बंगला

कृत्तिवास रामायण

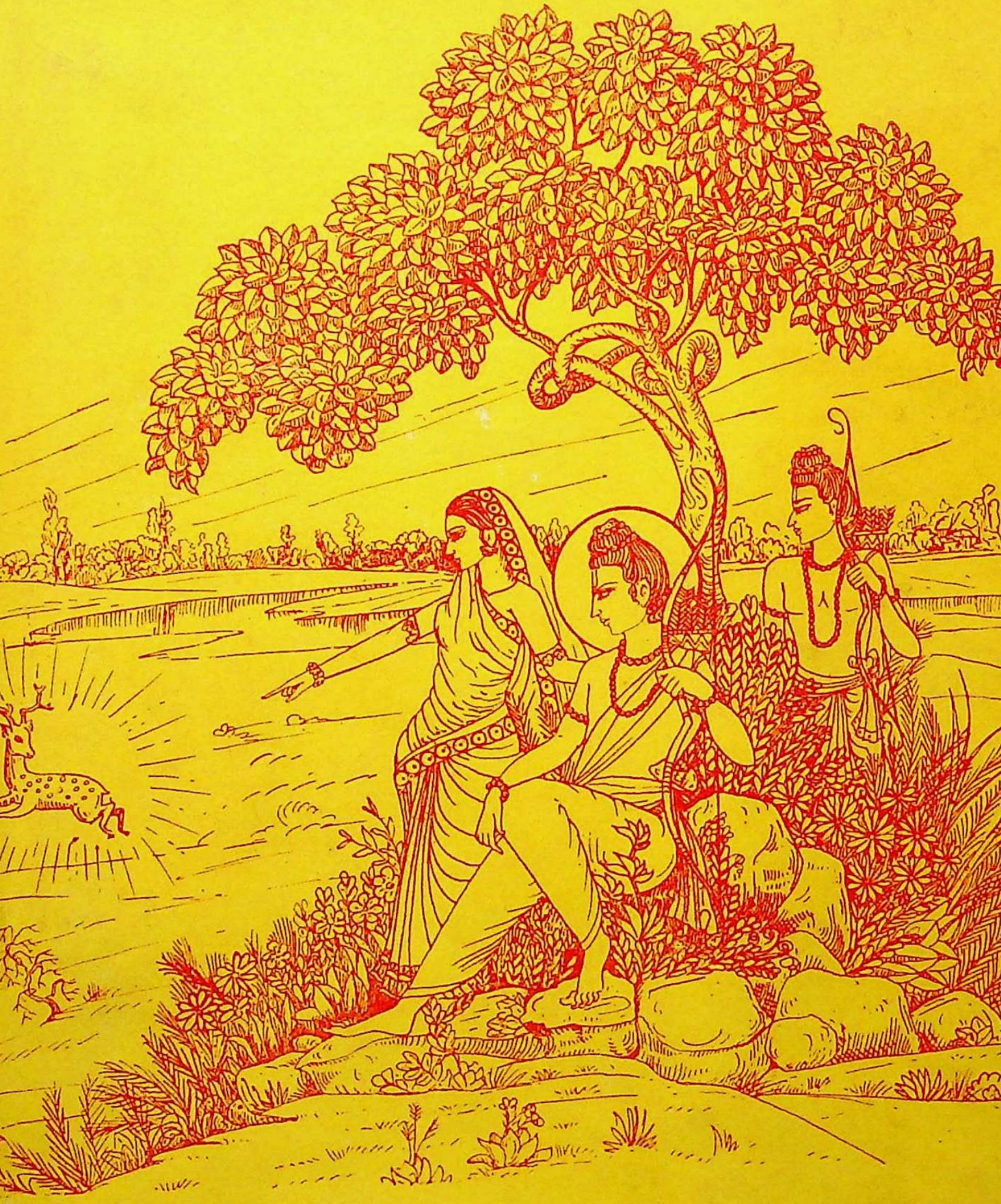

भुवनवाणी ट्रस्ट लखनऊ-३

श्री

कृत्तिवास रामायण

[रामचरितमानस से एक शती प्राचीन]

(आदि, अयोध्या, अरण्य, किष्किन्ध्या, सुन्दरकाण्ड)

बंगला काव्य के अमर रचयिता

सन्त महाकवि कृत्तिवास

अनुवादक एवं लिप्यन्तरणकार

नन्दकुमार अवस्थी

प्रकाशक

भुवन वाणी ट्रस्ट

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ—३

माल्यार्पण

नागरी लिपि भारत की जोड़-लिपि हो, विश्व की सम्पर्क लिपिओं में भी स्थान हो, अपनी मातृलिपि के साथ-साथ नागरी लिपि भी अपनाई जाय-- इस मंत्र को अनुप्राणित करनेवाले।

सत्य प्रेम करुणा

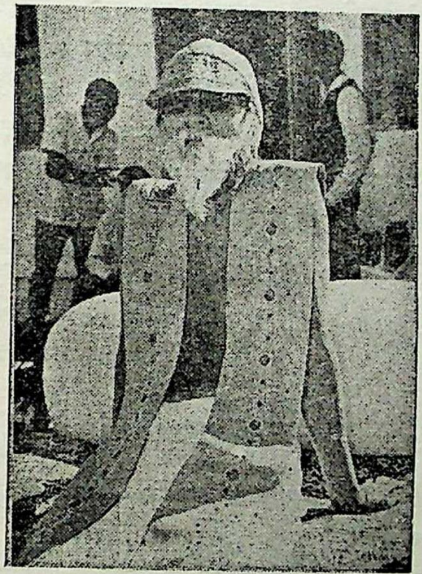

विश्व भाषा बन्धुत्व

बाबा का जय जगत

तुलसी के रामचरितमानस से एक शती प्राचीन बँगला 'कृत्तिवास रामायण' के पाँच काण्डों का नागरी लिप्यन्तरण और हिन्दी पद्यानुवाद से बाबा को माल्यार्पण करते हुए ट्रस्ट कृतकृत्य है।

१० जुलाई, १९७५

रथयात्रा-दिवस

प्रतिष्ठाता—भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ—३

भूमिका

श्री नन्दकुमार अवस्थी हिन्दी भाषार एकजन प्रसिद्ध साहित्यिक, बाङ्ला भाषाओ ताहार यथेष्ट दखल आछे। दीर्घ दिन अनेक परिश्रम करिया तिनि बंग भाषाय रचित विख्यात कृत्तिवास रामायण सुललित हिन्दी छन्दे अनुवाद करियाछेन। देवनागरी अक्षरे मूल बाङ्लाओ पुस्तके सन्निविष्ट हइयाछे। आमार हिन्दी भाषार ज्ञान सामान्य। एइ भाषाय अभिज्ञ मिशनेर अनेक संन्यासी श्री अवस्थी जीर एइ अनुवादेर भूयसी प्रशंसा करियाछेन। आमार दृढ़ विश्वास श्री अवस्थी जीर एइ प्रशंसनीय प्रचेष्टा हिन्दी भाषाभाषीदेर बाङ्ला भाषाय लिखित एइ अमूल्य ग्रंथेर रसग्रहणे साहाय्य करिबे। श्री अवस्थी जी ताहार एइ अनुवादेर द्वारा बाङ्ला भाषाभाषी ओ हिन्दी भाषा-भाषीदेर अशेष कृतज्ञतापाश आवद्ध करियाछेन। आमि एइ पुस्तकेर बहुल प्रचार कामना करि। इति।

(स्वामी) गंभीरानन्द

सा० स० रामकृष्ण मिशन

१०-४-६९ पो० बिलूरमठ, हावड़ा

अनुवाद

श्री नन्दकुमार अवस्थी हिन्दी भाषा के एक प्रसिद्ध साहित्यिक हैं। बंगला भाषा में भी उनकी यथेष्ट गति है। दीर्घकाल तक बहु परिश्रम द्वारा उन्होंने बंगभाषा में रचित सुप्रसिद्ध कृत्तिवास रामायण को सुललित हिन्दी काव्य में अनुवादित किया है। (साथ ही) देवनागरी अक्षरों में मूल बंगला पाठ भी पुस्तक में सन्निविष्ट है। मेरा हिन्दी भाषा का ज्ञान सामान्य है। तथापि इस भाषा के अभिज्ञ (रामकृष्ण) मिशन के अनेक संन्यासी जनों ने श्री अवस्थी जी के इस अनुवाद की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि श्री अवस्थी जी की यह प्रशंसनीय प्रचेष्टा हिन्दी भाषाभाषियों को बंग-भाषा में लिखित इस अमूल्य ग्रन्थ का रस ग्रहण करने में सहायता प्रदान करेगी। श्री अवस्थी ने अपने इस अनुवाद (और लिप्यन्तरण) द्वारा बंगभाषाभाषी और हिन्दी-भाषाभाषी दोनो—को समानरूपेण कृतज्ञतापाश में आबद्ध किया है। हम इस पुस्तक के बहुल प्रचार की कामना करते हैं। इति।

(स्वामी) गंभीरानन्द

सा० स० रामकृष्ण मिशन

प्रकाशकीय

'कृत्तिवास रामायण' का विस्तृत विवरण पृष्ठ १४-२१ में अनुवादक वक्तव्य में प्रस्तुत है। इस ग्रन्थ का आदिकाण्ड मात्र श्री प्रभाकर साहित्यालोक, लखनऊ से सन् ५९-६० में प्रकाशित हुआ था। उसको प्राप्त समादर से प्रोत्साहित होकर आदि, अयोध्या, अरण्य, किष्किन्ध्या और सुन्दर—इन पाँच काण्डों का सानुवाद लिप्यन्तरण भुवन वाणी, लखनऊ से जून १९६९ ई० में प्रकाशित हुआ। देश में उसकी सराहना हुई।

इसी बीच १९६९ ई० में भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ की स्थापना हुई। इस संस्था के द्वारा, भारत में व्यवहृत लगभग बीस भाषाओं का सानुवाद नागरी लिप्यन्तरण-कार्य सफलता के साथ हो रहा है। ट्रस्ट ने कृत्तिवास रामायण लंकाकाण्ड का नागरी लिप्यन्तरण गद्यानुवाद सहित प्रकाशित किया। इसको दृष्टि में रख कर कृत्तिवास रामायण के उपर्युक्त पाँच काण्डों को भी ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित करवाना समुचित समझा गया।

रहा प्रकाशन। बड़ा खर्चीला काम था। इसमें देश के उदार श्रीमन्त जन और उत्तर प्रदेश शासन की आंशिक सहायता रही। साथ-साथ में अन्य भाषाओं के लगभग बीस ग्रन्थों का प्रकाशन भी चल रहा था। भगवान् की कृपा से भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार श्री रमाप्रसन्न नायक और तत्कालीन गृहमंत्री श्री उमाशंकर जी दीक्षित की दृष्टि ट्रस्ट के भाषाई सेतुकरण के पुष्कल कार्यों की ओर गई। उनकी संस्तुति, पर शिक्षा एवं समाजकल्याण मंत्रालय, भारत सरकार की कृपा हुई। फलस्वरूप, ग्रन्थ के शेषांश को पूरा करके अखिल देश की जनता के सामने प्रस्तुत करने की नौबत आई। शिक्षामंत्रालय के मर्मज्ञ विद्वान् डाइरेक्टर श्री सनत्कुमार चतुर्वेदी जी की बड़ी कृपा रही। हम इन महानुभावों का, भाषाई सेतुकरण के राष्ट्रीय कार्य में उत्तरोत्तर दृढ़ और कार्यरत रहने का संकल्प लेते हुए, आभार प्रर्दन करते हैं।

कृत्तिवास रामायण उत्तर काण्ड का सानुवाद लिप्यन्तरण का प्रकाशन अभी अवशेष है।

नन्दकुमार अवस्थी

प्रतिष्ठाता—भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ-३

(उ० प्र० सरकार द्वारा मई ६० में पुरस्कृत)

कृत्तिवास रामायण (आदिकाण्ड)

के देवनागरी लिप्यन्तरण तथा हिन्दी पद्यानुवाद पर चन्द विद्वानों की प्रशस्तियाँ

(रामचरितमानस से सौ वर्ष प्राचीन बंगला काव्य)

यह अनुवाद प्रकाशित करके आपने बंगला और हिन्दी दोनो भाषाओं की अमूल्य सेवा की है; हमें विश्वास है कि हिन्दी जगत् आपके इस प्रयत्न का हार्दिक स्वागत करेगा।

ता. १६ जुलाई १९६० **—स० मन्त्री, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली**

'कृत्तिवास रामायण' (आदिकाण्ड) की पुस्तक देख ली। अच्छा काम शुरू किया है। एक बात सहज ही लिख दूँ, कृत्तिवास से भी ७०-८० साल पहले 'माधवकन्दली' रचित 'असमिया' रामायण है।.........

सारनिया आश्रम—गौहाटी, ४-१-६१ **—विनोबा**

कृत्तिवास रामायण (आदिकाण्ड) का पद्यानुवाद मिला। बहुत ही अच्छा बन पड़ा है। कृपया बधाई स्वीकार करें।

वाराणसी, २८-७-५९ **—हजारीप्रसाद द्विवेदी**

बंगला भाषा के महाकवि कृत्तिवास की बंगला रामायण का पं० नन्दकुमार अवस्थी द्वारा किया गया हिन्दी पद्यानुवाद पढ़कर प्रसन्नता हुई। अभी अनुवाद का आदिकाण्ड ही प्रकाशित हुआ है। पूरे प्रकाशन की संस्तुति करता हूँ। अवस्थी जी का यह कार्य बहुत ही सराहनीय है।

लखनऊ विश्वविद्यालय, ९-२-६० **—डा० दीनदयाल गुप्त**

आपने 'कृत्तिवास रामायण' पर जो श्रम किया है, सर्वथा श्लाघ्य है। अनुवाद पद्यबद्ध अच्छा रहा।

कनखल, २८-५-५९ **—किशोरीदास बाजपेयी**

निस्सन्देह कृत्तिवास रामायण को हिन्दीवालों के लिए सुलभ करके आपने अत्यन्त उपयोगी कार्य किया है; जनता का कर्तव्य है कि वह उक्त ग्रन्थ को खरीदकर पढ़े, जिससे आपका पुण्यकार्य सफल हो।

नई दिल्ली, ९-९-५९ **—बनारसीदास चतुर्वेदी**

'कृत्तिवास रामायण' का पद्यानुवाद प्रकाशित कर आपने वास्तव में हिन्दी का बड़ा उपकार किया है।

—डा० नगेन्द्र

दिल्ली विश्वविद्यालय, १७-८-५९

कृत्तिवास रामायण का अनुवाद ऐसी लोकप्रिय शैली में करके आपने बड़ा ही उपयोगी कार्य पूरा किया।

—नरेन्द्र शर्मा

आकाशवाणी भवन, नई दिल्ली, ता० २३-१०-६२

मैंने कृत्तिवास रामायण के अनुवाद का आदिकाण्ड देखा। पुस्तक बहुत अच्छी लगी।

—सम्पूर्णानन्द

राजभवन, जयपुर २६-२-६३

बंगला कृत्तिवास रामायण का पद्यानुवाद एवं मूल का देवनागरी लिप्यन्तरण, यह प्रयास सचमुच ही स्तुत्य है। आदिकाण्ड आद्योपांत देखा। बेहद पसंद आया। आशा है अगले काण्ड भी शीघ्र प्रकाशित होंगे।

—सत्यनारायण झुनझुनवाला
(मंत्री ठाकुरदास सुरेखा ट्रस्ट)

सलखिया, हावड़ा, ३०-३-६५

आपकी कृत्तिवास रामायण तो बहुत सुन्दर है। कल से इसी तखत पर रखी है। और भी सज्जनों ने देखा। उनका कहना है कि अनुवाद तो मूल से भी सुन्दर है।

—रमेशचन्द्र देव

रामनगर दुर्ग, वाराणसी, ७-३-६५ मंत्री, अखिल भारती काशिराज न्यास

बंगला-देवनागरी वर्णमाला

অअ	আआ	ইइ	ঈई	উउ
ঊऊ	ঋऋ	ঌऌ	এए	ঐऐ
ওओ	ঔऔ		অংअं	আঃअः
কक	খख	গग	ঘघ	ঙङ
চच	ছछ	জज	ঝझ	ঞञ
টट	ঠठ	ডड	ঢढ	ণण
তत	থथ	দद	ধध	নन
পप	ফफ	বब	ভभ	মम
যय	রर	লल	বव	শश
ষष	সस	হह	ক্ষक्ष	জ্ঞज्ञ
শ্রश्र	ড়ड़	ঢ়ढ़	ৎत्	য়य

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
समर्पण, उपहार	३
भूमिका—रामकृष्ण मिशन, बिलूरमठ	४
ग्रन्थ-विमोचन	५
प्रशस्तियाँ	७
बंगला देवनागरी वर्णमाला	९
विषय-सूची	१०
अनुवादक का वक्तव्य	१४
मंगलाचरण	२५
ग्रन्थ-परिचय	२६
आदिकाण्ड	
नारायण का चार अंश जन्मप्रकाश	२७
ब्रह्मा-नारद और रत्नाकर-मिलन	३०
रत्नाकर का पापक्षय आरंभ	३१
वाल्मीकि नामकरण, रामायण-रचना का वरदान	३५
नारद द्वारा रामायण-रचना-आभास	३६
चन्द्रवंश का वृत्तान्त	३८
सूर्यवंश वर्णन—मान्धाता जन्म	३९
दण्ड-आख्यान, सूर्यवंश निर्वंश	४१
राजा हरिश्चन्द्र आख्यान	४४
सगर-वंश आख्यान	५६
अश्वमेध यज्ञ आरंभ और सगर-वंश-विनाश	५९
कपिल ऋषि द्वारा सगरवंश-उद्धार व दिग्गजों का वर्णन	६०
गंगा-जन्म कथा, भगीरथ-जन्म	६२
भगीरथ द्वारा गंगा को मर्त्यलोक में लाना	६५
ऐरावत-दर्प-चूर्ण	७०
महादेव द्वारा गंगा-वेग धारण	७२
जह्नु मुनि का गंगा-पान	७४
काण्डार मुनि उपाख्यान	७५
सगरवंश-उद्धार	७७
गंगाजी की प्रार्थना	७९
सौदास (कल्माषपाद) उपाख्यान	८०
राजा दिलीप का अश्वमेध तथा रघु द्वारा इन्द्र को वन्दी बनाना	८४

विषय	पृष्ठ-संख्या
राजा रघु की दानकीर्ति	८७
राजा अज का विवाह दशरथजन्म	९१
दशरथ का राज्याभिषेक	९५
दशरथ-कौशल्या विवाह	९६
कैकेयी का विवाह	९८
सुमित्रा का विवाह	९९
अवध पर शनिदृष्टि के कारण अकाल तथा दशरथ की इन्द्र पर चढ़ाई	१०४
दशरथ-जटायु मित्रता	१०६
गणेशजन्म उपाख्यान, शनिदृष्टि-निवारण	१०७
दशरथ द्वारा अंधमुनिसुवन-बध	११२
दशरथ को अंधक मुनि का शाप	११५
त्रिजटा मुनि उपाख्यान	११६
निषाद (वामदेव) की जन्मकथा	११८
सम्बर असुर का वध	११९
सम्बर-युद्ध में घायल राजा दशरथ की कैकेयी द्वारा परिचर्या तथा वर-प्राप्ति	१२२
दशरथ का नखव्रण अच्छा करने पर कैकेयी को द्वितीय वर-प्राप्ति	१२४
श्रृंगी ऋषि उपाख्यान	१२५
राजा लोमपाद के यहाँ अनावृष्टि-निवारण-हेतु श्रृंगी ऋषि को छल से लाये जाने की कथा	१२७
अनावृष्टि-निवारण तथा राजा लोमपाद द्वारा पालिता दशरथ कन्या शांता का श्रृंगी मुनि के साथ विवाह	१३३
श्रृंगी ऋषि को न देखकर विभाण्डक मुनि का खेद	१३४
दशरथ द्वारा पुत्रेष्टि यज्ञ	१३६
क्षीरसागर में नारायण से, देवताओं की, रावणवध हेतु जन्म लेने की प्रार्थना	१४१
जनक द्वारा हल जोतते समय सीता के रूप में लक्ष्मी का जन्म	१४४

विषय	पृष्ठ-संख्या
यज्ञ से उत्पन्न चरु के पान से रानियों का गर्भधारण	१४६
श्रीराम-जन्म	१४८
भरत-लक्ष्मण-शत्रुघ्न का जन्म	१५१
राम-जन्म से आनन्द	१५२
रावण को आशंका और दूत शुक-सारन का राम की खोज में जाना	१५३
देवताओं का वानरों के स्वरूप में जन्म	१५६
रामादिक का अन्नप्राशन व नामकरण	१५७
दशरथ-सुवनों की बालक्रीड़ा	१५८
शस्त्र-शास्त्र-अध्ययन	१५९
जानकी-विवाह हेतु शिवधनु प्रदान	१६३
जनक की धनुर्भंग प्रतिज्ञा	१६५
समस्त राजाओं तथा रावण का धनुर्भंग में असफल होकर पलायन	१६६
राम का गंगास्नान तथा निषाद-दशरथ-युद्ध, भरद्वाज मुनि से राम को दैवी धनुष-बाण प्राप्ति	१७१
यज्ञों में विघ्नकारी राक्षसों के विनाश-हेतु राम को लाने के लिए विश्वामित्र का प्रस्थान	१७५
दशरथ द्वारा राम को भेजना अस्वीकार	१७७
दशरथ द्वारा राम के स्थान पर भरत को देने का छल, विश्वामित्र के कोप में अयोध्या का जलना	१७८
राम-लक्ष्मण का यज्ञ-रक्षा-हेतु प्रस्थान	१८०
राम द्वारा ताड़का-वध व अहल्या-उपाख्यान	१८२
राम द्वारा तीन कोटि असुरों का संहार, यज्ञ की पूर्ति, सीता-स्वयंवर-हेतु विश्वामित्र सहित राम-लखन का मिथिलागमन	१८८
देवताओं के निकट सीता की वर-याचना	१९६
राम द्वारा शिवधनुभंग	१९७

विषय	पृष्ठ-संख्या
विश्वामित्र का दशरथ को लाने के लिए अयोध्या प्रस्थान	२००
दशरथ का बारात सजाकर मिथिला-पयान	२०३
शुभ लग्न को टालने के लिए चन्द्रमा का नृत्य द्वारा सबको मोह लेना	२०८
शाखोच्चार चन्द्रवंश वर्णन	२०९
शाखोच्चार सूर्यवंश वर्णन	२१०
परशुराम-दर्प चूर्ण	२१५
दशरथ का अयोध्या आगमन	२२१

अयोध्या काण्ड

विषय	पृष्ठ-संख्या
मंगलाचरण	२२३
श्रीराम से राज्याभिषेक-प्रस्ताव	२२३
राम-राज्याभिषेक-अधिवास	२२६
राभ-राज्यप्राप्ति पर सब हर्षित	२३१
मन्थरा की कुमंत्रणा	२३२
दशरथ से कैकेयी की वर-याचना	२३८
पिता-प्रण-रक्षार्थ राम-वनगमन-उद्योग	२४२
राम-लक्ष्मण-सीता की वनयात्रा, शृंगवेरपुर गमन	२५९
राम द्वारा सुमंत्र को विदा	२७०
जयंत काक का नेत्र-वेधन	२७१
चित्रकूट-वास और दशरथ-मृत्यु	२७५
भरत का अयोध्या आगमन	२८१
भरत मिलाप	२८३
भरत-शत्रुघ्न द्वारा कैकेयी-मंथरा की भर्त्सना	२८६
कौशल्या, बशिष्ट-सहित भरत की मंत्रणा और दशरथ-अन्त्येष्ठि	२८९
भरत से राज्यग्रहण की प्रार्थना	२९३
राम को लाने के लिए भरत की वनयात्रा	२९४
भरत द्वारा श्रीराम की खोज	२९५
भरद्वाज आश्रम में साक्षात् स्वर्गपुरी आगमन	३००
श्रीराम से भरतादिक का मिलन	३०५
श्रीराम द्वारा पितृश्राद्ध	३०७

विषय	पृष्ठ-संख्या
श्रीराम-पादुका सिंहासनासीन कर भरत द्वारा राज्य	३०८
दशरथ-हेतु सीता द्वारा पिण्डदान	३१०
ब्राह्मण, तुलसी, फल्गुनदी-प्रति सीता-शाप तथा बटवृक्ष हेतु आशीष	३११
गया-माहात्म्य	३१५

अरण्यकाण्ड

विषय	पृष्ठ-संख्या
मंगलाचरण	३१८
चित्रकूट में श्रीरामादिक का निवास	३१८
अत्रि-आश्रम में अनुसूया-सीता का मिलन	३२०
रामादिक का दण्डकारण्य-दर्शन	३२३
विराध राक्षस वध	३२४
शरभंग मुनि-आश्रम में राम-गमन	३२७
श्रीराम का वन भ्रमण	३२८
अगस्त्य एव वातापि-इल्वल-आख्यान	३३१
पंचवटी में श्रीराम-जटायु-मिलन	३३४
शूर्पनखा के नासा-कर्ण छेदन	३३६
चौदह राक्षस सेनापतियों का वध	३३९
श्रीराम सहित खर और दूषन	३४१
श्रीराम द्वारा खर का वध	३४४
रावण-शूर्पनखा संवाद	३४६
रावण-मारीच परामर्श	३४८
रावण को मारीच का उपदेश	३५२
मारीच का मायामृग-रूप धारण	३५३
मारीच वध	३५४
सीताहरण	३५७
जटायु-रावण युद्ध	३६३
जटायु-सुत सुपार्श्व द्वारा रावण का अवरोध	३६६
सीता सहित रावण का लंकागमन	३६९
देवताओं द्वारा सीता की आहार-व्यवस्था	३७०
श्रीराम द्वारा विलाप और सीता की खोज	३७१
चक्रवाक और चक्रवाकी को राम का अभिशाप	३७७
राम-जटायु मिलन, सीता का समाचार प्राप्त	३७८
जटायु की अन्त्येष्ठि	३८०
कबन्ध-उद्धार	३८१
राम-दर्शन पाकर शवरी-उद्धार	३८४

किष्किन्ध्या काण्ड

विषय	पृष्ठ-संख्या
मंगलाचरण	३८६
राम-सुग्रीव मित्रता, सीता-आभूषण-प्राप्ति	३८७
राम-नाम-महिमा	३९२
सुग्रीव द्वारा सीता-उद्धार-स्वीकृति	३९३
राम द्वारा वालिवध और सुग्रीव को राज्य दिलाने का वचन	३९४
वालि द्वारा दुन्दुभि-वध	३९७
बालि द्वारा महिषासुर-वध	३९९
बालि-वध और सुग्रीव को राज्यारोहण की प्रतिज्ञा	४०१
बालि-सुग्रीव-युद्ध, सुग्रीव-पराजय	४०४
राम द्वारा बालि-वध	४०७
बालि द्वारा राम की भर्त्सना	४१२
श्रीराम के प्रति बालि-विनय	४१४
तारा-विलाप एवं राम को अभिशाप	४१६
बालि-संस्कार	४२२
सुग्रीव द्वारा राज्य-प्राप्ति	४२३
सीता-शोक में राम-अनुताप	४२५
सीता-उद्धार हेतु सुग्रीव को ताड़ना	४२६
सुग्रीव-लक्ष्मण कथोपकथन	४३४
सुग्रीव द्वारा कटक-सञ्चय	४३५
सीता खोज हित वानर सेना का पूर्व को प्रस्थान	४४०
,, ,, दक्षिण को प्रस्थान	४४४
,, ,, पश्चिम को प्रस्थान	४४७
,, ,, उत्तर को प्रस्थान	४५०
उत्तर-पूर्व-पश्चिम से कपि-सेना निराश वापस	४५७
रामनाम-महिमा	४५९
दक्षिण पाताल में सीतान्वेषण में विफलता	४६१
सीता-अन्वेषणार्थ अंगद-हनुमानादि में मंत्रणा	४६९

विषय	पृष्ठ-संख्या
सकल वानरों द्वारा प्राणोत्सर्ग व्रत	४७४
रामायण-श्रवण से संपाति पक्षोदय	४७५

सुन्दर काण्ड

विषय	पृष्ठ-संख्या
मंगलाचरण	४८९
सागर पार करने हेतु वानर-मंत्रणा	४८९
हनुमान-जन्म-वृत्तांत वर्णन	४९४
हनुमान का सागरतरण के लिए उत्साह	४९६
हनुमान द्वारा सागर-लंघनोद्योग	४९८
सागरलंघन हेतु हनुमान द्वारा भीषण रूप धारण	५०१
सुरसा द्वारा मार्ग अवरोध	५०३
हनुमान-मैनाक-संवाद	५०६
हनुमान द्वारा सिंहिका राक्षसी-वध और सागर-लंघन	५१०
हनुमान लंकाप्रवेश, चामुण्डा का लंका त्याग	५१३
हनुमान द्वारा सीता की खोज	५१४
हनुमान का अशोक वाटिका में सीतादर्शन	५१८
अशोक वाटिका में सीता-रावण साक्षात्	५२१
राक्षसियों द्वारा सीता-उत्पीड़न	५३१
सीता-त्रिजटा-संवाद	५३२
त्रिजटा का स्वप्न-वर्णन	५३३
सीता-सरमा संवाद	५३४
सीता-हनुमान साक्षात्	५३७
सीता द्वारा आत्मपरिचय	५४१
अँगूठी-संवाद	५४२
सीता का हनुमान को आशीर्वाद	५४५
सीता-खेद	५४९
सीता-हनुमान-कथोपकथन	५४९
हनुमान द्वारा मणिप्रदान	५५१
हनुमान द्वारा मधुवन-भञ्जन	५५३
जाम्बुमाली आदि अष्टवीर संहार	५५६
अक्षयकुमार वध	५५८
इन्द्रजीत द्वारा नागपाश में हनुमान-बंधन	५५९
रावण द्वारा हनुमान की दण्ड-व्यवस्था	५६४
हनुमान कर्त्तृक लंकादहन	५६७
सीता के समीप हनुमान का पुनरागमन	५७०
लंका से हनुमान की वापसी	५७२
वानरों द्वारा सुग्रीव-मधुवन-भञ्जन	५७५
हनुमान द्वारा श्रीराम के समीप निदर्शनमणि प्रदान	५७८
श्रीराम के प्रति हनुमान द्वारा भक्ति-प्रदर्शन	५८२
रावण को विभीषण का उपदेश	५८५
विभीषण की छाती पर रावण का पादप्रहार	५८७
विभीषण का लंकात्याग	५९०
विभीषण का कुबेरालय-गमन व कुबेर-उपदेश	५९३
विभीषण को शिव-उपदेश	५९९
श्रीराम-विभीषण-मिलन, विभीषण-राज्याभिषेक	६०३
श्रीराम द्वारा सागर-उपासना, सागर-ताड़न	६०६
सागर द्वारा श्रीराम की प्रार्थना	६०८
नल द्वारा सागर-सेतुबन्धन	६०९
नल के प्रति हनुमान-कोप	६११
काष्ठविडालों की सेतुबन्धन में सहायता	६१३
श्रीराम द्वारा शिव-प्रतिष्ठा	६१५
श्रीराम द्वारा भस्मलोचन-वध, लंका प्रवेश	६१७

अनुवादक का वक्तव्य

मंगलमय भगवान् की दया, पूर्वजों की अनुकम्पा और गुरुजनों के आशीर्वाद से मुझ अकिञ्चन ने, आज से लगभग ५०० वर्ष पूर्व अवतीर्ण, बंगभाषा के महाकाव्य "कृत्तिवास रामायण" के हिन्दी-रूपान्तर को प्रस्तुत करने का साहस किया। पाठकों के लिए भी यह कौतूहलजनक है। प्रश्न उठ सकता है कि हिन्दी में रामचरित्र पर तुलसी की अमर रचना 'रामचरितमानस' के अखंड और सार्वभौम साम्राज्य के रहते एक नवीन रामायण की रचना करने की आवश्यकता क्या है? इस जिज्ञासा के समाधान और महासन्त कृत्तिवास तथा उनके सुललित और सर्वांगपूर्ण इस महाकाव्य का, पाठकों के समक्ष, कुछ परिचय प्रस्तुत करने के हेतु, हिन्दीकार के नाते यह वक्तव्य देना आवश्यक प्रतीत हुआ।

संस्कृत के उत्तरकालीन साहित्य और संस्कृतेतर भारत की क्षेत्रीय तथा जनपदों की अन्य विपुल भाषाओं में प्राप्त धार्मिक अथवा सांस्कृतिक प्रायः सारे साहित्य पर व्यास के जयग्रन्थ (महाभारत) अथवा वाल्मीकि (रत्नाकर) की रामायण का प्रभाव है। आदिकवि महर्षि वाल्मीकि-रचित 'वाल्मीकीय रामायण' रामचरित्र पर उपलब्ध रचनाओं में सर्वप्रथम काव्य † है। इसी के आधार पर वृहत्तर भारत§ के विभिन्न क्षेत्रों और विभिन्न भाषाओं में कालिदास, कृत्तिवास, तुलसीदास आदि सरस्वती के वरद पुत्रों ने समय-समय पर मर्यादापुरुषोत्तम राम पर अपनी-अपनी भावना के अनुरूप काव्यरचना की है।

उल्लेखनीय है कि गोस्वामीजी के 'रामचरितमानस' के रचनाकाल से लगभग सौ वर्ष पूर्व "कृत्तिवासी रामायण" का आविर्भाव हुआ। उसके रचयिता संत कृत्तिवास बंगभाषा के आदिकवि माने जाते हैं। प्रारम्भ में संस्कृत के अभिमानी पण्डितों ने कृत्तिवास की रचना का बड़ा उपहास किया। उन पर चारो ओर से आक्षेप और प्रहार होने लगे। किन्तु परम स्वाभिमानी, संस्कृत और बंगला भाषाओं के समानरूपेण विद्वान्,

---

† वैसे आर्ष वचनों से यह आभास मिलता है कि च्यवन ऋषि एवं उनके अनुवर्ती वंशजों ने समय-समय पर रामायण का गान किया है और उन्हीं की परम्परा में आगे चलकर उत्पन्न रत्नाकार (वाल्मीकि) द्वारा रामचरित्र का जो संस्करण हुआ, वही आजकल की प्रचलित "वाल्मीकीय रामायण" का कलेवर अथवा कलेवर का आधार है।

§ वृहत्तर भारत में आधुनिक भारत, पाकिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, ईरान, बलख़, बरमा, दक्षिण-पूर्व एशिया तथा हिन्द महासागर के द्वीपपुञ्ज भी सम्मिलित थे।

महापण्डित कृत्तिवास की दृढ़ता और ओज के समक्ष उन पण्डितों का मिथ्या अहंभाव टिक नहीं सका। थोड़े ही समय में जनताजनार्दन के हृदय को मुग्ध कर इस महाकाव्य ने चिरंतन साम्राज्य के लिए अपना स्थान बना लिया। बंग-भाषा-भाषी प्रत्येक परिवार में आबाल-वृद्ध-वनिता सब इसके अनवरत गान में आनंदित होने लगे।

संत कृत्तिवास का समय गोस्वामी तुलसीदास जी से लगभग एक शताब्दी पूर्व होने के बावजूद उनका जन्म-स्थान, कुल और वंश-परिचय असंदिग्ध और सुविख्यात है। सन् ७३२ ई० में बंग-नरेश 'आदिशूर' द्वारा, यज्ञ के लिए कान्यकुब्ज देश से आमंत्रित और फिर बंगाल में ही बस गये पाँच ब्राह्मण-प्रवरों में सुपूज्य भारद्वाज गोत्रीय 'श्रीहर्ष' पण्डित से तेरहवीं पीढ़ी में 'माधवाचार्य' का जन्म हुआ। माधवाचार्य के 'उत्साह', उत्साह के 'आयित', आयित के 'उद्धव', उद्धव के 'शिव' और शिव के पुत्र 'नृसिंह ओझा' हुए जो सुवर्णग्राम के अधिपति महाराजा 'वेदानुज' के प्रधानमंत्री थे। आज से लगभग ६२५ वर्ष पूर्व वेदानुजकाल में अराजकता उत्पन्न हो जाने के फलस्वरूप नृसिंह ओझा ने सुवर्णग्राम का परित्याग कर उस समय के अति समृद्धिशाली फूलिया ग्राम में जाकर निवास किया।

कृत्तिवास के 'आत्मपरिचय' तथा इतिहास के विद्वानों के मत से प्रकट है कि 'फूलिया' धन-धान्य पूरित और मनोरम पुष्पोद्यानों से प्रफुल्लित, गंगाभागीरथी के उत्तर-पूर्व तट पर, श्रीमानों एवं प्रकाण्ड पण्डितों का उस समय प्रमुख पीठस्थान था। फूलिया, बेलगड़े, मालीपोता, सिमला, नवला, प्रभृति पञ्चग्राम संगठित होकर 'फूलिया-समाज' के नाम से प्रसिद्ध थे। कृत्तिवास से पूर्व और पश्चात् इस जागती भूमि ने अनेक भारत प्रसिद्ध विद्वानों एवं साधकों को जन्म दिया है। स्वयं कृत्तिवास के अति पवित्र कुल में ही 'अन्नदामंगल' आदि के रचयिता 'भारतचन्द्र गुणाकर' सुविख्यात स्मार्त और नैय्यायिक 'वासुदेव सार्वभौम' ओझा (उपाध्याय) वंश के प्रथम 'मुखोपाध्याय' उपाधिधारी 'श्रीगर्भ', 'रामचन्द्र विद्यालंकार', 'सर आशुतोष मुखर्जी' और अभी कल ही हम से विलग हुए, राष्ट्र के लिए प्राणोत्सर्ग करनेवाले 'स्व० श्यामाप्रसाद मुखर्जी' आदि नररत्नों ने या तो इसी पुण्यभूमि में जन्म लिया अथवा 'फूलिया के मुखर्जी' के पुनीत परिवार का होने के नाते अपनी कुलीनता का गर्व करते रहे हैं। यहीं पर उल्लेखनीय है कि भारत के सुवर्णकलश साहित्यसम्राट् बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय से आठ पीढ़ी पूर्व उनके पूर्वज अवस्थी गंगानन्द भी 'चटर्जीवंश' के अतिकुलीन 'फूलिया घराने' के आदिपुरुष थे और फूलिया के ही निवासी थे। आज कालस्रोत के प्रवाह में पड़कर 'फूलिया' गंगा से काफ़ी दूर हटकर एक साधारण ग्राम मात्र रह गया है। संत कृत्तिवास की यादगार उनका 'दोलमञ्च' आज भी एक टीले की शक्ल में वहाँ विराजमान है।

अस्तु उसी फूलिया में नृसिंह ओझा ने सुवर्णग्राम से आकर निवास किया। नृसिंह ओझा के 'गर्भेश्वर', गर्भेश्वर के 'मुरारि', मुरारि के तृतीय पुत्र 'वनमाली' और इन्हीं वनमाली की पत्नी 'मालिनी' के गर्भ से उत्पन्न छ: पुत्र और एक कन्या में कृत्तिवास कदाचित् ज्येष्ठ थे। इस प्रकार इस पुनीत वंश के प्रथम बंगवासी 'श्रीहर्ष' से २२ वीं पीढ़ी में सन्त कृत्तिवास ने जन्म लिया।

कृत्तिवास ने स्वरचित 'आत्मपरिचय' नामक प्रबन्ध में अपने जन्म-दिवस के संबंध में इस प्रकार लिखा है:—

"आदित्यवार श्रीपंचमी पूर्ण माघ मास।
ताखि मध्ये जन्म लइलाम कृत्तिवास॥"

इसके अनुसार पंचांग में ठीक शुभ क्षण खोजकर तथा अन्य विविध तथ्यों एवं तर्कों के आधार पर अनेक बंगीय विद्वानों के सहयोग से पण्डित-प्रवर अध्यापक योगेशचन्द्र ने १४३३ ई० ११ फरवरी, रविवार, माघ संक्रांति, रात्रिकाल को कृत्तिवास का जन्मकाल माना है। उन्हीं विद्वद्वर के मत से ४७ वर्ष की आयु प्राप्त होने पर १४८० ई० में संत का निर्वाण-काल और १४६७ ई० से १४७२ ई० के मध्य के पाँच वर्षों को रामायण कृत्तिवास की रचना का समय माना जाता है। कृत्तिवास के संतान होने का उनके 'आत्मपरिचय' में अथवा अन्यत्र भी कहीं उल्लेख नहीं है।

कृत्तिवास के पितामह मुरारि ओझा, व्यास और मार्कण्डेय के समान विद्वान् एवं तपस्वी थे। उनके सात पुत्र और बहुसंख्यक पौत्र-प्रपौत्रों का विपुल परिवार अतुल पाण्डित्य, कीर्ति और ऐश्वर्य का यशस्वी केन्द्र था। बारह वर्ष की अवस्था में कृत्तिवास, गंगापार किसी (अज्ञातनामा) सर्व-गुणनिधान गुरु के पास पढ़ने जाने लगे। कृत्तिवास ने स्थान-स्थान पर उनको महातेजस्वी कहकर व्यास-वाल्मीकि से तुलना की है। अध्ययन के पश्चात् सरस्वती के वरद पुत्र कृत्तिवास ने गौड़ेश्वर के प्रमुख सभापण्डित का पद प्राप्त किया। उस समय बंगाल में अनेक राजा-महाराजा सब गौड़ेश्वर करके प्रसिद्ध होते थे। कृत्तिवास के आश्रयदाता गौड़ेश्वर का नाम अज्ञात है। इन्हीं गौड़ेश्वर की प्रार्थना पर 'सन्त' द्वारा रचित ललित महाकाव्य आज 'कृत्तिवास रामायण' के नाम से प्रसिद्ध है।

'कृत्तिवास रामायण' सात काण्डों में समाप्त जनसाधारण के लिए सुबोध अति सरल पयार छन्दों में वर्णित 'पाञ्चाली गान' है। महाकाव्य को पढ़ने पर यह निश्चय प्रतीत होता है कि कृत्तिवास ओझा छन्द, व्याकरण ज्योतिष, धर्म और नीतिशास्त्र के अगाध पण्डित थे। भाषा सरल, अलंकार अनुप्रास से युक्त, तथा भाव और कवित्व-कल्पना से परिपूर्ण है। पारिवारिक

सामाजिक, राजनैतिक आचार का पूरा ज्ञान और संस्कृत भाषा पर उनका सर्वांग अधिकार है। राम-नाम में परम आस्था और विष्णु-शिव-शक्ति के स्वरूप में उनकी समानरूपेण भक्ति थी।

'कृत्तिवास' द्वारा हस्त-लिखित रामायण की प्रति अप्राप्य है। यदा-कदा प्राप्त प्राचीन पाण्डुलिपियों और सर्वत्र गाये जानेवाले पाञ्चाली गान के संग्रह बहुधा एक-दूसरे से भिन्न भी पाये गये हैं। अतः प्रस्तुत रामायण-ग्रन्थ के विषय में निश्चय रूप से यह कहना असम्भव है कि कृत्तिवास की प्रस्तुत रचना में कितना अंश प्रक्षिप्त है। फिर भी 'बंगीय साहित्य परिषद' जैसे भाषा-देव-मंदिरों में संगृहीत रामायण की अति प्राचीन लगभग ४०० पाण्डुलिपियों का निरीक्षण करके, श्रीरामपुर मिशनरी के प्रधान पादरी श्री केरी साहब के अनुरोध पर, विद्वन्मार्तण्ड स्व० जयगोपाल तर्कालंकार के प्रयास से सन् १८०२ ई० में "श्रीरामपुर मिशन प्रेस" से सर्वप्रथम 'रामायण कृत्तिवास' का परिष्कृत संस्करण प्रकाशित हुआ। तब से अनेक विद्वानों ने समय-समय पर उसका परिमार्जन किया और आज बाजार में उपलब्ध रामायण उन्हीं प्रयासों का पुष्कल परिणाम है। भले ही उनमें कोई-कोई अंश प्रक्षिप्त हों, किन्तु वह पवित्र ग्रन्थ कृत्तिवास की रचना करके मान्य है।

'कृत्तिवास रामायण' बंगभाषा-भाषियों की रग-रग में ओतप्रोत है। धनी-निर्धन, शिक्षित-अशिक्षित, पण्डित-मूर्ख, प्रत्येक सम्प्रदाय, समाज और वर्ग के लिए समानरूपेण वह आनन्दकारी है। संस्कृत में कालिदास और हिन्दी में गोस्वामी तुलसीदास के समान बंगला में 'कृत्तिवास' अजर-अमर और उनकी 'रामायण-रचना' सर्वकालानुयायिनी, सर्वतोगामिनी तथा सर्वतोव्यापिनी है। भाव सुस्पष्ट और भाषा प्राञ्जल, सरल और रोचक होते हुए भी अतुल पाण्डित्यपूर्ण है।

'कृत्तिवास रामायण' का कथानक प्रायः वाल्मीकीय रामायण के अनुसार है, फिर भी स्थान-स्थान पर अन्य पौराणिक अंशों का भी पर्याप्त समावेश है। गोस्वामी जी के मानस की तुलना में आख्यानों की अत्यधिक प्रचुरता कृत्तिवास रामायण की अपनी विशेषता है।

कृत्तिवास द्वारा रचित अनेक ग्रन्थों में रामायण के अतिरिक्त 'योगाद्यार बन्दना', 'शिवरामेर युद्ध', 'रुक्मांगदेर एकादशी' प्राप्य हैं। बंगला भाषा के इस महाकाव्य के रचयिता की सर आशुतोष मुखर्जी ने भी भूरि-भूरि वन्दना की है, और उसी कुल में जन्म पाने के नाते अपने को धन्य माना है।

अस्तु, प्रातःस्मरणीय सन्त कृत्तिवास और उनकी रामायण का संक्षिप्त परिचय देने के पश्चात् ऐसे 'सुधाभाण्ड' को हिन्दी पाठकों के समक्ष

प्रस्तुत करने की आवश्यकता पर अधिक लिखने का प्रयोजन शेष नहीं रहता। असंख्य कथारत्नों से अलंकृत, सर्वरसपूर्ण इस महाकाव्य से राष्ट्र-भाषा के भण्डार की श्रीवृद्धि करने की लालसा इस अकिंचन के मन में जाग्रत हुई।

इस मनोरथ के जागने पर, सन् १९१६ ई० में स्टीम प्रिन्टिंग प्रेस लखनऊ द्वारा प्रकाशित 'कृत्तिवास बालकाण्ड' को देखा। उसके सम्बन्ध में जिज्ञासाएँ कीं जिनसे विदित हुआ कि मेरे पड़ोसी एवं आदरणीय, साहित्य-मूर्धन्य स्व० पण्डित रूपनारायण पाण्डेय जी ने प्रसिद्ध साहित्यप्रेमी न्यायाधीश स्व० बाबू कालीप्रसन्न सिंह के आग्रह पर यह रचना की थी, जो बाद में बाबू कालीप्रसन्न सिंह के नाम से ही प्रकाशित हुई। स्व० पाण्डेयजी से चर्चा करने पर उन्होंने मुझे उक्त बातें बतलाईं। अनुवाद के संबंध में भी उन्होंने बताया कि "कृत्तिवास बालकाण्ड" के हिन्दी अनुवाद से ही बँगला भाषा के हिन्दी अनुवाद का अभ्यास उन्होंने आरम्भ किया था। और शायद इसी कारण, बँगला का प्रारम्भिक अभ्यास होने से, कृत्तिवास रामायण का हिन्दी भाषा में उनके द्वारा प्रस्तुत बालकाण्ड, मूल ग्रन्थ का अनुवाद न होकर एक परिवर्द्धित और स्वतंत्र ग्रन्थ सा बन गया है। उनका वह बालकाण्ड निस्सन्देह उनकी विद्वत्ता एवं प्रतिभा का परिचायक है। स्व० पाण्डेयजी हिन्दी के प्रतिभाशाली कवि, संस्कृत-भाषा के प्रकाण्ड पण्डित तथा श्रीमद्भागवत् के पुश्तैनी विद्वान् थे। और कदाचित् इसीलिए वे कृत्तिवास रामायण के आधार को लेकर भी श्रीमद्भागवत्, योगवाशिष्ट, अध्यात्म-रामायण, रघुवंश, मत्स्यपुराण, मार्कण्डेयपुराण आदि से विविध विषयों को प्रचुर संख्या में लेकर एक स्वतंत्र वृहत्काव्य की रचना-निर्माण का लोभ संवरण न कर सके। यहाँ तक कि वह ग्रन्थ मूल कृत्तिवास के आदिकाण्ड से कई गुना बढ़ भी गया। यह ग्रन्थ बाबू कालीप्रसन्न सिंह के नाम से छपा। पाण्डेय जी का नाम उस पर नहीं दिया गया है। आज उसके संस्करण प्राप्य भी नहीं हैं। इसी प्रकार बाबू कालीप्रसन्न सिंह ने 'कृत्तिवास लंकाकाण्ड' भी अमेठी निवासी श्री मथुराप्रसाद मिश्र द्वारा अनुवादित कराकर स्टीम प्रिन्टिंग प्रेस लखनऊ से ही प्रकाशित करवाया। इस अनुवाद का कथानक मूल बँगला पाठ के प्राय: अनुरूप होते हुए भी स्वतंत्र नाना छंदों से युक्त है, और निस्सन्देह विद्वत्तापूर्ण है। यह भी अब अप्राप्य है।

अत: यह विचार कर कि स्व० पाण्डेय जी की उक्त रचना से 'कृत्तिवास रामायण' के न तो ७ काण्डों की पूर्ति होती है और न आदिकाण्ड की ही, हिन्दी के इस अनमोल ग्रन्थ को प्रस्तुत करने की मेरी अभिलाषा दृढ़तर हो उठी।

बँगला रामायण की प्राञ्जल और सुबोध भाषा ने मेरे कार्य को सरल किया। गोस्वामी जी के रामचरितमानस के प्रमुख छन्द "दोहा-चौपाई" मानो रामायण के स्वरूप ही समझे जाते हैं। इसलिए कृत्तिवास के हिन्दी पद्यानुवाद को भी मैंने दोहा-चौपाई में ही रचना आरम्भ किया। यह पुष्कल कार्य १९५३ ई० में आरम्भ हुआ परन्तु मध्यम वर्ग की पारिवारिक एवं अन्यान्य कठिनाइयों के कारण बेछपा पड़ा रहा।

हिन्दी-काव्य में १६ चौपाइयों की एक कड़ी रखी गई है। और इन कड़ियों को कहीं एक, कहीं दो, 'दोहा-सोरठा' से जोड़कर एक-एक विराम की क्रमसंख्या दी गई है। एक कठिनाई अनुवाद करते समय मेरे सामने और थी। बँगला भाषा में संस्कृत के अनुसार विभक्तियों और प्रत्ययों से प्रायः काम ले लिया जाता है। हिन्दी में यह सुविधा कम होने से मैटर 'लाइन टु लाइन" जाने में कठिनता होती थी। दूसरी ओर मेरा सतत प्रयास था कि हिन्दी का कलेवर बँगला की अपेक्षा बढ़ने न पाये। इस कठिनाई को किसी प्रकार पार किया। कथानक और भावचित्रण में कहीं-कहीं ऐसा अवसर भी आया है कि हिन्दी और बंगला-पाठों में कुछ अन्तर प्रतीत हो। उनका उत्तरदायी सर्वरूपेण हिन्दीकार है। हिन्दी-अनुवाद काव्य, भाषा और व्यंजना की दृष्टि से कहाँ तक सफल हुआ है, यह सहृदय पाठक ही समझ सकते हैं। आशा है, मेरी त्रुटियों को क्षमा करते हुए संत कृत्तिवास के सुधा-सलिल का पान करेंगे।

पुस्तक का अनुवाद करते समय एक नई समयोचित भावना जाग्रत हुई। बँगला मूल देवनागरी लिपि में हिन्दी-रचना के साथ-साथ देने से हिन्दी पाठक को मूल बँगला काव्य के पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त होगा। बँगला भाषा जैसी सरल, मधुर, और संस्कृतमय है, उससे दो ही एक आवृत्ति कर लेने पर मूल काव्य समझ में आने लगेगा। इस प्रकार बँगला भाषा का ज्ञान और क्रमशः बंगला भाषा के अन्य ग्रन्थों को पढ़ने की अभिरुचि भी उत्पन्न होगी। दूसरी ओर बंगलाभाषा-भाषी अपने पवित्र सद्ग्रन्थ को हिन्दी-लिपि में पाकर राष्ट्रलिपि को सीखने और फिर क्रमशः राष्ट्रभाषा के साहित्य और विशेष रूप से गोस्वामी जी के 'रामचरितमानस' जैसे अद्वितीय महाकाव्य को पढ़ने-समझने में भी अनुरक्त होंगे। इस प्रकार राष्ट्रभाषा को अखिल देश में व्याप्त करने और विभिन्न राज्यों की क्षेत्रीय भाषाओं को एक राज्य से दूसरे राज्य तक प्रसारित कर सुपाठ्य और सुबोध बनाने के पुनीत राष्ट्रधर्म में मुझ जैसा साधारण नागरिक समुचित योगदान देकर धन्य होगा।

अस्तु। बंगला उच्चारण को नागरी लिपि में देने की समस्या की ओर ध्यान गया। कश्मीर से कन्याकुमारी पर्यन्त ग्राम-ग्राम, नगर-नगर

और प्रान्त-प्रान्त में मैं देखता हूँ, एक मूल भाषा ही कश्मीरी, पंजाबी, सौरसेनी, अवधी, मागधी, मैथिली, बंगला, उड़िया, असमिया, आदि अनेक भाषाओं में परिणित होती चली गई है। किन्तु हिन्दी के राष्ट्रभाषा एवं देवनागरी लिपि के राष्ट्रलिपि स्वीकृत हो जाने से भाषा और लिपि में यथासाध्य एकरूपता को लाना और जोड़-लिपि प्रस्तुत करना कर्तव्य सा बन गया। अतएव बंगला कविता को देवनागरी लिपि में लिखते समय 'योड़' को 'जोड़' एवं 'याय' को 'जाय' लिखना उचित समझा गया; फिर भी सर्वत्र अनेक स्थलों पर उसी शैली का अनुसरण किया गया है जिसे स्वयं बंगाली लेखकों ने अपनाया है, अर्थात् जलवायु से प्रभावित भिन्न उच्चारण की ओर ध्यान न देकर शब्दों को जैसे के तैसे रूप में लिखना। बंगला वर्णमाला का उच्चारण ओकारान्त होने पर भी बंगाली लेखक 'जल' और 'चक्षु' ही लिखते हैं यद्यपि पढ़नेवाले उन्हें 'जोल' और 'चोख' पढ़ लेते हैं। स्वर के संवृत-विवृत प्रयत्नों के फल-स्वरूप इस भेद को उच्चारण तक ही सीमित रखा है, लेखन में नहीं। हमने भी इसी मार्ग को ग्रहण करके मूल बंगला का प्रायः अक्षरान्तर कर दिया है। अनेक स्थलों पर व को ब और य को ज भी लिखा है।

अब दो शब्द अवशेष हैं। इस बड़े कार्य में यदि मेरे गुरुजनों और सहृदय मित्रों द्वारा उत्साह मुझे प्राप्त न होता तो कदाचित् मैं थककर कहीं बैठ जाता। मैं उनके स्नेह और सहृदयता का आभारी हूँ। स्व० श्री रूपनारायण जी पाण्डेय का आशीर्वाद मुझे प्राप्त था। उन्होंने मेरे अनुवाद को देखकर प्रशंसा की थी और मेरे उत्साह को दुचन्द कर दिया था।

प्रस्तुत पाँचकाण्डी संस्करण की भूमिका

एक बार इसका आदिकाण्ड श्री प्रभाकर साहित्यालोक से प्रकाशित हुआ। वह 'हिन्दी समिति, उत्तर प्रदेश' द्वारा पुरस्कृत हुआ; साहित्य अकादमी, दिल्ली तथा मूर्धन्य विद्वानों द्वारा प्रशंसित हुआ। प्रशस्तिपत्र पृष्ठ ७ पर दिये हैं। इससे उत्साहित होकर मैंने अगले काण्डों का अनुवाद और लिप्यन्तरण आरम्भ किया। और भगवान् की असीम कृपा से आदिकाण्ड, जो समाप्त हो चुका था, को सम्मिलित कर आदि, अयोध्या, अरण्य, किष्किधा और सुन्दर पर्यन्त पाँच काण्ड को एक जिल्द में प्रकाशित किया गया। लंका और उत्तरकाण्ड, इन संयुक्त पाँचों काण्डों की अपेक्षा कलेवर में बड़े हैं। उनका भी प्रकाशन शीघ्र ही आरम्भ होने की आशा है। मैं समझता हूँ स्वर्गीय बाबू कालीप्रसन्न सिंह की पुष्कल अभिलाषा की भी पूरी पूर्ति इस प्रयास से होगी।

'आदिकाण्ड' के संस्करण की भूमिका साहित्यमनीषी श्री भगीरथ मिश्र जी ने लिख कर रचना की भूरि-भूरि सराहना की थी। पश्चात् पाँचकाण्डी संस्करण की भूमिका श्री रामकृष्ण मिशन, बिलूरमठ, हावड़ा के स्वामी जी महाराज ने लिखकर हिन्दी रूपान्तरकार के श्रम को गौरवान्वित किया। मैं उनकी एवं मठ के संन्यासी विद्वानों की इस उदारता से कृतार्थ हूँ।

पाठकों को जानकर यह हर्ष होगा कि विभिन्न भारतीय भाषाओं के सेतुकरण-हेतु हिन्दी में सानुवाद लिप्यन्तरण का मेरा संकल्प और अनवरत श्रम १९४७ ई० से आरम्भ हुआ और अब वह संतोषजनक रूप में पल्लवित-पुष्पित हुआ है। सन् १९६९ में मैंने भुवन वाणी ट्रस्ट की स्थापना की। उसमें न केवल बँगला का पुनीत ग्रंथ कृत्तिवास रामायण, वरन् हिन्दी, उर्दू, कश्मीरी, गुरुमुखी, असमिया, ओड़िया, बँगला, मराठी, गुजराती, सिंधी, तमिल, तेलुगु, कन्नड, मलयाळम, राजस्थानी, संस्कृत, अरबी, फ़ारसी नेपाली आदि में बहुमुखी अच्छा-ख़ासा कार्य देवनागरी लिपि में सानुवाद प्रस्तुत हो चुका है। इसलिए कृत्तिवास रामायण पाँचकाण्ड का यह पुनर्संस्करण भुवन वाणी ट्रस्ट के माध्यम से पहली बार प्रकाशित हो रहा है। आशा है सहृदय पाठक एवं विज्ञजन विभिन्न भाषाओं के सेतुकरण के इस पुनीत कार्य में सहयोग देते रहेंगे। सूचनार्थ यह भी निवेदन है कि लंका और उत्तरकाण्ड का पद्यानुवाद होने में विलम्ब देखकर, भुवन वाणी ट्रस्ट से लंकाकाण्ड का देवनागरी लिप्यन्तरण, गद्यानुवाद सहित प्रकाशित हो चुका है। उत्तरकाण्ड का सानुवाद लिप्यन्तरण तैयार हो रहा है।

३१-३-७५ —नन्दकुमार अवस्थी

मुख्यन्यासी—सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ-३

श्रीराम-पञ्चायतन

अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ।।

* श्रीगणेशाय नमः *

कृत्तिवास रामायण

(हिन्दी पद्यानुवाद, बँगला मूल-सहित)

मँगलाचरण

श्लोक—यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै-
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ।
ध्यानावस्थिततद्गतेनमनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ।। १ ।।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते ।। २ ।।
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोस्तुते ।। ३ ।।
कृष्ण कृष्ण कृपालुस्त्वमगतीनां गतिः प्रभो ।
संसारार्णवमग्नानां प्रसीद पुरुषोत्तम ।। ४ ।।

(मूल ग्रन्थ)

श्लोक—रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरम् ।
काकुत्स्थं करुणामयं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम् ।।
राजेन्द्रं सत्यसन्धं दशरथतनयं श्यामलं शान्तिमूर्त्तिम् ।
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम् ।।
दक्षिणे लक्ष्मणोधन्वी वामतो जानकी शुभा ।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं नमामि रघूत्तमम् ।।
रामाय रामचन्द्राय रामभद्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ।।

(ग्रन्थ-परिचय)

दोहा—विघ्नविनाशन गजबदन, ऋद्धि-सिद्धि की खानि ।
मंगलवाणी भारती, जय भगवती भवानि ॥ १ ॥
रामचरित - अमरित - सलिल, पाप - नसावनहार ।
वाल्मीकि मुनि आदिकवि, कीहेन्उ जग विस्तार ॥ २ ॥
विविध भाव भाषा भरे, धर्म अर्थ अरु काम ।
मुक्ति, नीति अरु प्रीत के, अनुपम छन्द ललाम ॥ ३ ॥
सोइ पुनीत विरदावली, रघुवर काव्य अनन्त ।
युग-युग सों गावत रहे, मुनि मनीषि अरु सन्त ॥ ४ ॥
कालिदास वाणीवरद, अमर गिरा-अवतंस ।
बुधजन काव्य-विनोद हित, रचेउ ललित रघुवंस ॥ ५ ॥
देवनागरी-वाटिका, मानस-पुहुप विकास ।
सुरभित भारत भूमि चहुँ, धनि-धनि तुलसीदास ॥ ६ ॥
सजल श्यामला बंग की, उर्वर भूमि पुनीत ।
जहँ चैतन्य-रवीन्द्र सम, जन्मे जन-नवनीत ॥ ७ ॥
भक्ति-काव्य के स्रोत जहँ प्रकटे चण्डीदास ।
तहाँ सरस धारा बही, 'रामायण कृतिवास' ॥ ८ ॥
कोकिल-कूजित सुधामय, अनुपम काव्य सुवास ।
रचेउ, धन्य! तुम धन्य मुनि! महासन्त कृतिवास ॥ ९ ॥
भारतीय भाषा-प्रमुख, सकल रसन की खानि ।
देवनागरी माँहि सोइ, रचहुँ जोरि जुग पानि ॥ १० ॥
भाव रहित भाषा-विरस, कतहुँ न काव्य-प्रवीन ।
इत-उत के सत्संग सों विवस, प्रेरना लीन ॥ ११ ॥
कान्यकुब्ज-द्विज-गगन बिच, अवर प्रभाकर भास ।
जनमि, 'प्रभाकर' प्रवर किय, कुल-उपमन्यु प्रकास ॥ १२ ॥
विदित 'अवस्थी' आस्पद, बीते बरहीं साख ।
विक्रम चौंसठ, शत-उनिस, पाँच कृष्ण वैशाख ॥ १३ ॥
रानीकटरा—लखनऊ, संज्ञा 'नन्दकुमार' ।
तनय-दयाशंकर, जनम, मम परिचय-विस्तार ॥ १४ ॥
निर्गुण-सगुण अनन्त छबि, जड़-जंगम जगरूप ।
बन्दि सकल, रचना करहुँ 'कृत्तिवास'-अनुरूप ॥ १५ ॥
जतन भगीरथ, अल्प बल, तबौं लगी यह साध ।
गुनी-सन्त-सज्जन सकल, छमहिं मोर अपराध ॥ १६ ॥

आदि काण्ड

(हिन्दी पद्यानुवाद)

नारायण चार अंश जन्म-प्रकाश

सुखद सकल लोकन अति पावन ※ परमधाम गोलोक[1] सुहावन
विटप कल्पतरु अचरज नयना ※ मन-वाञ्छित अनन्त फल दयना
चन्द्र-सूर्य जहँ सतत[2] प्रकासा ※ विष्णु सहित श्री[3], दिव्य निवासा
नेतपाट[4] युत सुभग सिंहासन ※ नारायण विराज वीरासन
एक अंस प्रभु अस मन लाई ※ चारि अंस प्रगटैं रघुराई
राम भरत लक्ष्मण रिपुसूदन ※ यहि विधि चतुर्मूर्ति मधुसूदन

नारायणेर चारि अंशे जन्म प्रकाश

गोलोक बैकुण्ठपुरी सबार उपर ※ लक्ष्मीसह तथाय आछेन गदाधर
तथाय अद्भुत वृक्ष देखिते सुचारु ※ जाहा चाइ ताहा पाइ नाम कल्पतरु
दिवानिशि तथा चंद्र सूर्य्येर प्रकाश ※ तार तले आछे दिव्य विचित्र आवास
नेतपाट सिंहासन उपरेते तुली ※ वीरासने बसिया आछेन वनमाली
मने मने प्रभुर हइल अभिलाष ※ एक अंश चारि अंश हइते प्रकाश
श्री राम भरत आर शत्रुघ्न लक्ष्मण ※ एक अंशे चारि अंश हैला नारायण

---

१ वैकुण्ठ २ निरन्तर ३ लक्ष्मी ४ प्राचीन दिव्य वस्त्र—अलौकिक।

पाठकों को विदित है कि अवधी भाषा में 'एकार' और 'ओकार' की मात्राएं ह्रस्व और दीर्घ—दो प्रकार से बोली जाती हैं। यथा—'जे बिन काज दाहिनेहि बायें', 'जो जस कीन सो तस फल चाखा'। इनमें 'जे, ने और जो, सो' में ए और ओ की मात्राएं क्रमशः दीर्घ और ह्रस्व हैं। अवधी में अनभ्यस्त समुदाय के पाठ करते समय, ह्रस्व-दीर्घ एकार-ओकार के उच्चारण में भ्रम उत्पन्न होकर छन्द और लय भंग न हो जाय—इस हेतु सर्वभारतीय काशिराज-न्यास द्वारा प्रकाशित मानस-संस्करण में प्रयुक्त ह्रस्व तथा दीर्घ क्रमशः ॆ ो, ॆ ो का प्रयोग कृत्तिवास रामायण के अनुवाद के प्रस्तुत संस्करण में किया गया है। पूज्य श्री विनोबा भावे जी ने भी अपने तमिळ-देवनागरी लिप्यन्तरण में इन मात्रा-चिह्नों का प्रयोग किया है। भुवन वाणी ट्रस्ट भी, उर्दू-फ़ारसी के सामासिक पदों, कश्मीरी, तमिळ, तेलुगु, मलयाळम और कन्नड़-ग्रंथों के देवनागरी-लिप्यन्तरणों, तथा अवधी, ब्रजभाषा में इन विशिष्ट ह्रस्व-दीर्घ उच्चारणों को खास अवसरों पर व्यक्त करने के लिए, इन्हीं मात्रा-आकृतियों का प्रयोग कर रहा है। तदर्थ हम सर्वभारतीय काशिराज-न्यास तथा उसके मंत्री श्री रमेशचन्द्र देव के अतिशय अनुगृहीत हैं। **—नन्दकुमार अवस्थी, अनुवादक**

रमा रूप सोहति सिय बामा * कर जोरे कपि करत प्रनामा
चँवर भरत सत्रुघ्न डुलावत * कनक छत्र सौमित्रहिं भावत
यहि छबि प्रभु बैकुण्ठ बिराजा * पहुँचे तहँ नारद मुनिराजा
भक्ति सने श्रीहरि-गुण गावत * वीणा मंजुल तार बजावत
पंचायतन सरूप निहारी * सिथिल गात मोचत दृग वारी[1]
चकित रुप अद्भुत नव हेरी * नारद डगर[2] लीन शिव केरी
त्रिकालज्ञ शिव अन्तरयामी * हरिहिं सकल कुतूहल स्वामी
पंथ प्रथम भेंटे चतुरानन * लखि विरंचि हुलसे मुनिपावन
तिन सन करि सब कथा प्रकासा * लै विधि चले शिखर कैलासा
उमा सहित सोहत जहँ शंकर * बन्देउ तिनहिं सहित विधि[3] मुनिवर

दो० कस विरंचि? कस तपोधन? मुनि! अस पुलकित गात।
हरषि शंभु पूछेउ, कवन हेतु आगमन तात ॥ १ ॥

सुनि ब्रह्मा मृदु गिरा उच्चारी * सुनहु कुतूहल अति त्रिपुरारी
परमधाम गोलोक सुहावन * परमेश्वर त्रिभुवनपति पावन
तिनकर चारि अंश कर रूपा * नव प्रगटेउ कस आज अनूपा
विधि[3] सन सुनि सब कहेउ त्रिलोचन * लखेउ जु छबि, तुम, पाप-विमोचन

लक्ष्मीमूर्ति सीतादेवी वसेछेन बामे * स्वर्णछत्र धरेछेन लक्ष्मण श्रीरामे
चामर ढुलाय ताँरे भरत शत्रुघ्न * जोड़ हाते स्तव करे पवननन्दन
एइरूपे बैकुण्ठे आछेन गदाधर * हेनकाले चलिला नारद मुनिवर
वीणा यंत्र हाते करि हरिगुण गान * उत्तरिल गिया मुनि प्रभु विद्यमान
रूप देखि विह्वल नारद चान धीरे * वसन तितिल तार नयनेर नीरे
हेनरूप केन धरिलेन नारायण * इहा जिज्ञासिव गिया यथा पंचानन
भावी भूत वर्त्तमान शिव भाल जाने * ए कथा कहिब गिया महेशेर स्थाने
एतेक भाविया यात्रा करे मुनिवर * उत्तरिला प्रथमेते ब्रह्मार गोचर
विधातारे लये जान कैलास शिखरे * शिव के वन्दिया परे बन्दिल दुर्गारे
निरखिया दुइजने तुष्ट महेश्वर * जिज्ञासा करेन तवे ताँदेर गोचर
कह ब्रह्मा कह हे नारद तपोधन * दोंहे आनन्दित अद्य देखि कि कारण
बलेन विरिञ्चि शुन देव भोलानाथ * देखिलाम गोलोके अपूर्व्व जगन्नाथ
देखिलाम पूर्व्वेते केवल नारायण * चारि अंश देखि एवे किसेर कारण
ब्रह्मा वाक्य शुनिया कहेन कृत्तिवास * सेइरूप इहकाले हइबे प्रकाश

१ आँसू २ रास्ता ३ ब्रह्मा।

बरस बितीतहिं साठि हजारा ※ सोइ सरूप, प्रभु लै अवतारा
निसिचरनाह प्रचण्ड दशानन ※ तेहि विनासि भुवि-भार उतारन
अवधपुरी अति रम्य विशाला ※ सूर्यवंश दशरथ महिपाला
तिन कहँ तीनि नारि छबि-अयनी ※ तिन सुभघरी सुमंगल-दयिनी
चारि अंश प्रगटहिं मधुसूदन ※ राम भरत लछिमन रिपुसूदन
राम, सत्यपितु पालन हेतू ※ गवनहिं वन सिय-लखन समेतू
सिय उद्धार, नास खल रावन ※ लव-कुश सिय-सुत सुख-सरसावन
गोबध आदि अधम जे पापा ※ राम नाम मेटै संतापा
राम नाम भवसागर तारन ※ मुक्तिदेन पातकी उबारन
हँसि विधि कही सुनहु वृषकेतू[1] ※ अवनि[2] कहहु अस को अघहेतू[3]
करहु प्रतीति[4], शंभु कह बानी ※ भूतल[5] एक अधम अज्ञानी
राममंत्र तेहि दीजिय जाई ※ तासु प्रभाव मुक्ति जग पाई

दो० को अस नर? सोचन लगे, विधि नारद धरि ध्यान ।
'रत्नाकर' मुनि च्यवन-सुत, है पातकी महान ।। २ ।।

लूटै बधै पथिक बनचारी ※ दस्युवृत्ति, रुचि पापाचारी
मुनि-विधि[6] चले संत के रूपा ※ विधि-माया तेहि दिवस अनूपा

ये रूपे आछेन हरि गोलोक भितर ※ जन्म निते आछे षाटि सहस्र वत्सर
रावण राक्षस हवे पृथ्वीमण्डले ※ ताहाके बधिते जन्म लेबेन भूतले
दशरथ घरे जन्मिबेन चारिजन ※ श्रीराम लक्ष्मण आर भरत शत्रुघ्न
एक अंश नारायण चारि अंश ह'ये ※ तिन गर्भे जन्मिबेन शुभक्षण पेये
जानकीसहित राम लइया लक्ष्मण ※ पितृसत्य पालनार्थे जाइबेन बन
सीता उद्धारिबे राम मारिया रावण ※ लवकुश नामे हबे सीतार नन्दन
मनुष्य गोहत्या आदि जत पाप करे ※ एक बार रामनामे सर्ब्ब पापे तरे
महापापी ह'ये यदि राम नाम लय ※ संसार समुद्रे तार मुक्ति लाभ हय
हासिया बलेन ब्रह्मा शुन त्रिलोचन ※ पृथ्वीते हेन पापी आछे कोन जन
धूर्ज्जटि बलेन मम वाक्ये देह मन ※ मध्यपथे महापापी आछे एक जन
तारे गिया रामनाम देह एक बार ※ तबे से नितान्त मुक्त हइबे' संसार
विधाता नारद ताँर भावेन दुजन ※ पृथिवीते महापापी आछे से केमन
च्यवन मुनिर पुत्र नाम रत्नाकर ※ दस्युवृत्ति करे सेइ बनेर भितर
विरिञ्चि नारद दोंहे संन्यासी हइया ※ रत्नाकर काछे दोहे मिलिल आसिया

---

१ शंकर २ पृथ्वी ३ पाप का रूप ४ विश्वास ५ पृथ्वी पर ६ नारद और ब्रह्मा ।

तरु चढ़ि तकै पथिक मग ओरा * बिफल आजुदिन बीतेउ मोरा
हरषेउ निरखि पाप - अनुगामी * लूटौं बसन, हतौं दोउ स्वामी
लौहदण्ड लै सो तेहि मारा * तासु विफल विधि कीन्ह प्रहारा
मायाबस, कर अस्त्र न उठई * शठ कौतुक मन चिंतन करई
पूछेउ सहित सनेह विधाता * को तुम कवन प्रयोजन ताता
लूटहुँ बसन हरहुँ तव प्राना * मम नितनेम[1] न तुम अनुमाना
मम बध किये कतक धन पावै * कवन लोभ नित पाप कमावै
सौ रिपु हने जु पातक अहहीं * एक धेनु-बध सोइ नर लहहीं
सुनु सठ शत गोबधहिं समाना * लिये एक अबला कर प्राना
शत नारी सम विप्र-विनासा * टारे टरहि न सो अघ-त्रासा[2]
एक ब्रह्मचारी बध करई * शत द्विज हनै, न अन्तर परई
एते पाप बरन बहुरासी * अगनित पाप बधे संन्यासी
बिचरैं जहाँ संत बनबासी * चारि कोस महि[3] सो जनु कासी
सुनि सब सीख तबहुँ मन भावै * तौ पातक मनमौजि कमावै

दो० छद्मभेस बिधि-बैन सुनि, जड़ कीन्हेउ परिहास।
तुम सम केतक सन्त-मुनि, नित उठि करौं विनास ॥ ३ ॥

विधातार माया हैल रत्नाकर प्रति * सेइ दिन सेइ पथे कारो नाहि गति
उच्चवृक्षे चड़िया से चतुर्द्दिके चाय * ब्रह्मा नारदेरे पथे देखिवारे पाय
भावे मुनि रत्नाकर लुकाइया बने * संन्यासी मारिया वस्त्र लइव एक्षणे
विधाता नारदे लये जान सेइ पथे * लोहार मुद्गर तोले ब्रह्मारे बधिते
ब्रह्मार मायाते तार मुद्गर ना चले * मायाते मुद्गर बद्ध तार करतले
ना पारे मारिते दस्यु भावे मने मन * ब्रह्मा जिज्ञासेन बापू तुमि कोन जन
रत्नाकर बले तुमि ना चिन आमारे * लइब तोमार वस्त्र मारिया तोमारे
ब्रह्मा बले मारि मोरे कत पाबे धन * करियाछ जत पाप कहिव एखन
शत शत्रु मारिले जतेक पाप हय * एक गो बधिले तत पापेर उदय
एक शत धेनु वध जेइ जन करे * तत पाप हय जदि एक नारी मारे
एक शत नारी हत्या करे जेइ जन * तत पाप हय एक मारिले ब्राह्मण
एक शत ब्रह्म वधे जत पाप हय * एक ब्रह्मचारी वधे तत पापोदय
ब्रह्मचारी मारिले पातक हय राशि * संख्यानाई कत पाप मारिले संन्यासी
जेइ पथ दिया गति करेन संन्यासी * आड़ेदीर्घे चारिकोश सम पुरीकाशी
से पाप करिते जदि थाके तव मन * करह ए पाप सव कहिनु एखन
शुनिया कहेन दस्यु रत्नाकर हासि * मारियाछि तोमाहेन कतेक संन्यासी

---

१ नित्य का नियम (धन्धा) २ पाप का दुखमयभोग ३ पृथ्वी।

कह मुनि, यदि मम-बध तव प्रीती ※ मारहु अवनि विलोकि पुनीती[1]
पिपीलिका[2] जहँ कीट-पतंगा ※ जुरैं न लोभ सुगंध-प्रसंगा
गदाघात मम गात निपाता ※ कुचिलैं कीट, कवन सिर घाता
हे हतबुद्धि कुफल इन केरे ※ भागीदार कौन अघ[3] तेरे
लूट-पाट क्रय-विक्रय जेता ※ कहेउ दस्यु पुनि दर्प समेता
विलसहिं मातु-पिता अरु गृहनी ※ भागीदार सकल मम करनी
कह विरञ्चि तव मति बौरानी ※ ते तव पाप-युक्त ! कस जानी
पातक, तव पुरुषार्थ विशेषा ※ करै-भरै सो जग यहु लेखा
नहिं प्रतीति तौ जाहु निकेतू[4] ※ जो परिजन साझी तव हेतू
तौ पुनि लौटि करहु बध मोरा ※ तरु ढिग बैठि, लखहिं मग तोरा
भाई जुगुति[5], दस्यु मन चिन्तय ※ रहै कि भागि जाय मुनि, संसय
दै भरोस तेंहि पठयि विधाता ※ लावहु मत-पत्नी-पितु-माता
कछु पग बढ़ै, लखै पुनि तरुतर ※ करत जहाँ विश्राम संतवर

रत्नाकर का पापक्षय आरंभ

प्रथम जाय पितु सन रत्नाकर ※ कहत, सुनहु मम विनय गुनागर

ब्रह्मा बलिलेन जदि ना छाड़िबे मोरे ※ भाल स्थल देखिया हे वधह आमारे
जथा कीट पतङ्गादि पिपिलिका गन्धे ※ लोभे ना आइसे मृत खाइते आनन्दे
मारिबे दण्डेर बाड़ि पाड़िब भूमिते ※ पिपीलिका मरिबेक आमार चापेते
ब्रह्मा बलिलेन पाप कर कार लगि ※ तोमार ए पातकेर केबा हबे भागी
रत्नाकर बले जत ल'ये जाइ धन ※ मातापिता पत्नी आमि खाइ चारिजन
जेबा किछु बेचि किनि खाइ चारिजने ※ आमार पापेर भागी सकले ए क्षणे
शुनिया हासिया ब्रह्मा कहिलेन तबे ※ तोमार पापेर भागी तारा केन हबे
करियाछ जत पाप आपनार काय ※ आपनि करिले पाप आपनार दाय
जिज्ञासा करिया तुमि आइस निश्चय ※ तोमार पापेर भागी तारा जदि हय
नितान्त आमारे बध कर तबे तुमि ※ एइ वृक्ष तलेते बसिया थाकि आमि
हरिष विषादे दस्यु लागिल भाषिते ※ बुझिलाम एइ जुक्ति कर पलाइते
ब्रह्मा बले सत्यकरि ना पालाब आमि ※ माता पिता दारा सुते पुछे एस तुमि
अत:पर जाय दस्यु फिरिफिरि चाय ※ भावे बुझि भांडाइया संन्यासी पलाय

रामनामे रत्नाकरेर पापक्षय

प्रथमे पितार काछे करे निवेदन ※ आदिकाण्ड गान कृत्तिवास विचक्षण
मनुष्य मारिया आमि जत धन आनि ※ आमार पापेर भागी हओ किना तुमि

१ पवित्र २ चींटी ३ पाप ४ घर ५ युक्ति, उपाय ।

हरहुँ द्रव्य नित करि नरघाता ※ सेवहुँ सकल स्वपरिजन ताता
यहि विधि सुत के जे अपकर्मा ※ भागीदार अहौ, पितु-धर्मा

दो० जनक छोभ, सुनि सुत-बयन, बोले, जड़ मतिहीन !
पुत्र-पाप पितु लहै, अस, शास्त्र-मंत्र को दीन ॥ ४ ॥

पिता सुवन कहुँ सुत पितु रूपा ※ जगत-चक्र यहि भाँति अनूपा
तव शिशुकाल कठिन श्रम धारी ※ पोषण किय पितु-धर्म विचारी
अनुचित-उचित जो मैं तब कीन्हा ※ ताकर कुफल न तो कहँ दीन्हा
जरठ भयेउँ, शिशु सम असमर्था ※ सब विधि अब तैं युवक समर्था
पितु समान पालन करु मोरा ※ जनक रूप तैं, मैं शिशु तोरा
सो पालन मिस, करु नित हिंसा ※ कस अपराध मोर अवतंसा
सुनत जनक[1] कर यह खर[2] बानी ※ सीस नवाय दुखित अज्ञानी
अति विनम्र बरनेउ ढिग-जननी ※ पापमयी निज दैनिक करनी[3]
बाँटहु मातु मोर कछु पापा ※ नतरु मिटै किमि मम संतापा
सहेउँ कलेस गर्भ दस मासा ※ मम पोषन तव धर्म प्रकासा
सोइ पालन तैं कृत पसुवेसू ※ तव पातक मोंहि किमि लवलेसू[4]
लोचन लचे दस्यु मन पीरा ※ साहस जोरि गयो तिय[5] तीरा
प्रिय! मम हिंसा-वृत्ति कमाई ※ बिलसहु सुमुखि सकल सुख पाई

पुत्रेर बचन शुनि कहिछे च्यवन ※ हेन कथा तोमाय बलिल कोन जन
कोन शास्त्रे शुनियाछ के कहे तोमारे ※ पुत्र-कृत पाप केन लागिबे पितारे
अज्ञान बालक तोरे कि कहिब कथा ※ कभु पिता पुत्र हय पुत्र हय पिता
जखन बालक छिले पिता छिनु आमि ※ एखन बालक आमि पिता हैले तुमि
जखन बालक छिले ना छिल यौवन ※ बहुदु:ख करि तोमाय करेछि पालन
जत करियाछि पाप आपनि संसारे ※ से सब पापेर भाग न लागे तोमारे
एवे पिता हइयाछ पुत्रतुल्य आमि ※ कोनरूपे आमारे पुषिबे नित्य तुमि
मनुष्य मारिते तोमा बले कोन जन ※ तोमार पापेर भागी हब कि कारन
शुनिया बापेर कथा हेंट माथा करे ※ काँदिते काँदिते कहे मायेर गोचरे
सत्य करि आमारे गो कहिबे जननी ※ आमार पापेर भागी हबे कि आपनि
जननी कहिछे क्रुद्धा हइया आपार ※ एक दिवसेर धार के शोधे आमार
दश मास गर्भे धरि पुषेछि तोमाय ※ तव कत पाप पुत्र ना लागे आमाय
शुनिया मायेर वाक्य माथा हेंट कैल ※ पत्नीर निकटे गिया सकल कहिल
जिज्ञासि तोमारे प्रिय सत्य करि कओ ※ आमार पापेर भागी हओ कि न हओ

१ पिता २ खरी, कटु सत्य ३ नित्यकर्म ४ तनिक भी लगाव ५ पत्नी ।

तौ पुनि पाप बटावहु मोरे ※ सुनि तिय[1] बिनय कीन्ह कर जोरे
जेहि सुभ घड़ी गहेउ मम हाथा ※ मम पालन माथे तव नाथा
पोषन-भरन हेत नरघाता ※ केहि आदेस करहु नित ताता

दो० पाप-पुन्य सुख-दुख सहौं, आजीवन पति संग।
पालन हित पातक करहु, लगहि न मोरे अंग ॥ ५ ॥

धीरज छूट विकल रत्नाकर ※ किमि अब तरहुँ विषम भवसागर
नरघाती पातकी अपावन ※ अहह बृथा बीतेउ मम जीवन
मुद्‌गर-लौह हनेउ सिर माहीं ※ गिरेउ अचेत च्यवनसुत ताहीं
चलेउ सँभरि पुनि दृग भरि आँसू ※ विटप तरे जहँ मुनिन निवासू
करि दण्डवत जोरि जुग पानी ※ करहु सनाथ दास निज जानी
पूछेउँ सबन तीय-पितु-माता ※ कोउ न अंस-अघ[2] लेइ विधाता
दिव्य ज्ञान जो मुनि सों पावौं ※ सफल जनम करि, पाप नसावौं
सर[3] नहाइ करि अंग पुनीता ※ आवहु अस विधि कही सप्रीता
रत्नाकर सरवर ढिग गयेऊ ※ जलचर विकल, शुष्क जल भयेऊ
दस्यु गलानि, मनै बहु त्रासा ※ बरनेउ कथा लौटि विधि पासा

शुनिया स्वामीर वाक्य कहिछे रमणि ※ निवेदन करि प्रभु शुन गुणमणि
विधाता नरिछे मोरे अर्द्धाङ्गेर भागि ※ अन्य पाप निते पारि ए पाप तेयागि
जखन करिले तुमि आमारे ग्रहण ※ सर्वदा करिबे मम रक्षण पोषण
आर जत पाप पुण्य भाग लागे मोरे ※ पोषणार्थे पापभाग ना लागे आमारे
मनुष्य मारिते केवा बलिल तोमाय ※ एइमात्र जानि आमि पालिबे आमाय
शुनिया भार्यार कथा रत्नाकर डरे ※ केमन तरिब आमि ए पाप सागरे
डुबिनू पापेते आमि कि हइबे गति ※ काँदिते लागिल दस्यु स्मरिया दुष्कृति
लोहार मुद्‌गर निज माथाय मारिया ※ पड़िल भूमेते तबे अचेतन हैया
उठिया मुनिर पुत्र भाविल अन्तरे ※ सेइ महाजन यदि मोरे कृपा करे
एइ भावि उभयेर निकटेते गिया ※ कहिल ब्रह्मार पाय दण्डवत् हैया
एके-एके जिज्ञासिनु आमि सबाकारे ※ मम पापभागी केह नाहिक संसारे
आपनि करिया कृपा दिले दिव्यज्ञान ※ ए सकल पापे किसे हब परित्राण
कहिले न पितामह मुनिर कुमारे ※ करिया आइस स्नान तुमि सरोवरे
शुनिया चलिल दस्यु सरोवर पाड़ ※ शुकाइया गेल जल दृष्टिमात्र तार
शुष्क-स्थले मरे मीन मकर कुम्भीर ※ कहिल ब्रह्मार काछे ना पाइया नीर

---

१ पत्नी २ पाप में साझा ३ सरोवर।

अगम सलिल नित, सो जलहीना ※ अधम दीठि[1] मम सो कस काना
बीतेउ पाप च्यवन-सुत तारन ※ नारद सों मत करि चतुरानन
नीर कमण्डल ते सिर डारी ※ महामंत्र मुनि देन बिचारी
ब्रह्मा निकट आइ तेहि काना ※ 'राम' नाम कर दिय वरदाना
करत पाप नित जड़ भइ रसना ※ 'राम नाम' तेहि मुख निकसत ना
लखि-कौतुक विरंचि चितलागी ※ किमि कहि सकै 'राम' हतभागी

दो० मारत जन बीतेउ जनम, 'मरा' शब्द अनुकूल ।
तेहि पलटे सक 'राम' कह, अस सोचेउ जगमूल[2] ॥ ६ ॥

मृतकहिं कहत कौन विधि नागर[3] ※ 'मड़ा-मड़ा' बोलेउ रत्नाकर
मड़ा न कहु, जपु 'मरा' निरन्तर ※ होई राम उदय उर-अन्तर[4]
काठ सुखान विटप[5] दिखराई ※ ककस[6] कहत ? पूछत मुनिराई
करि अनुमान, जतन बहु कीना ※ 'मरा' काठ, मुनिसुत कहि लीना
'मरा-मरा' तेहि शब्द सुहावा ※ सगुन राम मानहुँ सो पावा
पुलकित रोम, नैन स्रव नीरा ※ रटनि एक, नहिं चेत सरीरा
उलटै जापु जपत अविरामा ※ पलटि भयेउ सो रामै-रामा
अनल पाय जिमि भसम कपासा ※ राम नाम सब पातक नासा

छिल जे अगाध जल एइ सरोवरे ※ मम दृष्टिमात्र गेल शुकाये अन्तरे
शुनिया कहेन ब्रह्मा सङ्गी तपोधने ※ हइयाछे पूर्ण पाप तरिबे केमने
कमण्डलु जल छिल दिलेन माथाय ※ महामन्त्र मुनि तारे करिबारे जाय
निकटे आसिया ब्रह्मा कहे तार काने ※ एक बार राम-नाम बल रे बदने
पापे जड़ जिह्वा राम बलिते ना पारे ※ कहिल आमार मुखे ओ कथा ना स्फुरे
शुनिया ब्रह्मार बड़ चिन्ता हैल मने ※ उच्चारिबे राम-नाम ए मुखे केमने
मकार कहिले अग्रे रा कहिले शेषे ※ तबे वा पापीर मुखे रामनाम आसे
ब्रह्मा वलिलेन तारे उपाय चिन्तिया ※ मनुष्य मारिले बापू डाक कि बलिया
शुनिया ब्रह्मार कथा वले रत्नाकर ※ मृत मनुष्येरे मड़ा बले सब नर
मड़ा नय मरा वलि जप अविराम ※ तव मुखे बाहिरिबे तबे रामनाम
शुष्क काष्ठ देखिलेन वृक्षेर उपरे ※ अंगुलि ठारिया ब्रह्मा देखान ताहारे
बहुक्षणे रत्नाकर करि अनुमान ※ बलिल अनेक कष्टे मरा काष्ठखान
मरा-मरा बलिते आइल राम नाम ※ पाइल सकल पापे दस्यु परित्राण
तुलाराशि जेमन अग्निते भस्म हय ※ एक बार राम नामे सर्व्व पाप क्षय

---

१ दृष्टि २ ब्रह्मा ३ बुद्धिमान् ४ हृदय के भीतर ५ सूखा वृक्ष ६ किस प्रकार ।

राम-नाम लखि अमित प्रभावा ❋ चकित विरंचि[1] मोद अति पावा

ब्रह्मा द्वारा रत्नाकर का 'वाल्मीकि' नामकरण तथा रामायण रचने का वरदान

बोले, सुनहु तपोधन ज्ञानी ❋ सदा बचन-शिव अमिट बखानी
रत्नाकर समाधि लवलीना ❋ वत्सर साठि सहस जप कीना
एक नाम, इक थल, एकासन ❋ अडिग जपत तन चुनेउ कीटगन
विरहित मांस अस्थि अवसेसा ❋ माटी जमि जिमि पिण्ड विसेसा
कण्ट काँस कुस जमत ढूह पर ❋ तेहि बिच राम नाम निसिवासर
बीते साठि सहस जब वत्सर ❋ कमलासन[2] हेरेउ रत्नाकर
धरती ऊँचि, जापु सुनि परही ❋ मानुष-तन न विधिहिं कहुँ लखही

दो० पिण्ड बीच मुनिसुत जपत, जानि विधाता लीन ।
सात दिवस बरसैं जलद, इन्द्रहिं आयसु दीन ।। ७ ।।

अविरल[3] जल मृत्तिका[4] बहाई ❋ शुभ्र अस्थि-तन विधि दरसाई
सुनि विधि-टेर चेतना जागी ❋ दौरि दण्डवत किय अनुरागी
कियेउ मुक्त मोंहि, दै हरि नामा ❋ पुलकित पुनि पुनि करत प्रनामा
रत्नाकर तजि नाम विधाता ❋ वाल्मीकि[5] जग किय विख्याता

नामेर महिमा देखि ब्रह्मार तरास ❋ आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

ब्रह्मा कर्त्तृक रत्नाकरेर वाल्मीकि नाम[6] ओ रामायण रचना करणेर वरदान

ब्रह्मा कह शुनह नारद तपोधन ❋ जे कहिल मिथ्या नहे शिवेर वचन
राम नाम ब्रह्मा स्थाने पेये रत्नाकर ❋ सेइ नाम जपे षाटि हाजार वत्सर
एक नाम जपे एकस्थाने एकासने ❋ सर्वाङ्ग खाइल वल्मीकेर कीटगणे
माँस खाइया पिण्ड करिल सोसर ❋ हइल कण्टक-कुश ताहार उपर
खाइल सकल मांस अस्थिमात्र थाके ❋ वल्मीकेर मध्ये मुनि राम नाम डाके
ब्रह्मार मुहूर्त्त षाट हाजार वत्सर ❋ पुनः आइलेन ब्रह्मा जथा मुनिवर
सेखाने आसिया ब्रह्मा चारिदिके चाय ❋ मनुष्य नाहिक किन्तु रामनाम हय
राम नाम शुने मात्र पिण्डेर भितर ❋ जानिल इहार मध्ये आछे मुनिवर
आज्ञा करिलेन ब्रह्मा डाकि पुरन्दरे ❋ सात दिन वृष्टि कर पिण्डेर उपरे
वृष्टिते गलिया गेल मृत्तिका सकल ❋ देखिल केवल अस्थि आछे अविकल
सृष्टिकर्ता करिलेन ताहारे आह्वान ❋ पाइया चैतन्य मुनि उठिया दाँड़ान
ब्रह्मारे कहिल मुनि करिया प्रणाम ❋ मोरे मुक्त कैला तुमि दिया रामनाम

---

१ ब्रह्मा २ ब्रह्मा ३ लगातार ४ मिट्टी ५ वल्मीक अर्थात् दीमकों से व्याप्त मिट्टी के ढेर से निकलने के कारण ब्रह्मा ने रत्नाकर को वाल्मीकि नाम दिया ।

तैं सुत सात काण्ड सुखकारी ※ राम-रुचिर-रचना-अधिकारी
राम नाम किय तोंहि अति पावन ※ रचहु चरित सोइ गाइ सुहावन
विद्याहीन न पिंगल-ज्ञाना ※ केहि विधि रचिहौं राम-पुराना
बाल्मीकि कर सविनय वानी ※ सुनि, प्रबोधि, बोले विधि ज्ञानी
सरस्वती तव गिरा निवासा ※ सहज काव्य तहँ होइ प्रकासा
जो वरनै तैं छन्द ललामा ※ सोइ जग जनमि, करैं श्री रामा
दै वर, गमन कियो विधि, देसा ※ वाल्मीकि हिय हरष विशेसा

नारद द्वारा वाल्मीकि को रामायण की रचना का आभास देना

बाल्मीकि एकदा विटप तर ※ जपत राम, जहँ सुखद सरोवर
एक क्रौंच पच्छिन की जोरी ※ बिलसति जहाँ निपट मदभोरी
व्याध-बान-हत खग - निस्संका ※ आकुल गिरा धरनि, मुनि-अंका
'अहह राम!' मुनि वचन उचारा ※ मुग्धकाल पच्छी किन मारा
बिन अपराध कौन खग - हिंसा ※ अस कुकर्म! मम रहत नृसंसा.
दो० नरक बास पावै अधम, शाप दियेउ भरि शोक।
शाप देत वानी प्रगट, छन्दबद्ध सुश्लोक ॥ ८ ॥

ब्रह्मा वले तव नाम रत्नाकर छिल ※ आजि ह'ते तव नाम बाल्मीकि हइल
बाल्मीकेते छिला जेइ सेइ ए विधान ※ सात काण्ड कर गिया रामेण पुराण
जेइ राम नाम हैते हइला पवित्र ※ सेइ ग्रन्थ रच गिया रामेर चरित्र
जोड़ हाते वले मुनि ब्रह्मा विद्यमान ※ केमन हइबे ग्रन्थ केमन पुराण
केमन कविताछन्द आमि नाहिजानि ※ शुनिया विधाता ताँरे कहिछेन वाणी
सरस्वती रहिबेन तोमार जिह्वाय ※ हइवे कविता राशि तोमार कथाय
श्लोकछन्दे पुराण करिबे तुमि जाहा ※ जन्मिया श्रीरामचन्द्र करिबेन ताहा
एत बलि ब्रह्मा गेल आपन भुवन ※ आदिकाण्ड गान कृत्तिवास विचक्षण

नारदकर्त्तृक वाल्मीकि के रामायण रचनार आभास प्रदान

एक दिन से वाल्मीकि सरोवर कूले ※ राम नाम जपे बसि सुखे वृक्ष मूले
क्रौञ्चक्रौञ्ची बसि तथा आछे वृक्षतले ※ एक व्याध सेइ पक्षी विन्धिलेक नले
विन्धिलेक सेइ पक्षी शृङ्गारेर काले ※ व्याकुल हइया पड़े वाल्मीकिर कोले
रामे स्मरि बले मुनि काणे दिया हात ※ जीवहत्या कैलि पापी आमार साक्षात्
शृङ्गारे मारिलि पाखी बड़इ कुकर्म्म ※ पापिष्ट नारकि तुइ नाहि तोर धर्म्म
बिना अपराधे हिंसा कर पक्षीजाति ※ बुझिलाम तोमार नरके हबे स्थिति
एतेक बलिया मुनि शाप दिल ताके ※ एई शोके एक श्लोक निःसरिल मुखे

जो न होत मुनि कहँ यहु शोका ※ तौ कस प्रगटत पुण्यश्लोका
'मा निषाद'[1] पद अमित अनन्दा ※ मुनि लिख लियेउ चतुष्पद छंदा
मर्म न विदित, चकित निज वचना ※ आश्रम - भरद्वाज पुनि गमना
दोउ गुरु-शिष्य मनन-आसीना[2] ※ सुनी उतै नारद-मधुबीना
वाल्मीकि मुनि काज सवाँरन ※ नारद कहँ पठयेउ चतुरानन
करि बन्दना, विनय रस पागे ※ रचना धरी देवमुनि[3] आगे
नारद ताकर मर्म बुझावा ※ वाल्मीकि मन अति सुख पावा
रामचरित वरनौ यहि छंदा ※ मानव - रूप सच्चिदानन्दा
रामभक्त, सब विधि सब लायक ※ वरनौ तात! चरित-रघुनायक
सुर्यवंश दसरथहि निकेतन ※ राम भरत लक्ष्मण रिपुसूदन
तीनि गर्भ, जन्मैं चारिउ जन ※ यहि विधि चतुर्मूत्ति नारायन
मिथला जनक जनमि वैदेही ※ चाप भंजि हरि ब्याहेउ तेही
पितु-आयसु धरि कृपानिकेता ※ बन गवने सिय-लखन समेता
तहँ सिय-हरन कियेउ दशग्रीवा ※ पुनि मित्रता सुकपि सुग्रीवा
बालि-हतन सुग्रीवहिं राजू ※ खोजेउ सिय, कपि सकल समाजू

शोक हैते श्लोकेर हइल उपादान ※ मा निषाद वलि तार हय उपाख्यान
चारि पद छन्द मुनि लिखिलेन हाते ※ लिखिया आपनि मूल ना पारे बुझिते
भरद्वाज सन्निधाने करिला गमन ※ गुरु शिष्य बसिया आछेन दुइजन
ब्रह्मा पाठाइया दिल तथा नारदेरे ※ वाल्मीकिरे उपदेश करिबार तरे
जेखाने बाल्मीकि मुनि भावेन बसिया ※ सेखाने नारद मुनि उत्तरिल गिया
नारद देखिया मुनि सम्भ्रमे उठिल ※ दण्डवत् करि बसिते आसन दिल
सेइ श्लोक शुनाइल मुनि नारदेरे ※ नारद करिया अर्थ बुझाइल ताँरे
एइ श्लोक छन्दे तुमि कर रामायण ※ उपदेश कहि जानि तुमि से भाजन
सूर्य्यबंशे दशरथ हबे नरपति ※ रावण बधिते जन्मिलेन लक्ष्मीपति
श्रीराम भरत आर शत्रुघ्न लक्ष्मण ※ तिन गर्भे जन्मिबेन एई चारि जन
सीता देवी जन्मिबेन जनकेर घरे ※ धनुर्भङ्ग पणे ताँर विवाह तत्परे
पितार आज्ञाय राम जाइबेन बन ※ संगेते जाबेन तार जानकी-लक्ष्मण
सीतारे हरिया लबे लङ्कार रावण ※ सुग्रीव सहित राम करिबे मिलन
बालि के मारिया तारे दिबे राज्य भार ※ सुग्रीव करिया दिबे सीतार उद्धार

१ चतुष्पद अनुष्टुप छंद का प्रथम चरण, जिससे राम का पुण्यचरित्र वाल्मीकीय रामायण में आरम्भ हुआ है। यह पद अकस्मात् उनके मुख से आहत पक्षी को देखकर निकल पड़ा। २ विचार करने में लीन ३ नारद।

भुजा बीस बधि लंक दसानन ※ लौटि अवधपुरि कीन्हेउ सासन

दो० बरनी रावन-दिग्विजय, कथा अगस्त्य ललाम।
पचंमास कर गर्भ सिय, पुनि सोइ त्यागेउ राम ॥ ६ ॥

गोपवास सियकर, तप-उपवन ※ लव-कुश जनम जानकीनन्दन
रामायण वेदादि पुराना ※ सिखवहु तिनहिं अस्त्र विधि नाना
ग्यारह सहस वर्ष छिति पालन ※ सुतहिं राज प्रभु स्वर्ग सिधारन
रचहु चरित जो मुनि गुन-सीला ※ करिहैं जनमि राम नर - लीला
देवलोक नारद पगु धारा ※ चन्द्रवंश पुनि इमि बिस्तारा

चन्द्रवंश का वृत्तान्त

सागर-मथन 'चन्द्र' आलोका ※ 'बुध' शशिसुवन विदित त्रयलोका
बुध 'पुरुरुवा' नाम कर ताता ※ तेहि सुत 'सतावर्त' विख्याता
सतावर्त के 'स्वर्ग' कहाये ※ 'श्वेत' नाम सुत-स्वर्ग सुहाये
श्वेत-पुत्र 'निमि' नाम कहावा ※ जिनि गाथा मुनि देवन गावा
मथेउ सबन निमि केर शरीरा ※ तेहि प्रगटेउ 'मिथि' सुत अतिवीरा
तिन यश मिथिलापुर विख्याता ※ 'सीरद्ध्वज' 'कुशध्वज' तिन ताता[1]

दशमुण्ड विश हात मारिया रावण ※ अयोध्या जाय राजा हइबेन नारायण
करिबेन अगस्त्य रावण दिग्विजय ※ पुनरपि सीता के बर्जिजबे महाशय
पञ्चमास गर्भवती सीतारे गोपने ※ लक्ष्मण राखिबे लये तव तपोवने
कुश लव नामे हबे सीतार नन्दन ※ उभये शिखावे तुमि वेद रामायण
एगार सहस्र वर्ष पालिबेन क्षिति ※ पुत्रे राज्य दिया स्वर्ग करिबेन गति
जन्म हैते कहिलाम स्वर्ग आरोहण ※ करिबेन जन्मि इहा प्रभु नारायण
एत बलि नारद गेलेन स्वर्गवास ※ आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

चन्द्रवंशेर उपाख्यान

सागर मन्थने 'चन्द्र' हइल उत्पन्न ※ हइल चन्द्रेर पुत्र बुध अति धन्य
पुरुरवा नामे हइल ताँहार नन्दन ※ ताँहार पुत्र शतावर्त्त जाने सर्ब्बजन
स्वर्ग नामे ताँहार हइल एक सुत ※ हइल ताँहार पुत्र श्वेत नाम युत
नामेते हइल निमि ताहार नन्दन ※ निमिके प्रशंसा करे जत देवगण
सकले मिलिया ताँर मथिल शरीर ※ जन्मिल ताहाते पुत्र मिथि नामे वीर
सेइ बसाइल एइ मिथिला नगर ※ वीरध्वज कुशध्वज ताँहार कोङर

---

१ बालक।

जग-कल्याण हेतु कछु साधन ❋ सोचन लगे तबै चतुरानन
जनक-गेह लक्ष्मी अवतारा ❋ 'सीता' रूप प्रगट संसारा
बरनेउ चन्द्रवंस कृतिवासा ❋ सूर्यवंस कर बहुरि प्रकासा

सूर्यवंश का वृत्तान्त और मान्धाता का जन्म

आदिपुरुष जो अलख 'निरञ्जन' ❋ 'शिव' 'विधि' 'विष्णु' प्रगट ताहीसन
सुवन तीनि, पुनि एक नन्दिनी ❋ सबन धरेउ मिलि नाम 'कन्दिनी'

दो० जरत्कारु अवतंस-मुनि, तिनसन रचेउ विवाह ।
नारद, भगिनी कन्दिनी, सहित समोद उछाह ॥ १० ॥

तिन कर सुता 'भानु' जेहि नामा ❋ ऋषि 'जमदग्नि' केरि सो बामा
जिन घर एक अंश अवतारा ❋ जनमे विष्णु[1] विदित संसारा
बीजपात तहँ किय चतुरानन ❋ प्रगटे मुनि 'मरीच' सोइ कारन
सुत-मरीच 'कश्यप' विख्याता ❋ कश्यप-सुवन 'सूर्य' सुखदाता
सूर्य-तनय 'मनु' नाम कहाये ❋ तिन अतिरूप 'सुषेन' सुहाये
अंश-सुषेन 'प्रसन्न' भुआला ❋ तेहि 'युवनाश्व' अवध महिपाला
सुता 'कालनिधि' 'कंदक' नृपवर ❋ वरेउ ताहि युवनाश्व तपागर

सृष्टिरक्षा हेतु धाता चिन्तिल अन्तरे ❋ करिल लक्ष्मीर जन्म जनकेर घरे
कृत्तिवास पण्डितेर कवित्व सुन्दर ❋ चन्द्रवंश रचना करिला कविवर

सूर्यवंशेर उपाख्यान ओ मान्धातार जन्म

आदि पुरुषेर नाम हैला निरञ्जन ❋ ब्रह्मा विष्णु महेश्वर पुत्र तिन जन
तिन पुत्र हइला तनया एक जानि ❋ सकले ताँहार नाम राखिल कन्दिनी
जरत्कारु मुनिपुत्रे से नारद आनि ❋ ताँहारे विवाह दिल कन्दिनी भगिनी
सबे गाय बाजाय नारद मुनि वेणु ❋ ताहाते जन्मिल कन्या नाम हैल भानु
ब्रह्मार काछेते ताँर पड़िलेक बीज ❋ ताहाते जन्मिल पुत्र नामेते मारीच
मारीचेर नन्दन कश्यप नाम धरे ❋ ताँर पुत्र सूर्य्य इहा विदित संसारे
सूर्य्येर हइल पुत्र मनु नाम ताँर ❋ सुषेण ताँहार पुत्र रूपे चमत्कार
प्रसन्न ताहाँर पुत्र अति से सुठाम ❋ हइल ताँहार पुत्र युवनाश्व नाम
युवनाश्व हइल राजा अयोध्या नगरे ❋ विवाह करिते गेल कन्दकेर घरे
कालनिमि नामे कन्या कन्दक राजार ❋ विवाह करिल युवनाश्व गुणाधार

---

1 परशुराम ।

नृप न किन्तु किय तिय-सहवासा * पितुहिं, लाज तजि, सुता प्रकासा
क्रुद्ध निरखि तनया-संतापा * जामातहिं दीन्हेउ अभिशापा
तप सों लौटि इतै गृह आई * विनय द्विजन युवनाश्व सुनाई
संतति-वर पावहुँ द्विजदाया * सुनि हँसि कहेउ विप्र-समुदाया
दरस तैं न पत्नी कर कीना * सुत-कामना कौन विधि लीना
तदपि यज्ञ-पुंसवन[1] गृहीता * पियै रानि सोइ वारि पुनीता
इमि सतेज सुत इक उत्पन्ना * सविधि याग नृप किय संपन्ना
जल पुंसवन यतन धरि लीना * नृप युवनाश्व शयन तब कीना
अर्ध निसा गत, लागि पिपासा * आकुल नृपति सहत नहिं त्रासा

दो० श्वसुर-शाप, भावी प्रबल, जो जल-यज्ञ महान।
धरेउ यतनयुत रानि हित, स्वयं कियेउ नृप पान ॥ ११ ॥

निसा विगत, रवि-वैभव जागा * बिप्रन नीर-पुंसवन मांगा
तब राजन निसि-कथा बुझाई * सुनि सखेद कह द्विज-समुदाई
यज्ञ-सलिल कर अमिट प्रभाऊ * धारौ गर्भ, न संसय राऊ
पूरन गर्भ विगत दस मासा * उदर फारि इक कुवँर प्रकासा
अति वेदना, तजे नृप प्राना * मुनि विरंचि आदिक जे नाना

विवाह करिल मात्र सम्भोग ना करे * लज्जा घुसाइया कन्या बलिल बापेरे
विशेष जानिया से कन्दक महीपति * अभिशाप करिलेक जामातार प्रति
तपस्या करिया जबे आइल भूपति * प्रणति करिया द्विजे माँगिल सन्तति
आशीर्व्वाद कर मम हउक नन्दन * शुनिया ईषत् हास कहे द्विजगण
पत्नीसह तोमार नाहिक दरशन * केमने वलिब तव हउक नन्दन
एक युक्ति कर राजा यदि लय मन * यज्ञ कर ताहे तव हइबे नन्दन
यज्ञजल कराइबे राणी के भक्षण * हइबे तोमार पुत्र अति विचक्षण
यज्ञ करि जल राजा राखे निज घरे * शयन करिल राजा खाटेर उपरे
जखन हइल रात्रि द्वितीय प्रहर * जल आन वलि राजा हइल कातर
तृष्णाय पीड़ित राजा आकुल हइल * पुंसवन जल छिल मुखेते टालिल
प्रभाते प्रकाश हैल सूर्य्येर किरण * जल आन बलि डाके यतेक ब्राह्मण
राजा वले द्विजगण करि निवेदन * रात्रिकाले जल आमि करेछि भक्षण
एकथा शुनिया बले यत महामति * रात्रिकाले जल खेले हवे गर्भवती
श्वशुरेर अभिशाप ताहारे लागिल * युवनाश्व महाराज गर्भ जे धरिल
दशमास गर्भ पूर्ण हइल राजार * बाहिर हइल पेट चिरिया कुमार
नृपति त्यजिल प्राण पेये बड़ व्यथा * ब्रह्मा आदि पुत्र नाम राखिल मान्धाता

---

१ पुत्रेष्टि यज्ञ से प्राप्त जल।

नामकरन कीन्हेउ 'मान्धाता' * सोइ सुत अवधभूप विख्याता
दानशील अस पुण्य गुणागर * सप्त द्वीप लौं नाम उजागर

सूर्यवंश-निर्वंश और अयोध्या में हारीत का अभिषेक

तनय तासु 'मुचकुन्द' सुहाये * हर्षित होत युद्ध के पाये
भूतल भेदि चक्र जिन स्यन्दन * सप्तसिंधु किय, सोइ 'पृथु' नन्दन
पुनि 'इक्ष्वाकु' समर सुविशारद * जिन सारथि वशिष्ठ अरु नारद
'सतावर्त' पुनि ताकर ताता * 'आर्यावर्त' तासु प्रख्याता
तिनके 'भरत' अमित बलधारन * 'भारत' नाम ख्याति जेहि कारन
'भूधर' भरत केर अधिकारी * 'खाण्ड' प्रकट तेहि सुत धनुधारी
'दण्ड' सुवन तेहि पापाचारी * जेहि व्यभिचार दुखित पुरनारी
पुरजन नृपहिं निवेदन करहीं * तव सुत हेत अयोध्या तजहीं
मन अति छोह खाण्ड नरनाहा * सुवन दण्ड कर रचेउ विवाहा

दो० नगर तजन, वन गमन कर, आयसु नृप पुनि कीन्ह ।
करि प्रवेश कानन सघन, दण्ड नगर तजि दीन्ह ॥ १२ ॥

नगर एक तहँ दण्ड बसावा * 'दण्डारण्य' नाम सोइ पावा
तहँ मुनिप्रवर 'शुक्र' कर वासा * नृप नित पठन जाय तिन पासा

अयोध्या नगरे राजा हइल मान्धाता * सप्तद्वीप अधिपति पुण्यशील दाता
कृत्तिवास पण्डितेर कवित्व सेठाम * आदिकाण्ड गान मान्धातार उपाख्यान

सूर्य्यवंश निर्व्वंश एवं अयोध्याय हारीतकेर अभिषेक

मान्धातार तनय हइल मुचुकुन्द * समर पाइले जार हृदये आनन्द
ताँहार तनय नामे पृथु नृपवर * जाँर रथचक्रे सप्त हइल सागर
ताँर पुत्र हइल इक्ष्वाकु नरपति * वशिष्ठ नारदे कैल रथेर सारथि
शतावर्त्त नामे ताँर हइल कुमार * आर्य्यावर्त्त नामे पुत्र हइल ताँहार
भरत ताहार पुत्र अति बलवान * जाहा हैते उपजिय भारत पुराण
जन्मिल ताहार पुत्र नामेते भूधर * खाण्ड नामे ताँर पुत्र अति धनुर्द्धर
खाण्डेर हइल पुत्र दण्ड नाम धरे * प्रजार कामिनी कन्या बलात्कार करे
कहिल जतेक प्रजा राजार गोचर * तव पुत्र हेतु छाड़ि अयोध्या नगर
एकथा शुनिया खाण्ड विषादित मन * पुत्रेर विवाह राजा दिल सेइ क्षण
परे पाठाइल राजा दण्डेरे कानने * प्रवेश करिल दण्ड सेइ महाबने
कानन मध्येते गिया दण्ड नृपवर * बसाइल दण्डारण्य नामेते नगर
ताहाते बसति करे शुक्र मुनिवर * पड़िवारे दण्ड नित्य जाय ताँर घर

एक दिवस तपहित मुनि गयेऊ * गुरुगृह दण्ड उपस्थित भयेऊ
तोरत सुमन सुतामुनि 'अब्जा' * लखि नृप दंड, काम मन उपजा
कामातुरहिं कहेउ मुनिबाला * उचित न, तैं पितु-शिष्य भुवाला
बन्धु! वरन सोंहि जो मन चहहू * प्रकट पिता सन आयसु लहहू
रुचै न मोंहि तव सीख-प्रसंगा * यहि छन केलि करयि मम संगा
करि बाटिका विवस मुनि-ललना * कुमति तृप्त निज कीन वासना
क्षत-विक्षत अरु नख आघाता * अब्जा कर कौमार्य निपाता
तप निवृत्त, मुनि आश्रम आये * आसन सलिल सुता सों पाये
दिवस क्लांत मुनि, सुता-सरूपा * निरखि क्षुब्ध, पूछेउ करि कोपा
कस शरीर शृंगार सहीता * सकुचि निवेदन किय भयभीता
'दंड' शिष्य तव सूने आवा * कियेउ विवस, मम धर्म नसावा
कुपित शुक्र नृप तुरत बुलावा * पोथिन सहित पढ़न मनु आवा
विद्यादान जो मोसन लीना * गुरु-दक्षिणा भली विधि दीना
दंड-भस्म सों[1] राजु पुनीता * होउ, शाप दिय क्रोध अतीता

दो० भयेउ अवधपुर नृपति बिन, भानुवंस निर्वंस ।
मुनि-शापित असमय तजेउ, जीवन, दंड नृशंस ।। १३ ।।

शुक्र गेल एकदिन तपस्या करिते * दण्ड राजा हेन काले गेलेन पड़िते
शुक्र कन्या अब्जा जाय पुष्प आहरणे * दण्ड तारे बले मोरे तोष आलिङ्गने
अब्जा बले शुन राजा कहि तव ठाँई * पितृ शिष्य तुमित सम्बन्धे हओ भाई
करिते विवाह यदि लय तव मन * पितृ विद्यमाने तबे कर निवेदन
राजा बले ए कथाय स्थिर नहे मन * विभा हबे पाछे आगे देह आलिङ्गन
गुरुकन्या बलि राजा ना करे विचार * पुष्पवाटिकाते तारे करे बलात्कार
प्रथम युवक राजा युवती मिलन * नखाघाते रक्तपात हैल सेइ क्षण
तपस्या करिया मुनि शुक्र एल घरे * आसन सलिल अब्जा दिल मुनिवरे
दिनान्ते अभुक्त मुनि पुड़े कलेवर * कन्यारे देखिया मुनि कुपित अन्तर
मुनि बले अब्जा कन्या देखि ए केमन * तोमार सर्व्वाङ्गे देखि शृङ्गार लक्षण
लज्जा वुचाइया कन्या कहे ताँर पाश * तव शिष्य दण्डराजा कैल जाति नाश
शुनिया ए हेन कथा क्रोधे मुनिवर * दण्डक बलिया तबे डाकिल सत्वर
पुथि काँखे करि दण्ड आसे पड़िवारे * देखिया कुपित मुनि कहिल ताँहारे
पड़ाइया तोमारे यदि दियाछ चेतन * ताहार दक्षिणा भाल दिले हे एखन
कोपदृष्टे चाहिल तखन महाऋषि * राज्य शुद्ध हइल से दण्ड भस्मराशि

---

१ कुमार्गी दण्ड के नष्ट होने से राज्य पवित्र हो, ऐसा शाप ।

मुनि बशिष्ठ-माथे सब सासन ❋ करैं प्रजा कर सुतसम पालन
जप तप नेम ब्राह्मण-धर्मा ❋ छूटे सकल राज्य के कर्मा[1]
अति चिन्तित सोचत मुनि ज्ञानी ❋ छन जेहि दंड-बुद्धि बौरानी
ऋतुवंती अब्जा तेहि काला ❋ निश्चय धरेउ गर्भ मुनिबाला
शुक्र बुलाय सुगिरा उच्चारी ❋ तव दौहित्र[2] राज्य-अधिकारी
शुक्र-मर्म सुनि उर सुख पावा ❋ अब्जा अवध सहर्षि पठावा
मुनितनया किय अवध निवासा ❋ प्रसवि कियेउ सुत मंजु प्रकासा
जननी जासु हरित[3]—जग जाना ❋ नाम तासु 'हारीत' बखाना
अन्नप्रासन किय षटमासा ❋ गुरु असीस मन अमित हुलासा
वर्ष एक गत, मुनी प्रवीना ❋ सिंहासन सुत किय आसीना
वयस[4] अल्प वैधव्य सरूपा ❋ निरखि मातु आकुल सुतभूपा
नृप हरीत पूँछत इमि बानी ❋ कहेउ जननि निज करुन कहानी
तव पितु सन नहिं सविधि बिवाहू ❋ बल प्रयोग बरबस नरनाहू
मुनि-सूने[5] मम चरित बिनासा ❋ मम-पितु-शाप तासु तन नासा
आख्यान-दंडक यहि रूपा ❋ कृत्तिवास किय बरनि अनूपा

अयोध्याते दण्डराजा त्यजिल जीवन ❋ निर्व्वंश हइल सूर्य्यबंशेर राजन
अयोध्याते हैल राजा वशिष्ठ ब्राह्मण ❋ पुत्रेर समान करि पाले प्रजागण
मुनि वले जप तप सब नष्ट हैल ❋ मिछा राज्य करि मम जन्म गोङाइल
ध्यान करि जानिल से वशिष्ठ ब्राह्मण ❋ अब्जार हइबेक एक उत्तम नन्दन
जेइकाले अब्जाकन्या ऋतुमती छिल ❋ दण्ड राजा वलात्कार तखन करिल
ध्याने जानि वशिष्ठ कहेन शुक्र प्रति ❋ शीघ्र पाठाइया देह राजा हवे नाति
शुनि शुक्र मुनि तबे हैल हृष्ट मन ❋ कन्या पाठाइबार सज्जा करिल तखन
अब्जा के पाठाय शुक्र अयोध्या नगर ❋ अब्जार हइल एक अपूर्व्व कोङर
हरणे हइल ताँर नाम जे हारीत ❋ मुनि तारे आशीष करिल जथोचित
दिने दिने बाड़िल जेमन शशधर ❋ छय मास मध्ये अन्न दिल मुनिवर
एक वर्ष हैल जेइ राजार कोङर ❋ वसाइल निया सिंहासनेर उपर
हारीत वलेन माता करि निवेदन ❋ अल्पकाले विधवा हइले कि कारण
एइ कथा शुनि राणी कहिल निश्चय ❋ तोमार बापेर सङ्गे विवाह ना हय
तव पिता आमारे करिल वलात्कार ❋ मम पिता कैल तव पितार संहार
कृत्तिवास पण्डितेर रामायण गान ❋ आदिकाण्डे गाइल दण्डक उपाख्यान

---

१ राजकाज के कारण २ नाती, कन्या का पुत्र ३ विवश करके पत्नी बनाई गई
४ उम्र ५ मुनि की अनुपस्थिति में ।

राजा हरिश्चन्द्र का उपाख्यान

भल हारीत प्रजा प्रतिपालत * तासु तनय 'हरिबीज' बखानत

दो० परनारी-हारी सदा, पुरजन विकल अनन्य।
ताके सुत 'हरिचन्द' नृप, ख्याति चराचर धन्य ॥ १४ ॥

नृप तन कियो जाह्नवी अर्पन * 'हरिश्चन्द्र' कहँ राज्य समर्पन
सत्य-रूप हरिचन्द भुआला * पितु सम प्रजा सतत प्रतिपाला
सोमदत्त नृप-तनया 'शैव्या' * कियो विवाह सुन्दरी भव्या
अनुपम तेहि रुहदास कुमारा * सब बिधि मोद भूप-परिवारा
सत्य-सुयश तिन पुन्य विलोका * वरनन इतै सुनौ सुरलोका
सुरपति इक दिन सभा विराजा * पचकन्यान नृत्य तहँ छाजा
नृत्य मुग्ध नर्तकी तरंगा * नाचति भयो ताल कहुँ भंगा
कोह,[1] चूक लखि, सुरपति व्यापा * दीन पंचकन्यन अभिशापा
यौवनमत्त बन्दिगृह जाहीं * विश्वामित्र तपोवन माहीं
रूपसि कहैं विकल भरि लोचन * नाथ होय किमि शाप विमोचन
पुन्यनरेस अवध हरिचन्दा * तिन कर छुये कटैं तव फन्दा

राजा हरिश्चन्द्रेर उपाख्यान

हारीतेर पुत्र हरिबीज नाम धरे * राजा हैल हरिबीज अयोध्या नगरे
परबधू हरि हरिबीज राज्य करे * ताँर पुत्र हरिश्चन्द्र ख्यात चराचरे
हरिश्चन्द्रे समर्पण करि सर्व्व देश * स्वरूपे गङ्गाते राजा करिल प्रवेश
पितृ मृत्यु परे हरिश्चन्द्र हैल राजा * पुत्रेर समान पाले अयोध्यार प्रजा
सोमदत्त राजकन्या ताँर नाम शैव्या * विवाह करिल हरिश्चन्द्र अति भव्या
पाइया सुन्दरी जाया अन्तरे उल्लास * हइल ताहार पुत्र नाम रुहिदास
सुखे राज्य करे हरिश्चन्द्र महीपति * इन्द्रेरे लइया किछु शुनह सम्प्रति
एक दिन सभाते बसिल सुरपति * पञ्चकन्या नृत्य करे प्रथम युवती
नाचिते नाचिते अति बाड़िल तरंग * एक वार करिलेक तारा ताल भंग
देखिया करिल कोप देव पुरन्दर * अभिशाप दिल पञ्चकन्यार उपर
यौवन गर्व्विता तोरा हयेछिस्. मने * बद्ध हये थाक विश्वामित्र तपोवने
चरणे धरिया तारा करेन क्रन्दन * कतकाले वल हबे शाप विमोचन
इन्द्र वले बन्दीरूपे थाक तपोवने * हबे मुक्त राजा हरिश्चन्द्र परशने

---

१ क्रोध।

चुनैं सुमन नित तोरैं डारी ✻ तरु उपवन शापित सुकुमारी
निरखि तपोवन डारि-निपाता ✻ कह शिष्यन सह कौशिक बाता
विटप-अंग जड़मति जेहि भंगा ✻ जड़वत बँधै लता के संगा
भोर होत पुनि सोइ अतिरूपा ✻ किंसुक[1] तोरन चलीं अनूपा
छुवतै चपकि लता सन लागीं ✻ मुनि के शाप न बचीं अभागी

दो० अपराधिनि तरुबद्ध लखि, करि भर्त्सन[2] अति रीस ।
किय पयान निज आसरम, विश्वामित्र मुनीस ॥ १५ ॥

मृगया हेत फिरत तहँ भूपा ✻ कानन हरिश्चन्द्र यशरूपा
भेंट कुरंग[3] न, सिथिल सरीरा ✻ डोलत मग-मारग प्रनधीरा
सोइ, तरु तरे लियो विश्रामा ✻ कीन गोहार निरखि सुरबामा[4]
क्रन्दन[5] सुनत छुयो तरु जैसे ✻ कन्या पंच मुक्त भइँ तैसे
लखेउ भूप सोइ अचरज नयना ✻ कीन स-सेन राज्य निज गमना
भोर गाधिसुत उपवन आये ✻ लखि न नवेलिन[6] मन अकुलाये
जेहि अपराध छुटे तिन बंधन ✻ होय नष्ट कह गाधियनन्दन
हरिश्चन्द्र-कर[7] तिन कर त्राना ✻ धरत ध्यान कौतुक मुनि जाना

नित्य से रूपसी पुष्प करे आहरण ✻ डाल भांगे फूल तोले के करे वारण
शिष्यसह विश्वामित्र गेल तपोवने ✻ डाल भाँग गाछ सब देखिल नयने
एमन करिया डाल भाँगे जेइ जन ✻ आइले लागिबे कालि लतार बन्धन
एत बलि शाप तारे दिल मुनिवरे ✻ आइल प्रभाते कन्या पुष्प तुलिवारे
जेइ काले कन्या आसि डाले भर दिल ✻ लतार बन्धन हाते अमनि लागिल
प्रभाते आसिया विश्वामित्र तपोधने ✻ कन्या देखि भाविते लागिल रुष्ट मने
अनेक प्रकारे तारे करिया भर्त्सन ✻ यथास्थाने मुनिवर करिल गमन
हेन काले तथा हरिश्चन्द्र यशोधन ✻ मृगया करिते करिलेन आगमन
मृग ना पाइया अति व्याकुलित मन ✻ क्लान्त हन नाना स्थाने करिया भ्रमण
मनस्ताप पाइया बसिला तरुतले ✻ कन्या डाके उच्चैःस्वरे हरिश्चन्द्र वले
क्रन्दन शुनिया राजा गेल तपोवने ✻ स्पर्शमात्र मुक्त हये गेल पञ्चजने
आश्चर्य्य देखिया हरिश्चन्द्र यशोधन ✻ सैन्यसह निज राज्ये करिलगमन
प्रातःकाले आइलेन गाधिर नन्दन ✻ कन्यागणे ना देखे दुःखित हैल मन
आमि जे बान्धिनु मुक्त कैल कोनजन ✻ सर्व्वनाश हैल तार संशय जीवन
ध्यान करि जानिलेन गाधिर नन्दन ✻ हरिश्चन्द्र छाड़ाइया दिल कन्यागण

१ पुष्प २ फटकार ३ हिरन ४ देव-पंचकन्याएँ ५ रोना ६ सुन्दरियों को ७ हाथ से ।

तुरत चले कौशिक तन ज्वाला * सत्यसंध जहँ अवध-भुआला
आदर-विनय सहित दै आसन * कह नृप, धाम कियो मुनि पावन
जीवन सफल नाथ मम आजू * धन्य! धन्य! कौशिक ऋषिराजू
सुनु नृप, अग्निपुञ्ज मुनि कहेऊ * मम बन्दिनी मुक्त किमि करेऊ
कह नृप, असत न कहौं तपोधन * करुन टेर[1] सुनि काटेउँ बंधन
दान-पुन्य नित द्विज-परितोषू * कस मोहिं नाथ अकारन रोषू
रे नृप ! अहंकार तोहिं छावा * दान-पुन्य-यश मोहिं सुनावा
बहु अभिलाष, करौं कछु याचन * कस समरथ, देखौं तैं राजन

दो० सफल धर्म, गृह आजु मम, पुलकित कह अवनीस ।
स्वयं दान मोसन गहैं, विश्वामित्र मुनीस ।। १६ ।।

तन मन धन जो कछु अवसेसा * अर्पन सकल नाथ-आदेसा
मुनि तव मान बचन प्रतिपाला * राखौं अटल कहेउ महिपाला
व्याध-फन्द मृग फसहिं अबूझा[2] * मुनि-प्रपंच तिमि नृपहिं न सूझा
प्रन-पालन हरिचन्द सुभाऊ * साखी[3] देव, कहत मुनिराऊ
जो कछु देन, नृपति! मन आनौ * तौ दै अवनि सकल, सुख मानौ

क्रोध करि मुनि तवे चलिल सत्वर * उत्तरिल गिया मुनि राजार गोचर
मुनिरे देखिया राजा कैल अभ्यर्थन * एस एस वलि दिल वसिते आसन
सफल भवन मोर सफल जीवन * मोर गृहे आइलेन गाधिर नन्दन
ज्वलन्त अनल जेन वले तपोधन * बाँधिनु ये कन्यागणे छाड़ कि कारन
राजा वले कन्या मोरे कैल आमन्त्रण * मिथ्या ना वलिब प्रभु करेछि मोचन
दान पुण्य करि प्रभु तुषि ये ब्राह्मण * आमा प्रति क्रोध केन कर अकारण
ए कथा शुनिया कहे गाधिर कुमार * दान पुण्य कर वले एत अहङ्कार
करिवे कि दान तुमि देखि तव मन * आमारे किञ्चित दान देह त राजन
राजा वले गृहधर्म्म सफल जीवन * मोर दान लवे प्रभु गाधिर नन्दन
याहा चाहा ताहा दिव ना करिव आन * नाना दाने गोसाँई राखिव तव मान
मुनि वले दान देह यद्यपि राजन * करह अग्रेते तुमि सत्य निवन्धन
राजा वले सत्य सत्य ना करिव आन * ए सत्य लङ्घिले नाहि पाव परित्राण
भूपति करिल सत्य ना बुझिया छन्द * मृग वन्दी हैल येन ना देखिया फान्द
मुनि वले देखह सकल देवगण * राजा करिबेन निज सत्येर पालन
मुनि वले दिबे यदि करेछ अन्तरे * राजन पृथिवी दान करह आमारे

---

१ पुकार २ धोखे में ३ गवाह ।

हरषि भूप लै किञ्चित माटी ※ कुल संकल्प दान-परिपाटी
श्रद्धायुत भूदान अनूपा ※ स्वस्ति! स्वस्ति! कहि लिय तपरूपा
कह मुनि सुनु कुल-भानु-विभूषन ※ बिन दच्छिना दान नहिं पूरन
कोष-अधिप कह कृपानिकेता ※ कोटि सप्त सुबरन मुनि हेता
स्वर कठोर कह कौशिक बानी ※ दानवीर कस मति बौरानी
धरनि दिये अब तैं न नरेसा ※ धन सेवक न राजु अवसेसा
सुनत मर्म, नृप मन सुधि आई ※ निज करनी निज सर्ब नसाई
प्रन किमि सधै महीप विचारा ※ उत मुनि किय पुनि वाक्प्रहारा
दान-धर्म कर दर्प घनेरा ※ तजि महि अन्त लखौ कहुँ डेरा
सुहृदन कह, मुनि विनय विचारहु ※ कछुक धरनि हरिचन्दहिं छाड़हु
जहँ निज तन नृप करैं निवासू ※ धरा छाँड़ि कित मानव वासू

दो० सूची अग्र न महि तजौं, कह सकोपि मुनि बैन ।
महि-तटस्थ वाराणसी, सो अकेल नृप-अैन[1] ॥ १७ ॥

काशीवास सहित परिवारा ※ तजैं राजु तिय सहित कुमारा
शैव्या, रोहिदास अरु राजन ※ तजेउ अवध, धरि मुनि-अनुसासन

दानेर करिल राजा अति परिपाटी ※ आनिलेन हाते करि तिन तोला माटी
भू-दान करिल हरिश्चन्द्र श्रद्धायुत ※ स्वस्ति स्वस्ति बलिया लइल गाधिसुत
मुनि बले दान दिला पाइनु एखन ※ दानेर दक्षिणा राजा देह त कांचन
राजा बले दक्षिणा ना करिह घृणा ※ दानेर दक्षिणा दिब सात कोटि सोना
मुनि बले विलम्बे नाहिक प्रयोजन ※ सात कोटि काञ्चन करह समर्पण
भूपति करेन आज्ञा भाण्डारीर प्रति ※ आमारे आनिया देह स्वर्ण शीघ्रगति
दृढ़ करि बले मुनि गाधिर कुमार ※ भाण्डारी उपरे तव किबा अधिकार
सकल पृथिवी दान करिले आमारे ※ भाण्डारी काहार धन दिबेक तोमारे
शुनिया भावित राजा छाड़िल निश्वास ※ करिलाम आपना आपनि सर्व्वनाश
मुनि बले भूपति मजिले अहङ्कारे ※ पृथिवी छाड़िया तुमि जाह स्थानान्तरे
पात्र मित्र सबे बले करि जोड़ पाणि ※ हरिश्चन्द्र भूपे दिते पल्ली एकखानि
सूच्यग्र खनने तत उठे वसुमती ※ उहाके ना देय विश्वामित्र महामति
पात्र मित्र बले शुन गाधिर तनय ※ कोथाय बसिबे हरिश्चन्द्र निराश्रय
एत शुनि क्रोध करि बले महाऋषि ※ पृथिवीर बहिर्भाग आछे वाराणसी
शैव्या नारी आर निज पुत्र रुहिदास ※ तिन जन जाउक करिते काशीवास
विश्वामित्र कथा शुनि सूर्य्यवंशधन ※ दारा पुत्र सह काशी करिल गमन

---

[1] अयन, निवास ।

तब लौं मुनि पुनि गर्जन कीन्हा ※ सप्तकोटि सुबरन नहिं दीन्हा
विवस भूप सविनय कह बानी ※ सात दिवस ठहरौ मुनिज्ञानी
यहि बिच सुबरन-भार उतारन ※ कहि काशी-पथ किय पग धारन
बीते दिवस, सोन कहँ मोरा ? ※ कौशिक कह पुनि वचन कठोरा
नृप ससोच किमि उबरहिं भारा ※ सहभामिनि सह करत विचारा
हाट[1] बेंचि मोहिं आनहु काञ्चन ※ यहि विधि करौ नाथ! प्रन-पालन
नृप पुकारि कह, सुनु पुरबासी ※ लेहु जु लेन चहौ कोउ दासी
भद्र विप्र इक फिरत बजारा ※ परी कान हरिचन्द-पुकारा
हे नर-रतन! उचित तुम कहहू ※ कतक[2] मोल दासी कर चहहू
कह नृप, नहिं प्रवञ्च[3] द्विजराई ※ चारि कोटि सेविका बिकाई
हर्षि विप्र सोइ दीन्हेउ सुबरन ※ लै शैव्या, पुनि चलेउ निकेतन
अञ्चल धरि रुहिदास कुमारा ※ मातहिं तजत न, रुदन अपारा
छोड़-छोड़ कहि लकुटि[4] दिखावै ※ द्विज हियहीन सुवन बिलगावै[5]
बटु[6]! दामन बिन सुत लै लीजै ※ रानी कहत, अनुग्रह कीजै
दो० दुइ जीवन भोजन-वसन, नहिं बाउरि[7] बस केरि ।
विप्र-बचन ढारस कछुक, बहुरि रानि किय टेरि ॥ १८ ॥

मुनि वले शुन राजा आमार वचन ※ दिया जाह सात कोटि आमारे काञ्चन
राजा बले गोसाँई ना करिवे घृणा ※ सात दिन परे दिव सात कोटि सोना
सात दिन पथे राजा हाँटिया चलिल ※ पथ आगुलिया मुनि कहिते लागिल
मम कथा शुन हरिश्चन्द्र यशोधन ※ आगे देह सात कोटि आमारे काञ्चन
शैव्यार सहित राजा करिल मन्त्रणा ※ कि दियाशोधिब आमि ब्राह्मणेर सोना
शैव्या बले शुन प्रभु निवेदि तोमारे ※ करह विक्रय मोरे हाटेर माझारे
स्त्री लइया चले राजा हाटेर भितरे ※ दासी के कि निबे बलि डाके उच्चैःस्वरे
एक विप्र छिल से पण्डित साधुजन ※ छिर तार एकटि दासीर प्रयोजन
ब्राह्मण वलेन ओहे पुरुषरतन ※ लइबे दासीर मूल्य कतेक काञ्चन
राजावले नाहिजानि मिथ्या प्रवञ्चना ※ ए दासीर मूल्य चाइ चारि कोटि सोना
शुनिया ए कथा विप्र स्वीकार करिल ※ चारिकोटि स्वर्णदिया शैव्यारे किनिल
दासी निया द्विज जाय आपनार वास ※ मायेर कापड़ धरि कान्दे रुहिदास
अञ्चले धरिया पुत्र जाय गड़ागड़ि ※ 'छाड़ छाड़' बलि विप्र देखाइल बाड़ि
शैव्या बले गोसाँई गो करि निवेदन ※ विना पणे किनह एवे आमार नन्दन
शुनिया कहिल विप्र हइला बातुल ※ दुजनार तरे कोथा पाइब तण्डुल

---

१ बाज़ार में २ कितना ३ ठगी, मोलतोल ४ लाठी ५ अलग करे
६ हे ब्रह्मन् ७ पगली ।

प्रभु निज भाग इतर[1] नहिं चाहौं ※ सुवन सहित, सोइ बिच निर्वाहौं
प्रति दिन सेर अन्न अधिकाई ※ सुलभ न, कहि गमने द्विजराई
चारि कोटि सुबरन जो लहेऊ ※ मुनि ढिग नृपति उपस्थित भयेऊ
कस मम करत अवज्ञा राजन ※ चारि कोटि दिखरावत काञ्चन
रत्ती सात होय नहिं अल्पा[2] ※ सप्त कोटि पूरन संकल्पा
आकुल हृदय माथ धरि हाथा ※ हाटहि चले अयोध्यानाथा
कासी पुरबासी सुनि लीजै ※ सेवक चहौ तो मोंहि लै लीजै
कालू नाम श्वपच[3] तहँ आवा ※ दास लेन कै रुचि दिखरावा
राखौ सुअर-यूथ मन भावै ※ तौ मोंहि जन! निज मोल बतावै
जो आदेस, करौं चितलाई ※ बूझौ मोल तो नहिं चतुराई
तीन कोटि सुबरन मोंहि दीजै ※ कह नृप, मोंहि चाकर करि लीजै
नहिं बिलम्ब सोइ दाम चुकाये ※ यहि विधि सात कोटि मुनि पाये
गाधितनय उत अवध विरामा ※ डोम इतै पूछत नृप - नामा
जननी-जनक नाम जो दीन्हा ※ 'हरिश्चन्द्र' कहि जग मोंहि चीन्हा
हरिचन्दा, हरि, हरे पुकारैं ※ जेहि जस प्रीति सो नाम उचारैं

शैव्या बले मुनि अन्न दिवे जे आमाके ※ ताहाइ भक्षण कराइब ए बालके
ब्राह्मण वलेन क्रोधे हइया बातुल ※ दिन प्रति सेर मात्र पाइबे तण्डुल
दासी किनि विप्र जाय आपनार स्थाने ※ अर्थ लये गेल राजा मुनि विद्यमाने
अत्यल्प देखिया स्वर्ण कहे तपोधन ※ अल्पज्ञान कर हरिश्चन्द्र हे राजन
सातकोटि लब नहे कम सात रति ※ विश्वामित्रे अवज्ञा ना कर महामति
ए कथा शुनिया महा प्रमाद भाविल ※ शिरे हात दिया राजा हाटे चलि गेल
हाट खानि बैसे वाराणसीर गोचरे ※ तृण वान्धि सान्धाइल हाटेर भितरे
नफर कि निबे वलि डाके उच्चै:स्वरे ※ कालू नामे हाडि एक छिल से नगरे
से बले आमार कर्म्म आछे त नफरे ※ चाहि एक नफर से राखिबे शूकरे
ए कथा शुनिया राजा बलिछे बचन ※ आमि या वलिब ताहा करिबे पालन
कालू बले शुन ओहे पुरुषरतन ※ आपनार मूल्य लबे कतेक काञ्चन
राजा बले नाहि जानि मिथ्या व्यवहार ※ स्वर्ण लब तिन कोटि मूल्य आपनार
एकथा शुनिया कालू बिलम्ब ना कैल ※ तिन कोटि स्वर्ण दिया नफर किनिल
सात कोटि सोना निया दिया मुनिवरे ※ धन पेये गेल मुनि अयोध्या नगरे
कालू बले शुन ओहे कर वरनन ※ कि नाम तोमार कह पुरुषरतन
करिया प्रबन्ध राजा कहिते लागिल ※ हरिश्चन्द्र नाम बाप मायेते राखिल
कत बा डाकिबे हरिश्चन्द्र नाम धरे ※ बलिओ कखन हरि कखन वा हरे

१ अलावा २ कम ३ चाण्डाल ।

'हरिश्चन्द्र' सों करि 'हरिदास' * कालू गमन चहेउ निज बासा

दो० प्रभु! उच्छिष्ट[1] भोजन कबौं, देहु न, यह अरदास[2]।
विनय सुनल बोलेउ श्वपच्च, धरौ ध्यान हरिदास ॥ १९ ॥

शूकरगन मम पालहु नीके * आवैं मृतक, घाट सुरसरि[3] के
मरघट-कर[4] तिन सों नित लेहू * बिन, शव-दाह करन जनि देहू
कालू सौंपि काज गृह जाई * सुअर-वृन्द[5] नृप कहेउ बुलाई
पुन्य-दान नित किय जिन हाँथन * तव मल-मूत्र न होयँ अपावन
सो तुम अन्त विसर्जन करहू * जो मम हित बराह[6] मन धरहू
नृप-विनती पशु नित अनुसरहीं * कबहुँ न घाट अपावन[7] करहीं
तजि राजसी भाव अरु वेषा * राजचिह्न तजि बाँधेउ केशा
हाँथ बाँस अरु डोम सरूपा * मरघट घाट फिरैं नित भूपा
शैव्या बसत उतै द्विज-भवना * पावत सेर एक नित अन्ना
तीनि भाग रोहित सुत पालै * एक पाव निज-तन प्रतिपालै
विप्र विलोकि दसा अति दीना * अनुष्ठान देवार्चन लीना
सुनु सेविका ! सुवन तव जाई * उपवन सुमन तोरि नित लाई

लइया नफर कालू जाय निज वास * हरिश्चन्द्र घुचाइल हैल हरिदास
हरिदास बले प्रभु करि निवेदन * खाइते उच्छिष्ट मोरे ना दिबे कखन
कालू बले हरिदास शुनह वचन * वाराणसी पुरे राख शूकरेर गण
वाराणसी तीरे जत मड़ा दाह हय * पञ्चाश काहन लह प्रत्येक मड़ाय
सँपिया कर्त्तव्य कर्म्म हाड़ि गेल घरे * डाकिया आनिल राजा सकल शूकरे
वलिते लागिल हरिश्चन्द्र महिपाल * मोर एक कथा शुन शूकरेर पाल[6]
दानपुण्य करिलाम ए दक्षिण करे * तोमादेर मलमूत्र मुछिब कि क'रे
एक सत्य पालिवे हे सकल शूकरे * मलमूत्र परित्याग करिबे अन्तरे
पालिल राजार वाक्य सकल शूकरे * मलमूत्र परित्याग करिल अन्तरे
उभ झुँटि चूल बान्धे राजा उच्चकरे * वाराणसी तीरे नित्य दौड़ादौड़ि करे
राजचिह्न राजार सकल दूरे गेल * पाटनिर वेश राजा तखन धरिल
शैव्या रहिलेन तथा ब्राह्मण आगारे * एक सेर तण्डुल ब्राह्मण देय तारे
तिन पोया रुहिदास खान तिन बारे * एक पोया खान शैव्या द्विजेर आगारे
विप्र वले शुन शैव्या आमार वचन * खाइल तोमार भाग तोमार नन्दन
कालि हैते आमि ये करिव देवार्च्चन * तव पुत्रे फूल हेतु पाठाइब वन

---

१ जूठा, अपवित्र २ विनती ३ गंगा ४ श्मशान का टैक्स ५ शूकर-समूह
६ सुअर ७ अपवित्र।

तन्दुल[1] अधिक देउँ सोइ हेता ❋ कहत रानि, द्विज कृपानिकेता!
जब जेहि विधि सुत आयसु देहू ❋ पूरन करै न संसय येहू
कनकपात्र लै भोर कुमारा ❋ कौशिक -तप-उपवन पग धारा
तोरत फूल डार कहुँ टूटहिं ❋ एक दिवस सोइ मुनि अवलोकहिं

दो० क्षत-विक्षत उपवन निरखि, को कीन्हेसि अपराध ?
धरत ध्यान जानेउ सकल, कोपपुञ्ज सुत-गाधि[2] ॥ २० ॥

पितु गृह डोम, जननि द्विज-दासी ❋ रोहित सुत बाटिका बिनासी
पुनि आवै तोरै तरु-अंगा ❋ दियेउ शाप सोइ डसै भुजंगा
कौशिक कोप शाप विकराला ❋शैव्या लखि निसि[3] सपन बिहाला[4]
मञ्जु प्रभात अरुन छबि छाजा ❋ किंशुक[5] लेन चलेउ युवराजा
निसि कर सपन भयानक बरनन ❋ हटकेउ[6] मातु, जाहु जनि उपवन
कह कुमार, भय करौ न जननी ❋ साँचु न होय सपन कै करनी
जो गृह बैठि सुमन नहिं लावौं ❋ दुर्मुख द्विज सन अन्न न पावौं
तव-तंदुल, धिक! मम प्रतिपालन ❋ धनि ते, करैं जननि-पितु पालन
सुनी न मातु-बैन नृपनन्दन ❋ चलेउ सुमन हित जहँ मुनि उपबन
बन विहरत सुत, भीति न अंगा ❋ तोरत पुहुप सुरंग - बिरंगा

याउक तुलिते पुष्प बालक तोमार ❋ वाड़ाइया दिव जे तण्डुल किछु आर
शैव्या वले जेइ आज्ञा करिवे जखन ❋ सेइ आज्ञा पालिबेक आमार नन्दन
स्वर्ण साजि लइल ये स्वर्णेर आकाँड़ि ❋ विश्वामित्र-तपोबने जाय रड़ारड़ि
डाल भांगे फूल तोले आपनार मने ❋ एक दिन एल मुनि से वन भ्रमणे
भांगा डार देखिया कुपिल मुनि मने ❋ एमन कुकर्म्म आसि करे कोन जने
ध्यान करि विश्वामित्र जानिल कारण ❋ पुष्पार्थे आइसे हरिश्चन्द्रेर नन्दन
विप्र घरे जननी हाड़िर घरे बाप ❋ कल्य यदि आसे हेथ ताके खाबे साँप
इहा वलि शाप दिल क्रोधे तपोधन ❋ रात्रिकाले हेथा शैव्या देखिछे स्वपन
प्रातःकाले प्रकाशित सूर्य्येर किरण ❋ तुलिते कुसुम जाय राजार नन्दन
तपोवने राजार कुमार जवे चले ❋ हेन काले शैव्या तारे स्नेह करि बले
ना जाइओ तुलिते कुसुम तपोवन ❋ नितान्त करिबे तोरे भुजंगे दंशन
रुहिदास वले नाहि जाइले तथाय ❋ दुर्म्मुख ब्राह्मण अन्न नादिबे तोमाय
कृति पुत्र करे माता-पितार पालन ❋ खाइया तोमार अन्न थाकि सर्व्वक्षण
शुनिल ना रुहिदास मायेर वचन ❋ कुसुम तुलिते जाय मुनि-तपोवन
रुहिदास प्रवेशिल कुसुम-कानने ❋ नाना जाति पुष्प तुले जाहा लय मने

१ चावल २ विश्वामित्र ३ रात्रि में ४ व्याकुल ५ पुष्प ६ मना किया ।

गेंदा गुलदाउदी सुहावन * गुलमेंहँदी गुलाब मनभावन
बेला बकुल कुसुम चहुँ फूला * हरसिंगार कुअँर मन झूला
शेफालिका सुकेसर प्यारी * चम्पा जवा विरञ्जित क्यारी
पारिजात किंशुक कहुँ तोरैं * कहुँ वल्लरी[1] सुमन झझकोरैं
कहुँ मल्लिका जुही मदभीनी * कलिका कछुक कुअँर चुनि लीनी
डाली विविध प्रसून सजावा * पुनि श्रीफल ढिग रोहित आवा

दो० छुअत डार मुनि-शाप बस, डसेउ सर्प विकराल।
अबुध[2] धरनि स्रव[3] रक्त मुख, तन विष बाढ़ी ज्वाल ॥ २१ ॥

दिन गत अर्ध, न सुत तब आवा * देवार्चन किमि सुमन अभावा !
सपन-ससंक रानि हित लर्जत * द्विज समुझाय चली सुत खोजत
चहुँ दिसि दौठि पुकारत उपवन * तरुतर लखि अचेत निज नन्दन
खाय पछार अवनि गिरि माता * जिमि समूल कदली[4] भुइँ पाता
निरखत छबि मुख बिलखत धरनी * सुत किल गमन कियो तजि जननी
धर्म करत दारुन दुख डारा * हे प्रभु ! अनल करौं तन छारा
लिये अंक सुत भरत उसासा[5] * विलपत रानि गई द्विज पासा
केहि विधि प्रान बचैं मम नन्दन * दासी तोर अकारथ क्रन्दन

जाति यूथी मल्लिका से तुलिल रंगन * शेफालिका पारिजात शिउलि काञ्चन
अशोक किंशुक जवा आतसी केशर * आकन्द गोलाब तोले वकुल टगर
अवशेषे श्रीफले आँकाड़ि लगाइल * आछिल डालेते शाप बुकेते दंशिल
सर्व्वांगेते शिशुर बेड़िल विषज्वाला * भूमिते पड़िल शिशु मुखे भांगे लाला
हइल आकाशे बेला द्वितय प्रहर * तबु से राजार पुत्र ना आइल घर
विलम्ब देखिया तारे कहिछे ब्राह्मण * एखन ना एले कबे हवे देवार्च्चन
शैव्या वले प्रभु एइ करि निवेदन * आपनि देखिया आसि कोथा से नन्दन
तनये देखिते शैव्या करिल गमन * विश्वामित्र तपोवने दिलेक दरशन
बालकेरे चाहिया बेड़ान तपोवने * देखे वृक्ष आड़े पड़े आपन नन्दने
पुत्रके देखिया शैव्या पड़िल भूतले * येमन कलार गाछ भांगे डाले मूले
पुत्र कोले करि शैव्या करिछे क्रन्दन * कोथा गेल मम पुत्र रुहित नन्दन
धर्म्म करिवारे दुःख दिल नारायण * अगिनते पुड़िया आमि त्यजिब जीवन
पुत्र कोले करि शैव्या छाड़िल निश्वास * कांदिते कांदिते गेल ब्राह्मणेर पाश
निवेदन करि शुन सकल ब्राह्मणे * कह ए अधीन पुत्र बाँचिबे केमने

१ बेल २ बेहोश ३ बहने लगा ४ केला का वृक्ष ५ लम्बी साँसें लेता।

सर्पदंश घातक तेहि प्राना ❋ मृतक पुरुष किमि जीवन-दाना
धैर्य, सती ! करु धीरज धारन ❋ भावी अमिट न सकौं उबारन
काशीघाट दाह मृत देहू ❋ बहु प्रबोधि, द्विज रहेउ स्वगेहू
मरघट चली रानि शव अंका ❋ डोलत जहँ हरिदास निशंका
लिये बाँस अरु श्वपच सरूपा ❋ मृतक देखि पहुँचे ढिग भूपा
जौं लौं कर नहिं घाट चुकावौ ❋ नारी जनि तुम चिता लगावौ
विधि मोहिं विवस अधम गति दीना ❋ मरघट नियम विनय तोहिं कीना
मम अधिकार प्रथम दै दीजै ❋ नतरु[1] दाह कहुँ अन्तै कीजै

दो० घाट-अधिप अनुमति मिलै, अर्ध वस्त्र तन फारि ।
चुकवौं कर तव, रानि कह, कातर गिरा उचारि ॥ २२ ॥

बिप्रगेह दासी कर कामा ❋ कटैं दिवस, सब विधि विधि बमा
तापर अहह दुसह दुख आई ❋ उतरेउ मम सिर गाय बजाई
पुनि-पुनि 'हरिश्चन्द्र' कर नामा ❋ करत उच्च लै रोदन भामा
अहौ कितै तुम अवधनरेसू ❋ तव सुत गमन आजु यम-देसू
धर्मयज्ञ कै आहुति पूरन ❋ प्रानहीन लखि सुअन बिसूरन[2]
सुनत नाम निज, रानि विलापा ❋ पूर्ववृत्त[3] हरिचन्दहिं जागा

शुनिया प्रवोध वाक्य कहे द्विजगण ❋ सर्पेर दंशने प्राण छाड़िल नन्दन
मरिले मानुष कभु वाँचे कि कखन ❋ सम्बर सम्बर सती सम्बर क्रन्दन
वाराणसी पुरे तुमि मड़ा लये जाह ❋ काष्ठ चिता करि एइ मृत देह दाह
मड़ा लैया गेल शैव्या कातर अन्तरे ❋ एकाकी रहिल द्विज आपनार घरे
मड़ा लैया गेल शैव्या वाराणसी वास ❋ हातेते मुद्गर करि आसे हरिदास
हरिदास वले आमि मड़ा दाह करि ❋ मड़ा दाह प्रति लइ पञ्चाश काहन कड़ि
सत्यकथा एइ तोमाय कहिनु निश्चय ❋ तोमारे बलिनु याहा मिथ्या नाही हय
अन्येर घाटेते लैया पोड़ाओ कुमार ❋ विधाता करिल मोरे हाड़िर आचार
शैव्या बले गोसाई बलिते भय बासि ❋ विधाता करिल मोरे ब्राह्मणेर दासी
आज्ञा कर यदि मोरे घाटेर पाटनी ❋ दिब आमि चिरिया ये वस्त्र अर्द्धखानि
एतेक शुनिया तबे शैव्यार वचन ❋ हातेते मुद्गर लैया आइसे राजन
पड़िलेन पुत्र लैये शैव्या स्थानान्तरे ❋ हरिश्चन्द्र बलिया से कान्दे उच्चैःस्वरे
प्रभु हरिश्चन्द्र राजा गेल कोथाकारे ❋ आसिया देखह मृत आपन कुमारे
धर्म्म तरे देख नाथ की दशा हयेछे ❋ पराण पुतलि पुत्र छाड़िया गियाछे
हरिश्चन्द्र बलि शैव्या कान्दे विद्यमान ❋ तखन राजार हैल सेइ पूर्व्वज्ञान

---

१ नहीं तो । २ बिसूरना दुःखों को याद करके कलपना ३ पहले का हाल ।

धरि धीरज शैव्या-ढिग आई * परिचय दै, बहु बिधि समुझाई
सुनि सकोप बोलत अकुलानी * कल लौं अवधभूप-महरानी
मरघट-डोम करैं परिहासा * हाय बिरञ्चि पलट कस पासा
पुनि नृप कहत सुनौ प्रिय रानी * व्यथा-बिवस सब कथा भुलानी
सोमदत्त-तनया जो शैव्या * अवध-भूप मैं बरेउँ सुभव्या
रोहित जनम लियेउ युवराजू * कौशिक हरन कियेउ पुनि राजू
नृप-ललाट इक चिन्ह विशेखी * संशय मिटेउ रानि सोइ देखी
उपजा मोह, नृपति तजि धीरा * रोहित-तन लखि शिथिल शरीरा
हे सुत ! हे कुमार ! हे ताता * कितै गमन किय तजि पितु-माता
सत मारग, दिय दुख नारायन * अनल भेंटि तन, मिटवौं कारन

दो० सुवन सहित चन्दन-चिता, सजि बैठे पितु-मात ।
अनल देत प्रगटे तबै, धर्मराज साक्षात ॥ २३ ॥

अगिनि नृपति जनि करौ प्रवेसा * पद्मपाणि रोहित-तन परसा
खोले दृग, विष दूर कुमारा * पुनि रविकुल-बाटिका बहारा
कालू आय कहत सुनु राजन * मुक्त बंध तव, सोन न याचन[1]
सोइ छन विप्र विनय किय आई * दीन सोन, सो मैं भरपाई

हरिश्चन्द्र वले राणी ना कर क्रन्दन * आमि सेइ हरिश्चन्द्र देखह लक्षण
शैव्या बले हरि हरि कपाले ए छिल * आमार रूपेर मोहे पाटनी पड़िल
अयोध्याय छिलाम जे राजार रमणी * एबे परिहास करे घाटेर पाटनी
हरिदास वले प्रिये वलि तव ठाँइ * पासरिले सकलि किछुइ मने नाइ
सोमदत्त राजकन्या शैव्या तव नाम * तोमारे विवाह प्रिये आमि करिलाम
रुहिदास नामे तव हइल नन्दन * मम राज्य निल विश्वामित्र तपोधन
ए कथा शुनिया राणी देखिते लागिल * कपाले निशान छिल तखनि चिनिल
पुत्र कोले करि राजा करिछे क्रन्दन * कोथा एड़ि गेले वापू रुहित नन्दन
ए धर्म्म करिते दुःख दिल नारायण * अग्निते पुड़िया आजि त्यजिब जीवन
तखनि चन्दन काष्ठे साजाइल चिता * मध्येते राखिल पुत्र पाशे माता-पिता
ये काले ज्वलन्त अग्नि दिबेन चिताते * हेन काले धर्म्मराज कहेन साक्षाते
अग्निते पुड़िया केन त्यजिबा जीवन * आमि वांचाइया दिब तोहार नन्दन
पद्महरत परशेन बालकेर गाय * विषज्वाला दूरे गेल चक्षु मेलि चाय
हेन काले कालू आसि राजारे सम्भाषे * तोमाय आमारस्वर्ण दाय नाहि आसे
ब्राह्मण आसिया बले राजार सदने * तोमाते आमाते दाय घुचिल काञ्चने

१ मूल्य में दिया सुवरन भर पाया ।

मम कल्यान न द्विज-धन लीने ※ शैव्या कर-कंकण तेंहि दीने
विश्वामित्र मुनीस विचारा ※ बिनसेउ जप-तप-जोग-अचारा
वृथा प्रपंच राज कर लीना ※ भेंटि नृपति, मुनि आयसु दीना
साधु-साधु नृप गमनौ आजू ※ करौ सनाथ अवधपुर राजू
सपरिवार महिपति पग धारा ※ गाधितनय मन मोद अपारा
छूटे बिपति-घन उघरेउ चन्दा ※ सुखी भानुकुल पुरजन वृन्दा
राजसूय विधिवत करि पूरन ※ राजतिलक दै रोहित नन्दन
श्वान बिडाल प्रजागन केते ※ भूपति-सह पयान जिन चेते[1]
सतन[2] स्वर्ग तिन लै पगु धारा ※ सत्य-धर्म कर बजेउ नगारा
नारायन बैकुण्ठ बिराजा ※ हरिश्चन्द्र कर निरखि समाजा
नृप के तप-आधार, कुवर्गा[3] ※ जुरैं न कहुँ मेटैं छबि-स्वर्गा
कहेउ सकोप गदाधर, नारद ※ नृप-संकल्प करौ मुनि गारद[4]

दो० प्रभु आयसु, सोइ दिसि चले, वीणापाणि मुनीस ।
गति अबाध[5] रथ लखेउ नभ, बढ़त कोशलाधीश ।। २४ ।।

करि प्रणाम बरनेउ निज अर्था ※ कह मुनि, नृप किमि भयेउ समर्था
जोरि समाज सतन गोलोका ※ के सुकर्म अस पुण्यश्लोका ?

राजा बले गोसांई गो करि निवेदन ※ ब्रह्मस्व लइब बल किसेर कारण
राणीर हातेते स्वर्ण कङ्कण जेछिल ※ ताहा दिता राज तार दाय घुचाइल
मुनि भावे तप जप सब नष्ट कैनु ※ मिथ्या राज्य करिया ये जन्म काटाइनु
येखाने आछेन हरिश्चन्द्र यशोधन ※ सेइखाने मुनि आसि दिल दरशन
मुनि बले शुन हरिश्चन्द्र महीपति ※ आपनार राज्ये तुमि जाह शीघ्र गति
स्त्री-पुत्र लइया राजा करिल गमन ※ प्रसन्न मानस मुनि प्रफुल्ल बदन
अयोध्याय राजा आसि दिल दरशन ※ राजसूय यज्ञ राजा करिल तखन
राज्यभार पुत्रेरे करिया समर्पण ※ हरिश्चद्र परलोके करिला गमन
पुरीर सहित चले बैकुण्ठ भुवने ※ कुक्कुर बिड़ाल आदि जे छिल खाने
देव गदाधर ताहे कुपिल अन्तरे ※ कहिलेन डाकिया नारद मुनिवरे
स्वर्ग नष्ट करे हरिश्चन्द्र नृपवर ※ ए कथा शुनिया मुनि चलिला सत्वर
वीण बाजाइया जाय महातपोधन ※ देखे रथे स्वर्ग राजा करिछे गमन
मुनि प्रणमिया राजा स्वर्ग जाइ बले ※ मुनि कन जाओ राजा कोन पुण्य फले

१ चाहना की २ स-देह ३ राजा के तप के बल पर अनधिकारी लोग भी.
४ मटिया-मेट ५ बिना रोक-टोक ।

उपजी कुमति सुबुद्धि नसावा * सत पर विजय रजोगुन पावा
वापी कूप तडाग सुकरनी * निज मुख नृप नारद सन बरनी
सेतु हाट फल विटप लगाये * यज्ञ दान प्रन-सत्य निभाये
कौशिक राज सकल करि अर्पन * काया बेंचि चुकाये सुबरन
जस-जस सुजस भूप निज गावा * स्यन्दन[1] तस लचि भुइँ तन[2] आवा
रथ कर पतन, पतन नृप केरा * लखी चूक, हिय[3] छोभ घनेरा
होत ज्ञान, रथ पुनि टिकि गयउ * सरग[4]-धरनि बिच स्थिर भयऊ
कटक सहित नृप भोजन-वसना * देवन मिलि कीन्ही अस रचना
जोरत अन्न मोद मन लेहीं * खरचत ताहि प्रान तजि देहीं
खेत धान्य भरि धरैं कोठारा * खाई भूप-कटक सोइ सारा
लोभी बसन संजूतहिं जेता * आवैं सकल कटक के हेता
अन्न-वस्त्र जेते सुख साधन * यहि विधि सकल जुटाये देवन
हरिश्चन्द्र कै पुन्य कहानी * कृत्तिवास यहि भाँति बखानी

सगर-वंश का उपाख्यान

इत रुहिदास सम्हारेउ सासन * पितु सम करत प्रजा प्रतिपालन

सुबुद्धि राजा के तबे कुबुद्धि घटिल * आपनार पुण्य सब कहिते लागिल
कूप-वापी-तडागादि नानास्थाने करि * दियाछि जांगाल आर वृक्ष सारि सारी
मम राज्य निल विश्वामित्र तपोधन * आपनारे वेचि शुधिलाम से काञ्चन
पुण्यकथा जेइ राजा कहिते लागिल * कहिते कहिते रथ नामिया पड़िल
नामिल राजार रथ दुःखित अन्तर * भाल मन्द नाहि बले हइल कातर
स्वर्गे थाकि युक्ति करे यत देवगण * राजार कटक किवा करिबे भक्षण
ये शस्य सञ्चय करे ना करिया व्यय * हरिश्चन्द्र राजार कटक ताहा लय
क्षेत्र हइते ये शस्य आनिया फेलाय * हरिश्चन्द्र राजार कटके ताहा खाय
नूतन बसन राखे करिया यतन * राजार कटके परे सेइ से बसन
ए नियम करिल सकल देवगण * अर्द्धपथे हरिश्चन्द्र रहिल तखन
स्वर्गे नाहि गेल राजा मर्त्य ना पाइल * हरिश्चन्द्र राजा मध्य पथे ते रहिल
कृत्तिवास पण्डित कवित्व विचक्षण * आदिकाण्डे गान हरिश्चन्द्र विवरण

सगरवंशेर उपाख्यान

अतःपर हइलेन रुहिदास राजा * पुत्र तुल्य पालन करेन सब प्रजा

---

१ रथ २ पृथ्वी की ओर ३ हृदय में ४ स्वर्ग ।

दो० रोहित-नन्दन 'सगर' नृप, चहुँ दिसि जासु बखान ।
तासु रुचिर गाथा सुने, बिनसैं पाप महान् ॥ २५ ॥

संततिहीन सगर अति शोका ❀ वंशहीन-मुख लखहिं न लोका
मन अति छोभ, गमन किय कानन ❀ बहु दिन कीन शंभु-आराधन
आसुतोष सब विधि परितोषू ❀ कहु नरपति, तोहि कौन कलेशू
नाथ? तनय बिन निसिदिन त्रासा ❀ 'सुत अनेक' लहि मिटै पिपासा
भोलानाथ बिहँसि वर दीना ❀ सुत सठ सहस एक[1] पितु कीना
लै वर, सगर गमन किय धामा ❀ केशिनि-सुमति युगल तेंहि भामा
गर्भवती भइँ शिव-वर पाई ❀ गत दस मास प्रसव नियराई
सुत असमंज केशिनी-नन्दन ❀ अतुलित छबि मनोज-मनरंजन
सुमति उठी वेदना कराला ❀ चर्म-उल्ब[2] प्रसवित तेहि काला
सगर उल्ब लखि, क्रोध प्रकासा ❀ 'भंगड़' कहि, किय शिव-उपहासा
तोरत उल्ब बुद्धि चकरानी ❀ तिल सम साठि सहस लखि प्रानी
मोहक रूप, सगर सुख पावा ❀ क्षीर-कलस सठ सहस मँगावा
दुग्धपुष्ट ते नर-तन पावत ❀ साठि सहस नृपसुत हुंकारत

ताहार नन्दन से सगर नाम धरे ❀ सगर हइल राजा अयोध्या नगरे
मन दिया शुन सगरेर विवरण ❀ ये कथा शुनिले हय पाप विमोचन
अपुत्रक राजा राज्य करे मनोदुःख ❀ प्राते नाहि देखे लोक अपुत्रेर मुख
दुःखेते सगर राजा करिल गमन ❀ बहु काल करिल शिवेर आराधन
सन्तुष्ट हइया शिव बलेन सगरे ❀ वर माँगि लह राजा या चाह अन्तरे
सगर बलेन, पुत्र बिना बड़ दुःख ❀ वर देह देखि आमि बहु पुत्र मुख
हासिया दिलेन वर भोला महेश्वर ❀ पुत्र षाटि हाजार हइबे तव घर
वर पेये आइलेन सगर नृपति ❀ शिव वरे दुइ नारी हैला गर्भवती
केशिनी-सुमती तार दुइ स्त्रीर नाम ❀ दिने दिने गर्भ दोंहा बाड़े अनुपम
दश मास गर्भ हैल प्रसव-समय ❀ केशिनी प्रसव कैल सुन्दर तनय
तनये देखिल येन अभिनव काम ❀ असमञ्ज बलिया थुइल तार नाम
सुमतीर गर्भ-व्यथा हइल यखन ❀ चर्म्मेर अलाबु एक प्रसवे तखन
देखिया अलाबु राला कुपित अन्तरे ❀ भाङ्गड़ बलिया गालि दिलेन शिवेरे
कोपे लाउ भाङ्गिया करिल खानखान ❀ षाटि हाज़ार पुत्र हैल निलेर प्रमाण
उषिमिषि करे सब देखिते रूपस ❀ षाटि हाज़ार आने राजा दुग्धेर कलस
खाइते खाइते दुग्ध नव रूप धरे ❀ षाटि हाजार पुत्रेर सगर हाँकारे

१ साठ हजार एक   २ चमड़े की झिल्ली, थैली के समान जिसमें गर्भ रहता है ।

सुत-समूह, दिय शाप बिसाई[1] * बिनसहु अल्प अवस्था पाई
बढ़त बढ़त बीते षट मासा * डगरत सुत लखि सगर हुलासा
चुटकी जब-जब भूप बजावैं * चहुँ दिसि घसिलि अंक चढ़ि आवैं

दो० द्वादस वयस किशोरगन, सबन विवाहेउ भूप ।
'अंशुमान' असमंज-सुत, प्रगटे धर्मस्वरूप ॥ २६ ॥

एकाधिक-सठ-सहस कुमारा * नाति एक, नृप सुख परिवारा
विगत जन्म जिन जोग नसावा * सोइ असमंज जनम पुनि पावा
असत जगत, सत ब्रह्म सनातन * छूटै राजपाश[2] किमि ? चिंतन
उबवौं[3] सबन विविध दै त्रासा * तौ पितु तजैं, मिटै जग-पासा[4]
पुर बालक मारग जे खेलत * पकरत तिन्हैं बाँधि जल बोरत
भरैं नीर नारी सर तीरा * तोरत घट, पुरजन अति पीरा
नित प्रति घरन लगावैं आगी * नृप सन कहेउ प्रजा दुख-पागी
सुवन-चरित सुनि मन अति त्रासू * सुत असमंज दीन वनवासू
हर्षित गमन कितो सोइ कानन * जग बंधन, भल मिटे अपावन[5]

षाटि हाजार पुत्रे शाप दिलेन बिसाई * अचिरे मरिबि तोरा ना हबि चिराई
दिने दिने बाड़े सेइ सगरनन्दन * छय मास वयस्क हइल पुत्रगण
जवे त सगर राजा हाते मारे तुड़ि * षाटिहाजार कोले आसे दिया हामागुड़ि
यखन हइल तारा द्वादश वत्सर * सकलेर परिणय दिलेन सगर
षाटि हाजारेर षाटि हाजार नारी * सुखे राज्य करे राजा अयोध्या नगरी
ज्येष्ठ पुत्र असमञ्ज धर्म्मपरायण * अंशुमान नामे ताँर हइल नन्दन
षाटि हाजार तनय एक मात्र नाति * येखिया सगर राजा आनन्दित अति
असमञ्ज सदाई भावेन मनेमन * संसार असत्य सत्य देव नारायण
असार संसारे केन वद्ध हये मारि * निभृते बसिया आमि भजिव श्रीहरि
भाविल संसारे आमि ना थाकिब आर * अनुचित कर्म्म सब करे दुराचार
यतेक वालक खेला खेलाय नगरे * हाते गले बान्धि सकलेरे फेले नीरे
यत नारीगण जल भरिवारे आसि * आछाड़िया भाङ्गे सब जलेर कलसी
अग्नि दिया पोड़ाय सकल प्रजाघर * कहिल सकल प्रजा राजार गोचर
पुत्रेर चरित्र शुनि लागिल तरास * असमञ्ज पुत्र राजा दिल वनवास
वने गिया असमञ्ज हरषित मन * संसारेर बन्धन छेदिल नारायण

१ इन्द्र—पृथ्वी के पराक्रमी राजाओं से सदैव सशंकित इन्द्र ने सगर की प्रताप-वृद्धि देख कर शाप दिया २ राज्य का बन्धन ३ उबाऊँ, पीड़ित कर दूँ ४ संसार के बन्धन ५ अपवित्र ।

अंशुमान सुत तासु[1] धर्मधर ❋ इतर[2] सुवन सह सुखित भूप वर
कछुक सगर-सुत सरग बिराजहिं ❋ कछुक कियेऊ तैनाथ[3] पतालहिं
डोलति धरा धरनिधर काँपैं ❋ सगर-सुवन यहि बिधि चहुँ ब्यापैं

राजा सगर का अश्वमेध यज्ञ आरम्भ और वंश-नाश

अश्वमेध शुचि यज्ञ उछाहा[4] ❋ उपजेउ एक दिवस नरनाहा
सो सुभ घड़ी कियेउ आरंभन ❋ यज्ञ-अश्व किय सुतन समर्पन
सजेउ अवधपुर यज्ञ-तुरंगा ❋ साठि सहस्र सहोदर संगा
लौटैं तुरग जीति दिग्देसा ❋ पुरवहु याग कहेउ अवधेसा

दो० मम विवाद सुरपति सदा, परैं कतक भय-व्याध ।
मेटि तिनहिं रविकुल सुभट, हय[5] आनहु निर्बाध[6] ॥ २७ ॥

सागर कटक तरंग अनन्ता ❋ उमड़त लखि सुरपति मन चिन्ता
जुगुति विरञ्चि! रचौं केहि भाँती ❋ सगर-तुरग[7] हरि जुड़वौं छाती
मध्य दिवस तम निसि सम छावा ❋ तकि अवसर हय इन्द्र चुरावा
बाँधेउ ताहि पताल शचीसा[8] ❋ योगलीन जहँ कपिल मुनीसा

असमञ्जे पाठाइया वनेर भितरे ❋ अपर सन्तान लये सुखे राज्य करे
कृत्तिवास पण्डितेर मुखे सरस्वती ❋ अमृत समान कैल आदिकाण्ड पृथि

सगरेर अश्वमेध यज्ञारम्भ ओ वंशनाशेर विवरण

कत पुत्रे रखे राजा स्वर्गेर उपर ❋ कतेक राखिल लये पाताल भितर
पृथिवीर राजा यत मम नामे काँपे ❋ मम वंशजात यत तिन लोके व्यापे
एक दिन सगर भाविया मने मने ❋ अश्वमेध यज्ञ करे अयोध्या भुवने
एतेक भाविया यज्ञ कैल आरम्भन ❋ तुरङ्ग राखिते दिल यतेक नन्दन
बापेर आगेते तारा करिल उत्तर ❋ घोटा सह जाब षाटि हाजार सोदर
पुत्र वाक्य शुनिया सगर बले ताय ❋ आनिते पारिले घोड़ा यज्ञ हबे साय
इन्द्रेर सहित मोर हइल विवाद ❋ एइ यज्ञे कत शत हइबे प्रमाद
यज्ञाश्व राखिते जाय सगर-नन्दन ❋ शुनिया हइल इन्द्र बड़ भीत मन
वासव बलेन ब्रह्मा कोन युक्ति करि ❋ विरिञ्चि बलेन तुमि घोड़ा कर चुरि
दिने दुइ प्रहरे हइल निशाप्राय ❋ घोड़ा चुरि करि इन्द्र पाताले पलाय
तपस्या करेन मुनि कपिल ये खाने ❋ घोड़ा लये राखिल ताहार विद्यमाने

१ केशिनी से उत्पन्न कुमार असमंज के पुत्र अंशुमान २ अन्य ३ नियुक्त ४ उत्साह, उमंग ५ घोड़ा ६ बेरोक-टोक ७ सगर का यज्ञ के लिए छोड़ा हुआ अश्व ८ शचिपति इन्द्र ।

मिटेउ अंध[1] पुनि भानु अलोका * कटक न सुतगन बाजि[2] बिलोका
हेरत फिरे सकल भूमण्डल * मिलेउ न हय पुनि चले रसातल
लै कुदारि[3] सठसहस कुमारा * कोस-कोस महि करत प्रहारा
हुमकि हनैं भल चोट कुदारी[3] * लागै कूर्म-पृष्ठ[4] महि फारी
चारि दण्ड खनि[5] चारिउ सागर * पहुँचे पुनि पताल बल-आगर
दिसि-पावक[6] बाँधा बट-छाहीं * उपवन-कपिल तुरग लखि ताहीं
करत कुलाहल कहि कटु बचना * घोर-चोर[7] किमि ध्यान-निमग्ना
हनेउ कुदार-बेंट मुनि अंगा * लागत भयेउ ध्यान-मुनि भंगा
अनल-नयन ऋषि झरैं अँगारा * पल बिच साठि सहस भे छारा

कपिल ऋषि द्वारा सगर-वंश के उद्धार का उपाय-कथन

फिरे न अश्व सहित नृपनन्दन * बीतेउ बरस, न यज्ञ अरम्भन
अंशुमान असमञ्ज-कुमारा * सगर-सुतन खोजन पग धारा
नृप आयसु सो रथ आरूढा * अवनि सकल मग-मारग ढूँढा

योगेते आछेन मुनि केह नाहि काछे * इन्द्र हय बान्धिया गेलेन तार पछे
अंधकार वृष्टि सब घुचिल यखन * हय हाराइल बले सगरनदन
चाहिया ना पाइलेक पृथिवीमण्डले * पृथिवी खुँजिया तारा चलिल पाताले
भाइ षाटि हाजार कोदालि हातेध रे * एक क्रोश एकेक कोदालि परिसरे
क्रोध करि जेइ धरे कोदालिर मुष्टे * एक चोटे भेजाय पाताले कूर्म्मपृष्ठे
चारि दण्डे खुँड़िलेक चारि जे सागर * सागर खुँड़िया गेल पाताल भितर
पूर्व्व ओ दक्षिण दिक तार मध्यखाने * घोड़ा बान्धा देखिल कपिल विद्यमाने
डाकाडाकि करिया कहिल सब ताँइ * घोड़ाचोरे देखिते पाइनु एक भाई
मुनिर गायेते मारे कोदालिर पाशि * ध्यान भङ्ग हइया चाहेन महाऋषि
क्रोधेते नयने अग्नि झरे राशिपाशि * पुड़े षाटि हाजार हैल भस्म राशि
एककाले क्षय हैल सगरनन्दन * आदिकाण्डे गान कृत्तिवास विचक्षण

कपिल ऋषि कर्त्तृक सगर-वंश उद्धारेर उपाय-कथन

एक वर्ष हैल न यज्ञ अवशेष * तुरङ्ग लइया पुत्र ना आइल देश
श्री असमञ्जेर पुत्र नाम अंशुमान * पुत्रेर करिते तत्व ताहारे पाठान
राज-आज्ञा पाइया चड़िया निज रथे * एके एके पृथिवीते खोजे नाना पथे

१ अन्धकार २ घोड़ा ३ कुदाल, भूमि खोदने का एक औज़ार ४ भूमि को धारण करनेवाले कच्छप की पीठ पर ५ खोद कर ६ आग्नेय कोण ७ घोड़ा हरण करनेवाला।

दो० खनित[1] लखेउ चहुँ धरातल, प्रविशे भेदि पताल ।
प्राची[2] दिसि कर महोदधि[3], दर्शन कियेउ विशाल ।। २८ ।।

नीलम बरन नील गज सुन्दर * दसनन धरा धरे तहँ भूधर
बन्दन करि पूँछेउ युवराजू * किय संकेत पन्थ गजराजू
अश्व-ओर[4] सों रहेउ सचेतू * सोइ पथ चले भानु-कुल-केतू[5]
सागर पुनि उत्तर दिशि सोहा * दिग्गज श्वेत निरखि मन मोहा
धवल रूप हे अवनि-अधारा[6] * लखे जात कहुँ सगरकुमारा
रविकुल-तुरग मिलै याही पथ * बढ़ेउ कुअँर उपजेउ पुरुषारथ
पच्छिम दिसा पयोधि तरंगा * दन्ती[7] जहँ सेंदुर सम अंगा
रक्त बरन अरु दन्त कराला * टिकी जहाँ मेदिनी[8] बिशाला
लचत माथ जिन, डोलत धरनी * अनुपम कथा-दिग्गजन बरनी
पूरुब-दखिन कोन हय-बंधन * किये समीप कपिलमुनि-दर्शन
हे मुनीस ! पूँछेउ करि वन्दन * देखे कतौं सगर के नन्दन
कपिल-अनल सुनि वंस-विनासा * अंशुमान मृदु वचन प्रकासा
सुत असमञ्ज, सगर-अवतंसा * छार कियेउ प्रभु ! ते मम बंसा

जे पथे प्रवेश करे देखे खानखान * सेइ पथ दिया तबे पाताले संधान
आगेते देखिल पूर्व्व दिकेर सागर * देखे नील वर्ण हस्ती परम सुन्दर
धरियाछे पृथिवी येन दशन उपरे * प्रणाम करिया तारे बलिछे सत्वरे
हस्ती बले एइ पथे जाह अंशुमान * छोड़ाचोर निकटे हइबे सावधान
पूर्व्वे हबे चलिलेन उत्तर सागर * श्वेत वर्ण एक हस्ती देखिल सुन्दर
अंशुमान ताँहारे लागिल शुधाइते * ए पथे सगर-पुत्रे देखेछ जाइते
शुनिया ताहार कथा लागिल कहिते * पाइबेन घोड़ा जाह एइ एइ पथे
तथा यदि ना पाइले घोड़ार दर्शन * पश्चिम सागरे गिया दिल दरशन
रक्तवर्ण एक हस्ती देखिल सुन्दर * मेदिनी से धरियाछे दशन उपर
से सब हस्तीर शुन अपूर्व्व कथन * मस्तक नाड़िले हय मेदिनी कम्पन
पूर्व्व ओ दक्षिण दिक तार मध्यखाने * घोड़ा बान्धा देखिल कपिल विद्यमाने
दण्डवत् हइया ताँरे लागिल कहिते * ए पथे सगरपुत्रे देखेछ जाइते
महाऋषि कपिल ये बलिल तखन * मम कोपानले भस्म हैल सर्व्वजन
शुनिया त अंशुमान जुड़िल स्तवन * सेइ वंशे तपोधन आमार जनम
असमञ्ज पुत्र आमि सगरेर नाति * तोमार महिमा बले काहार शकति

---

१ खुदी हुई २ पूर्व ३ महासागर ४ यह व्यंग्य कपिल मुनि की ओर संकेत है ५ अंशुमान ६ दिग्गज ७ हाथी ८ पृथ्वी ।

तिन सद्गति कछु कहौ उपाऊ * महिमा अमित छमौ मुनिराऊ
ब्रह्म-कोप थिर[1] नहिं अति काला * हरषि कहेउ मुनि, सुनौ भुवाला।
जो शुचि गंग बहै भुवि लोका * लहैं पितर-तव सद्गति-लोका[2]

दो० कहँ उद्गम, कहँ बसति सो, मिलै दरस किमि गंग?
विनय मानि, वरनेउ कपिल, सुरसरि-जनम प्रसंग ॥ २६ ॥

गंगा का जन्म और मर्त्यलोक में सगर का गंगा के लाने का उपाय-कथन
तथा भगीरथ का जन्म

परमधाम त्रिभुवनपति रूपा * सुर-मुनि सहित विराज अनूपा
अमियमूरि श्री आनँदकन्दा * निरखत शिव-हिय उदित अनन्दा
ताण्डव नर्त ताल विधि नाना * आनन पाँच, सकल हरिगाना
डमरू डिमि-डिमि जीव जगावै * सिंगी पुनि हरि-नेह लगावै
अनुपम गान भाव तल्लीना * मुदित सकल मुनि-देवन कीना
लक्ष्मी सहित द्रवित[3] नारायण * सरसित द्रव लखि भक्तिपरायण
सरसि प्रेम-द्रव सोइ प्रभु अंगा * प्रगटीं पतितपावनी गंगा
नीर कमण्डल भरि सोइ पावन * आदर सहित धरेउ चतुरानन

अंशुमान वलिलेन शुन महामति * केमने हइबे मोर वंशेर सद्गति
ब्राह्मणेर कोपे नाहि थाके एक तिल * प्रसन्न हइया तारे कहेन कपिल
मर्त्यलोके यदि बहे प्रवाह गंगार * तबे से तोमार वंश हइबे उद्धार
विनयेते अंशुमान कहे ताँर प्रति * कोथाय जन्मिल गंगा कोथाय बसति
कोथा गेले पाइब से गंगार दरशन * कह मुनि शुनि सेइ गंगार जनम
गंगार जन्मेर कथा करेन प्रकाश * आदिकाण्ड रचिल पण्डित कृत्तिवास

गंगार जन्म विवरण ओ मर्त्यलोके सगरेर गंगा-आनयनेर उपाय-कथन
एवं भगीरथेर जन्म

एक दिन गोलोके बसिया नारायण * चतुर्दिके आर यत देव-ऋषिगण
सभ माझे त्रिलोचन गान पञ्चमुखे * देवऋषि स्वर्गवासी पुलकित देखे
शिंगा बले श्रीराम डम्बुरे वले हरि * पञ्चमुखे स्तुतिगान देव त्रिपुरारी
लक्ष्मी सह वसिया आछेन महाशय * शुनिया से गान हइलेन द्रवमय
द्रवमय हइलेन निजे नारायण * पतितपावनी गंगा ताहारे जनम
सेइ जल कमण्डुले भरिया आदरे * राखिलेन तुलिया विधाता निजघरे

---

१ टिकाऊ २ मुक्तजन का लोक ३ प्रेम में पिघलना ४ भक्ति-तल्लीन शिव।

सलिल पुनीत धरनि सोइ आवै ※ सगरवंश सद्गति तब पावै
सुत तव-पितर-बनावन करनी ※ मम-वर, सुरसरि प्रगटै धरनी
अंशुमान लै तुरग सिधाये ※ दुखित अवध भूपति ढिग आये
साठि सहस मुनि-कोप विनासा ※ धरत न धीर सगर अति त्रासा
जन्मत बिपुल वंस, भय पाई ※ दीन विनास-शाप सुरराई
सोइ चरितार्थ, यज्ञ भइ भंगा ※ अब किमि अवनि अवतरन-गंगा
सुरसरि विन न तरैं सुत-लोका ※ करैं विलाप भूप अति शोका
अंशुमान प्रति राज समर्पन ※ चले सगर मन्दाकिनि आनन[1]

दो० सकल जतन-जप-तप विफल, दरस न सुरसरि दीन।
शोकाकुल नित गलत तन, स्वर्ग गमन नृप कीन ॥ ३० ॥

अंशुमान इत अवधनरेसू ※ सुत 'दिलीप' करि अर्पन देसू
सद्गति पितर लहैं सोइ कारन ※ सुरसरि हेत कीन तप धारन
सहस वर्ष दस, विन आहारा ※ सफल न तप, नृप स्वर्ग सिधारा
युगल रानि तजि, संततिहीना ※ नृप दिलीप पुनि, पितुपथ[2] लीना
जलाहार कहुँ निर्जल घोरा ※ तप विरञ्चि कर कीन कठोरा

सेइ गंगा यदि पार आनिते भूपति ※ तबे से सगर-वंश पाइबे सद्गति
अंशुमान तोमारे दिलाम एइ वर ※ तव वंश हेतु गंगा हबेन गोचर
घोड़ा लैया अंशुमान अयोध्याते जाय ※ विवरण बले आसि सगरेर पाय
कपिलेर स्थाने पाइलाम अश्वधने ※ ताँर कोपाग्निते भस्म हैल सर्व्वजने
शुनिया सगर राजा शोकाकुल मन ※ पुत्रशोके निरवधि करेन क्रन्दन
षाटि हाजार पुत्रे शाप दिलेन विशाइ ※ अल्पकाले मरिल, ना हइल चिराइ
अशुचि हइल यज्ञ ना हइल साय ※ किमते पावेन मुक्ति, भावेन उपाय
स्वर्गेते आछेन गंगा करि कि प्रकार ※ ताहा विना किसे हबे वंशेर उद्धार
अंशुमाने राज्य राजा करि समर्पण ※ गंगारे आनिते राजा करिल गमन
गंगा ना पाइया राजा नित्य बाड़े शोक ※ मरिया सगर राजा गेल ब्रह्मलोक
अंशुमान राज्य करे आयोध्यानगरे ※ ताँर पुत्र हइल दिलीप नाम धरे
पुत्र राज्य दिया गेल गंगा आनिवारे ※ तप करे दश हाजार वर्ष अनाहारे
गंगा ना पाइया गेल स्वर्गेर उपर ※ दिलीप राजत्व करे येन पुरन्दर
अपुत्रक राजा दुःख भावेन अन्तरे ※ दुइ नारि थुये गेल अयोध्यानगरे
चलिल दिलीप राजा गंगा आनिवारे ※ कठोर तपस्या करे थाकि अनाहारे
कभु जलाहार करे कभु अनाहार ※ अयुत वत्सर सेवाकरिल ब्रह्मार

१ लाने के लिए। २ पिता-पितामह के अनुसार ही गंगा-हेत तप को गये।

अयुत वर्ष सुरसरि नहिं आना ※ ब्रह्मलोक नृप कीन पयाना
निरखि भानुकुल वंस-विहीना ※ इन्द्रादिक मिलि चिन्तन कीना
सुनी अवध प्रभु कर अवतारा ※ सो किमि ! इतै न वंस-अधारा
देवन सोचि जतन मन लावा ※ गौरीपति कहँ अवध पठावा
विधवा युगुल बसति जहँ रानी ※ वृषभ-अरूढ़[1] शंभु वरदानी
'पुत्रवती भव कोउ एक नारी' ※ अलख जगाय कहत त्रिपुरारी
जीवन विधुर[2] चकित दोउ भामा ※ किमि असीष, सुत होय ललामा?
रति-रत होहिं परस्पर रानी ※ जन्मै सुत, न असत मम बानी
गमन शंभु, इत नारि-दिलीपा ※ आयसु धरि नित रहहिं समीपा
युगुल रहैं दम्पति सम तरुणी ※ लहेउ काल-ऋतु तिन अेक रमणी
शंभु-प्रसाद गर्भ धरि रानी ※ गत दस मास प्रसव नियरानी

दो० मांसपिण्ड कौतुक जनम, अस्थिहीन असमर्थ ।
लोक-हँसी! रानी दुखित, शिव दिय संतति व्यर्थ[3] ।। ३१ ।।

चलीं अंक-शिशु सरयू तीरा ※ तजहिं पंगु बिन-अस्थि सरीरा

तथापि ना पाय गंगा ना हय अशोक ※ मरिल दिलीप राजा गेल ब्रह्मलोक
अराजक हैल राज्य अयोध्यानगर ※ स्वर्गेते चिन्तित ब्रह्मा आर पुरन्दर
शुनियाछि जन्मिवेन विष्णु सूर्य्यकुले ※ केमने बाड़िबे वंश निर्म्मूल हइले
भाविया सकल देव युक्ति करि मने ※ अयोध्याय पाठाइल प्रभु त्रिलोचने
दिलीपेर दुइ जाया आछिलेन वासे ※ वृष आरोहणे शिव गेलेन सकाशे
कहिलेन दोंहाकार प्रति त्रिपुरारि ※ मम वरे पुत्रवती हवे एक नारी
दुइ नारी कहे शुनि शिवेर वचन ※ आमरा विधवा किसे हइबे नन्दन
शङ्कर बलेन दुइजने कर रति ※ मम वरे एकेर हइबे सुसन्तति
एइ वर दिया गेल दिया त्रिपुरारि ※ स्नान करि गेल दुइ दिलीपेर नारी
सम्प्रीतिते आछिलेन से दुइ युवती ※ कत दिने एकजन हैल ऋतुमती
दोंहेते जानिल यदि दोंहार सन्दर्भ ※ दोंहे केलि करिते एकेर हैल गर्भ
दश मास हैल गर्भ प्रसव समय ※ मांसपिण्ड मात्र पुत्र हइल उदय
पुत्र कोले करिया काँदेन दुइजन ※ हेन पुत्र वर केन दिला त्रिलोचन
अस्थि नाइ मांसपिण्ड चलिते न पारे ※ देखिया हासिबे लोक सकल संसारे
कोले करि निल ताहा चुपड़ि भितरे ※ सरयूर तीरे गेल फेलबार तरे

१ बैल पर सवार २ विधवा का, वैधव्य ३ शम्भुप्रसाद से रानी के गर्भ से अस्थिहीन लुण्ड-मुण्ड मांसपिण्ड का प्रसव देख सारा हर्ष लुप्त हो गया और निराशा तथा लोक-परिहास की आशंका से वह दुःखित हो उठीं ।

सोइ छन मुनि बशिष्ठ धरि ध्याना ※ कौतुक सकल तपोधन जाना
आयसु—पथ सोवाय सुत देहू ※ पथिक-दया तजि गमनहु गेहू
अष्टावक्र, हेतु असनाना ※ व्यथित-अंग तेहि पंथ पयाना
पंगु अचञ्चल सुवन-सरीरा ※ लखि अस मन सोचत मुनि धीरा
मम तन बिषम, नकल यदि करई ※ विनसै, ब्रह्मकोप सुत परई
जो वस्तुतः लुञ्ज, मम दाया ※ मदनमुग्ध छबि पावै काया[1]
अष्टावक्र विष्णु सम समरथ ※ जिन वर-शाप न होय अकारथ
चमत्कार-मुनि, रविकुलनन्दन ※ चपल सतेज लगेउ मग धावन
सुनि मुनि-टेर रानि दोउ आईं ※ तनय-सरूप निरखि हरषाईं
आशिष देयँ देव, मुनि, समरथ ※ सुवन-दिलीप नाम भागीरथ

भगीरथ द्वारा मर्त्यलोक में गंगा का लाना

पचयें वर्ष भगीरथ नन्दन ※ गुरु बशिष्ठ-गृह विद्यारंभन

हेन काले देखिलेन वशिष्ठ तपोधन ※ ध्यानेते जानिल तार सकल लक्षन
मुनि वले थुये जाओ पथे शोयाइया ※ करुणा करिबे केह आतुर देखिया
पुत्रे पथे शोयाइया दोंहे गेल वासे ※ स्नान करिबारे अष्टावक्र मुनि आसे
आट ठाँइ वाँका मुनि गमने कातर ※ बालक तेमनि करे पथेर उपर
एक दृष्टे अष्टावक्र तार पाने चाय ※ मनेभावे आमारे ए देखिया भेङ्चाय
आमारे देखिया यदि करे उपहास ※ मम ब्रह्मशापे हबे शरीर विनाश
यदि तव देह हय स्वभावे एमन ※ मम वरे हओ तुमि मदनमोहन
अष्टावक्र मुनि सेइ विष्णुर समान ※ यारे वर शाप देन कभु नहे आन
अष्टावक्र मुनिर महिमा चमत्कार ※ दाँडाइया उठिल से राजार कुमार
ध्याने जानिलेन अष्टाबक्र तपोधन ※ धन्य महापुरुष ए दिलीप नन्दन
उभय राणी के डाकि आने मुनिवर ※ पुत्र लये हरषित दोंहे गेल घर
आसिया सकल मुनि करिल कल्याण ※ भगे-भगे जन्म हेतु भगीरथ नाम
महाकवि कृत्तिवास पण्डित परम ※ आदिकाण्ड गान भगीरथेर जनम

भगीरथ कर्त्तृक मर्त्ये गंगा-आनयन

पाँच वत्सरेर हैल हाते खड़ि दिल ※ बशिष्ठेर वाड़ि पड़िबारे पाठाइल

[1] मार्ग में छोड़ दिये गये मांसपिण्ड को, दूर से आते हुए अष्टावक्र मुनि ने देखकर कल्पना की कि यदि यह कोई प्राणी मेरे विकृत शरीर की नकल या हँसी उड़ा रहा है तो नष्ट हो जाय और, यदि सचमुच असमर्थ है तो कामदेव के समान छबिमयी काया को प्राप्त हो।

कुअँर संग बालकन विवादा ※'जारज'[1] कहि इक शिशु प्रतिवादा
दुखित भगीरथ, उतर न आवा ※ मन गलानि लोचन जल छावा
तजि चटसार[2] कोपगृह सयना ※ मौन कुमार! न निकसत बयना
प्रहर द्वितीय दिवस चढ़ि आवा ※ आकुल जननि, न सुत गृह आवा

दो० शिशु हेरान बाघिनि यथा, विलपैं मुनि सन मात ।
मुनि प्रबोध, किय गमन दोउ, लखेउ कोपगृह तात ॥ ३२ ॥

चूमि माथ अञ्चल मुख पोछत ※ भरि सुअंक ममता सों बोलत
कहु केहि धनपति करौं भिखारी ※ बन्दिमुक्ति, कै रोग दुखारी
तौ शत वैद्य करैं उपचारा ※ गर भरि कह मृदु वचन कुमारा
कछु अभिलाष न रोग सरीरा ※ लाञ्छन लगत, मातु मोहिं पीरा
आश्रम कछु बालकन विवादा ※कहि 'जारज' मोहिं शिशु प्रतिवादा
केहि कुल जनम, नाम-पितु कहहू ※ वरनि, जननि! मम संसय हरहू
सुनि सुत-बिथा[3] रानि अति कातर※ कथा सत्य सुनु बंस-उजागर
साठि सहस सुत सगर अधीसा ※ नसे कोप परि कपिल मुनीसा
तजि सुरपुर, छिति गंग पधारहिं ※ तौ तव पितर सगरसुत तारहिं

वालके-वालके द्वन्द्व यखन वाड़िल ※ जारज वलिया गालि एक शिशु दिल
मने भगीरथ दुःखी ना दिल उत्तर ※ विषादे आइल शिशु आपनार घर
सर्व्वदा अस्थिर हय सजल नयन ※ शयन-मन्दिरे शिशु करिल शयन
आकाशे हइल वेला द्वितीय प्रहर ※ माता वले पुत्र केन ना आइल घर
शावक हाराये येन फुकारे वाघिनी ※ मुनि काछे कान्दि जाय दिलीप कामिनी
वशिष्ठ वलेन माता ना कर क्रन्दन ※ कोपेर मन्दिरे पुत्रे पावे दर्शन
आसि राणी भगीरथे कोले करि निल ※ निजेर आँचले तार मुख मुछाइल
वलिते लागिल भगीरथेर जननी ※ कोन दुःखे दुःखी तुमि कह यदुमणि
कारे वाड़ाइव कारे करिव काङ्गाल ※ वन्दी मुक्ति करि यदि थाके वन्दीशाल
कोन रोगे रोगी तुमि अमित ना जानि ※ एइक्षणे करि सुस्थ शत वैद्य आनि
भगीरथ वले माता कर अवधान ※ रोग दुःख नहे आजि पाइ अपमान
विरोध बाधिल एक वालकेर सने ※ जारज वलिया गालि दिल से ब्राह्मणे
कोन वंशजात आमि काहार नन्दन ※ इहार वृत्तान्त कथा कह विवरण
पुत्रेर हइले दुःख माये लागे व्यथा ※ पुत्रे सम्बोधिया माता कहे सत्य कथा
सगरेर छिल षाटि हाजार तनय ※ कपिल मुनिर शापे हैल भस्ममय
गंगा स्वर्ग हैते यदि आइलेन क्षिति ※ तबे से सगरवंश पाइबे निष्कृति

१ उपपति से उत्पन्न बालक २ पाठशाला ३ व्यथा, पीड़ा।

प्रवर[1] तीनि तव किय आराधन * सके न करि सुरसरि आवाहन
तव पितु गमन स्वर्ग सुतहीना * नृप-बनितन महेश वर दीना
युगुल रानि कृत दंपति जीवन * यहि विधि जनम भगीरथ नन्दन
तैं सुत भानुवंश उजियारा * सुनि अति मुदित दिलीप-कुमारा
सुर-सलिला किमि सहज प्रयत्ना * सुलभ न विना भगीरथ-यत्ना[2]
जप-तप-जोग पितरगन हेता * लौटौं महि, जाह्नवी[3] समेता
सुनि हठ-तनय विकल दोउ माता * हटकहिं, यहि छन जाहु न ताता

दो० सुनेउ न, मातन बंदि सुत, गमनेउ मुदित उमंग ।
गुरु बशिष्ठ लै दीच्छा, फरके दच्छिन अंग ।। ३३ ।।

अनाहार पुनि हेतु-पुरंदर[4] * सहस सात जपि वर्ष निरंतर
सदा मंत्रबस सुरगन रीती * प्रगटि इन्द्र कह वचन सप्रीती
को पितु धन्य, कौन कुलकेतू ? * माँगु माँगु वाञ्छित हिय-हेतू
तनय-दिलीप भानु-कुल-नन्दन * बन्दहुँ सुरगनपति जगबन्दन
पितर सहस सठ सगर-कुमारा * कपिल-शाप विनसे जरि छारा
मंदाकिनि जो प्रभु सों पावौं * तिनहिं सुगति सुरपुरहिं पठावौं

क्रमे तिन पुरुष करिल आराधना * तबु गंगा आनिते नारिल कोन जना
दिलीप तोमार पिता गेल स्वर्गपुरे * पाइलाम तोमा पुत्र महेशेर वरे
भगे-भगे जन्म हेतु भगीरथ नाम * सूर्य्यवंशे जन्म तव अयोध्याय धाम
शुनिया मायेर कथा भगीरथ हासे * हासिया कहिल कथा जननीर पाशे
सूर्य्यवंशे भूपतिरा निर्ब्बोधेर प्राय * अल्प श्रमे गंगा देवी के कोथाय पाय
यदि आमि धरि भगीरथ अभिधान * गंगा आनि करिब सगर वंश त्राण
काँदिया कहिछे भगीरथेर जननी * तपस्याय एक्षणे ना जाह वंशमणि
मायेर वचने भगीरथ ना रहिल * बशिष्ठेर स्थाने मन्त्रदीक्षा से करिल
यात्रा काले करे राजा मायेर स्मरण * दक्षिण लोचन तार करिछे स्पन्दन
मायेर चरणे आसि करिल प्रणति * प्रथमे सेविते गेल देव सुरपति
इन्द्रमन्त्र अनाहारे जपे निरन्तर * इन्द्रसेवा करे सात हाजार वत्सर
मन्त्रवश देवता रहिते नारे घर * वासब एलेन तथा दिते तारे वर
कोन वंशे जन्म तव काहार तनय * वर मागि लह या अभीष्ट तव हय
करिया प्रणाम इन्द्रे वलिल वचन * सूर्य्यवंशे जात आमि दिलीप-नन्दन
सगरेर छिल षाटि सहस्र तनय * कपिल मुनिर शापे हैल भस्ममय
आछेन स्वर्गेते गंगा देव सुरपति * ताहे मम वंशेर ये हइबे सद्गति

१ पूर्वज २ अकथ और अथक परिश्रम ३ गंगा ४ इन्द्र के लिए ।

सुनहु सुवन, कह सहसविलोचन ✻ गंग हेतु पूजहु त्रैलोचन
जो कुछ विघिन परैं तव काजा ✻ करौं सहाय, न छल युवराजा !
इन्द्र प्रनम्य, चलेउ कैलासा ✻ तप अनन्य किय शंभु-निवासा
आक[1] धतूर विल्वदल[2] चन्दन ✻ अनाहार कहुँ अजल शिवार्चन
अडिग सहस दस वर्ष कठोरा ✻ कह पशुपति तैं सफल किशोरा
भाव अनन्य गदाधर रूपा ✻ परम तत्व सेवहु सुतभूपा !
मम वर सफल साधना तोरी ✻ सुरसरि मिलै अमिय-मय-मूरी
चलेउ बन्दि शिव, जहँ श्रीकन्ता ✻ नित जप कोटि मंत्र भगवन्ता
शिशिर[3] शरीर सलिल[4] बिच थापै ✻ ग्रीषम रुद्र पञ्चगिन तापै
यहि विधि विगत वर्ष चालीसा ✻ भक्त-विवस प्रगटे जगदीसा

दो० निष्ठा, भक्ति, अनन्य तप, जतन-भगीरथ, तात ।
सफल, माँगु वर वाञ्छित, बोले करुनानाथ ।। ३४ ।।

सहस साठि जे सगर-कुमारा ✻ ते मम पितर कपिल किय छारा
हे प्रभु ! मुक्तिदान तिन दीजै ✻ सुलभ गगनवाहिनि[5] मोंहि कीजै
प्रभु हँसि कहेउ जो गंग पुनीता ✻ ज्ञान न मोंहि, सो अगम अतीता

इन्द्र वले वलि शुन दिलीपकुमार ✻ आमा हैते दरशन ना पावे गंगार
आनिवेक गंगा यदि आमि देइ वर ✻ एक भावे पूज गिया देव दिगंबर
गंगारे आनिते पथे विघ्न यदि घटे ✻ आमि ता करिब मुक्त कहि अकपटे
इन्द्रेर चरणे राजा करिल प्रणति ✻ कैलासे सेविते गेल देव पशुपति
ओकड़ा धुतूरा ये आकन्द विल्वपात ✻ इहातेइ तुष्ट हन त्रिदेवेर नाथ
कभु अनाहारे कभु निराहार करे ✻ दृढ़ तप करे दश हाजार वत्सरे
महेश बलेन शुन राजार नन्दन ✻ अनाहारे ए तपस्या कर कि कारण
गङ्गारे आनिवे तुमि आमि दिब वर ✻ एक भावे सेव गिया देव गदाधर
शिवेर चरणे पुनः करिया प्रणति ✻ गोलोके चलिया गेल यथा लक्ष्मीपति
भगीरथ प्रतिदिन कोटी मन्त्र जपे ✻ तप करे ग्रीष्मकाले रौद्रेर उत्तापे
शीत चारि मास थाके जलेर भितर ✻ ए मते करिल तप चलिश वत्सर
मन्त्रवश देवता रहिते नारे घर ✻ आसिया कहेन हरि तारे निते वर
तपस्या तोमार मोरे लागे चमत्कार ✻ माग इष्ट वर दिव राजार कुमार
भगीरथ वले प्रभु करि निवेदन ✻ सगरेर छिल षाटि हाजार नन्दन
कपिलेर शापेते हइल भस्ममय ✻ पाइले गङ्गारे तारा मुक्त तबे हय
कहिलेन सहास्य वदने चक्रपाणि ✻ गङ्गार महिमा बापू आमि किबा जानि

---

१ मदार २ वेलपत्र ३ घोर जाड़े में ४ जल ५ गंगा ।

होहुँ विफल जो कृपानिधाना * पदपंकज तव, त्यागहुँ प्राना
कह हरि, सुरसरि हित तजि सोकू * चलौ संग मम, सुत! विधिलोकू[1]
सदन-बिरञ्चि वारि रह जेता * हरन कियेउ सो कृपानिकेता
प्रभुहिं दरसि विधि सविनय आसन * दै पुनि चहेउ नीर पद परसन
लखि निकेत-बासन[2] जलहीना * सञ्चित गंग-कमण्डल लीना
हरिपद परसेउ करि आवाहन * कह 'अंह्रिजा' गंग सोइ कारन
कहेउ विष्णु, गमनौ लै संगा * सुत! सोइ पतितपावनी गंगा
गो-द्विज-घात अधम जे पापा * कुस परसत विनसत संतापा
अकथ पुन्य सुरसरि असनाना * पितर-मुक्ति-हित करौ पयाना
गमनौ छिति, हे धवल-तरंगा! * तारौ वेगि सगर नृप-अंगा[3]
कहेउ गंग आयसु धरि माथा * कछु मम विनय सुनौ जगनाथा
पापी अधम बसत बहु धरनी * अपँ मोहिं मलिन निज करनी
लहैं मुक्ति सुरपुर मम संगति * कहौ उपाय नाथ! मम सद्गति

दो० सुकृत-रूप वैष्णव अखिल, जिन बिच रमौं अनन्य।
दरस-परस-असनान तिन, करै देवि तोहिं धन्य ॥ ३५ ॥

भगीरथ बले गंगा नाहि दिबे दान * तव पादपद्मेते त्यजिब आमि प्राण
शुनिया ताहारे हरि करेन आश्वास * ब्रह्मलोके आछे गंगा चल ताँर पाश
छिल ब्रह्मलोकेते सामान्य यत जल * माया करि हरिलेक हरि से सकल
ब्रह्मार सदने प्रभु दिल दरशन * सम्भ्रमे उठिया ब्रह्मा दिलेन आसन
पाद्य दिते यान ब्रह्मा घरे नाहि जल * जलहीन पात्र मात्र आछे अविकल
कमण्डलु मध्ये गंगा पड़े ताँर मने * आस्ते आस्ते गिया ब्रह्मा आनेन यतने
गंगाजले विष्णुपद करेन स्खालन * अंह्रिजा बलिया नाम एइ से कारण
भगीरथ राजारे वलेन चिन्तामणि * लये जाह एइ गंगा पतितपावनी
ब्रह्महत्या गोहत्या प्रभृति पाप करे * कुशाग्रे परशे यदि सब पाप तरे
कतेक स्नानेते पुण्य बलिते ना पारि * वंशेर उद्धार कर लैया गंगावारि
श्रीहरि बलेन गंगा करह प्रस्थान * अविलम्बे मुक्त कर सगर-सन्तान
कहिलेन एत यदि प्रभु जगन्नाथ * काँदिया बलेन गंगा प्रभुर साक्षात्
पृथिवीते कत शत आछे पापीगण * आसिया आमाते पाप करिबे अर्पण
ताहारा हइया मुक्त जाइबे स्वर्गेते * मुक्त हब आमि प्रभु काहार स्पर्शेते
श्रीहरि बलेन यत वैष्णव अखिले * ताँहारा करिबे स्नान तोमार सलिले
करि आमि वैष्णवेर संगति वासना * वैष्णवेर संगे तुमि हबे पूतमना

---

१ ब्रह्मलोक २ घर के बरतन ३ वंश, पुत्र।

गंग बोध दै केकी-पंखा[१] ❋ दीन भगीरथ अनुपम शंखा
जेहि पथ शंखनाद सुत करई ❋ सोइ मारग सलिला[२] अनुसरई
कह विरञ्चि हे पुण्यकुमारा ❋ तव प्रयास त्रैलोक्य उबारा
मम रथ बैठि समर्थ भगीरथ ❋ मारग चलहु बनावत तीरथ
शंखनाद, स्यन्दन जस बढ़ई ❋ तव अनुगमन गंग तस करई
मंदाकिनि सुरलोक प्रवाहू ❋ अमरपुरी-जन अमित उछाहू
करि असनान भानु-कुल-अंसहिं[३] ❋ अछत[४] दूरबा-दल लै पूजहिं
स्वर्गलोक-जन सुरसरि-नामा ❋ मंदाकिनि कहि करहिं प्रनामा

ऐरावत का अहंकार चूर्ण और चार धाराओं में गंगा का मृत्युलोक में आगमन

तजि विधिलोक भगीरथ संगा ❋ पहुँची सैल-मेरु[५] ढिग गंगा
योजन साठि सहस्र उतंगा[६] ❋ सहस बतीस मूल गिरि शृंगा
सुमन धतूर सरिस तेहि रूपा ❋ ता बिच गह्वर[७] गहन अनूपा
द्वादश बर्ष भ्रमण तहँ कीन्हा ❋ गह्वर-पथ सुरसरि नहिं चीन्हा
अस्तुति करत जोरि जुग पानी ❋ बिलमति कितै गंग महरानी
तव बिन बंस न मोर उधारा[८] ❋ अनुनय करत दिलीप-कुमारा

कहिया गंगाके एइ वाक्य जगत्पति ❋ शङ्ख दिया वलिलेन भगीरथ प्रति
जाह तुमि आगे आगे शङ्ख वाजाइया ❋ जावेन पश्चाते गंगा तोमारे देखिया
विरिञ्च वलेन राजा तुमि पुण्यवान ❋ तोमा हैते तिनलोक पावे परित्राण
आमार ए रथ तुमि लह भगीरथ ❋ चड़िया आगेते तुमि जाह एइ रथ
रथ चड़ि यान आगे शङ्ख बाजाइया ❋ चलिलेन गंगा तार पाछु गोड़ाइया
स्वर्गवासी आसि करे गंगाजले स्नान ❋ भगीरथेर माथाय देय दूर्व्वाधान
आदिकाण्ड कृत्तिवास करिल बाखान ❋ स्वर्गेते गंगार हैल मन्दाकिनी नाम

ऐरावतेर अहंकार चूर्ण ओ चारि धाराय गंगार मर्त्य आगमन

ब्रह्मलोके ह'ते गंगा आने भगीरथ ❋ आनिया मिलेन गंगा सुमेरु पर्व्वत
सुमेरुर चूड़ा षाटि सहस्र योजन ❋ वत्रिश सहस्र तार गोड़ाय पत्तन
एइ आदि कहिलाम एइ तार मूल ❋ सुमेरु पर्व्वत येन धूतुरार फूल
तार मध्ये आछे एक दारुण गह्वर ❋ भ्रमेन ताहाते गंगा द्वादश वत्सर
गंगार ना पाय देखा नाहि कोन पथ ❋ जोड़हाते स्तुति करे राजा भगीरथ
सुमेरुते हइल तोमार अवतार ❋ ना करिले गंगा मम वंशेर उद्धार

१ मयूरपंखधारी भगवान् २ गंगा ३ भानुकुल में उत्पन्न भगीरथ को ४ अक्षत, चावल ५ मेरु पर्वत ६ ऊंचा ७ खोह, विवर ८ उद्धार।

तात सुमेरु पंथ अवरोधा * सफल करौं किमि तव अनुरोधा
ऐरावत मतंग जो आवै * दन्त चीरि गिरि पंथ बनावै
सोइ निकास मम होय प्रवाहू * चले भगीरथ जहँ सुरनाहू

दो० ब्रह्मलोक सों अवतरी, करि पुनीत सुरधाम।
जिमि सुमेरु-गह्वर रुकी, धारा गंग ललाम ॥ ३६ ॥

गाथा सकल इन्द्र सन वरनी * केहि विधि प्रगति करै जगतरनी
ऐरावत पठवौ मम संगा * पर्वत फोरि देय पथ गंगा
इन्द्रायसु चलि अधिपमतंगा[1] * पहुँचेउ जहाँ हेमगिरि शृंगा
अहंकार कुञ्जर[2] मन आवा * मलिन भाव तब सुतहिं जनावा
मम ढिग गंग एक निसि बासा * तौ गिरि भञ्जि मिटावौं त्रासा
विकल भगीरथ सुनि गजबानी * द्रवित नैन काया कुम्हिलानी
मुख न बैन; कित उदधि-मतंगा[3] * करुनमई पूछत इमि गंगा
सुरपति दया न संसय माता * तदपि गजेन्द्र मलिन जिमि बाता
कही, सो बरनौं किमि, अति हीना * सुरसरि बूझि मर्म सब लीना
सुरपुर-सुख उन्माद बिसेसा * दन्तीपति सन कहेउ सँदेसा

गंगा बलिलेन शुन बाछा भगीरथ * जाब आमि कोन दिके नाहि पाई पथ
ऐरावत हस्ती यदि आनिवारे पार * तबे से पर्व्वत हैते पाइ ये निस्तार
ऐरावत पर्व्वत चिरिया देय दाँते * तबे त बाहिर हइ आमि सेई पथे
गंगार चरणे राजा करिया प्रणति * आरबार गेल यथा देव सुरपति
प्रणाम करिया बन्दे जोड़ करि हात * कहिते लागिल कथा इन्द्रेर साक्षात्
ब्रह्मलोक हइते आसिया कोन मते * पड़िया आछेन गंगा सुमेरु पर्व्वते
ऐरावत पर्व्वत चिरिया देय दाँते * तबे त बाहिर हन गंगा सेइ पथे
लहिल आयसु इन्द्र, गेल ऐरावते * आसिया मिलिल सेई सुमेरु पर्व्वते
ऐरावतेर अन्तरे हइल अहङ्कार * कहगे गङ्गा के गिया संवाद आमार
गंगा यदि एक रात्रि वञ्चे मम सने * अव्याहति दिब तबे बन्धन खण्डने
यखन कहिल एइ कथा ऐरावत * म्लान मुखे माथा हेंट करे भगीरथ
मुखे नाहि वाक्य सरे चक्षे बहे जल * दुरु दुरु हिया करे अन्तर विकल
दशा देखि दयामयी जिज्ञासेन ताय * कि हेतु एमन दशा घटिल तोमाय
पारिले कि ऐरावत आनिते हेथाय * कोन दुःखे काँद बापू कह त आमाय
भगीरथ कहे माता करि निवेदन * सुरमणि मनवाञ्छा करिल पूरण
ऐरावत ये कहिल आमार गोचरे * पुत्र हये जननीरे बलिब कि करे

---

१ गजपति ऐरावत २ हाथी (ऐरावत) ३ चारो दिशाओं के सागरों के दिग्गजों के शिरोमणि।

साधि लेय मम वेग-तरंगा ※ सात-रैन[1] निबसौं तेहि संगा
सुनत मोद ऐरावत लीना ※ दन्तप्रहार चारि ढिग[2] कीना
कनकसैल[3] फूटी चौधारा ※ 'भद्रा' नाम उतर[4] पग धारा
'वसु' प्रवही प्राची दिसि सागर ※ पच्छिम जलधि 'श्वेत' लिय डागर[5]
बही अवनि[6] शुचि[7] 'अलकानन्दा' ※ सुत-दिलीप हिय अमित अनन्दा
इत गज विकल प्रवाह प्रचण्डा ※ जल चहुँ भरेउ श्रवण मुख शुण्डा[8]

दो० मातु-मातु कहि, धरनि गिरि, प्रान याचना कीन ।
दलित दर्प इमि दन्तिपति, सुरपुर मारग लीन ॥ ३७ ॥

महादेव के द्वारा गंगा का वेग धारण

सहित कुअँर सुरसरि तजि मेरू ※ चलि कैलास वास शिव केरू
गिरि उतंग[9] सों पात-प्रहारा[10] ※ डगमग धरनि सहत नहिं भारा
बिबस बहेउ जलबेग पताला ※ लखि दिलीप-सुत हाल बेहाला
करहु रसातल मातु प्रवेसू ※ बिन गति, पितर सहहिं मम क्लेसू

गंगा वलिलेन तार बुझिलाम तत्त्व ※ राजभोगे ऐरावत हइयाछे मत्त
यद्यपि आड़ाइ ढेउ से सहिते पारे ※ तार घरे सप्त रात्रि रब बल तारे
भगीरथ एइ कथा कहे हस्तीवरे ※ शुनिया गंगार कथा अपना पासरे
चारिखान करिया पर्व्वत चिरे दाँते ※ चारि धारा हैल गंगा सुमेरु कायाते
वसु भद्रा श्वेत आर अलकानन्दा आर ※ पड़िलेन पर्व्वत हइते चारि धार
वसु नामे गंगा हर पूर्व्वेर सागरे ※ भद्रा नामे सुरधुनी चलिला उत्तरे
श्वेत नामे चलिलेन पश्चिम सागरे ※ गेलेन अलकानन्दा पृथिवी उपरे
मारिलेन एक ढेउ ऐरावतोपरे ※ गेल जल नाक मुखे हाँसफाँस करे
मारिलेन आर ढेउ प्राय गत प्राण ※ हस्ती वले गंगामाता कर परित्राण
मा वलिया हस्ती यदि दाँते खड़ करे ※ राखिलेन आर ढेउ पर्व्वत उपरे
ऐरावत पलाइल पाइया तरास ※ आदिकाण्ड रचिल पण्डित कृत्तिवास

महादेव कर्त्तृक गंगार वेग धारण

भगीरथ सुमेरु हइते गंगा निया ※ कैलास पर्व्वते परे मिलिल आसिया
कैलास हइते पड़े पृथिवी उपरे ※ वसुमती ताँर भारे टलमल करे
वेगवती हये गंगा चले रसातले ※ दाँड़ाइया भगीरथ जोड़ हाते बले
पातालेते हइल तोमार आगुसार ※ केमने हइवे मम वंशेरे उद्धार

---

१ सात रात्रि २ स्थान ३ सुवर्णपर्वत ४ उत्तर दिशा ५ रास्ता ६ पृथ्वी पर ७ पवित्र ८ सूँड़ ९ ऊँचे १० धार के प्रपात की चोट ।

जनि मम वेग सकै छिति धारी ❋ सेवहु सुत समरथ त्रिपुरारी
रोपहिं[1] शम्भु जो मम जल-भारा ❋ तव हित अवनि[2] लेहुँ अवतारा
कियेउ भगीरथ गंग प्रनामा ❋ वर्ष अराधन किय शिवधामा
शिव बहोरि पूछत तप-हेता ❋ बरनी बिथा भानु-कुल-केता
सुरसरि-धार सहति नहिं धरनी ❋ नाथ शीश रोपहु जगतरनी
सुनि शिव नाचत पुलकित अंगा ❋ उमा सुनहु जग प्रगटति गंगा
जटाजूट शिरपञ्च कराला ❋ तहँ प्रवही शुचि धार मराला
द्वादश वर्ष न मारग पावा ❋ केस-महेस विपुल भ्रम छावा
कौतुक लखेउ भानुकुलनन्दन ❋ किय बहोरि गौरीपति-बन्दन
शंकर जटा चीरि पथ दीन्हा ❋ सोइ थल 'हरद्वार' जग चीन्हा
जहँ असनान दान जन करहीं ❋ पुन्य अमित विधि वरनि न सकहीं
विलग धार अेक बही पताला ❋ 'भोगवती' तेहि नाम विशाला

दो० संग भगीरथ पुनि चली, बही त्रिवेनी तीर ।
गंगा-यमुना-सरस्वति, संगम जहँ शुचि नीर ॥ ३८ ॥

गंगा बलिलेन बापू शुनह वचन ❋ धरित्री आमार वेग ना सबे कखन
शिव यदि आसिया बहेन जलधार ❋ तबे पारि क्षितिते हइते अवतार
गंगार चरणे पुनः करिया प्रणति ❋ आरबार गेल यथा देव पशुपति
एक वर्ष करिल शिवेर आराधन ❋ बलेन महेश पुनः एले कि कारण
भगीरथ बले गंगा दिल नारायण ❋ पृथिवी धरिते वेग ना पारे कखन
तुमि यदि आसि शिरे धर जलधार ❋ पृथिवीते हय तबे गंगा अवतार
गौरीर सहित तबे नाचे त्रिलोचन ❋ तोमा हैते पाब आजि गंगा दरशन
पातिलेन पञ्चानन पञ्चशिर सुखे ❋ पतितपावनी गंगा पड़ेन कौतुके
शिवेर माथाय जटा बड़ भयङ्कर ❋ बेड़ान जटार मध्ये द्वादश वत्सर
भगीरथ बलेन मा ए कि व्यवहार ❋ आमार केमने हबे वंशेर उद्धार
गङ्गा बलिलेन बापू शुन भगीरथ ❋ जटा हैते बाहिर हइते नाहि पथ
भोलानाथ बलिया डाकेन जोड़ हाते ❋ ध्यान भंग हइया चाहेन विश्वनाथे
महेश चिरिया जटा दिलेन गंगार ❋ सेइ खाने तीर्थ ये हइल हरिद्वार
जेइ नर स्नान दान करे हरिद्वारे ❋ तार पुण्य सीमा ब्रह्मा कहिते ना पारे
एक धारा गेल गंगा पाताल मण्डले ❋ भोगवती ब'ले नाम हैल रसातले
पश्चाते चलेन गंगा भगीरथ आगे ❋ आसि गंगा मिलिलेन त्रिवेणीर भागे
भगिनि यमुना गंगा आर सरस्वती ❋ नामेते त्रिवेणी तिन धारा युक्तगति

---

१ रोकें २ पृथ्वी ।

तीरथराज प्रयाग सुहावन ❊ मकर-नहान स्वर्ग-पथ पावन
शंख-घोष रविकुल-सुत आगे ❊ बारानसी-भाग पुनि जागे
काशी-थल जहँ शुचि सुरधारा ❊ महिमा चित दै सुनहु अपारा
एक दिवस द्विज बधेउ त्रिलोचन ❊ पातक तासु लखात न मोचन
गौरि गनेश षडानन चिंता ❊ किमि अघ-मुक्त होयँ भगवन्ता
ब्रह्मघात किमि उतरइ माथा ❊ उमा कही शिव सन, हे नाथा !
बिहँसि कहेउ शिव, लखु मन्दाकिनि ❊ बसति अवनि जो पाप-बिनासिनि
उमा, उमापति वृष असवारी ❊ सुरसरि ढिग यातरा[1] सँवारी
कुस परसत सो बिनसेउ पापा ❊ कहत शंभु लखु गंग-प्रतापा
पञ्चकोस सीमित करि धामा ❊ बारानसी छेत्र सरनामा
जहँ तन तजे लहै शिवलोका ❊ मिटैं सकल भव दारुन सोका
दिवस एक तहँ बिलमि बिरामा ❊ सुरसरि सहित कुँअर तजि धामा
शंखघोष, पुनि पथ गहि लीना ❊ सोइ सुरधुनी[2] अनुगमन कीना
पर्नकुटी बिच-पंथ सुहाई ❊ जहँ तप करत जह्नु मुनिराई
भइ जलमगन कुटी, मुनि ध्याना ❊ भयेउ भंग, किय सुरसरि पाना
तब लौं दीठि भगीरथ डारी ❊ लुप्त गंग, जनि कतौं[3] निहारी

प्रयागे मकरे जेइ नर स्नान करे ❊ मुक्त ह'ये सर्व्वपापे जाय स्वर्गपुरे
भगीरथ आगे जाय शङ्ख बाजाइया ❊ वाराणसी पुरे गंगा उत्तरिल गिया
मन दिया शुन वाराणसीर आख्यान ❊ वाराणसी तीर्थ जाहे हइल निर्म्माण
काटिलेन एक काले हर द्विज माथा ❊ ब्रह्महत्या पाप तार ना हय अन्यथा
चापिलेक ब्रह्महत्या गिरीशेर काँधे ❊ कार्त्तिक गणेश आर कात्यायनी काँदे
गौरी कन केन वा काटिले विप्रमाथा ❊ ब्रह्मवध हइले के करिबे अन्यथा
गौरीर शुनिया कथा शिव हासि भाषे ❊ पृथिवीते गेल गंगा कत पाप नाशे
वृषभे चापिया तवे शङ्करी शंकर ❊ दाँड़ाइल सुरधुनी तीरेते सत्वर
कुशाग्रे करिया हर कैल परशन ❊ ब्रह्महत्या पाप ताँर हैल विमोचन
बलेन धूर्ज्जटी देख परीक्षा गंगार ❊ पञ्च क्रोश युड़ि हर देन गण्डी तार
सेइ पञ्चक्रोश तीर्थ नाम वाराणसी ❊ ताहाते छाड़िले तनु शिवलोके बसि
एक रात्रि गंगा तथा करि अवस्थान ❊ करिलेन भगीरथ सहित प्रस्थान
भगीरथ आगे जान शङ्ख बाजाइया ❊ जह्नुर निकटे गिया मिलिल आसिया
पाता लता कृत जह्नु मुनिर कुटीर ❊ गंगास्रोते भेसे जाय प्लावि दुइ तीर
चक्षु मेलिलेक मुनि भांगिलेक ध्यान ❊ गण्डुष करिया सब जल करे पान
कत दूरे गिया भगीरथ फिरे चाय ❊ कोथा गेल गंगादेवी देखिते ना पाय

---

१ यात्रा २ गंगा ३ किसी भी जगह।

दो० बट तर जह्नु मुनीस लखि, पूछी अवध नरेस ।
कस कौतुक? संसय अतिव, मेटहु मोर कलेस ॥ ३६ ॥

उचित न केहु बिधि गंग-अचारा[1] ❋ नासेउ मम आश्रम निज धारा
सुरसरि पान कीन सोइ कारन ❋ लावहु टेरि बिधातहिं राजन्[2]
सुनत महीप व्याप अति त्रासा ❋ दोउ कर विनय करत मुनि पासा

काण्डार मुनि का वैकुण्ठगमन

तुम बिधि, बिष्णु, तुमहिं त्रैलोचन ❋ तव महिमा-गुन जानत को जन
सगर-तनय जे साठि हजारा ❋ कपिल-अनल बिनसे जरि छारा
उदर न मुक्त गंग मुनि करहीं ❋ तौ मम पितर न सद्गति लहहीं
ब्रह्मकोप नहिं थिर अतिकाला ❋ मुदित जह्नु कह सुनु महिपाला
पुनि मुख निसरि[3] गंगजल आवै ❋ तौ उच्छिष्ट ! निरादर पावै
दच्छिन जानु[4] चीरि मुनि ज्ञानी ❋ प्रगट कीन इमि सुरसरि रानी
नाम 'जाह्नवी' भगवति लोका ❋ लहत हरहिं भव-तन-मन सोका
मुनि काण्डार शापवश जाना ❋ नहिं त्रिभुवन पातकी समाना

अकस्मात् गंगादेवी गेल कोन खाने ❋ देखे मुनि बटतले बसियाछे ध्याने
जह्नुरे जिज्ञासे भगीरथ जोड़ हात ❋ गंगा मोर केवा निल पथे अकस्मात्
बलिलेन मुनि शुन राजा भगीरथ ❋ आनिते गंगारे तव नाहि छिल पथ
मम घर भांगे गंगा केमन आचार ❋ गिया कह भगीरथ निकटे ब्रह्मार
आनगिया देखि ब्रह्मा मम किवा करे ❋ गण्डुष करिया गंगा रेखेछि उदरे
मुनिर वचन शुनि लागिल तरास ❋ आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

काण्डार मुनिर बैकुण्ठे गमन

जोड़ हाते भगीरथ करेन स्तवन ❋ तुमि ब्रह्मा तुमि विष्णु तुमि त्रिलोचन
तोमार महिमा गुण जाने कोनजन ❋ मनुष्य शरीरे तव कि जानि स्तवन
सगर राजार षाटि हाजार तनय ❋ कपिलेर शापेते हइल भस्ममय
तोमार उदरेते गंगार अवतार ❋ आमार वंशेर किसे हइबे उद्धार
ब्राह्मणेर कोप नाहि थाकये कखन ❋ कृपाते बलेन तारे जह्नु तपोधन
मुख हइते बाहिर करिले गङ्गाजल ❋ उच्छिष्ट बलिया तबे घुषिबे सकल
चिरिल दक्षिण जानु सेइ क्षणे मुनि ❋ जानु दिया बाहिर हइल सुरधुनी
छिलेन किञ्चित् काल जह्नुर उदरे ❋ जाह्नवी बलिया ख्यात हइल संसारे
गंगामाता शुनि शापभ्रष्ट सेइ खाने ❋ उत्तर वाहिनी हैया जान सेइ खाने

१ आचरण, २ यह व्यंग्य है ३ निकलकर ४ जाँघ ।

बसत पाप-रत गनिका-धामा ※ मोह-काम कर फन्द ललामा
कानन काठ लेन सो गयऊ ※ तहँ मुनि-प्रान व्याघ्र हरि लयऊ
लै यमदूत चले यमलोका ※ मांसपिण्ड केहरि[1] अवलोका[2]
अस्थि अरण्य[3] शेष जहँ डारी ※ तहाँ उतर दिसि गंग पधारी
पुन्य सलिल वन कियेउ प्रकासा ※ उड़ेउ अस्थि लै काक अकासा

दो० निरखि चील्ह अेक लोभबस, अभिरी[4] वायस[5] संग ।
अस्थि हेत सुरसरि उपर, जूझत दुहू विहंग ।। ४० ।।

तजी अस्थि वायस भय पाई ※ दैव-योग सुरधुनी[6] समाई
परसत जल काण्डार अपावन ※ चौभुजरूप भयेउ सो पावन
गयेउ लोक जहँ हरि अभिरामा ※ यमकिंकर[7] भाजे यमधामा
रोय कथा यमराज बुझाई ※ मुनि पातकी बन्दि जिमि लाई
तासु पापमय जीवन वरना ※ लहेउ अन्त सो किमि हरि-चरना
दुसह लाज ! नहिं काज हमारा ※ सुनि यम चकित स्वर्ग पग धारा
गहि पदपंकज-विष्णु पुनीता ※ यम वरनी जिमि भई अनीता[8]
कानडार पातकी अपावन ※ अधम विदित सो,जग मनभावन!

काण्डार नामेते मुनि छिल एक जन ※ तार तुल्य पापी नाइ ए तिन भुवन
जन्मावधि सेइ मुनि वेश्या सेवा करे ※ तार वशीभूता हैया थाके तार घरे
काष्ठ काटिवारे गियाछिल से कानन ※ धरिया व्याघ्रेते तार वधिल जीवन
यमदूत आसि तारे करिया बन्धन ※ लइया चलिल तारे यमेर भवन
व्याघ्रेते सकल मांस गेल त खाइया ※ वनेर मध्येते अस्थि रहिल पड़िया
काकेते लइया जाय गंगा मध्य दिया ※ हेन काले सञ्चान से काकेरे देखिया
जाय पक्षी महावेगे काके खेदाइया ※ गंगा दिया जाय काक भये पलाइया
दुइजने तारा तथा जड़ाजड़ि करे ※ दैवयोगे अस्थि सेइ गंगा नीरे पड़े
करिल यखन अस्थि गंगा परशन ※ चतुर्भुज हइया से चलिल ब्राह्मण
हेन काले नारायण बैकुण्ठे थाकिया ※ काड़िया निलेन यमदूतेरे मारिया
काँदिते काँदिते सव यमेर किङ्कर ※ जिज्ञासा करिते गेल यमेर गोचर
विषय छाड़िनु प्रभु आर नाहि काज ※ आजि बड़ यमराज पाइलाम लाज
काण्डार नामेते पापी त्रिभुवने जाने ※ बैकुण्ठे ताहारे हरि निलेन कि ज्ञाने
यमराज रोषे शुनि दूत याहा भाषे ※ जिज्ञासा करिते गेल श्रीहरिर पाशे
काँदिते लागिल यम धरि प्रभु पाय ※ विषय छाड़िनु नाहि विषयेर दाय

१ सिंह २ देखा ३ वन ४ गुंथ गयी ५ कौआ ६ गंगा में ७ यम के दूत ८ नीति के विरुद्ध, अन्याय ।

पापिन पर यम-चिरअधिकारू * प्रभु छीनेउ सो किमि अविचारू
पाप-पुन्य कर एकहि भोगू * तौ यम-शासन कर कित योगू?
हँसि हरि कही सुनहु यमराया * रहत गंग किमि पातक-छाया ?
महिमा अकथ अमित शुचि धारा * जतक[1] दूर ताकर विस्तारा
दण्डपाणि कहु, बस नसि जाई * जाहु समीप न, मोर दुहाई
करि शवदाह अस्थि जल-शयना * चौभुज जीव लहै मम अयना[2]
बसै तीर गंगोदक पाना * प्रानी सो मम रूप समाना
बरजौ दूत, न पग तहँ डारैं * ते मम जन, मम आन[3] विचारैं

दो० यम-प्रबोध इमि, उत सुखद, महिमा जासु अपार
गौड़ देश पावन करत, बही गंग शुचि धार ।। ४१ ।।

सगर-वंश उद्धार

पूरुब जात 'पद्म' मुनिनाथा * भागीरथी चलीं तिन साथा
मम अकाज पूरुब दिसि जाये * विनय भगीरथ मातु सुनाये
चली फेरि शुचि प्रबल तरंगा * भागीरथी भगीरथ संगा
बही धार इक तजि जग-तरनी[4] * पद्मावती[5] पद्म[6] अनुसरनी

पापीर उपरे मोर चिर अधिकार * आजि केन ताहार हइल अविचार
काण्डार ब्राह्मण पापी विदित संसारे * आनिलेन कोन गुणे बैकुण्ठे ताहारे
शुनिया यमेर कथा हरि हासि कय * गंगा यथा तथा कभु पाप नाहि रय
गंगार महिमा कत कि बलिते जानि * मन दिया शुन तबे कहि दण्डपाणि
यत दूरे जाइबेक गंगार वातास[7] * आमार दोहाई यदि जाओ तार पाश
पुड़े मरे अस्थि लैया फेले गंगोदके * चतुर्भुज हैया सेत' आसिबे गोलोके
गंगातीरे थाकि गंगाजल करे पान * से शरीर जान तुमि आमार समान
निषेध करह यत दूतेरे तोमार * यदि जाओ सेइ स्थाने दोहाइ आमार
शुनिया प्रभुर कथा शमनेर त्रास * आदिकाण्ड रचिल पण्डित कृत्तिवास

सगरवंश-उद्धार

काण्डारेर प्रति गंगा मुक्तिपद दिया * गौड़ेर निकटे गंगा मिलिल आसिया
पद्म नामे एक मुनि पूर्व्वमुखे जाय * भगीरथ भावि गंगा पश्चात् गोड़ाय
जोड़हात करिया बलेन भगीरथ * पूर्व्व दिक जाइते आमार नाहि पथ
पद्ममुनि लये गेल नाम पद्मावती * भगीरथ सङ्गेते चलिल भागीरथी

---

१ जितनी २ धाम ३ मर्यादा, लीक ४ गंगा ५ बंगाल में प्रसिद्ध नदी
६ पद्म मुनि ७ वायु ।

गंग दीन पद्महिं पुनि शापा * तासु-नीर जनि मेटइ पापा
प्रथम कछुक पुनि भैरव[1] वाहिनि * पुनि भइँ मातु उदधि-अनुगामिनि
मंदाकिनि कर दरस पुनीता * करैं शंखध्वनि देव सप्रीता
शंखघोष, मज्जन जे करहीं * अयुत वर्ष सुरपुर नर लहहीं
कीन्ह समोद इन्द्र असनाना * इन्द्रेश्वर† प्रसिद्ध अस्थाना
इन्द्रेश्वर जो घाट सुपावन * स्वर्गदैन सब पाप नसावन
द्रुतगति[2] चली सरित[3] जगमाया * 'मेढ़ा' चढ़ि भेंटे द्विजराया
मेड़ातला† नाम सोइ कारन * थल प्रसिद्ध पातकी उबारन
मुदित महीप चले कछु आगे * भाग तबै 'नदिया'[4] के जागे
सप्तद्वीप† बिच श्रेष्ठ सुठामा * नवद्वीप† सुरसरि विश्रामा
रैन निवसि पुनि सप्तग्रामा† * पहुँची शुचि प्रयाग सम धामा
दछिन महेश† गंग पगु धारा * परसत अगनित घाट-विहारा

दो० तव संगति कत[5] वर्ष गत, कतक[6] दूर तव देश ।
कहहु भगीरथ भसम कहँ, सन्तति-सगरनरेस ? ।। ४२ ।।

शापवाणी सुरधुनी दिलेन पद्मारे * मुक्ति केह तव नीरे पाबे ना संसारे
एक बार गेल गंङ्गा भैरववाहिनी * आरबार फिरिलेन सागरगामिनी
अजय गंगार जल हइल दर्शन * शंखध्वनि करेन यतेक देवगण
शंखध्वनि घटे येवा नर स्नान करे * अयुत वत्सर सेइ थाके स्वर्गघरे
गंगा लये भगीरथ चलिल सत्वर * निमिषेते आइलेन नाम इन्द्रेश्वर
गंगाजले यथा इन्द्र करिलेन स्नान * इन्द्रेश्वर वलि नाम हइल से स्थान
इन्द्रेश्वर घाटे येवा नर स्नान करे * सर्व्वपापे मुक्त हये जाय स्वर्गपुरे
चलिलेन गंगा माता करि बड़ त्वरा * मेड़ातला नाम स्थाने यान सरिद्वरा
मेड़ाय चड़िया वृद्ध आइल ब्राह्मण * मेड़ातला वलि नाम एइ से कारण
गंगारे लइया जान आनन्दित हैया * आसिया मिलिला गंगा तीर्थ जे नदीया
सप्तद्वीप मध्ये सार नवद्वीप ग्राम * एक रात्रि गंगा तथा करिल विश्राम
रथे चड़ि भगीरथ यान आगुयान * आसिया मिलिल गंगा सप्तग्राम स्थान
सप्तग्राम तीर्थ जान प्रयाग समान * सेखान हइते गंगा करेन प्रयाण
आकना महेश गंगा दक्षिण करिया * विहारोदेर घाटे गंगा उत्तरिल गिया
गंगा बलिलेन वापू शुन भगीरथ * कत दूरे तोमार देशेर आछे पथ
भ्रमितेछि कत वर्ष तोमार संहति * कोथा आछे भस्ममय सगर-सन्तति

१ एक पवित्र स्थान २ तीव्र गति से ३ सरिता, नदीप ४ नवद्वी ५ कितने ६ कितनी । † चिह्नित स्थल बंगाल के भगीरथी तट पर स्थित पुनीत स्थानों के नाम हैं।

दछिन-पुरुब बिच देश सुहावन * जहाँ कपिल मुनि आश्रम पावन
भस्म-पितर मम तहँ अनुमाना * जननी-कथन सुनेउँ अस काना
सुनत शतमुखी होइ सुरधारा * बही, क्षार जहँ सगर-कुमारा
परसि गंग चौभुज तनु पाये * सगर-तनय सुरपुरहिं सिधाये
बसेउ सुवन इक जल-अधिकारी * शेष धाम-हरि मंगलकारी
निरखु भगीरथ! प्रवर[1] तिहारे * सकल मुक्त, सुरधाम सिधारे
बंस-मुक्ति धनि सफल मनोरथ * प्रनवति पुनि पुनि गंग भगीरथ
जाहु देस सुत बंस-उजागर * मैं अब मिलौं भेंटि उर सागर
'गंगासागर' तीर्थ महाना * संगम करहिं दान असनाना
अमित पुन्य, पातक सब छीना * लहहिं स्वर्ग हरिपद आधीना
सुरसरि अवनि[2] भगीरथ लाई * मुक्ति-दैनि जग पाप नसाई

गंगा-प्रार्थना

आई सुचि[3] सलिल मातु सन्तन सुखकारी ।।
सुरधुनी गंगा नाम, प्रगटी सो धरा धाम,
तीनि भुवन जासु नाम, मंगल जयकारी ।। आई० ।।
सुरनर मुनि तारिनि जो, पाप ताप हारिनि जो,
संकट निवारिनि जो, कलियुग अवतारी ।। आई० ।।

भगीरथ बले पड़े मने ये आमार * पूर्व्व ओ दक्षिण दिक मध्यस्थाने तार
जेइखाने आछिल कपिल महामुनि * सेइ खाने मम वंश मातृ मुखे शुनि
एइ कथा येखाने गंगारे राजा बले * हइलेन शतमुखी गंगा सेइ स्थले
आछिल सगर-वंश भस्मराशि हैया * बैकुण्ठे चलिल सबे गंगाजल पाइया
एक जन रहिल जलेर अधिकारी * आर सब गेल स्वर्गे चतुर्भुजधारी
हस्त तुलि गंगा भगीरथेरे देखान * ओई तव वंश देख स्वर्गवासे यान
वंश मुक्ति हइल देखिया भगीरथ * गंगा ते प्रणाम करि पूर्ण मनोरथ
गंगा बले देशे जाओ राजार नन्दन * सागरेर संगे आमि करिबे मिलन
महातीर्थ हइल से सागर संगम * ताहाते यतेक पुण्य नाहि व्यतिक्रम
गंगासागरे ये नर करे स्नान दान * सर्व्वपापे मुक्त ह'ये स्वर्गे पाय स्थान
गंगा आनि लोक मुक्त कैल भगीरथ * कृत्तिवास पण्डितेर कवित्व महत्

गंगार महिमा

सुरधुनी गंगा नामे, आइलेन धरा धामे, ए तिन भुवने प्रतिकार ।
सुर नर निस्तारिणी, पाप ताप निवारिणी, कलियुगे हन अवतार ।।

---

१ पूर्वज (सगरनन्दन) २ पृथ्वी पर ३ पवित्र ।

धन्य धन्य बसुन्धरी, सुरसरि नित जहाँ सरी,
धनि धनि हे क्षेमकरी, भव-तम उजियारी ।। आई० ।।
योजन शत पूत[१] धार, गंगे, गंगे पुकार,
दरसि परसि पुन्यवारि, सुरपुर अधिकारी ।। आई० ।।
कूजत तहँ पच्छिवृन्द, वरनौं किमि सो अनन्द,
बिलसत फल-फूल-कंद, पियत सुधा वारी ।। आई० ।।
भूपन के जे भुआल, बाँधे कुञ्जर[२] विसाल,
तेऊ लखि हैं निहाल, खगन मोद भारी ।। आई० ।।
सेतुबंध, नीलाचल, द्वारिका, वदरिका थल,
कासी, मथुरादि विमल नगरी सुचि सारी ।। आई० ।।
तीरथ मनभावन जे, विष्णु सरिस पावन जे,
अति महान ताहू ते सुरसरि महतारी ।। आई० ।।

सौदास राजा का आख्यान

दो० बीते वर्ष सहस्र सठ, सुरसरि लाये भूप ।
पहुँचि अवध पुनि प्रजागन, पालत सुत अनुरूप ।। ४३ ।।

लहि 'सौदास' जनम युवराजू ❊ मुदित नृपति सह अवध समाजू
सासन सौंपि सुवन नृप धीरा ❊ बसे भगीरथ सुरसरि तीरा
बीते दिवस, काटि भवफंदा ❊ लहेउ सरित-तट मुकुति अनन्दा

धन्य धन्य बसुमती, याहाते गंगार गति, धन्य धन्य कलियुग सार ।
शतेक योजन थाके, गंगा गंगा बलि डाके, शुने यमे लागे चमत्कार ।
पक्षिगण थाके यत, गंगातीरे कब कत, करे सदा गंगाजल पान ।
दूरे राज चक्रवर्त्ती, यार आछे कोटी हस्ती, सेइ नहे पक्षीर समान ।।
काशी गया नीलाचल, द्वारका मथुरा स्थल, रामेश्वर बदरिकाश्रम ।
ए सब यतेक तीर्थ, विष्णुर सम महत्त्व, सर्व्व तीर्थ गंगा सर्वोत्तम ।।

सौदास राजार उपाख्यान

गंगाहेतु गेल षाटि हाजार वत्सर ❊ पुनर्ब्बार गेल राजा अयोध्या नगर
राजा हैया करिलेन प्रजार पालन ❊ हइल सौदास नामे ताहार नन्दन
अयोध्याते करिलेन राजत्व सौदास ❊ भगीरथ करिलेन गङ्गातीरे वास
किछु काल भगीरथ भागीरथी तटे ❊ थाकिलेन मुक्त ह'ये संसार सङ्कटे

१ पवित्र २ हाथी ।

करि सौदास श्राद्ध पितु तर्पन ※ बहु बिधि दान द्विजन करि अर्पन
पावन चरित तासु सुनि ध्याना ※ तन सुचि होइ, मिटहिं अघ[1] नाना
दिवस एक मृगया[2] कर साजा ※ हेरत चहुँ वन-वन मृग राजा
दनुज एक तहँ भामिनि साथा ※ उतरेउ जहाँ भानुकुल नाथा
तजि निसिचर-तन व्याघ्र सरूपा ※ करत केलि तहँ माया रूपा
लखि सार्दूल[3] हनेउ नृप बाना ※ मुग्धकाल पसु त्यागेउ प्राना
हनेउ केलि-रत पति, केहि दोषा ※ विकल कहेउ निसिचरी सरोषा
दारुन कोप ब्रह्म कर शापा ※ परहु फन्द भुगतहु नृप ! पापा
करि कुभाष निसिचरी सिधारी ※ चले नगर तन भूप दुखारी
गुरु प्रिय परिजन सुहृद बुलाई ※ मुनि बशिष्ठ सन कथा सुनाई
अश्वमेध नर पातक मोचन ※ शास्त्र वचन इमि कहत तपोधन
सोइ सौदास याग संपन्ना ※ सुरभि दान वसनादिक अन्ना
द्विज गृह गमन, तोष भूपाला ※ इत चिन्तित निसिचरी कराला

दो० वचन अकारथ मोर कस, तजेउ दानवी रूप ।
पुनि बशिष्ठ सम रूप धरि, प्रगटी सम्मुख भूप ।। ४४ ।।

करिलेन राजार श्राद्धतर्पण सौदास ※ ब्राह्मणेरे दिल दान यत यार आश
मन दिया शुन राजा सौदास चरित्र ※ शुनिले ये पापक्षय शरीर पवित्र
एक दिन गेल राजा मृगया कारण ※ मृग लागि फिरे राजा घुरे सारा वन
आइल राक्षस एक संगे जाया निया ※ सौदासेर काछे उत्तरिल से आसिया
छाड़िया राक्षसरूप व्याघ्ररूप धरे ※ दुइ जने प्रभासेर तीरे केलि करे
हेन काले सौदास से शार्दूल देखिया ※ शृंगारेर काले तीरे मारिल विन्धिया
सेइ काले राक्षसी राजार प्रति कय ※ विना दोषे स्वामी मार शृंगार समय
परिणामे जानिबे हइबे यत पाप ※ महापाप भुञ्जिबे हइबे ब्रह्मशाप
एतेक बलिया ये राक्षसी गेल वन ※ मनोदुःखे घरे राजा करिल गमन
पात्रमित्रगणे राजा करिल आह्वान ※ बशिष्ठ मुनिरे आगे करिल सम्मान
मुनिरे कहिल राजा सब विवरण ※ एइ पाप केमने हइबे विमोचन
पुरोहित बशिष्ठ अनुज्ञा प्रमाणे ※ अश्वमेध करिलेन शास्त्रेर विधाने
यज्ञ पूर्ण दिल राजा दक्षिणा यखन ※ बिदाय हइया तबे गेल सर्व्वजन
हेन काले से राक्षसी भावे मने मन ※ मम वाक्य व्यर्थ हबे जानिल कारण
आपन राक्षसरूप दूरे तेयागिया ※ बशिष्ठ मुनिर रूप धरिया आसिया

१ पातक २ शिकार ३ सिंह ।

सामिष[1] नृपति! करावहु भोजन * मुनि-आयसु सुनि कहेउ यशोधन
अर्जित[2] अश्वमांस मन लावहु * करि असनान-ध्यान गुरु आवहु
तौलौं तासु रुचिर परिपाका * होइ, कहत रवि-वंश-पताका
तजि निशिचरी छद्म गुरु-वेषा * पुनि गृहपाक[3] विप्र धरि वेषा
भूपति अबुध, दनुजि छल कीन्हा * रंधि[4] मांस-मानव धरि दीन्हा
इत, नृप गुरु सन्मानि बुलावा * छल न ज्ञात, दोउ परे भुलावा
परसि मांस-मानुष विष बोई * मायाविनी लोप भइ सोई
लखि उपहास मुनिहिं संतापा * होहु ब्रह्मराकस दिय शापा
मैं निर्दोष शाप किमि दीन्हा * लै जल मुनिहिं भस्म चह कीन्हा
धरत ध्यान मुनि कौतुक जाना * जिमि निसिचरी रचेउ छल नाना
इत सौदास-रानि दमयंती * नृपहिं निषेध कीन सतवंती
उदय दनुज-बध-फल शुभकेतू * तजहु न शाप-नीर गुरु-हेतू
क्रोध शमन, सोचत मन राऊ * अभिमंत्रित जल अमित प्रभाऊ
सुरपुर नीर तजे सुर-त्रासा * नागलोक तजि नाग-विनासा

सौदास राजार काछे कहिल वचन * मोरे मांस भोजन कराओ यशोधन
राजा वले अश्व मांस करि आहरण * खाइवारे सेइ मांस गेल तव मन
स्नान संध्या करिया आइस महामुनि * एइ मांस कराइव रन्धन एखनि
वशिष्ठेर रूप से दुरे ते तेयागिया * पाचक विप्रेर वेश धरिया आसिया
मनुष्येर मांस लैया करिल रन्धन * बशिष्ठके डाके राजा करिते भोजन
यजमान वाक्य मुनि लङ्घिते ना पारे * हइलेन उपस्थित रन्धन आगारे
वसिलेन मुनि तवे करिते भोजन * राक्षसी मनुष्य मांस दिल ततक्षण
थाल कोले थुइया राक्षसी गेल घरे * देखिया मुनिर क्रोध बाड़िल अन्तरे
मनुष्येर मांस दिया कर उपहास * तुमि ब्रह्मराक्षस ये हओ हे सौदास
एत यदि श्री वशिष्ठ मुनि शाप दिल * मुनिरे शापिते राजा हाते जल निल
नहि आमि दोषी शाप दिला अकारणे * एइ जले भस्म करि पोड़ाब एक्षणे
राक्षसी राजार शाप शुनिया तखनि * घर हैते पलाइल चलिल आपनि
ध्यान करि जानिल वशिष्ठ तपोधन * राक्षसी आसिया मांस मागिल भोजन
मुनिके दिवारे शाप राजा जल निल * तारे दमयन्ती नारी निषेध करिल
क्रोध सम्बरिया राजा भावे मने मन * कोन स्थाने एइ जल थुइब एखन
स्वर्गे यदि थुइ तवे मरे देवगण * यदि फेलि नागपुरे नागेर मरण

१ मांसयुक्त २ (अश्वमेध यज्ञ द्वारा) प्राप्त किया हुआ ३ रसोई में ४ पकाकर।

शस्य[1] नष्ट छिति, नृप भय पाये ※ निज पद जल तजि पाँव जराये
युगुल पाँव भूपति निज जारे ※ जग कल्माषपाद विस्तारे

सो० पूछत बिकल नरेस, बहुरि धाय गुरुचरन धरि ।
ब्रह्मराकसी वेस, तजि कब लौं पावहुँ मुकुति ॥ ४५ ॥

कह बशिष्ठ नृपवर धरु धीरा ※ ग्यारह वर्ष विगत गत पीरा
दरस गंग पावहु तेहि काला ※ मिटहि शाप तजु योनि कराला
ब्रह्मराकछस भयेउ नरेसा ※ द्विजन भच्छि भरमत दिग्देसा
शाप-अवधि बीती जेहि काला ※ बिन अहार दिन तीनि भुआला
सिथिल,बिलमि[2] जहँ सुथल 'प्रभासा'※बिटप मूल किय कछुक निवासा
क्षुधित[3] भूप तहँ लखेउ सुपासा ※ तेहि तरु ब्रह्म-दैत्य कर वासा
पूँछत दैत्य कवन तैं प्रानी ※ कस मम विटप वास अज्ञानी
क्षुधा ज्वाल अति उदर कराला ※ भच्छहुँ तोहिं इमि कहेउ भुआला
राकस-दैत्य युगुल भटभेरा[4] ※ मल्लयुद्ध षट मास घनेरा
कोउ न न्यून, नहिं मानत हारी ※ पुनि भे सुहृद दोऊ तजि रारी[5]
सखा सुनहु, कह दैत्य सप्रीता ※ मम वरदत्त सुनाम अतीता[6]

पृथिवी ते फेलिले शस्य सब जाय ※ सेइ जल फेले राजा आपनार पाय
राजार पुड़िये गेल दुखानि चरण ※ राजार कल्माषपाद नाम से कारण
वशिष्ठ बलेन शाप दिनु नृपवर ※ राक्षस हइया थाक एगारे वत्सर
लोटाय धरिया राजा बशिष्ठ चरण ※ कत दिने हबे मम शाप विमोचन
मुनि बले पावे जबे गंगा दरशन ※ तबेइ तोमार पाप हइबे मोचन
सौदास भूपति ब्रह्मराक्षस हइया ※ देशे देशे नित्य फिरे ब्राह्मणे खाइया
एगार वत्सर पूर्ण हइल यखन ※ तिन दिन आहार ना मिलिल तखन
उत्तरिल गिया राजा प्रभासेर कूले ※ श्रमयुक्त हइया बसिल वृक्षमूले
क्षुधाय अज्ञान राजा वृक्ष ये ने पारे ※ एक ब्रह्मदैत्य आछे सेइ वृक्षडाले
ब्रह्मदैत्य बले ओहे तुमि केन हेथा ※ मम स्थान तुमि निले आमि जाव कोथा
शुनिया ताहार कथा सौदास हासिल ※ ब्रह्मदैत्य देखि एटा खाइते आइल
ब्रह्मदैत्य राक्षसे विवाद दुइजने ※ छय मास मल्लयुद्ध करिछे एमने
दुइजन युद्धे सम न्यून नहे केह ※ मित्रता करिया परस्पर करे स्नेह
सर्व्व दुःख दुइजन क्रेन प्रकाश ※ बशिष्ठ शापिल मोरे बलेन सौदास
ब्रह्मदैत्य बले मित्र शुन विवरण ※ वरदत्ता नामे आमि छिलाम ब्राह्मण

---

१ धान्य, फ़सल २ ठहरकर ३ भूखा ४ झुरमुट, गुत्थम-गुत्था ५ युद्ध
६ शापवश ब्रह्मदैत्य होने से पूर्व का मेरा नाम 'वरदत्त' था ।

गुरुगृह वेद पढ़ेउँ बहु काला ※ तासु दच्छिना वचन न पाला
लखि उपहास, शाप गुरु दीना ※ दिय मोहिं ब्रह्मदैत्य गति हीना
पुनि गुरुद्रवित[1] कहेउ, द्विजनन्दन! ※ परसि गंग कटिहैं तव बन्धन
भयेउ चेत, भल कह सौदासा ※ चलहिं सखा दोउ गंग निवासा

दो० मंदाकिनि असनान करि, गंगकलश धरि सीस।
तेहि मारग आवत लखे, भार्गव महामुनीस ॥ ४६ ॥

मुनिवर! दै कछु सुरसरि-वारी[2] ※ दया करहु दोउ शाप निवारी
विन जल-अर्घ प्रथम शिवशीसा ※ इतर हेतु किमि? कहत मुनीसा
आदि न शेष, तासु सम रूपा ※ गंग-सलिल सब भाँति अनूपा
अनुचित मुनि, न सोह यह बानी ※ भार्गव सुनत कथा सब जानी
चीन्हेउ नृपति भगीरथ-नन्दन ※ कुश सन कीन्ह गंग जल सरसन
विगत पाप तजि अधम सरीरा ※ निज-निज पंथ चले तजि पीरा
लहेउ स्वर्ग पुनि गंग प्रभावा ※ कृत्तिवास जस विमल सुनावा

दिलीप का अश्वमेध यज्ञ

नृप सौदास वास सुरधामा ※ तनय 'सुदास' तासु कर नामा

बहुकाल वेद पड़िलाम गुरुवासे ※ चाहिला-दक्षिणा गुरु आमार सकाशे
करिलाम उपहास गुरुर वचने ※ गुरु बले ब्रह्मदैत्य हओ एइ क्षणे
यखन गंगार जल पावे दरशन ※ तखन पाइले मुक्ति ब्राह्मण नन्दन
सौदास बलेन मित्र चिताइले मोरे ※ तेंइ से गंगार तत्व दुइजने करे
गंगा स्नान करि यान भार्गव महर्षि ※ माथाय करिया गंगाजलेर कलसी
हेन काने दोंहे बले आगुलिया ताय ※ गंगाजल विन्दुमात्र दाओ दुजनाय
लागिलेन कहिते भार्गव तपोधन ※ अग्रभागशिवेर ता दिव ना कखन
दोंहे कहे मुनि तव नाहि विद्यालेश ※ गंगाजले नाहि हय अग्र अवशेष
जानिलेन तखन भार्गव तपोधन ※ महाजन वटे भगीरथेर नन्दन
कुशाग्र करिया गंगाजल दिल ताय ※ ब्रह्महत्या आदि पाप एड़िया पलाय
छिलेन सौदास ब्रह्मराक्षस हइया ※ वैकुण्ठे चलिया गेल गंगाजल पाइया
ब्रह्मदैत्य आर ब्रह्मराक्षस सत्वरे ※ दुइ जने मुक्ति हैया गेल निजघरे
गंगार महिमा कथा अनन्ता ये शुनि ※ आदिकाण्ड रचे कृत्तिवास महागुनि

दिलीपेर अश्वमेध यज्ञ

सौदास गेलेन आयु शेषे स्वर्गस्थले ※ हइलेन सुदास भूपति भूमण्डले

---

१ दया से पिघलकर २ गंगाजल।

विपुल वर्ष सासन सुखदाई ※ सुत 'दिलीप' सासन पुनि पाई
'रघु' पुनि तनय दिलीप[1] प्रकासा ※ सुत सम पालि प्रजा दुख नासा
'रघु' बल-विक्रम अतुल बखाना ※ जनक[2] सरिस विक्रम बलवाना
रघु-बल अतुल निरखि नरनाहा ※ अश्वमेध कर उठेउ उछाहा[3]
छाँड़ेउ यज्ञ-तुरंग महीपा ※ जहँ-तहँ जात, सुदूर, समीपा
तुरग[4] जीति लौटइ दिग्देसा ※ सफल याग तब, कहत नरेसा
रघु युवराज दिलीप प्रनामी ※ सुभटन सहित बाजि[4] अनुगामी
सफल याग, सुरपुर अधिकारी ※ होय दिलीप दुखित असुरारी[5]

दो० हे विरञ्चि! कस करिय? विधि कहेउ, अश्व हरि लेहु।
विफल दिलीप-उछाहु करि, सुरपति! आनँद लेहु ॥ ४७ ॥

मध्य दिवस तम निसि सम छावा ※ अवसर तकि हय[4] इन्द्र चुरावा
कटक न तुरग[6], सोच उर अन्तर ※ हरेउ अवसि मम बाजि[6] पुरंदर
वत्सर दस, लघु नवल किशोरा ※ मुदित, हेलि[7] रघु सुरपुर ओरा
सहस तुरंग पवन-गति धावन ※ रघु-रथ निमिष[8] जहाँ सहसानन

सुदास करेन राज्य अनेक वत्सर ※ दिलीप हइल राजा राज्येर उपर
दिलीपेर नन्दन हइल रघुराजा ※ पुत्रेर समान पाले पृथिवीर प्रजा
एकेन दिलीप राजा महाबलवान ※ तद्रूप हइल पुत्र पितार समान
पुत्रेर विक्रम देखि भावे मने मन ※ अश्वमेध यज्ञ करिलेन आरम्भन
घोड़ा राखिवारे नियोजिलेन रघुरे ※ येखाने सेखाने जावे निकटे कि दूरे
घोड़ा दिया दिलीप कहिल तार ठाँइ ※ यज्ञ पूर्ण काले जेन एइ घोड़ा पाइ
घोड़ा राखिवारे रघु करिल पयान ※ सङ्गेते चलिल तुल्य योद्धा बलवान
महेन्द्र बलेन ब्रह्मा कोन बुद्धि करि ※ अश्वमेध करि राजा लबे स्वर्गपुरी
किसे निवारण हय बल कृपा करि ※ विरिञ्चि वलेन तार घोड़ा लओ हरि
अश्व विना राजा यज्ञ करिते ना पारे ※ चलिलेन इन्द्र घोड़ा चुरि करिवारे
द्वितीय प्रहर दिवा अन्धकार करि ※ लइलेन देवराज यज्ञ अश्व हरि
घोड़ा हाराइया भावे दिलीपनन्दन ※ इन्द्र बिना घोड़ा मोर लबे कोन जन
नय वत्सरेर शिशु पड़ियाछे दशे ※ इन्द्रेर उपर रथ चालाय हरषे
सहस्र घोड़ाय वहे स्वर्गे रथखान ※ पलके प्रवेशे गिया इन्द्र विद्यमान

१ सूर्यवंश की एक ही परंपरा में भगीरथ के पिता और उन्हीं भगीरथ के प्रपौत्र, दोनों का नाम 'दिलीप' कृत्तिवासी रामायण में उल्लिखित है, जो कुतूहलजनक है। मालूम नहीं किसी पुराण में ऐसा ही वर्णन है, अथवा सन्त कृत्तिवास के बाद यह लिखने-छपने की भूल है ! २ पिता ३ उत्साह ४ घोड़ा ५ असुरों के शत्रु इन्द्र ६ (यज्ञ का) घोड़ा ७ धावा मार के ८ पलमात्र में।

कितै इन्द्र ? रघु गर्जन करई * कुसल तासु लखि आजु न परई
मारु-मारु हुंकरत कुमारा * चढ़ि गजेन्द्र सुरपति पग डारा
रघु तन हेरि कहेउ कटु बानी * मरन हेतु तव मति बौरानी
माछी[1] मेरु-भार किमि सहई * बाँधि कण्ठ घट सागर तरई
धार कृपान दरस कहँ कीन्हा * बालक-हठ मोसन रन लीन्हा
मैं अजान-रन, कह रघुवीरा * तव बल-बुद्धि लखौं रनधीरा
मैं बालक तैं बीर पुरन्दर * सम्हरि आजु मोसन करु संगर[2]
बान तीन रघु, तकि हिय मारे * सह-कुञ्जर सुरपति तिन टारे
चकित इन्द्र भल भेटेउँ बालक * अगिनि कराल तजत सर घालक
सर दस तजेउ इन्द्र कोदण्डा[3] * रघु सायक तिन बीचहिं खण्डा
बान अगाध वृष्टि दोउ करहीं * कोउ न न्यून अविरल[4] दोउ लरहीं
रघु पशुपति पुनि अस्त्र चलाई * विवस कीन्ह बाँधे सुरराई

दो० गिरे धरनि गजपति सहित, रघु बाँधेउ सुरनाथ ।
लै तुरंग पहुँचे अवध, पितु पद नायेउ माथ ॥ ४८ ॥

सप्त दिवस तहँ बन्दि पुरन्दर * लखि आकुल सुरगन उर अन्तर
सुरगण तब अतिसय अकुलाये * सहित विरंचि अवधपुर आये

कोथा इन्द्र वलि रघु घन छाड़े डाक * आजि इन्द्र तोमा प्रति घटिल विपाक
मार-मार बलि रघु डाकिते लागिल * इन्द्र ऐरावते चड़ि बाहिर हइल
रघुरे देखिया इन्द्र कहे कटु भाषे * मरिबार निमित्त आइले स्वर्गवासे
माछि हइया सहिबे कि पर्व्वतेर भार * गलाय कलसी बान्धि सागरे साँतार
शाणित क्षरेर धार केवा सह्य करे * वालक हइया आइस आमार उपरे
रघु बले गर्व्व कर नाहि जान रण * यार यत बल बुद्धि जानिबे एखन
बालक आमाके देख आपनि कि वीर * बालकेर रणे आजि हओ देखि स्थिर
तिन वाण मारे रघु वासव हियाय * ऐरावत सह इन्द्र घोर पाक खाय
इन्द्र बले भाल वलि वयसे वालक * एड़िलेन बाण येन ज्वलन्त पावक
दश वाण इन्द्र तबे पूरिल सन्धान * दश बाणे काटिल इन्द्रेर दश बाण
दुइजने बाणवृष्टि वरषार धारे * दुइजने युद्ध करे केह नाइ हारे
रघुराज जाने बाण पशुपति सन्धि * हाते गले देवराजे करिलेक बन्दि
ऐरावत हइते पड़िल भूमितले * लोहार शिकले बान्धि रथे निया तोले
घोड़ा निये आइलेन वापेर गोचरे * सात दिन इन्द्र बान्धा अयोध्या नगरे
सङ्केते करिया ब्रह्मा यत देवगण * आपनि चलिया यान अयोध्याभवन

---

१ मक्खी २ समर ३ धनुष ४ लगातार ।

विधि बोले, दिलीप! सुनु भूपा ❋ तव नन्दन, रघु तव अनुरूपा
तासु ख्याति रघुवंस उजागर ❋ जग यश लहहि महान गुनागर
मुदित वैन सुनि, नृप आदेसा ❋ बन्दि-मुक्त पुनि कीन्ह सुरेसा
पावसपति[१]! जनि वृष्टि अभावा ❋ अवध कबौं रघु शपथ करावा
खेतन भार मानि निज सीसा ❋ चले स्वर्ग सुर-सहित सचीसा[२]

राजा रघु की दान-कीर्ति

पुन्य दिलीप विश्व चहुँ छाजै ❋ रघुहिं राजु दै स्वर्ग विराजै
करि पितुश्राद्ध द्विजन हित अर्पन ❋ अखिल कोष किय शेष[३] यशोधन
असन-बसन[४] हित द्रव्य न लहहीं ❋ माटी-बासन[५] नृप बैपरहीं
सुनहु कथा, कश्यप मुनि गेहा ❋ बसत शिष्य वरदत्त सनेहा
दिवस अनेक अध्ययन कीना ❋ चौंसठ कला भयेउ सुप्रवीना
विदाकाल नत प्रणवत माथा ❋ गुरु-दक्षिणा देहुँ का नाथा
अधिक न कोटि चतुर्दस सुबरन[६] ❋ दै मोंहि उरिन होहु द्विजनन्दन

विधाता बलेन राजा तुमि पुण्यवान ❋ तोमार तनय रघु तोमारि समान
आर किवा वर दिव रघुरे तोमार ❋ रघुवंश बलि यश घोषिबे संसार
एत यदि बलिलेन ब्रह्मा मुनिवर ❋ तबे मुक्त हइलेन देव पुरन्दर
रघु बलिलेन सत्य कर पुरन्दर ❋ अनावृष्टि नहे येन अयोध्या उपर
इन्द्र बलिलेन चिन्ता ना करिह तुमि ❋ क्षेतेर या किछु कर्म्म ता करिव आमि
करिलेन एइ सत्य देव पुरन्दर ❋ इन्द्र सह स्वर्गे गेल सकल अमर
रघुर विक्रम शुनि शत्रु पक्षे त्रास ❋ आदिकाण्ड रचिल पण्डित कृत्तिवास

रघु राजार दान-कीर्ति

दिलीप राजत्व करे अयुत वत्सर ❋ पुत्रे राज्य दिया गेल अमर नगर
पितृ श्राद्ध करिलेन रघु यशोधन ❋ ब्राह्मणेरे दिल राजा यत छिल धन
अद्य भक्ष्य रघुराजा नाहि धन घरे ❋ मृत्तिकार पात्रे राजा जलपान करे
वरदत्त नामे एक मुनिर नन्दन ❋ कश्यप मुनिर ठाँइ करे अध्ययन
गुरुगृहे बसति करिल वहु दिन ❋ चतुःषष्टि विद्याते से हइल प्रवीण
गुरुरे दक्षिणा दिते कहिल ताँहारे ❋ कि दक्षिणा दिब गुरु आदेश आमारे
गुरु बले अल्प मागि कर विवेचना ❋ चौषट्टी विद्यार देह चौद्द कोटि सोना

---

१ वर्षा के स्वामी इन्द्र २ शची के पति इन्द्र ३ समाप्त ४ भोजन-वस्त्र
५ मिट्टी के बरतन ६ सुवर्ण मुद्रा ।

चकित अमित सुनि सुबरन भारा * लहौं सु किमि? मन सोच कुमारा
पुन्यवान रघु अवध प्रतापू * तिन पहँ माँगि मेटु संतापू

दो० सुनत सीख, गुरु सन अवधि[1], सात दिवस पुनि लीन्ह ।
किय पयान, हिय थिर न, द्विज दरस अवधपुर कीन्ह ॥ ४६ ॥

विप्र निसेध[2] न रघुपुर कतहूँ * अन्तःपुर प्रविसेउ, नृप जहहूँ
भाण्ड-मृत्तिका[3] जहँ जलपाना * चौदह कोटि कनक किमि दाना
लौटत द्विज देखेउ रघुराई * स्वयं द्वार चलि संग लेवाई
परसि चरन चन्दन अरु फूला * विविध पाक सुरभित तांबूला
बहु सन्मानि सुधा सम वचनू * मम निकेत कस द्विज आगमनू
सुयश पुन्य सुनि तव यशरूपा * आयेउँ दान लेन ढिग भूपा
छिति[4] यश-विपुल केर अधिकारी * तासु हीन गति लखि दुख भारी
माटीपात्र करत जल पाना * सो समरथ किमि सुबरन दाना
दसा दीन लखि, कह द्विज बानी * नहिं याचना कीन्ह भय मानी
जो कामना करहु भूदेवा * सब विधि हरषि करौं तव सेवा
जिमि मोदक बालकन भुलावा * तस न सरल, द्विज वचन सुनावा

द्विज कहिलेन एइ असम्भव कथा * मने भावे एतेक सुवर्ण पाव कोथा
सवे वले रघुराजा वड़ पुण्यवान * ताँर ठाँइ आनि गिया मागि स्वर्णदान
सात दिवसेर तरे समय चाहिल * गुरु के कहिया शिष्य बिदाय हइल
सात पाँच भाविया से निज अकिञ्चन * अयोध्यानगरे आसि दिल दरशन
ब्राह्मणे निषेध नाहि दुयारे रघुर * उत्तरिल गिया सेइ राज अंतःपुर
मृत्तिकार पात्रे राजा करे जलपान * देखिया ब्राह्मणपुत्र करे अनुमान
मृत्तिकार पात्रेते करिछे जलपान * कि रूपे करिबे चौद्दकोटि स्वर्ण दान
देखिया ब्राह्मणपुत्र जाय पाछु हैया * उठिल ब्राह्मणे रघु द्वारेते देखिया
आपनि पाखाले राजा ताहार चरण * विविध मिष्टान्न दिया कराय भोजन
कर्पूर ताम्बूल माल्य दिलेन चन्दन * जिज्ञासा करेन करि पाद सम्वाहन
ब्राह्मण वलेन राजा तुमि पुण्यवान * आसियाछि तव स्थाने लइवारे दान
देखिलाम घटियाछे ये दशा तोमारे * आपनार नाहि किछु कि दिबे आमारे
तोमार अधीन राजा धरणी अशेष * ऐश्वर्य तोमार देखि मृत्पात्र शेष
देखि तव दशा डर लागिल आमारे * एसेछि तोमार ठाँइ धन मागिबारे
भूपति वलेन तुमि कत चाह धन * याहा माग ताहा दिब ठाकुर ब्राह्मण
शुनिया राजार कथा द्विजवर वले * वालके भाँड़ाओ कि लाडु दिबार छले

१ मोहलत २ रोकटोक ३ मिट्टी के बरतन ४ पृथ्वी पर ।

कह नृप,वचन न होइ अकारथ * जो न करौं, विनसै परमारथ
'हरि' कहि, हाथ कान पुनि राखी * चौदह कोटि सोन अभिलाषी
रमहु रैनि[1] इक पुर,मुनिनन्दन * गमनहु भोर होत लै कञ्चन
दै द्विज बास, टेरि पुनि राजन * अवध प्रजा जे अहउ महाजन
सुबरन चौदह कोटि जुटावहु * दसगुन तासु प्रात पुनि पावहु

दो० एक कोटि लौं कनक प्रभु, नगर न तव अवसेस ।
विवस प्रजा बानी-विनय, सुनि अनमने[2] नरेस ॥ ५० ॥

तेहि अवसर नारद मुनि आये * आसन अर्घ बन्दना पाये
हे नृपमणि! कस बदन मलीना * रघु द्विज-कथा निवेदन कीना
चहत आजु द्विज, सो किमि लहहीं * मुदित देवऋिषि[3] रघु सन कहहीं
कालिह कुबेरहिं देहुँ सँदेसा * लहहु बैठि गृह धन अवधेसा
नारद गमन, इतै रघुराजा * सजे, अवध बाजे रनबाजा
सुभट अमात्य[4] स्वसैन बुलावा * सजेउ कटक, दुंदुभी बजावा
सुनेउ कुबेर घोष कैलासा * तासु दूत[5] नित अवध निवासा

राजा वले येवा माग ना करिब आन * वलिया ना दिले नाहि पाव परित्राण
श्रीविष्णु वलिया विप्र काने दिल हात * चौद्दकोटि सोना मागि तोमार साक्षात
राजा वले एक रात्रि थाक महामुनि * प्रातःकाले दिव धन लये जेओ तुमि
एत वलि ब्राह्मणे राखिल निज घरे * आपनि जिज्ञासा करे साधु सदागरे
चौद्दकोटि सोना धार येवा दिते पारे * चौद्दश कोटि कालि शुधिब ताहारे
जोड़ हात करिया कहिछे प्रजागण * तोमरा नगरे नाइ एक कोटि धन
हेंट माथा करि राजा भाविल विपद * हेन काले तथा मुनि आइल नारद
पाद्य अर्घ्य दिल राजा बसिते आसन * मुनि बले केन राजा विरस वदन
राजा बले महाशय शुन बलि कथा * ब्राह्मण चाहिल धन आजि पाब कोथा
लागिलेन हासिते नारद महामुनि * इहार उपाय कहि शुनह आपनि
बल कालि कुवेरे करिब सम्भाषण * घरे ते बसिया पावे यत चाह धन
तार परे गेलेन नारद तपोधन * अयोध्या नगरे राजा बाजाय बाजन
आज्ञा करिलेन राजा पात्र मित्रगणे * सबे साज जाइब कुबेर सम्भाषणे
कटक साजिल बाजे दुन्दुभि बाजन * कैलासे कुबेर ताहा करेन श्रवण
कुबेरेर दूत[2] छिल अयोध्या-भुवने * जिज्ञासा करिल सब पात्र मित्रगणे

१ रात्रि-भर विश्राम करो २ चिन्तित ३ नारद ४ मंत्रिगण ५ राजदूत, एम्बेसेडर—त्रेता के प्राचीन काल में एम्बेसेडर की व्यवस्था की झलक कृत्तिवासी रामायण में अनूठी है ।

पूछत चहुँ, कित कटक सम्हारा? ※ मद-कुबेर भञ्जन पग धारा
सुनत दूत कैलास सिधायेउ ※ तहँ नारद कुबेर ढिग[१] पायेउ
चढ़ेउ साजि दल रघु नरनाहा ※ अस अचेत धनपति[२] न निबाहा
चौदह कोटि हेम[३] संकल्पा ※ परबस नृप, न कनक पुर स्वल्पा
सुमति दूत सिख मानि मुनीसा ※ सुबरन अमित दीन धनईसा
कनक सहित चर[४] अवध सिधावा ※ रघु-प्रताप-जस चहुँ दिसि छावा
भेंट-कुबेर लीन सन्मानी ※ द्विज हित सकल देन मनमानी
कान हाथ धरि, मुख 'हरि' भाषा ※ रत्ती अधिक न मम अभिलाषा
चौदह कोटि लीन गिनि कञ्चन ※ सो लदवाइ चलेउ द्विजनन्दन

दो० कनक-राशि-युत शिष्य लखि, गुरु अति अजरज लीन।
पुण्यरूप रघु-दान-यश, विरद[५] शिष्य बहु कीन ॥ ५१ ॥

गहन अरण्य[६] दस्यु[७] भयकारी ※ मुनिहिं प्रान-धन-संसय भारी
इन्द्र समीप अमानत[८] धरहीं ※ यज्ञकाल सोइ लै बैपरहीं
गुरु आयसु[९] द्विज द्रव्य असेसा ※ सहित चलेउ जहँ बसत सुरेसा
बटु[१०] सन्मानि भेंटि सुरनाथा ※ सुनी सकल पुनि सुबरन गाथा

पात्र मित्र बले कि बेड़ाओ शुधाइया ※ प्रमाद पड़िबे कालि कुबेरे लइया
शुनिया चलिल दूत धाइया अमनि ※ कैलासे नारद गिया कहेन तखनि
कि कर कुबेर तुमि निश्चिन्त बसिया ※ तोमार उपरे रघु आसिछे साजिया
सुवर्ण नाहिक रघु राजार भाण्डारे ※ चौद्दकोटि स्वर्ण विप्र चेयेछे ताँहारे
एत यदि बलिल नारद महामुनि ※ कुबेर बलेन आमि पाठाब एखुनि
स्वहस्ते कुबेर धन दिलेन गणिया ※ दूत गिया भाण्डारेते दिल फेलाइया
विनये कहेन रघु ब्राह्मण कुमारे ※ भाण्डार सहित स्वर्ण दिलाम तोमारे
श्रीविष्णु बलिया मुनि स्पर्शे दुइ कान ※ चौद्दकोटि मात्र लव ना लइब आन
चौद्दकोटि स्वर्ण तारे दिलेन गणिया ※ शत शत जने बोझा दिलेन बाँधिया
शिष्येरे आनिते देखि चौद्दकोटि सोना ※ गुरु बले एत धन दिल कोन जना
शिष्य बले रघु राजा बड़ पुण्यवान ※ करिलेन तिनि चौद्दकोटि स्वर्ण दान
मुनि बले थाकि आमि गहन कानने ※ धन हरि दस्युगण बधिबे जीवने
एइ धन राख ल'ये इन्द्रेर भाण्डारे ※ यज्ञकाले धन आनि देय ये आमारे
काञ्चन लइया गेल इन्द्रेर सदने ※ सम्भ्रमे उठिल इन्द्र देखिया ब्राह्मणे
द्विज बले गुरु पाठाइलेन आमारे ※ रघुराजा स्वर्णदान दिल भारे भारे
राखह भाण्डारे महामुनिर से धन ※ एत बलि धन तथा राखेन ब्राह्मण

---

१ समीप　२ धन के स्वामी, कुबेर　३ स्वर्ण　४ दूत, धावन　५ प्रशंसा
६ घना जंगल　७ डाकू　८ धरोहर　९ आज्ञा　१० ब्राह्मण।

विप्र-सुवन दच्छिना पुरावा ॥ पुष्कल[1] हेम[2] अवध जिमि आवा
सरिस कल्पतरु रघु दिय दाना ॥ दस्यु-त्रास सोइ तव ढिग आना
श्रवन हाथ धरि कहि पुनि 'रामा' ॥ सम्मुख मम न लेहु रघु-नामा
रैन न नींद, तासु भय पाई ॥ खेतन अवध रखावहुँ जाई[3]
इतर धरौ कहुँ धन हे ब्रह्मन् ! ॥ नतरु निपातै रघु मम जीवन
सुनि वरदत्त वचन-सुरनाहा ॥ गुरु-आश्रम-पथ पुनि अवगाहा[4]
मुनि आयसु बहोरि सोइ कञ्चन ॥ राखेउ ढिग कुबेर द्विजनन्दन
बिहँसि कही धनपति कैलासा ॥ जासु द्रव्य, आयेउ सोइ पासा
सुयश भूप रघु त्रिभुवन छावा ॥ कृत्तिवास शुचि गाइ सुनावा

राजा अज का विवाह और दशरथ का जन्म

वर्ष सहस दस रघु किय राजू ॥ मनमोहन 'अज' पुनि युवराजू
यौवन पग छबि-सुत अवलोका ॥ सौंपि राजु रघु गे सुरलोका
अज समान नहिं इतर भुआला ॥ पितु सम प्रजा करत प्रतिपाला

दो० रति लजाय, रूपसि परम, इन्दुमती जेहि नाम ।
माथुर-नृप तनया सुभग, अति लावण्य ललाम ॥ ५२ ॥

वासव बलेन बापू सत्य कह कथा ॥ उच्छवृत्ति करि सोना पाइलेन कोथा
द्विज बले दक्षिणा चाहिल स्वर्ण गुरु ॥ आमारे दिलेन रघुराजा कल्पतरु
राम राम बलि इन्द्र काने दिल हात ॥ रघुनाम ना करिओ आमार साक्षात्
निशाते ना जाइ निद्रा रघुर भयेते ॥ अयोध्या नगरे सदा भ्रमि क्षेते क्षेते
स्थानान्तरे निया प्रभु राख एइ धन ॥ धनेर कारण रघु बधिबे जीवन
धन लैया वरदत्त गेल गुरुपाशे ॥ गुरु बले राख निया पर्व्वत कैलासे
निजधन देखिया कुबेर मने हासे ॥ गियाछे जाहार धन एल तार पाशे
रघु भूपतिर यश त्रिभुवन घोषे ॥ रचिलेन आदिकाण्ड कवि कृत्तिवासे

अज राजार विवाह ओ दशरथेर जन्म

रघु राज्य करे दश हाजार वत्सर ॥ अज नामे ताँहार तनय मनोहर
देखिया पुत्रेर राजा प्रथम यौवन ॥ पुत्रे राज्य दिया गेल वैकुण्ठ-भुवन
अजेर समान राजा नाहिक संसारे ॥ पुत्रेर समान राजा पालेन सबारे
माथुर राजार कन्या इन्दुमती नाम ॥ परमा सुन्दरी सेइ लावण्येर धाम

---

१ ढेर का ढेर २ सुवर्ण ३ दिलीप के अश्वमेध यज्ञ के अवसर पर इन्द्र को बाँधकर रघु ने अयोध्या के राज्य में वृष्टि और खेती की सुरक्षा की व्यवस्था का वचन ले लिया था । यह कथा पहले आ चुकी है । ४ ग्रहण किया (नालन्दा कोष) ।

इच्छावर विवाह मन लीना ※ सकुच न नेक, प्रकट पितु कीना
सुता-स्वयंवर भूप उछाहा ※ नेउते चहुँ नरपति नरनाहा
पाय निमंत्रण माथुर देसा ※ चले सुभट बहु अवनि-नरेसा
तजेउ न अवसर, तजि-तजि धामा ※ जुरे सकल बल-रूप-ललामा
अवधभूप अज सभा विराजा ※ मनौ वृन्द-पशु छवि-मृगराजा
पौत्र-दिलीप, सुवन-रघु नाहर ※ एक छत्र छिति तपत गुनागर
सजी स्वयंवर सभा विसाला ※ बिनय कीन लखि नृपन भुआला
सुता दान हित अेक मम गेहू ※ आनहुँ सभा, ध्यान सब देहू
जासु कण्ठ अर्पित बरमाला ※ सोइ मम अतिथि गहै कर-बाला
विदा शेष नृप लै घर जाहीं ※ रारि-द्वन्द अवसर कछु नाहीं
राजन उजुर[1] न, आतुर वचना ※ सभा वेगि आनौ नृप ! ललना
सजी इन्दुमति बेनि[2] सँवारी ※ श्रुत कुण्डल कज्जल दृग डारी
ससि सम विमल, सुकुंकुम भाला[3] ※ पैज सिँगार विविध गर माला
जगमग छबि अति सुघर सुहावन ※ पुतरी कनक रची चतुरानन
सह सहचरिन चली गजगामिनि ※ मद मतंग सकुचत लखि भामिनि

इच्छावरी हइते कन्यार गेल मन ※ कहिल पितार अग्रे ना करि गोपन
स्वयंवरा हइते आमार आछे मन ※ सकल राजारे आन करि निमंत्रण
यत यत महाराज एइ धरा वासे ※ माथुरेर निमंत्रणे सबे येन आसे
प्रथम यौवन सबे देखिते सुन्दर ※ सकले आइसे केह ना रहिल घर
अयोध्या हइते हैल अजेर गमन ※ सभामध्ये अज गिया बसिल तखन
पशुर मध्येते येन पशिल केशरी ※ बसिल सकल राजा अज मध्य करि
रघुर तनय अज दिलीपेर पौत्र ※ पृथिवीमण्डले जाँर एकदण्ड छत्र
बसिल करिया सभा यत राजगण ※ तखन माथुर राजा करे निवेदन
एक कन्या दानयोग्या आछे मम घरे ※ आज्ञा कर सेइ कन्या आनि स्वयंबरे
परिणामे द्वन्द्व येन ना हय घटन ※ तबे शीघ्र आनि कन्या एइ निवेदन
मम कन्या वरमाल्य दिबेन जाँहारे ※ सिबारे विदाय दिया राखिव ताँहारे
भाल भाल वलिल सकल राजगण ※ शीघ्र इन्दुमती आन करिया साजन
केश आँचड़िया तार बाँधिल कुन्तल ※ विविध पुष्पेर माला करे झलमल
कपाले सिन्दूर दिल नयने कज्जल ※ चन्द्रेर समान रूप अतीव विमल
सुचित्र विचित्र परे पायेते पाशुलि ※ विधाता गड़ेछे येन कनक पुतुलि
सहचरीगण संगे चलिल घेरिया ※ मत्त गजपति रामा चलिल साजिया

---

१ उज्र, आपत्ति २ वेणी, चोटी ३ मस्तक ।

चितवनि इन्दुमती जेहि भूपा ※ सुधि न रहत लखि बदन अनूपा

दो० पाय चेत,[1] बोलत वचन—जासु गरे वरमाल।
देय सुमुखि, सोइ सफल तन, सोइ धनि-धन्य भुआल ॥ ५३ ॥

कोउ कह मोहिं निरखति मृगनयनी ※ कोउ कह चहति मोहिं पिकवयनी
जेहि नृप तजै, बढ़ै पग बाला ※ रोवत धरनी लोटि बेहाला[2]
कस कुत्सित मम रूप निहारी ※ सुमुखि तजेसि मोहिं सोक मँझारी
पैज-पैज[3] तजि नृपन विलोकत ※ सुता बढ़ी जहँ रघुसुत सोहत
दारिद जिमि बहुधन सुख पावा ※ हुलसि माल गर अज पहिरावा
इन्दुमती पुलकित गृह जाई ※ चला व्यथित नृपयूथ[4] लजाई
कानन बटुरि[5] मंत्रना करहीं ※ केहि विधि प्रान भूप अज हरहीं
इत-उत वन लुकान[6] सब तहहीं ※ अजहिं निपाति इन्दुमति लहहीं
सुतादान माथुर इत कीना ※ हय, गज, रथ, संपति बहु दीना
दिवस तीनि आतिथि सन्माना ※ अज-दंपति पुनि अवध पयाना
चला बेगि रथ, लै दोउ संगा ※ कटक साथ अगनित चतुरंगा
अज सोवत, रथ बन-पथ आवा ※ नृपगन घेरि पंथ किय धावा

जेइ जन करे इन्दुमती निरीक्षण ※ रूपेर मोहेते हरे ताहार चेतन
चेतन पाइया उठि बले नृपगण ※ ए कन्या पाइबे तार सार्थक जीवन
केह बले कन्या मोरे करे निरीक्षण ※ केह कहे कन्यार आमाते आछे मन
जारे पाछु करि कन्या करिल गमन ※ भूमेते पड़िया सेइ जुड़िल रोदन
कन्या कि कुत्सित रूप देखिल आमारे ※ आमारे छाड़िया सेइ भजिबे काहारे
एके एके देखिया यतेक राजगण ※ अजेर निकटे आसि दिल दरशन
धन पेले हृष्ट येन दरिद्रेर मति ※ गले माल्य दिया बले तुमि मम पति
वरमाल्य दिया यदि कन्या गेल घर ※ यत राजा पलाइल लज्जाय कातर
बनेते बसिया सबे ह'ये एकमति ※ बधिते अजेर प्राण करिल युकति
एक्षणे सबाइ थाकि वने लुकाइया ※ अजे मारि इन्दुमती लइब काड़िया
लुकाइया वने तारा रहे स्थाने स्थान ※ हेथाय माथुर राजा करे कन्यादान
कन्यादान करे राजा करिया कौतुक ※ नानारत्न हस्ती अश्व दिलेन यौतुक
तिन दिन छिल राजा माथुरेर घरे ※ तारपर यान राजा अयोध्या नगरे
इन्दुमती सह रथे करे आरोहण ※ कत सेना संगे रंगे चले अगणन
निद्राय कातर राजा चलितेछे रथ ※ सेइकाले राजगण आगुलिल पथ

१ होश २ खराब हालत में ३ पग-पग पर ४ राजाओं का समूह ५ इकट्ठा होकर ६ छिप गये।

मारु मारु बोलत चहुँ ओरा ※ इन्दुमती संकट लखि घोरा
बचैं कंत[1] किमि? संसय लागी ※ रुदन सुनत अज निद्रा त्यागी
अरि गर्जन न भीत[2] रनबंका ※ निरखत तिय-मुख मलिन निसंका
अहह नाथ! शत-शत भट योधा ※ चहुँ दिसि पंथ घेरि अवरोधा

दो० हरन मोर, बध स्वामि तव, अधमन[3] मिलि मत कीन।
महारथी रघु-तनय सुनि, भामिनि धीरज दीन ॥ ५४ ॥

सुमुखि! सोच तजि होहु अनन्दा ※ सायक एक हनौं अरि-वृन्दा
इतर गहौं सर सत्रु-सँहारन ※ तौ रघु आन अस्त्र धिक् धारन
चढ़उ चाप, स्यन्दन अज सोहा ※ खल नृपगन मन उपजेउ छोहा[4]
छत्रप[5] विपुल! सो तृण करि जाना ※ अज गंधर्वबान संधाना
व्यापे तीनि कोटि गंधर्वा ※ अभिरे[6] नृपति परस्पर सर्वा
सर अमोघ[7] जनि आनि उपाऊ ※ सकल मरे कटि जे नरराऊ
सहित प्रिया पुनि चलि नरनाहा ※ आये अवध अतीव उछाहा[8]
अज तन, प्रान इन्दुमति ताकर[9] ※ धारेउ गर्भ विगत कछु वासर
गत दस मास प्रसव शिशु कीना ※ शशि जिमि जनमि अवनि छबि दीना
काम सरिस गुन-रूप निहारी ※ दशरथ नाम तनय कर धारी

मार मार बलि सबे आगुलिल तथा ※ इन्दुमती देखिया करिल हेंट माथा
केमने बाँचाव स्वामी कान्दे इन्दुमती ※ से क्रन्दने जानिलेन अज महारथी
राजगण डाके ताहे भीत नहे मन ※ मलिन देखिल इन्दुमतीर बदन
इन्दुमती वले नाथ कि भाव एखन ※ देखना तोमारे घेरिलेक नृपगण
शत शत राजा आछे पथ आगुलिया ※ आमरे काड़िया लबे तोमारे मारिया
अज बले प्रसन्न करह प्रिये मुख ※ एकबाणे सबे मारि देखह कौतुक
एक वाण बिन यदि दुइ वाण मारि ※ रघुर दोहाई तबे वृथा अस्त्र धरि
एत बलि धनु लैया रथे दाण्डाइल ※ अजे देखि राजगण भाविते लागिल
शत शत भूपतिरे करि तृण ज्ञान ※ एड़िलेन अज से गन्धर्व्व नामे वाण
एक बाणे हइल गन्धर्व्व तिन कोटि ※ आपना आपना करे करि काटाकाटि
गन्धर्व्व वाणेते रण नाहिं जाय आँटा ※ एक बाणे राजगण सबे गेल काटा
सेइ सब राजगणे युद्धेते मारिया ※ अयोध्याते गेल अज इन्दुमती निया
अज राजा तनु तार प्राण इन्दुमती ※ हइलेन किछु काल परे गर्भवती
दश मास गर्भ हैल प्रसव समय ※ हइल तनय येन चन्द्रेर उदय
रूपे गुणे देखि येन अभिनव काम ※ दशरथ बलिया राखिन तार नाम

---

१ पति २ भयभीत ३ पतितों ने ४ क्षोभ ५ नृपगण, ६ परस्पर गुथे
७ अचूक ८ उमंग ९ अज शरीर और इन्दुमती उनका प्राण थी।

दशरथ बिरद बरनि नहिं जाई ❋ जाके सुवन राम रघुराई
दशरथ-जनम कथा सुखकरनी ❋ कृत्तिवास मञ्जुल इमि बरनी

दशरथ का राज्याभिषेक

किंशुकबन, जहँ द्वादस मासा ❋ सुत सोवाय दोउ मगन विलासा
इत रत-केलि हास-परिहासा ❋ गमनत नारद उतै अकासा
पारिजात माला खसि[1] वीना ❋ गिरत रानि-तन परसन[2] कीना
छुवत माल सो तजेउ सरीरा ❋ बिलखत अज, दृग नीर, अधीरा
दो० रुदन अकथ, बिलपत अतिव, मिटत न हिय संताप ।
पारिजात पुनि परसि तहँ, तजेउ प्रान नृप आप ॥ ५५ ॥
नर्त-नर्तकी सुरपुर - वासी ❋ भये सापबस धरनि-निवासी
चले युगुल पुनि सुरपुर वासा ❋ तजि दशरथ सुत द्वादस मासा
जनक-जननि-विरहित शिशु देखी ❋ मुनि बशिष्ठ हिय सोच विशेषी
पञ्च वर्ष सिखयेउ गृह राखी ❋ सविधि शास्त्र सुत-हित अभिलाषी
पितु-पद[3] लहि, गुरु-आयसु माना ❋ परशुराम किय आयुध[4] दाना

आमि दशरथेर कि कैब गुण ग्राम ❋ जार पुत्र हइलेन आपनि श्रीराम
कृत्तिवास पण्डित कवित्वे विचक्षण ❋ गान दशरथेर उत्पत्ति विवरण

दशरथेर राज्याभिषेक

एक वर्ष वयस्क यखन दशरथ ❋ पुत्रे शोयाइया दोंहे साधे मनोरथ
पुष्पवने क्रीड़ा करे हास्य परिहास ❋ नारद चलिया यान उपर आकाश
पारिजात माला छिल ताँहार बीणाय ❋ बातासे उड़िया पड़े इन्दुमती गाय
पारिजात यखन हइल परशन ❋ इन्दुमती छाड़िलेन तखनि जीवन
प्राण छाड़ि इन्दुमती गेल स्वर्गधाम ❋ काँदे अज नयनेते वारि अविराम
कत वा कहिब सेइ राजार विलाप ❋ ना पारे सहिते इन्दुमतीर सन्ताप
सेइ पारिजात मारे आपनार गाय ❋ दुइजने मुक्त हये स्वर्गपुरे जाय
नर्त्तक नर्त्तकी छिल दोंहे स्वर्गपुरे ❋ शापभ्रष्टे जन्मिया छिलेन भूमि परे
दुइ जन यखन गेलेन स्वर्ग पथ ❋ एक वर्ष वयस्क तखन दशरथ
पिता माता अल्प काले मरिल दुजन ❋ देखिया चिन्तित ये वशिष्ठ तपोधन
लैया गेल सेइ पुत्र आपनार घरे ❋ पड़ाइल नाना शास्त्र शास्त्र-अनुसारे
पञ्चवर्ष हइलेन वयस्क यखन ❋ लइलेन आपनि पैतृक सिंहासन
भृगुराम मुनि तारे अस्त्र दिल दान ❋ शिखाइल यत्न करि शब्दवेधी बाण

१ खिसककर २ स्पर्श ३ पिता का स्थान, राजसिंहासन ४ अस्त्र ।

शब्दबेध किय अस्त्र-प्रवीना ※ बयस पञ्चदश नृप पग दीना
लोकपाल पितु सरिस धनुर्धर ※ तपत राजु जिमि प्रबल पुरंदर

दशरथ के साथ कौशल्या का विवाह

सूर्यवंश दशरथ महराजा ※ सकल प्रशंस सर्वगुन साजा
अधिप महीपन के, नरनाहा ※ बर्ष तीस नहिं रचेउ विवाहा
सो सुभ घड़ी अवधि सजि आई ※ कोशलपुर - नृप कोशलराई
तासु सुता कौशल्या नामा ※ सोच बयस[1] लखि बढ़त ललामा
प्रोहित द्विज बटोरि पुनि राजन ※ कौशल्या-वर जोगु विचारन
गवनहिं विप्र अवध तत्काला ※ बिनवहि मम संबाद भुवाला
तुम समान वर धरनि न दूजा ※ हरषि जासु कर देहुँ तनूजा[2]
लै संबाद चले द्विजराई ※ सत्वर[3] अवधपुरी नियराई
लखि सोइ, दशरथ कीन प्रनामा ※ दै असीस प्रगटत द्विज नामा

सो० मैं द्विज-कोशलनाथ, सुता तासु अति रूपसी ।
देन चहत तव हाथ, सो पठयेउ संबाद नृप ।। ५६ ।।

राज्य करे दशरथ येन पुरन्दर ※ पुत्र तुल्य पाले प्रजा महा धनुर्द्धर
राजार वयस हैल पनर वत्सर ※ आदिकाण्डे रचे कृत्तिवास कविवर

दशरथेर सहित कौशल्यार विवाह

दशरथ महाराज जन्म सूर्यवंशे ※ सर्व्व गुणेश्वर राजा सकले प्रशंसे
राज चक्रवर्ती राजा सवार उपर ※ बिबाह ना हय वयः त्रिंशत् वत्सर
दैवेर घटने हैल राजार निर्व्वन्ध ※ हेन काले घटे ताँर बिबाह सम्बन्ध
कौशलेर नृपति कौशल दण्डधर ※ कौशल्या नामेते कन्या आछे ताँर घर
कौशल्यार रूप राजा देखिया मूर्च्छित ※ कारे कन्या दिव वलि राजा सुचिन्तित
पुरोहित ब्राह्मणेरे कहिल सत्वर ※ दशरथे आनिबारे जाह द्विजवर
आमार संवाद कह राजार गोचरे ※ कौशल्या नामेते कन्या दिब ताँर करे
ताँहा बिन कौशल्यार वर नाहि आन ※ सुखी हब दशरथे करि कन्यादान
संवाद लइया विप्र चलिल सत्वर ※ शीघ्रगति गेल द्विज अयोध्या नगर
ब्राह्मणे देखिया राजा करेन प्रणाम ※ आशीष करिया कहे आपनार नाम
कोशल देशेते घर राजपुरोहित ※ तोमारे लइते राजा करे नियोजित
परमा सुन्दरी कन्या आछे ताँर घरे ※ कौशल्या नामेते कन्या दिबेन तोमारे

१ उम्र २ कन्या ३ शीघ्र ही ।

नहिं तव रूप आन[1] दिग्देसा * तुमहिं वरन नृप चाउ[2] बिसेसा
करौ अनुग्रह कोसल देसू * सुनत वचन द्विज, अवध-नरेसू
बोलि सचिव सुहृदन मत कीना * निज-सूने[3] सासन तिन दीना
स्यन्दन साजि सारथी आना * सैन-सहित किय नृपति पयाना
नाचति विद्याधरी समाजा * तुरही भेरि झाँझ बहु बाजा
सहस पचास मृदंग बजावा * तीनि कोटि सिंगी रव[4] छावा
शंख कोटि अरु घण्टाजाला * अगनित बजत भरंग रसाला
डफ सहनाइ सुढोल दमामा * तबल घोष जयढोल ललामा
घन सम गर्जत नाद कराला *महाप्रलय, छिति-व्योम[5] बिहाला[6]
तुमुल[7]-विराट बजत चहुँ बाजा * आयेउ कोशल अवध-समाजा
सुनत, समाद[8] सविधि अगवानी * पाद अर्घ्य सन नृप सन्मानी
कन्यादान शास्त्र - आचारा * पुर - तिय - गान मंगलाचारा
शुभ क्षण दोउन दीठि शुभ डारी * धरा न अस दंपति छबि न्यारी
नाना रत्न-दान, सत्कारू * दै पुनि अर्ध[9] राज-अधिकारू

तव तुल्य रूप आर नाहि कोन देशे * तोमार दिवेन तिनि मनेर आवेशे
राजार संवाद एइ जानानु तोमारे * विवाह करिते चल कोशल आगारे
एतेक शुनिया राजा संवाद वचन * पात्र वर्ग लैया राजा करेन मन्त्रण
यावत् विवाह करि नाहि आसि घरे * तावत् पालह राज्य अयोध्या-नगरे
रथ लैया योगाइल रथेर सारथि * सेनागण संगे राजा चले शीघ्रगति
नाना वाद्य वाजे नाचे विद्याधरीगण * तुरी भेरी झाँझरी ता ना जाय गणन
पाखोयाज पञ्चाश सहस्र परिमाण * तिन कोटि शिङ्गा बाजे अति खरशान
वाजे तिन कोटि शङ्ख आर घण्टाजाल * भोरङ्ग सहस्रकोटि शुनिते रसाल
सहस्र सानाई बाजे डम्फ कोटि कोटि * तिन सहस्र दामामा घन पड़े काटि
तबल विशाल वाद्य वाजे जयढोल * महा प्रलयेर काले येन गण्डगोल
वाद्यभाण्ड महाभाण्ड करिल प्रचुर * रथ वेगे गेल राजा कोशलेर पुर
कोशलेर राजा वार्त्ता पाइया ताँहार * पूजेन राजारे दिया पाद्य अर्घ्य भार
राजा कन्यादान करे शास्त्र व्यवहारे * आमोद करिल रामागण स्त्रीआचारे
शुभ क्षणे दुइजने शुभदृष्टि करे * उभयेर रूपे धरा कत शोभा धरे
नाना रत्न दिया राजा करे कन्यादान * शास्त्रेर विहित राजा करिल सम्मान
आपनि अर्द्धेकराज्य दिला अधिकार * विलाइते दिल राजा अर्द्धेक भाण्डार

---

१ दूसरा २ चाहना ३ अपनी अनुपस्थिति में ४ शोर ५ पृथ्वी-आकाश सर्वत्र ६ हलचल पूर्ण ७ घोर कोलाहल ८ आदर-सम्मान ९ आधा।

कौशल्या-सह प्रमुदित अंगा ❋ आये दशरथ अवध-पतंगा[1]

दशरथ के साथ कैकेई का विवाह

दो० हिम-अञ्चल कैकय नृपति, सुखसासन बहु काल ।
कैकेई तिन सुता-छबि, जगमग पुरी-भुवाल ।। ५७ ।।

सुता स्वयंवर नृप मन भावा ❋ भूपन सकल निमंत्रि बुलावा
अवध दूत पठयेउ तत्काला ❋ जहँ दसरथ महिपन-महिपाला
द्विज बसीठ[2] लखि नृप सन्माना ❋ दै आसिस सो काज बखाना
गिरि प्रदेस कैकय नृप धामा ❋ रचेउ स्वयंवर-सुता ललामा
जुरे भूप तहँ अगनित-देसा ❋ चलौ बेगि गिरिनगर, नरेसा !
समारोह मिलि बढ़वहु सोभा ❋ सुनि द्विजवचन भूप मन लोभा
नृप-रथ चलेउ वेगि द्विज साथा ❋ सभा, जुरे जहँ बहु नरनाथा
यज्ञस्थल कैकई सुरूपा ❋ जगमग करत नगरगिरि-भूपा
लखि छबि अतुल सबन श्रम जाई ❋ विद्याधरी स्वयंवर आई
तिलोत्तमा अप्सरा अनूपा ❋ उर्वसि, कै[3] रंभा अतिरूपा
तुलना ककस[4] ? अतुल त्रैलोका ❋ भौचक[5], चकित सबन अवलोका

कौशल्या लइया राजा आसिलेन वास ❋ आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

दशरथेर सहित कैकेयीर विवाह

गिरिराज नगरेते कैकयेर घर ❋ सुखे राज्य करे राजा अनेक वत्सर
कैकेयी नामेते कन्या परमा सुन्दरी ❋ ताँर रूपे आलो करे सेई राजपुरी
स्वयंवर हवे कन्या हेन आछे मन ❋ पृथिवीर यत राजा कैल निमन्त्रन
दूत जाय दशरथे आनिते सत्वर ❋ शीघ्रगति गेल दूत अयोध्या-नगर
ब्राह्मणे देखिया राजा प्रणाम करिल ❋ आशीष करिया द्विज कहिते लागिल
गिरिराज नगरेते आमार बसति ❋ राजकन्या स्वयंवरा हवे नरपति
राजगण आसियाछे तथाय प्रचुर ❋ चल राजा शीघ्र तुमि गिरिराजपुर
स्वयंवर स्थान ये करिल सुशोभन ❋ संवाद पाइया राजा चलिल तखन
रथे त्वरा दशरथ गेल सभास्थाने ❋ सभा करि राजगण बसेछे येखाने
स्वयंवर स्थाने एल कैकेयी सुन्दरी ❋ गिरिराजपुरी तार रूपे आलो करि
कैकेयीरे देखि सबे करे अनुमान ❋ आइल कि विद्याधरी स्वयंवर स्थान
किम्बा रम्भा उर्व्वशी आइल तिलोत्तमा ❋ त्रिभुवने निरूपमा कि दिब उपमा
पूर्व्वे राजकन्या येन छिल इन्दुमती ❋ सेइ येन वरिलेक अज महामति

१ अवध के सूर्य २ दूत ३ अथवा ४ किस प्रकार हो ? ५ भौचक्के ।

जिमि 'अज' वरेउ 'इन्दु' महरानी ※ प्रगट दीख चहुँ कथा पुरानी
तासु रूप सुनि, हेतु विवाहा ※ माथुर जुरे सबै नरनाहा
'अज' वरमाल, शेष भट लाजा ※ अजहुँ न बिसरत भूप-समाजा
सारभौम[1] अति छबि जगबन्दन ※ अतुल सोह तहँ सोइ अजनन्दन[2]
दसरथ रहत, गहै को बाला ! ※ अवनत मुख सोचत नरपाला

दो० तजे नृपति बहु कैकई, निरखत अवध-भुवाल ।
पुलकि, दरिद जिमि लहै धन, बढ़ि डारी गर माल ॥ ५८ ॥

दसरथ गर डोलत वरमाला ※ लचे लाजबस सीस - भुवाला
वरै आनि किमि सुता सयानी[3] ※ निज-निज गेह चले कहि बानी
कैकय नृप किय कन्यादाना ※ बहु मनि रतन द्रव्य सन्माना
दासी निपुन मंथरा साथा ※ लै कैकई, अयोध्यानाथा
चले वेगि पुनि साजि तुरंगा ※ सैन सहित नृप प्रमुदित अंगा

राजा दशरथ के साथ सुमित्रा का विवाह और
राज्य पर शनिदृष्टि तथा उसके निवारणार्थ इन्द्र पर चढ़ाई

कौशल्या-कैकइ युग[4] भामा ※ क्रीड़ारत महीप अविरामा

ताँहार रूपेर कथा गेल देशे देशे ※ विवाहार्थे राजगण आसिलेन हेसे
इन्दुमती वरिलेक अज महाराजे ※ सब राजा गेल देशे पड़िया ये लाजे
परम सुन्दर राजा राजचक्रवर्ती ※ दशरथ तुल्य नाहि भूमिते भूपति
दशरथ थाकिते वरिबे कोन जने ※ एइ युक्ति अधोमुखे करे राजगणे
प्रत्यक्षे देखिल कन्या सब राजगणे ※ सबारे भूलिल दशरथ दरशने
धन पाइले तुष्ट येन दरिद्रेर मति ※ गले माल्य दिया बले तुमि हओ पति
दशरथ भूपतिर गले माल्य दोले ※ लज्जाय नृपतिगण माथा नाहि तोले
राजगण बले कन्या बड़ विचक्षण ※ दशरथ थाकिते वरिबे कोन जन
राजगण परस्पर करिया सम्मान ※ बिदाय हइया गेल निज निज स्थान
कन्यादान करे राजा परम कौतुके ※ मन्थरा नामेते चेरी दिलेन यौतुके
माणिक मुकुता राजा पाइया बिस्तर ※ अश्ववेगे निज देशे चलिल सत्वर
कैकेयी लइया राजा आसे निज देशे ※ आदिकाण्ड रचिल पण्डित कृत्तिवासे

राजा दशरथेर सहित सुमित्रार विवाह ओ राज्ये शनिर दृष्टि
ओ अनावृष्टि निवारण जन्य इन्द्रेर निकट रणयात्रा

कौशल्या कैकेयी एइ सपत्नी उभय ※ उभये लइया क्रीड़करे महाशय

१ चक्रवर्ती २ दशरथ ३ चतुर ४ दो ।

नृप सुमित्र सिंहल-अधिकारी ❋ सुता सुमित्रा छबि उजियारी
कहँ वर लहौं सुजोग कुमारी ❋ मन सुमित्र नित करैं विचारी
सारभौम दसरथ जग जाना ❋ दनुज-गँधर्व जासु भय माना
द्विज बुलाय दिय नृप आदेसू ❋ आनहु दसरथ अवध-नरेसू
हरषि विप्र नृप आयसु माना ❋ कीन अवध दिसि बेगि पयाना
अज-सुत निरखि विप्र सन्माना ❋ दै असीस, सो करत बखाना
सिंहलपति-प्रोहित, सोइ[1] काजा ❋ आयेउँ लेन हेत महराजा
सुता सुमित्रा परमा रूपा ❋ सिंहल करत अलोक[2] अनूपा
मञ्जुल छबि अतुलित दिग्देसू ❋ हरषि देन मन तुमहिं नरेसू
अकथ रूप सुनि प्रमुदित दसरथ ❋ वरौं सुमुखि अविलंब मनोरथ

दो० सजे भूप आखेट-मिस[3], बनिता-युगुल[4] अजान।
बाजन बाजे, सदल बल सिंहल कियेउ पयान ॥ ५६ ॥

नृप-आगम सिंहलपति जानी ❋ पाद अर्घ्य बहु बिधि सन्मानी
दसरथ रूप सराहत लोगू ❋ राजसुता बिधि[5] वर दिय योगू
नंदीमुख आदिक सुभ कर्मा ❋ हरषि दुहू पालत कुलधर्मा

सिंहल राज्येते से सुमित्र महीपति ❋ सुमित्रा तनया ताँर अति रूपवती
कन्यारे देखिया राजा भावे मने मन ❋ कन्या योग्य वर कोथा पाइव एखन
राजा चक्रवर्ती दशरथ लोके जाने ❋ राक्षस गन्धर्व्व काँपे जाँर नाम शुने
ब्राह्मण डाकिया राजा कहिल सत्वर ❋ दशरथे आन गिया अयोध्यानगर
राजार आज्ञाय द्विज चलिल हरिषे ❋ शीघ्रगति गेल द्विज अयोध्यार देशे
ब्राह्मणे देखिया राजा करेन प्रणाम ❋ आशीष करिया द्विज कहे निज नाम
सिंहल देशेर आमि राज पुरोहित ❋ तोमारे लइते राजा आमि उपस्थित
राजकन्या सुमित्रा से परमा सुन्दरी ❋ ताँर रूपे आलो करे सिंहल नगरी
समरूप राजकन्या नाहि कोन देशे ❋ तोमारे दिबेन राजा परम हरिषे
शुनिया कन्यार कथा हृष्ट दशरथ ❋ हइते सुमित्रा पति हैल मनोरथ
कौशल्या कैकेयी पाछे जाने दुइजन ❋ मृगयार छले राजा करिल गमन
नाना वाद्ये दशरथ चले कुतूहले ❋ उत्तरिल गिया राजा नगर सिंहले
वार्त्ता शुनि हरषित सिंहलेर राजा ❋ पाद्य अर्घ्य दिया ताँर करिलेन पूजा
देखि दशरथेर लावण्य मनोहर ❋ लोक वले बिधि दिल कन्यायोग्य वर
नान्दीमुख करि दोंहे विशेष हरिषे ❋ दुइजने वृद्धि श्राद्ध करे अवशेषे

१ उन्हीं के २ आलोक, प्रकाश ३ शिकार के बहाने ४ दोनों रानी (कौशल्या-कैकेई) ५ विधाता।

दम्पति दीठि[1] परस्पर डारी ※ दोउ छबि बसुन्धरा उजियारी
सय्या सुमन साँझि किय सयना ※ अलसभरे झपके नृप-नयना
भोर भूप उठि सय्या त्यागी ※ दिये नेग परजन[2] अनुरागी
यौतुक[3] लहेउ भूप मनमाना ※ प्रमुदित दीन विविध बहु दाना
दोउ नरेस किय बागबिदाई[4] ※ सतिय चढ़े रथ कोसलराई
छबि नवबधू निरखि नहिं धीरा ※ काम-अनल नृप अबुध सरीरा
भोर-बिवाह 'कालनिसि' कहहीं ※ स्यन्दन-उपर रमन युग करहीं
कालनिसा परसत जो नारी ※ परति नारि दुर्भाग बिचारी
आनि सुमित्रा अवध, नरेसू ※ अन्तःपुर किय पुलकि प्रवेसू
कौशल्या-कैकयि दोउ भामा ※ सोंच तासु लखि रूप ललामा
हर्षहिं बिसारि सौति अपनावैं ※ यहि भय शंकर-गौरि मनावैं
रानि तीन विलसत महिपाला ※ सुख सासन बीतेउ अतिकाला
सुत कर मुख न लखेउ नरनाहू ※ किय सत सप्त पचास बिवाहू

दो० बहु बनितान निकेत नृप, जिनहिं प्रमुख पद दीन ।
कौशल्या, कैकय-सुता, अरु सुमित्रजा तीन ।। ६० ।।

गोधूलिते दुइजने शुभदृष्टि करे ※ दोंहाकार रूपे आलो वसुमती करे
कुसुमशय्याय राजा शयन करिल ※ निद्रार अलसे प्राय अचेतन हैल
शय्या छाड़ि उठे दशरथ नृपवर ※ शय्यार उत्थान कौड़ि दिलेन विस्तर
वासिबिया सेइ स्थाने कैल दशरथ ※ यौतुक पाइल बहुधन मनोमत
विदाय हइल राजा राजार साक्षाते ※ सुमित्रा सहित राजा चड़े निज रथे
सुमित्रार रूपे राजा मदने मोहित ※ अधैर्य्य हइया राजा हइल मूर्च्छित
विलम्ब ना सहे आर करे इच्छाचार ※ रथेर उपरे राजा करेन शृङ्गार
वासिवियाहेर दिन हय कालराति ※ स्त्री पुरुष एक ठाँइ ना थाके संहति
कालरात्रे ये नारी के करे परशन ※ से स्त्री दुर्भागा हय नाहय खण्डन
सुमित्रा लइया राजा आनि निज देशे ※ अन्तःपुरे प्रवेशिलि परम हरिषे
कौशल्या कैकेयी तारा राणी दुइजन ※ सुमित्रार रूप देखि भावे मने मन
सुमित्रार रूप मजाइवे भूप-चित ※ आर ना चाहिवे आमासबाकार भित
निरवधि सेवे तारा पार्व्वती शङ्कर ※ सुमित्रा दुर्भागा ह'क एइ मागे वर
तिन रानी लैया राजा आछे कुतूहले ※ सुखे राज्य करे बहुकाल भूमण्डले
पुत्रहीन महाराज मने दुःख दाह ※ करिलेन सात शत पञ्चाश विवाह
सात शत पञ्चाशेर मुख्य तिन गणि ※ कौशल्या कैकेयी आर सुमित्रा सतिनी

---

१ दृष्टि २ सेवकों (नेगियों) को ३ दहेज ४ कन्यापक्ष वरपक्ष को विदाई के अवसर पर विदा करते व नजर देते हैं।

तिन, छबि अतुल सुमित्रा न्यारी ※ जगमग करत अयोध्या सारी
कालनिसा अपराध, बिचारी[1] ※ दैवयोग मन-भूप उतारी[2]
प्राणाधिक कैकई सनेहा ※ बसति भूप निसिदिन सोइ गेहा
तीनिहुँ - भाग सराह न जाई ※ सबन गर्भ जन्मे हरि[3] आई
मगन भूप इत सुख-संभोगू ※ अनावृष्टि उत अवध कुयोगू
वृष-रोहिणी दीठि शनि डारी§ ※ पावस[4] हरन अमंगलकारी
भोग विलास नारि - संभाषन ※रत[5]; पुर विपति न अवगत[6] राजन
सोइ अवसर नारद मुनि आये ※ आसन भूप पूजि बैठाये
सुनौ मुकुटमणि आगम-हेतू ※ कहौं कथा, सुनि होहु सचेतू
इन्द्र वृष्टि पोषत संसारा ※ तव पुर जल बिन सोक मँझारा
तैं कामिनि सन रत निसिवासर ※ भोगत नरक प्रजा दुखसागर
किय न अकाज काहु मुनि ज्ञानी ※ निन्दति प्रजा, बुद्धि बौरानी
पुरजन भोगत दुख निज कर्मा ※ लेपति किमि मम अंग अधर्मा
वर्षा छीन हेतु सुनु ताता ※ वृष-रोहिणी दृष्टि शनि पाता

तार मध्ये सुमित्रा ये परमा सुन्दरी ※ ताँर रूपे आलो करे अयोध्या नगरी
हेन स्त्री दुर्भागा हैल राजार विषाद ※ कालरात्रि दोष हैल एतेक प्रमाद
प्राणेर अधिक राजा कैकेयीरे देखे ※ दिवारात्रि दशरथ तारे लैया थाके
ए तिनेर भाग्य कत वर्णिव सम्प्रति ※ या सवार गर्भे जन्म लबेन श्रीपति[3]
सतत थाकेन राज सुखेर सागरे ※ दैवे अनावृष्टि हैल अयोध्या-नगरे
रोहिणी वृषेते हैल शनिर गमन ※ ते कारणे वृष्टि नाहि हय वरिषण
कौतुके थाकेन राजा भार्य्या सम्भाषणे ※ राज्येते प्रमाद हैल इहा नाहि जाने
सकल अयोध्या राज्ये हइल आपद ※ हेन काले आइलेन तथाय नारद
पाद्य अर्घ्य देन राजा बसिते आसन ※ मुनिर करिया पूजा बसिल राजन
नारद बलेन नृप करि निवेदन ※ आइलाम तोमारे करिते विज्ञापन
इन्द्रेर वृष्टीते बाँचे सकल संसार ※ तव राज्ये अनावृष्टि दुःख सबाकार
कामिनि लइया राजा करितेछ सुख ※ नरके पड़िला प्रजागण पाय दुःख
राजा बले कारे आमि नाहि करि दंड ※ कि कारणे मन्द मोरे बल राज्यखण्ड
दुःख पाय प्रजागण निज कर्म्मफले ※ कोन दोषे प्रजागण मोरे मन्द बले
नारद बलेन शुन नृप चूड़ामणि ※ रोहिणी नक्षत्रे दृष्टि दिया गेल शनि

१ वेचारी, दीन २ उपेक्षित, मनउतरी ३ रामादिक चार बन्धुओं में प्रगट होनेवाले नारायण के चार अंश ४ वर्षा ५ लीन ६ भिज्ञ, परिचित।

§ वृषराशि-स्थित रोहिणी नक्षत्र पर शनिश्चर की दृष्टि पड़ने पर अकाल योग होता है, यह ग्रंथकार का कथन है।

सोइ कारन तव प्रजा दुखारी * चले नृपहिँ कहि बीनाधारी
आवा चेत, साजि रथ राजा * चले लेन सुधि प्रजा-समाजा

दो० लखे उतर[१], आकुल सकल, जलचर, खग, पसु, वन्य[२]।
नदी, ताल, नद, बड़े सर, जल बिन शुष्क अरण्य[३] ॥ ६१ ॥

साँझ भई तरु-तर नृप वासा * शाखा, शुक-सारिका निवासा
कछु निसि बीति नींद भइ भंगा * कह बिहंग इमि सोक-प्रसंगा
कह सारिका, बास बहुकाला * गत, नित करत उपास[४] कराला
रविकुल-राजु न दुख कहुँ लेसू[५] * सो कस पाप ? दुसह दुखदेसू
चौदह वर्ष असन[६]-जलहीना * पावस-रहित, न फल तरु दीना
सर, सरिता, नद वारिविहीना * नृप पुरजन-हित चित तजि दीना
नारि-लिप्त निसि दिवस नरेसू * क्षुधा असह, शुक चलौ विदेसू
प्रिया ! सुनौ, कह शुक मृदु वानी * सीख न तव मैं रुचिकर जानी
सतयुग सों वन वसत सप्रीती * पीढ़ी मम पचास इत बीती
हमहिं[७] न दुख, दुख सब जग छावा * निरखि विषाद स्वयं नृप पावा
जेहि थल जनम, मरन सोइ देसू * तव सिख उचित न त्याग-स्वदेसू

एइ हेतु अनावृष्टि हइल राज्येते * प्रजागण दुःख पाय एइ कारणेते
एत वलि करिलेन नारद गमन * रथे चड़ि राज्य देखि बेड़ाय राजन
गेलेन उत्तर दिके गहन कानन * जलजन्तु देखे राजा पशु पक्षिगण
नद नदी देखे राजा ताहे नाहि जल * दिघि सरोवर देखे शुष्क से सकल
वेला अवसाने राजा वसे वृक्षतले * शारी शुक पाखी आछे सेइ वृक्ष डाले
शेष रात्रि हइल पक्षीर निद्रा भाङ्गे * पक्षिणी कहिल कथा पक्षिराज सङ्गे
बहुकाल हइल मोरा एइ वनबासी * आर कत पाव कष्ट नित्य उपवासी
सूर्यवंश राज्ये कभु दुःख नाहि जानि * चौद्द वर्ष अनाहार नाहि पाइ पानि
अनावृष्टि कारणे वृक्षेते नाहि फल * नद नदी सरोवर ताहे नाहि जल
भूपति पालिते राज्य चेष्टा नाहि करे * रात्रि दिन स्त्री लइया थाके अन्तःपुरे
कष्ट पाइ आर कत थाकि अनाहारे * अतएव चल प्रभु जाइ स्थानान्तरे
पक्षिराज वले प्रिये शुन मोर वाणी * तोमार वचने कि छाड़िब अरण्यानी
सत्ययुग हैते मोर एइ वने बास * गोंयाइनु एइ वने पुरुष पञ्चाश
मोर दुःख नहे दुःख हयेछे संसारे * एइ दुःखे आछे राजा दुःखित अन्तरे
एइ खाने जन्म मोर एखाने मरण * तोर बोले छाड़िते नारिब एइ वन

---

१ उत्तर दिशा २ जंगल के ३ जंगल ४ लंघन, फ़ाका ५ लवलेश, जरा भी ६ भोजन ७ केवल हम पर ही।

कह सारिका सुनौ शुक बाता * पापराज बसि प्रान निपाता
श्वास रुद्ध जल बिन गत प्राना * चलि तट सिंधु करैं जलपाना
युगुल पच्छि जिमि व्यथा बखाना * सुनि दसरथ तरुतर निज काना
असत[1] न कहेंउ तपोधन बानी * खग निन्दलि प्रतच्छ दर्सानी
इन्द्र लबार[2], बचन थिर नाहीं * कहनि-करनि[3] प्रतिकूल दिखाहीं

दो० बाँधि इन्द्र राखे अवध, रघु पितुजनक[4] स्वधाम ।
कटे फन्द बीने वचन, पावस सतत ललाम ।। ६२ ।।

पकरि इन्द्र पुनि, धरि जनि लावौं * तौ दसरथ—अजसुत न कहावौं
रजनी विगत, प्रभात अलोका * दुखित भूप, दोउ विहग विलोका
कह शुक, सुनु सारिका अपावन * अधम पच्छि किमि निन्दति राजन
सुनहिं सकल दसरथ निज काना * शब्दवेध सर हरहिं पराना
प्रान-मोह खग मन अति त्रासा * लिये डिम्ब[5] उड़ि चले अकासा
भुज उठाय नृप विहग बुलावा * पुनि प्रबोधि मृदु बचन सुनावा
अन्त[6] न जाहु तजौ भय-संका * सुख मन मानि बसौ तरु-अंका[7]
दोस न लेस[8] तोर खगरानी * लहेउँ चेत[9] सुनि तव सतबानी

पक्षिणी बलये पक्षी शुन विवरण * पातकीर राज्ये थाकि हाराबे जीवन
जल विन श्वासगत व्याकुलित प्राण * समुद्रेर तीरे गिया करि जलपान
एइ कथावार्त्ता तारा कहे दुइजने * वृक्ष तले थाकि ताहा दशरथ शुने
राजा बले नारदेर वचन प्रत्यक्ष * पक्षी मोरे निन्दा करे पेये उपलक्ष
बुझिलाम इन्द्रराज बड़इ चतुर * मुखे एक कहे से अन्तरे करे दूर
मम पितामह सेइ रघुनाम धरे * इन्द्रे आनि खाटाइल अयोध्यानगरे
तबे आजि हय मम दशरथ नाम * इद्रेरे वान्धिया आनि यदि निज धाम
रजनी प्रभात करे राजा मनोदुःखे * प्रभात हइले राजा दुई पक्षी देखे
पक्षी बले पापिनी पक्षिणी शुन वाणी * राजारे निन्दिला केन हइया पक्षिणी
से सकल दशरथ शुनियाछे काने * शब्दभेदी बाणे राजा मारिबे पराणे
पक्षीर पराण फाटे एतेक बलिया * डिम्ब लये ठोंटेते आकाशे उठे गिया
पक्षी पलाइया जाय पाइया तरास * ऊर्द्धबाहु करि राजा करेन आश्वास
दशरथ बले पक्षी ना पालाओ डरे * फिरिया आसिया वैस वासार उपरे
स्त्री वाक्ये अपराध नाहिक तोमार * तोमार वचने ज्ञान हइल आमार

---

१ मिथ्या २ झूठा, बकवादी ३ कहने और करने में अन्तर ४ पितामह
५ अण्डे-बच्चे ६ अन्यत्र, और कहीं ७ वृक्ष की गोद में ८ जरा भी ९ होश ।

कटहल - आमादिक जे कानन ※ खगन-अधीन कीन ते राजन
चले हेलि स्यन्दन सुरलोका ※ सभा-अमरगन[1] भूप विलोका
रन हुंकरत गर्जि महराजा ※ कहौ अमरगन कित सुरराजा
पुनि-पुनि समर हेत ललकारा ※ पूछेउ देव, क्रोध कस धारा
तुम सन रारि[2] न सुरपति भावा[3] ※ अनावृष्टि, नृप, जोगु सुनावा
चौदह वर्ष अवध जल नाहीं ※ उपज न अन्न, जीव बिलखाहीं
विनसत सृष्टि विकल जलहीना ※ नर, पसु, पच्छि, विटप, जलमीना
पावस विन, नित सहत कलेसा ※ सकल करत अपमान नरेसा

दो० कै[4] सुवृष्टि बरसैं जलद, अवध चराचर लोक।
हरषैं; नतरु[5], न दोष मोंहि, लहौं जीति सुरलोक ॥ ६३ ॥

चले अमरगन जहँ सुरनाथा ※ सबिधि वरन किय दसरथ-गाथा
काज कवन ? सुरपुरी प्रवेसा ※ मनुज न भय! किमि? कहेउ सुरेसा
अहंकार तजि सुनौ पुरंदर[6] ※ नहिं निस्तार[7] भूप सन संगर[8]
शब्दबेध संधान - प्रवीना ※ इत रन मनहुँ प्रान उत दीना
मिटै न जब लौं नृप मन-तापा ※ तिन सन करौ मधुर संलापा

एइ वने यत आम्र काँठालेर भार ※ आजि हैते दिलाल तोमारे अधिकार
पक्षी सम्वोधिया राजा राखि वासा घरे ※ आपनि गेलेन परे इन्द्रेर नगरे
स्वर्गेते पाइया राज़ा देवेर समाजे ※ कोथा इन्द्र बलिया डाकेन देवराजे
तर्जन करेन दशरथ महाराज ※ रणं देहि रणं देहि कोथा सुरराज
देवेरा बलेन राजा क्रोध कि कारण ※ तव संगे वासव ना करिवेक रण
भूपति बलेन मम राज्ये नाहि वृष्टि ※ अनावृष्टि हेतु मोर नष्ट हैल सृष्टि
मम राज्ये वृष्टि नाहि हय कोन काजे ※ अनावृष्टि हेतु यत प्रजागण मजे
चौद्द वर्ष अनावृष्टि नाहि हय धान ※ प्रजागण दुःखे मोरे करे अपमान
सुवृष्टि करिया सृष्टि राखुन सम्प्रति ※ नतुवा जिनिया लव ए अमरावती
एतेक शुनिया यान यत देवगण ※ इन्द्रके कहेन ताँर सब विवरण
वासव बलेन राजा एलो कि कारणे ※ मनुष्य हइया निन्दे शङ्का नाहि मने
देवेरा बलेन इन्द्र त्यज अहङ्कार ※ 'राजार युद्धेते कार' नाहिक निस्तार
शब्दभेदी बाण राजा शब्द मात्रे हने ※ तार सने युद्ध करि मरिब आपने
यावत् मनेते राजा नाहि पाय ताप ※ राजार सहित कर मधुर आलाप

१ देवताओं की सभा २ झगड़ा ३ पसंद ४ या तो ५ नहीं तो ६ इन्द्र
७ पार पाना ८ समर, युद्ध ।

सुरन-सीख सुरपति हिय आनी ❋ पाद अर्घ्य दसरथ सन्मानी
भूपति कहेउ, सुनहु सहसानन ❋ मम पुर अनावृष्टि केहि कारन
बृष-रोहिणी दीठि शनि डारी ❋ कारन अजल[1] कहेउ असुरारी
करौ निवारन तासु नरेसू ❋ महावृष्टि सरसै तव देसू
दशरथ रथ शनिलोक चलावा ❋ शनि-निकेत पुनि हाँक[2] लगावा
रविसुत[3] दीठि भूप-रथ भंगा ❋ गिरे गगन सों अष्ट तुरंगा
दड़ा[4] टूट रथ रहित अधारा ❋ भ्रमत चक्रवत व्योम[5] मँझारा
तहाँ न कोउ नृप मीत-सहाई ❋ सोइ छन, नभ कहुँ उड़त जटाई
लखेउ भ्रमित रथ, नरपति-पाता ❋ चूर अथाह होय गिरि गाता[6]
जो संकट सों महिप उबारौं ❋ बिरद सुयस चहुँ दिसि बिस्तारौं
धर्मधुरीन[7], रहत मम, नासा ❋ गिरैं धरनि कातर, अति त्रासा!

युगुल पसारे पंख नभ, अतुल वीर खगनाथ।
पंख-उपर थिर भूप पुनि, हय[8] जोरे रथ साथ ॥ ६४ ॥

बाँधि दड़ा अरु ध्वजा पताका ❋ सारथि पवन-तुरंगन[9] हाँका

देवतार वाक्य इन्द्र नाहि करे आन ❋ पाद्य अर्घ्य दिया ताँर करेन सम्मान
कहिलेन दशरथ करि सम्वोधन ❋ मम राज्ये अनावृष्टि हय कि कारण
वासव वलेन राजा शुन एक चित्ते ❋ पड़िल शनिर दृष्टि रोहिणी नक्षत्रे
छाड़ाइते पार यदि रोहिणीते दृष्टि ❋ हइवे तोमार देशे तबे महावृष्टि
चलिलेन दशरथ इन्द्रेर वचने ❋ रथ चालाइया जाय शनिर सदने
शनि घरे वलि राजा डाकिलेन ताय ❋ बाहिर हइया शनि सम्मुखे दाँड़ाय
शनिर दृष्टिते तबे छिंड़े रथदड़ा ❋ आकाश हइते पड़े तार अष्ट घोड़ा
छिंड़िया रथेर दड़ा नाहि पाय स्थल ❋ पाके पाके पड़े रथ करे टलमल
चक्रवत् फिरे रथ गगन उपरे ❋ हेनजन नाहि ये राजारे रक्षा करे
जटायु नामेते पक्षी उड़े अन्तरीक्षे ❋ आकाशे थाकिया पक्षी रथ पड़े देखे
भूमेते पड़िवे राजा नाहि पेये स्थल ❋ राजार हइबे चूर्ण शरीर सकल
हेन काले करि यदि राजार उद्धार ❋ घोषिते थाकिबे यश आमार अपार
दशरथ महाराज धर्म्म अधिष्ठान ❋ हेन राजा त्यजे प्राण मम विद्यमान
कातर हइवे राजा पड़िले भूमिते ❋ इहाभावि पक्षीराज दुइ पाखा पाते
पाखा पाति रहिल जटायु महावीर ❋ हइलेन ताहार उपर राजा स्थिर
स्थिर हैया दशरथ रथे जोड़े घोड़ा ❋ ध्वजा आर पताका वान्धेन जोड़ा जोड़ा

---

१ वर्षा का अभाव २ आवाज ३ शनिश्चर ४ बंधन ५ आकाश ६ शरीर ७ धर्म के आधार (दशरथ) ८ घोड़े ९ हवा के समान चलनेवाले घोड़ों को।

सोचत नृप, उत हय[1] नभ ओरा ※ बचे प्रान मम काहि निहोरा[2]
अज किंबा रघु पितर भुवाला ※ मेटी विपति कवन यहि काला
सम्मुख दरस जटायू पावा ※ रथ चढ़ाय, मृदु वचन सुनावा
गिरत धरनि विनसत मम काया ※ बचे प्रान तव पाय सहाया
को तुम भद्र? कहौ पितु नामा ※ परिचय देहु बसौ केहि ग्रामा
नाम जटायु, पच्छि मम जाती ※ जेठ बंधु मम नृप सम्पाती
गरुड़-तनय, सुभाव नभचारी ※ तहँ गिरत तव विपति निहारी
पंख पसारि भार तव साधा ※ सोइ प्रकार विनसी तव व्याधा
तैं मम सखा श्रेष्ठ सुनु प्रानी ※ दिय जिउदान न जाय बखानी
मुदित-दोऊ पुनि अगिन जराई ※ करि साखी सोइ कीन मिताई
नरपति - बन्धु विहगपति भयऊ ※ नृप सन बिदा माँगि घर गयऊ
सुनै जटायु-कथा धरि ध्याना ※ तासु विपति समुखैं भगवाना

राजा दशरथ का दुबारा शनि के निकट गमन और शनि द्वारा गणेश का जन्म-
वृत्तान्त वर्णन तथा दशरथ को वरदान

शनिगृह पुनि धाये अजनन्दन ※ सभय मूँदि दृग कह रविनन्दन[3]

सारथि घोड़ार गाय मारिलेक छाट ※ आरबार चले घोड़ा आकाशेर बाट
राजा बलिलेन रथ राख एइखान ※ राखिल आमार प्राण देखि कोन जन
रघु पितामह किंवा सेइ अज पिता ※ एमन विपदे केवा आमार रक्षिता
तुलिलेन पक्षिराजे रथेर उपरे ※ मधुर सम्भाषे राजा जिज्ञासेन तारे
आछाड़ खाइया पड़िताम भूमितले ※ करिले आमारे रक्षा तुमि हेन काले
कोन देशे थाक तुमि काहार नन्दन ※ परिचय देह मोरे तुमि कोन जन
पक्षीराज बलिलेन आमि पक्षीजाति ※ मम ज्येष्ठ भाइ पक्षी भूपति सम्पाति
जटायु आमार नाम गरुड़-नन्दन ※ अन्तरीक्षे भ्रमि आमि उपर गगन
आछाड़ खाइया पड़ देखिया राजन ※ राखिलाम पाखा पाति तोमार जीवन
दशरथ बलिलेन तुमि मोर मित्र ※ प्राणदान दिले मम कि कह चरित्र
तारपर रथ काष्ठ खसाइया आनि ※ ज्वालिलेन हुतभुक् नृपति आपनि
उभये मित्रता करे अग्नि करि साक्षी ※ हइल राजार मित्र जटायु ये पक्षी
जटायु पक्षीर कथा शुने येइ जन ※ सर्वत्र ताहारे राखे देव नारायण
विदाय हइया पक्षी चलिलेक देशे ※ आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवासे

दशरथेर पुनर्व्वार शनिर निकटे गमन ओ शनि कर्त्तृक गणेशेर जन्म-वृत्तान्त-वर्णन
एवं शनि कर्त्तृक दशरथ के वरदान

पुनश्च गेलेन राजा शनिर भवने ※ राजारे देखिया शनि भीत हय मने

१ घोड़े २ अनुग्रह से, बदौलत ३ शनिश्चर।

पाय प्रथम कुदीठ निस्तारा ※ सकेँउ जो नृप आगम यहि बारा
सारभौम रविकुल मणि राजन ※ जन्मैं तव निकेत नारायन

दो० धर्मरूप ! सोइ हेत नृप, मम सक दीठि निवार[1] ।
नतरु[2] दीठ-शनि परत छन, सकल होत जरि छार ॥ ६५ ॥

तासों मोरि कुदीठ निवारी ※ आवौ भूपति घूमि पछारी
सुनौ कथा, धरि ध्यान, पुरातन ※ जिमि गनेस पायउ गज-आनन
सुनेउ जनम-सुत गौरि-निकेता ※ जुरे सकल सुर दरसन हेता
देव-समाज न शनि अवलोका ※ कहत, न रवि-सुत, देवि! विलोका
उमा दूत पठयेउ मम वासा ※ आयसु पाय चलेउँ कैलासा
परत दीठि मम सुवन-गिरीसा[3] ※ लखेउ सबन उत शिशु विन सीसा
देव अवाक् शंभु मन चिन्ता ※ पारवती उर ताप अनन्ता
जस के तस, न सभा कोउ त्यागी ※ मम सुत सीस हरन को भागी[4]
कहत अमरगन, हे जग-जननी ※ असुभ दीठि-शनि कै यह करनी
सुनि, सकोपि शनि-बध मन ठानी ※ लै त्रिशूल हुंकरीं भवानी
चहुँ, मैं फिरत, न आश्रय पावा ※ सुरन बीच लुकि, प्रान बचावा
चण्डि-कोप ! कर शूल कराला ※ निरखि देवगन हाल-बिहाला

शनि वले दशरथ आइले आबार ※ तुमि से आमार दृष्टे पाइले निस्तार
दशरथ तुमि सूर्य्यवंशेर भूषण ※ लवेन तोमार घरे जन्म नारायण
राज-चक्रवर्ती तुमि धर्म अवतार ※ ते कारणे मोर दृष्टे पाइले निस्तार
मुदिया नयन शनि दशरथे वले ※ सम्मुख छाड़िया तुमि एस पृष्ठमूले
पूर्व्व कथा कहि राजा ताहे देह मन ※ येमते शिवेर पुत्र हैल गजानन
जन्मिलेन गणपति गौरीर नन्दन ※ देखिते गेलेन तथा यत देवगण
देवगण वले देवी तोमार आदेशे ※ आइल सकल देव शनि ना आइसे
दूत पाठइया दिल आमार गोचर ※ देखिते गेलाम पुत्र कैलास शिखर
शुभ दृष्टे गिया येइ मुखपाने चाइ ※ सबे वले गणेशेर मुण्ड देखि नाइ
ता देखिया देवगण हइल विस्मित ※ पार्व्वतीर मनोदुःखे महेश चिन्तित
पार्व्वती वलेन हेथा आछे देवगण ※ आमार पुत्रेर मुण्ड निल कोन जन
देवगण बलेन शुनह विश्वमाता ※ शनिर दृष्टिते भस्म गणेशेर माथा
देवतार वाक्य शुनि रुषिया भवानी ※ आमारे वधिते जान लये शूलपाणि
पलाइया जाइ आमि स्थान नाहि पाइ ※ देवतार आड़ालेते तखनइ लुकाइ
शूल हस्ते आइलेन देवी महाकोपे ※ पार्व्वतीर कोप देखि देवगण काँपे

---

१ वच निकलना २ नहीं तो ३ शिव के पुत्र गणेश ४ ज़िम्मेदार ।

विनवैं, अगम, अकथ तव दाया * आदिशक्ति, जगगति, जगमाया
शनि कुदीठ भव सीस-विहीना * कातुक वर माता तुम दीना
सोइ वर, वरदायिनि विपरीता[1] * शनि-वध उचित न मातु प्रतीता
स्वयं सिर्जि पुनि-ताहि निपाती * तासु त्रान जगती केहि भाँती

दो० विनय गौरि सन कीन विधि[2], शनिबध कतहुँ न हेत ।
धरौ धीर, गनपति-वदन[3], सिरजौं, करौं सचेत[4] ॥ ६६ ॥

चलेउ पवन विधि-आयसु पाई * लखेउ अबुध सोवत गजराई[5]
उतर-सीस[6] जल-गंग-अघाना[7] * निरखि मरुत[8] अवसर मनमाना
काटि भाल-गज[9] आनि बहोरी * नर-तन, मुख-कुञ्जर इमि जोरी
रूप बिहंगम तनय बिलोका * कस गजवदन? गौरि मन सोका
अन्य-देव-सुत-छबि मन मोहा * निज नन्दन निरखत मन छोहा
विधि[2] विधान दै, पुनि समुझावा * तव सुत आदि-पूज-पद पावा
तजि गजवदन, इतर सुर ध्यावै * धर्म, लोक-परलोक नसावै
ऐरावत इत सीस विहीना * निरखि अपार इन्द्र दुख कीना

सकल देवतागण करिछे स्तवन * आपनि सृजिया शनि मार कि कारण
तुमि आद्याशक्ति माता जगतेर गति * तोमार महिमा वले काहार शकति
आपनि दियाछ वर परम कौतुके * शनि यारे देखे तार माथा नाहि थाके
पाइया तोमार वर तोमाते परीक्षा * तुमि यदि मार तारे के करिबे रक्षा
शनिके मारह केन विधाता बलेन * स्थिर हओ जीयाइब तोमार नन्दन
आज्ञा करिलेन ब्रह्मा तवे पवनेरे * मुण्ड काटि आन येवा उत्तर शियरे
गङ्गा नीर खाइया इंद्रेर ऐरावत * उत्तर शियरे शुयेछिल निद्रागत
काटिया ताहार मुण्ड आनिल पवन * रक्तमांसे जीयाइल हैल गजानन
शरीर नरेर मत वदन करीर * देखिया हइल बड़ दुःख पार्व्वतीर
सकल देवेर पुत्र देखिते सुन्दर * गजमुख वसिबेक ताहार भितर
विरिञ्चि बलेन करि गणेशेरे राजा * आगे गणेशेर पूजा पिछे अन्य पूजा
गणेश थाकिते येवा अन्य देवे पूजे * पूर्व्व धर्म्म नष्ट तार हय सब काजे
ऐरावत मुखे जीयाइल लम्बोदर * हस्तीर शोकेते कान्दि कहे पुरन्दर

१ शनि को स्वयं भगवती से यह वरदान प्राप्त था कि उसकी दृष्टि में आते ही वस्तु नष्ट हो जाय। अब उसका प्रयोग उन्हीं के पुत्र पर हो जाने से, उन्हें अपने ही दिये वर के विपरीत, शनि पर कोप न करना चाहिए। विनम्र देवताओं ने इस प्रकार निवेदन किया २ ब्रह्मा ३ मुख ४ प्राणयुक्त ५ ऐरावत ६ उत्तर दिशा की ओर सिर रखकर ७ तृप्त ८ पवन, वायु ९ गज-मस्तक ।

उच्चैःश्रवा - दन्तिपति[1] हीना ※ किमि सुरपति सुर-साज विहीना
अनिल[2] बहोरि विरञ्चि पठावा ※ श्वेत मतंग[3] पछिम सिर पावा§
लाय कीन गजपतिहिं स-बदना[4] ※ पच्छिम शिर अनुचित इमि शयना
बन्दि गौरि, पुनि सहित मतंगा ※ सुरपति चले सुरन लै संगा
गनपति-जनम-कथा शनि वरनी ※ दसरथ सुनौ, दृगन मम करनी
तैं मानव पुनि-पुनि पग धारा ※ किमि संभव कुदृष्टि निस्तारा
मैं रविसुत, तैं रविकुल जाया ※ सोइ कारन निवरेउ[5] नृपराया
जो जानौं तव आगम हेतू ※ पूरन करौं भानु - कुल - केतू

दो० तव लोचन रोहिनि ग्रसित, विकल धरा, जल-हीन ।
भूप-मनोरथ जानि शनि, मुक्त रोहिणी कीन ।। ६७ ।।

तजि विषाद गृह जाहु नरेसू ※ पावस[6] अतुल झरइ तव देसू
तव यश भूप त्रिलोक प्रकासी ※ जब जहँ रोहिनि गृह वृष रासी
तहाँ न शनि आगम सोइ काला ※ लहि रविसुत[7]-वर, तोष[8] भुवाला
दसरथ चले जहाँ सुरराजा ※ तहँ विराज विच देव-समाजा

उच्चैःश्रवा घोड़ा आर ऐरावत हाती ※ ए सब सम्पदे मम नाम सुरपति
आज्ञा करिलेन चतुर्मुख पवनेरे ※ मुण्ड काटि आन येवा पश्चिम शियरे
पश्चिम शियरे शुये श्वेत हस्ती यथा ※ पवन काटिया आनि दिल तार माथा
प्राण पेये ऐरावत गेल निज घरे ※ हेलाय आलस्य नाइ पश्चिम शियरे
देवीरे प्रणाम करि गेल देवगणे ※ गणेशेर जन्म शनि कहिल राजने
शुभदृष्टे कोपदृष्टे यार पाने चाइ ※ आमार दृष्टिते केह रक्षा पाबे नाइ
मनुष्य हइया तुमि एस वार बार ※ सूर्य्यवंशे जन्म हेतु पाइले निस्तार
सूर्य्यवंश जात आमि सूर्य्येर कुमार ※ एक वंशे जन्म तेंइ पाइले निस्तार
कि कारणे आसियाछ तुमि मोर पाश ※ वर चाह तोमार पूराब अभिलाष
तखन बलेन दशरथ यशोधन ※ रोहिणीते तव दृष्टि नहे वरिषण
शनि वले आजि हैते छाड़िव रोहिणी ※ अविलम्बे देशे चलि जाओ नृपमणि
आजि हैते तव राज्ये हवे वरिषण ※ घोषिबे तोमार यश ए तिन भुवन
रोहिणी वृषभ राशि हवे येइ जन ※ सेइ राज्ये हबे ना आमार आगमन
हइया सन्तुष्ट नृपे शनि दिल वर ※ चलिलेन राजा इन्द्र निकटे सत्वर
सभाते वसिया इन्द्र सह देवगणे ※ दशरथ बसिलेन ताँर एकासने

१ ऐरावत २ पवन ३ सफ़ेद हाथी ४ शिरसहित ५ बच सके हो ६ वर्षा ७ शनिश्चर ८ तृप्ति ।

§ श्वेत हस्ती के पश्चिम दिशा की ओर शिर रखकर सोने पर शिरच्छेद होने के कारण पश्चिम की ओर शिर करके सोना वर्जित है ।

गाथा, शनि - प्रसाद जिमि पावा ※ सकल सुरपतिहिं भूप सुनावा
बोले वचन देव मन हर्षा ※ सात दिवस अविरल[1] जल वर्षा
घन बरसैं तव धाम नरेसू ※ यथाकाल पावस तव देसू
पाय मनोरथ इमि नृपराई ※ चले अवध मन मुद अधिकाई
पुनि, 'आवर्त्त', 'द्रोण' अरु 'पुष्कर' ※ घन 'संवर्त' चारि जे जलधर§
आयसु-इन्द्र पाय दिन साता ※ अवध-धरा अविरल जलपाता
पूरित जल नद, नदी, तडागा ※ हरित रसाल[2] विटप फल लागा
जड़-जंगम[3] सचेत, सुख छावा ※ जिमि तप अन्त मनोरथ पावा
दान, ध्यान, सुख, संपति, साजा ※ इन्द्र सरिस[4] शासन-रत राजा
वयस[5] सहस नव, भूपति बीती ※ सार्द्ध-सप्त-शत[6] रानि निपूती[7]
भार्गव-सुता एक तहँ रानी ※ तनया तासु गर्भ छबिखानी
जन्मी, सुबरन सरिस निहारी ※ 'हेमलता' तिन नाम पुकारी

दो० लोमपाद दसरथ - सखा, अंगप[8] धर्म-धुरीन ।
प्रथम अवधपति सों कबहुँ, जिन अस वाचा लीन ।। ६८ ।।

कहिलेन से सव वृत्तान्त पुरन्दरे ※ शनिके प्रसन्न करिलेन ये प्रकारे
शुनिया राजार कथा देवराज भाषे ※ एक्षणे हइबे वृष्टि जाओ तुमि देशे
सात दिन वृष्टि मात्र झड़ न करिब ※ तोमार राज्येते जल यथाकाले दिब
बिदाय हइया राजा गेलेन स्वदेशे ※ आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवासे
अनुज्ञा करिल इन्द्र चारि जलधरे ※ सात दिन वृष्टि करे अयोध्या-नगरे
आवर्त्त सम्वर्त्त द्रोण आर ये पुष्कर ※ चारि मेघे वृष्टि करे पृथिवी उपर
नद नदी सरोवर पूर्ण हैल जले ※ अनावृष्टि घुचिल वृक्षेते फल झुले
जीवन पाइया सब जीवेर समृद्धि ※ तपस्यार अन्ते येन मनोरथ सिद्धि
दान ध्यान सदा करे राज्ये प्रजागण ※ सुखे राजा राज्य करे सम्पदभाजन
राज्य करे दशरथ येन पुरन्दर ※ राजार वयस नय हाजार वत्सर
सात शत पञ्चाश ये नृपति रमणी ※ कारो पुत्र ना हइल बन्ध्या सब नारी
भार्गव राजार कन्या छिल एक जन ※ तार गर्भे एक कन्या जन्मिल तखन
परमा सुन्दरी कन्या अति सुचरिता ※ स्वर्णमूर्त्ति देखे नाम राखे हेमलता
दशरथ सखा अङ्गदेशेर नृपति ※ लोमपाद अंगदेशे करित बसति
जन्मियाछे कन्या दशरथेर शुनिया ※ लोमपाद आने तारे लोक पाठाइया

---

१ लगातार २ रस वाले (वृक्ष) ३ चल-अचल सृष्टि ४ समान ५ उम्र
६ साढ़े सात सौ ७ निस्संतान ८ अंग देश के नरेश ।

§ इन नामों वाले चार बादलों को अयोध्या में जल बरसाने हेतु इन्द्र ने नियुक्त किया ।

सुता-जनम सुनि सोइ अनुसारी ※ पठये दूत अंग-अधिकारी[1]
दसरथ विवस, न आनाकानी[2] ※ लोमपाद गृह कन्या आनी
तासु गेह कन्या प्रतिपाला ※ राजत अवध, अवध-महिपाला

दशरथ के द्वारा अंधमुनि के पुत्र का वध

भावी प्रबल! दिवस अेक राजन ※ चले साजि मृगया[3] हित कानन
शत शत गज, रथ सहित तुरंगा ※ मृग हित फिरत सिथिल नृप-अंगा
निबिड़[4] अरण्य, न मृग कहुँ पेखा ※ 'अन्धक' मुनि तप-उपवन देखा
तहँ तरु-तर नृप किय विश्रामा ※ जहँ तडाग लख दिव्य ललामा
अंधक-पुत्र 'सिंधु'[5] सर तीरा ※ घट ढेंढुकाय[6] भरत तहँ नीरा
डब-डब धुनि घट-मुख जल भरई ※ मृगी पियति जिमि जल—सुनि परई
खाय दूब-तृण सर जलपाना ※ नृप अनुमानि बान संधाना
सब्धबेध सायक तज चापा ※ सोइ छन सिन्धु बदन सर व्यापा
मृगी लेन नृप पनघट धाये ※ प्रान कण्ठगत मुनि-सुत पाये
बान विद्ध लखि भ्रम निज जाना ※ अहह! विकल लीने मुनि-प्राना

सत्य छिल पूर्व्वेते करिते नारे आन ※ लोमपाद पुण्यवान धर्म्म अधिष्ठान
कन्या रहे लोमपाद भूपतिर घरे ※ दशरथ राजत्व करेन निज पुरे

दशरथ कर्त्तृक अन्धमुनिर पुत्र-वध

दैवेर निर्व्वन्ध आछे ना जाय खण्डन ※ मृगया करिते राजा करेन गमन
हस्ती घोड़ा राजार चलिल शते शते ※ मृग अन्वेषिते राजा बेड़ान वनेते
भ्रमिया बेड़ान राजा निविड़ कानन ※ अन्धकेरे तपोवने गेलेन तखन
श्रमयुक्त हइया वसेन वृक्षतले ※ दिव्य सरोवर देखिलेन सेइ स्थले
अन्धक मुनिर पुत्र सिन्धु नामे धरे ※ कलसीते जल भरे सेइ सरोवरे
कलसीर मुख करे बुक् बुक् ध्वनि ※ राजा भावे जल पान करिछे हरिणी
पाता लता खाइया पशेछे सरोवर ※ इहा भावि वधिते जुड़ेन धनुःशर
शव्दभेदी वाण राजा शव्द मात्र हने ※ मुनि पुत्रोपरि वाण पड़े सेइ क्षणे
मृग ज्ञाने वाण हने राजा दशरथ ※ वाणाघाते मुनि पड़े प्राण ओष्ठागत
मृगेर उद्देशे राजा यान दौड़ादौड़ि ※ मृग नहे मुनि-पुत्र यान गड़ागड़ि
देखेन सिन्धुर बुके विद्ध आछे वाण ※ अति भीत दशरथ उड़िल पराण

---

१ अंगनरेश लोमपाद २ संकोच, टाल-मटूल ३ शिकार ४ घने ५ माता-पिता के अनन्य सेवक लोकप्रसिद्ध 'श्रवण' का नाम 'सिन्धु' कृत्तिवास ने लिखा है ६ झुकाकर।

बोल न मुख, हत अंधकुमारा ※ कियेउ कछुक जल हेत इसारा[1]
अञ्जलि जल नृप द्विज-मुख दीना ※ सरसति 'सिंधु' सचेतन कीना
धुनत सीस, दसरथ संतापा ※ सो लखि मुनिसुत दीन न शापा

दो० लाभ न दीन्हे शाप कछु, होहु न भीत भुवाल।
टरै न टारे करमगति, जो विधि लिखी कपाल ॥ ६६ ॥

सुरति[2] कथा मोंहि जनम पुरातन ※ मम तन भूप-सुवन, सुनु राजन !
प्रिय आखेट गुलेल अनन्दा ※ नित कानन मारौं खग-वृन्दा
युगुल कपोत[3] निरखि तरु-डारी ※ तिनहिं गुलेल साधि तकि मारी
गिरत कपोत कपोतिनि तापा ※ व्यथित विहंगिनि दिय मोंहि शापा
खगी-शाप-तरु-किंशुक[4] फूला ※ तव सर हतन मोर अनुकूला[5]
कस प्रमाद ? कस शोक ? नरेसू ! ※ मम बध तव न दोष लवलेसू
तदपि कलेस न बिसरै[6] दारुन ※ अंध जननि-पितु श्रीफल-कानन
मम बिन मरैं, जुगुल बिलखाई ※ मरनकाल तिन दरस न पाई
रहेउँ[7] अंध-अंधिनि कै आसा ※ मेटै को तिन छुधा-पिपासा ?
को फल-सलिल देय ढिग जाई ※ विनसैं अबुझ छोभ अधिकाई

बुके बाण बाजियाछे कथा नाहि सरे ※ 'जल देह' बले मुनि हस्त अनुसारे
अञ्जलि पूरिया राजा आनिल जीवन ※ मुखे दिवामात्र मुनि पाइल चेतन
शिरे हस्त दिया राजा करे मनस्ताप ※ व्याकुल देखिया मुनि नाहि दिल शाप
मुनि बले दशरथ भय कि कारण ※ तोमारे शापिया आमि पाब कत धन
कपाले या थाके याहा ना हय खण्डन ※ पूर्व्व जनमेर कथा हइल स्मरण
पूर्व्वेते छिलाम आमि राजार कुमार ※ मारिताम बाँटुलेते पक्षी अनिबार
कपोत कपोती पक्षी छिल एक डाले ※ कपोतेरे मारिलाम एकइ बाँटुले
मृत्युकाले कपोती आमारे दिल शाप ※ परजन्मे एइ रूप पावे मनस्ताप
व्यर्थ ना हइल सेइ पक्षीर वचन ※ होइल तोमार बाणे आमार मरण
लइला आमार प्राण कोन अपराधे ※ आमारे मारिया बड़ पड़िले प्रमादे
अन्ध पिता माता मम श्रीफलेर वने ※ आजि तारा मरिबेन आमार बिहने
एत बड़ दु:ख मम रहिल ये मने ※ मृत्युकाले देखा ना हइल दोंहासने
आमि अन्धकेर प्राण हइया छिलाम ※ तृष्णाय सलिल फल क्षुधाय दिताम
आर केवा फल जल दिबेक दोंहाके ※ अनाहारे मरिबेक आमा पुत्र शोके

१ संकेत, इशारा २ याद ३ कबूतर का जोड़ा ४ कबूतरी के शाप रूपी वृक्ष में फल निकला ५ मुनासिब, उचित ६ भूलता ७ था।

करौ काज अेक, शव नृपराई ※ राखौ जनक-जननि ढिग जाई
नहिं अनुसरे[१], नसै संसारा ※ तव अपराध न पुनि प्रतिकारा[२]
सिथिल गात 'हरि' नाम उचारा ※ बही सिंधु-मुख शोनित[३] धारा
कम्पमान लखि भूप अधीरा ※ लियेउ खैंचि सर सिन्धु-सरीरा
सोचति पुनि कस कौन विधाता ※ मृगया फिरत फसेउँ द्विज-घाता
पुनि शव[४]-सिंधु कंध धरि राजन ※ चले, रुदन बहु, अंधक-कानन

दो० शकुन असंगल इत भुजा, दृग फरकत विपरीत ।
कस विलंब सुत आगमन ? पूछत मातु सभीत* ।। ७० ।।

कहत अंध कस मति बौरानी ※ नित समीप पावत फल पानी
आज दूरि कहुँ कानन हेरा[५] ※ सोइ विलंब कारन सुत केरा
चर्चा-सुवन करें दोउ प्रानी ※ सोइ अवसर शव, नृप तहँ आनी
सूख पात, श्रीफल चरचरहीं ※ आयेउ तात, अंध मुनि कहहीं
जोति न लोचन, पल-पल भारी ※ अहह ! पुत्र ! दोउ कहत पुकारी
दिवस उपास[६] न किय जलपाना ※ असन[७]-नीर दै राखहु प्राना

एइ सत्य दशरथ करह आपने ※ आमा लैया जाओ पिता मातार सदने
इहा बिना तोमार नाहिक प्रतिकार ※ नहे सृष्टि नाश हबे मजिबे संसार
मृत्युकाले सिन्धुमुनि नारायणे डाके ※ नारायण बलिते उटिल रक्त मुखे
देखि दशरथ हइलेन कम्पमान ※ खसाइलेन ताहार बुक हैते बाण
भूपति भावेन आसि मृग मारिबारे ※ घटिल तपस्वी हत्या आमार उपरे
मृत मुनि तुलि राजा लइल काँधेते ※ अन्धकेर वने गेल काँदिते काँदिते
हेथा तपोवने बसे अन्धक अन्धकी ※ वाम नेत्र भुज स्पन्दे अमंगल देखि
गृहिणी बलेन नाथ ए कि कुलक्षण ※ आजि केन पुत्रेर विलम्ब एत क्षण
अन्धक बलेन शुन पागली गृहिणी ※ आर दिन निकटे पाइत फल पानि
आज बुझि गियाछे से दूरस्थ कानन ※ सेइ हेतु विलम्ब हइल एतक्षण
एइ कथावार्त्ता ताँरा कहेन दुजन ※ मड़ा काँधे करि राजा गेलेन तखन
शुष्क श्रीफलेर पाता मच मच करे ※ अन्धक बलेन एइ पुत्र एल घरे
चक्षु नाहि मुनिर ये देखिते ना पाय ※ एस पुत्र बलिया डाकिछे उभराय
कालिकार उपवासी करिब पारण ※ फल जल दिया बापू राखह जीवन

१ ऐसा न करने पर २ प्रायश्चित्त ३ रक्त ४ मृतक शरीर ५ ढूंढ़ा ६ लंघन, उपवास ७ भोजन ।

* अपशकुन होने पर, अपने पुत्र सिंधु (श्रवण) के आने में विलंब देख अंधी माता ने श्रवण के अंधे पिता से डरते हुए पूछा ।

दोउन गोहार[1], भूप मन त्रासा ※ संसय-बस न जात तिन पासा

राजा दशरथ को अन्धक मुनि का शाप

आगे बढ़त, हटत पिछलाहीं ※ सुत लखि मौन, अंध घबराहीं
जनक-जननि सन कस उपहासू ※ जोतिहीन - हिय - जोति - प्रकासू
धरत ध्यान कौतुक[2] मुनि देखा ※ धुनेउ सीस कर, रुदन विशेषा
दसरथ ! तव-सायक सुत घाला ※ शव समीप आनौ नरपाला
"सुवन-बिछोह[3] प्रान तव जाहीं ※ इतर शाप मुख निकसत नाहीं
पुत्र - शोक दारुन अनुतापा ※ भोगहु नृप", इमि अंध विलापा
"तजब प्रान दोउ", सुनि नरराई ※ शाप सरिस - वरदान[4] सुहाई
सत[5] द्विज-वचन फलवती मंसा[6] ※ मरौं भले, निरखौं अवतंसा[7]
विष्णु-तुल्य मुनि मोहिं प्रतीता ※ अमिट वचन तव, हर्ष अतीता

दो० सुत-वियोग किमि वर-सरिस ? लखेउ अंध धरि ध्यान।
नृप-निकेत[8] जन्मैं स्वयं कृपासिंधु भगवान ॥ ७१ ॥

दुइ जने डाक छाड़े राजार तरास ※ आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

दशरथेर प्रति अंधकेर अभिशाप

देखि दुइ अन्धे राजा सन्देह अन्तरे ※ याइते नारेन अग्रे पाछु याम धीरे
कहिल अन्धक मुनि करिया विश्वास ※ किवा माता-पिता सने कर उपहास
देखिते ना पाय मुनि बसिलेक ध्याने ※ सकल वृत्तान्त मुनि क्षणेकेते जाने
चक्षु भासे नीरे करे कराघात शिरे ※ बले, राजा मारियाछे पुत्रे एक तीरे
मुनि बले एस दशरथ नरपते ※ मृत पुत्र आनिले आमाके देखाइते
आर किवा दशरथ, शापिब तोमाके ※ एइ मत तोर प्राण जाबे पुत्रशोके
पुत्रशोके मरिब आमरा दुइ प्राणी ※ पुत्रशोक ये यन्त्रणा जानिबे आपनि
मुनि शाप दिल यदि राजार उपरे ※ दशरथ कहिछेन प्रफुल्ल अन्तरे
'शुभमस्तु' मुनिवाक्य ना हइबे आन ※ देखिया पुत्रेर मुख जाय जाबे प्राण
तोमा मुनि देखि येन विष्णुर समान ※ तोमार वचन सत्य होक नहे आन
तव शापे मुनि मम हरिष अन्तर ※ शाप नहे आमार हइल पुत्र-वर
अन्ध बले दशरथ वञ्चित सन्ताने ※ पुत्रशोके शाप दिनु वर करि माने
ध्यान करि जानिल अन्धक तपोधन ※ इहार घरेते जन्मिबेन नारायण

---

१ पुकार २ रहस्य ३ वियोग ४ वरदान के समान ५ सत्य ६ मनोकामना
७ पुत्र ८ घर।

मम वर[1] सत्य, गेह[2] तव भूपा * चारि अंस हरि जनम अनूपा
पुनि सोइ वचन शाप होइ लागी * पुत्र-विछोह मरौ तन त्यागी
ग्यारह वर्ष विलसि सुत चारी * सुत-सूने[3] तन तजौ दुखारी
द्विज कर शाप अकारथ नाहीं * लोचन तजेउँ कोप-मुनि माहीं
पूरुब[4] शाप-कथा मम राई * सुनौ, नैन जिमि जोति गँवाई
श्लीपद-पग त्रिजटा मुनि आये * पितु निकेत मम अलख जगाये[5]
पाद अर्घ्य पितु आसन दीना * कस द्विजनाथ, आगमन कीना?
भिक्षा हेतु, दिवस उपवासी * मुनिवर, मैं भोजन अभिलासी
विधिवत असन[6] अतिथि पितु दीना * सविनय विदा तपोधन कीना
कहेउ तात[7], हे सुत! अनुसरहू * मुनि-पद बंदि दण्डवत करहू
पग स्थूल, घृणा, लखि जागी * लेउँ तासु रज किमि अनुरागी[8]
नयन मूँदि रज सीस चढ़ावा * 'एवमस्तु'[9] मुनि वचन सुनावा
कथन महर्षि अमिट फल दीना * भये अंध दृग जोति-विहीना
सोइ अपराध दीठि-तिय लीना§ * गमन तपोधन कानन कीना

याह राजा तोमारे दिलाम आमि वर * चारि पुत्र तोमार हवेन गदाधर
मम शापे पुत्रशोके तोमार मरण * पुत्र हैले एकादश वत्सर जीवन
व्यर्थ नाहि हय कभु मुनिर वचन * मुनिर शापेते अन्ध आमार लोचन
पूर्व्व कथा कहि राजा ताहे देह मन * ये शापे हइल मम अन्ध ए लोचन
त्रिजटा मुनिर दुइ चरण डागर * मागिते आइल भिक्षा मम पितृघर
मुनिरे देखिया पिता उठिल तखन * पाद्य अर्घ्य देन तारे बसिते आसन
जिज्ञासा करेन ताँरे केन आगमन * मुनि बले आइलाम भिक्षार कारण
गतकल्य हते आमि आछि उपवासी * भोजन कराओ मोरे तुमि महाऋषि
अतिथि बलिया पिता करान भोजन * विदाय हइया मुनि यान तपोवन
पिता आसि आमारे कहेन सेइ काले * दण्डवत् करह मुनिर पद तले
गोदा पा देखिया ताँर घृणा हैल मने * एमन पायेर धूला लइब केमने
लइलाम नयन मुदिया पद धूलि * आशीर्वाद दिल मुनि एवमस्तु बलि
व्यर्थ ना हइल सेइ मुनिर वचन * इहाते हइल अन्ध आमार लोचन
सेइमत करिलेक आमार गृहिणी * दोंहारे करिया अन्ध घरे गेल मुनि

१ वरदान २ गृह ३ अनुपस्थिति में ४ पूर्व जन्म की ५ परमात्मा के नाम पर याचना करना ६ भोजन ७ पिता ८ प्रेम व भक्तिपूर्वक ९ ऐसा ही हो।

§ यही अपराध पत्नी द्वारा करने पर मुनि ने उसे भी अंधी होने का शाप दिया।

असिस[1] समान, शाप अनुकूला[2] ※ नृप तव गेह जनम जगमूला[3]
सुफल सत्य पालन नरराई ※ रचौ यज्ञ ऋषि 'शृंग' बुलाई

दो० श्रीफल पायेउँ बन फिरत, तव अर्पन नरनाथ।
चरु[4] दीन्हे फल दिव्य सों, प्रगटैं दीनानाथ ॥ ७२ ॥

करुन बैन पुनि अन्धक भाषा ※ लावहु सुत-शव कित नृप राखा?
दसरथ धरी आनि मृत काया ※ लोटत छिति बिलखत मुनिराया
नैन विहीन, न निरखत देहीं ※ परसत कर, सुअंक भरि लेहीं
बहु तप किये, लहेउँ तोहिं ताता ※ जनक-जननि घालक तव घाता
पुरवत फल-जल छुधा-पिपासा ※ अंधक-नयन, अंधि कर आसा
सन्ध्या-त्याग न गुरु-अपमाना ※ दधि-तन्दुल न असन मन आना[5]
पर धन हरेउँ न पाप अचारा ※ निधन[6] अकाल सुवन कस डारा
कैधौं[7] बिगरि पुरातन करनी ※ सुत-बिछोह भोगत पितु-जननी
'नारायण' कहि, सन्तति-सोकू ※ तजि तन, मुनि गमनेउ हरिलोकू
जीवन दुसह, सती पतिहीना ※ अन्धकि अन्ध-अनुगमन कीना
दसरथ लै पुनि मृतक सरीरा ※ चन्दन अगरु चिता के तीरा

आमार शापेते राजा पाइले प्रमाण ※ शापे वर हइल हइबे पुत्रवान
एइ सत्य दशरथ करिबे पालन ※ ऋष्यशृङ्गे आनि कर यज्ञ आरम्भन
श्रीफल पेयेछि आमि भ्रमिते कानन ※ एइ फल करिलाम तोमारे अर्पण
एइ फले जन्मिबेन देव चक्रपाणि ※ चरुर भितरे एइ फल दिओ तुमि
पुनश्च कहेन मुनि तारे मृदु स्वरे ※ कोथा आछे सिन्धुपुत्र आनि देह मोरे
मृतपुत्र दशरथ दिलेन आनिया ※ पुत्र कोले करि मुनि कान्दे लोटाइया
नयन विहीन मुनि देखिते ना पाय ※ कोलेते करिया हस्त शरीरे बुलाय
जन्मिला ये पुत्र तुमि तपेर सञ्चारे ※ तोमार मरणे मृत्यु घटिल आमारे
अन्धेर नयन तुमि हये छिला जानि ※ फल दिते क्षुधाय तृष्णाय दिते पानि
गुरुनिन्दा नाहि करि नहे सन्ध्यावाद ※ दधिर संयोगे रात्रे नाहि खाइ भात
पूर्व्वजन्मे कार कि करेछि विघटन ※ गुरुनिन्दा करेछि हरेछि स्थाप्यधन
एतेक बलिया मुनि नारायण डाके ※ नारायण मन्त्र जपि मरे पुत्रशोके
पतिव्रता नाहि जीये पतिर मरणे ※ अन्धकी छाड़िल प्राण अन्धकेर सने
तिन मृत ल'ये राजा गेल सरोवरे ※ अगुरु चन्दन काष्ठ आनिल सादरे
करिलेन चिता राजा उत्तर शियरे ※ तिनजने शोयाइल ताहार उपरे

१ आशीर्वाद २ माफ़िक ३ भगवान् ४ यज्ञ के हवन के लिए तैयार किया अन्न या खीर ५ दही-भात-जैसे उलटे भोजन पर रुचि नहीं की ६ मृत्यु ७ या, फिर।

आस-पास पितु जननि सोवाये ※ बीच 'सिंधु'-शव भूपति लाये
उतर शीस-शव अनल लगाई ※ परसि नीर सर, अस्थि बहाई
लिये कंध मुनि-घातक पापा ※ गये अवध नृप, हिय संतापा
चले बहोरि वशिष्ठ-निकेता ※ भेंट न, गुरु गमने तप-हेता
आश्रम, वामदेव गुरुनन्दन[1] ※ सकल कथा भूपति किय बरनन

दो० मुनिकुमार-वध पाप सन, उबरौं कौन उपाय ?
गुरुनन्दन ! आयसु करौ, जासों पाप नसाय ।। ७३ ।।

वध अकाल,[2] नृप पाप महाना ※ यज्ञ-दान कीने नहिं त्राना
शास्त्र पुरान मनीषि विचारी ※ वालमीकि जिन मंत्र उबारी[3]
राम नाम त्रय बार कहावा ※ सकल पाप सोइ नाम नसावा
पाप-छीन, गृह भूप सिधाये ※ साँझ वशिष्ठ तपोवन आये
फलाहार, सुस्थिर, मन मोदा ※ सुत-पितु रत दोउ बाग्-विनोदा
वामदेव पुनि अवसर पाई ※ कथा भूप-आगमन सुनाई
सुवन अंधमुनि सिन्धु बखाना ※ शब्दबेध दसरथ संधाना
अबुझ घात द्विज, नृप अति दीना ※ नसै पाप किमि, याचन कीना
याग, दान, तप, यतन न भावा ※ तीनि बार नृप 'राम' कहावा

दुइजन दुइदिके पुत्र मध्यखाने ※ शोयाइल तिन जने वेष्ठित आगुने
चिता प्रक्षालिया सेइ सरोवर तीरे ※ कान्दिया फेरेन राजा अयोध्यानगरे
मुनि हत्या करि राजा अजेर नन्दन ※ अमनि कान्दिया गेल वशिष्ठेर वन
गियाछेन वशिष्ठ तपस्या करिबारे ※ वामदेव पुत्र ताँर आछेन आगारे
सकल वृत्तान्त राजा कहिलेन ताँरे ※ मुनिहत्या करियाछि बनेर भितरे
प्रायश्चित्त इहार कराओ महाशय ※ कि रूने हइव मुक्त किसे पाप क्षय
मुनि बले अकालेते नाहि यज्ञदान ※ एइ पापे केमने पाइबे परित्राण
विचार करय मुनि आगम पुराण ※ वाल्मीकि ये मंत्र जपि पाइलेन त्राण
तिन बार बलाइल सेइ राम-नाम ※ पाइलेन भूपति से पापेर विराम
राजा मुक्त हइया गेलेन निज घर ※ आइलेन संध्याय वशिष्ठ मुनिवर
फलमूल भक्षणे मुनिर सुस्थ मन ※ पिता पुत्रे कथा वार्ता कन दुइजन
पितारे कहेन वामदेव नीतिक्रमे ※ दशरथ आसिया छिलेन ए आश्रमे
अंधक मुनिर पुत्र सिन्धु बले यारे ※ मारिलेन राज शब्दभेदि शरे ताँरे
दीनभावे कहिलेन राजा ए वचन ※ मुनिहत्या पाप मोरा कर विमोचन
योगयाग स्नान दान नाहि करालाम ※ तिन बार राजा के बलानु रामनाम

१ बशिष्ठ के पुत्र वामदेव २ आयुष्काल बिना पूरा हुए ३ उद्धार किया ।

तपत तैल उफनत लहि बारी[1] ❊ अनल-कोप मुनि गिरा उचारी
रसना[2] 'राम' एक पद लाई ❊ कोटि घात-द्विज पाप नसाई
सो त्रय बार भूप मुख आनी ❊ कस मम तनय? निपट अज्ञानी
तजि वन, अधम श्वपच गति जाई ❊ पितु-पग मुनिज[3] धरे अकुलाई
कहौ तात! किमि शाप विमोचन? ❊ थिर न रोष बहु, कहेउ तपोधन
दसरथ अनघ[4] मंत्र दिय नामा ❊ जनमैं अवध धाम सोइ रामा
सुरसरि - मग रघुनाथ विलोकी ❊ परसहु पद-पंकज पथ रोकी

दो० वामदेव, पितु सीख सुनि, श्वपच-योनि निस्तार[5]।
लियेउ जनम गुह-गेह, नित जोहत[6] अवधदुलार[7] ॥ ७४ ॥

संबर असुर का वध

तपत इन्द्र सम दसरथ वीरा ❊ संबर - असुर उतै सुर - पीरा
बैजयन्ति अमरावति जीती ❊ बसत न तहँ सुरवृन्द सभीती
यतन सोधि कछु कहौ विधाता ❊ कह सुरेस, किमि दनुज निपाता
जो आनहु दसरथ रनबंका ❊ सोइ कर[8] संबर-मरन न संका

जल फेलाइया येन दिल तप्त तैले ❊ कुपिया वशिष्ठ मुनि पुत्र प्रति बले
एक रामनामे कोटी ब्रह्महत्या हरे ❊ तिन बार रामनाम बलालि राजारे
मोर पुत्र हैया तोर अज्ञान विशाल ❊ दूर हरे वामदेव हबिरे चण्डाल
लोटाइया धरिल से पितार चरण ❊ केमने हइब मुक्त कह विवरण
ना थाके मुनिर मने कोप बहुक्षण ❊ बलिलेन ताहारे वशिष्ठ तपोधन
येइ रामनाम तुमि बलाले राजारे ❊ तिनि जन्मिबेन दशरथेर आगारे
गङ्गास्नाने रघुनाथ याबेन यखन ❊ आगुलिओ पथ तुमि रामेर तखन
ताँहार चरणपद्म करिह स्पर्शन ❊ तखनि हइबे मुक्त चण्डाल जनम
बलिलेन एइ रूप बशिष्ठ महामुनि ❊ गुहक चण्डाल हैया रहिलेन तिनि
कृत्तिवास पण्डितेर कवित्व विचक्षण ❊ आदिकाण्डे गाहिलेन अंधकोपाख्यान

सम्बर असुर वध

राज्य करे दशरथ येन पुरन्दर ❊ हइल असुर स्वर्गे नामेते सम्बर
हइल सम्बर सर्व्व देवतार अरि ❊ जिनिल अमरावती वैजयंतीपुरी
तार भये स्वर्गे देव रहिते ना पारे ❊ महेन्द्र बलेन ब्रह्मा बाँचि कि प्रकारे
ब्रह्मा बलिलेन आन राजा दशरथे ❊ असुर सम्बर मरिबेक ताँर हाते

---

१ उबलते तेल में जल पड़ने पर उफान आनें के समान क्रोध २ जीभ ३ मुनिपुत्र ४ निष्पाप ५ मोक्ष पाने के लिए ६ रास्ता देखता रहा ७ अयोध्या के लाड़ले राम ८ उन्हीं के हाथों।

स्वयं इन्द्र किय अवध पयाना ※ आसन - अर्घ्य भूप सन्माना
सुनौ अवधपति ! सुरगन त्रासा ※ सुरपुर संबर दैत्य प्रकासा
जीति स्वर्ग, संकट मोंहि डारी ※ तुम मम सुहृद सकौ सो टारी
तव सहाय, वध निसिचरनाथा ※ तव प्रसाद सुर होयँ सनाथा
सुरपति विदा, बजे रनबाजा ※ संबर-हित दसरथ दल साजा
साजु-साजु—चहुँ दिसि रणरंगा ※ मत्त - मतंग समीर - तुरंगा
मुद्गर मूषल कसत कमाना ※ स्यन्दन शूर सजत धनुबाना
ओर - छोर नहिं कटक अनन्ता ※ कटक धूरि नभ छुवत दिगन्ता
शिरस्त्राण[1] कञ्चुकि[2] हरि-मण्डा[3] ※ नृप साजे कर सर-कोदण्डा[4]
दिव्य तुरग सारथि रथ साजा ※ चलेउ पवनगति भूप-समाजा
चढ़े अवधपति संबर कारन ※ डगमग त्रिभुवन धीर न धारन
कौतुक चली अनी[5] चतुरंगा ※ गज पैदर रथ-रथी तुरंगा

दो० अमरावति उतरेउ कटक, दसरथ अवधमहीप ।
निरखि सैन कोपेउ अतुल, संबर दनुज-अधीप ॥ ७५ ॥

बिन्धि सरीर, बान झरलाये ※ असुर, सैन सौं नृप बिलगाये[6]

आपनि आइल इन्द्र अयोध्या नगरे ※ पाद्य अर्घ्ये दशरथ पूजे पुरन्दरे
इन्द्र बले दशरथ तुमि मोर मित ※ ठेकेछि संकटे रक्षा कर एइ हित
असुर सम्बर नामे तारे आमि हारि ※ खेदाड़िया देवगणे निल स्वर्गपुरी
आमार सहाय हैया यदि कर रण ※ तोमार प्रसादे तबे बाँचे देवगण
एतेक वलिया इन्द्र गेलेन स्वर्गेते ※ सम्बर मारिते तबे साजे दशरथे
साज-साज बलिया पड़िया गेल साड़ा ※ राहुत माहुत[7] साजाइल हाथी घोड़ा
मुद्गर मूषल केह बान्धिल कामान ※ धानुकि साजिल रथे लये धनुर्व्बान
साजिछे कटक सब नाहि दिशपाश ※ कटकेर पदधूलि लागिल आकाश
गायेते परिल सोना माथाय टोपर ※ धनुर्व्बाण हाते राजा चलिल सत्वर
दिव्य अश्व योगाइल रथेरसारथि ※ रथे चड़ि दशरथ चले शीघ्र गति
सम्बरे जितिते राजा करिल गमन ※ दशरथे देखिया काँपिल त्रिभुवन
चतुर्द्दोले चड़ि राजा चले कुतुहले ※ रथ रथी पदाति तुरंग हाती चले
उत्तरिल गिया राजा इन्द्रेर नगरी ※ देखिया राजार साजे क्रोधे देवअरि
दशरथे बाणे विंधे करिया जर्ज्जर ※ भंग दिल सेना राजा रहे एकेश्वर

---

१ फौजी टोप २ कवच ३ सुवर्ण से मढ़ा हुआ ४ धनुष-बाण ५ सेना
६ दशरथ को उनकी सेना से अलग कर दिया ७ महावत ।

नृप असैन, सर कोपि चलावा * दानव-दल हनि विपुल नसावा
आयुध विविध बुन्द झरिलाई * गगन पाटि सर, पथ न लखाई
समर चटक दानव - दल - वीरा * अवध - भटन किय बिद्ध सरीरा
लख-लख अस्त्र, असुर बरसाये * सुरपुर नभ रञ्जित, चहुँ छाये
सर-गंधर्व भूप संधाना * अतुल अस्त्र त्रिभुवन नहिं जाना
सर उपजे त्रिकोटि गंधर्वा * मरहिं परस्पर कटि रिपु सर्वा
निसिचर सर निसिचर तकि मारी[1] * सकल दनुज अेक बान सँहारी
राकस रुधिर-नदी उतराहीं * त्राहि-त्राहि संबर-दल माहीं
दसरथ रन बिछाय रिपु दीना * बचेउ दनुजपति सैनविहीना
तकि तकि बानवृष्टि दोउ करहीं * सरन पाटि सुरपुर दोउ लरहीं
सरमण्डित नभ, तम चहुँ ओरा * अलख[2] दैत्य गर्जन-रव घोरा
शब्दवेध परवीन विशेखा * तिमिर-अलोप[3] दनुज नहिं देखा
भावी प्रबल काल तेंहि घेरा * कछुक दूरि किय सोर घनेरा
शब्द ताकि नृप खैंचेउ चापा * सायक चलेउ अगिनि सम तापा
गिरेउ धरनि कटि संबर - माथा * कौतुक असुरघात नर-हाथा !

कोपे काँपे दशरथ पूरिल सन्धान * अस्त्राघाते दैत्यसेना त्यजिल पराण
नाना अस्त्र वर्षण करेन दशरथ * छाइल अमरावती पवनेर रथ
सम्वरेर सेनागण समरे प्रखर * भूपतिर सेना बिन्धे करिल जर्ज्जर
लक्षलक्ष बाण पूरे सम्बरेर सेना * पड़िलेक स्वर्गपुरी छाइया झञ्झना
पड़िल गन्धर्व्व अस्त्र भूपतिर मने * एमत अस्त्रेर शिक्षा नाहि त्रिभुवने
एकवाणे प्रसवे गन्धर्व्व तिन कोटी * आपना आपनी रिपु करे काटाकाटि
आपना आपनि करे बाण बरिषण * एक वाणे पड़िलो सकल सेनागण
सम्वरेर सेना देय रक्ते ते साँतार * त्राहि त्राहि डाक छाड़ि करे हाहाकार
पड़िल सकल सेना दैत्य एकेश्वर * दशरथ बाणे सेना पड़िल विस्तर
दुहुजने बाणवृष्टि करे झाँके-झाँके * उभयेर वाणेते अमरावती ढाके
हइल अमरावती बाणे अन्धकार * दैत्येर रणेते राजा ना देखि निस्तार
देखिते ना पाय दैत्य थाके कोनाखने * शब्दभेदी दशरथ शब्द शुने हाने
कालप्राप्ति दानवेर निकट मरण * दूरे थाकि दशरथे करिछे तर्ज्जन
सम्वरेर पेये शब्द राजा पूरे बाण * छुटिल राजार बाण अग्निर समान
एड़िलेक बाण राजा तार शुने कथा * काटि पाड़े दशरथ सम्बरेर माथा

---

१ गंधर्व-वाण के प्रभाव से राक्षस स्वयं एक-दूसरे को मारने लगे २ अदृश्य
३ अँधेरे में गायब।

दो० सुरन सहित सुरपति सरग, बोलत हिय हर्षाय ।
माँगहु वर मनवाञ्छित, नृप! तुम भयेउ सहाय ।। ७६ ।।

आनि न वर चाहौं सहसानन * मेटौ पाप अन्ध - सुत - मारन
कहेउ इन्द्र हँसि, गवनहु देसू * सो अघ[1] तुमहिं न अब लवलेसू
अन्धक-कथा कुतूहल बरनी * जनक तासु द्विज, सूदिन जननी*

संवर के साथ युद्ध करने में हुए घावों को अच्छा कर देने पर
राजा का कैकेयी को वर देने की प्रतिज्ञा

मिटेउ छोभ सुनि, नृप गृह आये * सुहृद तात परिजनन सुहाये
प्रथम सर्वप्रिय कैकयि - धामा * अजसुत सुखद लीन विश्रामा
अस्त्र सजीवनि कला प्रवीना * कैकयि छत-सरीर[2] चित दीना
जल अभिमंत्रि भूप तन डारी * सुखद सकल सोइ व्यथा निवारी
सिथिल-गात पुनि जीवन आवा * कैकयि-जतन प्रान नृप पावा
तव समान प्रिय मोहिं न आनू[3] * मनवाञ्छित माँगहु वरदानू
नहिं अदेय, पूरन भण्डारू * धन सम्पदा अमित आगारू

नर हैया मारिलेक असुर सम्वर * देव सह सुखे राज्य पाले पुरन्दर
इन्द्र वले दशरथ रक्षा कैले मोरे * वर माग दिव याहा प्रार्थना अन्तरे
दशरथ वले इन्द्र देह एइ वर * येन मुनिहत्या नाहि थाके ममोपर
शुनिया राजार कथा इन्द्र देव हासे * से पाप तोमाते आर नाहि जाओ देशे
अन्धक मुनिर कथा अपूर्व्व काहिनी * ब्राह्मण ताँहार पिता शूद्राणी जननी
एतेक शुनिया दशरथ आसे देशे * आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिबासे

सम्वर-सह युद्धे क्षत हओयाय कैकेयीर आरोग्य करिते राजार वर दिबार अंगीकार

पात्र मित्रगणे राजा दिलेन मेलानि * अन्तःपुरे दशरथ चलिल अमनि
सवार अधिक भालवासे कैकेयीरे * सेइ हेतु आगे गेल कैकेयीर घरे
अस्त्र सञ्जीवनी विद्या जानेन कैकेयी * देखिल राजार तनु अस्त्र-क्षतमयी
मन्त्र पड़ि जल दिल भूपतिर गाय * ज्वाला व्यथा गेल दूरे शरीर जुड़ाय
मृतदेहे येन पुनः आइल जीवन * सुस्थ ह'ये दशरथ वलेन तखन
हे कैकेयी प्राणरक्षा करिले आमार * तोमार समान प्रिये केह नाहि आर
वर मागि लह येवा अभीष्ट तोमार * कोन धन भाण्डारेते नाहिक आमार

१ पाप २ घायल शरीर ३ अन्य ।

* 'ब्राह्मण पर श्रद्धा' का यह अतिरेक है। अन्यथा शूद्रा से जन्मे अन्धमुनि का भी शाप दशरथ को भोगना ही पड़ा—व्यर्थ नहीं हुआ। (हिन्दीकार)

नाम मंथरा, कैकयि केरी ※ कूबर भार पृष्ठ, सोइ चेरी
कूबर कुटिल बुद्धि कै रासी ※ कहेउ बोलाय, रानि, सोइ दासी
मुदित भुआल वचन वर दीना ※ मम हित सुमति कहौ परवीना[1]
वचन-बद्ध भूपति करि लेहू ※ अवसर परे माँगि वर लेहू
दासि-वचन कैकयी प्रमाना ※ पुलकि भूप-ढिग कीन पयाना
नाथ आजु वर मोहिं न हेतू ※ देहु वचन इमि कृपानिकेतू

दो० करौं विनय अवसर परे, मन-उपजी अभिलाष।
तब लौं वर सञ्चित रहैं, नरपति-वचन न माष[2] ॥ ७७ ॥

सुमुखि! चहौ तब अवसर लागी ※ पुरवौं वचन प्रान लौं त्यागी
व्याध-फन्द मृग फसत अजाना ※ निरखि समाज-देव हरषाना
सोइ पितु-वर पालन वन जाई ※ कह विधि[3], हनैं दनुज रघुराई
दसरथ-राज अनन्द घनेरा ※ सुख प्रतिपाल प्रजागन केरा

दशरथ का नखव्रण अच्छा करने पर कैकेयी को दुवारा वर देने की प्रतिज्ञा

रिद्धि-सिद्धि भरपूर भुआला ※ नखव्रन[4] विथा उपज अंक काला
कातर अतिव दुसह व्रनपीरा ※ कहेउ बोलाय सुहृदगन तीरा

एत यदि बलिलेन राजा दशरथ ※ कैकेयी कुंजीके कहे वाक्य अभिमत
महाराज आमारे चाहेन दिते वर ※ किवा वर मागि लब ताँहार गोचर
पृष्ठे भार कुंजेर नाड़िते नारे चेड़ि ※ कुंज नहे ताहार से बुद्धिर चुपड़ि
कुंजी बले एक्षणे नाहिक प्रयोजन ※ इच्छा हबे जबे वर बलिब तखन
कैकेयी कुंजीर वाक्य ना करिल आन ※ हासिया कहिल राणी राजा विद्यमान
महाराज आजि वर नाहि प्रयोजन ※ यखन घटिबे कार्य्य मागिब तखन
आमार सत्येते बन्दी रहिले गोसाँइ ※ प्रयोजन अनुसारे बर येन पाइ
नृपति बलेन दिब याहा चाबे दान ※ आछुक अन्येर काज दिब निज प्राण
कैकेयीर कपटे अमरगण हासे ※ ना जानिया मृग येन बन्दी हैल फासे
ए सत्य पालिते राम याइबेन वन ※ विरिञ्चि बलेन तबे मरिबे रावण
राज्य करे दशरथ हरषित मन ※ करेन पुत्रेर मत प्रजार पालन
यखन या हबे ताहा दैवे सब करे ※ हइल राजार व्रण नखेर भितरे
कृत्तिवास कहे कथा अमृत समान ※ राम-नाम विना तार मुखे नाहि आन

दशरथेर व्रण आरोग्य करिते कैकेयी के पुनर्ब्बार वर दिते अंगीकार

व्रणेर व्यथाय राजा हइल कातर ※ पात्र मित्र आनि राजा बलिल सत्वर

---

१ हे चतुरा! २ वृथा, असत्य ३ ब्रह्मा ४ नाखून का घाव, बिषहरी।

यहि कलेस मम मरन समीपा ※ लखत भानुकुल रहित - महीपा
तबहिं सुवन - धन्वंतरि, नामा ※ 'पद्माकर' किय नृपहिं प्रनामा
मिटै व्यथा, नहिं संसय राऊ ※ बरनउँ ताकर युगुल उपाऊ
घृनारहित शामुक[1] - रसपाना ※ करइँ स्वयं साधन हित - प्राना
नतरु आनि जन कोउ नृप हेता ※ नखव्रन-रक्त पूय, रस, जेता
मुख सन चूसि हरै नृपपीरा ※ कैकइ सुनेउ, बसत नित तीरा
पति विषाद, सो सतत[2] निहारी ※ अहिनिसि[3] सेयि करत उपचारी
तिय-गति कतौं न पति बिन, नाथा ※ चूसौं मुखव्रन, होउँ सनाथा
मम अधिकार, भूप मम - धामा ※ नखव्रन मुख धरि पुलकित बामा
रानि - सुधामुख परसत पीरा ※ विगत व्यथा, नृप स्वस्थ सरीरा

दो० रुधिर-पूय तजि, सुमुखि ! लिय पान कपूर सुवास ।
रानि अन्य[4] तै ! माँगु वर, मनवाञ्छित अभिलास ।।

धरहु अमानत[5] युगुल वर, लेहुँ सुअवसर जानि ।
दसरथ अनुमति दीन हँसि, इमि कृत्तिवास बखानि ।। ७८ ।।

ए व्यथाय बुझि मम निकट मरण ※ सूर्य्यवंशे राजा हय नाहि कोन जन
धन्वन्तरि पुत्र एक पद्माकर नाम ※ आसिया राजार काछे करिल प्रणाम
कहिलेन शुन राजा पाइबे निस्तार ※ दुइमते आछये इहार प्रतिकार
शामुकेर झोल खाओ ना करिया घृणा ※ नहे नखद्वारे चुम्ब दिक एकजना
रक्त पूँये झरितेछे नखेर दुयारे ※ ताहाते चुम्बन दिते कोनजन पारे
कैकेयी राजार काछे दिवानिशि थाके ※ राजा यत दुःख पाये कैकेयी ता देखे
राजार शुश्रूषा राणी करे रात्रिदिने ※ कहिल कैकेयी राणी राजा विद्यमाने
स्वामी विना स्त्री लोकेर अन्य नाहि गति ※ व्रणे मुख दिव यदि पाओ अव्याहति
यार घरे थाके राजा तार दाय लागे ※ कैकेयी चुषिल गिया दशरथ आगे
पाकिया आछिल सेइ नखेर वरण ※ मुखेर अमृत लागि गलिल तखन
सुस्थ हइलेन राजा व्यथा गेल दूरे ※ रक्त पूँय फेलि देह वले कैकेयीरे
कर्पूर ताम्बूल प्रिये करह भक्षण ※ वर लह याहा चाह दिव एइक्षण
कैकेयी वलेन शुनि राजार वचन ※ यखन मागिब वर दिओ हे तखन
दुइ बारे दुइ वर थाक तव ठाँइ ※ पश्चाते मागिब वर एखन ना चाइ
शुनिया राणीर कथा दशरथ हासे ※ आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवासे

---

१ घोंघा २ सदैव ३ दिनरात ४ दूसरा वर ५ धरोहर ।

राजा दशरथ को पुत्र के लिए श्रृंगी ऋषि को बुलाकर यज्ञ करने की चिंता
तथा उक्त मुनि की उत्पत्ति-कथा

बहु वत्सर राजन - अधिराजू ※ एक छत्र सुरपति सम साजू
एक दिवस नृप सभा बिराजा ※ परिजन[1] सुहृद सगोत समाजा
मुनि अमात्य चहुँ सचिव सुहाये ※ सर्वाधिप बशिष्ठ तहँ आये
भूपति तहँ हिय-छोभ प्रकासा ※ गत अतिकाल, न सन्तति आसा
तर्पन, पिण्ड न गति-परलोका ※ बाद बंस-रवि अस्त बिलोका
नवम सहस मम आयु बितीता ※ तबहुँ न दरस तनय कर कीता
सुत - अभाव अतिशय उर शोका ※ भोर न तासु लखत मुख लोका
तर्पन करत सोंचु उर माहीं ※ मम सूने पितरन जल नाहीं
शाप-अंध[2] वर सरिस बताई ※ होय याग ऋषि श्रृंग बुलाई
तिन आगम पूरन मम कामा ※ कहौ कितै श्रृंगीऋषि - धामा
कह बशिष्ठ सुनु कोसलनाथा ※ सुनौ श्रृंगि ऋषि-उतपति गाथा
तपत विभाण्डक मुनि परतापा ※ तासु शाप-भय त्रिभुवन काँपा
मुनि तप अतुल, इन्द्र भय छावा ※ तप-विछेप[3] हित पवन पठावा

दशरथ पुत्रेर जन्य ऋष्यश्रृंग के आनिया यज्ञ करणेर चिन्ता ओ
उक्त मुनिर उत्पत्तिते काहिनी

राज्य करे दशरथ अनेक वत्सर ※ एकछत्र महाराज येन पुरन्दर
पात्र मित्र भाइबन्धु सबाकारे आनि ※ वशिष्ठादि आइलेन यत महामुनि
सभा करि बसे राजा अमात्य सहिते ※ अति खेद करि राजा लागिला कहिते
इहकाले ना हइल आमार सन्तति ※ परकाले कि रूपे पाइब अव्याहति
सन्तति थाकिले करे श्राद्धादि तर्पण ※ आमार मरणे वंशे नाहि एक जन
नवम हाजार वर्ष वयस हइल ※ एतकाले तबू मम पुत्र ना जन्मिल
अपुत्रक आमि पाइ मने बड़ दुख ※ प्रभाते ना देखे लोक अपुत्रेर मुख
अञ्जलि करिया देइ तर्पन सलिल ※ आमा हैते गेला वंश कोन दिबे जल
वर दियाछेन श्रीअन्धक महामुनि ※ यज्ञ कर तुमि ऋष्यश्रृङ्ग मुनि आनि
ऋष्यश्रृंग मुनिवर कोन देशे वसे ※ कार्य्य सिद्धि हय यदि सेइ मुनि आसे
कहिते लागिल ये वशिष्ठ महामुनि ※ शुनह ऋष्यश्रृंगेर उत्पत्ति काहिनी
विभाण्डक मुनि भये सर्व्वलोक काँपे ※ त्रिभुवन भस्म हय यदि मुनि शापे
ताँहार तपस्या देखि इन्द्र भावे मने ※ पाठाइया दिल इन्द्र देवता पवने

१ बन्धुगण २ अंधक मुनि का शाप ३ तप में विघ्न ।

छं० कुटी-विभाण्डक, पवनदेव रहि ओट, लखत मुनि-जीवन ।
फलाहार! फल सुधा-सार दै, कौतुक कीन समीरन[1] ॥
सने-सुधा-मधु खात नित्य फल निर्मल तपसी काया ।
बली अपरबल[2], वन तप करहीं, मन दुचित्त[3] मुनिराया ॥

नीर-नर्मदा मुनि तप-लीना * सोइ पथ गमन उर्वसी कीना
लखेउ गगन उर्वसी, समीरा * करि उर जतन उघारेउ[4] चीरा
दैवयोग मुनि सोइ तन देखी * लगेउ पञ्चसर मोह बिसेखी

दो० रेतपात[5], लिय बाम कर, तजेउ न सरिता-नीर ।
धरेउ कूल[6] ढिग रेत सोइ, आकुल सिथिल सरीर ॥ ७९ ॥

शुचि आचमन विभाण्डक कीना * भये तपोधन पुनि तप-लीना
विधि रचना नहिं मिटै मिटाई * तृषित मृगी तहँ जलहित आई
पियत पानि, तट दूब हरेरी * लागि चरन, मन लोभेउ हेरी
तहँ मुनि-रेत घास लपिटानी * हरिनि-उदर सोइ चरत समानी[7]
रेत-अहार, मृगी ऋतुकाला * धरेउ गर्भ विधिगती विसाला
बढ़त गर्भ, पशुवत षटमासा * मृगी कियेउ मनु[8] प्रसवि प्रकासा
बन-बन फिरउँ मनुज-भय पाई * सो रिपु-जनम गर्भ मम आई

मुनिर निकटे वायु लुकाइया थाके * वृक्ष-फल खाय मुनि पवन ता देखे
फलेते अमृति माखि राखिल पवन * फल योगे सुधा मुनि करिल भक्षण
फलेर सहित सुधा खेये महामुनि * सातिशय वलवान हइला तखनि
शुद्ध देहे खेये सुधा महा बलवान * तपस्या करेन वने चारि दिके चान
तपस्या करेन मुनि नर्मदार जले * ऊर्व्वशी चलिया जाय गगनमण्डले
अंगेर वसन तार वातासेते उड़े * दैवयोगे ताँर दृष्टि तारे गिया पड़े
ताहाके देखिया मुनि कामे अचेतन * मुनिर हइल रेतः पतन तखन
आस्ते व्यस्ते मुनि ताहा धरे वाम हाते * जले ना फेलिया रेतः फेलाय कूलेते
पुनर्ब्बार महामुनि करि आचमन * तपस्या करेन विभाण्डक तपोधन
विधिर लिखन कभु ना हय खण्डन * तृष्णाय हरिणी जल खाय सेइ क्षण
जल खेये हरिणी कूलेते घास चाटे * घासेर सहित रेतः सान्धाइल पेटे
दैवयोगे हरिणी आछिल ऋतुमती * मुनि वीर्य्य खाइया हइल गर्भवती
दिने-दिने गर्भ तार वाड़िते लागिल * छयमासे पशुवत प्रसव हइल
मनुष्येर भये आमि भ्रमि वने वन * आमार गर्भेते हैल शत्रुर जनम

---

१ वायु २ अत्यन्त ३ डगमग ४ हटा दिया ५ वीर्यपात ६ किनारे
७ पेट में चली गयी ८ मनुष्य ।

गमनी वन, अनाथ सिसु डारी ※ चूसत अँगुरि रुदन पथ भारी
सोइ मग गमन विभाण्डक कीना ※ रोवत सुवन दीठि मुनि दीना
निर्जन वन, शिशु-गात निहारा ※ हरिनि-बदन[1] अरु मनुज अकारा
धरत ध्यान सब लखेउ तपोधन ※ आन[2] न हरिनि-गर्भ मम नन्दन
मुनि लै अंक गमन-वन कीना ※ सुत मधुपुहुप पोषि बल दीना
नूतन-कुस-कोमल सुत सयना ※ दिन-दिन बढ़त महामुनि-अयना
शास्त्रनिपुन, छबि अतुल कुमारा ※ शृंग गुल्म युग मस्तक धारा
शृंग, समय गति! उभरे भाला[3] ※ सोइ विभूति ऋषि शृंग भुवाला
जासु शाप-वर अमिट प्रभाऊ ※ सोइ-वर पुत्रवान भव राऊ

लोमपाद के राज्य में अनावृष्टि-निवारण के लिए ऋष्यशृंग का लाया जाना

दो० कथन-वशिष्ठ सुमंत्र सुनि, बरनेउ अधिपति-अंग[4]।
लोमपाद सन्मानि गृह, जिमि राखेउ ऋषि शृंग ॥ ८० ॥

सचिव सुमन्त्र! कहौ केहि हेता ※ गवन शृंगमुनि अंग-निकेता?
कहेउ सुमंत्र अंगनृप-देसू ※ द्वादश वर्ष वृष्टि नहिं लेसू

पुत्र फेलाइया से हरिणी गेल वन ※ अंगुलि चुषिया शिशु युड़िल क्रन्दन
तपस्या करिया विभाण्डकेर गमन ※ कानने पड़िया शिशु करिछे क्रन्दन
बालके देखिया मुनि भावे मने मन ※ मनुष्य आकार देखि हरिणी वदन
ध्याने जानिनेक विभाण्डक तपोधन ※ हरिणीर गर्भ हैल आमार नन्दन
पुत्र कोले करि गेलेन निज घरे ※ पुष्पमधु दिया मुनि पोषेण ताहारे
नवीन कुशेर मूले करान शयन ※ दिने दिने बाड़े बिभाण्डकेर नन्दन
परम सुन्दर से विभाण्डकेर बेटा ※ शास्त्रवेत्ता हय से कपाले शृंग फोंटा
किछु-दिन परे शृंग उठिल कपाले ※ ऋष्यशृंग बले नाम थुइल सकले
यारे वर शाप देन कभु नहे आन ※ ताँर आशीर्वादे राजा हबे पुत्रवान

लोमपादेर राज्ये अनावृष्टि निवारणार्थ ऋष्यशृंग के आनयन

बशिष्ठेर वचन हइल अवसान ※ सुमंत्र वलेन राजा कर अवधान
लोमपाद राजा अंग देशेर ईश्वर ※ ऋष्यशृंग आनिया छिलेन निज घर
दशरथ बले पात्र कह विवरण ※ लोमपाद आनालेन किसेर कारण
सुमंत्र बलेन दशरथ नृपवर ※ सेइ देशे अनावृष्टि द्वादस वत्सर

---

१ हरिणी के समान मुख २ अन्य ३ शिर का अग्रभाग ४ अंग नरेश।

लोमपाद पण्डितन बुलावा ※ अनावृष्टि कर हेतु बुझावा
बुध विचारि बोलत, सुनु राजन ! ※ अनाचार किञ्चित तव सासन
बिन बिवाह ऋतुमती कुमारी ※ तव छिति, भूप ! न बरसत बारी
आनहु सुवन-विभाण्डक श्रृंगा ※ पाप-छीन, जल बरसै अंगा[1]
भूप अैलान[2], नगर-नरनारी ※ श्रृंगि आनि, जो काज सवाँरी
अर्ध राजु अर्पन सोइ-हेता ※ बूढ़ि एक कह दर्प समेता
श्रृंगि न ज्ञान नारि-नर लेसू ! ※ मुनि भरमाइ[3] बुलावहुँ देसू
फल-तरु रोपि[4] सजावहु तरनी ※ वयस चतुर्दस मुनिसुत-हरनी
सुवरन नाव जरठि[5] हित साजा ※ बीच जासु छबि ध्वजा विराजा
कनक-वितान भवन दुइ सोहा ※ परम रम्य निरखत मन मोहा
गजमुकुतावलि सुबरन तारा ※ मधु मिष्ठान्न रसाल सवाँरा
कर्पूरित गंगाजल झारी ※ नाना पानक[6] फल रुचिकारी
बाछि लीन सुन्दरी अनूपा ※ किन्नरि धौं अप्सरा सरूपा
तरुनि रुदन, मन मलिन बिचारी ※ परि मुनि-साप जरहिं, भयकारी

लोमपाद ब्राह्मण पण्डिते जिज्ञासिल ※ मम राज्ये अनावृष्टि कि हेतु हइल
कहिल पण्डितगण करिया विचार ※ किंचित् तोमार राज्ये आछे दुराचार
तव राज्ये कुमारी हइल ऋतुमती ※ एइ पापे वृष्टि नाहि हय नरपति
विभाण्डक पुत्र यदि ऋष्यश्रृंग आसे ※ पाप दूर हय आर देवता वरषे
नगरेते लोमपाद दिलेन घोषणा ※ ऋष्यश्रृंग मुनिके आनिबे कोन जना
ताहारे आनिया मोरे येवा दिते पारे ※ अर्द्धराज्य दिव आमि अवश्य ताहारे
डाकिया कहिल कथा बुड़ि एकजन ※ आमि आनि दिब सेई मुनिर नन्दन
स्त्री-पुरुष भेद सेइ मुनि नाहि जाने ※ भुलाइया आनिव से मुनिर नन्दने
नौका एक साजाइया देहत आमारे ※ फलवान वृक्ष रोप ताहार उपरे
चौद्द वत्सरेर सेइ मुनिर सन्तति ※ कौतुकेते भुलाइवे यतेक युवती
सुवर्णेर नौका राजा करिया गठन ※ विचित्र पताका ताहे करिल साजन
नौकार उपरे करे स्वर्ण दुइ घर ※ परम सुन्दर नौका अति मनोहर
उपरेते शोभा करे सुवर्णेर तारा ※ चारिभिते शोभे गज मुकुतार झारा
संदेश दिलेन नाना खाइते रसाल ※ नारिकेल कला आर काँठाल उताल
गंगाजल शीतल शर्करा मिश्र करि ※ कर्पुर वासित जल दिल पात्र पूरि
वाछिया वाछिया निल परमा सुन्दरी ※ चेना भार अप्सरा कि अमर किन्नरी
कान्दिते लागिल सबे मुखे नाहि हासि ※ मुनि कोपानले आजि हव भस्मराशि

१ अंग देश में २ घोषणा ३ भटका कर ४ जमा कर ५ बूढ़ी ६ शरवत ।

दो० तिनि प्रबोधि वृद्धा कहै * चलहु त्यागि भय संग ।
मम नवयौवन कीन मैं * शत शत मुनि-मन भंग ॥
तरनि तरत जल-नर्मदा, लगी विभाण्डक देस ।
बाँधि तीर तरि[1], रूपसिन, उपवन कीन प्रवेस ॥ ८१ ॥

मुनि-तप सोंचि सुन्दरिन त्रासा * जासु कोप परि छिनहिं बिनासा
पितु-सूने[2] उपवन एकाकी[3] * रमनिन तहाँ शृंग सुत ताकी
बंसी धुनि कोउ क्रीड़ति बीना * ताल देत सब चलीं नवीना
बूढ़िहिं घेरि चतुर्दिसि छाई * बहु चोंचला रूप दरसाई
कामिनि-कण्ठ कोकिला-गाना * सामगान ऋषि-सुवन भुलाना
नर-तिय अबुझ, रूप मुनि भाये * जिमि सुर अवनि, स्वर्ग तजि आये
विह्वल शृंगि द्वार चलि जाई * गहे बूढ़ि-पद अंग नवाई
परति पाँय, कर धरति किशोरा * चूमि कञ्जमुख पुनि-पुनि भोरा[4]
'आव-आव' कहि, सबन बुलाई * गदगद रोम, न मोद समाई
उपवन एक मात्र कुस-आसन * बूढ़िहिं दीन सप्रीति बिछावन
कन्द-मूल-फल नीर समेता * धरेउ शृंगि सो सुमुखिन हेता
'विष्णु-विष्णु' कहि, कर धरि काना * हरि-पूजन बिन किमि जलपाना?

बुड़ि बले केन भय करिछ युवती * तोमरा सकले चल आमार संहति
यखन आमार छिल नवीन यौवन * कत शत भुलायेछि महामुनिगण
नर्म्मदा बहिया जाय परम हरिषे * उपस्थित हय ऋष्यशृङ्ग येइ देशे
येखाने तपस्या करे विभाण्डक मुनि * सेइ वने तरुणीरा राखिल तरणी
विभाण्डके देखिया सकले भये काँपे * भस्मराशि करे पाछे शाप दिया कोपे
तपोवने आछे यथा ऋष्यशृङ्ग मुनि * आसिया मिलिल तथा सकल रमणी
तरी हैते उत्तरिल सकल नवीना * केह वंशी पूरये बाजाय केह वीणा
बुड़ि के बेड़िया गान करे नारीगण * मुनिर निकटे गिया दिल दरशन
कामिनीर मुखे गीत कोकिलेर ध्वनि * शुनि मुनि वेदध्वनि छाड़िल अमनि
स्त्री-पुरुष-भेद सेइ मुनि नाहि जाने * स्वर्गेर अमरगण मुनि मने माने
व्याकुल हइया मुनिद्वार हइते उले * प्रणिपात करिले बुड़िर पदतले
मुनिपुत्र पाये पड़े धरि करे कोले * बार बार चुम्ब दिल वदन कमले
एस-एस बले मुनि ता सबाके बले * आनन्दे गदगद से आसन दिते चले
एकखानि कुशासन छिल मात्र घरे * बैस बलि आनिया दिलेन से बुड़ीरे
फल मूल जल घरे छिल ये सकल * बुड़िर भक्षण हेतु दिलेन सकल
श्रीविष्णु बलिया बुड़ि छूँइल दुइ कान * विष्णुपूजा विना नाहि करि जलपान

---

१ नाव। २ पिता की अनुपस्थिति में। ३ अकेला। ४ भोला।

दिव्य कुसासन सोइ-हित साजी * उपरि जासु नायिका विराजी
नासा परसि, उलटि दृग-तारा * मुनि प्रतच्छ[1] मनु विष्णु निहारा
कछुक काल बकध्यान[2] लगावा * पुनि प्रसाद-हित सुतहिं बुलावा
अहह सफल जीवन मम आजा * लै प्रसाद हरि स्वयं विराजा

दो० फल कहि मोदक, नीर मिस, मायाविनि मधु दीन ।
अमित स्वाद अमरित सरिस, मुनिसुत मोहित कीन ॥ ८२ ॥

उपजत फल कित पूछत श्रृंगा * चले मुग्ध पुनि युवतिन संगा
मोदक मदनानन्द खवावा * मोदक-मद मुनिसुत तन छावा
दै संदेस[3], कहैं अतिरूपा * सुखतर फल जहँ, चलिय अनूपा
जो कहुँ सुलभ अधिक रसपागी * चलौं संग तव, उपवन त्यागी
मदन-विभोर निरखि मुनिनन्दन * सरकत बसन अंग छबि-वनितन
कोउ मुनि-कक्ष गात अनुसरहीं * पंकज मुख कोउ चुम्बन करहीं
पुनि गरेरि[4] बहु हास-विलासा * मुनिसुत उपज अमित उल्लासा
परसि उरोज अबुझ कोउ नारी * इकटक दीठि रहइ कोउ डारी
नैन-कटाछ रञ्ज[5] मन कोऊ * करत प्रगाढ़ अलिंगन कोऊ

दिव्य कुशासन पाति दिलेन बुड़ीरे * पूजा करिबारे वैसे ताहार उपरे
चक्षु उलटिया बुड़ि नाके दिल हात * मुनि बले विष्णु आजि करिब साक्षात्
कतक्षणे नासिकार हात घूचाइल * ए प्रसाद लओ वलि मुनिरे डाकिल
मुनि बले आजि मोर सफल जीवन * विष्णुर प्रसाद देह करिब भक्षण
फल वलि हाते दिल गङ्गाजल लाड़ू * जल बलि खाओयाइल मधु गाड़ूगाड़ू
मुनि-वले एइ फल कोथा गेले पाइ * सङ्गे करि लये गेले तवे सङ्गे जाइ
खाओयाइल कामेश्वर खाइते सुस्वाद * कामेश्वर खाइया से हइल उन्माद
कन्यागण बलिल खाइले ये संदेश * इहार अधिक आछे चल सेइ देश
मुनि बले इहार अधिक यदि पाइ * तोमरा चलह देशे आमि संगे जाइ
मदने भुलिल यदि मुनिर नन्दन * अंगेर वसन खसाइल नारीगण
आसिया मुनिर पुत्रे केह करे कोले * केह केह चुम्ब देय बदन कमले
मुनि लैया सबे करे हास्य परिहास * देखिया मुनिर पुत्र हइल उल्लास
कोन नारी भुलाइल स्तन परशने * केह वा भुलाय ताके भक्ष्य द्रव्य दाने
केह वा हरिल मन चाहिया नयने * केह वा करिल मत्त गाढ़ आलिङ्गने

---

१ साक्षात् २ बगुला के समान बनावटी ध्यान ३ एक बंगाली मिठाई
४ घेरकर ५ प्रसन्न करती थीं ।

जो मुनिहरन करहिं तत्काला * बिनसैं सकल विभांडक-ज्वाला
उचित आजु, तजि चलहिं बराई[1] * कथा सकल सुत जनक[2] जनाई
सुवन - नेह मुनि रहइँ निकेतू * कालिह न बन गमनइँ तप-हेतू
जो तजि तनय श्रेय तप देहीं * कहत बूढ़ि, तब सुत हरि लेहीं
सोचि जुगुति[3] दिय मत मुनिनन्दन * बिलमहु[4] कछुक काल भल उपवन
शिष्य एक तव-सरिस सुहावन * निकट भेंटि लौटहुँ मनभावन
बिनयेउ श्रृंगि, नाथ तव दासा * सदा स्वामि-ढिग सेवक-बासा

सो० गमन अन्त कहुँ देस, करहु त्यागि मोहिं अमरगन ।
पावक करौं प्रवेस, ब्रह्मघात तव - सीस धरि ॥ ८३ ॥

नर-नारी कर भेद न जानी * मुनि-कौतुक! छलिनी मुसकानी
बोली, करहु बास यहि काला * सुनु, बोलाय तोहिं लेउँ सकाला[5]
मुनि तजि गेह, चलीं मृगनयनी * लागि नर्मदा-तट जहँ तरनी
अस्ताचल जब सूर्य सिधाये * बिकल श्रृंगि! सुरगन नहिं आये
करगत अञ्चल-निधी नसानी * मम बिपरीत दैव[6]! मैं जानी
रुदन-थकित, तरुतर आसीना * तबहिं विभाण्डक उत पग दीना
शोकाकुल सुत लखि मुनिराई * कस मलीन? पूछत कुसलाई

बुड़ि बले आजि यदि लये जाइ हरे * पाछे विभाण्डक मुनि कोपे भस्म करे
आजि पिता पुत्रेते थाकुक एकस्थाने * कहिबे ए कथा मुनि पिता विद्यमाने
पुत्र प्रति यदि स्नेह कर तपोधन * तबे कालि तपस्याय ना याबे कखन
पुत्रे एड़ि जाय यदि तपस्यार तरे * तबे काल लैया याव मुनिर कुमारे
एइ युक्ति तबे बुड़ी भावे मने मने * कहिते लागिल सेइ मुनिर नन्दने
तपोवने बैस हे तोमारे भालबासि * अन्य एक शिष्येर आश्रम देखे आसि
वलिते लागिल तारे ऋष्यश्रृङ्ग ऋषि * तोमार सेवक हैया तव संगे आसि
आमारे एड़िया यदि जाबे कोन देशे * ब्रह्महत्या हबे तबे मरिब हुताशे
बुड़ी बले एइ क्षणे घरे थाक तुमि * संध्याकाले तोमारे लइया जाब आमि
एतेक बलिया ताँरे थुये निजघरे * सकल कामिनी चड़े नौकार ऊपरे
दिवाकर अस्तगत हइल यखन * मुनि बले ना आइल केन ऋषिगण
शिरोमणि हाराइल अञ्चलेर निधि * बुझिलाम आमारे वञ्चित कैल विधि
कान्दिते-कान्दिते मुनि बैसे वृक्षतले * विभाण्डक तप करि एल हेन काले
पुत्रेरे देखिया मुनि विचलित मन * जिज्ञासिल केन बापू करिछ क्रन्दन

१ टल जायँ २ पिता को ३ युक्ति, तरकीब ४ ठहर जाओ ५ सायंकाल
६ भाग्य ।

कीजिय तात प्रथम जलपाना ※ हाल सकल पुनि करउँ बखाना
फलाहार करि पितु सुख पावा ※ दिवस-कथा सुत ललकि[1] सुनावा
तपहित तुम पितु ! बनहिं सिधाये ※ देव स्वर्ग तजि आश्रम आये
चखे न अस फल स्वाद अनूपा ! ※ दीख त्रिलोक न तिन सम रूपा
जटा सीस छबिमण्डित भाला[2] ※ तहँ साजे कोउ किंशुक-माला
कस मृतिका[3] ! ललाट छबिसागर ※ नभमण्डल जिमि उदित प्रभाकर
कौन पुहुप ! गर हार सुहावन ※ नीलम, पीत, धवल मनभावन
बलकल बसन लसत कस अंगा ※ लाल, पियर, सित, हरियर रंगा
लता कौन सब करन[4] सजीली ※ कोउ कर मानिक जोति छबीली

दो० लोम[5] न आनन, परम द्विज, मांस-पिण्ड उर दोय ।
कोमल कर परसत मनहुँ, सुरपुर करगत होय ॥ ८४ ॥

नर-नारी ऋषि श्रृंग न ज्ञाना ※ बूझेउ सकल धरत मुनि ध्याना
कहत विभाण्डक, सुत ! ते नारी ※ कामुकि[6] फिरहिं दनुजि बनचारी
आजु पुन्य-मम बच तव प्राना ※ पुनि तिन-फन्द न सुत कल्याना
पिता न इमि भाखहु तिन हेता ※ ते अस कतहुँ न दयानिकेता

ऋष्यश्रृंग वले आगे खाओ फल जल ※ आजिकार विवरण कहिव सकल
फलजल खाइया हइवसुस्थ मन ※ पितापुत्रे कथावार्त्ता कन दुइजन
तुमि येइ गेले पिता तपस्यार तरे ※ स्वर्ग हैते देवगण आसे मम घरे
सेइ मत फल नाहि खाइ ए जीवने ※ एत रूप देखि नाइ ए तिन भुवने
कत वा छन्देते जटा धरेछे माथाय ※ कत कुसुमेर माला दियाछ ताहाय
कि जाति मृत्तिका आछे कपाले शोभित ※ गगनमण्डले येन भास्कर उदित
कि जाति वृक्षेर माला सवार गलाय ※ श्वेत पीत नील कत शोभिछे ताहाय
तेमन ना देखि पाता गाछेर वाकल ※ श्वेत रक्त पीत नील वरण उज्जवल
कि जाति वृक्षेर लया सवाकार हाते ※ कतेक माणिक गाँथा आछये ताहाते
परम ब्राह्मण कारो लोम नाहि मुखे ※ वेलेर समान दुटा मांसपिण्ड वुके
ताते यदि हस्तटि कराइ परशन ※ स्वर्गवास हाते पाइ हेन लय मन
मने भावे महामुनि पुत्रेर वचने ※ स्त्री-पुरुष ऋष्यश्रृंग कभु नाहि जाने
विभाण्डक वले बापू तारा नारीगण ※ कामाचारी राक्षसी वेड़ाय बने बन
मम पुण्ये प्राण आजि रेखेछे तोमार ※ पुनः गेले धरे खावे ना पावे निस्तार
ऋष्यश्रृंग वले पिता ना वल एमन ※ एमन दयालु नाइ ताहारा येमन

---

१ वड़े चाव से २ मस्तक ३ सकेशर चन्दन को भस्म समझा ४ हाथों में
५ वाल (दाढ़ी-मूँछ) ६ विलासिनी ।

सबन कालिह विधि देइ मिलाई ❋ सूचित करहुँ तात ढिग आई
निसि बितीत, मुनि बहु समुझावा ❋ तदपि शृंग कछु बोध न आवा
भोर होत रवि किरन प्रकासी ❋ सुवन-विषय सोचत गुनरासी
जो सुत साधि, आश्रमवासू ❋ अतिव चूक, तप-धर्म विनासू
सकल वृथा—को केहि सुत-नारी ❋ जग असार, सत् प्रभुहिं विचारी
बहुरि प्रबोधि[1] भाँति बहु शृंगा ❋ हटकेउ[2] मुनि तिन बनितन-संगा
ताम्रपात्र, तुलसीदल लीना ❋ तपहित गमन विभाण्डक कीना
सो लखि, बूढ़ि कहत हरषाई ❋ चलौ सबै, मुनिसुत हरि लाई
बीना, बँसुरि, ताल, करताला ❋ चलीं शृंग-ढिग चाल मराला
गई-द्रव्य मनु दारिद[3] पाई ❋ पद-नायिका गहे लपिटाई
गयेउ कालिह कित मोहिं बराई[4] ❋ तव-हित रोवत निसा बिताई
सोइ मोदक रुचि सोइ जल पाना ❋ देव ! संग तव करहुँ पयाना

शृंगी ऋषि का लोमपाद के राज्य में जाना और अनावृष्टि का निवारण

दो० फँसे फन्द, तिय कोल[5] करि, लिये नाव हरि शृंग ।
तरि[6] खेवत द्रुत बहि चली, काटत सरित-तरंग ॥ ८५ ॥
तरनी तरति, न मुनि आभासा ❋ भरमत बनितन सहित हुलासा

कालि यदि विधाता मिलाय ता सबारे ❋ तखनि याइब आमि कहिनु तोमारे
सारा रात्रि छिल मुनि पुत्र ल'ये घरे ❋ बुझाइते आपनि ना पारिल पुत्रेरे
प्रभात हइल रात्रि रविर किरण ❋ पुत्रेर विषय मुनि भावे मने मन
यदि आमि घरे थाकि पुत्रे करि साध ❋ धर्म्म नष्ट हबे मम हबे अपराध
कार पुत्र कार पत्नी सब अकारण ❋ संसार असार सार सत्य नारायण
पुत्रेरे प्रबोध करिलेन महामुनि ❋ कारो संगे कथा नाहि कहिओ आपनि
ताम्रघटी हाते निल तुलिल तुलसी ❋ तपस्या करिते गेल विभाण्डक ऋषि
बुड़ी बले बुड़ा मुनि छाड़ि गेल घर ❋ सबे चल आनि गिया मुनिर कोङर
ताल करताल बीणा केह पुरे बाँशी ❋ आइल मुनिर काछे सकल रुपसी
दरिद्र पाइल येन हाराइया धन ❋ व्यस्त मुनि करे धरि बुड़ीर चरण
आमारे एड़िया कालि गेल पलाइया ❋ सारारात्रि कान्दियाछि तोमार लागिया
सेइ जल सेइ लाड़ू करिब भक्षण ❋ संगे करि लैया चल करिब गमन
मर्म्म बुझ सबे कृत्तिवासेर सुबाणी ❋ नारीर कथाय भुले ऋष्यशृंग मुनि

ऋष्यशृंगेर लोमपाद राज्ये गमन ओ अनावृष्टि निवारण

कोले करि बसाइल नौकार उपर ❋ वाह वाह बलि बुड़ी डाकिछे सत्वर

१ समझाकर २ मना किया ३ निर्धन ४ टालकर ५ गोद ६ नाव ।

मुनि-पद अंगदेस जोइ परसा ※ अनावृष्टि गत, पावस बरसा
लच्छन सुभ, आगम-मुनि जानी ※ अर्घ्यपाद चलि नृप सन्मानी
लोमपाद नृप कन्याहीना ※ दसरथ सुता§ दान पुनि दीना
यहि विधि मुनि रघुवंस-जमाई[1] ※ बोलि अंगनृप, लेहु बुलाई
दसरथ पूछेउ सचिव सप्रीती ※ कस सुत-सोक विभाण्डक बीती
उपाख्यान ऋषि शृंग सुपावन ※ अनजल-हरन, नीर-सरसावन
कृत्तिवास इमि काव्य प्रकासा ※ राम-नाम मुद-मंगल-बासा

शृंगी ऋषि को न देखकर विभाण्डक मुनि का खेद

पुनि सुमन्त्र दसरथहिं सुनावा ※ बूढ़ी जिमि अंगपहिं[2] सिखावा
मुनिसुत-हरन फन्द पुनि बरनी ※ दै चित भूप करहु इमि करनी
कुपित विभाण्डक, साप कराला ※ सहित राजु बिनसहु मुनि-ज्वाला
तासु त्रान-हित[3] कहउँ उपाऊ ※ रचना रचहु पन्थ सोइ राऊ
ठौर-ठौर गो-महिष तुरंता ※ गीत वाद चहुँ नृत्य अनन्ता
उत्सव चहुँ लखि, मुनि-मन-रोषू ※ मिटै सहज, उपजै सन्तोषू

तरणी बाहिया जाय मुनि नाहि जाने ※ ऋष्यशृंगे बले बैस व्याघ्र आछे बने?
लोमपाद राज्ये मुनि दिल दरशन ※ अनावृष्टि छिल वृष्टि हइल तखन
लोमपाद जानिल मुनिर आगमन ※ पाद्य अर्घ्य दिया पूजे मुनिर नन्दन
कन्याहीन लोमपाद शान्ता अभिधान ※ दशरथ-कन्याके मुनिरे दिल दान
सम्वन्धे से मुनि हय तोमार जामाइ ※ ताहाके चाहिया आन लोमपाद ठाँइ
दशरथ बलिलेन कह हे नायक ※ पुत्रशोके केमने बाँचिल विभाण्डक
येइ देशे हय ऋष्यशृंगे उपाख्यान ※ अनावृष्टि घुचे हय से देशे कल्याण
कृत्तिवास पण्डितेर काव्य अनुपम ※ सानन्दे वसिया सबे शुन राम नाम

ऋष्यशृंगेर अदर्शने विभाण्डक मुनिर खेद

सुमन्त्र बलेन शुन राजा दशरथ ※ बुड़ी लोमपादे नीति कहे वाक्य यत
मन दिया स्थिरचित्ते शुनह बचन ※ भुलाइया आनियाछि मुनिर नन्दन
यदि शाप देन कोपे विभाण्डक ऋषि ※ राज्यसह आपनि हइबा भस्मराशि
तार ठाँइ यदि तुमि चाओ परित्राण ※ पथेते करयिा राख विहित विधान
स्थाने स्थाने महिष गो राखह सत्वर ※ गीतवाद्य नृत्योत्सव हउक विस्तर
गीतवाद्य देखिया तखनि तपोधन ※ यत क्रोध जन्मे थाके हबे पासरण

---

१ रघुवंशी राजा दशरथ के जामाता २ लोमपाद को ३ रक्षा के लिए।

§ राजा दशरथ की कन्या 'शान्ता' जिसका पालन राजा लोमपाद ने अपनी कन्या मानकर किया था। शान्ता का नाम हेमलता भी पहले आ चुका है।

बूढ़ी - बचन महीप प्रमाना ※ जनपद कायम कीन महाना
ठौर-ठौर तहँ धाम ललामा ※ सोइ ऋषिश्रृंगि-ग्राम धरि नामा

दो० सकल धान्य-पूरित मही, दिव्य धाम, पुर, ग्राम।
लोमपाद नृप, श्रृंग ऋषि, इमि राखे निज धाम ॥ ८६ ॥

तप करि कुटी विभाण्डक आये ※ सुत-श्रुतिगान न मुनि सुनि पाये
नित-विपरीत मौन[1]! मन चिंता ※ द्वार ससंक धरेउ पग सन्ता
दिवस ताप-तप, आश्रम आई ※ कासु बैनमधु बिथा मिटाई
तात! तात! कहि, कुटी प्रवेसू ※ लखेउ न सुत, मुनि दुसह कलेसू
छूट कमण्डल, मूर्छित गाता ※ तरु-तर धरनि तपसि-तन पाता
बीते छन, कछु चेतन आवा ※ कितै सुवन! पुनि-पुनि गोहरावा
सबन भेंटि पूछत सुत-बाता ※ सुवन-नेह जग अतुल विधाता
हे क्षुप,[2] बिटप, लता जे उपवन! ※ लखे जात कहुँ तुम मम नन्दन
हे खग, मृग, पसु कतहुँ बिलोका ※ तनय जात, इमि सोध[3] ससोका
हेरत चलत न मग विश्रामा ※ पहुँचे जहँ इक ग्राम ललामा
कवन ग्राम को धाम-निवासी ? ※ पूछत दुखित, सबन पुरबासी
विनय जोरि किय प्रजासमाजू ※ नाथ श्रृंगऋषि कर यहु राजू

बुड़ीर बचन राजा ना करिल आन ※ पथे पथे करे ग्राम बड़-बड़ स्थान
श्री ऋष्यश्रृंगेर ग्राम वलि तार नाम ※ सर्व्वशस्ययुता पुरी दिव्य-दिव्य ग्राम
ऋष्यश्रृंग रहिलेन लोमपाद घरे ※ विभाण्डक तप करि गेलेन कुटीरे
आर दिन दूर हइते शुने वेदध्वनि ※ से दिन ना शुने शब्द व्यस्त हैल मुनि
आकुल हइया मुनि दाण्डाइल तथा ※ काँदिया बलेन बाछा ऋष्यश्रृंग कोथा
तपस्याते श्रान्त ह'ये आइलाम घरे ※ हेथा आसि कह कथा दुःख याक् दूरे
बलिते बलिते गेल कुटीरेर द्वारे ※ पुत्र-पुत्र बलि डाके पुत्र नाहि घरे
कमण्डलु आछाड़िया फेले भूमितले ※ अज्ञान हइया मुनि पड़े वृक्षतले
क्षणेक रहिया ज्ञान पाइलेक मुनि ※ कोथा ऋष्यश्रृङ्ग बलि डाकये अमनि
अपत्येर स्नेह सम नाहिक संसारे ※ याहारे देखेन मुनि जिज्ञासेन तारे
मुनि बले आछ वने यत तरु लता ※ देखेछ तोमरा मम पुत्र गेल कोथा
मृग पशु पक्षीरे लागिल सुधाइते ※ तोमरा देखेछ ऋष्यश्रृंगेरे जाइते
कांदिया कांदिया जाय विभाण्डक मुनि ※ कत दूर गिया पान ग्राम एकखानि
सकल लोकेरे मुनि शोकेते शुधान ※ काहार ए ग्रामखानि कह विद्यमान
जोड़हात करे प्रजागण कहे बाणी ※ ऋष्यश्रृंग मुनिवर इथे राजा तिनि

---

१ सन्नाटा २ झाड़ी ३ खोज।

लोमपाद तनया जिन अर्पी ※ हय-गज-सुरभि, सुभूमि समर्पी
सुनत प्रजा-मुख मंगल-बानी ※ शमन क्रोध, आतमा जुड़ानी
सकुसल सुवन बिलस संसारू ※ मिटेउ छोभ, मुनि करत विचारू
संतति-हीन अवध अजनन्दन[1] ※ करहिं श्रृंग सुत-याग अरंभन

दो० सोइ अवसर भेटउँ सुवन, भूप-निमंत्रन पाय ।
अस विचारि, बन गमन किय, मुनिवर तप मन लाय ।। ८७ ।।

राजा दशरथ का पुत्रेष्टि-यज्ञ और नारायण का चार अशों में जन्म-ग्रहण

मंत्र-सुमंत्र भूप मन भावा ※ अंग[2] हेत चतुरंग सजावा
चले लेन हित श्रृंग मुनीसा ※ लोमपाद-ढिग अवध-महीसा
दसरथ-खबरि अंग नृप पाई ※ पाद-अर्घ्य, मृदु असन[3] सजाई
पूजि राज-उपचार समेता ※ पूछेउ अंग आगमन-हेता[4]
दसरथ कही अंधमुनि बानी ※ समय पाय सुतजोग बखानी
अवध-पयान श्रृंग मुनि करहीं ※ सफल याग संतति हित रचहीं
नृप, दसरथहिं श्रृंग ढिग लाये ※ मुनिहिं जोरि कर माथ नवाये
लोमपाद परिचय पुनि दीन्हा ※ रविकुलमणि दसरथ जग चीन्हा

लोमपाद ताँके कन्या दियाछे कौतुके ※ ग्राम पशु अश्व गज दियाछे यौतुके
एइ कथा कहिलेक यत प्रजागण ※ क्रोधमन गैल मुनि अति हृष्टमन
संसार करिते पुत्र करियाछे साध ※ पुत्रेर कुशल शुनि खण्डिल विषाद
भावे अपुत्रक राजा अजेर नन्दन ※ ऋष्यश्रृंग करिवेन यज्ञ आरम्भन
निमन्त्रण हइवेक मम से यज्ञेते ※ सेइ काले हबे देखा पुत्रेर सहिते
एतेक भाविया मुनि गेल निज बास ※ आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

दशरथ राजार पुत्रेष्टि-यज्ञ ओ नारायणेर चारि अंशे अवतार

दशरथ राजारे सुमन्त्र इहा बले ※ मुनिके आनिते राजा दशरथ चले
दशरथ लोमपाद नृपतिर घरे ※ चतुरंग संगे यान हरिष अन्तरे
राजार पाइया वार्त्ता लोमपाद राजा ※ राज उपचारे यत्ने ताँरे करे पूजा
मिष्टान्न प्रभृति दिया कराय भोजन ※ जिज्ञासिल कोन कार्य्ये तव आगमन
दशरथ बलिलेन मोर वाणी शुन ※ अयोध्याय लये चल श्रृंग एइ छण
अन्धकेर उक्ति आछे ये अतीत काले ※ पुत्रवान हब आमि ऋष्यश्रृंग गेले
एमत कहिले दशरथ नृपवर ※ लोमपाद लये गेल मुनिर गोचर
प्रणाम करेन दशरथ जोड़ हाते ※ लोमपाद परिचय लागिल कहिते

१ दशरथ २ अंगदेश ३ जलपान ४ आने का प्रयोजन ।

सुता शान्ता मुनिहिं बिवाही ❊ जनक[1] तासु दसरथ नृप आही
श्वसुर भूप, मुनि तासु जमाई ❊ सुवन-अभाव ताप दुखदाई
सो तव कृपा होयँ सुतवन्ता ❊ अवध गमन कीजिय भगवन्ता
मुदित ध्यान लखि मुनि, गृहभूपा ❊ चारि अंस प्रभु प्रगट अनूपा
अंधक मुनि कर बचन प्रमाना ❊ अवध-पयान शृंग मन माना
चढ़ि रथ सहित सुता-जामाता ❊ चले अवध पुरजन - सुखदाता
लोमपाद नृप संग सुहाये ❊ दल-बल सहित नृपति-घर आये
लखि बशिष्ठ-मुनिगन, कह शृंगा ❊ करहु अरंभन याग-प्रसंगा

सो० आदि विष्णु आराधि, पुनि निमंत्रि मुनिगन सकल।
भूपति - मंगल साधि, अश्वमेध रचना रचहु ॥ ८८ ॥

भूप निमंत्रण दिय दिग्देसा ❊ जुरे पाय, मुनिवृन्द असेसा
पुलह, पुलस्त्य, पुलोम प्रकासा ❊ गौतम, कौण्डिन्य, दुर्वासा
वैशम्पायन, भरत, पराशर ❊ पिप्पलाद, शरभंग, निशाकर
अष्टावक्र, पतञ्जलि, गर्गा ❊ गौतम, भरद्वाज तपवर्गा
कूर्म, मारकण्डेय तपोधन ❊ सनक सनन्दन, ऋषी सनातन

दशरथ राजा एइ शुनेछ आख्यान ❊ तुमि कृपाकर यदि, हन पुत्रवान
शान्ताकन्या विवाह ये दियाछि तोमारे ❊ सेइ कन्या जन्मेछिल इंहार आगारे
इहार जामाता तुमि तोमार श्वशुर ❊ अपुत्रक तापित से ताप कर दूर
ध्यानेते जानिल मुनि मनेते प्रशंसे ❊ एइ घरे जन्मिबेन विष्णु चारि अंशे
अन्धक मुनिर कथा कभु नहे आन ❊ एतेक जानिया मुनि करिल पयान
तनया जामाता सङ्गे चड़ि निज रथे ❊ अयोध्याय आइल राजा लोमपाद साथे
बशिष्ठादि आइल सकल मुनिगण ❊ ऋष्यशृंग बले कर यज्ञ आरम्भन
अश्वमेध यज्ञ कर विष्णु आराधन ❊ यत मुनिगणे तुमि कर निमन्त्रण
दशरथ निमन्त्रण करे देशे देशे ❊ निमन्त्रण पाइया यतेक मुनि आसे
अगस्त्य आइल आर पौलस्त्य पुलोम ❊ आइलेन वैशंपायन दुर्व्वासा गौतम
जैमिनी गौतम पिप्पलाद पराशर ❊ पुलह कौण्डिन्य मुनि आइल निशाकर
मार्कण्डेय मरीचि भरत भरद्वाज ❊ अष्टावक्र मुनि भृगु कूर्म्म दक्षराज
गर्ग मुनि दधीचि आइल शरभंग ❊ पूजे राजा मुनिगणे बाड़े मने रंग
पातालेते आइल कपिल राजऋषि ❊ सगर सन्ताने ये करिल भस्मराशि
वेदवान चक्रवान आइल सावर्णि ❊ जल माझे आछे सेइ मुनि मत्स्यकर्णि
सनातन सनक से सनन्द-कुमार ❊ सौरभि आइल मुनि विष्णु अवतार

---

1 पिता।

भृगु, अगस्त्य, जैमिनि किय वासा ❋ कपिल—सुतन जिन सगर विनासा
वेदवान, चक्रवान[1], मरीची ❋ दक्षराज, सार्वाण, दधीची
मत्स्यकर्णि जिन नीर निवासा ❋ सौरभि बिष्णु समान प्रकासा
वाल्मीकि तट - जमुन निवासू ❋ सबन पूजि, नृप हृदय हुलासू
कश्यप-सुवन विभाण्डक आये ❋ अगनित नाम बरनि जनि जाये
तीनि कोटि द्विज श्रुति उच्चारन ❋ सकल मुनिन-मुख प्रगट हुताशन
कोउ छिति एक पाद आधारा ❋ वर्ष सहस कोउ बिन आहारा
जटा सीस, तन बल्कल बसना ❋ बिष्णु-कथा तजि, आन न रसना
तीन कोटि इमि मुनिनि-समाजा ❋ विपुल शिष्यदल सहित बिराजा
दिय निवास सन्मानि मुनीसा ❋ आये अवध बहुल अवनीसा
मैथिल जनकराज-ऋषि आये ❋ काशिराज नृप मल्ल सुहाये

दो० लोमपाद अंगाधिपति बंग-महिप घनश्याम ।
भोज पुरन्दर आगमन, नृप मरीचपुर धाम ॥ ८९ ॥

अतुल तेज तैलंग - नरेसू ❋ चम्पेश्वर नृप अवध प्रवेसू
कोटि अठासि पछाँह-भुवाला ❋ निज पुर तजि लख-लख नरपाला
कर्नाटक, मागध, गंधारा ❋ जेतक नृप तिन अवध अखारा[2]
पाय निमंत्रन - दशरथराऊ ❋ समिटे अखिल भुवन-नरराऊ

आइल वाल्मीकि यमुनार कूले धाम ❋ कश्यपेर पुत्र एल विभाण्डक नाम
कतेक आइल मुनि नाम नाहि जानि ❋ राजार यज्ञेते एल तिन कोटि मुनि
तिन कोटि मुनि करे वेद उच्चारण ❋ सबाकार वदने निःसरे हुताशन
पृथिवीते केह आछे एक पदे भर ❋ केह अनाहारे आछे सहस्र वत्सर
माथाय कपिल जटा वाकल वसन ❋ नारायण कथा विना मुखे नहे आन
एमत आइल तथा तिन कोटि मुनि ❋ सङ्गे कत शिष्य तार संख्या नाहि जानि
मुनिगण वासार्थ दिलेन वासाघर ❋ पृथिवीर राजा आइल अयोध्या-नगर
मिथिलार आइल जनक राजा-ऋषि ❋ मल्ल महाराज एल राज्य यार काशी
अंगदेश अधिपति लोमपाद नाम ❋ राजा बंगदेशेर आइल घनश्याम
मरीचिपुरेर राजा भोज पुरन्दर ❋ चम्पापुर हइते आइल चम्पेश्वर
आइल तैलङ्ग राजा तेजेते असीम ❋ आइल आटाशी कोटि ये छिल पश्चिम
उत्कल मागध आइल गांधार कर्णाट ❋ लक्षलक्ष राजा एल छाड़ि राजपाट
उदयास्त गिरिते यतेक राजा बैसे ❋ दशरथ निमन्त्रणे सब राजा आसे
मेदिनी भुवने बैसे यत राजगण ❋ नाना रङ्गे आइलेन संगी अगणन

१ चक्रवान ऋषि २ जमाव ।

राजन अकथ कहौं किमि रंगा ※ अगनित सचिव-सखा तिन संगा
कोटि अठासी लख नरराई ※ पृथक नाम को सकिय गिनाई
सारभौम दसरथ महराजा ※ वार्षिक कर भेटैं सब राजा
सो धन सकल राज-भण्डारा ※ पृथक बास प्रति भूप सँवारा
रची यज्ञ नृप सरयू तीरा ※ सोइ शुचि भूमि चले तपधीरा[१]
योजन लंब अकासी अवनी ※ द्वादश इतर पक्ष लिय धरनी
चारि कोस मेखला बँधाई ※ शत योजन छिति-यज्ञ सुहाई
यज्ञभूमि मुनिगन लिय आसन ※ शुभ छन-लगन याग आरंभन
आदि स्वस्तयन मुनिगन गावा ※ पुनि दशरथ संकल्प सुहावा
विनय जोरि कर मधुरस साने ※ सकल तुल्य, बड़-छोट न जाने
कासु वरन ? मोहिं करहु अदेसू ※ कहेउ शृंग ऋषि सुनहु नरेसू
कुलगुरु प्रथम सुवन-जगमूला[२] ※ वरन बशिष्ठ शास्त्र अनुकूला

सो० तासु वरन न विवाद, उचित कहेउ ऋषिगन सकल ।
मुनि समान मर्याद[३], अमित द्रव्य नृप दिय हरषि ॥ ९० ॥

करहिं वेदध्वनि संग तपोधन ※ भई प्रकट मुनि-वदन[४] हुतासन

प्रत्येक कहिते नाम नितान्त अशक्य ※ राजा यत आइल आटाशी कोटि लक्ष
यत राजा गेल दशरथेर गोचरे ※ राजचक्रवर्ती दशरथ सर्व्वोपरे
आसिया करिल दशरथ सह देखा ※ दिलेन वार्षिक कर समुचित लेखा
यत धन एनेछिल राखिल भाण्डारे ※ प्रत्येके प्रत्येक वास दिल सबाकारे
यज्ञ करिछेन राजा सरयूर तीरे ※ मुनिगण गेलेन राजार यज्ञघरे
एकाशी योजन घर अति दीर्घतर ※ द्वादश योजन तार आड़े परिसर
चारिक्रोश बांधियाछे यज्ञेर मेखला ※ शतेक योजन उमे सेइ यज्ञशाला
मुनिगण वैसे गिया घरेर भितरे ※ शुभक्षणे शुभलग्ने यज्ञारम्भ करे
स्वस्तिकादि अग्रेते करये मुनिगण ※ सकल्प करिल तबे अजेर नन्दन
दाण्डाइल दशरथ जोड़ करि हात ※ कहिते लागिल सब मुनिर साक्षात्
छोट बड़ नाहि जानि तुल्य सर्व्वजन ※ आज्ञा कर कारे अग्रे करिब वरण
ऋष्यशृंग बलिलेन शुनह राजन ※ अग्रेते करह गुरु वशिष्ठ वरण
ब्रह्मार तनय आर कुल-पुरोहित ※ उँहार वरण आगे शास्त्रेते विहित
वशिष्ठेरे वरिया घुचाओ अभिमान ※ वड़ छोट केह नहे सकलि समान
भाल-भाल बलिया सकल मुनि बले ※ वस्त्र अलङ्कार राजा दिलेन सकले
सकले करिल एककाले वेदध्वनि ※ मुनि मुखे निःसरिल पावक तखनि

---

१ तपस्वी लोग २ ब्रह्मा के पुत्र बशिष्ठ ३ प्रतिष्ठा ४ मुनियों के मुख से ।

करि शुचि अनल[1], याग सोइ थापा ※ अग्निकुण्ड, सोइ पावक व्यापा
आहुति यव-तिल-तण्डुल-रासी ※ घृत-घट सहस देयँ बनबासी
निरखि याग इमि हर्ष निरंतर ※ सुरगन सरग न थिर उर अन्तर
विश्वस्रवा - सुवन दससीसा ※ सुरन सूल नित लंक-अधीसा
कहत इन्द्र, किमि हे चतुरानन ※ यहि अवसर जन्महिं नारायन
सफल याग, दसरथ-गृह ताता ※ होय तबहिं दसकंध-निपाता
मत मिलाय गमने सुरवृन्दा ※ छीर-उदधि जहँ आनँदकन्दा
विनय विरंचि विविधि संलग्ना ※ प्रभु जगपति किमि नींद-निमग्ना
रमा[2] परसि तहँ प्रभुपद बंदति ※ शयन अनन्त-सेज[3] त्रिभुवनपति
गे समीप सुर सकल समाजा ※ पन्नग-बिछवनि[3] बिष्णु विराजा
आभा-मेघ सलिल कस सोहा ※ अहिफन सहस छत्र मन मोहा
तव निद्रा निद्रित जग जेता[4] ※ सकल विश्व तव चेतन चेता
कृपा-कोरि[5] सेवकन निहारी ※ विपति दूर कीजिय बनवारी
चौमुख-विनय[6] सुनत रस पागी ※ श्रीहरि क्षीर-सयन उठि त्यागी

सेइ अग्नि पवित्र करिया मुनिगण ※ अग्निर कुण्डेते लये करिल स्थापन
आतप तण्डुल यव तिल राशिराशि ※ एके एके दिल घृत सहस्र कलसी
एक वर्ष यज्ञ करे राजा दशरथे ※ देवतार भय हेथा हइल स्वर्गेते
विश्वश्रवार पुत्र हय राजा दशानन ※ हीन ज्ञाने लंकाते खाटाय देवगण
महेन्द्र बलेन ब्रह्मा कोन बुद्धि करि ※ एइ काले जन्म कि लवेन श्रीहरि
पुत्रेर लागिया दशरथ यज्ञ करे ※ ताँर पुत्र हैले तबे दशानन मरे
एइ युक्ति करिया यतेक देवगण ※ क्षीरोद समुद्रे गेला यथा नारायण
चारिमुखे ब्रह्मा गिया करेन स्तवन ※ कत निद्रा यान प्रभु देव नारायण
पदतले लक्ष्मीदेवी करिछेन स्तुति ※ अनन्तशय्याय शुये आछेन श्रीपति
सकल देवता गिया दाण्डाइल कूले ※ देखिल येमन मेघ भासिछे सलिले
शुइया आछेन हरि अनन्त उपरे ※ वासुकि सहस्र फना तदुपरि धरे
सेवकगणेर प्रति प्रभु देह मन ※ तोमार निद्राय निद्रा चेतने चेतन
विपत्ति करह दूर श्रीमधुसूदन ※ चारिमुखे ब्रह्मा यदि करेन स्तवन
क्षीरोदे उठिया बसिलेन नारायण ※ चारि दिके देखिलेन यत देवगण
वसिया श्रीहरि करिलेन एक शब्द ※ से शब्दे हइल श्लोक चारि पदबद्ध
हरि करिलेन चारिदिके निरीक्षण ※ म्लान देखिलेन सब देवेर बदन

---

१ यज्ञार्थ पवित्र अग्नि २ लक्ष्मी ३ शेषशय्या ४ जितना भी, समस्त
५ कृपादृष्टि ६ ब्रह्मा की प्रार्थना ।

जुरे सकल सुरगन चहुँ देखी * कहेउ शब्द अेक नाथ विसेखी

सो० प्रगट अनुष्टुप छन्द, मुख मलीन सुरवृन्द लखि ।
पूछत आनँदकन्द, कहहु शत्रु को प्रगट तव ॥ ६१ ॥

विधि[1] सकोच कह सुनहु पुरन्दर * मम वर प्रबल दसानन निसिचर
सो तुम जाय सकल दुख-गाथा * वरनौ द्रवित[2] होयँ भवनाथा
जोरि पाणि, सुर-गुरु[3] प्रभु आगे * सविनय करन दण्डवत लागे
मंगल रूप परम भगवाना * सबन विदित, राखहु सुर-माना
नाथ-अनाथ, दीन कर त्राना * निगमागम[4] तुम सकल पुराना
विश्वस्रवा-तनय[5] दुर्दण्डा * विधि अराधि वर लहेउ प्रचण्डा
तेज-लंकपति, सुर श्रीहीना * सुरपुर त्रास दुसह तिन दीना
सविता-सोम न स्वर्ग प्रकासू * निसा-दिवस तम-निविड़[6] निवासू
दण्डहीन, हत यम-अधिकारा * बरुन न अधिपति जल-आगारा
पावक प्रबल तेज निर्वाना * कियो दरिद हरि धनद[7] खजाना
गतिविहीन भयभीत समीरा[8] * तजे मार्ग ग्रहगन, अति पीरा
सागर वेग न, मंद तरंगा * राग-रंग जनि कतहुँ प्रसंगा
वीना-नाद न नारद गीता * सुरपुर असुभ, सकल विपरीता

मलिन देखिया जिज्ञासेन नारायण * तोमा सबाकार शत्रु हैल कोन जन
विधाता बलेन शुन देव पुरन्दर * तुमि गिया कह कथा प्रभुर गोचर
आमि वर दियाछि दुर्द्दान्त रावणेरे * तुमि गिया कह दुःख प्रभुर गोचरे
देवगुरु बृहस्पति जोड़ करि हात * प्रभुर गोचरे करिलेन प्रणिपात
अवधान करह ठाकुर भगवान * आपनि जानह यत देवतार मान
आगम निगम तुमि भारत पुराण * अनाथेर नाथ तुमि कर परित्राण
विश्वश्रवा मुनि पुत्र राजा दशानन * पाइल ब्रह्मार वर करि आराधन
तार तेजे स्वर्गे देव रहिते ना पारे * देवेर देवत्व हरे दुष्ट बलात्कारे
घुचाइल यमेर यतेक अधिकार * सूर्य्येर उदय नाइ सदा अन्धकार
चन्द्रेर कतेक कब नाहि तार ज्योति * बहुकाल प्रभु स्वर्गे अन्धकार राति
वरुणेर घुचिल अगाध यत जल * निर्व्वाण हइल अग्नि नाहिक प्रबल
कुबेरेर हरे धन पाइल तरास * ग्रहगणेर अधिकार हइल विनाश
सम्वरिल पवन पाइया महाभय * समुद्रेर वेग अति मन्द मन्द बय
छाड़े बीणा नारद बीणाय छाड़े गीत * अमंगल स्वर्गे यत हैल विपरीत

१ ब्रह्मा २ करुणा से पिघलें ३ बृहस्पति ४ वेद-शास्त्र ५ विश्वस्रवा का पुत्र रावण ६ घोर अंधकार ७ कुबेर ८ पवन ।

पावसादि षड्ऋतु कुसुमाकर * तजे समय भय-बस दसकंधर
करि दुर्जय रावण जग माहीं * दै वर अब विरंचि पछिताहीं
विधि-वर पाय, विधिहिं प्रतिकूला * सुरपुर हरन दुसह दुखसूला
दो० छिनीं सुता, अपमान चहुँ, मलिन, न सुरपुर वास ।
ठौर न त्रिभुवन सुरन कहुँ, जहाँ जायँ तहँ त्रास ।। ९२ ।।
अहह सरन पग प्रभु तव पावन * देव-देवि राखिय बधि रावन
सुनत, नाथ-उर क्रोध कराला * जिमि घृत पाय प्रज्वलित ज्वाला
कर गहि चक्र सुदर्शनधारी * सुरन प्रबोधि गरुड़ असवारी
अधिक न सुरगन त्रास प्रसंगा * करौं मान-मद-रावन भंगा
अबहि बधौं, कह गरुड़-असीना * विधि सोइ समय निवेदन कीना
मम वर अमर प्रथम दसकंधर * बध न तासु बिन मानव-बन्दर
जो नर जनम लेयँ भगवाना * निसिचर मारि, करैं सुर-त्राना
वर के वीर, विपति मोंहि टेरा * सहज सुभाव सदा विधि केरा
भावी अमिट, चखौ निज करनी * सकल स्वर्ग तजि गमनौ धरनी
सुनि विरंचि, हरि, विनय सुनावा * दुर्जय दनुज दुसह दुख गावा
प्रहरी-लंक दण्डधर भानू[1] * निज कर रंधति[2] पाक कृसानू[3]

वसन्तादि अधिकार छाड़े छय ऋतु * नित्य भय पाइ सबे रावणेर हेतु
ब्रह्मार वरेते सेइ हइल दुर्ज्जय * तारे वर दिया ब्रह्मा निजे पान भय
ताँर वर पेये लङ्के ताँहार वचन * स्वर्ग हैते खेदाड़िया दिल देवगण
काड़िया लइल से देवेर कन्या यत * देवेर शरीरे अपमान सहे कत
त्रिभुवने रहिते कोथाओ नाहि स्थान * यथा जाइ तथा सेइ करे अपमान
निवेदन करि प्रभु तोमार चरणे * रावणे बधिया राख देव देवीगणे
शुनिया प्रभुर क्रोध अन्तरे बाड़िल * घृत पेये अग्नि येन प्रज्ज्वलित हैल
विनता-नन्दने हरि करेन स्मरण * चक्र हाते पक्षिवेर करि आरोहण
कहिलेन देवगणे भय नाहि आर * रावणे एखनि ये करिव संहार
गरुड़े चड़िया चलिलेन जगन्नाथ * हेनकाले कहे ब्रह्मा प्रभुर साक्षात्
आमि वर दियाछि ये पूर्व्वे रावणेरे * एखनि करिले रण रावण ना मरे
नरेर उदरे यदि लओ हे जनम * नर वानरेर हाते ताहार मरण
प्रभुर साक्षाते ब्रह्मा कहेन ए कथा * जन्मेर नामेते प्रभु हेंट करे माथा
वरेर समय ब्रह्मा हन आगुयान * विपदे पड़िले बले रक्ष भगवान
कतवार दुःख पाव ललाटे लिखन * पृथिवीते जाव स्वर्ग करिया त्यजन
पुनश्च हरिरे ब्रह्मा कहेन वचन * दुष्ट रावणेर क्रीड़ा करह श्रवण

---

१ सूर्यदेव २ रसोई बनाते हैं ३ अग्निदेव ।

सुरपति सुमन सँजोवत हारा * पवन करत नित मन्द बयारा[1]
छत्र छपाकर[2] छिति महरानी * मार्जन, वरुन पियावत पानी
घोटक घास काटि उपहासू * दीन विलोकि दसा यम-त्रासू
शनि-कुदीठ त्रैलोक विनासा * धोवत बसन लंकपति-बासा
दनुज-सुतन-चटसार[3] गुजारा * सकल सृष्टि मैं सिरजनहारा

दो० रावन मन रंजन करत, बीनापानि[4] मुनीस ।
भुवन-सिद्धि-सम्पति सकल, हित बिलास-दससीस ।। ६३ ।।

जो नर-जनम न भावै प्रभु-मन * हरि-रचना लीजै हरि-चरनन
रचउ विरंचि इतर सुरनाथा * तव जग तुमहिं समर्पित नाथा
सुनि विधि-विनय सुधा रससानी * भक्तविवस कह मंगल बानी
बरनउ युगुति[5] सकल चतुरानन * कासु उदर जनमउँ, केहि आँगन
कवन देस-कुल मम अवतारा * को मम जग परिजन-परिवारा
कह विधि, अवध भानुकुल-भूपा * कौशल्या पटरानि अनूपा
तासु गर्भ प्रभु पावन जन्मा * सुनि बोले मृदु बैन अजन्मा[6]
चिर परिचित मम ते दोउ प्रानी * भक्त पुरातन मम-वरदानी

हाते अस्त्र सूर्य्यदेव लकार दुयारी * इन्द्र माला गाँथि देन चन्द्र छत्रधारी
आपनि त अग्निदेव करेन रन्धन * मन्द मन्द वातास करेन समीरण
वरुण बहिया जल देन निति निति * करेन मार्ज्जन गृह निजे वसुमती
शुनिले यमेर कथा हइबेक हास * काटिया आनेन तार घोटकेर घास
शनि दृष्टे त्रिभुवन भस्म हैया उड़े * कापड़ धुइया देन शनि लङ्कापुरे
जगतेर कर्ता आमि ब्रह्मा महामुनि * पड़ाइ बालकगणे लङ्काते आपनि
रावणेर अग्रेते देव गायक नारद * रावण भुवन जिति करेछे सम्पद
जन्म निते हरि यदि हइला कातर * आपनार सृष्टि सब लह चक्रधर
आर इन्द्र आर ब्रह्मा करह सृजन * आपनार सृष्टि सब लह नारायण
एतेक बलिया ब्रह्मा करुण वचन * भकतवत्सल प्रभु ताहे देन मन
हे ब्रह्मन् इहार उपाय बल मोरे * कोन वंशे जन्म लव बल कार घरे
काहार उदरे आमि लइब जनम * आमारे वा अपत्य बलिबे कोन जन
ब्रह्मा बले जन्म लबे दशरथ घरे * सूर्य्यवंश पुण्येते कौशल्यार उदरे
विधातार वचने बलेन चक्रपाणि * दशरथ कौशल्या उभये आमि जानि
पूर्व्वेते आमार सेवा करिछे विस्तर * जन्मिब तोमार घरे दियाछि ए वर

१ पंखा झलना २ चन्द्रदेव ३ राक्षस-बालकों की पाठशाला ४ नारद
५ तरकीब ६ जन्म-मृत्यु-रहित परब्रह्म विष्णु ।

सो वर सफल जनमि तिन गेहा ❊ धरहुँ सुरन हित मानव-देहा
वानर-योनि जनमि सुरवृन्दा ❊ नर-वानर मिलि असुर निकन्दा[1]
जानत विष्णु-गमन छितिलोका ❊ कातर कमला[2] प्रभुहिं बिलोका
धरा जनम तव, नाथ वियोगू ❊ कतक काल पुनि दरस सँयोगू
दुसह व्यथा, मोंहि तजिय न कन्ता ❊ रमा रोय प्रनवति भगवन्ता
बोले हरि, विधि कहहु विचारी ❊ लोकजननि[3] किमि व्यथा निवारी
जगती जनम बिना जगमाता ❊ होय न प्रभु दसकंध निपाता
दिव्य जनम[4] छिति जहाँ विदेहा ❊ सुता प्रकट मिथिलापति गेहा

जनक ऋषि के हल जोतते समय लक्ष्मी का जन्म

दो० कथा हरिजनम बिलमि[5] कछु, पुनि वरनेउ कृतिवास ।
जगदम्बा जिमि जानकी, जनमी जनक-निवास ।।
वेदवती (कुश-ध्वजसुता), तजी जबै निज देह ।
बध निमित्त लंकेस, सिय प्रगटी धाम-विदेह ।। ६४ ।।

मिथिला-अधिप जनक ऋषिराजा ❊ यज्ञभूमि जोतत सुतकाजा
लै हर जोतत खेत भुवाला ❊ नभ उर्वसी गमन सोइ काला

नरेर गर्भेते आमि लइब जनम ❊ वानरीर गर्भे जन्म लह देवगण
आमि नर हइ हयो तोमरा वानर ❊ रावण मारिते येन हइओ दोसर
ब्रह्मा वाक्ये स्वीकार करेन नारायण ❊ पदतले पड़ि लक्ष्मी जूड़िल क्रन्दन
तव अवतार हबे पृथिवीमण्डले ❊ तोमा दरशन आमि पाव कत काले
आमारे छाड़िया कोथा जाइवे श्रीहरि ❊ विच्छेद-यन्त्रणा आमि सहिते ना पारि
लक्ष्मीर रोद न देखि कान्दे कम्बुग्रीव ❊ ब्रह्मारे जिज्ञासे कोथा लक्ष्मीरे राखिव
शुनिया से वाक्य ब्रह्मा निवेदन करे ❊ उनि नाहिं गेले कि रावण राजा मरे
अयोनि सम्भवा इनि जन्मिबेन चाषे ❊ जनकेर घरे जन्म मिथिला प्रदेशे
एतेक बलिल यदि ब्रह्मा तपोधन ❊ आदिकाण्ड गान कृत्तिवास बिचक्षण

जनक ऋषिर चाषे लक्ष्मीर जन्म

श्री हरिर जन्म-कथा थाकुक एखन ❊ आगेते कहिव माता लक्ष्मीर जनम
येखानेते वेदवती छाड़िल जीवन ❊ सेखाने हइल दिव्य मिथिला भुवन
तार राजा हइल जनक नामे ऋषि ❊ पुत्रेर कारणे राजा यज्ञभूमि चषि
स्वहस्ते लाङ्गले राजा यज्ञभूमि चषे ❊ उर्व्वशी चलिया जाय उपर आकाशे

१ विनाश २ लक्ष्मी ३ जगदम्बा ४ अलौकिक (अयोनि) जन्म ५ रुककर।

लखि अप्सरा कामसर घाता ❋ छिति ऋतुमती, रेत नृप पाता
अवनि-गर्भ सो डिम्ब-सरूपा[1] ❋ जोतत भूमि जहाँ नित भूपा
हर परसत, नृप डिम्ब निहारी ❋ किये टूक दुइ, कौतुक भारी
सुता रतन छबि रमा सरूपा ❋ चपला सरिस, रुदन सुनि भूपा
चकित देव, उत शब्द अकासा ❋ सीरभूमि जो सुता प्रकासा
तव तनया ! पालौ गृह जाई ❋ लै नृप अंक चले हरषाई
केहि दुख दीन हरन किय बाला ? ❋ कहत रानि, नहिं उचित भुवाला
जोतत सीर लही यह सीता ❋ पालहु रानि समोद सप्रीता
संततिहीन ! उमड़ असनेहा ❋ सुता बढ़त दिन-दिन नृप-गेहा
केशपाश घन चवँर समाना ❋ अधर ओष्ठ फल बिम्ब लुभाना
करगत सुकर सहज कटि अंगा ❋ अँगुरि पदुमपग हिंगुल-रंगा
तनछबि सुबरनलता प्रतीता[2] ❋ सीता[3]-जनम नाम सो सीता
अतुल अकथ इंदिरा सरूपा ❋ जेहि छबि मुग्ध विष्णु नररूपा
लक्ष्मी-जनम-कथा सुनि काना ❋ लहै सुतिय, सुत, संपति नाना

ताहाके देखिया कामे जनक मोहित ❋ हठात् ऋषिर वीर्य्य हइल स्खलित
दैवयोगे पृथिवी आछिल ऋतुमती ❋ ऋषिर्वीर्य्य पड़िया हइल गर्भवती
डिम्बरूपे भूमि मध्ये छिल बहुकाले ❋ भासिया उठिल डिम्ब लाङ्गल शिराले
डिम्ब भङ्गि जनक करिल दुइ खान ❋ कन्यारत्न देखि ताहे लक्ष्मीर समान
उङा-उङा करि कान्दे येन सौदामिनी ❋ आचम्बिते आकाशेते हैल देववाणी
चाषभूमि हैते एइ कन्यार जनम ❋ तव कन्या बटे एइ करिह पालन
शुनिया जनक बड़ हरिष अन्तरे ❋ कन्या कोले करिया तखनि एल घरे
देखि कन्या राजराणी जिज्ञासे तखन ❋ दुःख दिया काहारे आनिल कन्याधन
जनक बलेन क्षेत्रे कन्यार जनम ❋ मम कन्या बटे तुमि करह पालन
अपत्य नाहिक स्नेह बाड़िल अन्तरे ❋ दिने-दिने बाड़े लक्ष्मी जनकेर घरे
घन केशपाश ताँर येमन चामर ❋ पाका बिम्बफल तुल्य ताँर ओष्ठाधर
मुष्टिते धरिते पारि ताँहार काँकालि ❋ हिंगुले मण्डित पादपद्मेर अंगुलि
परमा सुन्दरी कन्या येन हेमलता ❋ शिराले हइल जन्म नाम राखे सीता
लक्ष्मीर रूपेर किवा कहिब तुलन ❋ याँर रूपे भुलिबे आपनि नारायण
येइ जन शुने एइ लक्ष्मीर जनम ❋ धन पुत्र लक्ष्मी तारे देन नारायण
कृत्तिवास पण्डित कवित्व विचक्षण ❋ गाइल ए आदिकाण्ड लक्ष्मीर जनम

१ अंडे के समान २ मालूम पड़ती थी ३ खेत जोतने के बाद की रेखा को सीता कहते हैं ।

पुत्रेष्टि-यज्ञ की समाप्ति पर यज्ञ का चरु राजा दशरथ की तीन रानियों द्वारा खाना और तीनों के गर्भ से चार अंशों में नारायण का जन्म

दो० जनकपुरी श्री-जनम उत, अवधपुरी श्रीकान्त।
असुर सूल, सुर सुखद, किय, लीला लीलाकान्त[1] ॥ ६५ ॥

यज्ञ, बर्ष लौं, दसरथ कीन्हा ※ यज्ञभूमि प्रभु दरसन दीन्हा
शंख चक्र कर पद्म गदाधर ※ वनमाला किरीट कुण्डलधर
शृंगिहिं केवल दरस सरूपा ※ लखत न आन[2] चतुर्भुज रूपा
कह मुनि, दसरथ-पुन्य महाना ※ जिन निकेत जन्मत भगवाना
कौतुक! सुरन कीन नभबानी ※ राम-जनम, रावन-बध जानी
अंधक सों नृप श्रीफल पावा ※ सो शृंगी चरु[3] सहित मिलावा
आहुति-पूर्न शृंगि ऋषि दीना ※ विष्णु-रूप चरु प्रगटित कीना
चरु सँजूति पुनि सुबरन थारी ※ सुभ छन मुनि दसरथहिं सवाँरी
महरानिन चरु दीजिय जाई ※ ते सुतवती होयँ सो पाई
चरु नृप लीन, कीन मुनि बंदन ※ शुचि पथ महल चले अजनन्दन
कैकइ कौशल्या पटरानी ※ यज्ञ-प्रसाद देन मन मानी

दशरथेर पुत्रेष्टि-यज्ञ ओ यज्ञेर चरु तिन रानी के भक्षण एवं तिनेर गर्भे नारायणेर चारि अंशे जन्म

मिथिलाय हैल यदि लक्ष्मीर उत्पत्ति ※ अयोध्याय जन्म निते यान लक्ष्मीपति
दशरथ यज्ञ करे एकइ वत्सर ※ यज्ञस्थले आसि देखा दिलेन श्रीधर
शंख चक्र गदा पद्म चतुर्भुज कला ※ किरीट कुण्डल कर्णे हृदे बनमाला
एइरूपे आसि देखा दिल नारायण ※ केवल देखिल ऋष्यशृङ्ग तपोधन
ऋषि वले दशरथ तुमि पुण्यवान ※ तव घरे जन्मिते आइल भगवान
हेनकाले देववाणी हैल चमत्कार ※ विष्णु जन्मे रावणेर करिते संहार
ऋष्यशृङ्ग मुनि दिल यज्ञेते आहुति ※ यज्ञ हैते उठे चरु विष्णुर आकृति
विष्णुमंत्रे ऋष्यशृंग ताहे दिल काठि ※ ताते फेलि दिल अन्धकेर फलगुटि
तुलिलेन चरु मुनि सुवर्णेर थाले ※ दशरथ हाते दिया कहे शुभकाले
प्रथमा नारीके लये कराओ भक्षण ※ एइ चरु हैते हवे तोमार नन्दन
मुनि चरु हाते दिल राजा वन्दे माथे ※ अन्तःपुरे गेल राजा सुपवित्र पथे
कौशल्या कैकेयी ताँर मुख्य दुइराणी ※ एकभाग छिल चरु कैल दुइ खानि
अग्रभाग दिल राजा कौशल्या राणीरे ※ शेष भागखानि दिल कैकेयी देवीरे

---

१ रामचन्द्र २ अन्य किसी को ३ यज्ञ की आहुति के लिए हविष्यान्न।

दौउन, भाग दै भूप समाना ❋ यज्ञभूमि दिसि कीन पयाना
रानि सुमित्रा सकल विलोका ❋ भरत उसास, अतुल उर सोका
कवन द्रव्य मोंहि वञ्चित कीन्हा ❋ हतभागिन मोंहि भूप न चीन्हा
जीवन विफल, विलग मोंहि राखी ❋ केहि विधि सुख, अकेल जो चाखी[1]
करुनामयी कौसिला रानी ❋ कहेउ, सुमित्रा! सुनु मम बानी

दो० सहभामिनि तीनिउ भगिनि, अर्द्ध देहुँ तोंहि अंस।
पै, मम सुत-सहचर सदा, रहै तोर अवतंस ॥ ९६ ॥

ममज[2] दास तव-तनय[3] जेठानी ❋ दै वर मोंहि सनाथहु रानी
एक भाग निज हित धरि शेषा ❋ दियेउ सुमित्रहिं चरु अवशेषा
कैकइ कौतुक सकल निहारी ❋ अति सयानि, इमि गिरा उचारी
मम चरु-भाग रानि तव हेता ❋ वचन देहु जो हर्ष समेता
मम चरु-अंस प्रगट तव नन्दन ❋ मम-सुत-सखा सतत[4] मनरंजन
दीदी दया लहौं बड़भागी ❋ ममज, दास तवसुत-अनुरागी
सुनि कैकई अंस निज दीन्हा ❋ तीनिउ संग पान चरु कीन्हा
हरि, इक अंस, जनम तन चारी ❋ शुभ छन तीनि कोखि अवतारी
दिय नृप सविधि दच्छिना-दाना ❋ पूरन याग, द्विजन सन्माना

चरु दिया यज्ञशाले गेल दशरथे ❋ हेन काले सुमित्रा से लागिल कान्दिते
ऊर्द्ध श्वासे आसि कहे छाड़िया निश्वास ❋ कोन द्रव्य खेते राजा ना कैल आश्वास
आमि त दुर्भागा नारी विफल जीवन ❋ आमारे वञ्चिया खेये कत पाबे धन
शुयिया कौशल्या राणी ह'ये दयावती ❋ बलिते लागिल राणी सुमित्रार प्रति
मने मानियाछि हेन तिनटि भगिनी ❋ आपन भागेर तोमा दिव अर्द्धखानि
इहाते तोमार यदि जन्मये नन्दन ❋ आमार पुत्रेर संगे रबेक से जन
सुमित्रा बलेन दिदि एइ देह वर ❋ मम पुत्र हय तव पुत्रेर नफर
अग्रभाग कौशल्या राखिया निज तरे ❋ शेषभाग दिल तबे सुमित्रा भग्निरे
ताहा देखि बसिया कैकेयी क्रूरमति ❋ कपटे डाकिया कहे सुमित्रार प्रति
चरुर अर्द्धेक अंश तोमा दिब आमि ❋ सुमित्रा भगिनी एइ सत्य कर तुमि
आमार चरुर अंशे हबे ये नन्दन ❋ आमार पुत्रेर संगी क'रो सेइ जन
सुमित्रा बलेन दिदि करिलाम पण ❋ तोमार पुत्रेर दास आमार नन्दन
एत शुनि शेषभाग दिलेन ताँहारे ❋ तिनजन खाइलेन चरु एकबारे
एक अंशे नारायण चारि अंश हैया ❋ तिन गर्भे जन्मिलेन शुभक्षण पाइया
हेथा यज्ञ सांग करि राजा दशरथ ❋ ब्राह्मणेरे धन दान करे विधिमत

---

१ खायगा २ मुझसे उत्पन्न पुत्र ३ तुम्हारे पुत्र राम का ४ सदैव।

'नृप सुतवान' सबन वर दीना ※ तृप्त गमन निज-निज गृह कीना

श्री राम का जन्म

इत, रानिन चरुपान प्रभावा ※ कोटिन भानु तेज तन छावा
असित[1] केस सित[2] वयस बुढ़ानी ※ सो तजि, चरुबल तरुनि लखानी
विधि-माया, तीनिउ इक काला ※ भईं ऋतुवती, विदित भुवाला
धारेउ गर्भ, भूप अनुमाना ※ बढ़त सतत शशिकला समाना
शुभ लच्छन दुइ मास वितीता ※ चौथ मास, नृप भई प्रतीता
पञ्चम मास गर्भ पगुधारा ※ समाचार सुभ जग विस्तारा

दो० पुरुबारध[3], सुमुखिन बदन[4], जिमि प्रभात कर चंद ।
श्याम उरोज, सलज्ज मन, अहिनिसि[5] पुलक अनन्द ॥ ९७ ॥

कछु बीते रुचि मृतिकापाना ※ उन्नत उदर, नयन अलसाना
फरकति कछु उठवनि लग भारी ※ अभरन[6] खसति, अंग पियरारी
असह बसन, तन-बल नित छीना ※ आभा श्याम उरोजन लीना
बढ़त गर्भ बीते नव मासा ※ लखि भूपति-हिय अमित हुलासा

ब्राह्मणे तुषिल करि नाना धन दान ※ सबे आशीर्व्वाद करे हओ पुत्रवान्
बिदाय हइया सबे निज देशे जाय ※ आदिकाण्डे गाइल पुत्रेष्टि यज्ञ साय

श्री रामेर जन्म

हेथा तिन राणी चरु करिल भक्षण ※ कोटि सूर्य्य जिनि सेइ तिनेर वरण
हइया छिलेन वृद्धा शिरे पाका केश ※ चरुर भक्षणे येन प्रथम वयेस
विधाता सकल माया करेन घटन ※ एककाले ऋतुमती हैल तिनजन
दशरथ जानिलेन ए सब सन्दर्भ ※ ऋतुर लक्षणे जाना गेल सेइ गर्भ
एइमत तिन गर्भ बाड़े दिने दिने ※ दुइमास गर्भ जाना गेल सुलक्षणे
चारिमास गर्भेते प्रतीत हैल मन ※ पञ्चमास गर्भेते शुनिल त्रिभुवन
प्रथम गर्भेते लज्जायुक्ता अहर्निशि ※ बदन हइल येन प्रभातेर शशि
कुचाग्र हइले काल उदर डागर ※ मृत्तिकार भक्षणेते सदा समादर
घन घन हाइ उठे अलस नयन ※ पाण्डुवर्ण हैल अंग खसे आभरण
कृष्णवर्ण प्रकाश हइल स्तन बोंटे ※ शरीरे ना रहे वस्त्र नित्य बल टुटे
एइमत हइल से गर्भेर वर्द्धन ※ नयमास गर्भवती हैल तिनजन

१ काले २ सफ़ेद ३ गर्भकाल का पूर्वार्द्ध समय ४ मुख ५ रातदिन ६ गहने ।

पञ्चामृत कराय शुचि पाना ※ पावन गर्भ कीन सबिधाना
पुन्य पुरातन, तरु फल आवा ※ कौसिल्या हरि सपने पावा
शंख चक्र कर पद्म गदाधर ※ दरस चतुर्भुज दिय सारंगधर
सुवन-भाव अंकहिं लिय रानी ※ कहेउ 'मातु !' प्रभु मञ्जुल वानी
प्रथम कीन मम बहु सेवकाई ※ सुफल, उदर तव प्रगटहुँ आई
मोहिं पालहु दै स्तन - पाना ※ अस कहि पुनि अदरस भगवाना
भौंचक रानि निरखि सुख-सपना ※ सकल समोद दसरथहिं बरना
'मातु-मातु' मोहिं नाथ पुकारी ※ अन्धक-वर नृप सत्य विचारी
हरषि द्विजन बहु सुबरन दाना ※ गत दस मास नृपति अनुमाना
जस-जस प्रसव-काल नियराई ※ तस-तस भूप मोद अधिकाई
अब-तब[1] जनम, निकट, मन धरहीं ※ मंगलगान प्रजागन करहीं
हरि आगमन-भूमि अनुमाना ※ वसति गगन आतुर सुर नाना

दो० दस दिसि मंगल नखत चहुँ, शुभ ग्रह उदित अनन्द ।
प्रथम पीर सुनि, प्रसवपुर[2] प्रविसीं[3] नारीवृन्द ॥ ६८ ॥

शुक्ला नवमि चैत मधुमासा ※ शुभ छन जग जगनाथ प्रकासा

देखि दशरथ राजा आनन्दित मन ※ पञ्चामृत दिया कैल गर्भेर शोधन
ये छिल प्राक्तन पुण्य ताहारि कारण ※ कौशल्यारे देन देखा प्रभु नारायण
स्वप्ने शंख चक्र गदा पद्म शार्ङ्गधारी ※ चतुर्भुज रूपे देखा दिलेन श्रीहरि
पुत्रभावे हरिके करिल राणी कोले ※ कहिलेन कौशल्यारे डाकिया मा बले
पूर्व्वेते आमार सेवा करेछ आदरे ※ सेइ पुण्ये जन्मिलाम तोमार उदरे
आपनि तोमार गर्भे लयेछि जनम ※ पुत्र बलि स्तन दिया करह पालन
एत बलि अदर्शन हैला नारायण ※ कौशल्या बलेन किवा' देखिनु स्वपन
कहिल सकल कथा दशरथ प्रति ※ मा बलिया आमारे ये डाकेन श्रीपति
शुनि दशरथ राजा हरषित मन ※ भावे, बुझि सत्य हबे अन्धक वचन
दीन द्विजगणेरे दिलेन कत स्वर्ण ※ एइरूपे दश मास हइल सम्पूर्ण
प्रसव समय यत निकट हइल ※ दशरथ भूपतिर आनन्द बाड़ील
एखन तखन राणी हइब प्रसव ※ प्रजागण गान करे सदा शुभ रव
जेइ दिन भूमिष्ठ हइबे नारायण ※ आकाश जुडिया बसिलेन देवगण
शुभ ग्रह सकल उदित स्थाने स्थाने ※ दशदिक मंगल सकल तारागणे
प्रथमे प्रथमा स्त्रीर गर्भेर वेदन ※ अन्त:पुरे प्रवेश करिल नारीगण
चैत्र मधुमास शुक्ला श्रीरामनवमी ※ शुभक्षणे भूमिष्ठ ह'लेन जगत्स्वामी

---

१ शीघ्र ही, जिस क्षण भी २ सौंर, सूतिकागृह ३ प्रवेश किया ।

व्यथा न सोनित[1] गर्भ सुपावन ❊ श्रीहरि जनम लीन मनभावन
दीपशिखा जिमि तिमिर बिनासा ❊ प्रभु-तन-दुति रवि कोटि प्रकासा
श्याम गात प्रभु कुञ्चित कुन्तल[2] ❊ निखरित मुख, सुधांसु[3] छबि झलमल
लंब अजानुबाहु मन रञ्जा ❊ श्रवन खचित दृग नीलमकंजा[4]
नूतन, अकथ, सुकोमल अंगा ❊ अधर ओष्ठ कस बिंबित रंगा
जो छबि विश्व जुरै मिलि तीरा ❊ अतुल, असम श्रीनाथ-सरीरा
पुर-बनितन जय-कलरव कीन्हा ❊ सम्हरि नार-छेदन मन दीन्हा
शुभदूती[5] कौशिल्या - दासी ❊ खुसखबरी नृप पाहिं प्रकासी
अष्टाभरन आदि सोइ पावा ❊ दसरथ-उर उछाह अति छावा
बेसुध गात विभोर अनन्दा ❊ अगनित धन पाये द्विजवृन्दा
पुनि तरंग पुलकावलि छाई ❊ शत-शत सुरभि दान मन भाई
सुभ छन पूँछि सुवनमुख हेता ❊ अवलोकन नृप चले निकेता
रोहनि-गेह चन्द्र जिमि गमना ❊ सुरपति चले मनौ शचि-भवना
चले भूप छबि-सुत अवलोकन ❊ जहँ कौसिला-कोलि[6] मनमोहन
बहु सम्हारि शिशु उर लपिटाई ❊ पुनि-पुनि चुम्ब चंदमुख राई

गर्भव्यथा नाहि पाय नाहिक शोणित ❊ शुभक्षणे श्रीहरि हइल उपनीत
अन्धकार घुचे येन ज्वलिलेक बाति ❊ कोटि सूर्य्य जिनिया ताँहार देहद्युति
श्यामल शरीर प्रभु चाँचर कुन्तल ❊ सुधांशु जिनिया मुख करे झलमल
आजानुलम्बित दीर्घ भुज सुललित ❊ नीलोत्पल जिनि चक्षु आकर्ण पूरित
के वर्णिते हय शक्त रच ओष्ठाधर ❊ नवनीत जिनिया कोमल कलेवर
संसारेर रूप यत एकत्र मिलन ❊ किसे वा तुलना दिव नाहिक तेमन
जय जय हुलाहुलि दिल नारीगण ❊ सावधाने करिलेन नाड़िका छेदन
कौशल्यार दासी सेइ शुभवार्त्ता नामे ❊ शुभ समाचार दिल गिवा राजधामे
शुनि दशरथ पूर्ण पुलक शरीरे ❊ अष्ट आभरण आरो दिलेन दासीरे
परम आनन्दे राजा पासरे आपना ❊ कत धन दिल द्विजे के करे गणना
आनन्दसागरे राजा भासे सेइ ठाँइ ❊ पुनरपि दिल दान कत शत गाइ
गणक आनिया करिलेन शुभकाल ❊ पुत्रमुख देखिबारे यान महीपाल
इन्द्र येन चलिलेन शचीर मन्दिरे ❊ चन्द्र येन आसिलेन रोहिणीर घरे
कौशल्या बसिया आछे नारायण कोले ❊ पुत्र देखिबारे राजा गेल हेनकाले
धीरे धीरे दशरथ पुत्रे निल बुके ❊ लक्ष लक्ष चुम्ब तार दिल चाँदमुखे

---

१ रक्त २ घुंघराले केश ३ चन्द्रमा ४ कानों तक पहुँचे नीलकमलवत् विशाल नेत्र ५ 'शुभसम्वादिनी' दासी ६ कौशल्या की गोद में।

दो० दरिद मोद निधि-कलस लहि, लोचन लोचनहीन ।
ताहू सों नृप अधिक सुख, तनय विधाता दीन ॥ ९९ ॥

भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न का जन्म

प्रथम अंश प्रगटत घनश्यामा ※ कैकइ छोभ जनम सुनि रामा
जनम कौसिला-सुत बड़भागी ※विधि[1] न प्रथम मोहिं दीन,अभागी
नृप-सुत जेठ राज-अधिकारी ※ शास्त्र सकल अस नीति विचारी
पूछत मंत्र मंथरा तीरा ※ तब लौं बढ़ी प्रसव कै पीरा
मंगलघरी प्रगट पद्मासन ※ अंस द्वितीय जन्म नारायन
भरत सरूप सलोन अनूपा ※ नखसिख सकल राम अनुरूपा
गई मन्थरा जहँ अजनन्दन ※ कैकइ-उदर जनम तव नन्दन
मुदित भूप कैकई निकेता ※ चले सुवन-मुख दरसन हेता
आनन-सुत विलोकि महिपाला ※ बहु धन दान, द्विजन प्रतिपाला
पीर सुमित्रा प्रसव बहोरी ※ जन्मति जुगुल तनय कै जोरी
गौरवर्ण दोउ हरि-अवतारा ※ अनुपम छबि सौमित्रि-कुमारा

दरिद्र पाइल येन निधिर कलस ※ ततोधिक आनन्दित राजार मानस
अन्धजन येमन नयन-लाभे हय ※ ततोधिक दशरथ पाइया तनय
एतदिने दशरथ मनेते उल्लास ※ रामजन्म रचिल पण्डित कृत्तिवास

भरत, लक्ष्मण ओ शत्रुघ्नेर जन्म

एक अंशे चारि अंश हैल नारायण ※ शुनिया दुःखित बड़ कैकेयीर मन
आजि हैते कौशल्या जे बाड़िल सोहागे※ मोरे पुत्र केन विधि नाहि दिल आगे
ज्येष्ठ पुत्र राजा हय सर्व्वशास्त्रे बले ※ मम पुत्र विधि आगे केन नाहि दिले
कैकेयी बलेन कुँजी गा करे केमन ※ बलिते बलिते हैल गर्भेर वेदन
छिलेन मायेर गर्भे करि पद्मासन ※ शुभक्षणे जन्मिलेन प्रभु नारायण
कौशल्या राणीर पुत्र जे रूप लावण्य ※ सेइ मुख सेइ नाक किछु नहे भिन्न
कुँजी गिया जानाइल भूपतिर घरे ※ हइल तोमार पुत्र कैकेयी उदरे
शुनि दशरथ राजा आपना पासरे ※ पुत्रमुख देखे गिया कैकेयीर घरे
पुत्र-मुख देखि राजा अति हृष्टमति ※ धन वितरण हेतु देन अनुमति
सुमित्रार हइलेक गर्भेर वेदन ※ यमज उभय पुत्र प्रसवे तखन
गौर वर्ण हैल दोंहे विष्णु अवतार ※ सुमित्रा प्रसव कैल यमज कुमार

---

१ विधाता ।

रूपसि-प्रसव जुगुल सुत देखी ❊ बनितन जय-ध्वनि कीन विसेखी
दीन सगर्व खबरि पुनि चेरी ❊ जोरी[1] नाथ जनम सुत केरी
सुनत अवधपति मोद अपारू ❊ दीन लुटाय, द्विजन भण्डारू
निरखि सुतन मुख, भूप पयाना ❊ करैं गनित[2] जहँ बुध-विद नाना
रविकुल धनि, नृप सुयस बखाना ❊ सुभ ग्रह घरी अकथ भगवाना

दो० सारभौम[3] मंगल सुवन, रामजनम सुनि कान ।
हरन त्रास-यम, लहनसुख, सुत, श्री, संपति-खान ।।
चले दान लहि गनित-बुध[4] उत पुर अनँद-हिलोर ।
अवध, प्रजा—चारिउ बरन, मगन, अवध सुख-सोर ।। १०० ।।

श्रीराम-जन्म में सभी को आनन्द

छं० रघुनाथ-जनम सुनि, नाचत ऋषि-मुनि, दण्ड-कमण्डल हाथा ।
नाचत सुर सुरपुर, धरा नारि-नर, अवध नचत नरनाथा[5] ।।
नाचत विरंचि रँग, देवयानि सँग, इन्द्र नर्त्त शचि-साथा ।
जड़-जंगम जेते, नृत्य अचेते, बसुमति[6] नर्त्ति सनाथा ।।

यखन यमज पुत्र प्रसवे सुन्दरी ❊ जय-जय हुलाहुलि दिल सब नारी
दासी गिया दशरथे कहिल गौरवे ❊ आर दुइ पुत्र राजा सुमित्रा प्रसवे
शुनिया हइल ताँर आनन्द अपार ❊ ब्राह्मणरे लुटाइल सकल भाण्डार
चलिलेन दशरथ परम कौतुक ❊ तिन घरे देखिलेन चारि-पुत्र-मुख
तिन दण्ड बेला हैल गणकेर मेला ❊ खड़िते गणिया देखे शुभ क्षण वेला
सूर्य्यवंशे आछे बहु राजार सुकीर्त्ति ❊ सबा हैते सेइ पुत्र राजचक्रवर्ती
इहार कोष्ठिर किबा करिव गणन ❊ एमन लक्षणे बुझि प्रभु नारायण
येइ जन शुने प्रभु रामेर जनम ❊ धन पुत्र लक्ष्मी हय भय पाय यम
अयोध्याय हइल आनन्द कोलाहल ❊ क्षत्रि वैश्य शूद्र सबे करिल मंगल
गणके तुषिल राजा दिया नाना धन ❊ आदिकाण्ड गान कृत्तिवास विचक्षण

श्रीरामेर जन्मे सकलेर आनन्द

रामेर जनम शुनि, नाचिल सकल मुनि, दण्ड कमण्डलु करि हाते ।
स्वर्गे नाचे देवगण, मर्त्ये नाचे मर्त्यजन, हरिषे नाचिछे दशरथे ।।
श्री देवयानिर संगे, नाचिछेन ब्रह्मा रंगे, शची संगे नाचे शचीपति ।
स्थावर जंगम आर, सबे नाचे चमत्कार, उल्लासित नाचे वसुमती ।।

१ जोड़ी (दो) २ ज्योतिष-गणना ३ चक्रवर्ती ४ ज्योतिषी ५ दशरथ ६ पृथ्वी ।

दिवि अभरन-धारी, रूपसि नारी, चलीं दरस भगवन्ता।
विद्याधरि-नर्तन,सकल नगर ध्वनि,रतन प्रदीप ज्वलंता ।।
कौशिला सुवन जनि[1],गगन सुरन ध्वनि,'रघुपति जय श्रीकन्ता'।
जन्मे नारायन, बधैं दसानन, सुरन कलेस-भनन्ता[2] ।।
प्रभु-ध्यान लगावैं, चरित जो गावैं, धनि! भवसागर तरहीं ।
नर-पुन्य उदित,हरि देवलोक तजि! धराधाम अवतरहीं ।।
यम-त्रास नसावनि, कथा सुपावनि, सुनि, सुत-संपति लहहीं ।
पूरन अभिलासा, कवि कृतिवासा,वालमीकि अनुसरहीं ।।

श्रीराम-जन्म से रावण को आशंका एवं उसके निवारण का उपाय सोचना

अवध जनम जो प्रभु, तौ लंका ※ हित अतंक , रावन मन संका
अचरज दनुज, सिहासन हाला ※ गिरे मुकुट छिति, हाल बेहाला!
धरनि किरीट[4] खसकि किमि आये ※ कौतुक कस ? अपसकुन दिखाये
कित घननाद ! आनु कोदण्डा ※ करौं बसुमती[5]-बासुकि[6] खण्डा
कहेउ विभीषण धर्म सरूपा ※ तव वध, प्रभु प्रगटे हरि रूपा
धरनि-सहसफन[7] कोप अकारन ※ आन न केहु अपराध दसानन

दिव्य-दिव्य आभरण, परि यत नारीगण, चलि जाय अनेक सुन्दरी ।
चलि जाय राजपथे, श्रीरामेरे निरखिते, सम्मुखेते नाचे विद्याधरी ।।
रत्नेर प्रदीप ज्वले, पुरी पूर्ण कोलाहले कौशल्या हइल पुत्रवती ।
गगनमण्डले थाकि, देवगण बले डाकि, जय-जय-जय रघुपति ।।
जन्मिलेन नारायन, बधिवारे दशानन, देवेर करिते अव्याहति ।
इहा शुने येइ जन, किम्बा करे अध्ययन, भवे मुक्त हय सेइ कृती ।।
वैकुण्ठ करिया शून्य, प्रकाशिते नरपुण्य, अवतीर्ण प्रभु भगवान् ।
रचिल ये कृत्तिवास, पूर्ण करि अभिलाष, बन्दिया से वाल्मीकि पुराण ।।

श्रीरामेर जन्मे रावणेर अमंगल आशंका एवं तन्निवारणेर उपाय चिन्तन

अयोध्याते यदि जन्म निलेन श्रीपति ※ लङ्काय आतंक देखे सदा लङ्कापति
आचम्बिते रावणेर सिंहासन दोले ※ माथार मुकुट खसि पड़े भूमितले
दशमुखे हाय - हाय करे दशानन ※ आचम्बिते मुकुट खसिल कि कारण
कोथा गेल इन्द्रजित आन धनुर्व्वाण ※ पृथिवी वासुकि करि करि खान-खान
हेनकाले कहेन धार्म्मिक विभीषण ※ जन्मियाछे जे तोमार बधिबे जीवन
पृथिवीर प्रति क्रोध कर कि कारण ※ तोमारे बधिते जन्म निल नारायण
आर कारो अपराध नाहि दशानन ※ वासुकि काटिते एबे कह कि कारण

---

१ जन्म देकर २ क्लेशहारी ३ आतंक ४ मुकुट ५ पृथ्वी ६ शेषनाग ७ पृथ्वी-शेषनाग पर।

तबहिं सुरन नभबानी कीन्हा * दसरथ-सदन जनम प्रभु लीन्हा
सो सुनि चिन्तित अतिव दसानन * कहेउ बोलाय दूत शुक-सारन
लखहु अवनि पग-पग दोउ सोधी * कितै जनम रिपु मोर विरोधी
अबहिं हनौं सोइ सैसव-काला[1] * नतरु प्रबल पनपत जंजाला
बंदि लंकपति, आयसु धारी * लंघि उदधि, चर करैं विचारी
वैष्णव परम दूत शुक-सारन * त्रिभुवन प्रकट पुरंदर[2] कारन
कह शुक, सुनु सारन! अस भावै * श्रीपति अवध जनम मन आवै
धन्य भाग ! दोउ अवसर पाई * लहैं दरस प्रभु चरनन जाई
लखत अवध छबि सुरपुर भासा * घर-घर रतन प्रदीप प्रकासा
बिछलत पग, पथ चहुँ चिकनाई * साँझ प्रवेस महल दोउ पाई

दो० तहँ कौशल्या-अंक प्रभु, राजत बाल सरूप ।
जाकी जा विधि भावना, लहै दरस अनुरूप ॥ १०१ ॥

युगुल बन्धु-चर भक्त महाना * दरस चतुर्भुज दिय भगवाना
शंख चक्र कर पद्म गदाधर * वनमाला, कुण्डल, किरीटधर
शत कोटिन विधि[3] अस्तुति करहीं * हरि-तन तीनि लोक चर लखहीं

सेइकाले आकाशेते हैल दैववाणी * दशरथ घरेते जन्मिल चक्रपाणि
शुनिया चिन्तित बड़ राजा दशानन * डाक दिया बले शुन शुक ओ सारण
एके एके देखि एस पृथिवी भुवने * आमार शत्रुर जन्म हैल कोनखाने
एखनि मारिब तारे अति शिशुकाले * प्रबल हइबे बड़ घटिबे जञ्जाले
रावणेर आज्ञा चर बन्दिलेक माथे * समुद्रेर पार हैया लागिल भाविते
परम वैष्णव दूत शुक ओ सारण * बासवेर द्वारी तारा जाने त्रिभुवन
शुक बले शुन मोर भाइरे सारण * अयोध्याय जन्मिलेन बुझि नारायण
आजि शुभदिन हैल आमा दोंहाकार * भाग्यफले देखि गिया चरण ताँहार
एत बलि अयोध्याय दिल दरशन * देखिल अयोध्या येन वैकुण्ठ भुवन
रतन प्रदीप ज्वले प्रति घरे घरे * तैल हरिद्राय पथे चलिते ना पारे
अलक्षिते सान्धाइल कौशल्यार घरे * बसेछेने कोशल्या श्रीराम कोले करे
याहार मानसे थाके जे रूप वासना * सेइ रूपे प्रभुरे देखये सेइ जना
परम वैष्णव तारा भाइ दुइ जन * चतुर्भुज रूपे देखिलेन नारायण
शंख चक्र गदा पद्म चतुर्भुज कला * किरीट कुण्डल शोभे हृदि वनमाला
शत कोटि ब्रह्मा ताँरे करिछे स्तवन * प्रभुर शरीरे देखे ए तिन भुवन

---

१ शिशु-अवस्था में २ इन्द्र ३ ब्रह्मा ।

सनक, सनातनादि प्रह्लादा ※ नारद निरखि, चरन[1] अह्लादा[2]
भक्ति भरे दोउ, लखि भवमोचन ※ लोटि मही प्रणवति भरि लोचन
जोरि हाथ अस्तुति सुख लहहीं ※ पुनि-पुनि सहस दण्डवत करहीं
राकस जाति अधम अज्ञानी ※ तव महिमा अपार किमि जानी
ब्रह्मादिक पद लहे न ध्याना ※ चरन[3] सों चरन[4] प्रतच्छ प्रमाना
कृपासिन्धु प्रभु गहन, गुनागर ※ दीजिय वर, निसिचर अति पामर
सदा रमन मन अंबुज-चरना ※ यहि विधि बंदि, लंक किय गमना
सुक-सारन मग मंत्र मिलावा ※ रावन सन सब कथा दुरावा
पलक निमेस अटे दोउ लंका ※ कहेउ, दनुजपति रहौ निसंका
तिल-तिल छानि, लखेउँ त्रैलोका ※ नाथ! न तव-रिपु कतौं विलोका
खसे किरीट अमंगल जानी ※ जल असनान तीरथन आनी
दीन-द्विजन दै सुबरन दाना ※ टरै विपति अपसकुन नसाना
खिली केतकी भादौं रंगा ※ कह ठठाय दसमुख इकसंगा

दो० अबुझ विभीषन! बन्धु करु, सुक-सारन विस्वास ।
धरनि सोधि आये, कतौं जनि मम रिपु आभास ।। १०२ ।।

अबहिं कहा परिनाम लखाई ※ अवसर परे विलोकेउ भाई ![5]

प्रसंगेते देखिल ये सर्व्व पारिषद ※ सनक सनातन आदि प्रह्लाद नारद
एइ रूपे दुइ भाइ प्रभुरे देखिया ※ सहस्र प्रणाम करे भूमे लोटाइया
भक्तिभावे करये अनेक प्रणिपात ※ स्तवन करिछे तारा करि जोड़ हात
राक्षसेर जाति मारा बड़इ अधम ※ तोमार महिमा ज्ञाने आमरा अक्षम
जे पद ब्रह्मादि देव नाहि पाय ध्याने ※ हेन पाद-पद्म देखि प्रत्यक्ष प्रमाणे
एइ निवेदन करि शुन महाशय ※ तव पादपद्मे येन मोर मन रय
कृपार सागर तुमि प्रभु गुणधाम ※ एत बलि गेल तारा करिया प्रणाम
पथे येते दुइ भाइ भाविलेक मने ※ एकथा कहिब नाइ पापी दशानने
चक्षुर निमेषे तारा लङ्कापुरे गिया ※ रावणेरे कहे गिया आगे दाँड़ाइया
एके एके देखिलाम ए तिन भुवने ※ तोमार ये शत्रु आछे नाहि लय मने
मुकुट खसिल राजा हबे अपमान ※ सकल तीर्थेर जले कर तुमि स्नान
सुवर्ण करह दान द्विज दीन नरे ※ अमंगल घुचिबे आपद जाबे दूरे
दशमुख मेलिया रावण राजा हासे ※ केतकी कुसुम येन फुटे भाद्रमासे
ना बुझिया कथा कह भाइ विभीषण ※ आमार नाहिक शत्रु हेन लय मन
रावणेर कथा शुनि बले विभीषण ※ परिणामे एइ कथा करिबे स्मरण

१ दूतों को २ हर्ष ३ दूतों को ४ चरण ५ विभीषण ने रावण से कहा ।

आयसु पुनि पयोधि[1] दिय रावन ※ सकल तीर्थन सुचि जल लावन
तनिक न देर जोरि जुग-पानी[2] ※ प्रस्तुत सकल तीर्थन-पानी
सोई सुचि सलिल कीन असनाना ※ दरिद दुखीजन सुवरन दाना
शत-शत सुरभि, शिला संकल्पा ※ अमित दान लंकेश सदर्पा
दान-पुन्य करि सकल विधाना ※ भयेउ अमर, दसकन्धर जाना

वानरों का जन्म

इत नररूप जनम जगदीसा ※ उत सुरगन प्रगटत तन-कीसा[3]
निज-निज तेज देवगन दीन्हा ※ गर्भ वानरिन धारन कीन्हा
'सुरपति' अंस 'बालि' बलवाना ※ 'भानु' तेज 'सुग्रीव' महाना
कन्द मूल फल खाय रसाला ※ किष्किधा तिन शौर्य विशाला
उद्गम धन बाढ़ति, धनरासी ※ तेज, तेज तहँ अवसि प्रकासी
सचिव 'जाम्ब' 'चतुरानन' धारा ※ 'हेमकूट' पुनि 'वरुण'-कुमारा
बाढ़ति दिन-दिन जिमि तरु-शाला ※ शंकर-सुत 'केसरी' विशाला

रावण समुद्र बलि लागिल डाकिते ※ आसिया समुद्र दाँड़ाइल जोड़ हाते
राजा बले पृथिवीते यत तीर्थ आछे ※ सकक तीर्थेर जल आन मोर काछे
वाक्य मात्र बलिते बिलम्ब ना हइल ※ सकल तीर्थेर जल सम्मुखे आइल
तीर्थजले दशानन करिलेक असनान ※ दरिद्र दुःखीरे राजा करे स्वर्ण दान
यतेक काञ्चन दिल नाम कर कत ※ धेनु दान शिला दान करे शत-शत
दान पुण्य करिया बसिल दशानन ※ भाविल अमर आमि नाहिक मरण
कृत्तिवास पण्डितेर श्लोक विचक्षण ※ रामेर प्रीतिते हरि बल सर्व्वजन

वानरगणेर जन्म

नर - रूपे जन्मिलेन प्रभु नारायण ※ वानर - रूपेते जन्म निल देवगण
विधाता बलेन शुन यत देवगण ※ जे जथा वानरी पाओ कर आलिंगन
एक वानरीते रति इन्द्र सूर्य्य करे ※ दुइ पुत्र जन्मिलेक ताहार उदरे
हइल इन्द्रेर तेजे वालि कपिवर ※ सुग्रीव वीरेर जन्म दिलेन भास्कर
किष्किन्धार फल मूल खाइते रसाल ※ फलमूल खाय दोंहे विक्रमे विशाल
तेज हैते तेज बाड़े सम्पदे सम्पद् ※ हइल बालिर पुत्र कुमार अङ्गद
हइल ब्रह्मार तेजे मन्त्री जाम्बुवान ※ हइलेन पवनेर तेजे हनूमान
हेमकूट नामे कपि वरुणनन्दन ※ पञ्च पुत्र यमेर ये यम - दरशन
जन्मिल शिवेर तेजे केशरी वानर ※ दिने दिने बाड़े येन शाल तरुवर

१ समुद्र २ दोनों हाथ ३ वानर शरीर।

'यम' सुत पाँच तासु अनुहारा ※ प्रबल 'प्रमाथि' 'कुबेर'-कुमारा
'चन्द्र'-तेज 'दधिमुख' बलसीला ※ 'अग्नि' अंश सेनापति 'नीला'

सो० 'धन्वन्तरहिं' 'सुषेन', ज्ञान द्रव्य-गुन सकल जिन ।
कपि 'सुषेन' कर देन, सुत 'महेन्द्र' 'देवेन्द्र' दोउ ।।

दो० सुर जेते, निज तेज दै, जन्मे कपि बलवन्त ।
प्रथक-प्रथक, रसना अकथ, कोटिन कीस अनन्त ।। १०३ ।।

दशरथ के चारों पुत्रों का अन्नप्राशन और नामकरण

आतुर नृप इत, गत दिन चारी ※ पचयें प्रथम अशौच निवारी[1]
छठी पूजि पुनि राति-जागरन ※ अठयें शिशुन कलाई-बन्धन
पुनि निमंत्रि पुर-बाल समाजा ※ असन-वसन-अभरन दिय राजा
दिवस त्रयोदस असुचि निवारा ※ कतक दान नृप नाहिं सम्हारा
चारिउ सुवन वयस षड्मासा ※ सबन सुभघरी अन्नपरासा[2]
अवनि-महीप, निमंत्रन पाई ※ दसरथ-सदन जुरे सब आई
गुरु बशिष्ठ शुभ साइत देखी ※ दिय मुख अन्न समोद बिसेखी
भूपति मुदित अंक लै चारी ※ मधु जल अन्न कञ्जमुख डारी

अग्नि तेजे हइलेन नील सेनापति ※ कुबेरेर तेजे जन्मे वानर प्रमाथी
सुषेणेर जन्म हय धन्वन्तरि तेजे ※ अहिविद्या वैद्यशास्त्र दिल तार माझे
महेन्द्र देवेन्द्र हइल सुषेण नन्दन ※ चन्द्रतेजे दधिमुख हइल तखन
प्रतेक कहिले हय पुस्तक विस्तर ※ एकैक देवेर तेजे एकैक वानर
कृत्तिवास पण्डित जे सुखी सर्वदण्डे ※ वानरेर जन्म एवे गाय आदिकाण्डे

दशरथेर चारिपुत्रेर अन्नप्राशन ओ नामकरण

एकैक गणने जे हइल चारि दिन ※ पाँचदिने पाँचुटी करिल सुप्रवीण
छयदिने षष्ठीपूजा निशि जागरणे ※ दिल अष्ट कलाइ अष्टाहे शिशुगणे
डाक दिया आने राजा बालक गणेरे ※ कापड़ पूरिया सोना दिल सबाकारे
त्रयोदशे राजार हइल अशौचान्त ※ कतेक करिल दान नाहि तार अन्त
छय मास वयस्क हइल चारि जन ※ कराइल सबाकार ओदन-प्राशन
आमन्त्रण करिया सकल क्षत्रगणे ※ आनाइल दशरथ आपन भवने
आसिया वशिष्ठ मुनि महानन्द मने ※ चारि-पुत्र-मुखे अन्न दिल शुभक्षणे
दशरथ चारि पुत्र ल'ये निज कोले ※ मिष्ठ अन्न-जल दिल वदन कमले

---

[1] पहला नहान पड़ा (सौर में) [2] अन्नप्राशन, पसनी ।

सुमुख नन्दनन पुनि बैठारी ❋ कौतुक रत्न द्रव्य दिय भारी
सकल सतोष मुदित सब काहू ❋ नामकरन कर सबन उछाहू
निगमागम[1] जँह स्रोत पुराना[2] ❋ जासु जाप सों त्रिभुवन-त्राना
वालमीकि जोइ जप अविरामा ❋ नाम कौसिला-सुत सोइ 'रामा'
सहन भार-मेदिनी[3] समर्था ❋ राखेउ 'भरत' नाम सोइ अर्था
पुनि जे युगुल सुमित्रानन्दन ❋ जेठ 'लखन' लघु सुत 'रिपुसूदन'
दसरथ सुनत चारि सुत नामा ❋ दीन भूसुरन[4] अगनित ग्रामा
रजतशिला, सुबरन अरु गाई ❋ शतविधि शत-शत बरनि न जाई

दो० सुरभि दुधारू सहस दिय, विविध दान सन्मान ।
सहित वशिष्ठ, असीसि नृप, मुनिगन कीन पयान ।। १०४ ।।

श्रीराम-लक्ष्मण आदि की बालक्रीड़ा

छठे मास हरि चलत बकाईं ❋ बिहँसत चढ़त मातु करिहाईं
छिन पितु-अंक, मातु छिन गोदी ❋ तोतरि बोल, दोउन हिय मोदी
ससिमुख राम, सुधा सम बतियाँ ❋ हँसी मंद, दुति उघरैं दतियाँ
वर्षगाँठ सुभघरी बहारा ❋ कटि करधनि, गर कञ्चन हारा

वसिलेन चारि भाइ सुचारु वदन ❋ कौतुके यौतुक दिल सबे रत्न धन
सकले यौतुक निले आसि राजधाम ❋ विचार करेन सबे राखेन कि नाम
विचारिया चारिवेद आगम पुराण ❋ जे मन्त्र हइते लोक पावे परित्राण
जेइ मन्त्र वाल्मीकि जपेन अविराम ❋ कौशल्या-पुत्रेर नाम राखिल श्रीराम
पृथिवीर भार सहिबेन अविरत ❋ तेंइ हेतु ताँर नाम हइल भरत
सुमित्रार हइयाछे यमज नन्दन ❋ शत्रुघ्न कनिष्ठ ताँर ज्येष्ठ श्रीलक्ष्मण
राजा चारि नन्दनेर शुनिलेन नाम ❋ ब्राह्मणेरे दिल दान कत-शत ग्राम
रजत काञ्चन दिल नाम लब कत ❋ धेनु दान शिला दान करे शत-शत
नाना दान दिय करे बशिष्ठेर मान ❋ दुग्धवती गाभी दिल सहस्र प्रमान
आशीर्वाद करि घरे गेल मुनिगण ❋ आदिकाण्डे श्रीरामेर नाम सङ्कलन

श्रीराम-लक्ष्मणादिर बालक्रीड़ा

छयमास वयस्क राम देन हामागुड़ि ❋ हासिया मायेर कोले यान गड़ागड़ि
क्षणेक मायेर कोले क्षणे पितृकोले ❋ वदने ना आसे कथा आध आध वले
श्रीरामेर चन्द्रानने अमृत बचन ❋ प्रकाशित मन्द मन्द हासिते दशन
एक वर्ष वयस्क हइले भाइ कटि ❋ पीत-धड़ा परिधान गले स्वर्णकाँठि

---

१ वेद-शास्त्र २ पुराण ३ पृथ्वी का भार ४ ब्राह्मणों को ।

भाल मध्य सुबरन लटकनिया ※ पग झंकार रतन पैंजनिया
विविध बालक्रीड़ा बहु करहीं ※ नेह समान परस्पर धरहीं
राम चलत, लछिमन पग डारा ※ पुनि रिपुदमन भरत अनुसारा
लछिमन-राम, भरत-रिपुसूदन ※ निज चरु अंस लखे दोऊ जन
पल न राम बिन, नृप कोउ काला ※ तिल बिछोह दुख दुसह कराला
ध्यान न सुलभ चरन चतुरानन ※ पुनि-पुनि चुम्ब तासु मुख राजन
नित्य बढ़त शशिकला प्रमाना ※ सबन रूप लावण्य समाना
एक अंस हरि चारि सरूपा ※ माया-राम विलोकत भूपा
सदा निहाल राम पै वारैं ※ मन, मुनि अंधक-शाप विचारैं
मुनि-सराप मोंहि भा फलदाई ※ सुतन-दरस बिन जीव नसाई
वर्ष सहस नव—कौतुक राजू ※ पायेउँ 'राम' पुन्यफल आजू
नेह सबन, पुनि राम बिसेखी ※ जीवन सफल सदा मुख देखी

दो० उठत मनोरथ विविध नित, लागेउ पञ्चम वर्ष ।
पाटी-पूजन धाम गुरु, पठयेउ भूप सहर्ष ॥ १०५ ॥

श्री राम को शास्त्र और शस्त्र-विद्या की शिक्षा

गुरुगृह पढ़न गये सब भाई ※ वरनाछरी बशिष्ठ सिखाई

काँठिर मध्येते दिल सोनार किङ्किणी ※ रतन नूपुर पाय रुणुरुणु ध्वनि
करेन श्रीराम खेला बालकेर सने ※ परस्पर सम्प्रीति हइल चारिजने
श्रीराम चलिते पथे चलेन लक्ष्मण ※ भरतेर चलने चलेन शत्रुघ्न
यार जेवे चरुर अंश जानिल ताहाते ※ श्रीराम लक्ष्मणे मिले शत्रुघ्न भरते
यथा तथा यान राजा राम यान साथे ※ एक तिल अदर्शने प्रमाद ताहाते
ब्रह्मा आदि याँर पद ना पाय मनने ※ पुनः पुनः चुम्ब देन ताँहार वदने
चन्द्रकला येमन वर्द्धित दिने दिने ※ रूप सेइ लावण्य बाड़िल चारिजने
एक विष्णु चारि भाइ मायार कारण ※ राम देखि दशरथ भावे मने मन
सर्व्व क्षण दशरथ रामेरे नेहाले ※ अन्धक मुनिर शाप मने मने बले
शाप दिल मुनि मोरे गौरव कारण ※ एइ पुत्र ना देखिले आमार मरण
नय हाजार वर्ष राज्य करि कुतूहले ※ राम हेन पुत्र पाइलाम पुण्यफले
पुत्र-मुख देखि सदा जीवन सफल ※ दशरथ - गृहे राम प्रथम प्रबल
एइ सब दशरथ करे अभिलाष ※ आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

श्रीरामेर शास्त्र ओ अस्त्र-विद्या-शिक्षा

पञ्च वर्ष गत हय हाते दिल खड़ि ※ पड़िते पाठान राजा बशिष्ठेर बाड़ी

विविध वर्ण, आकृति तिन नाना ※ अष्टशब्द+ हरि कुशल निधाना
काव्य, व्याकरण, श्रुति मन लाई ※ पारंगत इस्मृति रघुराई
चौसठ कला अल्प दिन जाना ※ कवन शास्त्र प्रभु जासु न ज्ञाना
शेष अध्ययन, गुरुहिं प्रनामा ※ अस्त्र शस्त्र सीखत पुनि रामा
भोर बन्धु सब जाइँ अखारा ※ करइँ जोर भिरि मल्ल जुझारा
डण्डा-गुलि अरु लाठी हाँथा ※ डटत न कोउ विक्रम रघुनाथा
अचल मेरु सम प्रभु कर हाला ※ लरजत भट न देत कोउ ताला
भानुवंस जनमत धनुधारी ※ चाप-सुमन धरि काननचारी
सायक राम जाहि संधाना ※ तीनिहु लोक न ताकर त्राना
जे नरेस दसरथ-प्रतिकूला ※ डरपत, राम-तेज तिन सूला
एक दिवस धनु-पुहुप सवाँरी ※ लखन सहित कानन पग धारी
मृगया हेतु फिरत दोउ कानन ※ असुर मरीच मिलेउ मनभावन
कहुँ अदृश्य कहुँ प्रगट सरूपा ※ आयो राम समुख मृगरूपा
निरखत मृग, प्रभु कौतुक छावा ※ बान अचूक सुचाप चढ़ावा
उल्कापात सरिस सर जाई ※ असुर भीत, भजि चलेउ बराई

क ख ग आठार फला बानान प्रभृति ※ अष्टशब्द पाठ करिलेन रघुपति
व्याकरण काव्यशास्त्र पड़िले स्मृति ※ अवशेषे पड़िलेन राम चतु:श्रुति
कोन शास्त्र नाहि ताँर हय अगोचर ※ चौद्दिने चतु:षष्टि विद्याते तत्पर
विद्या पड़ि करिलेन गुरुके प्रणाम ※ अस्त्र-विद्या सेइ क्षणे शिखिलेन राम
प्रात:काले चारि भाइ यान मालघरे ※ मल्लविद्या शिखिलेक सकले समादरे
गुलि दाँड़ा निया राम लाठरि खेलान ※ रामेर विक्रमे सब मालेर पयान
राम संगे कोन माल नाहि धरे ताल ※ सुमेरु पर्व्वते येन करिते साताल
सूर्य्यवंशो बालक धनुक भाल जाने ※ हाते फूलधनु राम वेड़ान कानने
धनु हाते करि राम यारे एड़े बाण ※ त्रिभुवने ताहार नाहिक परित्राण
दशरथ राजार विपक्ष यत छिल ※ रामेर विक्रम देखि सबे पलाइल
यतने खेलेन राम फूलधनु हाते ※ एक दिन वने गेल लक्ष्मण सहिते
मृग चाहि दुइ जन बेड़ान कानन ※ तखन मारीच संगे हइल मिलन
कोन खाने गेल से मारिच निशाचर ※ मृग रूप हैया गेल रामेर गोचर
मृग देखि रामेर कौतुक हइल मन ※ धनुके अव्यर्थ बाण जुड़िल तखन
छुटिल रामेर बाण तारा येन खसे ※ महाभीत मारीच पलाय महा त्रासे

+ 'अष्ट शब्द' से तात्पर्य कदाचित् शब्दों के आठों कारकों के रूपों से है ?

सो० सो पलाय मतिमंद, साँस लीन मिथिलापुरी।
सुरगन अमित अनन्द, निरखि राम विक्रम विपुल ॥ १०६ ॥

सब बिधि प्रभु समरथ मनभावन ❋ निसचय मरन निकट अब रावन
अथये[1] रवि, छिति साँझ सवाँरी ❋ थकित लखन-मुख मलिन निहारी
एक दिवस-श्रम दुसह, अधीरा ❋ हनि रिपु ककस[2] मिटइ द्विजपीरा
आमलकी[3] निचोरि मुख डारी ❋ छुधा - तृषा - मेटन सुखकारी
तौलौं सरवर[4] अनुपम लखहीं ❋ नीर विविध खग कलरव करहीं
कहेंउ विरञ्चि सुनहु सुरनाथा ❋ दसरथ-गेह जनम जग-नाथा
नर-तन धरि प्रभु निज नहिं चीन्हा ❋ रावन-हनन जनम जग लीन्हा
वन रन-असुर! असन फल-मूला! ❋ वर्ष चतुर्दस किमि अनुकूला ?
अमिय[5] मृनाल[6] भरहु सुरराई ❋ सुधापान श्रम-छुधा नसाई
सुरपति सुधा नाल सरसावा ❋ सोइ छन श्रीपति लखन बुझावा
लखन मृनाल तोरि प्रभु दीना ❋ सुधा मृनाल पान दोउ कीना
छुधा, तृषा, श्रम गत; दोउ भाई ❋ शयन सेज-पल्लव सुखदाई
श्रम उपरांत, नींद अस आई ❋ सोवत मातु-अंक मनु पाई

श्रीरामेर बाण शब्दे छाड़िल से वन ❋ जनकेर देशे गेल मिथिला भुवन
रामेर विक्रम देखि देवगण भाषे ❋ एत दिने रावण मरिबे अनायासे
सूर्य्य अस्त गेल यथा बेलार विराम ❋ रण श्रान्त लक्ष्मणेरे देखिलेन राम
मलिन हइया गेल लक्ष्मणेर मुख ❋ देखिया श्रीराम पान अन्तरेते दुःख
एक दिन दुःखे भाइ हइला एमन ❋ केमने मारिया बैरी राखिबे ब्राह्मण
आमलकी फल पाड़ि देन तार मुखे ❋ क्षुधा तृष्णा दूरे गेल खान मनोसुखे
हेन काले देखिल निकटे सरोवर ❋ नाना पक्षी जले आछे करे कलस्वर
एमन समये ब्रह्मा कन पुरन्दरे ❋ जन्मेछे आपनि हरि दशरथ घरे
नव रूपे आपनाके विस्मृत आपनि ❋ रावण मारिते मात्र अवतीर्ण तिनि
चतुर्द्दश वर्ष तिनि थाकिबेन बने ❋ फल-मूलाहारे युद्ध करिबे केमने
मृणाल भितर तुमि राख गिया सुधा ❋ सुधापाने रामेर ना लागिबे क्षुधा
एइ आज्ञा पाइलेन देव पुरन्दर ❋ राखिया गेलेन सुधा मृणाल भितर
हेनकाले लक्ष्मणेरे बलेन श्रीराम ❋ मृणाल तुलिया आन करि जलपान
लक्ष्मण आनिया दिल श्रीरामेर हाते ❋ दुइ भाइ सुधा खान मृणाल सहिते
क्षुधा तृष्णा दूरे गेल सुस्थ हैल मन ❋ वृक्षतले पातिया ये करिल शयन
परिश्रमे सुनिद्रा हइल वृक्षतले ❋ आछेन श्रीराम येन शुये मातृकोले

१ अस्त हुए २ किस प्रकार ३ आँवला ४ तालाब ५ अमृत ६ कमल का डण्ठल ।

निरखि न राम, इतै महतारी ॥ अस्त-व्यस्त नृप निकट पधारी
उत अतिकाल, न सुत अवलोका ॥ सभा विदा करि, भूप ससोका
लखहिं सुवन, चलि मातु-निवासू ॥ भई भेंट दोउ मग-रनिवासू

दो० कौशल्या पूछत विकल, कहहु नाथ कित राम ?
भोजन विविध सेरात[1] मग जोहौं[2], तात न धाम ।। १०७ ।।

सुध-बुध दसरथ सुनत बिलानी[3] ॥ बूझत, सुत अलोप[4] कस रानी?
दोउ किय गमन कैकयी-धामा ॥ पूछत—कतौं लखे तुम रामा ?
सुवन-कञ्जमुख दिवस न देखा ॥ थिर न प्रान, उर त्रास बिसेखा
दरसन आजु राम गुनखानी ॥ लहे न प्रभु, कह कैकयि रानी
जहँ सौमित्र[5] तहाँ रघुनाथा ॥ सदा भरत रिपुसूदन साथा
नगर भ्रमत राजा अरु रानी ॥ राम-सखा खेलत जहँ जानी
पूछत ललकि—लखन-रघुबीरा? ॥ 'लखे न' सुनि उपजत पुनि पीरा
शावक[6]-हरन फुंकरति बाघिनि ॥ फिरैं तीनि तिमि दसरथ-भामिनि
धुनत कपाल फिरत नरनाथा ॥ मिलिहैं कवन गैल रघुनाथा

ना देखिया श्रीरामेर हइया कातर ॥ आस्ते व्यस्ते गेल राणी राजार गोचर
हेथा राजा बहुक्षण रामे ना देखिया ॥ मने सुख नाहि येन अज्ञान हइया
सबारे विदाय दिया गेलेन आवासे ॥ रामेरे देखिब बलि कौशल्यार पाशे
दुइ जने पथेते हइल दरशन ॥ चिन्तिता हइया राणी जिज्ञासे तखन
प्रस्तुत आछये घरे खाद्य नाना विधि ॥ बहुक्षण रामे केन ना देखि सन्निधि
दशरथ बले राणी कि कहिला कथा ॥ देखिते ना पाइ राम तारा गेल कोथा
बुझि राम रहियाछे कैकेयी आबासे ॥ धेये गिया कैकेयीरे उभये जिज्ञासे
आजि आमि नाहि देखि श्रीरामेर मुख ॥ प्राण नाहि रहे मोर बिदरये बुक
कैकेयी बलेन आमि किछुइ ना जानि ॥ आजि हेथा नाहि देखि राम गुणमणि
आजि बुझि भुलिया रहिल कोनखाने ॥ लक्ष्मण ये स्थाने आछे राम सेइ स्थाने
भरत सहित हेथा मिलिल शत्रुघ्न ॥ अयोध्या-नगरे भ्रमे भाइ दुइ जन
जेइ जेइ बालक खेलाय ताँर मने ॥ ताहारे जिज्ञासे राम आछे कोनखाने
शुनिया सकले कहे शुन राजाराणी ॥ कोथा राम कोथाय लक्ष्मण नाहि जानि
कौशल्या सुमित्रा आर कैकेयी कामिनी ॥ डम्बुर हाराये येन फुकारे बाघिनी
हृदे दुःखे दशरथ भाले मारे हात ॥ कोथा गेले पाब आमि राम रघुनाथ

१ ठंढा हो रहा है २ रास्ता देख रही हूँ ३ गायब हो गयी ४ गायब, लोप
५ लक्ष्मण ६ बच्चा ।

शाप-अंधमुनि आजुइ फूला * जीवन हत, वियोग-सुत सूला
सुवन-सोच रचि मीचु[1] विधाता * राम-लखन बिन काय[2] निपाता
दिवस बीत, चहुँ दिसि तम छावा * तात-दरस, नृप आस नसावा
बिलखति रानिन आस गवाँई * प्रविसे तबहिं नगर रघुराई
वन्य कुसुम छबि, सारँग[3] हाथा * ठुमुकि धरत पग लछिमन साथा
भरत-रिपुघ्न[4] कौशिला तीरा * धाय कहत—आये रघुवीरा
सुनत रानि सोइ छन उठि धाई * द्वार राम-मुख परेउ लखाई
दो० धाय मात-पितु, लाय उर, लख-लख चुम्बत चंद ।
अंक लेत भरि, सिथिल तन, हिय न समात अनन्द ।। १०८ ।।
अंध-शाप हिय चोर नरेसू * कब विधि वाम, न मिटत कलेसू
दारिद-निधि तुम लोचन-तारा * पलक वियोग प्रलय तन धारा
भरत-रिपुघ्न बन्धु सिर नावा * राम, मातु ढिग भोजन पावा
राजा, रानि, सकल पुरवृन्दा * सुखी, अवध चहुँ दरस अनन्दा

सीता के विवाह के प्रण के लिए शिवजी का धनुष-प्रदान

सतई बरस राम पगु धारा * लक्ष्मी जनक-गेह अवतारा

अन्धक मुनिर शाप घटिल एखन * रामे ना देखिया मम ना रहे जीवन
पुत्रशोके मृत्यु आजि सृजिल विधाता * रामे नाहि देखि यदि मरण सर्व्वथा
दिवसे सकल देखि घोर अन्धकार * श्रीराम लक्ष्मणे बुझि ना देखिब आर
एइमत कान्दे राणी बेला अवशेषे * हेन काले दुइ भाइ अयोध्या प्रवेशे
वनपुष्पे भूषित धनुक वाम हाते * नाचिते नाचिते आसे लक्ष्मणेर साथे
भरत शत्रुघ्न गिया गृहे कौशल्यारे * हेन माता आइलेन राम पुरद्वारे
तार मुखे एइ वाक्य शुनिते शुनिते * बाहिर हइल राणी श्रीरामे देखिते
धेये राजा दशरथ रामे धरे बुके * लक्ष-लक्ष चुम्ब दिल ताँर चाँदमुखे
अन्धकेर शाप मुनि करे धुक् धुक् * कि जानिबा हन कबे बिधाता विमुख
कौशल्या धाइया गिया रामे कैल कोले * एक लक्ष चुम्ब दिल वदन कमले
दरिद्रेर निधि तुमि नयनेर तारा * पलके प्रलय घटे हइ यदि हारा
भरत शत्रुघ्न तबे देखेन श्रीराम * दुइ भाइ आसि रामे करिल प्रणाम
मायेर आलये राम करिल भोजन * राजाराणी हइलेन सुस्थिर तखन
कृत्तिवास पण्डितेर मधुर भणित * श्रीरामेर अरण्य - विहार सुललित

सीतार विवाह पणजन्य हरेर धनुक प्रदान

सात वत्सरेर राम अयोध्या-नगरे * लक्ष्मी हेथा जन्मिलेन जनकेर घरे

१ मृत्यु २ शरीर ३ धनुष ४ शत्रुघ्न ।

जोतत सीर[1], सुता नृप पाई ※ सीता[2] सोइ रूपसी कहाई
सीता अतुल रूप गुन-खानी ※ मिथिला प्रगट मनौ श्री[3] रानी
रमा, गौरि धौं सारद रूपा ※ जनक मुग्ध लखि सुता-सरूपा
कज्जल छबि मृगलोचन छाई ※ तिल-किंशुक[4] नासिका सुहाई
सुघर बाहु दोउ सुललित सोहा ※ इन्दु-सुधा सरसति छबि मोहा
करगत सुकर सहज कटि-अंगा[5] ※ अँगुरी सिय-पग हिंगुल-रंगा
अरुन कंज पद नूपुर बाजै ※ राजहंस गति गमनत लाजै
अमिय बैन मधु झरत सुबासा ※ तासु रूप दस दिसा प्रकासा
रोम-रोम लावण्य ललामा ※ वर सिय जोग लखिय केहि धामा
सोइ अनुहार न वर जग चीन्हा ※ प्रोहित सन बिदेह मत कीन्हा
कवन देस, कित सिय वर जोगू? ※ इत चिंतित सुरपुर सुरलोगू

दो० कह विधि, सुरपति सुनहु मत, सात वर्ष रघुनाथ।
सीता छबि निति बढ़त उत, चिंतित मिथिलानाथ ॥ १०६ ॥

राम इतर वर[6] तजैं नरेसा ※ सोइ हित चलिय समीप महेसा
धरि विधि-वचन सकल सुरवृन्दा ※ चले, शंभु जहँ परमानन्दा

चाषेर भूमिते कन्या पाय महाऋषि ※ मिथला हइल आलो परम रूपसी
अद्‌भुत सीतार रूप गुण मने मानि ※ ए सामान्य नहे कन्या कमला आपनि
कन्यारूप जनक देखेन दिने दिने ※ उमा कि कमला वाणी भ्रम हय मने
हरिणी नयने किवा शोभित कज्जल ※ तिल फुल जिनि ताँर नासिका उज्ज्वल
सुललित दुइ बाहु देखिते सुन्दर ※ सुधांशु जिनिया रूप अति मनोहर
मुष्टिते धरिते पारि सीतार काँकालि ※ हिंगुले मण्डित ताँर चरण अंगुली
अरुण वरण ताँर चरण कमल ※ ताहाते नूपुर बाजे शुनिते कोमल
राजहंसी भ्रम हय देखिले गमन ※ अमृत जिनिया ताँर मधुर वचन
दशदिक् आलो करे जानकीर रूपे ※ लावण्य निःसरे कत प्रति लोमकूपे
जनक भावेन मने सीता दिव कारे ※ सीता योग्य बर नाहि देखि ए संसारे
पुरोहित आनि राजा कहेन विशेषे ※ जानकीर योग्य वर पाब कोन देशे
जानकीरे विवाह करिबे कोन् जन ※ स्वर्गेते करेन चिन्ता यत देवगण
विधाता वलेन शुन देव पुरन्दर ※ रामेर वयस मात्र सप्तम वत्सर
दिने दिने जानकीर रूप वर्द्धमान ※ पाछे अन्य वरे राजा सीता करे दान
एइ युक्ति देवगण करिया मनन ※ कैलास पर्व्वते गेल यथा त्रिलोचन

---

१ हल २ जोत की रेखा अर्थात् 'सीता' से जन्म होने के कारण सीता नाम पड़ा ३ लक्ष्मी ४ तिल-पुष्प के समान सफ़ेद ५ कमर ६ राम के अलावा अन्य वर।

कह बिरंचि—शिव अंतरयामी ! ※ जनक-गेह अस कीजिय स्वामी
तब सेवक आयसु सिर लेही ※ देय न इतर राम वैदेही
करि विधि बिनय,गमन उत कीन्हा ※ परशुराम ! शिव आयसु दीन्हा
मम धनु लै विदेहपुर धरहू ※ मम आदेस जनक प्रति कहहू
जो समरथ जग शिवधनु-भंगा ※ सिया-विवाह रचिय सोइ संगा
राम रमापति विन त्रयलोका ※ भञ्जक चाप न कतहुँ विलोका
आयसु-शंभु, चले भृगुवीरा ※ कर कोदण्ड[1] प्रचण्ड सरीरा
पीठ निषंग[2] जटा सिर धारा ※ धनु-प्रतञ्च[3] कर एक कुठारा
सुत-जमदग्नि[4] जनकपुर आये ※ नृप प्रनम्य आसन बैठाये
पाद अर्घ्य सों नृप सन्माना ※ भृगुपति निरखि, मुनिन भय माना

राजा जनक की धनुर्भंग-प्रतिज्ञा

सिया-विवाह प्रसंग चलावा ※ सुनि मुनि-बचन जनक सुख पावा
विनय वचन निज भाग सराहा ※ मुनि-मत इतर न रचउँ विवाहा
पुनि भृगुराम चले तप कानन ※ गहि पद युगुल विनय किय राजन
सिय-सौभाग्य सुअवसर पाई ※ बिन तव सीख न रचउँ सगाई

ब्रह्मा वलिलेन शुन शिव अन्तर्य्यामि ※ जनकेर घरे सीता रक्षा कर तुमि
से तव सेवक आज्ञा लंघिते ना पारे ※ येन राम विना अन्ये ना देन सीतारे
एतेक बलिया ब्रह्मा करिल गमन ※ भृगुरामे डाकिया कहेन त्रिलोचन
आमार धनुक निया करह पयान ※ जनकेर घरे राख करि सावधान
आमारए धनुर्भङ्ग करिते ये पारे ※ कह जनकेर येन सीता देय तारे
ए तिन भुवने इहा तूले कोन जन ※ सबे मात्र तुलिबेन प्रभु नारायण
पाइया शिवेर राज्ञा वीर भृगुपति ※ धनुक धरिया हाते करिलेन गति
माथाय जटार भार पृष्ठे दुइ तूण ※ एक हाते कुठार अन्येते धनुर्गुण
ब्रह्मारे येमन देवे करेन सम्भ्रम ※ जनक परशुरामे करेन से क्रम
प्रणाम करिया ताँरे दिलेन आसन ※ पाद्य अर्घ्य दिया ताँरे करेन पूजन
भृगुरामे देखि सब मुनिर तरास ※ आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

जनक राजार धनुर्भंग पण

जिज्ञासिते लागिलेन जनक राजन ※ कोन कार्य्ये महाशय हेथा आगमन
वलेन परशुराम तोमार दुहिता ※ सीता देह यदि राजा करि विवाहिता
जनक वलेन शुन ए कि चमत्कार ※ एत कि सौभाग्य आछे कपाले सीतार
सीतार विवाह काल हइबे यखन ※ करा याबे युक्तिमत कहिबे येमन

१ धनुष २ तरकस ३ धनुष की डोरी ४ परशुराम ।

दो० तदपि तपोधन! दरस कर, कब सौभाग्य बहोरि।
तव-सूने[1] केहि संग मुनि, करौं सिया गठजोरि ॥ ११० ॥

आयसु श्रवन धरहु मिथिलेसा * निरखहु कौतुक चाप महेसा
धरि प्रतञ्च, धनु भंजइ वीरा * सुता जोग वर सोइ रनधीरा
सो कहि, गमन कीन भृगुरामा * शंभु-धनुष तजि मिथिलाधामा
सत्तर जोजन लंब प्रसारा * जोजन दसक इतर[2] विस्तारा
नृप प्रन—चाप चढ़ावै डोरी * करौं तासु सन सिय-गठजोरी
मन्दिर जोजन दीर्घ अेकासी * तँह धनु धरेउ शंभु अविनासी
ग्यारह जोजन गृह चौड़ाई * बिरद[3]-चाप दिग्देसन छाई

समस्त राजाओं एवं रावण का धनुष उठाने में असमर्थ होकर पलायन

सिया-वरन मन सबन उछाहा * जुरे जनकपुर जग-नरनाहा
जे-जे नृप जुरि गाल बजावैं * तिन धनु-मन्दिर जनक पठावैं
प्रन-विदेह—जो चाप चढ़ावैं * यौतुक[4] अमित सहित सिय पावैं

भृगु बले तपस्याय करिब गमन * देखो येन अन्य मत ना हय राजन
एतेक वलिया यदि भृगुराम यान * भृगुर चरण धरि जनक सुधान
तोमार साक्षात् आर पाब कत काले * कारे दिब कन्या आमि तुमि ना आइले
बलेन परशुराम आमार धनुक * राखि जाय तव स्थाने देखिबे कौतुक
धनुक तुलिया येवा गुण दिते पारे * रहिल आमार आज्ञा कन्या दिओ तारे
एत बलि भार्गव गेलेन स्थानान्तरे * पड़िया रहिक धनु जनकेर घरे
हरेर धनुक सेइ अपूर्व्व निर्म्माण * सत्तर योजन उभे धनुक प्रमाण
योजन दशेक धनु आड़े परिसर * करिलेन प्रतिज्ञा जनम ऋषिवर
ए धनुके गुण दिते ये जन पारिबे * सेइ जन जानकीरे विवाह करिबे
यतन करिया कैल धनुकेर घर * एकाशी योजन सेइ घर दीर्घतर
एगार योजन तार आड़े परिसर * धनुक पड़िया आछे ताहार भितर
सेइ धनुकेर कथा गेल देशे देशे * आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवासे

सकल राजा ओ रावणेर धनुक तुलिते अपारग हइया पलायन

धनुकेर कथा यदि गेल देशे देशे * जानकी विवाह हेतु राजा सब आसे
पृथिवीते आछे यत राजा महत्तर * एके एके आसे सब जनकेर घर
आसिया सकल राजा अहंकार करे * सबारे पाठाये देन धनुकेर घरे
जनक बलेन येबा तुलिबे धनुक * ताँरे सीता कन्या दिब परम यौतुक

---

१ आप की अनुपस्थिति में २ लंबाई से इतर अर्थात् चौड़ाई ३ प्रसिद्धि
४ दहेज।

जिन सूरन धनु ढिग डग डारी ※ दरस होत पग परत पछारी
बहुते हुमकि जायँ धनु पाहीं ※ परस न, दरस होत भजि जाहीं
पट कसि, चाप चढ़ावत साजू ※ भरहिं जोर नरपति-युवराजू
अभिरि प्रानपन, थकित बिचारे ※ चढ़ब दूर, धनु टरत न टारे
धनु-गुन[1] अडिग मेरु सम भारी ※ लाज विवस पुर तजि धनुधारी
डगर सबन निज गेह सम्हारी ※ बालक-जूथ हसैं दै तारी

दो० तिनहिं मिले मग भूप बहु, आवत सिय अभिलास।
सुनत चाप-कौतुक, तहैं, तजी दरस-धनु-आस ॥ १११ ॥

उलटे पाँव फिरे निज देसा ※ दरस-परस कामना न सेसा
अगनित, अकथ अतिथि विस्तारा ※ तीन कोटि नृप पुर पग धारा
कोउ न समर्थ, अडिग धनु संकर ※ सजेउ लंकपति पुनि दसकंधर
लै मारीच, प्रहस्त, अकम्पन ※ सहित महोदर सजि निज स्यंदन
रावन मिथिला कीन पयाना ※ समाचार मिथिलापति जाना
पात्र मित्रगन सबन बुलाई ※ चढ़ेउ दनुजपति, खबरि जनाई
जो न हर्षि सिय ताहि विवाहू ※ हरइ जोर[2], किमि कहौ निबाहू

धनुक तुलिते यत राजपुत्र जाय ※ देखिया सकल लोक पश्चाते गोड़ाय
घरेर द्वारे ते गिया ऊँकि दिया चाय ※ तुलिबार शक्ति कोथा देखिया पलाय
कत राजा राजपुत्र उद्यत हइया ※ तुलिते धनुक जाय वस्त्र काछटिया
प्राणपणे तार धनु टानाटानि करे ※ तुलिबार साध्य किबा नाड़िते ना पारे
सुमेरु पर्व्वत हेन धनुखान भारे ※ दिवे कि ताहाते गुण नाड़िते ना पारे
लज्जा पेये सब राजा पलाइया जाय ※ हात तालि दिया सब बालक गोड़ाय
पलाइया जाय सब आपनार देशे ※ विवाह करिते अन्य राजागण आसे
पथ मध्ये देखा हैय से सबार सने ※ धनुकेर पराक्रम तारा सब शुने
देखिबारे काज नाइ शुनिया डराय ※ शुनिया शुनिया पथे अमनि पलाय
एतेक कहिले हय पुस्तक विस्तार ※ राजा तिन कोटि गेल मिथिला नगर
धनुक तुलिते ना पारिल कोन जन ※ लंकाय थाकिया शुने लंकार रावण
अकम्पन प्रहस्त मारीच महोदर ※ चारि पात्र ल'ये रथे चड़े लंकेश्वर
आइल सकले तारा मिथिला भुवन ※ जनक शुनिल रावणेर आगमन
जनक बलेन शुन पात्र मित्रगण ※ रावण आइल आजि हइबे केमन
स्वेच्छाते विवाह यदि ना दिब रावणे ※ काड़िया लइबे सीता राखे कोन् जने

१ धनुष की डोरी २ बलपूर्वक।

मग भेटे विदेह अगवानी ※ हँसा ठठाय सुभट अभिमानी
कह प्रहस्त, सुनु लंक-जुझारा ※ प्रस्तुत नृप तव शिष्टाचारा
रथ तजि, असुर जनक भरि लीन्हा ※ बाहु पसारि आलिंगन कीन्हा
रतन सिँहासन अतिथि सुहावा ※ उभय मधुर संलाप चलावा
जीवन सफल दरस तव पाई ※ कारन कवन दया दरसाई
कह दससीस, सुता तव सीता ※ करहु दान, सोइ चहउँ ग्रहीता
धन्य भाग मम, निसिचर-नाहा! ※ तव समान कित जोग बिवाहा
तदपि बचन-बन्धन कछु मोरा ※ भृगुपति आनेउ धनुष कठोरा
भञ्जइ चाप वीर धनुधारी ※ सोइ, लंकेस ! सिया-अधिकारी

दो० अवनि[1] न अब लौं सफल कोउ, सुभट सुनहु दसभाल।
धनु चढ़ाइ, प्रन पूर करि, लेहु सुता-जयमाल ।। ११२ ।।

आनन दसौ हँसा सुनि रावन ※ धनुबल भल वरनेउ मोंहि राजन
गिरि मंदर कैलास उठावा ※ चाप-भार लघु बात चलावा
भञ्जउँ सोइ, जब करउँ पयाना ※ तब लौं सुता करौ मोंहि दाना
मैं प्रन-विवस, करहु धनुभंगा ※ निरखैं सब तव भुजबल-रंगा
पुनि प्रहस्त दिय मंत्र बिसेखा ※ प्रन-विदेह कछु अहित[2] न देखा

चलिल जनक राजा रावणे आनिते ※ देखिया रावण राजा लागिल हासिते
प्रहस्त डाकिया वले रावण राजारे ※ जनक आइल देख लइते तोमारे
देखिया रावण तारे भूमितले उलि ※ दुइ बाहु पसारिया करे कोलाकुलि
वसाइल रावणेरे रत्न सिंहासने ※ मिष्टालाप करिलेन वसि दु'जने
जनक बलेन आजि सफल जीवन ※ कोन कार्य्ये महाशय तव आगमन
दशानन बले राजा तव कन्या सीता ※ आमारे करह दान आमि ये ग्रहीता
जनक बलेन इहा सौभाग्य लक्षण ※ तोमा विना पात्र आर आछे कोन् जन
आनिलेन भृगुराम धनु एक खान ※ हेन वीर नाहि ये ताहाते देय टान
तुलिया धनुकखान भांग गिया तुमि ※ धनुकेर घरे सीता समर्पिव आमि
शुनिया से दशमुखे हासिल रावण ※ आमार साक्षाते वल धनुक विक्रम
कैलास तुलेछि आमि पर्व्वत मन्दर ※ ताहारे जिनिया कि धनुक हवे भार
आगे सीता आनिया आमारे कर दान ※ यात्राकाले भांगिया जाइब धनुखान
जनक बलेन कर प्रतिज्ञा पूरन ※ देखुक सकल लोक धनुक भंगन
प्रहस्त बलेन शुन राखा दशानन ※ आर जे प्रतिज्ञा भंग ना कर कखन

१ पृथ्वी पर २ अमंगल, बुराई ।

चढ़त चाप नृप अर्पहिं सीता ✻ नतरु जोर-बल करिय ग्रहीता
टूटै धनुष, न संशय येही ✻ मातुल[1] ! वरौं[2] अबै बैदेही
अभिमानी गमनेउ धनुगेहा ✻ संग लंकपति, चले विदेहा
धाई प्रजा, कूतूहल छावा ✻ जानकि-वर विधि आजु पठावा
युवा, वृद्ध, अरु बाल-समाजा ✻ धनुमंदिर पुर सकल विराजा
कौतुक जोजन दीर्घ अेकासी ✻ ग्यारह परिसर[3] तासु प्रकासी
गृह विशाल जहँ चाप-महेसा ✻ तासु द्वार लंकेस प्रवेसा
दुर्जय धनु निरखत रनबंका ✻ लंकापति उपजी मन संका
बल सुमिरत छिन, पुनि भयभीता ✻ असफल-सफल न हिय परतीता[4]
ताल प्रतच्छ[5], न अन्तस धीरा ✻ धनु ढिग गयेउ दसानन वीरा
कटि कसि फेंट, सुभट बलधारी ✻ चहेउ चाप भुजबीस उपारी[6]

दो० तमकि, हुमकि, उठि, बैठि बल, बिबिध करत दससीस।
सिथिल गात, हिय लाज अति, टरत न धनुष-गिरीस॥ ११३ ॥

मातुल! थकित भुजा मम बीसा ✻ सिखवति सुनि प्रहस्त, दससीसा

धनुक भांगिले राजा जानकीरे दिबे ✻ इच्छाधीने नाहि देय बले काड़ि लबे
दशमुख बले मामा राखि तव कथा ✻ धनुक भांगिले येन ना हय अन्यथा
अहंकार करिया चलिल लंकेश्वर ✻ देखाइते चलिल जनक नृपवर
शुनिया धाइल सब मिथिला नगर ✻ सबे बले जानकीर आजि एल वर
युवा वृद्ध शिशु एक नाहि रहे घरे ✻ कौतुक देखिते गेल राजार मन्दिरे
एकाशी योजन घर अति दीर्घतर ✻ एकादश योजन ताहार परिसर
धनुक पड़िया आछे ताहार भितरे ✻ आसिया रावण राजा दाण्डाइल द्वारे
दाण्डाय द्वारेते वीर डाँकि दिया चाय ✻ देखिया दुर्जय धनु अन्तर डराय
मने भावे आमार घुचिल भारिभुरि ✻ ये देखि धनुकखान पारि कि ना पारि
अन्तरे आतङ्क अति, मुखे आस्फालन ✻ तुलिते धनुक जाय वीर दशानन
आँटिया कापड़ परे बान्धिल काँकाले ✻ कुड़ि हाते धरिल से धनु महाबले
आँकाड़ि करिया तबे धनुखान टाने ✻ तुलिते ना पारे आर चाय चारिपाने
नाके हात दिया बले कि करि उपाय ✻ कि हइबे मामा धनु तोला नाहि जाय
प्रहस्त बलेन शुन राजा लङ्केश्वर ✻ लोक हासाइला आसि मिथिला नगर

---

१ मामा (प्रहस्त) २ विवाह लूंगा ३ प्रसार-फैलाव ४ प्रतीति, विश्वास
५ प्रकट में जोश ६ उठाना।

पुर उपहास असह, यहि कारन ※ तन भरि जोर, करौ बल धारन
भय तजि, धनु भञ्जिय केहु भाँती ※ साहस जोरि अड़ायेसि छाती
शिवगिरि मन्दर सहज उपारा ※ सोइ भुजबल, तिल धनुष न टारा
प्रन-पुरवनि प्रानन पर छाई ※ मातुल! जुगुति एक मन भाई
सब मिलि जोर करहिं इकसंगा ※ कह प्रहस्त, सियवर केहि संगा?
प्रान जाय पै राखिय माना ※ करि बल, हित साधिय बलवाना
मातुल[1]! जतन करौं सिख मानी ※ तदपि द्वार रथ राखहु आनी
हँसि प्रहस्त, रथ द्वार बुलावा ※ रावन पुनि बल अमित लगावा
तजी आस, चितवत नभ ओरा ※ सुरगन मनौ हँसत तेहि ओरा
रथ चढ़ि भजेउ लंक-अधिकारी ※ बालक हँसत बजावत तारी
मन गलानि उत गमनेउ रावन ※ इत सुरगन हिय ताप नसावन
बिन हरि, चाप चढ़ै केहि हाथा ※ श्री-वर कौन विना श्रीनाथा
दनुज-त्रास मिटि सीतल छाती ※ चिंता-जनक मिटी यहि भाँती
अमा-ग्रहण[2]-रवि अवसर देखी ※ नृप-मन सुत-कल्यान बिसेखी
हेमदान[3] सुरसरि असनाना ※ नृप उमंग, कृत्तिवास बखाना

चिन्ता ना करिह तुमि ना करिह डर ※ गात्रे बल करि आर एक बार धर
पुनश्च धनुकखान टानाटानि करे ※ तथापि धनुकखान नाड़िते ना पारे
दशग्रीव वले आर नाड़िते ना पारि ※ प्राण जाय मामा तबु तुलिते ना पारि
कैलास तुलिनु मामा पर्व्वत मन्दर ※ ताहारे जिनिया मामा धनुकेर भार
एइयुक्ति मामा गो तोमार ठाँइ मागि ※ सवाइ मिलिया तुले धनुखान भाङ्गि
प्रहस्त वलिल शुन वीर दशानन ※ तवे त सीतार वर हवे कोन जन
पार वा ना पार आर एक बार टान ※ जाय प्राण राख मान एइ वाक्य मान
रावण वलिल मामा शुन मोर वाणी ※ तुलिते ना पारि शीघ्र रथ आन तुमि
ईषत् हासिया वले प्रहस्त ताहारे ※ रथ लये एइ आमि रहिलाम द्वारे
आरवार रावण धनुकखान टाने ※ तुलिते ना पारे चाय प्रहस्तेर पाने
काँकालेते हात दिया आकाशे निरखे ※ मने भाव पाछे आसि इन्द्र बेटा देखे
वुझिया प्रहस्त रथ दिल योगाइया ※ लाफ दिया रथे उठे धनुक एड़िया
पलाइया चलिल लङ्कार अधिकारी ※ सकल वालक देय तारे टिटकारी
लंकाय शंकाय गेल लंकार रावण ※ आकाशे थाकिया देखे यत देवगण
श्रीलक्ष्मीपतिर लक्ष्मी लवे कोनजन ※ तुलिवेन धनुक केवल नारायण
कृत्तिवास पण्डितेर कि कहिव शिक्षा ※ आदिकाण्ड गाइल सीतार हैल रक्षा

---

१ मामा २ अमावस्या पर सूर्य-ग्रहण ३ स्वर्णदान।

श्री राम का गंगा-स्नान और गुह के साथ मित्रता तथा भरद्वाज मुनि के
घर राम का धनुर्बाण प्राप्त करना

दो० सहित चारि सुत, भूप रथ, शत-शत हय, गज संग ।
गगन तुमुल रव[1] ब्याप चहुँ, अमित[2] कटक चतुरंग ।। ११४ ।।

नृप-दशरथ रथ दिव्य सुहाये ※ पन्थ दरस नारद के पाये
पूछत हेतु गमन ? नृप भाषा ※ मुनि ! अस्नान-गंग अभिलाषा
भूप अजान ! राम मुख दरसन ※ पुनि कित हेतु जाह्नवी-परसन
भूतल पतितपावनी धारा ※ गंग, जासु पद-पदुम प्रसारा
गंगस्नान पुन्य सोइ नाना ※ सुवन-रूप निरखहु भगवाना
नारद बचन नरेस प्रतीता ※ चलहु राम गृह, कहेउ सप्रीता
सुनि पितु बचन, कहत रघुराई ※ विघिन धर्म-पथ, रीति सदाई
तिनहिं बराय, मातु-डग[3] धरहीं ※ सुरसरि-सुकृत[4] सफल तन करहीं
पितु मन दीन कथन-रघुनन्दन ※ सहित उछाह बढ़ेउ नृप-स्यंदन[5]

श्रीरामेर गंगास्नान ओ गुहकेर सहित मितालि ओ भरद्वाज मुनिर
गृह रामेर धनुर्व्वाण प्राप्ति

एक दिन दशरथ पुण्य तिथि पेये ※ गङ्गास्नाने यान राजा चार पुत्र ल'ये
हइबेक अमावस्या तिथिते ग्रहण ※ रामेर कल्याणे राजा दिबेन काञ्चन
तुरंग मातंग चले संगे शते शते ※ चारिपुत्र सह राजा चापिलेन रथे
चलिल कटक सब नाहि दिक् पाश ※ कटकेर शब्दे पूर्ण हइल आकाश
चलेछेन दशरथ चड़ि दिव्य रथे ※ नारद मुनिर संगे देखा हय पथे
मुनि बले कोथा राजा करिछ पयान ※ भूपति कहेन साध करि गंगास्नान
मुनि कहे दशरथ तुमि त अज्ञान ※ राममुख देखिले के करे गंगास्नान
पतितपावनी गंगा अवनीमण्डले ※ सेइ गंगा जन्मिलेन याँर पदतले
सेइ दान सेइ पुण्य सेइ गंगास्नान ※ पुत्रभावे देख तुमि प्रभु भगवान
एत यदि नृपतिरे कहिलेन मुनि ※ राजा बले चल घरे राम रघुमणि
वापेर बचन सुनि बलेन श्रीराम ※ अनेक पाषण्ड आछे धर्म्मपथे बाम
गंगार महिमा आमि कि बलिते जानि ※ ना शुनिओ महाराज नारदेर वाणी
एत यदि बलिलेन कौशल्याकुमार ※ चलिलेन दशरथ राजा आर बार
चलिल राजारा सैन्य आनन्दित है'या ※ गुहक चण्डाल आछे रथ आगुलिया

१ शब्द २ असीम ३ गंगा माता की राह ४ गंगा के पुण्य द्वारा ५ दशरथ का रथ ।

तौ लौं पथ घेरेउ गुहराजू * कोटिक[1] तीन निषाद-समाजू
कहेउ, कटक इत कस अवधेसा? * नित गहि पंथ बिगारत देसा
जो सुरसरि-अस्नान उछाहू * तजि मम भूमि, आन पथ जाहू
सोइ मग गमन रुचिर यदि भूपा * प्रथम लखौं छबि राम अनूपा
राम-राम गुहपति मुख भाखा * रथ लुकाय रामहिं नृप राखा
सोचत धनु चढ़ाय नरनाथा * बध गुह हीन! कवन जस हाथा?
जीते सुजस न पौरुष लेसू * हारे त्रिभुवन अजस बिसेसू

दो० छाड़ेहु[2] पुनि पार नहिं, अभिरत उत चण्डाल ।
नृप विमूढ़-मन, करिय कस? अरझेउ मग जंजाल ॥ ११५ ॥

बरसइँ बान, कोपि दोउ लरहीं * रिपु-सर निरखि, उभय मन डरहीं
तर्जहिं परस्पर बान कराला * यहि विधि ठनेउ युद्ध बहु काला
दसरथ पुनि पशुपति संधाना * गुहपति-हाथ बाँधि रथ आना
सोचत—दरस न कृपानिकेता * सफल न रन पथ रोकन हेता
पग धनु कसि, पग सों धरि बाना * बिन कर[3] कौतुक रन गुह ठाना
रामहिं अचरज भरत जनावा * पग सन धनुर्युद्ध-यश गावा
राम कुतूहल ! कला नवीना ! * देखन चले निषाद प्रवीना
गुहपति, निरखत छबि-रघुनाथा * नाय माथ, थिर भयेउ सनाथा

तिन कोटि चण्डालेते गुहक वेष्टित * हुड़ाहुड़ि बाधे दशरथेर सहित
गुहक चण्डाल वले शुन दशरथ * भाँगिया आमार देश करिले कि पथ
बारे बारे जाह तुमि एइ पथ दिया * सैन्येते आमार राज्य केलिल भांगिया
गंगास्नान करिते तोमार थाके मन * आर पथ दिया तुमि करह गमन
यदि इच्छा थाके हे जाइते एइ पथे * देखाओ तोमार आगे पुत्र रघुनाथे
राम राम वलिया से गुहक डाकिल * रथमध्ये रामेरे भूपति लुकाइल
निल दशरथ राजा धनुर्व्वाण हाते * रथेर द्वारेते राजा लागिल भाविते
चण्डालेरे मारि किवा हइवेक यश * नीच जने जिनिले कि हइबे पौरुष
यदि पराजय हइ चण्डालेर वाणे * अपयश घुषिवेक ए तिन भुवने
आमि यदि छाड़ि नाहि छाड़िवे चण्डाल * कि करिव पथे ए कि घटिल जञ्जाल
दुइजने वाणवृष्टि करे महाकोपे * उभयेर वाणेते दोंहार प्राण काँपे
एइ मत वाणवृष्टि हइल विस्तर * उभयेर संग्राम हइल बहुतर
दशरथ राजा एड़े पाशुपत शर * हाते गले गुहके वान्धिल नरेश्वर
गुहके वान्धिया राजा तुलिलेन रथे * बन्धने पड़िया गुहक लागिल भाविते

---

१ करोड़ २ न लड़ने पर भी ३ बिना हाथ के ।

पूछत राम, कहहु रन-कारन ? ※ सुनहु कथा प्रभु शाप-निवारन
पाप पुरबुले[1], अधम शरीरा ※ लहि, अब लौं भुगतौं भव-पीरा
पितु बशिष्ठ-सुत जनम पुनीता ※ वामदेव मम नाम अतीता[2]
सुत-विहीन दसरथ जेहि काला ※ अंध-सुवन-बध-पाप बेहाला[3]
तप-उपवन पकरे मम चरना ※ लोटत धरनि विकल मम सरना
राम नाम त्रय बार कहावा ※ सोइ प्रताप नृप-ताप नसावा
सोइ कारन पितु शाप कराला ※ जन्मेउँ अधम योनि चण्डाला
नाम एक, बध कोटि उबारन ※ तीनि बार केहि हेतु उचारन ?

दो० पितु-प्रकोप लखि, गहे पग, शाप-मुक्ति किमि नाथ?
कहेउ, निवारन अधम गति, दरस राम रघुनाथ ॥ ११६ ॥

सोइ अब राम अवध अवतारा ※ जासु चरन मम पाप निवारा
भक्तन प्रिय तुम नाथ-अनाथा ※ दयासिंधु को अस रघुनाथा
श्वपच-शरीर घृना यदि करहू ※ नाम पतितपावन, हरि ! तजहू
विनय-सनी आकुल गुहबानी ※ सुनत राम दृग सरसत पानी

याहाँर लागिया आमि आगुलिनु पथ ※ देखिते ना पाइलाम से राम किमत
एतेक भाविया गुह करे अनुमान ※ पायेते धनुक टाने पाये एड़े बाण
भरत कहिल गिया रामेर गोचरे ※ एमत अपूर्व्व शिक्षा नाहि चराचरे
पायेते धनुक टाने पाये एड़े बाण ※ देखिते कौतुक राम गेलेन से-स्थान
येइ मात्र गुहक देखिल रघुनाथे ※ दण्डवत् हइया रहिल जोड़ हाते
श्रीराम बलेन धनु टानह केमन ※ गुह बले तोमारे कहिब से कारण
पूर्व्व जन्म कथा मम शुन नारायण ※ ये पापे हइल मोर चण्डाल जनम
अपुत्रक छिलेन यखन दशरथ ※ अन्धक मुनिर पुत्र करिलेन हत
मुनि हत्या करिया आसिल तपोवने ※ लोटाइया धरिलेन आमार चरणे
वशिष्ठेर पुत्र आमि वामदेव नाम ※ तिन बार राजारे बलानु राम नाम
शुनिया वशिष्ठ शाप दिलेन विशाल ※ जाह वामदव पुत्र हओरे चण्डाल
एक रामनामे कोटि ब्रह्महत्या हरे ※ तिन बार रामनाम बलालि राजारे
लोटाय पड़िनु आमि पितार चरणे ※ चण्डाल हइते मुक्ति काहार दर्शने
पिता बलिल जबे पावे श्रीराम दर्शन ※ तबेत हइबे मुक्त चण्डाल जनम
सेइ राम जन्मियाछे दशरथ घरे ※ चरण परश दिया मुक्त कर मोरे
अनाथेर नाथ तुमि भकतवत्सल ※ करुणासागर हरि तुमि हे केवल
चण्डाल बलिया यदि घृणा कर मने ※ पतितपावन नाम तबे कि कारणे
एतेक बलिया गुह लागिल कान्दिते ※ गुहेर क्रन्दने राम कान्दिलेन रथे

---

१ पूर्वजन्म के २ व्यतीत काल का ३ परेशान।

पितु सन विनय करत कर जोरी ※ गुहपति-मुक्ति याचना मोरी
राम ! न कछु अदेय तव हेतू ※ अर्पित गुह तव, हर्ष समेतू
पितु-अनुमति; आतुर रघुनन्दन ※ काटे निजकर गुहपति-बन्धन
लखन ततच्छन अनल जराई ※ साखी राम-निषाद मिताई
हीन न तात ! सुनहु गुहभूपा ※ सब प्रकार तुम मम अनुरूपा
अधम अहौं, तुम अधम-सहाई ※ जग चहुँ पुजै राम-ठकुराई
करि मित्रता, बिदा गुह कीन्हा ※ सुरसरि-पथ दसरथ पुनि लीन्हा
फल अनन्त रविग्रहन पुनीता ※ दान धर्म अस्नान सप्रीता
शत-शत सुरभि शिला किय दाना ※ कञ्चन, रजत, रतन विधि नाना
दान-पुन्य करि नृप बहु भाँती ※ सुतन सहित पुनि निरखि सँझाती[1]
भरद्वाज-उपवन चलि जाई ※ बन्दि चरन-मुनि, बिनय सुनाई
सरन तपोधन तव, सुत चारी ※ अहह भाग तव चरन निहारी

दो० देहु असीस; बिलोकि तिन, सोचत मनहिं मुनीस ।
तजि गोलोक प्रतच्छ लख[2] जग प्रगटे जगदीस ।। ११७ ।।

तव सुत राम, जनक[3] जग केरा ※ जीवन सफल अवधपति केरा

करपुटे दाण्डाइल पितार साक्षात् ※ देह भिक्षा गुहके बलेन रघुनाथ
राजा वले प्राण चाह प्राण पारि दिते ※ चण्डाले तोमाके दिब बाधा नाहि इथे
पाइया बापेर आज्ञा कौशल्यानन्दन ※ खसालेन निज हस्ते गुहेर बन्धन
श्रीराम बलेन अग्नि ज्वालह लक्ष्मण ※ गुहकेर सह करि मित्रता बन्धन
लक्ष्मण ज्वालेन अग्नि रामेर साक्षात् ※ गुह सहित मित्रता करेन रघुनाथ
जेइ आमि सेइ तुमि वलेन श्रीराम ※ गुह बले घुचाइते नारि निज नाम
श्रीरामेर जगते हइल ठाकुरालि ※ प्रथमे करेन राम चण्डाले मितालि
विदाय करिया रामे गुह गेल घरे ※ पुत्र लैया दशरथ गेल गङ्गातीरे
अपूर्व्व अनन्त फल भास्कर ग्रहण ※ स्नान करि राजा दान करिल काञ्चन
धेनुदान शिलादान कैल शत शत ※ रजत काञ्चन तार नाम लब कत
दान धर्म्म करिते हइल बेला क्षय ※ प्रदोषे गेलेन राजा भरद्वाजेर आलय
बसिया आछेन मुनि आपनार घरे ※ चारि पुत्र सह राजा नमस्कार करे
जोड़ हाते बले राजा मुनिर गोचर ※ आनियाछि चारि पुत्रे देख मुनिवर
आशीर्व्वाद कर चारि पुत्रे तपोधन ※ वहुभाग्ये देखिलाम तोमार चरण
देखिया रामेरे भावे भरद्वाज मुनि ※ वैकुण्ठ हइते विष्णु आइला आपनि
मुनि बले राजा तव सकल जीविता ※ राम तव पुत्र किन्तु जगतेर पिता

---

१ सायंकाल २ मालूम पड़ता है ३ पिता ।

छबि विराट दूर्वादल श्यामा ❋ अतुलित तबहिं लखेउ मुनि रामा
अंकुश बज्र ध्वजा पद पंकज ❋ शंख चक्र कर पद्म गदा सज
शिव, विरञ्चि जेते सुरलोका ❋ भुवन राम-तन[1], सकल विलोका
मुनि-आश्रम आतिथ नृप पावा ❋ सहित सैन तहँ रैन बितावा
शयनकक्ष मुनि राम लेवाई ❋ सोवत, अर्धनिसा जब आई
अक्षय कवच दिव्य धनु साथा ❋ सिरहाने राखेउ सुरनाथा
मुनिहिं सकल सो सपन दिखाई ❋ भोर, चाप निरखेउ रघुराई
आयुध दिव्य शचीपति[2] दीन्हा ❋ सो निसि-कथा कथन मुनि कीन्हा
मुनि प्रणम्य, हरि पितु ढिग जाई ❋ सम्मुख धरेउ चाप-सुरराई
दसरथ मुदित; सहित सुत चारी ❋ आगम अवध सबन सुखकारी

राक्षसों द्वारा मुनियों के यज्ञों में विघ्न और उसके निवारण का उपाय

राजभोग ऐश्वर्य प्रपन्ना[3] ❋ सब विधि सुख समृद्धि संपन्ना
मिथिला मुनिन यज्ञ सोइ काला ❋ करैं भंग नित दनुज कराला
जब-जब मुनिगन याग रचावा ❋ तबहिं मरीच रक्त बरसावा

भरद्वाज एइकाले देखे चमत्कार ❋ दूर्व्वादल श्याम तनु परम आकार
ध्वज-वज्रांकुशे शोभित पदाम्बुज ❋ शङ्ख - चक्र - गदा - पद्मधारी चतुर्भुज
शंकर विरिञ्चि आदि यत देवगण ❋ रामेर शरीरे आरो देखेन भुवन
समुचित आतिथ्य करेन भरद्वाज ❋ सुखे रहिलेन सैन्यसह महाराज
रामेरे लइया मुनि अन्तःपुरे गिया ❋ शयन करेन दोंहे एकत्र हइया
यखन हइल रात्रि द्वितीय प्रहर ❋ शियरे राखेन देवराज धनुःशर
स्वप्ने उपदेश एइ करेन मुनिरे ❋ अक्षय धनुक तूण देह श्रीरामेरे
एत बलि करिलेन वासन पयान ❋ प्राते राम शियरे देखेन धनुर्ब्बाण
कहिलेन श्रीरामेरे मुनि भरद्वाज ❋ तोमारे दिलेन धनुर्ब्बाण देवराज
मुनिर चरणे राम करे प्रणिपात ❋ आनिलेन सेइ धनु पितार साक्षात्
शुनि राजा दशरथ आनन्द हइया ❋ आइलेन देशे चारि कुमारे लइया
कृत्तिवास करे आश पाइ परित्राण ❋ आदिकाण्ड गाइल रामेर गङ्गास्नान

राक्षसेर दौरात्म्ये मुनिदेर यज्ञपूर्णे व्याघात तन्निवारणेर उपाय

एइ रूपे दशरथ चारि पुत्र लैया ❋ करेन साम्राज्य भोग सावधान हैया
हेथा मिथिलाय यज्ञ करे मुनिगण ❋ यज्ञ पूर्ण नाहि हय राक्षस कारण
यज्ञ आरम्भन करे येइ मुनिवर ❋ करे रक्त वर्षण मारीच निशाचर

१ राम के शरीर में विराट रूप के दर्शन २ इन्द्र ३ युक्त, प्राप्त ।

मिथिला चहुँ दिसि याग-विहीना॥ मुनिन बोलाय जनक मत कीना
कौशिक-जुगुति सबन मन भाई ॥ अवध जाय आनहु रघुराई

दो० भयेउ जगत अवतार प्रभु, निसिचर नासन हेत ।
जनम राम बलधाम सोइ, दसरथ अवध निकेत ।। ११८ ।।

कहेउ जनक, तुम बिन मुनिराई ॥ याग-सिद्धि नहिं जतन लखाई
सबन प्रबोधि अवध मुनि गयऊ ॥ राम-निवास उपस्थित भयऊ
प्रहरी-खबरि—भूप-मन चिन्तन ॥विधि न सीध,कस गाधियनन्दन[1]!
रघुकुल कौशिक विषम प्रभावा ॥ बीतै कस ! दसरथ भय छावा
सुविदित सत्यसंध हरिचन्दा ॥ तिय-सुत बेचि कटे तिन फन्दा
संसय मन ! मुनि-चरन पखारी ॥ बन्दि, भूप मृदु गिरा उचारी
कीन गाधि-सुत पुष्कल[2] धामा ॥ अहो भाग्य! आवउँ मुनि-कामा
कौशिक कहेउ सुनहु अवधेसू ॥ मिथिला मुनिन अनन्त कलेसू
सफल न याग, दनुज-उत्पाता ॥ शोनित-स्त्रव, श्रुति-काज निपाता
जो मोंहि देव लखन-रघुराई ॥ कटै विपति तौ, असुर नसाई
आवइँ लौटि बितइ दिन चारी ॥ रघुकुल-सुयस भुवन विस्तारी
मन संसय सो आगे आवा ॥ धुनत सीस दसरथ भय छावा

यज्ञहीन हइलेक मिथिला भुवन ॥ करे जनक मुक्ति ल'ये ऋषि-मुनिगण
तार मध्ये वलिलेन विश्वामित्र मुनि ॥अयोध्याय गिया रामचन्द्रे आमि आनि
राक्षस बधेर हेतु धरि राम वेश ॥ दशरथ गृहे अवतीर्ण हृषीकेश
वलिलेन जनक शुनह महाशय ॥ तुमि रक्षा करिले ए यज्ञ रक्षा हय
विश्वामित्र सकलेरे करिया आश्वास ॥ चलिलेन यथा राम अयोध्या निवास
उपस्थित हइलेन अयोध्यार द्वारे ॥ द्वारी गिया जानाइल तखनि राजारे
भूपति शुनिवा मात्र विश्वामित्र नाम ॥ चिन्तित कहेन वुझि आजि विधि बाम
विश्वामित्र मुनि एइ बड़इ विषम ॥ प्रमाद घटाय किम्बा करे कोन क्रम
सूर्य्यवंशे छिल हरिश्चन्द्र महाराज ॥ भार्या पुत्र वेचाइया ताँरे दिल लाज
आसि वन्दिलेन राजा मुनिर चरण ॥ शिष्टाचारपूर्व्वक करेन निवेदन
तव आगमने मम पवित्र आलय ॥ आज्ञा कर कोन कार्य्य करि महाशय
विश्वामित्र वलेन शुनह दशरथ ॥ श्रीरामेर देह यदि हय अभिमत
मुनिगण यज्ञ करे करिया प्रयास ॥ राक्षस आसिया सदा करे यज्ञनाश
मुनि-परित्राण हय, कहिनु तोमारे ॥ श्रीराम-लक्ष्मण देह यज्ञ राखिवारे
येइ मात्र विश्वामित्र कहेन ए कथा ॥ भूपति भावेन मने हेंट करि माथा

१ गाधि के पुत्र विश्वामित्र २ पवित्र ।

सुत-वियोग मम काल कपाला[1] ※ अन्धक-शाप सतत[2] हिय साला[3]
बिन मुखचन्द्र-राम, छिन एका ※ दूभर[4] जियब, न, मुनि! अतिरेका[5]
जीवन राम ध्यान सोइ ज्ञाना ※ पल बिन-दरस अचेत समाना
मम तन-मन अर्पित तव काजू ※ राम अदेय, छमहु मुनिराजू

दो० सोवहुँ निसि हिय राम धरि, सदा सचेत सभीत ।
स्वप्न विलग—जिय कण्ठगत, कतहुँ न काहु प्रतीत[6] ।। ११६ ।।

श्रीराम को राक्षसों के साथ युद्ध के लिए भेजना दशरथ को अस्वीकार

छं० जिमि राम जनमे धाम मम, सो कथा-क्रम मुनि! श्रवन धरि।
सर तीर, कानन, सिन्धु—सुत-मुनिअंध, जल जिहि काल भरि।।
आखेट घूमत, शब्द-जलघट, शब्दबेधी सर हनेउँ ।
सो तौ न पसु! मुनि-सुवन हत! धरि कन्ध अन्धक-बन गयेउँ ।।
सन्तान बिन, मन ग्लानि निसिदिन, ताप मुनि-सुत-बध हृदै ।
तहँ अन्ध-दम्पति, कुपित बिलखत, सुत-वधिक—मोहि शाप दै।।
'मृत्युयोग वियोग-सुत'—मुनि शाप दिय वरदान सम ।
यहि भाँति पाये चारि सुत, भयभीत हिय, मुनिनाथ! मम ।।

पुत्रशोके मृत्यु मम लिखन कपाले ※ ना जानि हइबे मृत्यु मम कोन् काले
अन्धकेर शाप मने करे धुक् धुक् ※ कखन मरिब नाहि देखे चाँदमुख
प्राण चाह यदि मुनि प्राण दिते पारि ※ एक दण्ड रामचन्द्रे ना देखिले मरि
अतएव रामचन्द्रे ना दिब तोमारे ※ एक दण्ड ना देखिले हृदय बिदरे
आदिकाण्ड गाय कृत्तिवास विचक्षण ※ राम ध्यान राम ज्ञान राम से जीवन

श्रीरामके राक्षससह युद्धे प्रेरणे दशरथेर अस्वीकार

यखन शुइया थाकि, रामके हृदये राखि, भूमे राखि नाहिक प्रतीत ।
स्वप्ने ना देखिले ताय, प्राण ओष्ठागतप्राय, चमकिया चाहि चारि भित ।।
येमते पेयेछि रामे, कहि से सकल क्रमे, मृगया करिते गिया वने ।
सिन्धु नामे मुनिवरे, सरोवरे जल भरे, ताँरे मारि शब्दभेदी बाणे ।।
मृत मुनि कोले करि, गेलाम अन्धक-पुरी, देखि मुनि अग्निर समान ।
पुत्र-पुत्र बलि डाके, मरा पुत्र दिनु ताँके, पुत्रशोके से छाड़िल प्राण ।।
छिलाम सन्तान-हीन, मनोदुःखे रात्रिदिन, बधिलाम सिन्धुर जीवन ।
कुपिया सिन्धुर बाप, दिल मोरे अभिशाप, तेंइ पाइलाम एइ धन ।।

---

१ प्रारब्ध २ सदैव ३ खटकता रहा ४ कठिन ५ अत्योक्ति ६ विश्वास ।

स्वयं चलि, दलि दनुज, रचहुँ याग; सुनि मुनि कोप किय ।
बिन लखन-राम न काम, चाहत कुसल कोसलनाथ हिय ।।
दोउ सुवन दै, मुनिकाज करु, नतु शाप वंश बिनासिहौं ।
कौशिक कुपित लखि, कहत नृप, मुनि! कछुक अर्ज सुनाइहौं ।।

राजा दशरथ का विश्वामित्र मुनि के साथ छल करके भरत और शत्रुघ्न को भेजना
और विश्वामित्र का कोप, फिर राम को भेजना स्वीकार

बारी बयस लटुरियाँ सीसा ※ रन न ज्ञान! किमि लरहिं, मुनीसा?
जेतक सैन चहहु तव हेतू ※ हनै दनुजगन कटक समेतू
रसद[1] कटक हित कित तपकानन? ※ एक राम समरथ खल नासन
नृप तव सैन न कारज लेसू ※ रविकुल, जहँ हरिचन्द नरेसू
दै छिति दान, बेचि सुत-दारा ※ सत्यसंध मम भार उतारा
तहँ लघु बात मुनिन-उपहासू ! ※ प्रगट भानुकुल आजु विनासू
निरखि कोप, नृप युगुति बनाई ※ भरत-रिपुघ्न समीप बुलाई
करहु अनुगमन मुनि आदेसू ※ नृप-प्रवञ्च[2] मुनि ज्ञान न लेसू

अतएव तपोधन, शुन मम निवेदन, आमि जाब सहित तोमार ।
विना श्रीराम लक्ष्मण, अन्य किछु प्रयोजन, जाहा चाह दिब शतवार ।।
राजार वचन शुनि, कुपिलेन महामुनि, झाट देह तोमार कुमार ।
आपन मङ्गल चाह, श्रीराम लक्ष्मणे देह, नहे वंश नाशिब तोमार ।।

राजा दशरथ विश्वामित्र मुनिके प्रतारणा करिया भरत ओ शत्रुघ्न के प्रेरणा
ओ विश्वामित्रेर कोप, तारपरे रामेर गमन स्वीकार

राजा बलिलेन मुनि करि निवेदन ※ धनुर्विद्या नाहि जाने कि करिबे रण
अत्यल्प वयस मम पुत्र चारि गुटि ※ शिरे चूल नाहि घुचे आछे पञ्चझुटि
अन्य सैन्य यत चाह लह तपोधन ※ ताहारा करिबे निशाचर-निवारण
शुनिया कहेन विश्वामित्र तपोधन ※ कटके खाइबे यत कोथा पाव धन
एका राम गेले हय कार्य्येर साधन ※ सहस्र कटके मम नाहि प्रयोजन
तव वंशे छिल ये हरिश्चन्द्र राजा ※ पृथिवी आमाके दिया करिलेक पूजा
तथापि ना पाइलेन मनेर सान्त्वना ※ भार्या-पुत्र बेचिया से दिलेन दक्षिणा
एका रामे तुमि दिते कर उपहास ※ सूर्य्यवंश बुझि आज हइल विनाश
चिन्तित हइया राजा भावे मने मने ※ डाकिलेन भरत शत्रुघ्न दुइ जने
दोंहे दाँड़ाइल आसि मुनिर साक्षाते ※ राजा बलिलेन जाह मुनिर सङ्गेते

१ फौज के लिए अन्न २ ठगई, छल ।

लखन-राम तिन दोउ अनुमानी ※ कौशिक चले मोद मन मानी
सरयू तीर पहुँचि मुनिराई ※ युगुल सुतन दुइ पथ दिखराई
सुगम पंथ दिन तीन चलाई ※ पहर तीन दुर्गम पथ पाई
दुर्गम मग ताड़ुका[1] सुरारी ※ लगति, खाति मुनिगन नित मारी
मन भावै सोइ मग अनुसरहीं ※ 'कुपथ न हेतु'—भूप-सुत कहहीं
एक दनुजि ! डरपत रनबंका ! ※ राम-लखन कस? मुनि मन संका
बीतै कस अगनित खल पाई ? ※ किमि कोटिक दल-दनुज नसाई?
धरत ध्यान मुनि नृप-छल जाना ※ दीन न राम, भरत पहिचाना

दो० फिरे गाधिसुत, कुपित अति, दसरथ किय उपहास !
सहित अवध पुरजन सकल, भूपति करौं विनास ।। १२० ।।

मुनि-दृग प्रगटी पावक-रासी[2] ※ जरत नगर आकुल पुरबासी
हाट-बाट चहुँ जरैं अटारी ※ राम समीप भजे नर-नारी
तुम तजि, दीन भरत नरनाहू ※ कौशिक-कोप अनल पुर दाहू
नगर त्रास लखि अति दुख पागे ※ धाय राम मुनि-चरनन लागे

भूपतिर वञ्चनाय भ्रान्त तपोधन ※ मने भाविलेन एइ श्रीराम लक्ष्मण
आगे यान महामुनि पाछे दुइजन ※ सरयू नदीर तीरे दिल दरशन
मुनि बलिलेन शुन भूपति कुमार ※ हेथा गमनेर पथ आछे द्विप्रकार
एइ पथे गेले जाइ तिन दिने घर ※ एइ पथे गेले लागे तृतीय प्रहर
तृतीय प्रहर पथे किन्तु आछे भय ※ सेइ पथे ताड़का राक्षसी नामे रय
ताड़िया धरिया खाय यत मुनिगणे ※ कोन् पथे जाइते तोमार लागे मने
बलिलेन भरत शुनह तपोधन ※ दुष्ट घाटाइया पथे कोन प्रयोजन
एकथा शुनिया मुनि भाविलेन मने ※ इनि कि हबेन योग्य राक्षस निधने
एक राक्षसेर नाम शुनि एत डर ※ मारिबेन किसे इनि कोटि निशाचर
राजार शठता मुनि भावेन अन्तरे ※ श्रीरामे ना दिया राजा दिल भरतेरे
आमार सहित राजा करे उपहास ※ अयोध्या सहित आजि करिब विनाश
क्रोधे फिरिलेन पुन: विश्वामित्र ऋषि ※ निर्गत हइल ताँर नेत्र अग्निराशि
सेइ अग्नि लागे गिया अयोध्या-नगरे ※ प्रजार तावत् घर द्वार दग्ध करे
कान्दिया चलिल प्रजा रामेर गोचरे ※ विश्वामित्र मुनि आसि सर्व्वनाश करे
तोमारे ना दिया राजा दिल भरतेरे ※ ते कारणे ए आपद अयोध्या-नगरे
प्रजार क्रन्दन शुनि रामेर तरास ※ धाइया गेलेन राम विश्वामित्र पाश
मुनिर चरण धरि वले रघुमणि ※ प्रजालोके रक्षा प्रभु करह आपनि

१ राक्षसी २ अग्नि की लपटें ।

जेहि सिर पाप—दण्ड-अधिकारी! ※ निरपराध कस संकट डारी
कोप अकारन, मुनि मन आवै ※ सोइ छन पूरुब धर्म नसावै
पितु सनेहबस मोहिं न दीना ※ करौं विदेह निसाचर-हीना
रच्छहु प्रजा, शमन! तपपुञ्जा! ※ राम-बचन मृदु मुनि-मन रञ्जा
तप प्रभाव, अमरित मुनि-लोचन ※ सरसि अवध किय संकट मोचन
ह्रास न त्रास विपति कहुँ लेसू ※ मुनि-तप कौतुक राम बिसेसू

यज्ञरक्षा के लिए मिथिला में श्रीराम-लक्ष्मण का जाना और मन्त्र-दीक्षा

पञ्चशिखा सिर हरि अवतारा ※ मुग्ध राम-छबि मुनी निहारा
नभ शरदेन्दु[1] सरिस अभिरामा[2]! ※ शोभाधाम चलहु मम ग्रामा
सुनी कथा नृप, लखि न उपाऊ ※ सौंपेउ राम-लखन मुनिराऊ
रहु निचिन्त[3], दसरथ बड़भागी ※ राम हेतु भय संका त्यागी
तुमहिं न बोध, असुर-बध हेता ※ जनम राम-तन कृपानिकेता
नृप प्रबोधि, मुनि सुतन बुलावा ※ सोइ छन रघुबर विनय सुनावा
दो० जो अनुमति, आयसु-जननि, लै, पुनि करौं पयान ।
नतरु अनन्तर, रुदन-रत, तजैं अन्न-जल-पान ।। १२१ ।।

अपराध जेइ करे दण्ड कर तार ※ निरपराधीर दण्ड करा अविचार
मुनि हैया जेइ जन रागे देय मन ※ पूर्व्व धर्म्म नष्ट तार हय सेइ क्षण
पुत्रे पाठाइते पिता हलेन कातर ※ यज्ञ रक्षा करि गिया मिथिला नगर
हासिलेन मुनिराज रामेर वचने ※ अयोध्यार पाने चान अमृत नयने
सकल करिते पारे तपेर कारण ※ येमन अयोध्यापुरी हइल तेमन
मुनिर चरित्र देखि रामेर तरास ※ आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

मिथिलाय यज्ञरक्षार्थे श्रीराम-लक्ष्मणेर गमन ओ मंत्र दीक्षा

शिरे पञ्च झुँटि राम विष्णु अवतार ※ मुग्ध हइलेन मुनि रूपेते ताँहार
पूर्णिमार चन्द्र येन उदय आकाशे ※ मुनि वलिलेन राम चल मोर देशे
जानिलेन महाराज रामेर गमन ※ लक्ष्मण सहित रामे करेन अर्पण
वलिलेन विश्वामित्र राजार गोचर ※ राम लागि चिन्ता ना करिह नरेश्वर
तुमि नाहि जानह रामेर गुण लेश ※ राक्षस वधिते अवतीर्ण हृषीकेश
श्रीराम लक्ष्मणे ल'ये आमि देशे जाइ ※ स्थिर हओ महाराज कोन चिन्ता नाइ
राजारे कहिया एइ प्रवोध वचन ※ मुनि बलिलेन, चल श्रीराम लक्ष्मण
श्रीराम बलेन मुनि यदि बल तुमि ※ मातृस्थाने विदाय लइया आसि आमि
माये ना कहिया जाव मिथिला नगर ※ कान्दिबेन अन्नजल छाड़ि निरन्तर

---

१ शरत्पूनो का चन्द्र २ मनोहर ३ वेफ़िक्र (निश्चित) ।

चले बहोरि कौशिलाधामा * करि प्रनाम विनयेउ श्रीरामा
मिथिला असुर बिघिन[1] नित करहीं * नित तिन कोप विपुल मुनि मरहीं
रच्छहुँ याग असुर संहारी * कौशिक चहत मोहिं महतारी
मंगल मन मुद आसिस-माई * लहि प्रसाद लौटउँ जय पाई
अवसर प्रथम, समर सुभ मोरा * उचित न सोच जननि मम ओरा
उपजी सुनत वेदना भारी * भीजे वसन, झरत दृग वारी
भरि सुअंक, कर फेरति सीसा * कातर हिय, बहु भाँति असीसा
मातहिं बहु प्रबोधि रघुबीरा * ढरकत, रुकत न लोचन नीरा
चरन धूरि पुनि सीस सवाँरी * किय सुभ गमन राम धनुधारी
राम-लखन गमने मुनि साथा * दृग जल, धरनि गिरे नरनाथा
ओझल राम न, तौ लौं दरसन * छिति पलोटि, नृप कातर क्रन्दन
समुझावत बहु सचिव सनेही * भावी[2] अमिट, न संशय येही
निरखि राम मुनि मोद-उछाहू * रचेउ दैव रघुनाथ-विवाहू
विधि-अनुगत[3] अश्विनीकुमारा * तिमि दोउ, मुनि-पाछे पग धारा
विकल अवध-जन लौटति गेहा * उत बन विश्वामित्र स-नेहा
कुअँरन-बदन[4] मलिन रवितापा * अवलोकत मुनि संसय व्यापा

गेलेन श्रीरामचन्द्र मायेर गोचरे * प्रणाम करिया पदे बलेन मायेरे
आइलेन विश्वामित्र लइते आमारे * मिथिलाय जाइ आमि यज्ञ राखिवारे
शुद्ध मने मोरे माता आशीर्व्वाद कर * युद्धे जयी हइ येन प्रसादे तोमार
प्रथम युद्धेते यात्रा करितेछि आमि * आमार लागिया शोक ना करह तुमि
कौशल्या शुनिया तबे करिछे रोदन * भिजिल नयन नीरे नेतेर बसन
कातरा कौशल्या कोले करिया रामेरे * आशीर्व्वाद करिलेन कर दिया शिरे
मायेरे कहेन राम प्रबोध वचन * नेत्र नीर नेत्रेते हइल निवारण
मातृ पदधूलि राम वन्दिलेन माथे * शुभ यात्रा करिलेन धनुर्व्वाण हाते
श्रीराम लक्ष्मणे निया विश्वामित्र यान * महाराज नेत्रनीरे धरणी भासान
कत दूर गिया राम हन अदर्शन * भूमिते पड़िया राजा करेन क्रन्दन
राजाके प्रबोध करे यत पात्रगण * के करे अन्यथा याहा बिधिर घटन
रामे देखि मुनिवर आनन्दित मन * रामेर विवाह हवे दैवेर घटन
आगे मुनिवर यान पाछे दुइजन * ब्रह्मार पश्चाते येन अश्विनीनन्दन
कान्दिते कान्दिते सर्वगेल निज बासे * राम निया विश्वामित्र वनेते प्रवेशे
आगे मुनि यान पाछे श्रीराम लक्ष्मण * आतपे हइल म्लान दोंहार वदन

१ विघ्न २ होनी ३ ब्रह्मा के पीछे मानों अश्विनीकुमार चल रहे हैं ४ मुख।

सो० रामहिं बन सों काम, वर्ष चतुर्दस व्यथा नित।
दुसह एक दिन घाम, अवधि[1] पूरि किमि काटिहैं ॥ १२२ ॥

सोइ विचारि मुनि मत थिर कीन्हा ※ रामहिं मंत्र-दीक्षा दीन्हा
रघुकुल जे पूर्वज, रघुवीरा ! ※ तजे प्रान शुचि सरयू तीरा
तीरथ पुन्य सलिल सोइ पावन ※ मार्जन[2] करि आवहु मनभावन
लेहु सुमंत्र दीक्षा आई ※ सकल शोक-भय-हेतु नसाई
सहस वर्ष नहिं छुधा-पिपासा ※ सुनि, नहाय, आये मुनि पासा
युगुल बंधु दिवि[3] मंत्र सिखावा ※ सुरगन निरखि अतुल सुख पावा
सोइ बल अनाहार बनबासा ※ विक्रम लखन इन्द्रजित[4] नासा
दिव्य-मंत्र-दीक्षित शिर नाई ※ मुनि-अनुगमन कीन रघुराई

श्रीराम द्वारा ताड़का राक्षसी का वध और अहल्या-उद्धार

बन- ताड़का जबहिं नियरावा ※ प्रथम प्रश्न मुनि पुनि दोहरावा
फूटत युगुल पंथ इत लखहू ※ मन भावै सोइ मग अनुसरहू
एक सुगम दिन तीनि चलाई ※ पहर तीनि, दुर्गम पथ पाई

ताहा देखि विश्वामित्र अन्तरे चिन्तित ※ एक दिने श्रीरामेर दुःख उपस्थित
रविर तापेते यदि मुखे आसे घाम ※ वहुकाल किमते भ्रमिवे वने राम
विश्वामित्र एइ मत भाविया अन्तरे ※ कराइल मन्त्रदीक्षा श्रीरामचन्द्रेरे
विश्वामित्र वलेन शुनह रघुवीर ※ स्नान करि एस गिया सरयू नदीर
यत राजा पूर्व्व सूर्य्यवंशे हये छिल ※ एइ स्थाने प्राण छाड़ि स्वर्गधामे गेल
एइ पुण्यतीर्थे राम स्नान कर तुमि ※ तोमारे सुमन्त्र दीक्षा कराइव आमि
शोक दुःख कखन ना पाइवे अन्तरे ※ क्षुधा तृष्णा ना हइबे सहस्र वत्सरे
करिलेन रामचन्द्र से मन्त्र ग्रहण ※ रामेरे कहिते ताहा शिखिल लक्ष्मण
दृढ़ करि शिखिलेन भाई दुइजन ※ आनन्दित हइया देखिल देवगण
वहुकाल अनाहारे थाकिवे लक्ष्मण ※ ताहाते हइबे इन्द्रजितेर मरण
कृत्तिवास पण्डितेर कवित्वेर शिक्षा ※ आदिकाण्डे गाइल रामेर मन्त्र दीक्षा

श्रीराम कर्त्तृक ताड़का राक्षसी-वध ओ अहल्या उद्धार

गुरुर चरणे राम करिलेन नति ※ रामे लैया विश्वामित्र करिलेन गति
ताड़कार वने आसि कहे अभिमत ※ रामे चाहि वलिलेन एइ दुटि पथ
एइ पथे जाइ घर तृतीय प्रहरे ※ एइ पथे तिन दिने जाइ मम घरे

१ मियाद २ स्नान ३ दिव्य, अलौकिक ४ मेघनाद।

दुर्गम पथ ताड़का सुरारी ※ लगत, खात, मुनिगन नित मारी
भयंकरी दानवि जित लागा ※ सो पथ, सुत! न उचित अनुरागा!
मग विलंब, गुरु! मोहिं न भावा ※ पहर तीनि द्रुत[1] पंथ सुहावा
जो निसिचरी करइ भटभेरा[2] ※ तौ न तासु बध पातक हेरा
कुपथ बिसूरि उपज मुनि तापा ※ किमि उछाह रामहिं अस व्यापा?

सो० भाजहु पग धरि सीस, भेंट ताड़का कतहुँ जो।
सुनत कथन, जगदीस, बिहँसि धीर बोलत बचन ॥ १२३ ॥

राम न नाम, विफल धनुबाना ※ हनउँ एक सर राकसि-प्राना
सर द्वितीय लौं गुरू-दोहाई ※ तीज गहे मम धर्म नसाई
करि प्रन अटल, चले मुनि साथा ※ कानन अनुज सहित रघुनाथा
युगुल बंधु बिच, मुनि छबि पावा ※ ठिठकि दूर, गृह-असुरि दिखावा
विक्रम बरनि, मनहुँ भय पाई× ※ कुअँरन तजि, मुनि चले बराई
लखन जाहु सँग, गुरु भयभीता ※ तजब अकेल न उचित प्रतीता
लछिमन कहत विनय कर जोरी ※ अनुचर बिलग न प्रभु, मति मोरी
विक्रम विपुल विकट गति जाकी ※ तासन उचित न रन एकाकी

तिन प्रहरेर पथे किन्तु भय करि ※ ताड़का राक्षसी आछे महा भयंकरी
ताड़िया धरिया खाय यत जीवगण ※ कोन पथे जाइ बल श्रीराम लक्ष्मण
करिलेन राम गुरु-वाक्येर उत्तर ※ तिन दिन फेरे केन जाब मुनिवर
यदि से राक्षसी पथे आइसे खाइते ※ विचारे नाहिक दोष ताहारे मारिते
रामेरे कहेन विश्वामित्र मुनिवर ※ ओ पथेर नामे मोर गाये आसे ज्वर
तोमार वासना आमि ना पारि बुझिते ※ मोरे निया जाह बुझि राक्षसेरे दिते
यखन राक्षसी मोरे आसिबे ताड़िया ※ आमारे एड़िया दोंहे जाबे पलाइया
गुरुर वचने हासिलेन प्रभु राम ※ विफल धनुक धरि व्यर्थ राम नाम
एक बाण बिना कि द्वितीय बाण धरि ※ तोमार दोंहाइ यदि तिन बाण मारि
एइमत रघुवीर प्रतिज्ञा करिते ※ चलिलेन मुनि सेइ ताड़का देखाते
उभय भ्रातार मध्ये थाकि मुनिवर ※ दूर हैते देखाइल ताड़कार घर
कर बाड़ाइया तार घर देखाइया ※ अति त्रासे मुनिवर जान पलाइया
श्रीराम बलेन भाई मुनिर सहित ※ शीघ्र जाह गुरु एका जान अनुचित
लक्ष्मण बलेन रामे जोड़ करि हात ※ थाकुक सेवक संगे प्रभु रघुनाथ
शुनिला ताहार कथा बड़इ विषम ※ एकला केमने राम करिबे विक्रम

१ जल्दी वाला २ झुरमुट, झमेला।
× मुनि ने किशोरों की परीक्षार्थ भय का रूप दिखाया है।

सुनहु लखन प्रिय! सन भय त्यागी ※ कस समर्थ निसचरि हतभागी
जो मिलि सकल जुरहिं रन अर्था ※ अँगुरि न मम, सठ लंघ समर्था
गुरु-अनुगमन लखन पुनि कीन्हा ※ असुर-अरण्य राम पग दीन्हा
धनुर्दण्ड बिच धरि कर बामा ※ तानि तन्तु[१] दक्षिण कर रामा
फेंट-वसन कसि, सारंग[२] हाथा ※ दूर्बादल श्यामल रघुनाथा
धनुटंकार प्रथम, जग हाला ※ स्वर्ग, मर्त्य, पुनि चकित पताला
सुबरन - खाट ताड़का सोई ※ सुनि टंकार नींद तिन खोई
नयन पसारि सुरारि[३] निहारी ※ हरित दूबदल सम छबि प्यारी

दो० आसन-हेत विरञ्चि दिय, कोमल मानव-चाम ।
अबहिं हरौं तव प्रान, कहि, उठि धाई जित राम ।। १२४ ।।

विप्रचर्म-पट खल तन धरहीं ※ झूर[४], चलत सो चरमर करहीं
कानन कुण्डल मुनिन-कपाला ※ मनुज-भाल उर झूलत माला
रक्त-मांस, मुनि जरठ,[५] विहीना ※ अस्थि-चर्म तिनकर रसहीना
कोमल सुरुचि मांस विधि दीना ※ दनुजि कथन रघुवर सुनि लीना
विपुल लोम[६]-युत ताम्र सरीरा ※ विकट दन्त जिमि लौह जँजीरा

बलेन श्रीराम भाइ भय नाहि मने ※ कि करिते पारे भाइ राक्षसीर गणे
सकल राक्षसी यदि हय एक मिलि ※ लङ्घिते ना पारे मम कनिष्ठ अंगुलि
गेलेन मुनिर सङ्गे लक्ष्मण तखन ※ ताड़कार प्रति राम करेन गमन
वाम हस्त दिया राम धनु मध्यखाने ※ दक्षिण हस्तेते गुण दिलेन से स्थाने
आँटिया सुपीत वस्त्र वान्धिलेन राम ※ वाम हाते धनुर्व्बाण दूर्व्वादल श्याम
प्रथमे दिलेन राम धनुके टङ्कार ※ स्वर्ग मर्त्त पाताले लागिल चमत्कार
शुयेछिल राक्षसी से सुवर्णेर खाटे ※ धनुक टङ्कार शुनि चमकिया उठे
बसिया राक्षसी सेइ एक दृष्टे चाय ※ दूर्व्वादल श्याम रूप देखिल तथाय
उठिया चलिल सेइ राम विद्यमान ※ डाकिया बलिल आजि लव तोर प्राण
ब्राह्मणेर चर्म्म तार गायेर कापड़ ※ चलिते ताहार वस्त्र करे खड़मड़
ब्राह्मणेर मुण्ड तार कर्णेर कुण्डल ※ मनुष्येर मुण्डमाला गलार उपर
वसिते आसन नाइ भावे मने मन ※ इहार चर्म्मेत हबे वसिते आसन
रक्त मांस मुनिर शरीरे नाहि पाइ ※ अस्थि चर्म्म सार मात्र शुधु हाड़ खाई
अपूर्व्व इहार मांस दिलेन विधाता ※ कहिलेन राम शुनि ताड़कार कथा
ताम्रवर्ण देखि तोर गाये लोमावली ※ दन्त गोटा देखि येन लोहार शिकलि

---

१ प्रत्यञ्चा २ धनुष ३ राक्षसी ४ सूखे हुए ५ बूढ़े ६ रोम ।

भञ्छन हित, मुख चली पसारे * लखि निसिचरि प्रभु वचन उचारे
केतिक मुनि हनि देस उजारे * तजेउ पंथ तव-त्रास बिचारे
पठवउँ आजु तोहिं यमलोका * कुपित निसिचरी प्रभुहिं विलोका
गर्जति निडर, विकट तन धारी * चली राम तन, शाल उपारी
बालक ! सम्हरु, करौं तव पाना * नभ रव घोर, शाल संधाना
निरखि, राम सर एक चलावा * खण्ड-खण्ड, छिति विटप गिरावा
आयुध[1] विफल, कोप अधिकाई * शिशुपाल-तरु[2] लै पुनि धाई
तौलति कर, तकि प्रभु, रव घोरा * हरि-सर चलेउ दनुजि मुख ओरा
तदपि ताड़का अति रन ठाना * उत प्रभु तजत बान पर बाना
पावस घन जिमि दामिनि नादा * गर्ज तर्ज सर समर विवादा
सुर-वानी सुनि परी अकासा * बिन सर बज्र न दनुजि-विनासा

दो० राम बज्रसर मारि हिय, राकसि कीन अचेत ।
योजन दूरि पचास लौं, गिरी जाय सो खेत ॥ १२५ ॥

आर्त्तनाद करि त्यागेसि प्राना * सुनत दूरि, कौशिक हतज्ञाना
राम, पठयि राछसि यमगेहा * बन्देउ चलि मुनि चरन स-नेहा

वदन व्यादान करि आइलि खाइते * पाठाइब तोरे आजि यमेर घरेते
खाइया मुनुष्य चेड़ी देश कैलि वन * तोर डरे पथे नाहि चले साधुजन
शुनिया रामेर वाक्य कुपिया अन्तरे * निकटे आसिया से विकट मूर्त्ति धरे
रामके खाइते जाय डरे नाहि पारे * शालगाछ उपाड़िल घोर हुहुङ्कारे
शालगाछ उपाड़िया घन दिल पाक * दूर-दूर करिया ताड़का दिल डाक
ताहा देखि रघुनाथ एड़िलेन वाण * वाणाघाते करिलेन गाछ खान-खान
गाछ काटा देखि काँपिया गेल मने * शिशपार गाछ देखि घन-घन टाने
शिशपार गाछ तोले रामे मारिवारे * तार मुख भेदिलेन राम एक शरे
तथापि ताड़िया जाय रामे गिलिवारे * महावीर भय तभू नाहि करे तारे
वाणेर उपरे वाण शब्द ठन्ठनि * वर्षाकाले विद्युतेर येन झनझनि
श्रीरामेरे डाकिया बलेन देवगण * बज्रबाणे ताड़कार बधह जीवन
वज्रबाण एड़े राम जुड़िया धनुके * निर्घात बाजिल बाण ताड़कार बुके
बुके बाण बाजिते हइल अचेतन * ताड़का पड़िल गिया पञ्चाश योजन
डाक विपरीत छाड़ि छाड़िलेक प्राण * शब्द शुनि विश्वामित्र हैल हतज्ञान
पाठाइया ताड़कारे यमेर सदन * मुनिर चरण राम करिल वन्दन

१ अस्त्र २ शीशम का वृक्ष ।

मुनि सचेत, रघुवर उर लाई ※ दुर्जय दनुजि तात जय पाई
विनयेउ राम, कहा बल मोरा? ※ बिन गुरु-कृपा न कारज घोरा
कौशल्या-सुत ! सुनहु अनूपा ※ कस ताड़का? लखिय चलि रूपा
निसिचरि निकट चले धरि धीरा ※ यदपि मृतक, मुनि कम्प शरीरा
मुनि-मन सोच ! भयावह रूपा ※ लखेउ न विकट तासु अनुरूपा
हनि ताड़का, राम दृगकञ्जा ※ चले भूमि जहँ जन्म-प्रभञ्जा[1]
उद्‌गम इत उनचास प्रभञ्जन[2] ※ कुअँर लखहु! कह गाधियनन्दन
पवन-भूमि तजि, पुनि पग डारा ※ गौतमतिय - उपवन विस्तारा
मुनि अदेस, सुनु राजिवलोचन! ※ उपल[3] परसि पग करु अघमोचन[4]
परसन सिला कहहु कस कारन? ※ कौतूहल गुरु करिय निवारन
कौशिक कही पुरातन बाता ※ सिर्जि सहस रूपसी विधाता
तिन छबि एक सवाँरि अहिल्या ※ अतुल रूप जग तासु न तुल्या
रूपरासि सो गौतम-नारी ! ※ दिवस एक, मुनि तप पग धारी
मुनि-प्रिय-शिष्य—इन्द्र, मुनिवेसा ※ मुनि सूने, किय कुटी प्रवेसा

दो० कस अकाल प्रभु आगमन ? प्रश्न अहिल्या कीन ।
छम्मवेस सुरपति उतर, गौतम-तिय सों दीन ॥ १२६ ॥

चेतन पाइया बले गाधिर नन्दन ※ ताड़का मारिला बाछा कौशल्या जीवन
श्रीराम बलेन गुरु कि शक्ति आमार ※ ताड़कारे बधिलाम प्रसादे तोमार
मुनि बलिलेन शुन कौशल्यानन्दन ※ ताड़कारे देखि गिया ताड़का केमन
ताड़कारे देखि मुनि करेन प्रस्थान ※ मरेछे ताड़का तबू मुनि कम्पमान
ताड़कारे देखिया भावेन मुनि मने ※ एमन विकट मूर्ति ना देखि नयने
ताड़कारे मारिया राम राजीवलोचन ※ पवनेर जन्मभूमि करेन गमन
विश्वामित्र कहे देख श्रीरामलक्ष्मण ※ एइ खाने हैल ऊनपञ्चाश पवन
पवनेर जन्मभूमि पश्चात् करिया ※ अहल्यार तपोवने गेलेन चलिया
मुनि बलिलेन राम कमललोचन ※ पाषाण उपरे पद करह अर्पण
शुनिया बलेन राम मुनिर वचन ※ पाषाणेते दिब पद किसेर कारण
मुनि बलिलेन शुन पुरातन कथा ※ सहस्र सुन्दरी सृष्टि करिलेन धाता
सृजिलेन ता सबार रूपेते अहल्या ※ त्रिभुवने छिल ना सौन्दर्य्ये तार तुल्या
करिलेन अहल्याके विवाह गौतम ※ शिष्य गौतमेर इन्द्र अति प्रियतम
एक दिन गौतम गेलेन तपस्याय ※ गौतमेर वेशे इन्द्र प्रवेशे तथाय
अहल्या गौतम ज्ञाने करे सम्भाषण ※ आजके सकाले केन घरे आगमन

---

१ पवन की जन्मभूमि २ उनचास वायु का उत्पत्ति-स्थान ३ पत्थर ४ पापमुक्त।

हिय, तव रूप प्रिये ! अस्मरना[1] ※ मदन-दग्ध! किमि तप-आचरना
गुरु-तिय-रति सुरपति मन डारा ※ सतवन्ती पति-आयसु धारा
छम्म वेस पति—शचिपति संगा ※ विवस अहिल्या-व्रत इमि भंगा
तप-निवृत्त गौतम गृह आये ※ आसन-मान नारि सों पाये
अवसर विन, शृंगार-प्रसंगा ※ प्रिय कस लखत चिह्न तव अंगा?
सुनि ससंक, विनयेउ मुनिनारी ※ स्वयं नाथ करनी-अधिकारी
गिरेउ टूटि नभ गौतम-सीसा ※ सकल कथा सुनि विकल मुनीसा
धरत ध्यान, कौतुक सब जाना ※ पापहेतु - सुरपति, पहिचाना
इन्द्र ! इन्द्र ! मुनि गर्जि पुकारा ※ दबकति[2] पाँव पुरन्दर डारा
अनाहार, धधकत हिय आगी ※ बोलत दुगुन कोप मुनि पागी
नाना शास्त्र ज्ञान तैं लीन्हा ※ गुरु-दक्षिणा तासु भल दीन्हा
गुरु-तिय-धर्म, नीच ! तैं भंगा ※ सठ ! तव होय योनिमय अंगा
पुनि, दिय शाप सुतिय अतिरूपा ※ बसइ तपोबन शिला-सरूपा
विकल चरन धरि रुदन अपारा ※ केहि विधि,नाथ! शाप-निस्तारा?
कातर तिय प्रबोधि अनुरागी ※ अमिट शाप मम सुनु हतभागी

इन्द्र बले तव रूप हइल स्मरण ※ केमने करिब प्रिये तपस्याचरण
मदन दहने दग्ध हय मम हिया ※ निर्व्वाण करह प्रिये आलिङ्गन दिया
पतिव्रता नाहि लङ्घे पतिर वचन ※ तखनि शयनगृहे करिल गमन
गुरुपत्नी बलिया ना करिल विचार ※ धर्म्मलोप करिल वासव अहल्यार
तपस्या करिया मुनि आइलेन घरे ※ अहल्या आसन दिल अति समादरे
गौतम बलेन प्रिये जिज्ञासि तोमारे ※ शृङ्गार लक्षण केन तोमार शरीरे
अहल्या बलेन प्रभु निवेदि तोमारे ※ आपनि करिया कर्म्म दोषह आमारे
ए कथा शुनिया मुनि हेंट कैल तुण्डे ※ आकाश भाङ्गिया पड़े गौतमेर मुण्डे
जानिलेन ध्यानेते गौतम मुनिवर ※ जाति नाश करिल आसिया पुरन्दर
इन्द्र इन्द्र बलिया डाकेन मुनिवर ※ पुँथि काँखे करिया आइल पुरन्दर
दिनान्ते अभुक्त मुनि कुपित अन्तरे ※ द्विगुण ज्वलिया कहिलेन पुरन्दरे
तोके पड़ाइलाम ये आमि शास्त्र नाना ※ एतदिने भाल दिलि गुरुर दक्षिणा
जाति नष्ट कैलि तुइ ओरे पुरन्दर ※ योनिमय होक तोर सर्व्व कलेवर
अहल्या के शापिलेन क्रोधे मुनिवर ※ काननेत तोर तनु हउक प्रस्तर
अहल्या चरणे धरि कहिल तखन ※ कत काले हबे मोर शाप विमोचन
अहल्यारे कातरा देखिया तपोधन ※ कहिलेन मम शाप ना हय खण्डन

---

१ याद आ रहा है   २ भय से पैर दबाते हुए।

दसरथ-गेह जनमि रघुनाथा ❋ याग-क्षेम हित, कौशिक साथा
दो० गमनकाल, मग, चरन-रज, तिन परसत तव सीस ।
लहै मनुज-तन, रुदन तजु, सुमिरु कृपा जगदीस ।। १२७ ।।
लक्ष्मण कहत विनय सुनि लीजै ❋ ब्राह्मणि-सीस, चरन किमि दीजै
कतहुँ न द्विज, प्रस्तर यहि काला ❋ सुनत पदुमदृग राम कृपाला
परसेंउ चरन, सिला तजि रूपा ❋ शापमुक्त तिय भई अनूपा
अमित मोद, गौतम तहँ आये ❋ निरखि अहिल्यहिं सुख अति पाये
बिगत अतीत, मिली पुनि जोरी ❋ प्रभु-अस्तुती करैं कर जोरी
भक्तन हित तरुकल्प अनूपा ! ❋ दयासिन्धु! अगतिन-गति रूपा!
किय निस्तार, युगुल प्रभु-सरना ❋ नमन राम जय रघुपति-चरना
एक भाव मन प्रभु तल्लीना ❋ रचेंउ चरित कृतिवास प्रवीना

श्रीरामचन्द्र द्वारा तीन कोटि राक्षसों का संहार एवं मिथिलागमन

मुनिहिं कहेंउ पुनि राजिवलोचन ❋ भयेंउ इन्द्र किमि शाप-विमोचन
विश्वामित्र कथा इमि बरनी ❋ सहसयोनि-युत वासव[1] करनी
सोचत सुरगन, सुरपति लाजा ❋ किमि निवरैं[2] उपहास-समाजा

जन्मिबेन जबे राम दशरथ घरे ❋ विश्वामित्र लये जाबे यज्ञ राखिबारे
तोमार माथाय पद दिबेन यखन ❋ तखनि हइबे मुक्त ना कर क्रन्दन
इहा शुनि लक्ष्मण वलेन शुन मुनि ❋ केमने दिबेन पद उनि ये ब्राह्मणी
विश्वामित्र कहिलेन शुन रघुवर ❋ ब्राह्मणी नहेन उनि एखन प्रस्तर
ए कथा शुनिया राम कमललोचन ❋ तदुपरे करिलेन चरण अर्पण
ताहाते हइल ताँर शाप विमोचन ❋ आह्लादित शुनिया गौतम तपोधन
अहल्याके देखिया सानन्द महामुनि ❋ पुनर्व्वार करिलेन पुष्पेर छाउनि
दोहे मिलि स्तव करे जुड़ि दुइ कर ❋ भक्तवाञ्छा कल्पतरु दयार सागर
जय-जय रामचन्द्र अगतिर गति ❋ निस्तार दुयेरे प्रभु पदे करि नति
शुन सबे परे भाइ हैया एकमन ❋ आदिकाण्ड गाइल अहल्या - विवरण

श्रीरामचन्द्र कर्त्तृक तिनकोटि राक्षस-वध ओ मिथिलाय गमन

श्रीराम वलेन प्रभु करि निवेदन ❋ केमने हइल मुक्त सहस्रलोचन
मुनि वलिलेन शुन दशरथ सुत ❋ हइलेन वासव सहस्र योनियुत
लज्जायुक्त हइलेन देव पुरन्दर ❋ कि हवे उपाय सब भावेन अमर

---

१ इन्द्र २ निवारण हो ।

अश्वमेध करि पावन यागा ※ अमित नेम-जप-तप अनुरागा
कायाकल्प, चिह्न जे अंगा ※ लोचन सहस भये अेकसंगा
टोली[1] रत इमि कथा-प्रसंगा ※ पहुँची कछुक काल तट-गंगा
पाहन[2] पलटि भई मुनिगृहिनी ※ केवट सुनत लुकायेसि तरनी[3]
कौशिक डपटि लहेउ, कैवर्त्त[4]! ※ आयसु-लंघ, मिलावहुँ गर्त्त[5]

दो० उड़े प्रान, आयेउ निकट, कहेउ कोपि मुनिनाथ ।
सुरसरि पार उतारु मोहिं, युगुल किशोरन साथ ।। १२८ ।।

केवट करुन कथा निज बरनी ※ छिद्र अनेक, जीर्न मम तरनी
उजुर न मुनि आयसु सिर धारौं ※ सबन कंध लै पार उतारौं
कित आनेउ छबि अतुल कुमारा ※ जिन पग छुअत शिला निस्तारा
सुनी कथा सोइ भय-उपजावन ※ इन रज-चरन तरत छुइ पाहन
पद-रज परसि तरुनि[6] भइ तरनी[7] ※ कित निवास ? गृह झुरमुट घरनी[8]
नौका-हरन, हरन सब काहू ※ मुनि कित मम परिवार निबाहू?
जो प्रभु, चरन-धूरि पखराई ※ तौ तरि[9]-परस[10] न भय अधिकाई
केवट-युक्ति विनय-रस पागी ※ अनुमति दीन राम अनुरागी

अश्वमेध करिलेन तखन वासव ※ योनि छिल घुचिया हइल नेत्र सब
एइ रूपे कथा वार्ता कहिते-कहिते ※ तिन जने चलिलेन गङ्गार कूलेते
पाषाण हइल मुक्त कैवर्त्त ता शुने ※ नौकाखानि लइया से पलाइल वने
कैवर्त्तके डाकिया कहेन तपोधन ※ ना आइले भस्म आमि करिब एखन
एत शुनि कैवर्त्तेर उड़िल जीवन ※ आसिया मुनिर काछे दिल दरशन
मुनि बलिलेन बलि कैवर्त्त तोमारे ※ गङ्गाय करह पार ए तिन जनारे
कातर कैवर्त्त कहे करिया विनय ※ नौकाखानि जीर्ण मम शतछिद्रमय
तबे यदि आज्ञा कर मोरे तपोधन ※ स्कन्धे करि करि पार जाह तिनजन
कोथा हैते आनिल ए पुरुष सुन्दर ※ पायेर परशे मुक्त करिल प्रस्तर
ए कथा शुनिया आमि सभय अन्तर ※ चरण धूलिते मुक्त हइल पाथर
नौका मुक्त हय यदि लागि पदधूलि ※ कि दिया पूषिब आमि मम पोष्यगुलि
करिबेक गृहिणी आमाके गालागालि ※ बलिबे मुनिर बोले नौका हाराइलि
यदि बल श्रीरामेर चरण धोयाइ ※ नतुबा लागिले धूला तरणी हाराइ
तरणीते त्वराय करिते आरोहण ※ धोयाइल कैवर्त्त श्रीरामेर चरण

१ मण्डली २ पत्थर ३ नाव ४ केवट ५ धूल में ६ तरुण स्त्री ७ नाव
८ गृहिणी (पत्नी) ९ नाव १० स्पर्श ।

पग पखारि कुअँरन मुनि संगा ※ तरनि चढ़ाय पार किय गंगा
कहेंउ राम यहि सम जग माहीं ※ हे प्रिय लखन! अकिञ्चन नाहीं
परत दीठि शुभ राम कृपाला ※ तरनी कनकमयी तत्काला
सरिता उतरि लखन-श्रीरामा ※ पूछत कत, मुनि! मिथिलाधामा?
चलिय बेगि, मुनि कहत स-नेहा[1] ※ तीन कोस, सुत! अबहिं विदेहा
राम-लखन आगम तप-कानन ※ मुनि-तिय चकित चितै मनभावन
द्वादस वयस पञ्च सिर चोटी ※ कौतुक! हनहिं दनुज त्रयकोटी!
शत-शत पुन्य-पूर्व केहि जागी ? ※जन्मेसि जननि कवन बड़भागी ?

दो० नारी, अच्छत-दूब लै, पुनि-पुनि देयँ असीस ।
अमुर-निकन्दन राम लखि, प्रमुदित सकल मुनीस ।। १२९ ।।

प्रथम दिवस तपवन विश्रामा ※ भोर निवेदन किय श्रीरामा
युगुल बन्धु आये जेहि काजा ※ अनुमति सोइ दीजिय मुनिराजा
सुनहु तात हे रघुकुल-चन्दा ※ रचहिं याग अब द्विज-मुनि-वृन्दा
अब लौं जब-जब याग रचावा ※ ताड़क-सुत शोनित[2] बरसावा
विप्र-स्वभाव न समुचित क्रोधा ※ किये कोप, जप-तप अवरोधा[3]

श्रीराम लक्ष्मण विश्वामित्र एइ तिने ※ पाटनी करिया पार गेल भव जिने
श्रीराम बलेन शुन प्राणेर लक्ष्मण ※ इहार समान नाहि देखि अकिञ्चन
शुभदृष्टे श्रीराम चाहेन तार पाने ※ हइल सुवर्णमयी तरणी तत्क्षणे
हइलेन गङ्गापार श्रीराम लक्ष्मण ※ जिज्ञासेन कत दूरे मिथिला भुवन
मुनि वलिलेन राम चलह सत्वर ※ एखनो मिथिला आछे तिन क्रोशान्तर
पार ह'ये जान राम सहित लक्ष्मण ※ कहित लागिल देखि मुनिपत्नीगण
द्वादश वर्षेर राम शिरे पञ्चझुँटि ※ मारिवेन राक्षस केमने तिन कोटि
कोन भाग्यवती पुत्र धरियाछे गर्भे ※ कत शत पुण्य से ये करियाछे पूर्व्वे
आशीष करेन सवे हाते दूर्व्वाधान ※ मुनिगण आइलेन करिते कल्याण
श्रीरामेरे निरखिया यत मुनिगण ※ आनन्दसागरे मग्न सह तपोधन
से दिन वञ्चिया सुखे श्रीराललक्ष्मण ※ प्रातःकाले मुनिरे करेन निवेदन
ये कार्य्य करिते आइलाम दुइ भाइ ※ सेइ कार्य्ये अनुमति करह गोसाँइ
मुनिरा बलेन शुन श्रीराम लक्ष्मण ※ एखनि करिब यज्ञ सकल ब्राह्मण
आमरा सकले करि यज्ञ आरम्भन ※ रक्तवृष्टि करे दुष्ट ताड़कानन्दन
ना पारि करिते क्रोध आमरा ब्राह्मण ※ यदि क्रोध करि हय धर्म्म उल्लङ्घन

१ नेह-सहित २ रक्त, खून ३ रुकावट ।

यज्ञ-काज अविलंब अरम्भा ※ मुनि-प्रसाद मेटहुँ खल-दम्भा
राम-घोष, तपसी तत्काला ※ लै कुश चले यज्ञ शुचि शाला
कुश-आसन कोउ-कोउ मृगचर्मा ※ पूरुब मुख असीन तपकर्मा
करहिं वेदध्वनि बटु अनुरागी ※ स्वतः मंत्र-बल प्रगटति आगी
गगन धूम्र साकल्य[1] सुवासा ※ निरखि असुरगन किय उपहासा
निसिचर-रहत, न यज्ञ-अचारा ※ तीनि कोटि दल सजि हुंकारा
विपुल सैन मारीच सजावा ※ यज्ञस्थल समीप चढ़ि धावा
सैनन[2] मुनिगन राम चेतावा ※ होहु सचेत, दनुजदल आवा
रघुवर-दीठि जहाँ लौं जाई ※ अगनित असुर अनी छिति छाई
तत्पर लखन-राम धनुबाना ※ खैंचि श्रवन लौं सर संधाना
लिये विटप-पाषान विशाला ※ दानव समर, बदन विकराला

दो० निमिष माहिं रघुबर हने, तीखे बिशिख कराल।
कोटि असुर आहत किये, धनि-धनि दसरथलाल ॥ १३० ॥

जूझे कोटि दनुज रन हेता ※ जुरे कोटि धनुधर पुनि खेता
अति सुतीक्ष्ण सर हीरा-जीरा ※ इन्द्रबान छोड़ति रघुवीरा
पशुपति बान, क्षुरूप-सुरूपा ※ दलति असुर, ध्वनि मारु अनूपा

श्रीराम बलेन प्रभु करि निवेदन ※ अविलम्बे कर यज्ञक्रिया आरम्भन
शुनिया रामेर कथा तपस्वी सकले ※ खोला कुश लइया गेलेन यज्ञस्थले
केह व्याघ्रचर्म्म वैसे केह कुशासने ※ बसिलेन पूर्व्वमुख हइया आसने
लागिलेन वेदपाठ करिते सकले ※ मन्त्रेर प्रभावे अग्नि आपनि से ज्वले
यज्ञेर यतेक धूम उड़ये आकाशे ※ देखिया राक्षसगण मने-मने हासे
जीयन्ते थाकिते मोरा मुनि यज्ञ करे ※ तिन कोटि निशाचर साजिया चल रे
तिन कोटि लइया मारीच निशाचर ※ साजिया आइल तारा यज्ञेर भितर
सङ्केते श्रीरामेरे जानान मुनिगण ※ आसियाछे राक्षसगण कर निरीक्षण
देखिलेन रघुवीर निशाचर गण ※ व्यापियाछे वसुमति ना जाय गणन
श्रीराम लक्ष्मण करे धरि धनुर्ब्बाण ※ आकर्ण पूरिया बाण करेन सन्धान
पादप पाथर लये आइल विस्तर ※ भयङ्कर कलेवर यत निशाचर
कटाक्षेते निक्षेप करेन राम शर ※ ताहात पड़िल एक कोटि निशाचर
एक कोटि पड़े यदि रणेर भितर ※ अन्य कोटि लइया आइल धनुःशर
हीरा बाण जीरा बाण अति खर धार ※ मारये इन्द्रेर बाण कौशल्या-कुमार
क्षुरूपा सुरूपा बाण पशुपत आर ※ राक्षस उपरे पड़े बलि मार-मार

१ हवनहेतु सामग्री २ इशारे से

गर झलमल मणि-माणिक-माला * हनेउ असुर दुइ कोटि कृपाला
देयँ असीस, मुदित मुनिराई * जीतइँ समर राम दोउ भाई
विप्र-वचन सत, कतहुँ न भंगा * युगुल बन्धु खेलत रणरंगा
वरुण, पवन, कालानल पासा * अटल राम सर विविध प्रकासा
मायासर गंधर्व विशेखा * निज दल रिपुन राममय देखा
करहिं परस्पर मारामारी * सुरगन निरखि मोद मन भारी
डोलत धरा राम सर-घाता * तीन कोटि निसिचरन निपाता
सर तीखे तकि राम-सरीरा * मारहिं यातुधान[1] बलबीरा
बरसत सतत[2] दानवी सायक * अनुज सहित विचलित रघुनायक
जर्जर भयेउ गात-रघुबीरा * रुधिर-लालरी श्याम शरीरा
'दनुज-पराभव' 'जय रघुनन्दन'[3] * भाषत सुर-भूसुर जगबन्दन
स्वस्तिबचन-द्विज, बल अति प्रेरा * भिरे कुअँर रन जूझ घनेरा
खचित कान प्रभु बान चलावा * पावस घन जिमि झरी लगावा

दो० अर्द्धचन्द्र सायक कठिन, कौतुक बरनि न जाय ।
हनेउ प्रमुख दुइ सुभट रन, सोइ सर राम चलाय ।। १३१ ।।

दोउ भट प्रमुख निरखि रनपाता * कुपित मरीच ताड़का-ताता

गलाते लम्बित मणिमाणिक्येर काठि * रामबाणे पड़िल राक्षस दुइ कोटि
श्रीरामेरे आशीर्वाद करे मुनिगण * सबे बले जयी होक् श्रीराम लक्ष्मण
ब्राह्मणेर आशीषे ना हय हेन नाइ * मार-मार करिया जुझेन दुइ भाइ
वरुणास्त्र पाश वायुबाण कालानल * एड़िलेन बहु राम समरे अटल
मारिलेन श्रीराम गन्धर्व नामे शर * राममय देखिल सकल निशाचर
आपना आपनि सब काटाकाटि करे * सकल देवता देखि हासये अन्तरे
श्रीराम करेन युद्ध काँपाइया माटि * राम बाणे पड़िल राक्षस तिन कोटि
तिन कोटि पड़े यदि रणेर भितर * रामेर उपरे मारे चोख-चोख शर
निरन्तर बाण मारे निशाचर गण * धरिवेन सहिष्णुता कत दुइ जन
हइलेन जर्ज्जर वाणेते रघुवीर * शोणिते भासिया गेल श्यामल शरीर
आशीर्व्वाद करेन अमर द्विजचय * हउक रामेर जय, राक्षसेर क्षय
ब्राह्मणेर आशीर्व्वादे बाड़िल ये बल * मार-मार करिया गेलेन रणस्थल
आकर्ण पूरिया बाण मारेन राघव * वरिषये वर्षार येमन मेघ सब
अर्द्धचन्द्र विशिखेर कि कहिव कथा * ताहाते काटेन राम दुइ पात्र माथा
दुइ पात्र पड़े यदि रणेर भितर * मारीच रुषिल तबे ताड़का कोङर

१ राक्षस २ लगातार ३ दानवों का नाश हो, राम की जय हो—नारा ।

अलख[1] राम कित? कहँ लघु भ्राता ※ तीन कोटि किन असुर निपाता?
मम सर प्रान ताड़का त्यागे ※ मम कर निधन[2] असुर हतभागे
सुनि हरि-बैन मरीच रिसाना ※ रामहिं सर पर सर संधाना
जिमि बैसाख धूसरित धूरी ※ राम देहँ सठ बानन पूरी
राम न कातर, वीर अपारा ※ बरसहिं सर जिमि जलधर धारा
मायामृग सिय हरन विचारी ※ देवन मीच-मरीच[3] निवारी[4]
बिशिष बज्र मन सुमिर कृपाला ※ प्रस्तुत प्रगटि भयेउ तत्काला
प्रभु सोइ कुलिश-बान संधाना ※ हिय-मरीच तकि हनेउ निसाना
घायल चपकि बज्रसर संगा ※ उड़त यथा परहीन बिहंगा
भरमत दिवस सात अति कातर ※ धरनि लाग जहँ लंक, निसाचर
लंकबास—बहु हिंसाचारा ※ तजेसि अन्त लखि जगत असारा
बालक-रन मम होत निपाता ※ कुधन कुवृत्ति फसत किमि गाता
जटा शीश बल्कल परिधाना[5] ※ सयन-स्वपन रत रघुपति-ध्याना
बटतर[6] तप मरीच मन लावा ※ इतर राम-रट आन न भावा
मिटे बिघिन, किय याग मुनीसा ※ अछत-दूब लै हरिहिं असीसा

राम कोथा गेल कोथा गेल वा लक्ष्मण ※ तिन कोटि राक्षस मारिल कोन जन
श्रीराम बलेन ताड़कार हन्ता जेइ ※ तिन कोटि राक्षस मारिल रणे सेइ
मारीच शुनिया ताहा कुपिल अन्तरे ※ घन-घन बाण मारे रामेर उपरे
रामेर उपरे बाण पड़ितेछे नाना ※ वैशाख मासेते येन पड़ये झञ्झना ?
महाबीर रामचन्द्र ना हय कातर ※ शरवृष्टि करेन येमन जलधर
मारीचेरे रक्षा करे भावि देवगण ※ मारीच मरिले नहे सीतार हरण
बज्रबाण बलि राम करिल स्मरण ※ आसिया से बज्रबाण दिल दरशन
श्रीरामेर बज्रबाण बज्रेर हुड़के ※ निर्घात पड़िल गिया मारीचेर बुके
बुके बाण बाजिया नाटाई येन घुरे ※ डाना-भाङ्गा पाखी येन उड़े जाय धीरे
भ्रमिते-भ्रमिते जाय मारीच कातर ※ सात दिने उत्तरिल लङ्कार भितर
बहु जीव खाइया मारीच लंकावासी ※ विवेक संसार त्यजि हइल संन्यासी
कहे यदि मरिताम बालकेर रणे ※ के करित दस्युवृत्ति कि करित धने?
शिरे जटा परिया वाकल परिधान ※ शयने स्वपने करे राममय ध्यान
वटवृक्ष तले तप कैल आरम्भन ※ राम विना मारीचेर अन्य नाहि मन
हेथा यज्ञ मुनिर करिल समाधान ※ आशीष करेन रामे दिया दुर्व्वाधान

१ छिपे हुए २ नाश ! ३ मारीच की मृत्यु ४ बचा ली ५ वस्त्र
६ बरगद के तले।

दो० यज्ञ-शेष फल-मूल जे, सबन दीन रघुनाथ ।
लखन सहित, निसि तपोवन, सोये करुनानाथ ॥ १३२ ॥

जुरी सभा ऋषिगनन प्रभाता ※ चर्चहिं सकल राम कै बाता
सहज न मनुज, राम अवतारा ※ दसरथ-पुन्य प्रगट तनु धारा
स्वतः यज्ञ-प्रभु[1] याग सम्हारी ※ अब न हेतु भय असुर-सुरारी
हरि जन्मे दानव-बध अर्था ※ सोइ प्रन-जनक निबाह समर्था
रामहिं कौशिक कहेंउ सप्रीता ※ वत्स ! विदेह स्वयंवर-सीता
सिय-पितु प्रन! शिवधनु जे भंगा ※ सुता समर्पित सोइ भट संगा
अगनित भूप निरंतर आई ※ सभय चाप लखि, गये बराई[2]
रघुवर तव बल विपुल प्रतापू ※ मन प्रतीत[3] टूटइ शिवचापू
मुनि-आयसु-उलंघ अपकर्मा ? ※ को समर्थ ? पालन मम धर्मा
सुधा-सने मुनि वचन विनीता ※ चले विप्र, लै राम सप्रीता
धनुधर राम-लखन, चहुँ घेरी ※ टोली चली सन्त-मुनि केरी
अनुमति-राम गाधिसुत पाई ※ खबरि प्रथम चलि जनक जनाई
जनक, सभा मुनि-आगम देखी ※ दिय आसन सन्मानि विसेखी

यज्ञ अवशेषे येइ फलमूल छिल ※ खाइते से सब फल श्रीरामेरे दिल
से रात्रि वञ्चेन राम मुनिर आश्रमे ※ प्रभाते एकत्र हन मुनिगण क्रमे
सभाते वसिया युक्ति करे सर्व्वजन ※ सामान्य मनुष्य नहे राम नारायण
यिनि यज्ञेश्वर यज्ञ राखिलेन तिनि ※ दशरथ पुन्यफले अवतीर्ण इनि
राक्षसेर भय कर कि कारण आर ※ राक्षस वधार्थे हरि स्वयं अवतार
करिलेन येइ पण जनक भूपति ※ राम बिना ताहाते ना हबे अन्ये कृति
विश्वामित्र बलेन शुनह रघुवर ※ मिथिलाते हइबेक सीता-स्वयम्बर
करेछे प्रतिज्ञा एइ जानकीर पिता ※ हरधनु भाङ्गिबे ये तारे दिबे सीता
कत शत भूपति आइसे आर जाय ※ देखिया हरेर धनु सभये पलाय
देखिलाम ये तोमारे वीर वलवान ※ मने बुझि धनुक करिबा दुइखान
श्रीराम वलेन आज्ञा कर ये एखन ※ ताहा करि तव आज्ञा लङ्घे कोन्जन
ए कथा कहेन यदि कौशल्या-नन्दन ※ रामेरे लइया यान सकल ब्राह्मण
हाते धनु करि यान श्रीराम लक्ष्मण ※ आगे पाछे चलिलेन सकल ब्राह्मण
विश्वामित्र बलिलेन शुन रघुवर ※ अग्रेते गमन करि जनकेर घर
ए कथा शुनिया राम बलेन ताँहारे ※ आगे गिया वार्ता देह जनक राजारे
विश्वामित्र देखिया उठिल सर्व्वजन ※ आइस बलिया दिल बसिते आसन

१ यज्ञ के स्वामी २ बचकर निकल गये ३ विश्वास ।

कौशिक कहेउ, जनक तव-धामा ※ आये लखन सहित श्रीरामा
दुर्जय दनुजि ताड़ुका मारी ※ जिन गौतम-तिय शाप निवारी
जासु दरस सद्गति गुह पावा ※ जिन सर असुर त्रिकोटि नसावा
सो० द्वादस वर्ष ललाम, अनुज लखन, अनुपम युगुल।
तव पाहुन[1] सोइ राम, अतुल वीर विक्रम प्रबल ॥ १३३ ॥
राज समाज कथन-मुनि भावा ※ वर सिय जोग विरंचि पठावा
पुरजन सकल दरस हित धाये ※ धरि कर बन्धु[2] अन्ध लौं आये
राम-लखन-दरसन अति नेहा ※ उमड़ेउ नगर, काज तजि गेहा
सीस पञ्चलट केस सँवारे ※ मणि-माणिक-माला उर धारे
राम सहित मुनि जहँ नरनाहू ※ उर विदेहपति अमित उछाहू
सोचत मनहिं, सबन सन्मानी ※ सियवर विधि पठयेउ अब जानी
मुनि-आदेस, लखन-रघुराई ※ रहे जनक ढिग सीस नवाई
तिन मृदुबैन मोद अधिकाई ※ पुलकि भूप दोउ उर लपिटाई
योगी जनक ! ध्यान सब भासा ※ मिथिला जगपति स्वयं प्रकासा
दुर्जय शिवधनु जित आसीना ※ गमन स्वयंवर-थल नृप कीना
घोष कुतूहल प्रन दोहराई ※ सभा-सदस्य ! सुनहु मन लाई

मुनि बलिलेन शुन जनक राजन ※ तव घरे आइलेन श्रीराम-लक्ष्मण
ताड़कारे मारिलेन हेलाय ये जन ※ अहल्यार करिलेन शाप विमोचन
कैवर्त्तके तारिलेन सुकृपा दर्शने ※ तिन कोटि राक्षस मरिल याँर बाणे
सेइ राम द्वादश वत्सर वयःक्रम ※ लक्ष्मण ताँहार भाइ दुइ अनुपम
ए कथा शुनिया सबे राज सभाजन ※ कहिल सीतार वर आइल एखन
आइल समस्त लोक करिते दर्शन ※ बन्धु कर धरिया आइल अन्धजन
सबे बले देखिब लक्ष्मण आर राम ※ मिथिलार सब लोक छाणे गृहकाम
उभ करि वान्धियाछे शिरे पञ्चझुंटि ※ गलाते निर्म्मित मणि माणिक्येर काँठि
विश्वामित्र लइया यान जनकेर घरे ※ अनुव्रजि रामेरे लइल समादरे
उल्लासित कहेन जनक नृपवर ※ आइल सीतार वर एत दिन पर
कौशिक बलेन शुन श्रीराम-लक्ष्मण ※ जनकेर प्रणाम करह दुइजन
गुरुवाक्य अनुसारे श्रीराम-लक्ष्मण ※ करिलेन राजा के उभये सम्भाषण
आलिङ्गन दिलेन जनक दोंहाकारे ※ भासिलेन तखन आनन्द पारावारे
महायोगी जनक जानेन अभिप्राय ※ गोलोक छाड़िया हरि देखि मिथिलाय
धूर्ज्जटि दुर्ज्जय धनु आछे येइ खाने ※ सभा सह गेल सेइ स्वयम्बर स्थाने
हेनकाले जनक बलेन कुतूहले ※ सभाय वसिया कथा शुनेन सकले

१ अतिथि २ साथी का सहारा लेकर।

जो समर्थ शंकरधनु भंगा ※ सिया समर्पन सोइ भट संगा
कमलनयन, सुनि बचन-महीपा ※ गवने प्रभु शिव-चाप समीपा
सखिन सहित सिय चढ़ी अटारी ※ पूछत सोइ छन, कहु अँखियारी[1]!
लखन,सजनि को? कहँ सखि रामा? ※ सियहिं सँकेत[2] बतावइँ भामा
श्याम दूबदल छबि रघुनाथा ※ निरखि, सुरन सिय नावइ माथा

सो० नलिनिविलोचन राम, पुरबइँ वाञ्छित देवगन ।
कतहुँ विरञ्चि न बाम, पुनि-पुनि सुमिरत जानकी ।। १३४ ।।

देवताओं के निकट श्रीसीतादेवी की वर-याचना

छ० कर जोरि युग, मन विकल आतुर, सुरन ध्यावति जानकी ।
करि दासि, पुरवइँ आस, गुणनिधि राम रूपनिधान की ।।
वरुन, सुरपति, काल, सब दिक्पाल, गणपति, अग्नि जे ।
ते भूतनाथ सनाथ करि वर देहिं भगवति गौरिजे ।।
धरन-पालन, करनि-मंगल, जननि-जग माता, शिवा ।
बध-चण्ड-मुण्ड विलोकि निर्भय भजत सुरगन निशि-दिवा ।।

ये जन शिवेर धनु भाङ्गिवारे पारे ※ सीता नामे कन्या आमि समर्पिव ताँरे
ए कथा शुनिया राम कमल-लोचन ※ धनुकेर निकटेते करेन गमन
हेनकाले सीतादेवी सह सखीगण ※ अट्टालिका परे उठि करे निरीक्षण
जानकी बलेन सखि करि निवेदन ※ कोनजन राम वा लक्ष्मण कोनजन
सीतार देखाय सखिगण तुलि हात ※ दूर्व्वादल श्याम ओइ राम रघुनाथ
रामेरे देखिया सीता भाविलेन मने ※ पाछे से विरिञ्चि करे वञ्चित ए धने
देवगणे प्रार्थना करेन सीता मने ※ स्वामी करि देह राम कमललोचने

देवगणेर निकटे सीता देवीर वर-प्रार्थना

कृताञ्जलि सुचिन्तिता, प्रार्थना करेन सीता, शुनह सकल देवगण ।
यदि राम गुणनिधि, स्वामी करि देह विधि, तबे हय कामना पूरण ।।
शुनह देव हुताशन, आर शुन गजानन, शुनह आमार परिहार ।
महेन्द्र, वरुण, काल, शुन सवे दिक्पाल, महादेव करह निस्तार ।।
कात्यायनी भगवती, कर जोड़े करे स्तुति, पति देह राम गुणमणि ।
तुमि शिव, तुमि धाता, सकल देवेर माता, वेदमाता हरेर घरणी ।।
चण्ड, मुण्ड आदि यत, वधिले से कत शत, देवगणे करिला निस्तार ।
श्रीरामेरे पति देह, घुचाओ मनेर मोह, राम विना गति नाहि आर ।।

१ सुलोचनी २ इशारे से ।

मातु-पद प्रणिपात, रघुपति बिन न गति, जीवन वृथा।
पति मिलैं रघुकुलचन्द, आनँददायिनी मेटउ व्यथा॥

कुलिश कठिन धनु टरत न टारे ❋ बल प्रयोग अगनित भट हारे
कोमल कमल राम इत अंगा ❋ पितु-प्रन दारुन, अहह प्रसंगा
सिय-ससपंज[1] सुरन अनुमानी ❋ सुखद प्रबोधि कीन नभबानी
सुमन-सरिस सिवसारँग, सीता ❋ सहज राम-कर भंग प्रतीता
तजहु सोक-भय, जे जगबन्दन ❋ सोइ तव पति रघुपति रघुनन्दन

शिवधनु भंग और श्रीराम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न का विवाह तथा परशुराम-दर्प चूर्ण

धनुमंदिर धनु - धारन हेता ❋ चले जबहिं प्रभु, नृपदल जेता
विस्मित, निरत[2] विविध अनुमाना❋ किमि समर्थ शिशु धनु-संधाना?
कह सौमित्र, नाथ! धरि चापा❋ मेटहु, सभा कुतूहल व्यापा
अनुज-विनय, मुनि-आयसु पाई ❋ बिहँसि, पिनाक[3] साधि रघुराई
सभा विलोकि कहेउ, सुनु भाई ❋ तोरत शिवधनु मन सकुचाई
पुनि प्रतंच धरि, सविनय हेरी ❋ चहेउ कुअँर अनुमति मुनि केरी

कमठ-कठोर धनु, श्रीराम कोमल तनु, केमने तुलिबे शरासन।
कत शत वीरगण, ना पारिल उत्तोलन, दारुण पितार एइ पण॥
सीतार एमन मन, बुझिलेन देवगण आकाशे हइल दैववाणी।
शुन गो जनकसुता, ना हइओ दुःखयुता, स्वामी तव राम गुणमणि॥
फूलेर धनुक प्राय, हेलाय तुलिया ताय, भाङ्गिबेन कौशल्यानन्दन।
देवतागणेर कथा, कभू ना हइबे वृथा, एइ कृत्तिवासेर वचन॥

हरधनु भंग ओ श्रीराम-लक्ष्मण-भरत शत्रुघ्नेर विवाह ओ परशुराम-दर्प चूर्ण

धनुकेर घरे राम गेलेन यखन ❋ धनुक तोलह राम बले सर्व्वजन
यत राजा आछे तारा भाविल अन्तरे ❋ देखिब केमने शिशु धनुर्भङ्गकरे
विस्मित हइया सबे करे निरीक्षण ❋ धनुक तोलह राम बले सर्व्वजन
लक्ष्मण बलेन शुन ज्येष्ठ महाशय ❋ घुचाओ धनुक धरि सबार विस्मय
श्रीराम बलेन शुन गाधिर नन्दन ❋ आज्ञा कर करिब कि धनुक धारण
एतेक बलिया राम सहास्य बदने ❋ धनुक धारण करे, देखे सर्व्वजने
धनुके तुलिया राम बलेन लक्ष्मणे ❋ भाङ्गिब शिवेर धनु भय हय मने
धनुके अर्पिया गुण बलेन मुनिरे ❋ ताहा करि याहा आज्ञा करिबा आमारे

---

१ पशोपेश २ लीन ३ शिवधनुष।

भञ्जि चाप पुरवउ मनकामा * कौतुक सबन देखावउ रामा !
क्षण टंकार—विपुल कोदण्डा * तड़-तड़ निमिष, भयेउ दुइ खण्डा
सभा अचेत, कम्प त्रयलोका * इत विदेह निवरेउ[1] सब सोका
बाजन बजत, बजत सहनाई * चहुँ मिथिला आनन्द बधाई
सबन विदेह निमंत्रन दीन्हा * गर धरि वसन समादर कीन्हा

दो० द्विज-सुमंत्र[2]-गृह राम इत, द्विज-तिय करत बखान ।
रामभातु धनि! जनक ढिग, उत मुनि[3] कीन्ह पयान ।।
मुनि-पद बन्दे जानकी, पूछत पुनि नरनाह ।
सुभ साइति अनुमति चहौं, रघुवर-सिया विवाह ।। १३५ ।।

नृप-प्रस्ताव पाय मुनि धाये * लखन सहित जहँ राम सुहाये
सुनहु तात ! मम मंगल हेतू * करि विवाह पुनि जाहु निकेतू
बहुत काल बीतेउ मुनि-चरनन * आकुल अवसि मातु-पितु-परिजन
तासों अवध चलिय मुनिराई * बात एक मन और समाई
जन्मे सकल अनुज सँग, ताकी[4] * तिन तजि किमि विवाह एकाकी[5]
सुता चारि जहँ, तहँ मन माहीं * चारिउ बंधु ब्याहि घर जाहीं

मुनि बलिलेन राम देखाओ कौतुक * मनोरथ पूर्ण कर भाङ्गिया धनुक
आज्ञा पेये श्रीराम दिलेन गुणे टान * मड़ मड़ शब्दे धनु हैल दुइखान
सभार सकल लोक हाराइल ज्ञान * त्रिभुवन सघने हइल कम्पमान
हइलेन जनक भूपति हरषित * वाद्य बाजे मिथिला नगरे अगणित
गले वस्त्र दिया राजा अति समादरे * निमन्त्रण एके एके सबाकारे करे
सुमन्त्र ब्राह्मण रामे लये गेल घरे * सुमन्त्रेर ब्राह्मणी कौशल्या नाम धरे
कौशल्यार तुल्य केह नाह भाग्यवती * मा मा वलिया यार डाकेन श्रीपति
सुमन्त्र मुनिरे घरे राखिया रामेरे * विश्वामित्र गेलेन से जनकेर पुरे
सीतादेवी वन्दिलेन मुनिर चरन * आनन्दित हइलेन जनक यशोधन
जनक वलेन, प्रभु करि निवेदन * सीतार विवाह जन्य कर शुभ क्षण
ए कथा शुनिया मुनि गाधिर नन्दन * अमनि आइल यथा श्रीरामलक्ष्मण
मुनि बलिलेन, राम एइ आमि चाइ * विवाह करिया घरे जाह दुइ भाइ
श्रीराम कहेन प्रभु निवेदि तोमारे * आमा दोंहे लये चल अयोध्या-नगरे
बहुदिन आसियाछि तोमार सहित * विलम्ब हइले पिता हवेन चिन्तित
चारि भाइ जन्म लइयाछि एक दिने * से सवारे छाड़ि करि विवाह केमने
ए चारि भ्राताके जेइ कन्या दिवे चारि * चारि भाइ विवाह करिव घरे तारि

१ मिट गया २ मिथिला का कोई सुमंत्र ब्राह्मण ३ विश्वामित्र ४ देखकर ५ अकेले ।

वचन राम सुनि उपजेउ त्रासा ॐ मुनि-कपार जिमि टूट अकासा
सुनहु बिदेह! राम प्रतिकूला ॐ बरनत दुसह तपोधन सूला
तजे अवध बीतेउ बहु काला ॐ अवसि तहाँ पितु हाल बेहाला
अनुजन जनम लीन अेक संगा ॐ तिन तजि उचित न वरन-प्रसंगा
सुता चारि तहँ रचिय विवाहू ॐ सुनि मुनि-वचन विकल नरनाहू
शतानन्द प्रोहित सोइ काला ॐ दिय प्रबोध, थिर[1] होहु भुवाला
भ्रात कनिष्ठ कुशध्वज नामा ॐ सुता युगुल गुण-रूप ललामा
दुहिता दुइ रूपसि तव भूपा ॐ सुता चारि इमि अर्पि[2] अनूपा
करौ भूप! जो रघुपति भावा ॐ सुनि प्रमुदित मुनि हाल जनावा
तात! जनक-गृह कन्या चारी ॐ रघुकुल चारि कुअँर अनुहारी[3]

दो० मनचाही दसरथ-सुवन, मनभाई मिथिलेस।
सुता चारि अर्पत, कुअँर! अब न विघिन लवलेस ॥ १३६ ॥

मुनिवर! अबहुँ अेटक[4] सुभकाजू ॐ बन्धु न पितु, किमि मंगल-साजू?

एइ वाक्य निःसरिल श्रीरामेर तुण्डे ॐ आकाश भाङ्गिया पड़े कौशिकेर मुण्डे
दुःखित हइया मुनि गेलेन तखन ॐ जनकेर निकटे दिलेन दरशन
जनक वलेन प्रभु करि निवेदन ॐ सीतार विवाह दिन कर शुभक्षण
विश्वामित्र बलिलेन शुन नरपते ॐ रामेर मनस्थ नहे विवाह करिते
कहिलेन बहुकाल छाड़ियाछि घर ॐ विलम्ब हइले पिता हबेन कातर
ये चारि भायेरे चारि कन्या समर्पिबे ॐ ताँर घरे रामचन्द्र विवाह करिबे
शुनिया भावेन राजा करि हेंट माथा ॐ सीता विना कन्या नाइ आर पाब कोथा
एतेक भाविया राजा विषण्ण बदन ॐ शतानन्द पुरोहित कहिछे तखन
केन राजा हइयाछ विचलित मन ॐ तव घरे चारि कन्या हइबे घटन
तोमार कनिष्ठ भाइ कुशध्वज नाम ॐ ताँर दुइ कन्या आछे रूप गुणधाम
तोमार दुहिता दुइ परमा सुन्दरी ॐ चारि भाये समर्पण कर कन्या चारि
श्रीरामेर ये वासना हबे सेइ मत ॐ ताँहार जानाओ गिया समाचार यत
हरषित हैया मुनि गाधिर कोडर ॐ वार्ता देन गिया तबे रामेर गोचर
शुन राम नाहि देखि इहाते बाधक ॐ चारि भाये चारि कन्या दिबेन जनक
राम बलिलेन प्रभु करि निवेदन ॐ सब भाइ हेथा नाइ करिब केमन
इहाते बाधक आरो आछे मुनिवर ॐ विवाह करिते नारि पितृ अगोचर

१ स्थिर २ अर्पण करके ३ अनुरूप ४ रुकावट।

जो विदेह, मत, मुनि! मन भावै ❊ अवध मनुज चलि पितु लै आवै
विश्वामित्र जनक ढिग जाई ❊ बरनेउ सकल कथन-रघुराई
पठवौ अवध तुरत कोउ पायक[1] ❊ शुचि-उन्नत विचार रघुनायक
रोम-रोम नृप पुलकित अंगा ❊ मन-बच लहरति सुखद तरंगा
मुनिवर! आन[2] न जोग लखाई ❊ लावहु नृपति अवधपुर जाई
गाधितनय हिय अमित उछाहू ❊ चले लेन जस[3] राम-विवाहू
सिद्धाश्रम—जहँ मुनिन समाजू ❊ पूछत भेंटि कुतूहल काजू ?
अजय चाप त्रिपुरारि कठोरा ❊ सुनी अवधसुत छिन महँ तोरा
सिय-कल्याण हेतु सिवसायक ❊ स्वतः[4] टूट, बोले मुनिनायक
सिद्धाश्रम तजि मुनि पग धारा ❊ कछुक काल भे सुरसरि पारा
मुनि पहुँचे जहँ गौतम नारी ❊ शिला परसि पग-रघुवर तारी
बहुरि चले जहँ जन्म प्रभञ्जन ❊ सो तजि पार कीन ताड़कवन
चलि आये पुनि सरयू तीरा ❊ परसेउ गाधि-तनय शुचि नीरा
कहत सुदूर अवध-पुरवासी ❊ दरसत सोइ तपसी बनबासी
राम-लखन गमने जिन साथा ❊ सो किमि आजु बिना रघुनाथा

आमारे विवाह दिते यदि आछे मन ❊ अयोध्याते मनुष्य पाठाओ एकजन
एतेक शुनिया गेल गाधिर नन्दन ❊ कहिलेन जनकेरे सब विवरण
शुनिया भावेन राजा भावे गद गद ❊ वचन मनेर अगोचर ए सम्पद
मुनि बलिलेन शुन जनक राजन ❊ दशरथे आनिते पाठाओ एकजन
राजा बलिलेन, मुनि, करि निवेदन ❊ तोमा भिन्न के जाइवे अयोध्या-भुवन
ए कथा शुनिया मुनि भाविलेन मने ❊ घटक[5] हइया जाइ अयोध्या-भुवने
एइ यश आमार घुषिबे त्रिभुवने ❊ विवाह दिलाम आमि श्रीराम लक्ष्मणे
एतेक भाविया मुनि करिला गमन ❊ सिद्धाश्रमे प्रथमतः दिल दरशन
सुधाय सकल मुनि कि शुनि कौतुक ❊ राम नाकि भाङ्गियाछे हरेर धनुक
मुनि कन करिबारे सीतार कल्याण ❊ शिवधनु आपनि हइला दुइखान
विश्वामित्र सिद्धाश्रम पश्चात् करिया ❊ गङ्गार कूलेते मुनि उत्तरिल गिया
गंगापार हइया चलेन मुनिवर ❊ अहल्या येखाने छिल हइया पाथर
अहल्यार तपोवन पश्चात करिया ❊ पवनेर जन्मभूमि उत्तरिल गिया
पवनेर जन्मभूमि राखि कत दूर ❊ ताड़कार वने जान पाछे सरयूर
करिलेन सरयूर नीर परशन ❊ दूरेते थाकिया देखे अयोध्यार जन
आसिया ये मुनिराज रामे लये गेल ❊ एका मुनि आसितेछे राम ना आइल

१ दूत-प्यादा २ दूसरा ३ यश ४ अपने आप ५ घटक—विवाह तै कराने वाले मध्यस्थ।

दो० खबरि दीन कोउ दसरथहिं, आवत मुनि बिन राम ।
वज्रपात, आकुल, रुदन, कहाँ राम घनश्याम ।। १३७ ।।

कस अकेल? कित मम सुत प्राना? ※ आजु अन्धमुनि-बचन प्रमाना
राम-लखन बिन—जल बिन मीना ※ दै निधि दीनहिं विधि हरि लीना
रच्छन याग, असुर-उत्पाता ※ मेटन हेतु, लीन मम ताता
ते अलोप[1], टूटी सब आसा ※ हरेउ प्रान, मुनि सर्व बिनासा
शावक बिन बाघिन बिकराला ※ बिकल रानि, तहँ गये भुवाला
अन्तःपुर अपार दुख आवा ※ अवध, प्रमाद सकल दिसि छावा
द्वादस वयस नबोढ़[2] किशोरा ※ हतेउ कतहुँ बन निसिचर घोरा
बिलखत भूप, न गात सम्हारी ※ विश्वामित्र कुतूहल भारी
नेही[3] रहे प्रबोधि भुवाला ※ गुरु बशिष्ठ आगम सोइ काला
कौशिक कहौ कुअँर केहि भाँती ※ राम-कुसल कहि जुड़वउ छाती
परेउ न भल-अनभल[4] कछु काना ※ कह मुनि, रुदन अतुल कस ठाना?
कस न, गाधिसुत? अचरज कारन? ※ अलख राम किमि धीरज धारन!
ज्ञान, ध्यान, जीवन घनश्यामा ※ चहुँ तम[5] अवध-भुवन बिन रामा

ए कथा कहिल गिया दशरथ प्रति ※ बज्रपात सम ज्ञान करेन भूपति
कान्दिया बाहिरे आसि अजेर नन्दन ※ रामे ना देखिया कहे कातर वचन
एका ये आइले मुनि राम मोर कोथा ※ हइल प्रत्यक्ष आजि अन्धकेर कथा
कोथा राम कोथा बा लक्ष्मण गुणनिधि ※ दरिद्रेर दिया निधि हरिलेन विधि
यज्ञ रक्षा हेतु ल'ये गेला निजवास ※ छलेते करिले मुनि मम सर्व्वनाश
राक्षस-बधेर हेतु लइया कुमार ※ के जाने बधिबे मुनि पराण आमार
वार्ता पेये आइल राजार यत राणी ※ डम्बुर हाराये येन फुकारे बाघिनी
कौशल्या सुमित्रा राणी हाहाकार करे ※ प्रमाद पड़िल आजि अयोध्या-नगरे
द्वादश वर्षेर राम तेर नाहि पुरे ※ हेन रामे खाइल कि वने निशाचरे
आकुल हइल राजा अजेर कुमार ※ विश्वामित्र भाविलेन ए कि चमत्कार
राजारे बुझाय कत पात्र मित्रगण ※ हेनकाले आइलेन वशिष्ठ ब्राह्मण
वशिष्ठ बलेन कह गाधिर नन्दन ※ रामेर मंगल शुनि जुड़ाक् जीवन
इइ कथा शुनिया कहेन तपोधन ※ भालमन्द न शुनिया कान्द कि कारण
वशिष्ठ बलेन मुनि कह कि आश्चर्य्य ※ रामे ना देखिया कार मने हय धैर्य्य
रामध्यान रामज्ञान राम से जीवन ※ राम बिना अन्धकार अयोध्या भुवन

१ गायब २ नव-उम्र ३ स्नेही पात्र-मित्रगण ४ भला-बुरा ५ अन्धकार ।

लेहिं चरन-मुनि, भूप अधीरा ※ पूछत, कितै लखन रघुबीरा?
कहेउ गाधिसुत, सुनु नरनाथा! ※ विक्रम-सुवन, विरद-रघुनाथा
निसचरि प्रबल ताड़का मारी ※ शाप-रहित किय गौतम नारी

दो० केवट कीन सनाथ, पुनि, दनुज कटक हनि राम ।
पुरये मुनिगन-याग सुचि, पहुँचे मिथिला धाम ॥ १३८ ॥

जहँ धनुभंग जनक प्रन ठाना ※ परसत[1] सोइ हारे नृप नाना
शिवधनु भंजि, राखि प्रन भूपा ※ लहेउ दान सिय राम-सरूपा
सुता चारि तहँ, सुत तव चारी ※ भूपति! चलिय बरात सँवारी
दसरथ सुनि मुद-मंगल-गाथा ※ पुनि-पुनि मुनिपद बंदहिं माथा
सजी बरात अवध सजि आवा ※ लख-लख हय-गज-रथ चहुँ छावा
भरत-रिपुदमन आयसु पाई ※ सबन निमंत्रि, दीन पहुनाई
प्रथम चलेउ रथ मुनिन-समाजू ※ पुनि सुत युगुल सहित नरराजू
तौलौं कहति कौशिला रानी ※ जननि-स्वभाव सुधा सरसानी
राघव-तन किमि हारिद[2]-परसन ※ वर-सरूप सुत-छबि किमि दरसन?
लखन-मातु कह मंजुल बानी ※ अमित उछाह सुधारस-सानी
दीदी! लै रघुवर कर नामा ※ करहु सकल सुचि मंगल कामा

लोटाये पड़ेन राजा मुनि पदतले ※ कोथाय लक्ष्मण कोथा राम एइ बले
विश्वामित्र बलेन शुनह यशोधन ※ पुत्रेर विक्रम कथा करह श्रवण
ताड़कारे मारिलेन कौशल्यानन्दन ※ अहल्या के करिलेन शाप-विमोचन
कैवर्त्तके करिलेन कृतार्थ श्रीराम ※ राक्षस मारिया पूर्ण करिलेन काम
जनक करियाछिल धनुर्भङ्ग पण ※ ताहाते हारिया गेल यत राजगण
शंकरेर धनुक करिया दुइखान ※ लक्ष्मीरूपा कन्या राम पाइलेन दान
चारि कन्या दिबेन जनक चारि भाये ※ चल महाराज शीघ्र दुइ पुत्र लये
ए कथा शुनिया राजा आनन्दे विह्वल ※ प्रणति करेन मुनि - चरण - कमल
अयोध्याते तखन पड़िया गेल साड़ा ※ लक्षलक्ष हस्ती साजे लक्षलक्ष घोड़ा
नाना रूपे रथ साजे अति सुशोभन ※ डाकिया आनिल राजा भरत शत्रुघ्न
त्वरा करि सबारे करिल निमन्त्रण ※ अयोध्यार लोक सब करिल साजन
अग्रे रथे चड़िलेन यतक ब्राह्मण ※ चड़िलेन रथे राजा सह पुत्रगण
बलेन कौशल्या देवी सुमित्रा देवीरे ※ ना पाइ हरिद्रा दिते रामेर शरीरे
सुमित्रा बलेन दिदि केन भाव आर ※ रामेर नामेते करि मङ्गल-आचार

१ छूते ही २ हल्दी लगाना—एक मांगलिक कार्य ।

लख-लख हय-गज-रथ-पद यूथा * चली अनी चतुरंग वरूथा[1]
बिरदभाट, बटु[2] बेदन गावा * उत बिदेह रच रंग, सुहावा
रिधि-सिधि! रमा जनम सिय केरा * मिथिला सुख, धन, धाम घनेरा
मग, सुपेय घृत क्षीर तड़ागा * आतिथि-भाव धारि तन जागा
अतुल राशि पकवान मिठाई * चहुँ बरात हित, भूप सजाई
दो० अवध-सैन सुखदैन मग, ठौर-ठौर जनवास[3]।
असन-बसन-आमोद बहु, सब बिधि बिबिध सुपास[4] ॥ १३६ ॥
रघुकुल-कटक लिये अजनन्दन * सरयू-सलिल परसि किय बन्दन
पुनि अस्नान, अमित करि दाना * सुधा सरिस नृप किय जलपाना
सरिता उतरि अरण्य सोहावा * गाधि-सुवन इमि बचन सुनावा
जहाँ राम ताड़ुका विनासी * सोइ बन बिकट लखौ, गुनरासी
कस ताड़ुका दनुजि विकराला! * लखिय, सोचि पग धरे भुवाला
बिकट बदन परतच्छ निहारी * कौतुक! किमि मृदु राम पछारी[5]
पवन जन्म जहँ भूमि अनूपा * पुनि गौतम-तिय-उपवन; भूपा
पावन दरस, हरत श्रम-पीरा * पहुँचे शुचि सुरसरि के तीरा
जासु तरनि उतरे रघुनाथा * भेंटेउ सोइ निषाद नरनाथा

लक्षलक्ष पदादिक चलिलेक सङ्गे * चक्रवर्ती चलिलेन सैन्य चतुरंगे
रायबार पड़े भाट वेद विप्रगण * मिथिलार एबे किछु शुन विवरण
सीतारूपे लक्ष्मी स्वयं तथाय जन्मिल * मिथिला नगर धने पूर्णित हइल
घृते दुग्धे जनक करिल सरोवर * स्थाने-स्थाने भाण्डार करिल मनोहर
चाल राशिराशि सुमिष्टान्न काँड़िकाँड़ि * स्थाने-स्थाने राखे राजा लक्षलक्ष हाँड़ि
हेथा सैन्यगण लये अजेर नन्दन * सरयू नदीर तीरे दिल दरशन
सरयू नदीते राजा करि स्नान-दान * मिष्टान्न भोजन करे मिष्ट जलपान
त्वरिते सरयू नदी उत्तीर्ण हइया * ताड़कार बनेते प्रवेश करे गिया
कौशिक बलेन शुन अजेर नन्दन * एई बने ताड़का हइल निपातन
शुनिया बलेन राजा अजेर नन्दन * ताड़का देखिब प्रभु सेइ वा केमन
ताड़कार निकटे गेलेन दशरथ * देखेन पड़िया आछे आगुलिया पथ
ताड़का देखिया राजा भाविलेन मने * इहारे बालक राम मारिल केमने
ताड़कार वन राजा पश्चात् करिया * पवनेर जन्मभूमि देखिलेन गिया
पवनेर जन्मभूमि पश्चात् करिया * अहल्यार आश्रमेते उत्तरिल गिया
अहल्यार तपोवन पश्चात् करिया * गंगातीरे उपनीत हइलेन गिया
ये कैवर्त्त श्रीरामेरे पार क'रे छिल * से राजार नाम शुनि नौका साजाइल

१ समूह २ ब्राह्मण ३ बारात के लिए निवास-गृह ४ आराम ५ पछाड़ा।

अवध-कटक तरि[1] साजि उतारा ※ सिद्धाश्रम सुभ दरस[2] निहारा
बन-उपबन, मुनि! लखे ललामा ※ कतक दूर अब मिथिला-धामा
गाधिसुवन कह, सुनहु नरेसा ※ कोस तीनि मारग अवसेसा
मुनि-तिय कहइँ पूर मन-कामा ※ नृप ! निकेत तव जन्मे रामा
चले बहोरि विदेह-समीपा ※ प्रजा-सैन युत, अटे[3] महीपा
बाजन विविध बजत मन मोहा ※ हास-हुलास सकल दिसि सोहा
कौतुक-अस्त्र, खेल, उल्लासा ※ दूत जनक संवाद प्रकासा

दो० धाम जनक, सन्मानि बहु, भेंटि अवधपति लीन ।
समुचित शिष्टाचार पुनि, सविनय अस्तुति कीन ।। १४० ।।

सुत तव चारि, चारि मम बाला ※ लेहु दान, जो दया-भुवाला
बिहँसि अवधपति जनक प्रबोधा ※ बनी बात, कित लेस[4] विरोधा?
जनक बंदि गवने निज धामा ※ दशरथ पठइ, बास जहँ रामा
पितु-आगम लखि, आयसु पाई ※ गहे तात-चरनन लपिटाई
पितु प्रनाम किय लखन, बन्दना ※ भरत-रिपुदमन रघुपति चरना
भरतहिं लखन, लखन रिपुसूदन ※ पद[5]-अनुसार करहिं पद-पूजन

नौकाते हइल पार यत सैन्यगण ※ सिद्धाश्रम-दर्शन करेन यशोधन
भूपति बलेन मुनि निवेदन करि ※ कत दूरे आछे आर मिथिला-नगरी
विश्वामित्र बलेन शुनह नृपवर ※ आछे तार तिन क्रोश मिथिला-नगर
मुनिपत्नी सबे बले राजा पूर्णकाम ※ याँहार औरसे जन्म लइलेन राम
सिद्धाश्रम दशरथ पश्चात् करिया ※ मिथिलार सन्निकटे उत्तरिल गिया
आह्लादित प्रजा सब आरे सैन्यगण ※ नानाजाति अस्त्र खेले बाजाय बाजन
दूत गिया वार्त्ता दिल जनक राजारे ※ अनुव्रजि लह राजा अजेर कुमारे
रथ हैते नामिलेन अयोध्यार पति ※ करिलेन जनक आदरे बहु स्तुति
जनक बलेन राजा यदि कर दया ※ तव चारि पुत्रे देइ चारिटि तनया
दशरथ बलिलेन शुन हे जनक ※ सम्बन्ध हइल ठिक तबे कि बाधक
उभये हइल शिष्टाचार सम्भाषण ※ विदाय लइया राजा करेन गमन
येइ घरे वसिया आछेन रघुवीर ※ सेइ घरे चलिलेन दशरथ धीर
पितार आदेश पाइया हइया बाहिर ※ वन्दिलेन पितृ पदद्वय रघुवीर
लक्ष्मण वन्दिल गिया पितार चरण ※ रामेर चरण वन्दे भरत शत्रुघ्न
लक्ष्मण वन्दिल गिया भरते तखन ※ शत्रुघ्न आसिया वन्दे दोसर लक्ष्मण

---

१ नाव पर २ दृश्य ३ पहुँचे ४ अंश—जरा भी ५ मर्य्याद—छोटाई-बड़ाई ।

मिलहिं सनेह परस्पर चारी ※ तन-मन भूप, मोद लखि भारी
कोसल-दल सुपास बहु भाँती ※ मिथिला, सकल प्रफुल्ल बराती
व्यञ्जन बहु पकवान मिठाई ※ परसइँ, खाइँ, छटा छिति छाई
सोइ अवसर बशिष्ठ, नृपगेहा ※ चलि भेंटे जहँ सभा-विदेहा
उठि सन्मानि कीन मुनि-बन्दन ※ स्वागत, पाद्य, अर्घ्य, अरु आसन
सिय-विवाह सुभ लगन विचारी ※ कहउ, तपोधन ! मंगलकारी
नखत पुनर्वसु कर्कट कन्या ※ अनुपम लगन, महीप! अनन्या[1]
दंपति-सुख, जनि कतहुँ बिछोहा[2] ※ सुनि मुनि-वचन सबन मन मोहा
उतै सुरन सुरपुर मन छोहा[3] ※ जो न होय सिय राम-बिछोहा
तौ बनगमन न बध-दसमाथा ※ देवन मिलि सोचत शचिनाथा[4]

दो० लगन सुकर्कट टरइ जिमि, कीजिय जतन विचारि ।
निरखि मयंक,[5] भरोस करि, बोले इमि असुरारि[6]॥ १४१ ॥

नर्तकि[7]-भेष जनकपुर जाई ※ रचहु रंग, शशि! छबि निखराई
सुध-बुध तजइँ नर्त सब देखी ※ बीतइ कर्कट लगन बिसेखी
इत वशिष्ठ सुभ-लगन विचारी ※ दशरथ-हृदय मोद अति भारी
अभरन विविध भूप बहु साजी ※ अमित भार फल बहुल बिराजी

चारि भ्राता परस्परे करे आलिंगन ※ सुखे पुलकित अंग अजेर नन्दन
घाटेते नामिल केह उतरे वा माठे ※ केह पाक करि खाय सरोवर घाटे
खाओखाओ लओलओ एइमात्र शुनि ※ अन्न व्यञ्जनेते पूर्ण हइल मेदिनी
गेलेन वशिष्ठ मुनि जनकेर घर ※ सभा करि ब'सेछे जनक नृपवर
वशिष्ठे देखिया राजा करे अभ्यर्थन ※ पाद्य अर्घ्य दिल आर बसिते आसन
कहिते लागिल राजा जनक तखन ※ सीतार विवाह लग्न कर शुभक्षण
वशिष्ठ सभार मध्ये ज्योतिष मेलिल ※ पुनर्व्वसु कर्कटेते कन्या लग्न हैल
ताहाते विवाह विधि हइले घटन ※ स्त्री-पुरुषे विच्छेद ना हय कदाचन
सेइ लग्न करिल ये यत बन्धुजन ※ स्वर्गे थाकि युक्ति करे यत देवगण
स्त्री पुरुषे विच्छेद ना हय कालान्तरे ※ केमने मारिबे तबे लंकार ईश्वरे
करह मन्त्रणा एइ बलि सारोद्धार ※ लग्न भ्रष्ट कर गिया श्रीराम सीतार
नर्त्तकी हइया तबे जाओ शशधर ※ नृत्य कर गिया तुमि जनकेर घर
तव नृत्य देखिले भुलिबे सर्व्वजन ※ अतीत हइबे तबे कर्कट लगन
शुभ लग्न करिया वशिष्ठ मुनिवर ※ वार्त्ता गिया दिलेन भूपतिर गोचर
आनन्दित हइलेन अजेर नन्दन ※ आयोजन करिलेन सर्व्व आभरण

---

१ बेजोड़ २ वियोग ३ क्षोभ ४ इन्द्र ५ चन्द्रमा ६ इन्द्र ७ नाचनेवाली ।

खाँड, दूध, दधि, घृत-मधु भारा * सेवक चले लदे तिन थारा
द्विजन सहित, अधिवास[1] विचारी * जनक सभा वशिष्ठ पग धारी
आसन अर्घ्य पाय सन्मानू * लगन-चढ़न मुनि कीन विधानू
दूर्वा - धान मंगलाचारा * लगे होन, दोउ कुल अनुसारा
करइँ बेद-ध्वनि द्विज समुदायी * कनकासन सिय चौक सुहायी
भूषण, वसन, भाल छबि चन्दन * सुभ परिधान करावइँ परिजन
दै जलधार सुता तहँ लाये * खरचि द्रव्य बहु, जनक सोहाये
सिय-अधिवास संपदा सारी * पाय विप्रगन चले सुखारी
पुनि अधिवास-राम-आदेसू * पुलकि वशिष्ठ दीन अवधेसू
चारिउ कुअँर बिना उपवीता[2] * तिन अरंभ भअे काज पुनीता
क्षौर, सनान[3], गंध, कोपीना * मेखल, दण्ड, मंत्र, मुनि दीना
यहि बिधि कुअँर चारि उपवीती * अमित दान दिय भूप सप्रीती

दो० तिन अधिवास, समोद नृप, करहिं स्वकुल अनुरूप ।
बरन विविध अभरन सजे, मंगल मूरति रूप ।। १४२ ।।

नन्दीमुख सराध नृप कीन्हा * अतुल दान पुनि विप्रन दीन्हा

भारे भारे दधि दुग्ध भारे भारे कला * भारे भारे क्षीर घृत शर्करा उज्ज्वला
सन्देशेर भार लये गेल भारिगण * अधिवास करिबारे चलेन ब्राह्मण
सभा करि ब'सेछेन जनक भूपति * सेइखाने गेलेन वशिष्ठ महापति
द्रव्येर यतेक भार एड़िलेक गिया * बसेन वशिष्ठ कुशासन पातिया
घट संस्थापन करे येमन विधान * उपरेते आम्रशाखा नीचे दूर्व्वाधान
वेदध्वनि करिते लागिल ब्राह्मण * सीतारे आनिया दिल नाना आभरण
वसिलेन सीतादेवी सुवर्णेर पाटे * वेदमन्त्रे दिल गन्ध सीतार ललाटे
चारिजनेर अधिवास करिल तखन * वस्त्र पराइल आर नाना आभरण
जलधारा दिया कन्या लइलेक घरे * जनक भूपति सर्व्व द्रव्य व्यय करे
अधिवास द्रव्य लैया चलिल ब्राह्मण * श्रीरामेर अधिवास करे सर्व्वजन
वशिष्ठ वलेन दशरथे सम्बोधिया * चारि तनयेर कर अधिवास क्रिया
राजा बले शुनह वशिष्ठ तपोधन * अयज्ञोपवीत एइ चारिटि नन्दन
क्षौरकर्म्म करालेन चारिटि नन्दने * आर यज्ञोपवीत हइल चारि जने
रामचन्द्र वसिलेन बापेर निकटे * चन्दन दिलेन चारि पुत्रेर ललाटे
चारिजनेर अधिवास करिल राजन * वसन पराये दिल नाना आभरण
नान्दिमुख करिलेन येमन विधान * नान्दीमुख उपलक्ष्ये करिलेन दान

१ हल्दी, तेल, उबटन, गीत आदि, प्रत्येक मांगलिक कार्य के पूर्व होनेवाले टेहले या रस्में, यहाँ पर लग्न चढ़ना २ यज्ञोपवीत ३ स्नान ।

जे ब्राह्मणी, साथ जे दासी ※ निरखि राम अति हृदय हुलासी
माग्रन तैल हरिद्रा उबटन ※ मंगल गीत सहित किय सखियन
पुनि अस्नान कलावा बन्धन ※ कुअँरन-करन[1] सोह सुभ कंकन
निरखि चारि वर छबि अेकसंगा ※ मनहु बिराजत चारि अनंगा
मुक्तावलि उर मंजुल सोहा ※ पाग ललाट अतुल मन मोहा
बाजूबंद मुद्रिका कंकन ※ कुण्डल कान अमित मनरञ्जन
बसन दिव्य आभरन सरीरा ※ भाइन सहित सोह रघुबीरा
सुभ विवाह छत्रिय-कुल रीती ※ सजैं दोल[2], कह भूप सप्रीती
सजे चारि चंदोल सोहावन ※ सोहत कनक-कलश जहँ पावन
चौदिक सुबरन-झालरि परहीं ※ बिच गजमुक्ता झलमल करहीं
चवँर, निसान सुमंगलकारी ※ ठौर-ठौर गंगाजल-झारी[3]
चारि वरन चन्दोल सजीले ※ दसरथ-ठाठ अकथ रोबीले
अभिमत[4] अभरन बहु परिधाना[5] ※ धारि, चढ़े रथ, कर धनुबाना
मन हुलास, सजि चली बराता ※ चारन विरद कीन विख्याता
नाचहिं नर्तक बाजन रोरा ※ ढाक, ढोल, ढप, नभ अति सोरा

सो० बजे बयालिस साज, दोल अरोहन सुतन किय ।
दगड़ दमामे बाज, बीना, बँसुरी माधुरी ।। १४३ ।।

कौशल्या ब्राह्मणी आर यत दासी लैया ※ आनन्द करेन सबे रामेरे देखिया
हरिद्रा माखान चारि वरे कुतूहले ※ अंगेते पिठालि दिल सखीरा सकले
तोला जले स्नान कराइल चारि वरे ※ मंगलसूता बान्धिलेक ताँहादेर करे
मंगल करिया बसिलेन चारिजन ※ देखिया सकले भावे ए चारि मदन
वान्धिल अपूर्व्व पाग मस्तक मण्डले ※ मनोहर मुक्ताहार शोभे वक्षःस्थले
अंगुले अंगुरी करे अंगद बलय ※ कर्णेते कुण्डल दिल शोभा अतिशय
दिव्य वस्त्र परिधान भाइ चारिजन ※ सकल अंगेते दिल नाना आभरण
क्षत्रिय विवाह करे चतुर्द्दोल परे ※ साजाइते चतुर्द्दोल कहे नृपवरे
चारि दिके दिल नाना सुवर्णेर धारा ※ झलमल करे गज मुकतार झारा
गङ्गाजल चामर दिलेक ठाँइ ठाँइ ※ चतुर्द्दोल साजाइल हेन आर नाइ
आपनार सुसाज करेन दशरथ ※ परिधान परिच्छद यत मनोमत
रथोपरि चड़िलेन हाते धनुःशर ※ शुभयात्रा करिलेन सानन्द अन्तर
भाटे रायवार पड़े नाचे नट गण ※ बाजना बाजाय कत ना जाय गणन
दामामा दगड़ बाजे बियाल्लिश बाजना ※ चतुर्द्दोले आरोहण करे चारि जना

१ हाथों में २ चण्डोल, पालकी ३ गंगाजली ४ मनचाहे ५ वस्त्र ।

बजत बाजने पारी-पारी ※ कछु न सुनात कोलाहल भारी
कहुँ असि[1]-ढाल सुभट चमकावैं ※ तुरगसवार[2] कतक शत धावैं
कहुँ सूरमा लिये सर-चापा ※ मस्त! बरात मोद चहुँ व्यापा
नचत चन्द्र! उत जुरी समाजा ※ जनक-सभा रसरंग विराजा
सोइ अवसर कोसलपति आये ※ धाय जनक सन्मानि लेवाये
रेल-पेल दोउ दलन मझारी ※ अभिरत देत परस्पर गारी
सोम-नर्त[3]—मन मुग्ध लोभाना ※ कब कस लगन? सबन बिसराना
सोइ छन राम-लखन तहँ आये ※ शतानन्द इमि बचन सुनाये
'साधिय लगन', न केहु दिय काना ※ मोहित, प्रबल विरञ्चि-विधाना
बीती लगन, होस[4] जनि काहू ※ आये पुनि जहँ विहित विवाहू
कुअँर चारि मण्डप तर आये ※ द्विज-समाज प्रति सीस नवाये
चन्दन चौक राम बैठाई ※ बनितन कृत पैपुजी सोहाई
दूर्वाधान शीश श्रीरामा ※ चरन परसि दधि हुलसहिं बामा
श्रीवर वरन कीन अनुरागी ※ चलीं बहोरि गेह रसपागी
शाखोच्चार घरी पुनि जानी ※ निज-निज उपरोहितन बखानी
शतानन्द किय विनय हुलासा ※ रविकुल करहु बशिष्ठ प्रकासा

ढाक ढोल बाजाइछे डम्फ कोटि कोटि ※ चारि दिके उठिल वीणार झटपटि
कत ठाँइ बाजाइछे जोड़ा जोड़ा सानि ※ काँशि बाँशी यतवाजे संख्या ना जानि
ढालि पाइक जाय से खाँड़ार चिकिमिकि ※ कत शत अश्वारोही कत वा धनुकी
चन्द्रनृत्य करिछेन जनक सभाय ※ हेनकाले दशरथ गेलेन तथाय
अनुव्रजि लइलेन ताँहारे जनक ※ द्वारे ठेलाठेलि करे उभय कटक
प्रथमेते उभयेते हैल ठेलाठेलि ※ ठेलाठेलि हइते हइल गालागालि
चन्द्रनृत्य देखिते भुलिल सर्व्वजन ※ ताहे मग्न, कोथा लग्न, के करे गणन
आगे आइलेन राम पश्चाते लक्ष्मण ※ शतानन्द बले कन्या कर समर्पण
भाल मन्द केह कारो ना शुने वचन ※ अतीत हइल लग्न, सबे बिस्मरण
ल'ये गेल सबाकारे विवाहेर स्थले ※ चारि भाइ बैसे छाया मण्डपेर तले
प्रणाम करेन सबे सकल ब्राह्मणे ※ वरण करिल रामे वसन चन्दने
नारीगण करिलेक वरण विधान ※ पाये दधि दिल आर शिरे दूर्व्वाधान
वरण करिया गेल यत सखीगन ※ दुइ पुरोहित करे कथोपकथन
शतानन्द बलेन वशिष्ठ महाशय ※ सूर्य्यवंश कि प्रकार देह परिचय

---

१ तलवार २ घुड़सवार ३ चन्द्रमा का नाच ४ होश—सुधबुध।

दो० रघुकुल-गुरु दीन्हेउ उत्तर, चन्द्रवंश विस्तारि।
कहहु प्रथम; सुनि तपोधन, बोले सभा निहारि ॥ १४४ ॥

चन्द्रवंश-वर्णन

चन्द्रवंश कर दिव्य प्रकासू ※ कहउँ, श्रवन मंगलमय जासू
उदधि सुरासुर मंथन करनी ※ जासों प्रगट 'रमा' जगजननी
सोइ मंथन जग जनम 'सुधाकर' ※ भूतल 'चन्द्र' नाम छबि-आगर
'बुध' मतिमान चन्द्रसुत जानी ※ तासु 'पुरुरुवा' सुवन बखानी
पुनि 'पुरुकृष्ण' पुरुरुवानन्दन ※ 'शतावर्त्त' तिनकर जगबन्दन
'आर्यावर्त्त' तनय पुनि तासू ※ 'सेपदि' जनम महाशय जासू
'बाण' बहोरि 'रेत' सुत जाही ※ जगत-विदित 'ध्रुव' प्रगटत ताही
तिनके 'स्वर्ग', 'सर्व' सुत-स्वर्गा ※ कीन प्रकास चराचर वर्गा
सर्व-तनय 'हैहय' छबिरूपा ※ अंगज 'अर्जुन' सुभट अनूपा
चिरजीवी तिन सुत 'निमि' धीरा ※ मथेउ सबन मिलि तासु सरीरा
निमि-तन मथन, जनम 'मिथि' पावा ※ मिथिला जिन रमनीक बसावा
(जनक) 'सीरध्वज', 'कुशध्वज' नन्दन ※ मिथि के प्रगट युगुल जगबंदन

वशिष्ठ बलेन मुनि हबे बोझाबुझि ※ कहो देखि तुमि चन्द्रवंशेर कुलजि

चन्द्रवंश-कथन

शतानन्द मुनि बले सभार भितर ※ शुन चन्द्रवंशेर विस्तार मुनिवर
देवासुरे मन्थन करिल सिन्धुनीर ※ ताहे लक्ष्मी जगन्माया हइल बाहिर
सागर मन्थनेते जन्मिल शशधर ※ चन्द्र नाम हइल ताँहार मनोहर
हइल चन्द्रेर पुत्र बुध मतिमान ※ पुरूरवा नामे हैल ताँहार सन्तान
पुरुकृष्ण नामे हैल ताँहार कुमार ※ शतावर्त्त नामे पुत्र विदित संसार
आर्य्यावर्त्त नामे हैल ताँहार तनय ※ सेपदि नामेते ताँर पुत्र महाशय
बाण नामे पुत्र हैल जाने सर्व्वजन ※ रेतनामे ताँर पुत्र अति विचक्षण
ध्रुव नामे ताँर पुत्र विदित भूतले ※ स्वर्ग नामे पुत्र ताँर सर्व्वलोके बले
स्वर्ग भूपतिर पुत्र सर्व्व नाम धर ※ हैहय नामेते ताँर पुत्र मनोहर
हैहयेर नन्दन अर्जुन नाम धरे ※ निमि नामे ताँर पुत्र विदित अमरे
निमिर कीर्तिते व्याप्त सकल संसार ※ निमि नामे ताँहार ये हइल कुमार
सकले मिलिया ताँर मथिल शरीर ※ ताहाते जन्मिल पुत्र मिथि नामे वीर
सेइ बसाइल एइ मिथिला-नगर ※ जनक कुशध्वज हैल ताँहार कोङर

प्रमुदि वशिष्ठ कही, मुनि ज्ञानी! * सुनी चन्द्रकुल धन्य कहानी

सूर्यवंश-वर्णन

भानुवंश बरनउँ मनरंजन * जासु आदि कुलपुरुष निरञ्जन
'शिव' 'विधि' 'हरि' सुविदित तिनरूपा * सुता 'कंदिनी' एक अनूपा
सो किय 'जरत्कारु' मुनि-अर्पन * जरत्कारु कंदिनी समर्पन

सो० तिनकी सुता ललाम, 'भानु' नाम प्रगटी जगत ।
ऋषि 'जमदग्नि' सुधाम, मुनिबामा होइ, गई जहँ ॥ १४५ ॥

तासु गेह मंगल अवतंसा * हरि स्वरूप प्रगटेउ अेक अंसा[1]
सोइ अेक दिवस रेत-बिधि पाई * जन्मेउ सुत 'मरीच' सुखदाई
'कश्यप' सुत-मरीच, जिन व्यापी * 'सूर्य' तासु अति प्रखर प्रतापी
सूर्यवंश 'मनु' जग-विख्याता * तासु 'सुषेन' सूनु[2], सुखदाता
पुनि 'प्रसेन' छिति कीरति पाये * नृप 'युवनाश्व' तनय तिन जाये
'मान्धाता' पुनि तासु बंसधर * तासु भूप 'मुचकुन्द' कीर्तिकर
'धुन्धुमार' आँगन तिन सोहा * 'इला' जासु नन्दन मन मोहा
'शतावर्त्त' क्रम रविकुल आई * 'आर्यावर्त्त' जन्म सुभ पाई

वशिष्ठ बलेन शुनिलाम विवरण * आमि कथा कहि तबे ताहे देह मन

सूर्यवंश-कथन

आदि पुरुषेर नाम हैल निरञ्जन * ब्रह्मा विष्णु महेश्वर पुत्र तिन जन
तिन पुत्र हइल तनया एक जानि * सकले ताँहार नाम राखिल कन्दिनी
जरत्कारु मुनिपुत्र नारद वीणापाणि * ताँहाके विवाह दिल कन्दिनी भगिनी
सबे गीत गाय नारद बाजाय वीणा * ताहाते जन्मिल भानु नामे ताँर कन्या
ताहाके विवाह दिल जमदग्नि वरे * एक अंशे नारायण जन्मिल ताँर घरे
ब्रह्मार काछेते ताँर पड़िलेक वीज * ताहाते जन्मिल पुत्र नामेते मारीच
मारीचेर पुत्र हैल नामेते कश्यप * ताँहार तनय सूर्य्य प्रचण्ड आतप
सूर्य्येर हइल पुत्र मनु नाम ताँर * मनुर नामेते सर्व्व व्यापिल संसार
मनुर हइल पुत्र सुषेण नामेते * प्रसेन ताँहार पुत्र विदित जगते
प्रसेनेर पुत्र युवनाश्व नाम धरे * राजा युवनाश्व हय अयोध्या-नगरे
युवनाश्व राजार कहिब किबा कथा * ताँहार जन्मिल पुत्र नामेते मान्धाता
मान्धातार पुत्र हैल मुचुकुन्द नाम * गुणवान धुन्धुमार ताँर पुत्र नाम
ताँहार हइल पुत्र इला नाम धरे * ताँर पुत्र शतावर्त्त अयोध्या-नगरे

---

१ परशुराम २ पुत्र ।

'भरत' धरा चहुँ यश पुनि छावा ✻ भारत नाम हेतु सोइ पावा
भरत-तनय 'इक्ष्वाकु' धनुर्धर ✻ प्रोहित-पद वशिष्ठ लिय जाकर
पुनि सुमंत्र सारथि जिन स्यन्दन ✻ 'भूधर' सोइ महीप कर नन्दन
भूधर-'खाण्ड', खाण्ड-सुत 'दण्डा' ✻ पुरनारी - हारी बरबण्डा[1]
दण्ड-सुवन 'हारीत' बखाना ✻ तिन 'हरिबीज' प्रबल जग जाना
तनय तासु 'हरिचन्द' प्रतापी ✻ सत्यसंध महिमा जग व्यापी
कौशिक सकल दान जिन अर्पी ✻ काया, कञ्चन हेत समर्पी
चिरशासन पूरन अभिलासा ✻ तासु बंसधर सुत 'रुहिदासा'

दो० 'मृत्युञ्जय' पुनि आगमन, तिन 'त्रिशंकु' तपरूप ।
जिन जनमे 'रुक्मांगद', सील-धर्म-यश-रूप ।। १४६ ।।

द्वादश वर्ष कीन उपवासा ✻ धर्म सुवन तिन 'मरुत' प्रकासा
'अनारण्य' पुनि रविकुल-नाथा ✻ तिन-बध कीन लंक-दसमाथा
'बाहु' अनारण्यक-तन जाता ✻ तिन शिवभक्त 'सगर' बिख्याता
सगर-सूनु 'असमंज' धर्मधर ✻ 'अंशुमान' तिन धर्म-धुरंधर

आर्य्यावर्त्त नामे ताँर हइल नन्दन ✻ भरत ताँहार पुत्र जाने सर्व्वजन
भरत राजार आर कि कव आख्यान ✻ याँर नामे पृथिवीर भारत पुराण
ताँर पुत्र हइल इक्ष्वाकु नरपति ✻ वशिष्ठ पुरोधा याँर सुमन्त्र सारथि
ताँहार भूधर नामे हइल नन्दन ✻ खाण्ड नामे ताँर पुत्र अयोध्या-भूषण
हइल खाण्डेर बेटा दण्ड नाम धरे ✻ से प्रजार कामिनी के बलात्कार करे
ताँर पुत्र हइल हारीत नाम धरे ✻ हरिबीज ताँर पुत्र विदित संसारे
हरिबीज राज्य करे परम आनन्द ✻ हइल ताँहार पुत्र नाम हरिश्चन्द्र
याँर दान लइलेन गाधिर नन्दन ✻ बिकाइया आपनि ये शुधिला काञ्चन
हरिश्चन्द्र राज्य करे पूर्ण अभिलाष ✻ ताँहार हइल पुत्र नाम रुहिदास
से रुहिदासेर पुत्र नाम मृत्युञ्जय ✻ त्रिशंकु ताँहार पुत्र यिनि तपोमय
ताँर पुत्र रुक्माङ्गद अयोध्या निवासी ✻ द्वादश वत्सर काल करे एकादशी
रुक्माङ्गद जन्माइल धार्म्मिक तनय ✻ ताँर पुत्र हइल मरुत महाशय
अनरण्य ताँर बेटा जाने सर्व्वजन ✻ ताँहाके मारिया गेल लङ्कार रावण
हइल ताँहार पुत्र बाहु नृपवर ✻ शिवभक्त पुत्र ताँर हइल सगर
असमञ्ज नामे ताँर हइल नन्दन ✻ ताँर बेटा अंशुमान धर्म्मपरायण
अंशुमान राजा राज्य करिल कौतुके ✻ मरिल ताँहार वंश आर नाहि थाके

1 उद्दण्ड ।

जिनके प्रगट 'भगीरथ' भूपा[१] * जिन-तप सुरसरि बही अनूपा
सुर, नर, असुर—सृष्टि जिन तारी * भागीरथी भुवन विस्तारी
'वितपत' प्रगट बंसधर तासू * अवध-रतन 'विवरन' सुत जासू
पुनि 'अमर्षि', जिन सुवन 'दिलीपा' * तिन-'रघु' प्रबल प्रचण्ड महीपा
साका जिन रघुबंस चलावा * जासु नाम, रविकुल जस पावा
सब विधि 'अज' पितु सम रघुनन्दन * तासु तनय प्रस्तुत जगबंदन
'दसरथ' शौर्य्य-वीर्य्य गुणधामा * धार्मिक लखौ सुवन 'श्रीरामा'
वंशावलि वशिष्ठ जस गाई * प्रोहित सहित सभा मन भाई
गर[२] धरि बसन दसरथहिं पेखी * बिनती करइँ बिदेह बिसेखी
कोशलपति तव सुत बलधारी * शरण, समर्पित तनया चारी
बोले दशरथ, सुनउ विदेहा * सुवन चारि अर्पित तव-नेहा
समधी उभय निरत[३]-संभाषन * सोइ छन बटुरीं[४] सकल सखीगन

दो० विविध भाँति लाईं सकल, भूषन बसन ललाम ।
अस बानक[५] सिय साजिए, मुग्ध होयँ लखि राम ॥ १४७ ॥

आमलकी[६] मलि सिर असनाना * पुनि तन सोह दिव्य परिधाना

भगीरथ ताँर बेटा अयोध्या-नगरे * गङ्गा आनि उद्धारिल देव दैत्य नरे
वितपत नामे ताँर हइल नन्दन * विवर्ण ताँहार पुत्र अयोध्या-भूषण
ताँहार हइल बेटा अमर्षि राजन * दिलीप ताँहार पुत्र जाने सर्व्वजन
दिलीपेर सुत रघु बड़ बलवान * रघुवंश बलि यार वंशेते आख्यान
रघुर तनय अज पितार समान * ताँर पुत्र दशरथ देख विद्यमान
दशरथ राजा शौर्य्यवीर्य्य गुणधाम * ताँर ज्येष्ठ पुत्र एइ धार्म्मिक श्रीराम
एतेक वशिष्ठ मुनि बलिल सबाके * शुनि शतानन्द मुनि हात दिल नाके
गले वस्त्र दिया बले जनक राजन * तव पुत्रे कन्या दिया लइनु शरण
दशरथ बलिलेन जनक राजारे * शरण लइनु दिया ए चारि कुमारे
दुइ राजा उठि तबे कैल सम्भाषण * कन्या आन आन बले यत बन्धुगण
हेन वेश भूषण पराय सखीगण * याहाते मोहित हय श्रीरामेर मन
सखी देय सीतार मस्तके आमलकी * तोलाजले स्नान कराइल चन्द्रमुखी

---

१ पृष्ठ ७२ पर सूर्यवंश के वर्णन में अंशुमान का पुत्र दिलीप, दिलीप के भगीरथ—ऐसा वर्णन है। यहाँ अंशुमान के पुत्र भगीरथ हैं। यह पाठभेद संग्रहकर्ता की भूल है। कदाचित प्रथम विवरण अशुद्ध है। २ गले में पट लपेटकर—विनय-सूचक ३ लीन, तन्मय ४ जमा हुईं ५ सजधज ६ आँवला।

रुचि-रुचि आलिन केस सँवारी ※ लटन लसी वेणी मनहारी
बिन्दी कुंकुम भाल सोहाई ※ जिमि नभ, प्रभा-बालरवि छाई
मुक्ता सहित सोह नकबेसर ※ तन सुवास शुचि सलिल सकेसर
चञ्चल नयन सुकज्जल धारी ※ लोचन लचत मनोज निहारी
झिलमिल हार कण्ठ अति शोभा ※ उर कञ्चुकी जरी[1] मन लोभा
करनफूल कनकावलि न्यारी ※ भुज भुजबन्द छटा अति प्यारी
दोउ कर चूरी शंख बिराजी ※ तापर कञ्चन कंकन साजी
पग-अँगुरिन नूपुर बजनारे ※ प्रचुर बसन-भूषन छबि धारे
कनकचौक छबि जुड़वति छाती ※ चहुँ दिक् दीप्ति जोति-अवहाती[2]
दुहितन सविधि सहचरिन साजी ※ मण्डप-तर पुनि लाइ बिराजी
पुष्पाञ्जलि दै सिय-कर जोरी ※ राम सहित सत भाँवरि फेरी
अवसर, ओट भई जब सखियाँ ※ मिलीं राम-सिय सकुचित अँखियाँ
सलिल-धार दै, राम लेवाई ※ चलीं, कछुक पुनि सिय लै जाई
राखिन जहँ पटनई[3] अँधेरी ※ आली कहैं राम-तन हेरी
'षष्ठी'[4] कर पूजन मन लाई ※ करहु कुअँर इत मंगलदायी

चिरुणीते केश आँचड़िया सखीगण ※ चुल बान्धि पराइल अङ्गे आभरण
कपाले तिलक दिल निर्म्मल सिन्दूर ※ बालसूर्य्य सम तेज देखिते प्रचुर
नाकेते बेसर दिला मुक्ता सहकारे ※ पाटेर आछड़ा दिल सकल शरीरे
चञ्चल नयने किबा कज्जलेर रेखा ※ कामेर कामना येन गुणे जाय देखा
गलाय ताहार दिल हार झिलमिलि ※ बुके पराइया दिल सोनार काँचुलि
उपर हातेते दिल ताड़ स्वर्णमय ※ सुवर्णेर कर्णफुले शोभे कर्णद्वय
दुइ बाहु शङ्खेते शोभित विलक्षण ※ शङ्खेर उपरे साजे सोनार कङ्कण
वसन पराये ताँरे सुन्दर प्रचुर ※ दुइ पाये दिल ताँर बाजन नूपुर
सुवर्ण आसने बसिलेन रूपवती ※ चारिदिके ज्वालि दिल सोहागेर वाति
चारि भगिनीते वेश करि निलक्षण ※ तखन मण्डपे गिया दिल दरशन
पुष्पाञ्जलि दिया सीता नमस्कार करे ※ प्रदक्षिण सातबार करिल रामेरे
अन्त:पट घुचाइल यत बन्धुगण ※ सीता रामे परस्पर हैल दरशन
जलधारा दिया तारा कन्या दिल परे ※ शोयाइल जानकीरे अन्धकार घरे
वरेरे आनिते आज्ञा करे सखीगण ※ आसिया करुन राम षष्ठीर पूजन

---

१ ज़री के काम वाली २ सोहाग-वाती (दीपक) ३ नीची पटी हुई अँधेरी कोठरी ४ षष्ठी माता—कुलदेवी दुर्गा।

दो० चहुँ अँधेर, सिय-पग चहेँउ, देन सखिन हरि-हाथ ।
सिया-सकुच, चुरियन खनक, सजग भये रघुनाथ ॥ १४८ ॥

सिय-कर मञ्जु राम गहि लीन्हा ※ सुसुखिन निरखि ठठोली[1] कीन्हा
कोउ कह सियहिं लीन धरि हाथा ※ कोउ कह पग परसे रघुनाथा
षष्ठी-पूजन, सिय-पग-परसन ※ सो मसखरी[1] विफल भइ बनितन
वर-कन्या आगमन बहोरी ※ रोहिनि-चन्द्र गगन जिमि जोरी
सबिधि सुभग संपन्न बिबाहू ※ कन्यादान दीन नरनाहू
यौतुक[2] अमित दास अरु दासी ※ विविध सुपास दीन सुखरासी
दम्पति लिये, देल जलधारा ※ चलि रनिवास जनक पग धारा
राजा - रानी पाक बनावा ※ दोऊ परसि जेंवनार करावा
सखियन सेज सुहाग सजाई ※ सिया सहित शोभित रघुराई
भरत निवास माण्डवी संगा ※ लखन-उर्मिला रत रसरंगा
श्रुतिकीरति-रिपुसूदन रमना ※ निज-निज वास प्रमोद निमगना
हास-हुलास सुमिथिला-धामा ※ बनिता करैं चुहल[3] तकि रामा
हँसि-हँसि करैं रञ्जना[4] एही ※ तुम न राम, सरवरि[5] बैदेही
रूपसि अतुल सिया, तुम कारे ※ बिहँसि, राम बोलत ढिठियारे[6]

हाते धरि आनाइल रामेरे तखन ※ सीतार हात धरि तोल वले सखीगण
तखन भावेन मने सीता ठाकुरानी ※ पाये हात देन पाछे राम गुणमणि
करिलेन सीता वाम हस्ते शङ्खध्वनि ※ हाते धरि सीतारे तोलेन रघुमणि
स्त्री लोकेरा परिहास करे छल पेये ※ केह बले हाते धरे केह वले पाये
पूर्व्वापर वर-कन्या आइले दुजने ※ रोहिणीर सह चन्द्र येमन गगने
कन्यादान करे राजा विविध प्रकारे ※ पञ्च हरीतकी दिया परिहास करे
बहु दास दासी राजा दिल कन्या वरे ※ जलधारा दिया कन्या वर लैल घरे
राजराणी गिया परे करिल रन्धन ※ वरकन्या दुइ जने करिल भोजन
साजाय वासर घर यत सखीगण ※ राम सीता ताहाते वञ्चेन दुइजन
उर्मिला सहित सुखे वञ्चेन लक्ष्मण ※ माण्डवीर सहित भरत विचक्षण
श्रुतकीर्त्ति सहित आछेन शत्रुघ्न ※ एइरूपे वासरेते वञ्चे चरिजन
सानन्द हइल सब मिथिला भुवन ※ रामके देखिते जाय यत नारीगण
परिहास करे सबे रामेर सहित ※ तुमि ये जानकी पति ए नहे उचित
एइ कथा राम हे तोमाके वलि भाल ※ सीता वड़ सुन्दरी तुमि हे बड़ काल

१ मज़ाक २ दहेज ३ छेड़खानी, मनोरंजन ४ बातें बनाना ५ समान
६ ढीठ वचन ।

अब सहवास सुन्दरी पाई ❋ धन्य होहुँ छबि सों छबि पाई
अति खिसियई[1], सकल हतज्ञाना ❋ मुग्ध, राम-पद तजि मन-प्राना

दो० लखनलाल ढिग गईं पुनि, ठगीं चितइ तिन ओर ।
अनुज न कहुँ घट बन्धु सों, अनुपम रूप-किशोर ।।
लखन गुनी, गर बसन धरि, वनितन दीन लजाय ।
करैं मसखरी राम सन, लखौं सरिस तिन माय ।। १४६ ।।

कोशल-कुअँर चारि छबिखानी ❋ लोचन करहिं सनाथ सयानी
निज अनुरूप कामिनिन पाई ❋ रंग रसाल रमत सब भाई

परशुराम का दर्प-चूर्ण

भोर उदित रविकिरन-समाजा ❋ सभा सपरिजन भूप विराजा
बजत जनक-घर अनँद बधाई ❋ किय बशिष्ठ याचना-बिदाई
कातर जनक, अतुल पितु-मोहा ❋ कहत, दुसह तत्काल बिछोहा[2]
वर्ष एक आयसु पहुनाई ❋ रहैं जनकपुर सिय-रघुराई
बिहँसि प्रबोधि कहेउ अजनन्दन ❋ प्रान छाड़ि तन तुमहिं समर्पन
तौ अरदास[3] करिय स्वीकारू ❋ मम गृह सकल लहैं जेवनारू

हासिया बलेन राम सबार गोचर ❋ सुन्दरीर सहवासे हइब सुन्दर
परिहास करिबे कि हाराइल ज्ञान ❋ श्रीरामेर चरणे मजाय मन प्राण
जेखाने बसिया आछे अनुज लक्ष्मण ❋ सेखाने चलिया जाय यत सखीगण
अग्रज येमन ताँर अनुज लक्ष्मण ❋ भुलिल रामेरे तारा हेरिया लक्ष्मण
गले वस्त्र दिया ब'ले लक्ष्मण गुणमणि ❋ रामे परिहास करे से मोर जननि
लज्जायुक्त हये तबे यत सखीगन ❋ पुनर्व्वार जाय यथा नर नारायन
एइ रूपे चारि स्थाने करि दरशन ❋ मानिल कामिनीगण सफल नयन
चारि भाइ तुल्य चारि लइया सुन्दरी ❋ नाना सुखे कौतुके वञ्चेन विभावरी

परशुरामेर दर्प-चूर्ण

प्रभात हइले रात्रि उदित तपन ❋ सभा करि वसिलेन यत बन्धुगण
बाजिन आनन्द वाद्य जनक भवने ❋ विदाय मागेन गिया वशिष्ठ ब्राह्मणे
जनक बलेन अति हइया कातर ❋ राम सीता राखि जाओ एकटि वत्सर
हासिया बलेन तवे अजेर नन्दन ❋ शरीर लइया जाब राखिया जीवन
बलेन जनक राजा शुन हे वचन ❋ सकले आमार घरे करिबे भोजन

१ लज्जावश संकोच २ वियोग ३ निवेदन ।

दसरथ पुलकि अनुमती दीनी ※ उतै विदेह व्यवस्था कीनी
रानी कुशल रसोई - रंधन ※ एक द्रव्य सों शत-शत व्यञ्जन
करि असनान जनात-बराती ※ परिजन-पुरजन, जाति-बिजाती
पंगत-क्रम[1], पारुस रुचिकारी ※ भोजन लहि सुतृप्त नर-नारी
रामलला जेंवनार बिराजे ※ षटरस, दूध, दही सब साजे
भोजन तदुपरि कीन आचमन ※ सादर पान सुगंधित अर्पन
विगत-निसावत[2] पुनि श्रीरामा ※ मिथिलाधाम कीन विश्रामा
भोर होत नृप लीन बिदाई ※ सजा अवध-दल, आयसु पाई

दो० दान अपरिमित दुखिन दै, दीन अयाचक कीन ।
चारि दोल[3] चढ़ि, चले सब, कुअँर-बधू आसीन ॥ १५० ॥

माथे मौर, दिव्य परिधाना ※ तेज सरूप, सोह धनुबाना
भाइन सहित दूबदल श्यामा ※ चंदोलन अरूढ़ श्रीरामा
मुदित, अवध तन, नृप पग दीना ※ स्यंदन दिव्य वशिष्ठ असीना
सोइ छन चहुँ अपसकुन निहारी ※ द्विजवर! कस विपरीत बयारी[4]
कस होनी? कस विपति-विरोधा? ※ सुनि वशिष्ठ भूपतिहिं प्रबोधा
हे कोशलपति! तव सुत चारी ※ राजत कुशल समुख[5] सुखकारी

भाल-भाल वलिया दिलेन अनुमति ※ आयोजन करिलेन जनक भूपति
राजराणी घरे गिया करेन रन्धन ※ एक अन्न सह आर पञ्चास व्यञ्जन
स्नान करि आसिया सकल प्रजागण ※ आनन्दित हैया सबे करेन भोजन
भोजन करेन राम परम हरिषे ※ दधि दुग्ध दिल राजा भोजन विशेषे
सुतृप्त हइया सवे करे आचमन ※ कर्पूर ताम्वूले करे मुखेर शोधन
से रात्रि थाकेन राम तथा पूर्व्ववत् ※ प्रातःकाले विदाय मागेन दशरथ
राम सीता चतुर्द्दोले करि आरोहण ※ दीन द्विजगणे धन किय वितरण
दिव्य वस्त्र परिधान माथाय टोपर ※ दुर्व्वादलश्याम राम हाते धनुःशर
परे तिन भ्राता चापिलेन चतुर्द्दोले ※ परम आनन्द राजा अयोध्याय चले
दिव्य रथे चड़िलेन वशिष्ठ ब्राह्मण ※ किन्तु चतुर्द्दिके राजा देखे अलक्षण
राजा वलिलेन शुन वशिष्ठ ब्राह्मण ※ चारिदके देखि केन एत अलक्षण
कि जानि केमने हवे विपद घटन ※ वशिष्ठ बलेन शुन अजेर नन्दन
चारि दिके चारि पुत्र देख विद्यमान ※ के करिते पारे तव अशुभ विधान

१ ज्योनार में बैठने की व्यवस्था २ पिछली रात के समान ही ३ वर-वधू योग्य सवारी, पालकी, (डोला शायद इसी का अपभ्रंश है?) ४ उलटी हवा ५ साक्षात्।

का सक तव अपसकुन बिचारे * सुनत, बजे पुनि कटक नगारे
बाजत तुमुल घोष नभ छावा * परशुराम-हिय कंपन आवा
बाजन-रव मिथिलापुर एही * वरन कीन कोउ नृप वैदेही
कवन भूप ? सोचत भृगुराई * जनक व्यस्त इत बागबिदाई[1]
वर-कन्या-विछोह, गर भरहीं * लख-लख चुंब भूप मुख करहीं
कहत, सिया भरि अंक, भुवाला * लली! कीन अब लौं प्रतिपाला
कबौं-कबौं पितुपुरी बिसूरी[2] * सास-ससुर सेइय पगधूरी
कोउ प्रति ईर्षा, राग न द्वेषू * सुख-दुख सम, अदृष्ट[3] संतोषू
सतत स्वामिपद सेइय सीता * करुन, सीख पितु दीन सप्रीता
तब लौं आइ सखी, सहबोली * परिचारिका करुन रस घोली

सो० चली सबन तजि सीय, दरस चन्द्रमुख होय कब?
सकल-दसा दयनीय, सिसकि-सिसकि रोदन करहिं ।। १५१ ।।

जनक बिदा सिय-रघुवर कीना * शत सहस्र धन विप्रन दीना
सोइ अवसर कर कठिन कुठारा *जामदग्न्य[4], 'रहु! रहु!' ललकारा
खड्ग, चर्म[5] तन, सर-कोदण्डा * महा भयानक वेष प्रचण्डा
भीमवेग धावत करि गर्जन * प्रस्तुत रुद्ररूप भृगुनन्दन
गात विकंपित कोसलराई * राम-लखन मुनि चरनन लाई[6]

बाजनार महाशब्द उठिल आकाश * परशुरामेर चित्ते लागिल तरास
मिथिलाते शुनि केन वाद्येर बाजना * सीता के विवाह बुझि करे कोन जना
मने मने युक्ति करे सेथा मुनिवर * हेथा राजा विदाय करेन कन्यावर
लक्ष लक्ष चुम्ब दिया वदन कमले * जनक करिया कोले जानकीरे बले
करिलाम बहु:दुखे तोमारे पालन * बारेक मिथिला बलि करिओ स्मरण
श्वशुर श्वाशुड़ि प्रति राखह सुमति * राग द्वेष असूया ना कर कार प्रति
सुख दु:ख ना भाविओ यआछे कपाले *स्वामीसेवा सीता ना छाड़िओ कोन काले
झियारी बहुड़ी सब आसिया तखन * गलाय धरिया सब जुड़िल क्रन्दन
आमा सबा छाड़िया कि चलिला जानकी* आर कि हइबे देखा सीता चन्द्रमुखी
राम सीता विदाय करिलेन जनक * द्विजेर दिलेन धन सहस्र संख्यक
हेन काले जामदग्न्य हातेते कुठार * रह रह बलिया डाकिछे बार बार
खड्ग चर्म्म धनु:शर शरीरे ग्रथित * भीमवेषे भार्गव हइल उपस्थित
महा-भयानक वेश देखिया मुनिर * दशरथ भूपतिर कम्पित शरीर

१ बारात विदा होने पर, ग्राम की सीमा तक सम्बन्धी को बिदा करने जाने की रस्म २ याद करते हुए ३ भाग्य पर ४ परशुराम ५ मृगचर्म ६ पैरों पर झुकाकर।

सविनय मौन; निरखि सोइ काला ※ परशुराम कह, सुनिय भुआला!
जनक-गेह शिवधनु केहि भंगा ※ को तुम? वरनउ सकल प्रसंगा
मम सुत राम, नाथ! तव दासा ※ सोइ-कर छुवत प्रतञ्च विनासा
अग्निपुञ्ज कोपे भृगुरामा ※ मम समता[1] राखेसि सुत-नामा
परशुराम भूतल मोहिं जानी ※ आन[2] राम किमि नाम बखानी
सो सुनि, नरपति विनय सुनाई ※ छमहु दोस तपसी द्विजराई
रघुनन्दन कह, सुनु अज्ञानी! ※ निपट विप्र-तपसी अनुमानी
बोलत मन्द, अबुझ मम करनी ※ क्षत्रिय-हीन कीन यत[3] धरनी
मम कुठार कृत इकइस बारा ※ बही मही चहुँ शोनित-धारा
कश्यप सौंपि धरा नित दीनी ※ 'तापस द्विज' कहि, ताकर हीनी
मम गुरु-चाप, मूढ़ जोइ भंगा ※ मस्तक-रहित करौं सोइ अंगा

सो० कहेउ भूप, भय मानि, महाबीर विक्रम विपुल!
छमहु सुबालक जानि, तबहिं लखन बोले बचन ॥ १५२ ॥

वीरन विरद-बखान न हेतू ※ सो गावत निज मुख भृगुकेतू
क्षत्रि विनास सराहेउ जो बल ※ सोइ जुग राम-लखन-बिन भूतल
सुनि कटु गिरा-लखन विषसानी ※ भृगुपति कोपि कहेउ इमि बानी

एक हाते रामे धरि अपरे लक्ष्मणे ※ मुनिर चरणे राजा दिल सेइ क्षणे
मुनि बले दशरथ बलि हे तोमारे ※ धनुक भाङ्गिल केबा जनकेर घरे
दशरथ कहेन आमार पुत्र राम ※ गुण दिते धनुके हइल दुइखान
महाकोपे ज्वलिया बलेन भृगुराम ※ मम सम करि राखियाछ पुत्र नाम
आमि त परशुराम विदित भूतले ※ हेन जन आछे के ये राम नाम बले
ए कथा शुनिया राजा बलेन वचन ※ दोष क्षमा कर प्रभु तपस्वी ब्राह्मण
बलेन परशुराम आरक्त नयन ※ तुच्छ ज्ञान कर देखि तपस्वी ब्राह्मण
निःक्षत्रिया भूमि करि तिन-सप्तबार ※ रक्ते नदी बहाइल आमार कुठार
समस्त पृथिवी करि कश्यपेर दान ※ तपस्वी ब्राह्मण बलि कर अपमान
आमार गुरुर धनु भाङ्गिलेक जेइ ※ ताहाके वधिया आजि प्रतिफल देइ
भूपति बलेन भये कम्पित शरीर ※ बालकेर अपराध क्षम महावीर
रुषिया कहेन तबे सुमित्रा-कुमार ※ कथाय कि फल कर वीरेर आचार
क्षत्रिय विनाश तुमि करेछ यखन ※ तखन ना जन्मेछिल श्रीराम लक्ष्मण
एतेक बलिल यदि सुमित्रानन्दन ※ कुपित परशुराम कहेन वचन

---

१ समान २ अन्य व्यक्ति को ३ जितनी भी, समस्त ।

जीरन[1] चाप भञ्जि नहिं पारा * मम धनु-गुन[2] चढ़ये निस्तारा
अस कहि धनुष दीन रघुराई * सिय मन उपज सोच अधिकाई
राम सुयोग[3] एक धनु तोरा * पितु-प्रन राखि बरन किय मोरा
पुनि भृगु आनि धरेउ धनु शूला * सौतिन सरिस किधौं[4] प्रतिकूला
दीन सदर्प चाप भृगुरामा * तासु भार बिनसइँ श्रीरामा
सो हँसि बाम-पानि[5] रघुबीरा * सहज लीन, अति पुलक सरीरा
कौतुक लखहु लखन ! धनुधारी * यहि धनुही गरिमा मुनि भारी
हे मुनिवीर ! धनुष किय अर्पन * तौ सर कीजिय नाथ समर्पन
खोई सुमति, कुमति भृगु छाई * निज-सर दीन पाणि[6]-रघुराई
बल-आहत, मुनि सायक दीना * सर-बिलगत[7] मुनि तेज-विहीना
दै भृगुपति निजकर हरि-अंसा * रहे सहज द्विजकुल-अवतंसा
बोले बचन भानुकुलकेतू * धनु-प्रतंच-धारन कहु हेतू !
जो तव चाप तजै तव सायक * तो मुनि तव पंचत्व-विधायक[8]

दो० हेरि, लखन-मन जानिबे, मन कीन्हेउ भगवंत ।
कहेउ अनुज, प्रत्यंच धरि, कीजिय संसय अंत ॥ १५३ ॥

जीर्ण धनु भाङ्गिया ये देखाइल गुण * आमार धनुके राम देह देखि गुण
एतेक कहिया धनु दिलेन तखन * जानकी भावेन नम्र करिया बदन
एक वार धनुक भाङ्गिया अकस्मात् * करिलेन विवाह आमारे रघुनाथ
आर बार धनुक आनिल भृगुमनि * ना जानि हइबे मोर कतेक सतिनी
धनुखान भृगुराम दिल बड़ दापे * मरे त मरुक राम धनुकेर चापे
धनुक देखिया अति प्रसन्न अन्तरे * हासिया धरेन राम धनु वाम करे
श्रीराम बलेन हे लक्ष्मण धनुर्द्धर * ए धनुर गरिमा करेन मुनिवर
श्रीराम बलेन शुन ओहे वीरवर * धनु यदि दिले तबे देह एक शर
सुबुद्धि परशुरामे कुबुद्धि लागिल * तखनि रामेर हाते शर योगाइल
जेइ श्रीरामेर हाते मुनि शर दिल * आपनार तेज राम सकल हरिल
आपनार तेज राम लइल यखन * हइल मुनिर पुत्र सामान्य ब्राह्मण
श्रीराम बलेन शुन मुनिर नन्दन * धनुकेते गुण दिब किसेर कारण
तोमार धनुके यदि गुण दिते पारि * तोमार धनुकवाणे तोमारे संहारि
लक्ष्मणेरे जिज्ञासा करेन राम शेषे * धनुकेते गुण दिइ मुनिर आदेशे
लक्ष्मण बलेन शुन ज्येष्ठ महाशय * धनुकेते गुण दिया दूर कर भय

१ जीर्ण, पुराना २ धनुष की डोरी ३ संयोग से ४ अथवा ५ बायें हाथ में
६ हाथ में ७ अलग होते ही ८ मृत्यु का हेतु ।

पुलकि सकौतुक, सुनि, रघुराई ※ दिय प्रतंच-भृगुधनुष नवाई
धनुटंकार गगन लौं हाला ※ स्वर्ग देवगन, शेष पताला
त्राहि-त्राहि रघुपति! रघुवीरा! ※ विकल सहसफन थिर न सरीरा
चाप निवारि हरौ उर-शूला ※ सो सुनि लखन कहेउ अनुकूला
करौ तात बासुकि कर त्राना ※ अनुज-बैन बिहँसे भगवाना
चाप उठाय, सबन प्रभु आगे ※ मुनि सों बचन कहन इमि लागे
हे मुनि! बचेउ बिप्रबध-अर्था ※ तदपि मोर सायक अव्यर्था[1]
रोध[2]-पताल, स्वर्ग-अवरोधू ※ कस कीजिय? मुनिवर अनुरोधू
परशुराम-मन उपजेउ ज्ञाना ※ चीन्हेउ दयासिन्धु भगवाना
बिना धर्म-पथ, आन उपाऊ ※ रोधिय स्वर्ग, सुलभ जनि काऊ
सायक तजेउ राम करि क्रोधा ※ भार्गव-स्वर्गपंथ अवरोधा ?
विनयेउ परशुराम श्रीरामा ※ पुनि तप हेतु गये निलधामा
पुलकित मनौ गवा धन पाई ※ दसरथ मन प्रमोद अधिकाई
हे सुत! तात! अंक गहि लीन्हा ※ राम कमल मुख चुम्बन कीन्हा
गुरु सों बचन कहन इमि लागे ※ बाजन अब न प्रयोजन आगे
रामादिक चंदोल सुहाये ※ अवध ओर पुनि भूप सिधाये

ए कथा शुनिया राम हासिया कौतुके ※ धनु नोयाइया गुण दिलेन धनुके
धनुक टङ्कार गिया उठिल गगन ※ पाताले वासुकी काँपे स्वर्गे देवगण
पाताले वासुकी वले देव रघुवीर ※ धनुखान तोल मोर बुक होक स्थिर
लक्ष्मण वलेन शुन अग्रज श्रीराम ※ धनुखान तोल ये वासुकि पाय त्राण
एइ कथा शुनिया हासिया रघुनाथ ※ तुलिलेन सेइ धनु सबार साक्षात्
श्रीराम वलेन शुन मुनिर नन्दन ※ तोमारे ना मारि ब्रह्मबधेर कारण
अव्यर्थ आमार बाण कि हवे एखन ※ स्वर्ग रोध करि किम्बा पाताल भुवन
ये आज्ञा वलिया वले मुनिर नन्दन ※ चिनिलाम तोमारे ये तुमि नारायण
धर्म्मद्वारा स्वर्ग पाय नाहि हय आन ※ स्वर्गपथ रुद्ध कर देव भगवान
एक शर मारिलेन ना करिया क्रोध ※ परशुरामेर करे स्वर्ग-पथ रोध
श्रीरामेर स्तुति करे श्री परशुराम ※ तपस्या करिते मुनि यान नित्यधाम
दशरथ पाइलेन येन हारा धन ※ आनन्दित तेमनि हइल ताँर मन
पुत्र पुत्र वलिया करेन रामे कोले ※ लक्ष लक्ष चुम्ब देन वदन कमले
भूपति वलेन शुन वशिष्ठ ब्राह्मण ※ वाजनाय आर किछु नाहि प्रयोजन
चतुर्द्दोले श्रीराम करेन आरोहण ※ अयोध्याते द्रुतगति करेन गमन

---

१ अचूक २ रुद्ध कर दें—रोक दें।

दो० कटक सहित पहुँचे तबै, सिद्धाश्रम श्रीराम ।
सकल मुनिन-पद बंदि प्रभु, सविनय कीन प्रनाम ॥ १५४ ॥

मुनिवनितन रघुपति-सिय देखी ※ उर अन्तस तिन हर्ष बिसेखी
राम सरिस, सिय सब गुनखानी ※ धन्य पिता, धनि जननि बखानी
आगे चलि सरयू करि पारा ※ नगर अयोध्या नृप पग धारा
शोभा अकथ, अवध-छबि न्यारी ※ प्रमुदित बाल, वृद्ध, नर-नारी
नभ चँदवा छबि देत विताना[1] ※ ध्वजा-पताका रंजित नाना
सुता-कुलबधुन, निज-निज द्वारे ※ घृत प्रदीप दीपहिं सँझियारे
कनककलस, बंदन अमरारी[2] ※ नरियल रंभा[3] सगुन सुपारी
ग्राम प्रदच्छिन करि अजनन्दन ※ नगर समीप बजाये बाजन
कौशल्यादिक तीनिउ रानी ※ परछन बधुन चलीं सुखसानी
चलीं पुरबधू तिन सँग धाई ※ घर-घर पुरी बजत सहनाई
जय-जय ! सुमनवृष्टि सुरवृन्दा ※ नाचैं, उर उल्लास अनन्दा
बहुअन बगल सोबरन-कलसी ※ दै सुभ सबन आतमा हुलसी
हरा-भरा तिन सीस धराई ※ केला खील तहाँ छिटकाई
कुल अनुरूप सुमंगल रीती ※ सबिधि सबै पुरवइँ अति प्रीती

सिद्धाश्रमे श्रीराम दिलेन दरशन ※ प्रणाम करेन सबे मुनिर चरण
मुनिपत्नी आइल श्रीरामे देखिवारे ※ राम सीता देखे तारा हरषि अन्तरे
इँहार जननी धन्या, धन्य एर पिता ※ येमन गुणेर राम तेमनि ए सीता
तथा हैते चलिलेन परम हरिषे ※ उत्तरिल गिया सबे आपनार देशे
अयोध्यार ये शोभा ता वर्णिते ना पारि ※ आनन्द-सागरे मग्न बाल वृद्ध नारी
नाना वर्ण पताका उड़िछे नाना-स्थल ※ उपरे चाँदोया शोभे गगन मण्डल
कुलबधू आर यत प्रजार कुमारी ※ घृतेर प्रदीप ज्वाले द्वारे सारि सारि
सुवर्णेर पूर्ण कुम्भे दिल आम्रसार ※ गुवाक कदली नारीकेल राखे आर
ग्राम प्रदक्षिण करे अजेर नन्दन ※ ग्रामेर निकटे गिया वाजाय बाजन
कौशल्या कैकेयी आर सुमित्रा रमणी ※ चारिवधू आनिते चलिल तिन राणी
सङ्गेते चलिल रङ्गे पुरवासी नारी ※ सानन्द सकल पुरी वाजे तुरी भेरी
देवगण वरिषण करे पुष्पराशि ※ जय दिया नाचे सबे आनन्द उल्लासि
चारि वधू कक्षे दिल सुवर्ण कलसी ※ व्यवहार मत कर्म्म करे पुरवासी
कक्षे दिल कलसी मस्तके दिल डाला ※ छड़ाइया फेले सेइ खाने खइ कला

१ तम्बू २ आम के पत्तों की बन्दनवार ३ केला ।

सुभ साइति, रानिन मुँह देखा * चन्द्रमुखिन लखि जूड़[1] विसेखा
अभरन, बसन, रतनमय भूषन * नाना यौतुक[2] दीन सर्वजन

दो० यौतुक रघपति लहेउ जो, अतुलित विविध प्रकार ।
तासों परिपूरन भयेउ, अमित राम-भण्डार ।।
लहेउ सिया यौतुक यतक, निरखि रमा[3] सकुचाय ।
चारि कुअँर उत परसि पग, जननिन बन्देउ जाय ।।
रानिन दीन असीस बहु, धन सुत, आयु बखानि ।
सुतन लिये दसरथ अवध, मगन पाय सुखखानि ।।
सुख संपति सासन सकल, सुरपुर-स्वर्ग समान ।
सलिल सरिस कृतिवास इमि, ललित कीन हरिगान ।।
आदिकाण्ड गाथा परम, पावन इतै विराम ।
रचौं अयोध्याकाण्ड पुनि, बन्दि सियावर राम ।। १५५ ।।

।। आदिकाण्ड समाप्त ।।

वधूमुख शुभक्षणे राणीरा देखिल * निरखिया चन्द्रमुख बुक जुड़ाइल
नाना विधि यौतुक दिलेन सर्व्वजन * मणिमय आभरण वसन भूषण
यौतुकेते पान राम यत अलङ्कार * ताहाते हइल पूर्ण ताँहार भाण्डार
पाइलेन सीतादेवी यतेक यौतुक * निजे लक्ष्मी तिनि ताँर ए नहे कौतुक
श्रीराम लक्ष्मण आर भरत शत्रुघ्न * वन्दिलेन गिया सबे मायेर चरण
चारि पुत्रे आशीर्व्वाद करे राणीगण * चिरजीवी हओ पाओ बहु पुत्र धन
चारि पुत्र ल'ये राजा सुखी बहुतर * सुखे राज्य करे येन स्वर्गे पुरन्दर
कृत्तिवास रचे गीत अमृत - समान * एत दूरे आदिकाण्ड हैल समाधान

।। आदिकाण्ड समाप्त ।।

१ शीतल २ दहेज ३ लक्ष्मी ।

* श्रीगणेशाय नम: *

अयोध्या काण्ड

श्लोक—वामांके च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके,
भाले वालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट् ।
सोऽयं भूतिविभूषण: सुरवर: सर्व्वाधिप: सर्व्वदा,
सर्व्व: सर्व्वगत: शिव: शशिनिभ: श्रीशंकर: पातु माम् ।। १ ।।
प्रसन्नतां यो न गतोऽभिषेकतस्तथा न मम्लौ वनवासदु:खत: ।
मुखाम्बुजं श्रीरघुनन्दनस्य मे सदास्तु तन्मञ्जुलमंगलप्रदम् ।। २ ।।
नीलम्बुजश्यामलकोमलांगम् सीतासमारोपितवामभागम् ।
पाणौ महाशायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ।। ३ ।।

दो० आदिकाण्ड स्वागत निरखि, हिय न समात हुलास ।
अवधकाण्ड प्रस्तुत करहुँ, ज्यों बरनेउ कृतिवास ।।

श्रीरामचन्द्र के राजा होने का प्रस्ताव

अथ शुचि काण्ड-अयोध्या श्रवणम् * कैकयि-वचन राम-वनगमनम्
विमलासन पट निर्मल भूपा * वृद्ध, धवल छबि केश अनूपा
सिंहासन दसरथ जहँ सोहा * भूपन जुरि मधुबैनन मोहा
राम-बिवाह, देहिं नजराना * हय, गज, रतन, आभरन नाना
जोरि जुगुल कर, नावहिं माथा * धन्य ! धन्य ! दसरथ नरनाथा
हे नृप-मुकुट ! विनय सुनि लीजै * उचित, रामपद रामहिं दीजै

श्रीरामचन्द्रेर राजा हइवार प्रस्ताव

द्वितीय अयोध्याकाण्ड शुन सर्व्वजन * कैकेयीर वाक्ये राम जाइबेन बन
वृद्ध राजा दशरथ, शिरे शुभ्रकेश * आसन वसन शुभ्र, शुभ्र सर्व्ववेश
राजत्व करेन राजा बसि सिंहासने * आइल सकल राजा राज-सम्भाषणे
हस्ती अश्व नाना रत्न नाना आभरण * विवाह-यौतुक रामे देन राजगण
नमस्कार करि बले जोड़ करि हाथ * महाराज दशरथ तुमि लोकनाथ
एक निवेदन करि शुन नृपवर * श्रीरामेरे राजा कर सर्व्व गुणाकर

बारी वयस, जासु भय पाई ॥ चलेउ दनुज मारीच बराई
त्रिभुवन, अतुल वीर गुनसागर ॥ लखि तिन नृप! सुख लहै चराचर
सुनि सिख, उर न अनन्द समाई ॥ सो दबाय, नृप करि चतुराई
रूखे रुख भूपति इमि भाषा ॥ 'रामहिं राजु' सबन अभिलाषा
खल दलि[1], प्रजा सुवन सम तोषा ॥ वृद्धहिं राज-हरन केहि दोषा?
अन्तस[2] मोद, प्रकट अति कोपा ॥ लखि, भूपन हिय-धीरज लोपा
तिन-भय बिहँसि, भूप समुझावा ॥ लखि मसखरी[3], नृपन बल आवा
तजि भय, लेहु बशिष्ठ बुलाई ॥ 'रामहिं-राजु' सबन सुखदाई
आयसु सुनि, उर अमित अनन्दा ॥ दसरथ-पद बन्दत नृप-वृन्दा
सुहृदन टेरि, कहेउ नृप वचना ॥ राम-तिलक शुभ कीजिय रचना

दो० फूले विविध प्रसून, छबि, चहुँ बसन्त मधुमास।
भोर होत रघुबर-तिलक, आजु साज अधिवास ॥ १ ॥

सोइ-हित, सकल दृव्य यहिलागे[4] ॥ लाय, सँजूति, धरहु गुरु-आगे
स्यन्दन बेगि, सुमन्त्र ! सजाई ॥ आनहु मम गोचर रघुराई
सारथि धाय चलेउ सोइ काला ॥ आनेउ राम, जहाँ महिपाला

बालक श्रीराम चुले पञ्चझुँटि धरे ॥ मारीच राक्षस पलाइल याँर डरे
रामतुल्य वीर आर नाहि त्रिभुवने ॥ राम राजा हइले सानन्द सर्व्वजने
अन्तरे सानन्द राजा शुनिया वचन ॥ वाक्यच्छले सवार बुझेन राजा मन
श्रीराम हइले राजा सबार सन्तोष ॥ आमि वृद्धकाले करिलाम किवा दोष
पुत्रवत् पालि प्रजा, करि दुष्टे दण्ड ॥ कोनदोषे आमार घुचाओ राजदण्ड
आनन्दित अन्तरे, वाहिरे उष्ठ चापे ॥ भूपतिर कोप देखि सर्व्वराजा काँपे
सवारे सभय देखि दशरथ कय ॥ परिहास करिलाम, ना करिह भय
वशिष्ठेरे डाकि आनि कुलपुरोहित ॥ रामे राजा कर सवे ह'ये हरषित
भूपतिर अनुज्ञा पाइया सर्व्वजन ॥ करिल सकले ताँर चरण वन्दन
भूपति वलेन शुन पात्रमित्रगण ॥ रामे राजा करिव, करह आयोजन
नानापुष्प - विकाश वसन्त चैत्रमास ॥ कालि राजा हवे राम, आजि अधिवास
अधिवास करिते यतेक द्रव्य लागे ॥ से सकल द्रव्य आहरण कर आगे
श्रीरामेर अधिवासे यत द्रव्य चाइ ॥ से सकल आनि देह वशिष्ठेर ठाँइ
सुमन्त्र सारथि, तुमि चलह सत्वर ॥ रथे करि आन रामे आमार गोचर
आज्ञामात्र सुमंत्र चलिल शीघ्रगति ॥ श्रीरामेरे आनिल जेखाने महीपति

१ दमन करके २ मन में ३ मज़ाक ४ इसी समय।

रथ तजि दूरि, उतरि भुइँ आये * बन्दि चरन-पितु सीस नवाये
दै असीस, रघुबरहिं महीपा * बैठारेउ हिय-हरषि समीपा
सिंहासन सुत-पितु छबि पाये * सचिव-सभासद सकल सुहाये
तारावलि बिच पूनमचन्दा * सो छबि सभा सच्चिदानन्दा
सुवनहिं संसद-समुख सिखावा * विविध नीति-नृपधर्म बुझावा
प्रथमरानि-सुत तुम युवराजू * पालहु प्रजा, सम्हारहु काजू
सुनि अरदास[1], सबन हित धारी * सासन सदा भुवन जसकारी
राजनीति - पटु धर्मधुरीना * नित्य कीर्ति, सुत! लहहु नवीना
यदपि परम रूपसि परनारी * तदपि तासु तन दीठि[2] न डारी
बिलसति जो परबधू नरेसू * बिनसति स्वयं, बिनासति देसू
पर-पीड़न, पर-हिंसाचारा * कबहुँ न पर-धन-हरन विचारा
सरनागत-रिपु अभय प्रमाना * विन अपराध हरन जनि प्राना
पूजि देव-द्विज पालहु धर्मा * जप-तप-यज्ञ विहित शुभकर्मा

दो० नित इन-सुफल सुहावनी, कीरति लहहु ललाम।
सज्जन-चित, सब-जनन प्रति, दया राखि, हे राम! ॥ २ ॥

दुखदायी नर रत-परनारी * करनी सरिस दण्ड अधिकारी

कतदूरे रथ हैते नामिलेन राम * पितार चरणे पड़ि करिल प्रणाम
आशीर्व्वाद करिलेन राजा श्रीरामेरे * सिंहासने बसालेन हरिष अन्तरे
पिता-पुत्र बसिलेन सिंहासनोपरे * पात्र मित्र सकले वेष्टित नृपवरे
नक्षत्र-वेष्टित येन पूर्ण शशधर * सेइमत शोभित हइल रघुवर
पुत्रेरे शिखान पिता सभा-विद्यमान * राजनीति धर्म्म आर विविध विधान
प्रथमा रानीर तुमि प्रथम नन्दन * भूपति हइया कर प्रजार पालन
लोकेर आद्दाश तुमि शुनिबे जतने * तोमार महिमा जेन सर्व्वत्र बाखाने
राजनीति-धर्म्म तुमि शिख सावधाने * याहाते महिमा तव बाड़े दिने दिने
देखह परेर यदि परम सुन्दरी * ना देखिह से सबारे ऊर्द्धदृष्टि करि
राजा यदि परदार करे व्यवहार * आपनि से मजे पापे, मजाय संसार
राजा ह'ये पीड़ा दिले हय महापाप * परलोके नरकेते पाय महाताप
परहिंसा परपीड़ा ना करिह मने * कभू ना करिह राम लोभ परधने
शरण लइले शत्रु कर परित्राण * अपराध बिना कारो ना लइओ प्राण
तप-जप धर्म-कर्म्म करिबे बिहित * ना हइओ देव द्विज-भक्तिते रहित
यज्ञादिते बहु यश करिबे सञ्चय * सर्व्वजने दयालु हइओ सदाशय
परदार परपीड़ा करे जेइ जन * शास्त्र अनुसारे तारे करिबे शासन

---

१ फ़र्याद, नालिश २ दृष्टि।

लखि अपराध, दण्ड सुविचारा ❊ नृपहिं न दोष शास्त्र अनुसारा
दुखियन दया, सनेह अनाथा ❊ सरिस न पुन्य अन्य रघुनाथा!
गुरु-द्विज-देव भक्ति परितोषू ❊ रत सब-हित, कहुँ दुःख न रोषू
धर्म-नीति-सिख भूप बखानी ❊ इत, हिय मुदित कौशलारानी
सुत-कल्यान हेतु बहु दाना ❊ अन्न-वस्त्र-धन वितरन नाना
विप्र, ब्रह्मचारी, मुनि, चारन ❊ सबन विविध सन्मान सुहावन
जेते लोक रानि जँह पाये ❊ दियेउ बुलाय दान मनभाये
जमघट-सबन; जहाँ नरनाहा ❊ रामतिलक सुनि भाग सराहा
कोउ गावत, कोउ नृत्य-विभोरा ❊ 'क्लेश न रामराज', चहुँ सोरा[1]
राम-दरस हित, हुलसत आये ❊ तिन सब अवध मान-सुख पाये
मातु-दरस हित, जननी-धामा ❊ चले ललकि हिय पुनि श्रीरामा

श्रीरामराज्याभिषेक का अधिवास

गत सुखरैनि अरुन-छबि छाई ❊ पितुढिग मुदित चले रघुराई
भक्तिभाव बन्दॆउ पितु-चरना ❊ दशरथ-मुख पुनि आशिष-वचना

अपराध-मत दण्ड क'रो सावधाने ❊ दोष नाहि राजार से शास्त्रेर विधाने
दुःखित अनाथ राम, यदि केह हय ❊ ताहारे पालिले पुण्य, सर्व्व शास्त्रे कय
देव - गुरु - ब्राह्मणे तुषिवे भक्तिमने ❊ देख, सर्व्वजन येन दुःख नाहि जाने
राजनीति-धर्म्मराजा शिखान रामेरे ❊ शुनिया कौशल्या रानी हरिष अन्तरे
रामेर कल्याणे रानी करे नानादान ❊ स्वर्ण-रौप्य अन्न-वस्त्र सहस्र प्रमाण
मुनि ब्रह्मचारी यत भट्ट-विप्रगण ❊ सवाकारे देन रानी नानाविध धन
यत-यत लोक आछे यत-यत स्थाने ❊ सबारे आनिया रानी तोषे नानाधने
आइल यतेक लोक राज-विद्यमाने ❊ रामचन्द्र राजा हबे, शुनि भाग्य माने
केह नाचे केह गाय आनन्द विशेष ❊ राम राजा हइले ना हबे कारो क्लेश
यत यत लोग आछे अयोध्या नगरे ❊ रामेर निकटे जाय हरिष अन्तरे
सकलेर समादर करिया समान ❊ जननी - दर्शने राम करेन पयान
मातृगृहे उपस्थित मने कुतूहली ❊ अयोध्याकाण्डेते गान प्रथम शिकलि

श्रीरामेर राज्याभिषेके उद्योग ओ अधिवास

सुखेते वञ्चिया रात्रि उदित अरुणे ❊ आनन्दे गेलेन राम पितृ-सम्भाषणे
भक्तिभरे पितार बन्देन श्रीचरण ❊ रामेरे कहिल राजा शुभाशीर्व्वचन

---

1 शोर, कुलाहल।

लीन बिठाय सिँहासन भूपा ※ दोउ-हिय हर्ष-उमंग अनूपा
दशरथ कहेउ, ध्यान, सुत! दीजै ※ धर्म-कर्म चित दै, सुनि लीजै

दो० यज्ञ-श्राद्ध-तर्पन विहित, देव-पितर-ऋन हेत।
छत्र धारि, पुनि प्रजागन, पालहु नेह समेत ॥ ३ ॥

सुफल यज्ञ, तुम सम सुत पाये ※ राजनीति, नृपधर्म निभाये
जीवन साँझ, वृद्ध मम गाता ※ कखन[1] मरन? कहि जात न ताता
तुमहिं राजपद देन सुहावा ※ पालहु प्रजा, मनहिं अति भावा
आजु घरी, सासन तव माथा ※ करहु दमन-रिपु, मित्र-सनाथा
पै, निसि सपन लखेउँ उतपाता ※ उदित धूम[2] नभ उल्कापाता
पूनम चन्द-ग्रहण जगरीती ※ अमा-ग्रास-ससि[3], कस विपरीती?
असगुन बहु जंजाल कुसपना ※ गर्दभ चढ़ि, दच्छिन दिसि गमना
मृत्यु निकट जनु, असुभ बिसेखी ※ जीवन सफल तिलक तव देखी
अनुज भरत-हिय मर्म न जाना ※ तिन न राजपद तदपि विधाना
जेठ बराय[4], न लघु-अधिकारा ※ ताते राम सम्हारहु भारा[5]
इत-उत रिपु तव, राम! अनेका ※ अपन-बिरान, न सहज विवेका
को केहि घरी बवण्डर-कारन ※ भल, मम-रहत छत्र करु धारन

सिंहासने बसाइल राजा श्रीरामेरे ※ पित पुत्र उभयेर आनन्द अन्तरे
राजा बलिलेन, राम कर अवधान ※ यत कर्म्म करियाछि, कहि तव स्थान
यज्ञ करि तुषिलाम यत देव गणे ※ तुषिलाम पितृलोके श्राद्ध ओ तर्पणे
राजा ह'ये करिलाम लोकेर पालन ※ पुत्र तोमा हेन पाइ यज्ञेर कारन
पालिलाम राजनीतिधर्म्म अनिवार ※ तोमारे करिब राजा भावियाछि सार
वृद्ध हइलाम आमि, मरिब कखन ※ तोमारे करिब राजा पाल सर्व्वजन
आजि हैते तोमारे दिलाम राज्यभार ※ स्वपक्ष पालन कर, विपक्ष संहार
किन्तु आजि कुस्वपने देखेछि उत्पात ※ आकाश हइते भूमे हय उल्कापात
पूर्णिमाय चन्द्रग्रास शास्त्रेते बिहित ※ देखि अमावस्याय ए अति विपरीत
इत्यादि जञ्जाल आमि देखिनु स्वपने ※ गर्द्दभेर पृष्ठे चड़ि गेलाम दक्षिणे
कुस्वप्न देखिनु आजि, निकट मरन ※ राजा तुमि हओ तबे सफल जीवन
कनिष्ठ भरत, तार ना जानि आशय ※ तारे राज्य दिते कभु उपयुक्त नय
ज्येष्ठ-सत्त्वे कनिष्ठेर नाहि अधिकार ※ तुमि राजा हओ राम कर अंगीकार
कत-शत शत्रु तव आछे केतस्थाने ※ केवा शत्रु केवा मित्र, केवा ताहा जाने
आमि विद्यमाने धर छत्र नत्र-दण्ड ※ कि जानि आसिया पाछे के हय पाषण्ड

---

१ किस क्षण २ धूम्रकेतु ३ अमावस्या में चन्द्रग्रहण ४ टालकर ५ राज्यभार।

भोर 'पुष्य', तव सासन-साजू ※ सुभ अधिवास 'पुनर्वसु' आजू
पितु सिख सुनि, पुनि पाय बिदाई ※ अन्तःपुर गमने रघुराई
कौशल्या सह-सखिन बिराजा ※ मुदित सातशत रानिसमाजा
सविधि देव-पूजन-रत रानी ※ राम-प्रवेस निरखि हुलसानी

दो० बन्दि मातु-पद, जोरि कर, बहुरि दण्डवत कीन।
कहेउ कथा रघुबर सकल, अखिल राजु पितु दीन ॥ ४ ॥

तिलक बिहान[1], आजु अधिवासू ※ मोहिं देन पद, सबन हुलासू
सुभ संबाद देन तव तीरा ※ आयेउँ मातु, कहेउ रघुबीरा
पूजहु देवि सकल विधि, जननी! ※ रहैं सदा मम-मंगल-करनी
सुनि उर मुदित, मातु अनुरागी ※ बहु सुत-कुशल मनावन लागी
चिरञ्जीव सुत, सब सुख-खानी ※ लहहु अनुग्रह - शंभुभवानी
तप अति कठिन महेस, मनावा ※ उदर सरिस तव सुत मैं पावा
सुभ छन तव जनमत मम धामा ※ राजमातु पद पायेउँ, रामा !
रानि सुमित्रा मम रसपागी ※ लखन तासु तव अति अनुरागी
तव कल्यान, सदा तव चिन्तन ※ सुहृद अनन्य सुमित्रानन्दन

आजि अधिवास पुनर्व्वसु सुनक्षत्र ※ पुष्य कल्य हइबे, धरिबे दण्ड-छत्र
एतेक बलिया रामे दिलेन बिदाय ※ अन्तःपुरे रामचन्द्र गेलेन तथाय
बसेछेन कौशल्या वेष्टिता सखी वृन्दे ※ सातशत रानी तथा आछेन आनन्दे
देवपूजा करे रानी नाना उपहारे ※ हेनकाले श्रीराम गेलेन तथाकारे
रामेर देखेन रानी सहास्य - बदन ※ मायेर चरण राम करेन बन्दन
मायेर सम्मुखे दाँड़ाइया रघुनाथ ※ कहेन सकल कथा करि जोड़ हाथ
आमारे दिलेन पिता सर्व्व राज्यखण्ड ※ आजि अधिवास कालि पाव छत्रदण्ड
मोरे राजा करिते सबार अभिलाष ※ शुभ वार्त्ता कहिते आइनु तवपाश
नाना उपहार माता, कर इष्टपूजा ※ मम प्रति तुष्टा येन हन दशभुजा
एतेक शुनिया रानी हरषित - मन ※ रामेर कल्याण करिलेन अगनन
कौशल्या वलेन, राम, हओ चिरजीव ※ तोमारसहाय हौन पार्व्वती ओ शिव
अनेक कठोरे आमि पूजिया शंकरे ※ तोमा हेन पुत्र राम, धरिनु उदरे
शुभक्षणे जन्म निला आमार भवने ※ राजमाता हइलाम तोमार कारने
सुमित्रा सपत्नी से आमाते अनुरक्त ※ तार पुत्र लक्ष्मण तोमार बड़ भक्त
तोमार कुशल बहु चाहे सर्व्वक्षन ※ अति हितकारी तव सुमित्रानन्दन

---

1 कल सुबह।

कौशल्या बखान[1] लवलीना ※ अन्तःपुर लछिमन पग दीना
मातहिं किय कर जोरि प्रनामा ※ हेरि अनुज तन बिहँसे रामा
समुद सप्रेम अनुज लपिटाने ※ बोले बचन सुधारस-साने
मन प्रति नेह अतुल तव धीरा ※ बिलग न कोउ, दोउ एक शरीरा
परम सखा! मम सिर जदि राजू ※ दोउ मिलि तासु सम्हारहिं काजू
कहि इमि वचन, विदा पुनि लीन्हा ※ रानिन सकल सुभासिस दीन्हा
राम-लखन पितु ढिग; लखि भूपा ※ कहेउ आजु सुभघरी अनूपा

दो० नारद आदि बशिष्ठ जे, सबै राज-रुख पाय।
आयोजन रघुवर-तिलक, करैं विविध हरषाय ॥ ५ ॥

अवध निमंत्रित बहु नृप-वृन्दा ※ राम-राज सुनि, सबन अनन्दा
विद्याधरी, यूथ - गंधर्वा ※ गीत - वाद्य - नर्तन - रत सर्वा
ललित घोष 'जय' चहुँ इकसंगा ※ उड़ें ध्वजा लख-लख बहुरंगा
हय, गज, रथ, सारथि, बहु बाजा ※ सदल नृपन बहुरंग समाजा
अथ अधिवास मुनिन मन दीन्हा ※ रामहिं सुमिरि वेद-ध्वनि कीन्हा
ढिग-ढिग नरियल सगुन सुपारी ※ पुरबालन[2] घृत-दीप सवाँरी
विमल रतन चहुँ झलमलकारी ※ ध्वजा-विरञ्जित सजीं अँटारी

एतेक कौशिल्यादेवी कहिलेन कथा ※ हेनकाले श्रीलक्ष्मण आइलेन तथा
लक्ष्मणेरे देखिया हासेन रघुनाथ ※ कौशल्यारे वन्देन लक्ष्मण जोड़ हाथ
लक्ष्मणेरे प्रेमभरे दिया राम कोल ※ कहेन सहास्य मुखे कत मिष्ट बोल
मम भक्त भाइ तुमि परम सुस्थिर ※ तुमि आमि भिन्न नहि, एकइ शरीर
आमार हितैषी तुमि, यदि पाइ राज्य ※ उभयेते मिलिया करिब राजकार्य्य
एतेक बलिया राम हइला बिदाय ※ आशीर्व्वाद करिल सकल रानी ताँय
गेलेन पितार काछे श्रीराम-लक्ष्मण ※ राजा बले, आइस राम, हैल शुभक्षण
बशिष्ठ नारद आदि आइल सेस्थाने ※ आज्ञा पेये आयोजन करे सर्व्व जने
निमन्त्रण करिया आनिल राजगन ※ रामराजा हबेन सकल हृष्टमन
विद्याधरी नाचे, गाय गन्धर्व्वे संगीत ※ चतुर्भिते जयध्वनि शुनि सुललित
लक्ष-लक्ष पताका उड़िछे नानारंगे ※ नाना देश हैते राजा आसे सैन्यसंगे
नाना रंगे रथ-रथी हस्ती घोड़ा साजे ※ नानाजाति बाद्य शुनि नानादिके बाजे
अधिवास करिते आइल ऋषिमुनि ※ रामजय बलिया करिछे वेदध्वनि
नारिकेल-गुवाक रोपिल सारि-सारि ※ घृतेर प्रदीप ज्वाले प्रजार कुमारी
नानारत्ने निर्म्माइल लक्ष-लक्ष घर ※ विविध पताका उड़े चालेर उपर

१ प्रशंसा में २ नगर की कुमारियाँ।

रतन-जटित शोभित परिधाना ※ अवध-प्रजा उल्लास महाना
रत-रसरंग लोक दिग्देसा ※ जुरे अवध, हिय हर्ष बिसेसा
उत्सव-दरस सुरन मन कीना ※ निज-निज बाहन नभ-आसीना
शिव, विरञ्चि, सुरगन, सुरराजू ※ अखिल भगवती देवि-समाजू
ते अधिवास सकौतुक लखहीं ※ वर्षन-सुमन गगन सों करहीं
देखि मुनिन मन नायेउ माथा ※ पाद-अर्घ्य पूजेउ रघुनाथा
कहेउ बशिष्ठ, राम-अधिवासा ※ होय उचित जिमि शास्त्र प्रकासा
छत्र-दण्ड पितु-रहत[1] सम्हारी ※ सुवन ययाति नहुष[2] अनुसारी
पुनि स्वस्तयन बशिष्ठ उचारा ※ भुवन राम-जयघोष प्रसारा

सो० निरखि पूर्ण अधिवास, पुलकि, चले सुरगन सरग ।
नर्त-गीत-रत-रास, अवध अखिल बनिता सकल ॥ ६ ॥

राम सिया उपवास, हुलासा ※ चन्दन चर्चित अंग सुवासा
धन-संपदा सबन लहि दाना ※ कौतुक लखि गृह कीन्ह पयाना
शुभ मुहूर्त पूरन अधिवासा ※ नृप सन हरषि बशिष्ठ प्रकासा
सुनि बिहँसे, हिय प्रमुदित भूपा ※ द्विजन तृप्त किय, दान अनूपा

पृथ्वीते आछे यत नाना उपहार ※ ताहा आनि लक्ष-लक्ष भरिल भाण्डार
नाना रत्ने शोभित बसन परिहित ※ अयोध्यार यत लोक सबे आनन्दित
आइल देशेर लोक अयोध्यानगरे ※ केह नाचे केह गाय सानन्द अन्तरे
अधिवास देखिते आइल देवगन ※ अन्तरीक्षे रहे सबे चापिया बाहन
ब्रह्मा-शिव-शक्र आदि यत देवगन ※ भगवती आदि करि देवी अगनन
अधिवास देखिते आसिया सर्व्वजन ※ कौतुकेते पुष्पवृष्टि करेन तखन
ऋषिगणे देखिया उठिया रघुनाथ ※ पाद्य अर्घ्य दिया पूजे करि प्रनिपात
बशिष्ठ बलेन, राम, शास्त्रेर विहित ※ तव अधिवास आमि करि जे उचित
पितृ विद्यमाने धर दण्ड आर छाति ※ नहुष राजार येन तनय ययाति
बशिष्ठ करेन सुमंगल वेदध्वनि ※ अखिल भुवने रामजय-शब्द शुनि
अधिवास रामेर हइल समापन ※ आनन्दे देखिया स्वर्गे गेल देवगन
जय - जय हुलाहुलि करे रामागन ※ नृत्य-गीते आनन्दित अयोध्याभुवन
राम - सीता उपवासी रहे दुइजन ※ चन्दने चर्च्चित अंग सकौतुक मन
नाना रत्न धन सबे दिलेक यौतुक ※ निजालये गेल सबे देखिया कौतुक
बलेन बशिष्ठमुनि राजार सदने ※ अधिवास रामेर हइल शुभक्षने
शुनिया हासेन राजा आनन्दित मने ※ नानारत्न दाने राजा तुषित ब्राह्मणे

१ पिता की मौजूदगी में २ नहुप राजा के पुत्र ययाति के समान ।

सन्ध्या विगत नखत नभ छाये ※ लखि अधिवास, सकल गृह आये
तन पट दिव्य, गंध चहुँ छाई ※ सुरभि-सुमन, सुख निद्रा आई
निसा छीन, रवि-वैभव जागा ※ मन अति मोद, शयन सब त्यागा
सुनि अभिषेक-राम सुखकारी ※ विह्वल अति सुर-मुनि, नर-नारी

श्रीरामचन्द्र की राज्यप्राप्ति पर सब प्रफुल्लित

छं० हय-गज-रथ साजन, बहु बिधि बाजन, मुनिगन जय-जय करहीं।
धनवन्त-भिखारी, चहुँ जयकारी, उर लावत, सुख लहहीं॥
शिशु-नारि सुहासिन, सुमन सुवासिन, घर-घर लखत प्रमोदा।
सुरवसन सवाँरी, पुरनरनारी, नाच-गान रत-मोदा॥
दुख-क्लेश नसावन, सबन सुहावन, राम-तिलक सुखकारी।
त्रिभुवन-प्रिय रामा, पावन नामा, मुक्तिदैन भयहारी॥
बैकुण्ठ निवासी, भार विनासी, राम विष्णु अवतारा।
सब जन सुख पावैं, अस मन आवैं, चिदानन्द तन धारा॥
सब सोक भुलाने, आनँद साने, अखिल अवधपुर वासी।
सुर-पट-आभूषन, दिव्य सोह तन, विह्वल चहुँ सुखरासी॥

हइल वेलार शेष नक्षत्र गगने ※ अधिवास देखि घरे गेल सर्व्वजने
सुगन्धि - पुष्पेर गन्ध बहे चतुर्भित ※ देव तुल्य वेश परि सवाइ निद्रित
रात्रि अवसान हय, सूर्येर उदय ※ शयन त्यजिल सबे सानन्द हृदय

श्रीरामचन्द्रेर राज्य-प्राप्तिते सकलेर आनन्द

रथ रथी घोड़ा साजे, नाना रंगे वाद्य बाजे, मुनि सब करे जयध्वनि।
जय-जय हुलाहुलि, करे सबे कोलाकुली, सर्व्वलोक कि दुःखी कि धनी॥
सब लोक आनन्दित, गन्ध - पुष्पे सुशोभित, आमोद प्रमोद सब घरे।
स्वर्गपुरी तुल्य वेष, अयोध्यार सर्व्वदेश, नाचे - गाय हरिष अन्तरे॥
सबे भावे रघुपति, हइबेन महीपति, घुचिल सबार आजि क्लेश।
ना हइबे दुःख शोक, आनन्दित सर्व्वलोक, निस्तार पाइल सर्व्व देश॥
घुचिल सकल भय, सबाइ आनन्दमय, राम नाम पाइबे निष्कृति।
राम विष्णु अवतार, लवेन सबार भार, बैकुण्ठेते करिबे बसति॥
एतेक भाविया मने, आनन्दित सर्व्वजने, आनन्देते पासरे आपना।
अयोध्यार यत लोक, भुलिल सकल शोक, आनन्दे पूरित सर्व्वजना॥
नाना बस्त्र अलंकार, परिधान सबाकार, रूपे-वेशे देव अवतार।
आनन्दे विह्वलप्राय, रामगुण सबे गाय, जय - जय करे बार बार॥

पुनि-पुनि गुन गावा, जय-जय छावा, बनितन उपज उमंगा ।
बनि रघुपति-दासी, सब दुख नासी, लहैं विविध सुखसंगा ।।
अमरित घट तुल्या, काण्ड अयुध्या, श्रवन न पातक-योगू ।
कृतिवास बखाना मानस गाना, अन्त स्वर्ग-सुख-भोगू ।।

भरत को राज्य और राम को वनवास दिलाने की मन्थरा की सलाह

आम्रसार युत सुबरन झारी ※ यथा शास्त्र सब विधि शुभकारी
मञ्चन रतन-झालरी सोहा ※ पथ बहुरंग पताकन मोहा
घर-घर कनक-कलश मन लोभा ※ रत्नावली चौतरन शोभा
रत्न - जटित सुरपुरी सरूपा ※ रम्य सकल छबि सुभग अनूपा
सुरपुर यथा सकल छबिखानी ※ मंगलपुरी अवध दरसानी
भावी अमिट, न मेटनहारा ※ कब खसि परै विपत्ति-पहारा
शाप अप्सरा दुन्दुभि पाई ※ लै भुइँ जनम मन्थरा आई
कूबर तासु काँस-घट रूपा ※ कुटिल, क्रूर - कर्मिणी अनूपा

दो० कैकयि-दासी मंथरा, कुअँर भरत कै धाय ।
राम-विपति कर मूल सो, रची विरञ्चि बनाय ।। ७ ।।

नृपति, विवाह, लही यह दासी ※ राम-तिलक जिन ऊबासाँसी

अयोध्या नगरवासी, बले सब्र दास - दासी, मने ह'ये अति हरषित ।
घूचिवे सबार दुख, भुञ्जिबे विविध सुख, एत बलि सबे आनन्दित ।।
मधुर अयोध्याकाण्ड, शुनिते अमृतभाण्ड, याते हय पापेर विनाश ।
रामायण जेइ शुने, कृत्तिवास ओझा भने, हय अन्तकाले स्वर्गवास ।।

भारत के राजा करिया राम के बने पाठाइते कैकेयीर प्रति कुञ्जीर मन्त्रणादान

पूर्ण स्वर्ण कुम्भेर उपरे आम्रसार ※ शास्त्रेर विहित सब मंगल आचार
नाना रत्ने निर्म्माइल टुंगी शते-शते ※ नाना वर्ण पताका उड़िछे प्रतिपथे
प्रति घरे शोभा करे सुवर्णेर झारा ※ नाना रत्न लक्ष-लक्ष निर्मित चौतरा
नानारत्ने निर्मित आगार सारि-सारि ※ जिनिया अमरावती रम्यवेशधारी
इन्द्रपुरे येमन सबार रम्य वेश ※ तेमनि मंगलयुक्त अयोध्यार देश
दैवेर निर्ब्बन्ध कभु ना हय खण्डन ※ के जाने पड़िबे आसि प्रमाद कखन
पूर्व्वे जन्मेछिल ये दुन्दुभि अप्सरा ※ जन्मिल से कुञ्जी ह'ये नामेते मन्थरा
तार पृष्ठे कुञ्ज येन भरन्त डाबरी ※ कुटिला कुरूपा कुञ्जी क्रूरकर्मकारी
कैकेयीर चेड़ी भरतेर धात्रीमाता ※ रामेर दुःखेर हेतु सृजिल विधाता
दशरथ पेयेछिल बिबाहे से चेड़ी ※ राम राजा हन देखि करे धड़फड़ि

कुत्सित रूप स्वभाव कराला ※ कूबरि-बास, तासु घर घाला
जनम तासु रघुपति-दुख हेतू ※ कैकयि कुयश, मरन-नृपकेतू
जेहि मारग दसकंध निपाता ※ जानि मन्थरहिं रचेउ विधाता
चकित मंथरा बाहेर आई ※ लखेउ मुदित पुरजन समुदाई
राम-राजु सुनि पुलकित लोका ※ अण्टा चढ़ि सो चेरि विलोका
पुनि तँह दासिन-जमघट हेरी ※ चेरिन टेरि, बुझावत चेरी
कस उल्लसित नगर जनवृन्दा ※ कौशल्या हिय अमित अनन्दा
राम-मातु कर दान महाना ※ संगिनि! सकल करौ अनुमाना
कहेउ चेरि तव मति बौरानी ※ राम-तिलक सुभघरी न जानी
आयु समीप निरखि, नृप भावा ※ तुरत राम-अभिषेक सुहावा
दासी - बचन मंथरहिं शूला ※ बज्रघात सम हिय-प्रतिकूला
झनकि कैकयिहिं कोसि[1] कुदासी ※ लपकी, विधि अच्छर अविनासी
केहि संकोच, कुबुद्धि अबूझी ※ भल-अनभल निज सुत नहिं सूझी
भरत बराय, राम हित राजू ※ दुख, अपमान, मरन तव साजू
राम वनगमन, भरतहिं राजू ※ नृप वर माँगि सफल करु आजू

आकृति-प्रकृतिते कुत्सित देखि तारे ※ सर्व्वनाश करे कुब्जी, थाके जार घरे
रामेर दुःखेर हेतु तार उपादान ※ राजार मरण, कैकेयीर अपमान
मरिबे रावन जाते, विधाता से जाने ※ विधाता सृजिल तारे एइ से कारणे
आचंबिते कुंजी चेड़ी आइल वाहिरे ※ आनन्दित प्रजा सब देखिल नगरे
टंगेर उपरे उठि कुंजी ताहा देखे ※ राम राजा हबे, महा हरषित लोके
चेड़ी - चेड़ी एकठाँइ टुंगीर उपरे ※ कुंजी-चेड़ी जिज्ञासिल इतर चेड़ीरे
किकारणे हरषित अयोध्या नगर ※ किहेतु कौशिल्या रानी हरिष अन्तर
किजन्य रामेर माता करे बहुदान ※ सबे मिलि तोमारा कि कर अनुमान
आर चेड़ी बले, तुमि ना जान मन्थरा ※ रामेरे करिते राजा भूपतिर त्वरा
राजार निकट-मृत्यु गनिया असार ※ एइ हेतु रामेरे दिलेन राज्यभार
एमत शुनिल कुब्जी से चेड़ीर मुखे ※ बज्राघात हय येन मन्थरार बुके
विधातार बाजि केवा करये खण्डन ※ कैकेयीरे गालि दिते करिल गमन
कैकेयी आपन घरे छिलेन शयने ※ सत्वर मंथरा गिया कहिल सेखाने
निर्बुद्धि कैकेयि शुये आछ कोन् लाजे ※ तोमार भरत आजि मनोदुःखे मजे
अपमाने मरिबि तुइ शोकेर सागरे ※ भरते एड़िया राजा रामे राजा करे
भरतेरे राजा कर राख निज पन ※ राजारे कहिया रामे पाठाओ कानन
राम राजा हइले किसेर अधिकार ※ भरत हइले राजा सकलि तोमार

---

१ दुर्वचन कह कर।

सो० लञ्चित रघुपति-राज, निज सुत सासन सकल तव ।
सकल रानि-सरताज, राजमातु-पद लहहु पुनि ॥ ८ ॥

कैकइ कहइ— धर्मसुत रामा ※ बिन अपराध आचरण बामा
राम सदा मम आदर करहीं ※ तिन अनहित केहि विधि अनुसरहीं
राम जेठ सुत, ज्ञानगुनागर ※ सासन उचित सबन सुखसागर
सब बिधि राम छत्र-अधिकारी ※ तोष, बिपुल धन-मंगलकारी
राम-राज सुख भरत समाना ※ राममातु मम रखिहैं माना
खुसखबरी, मम गौरव जागा ※ देहुँ इनाम, चेरि ! मुँहमाँगा
रामहिं राजु सबन मुदकारी ※ सो तजि कस विषाद तैं धारी
अमित रामगुन रानि बखाना ※ सोचति किमि चेरिहिं सन्माना
तन - भूषन निकारि कैकेई ※ कर-मन्थरहिं नेह भरि देई
निरखि सौत, पुनि दीन दिलासा ※ रामराज तव पुरवउँ आसा
फरकत ओंठ कम्प उत चेरी ※ कुवचन कहत कैकयिहिं हेरी
अभरन झटकि निहारति रानी ※ कोपपुञ्ज दृग बोलत बानी
अहित दुखी, तव हित मम प्रीती ※ मम सिख तबहुँ तुमहिं विपरीती
सौति-सुवन नृप ! लखि हर्षानी ※ तुमसों मनु कौशिला सयानी[1]

एके त राजार तुमि हओ मुख्यरानी ※ भरत हइले राजा, राजार जननी
कैकेयी वलेन, राम धार्म्मिक तनय ※ कोन् दोषे रामेर करिब अपचय
आमार गौरव राम राखे अतिशय ※ करिते रामेर मन्द उपयुक्त नय
गुणेर सागर राम बिचारे पण्डित ※ पितृराज्य ज्येष्ठ पुत्र पाइते उचित
राम राजा हइले सन्तुष्ट सर्व्वजने ※ सबाकारे तुषिवेन राम बहु धने
भरतेरे राज्य राम दिवेन आपनि ※ राखिबेन आमार गौरव बड़रानी
राम राजा हइले आमार बहुमान ※ शुभ वार्त्ता कहिलि, कि दिब तोरे दान
राम राजा हइबेन, हृष्ट सर्व्वजन ※ हरिषे विषाद कुंजी कर कि कारन
यत गुन रामेर, कैकेयी ताहा जाने ※ मन्थराके दान दिते चिन्ते मने-मने
अंग हैते अलंकार खुलि शशव्यस्ते ※ आदरे कैकेयी देन मन्थरार हस्ते
कैकेयी कहेन, कुंजी, ना कर उत्तर ※ राम राजा हैले धन दिब त विस्तर
कुपिता मंथरा चेड़ी, दुइ ओष्ठ काँपे ※ कैकेयीरे गालि पाड़े अतुल प्रतापे
हाथ हैते अलंकार छड़ाइया फेले ※ दुइ चक्षु रांगा करि कैकेयीरे बले
कैकेयि, तोमार दुःख आमार अन्तरे ※ वलि हित, विपरीत बुझाओ आमारे
सपत्नी तनय राजा तुमि आनन्दिता ※ कौशल्या तोमार चेये बुझिते पण्डिता

[1] चतुर ।

सुतहिं रहत पति, राजु दिवावा ❋ दासी सौति— योग तव आवा
सिय रानी ! बड़िरानि सुपासा ❋ बनि पछिलगू[1] कैकयिहि बासा

दो० यदपि रानि-सरताज तुम, रामहिं राजु दिवाय।
रामममातु-पतिदर्प लखि, उर सालत अधिकाय ॥ ९ ॥

भरत ओट[2] नृप मातुलगेहा ❋ नृपहिं न दोष समान सनेहा
सौति-विभव-सुख सौतिनि भावा ❋ अनहोनी! सुनि निरखि न पावा
लालि-पालि किय भरत सयाने ❋ सो सुत आजु बिमातु-बिकाने
बिलग न राम लखन दोउ भाई ❋ करइँ राजु-सुख, भरत बिहाई[3]
लखि तव तनय-पराभव, रानी! ❋ मम हितबानि न तुमहिं सुहानी
भरतहिं राजु न अवधनिवासू ❋ दुर्लभ तव मुख, सतत प्रवासू
रुचिर रानि ! तौ बाँधहु साजू ❋ राम गमन वन, भरतहिं राजू
कूबरि-बचन सुबुद्धि बिनासा ❋ सुनि कुमंत्र मन उपजी आसा
सबन-सुरासुर राम पियारे ❋ अकथ विघिन कूबरि तहँ डारे
मैं अबोध, मम कण्टक रामा ❋ सुहृदि! सदा तैं आवति कामा
भरत विदेश, राम अभिषेकू ❋ करि कछु जतन मिटावइ सोकू
गुननिधान रघुपति पितुप्राना ❋ तिन वनगमन न जोग लखाना

निज पुत्रे राजा करे स्वामीर सोहागे ❋ थाकिवा दासीर न्याय कौशल्यार आगे
थाकिल कौशल्यारानी सीतार सम्पदे ❋ दाँड़ाइते नारिवि सीतार परिच्छदे
कौशल्या जिनिले तुमि सोहागेर दापे ❋ निज पुत्रे राजा करे सेइ मनस्तापे
भरत थाकिल गिया मातामह घरे ❋ राजार कि दोष दिब ना देखे ताहारे
सतिनेर आनन्देते सानन्दा सतिनी ❋ हेन अपरूप कभु ना देखि ना शुनि
लालिया पालिया बड़ करिनु भरते ❋ मातापुत्रे पड़िलासे कौशल्यार हाते
श्रीराम-लक्ष्मण दुइ एकइ शरीर ❋ उभये करिबे राज्य, भरत बाहिर
तबे त भरत तोर हइल वञ्चित ❋ हितकथा बलिलाम, बुझिस् अहित
भरत ना पेये राज्य ना आसिबे देशे ❋ ना देखिबे तव मुख, थाकिबे प्रवासे
मन्त्रणा करिया रामे पाठाओ कानन ❋ भरतेरे राज्य देह, यदि लय मन
शुनिया कुञ्जीर कथा कैकेयीर आश ❋ कुञ्जीर वचने तार हैल बुद्धिनाश
राम हेतु देव दैत्य आदि लोक सुखी ❋ प्रमाद पाड़िल चेड़ी, कोथाओ ना देखि
कैकेयी बलेन कुंजी तुमि हितैषिनी ❋ राम मम मन्दकारी, किछुइ ना जानि
भरत प्रवासे, राम राजा हबे आजि ❋ केमने अन्यथा करि युक्ति बल कुञ्जी
नृपतिर प्राण राम गुणेर सागर ❋ केमने पाठाब तारे बनेर भितर

१ पिछलगूं २ निगाह से दूर ३ त्याग कर।

भल न राम पावइँ अधिकारू * निरपराध किमि देस-निकारू
भरत विदेस, सुवन-नृप चारी * बाटहिं राजु अंस-अनुसारी
राम जेठ ! जनि भूलु सयानी * किमि तव मति सोचति बौरानी
राम गिरा-मधु सबन सुखारी * नृप किमि तिनहिं करइँ बनचारी

दो० सहज न सासन भरत हित, बहुरि राम बनबास ! ।
केहि बिधि? दासी! जतन कछु करि पुरवइ मम आस ॥ १० ॥

कहउँ उपाय, रानि सुनि लीजै * भरतहिं सुलभ राजपद कीजै
कथा पुरातन सुनु धरि ध्याना * अजहुँ याद भल, करहुँ बखाना
संबर असुर युद्ध जेहि काला * क्षत-विक्षत तन विषम भुवाला
परिचर्या तव सुखद निहारी * हरषि भूप वर-वाचा हारी
पुनि विषहरी[1] गृसित नरपाला * मुख वृण चूसि मिटायेउ ज्वाला
रक्त-पूयमय तव मुख देखी * सहन-शक्ति तव निरखि विशेषी
तव सेवा नृप-रोग नसावा * पुनि वर देन भूप मन भावा
जब जब घरी देन वर आई * तुम नरपतिहिं कहेउ समुझाई
नाथ ! मंथरा जब मन लावै * मम वर उभय धरोहरि[2] पावै

घरेते राखिब वरं राज्य नाहि दिब * कोन् दोषे श्रीरामेरे बने पाठाइब
चारि पुत्र आछे ताँर भरत विदेशे * अंश अनुसारे भाग हइबेक शेषे
ज्येष्ठ भाइ आछे तार कर विवेचना * कह देखि कुंजी तुमि, करि कि मंत्रणा
सबे तुष्ट श्रीरामेर मधुर बचने * हेन रामे केमने पाठाबे राजा बने
भरत पाइबे राज्य ना देखि उपाय * युक्ति बल भरत कि रूपे राज्य पाय
कि प्रकारे रामेर हइबे वनबास * भरतेरे राज्य दिया पुराइब आश
कुञ्जी बले युक्ति चाह, युक्ति दिते पारि * हेन युक्ति दिब ये, भरते राजा करि
पूर्व्वकथा सकल आमार आछे मने * से सकल कथा कहि, शुनि सावधाने
पूर्व्वे युद्ध करलि ये दानव सम्बर * सेइ युद्धे महाराज क्षत कलेवर
ताहाते करिले ताँर तुमि सेवा-पूजा * सुस्थ हये वर दिते चाहिलेन राजा
आर बार राजार ये हइल विस्फोट * ताप दिते मुखेर ठेकिल दुइ ठोंट
रक्त पूँय यतेक लागिल तव मुखे * तव यत दुःख राजा देखिल सम्मुखे
तोमार सेवाय राजा पाइल निस्तार * वर दिते चाहिल तोमारे पुनर्व्वार
तखन बलिला तुमि राजार गोचर * कुञ्जी जबे वर चाहे तबे दिओ वर
दुइवारे दुइ वर थाक् तव ठाँइ * कुञ्जी जबे वर चाहे तबे येन पाइ

१ जहरीला अँगूठा का फोड़ा २ धरोहर (अमानत)।

पुनि बरनेउ मोहिं सकल कहानी * अजहुँ याद, तुम भले भुलानी
राम-राज-पद घरी समीपा * तव गृह आवन चहत महीपा
निराभरन भूषन बिथराई * तजि पट, वसन मलिन तन लाई
अस्त-व्यस्त चहुँ, बिन आहारा * अवनि पलोटहु[1] कोपागारा
यहि विधि निरखि विकट तव रूपा * जस-जस आतुर पूँछहिं भूपा
तस-तस मौन, रुदन करु रानी * धीरज देहिं नृपति भय मानी
कोप-हेतु पूँछहिं बहु भाँती * अवसर ताकि वसूलहु थाती[2]

दो० कथा पुरातन अस्मरन, नृपहिं न कछु सन्देहु ।
बचन बाँधि, प्रन सत्य करि, माँगि युगुल वर लेहु ॥ ११ ॥

भरतहिं राज, राम वनवासू * यहि विधि दोउ वर करहु प्रकासू
चौदह वर्ष राम वनचारी * छिति चहुँ भरत विभव-विस्तारी
रुख लखि नृप तव, प्रान गवावैं * राम-गमन-वन दुलुखि[3] न पावैं
अति अनुराग अतुल तव प्रीती * फिरहिं वचन प्रन करि, न प्रतीती[4]
मंत्र-मंथरा कुमति जगावा * अयश अधर्म न भय मन आवा
ब्रह्मशाप-हत कैकयि रानी * जेहि कारन इमि भरम भुलानी
पितुगृह कतहुँ विप्र इक आवा * बालापन, कछु व्यंग्य सुनावा

एइ कथा कहिला आसिया मोर स्थाने * तुमि पासरिले, मोर सब आछे मन
आजि राम राजा हबे बेला अवशेषे * आगे आसिबेन राजा तोमार संभाषे
पट वस्त्र एड़ि पर मलिन बसन * खसाइया फेल यत गायेर भूषन
भूमिते पाड़ियाथाक त्यजिया आहार * राजा जिज्ञासिबे तव देखिया आकार
जिज्ञासा करिबे राजा कोपेर कारन * ना दिया उत्तर तुमि करिओ रोदन
बिबिध प्रकारे तोमा करिबे सांत्वना * याचिबे तोमारे वस्त्र अलंकार नाना
तवे पूर्व्व निर्ब्बन्ध कहिबे ताँर स्थान * आगे सत्य कराइया पिछे मांग दान
पूर्व्वकथा राजार अवश्य हबे मने * दुइ वर मागिओ राजार बिद्यमाने
एक वरे कराइबे राजा भरतेरे * आर वरे पाठाइबे अरण्ये रामेरे
चतुर्द्दश वर्ष राम थाके यदि वने * पृथिवी पुराबे तुमि भरतेर धने
तुमि यदि प्रान चाह, राजा प्रान देय * राम हेन प्रिय पुत्रे बनेते पाठाय
एमनि आसक्त राजा तोमार उपर * सत्ये वद्ध आछे, केन नाहि दिबे वर
फिरिल कैकेयी रानी कुब्जीर बचने * अधर्म्म अयश किछु नाहि करे मने
घोर ब्रह्मशाप आछे कैकेयीर तरे * सेइ दोषे कैकेयी प्रमाद एत करे
पित्रालये कैकेयी छिलेन शिशुकाले * करियाछिलेन व्यंग ब्राह्मणेरे छले

---

१ भूमि पर लोटो २ धरोहर ३ टाल न सकें ४ विश्वास नहीं होता ।

सुनि कटु व्यंग्य विप्र मन तापा * कोपि कैकयिहिं दीन्हेंउ शापा
जेहि विधि तैं कृत मम उपहासू * अखिल भुवन तव कुयस प्रकासू
ब्रह्मशाप कर अमिट प्रभावा * कुफल तासु इमि आगे आवा
कैकयि अतिव मोद मन छावा * कर-कूबरि धरि उर लपिटावा
पुलकि कहेंउ तुम सम गुनखानी * चहुँ दिसि मोहिं न कतौं लखानी
कथन न अनुचित, मन अति भावा * तैं हित परम, अहित चहुँ छावा
तव तन चन्द्रकला उजियारी * कहि गर सुमनमाल तिन डारी
कूबर रतन हार कर साजा * करहु अजाच्य[1] भरत लखि राजा
मम हित तव अपार सेवकाई * तासु एवज[2] पुरवहुँ दिन पाई

दो० आजु राम बन-गमन हित आयुसु देहिं नरेस ।
मुख मज्जन जलपान तब, तबहि तजहुँ यहु बेस ।। १२ ।।

तव सम्मुख मम प्रन यहु दासी * आजुहि राम लखहुँ बनवासी

दशरथ से कैकेयी की वर-याचना

सुनि कूबरी कहइ हुलसानी * अब विलंब कर काज न रानी
रामहिं राज मिलत, पछिताऊ * बहुरि न कछु अवशेष उपाऊ

ताहाते जन्मिल ब्राह्मणेर मने ताप * कुपिया ब्राह्मण ताँरे दिल अभिशाप
देखिया करिस् व्यंग कहिस कर्कश * सर्व्वलोके गाय येन तव अपयश
कैकेयीर ब्रह्मशाप ना हय खण्डन * सेइ हेतु घटिलेक ए सब घटन
अनंतर कैकेयीर प्रसन्नबदन * करे धरि कुन्जीरे करिल आलिंगन
कुन्जीरे कैकेयी कहे अति हृष्टमने * तव तुल्य गुणवती ना देखि भुवने
यत बल, सकलि से नहे त कुत्सित * सकलि अहित मम तुमि मात्र हित
गौर वर्ण धर तुमि येन चन्द्रकला * गलाय तुलिया देह दिव्य पुष्पमाला
रत्नहार लओ, पर कुन्जेर उपर * भरत हइले राजा दिब त विस्तर
येमन विस्तर सेवा करिले आमार * यतदिने पारि तव शुधिब से धार
यदि राजा रामेरे पाठाय आजि वन * तवे से करिव स्नान करिब भोजन
प्रतिज्ञा करिनु आमि तव विद्यमाने * वने पाठाइब रामे, देखह एक्षणे
कैकेयीर कथा शुनि कुन्जीर उल्लास * रचिल अयोध्याकाण्ड कवि कृत्तिवास

दशरथेर निकट कैकेयीर वर-प्रार्थना

कुन्जी बले कैकेयि बिलंब नाहि साजे * राम राजा हइले नहिबे कोन काजे
यावत् न देय राजा रामे सिंहासन * तावत् राजार ठाँइ कर निवेदन

१ जिसको माँगने की जरूरत न रहे २ बदले में ।

तासों प्रथम बनावहु काजा ❋ धरहु रूप[1], आवत अब राजा
सुनत, फेंकि अभरन तत्काला ❋ अवनि विलोटत हाल बेहाला
इत कैकेयी-मिलन उछाहू ❋ आतुर चले मुदित नरनाहू
कछु बतलाय लौटि पुनि आवौं ❋ तुरत राम शिर छत्र धरावौं
जो न जाहिं, बहु गिला-गुजारी ❋ धन जन राजु न कुछ सुखकारी
दशरथ मृत्यु सीस मँडरानी ❋ हेरत कक्ष-कक्ष कहँ रानी
कोपभवन जँह लोटति धरनी ❋ पहुँचे भूप, लखउ विधि करनी
सहज स्वभाव न कछु अनुमाना ❋ कस छरछंद[2] कैकयी ठाना
नृप हत्बुद्ध, मर्म नहिं जानी ❋ जिमि अजगरी, फुंकरति रानी
युवा रानि, अति बृद्ध नरेसू ❋ तिय तजि नृपहिं न गति अवसेसू
पति जहँ जरठ[3], तरुनि अति नारी ❋ सो वृद्धहिं प्रानन ते प्यारी
कैकइ रूप निछावर प्राना ❋ तासु दुःख नृप तजहिं पराना
पूँछेउ मृदु स्वर लर्जति अंगा ❋ बाघिनि-भय बन कम्प कुरंगा[4]

दो० कहा क्रोध? कारन कवन? कहेसि कोऊ कटु बानि।
अंग व्याधि, केहि वेदना, धरनि विलोटति रानि ॥ १३ ॥

जो कछु रोग-कलेस शरीरा ❋ वैद्य बुलाय हरौं तव पीरा

एक्षणि आसिबे राजा तोमा संभाषणे ❋ जे रूपे कहिबा, ताहा चिन्ता कर मने
शुनिया कुञ्जीर वाक्य कैकेयी सेकाले ❋ आभरन फेलाइया लुटे भूमि तले
हेथा राजा दशरथ हरषित मने ❋ चलिलेन कौतुके कैकेयी संभाषणे
भाषिलेन संभाषिया आसिया सत्वर ❋ श्रीरामे करिब आमि छत्र-दण्डधर
नाहि गेले कैकेयी करिबे अनुयोग ❋ धन-जन विफल आमार राज्यभोग
दशरथ नृपतिर निकट मरण ❋ घरे घरे कैकेयीरे करे अन्वेषण
जे घरे कैकेयी देवी लोटे भूमि परे ❋ विधिर निर्व्वन्ध राजा गेल सेइ घरे
पूर्व्वज्ञाने गेल राजा, ना जाने प्रमाद ❋ गड़ागड़ि जाय रानी करिछे विषाद
सरल हृदय राजा एत नाहि बुझे ❋ अजगर सर्प येन कैकेयी गरजे
दशरथ अति वृद्ध कैकेयी युवती ❋ कैकेयी बिहने ताँर नाहि आर गति
कैकेयी युवती नारी, दशरथ बुड़ा ❋ बुड़ार युवती नारी प्राण हेते बाड़ा
प्राणेर अधिक राजा कैकेयीरे देखे ❋ उड़िल राजार प्रान कैकेयीर दुखे
धीरे-धीरे जिज्ञासेन कम्पित अन्तरे ❋ बने मृग डरे येन बाघिनीर डरे
कि हेतु करिला क्रोध बल कार बोले ❋ कोन् ब्याधि शरीरे लोटाओ भूमि तले
ब्याधि पीड़ा यदि हय तोमार शरीरे ❋ वैद्य आनि सुस्थ करि बलह आमारे

---

१ स्वांग २ मक्कर ३ बूढ़ा ४ हरिन।

सारभौम - नृपतिन नरपाला ※ मम सम अवनि न अन्य भुवाला
नाम प्रताप भीत सुर लोका ※ सदा द्वार प्रस्तुत त्रय-लोका
अखिल धरा अधिकार प्रसारा ※ धन जन सकल चरन तव हारा
कवन हेतु प्रिय साधेउ माना ※ सुनत सुमुखि पुरवहुँ अरमाना
सुनि नृप-वचन भरोस सयानी ※ लगी कहन पुनि कथा पुरानी
रोग न तन, कलेश अपमाना ※ पाय वचन पुनि माँगहुँ दाना
भूप रानि-छलछंद न बाँचा ※ देन युगुल वर हारी बाचा
ब्याध फंद मृग फसत अबूझा ※ नृप मतिमन्द न मारग सूझा
सुमुखि! प्रगट करु निज अभ्यंतर[1] ※ करहुँ सत्य, मम वचन न अंतर
जो भावै सो पावै दाना ※ कहँ लग कहौं, समर्पन प्राना
कहेउ रानि, भूपति-प्रन भाषी ※ अष्टलोकपालन[2] करि साखी
रवि,शशि,नखत,योग,तिथि,वारा ※ निसि, दिन साखी सब संसारा
रुद्र अेकादश, द्वादश भानू ※अखिल चराचर, मरुत,[3] कृशानू[4]
नृप-प्रन, वर-याचन मम आजू ※ लखहु लोक त्रय, स्वजन, समाजू
गये दिनन थाती[5] वर दोऊ ※ दै मोंहि आजु उरिन नृप होऊ

पृथिवीमण्डले आमि वसुमती-पति ※ आमार समान राजा नाहि गुणवति
शुनिया आमार नाम देव डरे काँपे ※ त्रिभुवन द्वारे खाटे आमार प्रतापे
समस्त पृथिवी मध्ये मम अधिकार ※ धन - जन यत आछे सकलि तोमार
कोन् कार्य्ये कैकेयि करह अभिमान ※ आज्ञा कर, ताहाइ तोमार करि दान
एत यदि कैकेयी राजार पाय आश ※ पूर्व्वकथा ताँर आगे करिल प्रकाश
रोग, पीड़ा नहे मोर पाइ अपमान ※ आगे सत्य कर पिछे मागि आमि दान
कैकेयी प्रमाद पाड़े राजा नाहि जाने ※ सत्य करे दशरथ त्रियार वचने
महापाश लागि येन वने मृग ठेके ※ प्रमाद घटिबे पाछु राजा नाहि देखे
भूपति वलेन, प्रिये, निज कथा बल ※ सत्य करि यद्यपि तोमारे करि छल
जेइ द्रव्य चाह तुमि, ताहा दिव दान ※ आछुक अन्येर काज, दिते तारि प्रान
कैकेयी वलेन सत्य करिला आपनि ※ अष्टलोकपाल साक्षी, सुनु सत्यवानी
नक्षत्र भास्कर चन्द्र योग तिथि वार ※ रात्रि दिन साक्षी हओ सकल संसार
एकादश रूद्र साक्षी द्वादश आदित्य ※ स्थावर-जंगम साक्षी, यारा आछे नित्य
स्वर्ग मर्त्य पाताल शुनह वाप भाइ ※ सब्बे साक्षी, राजार निकटे वर चाइ
अवधान कर राजा, धार मोर धार ※ मोर धार शोधि तुमि सत्ये हओ पार

---

१ मन की बात २ शिव, कुबेर, इन्द्र, वरुण, अग्नि, वायु, यम, नैऋत—ये आठ लोकपाल हैं ३ पवन ४ अग्नि ५ धरोहर।

दो० रन घायल तन सेयि तव, विष-वृण पुनि उपचार ।
अति प्रसन्न वर दीन चह, मोहिं नृपति दोउ बार ॥ १४ ॥

कहेउँ, मंथरा जब मन लावै ※ मम वर उभय धरोहर पावै
अजहु अमानत दोउ तव तीरा ※ पूरन आस करहु, प्रनवीरा
प्रथमहिं भरत समर्पन सासन ※ दूजे राम पठावहु कानन
चौदह वर्ष राम बनचारी ※ भरत रहैं इत राजु सम्हारी
कस दुरन्त[1]! सुनि कम्प शरीरा ※ नृपहिं न चेत, सम्हार न धीरा
कैकइ-वचन-सेल हिय घाला ※ घसिलि उठे, लहि चेत भुवाला
हिय लर्जत विमूढ़ मुख धूरी ※ कहेउ मन्द स्वर कछुक बिसूरी
पापिनि ! तैं मम घात विचारी ※ देहैं कुयश जगत नरनारी
बिना राम मैं जीवनहीना ※ मम कुघात-दुर्मति केहिं दीना
गवनहिं वन रघुपति पुर त्यागी ※ तबहिं घरी मम मरन, अभागी !
पति-जीवन पतिनिहिं सुखरासी ※ पति कर वध कुल तीनि विनासी
पति करि हनन, सुवन कहँ राजू ※ चण्डालिन, तव कस अपकाजू
भरत खबर सुनि जीवन तजहीं ※ निश्चय नतरु प्रान तव हरहीं

युद्धे ह'येछिल तव क्षत कलेवर ※ सेविलाम ताहे दिते चेयेछिले वर
करिलाम पुनर्व्वार विस्फोटे तारन ※ तुष्ट ह'ये वर दिते चाहिला राजन
तबे आमि बलिलाम तोमार गोचर ※ कुब्जी जबे वर चाहे तबे दिओ वर
दु'बारेर दुइ वर आछे तव ठाँइ ※ दुइ वर सेइ राजा, एइ क्षणे चाइ
एक वरे भरतेरे देह सिंहासन ※ आर वरे श्रीरामेरे पाठाओ कानन
चतुर्द्दश वत्सर थाकुक राम बने ※ तत्काल भरत बसुक सिंहासने
दुरन्त वचने राजा हइल कम्पित ※ अचेतन हइलेन नाहिक संवित
कैकेयी-वचन येन शेल बुके फुटे ※ चेतन पाइया राजा धीरे - धीरे उठे
मुखे धूला उठे राजा काँपिछे अन्तरे ※ हतज्ञान दशरथ बले धीरे धीरे
पापीयसि, आमार वधिते तव आश ※ स्त्री-पुरुष यत लोक कहिबे कुभाष
राम विना आमार नाहिक अन्यगति ※ आमारे वधिते तोरे के दिल दुर्म्मति
राज्य छाड़ि यखन श्रीराम जाबे बन ※ सेइ दिने सेइ क्षणे आमार मरण
स्वामी यदि थाके तबे नारीर सम्पद ※ तिन कुल मजाइलि स्वामी करि बध
स्वामी-बध करिया पुत्रेरे दिबि राज्य ※ चण्डाल-हृदया तुइ करिलि कि कार्य्य
यद्यपि भरत आसि एइ कथा शुने ※ आपनि मरिबे, कि मारिबे सेइ क्षणे

१ घोर कष्टकारक ।

जो पातक लखि जीवनदाना ※ तबहुँ न पार विविधि अपमाना
डसेसि भुजंगिनि, विष तव घोरा ※ गृह-तव चरन, मरन मनु मोरा

दो० कवन भूप अस नारि-बस, को कामिनि-लवलीन ।
कमनीया के कथन परि, निज नन्दन तजि दीन ॥ १५ ॥

मानुष-आयु सहस दस त्रेता ※ नौ हजार बिलसेहुँ सुख जेता
एक हजार शेष मम आयू ※ तव हित मरन विना परमायू
उमिर न पूरि, लीन तैं प्राना ※ चहउँ बन्दि पग जीवनदाना
कैकइ-पद नृप लोटति धरनी ※ शिथिल अंग नयनन निर्झरनी
भोरहिं राजसभा कर साजा ※ भुवन-नृपन-दल जहाँ विराजा
लगन चढ़ी लखि, तिलक न दूरी ※ किमि तिन नयन झोंकिए धूरी
रच्छिय प्रान, क्षमा मोंहि कीजै ※ निज सोहाग सों खेल न कीजै
रहेउ न कुल कोउ नारि-अधीना ※ निज कर मरन मोल मैं लीना
कामिनि बस जन—सकल विनासा ※ अवधकाण्ड कृतिवास प्रकासा

पिता-प्राणरक्षार्थ राम-वन-गमन-उद्योग

प्रन करि, वचन भूप तुम दीन्हा ※ करत पूर्ण, हिय कातर कीन्हा
सत्य-धर्म-तप कठिन कमाई ※ मिटै तासु किमि राम सहाई

मातृ-बध-भये यदि ना लये परान ※ करिबे तथाति तोर बहु अपमान
विषदन्ते दंशिलि रे काल भुजंगिनि ※ तोरे घरे आनि शेषे मजिनु आपनि
कोन् राजा आछे एन कामिनीर वश ※ कामिनीर कथाय के त्यजेछे औरस
दश हाजार वर्ष लोक जीये त्रेतायुगे ※ नय हाजार वर्ष राज्य करि नाना भोगे
आर एक हाजार वत्सर आयु आछे ※ परमायु थाकिते मजिनु तोर काछे
प्रमाइ थाकिते एत वधिब परान ※ पाये पड़ि कैकेइ, करह प्राणदान
कैकेयीर पाये राजा लोटे भूमि-तले ※ सर्व्वांग तितिल ताँर नयनेर जले
प्रभाते बसिब कल्य सभा विद्यमाने ※ पृथिवीर यत राजा आसिबे से-स्थाने
अधिवास रामेर हइल सबे जाने ※ बलिया कि भाण्डाइब से सकलजने
क्षमा कर कैकेयि करह प्रानरक्षा ※ निज सोहागेर तुमि बुझिला परीक्षा
स्त्रीबाध्य ना हय केह अमार ए वंशे ※ तोर दोष नहे आमि मजि निज दोषे
स्त्री-वश ये जन तार हय सर्व्वनाश ※ गाइल अयोध्याकाण्ड कवि कृत्तिवास

पितृ-सत्य-पालनार्थ श्रीरामचन्द्रेर वन-गमनोद्योग

कैकेइ बलेन, सत्य आपनि करिला ※ सत्य करि वर दिते कातर हइला
सत्य धर्म्म तप राजा करे बहु श्रमे ※ सत्य नष्ट करिले कि करिबेक रामे

तजत सत्य तव सर्व विनासू ॐ पालन-सत्य स्वर्गपुर वासू
अब लौं रवि-शशि-कुल नरनाथा ॐ तिन यश विरद भुवन गुनगाथा
नृप ययाति शर्मिष्ठा रानी ॐ देवयानि पुनि नृप-पटरानी
सबन छोट शर्मिष्ठा-नन्दन ॐ रानिवचन तिन राजु समर्पन
'शिवि' महिपाल भुवन विख्याता ॐ विक्रम अतुल बीर बड़ दाता

दो० लचर[1] दीन अति विप्र इक, देखे लोचन-हीन।
काढ़ि नैन दोउ द्विजहिं दै, तासु विपति हरि लीन ॥ १६ ॥

द्विज-दुख-हरन बचन नरराई ॐ पालन हित निज दीठि गवाँई
सत्य पालि गवने सुरलोका ॐ रविकुल पुनि इक्ष्वाकु विलोका
चहुँ इक्ष्वाकुवंश जग नामा ॐ तासु नाम तव-कुल सरनामा
पितु कर धर्म निबाहन हेतू ॐ अनुजहिं नृपति कीन कुलकेतू
सत्य-धर्म जग होत न करनी ॐ अगम सिन्धु तौ बोरत धरनी
दोउ वर देन वचन, नृप ! हारी ॐ कस कातर, कस पाँव पछारी
माया-नारि-मर्म को जाना ॐ रानि-फंद दसरथ हत ज्ञाना
लोटत अवनि छोभ नरनाहू ॐ यहु भरभण्ड[2] विदित जनि काहू

सत्य लंघे जेइ तार हय सर्व्वनाश ॐ जे सत्य पालन करे, स्वर्ग तार वास
यत राजा हइले चन्द्र - सूर्य - वंशे ॐ से सबार यशोगुण सकले प्रशंसे
ययाति नामेते राजा पालिल पृथिवि ॐ देवयानि नामे ताँर मुख्य महादेवी
शर्मिष्ठार पुत्र हएल सबार कनिष्ठ ॐ पत्नीर बचने राजा तारे दिल राष्ट्र
शिवि नामे राजा छिल पृथिवीर पाता ॐ असम साहसी वीर, नहे अल्प दाता
द्विज एक छिल तार दुइ आँखि शून्य ॐ अत्यंत दरिद्र तार नाहि मिले अन्य
सेइ अन्ध शिवि राजे सत्य कराइल ॐ निज दुइ चक्षु शिवि तारे दान दिले
आपनि हइल अन्ध चक्षे नाहि देखे ॐ सत्य पालि सेइ राजा गेल स्वर्गलोके
इक्ष्वाकु नामेते राजा छिल सूर्य्यवंशे ॐ इक्ष्वाकुर वंश बलि सकले प्रशंसे
पितृ-सत्य करिलेन इक्ष्वाकु पालन ॐ कनिष्ठ भ्रातार तरे दिल राज्य धन
पृथिवी डुबाते पारे सागरेर नीरे ॐ सागर न बाड़े पूर्व्व-सत्य पालिवारे
आमारे करिया सत्य दिले दुइ वर ॐ एखन कातर केन हओ नृप वर
नारीर मायार सन्धि पुरुषे कि पाय ॐ दशरथ पड़िलेन कैकेयी मायाय
भूमे गड़ागड़ि राजा देय अभिमाने ॐ एतेक प्रमाद-कथा केह नहि जाने
हइयाछे अधिवास जाने सर्व्वजन ॐ सबे बले बशिष्ठ, हइल शुभक्षण

---

१ लाचार २ विनाशकारी विघ्न ।

कालिह व्यतीत राम-अधिवासू ※ आजु सबन अभिषेक हुलासू
शुभ मुहूर्त, केहि कारन देरी ※ पूँछत सकल बशिष्ठहिं घेरी
अतुल तेज चहुँ नृप अस छावा ※ अन्त:पुर कोउ पग न बढ़ावा
लखहु सुमंत्र कितै अवधेसू ※ तुम विन आन न सदन प्रवेसू
अगनित भूप अवध जुरि आये ※ सुरगन सुनि अभिषेक सुहाये
अवगत करहु, सुमंत्र ! महीपा ※ कस बिलंब, शुभ घरी समीपा
लखेउ सुमंत्र, भवन महिपाला ※ लोटत धरनि अचेत बेहाला
कस विवर्न[1] आकुल नरराई ※ राम-तिलक सुघरी नियराई

दो० समारोह हित, रहे पुर, अगनित भूप बिराज ।
राजसभा पग धारिए, अब बिलंब केहि काज ।। १७ ।।

हा, सुमंत्र ! तुम मर्म न जाना ※ मम बध यतन कैकई ठाना
अशुभ वैन हिय हूलेसि गाँसी ※ तासु बचन बँधि स्वयं विनासी
धरि मम कथन, राम द्रुत[2] लावौ ※ बैठि अबहिं कछु जुगुति बनावौ
कैकइ कहेउ न देर लगावौ ※ सारथि! अबहिं रघुपतिहिं लावौ
सुनि, रथ लै सुमंत्र, जहँ रामा ※ द्वार त्यागि रथ प्रविशेउ धामा
करि प्रणाम, पुनि दीन सँदेसू ※ मत कछु किय कैकई-नरेसू[3]

कालि श्रीरामेर हइयाछे अधिवास ※ आजि केन बिलंब ना जानि से आभास
राजार प्रतापे हय त्रिभुवन वश ※ भितरे जाइते केह ना करे साहस
पात्र-मित्र वले शुन सुमंत्र सारथि ※ तोमा विना अन्त:पुरे कारो नाहि गति
झट जाह सुमंत्र सारथि अन्त:पुरे ※ सकल देशेर राजा आसिआछे द्वारे
राम अभिषेके आसियाछे देवगण ※ एतक्षण विलंव राजार कि कारण
सुमंत्र सारथि गेल सकलेर वोले ※ देखे, राजा अज्ञान लोटाय भूमितले
वलिछे सुमंत्र केन लोटाओ राजन् ※ रामे राजा करिते हइल शुभक्षण
त्रिलोकेर राजा सव आसियाछे द्वारे ※ विलंब ना कर राजा चलह बाहिरे
राजा वलिलेन, पात्र ना जान कारण ※ मोरे वध करिवारे कैकेयीर मन
बुके शेल मारियाछे वलिया कुवाणी ※ तार सत्ये बन्दी आमि ह'येछि आपनि
रामे शीघ्र आन गिया आमार बचने ※ तुमि आमि राम युक्ति करि तिनजने
कैकेयी वलेन जाह सुमंत्र त्वरित ※ शीघ्र रामे आन नहे बिलंब उचित
शुनिया लइया रथ सारथि चलिल ※ उपस्थित रघुपति जेखाने हइल
वाहिरे खुइया रथ गेल अन्त:पुरे ※ जोड़ हाते कहे गिया रामेर गोचरे

---

१ विकृत २ शीघ्र ३ राजा और कैकई ने ।

पठयेउ लेन, तुमहिं निज साथा * आयसु चलहु बेगि रघुनाथा
प्रियजन-प्रमुख सुमंत्रहि जानी * आसन दै रघुपति सनमानी
बोले, पितु-आयसु मम माथा * अबहिं सुमंत्र चलहुँ तव साथा
पुनि-सीतहिं श्रीराम बुझावा * मम अभिषेक विमातु न भावा
विदित न, छल मंथरा सुझावा * रचना कवन विमातु रचावा
पितहिं साधि कस जुगुति, न जाना *किमि पितु मम हित करहिं विधाना
यहि विधि विदा लीन रघुराई * सिय बरोठ लौं पठवन आई
बाहेर निरखि लोक[1] रघुनाथा * धाय-धाय चहुँ जोरत हाँथा
राम-लखन रथ युगुल विराजा * दरसन हित चहुँ जुरेउ समाजा
हाँफति गर्भवती लौं आई * तजि भय-हिचक कुलबधू धाई

दो० धन परिजन पतिसुख सकल, तिनसों उपज विराग ।
पाप नसावन चलि परीं, राम-दरस अनुराग ।। १८ ।।

पुरजन चहुँ बंदहिं रघुनाथा * गावहिं सकल, राम-गुनगाथा
बड़भागी लहि राम रजाई[2] * जन्म जन्म तव करि सेवकाई
तव मुख दरस सदा सब करहीं * लखि तव पद भवसागर तरहीं
नारि मुग्ध लखि रूप ललामा * सील लचे, तर चितवहिं रामा

कैकेयीर संगे राजा युक्ति करे घरे * मोरे पाठाइला तिनि लइते तोमारे
मुख्यपात्र सुमंत्र श्रीराम तहा जानि * गौरवे दिलेन ताँरे आसन आपनि
बलेन श्रीराम, पित्र आज्ञा शिरे धरि * बिलंब न करि आर, चल यात्रा करि
यात्राकाले श्रीराम वलेन शुन सीता *आमि राज्य पाइब, बिमाता चिंतान्विता
कोन् युक्ति कुंजी दिल विमातार तरे * ना जानि विमाता आजि कोन् युक्ति करे
राजा सह कैकेयी कि करे अनुमान * जानि आसि पिता कि करेन संविधान
सीता स्थाने लइलेन श्रीराम विदाय * प्रकोष्ठे तिनेक सीता अनुव्रजि जाय
बाटीर बाहिर हइलेन रघुनाथ * चारि भिते धाय लोक करि जोड़हाथ
श्रीराम-लक्ष्मण दोंहे चड़िलेन रथे * देखिते सकल लोक धाय चारिभिते
ऊर्ध्व-श्वाशे धाइलेक नारी गर्भवती * लज्जा-भय नाहि माने कुलेर युवती
कि करिबे स्वामी, कि करिबे धने-जने * घुचिबे सकल पाप राम - दरशने
सारि-सारि लोक सबे दाण्डाइया चाय * यतगुण श्रीरामेर, सर्व्वलोके गाय
बहु भाग्ये पाइलाम तोमा हेन राजा * जन्मे-जन्मे राम येन करि तव पूजा
सर्व्वक्षण देखि येन तोमार बदन * सर्व्वलोक मुक्त हवे देखिया चरन
राम-रूपे मजाइल नारीगन चित * नयने ना चान राम परनारी भित

१ जनता २ राज्य ।

दरस विभोर, तजत पछिताहीं ※ चलीं गेह, थिर कोउ-मन नाहीं
बहिर्सदन[1], तजि लछिमन, रामा ※ कीन प्रवेश कैकयी - धामा
कैंकेई जहँ, नृप नत धरनी ※ लोटत, लखी राम यह करनी
रघुपति विनय कीन, कहु जननी ※ केहि बिषाद पितु लोटति धरनी
लखत मोहिं रिस[2] तजि हर्षाहीं ※ पूछेउ, आजु बचन मुख नाहीं
मम अपराध कुपित कछु ताता ※ कवन चूक पितु करत न बाता
भरत - रिपुदमन मातुल - देसू ※ चिरवियोग-तिन, मलिन नरेसू
कै अपराध आन कोउ कीन्हा ※ छिति लोटति, दारुन दुख दीन्हा
कै तुम कछुक कहेउ कटु बाता ※ सत्य सत्य वरनउ मोहिं माता
पितु विन व्यर्थ राज-सुख नाना ※ सुनहुँ सत्य तो पावहुँ प्राना
पितु आयसु पालन सुखकारी ※ मातु! सकल वरनउ विस्तारी
तात-कथन तव-मुख सुनि काना ※ तजहुँ राजु-तन, छार समाना

दो० सरल हृदय, इमि कैकई, पायेउ अवधकिशोर ।
कथा पुरातन कहि चली, कस हिय तासु कठोर ।। १९ ।।

संबर-रन तन जर्जर भूपा ※ मम सेवा लखि मुदित अनूपा

रूप देखि नारी सब मने पुड़े मरे ※ कपाल निंदिया सबे गेल निज घरे
घरे गिया स्त्री सबार मन नहे स्थिर ※ पितृ - पार्श्वे गमन करेन रघुवीर
एक वृहन्देर वहिः रहेन लक्ष्मन ※ भितर आवासे राम करेन गमन
राजा दशरथ भूमे लोटे अभिमाने ※ कैकेयी राजार काछे आछे सेई खाने
श्रीराम वलेन, माता कह त कारन ※ केन पिता विषादित भूमिते शयन
कोप जदि करेन, हासेन मोरे देखे ※ आजि जिज्ञासिले केन कथा नाहि मुखे
कोन् दोषे करिलाम पितार चरणे ※ उत्तर ना देन पिता किसेर कारणे
भरत शत्रुघ्न दुइ भाइ नाहि देशे ※ मातुलेर आलयेते रहिल प्रवासे
बहुदिन गत, न पाइल दुइ जन ※ सेइ मनोदुःखे बुझि विरस वदन
कोन जन किंवा करियाछे अपराध ※ भूमे लोटाइया तेंइ करेन विषाद
तुमि बुझि पितारे कहिला कटु वाणी ※ सत्य करि कह गो विमाता ठाकुरानि
करिवे कि राज्य भोगे पितार अभावे ※ आमारे कह गो सत्य, प्राण पाइ तवे
कि आज्ञा पितार आमि करिब पालन ※ सेइ कथा माता मोरे करह वर्णन
आछुक पितार कार्य्य तोमार वचने ※ राज्यछाड़ि, प्रानछाड़ि, कि छार जीवने
श्रीराम सरल, से कैकेयी पाप-हिया ※ कहिते लागिल कथा निष्ठुर हइया
दैत्य-युद्धे महाराज घायेते जर्ज्जर ※ ताहे सेविलाम, दिते चाहिलेन वर

१ घर के वाहर २ क्रोध ।

विष-वृण पुनि सेयेउँ नरनाहा ※ अवसर युगुल देन वर चाहा
प्रथमहिं भरत राज-अधिकारी ※ दूजे वर रघुपति बनचारी
लहउँ धरोहर अब दोउ बाचा ※ नृपहिं याद, पुरवइँ प्रन साँचा
चौदह वर्ष मूल-फल खाई ※ रहहु जटा तन बल्कल लाई
सुनत राम हँसि बोले बयना ※ आयसु सीस, अबहिं वनगमना
पितहिं न त्रास-प्रयोजन माता ※ तव बानी मोहिं वचन-विधाता
आज्ञा करहु न संशय लेसू ※ सर्वोपरि मोहिं तव आदेसू
पिता-वचन, तव प्रीति, निहारी ※ चौदह वर्ष रहौं वनचारी
भरतहिं तुरत बुलावहु देसू ※ भरत राज मोहिं हर्ष असेसू[1]
बिमल भरत, तिल दोष न गाता ※ धन-जन-राज देहु तिन माता
कैकइ कहेउ, प्रथम बनवासू ※ तबहिं भरत यहि धाम निवासू
मोरे कथन रोष जनि कीजै ※ जटा धारि कानन पथ लीजै
शीश लचाय सुनत नृप वानी ※ भय न लाज, कस बोलत रानी
राम विमातहि दीन दिलासा ※ देर न, गमन आजु बनबासा
जै छन सिय सौंपहुँ महतारी ※ तै छन रहहु धीर तन धारी

विस्फोट हइल पुनः करि सेवा-पूजा ※ ताहे अन्यवर दिते चाहिलेन राजा
एक वरे भरते करिब दण्डधारी ※ आर वरे राम, तुमि हओ वनचारी
दुइवारे दुइ वरे आछे मम धार ※ मम धार शुधि ताँरे सत्ये कर पार
शिरे जटा धरि तुमि परिवा बाकल ※ बने चौद्द वत्सर खाइबा मूल-फल
शुनिया कहेन राम सहास्य - वदने ※ तोमार आज्ञाय माता एइ जाइ बने
करियाछ कोन् काजे पितारे मूर्च्छित ※ लंघिते तोमार आज्ञा नहे त उचित
आछुक पितार काज, तुमि आज्ञा कर ※ तव आज्ञा सकल हइते महत्तर
तव प्रीति हबे, रबे पितार वचन ※ चतुर्द्दश वत्सर थाकिब गिया बन
भरतेरे त्वरिते आनाओ माता, देश ※ भरत हइले राजा आनंद अशेष
कोन् गुण नाहि माता, ताहार शरीरे ※ धन - जन - राज्य - भोग देह भरतेरे
कैकेयी बलेन, राम आगे जाह बन ※ भरत आसिबे तबे एइ निकेतन
आमार कथाय कोप न करिह मने ※ शिरे जटा धरि तुमि आजि जाह बने
हेंटमाथा करिया शुनेन महाराज ※ कि कहिब, कैकेयीर मुखे नाहि लाज
कैकेयीर प्रति राम करेन आश्वास ※ विलंब नाहिक आजि जाब वनबास
यावत् मायेरे सीता करि समर्पण ※ तावत् विलंब माता, सहिबा एखन

---

१ अपार।

दो० धरा बिलोटत अवधपति, छावा विपुल विषाद।
स्वप्न सरिस श्रवनन परत, रानि-राम संवाद ॥ २० ॥

पिता चरन बंदेउ रघुनन्दन ※ दुसह पीर! भूपति किय क्रन्दन
चले परसि पग जब रघुराई ※ 'हाय-राम!' कहि मूर्छा आई
मुख न बोल, नहिं चेत सरीरा ※ बाहेर भये लखन - रघुवीरा
प्रान समान लखन तजि आना[1] ※ कोऊ कतहुँ भेद नहिं जाना
हवन धूप देवन घृतबाती ※ कौशिल्या पूजहि बहुभाँती
बहु विधि भरा - सजा रनिवासू ※ रानि सात शत जहाँ निवासू
रानि सात सौ, औ बहुनारी ※ कैकइ एक न परत निहारी
ढिग-कौशिला रानि-समुदाई ※ चरचा रामतिलक चहुँ छाई
आय राम बन्देउ पुनि माई ※ आशिष दीन मोद अधिकाई
तुमहिं राज निज पितु किय दाना ※ रमा प्रसीदि[2] करइ कल्याना
राज अनन्त, अवनि प्रतिपाला ※ सुख बिलसहु बहुबिधि बहुकाला
पदपंकज शिव - गौरि मनावा ※ उदित पुन्य, सुत नृपपद पावा
कहेउ राम, सुख हेतु न जननी ※ करगत निधि छीनेउ विधि-करनी
आजु, लखन, हम, तुम, सिय चारी ※ मरन योग दुख सिंधु मझारी

भूमे लोटाइया राजा आछेन विषादे ※ शुनेन दोंहार वावय स्वप्न सम बोधे
रामचन्द्र पितार चरण द्वय बन्दे ※ दशरथ क्रन्दन करेन निरानन्दे
पितारे प्रणामि राम चलेन त्वरित ※ 'हा राम' बलिया राजा ह'लेन मूर्च्छित
मुखे नाहि शब्द राजा नाहिक चेतन ※ हइलेन बाहिर जे श्रीराम लक्ष्मन
रामेर ए सब कथा केह नाहि शुने ※ प्राणेर दोसर मात्र लक्ष्मण से जाने
करेन कोशल्या देवी देवता पूजन ※ धूप-धूना-घृतदीप ज्वालिया तखन
नाना उपचारे रानी पूरियाछे घर ※ सात शत सपत्नी से घरेर भितर
सबे मात्र कैकेयी नाहिक एक जन ※ सात शतरानी आर बहु नारीगन
कौशल्यार काछे थाके सातशत रानी ※ 'राम जय' एइ मात्र शब्द सदा शुनि
हेन काले श्रीराम मायेर पद बन्दे ※ आशीर्वाद करे रानी परम आनन्दे
तोमारे दिलेन राजा निज राज्य दान ※ सुप्रसन्ना राजलक्ष्मी करुन कल्यान
नानाविध सुख भुञ्ज हओ चिरजीवी ※ चिरकाल राज्यकर पालह पृथिवी
सेविलाम शिव - शिवा - चरनकमले ※ तुमि पुत्र राजा हओ सेइ पुण्य फले
श्रीराम वलेन, माता, हर्ष कर किसे ※ हातेते आइल निधि गेल दैव दोषे
तुमि आमि सीता आर अनुज लक्ष्मण ※ शोक-सिन्धु-नीरे आजि मजिचारिजन

१ अन्य किसी ने २ प्रसन्न होकर।

तुमसन प्रगट करत भय माता ❋ रचेउ विघ्न कैकई विमाता
भरतहिं राजु मोहिं बनबासू ❋ मत, विमातु निज कीन प्रकासू
दो० सुनि अचेत धरनी गिरी, निरखि, विकल रघुनाथ।
हाय मातुवध पाप मनु, लिखी नरक-गति माथ ॥ २१ ॥
जननि, बन्धु दोउ सम्हरि उठावा ❋ बहु छन जतन चेत पुनि आवा
बानी छीन, कहेउ महरानी ❋ कहहु सकल सुत सत्य कहानी
मम सौगंध दुराव[1] न ताता ❋ कौन दोष बन दीन बिमाता
दोष विमातु न कछु प्रिय जननी ❋ भावी अमिट, अटल विधि-करनी
परिचर्या-पति पुनि-पुनि कीन्हा ❋ हरषि युगुल वर भूपति दीन्हा
मम अभिषेक निरखि यहि लागे ❋ नृप सन वर विमातु दोउ माँगे
भरतहि प्रथम राज अधिकारू ❋ दूजे वर मम देस निकारू
पति बिन गति न, सदा करि सेवा ❋ भल बिमात जीतेउ पितुदेवा
पितु-पद, मातु! होत तव प्रीती ❋ तो न होत अस आजु अनीती
तनय - वचन दारुन दुखदाई ❋ कौशिल्या - उर सेल समाई
कदली कटत विलोटत धरनी ❋ 'तात! तात!' कहि विलपत जननी
गुननिधान नन्दन वनचारी ❋ लखि किमि सकउँ प्रान तन धारी

भीत हइ तोमारे कहिते आमि कथा ❋ प्रमादे पाड़िल माता कैकेयी विमाता
विमातार चरणे जाइते एल वन ❋ भरतेरे राज्य दिते विमातार मन
शुनिया पड़िल रानी हइया मूर्च्छित ❋ 'मा मा बलि' रामचन्द्र डाकेन त्वरित
'मा मा' बलिया राम उच्चैःस्वरे डाके ❋ 'मातृवध करि' बुझि डुबिनु नरके
कौशल्यारे धरि तोले श्रीराम-लक्ष्मन ❋ बहुक्षणे कौशल्यार हइल चेतन
चैतन्य पाइया रानी बले धीरे-धीरे ❋ सकल वृत्तान्त सत्य कह त आमारे
मोर दिव्य लागे जदि ताँड़ाह आमाय ❋ कि दोषे कैकेयी वने तोमारे पठाय
श्रीराम बलेन माता दैवेर घटन ❋ विमातार दोष नाहि, विधिर लिखन
पितृसेवा विमाता करिल बार-बार ❋ दुइ वर दिते छिल पितार स्वीकार
आजि आमि राजा हब सकलेर आगे ❋ शुनिया बिमाता सेइ दुइवर मागे
एक वरे भरते करिते दण्डधर ❋ आर वरे आमि जाइ वनेर भितर
स्वामि बिना स्त्रीलोकेर नाहि आर गति ❋ विमातार सेवाय पितार प्रीति अति
तुमि यदि सेवा माता करिते पितारे ❋ तबे केन एत ताप घटिबे तोमारे
एत यदि कहिलेन श्रीराम मायेरे ❋ फुटिल दारुण शेल कौशल्या-अन्तरे
काटिले कदली लेन लोटाय भूतले ❋ 'हा पुत्र' बलिया रानी राम प्रति बले
गुणेर सागर पुत्र यार जाय बन ❋ से नारी केमने आर राखिबे जीवन

1 छिपाव।

प्रथम वरन[1], मैं नृप-पटरानी ※ सौति कैकई पातक - खानी
राजहिं छलि, मम सुत वनवासा ※ करि पापिनि मम सकल बिनासा
मरन अकाल न रविकुल राजू ※ सो न प्रान मम निकसत आजू
देव - देवि बहु पूजे चरना ※ अहह! तासु फल सुत-वनगमना

दो० अखिल भूप रविकुल कबहुँ, रहे न नारि अधीन ।
आजु सवति[2] के फंद फँसि, नृपति अजस जग लीन ॥ २२ ॥

नारि-कथन सुत पठवइ कानन ※ तेहि पितु आयसु उचित न पालन
कहेउ लखन, तिय-बस पितु कहहीं ※ तौ कस राजु बिसर्जन करहीं
जेठहिं राजु सदा चहुँ गावा ※ केहि अपराध अरण्य पठावा
राजु प्रथम दै, पुनि बनबासू ※ अमिट भुवन पितु-अजस-प्रकासू
खबरि न जब लौं होय प्रचारा ※ करइँ राम शासन अधिकारा
नृप उन्मत्त कुमति सठियानी ※ सदा बिबस, बस-कैकइरानी
आयसु; भरत हनउँ यहि लागे ※ शासन लाय धरउँ प्रभु आगे
मैं सेवक, अनुमति तव पावौं ※ भरत-कटक छिन धूरि मिलावौं
जो कहुँ स्वयं गहउ धनु-सायक ※ को समर्थ समुहै[3] रघुनायक

राजार प्रथमा जाया आमि महारानी ※ चण्डाली हइल मोर कैकेयी सतिनी
घटाइल प्रमाद कैकेयी पापीयसी ※ राजारे कहिया रामे करे बनबासी
सूर्य्यवंश-राज्ये नाहि आकाल मरन ※ एई से कारने मम ना जाय जीवन
पूजिलाम कत-शत देव-देवीगणे ※ तार की ए फल बाछा तुमि जाह वने
सूर्य्यवंशे यत-यत राजा जन्मेछिल ※ बल देखि, स्त्रीर वाक्ये के हेन करिल
अयश राखिल राजा नारीर वचने ※ स्त्रीवाध्य-पितार वाक्ये केन जावे बने
स्त्रीर वाक्ये जिनि पुत्रे पाठान कानने ※ तेमन पितार कथा ना शुनिओ काने
लक्ष्मण बलेन सत्य तव कथा पूजि ※ स्त्रीवश-पितार वाक्ये केन राज्य त्यजि
ज्येष्ठपुत्र राज्य पाय इहा सबे घोषे ※ हेन पुत्रे वने राजा पाठान कि दोषे
आगे राज्य दिया परे पाठान कानने ※ हेन अपयश पिता राखेन भुवने
यावत् ए सब कथा ना हय प्रचार ※ तावत् श्रीरामचन्द्र लह राज्य भार
वार्द्धक्य दुर्बुद्धि राजा नितान्त पागल ※ करियाछे वाध्य ताँरे कैकेयी केवल
यदि रघुनाथ, आमि तव आज्ञा पाइ ※ भरते खण्डिया राज्य तोमारे देवाइ
आमि एइ आछि राम, तोमार सेवक ※ आज्ञा कर भरतेर काटिब कटक
तुमि यदि हस्ते प्रभु धर धनुर्व्वाण ※ तव रामे कोन् जन हबे आगुयान

१ पाणिग्रहण २ सौत पत्नी ३ सामना कर सके ।

कौशल्या पुनि कौन समर्थन ※ वचन-विमातु उचित नहिं कानन
करि निबाह इक पितु-प्रन पालन ※ भरतहिं सकल समर्पहु सासन
दूजे प्रन पालन जनि हेतू ※ बन तजि, अवध रहौ रघुकेतू
तजि मम कथन, वचन-पितु धारी ※ पितु सों श्रेष्ठ सदा महतारी
दुसह गर्भ दुख, पुनि तव पालन ※ दुलखत[1] सोइ जननी केहि कारन
बहु पितु-वचन ! तुच्छ मम बानी ※ कौन शास्त्र मत ? सुनी न जानी
कथा राम पुनि सविनय वरनी ※ पितु पद परम, पूज्य तव जननी

दो० परशुराम पितु-वचन धरि, काटेउ जननी-शीस ।
पितु आयसु गोबध कियेउ, अष्टावक्र मुनीस ।। २३ ।।

सन्तति-सगर कलेसन गाथा ※ मातहिं पुनि वरनेउ रघुनाथा
यदपि विकल मम-दुख अति ताता ※ सतपथ अटल तबहुँ लखु माता
सो पितु-वचन करौं जनि पालन ※ जीवन वृथा, वृथा सुख-सासन
तजैं विमातु, लखत[2] पितुदेवा ※ निसि दिन, मातु ! करेउ तिन सेवा
कौशिल्या हटकेउ रघुराई ※ तव वनगमन प्रान मम जाई
जननी-वध-समान नहिं पापा ※ पालक, जासु विपुल संतापा
जनक-उलंघन[3], जननी-घाता ※ गुरुतर[4] कवन ? विचारहु ताता

कौशल्या बलेन राम कि बले लक्ष्मण ※ विमातार वाक्ये तुमि केन जावे बन
पालह पितार एक - सत्य अंगीकार ※ भरतेर देहे तुमि सब राज्य भार
अन्य सत्य पालिते नाहिक प्रयोजन ※ देशे थाक राम, तुमि ना जाइओ बन
मायेर वचन लंघि पितृ वाक्य धर ※ पिता हैते माता तव अति महत्तर
गर्भे धरि दुःख पाय, स्तन दिया पोषे ※ हेन मातृ-आज्ञा राम, लंघ तुमि किसे
बापेर वचन राख, लंघ मातृवाणी ※ कोन शास्त्रे हैन कथा, कोथाओ ना शुनि
श्रीराम बलेन, माता, शुन एक कथा ※ पिता से परम गुरु तोमार देवता
देखह परशुराम पितार कथाय ※ अस्त्राघात करिलेन मायेर माथाय
पितार आज्ञाय अष्टाबक्रेर गोवध ※ सगर जन्माय पुत्रगणेर आपद
सत्य ना लंघेन पिता, सत्येते तत्पर ※ मम दुःखे पिता कत हवेन कातर
पितृ-सत्य यदि आमि ना करि पालन ※ वृथा राज्य-भोग मम, वृथा इ जीवन
बर्ज्जिवेन विमातार पिता, लय मने ※ करिह ताँहार सेवा तुमि रात्रि दिने
कौशल्या बलेन, राम, सत्य जाह बन ※ तुमि वने गेले आमि त्याजिव जीवन
मातृवध करिले हइवे तव पाप ※ मातृवध-पापे राम, पावे बड़ ताप
पितृसत्य पालिवे जे मायेर मरणे ※ कोन् पाप बड़ राम, भाव देखि मने

---

१ बात टालते हो २ ऐसा मालूम पड़ता है ३ अवज्ञा ४ अधिक बड़ा (पाप)।

ताल देहिं, लछिमन रिसि पाई ※ मति-भ्रम तुमहिं, कहेउ रघुराई

छं० राजपाट अनुराग, तात ! तव उत्कण्ठा जस भारी ।
तस वनगमन लगन मनमोहन मोहि रुचिर मुदकारी ।।
कूबरि दोष न दोष विमातहिं, घातैं चलीं विधाता ।
नेह-सनी, इमि नतरु होत किमि मम विपरीत विमाता ।।
तनय भरत सों, लखत मोर मुख, तेहिं अपराध न लेसू ।
विधि की गति विधि जानत नीके, छमहु बन्धु, तजि रोषू ।।
सुख-दुख लिखा ललार, भोग बिन अमिट कर्म के बन्धन ।
तोष-वचन सुनि रोष फुंकरत गर्जि सुमित्रानन्दन ।।

धनु प्रतञ्च धरि डग चहुँ धरई ※ लछिमन सुभट कोपि पुनि कहई
सासन तजहिं, होयँ वनचारी ※ राज भोग तजि साकाहारी
तप संन्यास आदि द्विज - कर्मा ※ युद्ध सदा प्रिय क्षत्रिय-धर्मा
कबहुँ न क्षत्रिय कानन काजू ※ परि रिपु-बचन तजै निज राजू
रिपु सम जगत विमातहिं ख्याती ※ सो हित राजु तजिय केहि भाँती
पितु मन सदा रमत तुम रामा ※ पितु कर मरन, तजत तव धामा
तुम विन, पितु पयान परलोकू ※ जननि दुसह घातक सुत-सोकू

आस्फालन लक्ष्मण करेन अतिशय ※ श्रीराम बलेन, तव बुद्धि भाल नय
यत यत्न कर तुमि राज्य लइवारे ※ तत यत्न करि आमि जाइते कान्तारे
विमातार दोष नहे, दोषी नहे कुब्जी ※ सकलि देखिवे भाइ, विधातार बाजी
विमाता जानेन भाल आमार चरित्र ※ जानिया शुनिया करिलेन विपरीत
भरथ हइते ताँर आमा प्रति आशा ※ विमातार दोष नाइ, आमार दुर्द्दशा
जे दिन जा हबे ताहा विधि सब जाने ※ दुःख ना भाविओ भाइ, क्षमा देह मने
दुःख ना भुञ्जिले कर्म्म ना हय खण्डन ※ सुख-दुःख देख भाइ ललाट लिखन
प्रवोध ना माने, कालसर्प येन गर्ज्जे ※ सुमित्राकुमार वीर घन-घन तर्ज्जे
धनुकेते गुन दिया चाहे चारि भिते ※ कुपिया लक्ष्मण वीर लागिल कहिते
राज्यखण्ड छाड़िया हइब वनवासी ※ राज्यभोग त्यजि फल-मूल अभिलाषी
संन्यास तपस्या यत ब्राह्मणेर कर्म्म ※ क्षत्रियेर सदा युद्ध, सेइ तार धर्म्म
क्षत्रिय कोथाय के करेछे वनवास ※ शत्रुर बचने केन छाड़ि राज्य आश
सबे जने विमाता शत्रुर मध्ये गणि ※ तार वाक्ये राज्य छाड़े, कोथाओ ना शुनि
तोमा विना पितार मनेते नाइ आन ※ तुमि वने गेले पिता त्याजिबेन प्रान
तोमा विना पिता जाइबेन परलोके ※ प्रान त्यजिबेन माता तोमार पुत्र-शोके

तव बिछोह पितु-मातु नसावन * तिन बध हेतु बनहु केहि कारन

दो० धिक् अजानु भुजदण्ड मम, खड्ग चर्म्म धनु शूल ।
रघुपति आयसु मिलत छन, करउँ भरत निर्मूल ॥ २४ ॥

हेतु न सम्पति, सकल असारा * दास रहत प्रभु विपति पहारा !
रघुपति कहेउ, न भरतहिं दोषू * निपट अजान, अकारन रोषू
भरत अबुझ, अभिसन्धि[1] न ज्ञाना*अमिट,अनुज! विधिरचित विधाना
बहु कौशिल्या-लखन बुझावा * राम दयामय तनिक न भावा
मातहिं पुनि प्रबोधि कह वचना * आयसु मिलै आजु वन-गमना
दृग जल, कहेउ जननि इमि रोई * अब धौं मिलन सुवन ! कब होई
बहु आराधि मंत्र जो पाये * राम-स्रवन[2] कौशिला सुनाये
चौदह वर्ष कुशल वन करहीं * अष्टलोकपति छाया धरहीं
विधि, हरि, गौरि, गनेश, कुमारा[3]* रमा, सरस्वति, रुद्र अँगारा[4]
द्वादश भानु छत्र शिर धरहीं * छिति-जल-थल सुत-मंगल करहीं
चौदह वर्ष रहै मम जीवन * तौ सुत ! लौटि होय तव दरसन
बन्दि मातु पद, लीन बिदाई * सिय ढिग चले लखन-रघुराई

एइ शोके पिता-माता मरिबे दु'जने * पिता-माता बध तुमि कर कि कारने
अकारणे हेर ए आजानु-बाहु-दण्ड * अकारणे धरि आमि धनुक प्रचण्ड
अकारणे धरि खड्ग चर्म्म भल्ल शूल * आज्ञा कर भरतेरे करिब निर्म्मूल
सकलि हइल व्यर्थ ए सब सम्पद * आमि दास थाकिते प्रभुर ए आपद
श्रीराम बलेन, तार नाहि अपराध * भरत ना जाने किछु ए सब प्रमाद
अकारणे भरतेरे केन कर रोष * विधिर निर्ब्बन्ध इहा ताहार कि दोष
रामेरे प्रबोध देन कौशल्या लक्ष्मण * दयामय राम नाहि शुनेन वचन
मायेरे कहेन राम प्रबोध-वचन *आज्ञा कर माता, आजि जाइ आमि वन
कौशल्या कहेन रामे सजल नयने * ना जानि हइबे कबे देखा तव सने
जे मंत्र कौशल्या पेयेछिल आराधने * सेइ मंत्र दिल रानी श्रीरामेर काने
चतुर्द्दश वर्ष वने थाकिबे कुशले * अष्ट लोकपाल राख आमार छाओयाले
ब्रह्मा विष्णु राखुन कार्त्तिक गणपति * लक्ष्मी सरस्वती रक्षा करुन पार्व्वती
एकादश रुद्र आर द्वादश जे रवि * जले-स्थले रक्षा तोमा करुन पृथिवी
चौद्द वर्ष रहे यदि आमार जीवन * तबे तोमा सने पुनः हबे दरशन
विदाय लइया राम मायेर चरणे * गेलेन लक्ष्मण सह सीता संभाषणे

---

१ षड्यंत्र २ कानों में ३ स्वामिकार्तिक ४ एकादश रुद्र ।

उदित कर्म मम सिय! कछु आजू * वचन-विमातु मिलेउ वनसाजू
बीतेउ वर्ष ब्याहि घर आई * रचेउ फन्द बिच कैकइ माई
भरतहिं राजु तासु अभिलासा * सोइ कारन मम-हित बनबासा
चौदह वर्ष रहउँ बनचारी * निसि दिन प्रिय सेवहु महतारी

दो० जनकनन्दिनी बैन-पति, सुनि अति भई निरास।
कहेउ चरन-श्रीनाथ विन, केहि बिधि अवध निवास ॥ २५ ॥

नाथ! परम गुरु तुम मम देवा * करि अनुगमन करउँ प्रभु सेवा
जियब संग पति, पति सहमरना * स्वामिन्! गति-नारी विन पति ना
प्रियतम! कस अकेल बनबासी * प्रस्तुत मग-सेवा-हित दासी
भरमत विविध दुःख वनदेसू * कछु चलि संग बटावउँ क्लेसू
कहौ जु,'सिय! वन विपति महाना'* प्रभु मुख दरस मिटैं दुख नाना
प्रभु हित रोग शोक नहिं जाना * प्रभु सेवा दुख सुखद महाना
उचित न संग चलब प्रिय! तोरा * दण्डक वन दारुण अति घोरा
सिंह व्याघ्र निसिचर-दल फिरई * वयस बारि[1] साहस किमि करई
राजसदन बहु सुख बहु भोगू * दण्डक भ्रमन मूल-फल-योगू
इत पर्यंक[2] सुखद सुखसयना * उत कुस-काँस चरन दुखदयना

श्रीराम वलेन, सीता निज कर्म्म दोषे * विमातार वाक्ये आमि जाइ वनवासे
विवाह करिया एक वर्ष आछि घरे * हेन काले विमाता फेलिल महाफेरे
ताँहार वचने आमि जाइ वनवास * भरतेरे राज्य दिते विमातार आश
चतुर्द्दश वर्ष आमि थाकि गिया वने * तावत् मायेर सेवा कर रात्रि दिने
जानकी वलेन सुखे हइया निराश * स्वामि विना आमार किसेर गृहवास
तुमि से परम गुरु तुमि से देवता * तुमि यथा जाओ प्रभु, आमि जाइ तथा
स्वामि विना स्त्रीलोकेर नाहि आर गति * स्वामीर जीवने जीये-मरणे संहति
प्राणनाथ, एकाकेन हबे वनवासी * पथेर दोसर हब संगे लह दासी
वने प्रभु, भ्रमण करिबे नाना क्लेशे * दुःख पासरिबे यदि दासी थाके पाशे
यदि वल, सीता वने पावे नाना दुःख * शत दुःख घुचे यदि देखि तव मुख
तोमार कारणे रोग-शोक नाहि गनि * तोमार सेवाय दुःख-सुख सम मानि
श्रीराम वलेन शुन जनक-दुहिते * विषम दण्डक वन न जाइओ साथे
सिंह-व्याघ्र आछे तथा राक्षसी-राक्षस * वालिका हइवा केन कर ए साहस
अन्तःपुरे नाना भोगे थाक मनःसुखे * फल मूल खेये केन भ्रमिबे दण्डके
तोमार सुसज्जा शय्या पालंक कोमल * कुशांकुरे विद्ध हबे चरणकमल

१ कम उम्र २ पलँग।

दोउ विरूप हम-तुम छबि-हीना ※ होयँ निरखि दोउ प्रीति-विहीना
चौदह वर्ष अवधि करि पूरी ※ दोउ सुख करहिं, न कछु अति दूरी
तजि मन सोच, शांति करु धारन ※ फिरत विषम वन दनुज हजारन
काँपत अधर, कोप सुनि व्यापा ※ रामहिं कहेउ सहित संतापा
कवन हेतु पितु दिय श्रीचरना ※ पण्डित कहत अबुझ सम वचना
भय मानत राखत तिय तीरा ※ तिनहिं सराहिय किमि बलबीरा

दो० जेठ बंधु - सासन गहत, भरत न कीन बिलंब ।
तहाँ, नारि तव, बोलिए, रहै कवन अवलंब ॥ २६ ॥

करगत राजु हरन छिन माहीं ※ नारि-हरन तहँ अचरज नाहीं
वन अनुगमन कष्ट कुस-घाता ※ प्रभु संगति, तृन सम, सुखदाता
वन भरमत तन लागै धूरी ※ लखौं अगरु-चन्दन सम रूरी[1]
तव सह जो निवास तरु-छाहीं ※ सो सुख सुलभ स्वर्ग मोहिं नाहीं
दुख, सुख सकल अहार, विहारा ※ मोहिं अनुभूति नाथ अनुसारा
उपजै छुधा तृषा श्रम कारन ※ निरखि श्याम छबि करौं निवारन
तप-उपवन बहु तीरथ पावन ※ दरस, भ्रमन गिरि विविध सुहावन
शैशव, जब पितुधाम निवासा ※ मुनिजन कीन्ह भविष्य प्रकासा

तुमि-आमि दोंहे हब विकृत आकृति ※ दोंहे दोंहाकारे देखि ना पाइब प्रीति
चतुर्द्दश वर्ष गेले देख बुझि मने ※ एइ काल गेले सुखे थाकिव दुजने
चिन्ता ना करिओ कान्ते,क्षान्त हओ मने ※ विषम राक्षसगुला आछे सेइ बने
श्रीरामेर वचने सीतार ओष्ठ काँपे ※ कहेन रामेर प्रति कुपित सन्तापे
पण्डित हइया बल निब्बोंधेर प्राय ※ केन हेनजने पिता दिलेन आमाय
निज नारी राखिते जे करे भय मने ※ देख ताय वीर बले कोन वीरजने
राज्य निते भरत ना करिल अपेक्षा ※ तार राज्ये स्त्री तोमार किसे पारे रक्षा
जे जन ग्रहण करे राजत्व तोमार ※ लइबे तोमार नारी बिलंब कि तार
तव संघे बेड़ाइते कुश-काँटा फुटे ※ तृणहेन वासि तुमि थाकिले निकटे
तव संगे थाकि जदि लागे धूलि गाय ※ अगरु-चन्दन-चुया[2] ज्ञान करि ताय
तव संगे थाकि यदि पाइ तरुमूल ※ स्वर्गधाम नहे कभु तार सम तुल्य
तव दुःखे दुःख मम, सुखे सुखभार ※ आहारे आहार आर विहारे विहार
क्षुधा-तृषा लागे यदि भ्रमिया कानन ※ श्याम रूप निरखिया करिव वारण
वहुतीर्थ देखिब अनेक तपोवन ※ नाना विध पर्व्वते करिब आरोहण
लखन पितार घरे छिलाम शैशवे ※ बलितेन आम्राके देखिया मुनि सबे

---

१ सचमुच २ चोया (चोभा) ।

सुनहु जनक ! सिय सुता तुम्हारी ※ पति सहचरी होय बनचारी
विप्र वचन, प्रभु ! कबहुँ न व्यर्था ※ विधि वनवास रचेउ मम अर्था
जो मोहि तजौ, तजउँ मैं प्राना ※ कतहुँ न तियवध-पातक त्राना
कहेउ राम, बहु बिधि मैं जाँचा ※ सिय ! संकल्प अटल तव साँचा
प्रिय ! बनबास हेतु तव प्रीती ※ अभरन[1] तजहु, चलहु बनरीती
उपजेउ मोद सुनत वैदेही ※ भूषन विविध सकल तजि देही
सम्मुख जे सुपात्र द्विजवृन्दा ※ सौंपि कहेउ, उर अमित अनन्दा
द्विज-वनितन अर्पन परिधाना ※ द्विजगन ! सफल करहु मम दाना

दो० निज संपति-धन-बसन बहु, सिय वितरित सब कीन ।
चितइ लखन तन राम पुनि, मधुर सिखावन दीन ।। २७ ।।

पालहु प्रजा, देस रहि, नीके ※ दासी दास राखि मन सबके
राजलोभ मन कबहुँ न लेसू ※ पुरजन परिजन हरहु कलेसू
जब पितु-जननि शोक मम करहीं ※ तव मुख निरखि शांति कछु लहहीं
हम तुम विलग, अनुज ! कहुँ नाहीं ※ मम वियोग, लखि तुमहि भुलाहीं
लखन कहेउ, चलिहौं प्रभु साथा ※ अनुचर जानि, लेहु रघुनाथा
मैं तुम एक, विदित विधि पाहीं ※ बिन मम, नाथ ! काज बन नाहीं

शुन हे जनकराज, तोमार दुहिता ※ करिवेन वनवास पतिर सहिता
ब्राह्मणेर-कथा कभु ना हय खण्डन ※ बनवास आछे मम ललारे लिखन
तुमि छाड़ि गेले आमि त्याजिब जीवन ※ स्त्रीवध हइले नाहि पाप - विमोचन
श्रीराम वलेन बुझिलाम तव मन ※ तोमाय परीक्षा करिलाम एतक्षण
हइयाछे वनवास हेतु तव मन ※ खुलिया फेलह तव गाय आभरण
एतेक शुनिया सीता हरिष अंतरे ※ खुलिलेन अलंकार या छिल शरीरे
सम्मुखे देखेन यत ब्राह्मण सज्जन ※ ता सबारे देन तिनि निज आभरण
आभरण समर्पिया कन सीता वाणी ※ भूखन परेन जेन तोमार ब्राह्मणी
सीतार भाण्डारे छिल वहु वस्त्र-धन ※ से सकल करिलेन तिनि वितरण
श्रीराम वलेन शुन अनुज लक्ष्मण ※ देशेते थाकिया करि सबार पालन
दास-दासी सबाकारे करिओ जिज्ञासा ※ राज्य लइवारे भाइ, ना करिह आशा
पिता-माता कातर हवेन मम शोके ※ कतक हबेन शान्त तव मुख देखे
जेइ तुमि सेइ आमि, शुनह लक्ष्मण ※ एकेरे देखिले हय शोक निवारण
लक्ष्मण वलेन, आमि हइ अग्रसर ※ संगे आमि थाकिब हइया अनुचर
जेइ तुमि सेइ आमि, विधि ताह जाने ※ आमि यदि ग्रह थाकि, कि करिबे बने

[1] आभूषण ।

संग मातु सिय, वन-वन फिरहीं ❋ बिन सेवक अपार दुख लहहीं
राजलली दुख कबहुँ न जाना ❋ विना दास, वन विपति महाना
जो वन-गमन—कहेउ रघुनायक ❋ बाँधहु लखन! विषम धनुसायक
विकट दनुज दल, बन रन घोरा ❋ जीतिय, धरि धनुवान कठोरा
आयसु पाय बिलंब न लाये ❋ अतुल तीक्ष्ण सर लखन जुटाये
धन भण्डार यतक[1] यहि लागे[2] ❋ आनहु अनुज! धरहु मम आगे
धन मम कछु न प्रयोजन आना[3] ❋ करहु सकल विप्रन हित दाना
कुलप्रोहित ऋषि मुनिन समाजू ❋ दै धन तृप्त करहु तिन आजू
द्विज कुलीन जहँ लगि जहँ पावौ ❋ मन वाञ्छित तिन आस पुरावौ
दुखी दरिद्र अपंग[4] भिखारी ❋ जस चाहना, करौ अनुसारी

दो० मम वियोग जिन वेदना, विकल जहाँ जे लोक।
वर्ष चतुर्दश हेतु धन, दै मेटहु तिन शोक ॥ २८ ॥

आयसु पाय राम रघुराई ❋ धरेउ विपुल धन संपति लाई
अमित दान! धन बचेउ न कोषा ❋ राम सबन मृदु बैनन तोषा
करि मम याद सोक नहिं काजा ❋ भरत करइँ प्रतिपाल समाजा
भरत विमल तन-मन नहिं दोषू ❋ तिन आचरन सदा संतोषू

सीता संगे केमने भ्रमिबे वने-बने ❋ सेवके छाड़िले दुःख पावे दुइ जने
राजार कुमारी सीता दुःख नाहि जाने ❋ सेवक बिहने दुःख पावेन कानने
श्रीराम बलेन, भाइ, जाबे जदि वन ❋ बाछिया धनुक-वाण लह रे लक्ष्मण
विषम राक्षस सब आछे सेइ वने ❋ धनुर्व्वाण लह, येन जयी हइ रणे
पाइया रामेर आज्ञा लक्ष्मण सत्वर ❋ भाल-भाल वाण सब बाँधिला विस्तर
श्रीराम बलेन, शुन लक्ष्मण सत्वरे ❋ तल्लास करह धन, कि आछे भाण्डारे
धने आर आमार नाहिक प्रयोजन ❋ ब्राह्मण सज्जने देह, आछे यत धन
मुनि-ऋषि आदि करि कुलपुरोहित ❋ से सबारे धन दिया तोषह त्वरित
वाछिया-बाछिया आनि कुलीन ब्राह्मण ❋ येवा यत चाहे तारे देह तत धन
जतेक दरिद्र आछे, भिक्षा मागि खाय ❋ से सबारे देह धन येवा यत चाय
मम दुःखे यत लोक हइबेक दुःखी ❋ चतुर्दश वर्ष येन हय तारा सुखी
पाइला लक्ष्मण यदि श्रीराम-आदेश ❋ ताँहार सम्मुखे धन आनेन अशेष
भाण्डार करेन शून्य धन वितरणे ❋ सवारे तोषेन राम मधुर वचने
आमालागि तोमरा न कारिओ क्रन्दन ❋ करिबे भरत - भाइ सवारे पालन
कोन दोषे नाहि भाइ भरत-शरीरे ❋ वड़ तुष्ट आछि आमि तार व्यवहारे

१ जितना भी २ इसी समय ३ अन्य, इतर ४ लाचार।

करि उत्सर्ग[1] रत्न बहु नाना ※ कोष न शेष, अखिल[2] किय दाना
बचेउ न कछु, सब दृव्य लुटावा ※ त्रिजटा नाम विप्र सुनि पावा
निपट दीन, सुनि विरद महाना ※ मति न धीर सुनि अतुलित दाना
गलि असमर्थ, विलोचन-हीना ※ गृहनी[3] टेरि सिखावन दीना
याचक राम अयाच्य बनावा ※ हम दोउ जरठ[4] मरन नगिचावा
तुम अशक्त मैं नारि बिचारी ※ उदर चलै किमि ? संकट भारी
गिरत-परत द्विज लकुटि[5] सहारे ※ कौन गोहार राम के द्वारे
त्रिजटा नाम, शिथिल मम-गाता ※ द्विज दरिद्र मोहिं रचेउ विधाता
गृह ब्राह्मणी, जरठ सुतहीना ※ मरत दोऊ नित अन्न-विहीना
चलेउँ लकुटि बल, करहु सनाथा ※ दोनहिं गति न बिना रघुनाथा
कहेउ राम, धन शेष न लेसू ※ लक्ष धेनु लै गमनौ देसू
लहि गोदान मोद अधिकाई ※ चलि गोसदन समेटत गाई

दो० शिखा बाँधि पुनि छड़ी लै, गिरत परत पग दीन ।
वसन धेनु पकरत विफल, लखेउ सबन द्विज दीन ।। २९ ।।

सुरभिन[6] द्विज झुरमुट भयकारी ※ हसत कोऊ, कोउ निरखि दुखारी
ब्रह्मघात पातक शिर जानी ※ रघुपति कहेउ सुकोमल बानी

नाना रत्न करिलेन राम परिहार ※ दाने शून्य करिलेन यतेक भाण्डार
सकल भाण्डार शून्य, नाहि आर धन ※ हेन काले वार्त्ता पाय त्रिजट ब्राह्मण
वड़इ दरिद्र से, त्रिजट नाम धरे ※ दान-कथा शुनिआ से धड़ फड़ करे
चलिते शकति नाइ, चक्षु क्षीण हय ※ ब्राह्मणी ताहाके हित उपदेश कय
दीनेरे करेन धनी, दिया राम धन ※ तुमि आमि बुड़ा-बुड़ी मरि दुइजन
तुमि वृद्ध, आमि वृद्धा, दुःखये अपार ※ के आर पुषिबे, कोथा मिलिबे आहार
शुनिया ब्राह्मण तबे नड़ि-भर करे ※ अति कष्टे गिया कहे रामेर गोचरे
आमि द्विज दरिद्र त्रिजट नाम धरि ※ वृद्धकाले ब्राह्मणीके पुषिते ना पारि
पुत्रिहीन आमरा के करिबे पालन ※ अनाहारे बुड़ा-बुड़ी मरि दुइ जन
नड़ि-भर करिया ये आहेनु संप्रति ※ तोमा बिना दरिद्रेर नाहि आर गति
श्रीराम बलेन, द्विज, आसियाछ शेषे ※ धन नाइ, लक्ष धेनु ल'ये जाह देशे
धेनु-दान पेये द्विज हरिष अन्तरे ※ कापड़ आँटिया जाय पालेर भितरे
दृढ़ करि चुल बाँधि नड़ि करि हाते ※ पालेते प्रवेश करे उठिते-पड़िते
बुड़ार विक्रम देखि भावे सर्व्व जने ※ धेनुते मारिबे आजि ए बृद्ध ब्राह्मणे
हासिया विह्वल केह, कारो वा विषाद ※ ब्राह्मणेर वध हेतु घटाल प्रमाद

---

१ त्याग २ सर्वस्व ३ पत्नी ने ४ वृद्ध ५ लाठी ६ गायों के साथ ।

कहत सकोच, एक लख गाई ❋ कठिन सम्हारब हे द्विजराई !
संकट एक धेनु बस कीन्हे ❋ जियहु न धेनु लात हनि[1] दीन्हे
गैयन सहित देहुँ मैं ग्वाला ❋ करै सदा सुरभिन[2] प्रतिपाला
निर्धन अति द्विज, मोहिं प्रतीती ❋ लेहु इतर धन जो तव प्रीती
अस अभिलाष न कछु रघुनन्दन ❋ गोधन आन[3] न नाथ प्रयोजन
अमित क्षीर सुख दोउ नित लहहीं ❋ कतक बेंचि धन संग्रह करहीं
सब की गति तुम नाथ-अनाथा ❋ वरनि सकै को तव गुनगाथा
गो-लख लै द्विज चलेउ निवासा ❋ अवधकाण्ड वरनेउ कृतिवासा

श्रीराम-लक्ष्मण-सीता की वन-यात्रा और शृंगवेरपुर-गमन

रघुपति सबन विभव विस्तारे ❋ कौतुक ! दरिद धनी भये सारे
तजि प्रभु राज चले बनबासा ❋ शिर धुनि विकल सकल निज बासा
पुर तजि चले अतुल दोउ वीरा ❋ युगुल मध्य छबि सीय सरीरा
अवध प्रजा विलाप अति भारी ❋ सिय पाछे धाईं पुरनारी
सकी न जेहि रवि-किरन निहारी ❋ सो सिय आजु प्रकट बनचारी
चतुर्दोल सुबरन असवारी ❋ सो रघुपति भूतल पदचारी

श्रीराम बलेन, द्विज, कहिते डराइ ❋ ना पारिबे लइवारे एक लक्ष गाइ
एक धेनु लइते तोमार ए संकट ❋ मरिवारे जाह केन धेनुर निकट
धेनुर सहित दान दिलाम गोयाल ❋ गोयाले राखिबे धेनु, थाके यतकाल
अनुमाने बुझि तुमि बड़इ निर्धन ❋ आज्ञा कर, दिते पारि अन्य किछु धन
द्विज बले प्रभु, नाहि चाहि आर धन ❋ धेनु-धन बिना नाहि अन्य प्रयोजन
बुड़ा-बुड़ी धेनु-दुग्ध खाइब अपार ❋ कत दुग्ध बिकि दिया पूरिब भांडार
अनाथेर नाथ तुमि सकलेर गति ❋ कहिते तोमार गुण काहार शकति
एक लक्ष धेनु ल'ये द्विज गेल देशे ❋ रचिल अयोध्याकांड कवि कृत्तिवासे

श्रीराम, सीता ओ लक्ष्मणेर वनवास-यात्रा ओ शृंगवेरपुरे गमन

रामेर प्रसादे बाड़े सबार ऐश्वर्य्य ❋ दरिद्र हइल धनी शुनिते आश्चर्य्य
राज्यखण्ड छाड़ि राम जान वनवासे ❋ शिरे हाथ दिया काँदे सबे निजवासे
माझे सीता आगे-पाछे दुइ महावीर ❋ तिन जन हइलेन पुरीर बाहिर
स्त्री-पुरुष काँदे यत अयोध्या-नगरी ❋ जानकीर पिछे जाय अयोध्यार नारी
जे सीता ना देखितेन सूर्य्यार किरण ❋ सेइ सीता बने जान, देखे सर्व्वजन
जेइ राम भ्रमितेन स्वर्ण चतुर्द्दोले ❋ सेइ प्रभु राम पथ बाहेन भूतले

---

१ लात-प्रहार २ गायों का ३ अन्य ।

दो० देखी अस अनरीति जनि, कबहुँ न सुनेउ प्रसंग ।
बाल बृद्ध बनिता सकल, रोय उठे इकसंग ॥ ३० ॥

तपवन-गमन राम जग-नाथा ※ पितुपद चले नवावन माथा
बुद्धि लोप दसरथ हृत ज्ञाना ※ सुत-वनगमन! बचैं किमि प्राना
नृप-मति कुमति कैकई नासी ※ राम सरिस सुत किय बनबासी
निकट मरन-नृप होत प्रतीती ※ सोइ कारन मति अस विपरीती
कानन चले सहित सिय स्वामी ※ तजि सुख सकल लखन अनुगामी
सब जन करइँ अनुगमन रामा ※ वर्ष चतुर्दश वन विश्रामा
पुर अरु धाम अखिल तजि देई ※ बिलसइँ भरत-सहित कैकेई
निवसइँ भालु श्रगाल अगाधा[1] ※ राजहिं माय-पूत बिन बाधा
रसना सबन विरद[2] रघुवीरा ※ तीनिउ[3] चले, उतै नृप तीरा
पहुँचे जब बरोठ रघुनन्दन ※ विलपत सुनेउ सदन अजनन्दन
अहह कैकई तव विष मारन ※सब बिधि मिटेउँ, कुटिल! तव कारन
कीन्ह निसिचरी रघुकुल नासा ※ हाय! राम सम सुत बनबासा
किमि बनगमन निरखिहौं नन्दन ※ लखि पयान मम प्रान बिसर्जन
मोह न प्रान, एक मोहिं शोकू ※ परवस नारि, अजस चहुँ लोकू

कोथाओ ना देखि हेन कोथाओ ना शुनि ※ हाहाकार करे वृद्ध-बालक-रमणी
जगतेर नाथ राम जान तपोवने ※ विदाय लइते जान पितार चरणे
बुद्धि नाहि भूपतिर हरियाछे ज्ञान ※ राम बने गेले ताँर किसे बाँचे प्रान
राजारे पागल कैल कैकेयी राक्षसी ※ रामहेन पुत्रे हाय कैल बनवासी
मने बुझि राजार ये निकट मरण ※ विपरीत बुद्धि हय, एइ से कारण
जानकी सहित राम जान तपोवन ※ राज्य-सुखभोग छाड़ि चलिल लक्ष्मण
पुरी शुद्ध सबे जाइ श्रीरामेर सने ※ चौद्दावर्ष एक ठाँइ थाकि गिया वने
अयोध्यार घर-द्वार फेलाइ भांगिया ※ कैकेयी करुक राज्य भरते लइया
शृगाल-गर्द्दभ थाक् अयोध्या नगरे ※ माये-पोये राजत्व करुक एकेश्वरे
एइ रूपे श्रीरामेरे सकले बाखाने ※ राजार निकटे द्रुत जान तिन जने
प्रकोष्ठेर बाहिरेते रहे तिन जन ※ आवास भितरे राजा करेन क्रन्दन
भूपति बलेन, रे कैकेयि भुजंगिनि ※ तोरे आनि मजिलाम सवंशे आपनि
रघुवंश-क्षय - हेतु आइलि राक्षसि ※ राम हेन पुत्रके करिलि वनवासी
केमने देखिब आमि राम जाय वन ※ राम वने गेले आमि त्यजिब जीवन
प्रान जाक, ताहे मम नाहि कोन शोक ※ आमारे स्त्रीवश बनि घुषिवेक लोक

१ अगणित २ प्रशंसा ३ राम-सीता-लक्ष्मण ।

जीते बिबद[1] भूप रन सर्वा ※ काँपत देव दनुज गन्धर्वा
जीतेउँ समर असुर-पति संबर ※ अर्द्धासन मोंहि देत पुरंदर
दो० नारि-वचन निर्बन्ध फँसि, दसरथ तजे परान।
रहै चिरंतन अमर यह, जग अपकीर्ति महान ॥ ३१ ॥
लखि मम अन्त, सिखै नर नीके ※ रहै अधीन कबहुँ जनि तिय के
तब पातक तव सुतहिं उतारा ※ तुम दोउ सन मम आजु किनारा[2]
तजउँ तुमहिं अरु भरतकुमारा ※ तर्पन श्राद्ध न कछु स्वीकारा
सुनहिं बरोठ तीनि बन-चारी ※ विलपत नृप जिमि गिरा उचारी
पितु की व्यथा-व्यथित दोउ भाई ※ उठे रोय लखि तात - रोवाई
अन्तर्सदन भूप दुखलीना ※ पहुँचि सुमंत्र दण्डवत कीना
नाथ! राम, सिय-लखन समेतू ※ आयसु चहत बनगमन हेतू
सचिव! मूढ़ मैं, बुद्धि गवाँई ※ रानि सात शत आनहु जाई
चलेउ सुमंत्र मानि नृपबानी ※ आनेउ वेगि सात शत रानी
सोहैं सकल भूप चहुँ घेरी ※ चारु चन्द्र चहुँ नखतन ढेरी
पुनि सुमंत्र नृप - आज्ञा पाई ※ आनेउ सीय, लखन, रघुराई
पितु पद बन्देउ रघुकुलकेतू ※ आयसु चहेउ गमन बन-हेतू

वड़-बड़ राजा आमि जिनिलाम रणे ※ देव-दैत्य-गन्धर्व्व काँपये मोर बाणे
जेइ राजा जिनिलेक दानव सम्बर ※ जार अर्द्धासने स्थान देन पुरन्दर
सेइ राजा दशरथ स्त्री लागिया मरे ※ एइ अपकीर्त्ति मोर थाकिल संसारे
स्त्रीर वश ना हइबे अन्य कोन नर ※ आमार मरणे लोक शिखिल विस्तर
वर्ज्जिबे भरत तोरे एइ अनाचारे ※ आमि बर्ज्जिलाम तोरे आर भरतेरे
आजि हैते तोर आमि करिनु बर्ज्जन ※ ना लइब भरतेर श्राद्ध वा तर्पण
थाकि अन्य प्रकोष्ठते ताँरा तिनजन ※ शुनेन राजार सर्व्व-विलाप-वचन
राजार दुःखेते दुखी श्रीराम-लक्ष्मण ※ राजार क्रन्दने कान्दे भाइ दुइजन
आवास भितरे देखे, कान्देन भूपति ※ हेन काले उपनीत सुमंत्र-सारथि
जोड़ हाते वार्त्ता कहे राजार गोचर ※ निवेदन, अवधान कर नृपवर
श्रीराम लक्ष्मण सीता जान आजि वने ※ बिदाय लइते आसिलेन तिन जने
भूपति बलेन, मंत्र, नाहि मम ज्ञान ※ सातशत महाराणी आन मोरे स्थान
पाइया राजार आज्ञा सुमंत्र सारथि ※ सातशत महाराणी आने शीघ्रगति
सातशत महाराणी चारिदिके बैसे ※ तारागण-मध्ये येन चन्द्रमा प्रकाशे
सुमंत्र राजाज्ञा मते चलिल तखन ※ श्रीराम-लक्ष्मण-सीता आने तिनजन
जोड़ हाते बन्दे राम पितार चरणे ※ आज्ञा कर, बने जाइ एइ तिन जने

१ वड़े-बड़े २ कोई सम्बन्ध नहीं।

सुनत न थिर, नृप रुदन अपारा ※ सुलभ न सुत अब मिलन हमारा
इत निवास तौ प्रान नसावौं ※ तुम सँग चलि कानन सुख पावौं
सुनि समुझाय कही रघुनाथा ※ पितु अरण्य अनुचित सुत-साथा
तौ इक रैन रहौ रघुबीरा ※ निसि निवास कीजिय इक-तीरा

दो० निरखि तात! भरि नयन छबि, रैन[1] लहउँ आनन्द ।
आजु बाद प्रिय सुवन! मोंहि, दुर्लभ तव मुखचन्द ।। ३२ ।।

रुकहिं रैन, पितु तदपि बिछोहा ※ निसि-हित सत्य-उलंघ न सोहा
तिथि वनगमन सुनिश्चित आजू ※ तजि, विमातु-मन-मलिन न काजू
तपसिन अन्न न उचित लखाई ※ सेवहिं कन्द मूल वन जाई
सत्य पालि, पितु ऋन उद्धारी ※ कुल-भूषन सोइ सुत जसकारी
कह नृप, हे सुमंत्र ! मन दीजै ※ हय-गज-रतन बहुल धन लीजै
वन - प्रदेश बहु पुण्यस्थाना ※ द्विज-तपसिन लखि करहु प्रदाना
जस - जस आयसु देंहि नरेसू ※ तस उपजत कैकइहिं कलेसू
मुख मलीन काया कुम्हिलानी ※ नृप तन हेरि कहेउ कटुबानी
भरतहिं राज देन तुम हारी ※ कुटिल हृदय, कस पाँव पछारी
तवकुल सगर सुकीर्ति प्रकासा ※ सुवन-जेठ असमञ्ज निकासा

शिरे घात हाने राजा करे हाहाकार ※ मम संगे देखा बाछा, ना हइबे आर
हेथा ना रहिब आमि, ना रबे जीवन ※ तोमार सहित राम, जाब तपोवन
श्रीराम बलेन, पिता, ए नहे बिहित ※ पुत्रसंगे पिता जाय, ए नहे उचित
भूपति बलेन, राम, थाक एक राति ※ एक रात्रि तव सने करिब बसति
भालमते देखिब तोमार सुबदन ※ पुनर्व्वार मुखचन्द्र ना हबे दर्शन
श्रीराम बलेन, यदि निश्चित गमन ※ एक रात्रि लागि केन सत्य उल्लंघन
आजि आमि बने जाब, आछे ए निर्व्वंध ※ ना गेले विमाता मने भाविबेन मन्द
आजि हैते अन्न आमि करिनु वर्ज्जन ※ बने गिया फल-मूल करिब भक्षण
तारे पुत्र वलि, ये कुलेर अलंकार ※ पितृसत्य पालिया शोधये पितृधार
भूपति बलेन, शुन, सुमंत्र वचन ※ अश्व हस्ती संगे देह आर बहुधन
अरण्येर मध्ये आछे बहु पुण्यस्थान ※ ब्राह्मण तपस्वी देखि करिबे प्रदान
धन दिते राजा यदि करेन आश्वास ※ कैकेयी अन्तरे दु खी, छाड़िल निःश्वास
सर्व्वांग हइल शुष्क, म्लान हैल मुख ※ राजारे निन्दिल बहु पेये मन दुख
भरतेरे राज्य दिते करि अंगीकार ※ कुटिल-हृदल, कर अन्यथा ताहार
तव वंशे छिलेन सगर महाशय ※ असमञ्ज-पुत्रे बर्ज्जे प्रधान तनय

१ रात्रिभर ।

तुमहिं व्यथा त्यागत रघुराई ※ पालन-सत्य तुमहिं दुखदाई
सुनि कटुवचन कहेंउ नृप बानी ※ पापमयी सुनु कैकयिरानी !
दुराचार असमञ्ज कुमारा ※ गर धरि बहु बालकन सँहारा
आय सगर ढिग, तिन पितु-जननी ※ दुखियन कही भूप-सुत करनी
तजि तव राजु, अन्त कहुँ जाहीं ※ तव सुत-जुलुम सहन अब नाहीं
जो पुनि तुमहिं प्रजा-अनुरागा ※ करौ कुअँर असमंजस त्यागा

दो० सुनत तजेंउ असमञ्ज खल, सगर लोकमत मानि।
तिल न दोष, केंहि विधि तजौं, रघुनन्दन, कहु रानि ! ॥ ३३ ॥

जगजीवन जगहित मम रामा ※ केंहि विधि कहउँ, तजौ सुत! धामा
सुनि पितु-वचन कहेंउ रघुराई ※ उचित विमातु-वचन अधिकाई
राज-पाट तजि बन पथ धारन ※ तेंहि हय-गज-धन सकल अकारन
दण्ड पाणि[1] बल्कल बस अंगा ※ केवल सिया-लखन मम संगा
चर्चा परत कैकई काना ※ तुरत दीन बल्कल परिधाना[2]
देखेंउ गहत बसन रघुनाथा ※ रुकेंउ न रुदन अयुध्यानाथा[3]
लखन राम सिय बल्कल धारा ※ रुदन सात शत रानि अपारा
सिय-तन पट-तरु[4] जबहिं निहारा ※ चहुँ लोचनन, बही जलधारा

रामेरे बर्जिते आजि मने लागे व्यथा ※ आपनि करिया सत्य करिले अन्यथा
एत यदि भूपतिरे कहिल कैकेयी ※ नृपति कहेन, शोन् पापीयसि, कहि
सगरेर पुत्र असमञ्ज दुराचार ※ गला चापि बालकेरे करित संहार
तार माता-पिता पाय दुःख पुत्रशोके ※ जानाइल सगर-राजाय प्रजालोके
तव राज्य छाड़ि राजा, जाब अन्य देश ※ असमञ्ज प्रजागणे देय बड़ क्लेश
केमने थाकिबे प्रजा, ये देशे एमन ※ प्रजा यदि चाह, पुत्रे करह बर्ज्जन
असमञ्जे बर्ज्जे राजा लोक-अनुरोधे ※ श्रीरामेरे बर्ज्जि आमि कोन् अपराधे
जगतेर हित राम जगत-जीवन ※ हेन रामे के कहिबे, जाओ तुमि वन
तखन बलेन राम पितृ विद्यमाने ※ भाल युक्ति बलिलेन माता तव स्थाने
राज्य छाड़ि जाहार जाइते हय वन ※ अश्व-हस्ति-धने तार कोन् प्रयोजन
गाछेर बाकल परि दण्ड करि हाते ※ जानकी लक्ष्मण मात्र जाइबेक साथे
बाकल परिबे राम, कैकेयी ता'शुने ※ बाकल राखियाछिल, दिल ततक्षणे
बाकल आनिया दिल श्रीरामेर हाते ※ कानदेन बाकल देखि राजा दशरथे
लक्ष्मणेर सीतार बाकल तिन खानि ※ रोदन करेन देखि सातशत रानी
अश्रुजल सबाकार करे छल-छल ※ केमने परिबे सीता गाछेर बाकल

१ हाथ में २ भोजपत्र के वस्त्र ३ दशरथ ४ वृक्ष की छाल के वस्त्र।

हे हरि ! बसन-गाछ सिय केरे * पीर सूल सम हिय नृप केरे
दया न लखि रघुवंश-किशोरा * शिला सरिस हिय कैकयि ! तोरा
डसेसि एक ! विष तीनिहुँ व्यापा * लखन-सिया किमि वन-संतापा?
पितु कर वचन राम शिर भारा * लछिमन-सिय कस देस निकारा
विकल, बसन लखि वधू, नरेसू * किय निषेध परिजन सियवेसू
पतिव्रत हेतु चली पति संगा * पितु-प्रन भार न कहुँ सिय-अंगा
सुनत सुमंत्र सदन तन धाये * अभरन रतन दिव्य बहु लाये
पग नूपुर, कंकन कर सोहा * मकराकित कुण्डल मन मोहा

दो० रत्नावलि, कटि करधनी, अनुपम बाजूबंद ।
अँगुरिन हीरक मुद्रिका, सिय-छबि करत दुचंद ।। ३४ ।।

चुरियाँ शंख सुरम्य सुहावन * भूषन विविधि विचित्र लुभावन
अनुपम वसन सजी इमि सीता * मनहुँ सकल लोकन छबि जीता
अभरन-छबि, सिय-छबि अनुरूपा * कौन प्रगाभ्म जाय ढिग भूपा
बन्दि ससुर-पद, लीन बिदाई * सास समीप जोरि कर आई
मन धरि सुनु सिय सीख हमारी * निसिदिन पति-सेवा सुखकारी
राजबधू पुनि राजकुमारी * तव आचरन अनुसरइँ नारी

हरि - हरि स्मरण करये सर्व्वलोके * वज्राघात हय येन भूपतिर बुके
सबे बले कैकेयि, पाषाण तोर हिया * तिलेक ना हय दया श्रीरामे देखिया
एक जने दंशिया दंशिल तिनजने * लक्ष्मण - सीतारे केन पाठाइलि वने
पितृसत्य पालिते श्रीराम जान वन * जानकी-लक्ष्मण जान किसेर कारण
बधूर वाकल देखि राजार क्रन्दन * पातृ-मितृ बले, सीता परुन बसन
पितृसत्य पुत्र पाले, बधूर कि दाय * पतिव्रता सीतादेवी पश्चात गोड़ाय
नानारत्ने परिपूर्ण राजार भाण्डार * सुमंत्र शुनिया आने दिव्य अलंकार
जानकी परेन ताड़ तोड़न नूपुर * मकर - कुण्डल हार अपूर्व्व केयूर
मणिमय माला आर विचित्र पाशुलि * हीरार अंगुरी परि शोभिल अंगुली
दुइ हाते शंख तार अद्भुत निर्म्माण * एइरूपे करिल भूषण परिधान
पट्ट वस्त्र परिलेन अति मनोहर * त्रैलोक्य जिनिया रूप धरिल सुन्दर
येमन भूषण ताँर तेमनि आकार * श्वशुर जानकीदेवी करे नमस्कार
विदाय लइया सीता श्वशुर - चरणे * जोड़हात करि रहे श्वश्रु विद्यमाने
कौशल्या कहेन, सीता, शुनु सावधाने * स्वामि-सेवा सतत करिबे रात्रि दिने
नृपतिर बहुयारी, राजार कुमारी * तोमार आचारे आचरिबे अन्य नारी

पति निर्धन धनवन्त समाना ※ वनितन[1] उचित अन्त नहिं ध्याना
मातु! सीख तव भल पतिसेवा ※ पूजउँ सदा चरन - पतिदेवा
सोइ लालसा, न मन कछु ध्याना ※ कारन सोइ वन, मातु! पयाना
धर्म-सीख बहु पितुगृह पावा ※ इतर नारि सम मोर न भावा[2]
मम-हित-रत सर्वोपरि माता ※ दिय उपदेस सदा सुभ-दाता
भाग सराहेउ सुनि कौशिल्या ※ लहेउँ धन्य बहुअरि[3] तव तुल्या
सियहिं प्रबोधि, राम सों कहेऊ ※ तप-उपवन सचेत सुत! रहेऊ
त्रिभुवन चहुँ सिय छबि उजियारी ※ सावधान! भय कानन भारी!
कहेउ सुमित्रा पुनि निज-नन्दन ※ पितु सम जेठ बन्धु रघुनन्दन
सदा देव सम सेवहु भ्राता ※ मों सन अधिक जानकी माता

दो० लखन-मातु तन हेरि पुनि, कहेउ कोसलाधीस ।
करहिं तीनि जन वन-गमन, मातु चहौं आसीस ॥ ३५ ॥

कानन तीनि समोद निवासू ※ त्रिभुवन तिनहिं न कहुँ भय-त्रासू
पुनि बन्दना सात शत माई ※ रघुपति याचत सबन बिदाई
बहुरि प्रणाम कैकयी - चरना ※ अनुमति मातु मिलै बन-गमना
भली-बुरी निकसी कछु बानी ※ क्षमहु, मातु! मन गिला न मानी

निर्धन हउक स्वामी अथवा सधन ※ स्वामि-विन स्त्रीलोकेर अन्ये नहे मन
जानकी बलेन, गो कौशल्या ठाकुरानि ※ स्वामि-सेवा करिते जे आमि भालजानि
स्वामि-सेवा करि मात्र, एइ आमि चाइ ※ से कारणे ठाकुरानि, वनवासे जाइ
धर्म्म-कर्म्म यत करियाछि पितृघरे ※ इतर स्त्रीलोक-प्राय ना भाव आमारे
मायेर अधिक जे आमार भाव व्यथा ※ हित उपदेश ताइ शिखाइला माता
ताँर कथा शुनिया कहेन महाराणी ※ तोमा हेन बधू आमि भाग्य बलि मानि
बधूर प्रबोध दिया बुझान श्रीरामे ※ सतर्क थाकिओ राम, मुनिर आश्रमे
जानकीर रूपे चमत्कृत त्रिभुवन ※ सावधाने रवे राम, भयानक वन
सुमित्रा बलेन शुन तनय लक्ष्मण ※ देवज्ञाने श्रीरामे देखिबे सर्व्वक्षण
ज्येष्ठभ्राता पितृ-तुल्य सर्व्वशास्त्रे जानि ※ आमार अधिक तव सीता ठाकुरानी
श्रीराम बलेन, शुन सुमित्रा सताइ ※ आशीर्व्वाद कर, आमि वनवासे जाइ
वनेते तिनेर तिन थाकिब दोसर ※ त्रिभुवने काहारेओ नाहि मोर डर
बन्देन सबारे राम, यत राजरानी ※ सबाकार ठाँइ राम मागेन मेलानि
नमस्कार करिलेन कैकेयी - चरणे ※ अनुमति कर माता, जाइ आमि वने
भालमन्द बलियाछि दुरक्षर बानी ※ मने किछु ना करिह, देह गो मेलानि

१ स्त्रियों को २ विचार ३ बहू ।

कुपित पापमति मौन सुहावा ※ राम हेतु मुख शब्द न आवा
जब लौं बन, सौंपहुँ पितु, माता[1] ※ सब विधि जतन करहु सुख ताता
आस न प्रान, कहेउ पितुदेवा ※ किमि तव जननि करै मम सेवा
तात! एक अनुरोध न टारौ ※ रथ चढ़ि दिवस-तीनि पग धारौ
रुख भूपति—अनुमति रघुनन्दन ※ निरखि सुमंत्र सजायेउ स्यन्दन
सहित अनुज-सिय रथ, भगवाना ※ लखन सवाँरेउ आयुध नाना
तजेउ राजु, वन-पथ प्रभु लीन्हा ※ बहु नर-नारि अनुगमन कीन्हा
धाये अमित, अवधपुर वासी ※ राज-सदन के सकल निवासी
हे सुमंत्र! रोकहु कछु स्यंदन ※ लखइँ चन्द्रमुख-छबि-रघुनन्दन
अरझत काँट, हुँफत, नृप धावहिं ※ सुतन-सीय-तन दीठि जमावहिं
सुनहु सुमंत्र कहेउ रघुराई ※ पितु - दुर्दसा दुसह दुखदायी
रथ-गति वेग करउ यहि रूपा ※ सुलभ होय जनि दरसन-भूपा

दो० सुनि सुमंत्र बोले बचन, तव आयसु मम सीस।
तदपि याचना कछु करौं, सुनउ विनय जगदीस ॥ ३६ ॥

पुरजन परिजन सहित नरेसू ※ रथ अनुसरत अखिल, तजि देसू
तव निति दरसन तिन्हहिं सुखारी ※ कोउ न देन पग चहत पछारी

पापिष्ठा कैकेयी ताहे अति क्रूरमति ※ भालमन्द ना वलिल श्रीरामेर प्रति
मायेरे सँपेन राम नृपतिर पाय ※ यावत् ना आसि, पिता, पालिह माताय
राजा बलिलेन यदि रहे ए जीवन ※ तवे त तोमार माये करबि पालन
आमार ए आज्ञा राम, ना कर लंघन ※ तिन दिन रथे चढ़ि करह गमन
राजाज्ञाय रथ आने सुमंत्र सारथि ※ जाइबेन तिनदिन रथे रघुपति
श्रीराम लक्ष्मण सीता उठिलेन रथे ※ तोलेन आयुध नाना लक्ष्मण ताहाते
राज्यखण्ड छाड़िया श्रीराम जान वने ※ पाछे-पाछे धाय कत स्त्री - पुरुषगणे
भांगिल सकल राज्य अयोध्या नगरी ※ श्रीरामेर पाछे धाय सव अन्तःपुरी
डाक दिया सुमंत्रे वलिछे सर्व्वजन ※ रथ राख श्रीरामेर देखि चन्द्रानन
काँटा-खोंचा भांगि राजा ऊर्द्धश्वासे धाय ※ श्रीराम लक्ष्मण सीता कत दूरे जाय
श्रीराम वलेन, शुन सुमंत्र सारथि ※ देखिते ना पारि आमि पितार दुर्गति
रथेर कराओ तुमि त्वरित गमन ※ पितार सहित येन ना हय दर्शन
सुमंत्र बलेन, आज्ञा ना करिब आन ※ एक वाक्य बलि आमि कर अवधान
भांगिल राजार संगे अयोध्या नगरी ※ रथेर पश्चाते ओइ देख सर्व्वपुरी
राजार सहित यदि हय दरशन ※ तवे ना देशेते लोके करिबे गमन

---

1 कौशल्या के प्रति।

राज, प्रजा, परिवार न कामा ※ मानहु कथन, कहेउ श्रीरामा
रथ गतिवान करौ यहि रूपा ※ झलक न पाय सकैं मम भूपा
आयसु धारि तुरंग बढ़ावा ※ पवन-वेग स्यन्दन गति पावा
ओझल भयेउ दरस कछु काला ※ गिरे अचेत अवनि नरपाला
सबन सम्हारि महीप उठावा ※ धूरि पोंछि मुख जल सरसावा
गत दिन एक तदपि अति म्लाना ※ जीवन कठिन सबन अनुमाना
ग्रसित-चन्द्र[1] सम असित[2] नरेसू ※ केहु विधि लै, किय सदन प्रवेसू
सधत न अंग, गिरे नृप धरनी ※ लीन उठाय भरत कै जननी
चण्डालिन ! मम छुवइ न गाता ※ पापिनि ! तैं कीन्हेसि पतिघाता
प्रथम जबहिं युवती कैकेई ※ अहिनिसि मम संगति मन देई
प्रगटेउ कुफल रूप सोइ मोहा ※ सर्वनाश, हा ! राम-विछोहा
कौशिल्यागृह पुनि नृप गयऊ ※ दोउ दुख समिटि एकरस भयऊ
रुदन चारि दिन थिर कोउ नाहीं ※ दोउ जन दुखी एक दुख माहीं
मुनिगन वेद, योगिजन योगू ※ तजेउ, प्रजा रुचि रही न भोगू

दो० हय-गज-मृग आहार बिन, आहुति अगिनि न लेय ।
प्रजा अन्न तज, निसि तिया पति-सुख ध्यान न देय ॥

श्रीराम बलेन, बलि सुमंत्र तोमारे ※ प्रयोजन नाहि मोर राज्य परिवारे
मन वाक्य आपनि ना पार लंघिवारे ※ झाट रथ चलाओ, ना देखा दिब कारे
श्रीरामेर आज्ञा मते सुमंत्र - सारथि ※ चालाइल रथखान पवनेर गति
कत दूरे गिया रथ हैल अदर्शन ※ भूमिते पड़ेन राजा ह'ये अचेतन
राजारे धरिया तोले अमात्य सकल ※ शरीरेर धूलि झाड़े, मुखे देय जल
एकदिन-शोके ताँर मूर्त्ति हैल म्लान ※ राजार जीवन नाइ, करे अनुमान
राहुते गिलिले चन्द्रे हय जे मूरति ※ कृष्णवर्ण हैल राजार आकृति प्रकृति
राजारे धरिया सबे ल'ये गेल देश ※ अन्तःपुर - मध्ये ताँरे कराय प्रवेश
गड़ागड़ि जान दशरथ भूमितले ※ हेनकाले कैकेयी राजारे धरि तोले
नरपति वले, नाहि छुँस रे पातकिनि ※ स्त्री हइया स्वामी के बधिलि चंडालिनी
कैकेयि, यखन छिलि प्रथम - युवती ※ रात्रिदिन थाकितिस् आमार संहति
ताहार कारण एइ हइल प्रकाश ※ राम-छाड़ा करिया करिलि सर्व्वनाश
गेलेन शोकार्त्त राजा कौशल्यार घर ※ दोंहार हइल शोक एकइ सोसर
रात्रिदिन नाहि घुचे दोंहार क्रन्दन ※ एकशोके कातर ह'लेन दुइ जन
मुनि वेद छाड़िलेन, योगी छाड़े योग ※ पावक आहुति छाड़े, प्रजा छाड़े भोग
मातंग आहार छाड़े, घोड़ा छाड़े घास ※ रंधन-भोजन नाहि, लोके उपवास

---

१ राहुग्रस्त चन्द्रमा २ कालिमा छायी थी ।

रुदन अहिर्निशि, शयन विन, चहुँ जग शून्य उदास ।
राम लखन पहुँचे उतै, तट-तमसा के पास ।। ३७ ।।

कूल विविध वन किंशुक फूले ※ राजहंस जल - कलरव भूले
तमसा - तीर आजु विश्रामा ※ आयसु दीन सुमंत्रहिं रामा
घोरन छोरि सरित हनवाये ※ बाँधि, रुचिर जलपान कराये
अस्ताचल रवि, संध्या आई ※ तमसा स्नान कीन रघुराई
तरुतर लखन सेज-तृन साजा ※ सुख-शय्या सिय-राम विराजा
लछिमन नीर-कमण्डल लीन्हा ※ पँ-पखार रघुपति-सिय कीन्हा
निसि जागरन लखन धनुधारी ※ मुग्ध अनुज-गुन राम निहारी
तमसा-तट निसि सकल बिराजे ※ भोर सुमंत्र तुरग रथ साजे
प्रातस्नान नियम आचारा ※ करि उतरे हरि तमसा पारा
जहँ-जहँ स्यंदन करत विरामा ※ लोक लेयँ जुरि परिचय-रामा
नारि अधीन वृद्ध अवधेसा ※ सुत, सुतवधू निकारेउ देसा
परत जहाँ पितु-निन्दा काना ※ प्रभु तजि अन्त करत प्रस्थाना
कछुक दूर गोमती सुहाई ※ सरिता पार कीन रघुराई
हंसन केलि सलिल अति सोभा ※ सो लखि राम-लखन-मन लोभा

यामिनीते कामिनी ना जाय पतिपास ※ संसार हइल शून्य, सकले निराश
रात्रि-दिन कान्दि लोक करे जागरण ※ गेलेन तमसा कूले श्रीराम - लक्ष्मण
नाना वनफूल फोटे से नदीर कूले ※ राजहंस क्रीड़ा करे तमसार जले
सुमंत्रेर प्रति आज्ञा करिलेन राम ※ तमसार कूले आजि करिब विश्राम
रथ-अश्व स्नान कराइल तार जले ※ जलपान कराइया वान्धे तार कूले
अस्तगिरि गत रवि, वेलार विराम ※ तमसार जले स्नान करेन श्रीराम
कमण्डलु भरि जल आनिया लक्ष्मण ※ राम-सीता दु'जनार पाखाले चरण
लक्ष्मण वृक्षेर तले बिछाइल पाता ※ करिलेन ताहाते शयन राम-सीता
हाते धनु लक्ष्मण रहिल जागरणे ※ प्रीति पाइलेन राम लक्ष्मणेर गुणे
तमसार कूलेते वञ्चेन एक राति ※ प्रभाते योगाय रथ सुमंत्र - सारथि
प्रातःस्नान-आदि करि नियम-आचार ※ हइलेन श्रीराम तमसा नदी पार
जेखाने - जेखाने श्रीरामेर रथ रय ※ तथाकार लोक आसि लय परिचय
वृद्धकाले दशरथ बाध्य वनितार ※ हेन पुत्र - पुत्रवधू पाठाय कान्तार
शुनेन जेखाने राम पितार निन्दन ※ करेन से स्नान ह'ते त्वरित गमन
तमसा छाड़िया आर गोमती प्रभृति ※ नदी पार हइलेन राम महामति
ले हंस केलि करे अति सुशोभन ※ सेइ नदी पार हैला श्रीराम-लक्ष्मण

सिय! इक्ष्वाकु-अवनि[1] लखु प्यारी ※ सर्वविदित शोभा अति न्यारी
धरेउ दण्ड इक्ष्वाकु नरेसा ※ मम पुरिखन पुनीत यहु देसा
दो० सहित लखन, सिय, मुदित मन, चिदानंद जहँ जाहिं ।
जुरत तहाँ, जन, विविध मत, विनय करत प्रभु पाहिं ।। ३८ ।।
तुम तजि अब न राज-कल्याना ※ कस विधि रचेउ अरण्य-विधाना
तुम सम सुहृद न मम जग कोऊ ※ कहि पितु-अयस[2] विदा सब होऊ
पितु-निन्दा सुनि राम दुखारी ※ तजत देस, पग देत अगारी
गति-विहंग[3] लाँघत बहु देसू ※ कौशलपुर रथ कीन प्रवेसू
सिय सुन्दरी! निरखु छबि न्यारी ※ मम मातुल[4] नगरी यह प्यारी
दान द्विजन किय गंग-प्रदेसू ※ सुत सम पालत प्रजा नरेसू
पुर बिच अतुल-गंग छबि रूपा ※ यज्ञ-कुण्ड तट पाँति अनूपा
कदली नरियर आम सुपारी ※ तरु कूलन अनुपम हरियारी
कूलन[5] ऋषि-मुनि शुचि[6] अस्नाना ※ विप्र वेद-ध्वनि मगन महाना
आयसु दीन सुमंत्रहिं रामा ※ भागीरथी आजु विश्रामा
प्रभु के बचन सबन मन भाये ※ रथ सों उतरि अवनि सब आये
तट तुरंग सारथि लै जाई ※ तरु-तर सिया लखन रघुराई

श्रीराम बलेन, सीते, सर्वत्र विदित ※ इक्ष्वाकुर राज्य एइ देखे सुशोभित
एइ देशे इक्ष्वाकु धरिल छत्र - दण्ड ※ मम पूर्व्व - पुरुषेर देख राज्यखण्ड
यथा - यथा जान राम प्रसन्न - हृदय ※ से-देशेर यत लोक आसि निवेदय
तोमार विहने राम, राज्येर विनाश ※ कोन् विधि सजिल तोमार वनवास
सवाकारे रामचन्द्र दिलेन मेलानि ※ भालवास आमारे तोमारा, भालजानि
करिया राजार निन्दा सबे जाय घरे ※ पितृनिन्दा शुनि राम गेलेन अन्तरे
पक्षि हेन उड़े रथ, जाय नाना देश ※ कोशलेर राज्ये राम करेन प्रवेश
श्रीराम बलेन, शुन जानकि सुन्दरि ※ मम मातामहेर आछिल एइ पुरी
पुत्रवत् करिलेन प्रजार पालन ※ गंगातीरे दियाछेन ब्राह्मण - शासन
नगरेर मध्ये गंगा शोभे कुतूहले ※ सारि-सारि यज्ञकुण्ड तार दुइकूले
कदली गुवाक नारिकेल आम्रसार ※ दुइतीरे रोपियाछे शोभित अपार
दुइ कूले विप्रगण करे वेदध्वनि ※ दुइ कूले स्नान करे यत ऋषिमुनि
सुमंत्रेर प्रति तवे बलेन श्रीराम ※ गंगातीरे रहि आजि करिब विश्राम
सुमंत्र - लक्ष्मण दोंहे दिला अनुमति ※ रथ हैते उलिलेन चारि महामति
राम-सीता-लक्ष्मण बसेन वृक्षमूले ※ सुमंत्र चालाय अश्व जाह्नवीर कूले

१ महाराज इक्ष्वाकु की धरती (राज्य) २ पिता की अपकीर्ति ३ पक्षियों जैसी तेज चाल से ४ मामा की ५ गंगा के दोनों किनारों पर ६ पवित्र ।

अथये[1] भानु साँझ नगिचानी * श्रृंगवेर[2] नगरी दरसानी
श्रृंगवेर लखि हुलसे रामा * लखन लखौ, प्रिय केवट-धामा
मम प्रिय अंग बिलग जनि कोई * लहि मम दरस सुखी अति होई
तासु निकेत, संग बतलाई * पुरवहिं मन, अभिन्न प्रिय पाई

दो० रंग बिरंगे, रस भरे, मधुर, विविध फल स्वाद ।
पथ-विवरन बहु मिलै पुनि, करहिं विविध संवाद ।।
कहि सुमंत्र सों राम इमि, निवसे केवट-धाम ।
कृत्तिवास पण्डित कियेउ, रचना अमित ललाम ।। ३९ ।।

श्रीराम-द्वारा सुमंत्र को विदा

विनय कीन सारथि सिर नाई * आयसु कवन मोहिं रघुराई
कमलनयन मुख मञ्जुल वयना * लै रथ अवध करउ तुम गमना
रहेउ रथी[3] पितु-आयसु धारी * गत दिन तीन, न काज-सवारी[4]
पथ दिन तीन, अयुध्या जाई * पितु सन सकल कहेउ समुझाई
बृद्ध पितहिं तजि कानन आये * दारुन दुख जनि मिटत मिटाये
रहि पितु तीर न सेयेउँ चरना * अनहोनी किमि अस विधि-रचना

भास्कर पश्चिमे जान बेला अवशेषे * तखन गेलेन राम श्रृंगवेर-देशे
श्रृंगवेर-देश देख राम हृष्टमति * वलिते लागिला तबे लक्ष्मणेर प्रति
गुहक चण्डाल हेथा आछे मम मित * आमारे पाइले मिता हबे हरषित
श्रीराम बलेन, शुन सुमंत्र सारथि * मितार बाटीते आमि थाकि एकराति
कहिब शुनिब वाक्य दोंहे दोंहाकार * विशेषतः जानिव पथेर समाचार
नानाविध फल खाब कदली काँटाल * सुरंग नारंगी आदि खाइव रसाल
राम वने जाइते रहेन सेइ देशे * गाहिल अयोध्याकाण्ड कवि कृत्तिवासे

श्रीरामेर निकट हइते सुमन्त्रेर विदाय

जोड़ हाथ करि वले सुमंत्र सारथि * आमारे कि आज्ञा कर, करि अवगति
वलेन शुनिया राम कमललोचन * रथ लये देशे तुमि करह गमन
तिन दिन रथे आसि पितार आदेशे * तिन दिन अतीत हइल, जाओ देशे
आर तिनदिने जाबे अयोध्या नगर * सकल कहिबे गिया पितार गोचर
वृद्ध पिता छाड़िया आसिनु देशान्तरे * एमन दारुण शोक किमते पासरे
पितृसेवा ना करिनु थाकिया निकटे * कोथाओ ना देखि, हेन कोनजने घटे

१ अस्त हुए २ चण्डालगढ़-चुनार ३ रथ पर सवार ४ रथ का प्रयोजन ।

भरत प्रानप्रिय मातुल - देसा ※ बिन आगमन मिटइ जनि क्लेसा
आवइँ सुनत, बिलंब न काजू ※ सेवइँ पिता, सम्हारहिं राजू
बन्दि जननि बरनेउ यहि भाँती ※ नृप कर जतन करइँ दिन राती
पीरा हरइँ, लखइँ गृहलोकू ※ मम सुधि तजइँ, बिसारइँ सोकू
पग बन्देउ पुनि कैकइ जननी ※ तासु न दोस अमिट बिधि करनी
कहि संबाद पितुहिं दै धीरा ※ नतरु बिकल होइ तजइँ सरीरा
मम कुल तव सुमंत्र ! अति आदर ※ हेतिन[1] बिनय कहेउ मम सादर
लोचन जल, सारथि के वयना ※ लहौं दरस कब पंकजनयना
चले सुमंत्र अतुल दुख - साने ※ रथ-तुरंग-गति पवन पयाने
इत बिचार रघुपति मन आवा ※ संसय सो सिय-लखन सुनावा

जयंत काक का नेत्र-वेधन

दो० अवधपुरी सों दूर नहिं, शृंगवेरपुर वास ।
सुनि सुमंत्र सों भरत नित, जब-तब[2] आवहिं पास ।। ४० ।।

जब लौं खबरि भरत मम लहहीं ※ सुरसरि उतरि गहन बन गहहीं
गुह सन पुनि मन्तव्य प्रकासा ※ चित्रकूट गिरि कीन्ह निवासा

प्रानेर भरत भाइ, थाके से विदेशे ※ भरत आनिया राज्य करिबे हरिषे
यतदिन भरत ए कथा नाहि शुने ※ ततदिन रबे मातामहेर भवने
मायेर - चरणे जानाइबे नमस्कार ※ आमाहेतु शोक येन ना करेन आर
रात्रि-दिन सेवा येन करेन पितार ※ मोरे पासरिबे माता देखिया संसार
परिहार जानाइबे कैकेयीर प्रति ※ ताँर किछु दोष नाइ, इहा दैवगति
पितार चरणे जानाइबे समाचार ※ अस्थिर हइले तिनि, मजिबे संसार
तुमि हेन महापात्र सुमंत्र-सारथि ※ इष्ट कुटुम्बेर ठाँइ जानाबे मिनति
सुमंत्र श्रीरामे कहे करिया क्रन्दन ※ आर कतदिने राम, पाब दरशन
बिदाय लइया जाय सुमन्त्र कान्दिया ※ अति शीघ्रगति गेल रथ चालाइया

राम लक्ष्मणादिर पर्य्यटन ओ जयन्त काकेर नेत्र-वेधन

सुमंत्र विदाय दिया श्रीराम चिन्तित ※ मन्त्रणा करेन सीता-लक्ष्मण-सहित
हेथा हैते अयोध्या निकट बड़ पथ ※ एखाने थाकिले निते आसिबे भरत
सुमंत्र कहिबे, आछि शृंगवेर-पुरे ※ शुनिले भरत निते आसिबे सत्वरे
यावत सुमंत्र पात्र नाहि जाय देशे ※ गंगापार ह'ये चल जाइ वनवासे
गुहकेरे प्रति तबे बलेन श्रीराम ※ चित्रकूट शैल गिया करिब विश्राम

१ हितू (हित चाहने वालों से) २ आये दिन ।

गंग तरंग कठिन उतराई ※ करि सहाय प्रन राखहु भाई
कोटिन नाव निषाद-अधीना ※ सुवरन-तरनि[1] सुसज्जित कीना
विनय, एक निसि अधिक विरामा ※ करहु राम! पावन मम धामा
निसि प्रभुसंग वास सुखदाई ※ उचित न तात! कहेउ रघुराई
जो यहि बीच भरत कहुँ आवैं ※ तौ पितु-वचन विघिन बहु लावैं
बेगि, सुहृद! करु सुरसरि पारा ※ सुनि गुहपति आयसु सिर धारा
शृंगवेर - पुर लेन बिदाई ※ तत्पर लखन सिया रघुराई
भोर नाव गुहराज सजावा ※ सुर-सलिला[2] पुनि पार करावा
सिय छबि मध्य अतुल दोउ वीरा ※ चले कोस दुइ सुरसरि तीरा
भरद्वाज पुनि आश्रम आवा ※ रैन-निवास तहाँ मन भावा
नखतन बिच नभ चन्द्र विराजा ※ भरद्वाज तिमि मुनिन-समाजा
जनकसुता, लछिमन, रघुराई ※ मुनि-चरनन बन्देउ सिर नाई
दसरथ-तनय राम मम नामा ※ लछिमन अनुज, सहित सिय वामा
मुनि! पितु-बचन हेतु प्रतिपालन ※ वर्ष चतुर्द्दस सेवहिं कानन

दो० राम कथा सुनि, धाय मुनि, प्रभुहिं विष्णु सम लीन।
पाद्य अर्घ्य पूजन अतिथि, विविध समादर दीन ॥ ४१ ॥

देखिया आतंक हय गंगार तरंग ※ झाट पार कर, येन नहे सत्य भंग
सातकोटि नौका तार, गुहक चण्डाल ※ आनिल सोनार नौका, सोनार केराल
गुह बले, करिलाम तरणी-साजन ※ एक रात्रि राम, हेथा बञ्च तिनजन
एक रात्रि थाकि राम, तोमार सहित ※ श्रीराम बलेन, मित्र, ए नहे उचित
एखाने रहिते आजि मन शंका पाय ※ भरत आसिया पाछे प्रमाद घटाय
विलम्ब न कर बन्धु, झाट कर पार ※ गुह बले झटिति करिब तोमा पार
गुहेर बाड़ीते राम थाकि एक राति ※ विदाय लइया परे जान शीघ्रगति
प्रातःकाले नौका गुह करिल साजन ※ पार हैया कूलेते उठेन तिनजन
माझे सीता, आगे पाछे दुइ महावीर ※ दुइ क्रोश पथ बहि जान गंगातीर
श्रीराम बलेन भरद्वाजेर निकटे ※ आजि गिया करि वास थाके निःसंकटे
मुनिगणे वेष्टित बसिया भरद्वाज ※ तारागण मध्ये येन शोभे द्विजराज
हेनकाले सेखाने गेलेन तिनजन ※ तिनजन बन्दिलेन मुनिर चरन
श्रीराम बलेन, शुन मुनि महाशय ※ तिनजन तव ठाँइ दिह परिचय
दशरथ - तनय आमरा दुइ जन ※ श्रीराम आमार नाम, कनिष्ट लक्ष्मण
पितृ-सत्य पालिते ह'येछि वनचारी ※ संगेते प्रेयसी मोर जनककुमारी
राम-कथा सुनि मुनि उठेन सम्भ्रमे ※ पाद्य अर्घ्य दिया पूजा करेन श्रीरामे

---

१ सोने की नौकाएँ २ गंगा।

राम प्रतच्छ विष्णु अवतारा ※ ध्यावत जिनहिं सकल संसारा
जिन तप-पूजन रत मुनि-वृन्दा ※ आये धाम सच्चिदानन्दा
सानुज राम-रमा छबि देखी ※ धनि जीवन धनि दिवस बिसेखी
गंग-यमुन बिच भोर सुवासू ※ बन न हेतु, इत करहु निवासू
अवध निकट नित पुर-नरनारी ※ घेरहिं आय, विपति मुनि! भारी
यमुनापार गहन वन-देसू ※ निर्जन कतहुँ करहु निर्देसू
जहँ निवास निर्विघ्न सुहावन ※ सुनि हरि-बचन कहेउ मुनिपावन
मुनिगन बसत जहाँ बट-छाहीं ※ तप उपवन सम जग सुख नाहीं
करत केलि बन खग-मृग-वृन्दा ※ सुमधुर विविध मूल फल कन्दा
दरस तपोवन ताप नसाई ※ मुनिन सहित निवसउ रघुराई
भरत शोध तव लहइँ न लेसू ※ तरनि[1]-हीन दुर्गम यहु देसू
भेला[2] बाँधि जाहु सुत! पारा ※ हाथ तीस जल-जमुन अपारा
पर्नकुटी[3] निसि कीजिय पावन ※ होत बिहान[4] जाहु मनभावन
दुइ योजन दुइ पहर चलाई ※ दरस तपोवन तहँ सुखदाई
मुनि-आश्रम, मुनि-आयसु पाई ※ निसि रुकि, भोर चले रघुराई
दोउ लँग[5] बन्धु युगुल धनुधारी ※ मध्य मञ्जु छबि जनकदुलारी

मुनि वलिलेन, तुमि विष्णु अवतार ※ विष्णु आराधने तप करये संसार
याँर तप-आराधन करे मुनिगणे ※ सेइ विष्णु आइलेन आमार भवने
श्रीराम-लक्ष्मण-लक्ष्मी देखि तिनजने ※ आपनारे धन्य बलि मान एतदिने
गंगा-यमुनार मध्ये आमार बसति ※ वनवास वञ्च एथा, थाकह संहति
श्रीराम बलेन, मुनि, अयोध्या सन्निधि ※ अयोध्यार लोकेरा आसिबे निरवधि
एथा हैते कोन स्थान आछये निर्ज्जन ※ यमुनार पारे हय अपूर्व्व-कानन
कह मुनि, कोथाय करिब निवसति ※ शुनि भरद्वाज कहे श्रीरामेर प्रति
चित्रकूटे मुनिगण वैसे बृक्षतले ※ मृग-पक्षी-बनजन्तु रहे कुतूहले
नाना फल-मूल पावे बड़इ सुस्वाद ※ तपोबन देखि राम घुचिवे विषाद
मुनि सकलेर संगे थाक सेइ देश ※ भरत तोमार तथा ना पावे उद्देश
एइ देशे नाहि राम, नौकार सञ्चार ※ भेला बाँधि यमुनाय ह'यो तुमि पार
त्रिश हस्त यमुनार आड़े परिसर ※ निम्नता ना जाने लोक, गभीर विस्तर
एक रात्रि हेथा राम, बञ्च तिनजन ※ कालि तुमि जाइओ मुनिर तपोवन
हेथा हैते तपोवन दुइटि योजन ※ दुइ प्रहरेर मध्ये जाबे तिन जन
भरद्वाजाश्रमे राम वञ्चि एक राति ※ प्रभाते विदाय लये जान शीघ्रगति
उभय वीरेर हाते दिव्य धनुःशर ※ मध्ये सीता, दुइ-पार्श्वे दुइ सहोदर

१ नाव २ काठ का पुल ३ मड़ैया ४ भोर ५ दोनो तरफ़।

दो० सिय पग परत सुहावने, आगे सीतानाथ।
सोहत मानौ जलद घन, सौदामिनि[1] के साथ ॥ ४२ ॥

काक जयंत[2] गगन मड़रावा ※ सिय छबि निरखि उतरि ढिग आवा
तन-मन अबुध न रुकत सम्हारे ※ अस्तन[3] तकि वायस[4] नख मारे
पुनि भय-विवस उड़त षटमासा ※ लै परान पहुँचेउ कैलासा
इत मैथिली त्रस्त, रव कीन्हा ※ रघुपति कुशल अनुज सों लीन्हा
कहेउ लखन अस को जगजाता[5] ※ सकइ निहारि जानकी माता
अधिक सुमित्रा सों सिय जननी ※ गयेउ काक कित करि अपकरनी[6]
लखत, बिंधि सर लेउँ पराना ※ इत सीता सुमिरेउ भगवाना
वायस गयेउ, अंग नख मारी ※ तन प्रभु! तासु वेदना भारी
सुनि रघुपति सायक संधाना ※ जहँ खग चलत अनुसरत बाना
तजि कैलास सुरपुरहिं धावा ※ तबहुँ राम-सर बिलग न पावा
लीन्ह जयंत सरन-सुरनायक[7] ※ द्विज-तन धरि प्रगटेउ रघुसायक
सुरपति! कथन मोर अनुसरहू ※ काक जयंत समर्पन करहू
वध के योग अधम अपकारी ※ तिन रच्छहि निज-मरन बिचारी
इन्द्र न काक सरन दै पाये ※ सर, सम्मुख बिहंग धरि लाये

आगे राम जान, पाछे श्रीराम-रमणी ※ सजल जलद सह येन सौदामिनी
जयंत नामेते काक छिल से आकाशे ※ देखिया सीतार रूप आसे सीता पाशे
सहसा सीतार गाये पड़िल उड़िया ※ सुतीक्ष्ण नखरे वक्षः दिल आँचड़िया
उड़िया चलिल काक पाइया तरास ※ छ'मासेर पथ गेल पर्व्वत कैलास
डाकेन जनकसुता भये उच्चैःस्वरे ※ श्रीराम बलेन, भाइ, सीतारे के मारे
शुनिया रामेर कथा कहेन लक्ष्मण ※ सीतारे प्रहारे, हेन आछे कोन् जन
सुमित्रा-अधिक माता सीता ठाकुरानी ※ आँचड़िया गेल काक कोथा नाहि जानि
देखिते ना पाइ काक, गेल कोन्खाने ※ बानेते बिन्धिया तारे मारिब पराने
हेनकाले श्रीरामे बलेन देवी सीता ※ आँचड़िया गेल काक, ह'येछि व्यथिता
काके मारिबारे राम पुरेन सन्धान ※ जेशे-जेशे चलिल काक, तथा जाय बान
कैलास छाड़िया काक स्वर्गपुरे जाय ※ मारिते रामेर बान पाछू-पाछू धाय
इन्द्रेर निकटे काक लइल शरण ※ रामेर ऐषिक वाण हइल ब्राह्मण
ब्राह्मण वेषेते सेइ गेल इन्द्र ठाँइ ※ लहिलेन, आमि ये जयन्त काके चाइ
करियाछे मन्द-कर्म बधिब जीवन ※ राखिबे जे जन काक, ताहारि मरण
राखिते नारिल काके देव पुरन्दर ※ आनिया दिलेन काके बाणेर गोचर

---

१ विजली २ इन्द्र का पुत्र काक के रूप में ३ स्तन ४ कौआ रूपी जयंत
५ संसार में उत्पन्न ६ पातक ७ इन्द्र की शरण।

खग के दरस कोप सर कीना ※ विन्धि कियेउ इक नयन विहीना
पुनि लायेउ जयंत जहँ रामा ※ अभय कीन लखि करुनाधामा

दो० लखि कुदीठ लोचन तजेउ, लखु, सिय ! खल उपहास ।
चलेउ जयंत निकेत निज, वरनि कही कृतिवास ॥ ४३ ॥

श्रीराम का चित्रकूट में अवस्थान और दशरथ-मृत्यु

प्रखर किरन मग भानु प्रतापा ※ जनकलली सहि सकत न तापा
हिंगुल छलकि पदंगुलि आवा ※ आतप छबि-नवनीत[1] बहावा
मुनि-प्रदेश गमनत पथ रामा ※ जुरि आईं देखन मुनि-भामा[2]
सिय लखि मुनि-तिय पूछहिं बानी ※ बिपिन-रमन कस रूपसि रानी !
लखत, मनौ तुम राजदुलारी ※ वरनउ सत्य सकल सुकुमारी
बिम्ब[3] अधर दूर्वादल श्यामा ※ भुज अजानु[4] शोभा अभिरामा
मञ्जुल मुख, सोहत धनुवाना ※ सुमुखि ! संग को रूपनिधाना
सकुच, नयन नत, बोलि न आवा ※ 'मम प्रियतम' ! सिय सैन[5] बुझावा
मृदु गति सिय पदपंकज परहीं ※ चलि तट-यमुन दरस सब करहीं

जयन्तेरे देखि रोषे श्रीरामेर बाण ※ बिन्धिया करिल तार एक चक्षु काण
श्रीरामेर काछे दिल बिन्धि एक आँखि ※ करुणासागर राम ना मारेन पाखी
श्रीराम बलेन, सीता, देख अपमान ※ जे चक्षे देखिल सेइ चक्षु हैल काण
अपमान पेये काक गेल निज देशे ※ रचिल अयोध्याकाण्ड कबि कृत्तिवासे

श्रीरामेर चित्रकूटे अवस्थान ओ दशरथेर मृत्यु

दिवाकर-किरण-उत्तापे उत्तापिता ※ चलिला कातरा अति जनक-दुहिता
हिंगुलमण्डित ताँर पायेर अंगुलि ※ आतपे मिलाय येन ननीर पुत्तली
मुनिर नगर दिया जान तिन जन ※ देखिते पाइल पथे मुनि-पत्नी-गन
जिज्ञासा करिल सबे जानकीर प्रति ※ पदब्रजे जाओ केन तुमि रूपवती
अनुभव करि तुमि राजार नन्दिनी ※ सत्यपरिचय देह, के बट आपनि
दूर्व्वादल श्याम-तनु अति मनोहर ※ आजानु-लम्बित-भुज, रक्त-ओष्ठधर
सुन्दर वदन देखि अति चमत्कार ※ करे धनुर्व्वाण, उनि के हन तोमार
लाजे अधोमुखी सीता, न बलेन आर ※ इंगिते बुझान, हनि स्वामी ये आमार
कमलिनी-सीता पथे जान धीरे-धीरे ※ उपस्थित हन शेषे यमुनार तीरे

१ नैनू की पुतली २ मुनि-पत्नियाँ ३ लाल ४ घुटनों तक भुजाएँ ५ संकेत द्वारा ।

गहन अतल तल, राम प्रभावा ※ घुटनन सुगम यमुन-जल आवा
नौकादिक न बाँध बिस्तारा ※ पग चलि गये कलिन्दी[1] पारा
तहँ मुनि - पद बन्दे रघुराई ※ निरखि मोद मुनि मन न समाई
तुम अवतार राम अविनासी ※ कस तपवेस अरण्य - निवासी
मुनिवर! तात-वचन शिर धारी ※ तापस तन जीवन वनचारी
समुद लखन-सिय-राम विरामा ※ उत सुमंत्र गवने निज धामा
चलि दिन तीन अवध पुनि आये ※ नृपहिं दण्डवत शीश नवाये

दो० तीन दिवस पथ, नृपतिवर! श्रृंगवेरपुर ग्राम ।
मुनि-प्रदेश पावन जहाँ, तजेउँ लखन-सिय-राम ॥ ४४ ॥

बिदा समय कहि बहु मधुबयना ※ तव पद बन्देउ पंकजनयना
सील[2] सरिस प्रभु-बचन सुखारी ※ लछिमन-कथन कोप अधिकारी
धनु दुर्दण्ड शेष सम गर्जन ※ मौन, शान्त रस सिय-छबि दर्शन
सुनि सुमंत्र-मुख करुन कहानी ※ सहित समाज पुरी बिलखानी
रानि सात शत विकल अपारा ※ रुदन अखिल निसि, नाहिं सम्हारा
तव लौं नृप, अतीत-सुधि आई ※ कौशिल्यहिं सो कथा सुनाई

ताहार गभीर जल पाताल प्रमान ※ रामेर प्रभाव हय हाँटुर समान
ना जानिया भेला ताहे बान्धेन लक्ष्मण ※ हाँटुजल पार ह'ये करेन गमन
मुनिर चरण राम बन्देन तखन ※ देखिया रामेरे मुनि हरषित मन
मुनि बलिलेन, राम, तुमि नारायण ※ तपस्वीर वेषे केन बने आगमन
श्रीराम बलेन, मुनि, पितार आदेशे ※ बिपिने करिब वास तपस्वीर बेशे
तिन जन चित्रकूटे रहेन अक्लेशे ※ एदिके सुमंत्र गिया उत्तरिल देशे
छयदिन उत्तरिल अयोध्या नगरे ※ जोड़हाते दाण्डाइल राजार गोचरे
कहिते लागिल पात्र नमस्कार करे ※ रामे राखि आइलाम श्रृंगवेरपुरे
सेथा हैते आइलाम राजा, तिन दिने ※ राम सीता लक्ष्मण रहेन सेइस्थाने
विदाय दिलेन राम मधुर-वचने ※ प्रणिपात करिलेन तव श्रीचरणे
रामेर येमन शील, तेमनि वचन ※ गर्ज्जन करिया किछु वलिल लक्ष्मण
प्रचण्ड कोदण्ड धरि गर्ज्जे येन फणी ※ किछु मात्र ना वलिल सीता ठाकुराणी
एतेक सुमन्त्र यदि वलिल वचन ※ पुरीर सहित सबे जुड़िल क्रन्दन
सातशत महादेवी राजार रमणी ※ कान्दिया विकल भावे पोहाय रजनी
केह कारे ना शान्ताय, सबे अचेतन ※ पूर्व्वकथा राजार ये हइल स्मरण

१ यमुना २ स्वभाव ।

अमिट वचन-द्विज, सत्य कहानी ❋ मृगया[1] हेतु फिरहुँ वन, रानी !
सुवन - अन्धमुनि श्रवनकुमारा ❋ सरयू नीर लेन पग धारा
घट जल भरत शब्द सुनि काना ❋ मृग अनुमानि बान सन्धाना
सर उर लगत, 'हाय!' द्विज कीन्हा ❋ केहि अपराध प्रान को लीन्हा
सुनि विमूढ़ गवनेउँ तेहि तीरा ❋ मुनि-सुत आहत लखेउँ सरीरा
हे नृप कवन दोष मोहि मारा ❋ मम परिवार बज्र सम डारा
अंध मातु पितु निसि-दिन सेवा ❋ मरन मोर तिनकर जिउ-लेवा[2]
श्रीफल वन पितु-जननि निवासा ❋ लै मोहि अंक चलहु तिन पासा
नतरु शाप-पितु पावहु राऊ ❋ भावी अमिट, न आन उपाऊ
मुनि-नन्दन पुनि तजे पराना ❋ भरि सुअंक, मैं कीन पयाना

दो० श्रवन-मातपितु अन्ध जहँ, बसत विल्वबन माहिं ।
धरेउँ जाय शव, जानि दोउ, अति बिलपहिं बिलखाहिं ॥ ४५ ॥

हे महीप ! निर्मम[3] अपघाती ❋ कवन दोष बिन्धेउ सुत-छाती
चलहु बेगि लै सरयू तीरा ❋ तर्पन-सुवन करउँ सोइ नीरा
चलेउँ टेकाय कथन अनुसारा ❋ करि तर्पन मुनि शाप उचारा
सुत वियोग दोउ स्वर्ग सिधाये ❋ उर अति विकल धाम हम आये

कौशल्यार ठाँइ राजा कहे पूर्व-कथा ❋ महाजन वाक्य कभू ना हय अन्यथा
मृगयाते जाइलाम सरयूर तीरे ❋ अन्धमुनि-पुत्र कलसीते जल भरे
मम ज्ञान मृग-सब करे जलपान ❋ बाण-त्याग करिलाम पुरिया सन्धान
भरिते सलिल तार फुटे बाण बुके ❋ प्राण गेल बलिया मुनिर पुत्र डाके
कोन् अपराधे प्राण निल कोन् जने ❋ एतेक शुनिया आमि गेलान से स्थाने
मुनिपुत्र बले, राजा, पाड़िला प्रमाद ❋ आमारे मारिला केन, किवा अपराध
अन्धमाता-पिता आमि पुषि रात्रिदिने ❋ बुड़ा-बुड़ि मरिबेक आमार मरणे
अन्धमाता-पिता आछे श्रीफलेर वने ❋ करि मोरे कोले राजा चल सेइ स्थाने
यावत् आमार पिता नाहि देन शाप ❋ मोरे लये चल तुमि यथा वृद्ध बाप
इहा विना आर तव नाहि प्रतिकार ❋ एतेक बलिला मोरे मुनिर कुमार
अन्ध बुड़ा-बुड़ि बसि आछे जेइ खाने ❋ मुनिपुत्रे कोले करि गेलाम से स्थाने
मुनि बलिलेन, राजा, बड़इ निर्दय ❋ कि दोषे मारिले बल आमार तनय
आमारे लइया जाइ सरयूर कूले ❋ पुत्रेर तर्पण आमि करि सेइ जले
मुनिरे लइया जाइ सरयूर तीरे ❋ पुत्रेर तर्पण करि शापिल आमारे
'पुत्रशोके मृत्यु' बलि गेला स्वर्गवास ❋ देशे आइलाम आमि पाइया तारास

---

१ शिकार २ प्राण हरनेवाला ३ निर्दय ।

रानी! अमिट अंध मुनि-शापू ※ निश्चय आजु मरन संतापू
तिलछत[1], करि विलाप तन हारा ※ बोल बंद, तन सीतल सारा
लखि नृप मौन, सबन मन भाई ※ भूपति नींद मनहुँ कछु आई
भोर, दण्ड दुइ दिन चढ़ि आवा ※ रानिन चहेउ महीप जगावा
गात छुवत भ्रम सबन नसाना ※ नारी[2] लोप, अंग बिन प्राना
खाय पछार गिरीं सब धरनी ※ पकरि चरन-नृप, रोवहिं रमनी
पुत्र - वियोग कौशिला पागी ※ लखि पति-शोक चेतना त्यागी
सत्पथ सदा सत्-वचन धारे ※ सत्य पालि नृप स्वर्ग सिधारे
अचल सत्य नृप पुण्यश्लोकू[3] ※ सुरपुर-गमन हरेउ तव शोकू
सुत-वनगमन स्वामि-सुरलोका ※ तदपि जियउँ सहि दारुन शोका
दुसह ताप छिति बिलखत रानी ※ मुनि बशिष्ठ बोले मधु बानी
कहा सीख! तुम स्वयं सयानी[4] ※ मृत-हित रुदन न समुचित रानी

दो० अवनि पालि, नृपधर्म करि, गमने स्वर्ग नरेस ।
महरानी प्रतिपालिये, धर्म-कर्म जे शेस ।। ४६ ।।

धरिय तैल बिच शव-नरनाहू ※ भरत बोलाय कराइय दाहू

से मुनिर वाक्य कभू ना हय खण्डन ※ आजिकार रात्रे रानि, आमार मरण
से अन्ध-मुनिर शाप फले अतःपरे ※ छट्-फट् करे राजा, वाक्य नाहि सरे
'हा राम' बलिया राजा त्यजिल जीवन ※ निद्रा जाय दशरथ, हेन लय मन
पुरी शुद्ध सबे कान्दि पोहाय रजनी ※ राजारे चियाते गेल सातशत राणी
दुइ दण्ड बेला हय, सूर्य्येर उदय ※ एतक्षण निद्रा जाय राजा महाशय
अनन्तर राजारे करिल मृत ज्ञान ※ नाड़िया चाड़िया देखे नाहि ताँर प्राण
आछाड़ खाइया पड़े कदली जेमनि ※ राजार चरण धरि कान्दे सब राणी
एके पुत्र-शोके राणी परम दुःखिता ※ पतिशोके ततोधिक, हइला मूर्च्छिता
सत्यवादी राजा तुमि, सत्ये बड़ स्थिर ※ सत्य पालि स्वर्गे गेले त्यजिया शरीर
सत्य, ना लंघिले तुमि, बड़ पुण्यश्लोक ※ स्वर्गवासी ह'ये एड़ाइले पुत्र-शोक
स्वर्ग गेल राजा, आर राम गेल वन ※ दुइ शोके प्राण मोर थाके कि कारण
भूमि गड़ागड़ि जाय कौशल्या तापिनी ※ कौशल्यारे बुझान वशिष्ठ महामुनि
तोमारे बुझाव कत, नहे न उचित ※ मृत हेतु कान्द यत, सब अनुचित
स्वर्गेते गेलेन राजा पालिया पृथिवी ※ ताँर धर्म्म-कर्म्म कर, तुमि महादेवी
राजारे राखह करि तैल-मध्यगत ※ देशे आसि अग्निकार्य्य करिबे भरत

---

१ कलपते थे २ नाड़ी ३ पवित्र चरित्र वाले ४ बुद्धिमती ।

भूप-देह धरि जतन, बिहानू[1] ※ उचित सचिवगन करइँ विधानू
सत्य पालि नृप सुरपुर पाई ※ बिन नृप राजु अतुल दुखदाई
शासन रहित कुशल जनि लेसू ※ पावस कबहुँ न बरसइ देसू
तरु फल-हीन, विफल सब धर्मा ※ जागत चहुँ दिसि विविध कुकर्मा
अनुशासन सेवक जनि रहहीं ※ तस्कर[2] दस्यु[3] उपद्रव करहीं
छत्रहीन-छिति, प्रजा दुखारी ※ हय गज घटत संपदा सारी
लूट - पाट पुरजन धनहारी ※ चहुँदिसि सन्न[4] ! अतुल भयकारी
नृपसूने रिपु करैं चढ़ाई ※ जंजालन[5] परि प्रजा नसाई
गगन न घन, सुरपति प्रतिकूला ※ चौमुख फलत अशुभ दुख-शूला
जहँ न राजु, तिय पति विपरीती ※ करैं पुरुष पर-वनितन प्रीती
हित विपरीत, सकल अनरीती ※ विन नृप धर्म न कर्म न नीती
अनुभव-पके[6] भुवाल-प्रतापा ※ सुखी प्रजा, जनि संशय व्यापा
तिन अतंक[7] व्यापत त्रयलोका ※ तिन सन्मान कुशल चहुँ लोका
अस्थिर राजु जहाँ नृप नाहीं ※ जहँ नृप, कुशल, प्रजा सुख माहीं
लाय भरत, शासन अधिकारू ※ दै, सब जन कीजिय स्वीकारू

बासिमड़ा हइया आछेन महाराज ※ प्रातःकाले युक्ति करे अमात्य-समाज
सत्य पालि भूपति गेलेन स्वर्गवास ※ अराजक हैल राज्य, पाइ बड़ त्रास
अराजक राज्येर सर्व्वदा अकुशल ※ अराजक प्रथिवीते नाहि हय जल
अराजक राज्ये बृक्ष नाहि धरे फल ※ अराजक राज्ये धर्म्म सकल विफल
अराजक राज्ये भृत्य वश नाहि हय ※ अराजक राज्ये सर्व्वक्षण दस्युभय
अराजक राज्येते तुरंग हस्ती छोटे ※ अराजक राज्येते प्रचार धन लोटे
अराजक राज्ये सदा हय डाका-चुरी ※ अराजक राज्ये देखि बड़ भय करि
अराजक राज्ये अन्य नृपति गरजे ※ अराजक राज्ये प्रजा-लोके दुःखे मजे
अराजक राज्ये ना वरिषे पुरन्दर ※ अराजक राज्येते अशुभ बहुतर
अराजक राज्ये नारी नाहि रहे पाशे ※ अराजक राज्ये स्वामी अन्यनारी तोषे
अराजक राज्ये सदा हिते विपरीत ※ अराजक राज्ये थाका अति अनुचित
राज्य करिलेन वृद्ध-राजा महाशय ※ ताँहार प्रतापे लोक थाकित निर्भय
स्वर्ग-मर्त्य-पाताल काँपित ताँर डरे ※ राज्येर कुशल छिल बुड़ार आदरे
हेन-राजा-विना राज्य करे टलमल ※ राजा हैले राज्यरक्षा, प्रजार कुशल
राज्य दिते भरतेरे सर्व्व-अंगीकार ※ भरतेर आनि देशे देह राज्यभार

१ प्रातः २ चोर ३ डाकू ४ सुनसान ५ झमेलों में ६ महान् अनुभव वाले ७ आतंक।

दो० बन्धु-गमन बन, पितु-मरन, दुख न जतावहिं लेस।
लावइँ भरत तुरंत चलि, धावन[1] मातुल देस॥ ४७॥

सुनि उर भरत अनन्त कलेसू ※ मन बिराग लौटहिं जनि देसू
कैकयि-दोष कान सुनि पावैं ※ तौ पुनि भरत अवध नहिं आवैं
भरत दूर जहँ केकयनाहा[2] ※ तनय चारि! पितु तबहुँ न दाहा
लावइँ भरत शीघ्र गति जाई ※ स्वजन-बशिष्ठ सलाह मिलाई
सम्मत सब, आयसु-गुरु धारा ※ चले लेन जहँ भरतकुमारा
चलि हस्तिनापुरी दिन तीना ※ भोर कुरंग देस पग दीना
चले नगर नीहार[3] तुरंता ※ रमा[4] बसति जहँ ज्ञान अनन्ता
चलि दिन-रैन सुरम्य लखानी ※ छबि मनहरन पुरी दरसानी
सुरपुर सरिस लखेउ इक देसू ※ प्रचुर सुकर्म, कुकर्म न लेसू
सलिला वेणु पार अवतरहीं ※ दोउ तट, विप्र जहाँ तप करहीं
विविध नदी-नद, गुहा मँझाई ※ देस-देस दिन-रैन चलाई
पँचये दिन गिरिनगर विरामू ※ जहँ कैकय नरेस कर धामू
लस्त-पस्त तन श्रम अधिकाई ※ करि भोजन सुख निद्रा आई

भरत आछेन मातामहेर बसति ※ दूत पाठाइया ताँर आन शीघ्रगति
राजा स्वर्गगत, राम चलिलेन बने ※ एत घोर प्रमाद भरत नाहिं जाने
भरतेरे ना कहिवे ए सब घटन ※ तबे ना करिबे सेइ देशे आगमन
मातृ-दोष शुनिले भरत ना आसिबे ※ पितृ-शोके मनोदुःखे देशांतरी हबे
भरत मातुल-गृहे अयोध्या पासरा ※ चारिपुत्र-सत्त्वे दशरथ बासिमड़ा
बुद्धिर सागर पात्र मंत्रणा विशेषे ※ चलिलेन भरतेरे आनिवारे देशे
करिलेन अनुज्ञा वशिष्ठ पुरोहित ※ भरतेरे आनिवारे चलिल त्वरित
हस्तिनानगरे गेल तृतीय दिवसे ※ परदिन गेल तारा कुरंगेर देशे
नीहारेर राज्ये गेल त्वरित-गमने ※ लक्ष्मी-अधिष्ठान सदा ज्ञान हय मने
रात्रिदिन सबे पथे चलिल सत्वर ※ पुनर्वेर राज्ये गेल देखे मनोहर
आड़ि-कूलदेशे गेले येन सुरपुर ※ कुकर्म्म बर्ज्जित लोक, सुकर्म्म प्रचुर
बह वेणु नदी पार हैल सर्व्वजन ※ जार दुइ कूले बैसे अनेक ब्राह्मण
नद-नदी-कन्दर हइल बहु पार ※ बहु देशे देशान्तरे एड़ाय अपार
गिरिराज देशेते केकय राजा बैसे ※ उत्तरिल गिय पात्र पंचम दिवसे
रात्रिदिन पथश्रमे हइया विकल ※ रन्धन भोजन करे पेये रम्यस्थल
भरतेर संगे नाहि हय दरशन ※ पथश्रमे निद्रा जाय ह'ये अचेतन

१ दूत २ कैकय देश के राजा ३ बर्फ से मण्डित नगर ४ लक्ष्मी।

भरत भेंट अवसर जनि आवा ※ सुधागान कृतिवास सुनावा

भरत का अयोध्या-आगमन

सदन भरत सोवत पर्यंका ※ लखि कुस्वप्न उपजी उर संका
भोर, सभा बिच भरत बिराजा ※ सचिव सनेहिन जुरा समाजा

दो० यथा-योग मिलि परस्पर, करैं बन्दनाशीष ।
कुशल-भरत, पूछहिं सकल, द्विज गन देहिं असीस ॥
मुख न बोल, जड़, विरस मन, पुनि-पुनि लेत उसास ।
पूछत परिजन कुशल, तब कीन्हेउ भरत प्रकास ॥ ४८ ॥

वरनेउ भरत अमंगल सपना ※ अवनिपात[1] रवि-ससि खसि[2] गगना
आय खबरि इक बृद्ध प्रकासी ※ लखन राम सिय काननवासी
संचित तैल मनो शव-ताता ※ लखि कुस्वप्न कंपित मम गाता
बंधु चारि बिच पितु-निर्वाना[3] ※ इतर[4] न मोहिं कोउ सपन लखाना
अशुभ सपन सब-जन दुखदाई ※ भरतहिं तदपि कहेउ समुझाई
मिटइ विसेख[5] असुभ नृपनन्दन ※ सविधि देवि-देवन-पद बंदन
दीनन दान, द्विजन सत्कारू ※ सुत! न धरनि यहि सम प्रतिकारू

कृत्तिवास-पण्डितेर वाणी अधिष्ठान ※ रचिल अयोध्याकांड अमृत समान

भरतेर अयोध्याय आगमन

निद्रागत भरत से पालंक-उपर ※ उठेन कुस्वप्न देखि सशंक-अन्तर
प्रभाते भरत आसि बलेन देओयाने ※ आइल अमात्यगण ताँर संभाषणे
यथायोग्य नमस्कार करे पातृगण ※ ब्राह्मण-पण्डित करे शुभाशीर्व्वचन
मित्रगण आसिया आलाप करे कत ※ इतरे सम्भाषे करे व्यवहारमत
भरत विषण्ण अति, मुखे नाहि शब्द ※ निश्वास प्रबल बहे, रहे अति स्तब्ध
भरतेरे जिज्ञासा करेन पात्रगण ※ शुनिया भरत वाक्य बलेन तखन
कुस्वप्न देखेछि आजि रात्रि अवशेषे ※ चन्द्र-सूर्य खसि येन पड़िल आकाशे
स्वप्ने एक वृद्ध आसि कहिल वचन ※ श्रीराम-लक्ष्मण-सीता गियाछेन वन
देखिलाम मृत पिता तैलेर भितर ※ एइ स्वप्न देखि आमि कम्पित अंतर
चारि भाइ आर पिता, एइ पाँचजन ※ पाचेर मध्येते देखि पितार मरन
भरतेर कथा शुनि सबाकार त्रास ※ पात्र-मित्र भरतेरे करिछे आश्वास
देखियाछ कुस्वप्न नृपतिकुमार ※ शुनह भरत, कहि तार प्रतिकार
देवतार पूजा तुमि कर सावधाने ※ ब्राह्मण-दरिद्र तुष्ट कर नाना दाने

१ धरती पर टूट पड़े २ खिसक कर ३ मोक्ष ४ कोई दूसरा ५ दोष ।

दान-प्रभाव हरन सब क्लेसू ※ स्वजन, सचिव-गन इमि उपदेसू
करि असनान अमित धन नाना ※ पूजे देव, कीन बहु दाना
धन अशेष, अस दान अपारा ※ तहुँ न तृप्त मन-भरत उदारा
संसद[1] केकयराज प्रतापा ※ सुरगन बिच सुरपति सम थापा
शोभित भरत समीप नरेसू ※ अवध-दूत सोइ घरी प्रवेसू
पायक[2] प्रथम नृपहिं शिर नावा ※ भरतहिं पुनि संवाद सुनावा
यह मुद्रिका राज - संकेतू ※ अवध तुरंत चलहु कुलकेतू !
पल विराम सों विपुल अकाजू ※ पठवहु कुअँर अवध, नृप! आजू
देखन भरत, अवधपति आतुर ※ कहहिं प्रवञ्च विविध, चर[3] चातुर

दो० कथन पायकन, सपन उत, असुभ दोऊ विपरीत ।
भरत कुतूहल! सकल सुनि, उर जनि होय प्रतीत ॥
पितु मंगल, जननिन कुशल, कुशल लखन-सिय-राम ।
कहि उर संशय हरहु चर ! सुखी सकल मम धाम ॥
वेगि अवध चलि कुशल सब, लखहु, चरन[4] मत दीन ।
मातामह-पद बन्दि द्रुत[5], कुअँर बिदाई लीन ॥ ४६ ॥

इहा बिना भरत, नाहिक उपदेश ※ दान द्वारा तोमार घुचिबे सर्व्वक्लेश
पात्र-मित्रगण दिला एतेक मन्त्रणा ※ स्नान करि भरत आनेन द्रव्य नाना
पूजिलेन आगे देवे दिया उपचार ※ करेन भरत दान सकल भाण्डार
भरतेर छिल यत धनेर भाण्डार ※ दिलेन सकल द्विजे, सीमा नाहि तार
सकल भाण्डार शून्य, नाहि आर धन ※ तथापि ताँहार किन्तु स्थिर नहे मन
प्रबल प्रतापशाली कैकय भूपति ※ देयाने बसिल गिया येन सुरपति
भरत वसेन गिया भूपतिर पाशे ※ अयोध्यार दूत गिया तखन प्रवेशे
केकयराजेर प्रति नोयाइया माथा ※ भरतेर आगे दूत कहे सव कथा
आइलाम तोमाके लइते सर्व्वजन ※ भरत, झटिति देशे कर आगमन
राजार निशान देख हातेर अंगुरी ※ झाट चल, आमरा रहिते नाहि पारि
एकदण्ड ना रहिव, आछे बड़ काज ※ भरतेरे पाठाओ केकय महाराज
कथार प्रवन्धे तारा कहिल विशेष ※ देखिते तोमाय वाञ्छा राजार अशेष
शुनिया भरत किछु ना हन प्रतीत ※ यत स्वप्न देखिलाम, सब बिपरीत
भरत वलेन, बल पितार मंगल ※ श्रीराम-लक्ष्मण भाइ आछेन कुशल
कैकेयी, कौशल्या आर सुमित्रा जननी ※ सकलेर मंगल बल हे दूत, शुनि
दूत वले, राजपुत्र ! सबार कुशल ※ सबारे देखिबे यदि शीघ्र देशे चल
प्रणाम करिया मातामहेर चरणे ※ लइलेन भरत बिदाय सेइ क्षणे

---

१ राज्यसभा २ दूत ३ पायक, संवाददाता ४ दूतों ने ५ अति शीघ्र ।

नृपति विपुल धन, हय-गज नाना * असन वसन अभरन सन्माना
भरत रिपुदमन रथ आसीना * कत शत सैन अनुगमन कीना
भानु विगत संध्या नियराई * अवधपुरी पहुँचे सब जाई
राम-सोक चहुँ रुदन अपारा * नगरी चहुँ बिषाद बिस्तारा
बिकल भरत पूछहिं केहि कारन * कस दुखरूप प्रजा किय धारन
आगम मम, दिन गये निहारी * मिलत, न बोलत कोउ नर-नरी
पायक रहे मौन सिर नाई * भल-अनभल मुख बात न आई
अवध-नारि-नर सहज सुभावा * कबहुँ न कोउ केहिं असुभ सुनावा

भरत-विलाप

अति संसय ! चलि जनक-निकेतू[1] * तात न तँह लखि विस्मय-हेतू
मरनकाल तजि कैकइ-धामा * कौशिल्या-गृह नृपति बिरामा
तहँ शव-भूप तैल बिच धारी * भरत न ज्ञात कथा यह सारी
पिता-हीन पितु-मंदिर देखी * चले जननि ढिग, क्लेस बिसेखी
रत्नासन बिराज कैकेई * मन न विषाद, मोद उर लेई
तनय-राजसुख-भरम भुलानी * लखेउ भरत चलि कैकइरानी

हाती-घोड़ा दिल राजा बहुमूल्य धन * असन-वसन आर नाना आभरण
शत्रुघ्न-भरत दोंहे चड़िलेन रथे * कत शत सैन्य चले ताँदेर सहिते
सूर्य्य जान अस्तगिरि, बेला अवशेषे * हेनकाले सबे तारा अयोध्या प्रवेशे
श्रीरामेरे शोके लोक करिछे क्रन्दन * अयोध्यार सर्व्वलोक बिरसवदन
जिज्ञासेन भरत हइया विषादित * प्रजालोके कान्दे केन, नहे हरषित
अनेक दिनेर परे आइलाम देशे * काछे ना आइसे केह, केह ना सम्भाषे
एत शुनि दूतगण हेंट करे माथा * केहि नाहि कहे कोन भाल-मन्द-कथा
अयोध्यार सर्व्वलोक आछे ए नियमे * अशुभ संवाद नाहि कहे कोनक्रमे

पितार मृत्यु एवं श्रीराम-प्रभृतिर वनगमन-संवादे भरतेर विलाप

भरप भावित अति मानिया विस्मय * प्रथमे गेलेन तिनि पितार आलय
देखिल, नाहिक पिता, शून्य निकेतन * भरत भाविया किछु ना पान कारण
मृत्युकाले दशरथ कौशल्यार घरे * तथा ताँर मृत देह तैलेर भितरे
भरत पितार गृह शून्यमय देखि * मायेर आवासे जान ह'ये मनोदुःखी
कैकेयी बसिया आछे रत्न-सिंहासने * पड़ियाछे प्रमाद, मनेते नाहि, गणे
पुत्रेर राजत्व लोभे आछे मनःसुखे * भरत गेलेन तबे मायेर सम्मुखे

१ पिता के निवास पर।

बन्देउ मातुचरन शिर नाई ❋ सुत लखि सिंहासन तजि धाई
भरि सुअंक चुम्बति सुत-आनन ❋ कहेउ कुशल-ननिहार बतावन

दो० बन्धु, जननि, पितु तव कुशल, मंगल कैकय-गेह ।
उत्कण्ठा तजि, प्रथम मम, हरहु मातु! सन्देह ।। ५० ।।

अवध सकल विपरीत निहारी ❋ कोउ न मुदित, सब लखत दुखारी
लोक उदास सोक चहुँ घोरा ❋ लखि अपवाद करैं मम ओरा
पितु-मंदिर पितु-दरस न पावा ❋ हाराकार अवध कस छावा
कहेउ न कोउ अबलौं अपकरनी ❋ पुलकि कैकई निज मुख वरनी
अचल सत्यवादी सत्वीरा ❋ तव पितु सत्-पथ तजेउ सरीरा
नृप-वियोग दुख नगर मँझारा ❋ गिरे भरत सुनि खाय पछारा

छं० कदली सम अचेत गिरि धरनी, धूल-धूसरित काया ।
पितहिं बिसूरि विलाप-भरत लखि बिलखत जन-समुदाया ।।
सुवन शास्त्रविद्! कहति कैकयी, तव दुख हिया-बिदारन ।
केहि पितु-मातु अमर ? सुत! सासन करु धीरज हिय धारन ।।

भरतेरे देखिया त्यजिल सिंहासन ❋ भरत करेन ताँर चरण बन्दन
मुखे चुम्ब दिया राणी पुत्रे लैल कोले ❋ कुशल जिज्ञासा करे ताँरे कुतूहले
केकय-भूपति पिता आछेन कुशले ❋ कुशले आछेन मम सोदर सकले
मंगले आछेन माता-विमाता-सकल ❋ पितृराज्य राजगिरि-देशेर मंगल
भरत बलेन, माता, ना हओ विकल ❋ माता-पिता-भ्राता तव सबार कुशल
तोमार बान्धव यत, केह नाहि मरे ❋ सकल मंगल तव जनकेर घरे
तुमि यत जिज्ञासिले, दिलाम उत्तर ❋ आमि ये जिज्ञासा, ताहा कह त सत्वर
अयोध्यार राज्य केन देखि विपरीत ❋ सकले विषण्ण, केह नहे हरषित
चतुर्दिके लोक केन करिछे क्रन्दन ❋ आमरे देखिया केन करिछे निन्दन
पितार आलये केन ना देखि पितारे ❋ अयोध्यानगर केन पूर्ण हाहाकारे
ये कथा कहिते कारो मुख ना आइसे ❋ हैन कथा कहे राणी परम हरिषे
सत्यवादी तव पिता, सत्ये बड़ स्थिर ❋ सत्य पालि स्वर्गेते गेलेन सत्यवीर
शून्य राज्य आछे तव पितार मरणे ❋ भरत आछाड़ खेये पड़ेन से क्षणे
काटिले कदली येन भूमिते लोटाय ❋ धूलाय पड़िया वीर गड़ागड़ि जाय
मूर्च्छागत भरत ह'लेन पितृशोके ❋ देखि ताँरे कान्दिया विकल अन्यलोके
कैकेयी बलिल, पुत्र कर अवधान ❋ तोमारे क्रन्दने मोर बिदरे परान
सर्व्वशास्त्र जान तुमि भरत अन्तरे ❋ पिता-माता ल'ये केबा कोथा राज्य करे

सुरपुर-गमन-तात सुनि पाई ❋ बरनउ कहाँ लखन-रघुराई
रामहिं राजभार पितु दीन्हा ❋ बानप्रस्थ निज कहँ मन कीन्हा
बिदित योजना बनी बनाई ❋ किमि अन्यथा भई कहु माई
अयुत वर्ष[1] निश्चित पितु-आयू ❋ स्वर्ग-गमन किमि बिन परमायू[1]
पति-बिछोह कर तुमहिं न सूला ❋ मन उपजत, तुम अनरथ-मूला[2]
सुख न समात, रानि जस भावा ❋ नाना बिधि सो सुतहिं सुनावा
लखन सहित रघुपति बनबासी ❋ अनुगामिन सिय भई प्रवासी
कानन राम गये केहि कारन ❋ मातु! कथन तव हृदय-विदारन
परतिय-हरन न पर-धनहारी ❋ कवन दोष रघुपति वनचारी
सुतहिं कैकई सकल सुनावा ❋ प्रथम अपार राम-गुन गावा

दो० धर्म-धुरीन, अनन्त गुन, जनक-जननि के प्रान।
राम भक्तप्रिय कर तिलक, सुनि सुख सबन समान ॥ ५१ ॥

तिलक बिहान[3] आजु अधिवासू ❋ राम-राज सुख सबन हुलासू
पठयेउँ तबहिं राम वन-देसू ❋ सुत! तव-हित पद लहेउँ नरेसू
राम-वियोग दुसह नरराई ❋ हाय राम! कहि सद्गति पाई
करगत[4] राम राजु अब तोरा ❋ सदा मातु-ऋन-ऋनी किशोरा

भरत वलेन शुनि पितार मरण ❋ श्रीराम-लक्ष्मण ताँरा कोथा दुइजन
महाराज रामेरे अर्पिया राज्यभार ❋ करिबेन आपनि केवल सदाचार
एइ सब युक्ति पूर्व्वे छिल, आमि जानि ❋ ताहार अन्यथा केन, कह ठाकुराणी
अयुत-वत्सर[1] जानि पितार जीवन ❋ न'हाजार वर्षे ताँर मृत्यु कि कारण
राजार मरणे तव नाहिक विषाद ❋ अनुमाने वुझि तुमि करेछ प्रमाद
राजकन्या कैकेयी वाड़िछे नानासुखे ❋ कतमत कथा वले यत आसे मुखे
राम बने गेलेन, लक्ष्मण ताँर साथे ❋ मने कि भाविया सीता गेलेन पश्चाते
भरत वलेन, केन राम यान वने ❋ परान विदरे माता, तोमार वचने
हरिलेन कार धन कार वा सुन्दरी ❋ कोन् दोषे हइलेन राम वनचारी
कैकेयी सकल कहे भरतेर स्थाने ❋ रामेर अशेष गुण प्रथमे वाखाने
भकतवत्सल राम धर्म्मेते तत्पर ❋ जनक-जननी-प्राण, गुणेर सागर
श्रीराम हइले राजा सबार कौतुक ❋ रामेर प्रसादे लोक पाय नानासुख
कालि रामराजा हबे, आजि अधिवास ❋ हेनकाले रामेरे दिलाम बनवास
तोमारे राजत्व दिया, राम जान वन ❋ 'हा राम' वलिया राजा त्यजिल जीवन
मातृऋण पुत्र कभु शुधिते ना पारे ❋ राम ल'ये छिल राज्य, दिलाम तोमारे

---

१ दस हजार वर्ष २ विष की जड़ ३ दूसरे दिन (कल) ४ हाथ में आया।

करहु राज सासन पद साजी ※ राज्यश्री तव भाल बिराजी

भरत-शत्रुघ्न द्वारा कैकेयी-मंथरा की भर्त्सना

घाव छुवत सम भरतहिं तापा ※ दहकति कहेउ, अतुल संतापा
निज मुख पाप कथा जस वरनी ※ पावहु नरक अधम गति जननी
नृप-कुल जनमि सुनेउ केहि काला ※ जेठ रहत, कब अनुज भुवाला ?
पिता, पितामह धर्म सरूपा ※ तिन गृह निसिचरि जनम अनूपा
प्रकटी दनुजि मनुज-तन धारी ※ मन रघुवंश-विनास विचारी
राम-शोक पितु प्रान गवाँवा ※ तैं कस राम अरण्य पठावा
पति-प्रसाद संपति सुखरासी ※ पति-वध तव कुल तीनि विनासी
पाप पुरबुले[1] कछु मम जागे ※ लहे जनम तव गर्भ अभागे
दीन्ह मातु होइ दारुन शोकू ※ काटि शीस पठवहुँ यमलोकू
अस निसिचरि-तन जगत न व्यापा ※ भले मातु-वध तासु न तापा
जिमि निज जननि बधे भृगुरामा[2] ※ उर उपजत पठवउँ सुरधामा

दो० अनल सरिस दहकत भरत, अंग न कोप समात ।
निरखि चली हटि कैकई, मनही मन पछितात ॥ ५२ ॥

राजा ह'ये राज्य कर, वैस राजपाटे ※ राजलक्ष्मी आछे पुत्र तोमार ललाटे

भरत-शत्रुघ्न कर्तृक कैकेयी ओ कुब्जीर प्रति भर्त्सना

घायेते लागिले घा ज्वलये जेमन ※ तेमनि भरत वले ह'ये ज्वालातन
निज गुण कह माता आपनार मुखे ※ आपनि मजिले माता, डुबिले नरके
राजकुले जन्मिया शुनिले कोन् खाने ※ कनिष्ठ हइबे राजा ज्येष्ठ विद्यमाने
तोर पिता-पितामह करे धर्म्म कर्म्म ※ से वंशेते हइल केन राक्षसीर जन्म
निशाचरी ह'ये तुइ हइलि मानुषी ※ रघुवंश-क्षय-हेतु आइलि राक्षसी
श्रीरामेर शोके राजा त्यजेन जीवन ※ तुइ केन श्रीरामेरे पाठाइलि वन
राजार प्रसादे तोर एतेक सम्पद ※ तिन कुल मजाइलि स्वामी करि वध
पूर्व्वजन्मे करियाछि कत कदाचार ※ सेइ पापे तोर गर्भे जनम आमार
मा हइया तनयेरे दिलि एत शोक ※ इच्छा हय काटिया पाठाइ परलोक
एमन राक्षसी तुइ, नाहि देखि कोथा ※ तो हेन मातार वधे नाहि कोन व्यथा
जेमन परशुराम काटिल मायेरे ※ तेमनि करिते वाञ्छा, किन्तु मरि डरे
राम पाछे वर्ज्जन वलिया मातृघाती ※ तवे त नरके मम हवे निवसति
भरत ज्वलंत-अग्नि-तुल्य क्रोधे ज्वले ※ देखिया कैकेयी तबे जाय अन्यस्थले

---

१ पूर्व जन्म के २ परशुराम ।

वृथा अनर्थ ! सोच उर छावा ※ परि कैहि कुमति प्रमाद रचावा
भरत समीप रिपुदमन आये ※ रुदन करहिं दोउ अति बिलखाये
तात ! तात ! कहि अंक लगावा ※ दोउ तन, दुहुन नयन जल छावा
दोष मंथरा मन अनुमानी ※ कहैं सकोपि बन्धु दोउ बानी
रामहिं राजु भूप-रुचिकारी ※ कूबरि कस प्रपञ्च विस्तारी!
मिलत मंथरा जियत न जाई ※ विधिगति! चेरि नजर-तर आई
अभरन छबि पट रंग बिरंगा ※ चन्दन बास सुवासित अंगा
कूबर-मुक्तावलि छबि खानी ※ राम - प्रवास चेरि हुलसानी
अबुझ, प्रफुल्ल भरत ढिग आई ※ प्रहरी तब लौं खबरि जनाई
नृपति-मरन रघुपति वनवासी ※ सकल-विनास-हेतु यह दासी
तासु मरन बिनसइ दुख सारा ※ सुनि रिपुघ्न बध-चेरि विचारा
कुपित, केस धरि, रगरि घुमावा ※ चाक - कुम्हार समान नचावा
सिथिल केस कछु भाजत आई ※ कैकयि - सदन गोहार मचाई
भरत-रिपुदमन लीन्हे प्राना ※ अहह रानि ! मम कीजिय त्राना
पुनि शत्रुघ्न केस धरि लाये ※ भीषम मार - प्रहार मचाये

जाइते-जाइते रानी करेन बिषाद ※ कार लागि करिलाम एतेक प्रमाद
आइलेन शत्रुघ्न करिते संभाषण ※ भरतेर क्रन्दने कान्देन शत्रुघ्न
'भाइ-भाइ' बलिया भरत निल कोले ※ दु'जनार अंग तिते नयनेर जले
अनुमाने बुझिलेन, कुञ्जीर ए क्रिया ※ कहिते लागिल दोंहे कुपित हइया
रामेरे दिलेन राजा निज छत्र दण्ड ※ कोथा हैते कुञ्जी पाड़े प्रमाद प्रचण्ड
पाइले कुञ्जीर देखा बधिब जीवन ※ बिधिर निर्ब्बंध कुञ्जी आइल तखन
शोभा पाय पट्ट वस्त्र आर आभरणे ※ सर्ब्वांग-भूषिता कुञ्जी सुगंधि चन्दने
मुक्ताहार शोभे तार कुञ्जेर उपर ※ श्रीरामेर बनबासे प्रफुल्ल अन्तर
एतेक प्रमाद हबे, कुञ्जी नाहि जाने ※ भरतेर निकटे आइसे हृष्ट-मने
हेन काले द्वारी बले, शुन शत्रुघन ※ एइ कुञ्जी-हेतु वृद्ध राजार मरण
एइ कुञ्जी रामे पाठाइल बनबास ※ एइ कुञ्जी करिलेक सकल बिनास
एइ कुञ्जी मजाइल अयोध्या नगरी ※ एइ कुंजी मरिले सकल दुःखे तरि
शत्रुघ्न बलेन, भाइ, इच्छा करे मन ※ एखन कुंजीर आमि बधिब जीवन
शत्रुघ्न कुपित ह'ये धरे तार चुले ※ चुले धरि कुंजीरे से फेले भूमि तले
हिंचड़िया ल'ये जाय ताहारे भूतले ※ कुमारेर चाक येन घुराइया फेले
'मरि-मरि' बले कुंजी परित्राहि डाके ※ चुले छिड़े गेल, से कैकेयी घरे ढोके
कुंजी बले, कैकेयि, करह परित्राण ※ भरथ-शत्रुघ्न मोर लइल परान
शत्रुघ्न प्रवेशे क्रोधे कैकेयीर घरे ※ चुल धरि कुंजीरे से आइल बाहिरे

कूबर - मुक्तावलि इमि टूटी ❋ नभ तजि धरनि नखत-छबि फूटी

दो० भरत-धाय, पुनि मुँहलगी, कैकेयी कै दासि।
रक्तसनी लोटति अधम, विधि गति! सकल विनासि॥
चेरी-दुर्गति निरखि, बढ़ि, पुनि हटि रानि पछार।
लेयँ प्रान कहुँ, रिपुदमन, उर अति भय-सञ्चार॥ ५३॥

कह शत्रुघ्न सुनहु मम बाता ❋ भजे[1] न गति, जनि मुकुति विमाता
तुम सिरमौर सातसत रानी ❋ पितु न कबहुँ दुलखो[2] तव बानी
नृपनन्दिनी, नृपति - प्रियरानी ❋ जात न तव दुर्भाग्य बखानी
तव सुख-सरिस न सुख शचि[3] पावा ❋ दासी - कुमति पताल पठावा
तव बध किये न दुख मम जाई ❋ वृथा मातु-बध पाप कमाई
तव सम्मुख बध तव प्रिय चेरी ❋ सुलगहु, मरहु विषम दुख हेरी
पकरि केस रगरत मुख धरनी ❋ लखि हिय कम्प भरत कै जननी
हिये टिहुन[4] गर चापि बहोरी ❋ मुद्गर-घात दीन पग तोरी
कूबरि पंगु रक्त चहुँ छावा ❋ तन विरूप[5] रिपुदमन बनावा
चेरि अचेत प्रान अवसेसू ❋ नारि-हनन भय भरत बिसेसू

तबु तार कुंजे हार करिछे शोभन ❋ प्रहारे छिड़िया पड़े जेन तारागण
कैकेयीर मुख्यदासी, धात्री भरतेर ❋ सर्व्वांग भिजिल रक्ते, एइ कर्म्मफेर
चुले ध'रे ल'ये जाय, कुंजे लागे छड़ ❋ शत्रुघ्नेरे देखिया कैकेयी दिल वड़
चेड़िरे मारिल, पाछे प्रहारे आमाय ❋ एइ मने करि त्रासे कैकेयी पलाय
शत्रुघ्न बलेन, शुन कैकेयि विमाता ❋ पलाइया नाहि जाह, कहि एक कथा
सात शत रानी जिनि तोमार प्रताप ❋ बलिते तुमि'या, ताइ करितेन बाप
राजार महिषी तुमि राजार नन्दिनी ❋ तोमा सम दुर्भगा स्त्री ना देखि ना शुनि
शचीर अधिक सुख, बले सर्व्वलोके ❋ आमी कि मारिया मात, डुब्रिब नरके
दासीर कथाय बुझि गेल रसातल ❋ दोष अनुरूप आमि की वलिब बल
यदि तोमा व्रधि पाड़े, दुःख नाहि घुचे ❋ मातृव्रध करिया नरके डुबि पाछे
तोमार चेड़ीरे मारि तोमार सम्मुखे ❋ पुड़िया ज्वलिया येन मर एइ शोके
चुले धरि चेड़ीरे माटीते मुख घसे ❋ देखिया कैकेयीरानी काँपिछे तरासे
बुके हाँटु दिया से कुंजीर धरे गला ❋ मुद्गरेर आघाते भांगिलि पा'र नला
एके त कुत्सिता कुंजी, तार हएल खोड़ा ❋ सर्व्वगाए छड़ गेल, येन रक्तबोड़ा
अचेतन हएल कुंजी, श्वास मात्र आछे ❋ भरत भावेन, नारीहत्या हय पाछे

---

१ भागकर २ बात काटी ३ इन्द्राणी ४ घुटना ५ भद्दा, कुरूप।

पुनि-पुनि अनुजहिं करि परितोषू * नारि-घात समुझावहिं दोषू
अस्थि सेस तन रक्त न चर्मा * तजहु न अब, तो होय अधर्मा
आयसु-राम तात! हिय धारी * लेहु न पाप सीस बध-नारी
रघुपति आन[1] समादर कीन्हा * प्रान बकसि रिपुसूदन दीन्हा
रहत कैकई दुर्गति नाना * मार-प्रहार! बचे बस प्राना
सुर तजि भला मनुज किमि जानैं * होनहार अस किमि पहिचानैं

दो० राम सिँहासन दीन पितु, जननि भई प्रतिकूल।
बिधि-गति केहि बिधि जानिए, यहै भरत-उर सूल ॥ ५४ ॥

तृप्त न बिलसि अतुल सुखखानी * दासी-कुमति रानि बौरानी
भयेउँ कलंकित जननी-काजा * पहुँचत राम-मातु पहँ लाजा
कहेउ रिपुघ्न, न मातहिं रोषू * भल जानहिं केहि-कर कस दोषू
इत बिलखत यहि विधि दोउ भाई * कौशिल्या-गृह सकल सुनाई

कौशल्या, वशिष्ठ-सहित भरत की मंत्रणा और दशरथ-अन्त्येष्ठि

राम-मातु पहँ चलि शिरनावा * कहि सुत, भरतहिं अंक लगावा
दोउ-तन भीज दुहुन दृग वारी * बोली मातु दुसह-दुख-मारी

धीरे-धीरे भरत बलेन सुबचन * नारीहत्या हब पाछे, शुन शत्रुघन
रक्तचर्म्म नाहि आर, अस्थिमात्र सार * नारी-वध हय पाछे ना मारिह आर
नारीहत्या महापाप, शुन शत्रुघन * यदि एइ पापे राम करेन बर्ज्जन
नाहि करि मातृहत्या श्रीरामेर डरे * एत शुनि शत्रुघ्न से छाड़िल कुब्जीरे
लइलेन कुब्जीरे कैकेयी विद्यमान * एतेक प्रहारे तबु रहिल पराण
भरत बलेन, भाइ, सब देव जाने * एतेक घटिबे भाइ, जानिब केमने
श्रीरामे दिलेन पिता राजसिंहासन * के जाने, करिबे माता अन्यथाचरण
स्वर्गेर भोग भुञ्जे, तबु नाहि आँटे * राजार महिषी कि चेड़ीर वाक्ये खाटे
आमि दुष्ट हइलाम जननीर दोषे * कौशल्यार काछे जाब केमन साहसे
शत्रुघ्न बलेन, ताँर ना हइबे रोष * आपनि जानेन माता, यार यत दोष
भरत-शत्रुघ्न हेथा करेन रोदन * कौशल्या बसिया घरे करेन श्रवण

कौशल्या-बशिष्ठेर सहित भरतेर मन्त्रणा ओ दशरथेर अन्त्येष्ठि

भरत शत्रुघ्न गिया भाइ दुइ जन * करिलेन कौशल्यार चरण बन्दन
'पुत्र' बलि कौशल्या भरते निल कोले * उभयेर सर्व्वांग तितिल नेत्र-जले

१ सौगंध।

तिलक बिहान[1], आजु अधिवासू[2] ※ कैकइ दीन जबहिं बनवासू
परतिय-हरन न परधन-हारी ※ केहि अपराध राम बनचारी
मैं कण्टक, मोहिं तापस वेसू ※ दै पठवहु जहँ सुत अवधेसू
दुख ललार[3], तिन कहँ दुख काजू ※ माय-पूत बिलसहु[4] सुख-राजू
ब्यंग-बोल सुनि भरत उदासा ※ मैं तो मातु! राम कर दासा
राम बन-गमन, मोर न दोषू ※ चरन सौंह[5] तव, करहु न रोषू
नृपति प्रजा-पीड़क दुखकारी ※ तासु पाप परि होहुँ दुखारी
नेह न नृप प्रति, सासन-द्रोही ※ अधम प्रजा सम गति मम होही
गुरु दच्छिना न, विद्या पाई ※ श्रम लइ मूल्य देत सकुचाई
निज बखान पर - निन्दाकारी ※ हरइँ धरोहर पर-धन-हारी

दो० गहौं राजु रघुनाथ छलि, मन मोरे अभिसन्धि[6]।
नसैं लोक दोउ, गति लहउँ नरक, शंभु सौगन्धि[7] ॥ ५५ ॥

भरत-शपथ सुनि बोली माता ※ भल मोहिं ज्ञात हृदय तव ताता!
राम सरिस तुम धर्म सरूपा ※ सदा धर्म रुचि दोउ अनुरूपा
चौदह वर्ष बितइ जब आवैं ※ राम न धाम जियत मोहिं पावैं

कालि राजा हबे राम, आजि अधिवास ※ हेनकाले तव माता दिल बनवास
हरिल काहार धन, राम कार नारी ※ कोन दोषे पुत्रे मोर करे देशान्तरी
आमारे करिया दूर घुचाओ ए काँटा ※ पाठाओ रामेर काछे, शिरे धरि जटा
कौशल्या बलेन, शुन कैकेयी-नन्दन ※ माये-पोये राज्य कर आनन्दे एमन
दुःखभागी एइजन, सेइ पाय दुःख ※ माये पोये भरत, भुञ्जह राज्यसुख
भरत कातर अति कौशल्या-वचने ※ रामेर सेवक आमि, तुमि जान मने
मम मते यदि राम गियाछेन बने ※ दिव्य करि माता आमि तोमार चरणे
राजा यदि प्रजा पीड़े, ना करे पालन ※ आमारे करुन विधि से पाप-भाजन
प्रजा ह'ये राज्यद्रोह करे जेइ लोके ※ सेइ पापे पापी ह'ये डुबिब नरके
विद्या पेये जे ना करे गुरुर सेवन ※ कर्म्म करि दक्षिणा ना देय जेइ जन
आपना बाखाने जेवा परनिन्दा करे ※ सेइ महापाप-राशि घटुक आमारे
स्थाप्य धन हरणेते हय जे पातक ※ सेइ पापे पापी ह'ये भुञ्जिब नरक
रामेरे वञ्चिया राज्य यदि आमि चाइ ※ इह-परकाल नष्ट, शिवेर दोहाइ
शपथ करेन हेन भरत तखन ※ कौशल्या बलेन, पुत्र जानि तव मन
रामेर हृदय धर्म्मे जेमन तत्पर ※ तोमार हृदय पुत्र, एकइ सोसर
चौद्दवर्ष गेले राम आसिबेन देश ※ ततदिने मम प्राण हइबे निःशेष

---

१ कल (दूसरे दिन) २ मंगलाचार ३ भाग्य ४ मौज करो ५ सौगंध
६ खड्यंत्र - ७ कसम।

पितु बिन-दाह अबहुँ, अति लाजा * भरत करहु तिन अंतिम काजा
अजस मातु, पुनि पितु परलोकू * बंधु-बिछोह अहिंनिसि[1] सोकू
मम हित पितु रामहिं वन दीन्हा * तबहुँ प्रवेस अवध मैं कीन्हा

छं० कह बशिष्ठ, सर्वज्ञ भरत तुम, सीख तुमहिं किमि दीजै।
गमन स्वर्ग नृप सत्पथ, रोदन! सकल पुण्य सुत! छीजै॥
तनय राम गुणधाम तासु पितु अमर, मरण के भाषैं।
गुरु प्रबोध, जनि बोध, भरत मन छोभ, बचन सम्भाषैं॥
बन्धु-बिछोह, मरन पितु दारुन, ककस[2] धीर उर धारौं।
थिर न प्रान, दुख दोउ महान, किमि जीवन, काहि निहारौं॥
मेघमुँदी-छबि छीन-चन्द्र-सम मलिन-बदन कुम्हिलाने।
सचिव-सखा-गुरु सहित भरत पितु-मंदिर ओर पयाने॥
शोक निरत तिन रानि सात शत, चलीं कुअँर सब घेरे।
'अहह तात! तव गति, न बात मुख' कहइँ भरत पितु नेरे[3]॥
सने सोक इत लोक दरस-हित, तिन दीजिय संतोषू।
जननि-दोष, पितु! मैं निदोष, जनि रोष, छमहु मम दोषू॥

आछे मृतदेह घरे, पाइ बड़ लाज * शीघ्र कर भरत, पितार अग्निकाज
पितृ-शोक भ्रातृशोक मायेर अयश * भरत करेन खेद रजनी-दिवस
आमाहेतु पिता मरे भ्राता वनबासी * जानिले एत कि आमि देशे फिरे आसि
बशिष्ठ बलेन, तुमि भरत, पण्डित * तोमारे बुझान आमि, ए नहे उचित
सत्य पालि भूपति गेलेन स्वर्गवास * ताँहार कारणे कान्दे, हय पुण्यनाश
राम-हेन पुत्र याँर गुणेर निधान * के बले मरिल राजा, आछे विद्यमान
एइ रूपे बुझान वशिष्ठ महामुनि * भरत ना कहे किछु, कहे खेदवाणी
किमते धरिब प्राण पितार मरणे * किमते धरिब प्राण रामेर बिहने
किरूपे हइब स्थिर काहारे निरखि * तुइ शोके प्राण रहे, कोथाओ ना देखि
शशधर जेमन हइले मेघाच्छन्न * विवर्ण भरत अति, तेमनि विषण्ण
पात्र-मित्र-संगेते बशिष्ठ पुरोहित * पितार निवासे जान लोकेते वेष्टित
सातशत राणी तारा शोकेते निराश * भरतेरे संगे गेल राजार निवास
भरत बलेन, पिता, एइ तव गति * उठिया सम्भाष कर भरतेर प्रति
तोमारे देखिते आसियाछे पुरजन * उठिया सवारे कह प्रबोध-वचन
मातृदोषे आमासह ना कह वचन * यदि थाके अपराध, कर विमोचन

---

१ दिनरात २ किस प्रकार ३ पिता के शव के समीप।

कहेउ बशिष्ठ छोह सुत तजहू * दाह, श्राद्ध-तर्पन-पितु करहू
यहु सब जेठ सुवन अधिकारा * सूने राम, सीस तव भारा
चन्दन अगुरु काष्ठ लदवाये * घृत मधु कलश पूर्ण मँगवाये
रतन प्रवाल मौक्तिक नाना * चतुर्दोल भल सजेउ विमाना
सुमन सुवासित हार सुहाये * नृप-तन सहित विमान सजाये
जेते अवध नगर नर-नारी * कर धरि शीश भरत अनुसारी[1]
प्रजा बंधु-जन सरयू तीरा * काढ़ि तैल सों नृपति-शरीरा
सरयू - जल असनान कराई * सबन निरखि मन करुना आई
शुभ्र बसन सुन्दर परिधाना * मृगमद[2] लेप सुगंध महाना
मंजुल माल सुमन बहुरंगा * सोहत गर आदिक नृप अंगा

दो० चिता अगुरु चन्दन सजी शयन करायेउ भूप ।
तीन लक्ष गो-दान करि, यथा शास्त्र अनुरूप ।।
पितु सम्मुख घृत अनल लै, दाह भरत तहँ कीन ।
तर्पन करि सरयू-सलिल, पिण्ड पितहिं पुनि दीन ।। ५६ ।।

अवनि अचेत भरत दुख दारुन * कहेउ बहोरि हेरि नर-नारिन
करौं तात सह अनल प्रवेसू * पुरजन सकल जायँ निज देसू

वशिष्ठ बलेन, त्यज भरत, क्रन्दन * पितृ अग्निकार्य्य श्राद्ध करह तर्पण
पितृकार्य्ये ज्येष्ठ तनयेर अधिकार * राम देशे नाहि, तुमि करह सत्कार
अगुरु-चन्दन-काष्ठ आने भारे-भारे * घृत मधु कुम्भ पूरि आनिल सत्वरे
मुकुता प्रवाल आने बहुमूल्य धन * चतुर्द्दोल आनिल विचित्र सिंहासन
सुगन्धि पुष्पेर माल्य, गन्ध मनोहर * चतुर्द्दोले चड़ाइल राजारे सत्वर
अयोध्यानगरे यत स्त्री पुरुष आछे * शिरे हात दिया जाय भरतेर पाछे
तैलेर भितरे आछिलेन महाराजा * सरयूर तीरे ल'ये जाय बन्धु-प्रजा
स्नान कराइल ताँरे सरयूर जले * देखिया कातर अति हइल सकले
शुक्ल-वस्त्र पराइल, सुन्दर उत्तरी * सर्व्वांग भरिया दिल सुगन्धि-कस्तूरी
नानाविध कुसुमेर माल्य-मनोहर * यथास्थाने दिल ताँर गलार उपर
चितार उपरे ल'ये कराय शयन * हेंटे ऊर्द्ध्व काष्ठ दिल अगुरु-चन्दन
तिन लक्ष धेनु दान करेन भरत * राजार सम्मुखे आनि यथा शास्त्रमत
पितारे करेन दाह घृतेर अनले * करिलेन तर्पणादि सरयूर जले
तर्पण करिया पिण्ड दिया नदी-पाड़े * भरत मूर्च्छित ह'ये मृत्तिकाते पड़े
भरत वलेन, सबे जाह निज देश * पितार अग्निते आमि करिब प्रवेश

१ पीछे चले २ कस्तूरी ।

पितु परलोक, बंधु बन माहीं ※ मम अब देस प्रयोजन नाहीं
कहेउ बशिष्ठ अकारन शोकू ※ निश्चय मरन, जनमि यहि लोकू
सकेउ न जग कोउ मृत्यु निवारी ※ मरि पुनि जीव जन्म-अधिकारी
अमर न कोउ, नित जीवन-मरना ※ तजहु विषाद, चलहु सुत! अयना[1]
अवध उजार[2] शून्य तन धारे ※ लिये भरत, गुरु पुरी पधारे
भरत अखिल निसि रोय बिताई ※ बिलपत सदा, कहाँ रघुराई?
तेरहीं श्राद्ध पिण्ड करि दाना ※ बिधिवत अमित दान किय नाना
हय गज, धरनि, नगर, बहु ग्रामा ※ तरु, उपवन, परिधान[3] ललामा
सोन सात लख बिप्रन अर्पा ※ सुरभी[4] सुबरन सजी समर्पा
लक्ष तिरासी कञ्चन भारा ※ अतुल दान-जस चहुँ बिस्तारा
कीन अठासी लख गोदाना ※ भुवन न दाता भरत समाना
जेते रवि-शशि-कुल-नरनाथा ※ धरा न काहु दान अस गाथा

भरत से राज्यभार-ग्रहण की प्रार्थना

निबटत नृप के अंतिम काजा ※ जुरेउ भरत ढिग हितुन-समाजा
सागर लौं सासन विस्तारे ※ तुमहिं सौंपि नृप स्वर्ग सिधारे

पिता परलोके गत, भ्राता गेल वने ※ देशेते जाइब आमि कोन प्रयोजने
बशिष्ठ भरते वले, इहा युक्ति नय ※ जन्मिले मरण आछे, ए कथा निश्चय
मरणेरे एड़ाइते ना पारे संसार ※ मरिले सबार जन्म हय आर वार
सकले मरेन, केह नहे त अमर ※ क्रन्दन संबर, हे भरत, चल घर
शून्य रहियाछे अद्य अयोध्यानगरी ※ भरतेरे बशिष्ठ निलेन राजपुरी
कान्दिया भरत पोहाइलेन रजनी ※ विलाप करेन सदा, कोथा रघुमणी
त्रयोदश दिवसे करेन श्राद्ध-दान ※ नानादान करेन, जे शास्त्रेर विधान
मातंग तुरंग आर पुरी भूमि ग्राम ※ विविध वसन शाल आर शालग्राम
विप्रे दान देन सोना सात लक्ष तोला ※ धेनु-दान करिलेन सोनार मेखला
त्रि-अशीति लक्ष भर सोनार भाण्डार ※ वितरण करिलेन, धन नाहि आर
अष्टाशीति लक्ष धेनु करिलेन दान ※ पृथिवीते दाता नाहि भरत समान
यत-यत राजा हैल चन्द्र-सूर्य्य कुले ※ हेन दान केह कोथा ना करे भूतले

पात्र-मित्र-सह भरतेर राज्यशासन-मन्त्रणा

समाप्त हइल श्राद्ध, निवारिल दान ※ पात्र-मित्र कहे गिया भरतेर स्थान
आसमुद्र राज्य आर अयोध्यानगरी ※ तोमारे अर्पिया राजा गेला स्वर्गपुरी

---

१ घर २ उजड़ा हुआ ३ वस्त्र ४ गाय।

दो० अवधभूप-पद भरत लै, करहु प्रजा-प्रतिपाल ।
होइ सुपात्र सासन तजौ, विनसै राज-भुवाल ॥ ५७ ॥

बर्जेउ भरत, न रघुकुल रीती ※ लघुहिं राजु तजि जेठ, अनीती
सासन गहत लगावहिं लोगू ※ मम सिर सकल जननि-अभियोगू
रामहिं राज उचित सब रूपा ※ चलि तिन लाइ बनावइँ भूपा
छत्र दण्ड रघुनाथहिं अर्पन ※ तिलक उचित तिन राज समर्पन
सविनय लाय बनाय नरेसू ※ राम अँवज[1] गमनउँ बनदेसू
ऊँच-नीच पथ सुगम कराई ※ हय-गज-कटक चलै जिमि धाई
आयसु-भरत बिलंब न काजा ※ कहेउ जोरि कर[2] सकल समाजा
अजस कैकई देस प्रसारा ※ तव जस अखिल भुवन विस्तारा
भल-अनभल[3] प्रस्तुत दोउ रूपा ※ मातु-अजस[4] सुत-सुजस[5] अनूपा

श्रीराम को लाने के लिए भरत की वन-यात्रा

कहेउ भरत जनि समय गवाँवौ ※ हय-गज-कटक सहित सब धावौ
रथ सारथी तुरंग मतंगा ※ चले राम हित भरतहिं संगा
छोट बड़े अन्तःपुर - बासी ※ रानि समाज, दास अरु दासी

पितृदण्ड-राज्य तुमि छाड़ कि कारण ※ राजा ह'ये कर तुमि प्रजार पालन
तोमा विना राज्यधर्म्म अन्ये नाहि साजे ※ तुमि राजा ना हइले पितृराज्य मजे
भरत बलेन, पात्र, ना वलिह आर ※ ज्येष्ठ सत्त्वे कनिष्ठेर नाहि अधिकार
राजा ह'ये यदि आमि बसि राजपाटे ※ मायेर यतेक दोष आमाते से घटे
राज्येर उचित राजा रामचन्द्र भाइ ※ रामेरे करिव राजा, चल तथा जाइ
यत अभिषेक द्रव्य लह राज्यखण्ड ※ तथा गिया श्रीरामे अर्पिव छत्रदंड
रामे राजा करिया पाठाव निज देशे ※ रामेर वदले आमि जाव वनबासे
समान करह यत उच्चनीच बाट ※ सुखे पथे जाय येन घोड़ा हाती-ठाट
भरतेर आज्ञाय सकले पड़े ताड़ा ※ भरते बलेन सबे करि हात जोड़ा
तोमार जतेक यश घुषिवे संसारे ※ कैकेयीर अपयश भारत-भितरे
भाल मन्द सकलि हेथाय विद्यमान ※ मायेर हइल निन्दा, पुत्रेर वाखान

श्रीराम के आनिवार जन्य भरतेर वनयात्रा

भरत बलेन, आर तोमरा ना वल ※ हाती-घोड़ा-कटक समेत सबे चल
घोड़ा-हाती चले, रथ साजाये सारथि ※ भरत आनिते रामे जाय शीघ्रगति
दास-दासी चलिल राजार यत नारी ※ छोट-बड़ सकले चलिल अन्तःपुरी

१ बदले में २ हाथ ३ भले-बुरे दोनों पक्ष ४ अपकीर्ति ५ सुकीर्ति ।

दल-बल चलेउ रघुपतिहिं आनै ❋ छोट-बड़ा कोउ रोक न मानै
बहु रथ-रथी बिपुल सामन्ता ❋ बृद्ध सैनपति सैन अनन्ता
कौशल्यादि सुमित्रा रानी ❋ रानि सात शत सकल पयानी[1]
लीन बशिष्ठ जतक[2] मुनि यूथा ❋ अखिल राज नर-नारि-वरूथा[3]

दो० कुटिल चेरि सँग कैकई, रुकी भरत-भय मानि।
कछु मंजिल करि, सभा बिच, कह बशिष्ठ, इमि बानि ॥
स्वयं जतन जो बिधि करैं, धाम न लौटइँ राम।
दुखद अकारथ परिसरम[4], भरत विफल तव काम ॥ ५८ ॥

राम वचन-पितु गमने कानन ❋ पितु-दिय-राजु, तजहु केहि कारन
गुरु, प्रोहित-पद परम पुनीता ❋ कहेउ भरत, कस कथन अनीता ?
शत-शत मम बन्दन तव चरना ❋ बहुरि न कहेउ अमंगल वचना
गति न मोर बिन रघुपति-चरनन ❋ करहुँ आनि प्रभु, राजु समर्पन

भरत द्वारा श्रीराम की खोज

गुरु की सीख न भरतहिं भाई[5] ❋ चले सवेग सुमिरि रघुराई
यमुना - पार राम बनदेसू ❋ शृंगवेर - पुर भरत प्रवेसू

श्रीरामे आनिते जाय सकल कटक ❋ बाल-बृद्ध, केह कारो ना माने आटक
अनन्त सामन्त चले बृद्ध-सेनापति ❋ भरतेर साथे चले बहु रथ-रथी
कौशल्या सुमित्रा जान उभय सतिनी ❋ आर सबे चलिल राजार यत राणी
वशिष्ठादि करिया यतेक मुनिगण ❋ राज्य-शुद्ध चलिल सकल पुरजन
कैकेयी ना जान मात्र भरतेर डरे ❋ कुटिला कुंजीर सह रहिलेन घरे
कतदूर गिया पथे हइल देओयान ❋ बलिलेन बशिष्ठ भरत-विद्यमान
यत्न करि आपनि बिधाता यदि आसे ❋ रामेरे आनिते तबु ना पारिबे देशे
रामेरे आनिते केन करिला उद्योग ❋ ना पारिबे आनिते, केवल दुःखभोग
पितृ सत्य पालिते गेलेन राम बन ❋ पिता दिल राज्य, तुमि छाड़ कि कारण
भरत वलेन, मुनि, तुमि पुरोहित ❋ ह'ये पुरोहित केन करह अहित
तोमार चरणे मोर शत-नमस्कार ❋ हेन अमंगल वाक्य ना कहिओ आर
रामेर चरण बिना गति नाहि आर ❋ रामेरे आनिया आमि दिब राज्यभार

भरतेर श्रीरामान्वेषण

युक्ति दिया नाहि पारे भरते राखिते ❋ श्रीरामे स्मरिया जान भरत त्वरिते
आछेन यमुना-पारे राम वनवासे ❋ भरत गेलेन तथा शृंगवेर देशे

१ प्रस्थान किया २ जितने भी ३ झुण्ड के झुण्ड ४ परिश्रम ५ पसन्द आई।

निरखि अखिल दल जुरेउ महाना ※ सुरसरि तट, गुहपति अनुमाना
कोउ नृप समर करन मन लावा ※ निज बल[1] सकल निषाद सजावा
बढ़ि, लखि अवध-कटक, मन चेता ※ आगम - भरत राम - रन - हेता
बलकल बसन पठइ बन आजू ※ भरत न चैन, हरन करि राजू
सजहिं, विषम सर-धनु धरि संगा ※ दलहिं अवध दल, तुरग, मतंगा
करि खरिहान[2], न बहुरहिं[3] देसू ※ बजत दमाम, सबन रन-बेसू
कहेउ भरत, गुहगन ! जनि चिन्ता ※ करहु, अनुज मैं श्रीभगवन्ता
कलसिन दधि, मधु, घृत अरु क्षीरा ※ आनेउ अमित अमिय फल तीरा
केला, गरी, अँगूर, सुपारी ※ कटहल, आम, अरम्ब[4] सवाँरी
रोहित-चितल मत्स्य बहु भारा ※ आनि धरेउ जहँ कटक अपारा

सो० भरत राम-अनुकूल, तौ भल विधि सनमानिये ।
जो मन कछु प्रतिकूल, सरित मिलावौं हनि सकल ॥ ५६ ॥

मन - निषाद ससपञ्ज[5] घनेरे ※ सुवचन कहि सुमन्त्र तब टेरे
आये भरत लेन रघुराई ※ केहि पथ गये राम, कहु भाई

पृथिवी जुड़िया ठाट एक चापे जाय ※ गंगातीरे वलि गुह करे अभिप्राय
कोन् राजा आइसे समर करिवारे ※ आपनार ठाट गुह एक ठाँइ करे
चिनिलेक विलम्बे से अयोध्यार ठाट ※ आपन कटके गुह आगुलिल बाट
गुह वले, देखि भरतेर सेनागण ※ श्रीरामेर सहित करिते आसे रण
पराइया वाकल से पाठाइल वने ※ राज्यखण्ड निल, तबु क्षमा नाहि मने
साज रे चण्डाल-ठाट चापे दिया चाड़ा ※ विषम शरेते आजि काटि हाती घोड़ा
सर्व्व सैन्य काटिया करिब भूमिगत ※ देशे वाहुड़िया येन ना जाय भरत
मार-मार वलिया दगड़े दिल काठि ※ हेन काले गुह वले भरतेरे भेटि
शुन रे चण्डालगण व्यस्त हओ नाइ ※ आसियाछे भरत रामेर छोटभाइ
दधि दुग्ध घृत मधु कलसी-कलसी ※ अमृत समान फल आन राशि-राशि
नारिकेल गुवाक कदली आम्रसार ※ द्राक्षा फल पनस आनह भारे-भार
भाल मत्स्य आन सबे रोहित-चितल ※ शिरे बोझा, कान्धे भार बह रे सकल
यद्यपि भरत करे श्रीरामेरे राजा ※ भाल मते कर तबे भरतेर पूजा
भरत आसिया थाके शत्रुभावे यदि ※ भरतेर ठाट काटि बहाइब नदी
सात-पाँच गुहक भाविछे मने-मन ※ हेनकाले सुमन्त्र कहेन सुवचन
आइलेन श्रीरामेरे लइते भरत ※ वल गुह, श्रीराम गेलेन कोन् पथ

---

१ सेना २ काट कर खलिहान कर दें ३ लौट न सकें ४ ढेर के ढेर
५ संशय ।

राम-लखन-सिय गत अति दूरी * दरस - लालसा इतै न पूरी
कहि, पुनि भरतहिं नायसि माथा * बरनी कथा सकल गुहनाथा
वन तव सैन, अनुज्ञा पाई * देहुँ सुपास[1] करौं पहुनाई
जब लग सुलभ न रघुपति-दरसन * अनशन सबन, न जल लौं परसन[2]
गंग - तरंग बिपति अधिकाई * होयँ पार तव पाय सहाई
मग भल विदित, कहेउ गुहनाथा * चलहुँ ससैन कुअँर ! तव साथा
संसय मन, जनि होत प्रतीती * लच्छन निरखि कछुक विपरीती
बन्धु-मिलन कर साज अनूपा * दल-बल बिपुल अतुल भयरूपा
केवट ! मम मन-मर्म न जाना * राम-चरन तजि अन्त न ध्याना
एक राम हम सबन - नरेसू[3] * आये सकल लेवावन देसू
कह केवट, धनि कैकयि-नन्दन * तव जस गान करै जग बन्दन
राम-सुहृद रघुपति-मनभावन * रघुकुल धन्य कीन तुम पावन
कै दिन कियेउ बास प्रभु साथा ? * गुहपति ! पद बंदेउ रघुनाथा ?
मातु कलंक सीस मम छावा * कहु निषाद ! कहँ राम पठावा

दो० दुइ निसि नाथ सनाथ किय, रहे संग मम धाम ।
लखन धनुर्धर भक्तियुत, प्रभु सेवत अविराम ।। ६० ।।

गुह बले, हेथा देखा ना पावे भरत * श्रीराम लक्ष्मण सीता बहुदूर गत
भरतेरे गुह तबे नोङाइल माथा * मेट दिया गुह ताँरे कहे सब कथा
गुह बले, ठाट तब बनेर भितरे * आज्ञा कर, थाकुक अतिथि-व्यवहारे
भरत बलेन, ठाट रबे अनशन * यावत् श्रीराम-सह नहे दरशन
जे देखि गंगार टेउ, पड़िब प्रमादे * तुमि यदि पार कर, जाइ निरापदे
गुह बले, आमार कटक पथे जाने * कटक सहित आमि जाइ तव सने
तोमार बचने आमि ना जाइ प्रतीत * मने तोलापाड़ा करे, देखि विपरीत
कोन् रूप धरि एले भ्रातृ-दरशने * कटक साजन देखि भय हय मने
भरत बलेन, मन ना जान आमार * रामेर चरण-विना गति नाहि आर
राम विना राजत्व लइते अन्ये नारे * राज्य सह आइलाम रामे लइवारे
बले गुह, धन्यवाद तोमारे आमार * तव यश घुषिवेक सकल संसार
तोमा-भाइ-हेतु धन्य रघुनाथ मित्र * रघुवंश धन्य तुमि करिले पवित्र
शुन चण्डालेर राजा, भरत बलेन * श्रीरामेर करिले पूजा हे कतदिन
आमि दोषी हइलाम जननीर दोषे * बल गुह, श्रीराम गेलेन कोन् देशे
गुह बले एखाने छिलेन एकराति * एकरात्रि एक ठाँइ छिलाम संहति
लक्ष्मण रामेर भक्त सेबे रात्रि दिने * धनुःशर हाते करि थाके सर्व्वक्षणे

---

१ सुविधा, आराम २ स्पर्श ३ हम सबों के राजा ।

पठइ सुमंत, सोच उर गाढ़े ※ नेरे[1] भरत रहइँ नित ठाढ़े
चलि निवास कहुँ अंत बनावैं ※ जहँ प्रिय भरत शोध जनि पावैं
राम महाबन पथ यहु धारा ※ सबन, गंग मैं पार उतारा
सकल शोध केवट सों पाई ※ अवध-कटक सोइ मारग जाई
चले भरत जनि दूर बिसेखी ※ तृण-शय्या तरु-तर इक देखी
शय्या वसन-अंश[2] लपिटाना ※ लखि प्रभु-शयन तहाँ अनुमाना
बसन गिरेउ खसि गहन[3] अगारी ※ प्रभु-तन-दुति[4] सम झलमलकारी
कहँ तृणसेज! कहाँ रघुराई! ※ लखि उर भरत सोच अधिकाई
केहि बिधि लखन सिया केहि रूपा ※ भल चीन्हेउ आवरण अनूपा
भरत गिरे छिति खाय पछारा ※ धाय सुमंत्र सुअंक सम्हारा
दुख पर दुख, सुधि-बुधि सब खोई ※ सुनत बिलाप शिला द्रव[5] होई
अहिनिसि, बंधु-बिछोह-सताए ※ उठे भरत बहु बिधि समुझाए
हय, गज, कटक, रानि-महरानी ※ बितई निसा अन्न बिन पानी
भरत बिहान[6] जाह्नवी[7] तीरा ※ सदल जुरे चहुँ सूर गँभीरा
कोटिन केवट, अगनित तरनी ※ सुरसरि-तट कहुँ लखत न धरनी

सुमन्त्रे विदाय दिया चिन्तिलेन मने ※ हेथा भरतेर हात एड़ाव केमने
हेथा हैते जाइ आमि अन्य कोन स्थले ※ भरत ना देखा पावे ये खाने थाकिले
एइपथे ताँहारा गेलेन महावने ※ गंगापार करिया राखिनु तिनजने
गुह-स्थाने पाइया सकल समाचार ※ सेइ पथे गमन हइल सबाकार
ताहा एड़ि भरत कतक दूरे गेले ※ तृण-शय्या देखिलेन एकबृक्षतले
तदुपरि शुये छिला राम बनवासी ※ तृण लग्न आछे पट्ट कापड़ेर दशी
कापड़ेर दशीते स्खलित आभरण ※ करे झिकिमिकि, येन सूर्य्येर किरण
ताहा देखि भरत चिन्तेन सकातरे ※ केमने शुइल प्रभु खड़ेर उपरे
केमने लक्ष्मड़ छिल, केमने जानकी ※ चिनिलाम आभरण, करे झिकिमिकि
आछाड़ खाइया पड़े भरत भूतले ※ सुमन्त्र धरिया तारे लइलेक कोले
भरत उभय शोके हइल अज्ञान ※ भरतेर क्रन्दनेते विदरे पाषाण
अनेक प्रबोध-वाक्ये उठेन भरत ※ श्रीरामेर शोके दुःख पान अविरत
घोड़ा-हाती-पदातिक सातशत राणी ※ उपवासे सेइखाने बञ्चिल रजनी
प्रभाते भरत जान महाकोलाहले ※ कटक समेत रहे जाह्नवीर कूले
गुहक चण्डाल आछे भरतेर संगे ※ नौका आनि पार करे गंगार तरंगे
बहुकोटि नौकार गुहक अधिपति ※ आनाइया तरणी छाइल भागीरथी

१ नज़दीक २ वस्त्र का टुकड़ा ३ गहना ४ प्रकाश ५ पिघलती ६ प्रातः दूसरे दिन ७ गंगा।

भरत सहित दल-अवध अपारा * छिन महँ गुहपति पार उतारा

छं० हय गज सैन अनंत सहित सामंत रानि-महरानी।
तरनि साजि, सुरसरि उतारि, गुहराज कहेउ मधुबानी ॥
चलहुँ देस, कारज न सेस, अरदास-दास[1] मन धारौ।
लेहु टेरि लउटत बहोरि, जनि सेवक हिये बिसारौ ॥
कहेउ भरत, हे रामसखा! तैं मम-बन्दन-अधिकारी।
भरि सुअंक रघुपति जिन मेले[2], तिन-पूजन सुखकारी ॥
चंदन अगुरु रतन धन अर्पन करि लीन्हेउ लपिटाई।
लहि प्रसाद गुह गमनेउ देसू, भरत जितैं रघुराई ॥

दो० दहिने माधव तीर्थ-पथ, तजि निज कटक महान।
कछुक जनन लै, तपोवन, कीन्हेउ भरत पयान ॥ ६१ ॥

भरद्वाज मुनि आश्रम जाई * बंदेउ भरत चरन सिर नाई
दशरथ-तनय भरत मम नामा * अनुज लखन अग्रज मम रामा
हे मुनि! बन आयेउँ तव सरना * दरस मिलै किमि रघुपति-चरना
राखि पंथ बिच कटक अपारा * इत अकेल कस भरतकुमारा

तरणी मानुषे गंगा पूर्ण दुइकुले * हइल कटक गंगा पार एकतिले
जाइल सामन्त सैन्य शीघ्रनदी पार * घोड़ा हाती कटक हइल परे पार
साजन नौकाय पार हन यत राणी * परे पार हइलेक सात अक्षौहिणी
गुह बले, आमार सेखाने नाहि कार्य्य * विदाय करह आमि जाइ निजराज्य
फिरिया यखन देशे करिबे गमन * आमारे आपन-ज्ञाने करिबे स्मरण
भरत बलेन, गुह, श्रीरामेर मित * करिते तोमार पूजा आमार उचित
जाँरे कोल दियाछेन आपनि श्रीराम * आमार उचित ताँरे करिते प्रणाम
आपनि भरत ताँरे देन आलिंगन * सुगन्ध चन्दन देन बहुमूल्य धन
प्रसाद पाइया गुह गेल निज देशे * चलिलेन भरत श्रीरामेर उद्देशे
माधव तीर्थेर काछे आछे जेइ पथ * ताहारे दक्षिण करि चलेन भरत
हस्ती-अश्व प्रभृति राखिया सेइ स्थाने * अल्पलोके भरत गेलेन तपोवने
महामुनि भरद्वाज आछेन बसिया * भरत बलेन ताँर चरण बन्दिया
दशरथ-तनय, भरत मम नाम * लक्ष्मण कनिष्ठ मम ज्येष्ठ हन राम
रामेर उद्देशे आमि आसियाछि बन * कह मुनि, कोथा ताँर पाब दरशन
जिज्ञासेन मुनि ताँरे, कोथा आगमन * एकेश्वर आसियाछ ना बुझि कारण
कटक-सकल तुमि राखियाछ पथे * कोन् भावे आसियाछ, ना पारि बुझिते

१ दास की प्रार्थना २ मिलन किया।

हेतु-आगमन जानि न पावा ✽ निज संसय मुनि कुवँर सुनावा
मुनि ! तुम कहँ अजान कछु नाहीं ✽ छल प्रपंच जनि मम मन माहीं
सात अछोहिनि[1] कटक अनंता ✽ तिनि निबाह किमि उपवन-संता[2]
भार विपुल दल, मुनिन कलेसू ✽ यहि भय सबन तजेउँ बन-देसू
आयेउँ एक राम अनुरागा ✽ सहज भाव दल मारग त्यागा

छं० बस रामहिं देस लिवाइ चलइँ, लौ[3] एक धरे समिटी नगरी ।
दिन-रैन रुकी जनि, सैन थकी, न समाय तपोबन सो सिगरी ॥
बिहँसे मुनि, तात ! इतै, सुख-वास सुपास[4] सबै-सुरनाथपुरी ।
सुत-कैकइ के न समात हिये किमि सिन्धु समाय इतै गगरी ॥

भरद्वाज-आश्रम में साक्षात् स्वर्गपुरी-आगमन

कहेउ बिहँसि मुनि, तजि सुत! चिंता✽आनहु सकल समाज अनंता
तप-उपवन दुर्लभ कछु नाहीं ✽ मुनि सिरजेउ कौतुक छिन माहीं
मुनि जब जेहि अभिमंत्रि बुलावा ✽ यज्ञ-भूमि ततछन सोइ आवा
प्रथम विश्वकर्महिं आदेसू ✽ रचहु सुरपुरी-सरिस प्रदेसू

भरत वलेन, आमि कपट ना जानि ✽ ध्यान करि मुनि, सब जानह आपनि
सकल कटक मम सात अक्षौहिणी ✽ कोन् खाने रवे ठाट, भय करि मुनि
सर्व्वशुद्ध आइले आश्रमे हवे क्लेश ✽ ते कारणे सैन्य मम बाहिर अशेष
आश्रम पीड़ने मुनि, करि वड़ भय ✽ अन्य सब वाहिरे आछये महाशय
राज्यशुद्ध आसियाछे अयोध्यानगरी ✽ रामेरे लइया जाव, एइ बाञ्छा करि
सातिशय श्रान्त सैन्य पथ परिश्रमे ✽ कोन् खाने रवे ठाट तोमार आश्रमे
भरतेर कथा शुनि, आज्ञा देन मुनि ✽ आपन इच्छाय आन यत अक्षौहिणी
दिव्यपुरी दिब आमि, दिब दिव्यवासा ✽ अतिथि सबारे आमि करिब सुश्रुषा
भरत बलेन, देखि खानकत घर ✽ केमने रहिबे ठाट, कटक विस्तर

भरद्वाज आश्रमे स्वर्गपुरी-आगमन

भरतेर कथाय कहेन हासि मुनि ✽ प्रयोजन-मत घर पाइबे एखनि
कटक आनिते जान भरत आपनि ✽ हेथा चमत्कार करे भरद्वाज मुनि
यज्ञशाले गिया मुनि ध्यान करि बैसे ✽ जखन जाहारे डाके, तखनि से आइसे
विश्वकर्म्मा प्रथमतः हन आगुयान ✽ आश्रमे अपूर्व्व पुरी करिते निर्म्माण
मुनि बले, विश्वकर्म्मा, शुनह वचन ✽ निर्म्माण करह, येन महेन्द्र-भुवन

१ अक्षौहिणी २ संत के आश्रम में ३ लौ, लगन ४ सुविधा ।

अस्सी जोजन पुरी प्रसारा ❋ रचहु, विविधि-सुबरन आगारा
छत-प्राचीर-कनक सब भाँती ❋ घाट बिसाल सोबरन पाँती
दिव्य सरोवर नगर मझारा ❋ नील धवल नित कमल-बहारा

दो० कनक-पात्र, कंचन-पलँग, रत्नासन, इमि सैन[1]।
कस्तूरी कुंकुम सुरभि सुर-वनितन सह सैन[2] ॥ ६२ ॥

जे नद-नदी धरातल छाईं ❋ मुनि बल योग तपोबल आईं
विपुल स्रोत जल सरित घनेरी[3] ❋ यमुन, प्रभास, सिन्धु, कावेरी
कृष्णा, प्रबल नर्मदा धारा ❋ गोदावरि, गोमती प्रसारा
भैरव, महानदी जल पावन ❋ सरयू-तरपन मुकुति-दिवावन
गंडक, कौशिकि, पुष्कर संगा ❋ मंदाकिनि अरु धवलतरंगा
सुरभित सुरुच ईख मधुसानी ❋ विविध सरित लखि थकन नसानी
घृत-सलिला, पुनि दधि अरु क्षीरा ❋ घृत विशुद्ध प्रवहति जिमि नीरा
नदी सात शत, बेग तरंगा ❋ आईं पतितपावनी गंगा
भरद्वाज तप-पुंज विशाला ❋ सकल देव पुनि दश दिक्पाला
सुरपति सहित अप्सरा आईं ❋ जिनि छबि-किरनि धरनि चहुँ छाईं

अशीति योजन करे पुरीर पत्तन ❋ सोनार आवास-घर करिल गठन
सोनार प्राचीर आर सोनार आवारी ❋ सोनार बान्धिल दीर्घ घाट सारि-सारि
पुरीर भितर करे दिव्य-सरोवर ❋ श्वेत-नील-पद्म ताहे शोभे निरंतर
सुवर्ण पालंक करे रत्न-सिंहासन ❋ देवकन्या ल'ये ठाट करिबे शयन
करिल सोनार बाटा, सोनार डावर ❋ कस्तूरी कुंकुम राखे गन्ध मनोहर
यत-यत नदी आछे पृथिवी-मण्डले ❋ योग बले मुनि आनाइल सेइ स्थले
सातशत नद आर नदी यत छिल ❋ यमुना प्रभास आदि सेखाने आइल
आइल नर्म्मदा नदी, कृष्णा गोदावरी ❋ आइल भैरव सिन्धु गोमती कावेरी
सरयू तनया नदी आर महानद ❋ तर्पण जाहार जले पाय मोक्षपद
कालिन्दी, पुष्कर, नदी आइल गण्डकी ❋ श्वेतगंगा स्वर्णगंगा आइल कौशिकी
इक्षुरस-नदी आइल, सुगन्धि सुस्वाद ❋ मधुरस-नदी आइल, घुचे अवसाद
दधि-दुग्ध-घृत आदि रहे चारिभिते ❋ घृतनदी बहिया आइसे शुधु घृते
सातशत नदी तथा अति वेगवती ❋ आइलेन आश्रमे आपनि भागीरथी
भरद्वाज ठाकुरेर तपस्या विशाल ❋ आइलेन सर्व्वदेव, दश दिक्पाल
देवकन्यागण ल'ये आइल पुरन्दरे ❋ याहादेर रूपेते पृथिवी आलो करे

---

१ सेना २ शयन करना ३ बहुत सी ।

रवि-छबि छुवत हेमगिरि-शृंगा ❋ बिसरे काज, न सुधि-बुधि अंगा
उपवन धनद कुबेर पधारे ❋ चहुँ दिसि कनकमयी बिस्तारे
मलय-पवन आगम तजि मेरू ❋ सुरभित मन मोहत सब केरू
इन्दु[1] अमियरस चहुँ दिसि पानू ❋ रवि, शनि, नव-गृह, वरुण, कृशानू[2]
वसुगण, मरुत समिटि उनचासा[3] ❋ मुनि-उपवन जुरि कीन प्रकासा
नारद, तुम्बुरादि[4] गंधर्वा ❋ समिटे नर्त - नर्तकी सर्वा

दो० आवत भरत, निमेष[5] बिच, रचना कीन ललाम ।
बसी सुरपुरी तपोवन, उजरि गयेउ सुरधाम ।।
कटक सहित मोहे भरत, नगरी रम्य बिलोक ।
शंकाकुल सुरगन सकल सोचत उर सुरलोक ।। ६३ ।।

भरत-नेह-बस तजि बनबासू ❋ जो प्रभु लौटहिं अवध निवासू
सुर मुनि संत मिटै जनि त्रासा ❋ कतहुँ न पुनि दसकंध-विनासा
सुरगन-हिय यह पीर समाई ❋ सोचि सतर्क रहे चहुँ छाई
भरद्वाज इत कौतुक कीन्हा ❋ अवध-समाज मोहि मन लीन्हा
यथायोग चहुँ सुखद निवासू ❋ ध्यान करत सब सुलभ सुपासू[6]

हेमकूटे देखि जेन सूर्य्येर किरण ❋ आछुक अन्येर काज, भुले मुनिगण
आइलेन कुबेर धनेर अधिकारी ❋ सोनार बासन थाले आलो करे पुरी
सुमेरु पर्व्वत हैते आइल पवन ❋ मलयेर वायुते सबार हरे मन
आइलेन सुधाकर सुधार निधान ❋ परम कौतुके सबे करे सुधापान
आइलेन अग्नि आर जलेर ईश्वर ❋ शनि आदि नवग्रह, संगे दिवाकर
मरुद्गण वसुगण येबा यथा रय ❋ आइल सकल देव मुनिर आलय
तुम्बुरु-नारद आदि स्वर्गेर गायक ❋ आइल नर्त्तकी कत, कत व नर्त्तक
देवशून्य हइलेक इन्द्रेर नगरी ❋ भरद्वाज-आश्रम हइल स्वर्गपुरी
हेनकाले सैन्य सह भरत आइसे ❋ एतेक करिल मुनि चक्षुर निमिषे
निरखिया भरतेर लागिल विस्मय ❋ तखन मन्त्रणा करे स्वर्गे देव चय
भरतेर संगे जदि राम जान देशे ❋ देवगण मुनिगण मरिबेन क्लेशे
राम देशे गेले, नाहि मरिबे रावण ❋ साधुलोके सकलेर नितान्त मरण
जे रूपे ना जान राम अयोध्या भुवन ❋ तेमन करह युक्ति, मरुक रावण
देवगण मुनिगण करेन मंत्रणा ❋ भुवन-मण्डल घिरि रहे सर्व्वजना
जार जोग्य जे आवास, जाय सेइ जन ❋ जेदिके जे चाहे, तार ताहे रहे मन

---

१ चन्द्रमा २ अग्नि ३ उन्चास प्रकार के पवन ४ तुम्बुरु गंधर्व आदिक
५ पलक मारते ६ सुविधाएँ, आराम ।

तन फुलेल पुनि मज्जन करहीं ※ कोउ सर, कोउ सलिला-पथ गहहीं
अवसर प्रथम! गंग अस्नाना ※ तरपनादि तिन मोद महाना
सरन[1] असंख्य तुरंग-मतंगा ※ करत केलि क्रीड़ति जल-रंगा
उपवन मुनि-प्रभाव अतिरेका[2] ※ नव सरिता बहि चलीं अनेका
करि अस्नान बसन बहुरंगा ※ चंदन लेप सुवासित अंगा
अखिल सैन जेहि जस रुचिकारी ※ भूखन-बसन विविध तिन धारी
सबकर भूखन - बसन समाना ※ प्रभु-सेवक न जात पहिचाना
जेवन[3] हित, पंगतिन[4] पधारी ※ कनक-पट्टि चहुँ कंचन-थारी
स्वर्ण-पात्र अरु सुबरन-धामा ※ स्वर्णमयी दिसि सकल ललामा
सुरवनितन पारुस सुखकारी ※ अलख! न दरसन परसनहारी[5]
बरा पिठबरा, बरी, मुँगौरी ※ गरी - भरी अमरित दुधपूरी

दो० चन्द्रकला व्यञ्जन विविध, सोभित सुमन लवंग।
दधि, मधु, घृत, पायस[6] मधुर, को सक बरनि प्रसंग ॥ ६४ ॥

चौबिधि[7] सुरभि[8] सुरस मन माने ※ सकल खाय जनि तबहुँ अघाने
तनि-तनि उदर कंठ लौं आए ※ दुसह! अचम्य[9] शयन-ग्रह धाए

माखिया सुगन्ध-तैल स्नान करिवारे ※ केह जाय नदीते, केह वा सरोवरे
कोन पुरुषते गंगा जे जन न देखे ※ करे स्नान-तर्पण से परम कौतुके
हस्ती अश्व कटक चलिल सुविस्तर ※ जलकेलि करे सबे गिया सरोवर
भरद्वाज मुनिर कि अपूर्व्व प्रभाव ※ कत नदी आश्रमे आपनि आविर्भाव
स्नान करि परे सबे विचित्र बसन ※ सर्व्वांग लेपिया दिल सुगंधिचन्दन
बहुविध परिच्छद परे सैन्यगण ※ यार याते वासना, परिल आभरण
सबार समान वेश, समान भूषण ※ केवा प्रभु, केवा दास, नाहि निरूपण
भोजने बसिल सैन्य बन्धु परिपाटी ※ स्वर्णपीठ स्वर्णथाल स्वर्णमय बाटि
स्वर्णेर डाबर आर स्वर्णमय झारि ※ स्वर्णमय घरेते बसिल सारि सारि
देवकन्या अन्न देय, सैन्यगण खाय ※ के परिवेषण करे जानिते ना पाय
चन्द्रपुलि बड़ा पिठा मुगेर सामुली ※ सुधामय दुग्धे फेले नारिकेल पुलि
निर्म्मल कोमल अन्न येन यूँथिफुल ※ खाइल व्यञ्जन कत, नाम हैल भुल
घृत दधि दुग्ध मधु मधुर पायस ※ नानाविध मिष्ठान्न खाइल नानारस
चर्व्य-चूष्य-लेह्य-पेय सुगन्धि सुस्वाद ※ यत पाय, तत खाय, नाहि अवसाद
कण्ठावधि पूर्ण हैल, पेट पाछे फाटे ※ आचमन करि ठाट कष्टे उठे खाटे

१ तालावों में २ अत्यन्त ३ भोजन के लिए ४ पंक्तियों में ५ परोसनेवाली ६ दूध ७ चबाने, चूसने, चाटने और पीने योग्य चार प्रकार के दृव्य ८ सुगंध ९ आचमन करके।

शयन पर्यंक, भामिनी संगा * सुर-वनिता सुखचार्पहिं अंगा
मंजुल मंद सुगंध बयारी[1] * पंचम स्वर पिक कूजति प्यारी
अलि-अलिनी[2]-गुंजन चहुँ छावा * नर्त्त - अप्सरा मदन[3] जगावा
रितु बसंत सुख रैन अनंता * रमनिन रमत सैन, सामन्ता
रसना सबन एक रट लागी * साध[4] न देस, स्वर्ग-सुख त्यागी
दुर्लभ जोग अतुल सुख पाई * धाम न काम, जाय सो जाई
सकल समाज अनंद-विभोरा * भरत एक लौ[5] प्रभु पद ओरा
भरत हेतु मुनि कीन्ही रचना * तिन न नेह, तजि रघुपति-चरना
भोर भरत बन्देउ मुनि जाई * सुख सों निसि तव धाम बिताई
अब करि दया मिटावहु पीरा * कहँ मुनि! दरस मिलै रघुबीरा
साधु! साधु! मुनि वचन उचारा * भक्त न भरत सरिस संसारा
माँगु माँगु मनु-वाँछित ताता * अमिट वचन मम जग विख्याता
एक मात्र अनुनय मुनि पाहीं * लहौं दरस चलि रघुपति पाहीं
बोले मुनि, सुनु कैकयि-नंदन * निवसति चित्रकूट रघुनंदन

छं० जदपि न लौटहिं धाम, राम के दरस मिलै तहँ जाये।
मुनिन सलाहन, चित्रकूट तन, भरत ससैन सिधाये॥

खाटे गिया प्रिया ल'ये करिले शयन * देवीरा आसिया करे शरीर मर्द्दन
मन्द मन्द गन्ध वहे अति सुललित * कोकिल पञ्चम स्वरे गाय बहु गीत
मधुकर-मधुकरी झंकारे कानने * अप्सरीरा नृत्य करे मातिया मदने
अनन्त सामन्त सैन्य लइया रमणी * परम आनन्दे वञ्चे वसन्त रजनी
सबे वले, देशे जाइ, हेन साध नाइ * अनायासे स्वर्ग मोरा पाइनु हेथाइ
एत सुख ए-संसारे केह नाहि करे * जे जाय से जाक्, आमि ना जाइब घरे
हेन सुखे भुञ्जे ठाट, भरत ना जाने * रामेर चरण विना नाहि ताँर ज्ञाने
एतेक करेन मुनि भरत-कारण * भरत भावेन मात्र रामेर चरण
प्रभाते भरत गिया मुनिरे जिज्ञासे * छिलाम परम सुखे तोमार निवासे
कह मुनि, कोथा गेले पाइब श्रीराम * उपदेश करिया पुराओ मनस्काम
मुनि वले, जानिलाम भरत, तोमारे * तव तुल्य भ्रातृ-भक्त ना देखि संसारे
वर माग भरत, आमि हे भरद्वाज * जारे जेइ वर दिइ, सिद्ध हय काज
भरत बलेन, मुनि अन्ये नाहि मन * वर देह, श्रीरामेर पाइ दरशन
बले मुनि, श्रीरामेर जानि सविशेष * देखा पाबे, किन्तु राम ना जावेन देश
चित्रकूट पर्व्वते आछेन रघुवीर * तथा गेले देखा हवे, एक जान स्थिर
अन्य अन्य मुनिगण दिल ताहे साय * भरतेर सैन्यगण चित्रकूटे जाय

---

१ हवा २ भ्रमर-भ्रमरी ३ कामदेव ४ लालसा ५ लगन।

दस दिसि धूरि धुंध चहुँ छायी, जमुन कीन्ह उतराई।
कटक प्रफुल्लित राम-खबर सुनि चलेउ पवन-गति धाई ॥
सो० पाय राम सहवास, गिरिबासी-मुनि पुलक अति।
सैन-सोर सुनि त्रास, राम! राम! रक्षा करहु ॥ ६५ ॥
भरत, रिपुदमन, कटक असेसू ※ सबन अतुल छबि तापस बेसू
राम-लखन-सिय उपवन बासू ※ पर्णकुटी रचि करहिं निवासू
द्वार राम, सिय कुटी बिराजी ※ बाहेर लखन सरासन साजी

श्रीरामचन्द्र से भरतादिक का मिलन

सानुज भरत, दीन अति वेसू ※ तब लौं आस्रम कीन प्रवेसू
गरे वसन अरु लोचन नीरा ※ मारग स्रम कुम्हिलान सरीरा
प्रभु-पद-कमल दण्डवत कीन्हा ※ पुलकित राम अंक भरि लीन्हा
मिला-भेंटि आसिस-सत्कारू ※ समुचित करत अवध परिवारू
गहि पद कहेउ, कवन मुँह लागी ※ वन-आगमन राज-पद त्यागी
सहज नारि-मति कुमति निवासू ※ उचित न परि तिन-कथन प्रवासू[1]

दशदिक् हइल धूलाय अन्धकार ※ जाइल भरत-सैन्य यमुनार पार
रामेर सन्धान पेये प्रफुल्ल कटक ※ वायुवेगे चले सबे, ना माने आटक
यत हय चित्रकूट पर्व्वत निकट ※ तत तथाकार लोक भावये विकट
चित्रकूट - पर्व्वत - निवासी मुनिगण ※ श्रीरामेर सहवासे सदा हृष्टमन
सैन्य-कोलाहल शुनि सभय अन्तरे ※ 'रक्षा कर रामचन्द्र' बले उच्चैःस्वरे
हेनकाले भरत-शत्रुघ्न उपनीत ※ सबार तपस्वि-वेश अयोध्या सहित
श्रीराम लक्ष्मण आर जनकेर बाला ※ बसति करेन निर्म्माइया पर्णशाला
तार द्वार बसिया आछेन रघुवीर ※ जानकी ताहार मध्ये, लक्ष्मण बाहिर

श्रीरामचन्द्रेर सहित भरत प्रभृतिर मिलन

हेनकाले भरत-शत्रुघ्न दीनवेशे ※ श्रीरामेर आश्रमेते आसिया प्रवेशे
गल-वस्त्र भरत, नयने बहे नीर ※ पथ-पर्य्यटने अति मलिन शरीर
पड़िलेन श्रीरामेर चरण-कमले ※ आनन्दे श्रीराम ताँरे लइलेन कोले
परस्पर सम्भाषण करे सर्व्वजन ※ यथायोग्य आलिंगन पदादि बन्दन
भरत कहेन धरि रामेर चरण ※ कार वाक्ये राज्य छाड़ि बने आगमन
बामाजाति स्वभावतः ब्रामा बुद्धि धरे ※ तार वाक्ये के कोथा गियाछे देशान्तरे

१ परदेश निवास।

छमहु नाथ सत्वर[1] चलि देसू * करहु राज उर मिटइ कलेसू
अवध-मुकुट तुम अवध सरूपा * तुम बिन अवध दिवस निसिरूपा
चलि प्रभु! राज सम्हारहु भारा * सेवहुँ पद पायक[2] अनुसारा
रघुपति कहेउ भरत! तुम ज्ञानी * तबहुँ कहत कस अनुचित बानी
वन आयेउँ पितु-आयसु धारी * उचित न दोष बिमातु बिचारी
चौदह बर्ष बचन-पितु धारी * अवधपुरी चलि निरखहिं प्यारी
तजहु प्रसंग न करहु अबेरी[3] * बरनौ प्रथम कुशल पितु केरी
दो० नृप गोलोक पयान किय, सुनि बशिष्ठ सों बैन ।
सहित लखन-सिय मूर्छित, बिलपत करुना-ऐन[4] ॥ ६६ ॥
कहेउ बशिष्ठ, धीर धरि रामा * करहु शास्त्र-सम्मत पितु-कामा
अशुचि[5] तीन दिन, श्राद्ध सवाँरी * तुम सुत जेठ पिण्ड-अधिकारी
भरत संग बहु दृव्य अपारा * लै बैपरहु सुरुचि अनुसारा
विज्ञ[6]! धरहु धीरज उर माहीं * तुमहिं सीख-समरथ जग नाहीं
भूप सत्य पथ सुरपुर बासा * रुदन किये तिन पुण्य विनासा
संचित तेल गात नरनाहू * भरत आय कीन्हेउ मृत दाहू
पुनि कर्तव्य कर्म किय नाना * अगनित अमित निरंतर दाना

अपराध क्षमा कर, चल प्रभु, देश * सिंहासने वसिया घुचाओ मनःक्लेश
अयोध्या-भूषण तुमि, अयोध्यार सार * तोमा बिना अयोध्या दिवसे अन्धकार
चल प्रभु अयोध्याय, लह राज्यभार * दासवत् कर्म्म करि आज्ञा अनुसार
श्रीराम वलेन, तुमि भरत, पण्डित * ना बुझिया केन बल, ए नहे उचित
मिथ्या अनुयोग केन कर विमाताय * वने आइलाम आमि पितार आज्ञाय
चतुर्द्दश वत्सर पालिया पितृवाक्य * अयोध्या जाइव आमि देखिवे प्रत्यक्ष
थाकुक से सब कथा, शुनिब सकल * वलह भरत, आगे पितार कुशल
वशिष्ठ कहेन, राम, ना कहिले नय * स्वर्गवासे गियाछेन राजा महाशय
शुनि मूर्च्छागत राम-जानकी-लक्ष्मण * भूमिते लोटाय बहु करेन रोदन
वशिष्ठ बलेन बलि व्यवस्था इहाते * तिन दिन तोमार अशौच शास्त्र-मते
पितृश्राद्ध करिते ज्येष्ठेर अधिकार * तिनदिन गेले श्राद्ध करिबे राजार
सकल भाण्डार आछे भरतेर साथे * लह धन, कर व्यय प्रयोजन मते
संवर संवर शोक राम महामति * तोमारे बुझाते पारे, आछे कोन कृती
सत्यहेतु भूपति गेलेन स्वर्गवास * रोदन करिया केन पुण्य कर नाश
छिलेन तैलेर मध्ये मृत महाराज * भरत आसिया करिलेन अग्निकाज
आरो जे कर्त्तव्य-कर्म्म करिया भरत * करिलेन कत शत दान अविरत

१ शीघ्र २ सेवक ३ विलम्ब ४ करुणाधाम ५ सूतक ६ ज्ञानवान् ।

भरत दान-गति बरनि न जाई ❋ कोटि-कोटि धन बिप्रन पाई
उपजेउ भुवन न कोउ नरनाथा ❋ भरत समान दान जिन गाथा

श्रीराम द्वारा पितृ-श्राद्ध

गुरु सों राम अनुज्ञा लेहीं ❋ तर्पन श्राद्ध करन मन देहीं
द्रुति चलि फल्गु नदी के तीरा ❋ आये लखन सीय रघुवीरा
सलिल नहाय ध्यान पितु धरहीं ❋ नाम गोत्र लै तर्पन करहीं
बैठे राम लखन बैदेही ❋ संग सकल दायाद[1] सनेही
अवध-समाज राम अनुसरही ❋ प्रभुहिं घेरि चहुँ आसन लहही
संका धरी राम गुरु आगे ❋ बिन परमायु[2] प्रान पितु त्यागे?
अयुत वर्ष मुनि! रविकुल-आयू ❋ कस पितु स्वर्ग गमन अल्पायू[3]

दो० कहेउ बशिष्ठ भुवाल तजि देहँ गये परलोक।
लही शांति, यहि विधि मिटेउ, दुसह ताप सुत-शोक ॥ ६७ ॥

कहेउ सुमंत्र, इतै तुम आये ❋ 'हाय राम!' कहि भूप सिधाये
पितु-गति सुनत दिये सब रोई ❋ श्राद्ध द्रव्य उत संचित होई
तप-उपवन निवसत मुनि-वृन्दा ❋ नेउतेउ सबन सच्चिदानन्दा

ताहार दानेर कथा शुन परिपाटि ❋ एकैक ब्राह्मणे देन धन एक कोटि
यत यत राजा हइलेन चराचरे ❋ भरत समान दान केह नाहि करे

श्रीराम-कर्त्तृक दशरथेर श्राद्धादि-सम्पादन

श्रीराम बलेन, हे बशिष्ठ पुरोहित ❋ आज्ञा कर, पितृश्राद्ध करि जे विहित
श्रीराम लक्ष्मण सीता चलेन त्वरित ❋ हइलेन फल्गु नदी तीरे उपनीत
सकले सलिले स्नान करिया तखन ❋ करिलेन नाम-गोत्र लइया तर्पण
स्नान करि तीरेते बसेन तिनजन ❋ तखन वसिल सबे आत्म बन्धुगन
यथा राम तथा हय अयोध्यानगरी ❋ रामचन्द्रे बेड़िया सब बसिल पुरी
श्रीराम बलेन, मुनि, जिज्ञासि कारण ❋ आयुःसत्वे मरिलेन पिता कि कारण
अयुत वत्सर लोक सूर्य्यवंशे जिये ❋ काल पूर्ण ना हइते मृत्यु कि लागिये
वशिष्ठ बलेन, राजा गिया परलोके ❋ रक्षा पाइलेन राम, तोमा पुत्रशोके
सुमन्त्र कहिल गिया, तुमि गेला वन ❋ 'हा राम' बलिया राजा त्यजिल जीवन
पितृकथा शुनिया कान्देन तिनजन ❋ एदिके श्राद्धेर द्रव्य हय आयोजन
तपोवने छिलेन जतेक मुनिगण ❋ पितृ-श्राद्धे श्रीराम करेन निमंत्रण

---

१ कुटुम्बी २ पूरी उम्र ३ अकाल मृत्यु।

कीन श्राद्ध पुनि फल्गू तीरा * पिण्ड समर्पन किय शुचि[1] नीरा
भोजन-वसन दान विधि नाना * मुनिन-द्विजन सब विधि सन्माना
मुनि परितृप्त वचन शुभ कहहीं * पिण्ड पाय नृप सुरपुर लहहीं
कहेउ बशिष्ठ, पुरइ पितु-कामा * भरतहिं करउ अनुज्ञा रामा!
तुम बिन भरत न गति, रघुराई! * होयँ सुखी तव अनुमति पाई
मुनि! मोहिं भरत प्रान ते प्यारे * भरत भेंटि उर सुख बिस्तारे
बिलग न भाव, एक दोउ भाई * भरत-राजु, गुरु! मोर रजाई[2]
गवनैं अवध करैं तत्काला * सचिवन सहित प्रजा-प्रतिपाला
पुरी नृपति बिन, भय मन आवै * कब को रिपु सूने[3] चढ़ि धावै
तुम सर्वज्ञ, सिखावन नाहीं * भल-अनभल-विवेक तव पाहीं
वर्ष चतुर्दस अवधि बिताई * सुख सों रहइँ अवध सब भाई

श्रीराम-पादुका सिंहासनासीन कर भरत द्वारा राज्य

विनय जोरि कर भरत सुनाई * मम सिर राज न शोभा पाई
प्रभु-पादुका सिंहासन धारी * दास प्रजा-पालन अधिकारी
दो० जहाँ पादुका नाथ की, त्रिभुवन-भय कस काम? ।
अर्पन करि पुनि भरत सों, पुलकि कहेउ इमि राम ।। ६८ ।।

पितृश्राद्ध करिलेन फल्गुनदी तीरे * पितृ पिण्ड समर्पण करेन से नीरे
मुनिगण कहे, कि राजार परिणाम * पिण्ड तिनि देन, जिनि निजे मोक्षधाम
श्रीरामेरे बलेन वशिष्ठ महाशय * भरतेर प्रति राम कि अनुज्ञा हय
तोमा विना भरतेर नाहि आर गति * बुझिया भरते राम, कर अनुमति
श्रीराम बलेन मुनि, हइलाम सुखी * प्राणेर अधिक आमि भरतेरे देखि
भरते आमाते नाहि करि अन्य भाव * भरतेर राजत्वे आमार राज्य-लाभ
जाओ भाइ भरत, त्वरित अयोध्याय * मन्त्रिगणे ल'ये राज्य करह तथाय
सिंहासन शून्य आछे, भय करि मने * कोन् शत्रु विपद् घटावे कोन् क्षणे
तोमारे जानाव कत, आछ ये विदित * विवेचना करिवे सर्व्वदा हिताहित
चतुर्द्दश वत्सर जानह गतप्राय * चारिभाइ एकत्र हइब अयोध्याय

सिंहासने श्रीरामेर पादुका राखिया भरतेर राज्यशासन

जोड़हाते भरत बलेन सविनय * केमने राखिब राज्य, मम कार्य्य नय
तोमार पादुका देह, करि गिया राजा * तबे से पारिव राम, पालिवारे प्रजा
तोमार पादुका राम, थाके यदि घरे * त्रिभुवने भरत काहारे नाहि डरे

---

१ पवित्र २ शासन, हुकूमत ३ राजा की अनुपस्थिति में ।

नन्दिग्राम थापहु रजधानी * तहँ बसि तात! काय-मन-बानी
देखहु राज सम्हारहु काजू * सावधान पालहु पितु-राजू
प्रभु-पादुका भरत सिर धारी * अतिव बिभोर मोद उर भारी
करि अभिषेक बन्धु-पदत्राना[1] * हरि-आयसु लहि कीन पयाना
बिछुरत रुदन कुलाहल भारी * सुनत न कोउ केहु सकत सम्हारी
राम अंक भरि बिलखत जननी * भिजये बसन नयन-निर्झरनी
लखन-मातु लखनहिं उर लाई * करत बिलाप दुसह दुख पाई
सीतहिं सकल समाज बिलोकी * आकुल रुदन सकेउ जनि रोकी
राम-बिछोह सबन दुखदायी * भरतहिं बिदा कीन रघुराई
चित्रकूट गिरि रम्य सुहावा * कछु दिन तहँ निवास मन भावा
तीन दिवस चलि पन्थ बिताये * भरत ससैन अवध पुनि आये
विश्कर्महिं[2] भगवन्त पठाये * नन्दिग्राम बहु धाम रचाये
रत्न सिँहासन आसन साजी * पदत्रान-प्रभु युगुल बिराजी
राज-छत्र छबि उपर सुहाई * नीचे पुनि मृगचर्म बिछाई
भरत चलावत सासन काजू * सहित सनेहिन सचिव-समाजू
राम नाम सब पाप बिनासा * मुक्ति दैन बैकुण्ठ निवासा

श्रीराम बलेन, हे भरत प्राणाधिक * पादुका लइया जाह, कि कव अधिक
नन्दिग्रामे पाट करि कर राज-कार्य्य * सावधान हइया पालिह पितृराज्य
श्रीरामेर पादुका भरत शिरे धरे * भावे पुलकित अंग, प्रफुल्ल अन्तरे
पादुकार अभिषेक करिया तथाय * चलिलेन भरत श्रीरामेर आज्ञाय
यात्राकाले उठे महाक्रन्दनेर रोल * कोनजन शुनिते ना पाय कारो बोल
कान्देन कौशल्यारानी रामे करि कोले * बसन भिजिल ताँर नयनेर जले
सुमित्रा कान्देन कोले करिया लक्ष्मणे * सकले क्रन्दन करे सीतार कारणे
भरतेरे विदाय करिया रघुवीर * चित्रकूटे किछु दिन रहिलेन स्थिर
सैन्यगण-सहित भरत अतःपरे * तिन दिने आइलेन अयोध्या-नगरे
विश्वकर्म्मा पाठाइया देन भगवान * नन्दिग्रामे अट्टालिका करेन निर्म्माण
रत्नसिंहासनेते भरत पट्ट पाति * तदुपरि पादुका राखिया धरे छाति
तार निम्ने श्रीभरत कृष्णसार चर्म्मे * पात्र-मित्र-सहित थाकेन राजकर्म्मे
राम नाम लइते जे करे अभिलाष * सर्व्व पापे मुक्ति तार, बैकुण्ठे निवास

---

१ खड़ाऊँ २ विश्वकर्मा को ।

दो० अवध काण्ड गाथा रुचिर कृत्तिवास किय गान ।
सुधा-कलश संगीतमय सुललित सुखद बखान ॥ ६६ ॥

दशरथ-हेतु सीता द्वारा पिण्डदान

गिरि, सिय सहित राम दोउ भाई ※ बर्षी-श्राद्ध-भूप-तिथि आई
लखन-सिया लखि सोचत रामा ※ किमि पितु-श्राद्ध सवाँरहिं कामा
तब लौं जुगुति एक मन भाई ※ नजर मुद्रिका मानिक आई
मुँदरी[1] लै सानुज पग धारे ※ रमत इतै सिय फल्गु-किनारे
कौतुक ! रेनु[2] रमत बैदेही ※ दरस दीन मृत श्वसुर[3] सनेही
हे सिय, करु मम कथन प्रमाना ※ छुधा अगिनि, मम निकसत प्राना
तैं मम बधू ! श्वसुर सत्कारै ※ रेनु-पिण्ड दै छुधा निवारै
कह सिय, पितु ! न मोहिं इन्कारी ※ पति बिन तदपि न मैं अधिकारी
राम सरिस मोहिं सब बिधि सीता ※ सम अधिकारिनि, करउ प्रतीता[4]
तजि ससपञ्ज[5] करहु जस भाषी ※ चन्द्रबदनि ! समुहे करि साखी
सुनि सिय चन्द्रमुखी सुख पाई ※ प्रभु-प्रिय 'तुलसी' आदि बुलाई
पुनि बट, फल्गु नदी, द्विजराई ※ साखी देन सबन सखराई[6]

कृत्तिवास कविर संगीत सुधाभाण्ड ※ किवा मनोहर गीत ए अयोध्याकाण्ड

दशरथेर उद्देशे सीतार पिण्डदान

राम सीता रहिलेन पर्व्वत-उपर ※ दशरथ मृत्यु पूर्ण हैल संवत्सर
कहिला श्रीरामचन्द्र सीता-लक्ष्मणेरे ※ कि दिया करिव श्राद्ध पितृ संवत्सरे
तखन करेन युक्ति श्रीराम दैत्यारि ※ भञ्जित करिया आन माणिक्य अंगुरी
अंगुरी लइया गेला दुइ सहोदरे ※ सीता आरम्भिला खेला फल्गुनदी तीरे
खेलेन लइया वालि सीता वहुमते ※ आसिलेन दशरथ सीतार साक्षाते
दशरथ कहिलेन, शुन ओ मा सीते ※ क्षुधार ज्वालाय आमि ना पारि तिष्ठिते
तुमि वधु, आमि तव श्वसुर ठाकुर ※ अर्पिया वालिर पिण्ड क्षुधा कर दूर
सीता कहिलेन, देव कहि जे तोमारे ※ किमते अर्पिव पिण्ड राम अगोचरे
राजा कन, सीतादेवि, कहि तवस्थान ※ आमार निकटे तुमि रामेर समान
मने किछु ना करिह, ओ मा चन्द्रमुखि ※ लोकजन डाकि आनि क'रे राखि साक्षी
'भाल-भाल' वलि कहे सीता चन्द्रमुखी ※ आद्येर तुलसी तुमि ह'ये थाक साक्षी
जिज्ञासा करेन राम फिरि आसि यदि ※ कहिवेन वटवृक्ष आर फल्गु नदी

१ अँगूठी २ बालू ३ श्वसुर स्व० दशरथ ४ विश्वास कर ५ संशय
६ यह गवाही देने का वचन ले लिया कि दशरथ ने सीता से पिण्ड ग्रहण किया ।

पूछहिं आय यदा रघुनाथा ※ कहेउ श्वसुर कै पावन गाथा
सिकता-पिण्ड[1] ग्रहण मुदि[2] कीन्हा ※ दसरथ रथ सुरपुर-पथ लीन्हा
सिय कहँ विपति पिण्ड नृप हेता ※ कृत्तिवास कह क्षोभ समेता

ब्राह्मण, तुलसी, फलगुनदी-प्रति सीता-शाप और वटवृक्षहेतु आशीष

सामग्री - सराध उत लीन्हे ※ तबहिं सबेग राम पग दीन्हे

दो० रामहिं देखि समोद मन कहेउ कुतूहल ! नाथ ।
इत प्रतच्छ दरसन दिये श्वसुर पूज्य नरनाथ ॥ ७० ॥

मोहिं दिय श्राद्ध करन आदेसू ※ गये पिण्ड लहि, स्वर्ग नरेसू
हे सिय! जे साखी तिन लावौ ※ अघटन[3] घटित प्रमान करावौ
साखी विप्र, विनय किय सीता ※ तिनहिं पूछि, प्रभु ! करहु प्रतीता
पुनश्राद्ध, द्विज लोभ विचारी[4] ※ वचन असत्य कहन मन धारी
हे द्विजश्रेष्ठ ! कहेउ रघुनन्दन ※ मम पितु लहे इतै तुम दरसन?
कह द्विज, वचन सत्य रघुनाथा ※ दरस न मोहिं दसरथ नरनाथा

ब्राह्मण देखिया सीता करेन ज्ञापन ※ दशरथ-कथा सब कहिबे ब्राह्मण
इहा शुनि दशरथ हर्षे उठि रथे ※ लइया बालिर पिण्ड गेला स्वर्गपथे
कृत्तिवास पण्डितेर रहिल विषाद ※ श्वशुरेर पिण्डदाने वधूर प्रमाद

ब्राह्मण, तुलसी ओ फलगुनदीर प्रति सीतार अभिशाप एवं
वटवृक्षेर प्रति ताँहार आशीर्व्वाद

हेथा प्रभु रामचन्द्र अति-त्वरापर ※ श्राद्धेर सामग्री ल'ये आइला सत्वर
श्रीरामे देखिया सीता हरिष अन्तरे ※ निवेदन करिलेन रामेर गोचरे
सीता कहिलेन, शुन प्रभु रघुवर ※ आश्रमे आसियाछिल अजेर कोङर
आमारे करिते श्राद्ध कन दशरथ ※ लइया बालिर पिण्ड गेला स्वर्गपथ
राम कहिलेन, किसे प्रत्य हय कथा ※ साक्षी करि राखियाछि, कन देवी सीता
साक्षीरे आनिया सीता, बलाओ एखन ※ साक्षी पाइलेइ मोर प्रत्यय हय मन
सीता कहिलेन, प्रभु करि निवेदन ※ जिज्ञासा करह तुमि डाकिया ब्राह्मण
ब्राह्मण बलेन खर्व्व करिब सीतारे ※ मिथ्या वाक्य कब आजि रामेर गोचरे
डाकिया ब्राह्मणे जिज्ञासेन रघुनाथे ※ तोमारा देखेछे मोर पिता दशरथे
ब्राह्मण कहेन तबे रामेर साक्षाते ※ आमरा ना देखियाछि राजा दशरथे

१ नदी की बालू के पिण्ड २ प्रसन्न होकर ३ अनहोनी ४ दुबारा राम द्वारा श्राद्ध होने पर दान-दक्षिणा-प्राप्ति का लोभ ।

सुनि घट-घट-व्यापी मुसकाने ※ सियसुन्दरी-नयन सकुचाने
असत् वचन द्विज, अति संतापू ※ सिय अति कोप, दीन तेंहि शापू
जदपि लखपती, दृव्य असेसू ※ भिक्षा-वृत्ति करहु दिग्देसू
रघुपति कह भरोस केंहि बानी ※ चन्द्रवदनि ! तेंहि आनहु रानी!
आदिप्रिया तव, तुलसी, नाथा ! ※ तिन मुख सकल सुनौ प्रभु! गाथा
तुलसी प्रति हरि बोलत बानी ※ बरनउ पिण्ड-प्रदान-कहानी
राम रिझाय सिया-विपरीती ※ तुलसी-मन इमि उपज अनीती
कहहु सत्य, बोले रघुवीरा ※ लखे पिता मम फल्गू तीरा
विप्रवचन तुलसी दुहरावा ※ तव पितु-दरस न प्रभु ! मैं पावा
सुनि मन अतुल ताप सिय व्यापा ※ सुनु तुलसी ! तव प्रति मम शापा

छं० हरि सीस लसी तुलसी, मम रीस, पचीसन ठौर जमै धरनी ।
दुखदायिनि ! श्वान-शृगालन के मल-मूत्र अपावन माँहि सनी ।।
सिय-कोप कराल निलै तुलसी, जु जुरै, उजरै, भुगतै करनी ।
मुसकाय कहैं रघुनाथ, सिया ! अब कौन गवाह कि है बरनी[1] ।।

ए कथा शुनिया राम कन हासि-हासि ※ लज्जाय मलिन हैल सीता सुरूपसी
मिथ्या कहि ब्राह्मण, एतेक दिले ताप ※ क्रोधे तनु थर-थर, दिनु तोमा शाप
लक्ष-लंकार दृव्य यदि थाके तव घरे ※ भिक्षार लागिया जेओ देश-देशान्तरे
राम कन कान्द केन सीता चन्द्रमुखी ※ आर केह थाके त, बलाओ देखि साक्षी
एतेक शुनिया कन सीता सुरूपसी ※ आनिया बलान् प्रभु आद्येर तुलसी
अतः पर तुलसी कानन तथा हेरि ※ कहिलेन रघुनाथ, कह द्रुति करि
पिण्ड-प्रदानेर तुमि जान विवरण ※ तुलसी कहेन, यथा कहेन ब्राह्मण
तुलसी भावेन, राम मोरे निबे हाते ※ मिथ्या कथा कव आमि रामेर साक्षाते
राम बले तुलसि शुनह मोर कथा ※ साक्षाते देखेछे मोर दशरथ पिता
तुलसी बलेन तबे प्रभु रघुवरे ※ आमरा ना देखियाछि तोमार पितारे
कथा शुनि जानकीर जन्मे मनस्ताप ※ जा रे जा तुलसि, आमि दिनु तोरे शाप
एत दुःख दिलि तुइ आमार अन्तरे ※ आभूमि जन्मिओ तुमि लैया सर्व्व ओरे
क्रोधभरे सीतादेवी कहेन एमन ※ तोर पत्र श्रीहरिर आदरेर धन
अपवित्र स्थाने तोर अवस्थित हवे ※ शृगाल कुक्कुर मूत्र-पुरीष त्यजिबे
हासिया बलेन राम, शुनह जानकि ※ आर केह थाकेत, बलाओ तारे साक्षी

---

१ पारी, नम्बर ।

दो० साखी[1] मम फलगू सरित, कौन सिया संकेत।
सरित तजेउ सत, लोभ-बस, राम-द्रव्य के हेत ॥ ७१ ॥

नलिनिविलोचन पूछत बानी ※ मम पितु लखेउ फलगु महरानी
फलगु असत्य बचन§ दुहरावा ※ मैं अजनन्दन - दरस न पावा
धीरज छूट, सिया अति रोदन ※ फलगु ! न गति तव शाप-विमोचन
अन्तःसलिल[2] बहै सब काला ※ लंघ छीन-जल श्वान-शृगाला
हे सिय सुमुखि ! कहेउ रघुवीरा ※ साखी और कौन तव-तीरा
कह सिय, अतिव लाज मन माहीं ※ पूछहु तदपि नाथ ! बट[3] पाहीं
पुरवहु एक साध[4]; तरु भाषी ※ वरनउँ कथा, नाथ मैं साखी
राम-रमा छबि युगुल निहारी ※ वरनउँ सकल सत्य मन धारी
सुनि तरु-वचन मोद अधिकाई ※ राम-बाम सिय जाय सोहाई
अनुपम निरखि जुगुल छबि प्यारी ※ बट कर-जोरि बिनय बिस्तारी
प्रभु-पद विनय एक रघुकेतू ※ 'चिन्तामणि' तव नाम न हेतू
जग बिख्यात 'दयामय' नामा ※ उबरत पतित, लहत तव-धामा

সীতা কহিলেন শুন প্রভু গুণনিধি ※ আর সাক্ষী আছে সেই ফল্গু মহানদী
ফল্গু ভাবে, মিথ্যা কর শ্রীরামের স্থলে ※ দিবেন কতই দ্রব্য রাম মোর জলে
ফল্গুরে সুধান রাম কমললোচন ※ তুমি দেখিয়াছ কিবা অজের নন্দন
ফল্গুনদী কহে, শুন প্রভু রঘুনাথে ※ আমি নাহি দেখিয়াছি রাজা দশরথে
এতেক শুনিয়া সীতা কান্দে উচ্চৈঃস্বরে ※ আজি আমি দিব শাপ এ ফল্গু নদীরে
অন্তঃশীলা হ'য়ে তুমি বহ সর্ব্বকাল ※ তোমারে ডিঙ্গিয়া জাবে কুক্কুরে-শৃগাল
শ্রীরাম বলেন শুন সীতা চন্দ্রমুখি ※ আর কেহ থাকে ত, বলাও আনি সাক্ষী
সীতা কহিলেন, রাম, লজ্জা বোধ করি ※ বটবৃক্ষ আনি সাক্ষী বলাও দৈত্যারি
বটবৃক্ষ আসি কহে প্রভু রঘুবর ※ সাক্ষী দিব, যদি মোর জুড়াও অন্তর
রাম-সীতা যুগ্ম-রূপ হেরিব নয়নে ※ তবে আমি সাক্ষ্য দিব তব বিদ্যমানে
বৃক্ষ কথা শুনি সীতা আনন্দিত মন ※ রামের বামেতে সীতা দাঁড়ান তখন
হেরিয়া যুগল রূপ নিজের নয়ানে ※ জোড় হস্তে, বলে বৃক্ষ রাম-বিদ্যমানে
তোমার চরণে প্রভু এই নিবেদন ※ 'চিন্তামণি' নাম তুমি ধর কি কারণ
দয়াময়-নাম তব সর্ব্বলোকে কয় ※ পতিতে তরাও তাই নাম 'দয়াময়'

---

१ साक्षी, गवाह २ जल-प्रवाह प्रगट न होकर क्षीण रहे ३ बरगद ४ अभिलाषा।

§ विष्णुप्रिया तुलसी ने सौत सीता के प्रति ईर्ष्या के कारण और ब्राह्मण तथा फलगु नदी ने राम के द्वारा पुनः पिण्डदान होने पर क्रमशः पुनः दान-दक्षिणा और पिण्ड पाने के लोभ में झूठी गवाही दी।

जड़ जंगम जे चेतन नाना * घट-घट नित व्यापत भगवाना
चिन्तामणि निमग्न जग-चिन्ता * किमि पितु-पिण्ड अबुध भगवन्ता
महिमा नाम वृथा इमि होई * कहै न 'चिन्तामणि' जग कोई
निजहिं भूलि संसार-सनेही * परे भरम लहि मानव-देही

दो० तुलसी, सरिता फल्गु दोउ, विप्र अनुसरन कौन ।
लोभ-बिबस बानी असत, हे प्रभु! साखी दीन ।। ७२ ।।

मिथ्या कथन रुचिर जनि स्वामी * उचित प्रवञ्च[1] न अन्तर्यामी
शत-शत कोटि जनम तप करई * समता-सतवादी जन लहई
सिकता-पिण्ड[2] गहे सिय हाता * निजकर पुलकि लीन नरनाथा
सो करि पान, तृप्त, सुखसाने * मम नैननतर[3] स्वर्ग पयाने

छं० तुलसी, द्विज, फल्गुनदी-बिपरीत, सुनी बट की प्रभु सत्य-कथा।
अश्वत्थ सदा चिरजीव अमर, तव बानि नसवानि सीय-व्यथा ।।
अति जेठ जलाक म' सीतलता, अरु माह म' सीत अलोप[4] तथा।
सुनि सीय असीस सियापति की, सिय बोलति, बानि न मोर वृथा।।
पतझार न पल्लव-हीन[5] कबौं, तरु-डारिन पात नये लहरैं ।
अति मञ्जुल सीतल छाँह सदा, श्रम-ताप हरैं, मन-मोद भरैं ।।

स्थावर-जंगम आदि यत जीवगण * सर्व्वजीवे सर्व्वक्षण आछ नारायण
संसारेर चिन्ताकरनाम 'चिन्तामणि' * सीता पिण्ड दिया किना, ना जान आपनि
चिन्तामणि नामे तव कलंक रहिल * आजि हैते चिन्तामणि-नामटि डुबिल
चिन्ताय व्यकुल ह'ये भुलेछ आपना * मायाय मानुष हैले, किछु नाहि जाना
वट वृक्ष कहे, शुन कमललोचन * मिथ्या साक्ष्य इहारा दिलेक सर्व्वजन
धनलोभे मिथ्या कथा कहिल ब्राह्मण * ब्राह्मणेर अनुरोधे अन्य दुइजन
आमि यदि मिथ्या बलि, एके हवे आर * अंतर्य्यामी नारायणे फाँकि देवा भार
शतकोटि जन्म तप करे जेइ जन * सत्यवादि-सम किन्तु ना हय कखन
वालिपिण्ड ल'ये छिला सीता डान हाथे * आपनि लइला ताहा राजा दशरथे
खाइया सीतार पिण्ड प्रफुल्ल अन्तरे * देखिते देखिते राजा गेला स्वर्गपुरे
शुनिया वृक्षेर कथा कन् रघुवर * चिरजीवी हओ वट, अक्षय अमर
पिण्डदान करि मने भावेन जानकी * बारे वारे सबाकारे करियाछि साक्षी
तुष्ट ह'ये वर दिव तोमाय केवल * शीतकाले उष्ण हवे, ग्रीष्मते शीतल
पुनर्व्वार सीता तारे दिला एइ वर * डाले डाले हबे नव पल्लव विस्तर
मनोहर सुशीतल रबे अनिवार * निष्पत्र ना हबे शाखा कदापि तोमार

---

१ छल २ वालू के पिण्ड ३ मेरे देखते-देखते ४ लुप्त ५ विना पत्तों के ।

गदिया[1] बहु पात-जटान लदे, तहँ नित्य बिहंग[2] बिहार करैं।
तरु-पुंगव हे! तव-संग लहे, सब क्लेश बटोहिन[3] के निवरैं॥

पुनि - पुनि तरुहिं असीसत जाई ※ रामप्रिया सिय दीन बिदाई
लखन - राम - सिय पर्व्वत वासू ※ गयाधाम कछु कथा प्रकासू

गया-माहात्म्य

चित्रकूट सानुज - सिय रामा ※ निवसि, चले पुनि गया सुधामा
वरनहु कथा पुरातन, नाथा ※ उत्पति - धाम सुपावन गाथा
पिण्ड पितर पठवत प्रभु - धामा ※ श्रवन लालसा कथा ललामा
सुनु सिय! अति प्राचीन कहानी ※ दनुज एक दुर्जय अभिमानी
सुरपति-रन सुरगनन पछारी ※ प्रबल 'गयासुर' अति बलधारी
अश्वमेध, करि जज्ञ अनन्ता ※ भयेउ अमर अक्षय बलवंता
कँहु न गिनत जग, तन विकराला ※ जीते अखिल देव - दिक्पाला
सुरगन बिकल बिरञ्चहिं टेरी ※ 'गति न', कहत दुर्गति सब केरी
असुर अतंक, न कहुँ निस्तारा ※ करहु प्रजापति! सबन उबारा[4]

सुशीतल राखिबे, जे जाबे तव तले ※ सर्व्वदा आनन्दे रबे निजपत्र - फले
एइ रूपे वटवृक्षे आशीर्व्वाद करि ※ विदाय दिलेन तारे रामेर सुन्दरी
पर्व्वत उपरे रन् राम लक्ष्मण सीता ※ एखन कहिब किछु गयाधाम कथा
कृत्तिवास पण्डितेर कथा सुधाभाण्ड ※ परम पवित्र एइ अयोध्यार काण्ड

गया-माहात्म्य

चित्रकूट छाड़ि राम, सीता ओ लक्ष्मण ※ गयाधामे गिया शेषे दिला दरशन
सीता बले, शुन प्रभु करि निवेदन ※ पूर्व्वकथा कह आमि करिब श्रवण
कि निमित्त गयाधाम हइल एखाने ※ इथे पिण्ड दिले जाय बैकुण्ठभुवने
राम बले शुन सीता आमार बचन ※ पूर्व्वकथा कहि आमि ताहे देह मन
पूर्व्वे हेथा छिल दैत्य गयासुर नाम ※ तार सने करे इन्द्र भीषण संग्राम
गयासुर दैत्य तार महाशक्ति छिल ※ इन्द्रादि यतेक देव, सबारे जिनिल
अश्वमेध आदि करि नाना यज्ञ करे ※ अक्षय अमर ह'ये रहे कलेवरे
प्रकाण्ड शरीर तार कारेओ ना माने ※ एके एके जिनिल यतेक देवगणे
तार भये देवगण तिष्ठिते ना पारे ※ ब्रह्मार निकटे गिया सबे स्वत करे
गोसाइँ, असुर भये नाहि अव्याहति ※ एइवार रक्षा कर ओहे प्रजापति

---

१ बरगद के फल २ पक्षी ३ यात्रियों ४ उद्धार।

कातर देव - समूह निहारी * चले बिरञ्चि सहित त्रिपुरारी

दो० बिधि-महेस रन विषम करि, सक न जीति संग्राम ।
कह बिरञ्चि, तुम सम, दनुज! जग न पुण्य-बल-धाम ॥ ७३ ॥

प्रबल दनुजपति! तव तन थापी[1] * रचना - यज्ञ - कामना ब्यापी
कहेउ गयासुर, शिव-चतुरानन * दोउ मम तन ऊपर लहि आसन
करहु याग पुरवहु निज आसा * तबहुँ न सम्भव मोर विनासा
कहि, उतान[2] भुइँ परा सुरारी[3] * शिव-बिरञ्चि तहँ यज्ञ सवाँरी
गिरि-पाषान अवनि बहु भाँती * देवन सकल धरेउ तेहि छाती
वेदी रची दनुजपति - गाता[4] * करत याग जहँ शंभु-विधाता[5]
सुरगन अखिल, विरञ्चि महेश्वर * सुरन सहित सुर-अधिप पुरन्दर[6]
तन विराट्! तिन भार अपारा * गय-तन अतुल बोझ बिस्तारा
करहिं जज्ञ पशुपति-चतुरानन[5] * तहँ प्रतच्छ[7] भइ प्रगट हुतासन[8]
कलसन घृत आहुति लहि आगी * नभ लौं लपट प्रज्वलित लागी
तन - वेदी जहँ यज्ञ प्रकासा * तबहुँ गयासुर - अंग न त्रासा
दनुज न लेस, असेस पराना * पूरन याग, सुरन अनुमाना

समस्त देवेर ब्रह्मा देखिया काकुति * आपनि आइला संगे ल'ये पशुपति
करिला भीषण रण दोंहे तारसने * तथापि जिनिते नारे ब्रह्मा-त्रिलोचने
ब्रह्मा बले दैत्य, तुमि बड़ बलवान * तोमार समान केह नाहि पुण्यवान
सेइ हेतु गयासुर, शुनह वचन * तोमार उपर यज्ञ करिव एखन
शुनिया ब्रह्मार कथा कहे गयासुरे * दोंहे मिलि यज्ञ कर आमार उपरे
आमार उपर यज्ञ कर दुइ जन * तथापि इहाते मोर ना हवे मरण
चित् ह'ये गयासुर पड़िल सेखाने * वसिला करिते यज्ञ ब्रह्मा त्रिलोचने
पृथिवीते पाषाण - पर्व्वत यत छिल * गयासुर उपरे सकलि चापाइल
यज्ञ सज्जा आनि देय यत देवगण * आरम्भिला यज्ञ तबे ब्रह्मा त्रिलोचन
यतेक देवता सह ब्रह्मा - महेश्वर * एकमन ह'ये सबे हैला गुरुभर
विराट् मूरति धरि गयेर उपर * बसिलेन देवगण - सह पुरन्दर
अग्नि ज्वालि यज्ञ करे ब्रह्मा, त्रिलोचन * मूर्त्तिमान ह'ये अग्नि उठे सेइ क्षण
अग्निमध्ये घृत ढाले कलसे-कलसे * प्रदीप्त हइया अग्नि अम्बर परशे
असुर उपरे यज्ञ यद्यपि करिल * तथापि असुर ताहे भय ना पाइल
सबे वले गयासुर परान त्यजिल * यज्ञ सांग करि फोंटा सकले परिल

१ शरीर पर वेदी स्थापित करके २ चित लेट गया ३ दैत्य गयासुर ४ दैत्य के शरीर पर ५ शिव और ब्रह्मा ६ इन्द्र ७ प्रत्यक्ष ८ यज्ञ-अग्नि ।

उठेउ झारि, तन विकट सम्हारा ※ गिरे दूरि तरु - उपल - पहारा[1]
मम विनास देवन - बस नाहीं ※ सुनि सभीत सुरगन मन माहीं
सुर - संकट लखि कृपानिधाना ※ चलि रन घोर असुर सन ठाना
विक्रम - विपुल - गयासुर देखी ※ श्रीपति - उर सन्तोष बिसेषी

दो० दनुज-पछारेउ, ताहि सिर, हरि पद-पंकज दीन ।
पिण्ड विष्णु-पद पितर लहि, होत परम-पद लीन ॥
गया-धाम पावन कथा, अवधकाण्ड इति गान ।
कृत्तिवास अनुरूप पुनि, अथ अरण्य - सोपान ॥ ७४ ॥

॥ अयोध्याकाण्ड समाप्त ॥

गयासुर बले सबे यज्ञ सांग हैल ※ गात्र झाड़ा दिय वीर तखनि उठिल
पाहाड़ पर्वत वृक्ष पड़े बहु दूरे ※ देखि यत देवगण पड़िब्र फाँफरे
गयासुर बले, शुन ओहे देवगण ※ तोमादेर हाते मोर ना हबे मरण
एतेक शुनिया देवगणे लागे त्रास ※ देवगण - त्रास देखि आसि श्रीनिवास
गयासुर सह आरम्भिला घोर रण ※ गयासुर - पराक्रमे तुष्ट नारायण
पराजिया गयासुरे देव दामोदर ※ स्थापिलेन पादपद्म तार शिरोपर
विष्णुपदे गय-शिरे जेवा पिण्ड येय ※ पितृगण मुक्त ह'ये मोक्षधामे जाय
सेइ हेतु गयाधाम नामेते प्रकाश ※ समाप्त अयोध्याकाण्ड, कहे कृत्तिवास

॥ अयोध्याकाण्ड समाप्त ॥

---

१ वृक्ष-पत्थर-पहाड ।

* श्रीगणेशाय नमः

अरण्यकाण्ड

श्लोक—मूलं धर्म्मतरोर्विवेकजलधेः पूर्णेन्दुमानन्ददं
वैराग्याम्बुजभास्करं कलुषहं ध्वान्तापहं तापहम् ।
मोहाम्भोधरपुञ्ज - पाटनविधौ भीमानिलं शङ्करं
वन्दे ब्रह्मकुलं कलङ्कशमनं श्रीरामचन्द्रप्रियम् ॥ १ ॥

सान्द्रानन्द - पयोदशोभनतनुं पीताम्बरं तारकं
पाणौ लग्नशरासनं कटिलसत्तूणीरभारं वरम् ।
राजीवायतलोचनं धृतजटाजूटेन संशोभितं
सीतालक्ष्मणसंयुतं पथिगतं श्रीरामचन्द्रं भजे ॥ २ ॥

चित्रकूट में श्रीरामादि का निवास

दो० अवधपुरी निवसत भरत, विनय-सील-गुन-धाम ।
चित्रकूट गिरि रमत उत, सहित लखन-सिय राम ॥
सोइ पावन गिरि बसत पुनि, बहु तपसी-मुनि-वृन्द ।
भल-अनभल, सुख-दुख सदा लखैं राम-मुख-चन्द ॥

दिवस एक, श्रवनन[1] कछु कहहीं * मुनि, लखि राम, मौन ह्वै रहहीं
निरखि मुनिन पूछत रघुबीरा * कहि निज सोच? हरौ भ्रम पीरा
सुख-दुख बिलग[2] न, संग बसेरा * संकठ परे अहित सब केरा
हे मुनि, जो विपत्ति कहुँ हेरी * सुनत निवारन करौं, न देरी

चित्रकूटे श्रीरामादिर अवस्थान ओ राक्षसभये मुनिगणेर प्रस्थान

करिलेन अयोध्याय भरत गमन * चित्रकूट पर्व्वते रहेन तिन जन
चित्रकूट पर्व्वते अनेक मुनि वैसे * भाल-मन्द जखन जे, रामेरे जिज्ञासे
एक दिन मुनिगण करे कानाकानि * जिज्ञासा करेन राम धनुर्व्वाण पाणि
कह-कह मुनिगण, कि करे मंत्रणा * आमारे ना कहि केन बाड़ाओ यंत्रणा
आमरा सकले करि एकत्र वसति * एकेर छतिते हय सबाकार क्षति
यदि कोन् विपद् ह'येछे उपस्थित * आमारे जानाओ, आमि करिब विहित

१ कान में २ अलग ।

राम - बचन मुनिगन सकुचाने ※ वृद्ध एक बोलत रस - साने
बरनउँ व्यथा सकल रघुवीरा ※ जेहि कारन मुनि-वृन्द अधीरा
खर-दूषन पुनि, अनुज-दशानन ※ दुष्ट दनुज, तिन सुभट हजारन
चहुँदिसि यातुधान[1] बन फिरहीं ※ उपवन प्रविसि उपद्रव करहीं
यज्ञ अरंभ - गंध खल पाई ※ करत ध्वंस, द्विज चलत बराई
तोरत भाण्ड, मूल फल खाहीं ※ द्विजगन भय-बस कुटिन लुकाहीं
तजि वन इतर[2] तपोवन गमना ※ मुनि-मत गोप,[3] राम! मैं वरना
निर्जन वन निवसउ केहि रूपा ※ सहित बन्धु, तिय लिये सुरूपा
वन जहँ ऋषि-मुनि नजर न कोई ※ चहुँ दल-दनुज! गुजर किमि होई
विक्रम विपुल अतुल बल-धामा ※ तदपि निवास दुसह वन रामा
तजि वन अन्य तपोवन जाहीं ※ रघुपति-दरस सुलभ तहँ नाहीं
जेहि जहँ स्वजन सुठौर लखाने ※ सतिय वृन्द-मुनि वेगि पयाने

दो० राम निहारत सघन वन, मुनि-विहीन जन-हीन।
सोचत पुनि रघुनाथ जिमि, कृत्तिवास रचि दीन ॥१॥

राम-वाक्ये मुनिगण पड़िलेन लाजे ※ वृद्ध एक मुनि उठि बले तार माझे
ये मंत्रणा करिनेछि मोरा रघुवर ※ ताहार वृत्तांत कहि तोमार गोचर
रावणेर दुइ - भाइ दुष्ट निशाचर ※ तार मध्ये ज्येष्ठ खर, दूषण अपर
ताहार सामन्तगण चतुर्दिके भ्रमे ※ कत उपद्रव करे प्रवेशि आश्रमे
यज्ञ आरंभन मात्र आसिया निकटे ※ यज्ञ नष्ट करे, द्विज पलाय संकटे
राक्षसेर डरे लुकाइया घरे आसि ※ फलमूल काड़ि खाय भांगेय कलसी
एइ वन छाड़िया जाइबे अन्य वन ※ कानाकानि करिलाम एइ से कारन
छाड़े मुनिगण यदि, शून्य हबे वन ※ शून्य वने केमने रहिबे तिन जन
सीता अति रूपवती, एइ वन माझे ※ केमने राखिबा राम, राक्षस-समाजे
विक्रमे विशाल तुमि जानि मोरा मने ※ कत संवरिया राम, थाकिबे कानने
आमरा ए वन छाँड़ि अन्य वने जाइ ※ तोमार सहित आर देखा हबे नाइ
स्त्री - पुरुषे मुनिगण चलेन सत्वर ※ यार यथा छिल स्थान कुटुम्बेर घर
उठि गेल मुनिगण शून्य देखा जाय ※ श्रीराम भावेन तबे ताहार उपाय
कृत्तिवास पण्डितेर मधुर पाञ्चाली ※ गाइल अरण्य-काण्डे प्रथम शिकलि

---

१ राक्षस २ अन्य ३ मन की बात।

अत्रि-आश्रम में अनुसूया-सीता-मिलन

जो कहुँ भरत लेन पुनि आवैं * किमि तिन वचन वृथा करि पावैं
चित्रकूट सों अवध न दूरी * भरत - भक्ति मोरे प्रति पूरी[1]
मत विचारि मन स्थिर कीन्हा * दच्छिन दिसि रघुपति पग दीन्हा
श्रम करि चलत चले रघुराई * अत्रि - तपोवन दरस सुहाई
जहँ मुनि अत्रि-धाम अति पावन * सतिय - बन्धु[2] बन्देउ मनभावन
निरखि राम, मुनि आनँद-साने * पाद - अर्घ्य - आसन सनमाने
मुनि निज तियहिं समर्पेउ सीता * राखहु तनया - सरिस सप्रीता
करुणा धौं श्रद्धा तन धारी * सोचत सिय, मनु स्वयं पधारी
धवल वसन सब धवलित वेसा * आजीवन तप पकए केसा
कै[3] तपलीन तपस्या रूपा * गायत्री जग - बन्द्य अनूपा
युगुल पाणि प्रणवति वैदेही * मुनि-वनिता मुदि आशिष देही
पुनि सीतहिं आसन सनमानी * उर प्रफुल्ल बोलीं मधुबानी
नृपनन्दिनी नृपति - गृह आई * दोउ कुल, प्रभा-शील-गुन छाई
तजि सुख विपुल भई वन-गामिनि * सुफल राम-तप लहि सिय भामिनि

अत्रि-आश्रमे श्रीरामगमन एवं अनुसूया-निकटे सीतार परिचय

आमा निते भरत आइले पुनर्व्वार * केमने अन्यथा करि वचन ताहार
चित्रकूट अयोध्या नहे त बहु दूर * भरत भ्रातार भक्ति आमाते प्रचुर
रघुनाथ एमत चिन्तिया मने-मने * चलिलेन चित्रकूट छाड़िया दक्षिणे
कत दूर जाय ताँर करि परिश्रम * सम्मुखे देखेन अत्रि मुनिर आश्रम
प्रवेशिया तिन जन पुण्य - तपोवन * बन्दना करेन अत्रि मुनिर चरण
रामे देखि मुनिवर उठिया यतने * पाद्य अर्घ्य दिया ताँर बसान आसने
आपनार पत्नी ठाँइ समर्पिया सीता * बलेन पालह येन आपन दुहिता
देखि मुनि पत्नीके भावेन मने सीता * मूर्तिमति करुणा कि श्रद्धा उपस्थिता
शुक्ल वस्त्र परिधान शुक्ल सर्व्ववेश * करिते - करिते तप पाकियाछे केश
तपस्या धरिया मूर्ति करेन तपस्या * ज्ञान हय गायत्री कि सबार नमस्या
कृताञ्जलि नमस्कार करिलेन सीता * आशीर्व्वाद करिलेन अत्रिर बनिता
मुनिपत्नी वसाइया सम्मुखे सीतारे * कहेन मधुर वाक्य प्रफुल्ल अन्तरे
राजकुले जन्मिया पड़िला राजकुले * दुइ कुल उज्ज्वल करिला गुणे शीले
ए सब सम्पदा छाड़ि पति संगे जाय * हेन स्त्री पाइला राम बहु तपस्याय

---

१ पूर्ण　२ सीता-लक्ष्मण सहित　३ या तो।

कह सिय, मातु! न सम्पद-हेतू ❋ मम निधि दूर्व्वादल रघुकेतू
पति बिन नारि वृथा सुख-भोगू ❋ पति तजि जग न अन्य धन-जोगू

दो० सकल ज्ञान-गुनधाम जे, मम जितेन्द्रिय नाथ।
कस न सेयि तिन चरन रज, जननी! होउँ सनाथ॥ २॥

धन-जन-सम्पद, देवि! न कामा ❋ चहौं असीस रमन-पद-रामा
अनुसूया लखि निज अनुसारी ❋ तृप्त दैन-सिय सुनि सुखकारी
सिय उर लाइ कीन सत्कारू ❋ भूषन दिव्य विविध उपहारू
तव सत्-सील मुग्ध मैं सीता ❋ निज मुख बरनउ कथा-अतीता[1]
सुनु भगवती! कहति वैदेही ❋ जनम-कथा मम अद्भुत एही
नभ उर्वसी उड़त लखि चीरा ❋ हर-जोतत-नृप जनक अधीरा
जनक-रेत[2] गिरि धरनि अनूपा ❋ जनम दीन छबि सुता सुरूपा
दिव्य अयोनि जन्म इमि पावा ❋ हर[3] तजि भूप मोहिं उर लावा
निज तनया सम मन अनुमानी ❋ तौ लौं सुरन कीन नभबानी
जन्म-अयोनि रूपसी काया ❋ हे नृप! तव औरस यह जाया
सीता-जनम[4] नाम धरु सीता ❋ भूप कुतूहल सुनेउ सप्रीता
दुखी-दीन-द्विज दिय बहु दाना ❋ नृप अर्पेउ मोहिं रानि-प्रधाना[5]

सीता कहिलेन मा सम्पदे किवा काम ❋ सकल सम्पद मम दूर्व्वादल श्याम
स्वामी विना स्त्रीलोकेर कार्य्ये किवा धने ❋ अन्य धने कि करिबे पतिर विहने
जितेन्द्रिय प्रभु मम सर्व्व-गुण-गुणी ❋ हेन पति सेवा करि भाग्यये न मानि
धन जन सम्पद ना चाहि भगवति ❋ आशीर्व्वाद कर, येन रामे थाके मति
शुनिया सीतार वाक्य तुष्ट मुनिदारा ❋ आपनार येमन तिनि, सीता सेइ धारा।
समादरे सीतारे दिलेन आलिंगन ❋ दिबा अलंकार आर बहुमूल्य धन
तुष्टा ह'ये सीतारे कहेन भगवति ❋ तव पूर्व्व वृत्तांत कह गो सीते सती
जानकी बलेन देवी कर अवधान ❋ आमार जन्मेर कथा अपूर्व्व आख्यान
एक दिन उर्व्वशी जाइते वस्त्र उड़े ❋ ताहा देखि जनक राजार वीर्य्य पड़े
सेइ वीर्य्ये जन्म मोर हइल-भूमिते ❋ उठिल आमार तनु लांगल चषिते
अयोनि-सम्भवा आमि, जन्म महीतले ❋ लांगल छाड़िया राजा मोरे निल कोले
निज कन्या बलि राजा मने अनुमानि ❋ हेन काले आकाशे हइल देववाणी
देवगण डाकि बले, जनक भूपति ❋ जन्मिल तोमार वीर्य्ये कन्या रूपवती
अयोनि-सम्भवा एइ तोमार दुहिता ❋ लांगलेर मुखे जन्म, नाम राख सीता
एतेक शुनिया राजा हरषित मन ❋ दीन द्विज दुःखीरे दिलेन बहुधन

१ बीती हुई २ वीर्य ३ हल ४ हल से जन्म होने के कारण ५ पटरानी को।

नेह पली सब विधि बहु नीके * दिन-दिन बढ़हुँ अंक जननी के
सो लखि नृप-मन कौतुक व्यापा * भट, जो शंभु चढ़ावैं चापा
सोइ कर ग्रहन करैं वैदेही * प्रकट भुवन प्रन दारुन एही
नृप - नन्दन तेरह लख वीरा * लखि पिनाक[1] हिय सकल अधीरा

दो० बिन भेटे पितु, विकल मन, ते सब चले बराय ।
मम-विवाह-प्रन विफल लखि, व्यथा-भूप अधिकाय ।। ३ ।।

छं० तहँ सानुज राम तबै प्रगटे, बिहँसे धनु हेरि कै टेरि कह्यो ।
जनि बेर, धरौं गुन[2] चाप अभै, कर वाम पिनाकहिं राम गह्यौ ।।
छुवतै धनुभंग, सबै लखि दंग, तिलोक झनाझन सोर छयो ।
छिति-स्वर्ग-पताल मची भुविचाल चहूँ दिसि कम्प कराल भयो ।।

सिर लट जासु उमिर गभुवारी * विक्रम भुवन कुतूहल भारी
मोंहि पद-राम[3] देन पितु-वानी[4] * पितु-सूने[5] मन राम न मानी
सुत-बिवाह सुनि अमित उछाहू * आये साजि अवध - नरनाहू
यहि विधि मैं पाये रघुनन्दन * लखन-उर्मिला पुनि गठबन्धन
युगुल भतीजिन भूप विदेहा * भरत-रिपुघ्नहिं दीन स-नेहा

प्रधान देवीर ठाँइ दिलेन आमारे * आमारे पालेन देवी विविध प्रकारे
दिने-दिने वाड़ि आमि मायेर पालने * आमा देखि जनक चिन्तेन मने मने
जेइ जन गुणे दिवे शिवेर धनुके * ताँरे समर्पिब सीता परम कौतुके
दारुण प्रतिज्ञा एइ भुवने प्रचार * तेर लक्ष वर एल राजार कुमार
धनुक देखिया सबाकार प्रान काँपे * ना सम्भाषि पितारे पलाय मनस्तापे
प्रतिज्ञा करिया आगे ना पान भाविया * केमने सम्पन्न हबे जानकीर बिया
हेनकाले उपस्थित श्रीराम - लक्ष्मण * धनुक देखिया हास्य करेन तखन
धनुकेते गुण दिते सर्व्वलोके बले * धनुखान धरि राम वाम हाते तोले
गुण-योग करिते से धनुखान भांगे * सबे स्तब्ध तार शब्द त्रिभुवने लागे
धनुकेर शब्दे येन बड़िल झंझना * स्वर्ग-मर्त्त-पाताले काँपिल सर्व्वजना
शिरे पंचझूटि राम विक्रमे विस्तर * चूड़ा कर्णवेध हय लोके चमत्कार
विवाह करिते पिता वलिल आमारे * ना करेन स्वीकार पितार अगोचरे
राज्यसह दशरथ आसिया सम्भाषे * रामेर विवाह देन परम सन्तोषे
श्रीराम करिलेन आमार पाणिग्रह * लक्ष्मणेर दार-कर्म ऊर्मिलार सह
कुशध्वज खुड़ार जे दुइ कन्या छिल * भरत शत्रुघ्न दोंहे विवाह करिल

---

१ शिव-धनुष २ धनुष की डोरी, प्रत्यंचा ३ राम के चरणों में ४ जनक का कथन ५ दशरथ की अनुपस्थिति में ।

पूरुब कथा, मातु ! मैं बरना ※ जेहि बिधि लहे, राम प्रभु-चरना
सिय-वृतांत मुनि-तियहिं सुहावा ※ सेंदुर भाल सुहाग चढ़ावा
कण्ठ हार-मणि, भुज भुजबंधन ※ कुण्डल श्रवन, हेम कर-कंकन
नकबेसर गजमुक्ता भाई ※ पदपंकज बिछुवन छबि छाई
गौर-वरन श्री-वसन अनूपा ※ मुनितिय साजेउ सिया सुरूपा
संध्या विगत, निसा पुनि आई ※ सीतापति - पद सिया सुहाई
लखि सिय, उमा-रमा सकुचाहीं ※ समता रूप चराचर नाहीं
सिय - सोभा - विमुग्ध रघुराई ※ मुनि - उपवन सुखरैन बिताई

रामादिक का दण्डकारण्य-दर्शन

करि अस्नान भोर, पुनि तर्पन ※ मुनि-पद सीस धरे तीनिउ जन
अत्रि महामुनि आशिष दीन्हा ※ समुचित सीख राम बहु लीन्हा
सुनहु तात ! यहु निसिचर-देसू ※ दनुज त्रास चहुँ विविधि कलेसू

दो० कछु आगे, रमणीक अति, सुवन ! दण्डकारण्य ।
तहँ निवास चलि कीजिए, उपवन सुखद सुरम्य ॥ ४ ॥

मुनि-पद बन्दि चले अवधेसू ※ दण्डक वन विच कीन प्रवेसू
आगे राम, लखन अनुसारी ※ मध्य सोह छबि जनकदुलारी

भगवति - पूर्व्वकथा एइ कहिलाम ※ हेनमते मिलिलेन मम स्वामी राम
एत यदि सीतादेवी कहेन काहिनी ※ परितुष्ट हइलेन मुनिर गृहिणी
ब्राह्मणी सीतार भाले दिलेन सिन्दूर ※ कण्ठे मणिमय हार बाहुते केयूर
कर्णेते कुण्डल करे कञ्चन - कंकण ※ नूपुर शोभित हय कमल - चरण
नासाय बेसर देन गजमुक्ता ताय ※ बस्त्र पट्ट अधिक शोभित गोर-गाय
प्रदोष हइल गत प्रवेशे रजनी ※ रामेर निकटे जाय श्रीराम-रमणी
उमा-रमा नाहि पान सीतार उपमा ※ चराचरे जनक - दुहिता निरुपमा
देखिया सीतार रूप हृष्ट रघुमणि ※ मुनिर आश्रमे सुखे वञ्चेन रजनी

श्रीरामादिर दण्डकारण्य-दर्शन

प्रभाते करिया स्नान आर तर्पण ※ तिनजन बन्दिलेन मुनिर चरण
आशीर्व्वाद करिले अत्रि महामुनि ※ कहिलेन उपयुक्त उपदेश - वाणी
शुन राम, राक्षस-प्रधान एइ देश ※ सदा उपद्रव करे बहु देय क्लेश
अग्रेते दण्डकारण्य अतिरम्य स्थान ※ तथा गिया रघुवीर कर अवस्थान
मुनिर चरणे राम करिया प्रणति ※ दण्डक कानन मध्ये करिलेन गति
आगे जान रघुनाथ पश्चात् लक्ष्मण ※ जनक-तनया मध्ये कि शोभ तखन

सुरभित फल - प्रसून बहुरंगा ※ मुग्ध ! मोर-ध्वनि, गुञ्जत भृङ्गा
नाना खग मधु कलरव करहीं ※ सरन[1] प्रचुर[2] पंकज[3] मन हरहीं
रामहिं लखि मुनिगन बनबासी ※ अस्तुति करहिं जानि अबिनासी
राजभोग बनबास समाना ※ घट-घट तुम ब्यापक भगवाना
सुधा-सलिल-फल राम अहारा ※ मधुसेवन श्रम-पन्थ निवारा[4]
देखहिं दण्डक - दृश्य सुहावन ※ चले सतिय सानुज मनभावन
लखन, सिया पुनि आगे रामा ※ जहँ-तहँ छबि निरखत अभिरामा

विराध राक्षस-वध

दुर्जय दनुज विकट विकराला ※ कौतुक प्रकट भयो तेहि काला
हिय कठोर शोनित[5] सम नयना ※ हनत वन्य-पसु मानत भय ना
गिरि सम गात अजेय अनन्ता ※ रक्तिम[6] मुख मनु अगिनि ज्वलंता
सघन जटा शिर, तन अति विस्तर ※ चमकत शिराजाल लम्बोदर
सिंहनाद, घन - गर्जन ! भारी ※ मूर्ति 'विराध' दनुज भयकारी
सियहिं दाबि दानव नभचारी ※ करत तर्ज-गर्जन बहु भारी
सिय-भच्छन, मुख दनुज पसारा ※ लखि रामहिं कटु बैन उचारा

फल पुष्प देखन गन्धेते आमोदित ※ मयूरेर केकाध्वनि भ्रमरेर गीत
नाना पक्षी कलरव शुनिते मधुर ※ सरोवरे कत शत कमल प्रचुर
वन - मध्ये अनेक मुनिर निवसति ※ श्रीरामेरे देखिया हरिषे करे स्तुति
राज्ये थाक, वने थाक, तोमार समान ※ यथा तथा थाक राम, तुमि भगवान
रम्य जल रम्य फल मधुर सुस्वाद ※ आहार करिया दूर गेल अवसाद
देखिते हइल इच्छा दण्डक कानन ※ तिन जन मन:सुखे करेन भ्रमण
आगे राम मध्ये सीता पश्चात् लक्ष्मण ※ नाना स्थले कौतुक करेन निरीक्षण

विराध राक्षस-वध

हेनकाले दुर्ज्जय राक्षस आचम्बित ※ विकट आकारेते सम्मुखे उपस्थित
रांगा दुइ-आंखि तार खोंखर हृदय ※ वनजन्तु धरि मारे, कारे नाहि भय
दुर्जय शरीर धरे पर्व्वत समान ※ ज्वलंत आगुन येन रांगा मुख खान
शिरे कटा दीर्घ जटा, दीर्घ सर्व्वकाय ※ लम्ब्रोदर अस्थिसार, शिरा गणा जाय
मेघेर गर्ज्जन न्याय छाड़े सिंहनाद ※ महाभयंकर मूर्त्ति राक्षस विराध
सीतार राक्षस गिया लइलेक कक्षे ※ तर्ज्जन गर्ज्जन करे थाकि अन्तरीक्षे
सीतार खाइते चाय मेलिया वदन ※ श्रीरामे कहये कटु करिया तर्ज्जन

---

१ तालावों में २ बहुत अधिक ३ कमल ४ थकन मिटाई ५ रक्त ६ लाल।

दो० तापस तन, बन-बन फिरत, संग सलोनी नारि ।
बनबासी मुनिगन भ्रमित-मोहित रूप निहारि ।। ५ ।।

सबन अहार करौं यहि लागे ※ तव परिचय, किमि? कहु हतभागे!
क्षत्रिय-कुल रघुपति मम नामा ※ लखन अनुज, तिय सिया ललामा
पुनि विरूप तन संसयकारी ※ को तुम वन भरमत वनचारी?
कहेउ दनुज, बकवाद न काजू ※ भच्छहुँ सबन, उबार न आजू
नाम 'विराध' निरंकुस[1] वासू ※ 'कालनाम' पितु जगत-प्रकासू
तन अभेद्य वर पाय विधाता ※ निर्भय मुनिन असंख्य निपाता
कहेउ राम सुनि असुर-प्रलापा ※ मन मन, लखन! कुसंसय व्यापा
विपति विदेस, देस तजि एही ※ दुर्जय दनुज ग्रसयि वैदेही
कहेउ लखन, प्रभु! संसयहारी ※ हरहु क्लेश निसिचर संहारी
अनुज विनय, रघुवर बल पाये ※ असुर-हिये, सर सात चलाये
तन-विराध जनि बिशिख[2] प्रभावा ※ लौह-दण्ड शठ विपुल[3] चलावा
सो लखि, राम हनेउ सर एका ※ दण्ड विफल किय खण्ड अनेका
अस्त्र-विहीन दनुज-उर त्रासा ※ मायावी उड़ि चलेउ अकासा
दिव्य वाण तब प्रभु संधाना ※ गिरेउ धरनि यमदूत समाना

तपस्वीर वेशे राम, भ्रमिस् कानने ※ देखाइया कामिनी भुलास् मुनिगणे
तोदेर सवारे आजि करिब भक्षन ※ झाट परिचय देह, तोरा कोन् जन
श्रीराम बलेन आमि क्षत्रियकुमार ※ लक्ष्मण अनुज, जाया जानकी आमार
देखि हे तोमार केन विकृति आकृति ※ बनेते बेड़ाउ तुमि, हउ कोन जाति
राक्षस बलिल आमि ये हइ से हइ ※ सबार खाइब आजि छाड़िबार नइ
'विराध' आमार नाम थाकि यथा-तथा ※ कालनामे मम पिता विदित सर्व्वथा
कत मुनि बधिलाम विधातार वरे ※ अभेद्य शरीर मोर, भय करि कारे
लक्ष्मणेरे श्रीराम कहेन पेये भय ※ जानकीरे खाय बुझि राक्षस दुर्ज्जय
आसिलाम निजदेश छाड़िया विदेशे ※ सीतारे खाइल आजि दारुण राक्षशे
लक्ष्मण बलेन, दादा, ना भाविह ताप ※ राक्षसेरे मारिया घुचाउ मनस्ताप
लक्ष्मणेर वाक्येते रामेर बल बाड़े ※ मारिलेन सात बाण राम तार घाड़े
सात वान खाइया से किछु नाहि जाने ※ हाते छिल जाठागाछ मारिल सेक्षणे
ताहा देखि श्रीराम छाड़ेन एक बान ※ जाठागाछ तखनि हइल खान-खान
जाठागाछ काटा गेल, राक्षसेर त्रास ※ अस्त्र नाहि, निशाचर उठिल आकाश
छाड़ेन ऐषिक वाण दशरथ - सुत ※ पड़िल विराध, येन कृतान्तेर दूत

१ स्वच्छंद २ बाण ३ बृहत् ।

आहत तर्जेसि सबेग सभीता ❋ अवनि[1] अचेत गिरी तहँ सीता
गात 'विराध' रक्त चहुँ सरही ❋ जोरि जुगुल कर अस्तुति करही

छं० शाप-ग्रस्त मम गात अधम, तव बान परसि जिन मुक्ति मिली ।
शरण, नाथ! कीजिय सनाथ, हे प्रणतपाल रघुवंशबली ।।
स्वामि जासु अभिराम राम, धनि! छबि-ललाम सो जनकलली ।
चरन बन्दि गति लहौं, कहौं प्रभु ! दनुज-देह जेंहि भाँति मिली ।।

दो० नाम 'किशोर'—कुबेर-चर, सबविधि मो-पर प्रीत ।
तिन प्रकोप पाई कुगति, वरनउँ कथा अतीत ।। ६ ।।

लिये धनद[2] बहु संग नवेली ❋ मदन-केलि बिहरत रँगरेली
तहँ दुर्दैव परेउँ मैं जाई ❋ लखि मोंहि सबन ग्लानि अति छाई
शाप-कुबेर, असुर-तन पावौं ❋ दण्डक-वन गति अधम वितावौं
पुनि करि दया कहेउ धननायक[2] ❋ मुक्तिदैन-तव रघुपति-सायक
तव सर परसि आजु निस्तारा ❋ लहि शव अगिनि, होहुँ भव-पारा
लखन-रचित करि चिता प्रवेसू ❋ स्यन्दन[3] दिव्य, दिव्य तन-वेसू
गमनेउ स्वर्ग दरस-प्रभु पाई ❋ कृत्तिवास कृत कथा सुहाई

आघाते कातर आछाड़िया फेले सीता ❋ भूमिते पड़ेन सीता हइया मूर्च्छिता
बाणाघाते विराधेर देह रक्ते भासे ❋ जोड़ हात करि जाय श्रीरामेर पाशे
जोड़ हाते राक्षस श्रीरामे करे स्तुति ❋ तव बाण स्पर्श राम, पाइ अव्याहति
शापे मुक्त करिला आमार ए-शरीर ❋ लइलाम शरण चरणे रघुवीर
धन्य-धन्य सीतादेवी, राम याँर पति ❋ तोमा परशिया पाइ शापे अव्याहति
पूर्व्वकथा आमार शुनह रघुपति ❋ कुवेरेर शापे मोर एहेन दुर्गति
किशोर आमार नाम, कुबेरेर चर ❋ आमाते सर्व्वदा तुष्ट धनेर ईश्वर
एक दिन कुवेर लइया नारीगने ❋ रंगस्थले केलि करे मातिया मदने
कर्म्मदोषे आमि तथा हइ उपनीत ❋ आमारे देखिया तारा हइल लज्जित
कोपे शाप आमारे दिलेन धनेश्वर ❋ दण्डककानने गिया हओ निशाचर
पश्चाते करुणा करि बलेन वचन ❋ श्रीरामेर शरे हबे शाप-विमोचन
पाइलाम तव वाण-स्पर्श अव्याहति ❋ मृत देह पोड़ाइले पाइव निष्कृति
लक्ष्मणेर उद्योगे राक्षस देह पुड़े ❋ दिव्य देह धरिया से दिव्य रथे चड़े
राम दरशने चर गेल स्वर्गवास ❋ रचिल अरण्यकाण्ड द्विज कृत्तिवास

१ पृथ्वी पर २ कुबेर ३ रथ ।

शरभंग मुनि के आश्रम में राम-गमन

हेरि लखन-सिय-तन, रघुनन्दन * कहेउ, चलिय शरभंग-तपोवन
गोमति-पार[1] अलौकिक धामा * द्वादश योजन दूरि ललामा
तप-प्रभाव जिमि अनल ज्वलन्ता * तहाँ ख्याति-शरभंग अनन्ता
बन बसि रैन, भोर-छबि छाई * हित मुनि-दरस, चले रघुराई
तब लौं तहँ सुरनाथ सुहाए * मुनि शरभंग-मिलन हित आये
स्यन्दन दिव्य, दिव्य परिधाना * सुरपति सोह सहित सुर नाना
रथ झालरि मनि-मुक्ता रंगा[2] * चपल सारथी, पवन तुरंगा
नील-पीत चहुँ विविध पताका * दूर मञ्जु छबि रघुपति ताका
बिलमि, लखन! निरखहु यहि देसू * मुनि-उपवन को करति प्रवेसू

दो० रथ तजि मुनि शरभंग पहँ, जाय नवायेउ माथ।
पुनि आगम-मन्तव्य निज, विनय कीन सुरनाथ ॥ ७ ॥

मुनि! तिहुँलोक-ईश प्रभु रामा * दरसन हित आये तव धामा
तुम सर्वज्ञ, न कथन प्रयोजन * दनुज-दलन प्रगटे रघुनन्दन
धरहु तीर मम यहु धनु-बाना * मिलहिं राम, तब करिय प्रदाना
पुनि सुरपति सुरपुरी सिधाये * मुनि समीप रघुपति इत आये

श्रीरामेर शरभंग मुनिर आश्रमे गमन

श्रीराम बलेन, चल जानकि लक्ष्मण * गोमतीर पारे शरभंग तपोवन
हेथा हैते सेइ स्थान द्वादश योजन * अद्भुत देखिबे से मुनिर तपोवन
तपेर प्रभावे येन ज्वलन्त अनल * शरभंग मुनिर विख्यात सेइ स्थल
सेइ दिन श्रीराम रहेन सेइ वने * प्रभाते उठिया जान मुनि-दरशने
हेन काले उपनीत तथा शचीनाथ * शरभंग मुनि सह करिते साक्षात्
रथोपरि पुरन्दर आसे शुद्धवेशे * देवगण वेष्टित ताँहार चारि पाशे
रथ शोभा करे मणि-मुक्तार झारा * वायुवेगे चले घोड़ा सारथिर त्वरा
चारि दिक् शोभे नील-पीत-पताकाय * दूरे थाकि रामचन्द्र देखिलेन ताँय
अनुजेरे बलेन, थाकह एइ क्षण * जानि आगे, आश्रमे प्रवेशे कोनजन
इन्द्र आसि मुनिवरे करि नमस्कार * निवेदन करिलेन कार्य्य आपनार
शुन मुनि रामरूपी त्रिलोकेर नाथ * आसिवेन तव सह करिते साक्षात्
राक्षस वधेर हेतु ताँर अवतार * आपनि त त्रिकालज्ञ जानाब किआर
तवस्थाने राखिलाम एइ धनुर्व्वान * आइले ताहारे तुमि करिबा प्रदान
एत बलि स्वर्गपुरी जान पुरन्दर * प्रवेश करेन राम, यथा मुनिवर

---

१ गोदावरी के पार २ सौंदर्य।

करि प्रणाम, मुनि-आशिष पावा * प्रभु-अस्तुति मुनीस पुनि गावा
जोगिन-दुर्लभ दरस दिखाई * कीन्ह सनाथ अनार्थाहि आई
कुटी पुनीत कीन भगवन्ता * लखि छबि लहौं धाम-श्रीकन्ता
अर्पन दिव्य इन्द्र-धनुबाना * शत वत्सर-तप करि पुनि दाना
यहु तन जीर्ण बिसर्जहुँ आजू * धरेउँ सँजूति[1] दरस-प्रभु काजू
लखन सहित कछु रुकिय निमेसू[2] * करउँ समुख तव अगिनि प्रवेसू
मुनि रचि कुण्ड अनल दहकाई * तासु लपट नभ-मण्डल छाई
कौतुक सानुज सतिय बिलोका * मुनि-साहस लखि बिस्मित लोका
ऊर्ध्वतुण्ड, रट राम, न शेसू * अगिन प्रदच्छिन, कुण्ड प्रवेसू
अनल जरेउ तन, जीव प्रकासा * मनहुँ पुरुष उठि चलेउ अकासा
लहि प्रभु-दरस, गमन गोलोका * सुफल पुण्य-मुनि, सबन बिलोका
मानस मुग्ध कुतूहल करनी * मुनि शरभंग-कथा इमि बरनी

श्रीराम का वनभ्रमण

छं० अहा! राम-सत्संग हेतु, मुनि-संघ जुरे ज्ञानी-तपसी।
फलाहार कोउ बिन अहार, ब्रत चतुर्मास के अतुल जसी॥

प्रणाम करेन शरभंग मुनिवरे * आशीर्व्वाद करिया कहेन मुनि ताँरे
अनाथ छिलाम वने, हइले हे नाथ * योगे याँरे देखा भार, तिनिइ साक्षात्
आइला आपनि विष्णु आमार निवास * तोमा दरशने मम हवे स्वर्गवास
शत वत्सरेर तप करिलाम दान * एइ लह इन्द्रदण्ड दिव्य धनुर्व्वान
शरीर छाड़िव आमि अति पुरातन * प्रान राखियाछि राम तोमार कारन
क्षणेक लक्ष्मण-सह बैस एइखाने * अग्निते शरीर त्यजि तव विद्यमाने
शरभंग कुण्ड काटि ज्वालेन अनल * ज्वलिया उठिल अग्नि गगनमण्डल
कौतुक देखेन सीता श्रीराम लक्ष्मण * मुनिर साहस देखि विस्मित भुवन
राम-राम उच्चारिया मुनि ऊर्द्ध्वतुण्ड * अग्नि प्रदक्षिण करि झाँप देन कुण्ड
पुड़िया मुनिर देह हइल अंगार * अग्नि हैते उठे एक पुरुष आकार
गोलोके गेलेन मुनि निज पुण्यफले * देखिया सवार मन पूर्ण कुतूहले
राम दरशने मुनि जान स्वर्गवास * रचिल अरण्यकाण्ड कवि कृत्तिवास

श्रीरामचन्द्रेर वन-भ्रमण

सम्भाषिते श्रीराम आइल मुनि-ऋषि * केह-केह फल खाइ, केह उपवासी
अनाहारी केह वा वरिषा चारिमास * केह-केह सर्व्वकाल करे उपवास

---

१ यत्नपूर्वक २ निमेष, क्षण।

गाछ-बसन मृगचर्म कमण्डल सीस जटान भभूति लसी।
मुनिवृन्दन के अभिनन्दन कहँ प्रभु धाय उठे रघुवंस-ससी ॥

दो० जोरि जुगुल कर, मुनिन पँह, रघुपति कीन प्रनाम ।
पुनि मुनीस अस्तुति करहिं, अभय कियेउ तिनि, राम ॥ ८ ॥

उपवन, अब न दनुज-सञ्चारू * हे मुनि! निकट असुर-संहारू
राम-लखन तपसिन अनुसरहीं * दरसन घूमि तपोवन करहीं
धनु टंकार कीन रघुवीरा * वैदेही सुनि अमित अधीरा
वन-जीवन! अरु आयुध हाथा * कस विपरीत! असंगति नाथा
केहि कारन निसिचरन-विवादा * हिंसा कर परिनाम प्रमादा
वरनउँ कथा पुरातन, रामा * सुनिय नाथ दूर्वादल श्यामा
बारी वयस, यदा पितु-गेहा * वरनेउ पूरुब-कथा विदेहा
कोउ मुनि 'दक्ष' तपोवन रहही * तासु समीप खड्ग कोउ धरही
पातक जो हेराय[1] पर-थाती[2] * सोचि जतन राखेउ सब भाँती
तब लौं वृद्ध, न समरथ अंगा * लखेउ दक्ष तहँ दीन-बिहंगा[3]
भावी प्रबल कुबुद्धि विकासा * लै मुनि खड्ग बिहंग बिनासा
अस्त्र-कुसंग कुमति उपजावा * अस्त्र-हेतु पातक मुनि छावा

गाछेर बाकल परे, शिरे जटा धरे * मृगचर्म्म परे केह, कमण्डलु करे
मुनिगणे देखिया उठिला रघुनाथ * करेन प्रणति स्तुति करि जोड़ हाथ
मुनिगण करे स्तुति रामेर गोचर * श्रीराम बलेन, प्रभु, ना करिह डर
तपोवने ना थूइब राक्षस-संचार * अविलम्ब हइवेक राक्षस-संहार
मुनिगण-संगे-संगे श्रीराम-लक्ष्मण * तपोवन - दरशने करेन गमन
धनुके टंकार दिला राम रघुवीर * देखिया सीतार मन हइल अस्थिर
वने प्रवेशेन राम, हाते धनुर्व्वान * निषेध करेन सीता राम विद्यमान
राक्षसेर सने केन करह विवाद * अकारण प्राणिवधे घटिबे प्रमाद
पूर्व्वेर वृत्तान्त एक कहि तव स्थान * दूर्व्वादल श्याम राम, कर अवधान
शिशुकाले यखन छिलाम पितृघरे * कहिलेन पिता पूर्व्व आख्यान आमारे
दक्ष नामे एक मुनि छिला तपोवने * ताँर स्थाने खड्ग स्थाप्य राखे एकजने
पाप हय हरिले परेर स्थाप्य-धन * यत्ने खड्गखानि ताइ राखेन ब्राह्मण
एक वृद्ध पाखी सेइ तपोवने वैसे * नड़िते चड़िते नारे प्राचीन-वयसे
मुनिरे कुबुद्धि पाय, दैवेर लिखन * सेइ खड्गाघाते वधे पाखीर जीवन
हाते अस्त्र थाकिले लोकेर ज्ञान नाशे * हइल मुनिर पाप से अस्त्रेर दोषे

---

१ खो जाय २ धरोहर ३ सामान्य पक्षी ।

पालन सत्य भये बनचारी ※ कवन प्रयोजन असुर सँहारी
सुनि सिय-सरल-वचन रघुराई ※ दिय प्रबोध बहु बिधि समुझाई
स्वर्ण-सरोज-सुमुखि सुनु सीता ※ मैं असंक, प्रिय किमि भयभीता
तेजपुञ्ज मुनिवृन्द सहाई ※ तिन सिय! किमि कहु भय दुखदाई?

दो० रमत पंथ, मारग लखेउ, सरवर दिव्य सरूप।
जेहि भीतर सों सुनि परत, धुनि-संगीत अनूप ॥ ६ ॥

लखि विस्मित पूछत रघुकेतू ※ सर-बिच गान! कहौ मुनि! हेतू
सुनहु राम, यहि देस अनूपा ※ कीन कठिन तप मुनि तपरूपा
मुनि तपभंग-हेतु सुरराई[1] ※ तप-उपवन अप्सरन पठाई
देवांगना अलौकिक सोभा ※ मदनदग्ध मुनि-मन तिनि लोभा
'पञ्च-अप्सरा' नाम प्रदेसू ※ अबहुँ बसति ते लुकि यहि देसू
अलख नयन, पुरान अस कहहीं ※ गीत-नर्त्त, कानन सुनि परहीं
लीलापति सुनि कथा ललामा ※ लखि उपवन गमने मुनि-धामा
तहँ सन्मान पाय पहुनाई ※ तीनिहुँ जन सुखरैन बिताई
कहुँ दस-पाँच, कहूँ षट-मासा ※ वन-उपवन प्रभु कीन निवासा
दिवस मास कहुँ पाख अतीते ※ अवधि-प्रवास वर्ष दस बीते

सत्य पालि देशे चल, एइ मात्र पन ※ राक्षस मारिया तव कोन प्रयोजन
सरला जनकबाला कहिले एमति ※ बुझान प्रबोधवाक्य ताँर सीतापति
कनक कमलमुखि जनककुमारि ※ आमार नाहिक भय, कि भय तोमारि
महातेजा मुनिगण यादेर सहिते ※ तादेर किसेर भय, वल देखि सीते
जाइते देखेन ताँरा दिव्य सरोवर ※ शुनेन अपूर्व्व गीत ताहार भितर
विस्मित हइया जिज्ञासेन रघुमणि ※ जलेर भितर गीत केन शुनि मुनि
मुनि वलिलेन हेथा छिल एक मुनि ※ करित कठोर तप दिवस-रजनी
तपोभंग करिते ताँहार पुरन्दर ※ पाठाय अप्सरागणे, यथा मुनिवर
आइल अप्सरागण मुनिर निकटे ※ देखिया पड़िल मुनि मदन-संकटे
एस्थानेर ख्याति पञ्च-अप्सरा वलिया ※ अद्यापि आछये तारा हेथा लुकाइया
नृत्य गीत करे तारा, नाहि जाय देखा ※ एमन अपूर्व्व कथा पुराणेते लेखा
शुनिया मुनिर कथा कौतुकी श्रीराम ※ तपोवन देखिया गेलेन मुनिधाम
आतिथ्य करेन मुनि समादर करि ※ तिन जन वञ्चिलेन सुखे विभावरी
कोथा पाँच-सात-मास कोथा दशमास ※ कोथा वार-मास राम करेन प्रवास
एइ रूपे वने-वने करेन भ्रमण ※ अतीत हइल दश वत्सर तखन

१ इन्द्र।

सानुज सतिय एक दिन रामा ※ मुनि सुतीक्ष्ण-पद कीन प्रनामा
सीतापति मधुवैन प्रकासा ※ पद-अगस्त्य बंदन अभिलासा
कहेँउ सुतीक्ष्ण पूर्ण तव कामा ※ करहु सुफल चलि कुम्भज[1]-धामा
पिप्पलवन तिन अनुज-निवासू ※ आजु रैन तहँ कीजिय वासू
भोर जाहु सुत जहाँ तपागर ※ मुनि अगस्त्य मनु अवर-प्रभाकर[2]
लीन बिदा, दच्छिन दिसि जाई ※ पिप्पलवन पहुँचे रघुराई

दो० निज आश्रम रघुवीर लखि, मुनिवर-उर अति प्रीत ।
राम-लखन-सिय समुद मन, तहँ, निसि कीन बितीत ।। ३० ।।

अगस्त्य एवं वातापि-इल्वल आख्यान

मारग गहेँउ भोर पुनि रामा ※ लखहु लखन! इत कुंभज-धामा
यहि वन दुष्ट दनुज इक भारी ※ निज आलय[3] मुनि तेंहि संहारी
सुनि सौमित्र कुतूहल छावा ※ मुनि किमि यमपुर असुर पठावा!
अनुज! कथा सुनु, दनुज प्रतापी ※ युगुल-बन्धु 'इल्वल'-'वातापी'
मायावी माया बहु करहीं ※ छल-करि द्विजन-प्रान चहुँ हरहीं
पटु संगीत सुविज्ञ अनूपा ※ अनुज संग तन मेष - सरूपा

एक दिन सीता-सह श्रीराम-लक्ष्मण ※ कर-पुटे बन्दे मुनि - सुतीक्ष्ण - चरण
सुतीक्ष्ण मुनिरे राम कहेन सुभाष ※ अगस्त्येरे प्रणाम करिते करि आश
मुनि बले, जाह राम अगस्त्येर धाम ※ ताथा गिया ताँहार पूराउ मनस्काम
ताँहार कनिष्ठ आछे पिप्पलीर वने ※ अद्य गिया वासा कर ताँर तपोवने
कल्य गिया पाइबे अगस्त्य-तपोवन ※ ताहाते आछेन मुनि द्वितीय तपन
विदाय लइया राम चलेन दक्षिणे ※ उपनीत हइलेन पिप्पलीर वने
श्रीराम पाइया मुनि पाइलेन प्रीति ※ सेइ रात्रि तथा राम करिलेन स्थिति

अगस्त्य मुनि कर्त्तृक वातापि ओ इल्वलेर वृत्तान्त

प्रभाते उठिया राम करेन गमन ※ लक्ष्मणे देखान राम अगस्त्येर वन
एइ वने छिल एक दानव दुर्ज्जन ※ तार वध मुनिवर करिला आश्रम
शुनिया लागिल लक्ष्मणेर चमत्कार ※ मुनि ह'ये असुरे मारेन कि प्रकार
श्रीराम बलेन, भाइ, शुन अवान्तर ※ इल्वल-वातापि छिल दुइ सहोदर
मायावी असुर तारा, नाना माया धरे ※ वातापि हइया मेष ब्रह्मवध करे
तार भाइ इल्वल, से जानिते संगीत ※ लोक मध्ये भ्रमे, येन अद्भुत पण्डित

---

१ अगस्त्य ऋषि २ दूसरे सूर्य ३ आश्रम में ।

इल्वल फिरत द्विजन जहँ पावै ※ सादर तिनहिं निमंत्रि बुलावै
मेष - मांस भोजन रुचिकारी ※ जेहि छन विप्र उदर निज धारी
इल्वल - हाँक[1] सुनत वातापी ※ उदर चीरि प्रगटत संतापी
विप्र-घात यहि विधि नित करहीं ※ वन-वन असुर सहोदर फिरहीं
उर अति छोभ, दनुज ढिग जाई ※ मुनि अगस्त्य कामना सुनाई
अतिथि-विप्र आयेउँ चलि दूरी ※ मेष - मांस - मंसा करु पूरी
अनाहार अतिकाल उपासू ※ रुचिभर मांस चहौं तव पासू
सुनि अति मोद असुर उर माहीं ※ मास-अभाव इतै मुनि नाहीं
माया - मेष अनुज वातापी ※ रंधति तासु मांस आतापी[2]
इत समोद जेंवत[3] मुनिराई ※ पुनि-पुनि खल परसत पुलकाई

दो० सुरसरि[4] आवाहन कियो, कौतुक कीन अगस्त्य ।
भागीरथी अलक्षिता[5], बसीं कमण्डल - मध्य ।। ११ ।।

छं० मेष-रूप वातापि-मांस कै रुचिर पाक आयेउ आगे ।
कुंभज[6]-कोप कराल ज्वाल नयनन सों अनल-बान त्यागे ।।
गंगोदक[7] प्रति ग्रास पान करि, उदर विपाक करन लागे ।
ब्रह्मायुध कर जाप, शाप मुनि, मायावी छल-बल भागे ।।

आदर करिया द्विज करे निमंत्रण ※ ऐ मेष-मांसे दिया कराय भोजन
ब्राह्मणेर उदरे मेषेर मांस थाके ※ वातापि वाहिर हय इल्वलेर डाके
पेट चिरि वाहिराय विप्रगण मरे ※ एइ रूप करि भ्रमे दुइ सहोदरे
ब्रह्मवध शुनिया अगस्त्य महामुनि ※ इल्वलेर ठाँइ दान माँगिला आपनि
दूर हैते आइलाम पथिक ब्राह्मण ※ मेषमांस मोरे आजि कराओ भोजन
मुनि वले बहुदिन आछि उपवास ※ भोजन करिब आजि गाड़लेर मास
मुनिर वचन शुनि इल्वल उल्लास ※ कहिल, खाइबे मुनि कत मेष-मास
वातापि गाड़ल हय मायार प्रवन्धे ※ गाड़ल काटिया मांस रान्धिल आनन्दे
वड़ आशा करि मुनि भोजनेते वैसे ※ हाते थाला करिया इल्वल आसेपाशे
'गंगादेवी' वलि मुनि मने-मने डाके ※ अलक्षिते गंगादेवी कमण्डलु ढोके
मुनि वले, बहुदिन मम उपवास ※ भोजन करिब आमि गाड़लेर मास
गंगाजल पिया मुनि ब्रह्ममंत्र जपे ※ मुष्टि-मुष्टि मांस से भोजन करे कोपे
मुनिर उदरे मांस प्राय हय पाक ※ बाहिर इल्वल डाके, घन-घन डाक
इल्वल बलिल, एस वातापि, वाहिरे ※ मुनि वले कोथा तुमि पावे वातापिरे

---

१ पुकार २ इल्वल ३ भोजन करते थे ४ गंगा ५ ओझल ६ अगस्त्य ऋषि ७ गंगाजल ।

'निकरु बन्धु बातापि! उदर-मुनि चीरि' पुकार करै इल्वल ।
गज पै सिंह समान गर्जि मुनि दनुज-विनास किये कौशल ।।
अट्टहास मुनिनाथ कियो, शठ ! बुद्धि-आसुरी तव निष्फल ! ।
उदर विपाक भयो हे दानव! पुनि-पुनि अनुज गोहार[1] विफल।।

अनुज वियोग, दनुज भरमाना ❋ मुनि त्यागेउ उत प्रबल अपाना
अगिनि बिषम तेंहि इल्वल जारा ❋ असुर - जुगुल इमि मुनि संहारा
दनुज पराभव, मुनिन सनाथा ❋ अभय तपोवन किय मुनिनाथा
दरसन सकल सिद्धि - सुखदाई ❋ सोइ अगस्त्य-उपवन यहु भाई
पहुँचे आश्रम दीनदयाला ❋ शिष्य एक भेंटेउ तेंहि काला
कहेउ लखन, मुनि-दरसन हेतू ❋ आये द्वार राम रघुकेतू
कहेउ शिष्य पुनि चलि मुनिधामा ❋ प्रस्तुत द्वार लखन-सिय-रामा
सुनि संवाद पुलकि मुनि कहहीं ❋ आनहु बेगि ! भुवनपति अबहीं
सदा योगिजन ध्यान लगावैं ❋ सबन-पुण्य ! ते उपवन आवैं
मुनि-आयसु, प्रवेश रघुनाथा ❋ दरस, कीन मुनि, मनहिं सनाथा
तीनिउ जन अगस्त्य-पद बन्दे ❋ निरखत छबि मुनि अमित अनन्दे
तजि बैकुण्ठ भये वनवासी ❋ को जानै मनगति-अविनासी

गर्ज्जिया येमन धरे सिंह भक्ष्य हाती ❋ इल्वले मारिते युक्ति करे महामति
पण्डित हइया तव बुझि नाहि घटे ❋ तोमार वातापि एइ आछे मम पेटे
से कथाय पासरिल असुर आपना ❋ बातकर्म्म करे मुनि येमन झंझना
वातकर्म्म अग्निते इल्वल पुड़ि मरे ❋ एइ मते मुनि दुइ दानवेरे मारे
ए रूप मारिया सेइ दानव दुर्ज्जय ❋ तपोवन रक्षा कैला मुनि महाशय
उपनीत मोरा से अगस्त्य - तपोवने ❋ सर्व्व कार्य्य सिद्ध हय जाँर दरशने
प्रवेशिते जान राम अगस्त्येर द्वारेरे ❋ हेनकाले शिष्य एक आइल बाहिरे
ताँहारे देखिया तबे बलेन लक्ष्मण ❋ आसिलेन राम मुनि-सम्भाष-कारन
एइ वाक्य शुनि शिष्य गेल अभ्यंतरे ❋ कहिल रामेर कथा मुनिर गोचरे
श्रीराम लक्ष्मण सीता द्वारे तिनजन ❋ आज्ञा विना केमने करेन आगमन
रामेर संवादे मुनि ह'ये आनन्दित ❋ आज्ञा करिलेन शिष्य, आनह त्वरित
सबाकार पूज्य राम आइलेन द्वारे ❋ योगिगण अनुक्षण ध्यान करे जाँरे
सबारे लइया गेल मुनिर आज्ञाय ❋ देखिया मुनिर मनोभ्रम दूरे जाय
अगस्त्येर चरण बन्देन तिनजन ❋ अगस्त्य बलेन, किवा अपूर्व्व दर्शन
गोलोक छाड़िया प्रभु, एले वनवास ❋ ना जानि तोमार आछे किवा अभिलाष

[1] पुकार ।

लखन अलौलिक अनुज न दूजा ※ सदा निरत सुख-दुख तव पूजा
तात! श्रान्त, लीजिय सत्कारू ※ जुरे जतन बटु[1], विविध प्रकारू
राम लखन सिय आयसु पाई ※ करि भोजन तहँ रैन बिताई
भोर कृत्य, पुनि चलि मुनि तीरा ※ विविध वारता - रत रघुबीरा

दो० मुनिवर! पितु के सत्य हित, कानन कीन प्रवास।
मुनि आयसु, मुनि-सीख धरि, चलि तहँ करइँ निवास ॥ १२ ॥

पंचवटी में श्रीराम-जटायु मिलन

कह मुनीश, हे पुण्यश्लोकू ※ जहँ तव चरन तहाँ सुरलोकू
तट-गौतमी[2] दिव्य वन जाई ※ निवसहु पञ्चवटी सुखदाई
बिसकर्मा-निर्मित धनुवाना ※ कुंभज[3] रामहिं कीन प्रदाना
लै मुनि विदा लखन-सिय साथा ※ दच्छिन दिसि गमने रघुनाथा
तेहि प्रदेस खग रहत जटाई ※ दसरथ-सुवन-खबरि सुनि पाई
धाय उपस्थित जहँ सियनाथा ※ दीन यथोचित परिचय गाथा
गरुड़-सुवन, मोंहि कहत जटाई ※ तव पितु-मम प्राचीन मिताई[4]
जेठ बन्धु खगपति सम्पाती ※ रामहिं कही कथा सब भाँती
कबहुँ भयेउँ दसरथहिं सहाई ※ जिमि अवधेस - मित्रता पाई

लक्ष्मणेर चरित्रे आमार चमत्कार ※ दुःखे-दुखी, सुखे-सुखी लक्ष्मण तोमार
पथश्रान्त आछ राम, करह भोजन ※ आज्ञामते शिष्यगण कैल आयोजन
मुनिर आदरे राम करेन भोजन ※ निशीथिनी तथाय बञ्चेन तिनजन
समापिया प्रातःकृत्य श्रीरघुनन्दन ※ अगस्त्येर सहित करेन आलापन
पितृ-सत्य पालिवारे आसियाछे वने ※ आज्ञा कर मुनिवर, थाकि कोन स्थाने

श्री रामेर पंचवटीते अवस्थान ओ जटायूर-परिचय

अगस्त्य बलेन शुनि रामेर वचन ※ येखाने थाकिबे, सेइ महेन्द्र भुवन
गोदावरी तीरे राम पञ्चवटी वन ※ सेइ स्थाने गिया सुखे थाक तिनजन
दिव्य धनुर्व्वाण विश्वकर्म्मार निर्म्माण ※ श्रीरामे अगस्त्य ताहा करिलेन दान
अगस्त्येर स्थाने राम लइया विदाय ※ चलेन दक्षिणे सीता - लक्ष्मण - सहाय
जटायु नामेते पक्षी, से देशे बसति ※ पाइया रामेर वार्त्ता आसे शीघ्रगति
श्रीरामेर सम्मुखे हइया उपस्थित ※ आपनार परिचय देन यथोचित
'जटायु' आमार नाम गरुड़नन्दन ※ तोमार बापेर मित्र आमि पुरातन
पक्षिराज सम्पाति आमार वड़ भाइ ※ आरो परिचय राम, तोमारे जानाइ
पूर्व्वे दशरथेर क'रेछि उपकार ※ तोंइ से ताँहार संगे मित्रता आमार

---

१ ब्रह्मचारी गण २ गोदावरी के किनारे ३ अगस्त्य ४ मित्रता।

अहा राम धनि लछिमन सीता * कीजिय चलि मम धाम पुनीता
चले विहंग - विनय अनुसारी * पञ्चवटी लखि उर सुख भारी
लखन ! रचहु इत कुटी ललामा * नित अस्नान गौतमी धामा
पल्लव - बाँस कुटी निर्माना * कही लखन, प्रभु कृपानिधाना
जेहि थल रुचिर सुआयसु पावौं * पर्न - कुटी रमनीक बनावौं
गोदावरि - सुतीर छबि पूरी * धवल पीत बहु शिला सिँदूरी
घाट प्रसून[1] खिले जहँ नाना * गुञ्जत भृङ्ग[2] मत्त मधु - पाना
लखन ! रचहु इति कुटी सुहावन * मञ्जुमयी सीतहिं मनभावन

सो० लखन जानि रुचि-राम, दिवस एक बिच निरमयेउ ।
रम्य अलौकिक धाम, लता, पता, तृन, सुमन-युत ॥

दो० द्वार कलश परिपूर्ण, पुनि, अगिनि पूजि रघुनाथ ।
गृह-प्रवेश सानन्द शुभ, कीन बन्धु-तिय साथ ॥ १३ ॥

वन्य कुटी छबि आनँद - साने * अवध - महल - ऐश्वर्य भुलाने
आयसु मिलत, सदा प्रभु पासा * कहि खगपति उड़ि चलेउ अकासा
पंख पसारि गयेउ छिन[3] देसू * इत विश्राम रैन अवधेसू
गोदावरि प्रभात अस्नाना * हेतु चले पुनि कृपानिधाना
सुरभित सुमन सुदर्शन राशी * सेवहिं देव नित्य अविनाशी

आइस आइस राम-सीता, मोर घरे * इहा कहि वासादिल अति समादरे
तिनजने अनुव्रजि ल'ये गेल पाखी * पञ्चवटी देखिया श्रीराम बड़ सुखी
लक्ष्मणे बलेन राम, बाँध वासा घर * गोदावरी जले स्नान करि निरन्तर
लक्ष्मण बलेन, देव, आपनि प्रधान * कोन् स्थाने बाँधि घर, कर संविधान
देखेन श्रीराम स्थान गोदावरी तीरे * सुशोभित श्वेत-पीत-लोहित प्रस्तरे
निकटे प्रसर घाट ताहे नाना फूल * मधुपाने मातिया गुंजरे अलिकुल
श्रीराम बलेन, हेथा बाँधे बासा-घर * जानकीर मनोमत करह सुन्दर
श्रीरामेर आज्ञाय लक्ष्मण बाँधे घर * एक दिने निर्म्माइल अति मनोहर
पूर्ण कुम्भ द्वारे स्थापि आनि पुष्पराशि * अग्निपूजा करिया हइला गृहवासी
लता-पाता निर्म्मित से कुटी पाइया * अयोध्यार अट्टालिका गेलेन भूलिया
जटायु बलेन, राम, आसि हे एखन * यखन करिबे आज्ञा, आसिब तखन
एत बलि पक्षिराज उड़िल आकाशे * दुइ पाखा सारि गेल आपनार देशे
रजनी वञ्चिया राम उठि प्रातःकाले * स्नान करिवारे जान गोदावरी जले
सुगन्धि सुदृश्य माना कुसुम तुलिया * नित्य-नित्य श्रीराम करेन नित्य-क्रिया

---

१ पुष्प २ भौंरे ३ क्षण भर में ।

सुलभ सुस्वादु कंद फल मूला ※ सुखद, सीत गोदावरि - कूला
सुखमय सदा सन्त - सत्संगा ※ करत केलि मिलि वृन्द-कुरंगा
सीय कबहुँ कुछ मनहिं बिसूरति[1] ※ भूलति निरखि मञ्जु प्रभु-मूरति
रामहिं देस, विदेस समाना ※ आत्मसरूप सदा भगवाना
अद्भुत लखन-चरित मनहारी ※ बन सेवत रामहिं अनुसारी

शूर्पनखा के नासा-कर्ण छेदन

पञ्चबटी गत दिवस अनेका ※ घटना घटित भई तहँ एका
शूर्पनखा भगिनी - दसकंधर ※ भ्रमत परी छबि मञ्जु नयन-तर
निरखि राम-लावण्य ललामा ※ मदमाती लागे सर-कामा
जिन छबि शत कन्दर्प[2] लजाहीं ※ सम-समान[3] अति सुख तिन पाहीं
छलिनि दुष्ट निसिचरी विरूपा ※ तजि निज रूप भई रति-रूपा
धर्म-किरीट जितेन्द्रिय रामा ※ पापिनि-फन्द न अंकुर जामा

दो० दुर्बल दुःसाहस करत आरोहन गिरिशृंग ।
चहति रिझावन, करति छल विपुल, सियापति संग ॥ १४ ॥

बहु करि हाव-भाव मृगनयनी ※ मुख प्रफुल्ल, पूछत मधुवयनी
क्षत्रिय-कुल पुनि तापस बेसू ※ कस विचरत इत कानन-देसू

फल मूल आहरण करेन भक्खन ※ सुमिष्ट शीतल गोदावरीर जीवन
ऋषिगण - सह सदा करेन निवास ※ करेन कुरंगगन - सह परिहास
सीतार कखन यदि दुःख हय मने ※ पासरेन तखनि श्रीराम दरशने
रामेर येमन देश, तेमनि विदेश ※ आत्माराम श्रीराम नाहिक कोन क्लेश
लक्ष्मणेर चरित्र विचित्र मने बासि ※ श्रीरामेर वनवासे जिनि वनवासी

(शूर्पनखार नासा-कर्ण-छेदन)

एरूपे रहेन पञ्चवटी तिनजन ※ हेन काले घटे एक अपूर्व्व घटन
रावणेर भग्नी, तार नाम शूर्पनखा ※ अकस्मात् रामेर सम्मुखे दिल देखा
भ्रमिते भ्रमिते गेल रामेर सदने ※ श्रीरामेरे देखिया से मातिल मदने
शतकाम जिनिया श्रीराम रूपवान ※ सुख हय, यदि मिले समाने समान
एत भावि मायाविनी दुष्टा निशाचरी ※ रति रूप धरे निज रूप परिहरि
जितेन्द्रिय श्रीराम धार्म्मिक शिरोमणि ※ रामे भुलाइबे किसे अधर्म्माचारिणी
पर्व्वत नाड़िते चाहे हइया दुर्व्वला ※ भ्रमाइते श्रीरामे पातिल नाना छला
हाव-भाव आविर्भाव करिया कामिनी ※ श्रीराम जिज्ञासा करे सहास्य बदनी
राजपुत्र बट किन्तु तपस्वीर वेश ※ एमन कानने केन करिले प्रवेश

१ याद करती थी २ कामदेव ३ बराबर की जोड़ी ।

दण्डक बसत दनुज अति घोरा ❋ फिरहु निसंक, न साहस थोरा
जो कहुँ मिलैं, दूर ते नाहीं[1] ❋ परहु सुदर्शन! संकट माहीं
चन्द्रबदनि को संग अनूपा ❋ तुम सम को यहु पुरुष सुरूपा
सरल हृदय, परिचय दिय रामा ❋ दसरथ-सुवन, अवध मम धामा
अनुज लखन, तिय सिया पियारी ❋ पालन - सत्य भये वनचारी
इति मम कथा, कहौ निज धामा ❋ को तुम हे सुन्दरी ललामा
तिलोत्तमा, उर्वसि धौं आई ❋ अनुपम छबि मेनका सुहाई
सहज सुभाव कहेउ प्रभु एही ❋ सूर्पनखा सुनि परिचय देही
रावन-भगिनि बास मम लंका ❋ एकाकिनि[2] चहुँ फिरहुँ निसंका
देस-विदेस रमहुँ, भय नाहीं ❋ बनौं नारि तव, रुचि मन माहीं
बन्धु लंकपति, तेज महाना ❋ सोवत कुम्भकर्ण बलवाना
भ्रात सुशील सुधर्म विभीषन ❋ बन्धु जुगुल इति खर अरु दूषन
अनुजा मैं इन सबन-दुलारी ❋ होहुँ धन्य लहि कृपा तुम्हारी
गिरि सुमेरु पर्वत कैलासू ❋ करहिं भ्रमन चहुँ तव सहवासू

दो० प्रियतम! चलिय सुदूर जहँ, नहिं मानव-सञ्चार।
केलि सकौतुक दोउ करैं, अहि-निसि सदा बिहार॥ १५॥

दण्डक कानने आछे दारुण राक्षस ❋ हेन वने भ्रम तुमि, ए बड़ साहस
बहुदूर नहे, तारा आछये निकटे ❋ हेन रूपवान तुमि, पड़िले संकटे
संगे देखि चन्द्रमुखी, इनि के तोमार ❋ केवा ए पुरुष तव समान आकार
सरल हृदय राम देन परिचय ❋ मम पिता राजा दशरथ महाशय
इनि भ्राता लक्ष्मण, प्रेयसी सीता इनि ❋ सत्यहेतु वने भ्रमि, शुनलो भामिनि
शुनिले आमार, देह निज परिचय ❋ कि बट आपनि, कोथा तोमार आलय
परम सुन्दरी तुमि लोके निरुपमा ❋ मेनका उर्व्वशी किंवा हवे तिलोत्तमा
जिज्ञासा करिल राम सरल हृदय ❋ शूर्पनखा आपनार देय परिचय
लंकाय वसति, आमि रावण-भगिनी ❋ नाना देशे भ्रमि आमि ह'ये एकाकिनी
देशे देशे भ्रमि आमि, कार नाहि भय ❋ तोमार कामिनी हइ, हेन वांछा हय
लंकापुरे बैसे भाइ दशानन राजा ❋ निद्रा जाय कुम्भकर्ण भ्राता महातेजा
अन्य भ्राता सुशील धार्म्मिक विभीषण ❋ भाइ खर-दूषन एखाने दुइ जन
अति आदरेर आमि कनिष्ठा भगिनी ❋ तोमार हइले कृपा, धन्य बलि मानि
सुमेरु-पर्व्वत आर कैलास-मन्दर ❋ तोमा सह बेड़ाइब, देखिब बिस्तर
तथा जाव यथा नाहि मनुष्य संचार ❋ तुमि आमि कौतुकेते करिब बिहार

---

१ वे दूर नहीं हैं २ अकेली।

मन भावै, चलि गगन उड़ाहीं ※ तव सीता एते गुन नाहीं
जो प्रतिरोध लखन-सिय करहीं ※ मम भच्छन अकाल ते मरहीं
लखहु राम मम रूप अनूपा ※ सिय-तुलना, मैं अति अतिरूपा
अति कुत्सित विरूप तव सीता ※ सम तिय लहि उर उपजहि प्रीता
मन-विहंग-रुचि जब जहँ देखी ※ दिन बिहार, निसि रंग बिसेखी
सियहिं सचेत राम पुनि कीन्हा ※ निसचरि-प्रति विनोद मन दीन्हा
तासु रूप-गुन-विरद बखानी ※ पुनि बोले रघुपति मृदु बानी
मम कर गहे सौति-सन्तापू ※ वरहु लखन गुन प्रबल प्रतापू
मञ्जुल छबि बिलसहु मम भाई ※ तरुण किशोर, सीख मम पाई
कनक-गौर, अब लौं तिय नाहीं ※ सुखद निवास करहु तिन पाहीं
सुलभ न जग तुम सम छबि-खानी ※ लखनहिं कहेउ, सत्य सब मानी
युवा अकेल! राग नहिं रंगा ※ लहहु संग मम रैन-तरंगा
कहेउ लखन, मैं रघुपति-दासा ※ उचित न अनुचर-प्रति अभिलासा
भुवन अनन्य अवध के राजा ※ पुजहु रानि बनि सकल-समाजा
सिय सों तुम सब भाँति बिसेसू ※ तव-तुलना गुन-रूप न लेसू
सिय मानुषी विफल तव आगे ※ रघुपति पाँय धरहु यहि लागे

मन:सुखे वेड़ाइव अन्तरीक्ष-गति ※ एत गुण नाहि धरे तव सीता सती
प्रतिवादी हय यदि जानकी - लक्ष्मण ※ राखिया नाहिक कार्य्य करिब भक्षण
आमारे देखह राम, केमन सुवेश ※ सीताय आमाय रूप अनेक विशेष
कुवेश तोमार सीता, बड़ह घृणित ※ हेन भार्य्या सने थाक, मने हय प्रीत
यखन येखाने इच्छा, सेखाने तखनि ※ विहार करिब गिया दिवस-रजनी
श्रीराम बलेन, सीता, न करिह त्रास ※ राक्षसीर सहित करिव परिहास
परिहास करेन श्रीराम सुचतुर ※ राक्षसीरे भाँड़ाइते बलेन मधुर
आमार हइले जाया पावे से सतिनी ※ लक्ष्मणेर भार्य्या हओ, एइ बड़गुनी
सुन्दर लक्ष्मण भाइ, मनोहर वेश ※ यौवन सफल कर, कहि उपदेश
लक्ष्मण कनकवर्ण परम सुन्दर ※ लक्ष्मणेर भार्य्या नाहि, तुमि कर वर
तोमा हेन रूपवती पावे कोन स्थले ※ सत्य ज्ञाने निशाचरी लक्ष्मणेरे बले
तुमि युवा हइया एकाकी वञ्च राति ※ रसक्रीड़ा भुञ्ज तुमि आमार संहित
लक्ष्मण वलेन, आमि श्रीरामेर दास ※ सेवकेर प्रति केन कर अभिलाष
भुवनेर सार राम, अयोध्यार राजा ※ रानी तुमि हइले करिबे सबे पूजा
गुण कि धरेन सीता, तोमार गोचर ※ तोमाय सीताय देखि अनेक अन्तर
रामेरे भजह तुमि ह'ये सावधान ※ मानुषी कि करिबेक तोमा विद्यमान

दो० वचनमात्र सुनि, लखन तजि, बिन जाने उपहास ।
मदमाती पुनि धाय उत, गई राम के पास ॥ १६ ॥

पुनि अभिराम राम ! मैं आई ※ भच्छहुँ सिय, मग-काँट नसाई
ग्रसन हेत, मुख दनुजि पसारा ※ हेरि विकल सिय भय विस्तारा
दच्छिन ओट[1] बाम कहुँ लेही ※ लखे राम आकुल वैदेही
सूर्पनखा धावै जित सीता ※ काँपति कदली-सरिस सभीता
बोले रघुपति, तजि उपहासू ※ लखन करहु दानवी विनासू
लखन प्रकोपि बान सन्धाना ※ काटे तासु नासिका - काना
कुत्सित ! नासा-श्रवन नसाने ※ अधर-चिबुक[2]-मुख शोनित-साने[3]

चौदह राक्षस सेनापतियों का वध

गात रक्त, नासिका छिपाई ※ खर-दूषन ढिग बिलपत जाई
टेरि सैनपति कह खर-दूषन ※ केहि मम भगिनी कीन कुरूपन
सिंह-भाग जम्बुक किमि ताका ※ निज-हित मूढ़ कीन विष-पाका
वर्नहि सिन्धु-तट दनुजन-थाना[4] ※ सहस चतुर्दस भट बलवाना
भय न लंकपति ! हमहिं न जानै ※ गरल सँजूति मृत्यु सन्मानै

उपहास नाहि बुझे वाक्यमात्रे धाय ※ लक्ष्मणेरे छाड़िया रामेरे काछे जाय
पुनर्व्वार आइलाम राम, तव पाशे ※ घुचाइव व्याघात सीतारे गिलि ग्रासे
बदन मेलिया जाय सीता गिलिवारे ※ त्रासेते विकल सीता राक्षसीर डरे
क्षणे वामे, क्षणेते दक्षिणे जान सीता ※ देखिलेन रघुनाथ सीतारे व्यथिता
जेइ दिके जान सीता, से दिके राक्षसी ※ राक्षसीर डरे काँपे जानकी रूपसी
श्रीराम बलेन, भाइ, छाड़ उपहास ※ इंगिते बलेन, कर इहार विनाश
क्रोधेते लक्ष्मण वीर मारिलेन बाण ※ एक बाणे ताहार काटिल नाककान
खान्दा नाक धान्दा लागे, भासे रक्त स्रोते ※ राक्षसीर ओष्ठाधर भासिल शोणिते

शूर्पनखार रक्षक चतुर्द्दश राक्षससेनापति-वध

शूर्पनखा जाय खर-दूषनेरे पाशे ※ नाके हात दिया काँदे, रक्ते मात्र भासे
कहे खर-दूषन राक्षस सेनापति ※ कोन् बेटा कैल हेन भगिनी दुर्गति
ए देखि बाघेर घरे घोगेरे बसति ※ मारिवार औषध के बाँधिल दुर्म्मति
सागरेर कूले थाना वनेर भितरे ※ उखाड़िया कोन् बेटा एल मरिवारे
खर-दूषनेर थाना यमेर समान ※ योद्धा चौद्द हाजार जाहाते बलवान
रावणेरे नाहि माने, आमारे ना जाने ※ मरिवार उपाय सृजिल कोन् जने

---

१ आड़ लेती २ ओंठ-ठोढ़ी ३ रक्तभरे ४ राक्षसों की चौकी ।

बोली बैठि[1], छीन अति बानी ❋ तात! लखे वन दुइ नर प्रानी
ते मुनिवेस जदपि मुनि नाहीं ❋ फिरत, नारि सुन्दरि तिन पाहीं
अधम वासना परि जेहि काजा ❋ भई कुगति बरनत मोहि लाजा
मानुस-मास साध उर लाई ❋ श्रवन-नासिका जाय नसाई

दो० प्रमुख चतुर्दस सैनपति, तिन खर कहेउ बोलाय।
राम-लखन हनि, देहु पुनि, गृद्ध-वायसन[2] आय ॥ १७ ॥

जे नर हेतु भगिनि-अपमाना ❋ करहु माँस तिन शोनित पाना
मूसल मुद्गर सैल सुहाये ❋ जिमि यमदूत, सैनपति धाये
मारु-मारु पुनि हाँक लगावा ❋ चहुँ दिसि असुर-कुलाहल छावा
जहँ अवधेस, जुरे सब वीरा ❋ सविनय निकसि कहेउ रघुवीरा
वन फल-मूल गुजर! केहि कारन? ❋ विन अपराध करौ रन धारन
दानव दुष्ट, विनय-रघुनन्दन ❋ सुनि सकोप बोले करि गर्जन
तापस जीवन, हमहिं न रोषू ❋ भगिनि विरूप कीन केहि दोषू
ए तव कर्म, न जीवन-साधा ❋ केहि मुख पूछत निज अपराधा
दुइ मानुष, इत कटक अपारा ❋ तिन आयुध छिन तव संहारा
सकल निसाचर यहि विधि कहहीं ❋ वर्षन अस्त्र उपक्रम[3] करहीं

बसिया त शूर्पनखा कहे धीरे धीरे ❋ आसियाछे दुइ नर वनेर भितरे
मुनि तुल्य वेश धरे किन्तु नहे मुनि ❋ संगे ल'ये भ्रमे एक सुन्दरी कामिनी
एक कार्य्ये गिया भ्रष्टा कहे आर काज ❋ मनेर वासना से कहिते बासे लाज
गेलाम मनुष्य मांस खाइवार साधे ❋ नाक कान काटे मोर एइ अपराधे
छिल चौद्दजन जे प्रधान सेनापति ❋ जूझिवारे खर सवे दिल अनुमति
रामेरे मारिया आन लक्ष्मण सहित ❋ गृध्र आर काके खाक् तादेर शोणित
जार ठाँइ भगिनी पाइल अपमान ❋ तार रक्त-मांस सबे कर गिया पान
लइया झकड़ा शेल मुषल मुद्गर ❋ सेनापति सवे धाय यमेर किंकर
मार मार वलिया धाइल निशाचर ❋ कोलाहले पूरित हइल दिगंतर
सकले आइल, यथा श्रीराम-लक्ष्मण ❋ बाहिरे आसिया राम कहेन तखन
फल-मूल खाइ मात्र, वास करि वने ❋ विना अपराधे आसि युद्ध कर केने
एइमत विनये कहिले रघुवर ❋ रामेरे डाकिया वले दुष्ट निशाचर
तपस्वीर मत थाक, कि करे वारण ❋ भगिनीर नाक-कान काट कि कारण
जेइ कर्म्म करिलि जीवने नाहि साध ❋ कोन् मुखे वलिस्, ना करि अपराध
तोरा दुइ मनुष्य आमरा बहुजन ❋ आमादेर अस्त्राघाते मरिबि एखन
एइमत कहिया से सकल राक्षस ❋ करे अस्त्र-वरिषन करिया साहस

१ आवाज़ बैठी हुई २ गीध-कौओं को ३ पुरुषार्थ।

तजेउ विशिष[1] रघुपति-कोदण्डा ※ मूसल मुद्गर अगनित खण्डा
चौदह बान हने पुनि रामा ※ दनुज चतुर्दस गे यमधामा
लौटि निषंग[2] राम-सर आये ※ प्रभु-प्रताप खल सकल नसाये
कृत्तिवास पण्डित कृत गाथा ※ यश पुराण-सम्मत रघुनाथा

श्रीराम के साथ खर और दूषण का युद्ध

निरखि चतुर्दस सुभट विनासा ※ सूर्पनखा-उर अतुलित त्रासा
खरहिं कहेउ, दानव-दल जेता ※ निष्फल कुजस लीन रन खेता

सो० राम-वान निष्प्रान, किय नायक जे चतुर्दस ।
सुनि खर असुर-प्रधान, भगिनि दीन सन्तोष बहु ॥

दो० छिन मेटहुँ उर-ताप तव, लखु मम तेज अनन्त ।
तीक्ष्ण अस्त्र पुनि लिय सहस-चौदह भट बलवन्त ॥ १८ ॥

मणि, प्रवाल-बहु साज समेतू ※ 'खर' विचित्र रथ अद्भुत केतू
इत-उत[3] रवि-शशि सम उजियारा ※ दुति दमकति मणि-मुक्ता-हारा
अद्भुत स्यन्दन सुबरन साजी ※ जोरे आठ पवनगति बाजी[4]
अगनित अस्त्र-शस्त्र पुनि लीना ※ विजय-खंभ गहि खर आसीना

एक बाणे रामचन्द्र काटेन सकल ※ खण्ड खण्ड हइल से मुद्गर मुषल
चतुर्द्दश बाणे राम पूरेन सन्धान ※ चतुर्द्दश निशाचर त्यजिल परान
नेउटिया आसे बाण श्रीरामेर तूणे ※ राक्षस विनाश हय श्रीरामेर गुणे
कृत्तिवास पण्डित विदित सर्व्वदिके ※ पुराण शुनिया गीत रचिल कौतुके

श्रीरामेर सहित खर ओ दूषणेर युद्ध

चौद्दजन युद्धे पड़े शूर्पनखा देखे ※ त्रास पेये कहे गिया खरेर सम्मुखे
जुझिवारे पाठाइला भाइ, चौद्दजन ※ अपयश करिल न साधि प्रयोजन
जेइ चौद्द राक्षसे पाठाले रणस्थान ※ रामेर बाणेते तारा हाराइल प्रान
खर बले देख तुमि आमार प्रताप ※ घुचाइब एखनि तोमार मनस्ताप
लइया चलिल निज अस्त्र खरशान ※ निशाचर चतुर्द्दश-सहस प्रधान
प्रवाल-प्रस्तर-छटा ताहे नानामणि ※ विचित्र पताका-ध्वज रथेर साजनि
रथगुला चन्द्र-सूर्य्य जिनिया उज्ज्वल ※ प्रवाल - मुकुता - हार करे झलमल
कनक रचिल रथ विचित्र निर्म्माण ※ वायुवेगे अष्टघोड़ा रथेरे योगान
अस्त्र शस्त्र तावत् तुलिया रथोपर ※ रथ-स्तंभ धरि उठे महाबली खर

१ बाण २ तरकस ३ इधर-उधर ४ घोड़े ।

ध्वज गृद्धिनि गिरि[1] असगुन कीना ❋ रथ गति मन्द, तुरग गति-हीना
घन सम दूषन-गर्जन घोरा ❋ हनौं राम पुनि लखनकिशोरा
असुर अपार कटक छबि छाई ❋ लखन हेरि बोले रघुराई

श्रीराम के साथ युद्ध में दूषण का पतन

सैन-सोर श्रवनन नियराई ❋ सियहिं अन्त कहुँ राखहु जाई
मम बल दुगुन रहे तुम पासा ❋ किन्तु रनस्थल सिय अति त्रासा
बेगि गुफा राखहु सिय जाई ❋ मानि लखन आयसु-रघुराई
गये सुदूर; लखैं इत सर्वा ❋ जुरे सुरासुर नभ गन्धर्वा
कौतुक राम पराक्रम एका ❋ सहस चतुर्दस दनुज अनेका
'दूषन' डपटि कही रघुनाथा ❋ चहत मनुज, रन दानव-साथा
'दूषन' बचन मोद 'खर' पावा ❋ 'खर' षट-सहस सेन लै धावा
बल[2] समान, 'दूषन' रनरंगा ❋ युगुल सहस भट 'त्रिशिरा' संगा
चौदह सहस दनुज चहुँ सोरा[3] ❋ 'खर' सकोप, हुमकेंउ प्रभु ओरा

दो० यथा सुशोभित सिंह परि, बिपुल शृगालन-वृन्द ।
सोहत निसिचर-निकर बिच, रघुपति रघुकुल-चंद ।। १९ ।।

आचम्बिते गृधिनी पड़िल रथध्वजे ❋ ना चले रथेर घोड़ा चले मन्द-तेजे
मेघेर गर्ज्जने गर्ज्जे राक्षस दूषण ❋ रामेरे मारिबे आगे, पश्चाते लक्ष्मण
राक्षस धाइल यत परम कौतुके ❋ कृत्तिवास रामायण रचे मनःसुखे

श्रीरामेर सह युद्धे दूषणेर मृत्यु

श्रीराम बलेन, शुन सैन्य कलकलि ❋ सीता ल'ये लक्ष्मण, त्यजह रणस्थली
थाकिले आमार काछे हइते दोसर ❋ किन्तु हेथा थाकिले पावेक सीता डर
विलम्ब ना कर भाइ, चलह सत्वर ❋ सीताके राखह गिया गुहार भितर
एत यदि लक्ष्मणेरे वलिलेन रामे ❋ दूरेते लक्ष्मण सीता गेलेन सम्भ्रमे
देव-दैत्य-गन्धर्व्व आइल सर्व्वजन ❋ अन्तरीक्ष थाकिया सकले देखे रन
एका राम चतुर्द्दश सहस राक्षस ❋ केमने जिनिवे राम, बड़ह साहस
डाकिया श्रीराम, वले दूषन तखन ❋ मनुष्य हइया तोर मोर सने रण
दूषनेर वचन शुनिया खर हासे ❋ राक्षस हाजार-छय सहित आइसे
त्रिशिरार संगे दुइ हाजार राक्षस ❋ खर सैन्य यत, तत दूषनेर वश
चतुर्द्दश सहस्र राक्षस - कलकलि ❋ श्रीरामे रुषिया जाय खर महाबली
वेष्टित-राक्षसगण-मध्ये राम एका ❋ शृगाल-वेष्टित येन सिंह जाय देखा

१ गिर कर २ सेना ३ शोर, कुलाहल ।

अष्ट तुरग-रथ सारथि प्रेरे ※ हने विषम 'खर' बान घनेरे
प्रभु सर साधि कीन सन्धाना ※ खंड-खंड किय निसिचर-बाना
बरसावत सर दोउ धनु-वीरा ※ अतिसय जर्जर दुहुन-सरीरा
आहत कीन परस्पर गाता ※ युगुल गात चहुँ रक्त प्रपाता
जोरे चाप सहस पुनि सायक ※ दनुजन हने कोपि रघुनायक
मरे-मरे चहुँ परी पुकारा ※ भगदर[1] निसिचर-कटक-मँझारा
सहस असुर पठये यमधामा ※ सर-गन्धर्व गहेउ पुनि रामा
अखिल निसाचर रक्त नहाये ※ भ्रमित[2], परस्पर रारि मचाये
एकहि एक घात प्रतिघाता ※ षट-सहस्र खर-सैन निपाता
सैन-विहीन, शेष 'खर' धीरा ※ 'दूषन', कुगति निहारति तीरा
लीन कमान, कीन रन घोरा ※ महाशूल प्रेरेउ प्रभु ओरा
बहु सर राम तजैं तकि शूला ※ छुवत शूल ते सब प्रतिकूला
अक्षय शूल, पूजि विधि, पावा ※ वर-विरञ्चि जग अमिट प्रभावा
राम निपुन-रन, युक्ति नवीना ※ शूल सहित भुज खंडित कीना
चन्दन - युत दूषन - भुजदंडा ※ भयेउ अचेत, गिरत भुइँ खंडा
दुसह पीर दूषन निष्प्राना ※ देवन रघुपति-बिरद बखाना

सारथि चालाय रथ, ताहे अष्टघोड़ा ※ रामेर उपरि फेले मारिल झकड़ा
सन्धान पूरिया राम छाड़िलेन बान ※ काटिया खरेर बान कैला खान-खान
दुइ जने वाण वर्षे, दोंहे धनुर्द्धर ※ दोंहेदोंहा विन्धि वाणे करिल जर्ज्जर
उभयेर गा रहिया रक्त पड़े स्रोते ※ निज निज गात्र रक्त दुइ-वीर तिते
श्रीराम सहस्र वाण जूड़िया धनुके ※ अति क्रोधे मारिलेन राक्षसेर बुके
निशाचरगण-मध्ये उठे कलकलि ※ मरि मरि बलिया पलाय कतगुलि
सहस्र राक्षस पड़े श्रीरामेर वाणे ※ जोड़ेन गन्धर्व अस्त्र राम धनुर्गुणे
सकल राक्षस वाणे हैल रक्तमय ※ आपना आपनि कारो नाहि परिचय
आपना-आपनि करे निर्घात प्रहार ※ खरेर हाजार छय राक्षस संहार
पड़िल सकल वीर, खर मात्र आछे ※ सेनापति दूषण आइल तार काछे
आगु ह'ये प्रवेशिल आपनि संग्रामे ※ महाशूल निक्षेप से करिल श्रीरामे
ये वाण छाड़ेन राम शूल काटिवारे ※ शूले ठेकि पड़े, किछु करिते न पारे
पेयेछे अक्षय शूल बिधातार वरे ※ त्रिभुवने सेइ वर अन्यथा के करे
वाणेते पण्डित राम, नाना बुद्धि घटे ※ शूल सह दूषणेर दुइ हात काटे
दूषणेर दुइ हात चन्दने भूषित ※ काटा गेल, पड़िल से हइया मूर्च्छित
ज्वालाय दूषण वीर त्यजिल परान ※ देवगण श्रीरामेर करिछे बाखान

---

१ भगदड मची २ गंधर्व बाण के प्रभाव से भ्रम में विमूढ़ ।

दो० सुमन-वृष्टि सुरगन करहिं, जय दुन्दुभी बजाय।
कृत्तिवास, दूषन-मरन रहे राम-जय गाय ॥ २० ॥

श्रीराम के साथ युद्ध में 'खर' की मृत्यु

छं० रन-खेतन दूषन जूझतही, खर कातर, नैनन नीर झरै।
'बिन नायक सैन कियो रघुनायक', धाय कै वीर प्रहार करै॥
कम राम न विक्रमधाम असुर, भट सों भट कोपि लरै अभिरै।
नभ अर्बुद-खर्बुद बान, चहूँ अँधियार, नहीं जग सूझि परै॥
ललकारि कहै 'खर', आजु लखौं तव बान-प्रताप कहा गिनती।
मम हाथ विनास ललार लिखेउ, इत आवन की उपजी कुमती॥
जहँ देव लुकान फिरैं भय सों, तहँ मानव-दर्प की काह गती।
सुनु दानव! प्रान हरौं तव आजु, सरोष कहेउ पुनि सीयपती॥

जो धनु-चाप दीन शरभंगा ※ सो सठ! अक्षय दिव्य निषंगा[1]
राम-कथन सुनि चाप-प्रतापा ※ 'खर' खल-हृदय कुसंसय व्यापा
तासु त्रास लखि, प्रभु सर मारे ※ खर कोदण्ड[2] खण्ड करि डारे
टूट चाप, उपजी उर चिन्ता ※ अवर लीन धनु दनुज तुरंता
पुनि तकि बान-बुन्द झरिलाये ※ जल-थल-गगन बिपुल चहुँ छाये

कृत्तिवास रामायण गाहिल कौतुके ※ दूषणादि सेनानी पड़िल अरण्यके

श्रीरामेर सहित युद्धे खरेर मृत्यु

दूषण पड़िल, खर लागिल भाविते ※ कातर हइया वीर नेत्र जले तिते
हाते अस्त्र करिया धाइया आगुसारे ※ एत सेनापति मोर एका राम मारे
रामे देखि खर वीर अग्निर आकार ※ दशदिक् जलस्थल वाणे अन्धकार
अर्व्वुद खर्व्वुद वाण एड़िया से खर ※ डाक पाड़ि रामे वीर करिछे उत्तर
मानुष हइया तोर एत अहंकार ※ देवगण नाहि पारे, तुई कोन् छार
कत वाण मारिस्, अग्रेते याक् देखा ※ आमार हस्तेते तोर मृत्यु आछे लेखा
श्रीराम बलेन, खर, लब् तोर प्राण ※ मुनिस्थाने पेयेछि अजेय धनुर्व्वाण
शरभंग दियाछेन ए अक्षय तूण ※ यत चाइ तत पाइ, नाहि हय न्यून
श्रीरामेर वचनेते लागे चमत्कार ※ त्रासे खर चिन्तिल संशय आपनार
त्रासित देखिया खरे राम एड़े वाण ※ काटिया खरेर धनु करे खान खान
काटा गेल धनुक, चिन्तित ह'ये खर ※ लइल धनुक आर अति शीघ्रतर
रामेर उपर करे वाण - वरिषन ※ जल - स्थल चतुर्दिक छाइल गगन

१ तरकश २ धनुष।

नाना अस्त्र अनन्त प्रकासा ※ 'जीतहुँ राम' अमित उल्लासा
भंजेउ दनुज चाप-भगवाना ※ धनु-अगस्त्य पुनि प्रभु संधाना[1]
आयुध दिव्य अलौकिक करनी ※ निसिचर-चाप गिरेउ कटि धरनी
स्वयं विष्णु लीन्हे कर बाना ※ खण्ड-खण्ड रथ-ध्वजा-निसाना
धरनि बिलोटत सारथि-सीसा ※ अनल बान छाँड़ेउ जगदीसा
हने प्रान तिन अष्ट तुरंगा ※ पुनि-पुनि असुर-चाप किय भंगा
'खर' अभिमंत्रि गदा हनि मारी ※ चलत तहाँ बरसत अगियारी
उगिलत अनल, बिटप सब जारे ※ गगन प्रकाश गुर्ज बिस्तारे
अगिनि शमन[2] जनि, गदा अनूपा ※ त्रिभुवन मानहुँ अनल-स्वरूपा
सो लखि 'आग्नेय' सर धारा ※ अन्तरिक्ष प्रति रघुपति मारा
त्रिशिख[3] तजै गिरि सरिस अँगारा ※ कौतुक-गदा भई जरि छारा

दो० लखि अवसर तजि विपुल सर, खर-तन जर्जर कीन ।
दनुज-कलेवर, राम सर, बिन्धि रक्त रँगि दीन ॥ २१ ॥

खर निरस्त्र, हिय धरकत[4], धाई ※ चहेउ कुपित रघुपतिहिं चबाई
लीलहिं राम, हेतु 'खर' धावा ※ दिब्य बान रघुनाथ चलावा

नाना अस्त्रे दशदिक करिल प्रकाश ※ रामे जिनिलाम बलि मनेमने हास
ये धनुके रघुनाथ करिछेन रन ※ राक्षसेर वाणे ताहा हइल छेदन
ये धनुक दिलेन अगस्त्य मुनिवर ※ से धनुके सन्धान पूरेन रघुवर
स्वयं विष्णु रघुवीर पूरिला संधान ※ काटिलेन खरेर हातेर धनुर्व्वान
रथ-ध्वज-पताका करेन खण्ड-खण्ड ※ भूमिते लोटाय रणे सारथिर मुण्ड
अग्निवाण एड़ेन धनुके दिया चाड़ा ※ काटिलेन श्रीराम-रथेर अष्ट घोड़ा
रामेर दुर्ज्जय वाण तारा हेन छाटे ※ आरवार खरेर हातेर धनु काटे
मंत्र पड़ि खर वीर महागदा एड़े ※ यतदूर जाय गदा ततदूर पोड़े
गाछेर निकटे गेले गाछ सब ज्वले ※ आलो करि आसे गदा गगनमण्डले
अग्नि जले गदाते, ना हय शान्त वाणे ※ त्रिभुवन एकाकार, छाइल आगुने
आर वाण छाड़ेन श्रीराम मंत्र प'ड़े ※ पृथिवी छाड़िया वाण अन्तरीक्ष जोड़े
वाण मुखे ज्वले अग्नि पर्व्वत आकार ※ अग्निवाणे गदा तार हइल संहार
पाइलेन श्रीराम तखन अवसर ※ खरेर शरीर वाणे करेन जर्ज्जर
सर्व्व कलेवर तार तितिल शोणिते ※ रक्ते राँगा ह'ये वीर चाहे चारिभिते
हाते अस्त्र नाहि आर, रथ हैते उले ※ रुषिया श्रीरामे वीर गिलिवारे चले
रामे गिलिवारे खर धाय महारोषे ※ श्रीराम ऐषिक वाण जूड़िलेन त्रासे

१ निशाना मारा २ शान्त ३ बाण ४ धड़कता था ।

गिरत बज्र जिमि पर्वत फारी * तिमि सर निसिचर-अंग बिदारी[1]
निसिचर चौदह सहस-निकंदन * सुरगन, जस गावत रघुनन्दन
वचन विरञ्चि, राम सन् कहहीं * देव सदा तव मंगल करहीं
तव रन निरखि शिवहिं संतोषू * सुरनाथहिं सब बिधि परितोषू[2]
वरुण कुबेर अष्ट - दिक्पाला * प्रस्तुत प्रणवत दीनदयाला
तव प्रसाद स्वच्छन्द बिहारू * सुरगन सुखी सहित परिवारू
चलि सिय-लखन राम-पद बन्दे * सुखद वार्ता सकल अनन्दे
विक्षत गात-नाथ, सिय देखी * नयन नीर, उर छोभ बिसेखी
रन, कौतुक बरनहिं रघुबीरा * सुमिरि कैकयी, सीतहिं पीरा

रावण-शूर्पनखा संवाद

लखि रन-राम बिकल उर संका * सूपनखा गवनी पुनि लंका
कुगति कहत, जहँ निसिचर-भूपा * कुत्सित, नाक न कान, विरूपा
कहत निरखि जन, यह कुल-नासन * खर-दूषन ग्रसि, ग्रसै दसानन
सोहत सभा भूप दसमाथा * सुरन विराजत जिमि सुरनाथा
आसन निहित सचिव आसीना * सूपनखा, तहँ दरसन दीना

वज्राघाते पर्व्वत येमन दुइ - चिर * गाये प्रवेशिले वाण पड़े खर - वीर
चतुर्दश सहस्र राक्षस पड़े रणे * श्रीरामेर वाखाने आसिया देवगणे
विरिञ्चि वलेन, राम, कर अवधान * सकल देवता करे तोमार कल्यान
हइलेन शंकर तोमार रणे सुखी * महेन्द्र तोमाते तुष्ट तव रण देखि
कुवेर - वरुण आदि यत देवगण * अष्टलोकपाल आदि करेन स्तवन
तोमार प्रसादे एवे वेड़ावे स्वच्छन्द * यथा-तथा देव-देवी रहिवे आनन्द
श्रीरामे वन्देन गिया जानकी-लक्ष्मण * करेन सकले वीर इष्ट संभाषण
अस्त्रक्षत देखिया रामेर कलेवरे * जानकीर नेत्रनीर झरझर झरे
ताँहारे कहेन राम रण विवरण * शुनि सीता कैकयीके करिल स्मरण

रावण-शूर्पनखा संवाद

रामेर संग्राम यत शूर्पनखा देखे * शंकाकुला लंकाय चलिल मनोदुःखे
रावणे कहिते जाय आत्म-समाचार * नाक-कान काटा तार बीभत्स आकार
जार काछे जाय खाँड़ी, सेइ भय पाय * खेये खर-दूषणे रावणे खाइते जाय
सभा करि बसियाछे रावण भूपति * सुरगण सहित जेमन सुरपति
वसियाछे निजनिज स्थाने मंत्रिगण * हेनकाले शूर्पनखा दिल दर्शन

१ फाड़ दिया २ तृप्ति ।

दो० नाक न कान भयंकरी, जहँ लंकेस भुआल।
कहत सभा बिच दुर्बचन, मुख सोवत दसभाल ॥ २२ ॥

अहि-निसि रत कौतुक-शृंगारू ※ दण्डक अखिल असुर संहारू
राम अकेल, कामिनी संगा ※ साथ न सैन तुरंग - मतंगा[1]
एक राम सब दनुज निपाते ※ सुनि बिबरन मुख-सूपनखा ते
कटक-वेष किमि बनहिं प्रवेसू[2]? ※ अहह! बरनु, पूछत लंकेसू
को पितु ? पुनि कहु तासु प्रतापू ※ कस बिक्रम बल सायक-चापू
सुनु रावन, ते दसरथ-नन्दन ※ बन भरमत पितु-सत्य निबाहन
तापस बेस, जदपि मुनि नाहीं ※ अति कमनीय नारि तिन पाहीं
सहस चतुर्दस निसिचर कानन ※ एक राम-सर सकल विदारन
राम-अनुज बल-लखन अपारा ※ तिन सों समर न कोहु निस्तारा
भामिनि - राम पद्मिनी रूपा ※ विश्वमुग्ध कमनीय अनूपा
सिय छबि अतुल, रूप जग नाहीं ※ रम्भादिक उर्वसी लजाहीं
नरपुंगव तुम पुरुष - समाजू ※ तव अनुरूप तासु छबि साजू
करि छल राम-लखन भरमाई[3] ※ हरहु बेगि, राखहु सिय लाई
जिमि कुल-दनुज दीन सन्तापू ※ तिय-बिछोह परि बिनसहि आपू

नाक कान काटा तार मूर्त्ति खानि कालि ※ सभा मध्ये रावणेरे देय गालागालि
शृंगार-कौतुके राजा, थाक रात्रि दिने ※ राक्षस करिते नाश राम आइल वने
स्त्री-मात्र ताहार संगे, केह नाहि आर ※ यत छिल दण्डकेते करिल संहार
हाती-घोड़ा नाहि तार, जानकी दोसर ※ यतेक राक्षस मारे राम एकेश्वर
शुनि शूर्पनखार दुःखेर विवरण ※ हाहाकार करिया जिज्ञासे दशानन
कतेक कटक तार, कि प्रकार वेश ※ भयंकर वने केन करिल प्रवेश
काहार नन्दन राम, केमन सम्मान ※ केमन विक्रमी से, केमन धनुर्व्वान
शूर्पनखा बले दशरथेर नन्दन ※ पितृसत्य पालिया बेड़ाय वने - वन
तपस्वीर वेश धरे, नहे त तपस्वी ※ संगे करि ल'ये भ्रमे परम रूपसी
चतुर्दश सहस्र राक्षस वने छिल ※ एका राम सकलेरे संहार करिल
रामेर कनिष्ठ से लक्ष्मण महावीर ※ तार सह समरे हइबे केबा स्थिर
रामेर महिषी सीता, साक्षात् पद्मिनी ※ त्रैलोक्यमोहिनी-रूप नारी-शिरोमणि
सीतार रूपेर सम नाइ आर नारी ※ ऊर्व्वशी, मेनका, रंभा हारे रूपे तारी
येमन महत् तुमि पुरुष समाजे ※ तार रूप केवल तोमाते मात्र साजे
रामेरे भाँड़ाओ, आर भाँड़ाओ लक्ष्मणे ※ आनह रमणीरत्न यत्ने एइ क्षणे
येमन सन्ताप दिल से राक्षस - कुले ※ तेमन से मरुक सीतार शोकानले

१ घोड़े-हाथी २ कितनी सेना, कैसा वेष, वन क्यों आये ? ३ मटक कर।

सूपनखा - मुख सुनी कहानी ※ सिय छबि उर-लंकेस समानी
सभा-सदन मन जुगुति बनावै ※ किमि छलि राम, सिया हरि लावै

दो० शूर्पनखा रोदन मनौ, सीस मृत्यु दसकंध ।
बिधि अच्छर भावी प्रबल, अकथ भाग्य निर्बन्ध ।।

सो० कोउ मन-मन मुसकान, सूपनखा बिलपत निरखि ।
भगिनि-कुगति धरि ध्यान, लंकापति समुझावही ।। २३ ।।

रावण-मारीच परामर्श

दिवस एक दसमुख-रुख पावा ※ सारथि तुरत बिमान सजावा
पुष्पक रथ बिज्ञान - प्रकासू ※ स्वयं समीर[1] सारथी जासू
हीरा मुक्ता मानिक रत्ना ※ सुबरन-साज खचित बहु यत्ना
रथ-छबि पुरत मनोरथ सारे ※ अष्ट-तुरग कौतुक बिस्तारे
लंकेश्वर रथ दिब्य सुहावा ※ बिद्युत गति समान रथ धावा
देस, नदी - नद बहु उतराई ※ सिन्धु पार शत योजन जाई
तहाँ श्याम-बट[2] बिटप बिशाला ※ अस्सी योजन मूल पताला
पद प्रकाण्ड[3] सत्तर, तरु-डारी[4] ※ शत योजन चहुँ दिसि बिस्तारी
शाखा चारि सरिस गिरि-शृंगा ※ जहँ ऋषि बालखिल्य मुनि संगा

शूर्पनखा यत बले, राजा सब शुने ※ सुन्दरी सीतार कथा भावे मने-मने
युक्ति करे रावण बसिया सभास्थले ※ रामे भाँड़ाइया सीता आनिव कि छले
विधातार माया नर बूझिते के पारे ※ शूर्पनखा कान्दिल रावण वधिवारे
केह शूर्पनखार कथाय मन्द हासे ※ गाइल अरण्य-काण्ड गीत कृत्तिवासे

रावण का मारीच से परामर्श

आर दिन दशानन आइल बाहिरे ※ बुझिया राजार मन सारथि सत्वरे
आनिल पुष्पक रथ अपूर्व्व गठन ※ से रथेर सारथि आपनि समीरन
हीरा-मुक्ता-माणिक्य प्रभृति रत्नगणे ※ खचित, रचित कत संचित काँचने
मनोरथे ना आइसे रथेर सौन्दर्य्य ※ अष्ट अश्व बद्ध ताहे, देखिते आश्चर्य्य
सेइ रथे आरोहण करे लंकेश्वर ※ विद्युतेर प्राय रथ चलिल सत्वर
नाना देश नद-नदी छाड़िया रावन ※ सागर लंघिया जाय शतेक योजन
श्यामवट - पादप योजन - शत डाल ※ अशीति योजन मूल गियाछे पाताल
चारि डाल देखि येन पर्व्वतेर चूड़ा ※ सत्तर योजन हय से गाछेर गोड़ा
तप करे वालखिल्य आदि मुनिगण ※ मारीच उद्देशे तथा चलिल रावण

१ पवन २ श्याम पत्तों वाला बरगद ३ तना ४ शाखाएँ ।

तप रत, तप-उपवन मारीचा ※ निवसि करत तप मुनिगन बीचा
रावन रथी तपोवन आवा ※ लखि मारीच त्रास उर छावा
काँपति सर्प दरस-उरगारी[1] ※ जग जम-दरसन जिमि भयकारी
कह दसमुख, तुम दनुज-प्रधाना ※ लंक न समरथ तुमहिं समाना
दस सहस्र गज हे बल-धारन ※ सुर-गन्धर्व सदा भय-कारन
सिन्धु नाँघि इत तव वनदेसू ※ आयेहुँ मम सिर कठिन कलेसू
दण्डकवन रजनीचर सारे ※ राम अकेल ! सबन संहारे

दो० खर दूषन त्रिशिरा सुहृद, हा ! अपजस कर धाम ।
मम-तव जीवन रहत धिक्, सकल बिनासे राम ।। २४ ।।

सुपनेखहिं न नाक नहिं काना ※ मनुज कीट कृत अस अपमाना
मानव छुद्र उपद्रव घोरा ※ मैं पुनि मेघनाद सुत मोरा
लेहुँ न रिपु-करनी प्रतिकारू[2] ※ तौ धिक् मम त्रिलोक-अधिकारू
सुहृद सुयोग्य ! शरन तव आजू ※ सुनहु व्यथा, पुरवहु मम काजू
सुनी एक तेहिं सुन्दरि नारी ※ अकथ रूप-गुन छबि-उजियारी
तासु हरन, तव पाय सहाई ※ दसन[3] जीभ मारीच दबाई
कस दुर्मति उपजी दसभाला ※ कोंहि कुमंत्र दीन्हेउ यहि काला

यथा तप करे से मारीच निशाचर ※ रथे चापि गेल तथा राजा लंकेश्वर
मारीच पाइल भय रावनेरे देखि ※ सर्प येन भीत हय गरुड़े निरखि
त्रास पाय लोक यथा यम दरशने ※ मारीचेर त्रास तथा देखिया रावने
रावण मारीचे बले, तुमइ प्रधान ※ लंकाय ना देखि पात्र तोमार समान
अयुत हस्तीर बल तोमार शरीरे ※ देवता गन्धर्व्व सदा भीत तव डरे
बड़ दुःखे आइलाम तोमार गोचरे ※ सागर लंघिया आसि वनेर भितरे
दण्डकारण्येते छिल यत निशाचर ※ सवाकारे संहारिल राम एकेश्वर
त्रिशिरा-दूषन-खर आदि यत भाइ ※ सवारे मारिल राम केह आर नाइ
धिक् धिक् आमारे, तोमारे धिक् धिक् ※ तुमि आमि थाकिते ए कलंक अधिक
शूर्पनखा भगिनीर काटे नाक कान ※ हइया मनुष्य-कीट करे अपमान
आपनि रावण आमि, पुत्र मेघनाद ※ घटाइल क्षुद्र राम एतेक प्रमाद
ना करि इहार यदि आमि प्रतीकार ※ त्रिलोकेर आधिपत्य विफल आमार
आजि लइलाम आमि तोमार शरण ※ पात्रकार्य्य कर पात्र, करह श्रवण
सुनि तार परम सुन्दरी एक नारी ※ रूप-गुण-कथा तार कहिते ना पारि
ताहारे हरिव करि तोमारे सहाय ※ शुनिया मारीच कहे करि हाय हाय
अबोध रावण, एकि तोमार युकति ※ कि दिल ए कुमंत्रणा तोमारे सम्प्रति

---

१ गरुड़ २ बदला ३ दातों में ।

प्रानाधिक रामहिं सियरानी * हरन तासु, मनु लंक नसानी
रघुपति-रार[1] द्वार-यमधामा * तिन सों छल-बल एक न कामा
कुम्भकर्ण घननादिक जेते * सकल कुअँरगन जूझहिं तेते
अतुल रम्य जग लंका नगरी * शमन तात ! नतु उजरहि सगरी
बन्दौं पद, सुनु बिनय हमारी * क्षमहु, लंक-जन-हित उर धारी
करि विवाद आनहु बैदेही * फसहिं बिपति-घन लोक-सनेही
मंत्रि-कुमंत्र राज्य श्री-नासा * सचिव-सुमति तहँ सम्पति-बासा
मत्त गयन्द[2] बिबस उन्मादू * जरहि लंक दसकन्ध - प्रमादू
सकल भुवन रघुपति-गुन-गाना * तासु बिरह पितु तजे पराना

दो० सदा राम-उर सिय बसै, रमत न प्रभु-मन अन्त ।
सीता के मन एक छबि, सदा चरन - भगवन्त ।। २५ ।।

सकल सुवन तव सकुशल रहहीं * सुहृद-सगोत मोद नित करहीं
तजि सिय-हरन अमंगल-जोगू * लहु परमायु विपुल सुख भोगू
भक्ति अनन्य जासु हरि-चरना * रावन ! तव निष्फल सिय-हरना
बिह्वल निरखि रूप परनारी * सकुल बिनास न रञ्च[3] बिचारी
भटकहिं राम, धरहु मृग-बेसू * छलि, सिय हरहिं, कहेउ लंकेसू

प्राणाधिका रामेर से जानकी सुन्दरी * हरिले ताँहारे कि रहिवे लंकापुरी
राम सह विवादे जाइवे यमपुरी * श्रीरामेर निकटे ना खाटिवे चातुरी
कुम्भकर्ण मेघनाद हइवे विनाश * मरिबे कुमारगण, हवे सर्व्वनाश
मनोहर लंकापुरी, नाहिक उपमा * सृष्टि नष्ट ना करिह, चित्ते देह क्षमा
पाये पड़ि लंकानाथ, करि हे मिनति * क्षमा देह, रक्षा कर लंकार बसति
आनह यद्यपि सीता करिया विवाद * सवाकार उपरेते पड़िबे प्रमाद
कुमंत्रीर वचनेते राजलक्ष्मी त्यजे * सुमंत्री मंत्रणा दिले लक्ष्मी तारे भजे
छुटिले ये मत्त हस्ती, ना रहे अंकुशे * लंकापुरी तेमति मजिवे तव दोषे
विदित रामेर गुण आछे सर्व्वलोके * प्राण दिल दशरथ राम-पुत्र-शोके
सीता विना रामेर ना जाय अन्ये मन * सीतार श्रीराम - पदे मन:समर्पण
तोमार कुमार सब थाकुक कुशले * ज्ञाति-पात्र तोमार थाकुक कुतूहले
बहुभोग करिवे, हइवे चिरजीवी * आनिते ना कर मने श्रीरामेर देवी
राम-विने सीतादेवी अन्ये नाहि भजे * तवे तारे रावण, हरिवे कोन् काजे
परस्त्री देखिले तुमि हओ बड़ सुखी * सवंशे मरिबे राजा, पाछू नाहि देखि
राजा बले, मारीच हरिन हओ तुमि * भाण्डाइया रामेरे हरिव सीता आमि

१ वैर-लड़ाई २ हाथी ३ किञ्चित भी ।

जो तव संग चलहुँ मृगगाता ※ प्रथम मोर, पुनि तोर निपाता
सुफल न काज, बिपति बहु बाधा ※ उचित न प्रभु सन तव अपराधा
भल-अनभल सुजान दृढ़-धर्मा ※ पूँछि बिभीषन, तजहु अकर्मा
बिज्ञ धर्म-मति त्रिजटा तीरा ※ लहि मति हरहु नारि-रघुबीरा
राम न मानव, बिष्णु सरूपा ※ नतरु अतुल बिक्रम केहि रूपा
भगिनि-कुगति उर छोभ न लाई ※ अगनित दनुज-बिनास भुलाई
त्रिशिरा-खर-दूषन तजि पीरा ※ बिलसहु सुख निज रच्छि सरीरा
चौदह सहस दले, तिन नारी ※ छलि, सबंश तव प्रानन-हारी
तव बल-तेज विदित दसभाला ※ कहँ तुम पुनि कहँ राम कृपाला
निज मुख जस[1] बरनहु, उत रामा ※ तुम सम बहु जीते बलधामा
नारि, सुवन तजि सुबरन लंका ※ करहुँ इतै तप, पुनि प्रभु-शंका

सो० तबहुँ बिबस तव त्रास, जो रघुपति ढिग जाइहौं ।
निश्चित मोर बिनास, यहि कारन, हे लंकपति ! ॥

दो० जाहु धाम सिय-लोभ तजि, सुनत रोष दसमाथ ।
कृत्तिवास पण्डित रचेउ, कथा बिमल रघुनाथ ॥ २६ ॥

मारीच बले मृगवेशे जाव ताँर काछे ※ आनेते आमार मृत्यु, तव मृत्यु पिछे
कार्य्यसिद्धि ना हइबे, पड़िबे संकटे ※ अपराध ना करिह रामेर निकटे
परिणाम भाल-मन्द विभीषण जाने ※ जिज्ञासा करिह से धार्म्मिक विभीषणे
धार्म्मिका त्रिजटा आछे, बुद्धिते पण्डिता ※ यदि बले आनिते से, तबे आन सीता
मनुष्य नहेन राम, स्वयं त्रिविक्रम ※ नतुवा अन्येर कार एत पराक्रम
मने ना करिह शूर्पनखार अवस्था ※ मरिल राक्षस बहु, ताहाते कि आस्था
दूषण-त्रिशिरा-खर लागि नाहि दुःख ※ आपनि बाँचिले जे भुंजिबे नाना सुख
चतुर्द्दश - सहस्र राक्षस जेइ मारे ※ सवंशे मरिबे राजा नारिबे[2] ताहारे
तोमार विक्रम जानि, शुन लंकेश्वर ※ श्रीरामे तोमाय देखि अनेक अन्तर
आपन-विक्रम तुमि वाखाओ आपनि ※ तोमा हेन लक्ष-लक्ष जिने रघुमणि
छाड़िलाम भार्य्या-पुत्र स्वर्ण-लंकापुरी ※ तपस्वी हइया तबू श्रीरामेर डरि
तथापि तोमार स्थाने नाहिक एड़ान ※ पाठाओ रामेर काछे नाशिते परान
आमार वचन तुमि शुन लंकेश्वर ※ सीता-लोभ छाड़िया चलिया जाह घर
यत बले मारीच, रावण तत रोषे ※ रचिल अरण्यकाण्ड द्विज कृत्तिवासे

---

१ यश २ पराजित न कर सकोगे ।

रावण को मारीच का उपदेश

भेषज[1] अरुचि, काल जहि सीसा ❊ सुनी न, कोपि कहेउ दससीसा
कस कुबुद्धि, दुर्मति मारीचा ❊ मनुज प्रसंसि, कहति मोहिं नीचा
शठ पठवहुँ सम्प्रति[2] यमलोकू ❊ डोलति धरा सुयश चहुँ लोकू
का नर ! बिजित सुरासुर नाना ❊ मम आगम तैं कृत अपमाना
मनुज राम बल-बुद्धि-बिहीना ❊ मम सम्मुख जस बरनन कीना
हीन दनुज कुल, मानव-गाथा ! ❊ गावत अधम, फिरेउ तव माथा
जो पशुपति[3] लौं करहिं निषेधू ❊ तबहुँ न सीय-हरन अवरोधू
भरमित[4] राम दूर करि देही ❊ सूने[5] पाथ हरहुँ बैदेही
रूप कुरंग चलहु मम संगा ❊ भय न त्रास नहिं जुद्ध-प्रसंगा
पुनि मारीच सुमंत्र प्रकासा ❊ आगम-सिय तव सकुल बिनासा
अब लौं हरन कीन बहु नारी ❊ यहि अवसर न तोर निस्तारी[6]
पुत्र कलत्र बन्धु परिवारा ❊ सुहृद सकल बिनसहिं यहि बारा
बनिता सकल नसावन-नारी ❊ तजि,[7] पुर चलहु सुभट बलधारी
सागर - दर्प वृथा दससीसा ❊ बोरहिं स-कुल सिन्धु जगदीसा

रावणेर प्रति मारीचेर उपदेश

औषध ना खाय, जार निकट मरण ❊ यत वले मारीच, ता' ना शुने रावण
रुषिया रावण कहे मारीचेर प्रति ❊ कुबुद्धि घटिल तोर शुन रे दुर्म्मति
नरेर गौरव कर मन्द वलि मोरे ❊ आमि यदि मारि तोरे, के राखिते पारे
आमार प्रतापे सदा कम्पिता मेदिनी ❊ मनुष्येर किवा कथा, देव-दैत्ये जिनि
आसिलाम तव घरे, कर तिरस्कार ❊ मोर अग्रे मनुष्येर कर पुरस्कार
वल-बुद्धि-हीन राम हय नर जाति ❊ निशाचर कुले तुमि राखिले अख्याति
निषेध करेन यदि देव पंचानन ❊ तथापि आनिव सीता, ना हय खंडन
भाण्डाइया रामेरे लइया जाह दूरे ❊ हरिया आनिव सीता, पेये शून्य पुरे
आमार सहित जावे, तोमार कि भय ❊ युद्ध ना करिव आमि देखह निश्चय
शुनिया मारीच ताहा वलिल वचन ❊ आनिले सीतारे हबे सवंशे मरण
ह'रेछ अनेक नारी पेयेछ निस्तार ❊ ना देखि निस्तार राजा, हरिले एवार
पुत्र मित्र एकत्र बान्धव परिवार ❊ एइबार सवाकार हइबे संहार
एक नारी आनिया मजावे यत नारी ❊ एइ लोभ छाड़ि फिरि जाह लंकापुरी
सागरेर दर्प कर, सागर कि करे ❊ सवंशे तोमारे राम डुवावे सागरे

१ औषधि २ इसी समय ३ शंकर ४ भटके हुए ५ एकान्त ६ छुटकारा
७ एक नारी लाकर सारी स्त्रियों से हाथ धोना पड़ेगा, इसलिए सीता की कामना छोड़कर लंका लौट चलो।

प्रथम मरहुँ हरि-दरसन पाई ※ पुनि सबंस दसकन्ध नसाई
राम-लखन सों करि छल धारन ※ तबहुँ न संकठ होय निवारन

दो० मम माया उपवन तजैं, जायँ दूरि जदि राम।
तबहुँ अकेल न जानकी, लखन बिराजत धाम ॥ २७ ॥

अतुल बीर लछिमन जेहि पाहीं ※ तहँ प्रवेस-समरथ जग नाहीं
जो कुछ और करहु मनमानी ※ तजहु आस सिय, भट अभिमानी
सबन जनावहु चलि निज धामा ※ उपजी सुमति, तजेहु दुष्कामा
पुनि संकल्प अटल जदि तोरा ※ कुसमय[1] कथन बिसूरेउ[2] मोरा
राजा-सचिव युक्ति मिलि कीना ※ उत्तर शीघ्र हेलि रथ दीना

मारीच का माया-मृग-रूप धारण

नभ दसमुख - मारीच सुहाये ※ रथ तजि दण्डक बन दोउ आये
सुनु मारीच, कहेउ दसकंधर ※ छबि माया-मृग धरहु मनोहर
कौतुक छिनहिं भयेउ मृगरूपा ※ सुबरन - गात सुचित्र अनूपा
मृदु नवनीत सरिस तेहि अंगा ※ चौपद खुर छबि धवलित रंगा
श्रृंग[3] प्रवाल[4] अलोक दिवाकर ※ ओंठ इन्दु, मनु रम्य निशाकर

आगेते मरिब आमि राम-दरशने ※ पश्चाते मरिबे तुमि, परे पुरीजने
श्रीराम-लक्ष्मणे भाण्डाइब कि मायाय ※ ना देखि उपाय किछु ठेकिलाम दाय
आमार मायाय राम यदि छाड़े घर ※ एका ना रहिबे सीता, थाकिबे सोदर
जे घरे थाकिबे वीर सुमित्रानन्दन ※ से घरे प्रवेश करे हेन कोन् जन
यथा-तथा जाओ तुमि बलि लंकेश्वर ※ ना कर सीतार चेष्टा चलि जाह घर
हरिते गेलाम सीता, ना हरिनु ताय ※ देशे गिया एइ कथा जानाह सबाय
यदि सीता आनिते नितांत कर मन ※ परिणामे मम कथा करिबे स्मरण
राजा पात्र करे युक्ति ह'ये एकमति ※ रथे चापि उत्तरेते चले शीघ्र गति
फूलियार कृत्तिवास गाय सुधाभाण्ड ※ रावणेरे मजाइते विधातार काण्ड

मारीचेर माया-मृगरूप धारण

रावण मारीच सह चलिल गगने ※ उत्तरिल दोंहे गिया दण्डक कानने
मारीचेर कर धरि कहे लंकेश्वर ※ मृगरूप धर तुमि देखिते सुन्दर
मृगरूप धरिल मारीच निशाचर ※ विचित्र सुचित्र तार स्वर्ण कलेवर
नवनीत सदृश कोमल कलेवर ※ श्वेतवर्ण चारि खुर देखिते सुन्दर
दुइ श्रृंग तार येन प्रवाल-प्रस्तर ※ उज्ज्वल बिम्बिक तार येन दिवाकर

१ बुरा फल प्राप्त होने पर २ याद करना ३ सींग ४ मूँगा के समान।

त्रिभुवन अतुल समुज्ज्वल काया ※ कञ्चनमय प्रदीप्त मृगमाया
सुबरन बिच-बिच कज्जल-धारी[1] ※ रक्तिम जीभ चमक रतनारी
रोम रोम दमकत मनु जोती ※ लोचन युग दीपित मणि-जोती
चपला धौं रतनन - उजियारी ※ कपट - बेस खल माया धारी

मारीच-वध

मृग छवि मुग्ध, रुकेउ बन रावन ※ प्रकट कपट-मृग चहुँ दिसि धावन
घूमि लखत निज सुन्दरताई ※ पहुँचेउ जहाँ सीय - रघुराई

दो० मञ्जुल मूर्ति बिराजहीं, उपवन सीता-राम ।
दरस दीन तहँ कपट-मृग, रूप नयन-अभिराम ।। २८ ।।

छं० रजनीचर-बंस-बिनासन औ, सिय सागर-दुःख अथाह परै ।
मृग-कंचन सिर्जि बिरंचि कियो, जिमि देवन की विपदा निवरै[2] ।।
जदि आयसु नाथ मिलै तौ कहौं सिय-बानि सौं बानि-सुधा निसरै[3]।
मृग-चर्म कुतूहल पर्णकुटी, तेहि आसन चित्त प्रमोद भरै ।।

सादर सुनि सिय-बचन ललामा ※ लखन निहारि कहेउ श्रीरामा
हरिन बिचित्र तात इत आवा ※ चित्र अतिव रमनीक सुहावा

जिनिया त्रैलोक्य स्वर्णमृग मनोहर ※ दुइ ओष्ठ शोभा पाये येन निशाकर
स्थाने-स्थाने रांगा, मध्ये कज्जलेर रेखा ※ रांगा जिह्वा मेले, येन रतन झलका
लोमावलि देखि येन मुकुतार ज्योति ※ दुइ चक्षु ज्वले येन रतनेर बाति
नाना माया धरे दुष्ट मायार पुतलि ※ रत्नेर किरण किंबा शोभित बिजली
मृगरूप देखिया रावण राजा हासे ※ गाइल अरण्यकाण्ड-गीत कृत्तिवासे

मारीच-वध

वन-मध्ये लुकाइया रहिल रावण ※ आलो करि चले मृग रत्नेर किरण
देखिया आपन मूर्ति आपनि उलटे ※ चलिते चलिते गेल रामेर निकटे
राम-सीता बसिया आछेन दुइ जन ※ सेइ खाने मृग गिया दिल दरशन
राक्षस वंशेर ध्वंस करिवार तरे ※ डुबाइते जानकीरे बिपत सागरे
देवगणे विपदे करिते परित्राण ※ करिला विधाता हेन मृगेर निर्म्माण
श्रीरामे बलेन सीता मधुर वचन ※ अनुमति हय यदि करि निवेदन
एइ मृगचर्म्म यदि दाओ भालवासि ※ कुटीर कौतुके राम बिछाइया बसि
शुनिया सादरे राम सीतार वचन ※ डाक दिया लक्ष्मणेरे बलेन तखन
अद्भुत हरिण भाइ, देख विद्यमान ※ अपूर्व्व सुन्दर रूप काहार निर्म्माण

---

१ काली रेखाएँ २ निवारण हो ३ निकले ।

बिपुल चन्द्र - छबि गात सुहाई ※ किरन - प्रभा रोमावलि छाई
अगिनि-लपलपी कुंकुम-रसना[1] ※ लोचन मञ्जु नखत जिमि गगना
वर्ण-प्रवाल[2] युगुल लघु शृंगा[3] ※ कर्ण रम्य दुति लखहु कुरंगा[4]
यहि मृग - चर्म मुग्ध बैदेही ※ करहु विचार लखन मन एही
गति-बिधि हरिन-सुरूप निहारी ※ लखन प्रभुहिं प्रति गिरा उचारी
मुनि बरनेउ, बन असुर-निकाया ※ स्वारथ हेत करत बहु माया
करि मन मुग्ध सबन भरमाई ※ पियत रक्त पुनि गात चबाई
फसैं सकल तिन फन्द अनूपा ※ धरत बिबिध, खल, माया-रूपा
कौतुक मृग यहि सम जग नाहीं ※ निश्चय असुर-कपट यहि माहीं
कै मारीच कि सहज कुरंगा ※ सोचनीय प्रभु! प्रथम प्रसंगा
कुशलबुद्धि जस लखन बतावा ※ घटित भयेउ सब आगे आवा
इत मारीच दनुज केहि हेतू ※ आगम तात! कहेउ रघुकेतू
बध-मारीच न भय द्विजघाता ※ जिमि अगस्त्य बातापि निपाता
जो कोउ अन्य, लखन! निसि-चारी ※ मारि तपोवन - सूल निवारी

दो० जो न असुर, मृग-मञ्जु तौ, धरि पालहिं, अति प्रीत ।
नतरु मारि, आवहुँ इतै लहि मृगचर्म पुनीत ।। २६ ।।

दुइ पाशे शोभा करे चन्द्रेर मण्डली ※ धवल किरन येन गाये लोमावली
रांगा जिह्वा मेले, येन अग्नि हेन देखि ※ आकाशेर तारा येन शोभे दुइ आँखी
दुइ शृंग अल्प देखि प्रवालेर वर्ण ※ रूपे आलो करितेछे रम्य दुइ कर्ण
जानकी चाहेन एइ हरिणेर चर्म्म ※ देखि बुझ लक्ष्मण, इहार किवा मर्म्म
लक्ष्मण मृगेर रूप करि निरीक्षण ※ श्रीरामे बलेन, किछु प्रवोध वचन
मायावी असुर शुनियाछि मुनि मुखे ※ पातिया मायार फाँद आपनार सुखे
रूपे भुलाइया आगे मन सबाकार ※ वने गिया रक्त माँस करये आहार
नाना माया धरे दुष्ट मायार पुत्तलि ※ आमा सबे भांडिवारे पाते महाजालि
अवश्य राक्षस आछे सहित इहार ※ नतुवा न देखि हेन मृगेर संचार
भालमते इहा आगे करिब निर्णय ※ मारीचेर माया कि स्वरूप मृग हय
लक्ष्मण सुबुद्धि अति, बुद्धि नाहि टुटे ※ यत युक्ति बलिलेन, सकलि से घटे
लक्ष्मणेर वचने कहेन रघुवीर ※ मारीच आइल, किसे कर भाइ स्थिर
यद्यपि मारीच हय ब्रह्मवधे पापी ※ मारिब ताहारे, येन अगस्त्य वातापी
से ना ह'य यद्यपि राक्षस अन्यजन ※ मारिया करिब निष्कण्टक तपोवन
राक्षस ना हय यदि, हय मृगजाति ※ रत्न मृग धरिले पाइब मनःप्रीति
धरिते ना पारि यदि मारिब पराने ※ मृगचर्म्म लइया आसिब एइखाने

१ केसर के रंग की जीभ २ मूँगा के रंग के ३ सींग ४ मृग ।

लौटहुँ करि आखेट कुरंगा ❋ करहु चौकसी रहि सिय संगा
सदा सचेत, सीख हिय माहीं ❋ परै न तात बिपति परछाहीं
सुनि तरु-ओट रावनहिं भावा ❋ यहि अवसर सिय-हरन सुहावा
भावी बिधि-अच्छर अनुकूला ❋ सिय सम सतिहिं दुसह दुख-सूला
उपवन लखन राखि, रघुनाथा ❋ मृग अनुसरत, बान-धनु हाथा
इत प्रभु-सर उत दसमुख-त्रासा ❋ भजे[1] मरीच न प्रानन आसा
हनहिं राम नतु बधै दसानन ❋ आजु घरी मम प्रान नसावन
मरन - राम - पद मंगलहेतू ❋ निसिचरपति-कर नरक-निकेतू
खल-गति सिथिल, शंक उर भारी ❋ धरत पैग पुनि भजत पिछारी
छन समीप, छन दूरि कुरंगा ❋ रचत विपुल छल नाना रंगा
ओझल[2] कबहुँ, कबहुँ नियराई ❋ दुरत अनुसरत लखि रघुराई
धरहिं कान धरि, लेहिं न प्राना ❋ मृग तन, प्रभु न बान संधाना
किन्तु निरखि कञ्चनमृग-माया ❋ दनुज प्रतीत भई रघुराया
कबहुँ दरस, अदरस छल रूपा ❋ दानव खल मारीच अनूपा
दिब्य बान रघुपति संधाना ❋ लगेउ हृदय सो बज्र समाना
निसिचर प्रकट पलोटत[3] धरनी ❋ दुसह बेदना जात न बरनी

यावत् मारिया मृग नाहि आसि घरे ❋ तावत् लक्ष्मण, रक्षा करह सीतारे
आमार वचन कभु ना करिह आन ❋ प्रमाद न पड़े येन, ह'यो सावधान
वृक्ष आड़े थाकिया रावण सव शुने ❋ मने भावे जानकीरे हरिब एक्षणे
यखन या' हवे ताहा विधिर लिखन ❋ सीताहेन सती दुःख पान से कारण
श्रीराम करेन सज्जा, हाते धनुःशर ❋ यान मृग मारिते लक्ष्मणे राखि घर
श्रीरामेरे देखिया मारीच भावे मने ❋ पलाइला गेले मोरे मारिबे रावणे
आमारे मारिवे राम नतुवा रावण ❋ आमार कपाले आजि अवश्य मरण
वरञ्च रामेर हाते मरण मंगल ❋ रावणेर हाते मृत्यु नरक केवल
मारीच सशंक ह'ये जाय धीरे धीरे ❋ आगे धाय, पिछे जाय, चाय फिरेफिरे
क्षणे जाय, क्षणे चाय, क्षणे हय दूर ❋ नानारंगे चले मृग मायाय प्रचुर
क्षणेक निकटे जाय, क्षणेक अन्तरे ❋ श्रीराम निकटे गेले पलाय से दूरे
प्राणे मरिवेक मृग, न मारेन वाण ❋ निकटे पाइले मृग धरि दुइ कान
क्षणेक चिन्तिया राम बुझेन कारण ❋ स्वरूपतः मृग नहे हबे दुष्ट जन
क्षणे अदर्शन हय क्षणे मृग देखि ❋ मायारूप धरियाछे मारीच पातकी
ऐषीक विशिख राम पूरेन संधान ❋ मारीचेर बुके बाजे बज्रेर समान
वाणाघाते मारीच से पड़िल अन्तरे ❋ राक्षसेर मूर्त्ति धरि हाहाकार करे

१ भाग कर २ गायब ३ जमीन पर लोटने लगा।

दो० राम तुल्य स्वर, हाँक दिय, अन्तहुँ हित-लंकेस ।
अहह दनुज! धावहु लखन! नतरु प्रान मम सेस ।। ३० ।।

राम-गुहार[1] लखन सुनि आवैं * सिय तजि कुटी, बन्धु हित धावैं
मन मारीच जुगुति यह धारी * लखन! लखन! भरि कण्ठ पुकारी
सो सुनि राम बिकम्पित गाता * प्रथम, असुर छिन माँहि निपाता
मन ससंक सायक कर लीन्हे * उत सिय-ओर तुरत पग दीन्हे

सीता हरण

परी निसाचर-धुनि सिय काना * माया - स्वर रघुनाथ - समाना
आरत वचन न संसय एही * लखनहिं हेरि कहत बैदेही
बिकल बन्धु तव दानव-त्रासा * गमनहु तुरत, लखन प्रभुपासा
बोले लखन, न कछु भयकारी * आवैं बेगि राम मृग मारी
कहँ रघुपति! कहँ आरत बानी! * हेतु न, मातु! कहा अकुलानी
शिवधनु-भंग तुम्हैं सुधि नाहीं * हनै राम, भट को जग माहीं
प्रानन परे न कातर बानी * निश्चय यह न राम मुख-बानी
उपवन सून, न कोउ तव तीरा * तजब न उचित, मातु मोंहि पीरा

तखन मारीच करे रावणेर हित * रामेर डाकेर तुल्य डाके आचम्बित
आइस लक्ष्मण झाट, कर परित्राण * राक्षसे मिलिया भाइ लय मोर प्राण
मारीच भाविल इहा, डाकिले एमनि * रामेर वचन मानि आसिबे एखनि
'लक्ष्मण-लक्ष्मण' बलि डाके उच्चैःस्वरे * शुनिया रामेर कम्प हय कलेवरे
मारीच बुकेर वाण खसे टान दिते * मारीचेरे संहारिया वाण ल'ये हाते
सीतार निकटे राम चलेन त्वरिते * कृत्तिवास मारीच-वध गाय अरण्येते

रावण कर्तृक सीता-हरण

दूरेते राक्षस करे रामतुल्य ध्वनि * राक्षसेर मायाय रामेर शब्द शुनि
हेथा सीता शुनिया से करुण वचन * बलिलेन, झाट जाओ देवर लक्ष्मण
आर्त्तस्वरे श्रीराम जे डाकेन तोमारे * देख गिया ताँहारे कि राक्षसेते मारे
लक्ष्मण बलेन, नाइ श्रीरामेर भय * मृग मारि आसिबेन, किसेर विस्मय
श्रीरामेर मुखे नाइ कातर वचन * एत व्यस्त हओ माता, किसेर कारन
रामेरे मारिते पारे, नाहि कोन् जन * तुम कि जान ना देवि, धनुक-भंजन
रामेर वचन देवि, आमि नाहि शुनि * प्राण गेले रामेर कातर नहे वाणी
कारे राखि तोमार निकट केवा रहे * शून्य घरे थाका तव उपयुक्त नहे

---

१ पुकार ।

उर अधीर सिय अति रिस-पागी ※ कुवचन कहन लखन प्रति लागी
बन्धु - बिमातन चाल बिरानी[1] ※ मम प्रति तव दुर्मति मैं जानी
भरतहिं राज, हरहु तुम नारी ※ भरत संघ अभिसन्धि[2] तुम्हारी
मेटि राम, यहि छन मम आसा ※ साध, बुझावन चहउ पिपासा

दो० आन पुरुष छाँहो परे, तजहुँ प्रान, सुनि बैन।
परमधार्मिक, विमलमन, लखनलाल बेचैन ॥ ३१ ॥

जलचर थलचर जे नभचारी ※ साखी ! सिय दुर्वचन उचारी
सीख न तोष, करत पुनि रोषू ※ नेउतत सिय विनास निज दोषू
निकसि लखन चहुँ रेख खँचाई ※ जेहि उलंघि कोउ कुटी न आई
देवन सौंपि, राम-पद ध्याई ※ लखन, सियहिं पुनि विनय सुनाई
आयसु देहु, छमा करु साई ※ द्रवित नैन सिय करुना छाई
चले प्रणम्य लखन, विधि वामा ※ विटप ओट रावन बलधामा
तापस बेस सुअवसर पाई ※ धरि छल-रूप सिया ढिग जाई
झोरी, दण्ड - कमण्डल रूपा ※ भगवा[3] बसन सुरूप अनूपा
मधुबयनी मृगनयनि ललामा ※ सीय-छटा लखि उपजा कामा

प्रवोध ना माने सीता ह'ये उतरोली ※ शिरे घा हानेन सीता देन गालागाली
वैमात्रेय भाइ कभू नहे त आपन ※ आमा प्रति लक्ष्मण, तोमार बुझि मन
भरत लइल राज्य तुमि लओ नारी ※ भरतेर सगे खड़ आछये तोमारि
मनेर वासना कि साधिवे एइ वेला ※ आमार आशाते कि रामेरे कर हेला
अपर पुरुषे यदि जाय मम मन ※ गलाय काटारि दिया त्यजिव जीवन
लक्ष्मण धार्म्मिक अति मने नाहि पाप ※ सकलेरे साक्षी करे पेये मनस्ताप
स्थलचर जलचर अन्तरीक्षचर ※ सबे साक्षी हओ, सीता बले दुरक्षर
प्रवोध न माने सीता आरो बले रोषे ※ आजि मजिवेक सीता आपनार दोषे
गन्ती दिया वेड़िलेन लक्ष्मण से घर ※ प्रवेश ना करे केह घरेर भितर
स्वयं विष्णु रघुनाथ, ताँर पत्नी सीता ※ शून्य घरे राखि ओहे सकल देवता
आमारे विदाय कर सीता ठाकुराणी ※ आर किछु ना वलिह दुरक्षर वाणी
शिरे घात हाने सीता, नेत्र जले तिते ※ सीतारे, प्रणमि जान लक्ष्मण त्वरिते
हइल विमुख विधि चलेन लक्ष्मण ※ थाकिया वृक्षेर आड़े देखिछे रावण
एतक्षणे रावणेर सिद्ध अभिलाष ※ तपस्वीर वेश धरि जाय सीता पाश
भिक्षा झुलि करे धरे स्कन्ध धरे छाति ※ सकल वसन रांगा, धरे नाना गति
परम सुन्दरी सीता वचन मधुर ※ ताँर रूप देखिया रावण कामातुर

१ सौतेले भाइयों की रीति ही गैरों सी होती है, २ साँठ-गाँठ, ३ गेरुए।

रसमय करत मधुर सम्भाषू * केहि कुल पुनि केहि देस निवासू
केहि दुहिता केहि प्रानपियारी * मनुज न, प्रतिमा कनक-सवाँरी
लखि उरोज-छबि, छबि मन मोहा * तव तन रम्य बसन भल सोहा
ब्याघ्र - सिंह दण्डक बनवासू * केहि बल तहँ सुन्दरी - निवासू
सुनि तपसिहिं निज कथा बखानी * अमिय[1] सनी सिय की मधुबानी
जनक-सुता सीता मम नामा * दशरथ-बधू, नाथ मम रामा
लखनलाल लाये फल नाना * तव अर्पन, द्विज! कीजिय पाना

दो० अतिथि-भक्त रघुबंसमणि, अतिथिन तिन अति प्रीत ।
लहैं परम सुख पाय तव, मुनिवर! दरस पुनीत ॥ ३२ ॥

कस सिर जटा कहहु मुनिकेतू * नाम, जाति भिक्षाटन - हेतू ?
यहि बिधि सुनि वृतांत - वैदेही * लंकापति निज परिचय देही
अग्रज मम कुबेर धनधामा * मुनिन प्रकट मम रावन नामा
बन तप करत अवधि बहु बीती * लहि तव दरस अतुल मन प्रीती
असन[2] गिरिस्त समादर करहीं * लै फल - मूल मोद मन भरहीं
आजु प्रथम दर्शन तव पाहीं * लै भिक्षा निज आश्रम जाहीं
भइ अबेर[3] जदि करहु बिधानू * आजु पुण्य - तव दान स्नानू

रावण मधुर वाक्ये सीतारे सम्भाषे * कोन जाति नारी, तुमि थाक् कोन देशे
काहार झियारी तुमि कार प्रियतमा * मानवी ना हओ तुमि, सोनार प्रतिमा
सुगठित दुइ स्तन शोभा करे हारे * उत्तम बसन शोभे तोमार शरीरे
विषम दण्डक वने हिंस्र व्याघ्र वैसे * एमन सुन्दरी थाक केमन साहसे
परिचय देन सीता तपस्वीर ज्ञाने * अमृत सिञ्चिल येन मधुर बचने
जनकनन्दिनी आमि, नाम धरि सीता * दशरथ - पुत्रबधू, रामेर वनिता
रह द्विज, फल आनि दिवेन लक्ष्मण * सेइ फल दिब, तुमि करिओ भक्षण
अतिथिरे भक्ति राम करेन यतने * बड़ प्रीति पाइवेन तोमा दरशने
जिज्ञासि तोमारे मुनि, शिरे धर शिखा * कि जाति कि नाम धर, केन कर भिक्षा
एतेक बलेन सीता तपस्वीर ज्ञाने * निज परिचय देय राजा दशानने
ज्येन्ठ भाइ कुवेर धनेर अधिकारी * एइ बने बहुकाल आमि तप करि
रावण आमार नाम, जाने मुनिगणे * बड़ प्रीति पाइलाम तोमा दरशने
फल-मूल दिया करि उदर पूरण * गृहस्थेर घरे गेले कराय भोजन
तोमार सहित आजि अपूर्व्व दर्शन * भिक्षा दिले जाइ चले निज निकेतन
हइल अनेक बेला, कर जे विधान * तोमार पुण्येते गिया करि स्नान-दान

१ अमृत २ भोजन ३ विलम्ब ।

आगम राम लखत अति देरी * सुमुखि! होत मोंहि बेर घनेरी[1]
बिप्र! पञ्चफल प्रस्तुत गेहा * करहु पान, सिय कहत स-नेहा
मैथिलि! मैं अरण्य-ब्रतचारी * आश्रम-भीख न मुनि अधिकारी
प्रभु आयसु बिन बाहेर आई * देहुँ भीख, यह द्विज! कठिनाई
कह दसकंध अबेर न कीजै * नतरु जाहुँ घर, उत्तर दीजै
अतिथि बिमुख रामहिं न सुहाई * धर्म-कर्म यत सकल नसाई
लिखा ललार न तेंहि प्रतिकूला * भावी बिधि-अच्छर-अनुकूला
लिये सिया फल बाहेर आई * बढ़ेउ पतित खल निसिचर धाई
गहेउ बेगि कर, बिस्मित सीता * कस बिपरीत! कहेउ भयभीता

दो० दुष्ट दुराचारी दनुज, दूर! दूर! खल दूर!।
मम कारन बिनसै स-कुल, कुटिल कुचाली कूर ।। ३२ ।।

सुनु सीता मम परिचय-गाथा * लंक धाम, मैं निसिचर-नाथा
लोचन बीस भुजा लखु बीसा * जग जाहिर दसमुख दससीसा
आयेउँ उपवन तापस रूपा * करहु कृपा लहि दास सरूपा
सुरपुर सरिस पुरी मम लंका * जग-दुर्लभ चलि लखहु निसंका
छबि-बिमुग्ध तव बड़ अभिलासी * महिषी[2] सकल करौं तव दासी

श्रीरामेर आसिते विलम्ब बहु देखि * हइल स्नानेर वेला, देख चन्द्रमुखि
जानकी बलेन, द्विज, करि निवेदन * पंच फल घरे आछे, करह भक्षण
रावण बलिल, सीता, व्रत करि वने * आश्रमे ना लइ भिक्षा, जाने मुनिगणे
जानकी बलेन, द्विज, एक कथा कहि * आज्ञाविना प्रभुर घरेर बाहिर नहि
रावण बलिल, भिक्षा आनह सत्वर * नतुवा उत्तर देह, जाइ निज घर
जानकी बलेन, व्यर्थ अतिथि जाइवे * धर्म्म कर्म्म नष्ट हबे, प्रभु कि बलिबे
विधिर निर्व्बन्ध कभु ना हय अन्यथा * विधिर लिखन मत घटिलेक तथा
फल-हाते वाहिर से हइला जानकी * लइते आइल दुष्ट रावण पातकी
धरिया सीतार हाथ लइल त्वरित * जानकी बलेन, हाय एकि विपरीत
दूर ह'रे दुराचार पापिष्ठ दुर्ज्जन * आमा लागि हबे तोर सवंशे मरण
रावण बलिल सीता शुनह वचन * आत्म-परिचय कहि, आमि दशानन
राक्षसेर राजा आमि, लंका निकेतन * कुड़ि हात, कुड़ि चक्षु, दशटि वदन
तपस्वीर वेश धरि आसि तपोवन * अनुग्रह कर मोरे, आमि दासजन
इन्द्रेर अमरावती जिनि लंकापुरी * जगत् दुर्लभ ठाँइ देखिबे सुन्दरि
तोमार रूपेते आमि बड़ भालबासि * अन्य यत महिषी, तोमार हबे दासी

---

१ वहुत देर २ रानियाँ।

तुम सिरमौरि सबन पटरानी * आश्रित सकल, सुमुखि! तव रानी
पुजहु, मान-सम्मान प्रकासू * कनक-रत्नमय-धाम निवासू
दुखमय जनम साथ रघुनाथा * सुख अनन्त बिलसहु मम साथा
कम्प त्रिलोक लखत मम बाना * मनुज राम मोहिं कीट समाना
बुद्धि न आयु! हीन तव कन्ता * जुगजुग मैं चिरायु बलवन्ता
वेष अनूप सुरूप लुनाई[1] * तुम सम रूपसि मम मन भाई
सिया कुपित सुनि रावन-बचना * अभिमत[2] अथक[3] कहहि दुर्बचना
रे शठ! पतित तोर दसमाथा * सकुल बिनास करहिं रघुनाथा
राम सिंह तैं निपट शृगाला * केहि बल भीरु! बजावत गाला
बिष्णुरूप रघुपति मनभावन * कहँ समता तव असुर अपावन
सूने लखन बिसूने रामा * नतरु सकत करि किमि दुष्कामा

दो० उपवन आजु सहाय बिन, पाय अकेली मोहिं।
अहा, दुष्ट मम हरन किय, आवत लाज न तोहिं ॥ ३४ ॥

कटकटाहिं दसमुख बत्तीसी * काँपति सीय पात-कदली सी
असुर भयंकर रूप दिखावा * सबबिधि गर्जि-तर्जि समुझावा
केहि गुन राम रीझ तव प्राना * बनन फिरत बल्कल-परिधाना[4]

सर्व्वोपरि तोमारे करिब ठाकुराणी * तुमि अन्न दिले अन्न पावे अन्यरानी
हइबे तोमार पूजा, बाड़िबे सम्मान * सुवर्ण माणिक्यमय हबे तवस्थान
करिया रामेर सेवा जन्म गेले दुःखे * करिले आमार सेवा रबे नाना सुखे
त्रिभुवन आमार बाणेते कम्पमान * मनुष्य रामेरे आमि कीट तुल्य ज्ञान
अल्पबुद्धि रामेर से अत्यल्प जीवन * युगे युगे चिरजीवी आमि दशानन
सीता, तुमि सुन्दरी लावण्य आर वेशे * तोमाहेन सुन्दरी आमाके अभिलाषे
कोपान्विता सीतादेवी रावण-वचने * रावणेरे गालि देन यत आसे मने
अधार्म्मिक नगण्य अधम दुराचार * करिवेन राम तोरे सवंशे संहार
श्रीराम केशरी, तुइ शृगाल येमन * कि साहस ताँहारे बलिस् कुवचन
विष्णु अवतार राम, तुइ निशाचर * रामे आर तोरे देखि अनेक अन्तर
यदि राम थाकितेन अथवा लक्ष्मण * करितिस् केमने ए दुष्ट आचरण
एकाकिनी पाइया आमारे वनमाझ * हरिस् आमारे दुष्ट, नाहि तोर लाज
करे दुष्ट कुड़ि पाटि दन्त कड़मड़ि * जानकी काँपेन येन कलार बागुड़ि
प्रकाशे राक्षस मूर्ति अति भयंकर * अधिक तर्ज्जन करे राजा लंकेश्वर
कि गुणे रामेर प्रति मजे तोर मन * बल्कल परिया से बेड़ाय वने वन

---

१ लावण्य २ मनमाने ३ विना रुके हुए ४ छाल के वस्त्र।

जग न सुलभ सुख बिलसहु लंका ※ सुनत सीय अति त्रस्त ससंका
रे मतिमन्द पातकी रावन ※ तव करनी तव प्रान-नसावन
लिखा ललार अमिट फल-भोगू ※ नतरु जुरत किमि सकल कुयोगू
जनकलली बनिता श्रीरामा ※ नृपमनि दशरथ-बधू ललामा
स्वयं रमा ! जननी जगबन्दन ※ अचरज आजु असुर के बन्धन
बिलखति त्रास, करुन सियबानी ※ हे प्रभु कहाँ राम गुनखानी
देवर लखन सिंह-बल-धारी ※ सूने हरत मोहिं निसिचारी
सत्य कथन तव कौन विधाता ※ आवहु बेगि उबारहु ताता
बिकल मैथिली अतुल बिलापू ※ करै त्रान को यहि सन्तापू
निसिचर-बस रथ सीय लखाई ※ जिमि घन सौदामिनी सुहाई
संकट परि ध्यावत श्रीरामा ※ नयनन छबि दूर्बादल श्यामा
असुर-दिब्यरथ, सिय नभ जाई ※ चितवत मनौ निकट रघुराई
सुरगन ! प्रभुहिं कहेउ बिधि एही ※ रावन हरन कीन बैदेही

दो० उदित कर्म बिधि बाम कस, डारेउ विपति-पहार ! ।
कोउ न बन्धु, दसकन्ध हनि, बिपति बचावनहार ।। ३५ ।।

रामहिं, बिटप-लता जे कानन ! ※ कहेउ, हरी जेहि बिधि सिय रावन
मृदु-प्रबोध-दसमुख जनि भावै ※ बढ़त शोक सिय रुदन मचावै

देखिबे केमने करि तोमार पालन ※ ताहा शुनि जानकीर उड़िल जीवन
जानकी वलेन ओरे पातकी रावण ※ आपनि मजिलि तुइ आमार कारण
दैवेर निर्व्बंध कभु ना हय खण्डन ※ नतुवा एमन केन हबे संगठन
जनकेर कन्या जिनि, रामेर कामिनी ※ श्वशुर जाँहार दशरथ नृपमणि
आपनि त्रिलोक-माता लक्ष्मी अवतार ※ ताँहारे राक्षसे हरे, एकि चमत्कार
त्रासेते कान्देन सीता हइया कातर ※ कोथा गेले प्रभुराम गुणेर सागर
सिंहेर विक्रम-सम देवर लक्ष्मण ※ शून्य घर पेये मोरे हरिल रावण
तुमि यत वलिले, हइल विद्यमान ※ झाट आइस देवर, करह परित्राण
अत्यन्त कातरा सीता करेन रोदन ※ एमत समये रक्षा करे कोन् जन
सीतारे धरिया रथे तुलिल रावण ※ मेघेर उपरे शोभे चपला येमन
विपदे पड़िया सीता डाकेन श्रीराम ※ चक्षु मुदि भावेन से दूर्व्वादल श्याम
सीता ल'ये रावण पलाय दिव्य रथे ※ राम पाछे आसे बलि देखे चारि भिते
जानकी बलेन, शुन यत देवगण ※ प्रभुर कहिओ, सीता हरिल रावण
हाय विधि, कि करिले, फेलिले विपाके ※ एमन ना देखि बन्धु, सीतारे जे राखे
बनेर भितर यत आछ वृक्ष-लता ※ श्रीरामे कहिओ हृता तोमार वनिता
वचन मधुर यत बुझाय रावण ※ शोकेते जानकी तत करेन रोदन

हाय, असुर छल जानि न पाई ※ रेख लाँघि गृह बाहेर आई
लखन न हठ करि बिबस पठावत ※ गिरत न गाज, न यहु दुख आवत
कह दसभाल वृथा सिय ! रागा[1] ※ लहि तव सरिस रतन केहि त्यागा
जनकलली सुनि कहत सशोका ※ बेग गमन तव शठ ! यमलोका
रावन सुनि कटुबैन रिसाना ※ रथ प्रेरित गति पवन समाना

जटायु-रावण युद्ध

गरुड़-सुवन खग नाम जटाई ※ उत सिय-रुदन दूरि सुनि पाई
उड़ेउ गगन चहुँ दीठि पसारी ※ असुर-फन्द सिय फँसी बिचारी
सुभट-विश्व चीन्हत खगनाथा ※ अहह ! लंकपति यहु दसमाथा
पंख पसारि गगन तन धावा ※ पंख-नखन बहु रारि मचावा
भल मोहिं बिदित अधम निसिचारी ※ शठ रावन तैं पापाचारी
ढायेउ लंक न तव रघुकेतू ※ हरन तासु तिय कहु केहि हेतू
सूर्पनखा कामातुर जाई ※ स्वयं नासिका कान नसाई
दसरथ सदा धर्म अति प्रीती ※ तासु बधू हरि तोहिं न भीती
वृद्ध, सिथिल तन, हे भुज-बीसा ※ फल सम नतरु बिदारत सीसा

आगे यदि जानिताम राक्षस दुर्ज्जन ※ घरेर बाहिर आमि हब कि कारण
हाय, केन लक्ष्मणेरे दिलाम बिदाय ※ लक्ष्मण थाकिले कि घटित हेन दाय
रावण बलिल, सीता, भाव अकारण ※ पाइले एमन रतन छाड़े कोन् जन
जानकी बलेन, शोन् दुष्ट निशाचर ※ अल्पायु हइया तुइ जाबि यम-घर
कुपिल रावण राजा सीतार वचने ※ चालाइल रथखान त्वरित गगने

जटायुर सहित रावणेर युद्ध

जटायु नामेते पक्षी गरुड़-नन्दन ※ दूर हैते शुनिल से सीतार क्रन्दन
आकाशे उठिया पक्ष चतुर्द्दिके जाय ※ देखिल, रावण राजा सीता ल'ये जाय
त्रिभुवने यत वीर, पक्षीर गोचर ※ देखिया चिनिल पक्षी राजा लंकेश्वर
दुइ पाखा पसारिया आगुलिल बाट ※ रावणेरे गालि दिया मारे पाख-साट
डाक दिया बले पक्षी, शोन् निशाचर ※ आपनाना जानिस् रे पापी लंकेश्वर
कोन् दोषे हरिलि श्रीरामेर सुन्दरी ※ रघुनाथ नाहि हिंसे तोर लंकापुरी
शूर्पनखा गियाछिल रमणेर साधे ※ नाक-कान काटा गेल सेइ अपराधे
राजा दशरथ बड़, धर्म्मेते तत्पर ※ पुत्रवधू ताँहार हरिल नाहि डर
कि कव, ह'येछि वृद्ध ठोंट हैल भोंता ※ नतुवा फलेर मत छिंड़िताम माथा

1 क्रोध ।

दो० ऊँचे उठि नभ, हेरि चहुँ, लखेउ न कहुँ रघुनाथ ।
डपटि भिरेउ दसमाथ सन, महाबली खगनाथ ॥ ३६ ॥

चोंचन, बिपुल पंख-नख-घाता ✻ रथ बिखण्डि सारथी निपाता
गगन कठिन रन खग विस्तारा ✻ रावन-तन बहु मास बिदारा
बिरथ लंकपति, रथ-ध्वज भंगा ✻ बिकल सकोपि प्रज्वलित अंगा
राखेउ सीय महीतल आनी ✻ पुनि उड़ि चला व्योम[1] अभिमानी
बसन सँभारि, सुअवसर ताकी ✻ बन सिय भाजि चली एकाकी[2]
चहुँ गिरि शृंग, बीच बन भारी ✻ बन भटकत बिन पंथ बिचारी
दारुन अति बिलाप भयभीता ✻ बिकल गगन सुरगन लखि सीता
युद्ध-त्रस्त कछु, बृद्ध जटाई ✻ तरु विराम, जनि साँस समाई
खगपति सिथिल निरखि तरु-डारी ✻ माया-बल रथ असुर सवाँरी
सिय धरि स्यन्दन[3] बेगि बढ़ावा ✻ महा सुभट पुनि काम बनावा
पुनि जटायु बिक्रम बल साधा ✻ ठनेउ विषम रन युद्ध अगाधा
कस बिहंग ! दसकन्ध बखाना ✻ पर-हित तजत व्यर्थ निज प्राना
बचु रे बचु, हे महिप-बिहंगा ✻ काटि पंख नतु करहुँ अपंगा
यहि बिधि दोउ अभिरत ललकारत ✻ दोउ अति सुभट परस्पर मारत

आकाशे उठिया देखे, राम बहु दूर ✻ कामड़े आँचड़े तार रथ कैल चूर
पाखसाट मारे पक्षी आर देय गालि ✻ रावणेर संगे युद्ध करे महाबली
आकाशे उठिया पक्षी छोंदिया से पड़े ✻ रावणेर पृष्ठ-मांस खान खान छिंड़े
छिंड़िल ठोंटेर घाय सारथिर मुण्ड ✻ रथ-ध्वज भांगिया करिल खण्ड-खण्ड
अति व्यस्त दशानन ज्वले क्रोधानले ✻ रथ हैते सीतारे राखिल भूमितले
भूमे राखि सीतारे से उठिल आकाशे ✻ संवरेन वस्त्र सीता पलायन आशे
पलाइते जान सीता, नाहि पान पथ ✻ चतुर्द्दिके महावन वेष्टित पर्व्वत
भयेते कान्देन सीता करिया व्यग्रता ✻ अन्तरीक्ष हाहाकार करेन देवता
जुझे पक्षिराज, किन्तु, अन्तरे तरास ✻ बृक्ष डाले वैसे गिया, घन वहे श्वास
बले टुटा पक्षिराजे देखिया रावण ✻ माया करि रथखान करिल साजन
आर वार रावण सीतारे तोले रथे ✻ चलिल से महाबली पूर्ण मनोरथे
आर वार जटायु साहसे करि भर ✻ महायुद्ध करे पक्षी अति घोर तर
रावण वलिल, पक्षी, शुनह वचन ✻ परलागि केन प्राण देह अकारन
अतःपर पक्षिराज, निज प्राण रक्ष ✻ यावत् तोमार नाहि काटि दुइ पक्ष
दुइ जने घोर-रवे हैल गालागालि ✻ दुइ जने युद्ध करे, दोंहे महाबली

१ आकाश २ अकेले ३ रथ ।

मत्त मतंग न मानत हारी ❋ एक न एकहिं सकहिं निवारी
रतन किरीट सीस दस धारे ❋ चोंचन टूक-टूक करि डारे

दो० आशुतोष-तप-पुण्य-बल, रहे कुशल दस माथ।
तदपि सीस बिन केश करि, कुगति कीन खगनाथ ॥ ३७ ॥

सिय कर गहे, न सर सन्धानू ❋ खग-रन भयेउ असुर अपमानू
रावन पुनि सिय धरनि उतारी ❋ लै रथ बेगि भयेउ नभचारी
हनेउ बतीस सहस सर नाना ❋ घायल खग तन आकुल प्राना
दुर्जय दसमुख! चहुँ जग ख्याती ❋ निपट बिहंग युद्ध केहि भाँती
भिरेउ प्रानपन साहस ठाना ❋ मग जोहत[1] आवैं भगवाना
दनुज हेरि खग टरत न टारे ❋ अर्द्धचन्द्र सर पंख निवारे
आहत धरनी गिरेउ जटाई ❋ कहि बिलखत समीप सिय आई
तैं मम श्वसुर[2]! बिसर्जेउ प्राना ❋ निसिचर-कर[3] न प्रान मम त्राना
रावन हेतु जनम जग मोरा ❋ अब न दरस रघुबंसकिसोरा
दरसन पाय लखन-रघुराई ❋ तबहिं तात तव प्रान नसाई
बन प्रभु मिलइँ, कहेउ समुझाई ❋ हरन कीन सिय निसिचरराई

अंकुश न माने मत्त मातंग येमन ❋ केह कारे करिते नारिल निवारण
रावणेर मुकुट से रत्नेते निर्म्माण ❋ ठोंट दिया पक्षी ताहा करे खान खान
रावणेर पूर्व्वपुण्ये रहे दशमाथा ❋ शिवेर प्रसादे ताहा ना हय अन्यथा
किन्तु केश छिड़िया करिल खण्ड-खण्ड ❋ निष्केश हइल रावणेर दशमुण्ड
पक्षियुद्धे ताहार हइल अपमान ❋ धरियाछे सीतारे, केमने छाड़े वाण
आर वार सीतारे राखिल भूमि तले ❋ रथ शुद्ध रावण उठिल नभस्तले
बत्रिश हाजार बाण रावण एड़िल ❋ सर्व्वांगे फुटिल, पक्षी कातर हइल
दुर्ज्जय रावण राजा त्रिभुवन जिने ❋ कि करिते पारे तार पक्षीर पराने
रामेर अपेक्षा करि रहे पक्षिवर ❋ प्राणपने जुझिल साहसे करि भर
रावण देखिल, पक्षी बले नाहि टुटे ❋ अर्द्धचन्द्र वाणे तार दुइ पाखा काटे
भूमिते पड़िया पक्षी करे छट्फट् ❋ आसिया कहेन सीता पक्षीर निकट
आमा लागे श्वशुर जे हाराले जीवन ❋ रावणेर हाते आछे आमार मरण
आमार हइल जन्म रावण-कारण ❋ आर ना पाइब श्री रामेर दरशन
दर्शन पाइबे जबे श्रीराम - लक्ष्मण ❋ तावत् रहिबे तव एइत जीवन
प्रभुरे देखह यदि वनेर भितर ❋ बलिह, तोमार सीता हरे लंकेश्वर

१ राह देखता था २ दशरथ-मित्र होने से जटायु भी श्वसुर के समान ३ रावण के हाथ से।

सागर पार लंक रजधानी * हरेउ गगन-पथ जहँ सियरानी
बिहग[1] अपंग दसा निज बरनी * लखेउ सकल मम पौरुष-करनी
लखन-राम करिहैं तव त्राना * तजहु रुदन आवइँ भगवाना
उभय कथन सुनि हँसेउ दसानन * रथ लखि, सीय भयेउ दुख दारुन
पुलकि बहोरि रथहिं बैठारी * रुदन-सीय सुनि शिलन दरारी[2]

दो० जनि भरोस, जनि आस कहुँ, सियहिं बिपुल संताप ।
दीन बेष, तन छीन अति, बहुबिधि दुसह बिलाप ।। ३८ ।।

फँसी गरुड़ मुख साँपिनि जैसे * क्रन्दन करुण अकथ सिय तैसे
सीता-कुबचन धरत न काना * रथ चढ़ि नभ गति-पवन पयाना
खग-रन लस्त-पस्त दसमाथा * उर भय ! मिलि न जायँ रघुनाथा
सरपट भजेउ न साँस समाई * तासु बेग लखि पवन लजाई

सुपार्श्व पक्षी द्वारा रावण का अवरोध

रामहिं चीन्ह[3] तजति बैदेही * भूषन-सुमन, गगन छबि देही
गर-आभरन सीय तजि दीन्हा * सो गिरि धरनि सुहावनि कीन्हा
जनकलली मणि - मुक्ता - हारा * हिमगिरि सरसति सुरसरि धारा

सागरेर पारे घर, वैसे लंकापुरी * अन्तरीक्ष लये गेल तोमार सुन्दरी
जटायु वलेन, सीता, नाहि मोर हात * यत युद्ध करिलाम, देखिले साक्षात्
आमार वचन शुन ना कर क्रन्दन * तोमा उद्धारिबे माता श्रीराम-लक्ष्मण
उभयेर कथा शुनि दशानन हासे * रथ देखि जानकी काँपेन महात्रासे
पुनर्व्वार सीतारे तुलिल रथोपरे * सीतार विलाप शुनि पाषाण विदरे
अपार भाविया सीता नाहि पान कूल * अति-कृशा दीनवेशा कान्दिया आकुल
सीतार विलाप कत लिखिबे लेखनी * गरुड़ेर मुखे येन पड़िल सापिनी
सीता यत गालि देन, रावण ना शुने * रथे चड़ि वायु वेगे उठिल गगने
रावण पक्षीर युद्धे हैल लण्ड-भण्ड * कि जानि आसिया राम काटिबेन मुण्ड
एइ भये रावण पलाय ऊर्द्ध्व श्वासे * तार सह जाइते ना पारिल वातासे

सुपार्श्व-पक्षि-कर्त्तृक रावणेर लंका-गमने वाधा प्रदान

रामे जानाइते सीता फेलेन भूषण * सीतार भूषण पुष्पे छाइल गगन
आभरण गलार फेलेन सीतादेवी * से भूषणे सुशोभिता हइल पृथिवी
छिंड़िया फेलेन मणि-मुकुतार झारा * हिमालय हैते येन पड़े गंगाधारा

---

१ पक्षी-जटायु २ चट्टानों में दरारें पड़ती थीं ३ निशानी ।

राम! राम! हा राम! बिलापू * सुरगन गगन बिपुल संतापू
कहाँ लखन! कहँ छबि रघुनन्दन * इक छन मिलइँ अभागिनि दरसन
ऋष्यमूक गिरि शृंग उतंगा[1] * तहँ सुग्रीव बसत प्रिय संगा
जामवन्त भल्लुक बलशीला * हनुमत् पुनि गवाक्ष, नल, नीला
खग-सम ते सोहत गिरि माहीं * कपिगन मम सँदेस तुम पाहीं
बनिता-राम, नाम सिय अहही * भूषन-बसन चीन्ह तजि कहही
दरसन मिलैं राम मनभावन * कहेउ हरन-सिय किय खल रावन
सुनि हनुमान सुकण्ठहिं[2] टेरी * धरि लंकेश मुक्ति सिय केरी
सो मति परी दशानन काना * राम त्रास! शठ बेगि पयाना

दो० लिये मैथिली गमन किय, दच्छिन दिसि दसकन्ध।
मारग भेंट सुपार्श्व सों भई! दैव-दुर्बन्ध[3] ॥ ३९ ॥

सुत-सम्पाति भतीज-जटाई * भट सुपार्श्व तहँ परेउ लखाई
बृद्ध पिता हित जतन अहारा * करत, निवसि सो बिन्ध्य पहारा
बिदित सुपार्श्व न रावन-करनी * मारि जटायु गिरायेसि धरनी
जो जानत जटायु जग नाहीं * खग रावनहिं हनत छन माहीं
शूकर महिष हस्ति बन पावै * सहसन[4] दाबि चोंच महँ लावै
कहँ जल-जन्तु सिन्धु महँ चापै * सागर तीनि भाग जल छापै

'श्रीराम' बलिया सीता करेन क्रन्दन * अन्तरीक्ष हाहाकार करे देवगण
जानकी बलेन, कोथा श्रीराम-लक्ष्मण * ए अभागिनीरे देखा देह एइक्षण
ऋष्यमूक नाम गिरि अति उच्चतर * पञ्चपात्र सहित सुग्रीव तदुपर
नल नील गवाक्ष ओ पवननन्दन * जाम्बवान सुग्रीव बसेछे छयजन
पक्षी येन बसियाछे पर्व्वतेर माझ * डाकिया बलेन सीता, शुन कपिराज
श्रीरामेर नारी आमि, सीता नाम धरि * अंगेर भूषण फेलि गात्रेर उत्तरी
रामेर सहित यदि हय दरशन * ताँहाके कहिओ, सीता हरिल रावण
हेनकाले सुग्रीवेरे बले हनूमान * सीता राखि रावणेर करि अपमान
एइ युक्ति दशानन शुनिल आकाशे * सीता ल'ये पलाइल श्रीरामेर त्रासे
सीता ल'ये दक्षिणेते चलिल रावण * दैवे पथे सुपार्श्वेर सह दरशन
सम्पातिर नन्दन, सुपार्श्वे नाम तार * विन्ध्याचले थाकि भक्ष्य योगाय पितार
जटायुर भ्रातपुत्र सम्पातिनन्दन * से ना जाने जटायुरे मारिले रावण
जटायुर मरण सुपार्श्व यदि जाने * रावणेरे मारित से दिन सेइ क्षणे
शूकर महिष हस्ती यत पाय वने * सहस्र-सहस्र जन्तु ठोंटे करि आने
सागरेर जल-जन्तु यखन से धरे * तिन भाग जल पक्षे आच्छादन करे

---

१ ऊँचे २ सुग्रीव से ३ दैवी बाधा ४ हजारों।

रिक्त[1] भाग इक सिंधु-तरंगा ※ दुर्जय बिकटाकार बिहंगा
बन्धु-जटायु जेठ सम्पाती ※ नन्दन तासु, गरुड़ कर नाती[2]
उड़ि सबेग नभमण्डल धावा ※ पंखन हलत बवण्डर छावा
लखि ससंक कौतुक दसमाथा ※ उत सिय रुदन 'राम-रघुनाथा!'
सुनि खग गर्जि-तर्जि ललकारा ※ रावन-पथ युग[3] पंख पसारा
तब लौं भई गगन सुरबानी ※ दसमुख हरन कीन सियरानी
कोपानल सुनि भयेउ बिहंगा ※ लीलन चलेउ रथहिं इकसंगा
स्यन्दन मध्य सियहिं तहँ पेखी ※ नारी-बध-भय पाप बिसेषी
पंखन करि स्यन्दन अवरोधू ※ करत विनय लखि, दनुज, विरोधू
रावन नाम, लंक मम धामा ※ तव प्रति मम न आचरन बामा

दो० खर-दूषन-रिपु, भगिनि किय नासा-श्रवन-विहीन।
राम किये अपमान-वश, तासु तिया हरि लीन ॥ ४० ॥

दुर्जय! तव बिक्रम जग ख्याती ※ खगपति! तुम पहँ मैं प्रणिपाती[4]
क्षमा सुपार्श्व कीन रथ त्यागी ※ भजेउ लंकपति देर न लागी
जानि न सकी कथा यह सीता ※ निरखि अचेत सिन्धु भयभीता
लखि पयोधि[5] दसकंध हुलासू ※ उदधि[5]-उलंघन कीन प्रयासू

सागरेर एक भाग जलमात्र रय ※ एमन वृहत्काय विहंग दुर्ज्जय
जटायुर भ्रातुष्पुत्र गरुड़ेर नाति ※ अन्तरीक्षे उड़िया आइसे शीघ्रगति
पाखसाट मारे पाखी, झड़ येन वहे ※ त्रासेते रावण माथ तुलि ऊर्द्ध चाहे
'श्रीराम' बलिया सीता करेन क्रन्दन ※ शुनिल से पक्षिराज उपर-गगन
पाखसाट मारे पाखी तर्ज्जे गर्ज्जे डाके ※ दुइ पक्ष दिया रावणेर रथ ढाके
तार प्रति डाक दिया बले देवगण ※ सीतारे हरिया ल'ये जाय दशानन
देवतार वाक्य शुनि पक्षी कोपे ज्वले ※ रथ शुद्ध गिलिवारे दुइ ठोंट मेले
रथ मध्ये देखे पक्षी आछेन जानकी ※ भावे नारी-हत्या करि हव कि नारकी
रथखान बद्ध करि राखे पाखा दिया ※ रावण बलिल तारे विनय करिया
रावण आमार नाम, वसति लंकाय ※ तव सह शत्रुता ना आछये आमाय
करियाछे राघव आमार अपमान ※ सहोदरा भगिनीर काटे नाक-कान
भाइ खर-दूषणेर राम महा-अरि ※ सेइ क्रोधे हरिलाम रामेर सुन्दरी
त्रिभुवने ख्यात तुमि, विक्रमे दुर्ज्जय ※ तव ठाँइ पक्षिराज, मानि पराजय
सुपार्श्व करिया क्षमा छाड़िल तखन ※ सेइ क्षणे रथ ल'ये चलिल रावण
एइ सब कथा किछु न जानेन सीता ※ समुद्र देखिया सहा भयेते मूर्च्छिता
देखिया समुद्रतीर रावण उल्लास ※ जलनिधि उत्तरिल करिया प्रयास

१ खाली २ पौत्र ३ दोनों ४ चरणों की शरण में हूँ ५ समुद्र।

सिय सोचत लखि सिंधु अपारा ※ राम कृपालु होहिं किमि पारा
संकित सिय नतमुखी[1] बेहाला[2] ※ उतरेउ लंक तबहिं दसभाला

सीता-सहित रावण का लंका-गमन

'रथ तजि कित राखउँ बैदेही' ※ लंकेश्वर बिचार मन एही
लखन शत्रु पुनि रिपु रघुराई ※ निसि न नींद बिन युगुल नसाई
नींद न भूख, सदा उर संका ※ कहँ केहि बिधि राखहिं सिय लंका
सियहिं बुझावत, सुनु अतिरूपा ※ मुख उठाय लखु लंक अनूपा
रवि-शशि सदा रहत सेवकाई ※ आयसु बिना न कोउ नियराई
सागर अगम मध्य गढ़ लंका ※ आवत निकट सुरासुर संका
देव - दनुज - दुहिता गृह मोरे ※ सेवइँ, सुमुखि! सदा पग तोरे
मम भण्डार बिपुल, नाना धन ※ तव आयसु सिय! सकल समर्पन
धरि सिय-चरन, बिकल मुख बानी ※ चन्द्रमुखी! करु कोप न रानी
तुम स्वामिनि, सेवक दसमाथा ※ अन्तःपुर चलि करहु सनाथा

सो० सुनि रावन के बैन, उर उपजेउ सिय क्रोध अति ।
मुख घुमाय, तर नैन, कहत सिथिल-स्वर जानकी ॥ ४१ ॥

भावेन जानकी देवी, सागर अपार ※ कृपार आधार राम किसे हबे पार
अधोमुखे जानकी कान्देन आशंकाय ※ उत्तरिल दशानन तखन लंकाय

सीताके लइया रावणेर लंकाय गमन

रथ हेते सीता के नामाय लंकेश्वर ※ 'कोथाय राखिब' बलि चिन्तित अन्तर
शत्रुता हइल राम-लक्ष्मणेर सने ※ निद्रा नाहि, यावत ना मारि दुई जने
रावणेर नाहि निद्रा, नाहिक भोजन ※ सीतारे राखिब कोथा, भावे सर्व्वक्षन
सीतारे प्रबोध वाक्ये कहे दशानन ※ लंकापुरी देख सीता, तुलिया बदन
चन्द्र-सूर्य्य दुयारे आसिया सदा खाटे ※ मोर आज्ञा-बिना केह ना आसे निकटे
चारभिते सागर, मध्येते लंकागड़ ※ देव दैत्य ना आइसे लंकार नियड़
देव-दानवेर कन्या आछे मोर घरे ※ दासी करि राखिब तोमार से सवारे
नाना-धनेपूर्ण देख आमार भाण्डार ※ आज्ञा कर सीता देवि, सकलि तोमार
सीतार चरणे पड़े करिया व्यग्रता ※ कोप ना करिह मोरे चन्द्रमुखि सीता
तोमार सेवक आमि तुमि तो ईश्वरी ※ आज्ञा करि सीता ल'ये जाइ अन्तःपुरी
रावणेर वाक्ये सीता कुपित अन्तरे ※ विमुखी हइया बलिलेन धीरे धीरे

---

१ सिर झुकाये २ व्याकुल ।

आन न ज्ञान, ध्यान मम प्राना ※ मम आराध्य राम भगवाना
सुनि सिय-बचन सिथिल दसकंधर ※ चेरिन कीन नियुक्त सीय तर
बन अशोक राखेंउ तहँ सीता ※ दासिन घिरी अतिव भयभीता
सूर्पनखा कटु बचन उचारी ※ बधहुँ कण्ठ धरि नखन बिदारी
तव देवर भंगेउ मम अंगा ※ तेंहि प्रकोप तव मृत्यु-प्रसंगा
गर्जत मुख विरूप यहि अन्तर ※ सकत न करि कछु भय-दसकंधर
बन अशोक दृग सजल सशोका ※ उर सिय राम सदा अवलोका

देवताओं द्वारा सीता की आहार-व्यवस्था

सुरगन बिकल बिपति सिय केरी ※ कहत विरञ्चि सुरपतिहिं टेरी
लंका सिय दस मास निवासू ※ कटै कवन विधि करि उपवासू[1]
सीय-मरन सुर-काज न सीझै[2] ※ लै परमान्न जाय सिय दीजै
गमने इन्द्र सुनत बिधि-बानी ※ जहँ अशोक-कानन सियरानी
मैं इत इन्द्र, सती! धरु धीरा ※ बेगि आय प्रभु मेटइँ पीरा
मृग आखेट लखन-श्रीरामा ※ छल-दसकंध, शून्य तव धामा
सेतु ससैन बाँधि करि पारा ※ हर्नाहि दनुज पुनि तव निस्तारा

राम ध्यान, राम प्राण, राम से देवता ※ रामविना अन्यजने नाहि जाने सीता
शुनिया सीतार वाक्य निरस्त रावण ※ ताँर काछे नियुक्त करिल चेड़ीगण
सीतारे राखिल ल'ये अशोक कानने ※ सीतारे बेड़िले गिया यत चेड़ीगने
शूर्पनखा आसि बले निष्ठुर वचन ※ गले नख दिया तोर बधिब जीवन
काटिल देवर तोर मोर नाक कान ※ सेइ कोपे आजि तोर बधिब परान
खान्दा मुखे गर्ज्जे खाँदी सभय अन्तरे ※ रावणेर डरे किछु बलिते न पारे
सशोक थाकेन सीता अशोक कानने ※ हृदये सर्व्वदा राम, सलिल नयने

देवगण कर्त्तृक सीतार आहारेर व्यवस्था

जानकीर दुखे दुखी सदा देव गण ※ इन्द्रेरे डाकिया ब्रह्मा बलेन वचन
लंकामध्ये थाकिबेन सीता दशमास ※ एहादिने केमने करेन उपवास
जानकी मरिले सिद्ध ना हइवे काज ※ एइ परमान्न ल'ये जाउ देवराज
ब्रह्मार बचने इन्द्र गेलेन तखन ※ जानकी आछेन यथा अशोक कानन
वासव बलेन, सीता, ना भाविह चिते ※ आमि इन्द्र आसियाछि तोमा संभाषिते
श्रीराम-लक्ष्मण गेल मृग मारिवारे ※ हरिल तोमाके से रावण शून्य घरे
सागर बाँधिया रामसैन्य करि पार ※ रावणे मारिया तोमा करिबे उद्धार

---

१ लंघन २ काम नहीं बनेगा।

रहहु शोक तजि धैर्य समेतू ❋ यहु परमान्न सिया तव हेतू
लंक दनुज-भय! प्रणवति सीता ❋ प्रभु सुरपति! किमि होय प्रतीता[1]

दो० सिय-संका समुचित समुझि, सहसविलोचन रूप।
धरेउ इन्द्र, लखि सीय कहँ, भइ प्रतीत अनुरूप ॥ ४२ ॥

सुधा सरिस परमान्न प्रकासा ❋ सेवत जासु न छुधा-पिपासा
रामहिं सिय नैबेद्य लगाई ❋ लीन प्रसाद, तृप्ति तिन आई
अमिय-पान सों सिय सन्तापा ❋ दूरि न प्रभु-बिरहानल-तापा
सुरपति कहेउ सुधा नित लाई ❋ देहुँ, धीर धरु हे सिय माई
बिदा महेन्द्र[2] लीन कहि एही ❋ इत दुख दुसह नित्य बैदेही
इत अशोक बन सीय बिरामा ❋ सुमिरत सदा राम अभिरामा
शोक अरण्य राम जेहि भाँती ❋ कवि बिपन्न बरनत बहुभाँती
प्रमुख ग्राम फूलिया निवासू ❋ राम-कथा कृतिवास हुलासू

श्रीराम द्वारा विलाप और सीता की खोज

कर सर-चाप राम गृह ओरा ❋ मग तहँ मिलत अपशकुन घोरा
दहिने जम्बुक[3] बाम भुजंगा[4] ❋ धरकत हीय, कम्प प्रभु-अंगा

शोक परिहर सीते, स्थिर कर मन ❋ परमान्न आनियाछि तोमार कारण
जानकी बलेन, लंका निशाचरमय ❋ इन्द्र यदि हओ, तबे देह परिचय
सीतार वचने इन्द्र भाविलेन मने ❋ सहस्रलोचन हइलेन तत क्षणे
इन्द्रके देखेन सीता सहस्रलोचन ❋ जन्मिल ताँहार मने प्रतीति तखन
दिलेन सीताके इन्द्र परमान्न सुधा ❋ याहार भक्षणे हरे तृष्णा आर क्षुधा
आगे परमान्न देन रामेर उद्देशे ❋ आपनि भक्षण सीता करिलेन शेषे
पायस-भक्षणे तृप्ति हबे कि ताँहार ❋ रामेर विरहानल ज्वले अनिवार
महेन्द्र बलेन, सीता, न हउ विकल ❋ प्रतिदिन जोगाइब आमि सुधाफल
सीतारे आश्वास दिया जान पुरन्दर ❋ अन्तरे जानकी दुःख पान निरन्तर
लंकाते रहेन सीता अशोक कानने ❋ हृदये श्रीराम मूर्ति सलिल नयने
कृत्तिवास पण्डितेर फाटिछे परान ❋ अरण्येते गान राम-शोकेर निदान
स्थानेर प्रधान से फुलियार निवास ❋ रामायण गान द्विज, मने अभिलाष

श्रीरामचन्द्रेर विलाप ओ सीतार अन्वेषण

हाते धनुर्व्वाण राम आइसेन घरे ❋ पथे अमंगल यत देखेन गोचरे
बामे सर्प देखिलेन शृगाल दक्षिणे ❋ तोलापाड़ा करेन श्रीराम कत मने

---

१ कैसे विश्वास हो कि तुम इन्द्र हो २ इन्द्र ३ सियार ४ सर्प।

मम अनुरूप दनुज स्वर पाये * तजि घर सून[1] लखन मनु धाये
छल - मारीच लखन भरमाये * सिय अकेलि तजि अन्त सिधाये?
दुख पर दुख विरञ्चि सिर डारा *दिय बिमातु! जस लिखेउ ललारा
हे सुरगन! बिनती मम एही * करहु आज रक्षा - बैदेही
आकुल राम, शोच उर भारी * आवत लखन प्रतच्छ निहारी
विस्मित ब्यस्त उपज हिय कंपन * लखनहिं पुनि बूझत रघुनन्दन

दो० कस अकेल तजि सीय बन, तव आगम हे तात! ।
लखत, हरन-सिय सफल भइ, असुर अपावन घात ॥ ४३ ॥

आयेउँ सौंपि तुमहिं प्रिय थाती[2] * तात कीन्ह रच्छा केहि भाँती
कस अन्यथा कीन मम बानी * अब धौं मिलन कठिन सियरानी
का गति अहा लखन मम होई * केहि सन किमि बरनउँ दुख रोई
कनक - पूतरी मम अतिरूपा * परी बन्धु! केहि फन्द अनूपा
दुर्जय दण्डक बन भय घोरा * असुर, हिंस्र पशु बहु चहुँ ओरा
केहि खल कीन्ह उपस्थित बाधा * दनुज दुष्ट मम केहि अपराधा
बरजेउ मुनिन सदा यहि कानन * दानव दुष्ट बिपुल भय कारन
तात! पूर्वापर[3] पर भल ज्ञाना * तबहुँ बिबेक न सुधि नहिं ध्याना

विपरीत ध्वनि करिलेक निशाचर * लक्ष्मण आसये पाछे शून्य राखि घर
मारीचेर आह्वाने कि लक्ष्मण भुलिबे * सीतारे राखिया एका अन्यत्र जाइबे
दुःखेर उपरे दुःख दिवे कि विधाता * या'छिल कपाले ताहा दिलेन विमाता
बलेन श्रीराम शुन सकल देवता * आजिकार दिने मोर रक्षा कर सीता
येमन चिन्तेन राम, घटिल तेमन * आसिते देखेन पथे सम्मुखे लक्ष्मण
लक्ष्मणेरे देखिया विस्मय मने मानि * व्यस्त ह'ये जिज्ञासा करेन रघुमणि
केन भाइ, आसितेछ तुमि ये एकाकी * शून्यघरे जानकीरे एकाकिनी राखि
प्रमाद पाड़िल बुझि राक्षस पातकी * ज्ञान हय भाइ हाराइलाम जानकी
आइलाम तोमाय करिया समर्पन * राखिया आइले कोथा मम स्थाप्य धन
मम वाक्य अन्यथा करिले केन भाइ * आर बुझि, सीतार साक्षात् नाहि पाइ
कि हइल, लक्ष्मण! कि हइल आमारे * ये दुःखे दुःखित आमि, कहिब काहारे
शुनरे लक्ष्मण, सेइ सोनार पुतलि * शून्यघरे राखिया काहारे दिलि डालि
दुरन्त दण्डकारण्य महा भयंकर * जन्तु-हिंस्र कत-शत कत निशाचर
कोन दण्डे कोन दुष्ट पाड़िबे प्रमाद * कि जानि राक्षसगणे साधिबेक वाद
एइ वने यत दुष्ट राक्षसेर थाना * मुनिगण सकले करेन सदा माना
तोमार लक्ष्मण पूर्व्वापर आछे जाना * तथापि लक्ष्मण ना करिले विवेचना

---

१ अकेला २ धरोहर ३ कब क्या अधिक आवश्यक है इसका विवेक ।

तव न दोष, भावी प्रतिकूला * बिधि अच्छर जनि मम अनुकूला
मो सन सूझ-बूझ अधिकाई * दैव-योग सो आजु नसाई
मायामृग छलि बन लै गयऊ * मम सर लगत असुर सो भयऊ
मूषल बिकट दहिन कर भारी * लखहु मरीच धरनि भयकारी
यहि बिधि कहत बन्धु दोउ जाहीं * अतिशय बेग, अन्त मन नाहीं[1]
तब लौं कुटी-द्वार नगिचाये * सिय, पुनि सिय, पुनि-पुनि गोहराये
कतहुँ न सीय, सून लखि धामा * भये अचेत धनुर्धर रामा
कौतुक लखि न तात मोहिं धीरा * बिन सिय इत मैं तजहुँ सरीरा

दो० हाय! लखन! घटना घटित जो मोरे-उर संक।
चोर दनुज सिय हरन किय, पाय अकेलि, निसंक ॥ ४४ ॥

बन-उपबन इत-उत तरु-मूला * हेरत[2] सिय प्रभु, दारुन सूला
कबहुँ लखन बहोरि रघुबीरा * पुनि पुनि लखत गौतमी[3] तीरा
गिरि कन्दरा मुनिन-बन माहीं * ठौर-ठौर सिय खोजत जाहीं
शत-शत बार जात चहुँ धाई * तबहुँ न सिय-दरसन कहुँ पाई
नयन बारि[4] रघुनाथ बिलापा * रोवत बन-खग-पशु संतापा
राम-कुटी मुनिगन जे आवहिं * धीरज दै बहु बिधि समुझावहिं

তোমার কি দিব দোষ, মম কর্ম্ম-ফল * যেমন বিধির লিপি ঘটিবে সকল
আমার অধিক ভাই, তব বুদ্ধিবল * কর্ম্মদোষ হেন বুদ্ধি গেল রসাতল
মায়া মৃগ ছলে মোরে লইল কাননে * হের, সেই রাক্ষস পড়েছে মোর বাণে
ভয়ংকর বিকট মুষল ডানি হাতে * দেখ ভাই, মারীচ পড়িয়া আছে পথে
এইমত কহিতে কহিতে দুই ভাই * বায়ুবেগে চলিলেন, অন্য জ্ঞান নাই
উপনীত হইলেন কুটীরের দ্বারে * 'সীতা-সীতা' বলিয়া ডাকেন বারে-বারে
শূন্য ঘরে দেখেন, না দেখেন জানকী * মূর্চ্ছাপন্ন অবসন্ন শ্রীরাম ধানুকী
শ্রীরাম বলেন ভাই, একি চমৎকার * না দেখিলে সীতা প্রাণ না রাখিব আর
তখনি বলিনু ভাই, সীতা নাই ঘরে * শূন্য ঘরে পাইয়া হরিল নিশাচরে
প্রতিবন প্রতিস্থান প্রতি-তরুমূল * সর্ব্বত্র দেখেন রাম হইয়া ব্যাকুল
পাতি পাতি করিয়া খোজেন দুইবীর * উলটি পালটি যত গোদাবরী-তীর
গিরি গুহা দেখেন, মুনির তপোবন * নানা স্থানে করেন সীতার অন্বেষণ
এক বার যেখানে করেন অন্বেষণ * পুনর্ব্বার জান তথা সীতার কারণ
এইরূপে এক স্থানে জান শতবার * তথাপি শ্রীরাম দেখা না পান সীতার
কান্দিয়া বিকল রাম, জলে ভাসে আঁখি * রামের ক্রন্দনে কান্দে বন্য-পশু-পাখী
রামের আশ্রমে আসি যত মুনিগণ * রামেরে কহেন কত প্রবোধ-বচন

---

१ किसी दूसरी ओर ध्यान नहीं २ खोजते फिरते थे ३ गोदावरी नदी ४ आँसू।

मुनिन सीख प्रभु मनहिं न माना ※ गुनत सदा उर सिय-गुनगाना
धरनि पलोटत सिय गोहराई ※ अंकहिं लखन लेत रघुराई
रामहिं धीर न, पुनि-पुनि शोकू ※ प्रभुहिं बिलोकि बिकल सुरलोकू
बिलपत कहत लखन सन एही ※ तात! न छन बिसरत बैदेही
कवन उपाय लखन! कहँ जाई ※ केहि बिधि सोध, सीय कहँ पाई?
सिय लुकान[1], आवत मन एही ※ बूझहिं लखन कितै बैदेही
कै बिन कहे संघ मुनि-नारी ※ गई कतहुँ मनु जनकदुलारी
कमलकुञ्ज भरमत धौं सीता ※ गोदावरि-तट जहाँ पुनीता
कमला मनौ कमलमुखि पाई ※ कमलकुञ्ज तेंहि लीन लुकाई[2]
शशि-छबि-भरम राहु कृत ग्रासा ※ कीन्ह शांत चिरकाल-पिपासा

दो० राज-हीन लखि धरनि मोहिं, कीन चहेउ श्री-हीन।
मम लक्ष्मी सीता, धरनि, निज-दुहिता[3] हरि लीन ॥ ४५ ॥

मैं श्री-हीन, दुसह दुख शूला ※ आजु बिमातु-मनोरथ फूला
सौदामिनि[4] समान घन नाहीं ※ तिमि अदरस सिय कानन माहीं
कनकलता छबि बन बैदेही ※ रुचिकर केहिं न? उजारेसि[5] तेही

उपदेश वाक्य नाहि मानेन श्रीराम ※ सदा मने पड़े से सीतार गुणग्राम
'सीता सीता' वलिया पड़ेन भूमितले ※ करेन लक्ष्मण वीर श्रीरामेरे कोले
रघुवीर नहे स्थिर जानकीर शोके ※ हाहाकार बार बार करे देवलोके
विलाप करेन राम लक्ष्मणेर आगे ※ ना भुलिते पारि सीता, सदा मने जागे
कि करिब, कोथा जाव अनुज लक्ष्मण ※ कोथा गेले पाव सीता कर निरूपण
मन बुझिवारे वुझि आमार जानकी ※ लुकाइया आछेन लक्ष्मण, देखि देखि
बुझि, कोन मुनिपत्नी-सहित कोथाय ※ गेलेन जानकी नाहि जानाये आमाय
गोदावरी तीरे आछे कमल-कानन ※ तथा कि कमलमुखी करेन भ्रमन
पद्मालया पद्ममुखी सीतारे पाइया ※ राखिलेन बुझि पद्मवने लुकाइया
चिर दिन पिपासित करिया प्रयास ※ चन्द्रकला-भ्रमे राहु करिल कि ग्रास
राज्यच्युत आमाके देखिया चिन्तान्विता ※ हरिलेन पृथिवी कि आपन दुहिता
रज्यहीन यद्यपि ह'येछि आमि वटे ※ राजलक्ष्मी तथापि छिलेन सन्निकटे
आमार से राजलक्ष्मी हाराइल वने ※ कैकेयीर मनोभीष्ट सिद्ध एत दिने
सौदामिनी येमन लुकाय जलधरे ※ लुकाइल तेमन जानकी वनान्तरे
कनक-लतार प्राय जनक-दुहिता ※ वने छिल, के करिल तोर उत्पाटिता

---

१ छिप गई है २ छिपा लिया ३ पृथ्वी ने अपनी कन्या को ४ बिजली
५ उजाड़ दिया।

दिवस दिवाकर निसि शशि-तारा ❊ हरि तम[1] करत जगत उजियारा
मम उर तिमिर[1] न सकहिं निवारी ❊ बिन सिय दिनहुँ सकल अँधियारी
दसौ दिसा सूनी बिन सीता ❊ मम मन धरत कतहुँ जनि प्रीता
सब सुख मूरि[2] ज्ञान मम ध्याना ❊ मणि बिन फनि[3], बिन सिय निष्प्राना
खोजहु लखन कतहुँ बन माहीं ❊ बिन सिय प्रान कुशल मम नाहीं
पञ्चबटी ! तैं पावन धामा ❊ यहि कारन इत लीन बिरामा
सुफल तासु भल मोहिं दिखावा ❊ तेंहि तपवन सिय आजु गवाँवा
लता विटप खग मृग पशु, कानन ❊ सिय शशिमुखी-हरन को कारन
बिलपत बन भरमत रघुराई ❊ सिय भूषन पथ परेउ लखाई
लखि रथ-शिखर भंग रथ चाका ❊ बिबिध खण्ड रथ कनक-पताका
मनि मुक्ता पुनि कञ्चनहारा ❊ बिखरे चहुँ रघुनाथ निहारा
लखन लखहु लच्छन कछु एही ❊ खोजइँ इत निश्चय बैदेही
सम्मुख अति उतंग[4] गिरिराई ❊ मनहुँ धरेंसि ससिबदनि[5] लुकाई

दो० तात ! निरखु यमदण्ड सम, मम सायक-कोदण्ड[6] ।
लखत समुख तव महारन, करहुँ बिपुल गिरि खंड ॥ ४६ ॥

दिवाकर निशाकर दीप्त तारागण ❊ दिवानिशि करितेछे तमो निवारण
तारा न हरिते पारे तिमिर आमार ❊ एक सीता विहने सकलि अन्धकार
दशदिक् शून्य देखि सीता अदर्शने ❊ सीता विना किछु नाहि लय मन मने
सीताध्यान, सीताज्ञान, सीताचिन्तामणि ❊ सीता विना आमि येन मणिहारा फणी
देख रे लक्ष्मण भाइ, कर अन्वेषण ❊ सीतारे आनिया दिया बाँचाओ जीवन
आमि जानि, पंचवटी, तुमि पुण्यस्थान ❊ तेइ से एखाने करिलाम अवस्थान
ताहार उचित फल दिले हे आमारे ❊ शून्य देखि तपोवन, सीता नाहि घरे
शुन पशु-मृग-पक्षि, शुन वृक्ष-लता ❊ के हरिल आमार से चन्द्रमुखी-सीता
कान्दिया कान्दिया राम भ्रमेन कानन ❊ देखिलेन पथ-मध्ये सीतार भूषण
देखिलेन, प'ड़े आछे भग्न रथ चाका ❊ कनक-रचित आछे पतित पताका
रथ-चूड़ा पड़ियाछे आर तार जाठि ❊ मणि-मुक्ता पड़ियाछे सुवर्णेर काँठि
श्रीराम बलेन देख भाइ रे लक्ष्मण ❊ एइ खाने करह सीतार अन्वेषण
सम्मुखे पर्व्वत बड़ अति उच्चकोटि ❊ लुकाइया पर्व्वत राखिल चन्द्रमुखि
यमदण्ड सम आमि धरि धनुर्व्वाण ❊ पर्व्वत काटिया आजि करि खान खान
महायुद्ध हइयाछे करि अनुमान ❊ लक्ष्मण, लक्षण तार देख विद्यमान

---

१ अँधेरा २ संजीवनी, अमृत ३ सर्प ४ ऊँचा ५ चन्द्रमुखी सीता
६ धनुषवाण ।

बोले लखन न हियँ केहु रूपा ※ सिय-निवास गिरि घोर विरूपा
अनुचित कोप वृथा गिरि-भंगा ※ नभ-पथ कोउ गमनेउ सिय-संगा
बहुबिधि लखन-प्रबोध अकामा[1] ※ बिकल अधीर कहेउ पुनि रामा
बिषधर स्वर धनु धरत प्रतञ्चा ※ दहन विश्व, यहु वृथा प्रपञ्चा
प्रभु-सर जारि करै जग-नासा ※ दक्ष यज्ञ जिमि शंभु विनासा
कहेउ लखन प्रभु-चरनन धाई ※ कछु मम विनय सुनहु रघुराई
रची सृष्टि जग सिरजनहारे ※ उचित न नाथ तासु संहारे
सकुल पातकिहिं समुचित नासू ※ तासु पाप किमि अन्य-बिनासू
प्रभु सर तजत न जग-निस्तारा ※ होई भसम विश्व जरि छारा
सीता कहँ[2] ? दोउ मिलि मन देहीं ※ धरि उर धीर शोध-सिय लेहीं
लखि गिरिशृंग तपोवन ग्रामा ※ चहुँ नद नदी सरोवर धामा
दरस न जो सीता कर पाई ※ मन भावै कीजिय रघुराई
सुनि निषंग[3] सर लिय रघुनाथा ※ हेरत सीय चले दोउ साथा
क्षण क्षण चलत करत बिश्रामा ※ मत्त प्रलाप करत बहु रामा
जल थल नभ सिय कर उद्देसू[4] ※ बन-बन फिरत सहत बहु क्लेसू
मिलत पन्थ कोउ, पूछत एही ※ तुम कहुँ लखी जाति बैदेही

लक्ष्मण बलेन, इहा नहे कोन मते ※ सीता केन रहिवेन ए घोरे पर्व्वते
पर्व्वत काटिते प्रभु चाह अकारण ※ सीता ल'ये अन्तरिक्ष गेल कोन्‌जन
नानामते श्रीरामेरे बुझान लक्ष्मण ※ शोकाकुल श्रीराम ना मानेन वचन
धनुके दिलेन गुण सर्प येन गर्ज्जे ※ बलेन, दहिब विश्व, आछे कोन कार्य्ये
विश्व पुड़ाइते राम पूरेन सन्धान ※ दक्ष - यज्ञ - विनाशे येमन महेशान
लक्ष्मण चरणे धरि करेन मिनति ※ एक कथा अवधान कर रघुपति
सृष्टिकर्ता सृष्टि करिलेन चराचर ※ केन सृष्टि नष्ट कर देव रघुवर
सवंशे मरिबे, ये हइवे अपराधी ※ अपराधे एकेर अन्येर नाहि बधि
तोमार वाणेते कारो नाहिक निस्तार ※ अकारणे केन प्रभु, पोड़ाउ संसार
कोथार आछेन सीता, करह विचार ※ दुइ भाइ अन्वेषण करिब सीतार
ग्राम आर तपोवन पर्व्वत शिखर ※ नद-नदी देखि आर गिरि सरोवर
तबे यदि सीतार ना पाइ दरशन ※ पश्चात् करिउ चेष्टा, येवा लय मन
शुनि अस्त्र संवरिया राखिलेन तूने ※ सीतार उद्देशे चलिलेन दुइ जने
क्षणेक उठेन राम, बसेन क्षणेक ※ उन्मत्तेर प्राय राम बलेन अनेक
जले - स्थले - अन्तरीक्षे करेन उद्देश ※ बने बने भ्रमिया अनेक पान क्लेश
जाइते देखेन जाके, जिज्ञासेन ताके ※ देखियाछ तोमारा कि ए पथे सीताके

१ व्यर्थ २ कहाँ है ? ३ तरकस ४ खोज।

दो० धन्य धन्य गिरि बिटप बन ! मो पर होहु सहाय ।
सिय-संबाद सुनाय मोंहि, लीजिय प्रान बचाय ॥ ४७ ॥

चक्रवाक और चक्रवाकी को श्रीराम का अभिशाप

चले दूरि कछु राजिवनयना[1] ※ चक्रवाक लखि पूछत बयना
केहुँ लै जात लखी बैदेही ※ सुनि बिहंग बोलत बिधि एही
बैदेही सों निपट अजाना ※ सुनहिं, मर्म खुलि करहु बखाना
सुनि खग - बचन कही मृदुवानी ※ जनकलली तिय मम सियरानी
उपवन तजि, गमनेउँ मृग हेतू ※ लौटि न पुनि सिय लखेउँ निकेतू[2]
कथा-राम सुनि किय उपहासू ※ जासु कुफल तिन भयेउ बिनासू
राम-कलेस बिहंग न ब्यापा ※ करत अनर्गल[3] ब्यंग प्रलापा
दुइ जन रखि न सके इक नारी ※ तिय बिन भ्रमत इतै बनचारी
तरु निवास, मैं हीन बिहंगा ※ रमत बिहंगिन दुइ[4] नित संगा
तिया-हरन पूछत जनि लाजा ※ मुख न बैन जहँ क्षत्रि-समाजा
चक्रवाक सुनि बचन कठोरा ※ कहेउ कोपि रघुवंशकिशोरा
मैं विपन्न[5], परि नारि-बिछोहू ※ शोध लेत भरमत तिय - मोहू

ओहे गिरि, ए समये करि उपकार ※ बाँचाओ कहिया जानकीर समाचार
हे अरण्य, तुमि धन्य, वन्य वृक्षगण ※ कहिया सीतार कथा राखह जीवन

चक्रवाक ओ चक्रवाकीर प्रति श्रीरामेर अभिशाप

आरो बहुदूर गिया कमललोचन ※ चक्रवाके देखि राम जिज्ञासे तखन
तुमि कि देखेछ निते जनकनन्दिनी ※ राम वाक्य शुनि पक्षी वलिलेक वाणी
जनकनन्दिनी केवा, तारे नाहि जानि ※ मर्म्मकथा खुलि बल मोर दोंहे शुनि
पक्षीर बचन शुनि बले चक्रपाणि ※ जनकनन्दिनी सीता आमार घरनी
गृहे राखि जाइलाम मृग मारिवारे ※ गृहे फिरि आसि देखि सीता नाहि घरे
रामेर कथाय पक्षी करे उपहास ※ एइ उपहासे तार हैल सर्व्वनाश
देखिया रामेर दुःख, दुःख ना हइल ※ उपहास करि पक्षी बलिते लागिल
एक नारी दुइ जने राखिते न पार ※ नारी उद्देशे ताइ हैला देशान्तर
पक्षिरूपे जन्म मोर वृक्षशाखे थाकि ※ एकेश्वर पक्षी आमि, दुइ नारी राखि
कि बलिबे जिज्ञासिले क्षत्रिय समाज ※ स्त्रीके हाराइया पुछ, नाहिं बास लाज
पक्षीर वचन शुनि कमल-लोचन ※ अग्नि सम नेत्र करि कहिला वचन
स्त्रीके हाराइया आमि पुछिनु तोमाय ※ तेंइ कि करिले तुमि विद्रूप आमाय

१ कमलनयन राम २ आश्रम में ३ अनुचित ४ दो पक्षिणियों के साथ
५ विपत्ति का मारा ।

नारि-संग-मद! मम उपहासू * सुलभ न अब तोंहि नारि-बिलासू
करहु अहार संग निसि दोऊ * तदपि न चीन्हि सकहु कोउ कोऊ
चकवा - चकई रैन बिछोहा * राम-शाप दोउ बिलग बिमोहा
अन्तरिक्ष रहि रंग - बिलासू * धरनि किये रति निश्चय नासू

दो० दण्ड पाय समुचित बिहग, चिन्ता शाप दुरंत[1]।
बोलि 'राम कम्! राम कम्'[2] गिरेउ चरन-भगवन्त ॥ ४८ ॥

चीन्हेउँ नाथ न पातक एता * सुनो स्वस्ति तुम क्षमानिकेता
भगतन प्रीति, पातकिन करुना * हरहु पाप, मैं भगवत्-चरना
जो अजान निकसी मुख बानी * करनी, लहि प्रभु-दरस, नसानी
बानी सुनि आरत खग केरी * कहेउ दयामय तेंहि पुनि हेरी
अमिट प्रभाव, पच्छि! मम शापा * तदपि निवारण तव संतापा
द्वापर फन्द ब्याध के जाला * फँसत नसै यहु शाप कराला
चक्रवाक कै दण्ड - कहानी * सुधा सरिस कृतिवास बखानी

राम-जटायु मिलन—सीता का समाचार प्राप्त

भरमत चहुँ इमि प्रभु पग डारा * रंजित - रक्त जटायु निहारा

स्त्रीर संगे वसि मोरे कैला उपहास * स्त्रीर गर्व्व रति-रस आजि होक् नाश
रजनीते आहार करिबे दुइ जने * केह कारे ना चिनिबे आमार वचने
उद्देश ना पावे केह रात्रिर भितरे * रात्रिते विच्छेद ह'ये थाकिबे अन्तरे
रतिक्रिया करि पक्षी उड़िया आकाश * भूमिते पड़िले हैउ रति संगे नाश
शापेते पक्षीर हैल दण्ड समुचित * 'राम कम् राम कम्' बलिल त्वरित
शाप पेये पक्षिवर चिन्तित हइया * श्रीरामेर स्तव करे भूमिते पड़िया
ना जानिया प्रभु, दोष हइल आमार * ये कथा बलेछि प्रभु शास्ति हैल तार
भकतवत्सल प्रभु तुमि नारायण * पतिते तराओ, ताइ पतित-पावन
ना बुझिया याहा किछु बलेछि बदने * सेइ पाप नाश हैल तव दरशने
रामेर हइल दया पक्षीर स्तवने * पुनरपि वले प्रभु पक्षिवर-स्थाने
जे कथा वलेछि, तार ना हबे खण्डन * द्वापर युगेते हबे ताहार मोचन
जाल दिया व्याधे तोमा करिबे बन्धन * तखन हइबे तव शाप-बिमोचन
कृत्तिवास पण्डितेर वाक्य सुधा-खण्ड * गाइल अरण्यकाण्ड चक्रवाक-दण्ड

जटायुर मुखे श्रीरामेर सीता-वार्त्ता श्रवण ओ जटायुर स्वर्गलाभ

एइ रूपे श्रीराम भ्रमेण चारिदिके * रक्ते रांगा जटायुके देखेन सम्मुखे

१ विकट २ चकई-चकवों की बोली।

सिय भच्छेसि खग ! मम अनुमाना ※ रे शठ ! अबहिं करौं बिन प्राना
तैं निशिचर खगरूप बिलोका ※ बिसिख[1] एक गमनै यमलोका
सर सन्धान, उतै खगराई ※ रक्त सने मृदु गिरा सुनाई
सिया-खोज पायेउ बहु क्लेसू ※ तात ! न लेस-सीय यहि देसू
लै सिय लंक गयेउ खल रावन ※ सिया-हेतु मम प्रान नसावन
युगुल बन्धु बिन उपबन पाई ※ दशमुख हरन कीन सियमाई
जरठ[2] गात, रन करि पथ रोका ※ आसा करि बहु पन्थ बिलोका
दनुज कीन पुनि पंख-बिहीना ※ स्रवत रक्त, अब जीवन हीना

दो० भरमि न इत-उत, कीजिए, जिमि दसमुख-विध्वंस ।
तात ! जनक[3] तव मित्र मम, धन्य दरस तेंहि अंस[4] ॥ ४९ ॥

तव हित नश्वर गात गवाँवा ※ प्रान रहत प्रभु-दरशन पावा
सम्मुख दरस देहु छबिखानी ※ सानुज राम सुनत मन ग्लानी
रोवत युगुल, नयन जलधारा ※ कह खग अच्छर अमिट ललारा
पितु सम, तात ! कहेउ रघुवीरा ※ कहि सिय-कुसल हरहु मम पीरा
दशमुख-सन मम-हेतु न रोषू ※ मम तिय-हरन तासु केहि दोषू
कहँ निवास कहु केहि कुल-केतू ※ सीता सुमुखि हरी केहि हेतू

पक्षीरे कहेन राम करि अनुमान ※ खाइलि सीतारे तुइ, बधि तार प्राण
पक्षिरूपे आछिस् रे तुइ निशाचर ※ पाठाइव एक बाणे तोरे यमघर
सन्धान पूरेन राम तारे मारिवारे ※ मुखे रक्त उठे बीर बले धीरे धीरे
अन्वेषिया सीतारे पाइले बहु क्लेश ※ एइ देशे ना पाइबे सीतार उद्देश
सीतार लागिया राम, आमार मरण ※ सीता के लइया गेल लंकार रावण
तोमार दु भाइ जबे नाहि छिला घर ※ शून्य घर पाइया हरिल लंकेश्वर
आमि वृद्ध, युद्ध करि रुद्ध करि ताय ※ राखिया छिलाम राम, तोमार आशाय
दुइ पाखा काटिलेक पापिष्ठ रावण ※ मुखे रक्त उठे राम जाय ए-जीवन
इतस्तत: भ्रमणे नाहिक प्रयोजन ※ चिन्ता कर राम, जाते मरिबे रावण
तोमार पितार मित्र, तोमा लागि मरि ※ आपनि मारिले राम, कि करिते पारि
प्राण आछे तोमारे करिते दरशन ※ सम्मुखे दाँड़ाउ राम देखि एक क्षण
आपना निन्देन राम जानि परिचय ※ दुइ भाइ रोदन करेन सातिशय
जटायु बलेन यत, लिखिब ता' कत ※ रामेर नयने बहे वारि अविरत
श्रीराम बलेन, पक्षि तुमि मोर बाप ※ कहिया सीतार वार्त्ता दूर कर ताप
रावणेर संगे मोर नाहिक वैरिता ※ विना दोषे हरिलेक आमार वनिता
कोन वंशे जन्म तार थाके कोन् पुरे ※ कोन् दोषे हरिलेक मोरे जानकीरे

१ बाण २ वृद्ध ३ पिता ४ पुत्र, अंश ।

पौरुष जोरि उठायेउ माथा * रामहिं सकल कहेउ खगनाथा
सहस चतुर्द्दश दानव मारे * कुत्सित शूर्पनखा करि डारे
रावन कोपि हरन सिय कीन्हा * उतरि सिन्धु लंका पग दीन्हा
विश्वस्रवा - सुवन नृप - नाथा * विधि-वर तेजपुञ्ज दसमाथा
चिन्ता तजि बिलाप, धरि धीरा * खल हनि आनहु सिय, रघुवीरा
चरनोदक पावौं मुख माहीं * लहौं सुगति सब पाप नसाहीं
प्रभुहिं कथा सिय केरि सुनावा * श्रम सों रक्त फूटि मुख आवा
अन्त बन्दि खग, पद-श्रीरामा * चढ़ि रथ दिव्य गयेउ सुरधामा
कथा जटायु वरनि कृतिवासा * धर्म-ज्ञान कर मर्म प्रकासा

जटायु की अन्त्येष्ठि

सिय हित प्रान दीन खगनाथा * पितु सम, अहह ! कहेउ रघुनाथा
दो० अयश, अधर्म ! जटायु-शव वन्यजन्तु जो खाहिं ।
दाह-कर्म आदेश प्रभु कीन्हेउ लक्ष्मण पाहिं ॥ ५० ॥
लखन दिब्य तहँ चिता सजाई * बिधिवत सो प्रज्वलित कराई
शव - बिहंगपति पुण्यस्वरूपा * अग्नि दीन दोउ बन्धु अनूपा
प्रेत - कर्म बिधिवत सम्पादन * गोदावरी सलिल किय तर्पन

अनेक शक्तिते पक्षी तुलिलेक माथा * कहिते लागिल श्रीरामेरे सर्व्वकथा
संहारिले चतुर्द्दश-सहस्र राक्षस * लक्ष्मण करेन शूर्पनखार अयश
एइ कोपे रावण हरिल जानकीरे * राखिल लंकाय ल'ये समुद्रेर पारे
पुत्र विश्वश्रवार रावण बड़ राजा * विधातार वरेते हइल महातेजा
कोन चिन्ता ना करिह संवर क्रन्दन * जानकीरे उद्धारिबे मारिया रावण
तव पादोदक राम, देह मोर मुखे * सकल कलुष नाशि जाइ स्वर्गलोके
कहिल सीतार वार्त्ता श्रीरामेर आगे * एत बलि पक्षीर मुखेते रक्त भांगे
मृत्युकाले बन्दे पक्षी श्रीरामचरण * दिव्यरथे चापि स्वर्गे करिल गमन
जटायुर मरण-श्रवणे धर्म्म ज्ञान * कृत्तिवास रचे इहा शुनिया पुराण

श्रीराम-कर्त्तृक जटायुर सत्कार ओ उद्धार

श्रीराम बलेन, पक्षी पितार समान * सीतार कारणे पक्षी हाराइल प्राण
वन्य जन्तु खाइले अधर्म-अपयश * अग्निकार्य्य करि राख, लक्ष्मण पौरुष
तवे त लक्ष्मण दिव्य-अग्नि कुण्ड काटि * ज्वालिलेन कुण्ड वीर करि परिपाटी
तुलिलेन चिताय जटायु पक्षिराज * दुइ भाइ ताहार करेन अग्निकाज
सत्कार करेन तार व्यवस्था येमन * गोदावरी जले तार करेन तर्पण

अन्त समय लहि दरसन-रामा ※ गमन जटायु कीन सुरधामा

श्रीराम द्वारा कबन्ध दानव का उद्धार

कित विराम ? रजनी[1] चहुँ छाई ※ शून्य कुटी गमने दोउ भाई
कानन कछुक चैन रघुराई ※ निर्जन धाम अधिक दुखदाई
लखन तात ! मोंहि सहन न पीरा ※ लेहुँ समाधि गौतमी - नीरा[2]
अनुज अंक भरि नयनन - वारी ※ बरि - बहि मुक्तन हार सवाँरी
नींद निसा जनि भरत उसासू ※ तहँ दिन तीन राम उपवासू
सिया-बिछोह दुसह दुख-तापू ※ अकथ अचिन्त्य राम - संतापू
गत निसि, निरखि अरुन[3] रघुकेतू ※ दक्खिन दिसि गमने सिय - हेतू
तजि उपवन, गमने दुइ कोसू ※ कुश - वन दुर्गम कीन प्रवेसू
सिंह ब्याघ्र महिषादि चरन्ता ※ तरु - तर तहँ सानुज भगवन्ता
बिक्रम-बुद्धि लखन अति आगर ※ बोले सुनहु नाथ ! करुनाकर
फरकत भुज-लोचन शुभ नाहीं ※ खंजन निकसि बाम पथ जाहीं
कुश-वन विषम अतिव भयकारी ※ लच्छन लखत अमंगलकारी

राम दरशने पक्षी गेल स्वर्गवास ※ गाइल अरण्यकाण्ड कवि कृत्तिवास

श्रीराम कर्तृक कवन्धेर मुक्ति-विधान

रजनी आइल, स्थान थाकिवार नाइ ※ शून्य घरे आइलेन पुनः दुइ भाइ
बाहिरे छिलेन राम वरंच आश्वस्त ※ शून्य घर देखि हइलेन आ रो व्यस्त
श्रीराम बलेन शुन भाइ रे लक्ष्मण ※ गोदावरी जीवनेते त्यजिब जीवन
एतेक बलिया लक्ष्मणेरे करि कोले ※ गांथिल मुक्तार हार नयनेर जले
रजनीते निद्रा नाहि घन बहे श्वास ※ से घरे करेन राम तिन उपवास
सीतार विच्छेद राम पाइल जे क्लेश ※ विशेष लिखिते गेले हय से अशेष
रजनी प्रभाता हय अरुण विकाशे ※ चलेन दक्षिणे राम सीतार उद्देशे
घर छाड़ जान राम क्रोश दुइ पथे ※ प्रवेशेन दुइ भाइ कुशेर वनेते
सिंह-व्याघ्र-महिषादि चरे पालेपाले ※ दुइ भाइ बसिलेन एक वृक्ष तले
बुद्धिते विक्रमे बड़ चतुर लक्ष्मण ※ रामेर बलेन किछु प्रबोध वचन
केन प्रभु हय हस्त-लोचन स्पन्दन ※ वामदिके करितेछे खण्डन गमन
विषम कुशेर वन देखि करे भय ※ नाना अमंगल देखि, ना जानि कि हय

---

१ रात्रि २ गोदावरी के जल में ३ अरुणोदय, प्रभात ।

दो० पुनि पथ गहेउ, कबन्ध दनु, बिकट दरस तहँ दीन ।
नाक कान मुख नैन सब, जासु उदर आसीन ।। ५१ ।।

अकथ! प्रलंब बाहु शत योजन * राम-लखन लखि, किय घन गर्जन
बाहु पसारि युगुल धरि कहही * करगत[1] मम अहार जनि बचही
कहु परिचय, मानव! केहि कारन * आगम इतै विषम वन दारुन
बोले राम, देहु तेंहि परिचय * नतरु तात[2]! प्रानन कर संसय
दुर्बल मन कीजिय कस नाथा * हनि दनु-भुज दोउ करहिं सनाथा[3]
सुनि दक्षिण कर[4] राम निपाता * लछिमन-खड्ग, बाम भुइँ पाता
छेदेउ भुज, दोउ बन्धु, बिशाला * फटकति अवनि कबन्ध कराला
पुनि रघुपतिहिं निवेदन करई * को तुम, कहँ निवास शुभ अहई
दसरथ-सुत जगपति, जगबन्दन * लखन कहेउ, सोई रघुनन्दन
लछिमन अनुज तासु, इत कानन * भरमत पिता-बचन प्रतिपालन
यहि बन बिकटाकार बिरूपा * कवन जाति, तुम दानव रूपा
सुनत कबन्धहिं लछिमन-बानी * परी याद पुनि कथा पुरानी
दैत्य कुबेर अन्त छबि नाहीं * मम छबि चन्द्र मनोज लजाहीं
तेंहि मद सुरन-रूप उपहासा * रुष्ट एक मुनि शाप प्रकासा

दुइ भाइ चलिते करेन अनुबन्ध * पथ आगुलिया राखे राक्षस कबंध
पेटेर भितर नाक-कान-चक्षु-माथा * शतेक योजन हस्त, अपूर्व्व से कथा
राम लक्ष्मणेरे देखि करिया तर्ज्जन * दुइ हात प्रसारिया राखे दुइ जन
कवन्ध वलिल तोरा आमार आहार * मोर हाते पड़िलि, कि पाइ निस्तार
ए विषम वने तोरा आइल कि कारण * परिचय देह शुनि तोरा कोन् जन
श्रीराम वलेन भाइ हइल संशय * प्राणरक्षा कर भाइ, देह परिचय
लक्ष्मण वलेन, प्रभु वुद्धि केन घाटि * राक्षसेर दुइ हात दुइ भाइ काटि
कवन्धेर डान हात काटेन श्रीराम * खड्गाघाते लक्ष्मण काटेन हस्त वाम
दुइ भाइ काटिलेन तार हस्त दुटि * पड़िया कबन्ध वीर करे छट्पटि
डाक दिया श्रीरामे से करे सम्भाषण * कोन् देशे थाक तुमि हउ कोन् जन
लक्ष्मण वलेन, राम जगतेर राजा * दशरथ! राजपुत्र सबे करे पूजा
श्रीरामेर भाइ आमि नामते लक्ष्मण * पितृसत्य पालिते बेड़ाइ बने बन
तुमि कोन् निशाचर विकृत आकृति * वनेर भितरे थाक, हओ कोन् जाति
एत यदि लक्ष्मण करेन सम्भाषण * पूर्व्वकथा कबन्धेर हइल स्मरण
कुबेर नामेते दैत्य छिलाम सुन्दर * कन्दर्प जिनिया रूप येन निशाकर
सकल देवता निन्दा करि निजरूपे * एक मुनिवर मोरे शाप दिल कोपे

---

१ हाथ में आया २ हे लक्ष्मण ! ३ मुक्ति प्रदान करें ४ हाथ ।

रूप-गर्व! निन्देसि पर-रूपा ❋ शाप विवश खल! होय विरूपा[1]
त्रेता विष्णु लेंहि अवतारा ❋ परसि राम-सर तव निस्तारा

दो० इन्द्र कोपि, हनि बज्र मम मुण्ड उदर-गत कीन।
चक्षु, कर्ण, नासा, चरन, सीस, उदर-आसीन ॥ ५२ ॥

गति बिहीन, जनि जतन-अहारा ❋ भुज प्रलम्ब बल मम आधारा
बाहू युगुल पर्वताकारा ❋ करगत मम बहु पन्थ-प्रसारा
चलत प्रहर दुइ समय प्रमाना ❋ पथ - विस्तार जीव जे नाना
भुज पसारि भच्छहुँ नित सारे ❋ नित समात ते उदर हमारे
घृणित अहार घृणित आकारू ❋ लहि तव दरस शाप-उद्धारू
प्रभु बन-हेतु जानि अभिलासा ❋ करि उपकार चहौं सुरवासा
वरनेउ राम, हरी सिय रावन ❋ मिलै दरस किमि तासु सुहावन
जेहि बिधि सुलभ होय बैदेही ❋ प्रभुहिं कबन्ध बतावत तेही
बिन अन्त्येष्टि[2] न मम निस्तारू ❋ निपट अन्ध मोहिं जग अँधियारू
अधम दनुज-तन जब लौं शेसू ❋ कबहुँ न सम्भव प्रभु! निरदेसू[3]
अनल-चिता, सुनि लखन सवाँरी ❋ दाह दीन पुनि बिधि अनुसारी
दहकेउ तन-कबन्ध बलसीवा ❋ उठेउ अनल सों अद्भुत जीवा

येमन रूपेर तेजे कर उपहास ❋ विरूप हउक सब, रूप याक् नाश
यखन हबेन विष्णु राम अवतार ❋ ताँर वाण स्पर्शे तोर हइबे निस्तार
आमार उपरे क्रुद्ध देव शचीनाथ ❋ करिले आमार शरीर बज्राघात
वज्राघाते मुण्ड मोर प्रवेशे उदरे ❋ चक्षु-कर्ण-घ्राण-पदे ना रहे बाहिरे
गतिशक्ति नाइ, किसे मिलिबेक भक्ष्य ❋ तेंइ मम दुइ-हस्त दीर्घ दुइ लक्ष
दुइ हस्त मोर येन दुइटा पर्य्यन्त ❋ दुइ हस्ते जुड़ि आमि बहुदूर-पंथ
दुइ प्रहरेर पथ यत वनचर ❋ दुइ हाते सापटिया भरि हे उदर
कुत्सित आकार मोर कुत्सित भोजन ❋ तोमा दरशने मोर शाप-विमोचन
तब किछु हित करि जाइ इन्द्रवास ❋ केन राम वने भ्रम, कोन् अभिलाष
श्रीराम बलेन, सीता हरिल रावण ❋ युक्ति बल, केमने पाइब दरशन
कबन्ध बलिल, राम, कहि उपदेश ❋ याहा हैते पावे तुमि सीतार उद्देश
यावत् तनुर मोर ना हय संहार ❋ तावत् ना देखि किछू, सब अन्धकार
राक्षस शरीर गेले पाव अव्याहति ❋ तबे त बलिते पारि इहार युकति
तखन लक्ष्मण वीर अग्निकुण्ड काटि ❋ कबन्धेरे दहिलेन करि परिपाटी
शरीर पुड़िया तार हइल अंगार ❋ अग्नि हैते उठे वीर अद्भुत आकार

१ अत्यन्त कुरूप २ अन्तःकर्म, दाहक्रिया आदि ३ निर्देश करना, राह सुझाना।

अवर भानु[1] मनु गगन प्रकासा * दिब्य पुरुष रामहिं सम्भासा
चित दै सुनहु लखन, रघुराई ! * ऋष्यमूक गिरि जहाँ सुहाई
मिलि सुग्रीव सरै[2] सब कामा * आयसु होय लहौं सुरधामा
राम दरस, दानव सुरधामा * कुश-कानन प्रभु कीन विरामा

श्रीराम-दर्शन पाकर शवरी का स्वर्गलाभ

दो० विगत रैन, रवि उदित छबि, सहित लखन, रघुवीर ।
पहुँचे सरित सुहावनी सलिला पम्पा तीर ॥ ५३ ॥

सहित बिहंगिनि[3] केलि बिहंगा[4] * चिर बिहार जहँ मृगी-कुरंगा[5]
राजहंस - हंसिन जल - क्रीड़ा * निरखि राम अतिशय मन पीड़ा
खग-मृग टेरि कहत बिधि एही * शशिमुखि कतहुँ लखी बैदेही
मज्जन - तर्पन पम्पा तीरा * शोध - सुकण्ठ[6] चले रघुवीरा
चलि मतंगमुनि - आश्रम आये * दरस तहाँ शवरी[7] के पाये
नयन नेह - जल भरत असेसू * रामहिं कहेउ यथा आदेसू
बहु दिन मुनि मतंग-पद सेवा * अन्त गये सुरपुर मुनिदेवा
मुनि के बचन—आश्रम वासू * दिवस एक जहँ राम निवासू

आकाशे उठिया करे रामे सम्भाषण * देवमूर्ति से पुरुष, द्वितीय तपन
पुरुष बलेन, शुन श्रीराम-लक्ष्मण * सावधान ह'ये शुन आमार वचन
सुग्रीवेर उद्देश करिओ ऋष्यमूके * आज्ञाकर रामचन्द्र जाइ स्वर्गलोके
राम दरशने कवन्धेर स्वर्गवास * कुशेर वनेते राम करेन प्रवास

श्रीरामदर्शने शवरीर स्वर्गलाभ

प्रभात हइल निशा, उदित मिहिर * चलिलेन दुइ भाइ पम्पा नदी तीर
केलि करे नाना पक्षी पक्षिणी सहित * देखिलेन मृग-मृगी विच्छेद-वञ्चित
राजहंसे-राजहंसी क्रीड़ा करे जले * देखिया रामेर शोकसागर उथले
जिज्ञासा करेन राम, ओहे मृग पक्षि * देखियाछ तोमारा कि सीता चन्द्रमुखी
पम्पाते करिया स्नान, करिया तर्पण * सुग्रीव-उद्देशे राम करेन गमन
प्रवेश करेन राम मतंग-आश्रमे * तथाय शवरी छिल देखिल श्रीरामे
शवरी आनन्द-वारि वारिते न पारे * श्रीरामेर प्रति बले आज्ञा अनुसारे
मतंग मुनिर सेवा करि बहुकाल * वैकुण्ठ गेलेन मुनि ह'ये प्राप्तकाल
कहिलेन आमार आश्रमे कर स्थित * आसिवेन एखाने अवश्य रघुपति

---

१ दूसरा सूर्य २ काम बनेगा ३ पक्षिणी ४ पक्षी ५ हरिन-हरिनी
६ सुग्रीव की खोज में ७ देखिये पृष्ठ ३८५ ।

दरस मिलैं जब नलिनि-विलोचन[1] ❊ शवरी! तब तव पाप-विमोचन
राम - राम रघुपति श्रीरामा ❊ दासिहिं सदय लेहु निज धामा
शुद्ध काठ बहु, चिता सजाई ❊ शवरी पुनि तहँ अनल जराई
कीन प्रवेश, राम मन धारी ❊ तेंहि साहस प्रभु विस्मय भारी
दहकि शरीर भयेउ जरि आगी ❊ अहह! धन्य शवरी बड़भागी!
जासु अस्मरन मंगल नामा ❊ मुक्ति दैन पावन हरिधामा
सो प्रतच्छ पुनि दरसन पाई ❊ शवरी-गति§ प्रभु स्वयं बनाई
राम प्रसाद पाप तेंहि नासू ❊ अनायास बैकुण्ठ निवासू

दो० राम-चरित-घट-सुधा सों, लहि अरण्य सुख-खानि ।
किष्किन्धा गाथा कहत, कवि कृतिवास बखानि ।। ५४ ।।

शवरी, यखन पावे राम-दरशन ❊ तखन हइवे तव पाप-विमोचन
राम-राम श्रीराम राघव रघुपति ❊ हइया प्रसन्न ए दासीरे देह गति
शवरी रामेर आगे अग्निकुण्ड काटे ❊ आनिया ज्वलिल अग्नि नाना शुद्धकाठे
अग्निते प्रवेश करे स्मरि नारायण ❊ ताहार साहसे राम चमकित-मन
अग्निते पुड़िया तनु हइल अंगार ❊ ताहार भाग्येर कथा कि कहिब आर
याँहार स्मरण मात्र मुक्ति संगे धाय ❊ ताँहाके सम्मुखि देखि त्यजिल से काय
श्रीराम-प्रसादे तार हय पाप नाश ❊ अनायासे शवरी चलिल स्वर्गवास
श्रीराम-चरित-कथा अमृतेर भाण्ड ❊ एत दूरे समाप्त हइल वन-काण्ड

।। अरण्यकाण्ड समाप्त ।।

---

१ कमलनयन राम ।

§ शवरी—एक अस्पृश्य कन्या के विवाह-आयोजन हेतु, उसके माता-पिता ने अनेक पशु-पक्षी प्रीतिभोज के निमित्त एकत्र कर रखे थे । शवरी को जब यह पता लगा, तो वह इस जीव-हत्या की आशंका से व्याकुल हो, विना कहे-सुने वन में भागकर अकेली फल-फूल-पत्तों पर गुज़र करने लगी । संयोगवश मतंग मुनि को इस छिपी हुई भक्तिनी का आभास मिला और उन्होंने उसे अपने आश्रम में आश्रय दिया । बहुत दिनों बाद, मतंग मुनि ने अपने शरीर-त्याग के समय शवरी से कहा कि वह उसी आश्रम में रहकर भगवान् के वहाँ आगमन तक प्रतीक्षा करे और भगवान् रामचन्द्र का दर्शन पाकर तब स्वर्गलाभ करे । सुतराम् शवरी वहाँ अकेली रहती, नित्य फल बटोर कर सायंकाल तक भगवान् की प्रतीक्षा करती और तब नैवेद्य लगाकर उसे स्वयं ग्रहण करती । वह शुभ अवसर राम के वन-आगमन के समय उपस्थित होने पर, शवरी ने उनका जंगली वेरों से सत्कार किया और, भगवान् का दर्शन प्राप्त होने पर, सदेह चितारोहण कर बैकुण्ठ को प्रस्थान किया ।

* श्रीगणेशाय नमः *

किष्किन्धाकाण्ड

श्लोक—कुन्देन्दीवरसुन्दरौ धृतिवलौ विज्ञानगेहावुभौ
लोलाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ ।
मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ सत्यव्रतावस्थितौ
सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्त्या भजामो वयम् ॥ १ ॥
ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं-
श्रीशम्भो रसनासुतृप्तिजनकं देवैः परं दुर्लभम् ।
संसारामयभेषजं सुमधुरं श्रीजानकीजीवनं-
धन्यास्ते कृतिनः पिवन्ति नियतं श्रीरामनामामृतम् ॥ २ ॥

दो० राम-लखन दण्डक भ्रमन, कपिगन कीन सहाय ।
सीय-खोज मञ्जुल कथा कहेँउ सन्त कबि गाय ॥

ऋष्यमूक गिरि शिखर सुहावन * युगुल बन्धु चलि सो किय पावन
तहँ मारुति[1], गवाक्ष, नल, नीला * सहित, सुकण्ठ[2] बसत बलशीला
उर ससंक कपिगन भय छावा * बालि मनहु चर युगुल पठावा
बालि अथाह बुद्धि - चतुराई * सो बिन जुगुति बूझि किमि पाई
सुनि सुग्रीव-बचन, तरु-डारी * फाँदि चढ़े बहु शाखाचारी[3]
घुड़कत खौखियात बहु भाँती * तरु विशाल फल-फूल निपाती
व्याघ्र, मृगेन्द्र[4], महिष भय पाई * आर्त्त कण्ठ गिरि चले बराई
हनुमत कहेँउ, सुनहु कपिकेतू[2] * कतहुँ न बालि, बालि-भय हेतू

श्रीराम लक्ष्मण दोंहे भ्रमेन दण्डके * सहाय करिते जान वानर कटके
दुइ भाइ उठिलेन पर्व्वत शिखरे * देखिया वानर पञ्च शंकित अन्तरे
सुग्रीव बलिल देख आसे दुइ नर * मने करि, बालि राजा पाठाइल चर
बुद्धिर सागर बालि बुद्धि धरे नाना * तत्त्व धर सत्य मिथ्या सब जावे जाना
सुग्रीवेर वचने वानर पाले पाले * लाफे लाफे उठे सब बड़-बड़ डाले
से गाछ सहिते नारे सवार आस्फाल * फल फूल भांगे कत शाल-ताल-डाल
बनजन्तु यत छिल पर्व्वत-शिखरे * सिंह व्याघ्र महिष पलाय उच्चैःस्वरे
हनूमान ब'ले राजा ना हओ चिन्तित * ना देखिया बालिरे हइले केन भीत

१ हनुमान २ सुग्रीव ३ बन्दर ४ सिंह ।

जग जानत कपि-चञ्चल-रीती * तिन नृप चपल, अधिक अनरीती
चलि देखहुँ, के धनुधर वीरा * बिन जाने, प्रभु ! व्यर्थ अधीरा
तापस बेस यदपि, हनुमाना ! * तदपि हेतु-भय ! कर धनु-बाना !
कोउ नृप सुवन, भभूति रमाई * आनहु मर्म बेगि तुम जाई
धरि मुनि-रूप चले हनुमाना * उभय मिलन अति मोद समाना[1]
राम-नाम यम त्रास नसावन * सहज मुक्ति, हरि-नाम दिवावन
प्रथम कड़ी किष्किन्धा गाना * मञ्जु, विज्ञ कृतिवास बखाना

राम-सुग्रीव-मित्रता और सीता-आभूषण-प्राप्ति

निरखि, पवनसुत, दोउ तपरूपा * कहेउ बचन, धरि निज मुनि-रूपा

छं० बनबासिन छम्य सरूप धरे, निहचय तुम राजदुलार कोऊ ।
सखि-भानु समान धरा बिचरौ, तजि व्योम[2] अरण्य रमन्त दोऊ ।।
केहि हेतु, कवन कुल-केतु, सदन कहँ? नाथ! सकल बिबरन कहऊ ।
जग-जाहिर वानरराज सुकण्ठ-सचीव[3] की संक प्रभो! हरऊ ।।

दो० लहैं मित्रता नाथ की, सुग्रीवहिं अभिलाष ।
तिन बसीठ[4] हनुमान मैं, इत आयेउँ प्रभु पास ।।

वानर चञ्चल जाति लोके उपहासे * चञ्चल हइले राजा लोके आरो दोषे
आमि गिया जेने आसि कोथाकारवीर * तथ्य ना जानिया केन हइले अस्थिर
सुग्रीव बलिल, देखि तपस्वी उभय * किन्तु धनुर्व्वाण धरे, मने लागे भय
हइबे तपस्वी वेश राजार कुमार * शीघ्र जाह हनूमान आन समाचार
जान हनूमान वीर तपस्वीर बेशे * परम गौरव भावे उभय सम्भाषे
राम नाम श्रवणे यमेर दाय तरि * अनायासे मुक्त हबे मुखे ब'ल हरि
कृत्तिवास पण्डितेर मधुर पांचालि * रचेन किष्किन्ध्याकाण्ड प्रथम शिकलि

सुग्रीवेर सहित श्रीरामेर मित्रता-बन्धन ओ सीतार आभूषण-प्राप्ति

हनूमान मुनिवेशे देखे दुइ जन * तपस्वीर वेश धरि कर सम्भाषन
हनूमान कहे, प्रभु, देखि ये आकार * अवश्य हइबे कोन राजार कुमार
चन्द्र सूर्य्य जिनि रूप भ्रम भूमण्डले * गगनमण्डल छाड़ि केन वनस्थले
कोथा घर कि कारने हेथा आगमन * विशेषिया कह प्रभु सब विवरन
सुग्रीव वानरराजा लोके ख्यातिमान * ताँहार सचिव आमि नाम हनूमान
तोमा सह मित्रता करिते अभिलाष * पाठाइल सुग्रीव आमारे तव पाश

---

१ आनन्द से भर गये २ आकाश ३ सुग्रीव के मंत्री मुझ हनुमान की ४ दूत ।

सुनि लखनहिं आयसु दियेउ रघुपति राजिवनैन ।
सचिव-सुकण्ठहिं लखन निज दीन्हेउ परिचय बैन ॥ १ ॥

छिति-भूषन दशरथ नृप-बन्दन ※ हम तिन सुवन लखन-रघुनन्दन
कानन इतै सत्य-पितु पालन ※ सूने हरी सिया तहँ रावन
एक सिद्ध जन[1] किय निर्देसू ※ मिलन-सुकण्ठ हरन सब क्लेसू
कहँ सुग्रीव? भ्रमन तेहि हेतू ※ लै कपि! चलौ जहाँ कपिकेतू
कह कपि, दरस परस्पर पाई ※ निवरैं क्लेस, उभय[2] सुखदाई
नारि-हरन अरु राजु विनासी ※ बालिराज किय अनुज प्रवासी
तव-सहाय तिन राज-उबारू ※ तिन-कर[3] पुनि सीता-उद्धारू
राज-रहित बन भ्रमत कपीसा ※ लहै राज-सुख मिलि जगदीसा
बोले राम, करउ कपि! सोई ※ मम-सुग्रीव-मिलन जिमि होई
सुनि प्रभु-बचन बेगि हनुमाना ※ चलि सुकण्ठ प्रति सकल बखाना
ऋष्यमूक सुग्रीव सुहाये ※ मारुति-बचन सुनत मन लाये

छं० हे कपि-मुकुट! कुरूप कीस तजि, मानव-तन छबि धारी ।
पाद्य-अर्घ्य-सत्कार करहु चलि आई राम-सवारी ॥

श्रीराम वलेन शुन लक्ष्मण वचन ※ सुग्रीवेर पात्र सह कर सम्भाषन
एतेक कहेन यदि कमललोचन ※ निज परिचय देन ताहारे लक्ष्मण
महाराज दशरथ पृथिवी-भूषण ※ आमरा ताँहार पुत्र श्रीराम लक्ष्मण
आइलाम पितृसत्य पालिते कानन ※ शून्य घरे पेये सीता हरिल रावण
कोन सिद्ध पुरुषे कहिल उपदेश ※ सुग्रीव हइते सब खण्डिवेक क्लेश
भ्रमितेछि आमरा सुग्रीवेर उद्देशे ※ दोंहारे लाइया चल सुग्रीवेर पाशे
हनूमान वलेन, उभय दरशने ※ परस्पर तुष्ट हबे उभयेर मने
सुग्रीवेर राज्य नाइ, नाइ तार नारी ※ वालिराजा हरिया करिल देशान्तरी
सुग्रीव पाइबे राज्य साहाय्ये तोमार ※ सुग्रीव करिबे तव सीतार उद्धार
हाराइया राज्य भ्रमे सुग्रीव कानने ※ राज्य सुख पाइब से तव दरशने
श्रीराम ब'लेन, कपि करह गमन ※ सुग्रीवेर सने मोर कराओ मिलन
शुनिया रामेर वाक्य जान हनूमान ※ कहेन सकल सुग्रीवेर विद्यमान
ऋष्यमूक पर्व्वते उठिया सेइ क्षणे ※ हनूमान कहेन, सुग्रीव राजा शुने
छाड़ह वानर मूर्ति कुत्सित आकार ※ धरह मनुष्य रूप, देखिते सुसार
पाद्य अर्घ्य लाइया करह शिष्टाचार ※ आइलेन राम दशरथेर कुमार

१ देवयोनि-प्राप्त कवन्ध दैत्य २ दोनों को ३ सुग्रीव के ...

दसरथ-नन्दन जगबन्दन के, प्रभु ! अब काज सवाँरी ।
लहि सहाय निज विपदा निवरौ[1] पात्र-कुपात्र विचारी ॥
अनुज सुलच्छन लखन जासु तिन तिया हरी दसभाला ।
बिधि-अनुगत ! सुग्रीव-द्वार सो प्रस्तुत आजु कृपाला ॥
वेद न जानत भेद, जोगि जन ध्यावत, जाहि त्रिकाला ।
शिव-विरञ्चि तरसत जिन दरसन श्रीपति राम-भुवाला ॥

सुनि सुग्रीव अनन्द-विभोरा ❋ लै फल-पुहुप चलेउ प्रभु ओरा
मंगल घरी धन्य ! कपिकेतू ❋ सुभ छन लहेउ दरस-रघुकेतू
पाद्य अर्घ्य पूजेउ रघुवीरा ❋ पुलकित कपि दृग सरसति नीरा
कर जोरे प्रणवति कपिराजू ❋ अवगत नाथ ! मोहिं तव काजू
गाथा सकल कही हनुमाना ❋ सिय-उद्धार हेतु भगवाना

दो० मारुति-बचन प्रतीत जनि, पसुहिं बनावौ मीत ।
प्रियजन कहि, कर गहहु[2] प्रभु ! जो मो पै कछु प्रीत ॥ २ ॥

कहँ कपि हीन, कहाँ तव चरना ❋ कृपासिन्धु कीजिय कछु करुना
प्रभु-पद परसत शिला-स्वरूपा ❋ अहह ! भई सुन्दरी अनूपा

ताँहारे साहाय्य यदि कर महाराज ❋ सेह परकाले तव सिद्ध हबे काज
रामेर अनुज से लक्ष्मण सुलक्षण ❋ सुवर्ण कुवर्ण मानि करि निरीक्षण
रामेर रमणी सीता हरिल रावण ❋ सेइ हेतु तोमाते ताँहार प्रयोजन
सुग्रीव, तोमारे आजि अनुकूल विधि ❋ कोथा हैते मिलाइल राम गुणनिधि
एतदिने तोमारे दुःखेर अवसान ❋ तोमारे सदय रामरूपी भगवान
याँर तत्व चारि वेदे ना पाय किञ्चित् ❋ विरिञ्चि वाञ्छित आर शंकर इप्सित
योगे योगे योगिगन ना पाय याँहारे ❋ सेइ राम रमानाथ उपस्थित द्वारे
शुनिया सुग्रीव राजा आपना पासरे ❋ फल पुष्प लये गेल श्रीराम गोचरे
बड़ भाग्य सुग्रीवेर विधिर लिखन ❋ शुभक्षणे करिल श्रीराम-दर्शन
पाद्य अर्घ्य दिया श्रीरामेर पूजा करे ❋ प्रेमानन्दे सुग्रीवेर नेत्र नीर झरे
कृताञ्जलि हइया कहिल कपिराज ❋ हइयाछि ज्ञात राम, तोमार ये काज
कहिलेन सकल आमारे हनूमान ❋ सीतार उद्धार हेतु आइले ए स्थान
मित्रता करिबे राम पशुर सहित ❋ ए हनूमानेर वाक्य ना हय प्रतीत
पशु प्रति यदि राम हय अनुग्रह ❋ मित्र बलि रघुवीर हस्ते हस्त देह
दास योग्य नहि आमि जातिते वानर ❋ करुणा प्रकाश कर करुणासागर
पाषाण उपर समर्पिया निज पद ❋ अनायासे दिले तारे मनुष्येर पद

केवट धन्य! सुहृद पद पाई ※ हीनहिं सुगति राम-प्रभुताई
राजिवनयन राम रघुनाथा ※ गहि कपीस-कर कीन सनाथा
पूरुब पुन्य अनन्त कपीसा ※ विधि वाञ्छित पद लहि जगदीसा
गुणनिधि राम दया के सागर ※ जासु कृपा बन्धन वन-वानर

छं० अति पामर, वानर प्रति कातर, प्रभु कर[1] दहिन बढ़ावा।
तजि मुनिवेस, पवनसुत अरनी[2] मंथि अनल सुलगावा॥
साखी अगिनि, परस्पर प्रमुदित, मित्र! मित्र! गुहरावा।
हनि रिपु, तिय-उद्धार, दुहुन दोउ करि सहाय, मन भावा॥

अमिट ललार-लिखी विधि-गाथा ※ जगपति[3] बचन बँधे कपि साथा
धन्य धन्य सुग्रीव कपाला[4] ※ सुहृद राम जिन परम दयाला
कथन परस्पर दोउ जन कहहीं ※ अतिशय मोद निरखि दोउ लहहीं
कथन-श्रवन दोउ मित्रन-गाना ※ दिन बहुरत[5] सुग्रीव समाना
कहे सुकण्ठ यथा मोहिं ज्ञाना ※ सिय-वृतांत प्रभु! करहुँ बखाना
कपि हम पाँच इतै गिरि ऊपर ※ स्यन्दन गगन लखा दसकंधर
बाला बिलपत रथ, कंकण-ध्वनि ※ गरुड़मुखे जिमि ग्रस्त भुजंगिनि

चण्डालेरे दस्यु भावे करिले उद्धार ※ नीचेर निस्तार हेतु तव अवतार
दयाल श्रीरामचन्द्र कमललोचन ※ वानरेर हस्ते हस्त देन नारायन
पुञ्ज पुञ्ज पूर्व्व पुण्य सुग्रीवेर छिल ※ विरिञ्चि वांछित पद प्रत्यक्ष पाइल
परम दयालु राम गुणे नाहि सन्धि ※ जाँर गुणे वनेर वानर हय वन्दी
वानरेर हस्त दिते नहेन विमर्ष ※ दिलेन दक्षिण हात श्रीराम सहर्ष
मुनि वेश छाड़ि कपि ह'ये हनूमान ※ काष्ठ आने वाछिया डागर दुइ खान
दुइ काष्ठ घर्षण करिते अग्नि ज्वले ※ अग्नि साक्षी करि दोंहे मित्र-मित्र बले
परस्पर बैरी मारि उद्धारिब नारी ※ अग्नि साक्षी करि एइ हइल दोंहारि
विधिर निर्व्वन्ध केवा करिबे खण्डन ※ वानरेर संगे सत्ये बद्ध नारायन
सवा हैते सुग्रीवेर अधिक कपाल ※ मितालि करेन राम परम दयाल
उभये कहेन कथा शुनेन उभय ※ उभये उभय-प्रति प्रीति सातिशय
उभयेर मित्रता जे शुने किम्बा कय ※ सुग्रीवेर मत तार हय भाग्योदय
सुग्रीव कहेन, राम, कहि अवशेष ※ पाइया छिलाम बूझि सीतार उद्देश
आमरा वानर पञ्च छिलाम पर्व्वते ※ देखिलाम एक कन्या रावणेर रथे
हात पा आछाड़े करे कंकणेर ध्वनि ※ गरुड़ेर मुखे येन बद्धा भुजंगिनि

१ हाथ २ अरणी, घिसकर अग्नि प्रकट करने के लिए दो काष्ठ ३ जगत् के स्वामी ४ भाग्य ५ [illegible]

आँचर आभूषन, गरहारा * रथ सों झरत मनहुँ नभ-तारा
धरेउ सँजूति नाथ मैं तेही * संसय मोहिं सोई वैदेही
लाय धरउँ प्रभु आयसु पाई * लखौ चीन्ह-सिय ते रघुराई

दो० चीन्ह-मैथिली आनि मोहिं दरस करावहु मीत ।
राखि प्रान, मेटहु व्यथा, बोले करुनातीत ॥ ३ ॥

आनेउ सोइ सुकण्ठ अविरामा * सोक-सिन्धु उमड़ेउ लखि रामा
सोक-विवस प्रभु धरनि निपाता * बरसि नयन-जल भिजवति गाता
आँचर अभरन रूपसि तोरा *कहँ सुमुखी ? विलाप अति घोरा!
तिन मग तजि मोंहि किय निर्देसू[1] * जानहिं किमि, कहँ प्रिय, केहि देसू
कहहु अहा! सुग्रीव सनेही * संभव मिलन पुनः वैदेही
सिय मन सुमिरि व्यथा उर माहीं * जग अँधियार ज्ञान थिर नाहीं
जनि दिन-रैन चैन, कहँ जाई * चन्द्रबदनि - दरसन कहँ पाई
स्वर्ग - मर्त्य तिहुँलोक पताला * हेरि दनुज जहँ जाति कराला
हनहिं, न तिन कोउ राखनहारा * मम धनु - तेज विदित संसारा
आनहु चाप, लखन! रिपु मारी * शोक-अनल-उर होय निवारी[2]
बानरपति[3] बहुबिधि समुझावा * कृत्तिवास मंजुल - पद गावा

गलार उत्तरीय गायेर आभरण * रथ हैते पड़िल जेमन तारागण
अनुमाने बुझि तिनि तोमार सुन्दरी * यत्न करि राखियाछि भूषण उत्तरी
यदि आज्ञा हय तब आनि ता एखन * हय नय, चिन मित्र सीतार भूषण
श्रीराम बलेन, मित्र, कर से विधान * देखाओ सीतार चिन्ह राख मम प्रान
आभरण आनेन सुग्रीव सेइ स्थले * देखिया रामेर शोकसागर उथले
अवश हइया राम पड़ेन भूतले * शरीर भासिल ताँर नयनेर जले
विलाप करेन कोथा रहिले सुन्दरी * तोमाय भूषण एइ तोमाय उत्तरी
जानाइते आमारे फेलियाछिले पथे * कोन दिके गेले प्रिये, जानिब किमते
कह कह सुग्रीव आमार तुमि सखा * पुनः कि पाइब आमि जानकीर देखा
जानकीर रूप मने हइले उदय * ज्ञानहत एइ सेइ, देखि विश्व तमोमय
स्थिर नहे मन देह दिवस रजनी * कोथा गेले पाइ सेइ सुधांशुबदनी
स्वर्ग मर्त्य पाताले रावण वैसे यथा * घुचाइब सर्व्वत्र राक्षस जाति कथा
त्रिभुवने जाने मम धनुकेर छटा * मारिब राक्षसगणे रक्षा करे केटा
लक्ष्मण, उद्योग कर, आन धनुर्व्वाण *अरि-बध करि आमि शोकाग्नि निर्व्वाण
सुग्रीव विविध रूपे रामे के बुझान * कृत्तिवास रचे गीत मधुर आख्यान

१ संकेत २ निवारण ३ सुग्रीव ।

राम-नाम-महिमा

छं० यम कर दमन कीन रावन, तिन-दलन कियेउ प्रभु रामा ।
पुण्य-नाम जिन लिये फन्द कटि, दरस न पुनि यम-धामा ।।
पातक-हरनि पुण्य कै जननी, बेद-ऋचा रामायन ।
श्रवन, ध्यान, पारायन कीन्हे तुष्ट होत नारायन ।।

सर्वप्रधान कर्म जप-रामा * कर्म न धर्म, वृथा सब कामा
अन्तकाल जेहि मुख प्रभु-रामा * चढ़ि बिमान गमनत सुरधामा
सुयश अहिल्या जग बिस्तारा * रघुपति महिमा अकथ अपारा
अश्वमेध-फल सुनि रामायन * खल रत्नाकर सम तारायन
सिथिल न कबहुँ, सदा हिय धारन * राम-सेतु भव-सिन्धु उबारन

दो० वन-वानर के नेह बँधि, दीनन कीन सनाथ ।
जल-तैरत पाहन[1], अहो ! लीला-लीलानाथ ।।
राम-जन्म सों प्रथम ही वत्सर साठि हजार ।
राम-भविष्यपुरान किय बाल्मीकि विस्तार ।।
वाल्मीकि मुनि बन्दि, किय बंग-काव्य कृतिवास ।
देवनागरी माँहि सो यहि विधि भयेउ प्रकास ।। ४ ।।

राम-नाम महिमा

शमन-दमन रावण राजा, रावण-दमन राम ।
शमन-भवन ना हय गमन, जे लय रामेर नाम ।।
सुकृत-जनन, दुष्कृति-दमन, श्रुति-मुख रामायण ।
श्रवण-मनन, करे जेइ जन, तारे तुष्ट नारायण ।।

राम-नाम जप भाइ अन्य कर्म्म पिछे * सर्व्व धर्म्म-कर्म्म राम-नाम विना मिछे
मृत्युकाले यदि नर 'राम' बलि डाके * विमाने चड़िया सेइ जाय देवलोके
श्रीरामेर महिमार कि दिब तुलना * ताहार प्रमाण देख गौतम-ललना
पापी जन हय मुक्त बालमीकिर गुने * अश्वमेध फल पाय रामायण शुने
राम नाम लइते भाइ ना करिओ हेला * भव सिन्धु तरिवारे राम-नाम भेला
अनाथेर नाथ राम प्रकाशिते लीला * वनेर बानर बन्दी, जले भासे शिला
रामजन्म पूर्व्वे षाटि सहस्र वत्सर * अनागत पुराण रचिल मुनिवर
बालमीकि बन्दिया कृत्तिवास विचक्षण * शुभक्षणे प्रकाशिल भाषा रामायण

---

१ पत्थर ।

सुग्रीव द्वारा सीता-उद्धार की स्वीकृति

कह सुग्रीव, न ज्ञान बिसेसू ※ केहि बिधि वीर गयेउ केहि देसू
तदपि, तात ! कहुँ तासु न त्राना ※ लै कपि-कटक हरहुँ तेहि प्राना
धैर्य, सखा ! करु धीरज धारन ※ तव प्रिय शोध, अबेर[1] न कारन
जहँ कहुँ खल रावन कर वासू ※ जाति गोत कुल सहित विनासू
रुदन तजहु, न शोक बुध[2] करहीं ※ कातर-शोक, शोक अनुसरहीं
शासन रहित, हरित मम नारी ※ मैं पसु, तबहुँ न बहु मन धारी
त्रिभुवन पूज्य अहो ! तुम रामा ※ अनुचित तव बिषाद हित-बामा[3]
तव प्रिय-मुक्ति, असत[4] जनि भाषी ※ निश्चय करहुँ अनल करि साखी
बहु विधि दिय प्रबोध कपिकेतू ※ शमन न राम दुसह दुख हेतू
बहु बिधि बिनय सुकण्ठ सुहाई ※ सो सुनि उतर दीन रघुराई
दुख कुल, जाति, सखा, सुत लोका ※ सर्वोपरि सहभामिनि - सोका
घरनी[5] सों घर-जग-उजियारा ※ नारी हेतु - पुत्र - परिवारा
पितरन श्राद्ध - पिण्ड - अधिकारी ※ वंश - प्रदीप - दयनि यह नारी
अतिशय सीख सुहृद ! तव पाई ※ बिसरत सोक न सिय दुखदाई
कहा कहौं प्रभु, कहेउ कपीसा ※ मैं अनुचर, तव आयसु सीसा

सुग्रीवेर सीता-उद्धारेर अंगीकार

सुग्रीव बलेन, सखे ना जानि विशेष ※ कि जानि केमन वीर गेल कोन देश
जथाय जाउक तार नाहिक एड़ान ※ वानर लइया तार बधिब परान
सम्बर सम्बर मित्र मने देह क्षमा ※ अविलम्बे उद्धारिब तव प्रियतमा
जथा तथा जाउक से पापिष्ठ रावण ※ सवंशे मारिब तार ज्ञाति-बन्धुजन
विलाप सम्बर राम, शोके बाड़े शोक ※ शोकेते कातर नाहि हय विज्ञलोक
राज्य हारालाम आर हारालाम नारी ※ पशु आमि तथापि ता मने नाहि करि
तुमि राम हइयाछ भुवन-पूजित ※ भार्य्या लागि कर खेद अति अनुचित
मिथ्या ना बलिब मित्र, अग्नि साक्षीकरि ※ उद्धार करिब आमि तोमार सुन्दरी
अशेष प्रकारे राजा जन्माय प्रबोध ※ तथापि बिषम शोक नाहि हय बोध
एतेक बलिल यदि सुग्रीव भूपति ※ प्रत्युत्तर करेन आपनि रघुपति
ज्ञाति गोत्र पुत्र मित्र शोक पाय लोक ※ से सबार हइते अधिक भार्य्या-शोक
कलत्रे गृहीर हय कलत्रे संसार ※ कलत्र हइते हय पुत्र - परिवार
गया श्राद्धे करे पुत्र वंशेर उद्धार ※ पुत्र दारा पारत्रिक ऐहिक निस्तार
अशेष प्रकारे मित्र, बुझाओ आमाय ※ तथापि कलत्र शोक पासरा ना जाय
सुग्रीव कहेन, राम, कि कहिते पारि ※ पालिब तोमार आज्ञा आमि आज्ञाकारी

१ विलंब २ समझदार ३ पत्नी के लिए ४ मिथ्या ५ पत्नी ।

यथा बुद्धि तव काज सवाँरहिं * सुधा-गान कृतिवास बखानहिं

राम द्वारा बालि को मार कर सुग्रीव को राज्य दिलाने का वचन

दो० भला प्रयोजन बिन कबहुँ, को यहि बिधि बतरात[1] ।
कहेउ राम, मम दुसह दुख, सुबिदित तुम कहँ तात ! ।। ५ ।।

सिय खोजहु, उर संशय नाहीं * कहउ प्रयोजन निज मम पाहीं
कतहुँ दुराव[2] न, साधहिं काजू * सुनि बिनीत बोलेउ कपिराजू
धरि मन धीर सुनहु रघुवीरा * करहुँ निवेदन कछु मम पीरा
हेरि, शाल-तरु आसन लाई * सोहत सखा युगुल सुख पाई
चन्दन-डार लखन आसीना * पुनि सुग्रीव निवेदन कीना
दुर्जय बालि बिपुल दुख दीना * अपमानित तिय-राजु-बिहीना !
यहि गिरि गुजर, न आन उपावा * विधि अनुगत प्रभु-दरस दिखावा
दीन भरोस कपिहिं रघुनन्दन * बालिहिं मारि निवारहुँ बन्धन
तुमहिं राज-दुख, मोहिं तिय-सोकू * दुहुन बेगि पठवहुँ यमलोकू
बरनहु युगुल बन्धु किमि रारी[3] *सुनहिं कवन केहि बिधि अपकारी[4]
रुचिर न रारि[5] मोहिं रघुनाथा * वरनौं सकल सुनौ मम गाथा

करिब तोमार कार्य्य आमि यथाज्ञान * कृत्तिवास रचे गीत अमृत समान

राम वालि के मारिया सुग्रीव के राज्य दिवार अंगीकार

श्रीराम व'लेन मित्र बिना प्रियजन * हेनकाले हेनकथा कहे कोनजन
आपनि देखिले मित्र, आमार ये क्लेश * अवश्य करिवे तुमि सीतार उद्देश
आमाते तोमार ये हइबे प्रयोजन * अकपटे सेइ कार्य्य करिब साधन
सुग्रीव व'लेन, स्थिर कर तुमि मन * सम्प्रति करिब किछु आत्मनिवेदन
बसिते आसन राजा देखे चारिभिते * आनिलेन शालबृक्ष फलेर सहिते
वसेन आनन्दे तदुपरि दुइजन * चन्दनेर डाल भांगि बसेन लक्ष्मण
सुग्रीव बलेन, बालि बिक्रमे प्रधान * राज्य-जाया हरिया करिल अपमान
ए पर्व्वते थाकि राम ना देखि उपाय * हये अनुकूल विधि तोमारे मिलाय
आश्वास करेन सुग्रीवेर रघुवर * बालिके मारिया तव घुचाइब डर
मम भार्य्या, तव राज्य, जेइ जन हरे * अविलम्बे ताहारे पाठाब यमघरे
उभय भ्रातार केन हइल विवाद * विशेष शुनिते चाहि कार अपराध
सुग्रीव बलेन, आमि विवाद ना जानि * विशेष करिया कहि, शुन रघुमणि

१ कहता है २ अलगाव, कपट ३ झगड़ा, विरोध ४ बुराई करनेवाला, अपराधी ५ झगड़ा ।

भूप महामति 'अक्षय' नामा * हम दोउ तासु सुवन सरनामा[1]
समय पाय पितु स्वर्ग सिधारे * केहि नृह-पद ? परिजनन[2] विचारे
अग्रज बालि अतुल बलवाना * धर्म कर्म रत, समर-प्रधाना
मंत्रिन-मत, सो राजु सम्हारी * बालि कीन पुनि मोंहि अधिकारी
सदा सनेह हास परिहासू * रारि न कहुँ, दोउ सुखद निवासू

दो० बिलसत राज सप्रीत दोउ, विधि होनी दुख-दैन ।
दारुन घटित विवाद जिमि, सुनहु सरोरुहनैन[3] ॥ ६ ॥

मायावी, दुन्दुभि—दुइ भ्राता * दनु[4] दुर्जय, वर दीन विधाता
माया महिष रूप निशिचारी * मायावी निसि बालि हँकारी[5]
सुनेउ निषेध न बाहेर जाई * मैं अनुसरेउँ द्वार जहँ भाई
युगुल बन्धु लखि निसिचर भागा * तेहि खोजत हम दोउ गृह त्यागा
लखेउँ चन्द्रछबि-धवलित देसू * दनु पातकी सुरंग प्रवेसू
कहेउ बालि आवहुँ खल मारी * तब लौं द्वार करहु रखवारी
हटकेउँ[6], दानव-त्रास न सेसू * उचित प्रवेस न संसय-देसू[7]
पद-बिनती मम ताहि न भाई * धाय सुरंग दनुज पहँ जाई

अक्षय छिलेन नामे राज्य महापति * आमरा उभय भ्राता ताँहार सन्तति
किछु काल परे पिता पाइलेन स्वर्ग * राज्य दिते उभयेर आसे पात्रवर्ग
ज्येष्ठ भाइ बालि राजा विक्रमे सागर * धर्म्मे सदा रात, समरे तत्पर
मंत्रीगण ताँहारे दिलेन राज्यभार * परे बालि दिल मोरे राज्य अधिकार
परस्पर परम सौहार्द करि वास * ना जानि विरोध, सदा-परिहास
विधिर निर्व्वन्धन कभू ना हय खण्डन * विवादेर कथा शुन कमललोचन
प्रीतिरूपे दोहे करिताम राज्यभोग * हेनकाले करिलेन विधाता दुर्य्योग
मायावी दुन्दुभि नामे दुइ सहोदर * पाइया ब्रह्मार वर दानव दुर्द्धर
दुइ भाइ मायाय महिषरूप धरे * मायावी निशीथ आसे जिनिते बालिरे
जुझिवारे जाय बालि सबार निषेधे * पश्चाते गेलाम आमि भाइ अनुरोधे
पलाइल दानव देखिया दुइजने * आमरा भ्रमन करि तार अन्वेषने
चन्द्र-आलोकेते मोरा जाइ देखादेखि * सुड़ंगे प्रवेश करे दानव पातकी
बालि बले थाक भाइ सुड़ंगेर द्वारे * यावत् दानव मारि नाहि आसि फिरे
आमि कहिलाम, दैत्य हैल निरुद्देश * संशय-स्थानेते तुमि ना कर प्रवेश
पापे पड़ि बलिलाम तबू नाहि माने * सुड़ंगे प्रवेश करे दानव जेखाने

१ प्रसिद्ध २ आत्मीयों ने ३ कमलनयन ४ दनुज ५ ललकारा ६ रोका
७ खतरे के स्थान में ।

बर्जेउँ[1] पुनि-पुनि, देत न काना * पैठि पताल कपीस पयाना
खोजत बालि भ्रमत इक वत्सर * मिलत बधेउ दनु समर अनन्तर
बालि सुभट कृत दानव - घातू * मोहिं प्रतीत नृप बालि - निपातू
नृप हनि पुनि मम हनन-प्रसंगा * शिला - रुद्ध किय द्वार - सुरंगा
बीतेउ वर्ष बालि नहिं आवा * सब के मन, नृप प्रान गवाँवा
बिलपहुँ अति परि बन्धु-बिछोहू * अहह तात कहँ ? उपजेउ मोहू
अन्तःकर्म शास्त्र - मत कीन्हा * मंत्रिन मोहिं राजपद दीन्हा
पुनि दलि दनुज नृपति गृह आये * मोहिं नृप लखि, दुर्वचन सुनाये

दो० सुहृद सचिव परिजन सबन, गर्जि तर्जि ललकारि ।
सब के सम्मुख डपटि मोहिं कुवचन रहेउ उचारि ॥ ७ ॥

द्वार सुकण्ठ राखि चण्डाला * गमनेउँ दनु-वध हेत पताला
शिला रोपि गमनेउ अविचारी[2] * हिय वासना, हरेसि मम नारी
करगत[3] रानि, राज-अधिकारू * धरा धरति तेहि पातक-भारू
विगत वर्ष, बधि निसिचर आयेउँ * पुनि-पुनि द्वार अनुज गोहरायेउँ[4]
विफल गोहार, उतर जनि पाई * पदाघात हनि शिला हटाई
अहह सहोदर दुसह अनीती * काटि शीश पावहुँ उर प्रीती

वारे वारे निषेधिनु, ना शुने उत्तर * प्रवेश करिल गिया पाताल-भितर
दैत्य अन्वेषणे भ्रमे से एक वत्सर * साक्षात् हइले परे बाधिल समर
महावीर दानवेरे करिल आघात * आमि भाव बालि राजा हइल निपात
बालिके मारिया दैत्य पाछे मोरे मारे * दिलाम पाथर एक सुड़ंगेर द्वारे
सम्बत्सर ना देखिया हइल संशय * सबे बले, बालिर ये मरन निश्चय
कान्दिलाम भ्रातृशोके आपनि विस्तर * कोथा मेल बालिराजा ज्येष्ठ सहोदर
अन्त्यक्रिया करिलाम ताहार विधाने * आमारे करिल राजा यत पात्रगने
तार पर दैत्ये मारि घरे एल बालि * मोरे राजा देखिया करिल गालागालि
पात्र मित्र बन्धुगणे डाके सवाकारे * सवार सम्मुखे गालि दिलेक आमारे
दानव मारिते आमि गेलाम पाताले * राखिया सुड़ंग द्वारे सुग्रीव चण्डाले
सुग्रीव पाथर दिया तार द्वार रोधे * राज्य महादेवी हरे श्रृंगारेर साधे
छत्रदण्ड निल मोर निल महादेवी * हेन पातकीर भार धरिल पृथिवी
वत्सरेके दैत्य मारि देशे आसिवारे * सुग्रीव ब'लिया डाकि सुड़ंगेर द्वारे
बहु डाकिलाम तबु ना पाइ उत्तर * पदाघाते घुचाइनु सुड़ंग - पाथर
सहोदर भाइ हये करिल अन्याय * माथा काटि इहार तबेते दुःख जाय

धर्म-अचार-हीन ! तजु देसू ! ※ खल-मुख-दरस न जीवन सेसू
सुनि बहु विधि बन्देउँ मैं चरना ※ क्षमहु तात ! सेवक तव सरना[1]
बन्धु ! न राज-लोभ उर व्यापा ※ प्रजा हेतु सचिवन मोहिं थापा[2]
सुहृद-सचिव मम हित बहु कहहीं ※ मम बहु विनय न नृप उर धरहीं
निष्फल बिनय - बन्दना सारी ※ खेदि सरोष देत बहु गारी
पुनि-पुनि डपट, न शठ ! तैं सुनहीं ※ मुष्टिक एक शीस तव हनहीं
बालि-क्रोध लखि उर भय पाई ※ अपमानित मैं चलेउँ बराई
यहि अपराध, आजु लौं नाथा! ※ भरमत वन-वन दुखित अनाथा
बीती ब्यथा सुकण्ठ बखाना ※ सानुज सुनत राम धरि ध्याना

बालि द्वारा दुन्दुभि-वध

जहँ संकठ समीप, तहँ वासू ? ※ केहि साहस, कपिनाथ निवासू ?
छं० सुनि सुग्रीव कहत रघुवर सों ऋष्यमूक गिरि-गाथा ।
'मायावी' दानव दुरंत बध कीन जबै कपिनाथा[3] ।।
अनुज 'दुंदुभी' क्रोध रैन - दिन महिष रूप फुफकारत ।
विक्रम अतुल गनत जनि काहू, रनहिं सिंधु[4] ललकारत ।।

दूर ह रे अधर्म्मिष्ठ दुष्ट दुराचार ※ ए जीवने तोर मुख ना देखिब आर
पाये पड़ि करिलाम बहु स्तुतिवाद ※ सेवक हइया थाकि क्षम अपराध
आमार इच्छाय नाहि हइआमि राजा ※ मंत्रि गण करिलेक पालिवारे प्रजा
बहु स्तव करिलाम ना शुने बचन ※ ब'लिल आमार लागि बहु पात्रगण
यत बलि पाये पड़ि, बालि नाहि शुने ※ क्रोधे बले या रे दुष्ट येखाने सेखाने
बारे बारे ब'लि तबू ना शुनिस् कथा ※ एकटा चापड़ भांगि आय तोर माथा
देखिया बालिर क्रोध भीत ह'ये मने ※ पलाइया आइलाम एइ अपमाने
एइ अपराधे राम आमि अपराधी ※ वने वने फिरि दुःखे आमि तदवधि
ब'लिल सुग्रीव पूर्व्व विषाद कथन ※ एकचित्ते शुनिलेन श्रीराम-लक्ष्मण

बालिर बिक्रम ओ दुन्दुभि-बध

श्रीराम ब'लेन मित्र पड़ेछ संकटे ※ केमन साहसे थाक देशेर निकटे
सुग्रीव कहेन कथा श्रीरामेर पाश ※ ऋष्यमूक पर्व्वतेर शुन इतिहास
विक्रमे महिषासुर कारे नाहि गने ※ समुद्रे हाँकारे गिया जूझिवार मने

---

१ शरण ; २ स्थापित किया ; ३ राजा बालि ; ४ समुद्र को ।

दीन सिन्धु कहि पाहि-पाहि सोचत किमि दनुज नसाई ।
शंकर-श्वसुर हिमञ्चल पहँ महिषासुर दीन पठाई ।।
जिमि प्रतञ्च सर तजै, दुन्दुभी निमिष जहाँ गिरिनाथा ।
अभिरि सींग पर सींग हनत भूधरपति ठनकेउ माथा ।।
को जग सुभट महिष संहारै, सोचि दनुज-गुन गावा ।
किष्किन्धापति बालि-बुद्धिबल कहि कहि तैस[1] देवावा ।।
बल-आगर वानर निपाति मधुवन जहँ रम्य प्रदेसू ।
तेहि विनासि अधिकार राजु, सुख बिलसहु, दनुज! असेसू ।।

दो० मायावी तव अग्रजहिं[2] कीन्ह कपीस विनास ।
ताहि ताल दै रन किये, तव रन मिटै पिपास ।। ८ ।।

मायावी - दुर्गति सुनि काना ※ बालिभूप - गृह कुपित पयाना
क्षत-विक्षत वन, श्रृंग-प्रहारा ※ रनहिं क्रुद्ध बालिहिं ललकारा
सुनि, प्रचण्ड तत्पर रनहेतू ※ सहवनितन्ह निर्भय कपिकेतू
रानिन बिच इमि बालि सुहावा ※ नखतन्ह बीच इन्दु[3] छबि पावा
महिष सरोष रक्तमय लोचन ※ वनितन्ह समुख गर्ज पुनि तर्जन
नयन चढ़े, मधुमद घनघोरा ※ मद्यप-वध न प्रयोजन मोरा

समुद्र ब'लेन मम युद्ध ना आइसे ※ जाह हिमालये चलि रणेर उद्देशे
हिमालय पर्व्वत शंकरेर श्वशुर ※ ताँर ठाँइ मेले तव दर्प हवे चूर
धनुकेर गुणेते येमन बाण छुटे ※ चक्षुर निमिषे गेल पर्व्वत निकटे
श्रृंगाघाते पर्व्वतेरे करे खान खान ※ चिन्तित हइया गिरि करे अनुमान
पर्व्वत जानिल तवे चिन्तिया संसार ※ याहाते महिषासुर हइबे संहार
ब'लिल, महिषासुर तुमि महाबली ※ किष्किंध्याय जाह तुमि यथा आछे वालि
वलबुद्धि चूर्ण हवे, शुन उपदेश ※ वालिर मधुर वने करह प्रवेश
राज्यभोग मधुवन राजार भाण्डार ※ वन भांगि मधु खेये कर छारखार
बालिराज ना सहिवे हेन अपचय ※ प्राणेते मारिवे तोरे वालि महाशय
तोर ज्येष्ठ मायावी ये छिल महावली ※ ताहारे मारिल से वनेर राजा बालि
शुनिया ज्येष्ठेर कथा कुपित अन्तरे ※ तखनि चलिल वालि-भूपतिर घरे
श्रृंगाघाते करिल कानन खण्ड-खण्ड ※ कुपित हइल बालि संग्रामे प्रचण्ड
स्त्रीगण वेष्टित वालि आइल निर्भय ※ तारागण मध्ये येन चन्द्रेर उदय
रुषिल महिषासुर आरक्तलोचन ※ स्त्रीगण-सम्मुखे करे तर्ज्जन, गर्ज्जन
मधुपाने मत्त तुमि घूर्णितलोचन ※ मत्तजने मारि, नाहि मोर प्रयोजन

१ ताव, उत्तेजना २ बड़े भाई 'मायावी' को ३ चन्द्रमा ।

बधहुँ न प्रान, अभय तैं आजू * बिलसु रैन कपि ! रानि-समाजू
निसि सुख-साज, बहोरि बिहानू[1] * दलि बल-बुद्धि, हरहुँ तव प्रानू
बनितन अन्तःपुरी पठावा * बालि सदर्प असुर गोहरावा
मम बल-बुद्धि-स्वाद रन चाखै * मम कर तोर प्रान को राखै !
यम की दया न रच्छहि प्राना * बालि-समर परि तासु न त्राना
स्वर्ग - पताल - मर्त्य जे वीरा * मम रन निश्चय तजत शरीरा
करि छल, बचन चहत तैं आजू * कालिह मरन तव निश्चय साजू
मम रन विपति, कुमति तोहिं दीना * विधि-अच्छरन बिबस तोहिं कीन्हा
भाजु भाजु लै भाजु पराना * देहुँ आजु शठ ! जीवन दाना
महिष कम्प, अति क्रोधित गाता * बालि बहोरि बचन संघाता[2]

दो० प्रथम चोट करु अमित बल बिक्रम जोरि बटोरि ।
सहि, बल निरखि, परान तव, यहि छन लेहुँ बहोरि ।। ६ ।।

बालि द्वारा महिषासुर-वध

दुंदुभि कुपित हने दोउ श्रृंगा * बालि बिदीर्ण अंग - प्रत्यंगा
टरत न भट क्षत अंग बिलोका * फूलेउ पाय बसन्त अशोका

प्राणदान दिनु तोरे आजिकार तरे * आजि रात्रि वञ्च गिया कौतुकश्रृंगारे
सुखे रात्रि वञ्च गिया प्रत्युषे विहाने * बल बुद्धि चूर्ण करि बधिब पराने
स्त्रीगणेरे बालि पाठाइल अन्तःपुर * वीर दाप करि बले शुनरे असुर
रणे प्रवेशिले बुझि शक्तिर परीक्षा * पड़िले बालिर होते नाहि तोर रक्षा
यमराज यदि धरे आछे प्रतिकार * बालिर स्थानेते कार' नाहिक निस्तार
स्वर्ग मर्त्य पाताले यतेक वीरगन * आइले आमार युद्धे अवश्य मरन
कपटे बाँचिते चाह आजिकार तरे * से कथा थाकुक, आजि जाह यमघरे
कुबुद्धि पाइल तोरे, मोर संगे रन * तोर दोष नाहि तोर ललाटे लिखन
पलाइया जारे तुइ लइया परान * आजिकार दिवस दिलाम प्राणदान
कोपेते महिषासुर काँपे थर-थर * पुनश्च ब'लिछे तारे बालि कपीश्वर
आगे मोरे हान तोर बुझिब विक्रम * तोर घा सहिया तोरे देखाइब यम
यत शक्ति थाके तोर, तत शक्ति हान * एइ दण्डे आमि तोर बधिब परान

बालि-कर्त्तृक महिषासुर-बध

रुषिया महिषासुर दुइ श्रृंग मारे * खानखान करिया बालिर अंग चिरे
सर्व्वांग विदीर्ण बालि तबु नाहि हटे * अशोक किंशुक येन बसन्तेते फुटे

---

१ भोर (तड़के) २ बचन प्रहार किया ।

बालि-महिष रन कौतुक लरहीं * लै तरु-शिला मार दोउ करहीं
कपि तरु-उपल[1] रहेउ बहु मारी * अभिरत दनुज न मानत हारी
सहसा बालि बिशीर्ण प्रसंगा * दुंदुभि लक्ष्य किये युग[2] शृंगा
साधि शृंग दोउ बालि सकोपा * कर धरि महिष गगन पुनि रोपा
पकरि सींग नभ ताहि उठावा * चाक-कुम्हार समान घुमावा
पुनि कपीस तकि शिला पछारा * चूरन अस्थि सीस करि डारा
गिरेउ धरनि दुंदुभी अचेतन * पद हनि कपि फेंकेउ इक जोजन
स्रवत फुहार रक्त चहुँ छावा * मुनि मतंग तन लाल बनावा
केहि पापी मम तन रँगि दीन्हा * मुनि लखि रक्त खेद अति कीन्हा
धोयेउ गात आचमन करहीं * तन शुचि करि मन हरि पद धरहीं
कोप कराल लीन पुनि नीरा * शाप दीन मुनि क्रोध अधीरा
खल दुष्कर्म कीन तेहि चरना * यहि गिरि[3] देत न संसय—मरना
सुनि मुनि-शाप बालि रहि दूरी * पुनि-पुनि बन्दति मुनि पद-धूरी
हे मुनि, संकठ-सिंधु उबारन * अहह कहउ किमि शाप-निवारन

दो० बालि-बचन कातर सुनत, यहि बिधि कहेउ मतंग ।
अमिट गिरा मम, कबहुँ पद, देहु न यहि गिरि-शृंग ॥ १० ॥

महिष वालिर सहित जूझे चमत्कार * पादप - पाथरे दोउ करे महामार
मारे गाछ-पाथर बालि महिष उपर * पराभव नहे दैत्य जूझे निरन्तर
दुइ शृंग नत करि वालिरे बधिते * बालिर सम्मुखे दैत्य गेल आचम्बिते
दुइ शृंग बालि तार धरिलेक रोषे * शृंग धरि महिषेरे तुलिल आकाशे
दुइ शृंग धरि तार घन देय पाक * घन-पाके फेरे येन कुमारेर चाक
पाथर उपरे तारे मारिल आछाड़ * भांगिल माथार खुलि, चूर्ण हैल हाड़
पड़िल महिषासुर ह'ये अचेतन * पदाघाते फेले तारे एकटि योजन
चतुर्द्दिके छड़ाइल रक्त पड़े स्रोते * मतंग मुनिर गात्र तितिल रक्तेते
मुनि व'ले, कोन वेटा करिल एमन * गाये रक्त देय ये से पापिष्ठ केमन
रक्त प्रक्षालिया करिलेन आचमन * पवित्र हइल मुनि स्मरि नारायण
महाक्रोध करि मुनि जल निल हाते * अभिशाप दिल तारे कुपिया रागेते
मुनि व'ले हेन कर्म करिल ये जन * ए पर्व्वते एले तार अवश्य मरन
परस्पर शुनि बलि शाप वाक्य तार * दूर हैते मुनि पदे करे नमस्कार
दूरे थाकि मुनि-स्थाने याचे परिहार * संकटसागरे प्रभु करह निस्तार
मतंग बलेन मम शाप अखण्डन * ए पर्व्वते कभु तुमि ना कर गमन

---

१ वृक्ष-पत्थर २ दोनों ३ इस पर्वत पर ।

ऋष्यमूक जनि बालि प्रवेसू ※ शाप-कथा चर्चित दिग्देसू
गिरि पग देत बालि निष्प्राना ※ बालिहिं शाप मोहिं वरदाना
सुनि सुग्रीव कहेउ रघुराई ※ देहिं बालि हनि तुमहिं रजाई[1]
बालि अगाध बली रघुनाथा ※ विक्रम तासु सुनहु प्रभु ! गाथा
निसि गत जबहिं अरुन अनुसरहीं ※ चारि सिन्धु जल सन्ध्या करहीं
नभ गिरि शृंग फेंकि, पुनि, हाथा ※ रोकत अति समर्थ कपिनाथा
गिरि उपारि नभ-मण्डल फेंकी ※ चहुँ अस सुनी नयन निज देखी
सप्तद्वीप छिति[2] निमिष[3] भ्रमन्ता ※ पावत पवन न डग[4]-बलवन्ता
सायक[5] प्रथम बालि-बध टरई ※ तौ मम प्रान वीरवर हरई
त्रिभुवन तासु सरिस भट नाहीं ※ सकल वीर अवनत[6] तेहि पाहीं

बालि-वध और सुग्रीव को राज्यारोहण की राम-प्रतिज्ञा

लछिमन सुनि कपि-कथा अतीता ※ कहेउ होय किमि तुमहिं प्रतीता
जेते देव दनुज गन्धर्वा ※ प्रभु-सर एक न समरथ सर्वा
तबहुँ राम प्रति नाहिं भरोसू ※ किमि कपि होय कहहु सन्तोषू
लखहु दुंदुभी-शव रघुनाथा ※ पदाघात फेंकेउ कपिनाथा

सेइ शापे बालि ना आइसे ऋष्यमूके ※ देशे देशान्तरे थाकि शुनि लोके मुखे
ऋष्यमूके आइले से हारावे परान ※ बालिके मुनिर शाप तेइ मोर त्रान
श्रीराम कहेन, मित्र, कहिले सकल ※ बालिके मारिया करि तोमाके प्रबल
सुग्रीव ब'लेन, बालि विक्रम सागर ※ बालिर विक्रम-कथा शुन रघुवर
रजनी जेखन जाय, अरुण उदय ※ चारि सागरेते सन्ध्या करे महाशय
आकाशे तुलिया फेले पर्व्वतशिखर ※ दुइ हाथे लोफे ताहा बालि कपीश्वर
उपाड़िया पर्व्वत आकाशोपरि फेले ※ आपनारे परीक्षिते नित्य लोफे बले
सप्तद्वीप पृथिवी से निमिषे बेड़ाय ※ कि क'ब पवन तार संगे ना गोड़ाय
बालिके मारिते यदि नार एक बाणे ※ तबे वालिराज मोरे बधिबे पराने
महावीर बालिराज ए तिन भुवने ※ पराभव पाय सर्व्ववीर तार रणे

बालि के मारिया सुग्रीव के राज्य दिते श्रीरामेर प्रतिज्ञा

सुग्रीवेर कथा शुनि बलेन लक्ष्मण ※ कोन कर्म्मे तोमार प्रतीत हय मन
देव-दैत्य-गन्धर्व्व कोथाय हेन वीर ※ श्रीरामेर एक वाणे के रहिबे स्थिर
हेन राम प्रति तव न हय प्रतीत ※ कि कर्म्म करिले तुमि हओ हरषित
सुग्रीव कहेन, देख दुन्दुभि-पाँजर ※ पाये करि फेलाइल बालि कपीश्वर

---

१ राज्य-अधिकार २ पृथ्वी ३ पलमात्र में ४ कदम (चाल) ५ बाण
६ झुकते हैं।

द्रवित-सुकंठ बहत दृग नीरा ※ दीन भरोस लखन रघुवीरा

दो० बालि एक योजन कहाँ! शत योजन रघुनाथ।
दनु-पञ्जर फेंकेउ, लहैं जिमि भरोस कपिनाथ॥ ११॥

रक्त-चर्म मांसल[1] शव-भारा ※ जबहिं बालि किय पाद प्रहारा
ठाँठर[2] दनु पाँजर यहि काला ※ बालि सरिस किमि दीनदयाला
संसय सोहि, कहेउ सुग्रीवा ※ तुम कि बालि? को अति बलसीवा
बरनहुँ बालि अतुल बल नाथा ※ मन दै सुनहु सकल रघुनाथा
चलेउ दिग्विजय हित दसकन्धर ※ भयो कपीस सहित तहँ संगर[3]
बालि सिन्धु तट सन्ध्या-मग्ना ※ मूँदि नैन तप-ध्यान निमग्ना
हेरत तहँ आयो सोइ काला ※ चापेउ[4] पृष्ठ घूमि दसभाला
तजेउ न तप, नहिं कीन लराई ※ बाँधेउ दसमुख पूँछ घुमाई
पूँछ बाँधि सागर तेहि डारी ※ छिन बोरत छिन लेत निकारी
ऊछू[5] जात विकल जेहि काला ※ सागर तप-रत कीस-भुवाला[6]
सन्ध्या कीन्ह सिन्धु-तट चारी ※ उठेउ, लंकपति बाँधि पुँछारी
रैन निरखि गृह चलेउ कपीसा ※ क्षमहु कहत कातर दससीसा
अभय दीन लखि परम विनीती ※ अति रावनहिं मुदित लहि प्रीती

नेत्र-नीरे सुग्रीवेर तितिल बदन ※ आश्वासिया तुषिलेन श्रीराम-लक्ष्मण
सुग्रीवेर प्रत्यय-निमित्त रघुवर ※ पदाघाते फेलिलेन दुंदुभि-पाँजर
फेलियाछिलेन बालि एकटि योजन ※ फेलेन योजन - शत कमललोचन
सुग्रीव बलिल, शुन राम रघुवर ※ यखन फेलियाछिल बालि से पाँजर
रक्तचर्म्म छिल भारि तुलिते दुष्कर ※ एखन हयेछे शुष्क, नहे तत भार
इहाते केमने राम, करि अनुमान ※ वालिराज हइते ये तुमि बलवान
नाथ रघुनाथ, शुन आमार वचन ※ वालिर विक्रम शुन करि निवेदन
दिग्विजय करिते चलिल दशानन ※ बालिर सहित युद्ध हइल घटन
सन्ध्या करे वालिराज मुद्रित नयन ※ पश्चाते धरिते जाय राजा दशानन
युद्ध नाहि करे बालि तप नाहि त्यजे ※ पृष्ठदिके रावनेरे जड़ाइल लेजे
लांगूले बांधिया फेले सागरेर जले ※ एक बार डुबाइया आर बार तोले
एइ रूपे तप करे चारि पारावारे ※ रावन खाइल जल बाँचिते ना पारे
चारि सागरेते सन्ध्या करि समापन ※ उठिलेन बालि लेजे बाँधा दशानन
रजनी हइल बालि चलि गेल घर ※ कातरे रावन व'लि क्षम कपीश्वर
बहु स्तव क्षमे बालि तार अपराध ※ रावन हइल मुक्त, परम आह्लाद

१ मांस सहित २ सूखी ठठरी ३ युद्ध ४ धर दबाया ५ नाक-मुँह में पानी भर जाना ६ वालि।

अलबत[1] एक युक्ति प्रभु ! भाई * बालि संग मम साधि मिताई
जो प्रभु मिलन होय दोउ भ्राता * दोउ-कर छिन दसकंध-निपाता
दोउ भट बन्धु परस्पर मिलहीं * रावन कुगति सहज पुनि करहीं

दो० धरा समर्थ न बालि सम, दनु[2] आनै धरि केस ।
बचन सुनत सुग्रीव के, बोले प्रभु अवधेस ।। १२ ।।

अगिन समुख मम प्रन यहि देसू[3] * तुमहिं, बालि बधि करहुँ नरेसू
पिता वचन पालन वन आये * कथन अटल मम, सदा निभाये
इतै वचन मृदु रघुपति केरा * लखन बहोरि सुकण्ठहिं टेरा
सप्त ताल तरु एक समाना * करु प्रतीत, बिन्धहिं भगवाना
कहत कपीस कुतूहल नाहीं * नखन बालि नृप बिन्धति ताहीं
बालि-समर समरथ रघुनायक * तौ बेधहिं सातौ इक सायक
बिहँसे प्रभु दस दिसा प्रकासी * कठिन कहा ! बोले अविनासी
सुबरन सर[4] अनूप छबि छाई * तरकस काढ़ि लीन रघुराई
दक्षिण कर दृढ़ मुष्टि कराला * सायक[4] चलेउ जितै तरु-ताला
बेधि सप्त तरु आरम्पारा * ऋष्यमूक पुनि बिंधि पहारा
पर्वत बिंधि, बिंधि तरु-ताला * बज्र शब्द सो बेधि पताला

एक युक्ति शुन प्रभु कमललोचन * वालि संगे मिलन कराओ एइ क्षण
मिलन हइले राम दुइ सहोदरे * दोंहे मिलि मारि गिया राजा लंकेश्वरे
भ्राता दुइ जने यदि कराओ मिलन * कोन् छार गणि तबे राजा दशानन
पृथिवीर मध्ये केवा बालिराज आँटे * रावणे आनिबे बालि धरि तार जटे
एतेक ब'लिल यदि सुग्रीव वचन * शुनिया श्रीरामचन्द्र कहेन तखन
करियाछि प्रतिज्ञा जे अग्नि साक्षी करि * बालि बधि तोमारे करिब अधिकारी
आमार वचन कभू ना हय खण्डन * पितृवाक्य-क्रमे आमि आइलाम वन
एतेक ब'लिले मृदु कमललोचन * सुग्रीवेरे डाक दिया ब'लेन लक्ष्मण
सात तालगाछ आछे एकइ सोसर * प्रत्येते तोमारे सबे बिन्धिबे रघुवर
सुग्रीव ब'लेन तबे शुन नरवर * नखेर चापने बिन्धे ताहा कपीश्वर
सात तालगाछ यदि बिन्ध एक शरे * तबे से बालिके तुमि जिनिबे समरे
हासेन श्रीरघुनाथ, दीप्त दशदिक * तालगाछ बिन्धिब से, ए कोन् अधिक
सुचित्र बिचित्र बाण कनक रचित * तून हैते तुलिलेन श्रीराम त्वरित
दृढ़ मुष्टि करि निल दक्षिण हस्तेते * छुटिल रामेर बाण से सात तालेते
सप्त ताल भेद करि बाण हैल पार * ऋष्यमूके पर्व्वत बिन्धिया आगुसार
एक बाणे शैल बिन्धे सप्त गाछ ताल * बज्रघात शब्दे बाण सान्धाय पाताल

१ बेशक २ दनुज (रावण) ३ स्थान पर ४ बाण ।

पुनि धरि राजहंस कर रूपा * आयेउ प्रभु ढिग बान अनूपा
तरकस पुनि समान[1] बनि सायक * चकित सकल लखि बल-रघुनायक
कपिगन कहत चरन प्रणिपाती * सकहु बालि शत नाथ! निपाती
विक्रम सुविदित, कहेउ कपीसा * तजि बैकुण्ठ प्रकट जगदीसा
तुम सम सखा विरञ्चि मिलाई * तव प्रताप मोहिं मिलै रजाई[2]

वालि-सुग्रीव युद्ध, सुग्रीव-पराजय

दो० बोले करुणानाथ, कपि! अब बिलम्ब केहि काज।
बेगि दरस चलि कीजिये, मिलैं जहाँ कपिराज॥ १३॥

रिपु हनि संकट करउँ निवारन * सौंपहुँ सुहृद! तुमहिं सुख-सासन
सब बिधि पाय राम-आश्वासन * किष्किन्धा गमने सातौ जन
राज-द्वार रघुपति नियराने * बिटप ओट दोउ वीर लुकाने
द्वारे सिंहनाद - सुग्रीवा * आवै सुनत बालि बलसीवा
होय समर तुम-सन आरूढ़ा * तबहिं हनौं सर एक विमूढ़ा
द्वार सिंह सम गर्जत कीसा[3] * निरखेउ निकसि प्रमाद कपीसा[4]
वीर सदर्प बालि रव[5] घोरा * झपटेउ सबल सहोदर ओरा

राजहंस मूर्तिमान आसिवार काले * पुनर्व्वार वाण एल श्रीरामेर काले
निज मूर्ति धरि वाण तून मध्ये ढोके * रामेर विक्रमे सबे हात दिल नाके
सकल वानर निल राम-पद-धूलि * तुमि पार मारिवारे शत शत वालि
ब'लेन सुग्रीव, तव विक्रमेते गनि * वैकुण्ठ छाड़िया प्रभु एसेछ आपनि
मित्र तोमा हेन मोरे दिलेन विधाता * तोमार प्रतापे पाव राजदण्ड-छाता

वालिर सहित सुग्रीवेर युद्ध ओ सुग्रीवेर पराजय

श्रीराम ब'लेन विलम्बे कि प्रयोजन * वालिर सहित झाट कराओ दर्शन
देखिले शत्रुके मारि घुचाइब डर * सुखे राज्य कराइब तोमा मित्रवर
सुग्रीवेरे देन राम आश्वास वचन * सात जन किष्किन्ध्याय करेन गमन
राजद्वार-निकटे चलेन राम धीरे * वृक्ष-आड़े लुकाइया थाकि दुइ वीरे
वालि-द्वारे सुग्रीव छाड़िबे सिंहनाद * ताहाते अवश्य बालि शुनिबे संबाद
करिबे तोमार संगे समर आरब्ध * एक बाणे बालि के करिब आमि स्तब्ध
बालि द्वारे सुग्रीव छाड़िल सिंहनाद * बाहिर हइल वालि देखिते प्रमाद
वीर दर्प करे बालि अति भयंकर * विक्रमे पड़िल आसि सुग्रीव उपर

१ प्रवेश कर गया २ राज्य ३ सुग्रीव ४ बालि ५ शब्द।

अभिरे[1] युगुल अंग - प्रत्यंगा ※ मल्लयुद्ध रत बहु रणरंगा
क्षण सुग्रीव प्रबल क्षण बाली ※ युगुल भार लहि धरती हाली
सिंहनाद गर्जत रन माहीं ※ दोउ रन करत मलिन कोउ नाहीं
बसन वयस लखि रूप समाना ※ केहि सर हनहिं चकित भगवाना
सुहृद न चीन्हत, जो सर मारैं ※ भ्रमवस राम मित्र हनि डारैं
बालि बज्र सम मुष्टि प्रहारी ※ दुसह, सुकण्ठ भजेउ मन हारी
बालि महाबल अतुल प्रतापा ※ केहि पितु सहन तासु रन-तापा
सुभट महाभट जिन संहारा ※ किमि समर्थ सुग्रीव बिचारा
ततछन लेत सुकण्ठ - पराना ※ जानि अनुज दिय जीवन दाना

दो० अंग - अंग शोणित रँगे, शिथिल - प्राय निर्जीव ।
डगमगात इत - उत गिरत - परत भजेउ सुग्रीव ॥ १४ ॥

ऋष्यमूक लीन्ही पुनि सरना ※ जहँ पग देत बालि कर मरना
मुनि शापित न अनुज सक-मारी ※ चलेउ धाम रिसि-गर्जन भारी
भल लै प्रान पलायन कीन्हा ※ केहि बल मो सन रन मन दीन्हा
बन्धु मोर, भल गयेउ बराई ※ मिलत पुनः शठ प्रान गवाँई
उत विषन्न[2] बाली सिंहासन ※ जर्जर अनुज मूक[3] गिरि पावन

हाते-हाते माथे-माथे बाधिल समर ※ दुइ भाइ मल्लयुद्ध करे बहुतर
क्षणे हेंटे पड़े बालि, क्षणेक उपरे ※ क्षिति टलमल करे उभयेर भरे
दुइ सिंह युद्धे छाड़े येन सिंहनाद ※ दुइ भाइ युद्ध करे नाहि अवसाद
देखेन श्रीराम बाण करिया सन्धान ※ उभयेर वेश-भूषा-वयस समान
चिनिते नारेन राम सुग्रीव बालिरे ※ बालिके मारिते पाछे निज मित्र मरे
सुग्रीवेरे मारि बालि बज्र सम चड़ ※ सहिते न पारि ताहा उठे दिल रड़
महाबल बालिराज अतुल प्रताप ※ ताहार सहित युद्ध सहे कार बाप
बड़ - बड़ वीरगणे करे ये संहार ※ तार युद्धे सुग्रीव वानर कोन छार
तखनि से सुग्रीवेर बधित परान ※ सहोदर-भाइ ब'लि दिल प्रानदान
रक्त रांगा अंग भांगा पलाय सुग्रीव ※ आगे जाय, फिरि चाय, प्राय से निर्जीव
ऋष्यमूके तिष्ठिते सुग्रीव पलाइल ※ मुनिशाप बालि मने करिया फिरिल
ना पारिया सुग्रीवेर प्रान विनाशिते ※ घरे जाय बालि राजा गर्ज्जिते गर्ज्जिते
भाल, पलाइया गेलि लइया जीवन ※ कि जोरे करिस रे आमार संगे रन
भाल हैल पलाइल, हय मोर भाइ ※ प्रानेते मारिब यदि पुनः देखा पाइ
सिंहासने बसि बालि भावे मनोदुःखे ※ सुग्रीव जर्ज्जर घाये रहे ऋष्यमूखे

1 भिड़ गये 2 विषादयुक्त 3 ऋष्यमूक।

अपमानित सुकण्ठ मन मारे ※ रामादिक चलि तहाँ पधारे
नत-मस्तक न दीठि प्रभु ओरा ※ किय अनुयोग[1] सबन प्रति घोरा
बालि-समर जदि जूझत आजू ※ कोहिकर राज, राम कोहि काजू
मारत सबल न साहस काहू ※ को भिरि सकत बालि नरनाहू
प्रथम कहेउँ दुर्जय प्रख्याता ※ सहज न कौतुक बालि-निपाता
धरनी सुभट महाभट वीरा ※ मारहि बालि न अस रणधीरा
रन तो कहा! दरस भयकारी ※ को तेहि सन रन परै अगारी
जेहि विधि गयेउँ लहेउँ अपमाना ※ तेहि कर बचत न अबलौं प्राना
ऋष्यमूक गिरि निकट सहाई ※ जहाँ विपन्न[2] अभय मैं पाई
दिय भरोस मनु बालि सँहारा ※ रन ढकेलि[3], निज कीन किनारा
मन आसरा, हनत अब बाना ※ सर न राम कहुँ, बचे पराना

दो० शमन मित्र रघुपति कहेउ, तुम दोउ एक समान।
तुल्य वेष-विक्रम-वयस, भ्रमित हनेउँ नहिं बान ॥ १५ ॥

चिह्न दिये चीन्हउँ निज ताता ※ नृप पद लहौ बालि-संघाता
पुनि ललकारि बालि रन लावौ ※ मनस्ताप निज, मित्र! मिटावौ
प्रभु भरोस लहि रैन विरामा ※ कृत्तिवास गुण गावत रामा

चलिलेन श्रीराम प्रभृति सेइखाने ※ आछे हेंट मुण्डेते सुग्रीव अपमाने
माथा तूलि सुग्रीव रामेरे नाहि देखे ※ बहु अनुयोग करे सबार सम्मुखे
आजि यदि मरिताम बालिर संग्रामे ※ के करिते राज्यभोग कि करिते रामे
मारिते नारिवे, आगे न ब'लिले केने ※ बालि संगे तबे केन प्रवेशिब रने
तखनि ब'लेछि, बालि विषम दुर्ज्जय ※ ताहारे संहार करा क्षुद्र कर्म्म नय
बड़ बड़ बीर यत मध्ये पृथिवीर ※ बालिके मारिते पारे नाहि हेन वीर
आछुक युद्धेर काज, दरशने भागे ※ कोन् जन युद्ध करे से बालिर आगे
केन वा गेलाम पाइलाम अपमान ※ एतक्षणे थाकिले बधित मोर प्रान
ऋष्यमूक पर्व्वत निकटे छिल जेइ ※ ए संकटे रक्षा आमि पाइलाम तेंइ
बालिके मारिब ब'लि करिले आश्वास ※ आमारे फेलिया रणे हैल एकपाश
एखनि मारिबे बाण हेन लय मने ※ कोथा वाण, कोथा राम, भाग्ये आछि प्राने
श्रीराम ब'लेन, मित्र, ना ब'ल बिस्तर ※ उभयेरे देखिलाम एकइ सोसर
वयसे - साहसे - वेशे एकइ समान ※ मित्रवध - भये नाहि एड़िलाम बाण
चिह्न दिया मात्र तुमि रणे गेले चिनि ※ वालिके मारिव, राजा हइवे आपनि
पुनः गेले यखन आसिवे रणे बालि ※ घुचाइब तखन मनेर यत कालि
बञ्चिल सुग्रीव रात्रि रामेर आश्वासे ※ रचिल किष्किन्ध्याकाण्ड कबि कृत्तिवासे

१ गिला २ मसीबत का मारा ३ [illegible]

श्रीराम द्वारा बालि-बध

जेहि बिधि सकहिं सुकण्ठहिं देखी * लखन देहु कछु चिह्न विशेषी
निसि गत भोर सुमन बहु रूपा * आनि लखन रचि माल अनूपा
कण्ठ सुकण्ठ दीन सो माला * सात सुभट गमने शुभकाला
बन्धु बिनासि राजु परिहरही * आगे सबन बेगि डग धरही
सधनु लखन धनुधर रघुनाथा * पुनि अनुसरत इतर[1] कपि साथा
देखत चहुँ खग मृग वनचारी * लख लख गज पर्वत अनुहारी[2]
ज्ञानी मुनिन तपोवन माहीं * कदली-वन चहुँ निरखत जाहीं
कहेउ राम कदली-बन हेरी * यहु तपवन रचना केहि केरी
इतै सप्तऋषि किय तप घोरा * जनश्रुति[3] कपि वरनत प्रभु ओरा
बर्ष सहस दस बिन आहारा * करि तप, सरग सतन[4] पग धारा
सबन सप्तऋषि-मण्डल बन्दे * जेहि फल सब विधि कुशल अनन्दे
कपि सचेत किय रघुपति-ध्याना * कालिह सरिस जनि होय विधाना
निज प्रन पूर्ति करौ रघुनाथा * सिय उद्धार-भार मम नाथा

दो० संसय उर जनि राखिए, करहुँ बचन अनुसार ।
मारि लंकपति, लंक चलि, करौं सिया उद्धार ॥ १६ ॥

श्रीराम-कर्त्तृक बालि-बध

चिह्न बिना नाहि चिना जाय सुग्रीवेरे * चिह्न दिते श्रीराम कहेन लक्ष्मणेरे
रजनी प्रभाते फुल आने नानाजाति * सेइ फले माला गोंथे लक्ष्मण सुमति
लक्ष्मण दिलेन पुष्पमाला तार गले * करिलेन सात वीर यात्रा शुभकाले
राज्यलोभे सुग्रीव मारिते सहोदरे * आगे-आगे चलिल, बिलम्ब नाहि करे
श्रीराम-लक्ष्मण जान हाते धनु:शर * ताँहार पश्चाते चले इतर वानर
मृग पक्षी वनचर देखे स्थाने-स्थान * लक्ष-लक्ष हस्ती देखे पर्व्वत प्रमान
वनेर भितर देखे अति विलक्षण * मुनिर आश्रमे-माझे कदलीर वन
श्रीराम ब'लेन मित्र अद्भुत कदली * काहार सृजन एइ आश्रम-मण्डली
सुग्रीव ब'लेन हेथा छिल सप्तमुनि * करित कठोर तप लोकमुखे शुनि
ताँरा दश हाजार वत्सर अनाहारे * करि तप स्वशरीरे गेल स्वर्गपुरे
सकले बन्देन गिया आश्रम-मण्डल * याहारे बन्दिले हय सर्व्वत्र मंगल
सुग्रीव बलेन राम हओ सावधान * कालिकार मत येन ना हय विधान
आपन शपथे मित्र आजि हओ पार * अवश्य करिब आमि सीतार उद्धार
आमार वचन मिथ्या ना भाविह मने * सीता उद्धारिब आमि मारिया रावने

बोले राम निरखि तव माला ✻ आजु बधहुँ मैं बालि भुवाला
बालि दरस मम सर सन्धाना ✻ आजु न तेहि पुरगमन विधाना
सप्ततात बेधे सर जेही ✻ सोइ सर सुमिरि संक तजि देही
अचल सत्य जो वचन प्रकासा ✻ आजु न संसय बालि - बिनासा
कपि किय सिंहनाद जहँ बाली ✻ गगन गिरेउ गिरि, धरती हाली
प्रभु-बल पाय सुकण्ठ कराला ✻ गर्जत, कम्पित धरा - पताला
बालि कुपित सुनि नाद अपारा ✻ कहत दुर्वचन जाहि[1] निहारा
मुख ज्वलंत जिमि अनल-अँगारा ✻ रवि शशि सम चमकत दृग-तारा
दीर्घ तीनि शत योजन वीरा ✻ सत्तर योजन बेंड़[2] सरीरा
कहुँ लघु रूप नकुल[3] सम धरई ✻ करि विस्तार गगन कहुँ छुवई
योजन पूँछ पसारि पचासा ✻ दुगुन किये परसत[4] आकासा
आगरि - बुद्धि[5] बालि कै दारा ✻ पतिहिं समर हित हटकति[6] तारा
शमन, नाथ ! जनि समर पयाना ✻ प्रानन हेत सीख धरि ध्याना
वत्सर शयन समर दिन एका ✻ रन आतुर, साहस अतिरेका[7]
पराभूत - रन पुनि ललकारै ✻ निसचय नीति सुविज्ञ विचारै
क्रोध बिबस निज हित बिसराना ✻ लखि तव कर्म, कम्प मम प्राना

श्रीराम ब'लेन तुमि भूषित मालाय ✻ बालिके बधिव आजि, बाँचब तोमाय
बालिके देखिया मात्र चालाइब शर ✻ पुनराय बालि आजि ना जाइबे घर
सप्ततात बिन्धिलाम आमि जेइ वाणे ✻ सेइ बाण स्मरिया निश्चिन्त हओ मने
मिथ्या ना बलिब, सत्य ना करिब आन ✻ बालिराज नितान्त हाराबे आजि प्रान
सिंहनाद छाड़िल सुग्रीव वालि-द्वारे ✻ आकाश भांगिया पड़े येन महीधरे
पाइया रामेर बल सुग्रीव प्रबल ✻ सिंहनादे काँपाइल धरा - रसातल
सिंहनादे रुषिल वानरराज वालि ✻ सम्मुखे याहारे देखे तारे देय गालि
मुखखान मेले येन ज्वलन्त आंगारा ✻ चन्द्र सूर्य्य जिनिया चक्षुर दुइ तारा
सत्तरि योजन तनु आड़े परिसर ✻ तिन शत योजन दीघल कलेवर
यदि वाञ्छा करे, हय नकुल प्रमान ✻ कखन आकाश-जोड़ा हय परिमाण
लांगूल करिते पारे योजन पञ्चाश ✻ उभ यदि करे तबे परशे आकाश
तारा महादेवी तार अति बुद्धि धरे ✻ बालिके वारन करे जाइते समरे
कोप सम्वरह, रणे ना कर गमन ✻ आमार वचन शुन जीवन-कारण
एक दिन युद्धे जार वत्सर विश्राम ✻ कि साहसे आसे पुनः करिते संग्राम
युद्ध दिया पुनः जेइ जुझते हाँकारे ✻ हइले पण्डित लोके अवश्य विचारे
आपना पासर तुमि मत्त हओ कोपे ✻ भाविते तोमार कर्म्म, भये प्रान काँपे

---

१ जिसको भी २ चौड़ाई (बेंड़ा) ३ नेवला ४ छूती थी ५ बुद्धि की खान

दो० नाथ ! तजहु संकल्प-रन, आजु अमंगल जानि ।
मम बानी मन धारिए, पुनि-पुनि हटकत रानि ॥ १७ ॥

केहु बल प्रबल अनुज इत आजू ❋ निसचय भोर सरै[1] तव काजू
आयेउ अवसि काहु बल पाई ❋ नतरु निपट दुर्बल किमि आई
रहि रनिवास रैन, रन तजहू ❋ द्वार विफल रिपु-गर्जन करहू
सूर्यवंश दशरथ नृप - बन्दन ❋ तिन सुत युगुल लखन-रघुनन्दन
धरि पितु-बचन भये बनवासी ❋ बल्कल, जटा सीस, संन्यासी
बन-बन भरमत राज-विहीना ❋ तिन-सुग्रीव सुमति मिलि कीना
राजविहीन विविध छल करई ❋ राम-सुकण्ठ संधि लखि परई
यहि अभिसन्धि[2] अतिव उर चिन्ता ❋ आजु न रन तव मंगल कन्ता[3] !
भला-बुरा पुनि अनुज तिहारा ❋ उचित न तेहि सन रारि[4] प्रसारा
धीरज धरहु, कोप जनि योगू ❋ बिलसहु सानुज सासन भोगू
सकल समेटि बन्धु करि हीना ❋ होय विरुद्ध दुखी पुनि दीना
उचित न, प्रभु ! मम सीख उलंघा ❋ अहं[5] -विवस अनुचित रणरंगा
सुनहु निवेदन पुनि हिय धारी ❋ धरि पितु वचन राम वनचारी
सत्य-भार तिन दीन विमाता ❋ अर्पेउ राजु राम, लघुभ्राता

युद्धे ना जाइओ प्रभु, शुन मोर वाणी ❋ आजिकार युद्धे आमि अमंगल गणि
कालि गेल तव स्थाने सुग्रीव हारिया ❋ कि बले आइल आजि प्रबल हइया
अवश्य काहारा ठाँइ पाइयाछे बल ❋ नतुवा आसिबे केन निजे से दुर्ब्बल
युद्धे ना जाइओ तुमि, थाक अन्तःपुरे ❋ डाकिछे सुग्रीव, डाके डाकुक बाहिरे
सूर्य्यवंश राजा छिल दशरथ नाम ❋ ताँर पुत्र दुइ भाइ लक्ष्मण-श्रीराम
पितृ-सत्य पालिते हइल वनवासी ❋ बल्कल परेन, शिरे जटा, से संन्यासी
राज्य हाराइया तारा भ्रमे वने-वने ❋ मिलियाछे तारा बुझि सुग्रीवेर सने
राज्यभ्रष्ट सुग्रीव विविध बुद्धि धरे ❋ सहाय करिया बुझि आइल रामेरे
यद्यपि एमत - हय तबे बड़ भार ❋ नाहि देखि अद्य युद्धे मंगल तोमार
भालमन्द हउक, से तव सहोदर ❋ सहोदर सने युद्ध अयोग्य विस्तर
क्षान्त हओ महाराज काज नाहि रागे ❋ सुग्रीव सहित राज्य कर एके योगे
सकले राजत्व करे, सुग्रीव वञ्चित ❋ सहिते ना पारे दुःख, भावे विपरीत
आमार वचन तुमि ना करिह हेला ❋ अहंकार ना करिओ संग्रामेर खेला
आर एक कथा प्रभु करि निवेदन ❋ पितृ-सत्य-हेतु राम आइलेन वन
कैकेयी विमाता ताँरे दिल सत्यभार ❋ कनिष्ठेरे राज्य राम देन अधिकार

... ३ हे स्वामी । ४ झगड़ा, ५ अहंकार ।

वन कर हेतु शत्रु अपकारी * किमि किय तिनहिं राज-अधिकारी
तव पितु सुवन, अनुज सुग्रीवा * दोउ मिलि राजु करहु बलसीवा

दो० कहेउ बालि मोंहिं रुचिर जनि, चन्द्रबदनि ! सुनि लेय।
शठ सुकण्ठ हित कहत जस, तस-तस हिय दुख देय ॥ १८ ॥

दुंदुभि दलन सुरंग पताला * गमनेउँ द्वार राखि चण्डाला
रोपि विटप - प्रस्तर अपकारी * धर्म न राखि हरन किय नारी
लेहुँ न जीवन, बाँधि सरीरा * तव आदर, आनहुँ तव तीरा
नृपमणि ! सुनहु, कहत पुनि तारा * दोषी सचिव, न बन्धु बिचारा
परिजन सचिव सुमति सब साधा * दीन राज्य, जनि तेंहि अपराधा
धरि मम वचन भीख मोंहिं दीजै * कतहुँ न तात ! आजु रन कीजै
खण्ड खण्ड छिति, भूधर टरहीं * रबि-ससि रघुपति-सर परि जरहीं
राम आगमन जासु सहाई * हे प्रभु ! तबहिं त्रान कहँ पाई
असत बचन कस ? कह कपिकेतू * मारहिं राम मोंहिं केहि हेतू ?
पर हित राम न करहिं अधर्मा * संशय राम न, सुनु, प्रिय! मर्मा[1]
सत्य - धर्म रघुपति गुनरासी * कारन सत्य भये बनबासी
कबहुँ न तिन सन मोर विवादू * लरहिं न मिथ्या सुनि अपवादू[2]

शत्रु हैया जेइ जन पाठाइल वने * ताहारे करेन राजा किसेर कारणे
तोमार वापेर वेटा कनिष्ठ सोदर * दुइ भाइ राज्य कर हैया एकत्तर
वालि व'ले ना भाविओ तारा चन्द्रमुखी * सुग्रीव लागिया व'ल यत, हय दुःखी
दानव मारिते आमि गेलाम पाताले * राखिलाम सुड़ंगेर द्वारे से चण्डाले
वृक्ष प्रस्तरेते से सुड़ंग द्वार ढाके * आमार महिला हरे, जाति नाहि राखे
तोमार कथाय तारे ना मारिब प्राने * हाते-गले वान्धि दिब तोमा विद्यमाने
तारा ब'ले, शुन राजा करि निवेदन * सुग्रीवेर दोष नाइ दोषी पात्रगण
पात्रगणे राज्य दिल करिया सन्तोष * सुग्रीव हइल राजा, तार नाहि दोष
करह आमारे रक्षा, राखह वचन * आजिकार दिन तुमि न करिह रन
क्षिति खान-खान हय पर्व्वत उपाड़े * चन्द्र-सूर्य आदि श्रीरामेर बाणे पोड़े
रामेर सहाय करि यदि से आइसे * तवे ब'ल प्राणनाथ, रक्षा पावे किसे
वालि ब'ले व'ल केन असत्य वचन * मारिवेन श्रीराम आमारे कि कारण
परेर कथाय कि करिवेन अधर्म्म * रामके ना भय करि, शुन तार मर्म्म
सत्यवादी राम वड़, सत्ये धर्म्मे मन * सत्येर कारणे तिनि आइलेन वन
कखन रामेर संगे मोर नाहि बाद * तिनि केन मारिबेन मिथ्या विसम्बाद

१ रहस्य २ निन्दा।

बिन अपराध रोष केहि कारन * पुनि-पुनि कहत, राम किमि आवन
तदपि सहाय होयँ जो रामा * अडिग करउँ अविचल संग्रामा
रानि-वचन कछु बालि न माना * कुपित सिंह सम गर्जि पयाना
नारि नयन जल छल-छल करई * रन पयान पति मंगल धरई

दो० जानि पुनः दुस्तर समर, निरखि न पति-निस्तार ।
किष्किन्धापति - भामिनी विलपत विकल अपार ॥ १६ ॥

आय बालि चहुँ दीठि पसारी * तहँ सुग्रीव, न इतर[1] निहारी
दोउ भट अभिरि परस्पर लरईं * ठेलि, घेरि, कसि रिपु बस करईं
लपिटि दाँव पर दाँव चलावैं * मारामार प्रहार मचावैं
मानत हार न वीर समाना * दंगल प्रहर[2] मल्ल दोउ ठाना
बिक्रम दुगुन बालि बलसीवा * लहि चपेट कातर सुग्रीवा
बज्र मुष्टि हनि उर तेहि मारा * मुख अचेत स्रव[3] शोणित धारा
लखि सम्मुख सुग्रीव अचेता * लीन दिव्य सर कृपानिकेता
भीत सुकण्ठ भजत[4] अनुमाना * ओट राम रहि सर संधाना
जगमग दस दिसि छूटत बाना * भिदेउ बालि-हिय बज्र समाना
हाहाकार पकरि हिय बाली * दारुण सर केहि हनेउ कुचाली

आमि दोषी नहि, राम रुषिवेन किसे * पुनः पुनः कह केन, राम बुझि आसे
तबे यदि सुग्रीव साहाय्ये आसे राम * तबु नाहि भंग दिब, करिब संग्राम
रुषिया चलिल बालि सिंहेर गर्ज्जने * ना रहिल तारा महादेवीर वचने
यात्राकाले महादेवी करिल मंगल * किन्तु तार नेत्रे जल करे छलछल
अन्तरे जानिया तारा कान्दिल विस्तर * एबार निस्तार नाहि, समर दुस्तर
बाहिर हइया बालि चतुर्द्दिके चाय * एका सुग्रीवेरे मात्र देखिवारे पाय
बालि सुग्रीवेर युद्ध लागे हुड़ाहुड़ि * हुड़ाहुड़ि दुइ जने करे बेड़ाबेड़ि
बेड़ाबेड़ि दुइ जने करे जड़ाजड़ि * जड़ाजड़ि दुइ जने करे मारामारि
केह कारे नाहि पारे, उभये सोसर * दुइ जने मल्ल युद्ध एकटि प्रहर
सुग्रीव हवते बालि द्विगुण प्रखर * एकटि चापड़े तारे करिल कातर
बालि बज्रमुष्टि जे मारे तार बुके * अचेतन सुग्रीव, शोणित उठे मुखे
सुग्रीवेर अचेतन देखिया सम्मुखे * श्रीराम ऐषिक बाण जुड़िया धनुके
सशंक-सुग्रीव प्राय करे पलायन * आड़े थाकि राम बाण करेन क्षेपण
दशदिक् आलो करि सेइ बाण छुटे * बज्राघात सम बाण बालि बुके फुटे
बुक धरि बालिराज करे हाहाकार * कोन् जन करिल ए दारुण प्रहार

१ कोई दूसरा २ एक प्रहर तक ३ रक्त-धार बहती थी ४ भागता ।

शूल पीठ-उर हलब मुहाला[1] ※ प्रबल श्वास, सर चोट बेंहाला[2]
धरनि बिलोटति सुरपति-सुवना[3] ※ अस्त-ब्यस्त तन भूषन बसना
कृत्तिवास मन अतिव विषादा ※ धर्मरूप किमि कीन प्रमादा

वालि द्वारा राम की भर्त्सना

छटपटाति छिति बालि भुवाला ※ धाये तहँ रघुवीर कृपाला
हनि मृग, व्याध जात मृग पाहीं ※ बालि समीप राम तिमि जाहीं
शोणित नयन राम प्रति लखहीं ※ कड़कड़ दन्त, दुर्वचन कहहीं

दो० तारा कीन निषेध मोंहि, अमिट विरञ्चि-विधान ।
अहह! कीन विश्वास मैं, पतित समुझि सद्ज्ञान ॥ २० ॥

जनमि राजकुल धर्म न ज्ञाना ※ केंहि विधान मम लीन्हेंसि प्राना
गैंड़ा, कूर्म, शशक अरु साही ※ गोह पञ्चनख, भक्षत जाही[4]
नहिं तिन मध्य सुनहु रघुवीरा ※ रक्त मांस जनि भक्ष्य शरीरा
मृग नहिं, शाखामृग[5] तरुचारी ※ चर्म न मम आसन अधिकारी
निर्दोषी कपि-बध केंहि काजू ※ नीति न धर्म, रहित तैं राजू
देश-हरन कोंहि दीन्हेउँ क्लेशा ※ विन अपराध आयु मम शेषा

बुके-पृष्ठे भार जे नाड़िते नारे पाश ※ एक बाणे पड़े बालि, घन बहे श्वास
पड़िलेक वालिराज इन्द्रेर नन्दन ※ गायेर भूषण खसे अंगेर वसन
कृत्तिवास पण्डितेर थाकिल विषाद ※ धार्म्मिक रामेर केन घटिल प्रमाद

वालि कर्त्तृक श्रीरामके भर्त्सना

भूमे पड़ि वालिराज करे छट्पट् ※ धाइया गेलेन राम ताहार निकट
मृग मारि व्याध येन धाइल उद्देशे ※ धाइया गेलेन राम से वालिर पाशे
रक्त नेत्रे श्रीरामेर पाने चाहे बालि ※ दन्त कड़मड़ करि देय गालागालि
निषेधिल तारा मोरे विविध विधाने ※ करिलाम विश्वास चण्डाले साधुज्ञाने
राजकुले जन्मियाछ नाहि धर्म्मज्ञान ※ आमिरे मारिले राम, ए कोन् विधान
शशक गण्डार कूर्म्म गोधिका शल्लकी ※ भक्षणीय जन्तु हय एइ पंचनखी
तार मध्ये केह नहि, शुन रघुवीर ※ आमार शोणित मांस भक्ष्येर बाहिर
आमार चर्म्मेते नाहि हइबे आसन ※ मृग नहि, शाखामृगे कोन् प्रयोजन
निर्द्दोष वानर आमि मार कोन कार्य्ये ※ एइ हेतु अधिकार ना पाइले राज्ये
कोन् देश लुटिया दिलाम कारे क्लेश ※ कोन दोषे करिले आमार आयु शेष

---

१ हिलना कठिन २ व्याकुल ३ वालि ४ गैण्डा, कछुआ, खरगोश, साही, गोह—ये पाँच नखवाले जीव भक्ष्य कहे गये हैं ५ बन्दर ।

कुल न हीन रघुबंश-कुमारा ※ जग तव धर्म प्रशंसति सारा
केहि विधि धर्म-कर्म विस्तारा ※ छलि बिन दोष महाभट मारा
कहत लोग तुम दया-निवासू ※ दया-पुञ्ज तव आजु प्रकासू
धरि मुनि रूप भ्रमत वन जाहीं ※ केहि वध करैं, सदा मन माहीं
जनश्रुति राम धर्म-अवतारा ※ प्रकट आजु तव धर्म - अचारा
कौतुक लखत लरत दुइ भाई ※ मारेहु बालि कवन सुख पाई
कबहुँ न दीख सुनी नहिं बाता ※ केहु रन इतर करै अपघाता
सम्मुख समर न सर सन्धाना ※ नतरु चपेटि हरत तव प्राना
मम सन संगर प्रकट कठोरा ※ ह्वै तरु ओट हनेउ जिमि चोरा
तुमहिं प्रकट मैं अतुलित वीरा ※ मम रन नहिं समर्थ रणधीरा

दो० बैरी मम सुग्रीव तेहि कारन किय अपघात[1]।
विन विवाद दुर्नीति तुम, राम ! कीन उत्पात ॥ २१ ॥

विन अपराध मारि कपिराजा ※ केहि मुख जइहौ साधु-समाजा
दशरथ धर्मधुरीन कहाये ※ कुल-द्रुम राम वंश तिन जाये
सदा धर्म दशरथ मन माहीं ※ तुम कदापि दशरथ-सुत नाहीं
पितु गौरव, तजि धर्म विहीना ※ संग-सुकण्ठ नीच मन दीना

हीन वंशे जन्म नहे, जन्म रघुवंशे ※ धार्म्मिक ब'लिया सब तोमारे प्रशंसे
ए कोन् धर्म्मेर कर्म्म करिले, ना जानि ※ बिना अपराधे बिनाशिले ममप्रानी
सबे ब'ले, रामचन्द्र दयार निवास ※ यत दया तोमार, ता आमाते प्रकाश
तपस्वीर वेशे राम भ्रम एइ वने ※ काहार बधिब प्रान, सदा भावे मने
सर्व्वलोके ब'ले राम धर्म्म अवतार ※ भाल राम देखाइले सेइ व्यवहार
भाइ भाइ द्वन्द्व करि देखह कौतुक ※ आमारे मारिया तुमि कि पाइले सुख
कोथाओ न देखि हेन कखन ना शुनि ※ एक सहित युद्धे अन्ये हय खुनी
सम्मुख संग्रामे यदि मारिते हे बाण ※ एकटा चपेटाघाते बधिलाम प्राण
सम्मुखे संग्राम मने बुझिया कठोर ※ तेंइ राम आमाके बधिले ह'ये चोर
ज्ञात आछ आमारे, जेमन आमि वीर ※ आमार सहित युद्धे केह नहे स्थिर
सुग्रीव आमार वादी, साधि तार वाद ※ अविवादे तुमि केन करिले प्रमाद
केमने देखाबे मुख साधुर समाजे ※ विना दोषे कपटे बधिया बालिराजे
दशरथ राजा तिनि धर्म्म-अवतार ※ ताँर वंशे हइयाछ कुलेर अंगार
महाराज दशरथ, धर्म्मे रत मन ※ तार पुत्र तुमि ना हइबे कदाचन
धर्म्महीन मान्य छिले बापेर गौरवे ※ मिलिले साधिते इष्ट पापीष्ठ सुग्रीवे

[1] विश्वासघात।

सिद्धक-साधक पापिन जोगू * नतरु होत मोंहि किमि दुखभोगू
विन कपि-कृपा न तव निस्तारा * तौ मोंहि किमि न दीन यहु भारा
एक छलांग सिन्धु के पारा * एक दिवस महँ सिय-उद्धारा
क्षत्रिय-सुवन विवेक न कीन्हा * अधम सचिव केहि सम्मति दीन्हा
शत-शत बीरन बालि सँहारा * कहा छुद्र दसकन्ध बिचारा
बाँधि पूँछ, जब रन हित आवा * सिंधु बोरि पुनि-पुनि उतरावा
बंधन ढील भएउ, गृह आई * गहि पद क्षमा पाय नभ जाई
त्रिपुर[1] जयी सिवप्रिय दसग्रीवा * तेहि समता कहँ खल सुग्रीवा
अधिकाधिक बिलम्ब यदि हेतू * सिन्धुमात्र बाधा रघुकेतू
जो मोंहि राम मिलत यहु भारा * दिवस एक महँ सिय-उद्धारा
धरि दशकन्ध कण्ठ सों लावत * सदा तुमहिं सेवक सम ध्यावत
मैं उपयुक्त - भार कपिराजा * चीन्हति मोंहि सब वीर समाजा

दो० बालिराज इमि राम प्रति विविध भर्त्सना कीन ।
कृत्तिवास कृत लेखनी मन विषाद अति लीन ॥ २२ ॥

श्रीराम के प्रति वालि-विनय

बोले राम, बालि ! धरु धीरा * सुनु कपिकुल तैं अद्भुत वीरा

पापी पापी मिलनेते पापेर मन्त्रणा * नतुवा आमार केन हइबे यन्त्रणा
वानर हइते कार्य्य करिबे उद्धार * तबे केन आमारे ना दिले एइ भार
एक लाफे पारावार हइताम पार * एकदिने करिताम सीतार उद्धार
राजपुत्र तुमि राम, नाहि विवेचना * कोन् छार मन्त्री सह करिले मन्त्रणा
करिताम कत शत वीरेर संहार * आमार सम्मुखेते रावण कोन् छार
रावण आसियाछिल रण करिवारे * लेजे बाँधि डुबाइनु चारि पारावारे
लेजेर बन्धन तार किष्किन्ध्याय खसे * पाये पड़ि आमार से उठिल आकाशे
त्रिलोक-विजयी शिवभक्त दशग्रीव * कि करिबे ताहार निकटे ए सुग्रीव
यदि हय, हइबे बिलम्ब बहुतर * मध्ये एक व्यवधान प्रबल सागर
यद्यपि आमारे राम, दिते एइभार * एक दिने करिताम सीतार उद्धार
आनिताम रावणेरे धरिया गलाय * सेवक हइया राम, सेवित तोमाय
ए विचित्र भार हेन आमि वालिराज * आमारे ना जाने कोन् वीरेर समाज
विस्तर भर्त्सिल रामे रण-स्थले वालि * कृत्तिवास ब'ले केन रामे देह गालि

श्रीरामेर प्रति वालिर विनय

श्रीराम ब'लेन, बालि, शुन ह'ये स्थिर * वानर जातिर मध्ये तुमि बड़ वीर

[1] तीनों लोक ।

बहु भर्त्सन[1] किय बालि नरेसू ※ कहु दुर्बचन अबहिं यदि शेषू
युग - युग भूमण्डल नरराया ※ केहि आखेट[2] तजेउ करि दाया
वन तृन गुजर न कछु अपराधा ※ पुनि मृग हेत बनत नृप व्याधा[3]
जनि कछु दोष बसत जल मीना ※ भक्ष्य भद्र जन तिन कहँ कीना
खग-मृग बसत बिपुल बन माहीं ※ ब्याध फन्द सों तिन गति नाहीं
मम सासन[4] बिलसत पर दारा ※ चहुँ दिसि पाप पाप-सञ्चारा
पातक मुक्त कीन मम सायक ※ हेतु न ताप, स्वर्ग फलदायक
करि सुग्रीव भक्त प्रतिपालन ※ बधहिं सदा तेहि शत्रु अपावन
कीन मित्रता पावक साखी ※ सकहुँ न रिपु-सुकण्ठ मैं राखी
अग्रज[5] तुम सुकण्ठ-सन्माने[6] ※ अधिक कथन जनि उचित लखाने
तुम सन उचित न मम रन-साजा ※ क्षमहु कपीस देहु जनि लाजा
क्षमहु वीर, विधि-लेख विचारौ ※ मम प्रसाद सुरपुरी सिधारौ
सुरपति-सुत ! धरि सुरपति-वेसू ※ गमन करहु सुरपुर निज देसू
त्रिभुवनपति पूजित मैं जानी ※ मन विषन्न ! मम अनुचित वानी
क्षमहु राम बन्दौं तव चरना ※ दोउ अंगद-सुकण्ठ तव सरना

आमाके करिले तुमि अनेक भर्त्सन ※ आर यदि थाके किछु, कह कुवचन
पृथिवीते यत राजा आछे युगे युगे ※ दया करि कोन् राजा छाड़ियाछे मृगे
घास खाय, वने चरे, नाहि अपराध ※ तबु मृग मारिते राजारा ह'य व्याध
मत्स्यगण जले थाके, हिंसे ब'ल काके ※ तारे वध करे केन बड़ बड़ लोके
पशुपक्षी सर्व्वस्थाने थाके सर्व्ववने ※ व्याधगण अविरत तारे केन हने
आमार राज्येते थाकि कर परदार ※ सेइ पापे मम राज्ये पापेर सञ्चार
मम वाणे तोमार हइल मुक्त पाप ※ स्वर्गे जाह बालि केन करह सन्ताप
भक्त हेन सुग्रीवेरे करिब पालन ※ ताहार ये शत्रु, तार बधिब जीवन
करियाछि मित्रता पावक साक्षी करि ※ कोथाओ ना राखि आमि सुग्रीवेर अरि
सुग्रीवेर ज्येष्ठ तुमि परम गर्व्वित ※ तोमाय अधिक ब'ला नहे त उचित
तोमार सहित युद्धे मोरे नाहि साजे ※ क्षमा कर कपिराज, केन फेल लाजे
क्षमा कर वीर तव दैवेर लिखन ※ आमार प्रसादे जाओ महेन्द्र-भुवन
इन्द्र-पुत्र तुमि, धर महेन्द्रेर वेश ※ अमरावतीते जाओ आपनार देश
बालि ब'ले त्रिभुवने तुमित पूजित ※ व्यथित हइया ब'लिलाम अनुचित
क्षमा कर, धरि राम तोमार चरण ※ सुग्रीव-अंगदे तुमि करह पालन

---

१ तिरस्कार, झिड़की २ शिकार ३ बहेलिया ४ राज्य में ५ बड़े भाई
६ सुग्रीव के पूज्य ।

दो० राजु समर्पन अनुज कहँ, करहु नाथ स्वीकार।
अंगद सुवन सनाथ करि देव यथा अधिकार॥
दाता, कर्त्ता नाथ तुम सबके सिरजनहार।
अंगद पुनि सुग्रीव दोउ, तव अब धर्मकुमार॥ २३॥

सुता-सुषेन रानि गृह तारा ※ दुख जनि लहै, सुकण्ठहिं भारा
पावन पद अति पायेउ कीसा ※ तजौ व्यथा बोले जगदीसा
राम-राम प्रणवति कपिनाथा ※ मम दुर्वचन क्षमहु रघुनाथा
बालि-बचन सुनि राम हुलासा ※ किष्किन्धा कृतिवास प्रकासा

तारा-विलाप एवं राम को अभिशाप

प्रभु-सर रन परि बालि विनासू ※ तारहिं खबरि मिली रनिवासू
सम्हरति केस बसन जनि आली ※ अंगद सहित चली जहँ बाली
सचिवन[1] त्रसित भजत मग माहीं ※ अश्रुमुखी पूछत तिन पाहीं
सब बिधि योग्य सखा नृप केरे ※ तिन तजि कहँ अपकीर्ति[2] बटोरे
कपिगन कहत सुनहु ठकुरानी ※ कलह बन्धु युग[3], किय अति हानी
रानि! कथन तव आगे आवा ※ रघुपति-सर नृप प्रान गवाँवा
रहु रनिवास सैन चहुँ ओरा ※ दुख तजि नृप करि बालिकिशोरा[4]

सुग्रीवेरे राज्य दिते करले स्वीकार ※ अंगदेरे दिले तुमि कोन् अधिकार
तुमि दाता तुमि कर्त्ता तुमि त विधाता ※ सुग्रीव-अंगदेर धर्म्मतः हओ पिता
सुषेण-दुहिता तारा आछे गृहमाझे ※ सुग्रीव ना दुःख देय तारे कोन् काजे
श्रीराम ब'लेन चिन्ता-गत कपिराज ※ पवित्र हइले तुमि, कथाय कि काज
श्रीरामे विनये कहे बालि जोड़ हाथ ※ विरूप वचन क्षमा कर रघुनाथ
बालिर वचन शुनि रामेर उल्लास ※ रचिल किष्किंध्याकाण्ड कवि कृत्तिवास

बालिर मृत्युते तारार विलाप ओ श्रीरामेर प्रति अभिशाप

रणे पड़े बालिराज श्रीरामेर बाणे ※ अन्तःपुरे थाकि ताहा तारादेवी शुने
वस्त्र ना सम्वरे रानी आलूलित केशे ※ अंगदेरे ल'ये जाय बालिर उद्देशे
पथे देखे मंत्रिगण पलाइछे त्रासे ※ अश्रुमुखी तारादेवी सबारे जिज्ञासे
तोमरा राजार पात्र, छिले तार साथी ※ तारे छाड़ि जाओ केन राखिया अख्याति
कपिगन ब'ले, शुन तारा ठाकुरानी ※ दुइ भाइ विस्तर करिल हानाहानि
तुमि यत ब'लिले इहार विद्यमान ※ श्रीरामेर वाण बालि हाराइल प्राण
चारिभिते सैन्य दिया राज अन्तःपुरी ※ अंगदेरे राजा कर शोक परिहरि

१ मंत्रियों से २ भाग कर अपयश ले रहे हो ३ ...

राज्य भार अंगद सुत हेतू * संग जाहुँ, मम धन कपिकेतू
कर सिर धुनत न वस्त्र सम्हारा * रनस्थली चहुँ रानि निहारा
तजि सर चाप थपे रघुनाथा * समुख लखन दोउ जोरे हाथा
मौन, सबन मुख चुप्पी छाई * सकल रहे तहँ माथ लचाई
वेगि बालि जहँ, प्रस्तुत तारा * पति-दुर्गति लखि हाहाकारा

दो० विपुल सुभट तुम सन कबहुँ, लरि न सके, घननाद[1]!।
छिति लोटत सर एक यहु, अघटन[2] दैव-विषाद[3] ॥ २४ ॥

कथन न मम सुनि, साहस कीन्हा * तव न दोष, विधि विपदा दीन्हा
नयन मूँदि मोहिं त्यागेउ नाथा * तुम बिन अंगद निपट अनाथा
अथये[4] चन्द्र अस्त नभ-तारा * नाथ-अस्त तारहिं अँधियारा
शासन हित सुकण्ठ अपकाजू * कीन दुखित कपि अखिल समाजू
रुदन बिसूरि[5] कृशोदरि तारा * सुनि किष्किन्धा रुदन अपारा
छिति लोटत अंगद सन्तापा * बालि-मरन मृग-विहग[6] विलापा
रोवत लखन विकल सब जीवा * मुख मलीन रघुपति सुग्रीवा
रघुकुल जनमि, कहेउ पुनि तारा * छल करि पति मम किमि संहारा

तारा ब'ले, राज्य निये थाकुक अंगद * स्वामी संगे जाब आमि, एइ से सम्पद
शिरे करे कराघात, वस्त्र ना सम्बरे * रणस्थले रानी चतुर्द्दिके दृष्टि करे
धनुर्ब्बाण छाड़िया बसिया रघुनाथ * लक्ष्मण सम्मुखे ताँर करि जोड़ हाथ
कारो मुखे नाहि शुना जाय कोन कथा * सकले बसिया आछे हेंट करि माथा
बालिर निकटे तारा चलिल सत्वरे * स्वामीर दुर्गति देखि हाहाकार करे
मेघेर गर्ज्जन-तुल्य तोमार गर्ज्जन * बड़ बड़ बीर सहे के तोमार रण
श्रीरामेर एक बाणे लोटाओ भूतले * एकि असम्भव कर्म्म, विधि देखाइले
मम वाक्य ना शुनिले करिले साहस * तोमार नाहिक दोष, विधाता विरस
मुदिले नयन नाथ, त्यजिया आमाय * तोमा बिना अंगदेर ना देखि उपाय
चन्द्र जान अस्त, ताँर संगे जाय तारा * तोमार हइल अस्त, केन रहे तारा
राज्य-लोभे सुग्रीव करिल एइ काज *कान्दाइल किष्किध्यार विशिष्ठ समाज
एतेक ब'लिया कान्दे तारा कृषोदरी * ताहार क्रन्दने कान्दे किष्किध्यानगरी
बालक अंगद कान्दे मृत्तिका-शयने * पशु-पक्षी आदि कान्दे बालिर मरने
थाकुक अन्येर कथा, कान्देन लक्ष्मण * श्रीराम सुग्रीव दोंहे विरस वदन
तारा ब'ले, राम तव जन्म रघुकुले * आमार स्वामीके केन विनाशिले छले

---

१ मेघ के समान गर्जन करने वाले वीर २ अनहोनी ३ भाग्य का कोप
४ अस्त होने पर ५ याद करके रोदन ६ पशु-पक्षी।

रन प्रतच्छ[1] करि लखत प्रतापू ※ हनेउ विटप लुकि, दारुन तापू
जनश्रुति दयासिन्धु भगवाना ※ भल दीन्हेउ तुम तासु प्रमाना
मम सब विधि तुम निपट विनासी ※ सुग्रीवहिं प्रति दया प्रकासी
सिय-विछोह परिचित रघुवीरा ※ सो मम हित किमि दारुन पीरा
दीन न शाप! सदय मम नाथा ※ लहि मम शाप भरहु रघुनाथा
निज बल विक्रम सिय उद्धारी ※ बहु श्रम करि आनहु गृह नारी
वेगि वियोग, सिया कर शोकू ※ कछु दिन निवसि लहै सुरलोकू
किष्किन्धा निमग्न जिमि शोका ※ अवध[2] सशोक लहै सुरलोका

दो० सती, सती, जो मैं सती, भारत-भूतल माहिं।
सीय विना कलपत कटैं सदा दिवस तव पाहिं॥ २५॥

अमिट, राम! यहु मम अभिशापू ※ सिय कारन तव तन संतापू
विगलित होयँ सिया हित प्राना ※ जीवन कटै सदा दुख-साना[3]
कहँ रघुपति कहँ वानरि हीना ※ गर्जति, 'किय मोहि सकल विहीना'
करहु न दर्प, 'अहौं जगनाथा' ※ कर्मभोग-बन्धन सब साथा
बिन अपराध बधेउ कपिनाथा ※ अन्य जन्म तव बध तिन[4]-हाथा
सदा सती-बाचा फुर[5] होई ※ तेहि परि मुक्ति-उपाय न कोई

सम्मुखे मारिते यदि, देखिते प्रताप ※ लुकाय मारिले पाइलाम बड़ ताप
श्रीराम तोमारे सवे व'ले दयावान ※ भाल देखाइले आजि ताहार प्रमान
एक बारे आमार करिते सर्व्वनाश ※ सुग्रीवेर प्रति दया करिले प्रकाश
विच्छेद यातना यत जान त आपनि ※ तबे केन आमारे हे दिले रघुमनि
प्रभु शाप नाहि दिले सदय हृदय ※ आमि शाप दिब तोमा फलिबे निश्चय
सीता उद्धारिबे राम, आपन विक्रमे ※ सीतार आनिबे घरे बहु परिश्रमे
किन्तु सीता ना थाकिबे सदा तव पाश ※ किछु दिन थाकिय करिबे स्वर्गवास
कान्दाइले जेइ रूप किष्किन्ध्यानगरी ※ कान्दाइया अयोध्या जाइबे स्वर्गपुरी
आमि यदि सती हइ भारत-भितरे ※ कान्दिबे सीतार हेतु चिर दिन धरे
आमि ए दिलाम शाप ना हबे खण्डन ※ सीतार कारणे राम हबे ज्वालातन
सीतार कारणे तुमि प्राण हाराइबे ※ ए जन्मेर मत दुःखे काल काटाइबे
वानरी हइया तारा रामेरे गरजे ※ एतेक सम्पद मोर तोमा हेतु मजे
इहा मने न करिह, आमि नारायन ※ कर्म्ममत फलभोग करे सर्व्वजन
विना दोषे जेमने मारिले कपीश्वरे ※ मारिबे तोमारे पुनः सेइ जन्मान्तरे
सतीर वचन कभु ना हबे खण्डन ※ जाहा ब'लि, ताहा नाहि हबे विमोचन

१ सम्मुख युद्ध करके २ सारी अयोध्या ३ दुखभरा ४ वालि रूपी व्याध
५ सच्ची।

लै पति अंक सखेद विलापू * बालि छीन बोलत लखि तापू
सुनु प्रेयसी, वचन मम तारा * रामहिं बहु दुर्वचन उचारा
मम कुवचन रामहिं अति लाजा * पुनि तव रोष सरै कस काजा
हरन लंकपति किय वैदेही * रावन-दोष मरन मम एही
राम निदोष[1] अमिट विधि-रीती * तव कुवचन तिन वृथा अप्रीती
तारहिं बालि प्रबोध प्रकासा * मरन काल अनुजहिं सम्भाषा
तैं सुग्रीव सहोदर मोरा * चलेउ विवाद दुहुन अति घोरा
तव विषाद पायेउँ फल आजू * निश्चय मोर मरन तव राजू
भावी[2] तुमहिं न दोष प्रसंगा * राज-भोग दोउ लिखा न संगा
अंगद पलेउ राज सुख भोगू * तेहि पद धूरि धूसरित जोगू

दो० मम सूने तुम जनक सम, प्रतिपालहु निज जानि ।
कबहुँ मिलै संताप जनि, अभय करहु सुत मानि ॥ २६ ॥

जो मैं होत, न होत अनाथा * सौंपहुँ कुअँर आजु तव हाथा
अहह राम सर दारुन पीरा * छनहिं प्रान अब तजत सरीरा
दीन सुवन-हित सुरपति माला * अर्पन तुमहिं अनुज यहि काला
अनुमति लीन बालि प्रभु पासा * दिव्य अनुज गर माल प्रकासा

खेदे तारा कान्दे कोले लइया बालिरे * ताँरार क्रन्दने बालि ब'ले धीरे धीरे
शुन तारा प्रेयसी, तोमारे आमि ब'लि * आमि बहु रामेरे दियाछि गालागालि
आमार बचने बड़ पाइलेन लाज * तुमि मन्द ब'लिया साधिबे कोन् काज
सीतारे हरिया निल लंकार रावन * रावनेर अपराधे आमार मरन
विधिर निर्ब्बंध दिल, रामेर कि दोष * गालि दिले श्रीरामेर हबे असन्तोष
तारा प्रति दिल बालि प्रबोध बचन * मृत्युकाले सुग्रवेरे करे सम्भाषण
बालि ब'ले सुग्रीव तुमि ये सहोदर * तव संगे विसम्वाद हइल विस्तर
तोमार विषादे मोर एइ फल हय * तुमि राज्य कर, आमि मरिहे निश्चय
तव दोष नाहि मोरे विधाता विमुख * एकत्र ना हइल दोंहार राज्य सुख
राजभोगे बाड़ालाम अंगद सुन्दर * पदतले लोटे पुत्र धूलाय धूसर
अंगदेरे भाइ, तुमि नाहि दिओ ताप * आमार बिहने तुमि अंगदेर बाप
अंगदेरे भयेते अभय दिओ दान * पालन करिओ एरे पुत्रेर समान
आमि यदि थाकिताम हइत पालन * एइ लह, अंगदेरे कपि समर्पन
दारुण रामेर बाणे पुड़े ए शरीर * क्षणेक थाकिया प्रान हइबे बाहिर
इन्द्रमाल दियाछेन पुत्रेर शन्देश * सुग्रीवेरे दिह से देखुक एइ देश
श्रीरामेर ठाँइ बालि लये अनुमति * सुग्रीवेरे गले दिल, धरे नाना ज्योति

---

१ बेकसूर २ होनहार ।

अनुज माल, पुनि सुवन निहारी ※ अन्तकाल कछु गिरा उचारी
मम गौरव जिमि दीन बड़ाई ※ प्रति-सुग्रीव करहु मन लाई
मन मम दर्प कबहुँ जनि आनौ ※ पितु सम पितु-भाई सन्मानौ
जहँ सुग्रीव-प्रीति तहँ प्रीती ※ तेहि विपरीत तोर विपरीती
सेवा तासु धर्म शुभकर्मा ※ दोउ जीवन करु सफल सधर्मा
यहि विधि कहत तजे कपि प्राना ※ प्रस्तुत सुरपति कीन विमाना
काल कराल न गति कोउ जाना ※ रन-थल महासुभट अवसाना[1]
चढ़ि विमान सुरपुरी सिधारा ※ इत विषादमय विलपति दारा[2]
सिर धुनि तजत आभरन तारा ※ छन अचेत छन हाहाकारा
बेणी खसि, गर मुक्ताहारा ※ छिन्न-भिन्न सहचरिन सम्हारा
पति बिछोह दृग सरसत नीरा ※ प्रभु ! तव विन मम दहति सरीरा
अहह ! कहाँ तव राज-पाट-धन ※ कहँ तव दिव्य रत्न सिंहासन

दो० प्रान हरेउ सुग्रीव तव, तुम विन सब अँधियार ।
कहँ अंगद तव प्रान सम, कहाँ राज-संसार ॥ २७ ॥

जिन विक्रम काँपत त्रयलोका ※ विधिगति तव यह दशा बिलोका
रघुपति-सर दारुण हिय माहीं ※ पाप-सुकण्ठ[3] फले हम पाहीं

सुग्रीवेरे माला दिया पुत्र-पाने चाहे ※ मृत्युकाले अंगदेरे परिमित कहे
बाड़िले येमत पुत्र आमार गौरवे ※ सेइमत बाड़ाइबे तोमाय सुग्रीवे
अहंकार ना करिह आमार कखने ※ खुड़ार करिओ सेवा आमार विधाने
सुग्रीवेर विपक्ष से जानिओ विपक्ष ※ सुग्रीवेर जेइ पक्ष, सेइ तव पक्ष
अधर्म न करिह, करिह सेवाकर्म ※ खुड़ार करिओ सेवा परापर धर्म
एत ब'लि वालिराज त्यजिल परान ※ प्रेरण करेन इन्द्र तखनि बिमान
कालेर कुटिल गति, के बुझिबे स्थिर ※ रणस्थले शयन करिल महावीर
विमाने चड़िया गेल अमरावतीते ※ हाहाकार करि तारा लागिल कान्दिते
शिरे करि कराघात त्यजे आभरन ※ क्षणे हाहाकार करे, क्षणे अचेतन
छिड़िर मुक्तार माला खसिल कवरी ※ धरिया राखिते तारे नारे सहचरी
पति हाराइया तारा नेत्रे धारा बहे ※ ब'ले, प्रभु, तोमार बिहने प्रान दहे
कोथाय रहिल तव राज्य पाट धन ※ कोथाय तोमार दिव्य रत्न सिंहासन
सुग्रीव हइल तव प्राणेर आपद ※ कोथाय रहिल तव प्राणेर अंगद
कोथाय रहिल तव ए राज्य संसार ※ तोमार बिहने देखि सब अन्धकार
त्रिभुवन कम्पमान तोमार विक्रमे ※ तोमार एमन दशा मम भाग्यक्रमे
रामेर दारुण बाण बिद्ध वक्षस्थले ※ सुग्रीवेर यत पाप आमार ता फले

१ मुरझा गया २ पत्नी तारा ३ सुग्रीव ।

बालि-तनहिं सर अनुज निकारा * बही तीव्र तहँ शोणित धारा
कातर भामिनि करत बिलापा * परिजन-बचन बुझावत तापा
कलपत रानि धरति जनि धीरा * करि अनुरोध कहेउ हनु[1] वीरा
धैर्य सती करु धीरज धारन * काल-धर्म जनि होय निवारन
बालि इन्द्र - सुत पुण्यश्लोकू * हरि - प्रसाद गमनेउ पितुलोकू[2]
अंगद, सकल समाज तिहारा * करहु, रानि! प्रतिपाल हमारा
नैनन अंगद लखहिं नरेसू * रानि! धीर धरि तजहु कलेसू
सावन झरी झरै दृग धारा * अकथ कथा, बोलति इमि तारा
जो अंगद नृप? तौ कस बीती * राम-सहाय सुकण्ठ न प्रीती
भल अनभल सुत, मोर न भारा * करि सहमरन[3] तरौं सब भारा
गौरव-नारि स्वामि के साथा * वृथा सुवन, जब मातु अनाथा[4]
लखि तिय रोष मोद पति लेही * सहति न सुवन बैन, तजि देही
धर्म कर्म पति सर्व विधाता * पति तिय-मोद-मुक्ति कर दाता
स्वामि सती-सेवा अधिकारी * पति विन लहति न गति कहुँ नारी

दो० बुध जन कहत अनन्य गुरु सम्पति स्वामि अनन्य ।
तिय-कर्त्ता दाता सकल स्वामि विधाता धन्य ।। २८ ।।

बुक हैते सुग्रीव काड़िया निल बाण * बालिर रक्तेते नदी बहे खरशान
कान्दिते कान्दिते तारा हइल कातर * पात्र मित्र मिलि देय प्रबोध उत्तर
कान्दे महादेवी तारा ना माने प्रबोध * हनूमान ब'ले कत करि अनुरोध
शोक परिहर रानी, सम्बर क्रन्दन * एमन कालेर धर्म, के करे खण्डन
परम धार्म्मिक बालि, इन्द्रेर नन्दन * रामेर प्रसादे जान पितार भुवन
अंगदेरे पालह, पालह सबाकारे * सकलि तोमार रानी, आछे ए संसारे
अंगद हइबे राजा, देखिबे नयने * परित्याग कर शोक, धैर्य्य धर मने
नेत्र नीर झरे येन श्रावनेर धारा * ना कहिले नहे, तेंइ कहे रानी तारा
शुन वीर राजा यदि अंगद हइबे * श्रीरामेर कि साहाय्य सुग्रीव करिबे
भाल मन्द पुत्रेर जे नाहि मने करि * स्वामी-सह मरिले सकल दाये तरि
नारीर गौरव यत, स्वामी सब जाने * कि करिते पारे पुत्र स्वामीर बिहने
पुत्रेर ब'लिले मन्द, अवश्य से रोषे * स्वामीर ब'लिले, मन्द मने-मने हासे
सर्व्व धर्म्म कर्म्म स्वामी नारीर विधाता * कामिनीर स्वामी हय सुख-मोक्षदाता
स्वामी-सेवा करिबेक यदि हय सती * स्वामी विना स्त्री लोकेर आर नाहि गति
स्वामी दाता स्वामी कर्त्ता स्वामी मात्र धन * स्वामी बिना गुरु नाहि, ब'ले ज्ञानी जन

१ हनुमान २ इन्द्रलोक ३ पति के साथ सती होकर ४ विना पति की ।

शतपुत्री विन स्वामि विचारी ※ कहत अभागिनि जग तेंहि नारी
विकल रानि इमि करत विलापा ※ लखि संताप सुकण्ठहिं व्यापा

बालि-संस्कार

बोले हरि, प्रिय! तजहु विषादू ※ दोष न काहु, विरञ्चि प्रमादू
हे कपिराज! शोक परिहरहू ※ अन्तःकर्म - बालि द्रुत करहू
चन्दन अगुरु सुकाष्ठ मँगाई ※ राजबसन अरु अभरन लाई
गात बिशाल बहन करि पावैं[1] ※ बाहक बाछि[2] कटक सों आवैं
कहेंउ लखन हनुमत! धरि-धीरा ※ यथा प्रयोजन आनहु वीरा!
गृहभण्डार प्रविसि हनुमाना ※ आनेंउ रत्न आभरन नाना
चतुर्द्दोल नृप अद्भुत वसना ※ देस-विदेस विविध धन रतना
शिविका[3] लिए बालि शव बीरा ※ गये सरित् जहँ पम्पा तीरा
चन्दन काष्ठ चिता सजवाई ※ बालिराज शव शयन कराई
राज-साज किंशुक[4] बहु भाँती ※ तारा पुनि पावक[5] प्रणिपाती
बालि-बन्धुगन धरेंउ अँगारा ※ अकथ कथा तिन रुदन अपारा
राम सरन लहि पाप विनासा ※ किष्किंधा गायेंउ कृतिवासा

शतपुत्रवती यदि स्वामी-हीना हय ※ तथापि सकले तारे अभागिनी कय
कान्दिते कान्दिते तारा हइल विह्वल ※ तारार क्रन्दते हय सुग्रीव विकल

बालिर-संस्कार

श्रीराम ब'लेन मित्र ना कर विषाद ※ कार दोष नाइ, दैव पाड़िल प्रमाद
सम्वरह शोक तुमि वानरेर राज ※ त्वरा करि करह बालिर अग्निकाज
शुष्क काष्ठ आन मित्र अगुरु चन्दन ※ राज-आभरन आन बसन भूषण
वृहत् शरीर तार करिते वहन ※ बाछिया कटक आन बालिर बाहन
लक्ष्मण ब'लेन हनूमान हउ स्थिर ※ सर्व्व प्रयोजन तुमि आनह बाहिर
हनुमान सान्धाइल बाहिर भीतरे ※ नाना-रत्न-आभरन आनिल बाहिरे
राज चतुर्द्दोल आने विचित्र वसन ※ बिलाइते आने आरो बहुमूल्य धन
राज चतुर्द्दोले निया तुलिल वालिरे ※ सकले लइया गेल पम्पा नदी तीरे
चन्दन काष्ठेर चिता करिल से तीरे ※ बालिराजे शोयाइल ताहार उपरे
राजयोग्य चिता करे, नाना पुष्पजाति ※ तारा महादेवी करे वैश्वानरे स्तुति
अग्निकार्य्य बालिर करिल वन्धुगण ※ ताहार क्रन्दन कत करिब वर्णन
राम नाम शरणेते शापेर विनाश ※ रचिल किष्किन्धा काण्ड कवि कृत्तिवास

---

१ ले चल सकें २ छाँट कर ३ पालकी ४ फल ५ वैश्वानर अग्नि।

सुग्रीव द्वारा राज्य-प्राप्ति

कपिगन चलि जहँ राम सुहाये ※ प्रभुहिं पवनसुत बचन सुनाये
नृप सुग्रीव, नाथ! तव कारन ※ पद तव चहत कपीस पखारन

दो० तव आयसु अन्तर्सदन[1] चलि निवसैं कपिनाथ।
किन्तु प्रवेश न देत मन विना संग रघुनाथ॥ २६॥

कहेउ राम जनि नगर प्रवेसू ※ पितु के बचन बास बनदेसू
चौदह वर्ष फिरहिं बन-कानन ※ केहि विधि समुचित नगर मँझावन
अतः सम्हारहु शासन-भारू ※ ह्वै नृप राज्य करौ अधिकारू
बालि निपाति सहेउँ अति लाजा ※ अंगद सुवन करहु युवराजा
सम्मति लै तारा महरानी ※ शासन करहु ताहि सन्मानी
सावन पावस कीन प्रवेसू ※ चलै कटक-कपि निज-निज देसू
वन-वन भरमि सहेउ बहु क्लेसू ※ बर्षा बिलसहु राजु नरेसू
वर्षा विगत रुकै दिन चारी ※ समुचित, तात! दण्ड अधिकारी
आयसु राम भयेउ कपि, सदना[1] ※ दान वसन बहु दीन्हे रतना
सिंहासन सुग्रीव असीना ※ छत्र दण्ड युत सासन कीना
सिंहासन सुघरी[2] पग दीना ※ चवँरादिक चहुँ कपिगन लीना

सुग्रीवेर राज्य-प्राप्ति

सकल वानर गेल राम-विद्यमान ※ सुग्रीवेर इंगिते ब'लेन हनूमान
तोमार प्रसादेते सुग्रीव हैल राजा ※ वाञ्छा करे सुग्रीव तोमारे करे पूजा
पाइले तोमार आज्ञा जाय अन्तःपुरे ※ अन्तःपुरे श्रीराम जाइबे एकत्तरे
श्रीराम बलेन पुरे ना करि प्रवेश ※ वने-वास करिवारे पितार आदेश
चतुर्द्दश वत्सर भ्रमिब वने-वने ※ नगरे केमने आमि करिब गमन
सुग्रीवेर श्रीरामं बलेन लउ भार ※ राजा हइया तुमि राज्य कर अधिकार
बालि के मारिया बड़ पाइलाम लाज ※ एइ हेतु अंगदेरे कर युवराज
महादेवी तारार करह पुरस्कार ※ ताहार मन्त्रणाय करिह व्यवहार
आइस श्रावण मास वरिषा प्रवेशे ※ शाखामृग-कटक थाकुक निज देशे
वने-वने भ्रमिया पाइले बड़ दुःख ※ वरिषार किछु दिन कर राज्य-सुख
वर्षा गेले घरे जे थाकिबे एक दण्ड ※ ताहार करिब मित्र, समुचित दण्ड
श्रीरामेर आज्ञाते से गेल अन्तःपुर ※ नाना वस्त्र रत्न दान करिल प्रचुर
सुग्रीवे करिते राजा एल राज्यखण्ड ※ सिंहासन बाहिर करिल छत्रदण्ड
शुभक्षणे सुग्रीव बसिल सिंहासने ※ चारिदिके चामर ढुलाय कपिगने

---

१ महल में २ शुभ घड़ी में।

आयसु-राम शिला कै रेखा ※ लै जलसिंधु कीन अभिषेका
कीन तिलक, किष्किन्धा-भारा ※ अर्पित कीन मञ्जुकटि-तारा
लहि सुकण्ठ तारहिं[1] अति तोषू ※ नृप-तिय रानि होय जनि दोषू
बादि सुकण्ठ अंगदहिं राजू ※ राम-बचन किमि होय अकाजू
अंगद सचिवन किय युवराजू ※ 'राम-घोष' किय कपिन समाजू

दो० माल्यवान एकान्त गिरि बहति सुवास समीर।
आकुल सिय हित, कोस दुइ, रहे जाय रघुवीर ॥ ३० ॥

दिव्य सरोवर जहँ गिरि सोहा ※ गिरि निवास रघुपति मन मोहा
धवल सीत निसि पूनम चन्दा ※ तरु फल फूल विविध सुखकंदा
तबहुँ न रामहिं कहुँ सुख-छाहीं ※ सिय बिन बृथा सकल सुख आहीं
असन-सयन कछु मनहिं न भावा ※ दिवस रुदन निसि जागि बितावा
नित कपिपति विलास मन दीना ※ निसि-दिन राम सीय-सुधि छीना
कनक पर्यंक[2] शयन कपिनाथा ※ तरुतर इत सोवत रघुनाथा
चतुर्मास सिय हेत विलापू ※ कपि उत सुमुखिन मगन प्रलापू
रुदन निरन्तर राम अधीरा ※ लखन प्रबोधि[3] देत बहु धीरा
वीर! धीर धरि तजहु प्रमादू ※ महापुरुष जनि उचित विषादू

श्रीरामेर आज्ञा येन पाषाणेर रेख ※ सागरेर जले तारे करे अभिषेक
छत्रदण्ड दिल आर किष्किन्ध्या नगरी ※ अभिषेक करि दिल तारा कृषोदरी
राजा-स्त्री राणी हबे इहाते कि दोषे ※ तारा पेये सुग्रीवेर बड़इ सन्तोषे
श्रीरामेर अलंघित वचन प्रमाणे ※ अंगदेर अभिषेक करे अवसाने
करिल अंगदे युवराज पात्रगण ※ 'रामजय' ब'लि डाके यत कपिगण
सीतार लागिया राम सदा क्षुण्ण मन ※ वरिषा वञ्चिते जान गिरि माल्यवान
दुइ क्रोश अन्तरे थाकेन रघुवीर ※ तथा वहे पर्व्वतेते सुगन्ध समीर
वासा करि थाकिलेन पर्व्वत-शिखर ※ स्थाने-स्थाने पर्व्वतेते दिव्य सरोवर
नानाविध वृक्षेते विचित्र फुल-फल ※ धवल रजनी पूर्णचन्द्र सुशीतल
रामेर सुखेर हेतु ना हय किञ्चित् ※ सीता विना सर्व्वसुखे श्रीराम वञ्चित
शयन भोजन ताँर किछु नाहि मने ※ दिन जाय रोदनेते, रात्रि जागरणे
राज्य भोग सुग्रीवेर वाड़े दिन दिन ※ रात्रि-दिन श्रीराम सीतार शोके क्षीण
सुवर्ण पालंके शोय सुग्रीव भूपति ※ तरुतले श्रीराम करेन निवसति
दिव्य सुन्दरीते सुग्रीवेर अभिलाष ※ सीता लागि श्रीराम कान्देन चारि मास
कान्दिते कान्दिते राम हइल कातर ※ ताँहारे लक्ष्मण देन सुबोध उत्तर
तुमि वीर हओ स्थिर त्यजह प्रमाद ※ महापुरुषेरा हने ना करे विषाद

१ तारा को २ पलँग ३ समझा ...

अतिव शोक चहुँ लोक प्रवादा ❋ हरत बुद्धि व्यापत उन्मादा
शोक सदा अज्ञान सतावै ❋ ज्ञानसिंधु प्रभु पहँ किमि आवै
काम क्रोध जीतेउ तुम वीरा ❋ शोक मगन किमि नाथ अधीरा
शमन, तात उर त्यागहु शंका ❋ लावहुँ सहित लंकपति लंका
प्रभु - आयसु सेवक जो पावै ❋ आनि सिया, दशकन्ध नसावै
कहा बिसात[1] लंकपति, लंका ❋ करहुँ विनास अकेल निसंका
बीतेउ बिलपत सावन मासू ❋ राम - रुदन वरनत कृतिवासू

सीता-शोक में राम-अनुताप

दो० चारि सिन्धु-जल सोंकि घन, आठ मास लहि नीर ।
बरसत पावस, तृप्त छिति[2], बिगत न प्रभु-सियपीर ॥ ३१ ॥

लखन ! कथन मम धरहु न काना ❋ बर्षा कुटिल हरेउ मम ज्ञाना
रवि ससि ढकत मेघ जिमि घोरा ❋ लेय सीय - दुख जीवन मोरा
जलद माझ दामिनि जिमि सोहा ❋ मम मन अंक मैथिली मोहा
जल थल एकमयी चहुँ अहई ❋ किमि कपि कटक कितहु पग धरई
नभ सों झरत सतत[3] जलधारा ❋ जलमय धरनि भूधराकारा

कातर हइले शोके निन्दा करे लोके ❋ शोके बुद्धिनाश हय, क्षिप्त हय शोके
शोकेते आच्छन्न होय, ये जन अज्ञान ❋ शोक कर केन राम, ह'ये ज्ञानवान
तुमि वीर, काम क्रोध कैला पराजय ❋ शोकस्थाने पराभव केन तव हय
क्षान्त हओ रघुवीर चिन्ता कर दूर ❋ लंकेश्वर-सहित आनिब लंकापुर
आज्ञा कर विज्ञवर, सेवक लक्ष्मणे ❋ जानकीर उद्धार करि नाशिया रावणे
कोन् छार लंका से, रावन कोन् छार ❋ एका आमि करि प्रभु, सबार संहार
कान्दिते कान्दिते गेल से श्रावण मास ❋ रामेर क्रन्दन गीत गाय कृत्तिवास

सीतार शोके श्रीरामेर अनुताप

चारि सागरेर नीर अष्टमास शोषे ❋ बरिषाकालेते मेघ सञ्चारि बरिषे
वरिषार धाराते पृथिवी छाड़े ताप ❋ सीतारे स्मरिया राम करेन सन्ताप
आमार वचने कर लक्ष्मण, आरति ❋ दुरन्त वरिषा ऋतु स्थिर नहे मति
सूर्य्य चन्द्र दोंहे बरिषार मेघ ढाके ❋ आमि त मरिब भाइ जानकीर शोके
सजल जलद शोभे विद्युत जेमन ❋ जानकी आमार कोले छिलेन सेमन
चतुर्द्दिके जल-स्थल सब एकाकार ❋ केमने हइबे कपिसैन्य आगुसार
जलधर निरंतर वरिषे आकाशे ❋ जलमग्ना धरणी, धरणीधर भासे

१ कीमत, हस्ती २ धरती ३ निरन्तर ।

कहुँ न पन्थ, दुर्गम सब देसू ※ सब विधि दुर्लभ सिय-उद्देसू[1]
किमि सुकण्ठ टेरहिं यहि काला ※ 'चलि खोजहु सिय कीसभुवाला'[2]
मग जल तजि, नद-नदी सुखाहीं ※ बिन तेहि सुफल मनोरथ नाहीं
तब लौं अस्थि-चर्म अवसेसू ※ मम बिछोह-सिय प्रान न सेसू
रिपु-बिच सीय अनाथिनि एका ※ पार करै किमि मास अनेका
उर मम आन न तजि बैदेही ※ बधै दनुज लखि, संसय एही
कलपत सीय सुनिश्चित मरना ※ तव बस अथच[3] मित्र के बस ना
खग न! सिन्धु उड़ि निरखहिं पारा ※ हतभागिनि सिय-शयन-अहारा
सदा विलाप राम जनि आसा ※ शोक कथा बरनत कृत्तिवासा

सीता-उद्धार हेतु सुग्रीव को ताड़ना

पावस बीती, शरद प्रवेसू ※ तबहुँ न चेत, न सिय-उद्देसू[4]
दादुर[5] लोप, न घन घहराहीं ※ विमल नखत ससि छबि नभ माहीं

दो० दिन बीते, मनु सिय मरन, थिर न मोर मन प्रान ।
चहुँ तम, तात! कपीस-तुम[6] काहु न बस कल्यान ॥ ३२ ॥

ए समये सुग्रीवेरे कहिब किमते ※ कटक लइया चल सीता उद्धारिते
नद नदी शुकाइवे, शुष्क हबे पथ ※ तबे से हइबे मम सिद्ध मनोरथ
तत दिन सीता हबे अस्थि-चर्म्म-सार ※ कि जानि त्यजे वा प्रान बिरहे आमार
एकाकिनी अनाथिनी शत्रुमध्ये वास ※ केमने बाँचिबे सीता एइ कय-मास
आमा विना जानकीर आर नाहि मन ※ एइ क्रोधे पाछे तारे वधे दशानन
कान्दिते कान्दिते सीता मरिबे निश्चित ※ कि करिबे भाइ तुमि, कि करिबे मित
पक्षी ह'ये उड़े जाइ सागरेर पार ※ अभागी सीतार देखि शयन-आहार
कान्देन सर्व्वदा राम करिया हताश ※ रामेर क्रन्दन रचे कवि कृत्तिवास

सीता उद्धारेर जन्य सुग्रीवेर प्रति ताड़न

बरिषा हइल गत, शरत् प्रवेश ※ तथापि ना जानकीर हइल उद्देश
भेकेर निनाद गेल मेघेर गर्ज्जन ※ निर्म्मल चन्द्रमा-तारा प्रकाशे गगन
मन प्राण स्थिर नहे सीतार लागिये ※ मरिवेक सीता बुझि, गेल दिन वये
कि करिबे भाइ तुमि कि करिबे मिते ※ सब अन्धकार मोर सीतार मृत्युते

---

१ सीता की खोज २ कपिराज सुग्रीव ३ अथवा ४ सीता की खोज
५ मेंढक ६ सुग्रीव और तुम लक्ष्मण ।

युगुल पुरुष-तिय धृत[1] संसारा ※ नारि स्रोत सन्तति परिवारा
तिय सों सुवन सार - संसारू ※ विन सुत तरत न पारावारू[2]
गया पिण्ड तर्पन अधिकारी ※ बन्धु! जगत सुत-सम्पति भारी
तिय-सुत-परिजन[3] काहु न त्यागा ※ विन सुत कहत निपूत अभागा
करत श्राद्ध तेहि मुख जे देखी ※ वृथा श्राद्ध, मत शास्त्र विशेषी
रतन अमोल बन्धु इमि दारा ※ सुत कर स्रोत, पलत परिवारा
जेते गोत बन्धु कुल लोका ※ सर्वोपरि सहभामिनि शोका
निर्दय मोहि सुग्रीव न भावत ※ सतिय केलि निज धाम सनावत
हनेउ बालि मैं कपिपति-काजू ※ परि सुख-भोग न मम सुधि आजू
तहि हित कीन विवेक न धर्मा ※ लहेउँ लाज वध-बालि अधर्मा
मम बल किष्किन्धा अधिकारा ※ यहि छन कपि मम अर्थ[4] बिसारा
बन्धु! गमन किष्किन्धा करहू ※ गाथा उचित तासु ढिग धरहू
बोले लखन, जाय कपिधामा ※ देखहुँ कस सुकण्ठ बलधामा
जाति कुटुम्ब गोत यत-लोकू ※ सबन अबहिं पठवहुँ यमलोकू
अति निश्चिन्त सकल बिसराई ※ हनहुँ एक सर सकल नसाई
विलपत इत भरमत रघुनाथा ※ उत पर्यंक रमत कपिनाथा

स्त्री पुरुष दुइ जने धरेछे संसार ※ भार्य्याते सन्तति हय, बाड़े परिवार
स्त्री थाकिले पुत्र हय संसारेर सार ※ पुत्र ना थाकिले तार गति नाहि आर
पिण्ड देय गयाय से, करये तर्पण ※ संसारेर मध्ये भाइ पुत्र बड़ धन
स्त्री पुत्र परिवार केह नहे छाड़ा ※ पुत्र ना थाकिले लोके बले आँटकुड़ा
तार मुख देखि श्राद्ध करये ये जन ※ श्राद्ध क्रिया वृथा तार, शास्त्रे कय हेन
अतएव शुन भाइ, भार्य्या बड़ धन ※ ताहाते सन्तति हय संसार-पालन
ज्ञाति बन्धु सहोदर मरे यत लोक ※ सबार अधिक भाइ, स्त्रीर बड़ शोक
सुग्रीव आमाके नाहि भावे से निर्दय ※ स्त्री पाइया केलि करे आपन आलय
ताहार लागिया आमि मारिलाम बालि ※ आमाके ना स्मरे कपि राजभोगे भुलि
बालिके बधिया आमि पाइलाम लाज ※धर्म्माधर्म्म ना भाविया साधि तार काज
किष्किन्ध्या पाइल कपि आमार कारणे ※ एखन आमार कर्म्म नाहि करे मने
एइ क्षणे जाओ भाइ किष्किन्ध्या नगर ※ समक्षे ब'लिवे तारे उचित उत्तर
लक्ष्मण ब'लेन जाइ किष्किन्ध्या नगर ※ देखिव केमन आजि सुग्रीव वानर
ज्ञाति वन्धु ताहार कुटुम्ब यत आर ※ पाठाइब सवाकारे शमनेर द्वार
निश्चिते वसिया आछे, आपना ना चिने ※ सुग्रीवे मारिया आजि पाणि एक बाणे
तुमि प्रभु रघुनाथ बेड़ाओ कान्दिया ※ कौतुके सुग्रीव थाके पालंके शुइया

१ धारण २ संसार-सागर ३ कुटुम्ब ४ मेरा प्रयोजन।

दो० अनुज ! मित्र-वध उचित जनि, लेहु काज डरपाय ।
बाम चाप कर दहिन सर, चले लखन तहँ धाय ॥ ३३ ॥

दृग सरोष अति कोप कराला ※ डगमग धरती सरग पताला
द्वार कपि-सदन लखन सुहाये ※ तहँ ससैन अंगद लखि पाये
लखन कोप लखि कपि भयभीता ※ प्रणवति बानर सकल बिनीता
छुद्र बहुल कीसन तजि धीरा ※ फाँदि बराय चले प्राचीरा[1]
कहेउ लखन सुनु बालिकुमारा ※ कहु सुकण्ठ आगमन हमारा
भ्रमत विकल हम नित वनदेसा ※ उत पर्यंक[2] सुखसैन कपीसा
वन दोउ भाइ फिरहिं सिय हेतू ※ रत्नासन सुचित्त कपिकेतू
दीन्हेउ राजु बालि हनि रामा ※ लहि, प्रमत्त कपि लीन विरामा
मञ्जु-बैन कपि कुटिल न लाजा ※ दै भरोस समिटेउ कपिराजा
चीटिहिं जमत पंख अवसानू[3] ※ इक सर सपुर[4] न तेहि कल्यानू
करत सहाय दीन जिन बाचा ※ करत न आजु बचन निज साचा
फिरत बालि-भय बन-बन रहई ※ सो सुधि आजु कपीस न अहई
समाचार चलि देहु कपीसा ※ प्रस्तुत द्वार अनुज - जगदीसा
बालि राम-सर सहजहिं मरई ※ केहि बल कपि दुःसाहस करई

बुझाइया लक्ष्मणेरे कहे रघुवर ※ मित्रबध ना करिओ, देखाइओ डर
लक्ष्मण विदाय हन श्रीरामेर स्थान ※ बाम हस्ते धनुक दक्षिण हस्ते बाण
महाकोपे चलिलेन घूर्णितलोचन ※ स्वर्ग्य मर्त्य पाताल काँपिल त्रिभुवन
किष्किन्ध्या नगरे वीर ह'ये उपनीत ※ द्वारे देखे अंगदेरे कटक वेष्टित
लक्ष्मणेर कोप देखि हइया कातर ※ प्रणति करिल ताँरे सकल वानर
हइलेक क्षुद्र क्षुद्र वानर अस्थिर ※ लाफे लाफे हल तारा प्राचीर बाहिर
लक्ष्मण ब'लेन शुन बालिर नन्दन ※ सुग्रीवेरे जनाओ आमार आगमन
वने वने भ्रमितेछि आमरा कान्दिया ※ सुग्रीव थाकेन नित्य पालंके शुइया
सीता लागि दुइ भाइ भ्रमि वने वने ※ निश्चिन्त आछेन तिनि रत्न सिंहासने
बालिरे मारिया राम दिलेन राजत्व ※ सुग्रीव पाइया राज्य हइयाछे मत्त
अति दुष्ट मिष्ट वाक्ये आछे आश्वासिया ※ कोन् लाजे थाके घरे निश्चिन्त बसिया
पिपीलिका पाखा उठे मरिवार तरे ※ राज्य सह पोड़ाइब आजि एक शरे
साहाय्य करिते आगे करिया स्वीकार ※ एखन ना मने करे ताहा एक बार
बालि भये अति भीत बेड़ाइत बने ※ से सकल सुग्रीवेर किछू नाहि मने
सुग्रीवेरे कह गिया एइ समाचार ※ रामेर अनुज भाइ आसियाछे द्वार
मारिलेन जे राम बालि के अनायासे ※ सुग्रीव ताँहारे तुच्छ कि करे साहसे

१ चहारदीवारी २ पलँग ३ मरण ४ किष्किन्धा सहित ।

वनचर बानर दुष्ट स्वभावा * तेहि कहि सखा राम अपनावा
दयासिन्धु कहँ श्रीरघुनाथा * कहँ बानर प्रभु कीन सनाथा

दो० मुनी जितेन्द्रिय योगिजन, अरु ब्रह्मर्षि अनन्त ।
अनाहार निज तप करत, अहिनिसि ध्यावत संत ।। ३४ ।।

सोइ प्रभु कीस लगायेउ कण्ठा * जन्म-जन्म कत पुण्य सुकण्ठा[1]
अंगद वचन विनीत सुनाई * लखन-कोप कछु शमन कराई
पाद्य अर्घ्य पुनि आसन दीना * दोउ कर जोरि अस्तुती कीना
लखन कोप लखि अति भय लेही * अन्तःपुर विनीत पग देही
बन्दि कपीसहिं मातु बहोरी * लखन द्वार, वरनत कर जोरी
रस-प्रमत्त लोचन मद-मोहा * नृप-तन कुंकुम[2] मृगमद[3] सोहा
मदन प्रभाव, न मन नृप पाहीं * अंगद-कथन सुनेउ कछु नाहीं
खौखियाय करि चिल्ल पुकारा * बँदरन नृप सन कीन गुहारा
कपिन कुलाहल द्वार सुनाना * केहि कारन चहुँदिसि रव[4] नाना
सुनि सुग्रीव शयन पुनि त्यागा * सचिव सखन प्रति कहत सरागा[5]
अन्तर्सदन सोर[4] किमि घोरा * सम्मुख प्रणवति बालिकिशोरा[6]
पठयेउ राम अनुज तव तीरा * द्वार उपस्थित लछिमन वीरा

पशु जाति बानर सुग्रीव दुराचारी * याहाके ब'लेन मित्र आपनि मुरारी
आपनि श्रीरघुनाथ दयार सागर * ताँर योग्य मित्र कि ए सुग्रीव बानर
कत योगी जितेन्द्रिय मुनि ब्रह्मऋषि * अनाहारे कत तप करे दिवानिशि
हेन राम कोले देय सुग्रीव बानरे * सुग्रीवेर कत पुण्य छिल जन्मान्तरे
अंगद ब'लेन शुन ठाकुर लक्ष्मण * स्थिर हओ महाशय करि निवेदन
पाद्य अर्घ्य दिल ताँरे बसिते आसन * जोड़ हाते स्तुति करे बालिर नन्दन
लक्ष्मणेर कोप देखि बड़ भय मने * अन्तःपुर मध्ये जाय परम सम्भ्रमे
सुग्रीव प्रणमि बन्दे मायेर चरण * जोड़ हाते ब'ले प्रभु, द्वारेते लक्ष्मण
घूर्णित लोचन राजा शृंगारेर मदे * शोभा पाय शरीर कुंकुम मृगमदे
कामरसे विह्वल सुग्रीव अन्य मन * किछु नाहि शुनिल अंगदेर वचन
जागाते राजारे करिल पाँचापाँचि * अनेक बानर मेलि करे किचिमिचि
बानरेर कोलाहल हइलेक द्वारे * कार मध्ये, स्थित थाके ए घोर चीत्कारे
शब्द शुनि सुग्रीव शय्या छाड़ि उठय * पात्र मित्र देखि राजा क्रोध भरे कय
अन्तःपुरे गोल[4] केन कर घोरतर * अंगद सम्मुखे गिया कहिछे उत्तर
पाठाइयाछेन राम आपन भ्रातारे * सुमित्रानन्दन वीर उपस्थित द्वारे

---

१ सुग्रीव २ केसर ३ कस्तूरी ४ शोर ५ क्रोध सहित ६ अंगद ।

महाकोप निन्दा फिटकारू ※ बहु कुवचन जनि जाय प्रचारू
साधि मित्रता निज हित[1] साधा ※ खल ! अब प्रभु-कारज किमि बाधा
कह सुकण्ठ, भल राम मिताई ※ पठय लखन दुर्वचन सुनाई
भय नहिं, कीन न मैं कछु दोषू ※ धनुधर लखन करत किमि रोषू

दो० कीन मित्रता राम सन, निश्चय यथा प्रमान ।
तेहि कारन लंकेस पहँ, करहुँ न जीवनदान ॥ ३५ ॥

जयी त्रिलोक लंकपति वीरा ※ तेहि भय सुरगन सदा अधीरा
नर-वानर तिन सन रन करई ※ केहि विधि जियत भला गृह फिरई
अबहिं लखन निज उपवन जाहीं ※ अवसर पाय कहउँ तिन पाहीं
अति मतिमान सचिव हनुमाना ※ बहु सुकण्ठ प्रति सीख बखाना
स्वयं विष्णु प्रभु पद्मविलोचन ※तिन प्रति किमि कुशब्द इमि मोचन
लहउ राजु नृप ! जासु प्रसादा ※ तिन प्रति किमि दुर्वचन प्रमादा
निसि दिन रत शृंगार विलासा ※ सुधि न राम-दुख, जात न पासा
लछिमन कुपित द्वार तव आहीं ※ चलि प्रसन्न कीजिय तिन पाहीं
जिन सर त्रिभुवन कोउ न समर्था ※ तिनहिं उलंघि परहु दुख व्यर्था
मैं तव मंत्री सुनहु नरेसू ※ तव हित मम निर्भय उपदेसू

महाकोपान्वित देखि ठाकुर लक्ष्मन ※ ब'लिब कतेक मत करिल भर्त्सन
साधिले आपन कर्म्म करिया मित्रता ※ रामेर कर्म्मेर काले कारिले खलता
सुग्रीव ब'लेन राम करिया मितालि ※ पाठाइला लक्ष्मनेरे देन गालागालि
अपराध नाहि करि कारे मोर डर ※ केन कोप करेन लक्ष्मन धनुर्धर
करियाछि मित्रता, नहे से अप्रमाण ※ राखिवारे मित्रता कि हाराइव प्राण
त्रिलोक विजयी से रावण महावीर ※ याहार भयेते सब देवता अस्थिर
ताहार सहित युद्ध नर कि वानर ※ आसिवेक पुनः प्राण लइया कि धर
एखन फिरया जाउक स्वस्थाने लक्ष्मन ※ आणु पाछु जाहा हबे, ब'लिब तखन
महामंत्री हनूमान अति तीक्ष्णमति ※ कहेन हितोपदेश सुग्रीवेरे प्रति
स्वयं विष्णु रघुनाथ कमललोचन ※ हेन वाक्य ब'ल केन ना बुझि कारन
याँहार प्रसादे तुमि पाइले राजत्व ※ ताँहाके एमत ब'ल, हयेछे कि मत्त
रात्रि दिन कर तुमि शृंगार विलास ※ ना देख रामेर दुःख नाहि जाओ पाश
कुपित लक्ष्मण वीर आइलेन द्वारे ※ अविलम्बे जाओ राजा, साध गिया ताँरे
याँर बाणे त्रिभुवने केह नाहि आँटे ※ ताँर आज्ञा ना मानिले पड़िबे संकटे
आमि तव मंत्री जेइ, शुन महाशय ※ हित उपदेश ब'लि हइया निर्भय

---

1 प्रयोजन ।

जेहि सर बालि वीर अवसाना * बिन तेहि सरन, न तव कल्याना
राम दुर्दसा होय विदारन * कातर शोक, न धीरज धारन
रत रनिवास रूपसी संगा * लाज न मत्त राज सुख रंगा
भय - लंकेस तजहु रघुनाथा * बचैं प्रान किमि लछिमन हाथा
इतै लखन, तरि सिन्धु दसानन *अबहिं लखन-सर किमि निस्तारन
सर-सौमित्र चलै छन माहीं * कपिगन प्रान निवारन नाहीं

दो० धारि वचन मम, प्रभु चरन, गहे नृपति कल्यान ।
पावक साखी लीन, द्रुति, पुरहु काज भगवान ।। ३६ ।।

पालत सत्य सत्य - अनुयाई[1] * सत हित वन आये रघुराई
जिन रघुनाथ सत्य प्रतिपाला * हनेउ बालि सोइ राम भुवाला
राज प्रजा सुख जिनके काजा[2] * जिन बल छत्र-दण्ड सुखसाजा
सहस चतुर्दस दनुज सँहारे * तिन सायक तुम सहज बिसारे
लहु गति, भजि रामहिं तजि भोगू * बिन रघुनाथ न सद्गति जोगू
नृप सुनि पवनतनय - खरबानी[3] * कहेउ वचन तिनि मधुरस-सानी
आनहु लखन दीन आदेसू * नगर कीन सौमित्र प्रवेसू
दिव्यपुरी सुरपुरी समाना * लखि कपि-साज लाज[4] सुर माना

बालि हेन महावीर पड़े जाँर बाणे * ताँहार शरण लओ बाँचिबे पराणे
रामेर दुर्दशा शुनि बुक हय चिर * शोकेते कातर गति, नहेन सुस्थिर
परम सुन्दरी लैया घरे कर क्रीड़ा * राजभोगे मत्त थाक नाहि हय व्रीणा
रावणेर भये यदि रामेरे छाड़िबे * लक्ष्मनेर हाते तुमि केमन बाँचिबे
रावण सागर पारे, द्वारेते लक्ष्मन * लक्ष्मणेर बाणाग्निते मरिबे एखन
लक्ष्मणेर बाणे कारो नाहिक निस्तार * बधिते वानरगणे कि भय ताँहार
आमार बचन राख हबे तव हित * रामेर शरण लह नहे विपरीत
सत्य करियाछे तुमि अग्नि साक्षी करि * श्रीरामेर कार्य्य कर, चल त्वरा करि
सत्यवादी लोके करे सत्येर पालन * सत्येर कारणे राम आइलेन वन
जेइ राम आइलेन सत्य पालिवारे * तेंइ से रामेर वाणे बालि राजा मरे
तेंइ से पाइले तुमि छत्र नवदण्ड * तेंइ प्रजागन लैया कर राज्यखण्ड
चतुर्द्दश सहस्र राक्षस पड़े रणे * याँर बाणे ताँरे कि सामान्य बुझ मने
भोग छाड़, राम भज, पाइबे निष्कृति * रघुनाथ विना राजा आर नाहि गति
हनूमान निरपेक्ष सुग्रीवे सम्भाषे * मधुर बचने राजा हनूमाने तोषे
लक्ष्मणेते आनाइते करेन आदेश * लक्ष्मण भितर-गड़े करेन प्रवेश
इन्द्रपुरी समान देखेन दिव्य पुरी * देखिया वानर-सज्जा लज्जा पाय सुरी

१ सत्य पर चलने वाले २ कारण, बदौलत ३ खरी बात ४ देवता लजाते थे ।

मञ्जु अटारिन कान्ति विशेखा * लखन प्रविसि अन्त:पुर देखा
कपि निवास लछमन पग धारा * त्रसित निरखि कपि क्रोध अपारा
लखि सुग्रीव कीन सत्कारा * उमा[1] बाम दहिने उठि तारा
अस्तुति - लखन जोरि कर कीना * पाद्य अर्घ्य आसन पुनि दीना
कुपित लखन आसन जनि लयऊ * रक्त - नयन कपिपति सन कहेऊ
अगिनि सपथ[2] लै निजहित साधा * करि चातुरी मित्र हित बाधा
निसिदिन क्लेस सहत दोउ भाई * मत्त सदा सुधि तुमहि न आई
केहि बल किष्किन्धा तुम पावा ? * केहि बल तारहिं रानि बनावा ?

दो० केहि बल बिछुरी नारि पुनि, उमा कीन अधिकार।
केहि प्रसाद कपिनाथ तुम, पायेउ सासन-भार ? ।। ३७ ।।

राम सरल, निर्दय कपिराजू * विमुख सत्य, साधेउ निज काजू
जग दुर्लभ जस तोर मिताई * तुम सम सुहृद न जग कोउ पाई
तुमहिं निपाति अंगदहिं राजू * तबहिं बनै सीता कर काजू
धर्महीन कपि सत्य न राखा * यहि सर-धनु पुरवहुँ अभिलाषा
किष्किन्धा करि खण्ड-विखण्डा * कतहुँ न त्रान निरखु कोदण्डा[3]
छत्र दण्ड दै बालिकुमारा * मम सर होय सबन निस्तारा

चतुर्दिके अट्टालिका शोभित प्रचुर * चलिलेन लक्ष्मन देखिया अन्त:पुर
गेलेन लक्ष्मन वीर भीतर आवासे * लक्ष्मनेर कोपे देखि वानर तरासे
देखिया सुग्रीव राजा उठिल सम्भ्रमे * डाइने उठिल तारा उमा उठि बामे
जोड़ हाते लक्ष्मणेरे करिल स्तवन * पाद्य अर्घ्य दिल राजा बसित आसन
कुपित लक्ष्मण वीर ना लय आसन * सुग्रीवेरे कहिलेन आरक्त नयन
तुमि जे करिले सत्य अग्नि साक्षी करि * उद्धारिते निज कार्य्य करिले चातुरी
रात्रि दिन क्लेश पाइ दुइ भाइ वने * वारेक ना कर तत्त्व, मत्त रात्रि दिने
पाइले काहार गुणे किष्किन्ध्या नगरी * पाइले काहार गुणे तारा कृषोदरी
पाइले काहार गुणे उमा निज नारी * काहार प्रसादे तुमि राज्य अधिकारी
सरल हृदय राम, तुमि हे निष्ठुर * साधिले आपन कार्य्य सत्य करि दूर
तोमार मित्रता येन त्रिभुवने थाके * आर येन हेन कर्म्म नाहि करे लोके
तोरे मारि अंगदेरे दिबे राज्यभार * अंगद हइते हबे सीतार उद्धार
अधर्म्मि वानर रे लंघिलि सत्य पथ * देख धनुर्ब्बाण, करि पूर्ण मनोरथ
एक बाणे मारि तोरे राखे कोन् जने * खण्ड-खण्ड किष्किन्ध्या करिब आजि रने
बाणे काटि सबारे करिब खण्ड-खण्ड * अंगदेर उपरे धराब छत्रदण्ड

१ उमा—सुग्रीव की स्त्री २ सौगन्ध, कसम ३ धनुष।

सुनेउ बालि-बध धनु टंकारा * सोइ सर चाप करौं संहारा
बालि समय बीती[1] जन एका * तव कारन कपि मरहिं अनेका
जेहि पथ गयेउ बालि कपिराई * तेहि चलि मिलौ बन्धु उर लाई
धर्महीन-बध कतहुँ न पापा * लखु शठ! इत मम चाप प्रतापा
मम सर बज्र करै तव नासू * संग बालि सुग्रीव निवासू
दुष्ट दुराचारी कपि जेते * लहैं यमपुरी यहि छन तेते
धरा न कोउ कहुँ अस नर-नारी * दै भरोस पुनि पाँव पछारी
जन्म-जन्म तव पुण्य कपीसा * तोहिं भरि अंक लीन जगदीसा
स्वयं विष्णु रघुपति के चरना * दयानाथ तोहिं दीन्हेउ सरना
तुम नृप, बालि-मरन, सत हेतू * दया असीम राम गुणकेतू

दो० लखन कोप लखि बढ़त अति, उर कपीस भयभीत ।
विकल वेगि पद लीन गहि, तारा कहेउ विनीत ॥ ३८ ॥

अग्रज-मित्र[2] उचित कछु माना[3] * जेठ समुझि समुचित सन्माना
राम सुकण्ठ सखा जग जाना * उचित न इमि तिन कर अपमाना
क्षमहु राजसुत! होहु सधीरा * राम-काज तत्पर कपि वीरा
दूर देश गिरि सागर पारा * वानर जहँ निवसत संसारा

बालिबधे शुनियाछ धनुक टंकार * सेइ धनु सेइ बाणे करिब संहार
बालिराजा केवल मारिल एक जन * तोर दोषे मरिबेक यत कपिगन
देखियाछ बालिराज गेल जेइ बाटे * सेइ बाटे थाक गिया भायेर निकटे
मारिब अधर्म्मि तोरे, नाहि ताहे पाप * हेर बाण एड़ि एइ, देखह प्रताप
प्राण लब आजि तोर बज्र सम बाने * एकत्र हइया जाक भाइ दुइ जने
आरे दुष्ट वानर पापिष्ट दुराचार * एखनि पाठाइ तोरे देख यमद्वार
पृथिवीते हेन कार्य्य के कोथाय करे * आगे दिय भर'सा पश्चाते थाके दूरे
राम मित ब'लिया दिलेन कोल तोरे * कत पुण्य करे छिलि जन्म-जन्मान्तरे
स्वयं विष्णु रघुनाथ करिलेन दया * तेंइ तोरे श्रीराम दिलेन पद-छाया
गुणेर सागर राम, दयार नाइ सन्धि * बालि मारि राज्य दिल सत्य हये बन्दी
लक्ष्मणेर महाक्रोध बाड़िते लागिल * त्रासेते सुग्रीव राजा चिन्तित हइल
त्वरा करि कातरा उठिया तारा रानी * लक्ष्मणेर पाये धरि ब'लिया मृदुवाणी
ज्येष्ठेर हइले मित्त हय से गर्व्वित * ज्येष्ठेर समान तार मानिते उचित
सुग्रीव रामेर मित्त जगते विदित * एत तिरस्कार प्रभु, ना हय उचित
क्षमा कर राजपुत्र हओ तुमि स्थिर * राम-कार्य्य करिवेक सकल कपि वीर
दूर देशे पर्व्वतेते समुद्रेर पारे * जेखाने वानर यत आछे ए संसारे

---

१ बीत गई २ बडे भाई राम का मित्र ३ आदर।

धावहिं सकल पाय सम्बादू ※ शमन लखन प्रभु! तजिय प्रमादू
तबहुँ न थिर जनि क्रोध विहीना ※ केहु विधि स्वर्ण पलँग आसीना
रानि विनय सुस्थिर सौमित्रा[1] ※ कृत्तिवास किय गान पवित्रा

सुग्रीव-लक्ष्मण कथोपकथन

कण्ठ सुकण्ठहिं सुरभित हारा ※ तजि कपीस सो भूतल डारा
सिंहासन तत्क्षण तजि धावा ※ बहुकर जोरि लखन-गुन गावा
छिना-राजु लहि राम-प्रसादा ※ दिन-दिन सम्पति बढ़ति अगाधा
स्वयं बिष्ण रघुपति अवतारू ※ शोध[2] न सम्भव तिन उपकारू
सिय-उद्धार शक्ति-रघुनाथा ※ केवल मैं निमित्त तिन साथा
तजि प्रभु-काजु, रहेउँ यहि भाँती ※ क्षमहु सदोष जानि कपि जाती
मैं पशु अधम करहुँ बहु दोषू ※ राम-दास प्रिय-प्रति जनि रोषू
बोले लखन सुनहु कपिराई ※ राम-काज करि सुकृति[3] कमाई
चहुँ जय, किये राम हित कर्मा ※ धर्म लोप नतु बढ़इ अधर्मा
दो० सतवादी ह्वै सत्य धरु, सत्य बँधे दोउ मीत।
राम निबाहेउ सत्य निज, तुम कस करत अनीत ॥ ३९ ॥

सम्बाद करिया शीघ्र आनिबे सबारे ※ सम्वर सम्बर क्रोध लक्ष्मण आमारे
तथापि श्रीलक्ष्मणेर कोप नाहि टुटे ※ बसाइल यत्न करि तारा स्वर्णखाटे
तारार विनय वाक्य सुस्थिर लक्ष्मण ※ कृत्तिवास विरचित गीत रामायण

सुग्रीवेर सहित लक्ष्मणेर कथोपकथन

सुगन्धि पुष्पेर माला सुग्रीवेर गले ※ सेइ माला सुग्रीव फेलिल भूमि तले
सिंहासन छाड़िया उठिल तत छण ※ जोड़ हाते लक्ष्मणेर करिछे स्तवन
हाराइया राज्य पाइ रामेर प्रसादे ※ तोमार प्रसादे बाड़िलाम सम्पदे
हेन रघुनाथ स्वयं विष्णु अवतार ※ कार शक्ति साधिवेक श्रीरामेर धार
सीता उद्धारिबे राम आपन शक्तिते ※ जाइबे केवल आमि ताँहार सहिते
ना करिया राम कार्य्य बसे आछि घरे ※ वानर जातिर दोष लागे क्षमिवारे
पशुजाति कपि आमि, कत करि दोष ※ सेवक-वत्सल राम नाहि करे रोष
लक्ष्मण ब'लेन, शुन सुग्रीव राजन ※ रामकार्य्य करि कर पुण्य उपार्ज्जन
राम-कार्य्य करिले सर्वत्र हय जय ※ ना करिले धर्म्म-लोप,अधर्म्म-सञ्चय
सत्यवादी हैले करे सत्येर पालन ※ मने कर करियाछ सत्य दुइ जन
श्रीराम आपनि सत्ये हइयाछेन पार ※ तुमि सत्ये बद्ध आछ, अधर्म्म अपार

१ लक्ष्मण २ बदला, उद्धार ३ पुण्य।

राम-विषन्न[1] निरखि, कटुबानी ※ कहेउँ तुमहिं बहु अपयश-खानी
क्षमहु कपीस करहु परिहारा[2] ※ कुवचन तुमहिं न शिष्टाचारा
सम्मानित - सन धर्म - अलापू ※ उचित न तिन सन मन्द प्रलापू
समुचित कर्म करहु धरि धर्मा ※ राम-काज करि फलहिं सुकर्मा
लखन दीन बहु हित - उपदेसू ※ कृत्तिवास कृत गान बिसेसू

सुग्रीव द्वारा कटक सञ्चय

कह सुग्रीव बेगि हनुमाना ※ आनहु कटक जितै कपि नाना
हिम, सुमेरु, मन्दर, विन्ध्याचल ※ रैवत, उदयाचल, अस्ताचल
करहु घोष चहुँ मम आदेसू ※ जुरैं बेगि कपि जो जेहि देसू
देस - बिदेस दूत चहुँ धावैं ※ दस दिन मध्य सकल जुरि आवैं
जो तजि अवधि[3] विलंब लगावैं ※ मारत तिनहिं केस धरि लावैं
अन्य उपाय जदा अनुसरहीं ※ बाँधि जँजीरन प्रस्तुत करहीं
मम अधीन छिति स्वर्ग पताला ※ समिटहिं अखिल कीस यहि काला
कोप कपीस प्रकम्पित वानर ※ आनन[4] कपिन चले बल-आगर
अनुशासन लहि मारुति[5] टेरे ※ तीस कोटि वानर चहुँ प्रेरे

रामेर कातर देखि ब'लेछि कर्कश ※ तोमार विरूप ब'ला आमार अयश
क्षमा कर कपीश्वर, करि परिहार ※ तोमाके दुर्व्वाक्य ब'ला नहे शिष्टाचार
मान्य लोके मन्द कथा नहे उपयुक्त ※ मान्य सह आलाप करिबे धर्म्मयुक्त
धर्म्म राख, कर्म्म कर, ये हय विहित ※ राम कार्य्य करिले हइबे सब हित
हित उपदेश बहु बुझान लक्ष्मण ※ किष्किन्ध्या काण्डेते गीत कृत्तिवास गान

सुग्रीवेर कटक-सञ्चय

बेलिल सुग्रीव राजा करिया आह्वान ※ वानर-कटक झाट आन हनूमान
हिमालय सुमेरु मन्दर आदि करि ※ विन्ध्याचल रैवत उदय अस्त गिरि
सर्व्वत्र घोषणा देह आमार आज्ञाय ※ यथा जे वानर थाके आइसे त्वराय
पाठाओ हे दूतगणे देश देशान्तरे ※ दश दिन मध्ये येन आइसे सत्वरे
इहाते बिलम्ब जेइ करिबे वानरे ※ प्रहारिया आनिबे ताहार चूले धरे
अन्यमत करिबे इहाते जेइ जन ※ आनिबे ताहारे करि निगड़े बन्धन
स्वर्ग मर्त्य पाताले आमार अधिकार ※ कोथाओ ना थाके हेन वानर सञ्चार
सुग्रीवेर कोपेते वानर सब काँपे ※ कटक आनिते चले अतुल प्रतापे
हनु जान बाहिरे हइया उपस्थित ※ त्रिश कोटि वानर पाठाय चारि भित

१ दुखी २ भूल जाओ ३ मियाद ४ लाने के लिए ५ हनुमान।

कीस-कटक छाये छिति-गगना * टीड़ी-दल सम जासु न गणना
पच्छिम नल पूरुब भट नीला * पुनि सम्पाति दखिन बलशीला

दो० महावीर[1] विक्रम अतुल, उत्तर दिसि पग दीन ।
सुभट चारि दिसि संग कपि, लक्ष-लक्ष लौं लीन ।। ४० ।।

खौखियाहिं गर्जहिं डग भरहीं * उछलहिं फाँदि उधुम बहु करहीं
डगमग कूर्म, शेष शिर हाला * चहुँ प्रकम्प भुइँडोल पताला
पुनि निनाद[2] किय बालिकुमारा * कपिगन गमन हुकुम अनुसारा
दसदिसि मध्य समिटि सब आवैं * करि बिलंब निज प्रान गवावैं
प्रानन मोह साध मन माहीं * आनहिं कपिन बेगि मम पाहीं
कपिगन अंगद सकल पठाये * राजपुरी हित निजहिं बचाये
कीस कोटि दस चहुँ दिसि छाये * सील[3] न, पकरि जहाँ जेहि पाये
लख-लख कीस दिवस दस माहीं * धरा गगन चहुँ ओर लखाहीं
किष्किन्धा कोलाहल नाना * नृप फल फूल नजर सन्माना
कटक देखि कपिपति उर आना * कार्य-सिद्धि लच्छन अनुमाना
अखिल सैन-कपि नगर पधारी * अगणित कटक अतिव भयकारी
किष्किन्धा कपि-कटक विरामा * चले सुकण्ठ जहाँ प्रिय रामा

मेदिनी आकाश जुड़ि चले कपिसेना * जेन पंगपाल जाय, ना हय गणना
चलिल वानर गण देश देशान्तरे * पूर्व्वदिके चलि गेल नील नाम धरे
पश्चिमे चलिया गेल नल महामति * दक्षिण दिकेते गेल आपनि सम्पाति
हनूमान महावीर महा पराक्रम * उत्तर दिकेते जान करिया विक्रम
एकैक जनार संगे चले दश लाख * महा शब्दे चले सबे करे हाँक डाक
हुप हाप लम्फे झम्पे कम्पे वसुमती * अति कष्टे धरे धरा कूर्म्म नागपति
तर्ज्जिया गर्ज्जिया ब'ले बालिरकुमार * यात्रा कर कपिगन आज्ञा अनुसार
दश दिवसेर मध्ये आनिबे सकले * प्राणदण्ड करिब हे विलम्ब हइले
बाँचिबे बलिया यदि साध थाके मने * त्वरा धरि आनिबे सकल कपिगणे
पाठाइल सकलेरे बालिर नन्दन * एकेला रहिल राजबाटीर रक्षण
हइल से दशकोटि कपि आगुसार * यारे पाय तारे आने नाहिक विचार
जुड़िया आकाश तुमि कपि झाँके झाँके * दशदिने आइसे सकल लाखे लाखे
किष्किन्ध्यार मध्येते लागिल कोलाहल * सुग्रीवेर भेट आनि दिल फुल फल
सैन्य देखि सुग्रीव भावेन मने मने * कार्य्यसिद्धि हइवेक, बुझि अनुमाने
आइल कटक सब किष्किन्ध्या भितर * असंख्य वानर सेना अति भयंकर
किष्किन्ध्याय प्रवेश करिल कपिगणे * चलिल सुग्रीव राजा मित्र सम्भाषणे

---

१ हनुमान २ गर्जन ३ मरौवत ।

कहैं सैन सों इमि कपिकेतू * चलहिं सुहृद जहँ मम रघुकेतू
राम-दरस उपजी मोंहि प्रीती * कहेउ लखन प्रति वचन विनीती
राम विष्णु तिन तुम सहचारी * चतुर्दोल प्रभु ! करहु सवारी
चतुर्दोल करि तुमहिं असीना * बेगि सुहृद-दरसन मन कीना

दो० लखनलाल तव चरन गहि, बिनवहुँ साध[1] ललाम।
सदा रहै मन प्रीति, उर, बसैं लखन - श्रीराम ॥ ४१ ॥

दुइ जन चढ़ि चन्दोल सुहाये * चौदिसि दासन चवँर डुलाये
पञ्च प्रकार बाजने बाजे * शंखनाद चहुँ घन रव[2] गाजे
अति रव सुनि रघुबीर विचारे * मनहुँ मित्र सुग्रीव पधारे
जस-जस राम-निकट नियराने * मित्र-दरस उर प्रभु हरषाने
तजि चन्दोल धरनि कपिनाथा * माल्यवान गिरि जहँ रघुनाथा
बन्देउ राम - चरन अनुरागी * कीन दण्डवत कपि बड़भागी
आसन दिव्य समादर दीन्हा * कुशल प्रश्न तिन रघुपति लीन्हा
कह सुग्रीव कुशल सब भाँती * नाथ-कृपा सब विपति निपाती
बालि निवारि दीन मोंहि राजू * मम सिर सत्य-भार प्रभु आजू
प्रभु-प्रसाद आसन अधिकारा * दण्ड-छत्र चहुँ कपिगन धारा

सुग्रीव आपन ठाटे वलिल वचन * मित्र सम्भाषणे आजि करिब गमन
सुग्रीव करिते जाय श्रीराम दर्शन * लक्ष्मणेर प्रति ब'ले विनय वचन
विष्णु अवतार तुमि, रामेर सादेर * आपनि चड़ह प्रभु, चतुर्द्दोलोपर
तबे चतुर्द्दोले आमि चारि बारे पारि * मित्र दरशने चल जाह त्वरा करि
तोमार चरणे मोर एइ निवेदन * श्रीराम-लक्ष्मणे जेन सदा थाके मन
चतुर्द्दोलि तखन चड़ेन दुइजन * चारिभिते चामर ढुलाय दासगण
पञ्च शब्द बाद्य बाजे करे शंखध्वनि * कोलाहल करे सबे महाशब्द गणि
कलरव शुनिया चिन्तेन रघुमणि * आमा सम्भाषिते आसे सुग्रीव आपनि
निकट हइल आसि सुग्रीव राजन * मने मने भावे वीर मित्र दरशन
चतुर्द्दोल हैते नामे राम विद्यमान * चलि जान सुग्रीव पर्व्वत माल्यवान
रामेर चरण बन्दे करिया प्रणति * जोड़ हाते दाण्डाइल सुग्रीव भूपति
आदरे श्रीराम तारे करि सम्भाषण * निकटे बसिते दिव्य दिलेन आसन
करिलेन मंगल जिज्ञासा रघुवर * सुग्रीव विनये तार करिछे उत्तर
हरियाछ राम, मम विपद सकल * तोमार प्रसादे मिता सकल मंगल
बालिके मारिया मोरे दिले राज्यभार * सत्ये बद्ध हइयाछि छारि तव धार
तोमार प्रसादे पाइलाम राज्यखण्ड * सकल वानरगण धरे छत्र दण्ड

१ अभिलाष २ शब्द।

तुम समर्थ काटहु सिय-बन्धन ※ मैं निमित्त अनुचर, रघुनन्दन !
भूमण्डल जेते कपि यूथा ※ बसत शृंगगिरि कीस-वरूथा
आयसु पाय सकल ते आये ※ कोटि, वृन्द, अर्बुद चहुँ छाये
सेन दुर्दमन कीस अपारा ※ जो मन धरहिं न रोकनहारा
तीन कोटि योजन त्रयलोका ※ प्रविसि लखैं दुर्जय कपिलोका
सिर्जेउ बिधि छिति स्वर्ग पताला ※ खोजहि सिय कपि कटक विशाला

दो० सीतापति के चरन महँ, जाकी भक्ति अपार ।
तेहि समीप का बापुरो ! काज सिया - उद्धार ।। ४२ ।।

प्रभु-कर स्वयं सिया निस्तारा ※ कहा कहौं, मैं दास तिहारा
भजति इन्द्र, सुर; सृष्टि सवाँरी ※ तव संकेत भानु नभचारी
तुम सोवत, जग सोवत सारा ※ तव चेतन सचेत संसारा
जन्म-जन्म तप बिधि मन लावा ※ तबहुँ न नाथ-दरस तिन पावा
सोइ पद-पद्म नयन निज देखी ※ धन्य-धन्य मम जन्म विशेषी
वानर जाति कहाँ अति हीना ※ प्रभु करि दया मित्रपद दीना
सिया शोधि लावहिं प्रभु पाहीं ※ तबलौं असन[1] शयन रुचि नाहीं
किष्किधा न राज, रघुनाथा ※ प्रभु प्रसन्न, उर लिय कपिनाथा

सीता उद्धारिबे तुमि आपनार गुणे ※ उपलक्ष केवल थाकिब तव सने
यतेक वानर थाके पृथिवी उपरे ※ यतेक बसति करे पर्वत शिखरे
से सकल आसियाछे आमार सम्बादे ※ कोटि-कोटि बृन्द-बृन्द अर्ब्बुद अर्ब्बुद
दुरन्त वानर सैन ना हय गनन ※ इहारा यामने करे, के करे लंघन
तिन कोटि योजनेर पथ त्रिभुवन ※ प्रवेशिब सर्व्वत्रे दुर्ज्जय कपिगन
स्वर्ग मर्त्य पाताल सृजन विधातार ※ जेखाने थाकुक सीता, करिब उद्धार
तोमार चरणे भक्ति थाकिले आमार ※ कोन कार्य्य गनि आमि सीतार उद्धार
आमि कि बलिब प्रभु तोमार चरणे ※ उद्धारिबे तुमि सीता आपनार गुणे
इन्द्र आदि देवगण तोमार धेयाय ※ गगने उदय रवि तोमार आज्ञाय
तोमार सृजने सृष्टि ए तिन भुवन ※ तोमार निद्राय निद्रा, चेतने चेतन
कत शत जन्म ब्रह्मा तपस्या करिल ※ तबु तव पाद पद्म देखा न पाइल
हेन पाद पद्म देखि प्रत्यक्ष नयने ※ आपनारे धन्य करि मानि एत दिने
अमित वानर जाति कि ब'लिते पारि ※ मित्र ब'ले आमारे से दया आपनारि
यावत् ना हय प्रभु सीता उद्धारन ※ तावत् आमार नाहि शयन भोजन
सीतारे आनिया दिले तोमार गोचरे ※ तबेत करिब राज्य किष्किन्ध्यानगरे
सन्तुष्ट हइल राम कमललोचन ※ सुग्रीवेरे उठिया दिलेन आलिंगन

[1] भोजन ।

अकथ भाग्य सुग्रीव सुहावा ※ वन-वानर प्रभु हृदय लगावा
अतुल पुण्यभागी कपिराया ※ जिन प्रति दयासिंधु किय दाया
पुनि रघुवीर-बैन सुखकारी ※ तुम समान मम को हितकारी
अचरज, हरत न रवि अँधियारा ※ अचरज मोंहि न सिय-उद्धारा
जनि अपूर्व, घन बरसहिं वारी[१] ※ तुम अपूर्व मोंहि मित्र! सुखारी
गिरि दोउ सुहृद करहिं सम्भासा[२] ※ कपि छाये चहुँ धरनि-अकासा
स-सहसकोटि शतावलि आये ※ सविता[३] गगन धुंधि[४] महँ छाये

दो० गन्धमादनाधिप शरभ, पुनि गवाक्ष तहँ आय ।
वानर कोटि पचास लै, रहे गगन-छिति छाय ॥ ४३ ॥

कज्जल धूम्र सरिस धूम्राक्षा ※ तीस कोटि कपि सह नीलाक्षा
सहस कोटि वानर लै साथी ※ घिरी धरनि चहुँ सैन-प्रमाथी
पथ दस प्रहर सैन विस्तारा ※ सत्तर योजन अंग प्रसारा
बसति हिंगु गिरि हिंगुल रंगा ※ मरकट[५] कोटि पचास विहंगा
मलयाचल केसरी निवासू ※ सत्तर कोटि संग कपि जासू
पूर्व्व सैनपति सुभट विनोदा ※ सहस कोटि लै चलति समोदा
आयेउ धूम्र सुकण्ठहिं शाला[६] ※ कटक गगन लौं जिमि घनमाला

सुग्रीवेर भाग्य कथा के कहिते पारे ※ श्रीराम दिलेन कोले बनेर बानरे
सब हैते सुग्रीवेर अधिक कपाल ※ यार प्रति सदा राम परम दयाल
श्रीराम ब'लेन शुन सुग्रीव सुहृद ※ तुमि विना आमार के करिबेक हित
अपूर्व्व ना गणि सूर्य्य हरे अन्धकार ※ अपूर्व्व ना मानि आनि सीतार उद्धार
अपूर्व्व ना गणि मेघ बरिषये जल ※ तोमारे अपूर्व्व मित्र, जानि हे केवल
दुइ मित्र पर्व्वते करेन सम्भाषण ※ आकाश मेदिनी जुड़ि आसे कपिगण
सहस्र कोटिं वानरे एलो शतावलि ※ यार सैन्य चलिले गगने लागे धूलि
गवाक्ष शरभ गय से गन्धमादन ※ वानर पञ्चाश कोटि संगे आगमन
अंजनिया बड़ धूम्र आइल धूम्राक्ष ※ त्रिश कोट कपि लैया आसे से नीलाक्ष
वानर सहस्रकोटि सहित प्रमाथी ※ आइल आपन सैन्य आच्छादिया क्षिति
प्रमाथी वानर बले क्षणे यदि नड़े ※ दश प्रहरेर पथ सैन्ये आड़े जोड़े
सत्तरि योजन वीर आड़े परिमान ※ सकले करये यार शरीर बाखान
हिंगुलिया पर्व्वते जे हिंगुलिया रंग ※ वानर पंचाश कोटि सहित विहंग
वानर सत्तरि कोटि लइया केशरी ※ जाहार बसति स्थान से मलयगिरि
पूर्व्व हैते आइल विनोद सेनापति ※ वानर सहस्र कोटि ताहार संहति
धूम्राक्ष आइल धूम्र सुग्रीवेर श्याला ※ गगन जुड़िया ठाट येन मेघमाला

गौर वर्ण छबि जिन, सम्पाती ※ भाजत लखि रिपु, अस तेहि ख्याती
वैद्य सुषेन श्वसुर नृप केरे ※ तीन करोर वृन्द कपि प्रेरे
जाम्बवान लै भल्लुक नाना ※ दुर्जय महा सुभट हनुमाना
पुनि युवराज सुबालिकुमारा ※ सहस कोटि जिन कोस अपारा
कपि शत लक्ष कोटि इक जाना ※ शतक कोटि कपि वृन्द समाना
शतक करोर वृन्द सम अर्बा ※ शतक कोटि अर्बुद पुनि खर्बा
महाखर्व, शत कोटिन खर्बा ※ तिन शत कोटि शंख कह सर्बा
शंखन महाशंख बुध गनहीं ※ पदम महाशंखहिं अनुसरहीं
महापद्म पुनि, सिन्धु बहोरी ※ तिन मिलि महासिन्धु सक जोरी

दो० महासिन्धु अक्षौहिणी, अक्षौहिणी अपार ।
क्रम सों सब शत कोटि सम, अगणित पार-अपार[1] ।।
एक मास बिस्तार पथ, गिरि नद नदी सुघेरि ।
सैन विशाल अनन्त प्रभु, रहे उल्लसित हेरि ।। ४४ ।।

सीताखोज-हित वानर-सेना का पूर्वदिशा-प्रस्थान

बोले राम, तात! चहुँ देसू ※ पठवहु सैन सीय उद्देसू[2]

सम्पाति वानर एल, गौरवर्ण धरे ※ देखिले विपक्ष जाय पलाइया डरे
आइल सुषेण वैद्य राजार श्वशुर ※ तिन कोटि बृन्द ठाट आइल प्रचुर
भल्लगण सहित आइल जाम्बुवान ※ दुर्ज्जय आइल महावीर हनूमान
युवराज आइल से वालिर कुमार ※ वानर सहस्र कोटि जार परिवार
शत लक्ष वानरेते एक कोटि जानि ※ शत कोटि वानरेते एक वृन्द गनि
शत कोटि वृन्दे हय अर्ब्बुद गनन ※ शत कोटि अर्ब्बुदेते खर्ब्ब निरूपन
शत कोटि खर्ब्ब एक महाखर्ब्व गनि ※ शत कोटि महाखर्ब्बे एक शंख जानि
शत कोटि शंख महाशंखेर गनन ※ शत कोटि महाशंख पद्म निरूपन
शत कोटि पद्मे एक महापद्म गनि ※ शत कोटि महापद्मे सागर बाखानि
शत कोटि सागरे महासागर जानि ※ शत कोटि महासागरे एक अक्षौहिनी
शत कोटि अक्षौहिणीते एक अपार ※ अपारेर अधिक गणना नाहि आर
नद नदी व्यापी ठाट भांगिल पर्व्वत ※ सर्व्व ठाट जुड़ि गेल मासेकेर पथ
पृथिवी जुड़िल सैन्य नाहि दिक् पाश ※ कटकेर चाप देखि रामेर उल्लास

सीतान्वेषणार्थ सुग्रीव कर्त्तृक पूर्व्वदिके वानर सैन्य प्रेरण

श्रीराम ब'लेन मिता, सैन्य नाना देशे ※ पाठाइया देह शीघ्र सीतार उद्देशे

1 'अपार' के आगे संख्या गिनी नहीं जा सकती। 2 खोज में।

जेहि छन होय सिया-उद्धारा ※ तबहिं भार-मम तव निस्तारा
कपिपति राम - अनुज्ञा पाई ※ नाना दिसि चहुँ सैन पठाई
अर्ब खर्ब कपि सीमा नाहीं ※ केहु बिधि गिरि ऊपर न समाहीं
नृप, सेनिप[1] विनोद दिय भारा ※ पूरुब दिसि कर्तव्य तुम्हारा
सहस कोटि बानरन लैवाई ※ सीता खोज करहु तुम जाई
जे नद नदी मिलहिं यत देसू ※ खोजहु करि सर्वत्र प्रवेसू
पावन धाम पुण्य थल जेते ※ सहित कटक चलि हेरहु तेते
स्वर्गहिं जाय भगीरथ आनी ※ उतरहु पार गंग महरानी
तरि सरयू तप - पुण्य बिसेषी ※ कौशिक-भगिनि कौशिकी देखी
सुरभी[2] चरहिं गोमती तीरा ※ सो तरि दरस सरस्वति-नीरा
मलय कोकनद कश्यप देसू ※ मगध जनकपुर करहु प्रवेसू
ब्रह्मपुत्र मन्द्राचल जाई ※ कर्नाटक शकद्वीप सुहाई
भूमि किरात कुतूहल ख्याती ※ अद्भुत निवसहिं नाना जाती
उठे लम्ब दुइ कर्ण विरूपा ※ कनक चम्प सम वर्ण[3] अनूपा
ताम्र केश मुख गोल लखाहीं ※ चलि पद एक, थाह बल नाहीं

तुमि यदि जानकीर करह उद्धार ※ तबे त आमार ठाँइ सत्ये हओ पार
श्रीरामेर ठाँइ राजा ल'ये अनुमति ※ नाना दिके पाठाइल सैन्य सेनापति
अर्ब्बुद खर्ब्बुद कपि, सीमा नाहि पाइ ※ पर्व्वते उपरे बसिते नाहि ठाँइ
सुग्रीव विनोद सेनापति प्रति भने ※ पूर्व्व दिके जाओ तुमि सीता अन्वेषने
वानर सहस्र कोटि तोमार भिड़न ※ सीता अन्वेषणे तुमि करह गमन
नद नदी मिलिबे मिलिबे यत देश ※ सेइ सेइ स्थाने गिया करिबे प्रवेश
यत यत पुण्य देश देख पुण्य स्थान ※ सकल वानर लैया करिबे पयान
स्वर्ग हैते गंगाके आनिल भगीरथे ※ गंगादेवी पार हवे कटक सहिते
तरिह सरयू नदी पुण्य तरंगिनी ※ कौशिकी तरिह विश्वामित्रेर भगिनी
दुइ कूले गरू चरे मध्येते गोमती ※ गोमती हइया पार पावे सरस्वती
अपूर्व्व मलय देश, देश कोकनद ※ कश्यपेर देश जाओ जनक मगध
ब्रह्मपुत्र तार संगे करिह प्रवेश ※ मन्दर पर्व्वते जेउ किरातेर देश
जाइबे कर्णाट देश आर शाक द्वीपे ※ किरात जातिरा आछे कि अद्भुते रूपे
कनक चाँपार मत शरीरेर वर्ण ※ उठान खानार मत धरे दुइ कर्ण
थाला हेन मुखखाना ताम्रवर्ण केश ※ एक पदे चले पथ, ब'लेते विशेष

---

१ सेनापति २ गायें ३ रंग ।

दो० बसति नीर, मुख मीन सम, मिलत मनुज धरि खाहिं ।
कहत व्याघ्र-नर, ताप पुनि सहन किरातन नाहिं ॥ ४५ ॥

जदि सिय कतहुँ किरातन-डेरा ❋ हेरेउ शोध लंकपति केरा
पार किरात ऋषभ गिरि परहीं ❋ सुरगन आय केलि नित करहीं
सदा पधारत तहँ सुरनाथा ❋ तहँ सिय सहित लखेउ दशमाथा
क्षीर सिन्धु पूरुब चलि मिलही ❋ पुनि तेहि पार श्वेत गिरि अहही
श्वेत नाग[1] तहँ सहस फनीसा ❋ धारे सहस फनीस गिरीसा[2]
फन सहस्र मणि सहस अनूपा ❋ मणि अलोक निसि दिवस सरूपा
क्षीर सिन्धु सों धवलित भूतल ❋ श्वेत श्वेतगिरि किय नभमण्डल
मणिधर श्वेत सहस फनधारी ❋ पूरुब धन्य तीनि उजियारी
दरस अनन्त[3] करहिं सब लोगू ❋ बन्दि गिरीश सधै सब जोगू
पूरुब तासु उभयगिरि-शृंगा ❋ ताल विटप चहुँ सुबरन रंगा
मनि मानिक गुच्छन तर झूमी ❋ डार कनक छबि परसत[4] भूमी
शिखर-शिखर चहुँ हेरहु जाई ❋ कहाँ दनुजपति कहँ सियमाई
उभयाचल न मिलै उद्देसू[5] ❋ कालोदक गिरि करिय प्रवेसू
कज्जल सलिल कालसर तीरा ❋ कोटि सर्प-सर्पिन तेहि नीरा

जलेर भितरे वैसे मत्स्यवत् मुख ❋ मानुष धरिया खाय आइले सम्मुख
मनुष्य-व्याघ्र व'लिया ताहादेर ख्याति ❋ आतप सहिते नारे किरातेर जाति
सीता लये थाके यदि किरातेर घरे ❋ यत्न करि चाहिउ तथा लंकेश्वरे
ऋषभ पर्व्वते जावे किरातेर पार ❋ देवगण करे केलि नित्य अवतार
सर्व्वकाले आइसे तथाय पुरन्दरे ❋ यतने चाहिउ तथा सीता लंकेश्वरे
तारपूर्व्व दिके जावे क्षीरोद सागर ❋ श्वेतगिरि देखिवेसे क्षीरोद उपर
श्वेत नाग धरे तथा सहस्र शिखर ❋ सहस्र फणाय आछे देव महेश्वर
सहस्र फणाय आछे सहस्रेक मणि ❋ मणिर आलोक तुल्य दिवस रजनी
क्षीरोद सागर करे पृथिवी धवल ❋ शेत गिरि श्वेत करे गगनमण्डल
श्वेत नाग धरे शिरे सहस्रेक फना ❋ पूर्व्व दिके धन्य करे सेइ तिन जना
सकले बन्दिवे से अनन्त महाराज ❋ महेश्वर बन्दि गेले सिद्ध हबे काज
उभय पर्व्वते जावे तार पूर्व्व दिके ❋ स्वर्ण-तालवृक्ष तथा आछे चारियुगे
मणि माणिक्येते तार बाँधियाछे गुँड़ि ❋ कनक-रचित तार शोभित बागुड़ि
देखिओ वानरगण शिखरे शिखर ❋ अन्वेषण कर तथा सीता लंकेश्वर
यदि तथा उभयेर ना पाओ उद्देश ❋ कालोदक पर्व्वते करिओ प्रवेश
से पर्व्वते आछे सरोवरे काल जल ❋ तिन कोटि सर्पी सर्प थाके सेइ स्थल

---

१ श्वेत पर्वत २ महादेव ३ नाग देवता के ४ छूती थीं ५ पता ।

सकल विनास जदा फुफकरहीं * भयबस दूरि सुरासुर रहहीं
गुहा नदी नद पर्वत जाई * देखहु कितै दुष्ट दनुराई

दो० मिलै न तहँ, पुनि अनुसरहु, लोहित गिरि अवलोकि।
कौतुक! योजन तीनि नद, रहेउ विषम पथ रोकि ॥ ४६ ॥

तेहि पूरुब जहँ लोहित सागर * बसत दनुज दुर्जय बल-आगर
लोहित वर्ण अगम तहँ नीरा * सेमर बिटप पुरातन तीरा
सुबरन गाछ गात चहुँ सूला[1] * गुच्छन लदे कतक फल-फूला
जल सों दनुज विटप चढ़ि आवैं * सुर सभीत, कोउ निकट न आवैं
समाचार तहँ सीय न पाई * प्राची-सिन्धु[2] लखहु पुनि जाई
द्वादश योजन तासु उतारा * सावधान कपि उतरहिं पारा
कनक उदयगिरि छबि किमि वरनी * भानु उदय धवलित किय धरनी
योजन दुइ शत लक्ष चलाई * तहँ रवि-किरन निमिष महँ छाई
मुनिगन तप रत यथा विधाना * बालखिल्य[3] अंगुष्ठ प्रमाना
उदय न रवि उदयाचल पारा * निश्चय तासु परे[4] अँधियारा
तेहि न दीख, नहिं ज्ञान विशेषी * लौटहिं कपि उदयाचल देखी

सर्पी यदि हाइ छाड़े, सर्व्वलोक मरे * तार काछे देव-दैत्य नाहि जाय डरे
नद नदी गिरि गुहा खुजिओ विस्तर * सेखाने मिलिते पारे दुष्ट लंकेश्वर
तथा यदि नाहि पाओ ताहार उद्देश * लोहित पर्व्वते गिया करिह प्रवेश
से पर्व्वते आछे एक बड़ चमत्कार * त्रियोजन नदी, ताहे विषम पाथार
तार पूर्व्वदिके आछे लोहित सागर * दुरन्त राक्षस आछे जलेर भितर
अगाध सलिल तार रक्त वर्ण धरे * चारियुगे एक वृक्ष आछे तार तीरे
सोनार शिमूल गाछ, सर्व्व गाय काँटा * सुवर्णेर फल फुल धरे गोटा गोटा
जल हैते राक्षसेरा चड़े तदुपरे * तार काछे देवगण नाहि जाय डरे
तथा यदि, जानकीर ना पाओ उद्देश * पूर्व्व सागरेर तीरे करह प्रवेश
आड़े दीर्घ से सागर द्वादश योजन * सावधाने पार हबे सब कपिगन
उदयगिरिर सर्व्व अंग स्वर्णमय * पृथिवी उज्ज्वल करे सूर्य्येर उदय
तिन लक्ष दुइ शत योजनेर पथ * चक्षुर मिमिषे सूर्य्य करे गतायात
मुनिगण तप करे येमन विधान * बालखिल्य नामे मुनि विघत प्रमान
उदयगिरिर पूर्व्वे नाहि सूर्य्योदय * अन्धकारमय देश, जानिह निश्चय
से देश कखन नहे आमार गोचर * देखिय उदयगिरि फिरिबे वानर

१ काँटे २ पूर्वसागर ३ अँगूठे के बराबर आकार वाले बालखिल्य मुनि
४ उसके आगे।

एते देश अवधि इक मासा ❊ अधिक रुकहिं तिन होय बिनासा
मास मध्य लौटहिं नहिं देसू ❊ परिजन सहित मरहिं निज दोसू
आयसु सीस सैन-कपि धारी ❊ सिय हित पूरुब दिसा सिधारी
कृत्तिवास कविमयी सुरसना ❊ सैनगमन - पूरुब छबि - रचना
तिन ओझा मुरारि कर नाती ❊ गिरा गान - प्रभुगुन प्रनिपाती

सीता-खोज हित वानर सेना का दक्षिण दिशा को प्रस्थान

दो० दच्छिन दिसि रावन बसत, सुग्रीवहिं भल ज्ञान ।
महावीर बलवीर बहु तहाँ कीन सन्धान ।। ४७ ।।

अंगद जाम्बवान मतिमाना ❊ पवनतनय हनुमत बलवाना
रम्भा ऋषभ कुमुद बलशीला ❊ पाँच प्रमुख सेनप नल-नीला
रहेउ सचेत, कहेउ कपिकेतू ❊ दच्छिन गमन करहु सिय हेतू
मारग देस नदी नद जेते ❊ गिरि कन्दर छानहु सब तेते
उत्तम अधम सकल चलि हेरी ❊ हयगिरि[1] जाय लखहु कावेरी
जहँ गौतमी नर्मदा कृष्णा ❊ लै सिय शोध निवारहु तृष्णा
सहस शिखर गिरि विन्ध्य विलोकी ❊ दिव्य फूल फल सर अवलोकी
लखि कलिंग उत्कल अनुसारी ❊ मलयागिरि विधि भली निहारी

जाइते उदयगिरि लागे एक मास ❊ मासेकेर बाड़ा हइले सबार बिनाश
मासेकेर मध्ये ये वानर ना आइसे ❊ सवंशे मरिबे सेइ आपनार दोषे
वानर कटक सुग्रीवेर आज्ञा पाय ❊ सीतार उद्देशे तारा पूर्व्व दिके जाय
कृत्तिवास करिब कवित्त्वमय वाणी ❊ अद्‌भुत रचिल पूर्व्वदिकेर पाँचनी
कृत्तिवास पण्डित मुरारि ओझार नाति ❊ याँर कण्ठे विराज करेन सरस्वति

सीतान्वेषणे सुग्रीव कर्त्तृक दक्षिण दिके सैन्य-प्रेरण

दक्षिणे रावण बैसे, सुग्रीव ता जाने ❊ बड़-बड़ वीर पाँचे सेइ त दक्षिणे
बालिर कुमार पाँचे मंत्री जाम्बवान ❊ पवन नन्दन पाँचे वीर हनूमान
ऋषभ कुमुद पाँचे रम्भ योद्धापति ❊ नल नील पाँच जने मुख्य सेनापति
सुग्रीव ब'लेन सैन्य शुन सावधाने ❊ सीतार उद्देशे जाह तोमरा दक्षिने
यत नद-नदी देख यत देख देश ❊ यत यत गिरि आछे, करिबे प्रवेश
उत्तम अधम स्थाने करिह प्रवेश ❊ जेरूपे पाइते पार सीतार उद्देश
कृष्ण वेणी नदी जे नर्म्मदा गोदावरी ❊ जावे अश्वमुख गिरि नदी जे कावेरी
पाइया पर्व्वत विन्ध्य सहस्र शिखर ❊ नाना फल फुल तथा दिव्य सरोवर
परेते कलिंग देशे जाइबे उत्कल ❊ मलय पर्व्वत गिया देखिबे सकल

१ अश्वमुख पर्वत ।

शृंग महेन्द्र गिरीश विशाला * जहँ सुरनाथ रमत सब काला
दक्षिण तासु सिन्धु के तीरा * चन्दनबन सुख-गन्ध समीरा
चन्दन सुरभि पाँति बहुतेरी * सिन्धु पार छबि लंका केरी
उदधि-मध्य मैनाक सुहाये * जल सों सहस शिखर उठि आये
सहस शिखर चुम्बति आकासू * कञ्चन गिरि दस दिसा प्रकासू
सो दनुजी सिंहिका कराला * बरनत लोक विषम विकराला
दनुजी तहँ सिंहिका बखानी * सागर बीच बसति भयखानी
निसिचरि विकट धरित लखि छाया * ग्रसति संग शत जीव निकाया[1]

दो० सत्तर योजन बेंड़ पुनि दुइ शत लम्ब शरीर ।
अर्ध गात नभ, अर्ध जल, होयँ त्रसित जनि वीर[2] ॥ ४८ ॥

एक छलाँग सिन्धु के पारा * रहैं सचेत तबहिं निस्तारा
शत योजन तरि सागर पारा * रावन-लंकापुरी प्रसारा
सागर मध्य घिरी सो लंका * सुरन समीप जात अति शंका
सकल कीस करि सकल उपाई * हेरैं दसमुख कित सियमाई
जो तिन मिलै न तहँ उद्देसू * लौटि करैं पुनि विन्ध्य प्रवेसू
विश्कर्मा-कृत निर्मित देखी * सुबरनमय तहँ पुरी विशेषी

महेन्द्र पर्व्वते जाबे अत्युच्च शिखर * सर्व्वक्षण थाकेन तथाय पुरन्दर
ताहार दक्षिणे जाह सागरेर तीर * चन्दनेर बन तथा सुगन्ध समीर
सुगन्धि चन्दन निरखिबे सारि सारि * सागरेर पारे जाब स्वर्ण लंकापुरि
मैनाक पर्व्वत आछे सागर भितर * सलिल हइते उठे तार सहस्र शिखर
सोनार पर्व्वते दशदिकेर प्रकाश * सहस्र शिखर उठे जुड़िया आकाश
सागरेर मध्ये आछे सिंहिका राक्षसी * विषम राक्षसी सेइ सर्व्वलोके घुषि
बिषम राक्षसी से छाया पाइले धरे * वार शत जीव-जन्तु गिले एके वारे
सत्तर योजन तनु आड़े परिसर * दुइ शत योजन दीर्घे उच्च कलेवर
अर्द्ध तनु जले थाके अर्द्धेक आकाश * ताहा देखि वीरगण ना पाइओ त्रास
सकल वानर तथा हइउ सावधान * एक लाफे सागर लंघिले हबे त्रान
सागर तरिबे सबे शतेक योजन * सागरेर पारे लंका तथाय रावन
चारिदिके सागर मध्येते लंकागड़ * देवगणेर गति नाइ लंकार निगड़
खूँजिबे लंकार मध्ये सीता लंकेश्वर * यत्न पुरःसरे तथा सकल वानर
तथा यदि उभयेर ना पाओ उद्देश * विन्ध्य गिरि मध्ये गिया करिबे प्रवेश
अन्वेषन करिह तथाय कपिगन * विश्वकर्म्मा कृत पुरी सोनार गठन

१ समूह २ वानर वीर उससे भय न खायँ ।

विश्कर्मा कृत कुम्भज-धामा[1] ※ रत्न धातु गिरि विविध ललामा
शिखर-शिखर खोजहिं बलधारी ※ कहँ दशमुख,कहँ सिया विचारी?
तहँ पुनि दरस न तिनकर पाई ※ गवनहिं सुभट ऋषभ गिरिराई
ऋषभ महीधर[2] दक्षिण जासू ※ कनक किरन दश दिशा प्रकासू
दुर्ग पञ्च सुवरनमय सर्वा ※ भयकारी निवसत गन्धर्वा
भय गन्धर्व न जे उर करहीं ※ 'आनहिं रतन' तबहिं मन धरहीं
रतन लोभ परि धन के अर्था ※ करैं न कपिगन कबहुँ अनर्था
दुर्जय विकट हनैं छिन माहीं ※ रारि[3] उचित यहि अवसर नाहीं
रहि सचेत लखि शिखर अनन्ता ※ लेहु सोय-दसमुख कर अन्ता[4]
मिलै न तहँ केंहु विधि सियमाई ※ तौ दक्षिण-पुनि[5] खोजहु जाई

दो० जियत न गति यमलोक जनि, रवि-ससि करत उजेर ।
निसि-दिन एक समान जहँ, एकाकार अँधेर ॥ ४६ ॥

यमपुर परे[6] ज्ञान मोंहि नाहीं ※ लौटहु निरखि मास इक माहीं
मास दिवस ते अधिक प्रवासू ※ सकुल तासु निज दोष विनासू
सिय कर शोध वेगि जो लावै ※ सम्मानित मम बन्धु कहावै

अगस्त्येर बाड़ी विश्वकर्म्मार निर्म्मित ※ नाना रत्न नाना धातु पर्व्वते भूषित
वीर गण अन्वेषिओ शिखर शिखर ※ यत्न करि देख तथा सीता लंकेश्वर
तथा यदि ताहादेर ना पाओ दर्शन ※ ऋषभ पर्व्वते जाबे सब वीर गन
ऋषभ पर्व्वत कर देखिबे दक्षिणे ※ दशदिक आलो करे सोनार किरणे
गन्धर्व्व आछये तथा स्वर्ण पञ्च गड़ ※ अन्य के जाइते पारे ताहार निगड़
आनिते तथाय रत्न यदि यत्न हय ※ विषम गन्धर्व्व तथा, न करिह भय
धन लोभ कारणेते हइबे अनर्थ ※ ताहा ना लइबे केह, शुनह यथार्थ
बिषम दुरन्त तारा, सेइक्षणे मारे ※ ते कारणे द्वन्द्व येन केह नाहि करे
सावधाने उठि तथा शिखरे शिखरे ※ यत्न करि अन्वेषिओ दुष्ट लंकेश्वरे
तथा यदि नाहि पाओ सीतार उद्देश ※ यमेर दक्षिण वाड़ी करिओ प्रवेश
जीयन्ते यमेर बाड़ी कारो नाहि गति ※ यमेर दक्षिणे नाहि चन्द्र सूर्य्य द्युति
यमेर दक्षिण दिके महा अन्धकार ※ रात्रि दिन नाहि चिनि, सब एकाकार
यमेर दक्षिणे नाहि आमार गोचर ※ यमपुरी हइते फिरिओ वीरवर
यमपुरी जाइते आसिते एक मास ※ मासेर अधिक हइले सवार विनाश
मासेकेर मध्ये जेइ वीर ना आइसे ※ सवंशे मरिबे सेइ आपनार दोषे
आनिबे सीतार वार्त्ता शीघ्र जेइ जन ※ बाड़ाब ताहारे आमि सह बन्धुगन

---

१ अगस्त्य मुनि का आश्रम २ पर्वत ३ झमेला ४ खोज ५ और भी दक्षिण ६ के पार ।

मास मध्य आवहि सिय देखी * लहै सदा मम प्रीति विशेषी
पवनसुतहिं बोले कपिराजू * तव कर लखत पूर्ति मम काजू
पवन वेग, जल-अगिन न मानत * लइहौ सीय-खबरि, मन आवत
तव प्रसाद मम भार उतारा * तव यश होय भुवन विस्तारा
कोउ भट आन न मोहिं प्रतीती[1] * हेरहु सिय, पावौं उर प्रीती
रामहिं विनय कीन कपिकेतू * प्रभु कछु चिह्न देहु सिय हेतू
पवनसुतहिं जनि चीन्हति सीता * बानर लखि न होय भयभीता
सुनि कपि-वचन, मुदित भगवाना * सिय प्रतीति[2] हित चिह्न प्रदाना
दीन मुद्रिका[3] निज रघुनाथा * हनुमत लीन जोरि जुग हाथा
कटक सहित गमने हनुमाना * टीड़ी दल जिमि गगन पयाना
नृप सुग्रीव-वचन सिर धारी * दच्छिन दिसि कपि-सैन सिधारी

कपिसेना का पश्चिम दिशा को प्रस्थान

पच्छिम जे नद-नदी प्रदेसू * हे सुषेन! तहँ करहु प्रवेसू
ठौर-कुठौर न मन कछु लाई * खोजहु सिय चहुँ, बुद्धि लगाई

दो० सिन्धु हेरि पुनि मलय चलि कावेरी के तीर।
कृमिजीवी जहँ देश अति गहन लखहु चलि वीर ॥ ५० ॥

सीतारे देखिया जे आसिबे एक मासे * सदा बन्धु हइया थाकिब तार पाशे
सुग्रीव बलेन, शुन पवननन्दन * तुमि से साधिबे कार्य्य, हेन लय मन
अग्नि जल नाहि मान पवनेर गति * तुमि से देखिबे सीता लय मोर मति
तोमार प्रसादे आमि सत्ये हब पार * तव यश घुषिवेक सकल संसार
तुमि यदि सीता देख, तबे आमि सुखी * आर के देखिबे सीता इहा नाहि देखि
सुग्रीव रामेर प्रति बलिल बचन * जानाइते जानकीरे देह निदर्शन
हनूमान सह ताँर नाहि परिचय * कि जानि, वानर देखि यदि पान भय
श्रीराम ब'लेन, शुन सुग्रीव सुहृत् * अंगुरी दिलाम आमि सीतार प्रतीत
दिलेन अंगुरी राम निज निदर्शन * हात पाति निल ताहा पवननन्दन
कपिसैन्य सह वीर हनूमान नड़े * पतंग सकल येन झाँके-झाँके उड़े
चलिल सकल ठाट सुग्रीव आदेशे * दक्षिणेर पाँचलि रचिल कृत्तिवासे

सीता अन्वेषणे पश्चिम दिके वानर सैन्य-प्रेषण

पश्चिमे देखिबे यत नद नदी देश * सुषेण, सर्वत्र तुमि करिबे प्रवेश
सुस्थान कुस्थान ना करिओ विवेचना * अन्वेषिबे जानकीरे करिया मंत्रना
सिन्धु देश मलय देश कावेरीर तीर * कृमिजीव देशे जाबे अति से गभीर

---

१ भरोसा २ विश्वास ३ अँगूठी।

निकट केतकी-कानन घोरा ※ जोजन बिस्तर, ओर न छोरा
दोउ दिसि वन केतकी अपारा ※ कण्टक धार विकट जिमि आरा
केहु विधि बेगि ताहि करि पारा ※ कपिगन लेयँ प्रान निस्तारा
तजि कानन केतकी विषादा ※ लहैं ताल-वन ताल-प्रसादा[१]
पच्छिम दिसि पुर-नगर मँझाई ※ हिंगुल गिरि छबि कौतुक छाई
पूर्व सिन्धु नद, पच्छिम सागर ※ मध्य हिंगु अति उच्च धराधर[२]
निरखहु भल खोजहु सब पाहीं ※ तात ! असाध्य तुम्हहिं कछु नाहीं
जो तहँ मिलै न सिय उद्देसू ※ चक्रवान गिरि करहु प्रवेसू
पच्छिम सागर जोजन एका ※ लखहु यतन करि भाँति अनेका
चक्रवान दस दिसा प्रकासा ※ रहि सचेत हेरहु तिन पासा
अद्भुत धार विपुल आकारा ※ कौतुक विष्णु-चक्र विस्तारा
विष्णु दनुज हयग्रीव निपाता ※ विष्णु-चक्र शोभित दनुगाता
भेदि चक्र दानव तन माहीं ※ शंख-चक्रधर विष्णु कहाहीं
कपिगन हेरहिं गिरि आरोही[३] ※ कहँ सीता कहँ दसमुख द्रोही
शोध-सिया कछु तहाँ न पाई ※ जोजन पुनि पचास चलि जाई
चक्रवान तजि, कञ्चन देसू ※ गिरि बराह पुनि करहु प्रवेसू

ताहार निकटे आछे केतकी कानन ※ दिशपाश नाहि तार, अनेक योजन
दुइ पार्श्वे केयावन देखिते अपार ※ केयाबने काँटा येन करातेर धार
सकल वानर तथा हबे सावधान ※ शीघ्रशीघ्र गेले तथा पाइबे हे त्रान
केयावन एड़िया से जाइबे तालवने ※ दुःख पासरिबे सबे से ताल भक्षने
ताहार पश्चिमे जाबे पाटने पाटन ※ हिंगुलिया गिरि तथा अद्भुत गठन
तार पूर्व्वे सिन्धु नदी, पश्चिमे सागर ※ तार मध्ये हिंगुलिया अत्युच्च शिखर
अन्वेषण करिबे से खाने सर्व्व ठाँइ ※ तोमार करिले कर्म्म असाध्य कि भाइ
तथा यदि नाहि पाओ सीतार उद्देश ※ चक्रवान पर्व्वते ते करिबे प्रवेश
पश्चिम सागर तीर एकह योजन ※ यत्न करि से खाने करिओ अन्वेषन
चक्रवान गिरि करे आलो दशदिगे ※ सावधाने सकले खूंजिओ एक योगे
विष्णुचक्र सेखाने अद्भुत तार धार ※ असुरेर हाड़े चक्र अद्भुत आकार
हयग्रीव असुरे मारेन गदाधर ※ असुरेर हाड़े चक्र देखिते सुन्दर
सेइ दैत्य हाड़े चक्र अति सृष्टि करि ※ आपनि हइल हरि शंख चक्र धारी
से पर्व्वते आरोहिबे सकल वानर ※ अन्वेषिओ सीता लंकेश्वरे यत्न करि
तथा यदि उभयेर ना पाओ उद्देश ※ बराह पर्व्वते गिया करिबे प्रवेश
चक्रवान छाड़ाइया पञ्चाश योजन ※ बाराह पर्व्वते जाबे निर्म्मल काञ्चन

१ ताल फल (खजूर) २ पर्वत ३ चढ़कर।

दो० विश्कर्मा विरचित जहाँ विमल वरुण कर धाम।
हीरक मणि माणिक्य युत मनहर मञ्जु ललाम ॥ ५१ ॥

पुरी अलोक हरति अँधियारा ※ नरकासुर जहँ सुभट जुझारा[1]
वरुण सहित निवास तहँ कीन्हा ※ यहि बिधि वरुण अभय तेंहि दीन्हा
रहेउ सचेत सदा तेंहि देसू ※ तेंहि कर[2] गये प्रान जनि सेसू
सुस्थिर, जतन करहु धरि धीरा ※ मोंहि प्रन-उरिन करावहु वीरा
तहाँ न लखि सीता संकेतू ※ गवनहु पुनि सुमेरु गिरिकेतू
घेरे साठि सहस जेंहि शृंगा ※ छबिमय अतुल सोबरन रंगा
तिन समूह जे साठि हजारा ※ सुबरन मण्डित सकल पहारा
कनक-ताल-तरु मेरु सुहाये ※ तिन दुति[3] दसौ दिसा दमकाये
दिन गत, रैन नित्य अवतरहीं ※ उमा-महेश केलि तहँ करहीं
धरा न अस कहुँ मंजुल-मूला ※ बहु विधि बहु झूमत फल-फूला
कौतुक गीत वाद्य अरु नर्तन ※ नृत्य अप्सरन मोहति सुरगन
जोजन दु-शत तीनि लख देसू ※ परिकरमति[4] जेंहि भानु निमेषू
गिरि अपूर्व जहँ देव निवासू ※ सकल सुरम्य सुठाँव[5] प्रकासू
निमिष मात्र आलोक न देरी ※ देत सुमेरु दिवाकर[6] फेरी[7]

विश्वकर्म्मा सृजिलेन वरुणेर घर ※ हीरक माणिक्यमय तथा मनोहर
पुरी आलो करे ज्योतिः अन्धकार दूर ※ असुर नरक नामे, विक्रमे प्रचुर
वरुणेर सहित से बैसे सेइ देशे ※ से कारणे वरुण ताहारे नाहि नाशे
सेखाने हइउ सबे अति सावधान ※ तार हाते पड़िले नाहिक परित्रान
अप्रमत्त रूप तनु करिबे तथाय ※ आमारे करह मुक्त एइ प्रतिज्ञाय
तथा यदि जानकीर ना पाओ उद्देश ※ सुमेरु पर्व्वते गिया करिओ प्रवेश
देखिबे पर्व्वत सेइ कनक रचित ※ सदा षाटि-सहस्र पर्व्वते से वेष्टित
तथा षाटि सहस्र पर्व्वतेर उदय ※ सेइ षाट सहस्र पर्व्वत स्वर्णमय
सोनार खर्ज्जूर बृक्ष सुमेरु शिखरे ※ दशदिक आलो करे दशमाथा धरे
तथा आसि केलि करे शंकर-शंकरी ※ दिवा अस्त जाय तथा आइसे शर्व्वरी
एमन उत्तम स्थान नाहि पृथिवीते ※ नाना मत फल फुल आछे युथे युथे
गीत बाद्य नृत्य करे परम कौतुके ※ नर्त्तकी करये नृत्य देखे देवलोके
परिसर तिन लक्ष दु'शत योजन ※ चक्षुर निमिषे सूर्य्य करये गमन
अपूर्व्व पर्व्वत सेइ, देव अधिष्ठान ※ सुमेरुर उपर सकल रम्य स्थान
निमिषेते सूर्य्य देव करये गमन ※ सुमेरु बेड़िया सूर्य्य करेन भ्रमन

---

१ योद्धा २ नरकासुर के हाथों ३ प्रकाश ४ परिक्रमा करता है ५ सुन्दर

गिरि सों सहज लखत त्रयलोका ※ सदा सुमेरु रमत सुरलोका
नित्य भानु[1] परिभ्रमत सुमेरू ※जेंहि दिसि निसि, विपरीत[2] उजेरू

दो० अवनि स्वर्ग पाताल यत, सबन सुमेरु अधार।
पच्छिम जासु न भानु गति निर्जन नित[3] अँधियार ॥ ५२ ॥

पच्छिम-मेरु, ज्ञान मोंहि नाहीं ※ तहँ लग लखि आवहु मम पाहीं
पन्थ सुमेरु अवधि इक मासा ※ जनि अबेर[4] नतु होय विनासा
जो न मास बिच आवै वीरा ※ सकुल[5] दोष निज तजै सरीरा
नृप आयसु पच्छिम अभियाना[6] ※ कटक सैन कृतिवास बखाना

सीता की खोज में कपिसेना का उत्तर दिशा को प्रस्थान

सुनहु शतावलि सैन तुम्हारी ※ छुवत धूरि नभ, जबहिं सिधारी
सेनिप[7] ! तुम बानरन प्रधाना ※ उत्तर दिसि, प्रिय ! करहु पयाना
कुमुद द्विविध दधि—गिरि आकारा※अन्य प्रमुख बानरन हँकारा
कहेउ, शतावलि ! मम आदेसू ※ करहु शुभगमन उत्तर देसू
वरनौं यथा ज्ञान सब देसा ※ सिय खोजहु रहि सजग विसेसा
प्रथम दरस लहि बर्बर देसू ※ निरखहु पुनि हिमवान प्रदेसू

स्वर्ग मर्त्य रसातल सुमेरु गोचर ※ देवगण करे तथा केलि निरंतर
सुमेरु फिरिया करे नित्य नित्य गति ※ एक दिक दिन हय आर दिक राति
स्वर्ग मर्त्य पाताल व्यतीत नाहि स्थान ※ सुमेरुर उपरे सकल अधिष्ठान
सुमेरुर पश्चिमे सूर्य्येर नाहि गति ※ अन्धकारमय तथा नाहिक बसति
ताहार पश्चिमे नाहि गमन आमार ※ सुमेरु पर्य्यन्त देखि आसिबेहे घर
सुमेरुते जाइते आसिते एक मास ※ मासेर अधिक हैले सवार विनाश
जेइ वीर मासेकेर मध्ये ना आइसे ※ सवंशे मरिबे सेइ आपनार दोषे
चलिल सकल ठाट सुग्रीव आदेशे ※ पश्चिम दिकेर यात्रा रचे कृत्तिवासे

सीता अन्वेषणे उत्तर दिके वानरसैन्य-प्रेरण

सुग्रीव ब'लेन शुन वीर शतावली ※ तव सैन्य चलिते गगने लागे धूलि
वानरेर मध्ये तुमि मुख्य सेनापति ※ चलिबे उत्तरदिके, आमार आरति
कुमुद द्विविध दधि वदन भूधर ※ आर आर आछे यत प्रधान वानर
शतावली ब'ले जे उत्तर तव देश ※ यात्रा कर शुभ क्षणे, आमार आदेश
यत देश जानि आमि, कहि तव स्थान ※ तथा सीता अन्वेषिओ ह'ये सावधान
इहार उत्तरे पावे देश ये वर्व्वर ※ हिमालय गिरि तथा यथा हिमघर

---

१ सूर्य २ उलटी (दूसरी) तरफ ३ सदैव ४ विलम्ब ५ कुल सहित
६ कूच ७ हे सेनापति।

बसत जन्तु रवि किरन समाना ※ तहँ सों गंग भगीरथ आना
अति पावन विरञ्चि[1] कर धामा ※ उद्‌गम भागीरथी ललामा
त्रिभुवन कहुँ न पुण्य अस छावा ※ दरस भगीरथ सुरसरि[2] पावा
धरा धाम सुरधुनी[2] पधारी ※ दरस जासु सब पातक हारी
महिमा अमित गंग महरानी ※ बरनि सकत जनि बेदन-बानी
शाप विवस दनु[3] द्विज सौदासा ※ परसि गंग बैकुण्ठ निवासा

दो० जेहि विधि गंग पुनीत के दरस होयँ भुविलोक।
तप अनन्त किय भगीरथ रविकुल-पुण्यश्लोक ॥ ५३ ॥

तप विधि हेतु, विष्णु पुनि ध्याई ※ अनाहार तप किय नृपराई
यदपि भगीरथ बहु तप कीन्हा ※ गंग-जनम कोउ मर्म न दीन्हा
बरष सहस दस शिवहिं मनावा ※ बरंब्रूहि[4] इमि शंभु सुनावा
भोलानाथ निरखि नृप बन्दे ※ सुरसरि दै मोहिं करहु अनन्दे
पितर पताल भसम अवसेसू ※ परसि गंग गवनहिं सुरदेसू
भागीरथहिं कहेउ पञ्चानन ※ कवन गंग, कित ? सुनेउँ न कानन
रविकुलनन्दन अतिव उदासा ※ कहौं कहा, प्रभु-चरनन-दासा
अष्टावक्र मुनीस बखाना ※ लहहु शम्भु ढिग गंग-विधाना

सूर्य्येर किरण ह'न जन्तु सब बैसे ※ भागीरथी गंगादेवी तथा हैते आसे
ताहार उत्तर अंशे ब्रह्मार बसति ※ तथा हैते भगीरथ आने भागीरथी
एमन पुण्येर स्थान नाहि त्रिभुवने ※ भगीरथ गंगारे पाइल सेइ खाने
नारायणी गंगादेवी आसिया भुवने ※ पापीर करेन मुक्त निज दरशने
कि ब'लिते पारे लोक गंगार महिमा ※ चारि वेदे विचारिया दिते नारि सीमा
आछिल सौदास द्विज राक्षस हइया ※ गेल से बैकुण्ठपुरी गंगाजल पाइया
सूर्य्यवंशे भगीरथ नामे महीपाल ※ गंगा हेतु तपस्या करिल बहुकाल
आराधना ब्रह्मार करिल बारे बारे ※ तार पर विष्णुर तपस्या अनाहारे
भगीरथ नानाविध तपस्या करिल ※ गंगार जन्मेर तत्व केह ना ब'लिल
शिव सेवा करे दश हाजार बत्सर ※ तबे शिव आइलेन ताँरे दिते वर
भगीरथ ब'ले शुन देव पञ्चानन ※ गंगा दिया रक्षा कर एइ निवेदन
मम पितृलोक भस्म ह'येछे पाताले ※ गंगा परशन है'ल स्वर्ग वासे चले
गंगाधर ब'लेन, ना जानि से गंगाय ※ कि जाति धरेन गंगा, थाकेन कोथाय
भगीरथ शुनिया भावेन दुःख मने ※ आमि कि वलिब प्रभु, तोमार चरने
अष्टावक्र मुनि कहिलेन मोर स्थान ※ आपनि कहिबे प्रभु, गंगार विधान

---

१ ब्रह्मा २ गंगा ३ दानव ४ वर माँगो।

नयन मूँदि शंकर किय ध्याना ❊ गंगा - जनम - मर्म उर आना
भक्त नेह बस शिव वर दीन्हा ❊ सुरसरि सहित बिदा नृप कीन्हा
करत शंखध्वनि नृप पग धरहीं ❊ हिमगिरि तजि भगवति अनुसरहीं
साधु, साधु ! सब कहत भगीरथ ❊ मुक्ति प्रशस्त कीन सुरसरि-पथ
भुवन भगीरथ पुण्य सरूपा ❊ जगती भूप न तिन अनुरूपा
स्वर्ग पताल मर्त्य उद्धारा ❊ परसि गंग पावन संसारा
भागीरथी भगीरथ लाये ❊ परसि पातकी स्वर्ग सिधाये
रसना राम, विनासत पापा ❊ कवि गावत भल गंग-प्रतापा

दो० हिम प्रदेस बिस्तर[1] निरखि, दरस न सिय-लंकेस ।
पार हिमञ्चल उतर दिसि, पुनि कपि करहु प्रवेस ।। ५४ ।।

दुर्गम विषम अतिव भयकारी ❊ गिरि तरु-दरस न सरसति वारी[2]
दुइशत योजन पन्थ न अन्ता ❊ तहँ प्रवेस भय-दुःख अनन्ता
तजहिं बेगि कपि दुर्गम देसू ❊ तब निबरैं[3] रहि सजग कलेसू
उत्तर चलि गिरिवर कैलासू ❊ जगमग सिखर सहस्र प्रकासू
जोजन सहस आयतन[4] भारी ❊ ऊपर लख जोजन बिस्तारी
जहँ कैलाशपुरी छबि-रूपा ❊ सदा उमा-शिव रमत अनूपा

वसिलेन ध्याने शिव मुदित नयने ❊ गंगार जनम तत्व जानिलेन मने
भक्त-ज्ञाने महादेव तुष्ट ह'य ताँय ❊ गंगा दिया भगीरथे करेन विदाय
आगे जान भगीरथ करि शंख ध्वनि ❊ हिमालये उठिलेन देवी तरंगिनी
सबे ब'ले, साधु साधु भाल भगीरथ ❊ गंगा आनि करिलेन तरिवारे पथ
भुवनेर मध्ये भगीरथ पुण्यवान ❊ त्रिभुवने केवा भगीरथेर समान
संसार पवित्र कैल परशे गंगार ❊ स्वर्ग मर्त्य पाताल त्रिलोकेर उद्धार
आइलेन गंगा भगीरथेर कारणे ❊ महापापी स्वर्ग जाय गंगा परशने
राम नाम स्मरणेते पापेर विनाश ❊ गंगार माहात्म्य गीत रचे कृत्तिवास
हेन हिमालय गिरि बहु आयतन ❊ यत्न अन्वेषिओ तथा जानकी रावण
तथा यदि जानकीर ना पाओ उद्देश ❊ ताहार उत्तर देशे करिओ प्रवेश
विषम दुर्गम अति भयानक स्थल ❊ वृक्ष नाहि गिरि नाहि नाहि ताहे जल
दुइ शत योजनेर पथ सेइ देश ❊ पाइबे अत्यन्त भय करिते प्रवेश
सकल वानर तथा हैओ सावधान ❊ झाट जाबे आसिबे तबे से परित्राण
कैलास पर्व्वते जावे ताहार उत्तर ❊ सेइ दिक आलो करे सहस्र शिखर
योजन सहस्र एय तार आयतन ❊ उभेते पर्व्वते लक्ष गणित योजन
कहेन अपूर्व्व पुरी कैलास तथाय ❊ सतत रमण शंभु पार्व्वती तथाय

---

१ विस्तार २ जल नहीं

तहँ पुनि अलकापुरी ललामा * कौतुकमय कुबेर कर धामा
विमला तहँ सरिता छबि देही * विद्रुम[1] सरिस लाल जल जेही
धनपति पियत नित्य सो नीरा * तरु सुगंध चन्दन छबि तीरा
चहुँ दिसि हेरि तहाँ सियमाई * कहुँ लंकेस दसाननराई
जो श्रम होय न तहँ अनुकूला * पुनि पग देहु पहार त्रिशूला
तीनि शृंग गिरि तीनि सरूपा * गिरिवर कपिगन लखहिं अनूपा
प्रथम धवल चन्द्रिका समाना * दूजे मनहुँ जोति मणि नाना
लोहित[2] शृंग तृतीय प्रकासा * तीनि शिखर उठि छुवत अकासा
शिखर-शिखर भल खोजहिं कीसा * हेरहिं यथा मिलै भुजबीसा[3]
मिलै न शोध तहाँ वैदेही * उत्तर अवर[4] कटक पग देही

दो० सुबरन जंबूवृक्ष तहँ, कनक विपुल आकार।
तेहि कौतुक-तरु नाम लहि, जंबू द्वीप प्रचार ॥ ५५ ॥

सब द्वीपन सो प्रमुख प्रधाना * द्वीप न जंबू - द्वीप समाना
सुरगन केलि करत दिन राती * जंबूद्वीप नाम यहि भाँती
जिमि गिरि शिखर चली तरु डारी[5] * लख योजन प्रकाण्ड[6] बिस्तारी

आर एक अद्‌भुत अलका नाम पुरी * धनेश्वर कुबेर ताहार अधिकारी
ताहार उपरे नदी नामेते विमला * तार जल रांगा वर्ण येन रक्तपला
धनेश्वर कुबेर करेन पान ताय * सुगन्धि चन्दन वृक्ष तीरे शोभा पाय
सीता लैया थाके यदि तथा दशानन * चतुर्द्दिके ताहार करिओ अन्वेषण
तथा यदि जानकीर ना पाओ उद्देश * त्रिश्रृंग पर्व्वत गिया करिबे प्रवेश
त्रिशृंग पर्व्वत सेइ तिन मूर्ति धरे * चमत्कार हबे तथा सकल वानरे
एक शृंग रूप तार येन चन्द्रकला * द्वितीय शृंगेर रूप येन मणि पला
अन्य शृंग रांगा वर्ण सर्व्वत्न प्रकाश * त्रिशृंग पर्व्वत गिया जुड़ये आकाश
सेखाने करिओ तत्त्व शिखरे-शिखरे * यत्न करि अन्वेषिओ सकल वानरे
तथा यदि नाहि पाओ सीता-लंकेश्वर * ताहार उद्देशे जाबे ताहार उत्तर
ताहार उत्तरे एक अद्‌भुत आकार * जम्बुवृक्ष देखिबे से अति चमत्कार
स्वर्ण-जम्बुवृक्ष सेइ सोनार आकार * तार नामे जम्बूद्वीप हइल प्रचार
सकलेर मुख्य सेइ जम्बूद्वीप हय * अन्य यत द्वीप, जम्बूद्वीप-तुल्य नय
तार तले देवगण नित्य करे केलि * ताहार कारण एइ जम्बूद्वीप बलि
डाल-डाल धरे येन पर्व्वतेर चूड़ा * लक्ष योजनेर बेड़ा से गाछेर गोड़ा

१ मूंगा २ लाल ३ रावण ४ और उत्तर की ओर ५ वृक्ष की शाखा

चहुँ लखि मिलै न सिय-लंकेसू ※ अधि-उत्तर पुनि करहु प्रवेसू
जंबुद्वीप उत्तर गिरि मन्दर ※ तहँ विशाल सरवर अति सुन्दर
सर्वस्थली कहत सब नामा ※ तहँ विरञ्चि सुख लहति ललामा
मन्दाकिनि जहँ सरसति नीरा ※ उद्गम सरित् कौशिकी, तीरा
कपिगन विफल होउ तहँ हेरी ※ लेहु डगर[1] बढ़ि उत्तर केरी
तहँ महेश सागर शत योजन ※ आकर[2] मणि बहुमूल्य रत्न धन
अस्ताचल गिरि सागर माहीं ※ सहस शृंग उठि नभ तन जाहीं
लखि महेश सागर भयखानी ※ सावधान खोजहु सियरानी
कञ्चन गिरि दस दिसा प्रकासा ※ परसहिं सिखर सहस्र अकासा
गिरिवर मूल सुवर्ण ललामा ※ तहँ शिवलिंग तहाँ शिवधामा
रावण पूजत सदा महेसा ※ तेहि मिस[3] जाय तहाँ लंकेसा
हेरहु तहँ बहु आस लगाई ※ संभव, ते कहुँ परैं लखाई
किन्तु लंकपति माया रूपा ※ विजय कीन त्रयलोक अनूपा

दो० तीनिलोक जय, दिग्विजय, किय लहि शंभु-प्रसाद ।
सुरन-त्रास, सो बालि पहँ, लहेउ मात्र अवसाद[4] ॥ ५६ ॥

सीता ल'ये यदि थाके तथाय रावण ※ चारिदिके सेखाने करिबे अन्वेषण
तथा यदि नाहि पाओ सीता लंकेश्वर ※ करिबे गमन आरो ताहार उत्तर
मन्दर पर्व्वत जम्बूद्वीपेर उत्तर ※ एक ह्रद आछे तथा परम सुन्दर
सर्व्वस्थली ब'लिया से ह्रदेर खेयाति ※ आइसेन देखिते से ह्रद प्रजापति
स्वर्ग हैते सेइ ह्रदे पड़े गंगनीर ※ कौशिकी नामेते नदी बहे सेइ तीर
आमार बचन शुन सर्व्व कपिगन ※ सावधाने अन्वेषिबे सीता-दशानन
तथा यदि नाहि पाओ सीता-लंकेश्वर ※ ताहार उत्तरे जाबे महेशसागर
महेशसागरे जन्मे बहुमूल्य धन ※ आड़े दीर्घ सागर से शतेक योजन
अस्ताचल पर्व्वत सागरेर भितर ※ जल हैते उठे गिरि सहस्र शिखर
देखिया हइबे सवे सभय अन्तर ※ अन्वेषिबे सावधाने महेशसागर
सोनार पर्व्वत दशदिक सुप्रकाश ※ शिखर सहस्र उठे जुड़िया आकाश
सोनार गठित गोड़ा देखिते सुठाम ※ शिवलिंग आछे ताहे येन शिवधाम
रावण से महेश्वरे पूजे सर्व्वक्षण ※ महेशेर काछे गिया थाकेन रावण
अन्वेषण करिओ से शिखरे शिखर ※ पाइते पारिबे तथा सीता लंकेश्वर
किन्तु माया जाने से पापिष्ठ दशानन ※ स्वर्ग मर्त्य पाताल जिनिल त्रिभुवन
सेविया शिवेर पद दिग्विजय करे ※ त्रिभुवन जिने बेटा शंकरेर वरे
देवगण जार डरे एक पाश हय ※ सबे मात्र बालिस्थाने तार पराजय

---

१ रास्ता २ खान ३ निमित्त ४ हार, पराभव ।

जो निष्फल, गिरि क्रौञ्च अगारी[1] ❋ विषम अँधेर लखहु भयकारी
केवल दरस निकट जनि गमना ❋ गये समीप सुनिश्चित मरना
दिसि नैरित[2] गिरि क्रौञ्च बराई[3] ❋ दोणाचल उत्तर दरसाई
दरस द्रोण सुख-खानि बखानी ❋ सुर, गन्धर्व, अप्सरन - खानी
बालखिल्य आदिक मुनि जेते ❋ बसत द्रोणगिरि तप-रत तेते
चन्द्रप्रभा, रवि - रश्मि - प्रकासू ❋ सुलभ न नखतन जोति अकासू
रूप - रूपसिन गिरि आलोका ❋ सरित पुण्यदा तहाँ विलोका
दोउ तट अगणित बाँस सुहाये ❋ जुरि दोउ तोरण[4] गगन बनाये
बसत भयंकर म्लेच्छ अपारा ❋ बाँस-सेतु[5] धरि करहु उतारा
उत्तर पुनि आगे शुभ - देसू ❋ प्रमुदित जन तहँ मिलैं असेसू
मन-वाञ्छित सुमधुर फल मूला ❋ रतन दृव्य सुबरन अनुकूला
विविध रतन मानिक जल माहीं ❋ रक्तिम जल लहि मानिक-छाहीं
अभरन[6] रतन पुरुष जहँ सोहा ❋ अकथ नारि-अभरन मन मोहा
मदमातिन - मद इन्द्र रिसाई ❋ बनितन[7] शाप दीन सुरराई
कीन अवज्ञा जिमि मदमाती ❋ जीवन दिवस, मरन नित राती

तथा यदि नाहि पाओ सीतार उद्देश ❋ महीधर क्रौञ्च गिया करिओ प्रवेश
क्रौञ्च पर्व्वत देखिया लागिवेक भय ❋ विषम पर्व्वत सेइ अन्धकारमय
दूर हैते पर्व्वत करिबे दरशन ❋ ताहार मध्येते गेले अवश्य मरन
से पर्व्वत राखिया दक्षिणे किंवा बामे ❋ ताहार उत्तरे जाबे गिरि द्रोण नामे
द्रोण गिरि देखिले हइबे बड़ सुखी ❋ देव गन्धर्व्वेर आछे यत चन्द्रमुखी
बालखिल्य आदि करि यत मुनिवर ❋ बास करे सकले से पर्व्वत-उपर
चन्द्रतेज नाहि तथा सूर्य्येर प्रकाश ❋ नक्षत्र नाहि देखि ना देखि आकाश
कामिनीगनेर तेज तथा आलो करे ❋ पुण्यदा नामेते नदी ताहार उपरे
दुइ कूले आछे तार बंश अगनन ❋ उत्तर तीरेर बंश दक्षिणे मिलन
म्लेच्छजाति आछे तथा जाति भयंकर ❋ नदी पार हय तारा बाँशे करि भर
ताहार उत्तरे जाबे सीतार उद्देशे ❋ सेइ देशे बहुलोक हरिषेते वैसे
जाहा चाबे ताहा पाबे मिष्ट वृक्षफल ❋ स्वर्ण जन्ये द्रव्य तथा सोनार उत्पल
रतन माणिक नाना जलेते उपजे ❋ रक्तवर्ण नदी जल माणिकेर तेजे
नाना रत्न अलंकार पुरुषेते परे ❋ कि वर्णिव अलंकार, स्त्रीलोके जा धरे
अहंकारे नारीगण इन्द्रे ना मानिल ❋ क्रोध करि इन्द्रदेव अभिशाप दिल
अहंकारे येमन ना मानिलि आमाय ❋ जीवित हइबे दिने, राते मृतप्राय

---

१ आगे २ दक्षिण-पश्चिम कोण ३ वचाते हुये ४ जुड़कर महराब के समान फाटक ५ बाँस का पुल ६ आभूषण ७ वनिताओं (स्त्रियों) को।

यहि विधि रैन नित्य अवसानू[१] * भोर होत पुनि जीवन-दानू

दो० शाप-विवस, नित रूपसी, रजनी रहि निष्प्रान ।
निरखि अरुन छबि मगन ते नृत्य रंग रस गान ।। ५७ ।।

अद्भुत सृष्टि कहाँ केहि भाँती * धरनि रत्नगर्भा चहुँ ख्याती
सावधान कपिगन तहँ जाई * भल हेरहिं रावन-सियमाई
उत्तर चलि पुनि सिंधु अपारा * गिरिवर हेमकूट विस्तारा
गिरि न हेमगिरि अद्भुत रंगा * अखिल शृंग तेहि शृंग उतंगा[२]
शिखर समूह गगन बतराहीं * जग गिरि-हेम सरिस गिरि नाहीं
तेहि उत्तर न भानु-पैठारी[३] * जीव न तहँ चहुँ दिसि अँधियारी
आगे तासु गयेउँ मैं नाहीं * तहँ लौं लखि आवौ मम पाहीं
यहि विधि जंबूद्वीप बखानी * सीमा, बसत जहाँ लौं प्रानी
मारग दिवस तीस गिरि हेमा * बीते अवधि सकुल जनि क्षेमा[४]
मास अधिक जेहि समय लगावा * निज करनी निज प्रान गवाँवा
बरनेउँ सबन कथा सब देसू * जहँ सिय चलि आनहु उद्देसू[५]
स्वर्ग पताल मर्त्य त्रयलोका * शास्त्रन इतर न सृष्टि विलोका
पौरुष करि दिग्देसन जाई * रामहिं सीय समर्पहु लाई

सेइ शापे मृत थाके सकल रजनी * प्रभात हइले बाँचे सकल रमणी
रजनीते थाके तारा हये अचेतन * प्रभाते उठिया करे संगीत नर्त्तन
वहुरत्ना पृथिवी ब'लेन सर्व्वजन * कत ठाँइ कत सृष्टि न हय गनन
सावधान हइया जाबे यत कपिगन * यत्नेते खुँजिबे तथा जानकी-रावण
ताहार उत्तरे जाबे अनन्त सागर * तथा हैते हेमगिरि नाम गिरिवर
सकल पर्व्वत मध्ये हेमगिरि सार * सकल पर्व्वत जिनि शिखर ताहार
आकाशेते जार शृंग लागे सारि सारि * हेमगिरि सम गिरि जगते ना हेरि
ताहार उत्तरे नाइ भास्करेर गति * अन्धकारमय तथा नाहिक बसति
ताहार उत्तरे नाइ आमार गमन * से पर्य्यन्त खुँजिया फिरिबे सर्व्वजन
एइ कहिलाम जम्बूद्वीपेर उत्पत्ति * ए अवधि आछे जीवजन्तुर बसति
हेमगिरि आसिते जाइते एक मास * मासेर अधिक हैले सबार विनाश
मासेकेर मध्ये जेवा फिरे ना आइसे * सवंशे मरिबे से ये आपनार दोषे
सकल देशेर कथा कहिनु सबाके * ये देशे थाकेन सीता उद्धारिबे ताँके
स्वर्ग मर्त्य ओ पाताल एइ तिन स्थान * इहा विना सृष्टि नाहि शास्त्रे विधान
यत देश कहिलाम, जाइबे साहसे * सीतादेवी आनि दिबे श्रीरामेर पाशे

---

१ मृत्यु २ ऊँचा ३ सूर्य का प्रवेश ४ कल्याण ५ पता ।

विफल, न आनि सकै बैदेही ॐ तासु विनास, न संसय येही
मास अवधि, जनि करैं अबेरी ॐ नतरु कुसल जनि प्रानन केरी
साखी अगिन, वचन मैं हारा ॐ करहुँ प्रानपन सिय उद्धारा
दो० कहेउ, शतावलि ! प्रथम लखि अखिल उत्तराखण्ड ।
सुबरन लंक प्रवेश पुनि जहँ लंकेस प्रचण्ड ॥ ५८ ॥
करतल मारि ताल बहु दीन्हा ॐ सुभट मेघ सम गर्जन कीन्हा
मैं अकेल, कपि-सैन न काजू ॐ हनि रावन आनहुँ सिय, राजू !
सिय पताल, पाताल प्रवेसू ॐ जो सिय सिन्धु, करौं जल सेसू[1]
वृथा मलीन लखन - रघुराई ॐ निज पौरुष आनहुँ सिय माई
वृथा शोच उर राम भुवाला ॐ मम रन, किमि समुखै[2] दसभाला
आवन-जान, न क्षण अधिकाई ॐ लावहुँ मैं प्रभु - काज बनाई
सुनत शतावलि विक्रम बानी ॐ उर प्रतीति कपिपति बहु मानी
सकल सैन उत्तर दिसि धाई ॐ कृत्तिवास करि गान सुनाई

उत्तर-पूर्व-पश्चिम से निराश कपि-सेना वापस

विपुल नदी-नद गिरि बहु नामा ॐ पूँछत सुनि कपीस सन रामा
सागर द्वीप महीधर धरनी ॐ सुहृद ! कथा किमि विस्तर वरनी ?

आनिते ना पार यदि सीता ठाकुरानी ॐ आमि गिया ताहारे करिब हानाहानि
मासेकेर मध्येते आसिबे वीरगण ॐ अधिक हइले तार अवश्य मरण
अग्नि साक्षी करि करियाछि अंगीकार ॐ प्राणपणे आमि सीता करिब उद्धार
सर्व्वस्थाने जाब आमि यत दूर संख्या ॐ तार पर प्रवेशिब स्वर्णपुरी लंका
मालसाट मारे बहु देय कर तालि ॐ मेघेरे गर्ज्जने गर्ज्जे वीर शतावलि
कि कर्य्ये पाठाओ राजा एत सेनागण ॐ आमि आनि दिब सीता मारिया रावण
पाताले थाकेन सीता, पाताले प्रवेशि ॐ सागरे थाकेन यदि, ताहा आमि शुषि
श्रीराम लक्ष्मण, केन हओ म्रियमाण ॐ सीता उद्धारिब आमि हये यत्नवान
कि हेतु श्रीराम, तुमि मने भाव आन ॐ एकेला रावण मोर ना धरिबे टान
आसिते जाइते मोर जे होक ब्याज ॐ अविलम्ब देखा दिब सिद्ध करि काज
शुनि शतावलीर से विक्रम वचन ॐ भरोसा पाइल मने सुग्रीव राजन
चलिल सकल ठाट सुग्रीव आदेशे ॐ उत्तर दिकेर यात्रा रचे कृत्तिवासे

उत्तर-पूर्व्व-पश्चिम दिके सीतार उद्देश ना पाइया वानरगणेर प्रत्यावर्त्तन

नद नदी पर्व्वतेर शुनिया त नाम ॐ सुग्रीवेरे जिज्ञासेन तखन श्रीराम
सागर पर्व्वत द्वीप पृथिवीर अन्त ॐ केमने जानिले मित्र, कह से वृत्तान्त

---

१ समाप्त २ सामना करै ।

बालि-त्रास भरमउँ, रघुनाथा * त्रिभुवन लखेउँ, कहेउ कपिनाथा
निमिषमात्र पथ बालि महीपा * त्रान न कतहुँ सप्त प्रभु द्वीपा
जहँ जहँ जावँ, बालि अनुसरही * लहि छन दरस प्रान मम हरही
त्रिभुवन बालि सरिस नहिं वीरा * तीनि लोक भरमेउँ तेहि पीरा
कतहुँ विराम न रैन बसेरा * संकित सदा बालि-भटभेरा[1]
निर्दय, मिलत न प्रान-निवारन * दूरि दूरि भरमेउँ यहि कारन

दो० सिन्धु नदी गिरि निरंतर भरमेउँ देस दिगन्त ।
जड़ जंगम त्रयलोक चहुँ घूमेउँ बार अनन्त ।। ५६ ।।

चहुँ दिसि धरनि अन्त जहँ पाये * दुर्दिन तहँ लौं दरस कराये
वरनेउँ प्रथम बालि-भय-हेतू * इमि मैं विश्व लखेउँ रघुकेतू !
मारुति[2] कही मूकगिरि[3]-गाथा * लही सरन इत जिमि, रघुनाथा !
चारि सखा युत भ्रमन विषादा * लहउँ नृपति-पद नाथ-प्रसादा
इमि नित सुहृद युगुल बतराहीं * मास व्यतीत दिवस नगिचाहीं
पूरुब देखि प्रगट तेहि काला * कपि विनोद जहँ कीस भुवाला
पश्चिम सों सुषेन बलबीरा * सीय न शोध विकल रघुबीरा
उत्तर पूरुब पच्छिम हेरी * आय सुनत कहि सब, सब केरी

कहेन सुग्रीव, शुन राम गुणाधार * बालि भये भ्रमिलाम ए तिन संसार
सप्तद्वीपा मही बालि निमिषेते जाय * कोन देशे जाब आमि, ना देखि उपाय
ये देशे जाइब आमि तथा बालि जावे * मुहूर्त्तेक देखा पेले तखनि मारिबे
बालि सम वीर नाइ ए तिन भुवने * स्वर्ग मर्त्य पातालेते फिरि से कारणे
एकदिन एकस्थाने ना थाकि कोथाय * बड़ भय, बालिराज यदि देखा पाय
देखा पेले प्राणे मारे बड़इ निष्ठुर * से कारणे पलाइया भ्रमि बहु दूर
सागर पर्व्वत नदी देश-देशान्तर * सर्व्वत्र भ्रमन करि आमि निरन्तर
स्थावर जंगम आदि ए तिन संसार * प्रतिस्थाने भ्रमण करेछि शतवार
जेखाने जेखाने आछे पृथिवीर अन्त * से कारणे जानि मित्र सकल वृत्तान्त
पूर्व्वकथा कहिलाम तोमार गोचरे * सर्व्व तत्त्व जानिलाम से बालिर डरे
ऋष्यमूक-कथा जेइ कहिले हनूमान * से कारणे करिलाम हेथा अवस्थान
चारि पात्र भ्रमिताम ह'ये संकुचित * तोमार प्रसादे एवे राज्येते पूजित
एइ रूपे दुइ मित्रे प्रत्यह सम्भाष * देखिते देखिते प्राय पूर्ण एकमास
एक दिन पूर्व्वदिक हइते सुमति * उपस्थित हइल विनोद सेनापति
ना शुनि सीतार वार्त्ता आर्त्त रघुवीर * आइल पश्चिम देखि सुषेण सुधीर

१ बालि का सामना पड़ जाने की शंका २ हनुमान ३ ऋष्यमूक पर्वत ।

खोजे गिरि बहु नाना देसा ❋ खबरि न सीय कतहुँ लवलेसा
रघुपति व्यथित मूर्च्छा आई ❋ समुझावत बहु बिधि कपिराई
दच्छिन जहँ निवास लंकेसू ❋ प्रभु! कपि प्रमुख गये तेंहि देसू
जाम्बवान पुनि बालिकुमारा ❋ हनुमत् काज सवाँरनहारा
वीर पवनसुत बुद्धि अपारा ❋ निसचय तिन-कर[1] काज उबारा
तव कारज मारुति अति प्रीती ❋ खोजहिं सिय, भल मोहिं प्रतीती
प्रखर बुद्धि अतिशय मतिमाना ❋ संक न, काजु करैं हनुमाना
बचन कपीस धीर प्रभु आवा ❋ कृत्तिवास किष्किन्धा गावा

राम-नाम-महिमा

छं० सुमिरि राम उर धाम निरंतर अगतिन-गति रामायन।
श्रवन, अतुलगुन-गान रामके अश्वमेध-फल दायन ॥
पद-रज परसि शिला भइ तरुनी, तरनी[2] कञ्चन काया।
निरालंब लखि नाव हटायो, अहह, करौ प्रभु! दाया ॥
मंत्र तंत्र जप जोग ध्यान-रत स्वतः सिन्धु-भव पारा।
करुनसिन्धु तौ दीन-हीन-गुन मनुजन करौ उतारा ॥

पश्चिम उत्तर पूर्व्व तिन दिक देखे ❋ आसिया सकले कहे सबार सम्मुखे
नाना गिरि खुँजिनु देखिनु बहुदेश ❋ कोन देशे ना पाइनु सीतार उद्देश
रघुनाथ हइलेन शुनिया मूर्च्छित ❋ ताँहारे प्रबोध देय सुग्रीव सुहृत्
दक्षिण दिकेते प्रभु रावणेर घर ❋ से दिके गियाछे यत प्रधान वानर
अंगद गियाछे आर मंत्री जाम्बवान ❋ कार्य्य-सम्पादक संगे वीर हनूमान
बुद्धिर सागर बड़ वीर हनूमान ❋ अवश्य साधिबे कर्म्म, किछु नहे आन
तव कार्य्ये हनूमान बड़ह तत्पर ❋ अवश्य हइबे सीता ताहार गोचर
बुद्धिते पण्डित हनूमान महाशय ❋ हनूमान पावे सीता, ना करिह भय
स्थिर हइलेन राम राजार आश्वासे ❋ रचिल किष्किध्याकाण्ड कवि कृत्तिवासे

राम-नाम महिमा

'राम' नाम ब'ल भाइ, मुखे बार-बार ❋ भेवे देख राम विना गति नाइ आर
करिलेन अश्वमेध श्रीराम यतने ❋ अश्वमेध-फल पाय रामायण शुने
एमत रामेर गुण कि दिबे तुलना ❋ पादस्पर्शे शिला तर, नौका हय सोना
पार कर रामचन्द्र, पार कर मोरे ❋ दीन देखि नौका राम, ल'ये गेले दूरे
योग याग तंत्र मंत्र, जेइ जन जाने ❋ तारे कि ताराबे राम तबे निजगुणे
ध्यान पूजा मंत्र तंत्रे जार नाहि ज्ञान ❋ तारे यदि पार कर तबे भगवान

---

१ उनके हाथों २ नाव।

बिना छिदाम, किनारे हेरौं, बोरौ भले उबारौ।
माँझी सहज सुभाव, साँझ लखि बिना छिदाम उतारौ ।।
स्वामी पालन-प्रलय, सर्प-विष तुम विष-झारनहारे।
लीलानाथ सकल के मालिक, प्यादा सकल तिहारे ।।
नाम पतितपावन किमि कहिये, बिना पतित पर दाया।
साधुन सद्गति सदा, असाधुन तारिय तौ प्रभु-माया ।।
तव पद-रेनु अहिल्या तारी, क्षमहु नाथ! मम करनी।
भवसागर के पार हेतु तव युगुल चरन मम तरनी[1] ।।
लाख तजौ, तव पद-नूपुर ह्वै बाजि राम धुनि गावौं।
राम सरित लखि, कहुँ विराम, असनान करौं, सुख पावौं ।।
मकर, भवँर, पुनि प्रलय रहित शुचि शान्त राम-निर्झरनी,।
विमल मञ्जु मधुमय सलिला तजि अन्य कितै मलहरनी ।।
तृप्ति न, पावन नीर पान करि, पुनि-पुनि बढ़त पिपासा।
राम-सरित करि पार, न पुनि यहि दिसि की होय दुरासा ।।

दो० राम गंग सों पार ह्वै जनि लौटन मन दीन।
नाम-अमिय करि पान, बहि, पतित होय जल-लीन ।।

मोर संगे कड़ि नाइ, पार हब किसे ❋ कर वा ना कर पार, कूले अछि ब'से
नेयेर स्वभाव आमि जानि भाले भाले ❋ कड़ि ना पाइले पार करे सन्ध्याकाले
आपनि से भांग प्रभु, आपनि से गड़ ❋ सर्प ह'ये दंश तुमि, ओझा ह'ये झाड़
सकलि तोमार लीला, सब तुमि पार ❋ हाकिम ह'ये हुकुम दाओ, पेयादा ह'ये मार
अधम देखिया यदि दया ना करिबे ❋ 'पतितपावन' नाम कि गुणे धरिबे
साधुजने तराइते सर्व्वदेव पारे ❋ असाधु तरान जिनि, ठाकुर ब'लि ताँरे
अहल्या पाषाण ह'ये छिल दैववशे ❋ मुक्ति पद पाइल तव चरण परशे
पार कर रामचन्द्र रघुकुलमणि ❋ तरावारे दुटि पद क'रेछ तरणी
तुमि यदि छाड़ मोरे, आमि ना छाड़िब ❋ बाजन नुपुर ह'ये चरने बाजिब
राम नदी व'ये जाय देखह नयने ❋ ताहे गिया स्नान कर, कूले बसि केने
से नदीर मध्ये नाइ कुम्भीर हांगर ❋ झड़ वृष्टि ना पाइबे ताहार उपर
पिओ स्वच्छ सुशीतल सुमधुर जल ❋ कोथाय चलिया जाबे अन्तरेर मल
यतइ करिबे पान, ना मिटि'बे आशा ❋ जल पिते पिते पुनः बाड़िबे पिपासा
वारेक जाइले राम-नदीर ओपार ❋ एपारे आसिते नाहि हय, पुनर्व्वार
हेदे रे पामर लोक पार हबि यदि ❋ पिओ राम-नामामृत, व'ये जाय नदी

---

१ नाव।

पार उतारत, अमित गुन, अन्त जासु मुख राम ।
सो प्रानी सुरपुर लहै, यमपुर तासु न काम ।। ६० ।।

दक्षिण पाताल में सीतान्वेषण में विफलता

विफल तीनि-दिसि सकल प्रयासू ※ दच्छिन दिसि पुनि-कथा प्रकासू
बिन्ध्य-मात्र कपि-सैन प्रयासा[1] ※ बीतेउ सहज तहाँ इक मासा
मास अवधि बीती भय छावा ※ कपिगन जीवन-आस गवाँवा
दण्डक कानन ओर न छोरा ※ कपिन प्रवेश कीन बन घोरा
बीती कथा, विप्र सुत एका ※ वयस वर्ष दस छबि-अतिरेका[2]
वन्य-जन्तु द्विज-सुवन विनासा ※ विकल वनहिं द्विज शाप प्रकासा
जल फल फूल न इत संचारा ※ यहि बन, जीव न जन्तु गुजारा
कपिन विषम वन कीन प्रवेसू ※ तदपि सुलभ जनि सिय-उद्देसू
सम्मुख अन्य एक वन देखी ※ तहँ प्रवेश मन कीन विशेषी
कानन ज्यों कपिगन पग दीन्हा ※ दानव विकट नयनतर लीन्हा
भच्छहिं कीस, विकट दनु धावा ※ अंगद हाँक प्रकोपि लगावा
अहह लंकपति तैं दससीसा ※ तव तलास[3] भरमत भट कीसा

मृत्युकाले वारेक जे 'राम' बलि डाके ※ स्वर्गे जाय सेइ, यम दाँड़ाइया देखे
एमन रामेर गुण वर्णिते ना पारि ※ हेलाय तरिया जाबे, मुखे बल हरि

दक्षिण-पाताले सीतार अन्वेषणे वानरगणेर वैफल्य

तिन दिके विफल हइल अन्वेषन ※ दक्षिणदिकेर कथा शुनह एखन
दक्षिणेते यत ठाट करिल प्रयास ※ विन्ध्यगिरि अन्वेषिते गेल एकमास
मासेकेर अधिक हइले लागे डर ※ जीवनेर आशा छाड़े सकल वानर
विषम दण्डक वन नाहिक उद्देश ※ ताहाते वानर सैन्य करिल प्रवेश
पूर्व्वे तथा छिल एक ब्राह्मण-तनय ※ दश वर्ष वयस्क सुन्दर अतिशय
ए वनेर वन्य जन्तु ताहारे मारिल ※ पुत्र शोके ब्राह्मण वनेरे शाप दिल
तदवधि फल जल नाहिक सञ्चार ※ कोन जीवजन्तु तथा नाहि थाके आर
हेन वने वानरेरा करिल प्रवेश ※ तथा ना पाइल तारा सीतार उद्देश
अन्य वन ताहारा देखिल ये सम्मुखे ※ जानकीर अन्वेषणे सेइ वने ढुके
सकल वानर गेल वनेर भितर ※ देखे एक राक्षस देखिते भयंकर
धाइया आइल से वानर खाइवारे ※ रुषिल अंगद वीर जुझिते हाँकारे
आय बेटा बुझि तुइ लंकार रावण ※ आमरा भ्रमिया करि तार अन्वेषण

१ सीता की खोज करते २ अत्यंत सुन्दर ३ तलाश, खोज में ।

अभिरि बालिसुत निसिचर संगा ※ दोउ भट मत्त लपिटि रनरंगा
मानत हार न वीर समाना ※ जर्जर गात समर विधि नाना
अंगद प्रबल कबहुँ निसिचारी ※ छिति डगमग तिन भार बिचारी
दनु-उर अंगद मुष्टि प्रहारा ※ दनु अचेत मुख शोनित-धारा

दो० दनुज मरन, पुनि खेद अति, शोध न सिय-लंकेस।
बोले अंगद कपिन सन, बैठि बिटप-तर-देस ॥ ६१ ॥

हिय-कारन, आये यहि देसू ※ मास अवधि सों विगत विसेसू
बिन सिय-खबरि नृपति पहँ जाहीं ※ तौ अकाल परि प्रान नसाहीं
अंगद-वचन सबन मत एका ※ छानत बन बन जतन अनेका
अंगद कहेउ, कुशल सिय केरी ※ दुर्लभ, यदपि चतुर्दिसि हेरी
पितु-अनुजहिं मैं बाचा हारी ※ लौटहुँ मातु सिया उद्धारी
चहुँ दिसि दूर कटक पग धारै ※ लखैं कौन किमि काज सवाँरै
शोच न होनी[1], हित यहि माहीं ※ भल लखि दखिन, चलैं प्रभु पाहीं
सिय न शोध, तौ सब जन मरहीं ※ राम-मरन[2] पुनि सब अनुसरहीं
लखन-मरन परि[3] रघुपति-सोकू ※ पुनि सुग्रीव गमन यमलोकू

अंगदे राक्षसे लागिगेल हुड़ा-हुड़ि ※ हुड़ा-हुड़ि एड़िया उभये जड़ाजड़ि
कहे कारे नाहि जिने दुजने सोसर ※ आँचड़े कामड़े दोंहे हइल जर्ज्जर
क्षणे हेंटे अंगद, से क्षणेक उपरे ※ टलमल करे क्षिति उभयेर भारे
अंगद चापड़ मारे राक्षसेर बुके ※ अचेतन हइल से रक्त उठे मुखे
राक्षसेरे मारिया रहिल सेइ वने ※ किन्तु सीता ना पाइया सबे दुखी मने
विषादेते कपि सब वैसे गाछतले ※ अंगद उठिया सब बानरेरे ब'ले
आइलाम जानकीर जानिते विशेष ※ हइल मासेर ऊर्द्ध, ना जाइब देश
सीता ना देखिया जाब सुग्रीवेर पाश ※ जीवनेर आशा नाइ अवश्य विनाश
अंगदेर वाक्ये सबे हये एकमति ※ वन डाल उटकिल करि पाति-पाति
ना पाइया अंगद कहिल खेमकथा ※ देखिलाम सर्व्ववन, आर पाब कोथा
सत्य करि आछेन से खुड़ा महाशय ※ सीता उद्धारिब आमि कहिनु निश्चय
चारि दिके वीरगण गेले दूर देशे ※ देखि-देखि कोन वीर कि करिया आसे
जे होक से होक भावि, आपन कल्याण ※ समस्त दक्षिण देखि जाब रामस्थान
सीता न पाइले हबे सबार मरण ※ आगे मरिबेन राम, शेषे अन्यजन
तारपर लक्ष्मण मरिबे ताँर शोके ※ अनन्तर सुग्रीव जाइबे यमलोके

१ होनहार २ सीता के वियोग में पहले राम का मरण ३ पड़कर।

तबहिं सुरंग गहन लखि पाई ❋ नीर न, कलरव[1], खग समुदाई
निकट न नीर न फल लवलेसू ❋ पच्छिन सोर[2] अनन्त असेसू
कौतुक लखि मन चिन्तन करहीं ❋ बिन जल खग-धुनि किमि सुनि परहीं
करत परस्पर तर्क विशेषा ❋ देत ध्यान कपिगन तहँ देखा
कोटर-तट बड़ विटप लखाई ❋ लीन छलांग चढ़े तरु जाई
चहुँ दिसि शाखन दृष्टि पसारी ❋ लखत न कहुँ कछु शाखाचारी[2]
तरु महँ द्वार सुरंग विलोका ❋ तम चहुँ, शशि न भानु-आलोका

दो० कोटर गहन प्रवेस किमि, सोचत होनी होय ।
पौरुष धारि सुरंग बिच, धँसे बहुरि सब कोय ।। ६२ ।।

कर महँ कर लीन्हे कपि-यूथा ❋ चलत, करत मत[3] कीस-वरूथा
मर्म - सुरंग जानिबे जोगू ❋ होनी भले मरहिं सब लोगू
कपिगन दृढ़ विचार इमि कीन्हा ❋ निपट अँधेर द्वार पग दीन्हा
चलत अंध जिमि लकुटि[4] सहारे ❋ गिरत, घोर तम, अभिरि बिचारे
हाँथन-हाँथ, न ओर न छोरा ❋ कपिगन-मन विषाद घनघोरा
जोति न, दुर्गम पथ किमि धारन ❋ सोचत फिरहिं, मरन केहि कारन !

चाहिते चाहिते देखे एकगोटा बिल ❋ जल नाइ, पक्षी तथा करे किल-किल
खाल फल ना देखि, निकटे नाह जल ❋ नाना पक्षि कलरव शुनि जे केवल
आश्चर्य्य देखिया तारा भावे मने-मने ❋ जल नाहि, शब्द शुनि किसेर कारने
केह ब'ले देखि इहा हय कि कारण ❋ दाण्डाइया भावे तथा सब कपिगण
बड़ गाछ आछे एक से बिलेर पाड़े ❋ लाफ दिया कपि सब सेइ गाछ चड़े
चारिदिके चाहे, नाहि हय दरशन ❋ शाखाय शाखाय फिरे शाखामृग गण
गाछे थाकि देखे तारा सुड़ंगेर द्वार ❋ चन्द्र सूर्य्य दीप्ति नाहि, महा अन्धकार
सुड़ंग देखिया तारा भावे मने-मने ❋ जाइब इहार मध्ये आमरा केमने
जे होक से होक, साहसे करि भर ❋ सकल वानर जाय सुड़ंग भितर
हाताहाति करि जाय सकल वानर ❋ जाइते-जाइते युक्ति करिल विस्तर
दैवे हय होक आमा सबार मरन ❋ बुझिब इहार धर्म्म, जानिब कारन
सुड़ंगे प्रवेशे एइ करिया विचार ❋ सुड़ंगे चलिल सबे महा अन्धकार
अन्धकारे जाय येन हाथे करि लड़ि ❋ हुड़ाहुड़ि करे कहे जाय गाय पड़ि
हाता-हाति जाय सबे, ना पाय सञ्चार ❋ सकल वानर तबे भाविल असार
देखिते ना पाइ किछु जाइब केमने ❋ फिरे चल, उठि गिया मरि कि कारने
केह ब'ले नामियाछि या हबार हबे ❋ एसेछ सुड़ंग पथे केन फिरे जाबे

१ चहचहाना २ वानर ३ सलाह करते ४ लाठी ।

विधि प्रणम्य[1], कौउ मनै बिचारी ※ दै पग पुनि किमि पाँव पछारी
चलत अंध, पथ बिन पहिचाने ※ तृषा-त्रसित कपि-कण्ठ सुखाने
कपिगन पवन-तनय अनुसारे ※ लकुटि लिये मनु अंध बिचारे
वीर साहसी हनुमत आगे ※ नयनहीन मनु पाछे लागे
कहत सुभट बरनहु हनुमाना ※ कत[2] योजन प्रकाश अनुमाना ?
कतक दूरि चलि सुलभ प्रकासू ※ कहेँउ पवनसुत उचित न त्रासू
उर, मम रहत, शंक परिहरहू ※ कपिगन सकल मोहिं अनुसरहू
शत योजन चलि कोटर पारा ※ तहँ इक गृह अद्‌भुत आकारा
मारुति-वचन सबन बल आवा ※ कपिन मन्द गति पैज[3] बढ़ावा
बुद्धि-वृहस्पति, हनुमति वीरा ※ कर धरि सबन लगायेंउ तीरा

दो० क्रमशः पार सुरंग करि, उतरे संकठ पार ।
अखिल बानरन लखेंउ पुनि, गृह अद्‌भुत आकार ।। ६३ ।।

सुबरन तरु सुबरन प्राचीरा ※ सुबरन मीन-पद्म तेंहि नीरा
लखत स्वर्णमय नगरी सारी ※ विस्मित कपिगन ताहि निहारी
सुरभि समीर फूल फल नाना ※ रसना प्रबल क्षुधातुर प्राना
उदर न अन्न न जल, दुख पाये ※ प्रचुर फूल-फल सबन लुभाये

अन्धकारे चलि जाय नाहि देखे बाट ※ पिपासाय सकलेर गला हैल काठ
अन्धकारे जाय सबे आगे हनुमान ※ हाते लड़ि करि जेन लये जाय कान
आगे हनूमान वीर चलिल साहसे ※ अंधलोके चले येन पड़े आशेपाशे
वीर गण बले शुन पवननन्दन ※ प्रकाश हइब गेले कतेक योजन
आर कत पथ गेले पाइब प्रकाश ※ हनूमान कहे, केह ना करिओ त्रास
आमि संगे जाव तबे विषम कि आछे ※ सकल वानरगण एस मोर पाछे
योजन शतेक गेले तबे हइ पार ※ एक गृह आछे तथा अद्‌भुत आकार
हनूमान वाक्येते साहसे करि भर ※ धीरे-धीरे चले तथा सकल वानर
हनूमान महावीर बुद्धे वृहस्पति ※ सबार करिल पार करि हाताहाति
धीरे-धीरे संकटे सकले हय पार ※ देखिते पाइल गृह अद्‌भुत आकार
सोनार प्राचीर तार स्वर्णमय गाछ ※ स्वर्णपद्म जले देखे स्वर्णमय माछ
पुरीखान देखिल सकल स्वर्णमय ※ देखिया वानरगण हइल विस्मय
अपूर्व्व पुरीर शोभा स्वर्ग सविशेष ※ सबे ब'ले, अनुमान एइ कोन देश
नाना फूल फल देखि सुगन्ध वातास ※ क्षुधातुर सकले खाइते करि आश
अन्न जल पेटे नाइ क्षुधाय दुःखित ※ फल फूल देखि मने बड़ हरषित

---

१ प्रणाम करके २ कितने ३ पैर, कदम ।

कन्या एक मात्र[1] तेंहि नगरी * तेंहि समीप कपि सेना डगरी[2]
त्रिशत प्रकोष्ठ[3] मध्य अतिरूपा * निवसि देति जग जोति अनूपा
कैधौं सुता उमा छबि-खानी * तिलोत्तमा रम्भा इन्द्रानी
कामधेनु-वत भृकुटि विशाला * सेंदुर अरुण सरिस छबि-भाला
चन्दन भाल बिन्दु कजरारी * चन्द्र हृदय छबि-श्याम पधारी
भ्रुव[4] बिच चन्दन विमल प्रकासा * मनहुँ उदित अर्द्धेन्दु[5] अकासा
बिन्दु - बिन्दु गोरोचन शोभा * अलका-तिलकावलि[6] मन लोभा
रतन जोति पद अंगुलि लाली * छबि अनूप गति हंस निराली
कटि किंकिणी शंख कर चूरी * नूपुर धुनि रुनझुन अति रूरी[7]
पीठ लालरी झलकति ऐसे * मणि-विद्रुम चूनरि तन जैसे
गौर वरन[8] तन सुरभि सुगंधा * महकत मनु चहुँ चम्पक-गन्धा
शंख - वलय[9], भुजबन्द सुहाये * अभरन विविध गात छबि छाये

दो० पायजेब, पायल, अमित आभूषन पद सोह।
निरखि बिरागिन तासु छबि बरबस उपजत मोह ॥ ६४ ॥

नगरी विच एकाकी बाला * छटा अलोकत पुरी पताला
कपिगन सकल बन्दि पद रहहीं * पुनि कर जोरि पवनसुत कहहीं
हम पशु-वन्य सदा वनचारी * अति क्षुधार्त्त पथ-दिशा बिसारी

पुरीर भितरे मात्र एक कन्या आछे * सकल वानर गेल से कन्यार काछे
त्रिशत प्रकोष्ठ मध्ये हय से आवास * कन्यार रूपेते करे जगत् प्रकाश
सुन्दरी से कन्या बुझि हरेर घरणी * रम्भा तिलोत्तमा किंवा इन्द्रेर इन्द्राणी
शोभित युगल भ्रुरु येन कामधेनु * कपाले सिन्दूर फोटा प्रभातेर भानु
चन्दन चन्द्रमा कोले कज्जलेर बिन्दु * भ्रुरु युग उपरेते उदित अर्द्ध-इन्दु
विन्दु-विन्दु गोरोचना शोभा करे अति * अलका तिलका रेखा अर्द्ध-अर्द्ध पाँति
रतन रञ्जित तार पदांगुलि सब * राजहंस जिनि गति रूपे अभिनव
करे शंख कंकण किंकिणी कटि माझे * रतन नूपुर पाय रुनुझुनु बाजे
पृष्ठे लोटे स्पष्ट रूपे प्रवालेर झाँपा * गौर गाय गन्ध करे गन्धराज चाँपा
कड़ा छड़ा बाजूबन्द शंखेर उपर * जेखाने जे शोभा करे परेछे विस्तर
दुइ पाये शोभित परेछे गोटा मल * ब्रह्मचारी आदि लोक देखिया पागल
पुरीर भितर कन्या आछे एकेश्वरी * कन्या रूपे आलो करे रसातल पुरी
ताहारा सकले वन्दे कन्यार चरन * जोड़ हाते ब'ले वीर पवननन्दन
आमरा बनेर पशु बने करि बासा * क्षुधाय न देखि पथे लागियाछे दिशा

---

१ अकेली २ धीरे धीरे पहुँची ३ कमरे ४ भौंहें ५ अर्द्धचंद्र ६ मुख पर चन्दन रेखाचित्र ७ अति सुन्दर ८ गोरा रंग ९ शंख की चूड़ी।

शासन-भय परि सकल असारा ※ नतु जल, फल, वन मात्र गुजारा
दुर्जय भटकि रसातल आये ※ लहि तव दरस प्रान मनु पाये
अमित तोष तव दरसन पाई ※ पितु, पति-परिचय दीजिय माई!
यहि छन उत्कण्ठा मम येही ※ निज परिचय रूपसि[१]! मोंहि देही
नगर, निवास, तडाग-अधीपा ※ बरनउ सकल प्रसंग समीपा
दिव्य सरोवर पुरी अनूपा ※ आय फँसे कह अति भयरूपा
पवनतनय सों सुता बखाना ※ पितु सुमेरु मम गिरिन प्रधाना
मैं 'सम्भवा' सखी मम 'हेमा' ※ पुरी-चौकसी[२] मम नितनेमा
सखी-वचन, रच्छहुँ यहु देसू ※ सम्भव जनि मम ओट[३] प्रवेसू
मयदानव विरचित आवासू ※ हेमा-सह दनु इतै विलासू
गान नर्त्त गुन वेष अनूपा ※ हेमा त्रिभुवन-जयी सुरूपा
तेंहि छबि मुग्ध दनुज नहिं चैना ※ रति अनवरत[४] रमत दिन रैना
चिर विलास हेमहिं अति क्लेसू ※ उठत न गात छीन तन शेषू

दो० दनुज अत्ति[५] सों त्रसित अति, हेमा गई पलाय[६]।
जहाँ मिलै, धरि लावई, तेंहि हेरत दनु जाय ॥ ६५ ॥

राजभये हइयाछे जीवन असार ※ खोलि जुली वन आदि चाहिनु संसार
दुर्ज्जय पातालेते आमरा सबे आसि ※ तोमा देखि बाँचिलाम, मने हेन बासि
हइलाम बड़ तुष्ट तोमारे देखिया ※ परिचय देह कन्या, तुमि कार प्रिया
बड़ह कातर मोरा ह'येछि एखन ※ परिचय देह कन्या, तुमि कोन जन
काहार वसति घर कार सरोवर ※ कृपा करि कह कन्ये, कार अवान्तर
अपूर्व्व पुरीर शोभा दिव्य सरोवर ※ कार पुरी आइलाम, बड़ पाइ डर
कन्या ब'ले शुन वीर मम परिचय ※ सुमेरु पर्व्वत श्रेष्ठ मम पिता हय
सम्भवा आमार नाम, हेमा मोर सखी ※ हेमार वचने आमि एइ पुरी राखि
एइ आवासेर रक्षा आछे मम करे ※ आमा आगे करे केह आसिते ना पारे
मय नामे दानवेर रचित आवास ※ हेमा सह मय करे एखाने विलास
नृत्येते नर्त्तकी हेमा गानेते गायनी ※ रूपे वेशे गुणे हेमा त्रिभुवन जिनि
रूपे मयदानवेरे मुग्ध करे हेमा ※ अविरत रति करे तार नाइ क्षमा
रात्रि दिन रमणे हेमार हय क्लेश ※ उठिते ना पारे हेमा, प्राय तनु शेष
दानवेर शृंगारे पलाय हेमा त्रासे ※ दानव चलिल सेइ हेमार उद्देशे
जेखाने पाइबे तारे आनिबे धरिया ※ एइ बेला पलाओ हे सेइ पथ दिया

---

१ हे सुन्दरी! २ पुरी की रक्षा ३ मेरी निगाह बचाकर ४ निरन्तर
५ हद से ज्यादा ६ भाग गई।

निसिचर दुष्ट दुरंत कराला ※ कपिगन तजहु देस तत्काला
सम्मति कासु[1], कासु उपदेसू ※ दुर्जय कान पताल प्रवेसू ?
तेहि आगमन न केहु निस्तारा ※ बेगि रसातल निकरहु पारा
बोले पवनतनय, सुनु गाथा ※ हम कपि सकल दूत-रघुनाथा
दशरथ-सुत सर्वोपरि रामा ※ महामहिम अतुलित गुणधामा
पिता-वचन धरि कानन आये ※ संग-अनुज तिन लखन सुहाये
संग भामिनी सीय ललामा ※ सहज स्वभाव सहचरी-रामा
तीनिउ जन निवसत वन देसू ※ सीता हरन कीन लंकेसू
आकुल अतिशय विरहित-भामा ※ वन-वन भ्रमत निरन्तर रामा
तहँ रघुपति-सुग्रीव मिताई ※ भये उभय[2] मिलि उभय सहाई
कीन, बालि बधि, नृपति कपीसा[3] ※ सिय-उद्धार भार कपि-सीसा
भरमत बन आयसु-कपिकेतू ※ अब लौं मिलेउ न सिय-संकेतू
मास अवधि कपिपति निर्धारी ※ सो व्यतीत उर अति भयकारी
सलिल हेतु हेरत तरु तीरा ※ खोजत इत आये हम नीरा
साँच सबन अति फल-अभिलाषा ※ उर ससपंज[4] चितै तुम पासा
फल-तृष्ना कपि सहज लुभाई ※ पके अधपके तरु चढ़ि खाई

बड़ह दुरंत से दानव दुष्टजन ※ एखान हइते जाह सब कपिगन
कोन जन हइते पाइले उपदेश ※ दुर्ज्जय पाताले केन करिले प्रवेश
शीघ्र जाह, बिलम्ब कि हेतु कर आर ※ दानव करिले कारो नाहिक निस्तार
हनूमान ब'ले कन्या शुन विवरन ※ आमरा रामेर दूत सर्व्व कपिगन
रामचन्द्र दशरथराजार कुमार ※ सर्व्वज्येष्ठ गुणश्रेष्ठ महिमा अपार
आइलेन पितृ-सत्य पालिते कानन ※ ताँर संगे आइलेन अनुज लक्ष्मण
श्रीराम-रमणी सीता परमा सुन्दरी ※ स्वभावत: सतत रामेर सहचरी
बने बास करियाछिलेन तिन जन ※ रामेर रमणी सीता हरिल रावण
सीतार बिरहे राम हइया कातर ※ वने वने भ्रमण करेन निरन्तर
दैवयोगे सुग्रीवेर सहित मिलन ※ हइलेक उभयेर सख्य संघटन
बालि बधि, राम राज्य दिलेन सुग्रीवे ※ सुग्रीव करिल सत्य सीता उद्धारिबे
सुग्रीवेर आदेशे बेड़ाइ नाना देश ※ अद्यापि ना पाइलाम सीतार उद्देश
मासकेर तरे राजा करिल निश्चय ※ मासकेर अधिक हैल बड़ बासि भय
गाछ हैते देखिया आमरा ए सकल ※ जलेर उद्देशे आइलाम एइ स्थल
मुखे कथा कहे तारा फल पाने चाय ※ मने तोलापाड़ा करे कन्यारे डराय
वानर देखिया फल हइब विकल ※ साध हय पेड़े खाय काँचा पाका फल

दो० कपि क्षुधार्त्त, लखि सुन्दरी, बोली ममता पाय ।
खायँ सर्वथा मोद भरि, कपिगन तरु फल जाय ॥ ६६ ॥

खाहु जितै रुचि फल मनमाने ※ कपिगन सकल सुनत हरषाने
मन भावै सो बैद बताई ※ उलरि छलाँग भरेउ तरु जाई
खायँ दुहुन कर डारि नसावैं ※ भरि कपोल कपि बोलि न पावैं
मृदु मद-गंध ताल-तरु जाई ※ भरि-भरि उदरन छुधा नसाई
अति परिपक्व दाबि रस लेहीं ※ अधखाये चलाय कछु देहीं
चूसि, चिचोरि, उदर रस भरहीं ※ मन-मन मगन, मोद उर धरहीं
खाये जहँ लौं उदर समाये ※ दूभर[1] चलब, पेट तनि आये
कपिगन तृप्ति पाय सब भाँती ※ किय सुन्दरिहिं? विनय प्रणिपाती
तव प्रसाद निवरैं सब क्लेसू ※ केहि पथ जाहिं, करौ उपदेसू
जब लौं दनुज न इतै प्रवेसा ※ तेहि बिच चलैं त्यागि यहु देसा
दनु-भय विपुल, सुमुखि! मन दीजै ※ बेगि पन्थ दै बाहेर कीजै
निर्देसत पथ गमनत बाला ※ कपिन अनुसरन किय तत्काला
चलत, घूमि पुनि लखत पछारी ※ आवै कहुँ न दनुज भयकारी

वानरेर इच्छा बुझि कन्या मने गणि ※ फल खाइवारे कन्या बलिल आपनि
बड़ह क्षुधार्त्त देखि हइल ममता ※ कन्या ब'ले फल खाओ, दिलाम सर्व्वथा
इच्छामत फल खाओ यत आसे मने ※ शुनिया हरिष चित्त यत कपिगणे
एक चाय आर आज्ञा पाइल वानर ※ लाफ दिया उठे गिया गाछेर उपर
दुइ हाते फल खाय भांगे आर डाल ※ मदगन्धे पाता खाय पूर्ण करि गाल
पक्व ताल लइया बसिल शाखापरे ※ क्षुधाय कातर खाय यत पेटे धरे
कतगुला पाका फल निङाड़िया खाय ※ आध खाओया करि कत टानिया फेलाय
कतक कामड़े खाय चुषि कत फल ※ मने मने खुसि रसे उदर पूरिल
फल फूल खाइया करिल माथा हेंट ※ नड़िते चड़िते नारे, भारि हइल पेट
करिया वानरगण उदर पूरण ※ निवेदन करि बन्दे कन्यार चरण
तोमार प्रसादेते खण्डिब सब क्लेश ※ कोन पथे बाहिरिब कह उपदेश
यावत् एखाने कन्या, दानव ना आसे ※ तावत् बाहिर हैया जाइ अन्यदेशे
बड़ भय हय कन्ये, दानवेर तरे ※ त्वराय बाहिर कर सकल वानरे
पथ देखाइते कन्या आपनि चलिल ※ सकल वानर तार पाछे गोड़ाइल
पलाय वानरगण, पाछू पाने चाय ※ दानव आसिया पाछे पश्चाते खेदाय

---

१ अति कठिन ।

मयदानव सों बचैं न प्राना * त्रान सुन्दरी मात्र लखाना
द्वार सुरंग पार किय बाला * लखहु कीसगन सिन्धु विशाला
सलिल अगम यहु दक्षिण सागर * बिन्ध्य-मलय इत, बुद्धि-उजागर !

छ० रामजन्म सों साठि सहस वत्सर पूरुब रामायन ।
भवतारन जो, बालमीकि मुनि कीन ब्रह्म-गुन-गायन ।।
गुह पर दया, तरनि पाषाणी, वेद-अगम नारायन ।
'मरा-मरा' कहि राम कृपा सों बालमीकि तारायन ।।

दो० बालमीकि वन्दन प्रथम, पुनि वन्दन कृतिवास ।
मंजुल भाषा भारती महँ मृदु काव्य प्रकास ।। ६७ ।।

(सीता अन्वेषणार्थ अंगद-हनुमानादि में मंत्रणा)

निकरि रसातल सों कपि आये * सकल अंगदहिं सीस नवाये
खोजेंउ सबन प्रवेसि पताला * कतहुँ न सिया, न लंक-भुवाला
कहेउ बहोरि बालि-सुत वीरा * सुनहु कथन मम सब धरि धीरा
खोजहिं सीय—अवधि इक मासा * अवधि-पार कपि सबन बिनासा
बकसैं[1] अन्य भले, सुग्रीवा * निसिचय हरन करैं मम जीवा
जेठ बन्धु जिन सहज निपाता * तिन समीप मैं कौन बिसाता[2]

पराणे मारिबे सबे कार नाहि रक्षा * उपाय केवल देखि, ए कन्या सपक्षा
सुड़ंगेर द्वारे कन्या हइया बाहिर * देखाय वानर प्रति सागर गभीर
एइ जल देख सबे सागर दक्षिण * विन्ध्याद्रि मलयगिरि देखह प्रवीण
श्रीरामेर आगे षाटि सहस्र वत्सर * अनागत पुराण रचिल मुनिवर
वाल्मीकि बन्दिया कृत्तिवास विचक्षण * शुभक्षणे प्रवेशिल वेद - रामायण
चण्डाले करिल दया बड़ सकरुण * पाषाणेते निशान रहिल तार गुण
तारक ब्रह्म राम नाम अनन्त महिमा * चारि वेदे विचारिया दिते नारे सीमा
असीम रामेरे गुण कि बलिते जानि * मरा मंत्र जपिया बालमीकि हैल मुनि

सीता अन्वेषणार्थ हनूमानादिर मन्त्रणा

पाताल हइते उठि सकल वानर * जोड़ हाते दाण्डाइल अंगद गोचर
पाताले प्रवेशि मोरा सकल वानर * कोथाओ ना देखिलाम सीता लंकेश्वर
बलेन अंगद वीर, हे वानरगण * सावधान हैया शुन आमार वचन
सीता-वार्त्ता जानिते हइल एक मास * मासेर अधिक हैले सबार विनाश
अन्येर जे होक मम संशय जीवन * सुग्रीव मारिते मोरे करियाछे पन
भ्रातारे मारिते यार ना हैल ममता * आमारे मारिबे से एवा कोन कथा

दच्छिन-कर करि पावक साखी ※ सो कपीस जनि छन भर राखी
पितु विहीन, किय प्रभु युवराजू ※ भूलि नृपति मम करै अकाजू
जनि पितृव्य[1] मोह मम हेतू ※ अवसर पाय हनै कपिकेतू
जनक-अनुज सों मम निस्तारा ※ कतहुँ न कपिगन मम उद्धारा
कातर अंगद विनय प्रमाना ※ आस न जीव, तजब अब प्राना
'तारक' कीस बुद्धि बहु पावा ※ बालिसुतहिं बहु युक्ति बुझावा
भय-सुग्रीव जाहिं नहिं देसू ※ सब चलि करहिं पताल प्रवेसू
राज्य-भोग, सुबरन आवासू ※ परम मोद तहँ सुखद निवासू
सलिल दिव्य सेवन फल फूला ※ तहँ सुग्रीव केर जनि शूला
का करि सकैं तहाँ कपिनाथा ※ तहाँ न भय लछिमन-रघुनाथा

दो० कपिगन! सुनहु निचिन्त[2] ह्वै बसइँ रसातल जाय ।
राम लखन सुग्रीव कर, तहँ जनि चलै उपाय ।। ६८ ।।

तारक-कथन सबन मन माना ※ सो सुनि मनन करत हनुमाना
वचन प्रमाद, न समुचित बानी ※ धरि सुबुद्धि निज युक्ति बखानी
किमि मम रहत राम-हित हानी ※ सभा निहारि कहत मृदुबानी
सीस भार, सो सकल बिसारा ※ अन्य काज, युवराज! सम्हारा

दक्षिण हस्तेते राम अग्नि साक्षी करे ※ यत हित करिलेन सकल पासरे
आमि युवराज नहि पिता विद्यमाने ※ से पद दिलेन राम आमारे विधाने
खुड़ार गणेते नहे आमार सम्बन्ध ※ आमारे मारिते खुड़ा करेन प्रबन्ध
आमारे मारिबे खुड़ा, ना हय खण्डन ※ आमार निस्तार नाहि, शुन कपिगण
जोड़ हाते कपिगणे कहिछे काहिनी ※ जीवनेर आशा नाहि त्यजिब पराणी
तारक वानर छिल बुद्धे बृहस्पति ※ अंगदेरे बुझाय से उत्तम प्रकृति
सुग्रीवेर भय हेतु ना जाइब देश ※ सकले पाताले गिया करिब प्रवेश
राज्यभोग आछे तथा सोनार आवास ※ परम आनन्दे तथा करिब निवास
फूल फल खाब तथा जल सुवासित ※ सुग्रीवेर भय यथा ना कर किञ्चित्
कि करिबे सुग्रीव से श्रीराम-लक्ष्मण ※ कोन भय ना करिह, शुन मित्रगण
निश्चिन्ते थाकिब गिया-पाताल भुवने ※ कि करिबे सुग्रीव श्रीराम-लक्ष्मणे
तारकेर वाक्ये सबे करे अनुमति ※ मने मने हनूमान करेन युकति
प्रमाद वचन नाहि भावे हनु वीर ※ आपनार मने बुद्धि करिलेन स्थिर
मोर विद्यमाने राम कार्य्ये हय हानि ※ सभार मध्येते हनूमान कहे वानी
हनूमान ब'लेन अंगद युवराज ※ एक कार्य्ये आसि तुमि कर अन्य काज

---

१ चाचा २ निश्चिन्त, बेखटके ।

लिये कपिन सोचत विपरीता ※ उचित न तव यहु कथन प्रतीता
भजहु[1] पताल कुमति अतिरेकू[2] ※ धर्माधर्म न होय विवेकू
सकल सुकण्ठ विदित, कहँ त्राना ※ कतहुँ पलायन जनि कल्याना
साँच न आँच, कहौं तुम पाहीं ※ कपिगन तव न अनुसरन जाहीं
किष्किधा तिय-सुत-परिवारा ※ तिन तजि किमि तव संग गुजारा
तव हित पुत्र-कलत्र न त्यागी ※ भरमहु बन अकेल हतभागी!
जो पताल चलि उबरैं प्राना ※ जियत सर्वदा अपजस नाना
तव पितु हनेउ एक प्रभु सायक ※ कहँ निस्तार बिना रघुनायक
रामहिं कपिपति[3] खबरि जनाये ※ बसि पताल केहि बिधि बचि पाये
किमि निर्भय, कहु किमि सुखदायक ※ द्वार सुरंग हनै प्रभु-सायक
पूजित जगत विष्णु अवतारा ※ तिन रघुपति प्रति किमि कुविचारा
किमि दुर्बुद्धि-वचन युवराजा ※ वीर पलायन! कहत न लाजा

दो० यतक दूरि पथ जाइ पुनि, चौथाई बिन पार।
पौरुष तजि, अनुचित इतैं, धरिबो अशुभ विचार ॥ ६९ ॥

मिलै न सिय, यदि लखि सब देसू ※ लहैं सरन चलि कोस-नरेसू
सदा सुकण्ठ धर्म उर धरहीं ※ बूझि दोष-गुन समुचित करहीं

कोन युक्ति कर तुमि ल'ये कपिगन ※ तोमार उचित नहे ए सब कथन
पलाइया जाबे तुमि पाताल भुवने ※ धर्म्माधर्म्म किछु ना भाविले केन मने
पलाइबे कोथाय, सुग्रीव सब जाने ※ पलाइया बाँचिते नारिबे कोन खाने
उचित ब'लिते तोमा आमार कि डर ※ तोमार सहित केबा पलाबे वानर
स्त्री पुत्र लइया करे किष्किन्ध्याय वास ※ तोमा लागि के छाड़िबे स्त्री-पुत्रेर आश
तोमा हेतु स्त्री-पुत्र छाड़िबे कोन जन ※ एकाकी केवल तुमि फिर वने-वन
मने कर पलाइया पावे अव्याहति ※ यतकाले जीबे तव थाकिबे अख्याति
तोमार बापेरे राम मारे एक बाणे ※ ताँर हाते छाड़ाइबे गिया कोन खाने
सुग्रीव बलिछे रामे बारता सम्प्रति ※ पाताले बसिया तुमि न पाबे निष्कृति
निर्भये केमने तुमि पाइबे निस्तार ※ रामबाणे मुक्त हबे सुड़ंगेर द्वार
विष्णु अवतार राम जगते पूजित ※ तोमार एमन युक्ति ना हय उचित
निर्बुद्धि तोमारे ब'लि, शुन युवराज ※ वीर हये पलाइबे, मुखे नाहि लाज
यतदूर जाबे तार चोटि नाहि आसि ※ अनर्थक युक्ति कर, भाल नाहि बासि
सर्व्व देश देख यदि नहे दरशन ※ सुग्रीवेर ठाइ गिया लइब शरण
धार्म्मिक सुग्रीव राजा धर्म्मेर चरित ※ दोष-गुण बुझिया से करिबे उचित

१ भागो २ सीमा पार (अतिरेक) ३ सुग्रीव द्वारा राम को।

भय बस निपट पलायन दोषू ※ चलि प्रभु-सरन लहैं तिन तोषू
नृप-आयसु निरखहिं सब देसा ※ अमिट दैवगति अर्पहिं शेसा
नृप तटस्थ करि तुमहिं प्रधाना ※ तव प्रसाद भय हमहिं न ज्ञाना
सभा मध्य हनुमान लजावा ※ अंगद तिन्हहिं प्रकोपि सुनावा
जेठ सरिस-पितु शास्त्रन गावा ※ तासु तीय नृप नारि बनावा
नारिहिं पर-जन तनय सरूपा ※ पर-नारी पुनि जननी रूपा
पितु सम अग्रज[1] शास्त्र विधाना ※ तेहि बनिता पुनि जननि समाना
सो सुग्रीव हरति सुख पावा ※ सिय हित मोहिं कुदेस पठावा
राम काज बिन होय विषादा ※ मारुति! मरन मोर अविवादा[2]
तुम सुग्रीव सधर्म बखाना ※ धर्माधर्म जिन्हहिं जनि ज्ञाना
राम-लखन पुरुषार्थ सराहा ※ छल करि हनेउ बालि नरनाहा
सम्मुख समर लेत जो रामा ※ लखत जनक मम कस बलधामा
करत गुजारिस[3] जो पितु पाहीं ※ धरि लावत रावन छिन माहीं
जानत, कहँ सिय? कहँ लंकेसू? ※ वृथा न कपि भरमत दिग्देसू

दो० सन्ध्या तर्पन नित करत, चारिउ सिंधु समीप।
तुमहिं अजान न पवनसुत, भुजबल बालि महीप ॥ ७० ॥

भय करि पलाइले बड़ हबे दोष ※ हइले शरणापन्न रामेर सन्तोष
जे देश ब'लिल राजा जाइब से देशे ※ तारपर या हवार हइबेक शेषे
तोमारे प्रधान करि से सुग्रीव बैसे ※ तोमार प्रसादे आमादेर भय किसे
कुपिल अंगद हनूमानेर वचने ※ लज्जा दिल हनुमान सभा विद्यमाने
ज्येष्ठभ्रातृ-रमणी राजार विवाहिता ※ शास्त्रमत ज्येष्ठे हय कनिष्ठेर पिता
अपर पुरुषे माता पुत्र हेन गणि ※ अपरन्त परजाया जेमन जननी
ज्येष्ठ भाइ पित सम सर्व्व शास्त्रे कय ※ तार पत्नी केवल मायेर तुल्य हय
ज्येष्ठभ्रातृ जाया हरे किसेर बाखान ※ जानिते सीतार वार्त्ता पाठाय कुस्थान
कार्य्य ना करिले राम हइबेन दुःखी ※ सर्व्वथा आमार मृत्यु हनूमान देखि
धर्म्माधर्म्म तार देखि वीर हनूमान ※ कोन कार्य्ये भाल नहे सुग्रीवेर ज्ञान
श्रीराम-लक्ष्मण कार्य्य करिलेन यत ※ चोरा-युद्धे आमार पितारे करे हत
सम्मुख समर यदि करितेन पिता ※ के केमन वीर तुमि तबे त जानिता
राम केन ना ब'लिलेन आमार बापेरे ※ गले धरि आनितेन राजा लंकेश्वरे
जेखाने थाकित सीता, जानित रावणे ※ तबे केन सीता लागि दुःख कपिगणे
तुमि किवा नाहि जान वीर हनूमान ※ पिता चारि सागरे करे सन्ध्या स्नान

---

१ वड़ा भाई २ निर्विवाद, निश्चय ३ प्रार्थना।

करि दिग्विजय लंकपति धावा ※ किष्किन्धा पितु जीतन आवा
आह्निक-रत[1] पितु सागर तीरा ※ लखेउ न गृह तिन रावन वीरा
पृष्ठ भाग रावन धरि बाली ※ स-बल कीन दशमाथ कुचाली
ध्यान भंग जनि, पूँछ घुमाई ※ बाँधि लंकपति सिंधु डुबाई
योजन पूँछ-कपीस पचासा ※ बाँधि दनुज पुनि लीन अकासा
छन बोरत अकास छन ताना[2] ※ ऊछू[3] जात कण्ठ-गत प्राना
चारि सिंधु जप-तप अवशेसू ※ साँझ आगमन पितु निज देसू
तहँ रावन दशशीस नवाई ※ किष्किधा तृण दाँत दबाई
पिता दया-बस छाँड़ेउ तेही ※ तत्क्षण लंक शरण दनु लेही
सो रावन अब सिया चुरावा ※ तेहि कारन हम सब दुख पावा
मम पितु-शरण लेत जो रामा ※ खल दसमुख पठवत यमधामा
राम भूप ह्वै कीन कुकर्मा ※ पितु निपाति किय पूर्ण अधर्मा
निज अधरम दुख रामहिं नाना ※ धर्म - मर्म सोचहु हनुमाना
राम काज बिन सधे विषादू ※ सबबिधि मोर मरन अवसादू[4]
सुग्रीवहिं जस, मरन हमारा ※ बिन सिय-शोध तजैं संसारा

दिग्विजय करिया से बेड़ाय रावण ※ पितारे जिनिते एल किष्किंध्या भुवन
रावण देखिल, मोर बाप नाहि घरे ※ आह्निक करेन पिता सागरेर तीरे
पाछू बाटे रावण धरिल मोर बापे ※ सापटिया धरिल से अतुल प्रतापे
ध्यान भंग ना हइल लेजेते बाँधिया ※ सागरेते रावणेरे फेले डुबाइया
दीर्घल पितार लेज योजन पञ्चाश ※ रावणे तोलेन पिता उपर आकाश
क्षणे तुलि नभःपरे डुबान से नीरे ※ नाकानि डुबानि खेये बेटा शेषे मरे
चारि सागरेर तथा हय अवशेष ※ सन्ध्याकाले मम पिता आइलेन देश
रावणेर दशमाथा करे नड़वड़ ※ किष्किन्ध्याय आसे बेटा दाँते करे खड़
दया करि मोर बाप छाड़ेन ताहारे ※ लंकाय पलाये गेल रावण तत्परे
से रावण आसिया सीतारे करे चुरि ※ इहार कारणे आमरा सबे मारि
यदि राम लइलेन पितार शरण ※ कोन तुच्छ पितार से पापिष्ठ रावण
पितारे मारिया राम करिल कुकर्म्म ※ राजा हैया करिलेन सम्पूर्ण अधर्म्म
आपन अधर्म्मे राम एत दुःखे पान ※ धर्म्ममत भाव तुमि वीर हनूमान
कार्य्य ना करिले राम हइबेन दुःखी ※ सब कार्य्ये हनूमान मोर मृत्यु देखि
सुग्रीवेर हबे यश आमार मरन ※ सीता ना पाइले आमि त्यजिब जीवन

१ नित्य सध्या-पूजन में लगे २ उठाकर अन्तरिक्ष में तान लेते थे ३ नाक-मुँह में पानी भर जाना ४ दुःख।

कहेउ पवनसुत, फुर[1] तव बानी ※ अग्रज-तीय मातु सम जानी

दो० किन्तु मनुज हित शास्त्र-मत, बन-पसु तासु न भार ।
नृप आयसु मत खोजि चहुँ, पुनि सब करहिं विचार ।।

दो० राम-नाम नित अस्मरन, पातक करत विनास ।
किष्किधा पावन चरित, गावत कवि कृतिवास ।। ७१ ।।

सकल वानरों द्वारा प्राणोत्सर्ग-व्रत

सुनि हनुमत् जिमि बैन उचारा ※ सभा, कहति पुनि बालिकुमारा
पुनि पुनि एक कथा तुम बरना ※ किन्तु लखत सब विधि मम मरना
भल सुग्रीव न रघुपति नीके ※ निश्चय चहुँ संकठ मम जी[2] के
पितु सम जेठ बन्धु-वध-हेतू ※ तेंहि सुत किमि बकसै[3] कपिकेतू
मातु चरन मम कहेउ प्रनामा ※ सुनि मम मरन मातु-यमधामा[4]
कपि समकक्ष परस्पर बन्दहिं ※ रोवत सबजन घेरि अंगदहिं
बिन अंगदकुमार गति नाहीं ※ लिन सहमरण रुचिर सब काहीं
सकल बानरन युक्ति मिलाई ※ तजि अहार जिय-आस गवाँई
करि अस्नान पूर्व मुख कीन्हे ※ दुख-बस अनाहार व्रत लीन्हे

हनुमान ब'ले यत मिथ्या किछु नय ※ ज्येष्ठेर रमणी हैले मातृ तुल्य हय
आमरा वानर पशु, जाति इहा पारि ※ कहिले जे शास्त्र ताहा हय मानुषेरि
यत देश ब'ले राजा खुँजि एक बार ※ पश्चाते करिब आमि इहार विचार
रामनाम स्मरणेते पापेर विनाश ※ रचिल किष्किन्ध्या काण्ड कवि कृत्तिवास

वानर सकलेर प्रायोपवेशन

एतेक ब'लिल यदि वीर हनूमान ※ पुनश्च अंगद ब'ले सबा विद्यमान
पुनः पुनः ब'ल तुमि पवननन्दन ※ जे ब'ल से ब'ल मोर अवश्य मरन
श्रीराम सुग्रीव एरा कभु नहे भाल ※ निश्चय जानिह अंगदेर प्राण गेल
ज्येष्ठ भाइ पितृ सम मारिल हेलाय ※ तार पुत्रे मारिबे सुग्रीव कोन दाय
दण्डवत जानाइओ मायेर चरणे ※ प्राण छाड़िबेन माता आमार मरणे
सोसर वानरगण परस्पर बन्दे ※ अंगदे वेड़िया सब वानरेरा कान्दे
अंगद कुमार बइ आर नइ गति ※ मरिब अंगद संगे करिल युकति
सकल वानर युक्ति एइ करि सार ※ जीवनेर आशा छाड़ि त्यजिल आहार
स्नान करि कपिगण वैसे पूर्व्वमुखे ※ उपवास करिया रहिल मनोदुःखे

---

१ सत्य २ प्राण ३ प्राणदान दे ४ माता प्राण त्याग करेगी ।

कपि प्रायोपवेश[1] उपवासा ※ कृत्तिवास इमि कीन प्रकासा

रामायण-श्रवण से सम्पाति-पक्षोदय

अतिबल गरुड़ सुवन खग जाती ※ विन्ध्य-शिखर निवसति सम्पाती
मुख उठाय कपि-कटक निहारा ※ चहत सबन खग करै अहारा
अंगद कहेउ, सुनहु हनुमाना ※ जो मम कथन सकल करि ध्याना
सिय की खोज इतै सब आये ※ सिय हित जीव विदेस गवाँये
राम - काज कोंहि दीन न आयू ※ सिय हित खगपति मरेउ जटायू
अतिशय समर कीन खगनाथा ※ गरुड़तनय लहि स्वर्ग सनाथा

दो० सीय - हरन दशमाथ किय, भ्रमन राम वन हेत ।
सिय हित, मरैं विदेस परि, कपिगन कटक समेत ॥ ७२ ॥

मरन - जटायु सुनत सम्पाती ※ शोकाकुल सुनि बन्धु - निपाती
विधिबस जरि मम पंख विनासा ※ सकहुँ न उड़ि आवहुँ तव पासा
तव मुख सुनहुँ जटायु - विनासा ※ अन्त न शोक नितांत निरासा
कपिन कहेउ अति विहग[2] सयाना ※ गये समीप बचैं जनि प्राना
पंगु, जरठ, दुर्बल ! तेहि पासा ※ जातैं विहग छलै करि ग्रासा
यदपि मरन, बोले हनुमाना ※ वृद्धहिं चलि कीजिय सन्धाना[3]

[प]रिवारे वानर करिल उपवास ※ रचिल किष्किन्ध्याकाण्ड कवि कृत्तिवास

रामायण-श्रवणे सम्पातिर पक्षोदय

[ग]रुड़ेर पुत्र महाबल पक्षिजाति ※ बैसे बिन्ध्यपर्व्वतेर शिखरे सम्पाति
[ब]ानर कटक माथा तुलि ऊर्द्ध्व देखे ※ अनुमान करे, एइ खाइबे सबाके
[अ]ंगद उठिया ब'ले शुन हनुमान ※ आमार बचने तुमि कर अवधान
[स]ीतार उद्देशे आइलाम सर्व्वजन ※ सीता लागि हाराइब विदेशे जीवन
[क]ोन जन ना करिल श्रीरामेर काज ※ सीता लागि मरिल जटायु पक्षिराज
[प्र]ाण दिल पक्षिराज करिया समर ※ अनायासे स्वर्गे गेल गरुड़-तनय
[र]ाम वनवास हेतु सीतार हरण ※ सीता लागि विदेशेते मरे कपिगण
[स]म्पाति ब'लेन के जटायु मृत्यु कहे ※ सोदरेर मृत्यु शुने मोर प्राण दहे
[व]िधिर विपाके पाखा पुड़िया विनाश ※ उड़िया जाइते नारि तोमादेर पाश
[त]ोमादेर मुखे शुनि जटायु-विनाश ※ आजि शोके हइलाम नितान्त निराश
[क]पिगण ब'ले पक्षी बड़ह सियान ※ निकटे आसिते चाहे लइते पराण
[उ]ड़िते चड़िते नारे जराते दुर्ब्बल ※ सम्मुखे पाइले गिलिबेक करि छल
[ह]नूमान ब'ले भाइ अवश्य मरण ※ ए वृद्ध पक्षीके आमि जिज्ञासि कारण

[illegible] २ पक्षी [illegible]

हनुमत्-मत कपिगन सिर धारा * कर गहि भल खगनाथ सम्हारा
खग राजत जहँ कीस-समाजू * पुनि कर जोरि कहत युवराजू
बालि-सुकण्ठ विदित दुइ भाई * रही कलह चिरकाल समाई
पिता-वचन वन आये रामा * तिन अनुसरेउ लखन, सिय बामा
बन्धु भ्रमत वन दोउ, सिय साथा * सूने[1] सीय हरी दससाथा
राम-लखन भरमत सिय हेतू * मग सुग्रीव मिलेउ कपिकेतू
परिचय दील, मिलन दोउ करहीं * दोउ निज व्यथा परस्पर कहहीं
अगिनि साक्षी युगुल-मिताई * करैं परस्पर उभय सहाई
सत्य बँधे, दोउ भये सनेही * यहि विधि हम खोजत बैदेही
मम पितु मारि, राम प्रन साधा * सुग्रीवहिं दिय राजु अगाधा

दो० पिता-मरन उर क्लेस मम, अति दारुन दुख दीन।
बन-बन भरमत, आय इत, आजु दरस तव कीन ।। ७३ ।।

समिटे आय कीस दिग्देसा * राम काज हित नृप - आदेसा
मास अवधि[2] कपिपति रखि दीनी * अवधि वितीत, कहा जनु होनी
परिचय इमि, खगनाथ! हमारा * सुनहु जटायु - मरन - बिस्तारा
मरन-जटायु कथा विधि एही * दसमुख हरन कीन वैदेही

हनूर वचने सबे दिल अनुमति * आनिलेन धराधरि करिया सम्पाति
पक्षीराजे वसाइल वानर समाज * जोड़ हाते कहिल अंगद युवराज
बालि-सुग्रीवेर जान दुइ सहोदर * कतकाल कोन्दल करिल परस्पर
पितृसत्य पालिते श्रीराम आसे वन * संगे गोड़ाइल ताँर जानकी-लक्ष्मण
सीता सह दुइ भाइ भ्रमे वने वन * घर शून्य पेये सीता हरिल रावन
सीता लागि भ्रमेन जे श्रीराम-लक्ष्मन * पथे सुग्रीवेर संगे हइल मिलन
सुग्रीवेरे दिलेन आपनि परिचय * आपन दुःखेर कथा दुइ जने कय
अग्नि साक्षी करि दुइजने सत्य करे * परस्पर उपकार करे परस्परे
दुइजने सत्येवद्ध हइल मिलन * सेइ हेतु करि मोरा सीता-अन्वेषन
राम सत्य पालेन मारिया मोर बापे * सुग्रीवेरे राज्य देन दुर्ज्जय प्रतापे
पिता मरिलेन मने हइलाम दुःखी * वने वने फिरि आमि, देख तार साक्षी
वानर आइल यत छिल देशे-देशे * रामकार्य्य साधिवारे सुग्रीव आदेशे
एक मास नियम करिल महाशय * मासेकेर बाड़ा हैले ना जानि कि हय
परिचय दिलाम आमरा कपिगण * एखन शुनह जटायूर विवरण
जटायु पक्षीर शुन मरणेर कथा * रावण हरिया निल श्रीरामेर सीता

१ अकेले में २ मियाद।

गरुड़-तनय खग नाम जटाई ※ गिरि सों सुनत रुदन-सियमाई
रथहिं पटकि कर[1], खालि पछारा ※ 'राम-लखन' कहि रुदन अपारा
सोचत खग मनु कहुँ लंकेसू ※ हरि मैथिली जात निज देसू
वृद्ध विहंग जरठ चिरकाला ※ पंख सम्हारि उठेउ तत्काला
सीता-रुदन परत तेहि काना ※ होय न भ्रम, खगपति अनुमाना
धाय गगन चहुँ लखत अकासा ※ रावन-रथ छबि-सीय प्रकासा
भनत जटायु बनै[2] इत सीता ※ हरेउ दनुज, उर होय प्रतीता
पंख पसारि पन्थ अवरोधा ※ हनत पंख दुर्वचन विरोधा
नभ सों लखेउ, न कहुँ रघुवीरा ※ दसन-नखाहत[3] किय दनुवीरा
सर पर सर मारत दशग्रीवा ※ जर्जर गात पच्छि बलसीवा
राम-बाट[4] बहु जोहत बीरा ※ तबहुँ न दरस तहाँ रघुवीरा
वृद्ध विशेष, टूटि दस आवा ※ गिरेउ धरनि युग पंख नसावा

दो० राम आय, दै अगिन पुनि, खगपति कीन सनाथ।
इमि जटायु सद्गति लही, को तुम्हार खगनाथ ? ॥ ७४ ॥

विवरन सुनि जटायु, सम्पाती ※ बन्धु ! बन्धु ! रोवत बहु भाँती

जटायु नामेते पक्षी गरुड़नन्दन ※ पर्व्वत हइते शुने सीतार क्रन्दन
हात-पा आछाड़े सीता रथेर उपरे ※ श्रीराम-लक्ष्मण ब'लि डाके उच्चैःस्वरे
पक्षी ब'ले, एइ बेटा लंकार रावण ※ सीतारे हरण करि करिछे गमन
अनेक कालेर पक्षी, हइयाछे जरा ※ दुइ पाखा मेलिया पोहाय तथा खरा
सीतार क्रन्दन पक्षी तथा हैते शुनि ※ भाविते लागिल से प्रमाद मने गनि
आकाशे उड़िया पक्षी चारिदिके चाय ※ रावणेर रथे सीता देखिवारे पाय
जटायु ब'लेन, सीता एसछेन वने ※ सेइ सीता लैया जाय पापिष्ठ रावने
दुइ पाखा प्रसारिया आगुलिल बाट ※ रावणेरे गालि पाड़े मारे पाख साट
आकाशे थाकिबा देखे राम बहुदूर ※ आँचड़ कामड़े तार रथ कैल चूर
रावण मारिल तारे घन-घन शर ※ जटायुर शरीर से करिल जर्ज्जर
रामेर अपेक्षा करि बुझिल विस्तर ※ तथापि ना आइलेन तथा रघुवर
बृद्धकाले जटायुर टुटियाछे बल ※ दुइ पाखा काटिया पाड़िल भूमितल
आसिया करेन राम तार अग्निकाज ※ राम दरशने मुक्त हैल पक्षिराज
कहिलाम जटायुर मृत्युर काहिनी ※ जटायुर के हओ आपनि इओ शुनि
सम्पाति शुनिया जटायुर विवरण ※ भाइ-भाइ ब'लिया कान्दल बहुक्षण

१ हाथ २ वन में ३ दाँत-नाखूनों से घायल किया ४ राम की रास्ता।

बधि मम बन्धु, चैन लंकेसू * रहौं मारि मन, पंख न शेसू
भद्दर युवा—पंख मम अंगा * तब कर कपिगन! सुनहु प्रसंगा
अनुज जटायु, जेठ सम्पाती * गरुड़-तनय, अति बल जिन ख्याती
जुगुल बन्धु मिलि स्थिर कीना * रवि परसै[1] सो वीर प्रवीना
अरुन-प्रभात गगन बिस्तारा * धरहिं भानु, दृढ़ कीन विचारा
जाति बन्धुगन विस्मय माहीं * लख योजन जहँ भानु लखाहीं
लख योजन उड़ि चलि आकासू * पहुँचे उभय प्रभाकर पासू
चहुँ दिसि प्रखर दिवाकर-तापा * तपत दिशा दस अगिनि-प्रतापा
उड़त प्रहर दुइ दिन चढ़ि आवा * दुहुन तेज-रवि चहत जरावा
विकल सहोदर तात जटाई * मरनप्राय लखि करुना आई
ढाकि पंख तेहि ऊपर राखा * आतप जरे युगुल मम पाँखा[2]
होनी प्रबल गिरेउँ गिरि आई * पंखहीन विधि पंगु बनाई
सात दिवस तृन-सलिल न पाना * तबहि एक सर्वज्ञ[3] लखाना
सर[4] 'सर्वज्ञ' करत असनाना * सिंह व्याघ्र तट बिचरत नाना
गिरि प्रमान तहँ जन्तु विशेसू * धरि न खाहिं! बल गात न शेसू

दो० बिबस दूरि भय-बस लहेउँ, सरन विटप-बट जाय ।
जन्तु सिंह महिषादि जे तब लौं गये बराय ॥ ७५ ॥

आमार भाइके मारि वेटा थाके सुखे * पाखा नाइ, कि करिब, आछि मनोदुःखे
यौवने जखन छिल पाखा से आमार * शुनह वानरगण, ब'लि सारोद्धार
जटायु सम्पाति एइ दुइ सहोदर * ब'ले महाबली मोरा गरुड़ कोङर
दुइ भाइ प्रतिज्ञा जे करिलाम एइ * सूर्य्य जे छुँइते पारे, वीर बटे सेइ
प्रभाते हइल जबे अरुण उदय * सूर्य्येरे धरिते जाइ करिया निश्चय
ज्ञाति बन्धु सकले देखिया सविस्मय * एक लक्ष योजन उपरे सूर्य्योदय
से लक्ष योजन उड़ि उठिया आकाशे * दिवाकरे धरिते गेलेन ताँर पाशे
चौदिके चापिया उठे सूर्य्य महाशय * दिक कि विदिक सब हैल अग्निमय
प्रभात हइते दुइ प्रहर उड़िया * दुइ भाइ मरि सूर्य्य-तेजेते पुड़िया
ताहाते जटायु भाइ हइल कातर * मृतप्राय हेन देखि भाइ सहोदर
ढाकि जटायुर पाखा निज पाखा दिया * आमार उभय पाखा गेल त पुड़िया
ए पर्व्वते पड़िलाम दैवेर निर्ब्बन्ध * एइ से कारणे आमि हइयाछि बन्ध
सात दिन नाहि पाइ सलिल ओदन * हेनकाले सर्व्वज्ञ आइल एक जन
स्नान करे सर्व्वज्ञ से सरोवर-जले * सिंह व्याघ्र चरितेछे तार दुइ कूले
पर्व्वत प्रमान देखि जन्तु से सकल * धरिया खाइबे मोरे गाये नाहि बल

१ स्पर्श करे २ पंख ३ सिद्धजन ४ तालाब ।

सरवर जल 'सर्वज्ञ' नहाई ※ दरस दीन मम सम्मुख आई
ज्ञानी परम 'निशाकर' नामा ※ मग आवत लखि, कीन प्रनामा
व्यथा-विकल मुख शब्द न आना ※ लखि मोहिं दीन, विप्र किय ध्याना
कहेउ रच्छु निज प्रान खगेसा ※ उबरैं पुनि तव पंख असेसा[1]
दशरथ नृपति अवध चिरकाला ※ जेठ सुवन तिन राम कृपाला
पिता-वचन गवनहिं वनदेसू ※ सूने हरहि सीय लंकेसू
सिय खोजत कपिगन इत आवैं ※ देहिं दरस, तव क्लेस नसावैं
होय दरस-कपि यहि गिरि धामा ※ जपहिं पंख मुख निकसत रामा
चिर निवसहु गिरि खगपति जबहीं ※ कपिगन-दरस मिलै रहि तबहीं
ध्यावत राम जियेउँ करि आसा ※ आजु दरस तव, मिटी पिपासा
अंगद कहत पच्छि! भयरूपा! ※ बरनहु सकल सत्य अनुरूपा
कहँ निवास, कहँ लंक-जुझारा ※ कत योजन बिच सिन्धु अपारा
मैं खगपति, कुल गृद्ध हमारा ※ पूर्व-दखिन[2] मम गति-बिस्तारा
कहब सुनब विवरन, जस ज्ञाना ※ प्रथमहिं राम-कथा सुनि काना
राम-कथा सुनि पंख-उबारा ※ होय पंख लहि सुलभ अहारा

दूर गिया रहिलाम वटबृक्ष तले ※ सिंहे महिषादि जन्तु गेल हेनकाले
स्नान करि सर्व्वज्ञ से सरोवर जले ※ आमार सम्मुखे से आइल हेनकाले
प्रसिद्ध सर्व्वज्ञ तिनि, निशाकर नाम ※ पथेते पाइया देखा कहिनु प्रणाम
व्यथाय कातर आमि शब्द नाहि मुखे ※ आमारे कातर देखि द्विज ध्याने देखे
सर्व्वज्ञ ब'लेन, पक्षिराज, प्राण रक्ष ※ हाराइया पाबे तुमि आपनार पक्ष
दशरथ राज्य करिबेन बहु दिन ※ ताँर ज्येष्ठ पुत्र राम हबेन प्रवीन
पितृसत्य पालिते जाबेन तिनि वन ※ शून्य घरे ताँहार सीता हरिबे रावन
कपिगण करिबेक सीतार उद्देश ※ ताँर दरशने तव खण्डिवेक क्लेश
थाक एइ पर्व्वते पाइबे तार देखा ※ 'राम-नाम' ब'लिते उठिबे तव पाखा
बहुकाल ए पर्व्वते थाक पक्षिवर ※ तबे से देखिबे तुमि सकल वानर
एत काल राम लागि आछे हे जीवन ※ एत दिन तव सने हैल दरशन
अंगद ब'लेन तोमा देखि पाइ भय ※ सत्य कह पक्षिराज वृतान्त निश्चय
रावणेर कोन देश, कोथा तार घर ※ तार देशे येते कत योजन सागर
पक्षिराज ब'ले आमि एइ ग्रध्र-जाति ※ पूर्व्वेते दक्षिण दिके छिल मम गति
कहिब शुनिबे, यत जानि विवरण ※ सम्प्रति जुड़ाउ कर्ण कहि रामायण
रामेर प्रसंग पुनः हबे पक्षोदय ※ पक्षोदये भक्ष्यलाभ प्राणरक्षा हय

---

१ जो लुप्त हो चुके हैं २ पूर्व से दक्षिण दिशा तक।

सुनु सुत-गरुड़! कहेउ हनुमाना * करहुँ बखान राम भगवाना

दो० सुनहु पुरातन, नारदहिं नारायण मत कीन ।
दुखमय सृष्टि-बिरंचि किमि, होय कलेस-विहीन ॥ ७६ ॥

नारायण विचार मन भावा * नारद सहित विरंचि पठावा
भ्रमत धरा दोउ देसन-देसू * सहसा किय बन घोर प्रवेसू
तहाँ ब्याध रत्नाकर नामा * दस्यु वृत्ति नित रत दुष्कामा
वैश्य शूद्र क्षत्रिय द्विज सोऊ * फाँसी देत, बचत जनि कोऊ
दस्युकर्म-रत इमि बहुँ फिरई * पन्थ दरस नारद मिलि करई
नारद अरु विरंचि मग हेरी * लखि दुइ विप्र, दस्यु तिन टेरी
हे युग[1] विप्र! कितै अब गमनू * परि मम हाथ सुनिश्चित मरनू
नारद कहेउ, भद्र! कहु कारन * तपसी विप्र वृथा तिन मारन
कहत दस्यु, मुनि! मम नित धर्मा * मम जीविका दस्यु कर कर्मा
पितु जननी तिय सुत जन जेते * मम जीविका पलल सब तेते
एक मात्र मम यहै कमाई * कर फँसरी[2], भरमत बन जाई
जती जितेन्द्रिय बटु संन्यासी * परत नयन, तिन हित यह फाँसी
द्विज दुर्बुद्धि हेरि मुनि टेरे * भागीदार कौन अघ[3] तेरे

हनूमान ब'ले शुन गरुड़नन्दन * मन निया शुन ब'लि रामेर कथन
पूर्व्वकथा कहि, शुन ताहे देह मन * नारदेर संगे युक्ति कैल नारायन
सृष्टि करिलेन पितामह वहु क्लेशे * भावेन, सकल लोक त्राण पावे किसे
नारदेरे युक्ति करि पाठान पृथिवीते * दिलेन विधिके हरि नारदेर साथे
दुइजन पृथिवीते बेड़ान भ्रमिया * दैवात् निबिड़ वने उत्तरिल गिया
बाल्मीकि छिलेन पूर्व्वे व्याध अवतार * दस्युवृत्ति करितेन अति दुराचार
ब्राह्मण क्षत्रिय शूद्र जार देखा पाय * फाँसि दिया मारे से, के कोथाय पलाय
एइ रूपे दस्युकर्म्म कर्म्म करे वने वन * नारदेर सने हैल पथे दरशन
नारद ओ विधि ताँरा जान दुइजने * हेनकाले देखे दस्यु से दुई ब्राह्मणे
दस्यु ब'ले, विप्र, ताँरा आर जाबि कोथा * पड़िलि आमार हाते, काटा जाबे माथा
नारद ब'लेन, आमि तपसी ब्राह्मण * आमारे मारिया तुमि किसेर कारण
दस्यु ब'ले नित्य आमि एइ कर्म्म करि * दस्युकर्म्म करिया उदर सदा भरि
माता पिता पत्नी पुत्र आछे यतजन * इहाते सबार करि उदर पूरन
अविरत दस्यु कर्म्म करि आमि खाइ * ते कारणे फाँसि-हाते वनेते बेड़ाइ
कत गण्डा जितेन्द्रिय जति ब्रह्मचारी * जार देखा पाइ, तारे सेइ क्षणे मारि
नारद ब'लेन शुन दुर्व्बुद्धि ब्राह्मण * तोमार पापेर भाग लय कोन जन

१ दोनो २ हाथ में फाँसी का फन्दा लिए ३ पाप ।

पितु-जननी जदि बाटहिं पापा ※ बध करु, हमहिं न पुनि संतापा
जानु जानु, गृह जाय नृशंसा ! ※ को तव पाप बटावत अंसा
रत्नाकर बोलत, द्विजराई ! ※ ओट होत मम, जाहु बराई

दो० जनि प्रतीत, तरु बाँधि दोउ, जाहु, कही मुनिराय ।
दस्यु कौन सो, विटप तर, मुनिन राखि गृह जाय ॥ ७७ ॥

बिलसहु पितु ! मम पाप कमाई ※ पाप-अंस मम तव सिर जाई
हे सुत ! पितु-पालन तव धर्मा ※ पितु किमि भागी सुत-अपकर्मा
जिमि पोषत मम तन, मोहिं तोषू ※ मम सिर किमि तव पातक-दोषू
सुनत जनक कै[1] निष्ठुर बानी ※ दरस लहेउ जहँ जननी रानी
उदर निमित्त नित्य हे माता ! ※ अर्जन हित[2] नित मनुज निपाता
बिलसहु मम घर बैठि कमाई ※ पाप अंस कछु बाटहु माई
सुनु कुबुद्ध सुत ! बोलति जननी ※ मम सिर किमि तव पातक करनी
सुवन, मात-पितु पालन हेता ※ तर्पन श्राद्ध गयादिक जेता
जो सुपुत्र कुल - दीप - प्रकासू ※ जननि न सेवत, रौरव - वासू[3]
जो जिमि देत, बैठि घर खाहीं ※ तव पातक, सुत ! मम सिर नाहीं
भारत-भुवन अखिल सुत अहहीं ※ सुत-अघ[4] जननिहिं शास्त्र न कहहीं

तव पापभागी यदि हय पितामाता ※ तबेत आमारे बध करह सर्व्वथा
जिज्ञासा करह गिया आपनार घरे ※ तोमार पापेर भाग काहार उपरे
दस्यु ब'ले, शुन ब'लि तपस्वी ब्राह्मन ※ आमि घरे गेले कि पालाबे दुइजन
नारद ब'लेन, राख गाछेते बाँधिया ※ पापभागी केवा हय, आइस जानिया
तबे दस्यु दुइजने करिल बन्धन ※ गाछेते बाँधिया, घरे करिल गमन
बापेरे कहिल, तुमि घरे बसे खाओ ※ आमा पापेर भाग तुमि निते चाओ
पिता ब'ले, जाहा दाउ, घरे बसे खाब ※ तुमि पाप कर, तार भाग केन लब
ये से प्रकारेते तुमि करिबे पालन ※ पापभाग लइते ना पारि कदाचन
बापेर शुनिल यदि निष्ठुर वचन ※ तबे गिया मायेरे से दिल दरशन
दस्यु ब'ले, शुन माता, करि निवेदन ※ मनुष्य मारिया करि उदर-भरन
आमि आनि देइ, तुमि घरे बसे खाओ ※ आमार पापेर भाग तुमि निते चाओ
जननी बलिल, शुन दुर्ब्बुद्धि नन्दन ※ तोमार पापेर भाग लब कि कारन
पुत्र हैले कर माता-पितार पालन ※ गयाय पिण्डदान करे श्राद्ध ओ तर्पन
सुपुत्र हइले हय कुलेर दीपक ※ मातृसेवा ना करिले विषम नरक
जाहा तुमि आनि दिबे, घरे बसे खाब ※ तोमार पापेर भाग आमि केन लब
यत-यत पुत्र जन्मे भारत मण्डले ※ पुत्र पाप माये लय, कोन शास्त्रे ब'ले

---

१ पिता की २ जीविका कमाने के लिए ३ नरकवास ४ पुत्र के पाप ।

मातु-बैन खर[1] सुनि, उर पीरा ※ कहेउ खिन्न मन चलि तिय तीरा
दस्यु - वृत्ति पालन प्रिय तोरा ※ पातक - अंस बटावहु मोरा
बनिता बिनय कीन, हे नाथा ! ※ पति-पातक किमि पत्नी साथा
सेवहुँ स्वामि करहुँ गृह-काजू ※ घर बसि तव बिलसहुँ सुख-साजू
नारि-वचन सुनि अतिव हतासा[2] ※ जाय-समीप कहेउ सुत पासा

दो० चरन बन्दि पुनि, कहेउ सुत, मम सिर पाप न भार ।
करहुँ मजूरी, आयु लहि, पितु प्रतिपाल तुम्हार ।। ७८ ।।

मम पालन तव सिर यहि काला ※ बहुरि करौं मैं तव प्रतिपाला
खल पूँछेसि चहुँ बारम्बारा ※ केहु न अंस-अघ[3] लेन सखारा[4]
रत्नाकर-उर अति अनुतापा ※ अगनित बध नित सिर्जति पापा
मन गलानि उर घोर निरासा ※ भरति साँस चलि तपसिन पासा
बन्धन खोलि, न गात-सम्हारा ※ सविनय वचन प्रनम्य उचारा
भल विधि जानि लीन मुनिनाथा ! ※ परिजन कोउ न पाप मम साथा
किमि कीजै, गति कहा उपाई ?※ 'तौ बध हेतु न' कह मुनिराई
तव पातक न बटावनहारा ※ तव अपकर्मन तव शिर भारा

मायेर शुनिल यदि निष्ठुर वचन ※ पत्नीर निकटे गिया कहे विवरन
दस्युकर्म्म करे आनि घरे बसे खाओ ※ आमार पापेर भाग तुमि निते चाओ
स्वामी ब'लिछे रामा विनय-वचन ※ तोमार पापेर भाग लब कि कारन
गृहस्थेर कर्म्म कार्य्य सकल करिब ※ यथा हैते आन तुमि, घरे बसि खाब
नारीर शुनिल यदि एतेक वचन ※ पुत्रेर निकट गिया कहिल तखन
शुनिया ब'लिल पुत्र पितार चरणे ※ पातकेर भार लब किसेर कारणे
आमि उपयुक्त जबे हइब संसारे ※ शिरे मोट बहि आमि पालिब तोमारे
एखन आमार कर भरण पोषण ※ आमि पुत्र, तोमादेर करिब पालन
एइमत जिज्ञासा करिल बारे-बार ※ पापभाग लैते केह ना करे स्वीकार
दस्यु ब'ले, तबे आमि कोन कर्म्म करि ※ अधर्म्म करिया केन लोकजन मारि
मने-मने दस्यु बड़ हइल निराश ※ उर्द्धश्वासे धेये गेल तपस्वीर पाश
आस्ते व्यस्ते खसाइल मुनिर बन्धन ※ प्रणाम करिया ब'ले विनय वचन
जिज्ञासिया घरे जानिलाम समाचार ※ आमार पापेर भागी केह नहे आर
कि करिव, कोथा जाव, कि हबे उपाय ※ मुनि ब'ले, तबे केन बधिबे आमाय
तोमार पापेर भागी केह ना हइल ※ यत पाप करिले से तोमारि थाकिल

---

१ खरी बात २ हताश ३ पाप में हिस्सा ४ स्वीकार किया ।

यमपुर नरक कहत चौरासी * रौरवादि[1] क्रम सों दुखरासी
धरि गर बसन युगुल कर जोरा * कातर दस्यु कहत मुनि ओरा
मैं तव चरन कृपामय नाथा * लहहुँ सुगति जिमि, करहु सनाथा
दस्यु-वृत्ति अरु तजि दुष्कर्मा * नित तव पद रहि सेवहुँ धर्मा
दयाशील मुनि जतन बतावा * सरवर करि असनान बुलावा
तव हित, तात ! उपाय प्रकासा * लहौ मुकुति सब पातक नासा
ब्याध मन्द गति चलि सर तीरा * परत छाँह सूखेउ सर-नीरा
सलिल न सरवर, बिन असनाना * पुनि जहँ मुनि तहँ कीन पयाना

दो० कहत जोरि कर, सलिल सर, लखि मम पाप सुखान ।
अहह, नाथ ! तव चरन पुनि आयेउँ बिन असनान ।। ७६ ।।

नारद बहु भरोस तेंहि दीन्हा * नीर-कमण्डल निज पुनि लीन्हा
लीन दया-जल, सीस लगावा * गात पुनीत, दस्यु सुख पावा
विधि-सुत[2] नारद दया-प्रतापू * महामंत्र अष्टाक्षर जापू
रत्नाकरहिं सतत आदेसू * जपै राम अहिनिसि, जनि शेसू
रसना जड़, न राम, विधि बामा * रसना चखन चहत रस-आमा

चौराशी नरककुण्ड आछे यमपुरे * रौरव नरक आदि, सब स्तरे स्तरे
गलाय कापड़ दिया जोड़ हात बुके * कातरे कहिल दस्यु मुनिर सम्मुखे
कृपा कर कृपामय, धरि हे चरण * कि हबे आमार गति, कह विवरण
आर आमि दस्युकर्म्म कभु ना करिब * हइया तोमार दास संगते फिरिब
ताहारे कहेन दयाशील महामुनि * सरोवरे स्नान करि आइस एखनि
तोमार निमित्त एक करिब उपाय * जाहाते हइबे मुक्त, पाप दूर जाय
आस्ते व्यस्ते गेल व्याध सरोवर तीरे * पापी देखे उड़ेगेल सलिल सरोवरे
स्नान करिवारे जल यदि ना पाइल * आर वार दस्यु सेइ मुनि काछे गेल
जाड़ हात करिया बलिल से गोसाइँ * गेलाम करिते स्नान, जल नाहि पाइ
आमाके आसिते देखे यत छिल जल * शुकाइया सरोवर, ह'ल शुष्क स्थल
शुनिया नारन मुनि करिया आश्वास * कमण्डले छिल जल आपनार पाश
दया करि सेइ जल दिलेन ताहाय * सेइ जल दस्यु निल आपन माथाय
ब्रह्मापुत्र नारदेर दया उपजिल * अष्टाक्षर महामंत्र तार काने दिल
ब्रह्मापुत्र आपनि करिल आदेशन * दिवानिशि रामनाम करह स्मरण
राम नाम बलिते बदने आसे आम * परम पातकी से विधाता तारे बाम

१ रौरव आदि नरक २ ब्रह्मा के पुत्र ।

मुखरत[1] आम, राम कठिनाई ※ मुनि सोचत किमि करिय उपाई
मुनि-उर उपजी दया विशेषी ※ तहि वन सूख ताल-तरु देखी
विटप सूख मुनि एक दिखाई ※ पूछत, कहु तरु कौन लखाई ?
दस्यु जोरि कर विनय सुनाई ※ 'मरा' ताल-तरु मोहिं लखाई
मुनि प्रवीन बोले, सुत सुनहू ※ 'मरा' मंत्र अहिनिसि बस जपहू
बन्दि मुनीस, समाधि लगाई ※ जपत निरन्तर निसिदिन ध्याई
पातक छीन, पुण्य बस जागा ※ एक मात्र मुख जप-अनुरागा
मुनि-आयसु—करु जाप निरंतर ※ आवइँ हम पुनि वर्ष-अनन्तर
विधि-नारद आगे पग दीना ※ 'मरा' मंत्र-जप दस्यु विलीना
बन बसि जाप अखण्ड सुहावा ※ ढूह[2] दीमकन अंग छिपावा

दो० वर्ष उपरि मुनि आय तहँ निरखेँउ कतहुँ न दस्यु ।
ध्यान धरत जानेँउ यथा द्विज-तन मृतिका-मध्य[3] ।।
मुनि-आयसु अनवरत[4] जल बरसायेँउ सुरनाथ ।
माटी बही, अखण्ड जप, मुनिहिं नवाअेँउ माथ ।।
निर्विकार एकाग्र मन, मंत्र जाप लवलीन ।
लखि प्रसन्न मुनिनाथ पुनि पूरन आशिष दीन ।। ८० ।।

भाविलेन महामुनि कि ह'व उपाय ※ रामनाम बदने नाहि जे बाहिराय
सेइ वने मरा एक ताल गाछ छिल ※ हेरिया मुनिर मने दया उपजिल
बुद्धिजीवी महामुनि जिज्ञासेन ताय ※ ब'ल देखि कोन वृक्ष ऐ देखा जाय
शुनिया कहिल दस्यु जोड़ करि कर ※ मरा ताल-गाछ एक देखि मुनिवर
शुनिया कहेन तार नारद प्रवीण ※ 'मरा' मंत्र जप कर तुमि रात्रिदिन
प्रणाम करिया दस्यु मुनिर चरणे ※ मरामंत्र जपिते बसिल रात्रिदिने
मरामंत्र विना तार मुखे नाहि आर ※ दूरे गेल दस्युवृत्ति, सदा सदाचार
नारद ब'लेन, मंत्र करह स्मरण ※ एक वत्सरेर परे आसिब दुजन
इहा ब'लि बिदाय हइल दुइजने ※ मरा मंत्र जप करे दस्यु एक मने
अरण्ये निवास करि 'मरा' मंत्र जपि ※ सर्व्वांग घेरिल तार बल्मीकेर ढिपि
आसिय देखेन मुनि वत्सरेक परे ※ एइखाने छिल दस्यु गेल कोथाकारे
ध्यान करि देखेन नारद तपोधन ※ ढिपिर मध्येते आछे से दस्यु ब्राह्मण
देवराज आदेश करेन तपोधन ※ बासव करिल परे वृष्टि वरिषण
माटि हइते बाहिर हइल सेइ क्षणे ※ एक चित्ते मरामंत्र जपे एकमने
आशिर्व्वाद करि तेन तुष्ट तपोधन ※ मुनिर प्रणाम करे से दस्यु ब्राह्मण

---

१ उच्चारण होता था २ टीला ३ मिट्टी के बीच ४ लगातार ।

दिव्य कान्ति प्रणवति मुनिनाथा ※ तव प्रसाद गति पाय सनाथा
कहत सनेह मुनी गुनधामा ※ पलटि तात मुख, बोलहु रामा
कातर रत्नाकर मुनि बन्दे ※ महामंत्र मुख 'राम' अनन्दे
अखिल तासु जे भौतिक पापा ※ मेटे राम नाम संतापा
दस हजार वत्सर तप करई ※ प्रति छन राम नाम अस्मरई
'मरा' मंत्र जपि, कौतुक कहेंऊ ※ बालमीकि रत्नाकर भयेंऊ
बालमीकि प्रति नारद वरना ※ सात काण्ड रामायन रचना
खगहिं गाय हनुमान सुनाये ※ उदित पंख - सम्पाति सुहाये
आदिकाण्ड सुभ घरी अनूपा ※ अवधहिं राम-जनम सुख-रूपा
राम भरत लछिमन रिपुसूदन ※ प्रमुदित भूप चारि लहि नन्दन
विश्वामित्र अवध चलि आये ※ मिथिला राम विवाह रचाये
कौतुक चारि सुवन गठबन्धन ※ दसरथ अवध करत सुख-सासन
रामहिं तिलक नृपति मन भावा ※ कुटिल कैकयी कुमति जगावा
धरि पितु-वचन, गये वन रामा ※ संग लखन अरु सीय ललामा
'आदौ' रघुपति जनम-विबाहू ※ प्रभु बन, 'अवध'[1] भरत नरनाहू
पुनि सिय हरि 'अरण्य','किष्किधा' ※ बालि-मरन कपि सैन निबन्धा

दिव्य कान्ति हइया मुनिरे करे स्तुति ※ तोमार प्रसादे पाइलाम अव्याहति
कहिलेन स्नेह वाक्ये मुनि गुणधाम ※ उलटिया आर कर बल रामनाम
कातर हइया कह जोड़ हात बुके ※ रामनाम महामंत्र नि:सरिल मुखे
यय पाप छिल तार भौतिक शरीरे ※ रामनाम स्मरणे सकल गेल दूरे
रामनाम स्मरण करिल निरन्तर ※ तपस्या करिल दश हाजार वत्सर
मन दिया शुन तार अपूर्व्व काहिनी ※ मरामंत्र जपिया बाल्मीकि हैल मुनि
नारदेर उपदेश पाइया से जन ※ प्रकाश करिल सातकाण्ड रामायण
सातकाण्ड रामायण हनुमान कय ※ सम्पाति पक्षीर पाखा हइल उदय
आदिकाण्डे राम जन्म हैल शुभक्षणे ※ परम उल्लास हैल अयोध्या भुवने
श्रीराम-लक्ष्मण आर भरत-शत्रुघ्न ※ चारि पुत्र पाइया भूपति हृष्टमन
विश्वामित्र आइलेन अयोध्या नगरे ※ मिथिलाय विवाह दिलेन श्रीरामेरे
चारि नन्दनेर दिया विवाह कौतुके ※ राजत्व करेन राजा अयोध्याय सुखे
रामेरे करिते राजा राजार वासना ※ कुटिला कैकेयी ताहे करे कुमंत्रणा
पितृ-सत्य पालिते गेलेन राम वन ※ संगे चलिलेन ताँर जानकी-लक्ष्मण
आदिकाण्डे रामजन्म विवाह निद्धार्य ※ अयोध्याय वनवास भरतेर राज्य
अरण्यकाण्डेते सीता हरे दुराशय ※ किष्कन्ध्याय बालि-बध कटक-सञ्चय

---

१ अयोध्याकाण्ड में।

दो० सेतुबन्ध अद्भुत कथा वरनेउ सुन्दरकाण्ड ।
लंकाकाण्ड निपात सुनु रावन सकुल प्रकाण्ड ।। ८१ ।।

उत्तरकाण्ड समापन गाना ※ सात काण्ड हनुमान बखाना
सो सुनि पंख उदय सम्पाती ※ कपिन कहत पुनि खग यहि भाँती
हरेउ मैथिली खल लंकेसू ※ राखेसि दक्षिण—लंक प्रदेसू
सीस किये तर[1] तहँ ससिबदनी ※ बन अशोक, गति जात न वरनी
करहिं चौकसी बहु निसिचरिगन ※ मारग सिन्धु लखत शत योजन
एक छलाँग लंघि कपि! सागर ※ लखि सीता लौटहु बलआगर
शोच न कछु सब अति बलवन्ता ※ लहौ तृप्ति तरि सिन्धु अनन्ता
सुनि दच्छिन दिसि दृष्टि पसारा ※ सके न लखि दस योजन पारा
दृष्टि मात्र भट कीस हतासा ※ खग बिहँसेउ लखि कपिन निरासा
जाम्बवान अति बुद्धि - उजागर ※ कहेउ, विहगपति[2] सुनहु गुनागर
योजन शत सागर विस्तारा ※ सो कपिगन किमि करहिं उतारा
तुम अनुभवी वृद्ध खगराई ※ सिंधु-पार कर कहहु उपाई
सुनहु ध्यान धरि कहेउ खगेसा ※ उपजी मन मम सूझ बिसेसा
हिमगिरि, तनय सुपार्श्व निवासा ※ देखन मोहिं नित आवत पासा

सुन्दरकाण्डेते सेतुबन्ध चमत्कार ※ लंकाकाण्डे रावणेर सवंशे संहार
कथा सातकाण्डेर उत्तरकाण्डे पड़े ※ गाय उत्तराकाण्ड रामायण निंगुड़े
कथा सप्तकाण्डेर कहिल हनूमान ※ सम्पाति पक्षीर पाखा हइल प्रमाण
सम्पाति ब'लेन शुन यत वीर गण ※ सीताके लइया गेल पापिष्ठ रावण
यखन दक्षिण दिके माथा तुले थाकि ※ अशोकेर वने थाके सीता चन्द्रमुखी
नाना वर्णे राक्षसी सीतारे करे रक्षा ※ शत योजनेर पथ सागर परिखा
एक लाफे पार हओ सकल वानर ※ सीतादेवी देखिया सकले जाह घर
महाबल धर सबे किसेर भावना ※ हइया सागर पारे पुराओ कामना
तार वाक्ये वानर दक्षिणदिके चाय ※ दश योजन विना आर देखिते ना पाय
एक दृष्टे कपिगन चाहे ऊर्द्धश्वासे ※ देखिते ना पाइ किछु, पक्षिराज हासे
जाम्बुवान उठि ब'ले बुद्धि-वृहस्पति ※ आमार वचन शुन विहंग सम्पाति
शतक योजन पथ सागर पाथार ※ वानर हइया हब कि प्रकारे पार
अनेक कालेर साक्षी अनेक वयस ※ सागर त्वरिते तुमि कर उपदेश
सम्पाति ब'लेन, तबे शुन सावधाने ※ अपूर्व्व प्रस्ताव एक पड़िल जे मने
सुपार्श्व आमार पुत्र हिमालये थाके ※ नित्य-नित्य से आइसे देखिते आमाके

---

१ सिर झुकाये २ सम्पाति ।

बसति हिमञ्चल मम परिवारू ※ करत जतन तहँ मम आहारू
आवत नित लै असन[1] प्रभाता ※ इक दिन अति अबेर[2] किय ताता

दो० क्षुधा त्रसित तन विकल मैं, तात-भर्त्सना कीन ।
परम धार्मिक सुवन मम, वरनी कथा नवीन ।। ८२ ।।

छं० भोर अहार लिये, पितु ! आवत, लखी पंथ वरनारी ।
कृष्ण मेघ रावण-रथ माहीं सौदामिनि[3] उजियारी ।।
राम-लखन कहि बिलपत, रथ दुइ पहर पंथ अवरोधा ।
रथ समग्र लीलत नारी-बध लखि, मैं तजेउँ विरोधा ।।

वचन- सुपार्श्व न संशय लेसू ※ विदित राम-तिय सीय कलेसू
अतिबल सुवन अबहिं सो आवै ※ सबन उठाय पार पहुँचावै
पौन[4] जलधि दुइ पंखपसारा[5] ※ एक भाग पुनि सहज उतारा
लंघन एक न भाग विसेसू ※ धरहु धीर कपि तजहु कलेसू
इमि बतरात[6], सरीर कराला ※ दरस सुपार्श्व दीन तत्काला
कटक-कीस लखि, लीलन चाहा ※ ओट निवारि[7] लीन खगनाहा
अहह ! तात ! अनुचित संहारू ※ मोर अमित इन किय उपकारू

हिमालय पर्व्वते आमार परिवार ※ तथा हैते पुत्र मम योगाय आहार
नित्य आने आहार से प्रभात समय ※ एक दिन आनिते बिलम्ब अतिशय
क्षुधाय आकुल आमि, दहे कलेवर ※ कोपे सुपार्श्वेर भर्त्सिलाम बहुतर
धार्म्मिक आमार पुत्र धर्म्मे बड़ रत ※ कहिलेन वृत्तान्त आमारे अवगत
आहार लइया पिता प्रभाते आसिते ※ देखिलाम एक नारी रावणेर रथे
कृष्णवर्ण रावण से गौरवर्ण नारी ※ मेघेर उपरे जेन विद्युत् सञ्चारि
'श्रीराम लक्ष्मण' बलि कान्दिछे बिस्तर ※ दुइ पाखे आगुलिनु दुइटि प्रहर
राखिताम रथ सह ताहारे उदरे ※ केवल पाइल रक्षा स्त्री-वधेर डरे
सुपार्श्वेर कथा शुनिलाम मनोनीता ※ जानिलाम तखनि से श्रीरामेर सीता
एखनि आसिबे पुत्र महाबल तार ※ पृष्ठे करि सब कारे से करिबे पार
तिन भाग सागर से दुइ पाखे ढाके ※ एक भाग मात्र तार लंघिवारे थाके
एक भाग लंघिते ना हबे कोन श्रम ※ स्थिर हओ कपिगण नहे व्यतिक्रम
एइ रूप करितेछे कथोपकथन ※ महाकाय सुपार्श्व आइल ततक्षण
दुइ ठोंट मिलिया से गिलिवारे जाय ※ सम्पातिर आड़े गिया कटक लुकाय
सम्पाति बलेन, बाछा, ना कर संहार ※ पृष्ठे करि सबार सागर कर पार

१ भोजन २ विलम्ब ३ बिजली ४ तीन चौथाई ५ दो पंख-फैलाव की जगह ६ बात करते हुये ७ अपनी आड़ में करके ।

प्रत्युपकार[1] पीठ तिन लेही ※ सिंधु पार कपिगन करि देही
कह सुपार्श्व, पितु-वचन प्रमाना ※ मम तन चढ़ि, कपि करैं पयाना
सुनत कहेउ पुनि बालिकुमारा ※ सिय हित सिंधु तरन मम भारा
स्वयं देव - देवन - अवतारा[2] ※ उचित न देहिं विहग-सिर[3] भारा
कह सम्पाति, कौन प्रभु-काजू ※ रामायन-प्रसाद मोहिं आजू
नूतन पंख पुनः मैं धारा ※ कपिन राम! जय राम! पुकारा
चमत्कार लखि बल सञ्चारा ※ सिन्धु, सुमिरि प्रभु, उतरहिं पारा
इमि चर्चत नभ उठेउ खगेसू ※ पंख पसारि चलेउ निज देसू
सहित सुवन उत्तरहिं पयाना ※ दक्षिण अंगदादि हनुमाना
दो० कृत्तिवास रचना विमल, श्रोतन[4] अमृतभाण्ड ।
कथा समापन पावनी इमि किष्किन्धाकाण्ड ॥ ८३ ॥

करियाछे इहारा आमार उपकार ※ करह प्रत्युपकार तबे हइ पार
सुपार्श्व बलेन, मान्य पितार वचन ※ आमार पृष्ठेते सब चड़ कपिगन
अंगद ब'लेन, वीर शुन उपदेश ※ सागर तरिया करि सीतार उद्देश
देवतार पुत्र मोरा देव अवतार ※ कि कारणे पक्षी हे, तोमाय दिब भार
सम्पाति ब'लेन, आमि रामकार्य्य करि ※ रामायण-प्रसादे नूतन पक्ष धरि
उभय हइल पक्ष देखिते सुन्दर ※ 'राम जय' ब'लि डाके सकल वानर
देखिया वानरगण लागे चमत्कार ※ रायजय-स्मरणे सागर हब पार
कपि सम्भाषिया पक्षी उठिया आकाशे ※ दुइ पक्ष पसारिया जाय निज देशे
पुत्र सह पक्षिराज गेलेन उत्तर ※ अंगद कटक सह दक्षिण सागर
कृत्तिवास रचे गीत अमृतेर भाण्ड ※ समाप्त हइल एइ किष्किन्ध्या काण्ड

॥ इति किष्किन्ध्या काण्ड ॥

---

१ उपकार के बदले में २ हम लोग देवी-देवताओं के अवतार स्वयं दिव्य हैं
३ पक्षी के ऊपर सवार हों ४ श्रोताओं (सुननेवालों) के लिए।

श्री गणेशाय नमः

सुन्दरकाण्ड

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्व्वाणशान्तिप्रदं-
शम्भुब्रह्मफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम् ।
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं-
वन्देहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ॥
नान्या स्पृहा रघुपते हृदये मदीये
सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा ।
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे
कामादिदोषरहितं कुरु मानसञ्च ॥
अतुलित - वलगेहं हेमशैलाभदेहं-
दशमुखपुर - वह्नि ज्ञानिनाम् - अग्रगण्यम् ।
सकलगुण - निधानं वानराणाम् - अधीशं-
रघुपति - वरदूतं वातजातं नमामि ॥

सागर पार करने हेतु वानर-मंत्रणा

दो० किष्किधा वन-वन फिरत कपिगन क्षोभ प्रकाण्ड ।
सीय-सुखद-सम्बाद-युत् सुन्दर सुन्दरकाण्ड ॥
उत्तर कीन पयान उत, दोउ सुपार्श्व-सम्पाति ।
अंगद दच्छिन सिन्धु-तन, कपिन पाँति की पाँति ॥ १ ॥

गर्ज - तर्ज बहु केहरि नादा ※ अगम तरंगन लखत प्रमादा[१]
तिमिर[२] गगन, पुनि विकट समीरा ※ उफनि उछालति बारिधि-नीरा
तहँ जलजन्तु विविध रव करहीं ※ ग्राह- त्रास[३] जल पग जनि धरहीं
ते जल - जीव पर्वताकारा ※ ग्रसहिं अकेल मनहुँ संसारा

वानरगणेर सागर-पार-गमनार्थ मन्त्रणा

पिता पुत्रे पक्षिराज गेलेन उत्तर ※ अंगद कटक सह दक्षिण सागर
तर्ज्जन गर्ज्जन करे, छाड़े सिंहनाद ※ सागर तरंग देखि गणिल प्रमाद
तमोमय देखा जाय गगन-मण्डल ※ हिल्लोले कल्लोल तुले समुद्रेर जल
सिन्धु जले जलजन्तु कलरव करे ※ जलेते ना नामे केह मकरेर डरे
एक एक जलजन्तु पर्व्वत प्रमान ※ जगत् करिबे ग्रास, हय अनुमान

१ उन्माद (उफनाना) २ अन्धकार ३ मगर के भय से ।

अगम सिन्धु लखि त्रसित अपारा ※ सबन प्रबोधत बालिकुमारा
संशय बल तोरत, पुनि मरना ※ संशय तजि सब संकठ तरना
सुख सोवहिं निसि सागर तीरा ※ उतरहिं भोर उदधि गम्भीरा
शय्या पुनि तृणपात सजाई ※ कपिन सिंधु-तट निसा बिताई
तीर जलधि सुखरैन बिताये ※ सैनिप[1] सब प्रातः जुरि आये
सम्मुख लखि प्रणवत[2] सब वीरा ※ अंगद कहेउ सुनहु रणधीरा
नृप-आयसु विधि इतै पठाई ※ कवन समर्थ विपत्ति नसाई
ब्रह्मकलश - अमरित छलि लावै ※ सुरपति कर सों बज्र छिनावै
को समर्थ रवि-ताप निवारी ※ सीत छटा सक चन्द्र उतारी
छीनि सकै यमदण्ड विशाला ※ बाँधै कुञ्जर तन्तु - मृनाला
जेहिं सशक्त पौरुष यहि भाँती ※ करै पराक्रम लहै सुख्याती
सिय-सम्बाद सबन सुखदाई ※ तिय-सुत-दरस लहैं गृह जाई

दो० विषम काज अंगद वरनि, पूँछत समरथ कौन ।
काहु न साहस, तकत मुँह, अखिल सैन-कपि मौन ॥ २ ॥

संग प्रचुर जे कपि सामन्ता ※ पूँछत अंगद बार अनन्ता
पुनि पुनि मैं पूँछत तुम पाहीं ※ उतर न देत, बैन मुख नाहीं

सागर देखिया सबे पाइल तरास ※ सवाकारे करितेछे अंगद आश्वास
विषादे विक्रम टूटे, विषादेते मरि ※ विषाद घुचिले भाइ सर्व्वएइ तरि
सुखे निद्रा जाय आजि समुद्रेर कूले ※ सागर तरिब कालि अति प्रातःकाले
सागरेर कूल चापि रहिल वानर ※ रहिबारे लतापत्रे साजाइले घर
सागरेर कूले तारा सुखे वाञ्चे राति ※ प्रभाते एकत्र हैल सर्व्व-सेनापति
जोड़ हाते दाण्डाइल अंगदेर आगे ※ अंगद कहिछे वार्त्ता शुने वीरभागे
दैवदोषे लंघिलाम राजार शासन ※ कोन् वीर घुचाइब ए घोर बन्धन
ब्रह्मार हस्तेर सुधा छले कोन् जने ※ इन्द्रेर हस्तेर बज्र कोन् जन आने
प्रखर सूर्य्येर रश्मि कोन् जन हरे ※ चन्द्रेर शीतल रश्मि के आनिते पारे
यम हैते यमदण्ड काड़े कोन् जन ※ के कर मृणाल-सूत्र करीर बन्धन
एइ कर्म्म करिवारे जाहार शकति ※ देखाइया विक्रम से राखुक खेयाति
आनिले सीतार वार्त्ता सबे हइ सुखी ※ ताहार प्रसादे गिया पत्नी पुत्र देखि
ऐत यदि वलिलेन कुमार अंगद ※ नीरव हइया सबे गनिल विपद
छिल यत सैन्य संगे सामन्त प्रचुर ※ बार-बार जिज्ञासेन अंगद ठाकुर
राजपुत्र अंगद जिज्ञासे वार-बार ※ उत्तर ना दाउ केन, ए कि व्यवहार

---

१ सेनापति २ प्रणाम करते हैं ।

सबन नयन-तर उदधि[1] विशाला * विकट तरंग अकास-पताला
पूँछत, उर केहि भाँति विषादू * को भट, लहै कपीस - प्रसादू
प्रन - सुग्रीव करै को पारा * करै वीर! रघुपति-उपकारा?
केहि कर[2] होय जाति-निस्तारा * लहै सुयश करि सिय-उद्धारा
अंगद - वचन अवज्ञा नाहीं * निज बल कहि कछु कछु सकुचाहीं
यम-नन्दन 'गय' निज बल वरना * अधिक न योजन दस मोंहि तरना
पुनि 'गवाक्ष' गय कौस-सहोदर * योजन बीस तरै सो सागर
'शरभ' सैनपति कपिन उजागर * योजन चालिस लौं बल-आगर
बन्धु 'गन्धमादन' विस्तारा * मम योजन पचास लौं भारा
कहेउ 'महेन्द्र' सुषेनकुमारा * योजन साठि करौं मैं पारा
मर्म बन्धु 'देवेन्द्र' बखाना * सत्तर अधिक न मम अनुमाना
विश्कर्मा-सुत 'नल' बहु ख्याती * अस्सी उपर न बल केंहु भाँती
अग्निसुवन बोलत कपि 'नीला' * नब्बे योजन लौं बलशीला
तारक जो कपीस - भण्डारी * नब्बे पर दुइ अधिक पुकारी

दो० ऋक्षपुत्र भल्लुक सचिव जाम्बवान अनुमान।
बिहँसि बहुरि युवराज सन निज बल कौन बखान॥ ३॥

अंगदेरे बोले, सबे सागर नेहाले * महा ढेउ उठे पड़े आकाश-पाताले
अंगद ब'लेन, केन करिछ विषाद * कोन् वीर लवे एस राजार प्रसाद
कोन् वीर सुग्रीवे करिबे सत्ये पार * कोन् वीर करिबे रामेर उपकार
कोन् वीर करिबे ज्ञातिर अव्याहति * सीता अन्वेषिया आजि राखह सुख्याति
अंगदेर वचन लंघिते केह नारे * आपन विक्रम सबे कहे धीरे-धीरे
गय नामे सेनापति यमेर नन्दन * सेइ ब'ले डिगाइब ए दश योजन
गवाक्ष वानर ब'ले तार सहोदर * पारि लंघिवारे कुड़ि योजन सागर
शरभ नामेते ब'ले मुख्य सेनापति * चल्लिश-योजन आमि लंघि सरित्पति
तार सहोदर ब'ले से गन्धमादन * आमि लंघिवारे पारि पंचाश योजन
महेन्द्र वानर ब'ले सुषेण कोङर * लंघिवारे पारि षाटि योजन सागर
देवेन्द्र ताहार भाइ ब'ले एइ सार * सत्तर योजन लंघि आमि पारावार
पुत्र विश्वकर्म्मार ब'लिछे नल वीर * अशीति योजन लंघि सागर गभीर
अग्नि-पुत्र नील ब'ले वीर अवतार * नवति योजन लंघि सागर पाथार
तारक वानर ब'ले राजार भाण्डारी * द्विनवति जोजन जे लंघि वारे पारि
ब्रह्मापुत्र भल्लुक करिया अनुमान * हासिया उत्तर करे मन्त्री जाम्बवान
यौवन कालेर बल टूटये बार्द्धके * यौवन कालेर कथा शुनह कौतुके

---

१ समुद्र २ हाथों से।

यौवन-बल न, वृद्ध अब अंगा ※ यौवन-कौतुक सुनहु प्रसंगा
बलिहिं छलन, वामन पग तीनी ※ त्रिभुवन धरनि नापि सब लीनी
अवनि अखिल जे वीर प्रवीना ※ हरि पद सकल प्रदच्छिन कीना
प्रभु - पद पैकरमा विस्तारा ※ सहित जटायु कीन त्रय वारा
भयेउँ जरठ, यद्यपि अब छीना ※ पचनब्बे योजनहिं प्रवीना
शत योजन विन सिद्ध न काजा ※ योजन पाँच कमी, अति लाजा
जामवन्त लचरई[1] बखाना ※ आत्मविभोर वीर हनुमाना
कोप-दग्ध कह बालिकुमारा ※ करौं शक्ति निज सिन्धु उतारा
इक छलाँग महँ सुबरन लंका ※ लौटत किन्तु हिये कछु संका
पिता-दुलारन[2] श्रम नहिं जाना ※ इमि संसय निज बल अनुमाना
जाब सुलभ प्रत्यागम[3] संसय ※ राम काज किमि होय असंसय[4]
को समर्थ सैनिप नरनाहू ※ जीतहि सिन्धु लहै जस-लाहू
कहेउ भल्लु सुनि अंगद-बानी ※ अहो वीर, किमि कथा बखानी
बिक्रम-बालि बिदित त्रयलोका ※ तेहि सम तहि सुत जगत विलोका
गिनती एक न, तुम शतवारा ※ सिन्धु समर्थ आर पुनि पारा
कटक रहित, तव श्रम अनरीती ※ जाहु सैन तजि स्वयं, न रीती

बलिरे छलिते हरि हइला वामन ※ तिनपाये जुड़िलेन ए तिन भुवन
प्रथिवीते यत वीर आछिल प्रवीण ※ तारा सब ताँर पद करे प्रदक्षिण
जटायु पक्षीर संगे उड़िया अपार ※ विष्णुपद प्रदक्षिण करि तिन वार
पूर्व्वे सेइ शक्ति छिल टूटिल एखन ※ तथापि लंघिब पंचनवति योजन
लांघिले योजन शत सिद्ध हय काज ※ लागिया योजन पाँच भावि बड़ लाज
एत यदि ब'लिलेन मंत्री जाम्बवान ※ अभिमाने ज्वले महावीर हनूमान
कहेन अंगद वीर, कोपे अंग ज्वले ※ सागर तरिते पारि आपनार बले
एक लाफे पड़ि गिया स्वर्णपुरी लंका ※ यदि ना आसिते पारि ताहे करि शंका
भोगे राखिलेन पिता, ना दिलेन श्रम ※ से कारणे नाहि जानि आपन विक्रम
सागर तरिते पारि आसिते संशय ※ कि जानि रामेर कर्म्मे पाछे विघ्न हय
सागर तरिते केवा आछ सेनापति ※ देखाइया विक्रम राखह निज ख्याति
अंगदेर कथा शुनि जाम्बवान हासे ※ वीर तुमि हेन कथा कह कि आभासे
बालिर विक्रम बापू, त्रिभुवने जाने ※ ताहार हइते तव विक्रम बाखाने
एकवार कोन कथा, तुमि शतवार ※ जाइते आसिते पार सागरेर पार
राजा ह'य केन हे करिबे एत श्रम ※ तुमि गेले कटकेर ना रवे नियम

१ लाचारी २ पिता के लाड-प्यार में ३ वापस लौटने में

दो० हम शाखा, तुम मूल, जिन, रहत फलन अधिकाय ।
मूल विना पल्लव झरैं, मूल रहत हरियाय ।। ४ ।।

तव पितु केहि न सीस उपकारा ※ तव प्रताप, नहिं कठिन उतारा
तव, युवराज ! सकल कपि पायक[1] ※ तव आयसु समर्थ सब लायक
आयसु मात्र देहु कपिराजू ! ※ सेवक सिद्ध करैं सब काजू
अंगद कहत, न सागर पारा ※ कोउ भट करत न अंगीकारा
प्रत्यागम[2] दुष्कर मोहिं जाई ※ लखि विलंब नृप-भय अधिकाई
संसय जीवन निश्चित मरना ※ अबहिं करौं मैं सागर तरना
कपिगन कहत जोरि जुग पानी ※ तरहु सिंधु तुम, हमहिं गलानी[3]
नृप, नृप-सुवन, इन्द्र कर नाती ※ सबन सुबुद्ध वृहस्पति भाँती
तव मुख निरखि बालि दुख भूला ※ तुम विन एक दिवस दुखशूला
कहेउ ऋच्छपति संसय तजहू ※ तरै सिन्धु जो, रुचि धरि सुनहू
आत्मविभोर मौन हनुमाना ※ बसत सैन बिच नकुल[4] प्रमाना
सहज नयनतर काहु न आवैं ※ जाम्बवन्त तिन बचन सुनावैं
का मुख लखत मौन हनुमाना ! ※ तात कथन मम सुनु धरि ध्याना

তুমি কটকের মূল, মোরা সবে ডাল ※ সে মূল থাকিলে ফল পাব সর্ব্বকাল
ঝড়ে বৃক্ষ ভাংগিলেই পত্র নাহি রয় ※ যদি মূল থাকে পত্র পুনরায় হয়
কার উপকার না করিল তব বাপ ※ কোন্ বীর লংঘিবেক তোমার প্রতাপ
সকল বানর তব ঘরের সেবক ※ সকলে হইব তব কার্য্যের সাধক
বসি আজ্ঞা কর তুমি বানরের রাজ ※ সেবক হইতে তব সিদ্ধ হবে কাজ
অংগদ ব'লেন ধীরে কি করি ইহার ※ সাগর লংঘিতে কেহ না করে স্বীকার
সাগর তরিতে পারি, আসিতে সংশয় ※ বিলম্ব হইলে করি সুগ্রীবের ভয়
জীবন সংশয় মম, নিশ্চিত মরন ※ সাগর লংঘিব আমি, দেখ বীরগণ
সকল বানর কহে করি জোড় হাত ※ তুমি কেন লংঘিবে হে বানরের নাথ
রাজপুত্র রাজা তুমি বাসবের নাতি ※ নিজে মহামতি তুমি বুদ্ধে বৃহস্পতি
ভুলিয়াছি বালিকে হে তোমা দরশনে ※ এক তিল নাহি বাঁচি তোমার বিহনে
জাম্ববান ব'লে ছাড় জংজাল বচন ※ জে সাগর লংঘিবে, তা করহ শ্রবন
অভিমানে মৌনভাবে বীর হনূমান ※ কটকের মধ্যে আছে নকুল প্রমান
কটকেতে হনুমানে কেহ নাহি দেখে ※ জাম্ববান কহিতেছে দেখিয়া তাহাকে
কার মুখ চাহ তুমি বীর হনূমান ※ আমার বচন বাছা কর অবধান

---

१ प्यादा, सेवक २ वापसी ३ लज्जा ४ नेवला ।

जाम्बवान हनुमत् जिमि कहहीं * कृत्तिवास कवि प्रस्तुत करहीं
बल अगाध पुनि किमि छलरूपा * राम-काज करु धाय अनूपा
सचिव-वचन अंगद मन दीना * गुन न कवन हनुमान प्रवीना
जाम्बवन्त, अंगद कपिनाथा * उर लपिटाइ लेत कर हाथा
भल्लुक कहत सुनहु धरि ध्याना * जन्म - वृतांत वीर हनुमाना

हनुमान-जन्मवृत्तांत वर्णन

दो० कुञ्जर - तनया रूपसी विद्याधरी अनूप ।
शापित विश्वामित्र सों, भइ वानरी सरूप ।। ५ ।।

सो वानरी सुता इक जाई * कपि केसरी ब्याहि घर आई
नाम अञ्जना केसरि संगा * सदा मलय गिरि रत रस-रंगा
चैत मास ऋतु जबहिं बसन्ता * 'पवन' कतहुँ गिरि मलय रमंता
ऋतु बसंत पुनि मलय समीरा * मन चञ्चल, अञ्जना अधीरा
रूप - अञ्जना पवन लुभावा * कपि-गृह दुर्जय, लंघि न पावा
ऋतु असनान नर्मदा - कूला * गई अञ्जना, विधि-अनुकूला
पवनहिं गंध मिलत तेहि ओरी * रमत अञ्जना, धरि बरजोरी
अहह ! देव वानरी - विलासू * कवन हेतु किय जाति विनासू

हनूमान जाम्बवान उभये सम्भाष * सुन्दरकाण्डेते गीत गाय कृत्तिवास
जाम्बवान ब'ले बाछा तुमि महाबल * रामकार्य्य कर बापू केन कर छल
अंगद ब'लेन भाल मंत्री जाम्बवान * कोन गुण नाहि धरे वीर हनूमान
जाम्बवान् वाक्य आर अंगदेर बोले * केह हाते धरे तार केह करे कोले
जाम्बवान् ब'ले, वीर, कर अवधान * शुन हनूमानेर ये जन्मेर विधान

जाम्बवान-कर्त्तृक हनुमानेर जन्म वृत्तान्त कथन

कुञ्जर तनया नामे छिल विद्याधरी * शापे विश्वामित्रेर से हइल वानरी
सेइ वानरीर एक हइल कुमारी * विवाह करिल तारे वानर केशरी
मलय पर्व्वतोपरि केशरीर घर * अंजना लइया केलि करे निरन्तर
चैत्रमास प्रवेशिल, बसन्त समय * हेन काले वायु गेल पर्व्वत मलय
एकेत वसन्त, ताहे मलय पवन * कामेते चंचल अति अंजनार मन
अंजनार रूपे वायु मोहित हृदय * लंघिते ना पारे घरे केशरी दुर्ज्जय
अंजना गेलेन भावि निज अनुकूल * ऋतु स्नान करिवारे नर्म्मदार कूल
सन्धान पाइया गिया देवता पवन * बले धरि अंजनारे करेन रमन
अंजना ब'लेन हे करिला जातिनाश * देवता हइया तव वानरी विलास

कहँ सुर श्रेष्ठ, कहाँ दुष्कर्मा * किय मम नष्ट पतिव्रत धर्मा
सुनु अञ्जना क्षमहि मम दोषू * लखि तव छबि दुर्लभ सन्तोषू
करहु गमन गृह कोप सम्हारी * तव सुत होय अमित बलधारी
मम औरस जेहि जन्म कुमारा * मम गति सों गतितर[1] बिस्तारा
इमि कहि पवन गयेउ निज वासा * मारुति जन्म अठरहें[2] मासा
जन्म अमा तिथि लिय हनुमाना * सुनहु कथा शुभघरी बखाना
जन्मति मातु-छीर[3] मुख लावा * भोर अरुण रवि कौतुक छावा
रुचिर लाल फल मनहिं लुभाना * भरि छलाँग तहँ कौतुक ठाना

दो० गिरि सों भानु छलाँग बिच, इक जोजन बिस्तार ।
एक उपक्रम तड़कि सो, कीन पवनसुत पार ।। ६ ।।

लोभ-दिवाकर, हनुमत धाई * दैवयोग तहँ 'राहु' लखाई
प्रस्तुत राहु, हेतु रवि ग्रासा * निरखि पवनसुत, उपजी त्रासा
सोचि समुझि पुनि चलेउ बराई * विनती सुरपति तीर सुनाई
लीलहि भानु, अवर[4] इक राहू * प्रस्तुत गगन सुनहु सुरनाहू
सुरपति-छोह, अन्य किमि राहू * ग्रसै भानु, किमि ताहि उछाहू[5]
ऐरावत चढ़ि इन्द्र सुहाये * रवि ढिग नजर पवनसुत आये

देवता हइया तुमि करिला कि कर्म्म * कि हेतु करिला नष्ट पतिव्रता धर्म्म
पवन ब'लेन किछु ना कह अंजना * देखिया तोमार रूप पासरि आपना
कोप संवरिया हे अंजना जाह घरे * महावीर हबे एक तोमार उदरे
आमार वीर्य्येते जेइ हइबे कुमार * आमार अधिक गति हइबे ताहार
एत बलि पवन गेलेन निजस्थान * अष्टादश-मासे जन्मिलेन हनूमान
अमावस्या तिथिते जन्मेन हनूमान * से दिनेर कथा कहि, कर अवधान
जन्मिया मायेर कोले करे स्तन्यपान * प्रत्यूषे उदित रक्तवर्ण भानुमान
रागा-फल ज्ञान करि धरिते ताँहाके * सेखान हइते लाफ दिलेन कौतुके
पर्व्वत हइते लक्ष्य योजन भास्कर * एक लाफे उठिलेन से अति दुष्कर
दिवाकरे धरिवारे जान हनूमान * दैवायत्त तथा राहु हय अधिष्ठान
सूर्य्यके करिते ग्रास राहु उपस्थित * देखि हनूमानेरे आपनि सशंकित
भाविया चिन्तिया राहु पलाय तरासे * निवेदन करे गिया बासवेर पाशे
शुन सुरपति, कहि एक समाचार * सूर्य्यके गिलिते ये आइल राहु आर
शुनिया राहुर कथा बासव विरस * सूर्य्यके गिलिते अन्य काहार साहस
ऐरावत चड़िया आइल पुरन्दर * हनूमाने देखे गिया सूर्य्येर गोचर

१ अधिक वेगवाला २ अठारवें ३ मा का दूध ४ एक दूसरा राहु
५ उत्साह ।

मारुति लखि सुरपति भय माना ❊ रवि तजि कहुँ न करै मम पाना
बदन - गजेन्द्र सुभग सिन्दूरी ❊ रहे सकौतुक हनुमति घूरी
धरै मतंग तजै दिननाथा[1]! ❊ बज्र त्रास - बस लिय सुरनाथा
ज्ञान - विवेक ब्रिनासत रोषू ❊ हनेउ बज्र सुरपति बिन दोषू
लागत कुलिस[2] मूर्च्छा आई ❊ गिरे मलयगिरि हनुमत जाई
हनु[3] आहत मारुति गिरि-धामा ❊ दिय हनुमान मातु-पितु नामा
यौवन बल अतीव विधि दीना ❊ त्रिभुवन तीनि प्रदच्छिन कीना
मरन समीप वृद्ध बल व्यर्था ❊ सिन्धु तरन जनि मैं असमर्था
जेहि विक्रम जग लेय सहारा ❊ धन्य सुयश चहुँ तासु प्रसारा
लावहु खबरि सीय, हनुमाना ! ❊ कपिगन चिन्तित, कीजिय त्राना

दो० निज-देसन चलि बिपुल कपि, सुयस करैं उद्घोष ।
सिन्धु उतरि, उद्धारि सिय, दीजिय रामहिं तोष ।। ७ ।।

हनुमान का सागर-तरण के लिए उत्साह

जेहि विधि जन्म भयेउ मम धरनी ❊ गाथा निज मुख हनुमत वरनी
भूतल तीर्थ 'प्रभास' बखाना ❊ सलिल तासु मुनिगन असनाना

भाविते लागिल इन्द्र पाइया तरास ❊ सूर्य्यके छाड़िया पाछे मोरे करे ग्रास
सिन्दूर शोभित ऐरावतेर बदन ❊ देखिया कोतुकी अति पवननन्दन
सूर्य्यके छाड़िया पाछे धरे ऐरावते ❊ त्रासयुक्त देवराज बज्र निल हाते
कुपित हइले लोक आपना पासरे ❊ विन अपरधे इन्द्र बज्र मारे शिरे
अचेतन हनूमान हइलेन ताते ❊ पड़िलेन तखनि से मलय पर्व्वते
हनू भग्न ह'ये पड़े मलय शिखरे ❊ हनूमान नाम ताइ बाप माये करे
यौवन कालेते आमि छिलाम प्रबल ❊ तिनवार प्रदक्षिण करि भूमण्डल
बृद्धकाले बलहीन निकट मरन ❊ आपनारे नाहि पारि करिते पालन
याहार विक्रमे लोक करेन भर'सा ❊ ताहार जीवन धन्य विक्रम प्रशंसा
जानिया सीतार वार्त्ता आइस हनूमान ❊ चिन्तित वानर सबे, कर परित्रान
नाना विध वानर बसति नाना देशे ❊ तोमार विक्रम येन देशे गिया घोषे
पौरुष प्रकाश कर सागर लंघिया ❊ श्रीरामेरे तुष्ट कर सीता उद्धारिया

आत्म-जन्मवृत्तान्त श्रवणे हनुमानेर सागर लंघनेर उत्साह

हनूमान कहिलेन करह विचार ❊ आमार जन्मेर कथा कहि आर बार
प्रभास नामेते तीर्थ ख्यात महीतले ❊ मुनिगण स्नान करे से नदीर जले

---

१ सूर्य २ वज्र ३ ठोड़ी ।

दन्त प्रलम्ब 'धवल' गज एका ※ दसन विदारैं मुनिन अनेका
भरद्वाज ऋषि मुनिन प्रधाना ※ दन्त पसारि चहत तिन प्राना
प्रानन परी विकल मुनि देखी ※ मम पितु उपजेउ रोष विसेषी
द्रवित[1] पितहिं अति कोप कराला ※ तड़कि मतंग धरेउ तत्काला
नखाघात दुइ नयन निकारे ※ हाथन हनि तिन दशन[2] उपारे
दन्त उपारि उदर पुनि धाँसा ※ दन्ताहत इमि कुञ्जर[3] नासा
प्रस्तुत पितु[4] पुनि मुनिन-समाजू ※ माँगु माँगु वर हे कपिराजू
जो मुनि वर मोंहि देन विचारा ※ लहौं तनय अति श्रेष्ठ कुमारा
कहेउ मुनिन, कपिपति! जस भावै ※ जयी-त्रिलोक सुवन तैं पावै
मुनिन प्रणम्य, कपीस[4] सिधारा ※ गयेउ मलयगिरि निज परिवारा
जननि अञ्जना रूप बखाना ※ गई नर्मदा ऋतु अस्नाना
पवनदेव प्रवहति तेहि ओरी ※ परसि गात लिय वसन झकोरी
पवन तनय इमि ख्याति समाजा ※ भरे समाज दिवावत लाजा
पुनि तुम जाम्बवान केहि जाये ※ हनुमानहिं जनि छिपत छिपाये

दो० मातु सती केहि, विदित केहि, को भट कपिन समाज ।
वृथा वचन मतभेद कहि, रामहिं काज अकाज ।। ८ ।।

धवल नामेते हस्ती दीघल दशन ※ दन्ताघाते चिरिया मारित मुनिगन
भरद्वाज महाऋषि ऋषिर प्रधान ※ दन्त सारि जाय हस्ती निते ताँर प्रान
व्याकुल हइया मुनि पलाय दौड़िया ※ रुषिया गेलेन पिता विपद् देखिया
दयालु आमार पिता अति भयंकर ※ एक लाफे पड़िलेन हस्तीर उपर
दुइ चक्षु उपाड़ेन नखेर आँचड़े ※ दुइ हाथे टानि दुइ दशन उपाड़े
दन्त उपाड़िया तार पेटे देय दन्त ※ दन्ताघाते मातंगेर करिलेन अन्त
परेते गेलेन पिता मुनिर समाज ※ मुनि ब'ले, वर माँग ओहे कपिराज
केशरी ब'लेन, यदि वर निते हय ※ तबे येन पाइ एक उत्तम तनय
मुनिरा ब'लेन, तुमि चाहिला जे वर ※ त्रैलोक्य विजयी हबे तोमार कोङर
वर पेये मुनिगणे करि नमस्कार ※ मलय पर्व्वते गेल यथा परिवार
अंजना आमार माता अति रूपवती ※ ऋतु स्नान हेतु गेल नर्म्मदार प्रति
सन्धान पाइया तथा देवता पवन ※ झड़े वस्त्र उड़ाइया दिल आलिंगन
एइ से कारणे आमि पवननन्दन ※ सभार भितरे लज्जा दाओ कि कारन
तुमि वा काहार पुत्र मंत्री जाम्बवान ※ सकलेर सब वार्त्ता जाने हनूमान
यत-यत आसियाछ वीर सेनापति ※ केवा न जानह, कह कार माता सती
रामकार्य्य करिते ना करि विसंवाद ※ विसंवाद करिले हइबे कार्य्ये वाध

---

१ दया से कातर २ दाँत ३ हाथी ४ अर्थात् केशरी ।

छं० कपि-सैन अभय करि, बालि-तनय कर, मान को मान बढ़ाइबे का ! ।
शत योजन सिन्धु मनौ जलबिन्दु, तहाँ शतबार को जाइबे का ! ।।
रिपु मारि, सिया उद्धारि, महाबल ! सुबरन-लंक ढहाइबे का ! ।
रन काहु न टेरि, अकेल सिया लहि, राम को काज सवाँरिबे का ! ।।

धरि उर मोद तजहु सब चिन्ता ※ करहुँ अकेल काज - भगवन्ता
कहत कीस तव वचन प्रमाना ※ जग न वीर हनुमान समाना
सुमन सुगन्ध मनोहर हारा ※ सकल कपिन हनुमत-गर डारा
सिन्धु तरन मारुति मन भावा ※ बहुभट-सुभटन सहज लजावा
कवि कृतिवास विचक्षण वानी ※ पावन गाथा - राम बखानी

हनुमान द्वारा सागर-लंघनोद्योग

हर्षित अति हिय पवनकुमारा ※ धाय, राम जय राम पुकारा
भरि सुअंक बन्देउ युवराजू ※ बन्दनीय पुनि अखिल समाजू
कपिन कहत भरि गोद बलागर[1] ※ भरौं छलाँग तरन हित सागर
तबहिं धरनि सहि सकै न भारा ※ चलि महेन्द्र गिरि लेयँ अधारा
गिरि समरथ मम भार सम्हारी ※ कपि अनुसरत मरुति[2] बलधारी

वानर कटके करि अभय प्रदान ※ अंगद वीरेर आजि बाड़ाइब मान
सागर जोजन शत देखि खालि जुलि ※ शतवार पार हइ आमि महाबली
उड़िया पड़िब गिया स्वर्ण लंकापुरी ※ शत्रु मारि उद्धारिब रामेर सुन्दरी
तोमा सवाकारे ना डाकिबे युद्ध आशे ※ एकाकी आनिब सीता श्रीरामेर पाशे
परम हरिषे थाक कोन चिन्ता नाइ ※ सकलेते किवा काज, एका आमि जाइ
सबे ब'ले, यत ब'ल, किछु नहे आन ※ त्रिभुवने वीर नाहि तोमार समान
सुगन्धि पुष्पेर माल्य गन्ध मनोहर ※ हनूमान गले दिल सकल वानर
बड़-बड़ वानरेर देखिया काकुति ※ सागर तरिते हनूमान करे मति
कृत्तिवास कविर कवित्व विचक्षण ※ गाइल सुन्दरकाण्ड गीत रामायण

हनूमानेर सागर लंघनोद्योग

तदन्तर वायु-पुत्र प्रसन्न हृदय ※ उठि दाँड़ाइया ब'ले 'राम जय-जय'
युवराज अंगदेरे करि आलिंगन ※ बन्दनीय सर्व्वजने करिला बन्दन
अन्य यत कपिगणे आलिंगन दिया ※ कहिछेन सकलेरे उल्लासित हैया
आमि जबे लम्फ दिब सागर लंघिते ※ ना पारिबे मोर भार धरणी सहिते
अतएव चल सबे महेन्द्र भूधरे ※ लम्फ दिव थाकि ओइ गिगिर उपरे

---

१ बलशाली हनुमान २ हनुमान ।

गिरि महेन्द्र हनुमत छबि पावा ❋ गिरि पर गिरि मानहुँ चढ़ि आवा
किन्नर, अमर, यक्ष, गन्धर्वा ❋ नाग, भूत, सिद्धादिक सर्वा
अप्सरादि विद्याधरि सारी ❋ नभ सों मुनिगन रहे निहारी
गिरि, प्रस्तुत वानर-कुल सारा ❋ विविध सुमन मिलि गूँथत हारा
सो युवराज लीन ततकाला ❋ अर्पित पवनतनय - गर माला
ऐरावत - मणिमाल सरूपा ❋ मरुति-कण्ठ छबि देत अनूपा

दो० कपिन-अनुज्ञा लै प्रथम, पूरुब-मुख आसीन।
पवनतनय सविनय सबन, ध्याय दण्डवत कीन ॥ ९ ॥

गौरि गनेश ब्रह्म दिक्पाला ❋ अष्ट लोकपति शंभु दयाला
पञ्चदेव वरुणादि कुबेरा ❋ विष्णु-रमा पुनि सुरपति टेरा
पुनि अञ्जना केशरी बन्दे ❋ बन्दति निज पितु पवन अनन्दे
जेते कीस सुभट बलसीवा ❋ बन्दि लखन-सिय उर सुग्रीवा
आदि राम छबि चिन्तन कीन्हा ❋ उर-हनुमान, दरस प्रभु दीन्हा
भक्ति सहित कपि कीन प्रणामा ❋ जयति राम जय करुणाधामा
अगनित रघुपति राम सहारा ❋ तव लहि कृपा तरति भव पारा
जो अवलम्ब दयामय केरू ❋ पिपीलकहिं[1] गिरि सहज सुमेरू

एत शुनि अग्रे करि पवन कोङरे ❋ उठिलेन कपिगण सेइ धराधरे
महेन्द्र उपरे शोभे मरुतनन्दन ❋ येन अन्य गिरि आसि कैल आरोहन
हेनकाले यावतीय अमर किन्नर ❋ देखिवारे एल सबे अम्बर उपर
विद्याधर अप्सरा गन्धर्व्व नागगन ❋ यक्ष भूत सिद्ध साध्य मुनि तपोधन
सबे मिलि यावतीय शाखामृग-कुल ❋ गाँथिलेन माला एक तुलि नाना फुल
सेइ माला युवराज ल'ये निज करे ❋ समर्पिला पवनतनय - कण्ठोपरे
शोभिल श्रीहनूमान सेइ माला परि ❋ जेन मणिमाला गले ऐरावत करी
तबे सब कपिस्थाने अनुमति ल'ये ❋ बसिलेन हनूमान पूर्व्वमुख ह'ये
भक्तियुक्त मने कैला दण्डवत नति ❋ गणेशादि पंचदेव दिक्पाल प्रति
अष्ट लोकपाल बन्दे उमा महेश्वरे ❋ कुबेर वरुण बन्दे बन्दे पुरन्दरे
ब्रह्मा विष्णु वन्दे वीर विष्णुर वनिता ❋ अंजना केशरी बन्दे, बन्दे वायु पिता
बड़-बड़ कपिगणे बन्दे एक भावे ❋ उद्देशे प्रणाम करे नृपति सुग्रीवे
लक्ष्मण जानकी पद करिया बन्दन ❋ आरम्भिला रामचन्द्र करिते चिन्तन
चिन्तामात्र हृदय प्रकाश रघुवर ❋ देखिया मारुति मने करेन आदर
जय - जय रामचन्द्र रघुकुलपति ❋ कृपामृत पारावार अगतिर गति
तुमि यदि चाह प्रभु हइया सदय ❋ तबे पिपीलिका मेरु तुलिते पारय

---

[1] चीटियों को भी।

अणु-परमाणु नयन बिन देखी * पंगु सकत तरि सिन्धु विशेषी
तव महिमा इमि लखि रघुराजू * करि साहस लिय गुरुतर काजू
यदि तव कृपा सिद्ध जनि कामा * तौ तव वृथा कल्पतरु नामा
लीन सरन मैं, प्रभु! यहि हेतू * कृपा-कोरि[1] कीजिय रघुकेतू
यहि विधि विनय पवनसुत कीन्हा * उर-छबि-राम अनुमती[2] दीन्हा
पुनि हिय सों हरि अन्तर्द्धाना * लखि प्रभु-गमन, तजेउ कपि ध्याना
राम-कृपा लहि, मोद महाना * कपिन हेरि बरनत हनुमाना
सखा! सुनहु अब मोहिं न चिन्ता * कर सम गहेउ स्वयं भगवन्ता

दो० गोपद सम सागर लखत, रुचि, शतबार सँझाय।
हनि सवंश लंकेस पुनि, धरौं लंक इत लाय॥ १०॥

हाथन सिन्धु उलीचहुँ बारी[3] * बोरहुँ विश्व मनै अस धारी
सुनत बैन प्रमुदित कपिवृन्दा * जिमि घन-गर्ज मयूर अनन्दा
पुनि मारुति अंगद उरलाई * वृद्ध ऋच्छपति-पद शिर नाई
राम-चरन, उर ध्यान लगावा * लंघन सिन्धु दछिन दिसि धावा
सबबिधि हनुमत-कुशल मनाई * वानर-कटक राम-धुनि छाई
धरनि विलोकि न समरथ भारा * गिरि चढ़ि लंघ पयोधि विचारा

परमाणु देखिते पारये अन्धजन * पंगु पारे पारावार करिते लंघन
एइ साहसेइ आमि हेन गुरुकाज * करिवारे साहस क'रेछि रघुराज
यदि सिद्ध नाहि कर तुमि सेइ कामे * दोष हवे प्रभु, तव कल्पतरु नामे
अतएव तव पदे करि निवेदन * कर मोर प्रति कृपा कटाक्ष अर्पन
एत निवेदन कैला जबे हनुमान * कटाक्षेते अनुमति दिला भगवान
तबे प्रभु अन्तरेह कैला अन्तर्द्धान * प्रभु नाहि देखि वीर त्यजिलेन ध्यान
प्रभु अनुग्रह पेये आनन्दित मन * कहिछेन कपिगणे पवननन्दन
आर नाहि करि आमि कोनइ चिन्तन * हइयाछि राम-कृपा-कटाक्ष-भाजन
एवे देखि समुद्रेर गोष्पद जेमन * शत कोटि वार लंघिवारे करि मन
सवंशे रावण बधे साहस जे करि * लंका तुलि एइ स्थाने अनिवारे पारि
भुजे करि हेलाइया सागरेर वारि * इच्छा हैले ब्रह्माण्डेरे डुबाइते पारि
मारुतिर वाणी शुनि सुखी कपिगन * शिखी यथा शुनि धाराधरेर गर्जन
तबे पुनः मारुति अंगदे आलिंगिया * वृद्ध ऋक्ष जाम्बवान-चरण बन्दिया
दाँड़ाय दक्षिण मुखे लंघिते सागर * श्रीरामचन्द्रेर पदे राखिया अन्तर
वानर कटके करे राम जयकार * हनूमान, निर्व्विघ्ने सागर हओ पार
पृथिवी सहिते नारे हनुमान भर * समुद्र लंघिते उठे पर्व्वत उपर

१ दयादृष्टि २ स्वीकृति ३ जल।

कपिपद - चाप धराधर काँपा ※ भय बस सिंह व्याघ्र गिरि साँपा
चालिस योजन अंग प्रसारा ※ तड़कि चलेउ नभ त्यागि पहारा

सागर लंघन हेतु हनुमान द्वारा भीषण-रूप धारण

गुणनिधि जाहिं सिन्धु के पारा ※ माया - तन हनुमत विस्तारा
दश योजन तन अभय कराला ※ बल तेहि दुगुन अतिव विकराला
पवनतनय गिरि इमि छबि पावा ※ अवर[1] धराधर[2] भूधर[3] छावा
अग्निपुञ्ज सम नयन विशाला ※ नासा-स्वर जिमि बज्र कराला
पुच्छ-रोम शिर करत कलोलैं ※ मेरु शिखर जिमि अहिपति[4] डोलैं
दुसह कलेवर - कपिवर - भारा ※ पुनि पुनि डगमग होत पहारा
गिरि लर्जत तरु कम्प गभीरा ※ झरत सुमन बरसत मनु वीरा
उपरि विटप[5] बहु धरनि लखाहीं ※ तरु-पंछी उड़ि नभ मड़राहीं

दो० कतक शृंग[6] आपात भुइँ, दुष्ट जीव दबि नष्ट ।
हस्ति चिघरत पाय भय, तजि वन भजे[7] सकष्ट ।। ११ ।।

बहु कुञ्जर उतान[8] बिन प्राना ※ तिन दबि मरे निकट-पशुनाना
अचरज अति जिमि लहि मृगराजू ※ बिडरत[9] चहुँ मृग वन्य समाजू

पर्व्वते उठिल सबे ह'ये एक चाप ※ सिंह व्याघ्र पलाइल पार्व्वतीय साप
चल्लिश योजन तनु हनूमान धरे ※ शरीर ठेकिल गिया आकाश उपरे

सागर लंघने हनुमानेर भीषण मूर्ति धारण

सर्व्वगुण पात्र वायु-पुत्र सिन्धु लंघिवारे ※ तबे करि लीला बाड़ाइला आपन कायारे
तबे असाध्वस ह'ल दश योजन विस्तार ※ आर महाबल सुदीघल द्विगुण ताहार
करि दरशन तारे मन करे हेन ज्ञान ※ येन सेइ गिरि शिरोपर आन गिरिमान
ताहे दुनयन विरोचन सम प्रकाशय ※ किवा नासा-रव शुनि सब निर्घात मानय
दिव्य रोमगुच्छ दीर्घपुच्छ शिरोपरिलोले ※ येन मेरुगिरि शृंगोपरि नागराज दोले
सेइ कपिवर-कलेवर-भर से भूधर ※ नारि सहिवारे वारे-वारे करे थर-थर
ताहे तरुगण आन्दोलन कर घनेघन ※ ताहे पुष्प झरे, बुझि वीरे करिये वर्षन
आर कत वृक्ष लक्ष-लक्ष उपड़ि पड़य ※ ताहे नाना पाखी छाड़ि शाखी आकाशे उड़य
ताहे कत शृंग पेये भंग भूतले पड़िला ※ ताय कत दुष्ट पशु नष्ट कष्टेते हइला
ताहे पाय भीति कत हाती कातर हइया ※ करे पलायन छाड़ि वन चीत्कार करिया
आर कत करी प्राणे मरि उच्च हैते पड़े ※ ताहे हैल हत पशु कत ये छिल नियड़े
इथे ह'ल एक परतेक महत् आश्चर्य्य ※ किवा करि-स्थाने ह'ल प्राणशून्य सिंहवर्य्य

१ दूसरा २ पहाड़ ३ पड़ाव पर ४ शेषनाग ५ वृक्ष उखड़-उखड़ कर ६ पहाड़ों की चोटियाँ ७ भाग गये ८ चित पड़े थे ९ तितर बितर हो जाता है ।

पवन प्रान-जग, तेँहि सुत-अंगा ※ पावत भार ढहत गिरि-शृंगा
मारुति-चाप विवर[1] तजि साँपा ※ आकुल तजत श्वास-सन्तापा
कर्ण सचेष्ट, धीर, बलवीरा ※ हुमकि सदर्प, घोष 'रघुवीरा'
सो हनु-नाद छनहिं जग छावा ※ मनु कल्पान्त जलद घहरावा
सुनत महारव जीव अधीरा ※ भय बस बिकल, न चेत सरीरा
घन-रव, पुनि कपिगन-जयकारा ※ दिग्दिगंत दोउ रव[2] विस्तारा
हनुमत - वेग अनन्त अपारा ※ स्वयं पवन-गति तन जिमि धारा
लख-लख विटप न वेग सम्हारी ※ तेँहि[3] अनुगमत, भये नभचारी
लखि प्रवास, हनुमान-बिछोहा ※ मनहुँ अनुसरत बिबस-बिमोहा
कतक शिखर कुंजर[4] उड़ि धाये ※ चलि मग वारिध-नीर समाये
मारुति अन्तरिक्ष तन उठहीं ※ कौतुक लखत चकित सब रहहीं
अहह ! पवनसुत गगन सुहावा ※ मेरु पंख धरि नभ छबि पावा
युगुल बाहु घन बीच प्रकासू ※ बासुकि जिमि गिरि-सीस निवासू
पुच्छ उच्चतर उद्धर्व अनूपा ※ भाद्र मास ध्वज-इन्द्र[5] सुरूपा

दो० चलत पवनगति अंग जिन अति रव बज्र समान ।
मरुत-बयार-प्रवाह फँसि, थिर न काहु कल्यान ।। १२ ।।

किवा जगत्-प्राण सुसन्तान-कलेवर-भरे ※ नारि सहिवारे से शिखरे चड़-चड़ करे
ताहे पेये चाप यत साप विवरे आछिल ※ तारा पेये त्रास महाश्वास छाड़िते लागिल
तबे महावीर ह'ये स्थिर उच्चे कर्ण सारि ※ करिमहादम्भ दिला लम्फ श्रीराम फुकारि
सेइ महारव लोकसब क्षणे आच्छादिल ※ येन कल्पकाले कुतूहले जलद गर्ज्जिल
सेइ शब्द शुनि यत प्राणी करे टलमल ※ ह'ल अचेतन यत जन भयेते विकल
ताहे कपिगन घने घन जयध्वनि करे ※ दुइ शब्दे मिलि गेला चलि दश दिगन्तरे
सेइ महावीर मारुतिर गतिवेग देखि ※ तार उपमान मरुत्वान पवनेन लेखि
सेइ वेग वृक्ष लक्ष-लक्ष ना पारि सहिते ※ तारा वीरवाय पाछे जाय व्योम उपरिते
मने एइ लिखि तारा देखि प्रवासी ताहाय ※ येन बन्धुजन दुःखिमन अनुब्रजि जाय
आर कत हाती श्रृंग तथि उड़िया चलिल ※ तारा कत दूरे गिया परे जलेत पड़िल
तबे विना लक्ष्ये अन्तरीक्षे मारुति उठिल ※ करि निरीक्षण सबजन स्तम्भित हइल
आहा कपि किवा पाय शोभा आकाश उपरे ※ येन मेरु गिरि पक्ष धरि उड़ये अम्बरे
तार बाहुद्वय प्रकाशय सघने दोलय ※ येन नागराज गिरिराज उपरि शोभय
तार ऊर्द्ध्व वदेशे किवा भासे पुच्छ उच्चतर ※ येन भाद्रमासे सुप्रकाशे इन्द्रध्वजवर
तार अंगगण समीरण सम तेजे वय ※ जार शुनि रव लोक सब निर्घात मानय

१ बिल २ शब्द ३ हनुमान के पीछे ४ हाथी ५ प्राचीन काल में भाद्र शुक्ल द्वादशी को इन्द्रध्वज गाड़कर पूजन होता था ।

बेग-समीर अकर्षन भारी ※ बिबस सकल फँसि चले मँझारी
बहुल धराधर सिन्धु समाये ※ नभचारी बहु उबरि न पाये
बारिधि जल अति कलकल ब्यापा ※ जल-थल अखिल महारव काँपा
मकरादिक जलचर जल माहीं ※ भय बस चलि अति दूर लुकाहीं[1]
उठत शनैः[2] व्योम[3] हनुमाना ※ लहेउ दिवाकर मुकुट समाना
रक्तपद्म अभरन युग चरना ※ गर जगमग रवि-दुति[4] आभरना
बल बिक्रम निहारि सुख पावैं ※ सुरगन सुमन वृष्टि झरिलावैं
चिन्तति उर स-नेह रघुनाथा ※ गगन संतरति इमि कपिनाथा

सुरसा द्वारा मार्ग-अवरोध

बिक्रम अतुल निरखि हनुमाना ※ सुरगन सुरसा तीर बखाना
अहि-जननी[5] तव शक्ति विलच्छन ※ संसय-होय-सबन करु भञ्जन
राम-प्रिया सिय-शोध लगावन ※ लखहु लंक-प्रति हनुमति-धावन
मारग विघिन रूप अस धरहू ※ तेंहि बल-बुद्धि परिच्छन[6] करहू
सिन्धु पार करि पुनरपि आवैं ※ कारज-राम सिद्ध करि लावैं

सेइ वेगवान मरुत्वान लागये याहारे ※ सेइ कोनमते स्वस्थानेते स्थिर हैते नारे
सेइ समीरण वेगे घन सब आकर्षित ※ तार पाछे-पाछे काछे-काछे चलिल त्वरित
आर बहुतर धराधर सागरे पड़िल ※ कत व्योमचारी सिन्धुवारि माझारे डुबिल
आर सिन्धुजल कलकल करे अतिशय ※ सेइ उतरोल जल-स्थल अवधि काँपय
ताहे स मकर जलचर यावत् आछिल ※ तारा पेये भय अतिशय दूरे पलाइल
तबे क्रमे क्रमे उठे व्योमे पवननन्दन ※ ह'ल प्रथमेते तार माथे मुकुट तपन
परे से तरणि कण्ठमणि-समान शोभिला ※ परे दुइपद कोकनद भूषण हइला
हेन महावीर मारुतिर शौर्य्य निरीक्षणे ※ पेये महातुष्टि पुष्पवृष्टि करे देवगणे
तबे एइमते आकाशेते चलिला वानर ※ किवा प्रेम भरे चिन्ता करे रामे वीरवर

सुरसा सापिनी कर्त्तृक हनूमानेर गतिरोध

एइमत मारुतिर विक्रम देखिया ※ सुरसाके सुर सब कहेन डाकिया
नागमाता, तुमि धर शक्ति विलक्षन ※ कर मो' सवार एक संदेह भंजन
जाइछेन एइ वायुतनय लंकाते ※ रामचन्द्र प्रेयसीर तत्त्वे से जानिते
तुमहि ताहाते करि विघ्न आचरन ※ जानह इहार बल बुद्धि वा केमन
पारिबे नारिबे किंवा एइ कपिराज ※ सेथा हैते फिरिवारे साधि एइ काज

---

१ छिप रहते थे २ धीरे धीरे ३ आकाश ४ सूर्य के प्रकाश जैसा ५ हे नागमाता! ६ परीक्षा।

धरि यहि हेतु बदन विकराला ❋ मारुति तीर जाहु तत्काला
सर्पमातु सुरसा यहि रूपा ❋ रूप-राच्छसी धरेसि अनूपा
मारुति चलत पवन रव करहीं ❋ पुच्छ-अघात शिला-तरु उड़हीं

दो० कीस निहारत सिन्धु तन, जहँ लौं दीठि-पसार ।
दरस न कहुँ हनुमान के, गये कहाँ लौं पार ॥ १३ ॥

लंघि भाग त्रय, इक अवसेसू ❋ सर्पिनि किय मग विघिन विसेसू
सुरसा कर निवास सुरलोकू ❋ ठकुराइन सब बिधि अहिलोकू
जन-पताल[1] मुनि सुर-गन्धर्वा ❋ सुरसा-भय ब्यापत जग सर्वा
मरजी-सुरन[2] विकट तन लाई ❋ जहँ मारुति नभ-तर तहँ छाई
कपि ढिग रूप भयंकर धारी ❋ अहि-जननी छल-वैन उचारी
रे रे कीस! जाहु जनि अन्ता ❋ करु प्रवेश मम बदन[3] अनन्ता
अतिशय क्षुधा विकल मम प्राना ❋ तुम लहि यहि छन जीव जुड़ाना
देव दयामय लखि मम पीरा ❋ किय अहार प्रस्तुत मम तीरा
अतः विलम्ब न करि तत्काला ❋ बेगि पैठु मम बदन कराला
सुनि सुतपवन युगुल कर जोरी ❋ नागमातु प्रति विनय बहोरी
दशरथ - तनय राम बनवासू ❋ पितु आयसु लहि दण्डक वासू

इहाइ जानिते धरि घोर कलेवर ❋ जाह तुमि क्षणेक मारुति बराबर
एत शुनि सर्पमाता सुरसा सापिनी ❋ प्रस्थान करिला ह'ये राक्षसी रूपिनी
दुड़ दुड़ शब्दे हनू जाय वायु-भर ❋ लेजेर आघाते उड़े पादप-पाथर
एक दृष्टे कपिगन सागर नेहाले ❋ देखिते ना पाय केह कतदूर गेले
तिनभाग गेछे, आर आछे एक भाग ❋ सुरसा सापिनी तार पथे पाइल लाग
देवतार पुरे थाके सुरसा सापिनी ❋ भुजंग लोकेर तिनि हन गोस्वामिनी
देवता गन्धर्व्व आर पाताल निवासी ❋ सुरसा-सापिनी-उरे सबे हय त्रासी
धरे से विकट मूर्त्ति देवतार बोले ❋ हनुमाने परीक्षा करिते नभस्तले
मारुतिर अंगे भीम मुरति धरिया ❋ कहिछेन नागमाता कपट करिया
अरे कपि, जाह तुमि आर कोन स्थाने ❋ प्रवेश करह आसि आमार बदने
हइयाछि सातिशय क्षुधाय पीड़ित ❋ ए समये तोरे पेये हैनु बड़ प्रीत
बुझिलाम, कृपा करि यत देवगन ❋ करि दिला मोर आगे तोर आनयन
अतएव विलम्ब ना कर एकक्षन ❋ शीघ्र आसि कर मोर मुखे प्रवेशन
एत शुनि वायुपुत्र जुड़ि कर द्वय ❋ कहिछेन ताँर प्रति करिया विनय
दशरथ-पुत्र राम दण्डक कानने ❋ आसि वास करेछिला पितार बचने

---

१ पातालनिवासी २ देवताओं की इच्छा से ३ मुख में ।

तहाँ लंकपति पापाचारी * बिन अपराध हरेउ तिन नारी
जाहुँ लंक आनहुँ सिय - शोधू * कँहु विधि उचित न तव अवरोधू
अखिल जगत-हित रघुपति प्रीती * तिन अनहित सब विधि अनरीती
तदपि न जो कँहु भाँति निवारन * तौ कछु काल धीर करु धारन
सिय की रामहिं खबरि जनाई * तव मुख लौटि प्रवेशहुँ माई !

दो० संशय जनि, मम कथन ध्रुव, सुनि सुरसा कपि-वानि ।
अडिग, कहत, ढिग आय मम, जियत न उबरत प्रानि ॥ १४ ॥

सुरसा - वचन समीरकुमारा * सुनि प्रकोपि कटु वैन उचारा
भच्छै मोहिं, कवन मुख माहीं * करौं प्रवेश, लखौं मैं ताहीं
सुनि सुरसा निज बदन पसारा * योजन बीस विषम बिस्तारा
योजन तीस भयेउ हनुमाना * सुरसा पुनि चालीस प्रमाना
मारुति गात प्रलम्ब पचासा * साँपिनि योजन साठि प्रकासा
इत सत्तर उत अस्सी करनी * हनुमति नब्बे, शत अहि-जननी
चिन्तति कौतुक पवनकुमारा * सहज न निसिचरि केन-प्रकारा
सोचत, प्रकट भयेउ सब मर्मा * निश्चय यहु सुरसा - दुष्कर्मा

विना दोषे हरि आनियाछे ताँर नारी * दशानन एइ लंकापुरी अधिकारी
जाइतेछि आमि ताँर तत्त्व जानिवारे * ताहे विघ्न नाहि कर कोनह प्रकारे
सेइ रामचन्द्र ह'न सकलेर हित * ताँहार अहित करा तव अनुचित
यदि ब'ल, अवश्यइ खाइब तोमारे * तव योग्य हय किछु गौण करिवारे
सीता देखि वार्त्ता दिया श्रीरघुनन्दने * आसि प्रवेशिब आमि तोमार बदने
किछु नाहि कर तुमि इहाते संशय * कहितेछि सत्य आमि करि निश्चय
सुरसा कहेन, ताहा आमि नाहि मानि * मोर आगे आसि फिरे नाहि जाय प्राणी
सुरसार वाणी शुनि समीरनन्दन * कोप करि कहिछेन कठोर वचन
कोन् मुखे दुष्टा, मोरे करि बिभक्षन * प्रकाश करह ताहा, करि प्रवेशन
शुनिया सुरसा विंश-योजन विस्तार * प्रकाश करिला निज-मुखेर आकार
ता' देखि मारुति त्रिश योजन हइला * चल्लिश योजन मुख सुरसा करिला
पंचाश योजन हैल पवन-सन्तान * करिला सुरसा षष्टि योजन व्यादान
सप्तति योजन हैल परे हनूमान * सुरसा करिल आशी योजन प्रमान
हनूमान हैल तबे नवति योजन * सुरसा करिल शत योजन आनन
ताहा देखि हनूमान चिन्तिल विस्मय * ए के ए त सामान्य राक्षसी नाहि हय
एत भावि क्षणकाल मानस माझारे * जानिलेन मारुति सुरसा ब'लि ताँरे
तबे निजे ह'ये इक योजन प्रमान * ताँर मुखमध्ये प्रवेशिल हनूमान

इक योजन करि गात प्रमाना * सुरसा-मुख समान[1] हनुमाना
ज्यों कपि-गात तासु मुख व्यापा * युगुल ओंठ अहिजननी चापा[2]
त्यों कपि ह्वै अंगुष्ठ प्रमाना * कर्णरन्ध्र[3] सों बहिर पयाना
सम्मुख आय कहेउ कर जोरी * नागमातु! विनती सुनु मोरी
तव आयसु तव बदन प्रवेसु * आयसु पाय लखौं उद्देसू[4]
पुरवहुँ राम-काज सिय-शोधू * गति न मातु! तव निरखि विरोधू
संकठ सों करि कृपा उबारौ * लौटति भले उदर पुनि धारौ
सीय-खबरि लावहुँ चलि लंका * बहुरि करौ कछु, मोंहि न संका

दो० पवनतनय के मधु भरे, सुनत वैन अनुरूप।
ह्वै प्रसन्न बोली वचन, सुरसा धरि निज रूप ।। १५ ।।

निपुन परम करु समुद[5] पयाना * सुरगन सदा करैं कल्याना
तव जाँचन, मोंहि सुरन पठावा * निधि-बल-बुद्धि तुमहिं मैं पावा
सुख सों जनत करौ चलि तेही * जेंहि विधि मिलैं राम-वैदेही
इमि कहि सुरसा धाम सिधारी * पूर्व-रूप हनुमत पुनि धारी
तिल न बिलम्ब सुमिरि रघुवीरा * चलेउ वेगि जिमि वेग-समीरा[6]

हनुमान-मैनाक संवाद

लखि बल-बुद्धि-वीर्य-हनुमाना * सुरगन सकल प्रशंसति नाना

प्रवेशिवा मात्र से सुरसा ठाकुराणी * उष्ठ चापि मुद्रित करिला मुख खानि
ताहा देखि ह'ये वीर अंगुष्ठ प्रमाण * कर्णरन्ध्र दिया कैले बाहिरे प्रयाण
वलिछेन, कपिवर जानिनू तोमाय * नागमाता, प्रणति गो करि तव पाय
तव वाक्ये प्रवेशिनु तोमार वदन * अनुमति देह एबे, करि गो गमन
रामेर कार्य्येते जाइ सीतार उद्देशे * तुमि यदि वाधा दउ पार हब किसे
कृपा यदि ना करिबे, पड़िबे संकटे * आसिवार काले खेउ जाइब निकटे
सीतार उद्देशे जाइ लंकार भितर * पाछे जाहा कर ताहे नाहि पाइ डर
तबे से सुरसा धरि आपन मूरति * कहिवारे आरम्भिला वायुपुत्र प्रति
सुखे जाइ हनूमान परम कुशली * करुन तोमार शुभ अमर-मण्डली
तव वीर्य्य पराक्रम बुद्धि जानिवारे * पाठाइयाछिला सब अमर आमारे
ताहा जानिलाम सुखे करह गमन * राम सीता उभयेर कराओ मिलन
एत कहि नागमाता गेला निजस्थान * पुनः पूर्व्वरूप हये जान हनूमान
नागिनी सम्भाषि वीर तिलेक ना रहे * श्रीराम स्मरिया जाय, येन झड़ बहे

१ प्रवेश कर गये २ बन्द किये ३ कान के छेद से ४ अपना प्रयोजन
५ सहर्ष ६ पवनगति से।

तबहिं सिन्धु मन चिन्तन करई ※ कथा पुरातन उर अनुसरई
नृपति 'सगर' सों उत्पति नामा ※ 'सागर' नाम जगत सरनामा
तेहि नृप सगर-बंसधर रामा ※ गमनत जासु पवनसुत कामा
मम कर्तव्य राम कर काजू ※ नतरु अजस[1] चहुँ देय समाजू
अखिल सिंधु इक संग उतारा ※ हनुमत सीस अतुल श्रम-भारा
मग जेहि विधि कहुँ मिलै सहारा ※ सो सुख जतन पयोधि[2] विचारा
इमि सोचत, 'मैनाक' बुलाई ※ सादर गिरिहिं कहेउ समुझाई
तनय-हिमालय! हे गिरिराजू! ※ करहु आजु मम एक सुकाजू
सुरपति-संक[3] लहेउ मम सरना ※ पालेहुँ धरि निज गर्भ सयतना
पवनतनय तव श्रंग विरामा ※ यहि छन करु सहाय कछु रामा

दो० उतपति मम नृप 'सगर' सों, जग 'सागर' सरनाम ।
सगर नृपति के वंश तिन जन्म लीन प्रभु राम ॥ १६ ॥

तिन कारज गमनत हनुमाना ※ करहुँ तासु हित मनहिं सुहाना
अतः जुगुति मम सुनु गिरिराई ※ सलिल उपरि रखु शृंग[4] उठाई
विदित मोंहि, चौदिसि तव शृंगा ※ सकहि प्रसारि सकल तै अंगा

मैनाक पर्व्वतेर सहित हनूमानेर सम्भाषण

देखि मारुतिर हेन वीर्य्य-बुद्धि-बल ※ प्रशंसा करेन ताँरे अमर सकल
हेनकाले नदीपति सुचिन्तित मन ※ करिछेन हृदयेते एइ विवेचन
सगर नृपति ह'ते मोर उपादान ※ एलागि सागर ब'लि डुबने आख्यान
सेइ त सगरवंश याँहार जनम ※ सेइ राम कार्य्ये जान पवननन्दन
ए लागि एहार हित कर्त्तव्य आमार ※ अन्यथा हइले निन्दा लोकेते अपार
लंघिछेन हनूमान एइ पारावार ※ हइतेछे बड़ श्रम इहाते इँहार
अतएव मध्यपथे आलम्बन पाइ ※ जे रूपेते सुखे जान करिब ताहाइ
एत भावि नदीपति मैनाक भूधरे ※ डाकिया कहेन किछु बचन सादरे
हिमालय-तनय मैनाक गिरिराज ※ करह तुमिह मोर आजि एक काज
शुन-शुन-शुन हिमालयेर नन्दन ※ एतकाल करिलाम तोमार पालन
इन्द्रेर भयेते मम लइले शरन ※ लुकाइया राखियाछि करिया यतन
तवोपरि जिराइबे पवननन्दन ※ श्रीरामेर सहायता कर एइक्षन
सगर हइते हय उत्पत्ति आमार ※ जन्म लयेछेन राम वंशेते ताँहार
सेइ राम कार्य्ये जान समीरतनय ※ ताँर किछु हित मोरे करिवारे हय
इहा लागि कहि आमि तोंहे युक्ति करि※ एक बार उठ तुमि सलिल उपरि
अधः उद्धर्व आर चारि पार्श्वे बाड़िवार※ आछये तोमार शक्ति अनेक प्रकार

१ अपयश २ समुद्र ३ देवताओं के भय से ४ पर्वत की चोटी ।

विनय हेतु यहि बारम्बारा ※ उठि, मैनाक ! करहु उपकारा
मारुति करि तव शिखर विरामा ※ गमन करहिं पुनि लंकाधामा
कहि तथास्तु गिरि शीश उठावा ※ निकरि सलिल सों ऊपर आवा
सुबरन-शिखर सिन्धु बिच सोहा ※ मनहु अरुण छबि सागर सोहा
झलक पाय चिन्तित हनुमाना ※ पुनि कँहि विधि यहु विघिन लखाना
मनुज रूप धरि शृंग पसारी ※ मारुति प्रति गिरि गिरा[1] उचारी
सुनु मम विनय समीरकिशोरा ※ आयसु-सिन्धु, आगमन मोरा
'सगर' भूप पूर्वज - रघुकेतू ※ 'सागर' भइ उत्पति जिन हेतू
सोइ सागर उर प्रीति समाई ※ राम - दूत ढिग मोहिं पठाई
उतरि शिखर मम करहु विरामा ※ लेहु सलिल फल मूल ललामा
थकन मिटाय स्वस्थ मन लाई ※ जाहु लंक जहँ रावनराई
मोहिं कपिनाथ ! बन्धु निज जानी ※ संसय तजहु, न भय उर आनी
बन्दौं तव पद धरि निज सीसा ※ सफल करहु अभिलाष कपीसा

दो० विनय-वचन मैनाक के, सुनि मारुतिहिं हुलास ।
रहि अकास सम्भाष पुनि, करत मधुर जिज्ञास ।। १७ ।।

हे गिरिवर ! करु मर्म प्रकासू ※ किमि पयोधि-अन्तस्तल[2] वासू

एइ लागि कहितेछि तोंहे वार-वार ※ उठिया करह तुमि मोर उपकार
तोमार उपरि शृंगे करि आरोहन ※ मारुति विश्राम करि करुन गमन
एत शुनि 'भाल-भाल' ब'लि गिरिवर ※ उठिलेन सागरेर जलेर उपर
किवा साजे सिन्धु माझे सुवर्ण शिखरी ※ प्रभात-तपन येन समुद्र उपरि
पथ माझे देखि तारे मारुति चिन्तित ※ एकि आसि कोन विघ्न हैल उपस्थित
तबे सेइ गिरि धरि मनुष्य मूरति ※ निज शृंगे थाकि केन मारुतिर प्रति
वायुपुत्र शुन किछु आमार वचन ※ समुद्र आदेशे आमि कैनु आगमन
श्रीरामेर पूर्व्ववंशे नृपति सगर ※ तिनि खान करेछेन एइत सागर
एइ हेतु रामदूत, तोंहे सम्मानिते ※ पाठालेन मोरे सिन्धु प्रीतियुक्त-चिते
तुमि हे आमार शृंगे करिया विश्राम ※ खाओ दिव्य फल मूल जल अनुपाम
अवशेषे ह'ये तुमि सुखयुक्त मन ※ करिबे रावणपुर-मध्येते गमन
परिहार कर तुमि यत शंका सब ※ इह आमि तोमादेर सम्बन्धे बान्धव
ए लागिया आसियाछि पूजिते तोमाय ※ सफल करह तुमि मोर वासनाय
एत शुनि हनूमान थाकिया आकाशे ※ जिज्ञासा करेन तारे सुमधुर भाषे
कह-कह कि कारणे तुमि गिरिवर ※ वास करितेछ सिन्धु जलेर भितर

---

१ वाणी २ समुद्र के भीतर ।

तुम मम बन्धु कहौ केहि रूपा ※ विस्तर बरनहु कथा अनूपा
सुनत समोद महीधर बानी ※ कपि सों सकल सप्रीति बखानी
पूरुब[1] पंख अखिल गिरि धरहीं ※ जहँ रुचि, उड़ि पयान ते करहीं
यहि मद-अंध कुबुद्धि प्रकासी ※ गिरत ग्राम-पुर, करत विनासी
हनेउ बज्र सुरनाथ प्रकोपा ※ छेदि कीन गिरि-पंख विलोपा
अखिल पर्वतन पंख विनासा ※ सुरपति पुनि आये मम पासा
भागेउँ यथा होय भय-मोचन ※ मोहि अनुसरत सहस्रविलोचन[2]
मम दयनीय दसा अति देखी ※ पवनदेव उर करुण विशेषी
अतिशय वेग पवन मोंहि डारा ※ गिरेउँ कृपा तेहि सिन्धु मँझारा
सागर-सरन लही, तिन दाया ※ सके न पंख काटि सुरराया
इमि तल-सिन्धु वास, कपि! मोरा ※ हिमगिरि - सुत मैनाककिशोरा
बन्धु-पवनसुत मैं यहि भाँती ※ रुचिर[3] गहौं तव पद प्रणिपाती
मम पुनि सिन्धु-प्रीति उर धारौ ※ बिलमि[4] अंग कछु थकन निवारौ
कहेउ बैन सुनि पवनकुमारा ※ सफल दिवस लहि दरस तुम्हारा
उर सीतल सुनि तव मधुबानी ※ क्षुधा, तृषा, श्रम, पीर नसानी

कि रूपे वा हओ तुमि आमार बान्धव ※ विशेष करिया कथा कह एइ सब
शुनि वाणी महीधर मुदित हइया ※ कहेन पवन-पुत्रे प्रणय करिया
पूर्व्वे यावतीय गिरि छिला पक्षवान् ※ उड़िया करित तारा सर्व्वत्र प्रयान
तबे ताहादेर दुष्टबुद्धि उपजिल ※ पड़िया नगर-ग्राम भंगिते लागिल
ताहा देखि क्रुद्ध ह'ये सहस्रलोचन ※ बज्र करि कैल पक्षच्छेद आरंभन
सकलेर पक्षच्छेद करि अवशेषे ※ वज्र धारि आसिलेन इन्द्र मोर पाशे
ताहा देखि भये आमि करि पलायन ※ पाछे-पाछे चलिलेन सहस्रलोचन
तबे मोरे देखिया कातर अतिशय ※ करुणाते आर्द्र हैया वायु महाशय
परम प्रवल वेग प्रकाश करिया ※ फेलाइल मोरे एइ समुद्रे आनिया
ताँहार कृपाय आर समुद्र आश्रये ※ ना काटिला इन्द्र मोर ए पक्ष उभये
से अवधि आछि आमि सागर भितर ※ हिमालय-पुत्र नाम मैनाक भूधर
तुमि हओ मोर बन्धु पवन-तनय ※ तोमार सम्मान मोरे करिवारे हय
अतएव मोर आर सिन्धुर पीरिते ※ करह विश्राम तुमि मोर उपरेते
गिरि वाक्य शुनि कन पवनकुमार ※ तोमार दर्शन दिन सफल आमार
तोमार मधुर वाक्ये प्राण जुड़ाइल ※ क्षुधा, तृष्णा, क्लेश, श्रम, सकलि जाइल
करिले आतिथ्य तुमि देखाइया प्रीत ※ तोमाते विश्राम करा मोर समुचित

१ पुरातन काल में २ इन्द्र ३ इच्छा होती है ४ विश्राम लेकर।

दो० मम पहुनाई प्रीति तव, निरखि, उचित विश्राम ।
किन्तु अबेर[1] अकाज लखि, उचित न पन्थ विराम ।।
जाय लंक प्रभुकाज करि, बोलत तनय-समीर[2] ।
देहुँ वचन, रहि सिंधुतट, बसौं बन्धु तव तीर ।। १८ ।।

निरालम्ब[3] शत योजन पारा ※ उचित सिन्धु अविराम[4] उतारा
अंगुलि परसि बन्धु तव नेहा ※ क्षमहु, अनुज्ञा देहु स-नेहा
साधु साधु मैनाक पुकारा ※ अनुमति दै प्रशंसि विस्तारा
अंगुलि परसि बंधु गिरि-सीसा ※ धाय गगन किय गमन कपीसा
मारुति प्रति लखि गिरि-सत्कारा ※ इन्द्र सतोष सुबैन उच्चारा
तव मैनाक! निरखि सत्काजू ※ अतिशय मोद लहेउँ मैं आजू
रामदूत प्रति तव पहुनाई ※ लखि त्रयलोक प्रीति चहुँ छाई
आजु क्षमा तव सब अपराधा ※ निर्भय रहहु, तजहु भय-व्याधा

हनुमान द्वारा सिंहिका राक्षसी-वध और सागर-लंघन

सुनि मैनाक अनन्द अपारा ※ गमनेउ दच्छिन पवनकुमारा
हनुमत योजन चलत अनेका ※ मग सिंहिका राक्षसी एका
कपि लखि, दुष्ट निसिचरिहिं भावा ※ विधि[5] अहार भरपेट पठावा

किन्तु वड़ त्वरा आछे लंकाय जाइते ※ ए लागि ना पारिलाम एक्षणे थाकिते
आर शुन आसिवार काले सिन्धु तटे ※ एसछि प्रतिज्ञा करि बान्धव निकटे
निरालम्बे पार हव शतेक योजन ※ अतएव योग्य नहे विश्राम करन
अंगुलि माथेते करि परशि तोमारे ※ दोष क्षमा करि देह अनुज्ञा आमारे
एत शुनि 'साधु साधु' व'लि गिरिवर ※ अनुमति दिल तारे प्रशंसि विस्तर
तबे कर अंगुलिते मैनाक भूधरे ※ परशि पयान कैला मारुति अम्बरे
मारुतिर आतिथ्येते सन्तुष्ट अन्तर ※ मैनाक भूधर प्रति कन पुरन्दर
मैनाक, तोमार आजि देखि एइ कर्म ※ पाइलाम मोरा सबे सातिशय शर्म्म
रामदूत मारुतिर आतिथ्य करिया ※ करिले हे तुष्ट तुमि त्रिजगत् हिया
अतएव आमि तोमा दिलाम अभय ※ सुखे थाक तुमि ह'ये निर्भय हृदय

हनूमान कर्त्तृक सिंहिका राक्षसी-वध ओ सागर लंघन

एत शुनि आनन्दित हन गिरिवर ※ दक्षिणेते चलिलेन पवन कोङर
कतदूरे जबे तिनि करिला गमन ※ सिंहिका राक्षसी ताँरे करिला दर्शन
देखि चिन्ता करे सेइ दुष्टा निशाचरी ※ बुझि आजि भुञ्जिते पाइब पेट भरि

१ विलम्ब २ हनुमान ३ विना सहारा लिए ४ विना रुके ५ ब्रह्मा ने ।

वृहद् जीव संतरति अकासा * धरि छाया खैंचहुँ निज पासा
सोचि, धरेउ मारुति-परछाहीं * मुख पसारि खैंचत निज पाहीं
लखि गति-वेग पवनसुत छीना[1] * तासु हेतु उर चिन्तन कीना
किमि मम वेग न्यूनपन[2] आवा * बाँधि रज्जु[3] दृढ़ बिबस बनावा
सोचि लखत चहुँ, बार अनेका * निज तर लखेउ राच्छसी एका

दो० मुख पताल सम निसिचरी, नभ तन रही पसार ।
पुनि पुनि सोचत पवनसुत, को यह बिकटाकार ॥ १६ ॥

करति अकर्षन, अस मन आवै * खैंचि मोंहि निज ग्रास बनावै
मन सम्पाति-वचन भल जागै * दुष्ट सिंहिका मारग लागै
मम कर आजु तासु प्रतिकारू * अहिनिसि-कण्टक होय निवारू
पुनि लघु रूप धरेउ कपिराई * बदन - सिंहिका[4] गये समाई
मुख भरि लीन तृप्ति अति गाता * स्वयं लीन विष निज अपघाता
प्रविसि दनुजि तन पवनकुमारा * खण्ड-खण्ड पुनि नखन बिदारा
उदर फारि पुनि बाहेर आये * यहि विधि निसिचरि प्रान गवाँये
फटकि-फटकि सिंहिका नसानी * प्रान गवाँय सिन्धु उतरानी
कोटि कोटि जलचर सुख लहहीं * लहि तेंहि माँस भोज मिलि करहीं

जाइतेछे आकाशेते बड़ एक प्राणी * इहार छायाके धरि आकर्षिया आनि
एत भावि मारुतिर छायास्पर्श पाय * आकर्षिते आरंभिल मुखखान वाय
तार आकर्षणे न्यून देखि निजवेग * मने चिन्ता करिछेन मारुति सोद्वेग
एकि, मोर गतिवेग न्यून हय केन * दृढ़ रज्जु दिया केह बान्धिलेक जेन
एत भावि सब दिके देखिते-देखिते * देखिलेन राक्षसीर निजे अधोभिते
पाताल समान मुख विस्तारण करि * रहियाछे अम्बरेते दुष्टा निशाचरी
ताहा देखि भावना करेन पुनर्व्वार * एकि, अधोभागे देखि विकट आकार
बुझि एइजन मोरे करे आकर्षन * आपनार मुखे कराइते प्रवेशन
सम्पातिर वाणी मने हइल स्मरन * एइ बटे सिंहिका राक्षसी दुष्टजन
आजि आमि प्रतिकार इहार करिब * ए पथेर कण्टक निःशेषे घुचाइब
एते भावि क्षुद्रमूर्ति धरि कपिवर * प्रवेशिला सिंहिकार वदन भितर
सिंहिका हइया सुखी मुदिल वदन * येन केह विष खाय मरण-कारण
तबे तार हृदये प्रवेशि हनूमान * नखे करि बिदारि करिल खान-खान
सेइ छिद्र दिया निजे हइल बाहिर * ताहे राक्षसीर प्राण छाड़िल शरीर
तबे घुरि-घुरि सेइ दुष्टा निशाचरी * पड़िल परेते सेइ पयोधि उपरि
ताहे सुखी हैल बहु कोटि जलचर * भोजन करिया तार माँस बहुतर

---

१ क्षीण, मन्द २ शिथिलता ३ रस्सी ४ सिंहिका के मुख में ।

अगनित जीव माँस बहु खाये ❋ तेहि सों आजु सकल भरि पाये
सुर - समूह उर अति हर्षाना ❋ गुन गावत पुनि पुनि हनुमाना
चिर-विजयी रहु पवनकुमारा ❋ राम - कृपा कल्यान तिहारा
निधन-सिंहिका दुष्कर कामा ❋ कोउ समर्थ जनि त्रिभुवनधामा
निरालम्ब शत योजन पारा ❋ धन्य सिंहिका मारग मारा
देवन सकल दनुजि-भय पाई ❋ गगन-पन्थ यहु दीन बराई[1]
कीन अकण्टक पथ यहु आजू ❋ सुलभ कीन सब हित सुख-साजू

दो० राम काज सम्पन्न करि, हरहु त्रिलोकन-पीर ।
तुम सम विक्रम वीर्य्य-बल, जनि समर्थ जग वीर ।। २० ।।

धरति धराधर[2] यावत् धरनी ❋ तावत् अमर सुयश तव करनी
सफल, न संसय, जाहु कपीसा ❋ सकुशल फिरहु, सुरन आसीसा
कहि सुर-सकल सुमन बरसाये ❋ सुनि कपि मगन[3] लंक तन धाये
कछुक दूर चलि लंक निहारी ❋ सोचत उर हनुमत बलधारी
लंका विकटाकार प्रवेसू ❋ निरखि शंक सब करहिं बिसेसू
धरि लघु रूप सुअवसर पावौं ❋ जाय लंक निज काज बनावौं
लंघि सिन्धु धरि सहज सरूपा ❋ दिय पग शिखर त्रिकूट अनूपा

बुझिलाम बहुमाँस पूर्व्वे खेयेछिल ❋ आजि सेइ सकलेर परिषोध दिल
सिंहिकार मृत्यु देखि यत देवगन ❋ करिछेन हनूमान बहु प्रशंसन
सर्व्वदा विजयी हओ पवनकुमार ❋ करुण श्रीभगवान कल्याण तोमार
जे कर्म्म करिले तुमि सिंहिका निधने ❋ इहार सम्भव नहे ए तिन भुवने
एके निरालम्बे शत योजन लंघन ❋ ताहे सुकठिन कर्म्म सिंहिका निधन
ए दुष्ट राक्षसी भये यत देवभाग ❋ करे छिला एइ व्योममार्ग परित्याग
आजि तुमि करिले ए पथ अकण्टक ❋ विहार करुण सुखे सब वृन्दारक
तोमा हैते रामकार्य्य निष्पन्न हइवे ❋ तोमा हैते त्रिभुवन आनन्द पाइबे
एकि बल, एकि वीर्य्य, एकि पराक्रम ❋ त्रिभुवने कोथाओ ना देखि जार सम
धरा धराधर सब यावत् थाकिवे ❋ तावत् पर्य्यन्त तव ए यश घुषिबे
जाह जाह करितेछि मोरा आशीर्वाद ❋ कृतकार्य्य हये फिरि एस निर्व्विवाद
एत कहि पुष्पवृष्टि करे देवगन ❋ शुनिया आनन्दे वीर करिला गमन
किछु दूर हैते लंका करि निरीक्षन ❋ मने-मने भाविछेन पवननन्दन
हेन महादेहे यदि प्रवेशि ए-लंका ❋ तवेते सकलेते मोर करिवेक शंका
अतएव क्षुद्रमूर्ति ह'ये प्रवेशिब ❋ उचित समये निज कार्य्य समाधिब
एत भावि आपन सहज मूर्त्ति धरि ❋ सिन्धु लंघि पड़िलेन सुवेल उपरि

---

१ त्याग दिया था २ पर्वत ३ प्रफुल्ल ।

सहत न भार - कीस रनबंका * डगमग गिरि त्रिकूट पुनि लंका
बाम अंग सिय सुभ - सन्देसू * फरकत असुभ बाम लंकेसू
यदपि कीन शत योजन पारा * मारुति-गात न श्रम संचारा
अमिय-कथा यह सागर-लंघन * पातक-पुञ्ज सुनत सब भञ्जन

हनुमान-लंका-प्रवेश और चामुण्डा का लंका-त्याग

इमि लंका चहुँ वीर मँझाई * बहुविधि निरखत वरनि न जाई
कनक रजत मणि फटिक[1] सुहावन * निर्मित छबि अति पुरी लुभावन
लखत पैठि गढ़ विस्मित नयना * विश्कर्मा[2] कृत अद्भुत रचना
भयंकरी तहँ प्रकट प्रचण्डा * खर्पर - खड्ग - सहित चामुण्डा
युग लोचन मनु उभय दिवाकर * ब्रह्म-अग्नि सम तेज भयंकर

दो० लोल[3] जीभ पुनि चन्द्रछबि मानिक कुण्डल कर्ण ।
विकट दसन पीठी जटा घोर कृष्णतम वर्ण ।।
मुण्डमाल भयकारिनी व्याघ्र चर्म परिधान ।
निरखि देवि, संशय अतिव, विनय कीन हनुमान ।। २१ ।।

चामुण्डा तुम शिवा सरूपा * शास्त्र कहत तव कथा अनूपा

सेइ त सुबेल गिरि भरेते ताँहार * काँपिते लागिल लंकाद्वीप सहकार
आर एक हैल बड़ से समये रंग * सीता आर रावणेर नाचे वाम अंग
यद्यपि लंघिल सेइ शतेक योजन * तथापि नाहिक किछु श्रम एकक्षन
सागर लंघन कथा अमृतेर भाण्ड * शुनिले पातक-राशि हय खण्ड खण्ड

हनूमानेर लंकाप्रवेश ओ चामुण्डार लंकात्याग

एइ रूपे गेल वीर लंकार भितर * कतस्थाने कत देखे वर्णिते विस्तर
काञ्चन रजत मणि स्फटिके निर्म्मान * पुरी-शोभा देखिया विस्मित हनूमान
गड़े प्रवेशिया देखे पवननन्दन * विश्वकर्म्मा निर्म्मित से अद्भुतरचन
महा भयंकरा मूर्त्ति सम्मुखे प्रचण्डा * बाम हस्ते खर्पर दक्षिण हस्ते खाण्डा
दुइ चक्षु घोरे येन दुइ दिवाकर * ब्रह्म अग्नि सम तेज अति भयंकर
लोल जिह्वा पृष्ठे जटा विकट दशन * हाँड़िया मेघेर वर्ण देखिते भीषन
व्याघ्र चर्म्म परिधान गले मुण्डमाला * माणिक कुण्डल-कर्ण, येन चन्द्रकला
देखिया चिन्तित अति वीर हनूमान * जोड़ हाते ब'लेन देवीर विद्यमान
शास्त्रे शुनियाछि आमि चामुण्डार कथा * शिवेर प्रेयसी तुमि, केन मागो, हेथा
तोमारे देखिया आमि पाइ बड़ डर * कि कारणे आछ माता, लंकार भितर

---

१ स्फटिक पत्थर के समान २ विश्वकर्मा ३ लपलपाती ।

मातु दरस तव अति भयकारी * कवन हेतु इत लंक पधारी
'शंभु-सती मैं' देवि प्रकासा * शिव-आयसु लहि लंक निवासा
स्वर्ण लंक सिर्जेउ विधि जबहीं * रच्छन-भार लहेउँ मैं तबहीं
बन्दि त्रिलोचन, विनय प्रकासा * कब लौं रावन-धाम निवासा
सुनि महेश मोंहि अवधि बताई * राम - जन्म सुभघरी सुनाई
दसरथ - भूप - तनय श्रीरामा * दसमुख हरैं सीय तेंहि बामा
पठवहिं राम दूत सिय हेतू * लहहु दरस हनुमत कपिकेतू
भेटहु लंक जबै हनुमाना * तजि, स्वदेश-हित करहु पयाना
सुबरन लंक निवास अनन्ता * अब लौं दरस न कहुँ हनुमन्ता
केंहि सेवक ? तव कवन प्रदेसू * उदधि-अलंघ्य तरन केंहि वेसू
सचिव - सुकण्ठ, राम कर दासा * पवनतनय कपि कीन प्रकासा
आगम लंकपुरी सिय हेतू * सागर तरन कृपा रघुकेतू
सुनि हनु-कथा देवि उल्लासा * त्यागि लंक गमनी कैलासा

हनुमान द्वारा सीता की खोज

वन-वन इत भरमत हनुमाना * नरियल - पुंगी - उपवन नाना
कोकिल कूजत गुञ्जति भृंगा * कौतुक कलरव विविधि विहंगा

चामुण्डा ब'लेन आमि शंकरेर सती * ताँहार आज्ञाय आमि लंकाय बसति
सृजेन जेखन ब्रह्मा स्वर्ण-लंकापुरी * सेइ काल हैते आमि लंका रक्षा करि
करिलाम जिज्ञासा शिवेर श्रीचरणे * थाकिव कतेक काल रावण भवने
शंकर ब'लेन, थाक एइ संख्या तार * जत दिन नाहि हय राम-अवतार
जन्मिवेन राम दशरथेर भवने * ताँर पत्नी सीता सती हरिबे रावणे
सीता अन्वेषणे राम पाठावेन चर * तार नाम हनूमान, आकारे वानर
जखन देखिबे लंकागत हनूमान * तखन छाड़िया लंका आसिबे स्वस्थान
सेइ हैते राखि आमि स्वर्ण लंकापुरी * हनूमाने ना देखिया जाइते ना पारि
काहार सेवक तुमि कोथा तव घर * किमते तरिले तुमि अलंघ्य सागर
हनूमान ब'ले आमि रामेर किंकर * सुग्रीवेर पात्र आमि पवनकोङर
सीता अन्वेषणे आइलाम लंकापुरी * श्रीरामेर दूत आमि, ताइ सिन्धु तरि
शुनिया हनूर कथा चामुण्डार हास * लंकाय देखिया तारे गेलेन कैलास

हनूमानेर सीता-अन्वेषण

तदन्तरे हनूमान भ्रमे वने वन * गुया नारिकेल देखे अति सुशोभन
कोकिलेर कुहूरव भ्रमर झंकार * नाना पक्षि कलरव लागे चमत्कार

दो० अति विशाल सरवर[1] लखे, विमल सलिल छबिधाम ।
धवल रक्त पुनि नील जहँ बिकसे पद्म ललाम ॥ २२ ॥

अगम सिन्धु चौगिर्द[2] असेसू * सुरन समर्थ न लंक-प्रवेसू
लौह-प्रकोट कनक-प्राचीरा * शिखर लंक परसति[3] नभ तीरा
चहुँ दिसि इमि भरमत हनुमन्ता * बहु बिधि करत मनहिं मन चिन्ता
दुर्जय दसमुख लंक प्रतापू *कहँ कपि कटक! निरखि संतापू!
को समर्थ इत करहि प्रवेसू * तजि जन चारि, शक्ति-जनि लेसू
प्रथम सुभट सुग्रीव अपारा * पुनि समर्थ इत बालिकुमारा
सैनिप नील तृतीय बहोरी * गति अपार, गिनती पुनि मोरी
प्रथम प्रयोजन सिय-संधानू * पुनि समुखौं[4] विधि यथा विधानू
किमि दुर्जय रिपुगन भरमाई * चीन्हहुँ किमि कहँ रावनराई
राव-चाव[5] लहि सुबरन लंका * किमि चीन्हउँ सिय जोति-मयंका[6]
राम-प्रिया मैं दरस न कीना * चन्द्रबदनि सिय मोहिं नवीना
चर्चति चपल हास-परिहासू * तहँ दुर्लभ जानकी-निवासू
अश्रु सदा दृग, बसन-मलीना * उर आवत, सिय छबि अति दीना
हेरत, सीय विघिन[7] अनुसरहीं * भावी मानि सीस सब धरहीं

दीघि सरोवर देखे सलिल निर्म्मल * प्रस्फुटित कोकनद पंकज उत्पल
लंकापुरी चारिदिके वेष्टित सागर * देवतार गति नाहि लंकार भितर
सोनार प्राचीर मध्ये, बाहिरे लोहार * गगनमण्डले चूड़ा लागये ताहार
एइरूपे हनूमान भ्रमे चतुर्भिते * मने-मने कत चिन्ता लागिल करिते
रावणेर प्रताप दुर्ज्जय लंकापुरे * वानर-कटक ताहे कि करिते पारे
एखाने आसिते पारे शक्ति आछे कार * चारि व्यक्ति विना आर सकल असार
सुग्रीव आसिते पारे वीर अवतार * युवराज अंगद आसिते पारे आर
आसिवारे शक्ति धरे नील सेनापति * आमिओ आसिते पारि अव्याहत-गति
एइ कार्य्ये आसियाछि सीता देखि आगे * शेषेते करिब, कार्य्य जेखाने जे लागे
भाण्डाइब केमने दुर्ज्जय शत्रुगणे * केमने चिनिब आमि राजा दशानने
बेड़ाइब केमने कनक-लंकापुरी * केमने चिनिब आमि रामेर सुन्दरी
रामेर प्रेयसी सीता कभु नाहि देखि * केमने चिनिब आमि सीता चन्द्रमुखि
हास्य-परिहास-कथा वचन-चातुरी * सेखाने ना थाकिबेन जानकी सुन्दरी
सर्व्वक्षण चक्षे अश्रु मलिन वसना * सेइ से रामेर सीता हय विवेचना
सीतारे देखिते यदि हय हानाहानि * हय लेक, क्षति ताहे किछुइ ना मानि

---

१ तालाब २ चारो ओर ३ छूती थी ४ सामना करूँ ५ हाल-चाल
६ चन्द्रछबि वाली ७ बाधाएँ ।

अथये भानु[1] उजेर नसाना ※ पुरी मध्य प्रविसे हनुमाना
नभ शशि उदित खिली उजियारी ※ भलीभाँति कपि लंक निहारी

दो० कनकझरोखन - युत सदन, मुक्तन बन्दनवार ।
ध्वजा - पताका सोह चहुँ, राज - साज श्रृंगार ।। २३ ।।

इच्छामत माया विस्तारी ※ घर घर फिरत नकुल-तन धारी
लखेंउ विभीषण - धाम ललामा ※ सदन - महोदर भट छबिधामा
उल्काजिह्व सु विद्युतमाली ※ जहँ बिद्युतजिह्वा बलशाली
शुक-सारन, पुनि दनुजकुमारा ※ अखिल लंक चहुँ गेह निहारा
कतहुँ लहेंउ जनि सिय - उद्देसू ※ नृप मन्दिर पुनि कीन प्रवेसू
दुर्जय दनु सशस्त्र रखवारे ※ डोलत पाँति पाँति नृप-द्वारे
लखि पुष्पक कौतुकी विमाना ※ कूदि छलाँग चढ़े हनुमाना
पुष्पक - सारथि स्वयं समीरा[2] ※ पवनतनय भेटत पितु तीरा
चर्चत बहु, पुनि पवन पयाना ※ दसमुख - गेह धँसे हनुमाना
शयन दशानन रतन - पर्यंका[3] ※ दस किरीट[4] जगमगत मयंका[5]
अभरन[6] अंग प्रचुर दशभाला ※ दामिनि दमकत जिमि घनमाला

अस्त गेल भानुमान, वेला अवसान ※ मध्यगड़े प्रवेश करिल हनूमान
निशाकर सुप्रकाश गगनमण्डले ※ भालमते हनूमान लंकाके नेहाले
चालेर उपरे शोभे सुवर्णेर वारा ※ चारिभिते शोभा करे मुकुतार झारा
प्रति घरे घरे ध्वजा पताका विराजे ※ राजार मन्दिर से सुन्दर साजे साजे
हनूमान स्वेच्छाय विविध माया धरे ※ नेउल प्रमान ह्'ये फिरे घरे घरे
अति सुशोभन विभीषणेर आवास ※ देखे महोदरेर से अपूर्व्व निवास
उल्काजिह्व विद्युत्जिह्व आर विद्युन्माली ※ शुक सारणेर घर देखे महाबली
कुमार सवार घर देखे सारा राति ※ एक-एक देखे यत लंकार बसति
कोनस्थाने सीतार न पाइया उद्देश ※ राज अन्त:पुरे वार करिले प्रवेश
राजार द्वारेते द्वारी देखे सारि सारि ※ दुर्ज्जय राक्षस सब नाना अस्त्रधारी
देखिल पुष्पक रथ विचित्र निर्म्मान ※ तदुपरि लाफ दिया उठे हनूमान
सेइ रथे सारथि जे देवता पवन ※ पिता पुत्र उभयेते हइल मिलन
पुत्रे सम्भाषिया पिता गेल निज स्थान ※ रावणेर घरे प्रवेशिल हनूमान
रावण शुइया आछे रत्नमय खाटे ※ घर आलो करितेछे दशटा मुकुटे
राजदेहे आभरण देखिल प्रचुर ※ दीप्त करि मेघ जेन पड़िछे चिकुर

१ सूर्य अस्त हुये २ पवनदेव ३ रत्न-पलँग पर ४ मुकुट ५ चन्द्रमा ६ आभूषण ।

रमण - श्रान्त सोवत दसकंधा * केसर कुंकुम मृगमद - गंधा
तारन मध्य चन्द्र जेंहि रूपा * चहुँ सोहैं अप्सरा अनूपा
एक संग रूपसि छबिबाला * पारिजात गुंथित मनु माला
बीणा बँसुरि खोल करताला * बजत, करत सुख-सैन भुवाला
मनुजि सुरासुरि पुनि गन्धर्विन * दनु-मन्दिर छबिखानि रूपसिन

दो० तन विशाल नीलम बरन, पीत वसन दसमाथ ।
नव जलधर[1] सोहत यथा सौदामिनि[2] के साथ ।। २४ ।।

मयदानव - दुहिता मन्दोदरि * रावन-अंक सोह अति सुन्दरि
भरी सुहाग रत्नमय रानी * लखि तेंहि सिय हनुमत अनुमानी
राम सरिस जग पुरुष न दूजा * सिय करि सकै न रावन-पूजा
जनकलली दसरथसुत - जाया * सेयि सकै सो किमि दनुराया
एक-एक करि सबन निहारी * तहँ न लखत सीता अनुहारी[3]
नयन बीस मूँदे पर्यंका * लखि लंकेस कपिहिं उर शंका
अन्त:पुर न खोज सिय पाई * अन्य गेह हेरत कपि जाई
जहँ दशग्रीव करत मधुपाना * तहाँ प्रवेश कीन हनुमाना
भक्ष्याभक्ष्य[4] कक्ष - आहारा[5] * विविध मनुज-मृग[6] मांस निहारा

निद्रा जाय रावण श्रृंगार अवसादे * कस्तूरी कुंकुमे राजा शोभे मृगमदे
चारिभिते देवकन्या मध्येते रावण * आकाशेर चन्द्र बेड़ि येन तारागण
शोभे एक ठाँइ सब रमणीर गला * एकसूत्रे गाँथा येन पारिजात माला
खोल करताल कारो वीणा वाँशी कोले * अचेतन निद्राय लोटाय भूमितले
मानुषी गन्धर्व्वी देवी दानवी राक्षसी * रावणेर घरे आछे परम रूपसी
नीलवर्ण रावण से पीतवस्त्र-धारी * नव-जलधर येन विद्युत सञ्चारी
रावणेर कोले देखे परम सुन्दरी * मयदानवेर कन्या रानी मन्दोदरी
सोहागे अगुलि सेइ रत्ने विभूषिता * तारे देखि भावे वीर एइ बुझि सीता
रामगुणे पुरुष नाहिक त्रिभुवने * रावणे भजिबे सीता, नाहि लय मने
दशरथ - पुत्रबधू जनक - झियारी * भजिवेन रावणेरे मने नाहि करि
एके एके सकल करिला निरीक्षन * सीतार लक्षण-युक्त नाहि एक जन
कुड़ि चक्षु मुद्रित, निद्रित लंकेश्वर * निरखिया हनूमान पाइलेन डर
अन्त:पुरे सीतार ना पाइया उद्देश * आर घरे गिया हनू करिल प्रवेश
जे घरे रावण राजा करे मधुपान * सेइ घरे प्रवेश करिल हनूमान
भक्ष्यघरे प्रवेशिया देखे नाना भक्ष्य * मनुष्य पशुर मांस देखे लक्ष लक्ष

१ मेघ २ बिजली ३ अनुरूप ४ खाद्य-अखाद्य ५ पाक शाला, रसोई
६ मनुष्य और पशुओं के मांस ।

सिय-छबि तबहुँ न दरसन पावा ※ चढ़ि प्राचीर मनहिं मन भावा
जहँ लौं बुद्धि, सकल अवलोकी ※ घर-घर कुत्सित रूप विलोकी
राम-दास मोहिं रिपु सम नारी ※ मत्त नगिनि[1] दानविन निहारी
अर्धनिसा मैं जागि बिताई ※ भरमेउँ कतहुँ खोज जनि पाई
विक्रम, बुद्धि, भक्ति रघुनाथा ※ मम सब हरन कीन खगनाथा[2]
सिय हित मानि वचन-सम्पाती ※ खोज सिन्धु तरि किय बहु भाँती
अब न लंक तजि अन्त पयाना ※ इतै लंक बिच त्यागहुँ प्राना

दो० सोचत बहुबिधि पवनसुत, उर वेदना अपार।
सुन्दरकाण्ड अनूप किय कृत्तिवास बिस्तार ॥ २५ ॥

हनुमान का अशोक-वाटिका में सीता-दर्शन

सत्तर योजन गढ़-प्राचीरा ※ उपरि बैठि सोचत हनुवीरा
निरखत सुबरन लंक ललामा ※ कनक-रजत निर्मित चहुँ धामा
जड़ित रतन स्फटिक सुहाये ※ पंख मयूर छावनी छाये
चहुँ सुरम्य चहुँ दिसि मन मोहा ※ तनयसमीर[3] विमूढ़ विमोहा
बैठि प्रकोट[4] रुदन कपि करई ※ कहँ चलि अन्त दरस-सिय लहई
राम-विदा लै बितयेउँ मासा ※ प्रभु पहँ चलि किमि करइँ प्रकासा

से खाने सीतार नाहि पाइया दर्शन ※ प्राचीरे बसिया भावे पवननन्दन
सर्व्वस्थान देखिलाम करिला विचार ※ घरे घरे देखि सब कुत्सित आकार
उलंग उन्मत्त यत रावणेर नारी ※ रामदास आमि, मोर नारी हय अरि
सीत हेतु अर्द्धरात्रि करि जागरण ※ अनेक भ्रमणे नाहि पाइ अन्वेषण
बल बुद्धि पराक्रम श्रीरामे भकति ※ करिल सकल नष्ट विहंग सम्पाति
तार वाक्ये लंघिलाम दुस्तर सागर ※ सीता हेतु भ्रमिलाम लंकार भितर
ए लंका हइते नाहि करिब गमन ※ एइ लंकापुरे आमि तजिब जीवन
कान्दिते कान्दिते हनू छाड़िल निःश्वास ※ रचिल सुन्दरकाण्ड कवि कृत्तिवास

हनूमान कर्त्तृक अशोकवने सीता-सन्दर्शन

सत्तर योजन लंका-प्राचीर-प्रमान ※ ताहार उपरे बसि भावे हनूमान
स्वर्णपुरी लंका देखे पवनकोङर ※ चतुर्द्दिके देखे स्वर्ण रजतेर घर
सोना ओ रूपार घर स्फटिकेर खनि ※ मयूरेर पाखे सब घरेर छाउनि
जेइदिके चाहे सेइदिके रहे मन ※ आपना पासरे वीर पवननन्दन
प्राचीरे बसिया हनू करिछे क्रन्दन ※ कोन् देशे पाब सीता मायेर दर्शन
मासेक हइल, राम बिदाय दिला मोरे ※ कि वार्त्ता कहिब गिया ताँहार गोचरे

---

१ नंगी २ सम्पाति ३ हनुमान ४ चहारदीवारी।

कहौं प्रबोध-बचन किमि रामा * जीवन वृथा, वृथा मम नामा
स्वर्ग पताल मर्त्य त्रयलोका * विफल, सिया जनि कतौं विलोका
बधहुँ प्रथम सुग्रीवहिं जाई * देहुँ प्रान पुनि चिता सजाई
करत पवनसुत रुदन अपारा * दै सिय ! दरस करहु निस्तारा
बिलपत जबहिं, नयन तर आवा * उपवन तहँ अशोक लखि पावा
विविध प्रसून[1] वर्ण तहँ नाना * चकित मुग्ध निरखत हनुमाना
कोकिल कूजत गुंजत भृंगा[2] * पवनसुतहिं उल्लास उमंगा
वन-अशोक लखि अमित हुलासू * निश्चित इत सिय जननि प्रकासू
अश्रु पोंछि पुनि गात सम्हारी * वन अशोक पग दिय बलधारी
तजि प्राचीर बलिस्त[3] प्रमाना * माया - तन प्रविसेउ हनुमाना

दो० विटप अशोक विशाल लखि, धाय चढ़े तहँ जाय ।
चालिस योजन शिखर तरु, गठित सघन अधिकाय ।। २६ ।।

तेहि ऊपर चढ़ि हनु बलधारी * कहँ तरुतर सिय ? रहेउ निहारी
त्रिजटा सहित अनेकन चेरी * बिलपत सियहिं रहीं जहँ घेरी
नयन उठाय अवर[4] चहुँ देखा * तरु सुन्दर बहु भाँति विशेषा
छबि तरु केते रक्तिम रंगा * मेघवर्ण मञ्जुल इकसंगा

वृथा हनूमान आमि, वृथाइ जीवन * कि ब'लिया प्रबोधिब श्रीरामेर मन
स्वर्ग मर्त्य पाताल खुँजिनु एके-एके * सीता माके खुँजिया ना पेलाम त्रिलोके
आगे गिया सुग्रीवेर बधिब जीवन * परे कुण्ड साजाइया मरिब तखन
कोथा आछ सीता माता, देह दरशन * एतेक ब'लिया वीर करिल क्रन्दन
कान्दिते कान्दिते वीर करे निरीक्षन * हेनकाले हेरे हनू अशोकेर वन
नानावर्ण पुष्पयुक्त अशोक कानन * फाँफर हइया हनू करे निरीक्षन
कोकिलेर कुहूरव, भ्रमर झंकार * ताहा देखि आनन्दित पवनकुमार
अशोकेर वन देखि आनन्दित मन * उखाने पाइब सीता मातार दर्शन
मुछिया नेत्रेर जले हइया सुस्थिर * प्रवेशिल अशोक कानने महावीर
प्राचीर छाड़िया वीर गेल सेइखाने * माया करि हैल हनू विघत प्रमाने
शिशपार वृक्ष वीर देखे उच्चतर * लम्फ दिया उठिलेक ताहार उपर
अति उच्चतर वृक्ष, अपूर्व्व गठन * ऊद्धर्व तार परिमाण चल्लिश योजन
ताहार उपरे उठि हनू महाबले * देखिल, रहेन सीता सेइ वृक्षतले
त्रिजटा राक्षसी तथा सहचेड़ी-गन * चेड़ीगन-मध्ये सीता करेन रोदन
वृक्षेते उठिया वीर नेहाले कानन * नानावर्ण वृक्ष देखे अति सुशोभन
रांगा वर्ण कत वृक्ष देखिते सुन्दर * मेघवर्ण कत वृक्ष देखे मनोहर

---

१ फूल २ भौंरे ३ बालिश्त भर लंबा ४ और ।

सुबरन रंगमञ्च अधिकाई ※ रमत अप्सरन रावनराई
विटप - लता बहुरञ्जित नाना ※ इत सीता, हनुमत अनुमाना
चेरिन विकट विरूप असोहा[1] ※ गिरि प्रलंब कर मुद्गर लोहा
धवल कृष्ण सित[2] दासि अशेषा ※ ताल - खजूर - जटा सम केशा
उदर गात लोमावलि[3] छाई ※ भृकुटिन चढ़ि नासिका समाई
गंज ललाटहिं, गिरगिट रूपा ※ लसत रक्त प्रत्यंग विरूपा
चमकति खड्ग अस्त्र बहु धारी ※ दसमुख - दासि महा भयकारी
घिरी राच्छसिन, दुर्बल - दीना ※ दुइज चन्द्र जिमि कलाविहीना
दिवस छीन जिमि इन्दु-प्रकासू[4] ※ सिय कहि 'राम' तजति निःस्वासू
राम-नाम मुख, रुदन अपारा ※ रहेउ न संशय पवनकुमारा
सिय लखि रोय उठे हनुमाना ※ सकल यथा सुग्रीव बखाना
भ्रमत मरनमुख कपि जेहि लागे[5] ※ नाक - कान सुपनेखहिं त्यागे

दो० सहस चतुर्दस दनु मरे, रावन हनेउ जटायु ।
तरन कबन्ध, सुकण्ठ पुनि राम लीन उर लाय ।।
कपि-प्रवास, मैं सिंधु तरि, पुनि भरमहुँ निसि लंक ।
सबन-हेतु 'सिय' रामप्रिय लखौं, न अब उर संक ।। २७ ।।

ठाँइ-ठाँइ देखे तथा स्वर्ण-नाट्यशाला ※ देवकन्या लइया रावण करे खेला
नानावर्ण वृक्ष देखे नानावर्ण लता ※ मने चिन्ते हनूमान, हेथा पाब सीता
चेड़ी सबे देखे तथा अंग भयंकर ※ पर्व्वत प्रमान हाते लोहार मुद्गर
केह काली, केह गोरी, कोन चेड़ी धली ※ खर्ज्जुर तालेर मत शिरे केशावली
ओ उदर चूल कारो माथा जुड़ि नाक ※ काँकलास मूर्ति कारो सब माथा ढाक
हाते मुखे सर्व्वांग रक्तेर छड़ाछड़ि ※ भयंकर मूर्त्ति सब रावणेर चेड़ी
नाना वस्त्र धरियाछे खाण्डा झिकिमिकि ※ चेड़ी सब घेरियाछे सुन्दरी जानकी
गाये मला पड़ियाछे, मलिना दुर्व्वला ※ द्वितीयार चन्द्र येन देखि हीनकला
दिवाभागे येन चन्द्रकलार प्रकाश ※ श्रीराम बलिया सीता छाड़ेन निःश्वास
श्रीराम ब'लिया सीता करेन क्रन्दन ※ सीतारे चिनिया निल पवननन्दन
सीतारूप देखि कान्दे वीर हनूमान ※ सुग्रीव ब'लिल यत, हैल विद्यमान
इहा लागि मरण एड़ाय कपि यत ※ इहा लागि शूर्पनखार नाक-कान हत
इहा लागि चतुर्द्दश-सहस्र रक्ष मरे ※ इहा लागि जटायु प्रहारे लंकेश्वरे
इहा लागि कवन्धेर स्वर्ग दरशन ※ इहा लागि श्रीरामेर सुग्रीव मिलन
इहा लागि कपिगण गेल देशान्तरे ※ इहा लागि एकेश्वर लंघिनु सागरे
इहा लागि लंकाय वेड़ाय राताराति ※ एइ से रामेर प्रिया सीता रूपवती

१ अशोभन २ उज्जवल ३ रोमावली ४ चन्द्र प्रकाश ५ जिसके कारण।

सीता - दुख कातर हनुमाना ॐ प्रस्तुत रूप यथा अनुमाना
दस दिसि जानकि-रूप अलोका ॐ जेहि हित रामहिं दारुन शोका
दनुजिन मारि कि निजहिं निपाती ॐ सिय-दुख सहन न अब केहु भाँती
मारुति विटप, राम-सिय ध्याना ॐ कृत्तिवास कृत रघुपति गाना

अशोक वाटिका में सीता से रावण का साक्षात्

पहर द्वितीय रैन चढ़ि आई ॐ नभ पूर्णेन्दु छटा चहुँ छाई
सीतल मनहर गन्ध बयारी[1] ॐ खिली सुचित्र धवल उजियारी
विगत अर्ध निसि घोर, असंका ॐ सुख सोवत लंकेस पयंका
मलय बसन्त समीर जगावा ॐ सिय कर सुधि दसमुखहिं सतावा
कामातुर मदान्ध[2] मन आवा ॐ सिया समीप चलन मन भावा
वन अशोक सिय ढिग पग धारी ॐ मन्दोदरि आदिकन गुहारी

छं० आयसु पाय सजीं सब रानी टोली सुमुखिन केरी ।
सहस रूपसिन रूप छटा सों सुबरन लंक उजेरी ।।
नारायन - असनिग्ध[3] सोबरन - दीपन पाँति घनेरी ।
झारी, चन्दनपात्र चवँर कर, चलीं दसानन घेरी ।।

देखिया सीतार दुःख कान्दे हनूमान ॐ अनुमाने या' छिल ता देखि विद्यमान
दशदिक् आलो करे जानकीर रूपे ॐ इहा लागि म्लान राम दारुण संतापे
राक्षसीगणेरे मारि, कि आपनि मारि ॐ जानकीर दुःख आर देखिते ना पारी
राम-सीता बाखाने चड़िया हनू गाछे ॐ कृत्तिवास मनोदुःखे राम गुण रचे

अशोकवने सीतादेवीर निकटे रावणेर गमन

द्वितीय-प्रहर रात्रे उठिल रावन ॐ पूर्ण चन्द्र उठियाछे उपर गगन
सुशीतल वायु बहे अति मनोहर ॐ धवल रजनी भाग विचित्र सुन्दर
निशि घोर रात्रि हैल, द्वितीय प्रहर ॐ पालंकेते निद्रा जाय राजा लंकेश्वर
मलय वसन्त वाये निद्रा भंग हैल ॐ सीतादेवी रावणेर मने पड़े गेल
मधुपाने रावण हइल कामातुर ॐ ब'ले, चल जाइ हे सीतार अन्तःपुर
सीता लागि जाब आमि अशोकेर बने ॐ मन्दोदरी रानी आदि डाके रानीगने
रावणेर आज्ञा पेये साजे रानीगन ॐ वेष्टित करिल सबे राजा दशानन
रावणेर संगे चले दश शत नारी ॐ रूपे आलो करिछे कनक-लंकापुरी
चामर ढुलाय केह कारो हाते झारि ॐ नारायण तैले ज्वले देउटी सारि सारि
कोन वा रानीर हाते चन्दनेर बाटी ॐ कोन वा रानीर हाते स्वर्णेर देउटी

१ वायु २ मदिरा से मत्त ३ नारायण तैल ।

संग रानिगन हाल - बिहाला ※ सिय ढिग प्रस्तुत लंक-भुवाला
सहस रानि बिच लंक-प्रधानू[1] ※ सुरपुर सम अशोक उद्यानू
सोचत कपि, सिय सम्मुख आई ※ किमि आचरत निसाचरराई
लखत लंकपति चहुँ दृग बीसा ※ सिय ढिग उचित न छाँह-कपीसा
सघन पात तरु ओट लुकाई ※ अदरस[2] लखत चतुर कपिराई
सिय ढिग प्रस्तुत रानिन संगा ※ विटप-ओट कपि लखत प्रसंगा

दो० कथन कुतूहल लंकपति-सीय सुनहिं, मन धारि ।
दुइ पग डार, बढ़ाय मुख, हनुमत रहे निहारि ।। २८ ।।

दनु लखि उर कंपित वैदेही ※ मलिन बसन अंगन ढकि लेही
अति भयभीत विकल सियमाई ※ चहति जाहिं निज गात समाई
अस्तन[3] जुगुल करन ढकि लीन्हा ※ आनन-छबि वन धवलित कीन्हा
कनकपूतरी कञ्चन अंगा ※ युगुल चरन-सिय हिंगुल रंगा
चरन जोति-नख चन्द्र लजाहीं ※ दसन-पंक्ति सम मुक्ता नाहीं
युगुल नयन-सिय सरसिज[4] शोभा ※ शत-शत मधुप[5] जुरत मधु-लोभा
दस दिसि सीय अलोकित करनी ※ तरु अशोक तर शोभित तरुनी

रानीगन संगे राजा चले आस्ते व्यस्ते ※ उपस्थित हैल गिया सीतार साक्षाते
दश शत नारी सह आइल रावन ※ अशोक कानन हैल देवता भवन
ब'ले हनू रावण करिल आगुसार ※ देखिब सीतार संगे कि करे आचार
कुड़ी नेत्रे दशानन चारि दिके चाहे ※ सीतार निकटे आछि, कभु भाल नहे
गाछेर आड़ाले बसि पातार भितर ※ आपनि लुकाये देखे चतुर वानर
नारीगण संगे गेले सीतार सम्मुखे ※ थाकिया गाछेर आड़े हनूमान देखे
कि ब'ले रावण राजा, कि ब'ले जानकी ※ शुनिवारे आगुसारे मारुति कौतुकी
दुइपद राखिलेक डालेर उपर ※ देह बाड़ाइया देखे सीतारे गोचर
रावणे देखिया सीता काँपिल अन्तरे ※ मलिन बसने ढाके निज कलेवरे
मने मने महाभय पाइया जानकी ※ आपनार अंगे तिनि हैते चान लुकि
दुइ हाते दुइ स्तन ढाकिल जानकी ※ आनन-लावण्य वन उज्ज्वल निरखि
सोनार प्रतिमा जिनि सीता ठाकुरानी ※ हिंगुल जिनिया यार चरण दुखानि
चन्द्र जिनि चरणेर दशनख ज्योति ※ मुकुता जिनिया मार दशनेर पाँति
पद्म जिनि जननीर दुइ चक्षु शोभे ※ भ्रमर धाइछे कत शत मधु लोभे
दशदिक् आलो करे जनक-झियारी ※ शिशपार तले जेन पड़िछे विजरी[6]

१ रावण २ अदृश्य ३ स्तन ४ कमल ५ भौंरे ६ जरारहित ।

जदपि मलीन दुसह दुख छीना ※ सिय अशोक वन जगमग कीना
उड़े प्रान-सिय लखि दससीसा ※ अहह! राम, रच्छहु जगदीसा
देवर लखन कहाँ पुनि रामा ※ राखहु धर्म दुहू बलधामा
विकल सिया पुनि सीस नवाई ※ देखन चहत न मुख-दनुराई
मन - मन सोचत लंकजुझारा ※ सिय! तव आगम मम उद्धारा
होनी होय, होय, जनि चिन्ता ※ लचहुँ न जग लहि कीर्ति अनन्ता
कह लंकेस, वचन सुनि लेही ※ मुख न उठावत किमि वैदेही
चितै, मान तजि, बनि पटरानी ※ स्वर्ण सिहासन[1] बिलसहु रानी
दस सहस्र अप्सरन प्रकासू ※ बनि पटरानि करहु सुखवासू

दो० अंग अंग रत्नाभरन मणि माणिक बहु धारि।
सदा लंकपति चरन तव अनुचर आज्ञाकारि॥ २९॥

त्रिभुवन मम सम भूप न आना ※ धन अपार अधिपति जग जाना
देव न लंक प्रवेस समर्था ※ हे सिय तैं डरपत केहि अर्था
भय मानत, लायेउँ बरजोरी ※ असुर-धर्म छल-बलहिं न खोरी[2]
कमलबदनि कै तुम शशिबदनी ※ त्रिभुवनजयी, मोर मनहरनी
कुण्डल रतन श्रवन दोउ धारी ※ तन नवनीत सरिस सुकुमारी

सीता मार गात्रे मला, मलिन बदन ※ तबु रूपे आलो करे अशोकेर वन
रावणे देखिया सीतार उड़े गेल प्राण ※ ब'लेन दुहात तूलि रक्षा कर राम
एमन समये कोथा देवर लक्ष्मन ※ जातिमान रक्षा कर भाइ दुइजन
विकलि करिया सीता कैला हैट माथे ※ माथा तुलि ना चाहेन रावण साक्षाते
सीता रूप हेरि रावण भावे मनेमन ※ आमार उद्धारे सीता, तव आगमन
ये होक् से होक् मोर, जानि मने मने ※ उन्नत हइया आमि नत हइ केने
डाक दिया ब'ले तबे लंका अधिकारी ※ हेंट माथा कैले केन जनकझियारी
अभिमान छाड़ि सीता चाह नेत्र कोणे ※ पाटराणी ह'ये बैस स्वर्ण सिंहासने
दश हाजार देवकन्या विभा करि आमि ※ तार मध्ये पाटराणी ह'ये रह तुमि
सर्व्वांग भरिया पर राज आभरन ※ तव आज्ञाकारी रबे राजा दशानन
मोर मत राजा आर नाहि त्रिभुवने ※ धनेर ईश्वर आमि जाने जगज्जने
रावण ब'लिल, सीता, कारे तव डर ※ देवता आसिते नारे लंकार भितर
बले धरि आनियाछि, एइ भय मने ※ राक्षसेर जाति-धर्म्म छले-बले आने
त्रिभुवन जिनिया तोमार सुबदन ※ कि पद्म कि सुधाकर, हेन लय मन
दुइ कर्णे शोभे तव रत्नेर कुण्डल ※ देखि नवनीत प्राय शरीर कोमल

---

१ सिहासन २ दोष।

करगत सुकर[1] सुछबि कटि पावा * हिंगुल मनहुँ पदंगुलि छावा
सेवत राम जनम दुख बीता * बिलसहु सुख मम सहित अतीता
जीवन छीन, सम्पदा स्वल्पा * राजहीन व्रनवास विकल्पा[2]
विदित न, पर्णकुटी अब रामा * कैं दनुजन पठये यमधामा
सहि न सुमेरु सकत मम सायक * किमि बापुरो[3] मनुज रघुनायक
किन्नर, देव, दनुज, गन्धर्वा * यक्ष—सबन के मेटे गर्वा
निज बल-बाहु दिग्विजय कीन्हा * शत-शत शूर रसातल चीन्हा
राम-लखन जड़ तपसी दोऊ * तिन तजि सुमुखि! सुखी चलि होऊ
निपट अबोध, बुद्धि जनि लेसू * सियहिं कहति को विज्ञ[4] विसेसू
पारांगत रतिशास्त्र प्रवीना * रमहिं केलि नित रंग नवीना
रतन बहुल धन-धाम हमारा * चलै सकल सिय तव अनुसारा

दो० मैं सेवक दसमाथ तव, तैं सिय मम ठकुरानि।
अनुमति लहि, अन्तर्सदन[5], अबहिं करौं पटरानि ॥ ३० ॥

मैं आतुर बन्दहुँ तव चरना * देवि! कोप तजु, मैं तव सरना
केहु पद कबहुँ न सीस नवाये * दसौ सीस तव चरन लोटाये
उर प्रकोप सुनि रावन-बानी * बोलत मन्द मन्द सियरानी

मुष्टिते धरिते पारि तोमार काँकालि * हिंगुले मण्डित तव चरण अंगुलि
करिया रामेर सेवा जन्म गेल दुःखे * हइया आमार भोग्या थाक नाना सुखे
रामेर अत्यल्प धन, अत्यल्प जीवन * राज्य शोके फिरे राम करिया भ्रमन
एखनो कि आछे राम सेइ पर्ण वासे * वनेर भितरे तारे खाइल राक्षसे
मोर वाणे सुमेरु नाहिक धरे टान * मानुष से राम, से कि आमार समान
देवता दानव यक्ष किन्नर गन्धर्व * युद्धे करिलाम पूर्ण सबाकार गर्व्व
दिग्विजय कैनु आमि रणे बाहुबले * कत शत योद्धपति दिनु रसातले
हेन जन छाड़ि तव तपस्वीते मन * जटिल तपस्वी तव श्रीराम लक्ष्मन
किछु बुद्धि नाहि तव अबोधिनी सीता * मिछामिछि ब'ले लोके तोमाके पण्डिता
रतिशास्त्र जानि आमि विविध विधाने * तुमि आमि केलि रस भुंजिब दुजने
नाना रत्ने पूर्ण आछे आमार आगार * आज्ञा कर सुन्दरि से सकलि तोमार
तोमार सेवक आमि तुमि त ईश्वरी * तोमार आज्ञाय लये जाइ अन्तःपुरी
तोमार चरण धरि करि हे व्यग्रता * कोप त्यजि मोर कथा शुन देवी सीता
कारो पाय नाहि पड़े राजा दशानने * दशमाथा लोटाइनु तोमार चरने
रावणेर वाक्ये सीता कुपिया अन्तरे * कहेन ताहार प्रति अति धीरे-धीरे

१ सरलता से २ बदले में ३ वेचारा ४ बुद्धिमती ५ राजमहल।

कुल - ललना मैं जनकदुलारी * किमि अधर्म-रत रामपियारी
बैठि बिमुख, उर कोप कराला * कुवचन कहत, सुनत दसभाला
विज्ञ न, तव हित कहत बुझाई * विज्ञ न दोष, मृत्यु तव आई
जम्बुक-उर सिंहिनि-अभिलासा * राम-विवाद, सवंश विनासा
भजे न प्रान बचैं प्रभुसायक * तैं किमि सरिस राम रघुनायक
पामर, अमर अमिय जो धारा * तबहुँ न प्रभु-सर[1] तव निस्तारा
कनक लंक लहि दर्प अपारा * रघुपति-सर जरि होय अँगारा
सिन्धु गर्व-बस किय दुष्कामा * जरहि जलधि लहि सायक[2]-रामा
शठ! सुनु, यदि चाहत कल्याना * दै मोंहि प्रीति लहै भगवाना
जो नहिं प्रीति लहै रघुनाथा * सुगति न देहिं अगति के नाथा
निज मुख निज मम दास बखानी * किमि दुलखत[3] बाचा-ठकुरानी[4]
गुरुजन-पद-बन्दन जग रीती * गहि मम पद किमि वचन अनीती
धरि पितु-वचन राम बनबासू * शाप-रोष तिन तोर बिनासू

दो० केहि साहस दसकन्ध तैं, मम हित कहेसि कुबानि ।
भञ्जहुँ तव बल-दर्प मैं रघुकुल भूषण-रानि ।। ३१ ।।

प्राननाथ मम रघुपति देवा * राम अनन्य सीय जनि सेवा

अधार्म्मिका नहि आमि रामेर सुन्दरी * जनक राजेर कन्या आमि कुलनारी
रावनेरे पाछु करे बैसे क्षुद्र मने * गाला गालि पाड़े सीता रावण ता शुने
नाहि हेन पण्डित, बुझाय तोरे हित * पण्डिते कि करे, तोर मृत्यु उपस्थित
शृगाल हइया तोर सिंहे जाय साध * सवंशे मरिबि रे, रामेर सने बाद
तोर प्राणे ना सहिबे श्रीरामेर वाण * पलाइया कोथाओ ना पाबि परित्राण
अमृत खाइया यदि ह'स रे अमर * तथापि रामेर वाणे मरिब पामर
सोनार लंकार तरे तोर अहंकार * श्रीरामेर वाणानले हइबे अंगार
सागरेर गर्व्वे ये करिस दुराचार * रामेर वाणेर तेजे सागर त छार
अतःपर दुष्ट, आमि तोरे ब'लि हित * मोरे दिया राम सने करह पीरित
यदि श्रीरामेर संगे ना कर पीरिति * श्रीरामेर करे तोर नाहि अव्याहति
आमार सेवक तुइ कहिलि आपनि * सेवक हइया कोथा लंघे ठाकुरानी
जार पाय पड़ि, सेइ हय गुरुजन * पाये पड़ि ब'लिस् केन कुत्सित कुवचन
पितृसत्य पालिते रामेर वनवास * क्रोधे शाप दिले ताँर हय सत्य-नाश
कि हेतु रावण, मोरे ब'लिस् कुवाणी * तोर शक्ति, भुलाइबि रामेर रमणी
राम मोर प्राणनाथ, राम से देवता * राम विना अन्यजने नाहि जाने सीता

---

१ राम के बाण से २ बाण ३ अवज्ञा करता है ४ स्वामिनी की बात ।

इमि जानकी प्रज्वलित नयना ※ कहत प्रकोपि रावनहिं वयना
पापी दनु दुर्मति दुष्कर्मा ※ कहँ रघुपति अपार गुणधर्मा
सीतल अमिय वचन भगवाना ※ परि तिन कोप विपक्ष नसाना
भानु-प्रताप अवध आसीना ※ अस्सी सहस नरेस अधीना
तेहि रघुवंश राम जग-प्राना ※ चौदह भुवन सृष्टि-भगवाना
सो मम पति शार्दूल[1] प्रमाना ※ तैं शृगाल पुनि श्वान समाना
रहि तव देस तदपि भय नाहीं ※ उदित राम मन मन्दिर माहीं
चहत पंगु तैं सागर लंघन ※ बामन बटुक सुधाकर परसन
सिंहिनि प्रति शृगाल मन आना ※ कतहुँ न धर्म, न शास्त्र-विधाना
चन्दन - गंध सरोवर - पंका[2]! ※ कस विपरीत ! सोचु उर-अंका
कमलनयन मम चन्दन-गंधा ※ पंक सरोवर तैं दसकन्धा
नखत निसाकर लखु अनुपाता[3] ※ तैं नछत्र, शशि राम विधाता
एक चन्द्र नभ अखिल प्रकासू ※ प्रभु पद-कञ्ज दशेन्दु[4] निवासू
दीपक विन - सनेह[5] अवसाना ※ सरिता-तट-तरु जनि कल्याना
वसन अनल लहि, तिमि तव नासू ※ लंक धर्म विन होय विनासू

एत ब'लि सीतादेवी अग्नि हेन ज्वले ※ कोपे दुइ चक्षु रांगा रावणेर ब'ले
दुराचार राक्षस पापिष्ठ दुष्टमति ※ धरेन कतइ गुण मोर रघुपति
रामेर अमृत जिनि वचन शीतल ※ विपक्ष विनाशे जिनि महा कालानल
जिनिया सूर्य्येर तेज अयोध्यार पाटे ※ आशी हाजार राजा जार पदतले खाटे
हेन वंशे जन्म मोर लभिला श्रीराम ※ चौद्द-भुवनेर कर्त्ता संसारेर प्राण
शोन, रे रावण, मोर पति रघुमणि ※ ताँरे सिंह, शृगाल कुक्कुर तोरे गणि
तोर देशे थाकिया कि तोरे भय करि ※ जागेन हृदये मोर राम जटाधारी
पंगु हये चास् तुइ लंघिते सागर ※ वामन हइया चास् धरिते शशधर
शृगाल हइया चास् सिंहेर रमनी ※ कोन शास्त्रे कोन धर्म्मे कोथाओ ना शुनि
सरोवर पंक आर सुगन्धि चन्दने ※ कतह अन्तर, तुइ भेवे देख मने
सरोवर पंक तुइ राजा दशानन ※ सुगन्धि चन्दन मोर कमललोचन
चन्द्र ओ नक्षत्र देख कतेक अन्तर ※ तारा ह'ये ह'ते चास् चन्द्रेर सोसर
एक चन्द्र आलो करे गगनमण्डले ※ दश चन्द्र रहे राम चरण कमले
तैल विना यथा दीप कभु नाहि रय ※ नदीकूले वृक्ष यथा चिरस्थायी नय
वस्त्रे अग्नि बन्धे यथा मृत्यु आपानार ※ धर्म्म विना लंका तथा हबे छारखार

---

१ सिंह २ तालाब की कीचड़ ३ तुलना ४ दश चन्द्रमा ५ तेल ।

दो० माखी कबहुँ, न करि सकै कुलिश[1] पंख निज धारि ।
तिमि समर्थ लंकेस जनि, निरखै जनकदुलारि ।। ३२ ।।

जनक-लली मैं सहज न नारी ※ जरै शाप-मम लंका सारी
हरेसि सहस दस तैं सुरबाला ※ प्रभु तोहिं बोरहिं सिन्धु कराला
वृथा गर्व—सागर बिच धामा ※ सागर स्वतः बँधेउ गुन-रामा
सायक बज्र चलत रघुनाथा ※ मनहुँ अखिल सागर प्रभु-हाथा
परकेहु[2] बहु सुरपतिहिं सताई ※ प्रभु पहँ मृत्यु तोर नँगिचाई
काल भुजंग चोट तव खाई ※ किमि निचिन्त[3], दंशहि गृह आई
मरन निकट, तजु जीवन-आसा ※ सब विधि तव अविलम्ब विनासा
सिय सरोष दुर्वचन सुनाई ※ दसमुख-उर उधेर-बुन[4] छाई
आवत छन मैं प्रथम प्रकासा ※ सादर वर्ष एक सिय वासा
वत्सर हेतु दीन अवकासा ※ वर्ष मध्य बीते दस मासा
मास मात्र दुइ सहन विसेसू ※ अवधि विगत निर्बन्ध[5] न लेसू
कह सिय, तैं दुर्वचन उचारा ※ मम हित विनसहि, लिखी ललारा
तैं दनु, राम विष्णु अवतारा ※ गरुड़-काग करु भेद विचारा
कहाँ शुक्त[6] कहँ अमरितपाना ※ लौह स्वर्ण किमि एक समाना

मक्षिका ना पारे कभु बज्र धरिवारे ※ रावण ना पारे कभु लइते सीतारे
जे से नारी नाहि, आमि जनकझियारी ※ मोर शापे भस्म हबे स्वर्ण लंकापुरी
दश हाजार देवकन्या ह'रेछिस् बले ※ डुबावेन तोरे राम सागरेर जले
करिस् वृथाय गर्व्व सागरेर गड़ ※ राम गुणे बद्ध हबे स्वयं सागर
क्षेपण करिले बज्र-बाण रघुमणि ※ करिते पारेन शुद्ध सागरेर पाणि
इन्द्रेर निकटे तोर यत भारि भूरि ※ ए बार रामेर हाते जाबि यमपुरी
रावण भाविस् एइ यत दिन जावे ※ घाँटाइलि कालसर्प, घरे आसि खाबे
मरण निकट, छाड़ जीवनेर आश ※ अविलम्बे हइवेक तोर सर्व्वनाश
एत यदि सीतादेवी ब'लिलेन रोषे ※ मने सात पाँच भावे दशानन शेषे
आसिवार काले आमि ब'लेछिबचन ※ एक वर्ष जानकीर करिब पालन
वत्सरेर तरे तोरे दियाछि आश्वास ※ वत्सरेर मध्ये तोर जाय दशमास
सहिवेक आर दुइ मास दशस्कन्ध ※ दुइमास गेले तोर या' थाके निर्ब्बंध
जानकी ब'लेन, तइ बलिस कुत्सित ※ आमा लागि मरिबि रे, दैवेर लिखित
विष्णु अवतार राम, तुइ निशाचर ※ गरुड़े वायसे देख् अनेक अन्तर
अनेक अन्तर देख् काँजि सुधा-पाने ※ अनेक अन्तर देख् लोहा ओ काञ्चने

१ बज्र २ चाट लग गई है ३ निश्चिन्त ४ सोच विचार ५ बन्धन, रोक
६ सिरका ।

कहँ द्विज श्रेष्ठ कहाँ चण्डाला ※ सिन्धु समान छुद्र किमि ताला[1]
राम सिंह तैं श्वान-शृगाला ※ एक अकास द्वितीय पताला

दो० सुनि अधीर, सिय तन कहत, नयनन बीस अँगार ।
दुसह गर्व तव, आजु नहिं मोसन होय उबार ।। ३३ ।।

दृगन बीस चमकत नभ-तारा ※ कर दसकन्धर खड्ग सम्हारा
कालान्तक[2] सम रोष अपारा ※ काटहुँ सीस, हेरु निस्तारा
प्रखर खड्ग-दसभाल निहारी ※ कर उठाय सिय राम गोहारी
रच्छहु राम ! रुदन बहु करही ※ नतरु निपच्छ-मीच[3] सिय मरही
देवर लखन अनुज-रघुनाथा ! ※ मिलन, मरत-छन जनि तव साथा
वन अशोक रहि विधि अब बामा ※ जगत जानकी बूड़त नामा
चहत लंकपति ! खड्ग प्रहारन ※ तौ मम विनय करिह उर धारन
प्रान जाहिं मोहिं मोह न प्राना ※ जग सिय-नाम लखत अवसाना[4]
विलमु[5] तिलेक[6] जबहिं लौं ध्याई ※ अरुन चरन बन्दहुँ रघुराई
विन तिलार्ध आजीवन नाहीं ※ मरन काल ध्यावहुँ उर माहीं
राम ध्यान यदि प्रान नसाना ※ पुनि केहु जन्म वरहुँ भगवाना

अनेक अन्तर देख ब्राह्मण-चण्डाले ※ अनेक अन्तर देख वारिनिधि-खाले
श्रीराम हइते तोरे देखि वहुदूर ※ रामे सिंह तोरे देखि शृगाल-कुक्कुर
रावण अस्थिर हैल सीतार वचने ※ कुड़ि चक्षु राँगा करि चाहे सीता पाने
रावण वले, सीता तोर एत अहंकार ※ मोर ठाँइ आजि तोर नाहिक निस्तार
रावण लइल हाते खाण्डा एक धारा ※ कुड़ि चक्षु फिरे जेन आकाशेर तारा
कालान्तक यम सम रुषिल रावन ※ खाण्डाय काटिले माथा राखे कोन् जन
रावणेर हाते सीता देखि खाण्डाखान ※ दुइ हात तुलि ब'ले, रक्षा कर राम
उच्चैःस्वरे डाके सीता तुलि दुइ हात ※ अनाथा हइया मरि, राख रघुनाथ
देवर लक्ष्मण कोथा रामेर छोट भाइ ※ मृत्युकाले तव संगे देखा हैल नाइ
आजि हैते डुवे गेल जानकीर नाम ※ एत दिने अशोक वने विधि हैल वाम
सीता ब'ले, यदि तुमि काट लंकेश्वर ※ आमार मिनति एक तोमार गोचर
प्राण जाय जाक् हाते किछु नाहि दाय ※ आजि हैते सीता नाम देखि डुबे जाय
तिलेक विलम्ब कर करि निवेदन ※ ध्यान करि श्रीरामेर रातुल चरन
तिलादर्ध रहिते नारि रामचन्द्र विना ※ मृत्युकाले करि मने ताँहारि भावना
रामे ध्यान करि यदि जाय मोर प्रान ※ कोन जन्मे पुनराय पति पाब राम

१ तालाब २ यम ३ अनाथों की मौत ४ अस्त ५ ठहरो ६ क्षण, तिल-भर ।

बूड़ि सिन्धु करि जीवन दाना ※ मरन-लालसा, मोह न प्राना
निश्चित मरन कालिह नतु आजू ※ भल निज हाथ हनहि दनुराजू
अन्तघरी रघुपति प्रणपाती ※ विनय, चोट इक[1] करहु निपाती
भजु तजि राम, सुमुखि! दसभाला ※ नतरु उपस्थित सिय! तव काला
मोहिं तव खड्ग न भय दसकंधर ※ राम दयामय ध्यान निरन्तर

दो० मौन, लचाये सीस सिय, रही धरनि तन हेरि।
दनु समीप वनिता सहस सैनन[2] रहीं तरेरि ॥ ३४ ॥

रामप्रियहिं पुनि भीति न लेसू ※ मन्दोदरि निन्दति लंकेसू
मनुजी[3] सहज, न सुर-गन्धर्वा ※ सिय-छबि तुम्हहिं लखति किमि सर्वा!
मदन-दग्ध नहिं दनुज सम्हारा ※ तजि असि[4] सिय बल धरन विचारा
चहुँ दिसि चितवत काम विभोरा ※ कर धरि मंदोदरि झकझोरा
नल-कूबर, प्रभु! शाप न ध्याना ※ विवस रमण करि विनसै प्राना
मन्दोदरी कहत करजोरी ※ यदपि न ज्ञान, सुनहु कछु मोरी
तजहु दया करि खंग भुवाला ※ मोहिं सिय-दान करहु यहि काला
जानि अजान बनत दशमाथा ※ जन्मे अवध विष्णु जग-नाथा

बाँचिवार साध नाइ, निजे मरिताम ※ झाँप दिया सागरेते प्राण त्यजिताम
आजि कालि मरि किंवा एखन तखन ※ भाल हैल निज हस्ते काट् रे रावन
प्राण गेले रामेर चरण तबु पाय ※ एक चोटे काट तुमि, तोमार दोहाइ
रावण ब'ले, सीता, एबे छाड़ राम-नाम ※ मोरे भज, नहिले त हाराबे परान
सीता ब'ले, खाण्डा देखि न करिब भय ※ छाड़िते नारिब आमि राम दयामय
एत ब'लि सीतादेवी करे हेट माथा ※ रावणेर संगे आर ना कहेन कथा
सहस्र कामिनी आछे रावणेर आड़े ※ आड़े थाकि ताहरा सीतारे चक्षु ठारे
तबु भय नाहि पाय रामेर सुन्दरी ※ रावणेरे भर्त्से सेइकाले मन्दोदरी
देवता गन्धर्व्व नहे, जानिते मानुषी ※ कत बड़ देख प्रभु जानकी रूपसी
रावण सीतारे देखि कामे अचेतन ※ खाण्डा फेलि जाय बले धरिते तखन
कामे मत्त चतुर्द्दिक् रावण नेहाले ※ मन्दोदरी हाते धरि ब'ले हेनकाले
नल कूबरेर शाप पासरिले मने ※ शृंगार करिले ब'ले मरिबे पराने
पुनः ब'ले मन्दोदरी करि जोड़हात ※ मूर्ख आमि मोर वाक्य राख प्राणनाथ
मोरे दया करि राजा त्यज खाण्डाखान ※ एवार जानकी माके मोरे देह दान
जानिया ना जान राजा, राम गदाधरे ※ आपनि जन्मिला विष्णु अयोध्या नगरे

[illegible] २ संकेत से ३ मानवी ४ तलवार।

दशरथसुत त्रिभुवनपति रामा ※ स्वयं रमा सिय जन्म ललामा
वचन मदोदरि, सीय कलेसू ※ लखि किय खंग कोष[1] लंकेसू
भयेउ शिथिल सुनि रानि-प्रबोधा ※ चेरिन प्रति धायेउ करि क्रोधा
डपटि पुकारत दासिन नामा ※ धाय बेगि सब करहिं प्रनामा
दासिन कहत प्रकोपि दसानन ※ सिय समीप तुम सब केहि कारन
चेरी पुनि दसगुनी बढ़ाई ※ वन अशोक चौकसी कराई
त्रिजटादिकन डपटि समुझावा ※ सकल चेरि सिय तीर लगावा
निर्दय निठुर प्रभाषा आई ※ दुर्मुख सूर्पनखा तहँ धाई

दो० अश्वमुखी चित्तच्छमा बज्रधारि जे दासि।
प्रस्तुत सरमा निसिचरी, धर्म तिरजटा रासि ।। ३५ ।।

चेरिन कान कहत दनुराई ※ भल अहिनिसि सीतहिं समुझाई
नेह दिखाय न नीरस वचना ※ अनुमति-सिंय लीजिय केहु जतना
रानिन सहित गयेउ निज धामा ※ सुख पर्यंक करत विश्रामा
सिय जहँ चेरिन-जमघट छावा ※ गर्जि तर्जि पुनि लकुटि[2] उठावा
कृत्तिवास कबि मञ्जुल बानी ※ सुन्दरकाण्ड पुनीत कहानी

दशरथ गृहे विष्णु जन्मिला आपनि ※ लक्ष्मी रूपे जन्मिलेन सीता ठाकुरानि
मन्दोदरी वाक्ये आर सीतार क्रन्दने ※ खाण्डाखान सम्बरिल राजा दशानने
नेउटिल दशानन रानीर प्रबोधे ※ मारिवारे चेड़िगणे जाय महाक्रोधे
चेड़ीगणे डाके से याहार जेइ नाम ※ द्रुत गिया चेड़ीगण करिल प्रणाम
चेड़ीगणे कोप करि ब'ले दशानन ※ सीता पाशे तोमा सबे राखि कि कारन
यत चेड़ी दिया छिल सीतार रक्षने ※ तार दशगुण दिल अशोक कानने
चेड़ी गणे कोप करि कहे दशानन ※ सीता ल'ये थाक् त्रिजटादि चेड़ीगन
निर्द्दया निष्ठुरा एल प्रभाषा दुर्म्मुखा ※ पाइया सीतार वार्त्ता राँणी शूर्पनखा
अश्वमुखी वज्रधारी एल चित्तक्षमा ※ धार्म्मिका त्रिजटा एल राक्षसी सरमा
कहिल रावण चेड़ी सकलेर काने ※ बुझाओ सीताय भालमते रात्रिदिने
रुक्षवाक्य ना ब'लिह, ब'लिह पीरीते ※ बुझाइया अनुमति लह भालमते
रानीगण संगे राजा गिया निज घर ※ पालंके शयन करे सुखे लंकेश्वर
हेथा सीता आगुलिया रहे यत चेड़ी ※ तर्ज्जन गर्ज्जन करे उठाइया बाड़ि
कृत्तिवास सुकविर कवित्व मधुर ※ पड़िले सुन्दरकाण्ड पाप हय दूर

---

१ मियान में २ लाठी।

राक्षसियों द्वारा सीता-उत्पीड़न

किय तैनात लंकपति चेरी ※ सकल रहीं ते सीतहिं घेरी
सुनु सीता ! लंकेस समाना ※ जग न स्वामि गुनधाम लखाना
जीवन अल्प, स्वल्प धन रामा ※ चौयुग सासन-सुख दनुधामा
धन-जीवन जिन स्वल्प बखाना ※ मम पति कमलनयन भगवाना
सुनि सिय-कथन, क्रुद्ध सब चेरी ※ लकुटि-खंग कर, कहहिं तरेरी[1]
तव हित सहन करहिं सन्तापू ※ सब मिलि भच्छि नसावहिं तापू
धाईं पुनि सिय मारन हेतू ※ इत मन-मन सुमिरन रघुकेतू
विटप-ओट हनुमत सब लखहीं ※ चेरिन-वध विचार मन करहीं
नारी-बध उर पाप विचारी ※ दलहिं दनुज-दल अस हिय धारी
सोचत, प्रथम सकल सुनि बाता ※ करहिं निसचरिन सकल निपाता
बोलति निठुरा कहति प्रभाषा ※ सियहिं काटि पुरवहिं अभिलाषा

दो० एतक दीन्हीं सीख सो, सियहिं न तनिक सुहाति ।
भच्छहिं मांस विखण्ड करि, सब मिलि सीय निपाति ॥ ३६ ॥

सुनि उठि अश्वमुखी सम्भाषा ※ सुखकारी अति कथन-प्रभाषा
सूर्पनखा किय वचन प्रहारा ※ गर धरि नखन करहिं संहारा

सीतार प्रति चेरीगणेर उत्पीड़न

घरे गेल दशमुख ठेकाइया चेड़ी ※ सीतारे मारिते सबे करे हुड़ाहुड़ि
चेड़ी सब ब'ले, सीता, शुन हित वाणी ※ रावणेर मत गुणी ना पाइबे स्वामी
अल्पधन धरे राम, अल्पइ जीवन ※ चौद्द युग राज्य भोग करिबे रावन
सीता ब'ले, अल्पधन अत्यल्प जीवन ※ सेइ से आमार स्वामी कमललोचन
शुनिया सीतार कथा, क्रुद्धा सब चेड़ी ※ कारो हाते खाण्डा आर कारो हाते वाड़ि
तोर लागि आमरा सकले दुःख पाइ ※ मिलिया सकल चेड़ी आज तोरे खाइ
सकले धाइया जाय सीतार निधने ※ श्रीराम स्मरण सीता करे मने मने
देखे शुने हनूमान थाकि वृक्ष आड़े ※ 'चेड़िगणे मारि' ब'लि मने तोड़पाड़े
मने भावे, नारी मारि करिब पातक ※ चेड़ीर बदले मारि राक्षस-कटक
शुनि आगे सवाकार बाक्य अवसान ※ पिछे चेड़ी सकलेर बधिब परान
तखन निष्ठुर ब'ले प्रभाषा राक्षसी ※ काट तबे सीतारे किसेर तरे तुषि
ना शुनिल सीता आमा सबार बचन ※ सीतारे काटिया मांसे करिल भक्षन
भाल भाल ब'लिया उठिल अश्वमुखी ※ प्रभाषार कथा शुनि हैल बड़ सुखी
शूर्पनखा राँड़ी तबे हाने वाक्यबान ※ गले नख दिया तोर बधिब परान

१ क्रोध में आँखें दिखा कर ।

छेदे लखन नासिका काना ※ तासु कोप तव नासहुँ प्राना
बज्रधारि पुनि पैग बढ़ावा ※ चाक सरिस धरि केस घुमावा
मारि नघोचहिं, काहु न क्लेसू ※ फँसे प्रान, सिय रुदन विसेसू
वस्त्र सम्हार न केशन बेणी ※ शोकाकुल सिय लोटत धरणी
तरु ऊपर उत हनु बलवन्ता ※ तरु तर मैथिल रुदन अनन्ता
मातु कौशिला कहँ भगवाना ? ※ दासिन कृत इत मम अपमाना
यदि लंका - आगम रघुनन्दन ※ सकुल होय दनुराज-निकन्दन
सहेउँ दुसह दुख, जो सुनि पावैं ※ प्रभु - सायक यह लंक नसावैं
यहि छन अन्तरिक्ष जो बसई ※ मम दुख जाय राम सन कहई
दृग जल झरत, न लेस बिरामा ※ आवहिं लंक विनासहिं रामा
जम्बुक[1]-श्वान-गृद्ध सब आई ※ दनुज-मांस जेवहिं[2] रुचि पाई
शाप - मैथिली लंक - विनासू ※ सुन्दरकाण्ड रचेउ कृतिवासू

सीता-त्रिजटा-संवाद

त्रिजटा कहति, लंकपति मानी ※ सिय ! पद लहहु लंक-पटरानी
त्रिजटा कस अनरीति तुम्हारी ※ प्राननाथ केहि भाँति बिसारी

लक्ष्मण काटिल जेइ मोर नाक कान ※ सेइ कोपे आजि तोर बधिब परान
आर चेड़ी एल, तार नाम बज्रधारी ※ चूलि धरि सीतारे से दिल चाक-भाउरी
मारिते काटिते चाहे, कारो नाहि व्यथा ※ प्राणे आर कत सबे कान्दिछेन सीता
वस्त्र ना संवरे सीता केश नाहि बाँधे ※ शोकाकुला हये भूमे लोटाइया कान्दे
महावीर हनूमान आछे वृक्षडाले ※ रोदन करेन सीता सेइ वृक्षतले
कोथा गेले प्रभु राम कौशल्या शाशुड़ी ※ अपमान करे मोरे रावणेर चेड़ी
यदि हय लंकाय रामेर आगमन ※ सवंशे निर्व्वंश हय राक्षसेर गन
एत दुःख पाइ, यदि शुनितेन चाने ※ लंकापुरी खान खान करितेन वाने
हेनकाले अन्तरीक्षे थाक यदि चर ※ मोर दुःख कह गिया श्रीराम गोचर
आमार चक्षुर जल नाहिक विराम ※ ए लंकार सर्व्वनाश करुन श्रीराम
गृधिनी शकुनि तुष्ट हउक आकाशे ※ शृगाले कुक्कुर तृप्त राक्षसेर मासे
जानकीर शापे हवे लंकार विनाश ※ रचिला सुन्दरकाण्ड कवि कृत्तिवास

सीता-त्रिजटा-सम्वाद

त्रिजटा ब'लेन, सीता, शुन मोर वाणी ※ रावणे भजिया हओ लंकार पाटराणी
सीता ब'ले, त्रिजटा कि ब'लह आमारे ※ केमने छाड़िते ब'ल प्राण रघुवरे

---

१ गीदड़ २ भक्षण करें।

दो० आभूषन पटरानि-पद, कहु त्रिजटा केहि काम।
जन्म-जन्म के पुण्यफल, पति पायेउँ मैं राम॥
ताम्रपात्र जल-जाह्नवी[1] तिल तुलसी लै हाथ।
बाल्यकाल पितु दान करि मोहिं अर्पेउ रघुनाथ॥ ३७॥

केवल राम अन्य नहिं सपना ※ अहिनिसि रुदन न पुनि विस्मरना
इमि तव सीख मोहिं जनि भावै ※ ताड़न तजि मुख राम सुनावै
दासी करुणवचन-सिय सुनहीं ※ निसि-प्रमाद आलस महँ परहीं
चर्चति बहु तन्द्रा तिन छाई ※ झूमि-झूमि सुख निद्रा आई

त्रिजटा का स्वप्न-वर्णन

रैन तिर्जटहिं सपन सतावा ※ दासिन निकट जगाय बुलावा
उचटी नींद तिरजटा जागी ※ निसि दुःस्वपन विचारन लागी
शैया बैठि शोच उर कीन्हा ※ चेरिन यत सिय पीड़न दीन्हा
त्रिजटा कहत, राम सिय रमनी ※ मारै ताहि मरै निज करनी
सिय कलेस निश्चित अवसाना[2] ※ सपन सुनहु जेहि भाँति विधाना[3]
तजि सिय सकल तिरजटा पासा ※ जाय सपन सुनि उपजेउ त्रासा
चेरिन कहेउ इकान्त बुलाई ※ सुमिरि सपन मम जीवन जाई

पाटराणीर आभरणे मोर काज कि ※ कत पुण्यफले रामे पति पेयेछि
ताम्रपात्रे गंगाजले तिल तुलसी हाते ※ बाल्यकाले पिता मोरे सँपे राम हाते
राम विना आर मोर आछे कोन जना ※ रात्रि दिन केंदे मरि, ना घुचे भावना
एइ कथा छेड़े चेड़िगो, दाण्डाओ विद्यमान ※ बेतेर वाणि फेले एक बारि शुनाओ रामेर नाम
सीतार करुणा शुनि यत चेड़ीगन ※ घुमे ढुलु ढुलु आँखि निद्राय मगन
त्रिजटा कतक रात्रे स्वप्न देखि उठे ※ चेड़ी गणे डाकि निल आपन निकटे

चेड़ीगण समीपे त्रिजटा राक्षसीर दुःस्वप्न वृत्तान्त कथन

त्रिजटा राक्षसी रात्रि जागिते ना पारे ※ दुःस्वप्न देखिया बुड़ि उठिल सत्वरे
शय्याय बसिया बुड़ी दुःख पाय मने ※ सीतारे बेड़िया मारे यत चेड़ीगने
त्रिजटा ब'लेन, सीता रामेर रमणी ※ सीतारे जे मारे, सेइ मरिबे आपनी
हइल सीतार बुझि दुःख अवसान ※ स्वप्न शुनिवारे सबे एस मोर स्थान
सीता एड़ि गेल सबे त्रिजटार पास ※ त्रिजटा कहिछे स्वप्न शुनि लागे त्रास
निभृते त्रिजटा डाकि ब'ले चेड़ीगन ※ स्वप्न देखि आजि मोर उड़िल जीवन

---

१ गंगाजल २ समाप्त ३ होनहार।

कुसपन आजु निसा मैं देखा * मर्कट[1] लंक प्रवेस विशेषा
प्रथम कपिन्द बलिस्त प्रमाना * आय सिय-पद दिय सन्माना
सीतहिं चर्चि भीम तन धारा * बन-रसाल भञ्जेउ पुनि सारा
सागर लंघि लंक किय छारा * संहारेसि कपि अखयकुमारा
जरठा[2] रक्तवसन-युत कारी[3] * सो रावन-गर फँसरी[4] डारी

दो० लंकदाह, हनि दानवन, कुम्भकर्ण-मुख कार।
स-धनु बन्धु दोउ सीय लै, पुष्पक भये सवार ॥ ३८ ॥

देखेउँ सपन, न तेहि निस्तारा * लंका अवशि होय संहारा
कहि निसचरि पुनि नींद विभोरा * सीय-रुदन तरु-तर अति घोरा
कपि तरु-डार हर्ष अतिरेका * सपन प्रतच्छ करहुँ दिन एका
त्रिजटा-सपन सत्य, कृतिवासा * वरनेउ दसमुख सकुल विनासा

सीता-सरमा संवाद

तहँ निसचरि सरमा गुनखानी * सिय सों सदा प्रीति रससानी
एक मात्र सरमा यह नारी * जो न लंक सीतहिं दुखकारी
भगिनी सम सरमा पुनि सीता * कहहिं परस्पर दुःख अतीता[5]

दुष्ट स्वप्न देखि आजि निशिर भितरे * लंकाय आसिल येन मर्कट वानरे
प्रथमे आसिल कपि विघत प्रमान * प्रणाम करिल आसि सीता-विद्यमान
सीता संभाषिया कपि भीम मूर्ति धरे * आम्रवन भांगि मारे अक्षयकुमारे
सागर लंघिया वीर एल शीघ्र करि * पोड़ाइया भस्मराशि कैल लंकापुरी
रक्तवस्त्र-परिधाना काली हेन बुड़ि * रावणेरे पाड़े तार गले दिया दड़ि
देय कुम्भकर्णेर मुखेते कालीचून * लंकादाह हय आर राक्षसेरा खून
श्रीराम लक्ष्मण देखि धनुर्व्वाण हाते * सीता उद्धारिया जाय चड़ि पुष्परथे
ये स्वप्न देखिनु, ताहे नाहिक निस्तार * पड़िबेक अवश्य लंकाय महामार
त्रिजटा एतेक ब'लि घुमे अचेतन * एक सीता वृक्ष तले करेन क्रन्दन
शुनिया वृक्षेर शाखे हनूमान हासे * प्रत्यक्ष कराब स्वप्न एकइ दिवसे
त्रिजटार स्वप्न सत्य, कहे कृत्तिवास * रावणेर हबे शीघ्र सवंशे विनाश

सीता ओ सरमार कथोपकथन

सरमा राक्षसी बटे महागुणवती * सीतार सहित तार परम पीरिति
लंकार सीतार नाहि दुःखेर भगिनी * एकमात्र छिल सेइ सरमा रमनी
सीता ओ सरमा जेन दुइटि भगिनी * उभये कहित कत दुःखेर काहिनी

---

१ बन्दर २ बूढ़ी ३ काले रंग की ४ फाँसी ५ अतिशय।

सरमा सुनत क्लेश - वैदेही ※ बहु एकान्त सान्त्वना[1] देही
हे प्रिय सखी ! कहति पुनि सीता ※ सहेउँ राम-पद-हित दुख केता
धौं विरंचि मोहिं करैं सुखारी ※ राम संग पुनि अवध निहारी
दीदी ! दरस लहौं पुनि रामा ! ※ राम-रानि ह्वै निवसउँ वामा
पर्णकुटी कहँ कुटी ललामा ※ देवर लखन कितै गुणधामा
हे प्रिय, कतहुँ न विधि[2] अनुकूला ※ लिखेउ ललार सकल प्रतिकूला
केहु न हानि सब कर कल्याना ※ किमि मम कुगति कीन भगवाना
दुख पर दुःख-गाज कहुँ डारौ ※ सुख पर सुख कहुँ, प्रभु ! बिस्तारौ
सुख सरसति जहँ तहँ सुख-सागर ※ दै छीनत किमि 'राम' गुनागर

दो० सीता-राम न भिन्न कहुँ, एक-एक महँ लीन ।
तिन बिछोह किमि दुसह दुख आजु विधाता दीन ॥ ३९ ॥

मैं करि साध न धारेउँ हारा ※ अन्तस हार राम-छबि धारा
जिन प्रभु हेतु न धारेउँ हारा ※ विधि तिन कीन सिंधु के पारा
किमि दारुन दुख सकहिं बिसारी ※ वृथा जन्म लिय जनकदुलारी
चेरी मोहिं ताड़हिं बहु रूपा ※ कब लौं सहौं कलेस अनूपा
उत्पीड़हिं दासीगन घोरा ※ भजे न प्रान, जलधि चहुँ ओरा

सीतार दुःखेर कथा सरमा शुनिले ※ सरमा सान्त्वना दित बसिया बिरले
सीता कन शुन मोर सरमा भगिनी ※ आर कि पाइब राम-चरण दुखानि
आर कि सरमा दिदि, हेन भाग्य पाव ※ श्रीरामेर संगे आमि अयोध्याय जाब
आर कि हेरिब चक्षे राम रघुमणि ※ आर कि रामेर बामे हब पाटराणी
कुटीर रहिल कोथा पत्रेर छाउनी ※ देवर लक्ष्मण कोथा सेइ गुण मनि
विषम कठिन विधि, देखि तव मन ※ आमार कपाले कैलि एमन लिखन
कारो मन्द नाहि करि, सबे करि भाल ※ तबे केन अभागीर हेन दशा ह'ल
दुःखेर उपरे कारे दाओ विधि, दुःख ※ सुखेर उपरे कारे दाउ तुमि सुख
यारे सुख दाओ, भासे से सुख सागरे ※ रामनिधि दिया पुनः केड़े निले तारे
राम सीता एक वस्तु भिन्न नहे कभु ※ भिन्न करि दिलि आज निदारुण विभु
साध करि गले हार ना परिनु आमि ※ हार-अन्तराले पाछे रन रघुमणि
ताइ आमि भये-भये ना परिनु हार ※ सेइ रामे राखे विधि सागरेर पार
एमन दारुण दुःख केमने पासरि ※ वृथा मोर जन्म वृथा जनकझियारी
आमारे बेतेर बाड़ि मारे चेड़ीगण ※ ए दुःखे सीतार प्राण बाँचे कत क्षण
सदाइ मारिते आसे राक्षसीर दल ※ पलाइते मने करि, चतुर्द्दिके जल

सरमा निरखि अतुल सिय-तापा ※ बहु समुझाय हरति संतापा
राम पदुम-दृग विष्णु बखानी ※ सिय जग विदित रमा ठकुरानी
भिन्न न राम-रमापति एका ※ उभय मिलन द्रुत[1], जनि अतिरेका[2]
सुलभ न फल विन अवसर आये ※ अवसर लहत सिद्धि पछुवाये[3]
प्रबल दैव, पुरुषार्थ कहाये ※ सोऊ व्यर्थ काल बिन पाये
पौरुष, दैव, काल मिलि तीनो ※ कारज सिद्धि सुनिश्चित कीनो
बिन्दु बिन्दु तव दृग जलधारा ※ बरसत मनहुँ ज्वलंत अँगारा
सुबरन लंक दहै यह आगी ※ अमिट वचन मम, सुनु बड़भागी
थोरी शेष, बीति बहु आई ※ दुख सम्हारु, नतु हिया सुखाई
सरमा सती-वचन सुनि काना ※ यहि विधि सीता कीन बखाना
जो मैं रमा, धन्य तैं सरमा ※ अनुपम नाम धन्य तव सुषमा

दो० रमा-संगिनी, सीय हित, सुषमा जासु अनन्य ।
धन्य मातु-पितु जिन धरेउ, सरमा नाम सुधन्य ।।
धरति शीस कर जानकी, तजति दीर्घ निश्वास ।
सिय के दुख उपवन दुखी, खग-मृग सकल उदास ।।
सरमा-सीख सुहावनी, सिय-उर सीतल कीन ।
सुन्दरकाण्ड अनूप इमि कृत्तिवास रचि दीन ।। ४० ।।

एतेक ब'लिया सीता करेन क्रन्दन ※ सरमा सीता के कहे प्रबोध वचन
कमललोचन राम देव नारायन ※ सीता लक्ष्मी ठाकुराणी, जाने त्रिभुवन
लक्ष्मी नारायण कभु भिन्न नाहि रबे ※ अविलम्बे उभयेर मिलन हइबे
कालपूर्ण हइलेइ कार्य्यसिद्धि हय ※ कालपूर्ण ना हइले नहे फलोदय
सत्य वटे दैव ओ पुरुषकार वल ※ किन्तु एइ दु'ये काज ना हय सफल
कालपूर्ण हइया चाइ तादेर सहित ※ ए तिन मिलिले कार्य्यसिद्धि सुनिश्चित
एक एक बिन्दु तव नयनेर जल ※ झरितेछे ठिक येन ज्वलन्त अनल
ए अनले दहिवेक स्वर्ण लंकापुरी ※ मने रेखे दिओ सीता विशेष विचारि
बहुकाल गेल सीता अल्पकाल आछे ※ क्रन्दन संवर सीता, हिया शुकाय पाछे
सरमा सतीर वाक्य करिया श्रवन ※ सीतादेवी एइ कथा ब'लेन तखन
आमि रमा यदि हइ तुमि हे सरमा ※ सार्थक तोमार नामे देखि ये सुषमा
धन्य तव पिता माता बुझिनु एखन ※ राखिला 'सरमा' नाम आमारि कारन
माथे हात दिया सीता छाड़िला निश्वास ※ सीतार क्रन्दने पशुपक्षि मने ह्रास
क्रन्दन संवरे सीता सरमा-वचने ※ सुन्दर सुन्दरकाण्ड कृत्तिवास भने

सीता सहित हनुमान-साक्षात्

सिय तजि धाम गईं सब चेरी * सीय-दरस-अवसर कपि हेरी
चढ़े विटप निरखत हनुमाना * पहुँचैं सिय समीप, अनुमाना
तरु-तर सिय, हनुमत तरु-डारी * करहिं बात किमि मनहिं विचारी
डरपहि कतहुँ न लखि वैदेही * उतरन-विटप न कपि मन देही
तदपि सीय बिन मिले न त्राना * होयँ निराश राम भगवाना
ऊँच नीच बहु भाँति विचारी * राम कथा हनुमत विस्तारी
राम सुमिरि सिय रुदन अपारा * कथा पवनसुत राम प्रसारा
तरु सों पुनि पुनि 'राम' बखाना * राम-नाम सिय अचरज काना
राम-नाम मधु को सरसाई * देय सतत[1] उर सीतलताई
चहौं दरस जेंहि मुख हरिनामा * निठुर लंक किमि अनुचर-रामा
कहँ तुम बत्स ! लखत मोंहि नाहीं * मनहुँ दरस पाये प्रभु पाहीं
प्रस्तुत ह्वै मारुति बलधामा * तबहिं कीन अष्टांग प्रणामा
कपि लखि उर विस्मित वैदेही * चीन्हहुँ जनि, तुम कवन सनेही
दसमुख-प्रेरित[2] धौं छलरूपा * उर ससंक लखि रूप अनूपा
मोंहि भरमावत धरि कपि रूपा * मम अकाज हित छम्य[3] सरूपा

सीतार सहित हनूमानेर साक्षात्कार ओ आत्म-परिचय प्रदान

हनूमान देखे, तबे चेड़ी घरे गेल * सीता सम्भाविते मोरे एइ बेला हैल
वृक्ष हैते एइ सब देखे हनूमान * एइवार जाब सीता मा'र विद्यमान
वृक्षशाखे हनूमान, सीता भूमितले * कि बलिया सम्भाषिब, मने युक्ति तुले
ब'लिते रामेर दूत ना हय वासना * मोर तरे ह'ते पारे सीतार यन्त्रना
तबेत सकल कार्य्य हइबे विनाश * असम्भाषे गेले हबे श्रीराम निराश
सात पाँच हनूमान भावेन आपनि * आपना आपनि कहे श्रीराम काहिनी
श्रीराम ब'लिया सीता करेन क्रन्दन * श्रीरामेर कथा कहे पवननन्दन
वृक्ष हैते राम ब'लि डाके घने घने * अचम्बिते राम नाम बाजे सीतार काने
सीता ब'ले के शुनाले मधुर राम नाम * जुड़ाओ रामेर नामे कान अविराम
ये शुनाले राम नाम एक बार देखा दे * निष्ठुर लंकाय रामेर हेन भक्त के
कोथा हैते आलि बाछा, नाहि जानि आमि * बोध हय रामचन्द्रे देखियाछ तुमि
देखिते देखिते एल वीर हनूमान * अष्टांग लोटाये वीर करिल प्रणाम
कपि देखि सीतार विस्मित हैल मन * चिनिते ना पारि बाछा, तुमि कोन जन
देखिया तोमार मूर्ति हइनु कातर * छल करि पाठाइल बुझि लंकेश्वर
एले कपि रूप धरि भुलाइवार तरे * मरिवार तरे कपि आइले ए धारे

१ निरंतर २ रावण के भेजे हुये ३ भेष बदला हुआ, बहुरूपिया।

कपि तजि, मातु ! न मैं कछु आना[1] * तनय - समीर[2] नाम हनुमाना

दो० राम कृपानिधि कृपा करि कीन मोहिं निज दास ।
भृत्य-राम, निसिचर न मैं, सुनउ मातु ! अरदास[3] ।।
तुम जननी, मैं सुवन तव, धरौ माथ निज हाथ ।
पवनतनय हनुमान मैं, दास राम रघुनाथ ।। ४१ ।।

'राम-दास' सुनि कौतुक छावा * सियहिं कथन विस्वास न आवा
जो तुम रामभक्त हनुमाना * देहु सुपरिचय सहित प्रमाना
हनुमत अतुल भक्ति रससाने * राम-सुयश तत्-छनहिं बखाने
यज्ञ-दान-रत दशरथ राजा * सुर-नर पूजत सकल समाजा
राम जेठ सुत, सिय तिन भामा * हरन कीन रावन दुष्कामा
कानन भ्रमत विरह सिय हेतू * भई मिताइ[4] राम-कपिकेतू[5]
वृत्त[6] राम मैं सकल सुनाई * सुत मैं तोर, निरखु मोंहि माई
सीस उठाय नयन तर आना * सीय लखत कपि वित्त-प्रमाना[7]
दरस परस्पर दोउ जन कीन्हा * कपि कर जोरि नाय सिर दीन्हा
विधि मम वाम कहत वैदेही * रावन - चर भरमावत मोहीं
माया बहु जानत लंकेसू * लखत लंकपति तुम कपिवेसू

हनू ब'ले आमि कपि नाहि अन्यजन * नाम मोर हनूमान पवननन्दन
निजगुणे कृपा करि भृत्य कैला राम * आमि ताँर भृत्य, मोर नाम हनूमान
निशाचर नहि आमि माथाय दाओमा * आमि तोमार प्रिय पुत्र, तुमि आमार मा
सीता ब'ले कि त्र'लिले रामेर भृत्य तुमि * के मने कहिब कथा प्रत्यय ना जाइ आमि
तुमि यदि रामेर सेवक हनूमान * ताँर परिचय दाओ मोर विद्यमान
सत्वर हइया हनू महाभक्ति-भरे * श्रीरामेर परिचय दिलेन सीतारे
यज्ञशील दानशील दशरथ राजा * देवलोक नरलोक सबे करे पूजा
ज्येष्ठपुत्र राम ताँर, बधू सीता सती * हरण करिल ताँरे रावण दुर्म्मति
कानने भ्रमेन राम सीता अन्वेषणे * सुग्रीवर सह मैत्री करिलेन वने
से रामेर वृत्तान्त तोमारे जाय ब'ला * माला तुलि देख मागो सेवक वत्सला
माथा तुलि सीतादेवी सम्मुखे नेहारे * विघत प्रमान कपि देखेन गोचरे
सीता हनूमान दोंहे हैल दरशन * जोड़ हाते नमे ताँरे पवननन्दन
जानकी बलेन, विधि विगुण आमाय * रावणेर दूत बुझि आमारे भुलाय
नानाविध माया जाने पापिष्ठ रावण * वानर रूपेते बुझि करे सम्भाषण

१ अन्य २ पवन-पुत्र ३ प्रार्थना ४ मित्रता ५ राम और सुग्रीव में ६ वृत्तांत ७ बालिश्त बराबर ।

विगत मास दस शोक-उपासू ※ किमि मम करत नित्य उपहासू
जो तुम साँचु दूत-श्रीरामा ※ मम वर होहु अमर बलधामा
अस्त्रघात जनि पावक[1] जारी ※ रन-वन उमा करैं रखवारी
सुत तव कण्ठ सरस्वति राजै ※ जहाँ जाहु तहँ सिद्धि विराजै
कपि कहु नाम कवन तव देसू ※ इत केहि हेतु कवन आदेसू

दो० कुशल मिली जनि, विगत दिन, जो तैं चर-प्रभु राम ।
मम हित दुर्बल नाथ, तिन वरनहु कथा ललाम ।। ४२ ।।

मारुति कहत राम गुणधामा ※ रूप - धर्म सर्वांग ललामा
गात प्रकाण्ड यथा तरु शाला ※ बाहु अजानु सुनाभि विशाला
नासा तिल, सुप्रशस्त ललाटा ※ फलाहार बल-वीर्य विराटा
गति मतंग दूर्वादल श्यामा ※ मदन जीति छबि भुवन ललामा
कौतुक धनु-समर्थ बल-वेशा ※ सुमनित[2] चञ्चल कुञ्चित केशा
'हा सीते' कहि रुदन, न धीरा ※ अनुज लखन तिन गौर शरीरा
उमड़ शोक सिय रुदन अतीता ※ सुत अब मोहिं तव भई प्रतीता[3]
राम सकल-गति नाथ-अनाथा ※ वरनि सकति को गुन-रघुनाथा
राम भक्त हे, सुनु हनुमाना ※ कमलनयन कहु किमि भगवाना

दश मास करि आमि शोके उपवास ※ मम संगे कि लागिया कर उपाहस
स्वरूपेते हओ यदि श्रीरामेर चर ※ आमार वरेते तुमि हइबे अमर
अग्निते पुड़िबे नाहि अस्त्रे ना मरिबे ※ रणे-वने तव रक्षा शंकरी करिबे
तव कण्ठे सरस्वती हौन अधिष्ठान ※ येखाने सेखाने जाओ सर्व्वत्र समान
वानर, कि नाम धर, थाक कोन देशे ※ कि हेतु आइले हेथा काहार आदेशे
बहुदिन श्री रामेर ना जानि कुशल ※ आमार लागिया प्रभु आछेन दुर्ब्बल
हइबे रामेर दूत हेन अनुमानि ※ तव मुखे शुनिलाम प्रभुर काहिनि
हनूमान ब'ले, राम गुणेर सागर ※ आकृति प्रकृति किवा सर्व्वांग सुन्दर
शालवृक्ष जिनि ताँर प्रकाण्ड शरीर ※ आजानु लम्बित बाहु नाभि सुगभीर
तिलफुल जिनि नासा सुदृश्य कपाल ※ फल मूल खान तबु विक्रमे विशाल
दूर्व्वादल श्याम राम गजेन्द्र-गमन ※ कन्दर्प जिनिया रूप भुवनमोहन
विचित्र धनुक ताँर ताहे देन चड़ा ※ चाँचर केशे चिकुर होन पुष्पलता बेड़ा
'हा सीता हा सीता' ब'लि करेन क्रन्दन ※ गौर वर्ण श्रीरामेर अनुज लक्ष्मन
एत शुनि जानकीर बाड़िल क्रन्दन ※ एत क्षणे बाछा, मोर प्रत्यय हैल मन
अनाथेर नाथ राम सकलेर गति ※ कहिते ताँहार गुण काहार शकति
रामेर सेवक बटे बाछा हनूमान ※ केमन आछेन मोर कमलनयान

---

१ अग्नि २ फूलों से सजे हुये ३ विश्वास ।

केहि विधि समय कटत रघुनाथा * बिलमि[1] सुनहुँ तिन मंगल गाथा
देवर लखन सुमित्रा - प्राना * प्रथम कुशल तिन कहु हनुमाना
पञ्चबटी मैं कहे कुबचना * सुनहुँ कथा तिन, मोहिं उचित ना
मम दुर्वचन गये वनदेसू * सूने मोहिं हरेउ लंकेसू
सुनि सिय-बचन कहेउ हनुमाना * वरनहुँ कथा विशेष प्रमाना
उपवन लखेउ कनक मृग सुन्दर * दनु मरीच सो रावन-अनुचर
तेहि अखेट[2] रघुवीर पयाना * प्रभुसर दनुज हरे पुनि प्राना

दो० मानि दुर्वचन तव लखन, चले जहाँ रघुनाथ ।
लहि सूने उपवन तुमहिं हरन कीन दशमाथ ॥ ४३ ॥

पञ्च कीस हम रहि गिरि-सूका * छिन्न वसन तहँ गिरत विलोका
छिन्न वसन रघुपति ढिग धारा * लखन-राम किय रुदन अपारा
भूमि विलोटत खात पछारा * दै प्रबोध सुग्रीव सम्हारा
किय सुकण्ठ प्रन सिय-उद्धारा * अेवज[3] राम तेहिं शासन-भारा
जुरेउ कटक-कपि नृप-आदेसू * गमनेउ चहुँ दिस तव उद्देसू[4]
मास-अवधि कपिनाथ बताई * बीते अवधि न केहु कुसलाई
प्रविसि पताल घोर तम-देसू[5] * जहँ लखि मरन, उपाय न शेसू

केमने वञ्चेन काल राम गुणमणि * रामेर मंगल पिछे शुनिब से आमि
आगे एक वार्ता हनू, सुधाइ तव काछे *सुमित्रार प्राण, देवर लक्ष्मण केमन आछे
देवरेर कथा आमि ना शुनिनु काने * दुष्ट कथा कहिलाम पंचवटी वने
दुष्ट कथा शुनि देवर एका राखि गेल * शून्य घर देखि रावण हरिया आनिल
सीतावाक्य शुनि पुन: कहे हनूमान * विशेषिया कहि माता, कर अवधान
आपनि ये स्वर्णमृग देखिला सुन्दर * राक्षस मारीच सेइ रावणेर चर
ताहाके मारिते राम करेन प्रयाण * श्रीरामेर वाणेते से हाराइल प्राण
तोमार दुर्व्वाक्ये घर छाड़िल लक्ष्मण * शून्य घर पेये तोमा हरिल रावण
पर्व्वत शिखरे छिनु मोरा पञ्चजन * छिन्न वस्त्र अकस्मात् पड़िल तखन
राम हस्ते छिन्न वस्त्र करिनु अर्पण * बहु कान्दिलेन राम कान्दिला लक्ष्मण
आछाड़ खाइया राम लोटान भूतले * सुहृद सुग्रीव ताँरे आश्वासिया तोले
करिल सुग्रीव सत्य तोमा उद्धारिते * राजत्व दिलेन ताँरे श्रीराम त्वरिते
आइल वानर सर्व्व सुग्रीव आश्वासे * चतुर्द्दिके गेल सबे तोमार उद्देशे
आसिते मासेर मध्ये राजार नियम * मासेर अधिक हैले हबे व्यतिक्रम
पाताले प्रवेश करि महा अन्धकार * मने हैल, कपि सब मरिल एबार

१ कुछ ठहर कर २ शिकार हेतु ३ बदले में ४ खोज में ५ अंधकारमय देश।

गरुड़-तनय खगपति सम्पाती ❋ सो तव वरनन किय बहुभाँती
गिरि ऊपर निवसत खगनाथा ❋ उगे पंख सुनि रघुपति-गाथा
दुस्तर सिन्धु तरेउँ तेहि वचना ❋ देखी लंक सकल इत रचना
दसमुख दूत न मैं भय-हेतू ❋ मातु! समुझु मोहिं चर-रघुकेतू
जनि प्रतीत, पुनि संक निवारौ ❋ राम - मुद्रिका चीन्ह निहारौ
सियजननी! मम करु विश्वासू ❋ असत न कहत राम कर दासू
राम-सीय प्रति भक्ति अगाधा ❋ मैं हनुमत मेटौं तव बाधा
सदा राम-सिय पद मदहोसू[1] ❋ कीजिय मम बल-बुद्धि भरोसू
कर - हनुमन्त[2] मातु उद्धारा ❋ कृत्तिवास हनु-कथा प्रसारा

सीता द्वारा आत्मपरिचय

दो० निज परिचय कहि सीय सों, पुनि पूँछत हनुमान।
नाम, ग्राम, पितु, श्वसुर, निज, कीजिय सकल बखान॥
पद्मपत्र-जल चपल सम नयन युगल छबिधाम।
राम नाम सुनि रुदन अति कहु तुम्हार को राम॥ ४४॥

সম্পাতি নামেতে পক্ষী গরুড়নন্দন ❋ তার মুখে শুনিলাম তব বিবরন
পর্ব্বতের উপরে তাহার পাই দেখা ❋ রাম নাম ব'লিতে তাহার উঠে পাখা
তার বাক্যে লংঘিলাম দুস্তর সাগর ❋ লংকার সকল স্থান হইল গোচর
রাবণের চর ব'লি না করিহ ভয় ❋ স্বরূপে রামের দূত জানিহ নিশ্চয়
আমার বচনে যদি না হয় প্রত্যয় ❋ রামের অংগুরী দেখি ঘুচিবে সংশয়
ও মা সীতা, হনূ বাক্যে কর মা বিশ্বাস ❋ হনূ না কহিবে মিথ্যা, হনূ রামদাস
হনূর অচলা ভক্তি রাম-সীতা প্রতি ❋ হনূ হৈতে খণ্ডিবেক তোমার দুর্গতি
হনূ তব বল-বুদ্ধি-ভরসার স্থল ❋ রাম-সীতা লাগি হনূ হইল পাগল
হনূহ করিবে মাগো তোমার উদ্ধার ❋ মারুতির কথা কৃত্তিবাস ব'লে সার

হনূমানের নিকটে সীতার আত্ম-পরিচয় প্রদান

হনূমান ব'লে শুন মাতা ঠাকুরানি ❋ পরিচয় দিনু আমি তোমারে ন চিনি
নিজ পরিচয় দাও তোমার নাম কি ❋ কোন রাজার বধু তুমি কোন রাজার ঝি
পদ্মপত্রে জল যথা করে ঢল ঢল ❋ সেরূপ তোমার মাগো, নয়ন যুগল
শীঘ্র করি জননি গো, পরিচয় দে ❋ রামনাম শুনি কান্দ রাম তোমার কে
এত শুনি জানকীর উথলে আগুনি ❋ আমি ছার জন্মিয়াছি বড় অভাগিনি

१ विह्वल २ हनुमान के हाथों।

छं० जनकनन्दिनी, कनकधाम जहँ मिथिला पुरी ललामा ।
कुलकलंकिनी अधम अभागिन मोर जानकी नामा ।।
अतुल तेज बल दशरथ भूपति श्वसुर अवध मम धामा ।
मिथिला जाय शंभुधनु भंजेउ वरन कीन मम रामा ।।
अवध-अधीश्वर प्राननाथ वर तबहुँ न सुख संचारा ।
राम विछोह निरन्तर कलपत विधि विपरीत ललारा ।।
सुनु हनुमान, राम बिन तिलछहुँ, रघुपति प्रान अधारा ।
जहाँ राम लै चलहु कीस तव सीस एक यह भारा ।।
दीन हीन मोंहि दिवस दिखावै अवध दरस लहि पाई ।
राम अवधपति वाम अंक पटरानि सुरूप सुहाई ।।
मारि लंकपति मोर निवारन जो समर्थ कपिराई ।
अवधरानि ह्वै, तनय सरिस तैं, लेहुँ अंक उरलाई ।।

अंगूठी-संवाद

पवनतनय सुनि सिय परितोषा ※ युगुल चरन तव मातु भरोसा
मम पहँ चिह्न एक वैदेही ※ कर महँ राम-मुद्रिका लेही
कौतुक सुनि मुद्रिका अपारा ※ पवनतनय तन हाथ पसारा

मिथिला बसति, जनक नृपति, काञ्चन रचित धाम ।
ताँहार नन्दिनी, कुलकलंकिनी, जानकी आमार नाम ।।
दशरथ राजा, बले महातेजा, ताँर वधू बटे आमि ।
मिथिला जाइया, धनुक भाँगिया, विभा कैला रघुमणि ।।
मोर प्राणवर, अयोध्या-ईश्वर, सुखेर अवधि नाइ ।
विधि हैला वाम, छाड़ि हेन राम, कांदितेछि सर्व्वदाइ ।।
शुन हनूमान, कर एइ काम, ल'ये जाओ यथा राम ।
रामेर विहने, म'रे आछि प्राणे, काँदितेछि अविराम ।।
आमि दीन हीन, ह्बे हेन दिन, अयोध्या जाइब आमि ।
गिया अयोध्याते, रघुनाथ साथे, वामे हब पाटराणी ।।
रावणे वधिया, आमारे लइया, येते यदि पार तुमि ।
राणी हबार काले, पुत्र ब'लि कोले, तोमारे लइब आमि ।।

अंगुरी-संवाद

हनूमान ब'ले किवा ब'ल ठाकुरानि ※ भरसा तोमार मागो चरण दु'खानि
एकटि निशान आछे जनकझियारी ※ हात पाति लह माता, रामेर अंगुरी
अंगुरीर नाम शुनि जानकी तत्पर ※ निदर्शन दिल हाते पवनकोङर

लीन अँगूठी भई सनाथा ※ लहे अभागिनि जिमि रघुनाथा
मुँदरी लाय दीन हनुमाना ※ अंगुस्तरी[1] मनौ मम प्राना
प्रभु मुँदरी कहँ जतन लुकाई ※ चेरि कनक[2] लखि लेयँ छिनाई
अँगुरिन धरत निसिचरिन हाथा ※ बिन मुँदरी पुनि होहुँ अनाथा
जो मुद्रिका हिये महँ धारौं ※ तौ किमि ताहि सदैव निहारौं
कछु विश्राम लेहु कपि ताता ※ मुँदरिहिं जबै करौं कछु बाता
अंगुस्तरी! सुनहु मम बानी ※ निसिदिन कलपति मैं सियरानी
तुम प्रभु-चिह्न, दरस तव पाई ※ रोवत प्रान दुगुन अधिकाई
जबहिं कीन पितु कन्यादाना ※ लीन तुमहिं तब रत्न समाना
गंगोदक तिल तुलसी हाथा ※ मोहिं-तुम-संगहिं कीन सनाथा
लीन संग प्रभु सिय पुनि मुँदरी ※ यहि विधि सौति भइउ तुम मोरी
हतभागिनि विरञ्चि मम वामा ※ मैं इत लंक, साथ तुम रामा
मम सुधि जब रघुनाथ सतावै ※ मम सूने तैं मन बहिलावै

दो० अहो दुसरिहा[3] राम की, रही राम के साथ।
कवन हेतु आई इतै, करि अकेल रघुनाथ ॥ ४५ ॥

कहु मुद्रिका कबहुँ रघुनाथा ※ सुमिरि अभागिनि करत सनाथा

अंगुरी देखिया सीता तुलि दुटि हात ※ अभागिनी ब'ले मने आछे रघुनाथ
रामेर अंगुरी आनि दिले हनूमान ※ अंगुरी नहे त इहा दिले मोर प्रान
ब'ल देखि कोथा राखि रामेर अंगुरी ※ सोना देखि केड़े लय पाछे सब चेड़ी
अंगुले राखिले पाछे लय चेड़ीगण ※ देखिते ना पाइब अंगुरी सर्व्वक्षण
हृदि माझे राखि यदि कहि तव ठाँइ ※ अंगुरी देखिते हाथ ना पाब सदाइ
वारेक विश्राम कर पवननन्दन ※ अंगुरीर सने कहि दुचारि कथन
अंगुरीर पाने चाहि कन ठाकुरानी ※ दिवानिशि काँदि आमि जनकनन्दिनी
शुनह अंगुरी, तुमि रामेर निशान ※ द्विगुण तोमाय देखि कान्दि उठे प्रान
जे काले जनक पिता दान कैला मोरे ※ मोर आगे वरण से करिला तोमारे
ताम्रपात्रे गंगाजल, तिल-तुलसी ताते ※ तोमारे आमारे पिता सँपे राम हाते
तोमाय आमाय दोंहे लैला रघुमनि ※ सेइ हैते हैले तुमि आमार सतिनी
विधि बाम हइलेन, आमि अभागिनी ※ रावण हरिल मोरे, संगे रैला तुमि
पड़िलाम जबे आमि श्रीरामेर मने ※ आमार अभावे राम चान तव पाने
अंगुरी, दोसर तुमि छिले राम सने ※ रामके राखिया एका हेथा एले केने
आर एक कथा आमि ब'लि तव स्थान ※ अभागिनी ब'ले मने करेन श्रीराम

---

१ अँगूठी २ सोना, सुवर्ण ३ साथी।

मम बिन बिगत भयेउ अति काला ※ कतक क्षीन कहु दीनदयाला
सोइ छन कहेउ कीस कर जोरी ※ तुम बिन छीन न प्रभु गति थोरी
बैठत उठत जागरन शयना ※ 'सीय' सदा मुख सरसिजनयना[1]
तव हित रुदन विकल रघुराया ※ बिन जल-असन[2] छीन अति काया
जटिल जटा, तन यहि विधि छीना ※ कृष अँगुरी तजि मुँदरी दीना
तव-रघुपति जेहि समय वियोगू ※ प्रभु - मुद्रिका न पुनि संयोगू
जो कर सोहत रामकृपाला ※ बढ़ि आकार भई सो बाला[3]
पूर्णचन्द्र छबि नभ चहुँ छाई ※ कपि सों सीय मुद्रिका पाई
सो लखि हीय अतुल हर्षानी ※ सुमिरत राम-मूर्ति सियरानी
चन्द्रकान्त मणि मुँदरि सुहाई ※ चन्द्र-किरन जगमगत समाई
रुदन-मुद्रिका सिय अनुमानी ※ तेहिं बोलत प्रबोधमय बानी
जन्मदुखी, मम समुचित पीरा ※ तै मुँदरी किमि विकल सरीरा
जानि लीन किमि दुःख समेतू ※ वन अशोक तव रोदन हेतू
रघुपति पाणि परसि जेहि पावा ※ आजीवन दुख न्यौति बुलावा
तेहि कलपत बीतत दिन नाना ※ बहुबिधि करि बिचार मैं जाना

आमा छाड़ा ह'ये राम रन वहुदिन ※ आमार विहने कत हयेछेन क्षीन
हेन काले व'ल हनू करि जोड़ हात ※ तोमा विना क्षीण देह हैला रघुनाथ
उठिते बसिते ताँर मुखे तव नाम ※ जागिते घुमाते 'सीता' ब'लेन श्रीराम
कान्दिया तोमार तरे श्रीराम विकल ※ फल जल तेयागिया बड़ह दुर्व्वल
एत क्षीण हयेछेन राम जटाधारी ※ ढिला ह'ये गेछे ताँर करेर अंगुरी
जवे हैते तव संग भंग हैला राम ※ सेइ दिन घुचियाछे अंगुरीर नाम
अंगुरी ब'लिया पूर्व्वे राम परिछिला ※ एखन एमन क्षीण, अंगुरी हैल बाला
पूर्णचन्द्र शोभितेछे गगन उपरे ※ अंगुरी दियाछे हनू जानकीर करे
अंगुरी हेरिया सीता महा हृष्ठ मन ※ श्रीरामेर मूर्तिखानि करिला स्मरन
चन्द्रकान्त मणि सेइ अंगुरीते छिल ※ चन्द्रेर किरणे ताहा क्षरिते लागिल
अंगुरी काँदछे सीता भावे मनेमन ※ अंगुरीके सम्बोधिया बलेन वचन
जनम दुःखिनी सीता काँदिबे सीताइ ※ हे अंगुरी, कि कारणे कान्द तुमि भाइ
बुझिनु बुझिनु भाइ बुझिनु एखन ※ केन कान्दितेछ आसि अशोकेर वन
श्रीरामचन्द्रेर करे पड़े जेइ जन ※ कान्दिते हइबे तारे जेनो आजीवन
ताहारे कान्दिते हबे चिरदिन धरि ※ देखिलाम इहा आमि विशेष विचारि

---

१ कमलनयन राम २ भोजन-पानी ३ कान की बाली।

दो० हम तुम दोउ रघुनाथ के परीं संग इक जाय।
दोऊ बिलपत लंक महँ, आजु दनुज घर आय ॥ ४६ ॥

'सीता' नाम कबहुँ जनि धारै ※ नतरु दुसह दुख बिधि बिस्तारै
इमि कहि सीय करति अनुतापा ※ दासी हेतु प्रभुहिं संतापा
रामदूत हे पवनकुमारा ! ※ मम दारुण दुख आर न पारा
घरी जवन मम स्वामि वियोगू ※ जल न असन मम मुख संयोगू
रहैं कि प्रान जायँ उर संसय ※ प्रभु-मुँदरी कहँ, वत्स! समर्पय
पुनि मुद्रिका जानकी लीन्हा ※ चहेउ करांगुलि[1] धारन कीन्हा
दृढ़ करि कर-अँगुरी सो धारी ※ कंकण सरिस मनौ विस्तारी
सो लखि रोय उठे हनुमाना ※ क्षीण राम-सिय एक समाना

सीता का हनुमान को आशीर्वाद

गति[2] प्रतच्छ मम कपि जिमि देखी ※ बरनेउ प्रभुपहँ सकल बिशेषी
होय बिलम्ब समीरकुमारा ※ तजौं प्रान मैं सिन्धु मँझारा
रावन-दासिन दिवस गुजारहिं ※ कहत 'राम' मारहिं ललकारहिं
उदर अमिय-फल नाहिं समाहीं ※ 'राम' अधार अभागिनि पाहीं

तुमि आमि दुजनाइ पड़ि ताँर करे ※ काँदितेछि दोंहे मिलि राक्षसेर घरे
केह येन 'सीता' नाम नाहि राखे आर ※ राखिले करिते हबे तारे हाहाकार
एत ब'लि जानकी कपाले मारे हात ※ दासी हेतु एत दुःख पाओ रघुनाथ
जानकी ब'लेन शुन पवनकुमार ※ आमार दुःखेर आर नाहि देखि पार
जेदिन ह'ते संग छाड़ा ह'लेन गोसाँइ ※ से दिन ह'ते फल जल किछु खाइ नाइ
बाँचे कि ना बाँचे आर जनकझियारी ※ कोथा राखि बाछा हनू, रामेर अंगुरी
एत ब'लि अंगुरीके लैला ठाकुरानी ※ अंगुरी परिते चान जनकनन्दिनी
अंगुरी परिला सीता दृढ़ करि मन ※ अंगुरी हइल ठिक हातेर कंकन
इहा देखि कान्दिया विकल हनूमान ※ राम सीता, दुइ क्षीण एकइ समान

हनूमान प्रति सीतार आशीर्वाद

सीता ब'ले देखे जाह पवनकोङर ※ मोर दशा ब'लो गिया रामेर गोचर
किञ्चित विलम्ब यदि हइत तोमार ※ सिन्धुजले त्यजिताम ए प्राण आमार
मोरे घेरि राखियाछे रावणेर चेड़ी ※ 'राम' ब'लें डाकिलेइ मारे मारे छड़ि
आहारे अमृत फल ना करि भक्षण ※ रामनामे अभागीर उदर पूरण

१ हाथ की उँगली में २ हालत।

जबहिं सतावत छुधा-पिपासा * सेवत रघुपति नाम मिठासा
तरु अशोक तर दारिद-धामा * एकाकी निवसहुँ बिन रामा
राम विछोह विगत दस मासू * प्रभु-चिन्तन अहि-निसि उपवासू
जो मम मरन, नारि-वध पापा * प्रभुहिं कहेउ, सुत! मम सन्तापा

दो० नित मारहिं बहु ताड़ना मिलै राच्छसिन हाँथ, ।
भुइँ लोटत, उद्घोष मुख, 'रक्ष! रक्ष!' रघुनाथ ॥ ४७ ॥

'सरमा' सों कछु फल जो लेहीं * चेरि-दसानन खान न देहीं
वरनि लंकपति - अत्याचारा * कहेउ न सिय केहु विधि निस्तारा
बिना राम सब कछु दुख-सेजा[1] * बिना भानु जिमि शशि निस्तेजा
वर्षा हेतु मेघ सन्माना * बिना राम जल अनल समाना
सरमा चन्दन देत सरीरा * मम तन लहत अनल सम पीरा
सहित कपूर पान यदि देही * विन रघुनाथ न रुचि उर लेही
एते दुख किमि सिय-निस्तारू * मरन असंशय विन उद्धारू
तजहु शोच कह पवनकुमारा * प्रभु सन रावन नाहिं उबारा
कपि असंख्य मिलि रघुपति संगा * छन महँ बाँधहिं सिन्धु अलंघा

क्षुधाय तृषाय जबे व्याकुलित प्राण * केवल आहार करि मिष्ट राम नाम
शिशपा वृक्षेर तले देख मोर कुंड़े * श्रीराम बिहने आमि एका थाकि पड़े
दशमास उपवासी आमि राम विना * दिवानिशि करि आमि रामेर भावना
जाओ राजा हनू ब'ल श्रीरामेर आगे * सीता मैले राम, तव नारीहत्या लागे
दुष्ट रावणेर चेड़ी मारे वेतेर वाड़ि * राम नाम हृदे जपि जाइ गड़ागड़ि
रावणेर चेड़ीगण तुले माथे हाथ * उच्चैःस्वरे डाकि ब'लि, रक्ष रघुनाथ
दुइ चारि फल पाइ सरमार ठाँइ * रावणेर चेड़ी ताहा खेते दिते नाइ
सन्देश लइया द्रुत जाह हनूमान * रावणेर अत्याचारे ना बाँचे परान
राम विना यत दुःख, शुन दिया मन * चन्द्रकर वोध हय सूर्य्येर किरन
जलविन्दु वरषिते मेघे करि माना * राम बिना जलविन्दु अनलेर कना
सरमा चन्दन यदि देय मोर गाय * अग्नि सम वोध हय, अंग पुड़े जाय
कर्पूर यद्यपि देय ताम्बूले भितरे * राम विना सेइ द्रव्य ना रुचे आमारे
एत दुःखे सीता प्राण बाँचे कतक्षण * उद्धार ना हैल मोर निश्चित मरण
हनूमान ब'ले मागो चिन्ता नाहि आर * राम हस्ते रावणेर नाहिक निस्तार
राम सने मिलियाछे असंख्य वानर * इंगिते बाँधिया दिबे अलंघ्य सागर

---

१ दुःख-शैय्या ।

कपिपति मिलन रमापति साथा ॐ रघुपति-सचिव भये कपिनाथा[1]
बटुरे[2] कपि असंख्य दिग्देसा ॐ लहत आचमन सिन्धु न शेषा
हरन जबहिं तव किय लंकेसू ॐ पूरुब कथा विदित जनि लेसू
ऋष्यमूक कपि पाँच बिराजे ॐ तन अभरन जब सिय! तुम त्याजे
प्रभु हित तजे चिह्न आभरना ॐ तुमहिं भुलान, मोहिं स्मरना
पञ्च कीस अगणित कपि साथा ॐ अनुचर सकल कृपा रघुनाथा
कपि! आयेउ तरि सिन्धु अपारा ॐ इत मम तीर न द्रव्य-अहारा

दो० पाँच आम सरमा दिये, वत्स समर्पन तोहिं।
जाहु संग लै पञ्च फल, देहुँ, बिलम्ब न मोहिं ॥ ४८ ॥

एक राम-पद कृपानिकेता ॐ दुइ फल अखिल कटक-कपि हेता
देवर लखनहिं एक कपीसा! ॐ दै पुनि अगनित कहेउ असीसा
जो फल एक पवनसुत! शेसू ॐ अर्द्ध तासु दै कीस-नरेसू[3]
तात! अर्द्ध फल पुनि तव हेता ॐ दीन पञ्च फल प्रीति समेता
रुकत न रोके हँसी अपारा ॐ कहत जोरि कर पवनकुमारा
छुधानुरूप[4] चहौं आहारा ॐ अर्द्ध रसाल[5] न मोर सहारा
दग्ध छुधानल[6] मैं वैदेही ॐ फल किमि अर्द्ध उदर सुख देही

सुग्रीव वानरे संगी कैला रघुनाथ ॐ मिताालि करिला राम सुग्रीवेर साथ
कत शत कपि एल देश देशान्तरी ॐ गण्डूषे शुषिते पारे सागरेर वारि
पूर्व्वकथा तव मागो नाहि पड़े मने ॐ जेदिन तोमाय हरि आने दशानने
ऋषिमूके छिनु मोरा कपि पञ्चजन ॐ आमा सबे फेलि दिले अंगेर भूषन
रामके निशान दिते फेलिले भूषने ॐ तुमि पासरिले माता, आछे मोर मने
से पञ्च वानर मिले श्रीरामेर सने ॐ असंख्य वानर संगी श्रीरामेर गुने
सीता कहे, एले हनू, लंघिया सागरे ॐ कि दिबे अनाथा सीता खाइते तोमारे
सरमा पाँचटि आम्र दियाछे आमाय ॐ तुमि बाछा लये जाओ, दिलाम तोमाय
सेइ पंचफल हनू, ल'ये जाह तुमि ॐ तिलेक विलम्ब कर, दिह बापू, आमि
एक आम्र दिबे रामेर चरणकमले ॐ दुटि आम्र दिबे बाछा, बानर सकले
एक आम्र दिबे मोर लक्ष्मण देवरे ॐ शत शत आशीर्वाद जानाबे ताहारे
एक आम्र आछे बाछा पवनकुमार ॐ इहार अर्द्धेक भाग सुग्रीव राजार
अवशिष्ट अर्द्धभाग खेओ बाछा तुमि ॐ एके एके फल बाछा, बेंटे दिनु आमि
शुनिया हनूर हासि नाहि धरे आर ॐ जोड़ हाते ब'ले हनू निकटे सीतार
आमार जेमन क्षुधा, खाद्य तथा चाइ ॐ अर्द्धेक फलेते मोर किछु हबे नाइ
क्षुधानले पुड़ितेछि ब'ल जनकेर झि ॐ अर्द्धेक फलेते मागो हबे मोर कि

---

१ सुग्रीव २ इकट्ठा हुए ३ सुग्रीव ४ भूख के अनुसार ५ आम ६ भूख की ज्वाला से।

आयसु लहौं जानकी जननी * सोकहुँ सिन्धु लखौ मम करनी
जो मोहिं मिलै मातु-आदेसू * सकल जलधि-जल श्रवन[1] प्रवेसू
वन अशोक इत राम-विहीना * कहति सीय, कपि! मैं अति दीना
वन अशोक नहिं कानन-शोका * दुख नासै मम प्रान, विलोका[2]
अनाहार दिन-रैन गुजारा * कंगालिनि-गृह कितै अहारा!
राम नाम बस एक अधारा * करत शरीर प्रान सञ्चारा
क्षुधा-तृषा मैं सकल बिसारा * केवल रघुपति नाम सहारा
मर्माहत दनु-दुःख अनन्ता * सहौं सुमिरि अहिनिसि[3] भगवन्ता
अवध गमन अवसर यदि पाई * करहुँ सप्रीति तात! पहुनाई[4]

दो० भक्तिभाव सों अर्द्ध फल, लहि अत्यल्प प्रसाद।
क्षुधा निवारन होय कपि! करहु न संशयवाद ॥ ४६ ॥

तव संवाद तुल्य, हनुमाना! * तुच्छ प्रान कर दान लखाना
सुलभ न राम-दरस बिन प्राना * सहज करत नतु जीवन दाना
करहुँ न प्रानदान यहि हेतू * जीवन राखि लखहुँ रघुकेतू
तदपि देहुँ यहि सम वर कोऊ * मम वर अमर चारि युग होऊ

आज्ञा यदि पाइ तव जनकझियारी * समुद्रेर जल आमि शुषे खेते पारि
यदि तव आज्ञा पाइ, हेन लय मने * सागरेर यत जल पूरे राखि काने
जानकी बलेन, हनू, श्रीराम बिहने * दरिद्र हयेछि बाछा, अशोक कानने
अशोक कानन नहे, शोकेर कानन * शोके दुःखे जानकीर जाइछे जीवन
हेथा किवा खाद्य पाब आमि कांगालिनी * अनाहारे आछि बाछा, दिवस यामिनी
एक मात्र राम नाम पानीय आहार * ताइ आछे एइ देहे प्राणेर संचार
क्षुधा तृषा यत किछु भूलेछि सकल * एकमात्र रामनामे यत किछु बल
रावणेर अत्याचारे मर्म्मे म'रे रइ * एकमात्र रामनामे से सकल सइ
कभु यदि जेते पाइ अयोध्या नगरे * उदर पूरिया बाछा, खाओयाब तोमारे
आर किछु ना बलिह पवननन्दन * अर्द्ध आम्रे हबे तव उदर पूरन
अत्यल्प प्रसाद यदि खाओ भक्ति भरे * क्षुधा नाहि प्रवेशिबे तोमार उदरे
जे वार्त्ता आनिया दिले बाछा हनूमान * तुलनाय तार काछे तुच्छ प्राणदान
प्राण दिते पारि आमि, कहि तव ठाँइ * प्राण दिले श्रीरामे देखिते पाब नाइ
सेकारणे प्राणदान ना दिनु तोमारे * प्राणरक्षा करिलाम रामे देखिवारे
इहार समान किछु दान दिब आमि * मोर वरे चारि युग अमर हओ तुमि
दुइ हात तुलि हनू तोमाय दिनु वर * मोर वरे चारि युग हइबे अमर

१ कानों में २ ऐसा मालूम पड़ता है ३ दिन-रात ४ आतिथ्य।

जो मैं सती काय - मन - बचना * सेवत त्रिविधि स्वामि के चरना
तौ सिय-वचन न संशय करई * वत्स! कथन मम निज उर धरई
राम-चरहिं[1] पद-अमर प्रकासा * ध्रुवपद-सती[2], कहत कृतिवासा

सीता खेद

छं० योगसिद्ध अति अतुल तेज नृप जनक-लली मैं सीता।
नव दूर्व्वादल श्याम राम सुत-दसरथ कीन गृहीता ॥
शुभ विवाह पुनि श्वसुर-गेह चलि, सुख बैपरे पुनीता।
ससुर-नेह, सासुन-सनेह नित, कौतुक सबन सप्रीता ॥
प्रजा प्रसन्न, मुदित महराजा, रामहिं राजु सवाँरी।
कुमति मंथरा धरति कैकई कीन नाथ वनचारी ॥
धरनिकुमारि[3] राम कै प्यारी हरेउ मोहिं निसिचारी।
सुन्दरकाण्ड ललित मञ्जुल कृतिवास कथा विस्तारी ॥

सीता-हनुमान कथोपकथन

अनुज विभीषण धर्मधुरीना * मम हित सीख दनुहिं[4] बहु दीना
दानव पुनि 'अरविन्द' उदारा ! * मम हित बहु दनुपतिहिं सम्हारा

काय-मनोवाक्ये यदि सती हइ आमि * काय-मनोवाक्ये यदि राम हन स्वामी
निश्चित सीतार वाक्य ना हबे लंघन * एइ कथा बाछ हनू रेखो मने मन
अमरत्व वर दिनु बाछा रामदास * सतीर अलंघ्य वाक्य, कहे कृत्तिवास

सीतार खेद

योगसिद्ध महातेजा, जनक नामेते राजा, आमि सीता ताँहार नन्दिनी
दशरथ सुत राम, नव दूर्व्वादल श्याम, विवाह करेन पणे जिनि
शुभ विवाहेर पर, गेलाम श्वशुरघर, कतमत करिलाम सुख
श्वशुरेर स्नेह यत, श्वाशुड़ीगणेर तत, नित्य बाड़े परम कौतुक
हरषित यत प्रजा, आनन्दित महाराजा, आदेशिला दिते छत्रदण्ड
कुंजी दिल कुमंत्रणा, कैकेयी करिल माना, बिलम्ब ना कैल एक दण्ड
आमि कन्या प्रथिवीर, स्वामी मम रघुवीर, मोरे बन्दी कैल निशाचर
सुन्दरकाण्डेर गीत, कृत्तिवास सुललित, विरचिल अति मनोहर

सीतादेवी ओ हनूमानेर कथोपकथन

विभीषण धार्म्मिक रावण सहोदर * मोर लागि रावणेरे बुझाय विस्तर
अरविन्द नामेते राक्षस महाशय * आमा दिते रावणेरे क'रेछे विनय

---

१ रामदूत को २ सती का वचन है अटल ३ धरणिपुत्री सीता ४ रावण को।

'सानन्दा' जो सुता विभीषण ※ पठयेसि मातु मोहिं समुझावन
सुता-विभीषन मर्म बखाना ※ रन बिन होय न मम कल्याना
सुग्रीवहिं सो हाल जनायेउ ※ विनय मोर रघुपतिहिं सुनायेउ
हनु बोलत मम पीठ अरोहन ※ करि चलु जहाँ राम अरु लछिमन
कहु पशु नतु मैं बनौ विहंगा ※ मातु विराजि चलहु मम संगा
बोलत सीय, बलिस्त[1] समाना ※ भार-वहन किमि मनुज प्रमाना
सुनि हनुमत परिवर्तित वेषू ※ अस्सी योजन गात निमेषू[2]

दो० योजन दश आड़े भयेउ, सत्तर योजन लम्ब ।
पूँछ पचासक दीर्घ नभ वृहदाकार प्रलम्ब ।। ५० ।।

विकट रूप लखि, बोलत सीता ※ उर कौतुक अति, वत्स ! सभीता
किमि तव पृष्ठ टिकहुँ, बलसीवा ! ※ गिरहुँ सिन्धु, भच्छहिं जलजीवा
आन पुरुष[3] किमि परसन[4] अंगा ※ विवस दसानन करि लिय संगा
दसमुख सम जनि लुकि-छिपि करनी ※ दनु हनि, करहु वीरवत् करनी
दुर्जय गात अतिव भयकारन ※ करहु संयमित तन निज धारन
अस्सी योजन गगन प्रसारी ※ सम्हरहु नतु रिपु लेय निहारी

विभीषण कन्या से सानन्दा नाम धरे ※ तार मा पाठाय तारे आमार गोचरे
ताँर ठाँइ शुनिलाम एइ सारोद्धार ※ विना युद्धे बाछा, मोर नाहिक उद्धार
सुग्रीवेर जानाइओ मम विवरन ※ श्रीरामेरे जानाइओ मोर निवेदन
हनू ब'ले मोर पृष्ठे कर आरोहण ※ तोमा ल'ये जाब, यथा श्रीराम लक्ष्मण
ब'ल मृग हइ माता, ब'ल हइ पाखी ※ किसे आरोहिया जाबे, ब'ल मा जानकि
जानकी ब'लेन तुमि विघत प्रमान ※ मनुष्येर भार किसे सबे हनूमान
शुनिया सीतार कथा हनूमान हासे ※ हइल योजन आशी चक्षुर निमिषे
हइल योजन दश आड़े परिसर ※ सत्तर योजन हैल उभे दीर्घतर
करिल दीघल लेज योजन पंचाश ※ तखनि से लेज गिया ठेकिल आकाश
जानकी ब'लेन बाछा तोमार आकार ※ देखिया आमार मने लागे चमत्कार
केमने तोमार पृष्ठे रब आमि स्थिर ※ सागरे पड़िले खाबे हाँगर कुम्भीर
पर पुरुषेर स्पर्श नाहि लय मन ※ कि करिब, बले धरि आनिल रावन
रावणेर मत कि करिबे मोरे चुरि ※ तारे मारि उद्धारह, तबे बाहादुरि
तोमार दुर्ज्जय मूर्ति देखि लागे डर ※ आपना संबर बाछा पवनकोङर
अशीति योजन अंग लागे अन्तरीक्षे ※ आपना सम्बर बाछा, केह पाछे देखे

---

१ बालिश्त के बरावर २ पलक मारते ३ राम के अतिरिक्त अन्य पुरुष ४ स्पर्श करे ।

सीता-वचन सुनत हनुमाना ※ भयेउ तुरंत बलिस्त प्रमाना
पवनसुतहिं जानकी सुनावा ※ तव विक्रम लखि अतुल प्रभावा
कहेउ लखन प्रति जो हियँ देखी ※ तिन विक्रम अति विरद विशेषी
निमिकुल जनमि भानुकुल आई ※ विधि गति इमि मम कुगति बनाई
पति प्रतच्छ जेहि रघुपति रामा ※ अपमानित निवसत दनुधामा
कहेउ सुकण्ठहिं कातर बानी ※ वरनेउ अन्य यथा सेनानी[1]
रावन दीन अवधि[2] दुइ मासा ※ शेष एक बीतत मम नासा
बीते अवधि न मम कल्याना ※ खण्ड-खण्ड करि नासहि प्राना
आवहिं वेगि तबहिं उपकारू ※ होत विलंब व्यर्थ उपचारू[3]
सिय की सुनत करुन अति पीरा ※ पवनतनय दृग सरसति नीरा

हनुमान को सीता द्वारा मणि-प्रदान

दो० मातु! रुदन तजि, चीन्ह कछु देहु, धरौ उर धीर।
लंक, सैन पुनि मास विच, लाय निवारउँ पीर ॥ ५१ ॥

अर्पेउ लै मस्तक-मणि सीता ※ दै मणि बोलत वचन सप्रीता
करै मास बिच जो कल्यानू ※ तव दाया सुत! जीवनदानू

शुनिया सीतार कथा वीर हनूमान ※ देखिते देखिते हय विघत प्रमान
जानकी बलेन बाछा पवन कोङर ※ तोमार विक्रमे मोर लागे मोर डर
लक्ष्मणेरे जानाइओ आमार कल्यान ※ ता सवार विक्रमेर किसेर बाखान
निमिकुले जन्मिया पड़िनु सूर्य्यकुले ※ एइ कि आछिल मोर लिखन कपाले
राम हेन स्वामी यार आछे विद्यमान ※ राक्षसे ताहार करे एत अपमान
सुग्रीवेरे जानाइओ आमार काकूति ※ जतेक आछये ताँर सैन्य सेनापति
दुमास जीवन तार, एक मास रय ※ मास गेले बाछा मोर जीवन संशय
दुइमास रावण दियाछे प्राणदान ※ अतःपर काटिया करिबे खान खान
आमि मैले सबाकार वृथा आयोजन ※ यदि झाट एस, तबे रहिबे जीवन
शुनिया सीतार एइ करुण वचन ※ नेत्र नीरे तिते वीर पवननन्दन

हनूमानेर निकटे सीतार निदर्शनमणि-प्रदान

हनूमान ब'ले शुन जनकनन्दिनि ※ ना कर क्रन्दन माता संबर आपनि
निदर्शन देह किछु, जाइब त्वरिते ※ मासेकेर मध्ये ठाट आनिब लंकाते
माथा हैते खसाइया सीता देन मणि ※ मणि दिया तार ठाँइ कहेन काहिनी
मासेकेर मध्ये यदि करह उद्धार ※ तोमार कल्याणे सीता जीये एइबार

१ सेनापतियों से २ मियाद ३ इलाज।

कहँ लौं प्रभु-पद-महिम बखानौ ❋ काक जयन्त इन्द्रसुत जानौ
स्तन परसत प्रभु सन्धाना ❋ सर[1] अनुसरत जयन्त पयाना
सरन[2] काक लिय सुरपति तीरा ❋ सर प्रस्तुत धरि विप्र सरीरा
अपराधी वायस[3] रघुनायक ❋ विप्ररूप मैं रघुपति सायक
सुरपति उठे दिव्य लखि वाना ❋ करत जोरि कर अस्तुति नाना
सायक कहत न मो सन त्राना ❋ त्रिभुवन व्यर्थ न रघुपति-बाना
सर-गर्जन भयभीत पुरन्दर ❋ आनेउ काक राम-सर-गोचर
नयन बिन्धि इक, लीन न प्राना ❋ बकसेउ खग प्रभु करुननिधाना
क्षमा, जदपि अपराध अपारा ❋ राम सरिस गुण जनि संसारा
पति प्रतच्छ जेहि प्रभु गुणधामा ❋ सहत गलानि वास-दनुधामा
मणि धरि शीस, बन्दि सियमाई ❋ चलेउ पवनसुत माँगि बिदाई
तजि अशोक वन कीन पयाना ❋ उर सोचत बहुबिधि हनुमाना
सहसा आय गमन पुनि सहसा ❋ लेस न चित्त विषाद न हर्षा
कौतुक कछु रावनहिं दिखाई ❋ रामदास रघुपति ढिग जाई

दो० जनकनन्दिनिहिं मोद दै, पुनि दसकन्धहिं त्रास।
लंघौं सिन्धु बहोरि, करि, सुबरन लंक विनास॥ ५२॥

आर कि कहिब कथा प्रभुर चरने ❋ इन्द्रसुत काक मोर आँचड़िल स्तने
श्रीराम ऐषिक वाण करेन सन्धान ❋ खेदाड़िया जाय वाण बधिते परान
काक गिया वासवेर लइल शरण ❋ से ऐषिक बाण तबे हइल ब्राह्मण
द्विजवेश कहे गिया वासवेर ठाँइ ❋ श्रीरामेर बाण आमि, एइ काक चाइ
सेइ बाण देखि इन्द्र उठिल तखन ❋ कर जोड़े तार आगे करिल स्तवन
बाण ब'ले मोर ठाँइ नाहिक एड़ान ❋ त्रिभुवने व्यर्थ नहे श्रीरामेर बान
बाणेर गर्ज्जन शुनि भीत पुरन्दर ❋ जयन्त काकेरे दिल बाणेर गोचर
श्रीरामे आनिया दिल बिन्धि एक आँखि ❋ करुणासागर प्राणे न मारेन पाखी
एत अपराध तारे ना मारेन प्राणे ❋ त्रिभुवने तुल्य नाहि श्रीरामेर गुणे
राम हेन पति यार आछे विद्यमान ❋ राक्षसे ताहार करे एत अपमान
अनन्तर मस्तके बाँधिया शिरोमनि ❋ देशेते चलिल वीर मागिया मेलानि
मेलानि पाइया वीर देशेते आइसे ❋ मने सात-पाँच वीर हनूमान भाषे
आचम्बिते आइलाम जाइ आचम्बिते ❋ हरिष विषाद किछु ना थाकिबे चिते
रामेर किंकर, जाब सागरेर पार ❋ रावणेरे किञ्चित देखाइ चमत्कार
जन्माइ सीतार हर्ष, रावणेर त्रास ❋ स्वर्ण लंकापुरी आजि करिब विनास

---

१ वाण २ शरण ३ कौआ, जयंत।

तरु-प्रकाण्ड मणि जतन लुकाई ※ हनुमत मन्द-मन्द चलि जाई
आई याद, कहेँउ पुनि सीता ※ कछु अमरितफल खाहु सप्रीता
कर-फल[1] छुद्र सकौतुक लीन्हा ※ हनुमत सहज उदरगत कीन्हा
अमिय समान अमियफल चाखा ※ मारुति विकल, बढ़ी अभिलाषा
मिटी न मातु ! छुधा मम लेसू ※ सुलभ कितै फल-अमिय विशेषू
मधुफल विटप कहाँ? तहँ जाई ※ खाहुँ उदर भरि यतक समाई
हे कपि! वृथा आगमन तोरा ※ कुसल न मम पहुँचै प्रभु ओरा
दनुज असंख्य, एक तुम कीसा ※ लखत बधैं अनुचर-भुजबीसा
कहेँउ कपिन्द[2] संक जनि धारौ ※ दानव दल मैं आजु सँहारौं
अमरित-वन बस देयि देखाई ※ उर चिन्ता जनि कीजिय माई

हनुमान द्वारा मधुवन-भञ्जन

कीन अमिय-वन सिय संकेतू ※ गमनेउ मौन वीर कपिकेतू
चौदिसि जाल मधुवनहिं ताना ※ सो लखि बिहँसि उठे हनुमाना
खग न खाहिं, चौकस रखवारे[3] ※ वन कपि मन्द-मन्द पग धारे
विटप-डार चढ़ि नकुल-प्रमाना[4] ※ लखि विहंग-कुल सहज पयाना

बाँधियाछे मणिते अशोक वृक्ष गुड़ि ※ सेइ वने हनूमान जाय गुड़ि गुड़ि
सीता ब'लिलेन बाछा हइल स्मरण ※ अमृतेर फल किछु करह भक्षण
हात पाति लय वीर परम कौतुके ※ अमनि फेलिया दिल आपनार मुखे
अमृत समान सेइ अमृतेर फल ※ फल खेये हनूमान हइल विकल
हनूमान कहे ओगो जननि जानकि ※ अमृत समान फल आरो आछे ना कि
कोथाय ताहार गाछ कह मा विधान ※ खाइब एमन फल, देख विद्यमान
सीता ब'लिलेन तव वृथा आगमन ※ मम वार्त्ता ना पावेन श्रीराम लक्ष्मन
तुमि एक वानर राक्षस बहुजन ※ तोमारे देखिबा मात्र बधिबे जीवन
हनूमान ब'ले, माता, भाव केन आर ※ राक्षस कटक आजि करिब संहार
मने चिन्ता न करिह शुनह वचन ※ देखाइया देह माता अमृतेर वन

हनूमान कर्त्तृक मधुवन-भञ्जन व रक्षक दैत्यगणेर संहार

देखान अंगुलि दिया सीता सेइ वन ※ निःशब्दे चलिल वीर पवननन्दन
जाल-दड़ा दिया बाँधा आछे चारि पाश ※ ताहा देखि मारुतिर उपजिल हास
खाइते ना पाइ पक्षी राक्षसेरा राखे ※ धीरे धीरे हनूमान सेइ बने ढाके
नेउल प्रमान ह'ये वृक्षडाले आछे ※ ताहारे दिखिया पक्षी नाहि रहे गाछे

१ हाथ का फल २ कपिश्रेष्ठ हनुमान ३ रक्षक ४ नेवले के आकार का कपि-स्वरूप।

शाखन बिचरि करत रखवारी ※ निरखि दनुजगन अति मुदकारी
फल ताकैं, वध कीस न हेतू ※ सोवहिं तरुतर मोद समेतू

दो० लेत नींद-सुख बिटपतर, जे निसिचर रखवार ।
मधुफल सानँद खात उत, वीर समीरकुमार[1] ॥ ५३ ॥

धावत वीर खात फल फूला ※ फेंकत डार लता तरुमूला
तड़तड़ात भञ्जत तरु डारी ※ दनुज सशंकित उठे सम्हारी
चहुँदिसि निसिचरगन अवलोका ※ मधुवन निपट उजार विलोका
शेल मुषल आयुध बहु मुद्गर ※ हनत अंग-कपि वृहत्-वृहत्तर[2]
नाना अस्त्र कोपि दनु मारैं ※ अन्तरिक्ष हनु रोकि निवारैं
बहुरि प्रकोपि समीरकुमारा ※ बरसावत तरु पर तरु-धारा
बिटप लक्ष्य करि चहुँ दिसि मारैं ※ तरु-डारन शत-शतन सँहारैं
मत्त मतंग रूप रन धारा ※ कहुँ तमाच[3] कहुँ पाद प्रहारा
धरि चेरिन रगरत दस-बीसा ※ हाड़ चूर करि भञ्जेउ सीसा
भजीं प्रान लै दासिन त्रासा ※ पूछहिं सियहिं, बहति घन-श्वासा
हे सिय ! बरनु सत्य तैं बानी ※ को कपि ? जेहि सन बहु बतरानी[4]
मैं अजान को माया-रूपा ! ※ जानहु चलि कपि तीर अनूपा

फल राखे हनूमान डाले डाले पाड़ि ※ देखिया राक्षस सब हेसे गड़ागड़ि
राक्षसेरा ब'ले, ए वानर नाहि मारि ※ राखुक वानर फल, निद्रा आगे सारि
वृक्षतले निद्रा जाय राक्षस सकल ※ पवननन्दन वीर खाय सब फल
फल फूल खाय वीर आर छिड़े पाता ※ उपाड़िया फेले गाछ, कोथा वृक्षलता
डाल भांगे हनूमान शब्द मड़मड़ि ※ आतंके राक्षस सब उठे दड़वड़ि
उठिया राक्षस गण चारिदिके चाय ※ अमृतेर वने देखे, किछु नाहि ताय
जाठा ओ झकड़ा शेल मुषल मुद्गर ※ नाना अस्त्र मारे तारा हनूर उपर
नाना अस्त्र राक्षसेरा फेले अति कोपे ※ लाफे लाफे हनूमान सब अस्त्र लोफे
कुपिलेन हनूमान पवननन्दन ※ सवार उपरे करे गाछ वरिषन
गाछ ल'ये हनूमान जाय ताड़ाताड़ि ※ गाछेर बाड़िते मारे दशविश कुड़ि
हनूमान जुझे जेन मदमत्त हाती ※ कारे मारे चापड़, काहारे मारे लाथि
दश विश चेड़ी धरि मारिछे आछाड़ ※ भांगिया माथार खुलि चूर्ण करे हाड़
प्राण ल'ये कत चेड़ी पलाइल त्रासे ※ सीतारे जिज्ञासे वार्त्ता अति घनश्वासे
चेड़ी सब कहे, सीता कह सत्यवानी ※ वानरेर साथे किवा कहिले काहिनी
सीता ब'लिलेन कोन जन माया धरे ※ आमि कि जानिब, सबे जिज्ञास वानरे

---

१ हनुमान २ बड़े से बड़े ३ तमाचा ४ बहुत बातें की थीं ।

हर्म्य[1] विशाल अरण्य-अशोका ※ वरनेउ चलि दशमुखहिं सशोका
आयेउ कीस विकट आकारा ※ बड़ बड़ घर मधुवनहिं उजारा
तुम जेहि सीय समर्पेउ प्राना ※ तेहि सन कपि बहु बिधि बतराना
सिय-कर[2] उठत, नवत कपि माथा ※ कहि न सकत नर-वानर-गाथा

दो० लाय बाँधि कपि, सभा बिच, कीजिय तासु विचार ।
जो बिलम्ब, कारज नसै, काहु न पुनि निस्तार ॥ ५४ ॥

चेरिन प्रति दसमाथ प्रकोपा ※ घृत लहि अनल प्रज्वलित कोपा
मारु-मारु पुनि गर्जन-तर्जन ※ दस दिसि निरखत दनुज दसानन
'मूढ़' नाम किंकर[3] लंकेसू ※ धरहु कीस दीन्हउ आदेसू
चलउ मूढ़ यमराज समाना ※ जहँ हनुमत तहँ वेगि पयाना
कपि-आखेट, जात दनु धाई ※ हनु प्रकोट[4], जिमि पर्वतराई
मुषल शेल बहु अस्त्र प्रकोपे ※ सो हनुमत मारग महँ रोपे
गिरि सम गृह-अस्तंभ उपारी ※ करत वीर अति मारामारी
हनि सर्वांग दुहत्थ चलावा ※ मूढ़ किंकरहिं भूमि दिखावा
असुर मूढ़ यमलोक पठाई ※ वन अशोक तजि, जहँ सियमाई
नागेश्वर[5] तरु गन्ध उखारै ※ चुनि चुनि चम्पक वृक्ष उपारै
सम्मुख परत चूर्ण करि डारै ※ दस-बीसन धरि मारि पछारै

भांगिल अशोक वन बड़ बड़ घर ※ तासे वार्त्ता कहे गिया रावण गोचर
आसियाछे कोथाकार एकटा वानर ※ अमृतेर वने भांगे बड़ बड़ घर
जे सीतार प्रति तुमि सँपियाछ मन ※ सेइ सीता वानरे करिल सम्भाषन
सीता नाड़े हातटि, वानरे नाड़े माथा ※ बुझिते नारिनु नर बानरेर कथा
झटिते बाँधिया आनि करह विचार ※ विलम्ब हइले कारो नाहिक निस्तार
कुपिल रावण राजा चेड़ीदेर बोले ※ घृत दिले अग्निते जेमने आरो ज्वले
मार मार शब्द करे तर्ज्जन गर्ज्जन ※ दशदिक् दशानन करे निरीक्षन
सम्मुखे देखिल मूढ़ नामेते किंकर ※ तारे आज्ञा दिल राजा धरिते वानर
चलिल किंकर मूढ़ यमेर दोसर ※ त्वरा करि गेल हनूमानेर गोचर
धेये जाय राक्षस बधिते हनूमान ※ प्राचीरे बसिल वीर पर्व्वत प्रमान
जाठा शेल झकड़ा मुषल फेले कोपे ※ लाफे लाफे हनूमान सब अस्त्र लोफे
उपाड़े घरेर थाम पर्व्वत आकार ※ थामेर बाड़िते वीर करे महामार
आथालि पाथालि मारे दोहातिया वाड़ि ※ पड़िया किंकर मूढ़ नाम गड़ागड़ि
पाठाइल मारिया मूढ़ेर यमघर ※ बाछिया उपाड़े गाछ चाँपा नागेश्वर
जेखाने थाकेन सीता, ताहा मात्र राखे ※ आर सब चूर्ण करे जा' देखे सम्मुखे

---

१ महल २ सीता का हाथ ३ सेवक ४ चहारदीवारी पर ५ वृक्ष विशेष ।

चूरन हाड़ शीश केहु भंगा ❋ धरत विदारत दानव - अंगा
तीक्ष्ण बालुका सागर तीरा ❋ केहु मुख घर्षत[1] तनय - समीरा
बहु जन भागि चले लहि त्रासा ❋ रावन ढिग, प्रवहति घनश्वासा
कहत नाथ उर भीति अशेषा ❋ यमपुर किंकर मूढ़ प्रवेशा
लंक उजारि एक कपि दीन्हा ❋ सबन विवस करि जर्जर कीन्हा

जाम्बुमाली आदि अष्टवीर-संहार

दो० सुभट जाम्बुमाली, जनक[2] दुर्जय जासु प्रहस्त ।
सादर आयसु, कटक लै, बाँधहु कीस प्रशस्त[3] ।। ५५ ।।

लहि आयसु, रथ दिव्य सुहाना ❋ संग सैन हय गज रथ नाना
कपि आसीन कनक प्राचीरा ❋ दीन ससैन दरस दनु वीरा
प्रथम परस्पर कुवचन नाना ❋ जाम्बुमालि पुनि सर सन्धाना
कपि - उर बान असंख्य प्रहारा ❋ कपि मुख झलकति रक्त-प्रसारा
बाछि बाछि सर हनत अनूपा ❋ कीस - अंग किय जर्जर रूपा
भयेउ क्रुद्ध अति पवनकुमारा ❋ शाल - गाछ तेहि काल उपारा
कपि भुजबल तरु हनत प्रचण्डा ❋ सो दानव किय खण्ड-बिखण्डा

दश विश जने धरि मारिछे आछाड़ ❋ मस्तक भांगिया कारो चूर्ण करे हाड़
सागरेर कूले यत बालि खरशान ❋ ताहाते काहारो मुख घर्षे हनूमान
पलाइल बहुजन पाइया तरास ❋ रावणेरे वार्त्ता कहे, घन बहे श्वास
देखिलाम जे किछु कहिते करि डर ❋ पड़िल किंकर मूढ़ शुन लंकेश्वर
लंका मजाइल आजि एकटा वानर ❋ सहिते ना पारि आर, करिल जर्ज्जर

हनूमान कर्त्तक जाम्बुमालि प्रभृति अष्टवीर-संहार

महायोद्धपति तार नाम जाम्बुमाली ❋ प्रहस्त योद्धार बेटा, बले महाबली
रावण ताहाके कहे करिया सम्मान ❋ आपन कटके बाँधि आन हनूमान
आदेश पाइया वीर दिव्य रथे चड़े ❋ हरित घोड़ा ठाट कत तार संगे नड़े
वसि आछे हनूमान प्राचीर उपर ❋ कटक लइया गेल ताहार गोचर
प्रथमे हइल दुइ जने गालागालि ❋ बाण बरिषण करे वीर जाम्बुमाली
प्रहारे असंख्य बाण हनूमान-बुके ❋ मुखे रक्त उठे तार झलके-झलके
बाछिया-बाछिया मारे चोखा चोखा शर ❋ हनूमाने बिंधिया से करिल जर्ज्जर
हइलेन महाक्रुद्ध पवननन्दन ❋ शालगाछ उपाड़िया आने ततक्षन
बाहुबले गाछ एड़े वीर हनूमान ❋ राक्षसेर बाणे गाछ हन खान खान

१ रगड़ते थे २ पिता ३ विशाल ।

विफल विटप लखि उर कपि चिन्ता ※ लिय हटात् गिरि शिखर तुरंता
हनेउ शिखर-गिरि बल सम्पूरन ※ दानव-सर किय शृंग[1] विचूरन
पुनि पुनि विफल शोक उर छावा ※ गृह-मूषल सहसा कपि पावा
दोउ कर मुषल तौलि बलधारी ※ स्यन्दन[2] ताकि दुहत्था मारी
जाम्बुमालि हत यमपुर जाई ※ कपि प्रकोट बैठत जय पाई
भग्नदूत[3] रावनहिं प्रकासा ※ जाम्बुमालि किय यमपुर वासा
सैनिप[4] छत्तिस कोटि प्रधाना ※ सकल लंकपति किय आह्वाना
विडालाक्ष शार्दूल प्रधाना ※ वीर धूम्रलोचन रन ठाना
नाना आयुध[5] धावत वेगा ※ कपि मारन हित, सकल सवेगा

दो० सप्त सुभट कर प्रखर अति लीन्हे अस्त्र अनन्त ।
धाय कहत सब, हनहिं हम, अबहिं कीस बलवन्त ।। ५६ ।।

नकुल प्रमान कीस प्राचीरा ※ कौतुक लखत सप्त जे वीरा
चलि प्रकोट दानव सब धाये ※ अलख[6] न दरसन कहुँ कपि पाये
कपि भय खाय लुकायेसि[7] जीवा ※ कहि भरमावहिं किमि दशग्रीवा
यहि विधि घर लौटत घबराहीं ※ किमि कपि धरि जँजीर लै जाहीं
इमि निसिचरगन करत विचारा ※ तबहिं खेदि मारुति ललकारा

शाल गाछ व्यर्थ गेल देखिया चिन्तित ※ पर्व्वतेर चूड़ा वीर आने आचम्बित
बाहुबले एड़े वीर पर्व्वतेर चूड़ा ※ जाम्बुमाली बाणेते पर्व्वत करे गुंड़ा
जिनिते नारिया वीर हइल चिन्तित ※ घरेर मूषल तार पाइल आचम्बित
दुइ हाते तुलि वीर मुषल सत्वर ※ दोहातिया वाड़ि मारे रथेर उपर
वाड़ि खेये जाम्बुमाली गेल यमघर ※ युद्ध जिनि वैसे वीर प्राचीर उपर
भग्न पाइक कहे गिया रावण गोचर ※ जाम्बुमाली पड़े शुन वीर लंकेश्वर
छत्रिश कोटिर जारा मुख्य सेनापति ※ सकलेर तरे त्वरा दिलेन आरति
शुनि ताहा विड़ालाक्ष शार्दूल प्रधान ※ वीर धूम्रलोचन से रणे आगुयान
नाना अस्त्र हाते करि धाय रड़ारड़ि ※ हनूमाने मारिते सबार ताड़ाताड़ि
नाना अस्त्र सात वीर एड़े खरशान ※ सबे ब'ले आमित मारिब हनूमान
सात वीर आसितेछे हनूमान देखे ※ नेउल प्रमाण ह'ये प्राचीरेते थाके
सात वीर आसिया प्राचीर पाने चाय ※ लुकाइल हनूमान, देखिते ना पाय
प्राण ल'ये पलाइल आमा सबा डरे ※ कि बलिब गिया मोरा राजा लंकेश्वरे
घरे जेते सात वीर करे हुड़ाहुड़ि ※ टान दिया आने हनू बड़ घरेर कड़ि
नेउटिया घरे जाइ सवाकार मन ※ पाछू खेदाड़िया जाय पवननन्दन

१ पर्वतशिखर २ रथ ३ पराजय का संवाद देनेवाले दूत ४ सेनापति
५ अस्त्र ६ अदृश्य ७ जान छिपाये है।

छीनि जँजीर ताकि रथ मारा ※ सप्त वीर रथ उपर सँहारा
पुनि प्राचीर चढ़े जय पाई ※ भग्नदूत[1] रावन पहँ जाई
जीतेउ युद्ध सहज इक कीसा ※ सप्त वीर जूझे दससीसा

अक्षयकुमार-वध

अखयकुमार सदर्प सुनावा ※ बधहु कीस आयसु - पितु पावा
अक्ष-इन्द्रजित् युगल सहोदर ※ अक्ष इन्द्रजित् सरिस धनुर्धर
बहु भण्डार अभूषन नाना ※ दै असीस नृप कीन प्रदाना
संग सैन हय-गज बहु लीना ※ पितु-प्रदक्षिणा, रथ-आसीना
अक्षय-कटक धरातल काँपा ※ पाँच अछोहिनि सैन प्रतापा
लखि प्राचीरहिं पवनकुमारा ※ कहत कोपि इमि अखैकुमारा
अक्षय सुत, पितु रावनराजू ※ मम कर तव निश्चित वध आजू
कोटिन बान करहुँ सन्धाना ※ देखहुँ किमि निवरत[2] हनुमाना

दो० इत सर जोरत कुअँर धनु, उत कपि चिन्ति उपाय ।
लहि छलाँग हनु गयेउ नभ, व्यर्थ बान तर[3] जाय ।। ५७ ।।

पुनि प्रकोपि सर सीस चलाये ※ जर्जर मारुति - अंग बनाये

कड़ि तुलि मारे वीर रथेर उपर ※ कड़िर वाड़िते तारा जाय यमघर
युद्ध जिनि वैसे वीर प्राचीर उपर ※ भग्न-पाइक कहे गिया राजार गोचर
युद्ध जिनिलेक राजा एकटा वानर ※ सात वीर पड़िल, शुनह लंकेश्वर

अक्षयकुमार-वध

अक्ष नामे राजपुत्र करे वीरदाप ※ वानरे मारिते तारे आज्ञा दिल बाप
अक्ष आर इन्द्रजित दुइ सहोदर ※ से इन्द्रजितेर तुल्य युद्ध धनुर्द्धर
प्रसाद दिलेक तारे नाना अलंकार ※ बिलाइते दिल तारे चारिटा भण्डार
पितृ प्रदक्षिण करि रथेते चड़िल ※ हस्ति घोड़ा ठाट कत संगेते चलिल
कटकेर पदभरे काँपिछे मेदिनी ※ कुमार अक्षेर ठाट पाँच अक्षौहिनी
हनूमान बसियाछे प्राचीर उपर ※ रुषिया कहिछे अक्ष शुन रे वानर
अक्ष नाम आमार जे, रावणनन्दन ※ नाहिक निस्तार आजि, बधिब जीवन
कोटि कोटि बाण आजि करिब सन्धान ※ केमन राखह प्राण, देखि हनूमान
सन्धान पूरिया बाण धनुकेते जोड़े ※ बाण व्यर्थ करिवारे चिन्तिल अन्तरे
लाफ दिया उठे हनू गगनमण्डले ※ यत बाण एड़े सब जाय पदतले
कोपे बाण फेले तार माथार उपर ※ बाण फुटि हनूमान हइल जर्ज्जर

१ पराजय का संवाद देने वाले दूत २ बचता है ३ नीचे।

अक्षय मनहु अनल बरसाये ※ अग्नि शिखा सम चहुँ सर छाये
कूदि पवनसुत रथ पग धारा ※ एक चपेट चूर्ण करि डारा
रथ सारथि हय सकल विनासा ※ अक्षय लखि उठि चलेउ अकासा
गगन पलायन लखि हनु कोपा ※ झपटि चील्ह[1] सम, पद पुनि रोपा
रोपि उभय पद, कुअँर पछारा ※ हाड़ सीस चूरन करि डारा
पुनि प्राचीर चढ़े जय पाई ※ इत सुत मरन सुनेउ दनुराई

इन्द्रजीत द्वारा नागपाश में हनुमान-बन्धन

सुनि लंकेस सोच उर छावा ※ घननादहिं[2] रन हेत बुलावा
भट सुभटन बहु गर्जन कीन्हा ※ लौटि सदन मोहिं दरस न दीन्हा
सुवन इन्द्रजित ! चढ़ु रन आजू ※ तोहिं तजि उचित न मम रन साजू
कहत इन्द्रजित सुनि लंकेसू ※ बान्धौं वानर चक्षुनिमेषू[3]
कहँ कपि हीन, कहाँ घननादा ※ लहौं आजु जय जनक-प्रसादा[4]
अंगुस्तरी[5] अँगुरि भुज कंकण ※ सजि सर्वांग राज-आभूषण
कञ्चन वसन नवलड़ी धारा ※ पूर्ण चन्द्र सम तिलक ललारा
ढाल कवच धारन किय अंगा ※ लीन बुलाय सारथी संगा

हनू ब'ले, राजपुत्र देखिते छावाल ※ बाण गुला एड़े जेन अग्निर उथाल
लाफ दिया हनुमान तार रथे चड़े ※ रथखान गुँड़ा करे एकइ चापड़े
रथेर सारथि घोड़ा हैल चूरमार ※ अन्तरीक्षे पलाइल से अक्षकुमार
राक्षस पलाय ऊर्द्धवे, हनूमान कोपे ※ लाफ दिया पाये धरे, चिले जेन लोफे
दुइ पा धरिया वीर मारिल आछाड़ ※ भांगिल माथार खुलि चूर्ण हैल हाड़
युद्ध जिनि वैसे वीर प्राचीर उपर ※ कुमार पड़िल वार्त्ता शुने लंकेश्वर

इन्द्रजित द्वारा हनुमानेर बन्दीकरण

शुनिया रावण राजा लागिल भाविते ※ जुझिवारे कहिल कुमार इन्द्रजिते
बड़-बड़ वीर जाय करिया गर्ज्जन ※ बाहुड़िया ना आइसे आमार सदन
अद्यकार युद्धे जाह बाछा इन्द्रजित् ※ तोमरा थाकिते आमि जाइ, अनुचित
पितृवाक्य शुनि वीर इन्द्रजित् भाषे ※ वानरे करिब बन्दी चक्षुर निमिषे
कि छार वानर बेटा, आमि मेघनाद ※ युद्ध जिनि लब अद्य राजार प्रसाद
अंगुले अंगुरी दिल, बाहुते कंकण ※ सर्व्वांग परिल वीर राज आभरण
स्वर्ण नवगुण परे, परे स्वर्ण पाटा ※ पूर्णिमार चन्द्र जेन कपालेर फोंटा
एक हाते धरियाछे सर्व्वांग-दापनि ※ आर हाते सारथिर डाकिल आपनि

१ चील पक्षी २ मेघनाद को ३ पलक मारते ४ पिता के प्रसाद से ५ अंगूठी ।

रथ रन-अटल सारथी साजा ※ जगमग रथ रन हेत विराजा

दो० कनक रचित छबि अतुल रथ, अति विचित्र निर्मान ।
जोरे अष्ट तुरंग पुनि, जिन गति पवन समान ।। ५८ ।।

बीस कोटि गज दशक तुरंगा ※ चलीं अछोहिनि तेरह संगा
कटक भार-पद काँपति मेदिनि[1] ※ बजत साज-रन सुरपुर लौं धुनि
लै इमि कटक बेगि भट धावा ※ पाछे सन दशमुख गुहरावा
तुम कहँ विदित बालि-सुग्रीवा ※ सचिव तासु हनुमत बलसीवा
सो न हीन, अति वीर जुझारा ※ कीजिय रन तेहि समुझि अपारा
हँसा इन्द्रजित सुनि पितु-वयना ※ सहज बाँधि कपि लावहुँ अयना[2]
चढ़ि प्राचीर कपिन्द सुहावा ※ बेगि ससैन इन्द्रजित धावा
कपिहिं हेरि अति कोप ज्वलंता ※ अति प्रताप, दुर्वचन अनन्ता
लता-पता कोपीन[3] सरीरा ※ प्रान तजन आतुर मम तीरा
जहँ सुग्रीव विचरु[4] तरु डारन ※ मरन हेतु किमि लंक पधारन
दनु-दुर्वचन सुनत कपि हँसई ※ मन अभिमत कुवचन शठ कहई
खायँ मूल-फल मुनि-आचारा ※ तरु-तरु फिरत, न अत्याचारा
अनाचार निज स्वयं न जाना ※ अनाचार-पितु[5] जगत बखाना

सारथि आनिल रथ संग्रामे अटल ※ साजाइल रथखान करे झलमल
कनक रचित रथ विचित्र निर्म्मान ※ वायुवेगे अष्टघोड़ा रथेर योगान
मातंग विंशति कोटि तार अर्द्ध घोड़ा ※ तेर अक्षौहिणी चले त्रिभुवन जाड़ा
कटकेर पदभरे काँपिछे मेदिनी ※ रणवाद्य बाजे कत स्वर्गे लागे ध्वनि
एत सैन्य ल'ये वीर चलिल सत्वर ※ पाछु हैते डाक दिया ब'ले लंकेश्वर
बालि सुग्रीवेर शुनियाछे जे काहिनी ※ तार पात्र हनूमान स्र्व्वलोके जानि
सेइ वा आसिया थाके वीर अवतार ※ तुच्छ ज्ञान ना करिह बुझिओ अपार
पितृवाक्य शुनि वीर इन्द्रजित् हासे ※ वानरे बधिब आजि देख अनायासे
बसि आछे हनूमान प्राचीर उपर ※ सैन्य सह इन्द्रजित् गेलेन सत्वर
देखि हनुमानेर से ज्वलिलेक कोपे ※ गालागालि पाड़े वीर अतुल प्रतापे
लता पता खास बेटा, परिस काछुटि ※ मरिवारे हेथा आसि करिस छटफटि
सुग्रीवेर काल गेल भ्रमि डाले डाले ※ मरिवारे कि कारणे लंकाय आइले
राक्षसेर गालि शुनि हनूमान हासे ※ गालागालि पाड़े वीर, मने यत आसे
फलमूल खाइ मोरा मुनि व्यवहार ※ डाले डाले फिरि, से त' नहे अनाचार
आपनार अनाचार ना देख आपनि ※ रावणेर अनाचार त्रिभुवने शुनि

---

१ पृथ्वी　२ घर को　३ लँगोटी　४ भ्रमण कर　५ रावण का [illegible]

नारि सहस दस हर्म्य[1] विराजा * पुनि पर-दार[2] हरन केहि काजा
सती यती तपसी द्विज नारी * हरेसि न कुवचन शाप विचारी
पुरुष अदोष नारि हित मारा * हरि विप्रनी रमत श्रृंगारा

दो० विप्र-घात कत शतक किय तव पितु पाप अनन्त ।
अपकीरति तव जनक चहुँ, कब लौं होय न अन्त ।।
तरु न देयँ फल सर्वदा, समय पाय फलवन्त ।
ब्रह्मशाप दसकन्ध प्रति फूलेउ आजु अनन्त ।। ५६ ।।

कुवचन कहत परस्पर दोऊ * पुनि रन करत न्यून[3] जनि कोऊ
अस्त्र इन्द्रजित बहु बरसावै * सकल पवनसुत विफल बनावै
मारुति कहत भञ्जि मद तोरा * पठवहुँ आजु यमपुरी ओरा
केहुँ न लाभ जय, उभय समाना * युगल प्रहर दोउ भट रन ठाना
नाग-पाश आयुध मम तोरा * बाँधहुँ कपि सोचत दनुवीरा
मेघनाद रणकुशल महाना * बाँधेउ कीस, पास[4] सन्धाना
तजि प्राचीर धरातल आवा * भञ्जहुँ पाश हृदय कपि भावा
सोचत जदि भञ्जहुँ मैं पासा[4] * दरस लहौं किमि दसमुख पासा
भञ्जेउ पाश न कपि यहि हेतू * खैंचि दनुज बाँधत कपिकेतू
कोउ गर धरत, पावँ कोउ हाँथा * लौह जँजीर कसत कपिनाथा

नारी दश हाजार यद्यपि आछे घरे * तथापि रे तोर बाप पर दार करे
सती स्त्री हरिया आने यति तपस्विनी * शाप गालि पाड़े तबु ना छाड़े ब्राह्मनी
स्त्री लागि पुरुष मारे बिना अपराधे * ब्राह्मणी हरिया आने श्रृंगारेर साधे
करिलेक कत शत ब्रह्महत्या पाप * अन्त नाहि यत पाप करे तोर बाप
त्रिभुवने तोर ये बापेर विसम्बाद * कतकाल थाके आर, पड़िल प्रमाद
सर्व्वदा ना फले वृक्ष, समयेते फले * रावणेर ब्रह्मशाप फले एत काले
एइ रूपे दुइजने हय गालागालि * तार परे युद्ध करे दोंहे महाबली
नाना अस्त्र इन्द्रजित् करे वरिषन * सब अस्त्र लुफे धरे पवननन्दन
हनूमान बले बेटा तोर रण चुरि * देख तोरे आजि रे पाठाइ यमपुरी
जिनिते ना पारे केह उभये सोसर * दुइजने युद्ध करे दुइटि प्रहर
इन्द्रजित् ब'ले, आमि पाश अस्त्र जानि * पाश अस्त्र छाड़िया वानर बाँधि आनि
रणेते पण्डित वीर जाने नाना सन्धि * एड़िलेक पाश अस्त्र हनू हय बन्दी
प्राचीर हइते वीर पड़िया भूतले * भावे, पारि पाश अस्त्र छिंड़िवारे ब'ले
पाश अस्त्र छिंड़िवारे नाहि लयें मने * रावणेर संगे देखा करिब केमने
एतेक चिन्तिया वीर पाश नाहि छिण्डे * राक्षसे टानिया बाँधे हाते गले मुण्डे

१ राजमहल में २ दूसरे की स्त्री ३ कम ४ नागपाश ।

देत निसचरन आयसु वीरा * लै कपि वेगि चलहु पितु तीरा
पुनि घननाद प्रथम डग धरही * घेरि कीस दनु-दल अनुसरही
सत्तर योजन कपि विस्तारा * तन झूमत चहुँ कोप अपारा
सात लाख दनु झुरमुट करहीं * बंक[1] न रोम तासु करि सकहीं
अतुल कीस विक्रम बलधारी * दनुज-सैनपति अचरज भारी
लादहु कंध बजाय दमामा * चलहु, कहत कपि, दसमुख-धामा

दो० कसे जँजीरन कंध धरि, दनु दुइ लख इकसंग ।
चले, मन्द मुसकात कपि, विविध दिखावत रंग ।। ६० ।।

जेंहि दिस लचत[2], देत कपि भारा * डगमगात दनु हाहाकारा
असुर सात लख खैंचत कीसा * अचल, न टरत द्वार दससीसा
नाँघत[3] कपि न, दानवन त्रासा * खबरि बेगि दिय दसमुख पासा
कपि दुरंत केहु विधि हम बाँधा * द्वार समात न तन, यह बाधा
द्वार भंगि, बोलत दससीसा * आनहु बेगि, लखहुँ कस कीसा
आयसु पाय निसाचर धाये * द्वार तोरि पथ बेगि बनाये
भञ्जत सात तदपि इक द्वारे * तहँ कपि अचल टरति नहिं टारे

केह हाते-पाये बाँधे केह बाँधे गले * गला टानि बाँधे केह लोहार शिकले
राक्षसेरे आज्ञा दिल वीर इन्द्रजित् * बापेर आगेते लह वानरे त्वरित्
एत ब'लि इन्द्रजित गेल आगुयान * बड़ बड़ वीर गिया बेड़े हनूमान
कोपे तोलपाड़े करे हनू यथोचित * सत्तर योजन वीर हय आचम्बित
सात लक्ष राक्षसेते टानाटानि करे * तथापि ताहार एक रोम नाहि सरे
देखि हनूमानेर से विक्रम विशाल * चमत्कृत हइलेक राक्षसेर पाल
हनूमान ब'ले तोरा बाजारे दामामा * राज सम्भाषणे जाब, कान्दे कर आमा
बड़ बड़ सांगि दिया हनूमाने बाँधे * दुइ लक्ष राक्षस ताहारे करे काँधे
राक्षसेर काँधे वीर मने मने हासे * कत रंग करे वीर मनेर उल्लासे
एइ भिते हनूमान देय किछु भ'र * राख राख बलिया राक्षस देय रड़
सात लक्ष राक्षसेते टानाटनि करे * अचल हइल हनू रावणेर द्वारे
नाड़िते ना पारे तारे पाप सबे त्रास * सत्वर कहिल वार्त्ता रावणेर पाश
कष्टेते हइल बन्दी से दुष्ट वानर * ना आसे शरीर तार द्वारेर भितर
हासिया रावण तारे कहे संविधान * द्वार भांगि झाट आन देखि हनूमान
राजार आज्ञाय दूत आइल सत्वरे * द्वार भांगि पथ करे आनिवार तरे
सात द्वार भांगे तारा एक द्वार रय * अचल हइल हनू, नाहि प्रवेशय

१ टेढ़ा २ झुक पड़ते थे ३ द्वार से निकल नहीं पाते थे ।

पुनि किय मारुति स्वतः प्रवेसू ※ सचिव-सुहृद बिच जहँ लंकेसू
सुत दसकंध पाँति की पाँती ※ सुरपुर सुर सोहत जेहि भाँती
सुर-बालन बिच रावन बासू ※ नभ नखतन बिच चन्द्र प्रकासू
वर-विधि[1] लहि दुर्जय दनुराई ※ बन्दी रवि-ससि[2] जहँ भय पाई
मञ्जुल जहँ दश मणि दशसीसा ※ ढाल - कवच धारे भुजबीसा
रावन-विभव नयनतर[3] आवा ※ कपि ससंक उर रघुपति ध्यावा
सचिव प्रहस्त कहत हे वानर ! ※ केहि आयसु आगम केहि अनुचर?
कहत पवनसुत, तव नरनाथा ※ कहँ निवसति दनुपति दशमाथा
दुर्मुख कपि ! लखु इतै दसानन ※ कहत प्रहस्त फेरि कपि-आनन

छं० रहेउ दसानन हेरि पवनसुत कहेउ टेरि इमि बानी ।
लखे विविध रावन, तिन महँ तुम कवन ? रहेउँ पहिचानी ।।
इन्द्रसुवन कपिराज बालि की कोख[4] दबा दनुराई ।
एक लंकपति सहसबाहु गहि अंक सदन लै जाई ।।
बसि घुड़सार कण्ठ-भुज बन्धन तरसि[5] पुलस्त्य छुड़ावा ।
बलि के धाम एक दसमुख पुनि त्रसित दरस मैं पावा ।।
सबन किन्तु छबि एक, मुण्ड दस, बीस नयन, भुज बीसा ।
सकल एक अथवा अनेक कहु को तुम लंक-अधीसा ? ।।

आपन इच्छाय गेल पवननन्दन ※ पात्र मित्र सह यथा ब'सेछे रावन
राजार कुमारगण बसे सारि सारि ※ बसियाछे येन सबे अमर नगरी
चारि भिते देवकन्या मध्येते रावण ※ आकाशेर चन्द्र जेन बेड़ि तारागण
रावण ब्रह्मार वरे कारे नाहि गने ※ चन्द्र सूर्य्य भये थाके रावण-सदने
दशशिरे शोभा तार करे दशमनि ※ सम्मुखेते परियाछे सर्व्वांग दापनि
देखिल वानर गिया रावण-सम्पद ※ त्रास पेये हनूमान भावे रामपद
प्रहस्त ब'ले वानरा तुइ काहार अनुचर ※ काहार बोले आइलि हेथा लंकार भितर
हनूमान बले तोरे आर कि दिब परिचय ※ तोर दशमुख रावणराजा सेइबा कोथा रय
प्रहस्त धरिया दाड़ि विराय हनूमाने ※ देख रे वानरा, चेये राजा दशानने
रावणेर पाने चाहि हनूमान ब'ले ※ तुइ से रावण राजा, देखेछि कोन काले
इन्द्रेर नन्दन छिल कपिराज बालि ※ वारेक देखेछि तोरे तार कक्षतलि
आर वार देखेछि तोर अर्जुनेर काले ※ हाते गले बाँधि राखे तोरे अश्वशाले
आसिया पुलस्त्य मुनि घुचाय बन्धन ※ आर वार देखेछि तोरे बलिर भवन
सेइमत देखि तोरे करि अनुमान ※ दश मुण्ड कुड़ि आँखि हात कुड़िखान

---

१ ब्रह्मा का वरदान २ सूर्य-चन्द्रमा ३ नेत्रों में ४ बगल में ५ तरस खा कर ।

दो० कपि-रचना सुनि बिहँसि पुनि पूछत इमि लंकेस ।
सुर, गन्धर्व, मनुष्य केहि तोहि पठयेउ दनु-देस ।।
को तैं सत्य बखान करु जो चाहति कल्यान ।
वृथा असत बकवाद तौ, लेहुँ कीस तव प्रान ।। ६१ ।।

रावण द्वारा हनुमान की दण्ड-व्यवस्था

रे कपि ! कहु, किमि सत्य कहानी ※ केहि चर कहु, न संक उर मानी
दै परिचय निज प्रान बचावै ※ असत[1] बानि तव प्रान नसावै
राम - दूत मैं पवनकुमारा ※ छबि - कानन मैं तोर उजारा[2]
बँधेउँ सहज तव दरसन हेतू ※ बरनहुँ सकल चरित - रघुकेतू
दशरथ भुवन ख्याति विस्तारी ※ जेठ राम सुत, सिय तिन नारी
सूने - राम हरी तुम सीता ※ सिय हित पुनि सुकण्ठ सन प्रीता
तुम ढिग-बालि[3] पराभव पावा ※ बालिहिं यमपुर राम पठावा
ब्रह्म - अस्त्र मम पहँ असमर्था ※ आयेउँ तोहिं बुझावन अर्था
राम-सुकण्ठ युक्ति मन धरहीं ※ तव अरु कुम्भकर्ण बध करहीं
मेघनाद पुनि लछिमन मारैं ※ कपिगन सकल दनुज संहारैं
रघुपति प्रन तव जीवन हरई ※ मम कर[4] बध, रघुपति-प्रन टरई

हासिते लागिल रावण हनूर कथा शुने ※ हनूमाने जिज्ञासा करे तबे दशानने
काहार बोले एलि रे तुइ राक्षसेर देशे ※ देवता गन्धर्व किंवा पाठाय मानुषे
स्वरूपेते बलिस यदि घुचाव बन्धन ※ मिथ्या यदि बलिस तोर बधिब जीवन

रावण कर्त्तृक हनूमानेर विचार ओ दण्ड-विधान

दशानन बलिछे तोमार नाहि डर ※ सत्य करि कह रे काहार तुमि चर
स्वरूपेते कह यदि घुचाव बन्धन ※ मिथ्या यदि कह तबे बधिब जीवन
हनूमान ब'ले आमि श्रीरामेर दूत ※ भांगिलाम तोमार से कानन अद्भुत
बन्धन मानिनु तोमा देखिवार मने ※ श्रीरामेर कथा कहि शुन सावधाने
सबे शुनियाछ दशरथ महीपति ※ ज्येष्ठ पुत्र राम ताँर बधू सीता सती
अगोचरे रावण हरिले तुमि सीते ※ सुग्रीवेर सह मैत्री सीता अन्वेषिते
ये बालिराजेर स्थाने तव पराजय ※ से बालिरे मारिलेन राम महाशय
तव ब्रह्म अस्त्र मोर कि करिते पारे ※ बन्धन मानिनु किछु बुझावार तरे
राम-सुग्रीवेर युक्ति सविशेष जानि ※ कुम्भकर्ण आर तोर बधिवेन तिनि
इन्द्रजिते मारिवेन ठाकुर लक्ष्मण ※ आर यत राक्षसे मारिबे कपिगण
एइ सत्य करिलेन सुग्रीवेर आगे ※ आमि तोरे मारिले ताँहार सत्ये भांगे

१ झूठी २ उजाड़ा ३ बालि के हाथों ४ मेरे हाथों ।

नतरु करत तव खण्ड विखण्डा ※ पूँछ - अघात छत्र - नवदण्डा
गर धरि रसरि[1] बाँधि घसिलावत ※ एक दण्ड दस मुण्ड गिरावत
दसकन्धर सुनि पवनकुमारा ※ दनुजन प्रति मारन ललकारा
शिरच्छेद ! गर्जंत दससीसा ※ कहत विभीषण धरि पद सीसा
सदा दूत - बध निपट अनीती ※ जग सों मिटै दूत कै रीती

दो० कहि सुनि निज बानी तथा दूत यथा मुख-बानि ।
चर[2] अबध्य, पुनि तासु बध, अनुचित सदा बखानि ॥
निज प्रभु करत बखान चर, उचित न तेंहि प्रति रोष ।
गुन गावत निज स्वामि हित, तिन कहँ अनुचित दोष ॥ ६२ ॥

पर - कीरति - बखान जनि दोषू ※ चर तजि, उचित चर-पतिहिं रोषू
चर - ताड़न केवल शिर - मुण्डा ※ उचित न अन्य दूत हित दण्डा
युक्ति-विभीषण कपिहिं जियावा ※ आयसु पुनि दसकन्ध सुनावा
पूँछ जारि पठवहु कपि देसू ※ बिहँसइँ जाति-बन्धु लखि बेसू
रावन - आयसु यहि विधि पाये ※ जारन पूँछ, सकल जुरि धाये
कुपित पवनसुत पूँछ पसारा ※ किय योजन पचास विस्तारा
लखि लांगूल[3] सभय दससीसा ※ डपटत पुनि-पुनि धरु ! यहि कीसा
बालि-पूँछ बँधि दुर्गति पाई ※ लखि कपि-पूँछ याद सो आई

मोर आगे धरियाछ नव छत्र दण्ड ※ लांगूलेर बाड़िते करिबे खण्ड-खण्ड
लइया जाइब तोरे गले दिया दड़ि ※ भांगिव दशटा मुण्ड मारि एक नड़ि
एतेक ब'लिल यदि पवननन्दन ※ वानरे काटिते आज्ञा दिल दशानन
काट काट ब'लि घन डाकिछे रावण ※ माथा नोयाइया ब'ले भाइ विभीषण
दूतके काटिले राजा बड़ अनाचार ※ आजि हैते घुचिवे दूतेर व्यवहार
आत्मकथा परकथा दूतमुखे शुनि ※ काटिते एमन दूत अनुचित वानी
परेर बड़ाइ करे, अपराधी किसे ※ जार बड़ाइ करे, तारे मारिते आइसे
दूतेर शासन आछे मुड़ाइते मुण्ड ※ इहा भिन्न दूतेर नाहिक अन्य दण्ड
एइ युक्ति ब'ले हनू पाइल जीवन ※ लेज पुड़ाइते आज्ञा करिछे रावन
लेज पुड़ाइया एरे पाठाओ से देशे ※ लेज पोड़ा देखि जेन ज्ञाति बन्धु हासे
एक आज्ञा करिलेक राजा लंकेश्वर ※ लेज पोड़ाइते सबे आइल सत्वर
कुपित हइल वीर पवननन्दन ※ बाड़ाइया दिल लेज पंचाश योजन
लेज देखि रावणेर हैल बड़ डर ※ धर धर डाक छाड़े राजा लंकेश्वर
हयेछिल जे दुःख बालिर लेज टेने ※ लेज देखि रावणेर ताहा पड़े मने

...री, २ दूत, ३ पूंछ ।

तीनि लक्ष मिलि भट निसिचारी * धरनी कपि लांगूल प्रसारी
बसन तीस मन सबन बटोरा * एक लपेटनि[1] परति न पूरा
लंका बसन जहाँ लौं पाई * बाँधि तैल-घृत सिक्त[2] बनाई
स्निग्ध[3] विशाल पूँछ छिति छाई * धधकि उठी सो पावक[4] पाई
हँसेउ ठठाय, निरखि, हनुमाना * निज कुबुद्धि दनु स्वयं नसाना
सिय-वर, अंग न व्यापत तापा * हेरत चहुँ कपि, त्रास न व्यापा
रावन कहत, दुष्ट कपि वीरा * करहु सबेग बहिर्प्राचीरा[5]
नगर घुमावौ गलिन मँझाई * लंक नारि-नर निरखहिं आई

दो० जरत पूँछ, रसरी कमर, कपि अति बदन कराल ।
उमड़ेउ कौतुक देखिबे, चहुँ जन-सिन्धु-विशाल ॥ ६३ ॥

छं० कोउ कहत हने रन मोर नाथ, कोउ कहत बन्धु हनि किय अनाथ ।
केहु रन-जुझार नन्दन निपात, कोउ कहत हने कुल गोत-जात[6] ॥
केहु बन्धु-बान्धव प्रति गुहार, कपि के प्रहार सब छार-खार ।
पुनि परत नयन तर धरि पछार[7], कहुँ शेल शूल मुद्गर प्रहार ॥
हनुमतहिं हेरि कम्पन कराल, किमि कवन धरै कपि यहु विशाल ।
विधि दहिन, मिलेउ यहि सों उबार[8], जेहि दीठि[9] करि सकै सब सँहार ॥

तिन लक्ष राक्षस चापिया लेज धरे * सबे मिलि लेज फेले भुमिर उपरे
त्रिश मन वस्त्र सबे आनिल निकटे * एक वस्त्र आने एक बेड़े नाहि आँटे
लंकार मध्येते छिल यतेक कापड़ * घृत तैल दिया ताहा करिल जावड़
कापड़ तितिल, लेज पड़िल भूतले * लेज अग्नि दिते सव दप् दप् ज्वले
लेजे अग्नि दिल देखि हनूमान हासे * आपन बुद्धिते बेटा पड़े सर्व्वनाशे
जानकीर वरे अग्नि नाहि लागे जाय * लेजे अग्नि दिते हनू चारिदिके चाय
रावण वलिछे दुष्ट कपि महावीर * झटिति इहार कर प्राचीर बाहिर
कूलि कूलि लैया बेड़ाउ चातरे चातरे * स्त्री-पुरुष देखे जेन लंकार भितरे
लेजे अग्नि दिलेक, कांकाले दिल दड़ि * देखिवारे सकले आइल ताड़ाताड़ि
केह ब'ले स्वामी मैल संग्रामे भितर * केह ब'ले मरिल आमार सहोदर
केह ब'ले पड़िल बान्धव बन्धु ज्ञाति * केह ब'ले पुत्र मोर पड़ योद्धृपति
इष्ट बन्धु कुटुम्ब मारिल सवाकारे * जर्ज्जर हइल सबे इहार प्रहारे
इटाल-पाटाल मारे, या' देखे डागर * शेल शूल मारे आर लोहार मुद्गर
हनूमाने देखिया सकले काँपे डरे * इहारे के धरे आजि सभार भितरे
भाग्येते इहार ठाँइ पाइनु निस्तार * देखिबा मात्रेते सब करिबे संहार

---

१ लपेट में २ तर किया ३ तर ४ अग्नि ५ चहारदीवारी के बाहर
६ कुल-जाति ७ पछाड़ना ८ छुटकारा ९ निगाहमात्र ।

सुनि सबन युक्ति कपि मृदुल हास, शठ! कहँ उबार? हेरहु विनास।
कपि गलिन गलिन जेहि छन मँझाय, सिय तीर चेरिगन कहेउ जाय॥

जो कपि तव समीप बतराना[1] ❋ जरत पूँछ सो बन्दि[2] लखाना
सुनि सम्बाद विलग मनु प्राना ❋ पूजत पावक[3] सहित विधाना
जो मैं सती काय मन वाचा ❋ तौ हनु-अंग न आवै आँचा
अनल[3] पूजि कलपत सिय रानी ❋ सिय दुख देखि भई नभ-बानी
कहति विरञ्चि सीय तजु चिन्ता ❋ तजहु सकल कपि प्रति दुश्चिन्ता
तव वर पाय कपिहिं जनि शंका ❋ आजु अनल कपि जारहि लंका
सुरगन आय सुकौतुक लखहीं ❋ हर्ष-विषाद हेतु जनि तुमहीं
विधि के वचन शमन[4] वैदेही ❋ कृत्तिवास मञ्जुल पद एही

हनुमान कर्त्तृक लंकादहन

छं० कपि अंगमान पर्वत प्रमान, सो समिटि भयेउ लघु नकुल मान।
कर रहे बन्धनन दनुज हेरि, हनु बहिर[5] होत लागी न बेर॥
कसि रज्जु लिये मारुति विशाल, भौचकित देखि ते दनु कराल।
हनुमन्त गाछ लै बेगवन्त शत-शतक हनत निसिचर अनन्त॥

शुनिया सबार युक्ति वानरेर हास ❋ एखन जाइबि कोथा, करि सर्व्वनाश
कुलि-कुलि लैया फिरे नगरे-नगरे ❋ चेड़ी सब वार्ता कहे सीतार गोचरे
जे वानर संगे तुमि कहिले काहिनी ❋ लेजे अग्नि, गले दड़ि, करे टानाटानि
कथा शुनि सीता देवी मृत्यु हेन गने ❋ अग्नि ज्वालि पूजे सीता विविध विधाने
कायमनोवाक्ये यदि आमि हइ सती ❋ तबे तव ठाँइ हनू पावे अव्याहति
अग्नि पूजि सीतादेवी करिछे क्रन्दन ❋ जानकीरे डाक दिय ब'ले देवगन
ब्रह्मा बलिलेन शुन ओगो देवि सीता ❋ वानरेर जन्य तुमि ना हओ चिन्तिता
तोमार वरेते त'र कारे नाहि शंका ❋ एखनि जे हनूमान पोड़ाइबे लंका
कौतुक देखिते आइलाम देवगण ❋ हरिषे विषाद तुमि कर कि कारण
क्रन्दन संवरे सीता ब्रह्मार आश्वासे ❋ रचिल सुन्दरकाण्ड कवि कृत्तिवासे

लंका-दहन

पर्व्वत प्रमान छिल सेइ हनूमान ❋ घुचाइते बन्धन से नेउल प्रमान
राक्षसेर हाते रहे सकल बन्धन ❋ माथा गुंजि बाहिरिल पवननन्दन
हनूमाने बेड़ि छिल यतेक राक्षसे ❋ ताहार विक्रमे देखि पलाय तरासे
हाते गाछ हनूमान धाय रड़ारड़ि ❋ गाछेर बाड़िते मारे दश बिश कुड़ि

---

१ बात करता था २ कैदी ३ अग्नि ४ शान्त ५ बाहर।

कहु पूँछ चपेटत लेत प्रान, जरि लोप मूछ-दाढ़िन निसान ।
चम्पत[1] सुरारि[2] नहिं सुधि पछारि, कर लिए विटप कपि राजद्वार ।।
सोचत निहारि चहुँ बार बार, किमि करहिं लंक जरि छार खार ।
रवि किरन सरिस चमकत ललाम, भट अनल समर्पत जवन धाम ।।

लपट-पुच्छ चपला घन माहीं * भवन-शिखर कपि निमिष[3] लखाहीं
पवन सहाय पवनसुत कीन्हा * पितु बल अनल द्विगुण बल दीन्हा
सुनि सुत-विपति पिता जनि धावै * तौ जग अति अनरीति कहावै
हनुहिं सहाय पवन उनचासा * फाँदि अँटारिन अगिनि प्रकासा
जारत एक जरत बहुधामा * बोल न मुख कोउ काहु न कामा
छुवत भवन जेहि अनल तरंगा * अर्ध नारि नर भस्मित अंगा
भागत, होस न, कतहुँ उघारे[4] * पूँछ लपेटि अनल पुनि जारे
छोट बड़े सब जरत समाना * लिये अंग तिय विनसैं नाना

दो० कलपत त्यागे नारि - सुत, जरे विविध बहुरूप ।
दग्ध भये मुखलोम[5] बहु मकुन[6] रूप विद्रूप ।। ६४ ।।

लंक सरोवर बहु छबि पाये * फाँदि निसचरिन प्रान बचाये
सलिल उपरि तिन सीस सुहाये * सरवर मनहुँ सरोरुह[7] छाये

कारो प्राण लय मारि लांगूलेर बाड़ि * लेजेर अग्निते कारो दग्ध गोप दाड़ि
पलाय राक्षस सब, उलटि ना चाहे * हाते गाछ हनूमान राजद्वारे रहे
महावीर हनूमान चारिदिके चाय * लंकापुरी पोड़ाइते चिन्तिल उपाय
सब घर ज्वले येन रविर किरन * हेन घरे अग्नि वीर करे समर्पण
मेघेते विद्युत येन, लेजे अग्नि ज्वले * लाफ दिया पड़े वीर बड़घरेर चाले
पुत्रेर साहाय्य हेतु वायु आसि मिले * पवनेर साहाय्ये द्विगुण अग्नि ज्वले
विपदे पड़िले पुत्र पिता आसि तार * साहाय्य करिबे नहे विचित्र व्यापार
उनपञ्चाशत वायु हय अधिष्ठान * घरे घरे लाफ दिया भ्रमे हनूमान
एक घरे अग्नि दिते आर घर ज्वले * के करे निर्व्वाण तार केवा कारे ब'ले
अग्निते पूड़िया पड़े बड़ घरेर चाल * अर्द्धेक स्त्री पुरुषेर दग्ध गायेर छाल
उलंग उन्मत्त केह पलाय उभरड़े * लेजे जड़ाइया तुलि अग्निते आछाड़े
छोट बड़ पुड़िया मारिल एक काले * राक्षस मरिल कत स्त्री लइया कोले
केह वा पुड़िया मरे भार्य्या-पुत्र छाड़ि * काहारो माकुन्द मुख दग्ध गोपदाड़ि
लंकामध्ये सरोवर, छिल सारि सारि * ताहाते नामिल यत राक्षसेर नारी
सुन्दर नारीर मुख नीरे शोभा करे * फुटिल कमल येन सेइ सरोवरे

१ रफ़ूचक्कर हो गये २ देवताओं के शत्रु दानव ३ पलक मारते ४ नग्न
५ मूछ-दाढ़ी ६ मकुना (पूँछ-दाढ़ी-विहीन) ७ कमल ।

रहि सुदूर कपि सुभट निहारी * पूँछ अगिनि केशावलि जारी
नीर गात, मुख बहिर अनूपा * दग्ध केश छबि सीस बिरूपा
जो भय अनल, डुबकि[1] जल रहहीं * जलमय उदर कुअवसर मरहीं
कपिहिं नारि-बध अरुचि न आई * तीनि लाख निसचरिन नसाई
रत्नधाम बहु छबि आगारा * अगनित राजसदन पुर जारा
चहुँ दिसि अगिनि भूधराकारा * कृमि-पतंग, हय-गज किय छारा
दसमुख - सदन मयूर[2] सुहावन * जरी पुछारि कुरूप अभावन
कनक लंक छन भसम बनाये * नृप पुनि सचिव न गृह बचि पाये[3]
कुम्भकर्ण पुनि गेह विभीषन * तजि किय छार सकल ताही छन
वर विभीषनहिं दिय चतुरानन * तासु निकेत बचेउ यहि कारन
दशमुख-अनुज[4] विवस सुख-शयना * सोवत अति प्रगाढ़ निज अयना
जरत धाम किमि विनसत प्राना? * विन रन तासु न मृत्यु-विधाना
परि तरु ओट बचेउ यहि कारन * शेष सकल गत उदर-हुताशन[5]
लंकपुरी जरि अखिल नसानी * हाहाकार करत सब प्रानी

दो० मरत सकल जरि अनल चहुँ, तहँ किमि सिय-कल्यान।
राम-प्रिया-निर्वान उर, सोचि विकल हनुमान ॥ ६५ ॥

दूरे थाकि देखे हनूमान महाबल * लेजेर अग्निते तार पोड़ाय कुन्तल
सर्व्वांग जलेर मध्ये जागे मात्र मुख * अग्निते पोड़ाय मुख, देखिते कौतुक
त्रासे डुब दिल यदि जलेर भितरे * जल दिया फाँफर हइया सबे मरे
स्त्रीवध करिया भावे पवननन्दन * बधिलाम तिन लक्ष नारीर जीवन
रत्नेते निर्म्मित घर अति मनोहर * लेखा-जोखा नाइ यत पोड़े राजघर
पर्व्वत प्रमाण अग्नि चतुर्द्दिके बेड़े * हस्ति-अश्व पोषापाखी ताहे कत पोड़े
कौतुकेते रावण मयूर पक्षी पोषे * लेज पोड़ा गेल से पेखम धरे किसे
स्वर्णमयी लंकापुरी तिलेकेते पोड़े * राजघर पात्रघर किछु नाहि एड़े
अन्य अन्य घर हनू पोड़ाय सकल * बाँचे कुम्भकर्ण विभीषणेर केवल
ब्रह्मावरे विभीषण गृह नाहि पोड़े * कुम्भकर्ण गृह बाँचे गाछेर आओड़े
गृहमध्ये कुम्भकर्ण निद्राय कातर * घरे अग्नि लागिले मरित निशाचर
युद्ध करि मरिवारे निर्व्वन्ध जे आछे * ताइ अन्यघर पोड़े तार घर बाँचे
सब लंका पोड़ाइया करे छार-खार * लंकार सकल प्राणी करे हाहाकार
हनूमान बले, सीता हइल विनाश * हिते विपरीत करि, एकि सर्व्वनाश
चतुर्द्दिके अग्नि ज्वले, मरे सर्व्व प्राणी * रक्षा ना पाइल बुझि रामेर रमणी

१ डुबकी लगाकर छिप जायँ २ मोर ३ राजन्य तथा मंत्री किसी के घर न बचे ४ कुम्भकर्ण ५ अग्नि के पेट में।

बल-बिक्रम धिक् मम चतुराई * धिक् जीवन, जनि लखत उपाई
तरेउँ हेतु सिय सिंधु अपारा * दुसह निरखि तेहि अगिनि मझारा
परि किमि कुमति लंक मैं जारी * प्रभु सेवक प्रभु-तीय उजारी[1]
सुत ह्वै दग्ध कीन निज जननी * रहै त्रिलोक अमर अपकरनी
मकर-मच्छ मम करइँ अहारा * विनसउँ नतरु अनल परि छारा
भेटहुँ सिन्धु कि अगिनि-प्रवेसू * मरहुँ इतै पुनि लखहुँ न देसू
तब लौं सुरन कीन नभबानी * सुनु कपीस ! सकुसल सियरानी
अनल अगम जहँ सिय, निस्संका * हे कपि ! समुद जरावहु लंका
देव-कथन हनुमत बल पावा * उछरि-उछरि[2] चहुँ पुरी जरावा
लंका-दहन, दनुज परिवारा * भसम अमित पावक सब जारा

सीता के समीप हनुमान का पुनरागमन

जोजन द्विशत अनल नभ छावा * सिय ससंक कपि प्रान नसावा
उर न धीर, विलपत वैदेही * 'सरमा' दनुजि सान्त्वना देही
कपि कुवचन रावनहिं सुनावा * कपिहिं लंकपति बन्दि[3] बनावा
मरकट-पुच्छ[4] बहोरि जराई * अगिनि लंक सो घर घर छाई

कि करिनु धिक् धिक् आमार जीवन * बल-बुद्धि-विक्रम आमार अकारण
ये सीतार हेतु आमि पारावार तरि * सेइ सीता पोड़ाइया केन प्राण धरि
कोन कर्म्म करि पोड़ाइया लंकापुरी * पोड़ाइ सेवक ह'ये रामेर सुन्दरी
जननीरे दग्ध करे हइया तनय * एइ कथा व्यक्त रवे त्रिभुवनमय
हांगर कुम्भीर मोरे करुक आहार * अग्निते पुड़िया किम्बा एइ छारखार
सागरेते किंवा करि अग्निते प्रवेश * एखानि मरिब आमि, ना जाइब देश
देवगण डाकि ब'ले, हनूमान शुने * सीतादेवी रक्षा पाय, ना पोड़े आगुने
तुमि लंका दग्ध कर मनेर हरषे * भस्म करि फेल लंका राखियाछ किसे
देववाक्ये वानर साहसे करि भर * लाफे-लाफे पोड़ाइल यत सब घर
पुड़िया मरिल यत राक्षस-राक्षसी * कृत्तिवास रचे लंका हय भस्मराशी

सीतार निकटे हनूमानेर पुनरागमन

द्विशत योजन अग्नि व्यापिल गगन * सीता भावे पुड़ि मेल पवननन्दन
विलाप करेन सीता मने नाहि क्षमा * ताँहाके बुझाय तबे राक्षसी सरमा
बन्दी हइयाछे, शुनियाछि से काहिनी * राजारे से बलिलेक दुरक्षर वाणी
लेजे अग्नि देल तार पोड़ावार तरे * सेइ अग्नि हनूमान दिल घरे घरे

१ उजाड़ दिया, नष्ट कर दिया २ उछल-उछलकर ३ कैदी ४ वानर की पूछ

आँच न अंग, कुशल बलवन्ता ❋ तब लौं प्रकट भयेउ हनुमन्ता
लंक जारि प्रस्तुत सिय तीरा ❋ पूँछ बुझायेउ वारिधि-नीरा

दो० विकल जलधि-जल बुझत जनि, अनल प्रबल अधिकाय ।
विकल अनिल-सुत[1] सीय पहँ, पूछत सीस नवाय ।। ६६ ।।

अचरज अतिव विदित नहिं कारन ❋ शमन होय किमि जननि! हुताशन[2]
देहु पूँछ मुख, सुत ! तत्काला ❋ लहि मुख-सुधा नसै सब ज्वाला
बुझत न पावक ताप अनन्ता ❋ मुख लांगूल[3] लीन हनुमन्ता
आनन[4] झरसि[5], शमन भइ आगी ❋ सागर-तट सोचत दुखपागी
लखि प्रतिबिम्ब दग्ध मुख नीरा ❋ कहेउ बहोरि आय सिय तीरा
जननि-काज किय मुख-छबि हानी ❋ हसैं जाति जन, मोहिं गलानी
सकल जाति-मुख होयँ विरूपा ❋ असित[6], कहति सिय, तव अनुरूपा
सुनि प्रसन्न, कपि आयसु चाहा ❋ आवैं तबहिं अवध नरनाहा
वैदेही पुनि कहति स-नेहा ❋ आहत ताप-अनल तव देहा
निवसु तात! कछु दिन मम तीरा ❋ लुकि[7] अशोकवन विनसइ पीरा
अनुचित बानि, लखन श्रीरामा ❋ मम विन किमि आवहिं यहि धामा
इत विलम्ब तौ विनसइ काजू ❋ द्रुति[8] आनहुँ सुकण्ठ कपिराजू

हनूमान नाहि पोड़े, आछे से कुशले ❋ लंका पोड़ाइया हनू एल हेनकाले
सीतार निकटे गिया पवननन्दन ❋ फेलिल लेजेर अग्नि सागरे से क्षण
निर्व्वाण ना हय अग्नि आरो ज्वले जले ❋ सीतार निकटे हनू जोड़ हाते बले
ना जानकि, जान किगो इहार कारण ❋ केमते निर्व्वाण हबे एइ हुताशन
सीता बले, मुखामृत देह हनूमान ❋ एखनि अग्निर ज्वाला हइबे निर्व्वाण
तबे हनू ह'ये अति ज्वालाय कातर ❋ ज्वलंत लांगूल पूरे मुखेर भितर
निर्व्वाण हइल ज्वाला, पुड़े गेल मुख ❋ सिन्धुतीरे गेल हनू पेये मने दुख
जले मुख देखि वीर मनागुणे ज्वले ❋ पुनरपि जानकी निकटे आसि बले
तव कार्य्ये आसि मागो, पुड़े गेल मुख ❋ ज्ञाति वर्ग हासिवेक, से जे बड़ दुःख
सीता बले, ज्ञातिवर्ग केह नहे छाड़ा ❋ मन वाक्ये सकलेइ हबे मुखपोड़ा
हनूमान बले, तबे आसि गो जननि ❋ आमि गेले आसिबेन राम रघुमणि
अग्निते तोमार तनु ह'यछे कातर ❋ किछु दिन थाक बाछा आमार गोचर
जानकी बलेन तबे सस्नेह बचने ❋ लुकाइया थाक हेथा अशोक कानने
हनूमान बले माता ब'ल ना एमन ❋ आमि गेले आसिबेन श्रीराम लक्ष्मण
बिलम्ब हइले मम नष्ट हबे काज ❋ आमि गेले आसिबे सुग्रीव महाराज

१ पवनसुत २ अग्नि ३ पूँछ ४ मुख को ५ झुलसाकर ६ काले ७ छिपकर ८ शीघ्र ही ।

चढ़ि मम कंध लखन रघुराई ※ भरहिं छलांग कोस-समुदाई
केते तव सम कपि बलवन्ता ※ राम-कटक वरनहु हनुमन्ता?
इत-उत की[१] अनेक कहि बाता ※ बिहँसि कहत कपि सुनु सिय माता
मों सन अधिक सुभट बहु वीरा ※ मैं लघुतम[२] सुकण्ठ के तीरा

दो० हीन कर्म, अति दीन कपि, सुभटन गिनती नाहिं ।
पायक समुझि सुकण्ठ मोहिं, इत पठयेउ तव पाहिं ॥
तबहुँ हनेउँ लख-लख दनुज, को वरनै प्रभु-बान[३] ।
तीस कोटि सेनिप[४] सुभट आवहिं कोस प्रधान ॥ ६७ ॥

तव दुख मातु वेगि अवसाना[५] ※ तव पद-पायक मैं हनुमाना
सेवक-वचन धरहु उर माता ※ प्रभु-कर द्रुत लंकेस निपाता
सुघरी[६] सहित लखन-सुग्रीवा ※ जीतहिं लंक राम बलसीवा
भय परितजहु विषाद न कामा ※ पवनपूत पुनि करत प्रनामा
दीन्हेउ सिय असीस हरषाई ※ कृत्तिवास सुचि[७]-कथा सुनाई

लंका से हनुमान की वापसी

राम-प्रतीति[८] हेतु हनुमाना ※ सिय-मणिमस्तक सहित पयाना

लाफ दिया पार हवे यत कपिगण ※ मोर पृष्ठे पार हवे श्रीराम लक्ष्मण
जानकी ब'लेन, शुन पवननन्दन ※ तोमा हेन कपि आर आछे कतजन
से कथा शुनिया वीर हनूमान हासे ※ सीताके बुझाय वीर अशेष-विशेषे
आमार अधिक वीर आछे बहुतर ※ आमा छोट सुग्रीवेर नाहिक वानर
सकलेर क्षुद्र आमि क्षुद्र कर्म्म करि ※ आमाके पाठान ताइ एइ लंकापुरी
वीर मध्ये यद्यपि आमारे नाहि लेखे ※ तथापि राक्षसगणे मारि लाखे-लाखे
त्रिशकोटि सेनापति आसिबे प्रधान ※ आपनि जानह माता श्रीरामेर वाण
शीघ्र ह'बे ठाकुराणि, दुःख अवसान ※ चरणसेवक तव आछे हनूमान
श्रीरामेर हाते ध्वस्त हइबे रावण ※ मने करि राख मागो, हनूर वचन
आसिबेन शुभक्षणे सुग्रीव लक्ष्मण ※ हइबेन लंकाजयी राम नारायण
भय ना करिह माता जनकनन्दिनी ※ एत बलि प्रणमिल ह'ये जोड़पाणि
आनन्दिता सीता हनूमानेर आश्वासे ※ गाइल सुन्दरकाण्ड कवि कृत्तिवासे

लंका हइते हनुमानेर प्रत्यावर्त्तन ओ वानरसैन-सह स्वदेश यात्रा

सीतार मस्तक मणि रामेर सन्देश ※ मेलानि पाइया हनू चलिलेन देश

१ इधर-उधर की २ सबसे छोटा ३ राम के वाण की महिमा ४ सेनापति ५ नष्ट होंगे ६ शुभ घड़ी में ७ पवित्र ८ विश्वास ।

लहि पद-चाप शिला-तरु भंगे * उठि लट-जलधि लंघ गिरि शृंगे
गिरि सों उठि पुनि सिन्धु निहारा * इक छलांग जहँ गगन प्रसारा
सिंहनाद किय प्रमुदित बीरा * भयेउ प्रतिध्वनित उत्तर तीरा
जाम्बवान तब हाँक लगावा * मनहु सिद्धि लहि हनुमत आवा
विक्रम, जिमि रव[1] घोर प्रतीता * निश्चित मनहु लखी तिन सीता
गमन पवन-गति, आगम शेषू * अर्ध सिन्धु किय पार निमेषू
बन्दि सुदूर गिरिन बजरंगा * पार कीन गिरि पर गिरिशृंगा
मारुति दरस जुरे सब कीसा * कहत धन्य तुम धन्य कपीसा
बालितनय प्रति प्रथमहिं बन्दे * जाम्बवान पुनि, अमित अनन्दे
भेंटे सखा, कपिन उर लावा * लहि फल-फूल, कुतूहल छावा

दो० अंगद सभा विराजहीं वानर-कटक अपार ।
जाम्बवान जिज्ञासहीं, वरनहु पवनकुमार ।। ६८ ।।

कनकलंक किमि, किमि लंकेसू * केहि विधि लखी सिया तेहि देसू
सिय प्रति किमि रावन-व्यवहारू * किमि तहँ जनकलली आचारू
विस्तर[2] सकल वरनु हनुमाना * किमि निसिचरन, लहेउ कपि! त्राना
तव प्रति चिन्ता रही विसेसू * काजसिद्धि विन दरस न देसू

ताहार चरण-भरे शिला वृक्ष भांगे * समुद्र तरिते उठे पर्व्वतेर शृंगे
पर्व्वते उठिया वीर सागर नेहाले * एक लाफे उठे वीर गगनमण्डले
सिंहनाद छाड़े वीर हरषित मुखे * सिंहनाद ताहार उत्तर कूले ठेके
डाक दिया तखन बलिछे जाम्बवान * सर्व्व कार्य्य सिद्ध करि आसे हनूमान
जेमत विक्रमे आसे हेन शब्द शुणि * देखियाछे निश्चित से रामेर रमणी
पवनगमने वीर आइसे सत्वर * चक्षुर निमिषे एल, अर्द्धेक सागर
दूर हैते पर्व्वतेरे नमस्कार करे * पार हैया रहे वीर पर्व्वत शिखरे
हनूमाने देखिवारे आइल वानर * ब'ले, धन्य धन्य वीर पवनकोङर
आगे माथा नोवाइल कुमार अंगदे * जाम्बवान आदि बन्दे परम आह्लादे
सोसर वानर संगे करे कोलाकुलि * फल फुल योगाय सकले कुतूहली
अंगदेर सभाय जिज्ञासे जाम्बवान * केमने देखिले रावणेरे हनूमान
केमने देखिले तुमि स्वर्ण लंकापुरी * केमने देखिले तुमि रामेर सुन्दरी
सीता ल'ये रावणेर किवा व्यवहार * केमन देखिला तुमि सीतार आचार
हनूमान, कह सविशेष समाचार * राक्षसेर हाते किसे पाइले निस्तार
तोमार लागिया छिल चिन्ता अतिशय * तबे देशे जाइ यदि इष्ट सिद्धि हय

१ गर्जन २ विस्तार सहित ।

बचन ऋच्छपति सुनि हनुमाना ※ हेरि अंगदहिं सकल बखाना
शत योजन वारिधि[1] विस्तारा ※ झेलि संकठन उतरेउँ पारा
भरमि लंक निसि अर्ध गवाँई ※ पुनि अशोक वन सीय लखाई
सिद्धि सदा अनुसरति कलेसू ※ राम तीर चलि कहहिं बिसेसू
सुनि सुभ खबरि[2] मुदित युवराजू ※ सिय-उद्धार बिलंब न काजू
लै सिय चलहिं जहाँ मनभावन ※ प्रथम गमन तहँ समय नसावन
एक पवनसुत काज बनावा ※ अब तुम सबन सुअवसर आवा
जामवन्त सुनि विहँसि बखाना ※ कथन न केहु विधि उचित लखाना
राम रमापति शिर सिय भारा ※ तव हाथन किमि तासु उबारा
निर्नय-सीय लेयँ रघुकेतू ※ नतु सब जतन अनादर हेतू
कपि न समर्थ तरहिं दस योजन ※ को भट करै पार शत योजन
सुनि व्यंगोक्ति[3] ऋच्छपति केरी ※ कहति बालिसुत नयन तरेरी[4]

सो० वृथा पकाये केस, सठियानी रे वृद्ध ! मति ।
देत विविध उपदेस, निज-मत[5] सबन अपंग[6] लखि ॥

दो० बाँधि पुच्छ, तव भार लहि, होहुँ सिन्धु के पार ।
कुपित अंगदहिं शान्त करि, बोले पवनकुमार ॥ ६६ ॥

एत यदि जिज्ञास करिल जाम्बवान ※ अंगद गोचरे वार्त्ता कहे हनूमान
शतेक योजन समुद्रेर परिसर ※ अनेक संकटे आमि तरिनु सागर
दु-प्रहर रात्रि गेल, तृतीय प्रहरे ※ देखिलाम अशोक कानने जानकीरे
आगे बहु कष्ट, इष्टसिद्धि हय शेषे ※ चलह रामेर ठाँइ कहिब विशेषे
शुनि शुभ समाचार हृष्ट युवराज ※ सीता उद्धारिते चाहे नाहि सहे व्याज
जानाइले श्रीरामेरे विलम्ब बिस्तर ※ सीता उद्धारिया चल रामेर गोचर
एकेश्वर हनूमान लंघिल सागर ※ तोमार साहस कर सकल वानर
अंगदेर कथा शुनि जाम्बवान हासे ※ यत किछु ब'ल मोर मने नाहि आसे
सीता उद्धारिते राजा करिलेन पन ※ तोमारा करिले ताहा घटिबे केमन
सीतार चरित्र राम करेन विचार ※ तव वाक्ये सीता निले हबे तिरस्कार
दश योजन लंघिते नारिबे कपिगन ※ कोन जन तरिवेक शतेक योजन
एत यदि जाम्बवान अंगदेरे ब'ले ※ कुपिया अंगद वीर अग्नि हेन ज्वले
अकारणे बुड़ाटि, पाकिल तोर केश ※ निजे बुड़ा, परेरे शिखाओ उपदेश
आपनार मत देख सकल संसार ※ लेज चापि धर हे सागर करि पार

१ समुद्र २ शुभ समाचार ३ व्यंग्य वचन ४ कोप-दृष्टि से ५ अपने समान
६ लाचार ।

अंगद ! शमन, धरहु उर धीरा ※ तुम समान दुर्लभ जग वीरा
जामवन्त तव सचिव बखाना ※ समुचित सचिव-सीख-सन्माना
बालितनय सुनि आनँद - साने ※ सहित सैन - कपि देस पयाने

वानरों द्वारा सुग्रीव-मधुवन-भञ्जन

छाये कपि छिति गगन असेसू ※ पहुँचे मधुवन चलि निज देसू
को मधुवन-छबि अतुल विलोकी ※ करहि प्रवेश न निज मन रोकी!
बालि भूप मधुवनहिं सवाँरे ※ सहस-सहस कपि जहँ रखवारे
कपिन करत चंचल मधु-गन्धा ※ विकल निहारि सदा प्रतिबन्धा[1]
जामवन्त मिलि सीख[2] बुझावा ※ अंगद ढिग हनुमतहिं पठावा
विनय अंगदहिं किय हनुमन्ता ※ लहि सिय-सुधि सुख दीन अनन्ता
तेंहि प्रसाद, आयसु, युवराजू ※ देहु समुद निज कपिन समाजू
आनि शोध सिय दीन हुलासा ※ तुमहिं अदेय न कछु मम पासा
आयसु कहा ! लहौ मनमाना ※ पुनि अंगदहिं कहेउ हनुमाना
मधु-रस अमिय सरिस अति स्वादा ※ चहत सकल कपि नाथ-प्रसादा
कीस करैं मधुपान सप्रीती ※ जनि सुग्रीव होयँ विपरीती

हनूमान ब'ले, तुमि ना हओ अस्थिर ※ पृथिवी-मण्डले नाइ तोमा हेन वीर
सर्व्वलोके ब'ले, तव मंत्री जाम्बवान ※ गंभीर मंत्रणा कभु ना करिह आन
शुनिया अंगद वीर हासे महोल्लासे ※ वानर-कटक-सह चले निज देशे

वानरगणेर मधुवन भञ्जन

कटक जुड़िया जाय पृथिवी-आकाश ※ देशे गिया उपस्थित मधुवन पाश
देखिते मधुर वन अति मनोहर ※ कोन प्राणी नाहि जाय ताहार भितर
सहस्र-सहस्र कपि मधुवन राखे ※ बालिर समयावधि मधुवने थाके
मधुगन्धे कपिगण अत्यन्त विकल ※ खाइवारे नाहि पारे, हइल चंचल
मधुपाने मंत्रणा करिल जाम्बवान ※ अंगदेर ठाँइ आज्ञा माग हनूमान
आनिया सीतार वार्त्ता दियाछ आह्लाद ※ अंगदेर ठाँइ लह राजार प्रसाद
अंगदेर काछे हनू कहे जोड़ हात ※ राजार प्रसाद चाहि वानरेर नाथ
अंगद बलेन, वीर, जे दिला आह्लाद ※ जाहा चाह ताहा लह कि राज-प्रसाद
हनूमाने ब'ले, मधु अमृत समान ※ सकल वानर खाइ, यदि देह दान
अंगद ब'लेन, मधु खाओ इच्छामत ※ ना हबेन सुग्रीव इहाते असम्मत
हरषित सकले पाइया मधुदान ※ आनन्दे करिछे स्वेच्छामत मधुपान

---

१ मधुफल खाने पर रोक २ सलाह ।

लहि आयसु कपिगन हर्षाने * अभिमत[1] करि मधुपान जुड़ाने
कोउ निचोरि कोउ चुल्लुन लीन्हा * मधु बिन मधुग्रह कपिगन कीन्हा
दो० पुनि मधुचक्र[2] बिखण्ड करि[3] रहे परस्पर मारि।
मधुमाते मदमस्त कपि अभिरि[4] मचाये रारि ॥ ७० ॥
नृत्य गान रत हास-विलासू * हार न जीत, सबन उल्लासू
हटकेउ कपिन, कुपित रखवारे * खेदि तिनहिं वानरगन मारे
केहु धरि केस फेंकि नभ ओरा * क्रुद्ध चलेउ कोउ अंगद ओरा
तव आयसु कपि रत मधुपाना * मधुरक्षक चाहत तिन प्राना
युवराजहिं सुनि क्रोध अपारा * साजि कटक मधुवन पग धारा
कुपित ससैन बालिसुत धावा * रक्षकपति 'दधिमुख' तहँ आवा
अंगद समुख[5] न कोउ भट धीरा *'दधिमुख' तजि, अलोप कपि वीरा
दधिमुख ! दीन अतुल संतापा * तव वध भात मिटै उर तापा
लहि सिय-शोध कीन प्रभुकाजू * किमि तिन उरिन[6] होयँ कपिराजू
करि नृप-काज न नृप-धन भोगू * तुमहिं निवसि गृह मधुरस जोगू
नित विलसत मधु पितुधन मोरा * मन यहि छनहिं[7] करौं वध तोरा
पितु-मातुल[8] पितुमहत्[9] समाना * यहि कारन तव बकसहुँ[10] प्राना

निङाड़िया खाय केह, पिये त चुमुके * सकल भाण्डार शून्य करिल कटके
मधुचक्र भांगि सबे मारामारि करे * ये जारे मारिते पारे, सेइ तारे मारे
मधु पिये कपिगण हइल पागल * मारामारि हुड़ाहुड़ि करिछे कोन्दल
केह नाचे, केह हासे, केह गाय गीत * केह हारे, केह जिने, सबे आनन्दित
रुषिया करिल माना मधुर रक्षक * खेदाड़िया जाय तारे अंगद कटक
चुलेते धरिया केह घुमाय आकाशे * महाक्रोधे जाय केह अंगदेर पाशे
तोमार आज्ञाय मोरा करि मधुपान * कोथाकार वानर लइते चाहे प्रान
कुपिल अंगद वीर शुनिया वचन * साज-साज ब'लि डाके बालिर नन्दन
कटक लइया युवराज जाय कोपे * कुपिल से दधिमुख, आसे एकचापे
अंगदेर प्रताप सहिबे कोनजन * दधिमुखे एड़िया पलाय कपिगन
अंगद कहिछे शुन ओरे दधिमुख * तोरे आज मारि यदि, तबे जाय दुख
जानिया सीतार वार्त्ता आइल जेजन * तारे दान दिते आमि नहिनु भाजन
राज-कार्य्य करि, नाहि खाइ पितृ-धन * घरेते बसिया भोग कर मधुवन
पितृधन मधुवन करिस भक्षण * मनेते वासना, तोरे काटि एइक्षण
बापेर मातुल जे सम्बन्धे वड़बाप * सेकारणे ना मारिनु तोमाहेन पाप

१ मनचाहा २ मधुभण्डार ३ तोड़कर ४ गुथे हुये ५ सामने ६ उद्धार
७ इमी क्षण ८ पिता का मामा ९ पितामह १० क्षमादान।

कम्पित ओंठ, सरोष अधीरा ※ सिथिल दसन-नख-आहत वीरा
दधिमुख जहँ सुकण्ठ कर धामा ※ धाय गोहारत[1] करत प्रनामा
हे नृप! अंगद - पवनकुमारा ※ दोउ मधुवन सब भाँति उजारा
अब लौं तुम पुनि बालि सवाँरे ※ सो मधुवन छिन माहिं सँहारे

दो० यदपि क्रोध, पुनि मौन ह्वै रहे नृपति सुग्रीव।
कौतूहल बस पूछहीं लखनलाल बलसीव ॥ ७१ ॥

मातुल-पद दधिमुख धरि चरना ※ निज अपमान रोय बहु वरना
किमि मातुलहिं अनादर रोषू ※ उतर न देत वचन सन्तोषू
लखन-बचन सुनि कह कपिनाथा ※ बूझेउँ मर्म, सुनहु सब गाथा
दच्छिन दिसि जे सुभट पधारे ※ लूटि मंजु मधुवन संहारे
रखवारेन[2] तिन खेदि पछारा ※ मातुल सो सब व्यथा प्रचारा
पूछत लखन कुतूहल भारी ※ को किमि आय कथा विस्तारी
दच्छिन जाय कवन पुनि आई ※ कहेउ राम, किमि खबरि जनाई
कहेउ सुकण्ठ, न होहु अधीरा ※ तेहि दिसि गये महाभट वीरा
सचिव ऋच्छपति[3], बालिकुमारा ※ हनुमत सिद्धि सवाँरनहारा
अति तव काज मारुतिहिं[4] प्रीती ※ लहेउ दरस-सिय, मोहिं प्रतीती

ओष्ठाधर कम्पमान, क्रोधेते आकुल ※ गोहारि करिते जाय राजार मातुल
जर्ज्जर हइया वीर आँचड़-कामड़े ※ अति शीघ्र गिया सुग्रीवेर पाये पड़े
पायेते पड़िया कहि निज अपमान ※ मधुवन नष्ट कर अंगद-हनूमान
तोमरा दुभाइ याहा करिले पालन ※ एत काले नष्ट करे सेइ मधुवन
शुनि क्रुद्ध हये राजा रहिल नीरवे ※ जिज्ञासेन लक्ष्मण से भूपति सुग्रीवे
मामा हये दधिमुख धरिल चरन ※ अपमान कथा कहे करिया क्रन्दन
ना देह सान्त्वना-वाक्य, ना देह उत्तर ※ किहेतु मामार प्रति एत अनादर
सुग्रीव ब'लेन शुनि लक्ष्मणेर कथा ※ अभिप्राय बुझिले उत्तर दिव तथा
दक्षिण दिकेते जारा करिल गमन ※ लुटिया खाइल तारा रम्य मधुवन
मारि खेदाइल एरे, एइ मधु राखे ※ एइ सब कथा कहे मामा दधिमुखे
शुनिया लक्ष्मण कहे अपरूप शुनि ※ के आसिल के कहिल दक्षिण-काहिनी
श्रीराम ब'लेन, यारा गियाछे दक्षिणे ※ तारा कि आइल, जान वार्त्ता कि एक्षणे
सुग्रीव ब'लेन मित्र ना हओ अस्थिर ※ दक्षिणेते गियाछिल बड़-बड़ वीर
आपनि अंगद आर मंत्री जाम्बवान ※ कार्य्येर साधक स्वयं वीर हनूमान
तव कार्य्ये हनूमान बड़ह तत्पर ※ अवश्य हयेछे सीता ताहार गोचर

विज्ञ, महान, धर्म-मति माना ❊ निश्चय सिय खोजेउ हनुमाना
बोले राम, तात तव बयना ❊ सकत न कहि अतुलित सुखदयना
हनु - अंगद दोउ लेहु बुलाई ❊ हिय जुड़ाय सुनि सिय-कुसलाई
दधिमुख प्रति सुकण्ठ संतोषा ❊ अंगद-वचन करहु जनि रोषा
सो तव नाति[1], कपिन युवराजा ❊ कौतुक-नाति हेतु जनि लाजा
मातुल बेगि दुहुन चलि लावौ ❊ हनु अंगद प्रभु-दरस करावौ

हनूमान द्वारा श्रीराम के समीप निदर्शनमणि-प्रदान

दो० लहि सुकण्ठ-आयसु समुद, दधिमुख कीन पयान ।
लै छलाँग प्रस्तुत भयेउ, जहँ अंगद-हनुमान ।। ७२ ।।

कहत जोरि कर पुनि शिर नाई ❊ जिमि आदेस दीन कपिराई
तव अनुयोग[2] कीन नृप पाहीं ❊ सो सुग्रीव लीन मन नाहीं
निज पितु-धन मधुवन बैपरहू[3] ❊ सेवक जानि रोष जनि करहू
राम-सुकण्ठ तीर द्रुति[4] जाई ❊ रामहिं तोष देहु बतराई
सदा दास अंगदहिं पियारा ❊ दीन दधिमुखहिं पुनि मधु-भारा
वीर बालिसुत हरषि पयाना ❊ चले घेरि चहुँ भट कपि नाना
सबन कपिन आगे हनु वीरा ❊ प्रभु समीप, गिरि सरिस सरीरा

धार्म्मिक पण्डित हनूमान महाशय ❊ देखियाछे जानकीरे, कहिनु निश्चय
श्रीराम बलेन, मित्र, तोमार वचने ❊ जे आनन्द पाइलाम, कहिबे केमने
हनूमान अंगदेरे डाकिया आनाउ ❊ कहिया सीतार वार्त्ता परान जुड़ाउ
सुग्रीव ब'लेन, एस मामा दधिमुख ❊ अंगदेर वाक्ये मामा ना भाविह दुख
सम्बन्धे तोमार नाति सेइ युवराज ❊ नाति नाट करिले तोमार नाहि लाज
झाट जाह मामा, तुमि आमार वचने ❊ अंगद-हनूर आन श्रीरामेर स्थाने

हनूमान द्वारा श्रीराम-समीपे सीतार निदर्शनमणि-प्रदान

राज-आज्ञा पाइया हरिषे दधिमुख ❊ एक लाफे पड़े गिया अंगद-सम्मुख
माथा नोयाइया तारे कहे जोड़ हात ❊ राजवार्त्ता कहि शुन वानरेर नाथ
तव दोष कहिलाम सुग्रीवेरे स्थाने ❊ तव अपराध राजा ना शुनिल काने
निज धन खाओ तुमि बापेर अर्ज्जित ❊ सेवक हइया कहिलाम अनुचित
श्रीराम सुग्रीव बसि आछे दुइजन ❊ झाट गिया कर तुमि राम सम्भाषन
सेवकवत्सल बड़ सुशील अंगद ❊ मधुवन-रक्षा तारे दिलेन सम्पद्
चलिल अंगद वीर ह'ये हरषित ❊ कौतुकेते जाय बहु वानर-वेष्टित
सकल ठाटेर आगे वीर हनूमान ❊ श्रीरामेर ठाँइ जाय पर्व्वत प्रमान

१ नाती, पौत्र २ शिकायत ३ सेवन करो ४ शीघ्र ।

निरखि दूर आवत हनुमाना ❊ तत् छन उठे लेन भगवाना
प्रभु ससंक अनुमान लगावैं ❊ धौं किमि खबरि पवनसुत लावैं
बहु बिचारि पूछत पुनि एही ❊ कँ तुम लखी सत्य वैदेही
जो सिय-दरस लहेउ हनुमाना ❊ कारज सधै, बचैं मम प्राना
बन्दि राम-पद पवनकुमारा ❊ दोउ कर जोरि कथन विस्तारा
वन अशोक बिच लंकानगरी ❊ वरनहुँ, नाथ! कथा मैं सगरी[१]
सागर शत योजन विस्तारा ❊ संकट झेलि भयउँ मैं पारा
घोर निसा-तम, लंक प्रवेसू ❊ राज-सदन जनि सिय उद्देसू
घर-घर मैं सब पुरी मँझाई ❊ विफल, अधीर, रुदन अधिकाई

दो० गत निसि अर्द्ध अशोक वन, लखि रवि-प्रभा-अलोक।
सहसा सिय-छबि-दरस लहि, भयेउँ, नाथ! गतशोक॥ ७३॥

तब लौं प्रकट तहाँ दशभाला ❊ विद्याधरी लिये सुरबाला
सिय सों यथा कही लंकेसू ❊ सुनेउँ सकल मैं लुकि[२] तरुदेसू
कीन अस्तुती[३] दशमुख नाना ❊ दीन जानकी एक न काना[४]
लखि सिय-उर अनन्य रघुनाथा ❊ सिय-बध हेतु कुपित दशमाथा
मम गति एक मृत्यु-अभिलासा ❊ प्रभु पद अन्त मोहिं जनि आसा

दूरे देखिलेन राम पवननन्दने ❊ बसिया छिलेन उठिलेन ततक्षने
सशंकित श्रीराम करेन अनुमान ❊ कि जानि केमन वार्त्ता कहे हनूमान
सात पाँच भावि रामजिज्ञासेन ताके ❊ सत्य कह हनूमान, देखेछ सीताके
यदि सीता देखे थाक वीर हनूमान ❊ सर्व्व कार्य्य सिद्ध हबे रबे तबे प्रान
श्रीराम चरणे वीर करि प्रणिपात ❊ निवेदन करे सब करि जोड़ हात
लंका मध्ये देखियाछे अशोक कानने ❊ कहिब सकल कथा प्रभु तव स्थाने
एक शत योजन से सागर पाथार ❊ अनेक कष्टेते आमि हइलाम पार
अन्धकारे करिलाम लंकाय प्रवेश ❊ राज अन्तःपुरे नाहि पेलाम उद्देश
आवासे आवासे आमि सीता नाहि देखि ❊ कान्दिलाम विस्तर हइया मनोदुःखी
अकस्मात देखिलाम अशोक कानन ❊ अशोक वनेर ज्योति; रविर किरन
द्वि प्रहर रात्रि गते तृतीय प्रहरे ❊ अशोक वनेर मध्ये देखिनु सीतारे
हेन काले गेल तथा राजा दशानन ❊ देवकन्या सगे आर विद्याधरीगन
कि ब'लिया सम्भाषे रावण जानकीरे ❊ वृक्ष आड़े रहिलाम शुनिवार तरे
अनेक प्रकारे स्तुति करिल रावन ❊ जानकी ना शुनिलेन ताहार वचन
तोमा विना जानकीर अन्ये नाहि मन ❊ कोपेते काटिते चाहे राजा दशानन
जानकी ब'लेन, मृत्यु करिलाम सार ❊ रामेर चरण बिना गति नाहि आर

१ सारी कथा २ छिपकर ३ खुशामद ४ नहीं सुना।

कथन-सीय सुनि आस गवाँवा * दुष्ट, विकट राच्छसिन बुलावा
गमनेउ गेह राखि तहँ चेरी * मारहिं कुगति करहिं सिय केरी
साम-दाम सब बिधि समुझावैं * दुष्ट वचन सिय-मनहिं न भावैं
त्रिजटा दनुजि सिया-हित-करनी * निसि लखि सपन कथा सब वरनी
तेहि ढिग सपन सुनैं जब चेरी * तरु तजि गयेउँ सुअवसर हेरी
पूँछी मातु, कवन तैं कीसा * वरनेउँ तव सहचर्य्य-कपीसा[1]
पुनि तव चिह्न मुद्रिका दीन्हा * सो लहि रुदन अतिव सिय कीन्हा
जननि भेंटि लौटति, उर व्यापा * करहिं प्रकट निज कछुक प्रतापा
भञ्जि सुधाकानन[2] मन-हारी * कोटि-कोटि निसिचरन सँहारी
अखयकुमार आदि कर प्राना * लीन, बधे सेनापति नाना
चक्षु - निमेष सकल संहारा * मेघनाद रन हित पग धारा

दो० सुवन-लंकपति इन्द्रजित्, समर पहर दुइ साधि ।
ब्रह्मपाश संधानि पुनि, असुर लीन मोंहि बाँधि ।। ७४ ।।

लै प्रस्तुत किय जहँ लंकेसू * कहेउँ ताहि दुर्वचन असेसू
मम वध आयसु दीन दशानन * सो निषेध किय अनुज बिभीषन
तासु वचन मम जीवन राखा * जारहु पुच्छ, दनुजपति भाषा

निराश हइल दुष्ट सीतार वचने * बिषम राक्षसी चेड़ी डाक दिया आने
घरे गेल दशानन ठेकाइया चेड़ी * सीतारे मारिते सबे करे हुड़ाहुड़ि
सीतारे बुझाय चेड़ी अशेष प्रकारे * कोन मते सीता दुष्ट-वचन ना धरे
त्रिजटा राक्षसी रात्रे देखिल स्वपन * सीतार मंगल सेइ चिन्ते अनुक्षन
स्वप्न शुनिवारे चेड़ी गेल तार पाश * गाछे थाकि सीता सह करिनु सम्भाष
कोथा हैते एले, मोरे सुधान वैदेही * सुग्रीवेर संगे सख्य आमि सब कहि
तोमार अँगुरी ताँरे कराइ दर्शन * अंगुरी पाइया सीता करेन रोदन
मेलानि पाइया आमि जबे देशे आसि * मने करिलाम, किछु विक्रम प्रकाशि
भांगिलाम मनोहर अमृत - कानन * कोटि - कोटि राक्षसेरे बधिनु जीवन
क्रमे बधिलाम तार बहु सेनापति * प्राणे मारिलाम अक्षकुमार प्रभृति
चक्षुर निमिषे सब करिनु संहार * इन्द्रजित् करिल समरे आगुसार
दु प्रहर तार सगे करिलाम रन * ब्रह्मपाशे से आमारे करिल बन्धन
धरियां लइया गेल रावण गोचर * रावणेर प्रति गालि दिलाम विस्तर
आमारे काटिते आज्ञा दिल दशानन * निषेध करिल तारे भाइ विभीषन
तार वाक्ये आमि तबे एड़ाइ मरण * लेजे पोड़ाइते आज्ञा करिल रावण

१ सुग्रीव से आपकी मित्रता २ अमृत वन ।

मम जारन हित पूछ जराई ※ लंक अगिनि सो घर-घर छाई
लंका अखिल कीन मैं छारा ※ दहकि भसम कहुँ सुलग अँगारा
सोचि विपति-मम, आकुल सीता ※ जहँ सिय, बेगि भयेउँ उपनीता[1]
निरखि मोहिं सिय हर्ष बिशेषू ※ करि कारज प्रस्तुत प्रभु-देसू
शशि घन-ओट यथा छबि-हीना ※ लखेउँ सिया तव विरह-मलीना
अलस[2] नित्य जिमि विद्या-छीना ※ तिमि सिय-तन विगलित श्री-हीना
जस देखेउँ वरनेउँ तस गाथा ※ लखहु तासु मस्तक-मणि, नाथा !
ललकि बाम कर मणि प्रभु लीन्हा ※ लखि सिय-चिह्न रुदन बहु कीन्हा
दै मणि, सीय कहेउ मम हेतू ※ सुनहुँ यथा, वरनहु कपिकेतू
कहेउ पवनसुत रघुपति-चरना ※ सिय जिमि रोय कहेउ सो वरना
विलमौ[3] कपि ! जब लौं मणि तीरा ※ कछु बतराय हरौं उर-पीरा
तुम पुनि मैं मणि भगिनि सरूपा ※ प्रतिपालेउ भल मैथिल-भूपा[4]
पुनि सादर रामहिं दिय दाना ※ सुता सहित मणि-रतन प्रदाना[5]

दो० भगिनि युगुल निवसैं सदा संग—जनक[6]-अभिलाष ।
तुम जेठी ! मम माथ रहि अहि-निसि करहु प्रकास ।। ७५ ।।

लेजे अग्नि दिल लेज पोड़ावार तरे ※ सेइ अग्नि दिलाम लंकार घरे घरे
लंका पोड़ाइया करिलाम छारखार ※ कतक हइल भस्म, कतक अंगार
आमार विपद् भावि भाविछेन माता ※ हेनकाले उपनीत हइलाम तथा
आमारे देखिया सीता हर्षिता विशेष ※ सर्व्वकार्य्य सिद्ध करि आइलाम देश
देखिलाम जानकीरे विरहे मलिना ※ मेघे ढाका शशी यथा लावण्यविहीना
सीता मार देह खानि देखिलाम क्षीन ※ अलसेर विद्या यथा क्षीण दिन दिन
देखिनु शुनिनु यत कहिनु काहिनी ※ लह रघुमणि, तोर मस्तकेर मनि
राम हस्ते मनि दिल पवननन्दन ※ मनि देखि रघुमनि करेन क्रन्दन
मनि दिया कि कहिला जानकी आमार ※ ब'ल ब'ल ओरे हनू, शुनि एकबार
हनूमान ब'ले, प्रभु, जनकनन्दिनी ※ कान्दिते कान्दिते एइ कहिला काहिनी
क्षणेक विश्राम कर बाछा हनूमान ※ मनि सने कथा कहि जुड़ाइ परान
तुमि मनि, आमि मनि, दुइटि भगिनी ※ दोंहे पालिलेन यत्ने जनक - नृमनि
विवाहेर काले पिता परम आदरे ※ अंगुरी करिला दान श्रीरामेर करे
तुमि आमि दुइ भग्नी थाकि एक खाने ※ इहायू पितार इच्छा छिल मने मने
तुमि ज्येष्ठा बलि ताइ तोमारे लइया ※ माथार उपर मोर दिलेन सँपिया

---

१ उपस्थित २ आलसी की ३ ठहरो ४ राजा जनक ने ५ कन्या और मणि दोनों ही दीं ६ पिता की।

दोउ अभिन्न निवसीं बहु काला * तोहिं सखी ! जुगयेउँ[1] निज भाला
तुमहिं पाय रघुपतिहिं हुलासू * यहि कारन पठवहुँ प्रभु-पासू
जासु जनक पितु, पति श्रीरामा * परी कुगति-बस निसिचर-धामा
जेहि विधि लंक सहेउँ दुख भारी * प्रभु पहँ जाय कहेउ विस्तारी
तुम मणि, रघुकुल-मणि रघुनाथा * निसिदिन सुख बिलसहु रहि साथा
मणि विन फणि, तिमि भोर निवासू * कब लौं हतभागिनि इत वासू
सुनि सीता कर रुदन-विलापू * सरसिजनयन अतिव संतापू
राम-रुदन रोवत कपि-वृन्दा * कृत्तिवास जिमि वरनत छंदा

श्रीराम प्रति हनुमान द्वारा भक्ति-प्रदर्शन

कहेउ नाथ पुनि, हे हनुमाना * सुलभ न जग तव वीर समाना
सागर अगम तरेउ केहि रूपा * कौतुक ! विवरन सुनहुँ अनूपा
कनक लंक किमि दहन-कहानी * उत्कण्ठा अति, कहहु बखानी
कपि किय विनय, सुनहु रघुकेतू * जेहि उर राम, न तेहि भय हेतू
नाथ-चरन पुनि पद-सियमाता * पद-पितुपवन सकल फल-दाता
इन त्रय पाद-पद्म मैं शरना * गोपद सरिस सिन्धु पुनि तरना

बहु दिन एक संगे आछि दोंहे भाइ * तोमार माथाय करे धरे राखि ताइ
रामेर आनन्द हवे तोमारे देखिले * पाठाइ तोमारे ताइ आज कुतूहले
जनक जनक जार, राम जार पति * राक्षसेर पुरे तार एहेन दुर्गति
यत कष्ट सहितेछि एइ लंकापुरे * गिया सब कवे तुमि रामेर गोचरे
तुमि मनि, आर सेइ रघुकुल - मनि * उभये थाकिबे सुखे दिवस यामिनी
मनिहारा फणिनीर मत एकाकिनी * कत काल रबे हेथा एइ अभागिनी
सीतार विलाप वाक्य करिया श्रवन * कान्दिते लागिला राम कमललोचन
रामेर रोदन देखि कपिगण कान्दे * कृत्तिवास रचिलेन पाञ्चालीर छन्दे

श्री रामेर प्रति हनूमानेर भक्ति प्रदर्शन

राम कहिलेन शुन वीर हनूमान * वीर नाहि देखि आछि तोमार समान
कि रूपे सागर - पारे करिले गमन * विवरण शुनिवारे ह'येछे मनन
कि रूपे सोनार लंका कैले छारखार * कह कह शुनि हनू, वासना आमार
हनूमान कहिलेन करिया विनय * तुमि जार हृदे थाक, कोथा तार भय
तव पद प्रभु पुनः सीता मार पद * 'पवन' पितार पद परम सम्पद
एइ तिन श्रीपदेर लइया शरन * वत्स - पद - सम हेरि सागर लंघन

१ यत्न से रखा ।

सुरसा साँपिनि दरस दिखाये ※ सुमिरि नाथ, तेहि उदर समाये
मुख सो बहिर[1] सुमिरि तव नामा ※ सब लीला - अधार गुणधामा

दो० बसति सदा जल सिंहिका, निरखि गगन महँ जीव ।
छाया धरि तिन लेत ग्रसि, कौतुक-दनुजि अतीव ।। ७६ ।।

ग्रसेउ मोहिं, मैं उदर समाई ※ सुमिरि नाम तव, ताहि नसाई
सम्पद-विपद सदा तव ध्याना ※ पुण्य नाम आधार महाना
प्रभु-कोपानल[2] अति विकराला ※ श्वास - वेदना - सीय कराला
शुष्क काष्ठ सम लंक जरावा ※ मैं निमित्त, विधि जोग जुटावा
परि तव कोप-अनल संसारा ※ कहुँ निस्तार न काहु उबारा
तव पद शरन गहैं जे लोका ※ ते तव दया लहैं परलोका
मैं वानर पशुजाति समाना ※ पशुहिं हिताहित[3] कबहुँ न ज्ञाना
दयाधाम मम निपट अधारा ※ तव पद रहि मम बुद्धि गुजारा
निर्बल कपि के बल तुम रामा ※ जग न मोहिं कहुँ अन्त विरामा
तुमहिं मातु-पितु, तुमहिं सहारे ※ तुम हनु - ताप नसावनहारे
जागे मम सौभाग्य अनन्ता ※ निज-पद-शरन लियेउ हनुमन्ता
बुद्धि, भरोस, मोर बल रामा ※ जिन तजि जग न अन्य मम कामा[4]

सुरसा सापिनी आसि देखा दिल मोरे ※ तव नाम स्मरि जाइ ताहार उदरे
बाहिरे आसिनु पुनः स्मरि तव नाम ※ सकलि तोमारि खेला ओहे गुणधाम
सिंहिका राक्षसी थाके समुद्रेर जले ※ मोरे त्रास करिवारे एल कुतूहले
प्रवेश करिनु गिया उदरे ताहार ※ बाहिरिनु तव नाम स्मरि पुनर्व्वार
कि विपदे कि सम्पदे थाकि एइ खाने ※ तव पुण्य नाम प्रभु स्मरि मने मने
परम प्रचण्ड प्रभु तव कोपानल ※ सीता मार श्वास-वायु परम प्रबल
लंकापुरी शुष्क काष्ठ, ज्वलि जाइ छिल ※ ए हेनू निमित्त मात्र तथाय जुटिल
तव कोपानले प्रभु पड़े जेइ जन ※ त्रिभुवने नाहि तार निस्तार कखन
ये जन तोमार पद करे समाश्रय ※ ताहारे परम पद दाओ दयामय
जातिते वानर आमि पशुर समान ※ नाहिक पशुर कभु हिताहित ज्ञान
तुमिइ आश्रय मोर, ओहे दयाधाम ※ तोमारि चरणे मोर मति अविराम
दुर्ब्बल हनूर तुमि एकमात्र वल ※ तोमा विना नाहि किछु हनूर सम्बल
तुमि पिता तुमि माता तुमिहि सकल ※ तुमिहि हनूर मात्र जुड़ावार स्थल
हनूर परम भाग्य, ओहे दयामय ※ हनूर दियाछ तुमि चरणे आश्रय
तुमि बल, तुमि बुद्धि, तुमिह भरसा ※ तोमा विना हनू किछु नाहि करे आशा

---

२ क्रोध की अग्नि ३ भले-बुरे का ज्ञान ४ कामना।

मम हृदयासन प्रभुहिं न जोगू ※ प्रभु-पद कहँ कपि दीन अजोगू
तबहुँ साध करुनामय एहीं ※ अरजी[1] चरन - रामवैदेही
बसै सदा हिय छबि दोउ केरी ※ होहुँ सुपावन नयनन हेरी
मोक्ष शास्त्रमत सम्पद् भारी ※ सो मोंहि लखत बिषम भयकारी

दो० हम-तुम भेद न मोक्ष लहि, उचित न प्रभु-सम्मान ।
राम-दास पुनि राम दोउ केहि विधि एक समान ।।
मैं सेवक तुम स्वामि मम, यहै सदा अरदास ।
अमर एक सम्बन्ध, प्रभु ! रहै, दास-अभिलास ।। ७७ ।।

मारुति धन्य, कहेउ रघुवीरा ※ त्रिभुवन तुम समान नहिं वीरा
अद्भुत तव विक्रम - विस्तारा ※ देहुँ कहा ? मैं स्वयं तिहारा
देन न जोग, लेहुँ उरलाई ※ कहि जगदीस लीन लपिटाई
वचन - पवनसुत सुनि हर्षाने ※ वेगि राम सुभ घरी पयाने

छं० उतर फाल्गुनी पहर निसा दुइ, सुभ छन - लगन बखाने ।
किय अभियान सवत्स धेनु, पुनि मृग, द्विज, दछिन लखाने ।।
शव, जम्बुकी, बाम कुक्कुटगन शकुन राम-अनुकूला ।
सूर्यवंश नक्षत्र रोहिणी, प्रकट दनुज कुल मूला[2] ।।

हनूर ए अपवित्र तुच्छ हृदासन ※ तव उपयुक्त नहे राखिते चरन
किन्तु ओहे कृपामय, बड़ साध मने ※ राम सीता दोंहे मिलि कबे दुइ जने
बसिया हनूर एइ हृदय आसने ※ पवित्र करिया दिबे हेरिब नयने
शास्त्रे बले मोक्ष पद परम सम्पद ※ किन्तु देखि मोक्षपदे विषम विपद
मोक्ष हैले तुमि आमि एकइ समान ※ एरूप घटिले हय तव असम्मान
श्रीराम हनूर प्रभु हनू रामदास ※ थाकुक सर्व्वदा एइ हनूर विश्वास
तुमि प्रभु आमि भृत्य चरणे तोमार ※ ए सम्बन्ध जेन प्रभु ना घुचे आमार
श्रीराम ब'लेन धन्य धन्य हनूमान ※ त्रिभुवने वीर नाहि तोमार समान
तोमार विक्रमे मोर लागे चमत्कार ※ कि दिब तोमारे आमि आमिइ तोमार
अन्य कि प्रसाद दिब, लह आलिंगन ※ एत ब'लि कोल देन कमललोचन
पवनपुत्रेर कथा शुनि हरषित ※ शुभ यात्रा करिलेन श्रीराम त्वरित
द्वितीय प्रहर रात्रि उत्तरफाल्गुनी ※ शुभक्षण शुभलग्न शुभफल गनि
दक्षिणे सवत्सा धेनु हरिण ब्राह्मण ※ देखे राम वामे शव-शिवा-कुम्भगण
सूर्य्यवंशी नृपतिर नक्षत्र रोहिनी ※ राक्षसगणेर मूला सर्व्व लोके जानि

१ प्रार्थना २ मूल नक्षत्र ।

सो 'रोहिणी' अकास 'मूल' तन रही सरोष निहारी।
लच्छन, जीतें राम, रावनहिं सहित बंस संहारी॥
करत कुलाहल, कपि असीम दल छायो धरनि-अकासा।
धाय सिन्धु-तट लतापतन सों उतरि बनाये बासा॥
दल बल सहित लखन पुनि रामा ※ सागर तीर लीन विश्रामा
सो लखि दनु-पायक[1] नित धावैं ※ सकल रावनहिं खबरि जनावैं

रावण को विभीषण का उपदेश

निकषा नाम लंकपति - माता ※ सुनि अति विपति विकम्पित गाता
विभीषनहिं वरनन सब कीना ※ सुत सुबुद्ध! सुनु धर्मप्रवीना
रावन अमित सुफल-तप भोगू ※ सिय हरि आज सकुल यमयोगू
हने विपुल दनु, तिन सन रारी ※ लखि प्रतच्छ मद-बस मतिमारी
हठ बस काहु-सीख जनि मानत ※ बनत अजान विपति सब जानत
अवसर रहत सीख तेंहि दीज ※ संकट - लंक निवारन कीजै
होय न जिमि रघुपति अभियाना[2] ※ करहु उपाय दनुज - कुल - त्राना
जननि-वयन सुनि वेगि विभीषन ※ सचिवन सह सोहत जहँ रावन
जाय जोरि कर अरज गुजारी ※ सुनहु ध्यान धरि विनय हमारी

मूला ऋक्ष देखिले रोहणी बड़ रोषे ※ सवंशे मरिबे तेइ रावण राक्षसे
चलिल वानर ठाट, नाहि दिश् पाश ※ कटक जुड़िया जाय मेदिनी-आकाश
किलिकिलि शब्द करि कपिगण चले ※ उत्तरिल गिया सबे सागरेर कूले
रहिवारे लता पता दिया करे घर ※ अवस्थिति करिलेक सकल वानर
सेइ स्थाने रहिलेन श्रीराम - लक्ष्मण ※ चर-मुखे वार्त्ता नित्य पाय से रावण

रावणेर प्रति विभीषणेर उपदेश

निकषा नामेते बुड़ी रावणेर मा ※ विपद् शुनिया तार त्रासे काँपे गा
आसिया कहिछे बुड़ी विभीषण प्रति ※ शुन पुत्र तुमि त धार्मिक शुद्ध मति
रावण तपेर फले यत सुख भुञ्जे ※ आनिया रामेर सीता सवंशे वा मजे
ये मारे राक्षसे, करे तार सने वाद ※ देखिया ना देखे दुष्ट एतेक प्रमाद
आर ना थाकिब हेन पुत्रेर निकट ※ देखिया ना देखे पुत्र एहेन संकट
अबोधे बुझाह, जेन राम ना बाहुड़े ※ यावत् रामेर बाणे लंका नाहि पुड़े
मातृ-वाक्य विभीषण चलिल सत्वर ※ पात्र मित्र सह यथा आछे लंकेश्वर
कृताञ्जलि हइया कहेन विभीषण ※ सभास्थ सकले शुद्ध करिछे श्रवण

१ दैत्यों के दूत २ चढ़ाई।

तव तप-फल यह सम्पति सारी * राम-कोप मनु सकल उजारी[1]

दो० तात! धरी जेंहि सिय हरी, लंक सीय पद दीन।
सपन अशुभ, बहु अपशकुन, नित प्रति लखौं नवीन ॥ ७८ ॥

घर-घर गीध-यूथ मडराहीं * जम्बुक-रव[2], निसि निद्रा नाहीं
वृद्ध कालिका दसन विशाला * झलक साँझ नित द्वार कराला
नित उत्पात लखहुँ चहुँ ओरा * तात! राम-विक्रम अति घोरा
नर रघुपति वानर सुग्रीवा * तिन भय उचित न, कह दशग्रीवा
बन्धु-सीख रावनहिं न भाई * दुष्ट मंत्रिगन लीन बुलाई
कहौ सचिवगन जुगुति प्रकारू * जेंहि विधि होय राम-संहारू
सेनिप[3] कहत सदर्प 'प्रहस्ता' * वन्य-जाति कपि निपट असक्ता[4]
गिरि-नद-नदी-गुहा-निर्झरनी * कपि-निर्बीज[5] करौं यह धरनी
बज्रकण्ठ दनु दसन विशाला * लौह मुषल कर वचन कराला
लौह-मुषल रन भेटहुँ कीसा * एक-एक कपि भञ्जहुँ सीसा
'त्रिशिरा' निज बल-बिक्रम गावै * को मम रहत लंक धसि पावै
बन उजारि कपि लंक जराई * सो लखि उर गलानि अति छाई
आयसु, तात! मिलै रन जाई * विक्रम लखहुँ लखन-रघुराई

अनेक तपेर फले ए सब सम्पद * रामेर प्रतापे भाई, घटिबे विपद
यतदिन सीतारे आनिले लंकापुर * ततदिन देखि भाइ कुस्वप्न प्रचुर
झाँके झाँके शकुनि पड़िछे गृहचाले * रात्रे नाहि निद्रा हय शृगालेर रोले
काली हेन बुड़ि देखि दशन विकट * सन्ध्याकाले ऊँकि मारे द्वारेर निकट
विविध उत्पात भाइ, देखि सदाकाल * रामचन्द्र अति वीर, विक्रमे विशाल
रावण ब'लिछे, कि रामेर एत डर * कि करिते पारे राम सुग्रीव वानर
रावण भ्रातार वाक्य न शुनिल काने * मन्त्रणा करिते दुष्ट मंत्रिगणे आने
रावण वलिछे, मन्त्रि युक्ति कर सार * कि प्रकारे राघवेरे करिब संहार
वीर दर्पे कहिछे प्रहस्त सेनापति * कि करिते पारे से वनेर पशुजाति
पर्व्वतेर गुहा आर नद नदी कूले * वानरेर नाम ना राखिब भूमण्डले
बज्रकण्ठ निशाचर दशन विकट * लोहार मुषल हाते कहे अकपट
लोहार मुषल ल'ये प्रवेशिब रने * माथा भांगि बधिब वानर जने जने
त्रिशिरा विक्रम करे, आमि आछि किसे * लंकाय थाकिते आमि कोन बेटा आसे
बन भांगे लंका दाह करे हनूमान * लंकाय थाकिते आमि एत अपमान
पाइले तोमार आज्ञा करि आमि रन * देखिब केमन राम केमन लक्ष्मन

---

१ नष्ट कर देना २ गीदड़ों का चीत्कार ३ सेनापति ४ असमर्थ ५ निर्मूल।

कहति 'अकम्पन' आयसु पावौं ※ कपिन भच्छि चिर साध मिटावौं
कुम्भकर्ण-सुत दोउ रनचातुर ※ 'कुम्भ-निकुम्भ' सुभट रनआतुर
मुषल शेल आयुध बहु नाना ※ रन हित साज कुतूहल ठाना

दो० नेक धीर धरि वीरगण ! बोलहु सोचि सम्हारि ।
जने-जने[1] गहि विभीषण पुनि-पुनि कहत पुकारि ।। ७६ ।।

बढ़ि-बढ़ि कथन न कहुँ निस्तारा ※ अग्रज[2]! सुनु हित-बैन हमारा
सिय अर्पन करि, पुनि भय नाहीं ※ राखत सिय मनु प्रान नसाहीं
विनसै लंक, नाथ ! केहि हेतू ※ पठवहु सीय जहाँ रघुकेतू

विभीषण की छाती पर रावण का पाद-प्रहार

सुमति-विभीषण सुनि दशभाला ※ अनल-कोप दहकति तन ज्वाला
मैं कनिष्ठ तैं ज्येष्ठ सरूपा ※ तैं सधर्म मैं अधरम - रूपा
काँपति निरखि तुच्छ मनु-देहा[3] ※ यहि विधि अनुज गुजर[4] जनि गेहा
दूर-दूर, धिक् ! बन्धु विभीषन ※ उचित पन्थ मोहिं, करौं विषम रन
कुपित बैन दसकन्ध सुनावा ※ सुमति विभीषण पुनि समुझावा
निसिचरपति सम तव बल-ज्ञाना ※ निज मत तुम तेहि भाँति बखाना
जो प्रतच्छ प्रकटहिं भगवाना ※ चीन्हत तदपि न जन बिन ज्ञाना

अकम्पन ब'ले, राजा, तव आज्ञा पाइ ※ अनेक दिनेर साध, कपि धरे खाइ
कुम्भ ओ निकुम्भ कुम्भकर्णेर नन्दन ※ उभयेर कत दर्प करिवारे रन
जाठि जाठा झकड़ा मुषल शेल आर ※ लइया साजिल युद्धे, लागे चमत्कार
हाते धरि विभीषण कहे जने जने ※ स्थिर हओ स्थिर हओ, शुन वीरगने
ए सबार वाक्ये भाइ ना करिह भर ※ हितवाक्य ब'लि भाइ शुन लंकेश्वर
सीता पाठाइया दिले थाकिबे निर्भय ※ सीतारे राखिले भाइ जीवन संशय
कि निमित्त मजाइते चाह लंकापुरी ※ पाठाइया देह सीता रामेर सुन्दरी

विभीषणेर वक्षस्थले रावणेर पदाघात

एत यदि विभीषण रावणेर ब'ले ※ कोपेते रावण राजा अग्नि हेन ज्वले
विभीषण जेन ज्येष्ठ, आमि त कनिष्ठ ※ आमि अधर्म्मिष्ठ बड, से बड़ धर्म्मिष्ठ
मानुष बेटार भये काँपे विभीषन ※ हेन भाइ ना राखिब आपन भवन
विभीषणे दूर कर, युक्ति बलि सार ※ युद्ध विना गति नाहि किसेर विचार
एत यदि क्रोध करि ब'लिल रावण ※ आर बार बलितेछे साधु विभीषण
निशाचर - राज, तव यथा ज्ञान बल ※ कहिले ताहार योग्य वचन सकल
प्रकटेओ ईश्वरे ना चिने अज्ञजन ※ अन्ध जेन जानिते ना पारये रतन

---

१ एक एक को २ ज्येष्ठ बन्धु रावण ! ३ तुच्छ मानव (राम) ४ गुजारा ।

अन्ध लखत जनि रतन-सरूपा * दिवस उलूकहिं जिमि निसि रूपा
यहि विधि तव न दोष दशमाथा * माया बस न लखत रघुनाथा
नयन प्रतच्छ, न दरसन लहही * अहह! धन्य माया-प्रभु अहही
यदपि सत्य, सुनु पुनि दसभाला * निजकर[1] जनि नेंउतहु[2] निज काला[3]
कालकूट[4] सिय लंक-निवासू * लहौ कटक सह यमपुर-वासू
सम्पद विपुल, विपुल तव राजू * स्वयं विपति सौंपति केंहि काजू

दो० तप अनन्त करि सुलभ किय, सम्पति सिद्धि अतीत[5]।
कछुक दिवस उपभोग करु, तजिय तात अनरीत ॥ ८० ॥

यदपि कछुक कटु सीख हमारी * कहहुँ बिबस तव हित मन धारी
सीख न उचित देय भय पाई * अनुचित मौन[6] पाप अधिकाई
यहि विधि सोचि कहौं हितबानी * मोंहि भरोस, करिहौ सुख मानी
राम धर्म-मय जगत बखानी * अधरम-संगति जीवन-हानी
मत्त-मतंग[7] निरंकुस एका * रुकत न, किय विध्वंस अनेका
धान्य-धाम वन सकल उजारे * कछु पालित-गज[8] तेंहि अनुसारे
खल-संगति सज्जन-मति हरई * त्यागि सुमति पातक सो करई
व्याध कुशल जानत सब अंगा[9] * रसरिन[10] बस करि लेत मतंगा

रहियाछे चक्षु किन्तु देखिते ना पाय * पेचक जेमन सूर्य्यमण्डले दिवाय
इहातेउ नाहि मानि तोमार दूषन * ये हेतु निजेरे प्रभु करये गोपन
प्रणाम करि जे ताँर शकति मायाय * नयन आगेओ जेइ ढाकि राखे ताँय
थाकुक से सब कथा, एखन तोमारे * कहि आमि, ना मजाओ तुमि आपनेरे
आनियाछ सीता काल भुजंगीरे घरे * राखिले ससैन्ये जाबे शमन नगरे
एहेन सुन्दर राज्य, एहेन सम्पद् * निज दोषे केन आनि घटाओ विपद
चिरकाल तप करि पेयेछ ए राज्य * किछु दिन भोग कर छाड़िया अन्याय
यदि बल, तुमि केन कह कुवचन * तार अभिप्राय कहि, करह श्रवन
जिज्ञासिले मंत्रणा कहिते हय हित * अन्यथा करिले हय पाप समुचित
अतएव कहितेछि तोमा हितकथा * कदाचित इहा नाहि करह अन्यथा
धार्म्मिक श्रीराम देख सर्व्वलोके कय * अधार्म्मिक संगे थाका जीवन संशय
देख एक मत्त हस्ती प्रवेशिले वने * सकलेर क्षति करे, क्षमा नाहि माने
क्षेत्रेर शस्यादि खाय, घर-द्वार भांगे * खाद्य लोभे पोषा हस्ती मिले तार संगे
दुष्टेर संगेते हय शिष्ट अपराध * हस्तीर बन्धन हेतु उपयुक्त व्याध
स्वभावेते व्याध जाति जाने नाना संधि * शत हस्त दड़ि दिया हस्ती करे बन्दी

१ अपने हाथों २ निमंत्रण न दो ३ मृत्यु ४ काला नाग का विष ५ अपार ६ खामोशी, चुप्पी ७ पागल हाथी ८ पालतू हाथी ९ सारे करतब १० रस्सियों से।

चरत जहाँ नित गज - समुदाई ※ खाद्य - द्रव्य बहु राखेउ जाई
लोभ-अहार[1] कण्ठ करि आगे ※ रज्जु - फन्द परि फसत अभागे
खल-संगति जिमि सज्जन-नासू ※ तव पातक तिमि लंक-विनासू
कथन - बिभीषन सुनि लंकेसा ※ अतिशय कोप प्रमत्त अशेसा
कटकटात पुनि शब्द कराला ※ करि हुंकार कहत दशभाला
रे दुर्मति ! गर्जत दससीसा ※ यम के फन्द लखत तव सीसा
चौदह चौयुग आयु हमारी ※ कबहुँ न केहु कटु वैन उचारी
मम सन, सुर-सुरनाथ-विवादा ※ सके न कहि ते वचन-प्रमादा

दो० छोटे मुख कहि दुर्वचन, लहै कोप-दसभाल ।
तड़कि आय भुइँ, तमकि पुनि, कर लिय खड्ग कराल ।। ८१ ।।

पद-अघात तेंहि डगमग लंका ※ तासु कोप लखि दनुज ससंका
दसमुख बेगि चलेउ पुनि धाई ※ अनुज-हीय हनि लात जमाई
धरनि अचेत विभीषन पाता ※ जिमि समूल छिति विटप प्रपाता
निरखि निसिचरन अति दुख पावा ※ हाहाकार दनुज - दल छावा
पुनि सुर-सुरपति देखि जुड़ाने ※ कहत परस्पर आनँदसाने
बन्धु विभीषन पाद प्रहारी ※ कुशल न, निश्चित मरन सुरारी[2]

येखानेते हस्ती सब चरे निरन्तर ※ भक्ष्य द्रव्य उपहार राखये विस्तर
खाइवार लोभे हस्ती गला बड़ाइल ※ गलाय लागिया दड़ि सवाइ पड़िल
दुष्टेर मिशाले हय शिष्टेर बन्धन ※ सेइ मत तव पापे मजे पुरीजन
जेइ मात्र ए कथा कहिल विभीषन ※ महाकोपे उन्मत्त हइल दशानन
दन्त कड़मड़ि करि छाड़िया हुंकार ※ विकट निनादे कहितेछे आरबार
एकि एकि एकि रे दुर्म्मति विभीषन ※ धरियाछे बुद्धि तोर चिकुर शमन
चौद्द चतुर्युग हैल आमार जनम ※ इति मध्ये शुनि नाइ हेन दुर्व्वचन
करियाछि कलह इन्द्रादि देवसने ※ केह पारे नाइ कहिवारे कुवचने
ताहा शुनाइलि तुइ क्षुद्र हये मोरे ※ किन्तु तार फल एइ देखाइ रे तोरे
एत कहि खरतर खड्ग करि करे ※ लम्फ दिया पड़िलेक भूतल उपरे
तार पदाघाते लंका करे टलमल ※ क्रोध देखि अति भीत राक्षस सकल
तबे सेइ दशानन महावेगे चले ※ पदाघात कैला विभीषण वक्षःस्थले
विभीषण अचेतन हइया ताहार ※ पड़िल धरणीतले छिन्न - तरु - प्राय
ताहा देखि यावतीय निशाचरगन ※ हाहाकार करे सबे अति दुःखिमन
ताहा देखि देवगण आर सुरपति ※ परस्पर कहितेछे एसब भारती

१ भोजन की लालच में २ देवताओं का शत्रु रावण ।

निज अपमान न रामहिं चिन्ता ※ भक्त - अनादर दुसह अनन्ता
कहि-सुनि, इत प्रहस्त पुनि कीना ※ सिंहासन दसमुख आसीना
कर सों खड्ग सचिव लै जाई ※ कोष[1] सौंपि दिय अन्त बराई[2]
सचिव-विभीषण निसिचर चारी ※ तेहि सम्हारि आसन बैठारी
सकल सभा यहि बिच जड़रूपा ※ निरखत सब पुत्तली[3] सरूपा

विभीषण का लंका-त्याग

पुनि कछु क्षण विवेक उर धारी ※ बन्धु विभीषण गिरा उचारी
महाराज ! अपकर्म तुम्हारा ※ किञ्चित खेद न मैं उर धारा
अतिशय विभव-मत्त-जन-रीती ※ जग तिन विदित सहज दुर्नीती
एक, तात ! मोहिं खेद अपारा ※ लेहुँ विदा तव करि परिहारा[4]
उर मम एक अनन्त कलेसू ※ दनु - कुल भरै पाप - लंकेसू

दो० कहेउ दसानन कोपि सुनि बन्धु बखानत नीत ।
जाति-नेह तव प्रकट भल, धन्य ! जाति के मीत ॥ ८२ ॥

जाति-विपति लखि तोहिं हुलासू ※ जाति-हृदय तव मोहिं प्रकासू
मानी-धनी जाति महँ कोई ※ निरखत ताहि दुसह दुख होई

गेल गेल गेल एवे निश्चित रावण ※ विभीषण अंगे करि चरण अर्पण
वरञ्च सहेन राम निज तिरस्कार ※ भक्त अपमान सह्य ना हय ताँहार
एखाने प्रहस्त उठि धरि दशानने ※ सान्त्वना करिया बसाइल सिंहासने
हस्त हैते काड़िया लइल खड्गखान ※ कोषे आच्छादिया राखिलेन अन्यस्थान
विभीषण मंत्री चारिजन निशाचर ※ तुलि बसाइल ताँरे आसन उपर
क्षण काल पर्य्यन्त तावत् सभाजन ※ रहिला निस्तब्ध ह'ये पुत्तली जेमन

विभीषणेर लंकात्याग

विभीषण क्षणकाल करि विवेचन ※ पुनर्व्वार रावणे कहेन ए वचन
महाराज, करिले जे कर्म्म आचरन ※ इहाते दुःखित किछु नहे मोर मन
ऐश्वर्य्य - मदेते मत्त जारा अतिशय ※ ताहादेर एइ रूपे दुःखभाव हय
इहातेउ नाहि मोर वड़ दुःख आर ※ चलिलाम आमि तोमा करि परिहार
एकमात्र खेद एइ रहि गेल मने ※ मजिल राक्षस-कुल तोमार दूषने
हेन वाणी शुनि अति क्रुद्ध लंकापति ※ कहितेछे पुनर्व्वार विभीषण प्रति
जानि जानि विभीषण, ज्ञातिर हृदय ※ ज्ञातिर विपद् देखि आनन्दित हय
ज्ञातिमध्ये केह यदि हय धनी सुखी ※ ताहा देखि अन्य ज्ञाति हय मनोदुःखी

१ म्यान में २ हटा दिया ३ जड़ मूर्ति ४ परित्याग ।

यदपि मरन-निज, तबहुँ सुखारी ※ किन्तु न विभव-जाति रुचिकारी
कपटाचार, नेह दरसाई ※ ढूँढ़त छिद्र जहाँ लौं पाई
रञ्च दोष पावत प्रतिकूला ※ करत उपाय विनास-समूला
विप्र-स्वभाव सहज तप-शीला ※ वनितन चपल सहज जिमि लीला
गो-धन दुग्ध विदित सब काऊ ※ जाति-द्रोह तव सहज स्वभाऊ
करु तजि लंक गमन छन अबहीं ※ तव बिन सकल निरापद रहहीं
नीति शास्त्र इमि ज्ञान बखाना ※ सुनु शठ! प्रस्तुत सकल प्रमाना
उचित संग-रिपु अथच[1] भुजंगा[2] ※ रिपु-सेवक जनि समुचित संगा
यदपि अनुज, तैं रिपु-अनुकूला[3] ※ तव सत्संग सदा प्रतिकूला
अतः गमन करु तजि मम देसू ※ विलमत[4] अतिशय होय कलेसू
सुनि मतिमान विभीषण एही ※ पुनि सविवेक उतर इमि देही
ठकुरसुहाती[5] सुलभ सदाहीं ※ कटु-हित कथन-श्रवन जग नाहीं[6]
निश्चय तव यमपुर पग धारन ※ ममहित-वानि अरुचि यहि कारन
अरुन्धती[7] दृग तर जनि आवै ※ सुहृद-वचन श्रवनन नहि भावै

दो० गहति नासिका - रन्ध्र जनि गन्ध - दीप - निर्वान।
एते लच्छन - युक्त जे, ते मानव म्रियमान[8] ॥ ८३ ॥

वरञ्च आपन मृत्यु पारे सहिवारे ※ ज्ञातिर ऐश्वर्य्य किन्तु सहिते ना पारे
ताहे पुनः कापट्य करिया प्रकाशन ※ निरन्तर छिद्र तार करे अन्वेषन
पावा मात्र कोन छिद्र विविध प्रकारे ※ आयोजन करे समूलेते नाशिवारे
स्वभावतः रहे यथा तपस्या ब्राह्मने ※ चापल्य नारीते, यथा दुग्ध गाभीस्तने
सेइ रूप निरन्तर राखिबे प्रत्यय ※ ज्ञाति हैते स्वभावतः थाके महाभय
जाह जाह लंका छाड़ि तुमि एइ क्षने ※ तुमि गेले आमरा थाकिब सुखी मने
इहाते प्रमाण हय नीति शास्त्र ज्ञान ※ तार अर्थ कहि आमि तव विद्यमान
वरञ्च भुजंग किंवा शत्रु संगे रबे ※ शत्रु सेवि-जन-सहवासी नाहि हबे
एके तुमि ज्ञाति, ताहे शत्रु-भक्तिमान ※ तुमिह थाकिते मोर ना हबे कल्यान
अतएव जाह तुमि छाड़ि मोर देश ※ विलम्ब हइले पाबे अतिशय क्लेश
एत कथा शुनि विभीषण महामति ※ कहिते लागिल पुनर्व्वार ए भारती
प्रियवादि-जन राजा, सर्व्वत्र सुलभ ※ अप्रिय पथ्येर वक्ता श्रोताउ दुर्लभ
निश्चय धरेछे तव चिकुरे शमन ※ ताइ मोर हित वाक्य ना कैले ग्रहन
किवा अरुन्धती, किवा सुहृद वचन ※ प्रदीप-निर्व्वाण-गंध किवा दुःसहन

---

१ अथवा २ सर्प ३ शत्रु से सहानुभूति रखनेवाला ४ ठहर कर समय बिताने से ५ चापलूसी ६ भली किन्तु कड़ुई बात कहने-सुननेवाले दोनो दुर्लभ हैं ७ अरुन्धती नक्षत्र ८ मरने के समीप।

उर मम कथन धरेउ, लंकेसू! ※ त्रिलपत अनुज तजेउ तव देसू
यदपि छोभ मोहिं बन्धु-बियोगू ※ दहकति सदन तजत बुध लोगू[1]
तात! कीन जो मम अपमाना ※ अग्रज समुझि माष[2] जनि माना
जो कोउ अन्य करत अपकाजू ※ समुचित उतर देत, दनुराजू![3]
कहेउँ सोचि मैं राजु - भलाई ※ प्रतिफल प्रभु मोहिं लात जमाई
तव पद तजि रघुपति गहि चरना ※ यहि छन लीन अकिञ्चन[4] सरना
अरज एक सुनु मम, भट! मानी ※ अन्त समय सुमिरेउ मम वानी
कहैं विभीषण दनुजन हेरी ※ चलै संग मम रुचि जेहि केरी
जेहि उर जीवन-साध समाई ※ चलि रघुनाथ लेय सेवकाई
कहि इमि बन्दि निसाचरराई ※ उठि पथ-गगन विभीषण जाई
सो लखि सचिव-विभीषन चारी ※ तेहि पद, सहित मोद, अनुसारी
अनिल, अनल, सम्पाति सहोदर ※ भीमादिक सुत-मालि निसाचर
लै तिन संग चले जहँ जननी ※ कथा विनीत विभीषन वरनी
अनुमति-मातु लीन शिर नाई ※ जहँ प्रिय बसति सदन तहँ जाई
'सरमा' नाम तियहिं उर लाई ※ सहित प्रेम सब कथा सुनाई

नाहि देखे नाहि शुने नाहि पाय घ्रान ※ हेन दशा यार, तारे मृत्यु सन्निधान
एइ कथा मने रेखो भाइ लंकेश्वर ※ कान्दिया चलिल तव कनिष्ठ सोदर
वहु दुःखे करिलाम तोमारे वर्ज्जन ※ दह्यमान गृह यथा त्यजे विज्ञजन
करिले तुमि जे मोरे यत परिभव ※ ज्येष्ठ ब'लि सहिलाम ताहा आमि सब
अन्य कोन जन यदि करित ए काज ※ देखाताम तारे फल निशाचरराज
ब'लिलाम राज्यरक्षा हेतु ये बचन ※ से कारणे हइलाम लाथिर भाजन
तोमार चरण छाड़ि रामेर चरन ※ शरण लइल आजि एइ अकिञ्चन
एक कथा ब'लि आमि भाइ हे रावन ※ मृत्युकाले स्मरिउ हे आमार वचन
शुन शुन मोर कथा ओहे बन्धुगन ※ चल मोर संगे यदि हय कारो मन
यद्यपि वासना हय जीवन राखिते ※ चल तबे श्रीरामेर चरण सेविते
एत कहि रावणेरे करिया बन्दन ※ उठिया आकाश पथे चले विभीषन
ताहा देखि ताँहार अमात्य चारि जन ※ आनन्दे करिल ताँर पश्चाते गमन
अनिल अनल भीम सम्पाति अपर ※ एइ चारिजन मालि - सन्तान सोदर
ताहादेर सहित जाइया विभीषन ※ मातार निकटे सब कैला निवेदन
ताँर अनुमति ल'ये प्रणमिला ताँरे ※ तार पर गेल निज भवन माझारे
निज भार्य्या सरमाके निकट डाकिया ※ कहिते लागिल तारे प्रणय करिया

---

१ बुद्धिमान् २ बुरा ३ हे निशिचरनाथ! ४ तुच्छ ने।

प्रिय ! उर धारि शरन-रघुकेतू ❋ चलेउँ चारि मैं सचिव समेतू

दो० सिय समीप रहि सर्वदा, जो सेवहु मन लाय ।
सीय-अनुग्रह-सुफल मोंहि, लेयँ राम उर लाय ।।
सरमा सिय-अनुरागिनी, अतुल शील गुन खानि ।
आयसु लहि, पुनि विदा किय, पतिहिं जोरि जुग पानि ।। ८४ ।।

निज शस्त्रास्त्र विभीषण लीन्हा ❋ सचिवन सहित गमन पुनि कीन्हा
पाद - प्रहार कुतूहल रचना ❋ रावन त्यागि विभीषन - गमना
कृत्तिवास सो गाय बखाना ❋ भक्त सभक्ति सुनत धरि ध्याना

विभीषण का कुवेरालय-गमन और कुवेर द्वारा उपदेश

गगन-पन्थ गमनत तजि लंका ❋ सचिवन प्रकट करत निज शंका
प्रस्तुत विपति निरखि यहि काला ❋ कीन अनादर मैं दशभाला
जो अब सरन लहौं रघुकेतू ❋ अपजस अबुध[1] देयँ यहि हेतू
अवसर टारि चलहिं जहँ रामा ❋ दशमुख लहै जबहिं यमधामा
तब लौं बसहिं कतौं[2] वन जाई ❋ राम-पदुम-पद ध्यान लगाई
करि सलाह संयम उर धारा ❋ थिर न चपल मन क्लेश अपारा

प्रिये, आमि रामचन्द्र शरण लइते ❋ चलिलाम एइ चारि अमात्य सहिते
तुमि जानकीर काछे थाक निरन्तर ❋ करिबे ताँहार सेवा हइया तत्पर
तिन यदि अनुग्रह करेन तोमारे ❋ तबे राम अंगीकार करिबेन मोरे
सुशीला सरमा जानकीते भक्तिमती ❋ 'जे आज्ञा' बलिया ताहे दिला अनुमति
तबे विभीषण निज अस्त्र-शस्त्र निया ❋ यात्रा कैला चारि मंत्री संगेते करिया
विभीषणे पदाघात अपूर्व्वकथन ❋ रावणेरे त्यजिया चलेन विभीषन
कृत्तिवास रचिलेन गीत रामायन ❋ भक्तिभावे शुन सब रामभक्तजन

विभीषण-कुबेर सम्वाद

लंका छाड़ि व्योमपथे जाइते जाइते ❋ मंत्रिगणे विभीषण लागिला कहिते
उपस्थित विपद् करिया निरीक्षण ❋ करिलाम आमिह अग्रजे उपेक्षण
ताहा यदि राम काछे करि हे गमन ❋ अख्याति करिबे मोर यत अज्ञजन
अतएव मने करि, एबे ना जाइबे ❋ रावण विनाश ह'ले प्रस्थान करिबे
एक्षणे थाकिया कोन निर्ज्जन कानने ❋ श्रीराम-चरणपद्म ध्यान करि मने
एइ परामर्श करि, किन्तु निज मन ❋ सुस्थिर करिते नारि पाइया जातन

१ नासमझ लोग २ कहीं अन्यत्र ।

मन आतुर सेवहिं पद-रामा ※ लहत न चंचल मन विश्रामा
किमि कर्तव्य, होत जनि निश्चय ※ कहौ सचिव! मेटौ उर संशय
युक्ति बहोरि एक उर आई ※ करहु विचार कहउँ समुझाई
अग्रज[1] मम कुबेर जो भ्राता ※ परम सुशील शुद्धमति ज्ञाता
अकथ कुबेर अतुल गुनरासी ※ जासु सखा शंकर अविनासी
लेहिं सीख चलि, आयसु पाई ※ करहिं यथाविधि, अस मन आई
युक्ति-विभीषन सबन सुहाई ※ निश्चय कीन सचिव-समुदाई

दो० धनपति[2] आयसु लेन हित, गमने पन्थ - अकास ।
मुदित विभीषण-सचिवगन, पहुँचे गिरि कैलास ।। ८५ ।।

तहँ शिवलोक, शम्भु धरि ध्याना ※ जानि गौरि प्रति सकल बखाना
अनुज विभीषन दसमुख केरू ※ जात मिलन जहँ सुहृद कुबेरू
सिय समर्पि पुनि राम-मिताई ※ अनुज-सीख रावनहिं न भाई
कीन अनादर अति लंकेसू ※ यहि कारन आगम यहि देसू
यदपि विभीषन - उर श्रीरामा ※ संशय चित्त, न उर विश्रामा
जेहि विधि संसय होय निवारन ※ प्रिय कुबेर ढिग, किय पगधारन
हरैं कुबेर न संसय - हेतू ※ तरै विभीषन जनि भव - सेतू

राम-पाद-पद्म मन करिते सेवन ※ चञ्चल हयेछे बड़ ना माने वारण
अतएव कि करिब, ना हय निश्चय ※ तोमा सबे कह, इथे कर्त्तव्य कि हय
करितेछि आमि इथे परामर्श आर ※ ताहाओ कहि ये, शुनि करह विचार
मोदेर अग्रज भ्राता हन धनपति ※ सुशील परम विज्ञ अति शुद्धमति
कि कहिब आर ताँर गुणेर विस्तार ※ सखा हयेछेन शम्भु गुणेते जाँहार
ताँरे जिज्ञासिले या करेन आज्ञापन ※ ताहाइ करिव, एइ लय मोर मन
विभीषण वाणी शुनि चारि मंत्री कय ※ करेछेन एइ युक्ति सुन्दर निश्चय
एतेक वचन शुनि आनन्दित मन ※ व्योमपथे कैलासे चलिला विभीषन
एखानेते निज स्थाने थाकि पशुपति ※ सकल वृत्तांत जानि कन शिवा प्रति
शुन प्रिये, रावण अनुज विभीषन ※ करितेछे सखार निकटे आगमन
सीता फिरि दिया राम संगे मिलिवारे ※ ब'लेछिल सेइ रावणेरे बारे बारे
सेइ ताहा ना शुनि करेछे अपमान ※ एइ लागि तारे छाड़ि आसिछे एखान
हइयाछे तार मन श्रीरामे भजिते ※ किन्तु करितेछे पुनः नाना शंका चिते
एखन संशयच्छेद करिवार आशे ※ आसितेछे मोर प्रिय सुहृदेर पाशे
यदि सखा ना पारेन बुझाइते तारे ※ तवे पड़िबेक सेइ संकट सागरे

---

१ बड़ा भाई २ कुबेर।

यहि कारन चलि स्वयं बुझाई ※ जेहि विधि लेय सरन - रघुराई
यदि कोउ राम-चरन अनुरागा ※ अतिव, उमा! मम उर सुखपागा
जीव असंख्य बसत यहि लोकू ※ पर हित विरल[1] व्यथा पर शोकू
विरल धर्मरत हितुन - अनेका[2] ※ धर्मिन बिच मुमुक्ष[3] जन एका
कोटि मुमुक्ष, मुक्त-जन कोऊ ※ मुक्तन राम-भक्त कोउ-कोऊ
यहि विधि रामभक्त यदि एका ※ लहत मुक्ति लहि दरस अनेका
मम अभिलाष सदा यहि हेतू ※ सुमिरै विश्व चरन - रघुकेतू
गहै विभीषन पद - रघुराई ※ सकल तासु तौ बिपति नसाई
तौ चलि अबहि निवारइँ[4] संशय ※ जेहि विधि लहै राम-पद निश्चय

दो० पंचानन मत धारि इमि, 'नन्दिहिं'[5] आयसु दीन ।
साजि 'वृषभ' तत्काल तहँ, नन्दी प्रस्तुत कीन ।। ८६ ।।

पशुपति बेगि उमा-कर[6] लीना ※ वृष वाहन दोउ भये असीना
तेहि छन उमा-उमापति शोभा ※ निरखि न केहि मन उपजत लोभा
सहित सभासद संभु सवारी ※ सखा कुबेर - निवास पधारी
निरखेउ आवत दूरि महेसा ※ गमने स्वागत हेत धनेसा[7]

अतएव चल, जाब आमिओ सेथाय ※ राम काछे पाठाइते हइबे ताहाय
यदि केह रामचन्द्र करये आश्रय ※ तबे मोर कतइ परमानन्द हय
देख देख संसार असंख्य जीवमय ※ तार मध्ये हिते रत केह केह हय
तार कोटि मध्ये एक जन धर्म्मपर ※ तार कोटि मध्येते मुमुक्ष एक नर
तार कोटि मध्ये एक जन हय मुक्त ※ तार कोटि मध्ये एक रामभक्ति युक्त
हेन राम भक्त यदि हय कोन जन ※ ताँर गुणे कत लोक पाय विमोचन
अतएव सतत वासना मोर मने ※ भजुक सकल लोक श्रीराम चरने
ताहे विभीषण गेले राम सन्निकटे ※ हइबे ताँहार कत हित ए संकटे
अतएव खण्डि तार सकल संशय ※ पाठाइब प्रभुकाछे अद्यइ निश्चय
एत कहि नन्दीरे कहेन त्रिलोचन ※ शीघ्र साजाइया वृषे कर आनयन
तव नन्दी गिया वृषे करिया साजन ※ करिलेक प्रभुर अग्रेते आनयन
तबे महादेव उठि शिवा-करे धरि ※ आरोहण करिलेन वृषेर उपरि
हइल जेरूप शोभा सेकाले ताँहार ※ ताहा भावि मन सुखी ना हय काहार
एइ रूपे पार्षद सहित पञ्चानन ※ गमन करिला निज सखार भवन
दूर हैते ताँरे निरखिया धनपति ※ अग्रसर हइया आसिला शीघ्रगति

---

१ कोई-कोई २ अनेक परोकारियों में ३ मोक्ष चाहनेवाला ४ दूर करें ५ शिव का पार्षद नन्दी ६ पार्वती का हाथ ७ कुबेर ।

वृष सों उतरि वृषाकपि[1] धाई ※ कौतुक लिय कुबेर लपिटाई
दोउ कर[2] दुहुन नेह सन लीना ※ आसन दिव्य भये आसीना
अखिल पार्षद, उमा भवानी ※ समुचित लिय आसन सुख मानी
युगुल मित्र धनपति पुनि शंकर ※ करत सप्रेम अलाप परस्पर
तबहिं विभीषन सचिवन लीन्हे ※ गिरि कैलास आय पग दीन्हे
कनक दिव्य मणि रचित ललामा ※ विश्कर्मा निर्मित छबिधामा
पुरी विभीषन कीन प्रवेसा ※ चले, सभा जहँ जुरी धनेसा[3]
दूरि विभीषन शंकर देखी ※ कहत कुबेरहिं मोद विशेषी
रावन-अनुज सधर्म विभीषन ※ करत तात ! तव तीर आगमन
सिय समीप पुनि राम मिताई ※ न्याय सीख रावनहिं बुझाई
किय अपमान कुपित लंकेसू ※ इमि तजि लंक इतै[4] तव देसू
राम-सरन तेहि जदपि सुहावा ※ किन्तु हृदय कछु संसय छावा

दो० तव सम्मति हित आगमन, हरहु विभीषन-पीर ।
धनपति ! बेगि सुबुद्धि दै, पठवहु रघुपति तीर ॥ ८७ ॥

मिलै विभीषन चलि रघुराई ※ रामहेतु अति मंगलदायी
रघुपति-सरन लहत, दिन फिरहीं ※ सरनागतहिं दनुजपति[5] करहीं

वृषाकपि वृष हैते नामिया भूतले ※ आलिंगन करिला कुवेरे कुतूहले
तबे दुइ जने कर धराधरि करि ※ बसिला जाइया दिव्य आसन-उपरि
शिवा आर यावतीय शिवभक्तगन ※ यथायोग्य स्थानेते बसिला सुखिमन
तबे पशुपति निज सखार सहित ※ करिलेन प्रेम आलापन समुचित
हेनकाले चारि मन्त्रि सने विभीषन ※ करिलेन कैलास भूधरे आगमन
दिव्य मणि सुवर्णे से रचित नगर ※ विश्वकर्म्मा विनिर्म्मिल परम सुन्दर
से नगरी माझे प्रवेशिया विभीषन ※ करिलेन कुबेरेर सभाय गमन
दूर हैते विभीषणे देखि पशुपति ※ कहिलेन सुखिमने कुबेरेर प्रति
देख सखे, रावण अनुज विभीषन ※ करितेछे तोमार निकटे आगमन
एइ क'हेछिल रावणेरे न्यायरीते ※ सीता फिरि दिया राम-सहित मिलिते
ताहा ना शुनिया से करेछे अपमान ※ एइलागि लंका छाड़ि आसिछे एस्थान
इच्छा हइयाछे रामे करिते आश्रय ※ किन्तु हृदयेते आछे किंचित संशय
इहा लागि आसितेछे तोमा जिज्ञासिते ※ पाठाओ इहारे राम निकटे त्वरिते
इह सेखानेते गेले विविध प्रकार ※ इहवेक श्रीरामचन्द्रेर उपकार
इह यावामात्र सखा करि रघुवर ※ इहारे करिबे राजा राक्षस-उपर

---

१ शंकर २ हाथ ३ कुवेर ४ इधर तुम्हारे यहाँ ५ लंका का राजा ।

जबहिं बुझावत शम्भु कुबेरा ✻ तेहि छन दुहुन विभीषन हेरा
मोद अपार अनन्द - विभोरा ✻ वरनत निरखि सचिवगन ओरा
अहह धन्य! मम धन्य कपाला[1] ✻ सभा विराजत शम्भु कृपाला
देवन सतत दरस अभिलाषा ✻ चरन, योगिजन जेहि चित राखा
पुनि, मुनि परम तत्व के ज्ञाता ✻ निरवधि[2] पद सभक्ति प्रणिपाता
लहेउँ सहज शिव-दरस पुनीता ✻ पूर्ण मनोरथ आजु अतीता[3]
यहि विधि दनुज-शिरोमनि आगे ✻ चलि पद दुहुन गहेउ अनुरागे
मृत्युञ्जय[4] पुनि आशिष दीन्हा ✻ अनुज कुबेर अलिंगन कीन्हा
दनुज[5] विराजत आयसु पाई ✻ धनपति पुनि पूछत कुसलाई
पन्थ समोद पार किय, ताता ✻ कहु तव लंक सुखी सब भ्राता?
बदन मलीन बिरस तव गाता ✻ कहु मन तव विषाद किमि जाता
धनपति के सुनि वचन विभीषन ✻ अति विनीत पुनि करत निवेदन
प्रभु! सुख सहित पन्थ मम बीता ✻ यहि छन लौं सब बन्धु सप्रीता
किन्तु उपस्थित दुख यहि काला ✻ तेहि कारन प्रस्तुत तत्काला

दो० हरि लायेउ दसकंध सिय, प्रभु-चर पवनकुमार।
आय भेंटि सिय, लंक पुनि जारि कीन सब छार ॥ ८८ ॥

एइ रूप कुवेरे कहेन पञ्चानन ✻ देखिला दूरेते थाकि ताँरे विभीषन
ताहे ह'ये अतिशय आनन्दित मति ✻ कहिते लागिला निज मंत्रिगण प्रति
एकि एकि देखियाछ! मोर भाग्योदय ✻ सभा माझे बसिया कृपालु मृत्युञ्जय
याँहारे देखिते वाञ्छा करे देवगण ✻ योगी सब ध्यान करे याँहार चरण
मुनिगण परमार्थ तत्व जानिवारे ✻ भक्तिभरे निरवधि सेवा करे याँरे
हेन प्रभु देखिते पाइनु अयतने ✻ मनोरथ परिपूर्ण हैल एत दिने
एइरूप कहिते कहिते आगे गिया ✻ पड़िलेन ताँहादेर पदे लोटाइया
महादेव आशीर्व्वाद कैला तार प्रति ✻ आलिंगन करिला सादरे धनपति
तबे आज्ञा ल'ये बसिलेन विभीषन ✻ कुबेर ताहार प्रति कहेन बचन
आसियाछ पथे सुखे भ्राता विभीषण ✻ कुशले आछय तव सब बन्धुगण
देखितेछि म्लान किछु तोमार बदन ✻ कह कह कि कारणे चिन्तायुक्त मन
कुबेरेर एइ वाक्य करिया श्रवण ✻ निवेदन करिते लागिला विभीषण
करियाछि प्रभु, पथे सुखे आगमन ✻ सम्प्रति आछये सुखे सब बन्धुजन
किन्तु एक दुःख हइतेछे उपस्थित ✻ इहा लागि आइलाम एखाने त्वरित
दादा दशानन रामचन्द्रेर भार्य्यारे ✻ हरिया आनियाछेन लंकार भितरे
ताँर दूत ह'ये आसिछिला हनूमान ✻ सीता भेटि गियाछेद हिया लंकाखान

---

१ भाग्य २ सर्वदा ३ बहुत दिनों का ४ शिव ५ विभीषण।

रघुपति लै कपि कटक अपारा ॐ लंक-सिन्धु-तट कीन उतारा
बन्धुहिं मैं बहुबिधि समुझाई ॐ लहौ, सीय दै, राम-मिताई
एक न मानि अनादर कीन्हा ॐ मैं तजि लंक सरन तव लीन्हा
यहि छन मम कर्तव्य, धनेसू ! ॐ मैं तव सरन, करहु निदेसू
सुनि कुबेर बोलत इमि बानी ॐ विदित सकल मोहिं प्रथम[1] कहानी
तदपि, सुनहुँ तव मुख, अभिलाषा ॐ तात ! सकल तुम समुचित भाषा
संसय तजि गमनहु अविरामा[2] ॐ जहँ सुग्रीव लखन प्रभु रामा
मिलत न बेर, राम रघुनाथा ॐ तुमहिं सखा सम करहिं सनाथा
अर्पहिं सकल निसाचर-देसू ॐ करि अभिषेक[3] करहिं लंकेसू
हनि दसकंध सबन्धुन, रामा ॐ तुमहिं राजु दै, गमनहिं धामा
यहि कारन तजि सब सन्देहू ॐ रघुपति-चरन-गमन मन देहू
संसय तजि, ह्वै राम सहाई ॐ करहु विनास दनुज-समुदाई
सुर-द्विज-धर्म विरुद्ध दसानन ॐ मारि, त्रिलोक बनहु सुख-कारन
लहै विश्व पुनि सुख-सन्तोषू ॐ यहि विधि लहहु अमरगन-तोषू[4]
ऋषिगन आसिष करहिं प्रदाना ॐ त्रिभुवन होय सुयश तव गाना

सम्प्रति से रामचन्द्र ल'ये कपिगन ॐ करेछेन सागर कूलेते आगमन
ताहा जानि कहिलाम आमिहि दादारे ॐ सीता फिरि दिया राम संगे मिलिवारे
ताहा ना शुनिया मोर कैला अपमान ॐ ए लागि त्यजिया लंका आइनु एस्थान
सम्प्रति उचित हय मोर कि करण ॐ याहा आज्ञा कर, आमि लइनु शरण
विभीषण-वाणी एइ शुनि धनपति ॐ कहिवारे आरम्भ करिला तार प्रति
इहा मोर जानि भ्राता, बहु पूर्व्व ह'ते ॐ तबु जिज्ञासिनु तव बदने शुनिते
कहियाछ जाहा तुमि ताहा समुचित ॐ ना हइबे इथे कोन प्रकारे चिन्तित
जाह जाह एइक्षणे करह गमन ॐ जेखाने आछेन राम सुग्रीव लक्ष्मन
तुमि जावामात्र रामचन्द्र वरावर ॐ सखा करिबेन तोमा प्रभु रघुवर
आर सेइ निशाचर राज्य अधिकारे ॐ करिबेन अभिषेक अद्यइ तोमारे
सवान्धवे रावणे करिया विनाशन ॐ तोमा राज्य दिया राम जाबेन भवन
अतएव त्यजि तुमि सकल सन्देह ॐ श्रीरामेर निकटे जाइते मन देह
राम संगे मिलिया सकल निशाचर ॐ संहार करह गिया त्यजि सब डर
रावण अधर्म्मी देव-द्विज द्रोहकारी ॐ त्रिभुवन सुखी कर ताहारे संहारि
हइबेक तबे एइ विश्वेर मंगल ॐ तोमारे हबेन तुष्ट अमर सकल
आशीर्व्वाद करिबे तोमारे ऋषिगन ॐ गाइबे तोमार यश ए तिन भुवन

१ पहले से ही प्रकट थी २ तुरंत ३ राज्यतिलक ४ देवताओं की तृप्ति ।

सदा विभीषन रघुपति-दासा ❊ शिव-कुबेर, कवि[1] कथा प्रकासा

विभीषण को शिव-उपदेश

दो० सीस लचाये विभीषन, सुनत धनद[2] के बैन।
संसय लखि शिव दयामय बोले करुनाऐन ।। ८९ ।।

अग्रज-बचन तुमहिं परमाना[3] ❊ तजहु अकारन संसय नाना
निज पुनि साधि विश्व कर हेतू ❊ अबहिं गमन करु जहँ रघुकेतू
आशुतोष[4], सुनि बैन, विभीषन ❊ सीस नाय इमि करत निवेदन
प्रभु कुबेर पुनि कथन तुम्हारा ❊ नाथ! न दुलखि[5] सकत संसारा
करहुँ निवेदन चलि जहँ रामा ❊ प्रस्तुत, त्यागि बन्धु-धन-धामा
संसय उर अति, किन्तु महेसा ❊ करहु दयामय दूरि कलेसा
यहि अवसर रघुपति पहँ जाई ❊ जग निन्दा चहुँ लोक-हसाई
विपति परे तजि लंक-अधीपा ❊ गयेउ विभीषन शत्रु समीपा
तदुपरि[6] राम देयँ अभिषेकू ❊ सतत[7] विश्व अपजस-अतिरेकू[8]
मैं परि लोभ राज की आसा ❊ अग्रज सकुल सबन्धु विनासा
यहि कारन यहि समय बराई[9] ❊ आगे करहुँ यथायसु[10] पाई

रामभक्त विभीषण सदा राम दास ❊ शिव-कुवेरेर कथा रचे कृत्तिवास

विभीषणेर प्रति शिवेर उपदेश

कुवेरेर मुखे शुनि एतेक वचन ❊ अधोमुख हइया भावेन विभीषन
ताहा देखि परम दयालु शूलपानि ❊ कहिते लागिला तार अभिप्राय जानि
भावितेछ अकारणे किवा विभीषन ❊ कर निज-अग्रजेर वचन पालन
जाह जाह श्रीरामेर निकटे त्वरित ❊ करह निजेर आर संसारेर हित
विरूपाक्ष-वाणी एइ शुनि बिभीषन ❊ कृतांजलि हइया करेन निवेदन
जे आज्ञा करेछ प्रभु, तोमा दुइ जन ❊ कार शक्ति करिवारे इहार लंघन
आमिह श्रीराम काछे जाइब बलिया ❊ आसियाछि गृह-धन-बान्धव त्यजिया
किन्तु ताहे अनेक संसय लय मन ❊ अनुग्रह करि ताहा करह खण्डन
आमि यदि राम काछे जाइ एइ क्षन ❊ सब करिबेक लोक आमार निन्दन
कहिवेक, रावणेर विपद देखिया ❊ तारे छाड़ि विभीषण गेल दुष्ट हैया
ताहे पुनः यदि मोरे राज्य देन राम ❊ तबे दोष घुषिबे संसारे अविराम
ब्रलिबे सकले, विभीषण राज्य लोभे ❊ बधिलेक सबान्धवे अग्रजे अक्षोभे
अतएव एक्षणे जाइते नाहि मन ❊ परेते करिबे, जे करिबे आज्ञापन

१ कृत्तिवास ने २ कुबेर ३ प्रमाण, पालनयोग्य ४ महादेव ५ नहीं काट सकता ६ उसके ऊपर ७ सदा के लिए ८ असीम ९ बचाकर १० आदेशानुसार।

इमि सुनि, विरस विभीषन देखी ❋ कहत शंभु सविनोद विशेषी
अहो ! विभीषन अचरज बानी ❋ किमि संसय तव मति बौरानी
भ्रम तजि करु मम वचन प्रमाना ❋ राम-भजन सब काल समाना
प्रभु कर रूप न तैं पहिचाना ❋ 'मानव' समुझि बिबस अज्ञाना
यहि भ्रम संसय नाना जाती ❋ सुनु कछु रूप राम जेंहि भाँती

दो० राम सत्य-सुख ज्ञान-घन वेद-जतिन परमेश[1] ।
जीवाधार अचिन्त्य सो कर्ता जगत अशेष ॥
परम शक्ति, स्थिति-प्रलय-सृष्टि सकल-आधार ।
अविनाशी भगवान प्रभु, महिमा-राम अपार ॥ ९० ॥

कहि कोउ 'ब्रह्म' अराधन करहीं ❋ 'नारायण' कहि कोउ अस्मरहीं
तीनि लोक-रचना अधिकारी ❋ दुख निवारि भक्तन सुखकारी
तासु भजन जनि काल-विधाना[2] ❋ जब जेंहि रुचि सुमिरै भगवाना
भक्तिभाव-रस जासु अनूपा ❋ सुख-संसार तजत यहि रूपा
तव सुत - तीय - बन्धुजन - त्यागा ❋ किमि उपजत बिन हरि-अनुरागा
यहि विधि कतहुँ न संशय-हेतू ❋ चलि करु भजन जहाँ रघुकेतू
जासु दरस कामना हमारी ❋ दैवयोग सो नयन अगारी
राम प्रतच्छ दरस सुख त्यागी ❋ सहन कलेस अन्त केहि लागी[3]

इहा कहि विभीषण विरत हइल ❋ हासि हासि शिव तारे कहिते लागिल
एकि एकि विभीषण, बड़ चमत्कार ❋ हइतेछे ए संशय केन वा तोमार
कहितेछि मोरा याँरे करिते आश्रय ❋ ताँहार भजने नाहि समय निर्णय
बुझि रामे आछे तव 'नर' वलि ज्ञान ❋ इहा लागि करितेछ संशय-विधान
हेन बोध अतिशय अनुचित हय ❋ शुन शुन किछु ताँर स्वरूप निर्णय
सत्य - सुख-ज्ञान - घन - तनु रघुपति ❋ परमात्मा भगवान कहे श्रुति-यति
जीवेर नियन्ता अविचिन्त्य-शक्तिधर ❋ सृष्टि स्थिति-लय-कर्त्ता जगद्-ईश्वर
केह ताँरे ब्रह्म ब'लि करे उपासन ❋ केह नारायण ब'लि करये भजन
ह'येछेन तिनि लोके सम्प्रति प्रकट ❋ साधिते भक्तेर सुख नाशिते संकट
समय निर्व्वन्ध नाहि ताँहार भजने ❋ करिबे तखनि, इच्छा जबे हबे मने
सेइ त ताँहार भक्ति हेन गुण धरे ❋ इच्छा हवामात्र संसारेरे त्याज्य करे
तुमि त त्यजिया आसियाछ बन्धुजने ❋ इथे जानितेछि, इच्छा हइयाछे मने
अतएव संशय करह कि कारन ❋ जाह जाह, कर गिया श्रीरामे भजन
जाँरे मोरा ध्यान करि, देखि मनोरथे ❋ भाग्यगुणे रयेछेन तिनि नेत्रपथे
इहाते साक्षात्-देखा सुख परिहरि ❋ केन क्लेश पाइबे अन्यत्र ध्यान करि

१ परमेश्वर　२ समय निर्धारित नहीं है　३ किस हेतु ।

पुनि पुनि सीख तुमहिं यहि हेतू * संसय तजि सेवहु रघुकेतू
तजेउ बन्धु लखि विपति-विवादू * चर्चहिं विविध लोक अपवादू
यहि विधि कथन, श्रवन जनि योगू * रुचिर न भगतहिं गृह-सुख-भोगू
प्रगटत प्रभु प्रतच्छ तेहि कारन * बिन तेहि दरस धीर किमि धारन
प्रभु-पद नेह हिये जहँ जामा * तजत बन्धु अतिशय गुनधामा
अग्रज दुष्ट अतिव तुम त्यागा * अजस कलंक तुमहिं किमि लागा
तव अपरञ्च[1] सुयश त्रयलोका * सदा बखानहिं जस बुधलोका[2]
पुनि आरोप राज कर लोभा * तव उर अपकीरति कर छोभा

दो० उचित, तात ! अपवाद[3] जनि, अनुचित तासु विचार ।
कतहुँ न तव उर लालसा राज-लोभ संचार ॥ ६१ ॥

तुमहिं न साध[4], न याचत[5] राजू * पुनि किमि निन्दइ तुमहिं समाजू
बरबस[6] रघुपति करैं नरेसू * तौ किमि तुमहिं अजस कर लेसू
पितु - प्रह्लाद नृसिंह निपाती * प्रह्लादहिं नृप किय; जग ख्याती
सो प्रह्लाद न अपजस भागी * वरन् प्रशंसति जग अनुरागी
इमि रावन बधि तुमहिं नरेसू * करहिं राम, तव दोष न लेसू

ए लागिया कहितेछि आमि बारबार * जाइ राम निकटेते त्यजिया विचार
तबे जे बलिले गालि दिबे लोकावली * बिबाद समये बन्धु त्याग कैल बलि
ए कथा त कभु शुनिवार योग्य नय * भकति जन्मिले केवा कोथा गृहे रय
ताहे प्रभु रयेछेन प्रकट हइया * कि रूपे थाकिबे ताँरे नेत्रे ना देखिया
आर देख, रति जन्मे जाहार भजने * सेइ त्याग करे गुणवान बन्धुजने
राम-सेवा लागि त्यजि दुष्ट बन्धुजन * तुमि वा कि रूपे हबे निन्दार भाजन
वरञ्च तोमार एइ यश त्रिभुवने * ज्ञान करिवेक सर्व्वस्थाने विज्ञजने
आर जे कहिले, यदि राज्य देन राम * तव दोष घुषिबे संसारे अविराम
ए कथाओ उचित ना हय शुनिवार * जे हेतु राज्येर आशा नाहिक तोमार
यदि तुमि राज्य पाव बलिया जाइते * वरञ्च तोमारे सबे पारिते निन्दिते
तिनि यदि बले राजा करेन तोमारे * इथे केन अपयश गाहिबे संसारे
देखि देखि, बध करि प्रह्लाद पितारे * नृसिंह प्रह्लादे राजा कैला बलात्कारे
इथे तार विगान करिबे कोन जन * वरञ्च करये सबे यशः प्रशंसन
ताह बध करि दशानने शार्ङ्गपानि * राज्य दिबे तोमा, ताहे कि दोष ना जानि

---

१ बल्कि २ ज्ञानी जन ३ लोक-निन्दा ४ लालसा ५ मांगते हो ६ विवस करके ।

बन्धु नास हित कीन मिताई[१] ※ तबहुँ न कछु अपराध लखाई
मुनिगन शान्त, धर्म मन धरहीं ※ खल-बध जतन विपुल विधि करहीं
अति अधार्मिक 'वेण' नरेसू ※ मुनिगन दीन विविध उपदेसू
विफल सीख लखि, करि हुंकारा ※ मुनिगन 'वेण' नृपति संहारा
यहि विधि तुमहिं न पातक-लेसू ※ करहु जतन यदि वध-लंकेसू
पुनि लखु 'राम' विष्णु अवतारा ※ राम प्रीति हित शेष असारा[२]
यदपि अधर्म ! हेतु-रघुराजा[३] ※ कहत शास्त्र सद्धर्म-सुकाजा
यहि कारन सब संशय त्यागी ※ गहौ बेगि प्रभु-पद अनुरागी
काज, प्रानपन करि, रघुराई ※ मिटैं कलेस, प्रेमधन पाई
सुनि महेश-आनन-श्रुतिकन्दा[४] ※ उदित विभीषन अमित अनन्दा
द्रवित लोचनन सरसति वारी ※ उर गद्गद इमि गिरा उचारी

दो० संशय छीन, कृतार्थ किय, नाथ अनुग्रह-बैन ।
पैंकरमति[५] कहि, बन्दि पुनि, शंकर करुनाऐन ।।

शम्भु दयामय, दीन हित, अतिशय दाया कीन ।
वेगि, विभीषन, राम-पद-दरस सुआयसु लीन ।। ९२ ।।

मिता जे कहिला बधिवारे दशानने ※ ताहातेओ किछु दोष नाहि लय मने
शान्त धर्म्मनिष्ठ यावतीय मुनिगन ※ ताँहाराउ दुष्ट बध करे आयोजन
देख वेण-नामे राजा अधार्म्मिक छिल ※ मुनिगण तारे नानामते शिखाइल
से यखन ना शुनिल ताँदेर बचन ※ हुंकारे करिला तारे ताँहारा निधन
तुमिओ रावण-बधे कर आयोजन ※ ना हइबे कोनमते अधर्म्मभाजन
ताहे पुनः हबे इथे राम-अवतार ※ जन्मिबे रामेर प्रीति संसारेर सार
राम लागि यदि केह करे पाप कर्म ※ ताहा हय सर्व्व शास्त्रे सिद्ध महाधर्म्म
अतएव सकल संशय परिहरि ※ जाह राम निकटेते तुमि त्वरा करि
रामकार्य्य साध गिया करि प्राणपन ※ तरिबे सकल दुःख पावे प्रेमधन
महेशेर मुखे शुनि एतेक वचन ※ अति आनन्दित चित हैला विभीषण
अश्रुजल परिपूर्ण हइल नयन ※ गदगद भावेते करेन निवेदन
प्रभु, अनुग्रह दृष्टि-बलेते तोमार ※ सकल संशय नष्ट हइल आमार
जानितेछि, कृतार्थ जे करिला आमारे ※ आज्ञा देह, जाइ एबे राम देखिवारे
एहा कहि महेशेर अनुज्ञा लइया ※ प्रदक्षिण कैला ताँरे भकति करिया
पुनः पुनः प्रणाम करेन पञ्चानने ※ सुन्दरकाण्डेते गीत कृत्तिवास भने

१ मित्रता २ तुच्छ ३ भगवान की राह में ४ मधुर वाणी ५ परिक्रमा करता है।

श्रीराम-विभीषण-मिलन व विभीषण-राज्याभिषेक

यहि विधि शिव पुनि गौरि मनाई ※ पुनि कुबेर अग्रज-पद ध्याई
लीन्हे चारि मंत्रिगन संगा ※ चलेउ विभीषन, हीय उमंगा
गमन गगन-पथ रघुपति तीरा ※ बसि तट-सिन्धु लखत कपिवीरा
शिला विटप कपि कटक सम्हारी ※ नभ तन, रहे ससंक निहारी
आवत मनहुँ दसानन जोधा ※ 'मारु मारु' कपि कहत सक्रोधा
व्योम[1] विभीषन प्रगटति बानी ※ अहह! सरन मैं सारँगपानी[2]
यहु संवाद दीन चलि पायक ※ करत सलाह सचिव-रघुनायक
कहत सुकण्ठ न उचित प्रतीती ※ रिपु बनि मित्र छलै विपरीती
जामवन्त मंत्री मतिमाना ※ रिपु-सत्संग न उचित बखाना
बिभीषनहिं हनुमत पहिचाना ※ दीन लंक मोहिं जीवनदाना
जो इन सन रघुनाथ-मिताई ※ तौ दसमुख-बध लहिय सहाई
टेरि सुकण्ठ, कहति रघुकेतू ※ उचित न संक[3] विभीषन हेतू
निज अवगुन निज प्रकट न होहीं ※ तव मित्रता प्रकट भल मोहीं
कातर जदि सरनागत आवै ※ करै विमुख, परलोक नसावै
बरनत जिमि पुरान, सुनु गाथा ※ धर्मरूप 'शिवि' नृप नरनाथा

श्रीराम कर्त्तृक विभीषणेर लंकाराज्ये अभिषेक

एइ रूपे प्रणाम करिया पञ्चानने ※ परे प्रणमिला शिवा आर वैश्रवणे
तबे चारिजन मंत्री संगेते लइया ※ चलिला श्रीराम काछे आनन्दित हिया
आकाशे रामेर पाशे जाय विभीषण ※ सागर-कूलेते थाकि देखे कपिगण
सम्भ्रमे वानर-सैन्य करे तोलापाड़ा ※ पादप-पाथर लये सबे हय खाड़ा
महाबल पराक्रम देखिते भीषण ※ सबे बले, मार मार, एइ त रावण
अन्तरीक्षे थाकि ब'ले, आमि विभीषण ※ रामेर चरणे आमि लइनु शरण
कहे विभीषणेर संवाद दूतगण ※ बसिलेन मंत्रणा करिते मंत्रिगण
सुग्रीव बलेन, शुन ए नहे उचित ※ छल करि यदि मिशि करे विपरीत
जाम्बवान-पात्र ब'ले बुद्धि-वृहस्पति ※ शत्रुके निकटे आना नहे मम मति
हेनकाले कहे आसि वीर हनूमान ※ एइ विभीषण मोरे दिला प्राणदान
मित्रता यद्यपि हय राम-विभीषणे ※ विभीषण साहाय्येइ बधिब रावणे
श्रीराम बलेन शुन सुग्रीव भूपति ※ अन्यरूप ना भाविह विभीषण प्रति
आपनार दोष मित्र, ना देख आपनि ※ तोमा हैते मित्रतार साक्षी आमि जानि
कातर हइया जेबा लइल शरण ※ परलोक नष्ट, यदि ना करे पालन
पुराणेर कथा कहि, कर अवधान ※ शिवि नामे राजा छिल धर्म्म-अधिष्ठान

१ आकाश से २ राम ३ शंका।

त्रसित[1] कपोत[2] श्येन[3]-भय पाई ※ नृप शिवि-अंक सरन लिय जाई
दो० निज अहार नृप-सरन लखि, 'बाज' प्रकोट[4] असीन ।
कहत नृपति ! अनरीति किमि ? भक्ष्य मोर हरि लीन ॥ ६३ ॥
खग मम सरन, कहत नृपकेतू ※ इतर मांस अर्पन तव हेतू
जो कपोत-हित जीवन दाना ※ करौ मांस निज मोहिं प्रदाना
तन-राजसी मांस अति स्वादा ※ मिटै छोभ लहि भूप-प्रसादा
श्येन-वचन, 'शिवि' अति हर्षाना ※ काटि मांस निज गात प्रदाना
तिल-तिल काटि दीन सब अंगा ※ लही उदर भरि तृप्ति विहंगा[5]
शोनित[6] फूटि बहीं चहुँ धारा ※ सिंहासन चहुँ रक्त[6] बहारा
यहि तप नृप बैकुण्ठ निवासू ※ सरन-विमुख करि सदा विनासू
सरनागत जो होत दसानन ※ तेहि कर तबहुँ करत प्रतिपालन
आयसु राम, गगन कपि छाये ※ प्रभु पहँ धाय विभीषन लाये
मिलत विभीषन नृप सुग्रीवा ※ चर्चत[7] दोउ उर मोद अतीवा
पुनि जहँ राम, दुहुन आगमना ※ गहेउ विभीषन रघुपति-चरना
रावन-अनुज विभीषन नामा ※ मैं तव सरन आजु श्रीरामा
कहति राम संसय सम हेरी ※ मिली-भगति[8] तव दसमुख केरी

पलाय कपोतपक्षी साँचानेर डरे ※ त्रासेते पड़िल शिवि नृपतिरे क्रोड़े
यत्न करि नरपति सेइ पक्षी राखे ※ प्राचीरे साँचान पक्षी नृपतिरे डाके
आमिह आमार भक्ष्य करिब आहार ※ हेन भक्ष्य राख राजा, नहे व्यवहार
राजा बले, पक्षी मम लभिल शरण ※ तोमारे अपर मांस कराओ भोजन
साँचान बलिल, यदि कर परित्राण ※ आपन गायेर मांस मोरे देह दान
राजभोगे मांस तव अतीव सुस्वाद ※ ए मांस खाइले मोर घुचे अवसाद
शुनि साँचानेर कथा राजार उल्लास ※ तीक्ष्ण छुरि दिया काटे निज गात्र मास
तिलार्द्ध नाहिक स्थान सर्व्व अंग काटे ※ भोजन कराय तारे, यत धरे पेटे
बहिया शिविर गात्र रक्त बहे स्रोते ※ आपन गायेर रक्ते सिंहासन तिते
सेइ त पुण्येते राजा गेल स्वर्गवास ※ शरणागतेरे ना राखिले सर्व्वनाश
विभीषण थाक, यदि आइसे रावण ※ हइले शरणागत करिब पालन
रामेर आज्ञाय कपि गेल अन्तरीक्षे ※ विभीषणे आनिवारे रामेर समक्षे
सुग्रीव राजेर आगे करे सम्भाषण ※ परम आनन्दे कोल दिल दुइजन
विभीषण सुग्रीव चलिल राम-स्थाने ※ विभीषण पड़े गिया श्रीराम-चरणे
रावणेर भाइ आमि, नाम विभीषण ※ तोमार चरणे आमि लइनु शरण
श्रीराम ब'लेन, ब'लि शुन विभीषण ※ मंत्रणा करिया बुझि पाठाय रावण

१ सताया हुआ २ कबूतर ३ बाज पक्षी ४ चहारदीवारी पर ५ बाज पक्षी ६ खून ७ बातचीत करते हैं ८ साँठगाँठ ।

कहत विभीषन छल कछु नाहीं ※ निश्छल शरन नाथ तव पाहीं
मन कछु दुराभाव जो लावौं ※ तौ कलिकाल-विप्र-गति पावौं
सहसतनय[1], पुनि कलि-नरनाथा ※ त्रयविधि दिव्य[2] करहुँ रघुनाथा
दो० दिव्य अनोखी तीनि सुनि, कहेउ लखन हँसि बैन।
सुनेउँ कुतूहल प्रथम मैं, यहि विधि, करुनाऐन[3] ॥ ६४ ॥
इक सुत हित, जग चरनन लागै ※ वर 'सुत-सहस' विभीषन माँगै
नृप-पद हेतु सदा नर आतुर ※ यहि विधि करत 'दिव्य', अतिचातुर
कहेउ राम तुम लखन! न जाना ※ दिव्य-विभीषन अतुल महाना
वचन-विभीषन मोहिं परितोषू ※ लखन! विप्र-कलि के सुनु दोषू
काम क्रोध पुनि लोभ विमोहा ※ कलि द्विज ग्रस्त लहति अति छोहा
बिबस-लालसा, दान-कुदाना ※ कबहुँ न उबरत पाप महाना
अपकर्मी सुत, जनक-सभाना[4] ※ जग विनसत इमि पातक-साना[5]
प्रजा न पालति कलि-नरपाला[6] ※ पाप-पंक फँसि मरत अकाला
दोष-निरूपन तजि यहि काला ※ प्रथम विभीषन करहु भुवाला
सैनिप! सिन्धु-सलिल इत लाई ※ लंक समर्पि करहु दनुराई[7]
पाथर-लीक कथन-रघुराई ※ आयसु लीन सबन सिर नाई

शुनिया रामेर कथा कहे विभीषण ※ तोमार चरण मात्र लइब शरण
इहा भिन्न यदि अन्यदिके धाय मन ※ तबे जेन हय आमि कलिर ब्राह्मण
हइब कलिर राजा, सहस्रतनय ※ एइ तिन-दिव्य आमि करिनु निश्चय
तिन-दिव्य करिल राक्षस विभीषण ※ एइ तिन दिव्य शुनि हासेन लक्ष्मण
हेन काले श्रीरामेरे बलेन लक्ष्मण ※ बहुदिने शुनिलाम अपूर्व्व कथन
एक पुत्र हेतु लोक करे आराधन ※ सहस्र पुत्रेर वर मागे विभीषण
राजा हइवार तरे तप करि मरे ※ हेन दिव्य करे राम, तोमार गोचरे
श्रीराम ब'लेन, अल्पबुद्धि रे लक्ष्मण ※ बड़ दिव्य करिल राक्षस विभीषण
एइ दिव्ये लक्ष्मण, आमार परितोष ※ कलिर ब्राह्मण भाइ, शुन तार दोष
काम-क्रोध-लोभ-मोह-आदि महापाप ※ एइ सब पापे विप्र पाय बड़ ताप
प्रतिग्रह करिवेन उद्धार कारण ※ प्रतिग्रह महापाप, नाहिक तारण
एइ सब पापे जेबा करे अनाचार ※ तादृश पुत्रेर पापे मजिब संसार
कलियुगे राजा प्रजा ना करे पालन ※ से पापे राजार हय अकाले मरण
आर सब दोष आछे ताहा जेनो पाछे ※ विभीषणे राजा करि राख मम काछे
सर्व्व सेनापति आन सागरेर वारि ※ लंकार राजत्व देह विभीषणोपरि
श्रीरामेर आज्ञा येन पाषाणेर रेख ※ सेइ स्थले विभीषणे करे अभिषेक

---

१ हजार पुत्रवाला २ सौगन्ध, कसम ३ करुणा के आगार राम! ४ पिता
५ ... पाप में सना हुआ ६ कलियुग के राजा ७ दैत्यों का नृप।

पुनि अभिषेक भयेउ ताही छन ※ चहुँ घोषित लंकेस विभीषन
छत्र-दण्ड, मन्दोदरि रानी ※ स्वर्ण लंक करि तिलक प्रदानी

श्रीराम द्वारा सागर-उपासना और सागर-ताड़न

कहत सुकण्ठ सिन्धु जिमि तरना ※ पूछि विभीषन, करहिं प्रयतना
कहौ विभीषन मर्म अनूपा ※ सागर पार होयँ केहि रूपा
तव पुरिखा[1], प्रभु! सगर-कुमारा ※ खोदि महीतल सिन्धु प्रसारा
दो० भूप 'सगर' कर विमल यश, 'सागर' जग सरनाम ।
करि उपवास पयोधि[2] हित, दरस लहौ श्रीराम ॥ ९५ ॥
कुश-आसन बिराज रघुवीरा ※ लिय उपवास अम्बुनिधि[2] तीरा
दिवस तीनि बीते उपवासू ※ राम कुपित बिन सिन्धु प्रकासू
अबहिं, लखन! आनहु धनु-सायक ※ देहुँ सीख सागर जेहि लायक
अस्तुति-अधम कीन बहु भाँती ※ बिफल उपास[3] तीनि दिन-राती
खल बिनास हनि पावक-बाना[4] ※ शोषहुँ वारि[5] न जग कल्याना
हरहुँ सिन्धु शठ आजु पराना ※ कहि प्रभु अनलबान[4] सन्धाना
अग्निवाण सब जलधि[2] प्रदाहा ※ मकरादिक जलजीवन[6] दाहा
सप्त सिन्धु ढिग भेदि पताला ※ सर लखि वारिध[2] त्रास कराला

श्रीरामेर वचन लंघिबे कोन जना ※ विभीषण राजा हैल, जगते घोषणा
छत्रदण्ड दिल तारे स्वर्ण लंकापुरी ※ अभिषेक करि दिल रानी मन्दोदरी

श्रीराम-कर्त्तृक सागरेर उपासना ओ सागर-कर्त्तृक सेतुबन्धनेर उपदेश

सुग्रीव ब'लेन, सिन्धु तरिते उपाय ※ विभीषण प्रति जिज्ञासिते से जुयाय
श्रीराम ब'लेन, विभीषण, बल सार ※ कि प्रकारे सागर हइब आमि पार
विभीषण बले, से सगर महीपति ※ सागर खनियाछिल ताँहार सन्तति
तव पूर्व्व-पुरुषेरा सागर प्रकाशे ※ सागर दिवेन देखा, थाक उपवासे
सागरेर कूले शय्या करिलेन कुशे ※ तदुपरि रहिलेन राम उपवासे
तिन उपवास गेल, ना देखि सागरे ※ कहिलेन लक्ष्मणेरे कुपित अन्तरे
आजि आमि सागरेर दिब भाल शिक्षा ※ धनुर्व्वाण आन भाइ, किसेर अपेक्षा
अधमे करिले स्तव नाहि फल देखे ※ मारिबे सागरे आजि, कार बाप राखे
तिन उपवास करि तार आराधने ※ सागर शुषिब आजि अग्निजाल-बाने
आजि सागरेर आमि लइब परान ※ अग्नि-जाल बाणे राम पूरेन सन्धान
अग्निबाण प्रभावेते शुकाय सागर ※ पुड़िया मरिल मत्स्य कुम्भीर मकर
चलिल पाताल सप्त-सागरेर पाश ※ बाण देखि सागरेर लागिल तरास

१ पूर्वज २ समुद्र ३ उपवास ४ अग्निवाण ५ जल ६ जलजन्तुओं को ।

थर-थर अतुल प्रकंपित गाता * धवल छत्र शिर सों भुइँपाता
इत निषंग[1] प्रविसेउ प्रभु-सायक * सिन्धु गहे उत पद-रघुनायक
किमि रघुनाथ! कोप विस्तारा * अपराधी किमि नाथ तुम्हारा
रघुकुल-कृत मम जगत प्रकासा *तव-कर, मम जनि उचित विनासा
कातर दिवस तीनि उपवासू * सिन्धु! तीर तव कीन निवासू
हरन कीन मम सिय दनुकेतू[2] * यहि विधि गमन लंक सिय-हेतू
कपिदल तरै जलधि जेहि भाँती * कीन उपास[3] तुमहिं प्रणिपाती

दो० तदपि सुलभ जनि दरस तव, विबस हनेउँ मैं बान ।
आड़े दस, पुनि दसगुना, लम्ब प्रसार प्रमान ।।

देहु पन्थ जल छाँड़ि कपि-कटक होय जिमि पार ।
सुनति जोरि कर राम सों, बरनत पारावार[4] ।। ९६ ।।

स्रोत पताल, सुलभ पथ नाहीं * युगुति एक वरनहुँ प्रभु पाहीं
विश्कर्मा-सुत नल कपि वीरा * तव हित वर पायेउ मुनि तीरा
बसेउ जह्नु मुनि पहँ शिशुकाला * 'नल' शिशु कीन जह्नु प्रतिपाला
दण्ड-कमण्डल नित जल-लीना[5] * पुनि सिर्जति मुनि नित्य नवीना
ध्यान कीन मुनि मर्म विचारा * जन्महिं विष्णु राम अवतारा

भय पेये सागर काँपये थर-थर * माथार धवल-छत्र टलिल सत्वर
बाण गिया प्रवेशिल श्रीरामेर तूणे * सागर पड़िल आसि रामेर चरणे
एत क्रोध मोरे केन, शुन गदाधर * तव पूर्व्व-वंश एइ करिल सागर
तुमि मोरे नष्ट कर, ए नहे विचार * कोन अपराध आमि करिनु तोमार
श्रीराम बलेन, शुन नृपति सागर * तिन दिन उपवासी, कूलेते कातर
मोर सीता चुरि कैल पापिष्ठ रावण * लंकाय जाइब तार उद्देश कारण
वानर कटक सब हइबेक पार * उपवास दिया देखा ना पाइ तोमार
एइ हेतु अग्निबाण जलेते छाड़िनु * तुमि ना आमाते आमि बाण जे मारिनु
आड़े दश-योजन दैर्घ्ये दशगुण तार * जल छाड़ि देह तुमि, वानर होक पार
एत शुनि जोड़ हस्ते ब'लेन सागर * मोर जल मिशियाछे पाताल भितर
केमने हइबे पथ, ना देखि उपाय * एक युक्ति आछे राम, कहिब तोमाय
विश्वकर्म्म-पुत्र नल-नामे जे वानर * तोमा हेतु मुनिस्थाने पाइयाछे वर
जन्हु मुनि ताहारे पालिल शिशुकुले * दण्ड कमण्डलु तार हाराइल जले
नित्य हाराइया आसे, नित्य सृजे मुनि * आर दिन ध्यान करि जानिल आपनि

१ तरकस में २ दानवराज रावण ३ उपवास ४ समुद्र ५ जल समेट

सिय हित जाहिं लंक के पारा * बाँधि सिन्धु जड़, करैं उतारा
दै वर नलहिं जह्नु इमि कहहीं * तव कर परसि शिला जल तरहीं
कहत सिन्धु मम बन्धन हेतू * करहु सैनपति 'नल' रघुकेतू
सागर-बन्धन गुन तव पाहीं * नल! तुम प्रकट कबहुँ किय नाहीं
जीतहुँ लंक सिन्धु करि पारा * नल! तव बल, इमि सिन्धु उचारा[1]
जाति-शाप-भय, संशय प्राना * कहेउँ न मर्म[2] कबहुँ भगवाना
कपि सैनिप[3] सुनि, अनुमति दीन्हा * नलहिं सेतु-हित[4] अधिपति कीन्हा
सबन अभीष्ट सिद्धि प्रभु-काजा * ढोवइँ शिला स्वयं कपिराजा[5]
प्रभु पहँ नल किय अंगीकारा * बन्धन - सेतु लेहुँ मैं भारा
नल सम सुभट, राम! तव तीरा * पाहन[6] परसि तरति जेंहि नीरा
जेंहि कर छुवत शिला-तरु जुरहीं * बाँधि सेतु रघुपति अवतरहीं
तव हित मोंहि बन्धन स्वीकारा * रावन हनहु सिन्धु करि पारा

सागर द्वारा श्रीराम की प्रार्थना

दो० किमि अजान? स्थिति-प्रलय-सृष्टि सकल के नाथ।
अखिल विश्व के पूज्य तुम, अगतिन करत सनाथ॥

स्वयं विष्णु हइबेन राम अवतार * सागर बाँधिया सैन्य करिबेन पार
एतेक भाविया मुनि दिला वरदान * नल स्पर्शे सलिलेते भासिबे पाषान
सागर बाँधिते सेनापति कर नले * नल स्पर्शे पाषाण भासिबे मोर जले
श्रीराम ब'लेन, नल आछ मम पाश * सागर बाँधिते जान ना कर प्रकाश
आमि लंका जिनिवि, तोमार करि आश * एत बुद्धि धर, शुनि सागरेर पाश
नल ब'ले, ज्ञाति भये ना करि प्रकाश * ज्ञाति शापे हय पाछे जीवन विनाश
सागरेर कथा शुनि सब सेनापति * सागर बाँधिते नले दिल अनुमति
राम-कार्य्य सिद्ध होक, एइ मात्र चाइ * सुग्रीव पाथर दिबे, अन्य कार्य्य नाइ
श्रीरामेर आगे नल करे अंगीकार * सागर बाँधिया दिब, प्रतिज्ञा आमार
श्रीराम, अधीन तव नल बीरवर * नलेर परशे जले भासये पाथर
गाछ-पाथर जोड़ा लागे परशे ताहार * जांगाल बाँधिया राम, ह'ये जाओ पार
तोमार कारण आमि लइब बन्धन * पार हये बध कर पापिष्ठ रावन

सागर-कर्त्तृक श्रीरामेर स्तुति

आपना ना जान तुमि देवि गदाधर * सृष्टि-स्थिति-प्रलयेर तुमिह ईश्वर
विश्वेर आराध्य तुमि, अगतिर गति * निदान सृजिते सृष्टि, तुमि प्रजापति

१ कहा २ रहस्य ३ वानर-सेनापति ४ पुल बाँधने के लिए ५ सुग्रीव
६ पत्थर।

सृजति सृष्टि बनि प्रजापति, करन-धरन-संहार।
महाकाल, कालाधिपति, सबके एक अधार ॥
चन्द्र, सूर्य, यम, वरुण, प्रभु! पुनि कुबेर, सुरनाथ[1]! ।
जड़-जंगम, साकार तुम निराकार, रघुनाथ! ॥
भगति-विनय जनि ज्ञान मोहिं महिमा-नाथ अपार।
निर्बल के बल! चरन निज लीजिय जगदाधार ॥
आदि अनादि अपंग-बल! पलकमात्र[2] प्रतिकूल[3]।
खण्ड खण्ड ब्रह्माण्ड करि, करत छार आमूल ॥
सुरन सहित सुरपति विकल, चहत दया की कोरि[4]।
कौशल्या-सुत की कृपा, चहत बहोरि बहोरि ॥
पुण्यमही भारत जनमि, अगणित पातक-लीन।
जाहुँ धाम निज, विदा तव, लै, प्रभु! मैं अति दीन ॥
बन्दि चरन सागर चलेउ, पुनि पुनि करत प्रणाम।
कृत्तिवास रसनामयी गाथा मञ्जु ललाम ॥ ६७ ॥

नल द्वारा सागर-सेतु-बन्धन

इत निज सदन सिन्धु चलि जाई * लीन बोलाय नलहिं रघुराई
जहँ रघुनाथ, बेगि नल आवा * रघुपति चरनन सीस नवावा
हे नल सुभट! कहेउ रघुबीरा * तुम सम वीर अहह! मम तीरा

तुमि सृष्टि, तुमि स्थिति, तुमिह प्रलय * काले महाकाल विश्व, काले कर लय
तुमि चन्द्र, तुमि सूर्य्य, तुमि चराचर * कुबेर, वरुण तुमि यम, पुरन्दर
तुमिह साकार पुन: निराकार तुमि * तव महिमार सीमा कि जानिब आमि
ना जानि भकति स्तुति, शुन रघुवर * श्रीचरणे स्थानदान देह गदाधर
तुमि हे अनाद्य-आद्य असाध्य-साधन * कटाक्षे ब्रह्माण्ड कर खण्डविनाशन
आखण्डल[1] चञ्चल चिन्तिया श्रीचरण * कटाक्षे करुणा कर कौशल्यानन्दन
जन्मिया भारत-भूमे आमि दुराचार * करेछि पातक कत संख्या नाहि तार
विदाय करह, आमि जाइ निज धाम * एत बलि पदतले करिल प्रणाम
कृत्तिवास पण्डितेर कवित्व-वचन * गाइल सुन्दरकाण्डे गीत रामायन

नल-कर्त्तृक सागरे सेतु-बन्धन

सागर चलिया गेल आपन भवन * 'नल' बलि डाक दिल देव नारायन
धाइया आइल नल यथाय श्रीराम * भूमि लुटि पदतले करिल प्रणाम
श्रीराम ब'लेन, नल, कहि जे तोमारे * तुमि हेन वीर आछ कटक भितरे

---

१ इन्द्र २ क्षण भर में ३ रुष्ट होते ही ४ दृष्टि।

सेतु-बन्ध तुम यदपि समर्था * मैं तुम रहत सहँउ दुख व्यर्था
हे प्रभु! मैं कपि छुद्र अतीता * जाति-लोक-भय अति भयभीता
प्रस्तुत वीर अतुल जहँ नाना * तिन सम्मुख किमि करहुँ बखाना
कथा पुरातन पितु के सदना * करहुँ निवेदन मैं प्रभु-चरना
नित विधि[1] सर-मानस[2] अवतरहीं * कुस-पैती[3] जल संध्या करहीं
तजत कुसादिक सरवर[4] तीरा * मैं नित तिनहिं बिसर्जहुँ नीरा
मम नितनेम सदा, यहि कारन * वर, लहि तोष, दीन चतुरानन
विधि-प्रसाद, परसत[5] मम हाथा * जल उतराहिं उपल[6] रघुनाथा
तव कर परसि उपल-तरु[7] जुरहीं * तरु-प्रस्तर[7] मिलि जल संतरहीं
बाँधहुँ सेतु बिरञ्चि-प्रसादा * निश्चय हरहुँ नाथ-अवसादा[8]
मास मध्य बाँधहुँ शत योजन * उपल-विटप कपि करहिं नियोजन
नल कर प्रन सुनि बन्धन-हेतू * कपिगन मुदित, मुदित कपिकेतू[9]
चहुँ कपि-कटक 'राम जय' छाई * बाँधन सेतु चले हर्षाई

दो० करि प्रणाम रघुवंशमणि, चलेउ सुभट नल वीर।
सेतुबन्ध अभियान किय, पैठेउ सागर-नीर ॥ ६८ ॥

सागर बाँधिते तुमि हओ बलवान * एत दुःख पाइ आमि तोमा विद्यमान
नल ब'ले प्रभु राम, निवेदन करि * क्षुद्र कपि आमि ताइ ज्ञाति लोके डरि
बड़-बड़ कपि आछे वीर अवतार * केमने तादेर आगे करि अंगीकार
यखन छिलाम आमि जनकेर घरे * ताहार वृत्तान्त किछु कहिब तोमारे
मानस सरसे ब्रह्मा छिप कुशी लये * सेइ स्थाने बसि सन्ध्या करेन आसिये
छिपकुशी राखि जान सरोवर तीरे * ताहा आमि तुलि लये फेलिताम नीरे
नित्य छिपकुशी ब्रह्मा करेन सृजन * आमारे देखिया ब्रह्मा ब'लेन वचन
नित्य छिपकुशी फेले दिस् मोरे जले * सन्तुष्ट हइया ब्रह्मा मोर प्रति ब'ले
आमि वर दिव तोरे शुन रे वानर * तुइ छुँले जले जेन भासये पाथर
गाछ-पाथर जोड़ा लागे तोमार परशे * तुइ छुँले गाछ-पाथर जले जेन भासे
ब्रह्मार वरेते आमि बाँधिब सागर * प्रतिज्ञा करिया वलि तोमार गोचर
एक मास बाँधि दिब शतेक योजन * गाछ पाथर आमि दिक् यत कपिगन
सागर बाँधिते नल अंगीकार करे * हर्षित हइल राजा सुग्रीव वानरे
'रामजय' वलिया डाकये कपिगन * सागर बाँधिते चले हरषित मन
श्रीरामे प्रणाम करि नल वीर चले * सागर बाँधिते वीर वैसे गिया जले

१ ब्रह्मा २ मानसरोवर ३ कुश-पवित्री से ४ सरोवर ५ छूतेही ६ पत्थर ७ पत्थर और वृक्ष ८ दुःख ९ सुग्रीव।

नल-कानन[1] जो सागर तीरा ※ सकल उजारि बिछायेउ नीरा
तिन पर पुनि तरु-काठ बिछाई ※ उपल-शिला चहुँ दीन जमाई
कपि तरु-उपल देत यहि हेतू ※ सम-तल किय दश योजन सेतू
उतर[2] अरंभि, दखिन पग धारा ※ दिवस एक जोजन बिस्तारा
नल अति कुशल सेतु-आसीना ※ लाय-लाय पर्व्वत कपि दीना
मुद्गर-चोट बज्र ध्वनि करहीं ※ घोष 'राम-जय' चहुँ सुनि परहीं
देत आनि गिरि तनय-समीरा[3] ※ बन्धन-सिंधु करत नल वीरा
दश योजन बंधन - बिस्तारा ※ कथा सकल कृतिवास प्रचारा

नल के प्रति हनुमान-कोप

छं० गढ़त सेतु नल, देत उपल-तरु, आनि मरुति[4] बलधारी ।
शिला रम्य अति, जड़ित अलँग दुइ, मगन नचत तरुचारी[5] ।।
बीच सुहावन, धवलित पाहन, कारुकार्य[6] रुचिकारी ।
मनहुँ राम कर, रचहिं धाम वर, निवसइँ अवधविहारी ।।

गिरि उपारि आनहिं हनुमन्ता ※ लेहिं बाम कर नल बलवन्ता

आछिल नलेर वन सागरेर तीरे ※ ताहा भाँगि फेलि दिल जलेर उपरे
ताहार उपरे गाछ दिल बिछाइया ※ उपरे पाथर सब दिल चापाइया
प्रस्थे दश योजन से करये बन्धन ※ गाछ-पाथर जोगाइया देय कपिगन
दीर्घ एक योजन बाँधिल एक दिने ※ उत्तरे आरम्भ करि चलिल दक्षिणे
बसिलेन नल वीर जांगाल उपरे ※ पर्व्वत आनिया देय सकल बानरे
मुद्गरेर बाड़ि पड़े, महाशब्द शुनि ※ उच्चैःस्वरे डाके कपि 'राम जय' ध्वनि
पर्व्वत आनिया देय पवननन्दन ※ नलवीर बसि करे सागर बन्धन
दश योजन सागर जे हइल बन्धन ※ कृत्तिवास गाइलेन गीत रामायण

नलेर प्रति हनूमानेर क्रोध

छं० सागर बाँधये नल, हनूमान महाबल, आनि देय शिला वृक्षगण ।
जाँगालेर दुइ भिते, सुन्दर पाथर गाँथे, आनन्दे नाचये कपिगण ।।
जाँगालेर माझे-माझे, रजत-पाथर साजे, नल करे विचित्र निर्म्मान ।
गठिछे आवास घर, थाकिवेन रघुवर, हेन मते गठे स्थाने-स्थाने ।।
माथाय पर्व्वत ल'ये, हनूमान देय व'ये, वाम हाते धरे वीर नल ।
महाक्रोधे हनूमान, पर्व्वत आनिते जान, बुझि, बेटा कत धरे बल ।।

---

१ नरकुल का जंगल २ उत्तर दिशा से ३ हनुमान ४ हनुमान ५ शाखाचारी, वानर ६ पच्चीकारी ।

सो निज मरति समुझि अपमाना * लावन गिरि पुनि उतर[1] पयाना
भूधर गंधमादनहिं लाई * नल कर देखहुँ बल-प्रभुताई
पद हनि शृंग-महीधर भंगा * रोम-रोम लटकत गिरि-अंगा[2]
दोउ कर दुइ गिरि धरि पुनि सीसा[3] * चलेउ पवनगति बेगि कपीसा
पूँछ एक गिरि धरि बलवन्ता * धायेउ अन्तरिक्ष हनुमन्ता
रवि गिरि ओट तिमिर[4] चहुँ छावा * नलहिं अतुल संसय मड़रावा
आवत निरखि कुपित हनुमाना * रघुपति पहँ नल त्रसित पयाना

दो० गिरि लावत धरि शीश हनु, जबहिं बढ़ावत राम !।
शिल्पी[5] सहज स्वभाव मैं, लेत तानि कर बाम[6] ।।
अवनि बिलोटत बन्दि पद, कहेउ जोरि नल हाथ ।
वृथा कोप, हनुमान मम, लेयँ प्रान, रघुनाथ ! ।। ९९ ।।

लखि नल-रुदन अतिव दुख पाई * पन्थ रोकि निवसे रघुराई
ततछन मग विलोकि भगवाना * सो किमि लंघि सकैं हनुमाना
अन्तरिक्ष तजि, भुइँ हनु आये * तोष-वचन प्रभु तिनहिं सुनाये
उचित न नल प्रति क्रोध तुम्हारा * सुनि बरनत इमि पवनकुमारा
देत प्रानधन गिरि मैं आनों * लेत वाम कर नल अभिमानी

धाय वीर मनोदुःखे, चलिल उत्तर मुखे, यथा गिरि से गन्धमादन ।
देखि पर्व्वतेर चूड़ा, लाथि मारि करे गुँड़ा, लोमे लोमे करये बन्धन ।।
दुइ हाते दुइ गिरि, लइया मस्तकोपरि, अमनि पवनवेगे धाय ।
जाय वीर महातेजे, एक गिरि बाँधि लेजे, शून्येर उपरि चलि जाय ।।
रविर किरण नाइ, अन्धकार सर्व्वठाँइ, चमकिया चाहे वीर नल ।
क्रोधे आसे हनूमान, उड़िल नलेर प्राण, उठिया पलाय महाबल ।।
श्रीरामेर काछे गिया, भूमि लुटि प्रणमिया, बन्दिया कहेन जोड़ हात ।
हनूमान आने गिरि, वाम हाते आमि धरि, कर्म्मीर स्वभाव रघुनाथ ।।
क्रोध करि मोर तरे, आइसे पवन भरे, पर्व्वत लइया बहुतर ।
कुपियाछे हनूमान, लइबे आमार प्राण, उद्धार करह रघुवर ।।
नलेर क्रन्दन शुनि, दुःखी हैला रघुमणि, पथ माझे दाण्डाइला गिया ।
रामेर उपर दिया, जाइबारे ना पारिया, चले वीर भूमेते नामिया ।।
कहिलेन प्रभु राम, शुन वीर हनूमान, नले क्रोध कर कि कारण ।
हनूमान कहे वाणी, जोड़ करि दुइ पाणि, शुन राम कमललोचन ।।

१ उत्तर दिशा को २ गिरिखण्ड ३ शिर पर ४ अन्धकार
६ वायें हाथ में ।

विवस छोभ, पर्वत बहु लाई ※ डारि सीस नल देहुँ नसाई
अनुचित गर्व तजहु हनुमाना ※ शिल्पी सहज स्वभाव बखाना
जो उपकरण[1] बाम कर साधा ※ तौ तव प्रति जनि नल-अपराधा
लाज न तात ! नलहिं उर लाई ※ करहु सप्रीति काज मम जाई
यहि विधि कहि, नल-कर लै हाथा ※ हनुहिं समर्पेउ पुनि रघुनाथा
नल, सुत-अनिल[2] मुदित लपिटाने ※ गढ़त सेतु नल आनँदसाने
अहि-निसि कृत्तिवास जप-नामा ※ चाहत अचल भक्ति पद-रामा

काष्ठविडालों की सेतु-बंधन में सहायता

विपुल महीधर हनुमत लाये ※ दश योजन पुनि सेतु बँधाये
योजन बीस अगम जहँ सागर ※ बन्धन निरखत आय निशाचर
काठ-बिडाल[3] तबहिं बहु आये ※ भरि छलाँग थल सों जल छाये
तन रेणुका[4] झटकि झरिलावैं ※ सेतु-सन्धि[5] बहु छिद्र मिटावैं

दो० पवनतनय चहुँ दिसि लखत, काष्ठ-बिडाल अनेक ।
इत-उत मारि बिडारि[6] तिन, रहे सकल दिसि फेक ॥१००॥

रोय गिलहरिन राम गुहारा ※ बिन अपराध पवनसुत मारा

करि आमि प्राणपण, आनिते पर्व्वतगण, वाम हाते नल ताहा धरे ।
एइ हेतु क्रोध करि, आनिनु अनेक गिरि, चापा दिते ए नल वानरे ॥
एत शुनि कहे राम, त्यज बापू अभिमान, कर्म्मीर स्वभाव एइ काज ।
वाम हात आगे चले, क्रोध ना करिह नले, नाहिक तोमार इथे लाज ॥
शुन बाछा हनूमान, मोर कार्य्ये देह प्राण, कर प्रीति नलवीर सने ।
एत कहि रघुनाथ, धरिया नलेर हात, समर्पिया दिया हनूमाने ॥
कोलाकुलि दुइ जने, करे हरषित मने, जांगाले उठिल गिया नल ।
कृत्तिवास कहे राम, जपिब तोमार नाम, एइ भक्ति हउक अचल ॥

काष्ठबिडालों की सेतुबन्धन में सहायता

जे पर्व्वत एनछिल पवननन्दन ※ दश योजन ताहाते जे हइल बन्धन
कुड़ि जोजन बाँधा गेल अलंघ्य सागर ※ आसिया देखिया जात यत निशाचर
काष्ठबिडालेर दल एल तथा कारे ※ लाफ दिया पड़े गिया सागरेर नीरे
अंगेते माखिया बालि झड़ये जांगाले ※ फाँक यत छिल, ताहा मारिल बिड़ाले
यातायात करे सदा वीर हनूमान ※ बिडालेरे चारिदिके फेले दिया टान
कान्दिया कहिल सबे रामेर गोचर ※ मारिया पाड़ये प्रभु, पवनकोङर

१ साधन २ हनुमान ३ गिलहरी ४ बालू ५ छेद या दरार ६ भय

कहेउ बुलाय राम, हनुमाना ! ※ कौन गिलहरिन किमि अपमाना
जिमि समर्थ निज बल अनुसारी ※ बंधन - सेतु सकल सहकारी
लाज पाय हनु सीस लचावा ※ सदय भाव रघुपति उर छावा
पीठ गिलहरिन प्रभु सुहराई[1] ※ चले सेतु पहँ सब हरषाई
कहेउ पवनसुत, चलहु सम्हारी ※ होय गिलहरिन जनि दुखकारी
दिवस बीस गिरि मरुति जुटावा ※ सत्तर जोजन सिन्धु बँधावा
पैठि लंकपुर हनुमत वीरा ※ खण्ड-बिखण्डित किय प्राचीरा
उपल-प्रकोट[2] आनि कपि बाँधा ※ नब्बे जोजन सिंधु अगाधा
भरत छलाँग कपिन कै जोरी ※ सिखर-लंक-देवल[3] लिय तोरी
ओट दनुज झाँकत कहुँ पावैं ※ ताल देहिं कपि मुहँ बिचकावैं
बाँधत सिंधु, मुदित-नल गयऊ ※ मास विगत शत योजन भयेऊ
उत्तर सों दक्खिन लौं सेतू ※ निर्मि[4] कहत कपि 'जय-रघुकेतू'
विश्कर्मा - सुत सेतु रचावा ※ सुरगन सकल सुमन बरसावा
सेतु समापन करि नल वीरा ※ चलि बन्देउ पद जहँ रघुवीरा
सविनय कहत भूमि प्रणिपाती ※ बँधेउ अम्बुनिधि[5], प्रभु! सब भाँती

हनूमान डाकिया कहेन प्रभु राम ※ काष्ठबिडालेर केन कर अपमान
जेमन सामर्थ्य जार, वान्धुक सागर ※ शुनिया लज्जित हैल पवनकोङर
सदय हृदय बड़ प्रभु रघुनाथ ※ काष्ठबिडालेर पृष्ठे वुलाइला हात
चलिल सबाइ तबे जांगाल उपर ※ हनूमान वले, शुन सकल वानर
काष्ठबिडालेरे केह किछु ना बलिबे ※ सावधान हये सबे जांगाले चलिबे
पर्व्वत आनिया देय पवननन्दन ※ कुड़िदिने बाँधा गेल सत्तर जोजन
लंकापुरे प्रवेशिया वीर हनूमान ※ प्राचीर भांगिया सब कैल खान-खान
बहिया आनिया ताहा सकल वानर ※ नवति योजन बाँधे प्रबल सागर
लाफ दिया जाय ताय कपि जोड़ा-जोड़ा ※ लंकार भांगिया आने देउलेर चूड़ा
आड़े-ओड़े थाकिया राक्षस देय उँकि ※ मालसाट मारे कपि, देखाय भावकि
आनन्दे करये नल सागर-बन्धन ※ एक मासे बाँधा गेल शतेक योजन
उत्तरेर जांगाल ठेकिल दक्षिण कूले ※ 'राम जय' बलिया बानर सब बुले
जांगाल बाँधिल विश्वकर्म्मार नन्दन ※ सकल देवता करे पुष्प-वरिषण
जांगाल समाप्त करि नल वीर चले ※ प्रणाम करिल गिया राम पदतले
भूमि लुटि घन-घन करि प्रणिपात ※ जोड़-हस्त करि वले, शुन रघुनाथ

---

१ किम्वदन्ती है कि भगवान राम के उस समय के अंगुलियों के स्पर्श के चिह्न गिलहरियों पर अब भी विद्यमान हैं २ चहारदीवारी के पत्थर ३ लंका के मंदिर का शिखर ४ बनाकर, सेतु बाँधकर ५ सागर ।

दो० सेतु रचित, हनुमन्त पुनि रक्षक, सुनि भगवान।
लही प्रीति, सन्तुष्ट अति, बोले कृपानिधान ॥१०१॥
नल! धन बिन किमि करहुँ प्रसादू * प्रस्तुत तव हित आशिष-वादू
सिय उद्धारि अवध जब चलहीं * अतुल रतन बहु अर्पन करहीं
नाथ रतन-धन मोहिं न प्रीता * विधि-वाञ्छित[1] मोहिं रतन अतीता
जेहि पद सतत[2] रमा[3] अनुरागा * जासु ध्यान शिव लीन विरागा
प्रभु! सो[4] चरन सीस मम दीजै * यहि सों अधिक रतन किमि लीजै
सुनि उर-कमलविलोचन हरषा * दहिन पदुम-पद नल शिर परसा
लिय प्रसाद नल पद-रज धारी * नाचत कपि 'जय राम' पुकारी
तात सुकण्ठ! कहेउ रघुकेतू * लखहिं सकल चलि जलनिधि-सेतू
घोष 'राम-जय' किय रविनन्दन[5] * आगे चले लखन - रघुनन्दन
चले सुकण्ठ[5], विभीषन राजा * अंगद, यत कपि वीर समाजा
कला कुतूहल सेतु निहारा * धनि धनि! नल विश्कर्मकुमारा!
नाग-सुरासुर चकित निहारा * मनहु सिन्धु पहिरे गर-हारा

श्रीराम द्वारा शिव-प्रतिष्ठा

रचहु शिवालय नल! जहँ सेतू * पूजहुँ शम्भु कहेउ रघुकेतू

जांगाल समाप्त करि बान्धिनु सकल * रक्षक रहिल हनूमान महाबल
एत शुनि सन्तुष्ट हइला रघुनाथ * नले आशीर्व्वाद करि पृष्ठे देन हात
धन नाइ, नल, किबा करिब प्रसाद * एखन लह रे बापू, मोर आशीर्व्वाद
सीतार उद्धार करि जाब अयोध्याय * अमूल्य रतन नाना दिब हे तोमाय
नल कहे, ताहे कार्य्य नाहि नारायण * ब्रह्मार वाञ्छित देह अमूल्य रतन
कमला याँहार सदा करित सेवन * याँहा लाखि योगी हैला देव-पञ्चानन
मोर शिरे देह सेइ चरण तोमार * इहा हैते अमूल्य रतन किवा आर
शुनिया सन्तुष्ट राम कमललोचन * नलेर माथाय दिला दक्षिण चरण
प्रसाद लइल नल भूमि लोटाइया * 'राम जय' बलि सबे बेड़ाय नाचिया
श्रीराम बलेन शुन मित्र कपिराज * जांगाल देखिते चल सागरेर माझ
'राम जय' बलि उठे सूर्य्येर नन्दन * आगे-आगे चलिलेन श्रीराम-लक्ष्मण
सुग्रीव चलिल आर राजा विभीषण * अंगद चलिल संगे यत वीरगण
देखिल विचित्र अति जांगाल बन्धन * धन्य-धन्य नल विश्वकर्म्मार नन्दन
देवता-असुर-नाग देखि चमत्कार * हेन बुझि, सागर परिला गले हार

सेतुबन्धे श्रीरामेर शिव-प्रतिष्ठा

श्रीराम बलेन, नल, शुनह विशेष * देउल गठिया देह पूजिते महेश

---

१ ब्रह्मा। जिन चरणों की चाहना रखते हैं २ सदैव ३ लक्ष्मी ४ वे ही ५ सुग्रीव।

सुनि नल वीर बेगि तहँ धावा * शिव मन्दिर, जहँ सेतु, रचावा
आनि पवनसुत शिला जुटावा[1] * देवल परम सुरम्य सुहावा
धवल मूर्ति-शिव तहाँ सुहाई * दीन खबरि नल जहँ रघुराई

दो० रचित शिवालय, राम सुनि, कहेउ टेरि हनुमान!।
श्वेत सरोरुह[2] देहु मोहिं, आनि सहस्र प्रमान ॥१०२॥

धाये सुनि मारुति कैलासा * कानन-कमल कुबेर निवासा
कानन इक सरवर मन मोहा * विकसित सुमन उपर जल सोहा
सहस पदुम चुनि हनुमत लाई * प्रस्तुत कीन जहाँ रघुराई
शिव-अर्पन रघुपति मन लाये * तजि कैलास स्वयं शिव धाये
दोउ कर रामहिं लीन महेसा * प्रेम - आलिंगत मोद असेसा
कहत शंभु रघुपति! कस पूजा * मोहिं न इष्ट राम बिन दूजा
तुम मम इष्ट, लेहु वृषकेतू[3]! * सलिल-सुमन[4] रावण-वध हेतू
रावन यदपि भक्त प्रिय मोरा * कीन हरन-सिय पातक घोरा
बोले शंभु, सुनहु रघुनायक * तासु मरन निश्चित तव सायक
शिव-आराध्य न रामहिं चीन्हा * स्वयं विनास निमंत्रित कीन्हा
आयु न शेष धरत सिय-केशा * आकुल सिय दिय शाप विशेषा

एत शुनि नल वीर हइया सत्वर * देउल गठिल सेइ जांगाल उपर
पर्व्वत आनिया दिल पवननन्दन * परम सुन्दर करे देउल गठन
श्वेतवर्ण शिव गठि ताहार भितर * नल जानाइल गिया रामेर गोचर
श्रीराम बलेन तबे पवनकुमारे * श्वेतपद्म-सहस्र आनिया देह मोरे
एत शुनि चले वीर पवननन्दन * कैलासेते यथा कुबेरेर पद्मबन
ताहार भितरे आछे एक सरोवर * फुटियाछे पुष्प सव जलेर उपर
तुलिया सहस्र पद्म पवननन्दन * आनिया दिलेन वीर, यथा नारायण
शिवपूजा करिते बसिला भगवान * कैलास छाड़िया शिव हैला अधिष्ठान
दुइ हात रामेर धरिला त्रिलोचन * दुइ जन हरषित प्रेम-आलिंगन
महेश बलेन प्रभु, पूजा कर कार * इष्टदेव राम तुमि हओ जे आमार
श्रीराम बलेन, तुमि मोर इष्ट हओ * रावण बधिते तुमि पुष्प जल लओ
शंकर बलेन, मोर सेवक रावण * सीता चुरि कैल, तार हउक मरण
तव वाणे हवे तार सवंशे संहार * अछिल परम प्रिय रावण आमार
ना चिनिल इष्टदेव प्रभु रघुमणि * आपन मरण ताइ आनिल आपनि
आयुः शेष हैल धरि जानकीर चुले * शाप दिला सीता तारे मनेर आकुले

१ इकट्ठा कीं २ सफेद कमल ३ शंकर ४ [illegible]

सकुल विनास तासु यहि हेतू ※ उतरहु सिन्धु बेगि रघुकेतू
बहुरि परस्पर कीन प्रणामा ※ शिव कहि 'राम' गये शिवधामा

राम द्वारा भस्मलोचन-वध व लंका-प्रवेश

आगे लखन सहित रघुराई ※ पुनि सुग्रीव विभीषनराई
दहिने जामवन्त बलवन्ता ※ आगे धाय चलेँउ हनुमन्ता
अंगद पुनि सेनापति नाना ※ सैन - चाप घन - गर्ज समाना

दो० 'राम-घोष' चहुँ 'राम जय' कपिगन करत निनाद ।
सिंहनाद सुनि दनुज-दल, छायेँउ अतुल प्रमाद ॥१०३॥

कहेँउ निसिचरन रावन तीरा ※ आये सिन्धु उतरि रघुवीरा
सुनि दसकन्ध नयन चहुँ कीन्हा ※ भस्मलोचनहिं आयसु दीन्हा
लै कपि, राम लंक-अभियाना[1] ※ हरहु भसम करि कपिगन प्राना
चलेँउ दनुज, आयसु लहि धाई ※ चर्म्म-टोप निज नयन चढ़ाई
चर्म - वेष्टित[2] रथ आसीना ※ सेतु समीप हेलि रथ दीना
कमललोचनहिं कहत बिभीषन ※ प्रस्तुत रन हित भस्मविलोचन
निरखत जहि दिसि चर्म हटाई ※ दृग तर परत भसम ह्वै जाई

एइ हेतु हबे तार सवंशे संहार ※ शीघ्र चलि जाइ राम, सागरेर पार
एत बलि परस्परे करिया प्रणाम ※ कैलासे गेलेन शिव बलि 'राम राम'

भस्मलोचन-बध ओ श्रीरामेर लंकाप्रवेश

श्रीराम चलिला तबे सहित लक्ष्मण ※ पश्चाते सुग्रीव राजा आर विभीषण
दक्षिण चापिया चले मंत्री जाम्बवान ※ आगे आगे धाइया चलिल हनूमान
चलिल अंगद वीर लये सेनागण ※ एक चापे चले ठाट मेघेरे गर्ज्जन
'राम जय' बलिया छाड़ये सिंहनाद ※ शुनिया राक्षसगण गणिल प्रमाद
रावणेरे कहे गिया यत निशाचर ※ आइला श्रीराम पार हइया सागर
शुनिया रावण राजा चारिदिके चाय ※ भस्मलोचनेरे देखि आज्ञा दिल ताय
श्रीराम लंकाय आसे वानर लइया ※ वानरेरे भस्म करि देह उड़ाइया
पाइया राजार आज्ञा चलिल सत्वर ※ चक्षे ठुलि दिया उठे रथेर उपर
चर्म्मे ढाका, रथखान आइसे धाइया ※ जांगाल उपरे रथ लागिल आसिया
विभीषण बले, गोसाँइ करि निवेदन ※ जुझिवार तरे आइल ए भस्मलोचन
घुचाये चर्म्मेर ठुलि जार पाने चाबे ※ च'क्षेते देखिवा मात्र भस्म ह'ये जाबे

[illegible] चढ़ाई २ चमड़े से ढका हुआ ।

आतुर राम सुहृद सन कहहीं * कवन जतन वानरगन बचहीं
कहत विभीषण, प्रभु ! अनुसरहू * धनु - प्रतञ्च दर्पनमय[1] करहू
दर्पन निज मुख लखि निज लोचन* जरै स्वयं खल भस्मविलोचन
सुनि अति तोष मुदित रघुनन्दन * ब्रह्मायुध साजे बहु दर्पन
दर्पन समुख दनुज-रथ आवा * दनुज बेगि दृग - चर्म हटावा
निज मुख दर्पन बीच निहारा * निसिचर भसम भयेउ जरि छारा
लखि निसिचरन अतुल भय छावा * प्रथम समर रघुपति जय पावा
यहि बिधि लंक राम पग दीन्हा * कपिगन सकल 'रामजय' कीन्हा
बीच जलधि[2], उत सिय इत रामा * अब समीप दोउ लंका धामा

दो० डेढ़ पहर रजनी रहत, कपिदल धाय निसंक ।
ध्याय राम रघुपति-चरन, घेरि लीन चहुँ लंक ।।
गाथा मंजु सुपावनी, अमिय-मूरि मधुभाण्ड ।
भयेउ समापन गान इत, सुन्दर सुन्दरकाण्ड ।।
नाना दानव सुभट पुनि, कपि अनन्त बलवन्त ।
युद्धकाण्ड गाथा - समर, सरुचि सुनैं गुनवन्त ।।
कृत्तिवास बंगीय कवि विरचित छंद पयार ।
सानुवाद लिप्यन्तरण—सो किय 'नन्दकुमार' ।।
अमर भारती नागरी, भाषा बंग ललाम ।
उभय ज्ञान लहि विज्ञवर, लहैं राम सुखधाम ।।१०४।।

श्रीराम ब'लेन, मिता, बलह उपाय * केमने वानरगण इथे रक्षा पाय
एत शुनि बलिछे राक्षस विभीषण * धनुकेर गुणे राम जोड़ह दर्पण
दर्पणे देखिते पाबे आपनार मुख * आपनि हइबे भस्म, देखह कौतुक
एत शुनि रघुनाथ आनन्दित मन * ब्रह्म-अस्त्रे कोटि-कोटि सृजिल दर्पण
रथ आगुलिया तार रहिल दर्पणे * घुचाय चक्षेर ठुलि चाहे चारि पाने
आपनार मुख देखे दर्पण भितर * भस्म ह'ये उड़े गेल सेइ निशाचर
देखिया राक्षसगण पाइलेक भय * हइल प्रथम रणे श्रीरामेर जय
पार हये लंकाय उठिल नारायण * 'राम जय' बलि डाके यत कपिगन
दूरे छिला सीतादेवी, दूरे छिला राम * दुइ जने मिलिया हइला एक स्थान
पोहाते तखन रात्रि आछे प्रहर देड़ * रामेर कटके लंकापुरी कैल बेड़
कृत्तिवास रचे गीत अमृतेर भाण्ड * एतदूरे पूर्ण हैल एइ सुन्दरकाण्ड

॥ इति सुन्दरकाण्ड ॥

१ धनुष की डोरी ...

कृत्तिवास रामायण

(लंकाकाण्ड)

बंगला

कृत्तिवास रामायण

[लंकाकाण्ड]

(तुलसी-रामचरितमानस से एक शती प्राचीन)

रचयिता सन्त कृत्तिवास

हिन्दी-अनुवाद सहित देवनागरी-लिप्यन्तरण

नन्दकुमार अवस्थी

प्रबोध मजुमदार

प्रकाशक

भुवन वाणी ट्रस्ट

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ-२२६००३

विषय-प्रवेश

बंगला-देवनागरी वर्णमाला				
অ अ	আ आ	ই इ	ঈ ई	উ उ
ঊ ऊ	ঋ ऋ	ঌ ऌ	এ ए	ঐ ऐ
ও ओ	ঔ औ		অং अं	আঃ अः
ক क	খ ख	গ ग	ঘ घ	ঙ ङ
চ च	ছ छ	জ ज	ঝ झ	ঞ ञ
ট ट	ঠ ठ	ড ड	ঢ ढ	ণ ण
ত त	থ थ	দ द	ধ ध	ন न
প प	ফ फ	ব ब	ভ भ	ম म
য य	র र	ল ल	ব व	শ श
ষ ष	স स	হ ह	ক্ষ क्ष	জ্ঞ ज्ञ
শ্র श्र	ড় ड़	ঢ় ढ़	ৎ त्	য় य

वाणी, भाषा और लिपि

मन के भावों और उद्गारों को मुख से प्रकट करना, यही वाणी है। पशु, पक्षी अथवा मनुष्यों में जब कोई वर्ग एक प्रकार की वाणी बोलता है, उस बोली से परस्पर भावों को कहता, सुनता और समझता है, तब वाणी के उस प्रकार को उस विशिष्ट-वर्ग की भाषा की संज्ञा दी जाती है। और उसी भाषा को जब चिह्नों-आकृतियों में लिख कर प्रकट

किया जाता है, तब उन्हीं चिह्नों और आकृतियों को उस भाषा-विशेष की लिपि कहा जाता है।

कुछ विद्वानों के मत से धरातल पर पृथक्-पृथक् भूखण्डों में विभिन्न समयों पर मानवों की सृष्टि और विकास होता रहा है। वे सब एक ही स्थान पर एक ही मानव से उत्पन्न नहीं हैं। फलतः उन सब की भाषाएँ भी एक दूसरे से बिलकुल पृथक् और स्वतंत्र हैं। इन पृथक् कुलों को ये विद्वान् आर्य, मंगोल, सेमेटिक, हेमेटिक, द्रविड़ आदि की संज्ञा देते हैं।

किन्तु भारतीय मत की घोषणा इसके विपरीत है, और इस्लामी तथा ख्रीष्ट मान्यता भी उसका अनुमोदन करती है। इस मत के अनुसार सारी मानव जाति एक ही मूल पुरुष मनु अथवा आदम की सन्तान हो कर मानव अथवा आदमी कहलायी। कालान्तर में विभिन्न भूखण्डों में फैलने, एक दूसरे से अलग-अलग होने और वहाँ की विशिष्ट जलवायु और संस्कारों से प्रभावित होने के फल-स्वरूप वह मानव जाति अनेक रूप, रंग, आकार और बोलियों में विभक्त होती गई। यह परिवर्त्तन लाखों वर्षों से चलते आ रहे हैं और इसलिए उन मानव-समूहों के रूप, रंग, आकार और बोलियों के अन्तर भी इतने सघन हो गये हैं कि ज्ञान की उपेक्षा करनेवाले और केवल तर्क, अनुमान, प्रयोग, अनुसंधान आदि भौतिक साधनों को ही ज्ञान मान कर उन पर निर्भर रहनेवाले पाश्चात्य विद्वानों तथा उनके अनुवर्ती भारतीयों का भ्रमित हो जाना स्वाभाविक ही है। यह बात इनसे ओझल हो जाती है कि कितना भी बड़ा वैषम्य इन जातियों के लक्षणों में दिखाई देता हो, उनकी आकृतियों और भाषाओं में कुछ ऐसे तथ्य लाखों वर्ष बाद भी झलकते हैं जो सारी मानव-जाति को किसी पुरातनकाल में एक मूल मानव का पितृत्व प्रदान करते हैं।

भारतीय वाङ्मय के सृष्टिक्रम-सम्बन्धी विशाल ज्ञानकोश को विस्तार-भय से किनारे भी रख दें, तो भी जन-साधारण की समझ में आनेवाली कुछ बातें तो हमारे मत की पुष्टि करती ही हैं। उदाहरण के लिए—(१) द्रविड़कुल की भाषाएँ आर्यकुल की भाषाओं से पाश्चात्य मत में-मूलतः पृथक् मानी गई हैं। किन्तु संस्कृत की वर्णाक्षरी, उनका वर्गीकरण तथा लिपि का बायें से दाहिने लिखा जाना उनके समान ही है। इसके विपरीत, आर्यकुल की अनेक भाषाओं का खरोष्टी लिपि में (दायें से बायें) लिखा जाना और वर्णों की संख्या, क्रम, वर्गीकरण आदि में संस्कृत से बड़ा अन्तर है। (२) अरबी और संस्कृत की शब्दावली और लिपि में नाममात्र को भी मेल नहीं है, किन्तु उनकी व्याकरण में बड़ी समानता है, जबकि संस्कृत का अपने आर्यकुल ही की अन्य भाषाओं के व्याकरण से साम्य

नगण्य सा है। (३) उत्तर-पश्चिम में सुदूरस्थ ईरान की अवेस्ता और गाथाओं की भाषा में असुर का अहुर उच्चारण है। बीच के पूरे आर्यावर्त्त में इसका अभाव होने के बाद उत्तर-पूर्व में असम प्रदेश में फिर दस को दह और गोसाईं को गोहाईं बोलते हैं। (४) नेपाल के आदिम निवासी आर्यकुल के रूप, आकृति से सर्वथा भिन्न हैं। किन्तु वहाँ कुछ ही समय से आबाद आर्यकुल के राज-परिवार तथा राना-परिवार की आकृतियों पर नेपाली प्रभाव प्रत्यक्ष है; आदि, आदि।

भारतीय भाषाएँ

अस्तु, जब मानव मात्र एक मनु (आदम) की सन्तान हैं और आज पृथ्वी पर उपलब्ध विविध भाषाओं और बोलियों का आदि-स्रोत एक है, तब भारत के निवासियों और भारतीय भाषाओं को मूलतः पृथक् मानना, उनका बुनियादी वर्गीकरण करना, कहाँ तक समुचित है। जहाँ तक हिन्दी, गुरुमुखी, सिन्धी, राजस्थानी, ओड़िया, बंगला, असमिया, गुजराती, मराठी, कश्मीरी, मैथिली, नेपाली, सिंहली आदि भाषाओं, लिपियों अथवा बोलियों का सम्बन्ध है इन सब की वर्णमाला, शब्दावली, व्याकरण आदि में इतना अधिक साम्य है कि उनको एक परिवार से बाहर समझने की रत्ती भर गुंजाइश नहीं। ये सभी प्राचीन संस्कृत की पौत्री और भारतीय जनपदों में शौरसेनी, मागधी, महाराष्ट्री आदि प्राकृत अथवा उनके अपभ्रंशों की पुत्रियाँ हैं। अलबत्ता भारत की दक्षिणी भाषाओं—मलयाळम, तेलुगु, कन्नड़ और तमिऴ—का शेष भारतीय भाषाओं और लिपिओं से भेद अधिक दूर का है। किन्तु उनके अक्षरों का देवनागरी लिपि के समान ही वर्गीकरण तथा संस्कृत के तद्भव-तत्सम अनेक शब्दों का घुलन-मिलन उनको भी अन्य भारतीय भाषाओं के समीप ले आता है।

किन्तु उर्दू को तो हिन्दी से पृथक् मानना ही भूल है। उसका तो हिन्दी से वही सम्बन्ध है जो एक रूह का दो क़ालिब से—एक प्राण का दो शरीर से। उर्दू-हिन्दी की व्याकरण, क्रियाओं के विभिन्न कारकों, कालों में प्रत्यय और रूप—ये सब एक समान हैं। अ़रबी लिपि में लिखी जाने अथवा अ़रबी-फ़ारसी भाषाओं के शब्दों के अधिक समाविष्ट हो जाने से वह पृथक् भाषा नहीं हो सकती। कदाचित् लोगों को कम पता है कि नगरों में नहीं ग्रामों तक में नित्य बोली जानेवाली और हिन्दी कही जानेवाली भाषा में एक चौथाई से अधिक शब्द अ़रबी, फ़ारसी, तुर्की आदि के बार-बार बोले जाते हैं। उनमें ऐसे भी अ़रबी शब्दों की भरमार है जिनको लोग ठेठ हिन्दी की सम्पत्ति समझने लगे हैं, उनके अ़रबी-फ़ारसी होने की कल्पना भी नहीं करते। जैसे हलुवा, साइत (मुहूर्त्त),

हरिया, हमेल, तरह, अन्दर, अगर, अचार, अजगर, अतलस, अबीर, अमीर, गरीब, अरक, मेवा, मल्लाह, मसखरा, मक्कर, लाला, लहास, स्याही, संदूक, रूमाल आदि ।

उद्देश्य

उपर्युक्त भाषाई पहलुवों के अलावा, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक दृष्टि से भी सारा देश परस्पर ऐसा गुथ गया है कि उसमें एकात्म-भाव के सर्वत्र दर्शन होते हैं। उसके प्रभाव की छाप सभी भाषाओं के साहित्य पर मौजूद है। इसलिए अपने-अपने क्षेत्र में विभिन्न लिपियों के फलते-फूलते रहने के बावजूद, यह ज़रूरी है कि राष्ट्र में सबसे अधिक सुपरिचित और व्याप्त देवनागरी लिपि के माध्यम से प्रत्येक क्षेत्रीय भाषा और साहित्य को भारत के कोने-कोने तक पहुँचाया जाय। भारत भूमि के हर कोने में प्रस्फुटित वाङ्मय को हर भारतवासी तक पहुँचाया जाय। लिपि और भाषा के सेतुकरण द्वारा सारे राष्ट्र का एकीकरण—यही इस 'भाषा-शिक्षण-सीरीज़' का उद्देश्य है।

उद्देश्य-पूर्ति का माध्यम देवनागरी लिपि

आसेतु हिमालय, सारे देश के साहित्य, संस्कृति, आचार-विचार और सन्तों की वाणी को, किसी एक क्षेत्र अथवा समुदाय तक सीमित न रहने देकर, सारे भारतीयों की सामूहिक सम्पत्ति बनाना ही राष्ट्रीय एकीकरण की उपलब्धि है। इस्लामी हदीसें, फ़ारसी और उर्दू का विशाल गद्य-पद्य साहित्य, तमाम शायरों के दीवान, कुल्यात, मस्नवी और अदबी नावेल, नरसी मेहता के भजन, टैगोर की गीताञ्जलि, तिरुवल्लुवर का तिरुक्कुरळ् और सन्त नानक की अमर वाणी क्रमशः उत्तरप्रदेश, गुजरात, बंगाल, तमिळनाडु और पञ्जाब को ही नहीं, अपितु सारे देश को प्राण प्रदान करें, यह उनके अनुवाद मात्र के द्वारा संभव नहीं। जिस भाषारूपी सुधाभाण्ड से यह अमृत प्रवाहित हुए हैं उस भाषा के बोध के विना वह प्राण सुलभ नहीं।

प्रत्यक्ष प्रणाली (डाइरेक्ट मेथड)

अस्तु, एक ही मार्ग है। देवनागरी लिपि, जो सारे देश में अपेक्षाकृत सर्वाधिक व्याप्त है, भारतीय प्राचीन वाङ्मय की भाषा—देवभाषा संस्कृत की अपनी लिपि है, इसी के माध्यम से हम क्षेत्रीय भाषा का आरंभिक ज्ञान प्राप्त करें। देवनागरी लिपि में क्षेत्रीय भाषाओं की वर्णमाला, उनके विशेष अक्षर-उच्चारण, मात्राएँ, सामान्य व्याकरण, वाक्यरचना,

देशज एवं संस्कृत के तत्सम-तद्भव शब्दों के उदाहरण आदि का कामचलाऊ ज्ञान प्राप्त करने के उपरांत सम्बन्धित क्षेत्रीय भाषा के किसी मान्य लोक-प्रिय ग्रंथ को चुन कर उसके अध्ययन द्वारा अपने अर्जित उपर्युक्त ज्ञान का अभ्यास किया जाय। धीरे-धीरे, अभ्यास के द्वारा उस भाषा में तथा अन्य वाञ्छित भाषाओं का अभीष्ट ज्ञान सुलभ होगा।

एक भाषाक्षेत्र में अन्यभाषा-भाषी निवासी

यह तो हुई भावनात्मक एकता की बात। देवनागरी लिपि के माध्यम से अन्य भारतीय भाषाओं को पढ़ने-समझने की ज़रूरत भी पैदा हो गई है। बहुत बड़ी संख्या में एक क्षेत्र या राज्य के निवासी दूसरे क्षेत्र अथवा राज्य में स्थायी तौर पर बस गये और बसते जा रहे हैं। वह अपने परिवार और सक्षेत्रीयों के साथ परस्पर तमिळ, बंगला, सिन्धी आदि अपनी मातृभाषाएँ बोलते हैं, और परम्परा के अभ्यास से सदैव बोलते भी रहेंगे, किन्तु उस क्षेत्र-विशेष में शिक्षा-दीक्षा पाने के कारण बच्चे अपनी लिपि के ज्ञान से अपरिचित रह जाते हैं। फलतः नित्य की बोलचाल को छोड़ कर, अपनी मातृभाषा के सम्पन्न और बहुमूल्य वाङ्मय से वे अपरिचित होते जा रहे हैं, और इस प्रकार अपनी क्षेत्रीय संस्कृति से दिन प्रति दिन दूर होते जायँगे। अन्य क्षेत्रों में आवासित उन परिवारों, जिनकी संख्या आज के आज़ाद भारत में अपरिमित है, के लिए तो अनिवार्यतः आवश्यक है कि देवनागरी लिपि में अपनी मातृभाषा के अमूल्य साहित्य को पढ़ कर अपनी क्षेत्रीय साहित्यिक निधि को अपने बीच संजोये रखें।

अन्य लिपियों का विरोध नहीं

उपर्युक्त प्रयास से यह किसी प्रकार अभीष्ट नहीं कि भारत में प्रयुक्त अन्य लिपियों के शिक्षण अथवा प्रचार में ज़रा भी कमी हो। वह वैसे ही, वरन् और अधिक फलती-फूलती रहें। किन्तु यह भी न भूलना चाहिए कि अन्य भाषाओं और लिपियों से सम्बन्धित जन, अथवा उनकी लिपि और भाषा के ही लोग जो परिस्थिति-वश दूसरे क्षेत्रों में स्थायी तौर पर बस गये हैं, उनको उनके प्रचुर साहित्य से वञ्चित होने की परिस्थिति पैदा न होने पाये। दो हज़ार वर्ष पूर्व तमिलनाडु के अमर सन्त तिरुवल्लुवर का 'पञ्चम वेद' समझा जाने वाला नीतिग्रन्थ 'तिरुक्कुरळ्' अपनी लिपि के साथ-साथ देवनागरी लिपि के कलेवर में राष्ट्र के कोने-कोने में लोकप्रिय होने की स्थिति में आ जाय, यह संकल्प भी कम पुनीत नहीं। जय भारत!

शमन-दमन रावणराजा रावण-दमन राम * शमनभवन नाहिय गमन ये लय रामेर नाम
राम नाम जप भाइ अन्य कर्म्म पिछे * सर्व्व कर्म्म धर्म्म रामनाम बिना मिछे १
राम नाम लइते ना कर भाइ हेला * भवसिन्धु तरिवारे राम-नाम भेला
रामनाम स्मरणे यमेर दाय तरि * भवसिन्धु तरिवारे रामपद तरी २
श्रीराम स्मरणे येबा महारण्ये जाय * धनुर्ब्बाण लये राम पश्चाते गोड़ाय
एमन रामेर गुण कि दिब तुलना * पादस्पर्शे शिला नर, नौका हय सोना ३
पार कर रामचन्द्र पार कर मोरे * दीन देखि नौका राम लये गेल दूरे
वार सने कड़ि छिल गेल पार ह'ये * कड़ि बिना पार करे तारे बलि नेये ४
ध्यान पूजा तंत्र मंत्र यार नाहि ज्ञान * तारे यदि करे पार तबे जानि राम
योग-याग तंत्र-मंत्र जेइ जन जाने * तुमि कि तराबे तारे तरे निजगुने ५
मोर संगे कड़ि नाइ, पार हब किसे * कर वा न कर पार कूले आछि व'से
नेयेर स्वभाव आमि जानि भालेभाले * कड़ि ना पाइले पार करे सन्ध्याकाले ६

जिस यम का दमन रावणराज ने किया उस रावण का दमन करनेवाले राम हैं। जो राम का नाम लेता है उसको यमलोक नहीं जाना पड़ता। भाई! राम-नाम जपो, दूसरा काम बाद में। राम-नाम के बिना सारे धर्म-कर्म व्यर्थ हैं ॥ १ ॥ भाई, राम-नाम लेने में आलस मत करना, भवसागर पार करने के लिए राम-नाम नौका के समान है ॥ २ ॥ राम-नाम के स्मरण से यम के हाथों से निस्तार मिल जाता है। भवसिन्धु को पार करने के निमित्त राम के चरण, तरणि (नौका) के समान हैं ॥ ३ ॥ श्रीराम का स्मरण कर जो घनघोर जंगल में भी जाता है तो राम उसके पीछे-पीछे धनुष-बाण लिये चलते हैं ॥ ४ ॥ राम के ऐसे ही गुण हैं, उनकी क्या तुलना दूँ। उनके चरणों के स्पर्श से पत्थर प्राणी में बदल जाता है और नाव सोने की बन जाती है ॥ ५ ॥ जिनके पास (उतराई देने के लिए) कौड़ी थी वे पार लग गये, बिन-कौड़ी के भी पार लगाओ तो समझूँ कि नाविक हो। जिसको ध्यान-पूजा, तंत्र-मंत्र का ज्ञान न हो उसको पार लगाओ तो जानूँ कि राम हो। जो व्यक्ति योग-याग और तंत्र-मंत्र में कुशल है वह तो अपने ही गुण के बूते पार हो जायगा, तुम उसे क्या पार लगाओगे? मेरे पास कौड़ी नहीं है, मैं पार कैसे जाऊँगा? चाहे पार लगाओ या न लगाओ मैं तो तट पर बैठा ही रहूँगा। केवटों की आदत से मैं भली-भाँति परिचित हूँ—कौड़ी न मिलने पर भी वे शाम को पार कर देते हैं ॥ ६ ॥

उपर्युक्त पंक्तियों में संत कृत्तिवास ने राम-नाम-माहात्म्य का मार्मिक वर्णन किया है। अब बंगला भाषा पर ध्यान दीजिए। (१) गमन, जप, शमन, दमन, भवन, मृत्युकाले, कर्म्म, धर्म्म, सर्व्व, विमान, स्मरण, ध्यान, गुण, मंत्र, तंत्र, आदि प्रायः नब्बे प्रतिशत शब्द संस्कृत के तत्सम अथवा सामान्य तोड़-मरोड़ के साथ तद्भव रूप में वर्तमान हैं, जो न केवल हिन्दी वरन् भारत के अन्य भाषाभाषियों को भी सुपरिचित हैं। (२) मृत्युकाले, देवलोके, स्मरणे, महाराज्ये, सन्ध्याकाले आदि अधिकरण कारक (संस्कृत के अनुरूप) जिसमें 'में' विभक्ति-चिह्न लगता है—व्याकरण के पृष्ठ बाइस पर 'कारक' देखिए। अर्थात् मृत्युकाल में, देवलोक में, स्मरण करने पर, महा अरण्य में, सन्ध्याकाल में, आदि। (३) नर, चड़िया,

जाय, भाइ, भवसिन्धु, शुनियो, नाहि, देखि, चूर आदि भी प्राय: सभी भाषाओं में जाने-समझे शब्द हैं। (४) ये, सर्व्व, यदि, यमेर, येवा, योग-याग आदि शब्दों को बंगला-असमिया की पद्धति पर क्रमश: जे, सर्ब्ब, जदि, जयेर, जेबा, जोग-जाग आदि पढ़ें, अथवा शुद्ध हिन्दी के ढङ्ग पर उनके मौलिक रूप में पढ़ें। (५) रामेर, यमेर, यार, आदि में सम्बन्ध कारक है, जिसका हिन्दी में विभक्तिचिह्न 'का, की, के' है। क्रमश: अर्थ—राम का, यम का, जिसका आदि—देखिए व्याकरण पृष्ठ अठारह 'कारक'। इस प्रकार क्रियाओं के काल, वचन, कारक, अव्यय आदि को व्याकरण-अंश से समझिए और दूसरी क्रियाओं तथा शब्दों के रूप भी उसी प्रकार बनाने का अभ्यास कीजिए। (६) मिछे, डाके, हेला, भेला गोड़ाय कड़ि (कौड़ी), आदि देशज बंगला शब्दों को ऊपर दिये हिन्दी अनुवाद की सहायता से समझिए और ध्यान में चढ़ाइए ताकि आगे पाठ में उनके पुन: आने पर आपको वह शब्द याद रहें। मूल ग्रंथ के साथ हिन्दी अनुवाद देने में यह एक उद्देश्य है। (७) कुछ शब्द जैसे गोड़ाय (अवधी में गोड़ अर्थात् पैर), मिछे (कदाचित् मिथ्या अर्थात् व्यर्थ) आदि देशज शब्द भी अन्य क्षेत्रीय शब्दों से मिलते-जुलते हैं, अथवा संस्कृत से बिलकुल बदल कर देशज का रूप ले लेते हैं। कुछ शब्द काव्य में छन्द की गति अथवा अन्त्यानुप्रास (तुकान्त) के लिए अपने वास्ताविक रूप से कुछ बदल कर सभी भाषाओं में प्रयुक्त होते हैं, वही बात बंगला काव्य में भी वर्तमान है। वह भी हिन्दी अनुवाद के सहारे आसानी से समझ में आ जायँगे।

विदेशी शब्द

कुछ विदेशी शब्द बंगला भाषा में ऐसे घुलमिल गये हैं कि उनका अंग बन गये हैं। वे ही शब्द न केवल हिन्दी वरन् अन्य भारतीय भाषाओं में भी प्राय: सुपरिचित हैं। ऐसे शब्दों के कुछ उदाहरण :—

अर्सा, आपस, आदमशुमार, आफसोस, आशनाइ, आशरफि, आसमान, इशारा, किशमिश, कूर्निश, क्लास, खरगोश, खुशि, चशमा, जिनिस, तल्लाश, तामाशा तोशक, दुशमन, नकशा, नालिश, नोटिस, पोस्ट, बक्शिश, बदमाश, बिस्कुट, बुरुश, मासूल, मुन्शी, मुश्किल, लश्कर, लाश, शयतान, शरम, शरिक, शर्त, शहर, शहिद, शागरेद, शादि, शवाश, शामियाना, शामिल, शुरु, शेमिज, शोरगोल, सादा, सुपारिश, स्टीमार, स्टेशन, स्ट्रीट, हामेशा, हिस्टिरिया, हूशियार, आदि।

क्षेत्रीय उच्चारण

लिखने-पढ़ने-समझने के लिए उपर्युक्त विवरण है। अब रही क्षेत्रीय-उच्चारण की बात। प्रत्येक क्षेत्र की जलवायु तथा परम्परागत संस्कार व अभ्यास का उच्चारण पर प्रभाव अनिवार्य है। उदाहरण के लिए बंगला में 'जल' लिख कर 'जोल', 'कृष्ण' लिख कर 'कृष्टो' पढ़ते हैं। उसी प्रकार पञ्जाबी (गुरमुखी) में 'घड़ी', 'घण्टाघर' लिखते हैं, किन्तु 'घड़ी', 'घण्टा' तथा 'घर' में 'घ' का उच्चारण 'घ' और 'ग' के बीच का करते हैं। यह उनका परम्परागत भाषाई प्रयत्न है। अतः दूसरे क्षेत्रों के निवासियों के लिए दो विकल्प हैं। (१) एक तो यह कि अपने निजी क्षेत्र के प्रयत्नों के अनुसार जैसा लिखा है वैसे पढ़ें—जैसे जल, कृष्ण, घड़ी, घण्टाघर आदि। यह भाषा की अशुद्धि न होगी। अलबत्ता प्रयत्नों की कमी कही जायगी। (२) दूसरा यह कि उस भाषा के क्षेत्र में प्रयुक्त प्रयत्नों के तदनुरूप ही उच्चारण करने का शौक रखें। इस दशा में उनको उस भाषा और क्षेत्र से सम्बन्धित जनों से सत्संग और आलाप-संलाप का सहारा लेना होगा। इस शौक की पूर्ति पुस्तकों के आधार पर असंभव है।

आगे आरंभिक व्याकरण प्रस्तुत है :—

सर्वनाम

[बंगला भाषा में तीन पुरुषों (उत्तम, मध्यम, अन्य) तथा कर्त्ता, कर्म, करण, आदि सात कारकों और एक तथा बहु-वचनों में सर्वनामों के रूप इस प्रकार बनते हैं :—]

आमि	**मैं, मैंने**	**तुइ**	**तू, तूने**
आमाके, आमाय	**मुझको, मुझे**	**तोके**	**तुझको, तुझे**
आमाके दिये, आमा द्वारा	**मुझसे**	**तोके दिये, तोर द्वारा**	**तुझसे**
आमाके, आमार जन्य	**मेरे लिए**	**तोके, तोर जन्य**	**तेरे लिए**
आमा हते, आमार चेये	**मुझसे**	**तोर थेके, तोर चेये**	**तुझसे**
आमार	**मेरा, मेरी, मेरे**	**तोर**	**तेरा, तेरी, तेरे**
आमाते, आमार ओपर	**मुझमें, मुझपर**	**तोते, तोर ओपर**	**तुझमें, तुझपर**
आमरा	**हम, हमने**	**तुमि**	**तुम, तुमने**
आमादेर	**हमको, हमें**	**तोमाके, तोमाय**	**तुमको, तुम्हें**
आमादेर दिये, आमादेर द्वारा	**हमसे**	**तोमाके दिये, तोमार-द्वारा**	**तुमसे**

आमादेर, आमादेर-जन्य	हमारे लिए
आमादेर हते(चेये)	हमसे
आमादेर	हमारा,हमारी,हमारे
आमादेर मध्ये, आमादेर-ओपर	हममें, हमपर
निज	अपने ने
निजेके	अपने को
निजेके दिये, निजेर द्वारा	अपने से
निजेके, निजेर जन्य	अपने लिए
निजेर हते (चेये)	अपने से
निजेर	अपना, अपनी, अपने
निजेते, निजेर मध्ये	अपने में, अपने पर
ओ, ने, ता	वह, उस, उसने
ओके, ताके	उसको,
ताके दिये, तार द्वारा, ओके दिये, ओर द्वारा	उससे
ओके, ओर जन्य ताके, तार जन्य	उसके लिए
तार हते, ओर हते	उससे
तार, ओर	उसका,उसकी,उसके
ताते, ओते,तार ओर-मध्ये, ओपर	उसमें, उसपर
ओरा, ओदे	वे, उन्होंने
ओदेर	उनको, उन्हें
ओदेर द्वारा, ओदेर दिये	उनसे
ओदेर, ओदेर जन्य	उनके लिए
ओदेर हते, ओदेर चेये	उनसे
ओदेर	उनका,उनकी,उनके
ओदेर मध्ये, ओदेर ओपर	उनमें, उनपर
कारा, कादे	कौन (बहुवचन)
,, ,,	किन्होंने,
कादेर	किनको, किन्हें
कादेर दिये, कादेर	किनसे

तोमाके, तोमार जन्य	तुम्हारे लिए
तोमा हते (चेये)	तुमसे
तोमार	तुम्हारा, तुम्हारी, तुम्हारे
तोमाते, तोमार-ओपर	तुममें, तुमपर
आपनि	आप, अपने
आपनाके	आपको
आपनाके दिये, आपनार द्वारा	आपसे
आपनाके,आपनार-जन्म	आपके लिए
आपनार हते (चेये)	आपसे
आपनार	आपका,आपकी आपके
आपनार मध्ये, आपनार ओपर,	आपमें, आपपर
ए	यह, इसने
एके	इसको, इसे
एके दिये, एर द्वारा	इससे
एके, एर जन्य	इसके लिए
ए हते, एर चेये, एर अपेक्खा	इससे
एर	इसका,इसकी,इसके
एते, एर मध्ये, एर ओपर	इसमें, इसपर
एरा, एदे,	ये इन्होंने,
एदेर	इनको, इन्हें
एदेर द्वारा,एदेर दिये	इनसे
एदेर, एदेर जन्य	इनके लिए
एदेर हते, एदेर चेये	इनसे
एदेर	इनका,इनकी, इनके
एदेर मध्ये, एदेर ओपर	इनमें, इनपर
के, का	कौन, किसने
काके	किसको, किसे
काके दिये, कारद्वारा	किससे
काके, कार जन्य	किसके लिए.
कार हते, कार चेये	किससे
कार	किसका, किसकी, किसके
कार मध्ये,कार ओपर	किसमें, किसपर

कादेर,		ये, या (जे, जा)	जो, जिसने
कादेर जन्य	किनके लिए,	याके (जाके)	जिसको, जिसे
कादेर हते (चेये)	किनसे	याके दिये, यार द्वारा, (जाके दिये-द्वारा)	जिससे
कादेर	किनका, किनकी, किनके	याके, यार जन्य	जिसके लिए
,,		यार हते, यार चेये	जिससे
कादेर मध्ये, कादेर ओपर	किनमें, किनपर	यार (जार)	जिसका, जिसकी जिसके
यारा	जो (बहुवचन) जिन्होंने	यार मध्ये,यार ओपर	जिसमें, जिसपर
,, यादेर	जिनको, जिन्हें	यादेर हते (चेये)	जिनसे
यादेर दिये, यादेर द्वारा	जिनसे	यादेर‡ (जादेर)	जिनका, जिनकी जिनके
यादेर, यादेर जन्य	जिनके लिए	यादेर मध्ये,यादेर ओपर	जिनमें, जिनपर

सहायक क्रिया

[जब केवल सर्वनाम के साथ 'होना' क्रिया वर्त्तमान काल में प्रयुक्त हो तब 'हइ-हस' आदि का प्रयोग होता है। किन्तु संज्ञा के साथ में होने पर हिन्दी के प्रयोग के विपरीत 'होना' क्रिया का प्रयोग नहीं होता। 'मैं हूँ' में 'आमि हइ' किन्तु 'मैं लड़की हूँ' में 'आमि मेये' काफ़ी होगा। 'हइ या हस' की आवश्यकता नहीं।]

आमि हइ	मैं हूँ	आमरा हइ	हम हैं
तुइ हस	तू है	तुमि हओ	तुम हो
आपनि हन	आप हैं	से हय	वह है
ओ हय	वह है	ओटा हय	वह है
ओरा हय(ओंरा हन)	वे हैं	ओगुलो हय	वे हैं
तारा हय(ताँरा हन)	वे हैं	ए हय	यह है
एटा हय	यह है	एइ हय, से हय	यह है
एरा हय (एँरा हन)	ये हैं	एगुलो§ हय	ये हैं
इनि हन	ये हैं	आमि छेले	मैं लड़का हूँ
आमि मेये	मैं लड़की हूँ	ओटा बइ	वह पुस्तक है
ओगुलो बइ	वे पुस्तकें हैं	एटा कि	यह क्या है
एटा बइ	यह पुस्तक है	तुमि के	तुम कौन हो

‡ बंगला में दो 'ज' बोले जाते हैं। एक वर्ग्य जैसे 'जल'। दूसरा 'जार (यार)' में अवर्ग्य 'ज'; य का ज। § बहुवचन बनाने के लिए 'गुलो' शब्द को जोड़ दिया जाता है। जैसे एइ हय (यह है); एगुलो हय (ये हैं), ओगुलो एखाने नेइ (वे यहाँ नहीं हैं) आदि-आदि।

तुमि कोथाय	तुम कहाँ हो	ए दुटो बाड़ि	ये दो घर हैं
एगुलो फल	ये फल हैं	आपनि छात्र	आप विद्यार्थी हैं
आपनि भाल	आप अच्छे हैं	ओ (से) एखाने नेइ	वह यहाँ नहीं हैं
ए बुद्धिमान नय	यह होशियार-नहीं है	ओगुलो-एखाने नेइ	वे यहाँ नहीं हैं

उसी प्रकार

[संस्कृत के अनुरूप बंगला भाषा में सामान्य वर्त्तमान काल में सहायक क्रिया 'है' आदि लगाये विना क्रिया का काम चल जाता है। जैसे संस्कृत में 'इदम् जलम्' में 'अस्ति' लगाये विना 'यह जल है' ऐसा वोध होता है, वैसे ही बंगला भाषा में 'एटा जल' कहना पर्याप्त है। हिन्दी के समान 'है' लगाने की ज़रूरत नहीं होती।]

एइ, इनि, ए,	...	...	यह
ओ, ओइ, उनि	...	...	वह
एटा कि	यह क्या है	एटा पाठशाला	यह पाठशाला है
एटि मेये	यह लड़की है	एटा जल	यह पानी है
एटा फुल	यह फूल है	ओ के	वह कौन है
ओ राम	वह राम है	ओटि मेये	वह लड़की है
ओ मानुष	वह आदमी है	ओटा बाड़ि	वह घर है
एटा भाल काज	यह अच्छा काम है	एटा भाल-बइ	यह अच्छी-पुस्तक है
एटा सुन्दर बाक्स	यह सुन्दर सन्दूक है	ओ चतुर व्यबसायी	वह चतुर व्यापारी है
एटा असुस्थ छेले	यह बीमार लड़का है	ओटा गरम दुध	वह गरम दूध है
ओटि छोट मेये	वह छोटी लड़की है	एगुलो भाल काज	ये अच्छे काम हैं
एटा बाक्सेर ताला	यह सन्दूक का ताला है	एगुलो भाल बइ	ये अच्छी-पुस्तकें हैं
एरा असुस्थ छेले	ये बीमार-लड़के हैं	ओरा गरीब लोक	वे गरीब-आदमी हैं
ओगुलो बड़ बाड़ि	वे बड़े घर हैं		
एइ कागज गुलो छोट	ये कागज छोटे हैं		

[विभिन्न कालों में क्रिया के रूपों के उदाहरण।]

सामान्य वर्त्तमान काल

आमि आसि	मैं आता हूँ, आती हूँ	तुइ आसिस	तूआता है, आती है
ओ (से) आसे	वह आता है	ए आसे	यह आता है
आमरा आसि	हम आतेहैं, आती हैं	तुमि आसो	तुम आते हो, आती हो
ओरा (तारा) आसे	वे आते हैं, आती हैं	एरा आसे	ये आते हैं, आती हैं
आपनि आसेन	आप आते हैं, आती हैं	ओ(से) आसे ए आसे	वह आती है, यह आती है

अपूर्ण वर्त्तमान काल

आमि आसछि	मैं आ रहा हूँ	तुइ आसछिस	तू आ रहा है
ओ (से) आसथे	वह आ रहा है	ए आसछे	यह आ रहा है
तुमि आसछो	तुम आ रहे हो, रही हो	आमरा आसछि	हम आ रहे हैं रही हैं
एरा आसछे, एँरा आसछेन	ये आ रहे हैं, रही हैं	तारा (ओरा)- आसछे	वे आ रहे हैं, रही हैं
आमि आसछि	मैं आ रही हूँ	आपनि आसछेन	आप आ रहे हैं रही हैं
तुइ आसछिस	तू आ रही है		
ए आसछे	यह आ रही है	ओ (से) आसछे	वह आ रही है

सामान्य भविष्यत् काल

आमि आसब	मैं आऊँगा,मैं आऊँगी	तुइ आसबि	तू आएगा, आएगी
ओ आसबे	वह आएगा	ओ आसबे	वह आएगी
ए आसबे	यह आएगा	ए आसबे	यह आएगी
आमरा आसब	हम आयेंगे, आएंगी	तुमि आसबे	तुम आओगे, आओगी
ओरा आसबे	वे आयेंगे, आएंगी		
एरा आसबे	वे आयेंगे, आयेंगी	एरा आसबे	ये आयेंगी, ये आयेंगी
आपनि आसबेन	आप आएँगे, आएँगी	,,	

सामान्य भूतकाल

आमिएलाम	मैं आया, आई	तुइ एलि	तू आया, आई
ओ एल	वह आया	ओ एल	वह आई
ए एल	वह आया	ए एल	यह आई
आमरा एलाम	हम आए, आईं	तुमि एले	तुम आए, आईं
ओरा एल	वे आए,	एरा एल	ये आए, आईं
ओरा एल	वे आईं	आपनि एलेन	आप आए, आईं

अपूर्ण भूतकाल

आमि आसछिलाम	मैं आ रहा था रही थी	तुइ आसछिलि	तू आ रहा था रही थी
ओ आसछिल	वह आ रहा था	ओ आसछिल	वह आ रही थी
ए आसछिल	यह आ रहा था	ए आसिछिल	यह आ रही थी
आमरा आसछिलाम	हम आ रहे थे	तुमि आसछिले	तुम आ रहे थे,
	हम आ रही थीं	,, ,,	तुम आ रही थीं
ओरा आसछिल	वे आ रहे थे	एरा आसछिल	ये आ रहे थे
,, ,,	वे आ रही थीं	आपनि आसछिलेन	आप आ रहे थे
एरा आसछिल	वे आ रही थीं	,, ,,	आप आ रही थीं

आज्ञा और विधि

तुइ बल	तू बोल	तुइ कर	तू कर
तुइ पड़	तू पढ़	तुमि बलो	तुम बोलो
तुमि करो	तुम करो	तुमि पड़ो	तुम पढ़ो
आपनि बलुन	आप बोलिए	आपनि पड़ुन	आप पढ़िए
आपनि करुन	आप कीजिए	तुइ ओखाने बसो	तू उधर बैठ
तुइ एखाने आय	तू यहाँ आ	तुमि एखाने एसो	तुम यहाँ आओ
तुइ बइ ने	तू पुस्तक ले	तुमि बइ नाओ	तुम पुस्तक लो
तुमि ओखाने बसो	तुम वहाँ बैठो	आपनि ओखाने बसुन	आप वहाँ बैठिए
आपनि एखाने आसुन	आप यहाँ आइए	आपनि ताला खुलुन	आप ताला खोलिए

आपनि बइ निन—आप पुस्तक लीजिए

[वर्तमान, भूत और भविष्यत्—इन कालों के कुछ अन्य प्रयोग ।]

आमि एसेछि	मैं आया हूँ	आमि एसेछिलाम	मैं आया था
आमि एसे थाकब	मैं आया हूँगा	तुइ एसेछिस	तू आया है,
तुइ एसेछिलि	तू आया था	तुइ एसे थाकबि	तू आया होगा
ओ एसेछे	वह आया है	ओ एसेछिल	वह आया था
ओ एसे थाकबे	वह आया होगा	ए एसेछे	यह आया है
ए एसेछिल	यह आया था	ए एसे थाकबे	यह आया होगा
आमरा एसेछि	हम आये हैं	आमरा एसेछिलाम	हम आये थे,
आयरा एसे थाकब	हम आये होंगे	तुमि एसेछ	तुम आये हो
तुमि एसेछिले	तुम आये थे	तुमि एसे थाकबे	तुम आये होगे
ओरा एसेछे	वे आये हैं	ओरा एसेछिले	वे आये थे
ओरा एसे थाकबे	वे आये होंगे	एरा एसेछे	ये आये हैं
एरा एसेछिल	ये आये थे	एरा एसे थाकबे	ये आये होंगे
आपनि एसेछेन	आप आये हैं	आपनि एसेछिलेन	आप आये थे
आपनि एसे थाकबेन	आप आये होंगे	आमि एसेछि	मैं आई हूँ
आमि एसे थाकब	मैं आई हूँगी	आमि एसेछिलाम	मैं आई थी
तुइ एसे थाकबि	तू आई होगी	दुइ एसेछिस	तू आई है
ओ एसे थाकबे	वह आई होगी	तूइ एसेछिलि	तू आई थी
ए एसे थाकबे	यह आई होगी	ओ एसेछे	वह आई है
आमरा एसेछिलाम	हम आई थीं	ओ एसेछिल	वह आई थी
तुमि एसेछ	तुम आई हो	ए एसेछे	यह आई है
तुमि एसेछिले	तुम आई थीं	ए एसेछिल	यह आई थी
ओरा एसेछे	वे आई हैं	आमरा एसेछि	हम आई हैं
ओरा एसेछिल	वे आई थीं	आमरा एसे थाकब	हम आई होंगी
एरा एसेछे	ये आई हैं	तुमि एसे थाकबे	तुम आई होगी
एरा एसेछिल	ये आई थीं	ओरा एसे थाकबे	वे आई होंगी
आपनि एसेछेन	आप आई हैं	एरा एसे थाकबे	ये आई होंगी
आपनि एसेछिलेन	आप आई थीं	आपनि एसे थाकबेन	आप आई होंगी
से एसेछे	वह आया है		

से एसेछिल	वह आया था	से एसे थाकबे	वह आया होगा
से एसेछे	वह आई है	ऐ एसेछिल	वह आई थी
से एसे थाकबे	वह आई होगी	ओरा एसेछे	वे आए हैं
ओरा एसे थाकबे	वे आए होंगे	ओरा एसेछिल	वे आए थे
ओरा एसे थाकबे	वे आई होंगी	ओरा एसेछे	वे आई हैं
		ओरा एसेछिल	वे आई थीं

कारक-प्रत्यय

[बंगला भाषा में संज्ञा अथवा सर्वनाम के सातों कारकों में शब्द के अन्त में निम्न प्रत्यय साधारणतः दिये जाते हैं। उनके साथ ही, नीचे दिये हुए वाक्यों में, उदाहरण भी ध्यान देने योग्य हैं। जैसे कर्म कारक में 'के' प्रत्यय है, इसलिए तोमाके, आपनाके (तुमको, आपको); सम्बन्ध कारक में में 'र, एर' प्रत्यय है, इसलिए 'गरुर, गोलापेर (गाय का, गुलाब की); अधिकरण कारक में 'य, ए' आदि प्रत्यय हैं, इसलिए पाठशालाय, खाटे (पाठशाला में, खाट पर) आदि-आदि।

कोई चिह्न नहीं	कर्ता—ने	के	कर्म—को
दिये (द्वारा)	करण—से	र जन्य, एर जन्य	संप्रदान—के लिए
थेके (हइते) चेये, (अपेक्खा)	अपादान—से	र, एर	सम्बन्ध—का, की
ए,य, एते, ते,ओपरे	अधिकरण—में, पर	आपना के पड़ाब	आपको पढ़ाऊँगा
तोमाके डाके	आपको बुलाता है	कमल दिये	कलम से
छुरि दिये	चाकू से	चोरर जन्य	चोरों के लिए
काठ थेके	लकड़ी से	ओर काछ थेके	
गरुर दुध	गाय का दूध	निते हबे	उससे लेने हैं
गाछेर पाता	पेड़ का पत्ता	गोलापेर कुँड़ि	गुलाब की कली
पाठशालाय- छात्ररा पड़े	पाठशाला में- विद्यार्थी पढ़ते हैं	आमि खाटे घुमाइ	मैं चारपाई पर सोता हूँ

अव्यय

[कुछ वह अव्यय शब्द जो प्रायः हर समय बोलने में प्रयुक्त होते हैं। नीचे उनके प्रयोग की विधि समझाई गई है। जैसे वाक्य है 'घर के बाहर'। बंगला भाषा में सम्बन्ध कारक में 'र', एर' प्रत्यय लगते हैं। इस प्रकार हुआ 'बाड़िर'(घर के)'। 'बाइरे' का अर्थ 'बाहर'। 'बाड़िर बाइरे'—घर के बाहर। नीचे दिये हुए अव्ययों और वाक्यों की सहायता से अभ्यास करें।]

निचे	नीचे	ओपर	ऊपर
बाइरे	बाहर	पेछने	पीछे
परे	बाद	संगे	साथ

अनुसारे	अनुसार	आगे, पूर्बे	पहले-पूर्व
द्वारा, माध्यमे	द्वारा-जरिए	जन्य	कारण-मारे
		भेतरे, मध्ये	अन्दर-भीतर
परे	आगे-सामने	छाड़ा	अलावा
काछे, पाशे	पास, निकट	बइटिर बिषये	पुस्तक के बारे में
ब्यतीय	सिवाय	जायगाय, बदले	वजह
जन्य	वास्ते-लिए	मत, न्याय, रकम	तरह, भाँति
चेये,अपेक्खा,तुलनाय	अपेक्षा	केनना, कारण	क्योंकि
दिके	ओर, तरफ	अतएव, ताइ, सुतरां	अतएव
एइ जन्य,एइ काजेइ	इसलिए	तुइ आसिस ना	तू मत आ
लिखे दिल	लिखकर दिया	उठे	उठकर
शेखा उचित	सीखना चाहिए	आपनार काछे	आपके पास
		ए छाड़ा	इसके अलावा
बाड़िर बाइरे	घर के बाहर	मन्दिरेर दिके	मन्दिर की तरफ

व्याकरण-प्रकरण से मिला कर अभ्यास के लिए कुछ वाक्य—

१. निजेर ग्राम बा शहर सम्बन्धे आटटि पंक्ति लिखुन।	१. अपने गाँव या शहर के बारे में आठ पंक्तियों में लिखिए।
२. तुइ एदिक-ओदिक ताकास ना।	२. तू इधर-उधर मत देख।
३. जेते जेते आमि ओके देखलाम।	३. जाते-जाते मैंने उसे देखा।
४. एखन आपनि कोथाय जाबेन ?	४. अब आप कहाँ जायँगे ?
५. एखाने थेके आमार बासा अनेक दुर।	५. यहाँ से मेरा निवास बहुत दूर है।
६. आपनि कोथा थेके आसछेन ?	६. आप कहाँ से आ रहे हैं ?
७. आमि कलिकाता थेके आसछि।	७. मैं कलकत्ता से आ रहा हूँ।
८. तुमि एखाने बसो, भालकरे बसो।	८. तुम यहाँ बैठो, मज़े में बैठो।
९. आपनार बाड़िटा कि सुन्दर ! चारिदिके परिष्कार-परिच्छन्न।	९. आपका मकान कितना सुन्दर है ! चारो ओर साफ़-सुथरा है।
१०. दुर्गापूजाइ आमादेर सब चेये बड़ ऊत्सब।	१०. दुर्गापूजा हमारा सब से बड़ा त्यौहार है।
११. तिनि आमार संगे कथा पर्यन्त बललेन ना।	११. उन्होंने मुझसे बात तक नहीं की।
१२. तुमि आज नेओ ना।	१२. तुम आज मत नहाओ।
१३. आमार बाड़िते अतिथिरा एसेछिलेन।	१३. मेरे घर मेहमान आये हैं।
१४. आपनार सम्बन्धे आमि अनेक शुनेछि।	१४. आपके बारे में मैंने बहुत सुना है।

संख्या

बंगला	हिन्दी	बंगला	हिन्दी
एक	एक	त्रिश	तीस
दुइ	दो	चल्लिश	चालीस
तिन	तीन	पञ्चाश	पचास
चार	चार	षाठ	साठ
पाँच	पाँच	सत्तर	सत्तर
छय	छः	आसी	अस्सी
सात	सात	नब्बई	नब्बे
आट	आठ	श	सौ
नय	नौ	दु,दुइ श	दो सौ
दश	दस	तिन श	तीन सौ
एगार	ग्यारह	चार श	चार सौ
बार	बारह	पाँच श	पाँच सौ
तेर	तेरह	छ, छय श	छः सौ
चोद्द	चौदह	सात श	सात सौ
पनेर	पन्द्रह	आट श	आठ सौ
षोल	सोलह	न, नय श	नौ सौ
सतेर	सत्रह	हाजार	हजार
आठार	अठारह	लाख	लाख
उनीश	उन्नीस	कोटि	करोड़
कुड़ि, बिश	बीस	दश कोटि	दस करोड़

महीना-दिन

बंगला और हिन्दी में दिन तथा मास के नाम प्रायः समान होते हैं।

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
विषय प्रवेश	३
बंगला (देवनागरी-लिपि) चार्ट	३
सामान्य व्याकरण	१२
रामायण लंकाकाण्ड-कथासूची	२१
शुक-सारण का रामसैन्य-निरीक्षण	२५
,, से श्रीराम द्वारा रावण-भर्त्सना	२९
,, द्वारा रावण से राम-प्रशंसा	३०
,, राम-सैन्य प्रदर्शन	३१
,, की रावण द्वारा भर्त्सना	३४
विभीषण द्वारा शार्दूल-निग्रह	३५
शार्दूल द्वारा रावण से राम-प्रशंसा	३७
श्रीराम-माहात्म्य वर्णन	३८
रावण द्वारा सीता को राम-मायामुण्ड-प्रदर्शन	४१
मायामुण्ड देखकर सीता का विलाप	४४
निकषा और माल्यवान द्वारा रावण को उपदेश तथा सरमा द्वारा सीता-सान्त्वना	४७
सुग्रीव द्वारा लंका के चार द्वार पर वानरसैन्य-नियुक्ति	५०
शिव-पार्वती-कलह	५४
अंगद का दौत्य	५७
रावण के प्रति अंगद की भर्त्सना	७५
अंगद द्वारा चार राक्षस-वध एवं रावण-मुकुट प्रेषण	७७
अंगद का राम से रावण-सम्पदा व अपमान का वर्णन	७९
इन्द्रजीत प्रथम-युद्ध, राम-लक्ष्मण का नागपाश-बंधन	८१
राम-लक्ष्मण-बन्धन पर सीता-विलाप	९४
त्रिजटा की सीता को सान्त्वना, नागपाश से मुक्ति	९६
धूम्राक्ष का युद्ध और पतन	१०३
अकम्पन का ,, ,,	१०६
वज्रदंष्ट्र का ,, ,,	१०८
प्रहस्त का ,, ,,	११४

रावण का प्रथमदिवस-युद्ध-गमन	११८
रावण-सैन्य-परिचय, रावण प्रथमदिवस-युद्ध	१२१
राम-रावण प्रथम युद्ध	१२९
कुम्भकर्ण-निद्राभंग तथा रावण से कथोपकथन	१३१
कुम्भकर्ण की युद्धयात्रा	१४३
कुम्भकर्ण का युद्ध	१४६
कुम्भकर्ण का नासा-कर्ण-छेदन	१४८
कुम्भकर्ण-पतन	१५१
कुम्भकर्ण की मृत्यु पर रावण-विलाप	१५५
नरान्तक, देवान्तक, महोदर, त्रिशिरा और महापाश का पतन	१५९
अतिकाय-युद्ध एवं मृत्यु	१६७
अतिकाय आदि चार पुत्रों के मरण पर रावण-विलाप	१७३
इन्द्रजीत द्वारा सान्त्वना	१७५
इन्द्रजीत की दूसरी युद्धयात्रा का उद्योग	१७६
इन्द्रजीत का निकुम्भिला-यज्ञानुष्ठान	१८३
इन्द्रजीत का दूसरी बार युद्धगमन	१८४
विभीषण एवं हनुमान के सिवा, राम-लक्ष्मण सहित रामसैन्य-मूर्च्छा	१८६
राम-लक्ष्मण के जीवनार्थ यन्त्रणा।	१९१
हनुमान का औषधि हेतु ऋष्यमूक-प्रस्थान	१९४
,, द्वारा पर्वत की स्तुति	१९६
रावण द्वारा लंका के चारो द्वारों का अवरोध	१९९
दुबारा लंकादहन	२०१
कुम्भ-निकुम्भ का युद्ध एवं पतन	२०३
मकराक्ष ,, ,,	२१६
तरणीसेन ,, ,,	२२२
वीरवाहु, भस्मलोचन का पतन	२४१
इन्द्रजीत की तीसरी युद्धयात्रा	२६६
माया की सीता का वध	२७१
विभीषण द्वारा इन्द्रजीत मरणोपाय-कथन	२७८
वानरों द्वारा निकुम्भिला यज्ञ-भंग	२८०
लक्ष्मण द्वारा इन्द्रजीत-वध	२८३
इन्द्रजीत के मरण पर देवताओं में आनन्द	२८९
इन्द्रजीत-वध के बाद लक्ष्मण-वापसी	२९०
,, सुनकर रामोल्लास	२९१

इन्द्रजीत के बाणों से आहत लक्ष्मण का आरोग्य-लाभ	२९२
रावण विलाप	२९३
मन्दोदरी-विलाप	२९४
रावण सीता-वध को उद्यत, मंदोदरी द्वारा सान्त्वना	२९६
रावण का द्वितीयबार युद्धगमन	२९८
,, ,, युद्ध	३०१
लक्ष्मण-शक्तिशेल	३०३
रामचन्द्र-विलाप	३०६
हनुमान का गन्धमादन पर्वत से औषध लाना	३०८
गन्धकाली अप्सरा तथा कालनेमि-वध	३१०
रावणादेश से अर्धरात्रि में सूर्योदय एवं हनुमान द्वारा सूर्य को काँख में दबा लेना	३१७
हनुमान द्वारा गन्धर्व-निग्रह, गंधमादन पर्वत को लंका लाना	३२१
हनुमान द्वारा भरत की परीक्षा	३२३
लक्ष्मण-जीवनदान	३२९
सप्त राक्षस वध एवं गंधमादन गिरि पुनर्स्थापना एवं गन्धर्वों को प्राणदान	३३१
हनुमान की काँख से सूर्य की मुक्ति	३३४
महिरावण का लंका-आगमन	३३६
रावण-महिरावण-मंत्रणा सुनकर विभीषण का राम-लक्ष्मण-रक्षा-विधान	३४२
महिरावण द्वारा राम-लक्ष्मण-हरण	३४५
हनुमान का पातालगमन	३५१
,, द्वारा राम-लक्ष्मण को आश्वासन	३५५
हनुमान को देवी द्वारा महिरावण-वधोपदेश	३५७
महिरावण-पूर्वजन्म-वृत्तांत	३५९
हनुमान द्वारा महिरावण-वध	३६१
अहिरावण-वध	३६२
रावण का तीसरे दिन युद्ध गमन	३६५
राम को इन्द्र द्वारा रथ-प्रदान	३६९
श्रीराम-रावण युद्ध	३७०
रावण का अम्बिका-स्तवन	३८३
अम्बिका द्वारा रावण को अभयदान	३८४
रावण-वध के लिए ब्रह्मा का अकालबोधन कल्पारंभ	३८७
श्रीराम का दुर्गोत्सव	३८८
नीलकमल लाने का परामर्श	३९१

राम का देवी-स्तवन, हनुमान द्वारा नीलकमल लाना	३९२
अष्टोत्तर-शत नीलकमल-दान में देवी द्वारा एक कमल-हरण	३९३
राम द्वारा पुनः देवी-स्तुति	३९४
देवी से राम का निवेदन	३९७
देवी से राम की वर-प्रार्थना	३९८
राम को वर-लाभ, दशमी-पूजन	४००
रावण-कामना-हेतु वृहस्पति का चण्डी पाठ, एवं हनुमान द्वारा श्लोक-लोपन	४०१
हनुमान द्वारा रावण का मृत्युबाण-हरण	४०२
रावण-वध	४०८
रावण से राम की राजनीति-शिक्षा	४११
विभीषण-विलाप	४१८
मन्दोदरी-विलाप	४२०
मन्दोदरी का राम से अवैधव्य-वरलाभ	४२१
मन्दोदरी की अवैधव्य-व्यवस्था	४२२
रावण का सत्कार व मृत्यु	४२४
विभीषण का लंकाभिषेक	४२५
हनुमान द्वारा सीता को रावण-वध-सूचना	४२७
सीता को मन्दोदरी का शाप	४२९
सीता की अग्निपरीक्षा	४३४
राम का सीता-ग्रहण	४३८
दशरथ-राम-सम्भाषण	४४१
इन्द्र द्वारा वानरों को जीवनदान	४४३
विभीषण द्वारा वानरों को सन्तुष्ट करना	४४६
श्रीराम-स्वदेशयात्रा	४५०
लक्ष्मण द्वारा सेतुभंग	४५२
सेतु पर राम का शिव-पूजन, भरद्वाजाश्रम को जाना	४५३
राम द्वारा स्वदेशगमन, स्वजन-संभाषण	४६०
श्रीराम कैकेयी-संभाषण	४७२
श्रीराम-राज्याभिषेक	४७४
श्रीराम द्वारा वानरों को पुरस्कार-प्रदान	४८२
हनुमान का हृदय चीरकर राम-नाम-प्रदर्शन	४८४
वानर-भोजन, विभीषण लंका-गमन	४८६
लंकाकाण्ड समाप्त	४८८

श्री गणेशाय नमः

कृत्तिवास रामायण

लंका काण्ड

(हिन्दी पद्यानुवाद बँगला मूल सहित)

मंगलाचरण

शंखेन्द्वाभमतीवसुन्दरतनुं शार्दूलचर्म्माम्बरं-
कालव्यालकरालभूषणधरं गंगाशशांकप्रियम् ।
काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं-
नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं श्रीशंकरं कामहम् ।। १ ।।

यो ददाति सतां शम्भुः कैवल्यमतिदुर्ल्लभम् ।
खलानां दण्डकृद् योऽसौ शंकरः शं तनोतु मे ।। २ ।।

रामं कामारिसेव्यं भवभयहरणं कालमत्तेभसिंहं-
योगीन्द्रध्यानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्व्विकारम् ।
मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं ब्रह्मवृन्दैकदेवं-
वन्दे मन्दावघातं सरसिजनयनं देवमुर्व्वीशरूपम् ।। ३ ।।

शुक-सारणेर गुप्तभावे रामसैन्य-परिदर्शन ओ विभीषणादि-कर्त्तृक निग्रह ।

बाँधा गेल सागर कटक हैल पार * दिने दिने रावणेर टूटे अहंकार
फाँफर हइल राजा गनि मने-मने * दुइ चर शुक आर सारणेरे भने

रावण के आदेश से शुक एवं सारण का गुप्तरूप से राम-सेना का निरीक्षण और
विभीषण आदि द्वारा उनका निग्रह

सागर बाँधा गया और सारा कटक भी दूसरे तट पर पहुँच गया। इस प्रकार दिन-प्रतिदिन रावण का अहंकार टूटने लगा। किंकर्त्तव्यविमूढ़

शुन शुक-सारण, तोमरा बुद्धिमान ❋ चर्च्च गिया रामेर कटक कि प्रमान
पाथरेते बाँधा गेल सागर गभीर ❋ त्रिभुवने हेन कर्म्म करे कोन वीर
भालमते जान विभीषणेर ये मति ❋ एके एके जान सब योद्धा सेनापति
बल-बुद्धि जान सब रामेर मन्त्रणा ❋ प्रथमे जानिह सब प्रधान ये जना
रामेर सहित थाके कोन महावीर ❋ लंकाय आसिया केवा रणे हवे स्थिर १
राजार आदेश चर बन्दिलेक माथे ❋ राज-प्रदक्षिण करि जाय मनोरथे
कपिरूपे सान्धाइल वानर-भितर ❋ लेखा जोखा नाइ, यत देखिल वानर
कत पार हैल कत हैते आछे पार ❋ लिखिवार शक्ति कार देखिते अपार
कटक चर्चिया भ्रमे चर दुइ जन ❋ दूरे थाकि देखे ताहा मित्र विभीषण
राक्षसेर माया से राक्षस भाल जाने ❋ विभीषण दुइ चरे चिने सेइ क्षणे
घरेर सेवक बलि ना करिल आस्था ❋ वानरेर हाते कैल पंचम अवस्था
आपनार प्रत्ययित्व जानावार तरे ❋ रथ हैते नामिया से दुइचरे धरे २

होकर राजा (दशानन) ने अपने दोनों चर शुक और सारण को बुलवाया। सुनो शुक-सारण ! तुम लोग बुद्धिमान हो, जाकर पता लगाओ कि राम की सेना का परिमाण क्या है। अथाह सागर को जिसने शिलाओं से बाँध दिया, तीनों लोक में ऐसा वीर वह कौन है। अच्छी तरह से विभीषण के चाल-ढाल का पता लगाओ और एक-एक कर उसके सारे योद्धा और सेनापतियों को भी जान लो। राम की मंत्रणा क्या होगी, यह बुद्धि-बल से ज्ञात कर लो। आरम्भ में जान लो कि (उसके दल में) प्रधान कौन-कौन हैं। राम के साथ-साथ कौन सा महावीर रहता है। लंका में आकर कौन युद्ध में स्थिर रहेगा ॥ १ ॥

राजा के आदेश को चरों ने सिर नवा कर ग्रहण किया और राजा की प्रदक्षिणा करके वे चल पड़े। कपि का रूप धारण कर वे वानरों के भीतर समा गये। देखा वानरों की संख्या अनगिनत है। कितनों को वे पार कर गये, फिर भी कितनों को पार करना बाकी है। इनकी संख्या लिखने की शक्ति किसमें है, देखने ही में इस सेना का कोई ओर-छोर नहीं। सेना का निरीक्षण करते हुए दोनों चर घूमते रहे। दूर से मित्र विभीषण ने यह देख लिया। निशाचर की माया निशाचर ही भली प्रकार समझ सकता है। विभीषण ने दोनों चरों को तत्काल पहचान लिया। घर के सेवक थे, यह जानकर भी उनकी आवभगत नहीं की उसने। बन्दरों के हाथ उनकी दुर्गति कर दी। अपनी विश्वस्तता जताने के लिए रथ से उतर कर उसने दोनों चरों को पकड़ लिया ॥ २ ॥

विभीषणे ठेलि चर जाय पलाइया ❋ दूरे थाकि सुग्रीव ता' देखिल चाहिया
ालगाछ उपाड़िया आने आचम्विते ❋ महाकोपे धाय वीर राक्षसेर भिते
ड़िलेक शालगाछ मेघेरे समान ❋ राक्षसेर वाणे गाछ हैल खान-खान
ार गाछ आने, तार दश क्रोश गोड़ा ❋ गाछेर वाड़ीते रथ करिलेक गुँड़ा
ड़िल सारथि-घोड़ा नाहिक दोसर ❋ गदा हाते दुइजन जुझे घोरतर
ादार वाड़िते सब करे चूरमार ❋ सुग्रीव बलेन, गर्व्व करिस गदार
ार देखि गदा, बुक पेते दिनु तोरे ❋ तारे घा सहिया तोरे दिइ यमघरे
इ हात तुलिया पातिया दिनु बुक ❋ मार देखि गदा सबे देखुक कौतुक
ातिया दिलेक वक्षः सुग्रीव भूपति ❋ गदा मारे शुक आर सारण दुर्म्मति
ज्रसम वक्षः तार वज्रेते निर्म्माण ❋ ताहाते लागिया गदा हैल खान-खान
दा मारि दुइजन हइल फाँफर ❋ दुइचर वाँधि निल रामेर गोचर
सिया आछेन मध्य राम गुणवान ❋ वामदिके उपविष्ट अनुज लक्ष्मण
क्षिणेते मंत्रि ताँर शोभे जाम्बवान ❋ जोड़ हाते वसियाछे यत मंत्रिगण ३
न काले दुइचर धेये आगुसरे ❋ प्रणाम करिल दोंहे राजव्यवहारे
येते छाड़िल तारा जोवनेर आश ❋ कहिते लागिल किछु गदगद भाष

विभीषण को ढकेल कर चर भागने लगे। दूर से सुग्रीव ने यह देख लिया। तुरन्त ही साखू का एक पेड़ उखाड़ कर वह राक्षस की ओर सक्रोध पका। वादलों जैसे उस साखू के पेड़ से वे कतरा गये, राक्षस के वाण वह पेड़ खंड-खंड हो गया। दूसरा पेड़ लाया गया जिसकी दस-कोस ाली जड़ थी। उसी पेड़ के प्रहार से रथ को चूर्ण-चूर्ण कर डाला गया। ारथि और घोड़े काम आ गये, अब कोई दूसरा सहाय न रहा। दोनों र हाथ में गदा लेकर घोरतर युद्ध करने लगे। गदा के प्रहार से वे सब छ चूर-चूर करने लग गये। सुग्रीव ने कहा, तू अपनी गदा पर इतराता ? ले, मैं सीना तान देता हूँ, इस पर गदा की चोट तो कर भला। ोनों हाथ उठा कर मैं सीना ताने देता हूँ, चला तो अपनी गदा। तेरा हार सहकर तुझे यमलोक भिजवा देता हूँ, और लोग यह तमाशा देखें। पति सुग्रीव ने अपना वक्ष उन्मोचित कर दिया और मतिभ्रष्ट शुक और ारण ने उस पर गदा का प्रहार किया। वज्र के समान कठिन वक्ष से कराकर गदा चूर-चूर हो गयी। गदा मारने के बाद दोनों भौचक्के ह गये। दोनों चरों को बाँध कर राम के समक्ष लाया गया। गुण के ागर रामचन्द्र बीच में विराजमान हैं, उनके बाएँ लक्ष्मण और दाहिने मंत्री ाम्बवान शोभायमान हैं। सारे सचिवगण हाथ जोड़े बैठे हैं॥ ३॥

कटक चर्च्चिते मोरे पाठाय रावणे ✻ कि जाने एमन दाय घटिबे एखाने
लुकाइया आसिलाम, ह'लाम विदित ✻ बुझिया करह प्रभु जे हय उचित
शुनिया चरेर कथा श्रीरामेर हास ✻ उभयेरे दयामय दिलेन आश्वास
विभीषण धरिलेन काटिवार मने ✻ रावण करेन राम तारे सेइ क्षणे
क्षान्त हओ, चर-हत्या नहे राजधर्म्म ✻ सेवक मारिले सिद्ध हबे कोन कर्म्म
गोपने आइसे चर, भ्रमे सर्व्वस्थाने ✻ दुई चारि कथा एइ बलिह रावणे
शून्यघरे सीता हरि आनिल आमार ✻ भये पलाइया एल सागरेर पार
सेइ त सागर आमि हइलाम पार ✻ जिज्ञास, रावण राजा कि बलिबे आर
हरिया आनिल सीता मम अगोचरे ✻ सेई हेतु सेतुबन्ध हइल सागरे
शुनियाछ खर-दूषणेर ये प्रकार ✻ प्रभाते हइबे सेइ प्रकार तोमार
ये कोन प्रकारे आजि पोहाउक राति ✻ एक जन ना राखिव वंशे दिते वाति
कृत्तिवास कविर कवित्व विचक्षण ✻ लंका-काण्डे गाइलेन गीत रामायण ४

ऐसे ही समय दोनों चरों ने आगे बढ़कर राजकीय सम्मान प्रदर्शित करते हुए राम को प्रणाम किया। भय के मारे दोनों ने प्राणों की आशा छोड़ दी और भयातुर भाषा में गिड़गिड़ाने लगे। रावण ने सेना के निरीक्षण के लिए हमें भेजा है, कौन जानता था कि यहाँ ऐसी विपत्ति आ पड़ेगी। हम छिप कर आए थे लेकिन भेद खुल गया। अब हे प्रभु, जैसा आप उचित समझें करें। चर की बातें सुनकर श्रीराम हँस पड़े और उनको आश्वासन देने लगे। विभीषण ने निश्चय किया था कि इनको काट डाला जाय किन्तु रामचन्द्र ने तत्काल उनको मना किया। रुको, चर की हत्या करना राजधर्म नहीं है, सेवक की हत्या करने से कौन सा काम सफल होगा। चर गुप्तरूप से आता है और सभी जगहों में विचरता है। (हे चर युगल!) रावण से मेरी ये दो-चार बातें बता देना। सूनी कुटिया से मेरी सीता को वह चुरा लाया और डर के मारे सागर लाँघ कर इस ओर आ गया। उस सागर को भी मैं लाँघ आया हूँ। पूछना, अब राजा रावण को क्या कहना है। मेरे अगोचर सीता को वह हर लाया और इसी कारण सागर पर सेतुबन्ध बना। खर-दूषण की दशा के बारे में तो सुना होगा, सवेरे तुम्हारी भी वही दशा हो कर रहेगी। आज किसी प्रकार रात तो बीत जाने दो, फिर मैं उसके वंश में किसी को भी दीया दिखाने के लिए भी जीवित नहीं छोड़ूँगा। कवि कृत्तिवास का यह विचक्षण कवित्व है—लंकाकांड में उन्होंने रामायण का गीत गाया॥ ४॥

शुक-सारण-समीपे श्रीराम-कर्त्तृक रावणेर भर्त्सना

त्रिभुवन से जिनिया, सुन्दरी सब आनिया, नाना अलंकार दिया साजे।
ता' सबार प्राणनाथ, डरे नाहि हाँटे वाट, अनाथा हइया तारा भजे ॥
सीतार से शापानले, आमार ए कोपानले, रावणेर नाहिक निस्तार।
विश्वकर्म्मार निर्म्माण, ए कनक लंका खान, पुड़िया हइल छारखार ॥
राजा ह'ये चर मारे, अपयश ए संसारे, कह गिया तोरे लंकेश्वर।
देखुक से दशकन्ध, सागरेते सेतुवन्ध, लंकापुरी घेरिल वानरे ॥
कपिगण ये प्रचण्ड, मेघकरे खण्ड-खण्ड, मार्त्तण्ड धरिते पारे बले।
सागर ना सहे टान, रणे नाहि परित्राण, हनुमान वधिवे सकले ॥
एले सैन्य चर्च्चिवारे, जावे केन अगोचरे, ब'लो तारे कथा दुइचारि।
काटि तार दशमुण्ड, विभीषण छत्रदण्ड, दिब आर राणी मन्दोदरी ॥
बन्दि रामेर चरण, कृत्तिवास विचक्षण, विरचिल सरस्वती वरे।
सर्व्वपाप-विनाशन, सारग्रन्थ रामायण, मुक्तिपाय श्रवण जे करे ॥५॥

शुक-सारण के निकट श्रीराम द्वारा रावण की भर्त्सना

तीनों लोक पर विजय प्राप्त कर सारी सुन्दरियों को लाकर उसने आभूषणों से सजाया है। वे नारियाँ अनाथा सी हो कर उसको प्राणनाथ के रूप में सेवा करने को विवश हैं और वह निडर होकर घूमता-फिरता है। सीता के अभिशाप की आग से और मेरे क्रोधानल से रावण का निस्तार नहीं। विश्वकर्मा-निर्मित यह स्वर्ण-लंका जल कर खाक हो गयी (समझो)। राजा होकर जो चर को मारता है उसका अपयश सारे संसार में व्याप्त हो जाता है। जाकर अपने लंकेश्वर से बताना, वह दशस्कन्ध देख ले कि सागर पर सेतुबन्ध रच कर वानरों ने लंकापुरी को घेर लिया है। ये कपि इतने प्रचंड हैं कि मेघ को खंड-खंड कर देते हैं और मार्त्तंड को भी अपनी शक्ति से पकड़ ला सकते हैं; सागर भी इनके बल का सामना नहीं कर सकता और रण में भी किसी को छुटकारा नहीं—हनुमान सभी का वध करेगा। तुम लोग सैन्य का भेद लेने के लिए आए थे, अनजाने ही क्यों चले जाओगे। उसको भी जाकर दो-चार बातें बताना। उसके दस मुंडों को काटकर विभीषण को राजछत्र और राजदंड प्रदान करूँगा—साथ में रानी मन्दोदरी भी। राम के चरणों की वन्दना कर विचक्षण कृत्तिवास ने सरस्वती के वरदान से इस सर्व-पाप-विनाशकारी सारग्रन्थ रामायण की रचना की। जो भी इसे सुनता है, मुक्ति पा जाता है ॥ ५ ॥

रावण-समीपे शुक-सारण-कर्त्तृक श्रीरामेर प्रशंसा ओ सम्वाद-ज्ञापन

दिया राज प्रसाद पाठान राम चर ※ रावणेरे भेटे गिया लंकार भितर
दाण्डाइते नारे चर, नाहि नाड़े पाश ※ ऊर्द्धवमुखे वार्त्ता कहे घने ऊर्द्ध वश्वास
तोमार आज्ञाय गेनु कटक भितरे ※ यावामात्र विभीषण चिनिल आमारे
विभीषण धरि निल काटिवार मने ※ प्राणदान करिलेन राम निजगुणे
श्रीराम लक्ष्मण विभीषण कपिराजे ※ देखिलाम चारिजने आनन्दे विराजे
रामेर येमन धनु, शर तुल्य तारि ※ आछुक अन्येर काज, एका रामे नारि
भुवन सहाय यदि अष्ट लोकपाल ※ तबु ना जिनिवे राम विक्रमे विशाल
शतेक योजन सेतु हइल सागरे ※ बान्धिल योजन शत वृक्ष ओ पाथरे
उत्तर कूलेर सेतु ठेकिल दक्षिणे ※ पार हैल राम-सैन्य जुझिवार मने
पाले-पाले कपिगण पर्व्वत आकार ※ देखिया डराय, येन महा अन्धकार
केह वा पिंगलवर्ण केह वा श्यामल ※ रक्तवर्ण केह, केह वरण उज्ज्वल
उभे परिमाण देखि पर्व्वत प्रमाण ※ रणे प्रवेशिते चाइ, किन्तु काँपे प्राण

रावण के समक्ष शुक-सारण द्वारा श्रीराम की प्रशंसा और समाचार-निवेदन

राज-प्रसाद प्रदान कर राम ने चरों को विदा किया। चरों ने जा कर लंका में रावण से भेंट की। बेतहाशा भागते हुए जाने के कारण चरों की साँस फूलने लगी। फिर भी सिर उठाकर एक साँस में कहने लग पड़े; (शुक ने कहा)—आपकी आज्ञा से हम राम-सेना के भीतर पहुँच गये। पहुँचते ही विभीषण ने हमको पहचान लिया। विभीषण ने हम लोगों को काट डालने का निश्चय करके पकड़ लिया। राम ने सदय हो कर प्राणदान दिया। श्रीराम, लक्ष्मण, विभीषण और कपिराज (सुग्रीव), इन चारों को आनन्द से विराजमान देखा। जैसा राम का धनुष है उनके वाण भी उसी के योग्य हैं। दूसरों का चाहे जो कुछ कर लो, राम अकेले हों तो भी उनसे निबटा नहीं जा सकता। यदि आठों दिक्पाल अथवा जगत् आपका सहायक बन जाय, फिर भी राम से जीत नहीं सकते, वे इतने प्रबल पराक्रमी हैं। सागर पर उन्होंने वृक्ष और पत्थरों से सौ योजन का सेतु बना डाला है। उत्तर तट का सेतु आकर दक्षिण से लगा। युद्ध का निश्चय लेकर राम-सेना इस पार आ गई है। पर्वत के आकार वाले वानरों के कितने ही दल हैं—महान् अन्धकार स्वरूप उनको देखकर डर लगता है। इनमें कोई तो पिंगल वर्ण का है तो कोई श्याम वर्ण का, कोई रक्त वर्ण का है तो कोई गोरे रंग का। ऊँचाई में ये पर्वत के समान हैं। रण में प्रवेश करने

एक चापे कपि सेना जाय पृष्ठे-पृष्ठे ※ ओर नाहि पाइ, यत चाइ एक दृष्टे
गणिते यद्यपि पारि वरिषार धारा ※ दृष्टे संख्या करि यदि आकाशेर तारा
यदि ओ निर्णय करि सागरेर पाणि ※ तथापि वानर सैन्य निश्चय ना जानि
कृत्तिवास पण्डितेर मधुर पाञ्चाली ※ लंकाकाण्ड गाय तार प्रथम शिकलि ६

शुक-सारण-कर्त्तृक रावण के परिचय सह राम-सैन्य-प्रदर्शन

हइल शुकेर वाक्य यदि अवसान ※ सारण बलिछे दशानन विद्यमान
आमादेर वाक्ये यदि न हय प्रत्यय ※ प्राचीरे उठिया देख, हय कि ना हय
अति उच्च लंकार प्राचीर स्वर्णमय ※ चर सह उठिल रावण दुराशय
चतुर्द्दिके जल-स्थल व्यापिल वानर ※ देखिया रावण राजा सभय अन्तर
सहस्र वत्सर युद्ध करि निरन्तर ※ तथापि ना फुराइबे कटक विस्तर ७
वानर चिनिते चाहे राजा दशानन ※ तुलिया दक्षिण हस्त देखाय सारण
वानर सहस्र कोटि याहार संहति ※ ऐ देख नीलवर्ण नील सेनापति
नील सेनापति से हेलाय यदि नड़े ※ द्वादश प्रहर पथ सैन्य आड़े जोड़े

की चाह है लेकिन दिल धड़कता है। आगे-पीछे कपि सेना की टुकड़ियाँ चली ही गयी हैं—कितनी ही दृष्टि दौड़ाऊँ उनका ओर-छोर नहीं दिखाई पड़ता। चाहे बरसात में वृष्टि की बूँदों को गिन लूँ, चाहे गगन के तारों को आँखों से देखकर गिन लूँ, समुद्र के जल का परिमाण भी चाहे कूत लूँ, लेकिन फिर भी वानर-सेना की संख्या का अनुमान नहीं लगा सकता। पंडित कृत्तिवास की यह मधुर गीत-गाथा है—लंकाकांड में जिसका प्रथम खंड गाया जा रहा है ॥ ६ ॥

शुक-सारण द्वारा रावण के समक्ष परिचय-सहित राम-सैन्य-प्रदर्शन

शुक का कहना समाप्त हुआ तो सारण ने कहा, हे दशानन! यदि आप को हमारी बातों पर विश्वास न हो तो प्राचीर पर चढ़ कर देखिये, भला हम सही हैं कि नहीं। लंका का स्वर्ण-मय प्राचीर बहुत ऊँचा है। दुष्ट रावण अपने चरों के साथ उस पर चढ़ गया। देखा, चारों ओर जल-थल में वानर व्याप्त हैं। देखकर राजा रावण का अन्तर भय से भर गया। कटक इतना विशाल है कि हजारों वर्ष तक निरन्तर युद्ध करने पर भी उसका अन्त नहीं होगा ॥ ७ ॥

राजा दशानन ने वानरों को पहचानना चाहा। दाहिना हाथ उठाकर सारण उनको दिखाने लगा। वह देखो नीले वर्ण का सेनापति नील है जिसके संग सहस्र-कोटि वानर हैं। नील सेनापति यदि तनिक भी

वानर सत्तर-कोटि यार पाछु लागे ※ सुग्रीव भूपति देख श्रीरामेर आगे
विशकोटि कपि सह ओइ ये गवाक्ष ※ त्रिशकोटि वानरेते देखह धूम्राक्ष
सम्पाति वानर देख गौरवर्ण धरे ※ रणे गेले विपक्ष पलाय यार डरे
हिंगुली पर्व्वतेर हिंगुल येन अंग ※ पञ्चशत कोटि कपि संगे शरभंग
मलय पर्व्वते कपि वर्ण येन गेरि ※ सहित सत्तर कोटि देखह केशरी
शरभ वानर देख सहस्र कोटि सह ※ रणते पशिले तारे नाहि पारे केह
हेलाय सम्पाति कपि कभु यदि नड़े ※ शरीर योजन-दश तार आड़े जोड़े
एकादश कोटिते वानर महामति ※ सहस्र कोटिते ऐ कुमुद सेनापति
शत शत उत्तरेर वीर महाबली ※ यादेर चरणे उड़े गगनेते धूलि
देख धूम्र-धूम्राक्ष राजार दुइ शाला ※ वानर कटक मध्ये येन मेघमाला ८
देख गय-गवाक्ष से साक्षात् शमन ※ पञ्चशत कोटि द्वय भायेर भिड़न
वैद्यराज सुषेण से राजार श्वसुर ※ तिनकोटि वृन्दवीर याहार प्रचुर
नल वीर देख विश्वकर्म्मार नन्दन ※ ये बाँधिल पारावार शतेक योजन

हिलता है तो उसकी सेना बारह पहर का पथ छेंक लेती है। श्रीराम के सम्मुख सुग्रीव राजा को देख रहे होंगे—उसके पीछे सत्तर करोड़ वानरों की सेना है। बीस करोड़ की सेना लेकर वह देखो गवाक्ष खड़ा है और तीस करोड़ वानर लेकर धूम्राक्ष। वह गोरे रंग का वानर सम्पाति है जिसके रणक्षेत्र में पहुँचते ही विपक्ष की सेना में मारे डर के भगदड़ मच जाती है। हिंगुली पर्वत के अंग के समान (बोरबर) हिंगुल है जिसके साथ पाँच सौ करोड़ कपि हैं। मलय-पर्वत के कपियों के शरीर का रंग गेरू जैसा है—ऐसे सत्तर करोड़ कपियों के संग केशरी है। शरभ नामक वानर सहस्र-कोटि वानरों के साथ है, वह युद्ध में उतर पड़े तो कोई सामना नहीं कर सकता। यदि सम्पाति कपि ने कभी अँगड़ाई सी ली तो उसका दश-योजन का शरीर लम्बाई-चौड़ाई में डोल जाता है। महामति वानर के पास ग्यारह करोड़ की सेना है। उस कुमुद नामक सेनापति के पास सहस्र कोटि की सेना है। उत्तर के सैकड़ों वीर महाबलियों को देखो जिनके पदचाप से गगन में धूल उड़ती है। राजा (सुग्रीव) के दो साले धूम्र और धूम्राक्ष मानों वानर-सेना में मेघमाला के समान हों॥ ८॥

मूर्त्तिमान् यम जैसे गय और गवाक्ष को देखो—दोनों भाइयों की सेना पाँच सौ करोड़ की है। राजा के श्वसुर वैद्यराज सुषेण के पास तीन करोड़ वीर हैं। विश्वकर्मा-नन्दन नल वीर को देखो जिन्होंने सौ-योजन समुद्र

गाछ पाथरेते जेइ बाँधिलेक सेतु ※ लंकापुरी विनाशिबे एइमात्र हेतु
देखह सुग्रीव राजा, वानराधिपति ※ त्रिभुवन नाहि आँटे याहार संहति
बालिर विक्रम तुमि जान भालमत ※ तार भाइ सुग्रीव लंकाते समागत
महेन्द्र-देवेन्द्र देख सुषेणनन्दन ※ आशी कोटि वीर दुइ भायेर भिड़न
भल्लुक कटक देख मंत्री जाम्बवान ※ आशी कोटि वानरेते देख हनुमान
युवराज अंगद से बालिर कुमार ※ कुड़ि लक्ष कपि तार निज परिवार ९
रामेर वानर संख्या कि कब काहिनी ※ शत्र कोटि वानरेते एक वृन्द गनि
शत कोटि वृन्द एक महावृन्द हय ※ शत कोटि महावृन्द अर्व्वुद निश्चय
शत कोटि अर्व्वुदेते महार्व्वुद लेखा ※ शत कोटि महार्वुदे एक खर्व्व शिक्षा
शत कोटि खर्व्व एक महाखर्व्व हय ※ शत कोटि महाखर्व्व शंख सुनिश्चय
शत कोटि शंखे एक महाशंख जानि ※ शत कोटि महाशंख एक पद्म जानि
शत कोटि पद्मे एक महापद्म हय ※ शतकोटि महापद्म सागर निर्णय
शत कोटि सागरे महासागर जानि ※ शत कोटि महासागरे एक अक्षौहिनी
शतकोटि अक्षौहिणीते एक अपार ※ अपारेर अधिक गणना नाहि आर १०

को बाँध डाला। लंकापुरी के विनाश के निमित्त उन्होंने पेड़-पत्थरों की सहायता से सेतु का निर्माण किया। वानरों के अधिपति सुग्रीव राजा को देखो जिनका तीनों लोक में कोई मुकाबला नहीं कर सकता। तुम को वालि का पराक्रम तो भली प्रकार विदित ही है, उसी के भाई सुग्रीव लंका में पधारे हैं। सुषेण के पुत्र महेन्द्र की अस्सी कोटि वीरों की सेना है। मंत्री जाम्बवान के अधीन भालुओं का कटक और अस्सी कोटि वानरों सहित हनुमान को देखिये। बालि का पुत्र युवराज अंगद है जिसके अपने परिवार में बीस लाख कपि हैं ॥ ६ ॥

राम की वानरी-सेना की संख्या के बारे में क्या वर्णन करूँ। शत-कोटि वानरों से एक वृन्द की गिनती होती है। शत-कोटि वृन्द से एक महावृन्द। शत-कोटि महावृन्द से एक अर्बुद। शत-कोटि अर्बुद से एक महार्बुद। शत-कोटि महार्बुद से एक खर्व। शत-कोटि खर्व से एक महाखर्व। शत-कोटि महाखर्व से एक शंख। शत-कोटि शंख से एक महाशंख। शत-कोटि महाशंख से एक पद्म। शत-कोटि पद्म से एक महा-पद्म। शत-कोटि महापद्म से एक सागर। शत-कोटि सागर से एक महा-सागर। शत-कोटि महासागर से एक अक्षौहिणी। और शत-कोटि अक्षौहिणी से एक अपार। अपार से अधिक आगे कोई गिनती नहीं है ॥१०॥

हेथा विभीषण बले श्रीराम गोचर ※ हेर राजा दशानने प्राचीर उपर
झाट वाण मारि तुमि काटह सत्वर ※ घुचुक मनेर दुःख जुड़ाक अन्तर
धनुर्व्वाण लये राम करेन सन्धान ※ ताहा देखि रावण पलाय लये प्राण
शुकसारण वले, छाड़ जीवनेर आस ※ कटकेर चाप देखि लागये तरास
जीवनेर वासना यद्यपि थाके मने ※ सीता देह रामेरे रावण, एइक्षणे
सीता दिया रामेरे ना कर यदि प्रीत ※ श्रीरामेर हाते राजा, मरिबे निश्चित
गरुड़ पाइले सर्प गिले ततक्षणे ※ अव्याहति नाहि तव श्री रामेर वाणे
शुक ओ सारण दोंहे कहे एइ रूपे ※ कोपे दुइ चरे भर्त्से दशानन भूपे
कृत्तिवास पण्डित भाविया नारायण ※ लंकाकाण्ड गाइलेन गीत रामायण ११

शुक-सारणेर प्रति रावणेर भर्त्सना

कोपे कहे लंकेश्वर, मृत्युर नाहिक डर, शत्रुर प्रशंसा वारे-वारे।
कि छार मिछार नर, भये काँपे चराचर, सदा खाटे आमार दुयारे ।।
स्वर्ग-मर्त्य-त्रिभुवने, देवता-गन्धर्व्वगणे, यक्ष कि किन्नर-विद्याधर।
कम्पित आमार डरे, कि भय नर-वानरे, कि वलिल हीन बुद्धि चर ।।

इधर विभीषण ने श्रीराम से कहा, वह देखिये राजा दशानन प्राचीर के ऊपर खड़ा है। शीघ्र ही वाण मारकर उसका वध कीजिये—मेरे मन का क्लेश दूर हो, दिल ठंडा हो। धनुष-वाण लेकर राम निशाना लगाने लगे। देख कर रावण अपने प्राण लेकर भाग खड़ा हुआ। शुक-सारण ने कहा, अपने प्राणों की आशा त्याग दें। कटक की अधिकता देखकर त्रास लगता है। यदि मन में प्राणों की आकांक्षा है, तो हे (लंकाधिपति) रावण! सीता को तत्काल राम के हाथों में सौंप दें। सीता को देकर यदि राम को प्रसन्न नहीं किया तो राम के हाथों आपकी मृत्यु निश्चित है। राजन्! जिस प्रकार गरुड़ के ग्रास से सर्प का वचाव नहीं उसी प्रकार श्रीराम के वाण से आपका कोई वचाव नहीं। शुक और सारण दोनों चर मिलकर इस प्रकार भूपति दशानन की भर्त्सना करने लगे।। ११।।

रावण द्वारा शुक-सारण की भर्त्सना

क्रोध में आकर लंकेश्वर ने कहा, तुझे मृत्यु का भय नहीं, बार-बार शत्रु की प्रशंसा कर रहा है। यह तुच्छ मानव किस बूते का है, सारा चराचर मेरे भय से काँपता रहता है और मेरे दरवाजे पर वेगार झेलता रहता है। स्वर्ग-मर्त्य—त्रिभुवन में देवता, गन्धर्व, यक्ष, किन्नर, विद्याधर मेरे भय से सभी कम्पित रहते हैं। मुझको नर-वानर से कौन सा डर है।

कपि देखि लक्ष-लक्ष, राक्षस जानिर भक्ष्य, तारे भय कर कि कारणे।
श्रीराम-लक्ष्मण दोंहे, बले मम तुल्य नहे, इंगिते बधिब दुइजने ॥
कुपिले कुमार भागे, के आसि जुझिबे आगे, भय कर मानुष-वानरे।
कृत्तिवास रचे गीत, दशानन क्रोधान्वित, वारे वारे भर्त्से दुइ चरे ॥१२॥
पर सैन्य चर्च्चिते पाठाइलाम तोरे ※ परेर बड़ाइ करिस आमार गोचरे
याहार प्रसादे वाड़े हेन राजा निन्दे ※ मारिते आइले वैरी तार गुण वन्दे
पूर्व्वे उपकार ये करिलि स्थाने-स्थाने ※ आजि कोपे एड़ाइलि एइ से कारणे
दूर हरे बेटा चर ना कर बाखान ※ आपनार दोषे पाछे हाराइस प्राण
एत यदि दशानन बलिलेक रोषे ※ प्रान लये धाय शुक-सारण तरासे १३

कटक-निर्णये शार्द्दूलेर गमन ओ विभीषणादि-कर्त्तृक लाञ्छना

जोड़ हात करि बले वीर महोदर ※ ये ना जाने किछुइ, पाठाओ हेन चर
कहिते ना जाने कथा सभा विद्यमाने ※ हेन चर आपनि पाठाओ कि कारणे

हीन बुद्धि चर! तू क्या बकवास कर रहा है। यह जो लाख-लाख कपि देख रहे हो वे राक्षस जाति के भक्ष्य हैं, उनसे डरने का कौन सा कारण है। श्रीराम-लक्ष्मण को कहते हो कि दोनों मेरे वश के नहीं हैं—अरे इनका वध तो मैं संकेतमात्र से कर डालूँगा। इन राजकुमारों में कौन युद्ध के लिए अग्रसर हो सकेगा? (निरीह) नर-वानरों से भय कैसा? कृत्तिवास गीत की रचना कर रहा है। दशानन मारे क्रोध के वार-वार दोनों चरों को डाँट फटकार रहा है॥ १२॥

तुम दोनों को दूसरे की सेना का भेद लेने के लिए मैंने भेजा और तुम आकर मेरे ही सामने उन्हीं की बड़ाई करने लग गये। जिस राजा के अनुग्रह से तुम्हारा पालन-पोषण हो रहा है उसी की निन्दा करने लग गये। जो वैरी मारने आ रहा है उसी का गुण बखानने लग गये। इससे पूर्व तुम दोनों ने कभी-कभार जो उपकार किया है उसी के कारण आज मेरे क्रोध से बच रहे हो। रे अधम चर! दूर हो जाओ, आगे मत बखानो। कहीं अपने ही दोष से अपने प्राणों से हाथ न धो लो। दशानन ने सरोष यह सब कहा तो शुक-सारण त्रास से वहाँ से प्राण लेकर भाग खड़े हुए॥ १३॥

कटक-निर्णय के लिए शार्दूल का जाना और विभीषण आदि द्वारा उसका निग्रह

वीर महोदर ने हाथ जोड़ कर कहा, ऐसे चर को आप क्यों भेजते हैं जो कुछ भी नहीं जानता और सभा में बात करने की भी जिसको तमीज नहीं। रावण ने फिर शार्दूल नामक राक्षस को बुलवाया। वह प

रावण डाकिया आने शार्दूल-राक्षसे ※ पञ्चजन संगे से आइल तार पाशे
पञ्चजन मध्ये तार शार्दूल प्रधान ※ दशानन दिल तार हाते गुया-पान
कोन खाने राम सैन्य पोहाय रजनी ※ कोन बाटे कपिगण करिल उठानि
चरेर प्रसादे राजा सर्व्व वार्त्ता जाने ※ चरेर प्रसादे राजा परचक्र जिने
लक्ष्मण सुग्रीव रामे जान भालमते ※ परचक्र जानि तुमि आइस त्वरिते १४
राजार आदेश चर वन्दिलेक माथे ※ गतमात्र ठेकिलेक विभीषण हाते
विभीषण वले कोथा गेलि रे वानर ※ हेथा आसियाछे देख रावणेर चर
सेइ वाक्ये वानर चरेर चुले धरे ※ चारि दिके वेड़िया ताहारे किल मारे
घरेर सेवक बलि ना करिल खून ※ वानर ताहारे दिल कष्ट पुन: पुन:
आपन प्रत्यय रामे जानावार तरे ※ पञ्चचर लये गेल रामेर गोचरे
दाण्डाइते नारे चर, नाहि नाड़े पाश ※ ऊर्द्ध्वमुखे वार्त्ता कहे घन बहे श्वास
चर्च्चिते तोमार सैन्य पाठाय रावणे ※ विभीषण धरे प्रभु काटिवार मने १५
श्रीराम बलेन आमि चर नाहि मारि ※ रावणे कहिओ मोरे कथा दुइचारि
सर्व्वदा पाठाओ चर कोन प्रयोजने ※ तोमाय आमाय देखा हइवेक रणे

राक्षसों के साथ वहाँ उपस्थित हुआ। इन पाँचों में शार्दूल प्रधान था। दशानन ने उसके हाथों में पान-सुपारी दी। किस स्थान पर राम की सेना रात बितायेगी, किस रास्ते से कपि आयेंगे? चर की सहायता से राजा सब कुछ जान लेता है, चर की सहायता से राजा को शत्रु का सारा कूट-कौशल प्रकट होता है। लक्ष्मण, सुग्रीव और राम को भली-भाँति जान लो और शत्रु-पक्ष के सम्बन्ध में सारी बातों का पता लेकर तुम शीघ्र लौट आना॥ १४॥

राजा का आदेश चर ने शिरोधार्य किया। किन्तु जाते ही विभीषण के हाथ पकड़ा गया। विभीषण ने कहा, अरे वानर किधर गये तुम सब, यह देखो रावण का चर आया है। यह वाक्य सुनते ही वन्दरों ने चरों के केश धर लिये और चारों ओर से घेर कर मुष्टि प्रहार करने लगे। [च]र के सेवक होने के कारण उनको प्राणों से तो नहीं मारा गया, किन्तु [व]ानरों ने उनको बार-बार उत्पीड़ित किया। (विभीषण ने) अपना विश्वास [र]ाम के समीप सिद्ध करने के लिए पाँचों चरों को राम के समक्ष ले जाकर पेश [क]िया। वे खड़े भी नहीं हो पा रहे हैं और न हिलडुल पा रहे हैं। तीव्र [श्]वास चल रही है। वे मुँह उठाकर बोले, हे प्रभु! रावण ने आपकी सेना [क]ा भेद लेने के निमित्त हमको भेजा है और विभीषण ने हमारे वध की मन्शा [स]े हमको पकड़ लिया है॥ १५॥

आपनि देखिबे एइ कटक दुर्व्वार * कि रूपे रावण, तुमि पाइवे निस्तार
मारिब रावण तोरे करि खण्ड-खण्ड * विभीषण उपरे धराव छत्र-दण्ड
आमार विक्रम घुषिवेक त्रिभुवने * रावणे मारिया राजा करि विभीषणे १६

रावण-समीपे शार्द्दूलेर कटक-वार्त्ता-कथन ओ श्रीरामेर प्रशंसा

प्रसाद पाइया चर विदाय हइल * लंकार मध्येते गिया रावणे भेटिल
दाँड़ाइते नारे चर नाहि नाड़े पाश * ऊर्द्ध्वमुखे वार्त्ता कहे, घन बहे श्वास
तोमार आज्ञाय गेनु सैन्य चर्च्चिवारे * यावामात्र विभीषण चिनिल आमारे
रक्ते रांगा ह'ये गेनु रामेर गोचरे * रघुनाथ प्राणदान दिलेन आमारे
कहिल सारण-शुक सैन्य यतोधिक * देखिलाम कटक नयने ततोधिक
कि कब रामेर रूप से अति सुठाम * ज्ञान हय देखिले, मानुष नहे राम
विराट् पुरुष राम सुदृश्य शरीर * आजानु लम्बित बाहु नाभि सुगभीर
उन्नत नासिका ताँर श्रीखण्ड कपाल * फलमूल खान, तबु विक्रमे विशाल
दूर्व्वादल श्याम तनु अति मनोहर * कन्दर्प जिनिया रूप परम सुन्दर
आकार प्रकार ताँर हेरि हय ज्ञान * त्रिभुवने वीर नाइ ताँहार समान

श्रीराम ने कहा, मैं चरों का वध नहीं करता हूँ। रावण से मेरी दो-चार बातें बता देना। सदा किस कारण तुम चर भेजते रहते हो। मेरी और तुम्हारी भेंट रणक्षेत्र में होगी, तब स्वयं इस दुर्जय सेना को देख लेना। हे रावण! तुम कैसे इससे निस्तार पाओगे? तुमको खंड-खंड मार कर विभीषण (के शिर) पर राजछत्र अर्पण करूँगा। त्रिभुवन में मेरा विक्रम घोषित होगा कि रावण को मार कर विभीषण को राजा बनाया ॥१६॥

रावण के निकट शार्दूल द्वारा कटक का वर्णन और श्रीराम की प्रशंसा

प्रसाद पाकर चर ने विदा ली और लंका में जाकर रावण से भेंट की। चरों में खड़े होने या हिलने-डुलने की शक्ति नहीं रह गयी थी। तेज साँस चल रही थी। वे ऊर्द्ध्वमुख होकर सुनाने लगे—आपकी आज्ञा से हम सेना का भेद लेने गये और जाते ही विभीषण ने हमको पहचान लिया। (वानरों द्वारा किये गये) लहूलुहान दशा में हम राम के समक्ष पहुँचे। रघुनाथ ने हम लोगों को प्राण दान किया। सारण और शुक ने सेना की जो वृहद् संख्या बताई थी अपनी आँखों से उससे अधिक सेना हमको देखने को मिली। राम के रूप का क्या वर्णन करूँ, उनकी कद-काठ इतनी सुन्दर है कि क्या बताऊँ। देखने से यह लगता है कि राम मनुष्य नहीं हैं। राम अति विशाल व सुदर्शन शरीर वाले हैं—जांघ तक

धर्म्मेते धार्म्मिक राम, गुणेर सदन ॐ विपक्षे देखिते राम प्रलय ज्वलन
ना मारेन राम तारे यार नम्रवाणी ॐ जे बड़ाइ करे तार उपरे उठानि
आछुक अन्येर काज देवे तारे नारे ॐ राक्षस हाजार चौद्द एका राम मारे
पात्र मित्र बुझाय ना लय तव चिते ॐ विधिर निर्व्वन्धे बुझि गेल विपरीते
सीता लागि रावण मरिल हाय हाय ॐ पांचालीप्रबन्धेगीतकृत्तिवासगाय १७

श्रीरामेर माहात्म्य-वर्णन

शमन-दमनरावणराजारावण-दमनरामॐशमनभवन नाहयगमन येलयरामेरनाम
राम नाम जप भाइ अन्य कर्म्म पिछे ॐ सर्व्व कर्म्म धर्म्म रामनाम विना मिछे
मृत्युकाले यदि नर राम बलि डाके ॐ विमान चड़िया सेइ जाय देवलोके
श्रीरामेर महिमार कि दिब तुलना ॐ ताहार प्रमाण देख गौतम-ललना
पापी जन मुक्त हय वाल्मीकिर गुणे ॐ अश्वमेध फल पाय रामायण शुने

लम्बी भुजाओं और गंभीर नाभिवाले हैं। उनकी नासिका समुन्नत और चन्दन सा माथा है। फल-मूल खाते हैं फिर भी महा-पराक्रमी हैं। दूर्वादल सा श्यामल उनका अति-मनोहर तन है और कन्दर्प को भी नीचा दिखानेवाला उनका सौन्दर्य। उनका आकार-प्रकार देखकर ऐसा लगता है कि तीनों लोक में उनके समान कोई वीर नहीं। राम धार्मिक हैं, गुणों का आलय हैं, शत्रु को भस्म करने के लिए प्रलय की अग्नि के समान हैं। जो नम्रभाषी है उसे राम नहीं मारते, लेकिन जो बढ़-बढ़ कर बोलता है उसी पर वे आक्रमण करते हैं। दूसरों की क्या बताऊँ अकेले राम चौदह हजार (खरदूषणादि) राक्षसों को मार डालते हैं। आपके पात्र-मित्र सभी समझा रहे हैं किन्तु आपकी समझ में कोई बात आ नहीं रही है। लगता है भाग्य आपके विपरीत हो गया है। हाय-हाय सीता के कारण (लंकपति) रावण की मृत्यु आ गयी। कृत्तिवास गीत-गाथा के माध्यम से राम की महिमा गाता है ॥ १७ ॥

श्रीराम का माहात्म्य-वर्णन

जिस यम का दमन रावणराज ने किया उस रावण का दमन करने वाले राम हैं। जो राम का नाम लेता है उसको यमलोक नहीं जाना पड़ता। भाई ! राम-नाम जपो, दूसरा काम बाद में। राम-नाम के बिना सारे धर्म-कर्म व्यर्थ हैं। मृत्यु के समय यदि मनुष्य राम का नाम ले लेता है तो विमान पर सवार होकर वह देवलोक चला जाता है। श्रीराम की महिमा की कौन सी तुलना दूँ। प्रमाण के रूप में गौतम-पत्नी अहल्या

राम नाम लइते ना कर भाइ हेला ※ भवसिन्धु तरिवारे राम-नाम भेला
अनाथेर नाथ राम प्रकाशिला लीला ※ वनेर वानर वन्दी जले भासे शिला
राम-जन्म-पूर्व्वे षाटि सहस्र वत्सर ※ अनागत पुराण रचिला मुनिवर
रामनाम स्मरणे यमेर दाय तरि ※ भवसिन्धु तरिवारे रामपद तरी
चण्डाले याँहार दया बड़ सकरुण ※ पाषाणे निशान आछे श्रीरामेर गुण
श्रीराम-नामेर गुणे कि दिब तुलना ※ पाषाण मनुष्य हय, नौका हय सोना
राम नाम लैते भाइ ना करिह हेला ※ संसार तरिते राम नामे बाँध भेला
श्रीराम स्मरणे येबा महारण्ये जाय ※ धनुर्व्वाण लये राम पश्चाते गोड़ाय
राम-राम बल भाइ मुखे वार-वार ※ भावि देख राम विना गति नाहि आर
करिलेन अश्वमेध श्रीराम यतने ※ अश्वमेध फल पाय रामायण शुने
एमन रामेर गुण कि दिब तुलना ※ पादस्पर्शे शिला नर, नौका हय सोना १८
पार कर रामचन्द्र पार कर मोरे ※ दीन देखि नौका राम लये गेल दूरे

को देख लो। बाल्मीकि की कृपा (अर्थात् रामकथा) से पापियों को मुक्ति मिली। रामायण सुनने से अश्वमेध-यज्ञ का फल प्राप्त होता है। भाई, राम-नाम लेने में आलस मत करना, भवसागर पार करने के लिए राम-नाम नौका के समान है। अनाथ के नाथ राम ने अपनी लीला प्रदर्शित की—वन के वानर वन्दी बन गये और जल पर शिला तैरने लगी। राम-जन्म से साठ-हजार वर्ष पूर्व मुनिवर ने अनागत-पुराण की रचना की। राम-नाम के स्मरण से यम के हाथों से निस्तार मिल जाता है। भवसिन्धु को पार करने के निमित्त राम के चरण, तरणि (नौका) के समान हैं। जिनकी करुणा चंडाल पर भी है और जिनके गुणों के चिह्न पाषाण पर भी अंकित हैं। राम-नाम लेने में भाई कतई काहिली मत करना, संसार तरने के लिए राम-नाम की भेला बाँधो। श्रीराम का स्मरण कर जो घनघोर जंगल में भी जाता है तो राम उसके पीछे-पीछे धनुष-बाण लिये चलते हैं। भाई, राम-नाम बार-बार मुँह से बोलो, सोच कर देखो, बिना राम के कोई गति नहीं। श्रीराम ने तो यत्न करके अश्वमेध-यज्ञ किया और केवल रामायण के श्रवणमात्र ही से अश्वमेध का फल मिल जाता है। राम के ऐसे ही गुण हैं, उनकी क्या तुलना दूँ। उनके चरणों के स्पर्श से पत्थर प्राणी में बदल जाता है और नाव सोने की बन जाती है॥ १८॥

पार लगाओ हे रामचन्द्र, मुझे पार लगाओ। मुझे दीन देखकर तुम नाव लेकर दूर हट गये। जिनके पास (उतराई देने के लिए) कौड़ी थी

यार सने कड़ि छिल गेल पार ह'ये ※ कड़ि विना पार करे तारे वलि नेये
ध्यान पूजा तंत्र मंत्र यार नाहि ज्ञान ※ तारे यदि करे पार तवे जानि राम
योग-याग तंत्र-मंत्र जेइ जन जाने ※ तुमि कि तराबे तारे तरे निजगुने
मोर संगे कड़ि नाइ, पार हब किसे ※ कर वा न कर पार कूले आछि व'से
नेयेर स्वभाव आमि जानि भालेभाले ※ कड़ि ना पाइले पार करे सन्ध्याकाले
कारे भांग कारे गड़ एइ तव काज ※ कारो मुण्डे छत्रदण्ड कारो मुण्डे वाज
एक शत पुत्र कारो अक्षय करि दाओ ※ एक पुत्र दिया कारे ताओ हरि लओ
आपनि से भांग प्रभु आपनि से गड़ ※ सर्प ह'ये दंश तुमि ओझा ह'ये झाड़
सकलि तोमार लीला सब तुमि कर ※ हाकिम ह'ये हुकुम दाओ पेयादा ह'येमार
अधम देखिया यदि दया ना करिबे ※ पतितपावन नाम कि गुणे धरिवे
साधु जने तराइते सर्व्व देव पारे ※ असाधु तरान जिनि, ठाकुर वलि ताँरे
अहल्या पाषाण ह'ये छिल दैव दोषे ※ मुक्ति-पद पाय तव चरण परशे
पार कर रामचन्द्र रघुकुलमणि ※ तरिवारे दुटि पद क'रेछ तरणी

वे पार लग गये, बिन-कौड़ी के भी पार लगाओ तो समझूँ कि नाविक हो। जिसको ध्यान-पूजा, तंत्र-मंत्र का ज्ञान न हो उसको पार लगाओ तो जानूँ कि राम हो। जो व्यक्ति योग-याग और तंत्र-मंत्र में कुशल है वह तो अपने ही गुण के बूते पार हो जायगा, तुम उसे क्या पार लगाओगे? मेरे पास कौड़ी नहीं है, मैं पार कैसे जाऊँगा? चाहे पार लगाओ या न लगाओ मैं तो तट पर बैठा ही रहूँगा। केवटों की आदत से मैं भली-भाँति परिचित हूँ—कौड़ी न मिलने पर भी वे शाम को पार कर देते हैं। किसी को बिगाड़ते हो तो किसी को बनाते हो—यही तुम्हारा काम है। किसी के सिर पर राजछत्र है तो किसी के सिर गाज गिराते हो। किसी को तो सौ पुत्रों से अक्षय बना देते हो और किसी को एक पुत्र देकर भी छीन लेते हो। हे प्रभु, तुम स्वयं तोड़ते हो, स्वयं गढ़ते हो। साँप बनकर डस लेते हो और ओझा बनकर विष उतार देते हो। सभी कुछ तुम्हारी लीला है, तुम ही सब कुछ करते हो। हाकिम बनकर हुक्म देते हो और कारिन्दा बनकर ताड़ित करते हो। अधम देख कर यदि दया नहीं करोगे तो अपना पतितपावन नाम किस बल पर रख सकोगे। साधुओं को तारने में तो सभी देवता समर्थ हैं, असाधु को जो तारे वही सबका स्वामी (देवताओं का देवता) है। दैव-दोष से अहल्या पाषाण बन गयी थी, तुम्हारे चरणों के स्पर्श से उसे मुक्ति मिल गयी। हे रघुकुलमणि रामचन्द्र! मुझको पार लगाओ, तुम्हारे दोनों चरणों को मैंने अपनी तरणी बना लिया है। यदि

यदि मोरे छाड़ प्रभु आमि ना छाड़िव ❋ बाजन नूपुर ह'ये चरणे बाजिव
राम नदी ब'ये जाय, देखह नयने ❋ तथा गिया स्नान कर कूले बसि केने
हेदे रे पामर लोक पार हवे यदि ❋ पिओ राम नामामृत, व'ये जाय नदी
मृत्युकाले एक वार राम बले डाके ❋ सेइ स्वर्गे जाय, यम दाण्डाइया देखे
एमन रामेर गुण वर्णिते कि पारि ❋ हेलाय तरिया जावे मुखे वल हरि१९

रावण-कर्तृक सीताके श्रीरामेर मायामुण्ड-प्रदर्शन

शार्दूल बलिछे, राजा कर अवधान ❋ रामेर विक्रम कथा शुन विद्यमान
खर आर दूषण त्रिशिरा तिनजन ❋ राक्षस सहस्र चतुर्दशेर मिलन
एके एके संहारिला एका रघुनाथ ❋ केमने दाँड़ाबे रणे ताँहार साक्षात्
देखिनु शुनिनु जे, कहिते भय करि ❋ बुझिया करह कार्य लंका-अधिकारि
शुक आर सारण कहिल तव हित ❋ अपमान करिले तादेर यथोचित
आपनि सुबुद्धि राजा विचारे पण्डित ❋ बुझिया करह कर्म ये हय उचित २०
शार्दूलेर कथाय रावण राजा हासे ❋ राजार प्रसाद देय यत मने आसे

तुम मुझको त्याग भी दो प्रभु ! तो मैं तुमको छोड़ने वाला नहीं। तुम्हारे पैरों की पजनिया बनकर बजा करूँगा। नयनों से देखो, राम-सरिता बह रही है, उसमें चल कर स्नान करो, किनारे क्यों बैठे हो। अरे पामर, यदि पार ही होना है तो राम-नाम का अमृत पी लो, नदी बहती चली जा रही है। मृत्यु के समय यदि एक बार भी राम का नाम लेकर कोई पुकार ले तो यम खड़ा देखता रह जाता है और वह (प्राणी) स्वर्ग चला जाता है। ऐसे राम के गुणों का बखान करना क्या मेरे सामर्थ्य में है, मुँह से 'हरि' का नाम लो, सुगमता से नौका पार लग जायगी ॥ १६ ॥

रावण-द्वारा सीता के सम्मुख श्रीराम के मायामुंड का प्रदर्शन

शार्दूल कह रहा है, हे राजन् ! ध्यान से राम की पराक्रम-कथा सुनिए। खर, दूषण और त्रिशिरा ने चौदह हजार राक्षसों सहित सामना किया तब अकेले रघुनाथ ने एक-एक कर प्रत्येक का संहार किया। रण में उनके सम्मुख कैसे खड़े हो सकिएगा। जो कुछ देखा और सुना उसे कहने में डर लगता है। हे लंकाधिपति ! समझ-बूझकर काम कीजिए। शुक और सारण ने आपके हित के लिए कहा और आपने उनका सर्वथा अपमान किया। हे राजा ! आप स्वयं बुद्धिमान हैं, विद्वान हैं, समझ-बूझकर जो समुचित लगे वही काम कीजिए ॥ २० ॥

शार्दूल की बातों पर राजा रावण हँस पड़ा और जी-भर कर प्रसाद देने

वलय कंकण दिल माणिक रतन ※ पञ्चशंख वाद्य दिल राजार वाजन
विचित्र निर्म्माण दिल हार ओ केयूर ※ नाना रत्न मणि दिल चरणे नूपुर २१
चरेर वचन जेइ हैल अवसान ※ अन्तरे हइल चिन्ता उड़िल पराण
दशानन पात्र मित्रे दिलेक मेलानि ※ विद्युज्जिह्व निशाचरे डाकिल तखनि
तोरे वलि विद्युज्जिह्व मायार सागर ※ तुमि त अलंघ्य पात्र लंकार भितर
मैथिलीके आनिलाम बड़ सुख आशे ※ अद्यापि ना हय सुख हइबे कि शेषे
एत दिन सीता ना हइल अनुगता ※ निकट आगत स्वामी शुनि हरषिता
पात्र-कार्य्य करि मोर कुलाओ आरति ※ रामेर धनुक-मुण्ड करह सम्प्रति
धनु-मुण्ड देखि सीता पाइवेक त्रास ※ स्वामि देवरेर तरे हउक निराश २२
एत यदि विद्युज्जिह्व राज-आज्ञा पाय ※ रामेर धनुकमुण्ड गठिवारे जाय
वसिल जे विद्युज्जिह्व करिया धेयान ※ गुरुर चरण वन्दि जोड़े ब्रह्मज्ञान
वसिल से विद्युज्जिह्व ध्यान नाहि टूटे ※ ब्रह्मज्ञान तेजेते धनुकमुण्ड उठे
विचित्र निर्म्माण सेइ धनुकेर गुणे ※ कुण्डल निर्म्मित रत्ने शोभे दुइ काने
मुकुता जिनिया तार दशनेर ज्योति ※ अविकल विम्बफल ओष्ठाधर द्युति

लगा। उसने वलय (कड़े) और कंगन दिये, माणिक्य और रत्न दिये। राजा का वाद्य पंचशंख दिया। विचित्र ढंग से निर्मित हार, बाजूबन्द, विविध मणि-रत्नादि तथा पैरों के लिए नूपुर दिये॥ २१॥

चर का कथन ज्यों ही समाप्त हुआ त्यों ही रावण के मन में चिन्ता का उदय हुआ और होश उड़ गये। दशानन ने सभासदों को विदा किया। फिर उसी समय विद्युज्जिह्व नामक निशाचर को बुलवाया। हे विद्युज्जिह्व! तुम्हें हम माया का सागर कहते हैं—लंका में कोई तुमसे पार पाने वाला नहीं। मैथिली को मैं बड़ी ही सुखद आशा से ले कर आया था। अभी तक वह आशा पूर्ण नहीं हुई, अन्त में जाने क्या हो। इतने दिनों में भी सीता (मेरी) अनुगता न बन सकी, और पति निकट आ गया है सुनकर वह प्रसन्न हो उठी है। (इसलिए तुम) सखा का कर्तव्य कर मेरी मनोकामना पूर्ण करो। तुरन्त राम का मायारूपी धनुष और मुंड बनाओ। धनुष-मुंड देखकर सीता डर जायगी और पति एवं देवर के सम्बन्ध में निराश हो जायगी॥ २२॥

इतनी राजाज्ञा पाकर विद्युज्जिह्व राम के सदृश धनुष-मुंड निर्माण के लिए चल पड़ा। गुरु के चरणों की वन्दना कर ध्यान लगाकर विद्युज्जिह्व बैठ गया और ब्रह्मज्ञान को केन्द्रित करने लगा। ब्रह्मज्ञान के तेज से माया-धनुष और माया-मुंड का आविर्भाव हुआ। उस धनुष की प्रत्यंचा की निर्माण-कला भी विचित्र थी। दोनों कानों में मणिमय कुण्डल शोभित हैं और दाँतों

चाँपा नागेश्वर दिया वान्धिलेक चूड़ा ※ अतिशुभ्र वसने रामेर जटा वेड़ा
श्रीरामेर मुण्ड सेइ करिल निर्म्माण ※ जे देखेछे सेइ जाने रामेर समान
रामेर समान धनु करिया निर्म्माण ※ रावणेर आगे लये करिल योगान
श्रीरामेर मुख देखि दशानन हासे ※ राजार प्रसाद देय यत मने आसे २३
विद्युज्जिह्व निशाचरे थुइलेक द्वारे ※ प्रवेशिल आपनि अशोक वनान्तरे
मिथ्या-सत्य करि पाड़े कथार पातन ※ ये प्रकारे सीतार प्रतीत हय मन
मोर वाक्य नाहि शुन बाड़ाओ जन्जाल ※ तोर अपेक्षाय राखियाछि एत काल
हेन मने करि तोरे काटि एइ दण्डे ※ तोर रूप देखिया तखनि कोप खण्डे
मने मने भाव ये रामेर कत गुन ※ आजिकार रणकथा मन दिया शुन
वहिल पाथर गाछ यत कपिगन ※ हइलेक ताहारा निद्राय अचेतन
निद्राय वानरगण गड़ागड़ि जाय ※ मुण्डे-मुण्डे ठेकाठेकि मूर्च्छितेर प्राय
एइ सब वार्त्ता आमि शुनि चर मुखे ※ रात्रियोगे गेलाम ये केह नाहि देखे
वानर-उपरे आगे करि हानाहानि ※ वाणेते काटिया करिलाम दुइ खानि
वानरेर मध्ये राम हैल आगुयान ※ खड्गाघाते मुण्ड काटि करि दुइ खान

की आभा ऐसी कि मोतियों को भी निष्प्रभ कर दे। विम्बफल की भाँति उनके होठों की द्युति है। चम्पक और नागेश्वर फूलों से केश का जूड़ा मंडित है और जटा अति शुभ्र वस्त्र से बँधी हुई। श्रीराम का इस प्रकार का मायामुंड उसने निर्मित किया—जिसने भी देखा उसी ने कहा यह मुंड राम जैसा ही है। राम के समान धनुष का निर्माण कर रावण के सम्मुख ला पहुंचाया। श्रीराम का मुख देखकर दशानन हँसने लगा और दिल खोलकर राज-प्रसाद प्रदान किया ॥२३॥

विद्युज्जिह्व निशाचर को द्वार पर छोड़कर रावण ने स्वयं अशोक-वन में प्रवेश किया। मिथ्या को इस प्रकार सत्य जैसा रूप दिया कि सीता को विश्वास हो जाय। मेरी वात तुम सुनती नहीं और झंझट वढ़ाये चली जा रही हो। तुम्हारी ही प्रतीक्षा में इतने दिन बिता चुका हूँ। जी करता है कि तुमको इसी क्षण काट कर फेंक दूँ लेकिन तुम्हारा रूप देखकर तुरन्त गुस्सा ठंडा पड़ जाता है। मन ही मन सोचा करती हो कि राम के कितने गुण हैं तो तनिक आज के युद्ध का हाल भी ध्यान लगाकर सुन लो। सारे बन्दर पेड़-पत्थर ढोकर थककर अचेत सो गये। नींद में वे लोग लुढ़क रहे थे और उनके मुंड आपस में टकरा रहे थे; मानों वे सब मूर्च्छित हो गये हों। चरों के मुँह यह सुनकर रात को मैं वहाँ गया, कोई मुझे नहीं देख पाया। वन्दरों पर पहला आक्रमण कर उनको वाण के द्वारा दो-दो टुकड़े कर डाला। वन्दरों में से निकलकर तुम्हारा राम आगे वढ़ आया। खड्ग से मैंने उसका मुंड

पड़िल तोमार राम, लक्ष्मण कातर ❋ देशे गेल लइया से सकल वानर
वानरेर मध्ये एक सुग्रीव प्रधान ❋ प्रहारे जर्जर अति आछे मात्र प्राण
महेन्द्र देवेन्द्र छिल कपि एक जोड़ा ❋ काटिलाम दुइ पद तारा दोंहे खोंड़ा
वानरेर मध्ये यार करिस वाखान ❋ हस्त पद काटिलाम पड़े हनूमान
एइमत करिलाम वानरेर दण्ड ❋ एइ देखि जानकि रामेर काटामुण्ड
कोथा गेलि विद्युज्जिह्व-नाम निशाचर ❋ जानकीर सम्मुखे रामेर मुण्ड धर
कृत्तिवास पण्डितेर कवित्व वाखान ❋लंकाकाण्डे गाहे मायामुण्डेर आख्यान२४

मायामुण्ड दर्शने सीतार विलाप

देखिया रामेर मुण्ड जानकी दुःखिता ❋ विलाप करेन बहु धरणी-पतिता
कुक्षणे पोहाले प्रभु आजिकार राति ❋ अभागिनी हारालाम तोमा हेन पति
आपदे पड़िले प्रभु सहोदर छाड़े ❋ लक्ष्मण वानर-सैन्य लये देशे नड़े
विदेशे आसिया प्रभु हाराले जीवन ❋ देशेते लक्ष्मण गेल एड़िया मरण
सहोदर छाड़िया देवर देशे गेलि ❋ राक्षसेर हातेते प्रभुरे दिया डालि
शुनिया कौशल्या देवी तोमार मरण ❋ त्यजिवेन प्रभु, तव शोकेते जीवन

काट डाला। तुम्हारे राम के गिरते ही लक्ष्मण उन बन्दरों को लेकर अपने देश लौट गया। बन्दरों में प्रधान है सुग्रीव। उसकी तो इतनी पिटाई हुई है कि वह बेहाल है—शरीर में केवल प्राण रह गया है। देवेन्द्र और महेन्द्र नाम के दो कपि थे उन दोनों के मैंने पैर काट लिये और वे लुंज हो गये हैं। बन्दरों में जिसकी प्रशंसा करती रहती हो उस हनुमान के हाथ और पैर काट लिये। इस प्रकार मैंने बन्दरों को दंड दिया। अरी जानकी! यह देख राम का कटा मुंड। क्यों रे विद्युज्जिह्व निशाचर! तू कहाँ गया, जानकी के सम्मुख राम का कटा मुंड तो रख। कृत्तिवास पंडित के कवित्व का क्या कहना है, लंकाकांड में वह माया-मुंड का आख्यान गा रहा है॥ २४॥

माया-मुंड देखकर सीता का विलाप

राम का मुंड देखकर जानकी शोकमग्न हो गयी और धरती पर लोटकर विलाप करने लगी। हे प्रभु, किस बुरे क्षणों में आज प्रभात आया कि मैंने तुम जैसा पति खो दिया। हे प्रभु, विपत्ति आने पर सहोदर भी छोड़ जाता है, लक्ष्मण वानरी सेना लेकर देश की ओर खिसक गया। हे प्रभु, तुमने विदेश में आकर प्राण गवाँया और लक्ष्मण मृत्यु से कतराकर देश चला गया। अरे देवर, तू अपने सहोदर को राक्षसों के हाथ सौंपकर देश चला गया! हे प्रभु, तुम्हारी मृत्यु का संदेश पाते ही कौशल्या देवी तुम्हारे शोक में प्राण त्याग

जनकेर घरे छिनु अभागिनी सीता ❋ जनम दु:खिनी आमि, नाहि माता-पिता
चरण सेविते तव आइलाम वने ❋ आमारे त्यजिया कोथा गेले हे एक्षणे
अग्निते प्रवेश करि त्यजिब जीवन ❋ एक वार देखा देह कमललोचन
राज्यनाश वनवास स्त्री निल रावणे ❋ केन विधि विड़ंविल राम हेन जने
सर्व्वलोके वले मोरे अविधवा सीता ❋ आमारे विधवा कैला केमन देवता
अकारणे आछ रे रावण मोर आशे ❋ गलाय काटारि दिया जाव प्रभुपाशे
ये खाण्डाय प्रभुरे करिलि दुइ खान ❋ सेइ खड्गे काट मोरे जाउक पराण
कृत्तिवास पण्डितेर कवित्व शोभन ❋ गाहिलेन सीतादेवी-हृदय-वेदन २५

श्री रामेर प्रशंसापूर्व्वक सीतार खेद

एमनि वाणेर शिक्षा, मुनिगणे कैले रक्षा, ताड़का मारिले एक वाणे ।
सुबाहु राक्षस मारि, मुनि-यज्ञ रक्षा करि, गेल प्रभु जनक भवने ।।
शिवेर धनुक भंगे, लोके चमत्कार लागे, करेछिले ए पाणिग्रहण ।
परशुरामे करि जय, गेला प्रभु अयोध्याय, जय-जय सकल भुवन ।।

मैं अभागिन सीता जनक के घर पर थी। जन्म की दुखियारी हूँ—मेरे पिता-माता नहीं। वन में तुम्हारे चरणों की सेवा करने आई, अब मुझको छोड़कर तुम कहाँ चले गये? आग में कूदकर अपने प्राण दे दूँगी—हे कमल-लोचन एक बार तो दर्शन दे दो। राज्य से हाथ धोया, वन आना पड़ा, रावण पत्नी उठा ले आया—विधाता ने राम जैसे व्यक्ति को इतने कष्ट-भोग क्यों दिये। सभी लोग मेरे लिए कहते हैं कि सीता अविधवा है। यह किस प्रकार देव ने मुझको विधवा बना दिया। ऐ रावण, तू व्यर्थ ही मेरी आशा में बैठा है, मैं गले में कटारी मार कर अपने स्वामी के पास चली जाऊँगी। जिस खड्ग से मेरे प्रभु को तुमने काटा है उसी से मुझको भी काट डालो, मेरा प्राण चला जाय। कृत्तिवास पंडित का कवित्व शोभन है—उसने सीतादेवी के हृदय की वेदना गाकर सुनाई ।। २५ ।।

श्रीराम की प्रशंसा करती हुई सीता का विलाप

तुमको धनुर्विद्या में ऐसी ही दक्षता थी कि एक वाण से ताड़का का वध कर तुमने मुनियों की रक्षा की। सुबाहु राक्षस को मारकर, मुनियों के यज्ञ की रक्षा कर तुम जनक-भवन में पधारे। लोगों को आश्चर्य-चकित करते हुए तुमने शिव-धनुष तोड़कर मेरा पाणिग्रहण किया था। परशुराम पर विजय प्राप्त कर तुम अयोध्या लौट गये और तीनों लोकों में तुम्हारी जय-जयकार होने लगी। मैं कैसी अभागिन पत्नी हूँ कि तुम सरीखे पति को खो दिया।

आमि स्त्री अभाग्यवती, हारालाम हेन पति, काँदे सीता मायामुण्ड लैया।
दैव-घटना-कारणे, एले प्रभु तपोवने, कोथा गेले आमारे त्यजिया ।।
परे निल राज्यखण्ड, विधि मोरे कैल दण्ड, भाग्ये मोर दैवेर लिखन ।
दारुण कैकेयी ताते, वाद साधे विधिमते, हाराइनु आमि रामधन ।।
त्यजिया राज्येर आश, करिले हे वनवास, पञ्चवटी एले तिनजन ।
शूर्पनखा नाक कान, केटे कैले अपमान, राक्षस विपक्ष से कारण ।।
करिला विषम रण, मारिला खरदूषण, चौद्द हाजार निशाचर जिनि ।
मारीच राक्षसे मारि, पाठाइला यमपुरी, हेन प्रभु लोटाय धरणी ।।
वालि वानरेरे मारि, सुग्रीवेरे मित्र करि, सागर शुषिले एक वाणे ।
करिला विषम रण, वधि कत शत जन, कार वाणे हाराइला प्राणे ।।
स्मरिते से सव कथा, अन्तरे लागिछे व्यथा, सहने ना जाय एइ दुःख ।
धन-जन-सुसम्पद, किछु नहे चिरपद, आर ना देखिब चाँदमुख ।।
अनले प्रवेश करि, कलेवर परिहरि, आमार जीवने नाहि काम ।
एइ कृत्तिवास वाणी, शुन सीता ठाकुराणी, पाइवे आपन प्रभु राम ।। २६

सीता मायामुंड लेकर विलाप करने लगी। हे प्रभु, दैवयोग से तुम तपोवन आये, मुझको त्यागकर कहाँ चले गये हो ? बाद में राजपाट भी जाता रहा—यह सारा दण्ड मेरे भाग्य का ही फेर है। निष्ठुर कैकेयी के बीच में पड़ने के कारण मैंने रामधन खोया। राज्य की आशा त्यागकर वनवास करने हम तीनों पंचवटी आये। शूर्पनखा के नाक-कान काटकर तुमने उसका अपमान किया और इसी कारण राक्षस तुम्हारे विरोधी हो गये। तुमने घनघोर युद्ध किया, खर-दूषण को मारकर चौदह हजार निशाचरों को परास्त किया। तुमने मारीच राक्षस को भी यमलोक पहुँचा दिया। हाय ! ऐसे (पराक्रमी) प्रभु, आज तुम धरती पर लोट रहे हो। वानर वालि का वध कर, सुग्रीव से मित्रता कर, एक वाण के प्रहार से सागर को भी सोख लिया। तुमने घनघोर युद्ध किया, कितनों के प्राण लिये। तुम्हारा प्राण किसके वाण से चला गया। ये सब बातें स्मरण करने पर हृदय व्यथा से भर जाता है और यह क्लेश सहा नहीं जाता। धन-जन-सम्पदा—कुछ भी चिरस्थायी नहीं है—दुःख है कि तुम्हारा चाँद सा मुखड़ा अब देखने को नहीं मिलेगा। मुझको अपने जीवन से कोई मोह नहीं, मैं आग में प्रवेश कर अपना शरीर त्याग दूँगी। कृत्तिवास का कहना है, हे सीता-माता ! चिन्ता न करो, अपने प्रभु राम को फिर से पा जाओगी ।। २६ ।।

निकषा ओ माल्यवान कर्त्तृक रावणेर प्रति उपदेश एवं सरमा कर्त्तृक सीतार सान्त्वना

कातर हइया सीता करेन रोदन * विमुख हइया हासे राजा दशानन
करिले परेर मन्द अवश्य प्रमाद * रामजय बलिया पड़िल सिंहनाद
वानरेर सिंहनादे काँपे लंकापुरी * मुण्ड लये पलाय लंकार अधिकारी
दशानन गिया शीघ्र वैसे सिंहासने * ताहारे बेड़िया बसे पात्रमित्रगणे २७
कान्देन अशोक वने श्रीराम प्रेयसी * हेनकाले आइल से सरमा राक्षसी
सीता बलिलेन, एस सरमा बहिनी * तव अपेक्षाय आमि राखियाछि प्राणी
विषपाने मरि किंवा, अनले प्रवेशि * एतक्षण आछे प्राण तोमारे आश्वासि
जाह देखि, रावण कि करिछे मंत्रणा * सत्य कि प्रभुर प्रति दिलेक से हाना
जानाइया स्वरूपे आमारे कर रक्षा * प्राण राखियाछि आमि तोमार अपेक्षा
सीता वाक्ये सरमा हइल एक पाखी * रावण निकटे गेल चतुर्दिक देखि
रावण कहिछे, मन्त्रिगण, कह सार * केमने रामेर सैन्य करिब संहार
मंत्री बले सीता दिले हबे अपमान * स्वयं करिया युद्ध लह रामेर प्राण २८

निकषा और माल्यवान द्वारा रावण के प्रति उपदेश और सरमा द्वारा सीता को सान्त्वना-दान

दुखी होकर सीता क्रन्दन कर रही थीं और राजा दशानन मुँह घुमाकर हँस रहा था। दूसरे की बुराई करने से अपने पर ही विपत्ति आती है। इतने में ही राम-जय का सिंहनाद लंकापुरी को कंपित करने लगा। झट मुंड लेकर लंकेश वहाँ से भाग खड़ा हुआ और जाकर सिंहासन पर बैठ गया। उसको घेर कर सभी सभासद बैठ गये ॥ २७ ॥

श्रीराम की प्रियतमा अशोक वन में रो रही थी कि ऐसे ही समय वहाँ सरमा राक्षसी आई। सीता ने कहा, आओ बहन सरमा, तुम्हारी ही प्रतीक्षा में मैंने अभी तक प्राण रख छोड़ा है। या तो विष खाऊँगी, अन्यथा अग्नि में प्रवेश करूँगी; केवल तुम्हारी ही आशा में अभी तक प्राण रखे हुए हूँ। जाओ, जाकर देखो कि रावण कौन सी मंत्रणा कर रहा है, क्या यह सच है कि उसने प्रभु पर हमला किया था। सारी बातों को जानकर मुझको बताओ, तुम्हारे ही कारण मैंने प्राण बचा रखा है। सीता के कहने पर सरमा एक पखेरू का रूप धारण कर चारों ओर देखते-भालते रावण के निकट पहुँची। रावण कह रहा है, मंत्रियो ! अब मूल बात बताओ कि राम की सेना का कैसे संहार किया जाय। मंत्री ने कहा, सीता को देने पर अपमान होगा, अतः स्वयं युद्ध कर राम का वध कीजिए ॥ २८ ॥

हेनकाले रावणेर माता अति बुड़ी ※ रावणेर काछे गेल अति ताड़ाताड़ि
आशे पाशे चाहे बुड़ी रावणेर पाने ※ रावणेरे बेड़ियाछे यत मंत्रिगणे
सवार हइते पोड़े मायेर परान ※ कहिते लागिल बुड़ी हये आगुयान
देवता गन्धर्व नहे सीता त मानुषी ※ कत बड़ देखियाछ ताहारे रूपसी
राक्षस हइया केन मनुष्येते साध ※ एखन ये देखितेछि पड़िबे प्रमाद
चतुर्दश सहस्र राक्षस मारे वाणे ※ त्रिशिरा, दूषण आर खर पड़े रणे
से राम कृतान्त-दण्ड-तुल्य-दण्डधारी ※ कि बुझिया आन तुमि से रामेर नारी
आमार वचन शुन पुत्र लंकेश्वर ※ सीतादेवी देह गिया रामेर गोचर
सीता दिया रामेर सहित कर प्रीति ※नतुवा तोमार नाहि देखि अव्याहति२९
एत यदि वले बुड़ि मनेर सन्तापे ※ शुनिया बुड़ीर कथा राजा मने कोपे
मायेर गौरव राखि ते कारणे सइ ※ अन्यजन हइले ताहार प्राण लइ
कुड़ि चक्षु रांगा करि चाहे लंकेश्वर ※ नड़ि भर करि बुड़ी उठि दिल रड़३०
बुड़ि यदि पलाइल पेये अपमान ※ रावणेरे बुझाय तखन माल्यवान
एतदिन नाति, तव विक्रम वाखानि ※ बुझिया आपन बल करह आपनि

ऐसे ही समय रावण की अत्यन्त वृद्धा माँ (निकषा) रावण के पास तुरंत गई। अगल-बगल देखकर बुढ़िया ने रावण की ओर देखा—सारे मंत्रियों ने रावण को घेर रखा है। लेकिन माँ का हृदय अपने पुत्र के लिए सबसे अधिक कातर होता है। आगे बढ़कर बुढ़िया कहने लगी, सीता कोई देवता या गन्धर्व नहीं, मामूली मानुषी है; वह तुमको कितनी रूपवती लगने लगी? राक्षस होकर मनुष्य की साध क्यों होने लगी, इससे तो विपत्ति आ पड़ेगी। बाणों से चौदह हजार राक्षसों के प्राण जा चुके हैं—युद्ध में त्रिशिरा, खर और दूषण काम आ गये। वह राम यम-दंड-धारी कृतान्त के समान हैं। पता नहीं क्या समझ कर तुम ऐसे राम की नारी उठा लाये हो। हे लंकेश! तुम मेरा कहना मानो, जाकर सीतादेवी को राम के अर्पण करो। सीता देकर राम से मित्रता कर लो वर्ना तुम्हारा निस्तार तो दिखाई नहीं पड़ता ॥ २९ ॥

बुढ़िया ने मन के सन्ताप के वश इतना कहा तो रावण क्रोध से भर गया। माँ के सम्मान के कारण कुछ कह न सका, दूसरा होता तो उसके प्राण ले लेता। लंकेश्वर ने लाल-लाल बीसों नेत्रों से देखा तो बुढ़िया लकुटी के सहारे उठ कर भाग खड़ी हुई ॥ ३० ॥

बुढ़िया जब अपमानित होकर चली गयी तो रावण को माल्यवान समझाने लग गया। हे नाती! अब तक तो तुम्हारे बल-विक्रम का बखान

यत यत राजा हैल चन्द्र-सूर्यकुले ॐ कोन राजा भासाइल पाषाण सलिले
सागर हइल पार हइया मानव ॐ हेन रामे घाँटाइला ए कि असम्भव
एतदिन शुनितेछ रामेर विक्रम ॐ सुजनेर बन्धु राम दुर्ज्जनेर यम
कुड़ि चक्षु रांगा करि चाहिल रावण ॐ माल्यवान रहिल हइया भीतमन ३१
रावण राक्षसगणे डाक दिया आने ॐ दिके दिके राखिल से लंकार रक्षणे
महोदरे दक्षिणे राखिल दशानन ॐ एक लक्ष राक्षस से द्वारेते भिड़न
पश्चिमे राखिल इन्द्रजिते ये प्रधान ॐ राक्षस अर्व्वुद-कोटि पर्व्वत प्रमान
पूर्व्वद्वारे राखिल प्रहस्त सेनापति ॐ तिनकोटि राक्षस ये ताहार संहति
रहिल उत्तरद्वारे आपनि रावण ॐ तिन द्वारे यत, तार द्विगुण भिड़न
ताहार छत्रिश कोटि मुख्य सेनापति ॐ रहिल उत्तरद्वारे रावण संहति
अक्षौहिणी-सत्तर सहित से रावण ॐ सतर्क सशंक सदा सब पुरजन ३२
सरमा जानिया इहा चलिल सत्वर ॐ सकलि कहिल गिया सीतार गोचर
रावण कहिल मिथ्या ना करे संग्राम ॐ सर्व्वथा कुशले तव आछेन श्रीराम

करता रहा। अब अपना बल कूत कर ही जो कुछ करना है करो। चन्द्रवंश, सूर्यवंश में अब तक जितने राजा हुए, बताओ उनमें कौन ऐसा है जिसने पानी में पत्थर तैराया। मनुष्य होकर भी जिसने सागर पार कर लिया ऐसे राम को तुमने छेड़ दिया, यह कैसी अनहोनी कर डाली तुमने। इतने दिनों से राम के पराक्रम के बारे में सुन रहे हो कि राम सुजन का मित्र है और दुर्जन का यम है। (इस पर) बीसों आँखें लाल-लाल करते हुए रावण ने देखा तो माल्यवान भयभीत बैठा रह गया॥ ३१॥

रावण ने राक्षसों को बुलवाकर उपस्थित किया और उनको लंका की सुरक्षा में चारों ओर नियुक्त किया। दक्षिण द्वार पर उसने महोदर को नियत किया जिसके साथ एक लाख राक्षस डटे थे। पश्चिम द्वार पर इन्द्रजीत को प्रधान बनाया और वहाँ अर्बुद-कोटि राक्षस तैनात कर दिये गये। पूर्वी द्वार पर प्रहस्त को सेनापति बनाया—उसके अधीन तीन-कोटि राक्षस सन्नद्ध हो गये। उत्तरी द्वार पर स्वयं रावण ने मोर्चा लगाया और तीनों द्वार पर जितनी सेना थी उसकी दुगुनी इस द्वार पर नियुक्त हुई। रावण के छत्तीस करोड़ मुख्य सेनापति उसके संग उत्तरी द्वार पर रहे। सत्तर अक्षौहिणी सेना के साथ रावण तथा सारे पुरवासी सदा चौकन्ने और सशंक बने रहे॥ ३२॥

इतना सब जान-समझकर सरमा झटपट चल पड़ी और सीता के निकट पहुँचकर सब कुछ बताया। रावण ने झूठ कहा है, उसने कोई भी युद्ध नहीं

तोमा दिते वलिल निकषा रावणेरे ❋ कतमत बुझाइल रामे भजिवारे
मातार वचन दुष्ट ना शुनिल काने ❋ सेइमत ताड़ाइल बुड़ा माल्यवाने
कारो युक्ति ना शुनिया युद्ध करे सार ❋ विना युद्धे सीता तव नाहिक उद्धार
वहुकष्ट गेल सीता अल्पमात्र आछे ❋ देखिया रामेर मुख सुख पावे पिछे
क्रन्दन सम्बर सीता त्यज अभिमान ❋ दिन दुइ चारि वादे जावे प्रभुस्थान
सरमार वाक्ये सीता सम्वरि क्रन्दन ❋ चिन्तेन श्रीराम पाद पद्म अनुक्षण
श्रीराम बलिया सीता छाड़ेन निःश्वास ❋लंकाकाण्डे मायामुण्ड गाय कृत्तिवास ३ ३

सुग्रीव कर्त्तृक लंकार चारि द्वारे वानर-सैन्य-सन्निवेश

सुमेरुर चूड़ा येन आकाशेते लागे ❋ सेइमत उच्चगिरि शोभा पाय आगे
गड़ेर वाहिर गिरि तिरिश योजन ❋ ताहाते उठिले हय लंका दरशन
पर्व्वते चड़ेन राम सह सेनागण ❋ संगेते सुग्रीव राजा आर विभीषण
पर्व्वत उपरे राम करेन देयान ❋ देखेन से लंका विश्वकर्म्मार निर्म्माण
स्वर्ण रौप्य घर सब देखिते रूपस ❋ छादेर उपरे शोभे कनक-कलस

किया, तुम्हारे श्रीराम विलकुल कुशल से हैं। निकषा ने रावण को समझाया कि तुम्हें वह लौटा दे और कितने ही ढंग से कहा कि वह राम को प्रसन्न करे। पर इस दुष्ट ने माँ का कहना भी नहीं सुना और वृद्ध माल्यवान को भी इसी प्रकार से दुत्कार दिया। किसी का भी परामर्श न मानकर उसने युद्ध करना ही निश्चित कर लिया है—विना युद्ध के सीता तुम्हारे उद्धार की कोई आशा नहीं। सीता, तुमने वहुत क्लेश झेले हैं अव केवल तनिक सा रह गया है। अन्त में राम का मुखड़ा देखकर सुख पाओगी। सीता, अपना रुदन-क्रन्दन रोको, क्षोभ का त्याग करो। दो-चार दिनों वाद ही अपने प्रभु के पास पहुँच जाओगी। सरमा के वाक्य से सीता ने रोना वन्द किया। श्रीराम के चरण-कमलों का निरन्तर चिन्तन करने लगी। श्रीराम कहकर सीता ने गहरी साँस ली। लंकाकाण्ड में कृत्तिवास मायामुंड-आख्यान गा रहा है ॥ ३३ ॥

सुग्रीव द्वारा लंका के चारों द्वार पर वानर-सैन्य नियुक्ति

सुमेरु की चोटी मानों आकाश को छू रही है। इसी प्रकार का ऊँचा पर्वत सम्मुख शोभा पा रहा है। गढ़ के वाहर तीस योजन का पर्वत है। इस पर चढ़ने पर लंका का दर्शन हो जाता है। राम ससैन्य इस पर्वत पर चढ़े। उनके साथ राजा सुग्रीव और विभीषण भी चले। पर्वत के ऊपर राम ने सभा की। उन्होंने विश्वकर्मा निर्मित लंका को देखा। सोने और चाँदी के वने मकान देखने में वड़े सुन्दर हैं जिनकी छतों पर कनक-कलश

ध्वजा आर पताका उड़िछे चतुर्द्दिके ※ राजगृह पात्रगृह शोभे एके एके
पुरी देखि रामचन्द्र करेन बाखान ※ पृथिवीमण्डले नाहि हेन रम्यस्थान
ए पुरीर राजा केन हयेछे रावण ※ तवे शोभे यदि राजा हय विभीषण
रघुवंशे यदि आमि राम नाम धरि ※ विभीषणे करिव लंकार अधिकारी
विभीषण मिताके लंकाय भाल साजे ※ विभीषणे राजा करि लोके येन पूजे
आनन्दित विभीषण रामेर आश्वासे ※ गिरि हैते उलेन सकले रात्रिशेषे ३४
पर्व्वत उपरे राम वञ्चि कत राति ※ नामिलेन सत्वर सहित सेनापति
पोहाइते आछे अल्प यखन रजनी ※ हेनकाले लंका वेड़िलेन रघुमणि
पाइया सुग्रीव श्रीरामेर अनुमति ※ चारि द्वारे राखिल वानर-सेनापति ३५
नील सेनापति बलि घन-घन डाके ※ एकेरे डाकिते सबे धाय झाँके झाँके
सुग्रीव बलेन नील तुमि सेनापति ※ लंकाय जुझिते तव प्रथम आरति
बाछिया वानर लह रणेते प्रधान ※ भालमते राख गिया पूर्वद्वारखान
नील वीर पूर्व्वद्वारे जाय हरषित ※ डाक दिया अंगदेरे आनिल त्वरित ३६

शोभायमान हैं। चारों ओर ध्वज और पताका लहरा रहे हैं। राजगृह और सभासद-भवन एक-एक कर शोभायमान हैं। लंकापुरी देखकर श्री रामचन्द्र ने कहा कि पूरे भूमंडल में ऐसा सुरम्य स्थान नहीं है। ऐसी पुरी का राजा रावण क्यों वना! यदि विभीषण इसका राजा वन जाय तभी इसकी शोभा है। यदि रघुवंश में (जन्म और) मेरा नाम राम है तो मैं विभीषण को इस लंका का राजा वनाऊँगा। मित्र विभीषण ही इस लंका में शोभा देंगे। विभीषण को राजा वनाकर लोग उसकी पूजा करेंगे। राम के आश्वासन पर विभीषण को वड़ी खुशी हुई। सभी लोग रात्रि के अन्त में पर्वत के नीचे उतर आए॥ ३४॥

पर्वत पर रात बिताकर रामचन्द्र अपने सेनापति के साथ नीचे उतर आए। उस समय रात समाप्त होने में थोड़ी देर थी, रघुमणि ने लंका को चारों ओर से घेर लिया। श्रीराम की सम्मति पाकर सुग्रीव ने चारों दरवाजों पर वानर सेनापति नियत कर दिये॥ ३५॥

नील-सेनापति का नाम लेकर वह बारम्बार पुकारने लगे। एक को बुलाने पर सभी झुंड के झुंड उस ओर लपके। सुग्रीव ने कहा! नील, तुम सेनापति हो, लंका के युद्ध में तुम्हारी ही पहली नियुक्ति है। अपने मन के अनुसार श्रेष्ठ वानर चुनकर पूर्वी द्वार पर जाकर उनका समावेश भलीभाँति करो। वीर नील सहर्ष पूर्वी द्वार के लिए चल पड़ा। अंगद को भी झटपट वुलाकर लाया गया॥ ३६॥

सुग्रीव बलेन, हे अंगद युवराज ❋ तोमार अधीन सर्व्व वानर समाज
बाछिया कटक तुमि लह सारात्सार ❋ भालमते राख गिया दक्षिणेर द्वार
चले अंगदेर ठाट सबे बाछेर बाछ ❋ एक हाते पर्व्वत द्वितीय हाते गाछ
धूलि उड़ाइया तारा करे अन्धकार ❋ मार मार शब्दे धाय दक्षिणेर द्वार
दक्षिणे अंगद गेल हये हरषित ❋ डाक दिया हनूमाने आनिल त्वरित ३७
सुग्रीव बलेन शुन वीर हनूमान ❋ सबा हैते राखि आमि तोमार सम्मान
शिशुकाले लाफ दिले धरिते भास्कर ❋ साहस करिया बाछा डिंगाले सागर
संग्रामे पशिले तुमि विक्रमे प्रधान ❋ पश्चिमेर द्वार रक्षा कर सावधान
येखाने थाकेन राम-लक्ष्मण दु-भाइ ❋ सावधान हये तुमि थाकिबे तथाइ
धाय हनूमानेर कटक महाबल ❋ किलकिल शब्देते व्यापिल नभःस्थल
धूलि उड़ाइया जाय करि अन्धकार ❋ मार मार करि गेल पश्चिमेर द्वार३८
पूर्व्वे नील वीरे दिया ना हय प्रत्यय ❋ डाकिया कुमुद वीरे आनिल तथाय
सुग्रीव बलेन, हे कुमुद सेनापति ❋ सहस्र वानर आछे तोमार संहति

सुग्रीव ने कहा, हे युवराज अंगद ! तुम्हारे ही अधीन सारा वानर-समाज है, तुम अच्छे-अच्छे योद्धाओं को चुनकर अपना कटक लेकर दक्षिण का द्वार जाकर सँभालो। अंगद का सैन्य-समूह चला जिसमें उत्तमोत्तम चुने हुए योद्धा थे। इनके एक हाथ में वृक्ष तो दूसरे हाथ में पर्वत थे। धूल उड़ाकर इन लोगों ने चारों दिशाओं में अन्धकार फैला दिया और मार-मार का नाद करते हुए वे दक्षिणी द्वार की ओर दौड़ पड़े। अंगद सहर्ष दक्षिण की ओर चल पड़ा। हनुमान को भी तत्काल बुलाया गया ॥ ३७ ॥

सुग्रीव ने कहा, हे वीर हनुमान ! सुनो। मैं तुम्हारा सब से अधिक सम्मान करता हूँ। बचपन ही में तुमने उछलकर सूर्य को पकड़ लिया था। हे वत्स ! साहस कर तुम (अलंघ्य) सागर लाँघ गये। संग्राम में जुटने पर तुम्हारे पराक्रम का क्या कहना। सावधान होकर पश्चिमी द्वार को संभालो। जहाँ राम-लक्ष्मण दोनों भाई रहेंगे, तुम वहीं सावधान होकर डटे रहोगे। हनुमान का महाबलशाली कटक भी दौड़ा—उनके पद-चाप के शब्द से नभमण्डल भर गया। धूल उड़ाते, चारों ओर अंधेरा छाते हुए उनके योद्धा मार-मार शब्द करते हुए पश्चिमी द्वार की ओर लपके ॥ ३८ ॥

पूर्वी द्वार पर नील वीर को तैनात कर भी सुग्रीव के मन को भरोसा नहीं हुआ; उन्होंने कुमुद-वीर को वहाँ बुलवाया। कहा, हे कुमुद सेनापति, तुम्हारे पास एक सहस्र वानरों की टुकड़ी है। इन वानरों को लेकर तुम पूर्वी

से सब वानर लये पूर्व्वद्वारे चल ※ नीलेर कटके गिया हओ अनुवल
तोमा सत्वे यद्यपि नीलेर सैन्य भागे ※ तार भाल मन्द दाय तोमरे ये लागे
सुग्रीवेर आदेश लंघिबे कोन जन ※ नीलेर काछेते करे कुमुद गमन ३९
दक्षिणे अंगदे राखि प्रतीति ना जाय ※ डाक दिया महेन्द्रेर तथाय पाठाय
महेन्द्र देवेन्द्र शुन सुषेणनन्दन ※ आशी कोटि कपि दुइ भायेर भिड़न
से सकल लइया दक्षिण द्वारे चल ※ अंगद कटके गिया हउ अनुवल
तोमा विद्यमाने यदि तार सैन्य भागे ※ भद्राभद्र ताहार तोमार प्रतिलागे
सुग्रीवेर आदेश लंघिबे कोन जना ※ अंगद पश्चाते गेल महेन्द्रेर थाना४०
पश्चिमे हनूके दिया ना हय प्रतीत ※ डाक दिया सुषेणेर आनिल त्वरित
सुग्रीव बलेन शुन सुषेण सुहृत् ※ तिनकोटि वृन्द कपि तोमार सहित
से सबे लइया जाह पश्चिमेर द्वार ※ वायुतनयेर कर साहाय्य एवार
आपनि थाकिते यदि कोन मन्द घटे ※ अपयश तोमारि से, लोके धर्म्म टुटे
सुग्रीवेर आदेशे सुषेण महावीर ※ हनुर पश्चाते गिया हइलेक स्थिर ४१
उत्तरे काहारे दिया ना हय प्रतीत ※ आपनि सुग्रीव रहे वानर सहित

द्वार पर चले जाओ और जाकर नील के कटक की सहायता करो। तुम्हारे होते हुए भी यदि नील की सेना के पैर उखड़ जाते हैं तो उसके भले-बुरे का दायित्व तुम पर है। सुग्रीव के आदेश का लंघन कौन कर सकता है, कुमुद ने नील की ओर प्रस्थान किया ॥ ३९ ॥

दक्षिण में अंगद को रखकर भी मन को भरोसा नहीं हुआ। सुग्रीव ने महेन्द्र को वहाँ बुलवा भेजा। सुषेण-नन्दन महेन्द्र और देवेन्द्र सुनो, तुम दोनों भाइयों के पास अस्सी कोटि कपि हैं। इनको लेकर दक्षिणी द्वार पर पहुँच जाओ और वहाँ अंगद के कटक की सहायता करो। तुम्हारे रहते हुए उसकी सेना के यदि पैर उखड़ते हैं तो सारी जिम्मेदारी तुम पर है। सुग्रीव के आदेश का कौन लंघन कर सकता है। महेन्द्र की सेना ने जाकर अंगद के पीछे छावनी डाली ॥ ४० ॥

हनुमान को पश्चिम में नियुक्त कर भी मन में पूर्ण विश्वास नहीं हुआ। सुषेण को वहाँ तुरन्त बुलवा भेजा। सुग्रीव ने कहा, हे मित्र सुषेण सुनो, तुम्हारे पास तीन-कोटि वृन्द वानर हैं। उनको लेकर पश्चिमी द्वार पर जाओ और इस समय पवनसुत हनुमान की सहायता करो। तुम्हारे रहते हुए यदि कोई अनिष्ट हो गया तो तुम्हारा ही अपयश होगा। सुग्रीव के आदेश से महावीर सुषेण जाकर हनुमान के पीछे स्थित हो गये ॥ ४१ ॥

उत्तर में किसी को भी नियुक्त कर निश्चिन्तता नहीं, सो सुग्रीव स्वयं

सागरेर कूलेते ये वानरेर घर ❊ जांगाल वहिया पाछे पलाय वानर
वहुकोटि सेनापति पात्र-मित्र लये ❊ रहिल सुग्रीव राजा उत्तर चापिये ४२
औषध आनिते रहे वीर हनूमान ❊ मंत्रणा कर्म्मेते थाके मंत्री जाम्बवान
प्रहरी हइया थाके द्वारे विभीषण ❊ चारि द्वार सुग्रीव देखेन घनेघन
येइ द्वार सुग्रीव देखेन हीन वल ❊ दुना करिदेन सैन्य समरे अटल
चारि द्वारे सुग्रीव से दितेछे आश्वास ❊ चारि द्वार रक्षा विरचिल कृत्तिवास ४३

देवगणेर अन्तरीक्षे आगमन ओ हर-पार्व्वतीर कोन्दल

साजिछे यतेक वीर वाजिछे वाजना ❊ अन्तरीक्षे अमरगणेर हय थाना
आइल गन्धर्व्व यक्ष किन्नर चारण ❊ आसिलेन विधाता मराले आरोहण
ऐरावत आरोहणे आसे पुरन्दर ❊ मकर वाहने आसे जलेर ईश्वर
वृषभ वाहने आसिलेन पशुपति ❊ केशरि वाहने चड़ि आसिला पार्व्वती
वसिलेन देवगण सबे सारि सारि ❊ गन्धर्व्वेरा गीत गाय नाचे विद्याधरी ४४
पृष्ठ दिया पार्व्वती बसेन एक दिके ❊ क्रोध करि महादेवे कहेन सम्मुखे

वानरों के साथ वहीं रहे। सागर-तट पर ही वानरों के घर हैं। कहीं सेतु पार कर वानर भाग खड़े हों इस आशंका से वहुकोटि सेनापति और पार्षद लेकर सुग्रीव राजा उत्तरी द्वार पर डट गये ॥ ४२ ॥

वीर हनुमान दवा लाते रहे, मंत्री जाम्बवान मंत्रणा-कार्य में रत रहे, विभीषण द्वार पर प्रहरी बनकर रहे और सुग्रीव बार-बार चारों द्वारों का निरीक्षण करते रहे। जिस द्वार को भी सुग्रीव ने हीन-बल देखा उसी में सैन्य-संख्या दुगुनी कर उसको दृढ़ बनाते रहे। चारों द्वारों पर सुग्रीव सब को आश्वासन देते रहे। चारों-द्वारों की सुरक्षा पर कृत्तिवास ने यह विवरण लिखा ॥ ४३ ॥

देवताओं का अन्तरिक्ष में आगमन और शिव-पार्वती में कलह

सारे वीर सज्जित हो रहे हैं और रण-वाद्य बज रहा है। अन्तरिक्ष में अमर-वृन्द देवगण विराजमान हैं। गन्धर्व, यक्ष, किन्नर, चारण सभी समवेत हो गये। ब्रह्मा हंस पर सवार वहाँ आ पहुँचे। ऐरावत पर सुरराज इन्द्र और जल-देवता वरुण, मकर पर सवार होकर आ गये। वृषभ-वाहन पर शंकर और सिंह पर आसीन पार्वती आईं। देवगण पंक्तियों में विराजमान हुए, गन्धर्व लोग गीत गाने लगे और विद्याधरियाँ नृत्य करने लगीं ॥ ४४ ॥

पार्वती एक ओर पीठ फेर कर बैठ गईं और सामने बैठे महादेव से सक्रोध बोलीं। तुम तो भंगेड़ी हो, श्मशान में सदा फिरते रहते हो। यह

तुमि त भांगड़ सदा वेडाओ श्मशाने ॐ कोन गुणे पूजे तोमा लंकार रावणे
धने-प्राणे मजिल लंकार अधिकारी ॐ केमने आछ हे स्थिर, बुझिते ना पारि
आपनार माथा काट आपनार करे ॐ दुःख नाहि हय केन सेवकेर तरे
आर कोन सेवक छुँइबे तव छाया ॐ रावण सेवके तव नाहि किछु दया४५
एत यदि बलिलेन क्रोधे भगवती ॐ पार्व्वतीर वचने कुपिला पशुपति
वामा जाति, तोमार तिलेक नाहि शंका ॐ आपनि राखह गिया स्वर्णपुरी लंका
तपस्या करिल दश हाजार वत्सर ॐ अमर हइते नाहि पाइलेक वर
एखन मरण-पथ चिन्तिल रावण ॐ त्रिभुवने हेन कर्म्म करे कोन जन
स्वयं विष्णु जन्मिलेन दशरथ-घर ॐ आपनि दिलेन पृष्ठ अलंघ्य सागर
द्वारे राम, रावणेर जीवन-संशय ॐ बल देखि, रावणेर किसे रक्षा हय
मानुष हइया राम विष्णु अधिष्ठान ॐ श्रीरामेर हाते किसे पावे परित्राण
मिथ्या अनुयोग मोरे ना कर पार्व्वति ॐ रावणे राखिते नाहि आमार शकति
विधातार निर्व्वन्ध ये नारि घुचाइते ॐ आपनि ये आछि आमि आपनार मते
शंकर-शंकरी दुइ जनेते कोन्दल ॐ विमुख हइया हासे देवता सकल

लंकाधीश तुम्हारे किस गुण पर रीझकर तुम्हारी पूजा करता है। लंकेश तो धन-प्राण से विनष्ट हो जाने वाला है। पता नहीं, तुम कैसे स्थिर बैठे हो। मस्तक काट-काट कर चढ़ानेवाले अपने भक्त के प्रति तुमको दुःख नहीं। सेवक रावण के प्रति जब तुमको इतनी भी दया नहीं है तब आगे कोई भी सेवक तुम्हारी परछाहीं से कतरायेगा ॥ ४५ ॥

क्रोध में आकर जब भगवती ने इतना कहा तो महादेव भी कुपित हो गये। तुम नारी जाति की ठहरीं, तुमको बात करते तिल भर शंका नहीं, तुम स्वयं ही जाकर स्वर्णपुरी लंका की रक्षा कर लो। रावण ने दस हजार वर्ष तक तपस्या की, फिर भी उसको अमर होने का वरदान नहीं मिला। अब रावण ने मृत्यु का पथ स्वयं ही चुन लिया। तीनों लोक में कौन ऐसा आदमी है जो ऐसा (निन्द्य) काम करता है। दशरथ के घर पर स्वयं विष्णु ने जन्म लिया। उन्होंने ही अलंघ्य सागर पर सेतु बनवा डाला। द्वार पर राम खड़े हैं और रावण के प्राण संशय में हैं। बताओ भी, रावण के प्राणों की रक्षा कैसे हो सकती है! मनुष्य होकर भी राम विष्णु का अवतार हैं, ऐसे राम के हाथ रावण को कैसे त्राण मिलेगा। पार्वति! मुझसे नाहक शिकायत मत करो, रावण को बचाने की मुझमें शक्ति नहीं। विधाता का लिखा मैं नहीं मेट सकता हूँ—मैं स्वयं अपने ही तरंग में रहा करता हूँ। शंकर-शंकरी में यह कलह देखकर सारे देवता मुँह फेरकर हँसने लगे। धूर्जटि महादेव

धूर्ज्जटिर कोपे देखि हासे देवगण ※ आजि कालि रावणेर हइबे मरण
रावण मरिबे, सर्व्व-देवतार हास ※ हर-गौरी-कोन्दल रचिल कृत्तिवास ४६
पंच दिन उभय सैन्येर समावेश ※ परस्पर केह कारे नाहि करे द्वेष
श्रीराम वलेन, तत्व जान विभीषण ※ कि कारण नाहि रण देय दशानन
विभीषण वले, प्रभु, कर अवगति ※ उभय सैन्येर शब्दे स्तब्ध लंकापति
ताइ विपक्षेर प्रति नाहि देय हाना ※ निश्चय जानिते दूत या'क् एक जना
विभीषण-सह राम युक्ति करि सार ※ हनूमाने डाकिया कहेन समाचार
आइस वाछा हनूमान पवननन्दन ※ लंकाते जानिया एस कि करे रावण
सभामध्ये उठिया वलिछे जाम्ववान् ※ एकवार गियाछिल वीर हनूमान्
येइ जाइवेक हनू लंकार भितर ※ हनूमाने देखिया कुपिबे लंकेश्वर
मनेते करिबे एइ आसे वार-बार ※ इहा बिना राम सैन्ये वीर नाहि आर
दक्षिण द्वारेते आछे अंगदेर थाना ※ ताहारे आनिते दूत जाक् एक जना
हनूमान हइते अंगद वीर वड़ ※ ताहारे पाठाउ, ये वलिबे दड़ वड़ ४७

का कोप देखकर सारे देवता हर्ष मनाने लगे। आज ही कल में रावण का मरण समीप है। रावण-मरण और देवताओं का उल्लास! इस प्रकार कृत्तिवास ने हर-गौरी कलह का विवरण प्रस्तुत किया ॥ ४६ ॥

पाँच दिन तक दोनों सैन्यों का जमाव होता रहा। किसी ने भी एक दूसरे को छेड़ा नहीं। श्री राम ने कहा, विभीषण! जरा इस वात का रहस्य वताओ कि दशानन लड़ाई में उतर क्यों नहीं रहा है। विभीषण ने कहा, प्रभु, जान लीजिये कि लंकापति दोनों सैन्यों के शब्द से स्तंभित रह गया है, इसीलिए विपत्त पर धावा नहीं वोल रहा है। (फिर भी) सही बात का पता लगाने के लिए एक दूत भेजना चाहिए। विभीपण के साथ ऐसा परामर्श कर राम ने हनुमान को वुलवा कर यह समाचार सुनाया और कहा, हे प्रिय पवननन्दन, तुम एक वार लंका जाकर यह पता लगा आओ कि रावण क्या कर रहा है। सभा में जाम्ववान उठ कर खड़ा हो गया और वोला, एक वार वीर हनुमान वहाँ गये थे; जैसे ही वह फिर लंका में जायँगे तो उसे देखकर लंकेश कुपित हो जायगा। वह (यह भी) सोचेगा कि यही वार-वार यहाँ आता है, शायद इसके अतिरिक्त राम-सेना में कोई अन्य वीर नहीं है। दक्षिण-द्वार पर अंगद का मोर्चा है, उसे वुलवाने के लिए एक पायक चला जाय। हनुमान से भी अंगद अधिक वीर है, उसको भेज दो। वह खूब खरी-खोटी सुनाये गा ॥ ४७ ॥

अंगद रायबार

रामेर आज्ञाय चले सुषेण सत्वर ※ माथा नोयाइया कहे अंगद-गोचर
शुन बलि तोमारे अंगद युवराज ※ रामेर आज्ञाय चल वानर समाज
अंगद बलेन आमि जाब कि एकाकी ※ किवा थाना-सह जाब, तुमि बल देखि
थाना भांगिवारे नाहि कोन प्रयोजन ※ एका गिया कर तुमि राम सम्भाषण
दूत वाक्ये चलिल अंगद युवराज ※ आसिया मिलिल वीर रामेर समाज
रामेरे प्रणाम करि कहे करपुटे ※ आज्ञा कर महाराज एसेछि निकटे ४८
श्रीराम बलेन हे अंगद महाबली ※ रावण राजारे किछु दिया एस गालि
अंगद बलेन प्रभु युक्ति नाहि हय ※ बालिपुत्र आमि ये आमाते कि प्रत्यय
श्रीराम बलेन सत्य-हेतु बालि बधि ※ तोमाते प्रत्यय मम आछे तदवधि
अंगद बलेन प्रभु एवा कोन कथा ※ नखे छिड़ि आनिव ताहार दशमाथा
बालिर विक्रम तुमि जान भाले-भाले ※ विक्रम जानिबा मम संग्रामेर काले
पशिब राक्षस मध्ये करिब उठानि ※ रावणेरे गालि दिया आसिब एखनि
सुग्रीव बलेन वाछा प्राणेर दोसर ※ विक्रमे विशाल तुमि बापेर सोसर

अंगद का दौत्य

राम की आज्ञा से सुषेण तत्काल चल पड़ा। अंगद के पास जाकर सिर नवा कर उसने कहा, हे युवराज अंगद, सुनो बताता हूँ, राम की आज्ञा से वानर-सभा में चलो। अंगद ने कहा, मैं अकेले चलूँ या साथ में अपना सैन्य भी ले चलूँ। दूत ने कहा, सैन्य ले चलने की कोई आवश्यकता नहीं, तुम अकेले ही जा कर राम-सम्भाषण करो। दूत के कहने पर अंगद युवराज चल पड़ा और राम के समक्ष पहुँचकर करबद्ध प्रणाम करते हुए बोला, महाराज आज्ञा कीजिये, मैं सम्मुख प्रस्तुत हूँ ॥ ४८ ॥

श्री राम ने कहा, हे महाबली अंगद ! जाकर रावण राजा को कुछ कुवचन सुना आओ। अंगद ने कहा, प्रभु ! यह कोई युक्ति का काम नहीं होगा, मैं वालि-पुत्र हूँ, मुझ पर क्या भरोसा ! श्री राम ने कहा, सत्य के हेतु मैंने बालि का वध किया और तभी से तुम पर मेरा विश्वास बना हुआ है। अंगद ने कहा, प्रभु ! यह भी कौन सी बात है, नखों से उसके दस सिर नोच कर ले आऊँ। बालि का पराक्रम तो आपको भली भाँति विदित है, मेरे पराक्रम के बारे में आपको संग्राम के समय मालूम होगा। राक्षसों में मैं अभी पैठ जाऊँगा और रावण को खरी-खोटी सुना कर अभी तत्काल आऊँगा। सुग्रीव ने कहा, बेटा, तुम मेरे प्राणों के प्राण हो, अपने पिता के समान पराक्रमी हो,

एतकाल पालिलाम तोमा राजभोगे ❋ देखाओ बाहुर बल श्रीरामेर आगे
लंका मध्ये गिया तुमि बुझाओ रावणे ❋ आसिया शरण लउक रामेर चरणे
नतुवा सवंशे तारे श्रीराम लक्ष्मण ❋ खण्ड खण्ड करिबेन राखे कोन जन ४९
अंगद करिल यात्रा हये हृष्ट मन ❋ हेनकाले उठिया बलिछे विभीषण
कहिओ आमार वाक्य भाइ लंकेश्वरे ❋ निज दुष्टाचार यत येन मने करे
सभामध्ये बलिलाम हित ये वचन ❋ से कारणे हइलाम लाथिर भाजन
मूढ़ विभीषण नाहि बुझे कोन काज ❋ भाल मंत्री लये तिनि ह'न महाराज
वंश रहिलाम मात्र करिते तर्पण ❋ कहिओ ए सब कथा वालिर नन्दन ५०
बार बार बन्दिया से रामेर चरण ❋ रावणे भर्त्सिते जाय वालिर नन्दन
सुग्रीव राजारे बन्दे बापेर सोसर ❋ आर यत बन्दिलेक प्रधान वानर
करिछे मंगल ध्वनि सर्व्व कपिगण आनन्दे देखेन चेये श्रीराम लक्ष्मण
जाय अन्तरीक्षेते अंगद डाकाबुका ❋ वायुभरे उड़े येन ज्वलन्त उलका
लंकापुरी गेल वीर त्वरित गमन ❋ पात्र मित्र लये यथा बसेछे रावण
देवान्तक नरान्तक अतिकाय वीर ❋ महोदर महोल्लास दुर्ज्जय शरीर

इतने दिनों राजभोग से तुम्हारा पालन-पोषण करता रहा, अब राम के सम्मुख अपना बाहुबल दिखाओ। लंका में जाकर तुम रावण को समझाओ कि वह आकर श्री राम के चरणों में शरण ले ले; वर्ना श्री राम-लक्ष्मण दोनों मिलकर उसका सवंश निधन करेंगे। उसको कोई भी बचा नहीं सकेगा ॥ ४९ ॥

अंगद ने प्रसन्न - मन से यात्रा की। ऐसे ही समय विभीषण ने उठकर कहा, मेरी भी दो चार बातें भाई लंकेश्वर से बता देना कि वह अपने सारे दुष्ट आचरणों का स्मरण करे। सभा में मैंने उससे हित की बात कही और इस कारण उसने मुझ पर पदाघात किया। मूढ़ विभीषण तो कोई काम ठीक नहीं समझ पाता, अब योग्य मंत्री लेकर वे महाराज बने रहें। हे वालि-नन्दन! उससे बता देना कि वंश में पुरखों को पानी देने के लिए मैं ही अकेला रह जाऊँगा ॥ ५० ॥

बार-बार राम के चरणों की वन्दना कर वालि-तनय रावण की भर्त्सना करने चल पड़ा। पिता के तुल्य सुग्रीव राजा का नमन किया और जितने भी वानर-प्रधान थे उनका भी नमन किया। सारे कपि मंगल-ध्वनि करने लगे और श्री राम-लक्ष्मण आनन्द से निहारने लगे। वीर और दिलेर अंगद अन्तरिक्ष में चल पड़ा; पवन-गति से चला मानो उल्का प्रकाशमान हो। लंका में, जहाँ अपने पार्षदों के साथ रावण बैठा था, वहीं तत्काल जा पहुँचा। वहाँ वीर देवान्तक, नरान्तक और अतिकाय बैठे थे। दुर्जय-शरीर वाले महोदर और

हस्तिपृष्ठे प्रणाम जानाय प्रकम्पन ※ अश्व-पृष्ठे आरोहिया से धूम्रलोचन
रथ साजाइया दिया मणि मुक्ता हीरा ※ आसिया प्रणाम करे कुमार त्रिशिरा
आइल निशठ शठ येन यमदूत ※ अजय विजय आदि युद्धे मजबूत
कुम्भकर्ण-सुत कुम्भ निकुंभ दुजन ※ आर वज्रदन्त माथा नोयाय तखन
आइल खरेर पुत्र सत्वर सभाय ※ तपन स्वपन आर वीर महाकाय
यार भये त्रिभुवन हय त कम्पित ※ पितारे प्रणाम करे वीर इन्द्रजित
आइल सामन्त सैन्य वीर नानावर्ण ※ सबे मात्र ना आइल वीर कुम्भकर्ण
निद्रा जाय कुम्भकर्ण आपनार मने ※ लंकाते अनर्थ एत किछुइ ना जाने ५१
सभामध्ये वलिछे रावण सवाकारे ※ नरकपि आसियाछे आमा मारिवारे
शिशु राम शिशु कपि ना जाने आमाय ※ ताइसे आमार सने जुझिवारे चाय
वाटा भरि गुया दिब आड़ने-आड़न ※ येइ जन मारिबेक श्रीराम लक्ष्मण
एतेक वलिल यदि वीर लंकापति ※ वीर दाप करि उठे सब सेनापति
नरकपि आसियाछे तारे भय किसे ※ आपना आपनि निधि गृहेते प्रवेशे
वानर खाइते साध छिल वहुकाले ※ हेन भक्ष्य मिलिल अनेक पुण्य फले
आजि यदि कुम्भकर्ण उठेन जागिया ※ खाइबेन लक्ष लक्ष वानर धरिया

महोल्लास जमे थे। हाथी पर बैठे अकम्पन ने प्रणाम किया और अश्व पर बैठे धूम्रलोचन ने। कुमार त्रिशिरा मणि-रत्न से सुसज्जित रथ पर बैठकर आया और प्रणाम किया। निशठ-शठ भी आये जो यमदूत जैसे थे। युद्ध में दृढ़ अजय-विजय भी आये। कुम्भकर्ण के दोनों पुत्र कुम्भ-निकुम्भ आये और वज्रदन्त ने आकर सिर नवाया। खर का पुत्र भी सभा में आया। तपन, स्वपन और वीर महाकाय भी आये। जिसके भय से त्रिभुवन कम्पित होता है उस वीर इन्द्रजित् ने भी आकर पिता के चरणों में प्रणाम किया। विभिन्न वर्णों के विभिन्न सामन्त वीर भी आये। केवल वीर कुम्भकर्ण नहीं आया, वह अपनी सुखनिद्रा में मग्न है। लंका में इतना अनर्थ हो रहा है, इस सम्बन्ध में उसको कतई कुछ मालूम नहीं ॥ ५१ ॥

सभा में रावण सबको कह रहा है—नर और कपि मुझको मारने के लिए आये हैं। राम अबोध है और ये कपि भी नादान हैं; ये मुझको जानते नहीं इसीलिए मुझसे लड़ना चाहते हैं। जो भी राम-लक्ष्मण को मार गिरायेगा उसी को थाल भरकर सुपारी दूंगा। जब लंकापति ने इतना कहा तो सारे सेनापति वीरदर्प से बोल पड़े—नर और वानर आये हैं तो इसमें डर किस बात का है। सम्पदा अपने आप ही घर में आ गई। बहुत दिनों से बन्दर खाने की साध थी, आज जाने किस पुण्य के प्रताप से ऐसा भोजन मिल गया।

इन्द्रजित आछे एक महा धनुर्द्धर ❊ तार वाणे शतशत मरिबे वानर
आगे गिया वानरेर गले दिब फाँस ❊ खाइव घाड़ेर रक्त कामड़े खाव मास
मनुष्य दुटार मांस बड़इ सुस्वाद ❊ सवाकार घुचाव मांसेर अवसाद
जाठि ओ झकड़ा शेल मुषल मुद्गर ❊ हाते करि दर्प करे यत निशाचर
राजार सम्मुखे कहे यत सेनापति ❊ आमरा थाकिते तव किसेर दुर्गति
सीता लये क्रीड़ा कर आनन्दिते मने ❊ आमरा बान्धिया दिव श्रीराम लक्ष्मणे
त्रिभुवन सहाय करि यदि राम आने ❊ सीता नितें नारिबे आमरा विद्यमाने
से बेटा प्रधान तार कटकेर सार ❊ से थाकिते महाराज रक्षा नाहि आर
लंका दग्ध करे गेल रात्रे एसे पड़े ❊ सेइ भय करि पुनः आसे वा बाहुड़े
सेइ आसि देखे गेल अशोक-वने सीता ❊ सेइ कराले रामेर सने सुग्रीवेर मिता
सेइ भुलाले विभीषणे नाना कथा कये ❊ सेइ सागर वेंधे दिल गाछ पाथर व'ये
यत देख महाराज सव चक्र तारि ❊ से थाकिते राखिते नारिबे रामेर नारी
रावण बले,या वलिले मोर मने ताइमिले❊जन्मे ये ना पाइ दुःख घरपोड़ा तादिले

आज यदि कुम्भकर्ण जाग पड़ें तो लाख-लाख वन्दर पकड़ कर भक्ष लगें। महान धनुर्धर इन्द्रजित् भी है जिनके वाण से सैकड़ों वन्दर मर मिटेंगे। पहले जाकर वन्दर के गले में फाँसी डाल देंगे, फिर गर्दन का खून पी लेने के वाद उसका मांस खायेंगे। उन दो मनुष्यों का मांस वड़ा ही स्वादिष्ट होगा— सभी लोगों की मांस की तृष्णा पूरी हो जायगी। जाठि, झंखड़ा, शेल, मूसल, मुद्गर आदि अस्त्र हाथ में लेकर सारे निशाचर दर्प करने लगे। राजा के सम्मुख सारे सेनापति डींग हाँकने लगे, हम लोगों के रहते तुम पर आँच कैसी ? तुम सीता को लेकर मजे में क्रीड़ा करो, हम लोग राम-लक्ष्मण को वाँध लायेंगे। यदि राम सारे त्रिभुवन की सहायता लेकर भी आ जाये तो भी हम लोगों के रहते सीता को नहीं ले जा सकेगा। वन्दर से क्या डरना, वे तो जंगली जानवर हैं, केवल वह लंकादाही हनुमान न आये। वह निगोड़ा उस (राम) के कटक में श्रेष्ठ और प्रधान है, उसके रहते महाराज ! कोई बचाव नहीं। रात को आकर लंका जलाकर चला गया। वही डर बना हुआ है कि कहीं फिर न लौट आये। वही आकर अशोक-वन में सीता को देख गया। उसी ने राम से सुग्रीव की मित्रता कराई। उसी ने विभीषण से वात-चीत कर उसे भरमाया। उसी ने पेड़-पत्थर ढोये और समुद्र को वाँध डाला। जो कुछ भी देखते हो महाराज, सभी कुछ उसी का कुचक्र है। उसके रहते तुम राम की नारी को रख नहीं सकोगे। रावण ने कहा, तुमने मेरे मन की कही, इस लंकादाही ने मुझको वह क्लेश पहुँचाया जो किसी ने

धरत मोर बाप सब कोन काल्के आर॥रामलक्ष्मणथाकुकआगेघरपोड़ाकेमार५२
एइ युक्ति रावण राजा करते छिल वसे ॥ एमत काले अंगद वीर उत्तरिल एसे
प्रकाण्ड शरीर तार मन्द मन्द गति ॥ पूर्व्वाचल हैते येन एल दिनपति
आकाशे देउटि येन दुइ चक्षु ज्वले ॥ मस्तक ठेकेछे तार गगन मण्डले
रावणेर सेनापति द्वारे छिल यारा ॥ अंगदेर अंग देखे भंगदिल तारा
राजार रक्षक यत साक्षात् तक्षक ॥ रड़े यथा भक्ष्य लक्ष्यि समक्षे भक्षक
दुयारे दुयारी छिल, उठि दिल रड़ ॥ लाथिर चोटे कपाटभेंगे प्रवेशिल गड़
येखाने रावण राजा बसेछे देड्याने ॥ लम्फ दिया वीर गिया वैसे मध्यखाने
वसेछे रावण राजा उच्च सिंहासने ॥ ताहा देखि अंगदेर बड़ दुःख मने
कुण्डली करिया लेज बसिल सभाते ॥ पुरन्दर वार येन दिल ऐरावते
सुमेरु पर्व्वत येन अंगदेर देह ॥ राक्षसेरा बले, बाप, एटा एलो केह
वड़ वड़ वीर छिल रावणेर, काछे ॥ अंगदेर अंग देखे चुप करे आछे ५३
अंगद के देखे रावण छले मायापाते ॥ शत शत रावण ह'ये बसिल सभाते
ये दिके अंगद चाहे, से दिके रावण ॥ दशमुण्ड कुड़िवाहु विंशति लोचन

भी नहीं पहुँचाया। मेरे बेटा! राम-लक्ष्मण को रहने दो, पहले उस घर-फूँकने वाले ही को मारो ॥ ५२ ॥

रावण राजा बैठे-बैठे यही सब परामर्श कर रहा था कि वीर अंगद वहाँ जा पहुँचा। प्रकांड शरीर लिये मन्द-मन्द गति से वह ऐसे पहुँचा मानों पूर्वाचल से सूर्य उदय हुआ। दोनों आँखें इस प्रकार धधक रही थीं मानों गगन में दीपक जल रहे हों—उसका सिर गगनमंडल से छू रहा था। द्वार पर रावण के जो सेनापति थे वे अंगद के डील-डौल को देखकर भाग खड़े हुए। द्वार पर द्वाररक्षक था। वह भी सिर पर पैर रखकर भागा। पदाघात से किवाड़ तोड़कर अंगद ने गढ़ में प्रवेश किया। जहाँ राजा रावण सभाकक्ष में बैठा था, वहीं फाँदकर वीर जा पहुँचा और बीच में बैठ गया। रावण-राजा ऊँचे सिंहासन पर बैठा है, देखकर अंगद के मन में बड़ा क्लेश हुआ। उसने अपनी पूँछ को कुंडली बनाकर उस पर आसन जमाया मानों ऐरावत पर विराजमान इन्द्र दरबार लगाये हैं। सुमेरु पर्वत के समान अंगद का शरीर देखकर राक्षसों ने कहा, हाय बाप, यह कौन आ गया। रावण के निकट बड़े-बड़े वीर बैठे थे, लेकिन अंगद का शरीर देखकर वे भी चुप किये रहे ॥ ५३ ॥

अंगद को देखकर रावण मायाजाल पर उतर आया। (इन्द्रजाल की माया से) वहाँ सब रावण ही रावण दिखाई देने लगे। अंगद जिस ओर भी

सवाइ रावण, भेद नाहि एक जने ※ अंगद वले कथा कव कोन रावणेर सने
सवेमात्र इन्द्रजित् छिल आपन साजे ※ पुत्र ह'ये पितार मूर्त्ति धरे कोन लाजे
निकुम्भिला यज्ञ करे रावणेर बेटा ※ कपाले देखिल तार यज्ञ शेष फोंटा५४
अंगद वले, बुझिलाम एइ बेटा मेघनाद ※ आकार इंगिते तारे कहेन संवाद
अंगद बले, सत्य करे कओ रे इन्द्रजिता ※ एइ यत वसि आछे सवाइ कि तोर पिता
तारि जन्य एत तेज गुरु लघु ना मानिस् ※ तोर वापेर एत तेज इन्द्र बेंधे आनिस्
धन्य नारी मन्दोदरी धन्य रे तोर माके ※ एक युवती एतेक पति भाव केमने राखे
कोन वाप तोर दिग्विजय कैल तिन लोके ※ कोन बाप तोर कोथा गेल परिचय देमोके
कोन बाप तोर चेड़ीरअन्नखाइलपाताले ※ कोनबापबाँधाछिलअर्ज्जुनेरअश्व-शाले
कोन बाप यम जिनिते गियाछिल दक्षिण ※ कोन वापमान्धातारवाणे दाँतेकैलतृण
कोनवापधनुकभांगितेगियाछिलमिथिला ※ कोनवापकैलासगिरि तुलितेगियाछिला

दृष्टि डालता उसी ओर देखता कि दशमुंड, बीस हाथ, बीस आँखों वाला रावण बैठा है। सभी एक समान रावण हैं; कोई भेद नहीं। अंगद ने सोचा मैं किस रावण के साथ बात करूँ। केवल इन्द्रजित् ही ऐसा था जो जैसे का तैसा अपने रूप में था; पुत्र होकर भला पिता का रूप कैसे धारण कर ले। रावण का पुत्र इन्द्रजित् 'निकुम्भिला-यज्ञ' करता है, उसके माथे पर अंगद ने यज्ञ-समाप्ति का तिलक देखा ॥ ५४ ॥

अंगद ने कहा, समझ गया कि यही बेटा मेघनाद जी हैं। इंगित से उसी को संन्देश सुनाने लग गया। अंगद ने कहा, अरे इन्द्रजित्! जरा सच-सच बताना, ये जो सारे बैठे हैं, ये सभी क्या तेरे पिता हैं? इसलिए क्या (इतने पिता होने के कारण ही) तुझमें इतना तेज है कि छोटे-बड़े किसी को नहीं गिनता? तेरे पिता का ही इतना तेज है कि उसके बल पर इन्द्र को भी बाँध लाता है। धन्य है नारी मन्दोदरी और धन्य है तेरी माँ, कि एक युवती होकर इतने पतियों को कैसे प्रसन्न रखती है। इनमें से तेरे किस बाप ने तीनों लोकों को जीता? तेरा कौन-सा बाप कहाँ गया, मुझको तनिक परिचय तो दे। तेरा कौन-सा बाप है जिसने पाताल में दासी का अन्न खाया? तेरा कौन-सा बाप है जो अर्जुन के अस्तबल में बँधा पड़ा था। तेरा कौन-सा बाप यम पर विजय प्राप्त करने दक्षिण गया था? तेरा कौन-सा बाप है जिसने मान्धाता के बाण से त्रस्त होकर दाँतों से तिनका उठाया था? तेरा कौन-सा बाप धनुष तोड़ने मिथिला गया था? तेरा कौन-सा बाप कैलास पर्वत उठाने गया था? तेरा कौन-सा बाप बहू के प्रेम में आसक्त हो गया था? तेरे कौन-से बाप की बहिन को मधु दैत्य ने चुरा लिया? तेरा कौन-सा बाप जामदग्न्य

कोन बाप तोर बधूर प्रेमे हइल आसक्त ❋ तोरकोन बापेर भग्नीहरेनिलमधुदैत्य
कोन बाप तोर जब्द हैलजामदग्न्येरतेज ❋ मोरबापतोरकोन बापकेबेन्धेछिललेजे
एके एके कहिलाम तोरसकलबापेरकथा ❋ एसबारेकाजनाइतोरयोगीबापटिकोथा
शूर्पणखा राँड़ी जारे कराइल दीक्षा ❋ दण्डक कानने ये मागिया खाय भिक्षा
शंखेर कुण्डल कर्णे रक्त वस्त्र परे ❋ डम्बरु बाजाय भिक्षा करे घरे घरे
संन्यासीर वेश धरे मुखे माखे छाइ ❋एसबारेकाजनाइतोरयोगीबापटिचाय५५
सहिते ना पारे रावण अंगदेर कथा ❋ लज्जा पेये रावण भये हेंट करिल माथा
दुःखित हइया रावण करिल माथा भंग ❋ दुइजने लेगे गेल वाक्येर तरंग
रावण बले, शोन ओरे वानरा तोरे बलि ❋ कोथा हते मरिवारे लंकापुरे एलि
के तोरे पाठाये दिल मरिवार तरे ❋ वनेर वानर केन राक्षसेर घरे
कि नाम काहार बेटा, कोन देशे वास ❋ भय कि मारिव नाहि कह सत्यभाष
अंगद बले तोर भयेते थरथराये काँपि ❋ एखनएमनधर्म्भकथामर रे बेटा पापी
तुइ कोन ठाकुरेर बेटा तोरे भय कि ❋ आमि के जानिसना तुइशोन परिचयदि
बालि आर सुग्रीव दुइ वीर अवतार ❋ यारेजिन्तेकिष्किन्धायगिछिलिएकवार

परशुराम के तेज के सम्मुख पराभूत हुआ था। मेरे बाप ने तेरे किस बाप को अपनी पूँछ में लपेट लिया था ? एक-एक कर तेरे सारे बापों की कथा वर्णन की। अच्छा, यह सब बातें भी रहने दे, तेरा वह तपसी बाप कहाँ है ? दुष्ट शूर्पणखा ने जिसको मंत्र दिया और दंडक अरण्य में जो भीख मांगकर खाता रहा ? कानो में शंख का कुंडल और (अंग में) भगवा वस्त्र पहने डम्बरु बजा-बजा कर घर-घर में भीख माँगता था। संन्यासी का वेश धारण किये मुँह पर राख पोतकर घूमता था। अस्तु, इन बापों की जरूरत नहीं; मुझे तो तेरे उस जोगड़े बाप की चाहना है ॥ ५५ ॥

अंगद की बातों को रावण सह न सका; लज्जा से उसने अपना सिर झुका लिया। दुखी होकर रावण ने अपना मायाजाल समाप्त किया। फिर दोनों में वाक्यों के वाण चलने लगे। रावण ने कहा, अरे वानरा! सुन तुझे बताऊं। कहाँ से तू लंकापुर मरने चला आया, किसने तुझे मरने के लिए भेज दिया ? वन के बन्दर हो, राक्षस के घर कैसे ? क्या नाम है तुम्हारा, किसके बेटे हो और कौन से देश के रहने वाले हो ? सच-सच बताओ, कोई डर नहीं, मारूंगा नहीं। अंगद ने कहा, तेरे डर से तो मैं थर-थर काँपने लग गया हूँ, अब ऐसी धार्मिक बातें करने लग गया है, अरे पापी, मरता भी नहीं। तू कौन खेत की मूली है, तुझ से क्या डरना है मुझे ? मैं कौन हूँ यह भी तू नहीं जानता। ठहर मैं अपना परिचय देता हूँ। बालि और सुग्रीव ये दो वीरों के अवतार हैं जिनको

पड़े कि ना पड़े मने हैल अनेक दिन ※ हात बुलाये देख गले आछे लेजेर चिन
से बालिर सुत आमि सुग्रीवेर चर ※ अंगद नाम धरि आमि रामेर किंकर
राम कि जानिस् नाइ आनिलि सीता हरे※ एखन देखि लंकापुरी राखिस् केमन करे
एइ तोर लंकापुरी राम वेड़िलेन एसे ※ वेर ना रावणा केन घरे रहिलि बसे
अरुण नय वरुण नय रामेर संगे वाद ※ वंशे केह ना थाकिवे ना करिस साध५६
रावण बले,बलिल कि राम लंकापुरे एसे※ बुझि वा रामेर डरे रैते नारि देशे
एइ कि भेवेछे गुहक-चण्डालेर मिता ※ वनेर वानर सहायकरे उद्धारिबेसीता
रामेर योग्यता यत सब देखते पाइ ※ नैले केन देशे थेके दूर करे देय भाइ
नारी संगे लइया से वने केन आसे ※ भाइके मेरे राज्य लंये रय ना केन देशे
राम या पारे करुक एसे तोर सने मोर कि※ शूर्पनखार नाक काटे बृथा आमि जी
एनेछि रामेर सीता बल्गे तार तरे ※ करुक एसे राम तपस्वी प्राणे यत परे
सुमेरु पर्व्वत यदि मक्षिकाय नाड़े ※ सती नारी कभु यदि निज पति छाड़े

जीतने के लिए तू एकबार किष्किन्ध्या भी गया था। काफी दिन हो गये, शायद याद न हो, गले में हाथ सहला कर देख ले कदाचित् पूँछ का चिह्न अब भी मौजूद हो। मैं उसी बालि का बेटा हूँ और सुग्रीव का चर हूँ। मेरा नाम अंगद है और मैं राम का अनुचर हूँ। राम कौन है यह तो तुझे मालूम नहीं था, तभी सीता को तू उठा लाया। अब देखता हूँ कि कैसे तू लंकापुरी को बचा लेता है। तेरे इस लंकापुरी को राम ने घेर लिया है। अरे, बाहर क्यों नहीं निकलता रे रावणा, घर में मुँह छिपाये क्यों बैठा है? यह कोई अरुण-वरुण नहीं, यह राम के साथ विवाद है। इसमें तेरे वंश में कोई भी बचा नहीं रह जायगा, [वंश की] लालसा न रखना ॥ ५६ ॥

रावण ने कहा—क्या कहा तूने कि राम लंकापुर आ गया तो उसके डर से हम अपने देश में रह नहीं सकेंगे। यह क्या तूने गुहक-चंडाल की मित्रता समझ रखी है। वन के बन्दरों की सहायता से वह सीता का उद्धार करेगा? राम की कितनी योग्यता है यह तो दिखाई ही पड़ रही है, वर्ना उसका भाई उसे देश से बाहर क्यों निकाल देता; और अपनी नारी को साथ लेकर वह जंगल भी क्यों आया होता; भाई को मार कर वह अपना राज्य क्यों नहीं छीन लेता। राम से जो कुछ बन पड़े आकर मेरा बिगाड़ ले; तुझसे मेरा क्या झगड़ा है? शूर्पनखा की नाक उसने काट ली और नाहक ही मैं जिन्दा हूँ। मै राम की सीता उठा लाया हूँ, उस तपसी राम से जाकर बताना कि उसके जी में जो आवे सो कर ले। यदि सुमेरु पर्वत को मक्खी परिचालित कर दे, सती नारी अपने

गरुड़ेर धन यदि हरे लय काके ※ खलेर शरीरे पाप यद्यपि न थाके
खद्योत उदये यदि हय चन्द्रपात ※ रावण जिते सीता निते नारबे रघुनाथ
बल् गिया वानरा रे तोर रघुनाथे ※ सेतुबन्ध भेंगे दिक् आपनार हाते
येखाने पर्व्वत छिल, सेखाने ता थोबे ※ उपाड़िल यत वृक्ष पुनर्व्वार रोबे
विभीषण एसे मोर पाये धरुक केंदे ※ घरपोड़ाके एने दिबि हाते गले बेंधे
द्वितीय प्रहर रात्रि घोर निशाभागे ※ दुयारे प्रहरी मोर केह नाहि जागे
लंका दग्ध करे गेल रात्रे एसे पड़े ※ तार शास्ति करे लब, तबे दिब छेड़े
धनुक वाण फेले राम खत् दिक् नाके ※ सर्व्व दोष क्षमा करे कृपा करि ताके ५७
अंगद बलिछे, रावण, आमरा ताइचाइ ※ कचकचिते काजकि मोरादेशे फिरे जाइ
रामके गिया बलि इहा ना करिले नय ※ सेतुबन्ध भेंगे दिब दण्ड चारि छय
या बलिले ता करिते मुस्किल कि आछे ※ येखाने पर्व्वत छिल थोब तार काछे
विभीषण के बेंधे एने दिब तोर काछे ※ बुझे पड़े शास्ति करो, मने यत आछे
निर्म्माइया दिब लंका यत गेछे पोड़ा ※ शूर्पनखार नाककान किसे जाबे जोड़ा
अक्षकुमार मेरेछे ये श्रीरामेर चरे ※ तार स्त्री विधवा हये आछे तोर घरे

पति का परित्याग कर दे, गरुड़ का धन यदि कौआ छीन लेने में समर्थ हो जाय, खल के शरीर में यदि पाप का लेश न रहे, जुगनू के निकलने से यदि चन्द्र का पतन हो जाय, फिर भी रावण को जीत कर रघुनाथ सीता को नहीं ले जा सकेगा। अरे वानरा! जाकर अपने रघुनाथ से ताकीद कर दे कि वह अपने हाथों से सेतुवन्ध तोड़ डाले; जहाँ पर्वत था वहीं उसे रख कर जितने पेड़ उखाड़े हैं उनको वही फिर से रोप दे; विभीषण आकर मेरे पैरों पर रोये-कलपे और लंकादाही हनुमान के हाथ-पैर बाँध कर मुझे सौंप दे। दो पहर रात बीते घनघोर रात्रि में जब मेरे दरवाजों पर भी प्रहरी जाग नहीं रहा था वह आकर लंका जला कर चला गया। दण्ड देने के वाद उसे छोड़ दूँगा। राम धनुष-वाण फेंक कर जमीन पर नाक रगड़ते हुए क्षमा माँगले, मैं उसके सारे अपराधों को सदय होकर क्षमा कर दूँगा ॥ ५७ ॥

अंगद ने कहा, रावण हम भी यही चाहते हैं। इस व्यर्थ के वाद में क्या रखा है, हम भी अपने देश लौट जायँ। राम से जाकर बताता हूँ कि यह किये विना कोई चारा नहीं। चार-छह दंड में ही सेतुवन्ध तोड़ दूँगा। तुमने जो कुछ बताया वह करना कोई कठिन नहीं, जहाँ पर पर्वत था वहीं उठाकर उसे रख दूँगा। विभीषण को बाँध कर तुम्हारे पास ला दूँगा, जो समझ में आवे सजा देना। लंका में जितना कुछ जल गया है उसका निर्माण भी कर दूँगा, लेकिन यह वताओ कि शूर्पनखा की नाक कैसे जोड़ी जा सकेगी? श्री राम के चर ने

ये तोर दारुण पन तेमन करे के ※ कबे बल्‌वि, आमार बधूर स्वामी एने दे
एकजन के एने दिले ताउ मने ना लबे ※ मनेर मत ना हइले ताहाओ फिरे दिवे
घर पोड़ाके एने दिते बलिल बटे हय ※सेदिन तारेदूर करेछेन खुड़ा महाशय५८
अंगदेर कथा शुने रावण राजा हासे ※ घरपोड़ाके दूर करिल तार कोन दोषे
अंगदबलेन हनूयखन आसितेछिलहेथा ※ बलेछिलेन खुड़ा तारे गोटा चारेककथा
जाओ लंकाय हनूमान पवनकुमार ※ पालन करिया कथा आसिह आमार
कुम्भकर्णेर माथाटा आनिबे नखेछिंड़े ※ सागरेर जले लंका फेलिबे उपाड़े
अशोकवन सहसीताआनबे माथायकरे ※ वाम हस्ते आनिबे रावणेर जटे धरे
पाठाये छिलेन तारे चारि कार्य्येर तरे ※ चारिकार्य्येर एक कार्य्य किछुइनाकरे
कोपेते सुग्रीवराजा काटितेछिलेन ताय ※ आमरा सकलवानरधरेरेखेछि ताँरपाय
अनाथेर नाथ राम गुणेर सागर ※ सुग्रीवेरे आज्ञा दिला, ना मार वानर
ना मारिल सुग्रीव शुनिया रामरे कथा ※ दूर करे दिल तारे मुड़ाइया माथा
कोन देशे पलायेछे आछे किवा नाइ ※ तारतत्व करिमोरा फिरिठाँइ-ठाँइ५९

जिस अक्ष-कुमार को उस दिन मारा है, उसकी पत्नी विधवा होकर तुम्हारे घर में रह रही है। तुम्हारी प्रतिज्ञा भी बड़ी जबर्दस्त है, ऐसी प्रतिज्ञा कोई दूसरा कर भी कैसे सकता। कभी यह कह बैठोगे कि मेरी बहू का पति ला दो। अगर एक को ला भी दूँ तो तुमको पसन्द नहीं आएगा। यदि मनपसन्द न हुआ तो उसको भी लौटा दोगे। लंकदाही को तो तूने ला देने के लिए कहा, किन्तु उसको उस दिन चाचा सुग्रीव ने भगा दिया है ॥ ५८ ॥

अंगद की बातें सुनकर राजा रावण हँसने लगा; कहा, घर जलाने वाले को किस दोष पर खदेड़ दिया गया। अंगद ने कहा, हनुमान जब यहाँ आ रहा था तो चाचा ने उससे दो-चार बातें कही थीं—पवनकुमार तुम लंका जाओ और मेरी दो चार आज्ञाओं का पालन कर आओ। नखों से कुम्भकर्ण का सिर नोच लाना। लंका को उखाड़ कर समुद्र के जल में फेंक देना। सीता-सहित अशोक-वन अपने सिर पर उठा कर ले आना। बायें हाथ से रावण को जटाओं के बल पकड़ लाना। उसको केवल चार काम देकर भेजा था और उनमें से उसने एक काम भी नहीं किया। गुस्से में आकर राजा सुग्रीव उसका वध करने ही वाले थे कि हम सब वानरों ने उनके पाँव पकड़ लिए। अनाथों के नाथ और गुणों के सागर राम ने सुग्रीव को आज्ञा दी कि वानर की हत्या मत करो। सुग्रीव ने राम के कहने पर उसे मारा नहीं लेकिन उसका सिर मुँड़ा कर उसको दूर भगा दिया। किस देश को वह भाग गया है, जिन्दा है भी या नहीं, इसका पता हम कहाँ लगाते फिरेंगे ॥ ५९ ॥

अंगदेर कथा शुनि राक्षसेरा चाय ※ से करे नाइ चारिकर्म्म एइ वा करे जाय
अंगद बलेबुझिलाम तोर एसब किछुनय ※ रघुनाथेर हाते तोर मरण निश्चय
जा थाके वासना तोर एइ बेला ता कर ※ राज आभरण लये सर्व्वांगेते पर
तुइ मरिले एसब आर भोग करिवे के ※ भाण्डार भाँगिया धन दरिद्रेके दे
हय हस्ति रथ आदि महिष गोधन ※ नयन मुदिले सब हबे अकारण
स्वप्नगत लोके येन निधि पाय हाते ※ आँखि कचालिया उठे रजनी प्रभाते
एसव सम्पद तोर देखि सेइमत ※ चैतन्य थाकिते देख आपनार पथ
स्त्री सकले डाकिया जिज्ञासा करकथा ※ केबा जाबे तोर सने ह'ये अनुमृता
आपनि कुठार दिलि आपनार पाय ※ अहंकार करे डिंगा डुबालि दरियाय
बुद्धिमान हये ज्ञान हारालि अभागा ※ शिरे हैल सर्पाघात कोथा बाँधवि तागा
विभीषणेर कथा तुइ ना शुनिलिकाने ※ सुखे शय्या कर गिया श्रीरामेर बाणे
सर्व्वशास्त्र पड़े बेटा ह'लि हतमुख ※ बल्ले कथा शुनिस् नाक एइत बड़दुःख
पूर्णब्रह्म नारायण राम रघुमणि ※ दुष्टेरे करिते नष्ट जन्मिला अवनी
मदमत्त निशाचर पापिष्ठ रावण ※ मजिबि सवंशे तार उठेछे लक्षण

अंगद की बातें सुनकर राक्षस एक दूसरे का मुँह ताकने लगे—उसने तो चारों काम नहीं किये, कहीं यही न यह सब करने लग जाय! अंगद ने कहा, तेरी सारी बात ही व्यर्थ है, समझ में आ गया कि तेरी मौत रघुनाथ के हाथ ही होगी। मन में तेरी जो कुछ वासना हो अभी पूरी कर ले। राज-आभरण लेकर सारे अंगों में पहिन ले क्योंकि तेरे मरने के बाद यह सब कौन भोगेगा? भंडार खोल कर सारा धन दरिद्रों को बाँट दे। घोड़ा, हाथी, रथ और गोधन आदि सब बाँट दे क्योंकि आँखें मुंदने के साथ-साथ सभी कुछ व्यर्थ हो जायगा। जिस प्रकार सपने में लोगों को निधि मिल जाती है और सबेरे उठते ही आँखें मसल कर देखता कि कहीं कुछ नहीं। तेरी यह सारी सम्पदा भी मैं इसी प्रकार देखता हूँ। चेतना रहते हुए अपना पथ देख ले। अपनी नारियों को बुला कर पूछ ले कि कौन-कौन तेरे साथ सहमरण में साथ देंगी। तूने स्वयं अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारी। घमंड के मारे मँझधार में ही अपनी नाव डुबो दी। बुद्धिमान होते हुए भी अभागे तूने अपना ज्ञान खो दिया। सिर पर यदि साँप डस ले तो पट्टी कहाँ बाँधेगा। विभीषण की बातों पर तूने ध्यान नहीं दिया, अब श्री राम के बाण की बदौलत आराम की सेज पर सो जा। सारा शास्त्र पढ़कर भी तू वज्र-मूरख रह गया—कहने पर भी सुनता नहीं, यही तो अफसोस है। राम रघुमणि पूर्णब्रह्म नारायण हैं—धरती पर दुष्टों का संहार करने के लिए उन्होंने जन्म लिया। हे मदमत्त निशाचर! हे पातकी

राम विष्णु सीता लक्ष्मी ना बुझिलि मने ※ दशरथेर घरे जन्म दुष्टेर दमने
मत्त हये धरलि बेटा, जानकीर केशे ※ सेइ अपराधे तुइ मजिलि सवंशे
विधाता विमुख तोरे शुनरे आभागे ※ आनिलि रामेर सीता मरिवार लेगे
दशहाजार देवकन्या मजिस रात्रि दिने ※ रहिते नारिस बेटा परदार विने
कामरसे मत्त हये पड़े गेलि फाँदे ※ वामन हइया हात वाड़ाइलि चाँदे
सूर्य्यवंश-चूड़ामणि दशरथ राजा ※ देवता गन्धर्व्व आदि करे यार पूजा
तार घरे रघुनाथ जन्मिला आपनि ※ एतदिन निर्व्वंशे हलि रे वैश्रवणि
कामरसे मजे गेलि विषय आस्वादे ※ तक्षके दंशिल तोरे कि करे औषधे
जे राम ताड़का वधे पञ्च वर्ष काले ※ हरेर धनुक जिनि भाँगे अवहेले
ताँहार वनिता सीता आन्लि बेटा हरे ※ कालकूट विष खेलि डान हाते करे
अहल्या पाषाणी ह'ये छिल दैवदोषे ※ मुक्त ह'ये गेल रामेर चरण परशे
कार्त्तवीर्य्यार्ज्जुन तृण कराइल दाँते ※ तार दर्प चूर्ण हल परशुरामेर हाते
हारिल परशुराम प्रभु रामेर ठाँइ ※ ताँर संगे तोर द्वन्द्व आर रक्षा नाइ
गेलि रे रावणा, तुइ गेलि एत दिने ※ उपाय ना देखि तोर राम नाम विने

रावण! तू अपने पूरे वंश के साथ ध्वंस होगा, ऐसे लक्षण दिखाई दे रहे हैं। तू यह नहीं समझ सका कि राम विष्णु हैं और सीता (साक्षात्) लक्ष्मी। दुष्टों के दमन के लिए दशरथ के लिए दशरथ के घर उन्होंने जन्म लिया है। मदमत्त होकर तूने जानकी को केशों से पकड़ा—इसी अपराध से तू अपने वंश के साथ चौपट हो गया। सुन ले रे अभागे! विधाता तुझसे विमुख है, मरने के निमित्त ही तू राम की सीता को ले आया। रात-दिन दस हजार देवकन्याओं से सम्बन्ध रखता है, फिर भी निगोड़े, तू विना पर-स्त्री रह नहीं सका? कामरस में मत्त होकर तू जाल में फँस गया है, बौना होकर तू चाँद पकड़ने लपका था। सूर्यवंश के चूड़ामणि सदृश राजा दशरथ की पूजा देवता गन्धर्व तक करते हैं। उन्हीं के घर में रघुमणि भगवान् ने स्वयं जन्म लिया। रे रावण अब तू निर्वंश हुआ। कामरस में डूब गया, व्यसन में मस्त हो गया। तक्षक ने तुझे डस लिया, अब औषध क्या कर सकता है? जो राम पाँच वर्ष की अवस्था में अनायास ताड़का का वध करता हो और शिवधनुष को जो अनायास ही तोड़ डालता हो, तू उसकी वनिता को चुरा कर ले आया—कालकूट विष तूने स्वेच्छा से पी लिया। दैव-दोष से अहल्या पत्थर की बनी पड़ी थी, श्री राम के चरणों के स्पर्श से :मुक्त हो गयी। कार्त्तवीर्यार्जुन ने तुझसे दाँतों से तृण उठवाया था, उसका घमंड परशुराम के हाथों चूर-चूर हो गया। वही परशुराम प्रभु राम से पराजित हुए। और उन्हीं के साथ तेरा कलह है, अब तेरी कोई रक्षा

यदि जिते आशा थाके गलवस्त्र हये * काँधे दोला करे सीता व'ये दिवि लये
तवे यदि रघुनाथ तोरे करेन रोष * श्रीचरणे धरि मोरा मेगे लव दोष६०
रावण वले वानरा तोर मुखे पड़ुक छाइ*आमार जन्य दुःख पेये मरवि केन भाई
आमार तरे तोरा केन धरबि रामेर पाय* युद्धकरेमरवआमितोरवापेरकिदाय६१
अंगद वले, यत वुझाइ, तोर मने ना लय* रघुनाथेर हाते तव मरण निश्चय
हितोपदेश कि वुझिबि शोनरे बेटा गरु* तुइ बाँचिलेआमारबापेरकीर्त्तिकल्पतरु
नैले तोरे बेंचे थाकते साध करे किवलि*लोकेव'लवे,एइबेटा के बेंधे छिल बालि
घुषिबे आमार बापेर कीर्त्ति जगन्मय * ताइ बलिदिनकतकआँचलेभाल हय६२
रावणवले,शोनवानरा, धिक्जीवनेतोर * राजार बेटा हये हलि नरेर नफर
पुत्र हये परशुराम, शुधते पितारधारे * निःक्षत्रिया कैल धरा तिन-सातवार
पुत्र हये तुइ तार कोन कर्म्म कैलि * वाप के मारिया तोर माके विलाइलि
धिक् धिक् जीवने तोर मा यार कुलटा *वारे वारे कहिसकथामरवानरा बेटा६३

नहीं। अरे रावण ! इतने दिनों में तेरी दुर्गति हुई, अब तो राम-नाम के बिना तेरा कोई चारा नहीं। अगर जीने की इच्छा हो तो गले में वस्त्र डाल, कन्धे पर सीता देवी की डोली ढोकर (राम की शरण में) उपस्थित हो। फिर भी अगर रघुनाथ तुझ पर रोष प्रगट करते हैं तो उनके श्रीचरणों को पकड़ कर हम लोग क्षमा माँग लेंगे ॥ ६० ॥

रावण ने कहा, अरे वानर; तेरे मुँह में राख। मेरे लिए क्यों क्लेश उठायेगा भाई ! मेरे लिए तुम लोग क्यों राम के पैर पकड़ोगे। मैं लड़कर मरूँगा, तेरे बाप का उससे क्या ? ॥ ६१ ॥

अंगद ने कहा, जितना भी तुझको समझाता हूँ, तेरी समझ नहीं आता। अवश्य तेरी मौत रघुनाथ के हाथों ही है। हितोपदेश तू क्या समझे, तू बैल है। सुन, तेरे जीने से मेरे बाप का यशोवर्धन होगा। वर्ना तुझे क्यों मैं जिन्दा रहने को कहता। लोग कहेंगे, इन्हीं बच्चू को बालि ने बाँधा था और इस प्रकार मेरे बाप का यश संसार भर में फैलेगा। इसीलिए कहता हूँ कि तू और कुछ दिन जी ले तो अच्छा ॥ ६२ ॥

रावण ने कहा—सुन रे वानर, तेरे जीवन पर धिक्कार है। राजा का बेटा होकर तू मनुष्य का नौकर बना। पुत्र होकर परशुराम ने पिता का ऋण चुकाने के लिए धरती को इक्कीस बार क्षत्रियशून्य किया। पुत्र होकर तूने अपने पिता का कौन सा काम किया। बाप को जिसने मरवाया उसीको माँ को सौंप दिया। तेरे जीवन पर धिक्कार है, जिसकी माँ कुलटा हो। बातें मारता है, रे वानर, तुझे मौत आये ॥ ६३ ॥

अंगद वले बेटा रावण मोर मा कुलटा ❊ सत्य करि वल देखि रे तुइ कार बेटा
जन्म तोर ब्रह्मवंशे त्रिभुवने ख्याति ❊ विश्वश्रवार बेटा तुइ पुलस्त्येर नाति
विश्वश्रवा महातपा विश्वे याँर यश ❊ तुइ यदि ताँर बेटा, केनरे राक्षस
मा तोर राक्षसी रे ब्राह्मण तोर पिता ❊ तुइ विभा कैलि बेटा दानव दुहिता
कुम्भनसी भग्नी तोर दैत्य निल हरे ❊ कय-जेते तुइ बेटा देख मने करे
रम्भावती सती से श्वशुर बले तोरे ❊ बलात्कार कैलि तारे पर्व्वतेर कोरे
आत्मछिद्र ना जानिस, परके दिस् खोंटा ❊ वारे-वारे कहिस कथामर रे पाजि बेटा
तार आगेते वड़ाइ कर, जे ना तोरे जाने ❊ दाँते कुटा करे एलि अर्जुनेर स्थाने ६४
अंगदेर कथा शुनि रावण उठे ज्वले ❊ ज्वलंत अनले येन घृत दिल टेले
दशानन बले, बसे करिस किरे दूत ❊ पलावे वानर बेटा धर तो मोर पूत ६५
अंगद वीर बड़ स्थिर दर्प करे कय ❊ आर के धरिबे, आपनि आइस नय
कुपिल अंगद दशाननेर वचने ❊ कोपे गालि देय से रावण ताहा शुने
अंगद बलिल मर पागल रावण ❊ किसेर वड़ाइ तुइ करिस एखन

अंगद ने कहा, अरे रावण, मेरी माँ को तू कुलटा कहता है, सच-सच वता तू किसका वेटा है। तेरा जन्म ब्राह्मणवंश में हुआ, त्रिभुवन में यही विदित है। तू विश्वश्रवा का वेटा है और पुलस्त्य का पौत्र है। विश्वश्रवा महातपा थे—विश्व भर में उनका यश है। अगर तू उनका बेटा है तो राक्षस कैसे वन गया। तेरी माँ राक्षसी है और पिता ब्राह्मण। तूने दानव-कन्या से विवाह कर लिया। तेरी बहन कुम्भनसी को दैत्य चुरा ले गया। तेरी जाति कौन सी है कुछ विचार कर के देख। सती रम्भावती तुझको श्वसुर कहकर पुकारती, तूने उसके साथ पर्वत की गुहा में बलात्कार किया। अपनी खोट नहीं देखता, दूसरे को ऐब लगाता है। बार-बार तू बड़ाई करता है, मर कहीं के। उसके सामने अपनी बड़ाई किया कर, जो तेरे बारे में कुछ जानता न हो। कार्तवीर्यार्जुन के सामने तुझको दाँतों से खर पकड़ना पड़ा था ॥ ६४ ॥

अंगद की बातें सुनकर रावण तिलमिला उठा, मानों जलते अनल पर किसी ने घी डाल दिया हो। दशानन ने कहा, अरे बेटा, जरा इस बन्दर को तो पकड़ ले नहीं तो भाग जायगा ॥ ६५ ॥

वीर अंगद स्थिर अटल वना रहा, दंभ करते हुए बोला—दूसरा कौन मुझको पकड़ेगा, स्वयं ही चेष्टा न कर ले। रावण के कथन पर अंगद को गुस्सा आ गया और वह (दशानन को) गाली देने लग गया। रावण सुनता रहा। अंगद ने कहा, अरे पागल रावण मर, अब तू किसकी बड़ाई कर रहा

तार आगे दर्प कर, ये जन ना जाने * तोर यत विक्रम विदित मोर स्थाने
कार्त्तवीर्य्य यखन से केलि करे जले * तारे आगे गेलि तुइ नर्म्मदार कूले
एइ मत वीर दर्प करिलि से स्थले * लुकाय थुइल तोरे वाम कक्षतले
चक्षे नीर बहे तोर मुखे घनश्वास * तार ठाँइ प्राय तुइ हइलि विनाश
आसिया पुलस्त्य मुनि करि स्तवस्तुति * तोरे मुक्ति करिया दिलेन अव्याहति
तार ठाँइ हये छिल संशय जीवन * भाग्ये प्राणरक्षा तोर मुनिर कारण
आर-बार गिया छिलि पितार निकट * शठता करिलि बहु तुइ बेटा शठ
सन्ध्या हेतु मम पिता ना करने रण * यत अस्त्र छिल तोर कैलि वरिषण
सन्ध्या सांग करि पिता तोरे बाँधि लेजे * डुबाइल चारि सागरेर जल माझे
लेजे बाँधि डुबाइल जलेर भितर * जल खेये रावणारे हइलि फाँफर
आमार पितार लेजे योजन पञ्चाश * जल मध्ये राखि तोरे उठिल आकाश
स्वीकार करिलि तुइ निज पराजय * तबे से पितार ठाँइ पाइलि विदाय
लेजेर बन्धन तोर किष्किन्ध्याय घोषे * बन्दिया पिताके मोर आइलि तरासे
बहुदिन गियाछे ना जाने कोन जन * बुझिनु बड़ाइ तोर एइ से कारण

है। उसके सामने इतरा जो न जानता हो, तेरा सारा पराक्रम मुझको मालूम है। कार्त्तवीर्य जिस समय जल-केलि कर रहा था, तू भी नर्मदा के तट पर गया और वहाँ इसी प्रकार वीरता की डींग हाँकने लगा। उसने तुझे उठाकर अपने बायें बगल में दाब लिया। तेरी साँस उखड़ने लगी और आँखों से आँसू निकलने लगे। वहाँ तेरे प्राण निकलने ही वाले थे कि पुलस्त्य मुनि ने आकर स्तव-स्तुति की और तुझे मुक्ति दिलायी। उसके निकट तेरे प्राण जाने ही वाले थे कि मुनि की कृपा से तू बच गया। और एकबार तू मेरे पिता के पास गया था। वहाँ तूने हर प्रकार की शठता की। सन्ध्या-जप के कारण मेरे पिता तुझसे युद्ध नहीं कर रहे थे और तेरे पास जितने अस्त्र थे तूने उन पर बरसाये। सन्ध्या समाप्त होने पर पिता ने तुझको पूँछ में लपेट कर चार सागर के पानी में गोता-लगवाया। पूँछ में बाँधकर तुझे पानी में डुबो दिया; पानी पेट में भर जाने से तेरी जान साँसत में आ गयी। मेरे पिता की पूँछ पचास योजन लम्बी थी; तुझे पानी में छोड़ वह आकाश में उठ गये। तूने अपनी पराजय मान ली, तब पिता जी से तूने छुटकारा पाया। किष्किन्ध्या में सर्वत्र तेरा पूँछ में बँध जाना घोषित हो गया। मेरे पिता की वन्दना कर [किसी प्रकार] तू त्रास से भाग आया। बहुत दिन बीत चुके हैं अतः किसी को इस घटना की जानकारी नहीं हैं, तभी तू इतना घमंड करता फिरता है। जरा याद तो कर ए रावन! तुझे सहस्रवीर्यार्जुन ने हराया था, बलि-द्वार पर तुझे चेरी

मने कर रावणा तोरे हाराय अर्ज्जुन ❊ वलि द्वारे चेड़ीर एँटो खेये हलि खून
अन्य के आमार पिता वान्धिलेन लेजे ❊ परिचय देह किवा आछे एर माझे
यद्यपि रावण नाहि दिलि परिचय ❊ सेइ से रावण तुइ बुझिनु निश्चय
सेइ रव काल गेल हास्य परिहासे ❊ एखन समय एलो धन-प्रान-नाशे
सिंह प्रति श्रृगालेर नाहि भारिभूरि ❊ रामेघाँटाइया रे, मजालि लंका-पुरी ६६
कुपिल रावण राजा अंगदरे बोले ❊ कुड़ि चक्षु रक्त करि अग्नि हेन ज्वले
दूतेरे काटिते नाइ राज व्यवहार ❊ सेकारणे सहि आमि तोर अहंकार
जिनिलाम देव दैत्य यक्ष विद्याधार ❊ अनरण्य मान्धाता प्रभृति नरेश्वर
वालि अर्ज्जुनेर सने तुल्य गेल रणे ❊ कि करिते पारे राम मनुष्य-पराणे ६७
अंगद बलिछे मर पागल रावण ❊ भाग्ये तोर वर्ज्जिल राक्षस विभीषण
रामेर वाणेर सने नाहि तोर देखा ❊ काटा नाक कान देख, घरे शूर्पणखा
घरे आछे भगिनी, से तोर नहे भिन्न ❊ विद्यमान देखह रामेर वाण चिह्न
रामेण वाणेर सने हइले दर्शन ❊ एक वाणे सवंशेते मरिवि रावण

का जूठन खाना पड़ा। दूसरों की बात क्या बताऊँ मेरे ही पिता ने तुझे पूँछ में लपेट लिया था—बताना जरा, इसमें तुझे कुछ कहना तो नहीं है? हालाँकि, रावण! तूने अपना यह परिचय नहीं दिया फिर भी मैं जानता हूँ कि तू वही रावण है। लेकिन वे सब दिन तो हँसी-मजाक में बीत गये, अब धन-प्राण से विनष्ट होने का दिन आ गया है। सिंह के प्रति सियार की अकड़-धकड़ बेकार है—राम से छेड़-छाड़ करके तू लंकापुरी के ध्वंस की स्थिति ले आया ॥ ६६ ॥

अंगद के वचन से रावण राजा कुपित हुआ। बीस आँखें लाल-लाल हो गयीं और आग सी धधकने लगीं। राजोचित धर्म के अनुसार दूत का वध नहीं करना चाहिए, इसीलिए मैं तेरे अहंकार को सह रहा हूँ। मैंने देव, दैत्य, यक्ष, विद्याधरों पर विजय पाई है। अनरण्य मान्धाता आदि नृपतियों को पराजित किया। रण में कार्त्तवीर्य और बालि जैसों के साथ मेरी जोड़ रही—यह तुच्छ मानव राम मेरा क्या बिगाड़ सकता है ॥ ६७ ॥

अंगद ने कहा, अरे पागल रावण, तू मरा। तेरे भाग्य का फेर है कि राक्षस विभीषण ने तुझे त्याग दिया। राम के बाण से अभी सामना नहीं हुआ; घर में सूर्पणखा है उसके कटे हुए नाक-कान देख ले। घर में तेरी बहिन है—वह तुझसे कोई भिन्न नहीं है—राम के बाण के चिह्न तेरे निकट ही विद्यमान हैं। राम के बाण से तेरा सामना हो जाय तो एक ही बाण से

यत वाण धरेन श्रीराम गुणधाम ※ अबोध रावण शुन से-सबार नाम
अमर्त्त समर्थ वाण, वाण महावल ※ विष्णुजाल इन्द्रजाल कालान्त अनल
उल्कामुख वरुण विद्युत खरशान ※ ग्रहपति नक्षत्र गगन रुद्र वाण
सूचीमुख शिलीमुख घोरदरशन ※ सिंहदन्त वज्रदंत वाण विरोचन
कालदण्ड ऐपिक देखह कर्णिकार ※ चन्द्रमुख अश्वमुख देख सप्तसार
विकट संकट वाण सप्त धाराधार ※ अर्द्धचन्द्र खुरपा आशुग क्षुरधार
पशु पक्षी अग्नि आर अग्नि मुखवाण ※ कुबेरास्त्र राजहंस वाण वर्द्धमान
यमक दुर्ज्जय वाण भंग ये विभंग ※ त्रिशूल अंकुश वाण वायव्य आतंक
वज्रवाण गरुड़ मयूर सुसन्धान ※ काकमुख भेकमुख कपोतक वाण
विष्णुचक्र पटचक्र वाण हुताशन ※ सन्तापन विलापन संग्रामे शमन
गजांक सन्धान वाण चारि दिके आँटा ※ सिंह ओ शार्दूल तार चारि दिके काँटा
एत वाण रघुनाथ करेन सन्धान ※ याँर एक वाणे वालि त्यजिलेक प्राण
ये वालिर निकटेते तोर पराजय ※ से वालिके मारिलेन राम महाशय
वाल्यक्रीड़ा याँहार शिलेर धनुर्भंग ※ कि साहसे तार संगे युद्धेर प्रसंग
भेदिलेन सप्तताल राम एक शरे ※ ताँर तुल्य वीर केवा आछे चराचरे

रावण तू अपने सारे वंश सहित नष्ट हो जायगा। गुणसागर राम के पास जितने वाण हैं, हे अबोध रावण ! उन सब के नाम तो सुन। अमर्त्त-समर्थ वाण, महावल वाण, विष्णुजाल, इन्द्रजाल, कालान्त, अनल, उल्कामुख, वरुण, विद्यु त, खरशान, गुहपति, नक्षत्र, गगन, रुद्रवाण, सूचीमुख, शिलीमुख जैसे भयानक रूपवाले वाण, सिंहदन्त,-वज्रदन्त और विरोचन, वालदन्त, ऐषीक व कर्णिकार वाण, चन्द्रमुख, अश्वमुख एवं सप्तसार विकट संकट-वाण जिसके सप्तमुख हैं, अर्द्धचन्द्र, खुरपा, आशुत्र, क्षुरधार वाण, पशु, पक्षी, अग्नि और अग्निमुख वाण, कुबेरास्त्र, राजहंस, वर्धमान वाण, यमक दुर्जेय-वाण, मंत्र-विमंत्र वाण, त्रिशूल, अंकुश, वायव्य, आतंक, वज्रवाण, गरुड़, मयूर, सुसन्धान वाण, काकमुख, भेकमुख, कपोतक वाण, विष्णुचक्र, पटचक्र, हुताशन, संतापन, विलापन जैसे संग्राम-शमन वाण, गजांक चारों ओर से कसा हुआ सन्धान वाण, सिंह और शार्दूल जिनके चारों ओर काँटे हैं—इतने वाणों पर रघुनाथ की गति है, जिनमें से एक वाण से वालि ने प्राण त्याग दिया। जिस वालि से तू पराजित हुआ था उसी वालि को श्रीराम ने मार गिराया। शिव का धनुष तोड़ना जिनके लिए वाल-क्रीड़ा के समान है, उनके साथ तेरे युद्ध का क्या प्रसंग ? राम ने एक वाण से सप्तताल को भेद किया, उनके समान वीर इस चराचर पर दूसरा कौन है। किस बूते पर तू आँखें लाल कर

कि हेतु देखिस रे पाकल करि आँखि ❊ माकड़ेर डिम्ब सम तोर लंका देखि
तोर काछे आछे तोरे नाहि करि शंका ❊ उपाड़िया लैते पारि स्वर्णपुरी लंका
हेर हेर मुण्ड मोर सुमेरुर चूड़ा ❊ हेर हेर पद मोर कैलासेर गोड़ा
हेर हेर हस्त मोर वज्रेर समान ❊ एकइ चापड़े तोर लइव परान
अपमाने रावण करिल हेंट माथा ❊पात्र मित्र सहित ना कहे कोन कथा६८
रावण अंगदे बले गर्ज्जिलि विस्तर ❊ एक वार्त्ता जिज्ञासि रे अवगति कर
ये वानर पोड़ाइल मोर लंकापुरी ❊ ये वा अक्षकुमारे मारिल बले धरि
भांगिल अशोक वन अति सुशोभन ❊ तार मत वीर आछे कह कत जन ६९
अंगद बलिछे तारे भर्त्सिया वचने ❊ तोर बल विक्रम बुझिनु एत दिने
सेवकेर सने यदि पाइलि पराजय ❊ केमने राखिबि लंका कह रे निश्चय
तार छोट वीर नाहि वानर कटके ❊ निर्बल बलिया तारे केह नाहि डाके
से मरिले दुःखशोके नाहिक वानरे ❊ तेंइ पाठाइया छिनु लंकार भितरे
वीर मध्ये तारे नाहि गणे कोन जन ❊ घरेर सेवक बेटा पवननन्दन
हनूमाने वान्धिया बेड़ेछे अहंकर ❊ पड़िलि आमार हाते जाबि यमद्वार

रहा है, तेरी लंका को मैं मकड़ी के अंडे के समान देखता हूँ। तेरे ही निकट हूँ लेकिन तुझसे कोई डर नहीं है मुझको, चाहूँ तो समूची स्वर्णपुरी लंका को उखाड़ लूँ। देख, देख, मेरा सिर सुमेरु के शिखर के समान है, देख, देख, मेरे पैर कैलास पर्वत का सानुदेश हैं; देख, देख, मेरे हाथ वज्र के समान है, एक ही झापड़ से तेरे प्राण ले लूँ। अपमान से रावण ने शिर झुका लिया, पार्षदों से कुछ भी बात नहीं की ॥ ६८ ॥

रावण ने अंगद से कहा, तूने काफी भर्त्सना कर ली है, अब एक बात तो बता। जिस बन्दर ने यह लंकापुरी जला डाला, जिसने अक्षकुमार को मार डाला, सुशोभन अशोक वन को जिसने तहस-नहस कर दिया उसके जैसे वीर और कितने हैं ॥ ६९ ॥

अंगद ने तिरस्कार करते हुए कहा, इतने दिनों में तेरे बल-विक्रम का सही अन्दाजा लगा। यदि सेवक से ही तेरी ऐसी करारी हार हुई है तो कैसे लंका को अपने अधिकार में रख सकेगा। वानर सेना में उससे छोटा कोई वीर नहीं है। कमजोर होने के कारण उसे कोई नहीं बुलाता। उसके मरने पर वानरों में कोई क्लेश नहीं होगा, इसी कारण उसको लंका में भेजा गया था। उसकी गिनती वीरों में कोई नहीं करता। वह पवन-नन्दन तो घर का नौकर मात्र है। हनुमान को बाँध कर तेरा घमंड बढ़ गया है; अ

लइया जाइव तोरे गले दिया दड़ि ※ दशमाथा भांगिब मारिया लेजेर वाड़ि
तोर सर्व्वनाश हेतु उत्पत्ति सीतार ※ निर्व्वंश करिते तोरे राम अवतार
कोथाय वैसेन राम अयोध्या नगरी ※ कोथा आइलेन तिति एइ लंकापुरी
एत दूरे आसि राम वान्धिला सागर ※ से रामेर सने दुष्ट तोर पाठान्तर
देवता जिनिया तोर वाड़ियाछे आश ※ एक सीता जन्ये तोर हवे सर्व्वनाश
वंशे केह रहिवेक, ना करिह साध ※ आपना आपनि तुइ पाड़िलि प्रमाद
खाटे पाटे शुये थाक् दिन दुइ चारि ※ हास्य परिहास कर लये दिव्यानारी
परिवार गणे देख दिने दुइ वार ※ विश्वकर्म्मार निर्म्माण देख घर द्वार
देख तुइ लंकापुरी कनक निर्म्माण ※ अंगद विक्रम यत कृत्तिवास गान ७०

रावणेर प्रति अंगदेर भर्त्सना

तुइ आति दुराचारी, हरिलि परेर नारी, परलोके नाहि तोर भय ।
दशरथ महाराजा, देवलोक करे पूजा, श्रीराम ये ताँहार तनय ॥
याँहार दुर्ज्जय वाण, भये विश्व कम्पमान, हेन राम लंकार भितर ।
देवराज करे पूजा, हेले मारे बालिराजा, ताँर सने तोर पाठान्तर ॥

तू मेरे हाथों में आ पड़ा है, अब सीधे मृत्यु-पुरी को पहुँचेगा। तेरे गले में रस्सी डालकर तुझे ले जाऊँगा। पूँछ के प्रहार से तेरे दस मुंडों को चूर-चूर कर दूँगा। तेरे सर्वनाश के निमित्त ही सीता का जन्म हुआ है और तुझको निर्वंश करने के लिए ही राम ने अवतार लिया है। कहाँ राम का स्थान अयोध्या नगरी में है और कहाँ वह इस लंकापुरी में आए हैं। इतनी दूर आकर राम ने सागर बाँध डाला है और इन्हीं राम के साथ तूने विवाद छेड़ दिया है। अरे दुष्ट ! देवताओं पर विजय प्राप्त कर तेरा दिमाग खराब हो गया है, अकेली सीता के लिए ही तेरा सत्यानाश हो जायगा। ऐसी आकांक्षा न रखना कि तेरे वंश में कोई भी जीवित रह जायगा। तूने स्वयं ही अपनी विपत्ति बुला ली। पलंग पर पड़े मौज से दो चार दिन बिता ले, दिव्य-नारियों के साथ हास-परिहास कर ले, दिन में दो बार परिवार-वर्ग को देख ले, विश्वकर्मा के बनाये घर-द्वार देख ले, इस सोने की लंकापुरी को भी देख ले। यों अंगद की विक्रम-कथा कृत्तिवास गा रहे हैं ॥ ७० ॥

रावण के प्रति अंगद की भर्त्सना

तू बड़ा दुराचारी है, दूसरे की नारी का तूने अपहरण किया, तुझे परलोक का भय नहीं है। श्रीराम उसी महाराजा दशरथ के पुत्र हैं जिनकी पूजा देवता भी करते हैं। जिनके दुर्जय वाण के भय से सारा विश्व काँपता रहता

सुग्रीवेर बल यत, ताहा वा कहिव कत, से सकल हइबि विदित।
तोरे एक लाथि मारि, काँपाइव लंकापुरी, कि करिबे तोर इन्द्रजित्॥
शुन राजा लंकेश्वर, आमार वचन धर, आइलाम दिते समाचार।
श्रीराम सागर पार, नाहिक निस्तार आर, निकटे ये तोर यमद्वार॥
राजा हये परदार, हरिलि रे दुराचार, बोध मात्र नाहि तोर घटे।
केवल ब्रह्मार वरे, जिनिलि रे पुरन्दरे, राम नामे तोरे बल टुटे॥
राख रे आपन प्राण, कर सीता प्रतिदान, भज गिया रामेर चरण।
घाटि माग ताँर ठाँइ, इहा भिन्न गति नाइ, तबे तोर रहिबे जीवन॥
तोरा जाति निशाचर, ना चिनिस आत्म पर, तोर भाइ रामे कैल मित।
श्रीरामेर अंगीकार करिवेन एइवार विभीषण लंकाय पूजित॥
शुनिया अंगदवाणी, करे सबे कानाकनि, ए लंकार नाहिक निस्तार।
कोपे उठे लंकेश्वर, बले राजा धर धर, देखि अंगदेर अहंकार॥

है, वही आज लंका के भीतर उपस्थित हैं। जिनकी पूजा देवराज किया करते हैं, वालिराज को जिन्होंने अनायास ही पराजित किया है उनके साथ तेरा द्वन्द्व है। सुग्रीव कितना शक्तिशाली है यह मैं क्या बताऊँ, तुझको स्वयं ही मालूम पड़ जायगा। तुझे एक लात मारकर लंकापुरी को थर्रा दूँ, तेरा इन्द्रजीत क्या कर सकेगा। ऐ राजा लंकेश्वर! मेरा वचन सुन ले, मैं यह समाचार देने आया हूँ कि श्रीराम ने सागर लाँघ लिया है, तेरा अब कोई निस्तार नहीं, तू यमद्वार के बहुत निकट पहुँच गया है। राजा होकर तूने परस्त्री का अपहरण किया, तेरे दिमाग में थोड़ी सी भी बुद्धि नहीं है। केवल ब्रह्मा के वरदान के कारण तूने पुरन्दर पर विजय प्राप्त की, लेकिन राम-नाम के कारण तेरी सब शक्ति लुप्त हो गई है। अपने प्राण बचा, सीता को जाकर लौटा आ और राम के चरणों की वन्दना कर। उनके समक्ष जाकर क्षमा माँग ले, इसके सिवा तेरा कोई उपाय नहीं है, तभी तेरे प्राण बच सकते हैं। तू निशाचर जाति का है, अपना पराया नहीं समझता, तेरे भाई ने जाकर राम से मित्रता कर ली। श्रीराम ने यह अंगीकार कर लिया है और वे अब विभीषण को लंका में सुप्रतिष्ठित करेंगे। अंगद के वचन सुनकर सभी लोग कानाफूसी करने लगे कि इस लंका के लिए अब कोई बचाव नहीं रहा। राजा लंकेश्वर कोप से उठ खड़े हो गये और बोले, इसको पकड़ लो, इस अंगद के अहंकार को तो चूर करूँ। सारे सेनापति यह देखकर मन ही मन यह परामर्श करने लगे कि अब हम लोगों की कोई रक्षा नहीं कर सकता। श्रीरा

देखि सव सेनापति, मने युक्ति करे इति, आमादेर रक्षा नाहि आर।
राम पद करि आश, सरस्वती-परकाश, कृत्तिवास नाचाड़ि सुसार ७१ ॥

अंगद कर्त्तृक चारि राक्षस वध ओ रावणेर मुकुट लइया श्रीरामचन्द्रेर निकटे गमन

अंगदेर रावण देखाय यत डर ❊ रुषिया अंगद वीर करिछे उत्तर
आर कपि नहि, आमि बालिर तनय ❊ तोर क्रोधे रावणा, आमार किवा भय
रावण, बड़ाइ ना करिस मोर आगे ❊ आमि तोरे मारिले रामेर सत्य भागे
राम सुग्रीवेर युक्ति आमि भाल जानि ❊ तोरे आर कुम्भकर्णे बधिवेन तिनि
इन्द्रजिते अतिकाये बधिवे लक्ष्मण ❊ आर यत राक्षसे बधिवे कपिगण
कोन बेटा धरिबे आसुक त्वरा करि ❊ एक चड़े ताहारे पाठाव यमपुरी ७२
क्रोधाकुल चारि दिके चाहे दशानन ❊ अंगदेर हाते पाये धरे चारि जन
चारि निशाचर करे अंगदे प्रहार ❊ अंगदेर दृढ़ अंग कि करिबे तार
अंगद से चारि जने धरिल सापुटे ❊ एक लाफे प्राचीरेर उपरे से उठे
प्राचीरे तुलिया वीर मारिल आछाड़ ❊ भांगिल माथार खुलि, चूर्ण हैल हाड़

के चरणों की आशा कर कृत्तिवास नृत्य छन्द में गाया जाने वाला सुन्दर गीत सरस्वती की कृपा से रचता है ॥ ७१ ॥

अंगद के द्वारा चार राक्षसों का वध और रावण का मुकुट लेकर श्रीरामचन्द्र के पास जाना

अंगद को रावण ने भय दिखाया तो रोष में आकर अंगद वीर ने जवाब दिया, मैं कोई सामान्य कपि नहीं—बालि का बेटा हूँ। तेरे क्रोध से मुझको कोई डर नहीं, ऐ रावणा, मेरे सामने तू लम्बी-चौड़ी बातें मत कर। मैं अगर तुझे मार डालूँ तो राम का सत्य-पालन खंडित हो जायगा। राम-सुग्रीव की युक्ति मैं भली-भाँति जानता हूँ। वे तेरा और कुम्भकर्ण का वध करेंगे। अतिकाय इन्द्रजीत का वध लक्ष्मण करेंगे। और बाकी राक्षसों का निधन कपियों के हाथ होगा। कौन निगोड़ा मुझको पकड़ना चाहता है आगे बढ़ आवे। एक ही झाँपड़ में उसको यमपुरी भेजता हूँ ॥ ७२ ॥

दशानन ने क्रोध से चारों ओर देखा। चार राक्षसों ने अंगद के हाथ-पैर पकड़ लिये। चार निशाचर मिलकर अंगद को पीटने लगे। लेकिन अंगद का शरीर वज्र के समान है, उसका इससे कुछ भी नहीं बिगड़ा। अंगद उन चारों राक्षसों को समेट कर एक छलांग में प्राचीर के ऊपर जा बैठा। प्राचीर पर चढ़ कर उसने उनको धर पटका। उनके सिर चकना चूर हो गये

से चारि राक्षसे मारि भांगिल प्राचीर * अंगद वीरेर डरे केह नहे स्थिर ७३
प्राचीरे उठिया भावे वालिर कुमार * कोन द्रव्य लये जाव रामे भेटिवार
हनूमान एसे छिल लंकार भितर * दिलेक सीतार मणि रामेर गोचर
मणि पेये रघुमणि आनन्दित अति * तदवधि महातुष्ट हनूमान प्रति
एइ स्थिर करिलेक अंगद अन्तरे * रतन मुकुट आछे रावणेर शिरे
ए मुकुट लये जाव राम सम्भाषणे * प्रसन्न हवेन राम इहा दरशने
प्राचीरे बसिया छिल वालिर कोडर * एक लाफे गिया पड़े रावण उपर
सिंहासने बसिया रावण तारे धरे * जड़ाजड़ि करि पड़े भूमिर उपरे
धरा टलमल करे उभयेर भरे * इन्द्र गरुड़ेर युद्ध गगन उपरे
दुइ सिंह युद्धे येन करि सिंहनाद * दुइ जने मल्लयुद्ध, हइल प्रमाद
रावणेरे आछाड़िया वालिर नन्दन * मुकुट लइया वेगे उठिल गगन
अंगदेर विक्रमे रावण काँपे डरे * अधोमुखे उटिया गायेर धूला झाडे
रावणेर काछे आछे सव सेनापति *एत वीर थाकिते तार एरूप दुर्गति ७४
रावण बलिछे, सबे आछ कोन काजे * वानरे मुकुट लय सबाकार माझे

और हड्डियाँ चूर-चूर। उन चारों राक्षसों को मार कर उसने प्राचीर तोड़ डाला। वीर अंगद के भय से सभी चंचल हो उठे ॥ ७३ ॥

प्राचीर पर चढ़ कर बालि-नन्दन सोचने लगे कि राम को भेंट चढ़ाने के लिए कौन सी वस्तु लेकर जाया जाय। हनुमान लंका में आया था तो सीता की चूड़ामणि लेकर गया था। मणि पाकर रघुमणि बहुत आनन्दित हुए थे और तभी से वे हनुमान के प्रति बहुत प्रसन्न हैं। अंगद ने मन ही मन यह विचार किया कि रावण के सिर पर जो रत्न-जड़ा मुकुट है वही लेकर मैं राम के पास जाऊंगा जिसको देखकर राम निःसन्देह प्रसन्न होंगे। बालिपुत्र प्राचीर पर बैठा था उछल कर रावण पर जा गिरा। सिंहासन पर बैठे रावण ने उसे पकड़ लिया। एक दूसरे से उलझ कर वे जमीन पर आ गिरे। दोनों के भार से धरती डगमगाने लगी, मानों ऊपर गगन में इन्द्र और गरुड़ का युद्ध हो रहा हो। सिंहनाद करते हुए दोनों ऐसे जूझने लगे मानों दो सिंह हों। दोनों में मल्लयुद्ध होने लगा और सभी लोग भयाकुल हो गये। बालि-तनय ने रावण को धर पटका और उसका मुकुट लेकर तुरन्त गगन में चढ़ गया। अंगद के पराक्रम से रावण डर के मारे काँपने लगा। उठकर सिर झुकाये वदन की धूल झाड़ने लगा। रावण के पास इतने सेनापति थे और इतने वीरों के रहते हुए रावण की ऐसी दुर्दशा हुई ॥ ७४ ॥

रावण ने कहा, तुम लोग किस काम के हो ? तुम लोगों के रहते बन्दर

वीरगण बले, शुन लंका-अधिकारि ※ आपनि हारिले मोरा कि करिते पारि
तव सने युद्ध करे बालिर नन्दन ※ मोरा भावि पाछे लय सवार जीवन
चारि वीर धरे छिल तारे सावधाने ※आछाड़िया अंगद मारिल सबे प्राणे७५
पात्र मित्र सहित चिन्तित दशानन ※ वैरी काँपाइया गेल वालिर नन्दन
एक लाफे पड़े गिया वानर भितर ※ श्रीरामे भेटिल, यथा सुग्रीव वानर
शत्रुर मुकुट दिल राम विद्यमान ※ देखिया वानर सव करिछे वाखान
मुकुट देखिया राम सहास्यवदन ※ तुष्ट हये अंगदेरे देन आलिंगन
चारि द्वारे शुनि वानरेर हुलाहुलि ※ अंगदेरे पुष्प देय अंजलि अंजलि
श्रीराम वलेन, वीर, कह त कुशल ※ किमते भेटिले गिया सेइ महावल
रघुपति अनुमति करिल तत्पर ※ अंगद कहिछे वार्त्ता यथा पूर्व्वापर७६

श्रीरामेर निकटे अंगद कर्त्तृक रावणेर ऐश्वर्य्य ओ अपमान ज्ञापन

श्रीरामे नोयाये माथा, अंगद कहिछे कथा, हरषित सकल वानर।
रघुमणि हरषित, सुग्रीव सुआनन्दित, लक्ष्मणेर हर्ष बहुतर ॥

मुकुट लेकर चला गया। वीरों ने कहा, सुनो लंकेश! तुम स्वयं हार जाओ तो हम लोग क्या कर सकते हैं। बालि का बेटा तुम्हारे साथ लड़ रहा था और हम लोग सोच रहे थे कि कहीं दूसरों की जान न ले ले। चार वीर उससे लिपट गये थे, उनको उसने पटक-पटक कर मार डाला ॥ ७५ ॥

अपने पार्षदों सहित दशानन चिन्तित हो गया। शत्रु वालि-कुमार आकर सबको कँपा गया। एक ही छलांग में वह वानरों में जा उतरा और श्री राम से भेंट की, जहाँ सुग्रीव भी बैठे थे। राम के सम्मुख उसने रावण का मुकुट रख दिया तो सभी वानर उसकी प्रशंसा करने लग गये। मुकुट देखकर राम के चेहरे पर मुस्कान छा गयी और प्रसन्न होकर उन्होंने अंगद को बाहों में भर लिया। चारों द्वार पर बन्दरों का कोलाहल सुन पड़ा—सभी आकर अंगद को अंजुरी भर-भर कर पुष्प देने लगे। श्रीराम ने कहा, वीर अपना कुशल-समाचार सुनाओ। बताओ उस महाबल से तुमने किस प्रकार भेंट की। रघुपति की आज्ञा से अंगद पूरी वार्त्ता ब्योरेवार सुनाने लगा ॥ ७६ ॥

श्रीराम के समक्ष अंगद द्वारा रावण की सम्पदा और अपमान का वर्णन

श्रीराम के सम्मुख सिर झुका कर अंगद सारा विवरण सुना रहा है और सारे बन्दर हर्षमग्न हैं। राम, लक्ष्मण और सुग्रीव आनन्द से उत्फुल्ल हैं। तुम्हारे आदेश से मैं भागता हुआ लंका गया और गढ़ के भीतर प्रवेश कर गया।

तोमार आरति पेये, लंकाय गेलाम धेये, प्रवेशनु गड़ेर भितर ।
　　सुवर्णेर आउयास येन चन्द्र परकाश, तथि शोभे प्रवाल प्रस्तर ।।
विश्वकर्म्मा कृत घर, देखि अति मनोहर, चारिभिते काञ्चन देयाल ।
　　श्वेत रक्त नील पीत, प्रस्तरेते सुशोभित, ताहे शोभे रतन मिशाल ।।
गेलाम राजार घर, देखि सैन्य बहुतर, खाण्डा जाठि विचित्र निर्म्माण ।
　　सोनोर पाटेर पड़ा, नाना वर्ण देखि घोड़ा, हस्ती सब पर्व्वत प्रमाण ।।
देखिलाम सरोवरे, हंस-हंसी केलि करे, घाट सब विचित्र निर्म्माण ।
　　कमल कुमुदोपरे, केलि करे मधुकरे, रूपसी राक्षसी करे स्नान ।।
देखिलाम नारीगण, रूपे मोहे त्रिभुवन, दुइ कर्णे रत्नेर कुण्डल ।
　　पारिजात माला हारे, शोभे नाना अलकारे, येन चन्द्र गगनमण्डल ।।
वीणा वाँशी बाजे ताय, केह वा संगीत गाय, गाने करे मोहित संसार ।
　　नाना आभरण परि, येन स्वर्ग विद्याधरी, रूपे येन देव अवतार ।।
देखिलाम पुष्पवन, मयूर मयूरीगण, क्रीड़ा करे मुग्ध कामरसे ।
　　प्रति गाछे पिकध्वनि, वड़इ मधुर शुनि, भ्रमर भ्रमरी रसे भासे ।।
गेलाम राजार पाश, चतुर्द्दिके महोल्लास, रावणेरे भर्त्सिनु विस्तर ।
　　यतेक वलिले तुमि, द्विगुण शुनाइ आमि, कोपे ज्वले राजा लंकेश्वर ।।

वह सब सुवर्ण से बने आवास हैं, मानों चन्द्रमा के प्रकाश से जगमगा रहे हों और प्रवाल-प्रस्तर से बने निर्माण-कार्य हैं । विश्वकर्मा द्वारा बनाए हुए मनोहर सारे भवन हैं और चारों ओर कांचन के बने प्राचीर हैं । सफेद नीले, लाल, पीले पत्थरों से वे सुशोभित हैं जिनमें स्थान-स्थान पर रत्न जड़े हैं । राजा के महल में भी गया । तरह-तरह के सैन्य हैं जिनके हाथों में खड्ग और लौहदंड शोभित हैं । विभिन्न वर्ण के घोड़े हैं और पहाड़ के समान हाथी । देखा, सरोवर में हंस-हंसिकाएँ केलि कर रही हैं और उनमें अद्भुत सारे घाट बने हुए हैं । कमल और कुमुद पर मधुकर गुंजन कर रहे हैं और जल में रूपवती राक्षसी स्नान कर रही हैं । ऐसी नारियों को भी देखा जिनके रूप से त्रिभुवन मुग्ध है, जिनके कानों में रत्नजड़े कुंडल लटक रहे हैं । गले में पारिजात की माला है । वे विभिन्न अलंकारों से गगनमंडल में चन्द्रमा के समान सुशोभित हैं । वहाँ कहीं पर वीणा और वंशी का वादन हो रहा है तो कहीं संगीत का गायन हो रहा है; गीत-वाद्य से सारा संसार प्रमुदित है । विभिन्न आभरणों से सज्जित नारियाँ मानों स्वर्ग की विद्याधरियाँ हों, अथवा दिव्य अवतार हों । वहाँ फुलवाड़ियाँ भी देखीं जिनमें मयूर-मयूरियाँ मुग्ध कामरस से क्रीड़ा कर रही हैं । प्रत्येक वृक्ष पर कोयल मधुर स्वर में कूक रही है और भँवरे गुंजन कर

आज्ञा दिल लंकेश्वर, धरे चारि निशाचर, लाफ दिनु प्राचीर उपर।
चारि जने संहारिया, रावणेरे गालि दिया, शून्य पथे आइनु सत्वर ॥
शुनिया अंगदवाणी, हरषित रघुमणि, अंगदेरे दिलेन प्रसाद।
सरस्वती परकाश, विरचिल कृत्तिवास, वानरेर जयजय-नाद ॥ ७७
श्रीराम वलेन हे अंगद युवराज ✻ तोमार पिताके मारि पाइलाम लाज
से सकल दु:ख किछु ना करिह मने ✻ तोमारे वाड़ाव आमि अशेष सम्माने
दक्षिणेर द्वारे जाह आपनार थाना ✻ तव कोपे दशानन पाछे देय हाना
विदाय हइया जाय दक्षिणेर द्वार ✻ कृत्तिवास राचिल अंगद रायवार ७८

इन्द्रजितेर प्रथम वार युद्धे गमन एवं नागपाश द्वारा श्रीरामेर लक्ष्मणेर वन्धन

अंगदेर भर्त्सने कुपित दशमुख ✻ असम्मान लज्जाय हइल अधोमुख
बहुकोटि सेनापति प्रधान प्रधान ✻ जुझिवारे सवाकारे करे संविधान
सप्त स्वर्ग जिनिलाम सप्त ये पाताल ✻ मम डरे देवगण काँपे सर्व्वकाल

रहे हैं। राजा के पास गया और उसको बहुत डाँटा-फटकारा। आपने मुझ से जितना वताया था उसका दुगुना मैंने कह सुनाया और राजा लंकेश्वर क्रोध से तिलमिलाने लगा। लंकेश्वर की आज्ञा से उसके चार अनुचरों ने मुझको पकड़ लिया तो उन चारों का वध कर रावण को बुरा-भला कह कर मैं शून्य पथ से तुरन्त लौट आया। अंगद की बातें सुनकर रघुनाथ बहुत प्रसन्न हुए और अंगद को उन्होंने प्रसाद दिया। वन्दरों ने इस पर जय-घोष किया॥ ७७ ॥

श्रीराम ने कहा, हे युवराज अंगद! तुम्हारे पिता को मारकर मुझको बड़ी लज्जा मिली। उन बातों का कुछ ख्याल न करना, तुमको मैं अमित सम्मान का अधिकारी वनाऊँगा। जाओ दक्षिण-द्वार पर अपना मोर्चा जाकर संभालो, कहीं तुमपर कुपित रावण उस पर हमला न कर दे। अंगद विदा लेकर दक्षिण-द्वार की ओर चला। कृत्तिवास ने अंगद के दौत्य-विवरण को प्रस्तुत किया ॥ ७८ ॥

इन्द्रजीत का पहली वार युद्ध में जाना और नागपाश द्वारा
राम-लक्ष्मण को बाँधना

अंगद की भर्त्सना सुनकर दशानन बहुत क्रोधित हो गया, लज्जा और अपमान से उसका सिर झुक गया। मुख्य-मुख्य सेनापतिओं को बुलाकर सभी को युद्ध करने का आवाहन किया। मैंने सातों स्वर्ग और सातों पाताल पर विजय प्राप्त की, मुझसे देवता सदा भय के मारे काँपा करते हैं।

इन्द्र यम सूर्य्य मम डरे नाहि आँटे ❋ एत दूरे आसिया वानर वेटा ठाटे
इन्द्रजित, वलि तोमा सवार प्रधान ❋ राम लक्ष्मणेरे मारि राखह सम्मान
हस्ती घोड़ा ठाट आदि लह त अपार ❋ आजिकार युद्धे मार तार चारिद्वार
सावधान हये वापू, कर गिया रण ❋ आगे मार अंगदेरे, शेषे अन्यजन ७९
वापेर दुलाल वेटा वीर मेघनाद ❋ सव्वाँग भरिया परे राजार प्रसाद
साजिल से मेघनाद, वापेर आरति ❋ लेखा जोखा नाहि, यत साजे सेनापति
सारथि आनिल रथ संग्रामे गहन ❋ मनोमत रथखान करिल साजन
कनक रचित रथ विचित्र निम्मर्ाण ❋ वायुवेग अष्टघोड़ा रथेर योगान
पर्वतीय घोड़ा मुखे हीरार विम्वकी ❋ क्षणे रथखान देखि क्षणे हये लुकि
स्वर्ण रौप्य साजे रथ करे झिकिमिकि ❋ अष्ट अक्षौहिणी ठाट योद्धा ये धानुकी
दशकोटि हाती चले विशकोटि घोड़ा ❋ पञ्चविंश कोटि चले शेल ओ झकड़ा
नानामत रथ लये योगाय सारथि ❋ नाना अस्त्र लये चले सव योद्धपति
पितृ प्रदक्षिण करि रथे गिया चड़े ❋ त्रिशति योजन पथ सैन्य आड़े जोड़े

इन्द्र, यम, सूर्य मेरे सम्मुख डरते रहते हैं और इतनी दूर आकर यह निगोड़ा बन्दर मेरी खिल्ली उड़ा गया। सुनो इन्द्रजीत, तुम सबके प्रधान हो, राम लक्ष्मण को मार कर मेरे सम्मान की रक्षा करो। असंख्य हाथी, घोड़े और सेना लेकर हमला करो और आज युद्ध में उसको चारों ओर से घेर कर मारो। सावधान होकर रण में जाओ और सबसे पहले उस अंगद का वध करो और वाद में अन्य लोगों का ॥ ७६ ॥

वीर मेघनाद वाप का लाड़ला वेटा है। सारे अंगों पर राजा के प्रसाद के रूप में आभूषण पहन कर, पिता का आदेश लेकर चल पड़ा। उसके साथ असंख्य सेनापति भी सुसज्जित हुए। सारथी अपने रथ को घनघोर संग्राम में ले आया। रथ को अपने मनमाने ढंग से उसने सुसज्जित किया। कनकनिर्मित रथ की वनावट भी विचित्र है। पवन की गति वाले आठ घोड़े उस रथ में जोते गये। पर्वतीय घोड़ों के मुख हीरक-विम्वकी आभूषण से सुसज्जित हैं। सोना और चाँदी से वना रथ चमचमा रहा है—कभी दिख जाता है तो कभी आँखों से ओझल हो जाता है। धनुर्धारी योद्धाओं की दस अक्षौहिणी सेना चल पड़ी। साथ में दस करोड़ हाथी और वीस करोड़ घोड़े भी चले। पच्चीस करोड़ शेल और झकड़ा नामक अस्त्र भी साथ हैं। विभिन्न प्रकार के रथ लेकर सारथी आए और विभिन्न प्रकार के अस्त्र-शस्त्र लेकर योद्धागण भी। पिता की प्रदक्षिणा कर वह रथ पर

कटकेर पदभरे कम्पिता मेदिनी ※ कटकेते वाद्य वाजे तिन अक्षौहिणी
सहस्र दगड़ वाजे, सहस्र काहाल ※ कोटि कोटि घण्टा बजे मृदंग विशाल
भेउरी झांझरी वाजे त्रिशकोटि काड़ा ※ कांस्य करताल बाजे तिन लक्ष पड़ा
घन घन बाजे ताय कत कोटि दामा ※दण्डी ओ महरी बाजे नाहि तार सीमा
सहस्र भोरंग वाजे डम्फ कोटि कोटि ※ दश लक्ष दगड़ेते घन पड़े काठि
बहु लक्ष शिगा बाजे अति खरशान ※ कत कोटि वाजे सिन्धु आर विन्दुयान
विरान्नइ कोटि बाजे धुरि ओ महरी ※ त्रिशकोटि शानाइ बाजे आर ये झांझरी
खमक ठमक बाजे पञ्चाश हाजार ※ विशकोटि वाजिछे पाखज ओ रसार
नाना शव्द करि बाजे पायेर नूपुर ※ माल साट मारे केह शव्द जाय दूर
बाजे स्वर मंगल साताश लक्ष काँसी ※ मृदुस्वरे बाजिछे आटाश लक्ष वाँशी
वाद्य शव्द देवतार मने लागे त्रास ※ सहस्र सहस्र बाजे रुद्रक पिनाश
डहर विशाल ढाक वाजे जयढोल ※ समस्त पृथिवी जुड़े उठे गण्डगोल
राक्षस कटक भरे पृथिवीर काँप ※ हाथी घोड़ा रथ नड़े हये एक चाप८०

जाकर बठा। उसकी सेना लम्बाई-चौड़ाई में बीस योजन रास्ता छके हुए है। कटक के पदचाप से पृथ्वी डगमगाने लगी। तीन अक्षौहिणी सैन्य में मारू वाद्य बज रहा है। हजार-हजार नगाड़े बज रहे हैं और करताल भी हजार-हजार; करोड़ों घंटियाँ बज रही हैं और विशालाकार मृदंग भी, झाँझरी और झाँझ बज रहे हैं और तीस करोड़ डफली भी। काँसे के मंजीरे भी तीन लाख बज रहे हैं। द्रुतलय में कितने ही करोड़ दमामे बज रहे हैं। दंडी और अद्भुत डुगडुगियाँ भी असंख्य बज रही हैं। सहस्र भेरियाँ बज रही हैं और करोड़ों डफ भी। दस लाख धौंसे पर दनादन चोब बरस रही है, कई लाख सींगियाँ उच्च स्वर से बज रही हैं, कितने ही करोड़ दुन्दुभि, बयानवे करोड़ तुरही और मौहरें बज रही हैं। तीस करोड़ शहनाई और झाँझों का वादन हो रहा है। पचास हजार खमक-ठमक बज रहे हैं। बीस करोड़ पखावज और रबार बज रहे हैं। पैरों के घुंघुर भी विभिन्न ध्वनियों से बज रहे हैं और तरह-तरह के नाद और रवों की आवाज बहुत दूर तक जा रही है। मंगल-स्वर बज रहा है और सत्ताइस लाख घड़ियाल भी। अट्ठाइस लाख बाँसुरी भी मृदु मन्द ध्वनि में बज रही हैं। सहस्रों की संख्या में ढाकें बज रही हैं और वाद्य-रव से देवताओं के मन में त्रास का संचार हो रहा है। डंके बज रहे हैं और जयढोल भी—सारी पृथ्वी पर कोलाहल छाया है। राक्षसों के कटक के भार से धरती थर्रा रही है और हाथी, घोड़े, रथ भी एक पद-चाप में समस्वर बढ़ रहे हैं ॥ ८० ॥

कटकेर धुलाय पृथिवी अन्धकार ※ प्रथमे चापिल गिया पूर्व्वकार द्वार
एक चापे करे वीर वाण वरिषण ※ गाछ ओ पाथर वरिषये कपिगण
राक्षस ओ वानरे हइल मिशामिशि ※ कौतुक देखिछे देवगण तथा आसि
वाण जुड़े राक्षस धनुके दिया चाड़ा ※ वानर उपरे पड़ितेछे जोड़ा जोड़ा
वानर पाथर-गाछ करे वरिषण ※ कोटि कोटि राक्षस रणे त्यजिछे जीवन
चापड़ मुकुटि मात्र वानरेर ताड़ा ※ मुकुटिर घाये कारो माथा हैल गुँड़ा
वाघेर येमन रूप वानरेर रंग ※ मरणेर भय नाहि रणे नाहि भंग
उभय कटक जुझे रक्ते हैल रांगा ※ रक्ते नदी वहे येन भाद्रमासे गंगा
घोड़ा हाती वीर आदि रक्तस्रोते भासे ※ हरिषे वानर सैन्य मने मने हासे
तार तुल्य ढेउ उठे रक्त कलकलि ※ युद्धेर नाहिक सीमा अधिक कि वलि
कोन युगे एइ मत युद्ध नाहि हय ※ ज्ञान हय, असमय प्रलय उदय ८१
पूर्व्वद्वारे समर करिया यथोचित ※ चलिल दक्षिणद्वारे वीर इन्द्रजित
अंगदेरे देखि तथा इन्द्रजित हासे ※ गालागालि देय तारे, यत मने आसे

कटक के पैरों से उठती धूल से पृथ्वी अंधकारमयी हो गयी। पहले वे पूर्वी द्वार पर जा धमके। एक साथ ये वीर वाण चलाने लगे और वानर पेड़ और पत्थर बरसाने लगे। राक्षस और वानर वहाँ आपस में गुथ गये और देवगण वहाँ आकर कौतुक निहारने लगे। धनुष पर वाण चढ़ाकर राक्षस सन्धान करने लगे और वानरों पर वे वाण ढेर के ढेर गिरने लगे। वानर भी पेड़-पत्थर फेंकने लगे और करोड़ों राक्षस रण में प्राण त्यागने लगे। वानरों का आक्रमण केवल मुक्के और झाँपड़ के माध्यम से हो रहा है। झाँपड़ खाकर किसी का सिर टूट गया। व्याघ्र का जैसा रूप होता है वानरों का भी वैसा ही रंग-ढंग है। न तो उनको मृत्यु का कोई भय है और न वे युद्धक्षेत्र से भागते ही हैं। दोनों सेनाएँ जूझ रही हैं और रक्त से चारों ओर लाली छा गयी है। खून की नदी बहने लगी है मानों भादों के महीने की गंगा हो। घोड़ा, हाथी, वीर सभी खून के प्रवाह में बह रहे हैं। हर्ष से वानरी-सेना मन ही मन हँस रही है। रक्त में खलबली मची हुई है और युद्ध मानों एक उत्ताल तरंग के समान बढ़ता ही जा रहा है। किसी भी युग में ऐसा घमासान युद्ध नहीं हुआ। प्रतीत होता है असमय ही प्रलय आ गया है॥ ८१॥

पूर्वी द्वार पर यथोचित युद्ध करने के पश्चात वीर इन्द्रजीत दक्षिण द्वार की ओर चला। वहाँ अंगद को देखकर इन्द्रजीत हँसने लगा। जी भर कर उसको गालियाँ दी। मेरे बाप को गाली देकर डर से तू भाग गया,

मोर बापे गालि दिया पलाइलि डरे ※ आय तोर कोन बाप आजि रक्षा करे
बापके मारिया तोर माके दिलि आने ※ धिक् रे वानरा तोर लाज नाहि मने
यार शरे मरे तोर पिता बालिराज ※ धिक् तोरे अधम करिस तार काज
खाइब घाड़ेर मांस कामड़ाब मास ※ मोर हाते आज तोर निश्चित विनाश
देशेते जीयन्त जावि ना करिस साध ※अन्य जन नहि आमि वीर मेघनाद८२
अंगद बलिछे, रे, गर्जिस अकारण ※ पदाघाते आजि तोर लइब जीवन
मारिते गेलाम तोरे लंकार भितर ※ से कोप पड़िल चारि राक्षस उपर
योगिवेशे तोर बाप सीतादेवी हरे ※ तार पापे मोर बाप मरे एक शरे
तार पापे पड़े रणे त्रिशिरा कबन्ध ※ तोर बापेर पापेते सागरे सेतुवन्ध
तोर बाप नारीचोरा तोर रण चुरि ※ आजि तोरे निश्चित पाठान यमपुरी
चोर-पुत्र चोर तुइ चुरि तोर रण ※ आजिकार युद्धे तोर लइब जीवन८३
एत शुनि इन्द्रजित् पूरिल सन्धान ※ कोटि कोटि वानरेर लइल परान
अंगदे एड़िया सबे पलाय वानर ※ रण मध्ये अंगद रहिल एकेश्वर
महा क्रोधे अंगद काँपिछे थर थर ※ इन्द्रजित परे फेले पादप पाथर

देखूँ की आज तेरा कौन सा बाप आकर तेरी रक्षा करता है। अरे वानरा! तूने अपने बाप को मरवा कर माँ को दूसरे के हाथों में सौंप दिया, तुझे धिक्कार है। तुझको शर्म भी नहीं आती, जिसके बाण से तेरे पिता बालि राजा का देहान्त हुआ तू उसी की सेवा करता है—तुझे धिक्कार है। तेरी गर्दन का मांस मैं चबाकर खा जाऊँगा, आज मेरे ही हाथों तेरा विनाश लिखा हुआ है। देश को जिन्दा वापस जायगा ऐसी साध मन में न रखना, मैं कोई सामान्य जन नहीं, मेघनाद हूँ ॥ ८२ ॥

अंगद ने कहा, अरे नाहक ही तू गरज रहा है, आज पदाघात से ही तेरे प्राण ले लूँगा। तुझको लंका के भीतर मारने गया तो मेरा क्रोध चार राक्षसों पर ही उतर पड़ा। तेरे बाप ने योगी का भेष रखकर सीता देवी का हरण किया और उसी के पाप से मेरे पिता एक बाण से मारे गये, उसी के पाप से त्रिशिरा-कबन्ध भी रण में गिरे। तेरे बाप के पाप के कारण ही सागर पर सेतु बँध गया। तेरा बाप स्त्री-चोर है और तू रण-चोर। आज ही के संग्राम में मैं तेरे प्राण लूँगा ॥ ८३ ॥

इतना सुन कर इन्द्रजीत ने धनुष पर बाण चढ़ाया और करोड़ों वानरों के प्राण चले गये। अंगद से कतरा कर सब वानर भागने लगे—रणक्षेत्र में अंगद अकेला अडिग खड़ा रहा। असह क्रोध से अंगद थरथर काँप रहा है और इन्द्रजीत पर वृक्ष और पत्थर फेंक रहा है। क्रोधित हो अंगद वीर ने

कुपिया अंगद वीर रथे मारे लाथि ※ लाथिर चोटे चूर्ण करे रथ ओ सारथि
अंगद विक्रमे इन्द्रजित काँपे त्रासे ※ लाफ दिया इन्द्रजित उठिल आकाशे
आकाशे थाकिया देखे दुइ सैन्य रण ※ राक्षस वानरे युद्ध नहे निवारण ८४
प्रचण्ड राक्षस एल हये आगुयान ※ सम्पाति वानरे मारे तिनशत वाण
वाण खेये सम्पाति ये हइल विवर्ण ※ उपाड़िया आने वृक्ष नामे अश्वकर्ण
अश्वकर्ण वृक्ष धरि दिल तिन पाक ※ वायुवेगे घुरे येन कुमारेर चाक
एड़िलेक गाछ-गोटा करिया हुंकार ※ वृक्षाघाते प्रचण्ड हइल चूरमार
सम्पाति वानर वीर प्रचण्डे मारिया ※ असंख्य राक्षस मारे लेजे जड़ाइया
चारि वीर लेजे बाँधि मारिल आछाड़ ※ भांगिल माथार खुलि, चूर्ण हैल हाड़
तपन नामे निशाचर आइल गजस्कंधे ※ संधान पूरिया वाण नील वीरे विन्धे
वाण खेये नील वीर उठि दिल रड़ ※ चड़िया हातीर कांधे तारे मारे चड़
चड़-चापड़ेते गेल दुइ आँखि उड़े ※ संग्रामेर माझेते तपन गेल पड़े ८५
रथे चड़ि आइल विद्युन्माली नाम ※ वानरेर संगे करे दुर्ज्जय संग्राम

रथ पर लात जमा दी और रथ एवं सारथि दोनों चूर्ण-चूर्ण हो गये। अंगद का पराक्रम देख इन्द्रजीत त्रास से काँपने लगा। छलांग मारकर वह आकाश में चढ़ गया आकाश में रह कर वह दोनों सेनाओं का युद्ध देखने लगा। राक्षस-वानर के युद्ध में कोई विराम नहीं॥ ८४॥

प्रचंड नामक राक्षस आगे बढ़ आया और सम्पाति नामक वानर पर तीन सौ वाण फेंके। वाण की चोट खाकर सम्पाति व्याकुल हुआ और वह लपककर एक शालवृक्ष उखाड़ लाया। वृक्ष को पकड़ कर उसको उसने तीन बार घुमाया। इतनी जोर से वह घूमा मानों कुम्हार का चाक हो। हुंकार के साथ पेड़ को उसने चलाया, पेड़ के प्रहार से प्रचंड चूर-चूर हो गया। वीर प्रचंड का निधन करने के उपरान्त सम्पाति वानर ने पूँछ में लपेट कर असंख्य राक्षसों का वध किया। चार वीरों को पूँछ में लपेट कर उसने पटक दिया। उनके शिर फूट गये और हड्डियाँ चूर-चूर हो गयीं। हाथी पर सवार हो तपन नामक निशाचर आया। नील वीर को निशाना बनाकर उसको वाण से बींध डाला। वाण से चोट खाकर नील वीर दौड़ पड़ा और हाथी के कन्धे पर चढ़कर उसको झापड़ मारने लगा। झापड़ की चपेट में उसकी दोनों आँखें जाती रहीं और वह युद्ध क्षेत्र में जा गिरा॥ ८५॥

विद्युन्माली नामक राक्षस रथ पर सवार आया। वह वानरों के साथ घनघोर संग्राम करने लगा। ऐसे ही समय उसने हनुमान को देखा और

हेनकाले हनूमाने देखिल सम्मुखे ❋ तिनशत वाण मारे हनूमानेर बुके
वाण खेये हनूमान भीत नहे चिते ❋ लाफ दिया उठिल विद्युन्मालीर रथे
रथेते उठिया तार धरिलेक चूले ❋ टानाटानि करि तारमाथा छिड़िफेले ८६
रणेते प्रवेश करे सुवर्ण राक्षस ❋ एकेबारे मद खाय साताश कलश
सोनार उपर तार सोनार वाहार ❋ रावण कटके आसि छाड़े हुहुंकार
खाँड़ा धरे कखन, कखन धनुर्व्वाण ❋ वानर कटक कोटि कैल खान खान
घोर अन्धकार हैल सेइ रण स्थले ❋ वानर कटक सव धरे धरे गिले
रणस्थले वानरेर देखिया दुर्गति ❋ आइल दारुण कोपे नील सेनापति
कुपिया से नील वीर चारिदिके चाय ❋ विद्युन्मालीर रथ-चक्र एक पाय
उपाड़िया चाका गोटा तुलि निल हाते ❋ दानवे रुषिल येन देव जगन्नाथे
एड़िलेक चाका गोटा तुलि वाहुवले ❋ अन्तरीक्षे फिरे चाका गगनमण्डले
वायुवेगे आसे चाका, कि कहिव कथा ❋ चाकार धारे काटिपाड़े सुवर्णेर माथा ८७
सुषेण वानरराज राजार श्वशुर ❋ दुइ पुत्र लये बुड़ा जुझिछे प्रचुर
जुझिते जुझिते बुड़ार वेड़े गेल रंग ❋ लाफ दिया उठे येन वयस तरंग

हनुमान के सीने पर तीन सौ वाण प्रहार किये। वाण खाकर हनुमान कुछ भी भयभीत न हुए, वरन उछल कर विद्युन्माली के रथ पर जा धमके। रथ पर चढ़कर उन्होंने विद्युन्माली के झोंटे धरे और खींच-खाँच कर उसका सिर धड़ से अलग कर दिया ॥ ८६ ॥

अब रण में सुवर्ण राक्षस ने प्रवेश किया। यह एकबारगी सत्ताईस घड़ा मदिरा पीता है। 'सुवर्ण' पर सुवर्ण की बहार है। वानर कटक के बीच आकर उसने हुंकार भरी। कभी तो वह हाथ में खड्ग ले लेता तो कभी धनुष-बाण। वानरी-सेना को काट-काट कर टुकड़े-टुकड़े करने लगा। रणक्षेत्र में अंधेरा छा गया और बानरों को पकड़-पकड़ कर वह लीलने लगा। समरभूमि में वानरों की दुर्दशा देखकर नील-सेनापति क्रोध से आगे बढ़ आए। चारों ओर क्रोध से निहारकर उनकी आँखें विद्युन्माली के रथ के चक्र पर पड़ीं। समूचा पहिया उखाड़ कर उन्होंने हाथ में ले लिया मानों दानवों पर देव जगन्नाथ कुपित हो गये। समूचे पहिये को घुमा कर ऊपर की ओर फेंका। पहिया गगन-मंडल में चक्कर लगाकर वायुवेग से नीचे उतरा और सुवर्ण का सिर काट कर फेंक दिया ॥ ८७ ॥

वानर-राज सुषेण राजा के श्वसुर हैं। अपने दोनों पुत्रों को लेकर वृद्ध खूब लड़ रहा है। लड़ते लड़ते बूढ़ा तरंग में आ गया—ऐसी छलांग भरने

जुझिते जुझिते बुड़ा पड़े गेल भोले ※ दश विश राक्षस चापिया धरे कोले
बुड़ार चापड़े चड़े कर्णे तालि लागे ※ निमिषे राक्षस सब लंका मध्ये भागे ८८
युझेन लक्ष्मण वीर सुमित्रानन्दन ※ अवसन्न नहे वीर प्रथम यौवन
रघुवंशे उद्भव लक्ष्मण महामति ※ सूर्य्येर किरण वीर शशधर ज्योति
उदयास्त युझे वीर, नाहि अवसान ※ धन्य शिक्षा वीरेर से, धन्य धनुर्व्वाण
मारे लक्ष निशाचरे चक्षुर निमिषे ※ राक्षस सहस्र कोटि मारे वेला शेषे
लक्ष्मणेर युद्ध देखि देवतार धन्ध ※ तिन लक्ष राक्षसेर काटि पाड़े स्कन्ध
रक्ते नदी वहे वाटे, रक्ते उठे फेना ※ लक्ष्मणेर वाणे पड़े राक्षसेर थाना
वाद्यभाण्ड भंग दिया पलाइल त्रासे ※ इन्द्रजित देखे ताहा थाकिया आकाशे ८९
पिता मोर कटक सँपिल हाते हाते ※ राखिते नारिन ठाट जाइव किमते
अग्निकेतु भस्मकेतु विक्रमे विशाल ※ वज्रदन्त वीर पड़े लंकार कोटाल
पड़े शठ निशठ साक्षात् यमदूत ※ अक्षय राक्षस पड़े समरे अद्भुत

लगा मानों नई जवानी से भरा हो। लड़ते-लड़ते बूढ़ा जोश में आ गया और दस-बीस राक्षसों को बाहों में दबोच लेने लगा। बूढ़े के झापड़ और तमाचों की आवाज से कान बहरे होने लगे। क्षण भर में सारे राक्षस लंका के भीतर भागने लग गये ॥ ८८ ॥

सुमित्रा-नन्दन वीर लक्ष्मण लड़ रहे हैं। उनकी नई जवानी है और उनमें नाम मात्र भी अवसाद नहीं है। महामति लक्ष्मण का जन्म रघुवंश में हुआ है, सूर्य की किरणों और चन्द्रकान्ति के सदृश वह दीप्तिमान् हैं। प्रातः से सन्ध्या तक वीरवर लड़ते रहे, उनमें थकान नहीं आई; धन्य है इस वीर की शिक्षा और धन्य हैं उसके धनुष-बाण। पलक झंपते ही लाख निशाचरों को मार गिराता। दिन ढलते-ढलते उसने सहस्र-कोटि राक्षस मार डाले। लक्ष्मण का युद्ध देखकर देवता चकित रह गये। तीन लाख राक्षसों के सिर काट कर फेंक दिये। खून से राह में नदी बहने लगी और उसमें लहरें और फेन उठने लगे। लक्ष्मण के बाणों से राक्षसों का मोर्चा टूट गया। गाजा-बाजा लेकर वे त्रास से भाग खड़े हुए। इन्द्रजीत ने आकाश में रहकर यह सब देखा ॥ ८९ ॥

पिता ने मेरे हाथों में सेना को सौंपा—उस सेना को मैं नहीं रख सका! अब मैं किस प्रकार से लौट सकूँगा? पराक्रमी अग्निकेतु भस्मकेतु और लंका के कोतवाल वीर वज्रदन्त भी गिर गये। साक्षात् यमदूत जैसे शठ-निशठ भी पराभूत हुए। समर में बेजोड़ अक्षय राक्षस का भी निधन हो गया।

वज्रमुष्टि पड़े शब्द कर्णे लागे तालि ※ पनस राक्षस पड़े लये सैन्य गुलि
हाती घोड़ा पड़िल अनेक राज्यखण्ड ※ माहुत पड़िल रणे समरे प्रचण्ड
देवमुष्ठि पड़िल सकल सेनापति ※ तिनलक्ष पड़े राजार प्रधान पदाति
हातीर पृष्ठे पड़े सैन्य देउलेर चूड़ा ※ पड़िल अर्व्वुद कोटि पार्व्वतीय घोड़ा
राज्येर महापात्र पड़े राज्य शून्य करि ※ कोन मुखे प्रवेश करिव लंकापुरी
आदर करिया पिता दिला गुया पान ※ एतेक कटक पड़े मोर विद्यमान
कटकेर भालमन्द मोरे सब लागे ※ कोन लाजे गिया दाण्डाइबे पितृ आगे
देखादेखि युद्ध करि जिनिवारे नारि ※ अदेखा हइले युद्ध करिवारे पारि
महायुद्ध करिव मायाते करि भर ※मेघ आड़े थाकि मारि नर ओ वानर ९०
डाक दिया श्रीरामेरे बले मेघनाद ※ जीयन्ते जाइते देशे ना करिह साध
निर्व्वल राक्षस मारि हरिष अन्तर ※ आजिकार युद्धे पाठाइब यमघर
एतेक बलिया धनुकेते दिल चाड़ा ※ देउल देहरेर येन भांगि पड़े चूड़ा
सोनार धनुके वीर योड़े तीक्ष्ण शर ※ सप्तद्वीपा पृथिवी काँपिछे थर-थर
धनुकेते दिया गुण तिनवार लोफे ※ ब्रह्मादि देवतागण थरथरि काँपे

वज्रमुष्टि गिरा तो घोर निनाद से कान बहरे हो गये और अपनी सारी सेना के साथ पनस राक्षस का भी पतन हुआ। बहुत सारे हाथी और घोड़े गिरे और इस प्रचंड समर में बहुत से महावत भी काम आ गये। सेनापति देवमुष्टि भी गिरा और राजा के श्रेष्ठ तीन लाख पैदल भी गिरे। हाथी की पीठ पर से हौदा गिर पड़ा और अर्बुद-कोटि पहाड़ी घोड़े भी काम आ गये। राज्य को सूना बनाते हुए राज्य का महापात्र गिर पड़ा। कौन सा मुँह लेकर अब मैं लंकापुरी लौटूँ। पिता ने लाड़ से पान-सुपारी दी और मेरे रहते हुए इतनी सेना विध्वंस हो गयी। कटक (सेना) के भले-बुरे की जिम्मेदारी मेरे सिर है, अब पिता के सम्मुख मैं किस मुँह से जाकर खड़ा हूँगा। आमने-सामने की लड़ाई में मैं जीत नहीं पाता हूँ—अदृश्य रहकर मैं युद्ध कर सकता हूँ। माया का सहारा लेकर मैं महारण छेड़ दूँगा। बादलों की ओट में रहकर नर और वानरों का संहार करूँगा ॥ ९० ॥

श्रीरामचन्द्र को पुकार कर मेघनाद ने कहा, जिन्दा अपने देश लौट जाने की साध न रखना। कमजोर राक्षसों को मारकर दिल ही दिल खुश हो रहे हो। आज की लड़ाई में तुमको यमराज के घर भेज दूँगा। इतना कहकर उसने धनुष की प्रत्यंचा को टंकोरा—मानों मन्दिर की चूड़ा (शिखर) काँप कर टूट पड़ी। सोने के धनुष पर वीर ने तीक्ष्ण बाण चढ़ाया—सातों द्वीप वाली पृथ्वी थर-थर काँपने लगी। धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाकर उसने तीन

राम लक्ष्मण वलि वीर घन डांक छाड़े ❊ संवर आमार वाण झाँके झाँके पड़े
एड़िलाम वाण एइ यमेर दोसर ❊ छुटिल दुर्ज्जय वाण संवर संवर
एत वलि करे वीर वाण वरिषण ❊ जर्ज्जर करिया विन्धे श्रीराम लक्ष्मण
नानावर्णे वाण एड़े जाने नाना छला ❊ राम लक्ष्मणेर काटि पाड़िल मेखला
तिलार्द्ध नाहिक स्थान रक्त पड़े स्रोते ❊ दु भाइयेर रक्तधारे वसुमति तिते ९१
हेथा इन्द्रजित विन्धे श्रीराम लक्ष्मण ❊ उत्तर द्वारे वार्त्ता पाइल सुग्रीव राजन
उत्तर द्वारेते तखन नाहि हानाहानि ❊ रक्षक राखिया राजा चलिल आपनि
पश्चिम द्वारे महायुद्ध करे इन्द्रजित ❊ चलिल सुग्रीव राजा वाचाइवे मित
धाइल सुग्रीव राजा अति शीघ्र गति ❊ छत्रिश कोटि सेनापति चलिल संहति
पूर्व्वद्वारेर थानाय आसिया शीघ्रगति ❊ समाचार दिल राजा यथा नील सेनापति
नील ओ कुमुद धाय कटक युझार ❊ थाना भाँगि गेला सवे पश्चिम दुयार
दक्षिण द्वारेते आछे अंगदेर थाना ❊ महेन्द्र देवेन्द्र ताहे आछे दुइ जना
महेन्द्र देवेन्द्र चले सह सेनागण ❊ आशीकोटि सैन्य दुइ भायेर भिड़न

वार उसको फेंककर गोच लिया तो ब्रह्मा आदि देवता थर-थर काँपने लगे। 'राम-लक्ष्मण' गुहार कर वीर वार-वार हाँक लगाने लगा—अब मेरे वाणों को संभालो। वाण झुंड के झुंड आकर गिरने लगे। यम सा भयानक यह वाण मैं फेंक रहा हूँ, यह लो दुर्जय वाण भी फेंक रहा हूँ—संभालो भी। इतना कहकर वीर, वाण बरसाने लगा। राम-लक्ष्मण दोनों, वाणों से जर्जर हो गये। विभिन्न वर्णों के वाणों से कतराकर विभिन्न प्रकार के छल-कपट से वाण फेंकने लगा और राम-लक्ष्मण की मेखलाएँ कट कर गिर गईं। शरीर में कोई भी स्थान वाकी नहीं रह गया, खून से वे लोग लहूलुहान हो गये, दोनों भाइयों के खून से धरती भीग गयी ॥ ९१ ॥

यहाँ इन्द्रजीत श्रीराम-लक्ष्मण को वाणों से बाँध रहा है, यह वार्त्ता सुग्रीव राजा को उत्तर के द्वार पर मिली। उस समय उत्तरी द्वार पर कोई मुठभेड़ नहीं हो रही थी—अतः रक्षकों को पीछे छोड़कर राजा स्वयं चल पड़ा। पश्चिम-द्वार पर इन्द्रजीत महासमर छेड़े हुए है। सुग्रीव राजा अपने मित्र की सहायता करने चल पड़ा। राजा सुग्रीव अति शीघ्र दौड़े और उनके साथ-साथ छत्तीस करोड़ सेनापति भी चल पड़े। पूर्वी द्वार के मोर्चे पर पहुँचकर यह समाचार सुनाया गया, जहाँ नील सेनापति था। रण-कुशल नील और कुमुद भी दौड़ पड़े—मोर्चा तोड़कर सब लोग पश्चिमी दरवाजे पर गये। दक्षिणी द्वार पर अंगद का मोर्चा था। वहाँ महेन्द्र और देवेन्द्र थे।

ताड़াताड़ि वार्त्ता तारा कहे जनेजन ※ सबे मात्र ना जाने राक्षस विभीषण
विभीषणे ना कहिल विपक्षेर ज्ञाने ※ एइ हेतु संवाद ना पाय विभीषणे
चारी द्वारेर कटक हइल एक ठाँइ ※ मेघ आड़े इन्द्रजित बिन्धे दुइ भाइ
लाफ दिया वानर सब उठये आकाश ※ कोथाय थाकिया युझे ना पाय तल्लास
श्रीराम लक्ष्मण बले, हइनु निराश ※ मेघ आड़े इन्द्रजित करे उपहास
सहस्र लोचने ना देखिल पुरन्दर ※ दुइ चक्षे कि देखिवे नर ओ वानर
श्रीराम लक्ष्मण, तोरा मानुषेर जाति ※ आजि बूझि तोदेर पोहाल कालराति
मेघ आड़े थाकि करे वाण वरिषण ※ जर्ज्जर करिया विन्धे श्रीराम लक्ष्मण
कोथा थाकि जुझे वेटा देखिते ना पाइ ※ जीवनेर वासना छाड़िल दुइ भाइ
एक वाण मारि बेटा क्षमा नाहि माने ※ नागपाश वाण जुड़े धनुकेर गुणे
नागपाश वाण एड़े वड़इ दारुण ※ यार नामे इन्द्र यम काँपये वरुण
ब्रह्म अस्त्र नागपाश दुर्ज्जय प्रताप ※ एक वाणे हइल चौराशी लक्ष साप
साप हये जाय वाण आकाशे धरे फणा ※ सापेर मुखे ज्वले येन आगुनेर कणा
मुखेते दारुण अग्नि ज्वले धिकि धिकि ※ आछये अन्येर काज काँपये बासुकि

दोनों भाइयों के पास अस्सी करोड़ की सेना थी—उसे लेकर वे चल पड़े। वे झटपट एक दूसरे को सन्देश पहुँचाते रहे। केवल विभीषण को इस बात की सूचना नहीं मिली—विपक्षी राक्षस समझकर उसको किसी ने यह खबर नहीं पहुँचाई। चारों द्वारों की सेना एकत्र हो गयी और बादलों की ओट से इन्द्रजीत दोनों भाइयों को बाणों से छेदता रहा। सारे वानर छलाँग मार-मार कर आकाश में उठते रहे लेकिन वह कहाँ छिपकर लड़ रहा है इसका पता नहीं चल सका। श्रीराम-लक्ष्मण ने कहा, हमतो निराश हो गये, बादलों की ओट से इन्द्रजीत हमारी खिल्ली उड़ा रहा है! सहस्रलोचन होते हुए भी पुरन्दर (इन्द्र) उसको न देख सके, नर और वानर उनको दो आँखों से कैसे देख सकते हैं। अरे राम और लक्ष्मण! तुम लोग मनुष्य जाति के हो, आज शायद तुम लोगों का मृत्यु-दिवस है। मेघनाद मेघ की ओट में रहकर बाण बरसाता है और राम-लक्ष्मण के शरीर को छेद रहा है। यह दुष्ट कहाँ से छिपा लड़ाई कर रहा है, दिखाई नहीं पड़ता। दोनों भाइयों ने प्राणों की आशा त्याग दी। इतने बाण मारने के उपरान्त भी वह शान्त नहीं हुआ। उसने नागपाश बाण धनुष पर चढ़ाया। नागपाश बाण बड़ा ही भयंकर बाण है, जिसके नाम पर इन्द्र, यम और वरुण तक काँपते हैं। प्रबल ओजपूर्ण ब्रह्मास्त्र सा नागपाश बाण है। उसके एक बाण से चौरासी लाख साँप उत्पन्न हो गये। साँप बनकर वह बाण गगन में गया और फन काढ़ लिया और साँप

चलिल ये वाण गोटा दुर्ज्जय प्रताप ॥ अग्निर समान येन एक एक साप
वायुवेगे जाय वाण मेघेर गर्ज्जने ॥ हाते पाये वान्धे गिआ श्रीराम लक्ष्मणे
कोन साप गलाय जड़ाय केह पाय ॥ पाक दिया भुजंग जड़ाय सर्व्वगाय
हात पा नाड़िते नारे गले लागे फाँस ॥ यमेर दोसर हैल बद्ध नागपाश
सापेर विषेर ज्वालाय जर्ज्जर शरीर ॥ उत्तर शियरे ढलि पड़े दुइ वीर
लक्ष्मण पड़िल आर राम रघुमणि ॥ चन्द्र सूर्य्य खसि येन पड़िल अवनी
लोटाय कोमल अंग आलु थालु वेश ॥ लोटाय धनुक तूण आलुयित केश ९२
रण जिनि इन्द्रजित छाड़े सिंहनाद ॥ पितृस्थाने जाय वीर लइते प्रसाद
वानरेर शुन आज क्रन्दनेर रोल ॥ लंकार प्रवेशे बाजाइया ढोल
आगे पाछे पड़े कत चन्दनेर छड़ा ॥ ताहार उपरे पाते नेतेर पाछड़ा
हस्तेक प्रमाण पड़े पुरु पारिजात ॥ सौरभेते पूर्णित शीतल वहे वात
पितृ आगे दाँड़ाइल करि जोड़ करे ॥ तिनवार माथा नोयाय राज व्यवहारे
रावण जिज्ञासा करे रणेर संवाद ॥ जोड़ हाते कहिछे कुमार मेघनाद

के मुँह से मानों आग लपलपाने लगी। उनके मुँह से भयंकर अग्नि की लौ निकलने लगी—दूसरों की क्या बताऊँ वासुकि तक काँपने लग गये। वह अजेय वाण चल पड़ा, एक-एक साँप मानों अग्नि के समान हो, और वे जाकर राम-लक्ष्मण के हाथ-पैरों में लिपट गये। कोई साँप तो गले में लिपट गया तो कोई पैर में। भुजंग सारे अंग भर में लिपट गये। हाथ-पैर हिलाने डुलाने में वे असमर्थ हो गये और गले में फाँसी जैसी लग गयी। नागपाश से बँध गये और विष की ज्वाला से उनके शरीर शिथिल हो गये। लक्ष्मण और राम रघुमणि उत्तर की ओर सिरहाना कर ढुलक गये—मानों धरती पर चन्द्र-सूर्य ढुलक पड़े। उनके कोमल अंग लोटने लगे, कपड़े अस्त-व्यस्त हो गये, धनुष और तूण अलग जा गिरे, बाल भी बिखर गये ॥ ९२ ॥

युद्ध जीतकर इद्रजीत ने सिंहनाद किया और पिता के निकट अनुग्रह प्राप्त करने चल पड़ा। इधर बन्दर क्रन्दन करने लगे। लंका में वीर ने ढोलक बजाते हुए प्रवेश किया। आगे-पीछे चन्दन के छींटे पड़ने लगे। सूक्ष्म रेशमी वस्त्र धरती पर बिछा दिया गया और उस पर एक हाथ ऊँचे पारिजात के फूल बिछा दिये। चारों दिशा सुगन्ध से महमहाने लगी और ठंडी हवा चलने लगी। हाथ जोड़कर वह पिता के सम्मुख खड़ा हो गया और राजोचित प्रथा के अनुसार तीन बार सिर झुकाया। रावण ने रण का समाचार सुनाने के लिए कहा और कुमार मेघनाद हाथ जोड़ कर सुनाने लगा। यक्ष, राक्षस, गन्धर्व,

यक्ष रक्ष गन्धर्व देवता चराचर ❋ सवार कठिन युद्ध नर ओ वानर
प्रथम करिते युद्ध वानर संहति ❋ चूर्ण कैल रथ छत्र मारिल सारथि
आपना राखिते आमि हइनु कातर ❋ प्राण भये पलाइनु आकाश उपर
दाण्डाइया देखिलाम राक्षस दुर्गति ❋ एक दण्डे पड़िल सकल सेनापति
पड़िल सकल सेना पाइ अपमान ❋ श्रीराम लक्ष्मणे बिन्धि करि खान खान
खण्ड खण्ड करिलाम माथार टोपर ❋ रक्तमात्र ना राखिनु शरीर भितर
बाणे बिन्धि दुइ भाये करिनु जर्ज्जर ❋ पड़िल अनेक ठाट, असंख्य वानर
ब्रह्मअस्त्र नागपाश प्रचण्ड प्रताप ❋ एके बारे जन्मिल चौरासी लक्ष साप
साप हये चले वाण आकाशे धरे फणा ❋ हाते पाये गलाय बान्धिल दुइ जना
त्रिभुवन मिलि यदि करे अकिञ्चन ❋ तबुना खसिबे नागपाशेर बन्धन
राम लक्ष्मणेर तरे नाहि आर डर ❋ सीता सने केलि कर लंकार भितर
हरिषे युद्धेर कथा मेघनाद कहे ❋ रावण करिया कोले चुम्ब दिल ताहे
हस्ती घोड़ा रत्न दिल भाण्डार प्रचुर ❋ अमुल्य रतनहार दिलेक केयूर

और देवता से लड़ना सहज है—सबसे कठिन लड़ाई इन नर और वानरों के साथ है। आरम्भ में वानर-यूथ के साथ युद्ध हुआ तो उन लोगों ने रथ-छत्र तोड़ डाला और सारथी को मार डाला। अपने को भी बचाना मेरे लिए कठिन हो गया तो मैं प्राण लेकर गगन में ऊपर चला गया। खड़े-खड़े मैंने राक्षसों की दुर्दशा देखी। बहुत शीघ्र ही सारे सेनापति काम आ गये। सारी सेना इस प्रकार गिरने से मुझको अपमान का बोध हुआ, तो मैंने बाण से श्रीराम-लक्ष्मण को छेदना शुरू कर दिया। बाण मार-मार कर मैंने दोनों भाइयों को बेहाल कर दिया। उनके सिर के मुकुट को मैंने खंड-खंड कर डाला और उनके शरीर में बिन्दुमात्र भी रक्त नहीं रह गया। असंख्य वानरों के साथ बहुत बड़ी सेना भी जमीन चूमने लगी। फिर मैंने ब्रह्मास्त्र नागपाश फेंका। एक ही बाण में चौरासी लाख साँप उत्पन्न हो गये और फन काढ़कर वे आकाश में उठ गये और उतर कर दोनों के हाथ-पैरों तथा गले को बाँध लिया। तीनों लोक भी मिलकर चेष्टा करें फिर भी उनको इस नागपाश-बन्धन से मुक्त नहीं कर सकते। अब राम-लक्ष्मण के लिए तुमको कोई डर नहीं, सीता को लेकर लंका के भीतर आनन्द से क्रीड़ा करो। हर्ष से मेघनाद ने यह समाचार जब सुनाया तो रावण ने उसको बाहों में खींचकर चुम्बन किया। हाथी, घोड़ा और पर्याप्त रत्नों का भंडार प्रदान किया—अनमोल रत्नों का हार और बाजूबन्द दिया। नीलम जड़े विभिन्न आभूषण प्रदान किये और अनेक रूपवती

नाना अलंकार दिल नीलकान्त मणि ※ आनि दिल विद्याधरी रूपसी रमणी
राजप्रसाद दिल राज्य करे लण्ड भण्ड ※ सबे मात्र नाहि दिल नव छत्र-दण्ड ९३

श्रीराम-लक्ष्मणेर नागपाशे बन्धन दर्शने सीतार विलाप

पितृस्थाने विदाय ल'ये गेल इन्द्रजित् ※ रावण त्रिजटा बलि डाकिल त्वरित
रावण वले, त्रिजटागो, जाह एक बार ※ चूर्ण करि आइस सीतार अहंकार
पुष्पक विमाने लह सीतारे तुलिया ※ क्षणेक आइस तुमि आकाशे भ्रमिया
राम लक्ष्मण पड़ेछेन वद्ध नाग पाशे ※ स्वचक्षे देखुक सीता थाकिया आकाशे
रामलक्ष्मण मैले सीता हइबे निराश ※ आमारे भजिबे सीता मने पेये त्रास ९४
रावणेर आज्ञा यदि त्रिजटा पाइल ※ राम लक्ष्मणेर कथा सीता के कहिल
राम लक्ष्मण पड़ियाछे इन्द्रजितेर वाणे ※ स्वामि देवर देख यदि एस मोर सने
चलिलेन सीतादेवी त्रिजटा संहति ※ रथे चड़ि दुइजन जान शीघ्रगति
नागपाशे वद्ध हेरि श्रीराम लक्ष्मण ※ शिरे कर हानि देवी करिछे रोदन
पोहाइल बुझि मोर आजि कालराति ※ अभागिनी हारालाम तोमा हेन पति
शिशुकाले छिनु जावे जनकेर घरे ※ अविधवा बलि लोक कहित आमारे

विद्याधरी रमणी भी दीं। छत्र और राजदंड तो नहीं दिया, लेकिन राज्य उलट-पुलट कर सारा राजप्रसाद उसे दे दिया ॥ ६३ ॥

श्री राम-लक्ष्मण को नाग-पाश बन्धन में देखकर सीता का विलाप

इन्द्रजीत पिता से विदा लेकर चला गया। उसके जाते ही रावण ने त्रिजटा कहकर पुकारा। रावण ने कहा, त्रिजटा! तुम जाकर एक बार सीता का घमंड चूर-चूर कर आओ। पुष्पक विमान में सीता को बिठाकर तुम थोड़ी देर के लिए आकाश में भ्रमण कर आओ। राम-लक्ष्मण नागपाश में बँध गये हैं—आकाश से सीता अपनी आँखों से देख ले। राम-लक्ष्मण के मरने पर सीता निराश हो जायगी और डरकर मेरी सेवा करने लगेगी ॥ ६४ ॥

त्रिजटा को जब रावण का आदेश मिला तो उसने सीता से राम-लक्ष्मण की बात बताई। इन्द्रजीत के बाण से राम-लक्ष्मण गिरे हैं, अगर पति और देवर को देखना चाहती हो तो मेरे साथ आओ। सीतादेवी त्रिजटा के साथ चल पड़ीं और रथ पर दोनों शीघ्रगति से रवाना हो गयीं। श्रीराम-लक्ष्मण को नागपाश में बँधा देखकर सिर पर हाथ मारती हुई देवी (सीता) रोने लगीं। आज शायद मेरी कालरात्रि उदय हुई, जो तुम जैसे पति को मैं अभागिन खो बैठी। बचपन में जब मैं जनक के घर पर थी तब लोग मुझको अविधवा

सकलेर वाक्य मोर हैल विपरीत ❋ धूलाते पड़िया प्रभु हूले असंवित ९५
वधिया ताड़कासुर, तुष्ट कैले तिनपुर, जनकेर पन पूर्ण करि।
हरेर धनुकखान, भांगि कैला खान-खान, धन्य कैला जनकेर पुरी ॥
विविध विलाप करि, श्रीरामेर गुण स्मरि, कान्दे सीता, नहे निवारण ।
कैकेयी-सताइ-दोषे आसिया कानन-वासे, विपाकेते हाराले जीवन ॥
भरत करिल स्तुति, ना करिले अनुमति, वने आइले सत्ये करि भर ।
रत्नमय सिंहासन, परिहरि कि कारण, कोमलांग धूलाय धूसर ॥
अयोध्यार छत्रधर, आज्ञाचारी चराचर, सागर बाँधिया हैला पार ।
आमि कि अभाग्यवती, हारालाम रामपति, तव मुख ना देखिब आर ॥
आमा अन्वेषण करि, एले प्रभु लंकापुरी, दुःख मोर ना हैल मोचन ।
दुराचार इन्द्रजित्, कैल युद्ध विपरीत, ताहे प्रभु हाराले जीवन ॥
त्रिजटार हाते धरि, विस्तर विनय करि, कहिछेन करुण वचन ।
तोमार सहाय गुणे, जाब आमि स्वामि सने, रथ राख, ना कर गमन ॥
सीतार रोदन शुनि, हइल आकाशवाणी, कभु नाहि रामेर विनाश ।
तोमारे उद्धार करि, जाबेन अयोध्यापुरी, रचिल पण्डित कृत्तिवास ॥९६

कहकर पुकारते थे। आज सभी का कहना विपरीत हो गया, मेरे प्रभु धूल में बेहोश लोट रहे हैं ॥ ६५ ॥

ताड़का का वध कर तुमने तीनों लोकों को तुष्ट किया। शिव-धनुष को तोड़ कर तुमने जनक-पुरी को सन्तुष्ट किया। श्रीराम के विभिन्न गुणों का स्मरण करती हुई सीता रो रो कर विलाप करने लगीं। सौतेली माँ कैकेयी के दोष से तुमको वनवास करने आना पड़ा और इस प्रकार अकारण प्राण त्यागना पड़ा। भरत ने तुमसे प्रार्थना भी की लेकिन तुमने उसकी एक न सुनी और सत्यपालन के लिए वन चले आए। रत्नजड़े सिंहासन को त्याग कर किस कारण तुम धूल में लोट रहे हो। तुम अयोध्या के छत्रपति हो, सारा संसार तुम्हारा आज्ञाकारी है, सागर को बाँध कर तुम उसको लाँघ आए। मैं कैसी अभागिन हूँ कि फिर तुम्हारा मुख नहीं देख सकूँगी। मुझ ही को ढूँढ़ते हुए प्रभु, तुम लंकापुरी आए लेकिन मेरा दुख दूर न हो सका। दुराचारी इन्द्रजीत ने छल-कपट का युद्ध किया और उसी में प्रभु तुमने अपने प्राण खो दिये। त्रिजटा के हाथ थाम कर सीता करुण स्वर में उससे विनती करने लगी, तुम्हारी ही सहायता से मैं पति के साथ सहगमन करूँगी, रथ को रोक लो और आगे मत चलो। सीता का रुदन सुनकर आकाशवाणी

सीतार प्रति त्रिजटार सान्त्वना एवम् श्रीराम-लक्ष्मणेर नागपाश हइते मुक्ति

कातर हइया कान्दे से सीता रूपसी ※ सीतारे प्रबोध देय त्रिजटा राक्षसी
पुष्परथ देख सीता देव अवतार ※ कखन ना सहे एइ अशुचिर भार
एकान्त श्रीराम यदि हारात जीवन ※ अचल हइत रथ, ना जाय खण्डन
ना कर रोदन सीता, ना कर रोदन ※ प्राण ना त्यजेन तव श्रीराम लक्ष्मण
वहुकाल गेल, दुःख अल्प दिन आछे ※ भावि आमि, क्षणे सीता मरे जाह पाछे
एत बलि त्रिजटा बिस्तर बुझाइया ※ अशोकेर वने गेल सीतारे लइया
अशोकेर वृक्ष तले वसिलेन सीते ※ स्वर्णवेत हाते घुरे यतेक चेड़ीते ९७
नागपाशे वन्दी रन श्रीराम लक्ष्मण ※ माथे हात दिया कान्दे यत कपिगण
वड़ वड़ कपि कान्दे वले हाय हाय ※ नील सेनापति कान्दि गड़ागड़ि जाय
सकल कटक कान्दे हइया अज्ञान ※ पिता पुत्रे कान्दिछे केशरा हनूमान
कान्दिछे सुग्रीव राजा कटकेर आड़े ※ मित्र मित्र बलि राजा घन डाक छाड़े
लंकाते यद्यपि प्रभु रघुनाथ मरे ※ कि वलिया जाव आमि किष्किधा नगरे

हुई, राम का कभी विनाश नहीं होगा। तुम्हारा उद्धार कर वे अयोध्यापुरी जायँगे—ऐसा कृत्तिवास ने कहा ॥ ९६ ॥

सीता के प्रति त्रिजटा की सान्त्वना और श्री राम-लक्ष्मण की नागपाश से मुक्ति

रूपवती सीता व्याकुल होकर रोने लगी तो त्रिजटा राक्षसी उसको ढाढ़स बँधाने लगी। सीता, यह पुष्पक-रथ देखो—यह देव-अवतार के समान है। यह अपवित्र का भार कभी नहीं सह सकता। यदि श्रीराम अपने प्राण से हाथ धो लिये होते तो यह रथ अचल हो गया होता, इसमें कोई सन्देह नहीं। ऐ सीता, तुम मत रोओ, मत रोओ। तुम्हारे राम-लक्ष्मण ने प्राण नहीं त्यागा है। वहुत दिन बीत गये, अब तुम्हारे दुख के दिन इने-गिने हैं। मुझको चिन्ता है कि तुम इसी दुख में क्षणभर में प्राण न त्याग दो। इतना कह सीता को वहुत कुछ समझा-बुझा कर त्रिजटा उसको अशोक-वाटिका में ले गयी। अशोक वृक्ष के नीचे सीता जाकर बैठ गयी और उसको घेर कर राक्षसी दासियाँ हाथ में सोने के बेंत लिये पहरा देने लगीं ॥ ९७ ॥

नागपाश में श्री राम-लक्ष्मण वन्दी हो गये और सिर पर हाथ रखे सारे कपि रोने लगे। बड़े-बड़े कपि हाय-हाय कर रोने लग गये। सारा कटक वेहाल होकर रोने लगा। केसरी और हनुमान भी रोने लगे। सेना की आड़ में खड़े राजा सुग्रीव भी रोने लग गये और 'मित्र-मित्र' कहकर बार-बार पुकारने लगे। जब प्रभु रघुनाथ ने लंका में प्राण त्याग दिया, तो मैं कौन सा मुँह लेकर

किष्किन्धार राजपाट सब पोड़ाइया ※ पराण त्यजिब आमि सागरे डुबिया
सुग्रीव बलेन, मोरा सबे ऐक्य करि ※ दुइभाय जाब लये किष्किन्धानगरी
श्रीराम लक्ष्मणे यदि पारि बाँचाइते ※ आनिब औषध यथा पाव संसारेते
बाँचाइया श्रीराम लक्ष्मण दुइजने ※ करिब तुमुल युद्ध रावणेर सने
सवंशे मारिब जबे लंकार रावण ※ तबे से जानिया मोर स्वदेशे गमन ९८
दूर हैते क्रन्दन शुनिया विभीषण ※ चारिदिके चाहिया भाविछे मनेमन
कोन वीरे लइया पड़ेछे अथान्तर ※ माथे हात दिया केन कान्दिछे वानर
कान्दिछे सुग्रीव वीर अंगद युवराज ※ सकल वानर कान्दे नहे छोट काज
एत भावि विभीषण चलिल सत्वर ※ विभीषणे देखि छोटे यतेक वानर
विभीषण इन्द्रजित् अभेद रूपेते ※ विभीषणे देखि बले एल इन्द्रजिते ९९
सुग्रीव डाकिया बले अंगदेर आगे ※ तुमि आछ सम्मुखे कटक केन भागे
अंगद बलेन, शुन वानरेर पति ※ विभीषणे देखि भागे यत सेनापति
डाक दिया कहिछे अंगद युवराज ※ कारे देखि पलाह मुण्डेते पड़ुक बाज
हाना दिया इन्द्रजित् गेल लंकापुरे ※ विभीषणे देखि केन पलाइछ डरे

किष्किन्धा जाऊँगा। किष्किन्धा का सारा राज-पाट जलाकर खाक कर दूँगा और समुद्र में डूबकर अपने प्राण दे दूँगा। सुग्रीव ने कहा, चलो, हम सब इकट्ठे होकर दोनों भाइयों को किष्किन्धा नगरी ले चलें। वहाँ संसार भर में ढूँढकर दवा ले आऊँगा और श्रीराम-लक्ष्मण को बचाने की कोशिश करूँगा। श्रीराम-लक्ष्मण को बचाकर फिर रावण के साथ प्रबल युद्ध करूँगा। लंका के रावण को जब उसकी सारी सन्ततियों के साथ मार सकूँगा तभी जान लेना मैं स्वदेश को लौटूँगा ॥ ९८ ॥

दूर से क्रन्दन सुनकर विभीषण चारों ओर देखता हुआ मन ही मन सोच रहा है कि कौन सा वीर रणक्षेत्र में काम आ गया कि सारे बन्दर सिर पर हाथ रखे रो रहे हैं। सुग्रीव वीर भी रो रहा है और अंगद युवराज भी। सारे बन्दर रो रहे हैं, यह कोई मामूली बात नहीं है। इतना सोचकर विभीषण झटपट चल पड़ा। विभीषण को देखकर सारे बन्दर भागने लग गये। विभीषण और इन्द्रजीत देखने में एक जैसे हैं, विभीषण को देखकर वे कहने लगे कि इन्द्रजीत आ गया है ॥ ९९ ॥

सुग्रीव ने अंगद को बुलाकर कहा, तुम सामने हो फिर भी तुम्हारा कटक क्यों भाग रहा है। अंगद ने कहा, हे वानरराज, सुनो ! विभीषण को देखकर सारे सेनापति भाग खड़े हुए हैं। फिर हाँक लगाकर अंगद युवराज ने ललकारा, अरे तुम लोग किसको देखकर भागने लगे हो, तुम लोगों के सिर

देशे पलाइया जाबे पुत्र दारा आशे ❊ एक गाड़े गाड़िबे सुग्रीव राजा देशे
यदि देशे जाबे, मने करह वासना ❊ उलटिया राख गिया आपनार थाना
अंगदेर देखिया दन्तेर कड़मड़ि ❊आपनार थानाय सबे जाय ताड़ाताड़ि १००
विभीषण बले शुन राजीवलोचन ❊ जीयन्ते मरिनु आमि तोमार कारण
पलाइते नाहि ठाँइ जाव कोन देश ❊ विशेष सागरे गिया करिब प्रवेश
धिक् धिक् राज्यभोग धिक् धिक् सुख ❊जनम गोयाब आमि देखिकार मुख १०१
एतेक शुनिया तबे विभीषण वाणी ❊ धीरे धीरे कहिछेन राम रघुमणि
सब छाड़ि विभीषण कैले आमासार ❊ शुधिते नारिनु मिता तोमार से धार
नागपाश बन्धे मृत्यु घटिल आमारे ❊ मरा लागि जीयन्ते कोथाय केवा मरे
शुन हे सुग्रीव मिता कहि तवस्थाने ❊ सैन्य लये जाह तुमि आपन भवने
आमा स्थाने मित्र, तुमि सत्ये हैले पार ❊ तुमि कि करिबे, दैव विपक्ष आमार
नूतन भूपति तुमि देखह विचारि ❊ तोमा विने लण्डभण्ड हवे राजपुरी

पर क्यों गाज आ गिरी है। इन्द्रजीत तो धावा बोलने के बाद लंकापुरी में चला गया, अब विभीषण को देखकर डर से क्यों भागने लगे हो। अपने बाल-बच्चों के पास देश भाग जाने की साध लिये हुए हो, राजा सुग्रीव तुमको जमीन में तोप कर रख देंगे। दिल में अगर अपने देश लौट जाने की अभिलाषा है तो जाकर अपना-अपना मोर्चा सँभालो। अंगद को देखकर सभी लोग दाँत पीसने लगे और लौटकर अपने-अपने मोर्चों पर पहुँच गये ॥ १०० ॥

विभीषण ने कहा, हे राजीवलोचन! तुम्हारे कारण मैं तो जिन्दा ही मर गया। भागने को मेरे लिए कोई ठौर नहीं, किस देश को जाऊँ। कहीं अन्ततः मुझको समुद्र में ही प्रवेश करना न पड़ जाय। राज्य भोगने की आकांक्षा को धिक्कार है और सुख को भी धिक्कार है। किसका मुख देखकर मैं अपना जीवन विताऊँगा ॥ १०१ ॥

विभीषण के ये वाक्य सुनकर राम रघुमणि धीरे-धीरे बोल पड़े—हे विभीषण! तुम सब कुछ छोड़कर मुझ पर निर्भर हुए। हे मित्र, मैं तुम्हारा यह ऋण चुका न सका, नागपाश-बन्धन से मेरी मृत्यु हो रही है। मरे हुए व्यक्ति के लिए कब कौन जीवित व्यक्ति अपने प्राण दे देता है। सुनो मित्र सुग्रीव, तुमसे बताऊँ। तुम अपनी सेना लेकर अपने घर लौट जाओ। तुम मेरे लिए परम मित्र हो और अपना सत्य तुमने पाला है। तुम क्या करोगे, दैव मेरे विपक्ष में है। तुम नए नृपति हो, तुम्हारे बिना राज्य नष्ट-भ्रष्ट हो

करह राज्येर चर्च्चा गिया निज राज्ये ❋ आमार निकटे आर आछ कोन् कार्य्ये
नागपाश अस्त्र एल आमा-दोंहा तरे ❋ भाग्ये जाहा छिल, हैल, तुमि जाह फिरे
अंगदेर बापे मारि पाइयाछि लाज ❋ प्राणपणे पालिह अंगद युवराज
गय गवाक्ष शरभादि ओ गन्धमादन ❋ महेन्द्र देवेन्द्र एइ सुषेणनन्दन
शरभंग वानर ये कुमुद सेनापति ❋ देशे तवे जाह सबे करिया पीरिति
देशे जाह सकले आमारे दिया कोल ❋ गालागालि ना दिह ना बलो मन्द बोल
अयोध्या नगरे तुमि जाह हनूमान ❋ समाचार कहिओ सबार विद्यमान
जानाइओ भरतेरे आमार सम्वाद ❋ कारो संगे येन नाहि करे विसम्वाद
धर्म्मेते पालिबे प्रजा राखि धर्म्मपथ ❋ एइ रूपे राज्य येन करेन भरत
कौशल्या मायेरे जानाइबे नमस्कार ❋ कैकेयी मातारे कह एइ समाचार
प्रणाम करिब गिया मने छिल साध ❋ विधाता साधिल ताहे निदारुण वाद
जानकी रहिल बन्दी अशोकेर वने ❋ नागपाशे बद्ध राम लक्ष्मण दु जने
सुमित्रा माताके मोर दिओ नमस्कार ❋ यथायोग्य सबारे जानाह समाचार
आमा लागि लक्ष्मण छाड़िल निजपुरी ❋ सुखभोग छाड़ि भाइ हैल वनचारी

जायगा। अपने राज्य को लौट जाओ और राजकाज संभालो। मेरे पास तुम किस कारण रुके हो। हम दोनों के लिए नाग-पाश अस्त्र का प्रहार आया। मेरे भाग्य में जो कुछ था सो तो हो गया, अब तुम लौट जाओ। अंगद के बाप को मारकर मुझको बड़ी लज्जा पहुँची है। अंगद युवराज का हर तरह से पालन-पोषण करना। गय, गवाक्ष, शरभ, गन्धमादन, महेन्द्र, देवेन्द्र नामक सुषेण के पुत्र, शरभंग कपि और सेनापति कुमुद तुम सभी लोग प्रेम से अपने-अपने देश लौट जाओ। मुझसे गले मिलकर सभी देश को लौट जाओ। मुझको बुरा-भला मत कहो और न मुझको गाली दो। हनुमान तुम अयोध्या चले जाओ और सबसे मेरा समाचार बता दो। भरत से मेरा समाचार कहना और यह भी बता देना कि किसी से कलह-विवाद न करें, धर्म के अनुसार प्रजा-पालन करें और धर्म-पथ पर चलते हुए भरत राज्य-शासन करें। माता कौशल्या को मेरा प्रणाम पहुँचाना। माता कैकेयी से कहना कि मन में साध थी कि स्वयं जाकर प्रणाम करूँगा लेकिन विधाता की इच्छा कुछ और ही थी। जानकी अशोक-वाटिका में वन्दिनी रह गई और राम-लक्ष्मण दोनों नागपाश में बद्ध हो गये। माता सुमित्रा से भी मेरा नमस्कार कहना। सभी लोगों से यथायोग्य समाचार बताना। मेरे ही कारण लक्ष्मण ने अपना घर छोड़ा, राजसुख को त्याग कर मेरा भाई वनचारी बना। मेरे प्राणों के समान

प्राणेर लक्ष्मण भाइ छिल हातेर नड़ि ❊ हेन भाइ नागपाशे जाय गड़ागड़ि १०२
नागपाशे कातर हइला रघुवीर ❊ ब्रह्मादि देवता भावि हइल अस्थिर
इन्द्र आदि करिया यतेक देवगण ❊ डाक दिया आनिलेन देवता पवन
इन्द्र बले समाचार ना जान पवन ❊ नागपाशे बाँधा आछे श्रीराम लक्ष्मण
अरुण वरुण यम सबे काँपे डरे ❊ भये ना आइसे केह लंकार भितरे
आमि इन्द्रदेव त्रिभुवन अधिपति ❊ रावणेर बेटा मोर करिल दुर्गति
लंकाते लइल बाँधि, संसारे विदित ❊ आमारे जिनिया बेटार नाम इन्द्रजित्
बड़ निदारुण बेटा विख्यात भुवने ❊ नागपाशे बान्धियाछे श्रीराम लक्ष्मणे
नागपाशे अचैतन्य दुइ सहोदर ❊ बल बुद्धि हारायेछे सकल वानर
श्रीरामेर स्थाने जाह आमार वचने ❊ कह रामे मुक्त हबे गरुड़ स्मरणे
विष्णुर वाहन गरुड़ धरे विष्णु तेज ❊ नागपाश घुचाइते सेइ महावेज ३
इन्द्रेर वचन मानि देवता पवन ❊ कहिल श्रीरामे, कर गरुड़ स्मरण
पवन श्रीरामे यदि हैल कानाकानि ❊ गरुड़े स्मरण करे राम रघुमणि

भाई लक्ष्मण, जो मेरा सबसे बड़ा सहारा था, नागपाश से बँध कर भूमि पर लोट-पोट रहा है ।। १०२ ।।

कातर रघुवीर को नागपाश में बँधा देखकर ब्रह्मा आदि सारे देवता बड़े चिन्तित हुये। इन्द्र आदि देवता जाकर पवन को बुला लाए। इन्द्र ने कहा, पवन तुमको शायद यह समाचार ज्ञात न हो, राम-लक्ष्मण नागपाश में बँध गये हैं। अरुण-वरुण और यम सभी डर से काँपते रहते हैं—कोई भी डर के मारे लंकापुरी में प्रवेश नहीं करते हैं। मैं त्रिभुवन का पति इन्द्र हूँ, मेरी भी दुर्गति इस रावण के बेटे ने कर दी। संसार भर में यह विदित है कि मुझको इसने लंका में बाँध लिया। मुझको हरा कर ही इस दुष्ट का नाम इन्द्रजीत पड़ा है। यह निगोड़ा बड़ा ही भयानक है, उसने राम-लक्ष्मण को नागपाश से बाँध डाला है। दोनों भाई नागपाश से अचेतन हैं। सारे बन्दरों की बुद्धि पर भी पत्थर पड़ गया है। मेरे कहने पर तुम राम के निकट जाओ और बताओ कि गरुड़ के स्मरण करने पर वह मुक्त हो जायगा। गरुड़ विष्णु का वाहन है और महातेज-सम्पन्न है। नागपाश का अन्त करने में वही महावैद्य के समान है ।। ३ ।।

इन्द्र के वचन के अनुसार पवन ने जाकर श्रीरामचन्द्र जी से गरुड़ का स्मरण करने के लिए कहा। पवन और श्रीराम में कानाफूसी हुई और राम रघुमणि ने तुरन्त गरुड़ का स्मरण किया। विष्णु-अवतार श्रीराम ने जैसे

गरुड़े स्मरण राम विष्णु अवतार ❋ गरुड़ेर ललाटे ते पड़िल टंकार
कुशद्वीपे चरे गरुड़ सागरेर कूले ❋ गिलेछिल अजगर, उगारिया फेले
शून्यभरे गरुड़ आइल उभ-रड़े ❋ पाख साटे पर्व्वत-पादप जाय उड़े
दिग् दिगन्तेर गाछ आने पाखे टेने ❋ झञ्झना पड़ये जेन घोर वरिषणे
सागरेर जलजन्तु लुकाइल जले ❋ भय पेये नागगण कम्पित पाताले
उपाड़िया पड़े वृक्ष पाखार बातासे ❋ दश योजन हैते सर्प सर्व पलाय तरासे
दूर हैते गरुड़ेर लागिल निःश्वास ❋ रामलक्ष्मणेर खसि पड़े नागपाश
पद्महस्त बुलाइल विनतानन्दन ❋ सचैतन्य हये उठे श्रीराम लक्ष्मण
गरुड़ पक्षीरे कन राम रघुमणि ❋ प्राणदान दिले, सखा छिले हे आपनि
गरुड़ बलेन, शुन सविशेष कहि ❋ श्रीचरण भृत्य आमि सखा योग्य नहि
तुमि विष्णु अवतार जगतेर पति ❋ पतिव्रता शापे आछे आपना विस्मृति
आमि ये गरुड़ पक्षी तोमार वाहन ❋ पूर्व्वकथा प्रभु केन हओ विस्मरण ४
श्रीराम बलेन पक्षि कैले उपकार ❋ वर माग पक्षिवर जे वाञ्छा तोमार
गरुड़ बलेन, वाञ्छा आछे एइमने ❋ द्विभुज मुरलीधर देखिबो नयने
त्रिभंगभंगिम रूप गले वनमाला ❋ शिखि पुष्पवद्ध चूड़ा वामे अर्द्ध हेला

ही गरुड़ का स्मरण किया कि गरुड़ का माथा ठनका। कुशद्वीप में समुद्र के किनारे गरुड़ विचर रहा था। एक अजगर को वह लील चुका था, उसको उसने वमन कर दिया। शून्य में गरुड़ तीव्र गति से उड़ने लगा—उसके डैनों के झपट्टे से पेड़-पहाड़ सब उड़ने लगे। दिगदिगन्त के पेड़ों को वह डैनों में समेटे चला—मानों घोर वर्षा में आँधी चल पड़ी हो। समुद्र के सारे जल-जन्तु पानी में छिप गए और सारे नाग पाताल में भय से काँपने लगे। डैनों की हवा से वृक्ष जड़ से उखड़ने लगे और दस योजन की दूरी से सारे साँप भागने लगे। दूर से गरुड़ की साँस आकर लगते ही राम-लक्ष्मण के नागपाश अलग जा गिरे। विनता-नन्दन ने श्रीराम-लक्ष्मण के बदन को कमल-कर से सहलाया और वे दोनों तुरन्त सचेतन हो उठे। राम-रघुमणि ने गरुड़ पक्षी से कहा, तुमने मेरा प्राण बचाया, तुम मेरे सखा हो। गरुड़ ने कहा, मैं आपके श्रीचरणों का दास हूँ, मैं सखा बनने योग्य नहीं हूँ। तुम जगत के पति विष्णु के अवतार हो, पतिव्रता के शाप से तुम अपने को भूले हुए हो। मैं गरुड़ पक्षी तुम्हारा वाहन हूँ, हे प्रभु! ये पुरानी बात क्यों भूल रहे हो ॥ ४ ॥

श्रीराम ने कहा, हे पक्षिराज! तुमने मेरा बड़ा उपकार किया, तुम्हारे मन में जो इच्छा हो सो वर माँगो। गरुड़ ने कहा, मेरे दिल में आकांक्षा है कि मैं द्विभुज मुरलीधर को अपने नयनों से देखूँ। उनका त्रिभंग-बंकिम रूप मैं

अलका आवृत शशि श्रीमुखमण्डल ※ श्रुतियुगे मनोहर मकरकुण्डल
गले वनमाला परिधान पीताम्बर ※ सेइ रूप देखिते वासना निरन्तर
श्रीराम बलेन हब सेरूप केमने ※ धनुर्द्धारी राम आमि सकलेते जाने
ना वलिह कृष्णमूर्त्ति करिते धारण ※ से रूप देखिले कि कहिबे कपिगण
गरुड़ वलेन कि कहिबे कपिगणे ※ करिया पाखार घर बसाब गोपने ५
एतेक मन्त्रणा करि विनतानन्दन ※ पाखाते करिल घर अद्भुत रचन
भकतवत्सल राम ताहार भितरे ※ दाण्डाइल त्रिभंगभंगिम रूप धरे
धनुक त्यजिया वाँशी धरिलेन करे ※ हनूमान देखि बसि भावितेछे दूरे
हनू भावे प्राणपणे करि प्रभुहित ※ पक्षीर संगेते एत किसेर पीरित
देखिलेन हनूमान महायोगे बसि ※ धनु खसाइया पक्षी करे दिल वाँशी
हनूमान वले, पक्षि, एत अहंकार ※ धनुक खुलिया वाँशी दिलि हाते ताँर
यदि भृत्य हइ, मन थाके श्रीचरणे ※ लइव इहार शोध तोरि विद्यमाने
वाँशी खसाइया दिव धनुःशर करे ※ लइव इहार शोध कृष्ण अवतारे ६

देखना चाहता हूँ—उनके गले में वनमाला होगी, सिर पर मोरपंख लगी चूड़ा वाईं ओर ढुलकी हुई होगी; उनके चन्द्रवदन पर वाल के गुच्छे आ पड़ेंगे, कानों में मनोहर मकराकृति कुंडल होंगे। पीताम्बर पहने और गले में वनमाला डाले—ऐसा रूप देखने की लालसा मुझमें निरन्तर है। श्रीराम ने कहा, वताओ मैं ऐसा रूप कैसे ले लूँ ? सभी जानते हैं कि मैं धनुषधारी राम हूँ। मुझको कृष्णमूर्त्ति धारण करने को मत कहो, वर्ना वह रूप देखकर ये सारे वानर क्या कहेंगे। गरुड़ ने कहा, वानर क्या कहेंगे ! मैं अपने डैनों की ओट में गुप्त-कक्ष वना कर उसमें तुमको विठाऊँगा ॥ ५ ॥

विनतानन्दन ने इतना कहकर अपने डैनों से विचित्र कक्ष का निर्माण किया। भक्तवत्सल राम उसी कक्ष के भीतर त्रिभंग-वंकिम रूप धारण कर खड़े हो गये। धनुष त्याग कर उन्होंने हाथों में वाँसुरी ले ली। हनुमान दूर वैठे सोचने लगे कि प्रभु के हित के लिये मैं इतना-कुछ किया करता हूँ—इस पक्षी के साथ प्रभु का इतना प्रेमभाव क्यों है ? महायोग में वैठकर हनुमान ने देखा कि हाथों से धनुष हटाकर पक्षी ने वाँसुरी थमा दी। हनुमान ने कहा, हे पक्षी, तुझे इतना घमंड है कि तूने धनुष उतरवाकर हाथों में वाँसुरी थमा दी; अगर मैं सेवक हूँ और मेरा चित्त उन्हीं चरण-कमलों पर टिका हुआ हो तो तेरी ही उपस्थिति में मैं इसका वदला लेकर रहूँगा। इसका वदला मैं कृष्ण-अवतार के समय लूँगा और वाँसुरी उतरवा कर धनुष-वाण पकड़वाऊँगा॥ ६ ॥

एतेक शुनिया तवे विनतानन्दन ※ ईषत् हासिया पाखा करे संवरण
श्रीरामे प्रणाम करि जाय शून्यपथे ※ दाण्डाइला रघुनाथ धनुर्व्वाण हाते
अँग झाड़ा दिया उठे अनुज लक्ष्मण ※ आनन्द सागरे मग्न यत कपिगण
गरुड़ेर पक्ष शब्द यत दूर जाय ※ तत दूर कपिगण उठिया दाँड़ाय
नागपाशे मुक्त हैला श्रीराम लक्ष्मण ※ रामजय शब्द करे यत कपिगण ७
एक बारे सव कपि छाड़े सिंहनाद ※ शुनिया रावण राजा गणिल प्रमाद
वानरेर शब्द निशि तृतीय प्रहर ※ शय्या हैते उठि वसे राजा लंकेश्वर
रावण प्राचीरे उठि चाहे चारिभिते ※ दाण्डायेछे राम-लक्ष्मण धनुर्वाण हाते
रावण वले ये वाण वन्धन नागपाश ※ नागपाशे मुक्त हैल लंकार विनाश
मरिया ना मरे राम ए केमन वैरी ※ अनुमाने वुझिनु मजिल लंकापुरी ८

धूम्राक्षेर युद्ध ओ पतन

दैवेर निर्व्वन्ध, रावण देखिछे विपाक ※ धूम्राक्ष वलिया राजा घन पाड़े डाक
आज्ञामात्र आइल धूम्राक्ष महावीर ※ राजार चरणे आसि नोङाइल शिर

इतना सुनने के वाद विनतानन्दन मुस्कराया और अपने डैनों को समेट लिया। श्रीराम को प्रणाम कर वह शून्य पथ पर चला गया। रघुनाथ धनुष-वाण लेकर फिर खड़े हो गये। वदन भाड़ कर अनुज लक्ष्मण उठ कर खड़े हो गये और सारे कपि आनन्दमग्न हो गये। गरुड़ के डैनों का शब्द जहाँ तक पहुँचा वहाँ तक सारे कपि उठकर खड़े हो गये। श्रीराम-लक्ष्मण नागपाश से मुक्त हो गये—समस्त कपि श्रीरामचन्द्र की जय का घोष करने लगे ॥ ७ ॥

एक साथ जव सारे कपियों ने सिंहनाद किया तो राजा रावण बहुत घबड़ा उठे। रात के तीसरे पहर में वानरों का यह महानाद उठा तो लंकेश्वर विस्तर पर उठकर वैठ गया। प्राचीर पर उठकर रावण चारों ओर देखने लगा। देखा राम-लक्ष्मण धनुष-वाण हाथ में लेकर खड़े हो गये हैं। रावण ने कहा, इस वाण ने नागपाश-वन्धन से इनको वाँध डाला था और उससे ये मुक्त हो गये। अव तो लंका का विनाश निश्चित है। यह राम मर कर भी नहीं मरता—यह कैसा वैरी है—अव यही अनुमान है कि लंकापुरी के बुरे दिन आ गये ॥ ८ ॥

धूम्राक्ष का युद्ध और पतन

रावण ने यह विपत्ति देखी और इसको दैव की इच्छा समझी तो उसने जोर-जोर से धूम्राक्ष को गुहारा। आज्ञा पाते ही महावीर धूम्राक्ष आया।

रावण वले तुमि हे प्रधान सेनापति ※ आजिकार युद्धे तुमि कुलावे आरति
राज व्यवहारे तार बाड़ाय सम्मान ※ जुझिवारे अनुमति दिल गुयापान ९
राज आज्ञामात्र वीर रथे गिया चड़े ※ हाती घोड़ा ठाट सैन्य चले मुड़े मुड़े
हाती घोड़ा चले आर अगणन ठाट ※ धूलि उड़ाइया चले नाहि देखे वाट
लंकाते धूम्राक्ष वीर परम सुज्ञानी ※ यात्राकाले अमंगल देखिल आपनि
आउदर चुले भिक्षा मागिछे योगिनी ※ रथध्वजे उड़ि वैसे शकुनि गृधिनी
यात्राकाले अमंगल देखिछे अपार ※ किछुइ ना माने वीर वले मार मार१०
दुइदले मिशामिशि दृढ़ बाजे रण ※ नाना अस्त्र गाछ पाथर करे वरिषण
रुषिया धूम्राक्ष वले कोथाय तपस्वी ※ उखाड़िया मरे केन एत दूरे आसि
छाड़िया सीतार आशा फिरि जाह घर ※ मनुष्य हइया वेटा लंकार भितर
कपिगण वले वेटा चक्षु थेके अन्ध ※ मनुष्य कि सागर करिते पारे वन्ध
स्वयं विष्णु रघुनाथ वान्धिलेक सेतु ※ अवतीर्ण राक्षसेर वंशनाश हेतु

आकर राजा के चरणों पर नमन किया। रावण ने कहा, तुम प्रधान सेनापति हो, आज के युद्ध में तुम मेरी मनोकामना पूर्ण करो। राजकीय आचरण से उसके सम्मान की वृद्धि कर, संग्राम करने की अनुमति के रूप में पान-सुपारी उसके हाथों में दी ॥ ९ ॥

राजा की आज्ञा पाते ही वीर जाकर रथ पर सवार हो गया। हाथी घोड़ा और पैदल सेना के यूथों के साथ अग्रसर हुआ। हाथी, घोड़ा और अगणित सेना चलने लगी और धूल के उड़ने से पथ भी नहीं दिखाई पड़ने लगा। लंका में वीर धूम्राक्ष परम ज्ञानी माना जाता है—यात्रा के समय उसने खुद अपना असगुन देखा। खुले बालों वाली योगिनी भीख माँग रही है और गिद्ध आकर रथ-ध्वजा पर बैठ रहा है। यात्रा के समय इन असगुनों को बार-बार देखने के बाद भी वह वीर मार-मार शब्द करता हुआ युद्ध में टूट पड़ा ॥ १० ॥

दोनों दलों में मुठभेड़ हो गई और घोर युद्ध छिड़ गया—विभिन्न अस्त्र-शस्त्र, पेड़ और पत्थरों की वर्षा होने लगी। धूम्राक्ष ने क्रोधित होकर कहा, वह तपस्वी कहाँ है जो मरने के लिए इधर छिटक कर आ गया है। सीता की आशा त्याग कर अपने घर लौट जाओ—मनुष्य होकर लंका में कैसे चले आये ? कपियों ने कहा, अरे आँख रहते हुये भी क्या तुम अन्धे हो, मनुष्य क्या सागर को बाँध सकता है। स्वयं विष्णु-अवतार रघुनाथ ने सेतु का निर्माण किया और राक्षसों के वंश के ध्वंस के निमित्त ही वे धराधाम पर

गड़ागड़ि जाबे रावणेर दशमुण्ड ※ विभीषण उपरे धराव छत्रदण्ड
कुपिल धूम्राक्ष वीर ज्वलंत आगुनि ※ मुषल लइया एक कपिगणे हानि
मुषलेर घाये भांगे कारो माथार खुलि ※ कारो मुण्ड काटि भूमे पाड़े महाबली
खाण्डाखान काहारो मस्तके तुलि हाने ※ भंग दिल वानर अस्थिर हये रणे
हनूमान देखिल वानरगण भागे ※ दाण्डाइल हनूमान धूम्राक्षेर आगे
हनूमान वले वेटा कि नाम तोमार ※ आमार सहित युद्ध कर एकवार
राक्षस वलिल यदि तोरे आमिपाइ ※ अन्येर कि प्रयोजन तोर रक्त खाइ ११
एत यदि दुइ जने हैल गालागालि ※ दुइ वीरे युद्ध करे दौहे महावली
हनूमान आनिल पाथर दुइ खान ※ रथेर उपरे फेलि डाके हानाहान
रथ घोड़ा सारथि करिल चूरमार ※ रथ एड़ि धूम्राक्ष धाइल आरवार
धूम्राक्षेर हाते छिल एक महागदा ※ तार आशे पाशे वाजे जयघण्टा सदा
देव दैत्य गन्धर्व्वगणेर भय लागे ※ गदा हाते करि गेल हनूमान आगे
दोहातिया वाड़ि मारे हनूमानेर बुके ※ हनूमानेर बुक येन वज्र हेन देखे
बुकेते ठेकिया गदा हैल खान खान ※ कोप करि पासरे आपना हनूमान

अवतीर्ण हुए हैं। रावण के दस मुंड जमीन पर लुढ़केंगे और विभीषण के सिर पर राजछत्र की छाया होगी। इस बात पर वीर धूम्राक्ष ज्वलन्त-अग्नि सा क्रोधित हुआ और एक मूसल लेकर कपियों पर दे मारा। मूसल के प्रहार से किसी का सिर टूट गया तो किसी का मुंड कट कर जमीन पर जा गिरा। महाबली ने खड्ग उठाकर किसी के सिर पर दे मारा। सारे वानर घबड़ाकर तितर-बितर होने लगे। हनुमान ने देखा कि वानर भाग रहे हैं तो वह धूम्राक्ष के सामने जाकर खड़ा हो गया। हनुमान ने कहा, अरे दुष्ट, तेरा क्या नाम है, जरा मेरे साथ भी तो लड़ कर देख ले। राक्षस ने कहा, तुझको अगर पा जाऊँ तो मुझे दूसरे की क्या जरूरत, मैं तेरा ही रक्त पी जाऊँ ॥ ११ ॥

दोनों में जब इस प्रकार का गाली-गलौज हो चुका तो दोनों महाबली युद्ध में जुट गए। हनुमान दो पत्थर उठा लाये और रथ पर फेंके। रथ, घोड़ा और सारथी चूर-चूर हो गए और धूम्राक्ष रथ से कूद कर अलग खड़ा हो गया। धूम्राक्ष के हाथों में एक महागदा थी और उसके आसपास सदा जय-घंटा बजा करता था जिससे देव-दैत्य और गन्धर्वगण सदा भयभीत रहते थे। हाथ में गदा लिये वह हनुमान के सम्मुख गया और दोनों हाथों से हनुमान के वक्ष पर उस गदा का प्रहार किया। लेकिन हनुमान का वक्ष मानों

हनूमान बले गदा गेल रसातल ※ एखन आइस आमि वुझि तोर बल
एक वज्र चापड़ मारिल तार शिरे ※ कातर हइया पड़े भूमिर उपरे
हनूमान महावीर संग्रामेते शूर ※ लाथि मारि धूम्राक्षेर देह करे चूर
पड़िल धूम्राक्ष वीर समरे दुर्ज्जय ※ सकल वानर घोषे राम जय जय
धूम्राक्षेर सेना छिल दुइ अक्षौहिणी ※ पलाय सकले लये निज निज प्राणी
भग्न पाइक कहे गिया रावण गोचर ※ धूम्राक्ष पड़िल वार्त्ता शुन लंकेश्वर १२

अकम्पनेर युद्ध ओ पतन

धूम्राक्ष पड़िल, वार्त्ता पाइल रावण ※ अकम्पन बलि डाक छाड़े घनेघन
आज्ञामात्र उपनीत अकम्पन वीर ※ राजार निकटे आसि नोङाइल शिर
रावण बले शुन अकम्पन सेनापति ※ आजिकारि युद्धे तुमि कुलाबे आरति
वीर मध्ये वीर तुमि सकलेते जाने ※ त्रैलोक्य जिनिते तुमि पार एक दिने
तोमार सम्मुखे जुझे आछे कोन जन ※ हाते करे वान्धि आन श्रीराम लक्ष्मण
मधुर वचने राजा अकम्पने तोषे ※ जुझिते चलिल वीर राजार आदेशे

वज्र सा कठोर है—गदा उससे टकरा कर खंड-खंड हो गई। हनुमान ने अब कहा, तेरी गदा तो चूर-चूर हो गयी, अब आ जा, देखें तुझमें कितना बल है। इतना कहकर उसने एक वज्र-सरीखा-झाँपड़ उसके सिर पर मारा। झाँपड़ खाकर वीर जमीन पर जा गिरा। महावीर हनुमान संग्राम में शूरवीर है—लात मार-मार कर उसने धूम्राक्ष का शरीर चूर-चूर कर दिया। समर में दुर्जय वीर धूम्राक्ष का पतन हुआ। सभी वानर श्रीराम की जय घोषित करने लगे। धूम्राक्ष की दो अक्षौहिणी सेना थी, उनके पैर उखड़ गए और वे अपने-अपने प्राण लेकर भागने लगे। भग्नदूत ने जाकर रावण को सूचना दी, हे लंकेश्वर! रणक्षेत्र में धूम्राक्ष का पतन हुआ ॥ १२ ॥

अकम्पन का युद्ध और पतन

रावण को जब सूचना मिली कि धूम्राक्ष का पतन हुआ है तो उसने जोर-जोर से अकम्पन का नाम लेकर पुकारा। आज्ञा पाते ही वीर अकम्पन राजा के सामने आकर सिर झुका कर खड़ा हो गया। रावण ने कहा, हे सेनापति अकम्पन! आज के युद्ध में तुम मेरी मनोकामना पूरी करोगे। सभी जानते हैं कि तुम वीरों में वीर हो, एक दिन में तीनों लोक जीत सकते हो। ऐसा कौन है जो तुमसे जूझ सकता हो? राम-लक्ष्मण के हाथ-पैर बाँध कर ले आओ। मीठी-मीठी बातों से राजा ने अकम्पन को तुष्ट किया। राजा के

सारथि योगाय रथ विचित्र गठन ※ ससैन्ये साजिया चले वीर अकम्पन
आचम्बिते गृधिनी पड़िल रथध्वजे ※ उखाड़िया पड़े घोड़ा जाय मन्द तेजे
अकम्पन नाम तार कम्पे ना कखन ※ यात्राकाले हस्तपद कम्पे घन घन
यात्राकाले अमंगल देखिल अपार ※ मार मार शब्दे गेल पश्चिम दुयार
दुइ सैन्ये मिशामिशि दृढ़ बाजे रण ※ नाना अस्त्र गाछ पाथर करे वरिषण
दुइ सैन्ये महायुद्ध हइल अपार ※ रणेर धूलिते दशदिक् अन्धकार
अन्धकारे केह नाहि चिने आत्मपर ※ राक्षसे राक्षस मारे वानरे वानर
रक्ते रांगा हैल वाटे धूला नाहि उड़े ※ देखादेखि युद्ध करे दुइ दले पड़े
महेन्द्र देवेन्द्र आर कुमुद सेनापति ※ रण देखि तिन वीर एल शीघ्रगति
तिन वीर आसि करे वृक्ष वरिषण ※ सम्मुख संग्रामे स्थिर नहे तिन जन
भंग दिया तिन वीर पलाइल त्रासे ※ हाते धनु दाण्डाइया अकम्पन हासे
नील वीर बड़धीर सकले बाखाने ※ भंग दिया पलाइल अकम्पन रणे
नल वीर करेछिल एका सेतुवन्ध ※ अकम्पन वाणे तार चक्षु हैल अन्ध

आदेश से वीर लड़ने चल पड़ा। सारथी उसके लिए विचित्र बनावट का रथ ले आया। वीर अकम्पन सजधज कर अपनी सेना के साथ चल पड़ा। अचानक ही रथ की ध्वजा पर गिद्ध आकर बैठ गया। घोड़े के पैरों में ठोकर लगी और वह धीरे-धीरे चलने लगा। चूँकि वह कभी कम्पित नहीं होता तभी उसका नाम अकम्पन पड़ा था। आज यात्रा के समय उसके हाथ-पैर काँपने लगे। यात्रा के समय उसने असंख्य अमंगल-सूचक लक्षण देखे। मार-मार शब्द करता हुआ वह पश्चिमी द्वार पर गया। दोनों सैन्य आपस में गुथ गए और युद्ध छिड़ गया। तरह-तरह के अस्त्र और पेड़-पत्थर बरसने लगे। दोनों सेनाओं में महायुद्ध हुआ। रण की धूल से चारों ओर अँधियारा छा गया। अँधियारे में अपना-पराया समझ में नहीं आता। वानर, वानर को, और राक्षस, राक्षस को मारने लगे। खून से जब धूल दब गई तो दोनों दल एक दूसरे को देख कर लड़ने लगे। महेन्द्र, देवेन्द्र और कुमुद—तीनों वीर सेनापतियों ने रण होते देखा तो शीघ्रगति से इधर चले आये। तीनों वीरों ने आकर पेड़ बरसाना शुरू कर दिया। सम्मुख-संग्राम में इन तीनों वीरों के पैर उखड़ गये और वे भय से भागने लगे। हाथ में धनुष लेकर अकम्पन हँसने लगा। सभी लोगों का कहना है कि वीर नील बड़ा धैर्यशील है। वह भी अकम्पन के साथ युद्ध में भाग खड़ा हुआ। नलवीर ने अकेले सेतुबन्ध का निर्माण किया था। अकम्पन के वाण से उसकी एक आँख अन्धी

शरभंग पलाइल पेये अपमान ❋ रणेते प्रवेश करे वीर हनूमान १३
हनूमान बले, बेटा पलावि कोथाय ❋ एकचड़े यमालये पाठाव तोमाय
पाइक मारिया बेटा जिनि याह रण ❋ अवश्य आमार हाते तोमार मरण
एत यदि दुइ वीरे हैल गालागालि ❋ दुइ जने युद्ध वाजे दोंहे महावली
आशीकोटि बाण एड़े वीर अकम्पन ❋ वाणे अचेतन हैल पवननन्दन
संज्ञा लभि उठे पुनः वीर हनूमान ❋ क्रोधे आने शालगाछ दिया एक टान
बाहुबले एड़े गाछ वीर हनूमान ❋ अकम्पन वाणे गाछ हैल दुइ खान
जिनिते ना पारे हनू भावये अन्तरे ❋ लाफ दिया पड़े तार रथेर उपरे
चुलेते धरिया तारे मारिल आछाड़ ❋ भांगिल माथार खुलि चूर्ण हैल हाड़
अकम्पने पड़े यदि संग्रामे दुर्जय ❋ सकल वानर वले राम जय जय
भग्नपाइक कहे गिया रावण गोचर ❋ अकम्पन पड़िल शुनह लंकेश्वर १४

(वज्रदंष्ट्रेर युद्ध ओ पतन)

अकम्पन-मृत्यु शुनि चरेर वदने ❋ किछु भय उपजिल रावणेर मने
हृदये करिया विवेचना वहुतर ❋ युद्ध विना हित नाहि देखिल अपर

हो गई। अपमानित होकर शरभंग भी भाग खड़ा हुआ। तब रण में वीर हनुमान ने प्रवेश किया ॥ १३ ॥

हनुमान ने कहा, अरे नीच, तू भागेगा कहाँ। एक ही झाँपड़ में तुझे यमालय भेज दूँगा। छोटे सैनिकों को मार कर तू रण जीत कर जा रहा है—बेशक तेरी मौत मेरे ही हाथों लिखी हुई है। दोनों वीरों में जब गाली-गलौज खत्म हुआ तो दोनों महाबलियों में लड़ाई छिड़ गई। वीर अकम्पन ने अस्सी करोड़ वाण फेंके—तो वाण से पवननन्दन अचेत हो गये। सुधि पाकर फिर वीर हनुमान उठ कर खड़े हो गए और एक साखू का पेड़ उखाड़ लाये। बाहों की शक्ति से हनुमान ने वह पेड़ फेंका—अकम्पन ने अपने वाण से उसके दो टुकड़े कर दिये। किसी तरह से यह काबू में नहीं आ रहा है—हनुमान सोच में पड़ गये। फिर छलाँग मारकर वह रथ पर जा धमके। बालों से पकड़ कर उसको उठाकर दे पटका। उसका सिर टूट गया और हड्डियाँ चूर-चूर हो गई। संग्राम में दुर्जय अकम्पन का जब पतन हुआ तो सभी वानर राम रघुनाथ का जय-घोष करने लगे। भग्नदूत ने जाकर लंकेश्वर से कहा, रणक्षेत्र में अकम्पन का पतन हो गया है ॥ १४ ॥

वज्रदंष्ट्र का युद्ध और पतन

चर के मुँह अकम्पन की मृत्यु का समाचार सुनकर रावण के मन में

तबे अग्रे देखि वज्रदंष्ट्र निशाचरे * कहिते लागिल तारे अति समादरे
वज्रदंष्ट्र तुमि हओ सुपण्डित रणे * तोमार समान वीर ना देखि भुवने
धनुक धरिया तुमि दाँड़ाले समरे * निजे इन्द्र सम्मुख हइते नारे डरे
तोमारे सहाय करि आमि देवगणे * पराजय करियाछि अनायासे रणे
अपर कि कव सर्व्वनाशक शमने * तोमार साहाय्ये जिनियाछि अयतने
तुमिह समरे जाह सेनानी हइया * सुग्रीव लक्ष्मण रामे आइस वधिया १५
एत वाणी शुनि वज्रदंष्ट्र निशाचर * प्रणमिया कहितेछे रावण गोचर
महाराज एइ आमि चलिलाम रणे * आपनि परमानन्दे थाकुन भवने
वधिव तोमार शत्रु सेइ दुइ नरे * सुग्रीव मारुति आर मुख्य कपिवरे
आपनि मंगल-चिन्ता करिया आमार * गृहे थाकि सीता लये करुन विहार १६
तबे बलाध्यक्ष करि सेनार साजन * दशानन आगे आसि कैल निवेदन
ताहा शुनि प्रणाम करिया दशानने * वज्रदंष्ट्र वीर यात्रा करिलेक रणे
करिल विविध मते मंगलाचरण * वान्धिलेक निज अंगे अनेक रक्षण
परिलेक अंगे साना माथाय टोपर * पृष्ठेते बान्धिल तूण पूरि तीक्ष्ण शर

कुछ भय का संचार हुआ। मन ही मन उसने विवेचन किया और इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि युद्ध के बिना हित नहीं। सामने वज्रदंष्ट्र निशाचर को देखकर उससे रावण आदरपूर्वक कहने लगा, वज्रदंष्ट्र! तुम रण में विचक्षण हो। तुम्हारे समकक्ष वीर इस संसार में नहीं। समर में यदि तुम धनुष लेकर खड़े हो जाओ तो स्वयं इन्द्र भी सामना करने से डरेगा। तुम्हारी सहायता से मैंने रण में अनायास ही देवताओं को पराजित किया था। दूसरे की क्या चर्चा करूँ तुम्हारी सहायता से मैंने सर्व-नाशक यमराज पर भी अनायास विजय प्राप्त की थी। तुम ही सेनापति बन कर युद्ध में जाओ और राम, लक्ष्मण और सुग्रीव का वध करके चले आओ ॥ १५ ॥

इतना सुनकर वज्रदंष्ट्र निशाचर ने प्रणाम कर रावण से कहा, महाराज! मैं रण को चला, आप आनन्द से अपने भवन में रहें। मैं आपके शत्रु दोनों मानवों का वध करूँगा—सुग्रीव, मारुति जैसे मुख्य-मुख्य वानरों का भी। आप मेरी मंगल-कामना करते हुए घर पर रह कर सीता के साथ विहार करें ॥ १६ ॥

सेनापति ने सेना को सज्जित कर दशानन के सम्मुख आकर निवेदन किया। सुनकर दशानन को प्रणाम कर वीर वज्रदंष्ट्र ने रण के लिए प्रस्थान किया। तरह-तरह का मंगलाचरण किया और अपने अंगों पर कवच चढ़ा लिया। बदन पर दुर्भेद्य कवच पहन लिया और सिर पर शिरस्त्राण। पीठ

आर नाना अस्त्र शस्त्र करिला बन्धन ॐ रथेर उपरे गिया कैल आरोहण
किवा तार रथ अति मनोहर हय ॐ अलंकृत दिव्य दिव्य घोटके वहय
तार रथ दुइ दिके जाय मनोरम ॐ द्विसहस्र सप्तति संख्यक तुरंगम
घोड़ार पश्चाते दुइ सहस्र सप्तति ॐ जाइतेछे मदमत्त हाती मन्दगति
मध्येते याइछे वज्रदंष्ट्र दिव्य रथे ॐ एक लक्ष धनुर्द्धर जाय अग्रपथे
आर कत ढाली शूली तोमरी खर्परी ॐ जाइतेछे रथे गजे घोटकेते चड़ि
बाजितेछे सहस्र सहस्र रणभेरी ॐ निनाद छाड़ये घोड़ा हाती वेरि वेरि
सेइ सब शब्दे लंका करि दलमाल ॐ रणे जाय वज्रदंष्ट्र येन महाकाल१७
जाइते जाइते देखे नाना अमंगल ॐ अग्रेते पड़ये तार उल्का झलमल
मुख दिया अग्निशिखा करिया वमन ॐ शिवा सब करितेछे अशिब निःस्वन
रथेर घोड़ार नेत्रे पड़े अश्रुजल ॐ पुनः पुनः त्याग करे तारा मूत्रमल
ताहा देखियाओ वज्रदंष्ट्र अशंकित ॐ कहितेछे सैन्यगणे अत्यंत गर्व्वित
अमंगल देखि केह ना करो चिन्तन ॐ अतिमन्द शुभकर, कहे सर्व्वजन
आर शुन, कि करिवे एइ अमंगले ॐ सब अमंगल विनाशिव बाहुवले

कर पैने वाणों से भरा तरकस बाँध लिया। और भी तरह-तरह के अस्त्र-शस्त्र से वह लैस हो गया। रथ पर जाकर वह सवार हो गया। उसका रथ वड़ा ही दिव्य और मनोहर है जिसको अलंकारों से सुसज्जित घोड़े खींच रहे हैं। उसका रथ दोनों दिशाओं में जाने वाला रथ है। साथ में दो हजार सत्तर घुड़सवार चले और घोड़ों के पीछे दो हजार सत्तर मदमत्त हाथी मन्दगति से चले। बीच में वज्रदंष्ट्र दिव्य रथ पर सवार चल पड़ा। अग्रपथ पर एक लाख धनुर्धर चल पड़े। कितने ही ढाली, शूली, तोमरी और खर्परी सैनिक रथ-गज और अश्व पर सवार चल पड़े। हजारों रणभेरियाँ बजने लगीं। घोड़ा और हाथी बार-बार हिनहिनाने और चिंघाड़ने लगे। इन सब शब्दों से लंका को आन्दोलित करता हुआ वज्रदंष्ट्र रण के लिए महाकाल की तरह चल पड़ा ॥ १७ ॥

चलते समय उसने अमंगल-सूचक विभिन्न लक्षण देखे। उसके सामने आग उगलती हुई उल्का गिरी। सियार अमंगल-जनक ध्वनि करने लगे। रथ के घोड़े की आँखों से आँसू टपकने लगे। और वे बार-बार मल-मूत्र त्याग करने लगे। यह देखकर भी वज्रदंष्ट्र निडर बना रहा और अपनी सेना से सगर्व कहने लगा, अमंगल देखकर चिन्ता मत करो। सभी लोगों का कहना है कि बहुत बुरे लक्षण भी शुभंकर होते हैं। और यह भी सुन लो, यह अमंगल हमारा क्या बिगाड़ सकते हैं, मैं तो बाहुबल से इन अमंगलों का नाश करूँगा।

देखिवि सकले तोरा विक्रम आमार ❊ राजार सकल शत्रु करिव संहार
आजि मोर वाणहत कपिर आमिषे ❊ निशाचर पिण्ड दिवे वान्धवे हरिषे
आमिह बधिया सुग्रीवादि कपिगणे ❊ भक्षण करिव निजे श्रीराम लक्ष्मणे
ब्रज्रदंष्ट्र नाम मोर बज्र हेन दाड़ ❊ चर्व्वण करिब आमि ताहादेर हाड़
तोरा सबे भय तजि चलह समरे ❊ शत्रुवध करि शीघ्र फिरि जाब घरे
एत कहि बज्रदंष्ट्र सैन्य हुहुंकारे ❊ उपनीत हैल आसि उत्तरेर द्वारे१८

तबे देखि ताहारे, सेइत द्वारे प्लवंगमगण।
तारा, तरुशिखरी करेते धरि रहे सुखिमन॥
ताहा निरखि तारा, मेघेर धारा, हेन बर्षे वाण।
ताहे वानर गणे, विन्धि सघने, कैला खान खान॥
तबे कुपित मति, वानर तति वृक्षशिला मारि।
करे कुलिश दन्त, सेनार अन्त, गभीर हाँकारि॥
ताहे त्रासित मन, कौणपगण पलायन करे।
ताहा देखि दुरन्त, वजरदन्त, वरिषये शरे॥
तार वाणेर तूणे, धनुक गुणे, कर्ण वारे वारे।
कर, भ्रमण करे, केह ताहारे, लक्षिते ना पारे॥

तुम सब लोग मेरा पराक्रम देख लेना, राजा के सारे शत्रुओं का मैं संहार करूँगा। आज मेरे वाणों से मरे कपियों के माँस से, निशाचर अपने पुरखों को पिंड चढ़ाएँगे। मैं सुग्रीव आदि कपियों का निधन कर स्वयं श्रीराम और लक्ष्मण का भक्षण करूँगा। मेरा नाम वज्रदंष्ट्र है, वज्र जैसे कठोर मेरे दाँत हैं—मैं उन लोगों की हड्डियाँ चबा लूँगा। तुम लोग सारा भय त्याग कर युद्ध में चलो, झटपट युद्ध समाप्त कर घर लौट आना है। इतना कहकर वज्रदंष्ट्र ने सैन्य में हुँकार मारी और उत्तरी द्वार पर वह पहुँच गया॥ १८॥

तब उसको द्वार पर देखकर वानर-समूह हाथों में वृक्षों की चोटियाँ थामे बहुत आनन्दित हुआ। यह निरख कर ये लोग वर्षा की धारा जैसे वाण बरसाने लगे जिससे वानर लोग आहत होकर टुकड़े-टुकड़े होने लगे। तब क्रोध में आकर कपि-समूह वृक्ष और शिला फेंक-फेंक कर मारने और कुलिशदन्त की सेना का अन्त करने लगे। इससे घबड़ाकर राक्षस भागने लगे तो वज्रदन्त ने वाण बरसाना शुरु कर दिया। उसका हाथ कभी तो तूण के तीरों पर, तो कभी धनुष की डोरी पर इतनी तेजी से चलने लगा कि दृष्टि में न आता था। उसके वाणों से सभी वानर बेहाल होने लगे—उनके खून

तार शर-निकरे, यत वानरे, जर्ज्जर करिल ।
ताहे, रुधिर धारे, रणभितरे तटिनी हइल ॥
ताहे, प्राण छाड़िया,जाय भासिया, भल्ल कपिगण ।
ताहे काक शृगाली, टानिया तुलि, करये भक्षण ॥
सेइ वजरदन्त, शरेते अन्त देखि आत्मकूले ।
यत वानर वृन्द त्यजिया द्वन्द्व, भागे सिन्धुकूले ॥
ता'हा करिया दृष्ट, हइया रुष्ट, कपि चूड़ामणि ।
निजे, चलिला रणे, करि सघने, घोर सिंह ध्वनि ॥
शुनि, सेइ त रव, कौणप सव, मूर्च्छित हइल ।
कत घोटक करी भूमिते पड़ि, चीत्कार करिल ॥
परे तारे देखिया, त्रास पाइया, वज्रदंष्ट्र सेना ।
तारा पलाये जाय, पाछे ना चाय (वारण) शोनेना ॥
तबे ताहा निरखि, मनेते रोखि ब्रज्रदंष्ट्र वीर ।
सेइ तपनसुते अतिवेगेते, विन्धे बहुतीर ॥
ताहे कुपित मति, कपिर पति, चपेट प्रहारे ।
तार वाम डाहिने, घोटक गणे निला यमद्वारे ॥
आर दुइ पाशेते, सारिक्रमेते, यत करी छिल ।
मारि गाछेर वाड़ि, यमेर वाड़ी, तादिगे प्रेरिल ॥
परे शाल उपाड़ि, घूर्णित करि तपनकुमार ।
सेइ वज्रदशन प्रतिक्षेपण कैल हुहुंकार ॥

से नदियाँ वहने लगीं जिनमें कपि और रीछ वहने लगे। कौवे और सियार उनको खींच कर नोच-नोच कर खाने लगे। उस वज्रदन्त के शरों से अपनी सारी विरादरी का अन्त होते देखकर युद्धक्षेत्र छोड़कर सब वानर समुद्रतट की ओर भागने लगे। यह देखकर घोर रोष में आकर कपियों के शिरोमणि सुग्रीव स्वयं रण में कूद पड़े और सिंहनाद करने लगे। वह निनाद सुनकर सारे निशाचर मूर्च्छित होने लगे। कितने ही घोड़े और हाथी जमीन पर लोट कर चिल्लाने लगे। फिर उसको देखकर वज्रदंष्ट्र की सेना भागने लगी। वे न तो पीछे पलट कर देखते और न निषेध मानते। यह देखकर वज्रदंष्ट्र मन में हौसला लाकर सूर्य-तनय सुग्रीव को वाणों से विंधने लगा। तेजी से उसने बहुत से वाण चलाये। इससे विगड़ कर वानर-पति ने जो झाँपड़ मारा तो दाहिने और वाएँ सारे घोड़े मर गये और दोनों वाजुओं में कतारों में लगे जितने हाथी थे उन पर पेड़ों से प्रहार कर उनको यमालय

सेइ रजनीचर, छाड़िया शर, शत परिमाण।
सेइ शाल तरुरे, काटिया पाड़े करि खानखान ॥
ताहा निरखि सूर्य्य-तनय शौर्य्य, करि प्रकाशन।
एक वृहत् शिला तुलिया निला पर्व्वत येमन ॥
तारे बजरदन्त, रथेर अन्त, करिते छाड़िल।
सेइ ताहा देखिया, रथ छाड़िया, भूमिते नामिल ॥
सेइ घोर पाषाणे, ताहार याने, सुग्रीव भांगिला।
आर घोटक साते ध्वज सहिते सारथि नाशिला ॥
परे एक तरुरे, धरिया करे, करिया घूर्णित।
सेइ बजरदंत, सेनार अन्त, कैल राममित ॥
तेंह गिरिर श्रृंग, करिया भंग, छाड़िया हुंकार।
वज्रदशन वीरे, मारिते परे, हैल आगुसार ॥
ताहा निरखि सेह, विकट देह, गदा घुराइया।
वीर तपनसुते, मारिला माथे, गर्ज्जन करिल ॥
किवा सुग्रीव शिरे, ठेकिया भरे, सेइ गदादण्ड।
एकि अश्रुत कथा, कर्कटी यथा, हैल शतखण्ड ॥
तबे कपि-भूपति, ताहार प्रति, सेइ गिरि-चूड़ा।
निज बाहुर जोरे, मारिया शिरे, करिलेन गुँड़ा ॥

भेज दिया। फिर सूर्य-कुमार ने एक शाल-वृक्ष उखाड़ कर उस वज्र-दशन की ओर घूमाते हुए फेंका। उस रजनीचर ने सैकड़ों वाण फेंक कर उस शाल-वृक्ष को खंड-खंड कर डाला। यह देखकर सूर्य-तनय ने शूरवीरता प्रदर्शित करते हुए एक वृहद् शिलाखंड उठा लिया जो पर्वत के आकार का था। उससे वज्र-दन्त का रथ चूर्ण-विचूर्ण हो गया और वह रथ छोड़ कर भूमि पर उतर आया। उस भयानक पाषाण के आघात से अपनी ध्वजा के साथ रथ, उसका घोड़ा और सारथी का विनाश हुआ। बाद में एक वृक्ष को हाथ में लेकर घुमाते हुए राम-मित्र ने वज्रदन्त की सेना का नाश करना आरम्भ कर दिया। फिर एक पर्वत का शिखर उखाड़ कर हुँकार करते हुए वह वज्र-दशन को मारने के लिए बढ़ा। यह निरख कर उस वीर ने गरजते हुए सूर्य-पुत्र के सिर पर विकटाकार गदा दे मारा। लेकिन आश्चर्य की बात है कि सुग्रीव के सिर से टकराकर वह गदा ककड़ी के फल की तरह खंड-खंड हो गया; और वानर-राज ने वह गिरि-शिखर उसके सिर पर मार कर उसको चूर्ण-चूर्ण कर दिया। लहूलुहान होकर वीर, भूमि पर जा

ताहे रुधिर धार, बदने तार, वहे अनिवार।
सेह पड़िल भूमे, देखिते यमे, गेल प्राण तार॥
तवे वज्रदशन, पाइल मरण, देखि तार सेना।
तारा, त्रासित हये, जाय पलाये, फिरिया चाहे ना॥
तवे समर जिति, रावण पति, करि सिंहनाद।
दिल आपन सखा, निकटे देखा मनेते आह्लाद॥
शुनि ताहार वाणी, श्री रघुमणि, करि प्रशंसन।
दिला वाहु पसारि, हृदय भरि, तारे आलिंगन॥ १९

प्रहस्तेर युद्ध ओ पतन

एखानेते भग्नदूत जाइया लंकाय * वज्रदंष्ट्र मृत्युकथा कहिला राजाय
वज्रदंष्ट्र पड़े रणे रावण चिन्तित * बलिया प्रहस्त मामा डाकिल त्वरित
रावण वले मामा तुमि राज्येर ठाकुर * तिन कोटि वृन्द ठाट तोमार प्रचुर
तुमि आमि कुम्भकर्ण आर इन्द्रजित् * एइ कयजन आछि समरे पण्डित
विशेष अधिक तुमि जानि चिरदिन * करिया अनेक युद्ध हयेछ प्रवीण
प्रतापे प्रचण्ड ताहे जान वहु सन्धि *श्रीराम लक्ष्मणे आन हाते गले बान्धि २०
रावणेर कथा शुनि प्रहस्तेर हास * श्रीराम लक्ष्मणे रणे करिब विनाश

गिरा और यमलोक चला गया। फिर वज्रदशन की मृत्यु हो गई सुनकर उसकी सेना त्रास से भागने लगी और पीछे पलट कर भी नहीं देखा। समर में जीत कर वानरपति ने सिंहनाद किया और अपने मित्र राम के सम्मुख सोल्लास जा पहुँचा। उसकी वातें सुनकर रघुमणि ने भूरि-भूरि प्रशंसा की और वाँहें पसार कर उसको आलिंगन-बद्ध कर लिया॥ १६॥

प्रहस्त का युद्ध और पतन

इधर भग्नदूत ने लंका में जाकार राजा रावण से वज्रदंष्ट्र की मृत्यु के वारे में बताया। वज्रदष्ट्र रण में काम आया सुनकर रावण चिन्तित हो उठा। उसने प्रहस्त मामा को पुकारा। कहा, मामा तुम राज्य में सभी के पूज्य हो, तुम्हारे अधीन तीन करोड़ वृन्द सेना मौजूद है। तुम, मैं, कुम्भकर्ण और इन्द्रजीत—यही चारजने युद्ध में पंडित हैं। खासतौर से तुमने कई युद्ध किये हैं, अत: युद्ध में प्रवीण भी हो। प्रचंड पराक्रमी और काफी कला-कौशल में भी दक्ष हो। श्रीराम-लक्ष्मण को गला धरकर बाँध लाओ॥ २०॥

रावण की वातें सुनकर प्रहस्त हँसने लगा। श्रीराम-लक्ष्मण का विनाश मैं रण में करूँगा। मेरे रहते हुए क्यों किसी दूसरे को भेजते हो। अभी

आमि आछि रणे केन प्रेर अन्यजने ॥ एखनि धरिया दिव श्रीराम लक्ष्मणे
आगे आमि तोमारे बलेछि युक्ति सार ॥ सीता नाहि दिव युद्ध करिब अपार
अ-वानर अ-राम करिव धरातल ॥ दशानन बले, मामा, जानि तव बल
अष्ट अंगे पर मामा रत्न अलंकार ॥ युद्ध जिनि एले मामा सकलि तोमार२१
रावणेर कथा केह लंघिते ना पारे ॥ ससैन्य प्रहस्त जाय युद्ध करिवारे
चारि वीर अग्रे जाय हाते धरि धनु ॥ यज्ञधूम महानाद कोपन महाहनु
देवगण स्थिर नहे याहार विवादे ॥ हेन सव वीर धाय संग्रामेर साधे
साजिया आइल सैन्य प्रहस्तेर पाश ॥ सवारे प्रहस्त वीर दितेछे आश्वास
राम लक्ष्मणेर आजि अवश्य मरण ॥ शकुनि गृधिनी उड़े ढाकिल गगन
प्रहस्तेर सैन्ये दशदिक् अन्धकार ॥ मार मार करिया चलिल पूर्व्वद्वार
दुइ सैन्ये मिशामिशि दृढ़ बाजे रण ॥ नाना अस्त्र गाछ पाथर करे वरिषण२२
प्रहस्तेर सेनापति मुख्य चारिजन ॥ हाते धनु आइल ये करिवारे रण
युझिवार काज थाक देखि चारि वीर ॥ भंग दिल् वानर संग्रामे नहे स्थिर
पूर्व्व द्वारे दृढ़तर हैल गण्डगोल ॥ तिन द्वारे थाकि शुने कटकेर रोल

श्रीराम-लक्ष्मण को पकड़ कर ला दूँगा। मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि सीता को नहीं दूँगा और घमासान लड़ाई लड़ूँगा। धरती को वानर-शून्य और श्रीरामचन्द्र-शून्य वना दूँगा। दशानन ने कहा, मामा तुम्हारी शक्ति के वारे में मैं भलीभाँति जानता हूँ। तुम आठों अंगों में अलंकार पहन लो मामा ! युद्ध जीत कर लौटने पर सभी कुछ तुम्हारा है ॥ २१ ॥

रावण की वात को कोई टाल नहीं सकता है। अपनी सेना के साथ प्रहस्त लड़ने के लिए चला। चार वीर हाथों में धनुष लेकर आगे-आगे चले— यज्ञधूम, महानाद, कोपन और महाहनु। जिनके साथ संग्राम में देवता भी स्थिर नहीं रह पाते ऐसे ये चारों वीर संग्राम करने के लिए लपके। सारा कटक सुसज्जित होकर प्रहस्त के पास आया। सभी को प्रहस्त वीर आश्वासन देन लगे। आज तो राम-लक्ष्मण को निश्चित रूप से मरना है। गिद्ध और चीलों ने आकाश ढक लिया है। प्रहस्त की सेना के अभियान से दशों दिशाएँ अन्धकारमय हो गईं। मार-मार शब्द करते हुए वे पूर्वी द्वार की ओर चल पड़े। दोनों सेनाएँ आपस में घुलमिल गईं और घमासान रण ठन गया। तरह-तरह के हथियार, पेड़ और पत्थरों की वर्षा होने लगी ॥ २२ ॥

प्रहस्त के जो चार मुख्य सेनापति थे वे हाथों में धनुष लेकर युद्ध करने आये। चार वीरों को देखकर युद्ध करना तो दरकिनार, सारे बन्दर भाग खड़े हुए। पूर्वी द्वार पर घनघोर कोलाहल होने लगा। तीन द्वारों पर वानरों

तिन द्वारे चारि वीर आछिल प्रधान ❊ महेन्द्र देवेन्द्र ये अंगद हनुमान
पूर्व्व द्वारे चारि वीर आइल शीघ्रगति ❊ नीलेर सपक्ष हैल चारि सेनापति
चारि वीर आसि करे वृक्ष वरिषण ❊ भंग दिल राक्षस सहिते नारे रण
प्रहस्तेर चारि वीर देखि दूर हैते ❊ रणेते प्रवेश करे धनुर्व्वाण हाते
महेन्द्र देवेन्द्र ओ अंगद हनुमान ❊ चारि वीरेर काड़ि निल धनु चारिखान
हाँटुर चापान दिया चारि धनु भाँगे ❊ मालसाट दिया गेल चारि वीर आगे
कुपिया अंगद वीर छाड़े सिंहनाद ❊ लाथिर चोटे मारिल राक्षस महानाद २३
महाहनू हनूमाने दोंहे बाजेरण ❊ महाहनू चेपे धरे पवननन्दन
करिया पाथालि कोला लये गेल दूर ❊ कपटे कहिछे हनू वचन मधुर
तोर नाम महाहनू आमि हनूमान ❊ मितालि करिव नाम मिलिल समान
हइ मिता छोट वड़ के हय केमन ❊ वारेक करिया युद्ध बुझिब दुजन
शुनिया त महाहनू बलये तरासे ❊ मित्र सने युद्ध करा युक्ति ना आइसे
हनूमान बल, कर वाचिबार आश ❊ तिलेक विलम्ब नाहि करिब विनाश
राक्षसेर संगे मोर किसेर मितालि ❊ वज्रमुष्टि मारिया भांगिब माथार खूलि

को वह कोलाहल सुन पड़ा। तीन द्वारों पर चार प्रधान वीर थे—महेन्द्र, देवेन्द्र, अंगद और हनुमान। चारों वीर तुरन्त शीघ्रगति से पूर्वी द्वार पर चले आये। नील के पक्ष में चार सेनापति आ गये। चारों वीरों ने आकर वृक्ष फेंकना शुरू कर दिया तो राक्षसों के पैर उखड़ गये, रण से भाग खड़े हुए। दूर से दिखाई पड़ा कि धनुष-बाण हाथों में लेकर प्रहस्त के चार वीर रणक्षेत्र में प्रवेश कर रहे हैं। महेन्द्र, देवेन्द्र, अंगद और हनुमान—इन चारों ने उन चार वीरों के हाथों से धनुष छीन कर उनको घुटनों के नीचे दबाकर तोड़ डाला। ताल ठोकते हुए चारों वीर आगे बढ़ गये। अंगद वीर ने क्रोध से सिंहनाद किया और एक ही पदाघात से राक्षस महानाद को मार डाला ॥ २३ ।

महाहनु और हनुमान में अब घनघोर लड़ाई छिड़ गई। महाहनु को पवननन्दन ने धर दबाया। उसको दोनों बाहों से गोद में उठाकर वह दूर ले गये। कपट से हनुमान मधुर वचन बोलने लगे, तुम्हारा नाम महाहनु है और मेरा नाम हनुमान है; दोनों हमनाम हैं इसलिए हम एक दूसरे के मित्र बन जाएँ। दोनों मित्र हैं लेकिन कौन छोटा है और कौन बड़ा है यह जानने के लिए हमलोग लड़ेंगे। सुनकर महाहनु ने भय से कहा, मित्र से युद्ध करना तो उचित नहीं होगा। हनुमान ने कहा, तू जीने की आशा लगाये हुए है, रुक, क्षणभर की देर नहीं, तेरा विनाश करता हूँ। राक्षस के साथ भला मेरी

एत वलि हनूमान कसे मारे चड़ ❋ भूमे पड़े महाहनू करे धड़ फड़ २४
महाहनू पड़िल रुषिल यज्ञधूम ❋ प्रवेशिल रणे येन कालान्तक यम
कुपिल महेन्द्र वीर सुषेणनन्दन ❋ दीर्घ एक शाल गाछ उपाड़े तखन
एड़िलेक शाल गाछ दिया हुहुंकार ❋ रथ सह यज्ञधूम हैल चूरमार २५
यज्ञधूम पड़े रणे, रुषिल कोपन ❋ रुषिल देवेन्द्रवीर सुषेण नन्दन
युड़िल कोपन वीर तिन शत शर ❋ विन्धिया देवेन्द्र वीरे करिल जर्ज्जर
कुपिया देवेन्द्र वीर करिल उठानि ❋ पर्व्वतेर चूड़ा धरि करे टानाटानि
दुइ हाते उपाड़िल गाछ ओ पाथर ❋ गाछ पाथर लये वीर धाइल सत्वर
झञ्झना पड़ये येन गाछ पाथर हाने ❋ पड़िल राक्षस वीर दुर्ज्जय कोपने
चारि सेनापति पड़े प्रहस्त ता देखे ❋ संधान पूरिया आइल चारि वीर आगे
प्रहस्तेर रणे देवगण कम्पमान ❋ महेन्द्र देवेन्द्र भागे भागे हनूमान
पूर्व्वद्वार खान सेई नील वीर राखे ❋ भांगिल कटक सब नील ताहा देखे
नील बले, प्रहस्त, तोर बाड़ियाछे आश ❋ अवश्य आजिके तोरे करिव विनाश
रुषिया प्रहस्त बले, ओरे बेटा नील ❋ पाठाइबे यमालये मेरे एक कील

मित्रता कैसी। वज्र जैसा मुक्का मार कर तेरा खोपड़ा चूर-चूर कर दूँगा। इतना कहकर हनुमान ने उसको एक झाँपड़ मारा। महाहनु जमीन पर गिर कर तड़पने लगा ॥ २४ ॥

महाहनु के गिरते ही यज्ञधूम क्रोधित हो उठा। कालान्तक यम के समान उसने रणक्षेत्र में प्रवेश किया। इधर सुषेण का बेटा महेन्द्र वीर भी क्रोधित हो गया। उसने एक बड़ा सा शाल-वृक्ष उखाड़ लिया और हुँकार करते हुए उसे दे मारा। रथ-सहित यज्ञधूम चूर-चूर हो गया ॥ २५ ॥

यज्ञधूम के गिरते ही कोपन बेहद कुपित हुआ। उधर सुषेण-नन्दन वीर देवेन्द्र भी रोष से भर गया। वीर कोपन ने तीन सौ बाण फेंके जिनसे वीर देवेन्द्र का शरीर छलनी बन गया। रोष से वीर देवेन्द्र उठ खड़ा हुआ और पर्वत का एक शिखर लेकर खींचातानी करने लगा। दोनों हाथों से पेड़ और पत्थर उठाकर तेजी से दौड़ पड़ा। इस प्रकार पेड़ और पत्थर गिराने लगा मानों आँधी आ गयी हो। दुर्जय राक्षस वीर कोपन रणक्षेत्र में ढेर हो गया। प्रहस्त ने देखा कि उसके चारों वीर खेत रहे तो वह धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाये चारों वीरों के सम्मुख आ गया। प्रहस्त के युद्ध से देवता भी काँपने लगे। महेन्द्र और देवेंद्र भागने लगे, हनुमान के भी पैर उखड़ गये। पूर्वी द्वार की रक्षा का भार वीर नील पर था। नील ने यह देखा कि उनकी सेना के पैर उखड़ रहे हैं। नील बोल पड़ा, अरे प्रहस्त! तूने मन में बड़ी आशा बाँध रखी है,

एत यदि दुइ वीरे हैल गालागालि ❀ दुइजने युद्ध बाजे दोंहे महाबली
तिन शत वाण वीर युड़िल धनुके ❀ सधान पूरिया मारे नील वीर बुके
वाण खेये नील वीर करिल उठानि ❀ पर्व्वतेर चूड़ा धरि करे टानाटानि
दश योजन आने वीर पर्व्वतेर चूड़ा ❀ प्रहस्तेर माथाय मारिया कैल गुँड़ा
प्रहस्त पड़िल रणे लागे चमत्कार ❀ भग्नदूत रावणे जानाय समाचार
प्रहस्त पड़िल वार्त्ता शुन लंकेश्वर ❀ रावण वले काल हैल नर ओ बानर
रावण वले, ये ये वीर धनु धरिते जाने ❀ छोट बड़ राक्षस चलुक मोर सने
सेनापति पड़िल राज्येर चूड़ामणि ❀ आर कारे पाठाइब जाइब आपनि२६

रावणेर प्रथम दिवसेर युद्धे गमन

रावणेर छत्रिश कोटि प्रधान सेनापति ❀ साजिया चलिल सबे रावण संहति
भाइ भाइपो आदि कुमार भागे नड़े ❀ हाती घोड़ा आदि ठाट नड़े मुड़े मुड़े
युझिवार तरे नड़े राजा से रावण ❀ सर्व्वांग भूषित करे नाना आभरण
मेघेते चपला येन गलाय उत्तरी ❀ लेपिलेक मृगमद सुगन्धि कस्तूरी

आज मैं अवश्य ही तेरा विनाश करूँगा। रुष्ट होकर प्रहस्त ने कहा, अरे अभागे नील, एक मुक्का मार कर मैं तुझको यमालय भिजवा दूँगा। इतना गाली-गलौज हो जाने के बाद दोनों महावलियों में युद्ध छिड़ गया। प्रहस्त ने धनुष में तीन सौ वाण लगाकर निशाना साधकर नील के सीने पर फेंका। वाण खाकर नीलवीर उछल पड़ा और एक पर्वत की चोटी पकड़ कर खींचने लगा। महावली ने दश योजन वाला पर्वत का शिखर लाकर प्रहस्त के सिर पर दे मारा। प्रहस्त का सिर टूटकर चकनाचूर हो गया। प्रहस्त को युद्धक्षेत्र में वीरगति प्राप्त हुई, यह सुनकर सभी को चमत्कार सा लगा। भग्नदूत ने जाकर रावण को समाचार सुनाया कि प्रहस्त का पतन हुआ है। रावण ने कहा, यह नर और वानर मेरे काल वन गये। ललकार कर कहा, जो भी धनुप पकड़ना जानता हो ऐसे छोटे-बड़े सभी राक्षस मेरे साथ चलें। राज्य का सर्वश्रेष्ठ सेनापति युद्ध में गिरा, अब किसे भेजूँ, स्वयं ही चलता हूँ ॥ २६ ॥

रावण के प्रथम दिवस की युद्ध-यात्रा

रावण के छत्तीस करोड़ मुख्य सेनापति सुसज्जित होकर रावण के साथ चल पड़े। भाई-भतीजे जितने राजपुत्र थे सब लोग चल पड़े—हाथी-घोड़ों का विशाल दल भी साथ-साथ चला। युद्ध करने के लिए राजा रावण ने निश्चय किया, तो सारे अंगों को आभूषणों से सुसज्जित किया। गले में ऐसा दुपट्टा डाला मानों बादलों में बिजली चमक रही हो। मृगमद और सुगन्धित

दशभाले दशमणि करे झलमल ※ चन्द्र सूर्य्य जिनि शोभे कर्णेर कुण्डल
रावणेर रथखान साजाय सारथि ※ नाना रत्न मणि मुक्ता साजाइल तथि
कनके रचित रथ माणिकेर चाका ※ रत्नेर कलसे साजे नेतेर पताका
विचित्र निर्म्माण रथ साजाय सुन्दर ※ रथेर उपरे उठे राजा लंकेश्वर
खाण्डा टांगी शेल शूल मुषल मुद्‌गर ※ नानाजाति अस्त्र तुले रथेर उपर
गदा लये जाय केह केह वा कामान ※ विचित्र निर्म्माण करे लये धनुर्व्वाण
हस्ती अश्व ठाट कटक चले मुड़े मुड़े ※ विंशति योजन पथ सैन्य आड़े जोड़े
कटकेर पदभरे काँपिछे मेदिनी ※ रावणेर वाद्य भाण्ड सात अक्षौहिणी
एक लक्ष दगड़, दुलक्ष करताल ※ दुसहस्र घण्टा वाजे मृदंग विशाल
भेउरी झाँझरी वाजे, तिन लक्ष काड़ा ※ चारि लक्ष जयढाक, छय लक्ष पड़ा
बाजिल चौरासी लक्ष शंख आर वीणे ※ तिन लक्ष तासा बाजे दामामार सने
ढेमचा खेमचा वाजे, दुइ लक्ष ढोल ※ तिन लक्ष पाखोयाज विस्तर मादल
जयढाक रामकाड़ा बाजे जगझम्प ※ पाखोयाज आदि बाजे त्रिभुवने कम्प
वाजिल राक्षस ढाक पञ्चाछ हाजार ※ दुन्दुभि तुम्बूर शिगा संख्या कराभार
खञ्जनी खमक बाजे सेतार तवोल ※ प्रलयेर काले येन उठे गण्डगोल

कस्तूरी का लेपन किया। दश माथों पर दश रत्न झलमलाने लगे। कानों में कुंडल चन्द्र-सूर्य जैसे चमकने लगे। रावण का रथ सारथी ने विभिन्न हीरे-जवाहरात से सजाया। कनकनिर्मित उस रथ में माणिक्य के बने पाहए थे। ध्वजा रत्न-कलश से सुशोभित की गई। सुन्दर रूप से सुसज्जित उस विचित्र आकार के रथ पर राजा लंकेश्वर बैठा। रथ में खड्ग, फरसा, शेल, शूल, मूसल, मुद्‌गर आदि विभिन्न प्रकार के अस्त्र-शस्त्र लादे गये। कोई तो गदा लेकर चल पड़ा तो कोई कमान और धनुष-बाण-धारी सेना ने व्यूह का निर्माण किया। हाथी, घोड़ा और पैदल सेना झूम-झूम कर आगे बढ़ने लगी और बीस योजन का पथ उन लोगों ने घेर लिया। कटक के पदचाप से धरती थर्राने लगी। रावण के रणवाद्य-वादकों का दल ही सात अक्षौहिणी के समान है। एक लाख नगाड़े, दो लाख करताल, दो हजार घंटे और विशाल मृदंग बजने लगे। झाँझरी, मंजीरा बजने लगे, तीन लाख डफली भी। चार लाख डंका और छह लाख धौंसा भी बज उठे। शंख और वीणा मिलाकर चौरासी लाख बाजे बजने लगे। तीन लाख ताशा दुंदुभी के साथ बजने लगे और दो लाख ढोल भी। तीन लाख पखावज और असंख्य मादल भी। जयडंका, रामकाड़ा, जगझम्प, पखावज आदि के शब्द से त्रिभुवन काँपने लगा। तुरही, सींगी असंख्य बजने लगीं, खंजरी, सितार, तबला के शब्द से

तुरी भेरी रणशिंगा वार लक्ष वाँशी ✱ दगड़े रगड़ दिते दश लक्ष काँसी
टिकारा टंकार आर चौताल मोचंग ✱ वाद्य शुने वानरेर वेड़े गेल रंग
तिन कोटि वृन्द ठाटे साजिल रावण ✱ शतकोटि रवि जिनि रथेर किरण
रत्नमय कलसे पताका सारि सारि ✱ संग्रामेते साजिल लंकार अधिकारी २७
रावण करिल यदि रथे आरोहण ✱ भय पेये मन्द मन्द वहिछे पवन
रवि हैल मन्द तेज ढाकिया किरण ✱ सशंकित स्वर्गेर सकल देवगण
धनुक धरिते जाने यत निशाचर ✱ रावणेर संगे चले करिते समर
राक्षसेर सिंहनाद, धनुक टंकार ✱ पश्चिमे द्वारेते जाय करि मार मार
मणिमय मुकुट शोभिछे दशमाथे ✱ त्रिभुवनविजयी धनुक वाण हाते २८
सैन्य देखे दशानन दाण्डाइया रथे ✱ विभीषणे जिज्ञासा करेन रघुनाथे
शतकोटि रविशशि जिनिया किरण ✱ वल देखि संग्रामे आइल कोन जन
विभीषण वले, रणे आइल दशानन ✱ ज्येष्ठ भाइ आमार विजयी त्रिभुवन
ब्रह्मार निर्म्मित रथ वहुरूप धरे ✱ तुष्ट हये देवगण दिला धनेश्वरे
कुबेरे जिनिया रथ निलेक रावण ✱ आसियाछे सेइ रथे करि आरोहण

लगा कि प्रलय के समय का कोलाहल सुनाई पड़ रहा है। दस लाख घड़ियाल और वारह लाख वाँसुरी वजने लगीं। वाजे की आवाज सुनकर वन्दरों में मस्ती आ गई। तीन करोड़ वृन्द सेना के साथ रावण सुसज्जित हुआ। शतकोटि सूर्य की किरणों के समान उज्वल रथ पर रत्नमय कलशों में पंक्तियों में लगी पताकाएँ फहराने लगीं। लंका का अधिकारी इस प्रकार युद्ध में सुसज्जित हुआ ॥ २७ ॥

रावण ने रथ पर आरोहण किया तो पवन भी डर कर मन्द-मन्द चलने लगा। रवि का प्रकाश भी धीमा पड़ गया और स्वर्ग के समस्त देवता शंकित हो उठे। जितने भी निशाचर धनुष पकड़ना जानते हैं, रावण के साथ समर पर चल पड़े। धनुष का टंकार हुआ। राक्षस मार-मार शब्द से सिंहनाद करते पश्चिमी द्वार की ओर चल पड़े, दश शिरों पर मणिमय मुकुट और त्रिभुवन-विजयी रावण के हाथों में धनुष-वाण शोभायमान है ॥ २८ ॥

रथ पर खड़ा दशानन अपनी सेना का परिदर्शन कर रहा था। रघुनाथ ने विभीषण से पूछा, शतकोटि रवि-शशि की किरणों से अधिक दीप्तिमय यह कौन है जो आज संग्राम में आया है। विभीषण ने कहा, रण में आज दशानन आया है जो मेरा त्रिभुवन-विजयी वड़ा भाई है। यह ब्रह्मा का वनाया रथ है जो वहुत सी आकृतियों को धारण करता है। देवताओं ने सन्तुष्ट होकर धनेश्वर को दिया था। कुबेर को जीत कर रावण ने यह रथ ले लिया।

कोटि सूर्य्य जिनिया सौन्दर्य्य खरतर ※ रथेर किरण कत देख रघुवर
कृत्तिवास पण्डितेर कवित्त्व सुन्दर ※ राम-रावणेर युद्ध शुनि अतः पर २९

रावण-सैन्येर परिचय

कहितेछे विभीषण, रथे देख नारायण, छत्रदण्ड धरे देवगण।
कपालेते दशमणि, दीप्त येन दिनमणि, ऐ राजा लंकार रावण॥
हासि रघुनाथ कन, चिनिलाम दशानन, योग्य बटे लंका अधिकारी।
कुबुद्धि एमन केने, देवकन्या केन आने, परनारी केन करे चुरि॥
पाइया ब्रह्मार वर, नाम धरे लंकेश्वर, देवमाया ना बुझे रावण।
आमि रावणेर यम, ना थाकिबे पराक्रम, मोर हाते सवंशे मरण॥
कहे सुमित्रानन्दन, एइकि राजा रावण, आर केबा उहार संहति।
हाते धनु सुरचित, ऐ पुत्र इन्द्रजित, संगेते उहार सेनापति॥
कुम्भ निकुम्भ दुजन, कुम्भकर्णेर नन्दन, संगे सैन्य आइल अपार।
शारदा चरण सेवि, वाल्मीकि ये महाकवि, रामायण करिल प्रचार३०॥

रावणेर प्रथम दिनेर युद्ध

विभीषण कहिछे लंकार समाचार ※ राम बले, विभीषण हओ आगुसार

उसी रथ पर सवार होकर आज वह आया है। हे रघुवर! इस रथ से निकलती हुई किरणें कितनी प्रखर और सौन्दर्य से पूर्ण हैं। कृत्तिवास पंडित का कवित्व दिव्य है। इसके बाद राम-रावण के युद्ध के बारे में सुनो॥ २९॥

रावण-सैन्य का परिचय

विभीषण कह रहा है, हे नारायण! माथे पर दशमणि लगाये दिनमणि सा ज्योतित वह राजा रावण है, जिसके सिर पर देवता छत्र पकड़े हैं। हँस कर रघुनाथ ने कहा, ठीक है दशानन को पहचान लिया, लंका के योग्य अधिकारी जैसा ही रूप-रंग है। लेकिन इसमें ऐसी कुबुद्धि क्यों आ गई कि देवकन्याओं को पकड़कर लाता है और परनारियों को चुराता है। ब्रह्मा का वर-दान पाकर लंकेश्वर कहलाता है किन्तु रावण देवताओं की माया को समझता नहीं है। मैं रावण का यम-स्वरूप हूँ, मेरे सम्मुख उसका पराक्रम जाता रहेगा और मेरे ही हाथों उसका सवंश निधन होगा। सुमित्रानन्दन ने कहा, क्या यही राजा रावण है और उनके साथ वे कौन हैं? हाथों में सुनिर्मित धनुष लिये वह उसका पुत्र इन्द्रजीत है—और साथ में उनके दो सेनापति हैं। कुम्भकर्ण के दो पुत्र कुम्भ और निकुम्भ अपार सेना के साथ आये हैं। महाकवि वाल्मीकि ने शारदा के चरणों की सेवा कर रामायण का प्रचार किया॥ ३०॥

रावण के प्रथम दिवस का युद्ध

विभीषण लंका का समाचार बखानने लगा। राम ने कहा, विभीषण

जिज्ञासा करिल यदि प्रभु रघुनाथ ※ कटक चिनाये देय तुलि डान हात
रावणेर धनु ओइ रतने खचित ※ राजार दक्षिणे ऐ कुमार इन्द्रजित
मेघ सम अंग, ताम्रवर्ण द्विलोचन ※ नागपाशे बेंधेछिल तोमा दुइजन
नगेन्द्र-देवेन्द्र-आदि रणे पराभव ※ कोटि-इन्द्र जिनि दशाननेर वैभव
एमन ऐश्वर्य आज हाराय रावण ※ तोमार संग्रामे ना बाँचिबे कोनजन ३१
रावणेरे देखिया सुग्रीव ज्वले कोपे ※ रुषिया सुग्रीव-राजा जाय वीरदापे
कुपिया सुग्रीव से पर्व्वते दिल टान ※ एकटाने उपाड़े पर्व्वत एक खान
घुराय पर्व्वतगोटा अतिशय रोषे ※ गर्ज्जिया हानिल वीर रावणे-उद्देशे
रावण कोपेते एड़े दशगोटा बाण ※ बाणे काटि पर्व्वत करिल खान-खान
व्यर्थ गेल पर्व्वत, सुग्रीव-राजा देखे ※ कोपेते रावण बाण जुड़िल धनुके
तिनशत बाण रावण जुडिल धनुके ※ गर्ज्जिया मारिल बाण सुग्रीवेर बुके
बाण खेये सुग्रीव सघने घुरे बुले ※ भाग्येते बाँचिल प्राण पूर्व्वपुण्यफले ३२
सुग्रीव हारिल यदि, पलाय बानर ※ कोपेते धनुक करे निला रघुवर
सन्धान पूरिया जान करिवारे रण ※ हेनकाले जोड़हाते बलेन लक्ष्मण
लक्ष्मण वलेन, प्रभु थाक तुमि ब'से ※ आमि मारि दशानने चक्षुर निमिषे

आगे बढ़ो। प्रभु रघुनाथ ने पूछा तो विभीषण दाहिना हाथ उठाकर सैन्य का परिचय कराने लगा। रत्न-खचित धनुष वाला तो रावण है और उसके दक्षिण में कुँवर इन्द्रजीत है जिसके शरीर का रंग बादलों सा है और आँखें ताम्रवर्ण हैं। उसीने तुम दोनों को नागपाश से बाँधा था। नगेन्द्र, देवेन्द्र आदि रण में उससे पराभव मान चुके हैं। कोटि इन्द्रों सा दशानन का वैभव है, ऐसा वैभव आज रावण गँवा रहा है। तुम्हारे साथ संग्राम में किसी के भी प्राण नहीं बचेंगे ॥ ३१ ॥

रावण को देखकर सुग्रीव क्रोध से तिलमिला उठा और वीरदर्प से आगे बढ़ गया। गुस्से में आकर सुग्रीव ने एक पर्वत को पकड़कर खींचा और समूचा पर्वत ही उखड़कर उसके हाथों में आ गया। समूचे पर्वत को उसने रोष से रावण के प्रति फेंका, तो रावण ने दश बाण चलाकर उस पर्वत को खंड-खंड कर दिया। सुग्रीव राजा ने देखा कि पर्वत फेंकना व्यर्थ गया। कुपित होकर रावण ने धनुष में तीन सौ बाण लगाकर गरजते हुए फेंका। सुग्रीव के सीने पर जाकर वे बाण टकराये। बाणों के आघात से सुग्रीव को चक्कर आ गया। केवल पूर्वपुण्य के कारण ही उसके प्राण बच गये ॥ ३२ ॥

सुग्रीव का हारना था कि भय से सब बन्दर भागने लगे। यह देखकर रघुवर हाथ में धनुष लेकर प्रत्यंचा चढ़ाकर युद्ध करने आगे बढ़े। ऐसे ही समय लक्ष्मण ने हाथ जोड़कर कहा, प्रभो ! तुम बठे रहो मैं पलभर में रावण को मार गिराता हूँ। राम ने कहा, लक्ष्मण तुमको भला कितने कौशल ज्ञात

राम बले, कत सन्धि जानह् लक्ष्मण ※ रावण-सन्मुखे जुद्धे संशय जीवन
बाहुबले त्रिभुवन जिनिल राक्षस ※ रावणेर संगे युद्धे ना कर साहस
तथापि लक्ष्मण जान पूरिया सन्धान ※ हेनकाले लक्ष्मणेरे बले हनूमान ३३
हनूमान् बले, तुमि तिष्ठह् लक्ष्मण ※ कौतुक देखह, आमि मारिब रावण
आमार संग्रामे यदि पाय से निस्तार ※ तबे त लक्ष्मण, तव जुझिवार भार
लक्ष्मणेर पदधूलि ल'ये हनू माथे ※ लाफ दिया पड़े गिया रावणेर रथे
सन्मुखे दाँड़ाय वीर परम-सन्धाना ※ सारथिर केड़े लय हातेर पाँचना
देव-दानव जिन बेटा, ब्रह्मार कारण ※ बानर हइया तोर बधिब जीवन
हेर हेर मुण्ड मोर सुमेरुर चूड़ा ※ हेर हेर पद मोर कैलासेर गोड़ा
हेर हेर हस्त मोर पर्व्वतेर सार ※ हातेर अंगुली हेर सर्पेर आकार
हेर हेर नख मोर बज्रेर सोसर ※ एकचड़े पाठाइब तोरे यमघर ३४
रावण बले, तोरे पेले अन्ये नाहि कथा ※ पड़िलि आमार हाते, जाबि आर कोथा
हनू बले, तोरे कि मारिब एइक्षणे ※ पूर्व्वे मारियाछि बेटा भेवे देख मने
से अक्ष-कुमारे मारि पोड़ालाम शोके ※ से शोक रावण, तोर त्रिन्धियाछे बुके
आपना पासरे कोपे वीर हनूमान ※ रावणे चापड़ मारे वज्रेर समान

हैं ? रावण के साथ युद्ध में प्राणों का भय है। वाहुबल से इस राक्षस ने त्रिभुवन पर विजय प्राप्त की है। रावण के साथ युद्ध में प्रवृत्त होने का साहस मत करो। फिर भी लक्ष्मण धनुष पर वाण चढ़ाये आगे बढ़े तो हनुमान ने लक्ष्मण से कहा ॥ ३३ ॥

हनुमान ने कहा, लक्ष्मण तुम ठहरो। जरा तमाशा तो देखो, मैं रावण को मारता हूँ। मुझसे अगर वह वच गया तो उसके साथ भिड़ने का भार तुम पर है। लक्ष्मण के पैरों की धूल सिर से लगाकर हनुमान छलाँग मारते हुए रावण के रथ पर जा धमके। रथ के सामने खड़े होकर परम दक्ष वीर सारथी के हाथों से रास छीन कर रावण से बोले– ब्रह्मा के वर से तुम देव-दानवों पर विजय प्राप्त किये हुए हो। वन्दर होकर भी आज तेरे मैं प्राण ले लूँगा। मेरे मुंड की ओर देख, देख वह सुमेरु का शिखर है। मेरे पैरों की ओर देख, देख वह कैलाश का मूलप्रदेश है। मेरे हाथों की ओर देख, देख यह पहाड़ के समान है। मेरी अँगुलियों की ओर देख, ये सर्प के समान हैं। मेरे नाखून की ओर देख, देख ये वज्र के समान हैं। एक ही झोंपड़ में तुझे यमालय भेज दूँगा ॥ ३४ ॥

रावण ने कहा, तू मिल जाय तो फिर दूसरों से मेरा क्या लेना-देना है। अब तू मेरे चंगुल में आ गया है, वचकर निकल नहीं सकता। हनुमान ने कहा, तुझे क्या मैं अभी मारूँगा ? जरा सोचकर देख, तुझे मैंने इससे पूर्व भी मारा है। जिस अक्षय-कुमार को मैंने मारा उसके शोक से मैंने तुझे जलाकर

चापड़ खाइया रावण हैल अचेतन ❋ भाग्येते रहिल प्राण ब्रह्मार कारण
संवित् पाइया पुनः उठिल सत्वर ❋ डाक दिया हनूमाने कहिछे उत्तर
रावण बले, वानरा रे, तुइ बड़ वीर ❋ तोर चापड़ेते मोर काँपिल शरीर
बले हनूमान, मोर किसेर वाखान ❋ मोर चापड़ेते तोर रहिल पराण
तोरे मारिलाम बेटा, उठि तोर रथे ❋ हारि सिद्ध ह'लो तोर सवार साक्षाते
आपना पासरि कोपे राजा से रावण ❋ हनूरे चापड़ मारे करिया गर्ज्जन
हनूमान वुके मारे से वज्र-चापड़ ❋ रथ हैते पड़ि हनू करे धड़फड़
भूमे पड़ि हनूमान घुरे घुरे बुले ❋ हनूमाने छाड़ि विन्धे सेनापति नीले
संवित् पाइया उठे वीर हनूमान ❋ डाक दिया बले, रावण हओ सावधान
राक्षस रावणा, तोर एइ वीरपणा ❋ मोर सने युद्ध क' रे अन्ये दाओ हाना
हनूमान यत बले, रावण ना शुने ❋ नील सेनापति बिन्धे आपनार मने
बाछिया बाछिया मारे चोख-चोख शर ❋ नीलेरे बिंधिया वीर करिल जर्ज्जर ३५
आपन रक्तेते तिते नील सेनापति ❋ केमने जिनिब रण, करेन युकति
दीर्घाकार नील वीर, येमन देउल ❋ माया करि नील वीर हइल नेउल
नेउल-प्रमाण वीर हइल मायाते ❋ एक लाफे पड़े गिया रावणेर रथे

खाक किया। ऐ रावना, वह शोक तेरे दिल में चुभ गया है। क्रोध से वीर हनुमान अपने आपे में न रहा और वज्र के समान एक झाँपड़ रावण को मार बैठा। झाँपड़ खाकर रावण बेहोश हो गया। केवल ब्रह्मा के वर के कारण ही उसके प्राण रह गये। सुध पाकर फिर वह उठा और हनुमान को बुलाकर कहने लगा। रावण ने कहा, ऐ वानर तू तो बड़ा वीर है, तेरे झाँपड़ से मेरा शरीर झनझना गया। हनुमान ने कहा, मेरा क्या बखान करता है, धन्य है कि मेरे झाँपड़ खाने के बाद भी तेरे प्राण रह गये। तेरे रथ पर चढ़कर तुझे मारा, सभी के सम्मुख तेरी हेठी सिद्ध हुई। रावण राजा भी आपे से बाहर हो गया और क्रोध से गरजते हुए उसने हनुमान के एक झाँपड़ मारा। हनुमान के वक्ष पर वह प्रहार वज्र सा लगा और रथ से गिरकर हनुमान तड़फड़ाने लगे। जमीन पर गिर कर वह लोट पोट हो गये। अब हनुमान को छोड़कर रावण सेनापति नील को बाणों से छेदने लगा। होश में आकर वीर हनुमान उठे और ललकारते हुए बोले, ऐ रावण, सावधान हो जा। अरे राक्षस रावण, क्या यही तेरी वीरता है कि मेरे साथ लड़ते समय दूसरों पर हमला कर रहा है। हनुमान कितना ही कहते रहे लेकिन रावण ने एक न सुना। वह अपनी ही धुन में नील सेनापति पर चुने हुए पैने-पैने बाण फेंकने लगा। नील का सारा शरीर जर्जर हो गया॥ ३५॥

नील सेनापति अपने ही खून से तर हो गये। युद्ध कैसे जीता जा सकता है इसी पर सोच विचार करने लगे। दीर्घ आकार के नीलवीर अटारी जैसे

रावणेर रथे पड़ि नाहि करे डर ❋ नीलेर विक्रम देखि रावण फाँफर
नीलेरे मारिते धनुकेते वाण जोड़े ❋ लम्फ दिया नील गिया रथ ध्वज धरे
माथा तुलि रावण से उपर नेहाले ❋ नील वीर पड़े तार धनुकेर हुले
नीलवीरे धरिवारे रावण चिन्तिल ❋ लाफ दिया नील तार मस्तके उठिल
नीलेरे धरिते हात बाड़ाय रावण ❋ माथा हैते मुकुटे उठिल ततक्षण
रावणेर मुकुट शोभिछे सारि-सारि ❋ मुकुट उपरे बेड़ाय फिरि घुरि घुरि
माया करि बेड़ाय रावणे दिया फाँकि ❋ घनपाके घुरे येन नाचनीया पाखी
कुड़िचक्षे चाय, तबु ना देखे रावण ❋ चाहे पुनः पुनः, नाहि पाय दरशन
क्षणेक देखिते पाय चक्षुर निमिषे ❋ धरि धरि मने करे स्थानान्तरे आसे
नाना-माया जाने वीर मायार निदाने ❋ नेउल-प्रमाणे वीर फिरे स्थाने-स्थाने
कुपिल से नील-वीर वुद्धिर सागर ❋ लाथि मारे रावणेर मुकुट उपर
भाग्य बले रावणेर रहे दश-माथा ❋ वहुमते रावणेर करिल अवस्था
नीलेर विक्रम येन सिंहेर प्रताप ❋ रावणेर मस्तकेते करिल प्रश्राव
रावणेर मुकुटेते नील-वीर मुते ❋ मुख वये पड़े मूत्र, सर्व्व-अंगतिते
प्रस्रावेर धारा बहे रावण-अंगेते ❋ आभरन कुंकुम भासिया गेल स्रोते

ऊँचे थे, माया से वे नेवला जैसे वन गये और कूद कर रावण के रथ पर चढ़ गये। रावण के रथ पर आकर वह भयभीत नहीं होते। नील का पराक्रम देख-कर रावण हक्का-बक्का हो गया। नील को मारने के लिए उसने धनुष पर वाण चढ़ाया। नील रूपी नेवला भी कूद कर रथ-ध्वजा पर चढ़ गया। सिर उठाकर रावण ने ऊपर की ओर देखा तो नीलवीर कूदकर उसके धनुष पर आ गिरा। ज्योंही नीलवीर को पकड़ने के लिए रावण ने सोचा त्योंही कूद कर नील उसके सिर पर चढ़ गया। नील को पकड़ने के लिए रावण ने हाथ वढ़ाया। वह भी सिर से मुकुट पर चढ़ गया। रावण के मुकुट-पंक्ति में सुशोभित था, वह फुदक-फुदक कर एक से दूसरे मुकुट पर विचरने लग गया। माया का जाल फेंक वह रावण को भरमाता रहा और नाचनेवाले पक्षी की तरह फुदकता रहा। रावण वीस आँखों से उसे देखता रहा पर देख न सका, बार-बार देखने पर भी उसका दर्शन नहीं मिलता। क्षणभर को वह दिखाई पड़ता तो क्षणभर में ओझल हो जाता, पकड़ने का उपक्रम करते ही वह अन्य स्थान पर पहुँच जाता। यह वीर तो वड़ा मायावी है, विभिन्न मायाओं का जानकार है। बुद्धि के सागर नीलवीर ने रावण के सिर पर लात मारी—भाग्य के बल से रावण के दश मुंड साबित रह गये। विभिन्न प्रकार से उसने रावण की दुर्दशा कर दी। नील का पराक्रम मानों सिंह के प्रताप के समान है—रावण के सिर पर उसने पेशाब कर दिया। रावण के सिर पर नीलवीर ने पेशाब कर दिया और मूत्र उसके मुख पर से टपकते हुए सारा अंग भिगोने

देखिया त देवगण दिल टिटकारी ※ कुपिल रावण-राजा लंका अधिकारी
धनुके जुड़िया वाण आछे त सन्धाने ※ देखिते ना पाय, बाण मारिबे केमने
एक वार माया करि उठे मुकुटेते ※ आर बार लाफ दिया पड़े गिया रथे
मुकुट ह'ते रथे जेते देखिलेक छाया ※ सन्धान पूरिया नीलेर भांगि दिल माया
बाण खेये नील वीर पड़े भूमि तले ※ भाग्येते बांचिल प्राण पूर्व्व-पुण्यफले ३६
नील वीर हनूमान हइले विमुख ※ लक्ष्मण आइल रणे पातिया धनुक
लक्ष्मण बलेन, तोर बुझि वीरपण ※ आमार संगेते युद्ध करह रावण
लक्ष्मणेर कथा शुनि रावण-राजा हासे ※ पला रे तपस्वि बेटा, प्राण ल'ये देशे
एत यदि दुइजने हैल गालागालि ※ दुइजने युद्ध बाजे, दोंहे महाबली
दुइ शत बाण एड़े राजा दशानन ※ बाणेते काटिया पाड़े ठाकुर लक्ष्मण
व्यर्थ गेल बाण-सब, चिन्तित रावण ※ लक्ष्मण-उपरे करे बाण-वरिषण
तिनशत बाण मारे जुड़िया धनुके ※ फुटे तिनशत बाण लक्ष्मणेर बुके
बुके फुटि वाणेर ये बिन्धि रहे फला ※ लक्ष्मणेर अंगे येन रक्तपद्म-माला
वाणे-बाणे लक्ष्मणेर नाहि चले दृष्टि ※ खसि पड़े लक्ष्मणेर धनुकेर मुष्टि
संवरिया लक्ष्मण सुस्थिर कैल बुक ※ काटिलेन रावणेर हातेर धनुक

लगा। मूत्र की धारा से रावण के अंग से आभरण कुंकुम आदि बह गये। यह देखकर देवता उसकी खिल्ली उड़ाने लगे। लंका का अधिकारी रावण इस पर बड़ा क्रोधित हुआ—धनुष पर बाण तो लगाया हुआ है लेकिन निशाना किस पर साधे, वह तो दिखाई ही नहीं पड़ता, बाण कहाँ मारे। एक बार वह मुकुट पर चढ़ा, फिर कूद कर रथ पर चढ़ गया। मुकुट से रथ पर चढ़ते समय की उसकी छाया रावण ने देख ली और बाण चला दिया। नील की माया धरी रह गई और बाण खाकर वह धरती पर जा गिरा। पूर्व-पुण्य के कारण ही उसके प्राण बचे ॥ ३६ ॥

नीलवीर और हनुमान ने जब रण में नीचा देखा, तब लक्ष्मण धनुष उठाये रणक्षेत्र में आये। लक्ष्मण ने ललकारते हुए कहा, अरे रावण, तेरी वीरता तो देखूँ, मेरे साथ भी जरा लड़ कर देख ले। लक्ष्मण की बातें सुनकर रावण राजा हँसने लगा, बोला, अरे तपस्वी के बेटे ! प्राण लेकर अपने देश लौट जा। इतने गाली-गलौज के उपरान्त दोनों महावीरों में युद्ध छिड़ गया। राजा दशानन ने दो सौ बाण चलाये और लक्ष्मण ने बाणों से काटकर उनको नीचे गिराया। सारे बाण व्यर्थ गये देखकर रावण चिन्तित हुआ और लक्ष्मण पर बाण बरसाने लगा। धनुष पर तीन सौ बाण साध कर लक्ष्मण के सीने पर फेंके। सीने को छेद कर बाण के फल अटके रह गये और यों लगा कि लक्ष्मण के अंग पर रक्तकमल की माला पड़ी हुई है। बाणों की वर्षा में लक्ष्मण की दृष्टि धुँधली पड़ गई और धनुष से लक्ष्मण की मुट्ठी

काटा गेल धनुक, बानरगण हासे ※ आर धनु लय रावण चक्षुर निमिषे
लक्ष्मण-उपरे करे बाण-बरिषण ※ रावणेर बाणे आच्छादिल ये गगन
कोप करि लक्ष्मण धनुके दिला चाड़ा ※ काटिलेन रावण-रथेर अष्टघोड़ा
घोड़ा काटा गेल, रथ हइल अचल ※ सारथिर माथा काटि पाड़े भूमितल
पड़िल सारथि अश्व, देवगण हासे ※ आर रथ योगाइल चक्षुर निमिषे
लाफ दिया दशानन सेइ रथे चड़े ※ तिनशत बाण तबे एकेबारे जोड़े
देखिया गन्धर्व्व-बाण जुड़िल लक्ष्मण ※ रावणेर यत बाण कैल निवारण
लक्ष्मण-रावण करे बाण-वरिषण ※ दू'जनार बाणे ढाके रविर किरण
दुइजने बाण वर्षे नाहि लेखा जोखा ※ प्राणपणे मारे बाण, यार यत शिक्षा
अमर्त समर्थ बाण, बाण ब्रह्मजाल ※ चारिदिके पड़े येन अग्निर उथाल
अरुण वरुण वाण, बाण खरशाण ※ अग्निबाण यमबाण यमेर समान
सूचीमुख शिलीमुख बाण विरोचन ※ सिंहदन्त वज्रदन्त घोर-दरशन
कालदन्त ऐषिक ओ दीर्घ-कर्णिकार ※ क्षुरपार्श्व शेलान्तक अति तीक्ष्णधार
नील हरिताल बाण विकट-दर्शन ※ अर्द्धचन्द्र चक्रवाण साक्षात् शमन
एत बाण दुइजने करे अवतार ※ दशदिक् जल-स्थल हैल अन्धकार

ढीली पड़ गई। अपने को सँभाल कर लक्ष्मण ने हौसला किया और रावण के हाथ का धनुष काट डाला। धनुष कट गया और वन्दर हँसने लगे। रावण ने तुरन्त दूसरा धनुष हाथ में ले लिया। लक्ष्मण पर वाणों की वर्षा करने लगा—और आकाश वाणों से भर गया। लक्ष्मण ने क्रुद्ध होकर धनुष की प्रत्यंचा खींची और रावण के रथ के आठों घोड़ों को काट डाला। घोड़े कट गये, अतः रथ अचल हो गया। सारथी का सिर कटकर धरती पर जा गिरा। सारथी और अश्व के गिरने से देवगण हँसने लगे। पर तुरन्त ही दूसरा रथ आ गया और रावण कूद कर उस रथ पर जा सवार हुआ। फिर एक साथ उसने तीन सौ वाण चला दिये। यह देखकर लक्ष्मण ने गन्धर्व-बाण चला कर रावण के सारे वाणों को व्यर्थ कर दिया। रावण और लक्ष्मण में वाणों की वर्षा होने लगी—जिसकी कोई गिनती ही नहीं। जिसकी जितनी शिक्षा थी उसी के अनुसार वह वाण चलाता रहा। अमर्त्य, समर्थ नामक वाण, ब्रह्मजाल वाण—ये चारों ओर यों गिरने लगे मानों आग की लौ हो। अरुण, वरुण वाण, खरशान वाण, अग्नि वाण, यमवाण, कालान्तक वाण जैसे। सूचीमुख, शिलीमुख, विरोचन, सिंहदन्त, बज्रदन्त जैसे घोर-दर्शन वाण, कालदन्त, ऐषिक, दीर्घ-कर्णिकार, क्षुरपार्श्व, शेलान्तक जैसे अत्यधिक तीक्ष्णधार वाण, विकट दर्शन नील और हरिताल वाण, अर्धचन्द्र चक्रवाण मानों साक्षात् मृत्यु हो। इतने वाण दोनों ने मिलकर फके और जल-थल में दशों दिशाएँ अन्धकारमयी हो गईं। लक्ष्मण यों वाण फेंकते मानों कोई

लक्ष्मण वरिषे वाण, तारा येन छुटे ❊ रावणेर हातेर धनकखान काटे
आर ये पञ्चाश-वाण पूरिल सन्धान ❊ रावणेर बुके वाजे वज्रेर समान
खाइया पञ्चाश-वाण भावे मने-मने ❊ ब्रह्मा दियाछेन शेल, ताहा पड़े मने
मंत्र पड़ि रावण से शेलपाट एड़े ❊ यमेर दोसर शेल देखि प्राण उड़े
शेलपाट एड़िलेक दिया हुहुंकार ❊ स्वर्ग-मर्त्य-पाताले लागिल चमत्कार
लक्ष्मण एंड़ेन बाण शेल काटिवारे ❊ ठेकिया शेलेर मुखे भस्म ह'ये उड़े
राखा नाहि जाय शेल ब्रह्मार येवरे ❊ वायुवेगे पड़े शेल लक्ष्मण-उपरे
पड़िल लक्ष्मण-वीर शेलेर आघाते ❊ पुनराय शेल जाय रावणेर हाते
लक्ष्मण पड़िल रणे ह'ये अचेतन ❊ कुड़िहस्ते लक्ष्मणेरे धरिल रावण
रथे तुलि लंकार भितरे लइते चाय ❊ शत-मेरु-भार हैल लक्ष्मणेर काय
कुड़िहाते टानिछे लंकार अधिपति ❊ नाड़िते लक्ष्मण-वीरे नहिल शकति
हात दिया कटिते भाविछे दशानन ❊ जटिल तपस्वी बेटा भारी कि एमन
तुलिलाम हिमालय पर्व्वत मन्दर ❊ ता ह'ते अधिक कि मनुष्य बेटा भर
कैलास-पर्व्वत तुलिलाम बामहाते ❊ कुड़िहस्ते लक्ष्मणेरे ना पारि नाड़िते ३७
लक्ष्मणे नाड़िते नारे, हैल अपमान ❊ दूर हैते देखे ताहा वीर हनूमान

तारा लपक रहा हो और उसने जाकर रावण का धनुष काट डाला। और जो पचास वाण उन्होंने फेंके वे रावण की छाती पर वज्र के समान जा गिरे। पचास वाण खाने के वाद रावण मन ही मन सोचने लगा, ब्रह्मा ने शेल दिया है, यह भी उसे याद आ गया। मंत्र पढ़कर रावण ने वह शेल फेंका—मृत्यु के समान वह शेल देखकर भय से होश उड़ते हैं। हुँकारते हुए उसने वह शेल फेंका और स्वर्ग, मर्त्य, पाताल विस्मय करने लगे। शेल को काटने के लिए लक्ष्मण ने वाण फेंके लेकिन शेल से टकराकर वे वाण भस्म हो गये। ब्रह्मा के वरदान से वह शेल रोका नहीं जा सकता, वायुवेग से वह आकर लक्ष्मण के वक्ष पर गिरा। वीर लक्ष्मण भी शेल के आघात से धरती पर गिर पड़े। पुन: वह शेल रावण के हाथों में लौट गया। रणक्षेत्र में लक्ष्मण अचेतन होकर गिर पड़े। वीस हाथों से रावण ने लक्ष्मण को उठाना चाहा। चाहा कि उन्हें रथ पर उठाकर लंका में ले जाये। लेकिन लक्ष्मण का शरीर शत-मेरुपर्वतों से भी अधिक भारी हो गया। लंकाधिपति बीस हाथों से लक्ष्मण को उठाने की चेष्टा करने लगा लेकिन वीर लक्ष्मण को हिलाने की भी शक्ति उसमें नहीं रही। कमर पर हाथ रख कर दशानन सोचने लगा—यह जटाधारी तपस्वी कैसे इतना वजनी हो गया। मैंने हिमालय, मन्दर पर्वत तक को उठा लिया, उससे भी क्या यह मनुष्य का जामा ज्यादा भारी हो गया। वाएँ हाथ से मैंने कैलाश पर्वत उठा लिया और वीस हाथों से मैं लक्ष्मण को हिला नहीं पा रहा हूँ! ॥ ३७ ॥

रावणेर गालेते मारिल एक चड़ ❋ चड़ खेये दशानन उठि दिल रड़
चड़ खेये दशानन लागिल घुरिते ❋ घुरिते घुरिते रावण पड़े गिया रथे
पलाइल रावण देखिया हनूमाने ❋ करिया पाथालि-कोला तुलिल लक्ष्मणे
वैरि-स्पर्शे ह'येछिला पर्व्वतेर भार ❋ सेवकेर हाते हैला तूलार आकार
लक्ष्मणे राखिल ल'ये श्रीरामेर पाशे ❋ धेयाने जीयान राम चक्षुर निमिषे ३८

राम-रावणेर प्रथम युद्ध

रावण बसिया आछे आपनार रथे ❋ संग्रामेते यान राम धनुर्व्वाण-हाते
रावणे मारिते यान पूरिया सन्धान ❋ हेनकाले जोड़ हाते बले हनूमान
रथे चड़ि जुझे रावण, श्रम नाहि जाने ❋ भूमिते थाकिया तुमि जुझिबे के मने
मोर पृष्ठे रघुनाथ, कर आरोहण ❋ आमार पृष्ठेते चड़ि मारह रावण
हनूमान-पृष्ठेते चड़ेन रघुवर ❋ ऐरावते वार येन दिला पुरन्दर
रावणे बलेन राम उपजिया क्रोध ❋ यत दुःख दिलि, आजि लब तार शोध
दश मुख साजायेछ नाना-अलंकारे ❋ दश मुंड काटिया बधिब आजि तोरे
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर आर यत देवे ❋ पड़ेछ आमार हाते, के आर राखिबे

लक्ष्मण को हिला न सकने से वह अपमानित बोध करने लगा। दूर से हनुमान ने यह देखा और दौड़कर उन्होंने रावण के गाल पर एक झाँपड़ जड़ दिया। झाँपड़ खाकर रावण भाग खड़ा हुआ, चक्कर खाते-खाते अपने रथ पर जा गिरा। रावण भागा, यह देखकर हनुमान ने अपनी बाहों में लक्ष्मण को उठा लिया। वैरी के स्पर्श से जिस शरीर का भार पर्वत के समान हो गया था, सेवक के निकट वह रुई के समान हो गया। लक्ष्मण को उन्होंने श्रीराम के बगल में ले जाकर रखा। राम ने ध्यान-शक्ति से उन्हें पल भर में जीवित कर दिया ॥ ३८ ॥

राम-रावण का पहला युद्ध

रावण अपने रथ पर बैठा था कि राम धनुष-वाण हाथ में लिये युद्ध के लिए चल पड़े। रावण को मारने के लिए जो वे आगे बढ़े तो हनुमान ने हाथ जोड़ कर कहा, रावण रथ पर चढ़कर लड़ रहा है, उसको कोई परिश्रम से पाला नहीं पड़ रहा है, आप धरती पर खड़े कैसे युद्ध करेंगे। हे रघुनाथ! आप मेरी पीठ पर सवार हो जायें और रावण का वध करें। रघुवर हनुमान की पीठ पर इस प्रकार बैठ गये मानो पुरन्दर ऐरावत पर विराजमान हों। क्रुद्ध राम ने रावण से कहा, तूने आज तक जितना क्लेश पहुँचाया उसका बदला मैं आज चुकाऊँगा। तूने विभिन्न अलंकारों से अपना दशमुख सुसज्जित किया है, उन्हीं दशमुंडों को काट कर आज तेरा वध करूँगा। तू अब मेरे हाथ में पड़ गया है; ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर—कौन तेरी रक्षा करेगा। राम के

रामेरे वचने रावण ना करे उत्तर ॐ हनूमाने देखिया कुपिल लंकेश्वर
मारे अक्ष-कुमारे पोड़ाय लंकापुरी ॐ वद्ध आछे घरपोड़ा, एइ बेला मारि
बन्दी हइयाछे बेटा, पृष्ठे ल'ये राम ॐ आजि दिब प्रतिफल करिया संग्राम
निज बुद्धे बाँधा गेछे आपना-आपनि ॐ नड़िते पड़िते नारे एइबेला हानि
बाछिया बाछिया एड़े चोख-चोख शर ॐ बाणे विन्धि हनूमाने करिल जर्ज्जर
जुझिते ना पारे हनू, पृष्ठेते श्रीराम ॐ बाण फुटि हनूर छुटिल काल-घाम
लक्ष-लक्ष बाण मारे हनूर बुकेते ॐ क्रोधे हनूमान-वीर लागिल फुलिते
दश-योजन देह कैल आड़े परिसर ॐ दीर्घे त्रिश-योजन हइल कलेवर
लेज कैल दीर्घाकार य़ोजन पञ्चाश ॐ हनूमानेर लेज गिया ठेकिल आकाश
हनूमानेर लेज देखि रावणेर भय ॐ वालि-राजेर मत पाछे लेजे बाँधि लय ३९
श्रीराम एड़ेन बाण ज्वलन्त आगुनि ॐ सब-बाण काटे रावण परम-सन्धानी
श्रीराम ऐषिक-बाण जुड़ेन धनुके ॐ सन्धान पूरिया मारे रावणेर बुके
बाण खेये दशानन हैल अचेतन ॐ क्षणेके संवित् पाय राजा से रावण
डाक दिया बले राम, शुन रे रावण ॐ मोर बाण खेये तुइ ह'लि अचेतन
आजि ना मारिया तोर छिन्न करि केश ॐ लौकिकता ल'ये जाह, येमन सन्देश

वचन सुनकर, लंकेश्वर रावण की नजर हनुमान पर पड़ी। वह बेहद गुस्सा हो गया। इसी ने अक्ष-कुमार को मारा, इसी ने लंका-दहन किया, यह मुँहजला इस समय बंधन में है, इसको इस समय मार डाला जाय। पीठ पर राम को चढ़ाकर यह इस समय बन्धन में है, आज बदला चुकाऊँगा। अपनी बुद्धि के कारण ही इसने अपने आपको फँसा रखा है—इस वक्त वह हिलने-डुलने में अशक्त है, इसलिए अभी उस पर आक्रमण करूँ। चुन-चुन कर वह पैने-पैने बाण चलाने और बाणों से छेद-छेद कर हनुमान को बेहाल करने लगा। पीठ पर श्रीराम के होने के कारण हनुमान लड़ नहीं सकते थे। बाणों के चुभने से उनके पसीना निकल आया। हनुमान के सीने पर लाख-लाख बाण मारने लगा और गुस्से से हनुमान का बदन फूलने लगा। शरीर की चौड़ाई बढ़कर दश योजन की हो गयी और तीस योजन ऊँचा कलेवर बन गया। पूँछ को बढ़ाकर उन्होंने पचास योजन लम्बी कर दी, कि वह आकाश से बातें करने लगी। पूँछ देखकर रावण को डर लगने लगा, कहीं बालि राजा की तरह यह भी न पूँछ में उसे लपेट ले॥ ३९॥

श्रीराम ज्वलन्त अग्नि के समान बाण फेंकने लगे और रावण उनको कुशलता से काटने लगा। श्रीराम ने धनुष पर ऐषिक बाण चढ़ाया और निशाना साध कर रावण के सीने पर मारा। बाण की चोट से दशानन अचेतन हो गया। फिर थोड़ी ही देर में वह अपने होश में आ गया। राम ने ललकार कर कहा, अरे रावण सुन, मेरे बाण के प्रहार से तू अचेतन हो

रघुवंशे जन्म मोर राम-नाम धरि ❊ एकदिनेर रणे आमि बैरी नाहि मारि
आजि तोरे मारिले विवाद घुचे जावे ❊ ज्ञाति-बन्धु-आदि तोर अनेक बाँचिवे
एक लक्ष पुत्र तोर, सओया-लक्ष नाति ❊ एक जन ना राखिव वंशे दिते वाति
शेषे तोरे बधिब करिया लंड-भंड ❊ विभीषण-उपरे धराव छत्रदण्ड
सभाखंड सकले रामेर कथा शुने ❊ अर्द्धचन्द्र-वाण राम पूरेन सन्धाने
बाणे दशदिक् आलो, उल्का-हेन छुटे ❊ दश-माथार मुकुट एकइ वाण काटे
काटा गेल मुकुट, खसिल दश-पाग ❊ भंगदिल दशानन, नाहि पाय लाग
सारथिरे आज्ञा दिल राजा दशानन ❊ लंकाते चालाओ रथ त्वरित-गमन
रावणेर आज्ञा पेये सारथि सत्वर ❊ शीघ्रगति निल रथ लंकार भितर
काटा गेल मुकुट, पलाय दशानन ❊ धर धर डाक छाड़े यत कपिगण
कृत्तिवास-कवित्व शुनिते बड़ रंग ❊ लंकाकाण्डे गान गीत रावणेर भंग ४०

अकाले कुम्भकर्णेर निद्राभंग ओ रावणेर सहित कथोपकथन

भंग दिया गेल रावण पेये अपमान ❊ पात्र-मित्र ल'ये बैसे करिया देयान

गया। आज तेरा वध न कर तेरे बाल नोच लेता हूँ—लोकाचार के रूप में मेरा यही उपहार तू आज ले जा। मेरा नाम राम है और मैंने रघुवंश में जन्म लिया है। एक दिन के रण में मैं अपने शत्रु का वध नहीं करता हूँ। आज अगर तुझको मैं मार डालूँ तो झगड़ा ही खत्म हो जायगा और तेरे नाते-रिश्तेदार बहुत सारे जीवित रह जाएँगे। तेरे एक लाख पुत्र हैं और सवा लाख पौत्र हैं। मैं उनमें से एक को भी जिन्दा नहीं छोड़ जाऊँगा कि तेरे कुल के दीपक के रूप में जीवित रहें। पूरा हुड़दंग मचाने के उपरान्त ही तेरा वध करूँगा और विभीषण पर राजछत्र शोभा देगा। उपस्थित सारे लोगों ने राम की घोषणा सुनी। राम ने धनुष पर अर्ध-चन्द्र वाण साधा। बाण से दशों दिशाएँ प्रकाशमय हो गईं—उल्का सी वह लपकी। एक ही बाण से उन्होंने दस सिरों पर शोभायमान मुकुट काट डाले। मुकुट कट गये और दस पगड़ियाँ भी गिर गईं, यह देखकर दशानन भाग खड़ा हुआ। तब दशानन ने रथ चलाने के लिए सारथी को आज्ञा दी। रावण की आज्ञा पाकर सारथी द्रुतगति से रथ लेकर लंका की ओर चल पड़ा। दशानन के मुकुट गिर गये, और वह लंका की ओर भाग रहा है यह देखकर सारे कपि 'पकड़ो पकड़ो' का शब्द करने लगे। कृत्तिवास का कवित्व सुनने में बड़ा आनन्द आता है। लंकाकांड में उन्होंने रावण के पलायन का गीत गाया ॥ ४० ॥

असमय कुम्भकर्ण का निद्राभंग और रावण से वार्त्तालाप

अपमानित होकर रावण रणक्षेत्र से भाग खड़ा हुआ। सारे पात्र-मित्र सभासदों को लेकर वह सभा में बैठा। चारों ओर तीस-कोटि सेनापति घेरे

त्रिशकोटि सेनापति चौदिके वेष्टन ❋ सभा मध्ये सिंहासने वसिल रावण
रावण बले, बुझिलाम देवतार फन्दि ❋ एतदिने गड़ाइल, या वलिल नन्दी
कुबेरे जिनिया आसि कैलास-शिखरे ❋ नन्दी दाँड़ाइया छिल शिवेर दुयारे
शिव-दुर्गा-दर्शने वासना आमार ❋ विस्तर कहिनु, नन्दी ना छाड़िल द्वार
विकृत बानर-मुख नन्दी जे दुयारी ❋ मुखपाने चाहि तार दिनु टिट्कारी
कोप करि नन्दी मोरे दिल अभिशाप ❋ सेइ शापे पाइ आमि एत मनस्ताप
नन्दी कहिलेक, आमि शिवेर किंकर ❋ मोरे उपहास कर दुष्ट निशाचर
कपिमुख देखि तुइ कैलि उपहास ❋ एइ मुख हवे तोर सवंशे विनाश
फलिल नन्दीर शाप एतदिन परे ❋ पराजय करिलेक वनेर बानरे
क'रेछि विस्तर तप हइते अमर ❋ अमर हइते ब्रह्मा नाहि दिलवर
एइ वर दिला ब्रह्मा हइया सदय ❋ यक्ष रक्ष देवता गन्धर्व्वे नाहि भय
सवारे जिनिव रणे, मागि निलाम वर ❋ सबे मात्र वाकि छिल नर ओ बानर
भेवेछिनु भक्ष्य मध्ये एरा दुइजन ❋ के जाने, बानर-नर दुर्जय एमन
पुनः ब्रह्मा वर दिला अनुकूल ह'ये ❋ काटामुंड जोड़ा जावे स्कन्धेते आसिये
देव-दानव-गंधर्वेते नाहि तोर डर ❋ सवंशे मारिबे तोरे नर ओ बानर

हैं और वीच में रावण सिंहासन पर वैठा है। रावण ने कहा, देवताओं का छल अब समझ में आया। नन्दी ने जो कहा था वह इतने दिनों में फला। कुबेर पर विजय प्राप्त कर मैं कैलास पर्वत पर आया। शिव जी के दरवाजे पर नन्दी खड़ा था। शिव-दुर्गा के दर्शन के लिए मेरे मन में अभिलाषा थी। बहुत कहता रहा लेकिन नन्दी ने दरवाजा नहीं छोड़ा। वन्दर सरीखे विकृत मुखवाले नन्दी की मैंने बहुत खिल्ली उड़ाई। गुस्से में आकर नन्दी ने मुझे शाप दिया। उसी शाप से मेरे मन में इतना दुख है। नन्दी ने कहा, मैं शिव का किंकर हूँ। तू दुष्ट निशाचर मेरा कपिमुख देखकर उपहास कर रहा है। इसी मुखवालों द्वारा तेरे वंश का विनाश होगा। नन्दी का शाप इतने दिनों में फैला। मुझको वन के वानरों ने पराजित किया। अमर बनने के लिए मैंने कितनी ही तपस्या की है लेकिन फिर भी ब्रह्मा ने मुझे अमरत्व का वर नहीं दिया। ब्रह्मा ने सदय होकर यह वर दिया कि यक्षों, राक्षसों, देवताओं और गन्धर्वों से मुझको कोई भय नहीं रहेगा—सभी पर मुझको विजय प्राप्त होगी—यही वर मैंने उनसे माँग लिया। बाकी रह गये नर और वानर—ये तो मेरे भक्ष्य हैं ऐसा सोचा था मैंने। कौन जानता था कि नर और वानर इतने दुर्जय होते हैं। फिर ब्रह्मा ने मेरे प्रति सदय होकर वर दिया कि मेरे कटे मुंड फिर से स्कन्ध से जुड़ जायेंगे। देवों-दानवों-गन्धर्वों से तुझे कोई भय नहीं। नर और वानर ही तेरे सारे वंश को नष्ट करेंगे। ये ब्रह्मा के वाक्य थे, इसमें कोई वात अन्यथा नहीं हो सकती। इतने दिनों

ब्रह्मार वचन इहा, कभु नहे आन ※ एतदिने पाइलाम बड़ अपमान
सर्वांग पुड़िछे मोर मनुष्येर वाणे ※ राजा ह'ये हारिलाम, जिने कोन जने
निद्रा जाय कुम्भकर्ण, जागिवेक कबे ※ विचार करिया देख सभाखंड सबे
जाय अर्द्ध लंकापुरी कुम्भकर्ण-भोगे ※ छयमास निद्रा जाय, एक दिन जागे
पाँच मास गत, निद्रा एकमास आछे ※ आजिलंका मजिले से कि करिबे पाछे
कुम्भकर्णे जागाइते करह जतन ※ प्राणसत्वे मोर जेन हय सचेतन ४१
एत यदि आज्ञा दिल राज लंकेश्वर ※ तिन लक्ष रक्षः चले कुम्भकर्ण-घर
भक्ष्य-द्रव्य मद्य-मांस अनेक प्रकार ※ सुगन्धि चन्दन-पुष्प आने भारे-भार
पाले-पाले महिष-हरिण आने कत ※ छागल गाड़ल नाहि हय परिमित
सोनार निर्मित गृह अति मनोहर ※ विश्वकर्मा-निर्मित विचित्र बहुतर
सारि-सारि सोनार कलस-सब साजे ※ नेतेर पताका उड़े, जयघंटा बाजे
त्रिश-योजन घरखान दीर्घ-निरूपण ※ आड़े दश-योजन देखिते सुगठन
चारिक्रोश जुड़े द्वार आड़ेते निर्णय ※ दीर्घेते योजन-अष्ट, दृष्ट नाहि हय
चारिदिके एइरूप द्वार शोभे चारि ※ मध्ये-मध्ये गवाक्ष शोभिछे सारि-सारि
रत्नखाटे कुम्भकर्ण घुमे अचेतन ※ नाकेर निश्वास जेन प्रलय-पवन

में मुझको इतना बड़ा अपमान सहन करना पड़ा। मनुष्य का वाण खाकर मेरा सारा तन-बदन जला जा रहा है। राजा होकर भी मैं हार गया जिसको कोई हरा नहीं सकता था। कुम्भकर्ण निद्रा में मग्न है, जाने कब उसकी नींद टूटेगी। सारी सभा से मैं यह विचारने का अनुरोध करता हूँ कि आधी लंका-पुरी कुम्भकर्ण के भोग में स्वाहा हो जाती है। छह महीने सोता है तो एक दिन जागता है। पाँच महीने बीत चुके हैं और एक महीना शेष है। अगर आज ही लंका ध्वंस हो जाय तो बाद में जागकर वह क्या करेगा। इसलिए उसे जगाने का यत्न करें—कि वह जीवितावस्था में सचेतन हो जाय ॥ ४१ ॥

जब राजा लंकेश्वर ने यह आज्ञा दी तो तीन लाख राक्षस कुम्भकर्ण के गृह की ओर चल पड़े। तरह-तरह के भोजन-पदार्थ एवं मदिरा-मांस लेकर वे चले। सुगन्धि, चन्दन और ढेर के ढेर पुष्प भी लेकर वे चले। वे न जाने कितने भैंसे, हिरन और बकरे ले चले जिनकी कोई गिनती नहीं। विश्वकर्मा द्वारा निर्मित स्वर्ण का बना वह भवन बड़ा ही विचित्र और सुन्दर है। पंक्तियों में सोने के कलश सजे हुए और वस्त्र निर्मित पताकाएँ फहरा रही हैं और जयघंटे बज रहे हैं। भवन की लम्बाई तीस योजन है और चौड़ाई दस योजन। लम्बाई में दरवाजा चार कोस का है तो ऊँचाई में आठ योजन—आँखों से दिखाई नहीं पड़ता। भवन के चारों ओर इस प्रकार के चार दरवाजे शोभित हो रहे हैं और बीच-बीच में गवाक्षों (झरोखों) की

दूयारेर निकटेते जे राक्षस आसे ※ उड़ाइया फेले तारे नाकेर निश्वासे
टानिया प्रश्वास जबे लय निशाचर ※ राक्षस कतेक ढोके नाकेर भितर
ये-सब राक्षस जाने सन्धि उपदेश ※ अनेक शक्तिते घरे करिल प्रवेश
अंग-भंगे आलस्ये जखन तुले हाइ ※ मुखेर गह्वर येन बड़ गड़ खाइ
कि रूपेते कुम्भकर्णेर हबे निद्राभंग ※ कत-शत निशाचर करे कत रंग
बाजाइल लक्ष-डाक चारिदिके बेड़े ※ निद्रा जाय कुम्भकर्ण, कर्ण नाहि नड़े
घड़ा-घड़ा चन्दन डालिया दिल बुके ※ सुगन्ध-शीतले आरो निद्रा जाय सुखे
बाजाय कानेर काछे तिन-लक्ष शाँख ※ द्विगुण बाड़िल आरो नासिकार डाक
शाँख-नाक-गर्जने गभीर महाशब्द ※ शंकाय लंकार लोक ह'ये रहे स्तब्ध
पाले-पाले आनिल ये छागल गाड़र ※ प्रवेश कराय तार नाकेर भितर
तिलार्द्धओ नासारन्ध्रे रहिते ना पारे ※ निश्वासे पड़िल उड़े दिग्-दिगन्तरे
यतेक प्रबन्ध करे निशाचरगणे ※ ब्रह्मा-वरे निद्रा जाय, किछु नाहि जाने
रावण-गोचरे वार्ता कहिल सत्वरे ※ राजाज्ञाते राक्षसेरा चारिभिते मारे
राजभ्राता बलि केह नाहि करे डर ※ बुकेर उपरे मारे वृक्ष ओ प्रस्तर

पंक्तियाँ भी सुशोभित हैं। रत्ननिर्मित पलंग पर कुम्भकर्ण निद्रा में अचेतन है। नाक से जो श्वास छोड़ रहा है वह मानों प्रलय का पतन हो। दरवाज़े के निकट जो भी राक्षस जा पहुँचता उसी को उसाँस दूर उड़ा ले जा रही है। जब वह साँस खींचता तो कितने ही राक्षस खिंच कर नाक के भीतर जा पहुँचते। जिन राक्षसों को कौशलों का पता है वे ही काफी शक्ति के साथ भवन में प्रवेश कर सके। आलस्य से जब भी वह जमुहाई लेने लगता तो उसका मुँह एक खाई की तरह लगने लगता। कुम्भकर्ण की निद्रा कैसे टूटे इस पर सैकड़ों निशाचर कितने ही प्रकार के तमाशे करने लगे। चारों ओर से घेर कर एक लाख धौंसे बजाये गये। कुम्भकर्ण सोता ही रहा उसके कानों में जूँ नहीं रेंगी। सीने पर घड़ों चन्दन उँडेला गया—सुगन्ध और शीतलता पाकर वह और भी सुख से सोने लगा। कानों के पास तीन लाख शंख बजने लगे। नाक का स्वर दुगुना हो गया। शंख और नाक के गर्जन से घोर नाद होने लगा और शंका से लंका के निवासी स्तब्ध रह गये। जो ढेर के ढेर भेड़ और बकरे लाये गये थे उनको उसकी नाक में प्रवेश करा दिया गया। क्षणभर के लिए भी वे नथुनों में टिक न सके, साँस से वे दिग्-दिगन्तरों की ओर उड़ गये। जितने ही प्रबन्ध निशाचर करने लगे, ब्रह्मा के वर से वह सोता ही रहा और कुछ भी न जान सका। तब तुरन्त ही सब लोगों ने जाकर रावण से यह वार्त्ता सुनाई। राजा की आज्ञा पाकर वे चारों तरफ से उसे पीटने लगे—राजा का भाई जानकर कोई भी डरा नहीं। उसके सीने पर पेड़ और पत्थर बरसाने लगे। कोई-कोई तो उस पर ताव

मुषल मुद्गर केह अंगे मारे तेड़े ❋ साँड़ासिते मांस टाने, शेल-शूल फोंड़े
केह कामड़ाय, केह चुले धरि टाने ❋ ब्रह्मा-वरे निद्रा जाय, किछुइ ना जाने
मार खेये कुम्भकर्ण हइल विवर्ण ❋ सकल राक्षस बले, मैल कुम्भकर्ण
महोदर बले, एक युक्तिमने गणि ❋ लंकार भितर हैते आनह कामिनी
शोयाओ से सबाकारे कुम्भकर्ण-पाशे ❋ आपनि जागिबे वीर नारीर परशे
एत शुनि सब वीर धाइल सत्वर ❋ विद्याधरी-तुल्या नारी आनिल विस्तर
शुइल ताहारा कुम्भकर्णेर आसने ❋ सर्व्वांग लेपन तार करिल चन्दने
तार पाशे कन्या-सब करे आलिंगन ❋ अति-सुशीतल लागे कन्या-परशन
एके कुम्भकर्ण, ताहे स्त्रीगण पाइया ❋ पाश फिर शोय वीर अंग मोड़ा दिया
नाकेर निश्वास येन प्रलयेर झड़ ❋ भय पेये कन्या-सब उठि दिल रड़
महोदर बले, एक युक्ति अनुमानि ❋ मदिरा-मांसेर देह खुलिया ढाकनि
जागाइते ना पारिबे ए-सब प्रबन्धे ❋ आपनि जागिबे वीर मद्य-मांस-गन्धे ४२
अनन्त-बासुकि येन तुलिलेक हाइ ❋ चन्द्र-सूर्य दुइ चक्षु देखिया डराइ
घूर्णित-लोचन वीर उठि वैसे खाटे ❋ निद्राभंग ह'ये तबे कुम्भकर्ण उठे

में आकर मूसल और मुद्गर चलाने लग गया। कोई तो सँड़सी से मांस नोचने लग गया तो कोई शेल और शूल धँसा देने लगा। तो कोई उसके बाल नोचने लगा। पर वह ब्रह्मा के वरदान से निद्रामग्न रहा, कुछ भी न जान सका। मार खाकर कुम्भकर्ण के शरीर का रंग उड़ गया तो सभी राक्षसों ने कहा कुम्भकर्ण मर गया। महोदर ने कहा, मेरा एक परामर्श मानो। लंका के भीतर से कामिनियों को ले आओ और सबको कुम्भकर्ण के बगल में लिटा दो। नारी के स्पर्श से स्वयं वीर जाग जायगा। इतना सुनकर सभी वीर तुरन्त दौड़ पड़े और अनेक संख्या में विद्याधरी नारियों को ले आए। वे कुम्भकर्ण के बिस्तर पर लेट गयीं और उसका सारा अंग चन्दन से पोत दिया। बगल में लेट कर जब इन नारियों ने उसे आलिंगनबद्ध किया तो कुम्भकर्ण को इन नारियों का स्पर्श बड़ा सुखद लगा। एक तो कुम्भकर्ण है फिर नारी का स्पर्श। अंगड़ाई लेते हुए वीर ने करवट बदली। नाक से निकलने वाली निःश्वास मानों प्रलय की आँधी हो, डर कर सभी नारियाँ भाग खड़ी हुईं। महोदर ने कहा, एक युक्ति मेरी और सुन लो। मदिरा और मांस के पात्रों के ढक्कन खोल दो। इन सब तरकीबों से उसे नहीं जगा सकोगे। वह स्वयं मदिरा मांस की गन्ध से जाग जायगा ॥ ४२ ॥

मानों अनन्तनाग ने जमुहाई ली—चन्द्र-सूर्य जैसे धधकती दो आँखें देखकर डर लगता। नींद से जागकर कुम्भकर्ण उठ कर पलंग पर बैठ गया और उसके दोनों नेत्र उस समय घूर्णित हो रहे थे। बिस्तर पर बैठकर वीर निशाचर ने कहा, किस कारण तुम लोगों ने मुझको बेवक्त नींद से जगा दिया।

शय्याय वसिया वीर निशाचरे बले ❋ कि लागिया निद्राभंग करिलि अकाले
अकाले जागालि मोरे, छोट नहे काज ❋ कोनबेटा उल्लंघने रावणमहाराज १४३
धेये गिया रावणे बले निशाचर ❋ कुम्भकर्ण जागिलेन, शुन लंकेश्वर
भाइके देखिते हैल रावणेर साध ❋ कुम्भकर्णे जानाइल रावण-संवाद
शय्या हैते उठि वीर चक्षे दिल पानि ❋ भक्षणेर द्रव्य दिल थरे थरे आनि
मद्यपान करिलेक साताश-कलसी ❋ पर्व्वत-प्रमाण मांस खाय राशि-राशि
हरिण महिष वरा सापटिया धरे ❋ बारो-तेर-शत पशु खाय एक बारे
कुम्भकर्ण बले, बुझिलाम अनुमाने ❋ अकाले जागाय मोरे याहार कारणे
कोन लाजे इन्द्र बेटा दिते एलो हाना ❋ वारे वारे हेरे जाय ना भावे भावना
आछुक इन्द्रेर काज, यम यदि आसे ❋ यम ह'ये ताहारे गिलिब एकग्रासे १४४
विरूपाक्ष राक्षस से धर्म्म-अधिष्ठान ❋ जोड़हाते कहे कुम्भकर्ण-बिद्यमान
देवे कोप न कर, निर्दोष पुरन्दर ❋ प्रमाद पाड़िल एत नर ओ वानर
शूर्पणखा गियाछिल पंचवटी-वने ❋ अग्रे तार नाक-कान काटिल लक्ष्मणे
श्रीरामेर सीता राजा आने सेइ रोषे ❋ सागर डिंगिया हनू लंकापुरे आसे
लंका दग्ध करिल वानर हनुमान ❋ तुमि थाक्ते लंकार एतेक अपमान

असमय ही तुम लोगों ने मुझको जगा दिया है—यह कोई सामान्य काम नहीं। महाराजा रावण की आज्ञा का किसने उल्लंघन किया ? ॥ १४३ ॥

राक्षसों ने दौड़कर रावण से जाकर कहा, सुनो लंकेश्वर, कुम्भकर्ण जाग पड़ा है। रावण का जी चाहा कि भाई को देखें। रावण का सन्देश कुम्भकर्ण को भेजा गया। बिस्तर से उठकर वीर ने आँखों पर पानी का छींटा मारा। तरह-तरह की भोज्य-सामग्री लाकर सामने रख दी गई। उसने सत्ताईस घड़े मदिरा के पी डाले और पर्वत के ढेर के समान मांस खा गया। भैंसे, हिरन और वराह पकड़-पकड़ कर वह खाने लगा। एक-एक निवाले में वह बारह-तेरह सौ जानवर खाने लगा। कुम्भकर्ण ने कहा, मैंने अनुमान लगा लिया है कि मुझको किस कारण असमय जगा दिया गया है। यह इन्द्र भी कैसा निर्लज्ज है फिर धावा बोलने आ गया। बार-बार हार जाने पर भी उसको कोई चिन्ता नहीं। इन्द्र तो अलग रहा, अगर यम भी आ जाये तो उसका यम बनकर मैं उसको भी निगल जाऊँगा॥ १४४ ॥

धर्म का पुजारी विरूपाक्ष नामक एक राक्षस था। उसने हाथ जोड़ कर कुम्भकर्ण से कहा, देवताओं पर नाराज मत हो, पुरन्दर निर्दोष है। नर और वानर यह प्रमाद ले आए हैं। पंचवटीवन में सूर्पनखा गयी थी, वहाँ लक्ष्मण ने उसके नाक-कान काट डाले। उसी क्रोध में राजा रावण जाकर श्रीराम की सीता को ले आया। सागर लाँघ कर हनुमान लंकापुरी आया और उस बन्दर हनुमान ने लंकापुरी जला डाली। तुम्हारे रहते हुए लंका का इतना बड़ा अपमान हो।

प्रमाद करिछे नर-वानर आसिये * राजा-प्रजा र'येछे तोमार मुख चेये १४५
कुम्भकर्ण बले, आगे जिने आसि रण * तबे त भेटिव गिया भाइ दशानन
एत बलि कुम्भकर्ण चले रणमुखे * महोदर भाइ गिया कहिछे सन्मुखे
राजार नाहिक आज्ञा रणे दिते हाना * केमने जाइबे युद्धे ना करि मन्त्रणा
यात्राकाले कुम्भकर्ण आरो खेते चाय * राजभोग-द्रव्य आनि राक्षसे योगाय
बहुदिन अनाहारे खाय बाड़ाबाड़ि * मद खेये उजाड़िल सातशत हाँड़ि
नहेसे सामान्य हाँड़ि, कि कब व्याख्यान * पंचिशेर बन्द जेन घर एक खान
महारक्त कत खाइल, संख्या नाहि हय * पाले पाले शूकर मनुष्य कुड़ि छय ४६
यात्रा करि चलिलेन कुम्भकर्ण-वीर * मेघ हैते सूर्य येन हइल बाहिर
पर्व्वत-प्रमाण उच्च लंकार प्राचीर * प्राचीर जिनिया कुम्भकर्णेर शरीर
चले जाय पथे, येन सुमेरु-समान * देखिया त बानरेर उड़िल परान
दरशने भंग दिल यत कपिगण * आश्वासिया राखिल राक्षस विभीषण ४७
विभीषण-आश्वासे रहिल कपिगणे * रघुनाथ जिज्ञासा करेन विभीषणे
एतदिन कोथा छिल एइ महावीर * त्रिभुवन जिनिया त दुर्ज्जय शरीर

नर और वानर आकर विपत्ति मचाये हुए हैं—राजा-प्रजा सभी तुम्हारा मुँह देख [अर्थात् आसरा कर] रहे हैं ॥ १४५ ॥

कुम्भकर्ण ने कहा, पहले जाकर मैं रण में जीत आऊँ, फिर भाई दशानन से भेंट करूँगा। इतना कह कर कुम्भकर्ण रणक्षेत्र की ओर चल पड़ा। भाई महोदर उसके सम्मुख पहुँचकर बोला, रण में धावा बोलने की आज्ञा राजा से नहीं मिली है, बिना परामर्श किये युद्ध में कैसे जाओगे? यात्रा के समय कुम्भकर्ण ने और भी खाना माँगा। राक्षसों ने राजभोग लाकर रख दिया। लम्बी अवधि तक निराहार रहने के कारण खाने में कुछ अधिकाई भी की। सात सौ हाँडी मदिरा पी डाली उसने। वे हाँडियाँ भी कोई ऐसी-वैसी नहीं थीं—उनका क्या बखान करूँ। एक-एक मानो विशाल कक्ष सा हो। कितना महारक्त वह पी गया इसका कोई हिसाब ही नहीं। सुअरों के कई जत्थे और छब्बीस मनुष्य भी ॥ ४६ ॥

वीर कुम्भकर्ण ने यात्रा की तो लगा मानों बादलों में से सूर्य निकल आया। लंका का प्राचीर पर्वत के समान ऊँचा है—और कुम्भकर्ण का शरीर उससे भी ऊँचा है। पथ पर चलते समय लगता कि सुमेरु पर्वत चला जा रहा है। उसको देखकर बन्दरों के प्राण सूख गये। देखते ही उनके पैर उखड़ गये। विभीषण ने उन लोगों को आश्वासन देकर किसी प्रकार से रोका ॥ ४७ ॥

विभीषण के आश्वासन पर कपि रुक गये। रघुनाथ ने विभीषण से पूछा, इतने दिनों तक यह वीर कहाँ रहा। इसका डील-डौल तो दुर्जय सा लगता है। सैन्य का अनुमान लगाये बिना ही मैं समुद्र पार कर चला आया।

ना बुझे कटक आमि करियाछि पार ※ इहार संग्रामे कारो नाहिक निस्तार
विभीषण बले, शुन राम रघुवर ※ कुम्भकर्ण नामे मम मध्यम सोदर
ब्रह्मार वरेते राजा दशानन युझे ※ कुम्भकर्ण-वीर युद्धे आपनार तेजे
गदा हाते कुम्भकर्ण यदि करे रण ※ एकदण्डे जिनिते पारये त्रिभुवन
कुम्भकर्ण भूमिष्ठ हइल जेइकाले ※ सूतिका-घरेर नारीगणे धरि गिले
स्वर्ग-विद्याधरी-आदि विस्तर रूपसी ※ ध'रे ध'रे खाइल अनेक मुनि-ऋषी
कोप करि पुरन्दर बज्र-अस्त्र हाने ※ वज्र-अस्त्र गिलेछिल अमरेर रणे
ऐरावत-दन्त उपाड़िया एकटाने ※ सेइ दन्त प्रहारिल सहस्रलोचने
मूर्च्छिया पड़िल इन्द्र धरणी-उपर ※ अमर बलिया ताइ बाँचे पुरन्दर ४८
कुम्भकर्ण-कथा शुन राजीव-लोचन ※ गोकर्ण-पुरेते तप करि तिनजन
ब्रह्मा वर दिला तवे भाइ तिनजने ※ प्रथमे दिलेन वर ज्येष्ठ दशानने
ब्रह्मा बले, त्रिभुवन जिनिब रावण ※ नर-वानरेर हाते सवंशे निधन
तुष्ट ह'ये आमारे विधाता दिला वर ※ सेइ वरे देख आमि ह'येछि अमर
वर दिते गेल ब्रह्मा कुम्भकर्ण-स्थान ※ इन्द्रआदि देवतार उड़िल पराण
बिना वरे कुम्भकर्ण देखि लागे डर ※ सृष्टिनाश करिबे ब्रह्मार पेले वर

इसके साथ संग्राम में तो किसी की भी जान नहीं वचेगी। विभीषण ने कहा, हे राम रघुवर सुनो, यह मेरा मध्यम सहोदर कुम्भकर्ण है। राजा दशानन ब्रह्मा के वर की शक्ति से युद्ध करता है किन्तु कुम्भकर्ण अपनी ही शक्ति से जूझता है। हाथों में गदा लेकर यदि कुम्भकर्ण युद्ध में उतरे तो एक दंड में वह तीन लोक पर विजय पा सकता है। जिस समय कुम्भकर्ण ने जन्म लिया था उस समय सौरी में उपस्थित नारियों को पकड़-पकड़ कर लीलने लगा था। स्वर्ग की विद्याधरी आदि असंख्य रूपवतियों को और अनेक मुनि-ऋषियों को इसने पकड़-पकड़ कर खा डाला। गुस्से में आकर पुरन्दर (इन्द्र) ने इस पर वज्र फेका था सो इसने उस वज्र को भी लील लिया था। ऐरावत का दाँत उखाड़ कर उसी दाँत से उसने सहस्रलोचन पर प्रहार किया था। मूर्च्छित होकर सहस्रलोचन (इन्द्र) धरती पर गिरा पड़ा था। केवल अमर होने के कारण ही पुरन्दर का जीवन बच गया था ॥ ४८ ॥

हे राजीवलोचन राम! तुमको कुम्भकर्ण के सम्बन्ध में सुनाता हूँ। हम तीनों गोकर्णपुर में तपस्या कर रहे थे; प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने हम तीनों को वर दिया। आरम्भ में उन्होंने ज्येष्ठ दशानन को वर दिया कि रावण तीनों लोकों पर विजय प्राप्त करेगा किन्तु नर और वानर के हाथों उसका सपरिवार निधन भी होगा। तुष्ट होकर विधाता ने मुझे भी वर दिया और उसी के कारण मैं अमर हो गया हूँ। जब ब्रह्मा कुम्भकर्ण को वर देने को चला तो इन्द्र आदि देवताओं के प्राण सूख गये। बिना वर पाये हुए कुम्भकर्ण को

यतेक देवतागण ह'ये एकमति ❋ युक्ति करि पाठाइला देवी सरस्वती
देवी गिया बसिलेन कण्ठेर उपर ❋ ब्रह्मा बले, कुम्भकर्ण, चाह कोन वर
कुम्भकर्ण बले,ब्रह्मा, नाहि चाहि आनि ❋ चिरकाल निद्रा जाइ, करह विधान
ब्रह्मा बले, दिनु वर, चाहिले येमन ❋ दिवानिशि निद्रा जाह ह'ये अचेतन
वर शुनि शोकाकुल हइल रावण ❋ कान्दिया धरिल गिया ब्रह्मार चरण
रावण बलिल, सृष्टि सृजिले आपनि ❋ आपनि विनाश केन कर पद्मयोनि
तोमार वचन कभु ना हइबे आन ❋ निद्रा-जागरण प्रभु, करह विधान
ब्रह्मा बले, दिनु वर, शुनह रावण ❋ छयमास निद्रा एक दिन जागरण
अद्भुत धरिबे बल, अद्भुत आहार ❋ काँचा-निद्रा भंग ह'ले से-दिन संहार
एत बलि चतुर्म्मुख करिल गमन ❋ कुम्भकर्ण हइल निद्राय अचेतन
स्कन्धे करि निवासे आइनु दुइ भाइ ❋ कुम्भकर्ण कथा एइ, शुनह गोसाँइ
काँचा-निद्रा भंग आजि ह'येछे उहार ❋ अवश्य तोमार हाते हइबे संहार ४९
शुनि हरषित हैल श्रीराम-लक्ष्मण ❋ कुम्भकर्ण गेल तबे भेटिते रावण
कुम्भकर्णे देखिया रावण कुतूहली ❋ सिंहासन हैते उठि करे कोलाकुलि
कुम्भकर्ण रावणेर बन्दिल चरण ❋ बसिते दिलेन राजा रत्न सिंहासन

देख कर ही डर लगता है, ब्रह्मा का वर मिलते ही यह सारी सृष्टि का नाश कर देगा। सभी देवताओं ने परामर्श के उपरान्त एकमत होकर देवी सरस्वती को भेज दिया। देवी सरस्वती जाकर उसकी जिह्वा पर बैठ गईं। ब्रह्मा ने पूछा, कुम्भकर्ण, कौन सा वर चाहते हो। कुम्भकर्ण ने कहा, ब्रह्मा, मैं और कुछ नहीं चाहता हूँ, सदा सो सकूँ इसका विधान दो। ब्रह्मा ने कहा, जैसा वर माँग रहे हो वैसा ही दे रहा हूँ। रातोंदिन तुम निद्रा में अचेतन रहा करो। वर सुनकर रावण बड़ा दुखी हुआ और जाकर उसने ब्रह्मा के चरण पकड़ लिये। रावण ने कहा, हे पद्मयोनि, तुमने स्वयं ही सर्जन किया तो स्वयं ही विनाश क्यों करने लग गये। तुम्हारा कहा हुआ कभी टल नहीं सकता, निद्रा और जागरण दोनों का विधान दो। ब्रह्मा ने कहा, सुनो रावण! मैंने वर दे दिया, छह महीने यह निद्रा में रहेगा और एक दिन जागेगा। अद्भुत बलशाली होगा और अद्भुत भोजन भी होगा। असमय नींद टूटने पर इसका विनाश होगा। इतना कहकर चतुरानन चल दिये और कुम्भकर्ण निद्रा में अचेतन हो गया। उसको कन्धे पर लाद कर हम दोनों भाई घर लौट आए। सुनो प्रभु, यही है कुम्भकर्ण की कथा। आज उसकी नींद असमय टूटी है, अतः तुम्हारे हाथ ही उसका निधन होगा ॥ ४९ ॥

यह सुनकर राम-लक्ष्मण दोनों बड़े प्रसन्न हुए। तब कुम्भकर्ण रावण से भेंट करने गया। कुम्भकर्ण को देखकर रावण ने सिंहासन से उतर कर उसको बाहों में बाँध लिया। कुम्भकर्ण ने रावण के चरणों की वन्दना की

कुम्भकर्ण बले, तव कारे एत डर ※ आज्ञा कर, काहारे पाठाब यमघर
आमिह थाकिते तव कारे नाहि डर ※ कतबार जिनियाछि यम-पुरन्दर
सागर शुषिब आजि, खाइब आगुनि ※ शूले खान-खान करि काटिब मेदिनी
चन्द्र-सूर्य चिबाइया फेलाइब दाँते ※ पृथिवी उपाड़ि फेलाइब खरस्रोते
सप्तद्वीपा पृथिवी करिब खंड-खंड ※ त्रिभुवन-उपरे धराब छत्र-दंड
एतेक बलिया वीर जिज्ञासे तखन ※ नर-वानरेर संगे युद्ध कि कारण
रावण बले, निद्रा जाओ ह'ये अचेतन ※ किरूपेते जानिबे एतेक विवरण
तिन सहोदर मोरा, भग्नी मात्र एका ※ जननीर आदरेर कन्या शूर्पणखा
विधवा हइया भग्नी कान्दिल विस्तर ※ मने-मने वासना थाकिते स्वतन्तर
शिवेर साधना-हेतु रहे स्थानान्तरे ※ स्थान दिया राखिलाम सागरेर पारे
संगे दिनु दुइ भाइ खर ओ दूषण ※ चौद्द-हाजार निशाचर ताहार भिड़न
एइरूपे शूर्पणखा किछुदिन थाके ※ दैवेर निर्बन्ध भाइ, कि कब तोमाके
राजा दशरथ छिल अयोध्यार धाम ※ चारि-पुत्र हय तार, ज्येष्ठ पुत्रराम
भरतेरे दिल राज्य, ना दिल ताहारे ※ दुर्भगार पुत्र बलि दिल दूर क'रे
वनेते आइल राम हइया संन्यासी ※ संगेते लक्ष्मण भाई, भार्या से रूपसी

और राजा ने उसको बैठने के लिए रत्न-सिंहासन दिया। कुम्भकर्ण ने कहा, तुमको किससे भय है मुझे बताओ, मैं उसको यम के घर भेज दूँ। मेरे रहते तुमको किसी का भी डर नहीं होना चाहिए—कितनी ही बार मैंने यम और पुरन्दर को हराया है। मैं सागर सोख डालूँ, आग खा डालूँ और भूमण्डल को शूल से खंड-खंड कर डालूँ। चन्द्र-सूर्य को दाँतों से चबाकर फेंक दूँ, पृथ्वी को उखाड़ कर समुद्र में फेंक दूँ। सप्तद्वीपवाली इस पृथ्वी को मैं खंड-खंड कर डालूँ और तीनों लोकों पर तुम्हारा प्रभुत्व हो जाय। इतना कह कर वीर ने पूछा, यह नर-वानर के साथ युद्ध किस कारण हुआ। रावण ने कहा, अचेतन हो तुम सोते रहते हो, इतना सारा विवरण तुमको कैसे मालूम हो सकेगा। हम तीन सहोदर हैं और बहन सिर्फ एक है। जननी की लाड़ली बेटी और हमारी बहिन सूर्पणखा। विधवा होकर बहुत रोती रही और मन ही मन स्वतंत्र रहने का विचार करने लगी। शिव जी की साधना के निमित्त वह अन्य स्थान पर रहना चाहती थी। मैंने उसे समुद्र के पार स्थान देकर रखा। खर और दूषण दोनों भाइयों को उसके साथ कर दिया जिनके साथ चौदह हजार राक्षसों की सेना भी थी। इस प्रकार सूर्पणखा कुछ दिनों तक रही। लेकिन दैव का फेर तुमको क्या बताऊँ भाई! अयोध्या में राजा दशरथ थे। उनके चार पुत्र हैं। ज्येष्ठपुत्र राम को राज्य न देकर उसने भरत को राज्य दिया और राम को घर से भगा दिया। राम संन्यासी बनकर वन में आया। उसके साथ उसका भाई लक्ष्मण और

कुँड़े बाँधि छिल बेटा पञ्चवटी-वने ※ शूर्पणखा गियाछिल पुष्प-अन्वेषणे
शूर्पणखार नाक-कान काटिल लक्ष्मण ※ परितापे युद्ध करे खर ओ दूषण
युद्ध करि रामचन्द्र मारे सर्व्वजने ※ भग्नी आसि कान्दिलेक धरिया चरणे
शूर्पणखा-परिताप सहिते ना पारि ※ आमि गिया हरिया एनेछि तार नारी
बुझिते ना पारि, बेटा फेरे कत रंगे ※ मितालि करिल गिया वानरेर संगे
सुग्रीव बालिर भाइ, किष्किन्धाय थाके ※ कटक सञ्चय कैल सेवा करि ताके
आज्ञाकारी करियाछे यत कपिगणे ※ बुड़ा एक भल्लुक मिलेछे तार सने
सेइ बेटा कुमन्त्रणा देय निरन्तर ※ वृक्ष-प्रस्तरेते बान्धे अलंघ्य सागर
सेइ बाँध व'ये कपि एसेछे अपार ※ घिरेछे कनक-लंका चारिटा दुयार
ब'सेछे पश्चिम-द्वारे से राम-लक्ष्मण ※ बड़-बड़ निशाचरे करिल निधन
बड़इ दुष्कर नर-वानरेर रण ※ विपदे पड़िया तोमा क'रेछि चेतन५०
कुम्भकर्ण बले, शुन भाइ दशानन ※ शुनाले आश्चर्य कथा, ए आर केमन
यदि राम-लक्ष्मण सामान्य हैत नर ※ जलेर उपरे केन भासिबे पाथर
वनेर वानर बद्ध ये रामेर गुणे ※ सामान्य मनुष्य ताँरे ना भाविह मने
कुम्भकर्ण वले, हेन लय मम मन ※ मायाते मनुष्य-रूप देव-नारायण

रूपवती भार्या सीता भी आई। पंचवटी के वन में कुटिया वनाकर रहता था। एक दिन फूल तोड़ने सूर्पणखा वहाँ गई तो लक्ष्मण ने उसके नाक-कान काट लिये। खर और दूषण ने युद्ध किया। युद्ध में रामचन्द्र ने सवको मार डाला। वहन ने आकर चरण पकड़ लिया और रोने लगी। सूर्पणखा का क्लेश मुझसे सहा नहीं गया। मैं जाकर उसकी नारी को चुरा लाया। समझ में नहीं आता यह हीन कितना छल-छन्द जानता है। इसने जाकर वानरों के साथ मित्रता कर ली। वाली का भाई सुग्रीव किस्किन्ध्या में रहता है। उसकी सेवा कर इसने सेना का जुगाड़ कर लिया। सारे कपियों को इसने आज्ञाकारी वना लिया है। इसके साथ बूढ़ा एक भालू भी (जाम्ववान) आ जुटा है। वही धूर्त बैठे-बैठे परामर्श देता रहता है। पेड़ और पत्थरों से उसने अलंघ्य सागर को बाँध डाला है। उसी वाँध पर से होते हुए असंख्य वानर इधर आ गये हैं और उन्होंने स्वर्ण-लंका के चारों द्वारों को घेर रखा है। बड़े-बड़े निशाचरों को उसने मार गिराया। यह नर-वानर वाला युद्ध बड़ा ही कठिन लग रहा है। विपत्ति में पड़कर ही तुमको जगाया है ॥ ५० ॥

कुम्भकर्ण ने कहा, भाई दशानन, सुनो, यह तो तुमने आश्चर्यजनक वात बताई। अगर राम-लक्ष्मण सामान्य नर होते तो जल पर पत्थर कैसे तैराते। वन का वानर राम के गुण पर रीझ कर उसका सेवक वन गया है—उसको तुम सामान्य मनुष्य न सोचना। कुम्भकर्ण ने कहा, मुझको यों लग रहा है

रावण बले, राम यदि देव-नारायण ※ संन्यासीर वेशे केन करिबे भ्रमण
कुम्भकर्ण बले, राम हइबे तपस्वी ※ रावण बले, केन नाहि हय तीर्थवासी
कुम्भकर्ण बले, राम हवे राजार बेटा ※ रावण बले, केन से माथाय धरे जटा
कुम्भकर्ण बले, राम व्याध हैते पारे ※ रावण बले, केन तबे यज्ञसूत्र धरे
कुम्भकर्ण बले, राम हवे ब्रह्मचारी ※ रावण बले, तबे केन संगे तार नारी ५१
रावण बलिछे, राम किसेर ब्रह्मचारी ※ भक्तिते डाकिले जाय चण्डालेर बाड़ी
दिन-पाँच-छय छिल पञ्चवटी-मूले ※ सेखाने पाकाल जटा आठा मेखे चूले
इन्द्र चन्द्र कुवेर वरुण पुरन्दर ※ शंकाते आसिते नारे लंकार भितर
मनुष्य हइया बेटार एत अहंकार ※ बानरेर सहाये सागर हैल पार
बलिते ना पारि, ए कि दैवेर घटना ※ त्रिभुवनेर कपि ल'ये रामेर मन्त्रणा
आछिल सागर सेइ अगाध गभीर ※ आपनार तेजेते आपनि नहे स्थिर
रत्नाकर भीत हैल मनुष्येर आगे ※ जोड़हस्त करिया बन्धन निल मेगे
एतदिने अपयश हैल रत्नाकरे ※ वृक्ष-प्रस्तरेते बान्धे नर ओ वानरे
वीर नाहि लंकाते, भाण्डारे नाहि धन ※ एतेक प्रमाद तव निद्रार कारण

कि मनुष्य के रूप में यह नारायण है। रावण ने कहा, राम यदि नारायण ही है तो संन्यासी के वेश में क्यों भटकता फिर रहा है। कुम्भकर्ण ने कहा, राम तपस्वी होगा। रावण ने पूछा, तो फिर वह तीर्थवासी क्यों नहीं बना ? कुम्भकर्ण ने कहा, राम राजा का वेटा है। रावण ने कहा, तो फिर वह सिर पर जटा क्यों धरे है ? कुम्भकर्ण ने कहा हो सकता है राम व्याध (शिकारी) हो। रावण ने कहा, फिर यज्ञोपवीत क्यों धारण किये हुए हैं। कुम्भकर्ण ने कहा, राम ब्रह्मचारी होगा। रावण ने कहा, तो उसके साथ नारी क्यों है ? ॥ ५१ ॥

रावण ने कहा, यह राम कैसा ब्रह्मचारी है कि भक्ति से बुलाने पर चंडाल के घर भी चला जाता है। पाँच-छह दिन पंचवटी में था, वहीं इसने गोंद से वालों में जटा बना ली। इन्द्र, चन्द्र, वरुण, कुबेर पुरन्दर जैसे देवता भय से लंका में प्रवेश नहीं करते। लेकिन मनुष्य होकर भी इस व्यक्ति को इतना घमंड है। वन्दरों की सहायता से इसने समुद्र लाँघा, कुछ बता भी नहीं सकता कि यह नियति का कैसा खेल है कि त्रिभुवन के कपियों के साथ वह मंत्रणा करता रहता है। इतने दिनों से रत्नाकर समुद्र अथाह गहरा और चंचल था लेकिन वह भी मनुष्य से डर गया और हाथ जोड़ कर वन्धन स्वीकार कर लिया। रत्नाकर इतने दिनों में वदनाम हो गया—उसको नर और वानर ने पेड़ और पत्थरों से बाँध डाला। लंका में कोई वीर न रहा और न भंडार में कोई धन ही रहा और यह सारी विपत्तियाँ तुम्हारी निद्रा के कारण ही आईं। धर्म-धुरन्धर भाई विभीषण था, वह भी मुझसे लड़ कर राम

छिल भाइ विभीषण धर्म-अधिष्ठान ※ आमा-सने द्वन्द्व करि गेल राम-स्थान
बुद्धिहीन विभीषण कार लागि मरे ※ मनुष्येर हित चिन्ति ज्ञाति-हिंसा करे
अरुण-वरुण-यमे शंका नाहि करि ※ सीता फिरे दिले ये हासिबे सुरपुरी
अन्ये हासे हासुक, हासिबे पुरन्दर ※ सेइ बेटा बलिबेक हीन लंकेश्वर
बुझिया करह भाइ, जे हय विधान ※ तुमि-बिना लंकार नाहिक परित्राण
त्रिभुवन जिनिलाम तव बाहुबले ※ वानरेर संगे रणे कि आछे कपाले
लंकापुरी राखह, आमार कर हित ※ भावह उपाय मने, जे हय विहित ५२

कुम्भकर्णेर युद्धयात्रा

कम्भकर्ण बले, किवा क'रेछ मन्त्रणा ※ तोमार सभाते नाहि मन्त्री एक जना
समुद्रेर पारे केन नाहि दिले थाना ※ तवे आर सागर बान्धित कोन जना
घरेते बसिया बड़ देखह आपना ※ कोन छार मन्त्री ल'ये तोमार मन्त्रणा
आपनारे बड़ देख बसि लंकापुरे ※ बेड़िल ए स्वर्ण-लंका वनेर वानरे
बालि हैते सुग्रीव ये नहे पराक्रमे ※ प्रबन्ध करिया तबु जिनिल संग्रामे
पाइल अर्द्धेक राज्य, महाराणी तारा ※ तोमा हैते बुद्धिमान सुग्रीव वानरा ५३
एत यदि कुम्भकर्ण रावणेरे बले ※ शुनिया रावण-राजा अग्नि हेन ज्वले

से मिल गया। यह मूर्ख विभीषण जाने किसके लिए प्राण दे रहा है। मनुष्य की भलाई सोचता हुआ अपने सगे-सम्बन्धियों से झगड़ा मोल लिए है। अरुण, वरुण, यम से मैं नहीं डरता और सीता को लौटा दूँगा तो सारी सुरपुरी हँसेगी। दूसरा कोई हँसे तो कोई बात नहीं लेकिन पुरन्दर हँसेगा और कहेगा कि लंकेश्वर हीन है। भाई, समझ-बूझ कर जो जी में आवे करो, तुम्हारे बिना लंका का कोई निस्तार नहीं। तुम्हारे ही बाहुबल से मैंने त्रिभुवन पर विजय पाई। पता नहीं, बन्दरों के साथ इस युद्ध में भाग्य में क्या लिखा है। लंकापुरी की रक्षा करो और मेरा हित। जो कुछ भी तुमको उचित लगे वही करो॥ ५२॥

कुम्भकर्ण की युद्ध-यात्रा

कुम्भकर्ण ने कहा, तुम्हारी सभा में एक भी मंत्री नहीं है, जाने क्या परामर्श मिला तुमको। तुमने समुद्र पार कर छावनी क्यों नहीं कायम की? फिर तो समुद्र बाँधने से ये रह गये होते। पता नहीं कैसे मंत्रियों से तुम मंत्रणा लेते हो? लंका में बैठे अपने को बहुत बड़ा मानते हो, अब देख लो जंगल के बन्दरों ने स्वर्णलंका को घेर लिया है। जो सुग्रीव वालि के मुकाबले पराक्रम में कुछ भी नहीं है उसने तरकीब भिड़ाकर संग्राम में विजय पाई, आधा राज्य और महारानी तारा उसे मिले। वह सुग्रीव बन्दर भी तुमसे अधिक बुद्धिमान् है॥ ५३॥

कुम्भकर्ण ने जब रावण से इतना कहा तो रावण गुस्से से तमतमा उठा।

कुड़िचक्षु रक्तवर्ण कहे लंकेश्वर ❊ सदा थाक निद्रागत घरेर भितर
स्वर्ग मर्त्य पाताल जिनिनु त्रिभुवन ❊ दैवेर निर्व्वन्ध याहा, ना हय खण्डन
कनिष्ठ नहिस्, येन ज्येष्ठ सहोदर ❊ राजनीति शिक्षा दिस् सभार भितर
कहिले ये भाल-मन्द अनेक काहिनी ❊ पश्चाते बुझिब सब, वैरी आगे जिनि ५४
कुम्भकर्ण बले, भाई ना बल विस्तर ❊ विपत्-समये नीति कहे सहोदर
आमि-हेन भाइ तव, कारे कर शंका ❊ वैरी मारि राखिब कनक-पुरी लंका
श्रीरामेर माथा काटि तोमा दिब डालि ❊ सीता ल'ये चिरदिन सुखे कर केलि
आगे लंका अ-रामा ओ अ-वानरा करि ❊ सुग्रीवेरे मारिया पाठाब यमपुरी
बधिब कुमुद-आदि यत कपिगण ❊ मारिब तोमार वैरी भाइ विभीषण
हनूमान मारि आजि लंकापुरी-वैरी ❊ मारिब ताहार परे वानर केशरी ५५
चलिल से कुम्भकर्ण जुझिवार साधे ❊ भाइ महोदर गिया सम्मुखे विरोधे
महोदर बले, भाइ, करि निवेदन ❊ बहुदिन निद्रागत छिले अचेतन
देखिते करये साध पुरवासी नारी ❊ एक बार देखा दिते चल अन्त:पुरी
कुम्भकर्ण बले' कि कहिस् महोदर ❊ सम्मुखे विपक्ष ब'से यमेर दोसर
चारि-द्वार मेरे आगे जिने आसि रण ❊ तबे अन्त:पुरे हबे आमार गमन ५६

बीस आँखें लाल-लाल करते हुए लंकेश्वर ने कहा, सदा निद्रा में मग्न कमरे के भीतर रहा करते हो। त्रिभुवन तो मैंने जीता लेकिन दैव की मार से कैसे बचूँ। तू छोटा नहीं, मानों बड़ा भाई हो इस तरह सभा में राजनीति सिखाने लग गया। जो भला-बुरा तूने कहा उससे तो पीछे निबट लूँगा, इस वक्त तो शत्रु को हराना है॥ ५४॥

कुम्भकर्ण ने कहा, भाई ज्यादा कुछ मत कहो, विपत्ति के समय सहोदर भाई ही सलाह देता है। मुझ जैसे भाई के होते तुमको कौन सा डर है, वैरी मारकर मैं कनक-पुरी लंका बचा लूँगा। श्रीराम का सिर काटकर तुमको भेंट चढ़ाऊँगा, सीता को लेकर सदा के लिए आनन्द से केलि करो। पहले लंका को रामशून्य और वानरशून्य बना डालूँ। सुग्रीव, कुमुद आदि कपियों को यमपुरी भेज दूँगा। हनुमान जैसे लंका के वैरी को मार गिराऊँगा। तुम्हारे शत्रु भाई विभीषण को भी मार डालूँगा। सबके अन्त में वानर-केशरी को मारूँगा॥ ५५॥

जब जूझने के लिए कुम्भकर्ण चल पड़ा तो भाई महोदर सामने आकर खड़ा हो गया और बोला, बहुत दिनों से तुम निद्रा में अचेतन थे इसलिए पुरवासिनी नारियाँ तुमको देखने के लिए उत्सुक हैं। कुम्भकर्ण ने कहा, अरे महोदर, तू क्या कह रहा है। सामने यम सा शत्रु-पक्ष खड़ा है। पहले चारों द्वारों को जीत कर लौट आऊँ, फिर अन्त:पुर में जाऊँगा॥ ५६॥

महोदर-कुम्भकर्ण कथा दुइजने ※ सिंहासन छाड़ि तबे उठिल रावणे
संग्रामेर साजे राजा साजाय आपनि ※ पराय मतिर पाग, थरे-थरे मणि
कुम्भकर्ण साजिछे, राक्षस पुलकित ※ चारि दिके निशाचर साजये त्वरित
कुमारेर चाक येन, माणिक-अंगुरी ※ कुम्भकर्ण-अंगुले पराय यत्नकरि
कतमत यतने पराय तोड़ताड़ ※ माथार मुकुट येन मैनाक-पाहाड़
स्थाने-स्थाने मरकत-शोभा कत तार ※ गलाय तुलिया दिल मणिमय हार
रत्नेते निर्म्मित दिल श्रवणे कुण्डल ※ रवि-शशि जिनि ज्योति करे झलमल
मुकुटेर चूड़ा गिया आकाशेते जोड़े ※ राजारे प्रणाम करि जुझिवारे नड़े५७
जुझिवारे कुम्भकर्ण चले एकेश्वर ※ गगने मस्तक येन नव जलधर
आकाशेर चन्द्र खसे, वायु मन्दगति ※ मेघे रक्त वरषय, काँपे वसुमती
आकाशे अमर काँपे, सागर उथले ※ गड़ेर बाहिर ह'ये जुझिवारे चले
कुम्भकर्ण हैल यदि गड़ेर बाहिर ※ वानर देखिया करे गर्ज्जन गभीर
बड़-बड़ वानरेर बड़-बड़ लम्फ ※ कुम्भकर्णे देखिया सवार हैल कम्प
भये शुकाइल मुख, काँपिल अन्तर ※ फेलिया पाथर-गाछ पलाय वानर
चूल नाहि बाँधे केह, ना परे कापड़ ※ बड़-बड़ वानर उठिया दिल रड़
वानरेर भंग-रवे कर्णे लागे तालि ※ शतकोटि वानरे पलाय शतबली
हिंगुलिया वानर हिंगुल जिनि अंग ※ आशीकोटि वानरे पलाय शरभंग

महोदर-कुम्भकर्ण का सम्भाषण समाप्त हुआ तो रावण सिंहासन से उठ खड़ा हुआ और अपने हाथों से युद्ध की सज्जा पहनाने लग गया। मोती-जड़ी पगड़ी, कुम्हार की चाक जैसी माणिक जड़ी अंगूठी, मणिमय हार, रत्नमय कुंडल आदि पहनाये गये। कुम्भकर्ण को सज्जित होते देख कर राक्षस पुलकित हुए और वे भी युद्ध के लिए सज्जित होने लग गये। कुम्भकर्ण के मुकुट की चूड़ा आकाश से जा टकराई। राजा को प्रणाम कर वह रण में चल पड़ा ॥ ५७ ॥

एकेश्वर कुम्भकर्ण जब लड़ने के लिए चला तो गगन में उसका मस्तक नव-जलधर सा दिखने लगा। आकाश से चन्द्र का स्खलन हुआ, पवन मन्दगति हो गया, मेघ से रक्तवर्षा होने लगी और वसुधा काँपने लगी। आकाश में अमरवृन्द काँपने लगे और समुद्र में उथल-पुथल मच गई। गढ़ से बाहर कुम्भकर्ण ने निकल कर बन्दरों को देख भीषण गर्जन किया। कुम्भकर्ण को देखकर बन्दरों की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई, कूद-फाँद बन्द हो गया, चेहरे सूख गये, दिल धड़कने लगे, पेड़-पत्थर फेंक-फाँक कर सब भागने लग गये। बन्दरों की भगदड़ से कानों के परदे फटने लगे। शतबली अपने शतकोटि बन्दरों को लेकर भागा, हिंगुल जैसे अंग वाले अपने अस्सी करोड़ हिंगुलिया बन्दरों के साथ शरभंग भागा। मलय-गिरि वाले गेरू रंग के छत्तीस करोड़ बन्दरों के साथ केशरी भागा। गवाक्ष और गय दोनों

मलय-गिरिर कपि वर्ण येन गेरी ❋ छत्रिश-कोटि वानरेते पलाय केशरी
पलाल गवाक्ष गय भाइ दुइजन ❋ वानर पञ्चाश-कोटि दोंहार भिड़न
भल्लुक-कटके पलाय मन्त्री जाम्बवान ❋ आशीकोटि वानरे पलाय हनूमान
पलाय सुषेण-वेज राजार श्वशुर ❋ तिनकोटि-वृन्द ठाट याहार प्रचुर५८

कुम्भकर्णेर युद्ध

पलाय वानर-ठाट, केह नाहि तिष्ठे ❋ कोप करि अंगद चाहिछे एकदृष्टे
अंगद बले, कपिगण, भंग कि कारण ❋ एकचड़े राक्षसार बधिब जीवन
जीवन-मरण नाहि आपनार वशे ❋ युद्ध करि मरिले भुवन भरे यशे
यत युद्ध करिले, से-सब नाहि गणि ❋ आजि रण जिनिले पौरुष बलि मानि
देवतार पुत्र तोरा, देव-अवतार ❋ राक्षसेर रणे केन हासिब संसार
एत शुनि थरे-थरे फिरे कपिगण ❋ कटक फिराये आने बालिर नन्दन
लाफ दिया कपि सब उठिल आकाशे ❋ आकाशे उठिया गाछ-पाथर वरिषे
कुपिल से कुम्भकर्ण, हाते धरि शूल ❋ वानर-कटक विन्धि करिल निर्म्मूल
बड़-बड़ वीरगणे शूले बिन्धि पाड़े ❋ तृणगण येमन अनले पड़ि पुड़े
पर्वत तुलिया मारे वानर-कटके ❋ कुम्भकर्ण-अंगे येन तृण हेन ठेके

भाई अपनी पचास-करोड़ की सेना लेकर भाग खड़े हुए। मंत्री जाम्बवान अपने भालू-कटक के साथ भागे। अस्सी करोड़ बन्दर लेकर हनुमान भाग चले। राजा का श्वसुर सुषेण वैद्य अपने तीन करोड़ सेना के साथ भाग खड़ा हुआ ॥ ५८ ॥

कुम्भकर्ण का युद्ध

वानर-सेना भागने लगी है और कोई भी ठहरता नहीं है यह देखकर अंगद बेहद बिगड़ा। उसने कहा, क्यों कपिगण! यह क्या बात है जो तुम लोग भाग रहे हो। मैं एक ही झाँपड़ से इस राक्षस को मार डालूँगा। जीवन और मृत्यु अपने वश में नहीं होते—युद्ध के उपरान्त मरने पर यश मिलता है। जितने युद्ध आज तक तुम लोगों ने जीते मैं उनकी गिनती नहीं करता; आज का युद्ध जीतो तो मैं पौरुष मानूँ। तुम सब देवता के अवतार हो—राक्षसों के साथ युद्ध में क्यों जगहँसाई करते हो। इतना सुनकर सारे कपि एक-एक कर वापस चले आए। बालिपुत्र ने सारी वानर-सेना को संगठित किया। सारे कपि आकाश पर चढ़ गये और पेड़-पत्थरों की वर्षा करने लगे। कुम्भकर्ण बिगड़ गया और हाथ में शूल लेकर वानर-सेना को छेद-छेद कर निमूल करने लगा। बड़े-बड़े वीरों को शूल से यों मार डाला जैसे आग में घास-फूस जल जाती हो। वानर-सेना ने जो पहाड़ फेंक-फेंक कर मारे वह कुम्भकर्ण के शरीर पर तृण के समान लगे। क्रोधित होकर कुम्भकर्ण बन्दरों को दोनों हाथों से पकड़-पकड़ कर निगलने लगा ॥ ५९ ॥

कुपिल से कुम्भकर्ण अति भयंकर ※ दुइ हाते ध'रे ध'रे गिलिछे वानर ५९
भंग दिया वानर पलाय सब डरे ※ कुम्भकर्ण केह सहित ना पारे
कुपिल से नील वीर कटके प्रधान ※ शालगाछ आनिलेक गिया एकटान
शालगाछ आने येन पर्वतेर चूड़ा ※ कुम्भकर्ण-गाये ठेके ह'ये गेल गुँडा
कुम्भकर्ण-रण केह सहिते ना पारे ※ एकेश्वर नील रहे संग्राम-भितरे
साहस करिया युद्धे नील सेनापति ※ आर चारि वीर तार मिलिल संहति
शरभंग कुमुद नल से गन्धमादन ※ नीलेर संहति मिलि हैल पञ्चजन
पाँचवीर गाछ आर पर्व्वत उपाड़ि ※ कुम्भकर्ण-बुके मारे दु-हातिया बाड़ि
वानरेर गाछ-पाथर किछुइ ना गणे ※ हाते शूल कुम्भकर्ण चाहे पञ्चजने
रह रह बलि वीर वानरेर बले ※ दुइ हाते सापटिया धरि कोले फेले
कोलेर चापने कपि हैल अचेतन ※ मुखे रक्त उठे, श्वास बहे घने-घन
चापड़ेर घाये मूर्च्छे नील सेनापति ※ पदाघाते पड़िल गवाक्ष योद्धपति
शरभंग गन्धमादन पड़े दुइजन ※ पञ्चजना भूमे पड़ि हय अचेतन ६०
प्रथम समरे यदि पञ्चजन पड़े ※ अनेक बानर आसि कुम्भकर्णे बेड़े
मार मार शब्दे कपि धाय उभ रड़े ※ केह स्कन्धे चड़े, केह अंग चापि पड़े
केह पृष्ठे उठे, केह कील मारे घाड़े ※ कार साध्य कुम्भकर्णे रणमध्ये पाड़े
वानर धरिया वीर चिबाइछे दाँते ※ मुख संवरिते नारे, रक्त पड़े स्रोते

कुम्भकर्ण के आक्रमण को सह न सकने के कारण सारे बन्दर मैदान छोड़ कर भागने लगे। कटक के प्रधान वीर नील ने क्रोधित हो एक शालवृक्ष उखाड़ा, लेकिन कुम्भकर्ण के बदन से टकरा कर वह टुकड़ा-टुकड़ा हो गया। कुम्भकर्ण से लड़ने वाला सिवाय वीर नील के और कोई न रहा और चार वीर शरभंग, कुमुद, नल और गन्धमादन उनकी सहायता में रहे। पाँचों वीरों ने पेड़ों और पर्वतों को उखाड़-उखाड़ कर कुम्भकर्ण के सीने पर दोनों हाथों से दे मारा, लेकिन इसका कोई भी प्रभाव कुम्भकर्ण पर न पड़ा। उसने पाँचों को हाथों से समेट कर गोद में धर दबोचा। दबाव से कपि अचेतन हो गये, मुँह से खून निकल आया और साँस उखड़ने लगी। एक झाँपड़ की मार से नील सेनापति को मूर्च्छा आ गई, पदाघात से गवाक्ष सा रणपति भूमि पर लोटने लगा, शरभंग और गन्धमादन भी गिर गये—पाँचों के पाँचों बेहोश होकर धरती चूमने लगे ॥ ६० ॥

प्रथम संग्राम में ही जब पाँचों वानर गिर गये तो बहुत सारे वानरों ने आकर कुम्भकर्ण को घेर लिया। कोई तो उसके कंधे पर चढ़ गया तो कोई उसकी पीठ पर, कोई घूँसा मारने लगा तो कोई मुक्का। लेकिन कुम्भकर्ण को वश में करना किसी के बूते का नहीं था। वह बन्दरों को पकड़-पकड़ कर दाँतों से चबा रहा था और मुँह से निरन्तर खून की धारा वह रही थी।

सहस्र-सहस्र कपि सापटिया धरे ❋ पाताल-समान मुख ताहे ल'ये पूरे
नाक-कानेर पथ येन घरेर दूयार ❋ ताहा दिया कपि सब वेरय आपार ६१
लाफ दिया कुम्भकर्ण धरे अंगदेरे ❋ मूर्च्छित करिल तारे गदार प्रहारे
हाते गदा कुम्भकर्ण अति भयंकर ❋ गदार बाड़िते मारे अनेक वानर
शतबली भूमे पड़ि जाय गड़ागड़ि ❋ हनूमान-बुकेते मारिल गदाबाड़ि
गदा खेये हनूमान उठिल आकाशे ❋ आकाशे थाकिया गाछ पाथर-वरिषे
घने घने वर्षे येन महाशब्द शुनि ❋ कुम्भकर्ण-गदाभांगि कैलि खानि-खानि
गदा गेल, कुम्भकर्ण लागिल भाविते ❋ लाफ दिया हनूमाने धरिल त्वरिते
हनूमान-बुके मारे वज्रेर चापड़ ❋ चापड़ेर घाये हनूमान करे धड़फड़
भूमिते पड़िल यदि पवन-नन्दन ❋ रण छाड़ि पलाय यतेक कपिगण
बड़-बड़ वीर धाय भंग दिया रणे ❋ कुम्भकर्णे देखि केह स्थिर नहे मने ६२

सुग्रीव-कर्तृक कुम्भकर्णेर नासा-कर्ण-छेदन

बड़-बड़ वानर धरिया सब गिले ❋ आपनि सुग्रीव गेल संग्रामेर स्थले
शालवृक्ष उपाड़िलि पवनेर वेगे ❋ गाछ-हाते दाण्डाइल कुम्भकर्ण-आगे
बड़-बड़ वानर पाड़िलि वाछेर वाछ ❋ मोर घा सह रे बेटा, मारि शालगाछ
कुम्भकर्ण बले, आमि विधातार नाति ❋ एड़ देखि शालवृक्ष, बुझि रे शकति

हजारों कपियों को समेट कर वह अपने मुख-गह्वर में डाल लेता। नाक और कान के छिद्र मानों द्वार हों जिनमें से कपि निकल और घुस रहे थे ॥ ६१ ॥

कूद कर कुम्भकर्ण ने अंगद को पकड़ लिया और गदा के प्रहार से उसको मूर्च्छित कर डाला। हाथ में गदा पकड़े हुए कुम्भकर्ण का रूप बड़ा भयंकर है। गदा के प्रहार से उसने वहुत सारे वानरों को मार डाला। शतबली भी भूमि पर लोटने लगा। गदा का प्रहार खाकर हनुमान आकाश में उठ गया और वहाँ से पेड़-पत्थर वरसाने लगा। कुम्भकर्ण की गदा टूट गयी तो उसने उछल कर हनुमान को पकड़ लिया और उसके सीने पर वज्र सा एक मुक्का मारा। मुक्के की चोट से पवननन्दन छटपटा कर जमीन पर गिर पड़े। सारे वन्दर मैदान छोड़-छोड़ कर भागने लगे। कुम्भकर्ण के सम्मुख सभी के पैर उखड़ गये ॥ ६२ ॥

सुग्रीव द्वारा कुम्भकर्ण का नासा-कर्ण-छेदन

जब बड़े-बड़े वन्दरों को पकड़-पकड़ कर कुम्भकर्ण निगलने लगा तो समर-क्षेत्र में सुग्रीव स्वयं पहुँच गया। एक विशाल शाल-वृक्ष उखाड़ कर हाथ में लेकर वह कुम्भकर्ण के सम्मुख जाकर खड़ा हो गया और बोला, बड़े-बड़े वन्दरों को चुन-चुन कर तूने गिराया है, अब जरा मेरी चोट तो सँभाल। कुम्भकर्ण ने कहा, मैं ब्रह्मा का प्रपौत्र हूँ, तू शालवृक्ष मार तो जरा। पर्वत-समान

एड़िलेक शालवृक्ष पर्वत-प्रमाण ❋ कुम्भकर्ण-गाये ठेकि हैल खान-खान
छि छि बलि कुम्भकर्ण दिल टिट्कारी ❋ एइ मुखे खाबि बेटा किष्किन्ध्या नगरी
भाल छिल बालिराज, वीर मध्ये गणि ❋ कोन मुखे राखिबि ताहार राजधानी
दुइलक्ष राक्षसे ये जाठा-गाछ वय ❋ सेइ जाठा कुम्भकर्ण हाते तुलि लय
आशीकोटि मण लौह जाठार गठन ❋ दशहाजार हात जाठा दैर्घ्य निरूपण
कुम्भकर्ण एड़े जाठा दिया हुहुंकार ❋ स्वर्ग-मर्त्य-पाताले लागिल चमत्कार
देखिया सुग्रीव-वीर ना भावे मनेते ❋ सिंहनाद करि जाठा धरे वाम हाते
भांगिलेक जाठा, येन पड़िल झञ्झना ❋ त्रिभुवने यत लोक पासरे आपना
कुम्भकर्ण कोपेते पर्व्वते दिल टान ❋ एकटाने आनिल पर्व्वत एकखान
एड़िल पर्व्वतगोटा विपरीत-कोपे ❋ पड़िल सुग्रीव-राजा पर्व्वतेर चापे
घिरेछिल मेघ, येन उड़ाइल झड़े ❋ सुग्रीवे लइया वीर प्रवेशिल गड़े
लंकार भितरे शीघ्र जाय महाबली ❋ सुग्रीवेरे ल'ये दशानने दिते डालि
प्रथम वृहन्दे जाय क'रे ठेलाठेलि ❋ द्वितीय वृहन्दे, जाय पड़े हुलाहुलि
तृतीय वृहन्दे जाय परम हरिषे ❋ सुग्रीव राजारे देखि नारिगण हासे ६३
कुम्भकर्ण सुग्रीवेरे ल'ये जाय बेन्धे ❋ यतेक वानरगण माथे हात कान्दे
महावीर हनूमान कटकेर सार ❋ मने-मने भाविछे राजार प्रतिकार
कुम्भकर्णे संहारिब आजिकार रणे ❋ राजा उद्धारिले तवे प्रीति पाइ मने

शालवृक्ष कुम्भकर्ण के शरीर से टकराते ही खंड-खंड हो गया। कुम्भकर्ण ने सुग्रीव को धिक्कारा और कहा, इसी बूते पर तू किष्किन्धा-नगरी का भोग करेगा। बालिराजा को मैं वीर मानता हूँ, तू किस मुँह से उसकी राजधानी की रक्षा कर सकेगा। जिस लौह-दंड को दो लाख राक्षस ढोते हैं, अस्सी करोड़ मन वजन का और दश हजार हाथ लम्बा, वही लौह-दंड हाथ में लेकर कुम्भकर्ण ने हुंकार मारते हुए फेंका। सुग्रीव ने इसकी परवाह न करते हुए बाएँ हाथ से उस दंड को पकड़ा। लौहदंड झनझनाता हुआ टूट गया। कुम्भकर्ण ने गुस्से से एक पर्वत को उखाड़ कर सुग्रीव की ओर फेंका और सुग्रीव राजा उसके नीचे दब गया। सुग्रीव को लेकर कुम्भकर्ण दशानन को भेंट चढ़ाने गढ़ के भीतर चल पड़ा। प्रथम महल में प्रवेश करते ही धकमपेल शुरू हो गया, द्वितीय महल में हो-हल्ला मच गया, तृतीय महल में कुम्भकर्ण जब सहर्ष पहुँचा तो सुग्रीव राजा को देखकर नारियाँ हँसने लगीं॥ ६३॥

कुम्भकर्ण सुग्रीव को बाँधकर ले चला तो सारे बन्दर सिर पर हाथ रख कर रोने लगे। महावीर हनुमान मन ही मन इसके प्रतिकार के बारे में सोचने लगा। आज के युद्ध में मैं कुम्भकर्ण का नाश करूँगा लेकिन उससे पूर्व यदि राजा सुग्रीव मुक्ति पा जाएँ तो मन प्रसन्न हो। इतना कहकर वीर जूझने को चल पड़ा तो जाम्बवान ने "लौट आओ, लौट आओ" कहकर पुकारा।

एतेक बलिया वीर जुझिवारे यान ※ 'वाहड़-वाहड़' बलि डाके जाम्बवान
यतदिन जीवे राजा क्षोभ रबे मने ※ भाल जाबे, मन्द रबे, कि काज ए रणे
सेवक हइते राजा पाबे अव्याहति ※ चिरकाल सुग्रीवेर घुषिबे अख्याति
राज-बुद्धि धरे राजा, बले विपरीत ※ कुम्भकर्ण-हस्त हैते आसिबे निश्चित
जाम्बवान-वाक्ये वीर नाहि दिल हाना ※ उलटिया रहे गिया आपनार थाना ६४
कुम्भकर्ण-कोले राजा पाइल संवित् ※ चारिदिके लंकार देखिछे नृत्य-गीत
चारिदिके निशाचर, ना देखे वानर ※ विचित्र-निर्म्माण देखे सुवर्णेर घर
महाबल सुग्रीव बुद्धिते बृहस्पति ※ मने-मने चिन्तेन आपन-अव्याहति
कर्ण-टाने दु'हाते, कामड़े छिँड़े नाक ※ भये कुम्भकर्ण डाके 'परित्राहि' डाक
दुइपार्श्व चिरे फेले दु'पायेर भरे ※ पञ्च-अंगे कुम्भकर्णेर रक्त पड़े धारे
मर्म्मव्यथा पेये वीर छाड़े सुग्रीवेरे ※ आछाड़िया फेलि दिल धरणी उपरे
दशने नासिका निल, कर्ण निल करे ※ लाफ दिया वीर गिया उठिल प्राचीरे
पुनः लाफ दिलेक विक्रमे करि भर ※ प्रवेश करिल गिया कटक-भितर
कटकेते पशिया सुग्रीव महाबली ※ कुम्भकर्ण-नाक-कान रामे दिल डालि
सेइ नाक कानेर कि कहिब व्याख्यान ※ पँचिशेर बन्द येन घर एकखान ६५

ऐसे रण से क्या लाभ जिसमें उत्तम तो चला जाय और अधम रह जाय। सेवक के प्रयास से राजा को मुक्ति मिली यह सदा के लिए सुग्रीव की बदनामी का कारण बना रहेगा। राजा राज-बुद्धि-सम्पन्न है और निश्चित रूप से वह कुम्भकर्ण के हाथों से मुक्त होकर चला आयगा। जाम्बवान के कहने पर वीर हनुमान ने आक्रमण नहीं किया और अपनी चौकी पर जाकर खड़ा हो गया ॥ ६४ ॥

कुम्भकर्ण की गोद में राजा होश में लौट आया। चारों ओर उसने लंका का नृत्यगीत देखा। चारों ओर निशाचर दीख रहे हैं—कोई भी वानर नहीं दिखाई पड़ रहा है। सुवर्ण निर्मित गृहों का विचित्र निर्माण-कार्य देखा। महाबली सुग्रीव बुद्धि में बृहस्पति के समान हैं। वे मन ही मन अपनी मुक्ति का उपाय सोचने लगे। दोनों हाथों से उन्होंने कुम्भकर्ण के दोनों कान खींच लिये और दाँतों से उसकी नाक काट ली। डर के मारे कुम्भकर्ण त्राहि-त्राहि चिल्लाने लगा। दोनों पैरों के भार से सुग्रीव ने कुम्भकर्ण के दोनों बगल चीर डाले और उसके सारे अंगों से खून की धारा बह निकली। असह्य पीड़ा से व्याकुल हो वीर कुम्भकर्ण ने सुग्रीव को छोड़ दिया और उसको जमीन पर पटक दिया। वीर सुग्रीव एक छलाँग में प्राचीर पर चढ़ गया, फिर दूसरी छलाँग में अपनी सेना के बीच आ गया। कटक में प्रवेश करने के बाद महाबली ने राम के सम्मुख कुम्भकर्ण के नाक और कान भेंट में चढ़ाये। उन नाक और कान का क्या बखान करूँ—मानों पच्चीस धन्नियों वाला एक-एक कमरा हो ॥ ६५ ॥

श्रीरामेर सहित कुम्भकर्णेर युद्ध ओ मृत्यु

नाक कान नाहि, कुम्भकर्ण पाय लाज ॥ मने-मने भावे, आर जीवने कि काज
एत बल-बिक्रम सकल हैला मिछा ॥ सुग्रीव-वानरा बेटा क'रे गेल बोंचा
नेउटिया रणे वीर आइल निमिषे ॥ बोंचा नाक देखिया वानरगण हासे
ताहा देखि कुम्भकर्ण महाकोपे ज्वले ॥ बड़-बड़ कपिगणे ध'रे ध'रे गिले
नासिका-कर्णेर पथ विषम-विस्तार ॥ ताहा दिया कपिगण वेरय अपार
एके कुम्भकर्ण वीर अति भयंकर ॥ कर्ण-नासा गेछे आरो ह'येछे दुष्कर
कोपदृष्टे कुम्भकर्ण जेइदिके चाय ॥ बड़-बड़ वीर सब छुटिया पलाय
'बोंचा एलो' बलि छुटे सकल वानर ॥ दाण्डाइल सबे गिया लक्ष्मण गोचर ६६
हाते धनु लक्ष्मण हइल आगुसार ॥ ताहा देखि कुम्भकर्ण हासे एकबार
कुम्भकर्ण बले, बेटा, तोरे चाहे के ॥ तोर भाइ रामा बेटा, तारे डेके दे
हासिया बलेन राम कमललोचन ॥ एतदिने यम बुझि क'रेछे स्मरण
एइ आमि आइलाम तोर विद्यमान ॥ यत शक्ति आछे बेटा, तत शक्ति हान
तोरे मेरे काटि रावणेर दशमुंड ॥ विभीषण-उपरे धराब छत्र-दण्ड
श्रीरामेर कथा शुनि कुम्भकर्ण हासे ॥ मने कि क'रेछ बेटा, फिरे जाबे देशे
एत बलि कुम्भकर्ण ह'ये क्रोधमति ॥ रामेरे गिलिते जाय अति शीघ्रगति

श्रीराम के साथ कुम्भकर्ण का युद्ध और उसकी मृत्यु

नाक और कान के न होने से कुम्भकर्ण बड़ा लज्जित हुआ। मेरा इतना पराक्रम सब व्यर्थ हुआ—बन्दर सुग्रीव ने आकर मुझको नकटा बना दिया। तुरन्त पलट कर वह रणक्षेत्र में आया और बन्दर उसको नकटा देखकर हँसने लगे। यह देखकर कुम्भकर्ण क्रोध से जलने लगा और बड़े-बड़े कपियों को पकड़कर निगलने लगा। नाक और कान के रास्ते अत्यन्त लम्बे चौड़े थे सो बन्दर उसमें से निकलने लगे। यों ही कुम्भकर्ण देखने में भयंकर है, अब नाक-कान के जाने से वह और भी विकट लगने लगा है। कुम्भकर्ण जिस ओर भी अपनी क्रुद्ध दृष्टि डालता बड़े-बड़े कपि 'नकटा आया' कहकर भागने लगते। भागकर वे लक्ष्मण के पास पहुँचे ॥ ६६ ॥

हाथ में धनुष लेकर लक्ष्मण जो आगे बढ़ा तो देखकर कुम्भकर्ण हँस पड़ा, बोला, अरे तुझसे क्या करना है, अपने भाई राम को बुलवा दे। कमलनयन राम ने हँस कर कहा, शायद इतने दिनों में यम ने तुझको याद किया है। यह ले, मैं तेरे समक्ष आ गया, अब जितनी भी शक्ति तेरे पास है उसे अजमा ले। तुझको मारने के बाद रावण के दश मुंड काटने हैं और विभीषण को सिंहासन पर बिठाना है। श्रीराम की बात सुनकर कुम्भकर्ण हँसने लगा; बोला, क्या तुमने सोच लिया है कि लौटकर अपने देश जा सकोगे ? इतना कहकर कुम्भकर्ण बड़े क्रोध से राम को निगलने के लिए बढ़ा। कुम्भकर्ण के

कुम्भकर्ण-भरे लंका करे टलमल ※ स्वर्ग-मर्त्य काँपिल, काँपिल रसातल
आकाशे देउटि येन, दुइ चक्षु ज्वले ※ मालसाट दिया वीर रघुनाथे बले
खर-दूषण नाहि आमि त्रिशिराकबन्ध ※ मारीच राक्षस नाहि मायार प्रबन्ध
बालिराज नाहि आमि कोमल शरीर ※ वज्रसम अंग, आमि कुम्भकर्ण वीर
सेइ सब वीर वध कैले येइ बाणे ※ से सकल बाण एवे तुले राख तूणे
तोमार बाणेर मध्ये तीक्ष्ण ये सकल ※सेइसब बाण मार, बुझा थाक बल१६७
राम बले, कुम्भकर्ण, त्यज अहंकार ※ मोर बाण सहे, हेन शक्ति आछे कार
तीक्ष्णबाण प्रहारिले हइबे प्रलय ※ क्षुद्र एक बाणे तोरे दिब यमालय
श्रीरामेर कथा शुनि कुम्भकर्ण हासे ※ मनेते वासना बुझि, जाबे यम-वासे
हेर देख देह मोर पर्व्वत-प्रमाण ※ देवता गन्धर्व केह नाहि धरे टान
कत अस्त्र जान बेटा, कत जान शिक्षा ※ इन्द्र-यम जाने आमा, आर जाने यक्षा
जे बाणे मारिला बालि दुर्ज्जय वानरे ※ से बाण मारेन राम कुम्भकर्णोपरे
यत दिन जीवे राजा, क्षोभ र वे मने ※ भाल जावे, मन्दर वे, कि काजए रणे
रामेर ऐषिक वाण तारा सम छुटे ※ कण्टक समान येन कुम्भकर्णे फुटे
छि छि बलि कुम्भकर्ण दिल टिट्कारी ※ बल बुझि मोर भाइ आने तोर नारी

भार से लंका नगरी डोलने लगी, स्वर्ग, मर्त्य रसातल तीनों लोक काँप उठे। उसकी दोनों आँखें मानों आकाश में प्रदीप जैसी धधकने लगीं। ताल ठोकते हुए उसने कहा, मैं न तो खर-दूषण हूँ और न त्रिशिरा-कबन्ध हूँ। माया का पुतला मारीच राक्षस भी नहीं हूँ। कोमलांग बालि राजा भी नहीं हूँ। मैं वीर कुम्भकर्ण हूँ और मेरे अंग वज्र के समान कठोर हैं। उन वीरों को जिन बाणों से तुमने वध किया है उनको तरकस में रख दो। अपने बाणों में जो सर्वाधिक पैने बाण हों, उन्हीं का अब प्रयोग करो और अपनी शक्ति का परीक्षण कर लो ॥ १६७ ॥

राम ने कहा, कुम्भकर्ण, अपना घमंड छोड़, मेरे बाणों को सह ले इतनी शक्ति किसमें है ? तीक्ष्ण बाण चला दूँ तो प्रलय हो जाय, इसलिए एक क्षुद्र बाण से ही तुम्हारे प्राण ले लूँगा। श्रीराम की बात सुनकर कुम्भकर्ण हँसकर कहने लगा, क्या यमराज के घर जाने की इच्छा है ? मेरे इस पर्वत सरीखे शरीर को देखो, कितने ही गन्धर्व देवता इससे हार मान चुके हैं। देखा जाय कि रण-विद्या में तुम कितने कुशल हो। मेरे बारे में भला तुम क्या जानोगे, वह तो इन्द्र, यम और यक्ष जानते हैं। जिस बाण से राम ने दुर्जय कपि बालि का वध किया था, उसी बाण को कुम्भकर्ण पर चलाया। राम का ऐषिक बाण तारा के समान लपका, लेकिन कुम्भकर्ण के शरीर में वह काँटे के समान जा चुभा। कुम्भकर्ण ने छी-छी करते हुए राम को धिक्कारा। कहा, तुम्हीं कहते हो न कि मेरा भाई तुम्हारी नारी को ले आया है।

लोहार मुषल वीर घन-घन नाड़े * श्रीरामेर यत वाण ताहे ठेकि पड़े
मुषल फिराये वीर मारिवारे आसे * ब्रह्म-अस्त्र रघुनाथ जुड़िलेन त्रासे
विना-अस्त्रे युद्ध, येन मदमत्त हाती * कारे किल-चड़ मारे, कारे मारे लाथि
भूमे पड़े नीलवीर हइया कातर * मुषलेर घाये मारे अनेक वानर
मुषल करिया हाते छुटे उभराय * पलाय वानरगण, पिछु नाहि चाय १६८
डाक दिया कहिलेन ठाकुर लक्ष्मण * एक उपदेश शुन यत कपिगण
पागल ह'येछे वेटा रक्तेर दुर्गन्धे * जन कत वानर उठह ओर स्कन्धे
भर ना सहिवे वेटा, पड़िबे चापने * भूमिते पाड़िया मार पापिष्ठ दुर्जने
लक्ष्मणेर वाक्येते साहसे करि भर * स्कन्धे उठे बड़ बड़ अनेक वानर
कुम्भकर्ण-स्कन्धे चड़ि वीरगण नाचे * वादुड़ झुलिछे येन तेंतुलेर गाछे
शरभ गवाक्ष गय से गन्धमादन * महेन्द्र देवेन्द्र नल उठे सप्तजन
सप्तजन चड़िलेक कुम्भकर्ण-स्कन्धे * केशे धरि टाने केह, घाड़े नख विन्धे
सातवीर लाफ दिया घाड़े गिया चड़े * दुइ हाते कुम्भकर्ण वानरे आछाड़े
आछाड़े गवाक्ष-वीर हाराय संवित् * भूमिते पड़िल, मुखे उठिल शोणित
शरभ गवाक्ष गय ओ गन्धमादन * आछाड़ेर घाये सबे हैल अचेतन
देखिया अंगद हनूमाने लागे डर * उठिते उठिते घाड़े उठि दिल रड़ १६९

लोहे का मूसल लेकर वीर उसको बराबर घुमाता रहा और श्रीराम के फेंके हुए सारे वाण उससे टकरा कर नीचे गिर गये। मूसल घुमाते हुए जब वह मारने के लिए लपका तो त्रास में आकर रघुनाथ ने धनुष पर ब्रह्म-अस्त्र चढ़ाया। मदमत्त हाथी सा वह विना अस्त्र के लड़ता रहा, मुक्का, घूँसा और लात मारते हुए वह वीर आगे बढ़ा। वीर नील घायल होकर जमीन पर गिर गया। मूसल के प्रहार से बहुत से बन्दरों को उसने मार डाला। हाथ में मूसल लेकर वह तेजी से घुमाने लगा और बन्दर सिर पर पैर रखकर भागने लगे ॥ १६८ ॥

तब लक्ष्मण ने कपियों को सम्बोधित करते हुए कहा, सुनो, यह रक्त की दुर्गन्ध से पगला गया है। कुछ बन्दर इसके कंधे पर चढ़ जाओ, भार न संभाल सकने से यह गिर पड़ेगा तो इसको जमीन पर गिरा कर मारने लगना। लक्ष्मण के कहने से बन्दरों में साहस आया और कई बड़े-बड़े बन्दर कुम्भकर्ण के कन्धों पर चढ़कर नाचने लगे। लगा कि इमली के वृक्ष पर चमगादड़ लटक रहे हैं। शरभ, गवाक्ष, गय, गन्धमादन, महेन्द्र, देवेन्द्र और नल—ये सातों कुम्भकर्ण के कन्धों पर सवार हो गये। कोई तो उसके बाल पकड़ कर खींचने लगा तो कोई नाखून से गर्दन खरोंचने लगा। दोनों हाथों से इन बन्दरों को पकड़ कर कुम्भकर्ण ने पटक दिया। पटकनी खाकर वीर गवाक्ष ने होश गँवा दिया, उसके मुँह से खून बहने लगा। शरभ, गय और गन्धमादन भी पटकनी खाकर बेहोश हो गये। यह देखकर अंगद और हनुमान

कुम्भकर्ण पाड़िते नारिल कोनजने ❋ आरवार अस्त्र राम जुड़िलेन गुणे
ब्रह्म-अस्त्र छाड़िलेन पूरिया सन्धान ❋ कुम्भकर्णेर काटिलेन डान-हातखान
हातखान पड़े, जेन पर्व्वत-शिखर ❋ हातेर चापने पड़े अनेक वानर
वामहाते शालगाछ उपाड़िया आने ❋ हाते गाछ करि धाय श्रीरामेर पाने
ऐषिक-वाणेते राम पूरिया सन्धान ❋ सेइवाणे काटिलेन वाम-हातखान
दुइहात काटागेल, तबु नाहि टुटे ❋ श्री रामेर गिलिवारे द्रुतिगति छुटे
इन्द्र-अस्त्र रघुनाथ करिला सन्धान ❋ एकवाणे काटिलेन पद दुइखान
हस्त गेल, पद गेल, तबु नाहि डरे ❋ गड़ागड़ि दिया जाय रामे गिलिवारे
दन्ते धरि तुलि निल लोहार मुषल ❋ मुषलेर घाये मारे वानरमण्डल
मुषल काटिते राम जुड़िलेन वाण ❋ नय वाणे मुषल करिला खान-खान
काटा गेल मुषल, शमता नाहि ताते ❋ गड़ागड़ि दिया जाय श्रीरामे गिलिते
येमन आइसे राहु चन्द्रे ग्रासिवारे ❋ कुम्भकर्ण तेमते श्रीरामे गिलिवारे
कुम्भकर्ण-मुख बहि पड़िछे शोणित ❋ बाणे मुख भेदिल, देखाय विपरीत
एतेक दुर्गति हैल, तबु नाहि मरे ❋ आरवार ब्रह्म-अस्त्र मारिलेन तारे

को भी डर लगने लगा और उन्होंने कन्धों पर चढ़ने का विचार छोड़ दिया ॥ १६६ ॥

कुम्भकर्ण को जब कोई भी काबू में नहीं कर सका तो राम ने फिर प्रत्यंचा पर वाण रखा। निशाना साधकर उन्होंने ब्रह्मास्त्र फेंका और कुम्भकर्ण का दाहिना हाथ काट डाला। हाथ क्या गिरा मानों एक पहाड़ आ गिरा और उसके नीचे बहुत सारे बन्दर दब गये। अब उसने बाएँ हाथ से एक शालवृक्ष उखाड़ा और उसको लेकर राम की ओर लपका। राम ने निशाना साधकर ऐषिक वाण फेंका और उस वाण से उसका बायाँ हाथ काट डाला। दोनों हाथों के कट जाने से भी वह निस्तेज नहीं हुआ, श्रीराम को लीलने के लिए वह द्रुत गति से दौड़ने लगा। रघुनाथ ने इन्द्र-अस्त्र फेंका और एक ही वाण से उसके दोनों पैर काट डाले। हाथ कट गये, पैर कट गये, फिर भी उसको कोई डर नहीं, जमीन पर लुढ़कता हुआ वह, राम को निगलने के लिए चला। दाँतों से उसने मूसल पकड़ लिया और उसके प्रहार से बन्दरों को मारने लगा। राम ने नौ वाण चलाकर मूसल को खंड-खंड कर डाला। मूसल के खंड-खंड हो जाने पर भी वह शान्त नहीं हुआ और भूमि पर लुढ़कता हुआ वह राम को निगलने चला, मानो राहु चन्द्र को निगलने जा रहा है। कुम्भकर्ण के मुँह से रक्त की धारा बहने लगी। वाणों से मुँह छिद गया और वह अद्भुत सा दीखने लगा। इतनी दुर्दशा के उपरान्त भी उसके प्राण नहीं गये। तब राम ने दुवारा ब्रह्म-अस्त्र फेंका। चारों ओर उजियाला करता

यमदण्ड-सम वाण, येमन विजुलि ※ छुटिल रामेर वाण चौदिक उजलि
ब्रह्म-अस्त्र बाण आर नाहिक अन्यथा ※ सेइ बाणे कुम्भकर्णेर काटिलेन माथा
काटामुण्ड हनूमान सापटिया तोले ※ टेने फेले दिल ल'ये समुद्रेर जले
सागरेर जलजन्तु करे तोलपाड़ ※ मध्य-सागरेते येन पड़िल पाहाड़
दशलक्ष राक्षसेते कुम्भकर्ण पड़े ※ कानन भांगिल येन प्रलयेर झड़े
देवगण सुखी हैल रामेर विक्रमे ※ स्वर्ग हैते पुरन्दर पूजेन श्रीरामे
कपिगण बले, राम, करिला निस्तार ※ आर यत वीर आछे, मो-सवार भार
ना देखि एमन वीर ए तिन भुवने ※ जुझिवार काज थाक्, भंग दरशने
अकाले जागिया कुम्भकर्णेर विनाश ※ श्रीराम-चरण स्मरि गाय कृत्तिवास७०

कुम्भकर्णेर मृत्युसंवाद-श्रवणे रावणेर विलाप

रणे भंग दिया यत निशाचरगण ※ रणस्थली छाड़ि कैल लंका-प्रवेशन
हेथा कुम्भकर्णे पाठाइया राम-रणे ※ दशानन करितेछे चिन्ता मने-मने
समरे गियाछे आजि कुम्भकर्ण भाइ ※ एखनि जिनिबे रण, किछु शंका नाइ
जयवार्त्ता दिबे दूत जेकाले आसिया ※ तुषिब ताहारे आमि बहुधन दिया
नगरे करिया नाना मंगल-आचार ※ भ्रातारे आनिते निजे हब आगुसार

वह वाण बिजली के समान चला और उसने कुम्भकर्ण का सिर काट कर रख दिया। हनुमान ने उस कटे मुंड को दोनों हाथों से समेट कर समुद्र के जल में फेंक दिया। समुद्र के मध्य मानों कोई पहाड़ जा गिरा—सारे जल-जन्तुओं में कुहराम मच गया। दस लाख राक्षसों के समान कुम्भकर्ण गिरा, मानों प्रलय की आँधी में कोई वन भूमिसात् हो गया। राम के पराक्रम से देवता सुखी हुए। स्वर्ग से पुरन्दर ने राम की पूजा की। कपियों ने कहा, राम तुमने आज हम सबको बचा लिया। बाकी जितने वीर हैं उनसे निबटने का काम हमारा है। ऐसा वीर तो त्रिभुवन में नहीं देखा था जिससे लड़ना तो दूर की बात, देखने से ही भगदड़ मच जाती थी। इस प्रकार असमय नींद से जागकर कुम्भकर्ण का विनाश हुआ ॥ ७० ॥

कुम्भकर्ण की मृत्यु के समाचार से रावण का विलाप

सारे निशाचर रणक्षेत्र से भागकर लंका में प्रवेश कर गये। कुम्भकर्ण को राम के साथ लड़ने भेजकर दशानन मन ही मन सोचने लगा था, आज मेरा कुम्भकर्ण भाई रण में गया है, वह तुरन्त ही युद्ध में विजय प्राप्त कर लौटेगा, कोई शंका नहीं है। दूत जब विजय-वार्ता लेकर आएगा तो उसको पर्याप्त धन देकर तुष्ट करूँगा। नगर भर में विभिन्न मंगल-अनुष्ठान करूँगा। भाई की अगवानी करने खुद ही चला जाऊँगा और उसके झुक कर प्रणाम करने से पूर्व ही मैं उसको अपने अंक में बाँध लूँगा। उसके युद्ध की सज्जा

ना करिते ना करिते प्रणाम आमारे ※ अग्रेइ ये आमि कोले करिव ताहारे
रणवेश घुचाइया दिव्यवेश करि ※ दूभाइ बसिव एक आसन-उपरि
बन्धुजन सकले करिया आनयन ※ नानामत उत्सव करिव आचरण
एत भावि किछुकाल परे दशानन ※ उत्कण्ठित ह'ये पुनः करये चिन्तन
भ्राता मोर गियाछे, हइल बहुक्षण ※ एखनो ना कैल केन दूत आगमन
बुझिते ना पारि किछु रणेर विषय ※ हइल कि ना हइल शत्रु-पराजय
बुझि शत्रुजय नाहि हइया थाकिबे ※ जय हैले केन मोर हृदय काँपिबे
एइरूप करिते करिते मनोरथे ※ शुनिते पाइल कोलाहल व्योमपथे
ताहा शुनि हइया विस्मययुक्त-मन ※ उद्विग्न हइया करे विविध चिन्तन
एकि एकि आजि देव-मुनि-यक्षगण ※ करितेछे आकाशेते जय उच्चारण
बाँचिया थाकिते मोर कुम्भकर्ण भाइ ※ उहादेर मुखे जय-शब्द शुनि नाइ
अतएव बड़ शंका हय मोर चिते ※ना जानि ह'तेछे किवा संग्राम स्थलीते७१
एइरूप चिन्ता करे राजा दशानन ※ हेनकाले भग्नदूत कैल आगमन
तारे देखि जिज्ञासे रावण सशङ्कित ※ कह रे कह रे रण-मंगल त्वरित
भीतमन ह'ये दूत कहिते ना पारे ※ आरबार राजा तारे कहे कहिवारे
तबे कान्दि भग्नदूत कहे सभास्थल ※ कि कहिब महाराज, रणेर कुशल
तोमार अनुज गिया समर-भितर ※ बधिलेन बहुतर भल्लुक-वानर
परे राम-बाणेते से त्यजिया पराण ※ स्वर्गपुरे कुम्भकर्ण करिला प्रयाण

उतारकर दिव्यवेश पहना कर हम दोनों भाई एक ही आसन पर बैठेंगे। सारे इष्ट-मित्रों को बुलवाकर उत्सव का आयोजन करूँगा। इतना सोचने के कुछ देर के उपरान्त दशानन फिर उत्कण्ठा से चिन्ता करने लगा, मेरा भाई काफी देर हुए गया है, अभी तक दूत क्यों नहीं आया। समझ में नहीं आता कि रण में क्या हुआ—शत्रु पराजित हुआ भी या नहीं। शायद शत्रु विजित नहीं हुआ, नहीं तो विजय होने पर मेरा हृदय क्यों काँपता ? इस प्रकार चिन्तन करते समय उसने व्योमपथ से कोलाहल होते हुए सुना। सुनकर उसे विस्मय हुआ और वह तरह-तरह की चिन्ताएँ करने लगा। यह कैसी बात है कि देव, मुनि और यक्ष आकाश में जय-ध्वनि कर रहे हैं। मेरे भाई कुम्भकर्ण के जीवित रहते उनके मुँह से कभी जय-ध्वनि सुनने को नहीं मिली, इसलिए मेरे मन में शंका बढ़ रही है—न जाने युद्धक्षेत्र में क्या हो गया है ॥ ७१ ॥

इस प्रकार राजा दशानन चिन्ता कर रहे थे कि भग्नदूत आ पहुँचा। रावण ने सशंकित हो कर कहा, तुरन्त रण का सन्देश सुनाओ। भयभीत दूत कुछ बोल न सका। फिर राजा ने उससे कहा तो वह रोते हुए बोला, क्या बताऊँ महाराज, तुम्हारे अनुज ने रणक्षेत्र में जाकर असंख्य भालू और बन्दरों का विनाश किया लेकिन बाद में राम के बाण से प्राण त्याग कर स्वर्ग प्रयाण

जेइमात्र एइ कथा चरेते कहिल ❋ मूर्च्छा हेतु दशानन भूतले पड़िल
ताहा देखि महापार्श्व आर महोदर ❋ उठाइया बसाइल आसन-उपर
कुम्भकर्ण-मृत्युवार्त्ता करिया श्रवण ❋ क्रन्दन करये यत लङ्कावासी जन७२
मुहूर्त्तेक परे राजा चेतन पाइया ❋ विलाप करये शोके कातर हइया
भाइ नहि, आमि रे चण्डाल सहोदर ❋ काँचा घुमे जागाये पाठाइ यमघर
आजि हैल शून्याकार निद्रार चउरि ❋ वीरशून्या हइल कनक-लंकापुरी
आजि हैते राज्य मोर हइल विफल ❋ कुम्भकर्ण भाइ, तुमि छिले महाबल
चन्द्र सूर्य वायु यम देव-पुरन्दर ❋ महासुखे निद्रा जावे, घुचे गेल डर
कोथा गेले भाइ मोर, आइस सत्वर ❋ दुइ भाइ मिलि गिया करिव समर
डानिहस्त गेल मोर एतदिन परे ❋ लङ्कापुरे क्रन्दन उठिल घरे-घरे
विभीषण भाइ मोरे दिया गेल शाप ❋ धार्मिकेर शापे पाइ एत मनस्ताप७३
हाय हाय कि हइल, क्रूर विधि कि करिल, प्राणाधिक भाइ निल हरि।
कि करिब कोथा जाब, कोथा गेले तोरे पाब, ता'—बिने किरूपे प्राण धरि॥
ओरे प्राणाधिक भ्राता, मोरे छाड़ि गेलि कोथा, देखिते ना पाइ आर तोरे।
धिक् धिक् प्राणे मोर, शुनिया मरण तोर, एखनो ना छाड़े ए-शरीरे॥

कर गये। ज्योंही दूत ने यह वार्त्ता सुनाई दशानन मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पड़ा। यह देखकर महापार्श्व और महोदर ने उनको आसन पर बिठाया। कुम्भकर्ण की मृत्यु का समाचार पाकर सारे लंका-निवासी क्रन्दन करने लगे॥ ७२॥

क्षणभर के बाद राजा सचेतन होकर शोक से कातर हो विलाप करने लगा। अरे मैं भाई नहीं चंडाल हूँ जो नींद से जगाकर अपने सहोदर को यम के घर भेज दिया। आज से निद्रा-भवन सूना हो गया और लंकपुरी वीर से सूनी हो गई। आज से मेरा राज्य करना विफल हो गया। ऐ मेरे कुम्भकर्ण भाई, तुम महाबली थे, आज से चन्द्र, सूर्य, वायु, यम और इन्द्र सुख से सोयेंगे क्योंकि अब उनको कोई डर न रहा। मेरे भाई, तुम कहाँ चले गये? झट आन मिलो, दोनों मिलकर अब युद्ध करेंगे। इतने दिनों बाद मेरा दाहिना हाथ चला गया। इस प्रकार लंका के घर-घर में क्रन्दन-रव उठा। धार्मिक भाई विभीषण के अभिशाप से आज मुझको इतना कष्ट मिल रहा है॥ ७३॥

हाय हाय, यह क्या हो गया? क्रूर विधाता ने क्या किया? मेरे प्राणों से भी प्रिय भाई को मुझसे छीन लिया। क्या करूँ? कहाँ जाऊँ? कहाँ जाने से वह मिल जायगा? उसके बिना मैं कैसे जीवित रहूँ? ओ मेरे प्राणप्यारे भाई, मुझको छोड़कर तुम कहाँ चले गये? मेरे प्राणों को धिक्कार है कि तेरी मृत्यु का समाचार सुनकर भी उसने इस शरीर को त्यागा नहीं। तुम मुझसे

कहि गेले तुमि मोरे, मारि आसि राघवेरे, आपनि वसिया थाक सुखे।
ताहा ना करिते पारि, निजे गेले यमपुरी, फेलिले आमारे घोर दुःखे॥
जिनिले असुर-सुर, गन्धर्व-भुजंग-पुर, यक्ष गुह्य सिद्ध विद्याधर।
जय करि ए-संसारे, क्षुद्र मनुष्येर करे, प्राण हाराइले भ्रातृवर॥
ये तोमार शरीरेते, नाहि पारि प्रवेशिते, वज्र भूमि तले प'ड़ेछिल।
से तुमि रामेर शरे, बिद्ध हैले कि प्रकारे, आमार कपाले एकि छिल॥
आर आमि कि प्रकारे, जिनिब से पुरन्दरे, शमन-वरुण-दैत्यगणे।
उपस्थित शत्रुजने, किरूपे बधिब रणे, लंका-रक्षा करिब केमने॥
ओरे ओरे भ्रातृवर तोमा-बिने मोरे डर, ना करिबे आर कोनजन।
अपर कि कब आर, यावत् वानर छार, तारा कैल सशंकित-मन॥
ना मरिते ना मरिते, आगे ऐ आकाशेते, कोलाहल करे देवगण।
बुझि वा इहार परे, उपहास करे मोरे, करतालि दिया सर्व्वजन॥
मारीच कहिला हित, सातिशय समुचित, कहिलेक भ्राता विभीषण।
तुमिह कहिले पथ्य, सव कथा अति तथ्य, किछु नाहि करिनु श्रवण॥
धार्मिक विशुद्ध-मन, सेइ भ्राता विभीषण, करिलाम तार अपमान।
सेइ पापे बुझि मोरे, नर-वानरेर करे, पाइते हइल अपमान॥

कह गये, मैं राघव को मार कर आता हूँ, तुम आनन्द से बैठो। सो तो तुम कर नहीं सके और खुद ही यमपुरी चले गये, मुझको घोर क्लेश में छोड़ गये। हे मेरे योग्य भ्राता, तुमने सुर-असुर, गन्धर्व, भुजंग, यक्ष, गुह्य, सिद्ध, विद्याधर आदि को पराजित कर सारे संसार पर विजय प्राप्त की, और आज क्षुद्र मनुष्य के हाथों प्राण गवाँया। तुम वह हो जिसके शरीर में प्रवेश करने में असमर्थ वज्र टकरा कर भूमि पर गिर पड़ा था और आज वही तुम राम के बाण से कैसे आहत हो गये? मेरे भाग्य में यह क्या लिखा था? फिर मैं किस तरह से पुरन्दर, यम, वरुण तथा दैत्यों पर विजय प्राप्त कर सकूँगा? उपस्थित शत्रुओं का रण में किस प्रकार वध कर सकूँगा और लंका की रक्षा किस प्रकार कर सकूँगा? अरे! मेरे भाई, तुम्हारे न होने से, मुझसे अब कोई भी डरेगा नहीं। दूसरों की क्या कहूँ, इन क्षुद्र वानरों तक ने मेरे मन को सशंकित कर रखा है। तुम्हारे मरते न मरते ही आकाश में देवतागण कोलाहल करने लग गये। शायद इसके बाद वे सब के सब तालियाँ बजा कर मेरी हँसी उड़ायेंगे। मारीच ने मेरे हित में कहा था और भाई विभीषण ने अत्यन्त समुचित बात कही थी, तुमने भी हितकारी और सच्ची बातें बताई, किन्तु मैंने किसी की एक बात भी न सुनी। विशुद्ध-चित्त और धार्मिक भाई विभीषण का मैंने अपमान किया। कदाचित् उसी पाप के कारण मुझको नर एवं वानरों के हाथ अपमानित होना पड़ा। मेरे भाई,

तुमि भ्राता यदि गेले, कि फल ऐश्वर्य-बले, कि कार्य सीताय आर प्राणे।
कि फल समर-जये, कि फल बान्धव-चये, प्राण दिब रघुपति-बाणे ।। ७४

नरान्तक, देवान्तक, महोदर, त्रिशिरा एवं महापाशेर युद्ध ओ मृत्यु

एइरूपे क्रन्दन करये दशानन ॥ अश्रुजले अभिशिक्त हइल वदन
पिताय कातर देखि पुत्रे जन्मे दुःख ॥ त्रिशिरा विक्रम करे रावण-सम्मुख
करिला तपस्या पिता, हइते अमर ॥ अमर हइते ब्रह्मा नाहि दिला बर
अमर हइल विभीषण निजगुणे ॥ ब्रह्मार कृपाय सेइ सर्व-शास्त्र जाने
शास्त्र-अनुरूप खुड़ा कहिलेक हित ॥ धार्मिक-चरित्र जिनि विचारे पण्डित
त्रिभुवन जिनि पिता, तोमार बाखान ॥ देवता-गन्धर्व्व-आदि नाहि धरे टान
ज्येष्ठ भाइ कुबेर धनेर अधिकारी ॥ तारे जिनि पुष्परथ निले लङ्कापुरी
मय-दानव महाराज सर्वलोक-माझे ॥ कन्यादान दिया से तोमारे देख पूजे
वासुकिर विषदाहे त्रिभुवन पुड़े ॥ तव शब्द पाइले पलाय उभरड़े
इन्द्र-यम-वरुणेर करिले वितथा ॥ मनुष्य-बेटारे जिना कत बड़ कथा

यदि तुम ही चले गये तो मुझको इस धन-सम्पदा की कौन सी आवश्यकता रही, अपने प्राण और सीता से भी मुझे क्या काम रहा, युद्ध-विजय से भी क्या फल होगा और इष्ट-मित्रों के ध्वंस से ही क्या फल निकलेगा ? इससे अच्छा है कि मैं रघुपति के बाणों से प्राण दे दूँ ।। ७४ ।।

नरान्तक, देवान्तक, महोदर, त्रिशिरा और महापाश का युद्ध और मृत्यु

दशानन इस प्रकार क्रन्दन करने लगा और उसका मुँह आँसुओं से भीग गया। पिता को दुखी देखकर उसका पुत्र त्रिशिरा भी दुखी हुआ और रावण के सम्मुख अपना पराक्रम प्रकट करने लगा। (उसने कहा) हे पिता, अमर बनने के लिए तपस्या की, लेकिन ब्रह्मा ने अमरत्व का वरदान नहीं दिया। विभीषण अपने गुणों के कारण अमर हो गये और ब्रह्मा की कृपा से सर्व-शास्त्र पारंगत हो गये। चाचा जी ने शास्त्र के अनुरूप कार्य किया, वे विद्वान और धार्मिक चरित्र के हैं। त्रिभुवन पर विजय प्राप्त कर आपको ख्याति मिली, देवता-गन्धर्व आदि आपका सामना न कर सके। आपके ज्येष्ठ-भ्राता कुबेर धन के अधिकारी हैं, उन पर विजय प्राप्त कर आप पुष्पक-विमान लंकापुरी ले आये। सारे लोकों में प्रख्यात महाराजा मयदानव ने अपनी कन्या दान कर आपकी पूजा की। वासुकी के विषदाह से त्रिभुवन भस्म हो जाता है किन्तु आपकी आहट पाते ही वह भाग जाता है। जिन्होंने इन्द्र-यम-वरुण की दुर्दशा कर दी उनके लिए मनुष्य पर विजय प्राप्त करना कौन सी बड़ी बात है। आज के युद्ध का सारा भार मुझपर है, मैं विभिन्न अस्त्रों से युद्ध करूँगा। गरुड़ के मुँह में जिस प्रकार सर्प जलकर खाक हो जाता

नाना-अस्त्र संग्रामे करिव अवतार ※ आजिकार यत युद्ध, से भार आमार
गरुड़ेर मुखे येन दग्ध हय साप ※ श्रीराम-लक्ष्मणे मारि घुचाव सन्ताप ७५
त्रिशिरा विक्रम करे, राजा हरषित ※ आर तिन भाइ तार रोषे आचम्बित
देवान्तक नरान्तक अतिकाय-वीर ※ संग्रामे जाइते चाहे, नाहि हय स्थिर
चारिजन महाबल चिरकाल जाने ※ चारिजने ऐक्य हैले त्रिभुवन जिने
राजार प्रसाद यत पाय चारिजन ※ सुगन्धि-कुसुम-माल्य करतूरी-चन्दन
वीर-धटी परे केह नामे गंगाजल ※ रत्न-विनिर्मित परे कर्णेते कुण्डल
परिल सोनार शाना, रत्नेर टोपर ※ माणिक्येर हार साजे गलार उपर
नाना-रत्न-अलङ्कार परिल शरीरे ※ कनक-कंकण वाला परे दुइ करे
चारि बेटा परिलेक चारि राजार धन ※ रावणेर चारि बेटा कामिनी-मोहन
महापाश-वीर आर भाइ महोदर ※ छयजन यात्रा करे संग्राम-भितर ७६
छयवीर यात्रा करे संग्रामे प्रवीण ※ विदाय लइल करि पितृ-प्रदक्षिण
नीलवर्ण हस्ती एल नीलमेघ-ज्योति ※ ऐरावत-वंशे तार ह'येछे उत्पत्ति
वड़इ प्रबल सेइ मदमत्त हाती ※ ताहाते चड़िल महोदर योद्धपति
उच्चैःश्रवा अश्व येन पवनेर गति ※ सेइ अश्वे चड़े देवान्तक महामति

है उसी प्रकार मैं श्रीराम-लक्ष्मण को मारकर आपका सारा सन्ताप दूर करूँगा ॥ ७५ ॥

जब त्रिशिरा इस प्रकार अपना पराक्रम प्रकट करने लगा तो राजा हर्ष-मग्न हुआ। उसके तीन भाई देवान्तक, नरान्तक और अतिकाय रोष से अधीर होकर संग्राम में जाने के लिए आग्रह करने लगे। चारों भाई महाबली हैं, ये चारों जब एकत्र हो जायें तो त्रिभुवन जीत सकते हैं, यह सभी लोग जानते हैं। चारों को राजा का प्रसाद—सुगंन्धित पुष्पों की माला और कस्तूरी-चन्दन प्राप्त हुआ। उन्होंने गंगाजल के समान शुभ्र वीर परिधान धारण किया। रत्नों से बने कुंडल पहन लिये। रत्न-निर्मित मुकुट और सोने का कवच धारण किया। गले में माणिक्य का हार पहन लिया। शरीरपर विभिन्न रत्नालंकार और—हाथों में सोने के कंगन—इस प्रकार चारों बेटों ने चार राजाओं की सम्पदा के तुल्य आभूषण पहन लिये। रावण के चारों बेटे कामिनीमोहन हैं। उनके साथ रावण के दो वीर भाई महापाश, महोदर भी साथ हो लिये। इस प्रकार संग्राम लड़ने के लिये ये छह वीर चल पड़े ॥ ७६ ॥

संग्राम में निपुण छह वीरों ने रावण की प्रदक्षिणा कर विदा ली। नीले वर्ण का नील-मेघ-ज्योति नामक हाथी आया जिसका जन्म ऐरावत के वंश में हुआ था। वह मदमत्त हाथी बड़ा ही प्रबल था। उसपर समरपति महोदर ने सवारी की। पवन की गति वाले उच्चैःश्रवा अश्व पर महामति देवान्तक

आर अश्व भूमे पाद पड़े कि ना पड़े ❊ हाते शेल नरान्तक सेइ अश्व चड़े
साजाइल रथ, येन रविर प्रकाश ❊ हाते शेल चड़े ताहे वीर महापाश
आर रथ साजाय माणिक्य-मणि-हीरा ❊ हाते खाण्डा चड़े ताहे कुमार त्रिशिरा
सुवर्णेर रथ, शत घोड़ार साजनि ❊ सेइ रथे अतिकाय चड़िल आपनि ৭৭
पुत्रसब यात्रा करे, शुनि ए वचन ❊ सबार जननी आसि करिछे रोदन
कुम्भकर्ण-हेन वीर प'ड़े गेल रणे ❊ ना जाइओ व्यथा दिया जननीर प्राणे
धनुर्बाण छाड़ बाछा, प्राण बड़ धन ❊ कल्याणे थाकिबे, राख मायेर वचन
विभा कैले कत देव-दानव-नन्दिनी ❊ कोथा जाह ता'—सबारे करि अनाथिनी
सम्प्रति करिले विभा, नहे सहवास ❊ अग्नि दिया पोड़ाब लंकार गृहवास
चारि-भाइ चतुर्द्दोल लह स्कन्ध करि ❊ श्रीरामेरे देह ल'ये जानकी सुन्दरी
हेन कर्म्म करिले यद्यपि राजा रोषे ❊ पलाइया थाक गिया पर्व्वत-कैलासे
कुबेर तोमार पितृ-ज्येष्ठ-भ्रातृबर ❊ सेवि ताँके पुत्रसम थाक ताँर घर
मातृगण-वचनेते पुत्र सब कोपे ❊ पुत्रगण-क्रोध देखि भये तारा काँपे
कोपे पुत्रगण बले, दिताम प्रतिफल ❊ जननी बलिया एत सहि ये सकल

सवार हुआ। दूसरे एक अश्व पर नरान्तक बैठ गया जिसके पैर भूमि पर पड़ते थे या नहीं इसमें सन्देह है। सूर्य के प्रकाश के समान रथ सुसज्जित हुआ, जिस पर हाथ में शेल लेकर वीर महापाश आसीन हुआ। दूसरा एक रथ मणि-माणिक्य और हीरों से सुशोभित किया गया जिस पर कुमार त्रिशिरा हाथों में खड्ग लेकर बैठ गया। सौ घोड़ों से सुसज्जित स्वर्ण रथ पर अतिकाय जाकर स्वयं बैठ गया ॥ ৭৭ ॥

समस्त पुत्र यात्रा कर रहे हैं यह सुनकर उनकी माताएँ आकर रोने लगीं। युद्ध में जब कुम्भकर्ण जसे वीर का निधन हो गया. तो तुम बेटे रणक्षेत्र में मत जाना, जननी के हृदय को मत दुखाओ। धनुष-बाण त्याग दो बेटा, प्राण बहुत बड़ी सम्पदा है, माँ का कहना मान लो, कुशल से रहोगे। कितनी ही देव-दानव-नन्दिनियों से तुम लोगों ने विवाह किया है—उनको अनाथिन बना कर कहाँ जा रहे हो। हाल में तुमने विवाह किया है, सहवास भी नहीं हुआ, (अगर तुम लोग चले गये तो) अग्नि से लंका में निवास-गृह को जला दूँगी। चारों भाई अपने कंधों पर चतुर्दोल उठाकर उसमें जानकी सुन्दरी को बिठाकर श्रीराम के पास ले जाकर पहुँचा आओ। ऐसा काम करने से यदि पिता रुष्ट होते हैं तो भागकर कैलास पर्वत में जाकर छिप जाओ। कुबेर तुम्हारे पिता के बड़े भाई हैं—उनकी सेवा कर उनके घर में पुत्र के समान रहो। माताओं के वाक्य से सारे पुत्र क्रोधित हो उठे, पुत्रों का क्रोध देखकर माताएँ काँपने लगीं। कुपित पुत्रों ने कहा, अवश्य ही हम इसका बदला चुका देते लेकिन तुम लोग जननी हो इसलिए सहन कर रहे हैं।

जगतेर कर्त्ता मोरा, वीरवंशे जन्म ❋ मानुषेर डरे रब करि सेवाकर्म्म
आनिल पुष्पक-रथ पिता जारे जिने ❋ कि लाजे शरण लव ताहार चरणे
वाहुवले पिता मोर त्रिभुवन शासे ❋ लुकाये थाकिब केन डराये मानुषे
विपक्ष-सम्मुखे यदि संग्रामेते मरि ❋ दिव्य रथे चड़िया जाइब स्वर्गपुरी
आपन-मन्दरे जाह, ना कर विषाद ❋ श्रीराम-लक्ष्मणे मारि घुचाब विवाद
गरुड़ेर मुखे येन भस्म हय साप ❋ ग्रासिब वानर-सेना, देखाव प्रताप७८
मातृगणे प्रवोधिया छयजन साजे ❋ रुषिया प्रवेश करे संग्रामेर माझे
छय-सेनापति-ठाट छय-अक्षौहिणी ❋ कटकेर पदभरे काँपिछे मेदिनी
धूलाय दिवसे वाट हैल अन्धकार ❋ छय-वीर उत्तरिल करि मार-मार
दुइ सैन्य मिशामिशि बाजे महारण ❋ गाछ उपाड़िया आने यत कपिगण
वानरे पाथर-गाछ करे वरिषण ❋ वाणे काटि राक्षसेरा करे निवारण
राक्षसेरा वाण एड़े अनलेर शिखा ❋ वानर-कटक पड़े, नाहि लेखाजोखा
व्याघ्रेर झाँपानि येन वानरेर रंग ❋ मरणेर भय नाहि, रणे नाहि भंग
चड़-चापड़-मुष्ट्याघात वानरेर ताड़ा ❋ कतशत राक्षसेर माथा करे गुँड़ा ७९

हम लोग संसार के प्रभु हैं, हमारा जन्म वीरवंश में हुआ है सो हम मनुष्य के भय से सेवक का काम करने लग जाएँ। पिता जिनको हराकर पुष्पक रथ छीन लाये थे, किस मुँह से हम उनकी शरण में जा सकते हैं। मेरे पिता अपने बाहुबल से संसार पर शासन करते हैं और हम मनुष्य से डर कर छिप कर रहें! शत्रु के साथ सम्मुख-संग्राम में अगर हम मरेंगे तो दिव्यरथ पर बैठकर हम स्वर्ग चले जाएँगे। तुम लोग अपने-अपने मन्दिरों में चली जाओ, खेद मत करो, श्रीराम-लक्ष्मण का वध कर सारा झगड़ा ही निबटा देंगे। जिस प्रकार गरुड़ के मुँह में सर्प भस्म हो जाता है, अपने प्रताप से उसी प्रकार हम लोग वानर-सेना को ग्रसित कर लेंगे ॥ ७८ ॥

इस प्रकार माताओं को ढारस बँधाकर वे छहों पुत्र सज्जित हुए और क्रुद्ध होकर संग्राम में प्रवेश किया। छहों सेनापतियों के पास छह अक्षौहिणी सेना थी। उसकी पदचाप से धरती काँपने लगी। धूल के कारण दिन के समय भी पथ अन्धकारमय हो गया। छहों वीर मार-मार शब्द करते हुए रण में उतरे और दोनों सेनाएँ मिल जाने से घोर युद्ध ठन गया। सारे कपि वृक्ष उखाड़-उखाड़ कर लाने लगे और वृक्ष और शिला बरसाने लगे। राक्षसों ने बाण फेंककर उनको घायल कर दिया। राक्षस अनल-शिखा जैसे बाण चलाने लगे जिससे अनगिनत वानर-सेना गिरने लगी। वानर यों कूद-फाँद करने लगे मानों व्याघ्र हों, उनको मृत्यु का भय नहीं और वे रण से भी भागने वाले नहीं। वानरों ने झाँपड़-मुक्का मार-मार कर कितने ही राक्षसों का सिर चूर्ण-विचूर्ण कर दिया ॥ ७९ ॥

अनेक राक्षस पड़े, अत्यल्प वानर ❊ कुपिल ये नरान्तक रावण कोङर
चतुर्द्दिक चापिया उठिल तार घोड़ा ❊ चतुर्द्दिके अस्त्रवृष्टि करे जोड़ा-जोड़ा
वानरेर मारे वीर महा-शेलपाट ❊ वानरेर रक्ते कादा ह'ये गेल बाट
नरान्तक-बाण केह सहिते ना पारे ❊ भंग दिया वानर पलाये गेल डरे
डाकिया सुग्रीव कहे अंगदेरे आगे ❊ देख देखि अंगद, कटक केन भागे
आपनि करिया युद्ध राख कपिगण ❊नरान्तक मारि तोष श्रीराम-लक्ष्मण८०
सुग्रीवेर वचने अंगद पड़े लाजे ❊ कटक साजाये गेल संग्रामेर माझे
रणेते प्रवेश करे अति क्रोध मुखे ❊ दूर हैते नरान्तके बालि-सुत डाके
दुइ हात शून्य मोर, देख निशाचर ❊ यत शक्ति आछे हान बुकेर उपर
देवता जिनिस् बेटा, शेलेर कारण ❊ आजिकार युद्धे तोर बधिब जीवन
श्रीरामेर भृत्य आमि संसारे पुजित ❊ तुइ अस्त्र पड़िले ना हब आमि भीत
पाइक मारिया बेटा, फिर कि कारण ❊ तोमाते आमाते जुझि, जिने कोन जन
दुइ हात पसारिया येते दिल बुक ❊ अंगद-विक्रम देखि सुग्रीवे कौतुक-
कोपे नरान्तक-वीर-अधरोष्ठ काँपे ❊ एड़िलेक शेलपाट अतिशय कोपे
एड़िलेक शेलपाट दिया हुहुंकार ❊ स्वर्ग-मर्त्य-पाताले लागिल चमत्कार

राक्षस अधिक गिर रहे हैं और गिरने वाले वानरों की संख्या बहुत कम है यह देखकर रावण-सुत नरान्तक अत्यन्त कुपित हुआ। घोड़े पर सवार वह चारों ओर धावा करने लगा तथा चारों ओर अस्त्रों की वर्षा करने लगा। महा-शेलपाट से उसने वानरों को मारा, वानरों के खून से पथ में कीचड़ हो गया। नरान्तक के बाणों का कोई सामना नहीं कर सका, डर के मारे वानरों के पैर उखड़ने लगे। तब सुग्रीव ने अंगद को बुलाकर कहा, अंगद, थोड़ा देखना तो, वानर-सेना भागने क्यों लग गई है? स्वयं युद्ध कर कपियों को ठहराये रखो और नरान्तक को मार कर श्रीराम-लक्ष्मण को प्रसन्न करो॥ ८०॥

सुग्रीव का वचन सुनकर अंगद को लाज आ गई—वह सेना को सुसज्जित कर रणक्षेत्र में जा पहुँचा। क्रोधित होकर वह रण में प्रवेश करने लगा तो दूर से नरान्तक को बालि-सुत ने ललकारा। अरे निशाचर, देख मेरे दोनों हाथों में कुछ भी नहीं है, तुझमें जितनी शक्ति है उससे मेरे सीने पर शेल मार। अरे तू देवताओं पर विजय पाता है तो शेल के कारण, लेकिन आज के युद्ध में मैं तेरे प्राण ले लूँगा। मैं संसार भर में पूज्य श्रीराम का सेवक हूँ, तू अस्त्र फेंकेगा तो मैं भयभीत नहीं हूँगा। छोटे योद्धाओं को क्यों मारते फिरते हो, आओ तुम-हम दोनों निबट लें, देखें कौन जीतता है। दोनों हाथ पसार कर उसने सीना तान दिया। अंगद का विक्रम देखकर सुग्रीव को बड़ा आनन्द आया। कोप से वीर नरान्तक के होंठ काँपने लगे। उसने अत्यन्त क्रुद्ध होकर हुंकार के साथ शेलपाट फेंका जिससे स्वर्ग-मर्त्य-पाताल,

अंगदेर बुक येन वज्रेर समान ※ बुकेते ठेकिया शेल हैल दुइखान
अंगद वले, तोर अस्त्र गेल रसातल ※ मोर घा संवर बेटा, तबे जानि बल
आपना पासरे कोपे बालिर नन्दन ※ नरान्तके मारिते भावये मने-मन
बज्रमुष्टि मारि घोड़ा करिलेक चूर ※ पड़िल दुर्जय घोड़ा ऊर्ध्वे चारिखूर
दुइचक्षु ठिकरिल, जिह्वा बाहिराय ※ नरान्तक कुपिया अंगद-पाने चाय
वज्रमुष्टि मारिलेक अंगदेर बुके ※ मुखे रक्त उठे तार झलके झलके
शरीर व्यथित, तबु नहे त कातर ※ प्रवेश करिल गिया रणेर भितर
महावल अंगद अत्यन्त क्रोधभरे ※ बुके हाँटु दिया तबे नरान्तक मारे ८१
नरान्तक पड़िल, देखिल देवान्तके ※ ससैन्येते अंगदे बेड़िल चारिदिके
हस्तीर उपरे चड़ि आइल महोदर ※ चालाइया दिल करी अंगद-उपर
अनुबल त्रिशिरा हइल ततक्षण ※ अंगदेरे बेड़े आसि वीर दुइजन
महोदर जाठा मारे अंगदेर बुके ※ मुखे रक्त उठे वीरेर झलके झलके
मुखे रक्त उठे, तबू ना हय कातर ※ अन्धकार करि फेले गाछ ओ पाथर
मध्येते अंगद चारिदिके निशाचर ※ देखि हनूमान-वीर धाइल सत्वर
महारणे मिशामिशि हैल छयजन ※ बाधिल तुमुल युद्ध, नहे निवारण

तीनों लोक चमत्कृत हो उठे। अंगद का वक्ष मानों वज्र का बना हुआ हो—जिससे टकराकर उस शेल के दो टुकड़े हो गये। अंगद ने कहा, तेरा अस्त्र तो व्यर्थ गया अब मेरा आघात सह ले तो जानूँ। अपने क्रोध को बालि-नन्दन ने संवरण किया और मन ही मन नरान्तक को मारने का उपाय सोचने लगा। वज्रमुष्टि के प्रहार से उसके घोड़े को मारा, उसका दुर्जय घोड़ा जमीन पर जा गिरा और उसके चारों खुर आकाश की ओर उठ गये, उसकी आँखें और जीभ भी कोटरों से बाहर निकल आईं। नरान्तक ने क्रुद्ध हो अंगद की ओर देखा और अंगद के वक्ष पर वज्रमुष्टि मारी। उसके मुँह से भल-भल खून निकलने लगा किन्तु शरीर में दर्द होने पर भी वह कातर न हुआ, और रणक्षेत्र में डटा रहा। अत्यन्त क्रोध से महाबल अंगद ने नरान्तक के सीने पर घुटना दबाकर उसको मार डाला ॥ ८१ ॥

देवान्तक ने नरान्तक को गिरते हुए देखा और अपने सैन्य के साथ अंगद को चारों ओर से घेर लिया। अपने हाथी पर बैठा महोदर आया और अंगद के ऊपर हाथी चला दिया। इतनी ही देर में वहाँ अनुबल और त्रिशिरा आ पहुँचे और दोनों वीरों ने अंगद को घेर लिया। महोदर ने अंगद के वक्ष पर जाठा (लौहदंड) मारा, अंगद के मुँह से भल-भल खून निकलने लगा। मुँह से खून निकलने पर भी वीर जरा सा भी कातर न हुआ और घनघोर वृक्ष तथा प्रस्तर फेंकने लगा। बीच में अंगद हैं और चारों ओर से उनको निशाचर घेरे हुए हैं, यह देखकर वीर हनुमान शीघ्र ही दौड़े। घमासान युद्ध

देवान्तक-हस्ते छिल लोहार पावड़ि ❋ हनूमान-बुके मारे दुहातिया वाड़ि
कुपिल से हनूमान संग्रामेर शूर ❋ पदाघाते देवान्तके करिलेक चूर ८२
हस्तीर उपरे तबे आइल महोदर ❋ नील सेनापति बिन्धि करिल जर्जर
वाण खेये नील वीर करिल उठानि ❋ एकटाने उपाड़े पर्व्वत एकखानि
एड़िल पर्व्वत-गोटा शब्द गेल दूर ❋ हस्ति-सह महोदरे करिलेक चूर ८३
तिन-वीर पड़े रणे, देखे अतिकाय ❋ हाते खाण्डा त्रिशिरा संग्राम-माझे जाय
हनूमान महावीरे देखिल सम्मुखे ❋ दुहातिया बाड़ि मारे हनूमान-बुके
प्रहारेते हनूमान आपना पासरे ❋ एकलाफे पड़े तार रथेर उपरे
त्रिशिरार हाते खाण्डा अति खरशान ❋ से खाण्डाय त्रिशिराय करेखान-खान ८४
भाइ भाइपो पड़े रणे, देखे महापाश ❋ हाते गदा कपिगणे करिछे विनाश
नीलवर्ण गदाखान देखि चारिभिते ❋ अधिक हइल रांगा कपिर शोणिते
जयघण्टा बाजे से गदार चारिपाशे ❋ देवता-गन्धर्व-आदि सबे काँपे त्रासे
महापाश-गदा केह सहिते ना पारे ❋ भंग दिया पलाइल सकल वानरे
हेमकूट-कपि आइल वरुण-नन्दन ❋ पर्व्वत उपाड़े एक घोर-दरशन

में ये छः जने जुट गये और इसके शान्त होने के कोई लक्षण नहीं दिखाई पड़ रहे थे। देवान्तक के हाथों में लोहे का एक दण्ड था—दोनों हाथों से उसने हनुमान के वक्ष पर उसे दे मारा। संग्राम में शूर हनुमान फिर बिगड़ खड़ा हुआ और पदाघात से उसने देवान्तक को चूर्ण-विचूर्ण कर दिया ॥ ८२ ॥

फिर महोदर अपने हाथी पर सवार आया। उसने सेनापति नील को वाणों से विद्ध कर दिया। बाण खाकर नीलवीर उठे और एक समूचा पर्वत उखाड़ कर फेंका। पर्वत के फेंकने से दूर-दूर तक शब्द गया और हाथी सहित महोदर विनष्ट हो गया ॥ ८३ ॥

अतिकाय ने देखा कि तीन वीरों का पतन हो गया। त्रिशिरा हाथ में खड्ग लेकर संग्राम में कूद पड़ा। उसने सामने महावीर हनुमान को देखा और दोनों हाथों से खड्ग उठाकर हनुमान के वक्ष पर वार किया। हनुमान ने वार से अपने को बचा लिया और कूद कर उसके रथ पर जा गिरा। त्रिशिरा के हाथ का खड्ग बड़ा ही तेजधार वाला था—उसी खड्ग से उसने त्रिशिरा को खंड-खंड कर डाला ॥ ८४ ॥

महापाश ने देखा कि युद्ध में उसके भाई और भतीजे गिर गये। गदा लेकर वह कपियों का नाश करने लग गया। नीले रंग की वह गदा कपि के रक्त से लाल रंग की हो गई। उस गदा के चारों ओर जयघंटा बजता और देवता, गन्धर्व आदि सभी त्रास से काँपते। महापाश की गदा का प्रहार कोई सह न सका और सभी वानर भागने लगे। इतने में वरुण-नन्दन हेमकूट कपि आया और एक भयंकर दीखने वाला पहाड़ उखाड़ा। क्रोधित होकर

एड़िल पर्व्वतखान अति क्रोधमने ※ महापाश-वीर पड़े पर्व्वत-चापने
कृत्तिवास-पण्डित कवित्व विचक्षण ※ लंकाकाण्डे गाहिलेन गीत रामायण८५

अतिकायेर युद्धे प्रवेश

पड़े वीर पञ्चजना, देखिबारे पाय ※ हाते धनु संग्रामे प्रवेशे अतिकाय
चिन्ता करि मने-मने बलिछे तखन ※ श्रीचरणे स्थान देह कौशल्या-नन्दन
रावण-सन्तान बलि दया ना करिबे ※ दयामय-राम-नामे कलंक रहिबे
खुड़ा दुइजन पड़े, सहोदर आर ※ रुष्ट हैल अतिकाय रावण-कुमार
हीरा-मणि-माणिक्येते शोभे रथखान ※ एकशत अश्ववर रथेर योगान
माथाय मुकुट शोभे, कर्णेते कुण्डल ※ देवता गन्धर्व जिनि बाड़ियाछे बल
महाक्रोधे अतिकाय ह'ये आगुसार ※ दिलेन आपन दिव्य-चापेते टंकार
किवा घोरतर सेइ टंकार-निःस्वन ※ ताहा शुनि मूर्च्छित हइल कपिगण
बड़-बड़ वीर यत भल्लुक वानर ※ ताहादेर वक्षःस्थल काँपे थर-थर
तबे सेइ रथे थाकि गभीर-गर्ज्जने ※ कहितेछे सम्वोधिया प्लवंगमगणे
ओरे ओरे महामूर्ख मर्कट-सकल ※ पलाह पलाह तोरा छाड़ि रणस्थल
त्रिभुवने अति ख्याति अतिकाय नाम ※ आसियाछि आमि आजि करिते संग्राम

उसने उस पहाड़ को फेंका। उसी पहाड़ से दबकर वीर नागपाश गिरा। कवित्व में विचक्षण पंडित कृत्तिवास ने लंकाकांड में रामायण का गीत गाया ॥ ८५ ॥

अतिकाय का रण में प्रवेश

पाँचों वीर गिर गये यह अतिकाय ने देखा और हाथों में तीर-धनुष लेकर उसने संग्राम में प्रवेश किया। उस समय वह मन ही मन चिन्ता कर कहने लगा, हे कौशल्या-नन्दन तुम अपने श्रीचरणों में मुझे स्थान दो। रावण-पुत्र होने के कारण तुम मुझ पर अगर दया नहीं करोगे तो राम के दयामय नाम पर कलंक लगेगा। दो चाचा गिर गये और सहोदर भी। रावण-कुमार अतिकाय यह सोचकर क्रुद्ध हो गया। हीरा-मोतियों से जगमगाते रथ में सौ घोड़े जुते हुए थे। सिर पर मुकुट शोभायमान था और कानों में कुंडल। देवता और गन्धर्वों पर विजय प्राप्त करने के कारण इसकी शक्ति पर्याप्त बढ़ चुकी थी। अतिकाय महाक्रोध से आगे बढ़ा और अपने दिव्य धनुष पर उसने टंकार-ध्वनि भी कितनी घनघोर की कि उसे सुनकर कपि मूर्च्छित होने लगे। जितने बड़े-बड़े रीछ और वानर थे सभी के हृदय थर-थर काँपने लगे। उस रथ पर बैठकर गंभीर गरजते स्वर में उसने कपियों को सम्बोधित करते हुए कहा, अरे महामूर्ख मर्कट-मंडली! रणक्षेत्र छोड़कर तुम सब भाग जाओ। अतिकाय का नाम त्रिभुवन में प्रख्यात है, और आज मैं ही युद्ध करने आया हूँ। आज

आजि ना राखिव एइ भुवन-भितर ॐ आपन पितार रिपु कपि किंवा नर
तोरा केन मोर अग्रे मरिस् थाकिया ॐ हित कहि, प्राण ल'ये जाह पलाइया
एत बलि सिंहनाद करे घन-घन ॐ ताहे अति त्रासित हइल कपिगण
आर तार अतिशय भयंकर काय ॐ देखिया वानर सब भयेते पलाय
केह केह सेतु दिया जाय सिन्धुपारे ॐ केह प्रवेशये वने, केह बलि-द्वारे
केह केह सिन्धु-जले थाकये डुबिया ॐ केह लता-पत्रादिते देह आच्छादिया
केह केह प्रवेशये वृक्षेर कोटरे ॐ केह केह कुम्भकर्ण-वदन-विवरे
केह केह भये निजे मृत जानावारे ॐ शयन करिया रहे शवेर माझारे
केह केह श्रीरामेर निकटे जाइया ॐ कहितेछे अतिकाय-वीरे देखाइया
देख देख रघुवर, रणेर भितर ॐ आसियाछे अति बड़ एक निशाचर
उहारे देखिबामात्र यत कपिगण ॐ त्रासित हइया सबे कैल पलायन
कपिगण-कथा शुनि श्रीरघुनन्दन ॐ अतिकाये देखि हैल सविस्मय-मन
यद्यपि प्रथम-रणे देखेछिला तारे ॐ तथापि बिस्मय हैल अन्तर-माझारे
अलौकिक पदार्थेर एइ धर्म्म हय ॐ देखिलेओ नव-नव-रूपे प्रकाशय
तबे रघुपति निज-मिता विभीषणे ॐ जिज्ञासा करने अति-मधुर-वचने ८६
देख मिता विभीषण, रणे एल कोन जन, पर्व्वत-प्रमाण रथे चापि।
निजेओ भूधरे जिति, श्यामवर्ण शिलाकृति, अति भयंकर भूप्रतापी ॥

इस संसार में अपने पिता के शत्रु नर और वानर एक भी शेष न रखूंगा। क्यों तुम लोग मेरे सामने रहकर मरना चाहते हो, तुम्हारे हित की बात करता हूँ, अपने प्राण लेकर तुम भाग जाओ। इतना कहकर वह बार-बार सिंहनाद करने लगा, जिससे सारे कपि अत्यन्त आतंकित हो गये और उसकी भयंकर विशाल देह देखकर सारे वानर भय से भागने लगे। कोई कोई तो सेतु से सिन्धु लांघ कर दूसरी ओर चला गया, तो कोई जंगल में घुस गया, तो कोई वलि के द्वार, कोई-कोई समुद्र के जल में जाकर डूब कर खड़ा रहा। किसी ने वृक्षों के पत्ते और लताओं से अपने को ढँक लिया, तो कोई वृक्ष के कोटरों में छिप गया। कोई-कोई मृत कुम्भकर्ण के मुँह गह्वर में छिप गया तो कोई अपने को मृत जताने के लिए शवों के बीच जाकर लेट गया। कोई-कोई श्रीराम के निकट जाकर अतिकाय वीर को दिखाकर कहने लगा, देखो रघुवर, आज रणक्षेत्र में बहुत बड़ा एक निशाचर आया है, उसको देखते ही सारे कपि भय से भाग गये। कपियों की बात सुनकर श्रीरघुनन्दन ने अतिकाय को देखा और विस्मित हुए। यद्यपि प्रथम रण में उसको देखा था फिर भी उसको देखकर अन्तर विस्मय से भर गया। अलौकिक वस्तुओं का यही स्वभाव होता है, देखी हुई होने पर भी वे नये-नये रूप में प्रकट होती हैं। तब रघुपति ने अपने मित्र विभीषण से अत्यन्त मधुर वचन में पूछा ॥ ८६ ॥

सुनो मित्र विभषण, जरा देखना, पर्वत-प्रमाण रथ पर बैठा रण में यह

मुकुट शोभये शिरे, येन नील-धराधरे, सुवर्णेर शृंग शोभा पाय।
पिंगल नयनद्वय, भुजेते अंगदचय, गले नाना-आभरण ताय॥
किवा देखि रथखान, दशशत परिमाण, घोटकेते बहितेछे जारे।
पञ्च सुसारथि जार, ध्वज नर-मुण्डाकार, पताका उड़िछे चारिधारे॥
देखि रथ-उपरेते, अस्त्र-शस्त्र नानामते, शेल शूल मुषल मुद्‌गर।
तीक्ष्ण-तीक्ष्ण भिन्दिपाल, शत-शत तरवाल, काठार कुठार वहुतर॥
अतिशय भयंकर, लौहमय बाण खर, अष्टत्रिंश तूण शोभा करे।
स्वर्णबद्ध सुशोभन, दिव्य-दिव्य शरासन, चारिदिके रहे थरे-थर॥
दशहस्त परिमाण, दुइपाशे दुइखान, खड्‌ग दुलितेछे भयंकर।
धरियाछे वामकरे, एकखान धनुकेरे, इन्द्रधनुः सम दीर्घतर॥
निरखिया एइजने, पलाइछे स्थाने-स्थाने, वानर-सकल भीतमने।
के वटे, काहार पौत्र, कि नाम, काहार पुत्र, कह मिता, मम विद्यमाने॥ १८७

अतिकायेर युद्ध ओ मृत्यु

श्रीराम-वदने शुनि एतेक वचन ❋ विभीषण ताँहारे करेन निवेदन
विश्ववार पौत्र प्रभु, रावण-नन्दन ❋ अतिकाय-नामधारी हय एइजन
जनम इहार धान्यमालिनी-उदरे ❋ आपन पितार तुल्य ए हय समरे

कौन आया। स्वयं भी वह भूधराकार है, श्यामवर्ण प्रस्तर के समान है और भयंकर पराक्रमी प्रतीत होता है। जिस प्रकार नीले पर्वत की चोटी पर स्वर्ण-शिखर शोभा पाता है उसी प्रकार उसके मस्तक पर मुकुट शोभायमान है। वह रथ भी कैसा जिसको दश-शत घोड़े खींच रहे हैं। पाँच-पाँच सारथी जिस पर बैठे हैं और नर-मुंड के आकार के ध्वज जिस पर हैं, उसके चारों तरफ झंडियाँ फहरा रही हैं। देख रहा हूँ कि रथ के ऊपर शैल, शूल, मूसल, मुद्‌गर, तेज भिन्दिपाल, सैकड़ों तलवारें, अनेक प्रकार के फरसे और कुल्हाड़े रखे हैं। अतिशय भयंकर लोहे के खरधार (तेज धार वाले) बाणों से भरे अड़तीस तूण (तरकस) शोभायमान हैं। सोने से मढ़े हुए दिव्य आकार के कितने ही धनुष सुसज्जित रखे हैं। दो बाजुओं में दस-दस हाथ लम्बे भयंकर दो खड्ग लटक रहे हैं। बाएँ हाथ में उसने एक लम्बा सा धनुष थाम रक्खा है जो कि इन्द्रधनुष सा लम्बा है। इसको देखकर भयभीत हो स्थान-स्थान पर वानर भाग रहे हैं। यह कौन है, किसका पुत्र और किसका पौत्र है, हे मित्र मुझको बताना॥ १८७॥

अतिकाय का युद्ध और मृत्यु

श्रीराम के मुँह ऐसे वचन सुनकर विभीषण ने उससे निवेदन किया, हे प्रभु, यह विश्रवा का पौत्र है और रावण का पुत्र है, इसका नाम अतिकाय है।

ज्ञाति-जन-सेवनेते एइ अनुरक्त ❋ एकवार श्रुतिमात्रे शास्त्राभ्यासे शक्त
साम दाम भेद दण्ड ए चारि उपाये ❋ अत्यन्त निपुण आर मन्त्रणा-निचये
धर्म्मशास्त्र अर्थशास्त्र कामशास्त्रे धीर ❋ अश्वपृष्ठे गजस्कन्धे रथे महास्थिर
धनुक-धारणे आर बाण-विमोचने ❋ इहार समान नाहि रावण-विहने
खड्ग-चर्म्म-युद्धे आर गदा-प्रहरणे ❋ इहार समान नाहि ए लंका-भुवने
इहारइ बाहुर बल करिया आश्रय ❋ निरवधि लंकापुरी आछये निर्भय
इहार प्रभाव प्रशंसये सर्व्वजन ❋ देवता - दानव - यक्ष - विद्याधरगण
एइ घोर तप करि अनेक वरष ❋ विधातारे करियाछे आपनार वश
ताँर स्थाने पाइयाछे एइ दिव्ययान ❋ आर पाइयाछे नानाविध अस्त्र-बाण
पाइयाछे दिव्य एक कवच अभेद्य ❋ हइयाछे सुरासुर-निकटे अवध्य
एइ जिनियाछे वहु देवता-दानवे ❋ यक्ष-विद्याधर-नाग-किन्नरादि सवे
करेछिल एइ वाणे वज्रेर स्थम्भन ❋ वरुणेर पाश क'रेछिल निवारण
लंकामाझे एइ सब वीरेर प्रधान ❋ देव-दैत्य-जयी शूर वीर बलवान
आदरेते अतिकाय-नाम राखे बाप ❋ कुमार-भागेते नाहि एमन प्रताप
एइ रणे यावतीय कपि-भल्लगणे ❋ संहार करिबे शरजाले एइक्षणे
अतएव इहार करिते संहरण ❋ करिते हइबे अति शीघ्र आयोजन ८८

इसका जन्म धान्यमालिनी की कोख से हुआ है। यह युद्ध में अपने पिता के समान है। पात्र-मित्रों-सम्बन्धियों की सेवा में यह तत्पर है। एक बार सुन कर ही यह कठिन शास्त्रों में पारंगत हो गया। साम, दाम, दंड, भेद—इन चारों उपायों में यह बड़ा ही निपुण है। धर्मशास्त्र, और कामशास्त्र में यह निष्णात (चतुर) है। अश्वारोहण और गजारोहण में, धनुष पकड़ने और वाण चलाने में यह दक्ष है। खड्ग-चर्म युद्ध में और गदायुद्ध में लंका में इसकी कोई तुलना नहीं। इसी के बाहुवल के भरोसे लंकापुरी निर्भय बनी हुई है। देवता-दानव-यक्ष-विद्याधर सभी इसके प्रभाव की प्रशंसा करते हैं। इसने बहुत वर्षों तक घोर तपस्या करने के बाद विधाता को अपने वश में किया। उस तपस्या के कारण उसको यह दिव्य-ज्ञान और अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र मिले। इसको एक अभेद्य कवच मिला है जिस कारण यह सुरासुर के निकट अवध्य बन गया है। इसने बहुत सारे देवता-दानव-यक्ष-विद्याधर-नाग-किन्नरादि पर विजय प्राप्त की है। इसने बाण से वज्र का निवारण किया था, और वरुण के पाश को भी रोका था। लंका में यह सारे वीरों में श्रेष्ठ है—यह देव-दैत्य-विजयी, शूर-वीर और बलवान है। पिता ने दुलार से इसका नाम अतिकाय रखा, राजपुत्रों में इसके समान पराक्रमी दूसरा कोई भी नहीं है। यह रण में अपने बाणों से सारे कपि और रीछों का संहार कर डालेगा। अतः इसको रोकने केलिए शीघ्र व्यवस्था करनी पड़ेगी॥ ८८॥

एइरूपे विभीषण कन रघुवरे ※ अतिकाय प्रवेशिल समर-भितरे
सम्मुखेते विभीषण करि निरीक्षण ※ प्रणाम करिया ताँरे कहिछे वचन
अतिकाय बले, खुड़ा, शुनह उत्तर ※ रात्रिदिन सेव तुमि देव गदाधर
तोमार समान श्रेष्ठ हवे कोन जन ※ तोमा-प्रति बड़ प्रीत देव नारायण
अतिकाय बले, खुड़ा, निवेदि तोमारे ※ आमारे करुन दया देव-गदाधरे
एत कहि अतिकाय खुड़ा विभीषणे ※ चालाइया दिल रथ राम-विद्यमाने
अतिकाय बले, शुन जगत्-गोसाँइ ※ मम प्रति केन तव दया हय नाइ
अतिकाय बले, शुन देव-नारायण ※ स्थान दिओ श्रीचरणे, एइ निवेदन८९
स्तव शुनि स्तब्ध हये कन गदाधर ※ परम धार्मिक तुमि लंकार भितर
तुमि आर तोमार पितृव्य विभीषण ※ दुइजने राज्य दिब मारिया रावण
अतिकाय बले, राज्ये नाहि प्रयोजन ※ युद्ध करि कलेवर करिव पातन
एखन ओ-पदे करि एइ निवेदन ※ आमार सहित युद्ध दिबे कोन जन
वानरेर संगे आमि ना करिव रण ※ पशुजाति युद्धेर कि जाने कपिगण
वानरेर सम्भावना वृक्ष ओ प्रस्तर ※ कटाक्षे मारिते पारि सकल वानर
सुग्रीव-राजारे देखि वकेर समान ※ लक्ष्मण बालक, रणे कि जाने सन्धान
जोड़ हाते बले वीर, शुनह श्रीराम ※ तोमार सहित आमि करिब संग्राम९०

जिस समय विभीपण ने रघुवर से ये सारी बातें बताईं उसी समय अतिकाय ने रणक्षेत्र में प्रवेश किया। सामने विभीषण को निरख कर उनको प्रणाम कर अतिकाय कहने लगा, चाचा रातोंदिन तुम देव गदाधर की सेवा करते हो, तुम्हारे समान बड़भागी दूसरा कौन होगा। नारायण तुमसे अत्यन्त प्रसन्न हैं। अतिकाय ने कहा, चाचा, तुमसे निवेदन करता हूँ कि देव-गदाधर मुझ पर कृपा करें। अपने चाचा विभीषण से इतना कहकर अतिकाय अपना रथ राम के सम्मुख ले गया। अतिकाय ने कहा, संसार के स्वामी सुनो, मेरे प्रति तुम कृपा क्यों नहीं करते हो। हे देव-नारायण तुमसे इतना ही निवेदन है कि अपने श्रीचरणों में स्थान देना ॥ ८९ ॥

स्तवन सुनकर गदाधर (राम) स्तब्ध हो गये, फिर बोले, लंका के भीतर तुम परम धार्मिक हो। तुम और तुम्हारे पितृव्य को मैं रावण का वध कर राज्य दूँगा। अतिकाय ने कहा, मुझको राज्य की आवश्यकता नहीं, मैं युद्ध कर अपने शरीर को विनष्ट करूँगा। अब इन चरणों में मेरा निवेदन है कि मेरे साथ किस व्यक्ति को युद्ध करने दोगे। वानरों के साथ मैं युद्ध नहीं करूँगा—ये कपि पशुओं की जाति के हैं, भला इनको युद्ध करना भी आता है। बन्दरों के एक मात्र पेड़ और पत्थर (ही अस्त्र-शस्त्र) हैं। मैं बहुत ही आसानी से सारे वानरों को मार सकता हूँ। राजा सुग्रीव को भी मैं बगुले के समान देखता हूँ। लक्ष्मण भी बालक ही है—रण कौशल क्या जानता होगा ? हाथ

धनुक पातिया जान ठाकुर लक्ष्मण ❋ हासिया जिज्ञासा करे रावण-नन्दन
कत युद्ध करियाछ, बयःक्रम कत ❋ आमार सहित युद्ध ना हय उचित
इन्द्र चन्द्र कुबेर आमारे करे भय ❋ आमार सहित युद्ध उचित ना हय
कोपेते लक्ष्मण दिल धनुके टंकार ❋ देखि अतिकाय-वीर लागे चमत्कार
अतिकाय बले, शुन ठाकुर लक्ष्मण ❋वयसे छाओयाल तुमि, किवा जान रण९१
लक्ष्मण बलेन, तुइ जाति निशाचर ❋ भाल-मन्द ना जानिस्, करिस् उत्तर
के कोथा देखेछे हेन, शुनेछे श्रवणे ❋ वयस अधिक जार, सेइ रण जिने
आमारे छाओयाल बल, प्रवीण आपनि ❋ प्राणे प्राणे जाओ यदि, तवे वीर जानि
आजिकारि युद्धे यदि तोरे नाहि मारि ❋ तवे त लक्ष्मण-नाम वृथा आमि धरि
एत यदि दु'जने वचने हैल कक्षा ❋ दुइजने वाण मारे, जार यत शिक्षा
अतिकाय वले, शुन ठाकुर लक्ष्मण ❋ तोमाते आमाते युद्ध करिव दु'जन
संग्रामेर दोष-गुण काहार केमन ❋ रामचन्द्र साक्षी, आर खुड़ा विभीषण
मध्यस्थ हइया दोंहे करुन विचार ❋ जय-पराजय रणे कि हय काहार९२
अतिकाय-वचने लक्ष्मण दिल साय ❋ महायुद्ध बाधिल लक्ष्मण-अतिकाय

जोड़ते हुए वीर (अतिकाय) ने कहा, हे श्रीराम सुनो, मैं तुम्हारे साथ युद्ध करूँगा ॥ ९० ॥

धनुष में प्रत्यंचा चढ़ाकर लक्ष्मण आगे बढ़ आए। रावण-नन्दन ने हँस कर पूछा, तुम्हारी अवस्था कितनी है, कितने युद्धों में तुमने भाग लिया है। तुमको मेरे साथ युद्ध नहीं करना चाहिए। इन्द्र, चन्द्र, कुबेर आदि मुझसे डरते हैं—मेरे साथ युद्ध करना तुम्हारे लिए उचित नहीं होगा। यह सुनकर क्रोधित होकर लक्ष्मण ने धनुष में टंकार किया, उसे सुनकर वीर अतिकाय आश्चर्य करने लगा। अतिकाय ने कहा, हे देव लक्ष्मण, अवस्था से तुम लड़के हो, रण के बारे में भला तुम क्या जानते हो ॥ ९१ ॥

लक्ष्मण ने कहा, तुम निशाचर जाति के हो। भला-बुरा बिना जाने बातें करते हो। किसने कब ऐसा देखा या सुना है कि अवस्था में अधिक होने वाला ही रण को जीतता रहा है। मुझको तुम बच्चा कहते हो और अपने को प्रवीण, यदि प्राण लेकर लौट जाओ तभी मैं तुमको वीर मानूँ। आज के युद्ध में यदि मैं तुमको नहीं मार सका तो बेकार ही मैं लक्ष्मण नाम धरता हूँ। जब दोनों में इतना वचन-युद्ध हो गया तो अपनी-अपनी शिक्षा के अनुसार दोनों बाण चलाने लगे। अतिकाय ने कहा, हे देव लक्ष्मण, तुममें-हममें संग्राम हो और संग्राम के दोष-गुण के सम्बन्ध में चाचा विभीषण और श्रीरामचन्द्र साक्षी बनकर, मध्यस्थ हो न्याय करें कि रण में किसकी जय या पराजय होती है ॥ ९२ ॥

अतिकाय के प्रस्ताव में लक्ष्मण ने सम्मति दी। फिर लक्ष्मण और

अग्निबाण अतिकाय करे अवतार ❋ लक्ष्मण वरुण-वाणे करिल संहार
दुइशत वाण तवे अतिकाय एड़े ❋ अविलम्वे लक्ष्मण वाणेते काटि पाड़े
हस्ति-वाण एड़े अतिकाय महावल ❋ सिंह-वाणे लक्ष्मण करिल रसातल
मारिल पर्व्वत-बाण अतिकाय रोषे ❋ लक्ष्मण पवन-वाणे उड़ान वातासे
अमर्त्य समर्थ बाण विकट-दशन ❋ इन्द्रजाल विष्णुजाल घोर-दरशन
एइसव वाण दोंहे करे अवतार ❋ दशदिक् जल-स्थल वाणे अन्धकार
दुइजने वाण मारे अति परिपाटि ❋ अन्तरीक्षे दुइ वाण करे काटाकाटि
लक्ष्मण मारेन वाण दिया वाहुनाड़ा ❋ अतिकाय-रथेर काटेन शत-घोड़ा
आर वाण एड़ेन लक्ष्मण महावीर ❋ काटिलेन तार पञ्च-सारथिर शिर
युद्ध करे अतिकाय हइया विरथी ❋ चक्षुर निमिषे रथ योगाय सारथि
रथ पेये अतिकाय लाफ दिया चड़े ❋ तिनकोटि वाण लक्ष्मणेर प्रति एड़े
से वाण लक्ष्मण सब काटे अवहेले ❋ स्वर्गेते देवता सब साधु-साधु वले
लक्ष्मण एड़ेन वाण नामेते अक्षय ❋ शानाते ठेकिया वाण पाइल पराजय९३
शानाय ठेकिया वाण ना करे प्रवेश ❋ लक्ष्मणेर काने वायु कहे उपदेश
अक्षय कवच आछे अंगेते उहार ❋ अंगे प्रहारिते बाण शक्ति आछे कार

अतिकाय में महायुद्ध छिड़ गया। अतिकाय ने अग्निवाण छोड़ा तो लक्ष्मण ने वरुण वाण से उसका सामना किया। तब अतिकाय ने दो सौ वाण फेंके और लक्ष्मण ने अपने वाणों से उनको काट गिराया। महावली अतिकाय ने हस्ति-वाण फेंका तो लक्ष्मण ने सिंह वाण से उसे मार गिराया। अतिकाय ने रोष से पर्वत-वाण फका तो लक्ष्मण का पवन-वाण उसको उड़ा ले गया। अमर्त्य, समर्थ नामक विकट-दर्शन वाण और घनघोर इन्द्रजाल और विष्णुजाल नामक वाण दोनों चलाने लगे। जल-स्थल सहित दशों दिशाएँ वाणों से ढककर अन्धकारमयी हो गयीं। दोनों चुन-चुन कर वाण फेंकने लगे और अन्तरिक्ष में दोनों के वाण एक दूसरे को काटने लगे। तब हाथ झटकारते हुए लक्ष्मण ने वाण फेंका और अतिकाय ने रथ के सौ घोड़ों को मार डाला। फिर महावीर लक्ष्मण ने दूसरा वाण फेंका और उसके पाँच सारथियों के सिर काट डाले। जब रथ शून्य होकर अतिकाय लड़ने लगा तो सारथी ने क्षण भर में रथ ला दिया। रथ पाते ही अतिकाय कूद कर रथ पर चढ़ गया और लक्ष्मण के ऊपर तीन करोड़ वाण फेंके। उन वाणों को लक्ष्मण ने सहज ही काटकर गिरा दिया तो स्वर्ग से सभी देवता साधु-साधु कहने लगे। लक्ष्मण ने अक्षय नामक वाण फेंका जो कि कवच से टकराकर व्यर्थ गया ॥ ९३ ॥

जब कवच से टकराकर वाण अन्दर प्रवेश नहीं कर सका तो पवन ने आकर लक्ष्मण के कानों में यह उपदेश किया कि उसके अंग पर अक्षय कवच

सहजेते ना मरिबे रावण-कुमार ❋ ब्रह्म-अस्त्र मारि ओरे करह संहार
उपदेशे कहिया पवन-देव नड़े ❋ मंत्र पड़ि लक्ष्मण-बीर ब्रह्म-अस्त्र जोड़े
लक्ष्मण एड़िल बाण पूरिया सन्धान ❋ बाण देखि अतिकायेर उड़िल पराण
मारे जाठि झकड़ा से अस्त्र काटिवारे ❋ तबु अतिकाय ताहा फिराइते नारे
अजय अक्षय बाण केवा धरे टान ❋ अतिकाय-माथा काटि कैल दुइखान
अतिकाय पड़िल, राक्षस-भागे डरे ❋ धाइया वानरगण राक्षसेरे मारे
पलाय राक्षसगण गणिया प्रमाद ❋ 'राम-जय'-शब्दे कपि छाड़े सिंहनाद
समुकुट मुण्ड पड़े सहित-कुण्डले ❋ अतिकाय-मुण्ड गड़ागड़ि भूमितले
भूमिते पड़िया मुण्ड 'राम राम' बले ❋ प्रेमानन्दे विभीषण भासे अश्रुजले
धन्य धन्य पुत्र, तुमि निशाचर कुले ❋ तिनकुल मुक्त हवे तव पुण्यफले
हेन भक्त ना देखि ना शुनि कोनकाले ❋ काटामुण्ड एइरूपे 'राम राम' वले
वानरेते 'राम-जय' शब्द करे मुखे ❋ वज्राघात पड़े येन रावणेर बुके
अतिकाय पड़े यदि संग्राम-भितरे ❋ दूत जाय समाचार दिते लंकाश्वरे९४

अतिकायादि चारिपुत्रेर मृत्यु शुनिया रावणेर रोदन

भग्नदूत गिया तबे दशानन-पाशे ❋ निवेदन करितेछे गदगद-भाषे

है—ऐसा कौन सा वाण है जिसमें उसका अंग-भेद करने की शक्ति है। रावण-कुमार आसानी से नहीं मरेगा। ब्रह्म-अस्त्र मारकर उसका संहार करो। यह उपदेश देकर पवन-देव वहाँ से खिसक गये। तब वीर लक्ष्मण ने मंत्र पढ़कर ब्रह्मास्त्र को धनुष पर रखा। वाण देखकर अतिकाय के प्राण सूख गये। उसने जाठि-झकड़ा आदि फेंककर उस अस्त्र को काटना चाहा लेकिन फिर भी उसका निवारण नहीं कर सका। अजेय अक्षय वाण का कौन रोध कर सका है, उसने अतिकाय के सिर को काट कर फेंक दिया। अतिकाय गिर गया यह देखकर राक्षस भागने लगे तो वानर दौड़-दौड़ कर उनको मारने लगे। विपत्ति जानकर राक्षस भागने लगे तो कपि 'राम-जय' कहकर सिंहनाद करने लगे। मुकुट और कुंडल के साथ जब अतिकाय का मुंड धरती पर गिरा तो वह गिरा हुआ मुंड 'राम-राम' शब्द करने लगा। प्रेमानन्द से विभीषण आँसुओं से भीग गया। कहने लगा, हे पुत्र! तुम धन्य हो, निशाचर कुल में तुम धन्य हो। तुम्हारे पुण्य के कारण तुम्हारे तीन कुल तर जाएँगे। ऐसा भक्त आज तक न देखा है और न सुना ही है कि कटामुंड इस प्रकार 'राम-राम' का शब्द करता हो। वानर 'राम-जय' की ध्वनि करने लगे तो रावण के वक्ष पर मानों गाज गिरने लगी। संग्राम में अतिकाय गिरा तो दूत लंकेश्वर को समाचार देने चल पड़ा ॥ ९४ ॥

अतिकाय आदि चार पुत्रों की मृत्यु के समाचार पर रावण का रुदन

भग्नदूत दशानन के निकट पहुँचकर शोकाकुल स्वर में निवेदन करने

महाराज, चारिजन तनय तोमार ॐ रणे गियाछिल दुइजन भ्राता आर
तार मध्ये पञ्चजने वानरे वधिल ॐ अतिकाय लक्ष्मणेर बाणेते मरिल९५
दूतमुखे हेनवाणी करिया श्रवण ॐ किछुकाल स्तब्ध ह'ये रहे दशानन
मुहूर्त्तेक परे पुन: पाइया चेतन ॐ कि कहिले बलिया करये जिज्ञासन
पुनर्व्वार दूत कैल सब निवेदन ॐ ताहा शुनि मूर्च्छित हइल दशानन
किछुकाल परे पुन: संवित् पाइया ॐ सुदीर्घ निश्वास छाड़े हुंकार करिया
हइयाछे अतिशय शोकेते मगन ॐ ना पारये करिवारे धैरय धारण
विंशति-नयने घन अश्रुधारा वय ॐ मुक्तकण्ठ हय राजा क्रन्दन करय
कोथा गेल महोदर भाइ महापाश ॐ कोथा गेल चारिपुत्र करिया उदास
पितृश्राद्ध करे पुत्र, सर्व्वकाले शुनि ॐ पुत्रश्राद्ध करे पिता, ए अद्भुत गणि९६
कि हइल हाय हाय, दु:ख नाहि सहा जाय, आर देहे प्राण नाहि रहे।
शोकानल विपरीत, ह'ये अति प्रज्वलित, निरवधि प्राण-मन दहे॥
पुड़ि मरितेछि एके, कुम्भकर्ण-भ्रातृशोके, क्षणकाल स्थिर नहे मन।
तदुपरि आर बार, एइ वज्र सम्प्रहार, कि करिया धरिव जीवन॥
ओरे अतिकाय पुत्र, सकल गुणेर पात्र, कोन स्थाने करिलि गमन।
ना देखि तोमार मुख, विदरे आमार बुक, धैर्य्य नाहि धरे मोर मन॥

लगा, महाराज, आपके चारों तनय और दो भ्राता युद्ध करने गये थे, उनमें से वानरों ने पाँच का वध किया और लक्ष्मण के बाणों से अतिकाय की मृत्यु हुई॥ ९५॥

दूत के मुँह ऐसा सन्देश सुनकर कुछ देर के लिए दशानन स्तब्ध हो गया। क्षणभर के उपरान्त सचेतन होकर उसने पूछा, तुमने क्या कहा, फिर से बताओ। दूत ने फिर से सारी बातें बताई, सुनते ही दशानन मूर्छित हो गया। कुछ देर के बाद होश में आकर उसने हुंकार करते हुए लम्बी-लम्बी साँस ली। वह इतना शोकमग्न हो गया था कि धैर्य धारण नहीं कर पा रहा था। उसकी बीसों आँखों से आँसू निकलने लगे और राजा खुल कर जोर-जोर से रोने लगा। हाय मेरे भाई महोदर और महापाश तुम कहाँ चले गये। मेरे चारों पुत्रों तुम मुझको उदास कर कहाँ चले गये। चिरकाल से सुना जाता है कि पुत्र ही पिता का श्राद्ध करता है, यह कसी अद्भुत बात है कि मुझे पिता होकर पुत्र का श्राद्ध करना पड़ रहा है॥ ९६॥

हाय हाय! यह क्या हो गया, यह दु:ख तो अब सहा नहीं जाता। इस शरीर में अब प्राण रहना ही नहीं चाहते। शोकानल प्रज्वलित होकर देह और मन को जला रहा है। एक तो भाई कुम्भकर्ण के शोक से जला जा रहा हूँ, मेरा मन क्षणभर के लिए भी स्थिर नहीं है, तिस पर बार-बार यह वज्र का प्रहार हो रहा है; यह जीवन मैं कब तक रख सकूँगा? हे पुत्र अतिकाय,

तोमा-विना घर-द्वार, सब हैल अन्धकार, शून्य देखि ए तिन भुवन ।
अन्ध हैल सब नेत्र, ज्वलितेछे मोर गात्र, हृदय हं'तेछे उचाटन ।।
ओरे ओरे बाछा मोर, ना देखिब आर तोर, सुधांशु समान से बदन ।
आर तोरे निज क्रोड़े, ना बसाब धरि करे, ना शुनिब से मिष्ट-बचन ।।
के कहिवे मोरे आर, हितकथा शास्त्र-सार, के करिबे विपदे मोचन ।
के करिबे शत्रु-जय, के तुषिबे बन्धुचय, सम्मानिवे केवा मान्यजन ।।
औरे वाप देवान्तक, त्रिशिरा ओ नरान्तक, भ्राता महापाश महोदर ।
तोरा सवे छाड़ि मोरे, गेलि कोन देशान्तरे, ना देखिया पोड़ये अन्तर ।।
यदि गेलि तोरा सबे, जीवने कि कार्य तबे, मरिब डुबिया रत्नाकरे ।
एकमात्र रहि गेल, हृदयेते खेद-शेल, जिनिते नारिनु रघुवरे ।। ९७

इन्द्रजित्-कर्तृक रावणेर सान्त्वना

एइरूपे क्रन्दन करये दशानन ※ कोनमते स्थिर नाहि हय एकक्षण
राजार क्रन्दन शुनि, काँदे सर्व्वजना ※ केह ना करिते पारे काहारे सान्त्वना
तबे इन्द्रजित् निज क्रन्दन संवरि ※ कहितेछे दशानने अहंकार करि

तुम सारे गुणों के निधि थे, तुम कहाँ चले गये ? तुम्हारा मुख देखे बिना मेरा हृदय खंड-खंड हो रहा है और मैं धीरज नहीं धर पा रहा हूँ। तुम्हारे बिना घर-द्वार सब कुछ अन्धकारमय हो गया—तीनों भुवनों को सूना देख रहा हूँ। मेरे सारे नेत्र अन्धे हो गये, मेरा बदन तप रहा है और दिल उदास हो रहा। अरे मेरे बेटे, तेरा चाँद सा मुखड़ा मैं फिर न देख सकूँगा, तुझको फिर कभी अपनी गोद में बिठाकर तेरी मीठी-मीठी बातें नहीं सुन सकूँगा। कौन मुझको फिर से शास्त्र-सम्मत हितकारी बातें सुनाया करेगा और विपत्तियों से मुक्त करेगा। अब कौन शत्रु-जय करेगा, मित्रों का तोषण करेगा और सम्मानित व्यक्तियों का सम्मान करेगा ? अरे बेटे देवान्तक, नरान्तक और त्रिशिरा, भाई महापाश और महोदर, तुम सब मुझको छोड़कर किस देश को प्रस्थान कर गये। तुमको बिना देखे मेरा अन्तर (हृदय) दग्ध होता जा रहा है। यदि तुम सबही चले गये तो मेरे जीवन से क्या लाभ, मैं सागर में डूब कर प्राण दे दूँगा पर इतना ही खेद रह जायगा कि रघुवर को मैं जीत नहीं सका ।। ९७ ।।

इन्द्रजीत द्वारा रावण को सान्त्वना

इस प्रकार दशानन निरन्तर क्रन्दन करने लगा और क्षणभर भी स्थिर न रह सका। राजा को रोते देखकर सभी रोने लगे और कोई किसी को ढारस न बँधा सका। तब इन्द्रजीत ने अपना रुदन रोककर अहंकार करते हुए दशानन से कहा, मेरे रहते हुए किसी दूसरे को क्यों भेज रहे हो। आज्ञा दो,

आमि विद्यमाने केन प्रेर अन्यजने ❋ आज्ञा कर, मेरे आसि श्रीराम-लक्ष्मणे
अनुग्रह करि मोरे देह पदधूलि ❋ रामसैन्य मारिवारे एइ आमि चलि
अंगद सुग्रीव आर वीर हनूमान ❋ बड़-बड़ वानरेर लइब पराण
नल-नील-सुषेणे मारिब अवहेले ❋ जाम्बवान डुबाइब सागरेर जले
सुग्रीवेर श्वशुर सुषेण बेटा बुड़ा ❋ गदाघाते करिब ताहार मुण्ड गुँड़ा
केशरी-वानर बेटा घरपोड़ार वाप ❋ यमालये पाठाइव करि वीरदाप
मारिब शरभ-आदि यत कपिगणे ❋ बधिब लंकार शत्रु खुड़ा विभीषणे
यत बेटा लंका आसि करेछे प्रवेश ❋ वाहुड़िया एकजन ना जाइबे देश१९८

इन्द्रजितेर द्वितीयवार युद्धे गमनोद्योग

मेघनाद-कथा शुनि रावण हर्षित ❋ कोले करि मेघनादे कहिछे त्वरित
लंका-अधिपति तुमि पुत्र मेघनाद ❋ मारिया वानर-नर घुचाओ प्रमाद
भुञ्जिते लंकार भोग आमि दशानन ❋ विपक्ष नाशिते पुत्र रयेछे एखन
चारिपुत्र-शोके हेरि रावणे चिन्तित ❋ जोड़हाते पितृ-आगे कहे इन्द्रजित्
लंका-अधिपति तुमि, भुवनेर राजा ❋ इन्द्र-आदि देवता तोमार करे पूजा
किसेर संग्राम नर-वानरेर सने ❋ एखनि बाँधिया आनि श्रीराम-लक्ष्मणे१९९

मैं श्रीराम और लक्ष्मण को मार आऊँ। कृपया अपने चरणों की धूल दो, मैं राम-सेना का संहार करने चलता हूँ। अंगद, सुग्रीव और वीर हनुमान जैसे बड़े-बड़े वानरों का प्राण मैं ले लूँगा। नल-नील-सुषेण को मैं अनायास ही मार डालूँगा। और जाम्बवान को समुद्र के पानी में डुबो मारूँगा। सुग्रीव के श्वसुर बूढ़े सुषेण का मुंड मैं गदा से चकनाचूर कर डालूँगा। केशरी वानर जो कि गृहदाह करने वाले वानर हनुमान का बाप है उसको मैं पदाघात से यमालय भेज दूँगा। शरभ आदि सारे कपियों को मैं मार डालूँगा और लंका के शत्रु चाचा विभीषण का भी मैं वध करूँगा। जितने नीच लंका में प्रवेश कर आए हैं, उनमें से एक भी लौट कर अपने देश नहीं जा सकेगा ॥ १९८ ॥

इन्द्रजीत का दुबारा युद्ध में जाने का उद्योग

मेघनाद के वचन सुनकर रावण हर्षमग्न हुआ और उसको गोद में बिठा कर बोला, हे पुत्र मेघनाद तुम लंका के अधिपति हो। नर और वानरों को मार कर मेरा दुख दूर करो। लंका को भोगने के लिए मैं अकेला दशानन रहा। विपक्ष के नाश के लिए अब तुम रह गये। चार पुत्रों के शोक से रावण को व्याकुल देखकर इन्द्रजीत पिता के सम्मुख हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और कहने लगा, तुम लंका के अधिपति हो और संसार के राजा हो। इन्द्र आदि देवता तुम्हारी पूजा करते रहते हैं। नर-वानर के साथ युद्ध भी

एतेक कहिल यदि रावण-नन्दन ❋ युद्ध करिवारे आज्ञा दिल दशानन
राज-आभरण दिल देवेर वाञ्छित ❋ संग्रामेते साजिल कुमार इन्द्रजित्
बापेर दुलाल सेइ पुत्र मेघनाद ❋ सर्व्वांग भरिया परे राजार प्रसाद
अंगूले अंगुरी परे, बाहुते कंकण ❋ सर्व्वांग भूषित करे राज-आभरण
वीर-परिधान परे नेतेर जे फालि ❋ तिनशत फेर दिया बान्धिल काँकालि
सर्व्वांगे लेपन करे चन्दनेर सार ❋ गलार उपरे तुलि दिल रत्नहार
स्वर्ण-नवगुण परे, परे स्वर्णपाटा ❋ भुवन जिनिया छटा कपालेर फोंटा
सोनार दापनि परे अष्ट-अंग वहि ❋ एमन सुन्दर रूप त्रिभुवने नाहि
राज-आभरण परे देवेर वाञ्छित ❋ संग्रामेते साजिल कुमार इन्द्रजित्
घन-घन सारथिरे करिछे मेलानि ❋ शीघ्र कर रथसज्जा, डाकिछे आपनि
सारथि आनिल रथ संग्राम-कारण ❋ मनोहर-वेशे रथ करिल साजन
करिलेक रथसज्जा रथेर सारथि ❋ माणिक्य प्रवाल कत बसाइल तथि
कनक-रचित रथ मुक्तार सञ्चारे ❋ चारिदिके स्वर्ण-वृक्ष फल-फूल धरे
चन्द्र-सूर्य-तेज जिनि रथेर किरण ❋ प्रवाल-मुकुता कत रथेर साजन
पार्व्वतीय घोड़ा, गले रत्नेर बिम्बकि ❋ तेइश अक्षोहिणी ठाट युद्धेर धानुकी

कौन सी बड़ी बात है, अभी जाकर श्रीराम और लक्ष्मण को बाँधकर लाता हूँ ॥ १६६ ॥

रावण-नन्दन मेघनाद ने जब इतना कहा तो राजा दशानन ने उसको युद्ध में जाने की आज्ञा दे दी। देवताओं द्वारा वांछित राज-आभरण उसको दिया गया और कुमार इन्द्रजीत ने अपने को रण के लिए सुसज्जित किया। पिता के लाडले मेघनाद ने राजा से प्राप्त प्रसाद को धारण किया। अंगुलियों में अँगूठियाँ और बाहु में कंकण धारण कर राज-आभरण से सारे अंग को सजाया। उसने अपने शरीर पर वीरोचित नेत-वस्त्र धारण किया और कमर में तीन सौ लपेट (फेंट) बांधे। सारे शरीर पर चन्दन का प्रलेप चढ़ाकर गले में रत्नहार पहन लिया। नौ गुना स्वर्णालंकार पहनने के उपरान्त सुवर्ण-कवच भी पहन लिया। माथे पर तिलक की शोभा का क्या कहना है। आठों अंगों पर उसने सोने का दर्पण पहन लिया। ऐसा सुन्दर रूप त्रिभुवन में नहीं है। देव-वांछित आभरणों से सज्जित हो कुमार इन्द्रजीत रण के लिए तैयार हो गया। सारथी को बार-बार स्वयं बुला कर कहने लगा, तुरन्त रथसज्जा कर डालो। तब सारथी युद्ध के लिए मनोहर वेश में रथ को सुसज्जित कर आ पहुँचा। रथ पर कितने ही माणिक और मूंगे जड़े हुए थे। उस स्वर्ण-निर्मित रथ पर मोतियों की सजावट थी उसके चारों ओर फूल और फलों से सुशोभित स्वर्ण-वृक्ष थे। रथ में पार्वतीय घोड़ा जुता था जिसके गले में रत्न-निर्मित पदक लटक रहा था। युद्ध में तेईस अक्षौहिणी धनुषधारी सैनिक चले। उस सेना

कटकेर पदभरे काँपिछे मेदिनी ❋ इन्द्रजितेर निज-वाद्य तिन-अक्षौहिणी
काड़ा पड़ा ढाक ढोल तवोल टिकारा ❋ तूरी भेरी जगझम्प वीणा सप्तस्वरा
काँशी वाँशी राक्षसी-ढाकेर परिपाटी ❋ दामामा-दगड़े पड़े लक्ष-लक्ष काठि
ढेमचा खेमचा बाजे, बाजे करताल ❋ ठमक खमक तासा शुनिते रसाल
बाजे शिङ्गा डमरु तम्बूरा जयढाक ❋ झाँझरि मोचङ्ग बाजे, मधुर पिनाक
शंख बाजे, घण्टा बाजे, मन्दिरा मृदंग ❋ रणशिङ्गा खञ्जनी ओ गभीर भोरंग
कोटि-कोटि जयढाक घोर-रवे बाजे ❋ कोटि-कोटि जगझम्प महाशब्दे गाजे
बेहाला मन्दिरा आर वीणा-आदि कत ❋ कहिते ना पारा जाय, तार संख्या यत
असंख्य सेतार बाजे, कोटि-कोटि डम्फ ❋ वाद्यभाण्ड-घोर-शब्दे त्रिभुवन-कम्प
तिनकोटि राक्षसेते बाजाय मादल ❋ प्रलयेर काले येन उठिल बादल२००
कटक साजाये वीर जुझिवारे नड़े ❋ मन्दोदरी जननी तखन मने पड़े
माये ना कहिया यदि युद्धे यात्रा करि ❋ अन्नजल त्यजिबेन माता मन्दोदरी
भक्तिभरे जननीरे प्रणाम करिये ❋ तबे जाब रणस्थले मातृ-आज्ञा लये
एत भावि इन्द्रजित् सभक्ति-अन्तरे ❋ मातार निकटे वीर चलिल सत्वरे
सैन्य-सेनापति यत द्वारेते राखिया ❋ जननीर अन्तःपुरे प्रवेशिल गिया

के पदचाप से पृथ्वी थर्राने लगी। इन्द्रजीत का निजी वाद्य-संभार (वाजों-गाजों का समूह) तीन अक्षौहिणी था। ढाक, ढोल, तवला, चिकारा, तुरही, सींगी, जगझम्प, सप्तस्वरा वीणा, झाँझ, बाँसुरी और धौंसा इन सबके समाहार का क्या कहना। नगाड़ों और डंकों पर लाख-लाख संटियाँ पड़ने लगीं। करताल और मंजीरे वजने लगे। ताशा की आवाज भी बड़ी मधुर लगने लगी। सींगी, डम्बरू, तम्बूरा और जयढाक; झाँझ, झाँझरी और मधुर तूती वजने लगे। शंख, घंटा, मन्दिरा, मृदंग, रणसींगी, खंजड़ी और गंभीर-नाद वाला भोरंग वजने लगा। करोड़ों जय-डंके महानाद से वजने लगे और करोड़ों जगझम्प महाशब्द से गरजने लगे। बेला, मन्दिरा, और वीणाओं की संख्या गिनती से परे है। असंख्य सितार और कोटि-कोटि डफ भी वजने लगे। वाद्यों के घनघोर शब्द से तीनों लोक थरथराने लगे। तीन करोड़ राक्षस इस प्रकार मादल बजाने लगे मानों प्रलय के समय बादल घिर आए हों ॥ २०० ॥

जब कटक सुसज्जित कर वीर मेघनाद युद्ध करने के लिए चल पड़ा तो उसे जननी मन्दोदरी याद आ गयी। उसने सोचा यदि मैं माँ से बिना कहे युद्ध के लिए प्रयाण करूँगा तो माता मन्दोदरी अन्नजल त्याग देंगी। मैं जननी को भक्ति से प्रणाम कर उनकी आज्ञा लेने के उपरान्त रणभूमि में जाऊँगा। इस प्रकार सोच कर वीर इन्द्रजीत भक्तिपूर्ण हृदय से माता के निकट गया। समस्त सेना और सेनापतियों को द्वार पर छोड़ कर वह

सुवर्णेर खाट-पाट, स्वर्णमयी पुरी ※ से पुरीर तुल्य शोभा भुवने ना हेरि
दश-हाजार सतिनी-वेष्ठिता मन्दोदरी ※ ताहार सुखेर सीमा कहिते ना पारि
नारायण-तैले ज्वले तिनलक्ष बाति ※ मन्दोदरी पूजा करे महेश-पार्व्वती
झिउड़ी वहुड़ी आर कतशत नारी ※ दश-हाजार सतिनी-सहित मन्दोदरी
न-हाजार नारी मेघनादेर गृहिणी ※ दुइलक्ष आर यत पुत्रेर रमणी
आर यत रमणी लंकार एकत्तर ※ शिव-दुर्गा पूजि मागे रण-जयवर २०१
हेनकाले इन्द्रजित् हलो उपनीत ※ पूर्व्वाचल हैते येन आदित्य उदित
किरणे अरुण जेन, रूपे चन्द्रकला ※ ताहारे देखिते यत स्त्रीलोकेर मेला
प्रणमिल मेघनाद मायेर चरणे ※ मन्दोदरी पुलकित चाहि पुत्र पाने
आस्ते-व्यस्ते उठि राणी धरि दुइहाते ※ लक्ष-लक्ष चुम्ब दिल मेघनाद-माथे
मन्दोदरी वले आमि, पूजि गंगाधरे ※ सेइ पुण्यफले पुत्र, पेयेछि तोमारे
तोमा पुत्रे गर्भे धरि हइ पाटराणी ※ चेड़ी ह'ये खाटे दस-हाजार सतिनी
श्रीराम मनुष्य नहे, बुझि अभिप्राय ※ फिरे ना आइसे, रणे जेइ वीर जाय
परदार महापाप करे तोर बाप ※ सेइ अपराधे पाइ एत मनस्ताप

जननी के अन्त:पुर में गया। सुवर्ण का बना अन्त:पुर जिसकी शोभा की तुलना संसार में नहीं है। वहाँ के पलंग आदि सभी वस्तुएँ स्वर्ण की बनी हुई हैं। दस हजार सौतों से घिरी मन्दोदरी के सुख की कोई सीमा नहीं। वहाँ तीन लाख वत्तियों में नारायण-तैल जल रहा है और मन्दोदरी महेश-पार्वती की पूजा कर रही है। दस हजार सौतों के अतिरिक्त सैकड़ों बहू-बेटियाँ और अन्य नारियाँ भी हैं। नौ हजार नारियाँ तो मेघनाद की गृहिणियाँ हैं और बाकी दो लाख नारियाँ अन्यान्य पुत्रों की पत्नियाँ हैं। लंका की और सारी रमणियाँ एकत्र होकर शिव-दुर्गा की पूजा कर युद्ध-विजय का वरदान माँग रही हैं ॥ २०१ ॥

ऐसे ही समय इन्द्रजीत वहाँ आ उपस्थित हुआ मानों पूर्वाचल से आदित्य का उदय हुआ। उसकी शोभा अरुण-किरण जैसी है और उसका चन्द्रकला जैसा सौन्दर्य निरखने के लिए नारियों का मेला लग गया। मेघनाद ने माता के चरणों में प्रणाम किया। मन्दोदरी ने पुलकित नेत्रों से पुत्र की ओर देखा। अस्त-व्यस्त हो रानी ने उसे बाहों में भर लिया और मेघनाद के माथे पर लाख-लाख चुम्बन किया। मन्दोदरी ने कहा, हे पुत्र मैं गंगाधर शंकर की पूजा करती हूँ और उसी पुण्य के कारण मुझे तुम जैसा पुत्र प्राप्त हुआ है। तुमको गर्भ में धारण करते ही मैं पटरानी बनी और दस हजार सौतें मेरी दासी बनकर सेवा करने लगीं। मैं यह समझती हूँ कि श्रीराम कोई मनुष्य नहीं हैं—जो भी युद्ध में जाता है लौट कर नहीं आता। तेरे बाप ने पराई स्त्री को ग्रहण कर महापाप किया है और उसी अपराध के कारण उसे इतना मनोकष्ट

रामेर सीता रामे देह, करह पिरीति ✻ मजिल कनक-लंका नाहि अव्याहति
वानरे पोड़ाये लंका कैल छारखार ✻ श्रीराम मनुष्य नहे, विष्णु-अवतार
विभीषण खुड़ा तव गुणेर सागर ✻ तारे लाथि मारे राजा सभार भितर
आनिला रामेर सीता करिया हरण ✻ अन्यके रणेते केन पाठाय एखन
तोमारे कपाट दिया राखिव गृहेते ✻ नर-वानरेर युद्धे ना दिव जाइते
सीता फिरे दिन राजा, शुनून मन्त्रणा ✻ आजि हैते युद्ध नाइ, करह घोषणा२
मन्दोदरी-कथा शुनि मेघनाद हासे ✻ मायेरे प्रबोध देय अशेष-विशेषे
जगतेर कर्ता माता, हय मोर वाप ✻ अष्टलोकपाले जिनि दुर्ज्जय-प्रताप
एतेक वैभव भोग कर कार तेजे ✻ हेनजने निन्दा कर स्त्रीगण-समाजे
वामाजाति हओ तुमि, तेमति वचन ✻ स्वामिनिन्दा महापाप कर कि कारण
अतुल ऐश्वर्य भोग करेन इन्द्राणी ✻ शची जिने शत गुणे तुमि ठाकुराणी
स्वर्ग-मर्त्य-पातालेते यत देवगण ✻ परदार नाहि करे कोन महाजन
सुरपति इन्द्र देख देवतार सार ✻ गुरुपत्नी-हरणे कि हैल देख तार
गौतमेर शिष्य ह'ये इन्द्र देवराज ✻ करिल कुत्सित कर्म, ना भाविल लाज

मिल रहा है। तुम राम की सीता को दे दो और उनसे मित्रता कर लो। कनक-लंका नष्ट-भ्रष्ट हो रही है, इसे बचाने का कोई उपाय नहीं। बन्दरों ने सोने की लंका को जलाकर नष्ट-भ्रष्ट कर दिया है। श्रीराम कोई मनुष्य नहीं है, वह विष्णु का अवतार हैं। तुम्हारे चाचा विभीषण गुणों की निधि हैं, उनको राजा ने भरी-सभा में पदाघात किया। स्वयं तो राम की सीता को हर लाया, अब दूसरों को क्यों रण में भेजने लगा। तुमको किवाड़ बन्द कर घर में रखूँगी—नर-वानर के युद्ध में नहीं जाने दूँगी। राजा सीता को लौटा दें—यह परामर्श सुनें। यह घोषणा कर दो कि आज से कोई युद्ध नहीं रहा ॥ २०२ ॥

मन्दोदरी के ये वचन सुनकर मेघनाद हँसने लगा और माता को विभिन्न प्रकार से समझाने-बुझाने लगा। हे मा, मेरे पिता संसार के प्रभु हैं, वे अष्ट-लोकपालों को हरा कर दुर्जय-प्रतापी बन गये हैं। किसके रोब-दाब के कारण तुम इतने वैभव को भोग रही हो। ऐसे व्यक्ति की निन्दा तुम नारियों के समाज में कर रही हो। तुम नारी जाति की हो इस कारण तुम्हारे वाक्य भी वैसे ही हैं। पतिनिन्दा महापाप है—क्यों ऐसा कर रही हो? इन्द्राणी अतुल ऐश्वर्य का भोग करती है। तुम उस शचीदेवी (इन्द्राणी) से सौ गुना अधिक अधिकार-सम्पन्न हो। स्वर्ग-मर्त्य-पाताल में जितने देवता हैं उनमें कौन ऐसा है जिसने पराई स्त्री को न रखा हो। देवताओं में श्रेष्ठ सुरपति इन्द्र को ही देख लो न—उसने गुरुपत्नी का हरण क्यों कर किया? गौतम का शिष्य होकर भी देवराज इन्द्र को ऐसा कुत्सित कार्य करते लाज न आई।

सबे वले, देवराज देवेर उत्तम ※ जाहार कारणे नारी त्यजिला गौतम
ब्राह्मणेर राजा चन्द्र जगते बाखानि ※ चन्द्र केन हरिलेन गुरुर गृहिणी
पड़िवारे गेल बृहस्पतिर आलय ※ तथा हरे गुरुपत्नी, मिथ्या ताहा नय
तबु चन्द्र-रूपेते जगत् आलो करे ※ पुरुषे एमन पाप केवा नाहि करे
जगतेर श्रेष्ठ एक देवता पवन ※ सेओ करेछिल देख वानरी गमन
कोन जन नाहि करे हेन कदाचार ※ मिछे केन देह दोष पिताके आमार
राम से मनुष्यजाति, नहे त गर्व्वित ※ आनिल ताहार नारी, किवा अनुचित
खर-दूषण मारि राम हइयाछे बैरी ※ भाल करिलेन पिता आनि तार नारी ३
एत कथा माये यदि दिल पातियान ※ दुइलक्ष राण्डी तबे दिलेक योगानि
कहिछे सकल राण्डी करि जोड़हात ※ निवेदन करि, शुन राक्षसेर नाथ
युद्ध करि मरिल मोदेर स्वामिगण ※ शोकेते आकुल मोरा तादेर कारण
गगने जखन हय द्विप्रहर बेला ※ पड़े जाय राण्डीदेर हविष्येर मेला
लंकापुरे घरे-घरे ज्वलये तियड़ि ※ कहिते विदरे बुक, नित्य फेलि हाँड़ि
न-हाजार नारी तव परम सुन्दरी ※ करुक तोमार सेवा यत बहुयारी
सकलेरे तुष्ट राखि जाह रणस्थले ※ नर ओ वानर जिनि आइस कुशले

सब लोग कहते हैं कि देवताओं में सर्वोत्तम देवराज इन्द्र हैं जिनके कारण गौतम को अपनी नारी को त्यागना पड़ा। संसार में प्रसिद्ध है कि चन्द्र ब्राह्मणों का राजा है—उसने क्यों अपने गुरु की पत्नी का हरण किया। बृहस्पति के घर वह पाठाभ्यास के निमित्त गया और अपनी गुरुपत्नी का हरण कर लाया—यह कोई झूठी बात नहीं। फिर भी वह चन्द्र के रूप में संसार भर को प्रकाश देता है। पुरुषों में कौन है जो ऐसा पाप नहीं करता। संसार में श्रेष्ठ माना जाने वाला पवन भी वानरी-गमन कर चुका है। कौन ऐसा है जो इस प्रकार का दुराचार नहीं करता ? फिर नाहक क्यों मेरे पिता को दोषी बनाती हो। राम तो मनुष्य जाति का है कोई पूज्य भी नहीं, तो उसकी नारी लाकर पिता ने कौन सा अनुचित कार्य किया। खर-दूषण का वध कर राम हमारा वैरी बन गया। उनकी नारी लाकर पिता ने अच्छा ही काम किया है ॥ २०३ ॥

इतनी बातों से जब उसने माँ के मन को समझाया तो दो लाख विधवाओं ने कहना शुरु कर दिया। सभी विधवाओं ने हाथ जोड़ कर कहा, हे राक्षसों के नाथ, हम लोगों का निवेदन सुनो, हमारे पतियों ने युद्ध कर प्राण दिये, उनके कारण हम शोकाकुल हैं। जब दिन में दोपहर हो जाता है तो सारी विधवाएँ हविष्य-अन्न पकाने बैठ जाती हैं। लंकानगरी के घर-घर में चूल्हा जलने लगता है—कहने में दिल फटा जाता है कि हम लोग नित-प्रतिदिन अपनी हाँड़ी फेंक देती हैं। तुम्हारी नौ हजार सुन्दरी नारियाँ हैं वे तुम्हारी जी भर कर सेवा करें। सभी को सन्तुष्ट कर तुम रणभूमि में जाओ और

शुभयोगे यात्रा कैले नाहि पराजय ※ संसारेते केह येन राण्डी नाहि हय
राण्डीर असाध्य कर्म्म नाहि त्रिभुवने ※ आकाशे पातये फाँद स्वभावेर गुणे
वुझिया देखह मने राक्षसेर पति ※ एक राँड़े मजाइल लंकार बसति
शूर्पणखा राण्डी देख हय तव पिसी ※ राक्षसी हइया से मानुषे अभिलाषी
वयसेर संख्या नाहि, पाकाइल केश ※ रामेरे भुलाते धरे मनोहर वेश
राण्डीर असाध्य कर्म्म नाहिक संसारे ※ सग्रामेते जाह बाछा, शुभयात्रा क'रे
पड़िल रामेर युद्धे वड़-बड़ वीर ※ बन्धु-वान्धवेर शोके दहिछे शरीर
हर-पार्व्वतीर प्रियभक्त दशानन ※ केन आसि रक्षा नाहि करे दुइजन
उपकार कि करिल शंकर-पार्व्वती ※ शूर्पणखा मजाइल लंकार वसति
विलाप करिया कान्दे लक्ष-लक्ष नारी ※ श्रावणेर धारा-सम चक्षे वहे वारि४
राण्डीर रोदने इन्द्रजितेर विषाद ※ सवारे प्रबोध-वाक्ये कहे मेघनाद
ना कान्द ना कान्द सबे, परिहर शोक ※ तोमादेर पति सब गेछे स्वर्गलोक
श्रीराम-लक्ष्मणे रणे मारिया एखनि ※ निवाइब सकलेर मनेर आगुनि
एत वलि सकलेरे दिल पातियान ※ मन्दोदरी कहे तबे पुत्र-विद्यमान

नर-वानर पर विजय प्राप्त कर सकुशल लौट आओ। शुभ घड़ी में यात्रा करने पर पराजय नहीं होती। संसार में कोई कभी विधवा न हो। त्रिभुवन में विधवाओं द्वारा असाध्य कार्य कोई भी नहीं है, अपने स्वभाव के कारण वे आकाश में भी जाल विछा देती हैं। हे राक्षसों के पति, तनिक मन में विचार कर देखो, एक विधवा ने ही लंका की सारी वस्ती को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। तुम्हारी बुआ शूर्पणखा विधवा थी—राक्षसी होकर भी उसने मनुष्य की कामना की। उसकी आयु का कोई ओर-छोर नहीं, केश पक चुके हैं फिर भी मनोहर वेश लेकर वह राम को फुसलाने गई थी। विधवाओं के लिए संसार में कोई भी कार्य असाध्य नहीं। जाओ बेटा, शुभयात्रा कर संग्राम में जाओ। राम के युद्ध में बड़े-बड़े वीर काम आ गये, उन इष्ट-मित्रों के शोक से सारा शरीर तप रहा है। दशानन शंकर-पार्वती का प्रिय भक्त है। वे दोनों आकर रक्षा क्यों नहीं करते? शंकर-पार्वती ने क्या भला किया? सूर्पणखा ने लंका की सारी आवादी को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। इस प्रकार लाख-लाख नारियाँ विलाप करती हुई रोने लगीं। उनकी आँखों से सावन की वर्षा के समान आँसू झरने लगे ॥ २०४ ॥

उन विधवाओं के रोने से इन्द्रजीत बड़ा विषादमग्न हो गया और सभी को प्रवोध-वाक्य से समझाने लगा। वह कहने लगा तुम लोग मत रोओ, मत रोओ, शोक मत करो, तुम लोगों के पति स्वर्गलोक गये हैं। श्रीराम-लक्ष्मण को मारकर अभी सभी लोगों के मन की आग शान्त करूँगा। इतना कहकर उसने सबके मन को ढाँढ़स बँधाया। तब मन्दोदरी ने पुत्र से कहा,

रूपे-गुणे वीर तुमि परम-सुन्दर ※ देव-दानवेर कन्या विवाह विस्तर
न-हाजार नारी तव परम-सुन्दरी ※ आजि सेवा करुक यतेक बहुयारी
राखह मायेर वाक्य हइया सुमति ※ अन्तःपुरे थाक बाछा, आजिकार राति
मन्दोदरी कथा कहे सकरुण-भाषे ※ वदन झाँपिया वस्त्रे इन्द्रजित् हासे
जुझिवारे पिता मोरे दिलेन आरति ※ केमने थाकिब गृहे, ना हय युकति
ससैन्येते आसियाछि जुझिवार मने ※ कोन लाजे गृहमाझे थाकिब एक्षणे
करिब कठिन यज्ञ नामे निकुम्भिला ※ इष्टदेव-अर्च्चने हइल एत बेला
यज्ञेते आहुति दिब गिया ये एखनि ※ छोँबार थाकुक काज, ना हेरि रमणी
यात्राकाले छुँले नारी पड़िबे प्रमाद ※ एत बलि बिदाय हइल मेघनाथ
भक्तिभरे जननीर चरण वन्दिया ※ यज्ञतरे इन्द्रजित् चलिल साजिया
कृत्तिवास-पण्डितेर मधुर वचन ※ लंकाकाण्डे गाहिलेन गीत रामायण५

इन्द्रजितेर निकुम्भिला-यज्ञानुष्ठान

वैसे गिया इन्द्रजित् यज्ञ करिवारे ※ योगाय यज्ञेर द्रव्य लक्ष-निशाचरे
रक्तवस्त्र भारे-भारे आनिछे तखन ※ रक्तवर्ण पुष्पमाल्य, सुरक्त-चन्दन
शरपत्र बोझा-बोझा, घृतेर कलस ※ कालोछाग पाले-पाले बहिछे राक्षस

तुम रूप-गुण में परम-सुन्दर और वीर हो, तुमने देव-दानवों की असंख्य कन्याओं से विवाह किया है। तुम्हारी नौ हजार परम सुन्दरी नारियाँ हैं—वे सब वहुएँ आज तुम्हारी सेवा करें, आज की रात तुम अन्तःपुर में रह जाओ। मन्दोदरी करुण भाषा में कहती रही और कपड़े से मुँह ढाँप कर इन्द्रजीत हँसता रहा। युद्ध करने के लिये पिता ने मेरी आरती उतारी है अब मैं किस युक्ति पर घर में रह सकता हूँ। अपनी सेना सहित युद्ध करने को निश्चय कर आया हूँ अब किस मुँह से गृह में रह सकता हूँ। अब मैं निकुम्भिला नामक कठिन यज्ञ करूँगा—इष्टदेव की अर्चना में इतना विलम्ब हो गया। अभी जाकर मैं यज्ञ में आहुति चढ़ाऊँगा, रमणी को छूना तो दरकिनार, दर्शन तक नहीं करूँगा। यात्रा के समय नारी को छूने से विपत्ति आ जायगी। इतना कहकर मेघनाद ने विदा ली। भक्ति से जननी के चरणों की वन्दना कर इन्द्रजीत सुसज्जित हो यज्ञ के लिए चल पड़ा। पंडित कृत्तिवास के वचन बड़े मधुर हैं उन्होंने युद्धकांड में रामायण का गीत गाया ॥ ५ ॥

इन्द्रजीत का निकुम्भिला यज्ञानुष्ठान

इन्द्रजीत जाकर यज्ञ करने बैठा। एक लाख निशाचर यज्ञ के उपकरण जुटाने लग गये। उस समय तरह-तरह के रक्तवस्त्र, लाल पुष्पों की मालाएँ और रक्त चन्दन लाये जाने लगे। ढेर से सरकंडे के पत्ते और घी के घड़े

यज्ञशाले शरपत्र बिछाय सकल ※ मन्त्र पड़ि यज्ञकुण्डे ज्वलिल अनल
तीक्ष्ण-अस्त्रे छागल छेदिल कोटि-कोटि ※ यज्ञेते आहुति देय अति परिपाटी
आतप-तण्डुल जब पाटि-पाटि आने ※ हविते मिलित करि दितेछे आगुने
रक्तवस्त्र-माल्य देय जोबड़ाये घृते ※ दश-हाजार ब्राह्मण बसेछे चारिभिते
अग्निर दुर्जय शब्द मेघेर गर्ज्जन ※ विंशति-योजन शिखा उठिल गगन
तप्त-काञ्चनेर मत विपरीत शिखा ※ मूर्त्तिमान हये अग्नि आसि दिल देखा
साक्षाते आसिया अग्नि हैल अधिष्ठान ※ यवधान्य दुग्ध दधि मधु कैल पान
जे वर चाहिल इन्द्रजित्, पाइल सुखे ※ मनेर आनन्दे कहे सैन्यगणे डेके २०६

इन्द्रजितेर द्वितीय बार युद्धे गमन

रथेर साजन वीर कैल दुइ-हाते ※ लाफ दिया उठे गिया संग्रामेर रथे
चण्ड-मुण्ड छत्रदण्ड धरियाछे शिरे ※ पूर्व्वद्वारे उपनीत मार-मार करे
पूर्व्वद्वार आगुलिया छिल नील-सेना ※ भंग दिया पलाय वानर अगणना
उठे पड़े पलाय पाइया सबे डर ※ मेघनाद हासे बसि रथेर उपर
वानरेर भंग देखि नीलवीर रोखे ※ लाफ दिया गेल मेघनादेर सम्मुखे

लाये जाने लगे। राक्षस काले रंग के बकरे भी ढो ढो कर लाने लगे। यज्ञशाला में तृण के पत्ते बिछा दिये गये और मंत्र पढ़ कर यज्ञकुंड में आग जलाई गई। पैने अस्त्रों से करोड़ों बकरे काटे गये और यज्ञ में होम किये गये। पर्याप्त मात्रा में आतप-तंडुल लाकर घृत से मिश्रित कर आग में डाला जाने लगा। रक्तवस्त्र और माला घी में चुपड़ कर डाला जाने लगा। चारों ओर दश हजार ब्राह्मण बैठे। अग्नि का शब्द मेघ-गर्जन सा सुन पड़ने लगा और उसकी शिखा गगन में बीस योजन तक उठने लगी। तप्त-काँचन जैसी विपरीत शिखा दिखाई पड़ी और अग्नि ने साकार रूप धर कर दर्शन किया। अग्नि साक्षात् उपस्थित होकर अधिष्ठित हुए और जौ, धान, दूध, दही और मधु का पान करने लगे। इन्द्रजीत ने जो वर माँगा वह अनायास मिला। उसने यह समाचार सारी सेना को बुलाकर आनन्द से सुनाया॥ २०६॥

इन्द्रजीत का द्वितीय बार युद्ध-गमन

वीर मेघनाद ने दोनों हाथों से रथ को सुसज्जित किया और छलाँग मार कर युद्ध-रथ पर बैठ गया। सिर पर चंड-मुंड छत्र थामे हुए थे। मार-मार शब्द करते हुए वह पूर्वी द्वार पर जा धमका। नील की सेना पूर्वी द्वार को संभाले हुए थी। वहाँ से अनगिनत वानर डर के मारे भागने लग गये। यह देखकर मेघनाद रथ पर बैठा हँसने लगा। वानरों की भगदड़ देखकर नीलवीर क्रोधित हुआ और कूदकर मेघनाद के सम्मुख जाकर खड़ा हो गया। नीलवीर ने कहा, अरे मेघनाद, अब तू जीवित लौट जाने की अभिलाषा त्याग दे।

नीलवीर बले, ओरे बेटा मेघनाद ※ जीयन्ते फिरिया जाबे, ना करह साध
सुग्रीव पाइल राज्य श्रीरामेर गुणे ※ रावणे वधिया राज्य दिब विभीषणे
अजेय सुग्रीव-राजा अतुलन-बल ※ गाछ-पाथरेते बान्धे सागरेर जल
दुकूल समुद्र बाँधि कैल एक कूल ※ राक्षस-कटक मारि करिल निर्म्मूल
जीवनेर बांछा यदि करिस् इन्द्रजित् ※ सबान्धवे लंका छाड़ि पला रे त्वरित
ये बेटा थाकिबे एइ लंकार भितर ※ पाठाइबे यमालये सुग्रीव-वानर२०७
इन्द्रजित् बले, बेटा, भ्रमितिस् वने ※ केन प्राण दिते एलि राक्षसेर बाणे
ना जान धरिते अस्त्र, कथार आँटुनि ※ एकबाणे यमालये पाठाब एखनि
सुग्रीव वानरा, तार किसेर बाखान ※ मानुष लक्ष्मण बेटा, जाने कत बाण
गोटा-कत राक्षस मारिया तोर राम ※ मनेते क'रेछे बुझि, जिनेछि संग्राम
सेइ दिन म'रे बेटा जेतो नागपाशे ※ भाग्यबले बेचे गेल गरुड़-नि:श्वासे
पक्षी बेटा आसिया दिलेक प्राणदान ※धिक् रे वानरा,तार करिस् बाखान२०८
एत यदि कहिलेक रावणेर बेटा ※ नील-वानरेर बुके लागे येन जाठा
कहितेछे नीलवीर कोपेते विवर्ण ※ तुइ ना म'रे मरे तोर खुड़ा कुम्भकर्ण

श्रीराम के गुणों के कारण सुग्रीव को राज्य मिला। रावण का वध कर अब विभीषण को राज्य दूँगा। सुग्रीव राजा अजेय और अतुल बलशाली है, उसने वृक्ष और पत्थरों से समुद्र के दोनों तटों को बाँधकर एक कर दिया है—राक्षस-कटक का संहार कर उसको समूल समाप्त कर दिया है। अरे इन्द्रजीत, यदि तुझे जीवन की अभिलाषा है तो तू अपने इष्ट-मित्रों सहित झटपट लंका छोड़ कर भाग जा। इस लंका में जो कोई भी रह जायगा उसको वानर-राज सुग्रीव यमालय भिजवा देगा ॥ २०७ ॥

इन्द्रजीत ने कहा, अरे अभागे, तू वन-वन में विचरा करता था, नाहक राक्षस के बाण से प्राण देने क्यों चला आया। हथियार पकड़ना तो आता नहीं बस बड़े बोल में कुशल है, मैं एक ही बाण से अभी तुझे यमालय भिजवा दूँगा। वानर सुग्रीव के गुणों को तू क्या बखान कर रहा है। भला उस मानव लक्ष्मण को भी कितने बाणों का पता है। चन्द राक्षसों को मार कर तेरे राम ने क्या समझ लिया है कि वह युद्ध जीत गया है। उस दिन वह तुच्छ राम नाग-पाश से अवश्य मर गया होता—भाग्य से गरुड के निश्वास के कारण जी गया। पक्षी ने आकर उसे प्राणदान दिया। अरे वानरा, तुझे धिक्कार है जो तू उसकी प्रशंसा कर रहा है ॥ २०८ ॥

जब रावण के बेटे ने यह कहा तो नील-वानर के हृदय पर मानों शेल का आघात पहुँचा। क्रोध से विवर्ण होकर नीलवीर ने कहा, तू तो नहीं मरा लेकिन तेरा चाचा कुम्भकर्ण मर गया। जाति से तू निशाचर है अत: आगा-पीछा का तुझे कोई ज्ञान नहीं, तेरे रहते हुए तेरे सहोदर क्यों मर गये। जितने

आगु-पाछु ना जानिस, जाति निशाचर ❋ तुइ थाकिते मरे केन तोर सहोदर
यतेक राक्षसगण आइल निकटे ❋ ना जानि धरिते अस्त्र, हाते नाहि आँटे
नाहिक आहार-निद्रा, जागि साराराति ❋ यावत् ना मारिब लंकार अधिपति
आजि तोरे मारिया मारिब तोर पिता ❋ विभीषण-उपरे धराव दण्ड-छाता२०९

इन्द्रजितेरे युद्धे विभीषण ओ हनुमान व्यतीत सैन्यसह श्रीराम ओ लक्ष्मणेर मूर्च्छा

कुपिल से इन्द्रजित् नीलेर वचने ❋ कोपे गालि पाड़े वीर, यत आसे मने
आजि यदि रहे बेटा, तोमार जीवन ❋ तबे राजा करिस् राक्षस विभीषण
एत बलि मेघनाद मेघे हय लुकि ❋ मेघ-आड़े थाकि युद्धे रावणि धानुकी
आकाशे थाकिया करे बाण-वरिषण ❋ जर्ज्जर करिया विन्धे यत कपिगण
खाण्डा ओ डांगस टाँगी छुरी एकधारा❋ चारिभिते पड़े, येन आकाशेर तारा
नाना-अस्त्र कपिगणे करये प्रहार ❋ सर्व्वांग वहिया पड़े रुधिरेर धार
हस्त-पद काटे, कपि पड़े कोटि-कोटि ❋ गड़ागड़ि जाय भूमे कामड़ाय माटि
पलाइया जाय केह मने भावि अन्त ❋ छुता करि पड़े केह सिट किया दन्त
केह पड़े सेतुवन्धे गाये माखि वालि ❋ दूरे गिया केह वा राजारे पाड़े गालि
भाल छिल वालिराज गुणेर सागर ❋ आपनार पुत्र-सम पालिल वानर

राक्षस निकट आए, अस्त्र न पकड़ते हुए भी हाथों से उनका विनाश किया। जब तक हमलोग लंका के अधिपति को मार नहीं गिरायेंगे तब तक के लिए हमलोगों ने आहार निद्रा छोड़ रखा है। आज तुझको मार कर फिर तेरे पिता को मारूँगा और विभीषण पर राजछत्र सुशोभित करूँगा ॥ २०६ ॥

इन्द्रजीत के युद्ध में विभीषण और हनुमान के सिवा सारी सेना-सहित श्रीराम और लक्ष्मण की मूर्च्छा

नील के वचन से इन्द्रजीत क्रुद्ध हुआ और उसके मन में जो अपशब्द आये सुनाने लगा। आज अगर तेरी जान बच जाये तो राक्षस विभीषण को राजा बनाना। इतना कहकर मेघनाद मेघ में छिप गया और बादलों की आड़ में रहकर रावण-पुत्र धनुर्धारी-युद्ध करने लगा। आकाश में रहकर वह बाण बरसाने लगा और सारे कपियों के शरीर को छलनी बनाने लगा। चारों ओर खाँड़ा, फरसा, छुरा यों गिरने लगे मानों आकाश से तारे टूट रहे हों। विभिन्न अस्त्रों से कपि आहत होने लगे और उनके सारे अंगों से रक्त की धारा बहने लगी। हाथ-पैर कट कर कोटि-कोटि कपि गिरे और भूमि पर लुढ़क कर वे धरती चूमने लगे। कोई तो अन्त समय आया समझकर भाग खड़ा हुआ तो कोई आ कर दाँत निपोर कर भूमि पर पड़ गया। कोई सेतुबन्ध पर जाकर बदन पर बालू मलने लगा तो कोई राजा (सुग्रीव) को गाली देने लगा। (वे कहने लगे—) बाली राजा बहुत नेक थे; वे अपने पुत्र के समान

बालि-राजेर खाइया परिया गेल काल ※ एतदिन नाहि छिल एमन जञ्जाल
आड़ाइ दिनेर मध्ये पेये छत्र-दण्ड ※ लङ्काते वानर आनि कैल लण्ड-भण्ड
राम-सुग्रीवेर आर केन उपरोध ※ इन्द्रजित्-संगे नाहि करिव विरोध
कपिर क्रन्दन शुनि इन्द्रजित् हासे ※ प्रहारे असंख्य वाण थाकिया आकाशे
वरिषे असंख्य वाण आगुनेर कणा ※ पड़िल ये नीलवीर सह-निज सेना
रक्ते नदी वहिछे, देखिते भय करे ※ वानर सहस्र-कोटि पड़े पूर्व्वद्वारे १०
पूर्व्वद्वार जिनिया कुमार मेघनाद ※ दक्षिण-द्वारेते गिया करे सिंहनाद
दक्षिण-दुयारे कोन कपि-वीर जागे ※ परिचय दाओ, युद्ध देह मोर आगे
महेन्द्र देवेन्द्र जागे अंगद प्रभृति ※ मरिते आइलि वेटा निशाभाग-राति
नाहिक आहार-निद्रा, नाहि सुख-आश ※ यावत् रावण-वंश ना हय विनाश
आजि तोरे मारिया मारिब तोर पिता ※ विभीषण-उपरे धराव दण्ड-छाता
छारखार करिव लुठिया लङ्कपुरी ※ विभीषण-कोले दिब राणी मन्दोदरी ११
कोपे इन्द्रजित् शरभेर वाक्य शुने ※ गालि पाड़े मेघनाद, यत आसे मने
आजिकार युद्धे यदि रहे त जीवन ※ तबे राजा करिस् राक्षस विभीषण

वानरों का पालन करते थे। वाली राजा का खा-पीकर इतने दिन बीत गये—कभी ऐसा बवाल नहीं आ पड़ा। ढाई दिन में राजदंड और छत्र पाकर सारे वानरों को लंका में लाकर ऐसी धमाचौकड़ी मचा दी। अब राम-सुग्रीव का कहना क्यों मानें—इन्द्रजीत के साथ अब कोई विरोध नहीं करेंगे। कपियों का क्रन्दन सुनकर इन्द्रजीत हँसने लगा और आकाश में रहकर ही असंख्य वाणों से प्रहार करने लगा। जब आग के समान असंख्य वाण बरसने लगे तो नीलवीर अपनी सेना सहित गिर पड़ा। खून की नदी बहने लगी जिसे देखते हुए भी डर लगता था। पूर्वीद्वार पर सहस्र-कोटि वानर धराशायी हुए॥ १०॥

पूर्वीद्वार पर विजय पाकर कुमार मेघनाद दक्षिणद्वार पर जाकर सिंहनाद करने लगा। (मेघनाद बोला—) दक्षिण-द्वार पर कौन सा कपि-वीर जागता है—अपने-अपने परिचय दो और मेरे साथ युद्ध करो। महेन्द्र, देवेन्द्र, अंगद आदि जाग रहे थे। (वे कहने लगे—) रात को विचरने वाले अभागे तू यहाँ मरने आ गया! न भोजन है और न निद्रा और न सुख की आशा है, जब तक कि रावण के वंश का विनाश नहीं होता। आज तुझको मारकर तेरे पिता को मारूँगा और विभीषण के सर पर छत्र धराऊँगा। सारी लंकापुरी को लूट कर नष्ट-भ्रष्ट कर दूँगा और विभीषण की गोद में रानी मन्दोदरी को ला बिठाऊँगा॥ ११॥

शरभ के ये वाक्य सुनकर इन्द्रजीत कुपित हुआ और मन में जो बुरा-भला आया वही बकने लगा। आज के युद्ध में यदि तुम लोगों के प्राण बच गये

एत बलि मेघनाद मेघेते लुकाये ※ वरिषे असंख्य वाण विक्रम करिये
आकाशे थाकिया करे वाण-वरिषण ※ जर्ज्जर करिया विन्धे यत कपिगण
ब्रह्म-अस्त्र प्रहारे ब्रह्मार पेये वर ※ वाण फुटि मूर्च्छागत असंख्य वानर
बड़-बड़ वानर हइल अचेतन ※ महेन्द्र देवेन्द्र पड़े बालिर नन्दन
आशीकोटि कपि पड़े दक्षिण-द्वारेते ※ वानरेर रक्ते नदी बहे खरस्रोते १२
जिनिया दक्षिण द्वार चले मेघनाद ※ उत्तर-द्वारेते गिया करे सिंहनाद
उत्तर-द्वारेते कोन कोन बेटा जागे ※ परिचय देह त दारुण निशाभागे
धूम्राक्ष वानर छिल रात्रि-जागरणे ※ डाकिया उत्तर करे मेघनाद-सने
असंख्य वानर आछे तोर पथ चेये ※ आपनि सुग्रीव-राजा र'येछे जागिये
अन्नजल नाखाइ, नाजाइ निद्रा रेते ※ यावत् राक्षस-वंश ना पारि मारिते
आजि तोरे मारिया मारिब तोर पिता ※ विभीषण-उपरे धराब दण्ड-छाता
कोपे ज्वले इन्द्रजित् वानर-वचने ※ गालि पाड़े मेघनाद, यत आसे मने
आजिकार युद्धे आगे बाँचुक् जीवन ※ तबे राजा करिस् राक्षस विभीषण
एत वलि मेघनाद मेघेते लुकाये ※ वानर-कटक बिन्धे सन्धान पूरिये
आकाशे थाकिया करे वाण-वरिषण ※ जर्ज्जर करिया विन्धे यत कपिगण

तो विभीषण को राजा बनाना। इतना कहकर मेघनाद मेघ में छिप गया और असंख्य वाण बरसाने लगा। आकाश में रहकर वह वाण बरसाने लगा और कपियों को जर्जरित करने लगा। ब्रह्मा का वर मिलने के कारण वह ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करने लगा। उसके वाणों से बिंध कर असंख्य वानर मूर्च्छित हो गये। बड़े-बड़े वानर अचेतन हो गये। बाली-नन्दन अंगद, महेन्द्र और देवेन्द्र वानर भी गिरे। दक्षिण-द्वार पर अस्सी करोड़ कपि गिरे। वानरों के रक्त से तेज बहाव वाली नदी बहने लगी ।। १२ ।।

दक्षिणद्वार पर विजय प्राप्त कर मेघनाद उत्तरद्वार पर गया और वहाँ सिंहनाद करने लगा। (वह बोला—) उत्तरद्वार पर कौन जाग रहा है। इस रात्रि के समय अपना परिचय दो। रात्रि-जागरण पर धूम्राक्ष वानर नियुक्त था; उसने मेघनाद को ललकार कर जवाब दिया। तेरा पथ जोहते हुए असंख्य वानर जाग रहे हैं—स्वयं राजा सुग्रीव भी जाग रहे हैं। हम न अन्नजल ग्रहण करते हैं और न रात को सोते हैं जब तक राक्षस-वंश सम्पूर्ण रूप से मर न जाय। आज तुझको मार कर फिर तेरे बाप को मारूँगा और विभीषण के सर पर राजछत्र धराऊँगा। वानर के इन वाक्यों से मेघनाद क्रोधित हुआ और उसके मन में जो कुवाक्य आये वह बकने लगा। वह बोला आज के युद्ध में अपने प्राण बचा ले, फिर राक्षस विभीषण को राजा बनाना। इतना कहकर मेघनाद मेघ में छिप गया और निशाना साध-साध कर वानर-कटक पर बाण चलाने लगा। आकाश से रह-रहकर वाण बरसाने लगा

मारे काटे इन्द्रजित् केह नाहि देखे ※ उत्तर-द्वारेते कपि पड़े लाखे-लाखे
वानर-कटक पड़े, वीर-चूड़ामणि ※ आछुक अन्येर काज सुग्रीव आपनि
रक्ते नदी बहे, ठाट पड़िल विस्तर ※ असंख्य-वानरे पड़े सुग्रीव-वानर १३
मेघेर आड़ेते चले वीर मेघनाद ※ पश्चिम-दूयारे गिया करे सिंहनाद
पश्चिम-दूयारे कोन-कोन वीर जागे ※ त्वरिते आसिया युद्ध देह निशाभागे
हनुमान वीर छिल रात्रि-जागरणे ※ डाकिया उत्तर करे मेघनाद-सने
सेनापतिगण जागे, नाहि परिमाण ※ वड़-वड़ वीर जागे पर्व्वत-प्रमाण
जागिछे सुषेण-वेज राजार श्वशुर ※ जागितेछे कोटि-कोटि वानर प्रचुर
श्रीराम-लक्ष्मण जागे संसार-पूजित् ※ आमि हनुमान जागि, शुन इन्द्रजित्
नाहिक आहार-निद्रा, जागि दिवानिसि ※ यावत् ना मारिब लंकार अधीस
तोरे बध करिया बधिब तोर पिता ※ विभीषण-उपरे धराब दण्ड-छाता
विभीषणे समर्पित स्वर्ण-लंकपुरी ※ केलि करिवारे दिव राणी मन्दोदरी १४
एत शुनि मेघनाद महाकोप मने ※ हनूमाने गालि पाड़े, यत आसे मने
श्रीरामेरे डाक दिया, बले मेघनाद ※ देशेते जीयन्ते जाबे, ना करिह साध

और कपियों को बाँधता रहा। इन्द्रजीत मारकाट मचाये हुए है लेकिन कोई भी उसको आँखों से नहीं देख पा रहा है और उत्तरद्वार पर लाख-लाख कपि गिर रहे हैं। वानर कटक नष्ट-भ्रष्ट हो गया; दूसरों की क्या कहें, स्वयं वीर-चूड़ामणि सुग्रीव भी गिरे। खून की नदियाँ वह निकलीं और वहुत सारी सेना भी सुग्रीव के साथ घायल हो भूमि पर गिर पड़ी॥ १३॥

बादलों की आड़ में रहकर मेघनाद चला और पश्चिमद्वार पर आकर उसने सिंहनाद किया। (वह बोला,) पश्चिमद्वार पर कौन-कौन वीर जाग रहा है—रात्रि के समय आकर तुरन्त मेरे साथ युद्ध करो। उस समय रात्रि-जागरण पर वीर हनुमान था। उसने डपट कर मेघनाद को जवाब दिया। सारे सेनापति जाग रहे हैं जो संख्या में अगणित हैं। पर्वत-प्रमाण वड़े-बड़े वीर जाग रहे हैं। राजा के श्वसुर सुषेण वैद्य जाग रहे हैं—और कोटि-कोटि वानर भी जाग रहे हैं। संसार के पूज्य श्रीराम और लक्ष्मण भी जाग रहे हैं। सुनो इन्द्रजीत, मैं हनुमान जाग रहा हूँ। जब तक लंका के अधिपति की मृत्यु नहीं होती तब तक खाना-पीना-सोना वर्जित है—मैं रातोंदिन जागता रहता हूँ। तेरा वध करूँगा और विभीषण के हाथों में राजदंड देकर उसके ऊपर राजछत्र को सुशोभित करूँगा। स्वर्णमयी लंकापुरी विभीषण को सौंप दूँगा और केलि करने के निमित्त रानी मन्दोदरी को अर्पित कर दूँगा॥ १४॥

इतना सुनकर मेघनाद महा क्रोधित हुआ। उसके मन में जो अपशब्द आये, वह हनुमान को कहने लगा। मेघनाद ने श्रीराम को पुकार कर कहा,

इन्द्रजित् नाम मोर त्रिभुवन जाने ※ कोन बेटा निस्तार पाइबे मोर वाणे
एत बलि लुकाइल मेघेर आड़ाले ※ आकाशे थाकिया वाण झाँके झाँके फेले
आकाशे थाकिया करे वाण-वरिषण ※ जर्ज्जर करिया विन्धे श्रीराम-लक्ष्मण
शेल शूल मुषल मुद्‌गर एकधारा ※ चारिदिके पड़े, येन आकाशेर तारा
जाठा जाठि झकड़ा कर्णिक एकधार ※ वरिषण करे, आर बले मार-मार
श्रीरामे यतेक विन्धे, ताहा नाहि माने ※ सह सह बलि तवे डाकये लक्ष्मणे
वज्रेर समान वाण असंख्य वरिषे ※ पड़िल लक्ष्मण-वीर श्रीरामेर पाशे
क्षुरपार्श्वं अर्द्धचन्द्र दु' वाणेर नाम ※ सेइ दुइ बाण फुटि पड़िल श्रीराम १५
चारिद्वारे पड़े ठाट लक्ष्मण-श्रीराम ※ राजार प्रसाद लैते चले पितृ स्थान
आगुवाड़ि पथे पड़े चन्दनेर छड़ा ※ ताहार उपरे पाते नेतेर पाछड़ा
हस्तेक प्रमाण पाड़े पुष्प-पारिजात ※ आज्ञा पेये पवन सुगन्ध वहे वात
दाण्डाय वापेर आगे वीर-अवतार ※ वापेर चरणेमाथा नोङाय तिनबार
कहिल सकल, यत करिल संग्राम ※ पड़िल सकल-सैन्य-सहित श्रीराम
पड़िल लक्ष्मण आर वीर हनूमान ※ वानर-कटक पड़े, नाहि परिमाण

देश को जीवित लौट सकोगे ऐसी साध मन में मत रखो। मेरा नाम इन्द्रजीत है, मुझको सारा संसार जानता है, मेरे बाणों से किसको निस्तार मिल सकता है। इतना कहकर वह बादलों की ओट में छिप गया। आकाश में रहकर वह अनगिनत बाण बरसाने लगा। आकाश में रहकर बाण बरसाते हुए वह श्रीराम-लक्ष्मण को बींधने लगा। चारों ओर धारा-प्रवाह शेल, शूल, मूसल और मुद्‌गर इस प्रकार गिरने लगे मानों आकाश से तारे गिर रहे हों। विभिन्न शस्त्र बरसाते हुए वह मार-मार शब्द करने लगा। श्रीराम को जितने अस्त्र वह मारता उनकी गणना न कर वह लक्ष्मण को सम्बोधित करता, जरा झेल कर तो देखो। जब वज्र के समान असंख्य बाण बरसने लगे तो वीर लक्ष्मण रामचन्द्र के बगल में ही गिर पड़े। क्षुरपार्श्व और अर्धचन्द्र नामक दो बाणों से आहत हो श्रीराम भी गिर गये॥ १५॥

चारों द्वारों पर श्रीराम-लक्ष्मण सहित जब सारा वानर-कटक गिरा तो राजा का प्रसाद प्राप्त करने के लिए (इन्द्रजीत) पिता के निकट चल पड़ा। उसके चलने के पथ पर चन्दन का छिड़काव हुआ, फिर मूल्यवान वस्त्र बिछाया गया। हाथ-भर ऊँचा पारिजात-पुष्प उस पर बिछ गया। आज्ञा पाकर पवन सुगन्ध का संचार करने लग गया। वीरता का अवतार इन्द्रजीत जाकर पिता के सम्मुख खड़ा हो गया और पिता के चरणों में तीन बार नमन किया। उसने युद्ध के सम्बन्ध में सभी कुछ बताया कि

सुग्रीव अंगद पड़े, नील सेनापति ❋ पड़िल से जाम्बवान भल्लूक प्रभृति
शरभ सुषेण गन्धमादनादि वीर ❋ समुद्रेर कूले सव लोटाय शरीर
चारिद्वारे पड़ियाछे वानरेर थाना ❋ आजि रणे जीयन्त नाहिक एकजना
सुग्रीव-वानरे आर नाहि तव डर ❋ घरपोड़ा वानर गियाछे यमघर १६
हरिषे युद्धेर कथा कहे मेघनाद ❋ चुम्ब दिया रावण करिल आशीर्व्वाद
राजप्रसाद मेघनाद पाइल विस्तर ❋ विचित्र निर्म्माण दिल रत्नेर टोपर
वलय कंकण दिल, माणिक रतन ❋ पञ्चशब्दे वाद्य बाजे, ना जाय गणन
नाना-रत्न-धन दिल, मस्तकेर मणि ❋ इन्द्र-विद्याधरी दिल सहस्र कामिनी
राज प्रसाद दिल राज्य क'रे लण्ड-भण्ड ❋ सबेमात्र नाहि दिल नव-छत्र-दण्ड
राज प्रसाद पाइया प्रवेशे अन्तःपुरी ❋ नारिभाग ल'ये गृहे खेले पाशासारि १७

ससैन्य श्रीराम-लक्ष्मणेर उज्जीवनार्थ विभीषण, हनूमान, ओ जाम्बवानेर मन्त्रणा

चारि-द्वारे पड़े सैन्य श्रीराम-लक्ष्मण ❋ रक्षा पाय विभीषण पवन-नन्दन
दुइजने अमर ब्रह्मार पेये वर ❋ ना मरिल दुइजन वानर-भितर

श्रीराम सहित सारी सेना पराजित हुई है। लक्ष्मण और वीर हनुमान भी गिरे हैं। असंख्य वानरी-सेना विनष्ट हो गई है जिसका कोई लेखा-जोखा नहीं है। सुग्रीव, अंगद और नील सेनापति भी गिरे हैं। जाम्बवान अपने भालुओं के साथ गिरा है। शरभ, सुषेण, गन्धमादन आदि वीरों के शरीर समुद्र-तट पर पड़े हैं। चारों द्वारों पर वानरी-सेना गिरी है। आज के युद्ध में एक भी जीवित नहीं रहा। अब तुमको सुग्रीव-वानर से कोई डर नहीं। घर जलाने वाला वानर भी यमालय चला गया है ॥ १६ ॥

मेघनाद ने हर्ष से युद्ध की बातें सुनाईं। रावण ने उसका चुम्बन कर आशीर्वाद किया। मेघनाद को पर्याप्त राजप्रसाद प्राप्त हुआ, विचित्र रूप से निर्मित रत्नमुकुट मिला, वलय कंगन माणिक्य और रत्न मिले। पंचशब्द से असंख्य वाद्य बजने लगे। अपने मस्तक से मणि उतार कर तरह-तरह का धन-रत्न दिया। सहस्रों इन्द्र-विद्याधरी कामिनियाँ भी मिलीं। राज्य को खाली कर राजप्रसाद दिया गया—केवल नया छत्र और दंड ही नहीं मिला। राजप्रसाद प्राप्त करने के बाद उसने अन्तःपुर में प्रवेश किया और नारीमंडली लेकर पाँसा खेलने बैठ गया ॥ १७ ॥

सारी सेना-सहित श्रीराम-लक्ष्मण को उज्जीवित करने के निमित्त विभीषण, हनुमान और जाम्बवान की मंत्रणा

चारों द्वारों पर श्रीराम-लक्ष्मण सहित सारी सेना गिरी। केवल विभीषण और पवननन्दन बचे रहे। ब्रह्मा का वरदान पाकर दोनों अमर हैं। वानरों में

चिन्तिया गणिया दोंहे युक्ति कैल सार॥ राम-लक्ष्मण जीयाइते कैल प्रतिकार
हाते करि देउटि फिरिछे दुइ वीर ॥ वानर देखिया बेड़ाय, गति अति धीर
प'ड़ेछे सुग्रीव-राजा ल'ये राज्यखंड॥ छत्रिश-कोटि सेनापतिर लोटाइछे मुण्ड
पूर्व्वद्वारे शतकोटि वानर-संहति ॥ हाते गाछ पड़ियाछे नील सेनापति
प'ड़ेछे अंगद वीर दक्षिण-दूयारे ॥ वाणेते अवश अंग, मूर्च्छित शरीरे
पड़िया पश्चिम-द्वारे श्रीराम-लक्ष्मण॥ देखिया माथाय हात कान्दे दुइजन
शब्द नाहि, स्तब्ध अंग, दु'जने मूर्च्छित॥ नाड़िया चाड़िया देखे, नाहिक संवित्
बाण फुटि पड़ियाछे मन्त्री जाम्ववान॥ ना पारे मेलिते चक्षु, बुके पड़े टान
विभीषण वले, तुमि वले महाबली ॥ उठिया मन्त्रणा कर, आर कारे बलि
जाम्ववान बले, मम अंगे लक्षबाण ॥ ना पारि मेलिते चक्षु, बुके पड़े टान
अनुमाने जानिलाम कथार आभासे ॥ विभीषण आसियाछ आमार सम्भाषे
जाम्ववान वले तुमि धार्मिक सुजन ॥ तत्त्व करि देख, कोथा पवन-नन्दन
दु'जने मन्त्रणा करि भावह उपाय ॥ इन्द्रजित-बाणे सबे रक्षा किसे पाय
विभीषण बले, तुमि बुद्धे बृहस्पति ॥ इन्द्रजित-त्राणे तव छिन्न हैल मति
श्रीराम-लक्ष्मण पड़े जगत्-पूजित ॥ ए-समये केन नाहि चिन्ता करहित

केवल यही दोनों नहीं मरे। दोनों ने चिन्तन-मनन कर यह निश्चय किया कि श्रीराम लक्ष्मण को जिलाने के लिए प्रवन्ध करना है। हाथ में दीवट लेकर दोनों वीर मंथर-गति से वानरों को देखने फिरने लगे। अपना सारा कटक लेकर राजा सुग्रीव गिरे हैं। छत्तीस करोड़ सेनापतियों के मुंड लुढ़क रहे हैं। पूर्वीद्वार पर सौ करोड़ वानरों की सेना गिरी है। नील सेनापति हाथ में वृक्ष लेकर गिरा है। दक्षिण द्वार पर अंगद वीर गिरा है। उसका शरीर वाणों से निश्चेष्ट पड़ गया है और वह मूर्छित पड़ा है। पश्चिमद्वार पर श्रीराम और लक्ष्मण गिरे हैं। उनको देखकर सिर पर हाथ रख दोनों रोने लगे। दोनों ने हिलाडुला कर देखा कि दोनों मूर्छित पड़े हैं, कोई आहट नहीं और सारा शरीर भी निश्चल है। मंत्री जाम्बवान भी बाण खाकर गिरा था। उससे आँखें नहीं खोली जातीं थी, सीने में दर्द होता था। विभीषण ने कहा, तुम तो महाबली हो, उठकर जरा मंत्रणा करो, भला और किसी से क्या बताऊँ। जाम्बवान ने कहा, मेरे शरीर में लाखों बाण चुभे हैं, मैं आँखें नहीं खोल पा रहा हूँ, सीने में दर्द होता है। बातों के आभास से अनुमान लगाता हूँ कि तुम विभीषण हो और मुझसे बातें करने आए हो। जाम्बवान ने कहा, तुमतो धार्मिक और सुजन हो, जरा पता लगाओ पवननन्दन कहाँ हैं। फिर दोनों परामर्श कर कोई उपाय सोचो कि इन्द्रजीत के बाणों से सबकी किस प्रकार रक्षा हो सकती है। विभीषण ने कहा, तुम तो बुद्धि में बृहस्पति के समान हो—इन्द्रजीत के बाणों से तुम्हारी भी मति मारी गई है।

प'ड़ेछे सुग्रीव-राजा वानरेर पति ※ कि हवे उपाय, किछु कर तार गति
एवे से जानिनु आमि तोमार चरित्र ※ पवन-नन्दन-विना नाहि तव मित्र
जाम्बवान वले, मोर वुद्धि नाहि घटे ※ हनूमाने डाकि देह आमार निकटे
अन्य अन्य अन्वेषणे, नाहि प्रयोजन ※ देख आगे, कोथा आछे पवन-नन्दन
चेतना थाकये यदि ताहार शरीरे ※ प्राणदान दिवेक सकल महावीरे
विभीषणे वले, देख मेलिया नयान ※ तोमा सम्भाषिते आसियाछे हनूमान १८
चरण बन्दिल जाम्ववानेर हनूमान ※ मृदुभाषे तखन वलिछे जाम्ववान
प'ड़ेछेन श्रीराम-लक्ष्मण कपिगण ※ औषध आनिले तुमि जीये सर्व्वजन
अन्तरीक्षे जाइवे पवन करि भर ※ अति-उच्च हिमालय-पर्व्वत-शिखर
ऋष्यमूक-पर्व्वत से हिमालय-पार ※ धवल-पर्व्वत श्वेत-धवल-आकार
ताहार दक्षिण-पूर्व्वे पर्व्वत-कैलास ※ ऋष्यमूके-महौषध आछये निर्ज्यास
चारि-वृक्ष आछये औषध चारि-जाति ※ अन्धकारे आलोकरे औषधेर ज्योति
'विशल्य-करणी' एक सर्व्वलोके जानि ※ द्वितीय-औषध-नाम 'मृत-संजीवनी'
तृतीय औषध आछे 'अस्थि-सञ्चारिणी' ※ चतुर्थ औषध-नाम 'सुवर्ण-करणी'
आनिते औषध यदि पार राताराति ※ चारियुगे थाकिबेक तोमार सुख्याति १९

संसार के पूज्य श्रीराम-लक्ष्मण भी गिरे हैं। इस समय उनके हित की कोई चिन्ता करो। वानरों के पति राजा सुग्रीव भी गिरे हैं। कोई उपाय निकालो—रास्ता वतलाओ। अब मैंने तुम्हारा चरित्र जान लिया कि पवन-नन्दन के विना तुम्हारा कोई मित्र नहीं। जाम्ववान ने कहा, इस समय मेरा दिमाग काम नहीं कर रहा है, मेरे पास हनुमान को बुला दो। और कुछ तुमको खोजने-तलाशने की जरूरत नहीं। पहले देखो कि पवननन्दन कहाँ है। उसके शरीर में यदि चेतना है तो सारे महावीरों को वह प्राणदान कर सकेगा। विभीषण ने कहा, आँखें खोलकर देखो, तुमसे संभाषण करने के लिए हनुमान प्रस्तुत हैं ॥ १८ ॥

हनुमान ने जाम्ववान के चरणों की वन्दना की। तब जाम्ववान ने धीमे स्वर में कहा, श्रीराम-लक्ष्मण और सारे कपि गिरे हैं। तुम दवा ले आओ तो सारे लोग जी जाय। पवन पर चढ़कर अन्तरिक्ष में जाओगे। अति-उच्च हिमालय पर्वत मिलेगा। उसको लाँघ जाओगे तो ऋष्यमूक पर्वत मिलेगा। वह धवल वर्ण का पर्वत है। उसके दक्षिण-पूर्व में कैलास-पर्वत है। ऋष्यमूक पर्वत पर निश्चित रूप से महौषध है। चार प्रकार के वृक्ष हैं जिनमें चार प्रकार के औषध हैं। औषध की ज्योति अँधेरे में उजाला करती है। एक तो 'विशल्यकरणी' है जिसको सारा संसार जानता है। दूसरी औषध का नाम है 'मृत-संजीवनी'। तीसरी औषध है 'अस्थि-संचारिणी' तो चौथी का नाम है 'सुवर्णकरणी'। अगर रातोंरात ये औषधियाँ ले आओ तो चारों युग में तुम्हारा सुयश सदा फैला रहेगा ॥ १९ ॥

नाहिक एसब कथा वाल्मीकी-रचने ※ विस्तारिया लिखित 'अद्भुत-रामायणे'
एक रामायण शत-सहस्र प्रकार ※ के जाने प्रभुर लीला, कत अवतार
कृत्तिवास-पण्डितेर जन्म शुभक्षणे ※ लङ्का-काण्ड गाहिलेन गीत-रामायणे२०

औषध आनिते हनूमानेर ऋष्यमूक-पर्व्वते यात्रा

जाम्बवान हनूमाने दिलेन विदाय ※ औषध आनिते वीर हनूमान जाय
उभलेज करिया सारिला दुइ कान ※ एकलाफे आकाशे उठिल हनूमान
महाशब्दे चलिल पवने करि भार ※ लेजेर सापटे उड़े पर्व्वत-पाथर
दश-योजन हैल वीर आड़े परिसर ※ दीर्घेते योजन त्रिश, चमके अमर
लाङ्गुल बाड़ाये कैल योजन पञ्चाश ※ सारिया तुलिल लेज, ठेकिल आकाश
सागर हइया निमिषेते गेल पार ※ शरा-गोटा ज्ञान करे सकल संसार
नद-नदी एड़ाइल पर्व्वत-कान्तार ※ कत वन-उपवन ह'ये गेल पार
नाना-तीर्थ-क्षेत्र, कत मुनिर वसति ※ वारो-वत्सरेर पथ जाय एकराति
हिमालय-पर्व्वत छाड़ाये शीघ्रगति ※ कैलास-पर्व्वत देखे धवल-आकृति

वाल्मीकी की रचना में ये सब बातें नहीं हैं। ये सब 'अद्भुत रामायण' में विस्तार से लिखी हुई हैं। एक ही रामायण है लेकिन वह शत-सहस्र प्रकार की है। प्रभु की लीला कौन जान सकता है। उनके कितने ही अवतार हैं। कृत्तिवास पंडित का जन्म अवश्य ही शुभ-घड़ी में हुआ था। उन्होंने रामायण का गीत लंका-कॉंड में गाया ॥ २० ॥

औषधि लाने के लिए हनुमान की ऋष्यमूकपर्वत-यात्रा

जाम्बवान ने हनुमान को विदा दी। वीर हनुमान औषधि लाने के लिए चल पड़ा। पूँछ को ऊपर की ओर कर और दोनों कानों को खड़े कर एक छलाँग में हनुमान आकाश में उड़ गया। भीषण शब्द करता हुआ वह पवन के सहारे चल पड़ा। उसकी पूँछ की चपेट में पड़कर पहाड़-पत्थर उड़ने लगे। वीर ने चौड़ाई में अपने शरीर को दस-योजन का बनाया और लम्बाई में तीस योजन का। पूँछ बढ़कर पचास योजन लम्बी बना डाली जिसके उठाते ही आकाश छू गया। पल भर में वह समुद्र लाँघ गया। सारे संसार को उसने सकोरा-मात्र समझा। कितनी ही नद-नदियाँ और पर्वत, जंगल वह पार कर गया। कितने ही वन-उपवन, विभिन्न तीर्थ-क्षेत्र, ऋषियों के निवास स्थान वह पार कर गया। एक रात में वह बारह वर्षों का पथ पार कर गया। तेज गति से वह हिमालय-पर्वत भी लाँघ गया। कैलास पर्वत में उसने धवलाकार पहाड़ देखा। इस प्रकार हनुमान ऋष्यमूक पर्वत पर चढ़ा। औषधि की गन्ध पाकर वहीं ठहर गया। औषधि की गन्ध से

ऋष्यमूक-पर्व्वत उठिल हनूमान ❋ औषधेर गन्ध पेये रहे सेइस्थान
औषधेर गन्धेते सुगन्ध वात वहे ❋ सन्धान पाइया वीर सेइखाने रहे
शिखरे-शिखरे फिरे पवन-नन्दन ❋ चारिजाति औषध ना पाय दरशन
देवमूर्ति औषध, किदिब तार लेखा ❋ कारे हय अदर्शन, कारे देय देखा २१
औषध ना पाय वीर, रजनी विस्तार ❋ मने-मने चिन्ता तवे करे वीरवर
मने-मने हनू तवे करे अनुमान ❋ वाण खेये बुद्धि गेछे बुड़ा जाम्बवान
तल्लासिनु पर्व्वत करिया पाति पाति ❋ चारिजाति औषध, ना पाइ एक जाति
अकारणे आइलाम भल्लूकेर बोले ❋ एत दुःख विधाता कि लिखिल कपाले
बुद्धिमान हनूमान विचारे पण्डित ❋ सात-पाँच भावि मने स्थिर करे चित
ब्रह्मार नन्दन वीर, आछे बहुज्ञान ❋ सर्व्वलोके बले, महामन्त्री जाम्ववान
तार वाक्य मिथ्या ना हइबे कोनकाले ❋ पर्व्वत चातुरी क'रे औषध लुकाले
साधे कि तोमार पाखा काटे पुरन्दर ❋ आमारे भाविले तुमि वनेर वानर
परिहास कर तुमि विपत्तिर काले ❋ उपाड़िया फेले दिब सागरेर जले
सुग्रीवेर चर आमि, श्रीरामेर दास ❋ आमार संगेते तुमि कर परिहास
कृत्तिवास-पण्डितेर मधुर भारती ❋ याँर कण्ठे विराजेन देवी सरस्वती २२

सुगन्धित पवन चल रहा था—टोह पाकर वह वीर वहीं ठहर गया। पवन-नन्दन शिखर-शिखर पर भटकता रहा लेकिन उसको चार प्रकार की औषधियों का दर्शन नहीं मिला। औषधि भी देवमूर्त्ति के समान है—किसी को वह दर्शन देती है और किसी को नहीं देती ॥ २१ ॥

रात बहुत वीत गई लेकिन वीर को औषधि नहीं मिली। तब वीरवर ने मन ही मन चिन्तन किया—उसने अनुमान किया कि वाण खाकर वृद्ध जाम्बवान की बुद्धि कुंठित हो गई है। सारा पर्वत छान डाला—चार जाति की औषधि है और एक भी नहीं मिल रही है। भालू के कहने से नाहक मैं चला आया, विधाता ने मेरे भाग्य में इतना क्लेश लिख रखा था। बुद्धिमान हनुमान पंडित-प्रवर भी था—आगा-पीछा सोचकर उसने अपने चित्त को शान्त किया। ब्रह्मा का सुवन वीर जाम्बवान श्रेष्ठ ज्ञान का अधिकारी है, सभी लोग उसको महामंत्री जाम्ववान कहते हैं। उसके वाक्य कभी झूठे नहीं हो सकते। पर्वत ने चालाकी कर औषधि छिपा ली है। यों ही इन्द्र ने तुम लोगों का पंख नहीं काटा था। मुझको तुमने वन का वानर समझ रखा है। विपत्ति के समय तुम मुझसे परिहास कर रहे हो। मैं तुम्हें उखाड़ कर समुद्र के जल में फेंक दूँगा। मैं सुग्रीव का दूत हूँ और श्रीराम का दास हूँ, तुम मेरे साथ परिहास कर रहे हो। जिनके कँठ में सरस्वती विराजमान हैं उन कृत्तिवास पंडित की यह मधुर रचना है ॥ २२ ॥

हनूमान-कर्त्तृक पर्व्वतेर स्तव

हनूमान जोड़करे, पर्व्वतेरे स्तव करे, वले, शुन शुन गिरिवर।
पाव व'ले महौषधि, लंघिया पर्व्वत-नदी, दुःख पेये एसेछि विस्तर॥
मेरुगण यत आछे, तुल्य नहे तव काछे, तुमि मेरु सुमेरु-समान।
श्रीराम-लक्ष्मण रणे, प'ड़े छेन दुइजने, कृपाय औषध कर दान॥
सुग्रीव-अंगद-नल, आर यत महावल, प'ड़े आछे मृतदेह-प्राय।
तुमि ह'ये दयावान, महौषधि कर दान, वाँचे सबे तोमार कृपाय॥
शुन हित-उपदेश, रजनी हइल शेष, येते हवे सागरेर पार।
शुन मेरु गुणनिधि, देखाइया महौषधि, करह रामेर उपकार॥
एरूप अन्जना-सुत, स्तव करे शत-शत, पर्व्वत ना माने उपरोध।
राम-पद-अभिलाषे, विरचिल कृत्तिवासे, हनूमाने उपजिल क्रोध २३॥

हनूमान-कर्त्तृक औषध-आनयन एवं राम, लक्ष्मण ओ वानर गणेर चैतन्य-लाभ

एत परिश्रमे हनू औषध ना पाय ॐ कोपे कड़मड़ दन्त कटमट चाय
हनूमान वले, आमि श्रीरामेर दास ॐ ना दिल औषध वेटा, करे उपहास
क्षुद्र तुइ प्रस्तर, पर्व्वत केटा वले ॐ तोर मत कत-शत डुवायेछि जले

हनुमान द्वारा पर्वत की स्तुति

फिर हनुमान हाथ जोड़कर पर्वत का स्तव करने लग गये। बोले, हे गिरिवर, कृपया सुनो। महौषधि प्राप्त करने के लिए कितने ही पर्वत और नदियों को लाँघ कर अशेष क्लेश झेलते हुए यहाँ आया हूँ। जितने भी मेरु हैं वे तुम्हारी तुलना में कुछ भी नहीं—तुम तो सुमेरु के समान हो। युद्धक्षेत्र में श्रीराम और लक्ष्मण गिरे हैं, कृपया औषधि प्रदान करो। सुग्रीव, अंगद, नल एवं अन्य-अन्य महाबली भी मृत के समान पड़े हैं। तुम दयालु बनकर महौषधि का दान करो तो तुम्हारी कृपा से सबके प्राण बचें। मेरा कहना मानो, रात समाप्त हो रही है और मुझको समुद्र लाँघ कर जाना है। हे गुणनिधि मेरु, सुनो, महौषधि दिखाकर राम का उपकार करो। इस प्रकार अंजना-सुत हनुमान ने तरह-तरह से स्तव किया, किन्तु पर्वत ने उनका अनुरोध न माना। इस पर हनुमान को क्रोध आ गया। श्रीरामचन्द्र के चरणों के अभिलाषी कृत्तिवास ने यह रचना की॥ २३॥

हनुमान द्वारा औषधि का लाना एवं राम, लक्ष्मण और कपियों का चैतन्य-लाभ

इतने परिश्रम के उपरान्त भी जब हनुमान को औषधि नहीं मिली तो क्रोध से उसके दाँत किटकिटाने लगे और वह आँखें लाल-लाल कर देखने लगा। हनुमान ने कहा, मैं राम का दास हूँ, तूने औषधि नहीं दी और उलटे मेरा उपहास करता है। तुझको पर्वत कौन कहता है, तू तो छोटा सा पत्थर

एत बलि धरि टाने पवन-नन्दन ※ चड़-चड़ शब्दे छिंड़े लतार बन्धन
वड़-बड़ वृक्ष सब उपाड़िया पड़े ※ पाले-पाले वन-जन्तु धाय उभरड़े
कत-शत मुनि-ऋषिर हैल तपोभंग ※ सिंहेर उपरे चापि पड़िछे मातंग
शार्दूल-उपरे पड़े कुक्कुर श्रृगाल ※ नेउल मूषिक साप एकत्र मिशाल
भूत प्रेत पिशाच पलाय ल'ये प्राण ※ आतङ्कते यक्ष बले, रक्ष भगवान
प्रलय पाड़िल, पलावार नाहि पथ ※ मूर्त्तिमान ह'ये देखा दिलेन पर्व्वत २४
ऋषिरूपे आसि हनूमानेर साक्षाते ※ जिज्ञासिल हनूमाने मधुर वाक्येते
के तुमि, कोथाय थाक, वीर-चूड़ामणि ※ पर्व्वत धरिया केन कर टानाटानि
हनूमान बले, आमि पवनेर सुत ※ सुग्रीवेर अनुचर, श्रीरामेर दूत
ह'रेछे रामेर सीता दुष्ट दशानन ※ रघुनाथ करे छेन सागर-बन्धन
लङ्काते ह'तेछे युद्ध श्रीराम-रावणे ※ प'ड़ेछेन रघुनाथ इन्द्रजित्-वाणे
रघुनाथ मूर्च्छागत, ठाकुर लक्ष्मण ※ सुग्रीव-अंगद-आदि यत कपिगण
अचैतन्य ह'ये सबे आछे लङ्कापुरे ※ जाम्बवान पाठाइल औषधेर तरे
महौषधि आछे एइ पर्व्वत-उपरे ※ ना दिल औषध मेरु कोन अहंकारे
प्राणपणे करिब रामेर उपकार ※ पर्व्वत लइया जाब सागरेर पार २५

है, तुझ जैसे सैकड़ों को मैंने पानी में डुबो दिया है। इतना कहकर पवन-नन्दन पर्वत को पकड़ कर खींचने लगा—तो लताओं के सारे वन्धन चट-चट और बड़े-बड़े पेड़ भी उखड़-उखड़ कर गिरने लगे। झुंड के झुंड जंगली जानवर भागने लग गये। कितने ही ऋषि-मुनियों की तपस्या-भंग हो गई। कहीं तो सिंह पर हाथी जा गिरता तो कहीं शार्दूल पर कुत्ते सियार जा गिरते। नेवला, चूहा और साँप एक ही जगह एकत्र हो गये। भूत-प्रेत-पिशाच अपने-अपने प्राण लेकर भाग खड़े हुए। आतंक से यक्ष कहने लगे, हे ईश्वर रक्षा करो, प्रलय आ गया, भागने का रास्ता नहीं। इतने में ऋषि की मूर्त्ति धरकर पर्वत ने दर्शन दिया ॥ २४ ॥

ऋषि का रूप लेकर वह हनुमान के सम्मुख आया और मधुर वचन से हनुमान से पूछा, हे वीर चूड़ामणि, तुम कौन हो, कहाँ रहते हो, पर्वत पकड़ कर क्यों खींचातानी कर रहे हो। हनुमान ने कहा, मैं पवनसुत हूँ, सुग्रीव का अनुचर और श्रीराम का दूत हूँ। श्रीराम की सीता का दुष्ट दशानन ने हरण किया है। रघुनाथ ने सागर बाँध डाला है और लंका में राम और रावण में युद्ध हो रहा है। इन्द्रजीत के वाण से घायल हो रघुनाथ गिरे हैं। रघुनाथ मूर्च्छित हैं, लक्ष्मण तथा सुग्रीव, अंगद आदि सारे कपि लंका में अचेतन पड़े हैं। जाम्बवान ने मुझको औषधि के लिए भेजा है। वह महौषधि इसी पर्वत पर है। इस मेरु ने जाने किस अहंकार से औषधि नहीं

ऋषि बले, शान्त हओ पवन-नन्दन ❋ आमि देखाइया दिव औषधेर वन
एत बलि संगे करि ल'ये सेइखाने ❋ देखाइया दिल गिया औषध जेखाने
चारिजात औषध लइया हनूमान ❋ उभलेज करिया सारिल दुइ कान
लाफ दिया वीर गिया उठिल आकाशे ❋ लङ्कापुरे उपनीत चक्षुर निमिषे
विशल्य-करणी आर सुवर्ण-करणी ❋ अस्थि-सञ्चारिणी आर मृत-सञ्जीवनी
एइ चारि औषध लइया हनूमान ❋ चारि द्वारे भ्रमण करये स्थाने-स्थान
चारि-औषधेर घ्राण यतदूर जाय ❋ वानर-कटक सब उठिया दाण्डाय
निद्राभंगे उठे येन मेलिया नयन ❋ सेइरूपे उठिलेन श्रीराम-लक्ष्मण
सुग्रीव उठिल वानरेर अधिपति ❋ द्विविद कुमुद उठे सैन्येर संहति
नल नील उठिल अंगद युवराज ❋ गय ओ गवाक्ष उठे कटक-समाज
जार नाके लागे अस्थि-सञ्चारिणी गुँड़ा ❋ कटकेर शत-पा आसिया लागे जोड़ा
अस्थि-सञ्चारिणी-गन्ध प्रवेशये नाके ❋ चारि द्वारे वानर उठिल झाँके-झाँके
सुवर्ण-करणी-गन्ध सुकोमल अति ❋ सुन्दर शरीर हैल पूर्व्वेर आकृति २६
सकल वानर उठे दिया अंग-झाड़ा ❋ हनूमाने कहे सबे हात करि जोड़ा

दी। मैं प्राणों की बाजी लगाकर भी राम का उपकार करूँगा—मैं इस पर्वत को समुद्र पार ले जाऊँगा ॥ २५ ॥

ऋषि ने कहा, पवन-नन्दन, शान्त हो जाओ। मैं तुमको औषधि वाला वन दिखा दूँगा। इतना कहकर वह उसको साथ ले गया और उस स्थान पर ले गया जहाँ औषधि के पौधे थे। चारों प्रकार की औषधि लेकर हनुमान ने पूँछ ऊपर की ओर की और कान समेट लिये और कूद कर आकाश में उड़ गये। आँखों के पलक गिरते-गिरते ही वह लंकापुरी जा पहुँचे। विशल्य-करणी, सुवर्ण-करणी, अस्थि-संचारिणी और मृत-संजीवनी ये चारों औषध लेकर हनुमान चारों द्वार पर जगह-जगह घूमने लगे। चारों औषधों की गन्ध जहाँ-जहाँ तक पहुँचती उतनी दूर तक सारा वानर कटक उठ उठ कर खड़ा हो जाता। जिस प्रकार नींद टूटने पर कोई आँखें खोलकर उठ जाता है उसी प्रकार श्रीराम और लक्ष्मण उठ कर बैठ गये। वानरों के अधिपति सुग्रीव उठे। द्विविद, कुमुद और सेना का सारा समूह उठकर बैठ गया। नल, नील, युवराज अंगद, गय, गवाक्ष आदि वानर-कटक के सदस्य उठ कर खड़े हो गये। जिसकी नाक में अस्थि-संचारिणी का चूर्ण जा पहुँचता उसी के टूटे हाथ-पैर आदि अंग जुड़ जाते। चारों द्वारों पर झुंड के झुंड वानर उठ कर खड़े हो गये। सुवर्ण-करणी की गन्ध बड़ी कोमल है, उससे सारा शरीर सुन्दर रूप ले लेता था और अपने स्वरूप पर लौट आता था ॥ २६ ॥

सभी वानर बदन झाड़ कर उठ खड़े हुए। सभी ने हाथ जोड़कर हनुमान से कहा, तुम्हारे समान वीर तीनों लोकों में नहीं है। तुम्हारे ही

तोमार समान वीर त्रिभुवने नाइ ※ तोमार प्रसादे सव मैले प्राण पाइ
राम बले, हनूमान, ये गुण तोमार ※ शतयुगे शुधिते नारिब तव धार
कि दिव प्रसाद वल, आछे किवा धन ※ हनूमाने कोल दिला श्रीराम-लक्ष्मण
राम बले, हनूमान, तुमि भक्तवीर ※ तोमाते आमाते हय अभेद-शरीर
सर्व्वजन करे हनूमानेर वाखान ※ हनूमान हैते सबे पाइल पराण
मिथ्या हैल, यत युद्ध कैल इन्द्रजित् ※ कृत्तिवास गाहिलेक लङ्काकाण्ड-गीत२७

रावण-कर्त्तृक लङ्कार चारि-द्वार-अवरोध

'राम-जय' शब्दे कपि छाड़े सिंहनाद ※ लंकाते रावण-राजा गणिल प्रमाद
रावण बले, दैवगति के पारे रोधिते ※ लङ्कापुरी विनाशिवे नर-वानरेते
श्रीराम-लक्ष्मण मैल यत सेनापति ※ एखनि उठिल वेंचे ना पोहाते राति
मोर सेना मरिले ना बाँचे एकजन ※ वारे-बारे मरे-बाँचे श्रीराम-लक्ष्मण
हेन वीर नाहि मोर लङ्कार भितर ※ मारे राम-लक्ष्मण ओ सुग्रीव-वानर
मरिया ना मरे राम, ए केमन वैरी ※ वीर शून्या हइल कनक-लङ्कापुरी
हेन छार युद्धे आर नाहि प्रयोजन ※ थाकिब कपाट दिया, प्राण बड़ धन

कारण हम सभी मरे हुओं को प्राण मिले। श्रीराम ने कहा, हनुमान! तुममें अपार गुण हैं। मैं तुम्हारा ऋण कभी न चुका सकूँगा। बताओ तुमको कौन सा प्रसाद दूँ, मेरे पास भला धन भी कौन सा है। इतना कहकर श्रीराम-लक्ष्मण ने हनुमान को अंक में बाँध लिया। राम ने कहा, हनुमान तुम भक्तवीर हो, तुम्हारा और मेरा शरीर अभिन्न है। सभी लोग हनुमान की प्रशंसा करने लगे कि हनुमान के कारण ही सबको प्राण मिले। इन्द्रजीत ने जितना भी युद्ध किया था सब व्यर्थ हो गया। कृत्तिवास ने लंकाकांड का गीत गाया ॥ २७ ॥

रावण द्वारा लंका के चारों द्वारों का अवरोध

तब कपियों ने 'राम की जय हो' यह ध्वनि कर सिंहनाद किया। उसे सुनकर लंका में राजा रावण ने अपनी विपत्ति जान ली। रावण ने कहा, दैव की गति को कौन रोक सकता है—इस लंकापुरी को नर और वानर मिलकर विनष्ट करेंगे। सारे सेनापतिओं के साथ श्री-राम और लक्ष्मण मर गये और इधर सवेरा होते न होते ही वे सब जी उठे। मेरी सेना में एक भी सैनिक मरने पर जीता नहीं है और यह राम और लक्ष्मण वार-बार मरते और जीते रहते हैं। मेरी लंकानगरी में ऐसा कोई भी वीर नहीं है जो राम-लक्ष्मण और वानर सुग्रीव का वध कर सके। यह राम मर कर भी नहीं मरता—यह कैसा वैरी है। कनकमयी लंकापुरी वीरों से शून्य हो गई।

प्रवेशिते लङ्कापुरे नाहि दिब बाट ❋ लङ्कापुरे चारि द्वारे देह त कपाट २८
राजार आदेश पेये यत निशाचरे ❋ लंकापुरे कपाट दिलेक चारि द्वारे
सोनार कपाट, छिल भयंकर अति ❋ नाहि ताहे चन्द्र-सूर्य पवनेर गति २९
पाँचदिन द्वारेर कपाट नाहि खुले ❋ हासिया सुग्रीव-राजा सबाकारे बले
दुयारे कपाट दिया रहिल रावण ❋ मने कि भेवेछे वेटा, जिनियाछे रण
एतेक भाविया मने वानरेर पति ❋ पश्चिम-दुयारे गेल मन्द-मन्द गति
बसे छेन रघुनाथ समुद्रेर तटे ❋ चौदिके वानरगण, लक्ष्मण निकटे
हनूमान जाम्बवान आर विभीषण ❋ कृताञ्जलि हइया आछेन तिनजन
उपनीत हैल आसि सुग्रीव-राजन ❋ सम्भ्रमे बन्दिला आसि रामेर चरण
लक्ष्मणेर पादपद्म वन्दिलेन शिरे ❋ जिज्ञासेन श्रीराम सुग्रीव महावीरे
कि मन्त्रणा करिछे लङ्कार अधिकारी ❋ चारि द्वारे कपाट रेखेछे बन्ध करि
पाँचदिन हैल, केन नाहि देय रण ❋ कह ना सुग्रीव मिता, इहार कारण
सुग्रीव बलेन, प्रभु, ना जानि संवाद ❋ क'रेछे कपाट वन्द गणिया प्रमाद २३०

ऐसे अधम युद्ध की अब और आवश्यकता नहीं। मैं किवाड़ वन्द कर पड़ा रहूँगा, प्राण बहुत बड़ी संपत्ति है। मैं उन्हें लंका में प्रवेश करने का रास्ता नहीं दूँगा। जाओ लंका के चारों द्वारों के किवाड़ वन्द कर दो ॥ २८ ॥

इस प्रकार राजा का आदेश पाकर सारे निशाचरों ने लंका के चारों द्वारों के किवाड़ वन्द कर दिये। सोने के बने हुए इन किवाड़ों में बड़ी भयंकर कुण्डी लगी थी, जिनमें से चन्द्र-सूर्य की किरणें और पवन भी नहीं जा सकते थे ॥ २९ ॥

जब पाँचदिन तक इन द्वारों के किवाड़ नहीं खुले तो राजा सुग्रीव ने हँसकर सबसे कहा, रावण किवाड़ वन्द करके बैठा है। क्या उसने सोच रखा है कि उसने युद्ध जीत लिया है। वानर-पति इतना सोचकर पश्चिमद्वार की ओर मन्दगति से चल पड़े। समुद्र तट पर रघुनाथ बैठे थे, उनके पास ही लक्ष्मण और उनके चारों ओर सारे वानर बैठे थे। हनुमान, जाम्बवान और विभीषण, तीनों हाथ जोड़े प्रस्तुत थे। तब राजा सुग्रीव वहाँ आ पहुँचे और उन्होंने आदर के साथ श्रीराम के चरणों की वन्दना की। लक्ष्मण के चरण-कमलों को भी प्रणाम किया। तब श्रीराम ने महावीर सुग्रीव से पूछा, लंका के अधिकारी क्या मंत्रणा कर रहे हैं। उन्होंने चारों द्वारों के किवाड़ वन्द कर रखे हैं। आज पाँच दिन हो गये, वे लड़ने नहीं आ रहे हैं। मित्र सुग्रीव इसका कारण बताओ। सुग्रीव ने कहा, प्रभु, कुछ पता तो चलता नहीं, लेकिन लगता है कि विपत्ति समझ कर ही उन्होंने किवाड़ वन्द कर लिये हैं ॥ २३० ॥

वानरगण-कर्त्तृक द्वितीयवार लंका-दाह

श्रीराम बलेन, शुन मन्त्री जाम्ववान ※ चिन्तिया मन्त्रणा कर, ये हय विधान
जाम्बवान बले, प्रभु पाठाये वानरे ※ लङ्काय आगुन देह प्रति-घरे-घरे२३१
एतेक शुनिया तबे सुग्रीव-राजन ※ बड़-बड़ वानरे पाठाय ततक्षण
सुग्रीवेर आज्ञा पेये असंख्य-वानर ※ लाफे-लाफे पड़े गिया लङ्कार भितर
एके लङ्कापुरी, ताहे वानरेर जाति ※ आँचड़-कामड़ मारे धरिया युवती
अन्तःपुर-नारी देखि वानरेर रंग ※ कापड़ काड़िया लय करिया उलंग
अञ्चल धरिया दन्त खिचाइया उठे ※ वस्त्र फेलि युवती पलाय सबे छुटे
दन्त किच्‌किच् करे, खिलखिल हासि ※ भाण्डार हइते आने घृतेर कलसी
कारे मारे लाथि-कील, कारे मारे चड़ ※ नारायण-तैलेर कलसी ल'ये रड़
बाहिर आओयासे दिते गेल समाचार ※ तिनलाफे प्राचीर हइया आसे पार
नारायण-तैल घृत कलसी कलसी ※ पर्व्वत-प्रमाण वस्त्र आने राशि-राशि२३२
एइरूपे दुर्ज्जय वानर कोटि-कोटि ※ सन्ध्याकाले लक्ष-लक्ष ज्वलिल देउटि
एके चाय, ताहे आज्ञा पाइल वानर ※ लाफे-लाफे प्रवेशिल लङ्कार भितर

वानरों द्वारा दूसरी बार लंका-दहन

श्रीराम ने कहा, हे मंत्री जाम्ववान, सोच विचार कर कोई रास्ता निकालो कि क्या किया जाये। जाम्ववान ने कहा, प्रभु, वानर भेजकर लंका के प्रत्येक गृह में आग लगवा दो ॥ २३१ ॥

इतना सुनकर राजा सुग्रीव ने बड़े-बड़े वानरों को भेज दिया। सुग्रीव की आज्ञा पाकर असंख्य वानर लंका के भीतर कूद पड़े। एक तो लंकापुरी, फिर वन्दरों की जाति—युवतियों को पकड़-पकड़ कर उन पर नख-दन्त का प्रहार करने लगे। अन्तःपुर की नारियाँ वन्दरों का राग-रंग देखने लगीं। कोई वन्दर उनका वस्त्र खींचकर उनको नग्न कर देता तो कोई आँचल पकड़ कर दाँत दिखाने लगता। तब कपड़े फेंक-फाँक कर युवतियाँ सब भाग खड़ी हुईं। तब वे वानर दाँत किटकिटाकर और खिलखिलाकर हँसने लगे और भंडार से घी के मटके उठा लाए। किसी को वे लात-घूँसा मारते तो किसी को झापड़। वे नारायण-तैल का घड़ा लेकर दौड़ने लगे। बाहरी-आवास में कोई समाचार देने दौड़ी तो वे तीन छलाँग में प्राचीर लाँघ गये। नारायण-तैल और घी के मटके इकट्ठे हुए और पर्वत-प्रमाण वस्त्रों का ढेर जमा हो गया ॥ २३२ ॥

इस प्रकार करोड़ों अजेय वानरों ने सन्ध्या के समय लाख-लाख दीपक जला दिये। एक तो उनकी मनचाही बात थी, तिसपर उनको आज्ञा मिली हुई थी—कूद-कूद कर वे सभी लंका में प्रवेश कर गये। एक-एक कपि ने

एक-एक कपि लय दु-दुटि मशाल ❋ अग्नि दिया पोड़ाय लङ्कार प्रतिचाल
अग्निते पुड़िया पड़े बड़-बड़ घर ❋ परित्राहि रव उठे लङ्कार भितर
उलङ्ग हइया केह पलाइल डरे ❋ लाफ दिया पड़े केह जलेर भितरे
अनेक पुड़िल घर आगुनेते ज्वले ❋ केह वा पलाये जाय बाप बाप ब'ले
लङ्कार भितर यत छिल विद्याधरी ❋ जलेते प्रवेश करे, बले मरि मरि
अंग डुबाइया मुख भासाइला जले ❋ सरोवर शोभे येन शत-शतदले
दुयारे थाकिया देखे हनू महाबल ❋ देउटिर अग्नि दिया पोड़ाय कुशल
जलेते डुबाये अंग जागाइछे मुख ❋ मुखे अग्नि दिया हनू देखिछे कौतुक
डुबिया थाकिल त्रासे जलेर भितरे ❋ जल खेये तारा सब पेट फुले मरे
त्रिशकोटि रमणीर पोड़ाय वदन ❋ लाफ दिया उठे चाले पवन-नन्दन
आगे-पाछे अग्नि देय, करे ताड़ाताड़ि ❋ बालक-युवक पुड़े, कत बुड़ा-बुड़ी
सैन्य-सामन्तेर घर पोड़े सारि-सारि ❋ पात्रमित्र गणेर पुड़िल कत पुरी
मणिरत्न-निर्म्मित सुन्दर सब घर ❋ लेखाजोखा नाहि तार, पुड़िल विस्तर
खाट पाट पालङ्क पुड़िल रत्न-धन ❋ मणि-रत्न निर्म्मित असंख्य आभरण
बहुदूर हइते अग्निर शब्द शुनि ❋ वानर-कटक घरे दितेछे आगुनि
पर्व्वत-प्रमाण अग्नि भयंकर देखि ❋ पिञ्जर-सहित पोड़े यत पोषा-पाखी

दो-दो मशाल लिये और इस प्रकार वे आग से लंका के प्रत्येक छाजन को जलाने लगे। आग में जल कर बड़े-बड़े मकान गिरने लगे और लंका में त्राहि-त्राहि का रव सुनाई पड़ने लगा। कोई तो विवस्त्र होकर भाग खड़ा हुआ तो कोई जल में कूद पड़ा। बहुत सारे मकान के भीतर ही आग में जलकर मर गये तो कोई बाप-बाप कहते हुए भागा। लंका में जितनी विद्याधरियाँ थीं वे पानी में प्रवेश कर कहने लगीं, हाय मरीं। सरोवर में शरीर डुबो कर जल के ऊपर मुँह किये वे खड़ी रहीं और यों लगा कि सरोवर सैकड़ों शतदलों (कमलों) से सुशोभित है। महाबली हनुमान ने द्वार पर खड़े होकर यह देखा तो दीपक की अग्नि से उनके केश जलाने लगा। पानी में डूब कर मुँह ऊपर किये हुए हैं, यह देखकर उनके मुख को आग से जला कर वह कौतुक देखने लगा। जब भय से वे जल में डुबकी लगा गईं तो उनके पेट पानी से भर गये। तीस करोड़ औरतों का मुँह जलाकर पवन-नन्दन कूद कर छत पर चढ़े। फुर्ती से वे आगे-पीछे सभी जगह आग लगाने लगे जिससे कितने ही बालक-युवक और बुढ़िया-बूढ़े जल कर मर गये। सैनिकों, सेनापतियों और पात्र-मित्रों के घर जलकर खाक हो गये। मणि-रत्नों से बने कितने ही सुन्दर घर जिनकी कोई गिनती नहीं जलकर भस्म हो गये। खाट-पलंग, धन-रत्न, मणि-माणिक्य से बने आभरण सभी जल गये। बहुत दूर से आग का शब्द सुनाई पड़ता। वानर-कटक में घर-घर आग लगाने

शारी शुक काकातुया सारस सारसी॥ नानाजाति विहंग पुड़िल राशि-राशि
हाती घोड़ा गेल पोड़ा कत लाखे-लाख॥ पलाते ना पारे, डाके विपरीत डाक
कतशत मयूर पुडिल झाँके-झाँक ॥ कुक्कुट-आकृति हैल, पोड़ा गेल पाख
नाना जानि पोषा-जन्तु पालेपाले पोड़े॥ प्राणभये केह वा पलाय उभरड़े
वानरेते पर्व्वत वरिषे झाँके-झाँके ॥ श्रवण बधिर हैल आगुनेर डाके ३३
अगंद वलेन, शुन पवन-कुमार ॥ चारिजन राखह लङ्कार चारिद्वार
ब'से थाक चारिद्वारे देउटि ज्वलिया ॥ राक्षस आइले देह मुख पोड़ाइया
भितरेते आगुन बाहिरे जेते चाय ॥ पलाइते नारे, मुख वानरे पोड़ाय
राक्षस-अवस्था देखि वानरेर हास ॥ लङ्काकाण्ड गाहिल पण्डित कृत्तिवास ३४

कुम्भ ओ निकुम्भेर युद्ध ओ पतन

रावण बले, नाहि सहे प्राणे अपमान ॥ थाकिले कपाट दिया नाहिक एड़ान
कपाट दिले पोड़ाय घर, युद्ध हैल सार॥ युद्ध-विना निस्तार नाहिक देखि आर
कुम्भ ओ निकुम्भ कुम्भकर्णेर नन्दन॥ डाक दिया आनाइल राजा दशानन
दुइभाइ आसिया राजाकेनोङायमाथा॥ रावण बले, देख बापू, लङ्कार वितथा

लगा। पर्वत की तरह वह भयंकर आग की लौ ऊपर उठी। कितने ही पालतू पक्षी पिंजड़ों में जलकर मर गये। तोता, मैना, काकातुआ, सारस आदि विभिन्न जाति के असंख्य विहंग भी जल मरे। लाखों हाथी-घोड़े जल कर मर गये। भाग न सकने के कारण वे चीख-चिंघार मचाने लगे। कितने ही मोर जल गये—पंख जल जाने से वे कुक्कुट (मुर्गे) जैसे नजर आने लगे। विभिन्न जाति के पालतू पशु झुण्ड के झुण्ड जलने लगे। कितने ही प्राणों के भय से वेतहाशा भागने लगे। वानर पत्थर वरसाने लगे। इस प्रकार आग के कोलाहल से सबके कान वहरे होने लगे॥ ३३ ॥

तब अंगद ने कहा, हे पवनकुमार हनुमान, लंका के चारों द्वारों पर चार व्यक्तियों को नियुक्त करो। चारों दरवाजों पर मशाल जलाकर बैठे रहो और राक्षसों के निकलते ही उनका मुख जला दो। भीतर की आग से घवड़ा कर राक्षस वाहर निकलना चाहते थे किन्तु भाग नहीं पाते थे, उनका मुख वानर जला देते थे। राक्षसों की दशा देखकर वानर हँसने लगे। लंकाकांड में पंडित कृत्तिवास ने यह गीत गाया॥ ३४ ॥

कुम्भ और निकुम्भ का युद्ध और पतन

रावण ने कहा अव तो यह अपमान सहन नहीं होता। किवाड़ बन्द करके रहने से भी छुटकारा नहीं। किवाड़ बन्द करने पर ये घर में आग लगाने लगते हैं। अव तो युद्ध करना ही पड़ेगा। युद्ध के बिना अव कोई निस्तार नहीं। कुम्भकर्ण के दो पुत्र थे कुम्भ और निकुम्भ। उनको राजा

विक्रमेते अतुल तोमारा दु'टि भाइ ✻ त्रिभुवन पराभूत तोमा-दोंहा-ठाँइ
आमि जयी तोमार पितार बाहुबले ✻ कुम्भकर्ण-शोके आमि भासि अश्रुजले
कुम्भकर्ण-विना लङ्कापुरी शून्याकार ✻ नर-वानरेर हाते नाहिक निस्तार
इन्द्र-युद्धे उद्धारिल तोमादेर पिते ✻ तोमरा राखह नर-वानरेर हाते
सेइ पुत्र जन्मये कुलेर अलंकार ✻ पितृशत्रु मारि ये शोधये पितृ-धार ३५
राजाज्ञा पाइया दोंहे रथे गिया चड़े ✻ हस्ती घोड़ा ठाट सैन्य नड़े मुड़े-मुड़े
सैन्येर पायेर भरे कम्पिता मेदिनी ✻ दु'भायेर संगे ठाट आट-अक्षौहिणी
संग्राम करिते यात्रा करे दुइ वीर ✻ देखादेखि हैल गिया गड़ेर बाहिर
दुर्ज्जय-शरीर-दोंहे पर्व्वत-आकार ✻ पश्चिम-दुयारे गेल करि मार-मार
राक्षस-वानर ठाट मिशामिशि हैल ✻ गाछ-पाथर ल'ये कपि जुझिते आइल ३६

तबे दुइ दल, कोपेते पागल, परस्परे हारा हारि।
अनल-निकरे, विरल-तिमिरे, करितेछे मारामारि ॥
शत निशाचर, धरि धनु:शर, कठोर कुठार धरि।
वानर उपरे, सम्प्रहार करे, चक्र गदा असि मारि ॥

दशानन ने बुलवा भेजा। दोनों भाइयों ने आकर सिर नवाया। रावण ने कहा, देखो बेटे, लंका का हाल देखो। तुम दोनों भाई बड़े पराक्रमी हो—तुम दोनों भाइयों के पराक्रम से त्रिभुवन पराभूत है। तुम्हारे पिता के बाहुबल के कारण ही मैं विजयी बना रहा। आज मैं कुम्भकर्ण के शोक से आँसुओं में डूबा हुआ हूँ। कुम्भकर्ण के बिना लंकापुरी सूनी है। मुझको लगता है कि इस नर-वानर के युद्ध में मेरा निस्तार नहीं। इन्द्र के साथ युद्ध में तुम लोगों के पिता ने मुझे उबारा था। अब तुम लोग मुझको नर-वानरों के हाथ से बचाओ। वही पुत्र कुल का अलंकार माना जाता है जो पिता के शत्रुओं का हनन कर पितृ-ऋण चुका देता है ॥ ३५ ॥

राजा का आदेश पाकर दोनों राक्षस जाकर रथ पर सवार हो गये। हाथी-घोड़े सहित सारी सेना आन्दोलित होने लगी। सेना की पदचाप से पृथ्वी थरथराने लगी। दोनों भाइयों के साथ आठ अक्षौहिणी सेना चली। दोनों वीर संग्राम करने चल पड़े, गढ़ से बाहर निकलने पर दोनों का सामना हुआ। दोनों के ही शरीर पर्वत-समान दुर्जय थे। वे मार-काट मचाते हुए पश्चिमद्वार पर जा धमके। राक्षसों और वानरों की सेनाएँ आपस में गुथ गयीं। पेड़-पत्थर लेकर वानर लड़ने के लिए आ गये ॥ ३६ ॥

तब दोनों दल क्रोध से उन्मत्त हो एक दूसरे को हराने के लिए यों मार करने लगे मानों अनल और अन्धकार में संग्राम छिड़ा हो। सैकड़ों निशाचर धनुष-बाण और कठोर कुठार लेकर वानरों पर प्रहार करने लगे। चक्र, गदा और तलवार का भी प्रयोग करने लगे। इससे किसी का मुंड

ताहे कारो मुण्ड, कारो भुजदण्ड, कारो बुक फाटे बले।
कारो उरु-मूल, काहारो लाङ्गूल, कारो हस्त-पद-गले ॥
कोनजने शर, बिन्धिया जर्ज्जर, करितेछे कोनजन।
कारो गदाघाते, भङ्गे बुक-हाते, खड्गे करे विदारण ॥
ताहे कपि सब, करि घोर-रव, गिरि-तरु-शिलागण।
फेलि फेलि मारे, राक्षस-उपरे, करे उल्का-निक्षेपण ॥
ताहे चूर्ण करे, कत रात्रिचरे, कारो भाङ्गे शिर-बुक।
कारो उल्कानले, दहे मुण्ड-गले, कारो मुख सकौतुक ॥
केह मुष्ट्याघाते, भांगे कारो माथे, बुक भांगे पदाघाते।
दशन-नखरे, विदारण करे, बुक पाश पेट माथे ॥
काहारो घोड़ारे, आछाड़िया मारे, कोन कपि कारो गजे।
केह मारि लाथे, भांगे कारो रथे, ससारथि-हय-ध्वजे ॥
कत निशाचर, त्यजि असि-शर, हाताहाति रण करे।
केह मारे चड़, केह वा चापड़, केह मुटकी प्रहारे ॥
पाँच-सात-जन, राक्षस मिलन, धरि एक कपिवरे।
अस्त्रादि-प्रहारे, छिन्न-भिन्न क'रे, काहारो पराण हरे ॥
सेइ-अनुसारे, एक निशाचरे, अनेक वानर धरि।
मारे चड़-कील, बहुतर शिल, विदारये नखे करि ॥

कटा तो किसी का भुजदंड और किसी का वक्ष विदीर्ण हुआ, किसी की जाँघ कट गई तो किसी की पूँछ, कोई हाथ-पैरों से विहीन हो गया, किसी के गदाघात से किसी का सीना या हाथ टूटा तो कोई खड्ग से अंग-प्रत्यंग काटने लगा। इधर सारे कपि घोर नाद करते हुए राक्षसों पर इस प्रकार पेड़ और पत्थर वरसाने लगे मानों उल्कापात हो रहा हो। इससे कितने ही निशाचरों के सिर और शरीर टूटे। उल्का की आग से कितने ही निशाचर मर गये। कोई घूँसा मारकर सिर तोड़ने लगा तो कोई पदाघात से वक्ष। दाँत और नाखूनों से कोई सीना, पेट, सिर चीरने लगा। कोई कपि किसी के घोड़े को उठाकर जमीन पर पटक देता तो कोई कपि किसी हाथी को। कोई तो लात जमाकर सारथी, अश्व और ध्वजा समेत रथ को तोड़ देता। कितने ही निशाचर धनुष-वाण और असि छोड़कर हाथापाई का युद्ध करने लगे। कोई चपेटाघात करता तो कोई झाँपड़ मारता और कोई मुक्का। पाँच-सात राक्षस मिलकर एक वानर को धर दबाते। अस्त्र आदि के प्रहार से उसका अंग छिन्न-भिन्न कर उसके प्राण हर लेते। इसी प्रकार कई कपि एक निशाचर को पकड़कर घूँसा-मुक्का मारते और नाखून से उसको चीर डालते। ऐसे तुमुल समर से घवड़ा कर कपि जाम्बवान रोने लग गये। हाय-हाय अब तो

एरूप तुमुल, समरे व्याकुल, कान्दे कपि जाम्बवान।
म'ल रे म'ल रे, गेल रे गेल रे, आर ना रहिल प्राण॥
बड़ वीरसव, करि घोर-रव, कहितेछे वार-वार।
धर धर धर, मार मार मार, पुना राखिव रि आर॥
एइ त प्रकारे, तुमुल समरे, मातिया कोपेर मरे।
कृत्तिवास भणे, राम-दशानने, सेना हानाहानि करे ३७।

तार मध्ये वज्रकण्ठे-नामे निशाचर ※ मारिलेक गाढ़ गदा अंगद-उपर
किछुकाल काँपि ताहे कपीन्द्र-कुमार ※ सुस्थ हये शीघ्र पुनः कैल आगुसार
करे धरि एकखान शिखरि-शिखर ※ मारिलेक वज्रकण्ठ-मस्तक-उपर
ताहार प्रहारे प्राण परित्याग करि ※ वज्रकण्ठ-वीर पड़े वसुधा-उपरि
ताहा देखि कोपेते कम्पित संकम्पन ※ रणे प्रवेशिल करि रथे आरोहण
सेह वेगे वृष्टि करि वाण बहुतर ※ अंगदेर अंगगणे करिल जर्ज्जर
शत्रुसुत-सुत सहि से-सकल शरे ※ लाफ दिया उठे तार रथेर उपरे
तार कर हइते कोदण्ड काड़ि लैया ※ चरण-चापने तारे फेलिल भांगिया
पदाघाते रथखान करि प्रमथन ※ नाशिला नखरे करि तुरंगमगण
स्यन्दन छाड़िया तबे सेइ संकम्पन ※ आकाशे उठिल खड्ग करिया धारण
ताहादेखि महाबल बालिर नन्दन ※ लम्फ दिया तार पिछे करिल धावन
किञ्चित् दूरेते तारे बले करे धरि ※ काड़िया लइल तार खड्ग आर फरी

प्राण वचने वाले नहीं। वड़े-बड़े वीर घोर-नाद करते हुए वार-वार कहने लगे—पकड़ो-पकड़ो, मारो-मारो, शत्रु एक भी न वच सके। कृत्तिवास कहते हैं कि इसी प्रकार घोर समर में प्रचंड क्रोध में उन्मत्त हो राम और दशानन की सेना एक दूसरे पर प्रहार करने लगी॥ ३७॥

उनमें एक वज्रकंठ नाम का निशाचर था जिसने अंगद के शरीर पर गदा का पूर्ण प्रहार किया। इससे कपीन्द्रकुमार कुछ देर के लिए लड़खड़ा गये किन्तु शीघ्र ही स्वस्थ होकर आगे वढ़े। एक पर्वत को चोटी समेत उखाड़ कर उन्होंने वज्रकंठ के सिर पर दे मारा। उस प्रहार से वीर वज्रकंठ ने प्राण त्याग दिया और धरती पर जा गिरा। यह देखकर क्रोध से काँपते हुए संकम्पन ने रथ में सवार हो रणक्षेत्र में प्रवेश किया। उसने वेग से वाण वरसाते हुए अंगद के अंग-अंग को छलनी वना दिया। शक्र-सुत (वालि) के पुत्र ने इन वाणों को सहन किया, फिर उछलकर वह उस रथ पर चढ़ गया। उसके हाथों से धनुष छीन कर पैरों से दवाकर तोड़ डाला। पदाघात से रथ को चूर्ण-विचूर्णकर नखों से उसने अश्वों को मार डाला। तब रथ छोड़ कर संकम्पन ने खड्ग ले लिया और आकाश में चढ़ गया। यह देखकर महावली वालीनन्दन (अंगद) भी कूद कर उसके पीछे दौड़ा। कुछ ही दूर

तबे सिंहनाद करि अति कुतूहले * सेइ खड्ग धरि कोप दिला तार गले
ताहे छिन्न ह'ये सेह येन उपवीत * आकाशे हइते हैल भूतले पतित
तबे सिंहनाद करि बालिर कुमार * भूतले नामिल शव्द करि मार मार
तबे शोणिताक्ष-वीर लौह-गदा धरि * उपस्थित हइल अंगद-बराबरि
प्रजंघ यूपाक्ष नामे आर दुइजन * रथे चड़ि तार काछे करिल धावन
श्रीमैन्द द्विविद दुइ वीर ता' देखिया * अंगदेर दुइ पाशे दाँड़ाल आसिया
तबे सेइ निशाचर-तिनजन-संगे * तिन कपि-वीर युद्ध आरम्भिल रंगे
नानावृक्ष उपाड़िया कपि तिनजन * करितेछे तिन निशाचरे निक्षेपण
ताहा देखि खड्ग धरि राक्षस प्रजंघ * खण्ड-खण्ड करि काटे सेइ वृक्षसंघ
तबे सेइ तिनजन शाखामृगवर * निक्षेप करिला रथ-भुरंग-कुञ्जर
निरीक्षण करिया यूपाक्ष रणे दक्ष * काटिल से-सब एड़ि शर लक्ष-लक्ष
तबे पुनः श्रीमैन्द द्विविद वालिसुत * वर्षण करये वृक्ष बहुत-वहुत
शोणिताक्ष से-सकल सत्वर हइया * चूर्ण करि दिल गुरु गदा घुराइया
परेते प्रजंघ खरशान खड्ग धरि * बालिपुत्रे बधिवारे आसे त्वरा करि
निकटे निरखि तारे तारार तनय * सन्धान करिल शालशाखी अतिशय
सेइ त तरुते तारे ताड़न करिला * आर तार बाहुमूले मुटकि मारिला
प्रजंघेर बाहु ताहे विभिन्न हइल * हस्त हैते खड्गखान खसिया पड़िल

पर उसने उसको पकड़ लिया और अपनी शक्ति से उसके खड्ग और ढाल छीन लिये। फिर सिंहनाद करते हुए उसी खड्ग से उसने उसके गले पर वार किया, जिससे उसका गला जनेऊ की तरह कट कर गिरा और वह आकाश से धरती पर आ गिरा। फिर सिंहनाद करते हुए वालीनन्दन धरती पर मार-मार करते हुए उतरे। फिर वीर शोणिताक्ष लौहगदा लेकर अंगद के सामने उपस्थित हुआ। तब प्रजंघ और यूपाक्ष नामक और दो राक्षस रथ पर सवार हो उनकी ओर लपके। यह देखकर श्रीमैन्द और द्विविद नामक दो वीर, अंगद के दोनों ओर आकर खड़े हो गये। फिर उन तीनों निशाचरों के साथ तीन कपि-वीर युद्ध करने लग गये। तीनों कपि तरह-तरह के वृक्ष उखाड़ कर तीन निशाचरों पर फेंकने लगे। यह देखकर राक्षस प्रजंघ ने खड्ग लेकर उन वृक्षों को खंड-खंड कर दिया। तब उन तीनों शाखा-मृगों (वानरों) ने रथ, तुरंग और कुंजर फेंकना आरम्भ कर दिया। रण में दक्ष यूपाक्ष ने लाख-लाख वाण फेंककर उनको नष्ट किया। तो फिर श्रीमैन्द, द्विविद और अंगद अनेक वृक्ष फेंकने लग गये। शोणिताक्ष ने उन सभी को भारी गदा घुमाते हुए चूर्ण कर डाला। बाद में प्रजंघ तेज खड्ग लेकर बालीपुत्र का वध करने के लिए दौड़ा। तारा के तनय (अंगद) ने उनको निकट देख एक शाल वृक्ष उखाड़ कर उन पर दे मारा। उस वृक्ष की चोट के अतिरिक्त उसकी बाँह पर उसने एक मुक्का भी जमा दिया जिससे

स्थिर ह'ये प्रजंघ परेते किछुकाले ※ मारिल प्रबल मुष्ठि अंगद-कपाले
ताहे दुइ-दण्ड-काल रहि अचेतन ※ चेतन पाइल पुनः बालिर नन्दन
सुगभीर सिंहनाद करि कोपभरे ※ प्रजंघ-उपरे मुष्ठि मारिल निर्भरे
ताहाते विदीर्ण हैल महामुण्ड तार ※ पड़िल से, येन वज्राहत शैलसार३८
क्षीणशर हइया यूपाक्ष खड्ग धरि ※ मारिवारे जाय तथा रथ परिहरि
तबे से यूपाक्ष वीरे मुटकि मारिया ※ धरिल श्रीमैन्द तारे बाहुते बेड़िया
एहेन समये शोणिताक्ष महासार ※ द्विविदेर वक्षे कैल गदार प्रहार
ताहे हत हैया सेइ अश्वीर नन्दन ※ किछुकाल रहिला कातर अचेतन
पुनः शोणिताक्ष जबे घुराय गदारे ※ सेइकाले धरि काड़ि लइल ताहारे
तबे त यूपाक्ष शोणिताक्ष दुइजन ※ श्रीमैन्द-द्विविद-संगे करे वहु-रण
केह कोनजने कभु करे आकर्षण ※ केह कोनजने करे दृढ़ आलिंगन
केह कोनजने कभु ठेलि ल'ये जाय ※ केह कोनजने कभु बलेते घुराय
केह कोनजने कभु तुले उपरेते ※ केह कोनजने कभु फेले धरणीते
मध्ये मध्ये मुष्ट्याघात-कराघात करे ※ कभु विदारण करे दशन-नखरे
एइरूपे किछुकाल तुल्य हैल रण ※ परे अति कुपिल कपीन्द्र दुइजन २३९

प्रजंघ की बाँह टूट गई और हाथ से खड्ग नीचे गिर गया। कुछ देर में प्रजंघ स्थिर हुआ तो अंगद के माथे पर उसने एक घूँसा जमा दिया। इससे दो दंड अचेतन रहने के बाद बालीनन्दन होश में आए। क्रोध से सिंहनाद करते हुए उन्होंने प्रजंघ पर घूँसा जमाया। इससे उसका महामुंड टूट गया और वह वज्र के आघात से विदीर्ण पर्वत की भाँति गिर पड़ा ॥ ३८ ॥

तब धनुष-बाण से रहित होकर यूपाक्ष ने खड्ग थाम लिया और रथ का परित्याग कर उसको मारने के लिए चल पड़ा। तब श्रीमैन्द ने वीर यूपाक्ष को मुक्का मार उसे बाँहों से जकड़ लिया। ऐसे ही समय बलवान शोणिताक्ष ने द्विविद के वक्ष पर गदा का प्रहार किया। उससे घायल होकर अश्विनी-कुमार का नन्दन द्विविद कुछ देर तक अचेतन पड़ा रहा। जब शोणिताक्ष ने फिर गदा घुमाई तो उसने उसको पकड़ कर छीन लिया। फिर तो यूपाक्ष और शोणिताक्ष दोनों मिलकर श्रीमैन्द और द्विविद के साथ मल्लयुद्ध करने लगे। कोई किसी को कभी खींचता तो कोई किसी को बाहुपाश में कस कर बाँध लेता। कोई किसी को धकेलता हुआ ले जाता तो कोई किसी को बल से घुमाने लग जाता। कोई किसी को ऊपर उठा लेता तो कोई किसी को धरती पर पटक देता। कभी-कभी वे झाँपड़ और चाँटा जमाते तो कभी दाँत और नाखून से घायल करने लगते। इस प्रकार कुछ देर तक बराबर लड़ाई चलती रही, यहाँ तक कि दोनों कपीन्द्र अत्यन्त क्रोधित हो उठे ॥ २३९ ॥

तार मध्ये शोणिताक्षे द्विविद-वानर ❋ नखे विदारण करि करिला जर्ज्जर
आर तार दुइ भुज धरि घुराइया ❋ मारिलेक ताहारे भूतले आछाड़िया २४०
श्रीमैन्द यूपाक्ष-सने करि वाहु-रण ❋ परे तार भुजे धरि करिल चापन
ताहाते यूपाक्ष करि शब्द घोरतर ❋ चलि गेल देखिवारे प्रेत-पुरीश्वर ४१
तबे विरूपाक्ष-नामे एक निशाचर ❋ कपि-सैन्य-उपरे वर्षन करे शर
सहिते ना पारि तार शरेर प्रहार ❋ समर त्यजिया कपि पलाय अपार
ताहा देखि मैन्द एक महीधर धरि ❋ निक्षेपिल विरूपाक्ष-मस्तक-उपरि
ताहे हत ह'ये विरूपाक्ष निशाचर ❋ भूतले पड़िल, येन छिन्न धराधर ४२
तबे मैन्द महाघोर सिंहनाद करि ❋ वधिते लागिला मुष्टि मारि सब अरि
ताहा देखि विद्युन्माली-नामे जातुधान ❋ रथे थाकि वृष्टि करे बहुतर बाण
दशदिक् आच्छादन करि सेइ शरे ❋ विन्धिते लागिल यत भल्लूक-वानरे
तार शराघाते केह स्थिर हैते नारे ❋ वासना करये रण छाड़ि पलावारे
ताहा निरखिया नल ल'ये तरु-शिला ❋ विद्युन्माली बधिवारे वर्षिते लागिला
सेइ शत-शत शर करिया वर्णन ❋ सेइसब शाखी शिला करिला कर्त्तन
पुनश्च नलेर प्राण विनाश करिते ❋ कोदण्ड कर्षिया काण्ड लागिल एड़िते

तब द्विविद वानर ने शोणिताक्ष को नखों के आघात से लहूलुहान कर दिया। फिर उसके दोनों हाथों को पकड़ कर उसको घुमाया और धरती पर पटक कर मार डाला ॥ २४० ॥

श्रीमैन्द ने यूपाक्ष के साथ कुछ देर मल्लयुद्ध किया। फिर उसको बाहों से बाँध कर दबाने लग गया। इससे यूपाक्ष ने घोर चीत्कार कर प्रेतपुरी के प्रभु (यम) को देखने के लिए प्रस्थान किया ॥ ४१ ॥

फिर विरूपाक्ष नामक एक निशाचर वानरों पर बाण बरसाने लगा। उसके बाणों का प्रहार सह न सकने के कारण बहुत सारे कपि समरभूमि त्याग कर भागने लग गये। यह देखकर मैन्द ने एक पहाड़ पकड़ कर विरूपाक्ष के सिर पर फेंका। इससे घायल होकर निशाचर विरूपाक्ष यों भूमि पर जा गिरा मानों पहाड़ टूट पड़ा हो ॥ ४२ ॥

तब मैन्द घोर सिंहनाद करते हुए घूँसा मार-मार कर सारे शत्रुओं का वध करने लगा। यह देखकर विद्युन्माली नामक राक्षस रथ पर चढ़ कर अनेक बाण बरसाने लगा। उन बाणों से दशों दिशाएँ छा गईं, भालू और वानरों के शरीर में वे बाण जाकर चुभने लगे। उसके शराघात के सामने कोई टिक नहीं पाता और सभी का जी करने लगता कि रण छोड़कर भाग जायँ। यह देखकर नल वृक्ष और शिला लेकर विद्युन्माली का वध करने के लिए उस पर बरसाने लगा। वह विद्युन्माली भी शत-शत बाणों की वर्षा करते हुए उन वृक्ष और शिलाओं को काटता रहा। फिर नल के प्राण लेने

से-सकल शरे विश्वकर्म्मार नन्दन ※ शाल-शिला फेलाइया करिल वारण
एइरूपे नल वृष्टि करे वृक्षगण ※ विद्युन्माली करे ताहा वाणेते छेदन
विद्युन्माली यावतीय शर-वृष्टि करे ※ नल ताहा निवारये पादप-प्रस्तरे
एइरूपे किछुकाल सेइ दुइजन ※ करिलेक समभावे घोरतर रण
तबे सेइ निशाचर निःशर हइया ※ कहितेछे नल-प्रति चातुरी करिया
विश्वकर्मा-पुत्र, आजि तोमा-सह रणे ※ बड़इ आनन्द आमि पाइलाम मने
देखिया तोमार वल-विक्रम अपार ※ इच्छा हय बाहुयुद्ध करिते आमार
बलये विश्वकर्म्मार नन्दन ताहारे ※ आमारो वासना एइ अन्तर-माझारे
ताहा शुनि रथ हैते राक्षस नामिल ※ तबे दुइ वीरे बाहुयुद्ध आरम्भिल
हाते-हाते भुजे-भुजे कपाले-कपाले ※ बुके-बुके प्रहार करये दुइ शाले
उन्मत्त मातङ्ग येन दशने-दशने ※ युद्ध करे हेन शब्द हय घने-घने
वज्रेर समान अंग उभयेर हय ※ काहारो प्रहारे कोनजन व्यग्र नय
कभु बाहु-प्रहार करये कोनजन ※ वज्रेते करये येन विकट निःस्वन
कभु नले ठेलि ल'ये जाय विद्युन्माली ※ कभु विद्युन्मालीरे से नल बलशाली
कभु आकर्षये, कभु करे उत्तोलन ※ कभु चापि धरे, कभु करये पातन
मुष्टि-दन्त-नखे कभु करये प्रहार ※ दुइ सिंहे करे येन युद्ध अनिवार

के लिए वह धनुष खींच कर शर-वर्षा करता रहा। विश्वकर्मा-नन्दन नल ने उन वाणों का निवारण पादप-प्रस्तर फेंक कर किया। इस प्रकार नल ने जितने वृक्ष फेंके विद्युन्माली ने उनको वाणों से काट डाला। और विद्युन्माली ने जितने वाण वरसाये नल ने उनका निवारण पादपों और प्रस्तरों से किया। इस प्रकार कुछ समय तक ये दोनों समान रूप से घोरतर युद्ध करते रहे। फिर जब उस राक्षस के पास सारे वाण चुक गये तो उसने चतुराई से नल से कहा, हे विश्वकर्मा-नन्दन, आज तुम्हारे साथ युद्ध करते हुए मुझको बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। तुम्हारा वल-विक्रम देखकर तुम्हारे साथ बाहुयुद्ध करने की इच्छा हो रही है। विश्वकर्मा के पुत्र ने भी जवाब दिया, मेरी भी आन्तरिक अभिलाषा ऐसी ही है। यह सुनकर राक्षस रथ से उतर आया और दोनों में बाहु-युद्ध छिड़ गया। हाथ हाथ पर, और बाँह बाँह पर, माथा माथे पर और वक्ष वक्ष पर, मानों दो शालवृक्ष एक दूसरे पर प्रहार करने लगे। मानों दो मत्त-मातंग हों, यों दाँत किटकिटा कर युद्ध करने का शब्द होने लगा। दोनों के अंग ही वज्र के समान हैं। किसी के भी प्रहार से कोई व्याकुल नहीं होता। कभी कोई हाथों से ऐसा प्रहार करता मानों वज्रपात का घोर नाद हुआ। कभी नल को धकेलता हुआ विद्युन्माली ले जाता, तो कभी बलशाली नल विद्युन्माली को। कभी घसीटते तो कभी ऊपर उठा लेते, कभी धर दबाते तो कभी पटक देते। कभी नख, दन्त और मुष्टि से प्रहार करते। दो

एइरूपे दुइ-दण्डकाल दुइजन ❋ करिलेक न्यूनाधिक्य-शून्य वाहु-रण
तवे त नलेर वल ना पारि सहिते ❋ विद्युम्माली हस्त तार छाड़िल श्रान्तिते
पुनर्व्वार रथे शीघ्र करि आरोहण ❋ अति-घोर शक्ति एक करिल क्षेपण
ताहा देखि नल एक गिरिश्रृंग धरि ❋ विद्युम्माली-उपरे छाड़िल क्रोध करि
सेइ श्रृंगे पाड़े रथ सारथि-सहित ❋ विद्युम्माली त्यजे प्राण हइया चूर्णित ४३
तबे भीत ह'ये यत निशाचर गण ❋ कुम्भकर्ण-पुत्र-काछे करे पलायन
ताहा देखि रणमत्त वानर-निकर ❋ घन-घन सिंहनाद करे घोरतर
ताहा देखि कुम्भ-वीर अधिक कुपिल ❋ स्वसैन्ये सान्त्वना करि समरे साजिल
कुम्भ-वीरे देखिया पलाय कपिगण ❋ महेन्द्र देवेन्द्र आर वालिर नन्दन
साहसे करिया भर गेल तिनजन ❋ कुम्भेर सहित गिया आरम्भिल रण
महेन्द्र देवेन्द्र तवे दुइ वीरवर ❋ गाछ-पाथर ल'ये फेले कुम्भेर उपर
गाछ-पाथर काटि पाड़े चोख-चोख शरे ❋ बिन्धिया जर्ज्जर कैल महेन्द्र-वानरे
महेन्द्र कातर देखि देवेन्द्र चिन्तित ❋ त्रिश-योजन गिरि एक आनिल त्वरित
त्रिश-योजन पर्व्वत एड़िल दिया टान ❋ कुम्भ-वीर-वाणेते हइल खान-खान
बाणेते पर्व्वत काटि खान-खान करे ❋ बिन्धिया जर्ज्जर करे देवेन्द्र-वानरे
महेन्द्र देवेन्द्र दोंहे हैल अचेतन ❋ कोपेते पर्व्वत एड़े वालिर नन्दन

सिंह मानों लगातार लड़ते जा रहे हैं, इस प्रकार वे दोनों दो दंड से अधिक समय तक बराबरी का बाहु-युद्ध करते रहे। फिर नल का बल सहन न कर सकने से विद्युन्माली ने थक कर अपने हाथ लटका लिये। फिर फुरती से रथ पर सवार होकर उसने एक शक्ति फेंक कर मारी। यह देखकर नल ने पर्वत की एक चोटी उखाड़ कर विद्युन्माली के ऊपर दे मारी। उस चोटी के प्रहार से रथ और सारथी के सहित विद्युन्माली ने चूर्ण-विचूर्ण होते हुए प्राण त्याग किया ॥ ४३ ॥

तब भयभीत होकर सारे राक्षस कुम्भकर्ण-पुत्र की ओर भागे। यह देख कर सारा वानर-समुदाय जोर से सिंहनाद करने लग गया। यह देखकर वीर कुम्भ अत्यन्त क्रोधित हुआ और अपनी सेना को सँजो कर रण के लिए तैयार हुआ। वीर कुम्भ को देखकर सारे कपि भागने लग गये। यह देखकर महेन्द्र, देवेन्द्र और वालीनन्दन साहस करते हुए आगे बढ़े। आगे बढ़कर वे कुम्भ के साथ युद्ध करने लग गये। दोनों वीर महेन्द्र और देवेन्द्र पेड़-पत्थर लाकर कुम्भ पर फेंकने लगे। पैने-पैने वाणों से पेड़-पत्थर को काट कर (कुम्भ ने) महेन्द्र वानर को वाणों से छेद दिया। महेन्द्र को कातर देखकर देवेन्द्र चिन्तित हुआ और तीस योजन वाला एक पर्वत झटपट उठा लाया। तीस योजन वाला वह पर्वत जब उसने फेंक कर मारा तो कुम्भ-वीर के वाणों से वह खंड-खंड हो गया। वाणों से पर्वत को खंड-खंड काट डालने के बाद

अंगदेर पर्व्वत वाणेते फेले केटे ❊ शतबाण अंगदेर मारिल ललाटे
वाणेते अङ्गद-वीर डाके परित्राहि ❊ सकल वानर गेल रघुनाथ ठाँहि
तिनवीर अचेतन शुनि एइ कथा ❊ मनेते श्रीरामचन्द्र पाइलेन व्यथा ४४
ऋषभ कुमुद आर सुषेण सेनापति ❊ तिनवीरे रघुनाथ करिला आरति
श्रीरामेर आज्ञा पेये चले तिनजन ❊ आकाश छाइया करे वृक्ष-वरिषण
कुपिल से कुम्भ-वीर पूरिया सन्धान ❊ तिनवीरेर गाछ-पाथर करे खान-खान
जर्ज्जर हइल तारा कुम्भ-वीर-वाणे ❊ भय पेये तिनजन भंग दिल रणे ४५
तिनवीर पलाइया सुग्रीवेरे कय ❊ रुषिल सुग्रीव-राजा संग्रामे दुर्ज्जय
कुपिया सुग्रीव-वीर एकलाफे जाय ❊ पाकल करिया आँखि कुम्भ-वीरे चाय
कुम्भ बले, वानरा रे, वेड़ास डाले डाले ❊ तोर एत विक्रम ना छिल कोनकाले
सुग्रीव बलिछे, द्वन्द्व नाहि कारो सने ❊ ना जान विक्रम तुमि एइ से कारणे
तोर सने रणे करि विक्रम-परीक्षा ❊ पड़िलि आमार हाते, नाहि तोर रक्षा
यमराज जेगे व'से, आछे तोर तरे ❊ देखाव विक्रम आजि, जावि यमघरे
तोर पिता कुम्भकर्ण, से जाने विक्रम ❊ क्षणेक विलम्ब कर, देखाइव यम

देवेन्द्र वानर को उसने वाणों से विंध डाला। महेन्द्र और देवेन्द्र दोनों जब अचेतन हो गये तो बाली के नन्दन ने क्रोध से एक पर्वत फेंका। वाणों से अंगद के फेंके हुए पर्वत को खंड-खंड करने के बाद उसने अंगद के ललाट पर सौ वाण मारे। वाणों के मारे जब अंगद त्राहि-त्राहि मचाने लगा तो सारे वानर रघुनाथ के पास गये। यह सुनकर कि तीनों वीर अचेतन हो गये हैं श्रीरामचन्द्र व्यथित हुए ॥ ४४ ॥

तब रघुनाथ ने ऋषभ, कुमुद और सुषेण सेनापति को आदेश दिया। श्रीरामचन्द्र की आज्ञा पाकर तीनों वीर चल पड़े। उन्होंने इस प्रकार वृक्ष वरसाना शुरू किया कि आकाश छा गया। इससे कुम्भवीर अत्यन्त क्रोधित हो वाण चलाने और तीनों वीरों द्वारा फेंके पेड़-पत्थरों को खंड-खंड करने लगा। कुम्भवीर के साथ युद्ध में घायल हो वे तीनों ही डर कर भाग खड़े हुए ॥ ४५ ॥

तीनों वीर भाग कर राजा सुग्रीव के पास गये और सारा ब्योरा सुनाया। संग्राम में दुर्जय राजा सुग्रीव यह सुनकर अत्यन्त रुष्ट हुए। रोष से एक-छलाँग में राजा सुग्रीव वहाँ पहुँचे और आँखें तरेर कर कुम्भवीर को देखने लगे। कुम्भ कहता, अरे वानर, तू डाली-डाली पर विचरता रहता है, तुझमें इतना पराक्रम तो कभी नहीं था। सुग्रीव ने कहा, किसी के साथ हम लोगों का झगड़ा नहीं था इसीलिए तुझको हमारे पराक्रम का पता नहीं चला। तेरे साथ युद्ध में पराक्रम की परीक्षा हो रही है, तू, मेरे हाथों में आ गया है अब तेरी रक्षा नहीं। तेरे लिए यमराज प्रतीक्षा में जागते हुए बैठे हैं, आज मैं

कुपिया से कुम्भ-वीर तीक्ष्ण वाण जोड़े ※ तिनशत वाण राजा सुग्रीवेरे एड़े
वाण खेये सुग्रीव ये चिन्तित अन्तर ※ लाफ दिया पड़े तार रथेर उपर
धनुक धरिया टाने, केड़े निते नारे ※ रथ हैते कुम्भ-वीर फेले सुग्रीवेरे
आछाड़ खाइया राजा हैल अचेतन ※ चेतन पाइया पुनः बले ततक्षण
तोर बापेर जाठा ये निलाम एकहाते ※ तोर हातेर धनुखान नारिनु छाड़ाते
बापेर समान तुइ वीर-चूड़ामणि ※ इन्द्रजितार सम तोर धनुक बाखानि
कुम्भ-वीर बले, धनु दूरे परिहरि ※ रिक्तहस्ते आइस दु'जने युद्ध करि
अस्त्र फेलि दुइजने करे हुड़ाहुड़ि ※ हुड़ाहुड़ि घुचिले लागिल जड़ाजड़ि
कुम्भ-वीर चापड़ मारिल बाहुबले ※ पड़िल सुग्रीव-राजा समुद्रेर जले
रामेर किङ्कर देखि सागर गभीर ※ मध्ये चड़ा पड़िल, हइल अल्प नीर
माटीते दाण्डाये फिरे आइल एकलाफे ※ कुम्भ-वीर विक्रमे सुग्रीव-राजा काँपे
पुनः कोपे कुम्भ-वीर मुष्ट्याघातमारे ※ पड़िल सुग्रीव-राजा दुर्ज्जय-प्रहारे
चैतन्य हाराय, मुखे उठे रक्त-फेना ※ सुमेरु-पर्व्वते येन पड़िल झञ्झना
संवित् पाइया उठि वानरेर नाथ ※ कुम्भ-वीर उपरे करिल पदाघात

अपना पराक्रम दिखाऊँगा और तू यमसदन जायेगा। तेरा पिता कुम्भकर्ण मेरा पराक्रम जानता था, थोड़ा सा ठहर जा, तेरी यम से भेंट करा दूँ। तब कुपित होकर कुम्भवीर ने पैने वाण चलाये और तीन सौ वाण सुग्रीव को आ लगे। वाण के आघात से सुग्रीव चिन्तित हुआ और कूद कर उसके रथ पर चढ़ गया। रथ पर चढ़कर वह उसका धनुष पकड़ कर खींचने लगा, लेकिन छीन न सका। रथ से कुम्भवीर ने सुग्रीव को नीचे गिरा दिया, नीचे गिर कर सुग्रीव अचेतन हो गया। चेतना पाकर फिर उसने कहा, तेरे बाप के हाथ से मैंने शेल एक हाथ से छीन लिया था और तेरे हाथ का धनुष मैं दोनों हाथों से न छीन सका। तू अपने बाप के समान ही वीर-चूड़ामणि है और इन्द्रजीत जैसा ही तेरे धनुष की ख्याति है। तब वीर कुम्भ ने कहा, आओ धनुष को फेंककर हमलोग खुले हाथ लड़ें। तब अस्त्र फेंक कर दोनों दाँव-पेच करने लगे। हाथापाई करते-करते दोनों में गुत्थम-गुत्था शुरू हो गया। कुम्भवीर ने एक चपेट मारा तो राजा सुग्रीव समुद्र के जल में जा गिरे। राम के किंकर को देखकर गहरा समुद्र उस स्थान पर छिछला हो गया। जमीन पर खड़े होने के बाद सुग्रीव फिर एक छलाँग में वहाँ लौट आया। कुम्भ-वीर के पराक्रम से राजा सुग्रीव काँपने लगे। फिर क्रुद्ध होकर कुम्भवीर ने सुग्रीव पर मुष्टि-प्रहार किया, मार खाकर राजा सुग्रीव फिर भूमि पर गिर पड़े। उनके मुँह से खून और झाग निकलने लगा। चेतना खोकर वे यों गिरे मानो सुमेरु पर्वत गिर पड़ा हो। जब वानरों के पति सुग्रीव फिर होश में आए तो उठ खड़े हुए और कुम्भवीर पर पदाघात किया। गुस्से में आकर

महाकोपे कुम्भ-वीर धरे सुग्रीवेरे * दुइजने मल्लयुद्ध, केह नाहि हारे
दुईसिंह युद्धे येन छाड़े सिंहनाद * दुइ वीरे महायुद्ध, नाहि अवसाद
लाफ दिया सुग्रीव ताहार रथे च'ड़े * दुइ मातंगेर दन्त दु-हाते उपाड़े
लइया हस्तीर दन्त कुम्भ-वीरे हानि * दन्ताघाते कुम्भेर जर्ज्जर हैल प्राणी
ऊर्द्धते कुम्भेरे तुलि मारिल आछाड़ * भांगिल माथार खुलि, चूर्ण हैल हाड़ ४६
देखिया निकुम्भ-वीर भ्रातार निधन * सुग्रीवे रुषिया जाय करिया तर्ज्जन
निकुम्भेर मुषल से पर्व्वत-सोसर * मुषल मारिते जाय सुग्रीव-उपर
दम्भ करि मुषलेते घन देय पाक * घुराय मुषल येन कुलालेर चाक
विक्रम करिया छुटे संग्रामेर स्थले * प्रवल आगुन येन घृत पेले ज्वले
निकुम्भेर विक्रम देखिया लागे डर * भये पलाइया गेल सुग्रीव-वानर ४७
भयेते सुग्रीव-राजा नहे आगुयान * सुग्रीवेर भंग देखि रोषे हनूमान
सेवक थाकिते तोर राजा-सने रण * तोते मोते जुझि, देखि मरे कोनजन
निकुम्भ कहिछे, वेटा घरपोड़ा शोन * तोरे पेले आर नाहि चाहि अन्यजन
एत यदि दुइजने हैल गालागालि * दुइजने युद्ध बाजे, दोंहे महाबली
लोहार मुषल छिल निकुम्भेर हाते * रुषिया मारिल वीर हनूमान-माथे
हनूमानेर माथा येन वज्रेर समान * माथाय मुषल-गोटा हैल खान-खान

कुम्भवीर सुग्रीव से लिपट गया और दोनों में मल्लयुद्ध होने लगा; उनमें कोई भी हार नहीं मानता था। मानों दोनों ही युद्ध में रत दो सिंह हों, वे बार बार सिंहनाद करने लगे। दोनों वीरों में महायुद्ध होने लगा, उन दोनों में कोई भी थकने वाला नहीं था। मातंग के दो दाँतों को दोनों हाथों से उखाड़ कर सुग्रीव कुंभ के रथ पर चढ़ गया। हाथी के दाँत से उसने कुम्भवीर पर प्रहार किया तो कुम्भवीर की जान साँसत में पड़ गई। कुम्भ को ऊपर उठा कर उसने जमीन पर दे मारा। उसका खोपड़ा टूट गया और हड्डियाँ चूर-चूर हो गईं ॥ ४६ ॥

भाई का निधन देखकर वीर निकुम्भ परम क्रोध से सुग्रीव की ओर लपका। निकुम्भ के हाथ का मूसल पर्वत के समान है, उसी मूसल से वह सुग्रीव पर प्रहार करने लगा। दंभ से वह मूसल को बार-बार यों घुमाने लगा मानों कुम्हार का चाक हो। संग्राम-भूमि पर वह इस प्रकार पराक्रम के साथ दौड़ा जिस प्रकार प्रबल अग्नि में घी पड़ने पर वह भभक उठता है। निकुम्भ का पराक्रम देखकर भयभीत राजा सुग्रीव वहाँ से भाग गया ॥ ४७ ॥

भय के मारे राजा सुग्रीव आगे बढ़े। सुग्रीव को इस प्रकार हिम्मत हारते देखकर हनुमान क्रोधित हुए। वह कुंभ से बोले सेवक के रहते हुए तू राजा से क्या लड़ेगा। आ जा हम और तू निबट लें, देखा जाय कौन मरता है। निकुम्भ ने कहा, अरे घर जलाने वाले सुन, तू मिल जाय तो मुझे और किसी

हनूमान बले,तोर मुषल गेल तल ❋ मोर घा सह रे बेटा, तवे जानि बल
आपना पासरे कोपे वीर हनूमान ❋ निकुम्भे मारिल चड़ वज्रेर समान
चापड़ खाइया वीर काँपे थरहरि ❋ भंग नाहि देय रणे विक्रमे केशरी
हनूमान-पाने वीर चाहे एक दृष्टि ❋ कोपे हनूमान-बुके मारे बज्रमुष्टि
मुष्ट्याघाते हनूमान हैल अचेतन ❋ हनू कोले करि जाय भेटिते रावण
प्रथम बृहन्दे जाय कोपे करि भर ❋ द्वितीय वृहन्दे परे चले निशाचर
चलि जाय निकुम्भ जे परम-हरिषे ❋ हनूमाने देखिते रमणी सब आसे
निकुम्भेरे नारीगण धन्य धन्य बले ❋ भाल कैले, घरपोड़ा धरिया आनिले
सुग्रीवेरे बन्दी क'रेछिल तव वापे ❋ घरपोड़ा हैल बन्दी तोमार प्रतापे
घरपोड़ा बेटा घर पोड़ाइते मन ❋ समुद्र लङ्घिया आसे, दुर्ज्जय एमन ४८
निकुम्भेर कोले हनू पाइल चेतन ❋ कि बुझि करिबे हनू, भाविछे तखन
सर्व्व-अंग विदारिल आँचड़-कामड़े ❋ दुइ-कान छिड़िनिल हातेर मोचड़े
परित्राहि डाके वीर, छाड़ छाड़ वले ❋ भय पेये छुँड़े फेले गगन-मण्डले

की आवश्यकता भी नहीं। दोनों में जब इस प्रकार गाली-गलौज हो चुका तो दोनों महावलियों में युद्ध ठन गया। निकुम्भ के हाथों में लोहे का मूसल था—रोष में आकर उसने हनुमान के सिर पर उसका प्रहार किया। हनुमान का सिर मानों वज्र के समान हो, जिससे टकराकर मूसल टुकड़ा-टुकड़ा हो गया। हनुमान ने कहा, तेरा मूसल तो वेकार हो गया, अब मेरी चोट सह ले तो समझूँ कि तुझमें बल है। अपने क्रोध को सँभालते हुए वीर हनुमान ने निकुम्भ पर वज्र सा एक झाँपड़ जमाया। झाँपड़ खाकर वह वीर थर-थर काँपने लगा लेकिन पराक्रम में सिंह के समान वह वीर रणक्षेत्र से भागा नहीं। वह वीर हनुमान की ओर एकटक देखता रहा फिर क्रोध से उसने हनुमान के वक्ष पर एक मुक्का मारा। मुष्टि के आघात से हनुमान अचेतन हो गया तो उसको गोद में उठाकर निकुम्भ रावण को भेंट देने चल पड़ा। पहली ड्योढ़ी निकुम्भ ने सक्रोध पार की, दूसरी ड्योढ़ी में वह सहर्ष चलने लगा। हनुमान को देखने के लिए सारी रमणियाँ दौड़ पड़ीं। निकुम्भ को सारी नारियाँ धन्य-धन्य कहने लगीं। वे कहने लगीं अच्छा ही किया कि इस घर जलाने वाले को तुम पकड़ लाए। तुम्हारे वाप ने सुग्रीव को बन्दी बनाया था और तुमने अपने प्रताप से घर जलाने वाले को बन्दी बनाया। यह मुँहजला घर जलाने में ही दक्ष है, ऐसा दुर्जय है कि समुद्र लाँघ आता है॥ ४८॥

निकुम्भ की गोद में ही हनुमान की चेतना लौट आई। तब हनुमान सोचने लगे कि कौन सी बुद्धि लड़ाई जाय। उन्होंने नोच-खसोट कर निकुम्भ का सारा अंग चीर फाड़ डाला। हाथ के मरोड़ से दोनों कान उचार लिये। तब त्राहि-त्राहि मचाता हुआ वीर निकुम्भ चिल्लाने लगा, छोड़ो-छोड़ो। डर

अन्तरीक्षे लाफ दिल, हाते दुइ-कान ※ निकुम्भेर स्कन्धे चड़े वीर हनूमान
हाते चूल जड़ाये मस्तक छिंड़े फेले ※ मुण्ड ल'ये जाय हनूमान महाबले
सिंहनाद करि चले पवनेर वेगे ※ एकलाफे उपनीत श्रीरामेर आगे
निकुम्भेर मुण्ड देखि श्रीरामेर हास ※ निकुम्भेर विनाश गाहिल कृत्तिवास २४९

मकराक्षेर युद्ध ओ पतन

भग्न-पाइक कहे गिया रावण-गोचर ※ पड़िल निकुम्भ-कुम्भ, शुन लङ्केश्वर
कुम्भ-निकुम्भेर मृत्यु शुनिया तखन ※ सिंहासन हैते पड़े राजा दशानन
देव-दानव-गन्धर्व्व करित रणे शंका ※ कुम्भ ओ निकुम्भ पड़े, शून्य हैल लंका
कुड़िच'क्षे बहे धारा राजा लङ्केश्वर ※ मकराक्ष-महावीरे आनिल सत्वर
प्रणमिल मकराक्ष रावणेर पाय ※ देहे तार कुड़ि-हस्त रावण बुलाय
रावण वले, मकराक्ष, तुमि योद्धृपति ※ नर-वानर मारि राख लंकार बसति
सेइ पुत्र सुजन, कुलेर अलंकार ※ पितृशत्रु वधि ये शोधये पितृधार
रात्रि-दिन कान्दे शोके तोमार जननी ※ से रागे रामेर सीता आमि ह'रे आनि
ताहार कारण हैल एत विसंवाद ※ राम-लक्ष्मणेरे मारि घुचाओ विषाद

कर उसने उसको गगन की ओर फेंका। हाथ में दोनों कान लेकर हनुमान ने अन्तरिक्ष में छलाँग मारी। फिर निकुम्भ के कन्धे पर सवार होकर वीर हनुमान ने निकुम्भ का सिर झोंटों के बल पकड़ा और मस्तक को उचार लिया। मुंड लेकर हनुमान पवन-वेग से सिंहनाद करते हुए चले और एक ही छलाँग में श्रीराम के सम्मुख आ पहुँचे। निकुम्भ का मुंड देखकर श्रीराम प्रसन्न हुए। कृत्तिवास ने निकुम्भ के विनाश का ब्योरा गाया ॥ २४६ ॥

मकराक्ष का युद्ध और पतन

भग्नदूत ने जाकर रावण से कहा, हे लंकेश्वर सुनो, कुंभ और निकुंभ का (रणक्षेत्र में) पतन हुआ। कुंभ-निकुंभ की मृत्यु का समाचार सुनते ही राजा दशानन सिंहासन से गिर पड़े। देव-दानव-गन्धर्व भी जिनसे रण में शंकित रहा करते थे वही कुंभ और निकुंभ नहीं रहे, लंका सूनी हो गई। राजा लंकेश्वर की वीस आँखों से आँसू गिरने लगे। उसने झट महावीर मकराक्ष को बुलवाया। जब मकराक्ष ने आकर रावण के चरणों में प्रणाम किया तो रावण अपने वीस हाथों से उसका वदन सहलाता रहा। रावण ने कहा, मकराक्ष! तुम अब युद्ध के संचालक हो। नर-वानरों को मार कर लंका की जनता को बचाओ। वही पुत्र सुजन है और वंश की शोभा है जो पिता के शत्रु का वध कर पितृ-ऋण से उऋण होता है। रातों दिन तुम्हारी जननी शोक से रोती थी यह देखकर मारे गुस्से के मैं सीता का हरण कर लाया। इसी के कारण इतना सारा झगड़ा हुआ। अब राम-लक्ष्मण को मार कर इस विषाद को दूर करो।

मकराक्ष बले, चिन्ता नाकर राजन ※ एखनि मारिब शत्रु श्रीराम-लक्ष्मण
रावण बले, बड़ वीर तुमि मकराक्ष ※ बड़ प्रीति पाइलाम शुनि तब वाक्य २५०
एत बलि मकराक्षे पाठाय जुझिते ※ रण सज्जा करि देय आपनार हाते
मस्तके मुकुट दिल, अंगे दिल साना ※ काड़ा पड़ा ढाक ढोल बाजाय बाजना
मकराक्ष बले, शुन प्रतिज्ञा राजन ※ युद्धे नर-वानर एड़ाबे कोन जन
राम-लक्ष्मण सुग्रीव राक्षस विभीषण ※ चारिजना-रक्ते पितार करिब तर्पण
एत शुनि हरषित यतेक राक्षस ※ सबे बले, मकराक्षेर बड़इ साहस
मन्त्रणाते मन्त्री ये बलेते बलवान ※ लङ्कापुरे वीर नाहि तोमार समान ५१
मने-मने मकराक्ष भाविछे तखन ※ नर-वानरेर युद्धे संशय जीवन
कुम्भकर्ण अतिकाय हइल विनाश ※ श्रीरामेर संगे युद्ध छाड़ि प्राण-आस
किन्तु एक सुमन्त्रणा आछये इहार ※ शुनियाछि रघुनाथ विष्णु-अवतार
बड़इ धार्मिक राम, धर्म्मेते तत्पर ※ अस्त्राघात ना करेन गरुर उपर
एतेक भाविया मकराक्ष निशाचर ※ युक्ति करि धेनु-वत्स आनाय विस्तर
नव-नव वत्स सब रथे ल'ये तुले ※ रथेर चौदिके धेनु-बान्धे पाले-पाले
मनोरम हय हस्ती दूर करि सब ※ रथेर योगान दिल चारिटा वृषभ

तब मकराक्ष ने कहा, राजन, चिन्ता न करो मैं अभी जाकर शत्रु राम-लक्ष्मण को मारे डालता हूँ। रावण ने कहा, हे वीर मकराक्ष, तुम्हारी बातें सुनकर मुझे बड़ी खुशी हुई ॥ २५० ॥

इतना कहकर मकराक्ष को उसने युद्ध करने के लिए भेज दिया। अपने हाथों से उसने उसकी रणसज्जा की। सिर पर मुकुट पहनाया और शरीर पर कवच। तब ढाक ढोल नगाड़े बजने लगे। मकराक्ष ने कहा, हे राजन मेरी प्रतिज्ञा सुनो, युद्ध में नर-वानर कौन ऐसा है जो मुझसे बच कर निकल जायगा। राम-लक्ष्मण-सुग्रीव और राक्षस विभीषण के रक्त से मैं पिता का तर्पण करूँगा। इतना सुन कर सारे राक्षस बहुत हर्षित हुए, सभी कहने लगे, मकराक्ष बड़ा साहसी है। मंत्रणा देने में मंत्री और बल में बलवान उसकी समता का लंका में कोई दूसरा नहीं है ॥ ५१ ॥

तब मकराक्ष मन ही मन सोचने लगा, नर-वानर के युद्ध में प्राणों का संशय है। अतिकाय कुम्भकर्ण का विनाश करनेवाले श्रीराम से युद्ध छेड़ प्राणों की आशा त्यागता हूँ। लेकिन इसमें भी एक कौशल भिड़ाया जा सकता है। सुना है कि रघुनाथ विष्णु का अवतार हैं, बड़े ही धार्मिक हैं, और धर्म में तत्पर भी। अवश्य ही गौवों पर अस्त्र का आघात नहीं करेंगे। इतना सोचकर मकराक्ष ने पर्याप्त संख्या में गायें और बछियाँ मँगवाईं। नई-नई बछियों को रथ पर बैठा दिया और रथ के चारों ओर गौवों को बाँध दिया। सुन्दर हाथी और घोड़ों को भगा कर चार बैलों से रथ हँकाने लगे। आपस

गोचर्म्मेते ढाके रथ करिया मन्त्रणा ❊ सर्व्व-अंगे ढाका दिल गोचर्म्मेर साना
गोचर्म्मेते साना ढाके सारथिर अंगे ❊ ढाक ढोल दामामा दगड़ बाजे रंगे
पाखोयाज सेतारा बाँशी बाजे जगझम्प ❊ भयंकर शव्द शुनि सुरपुरे कम्प
मकराक्ष महावीर करिल साजनि ❊ संगेते कटक चले तिन-अक्षौहिणी
केह अश्वे, केह गजे, केह चड़े रथे ❊ त्रिभुवन-विजयी धनुक-वाण हाते
एइरूपे यतेक प्रधान सेनापति ❊ साजिया चलिल मकराक्षेर संहति
हाते धनु मकराक्ष रथे गिया चड़े ❊ राक्षसेर कोलाहले महाशव्द पड़े
घन-घन सिंहनाद धनुक-टंकार ❊ पश्चिम-द्वारेते गेल करि मार मार ५२
मकराक्ष एल रणे, प'ड़े गेल साड़ा ❊ असंख्य वानर उठे दिया गात्र-झाड़ा
'रामजय' शव्द करि धाइल वानर ❊ वानर देखिया रोषे यत निशाचर
केह बले, काट काट, केह बले, मार ❊ रुषिया आइल रणे खरेर कुमार
मकराक्ष-सम्मुखे दाण्डाय हनूमान ❊ गोचर्म्मेते ढाका रथ देखे विद्यमान
धेनु-वत्स पाले-पाले रोधकैल पथ ❊ भावे मने, कि हबे, वृषभे टाने रथ
राक्षसे मारितेगे ले धनु-वत्स मरे ❊ गोहत्यार भये कपि जुझिते ना पारे

में सलाह कर उन्होंने सारे रथ को गौ के चाम से मढ़ लिया और सारे अंग पर गोचर्म का कवच पहन लिया। सारथि के अंग पर भी गोचर्म का कवच। ढोल, नगाड़े और दमामा जोर-शोर से बजने लगे। पखावज, सितार और बाँसरी के साथ जगझम्प भी बजने लगे। इनका भयंकर शब्द सुनकर सुर-पुर में सभी कम्पित हुए। इस प्रकार जब महावीर मकराक्ष सुसज्जित होकर चला तो उसके साथ तीन अक्षौहिणी सेना भी सुसज्जित चल पड़ी। कोई-कोई घोड़े पर, तो कोई हाथी पर, तो कोई रथ पर सवार; त्रिभुवन-विजयी धनुष-बाण हाथों में लेकर। इस प्रकार सारे सेनापति सज्जित होकर मकराक्ष की सेना में चले। हाथों में धनुष लेकर मकराक्ष रथ पर जा सवार हुआ। राक्षसों के कोलाहल से चारों ओर महानाद होने लगा। बार-बार सिंहनाद करते हुए धनुष पर टंकार कर मार-मार शब्द करते हुए वह पश्चिम द्वार पर गया ॥ ५२ ॥

रणक्षेत्र में मकराक्ष आया है यह सुनकर चारों ओर चहल-पहल मच गई। असंख्य वानर बदन झाड़ कर उठ खड़े हुए और 'रामजय' का घोष कर दौड़ पड़े। वानरों को देखकर क्रोध से सारे निशाचर मार-मार, काट-काट पुकारने लगे। खर का पुत्र रोष से आगे बढ़ आया। हनुमान जाकर मकराक्ष के सम्मुख खड़े हो गये। उन्होंने देखा कि रथ गौ के चमड़े से मढ़ा हुआ है और असंख्य बछड़ों ने उनका रास्ता रोक रखा है। उन्होंने मन ही मन सोचा कि बैल इनका रथ खींच रहे हैं। राक्षसों को मारने जाओ तो गो-वत्सों की हत्या होती है। गोहत्या के भय से वानर युद्ध नहीं कर पाते।

मकराक्ष मारे बाण वानर-उपर ※ असंख्य वानर पड़े संग्राम-भितर
वानर-कटक भये पलाय अपार ※ पश्चाते राक्षस धाय करि मार मार
नल नील सुषेण अंगद महाबल ※ भये भंग दिया जाय छाड़ि रणस्थल
महेन्द्र-देवेन्द्र-आदि वीर हनूमान ※ हात हैते फेले वृक्ष पर्व्वत पाषाण
भयेते पलाये जाय, पश्चाते ना चाय ※ रण छाड़ि सुग्रीव पलाय उभराय ५३
भंग दिल कपिगण, मकराक्ष देखे ※ चालाइया दिल रथ रामेर सम्मुखे
सन्धान पूरिया वीर श्रीरामेरे डाके ※ आसिया करह युद्ध आमार सम्मुखे
दण्डक-वनेते बेटा, मारिलि मोर बाप ※ भुञ्जिबि ताहार फल, देखाव प्रताप
पितृशत्रु पाइलाम बहुदिन परे ※ आमार पितार काछे पाठाब तोमारे
पाड़िब तोमार मुण्ड कटि चोखा शरे ※ खाइबे तोमार मांस शृगाल-कुक्कुरे
एत बलि धनुके जुड़िल तीक्ष्ण शर ※ बिन्धिया कोमल-अंग करिल जर्ज्जर५४
मने-मने रघुनाथ भावेन ए भय ※ मकराक्ष मारिते गो-हत्या पाछे हय
यतयत वीर सने करिला संग्राम ※ प्रति युद्धे तिनपद आगु हैला राम
पूर्णब्रह्म नारायण भय पेये मने ※ हइला त्रिपद-भंग मकराक्ष-रणे
तिनपद पश्चात् हइला रघुवर ※ मकराक्ष-बाणे राम अतीव कातर

मकराक्ष वानरों पर बाण चलाने लगा और संग्राम में असंख्य वानर गिरे। भय के मारे वानर-सेना भागने लगी—पीछे-पीछे राक्षस मार-मार शब्द करते दौड़ने लगे। नल, नील, सुषेण, अंगद जैसे महाबली रणभूमि त्याग कर भागने लगे। महेन्द्र, देवेन्द्र, वीर हनुमान आदि भी हाथों से पेड़-पत्थर आदि फेंक कर भागने लगे—पीछे पलट कर भी नहीं देखा। रण छोड़कर सुग्रीव भी भाग खड़े हुए॥ ५३ ॥

मकराक्ष ने देखा कि सारे वानर रणक्षेत्र से भागे जा रहे हैं तो उसने राम के सम्मुख रथ चला दिया। धनुष पर बाण चढ़ाकर वीर ने श्रीराम को ललकारा, आओ मेरे साथ युद्ध करो। अरे तूने दंडक-वन में मेरे बाप की हत्या की, मैं उसका बदला लूंगा और अपना पराक्रम दिखाऊँगा। बहुत दिनों के बाद पिता का शत्रु मिला है, आज तुझको मैं अपने पिता के पास भेजूँगा, पैने बाणों से तेरा सिर काट कर गिराऊँगा। तेरा मांस सियार और कुत्ते खाएंगे। इतना कहकर उसने धनुष पर पैने-पैने बाण चढ़ाये और राम के कोमल अंगों को बेध-बेध कर छलनी कर दिया॥ ५४ ॥

मन ही मन रघुनाथ को यह डर लगा कि मकराक्ष को मारने में कहीं गो-हत्या न हो जाय। जितने भी वीरों के साथ आज तक उनका युद्ध हो चुका है, प्रत्येक युद्ध में राम तीन पग आगे बढ़े। किन्तु पूर्णब्रह्म नारायण भय पाकर मकराक्ष के साथ रण में तीन पैर पीछे हट गये। मकराक्ष के बाणों से अत्यन्त दुखी होकर रघुवर तीन पैर पीछे हट गये। मन ही मन

केमने जिनिब रण, भाविलेन मने ※ जुड़िला पवन-बाण धनुकेर गुणे
पवन-बाणेर तेजे त्रिभुवन नड़े ※ पर्व्वत कन्दर वृक्ष उड़ाइल झड़े
ब्रह्मरूपी बाणेते पवन आविर्भूत ※ उड़ाइल धेनु-वत्स-वृषभादि यत
गोचर्म्मे यतेक छिल उड़ाइल झड़े ※ यतेक वानर आसि मकराक्षे वेड़े
'रामजय' शब्द करे यतेक वानर ※ अन्धकार करि फेले वृक्ष ओ पाथर
मकराक्ष महावीर पूरिल सन्धान ※ गाछ-पाथर काटिया करिल खान-खान
गाछ-पाथर काटिते एड़िल पञ्च-शर ※ दशबाणे नीलवीरे करिल जर्ज्जर
सुग्रीव-सुषेण-आदि बड़-बड़ वीर ※ दश-दश बाणे बिन्धे सबार शरीर
विंशति बाणेते बिन्धे अंगदेर अंग ※ पलाय अंगद-वीर रणे दिया भंग
धेनु-वत्स-बृष-सव उड़िल झड़ेते ※ चारि अश्ववर आनि जुड़िलेक रथे
देवांशी रथेर तेजे, चले वायुवेगे ※ विक्रम करिया आसे श्रीरामेर आगे
गालि पाड़े रघुनाथे, यत आसे मने ※ दशदिक् अन्धकार करिलेक बाणे ५५
राम बले, मकराक्ष ना कर विलाप ※ आजि घुचाइब तव मनेर सन्ताप
एखनि पाठाव तोरे यमेर सदन ※ चिर दिन पिता-पुत्रे हबे दरशन
एत बलि खुरपार्श्व बाणे दिला टान ※ मकराक्ष मारे बाण पूरिया सन्धान

सोचने लगे कि इस रण को कैसे जीता जाय। उन्होंने धनुष की प्रत्यंचा पर पवन-बाण साधा। पवन-बाण के ओज से त्रिभुवन हिल गया। पर्वत-कन्दर-वृक्ष आँधी में उड़ गये। ब्रह्मरूपी बाण में पवन आविर्भूत हुए और गाय-बछड़े-बैल सब के सब उड़ गये। आँधी में गौ के सारे चमड़े उड़ गये। अब सारे वानरों ने आकर मकराक्ष को घेर लिया और दिशाओं को अन्धकार करते हुए पेड़ और पत्थर बरसाने लगे। महावीर मकराक्ष ने भी निशाना साध-साध कर पेड़ और पत्थर काट-काट कर खंड-खंड कर डाले। पेड़ और पत्थर से बचने के लिए उसने पंचशर चलाया। और दश बाणों से उसने नीलवीर को जर्जर कर डाला। सुग्रीव, सुषेण आदि बड़े-बड़े वीरों को उसने दस-दस बाण मारकर छेद दिया। बीस बाणों से उसने अंगद का शरीर छेद डाला तो वीर अंगद रण छोड़ भाग खड़े हुए। गाय-बछड़े और बैल जब आँधी में उड़ गये तो चार-घोड़े लाकर रथ में जोते गये। देवांशी रथ की शक्ति ही भिन्न है; वह पवनवेग से चलने लगा और प्रबल पराक्रम से राम के सम्मुख आ खड़ा हुआ। जितना भी उसके जी में आया रघुनाथ को वह उतनी ही गालियाँ देने लगा और बाणों से दशों दिशाओं को अन्धकारमय कर दिया ॥ ५५ ॥

तब राम कहने लगे, मकराक्ष, खेद न करो। आज तुम्हारे मन का सारा सन्ताप दूर कर दूँगा। अभी तुमको यम-सदन भेज दूँगा, निरन्तर पिता-पुत्र में भेंट होती रहेगी। इतना कहकर उन्होंने खुरपार्श्व बाण फेंका।

आकाशे उठिल गिया दु'जनार बाण ※ श्रीरामेर बाण काटि कैल खान-खान
मकराक्ष बाण एड़े, तारा येन छुटे ※ शत-शत बाण मारे रामेर ललाटे
ललाटे लागिला बाण बिन्धि रहे फला ※ रामेर शरीरे येन रक्तपद्म-माला
अन्धकार हैल बाणे, नाहि चले दृष्टि ※ खसिया पड़िल रामेर धनुकेर मुष्टि
आपना सारिया राम दृढ़ कैला बुक ※ काटिलेन मकराक्ष-हातेर धनुक
आर धनु ल'ये करे बाण-वरिषण ※ बाणे-बाणे मकराक्ष ढाकिल गगन
खरेर कुमार वीर नाना शिक्षा जाने ※ दशदिक् अन्धकार करिलेक बाणे
बाणे अन्धकार, बाण फेले निरन्तर ※ बाण फुटि रघुनाथ हइला कातर
श्रीरामे कातर देखि दुष्ट निशाचर ※ रामेर सर्व्वाङ्ग बिन्धि करिल जर्ज्जर
कत बाण मारे रामे, नाहि अवकाश ※ श्रीरामे जिनिनु बलि मनेते उल्लास
सर्व्वांगे विन्धिया रामे करिल अस्थिर ※ श्रीराम बलेन, बेटा बाप हैते वीर
खरेरे मारियाछिनु दण्डकेर रणे ※ दुइ प्रहर हैल, बेटा युद्धे मोर सने
सन्धान पूरिया राम चाहे चारिभिते ※ बाणे अन्धकार, कारे ना पान देखिते
बाणेते पण्डित राम विष्णु-अवतार ※ चिकुर-बाणेते लुप्त करे अन्धकार

मकराक्ष ने भी निशाना साध कर बाण चलाया। दोनों के बाण आकाश में चढ़ गये और श्रीराम के बाण कट कर खंड-खंड हो गये। मकराक्ष यों बाण चलाने लगा मानों नक्षत्र लपक रहे हों—और सैकड़ों बाण आकर राम के ललाट में चुभ गये। राम के ललाट से टकराकर बाण का फल चुभा रह जाता और यों लगने लगता मानों राम के शरीर पर रक्त-पद्म की माला पड़ी है। बाणों से चारों ओर अंधेरा छा गया था, दृष्टि काम नहीं करती थी, राम की मुट्ठी धनुष पर ढीली पड़ गई। तब अपने को संयत कर राम ने मन को दृढ़ किया और मकराक्ष के हाथ का धनुष काट डाला। मकराक्ष दूसरा धनुष लेकर फिर बाण बरसाने लगा और बाणों से मकराक्ष ने गगन छा दिया। खर का पुत्र वीर मकराक्ष अनेक विद्याओं में दक्ष था, उसने बाणों से चारों ओर अन्धकार कर दिया। बाणों से अन्धकार कर वह निरन्तर बाण फेंकता ही रहा और बाणों के चुभने से रघुनाथ काफी क्लेश पाने लगे। श्रीराम को क्लेश में देखकर दुष्ट निशाचर ने राम के सारे अंगों को छेद कर जर्जर कर डाला। बिना विराम लिये ही वह राम को कितने ही बाण मारता रहा। श्रीराम पर विजय पा ली, यह सोचकर वह मन ही मन उल्लसित हो उठा। सारे अंगों को छेद कर उसने राम को अस्थिर कर दिया, तब श्रीराम ने कहा, बेटा बाप से भी बड़ा वीर है। मैंने दंडकवन के रण में खर का वध किया था, दो पहर बीत गये, उसका बेटा मेरे साथ जूझता चला जा रहा है। बाण को धनुष पर लगाकर राम चारों ओर देखने लगे किन्तु बाणों से छाये अंधेरे में किसी को नहीं देख सके।

एड़ेन ऐषिक वाण, तारा येन छूटे ※ हातेर धनुक तार पाड़िलेन केटे
मकराक्ष महावीर जाठा लय हाते ※ से जाठा काटेन राम देखिते देखिते
जाठा यदि काटा गेल, शेलमात्र ताड़ा ※ एड़िलेक शेलपाट दिया अंग-नाड़ा
सूर्येर किरण येन, आसे शेल-वाण ※ ऐषिक वाणेते राम कैला खान-खान
सर्व्व-अस्त्र काटागेल, मकराक्ष रोषे ※ बज्रमुष्टि मारिते पवन-वेगे आसे
देखिया श्रीरघुनाथ पूरिला सन्धान ※ अर्द्धचन्द्र-वाणे काटे हस्त दुइखान
हस्त काटा गेल, बेटा दन्त कड़मड़े ※ धेये जाय श्री रामेरे खाइते कामड़े
वदन विस्तारि जाय अतिकाय कोपे ※ अग्नि-अस्त्र रघुनाथ बसाइला चापे
अग्नि बाण जुड़िया धनुके दिला टान ※ अग्नि बाणे मकराक्षेर बाहिराय प्राण
तिन प्रहर युद्ध कैल श्रीरामेर सने ※ सन्ध्याकाले मकराक्ष पड़े अग्निबाणे
कृत्तिवास पण्डितेर मधुर-वचन ※ लंका-काण्डे मकराक्षेर हइल पतन५६

तरणीसेनेर युद्ध ओ पतन

भग्न-पाइक कहे गिया रावण-गोचर ※ मकराक्ष पड़े रणे, शुन लङ्केश्वर
शोकेर उपरे शोक हैल विपरीत ※ सिंहासन हैते पड़े हइया मूर्च्छित

स्वयं विष्णु के अवतार राम बाण-विद्या में निष्णात हैं। उन्होंने चिकुर-वाण चलाकर अन्धकार को दूर किया। उन्होंने ऐषिक वाण इस प्रकार फेंका मानों तारा लपक रहा हो और उसके हाथ का धनुष काट डाला। महावीर मकराक्ष ने फिर अपने हाथों में जाठा ले लिया। देखते ही देखते राम ने वह जाठा भी काट गिराया। जाठा कट गया तो उसने शेल उठा लिया और सारे अंगों को संचालित कर उसने शेल फेंका। ऐषिक वाण से राम ने उसको भी खंड-खंड कर डाला। सारे अस्त्र कट गये तो मकराक्ष रोष से वज्रमुष्टि मारने के लिये पवन-वेग से लपका। यह देखकर श्री रघुनाथ ने निशाना साध कर अर्धचन्द्र वाण फेंका और उसके दोनों हाथ काट डाले। हाथ कट गये तो वह दाँत किटकिटाने लगा और राम को काट खाने के लिये दौड़ा। जब अत्यन्त कोप से मुँह फाड़ कर वह दौड़ा तो रघुनाथ ने धनुष पर अग्नि-अस्त्र को चढ़ाया। अग्नि-वाण को धनुष पर चढ़ाकर उन्होंने प्रत्यंचा खींची। उस अग्नि वाण से ही मकराक्ष के प्राण निकल गये। श्रीराम के साथ तीन पहर युद्ध करने के बाद सन्ध्या के समय मकराक्ष अग्निवाण से गिरा। पंडित कृत्तिवास के वचन मधुर हैं, लंका-कांड में मकराक्ष का पतन हो गया ॥ ५६ ॥

तरणीसेन का युद्ध और पतन

भग्न-दूत ने जाकर रावण से कहा, हे लंकेश्वर सुनो, मकराक्ष युद्ध में काम आ गया। इस प्रकार शोक पर शोक के प्रहार से रावण की हालत

पात्र-मित्र आसिया बुझाय बहुतर ※ धरासने बसि राजा कान्दिल विस्तर
मरिया ना मरे राम, विपरीत बैरी ※ वीर शून्या हइल कनक-लंकापुरी
कुम्भकर्ण अतिकाय वीर अकम्पन ※ नर-वानरेर युद्धे हइल निधन
के आछे एमन वीर, पाठाइब कारे ※ श्रीराम-लक्ष्मणे मारे सुग्रीव-वानरे
मन्त्रणा करये राजा ल'ये मन्त्रिगण ※ तरणीसेनेर नाम हइला स्मरण ५७
राजार आदेशे वीर आइल तरणी ※ प्रणमिल दशानने लोटाये धरणी
आलिंगन करे राजा, वाड़ाय सम्मान ※ जुझिते आरति कैल दिया पुष्प-पान
रावण वले, लंकापुरी राखह तरणी ※ एतेक प्रमाद हबे, आगे नाहि जानि
तव पिता विभीषण धर्म्मेते तत्पर ※ हित-उपदेश भाइ बुझाले विस्तर
अहंकारे मत्त आमि, छिन्न हैल मति ※ विना-अपराधे तारे मारिलाम लाथि
आमारे छाड़िया गेल भाइ विभीषण ※ अनुरागे लइयाछे रामेर शरण
सन्धि-उपदेश-कथा सेइ देय क'ये ※ श्रीराम आछेन ब'से कालरूपी ह'ये
शत्रुर सपक्ष हइयाछे तव पिते ※ मजिल कनक-लंका तार मन्त्रणाते
तुमि तार पुत्र बट, नह तार मत ※ चिरदिन जानि, तुमि मम अनुगत

खराब हो गई और वह सिंहासन से गिर कर मूर्छित हो गया। सारे पात्र-मित्रों ने आकर बहुत समझाया बुझाया, राजा धरती पर बैठ बहुत रोता रहा। यह कैसा विपरीत बैरी है, यह राम मर कर भी नहीं मरता। स्वर्ण-लंकापुरी धीरे-धीरे वीरों से शून्य हो रही है। कुम्भकर्ण, अतिकाय और वीर अकम्पन का वध नर-वानर के युद्ध में हो गया। ऐसा कौन सा वीर रह गया, किसको युद्ध में भेज दूँ जो श्रीराम, लक्ष्मण और सुग्रीव वानर का वध कर डाले। अपने मंत्रियों के साथ राजा मंत्रणा करने बैठे तो उनको तरणीसेन याद आ गया ॥ ५७ ॥

राजा का आदेश पाकर वीर तरणीसेन आया और भूमि पर लोट कर उसने दशानन को प्रणाम किया। राजा ने उसको बाँहों में बाँधकर उसका सम्मान बढ़ाया और पुष्प-पान देकर उसकी युद्ध करने के लिए आरती उतारी। रावण ने कहा, तरणी! अब लंकापुरी की रक्षा करो, इतनी बड़ी विपत्ति आ जायगी, यह मुझको पहले नहीं मालूम था। तुम्हारे पिता विभीषण धर्म के अनुगत रहे, उन्होंने बहुत सारे हित-उपदेश दिये और मुझको समझाया भी। लेकिन मैं अहंकार में मत्त था, मेरी मति भ्रष्ट हो चुकी थी, मैंने बिना-अपराध के ही उन पर लात जमा दी। भाई विभीषण मुझको त्याग कर चले गये और मुझ पर क्रोधित होने के कारण उन्होंने राम की शरण ले ली। वही सारे सन्धान का उपदेश देते रहते हैं और श्रीराम यम जैसा बैठा हुआ है। तुम्हारे पिता शत्रु के पक्ष में हो गये हैं और उन्हीं की मंत्रणा से कनक-लंका ध्वंस हो रही है। तुम उनके पुत्र हो लेकिन उन जैसे नहीं हो, सदा से जानता

राज्य-धन लह बापु, स्वर्ण-लंकापुरी ❋ राखह राक्षसकुल वैरिगणे मारि ५८
कहिछे तरणीसेन करि जोड़हात ❋ त्रैलोक्य-विजयी तुमि राक्षसेर नाथ
महागुरु पिता-माता, सर्व्वशास्त्रे कय ❋ कहिते पितार कथा उचित ना हय
दशानन बले, तुमि कुले सुसन्तान ❋ नर-वानरेर हाते कर परित्राण
संग्रामे जिनिबे तुमि, हेन लय मने ❋ तोमार समान वीर नाहि त्रिभुवने
युद्धे योद्धपति तुमि, बुद्धे विचक्षण ❋ हाते गले वान्धि आन श्रीराम-लक्ष्मण
एत शुनि कहे विभीषणेर कुमार ❋ यथाशक्ति संग्रामे करिव महामार
कुलक्षय करिवार मूलाधार पिते ❋ उपरोध ना करिब उपस्थितमते
नाना-जाति पुराण-शास्त्रेते इहा कय ❋श्रेष्ठ-ज्येष्ठ-विवेचना युद्धकाले नय २५९
बड़ प्रीति पाय राजा तरणीर बोले ❋ शिरे चुम्ब दिया राजा करिलेक कोले
रत्नमय हार आर वलय कङ्कण ❋ आपनार हाते तारे पराय रावण
रणसाजे साजाइया दिल दशानन ❋ सारथि आनिल रथ संग्रामे गमन
साजन करिल रथ मनेर हरिषे ❋ सारि-सारि कत रत्न शोभे चारिपाशे

हूँ कि तुम मेरे अनुगत हो। बेटा, यह स्वर्ग-लंकापुरी और सारा राज-पाट तुम ले लो और राक्षसों के शत्रुओं को मारकर राक्षसवंश की रक्षा करो॥ ५८ ॥

तरणीसेन ने हाथ जोड़ कर कहा, हे राक्षसों के नाथ, तुम त्रैलोक्यविजयी हो। सभी शास्त्रों में कहा गया है कि माता-पिता महागुरु हैं, इसलिए पिता के सम्बन्ध में कुछ भी कहना उचित नहीं होगा। दशानन ने कहा, तुम हमारे वंश के सुसन्तान हो, नर और वानर के हाथों से हमारी रक्षा करो। मुझको लगता है कि तुम संग्राम में विजयी होगे। तुम सा वीर तीनों भुवनों में नहीं है। तुम बुद्धि से विचक्षण हो और युद्ध में कुशल योद्धा हो। तुम श्रीराम-लक्ष्मण को हाथ-पैरों से बाँधकर ले आओ। इतना सुनकर विभीषण के पुत्र ने कहा, संग्राम में अपनी शक्तिभर मारकाट मचाऊँगा। वंश के नाश में मूल आधार पिता हैं—इस समय उनसे मैं कोई भी अनुरोध नहीं करूँगा। विभिन्न प्रकार के पुराण और शास्त्रों में यह कहा गया है कि युद्ध के समय श्रेष्ठ और ज्येष्ठ की विवेचना नहीं करनी चाहिए॥ २५९ ॥

राजा को तरणी के वचन से बड़ा आनन्द पहुँचा। उन्होंने उसका सिर चूम कर उसे गोद में ले लिया। रावण ने उसको अपने हाथों से रणसज्जा पहनाई। सारथी संग्राम में जाने के निमित्त रथ ले आया। उसने जी भर कर अपने रथ को सजाया। कितने ही रत्न चारों ओर शोभित होने लगे। रथ के ऊपर कितने ही विचित्र चित्र लगाये गये। सफेद और नीले कपड़े की कितनी ही झंडियाँ फहराने लगीं।

अनेक विचित्र चित्र रथेर उपरि ❋ श्वेत नील नेतेर पताका सारि-सारि
विचित्र धनुक तोले तूण पूर्णवाण ❋ जाठा-जाठिशेल-शूल खाण्डा खरशाण२६०
सैन्येरे साजिते आज्ञा दिलेक तरणी ❋ तखन पड़िल मने सरमा जननी
शीघ्रगति गेल वीर मायेर निकटे ❋ दाण्डाइल प्रणाम करिया करपुटे
तरणी बलेन, माता, निवेदि चरणे ❋ ह'येछे रामेर आज्ञा, जाब आमि रणे
पूर्णब्रह्म नारायणे देखिव नयने ❋ पवित्र हइवे देह राम-दरशने
निरखिव जनकेर चरण कमल ❋ देह अनुमति माता, जाव रणस्थल६१
संग्रामे जाइबे पुत्र, शुनि ए वचन ❋ सरमा चमकि उठि करिला रोदन
कि कथा कहिलि वापू, प्राण काँपे शुने ❋ जाइते ना दिब नर-वानरेर रणे
लंका छाड़ि तोमा ल'ये जाव स्थानान्तर ❋ थाकुक राजत्व ल'ये राजा लङ्केश्वर
धार्म्मिक तोमार पिता, जाने सर्व्वजन ❋ पाप-संग छाड़ि लय रामेर शरण
तुमि गिया रामेर चरणे कर स्तुति ❋ श्रीराम मनुष्य नाहे, गोलोकेर पति
दुरात्मा राक्षसकुल करिते संहार ❋ दशरथ-गृहे विष्णु राम-अवतार
एकलक्ष पुत्र जार, सओया लक्ष नाति ❋ एकजन ना थाकिबे वंशे दिते बाति
विषम बुझिया तव पिता विभीषण ❋ पलाइया निल गिया रामेर शरण

अनोखा धनुष और बाणों से भरा तूण रथ पर रखा गया; जाठा-जाठी, शेल, शूल, खड्ग, असि आदि भी रथ पर रखे गये ॥ २६० ॥

तब तरणी ने सेना को सुसज्जित होने का आदेश दिया। तभी उसकी अपनी माँ सरमा याद आ गई। शीघ्रगति से वीर अपनी जननी के पास पहुँचा। प्रणाम कर हाथ जोड़ वह खड़ा हो गया। तरणी ने कहा, माता, तुम्हारे चरणों में निवेदन करता हूँ कि राजा का आदेश मिला है और मैं रण में जा रहा हूँ। पूर्णब्रह्म नारायण को अपनी आँखों से देखूँगा। राम के दर्शन से यह शरीर पवित्र हो जायगा। अपने पिता के चरण-कमल भी देख सकूँगा। माँ, मुझको अनुमति दो, मैं रणस्थल में जाऊँगा ॥ ६१ ॥

पुत्र संग्राम पर जायगा, यह सुनकर सरमा चौंक कर रो पड़ी। हाय बेटा, तूने यह क्या सुनाया, मैं तुझको नर-वानर के रण में नहीं जाने दूँगी। लंका छोड़कर तुझको लेकर कहीं और चली जाऊँगी। राजा लंकेश्वर अपना राज्य लेकर रहें। सभी लोग जानते हैं कि तुम्हारे पिता धार्मिक हैं, पाप-संगति त्याग कर उन्होंने राम की शरण ली है। तुम जाकर राम के चरणों में स्तुति करो। श्रीराम मनुष्य नहीं हैं, वे गोलोक के पति हैं। दुष्ट राक्षसकुल का ध्वंस करने के लिए विष्णु ने दशरथ के घर पर राम-अवतार के रूप में जन्म लिया है। जिसके एक लाख पुत्र हों और सवा लाख पोते हों, उनके वंश में एक भी दीपक जलाने को नहीं बचेगा। तुम्हारे पिता विभीषण ने

तुमि त सुबुद्ध वट, अति विचक्षण ※ ए-सब शुनिया युद्धे जाह कि कारण ६२
मायेर वचने शुनि कहिछे तरणी ※ विष्णु अवतार राम आमि भाल जानि
तथापि करिब युद्ध, भेवेछि निर्यास ※ मरिले रामेर हाते गोलोके निवास
शुनि याछि सर्व्व-शास्त्रे वेदेर लिखन ※ तुमि माता, विषाद भाविछ कि कारण
के कारे मारिते पारे, केवा कार रिपु ※ एक विष्णु विश्वमय, भिन्न भिन्न वपु
कालेते करिया हय उत्पत्ति प्रलय ※ मिथ्या केन भाव माता, मरणेर भय
शुनेछि पितार मुखे महा-योगतन्त्र ※ अनित्य शरीर एइ, मिछे माया जन्त्र
दासेर सन्तान वलि ना मारेन राम ※ आसिया करिब पुनः श्रीपदे प्रणाम
कालेर विभक्त काल पूर्ण हैले परे ※ त्रिभुवने कार साध्य, के राखिते पारे ६३
महाज्ञानवती सती सरमा सुन्दरी ※ वसिलेन संवरिया नयनेर वारि
चले वीर प्रणमिया सरमा-जननी ※ साज साज वलि सवे डाकिछे तरणी
साज साज वलि सैन्ये प'ड़े गेल साड़ा ※ असंख्य सानाइ बाजे दुइ लक्ष काड़ा
करताल बाँशी काँसी डम्फ कोटि-कोटि ※ तिनलक्ष दगड़े सघने पड़े काठि
सेतारा चौतारा वाजे मधुर मृदङ्ग ※ वाजे वीणा सप्तस्वरा भेउरि भोरंग

अटपटा देखा तो भागकर राम की शरण में पहुँच गये। तुम तो बुद्धिमान हो और विचक्षण भी, फिर यह सब जान-बूझ कर भी तुम किस कारण युद्ध में जा रहे हो ॥ ६२ ॥

माँ की बातें सुनकर तरणी कहने लगा, मैं भली-भाँति जानता हूँ कि राम विष्णु-अवतार हैं, फिर भी मैंने निश्चय कर लिया है कि युद्ध करूँगा। सर्व-शास्त्रों में और वेदों में लिखा है कि राम के हाथों मरने पर स्वर्ग में आवास मिलेगा। माँ, तुम किस कारण दुखी हो रही हो। कौन किसको मार सकता है और भला कौन किसका शत्रु है। एक ही विष्णु सारे विश्व-भर में फैले हैं—उनके भिन्न-भिन्न शरीर हैं। समय के बीतने पर प्रलय होता है। हे माता, फिर मृत्यु के भय से तुम नाहक क्यों चिन्ता करती हो। पिता के मुँह मैंने महायोग-तंत्र सुना है कि यह शरीर अनित्य है, माया-यंत्र मात्र है। यदि दास का पुत्र समझ कर राम मेरा वध न करें तो लौटकर तुम्हारे चरणों में फिर प्रणाम करूँगा। नियत समय पूर्ण होने पर त्रिभुवन में किसकी शक्ति है कि किसी को रोक रखे ॥ ६३ ॥

महाज्ञानवती एवं सती सुन्दरी सरमा आँसू रोक कर बैठ गई। वीर तरणीसेन सरमा-जननी के चरणों का नमन कर चल पड़ा। तरणी ने सबको 'सजो-सजो' यह कहकर पुकारा। सारी सेना में सुसज्जित होने के लिए गुहार मच गई। अनगिनत शहनाइयाँ और दो लाख नगाड़े भी बजने लगे। करोड़ों करताल, बाँसुरी, घड़ियाल और डफ भी बजने लगे। तीन लाख धौंसों पर चोट पड़ी। सितार, चौतार और साथ में मृदंग भी मधुर स्वर

शंख बाजे, घन्टा बाजे, बाजे जयढोल ※ प्रलयेर काले येन उठे गण्डगोल
ढेमचा खेमचा बाजे पाखोज पिनाक ※ सहस्र-सहस्र बाजे निशाचर-ढाक
उरमाल ढिकारा बाजे कोटि-कोटिडम्फ ※ रणशिंगा-शब्द शुनि त्रिभुवने कम्प
साजिल तरणीसेन करिते संग्राम ※ आनन्दे सकल-अंगे लिखे राम-नाम
असंख्य कटक-ठाट साजिल विस्तर ※ केह रथे, केह गजे, केह अश्वोपर
केह धरे शेल शूल, केह धनुर्व्वाण ※ कारो हाते जाठा-जाठि खड्ग खरशान
आकाशेर तारा पारि करिते गणना ※ ना पारि करिते संख्या तरणीर सेना
लक्ष-लक्ष अश्वगज, लक्ष-लक्ष रथ ※ ढाकिल गगन-आदि, आच्छादिल पथ
लक्ष-लक्ष राम-नाम गंगा-मृत्तिकाते ※ लिखिलेक रथे आर ध्वज-पताकाते ६४
हाते धनु रथे उठे वीर-अवतार ※ पश्चिम-द्वारेते चले करि मार मार
गड़ेर बाहिर ह'ये दिलेक घोषणा ※ रामजय रामजय बाजाओ बाजना
केह बले मार मार, केह बले धर ※ वानर धाइल ल'ये वृक्ष ओ प्रस्तर
धनुक पातिया युद्धे तरणीर सेना ※ वानर-कटके येन पड़िछे झञ्झना
राक्षस-वानरे युद्ध हइल महामार ※ सहिते ना पारे कपि, पलाय अपार ६५

में बजने लगे। सप्तस्वरा वीणा, भेउरी और भोरंग भी बजने लगे। शंखनाद होने लगा, घंटे घनघनाने लगे और जयढोल बजने लगे। ऐसा प्रतीत होने लगा मानों प्रलय के समय का कोलाहल हो रहा हो। पखावज, पिनाक और हजारों निशाचरी डंके भी बजने लगे। करोड़ों डफ और झाँझ बजने लगे। रण-दुंदुभियों के शब्द से त्रिभुवन काँपने लगा। सारे अंगों पर सानन्द राम-नाम लिखकर तरणीसेन संग्राम के लिए सुसज्जित हुआ। असंख्य कटक सुसज्जित हुआ, कोई रथ पर, कोई हाथी पर तो कोई घोड़े पर। किसी ने शेल-शूल लिया तो किसी ने धनुष-बाण। किसी ने जाठा-जाठी ली तो किसी ने धारदार खड्ग। आसमान के तारे भी गिन सकता हूँ लेकिन तरणी की सेना की संख्या नहीं गिन सकता। लाख-लाख अश्व और गज और लाख-लाख रथों ने गगन ढक लिया और पथ को छेंक लिया। उसने गंगा की मृत्तिका से लाख-लाख राम-नाम रथ पर और ध्वज-पताका पर लिख डाला॥ ६४॥

हाथ में धनुष लेकर वीरता का अवतार (तरणीसेन) रथ पर सवार हुआ और मार-मार शब्द करता पश्चिमी द्वार पर चल पड़ा। गढ़ से बाहर निकल कर उसने घोषणा की—बाजे पर रामजय-रामजय की धुन बजाओ। कोई कहता मारो-मारो तो कोई कहता पकड़ लो। वानर वृक्ष और पत्थर लेकर पिल पड़े। तरणी की सेना धनुष तान कर लड़ने लगी। वानरों की सेना में मानों आँधी चलने लगी। राक्षसों और वानरों में महारण हुआ। वानर प्रहार को सहने में असमर्थ हो भाग खड़े हुए॥ ६५॥

श्रीराम बलेन, शुन मित्र विभीषण ❈ देखि देखि संग्रामे आइल कोन जन
विभीषण बले, शुन राजीव-लोचन ❈ रावणेर अन्नेते पालित एकजन
सम्बन्धेते भ्रातुष्पुत्र, परिचये ज्ञाति ❈ धर्म्मेते धार्मिक पुत्र, बड़ योद्धपति
प्रकारेते दिलेन प्रकृत परिचय ❈ तरणी भाविछे, कोथा राम-दयामय ६६
कटके-कटके युद्ध हइल विस्तर ❈ भंग दिया पलाइल यतेक वानर
चारिदिके नेहारिया देखिछे तरणी ❈ कतक्षणे देखा पाइ राम रघुमणि
कतक्षणे पितार पाइव दरशन ❈ जनम सफल हवे, जुड़ाइवे जीवन
मने भावे, कत पूरे देव-नारायण ❈ चालाइया दिल रथ त्वरित-गमन
रघुनाथ-पाने यदि चालाइल रथ ❈ धेये गिया नीलवीर आगुलिल पथ
नीलवीर बले, बेटा आर जावि कोथा ❈ एकचड़े राक्षसा, छिंड़िव तोर माथा
जोड़हाते बले, विभीषणेर नन्दन ❈ पथ छाड़, देखि गिया श्रीराम-लक्ष्मण
नील बले, प्राण लव पर्व्वत-चापने ❈ केमने देखिवि बेटा, श्रीराम-लक्ष्मणे
अङ्गे लेखा राम-नाम रथ-चारिपाशे ❈ तरणीर भक्ति देखि कपिगण हासे
दुष्ट निशाचर-जाति कत माया जाने ❈ हइया धार्म्मिक वक आसियाछे रणे
मकराक्ष एसेछिल, बुद्धि बड़ सरु ❈ युद्ध जिन्ते एसेछिल रथे बेंधे गरु
वृषभेते टाने रथ गो-चर्म्मेते ढाका ❈ वायुबाणे धेनु उड़े, बेटा हैल भेका

श्रीराम ने कहा, मित्र विभीषण, तनिक देखना तो कौन युद्ध करने आ गया। विभीषण ने कहा, हे राजीवलोचन, यह तो रावण के अन्न से पला कोई है। रिश्ते में वह उसका भतीजा लगता है और परिचय से उसके गोत्र का है। धर्म से धार्मिक यह पुत्र काफी बड़ा योद्धा है। संकेत से उन्होंने उसका प्रकृत परिचय दिया। तरणी सोच रहा है, दयामय राम कहाँ हैं ॥ ६६ ॥

दोनों सेनाओं में काफी युद्ध होता रहा। जितने वानर थे सब भाग खड़े हुए। तरणी चारों ओर निहार रहा है कि कब राम रघुमणि का दर्शन मिलता है। कितनी देर में पिता का दर्शन होगा और जन्म सफल और जीवन धन्य होगा। मन ही मन सोचता, देव-नारायण जाने कितनी दूर पर हैं। उसने झटपट रथ को तेज दौड़ाया। उसने रघुनाथ की ओर रथ भगाया तो रास्ता रोककर नीलवीर खड़े हो गये। वीरवर नील ने कहा, अरे राक्षस कहाँ जा रहा है, एक ही चाँटे में तेरा सिर तोड़ दूँगा। विभीषण-नन्दन ने हाथ जोड़ कर कहा, रास्ता छोड़ो, चलकर श्रीराम-लक्ष्मण को देखूँ। नील ने कहा, पहाड़ के नीचे कुचल कर तुझे मार डालूँगा, कैसे तू श्रीराम-लक्ष्मण को देख सकेगा। सारे अंग पर तथा रथ के चारों ओर राम-नाम लिखा है—तरणी की भक्ति देखकर वानर हँसने लगे। दुष्ट निशाचर कितने ही प्रकार के ढोंग जानते हैं। बगुला-भगत बनकर युद्ध करने आया है। मकराक्ष की बड़ी नुकीली बुद्धि थी—वह रथ में बैल जोतकर लड़ने आया था।

गोवत्स गोचर्म्म धेनु वाणे गेल उड़े ※ चेये देख से-राक्षसार मुण्ड आछे प'ड़े
तुइ बेटा महादुष्ट, ता' ह'ते मायावी ※ भण्ड तपस्याते तुइ काहारे भुलावि
एत बलि नीलवीर कोपे करि भर ※ उपाड़िया आने एक दीर्घ तरुवर
बाहुवले हाने वृक्ष तरणीर माथे ※ हासिया तरणीसेन धरे वामहाते
वृक्ष यदि व्यर्थ गेल, नीलवीर रोषे ※ आनिल पर्व्वत एक चक्षुर निमिषे
हानिल पर्व्वत-गोटा दिया हुहुङ्कार ※ तरणीर गदा ठेकि हैल चूरमार
पर्व्वत हइल गुँड़ा गदार प्रहारे ※ तरणी हानिल वाण नीलेर उपरे
मुखे रक्त उठे, वीर हइल अज्ञान ※ नीलवीर-भंग देखि रोषे हनूमान ६७
लाफ़ दिया हनूमान तार रथे चड़े ※ सारथिर हातेर प्रवोध निल केड़े
रुषिया तरणीसेन मारे एक चड़ ※ रथ हैते पड़ि हनू करे धड़फड़
संवित् पाइया हनू करे महामार ※ लाफ़ दिया रथे गिया पड़े आर वार
दुइजने महायुद्ध रथेरे उपरे ※ कोपेते तरणीसेन हनूमाने धरे
आछाड़िया फेले दिल धरणी-उपर ※ पाछु हैल हनूमान पाइया त डर
हनूमाने विमुख देखिया लागे भय ※ आतंके वानर केह आगु नाहि हय ६८

गाय के चमड़े से ढका हुआ रथ बैल खींच रहा था। पवन-वाण से जब उसके बैल उड़ गये तो वह हक्का-बक्का रह गया था। बछिया और गाय के चमड़े वाण से हवा में उड़ गये थे। आँखें खोलकर देख ले, उस राक्षस का मुंड यहीं पड़ा है। तू बड़ा दुष्ट और मायावी भी है। इस ढोंग-भरी तपस्या से तू किसको भुलावा दे रहा है। इतना कहकर नीलवीर क्रोधित हो एक लम्बा सा पेड़ उखाड़ कर ले आया, उसने बाँहों की पूरी शक्ति से उस पेड़ को तरणी के सिर पर दे मारा। हँसकर तरणीसेन ने उसको बाएँ हाथ से पकड़ लिया। वृक्ष व्यर्थ गया देखकर नीलवीर रोष से क्षणभर में एक पर्वत ले आया। उसने समूचा पर्वत हुंकार के साथ फेंका, तरणी की गदा से टकराकर वह पर्वत भी चकनाचूर हो गया। जब गदा के प्रहार से पर्वत चूर-चूर हो गया तब तरणी ने नील पर वाण छोड़ा। नीलवीर के मुँह से खून निकल आया और वह बेहोश हो गया। नीलवीर की पराजय देखकर हनुमान को बड़ा क्रोध आया ॥ ६७ ॥

छलांग मार हनुमान उसके रथ पर चढ़ गया और सारथी के हाथ से चाबुक छीन लिया। गुस्से में आकर तरणीसेन ने एक चपत मारा। रथ से गिरकर हनुमान तड़फड़ाने लगा। होश में आकर हनुमान फिर मार-मार कर उठा और फिर कूद कर रथ पर जा चढ़ा। रथ के ऊपर ही दोनों में महायुद्ध छिड़ गया। कुपित होकर तरणीसेन ने हनुमान को पकड़ लिया और ज़मीन पर उसको पटक दिया। डर कर हनुमान पीछे हट गया। हनुमान को पीछे हटते देख सारे वानर डर गये, आतंक से कोई भी बन्दर आगे नहीं बढ़ा ॥६८॥

महाकोपे पश्चात् करिया हनूमाने ❋ वालिर तनय वीर प्रवेशिल रणे
हानिल पर्व्वत एक तरणी-उपर ❋ देखिया तरणीसेन हइल फाँफर
भयेते तरणी एड़े चोखा-चोखा वाण ❋ वाणे काटि पर्व्वत करिल खान-खान
काटा गेल पर्व्वत, अङ्गदे लागे भय ❋ मुष्ट्याघाते मारिल रथेर चारि हय
सारथि तत्पर वड़, त्वरान्वित ह'ये ❋ पुनः अश्व जुड़ि रथ दिल चालाइये
रुषिल तरणीसेन अङ्गद-उपर ❋ अङ्गदेर बुके मारे लोहार मुद्गर
मुद्गर-आघाते पड़े बालिर नन्दन ❋ महेन्द्र देवेन्द्र आइल करिया गर्ज्जन
आर यत वानर मिलिल एक वारे ❋ वरिषे पर्व्वत-वृक्ष तरणी-उपरे
गिरि येन वृष्टिधारा माथा पाति धरे ❋ तेमनि तरणीसेन संग्राम-भितरे
नाना-शिक्षा जाने वीर परम-सन्धानी ❋ क्षणेके पर्व्वत-वृक्ष काटिल तरणी
आगुनेर शिखा येन तरणीर वाण ❋ लक्ष-लक्ष वानरेर लइल पराण
चड़-लाथि-मुष्ट्याघात वानरेर ताड़ा ❋ लक्ष-लक्ष राक्षसेर माथा करे गुँड़ा
बानरे राक्षस मारे, राक्षसे वानर ❋ हस्ती अश्व रथ रथी पड़िल विस्तर
स्थाने-स्थाने पर्व्वत-प्रमाण गादि-गादि ❋ संग्रामेर स्थलेते वहिल रक्ते नदी
वानरेर घोरनाद, गजेर गर्ज्जन ❋ रथेर घर्घर-शब्द, शुनिते भीषण

भीषण क्रोध से हनुमान को पीछे कर बाली का वीर बेटा रण में आ गया। तरणी पर उसने एक पर्वत फेंका। यह देख कर तरणीसेन घबड़ा गया। घबड़ा कर उसने तीखे-तीखे वाण चलाये और वाणों से उसने पर्वत को खंड-खंड कर डाला। पर्वत खंड-खंड हो गया, देखकर अंगद को डर लगा। उसने मुक्का मार कर रथ के चारों घोड़ों को मार डाला। सारथी बड़ा ही चुस्त था, उसने तुरन्त घोड़े जोतकर रथ चला दिया। तरणीसेन अंगद पर गुस्सा गया और अंगद के सीने पर उसने लोहे का मुद्गर दे मारा। मुद्गर के प्रहार से बाली का बेटा गिर पड़ा तो महेन्द्र और देवेन्द्र गरजते हुए आ पहुँचे। और भी सारे बन्दर एक साथ इकट्ठे हो गये और तरणी पर पेड़-पत्थर की वर्षा करने लगे। जिस प्रकार पर्वत अपने सिर पर वर्षा की झड़ी को सहता है उसी प्रकार तरणीसेन संग्राम में खड़ा रहा। परम-कुशल वीर तरणीसेन विभिन्न विद्याओं में निष्णात था, उसने क्षण भर में सारे पेड़-पर्वतों को काट-काट कर गिरा दिया। तरणी के वाण मानों आग की शिखा हों, उन्होंने लाखों वानरों के प्राण ले लिये। वानर चाँटा, घूँसा और लात से हमला करते और लाखों राक्षसों के सिर चूर-चूर करते। वानर राक्षसों को मारते और राक्षस वानरों को। पर्याप्त संख्या में हाथी, घोड़े, रथ और रथी ढेर हो गये। स्थान-स्थान पर पर्वत के समान ढेर जमा हो गया। रण-भूमि में खून की नदी बह निकली। वानरों का घोरनाद, हाथियों का चिंघाड़ना, रथों का घरघराना—यह सब अत्यन्त घोर शब्द उत्पन्न

जाठा-जाठि-गदा-शेल-शब्द ठन ठन ※ केह वा पलाये जाय लइया जीवन
कारो गेल हस्त-पद, कारो चक्षु-कर्ण ※ मुषल-आघाते केह हइल विवर्ण
तुलना नाहिक दिते, युद्ध हैल बड़ ※ चारि-द्वारेर वानर पश्चिम-द्वारे जड़ ६९
सहिते ना पारे केह तरणीर बाण ※ रुषिया सुषेण बुड़ा हैल आगुयान
सुषेणेर प्रतापे राक्षसगण काँपे ※ तरणीर रथे गिया पड़े एकलाफे
तरणीर हातेर धनुक निल केड़े ※ विदारिल सर्व्व-अंग आँचड़-कामड़े
तरणीर अंगे तबे रक्तधारा बय ※ पदाघाते मारिल रथेर चारि हय
सारथिर मुण्ड छिड़ि करे वीर-दाप ※ आपन कटके पड़े दिया एकलाफ
तरणीर दशा देखि कंपिगण हासे ※ आनिल सारथि हय चक्षुर निमिषे
करिछे तरणीसेन बाण-अवतार ※ सम्मुख-संग्रामे रहे, हेन साध्यकार ७०
बड़-बड़ वानर पलाये गेल दूरे ※ चोखा-चोखा बाण बिन्धे सुग्रीव-वानरे
बाणाघाते सुग्रीव-भूपति कोपे ज्वले ※ गर्ज्जिया पर्व्वत वीर हाने बाहुबले
तरणी मारिल गदा क्रोधे कम्पमान ※ प्रहारे पर्व्वत गेल ह'ये शतखान
हानिल दुर्ज्जय जाठा सुग्रीवेर बुके ※ पड़िल सुग्रीव-राजा, रक्त उठे मुखे

करने लगा। गदा, शेल, शूल जैसे अस्त्रों के टकराव से ठन्-ठन् का शब्द होने लगा। किसी के हाथ-पैर कट गये तो किसी के आँख और कान। मूसल के प्रहार से किसी का अंग उड़ गया। यह युद्ध बड़ा भयंकर हुआ, इसकी तुलना नहीं की जा सकती। चारों द्वारों के वानर पश्चिमद्वार पर इकट्ठे हो गये ॥ ६९ ॥

तरणी के बाणों को कोई भी सह नहीं सका। बूढ़ा सुषेण बिगड़कर आगे बढ़ आया। सुषेण के प्रताप से राक्षस काँपने लगे। वह एक छलांग में तरणी के रथ पर जा चढ़ा। उसने तरणी के हाथों का धनुष छीन लिया और सभी अंगों को नाखून और दाँतों से नोच-खसोट डाला। तरणी के शरीर से रक्त की धारा बह निकली। लात मारकर उसने रथ के चारों घोड़ों को मार डाला और सारथी का मुंड भी नोच डाला। फिर एक छलांग में अपनी सेना के बीच आ गया। तरणी की दुर्दशा देखकर वानर हँसने लगे। तरणी ने तुरन्त घोड़े और सारथी मंगवाये। फिर बाणों की वर्षा करने लगा। सम्मुख संग्राम में उसके सामने टिके रहा ऐसी शक्ति किसमें है ॥ ७० ॥

बड़े-बड़े वानर दूर भाग गये। तीखे-तीखे बाण आकर सुग्रीव को लगने लगे। बाणों की चोट से सुग्रीव-राजा क्रोध से जलने लगे। वीर ने गरज कर एक पर्वत फेंका। तरणी ने क्रोध से काँपते हुए उसपर गदा की चोट की जिससे पहाड़ के सैकड़ों टुकड़े हो गये। सुग्रीव के सीने पर उसने घनघोर जाठा फेंककर मारा—सुग्रीव राजा गिर पड़े और उनके मुख से खून निकलने लगा। राजा सुग्रीव ज्योंही युद्धस्थल पर गिरे तो दुम उठाकर

संग्रामे पड़िल यदि सुग्रीव-राजन ※ उपलेज करिया पलाय कपिगण
पलाय वानरगण, फिरिया ना चाय ※ धर धर वलिया राक्षस पिछे धाय
प्राणभये पलाइल वड़-वड़ वीर ※ तरणीसेनेर वाणे केह नहे स्थिर
महेन्द्र देवेन्द्र पलाय द्विविद कुमुद ※ रहिलेन हनूमान सुषेण अङ्गद
सुग्रीवेर चैतन्य कराय तिनजन ※ चालाइल रथ विभीषणेर नन्दन २७१
हाते धनु दाण्डाइया श्रीराम-लक्ष्मण ※ दक्षिणेते जाम्ववान, वामे विभीषण
सम्मुखेते उपनीत तरणीर रथ ※ रथ हैते नामिल थाकिते कत पथ
सङ्केते प्रणाम करे पितार चरणे ※ करपुटे प्रणमिल श्रीराम-लक्ष्मणे
विभीषण वले, राम, देखह सत्वर ※ तोमा-दोंहे प्रणाम करये निशाचर
श्रीराम वलेन, शुन मित्र विभीषण ※ आसियाछे निशाचर करिवारे रण
विपक्षेर पक्ष ह'ये आसियाछे रणे ※ आमा-दोंहे प्रणाम करिवे कि कारणे
विभीषण वले, प्रभु, ना जान कारण ※ लङ्कापुरे ओ तोमार भक्त एकजन
तोमार चरण-विना अन्य नाहि जाने ※ आसियाछे संग्रामेते राजार शासने
राम वले, भक्त यदि जानह निश्चय ※ आशीर्व्वाद करि, येन वाञ्छा पूर्ण हय
लक्ष्मण वलेन, कि कहिले महाशय ※ राक्षसेर अभिलाष रावणेर जय

सारे वानर भागने लग गये। वानर भागने लगे तो पीछे पलटकर भी नहीं देखा। पकड़ो-पकड़ो, कह कर राक्षस उनके पीछे पड़ गये। बड़े-बड़े वीर प्राणों के भय से भागे। तरणीसेन के बाणों से कोई भी स्थिर नहीं रह सका। महेन्द्र, देवेन्द्र, द्विविद और कुमुद भागने लगे। हनुमान, सुषेण और अंगद रह गये। तीनों मिलकर सुग्रीव को होश में करने लग गये। विभीषण-नन्दन ने रथ चला दिया ॥ २७१ ॥

हाथ में धनुष लिये श्रीराम-लक्ष्मण खड़े हैं। उनके दक्षिण में जाम्बवान खड़ा है तो बाएँ विभीषण। सामने तरणी का रथ जा पहुँचा। कुछ रास्ता शेष रहते वह रथ से उतर पड़ा। पिता के चरणों पर उसने संकेत से प्रणाम किया। हाथ जोड़कर उसने श्रीराम-लक्ष्मण को प्रणाम किया। विभीषण ने कहा, हे राम, शीघ्र देखो तुम दोनों को निशाचर प्रणाम कर रहा है। श्रीराम ने कहा, मित्र विभीषण सुनो, यह निशाचर विपक्ष की ओर से युद्ध करने रणभूमि में आया है, वह किस कारण हम दोनों को प्रणाम करेगा? विभीषण बोले, प्रभु आप इसका कारण नहीं जानते। लंका नगरी में यह आपका एक भक्त है। आपके चरणों के अतिरिक्त यह और कुछ भी नहीं जानता है। राजा के आदेश से यह युद्ध करने आया है। राम ने कहा, अगर निश्चित रूप से जानते हो कि यह मेरा भक्त है तो आशीर्वाद करता हूँ कि इसकी मनोकामना पूर्ण हो। लक्ष्मण ने कहा, हाय, यह आपने क्या किया। राक्षस की अभिलाषा है रावण की विजय। श्रीराम ने कहा, तुम नहीं जानते लक्ष्मण, भक्त कभी भौतिक इच्छाएँ नहीं करता ॥ २७२ ॥

श्रीराम बलेन, तुमि ना जान लक्ष्मण ※ भक्तेर विषय-वाञ्छा नहे कदाचन२७२
कहिते कहिते कथा राम रघुमणि ※ धनुके टङ्कार दिया आइल तरणी
गभीर-गर्ज्जने बले छाड़ि सिंहनाद ※ देशे फिरे जाबे बेटा, करियाछ साध
महाकोपे लक्ष्मणेर ओष्ठाधर काँपे ※ शमन-समान बाण वसाइल चापे
प्रहारिल तरणीरे पञ्चशत बाण ※ काटिया तरणीसेन करे खान-खान
बाण यदि व्यर्थ गेल, रुषिल लक्ष्मण ※ तरणी-उपरे करे वाण-वरिषण
यत वाण लक्ष्मण मारिला तरणीके ※ श्रीराम-स्मरणे वीर काटे एके-एके
अमर्त्य समर्थ वाण, वाण कर्णरेखा ※ दुइजने बाण मारे, जार यत शिक्षा
लक्ष्मण पड़िल बाण अग्नि-अवतार ※ तरणी बरुण-बाणे करिल संहार
पाशुपत-बाण मारे ठाकुर लक्ष्मण ※ वैष्णव-बाणेते वीर करे निवारण
हानिल पर्व्वत-बाण अति-भयङ्कर ※ पवन-बाणेते निवारिल निशाचर
सर्प-वाण मारिलेन ठाकुर लक्ष्मण ※ लक्ष-लक्ष अजगरे छाइल गगन
विकट-दशन, तुण्ड अति-भयङ्कर ※ गरुड़-बाणेते निवारिल निशाचर
कुह-शरे लक्ष्मण करिल मायामय ※ दशदिक् अन्धकार, दृष्टि नाहि हय
अन्धकारे देखिते ना पाय निशाचर ※ आपना-आपनि काटाकाटि परस्पर

राम रघुमणि यह सब कह ही रहे थे कि धनुष पर टंकार मारते तरणी आ गया। गम्भीर गर्जन से उसने सिंहनाद किया, कहा कि क्या अपने देश सकुशल लौट जाने की साध है तुमको। यह सुनकर प्रचंड क्रोध से लक्ष्मण के होंठ काँपने लगे। उन्होंने धनुष पर यमराज के समान वाण चढ़ाया। उन्होंने तरणी पर पाँच सौ बाण फेंके जिनको तरणीसेन ने काट कर खंड-खंड कर दिया। वाण व्यर्थ गये देख लक्ष्मण अत्यन्त कुपित हुए और तरणी पर फिर बाण बरसाने लगे। जितने वाण लक्ष्मण तरणी पर निशाना साधकर फकते, श्रीराम का स्मरण कर वीर तरणी उनको काट कर गिरा देता। अमर्त्य, समर्थ, कर्णरेखा आदि कितने ही बाण उसने काट डाले। दोनों ही अपनी-अपनी शिक्षा के अनुसार बाण चलाते रहे। लक्ष्मण ने अग्नि-अवतार बाण चलाया तो तरणी ने वरुण-वाण से उसका संहार किया। लक्ष्मण ने पाशुपत-वाण मारा तो वीर तरणी ने वैष्णव-बाण से उसका निवारण किया। लक्ष्मण ने भयंकर पर्वत-बाण फेंका तो निशाचर ने पवन-बाण से उसका निवारण किया। लक्ष्मण ने सर्प-बाण फेंका, भयानक फन और विकट दाँत वाले लाख-लाख अजगरों से गगन छा गया, निशाचर तरणीसेन ने गरुड़-बाण से उसका प्रतिरोध किया। लक्ष्मण ने कुहरा-बाण फेंका तो चारों ओर अंधेरा छा गया, कुछ भी दृष्टिगोचर नहीं होता था, निशाचर आपस में मारकाट कर ध्वंस होने लगे, तरणी की सेना में खलबली मच गई। तरणी ने चिकुर-बाण से अन्धकार का नाश किया। गुस्से में आकर लक्ष्मण ने गन्धर्व-बाण

तरणीर सैन्येते हइल महामार ❋ चिकुर-बाणेते विनाशिल अन्धकार
कोपेते गन्धर्व्व-बाण मारिल लक्ष्मण ❋ तिनकोटि गन्धर्व्व जन्मिल ततक्षण
गन्धर्व्व-राक्षसे तबे हैल महामार ❋ तरणीर सैन्य सब हइल संहार
पड़िल सकल ठाट, नाहि एकजन ❋ राखिते नारिल विभीषणेर नन्दन
कोपेते तरणीसेन जाठा निल हाते ❋ गर्जिया मारिल जाठा लक्ष्मणेर माथे
पड़िल लक्ष्मण-वीर हइया अज्ञान ❋ लक्ष्मणेरे लइया पलाय हनूमान ७३
डाकिछे तरणीसेन जिनिया संग्राम ❋ कोथाय तपस्वी भक्त जटाधारी राम
राम बले, अधिक विलम्ब नाहि आर ❋ एखनि पाठाव तोरे यमेर दुयार
लक्ष्मण पड़िल यदि, आइल रघुनाथे ❋ त्रिभुवन-विजयी धनुक-बाण हाते
दाण्डाइल रघुनाथ तरणी-सम्मुखे ❋ रामेर सर्व्वाङ्ग वीर नेहालिया देखे
विश्वरूप रामेर देखिल निशाचर ❋ ब्रह्माण्ड एकैक लोमकूपेर भितर
पर्व्वत-कान्तार देखे कत नद-नदी ❋ मर्त्यलोक - तपोलोक - ब्रह्मलोक-आदि
मायाते मनुष्य-लीला गोलोकेर पति ❋ चरणे तरङ्गमयी गंगा भागीरथी
यक्ष रक्ष देवता किन्नर लाखे-लाखे ❋ विस्मय हइल मने विश्वरूप देखे
अष्टांग लोटाये भूमे प्रणाम करिल ❋ धनुर्व्वाण फेलि स्तव करिते लागिल७४

फेंका। उतनी देर में तीन करोड़ गन्धर्वों का जन्म हो गया। गन्धर्वों और राक्षसों में घनघोर मारकाट शुरू हो गई और तरणी की सारी सेना मर-खप गई, सारा कटक गिर गया, एक भी सैनिक नहीं बचा, विभीषण का नन्दन उनकी रक्षा न कर सका। क्रोधित हो तरणीसेन ने हाथ में जाठा उठा लिया और गरज कर लक्ष्मण के सिर पर दे मारा। तब बेहोश होकर लक्ष्मण-वीर गिर पड़े और लक्ष्मण को लेकर हनुमान भाग खड़े हुये॥ ७३॥

संग्राम जीतकर तरणीसेन ने पुकारा, कहाँ है वह कपटी तपस्वी जटाधारी राम? राम ने कहा, अब और कोई विलम्ब नहीं, तुझे जल्द ही यम के घर भेज रहा हूँ। लक्ष्मण के गिरने पर अपने हाथों में त्रिभुवन-विजयी धनुष-बाण लेकर रघुनाथ आगे बढ़ आए। रघुनाथ तरणी के सम्मुख आकर खड़े हो गये। वीर तरणी राम का सर्वांग निहारने लगा। निशाचर ने राम का विश्वरूप देखा। उनके एक-एक रोम-कूप में एक-एक ब्रह्मांड समाया हुआ था। उसी में उसने कितने ही नद-नदी पर्वत-कान्तार (वन) आदि देखे। मर्त्यलोक, तपोलोक, ब्रह्मलोक देखे। माया से गोलोक के स्वामी मनुष्यरूप धर कर लीला कर रहे हैं, उनके चरणों पर गंगा-भागीरथी प्रवाहमान है। लाख-लाख यक्ष, रक्ष, देवता, किन्नर विचर रहे हैं। यह विश्वरूप देखकर वह मन ही मन विस्मित हुआ। भूमि पर साष्टांग लोट कर उसने प्रणाम किया। फिर धनुष-बाण फेंककर वह स्तुति करने लगा॥ ७४॥

कहिछे तरणीसेन करि जोड़ हात ※ देवेर देवता तुमि, जगतेर नाथ
तुमि ब्रह्मा, तुमि विष्णु, तुमि महेश्वर ※ कुबेर वरुण तुमि यम पुरन्दर
तुमि चन्द्र, तुमि सूर्य, तुमि दिवाराति ※ अनाथेर नाथ तुमि, अगतिर गति
तुमि सृष्टि, तुमि स्थिति, तोमाते प्रलय ※ सत्वरजस्तमोगुणे, तुमि विश्वमय
मत्स्य-कूर्म्म-वराह - नृसिंह- रूपधारी ※ हिरण्यकशिपु-रिपु गोलोक-विहारी
गभीर-महिमा वीर मिहिर-वंशज ※ अन्तिमे आश्रय देह ओ पद-पंकज
विकार-विहीन दीन-दयामय नाम ※ रघुकुलोद्भव नव-दूर्व्वादल-श्याम
कि जानि भकति-स्तुति, आमि अतिमूढ़ ※ चिन्तिया ना पाय चराचर चन्द्रचूड़
रक्ष हे पूण्डरीकाक्ष, राक्षसेर रिपु ※ स्तवेते अशक्त आमि, निशाचर-वपु
बहु-युग-युगान्तरे मानिया असाध्य ※ जन्मेछि राक्षसकुले ह'ये तव वध्य
कि छार मिछार गर्व्व, स्वर्ग नाहि चाइ ※ मुण्ड काट तीक्ष्णखड्गे, मोक्षधामे जाइ
पद्महस्ते छिन्न यदि कर एइ देह ※ पुलके गोलोके जाव, नाहिक सन्देह ७५
तरणी करिल स्तव, शुने रघुवर ※ अश्रुजले भासिल कोमल-कलेवर
श्रीराम बलेन, शुन मित्र विभीषण ※ लङ्काते एमन भक्त, जानिनु एखन

तब हाथ जोड़ कर तरणीसेन कहने लगा, तुम देवताओं के देवता हो, जगत् के नाथ हो। तुम्हीं ब्रह्मा हो, तुम्हीं विष्णु हो और तुम्हीं महेश्वर हो। तुम्हीं कुबेर, वरुण, यम तथा पुरन्दर हो। तुम्हीं चन्द्र हो, तुम्हीं सूर्य हो, तुम्हीं रात हो, तुम्हीं दिन हो। तुम्हीं अनाथों के नाथ हो, तुम्हीं निराश्रयों के आश्रय हो। तुम्हीं सृष्टि हो, तुम्हीं स्थिति हो और तुम्हीं प्रलय हो। तुम्हीं सत्व, रज और तम गुण से परिपूर्ण विश्व हो। तुम्हीं मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह-रूपधारी हो। हे गोलोक-विहारी, तुम्हीं हिरण्यकशिपु के रिपु हो। हे सूर्य-वंश से उद्भूत महान्-महिमा-सम्पन्न वीर, तुम अपने उन पद-पंकजों में मुझको शरण दो। हे विकार-शून्य दीनों के प्रति दयामय, तुम रघुकुल में जन्मे सुन्दर सलोने साँवले राम हो। मैं अत्यन्त मूढ़ हूँ, मुझको भक्ति स्तुति नहीं आती। हे चन्द्रचूड़, सारा चराचर मनन करके भी तुमको नहीं जान पाता। हे पुंडरीकाक्ष, हे राक्षसों के रिपु, मैं स्तुति करने में असमर्थ हूँ। मैने राक्षसों का शरीर पाया है। युग-युगान्तरों से मुक्ति को असाध्य मानने के उपरान्त अब मैंने तुम्हारा वध्य बनकर राक्षस-कुल में जन्म लिया है। झूठे गर्व से क्या लाभ, मुझको स्वर्ग नहीं चाहिए, तेज खड्ग से मेरा मुंड काट डालो, मैं मोक्षधाम को चला जाऊँ। यदि आप अपने कमल-करों से मेरा सिर काट डालो तो मैं प्रसन्नतापूर्वक गोलोक चला जाऊँगा, इसमें कोई सन्देह नहीं है ॥ ७५ ॥

जब तरणी ने इस प्रकार स्तुति की और रघुवर ने सुना तो उनका कोमल शरीर आँसुओं से भीग गया। श्रीराम ने कहा, हे मित्र विभीषण, सुनो, अब

केमने मारिब अस्त्र इहार उपर ❋ एतबलि त्यजिला हातेर धनुःशर
राम बले, विभीषण, बलि हे तोमारे ❋ केमने धरिब प्राण ए-भक्तेरे मेरे
अकारणे करिलाम सागर-बन्धन ❋ त्यजिया लङ्कार युद्ध पुनः जाइ वन
यत युद्ध करिलाम, श्रम हैल सार ❋ बुझिलाम, ना हइल सीतार उद्धार
नाहिक सीताय कार्य, ना जाव राज्येते ❋ केमने मारिब वाण भक्तेर अंगेते
कण्टक फुटिले मम भक्तेर शरीरे ❋ शेलेर समान वाजे आमार अन्तरे
भक्त मोर पिता-माता, भक्त मोर प्राण ❋ केमने एमन भक्ते प्रहारिब वाण
एतेक भाविया युद्धे हइया विरत ❋ बसिलेन रघुनाथ अन्तरे चिन्तित ७६
सदय-हृदय देखि राजीव-लोचने ❋ तरणी विचार करे आपनार मने
आमार स्तवेते तुष्ट ह'ये रघुवर ❋ बुझि अस्त्र ना मारेन आमार उपर
केमने राक्षस-देह हइवे उद्धार ❋ युद्ध-विना परित्राण नाहि देखि आर
एतेक भाविया तुलि निल धनुर्व्वाण ❋ कहिछे कर्कश-वाक्य पूरिया सन्धान
तरणी कहिछे, राम, शोन बलि तोरे ❋ कहिलाम प्रियवाक्य बुझिवार तरे
केमने बुझिलि, आमि ना करिब रण ❋ एखनि पाठाब तोरे यमेर सदन

मुझको विदित हुआ कि लंका में मेरा ऐसा भी भक्त है। इस पर मैं अस्त्र कैसे चला सकता हूँ—यह कहकर उन्होंने अपने हाथ के धनुष-बाण रख दिये। राम ने कहा, विभीषण तुम से बताऊँ, ऐसे भक्त को मार कर मैं कैसे रह सकूँगा। व्यर्थ ही मैंने सागर बांधा, लंका का युद्ध त्याग कर फिर वन चला जाऊँ। मैंने कितने ही युद्ध किये, किन्तु अब सारी मेहनत बेकार गई। मैंने अब समझ लिया कि सीता का उद्धार न हो सकेगा। न सीता का उद्धार होगा और न मैं लौट कर अपने राज्य में जाऊँगा। भला मैं भक्त के अंगों पर वाण कैसे चलाऊँ। मेरे भक्त के अंग में काँटा भी चुभ जाय तो मेरे हृदय पर शेल की चोट सी लगती है। भक्त ही मेरे पिता-माता हैं, भक्त ही मेरे प्राणों के समान हैं, मैं ऐसे भक्त के शरीर पर बाणों का प्रहार कैसे कर सकूँगा। इतना सोचकर रघुनाथ युद्ध से हाथ खींचकर चिन्तित हो अलग बैठ गये ॥ ७६ ॥

राजीव लोचन राम को सदय-हृदय देखकर तरणी अपने मन ही मन विचारने लगा। कदाचित् मेरी स्तुति से तुष्ट होकर रघुवर मुझ पर अस्त्र नहीं चला रहे हैं। इस राक्षस-देह से कैसे मुक्ति मिलेगी, युद्ध के बिना मुक्ति का कोई उपाय नहीं। इतना सोचकर उसने धनुष-बाण उठा लिया। धनुष पर बाण चढ़ा कर उसने कठोर वाक्य कहना शुरू कर दिया। तरणी ने कहा, सुन राम, मै तेरे को बताता हूँ कि मैने ये प्यारे-प्यारे शब्द तुझे परखने के लिए कहे थे। तूने यह कैसे समझ लिया कि मैं युद्ध नहीं करूँगा, मैं अभी तुझे यमालय भेजता हूँ। तेरी जो वीरता है उसके बारे में चराचर में

तोर ये वीरत्व, ताहा जाने चराचरे ※ भरत लइल राज्य दूर करि तोरे
तोरे मारि लक्ष्मणेरे मारिब संग्रामे ※ सीतारे बसाब ल'ये रावणेर बाणे ७७
एत यदि कहिल तरणी महावीर ※ कोपे लक्ष्मणेर हैल कम्पित शरीर
लक्ष्मण बलेन, दुष्ट निशाचर जाति ※ प्रणेर भयेते बेटा करिल मिनति
कोथाकार भक्त बेटा, पापिष्ठ दुर्ज्जन ※ एत बलि शतबाण जुड़िल लक्ष्मण
देखिया तरणीसेन भाविल मनेते ※ मरिते वासना मम श्रीरामेर हाते
एतेक भाविया हैल विषण-वदन ※ तरणीर अभिलाष बुझे विभीषण ७८
जोड़ हाते विभीषण कहे रघुनाथे ※ ए बेटा दुर्ज्जय वीर लङ्कार मध्येते
एक बार लक्ष्मण मूर्च्छित हैल रणे ※ आर बार युद्धे केन पाठाओ लक्ष्मणे
आपनि मारह रणे दुष्ट निशाचर ※ एत शुनि धनुक धरिला रघुवर
चोख-चोख बाण मारे पूरिया सन्धान ※ अर्द्धपथे तरणी करिल खान-खान
यत बाण मारिलेन राम रघुमणि ※ बाणेते रामेर बाण काटिल तरणी
तरणी बाछिया मारे खरतर-शर ※ विन्धिया कोमल-अंग करिल जर्ज्जर
दुइजने युद्ध बाजे, दु'जने समान ※ कोपे राम जुड़िलेन अर्द्धचन्द्र-बाण
बाण देखि तरणीर मने हैल भय ※ सेइ बाणे काटिला रथेर चारि हय

विदित है। भरत ने तुझे भगाकर राज्य छीन लिया। तुझको मारने के बाद मैं युद्ध में लक्ष्मण का भी वध करूँगा और सीता को लेकर रावण के बाएँ बिठाऊँगा ॥ ७७ ॥

महावीर तरणी का इतना कहना था कि लक्ष्मण का शरीर क्रोध से काँपने लगा। लक्ष्मण ने कहा, यह दुष्ट निशाचर जाति का है, प्राणों के भय से इसने विनती की। यह कहाँ भक्त ठहरा, यह तो पापिष्ठ दुर्जन है। इतना कहकर लक्ष्मण ने सौ बाण धनुष पर चढ़ाये। यह देखकर तरणीसेन ने मन ही मन सोचा—मुझको तो राम के हाथों मरने की अभिलाषा है। यह सोचते ही उसका चेहरा विषाद से भर गया। विभीषण ने तरणी की अभिलाषा भाँप ली ॥ ७८ ॥

हाथ जोड़ कर विभीषण ने रघुनाथ से कहा, लंका में यह छोकरा दुर्जय वीर है। एकबार इससे लड़ते हुए लक्ष्मण मूर्च्छित हो चुके हैं, फिर क्यों दुबारा लक्ष्मण को युद्ध में भेज रहे हैं। स्वयं ही इस निशाचर को आप मारें। इतना सुनकर रघुवर ने धनुष उठा लिया और निशाना साध-साध कर तीखे-तीखे बाण फेंकने लगे। उन बाणों को तरणी ने आधे ही रास्ते में टुकड़े-टुकड़े कर दिये। जितने बाण राम रघुमणि ने फेंके, तरणी ने अपने बाणों के द्वारा उनको काट गिराया। तरणी ने चुन-चुन कर पैने-पैने बाण फेंके और राम के कोमल अंगों को छेद-छेद कर जर्जर कर डाला। दोनों में युद्ध ठन गया, दोनों ही बराबरी के थे। क्रोध में आकर राम ने धनुष पर अर्धचन्द्र

अश्व काटा गेल, रथ हइल अचल * लाफ दिया पड़िल तरणी महीतल
पर्व्वत पाषाण वृक्ष जा देखे सम्मुखे * तर्ज्जन करिया हाने श्रीरामेर बुके
अन्धकार करि फेले वृक्ष ओ प्रस्तर * प्रहारेते कातर हइला रघुवर
शुकाइल मुखचन्द्र, नाहि चले बाहु * पूर्णिमार चन्द्र येन ग्रासिलेक राहु
अस्थिर हइला रणे राम रघुमणि * श्रीरामे कातर देखि भाविछे तरणी
श्रीरामेर परिश्रम ह'येछे अधिक * दारा-सुत मिछा माया, सकलि अलीक
युगे-युगे कामना करिया बहुतर * पेयेछि परम-रिपु परम-ईश्वर
राज्य-धन-परिजन किछु नाहि चाइ * मरिया रामेर हाते गोलोकेते जाइ७९
एत यदि तरणी भाविल मने-मने * विभीषण कहिलेन श्रीरामेर काने
शुन प्रभु रघुनाथ, करि निवेदन * ब्रह्म-अस्त्रे हइबेक इहार मरण
अन्य-अस्त्रे ना मरिबे एइ निशाचर * सदय हइया ब्रह्मा दियाछेन वर
एतेक शुनिया राम कमल-लोचन * धनुकेते ब्रह्म-अस्त्र जुड़िला तखन
रविर किरण जिनि खरतर बाण * सेइ बाणे रघुनाथ पूरिला सन्धान
बाणेर गर्ज्जन, येन वारिद गरजे * विमानेते आसे बाण, जयघण्टा बाजे
स्वर्गेते देवता करे सुमंगल-ध्वनि * जोड़ हाते श्रीरामेरे कहिछे तरणी

बाण चढ़ाया। वह बाण देखकर तरणी के मन में भय समा गया। उस बाण से रथ के चारों घोड़े कट गये। घोड़े कट गये तो रथ अचल हो गया। तरणी कूद कर भूमि पर खड़ा हो गया। सामने पर्वत, पत्थर, पेड़ जो भी दिखता उसे उठाकर गरजते हुए श्रीराम के वक्ष पर फेंकने लगा। चारों ओर अँधियारा कर वह पेड़ और पत्थर फेंकने लगा, इस प्रहार से रघुवर बड़े कातर हुए। उनका चाँद सा मुखड़ा सूख गया और हाथ भी जवाब देने लगे। ऐसा प्रतीत होने लगा मानों पूर्णमासी के चन्द्रमा को राहु ग्रसने लगा हो। श्रीराम को कातर देखकर तरणी सोच रहा है कि राम अत्यन्त परिश्रम से श्रान्त हो गये हैं। पुत्र-कलत्र सभी कुछ मिथ्या है, माया है, अलीक है। युग-युग से कामना करने के उपरान्त परम-शत्रु के रूप में परम-ईश्वर को पाया है। मुझको राज्य-धन-सम्पत्ति कुछ भी नहीं चाहिए। केवल राम के हाथों मर कर गोलोकधाम जाना चाहता हूँ॥ ७९॥

तरणी ने जब मन ही मन इतना सोचा तो विभीषण ने राम के कानों में कहा, प्रभु रघुनाथ सुनो, निवेदन है कि इसकी मृत्यु केवल ब्रह्मास्त्र से ही होगी। अन्य किसी अस्त्र से इस निशाचर की मृत्यु नहीं होगी। ब्रह्मा ने सदय होकर उसको यह वरदान दिया है। इतना सुनकर कमललोचन राम ने धनुष पर ब्रह्म-अस्त्र चढ़ाया। रवि के किरण सा प्रखर वह बाण धनुष पर चढ़ाकर राम ने निशाना साधा। बाण का गर्जन भी ऐसा था मानों बादल गरज रहा हो। विमान से बाण आने लगा और विजय-घंट बजने

तोमार चरण हेरि परि हरि प्राण ※ परलोके दिओ प्रभु, श्रीचरणे स्थान
एतेक भाविते अंगे आसि पड़े बाण ※ तरणीर मुण्ड काटि करे खान-खान
दुइ खण्ड ह'ये वीर पड़े भूमितले ※ तरणीर काटा-मुण्ड "राम राम" बले
'राम-जय' शुभ-ध्वनि करे कपिगण ※ हाहाकार-शब्दे भूमे पड़े विभीषण
अंगेर दुकूल भासे नयनेर जले ※ धेये गिया विभीषणे राम कैला कोले
श्रीराम बलेन, शुन मित्र विभीषण ※ केन हे अधैर्य ह'ये करिछ रोदन
इतिमध्ये कि दुःख उठिल तव मने ※ कान्दिया आकुल हैले किसेर कारणे
विभीषण वले, प्रभु करि निवेदन ※ मरिल तरणीसेन आमार नन्दन
एत शुनि रघुनाथ कान्दिते लागिला ※ तोमार सन्तान, केन आगे न बलिला
तोमार नन्दन, यदि कहिते आगेते ※ युद्ध नाहि करिताम तरणी-संगेते
शोकाकुल हइया कान्देन दुइजन ※ श्रीराम-लक्ष्मण कान्दे यत कपिगण
सुग्रीव-अङ्गद कान्दे वीर हनूमान ※ कान्देन-सुषेण-आदि मन्त्री जाम्बवान
श्रीराम बलेन, शुन मित्र विभीषण ※ ना जानि, हृदय तव कठिन केमन
ब्रह्म-अस्त्र मारिते मन्त्रणादिल काने ※ आपनि करिले वध आपन-सन्ताने

लगा। स्वर्ग से देवता सुमंगल-ध्वनि करने लगे। तरणी हाथ जोड़ कर श्रीराम से कहने लगा, तुम्हारे चरणों को निहार कर मैं अपने प्राण त्यागता हूँ। हे प्रभु, परलोक में भी अपने श्रीचरणों में स्थान देना। तरणी ने अपने मन में इतना सोचा भर होगा कि वाण आकर उसके लगा और उसका मुंड कटकर अलग जा गिरा। दो खंड होकर वह वीर भूमि पर गिरा। तरणी का कटा मुंड 'राम-राम' उच्चारने लगा। सारे वानर 'राम जय' की शुभ ध्वनि करने लगे। तब हाय-हाय करता हुआ विभीषण जमीन पर गिर पड़ा, उसके अंग तथा वस्त्र आँसुओं से भीग गये। तब दौड़कर राम ने विभीषण को गोद में उठा लिया। श्री राम ने कहा, मित्र विभीषण, तुम ऐसा अधीर होकर क्यों रो रहे हो। इस बीच तुम्हारे मन में कौन सा दुःख उपजा जो तुम रोकर ऐसा व्याकुल होने लगे। विभीषण ने कहा, प्रभु निवेदन करता हूँ, यह मेरा पुत्र तरणीसेन मरा। इतना सुनकर रघुनाथ भी रोने लगे। तुमने पहले क्यों नहीं बताया कि यह तुम्हारा पुत्र है। अगर तुम पहले कह दिये होते कि यह तुम्हारा पुत्र है तो मैं तरणी के साथ युद्ध नहीं करता। इस प्रकार शोकाकुल होकर दोनों रोने लगे। श्रीराम-लक्ष्मण और सारे वानर भी रोने लगे। सुग्रीव, अंगद और वीर हनुमान भी रोने लगे, सुषेण आदि वानर और मंत्री जाम्बवान रोने लगे। श्रीराम ने कहा, मित्र विभीषण, पता नहीं तुम्हारा हृदय कितना कठोर है, तुम्हीं ने मुझे ब्रह्म-अस्त्र से मारने की मंत्रणा दी। स्वयं तुमने अपनी सन्तान का वध कराया। पहले तुमने इस बारे में क्यों नहीं सोचा और अब किस कारण तुम रो रहे हो। हे मित्र !

आगे केन विवेचना ना करिले मने ※ एक्षणे कान्दह मित्र, किसेर कारणे
शोक परिहर मित्र, स्थिर कर मन ※ अनित्य देहेर तरे कान्द कि कारण२८०
विभीषण बले, प्रभु, निवेदि चरणे ※ पुत्र-शोके कान्दि, हेन ना भाविह मने
धन्य आमि, पुण्यवान आमार सन्तान ※ मरिया तोमार हस्ते पाइल निर्व्वाण
हय से वैकुण्ठे गेल अथवा गोलोके ※ त्यजिल राक्षस-देह, मुक्त कैले ताके
कुम्भकर्ण-अतिकाय-आदि यत वीर ※ पुलके गोलोके गेल त्यजिया शरीर
शत्रुभाव करि सबे पाइल उद्धार ※ श्रीचरण-सेवा करि कि लाभ आमार
यदि पारिताम देह करिते पातन ※ वैकुण्ठ-नगरे मम हइत गमन
मृत्यु नाहि हबे, ब्रह्मादियाछेन वर ※ अनेक यन्त्रणा पाब अवनी-भितर
विषाद भाविया कान्दि इहार कारण ※ श्रीराम बलेन, दुःख त्यज विभीषण
येइ तुमि, सेइ आमि, इथे नाहि आन ※ साधुर जीवन-मृत्यु एकइ समान
यतदिन रवे तुमि अवनी-भितरे ※ आमार समान दया तोमार उपरे
एत शुनि विभीषण क्रन्दन संवरे ※ भग्न-दूत कहे गिया रावण-गोचरे२८१
दूत कहे, लङ्केश्वर, निवेदि चरणे ※ पड़िल तरणीसेन आजिकार रणे
तरणीसेनेर मृत्यु शुनि लङ्केश्वर ※ सिंहासन हैते पड़े धरणी-उपर

शोक मत करो, मन को स्थिर करो, यह शरीर नश्वर है, इसके लिए क्यों रोते हो॥ २८०॥

विभीषण ने कहा, प्रभु! तुम्हारे चरणों में निवेदन करता हूँ तुम ऐसा न सोचना कि मैं पुत्र-शोक से रो रहा हूँ। मैं धन्य हूँ और मेरा पुत्र भी पुण्यात्मा है जिसने तुम्हारे हाथों मर कर निर्वाण प्राप्त किया है। शायद वह वैकुंठ गया या गोलोक, उसने अपना राक्षस-शरीर त्यागा और तुमने उसको मुक्त किया। कुम्भकर्ण, अतिकाय आदि वीरों ने भी शरीर त्याग कर आनन्द से गोलोक के लिए प्रस्थान किया। ये लोग शत्रु बन कर मुक्ति पा गये। तुम्हारे चरण-कमलों की सेवा कर मुझको क्या लाभ हुआ। यदि मैं इस शरीर को छोड़ सकता तो मैं भी वैकुंठ जा सकता था। लेकिन ब्रह्मा ने वर दिया है कि मेरी मृत्यु नहीं होगी, और पृथ्वी पर मुझको बहुत दुःख सहना पड़ेगा। इसी कारण विषाद से भर कर मैं रो रहा हूँ। श्रीराम ने कहा, हे विभीषण, दुःख मत करो, जो तुम हो वही मैं हूँ, इसमें कोई झूठ नहीं। साधु के लिये जीवन-मृत्यु दोनों बराबर हैं। जितने दिन तुम संसार में रहोगे सदा तुम पर मेरी कृपा बनी रहेगी। इतना सुनकर विभीषण ने अपना क्रन्दन रोका। भग्न-दूत ने जाकर रावण के निकट निवेदन किया॥ २८१॥

दूत ने कहा, हे लंकेश्वर, तुम्हारे चरणों पर निवेदन करता हूँ कि आज के युद्ध में तरणीसेन वीरगति को पा गये। तरणीसेन की मृत्यु की वार्त्ता सुनकर लंकेश्वर सिंहासन से जमीन पर गिर पड़ा।

चैतन्य पाइया राजा करये क्रन्दन ※ राजारे प्रबोध देय पात्र-मित्रगण
मृत्तिकाते बसि भावे लङ्का-अधिकारी ※ घरे-घरे कान्दे यत सब वीर-नारी
पुत्रशोके अनिवार कान्दिल सरमा ※ बुझिया अनित्य देह, मने दिल क्षमा
अश्रुजले सरमार कलेवर भासे ※ जानकी प्रबोध देन अशेष-विशेषे
एइरूपे नारिगण कान्दे लङ्कापुरे ※ रावण मन्त्रणा करे, पाठाइब कारे
कृत्तिवास-पण्डितेर मधुर-वचन ※ लङ्का-काण्डे गाहिलेन तरणी-निधन२८२

वीरबाहु, धूम्राक्ष ओ भस्मलोचनेर युद्धे गमन ओ पतन

ये वीर पाठाइ नर-वानरेर रणे ※ सबे मरे, फिरे नाहि आसे एकजने
दिने दिने टुटे बल, मने पाइ शंका ※नर-वानर मारि केबा राखे पुरी-लंका८३
स्वर्गेते गन्धर्व्व एक चित्रसेन नाम ※ चित्राङ्गदा कन्या तार, रूपेते सुठाम
रावण हरिया तारे आने लङ्कापुरी ※ परम-सुन्दरी कन्या जिनि विद्याधरी
विष्णुर वरेते एक सन्तान प्रसवे ※ ताहार गुणेर कथा कहि, शुन सबे
राक्षस-औरसे जन्म वीरबाहु नाम ※ देव-गुरु-भक्त बड़, सदा जपे राम

चेतना लौट आने पर राजा क्रन्दन करने लगा। राजा को सारे पात्र-मित्र दिलासा देने लगे। इस प्रकार लंका का अधिकारी रावण भूमि पर बैठा हुआ सोचने लगा और घर-घर में वीर-नारियाँ रोने लगीं। पुत्रशोक से सरमा निरन्तर रोती रही। यह सोचकर कि यह शरीर नश्वर है, उसने मन को समझाया। सरमा के सारे अंग आँसुओं से भीग गये। जानकी उनको तरह-तरह से ढाढ़स बँधाने लगीं। इस प्रकार नारियाँ लंकापुर में रोती रहीं। रावण मंत्रणा करने लगा कि अब किसको भेजा जाय। पंडित कृत्तिवास के वचन बड़े मधुर हैं— उन्होंने लंका-कांड में तरणी-वध का प्रसंग गाया ॥ २८२ ॥

वीरबाहु, धूम्राक्ष और भस्मलोचन का युद्ध में गमन और पतन

जिस वीर को भी मैं नर-वानरों के रण में भेजता हूँ वे सभी मर जाते हैं, एक भी लौटकर नहीं आता। दिनोंदिन मेरी सारी शक्ति समाप्त होती जा रही है, मन में यह शंका उपजती है कि नर-वानरों को मार कर कौन लंका की रक्षा करेगा ॥ ८३ ॥

स्वर्ग में चित्रसेन नाम का एक गन्धर्व था जिसकी कन्या चित्रांगदा रूप-सौन्दर्य में अनुपम थी। रावण उस परम-सुन्दरी कन्या को, जो कि विद्याधरियों से भी अधिक रूपवती थी, हर कर ले आया। विष्णु के वर से उसने एक बेटे को जन्म दिया। उसके गुणों को बखानता हूँ, सब लोग सुनो। राक्षस के औरस रूप में उत्पन्न बालक का नाम वीरबाहु है। वह देव, गुरु आदि में बहुत भक्ति रखता है, सदा राम का नाम जपता रहता है। जन्म

जन्मिया ब्रह्मार सेवा करे निरन्तर ॐ कतदिने ब्रह्मा तबे तारे दिला वर
ब्रह्मा बले, वीरबाहु, जाह निजस्थान ॐ एइ हस्ती लह ऐरावतेर समान
एइ हस्ति-सहाये जिनिबे त्रिभुवन ॐ हस्तीर निधने हबे तोमार पतन
विष्णुभक्त हबे तुमि विष्णु-परायण ॐ विष्णुसेवा जतने करिबे सर्व्वक्षण
तोमा-प्रति तुष्ट आमि, जाओ तुमि घरे ॐ मम वरे अन्ते जाबे बैकुण्ठ-नगरे
धर्म्मशील हबे सर्व्व-शास्त्रेते पण्डित ॐ वर पेये पितार निकटे उपनीत ८४
रावण जिज्ञासे, तुमि हओ कोन जन ॐ कोथाय बसति कर, काहार नन्दन
वीरवाहु बले, पिता, हैले विस्मरण ॐ चित्राङ्गदा-गर्भे जन्म, तोमार नन्दन
तपे तुष्ट ह'ये ब्रह्मा दियाछेन वर ॐ पाइयाछि हस्ती ऐरावतेर सोसर
हस्ति-आरोहणे आमि यदि करि मने ॐ त्रैलोक्य जिनिति पारि दिनेकेर रणे
एत शुनि दशानन पुत्रे कैल कोले ॐ शिरे चुम्ब दिया बले सकरुण-बोले
रावण बले, वीरवाहु, थाक एइखाने ॐ लङ्का-राज्य भोग कर मेघनाद-सने
वीरवाहु बले, पिता, करि निवेदन ॐ मातामह-राज्ये आमि थाकिव एखन
तव प्रयोजन-काले आसिब हेथाय ॐ एत बलि वीरवाहु हइल विदाय ८५

लेने के बाद ही वह निरन्तर ब्रह्मा की सेवा करने लगा। कितने ही दिनों के उपरान्त ब्रह्मा ने उसे वर दिया। ब्रह्मा ने कहा, वीरवाहु तुम अपने घर लौट जाओ, यह ऐरावत सा हाथी तुम अपने साथ ले जाओ, इस हाथी की सहायता से तुम त्रिभुवन पर विजय प्राप्त करोगे। हाथी की मृत्यु होते ही तुम्हारा पतन होगा। तुम विष्णुभक्त हो, विष्णु में तुम्हारी भक्ति बनी रहे, तुम सदा-सर्वदा यत्न से विष्णु की सेवा करते रहना। तुम पर मैं प्रसन्न हूँ, तुम अपने घर जाओ। मेरे वर से अन्त में तुम बैकुंठधाम जाओगे। तुम धर्मपरायण और सर्वशास्त्रों में विज्ञ होगे। इस प्रकार वर पाकर वह अपने पिता के निकट पहुँचा ॥ ८४ ॥

रावण ने पूछा, तुम कौन हो, तुम्हारा कहाँ घर है और तुम किसके पुत्र हो। वीरवाहु ने कहा, पिता, आप भूल गये, मैं आपका पुत्र हूँ, चित्रांगदा के गर्भ से मेरा जन्म हुआ है। मेरी तपस्या से तुष्ट होकर ब्रह्मा ने वर और ऐरावत सरीखा हाथी दिया है। अगर मैं चाहूँ तो इस हाथी पर सवार होकर एक दिन के युद्ध में तीनों लोकों को जीत लूँ। इतना सुनकर दशानन ने पुत्र को गोद में उठा लिया और उसका माथा चूम कर करुण भाषा में कहा, वीरवाहु तुम यहीं रहो, मेघनाद के साथ लंका के राज्य का भोग करो। वीरवाहु ने कहा, पिता, मेरा निवेदन यह है कि मैं अभी मातामह के राज्य में ही रहूँगा, तुम्हारी आवश्यकता पड़ने पर यहाँ आऊँगा, इतना कहकर वीरवाहु ने विदा ले ली ॥ ८५ ॥

मातामह-राज्ये छिल गन्धर्व्व-लोकेते ※ युद्धेर वारता शुनि आइल लङ्काते
मने जाने नररूपी देव-नारायण ※ सफल हइबे देह करि दरशन
उद्देशे ब्रह्मार पदे नमस्कार करि ※ हस्ति पृष्ठे वीरबाहु गेल लङ्कापुरी
निरबधि विष्णु-बिना अन्ये नाहि मन ※ परम-धार्म्मिक वीर रावण-नन्दन
लङ्काय आसिया देखे छिन्न-भिन्न सब ※ नाहिक से नृत्य-गीत वाद्यभाण्ड-रव
महाशब्दे कलरव करिछे वानर ※ केह बले मार मार, केह बले धर
मृतदेह राशि-राशि राक्षस-बानरे ※ समुद्र गियाछे बाँधा गाछ ओ पाथरे
दग्ध बड़-वड़ घर लङ्कार भितर ※ देखिया से बीरबाहु समय-अन्तर
कुम्भकर्ण-आदि यत राक्षस प्रचण्ड ※ एकठाँइ स्कन्ध पड़े, आर ठाँइ मुण्ड
शकुनि गृधिनी आर कुक्कुर शृगाल ※ महानन्दे कलरव करे पाले-पाल
लक्ष-लक्ष रमणीर रोदनेर शब्द ※ भयङ्कर कर्म्म देखि भये हैल स्तब्ध
अन्तरीक्षे फिरे वीर हस्तीर उपरे ※ तिनद्वार फिरि गेल पश्चिमेर द्वारे
देखिल आछेन बसि श्रीराम-लक्ष्मण ※ जोड़हाते रहियाछे खुड़ा बिभीषण
भल्लूक-वानर कत वड़-वड़ वीर ※ निरखिया वीरबाहु कम्पित-शरीर

गन्धर्वलोक में वीरबाहु के मातामह का राज्य था। युद्ध की वार्त्ता सुनकर वीरबाहु लंका चला आया। मन ही मन वह जानता था कि स्वयं नारायण नर का रूप लेकर आए हैं, जिनके दर्शन से सारा तन-मन सफल हो जायगा। ब्रह्मा के चरणों में प्रणाम कर हाथी की पीठ पर बैठकर वीरबाहु लंकापुरी गया। सिवाय विष्णु के अन्य किसी में उसका कोई ध्यान नहीं था। रावण-नन्दन वीर भी था और परम धार्मिक भी। लंका में आकर उसने देखा कि सब कुछ तीन-तेरह हो गया है। न तो वह नाच-गाना रहा और ना गाजा-बाजा ही। चारों ओर वानरों का कलरव हो रहा था, कोई कहता था मारो-मारो, तो कोई कहता था पकड़ो-पकड़ो। चारों ओर राक्षसों और वानरों के मृतदेह बिखरे पड़े थे, समुद्र पेड़ और पत्थरों से बाँध डाला गया था। लंका के भीतर बड़े-बड़े मकान जल गये थे। यह देखकर वीरबाहु का मन भय से भर गया। कुम्भकर्ण आदि बड़े-बड़े राक्षसों का कहीं मुंड पड़ा है तो कहीं धड़। गिद्ध, कुत्ते, स्यार और गीदड़ झुंड के झुंड आनन्द से शोर मचा रहे थे। लाखों निशाचर-रमणियों के रुदन का शब्द सुनाई पड़ रहा था। यह भयानक दृश्य देखकर वह वीर स्तब्ध रह गया। हाथी पर सवार वह वीर अन्तरिक्ष में फिरता रहा। तीनों द्वारों का चक्कर लगाकर वह पश्चिमद्वार पर गया। वहाँ उसने देखा कि श्रीराम-लक्ष्मण बैठे हैं और उनके सम्मुख हाथ जोड़े चाचा विभीषण बैठे हैं। भालू और वानरों में कितने ही बड़े-बड़े वीर बैठे हैं। यह देखकर वीरबाहु का शरीर काँपने लगा। श्रीराम-लक्ष्मण को देखकर रावण-नन्दन ने उनके दोनों चरणों

श्रीराम-लक्ष्मणे देखि रावण-नन्दन ❋ उद्देशेते वन्दिलेन दोंहार चरण
विभीषण-खुड़ाके प्रणाम कैल मने ❋ प्रणमिल भक्तवृन्द यत कपिगणे
विष्णु-अवतार राम देखिल नयने ❋ जानिल राक्षस-वंश-ध्वंस एतदिने ८६
एतेक भाविया गेल पुरीर भितर ❋ सिंहासन त्यजि भूमे ब'से लङ्केश्वर
कान्दिछे तरणी-शोके हइया कातर ❋ कुड़िच'क्षे वारिधारा बहे निरन्तर
दाण्डायेछे पात्र-मित्र चतुर्द्दिके घिरे ❋ दशानन बले, युद्धे पाठाइब कारे
वीर नाहि लङ्काते, भाण्डारे नाहि धन ❋ कुम्भकर्ण मरिल, ना मरे विभीषण
मारिल आपन-पुत्रे आपन-साक्षाते ❋ मजाले कनक-लङ्का नर-वानरेते
जिनिवे वानर-नरे, के आछे एमन ❋ लङ्काते आइल राम हइया शमन
कारे पाठाइव रणे, भावे दशानन ❋ हेनकाले वीरबाहु वन्दिल चरण
वीरबाहु देखिया उठिल दशानन ❋ आलिंगन करि दिल रत्न-सिंहासन
रावण वले, वीरबाहु, करि अवगति ❋ देखिला आपन च'क्षे लङ्कार दुर्गति
स्वर्ग-मर्त्य-पाताल जिनिनु त्रिभुवन ❋ नर-वानरेर हाते संशय जीवन
वीरबाहु वले, पिता, कह त संवाद ❋ नर, वानरेर सने किसेर विवाद
रावण वले, शुन पुत्र, कहि ये तोमारे ❋ दशरथ राजा छिल अयोध्या-नगरे

में नमन किया। मन ही मन विभीषण-चाचा को प्रणाम किया। सारे भक्त कपियों को उसने प्रणाम किया। अपनी आँखों से उसने विष्णु-अवतार श्रीराम को देखा। उसने यह जान लिया कि इतने दिनों में अब राक्षस-वंश के ध्वंस होने के दिन आ गये ॥ ८६ ॥

इतना सोचकर वह पुरी के भीतर गया। सिंहासन छोड़कर लंकेश्वर जमीन पर बैठा है और तरणी के शोक में अधीर है। उसके बीस नयनों से निरन्तर आँसू गिर रहे हैं। चारों ओर उसे घेर कर पार्षद लोग खड़े हैं। दशानन कह रहा है, कि अब मैं किसको युद्ध करने भेजूँ। लंका में वीर नहीं रहा और भंडार में अब धन नहीं रहा। कुम्भकर्ण मर गया किन्तु विभीषण नहीं मरा। अपने ही पुत्र का उसने अपने सम्मुख वध कराया। नर-वानरों ने मिलकर सोने की लंका का ध्वंस कर दिया। वानरों तथा नर को हरावे, ऐसा कौन है। राम यमराज बन कर लंका में आ गया। दशानन सोचने लगा कि अब मैं किसको रण में भेजूँ। ऐसे ही समय वीरबाहु ने आकर चरण-वन्दना की। वीरबाहु को देखकर दशानन उठ कर खड़ा हो गया और उसका आलिंगन कर बैठने के लिए रत्न-जटित सिंहासन दिया। रावण ने कहा, वीरबाहु, तुमने अपनी आँखों से लंका की दुर्दशा देख ली। मैंने स्वर्ग-मर्त्य-पाताल तीनों लोकों पर विजय प्राप्त की, पर आज नर-वानरों के हाथों मेरा जीवन विपत्ति में पड़ा है। वीरबाहु ने कहा, पिता जी मुझको सारा समाचार तो बताओ, नर-वानर के साथ यह

तार बेटा राम लोकमुखे शुन्ते पाइ ※ राज्य केड़े ल'ये दूर करे दिल भाइ
दुइ भाइ बनवासी संगे ल'ये नारी ※ पञ्चवटी-वने छिल ह'ये जटाधारी
शूर्पणखा गियाछिल पुष्प-अन्वेषणे ※ नाक-कान काटे तार अनुज-लक्ष्मणे
आमि ह'रे आनिलाम ताहार सुन्दरी ※ वानर लइया राम एल लङ्कापुरी
कुम्भकर्ण-आदि वीर पड़ियाछे रणे ※ के आर जुझिबे नर-वानरेर सने ८७
वीरवाहु बले, शंका ना कर राजन ※ इंगिते मारिया दिव श्रीराम-लक्ष्मण
एत बलि वीरबाहु भावे मने-मन ※ विष्णु हस्ते मरि जाब वैकुण्ठ-भुवन
वीरबाहु वले, पिता तुमि जान भाले ※ इन्द्र-आदि देव काँपे आमारे देखिले
बिदाय करह, जाव रणेर भितर ※ एत बलि वीरबाहु चलिल सत्वर
नाना-रत्न-दान राजा दिल पुत्र-तरे ※ हार ओ नूपुर ताड़ नाना-अलङ्कारे
प्रतापे प्रचण्ड वीर, संग्रामे सुधीर ※ बापेर आज्ञाय साजि चले महावीर ८८
हेनकाले माता तार दूत मुखे शुने ※ धेये आसे द्रुतगति पुत्र-दरशने
कार बोले जाह पुत्र, करिवारे रण ※ वड़-वड़ वीर सब हइल निधन
वीरशून्य हइल कनक-लङ्कापुरी ※ तुमि युद्धे गेले आमि प्राण परिहरि

कैसा विवाद है। रावण ने कहा, सुनो बेटा, तुमसे बताता हूँ। अयोध्या नगर में एक राजा दशरथ था। उसका बेटा राम है। लोगों के मुँह सुना है कि उसके भाई ने राज्य छीन कर उसको भगा दिया। दोनों भाई जटाधारी वन कर साथ में नारी लेकर बनवास करने पंचवटी में रहने लगे। शूर्पणखा वहाँ फूल तोड़ने गई थी। उसके छोटे भाई लक्ष्मण ने उसके नाक-कान काट लिये। मैं उसकी सुन्दरी स्त्री को चुरा लाया। राम वानरों को लेकर लंका में आ धमका। कुम्भकर्ण आदि वीर युद्ध में मारे गये, अब नर-वानरों के साथ कौन जूझेगा ॥ ८७ ॥

वीरवाहु ने कहा, राजन, कोई शंका मत करो। मैं देखते ही देखते श्रीराम-लक्ष्मण को मार डालूँगा। इतना कहकर वीरवाहु मन ही मन सोचने लगा, विष्णु के हाथों मर कर वैकुंठ जाऊँगा। वीरवाहु ने कहा, पिता, तुम भली-भाँति जानते हो कि मुझको देखते ही इन्द्र आदि देवता काँपने लगते हैं। मुझको विदा कर दो, मैं रणक्षेत्र में जाऊँगा। इतना कहकर वीरवाहु शीघ्र चल पड़ा। राजा ने अपने पुत्र के लिए विभिन्न रत्न दान दिये। रत्नहार, नूपुर और विभिन्न अलंकारों से उसको सुसज्जित किया। प्रताप से प्रचंड वीर, संग्राम में सुधीर, महावीर वीरवाहु पिता की आज्ञा से सुसज्जित हो चल पड़ा ॥ ८८ ॥

दूत के मुँह से यह वृत्तान्त सुनकर उसकी माँ पुत्र को देखने दौड़ आई और बोली, हे पुत्र, किसके कहने पर तुम युद्ध करने जा रहे हो, बड़े-बड़े वीरों का निधन हो गया, सोने की लंका वीरों से शून्य हो गयी। तुम युद्ध में

कुम्भकर्ण-हेन वीर रणे गिया मरे ※ अतिकाये मारियाछे नर ओ वानरे
मायेर वचन शुनि वीरबाहु हासे ※ मधुर-वचन कहि जननीरे तोषे
चरणेर धूलि लय माथार उपर ※ हासिते हासिते करे मायेरे उत्तर
अबोध अबला-जाति, नाहि बुझ कार्य ※ आमि युद्ध ना करिले के राखिबे राज्य
आशीर्व्वाद कर माता, तुमि एक चिते ※ तोमार प्रसादे रण जिनिब इंगिते
संग्रामे रामेर हाते हइले निधन ※ रथे चड़ि जाब आमि बैकुण्ठे-भुवन
मायेरे प्रबोध दिया हस्ति-स्कन्धे चड़े ※ विदाय लइया वीर जुझिवारे नड़े२८९
वीरबाहु रणे चले ह'ये सेनापति ※ हस्ती अश्व बहुठाट चलिल संहति
चलिल धूम्राक्ष-वीर रथेते चड़िये ※ मार-मार-शब्दे धाय नाना अस्त्र ल'ये
सवार पश्चाते चले भस्माक्ष दुर्ज्जय ※ चर्म्मे ढाकि रथखान सबामध्ये रय
जार मुख देखे, सेइ हय भस्ममय ※ संसारे काहारो मुख नाहि निरीक्षय
हेन महावीर नड़े रण करिवारे ※ सम्मुख-संग्रामे केवा जिनिबे ताहारे
ताहार सहित एल कतशत वीर ※ हस्ति-' परे वीरवाहु सुन्दर-शरीर
मने-मने वीरवाहु चिन्ते अनुक्षण ※ केमने पाइब आमि राम-दरशन२९०

जाओगे तो मैं प्राण त्याग दूँगी। कुम्भकर्ण जैसे वीर ने रण में प्राण दिये। नर और वानरों ने मिलकर अतिकाय को मार डाला। माँ के वचन सुनकर वीरवाहु हँसने लगा और मधुर वचन कहकर जननी को प्रसन्न करने लगा। माँ के चरणों की धूलि सिर से छुवाकर हँसते-हँसते उसने माँ के प्रश्नों का उत्तर दिया। वह वोला, तुम लोग अवोध अवला जाति की हो, व्यावहारिक वातों में अनभिज्ञ हो, मैं युद्ध न करूँ तो राज्य की कौन रक्षा करेगा। हे जननी, तुम एकचित्त होकर आशीर्वाद दो, तुम्हारे प्रसाद से मैं सहज में ही रण जीत लूँगा। संग्राम में यदि राम के हाथ मेरा निधन हो जाय तो रथ पर सवार होकर वैकुंठ-धाम की यात्रा करूँगा। माँ को प्रवोध देकर वह हाथी की पीठ पर सवार हो गया और विदा लेकर लड़ने के लिए चल पड़ा ॥ २८९ ॥

वीरवाहु सेनापति वन कर रण में चल पड़ा। हाथी घोड़ा आदि कई प्रकार की सेना चल पड़ी। धूम्राक्ष वीर रथ पर सवार होकर विभिन्न अस्त्रों से सुसज्जित हो मार-मार शब्द करता चला। सवके पीछे भस्माक्ष तथा दुर्जय चले। अपने रथ को चमड़े से लपेट कर वह वीच में रहा। जिसके मुख की ओर वह दृष्टि डालता वही भस्म हो जाता। संसार में वह किसी का भी मुँह नहीं देखता था। ऐसा महावीर भस्माक्ष रण करने के लिए चल पड़ा। उसके साथ सम्मुख-संग्राम में कौन जीत सकता था? उसके साथ सैकड़ों वीर चले। सुन्दर शरीर धारी वीरवाहु हाथी पर सवार होकर चला। मन ही मन वीरवाहु निरन्तर चिन्तन करता रहा कि कैसे राम का दर्शन हो ॥ २९० ॥

प्रथमेते उत्तरिल वानर-गोचर ※ मार-मार-शब्द करि धाइल वानर
भस्मलोचनेरे तवे डाकिल तखन ※ जुझिते दिलेक आज्ञा रावण-नन्दन
वीरबाहु आज्ञा यदि दिलेक ताहाके ※ से भस्मलोचन जाय रामेर सम्मुखे
चर्म्मे ढाकियाछे रथ, च'क्षे चर्म्म-ठुलि ※ राम-आगे चलिल भस्माक्ष महाबली
जेखानेते श्रीराम् सुग्रीव विभीषण ※ सेइखाने जाय ठुलि खुलिवारे मन
जोड़ करे श्रीरामे कहृये विभीषण ※ घटिल प्रमाद बड़, रक्ष नारायण
देखह भस्माक्ष-वीर उपनीत आसि ※ जाहारे देखिबे, सेइ हृबे भस्मराशि
चर्म्मे आच्छादित रथ, देख विद्यमान ※ इहार भितरे आछे शमन-समान
भस्माक्ष इहार नाम, बड़इ दुर्द्धर ※ करिल कठोर तप सहस्र-वत्सर
तपे तुष्ट ब्रह्मा जबे दिते एल वर ※ राक्षस बलिल, मोरे करह अमर
ब्रह्मा बले, अन्य वर चाह निशाचर ※ सृष्टिनाश हृबे तुमि हइले अमर
निशाचर बले, तबे करि निवेदन ※ सेइ भस्म हृबे, जार हेरिब बदन
ब्रह्मा बले, दिनु, जाहा एल तव मुखे ※ घरे गिया ब'से थाक ठुलि दिया चोखे
वर पेये राक्षस हइल आनन्दित ※ सत्य-मिथ्या केमनेते जाइब प्रतीत

पहले वह वानरों के निकट जा पहुँचा तो वानर मार-मार शब्द करते हुए उसकी ओर लपके। तब भस्मलोचन को बुलाकर रावणनन्दन वीरबाहु ने लड़ने का आदेश दिया। जब वीरबाहु ने आज्ञा दी तो भस्मलोचन राम के सम्मुख चल पड़ा। चमड़े से उसका रथ ढका हुआ था और आँखों पर भी चमड़े की अँधेरियाँ पड़ी हुई थीं। महावली भस्माक्ष राम के सम्मुख उस ओर चला जहाँ श्रीराम के साथ सुग्रीव और विभीषण बैठे थे। उसका उद्देश्य था कि वहीं जाकर वह अपनी आँखों से अँधेरियाँ हटा लेगा। विभीषण ने श्रीराम से हाथ जोड़ कर कहा, हे नारायण रक्षा करो, बहुत बड़ी विपत्ति आ पड़ी है। देखो वीर भस्माक्ष आ पहुँचा है। जिसको भी वह देख लेगा वही भस्म के रूप में परिणत हो जायगा। सामने चमड़े से ढको हुआ रथ है, इसके भीतर साक्षात् यम बैठा है। इसका नाम है भस्माक्ष, यह बड़ा ही दुर्द्धर्ष है। इसने हजार वर्ष तक कठोर तपस्या की। तपस्या से तुष्ट होकर ब्रह्मा वर देने आए, तब इस राक्षस ने कहा कि मुझको अमर बना दो। ब्रह्मा ने कहा, हे निशाचर तुझको अमर बना देने से सृष्टि का ध्वंस हो जायगा। तब निशाचर ने कहा, मेरा निवेदन है कि मैं जिसकी ओर भी देखूँ वही भस्म हो जाय। ब्रह्मा ने कहा, जो तुमने माँगा मैंने तुमको वही वर दिया। अब घर जाकर आँखों पर अँधेरियाँ चढ़ाकर बैठ जाओ। वर पाकर राक्षस बड़ा खुश हुआ। कैसे पता चले कि यह वर सच है या झूठ, यह जानने के लिए उसने अपने गुट में जितने राक्षस थे उनकी ओर देखा। उनके मुख की ओर देखते ही वे सब के सब भस्म हो गये।

संहति इहार छिल रक्षः यतजन ※ मुख निरखिते भस्म हइल तखन
वर पेये निशाचर हरिष-अन्तर ※ स्त्री-पुत्र ना रहे ऐ पापिष्ठ-गोचर
एहेन पापिष्ठ रणे हैल आगुयान ※ इहार संग्रामे प्रभु, हओ सावधान२९१
विभीषण-वचने विस्मय हय मने ※ पुनरपि श्रीराम कहेन विभीषणे
रणे भंग नाहि दिब, जुझिव अवश्य ※ आमि भस्म हइ, किंवा ऐ हवे भस्म
विभीषण वले, प्रभु, ना करिह भय ※ करह उपाय-चिन्ता, मरिवे निश्चय
आछये मन्त्रणा एक, शुन नारायण ※ इहार सम्मुखे देह धरिया दर्पण
जखनि आसिबे बेटा मुख देखिवारे ※ दर्पणे आपन-मुख पावे देखिवारे
दर्पणे आपन-मुख देखि निशाचर ※ आपनि हइबे भस्म, ना करिह डर
हेन उपदेश यदि कहे विभीषण ※ मित्र मित्र बलि राम दिला आलिंगन
श्रीराम वलेन, सैन्य हओ एकपाश ※ यावत् राक्षस दुष्ट ना हय विनाश
श्रीराम दर्पण-अस्त्र जुड़िल धनुके ※ छुटिया रामेर बाण रहिल सम्मुखे
आछिल रामेर संगे यत कपिगण ※ वाणेते सवार मुख हइल दर्पण२९२
हेनकाले सेइ दुष्ट संग्रामे पशिल ※ राम-अग्रे दु'चक्षेर ठुलि खसाइल
दर्पणास्त्रे रघुनाथ कैला आच्छादन ※ यत बानरेर मुख हइल दर्पण
देखिल भस्माक्ष-वीर जाहार वदन ※ मुख देखा नाहि गेल, देखिल दर्पण

वर पाकर निशाचर तो बड़ा खुश हुआ लेकिन उस पापी के पास उसके स्त्री पुत्र नहीं रहे। ऐसा पापी आज रण में आया हुआ है। हे प्रभु, इसके साथ युद्ध करते हुए सावधान रहना ॥ २९१ ॥

विभीषण के वचन से यद्यपि श्रीराम विस्मित हुए, तथापि उन्होंने विभीषण से कहा, रण से भागूँगा नहीं, अवश्य ही इससे लड़ूँगा; चाहे मैं भस्म हो जाऊँ और चाहे वह। विभीषण ने कहा, प्रभु भयभीत न हों, उपाय की चिन्ता की जाय, यह अवश्य ही मरेगा। हे नारायण सुनो, मेरी एक मंत्रणा है। उसके सामने दर्पण धर दो। जैसे ही वह मुख देखने के लिए आयेगा दर्पण में अपना मुख देख पायेगा। दर्पण में अपना मुख देखकर निशाचर स्वयं भस्म हो जायगा, आपको कोई भय नहीं होगा। विभीषण ने जब ऐसा परामर्श दिया तो राम ने मित्र-मित्र कहकर उसे गले से लगा लिया। श्रीराम ने कहा, सारी सेना एक बगल हो जाओ जब तक कि इस राक्षस का विनाश न हो जाय। श्रीराम ने धनुष पर दर्पण अस्त्र लगाया। बाण छूटकर राम के सम्मुख बना रहा। राम के साथ जितने भी कपि थे, बाण के कारण सभी के मुख दर्पण बन गये ॥ २९२ ॥

ऐसे ही समय दुष्ट संग्राम में पिल पड़ा। राम के सम्मुख आ उसने दोनों आँखों से अँधेरियाँ हटा लीं। दर्पणास्त्र से रघुनाथ ने पहले ही सभी को ढक दिया था, सारे वानरों के मुख दर्पण बन गये थे।

मुख नाहि देखिया कुपिल निशाचर ॐ श्रीरामे डाकिया तबे बलिछे उत्तर
राक्षस बलिछे, तुमि प्राणेते कातर ॐ भय यदि कर, पलाइया जाह घर
राम बले, राक्षसा, कि इच्छिलि मरण ॐ एखनि पाठाब तोरे शमन-सदन
रामेर वचन शुनि कोपे निशाचर ॐ रथ चालाइया दिल रामेर गोचर
रामे देखिवारे वीर मेलिल लोचन ॐ राक्षस-सम्मुखे राम धरिला दर्पण
दर्पण-भितरे देखि आपनार आस्य ॐ निज-मुख देखिया आपनि हैल भस्म
भस्म ह'ये पड़े वेटा रथेर उपरे ॐ भस्माक्षेर पतने राक्षस धाय डरे
भस्माक्ष पड़िल यदि, राक्षसेर भङ्ग ॐ राक्षसेर भङ्ग देखि बानरेर रंग९३
भस्माक्षेर मृत्यु देखि राक्षस पलाय ॐ दूर हैते वीरबाहु देखिवारे पाय
कुपित हइया वीर चाहे घन-घन ॐ हाते धनु कहितेछे रावण-नन्दन
राक्षेसेर भंग देख बानर हर्षित ॐ हस्तिपृष्ठे वीरबाहु चलिल त्वरित
श्वेतवर्ण हस्ती, जेन पर्व्वत-प्रमाण ॐ दुर्ज्जय दशन ऐरावतेर समान
हस्ति पृष्ठे नाना-अस्त्र मुषल-मुद्गर ॐ ऐरावत-'परे येन एल पुरन्दर
राक्षसेर भंग देखि रावण-नन्दन ॐ आश्वास-वचने सबे कहिछे तखन

भस्माक्ष-वीर ने जिसके मुख की ओर भी देखा उसका मुख नहीं दिखाई पड़ा, केवल दर्पण दिखाई पड़े। मुख न देख सकने से राक्षस बिगड़ खड़ा हुआ। श्रीराम को पुकार कर उसने कहा, तुम प्राणों के भय से कातर हो। यदि भयभीत हो तो भाग कर घर चले जाओ। राम ने कहा, हे राक्षस तुझे क्या मृत्यु की इच्छा है, अभी तुझे यम के घर भेज देता हूँ। राम के वाक्य सुनकर क्रोध से निशाचर ने राम के निकट रथ चला दिया। राम को देखने के लिए वीर ने आँखें खोल दी। राक्षस के सम्मुख राम ने दपण रख दिया। दर्पण के भीतर अपना मुख देखकर वह स्वयं भस्म हो गया। भस्म होकर वह अभागा अपने ही रथ पर गिरा। भस्माक्ष के पतन से राक्षस डर कर भागने लगे। इस प्रकार भस्माक्ष के पतन से राक्षसों में भगदड़ मच गई। राक्षसों की भगदड़ देखकर वन्दरों को आनन्द आ गया॥ २६३॥

भस्माक्ष की मृत्यु देखकर जब राक्षस भागने लगे तो उन्हें दूर से वीरबाहु ने देखा। क्रोध में आकर वीर उन्हें बार-बार देखने लगा। रावण-नन्दन वीरबाहु हाथ में धनुष लेकर कहने लगा। राक्षसों की भगदड़ देखकर वानर हर्षमग्न हैं। वीरबाहु हाथी की पीठ पर सवार हो तुरन्त चल पड़ा। श्वेतवर्ण का हाथी ऐसा था मानों पर्वत हो या अजेय दाँतों वाला ऐरावत हो। हाथी की पीठ पर मूसल, मुद्गर आदि विभिन्न अस्त्र लदे थे; ऐसा प्रतीत हुआ मानों ऐरावत पर सवार होकर स्वयं पुरन्दर आ गये हों। रावण-नन्दन ने राक्षसों की भगदड़ देखकर सभी को ढाढ़स बँधाया और कहा, हे राक्षसो,

ना पलाय राक्षस, संग्रामे एस फिरे ❋ एखनि मारिब रणे नर ओ वानरे
वीरबाहु-वाक्ये फिरे निशाचरगण ❋ पुनरपि एल रणे करिया तर्ज्जन
देखिया वानरगणे वीरबाहु बले ❋ हस्ती चालाइया बीर दिल रणस्थले ९४
वीरबाहु बले, कपि, दण्ड-दुइ थाक ❋ वानर-कटके रणे देखाब विपाक
चालाइया दिल हस्ती संग्राम-भितर ❋ देखिया रुषिल रणे यतेक वानर
कोपेते अङ्गद-बीर बालिर नन्दन ❋ घोर सिंहनाद करि करिछे तर्ज्जन
रुषिल राजार-बेटा, कार साध्य थाके ❋ कपिगण संग्रामे चलिल एके-एके
नल-नील-कुमुद-सम्पाति-आदि करि ❋ महेन्द्र देवेन्द्र आर सुषेण केसरी
गवाक्ष-शरभ-गय-द्विविद वानर ❋ दीर्घाकार पर्व्वत-प्रमाण कलेवर
सुग्रीवेर सैन्य नड़े देखिते अपार ❋ विंशति वानरे अङ्गदेर आगुसार
आगुदले अङ्गदेर हैल आगमन ❋ राक्षसेर सने जाय करिवारे रण
योजन पर्व्वत दश निल से उपाड़ि ❋ राक्षस-उपरे फेले अति ताड़ाताड़ि
सन्धान पूरिया वीरबाहु एड़े वाण ❋ पर्व्वत काटिया वीर करे खान-खान
पाँचबाण हानिलेक अङ्गदेर बुके ❋ पड़िल अंगद-वीर, रक्त उठे मुखे ९५

भागो मत, संग्राम में लौट आओ। मैं अभी युद्ध में नर और वानरों का संहार करूँगा। वीरबाहु के कहने पर राक्षस फिर लौट कर आ गये और रणक्षेत्र में गरजने लगे। वानरों को देखकर वीर वीरबाहु ने रणभूमि में अपना हाथी आगे चला दिया॥ २६४॥

वीरबाहु ने कहा, अरे दो घड़ी तो ठहर जाओ, आज मैं वानरों की सेना में विपत्ति ढा दूँगा। यह कहकर उसने रण-भूमि के भीतर अपना हाथी चला दिया। यह देखकर सारे वानर क्रोधित हो गये। क्रोध में आकर वाली का नन्दन वीर अँगद गर्जन-तर्जन करते हुए घोर सिंहनाद करने लगा। जब राजा बालि का बेटा अंगद रोष में आया तो फिर कौन ठहर सकता था। सभी वानर एक-एक कर युद्ध में आगे-आगे चलने लगे। नल, नील, कुमुद, सम्पाति, महेन्द्र, देवेन्द्र, और सुषेण, गवाक्ष, शरभ, गय, द्विविद नामक सभी प्रमुख वानर चल पड़े। पर्वत के समान वृहदाकार शरीर लिये हुए वे सब वानर चल पड़े। सुग्रीव की सेना देखने में अत्यन्त अपार लगती थी। अंगद का हरावल (अगला) दस्ता बीस वानरों का था। अग्रवर्त्ती दल के साथ अंगद का आगमन हुआ। राक्षस के साथ युद्ध करने के लिए अंगद चल पड़ा। उसने योजन भर लम्बे दस पर्वत उखाड़ लिये और उनको राक्षस पर फेंका। वीरबाहु ने निशाना साधकर बाण चलाया और पर्वतों को काट कर उसने खंड-खंड कर डाला। अंगद के सीने पर भी उसने पाँच बाण चला दिये। अंगद वीर गिर पड़ा और उसके मुख से खून निकलने लगा॥ २६५॥

राजपुत्र रणे पड़े, देखे हनूमान् ※ शालगाछ उपाड़िल दिया एकटान
हस्तीर माथाते मारे दुहातिया बाड़ि ※ हस्तीर माथाय ठेके बृक्ष हैल गुँड़ि
बृक्ष-गोटा व्यर्थ गेल, कोपे हनूमान ※ आर बृक्ष उपाड़िल दिया एकटान
उपाड़िया आने बृक्ष पञ्चाश-योजन ※ बृक्षेर छायाते ढाके रविर किरण
एड़िलेक बृक्ष-गोटा धरि बाहुबले ※ करिया बिषम शब्द बृक्ष-गोटा चले
हस्तीर माथाय बृक्ष गुँड़ा ह'ये जाय ※ रुषिया दारुण हस्ती क्रोधभरे धाय
क्रोधभरे वीरबाहु एड़े दशबाण ※ बाण फुटि भूमिते पड़िल हनूमान९६
शराघाते हनूमान अचेतन हैल ※ नल-नील-कुमुदादि रणे प्रवेशिल
महेन्द्र देवेन्द्र आर सुषेण केशरी ※ नय-बीर जुझिवारे एल आगुसरि
नय-वीरे देखि तबे एड़े नय-शर ※ बिन्धिया बानरगणे करिल जर्ज्जर
दश-दश बाणे प्रति वानरेरे बिन्धे ※ बिन्धिल बानरगणे बसि गजस्कन्धे
गवाक्ष-शरभ-गय ओ गन्धमादन ※ बाणे अचेतन ह'ये पड़े पञ्चजन
बानर-कटक बिन्धे करि खान-खान ※ पलाय बानरगण लइया पराण२९७
धाइया बानर कहे श्रीरामेर ठाँइ ※ वीरबाहु-बाणे प्रभु, कारो रक्षा नाइ

हनुमान ने देखा, राजपुत्र युद्ध में गिर पड़ा। उसने झटके से एक शाल वृक्ष उखाड़ लिया। दोनों हाथों से उसने उसको पकड़कर हाथी के सिर पर दे मारा। हाथी के सिर से टकराकर वृक्ष खंड खंड हो गया। एक समूचा वृक्ष व्यर्थ गया तो कोप से हनुमान ने खींचकर एक दूसरा पेड़ उखाड़ लिया। वह वृक्ष इतना बड़ा था कि उसके पचास-योजन के घेरे में सूर्य की किरणें भी छिप गईं थीं। बीहड़ शब्द करते हुए उसने समूचा वृक्ष हाथी के सिर पर दे मारा लेकिन वह भी हाथी के सिर से टकराकर सौ टुकड़े हो गया। तब गुस्से में बावला होकर हाथी दौड़ने लगा। क्रोध में आकर वीरबाहु ने दस बाण चला दिये तो बाणों से छिदकर हनुमान भूमि पर गिर पड़े॥ २९६॥

जब बाणों के आघात से हनुमान अचेतन हो गया तब नल, नील, कुमुद आदि ने रण में प्रवेश किया। महेन्द्र, देवेन्द्र, सिंह सदृश सुषेण आदि नौ वीर युद्ध करने के लिए आगे बढ़ आए। नौ वीरों को देखकर उसने नौ बाण चलाये। उसने बाणों से छेद-छेद कर वानरों को व्याकुल कर डाला। हाथी के कन्धे पर बैठे वीरबाहु ने दस-दस बाण एक-एक बन्दर को मारे। गवाक्ष, शरभ, गय और गन्धमादन आदि पाँच वानर बाण की मार से अचेतन हो गिर गये। साध-साध कर एक-एक वानर को वह बाणों से मारने लगा और वानर अपने प्राण लेकर भागने लगे॥ २९७॥

वानरों ने दौड़ कर श्रीराम से जाकर कहा, हे प्रभो, वीरबाहु के बाणों से किसी की भी रक्षा नहीं हो रही है। कालान्तक यम सा वह रणक्षेत्र में

कालान्तक यम जेन आसि करे रण ❋ पड़ियाछे हनूमान-आदि कपिगण
कुम्भकर्ण-हाते सबे पेयेछे निस्तार ❋ आजिकार रणे बुझि सबार संहार
एतेक रणेर कथा शुनि दाशरथि ❋ चलिलेन रघुनाथ लक्ष्मण-संहति
राम पाछे चलिल सुग्रीव-बिभीषण ❋ गाछ-पाथर हाते करि धाय कपिगण२९८
हस्तीर स्कन्धेते थाकि करिछे संग्राम ❋ बिभीषणे जिज्ञासा करेन प्रभु राम
श्रीराम बलेन, शुन मित्र विभीषण ❋ कोन् वीर आसियाछे हस्ति-आरोहण
ऐरावत-सम गज अति-भयङ्कर ❋ नाना-अस्त्र तुलियाछे गजेर उपर
प्रचण्ड धनुक-बाण, खरतर जाठा ❋ पुरन्दर-सम गज-स्कन्धे एल केटा२९९
विभीषण बले, राम, कर अवधान ❋ वीरबाहु-नाम धरे रावण-सन्तान
चित्राङ्गदा-नामे एक गन्धर्व्व-कुमारी ❋ युद्ध जिनि रावण आनिल तारे हरि
ताहार गर्भेते जन्म, सुन्दर सुठाम ❋ देव-द्विज-गुरु-भक्त, वीरवाहु नाम
चित्राङ्गदा जननी, रावण ओर वाप ❋ नाम धरे वीरबाहु, दुर्ज्जय-प्रताप
कठोर तपस्या वीर करिल विस्तार ❋ तपेर कारण ब्रह्मा दिते एल वर
ब्रह्मा बले, हवे तोर संग्रामे विजय ❋ दिला एक हस्ती ऐरावतेर तनय
गजराज दिया ब्रह्मा वलिला वचन ❋ ए-गजेर जीवनेते तोमार जीवन

आया है, हनुमान आदि कपि गिर गये हैं। कुम्भकर्ण के साथ युद्ध में तो हमलोग वच गये किन्तु लगता है आज के युद्ध में सभी का संहार हो जायगा। रण के सम्बन्ध में यह सारी वातें सुनने के वाद दशरथ-तनय श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण के साथ चल पड़े। श्रीराम के पीछे-पीछे सुग्रीव और विभीषण भी चले तथा पेड़-पत्थर हाथ में लिये वानर भी दौड़ पड़े॥ २९८॥

वीरवाहु हाथी के कन्धे पर वैठा युद्ध कर रहा है यह देखकर प्रभु राम ने विभीषण से पूछा, क्यों मित्र विभीषण, आज हाथी के कन्धों पर सवार यह कौन सा वीर आ गया है। यह गज ऐरावत सा अति-भयंकर है और गज पर विभिन्न अस्त्र-शस्त्र भी लदे हुए हैं। प्रचंड धनुष-वाण और खरधार वाला जाठा भी है। यह पुरन्दर के समान हाथी पर सवार होकर कौन आ गया॥ २९९॥

विभीषण ने कहा, हे राम ध्यान से सुनें। यह रावण की सन्तान है, इसका नाम वीरवाहु है। चित्रांगदा नामक एक गन्धर्व-कुमारी थी जिसका हरण रावण ने युद्ध जीतकर किया था। उसी के गर्भ से इस सुन्दर सुडौल पुरुष का जन्म हुआ है—, यह देव-द्विज-गुरु का भक्त है, इसका नाम है वीरवाहु। चित्रांगदा इसकी जननी है और रावण इसका जनक है। महा-प्रतापी इस वीर का नाम वीरवाहु है। इस वीर ने वड़ी कठोर तपस्या की। तपस्या के कारण ब्रह्मा इसको वर देने आए। ब्रह्मा ने कहा, संग्राम में तेरी-विजय होगी और यह कहकर ऐरावत के तनय के समान एक गज इसे दे

शुनि वीरबाहु बले, निश्चय मरण ❋ युद्धे मरि पाइ येन देव-नारायण
ब्रह्मा बले, नररूपी हबे नारायण ❋ इच्छासुखे ताँर हस्ते लभिबे मरण
सेइ वीरबाहु एइ दुर्ज्जय-शरीर ❋ वीरबाहु-तेजे रणे केह नहे स्थिर
वीरबाहु जिनिले रावण-राजे जिनि ❋ समुद्र तरिले येन गोष्पदेर पानि
वीरबाहु इन्द्रजित् बिना नाहि आर ❋ इहारा मरिले हबे रावण-संहार
श्रीराम बलेन, मित्र, भरसा तोमार ❋ तव उपदेशे हैल सबार संहार३००
राम-बिभीषणे एइ कथोपकथन ❋ डाक दिया कहितेछे रावण-नन्दन
वीरबाहु बले, शुन श्रीराम-लक्ष्मण ❋ आमा-सने तोमरा जुझिबे कोन जन
राम बले, तोमाते आमाते आजि रण ❋ आजिकार युद्धे तव बधिव जीवन
वानर-कटक सव हओ एकभित ❋ दु'जने करिब युद्ध जेमन प्रमित
एत शुनि वीरबाहु करिछे समर ❋ माथाय टोपर वीर हाते धनु:शर
गजस्कन्धे थाकि वीर नेहाले श्रीराम ❋ कपटे मनुष्य-देह दूर्व्वादल श्याम
चाँचर-चिकुर शोभे चौरस कपाल ❋ प्रसन्न-शरीर वीर परम-दयाल
ध्वज-वज्रांकुश चिह्न अति मनोहर ❋ भुवन-मोहन रूप श्यामल-सुन्दर

दिया। गजराज देकर ब्रह्मा ने कहा, इसी गज के प्राणों में तुम्हारा प्राण छिपा है। यह सुनकर वीरबाहु ने कहा, मृत्यु तो निश्चय ही होगी। ऐसा करें कि युद्ध में मर कर मैं देव-नारायण को प्राप्त कर सकूँ। ब्रह्मा ने कहा, नारायण नर का रूप लेकर आएँगे, तब तुम अपनी खुशी से उन्हीं के हाथों अपनी मृत्यु प्राप्त कर लेना। यह वही दुर्जय-शरीर वाला वीरबाहु है। वीरबाहु के प्रताप से कोई भी रण में स्थिर नहीं है। वीरबाहु को जीत लो तो रावण को जीतना मानों समुद्र को तरने के बाद गड़ही-गुच्चे में भरे पानी को पार करना है। वीरबाहु और इन्द्रजीत के अतिरिक्त अब और कोई न रहा। इसके मरने के बाद ही रावण का संहार होगा। श्रीराम ने कहा, मित्र अब तुम्हारा ही भरोसा है, तुम्हारे परामर्श से ही सभी का संहार हुआ है ॥ ३०० ॥

राम और विभीषण में ऐसा सम्भाषण चल रहा था कि रावण-नन्दन वीरबाहु ने पुकार कर कहा, हे श्रीराम लक्ष्मण! तुम दोनों में कौन मेरे साथ लड़ेगा। राम ने कहा, आज तुम्हारी हमारी लड़ाई है। आज के युद्ध में मैं तुम्हारा प्राण-संहार करूँगा। सारी वानर-सेना एक ओर हो जाय। जैसी प्रथा है हम दोनो अकेले युद्ध करेंगे। इतना सुनकर सिर पर मुकुट पहने और हाथों में धनुष-बाण लिये वीरबाहु युद्ध करने लगा। गज के कंधों पर बैठे उस वीर ने श्रीराम को निहारा। छल से मनुष्य का शरीर धारण किये वे दूर्वा-दल सरीखे साँवले हैं, सिर पर काले-काले केश शोभायमान हैं और माथा चौड़ा है। वे परम-दयालु, वीर शरीर, परम-प्रसन्न हैं। जिनके

रामेर हातेर धनु विचित्र-गठन ※ सकल शरीरे देखे विष्णुर लक्षण
नारायण-रूप देखे रावण-कुमार ※ निश्चय जानिल राम विष्णु-अवतार
हातेर धनुक-खान भूमिते फेलाये ※ गज हैते नामि कहे विनय करिये
धरणी लोटाये रहे जुड़ि दुइ कर ※ अकिञ्चन कर दया राम-रघुवर
प्रणमामि रामचन्द्र संसारेर सार ※ सत्यवादी जितेन्द्रिय विष्णु-अवतार
अनादि-अनन्त तुमि पुरुष-प्रधान ※ नाशिते अजेय अरि शमन-समान
पुरुष-प्रकृति तुमि, तुमि चराचर ※ तोमार एकांश ब्रह्मा विष्णु महेश्वर
अनाथेर नाथ तुमि संसार-तारण ※ सुरासुर तुमि सृष्टि-संहार-कारण
बहु स्तुति करि बले रावण-नन्दन ※ अनुक्षण जपे ध्याने देव-त्रिलोचन
साम-ऋक्-यजु ओ अथर्व्व तोमा हैते ※ असीम महिमा-गुण नारि सीमा दिते
हेन पादपद्म देखिलाम अनायासे ※ परिपूर्ण हैल एवे मम अभिलाषे
तव पादपद्मे जेवा नाहि मागे वर ※ बृथाय जीवन तार अवनी-भितर
आपनि क'रेछ बिधि, ना हय खण्डन ※ ओ पद-स्मरणे हय पाप-विमोचन
ए भव-संसार देखि अकुल पाथार ※ राम-नाम-तरणी करिये हव पार

चरणों पर ध्वज-वज्रांकुश के चिह्न सुशोभित हो रहे हैं। साँवले-सलोने राम का रूप भुवन-मोहक है। राम के हाथ के धनुष का गठन भी विचित्र है। वीरबाहु ने राम के सारे अंगों पर विष्णु के लक्षण देखे। रावण-कुमार वीरबाहु ने नारायण रूप देखकर निश्चय रूप से जान लिया कि राम विष्णु के अवतार हैं। तब हाथ का धनुष धरती पर फेंक कर वह विनय-पूर्वक गज से उतरा। धरती पर लोटकर उसने दोनों हाथ जोड़ लिये और कहने लगा हे राम रघुवर, इस तुच्छ व्यक्ति पर दया करो। हे रामचन्द्र, तुम संसार के सार हो, जितेन्द्रिय हो, तुम विष्णु के अवतार हो, तुम अनादि-अनन्त हो, तुम प्रधान पुरुष हो। अजेय शत्रु के विनाश में तुम यमराज के समान हो। तुम्हीं पुरुष व प्रकृति हो, तुम्हीं चराचर हो। तुम्हारा ही एकांश ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वर हैं। तुम अनाथों के नाथ हो, तुम्हीं संसार के त्राता हो। तुम्हीं सृष्टि और संहार के निमित्त सुरासुर हो। इस प्रकार रावण-नन्दन भूरि-भूरि स्तुति करता हुआ बोला, देव-त्रिलोचन तुम्हारा ध्यान अनुक्षण करते रहते हैं। तुम्हीं से साम, ऋक्, यजु और अथर्व वेदों का जन्म हुआ है। तुम्हारे असीम गुणों की महिमा का मैं वर्णन नहीं कर सकता। ऐसे भगवान् राम के चरण-कमल मैंने अनायास देख लिये, अब मेरी अभिलाषा पूर्ण हुई। तुम्हारे चरण-कमलों से जो वर नहीं माँगता उसका जन्म इस संसार में व्यर्थ ही है। तुमने स्वयं यह विधि बनाई है, अब यह खंडित नहीं हो सकती। इन चरणों के ध्यान मात्र से सारे पाप धुल जाते हैं। यह संसार अकूल समुद्र सा है, राम-नाम की नाव लेकर मैं

तुमि नारायण-धर्म्म ब्रह्म-सनातन ❋ राक्षस-विनाशकारी भुवन-मोहन
उत्पत्ति प्रलय तुमि अचिन्त्य-रतन ❋ तोमारे चिनिते प्रभु पारे कोन् जन
अधम राक्षस आमि, बड़इ पापिष्ठ ❋ ए दुःखे तारिते प्रभु, तुमि महा इष्ट
चिरदिन महापाप क'रेछि अपार ❋ वैष्णव-अस्त्रेते मोरे कर हे संहार ३०१
एतेक वलिया यदि रावण-नन्दन ❋ रण त्यजि रघुनाथ बसिला तखन
राम बले, देखिलाम तव व्यवहार ❋ तोमा बध करा नहे उचित आमार
जाउक जानकी, मोर राज्य जाक् ब'ये ❋ पुनः बने जाइ आमि तोरे लङ्का दिये
वीरबाहु वले हे गोसाइ परिहार ❋ तुमि जारे दया कर, लङ्का तार छार
अनन्त-ब्रह्माण्ड प्रभु तोमार शरीरे ❋ क्षुद्र लंकापुरी दिया भाण्डिबे आमारे
लंका दिया रघुनाथ भाण्डिते आमारे ❋ ना पारिबे कदाचन एइ दुराचारे ३०२
एतेक बलिल जदि रावण-नन्दन ❋ मने मने भावे निज मरण तखन
तुमि ना मारिले मोर ना हवे उद्धार ❋ दया क'रे करेह आमार प्रतिकार
रण क'रे पड़ि यदि प्रभु तव बाणे ❋ विष्णुदूते ल'ये जाबे वैकुण्ठे-भुवने
जाहा लागि मुनि ऋषि नाना तीर्थे फिरे ❋ जाहा लागि साधु-जन नाना यज्ञ करे
अनायासे पाब आमि सेइ गुणनिधि ❋ विना जाति-व्यवहारे नहे कार्य सिद्धि ३०३

इसको पार करूँगा। तुम नारायण हो, ब्रह्म हो, सनातन धर्म हो। तुम्हीं राक्षस-विनाशकारी भुवन-मोहन हो। तुम्हीं उत्पत्ति हो और तुम्हीं प्रलय हो। तुम जैसे अचित्य रत्न को कौन पहचान सकता है। मैं अधम राक्षस हूँ, महापापी हूँ, मेरा दुख दूर करने में तुम्हीं सहायक हो। चिरकाल से मैं महापाप करता आया हूँ तुम मेरा वध वष्णव-अस्त्र से करो॥ ३०१॥

जब रावण-नन्दन ने यह सब कह डाला तो रघुनाथ रण त्याग कर अलग बैठ गये। राम ने कहा, मैंने तुम्हारा आचरण देख लिया, तुम्हारा वध करना मेरे लिए उचित नहीं होगा। जानकी गई तो गई, राज्य भी मेरा गया तो जाने दो, तुझको लंका प्रदान कर फिर मैं वन में लौट जाऊँगा। वीरबाहु ने कहा, हे स्वामी छोड़ो भी, तुम जिस पर दया करते हो उसके लिए लंका बहुत ही तुच्छ है। हे प्रभु, तुम्हारे शरीर में अनन्त ब्रह्मांड हैं, क्षुद्र लंकापुरी देकर तुम मुझको बहकाओगे। हे रघुनाथ, इस दुराचारी को तुम लंका देकर कभी बहका नहीं सकोगे॥ ३०२॥

रावण-नन्दन यह कह कर मन ही मन सोचने लगा कि मेरी मृत्यु कैसे होगी। वह राम से बोला तुम अगर मुझे नहीं मारते तो मेरा उद्धार नहीं होगा। कृपया मेरा उपकार करो। युद्ध करते हुए अगर तुम्हारे बाणों से मैं गिरा तो विष्णुदूत मुझको वैकुंठ-भुवन में ले जायँगे। जिसके निमित्त ऋषि-मुनि तीर्थों में भ्रमण करते रहते हैं, जिसके निमित्त साधु-संन्यासी विभिन्न यज्ञ करते रहते हैं, हे गुणनिधि, मुझको वही परम पद अनायास प्राप्त हो जायगा। बिना जाति-व्यवहार के काम बनता दिखाई नहीं देता॥ ३०३॥

एतेक भाविया मने रावण-कुमार ✻ एक लाफ दिया उठे गजे आपनार
प्रचण्ड धनुक छिल गजेर उपरे ✻ दृढ़मुष्टि अस्त्र ल'ये विन्धे रघुवीरे
हेदे रे तपस्वी वेटा, भण्ड वनचारी ✻ मरण एड़ाते चाह क'रे भारिभूरि
कालसर्प-सम अस्त्र देखह सर्व्वथा ✻ लव शोध, यत दुःख पाय मम पिता
मम इष्टदेवे आमि करि जे स्तवन ✻ तुमि मने करेछ आपनि नारायण ३०४
कैल वीरवाहु यदि दुरक्षर वाणी ✻ क्रोधेते हइला राम ज्वलन्त आगुनि
सत्त्वगुणे तमोगुण वड़इ विषम ✻ क्रोधेते हइला राम कालान्तक यम
मार मार बलि राम जुड़िलेन बाण ✻ हासिया धनुक धरे रावण-सन्तान
दुइ जने लागिल वाणेर हानाहानि ✻ उठिल आकाशे बाण शब्द-ठनठनि
वाणे वाणे काटाकाटि उठिल आगुनि ✻ स्वर्गेते देवता काँपे असम्भव गणि'
दूरे थाकि देखे कपि उभयेर रण ✻ बाणेर विषम शब्द उठिल गगन
दुइ जने काटाकाटि हैल बाणे बाणे ✻ दु'जनार उपरेते दुइ जने हाने
अग्निबाण वीरवाहु जुड़िल धनुके ✻ वज्रसम आसे वाण रामेर सम्मुखे
अग्निवाण करे वीर अग्नि-अवतार ✻ वरुण-वाणेते राम करेन संहार
महाकोपे वीरवाहु एड़े दश-बाण ✻ श्रीरामेर बुके फुटे वज्रेर समान

ऐसा सोचकर रावण-कुमार एक छलांग में उचक कर अपने गज पर बैठ गया। उसके गज पर प्रचंड धनुष रखा था। उसको अपनी दृढ़ मुट्ठियों में लेकर वह रघुनाथ को वींधने लगा। क्यों रे अभागे तपस्वी, कपटी वनवासी, तू वात वनाकर अपनी मृत्यु से वच जाना चाहता है। यह काल-सर्प जैसा मेरा अस्त्र देखो। मेरे पिता जितना क्लेश भोग रहे हैं मैं उसका सब वदला लूँगा। मैं अपने इष्टदेव की स्तुति कर रहा हूँ और तुम सोच रहे हो कि तुम खुद ही नारायण वन गये ॥ ३०४ ॥

वीरवाहु ने जव ये कुबोल वोले तो क्रोध से राम आग की भाँति तमतमा उठे। सत्वगुण वाले व्यक्ति में तमोगुण का प्रवेश वड़ा ही भयंकर होता है। क्रोध से राम कालान्तक यम के समान वन गये। मार-मार शब्द करते हुए राम ने वाण साधा तो रावण-सन्तान ने हँसकर धनुष उठा लिया। दोनों के वाणों की मुठभेड़ हुई, आकाश मार्ग पर वाण ठनाठन शब्द करने लगे। वाणों से वाण टकराकर चिनगारियाँ निकलने लगीं। स्वर्ग के देवता इसको असम्भव युद्ध मान कर काँप उठे। दूर रहकर कपियों ने दोनों का रण देखा। वाणों का भीषण शब्द गगन में गूँजने लगा। दोनों के वाण एक दूसरे की काट करने लगे। वीरवाहु ने अपने धनुष पर अग्निवाण चढ़ाया जो कि वज्र के समान राम के सम्मुख आ पहुँचा। अग्निवाण से वीरों ने चारों ओर आग ही आग फैला दी। राम ने वरुण वाण से उसका संहार किया। तव कुपित होकर वीरवाहु ने दस वाण चला दिये।

शराघाते शोणिते भासिला रघुनाथे ❊ जेन सूर्यपात ह'ये पड़िल भूमिते
पड़िलेन रामचन्द्र, सर्व्वजन देखे ❊ मुखेते उठिल रक्त झलके झलके
व्यथा संवरिया राम जुड़िलेन वाण ❊ वीरवाहुर काटिते चाहेन धनुखान
तीक्ष्ण वाण मारे राम धनुक काटिते ❊ धनुके ठेकिया वाण पड़े एक भिते
वीरवाहु वले, अवधान रघुनाथ ❊ आमार धनुके मिथ्या करिछ आघात
धनुक काटिते ना पारिवे रघुनाथ ❊ वीरवाहु कहितेछे करि जोड़हात
अक्षय धनुक आमि करियाछि हाते ❊ त्रिभुवने कार साध्य, के पारे काटिते
धनुः काटा नाहि गेल, श्रीराम लज्जित ❊ अर्द्धचन्द्र-वाण राम जुड़ेन त्वरित
एड़िलेन वाण राम तारा जेन छुटे ❊ सेइ वाणे वीरवाहुर धनुर्व्वाण टुटे
धनुर्व्वाण गेल, वीरवाहुर उल्लास ❊ एत दिने बुझि वा पूरिल मनो-आश
मने जानिलाम, आज नाहि अव्याहति ❊ श्रीरामेर वाणे प'ड़े पाइव निष्कृति
एकमने वीरवाहु करिछे स्तवन ❊ धनुर्व्वाण काटा गेल, अवश्य मरण
धनुः काटा गेल, वीर आर धनु लय ❊ शरजाल-वाण एड़े रावण-तनय
वाणे आच्छादिल रघुनाथ-कलेवर ❊ वाण खेये रघुनाथ हइल फाँफर
मने मने रघुनाथ करि अनुमान ❊ ऐषिक वाणेते राम पूरिला सन्धान

श्रीराम के वक्ष में वज्र के समान वे दसों वाण विंध गये। वाणों के आघात से रघुनाथ रक्त से सरावोर हो गये। ऐसा लगा मानों सूर्य का पतन हो गया है और वह भूमि पर गिर पड़ा है। सभी लोगों ने देखा कि रामचन्द्र गिर पड़े और उनके मुँह से भल-भल खून निकलने लगा। पीड़ा को सहकर राम ने एक वाण साधा। उन्होंने वीरवाहु का धनुष काटना चाहा। धनुष से टकरा कर बाण एक ओर गिर पड़ा। वीरवाहु ने कहा, रघुनाथ सुनो, तुम नाहक मेरे धनुष पर चोट कर रहे हो, मेरे धनुष को तुम नहीं काट सकते। वीरबाहु ने हाथ जोड़ कर कहा, मैंने हाथों में अक्षय धनुष ले लिया है। त्रिभुवन में कौन है जो उसको काट सके। जब धनुष नहीं काटा जा सका तो श्रीराम अत्यन्त लज्जित हुए। राम ने तुरन्त ही अर्धचन्द्र बाण साधा। जब राम ने वाण फेंका तो वह नक्षत्र सा लपका। उसी वाण से वीरवाहु के धनुष-बाण कट गये। जब धनुष-बाण गिर गये तो वीरवाहु उल्लसित हो उठा। उसने सोचा शायद इतने दिनों में मेरे मन की अभिलाषा अब पूरी होगी। मन ही मन मैंने यह जान लिया कि आज मेरा कोई बचाव नहीं, श्रीराम के बाणों से मर कर मुक्ति मिलेगी। एकाग्र मन होकर वीरवाहु स्तुति करने लगा, और कहा कि धनुष टूट गया तो अब मृत्यु अवश्यम्भावी है। जब धनुष टूट गया तो वीर ने दूसरा धनुष ले लिया। रावण-तनय के फेंके हुए बाणों के समूहों से रघुनाथ का सारा शरीर ढक गया। बाणों से घायल होकर रघुनाथ जरा किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गये। मन ही मन अनुमान लगाकर

श्रीराम ऐषिक वाण वसाइल चापे ※ राक्षसेर बाण काटिलेन वीर-दापे
श्रीराम काटेन बाण मनेर कौतुके ※ दाण्डाय बानर-गण दूर हैते देखे
राम वले, वीरबाहु, तुमि बड़ वीर ※ तव बाणे मम सैन्य ना हय सुस्थिर
वीरवाहु वले, राम, क्षणेक थाकह ※ यत दुःख दिले, तार प्रतिफल लह ३०५
राक्षसेर वाक्य शुनि कुपिया लक्ष्मण ※ राक्षस उपरे करे बाण-बरिषण
लक्ष्मणेर बाणे वीरबाहु क्रोधान्वित ※ एड़िल दुर्ज्जय बाण, अग्नि प्रज्वलित
चलिल लक्ष्मण-वाण तारा हेन छुटे ※ सेइ बाणे राक्षसेर अग्निबाण काटे
पञ्चबाण लक्ष्मण जे जुड़िला धनुके ※ सन्धान पूरिया मारे वीरबाहु-बुके
बाणाघाते वीरबाहु हइल कम्पित ※ लक्ष्मण उपरे मारे बाण आचम्बित
अष्टबाण बीरबाहु जुड़िल धनुके ※ सन्धान पूरिया मारे लक्ष्मणेर बुके
वीरवाहु-वाण लक्ष्मणेर फुटे बुके ※ घुरिया पड़िल बीर, रक्त उठे मुखे
कतक्षणे लक्ष्मण हइल सचेतन ※ पुनरपि दुइजने हैल महारण
लक्ष्मणे मारिते वीरबाहु करे मति ※ वायुवेगे चालाइया हस्ती शीघ्रगति
आइसे दुर्ज्जय हस्ती त्वरित-गमन ※ लक्ष्मणे मारिल जाठा रावण-नन्दन
अति वेगे एड़े जाठा, चले शीघ्रगति ※ देखिया चिन्तित बड़ हैला दाशरथि

रघुनाथ ने धनुष पर ऐषीक वाण साधा। श्रीराम ने धनुष पर ऐषीक बाण चढ़ाया और राक्षस के बाण काट डाले। हँसीखेल में राम ने राक्षस के वाण काट डाले, दूर खड़े हुए बन्दरों ने यह सब देखा। राम ने कहा, वीरबाहु तुम बड़े वीर हो, तुम्हारे बाणों से हमारी सेना स्थिर नहीं रह पाती। वीरबाहु ने कहा, राम तनिक देर ठहरो, जितना दुख दिया है उसका बदला तो ले लो ॥ ३०५ ॥

राक्षस की बात सुनकर लक्ष्मण को क्रोध आ गया। वह राक्षस पर वाण बरसाने लगे। लक्ष्मण के बाणों से वीरबाहु क्रोधित हो उठा और उसने प्रज्वलन्त अग्नि वाला दुर्जय बाण फेंका। लक्ष्मण का बाण भी नक्षत्र सा लपका—उसी बाण से राक्षस का अग्निबाण कट गया। लक्ष्मण ने धनुष पर पंचबाण साधा और वीरबाहु के वक्षस्थल का निशाना साध कर फेंका। बाण के आघात से वीरबाहु काँपने लगा। उसने भी तुरन्त लक्ष्मण पर बाण फेंका। वीरबाहु ने धनुष पर अष्टबाण चढ़ाया और लक्ष्मण के वक्षस्थल को लक्ष्य कर फेंका। वीरबाहु का बाण लक्ष्मण के सीने में चुभ गया। वीर चक्कर खाकर गिर पड़े और उनके मुँह से खून निकलने लगा। थोडी ही देर में लक्ष्मण होश में आये तो फिर दोनों में महारण छिड़ गया। वीरबाहु ने लक्ष्मण को मारने का निश्चय कर लिया—उसने हाथी को पवन-वेग से दौड़ाया। दुर्जय हाथी तेज चाल से आ पहुँचा और रावण-नन्दन ने लक्ष्मण पर जाठा फेंका। यह देखकर दाशरथि राम बड़े चिन्तित हो गये। राम

जाठार उद्देशे राम एड़िलेन बाण ※ तिन बाणे जाठार करिला खान खान
जाठारे काटिया राम राखिल लक्ष्मण ※ डाक दिया बले तबे रावण-नन्दन
साक्षी हओ जाम्बवान्, खुड़ा विभीषण ※ साक्षी हओ कपिगण पवन-नन्दन
क्षत्रियेरे धर्म्म एइ युद्धे आछे पण ※ जार संगे युद्ध करे, मारे सेइ जन
आमि जाठा मारिलाम लक्ष्मण-उपरे ※ तुमि केन से जाठा काटिले अविचारे
एकेर संगेते युद्धे अन्ये देन हाना ※ धर्म्मशास्त्रे तारे नाहि बले वीरपणा६
श्रीराम बलेन, शुन रावण-नन्दन ※ लक्ष्मणे आमाते भिन्न बले कोन् जन
वीरबाहु बले, राम, आमि ताहा जानि ※ ब्रह्माण्डे तोमाते भिन्न आछे कोन प्राण
वीरबाहु-वाक्य शुनि, लज्जित श्रीराम ※ पुनरपि दुइजने बाधिल संग्राम
गगन छाइया दोंहे बाण-बरिषण ※ वाणे बाणे काटाकाटि, उठे हुताशन
दशबाण रघुनाथ जुड़िला धनुके ※ वज्रसम बाजे बाण वीरबाहु,बुके
बुके बाण बाजे, रक्त उठे अनिवार ※ अचैतन्य ह'ये पड़े रावण-कुमार
रक्तधारे वीरबाहुर भासे कलेवर ※ गड़ागाड़ि जाय वीर गजेर उपर
वीरबाहु ल'ये गज उठिल गगन ※ जोड़ हाते श्रीरामेरे बलेन लक्ष्मण
लक्ष्मण बलेन, प्रभु, करि निवेदन ※ ब्रह्म-अस्त्र मेरे ओर बधह जीवन

ने जाठा के काटने के उद्‌देश्य से बाण फेंके और तीन बाणों से जाठा को खंड-खंड कर डाला। जाठा काटकर राम ने लक्ष्मण को बचा लिया। तब रावण-नन्दन ने गुहार कर कहा, हे जाम्बवान, हे चाचा विभीषण, तुम लोग सब गवाह हो। हे पवन-नन्दन और दूसरे कपि, तुमलोग भी साक्षी हो। क्षात्र-धर्म में युद्ध की शर्त्त यह है कि जिसके साथ युद्ध होता है वही मारता है। मैंने लक्ष्मण पर जाठा मारा, तुमने क्यों अन्याय पूर्ण ढंग से उस जाठा को काट डाला। एक के साथ लड़ाई छिड़ी हुई हो और दूसरा आकर उसमें हमला बोल दे तो यह कोई दिलेरी नहीं है॥ ३०६॥

श्रीराम ने कहा, हे रावण-नन्दन सुनो, मुझमें और लक्ष्मण में भेद है यह कौन बताता है। वीरबाहु ने कहा, राम, यह मुझको भलीभाँति मालूम है कि इस ब्रह्मांड में कौन सा प्राणी तुमसे भिन्न है। वीरबाहु के वाक्य सुन कर श्रीराम लज्जित हो गये। फिर दोनों में संग्राम छिड़ गया। दोनों की बाण-वर्षा से आकाश छा गया। बाण से बाण टकरा कर चिनगारियाँ निकलने लगीं। रघुनाथ ने धनुष पर दस बाण चढ़ाये, वीरबाहु के वक्ष पर वे वज्र के समान जा लगे। सीने पर बाण लगे और मुँह से निरन्तर खून निकलने लगा। रावणकुमार वीरबाहु अचेतन हो गया, उसका सारा शरीर खून से लथपथ हो गया और हाथी पर लोट-पोट खाने लगा। तब वीरबाहु को लेकर गज गगन पर चढ़ गया। लक्ष्मण ने हाथ जोड़कर श्रीराम से कहा, प्रभो, मेरा निवेदन है कि ब्रह्म-अस्त्र मार कर इसके प्राण ले लो। राम ने

राम बले, ए बेटा राक्षस-महावीर ❋ धर्म्मेते धार्म्मिक वड़ सुबुद्धि-सुधीर
करिया अन्याय युद्ध ना मारि उहारे ❋ मारिव धर्म्मतः जुद्धे वीरबाहु-वीरे७
कतक्षणे राक्षस हइल अचेतन ❋ हरिष हइया वीर कहिछे तखन
आरबार एस देखि रणेर भितर ❋ जानिलाम वीर बट तुमि रघुवर८
एत बलि धनुक धरिल वाम करे ❋ देखिया रुषिल तबे सुग्रीव-वानरे
सुग्रीव बलेन, शुन जगत्-गोसाँइ ❋ शुनियाछि हस्ति-संगे, इहार प्रमाइ
हस्ती मैले वीरबाहु मरिबे निश्चय ❋ हस्तीरे मारिया कर राक्षसेर क्षय
एत बलि सुग्रीव पवन-गति धाय ❋ दूरे थाकि पाथर से देखिबारे पाय
दश योजन पाथर तुलिया निल हाते ❋ दानवे रुषिला जेन देव जगन्नाथे
वीरदर्प करि वीर हानिल पाथर ❋ दन्त दिया पाथर धरिल गजवर
खान खान करिलेक दन्तेर ताड़ने ❋ शालगाछ सुग्रीव उपाड़े एकटाने
दुर्ज्जय से शालवृक्ष विंशति योजन ❋ वृक्षेर छायाते ढाके सूर्य्येर किरण
पाथर हइल व्यर्थ, सुग्रीव लज्जित ❋ हानिलेक शालगाछ हइया कुपित
गजेर माथाय मारे दुहातिया बाड़ि ❋ हस्तीर माथाय गाछ ह'ये गेल गुँड़ि

कहा, यह राक्षस महान् वीर, धार्मिक, बुद्धिमान् और सुधीर भी है। अन्याय-पूर्ण युद्ध कर मैं इसको नहीं मारूँगा। वीर वीरबाहु को मैं धर्मयुद्ध में ही वध करूँगा ॥ ३०७ ॥

जब कुछ देर में राक्षस सचेतन हुआ तो उसने हर्ष से राम को ललकारा, हे रघुवर, यह मालूम हो गया कि तुम वीर हो, आओ फिर रण में आओ ॥ ३०८ ॥

इतना कहकर उसने बाएँ हाथ में धनुष ले लिया। यह देखकर वानर सुग्रीव को क्रोध आ गया। सुग्रीव ने कहा, हे जगत् के स्वामी सुनो, मैंने सुना है कि इस हाथी के साथ इसकी आयु बँधी है। हाथी के मरने पर ही वीरबाहु मरेगा। हाथी को मार कर राक्षस का निधन करो। यह कहकर सुग्रीव पवन-गति से दौड़ पड़ा। दूर रहकर ही उसने एक पत्थर देख लिया। दस योजन वाला वह पत्थर उसने हाथों में उठा लिया। मानों देव जगन्नाथ दानवों पर रुष्ट हो गये हों, इस प्रकार वीर सुग्रीव ने बड़े ही वीरदर्प के साथ पत्थर फेंका। गजराज ने उस पत्थर को अपने दाँतों से पकड़ लिया और दाँतों के प्रहार से ही उसको चूर-चूर कर डाला। फिर सुग्रीव ने एक साखू का वृक्ष खींच कर जमीन से उखाड़ लिया। बीस योजन लम्बा वह साखू का वृक्ष अपनी छाया से सूर्य की किरणें ढके हुए था। पत्थर जब व्यर्थ गया तो लज्जित होकर सुग्रीव ने वह साखू दोनों हाथों से पकड़कर उसने गज के माथे पर दे मारा; किन्तु गज के माथे से टकराकर पेड़ खंड-खंड हो गया। हाथी ने सुग्रीव को अपनी सूँड़ में लपेट लिया और उठाकर जमीन

शुण्डे जड़ाइया हस्ती सुग्रीवेरे धरे ※ आछाड़ मारिया तार अस्थि चूर्ण करे
भूमेते पड़िया राजा करे धड़फड़ ※ देखिया वानर-गण उठे दिल रड़
मुखे रक्त उठे राजार झलके-झलके ※ सुग्रीव मरिल वलि कपिगण डाके९
अनेक यतने राजा पाइल चेतन ※ रामेरे डाकिया बले रावण-नन्दन
एकजन उपरेते दुइजन रोपे ※ धर्म्म नाहि सहे ताहा, मरे निज दोषे
तुमि आमि युद्ध करितेछे दुइ जना ※ बानरा आसिया केन माझे दिल हाना
वनपशु, युद्धे किन्तु आम्बा देखि बाड़ा ※ सेइ पापे हस्तीते आछाड़े करे गुँड़ा१०
वीरवाहु-वाक्येते लज्जित रघुवर ※ ईषत् हासिया राम करेन उत्तर
बनेते लक्ष्मण छिल ह'ये ब्रह्मचारी ※ शूर्पणखा राँड़ि गेल वर-वाञ्छा करि
सेइ दोषे नाक कान काटिल लक्ष्मण ※ विधवार धर्म्म भाल करिल पालन
तोर पिता रावणेर एक लक्ष वेटा ※ चौद्द हाजार नारी तार, विभा कैल कटा
परम पातकी वेटा लङ्का-अधिकारी ※ जन्मावधि चुरि क'रे आने पर-नारी
ज्येष्ठ भाइ कुवेर धनेर अधिपति ※ तार वधु हरिया आनिल पापमति
ब्रह्म-अंशे जन्म देख यत निशाचर ※ खाइया मानुष पशु पूरये उदर

पर पटक दिया। सुग्रीव की हड्डियाँ चूर-चूर हो गई और जमीन पर पड़ा-पड़ा राजा सुग्रीव छटपटाने लगा। राजा सुग्रीव के मुँह से भल-भल खून निकलने लगा, यह देखकर सारे वानर भाग खड़े हुए। सारे कपि यह कहकर चिल्लाने लगे कि सुग्रीव मर गया॥ ३०६॥

बहुत काफी यत्न करने के उपरान्त राजा (सुग्रीव) होश में आया। रावण-नन्दन ने राम को पुकार कर कहा, एक व्यक्ति पर दो जने मिलकर हमला करते हो, धर्म इस बात को सहन नहीं कर सकता, यह अपने दोष से ही मर रहा है। तुम और मैं युद्ध कर रहा हूँ इसके बीच में यह वानर आकर क्यों टूट पड़ा। यह जंगल का जानवर है किन्तु युद्ध करने में बड़ी स्पर्धा रखता है—इसी पाप के कारण हाथी ने उसको पटक कर चूर-चूर कर डाला है॥ ३१०॥

वीरवाहु के वाक्य से रघुवर लज्जित हुए और मुस्कराकर उत्तर दिया, वन में लक्ष्मण ब्रह्मचारी बना रह रहा था, विधवा सूर्पनखा उसके पास पति की अभिलाषा लिए गई। उसी दोष से लक्ष्मण ने उसके नाक-कान काट लिये। विधवा का धर्म सूर्पणखा ने खूब पालन किया। तेरे पिता रावण के एक लाख बेटे हैं। चौदह हजार उसकी नारियाँ हैं—इसमें कितनी नारियों से उसने विवाह किया है। यह लंका का अधिकारी परम पापी है, आरम्भ से ही यह पर-नारियों को चुरा-चुरा कर लाने लगा। इसका बड़ा भाई कुवेर धन का अधिपति है उसी की पत्नी को यह पापिष्ठ पकड़कर ले आया। ब्रह्म-अंश से जन्म लेकर भी ये सारे निशाचर, मनुष्य और पशुओं

एत दिने लङ्कापुर पापे हैल पूर्ण ※ पाठाइव यमालये, हबे दर्प चूर्ण ११
एतेक वलिया राम पूरये सन्धान ※ मारिला राक्षस-गणे शत शत बाण
मारिया रामेर बाण वीरबाहु वीर ※ शत शत बाणे विन्धे रामेर शरीर
बाणे वाणे काटाकाटि करे दुइ जन ※ अग्निमय वाण मारे रावण-नन्दन
बाणेर मुखेते अग्नि पर्व्वत-प्रमाण ※ वीरबाहु-बाणे राम हइला अज्ञान
सम्मुख-युद्धेते राम हइल मूर्च्छित ※ देखिया वानर-गण हइल चिन्तित १२
शीघ्रगति आसिया राक्षस विभीषण ※ श्रीरामेर धनुर्व्बाण ल'ये करे रण
पञ्च-बाण विभीषण जुड़िल धनुके ※ सन्धान पूरिया मारे वीरबाहु-बुके
बाणेर उपरे वाण एड़े विभीषण ※ फाँफर हइल डरे रावण-नन्दन
वाणे भीत वीरबाहु चाहे चारि भिते ※ राम-मूर्च्छा, केवा वाण मारे आचम्बिते १३
हेनकाले देखे वीर खुड़ा विभीषण ※ वीरबाहु वले, खुड़ा, सार्थक जीवन
वंश-चूड़ामणि तुमि आछ एकजन ※ देव-द्विज-गुरु-भक्त बुद्धे विचक्षण
कुले एकजन ह'ले विष्णुते भकति ※ सकल पुरुष तार पाय दिव्य गति
परम-पुरुष राम ब्रह्म सनातन ※ सकलि त्यजिला तुमि रामेर कारण
तोमार चरणे खुड़ा करि दण्डवत् ※ आशीर्व्वाद कर, येन पूरे मनोरथ

का भक्षण कर पेट भरते हैं। इतने दिनों में लंका पाप से भर गई, अब रावण को यमालय भेजकर उसके दर्प को चूर-चूर करूँगा ॥ ३११ ॥

इतना कहकर राम ने धनुष-बाण साधा और राक्षसों पर सैकड़ों बाण फेंके। राम के बाणों से निबटकर वीरबाहु ने सौ-सौ बाणों से राम का शरीर छेद दिया। दोनों जने एक दूसरे के बाणों को बाणों से काटने लगे। रावण-नन्दन ने एक अग्निमय बाण फेंका। उस बाण के मुख पर पर्वत के समान आग थी। वीरबाहु के बाण से राम अचेतन हो गये। सम्मुख-युद्ध में राम अचेतन हो गये यह देखकर सारे वानर बड़े चिन्तित हुए ॥ ३१२ ॥

तब फौरन राक्षस विभीषण ने आकर श्रीराम का धनुष-बाण ले लिया और युद्ध करने लग गया। धनुष पर विभीषण ने पंचबाण चढ़ाया और निशाना साध वीरबाहु के वक्ष पर मारा। विभीषण बाण पर बाण चलाने लगा तो रावण-नन्दन घबरा गया। बाणों से डर कर वह चारों तरफ देखने लगा कि राम तो अचेतन हो गया है अब यह अचानक बाण कौन चलाने लग गया ॥ ३१३ ॥

इतने में ही उस वीर ने देखा कि यह तो चाचा विभीषण हैं। वीरबाहु ने कहा, चाचा, मेरा जीवन आज सार्थक हो गया। तुम ही एक वंश के चूड़ामणि हो, देव-द्विज-गुरु के भक्त हो और बुद्धि में भी विचक्षण हो। सारे वंश में यदि एक भी व्यक्ति विष्णु-भक्त हो जाय तो सारी पीढ़ी को दिव्य-गति प्राप्त हो जाती है। राम परम पुरुष हैं और सनातन ब्रह्म हैं। उन्हीं

विभीषण बले, बाछा, तुमि भाग्यवान् ॐ तोमार चरित्र बाछा ना हय बाखान १४
एइरूपे दुइजने कथोपकथन ॐ हेनकाले रघुनाथ पाइला चेतन
पुनरपि संग्राम बाजिल दुइजने ॐ वाणे वाणे काटाकाटि उठिल गगने
दुइजने बाण मारे, जार जत शिक्षा ॐ प्राणपणे एड़े वाण नाहि लेखा-जोखा
अमर्त्य समर्थ बाण, बाण-महाबल ॐ विष्णुजाल अग्निजाल बाण-कालानल
वरुणमुख उल्कामुख अति शरखान ॐ ग्रहादि नक्षत्र रुद्र ज्योतिर्मय बाण
शिलीमुख सूचीमुख घोर-दरशन ॐ सिंहदन्त वज्रदन्त बाण-बिरोचन
रिपुहन्ता बिश्वहन्ता बिपक्ष-संहार ॐ चन्द्रमुख सूर्यमुख बाण-सप्तसार
कालदण्ड यमदण्ड बाण-कर्णिकार ॐ इन्द्रजाल ब्रह्मजाल बाण-शतधार
गरुड़ असुर-मुख हंस-मुख वाण ॐ धूम्रमुख कूर्म्ममुख शमन-समान
नील हरिताल बाण विकट-दशन ॐ बिलाप प्रलाप बाण महा-पद्मासन
भयंकर दुष्कर कामिनी-मनोहर ॐ पाशुपत हयग्रीव देखिते सुन्दर
कुबेर पवन अस्त्र अति खरशाण ॐ नवघन उल्का-बाण के करे बाखान
शोषक-पोषक वाण अंग जे बिभंग ॐ त्रिशूल-अंकुश बाण विह्वल मातंग
विकट-संकट बाण सार्थक पथिक ॐ माल्यवान् हीरावन्त शारंग ऐषीक

के कारण तुमने सब कुछ त्याग दिया। चचा! मैं तुम्हारे चरणों में प्रणाम करता हूँ। यह आशीर्वाद दो कि मेरी मनोकामना पूर्ण हो जाय। विभीषण ने कहा, बेटा तुम भाग्यवान् हो, तुम्हारा चरित्र बखाना नहीं जा सकता ॥ ३१४ ॥

इस प्रकार दोनों में बातचीत हो ही रही थी कि रघुनाथ होश में आ गये। फिर दोनों में संग्राम ठन गया। गगन में दोनों के बाण एक दूसरे से टकराने लगे। अपनी-अपनी शिक्षा के अनुसार दोनों वाण फेंकने लगे। प्राणपण से दोनों अनगिनती बाण चलाने लग गये। अमर्त्य, समर्थ बाण, महाबल बाण, विष्णुजाल, अग्निजाल, कालानल बाण, वरुणमुख और उल्कामुख जैसे तीखे बाण, ग्रहादि, नक्षत्र, रुद्र नामक ज्योति से पूर्ण बाण, विकट दिखने वाले शिलीमुख, सूचीमुख बाण और सिंहदन्त, वज्रदन्त और विरोचन बाण, रिपुहन्ता, विश्वहन्ता, विपक्ष-संहार, चन्द्रमुख, सूर्यमुख, सप्तसार नामक बाण, कालदंड, यमदंड, कर्णिकार, इन्द्रजाल, ब्रह्मजाल, 'शतधार नामक बाण, गरुड़ बाण, असुर-मुख, हंस-मुख नामक बाण, धूम्रमुख, कूर्ममुख जैसे यम के समान बाण, विलाप, प्रलाप, महापद्मासन, भयंकर, दुष्कर, कामिनी-मनोहर पाशुपत, देखने में सुन्दर हयग्रीव बाण, कुबेर, पवनास्त्र आदि बड़े ही खरधार बाण थे। नवघन उल्का-बाण को कौन बखान सकता है। शोषक-पोषक बाण के अंग-विभंग थे। त्रिशूल-अंकुश बाण से मातंग विह्वल हो जाते थे। विकट और संकट बाण अपने पथ के सार्थक पथिक बाण थे। माल्यवान, हीरावन्त, शारंग और ऐषीक बाण भी थे। गजांकुश, शिलाचर्ण

गजाङ्कुश शिलाचूर्ण गभीर गरजे ❋ जाइते वाणेर मुखे जयघण्टा बाजे
एत वाण दुइजने करे अवतार ❋ सब लङ्कापुरी हैल वाणे अन्धकार
जिनिते ना पारे केह, समान दु-जन ❋ दुइजने महायुद्ध, ना जाय लिखन
ब्रह्मार निकटे पेयेछिल पूर्व्वे वाण ❋ सेइ वाणे वीरवाहु पूरिल सन्धान
मन्त्रेते हइल वाण अति भयंकर ❋ महातेजे आसे वाण रामेर उपर
विपरीत ब्रह्म-अस्त्र देखिया सम्मुखे ❋ तीक्ष्ण अस्त्र रघुनाथ जुड़िला धनुके
श्रीरामेर वाण व्यर्थ राक्षसेर शरे ❋ देखिया त रघुनाथ भाविला अन्तरे१५
राक्षसेर वाणेर मुखेते अग्नि ज्वले ❋ देखिया त पुरन्दर पवनेरे बले
शरभंग-मुनि-स्थाने पाइला ये शर ❋ सेइ वाण राक्षसे मारह रघुवर१६
एत यदि पुरन्दर कहे पवनेरे ❋ पवन गोपने गिया कन रघुवरे
जे वाण पाइला राम शरभंग-स्थाने ❋ वीरवाहु ब्रह्म-अस्त्र काट सेइ वाणे
एत वलि पवन पलाय उभरड़े ❋ सेइ वाण तखन रामेर मने पड़े
तूण हैते सेइ अस्त्र ल'ये शीघ्रगति ❋ मन्त्र पड़ि' धनुके जुड़िला रघुपति
आकर्ण पूरिया वाण जुड़िल धनुके ❋ ब्रह्म-अग्नि प्रज्वलित हैल अस्त्र-मुखे
कोपे कम्पमान् छाड़े वाण दाशरथि ❋ वाणेर प्रतापे घन काँपे बसुमती

वाणों का गर्जन गंभीर था। चलते समय वाण के मुख से जयघंटा बजता रहता था। इस प्रकार दोनों ने मिलकर इतने वाणों का प्रयोग किया कि सारी लंकापुरी वाणों से अन्धकारमय हो गई। दोनों में कोई भी जीत नहीं पा रहा है, दोनों ही समान योग्यता के हैं। दोनों में महायुद्ध होने लगा, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। ब्रह्मा से वीरबाहु को पहले ही एक वाण मिला था, वीरबाहु ने उस वाण को धनुष पर चढ़ाया। मंत्र से वह वाण महा भयंकर बन गया, तेजोदीप्त होकर वह वाण राम पर आने लगा। विपरीत दिशा से आते हुए ब्रह्म-अस्त्र को सम्मुख देखकर राम ने धनुष पर तीक्ष्ण अस्त्र चढ़ाया। श्रीराम का वाण राक्षस के शर से व्यर्थ हो गया यह देखकर रघुनाथ ने अपने मन में सोचा ॥ ३१५ ॥

राक्षस के वाण के मुख पर जलते हुए अग्नि को देखकर पुरन्दर ने पवन से कहा, शरभंग मुनि के स्थान पर जो वाण मिला था, वह वाण रघुवर चला कर राक्षस को मारें ॥ ३१६ ॥

पुरन्दर ने जब पवन से इतना कहा तो पवन चुपके से जाकर रघुवर से कह आया कि हे राम, जो वाण शरभंग के स्थान पर मिला था, वीरबाहु का ब्रह्म-अस्त्र उसी वाण से काटो। इतना कहकर पवन भाग खड़ा हुआ। तब राम को वह वाण याद आया। तूण से वह अस्त्र झटपट निकालकर मंत्र पढ़कर धनुष पर लगाया और कान तक खींच कर राम ने वाण को धनुष पर चढ़ाया। उस अस्त्र के मुख पर ब्रह्म-अग्नि प्रज्वलित हो उठी।

श्रीराम एड़िला बाण वायु-वेगे चले ※ राक्षसेर ब्रह्म-अस्त्र काटे अवहेले
पुनः श्रीरामेर बाण गर्ज्जिया उठिल ※ काटिया गजेन्द्र-मुण्ड भूतले पाड़िल
गजवर पड़िल देखिते भयङ्कर ※ पर्व्वत पड़िल येन धरणी-उपर
एक ठाँइ स्कन्ध पड़े, मुण्ड आर मिते ※ लाफ़ दिया वीरबाहु दाण्डाय भूमिते
कोप-मने श्रीराम मारेन पञ्च बाण ※ वीरबाहुर धनुक करेन खान खान
ब्रह्म-अस्त्रे धनुक काटेन रघुनाथ ※ कहितेछे वीरबाहु करि जोड़-हात
जानिलाम, राम तुमि विष्णु-अवतार ※ अगतिर गति तुमि, संसारेर सार
श्रीचरणे अधीनेर एइ निवेदन ※ वैष्णव-अस्त्रेते मोरे करह निधन
वीरबाहु कहिलेक करुण-वचन ※ मने विषादित हैला कमल-लोचन
वीरबाहु ना मरिले, ना मरे-रावण ※ एतेक भाविया राम विषण्ण-वदन
दुर्ज्जय वैष्णव-अस्त्र धनुकेते जुड़ि ※ आकर्ण पूरिया गुण देन बाण छाड़ि
महाबेगे जाय अस्त्र, शब्द विपर्यय ※ देव-दानव-गन्धर्व्व-लोकेते लागे भय
चलिल वैष्णव-अस्त्र विष्णु-अवतार ※ रामेर बाणेते दीप्त हइल संसार
अव्यर्थ वैष्णव-बाण, कि कहिव कथा ※ मुकुट-सहित काटे वीरबाहु-माथा
भूमिते पड़िया मुण्ड "राम राम" वले ※ बिभीषण दिल मुण्ड राम-पद-तले

दाशरथि राम ने क्रोध से काँपते हुए वह बाण छोड़ा। बाण के प्रताप से वसुमती काँपने लगी। जब श्रीराम ने बाण फेंका तो उसने जाकर अनायास राक्षस के ब्रह्म-अस्त्र को काट गिराया। फिर राम का बाण गरज उठा और उसने गजेन्द्र का मुंड काटकर जमीन पर गिरा दिया। गजवर जमीन पर गिरा तो ऐसा लगा मानों धरती पर पर्वत गिर पड़ा हो। एक ओर उसका मुंड जा गिरा तो दूसरी ओर उसका धड़। तब कूद कर वीरबाहु भूमि पर खड़ा हो गया। क्रोधित मन से श्रीराम ने पंच-बाण फेंका तो वीरबाहु का धनुष खंड-खंड हो गया। ब्रह्म-अस्त्र से रघुनाथ ने वीरबाहु का धनुष काट डाला तो हाथ जोड़ कर वीरबाहु कहने लगा, हे राम मैंने जान लिया कि तुम विष्णु के अवतार हो, असहायों के सहारे हो और संसार के सार हो। तुम्हारे श्रीचरणों में इस अधीन का यह निवेदन है कि वैष्णव-अस्त्र से मेरा निधन कर डालो। जब वीरबाहु ने ये करुण वचन सुनाये तो कमल-लोचन राम मन ही मन विषादमग्न हो गये। उन्होंने दुर्जय वैष्णव अस्त्र को धनुष पर चढ़ाकर कान तक प्रत्यंचा खींच छोड़ दिया। महावेग से जब वह अस्त्र चलने लगा तो भीषण शब्द होने लगा जिससे देव-दानव-गन्धर्व लोक में सभी को डर लगने लगा। विष्णु के अवतार स्वरूप वैष्णव अस्त्र चल पड़ा। राम के बाण से सारा संसार प्रकाशमय हो गया। वैष्णव-बाण अचूक होता है। अधिक क्या कहना है, उसने जाकर मुकुट सहित वीरबाहु के सिर को काट डाला। भूमि पर गिरकर उसका मुंड 'राम-राम' रटने लगा।

विष्णु-अस्त्रे पड़ि' वीरबाहु मुक्त हय ※ रामेर चरणे लागे ह'ये ज्योतिर्म्मय
श्रीराम - लक्ष्मण - हनूमान् - विभीषण ※ चारिजन देखिल, ना देखे अन्यजन
रण जिनि श्रीराम-लक्ष्मणे कोलाकुलि ※ उच्चैःस्वरे डाके कपि "राम जय" बलि
वानर-कटक बले, करिला निस्तार ※ आर जत वीर हासे मो-सबार भार
हासिया चाहेन राम-विभीषण-पाने ※ एइ मत वीर आर आछे कतजने
विभीषण बले, प्रभु, वीर नाहि आर ※ रावण ओ इन्द्रजित् रावण-कुमार
कृत्तिवास-पण्डितेर मधुर भारती ※ लंका-काण्डे पड़े वीरबाहु योद्धपति ३१७

इन्द्रजितेर तृतीय बार युद्धयात्रा

भग्नदूत कहे गिया रावण-गोचर ※ वीरबाहु पड़े, वार्त्ता शुन लंकेश्वर
शोकेर उपरे शोक हइला तखन ※ सिंहासन हैते पड़े राजा दशानन
चैतन्य पाइया राजा कान्दिल विस्तर ※ लङ्काते हइल काल नर ओ वानर
कुम्भकर्ण आदि करि बड़ वड़ वीर ※ नर-बानरेर रणे त्यजिल शरीर
स्वर्ग-मर्त्य-पाताल जिनिनु त्रिभुवन ※ नर-वानरेर हाते संशय जीवन
एके एके पाठाइनु जत जत वीरे ※ संग्रामेते गेल, आर ना आसिल फिरे

तब विभीषण ने मुंड लाकर श्रीराम के चरणों के नीचे रख दिया। इस प्रकार विष्णु अस्त्र से मर कर वीरवाहु मुक्त हो गया। श्रीराम के चरणों से लगते ही वह ज्योतिर्मय हो गया। यह दृश्य श्रीराम, लक्ष्मण, हनुमान और विभीषण इन चारों ने ही देखा, इसके अतिरिक्त किसी और ने नहीं देखा। रण के उपरान्त श्रीराम और लक्ष्मण दोनों आपस में गले मिले और सारे वानर 'राम जय' की ध्वनि करने लगे। वानर-कटक ने कहा, प्रभु आपने हमलोगों का निस्तार किया, बाकी जो वीर आते हैं उनकी हमें परवाह नहीं। तब हँस कर राम ने विभीषण की ओर देखा और पूछा, इस प्रकार के वीर और कितने हैं? विभीषण ने कहा, प्रभु, अब और कोई वीर नहीं रहा। केवल रावण और रावण-कुमार इन्द्रजीत रह गये हैं। पंडित कृत्तिवास के मधुर वाक्य सुनो, लंका काण्ड में योद्धा-श्रेष्ठ वीरवाहु का पतन हुआ ॥ ३१७ ॥

इन्द्रजीत की तीसरी-वार की युद्धयात्रा

भग्नदूत ने रावण के निकट जाकर कहा, हे लंकेश्वर वार्त्ता सुनो, वीरवाहु खेत रहे। इस प्रकार जब शोक पर शोक का प्रहार हुआ तो राजा दशानन सिंहासन से गिर पड़ा। होश में आने के बाद राजा बहुत रोता रहा। हाय! लंका में नर और वानर यम के समान हो गये, कुम्भकर्ण आदि बड़े-बड़े वीर इस नर-वानर के युद्ध में शरीर त्याग कर चले गये, मैंने स्वर्ग-मर्त्य-पाताल तीनों लोक को जीता पर आज नर-वानर के युद्ध में मेरे

मकराक्ष अतिकाय वीर अकम्पन ※ महोदर महापाश जत जत जन
त्रिभुवन जिनियाछि जे सव सहाये ※ कोथा गेल वीरगण आमारे त्यजिये
इन्द्र - चन्द्र - कुबेर - वरुण आदि आर ※ आशंकाते ना आसित लंकाते आमार
एखन वानर-नरे दर्प करे चूर्ण ※ कोथा महोदर, कोथा भाइ कुम्भकर्ण
भाविते भाविते राजा हइल मूर्च्छित ※ हेनकाले आइल कुमार इन्द्रजित्
बापेर अवस्था देखे हइल अस्थिर ※ वयान वहिया पड़े नयनेर नीर१८
मेघनाद वले, पिता, भावि ताइ मने ※ निस्तार ना देखि नर-वानरेर रणे
लुकाइया थाकिले आगुन देय घरे ※ मरि वाँचि वारेक देखिव युद्ध क'रे
रावण बले, युद्धे जाओया तोमार उचित ※ एकबार जाह पुनः पुत्र-इन्द्रजित्
बड़ बड़ वीर पाठाइ, बड़ भावि मने ※ फिरिया ना आसे केह राम-दरशने
जत बार तुमि जाओ जुझिवार तरे ※ करिया संग्राम जय एस वारे बारे
श्रीराम-लक्ष्मणे बेन्धेछिले नागपाशे ※ मरिया जीयन्त हैल गरुड़-निःश्वासे
दशदिक् चापि कैले वाण-वरिषण ※ बानर-कटक मरे श्रीराम-लक्ष्मण
भाग्ये भृत्य छिल तार कपि हनूमान ※ औषध आनिया सबे दिल प्राणदान

प्राण संशय में पड़े हैं। मैंने एक-एक कर बड़े-बड़े वीरों को युद्ध में भेजा पर उनमें से एक भी घर लौट कर नहीं आया। मकराच्, अतिकाय, अकम्पन, महोदर, महापाश आदि जिन-जिन वीरों की सहायता से मैंने त्रिभुवन पर विजय प्राप्त की थी, वे सब वीर मुझको त्याग कर कहाँ चले गये? इन्द्र, चन्द्र, कुबेर, वरुण आदि तक भी मारे भय के मेरी लंका में कभी नहीं आते थे, पर अब नर और वानर मिलकर मेरा दर्प चूर-चूर कर रहे हैं। हाय वह महोदर कहाँ है, मेरा भाई कुम्भकर्ण कहाँ है? यह सोचते-सोचते राजा रावण को मूर्च्छा आ गई। ऐसे ही समय वहाँ कुमार इन्द्रजीत आ पहुँचा। बाप की ऐसी दशा देखकर वह बड़ा चिन्तित हुआ। उसके चेहरे पर आँसू ढरकने लगे॥ ३१८॥

मेघनाद ने कहा, पिता, मैं यही मन ही मन सोच रहा हूँ कि इस नर-वानर के रण में निस्तार नहीं। छिपकर रहने पर ये घरों में आग लगा देते हैं। चाहे मरूँ या जीता रहूँ पर अब फिर से एकबार युद्ध कर देख लेना चाहिए। रावण ने कहा, हाँ युद्ध में जाना तुम्हारे लिए उचित है। हे पुत्र इन्द्रजीत, तुम एक बार फिर जाओ। बड़े-बड़े वीरों को युद्ध में भेजता हूँ और मन में बड़ी-बड़ी आशाएँ सँजोता हूँ, लेकिन राम के दर्शन के बाद कोई भी लौट कर नहीं आता। तुम जितनी ही बार जूझने गये हो, संग्राम में विजयी होकर लौट आये हो, श्रीराम-लच्मण को तुमने नागपाश में बाँधा था, गरुड़ की साँस से वे मर कर भी जी गये। दशों दिशाओं में तुमने बाण बरसाये तो श्रीराम-लच्मण के साथ वानर-कटक मर गया। भाग्य से कपि

तोमार संग्रामे कारो नाहिक निस्तार ※ एबारे मारिले तारे के बचाबे आर
आर बार गिया आजि रणे देह हाना ※ बाहुड़िया जेन नाहि फिरे एकजना१९
बापेर वचने मेघनाद सुचिन्तित ※ जोड़हात करिया बलिछे इन्द्रजित्
बार बार मारिलाम श्रीराम-लक्ष्मण ※ कोथा शुनियाछ मरा पे'येछे जीवन
मरिया ना मरे राम एकि चमत्कार ※ केमन एमन रिपु करिब संहार
मेघनाद-कथा शुनि, कहिछे रावण ※ आगेते मारह पुत्र पवन-नन्दन
सेइ बेटा सबाकार देय प्राणदान ※ आर के बाँचाबे बल म'ले हनूमान
आगे यदि तुमि तारे करिते निधन ※ तबे आर औषध आनित कोन जन२०
पितृ-आज्ञा मेघनाद लंघिते ना पारे ※ कटक लइया तबे नड़े जुझिवारे
संग्रामेते साजिल कुमार इद्रजित् ※ असंख्य राक्षस-ठाट चलिल त्वरित
यात्रा करि मेघनाद रथे गिया चड़े ※ मन्दोदरी मायेरे तखन मने पड़े
माता सम्भाषिते गेले हइबे विरोध ※ जुझिवारे जाव आमि पितृ-अनुरोध
संग्राम जिनिया आमि यदि आसि घरे ※ कहिब सकल कथा मायेर गोचरे
उद्देशे मायेर पदे करि नमस्कार ※ फिरे यदि आसि, देखा करिब आबार२१

हनुमान उनका भृत्य था जिसने औषध लाकर सबके प्राण बचाये। तुम्हारे संग्राम में किसी का भी निस्तार नहीं, इसबार मरेगा तो उसको कौन बचायेगा। फिर आज रण में हमला बोल दो कि कोई भाग कर भी लौट न सके ॥ ३१६ ॥

पिता के ये वचन सुनकर मेघनाद चिन्ता करने लगा, फिर हाथ जोड़ कर कहने लगा। मैंने बार-बार श्रीराम-लक्ष्मण को मारा, तुमने यह कहाँ सुना होगा कि मरा आदमी भी फिर जी जाता है। यह कैसा चमत्कार है कि मर कर भी राम नहीं मरता है। मैं ऐसे शत्रु का संहार कैसे कर सकूँगा ? मेघनाद की बात सुनकर रावण कहने लगा, हे पुत्र, पहले पवन-नन्दन को मारो। वही अभागा है जो कि सबको प्राणदान करता है। अगर हनुमान मर जाय तो फिर कौन बचायेगा। तुम यदि पहले उसका वध कर दिये होते तो औषध कौन ले आता ॥ ३२० ॥

पिता की आज्ञा का उल्लंघन मेघनाद नहीं कर सकता था इसलिए, सेना लेकर वह लड़ने के लिए वहाँ से चला। कुमार इन्द्रजीत संग्राम के लिए सुसज्जित हुआ। असंख्य राक्षस-सेना उनके साथ तुरन्त चल पड़ी। जब मेघनाद रथ पर सवार हो गया। तभी उसको माता मन्दोदरी याद आ गई। माता से सम्भाषण करने जाने पर अभी इसका विरोध होगा। मैं पिता के अनुरोध पर युद्ध करने जा रहा हूँ। युद्ध जीत कर अगर लौट आऊँगा तो माँ से जाकर सारी बातें करूँगा। माँ के चरणों के उद्देश्य से प्रणाम करके वह चल पड़ा और मन में सोचा कि यदि लौट कर आऊँगा तो फिर भेंट करूँगा ॥ ३२१ ॥

यज्ञस्थाने चलिल कुमार इन्द्रजित् ❊ यज्ञेर सामग्री सब आनिल त्वरित
रक्तपाट भारे भारे, सुरक्त चन्दन ❊ रक्तेर कुसुम-माल्य रक्तेर वसन
शरपत्र बोझा बोझा, घृतेर कलस ❊ काल छाग पाले पाले बहिछे राक्षस
शरपत्र विधिमते, करिल बिछानि ❊ मन्त्र पड़ि' यज्ञस्थले ज्वालिल आगुनि
शरखान खड्गे छाग काटि शीघ्रगति ❊ अग्नि समर्पण करि दितेछे आहुति
आतप-तण्डुल यव राशि राशि आने ❊ घृतेर आहुति सह दितेछे आगुने
रक्तवर्ण पुष्पमाल्य डुबाइया घृते ❊ दश हाजार विप्र वेद पड़े चारिभिते
अग्निर विषम शव्द मेघेर गर्ज्जन ❊ से अग्निर शिखा गिया ठेकिल गगन
दक्षिणदिकेते गेल आगुनेर शिखा ❊ मूर्त्तिमान ह'ये अग्नि आसि दिल देखा
साक्षात् हइया अग्नि रहे विद्यमान ❊ रुष्ट ह'ये अग्नि नाहि लय तार दान ३२२
अग्नि बले, नित्य पूजा कर कि कारणे ❊ कत वर आमि तोरे दिब रात्रिदिने
इन्द्रजित् बले, मोरे देह एइ वर ❊ राम-सैन्य मारिया पाठाइ यमघर
अग्नि बले, हेन वर चास् अकारण ❊ केमने मारिबि रामे, तिनि नारायण
स्वयं विष्णु जन्मिलेन राम-अवतार ❊ रावणेरे सवंशेते करिते संहार
मनुष्य नहेन राम, स्वयं नारायण ❊ अनुक्षण चिन्ति आमि ताँहार चरण

कुमार इन्द्रजीत अपने यज्ञ-स्थल की ओर चला। झटपट यज्ञ के सारे सामान ले आया, जैसे लाल रंग के वस्त्र और लाल रंग का चन्दन, रक्तवर्ण फूलों की माला और रक्तवर्ण वसन, आदि। राक्षस सरकंडों का ढेर, घी के घड़े और झुंड के झुंड काले बकरे लाद-लाद कर लाने लगे। विधि के अनुसार उसने सरपत बिछाया और मंत्र पढ़कर यज्ञकुंड में आग जलाई। तेज खड्ग से बकरे के अंगों को काट कर कर वह शीघ्रातिशीघ्र अग्नि में हवन करने लगा। चावल और जौ पर्याप्त परिमाण में लाकर वह घी के साथ आग में आहुति डालने लगा। लाल रंग के पुष्प घी में भिगोकर हवन करते हुए दस हजार विप्र चारों ओर वेदपाठ करने लगे। अग्नि का भयंकर शब्द इस प्रकार होने लगा मानों मेघगर्जन हो। अग्नि की वह शिखा गगन को छूने लगी। अग्निशिखा दक्षिण की ओर लपकी तो अग्निदेव ने स्वयं मूर्त्तिमान होकर दर्शन दिये। साक्षात् रूप में अग्नि विद्यमान हुए किन्तु रुष्ट होकर उन्होंने उसका दान नहीं स्वीकारा ॥ ३२२ ॥

अग्नि ने कहा, नित्यप्रति मेरी पूजा तुम किस कारण करते हो। तुमको रातोंदिन मैं कितने वर दूँ? इन्द्रजीत ने कहा, मुझको यह वर दो कि मैं राम की सेना का वध कर उनको यमालय भेज दूँ। अग्नि ने कहा, क्यों अकारण ऐसा वर तुम माँग रहे हो, राम को तुम कैसे मार सकते हो, वे तो स्वयं नारायण हैं। रावण का सवंश संहार करने के निमित्त स्वयं विष्णु ने राम का अवतार लेकर जन्म लिया है। राम मनुष्य नहीं, स्वयं नारायण

रामेरे मारिते वर केवा पारे दिते * आर यज्ञे आमारे ना पाइबि देखिते
यखन मारिस् ताँरे, बाँचेन तखन * एत देखि तथापि प्रतीत नहे मन२३
शुनिया अग्निर कथा पाय बेटा त्रास * रथे चड़ि इन्द्रजित् उठिल आकाश
अग्निदेव चलिलेन आपनार देश * इन्द्रजित् रणे गिया करिल प्रवेश२४
रथ सञ्चारिया जाय उपर गगन * पश्चिम-द्वारेते यथा श्रीराम-लक्ष्मण
एकेवारे जुड़िल साताश-लक्ष शर * बिन्धिया जर्ज्जर कैल यतेक वानर
झञ्झनार शब्दवत् बाण शब्द शुनि * इन्द्रजित् बलि सबे करे कानाकानि
बानर-कटक बले, शुन रघुनाथ * एड़ान ना जावे आजि इन्द्रजित्-हात
राक्षसेर बाणेते कातर कपिगण * हेनकाले श्रीरामेरे बलेन लक्ष्मण
ब्रह्म-अस्त्र छाड़, कर राक्षस-संहार * पृथिवीते नाहि थाके राक्षस-संचार
श्रीराम बलेन, भाइ निर्ब्बोध लक्ष्मण * कोन अपराधे वधि सबार जीवन
कोन दोष करिल लङ्कार यत नारी * अपराध एकेर, अन्येरे केन मारि
शुन भाइ, आमार अस्त्रेर एइ पण * मारिबे राक्षसगणे बिना विभीषण
मेघेर उपरे येन विद्युत् झलके * शोभिछे मुकुट इन्द्रजितेर मस्तके

हैं, और मैं प्रतिक्षण उन्हीं के चरणों का मनन किया करता हूँ। राम को मारने का वर कौन दे सकता है। आगे से तुम कभी मेरा दर्शन नहीं पाओगे। जब भी तुम उनको मारते हो देखते हो कि वे जी जाते हैं, इतना देखने के उपरान्त भी तुमको यह विश्वास क्यों नहीं होता कि तुम राम को मार नहीं सकते ॥ ३२३ ॥

अग्नि की बातें सुनकर अभागे इन्द्रजीत को बड़ा डर लगा। तब इन्द्रजीत रथ पर सवार होकर आकाश में चढ़ गया और अग्निदेव अपने देश को प्रस्थान कर गये। इसके बाद इन्द्रजीत ने रणक्षेत्र में प्रवेश किया ॥ ३२४ ॥

ऊपर गगन में रथ चलाता हुआ वह पश्चिम द्वार पर गया जहाँ श्रीराम और लक्ष्मण थे। एक ही बार में उसने सत्ताइस लाख बाण छोड़े और बाणों से सारे वानरों को छेद दिया। बाणों के शब्द झंझा की ध्वनि जैसे सुनाई पड़ने लगे। सभी लोग कानाफूसी करने लगे कि इन्द्रजीत आ गया है। वानर-कटक ने कहा, हे रघुनाथ, सुनो आज इन्द्रजीत के हाथों से बचा नहीं जा सकता। राक्षस के बाणों से कपि बड़े कातर हो गये हैं। ऐसे ही समय श्रीराम से लक्ष्मण ने कहा, आप ब्रह्म-अस्त्र छोड़ें और राक्षसों का ऐसा संहार करें कि पृथ्वी पर एक भी राक्षस न रहे। श्रीराम ने कहा, भाई लक्ष्मण, तुम बड़े निर्बोध हो। किस अपराध पर मैं सबके प्राण ले लूँ। लंका की सारी नारियों ने कौन सा अपराध किया है। किसी का अपराध हो और किसी दूसरे को क्यों मार डालूँ। सुनो भाई लक्ष्मण, मेरे अस्त्र का पण है कि विभीषण के सिवा सारे राक्षसों को मारेगा। जिस प्रकार बादलों पर

लक्ष्मण बलेन, मेघे जुझे इन्द्रजित् ॥ मेघ-सने वेटारे विन्धह अलक्षित
श्रीराम बलेन, युद्ध देखे देवगण ॥ कि जानि संहारि पाछे देवेर जीवन
उभयेर युक्ति वेटा शुनिल आकाशे ॥ लङ्कामध्ये यज्ञस्थाने प्रवेशिल त्रासे २५

माया-सीता-वध

पशिया लङ्कार मध्ये युक्ति करि सार ॥ विद्युज्जिह्व निशाचरे कहे बारबार
शुन वलि विद्युज्जिह्व नाना-मायाधारि ॥ मन्त्रेते गड़िया देह रामेर सुन्दरी
जनक-नन्दिनी जे प्रकार रूप धरे ॥ सेइरूप सीता निर्म्माइया देह मोरे
माया-सीता काटि आजि रामेर गोचर ॥ पत्नीशोके मरिबेक राम-धनुर्द्धर
अनायासे हइबेक रामेर मरण ॥ रामेर मरणे मरिबेक से लक्ष्मण
पलाइबे सुग्रीव से गणिया प्रमाद ॥ बिना-युद्धे राम-संगे घुचिवे विवाद २६
अनुज्ञा पाइबा मात्र प्रफुल्ल-हृदय ॥ माया-सीता निर्म्माइते करिल निश्चय
सीतार येमन रूप, येमन आकार ॥ विद्युज्जिह्व सेइमत रचिल ताहार
माया-सीता गड़िलेक मायार आकार ॥ मन्त्र पड़ि करे तार जीवन-सञ्चार

बिजली चमकती है उसी प्रकार इन्द्रजीत के सिर पर मुकुट शोभा पायेगा। लक्ष्मण ने कहा, यह इन्द्रजीत मेघ में रहकर जूझ रहा है, इसको अनदेखे मेघ के साथ वेध डालो। श्रीराम ने कहा, इस समय देवता भी युद्ध देख रहे हैं। क्या मालूम इस प्रकार मैं किसी देवता के ही प्राण ले डालूँ। आकाश में रहकर दुष्ट इन्द्रजीत ने दोनों की बातचीत सुन ली और त्रस्त होकर लंका में अपने यज्ञस्थल पर पहुँचा ॥ ३२५ ॥

माया-सीता-वध

लंका में प्रवेश कर वह मन ही मन युक्ति लड़ाने लगा। फिर विद्युज्जिह्व निशाचर से उसने कहा। सुनो विद्युज्जिह्व, तुम विभिन्न प्रकार की मायाओं के ज्ञाता हो, तुम मंत्र द्वारा राम की पत्नी सीता को गढ़ दो। जनक-नन्दिनी का जसा रूप-रंग है उसी प्रकार की सीता का निर्माण मेरे लिए कर दो। आज राम के समक्ष मैं माया की सीता को काटकर धनुर्धर राम को पत्नीशोक से दुखी करके मार डालूँगा। इस प्रकार अनायास ही राम की मृत्यु हो जायगी और राम की मृत्यु से लक्ष्मण भी मरेगा। यह विपत्ति देखकर सुग्रीव भी भाग खड़ा होगा। बिना युद्ध के ही राम के साथ सारे विवाद का अन्त हो जायगा ॥ ३२६ ॥

आज्ञा पाते ही प्रसन्न मन हो उसने माया की सीता का निर्माण करने का निश्चय कर लिया। जैसा सीता का रूप-रंग और आकार-प्रकार था विद्युज्जिह्व ने उसी प्रकार की माया की सीता गढ़ डाली। मंत्र पढ़ कर उसने उसमें प्राणों का संचार किया। तब विद्युज्जिह्व ने उस सीता को पढ़ाया

विद्युज्जिह्व से सीतारे पड़ाय तखन ❋ श्रीराम तोमार स्वामी, देवर लक्ष्मण
दशरथ श्वशुर, जनक तोर वाप ❋ रावण आनिल तोमा पेये बड़ ताप
इन्द्रजित् रथे तोमा तुलिबे यखन ❋ "राम-राम" शब्दे तुमि करिह रोदन
माया-सीता दिल इन्द्रजितेर गोचर ❋ शिरोपा से विद्युज्जिह्व पाइल विस्तर
ताड़-बाला पाइल कत माणिक्य-रतन ❋ पञ्चशब्द बाद्य पाइल अनेक बाजन२७
माया-सीता तुलिया रथेर एकभिते ❋ पश्चिम-द्वारेते उपनीत इन्द्रजिते
अश्वबाड़ि मारे माया-सीतार शरीरे ❋ अंगे फुटि सीतार ये रक्त पड़े धारे
"मरि मरि" बलि सीता कान्दे उभरोले ❋ हाते खाण्डा इन्द्रजित् धरे सीतार चूले२८
देखि हनूमान वीर धाय उभरड़े ❋ दुइच'क्षे मारुतिर वारिधारा पड़े
इन्द्रजित्-रथे सीता हनूमान देखे ❋ वृक्ष हाते रहे तार, वाक्य नाहि मुखे
एकहस्ते धरियाछे वृक्ष ओ पाथर ❋ आर हाते आँखि-जल संवरे बानर
डाक दिया कहे हनू मेघनाद-तरे ❋ पापेते डुबिलि बेटा, नरक-भितरे
स्त्रीवध दुष्कर वड़ परम-पातक ❋ अनेक दिवस बेटा, भुञ्जिबि नरक
अंगेमांस नाहि सीतार, अस्थिचर्म्म-सार ❋ ए नारी काटिले तोर नाहिक निस्तार२९

कि श्रीराम तुम्हारा पति है और लक्ष्मण देवर हैं, दशरथ तुम्हारे श्वसुर हैं और जनक बाप हैं। रावण तुमको बड़ा दुख पाकर उठा लाया। जब इन्द्रजीत तुमको रथ पर चढ़ा लेगा तब तुम 'राम-राम' शब्द करते हुए रोदन करना। उसने माया की सीता लाकर इन्द्रजीत को दे दी। विद्युज्जिह्व को इसके लिए शरोभूषण मिला, वलय-कंगन और कितने ही हीरे-जवाहरात मिले, तथा पंचशब्द करने वाले कितने ही वाद्ययंत्र भी प्राप्त हुए॥ ३२७॥

माया की सीता को रथ के एक कोने में बिठाकर इन्द्रजीत पश्चिम द्वार पर जा पहुँचा। वह सीता के शरीर पर चाबुक चलाने लगा जिससे सीता के अंग फट गये, और उनसे खून निकलने लगा। तब 'मरी मरी' कहकर सीता दहाड़ मार रोने लगी। तब इसके बाद इन्द्रजीत ने हाथ में खड्ग लेकर सीता के बालों के झोंटे को पकड़ा॥ ३२८॥

यह देखकर वीर हनुमान तेज गति से दौड़ पड़े। उनकी दोनों आँखों से आँसू गिरने लगे। हनुमान ने इन्द्रजीत के रथ पर सीता को देखा, उसके हाथों में पकड़ा हुआ वृक्ष हाथों में रह गया और मुँह से कोई शब्द नहीं निकला। एक हाथ से वृक्ष और पत्थर पकड़े हनुमान दूसरे हाथ से अपने आँसू पोछने लगे। तब मेघनाद को पुकार कर हनुमान ने कहा, अरे तू तो नरक के पापों में डूब गया। स्त्री की हत्या परम पाप है—तू तो लम्बी अवधि तक नरक-वास करेगा। सीता के शरीर पर मांस भी नहीं रह गया, वह हड्डियों का ढाँचा भर रह गई है, इस नारी को मारने पर तेरा निस्तार नहीं होगा॥ ३२९॥

इन्द्रजित् वले, तुइ पशु-दुराचार ※ केमने जानिवि वेटा, धर्म्मेर विचार
स्त्री काटिले शोके पुड़े मरे यदि वैरी ※ शास्त्रमत हेन स्त्रीके काटिवारे पारि
आगे सीता काटि, पाछे श्रीराम-लक्ष्मण ※ सुग्रीवे काटिव आर यत कपिगण
इन्द्रजिते घेरिते धाइल कपिगणे ※ आगु हैते नाहि पारे इन्द्रजित्-वाणे
इन्द्रजिते मारि सीता काड़ि लैते चाहे ※ यम सम इन्द्रजित्, सामान्य त नहे ३ ३ ०
आगु हैते नाहि पारे पवन-नन्दन ※ माया करि माया-सीता जुड़िल क्रन्दन
हा हा प्रभु रघुनाथ, देवर-लक्ष्मण ※ ए समये एकवार देह दरशन
राजार नन्दिनी आमि, रामेर बनिते ※ विपाके हारानु प्राण राक्षसेर हाते
कोथाय जनक-ऋषि जनक आमार ※ विपाके मरिनु आसि समुद्रेर पार
कौशल्या शाशुड़ी शोके भासे अश्रुजले ※ ना करिनु सेवा ताँर आसिवार काले
सेइ अपराधे बुझि ह'लो ए दुर्गति ※ राक्षसेते वधे प्राण, राख रघुपति
रक्षा कर हनूमान पवन-नन्दन ※ एत वलि माया-सीता करेन क्रन्दन ३ ३ १
क्रोधकरि इन्द्रजित् खड्ग ल'ये हाते ※ तुलिया मारिल माया-सीतार अंगेते
ब्राह्मणेर गलेते येमन थाके पैता ※ सेइमत करिया काटिल माया-सीता

इन्द्रजीत ने कहा, अरे तू तो दुराचारी पशु है, धर्म के बारे में तुझको भला क्या ज्ञान होगा। स्त्री के काट डालने पर अगर शोक की आग से जलकर शत्रु मर जाय तो शास्त्र के अनुसार ऐसी स्त्री को मैं काट सकता हूँ। पहले सीता को काट डालूँ फिर श्रीराम-लक्ष्मण को काटूँगा, और इसके उपरान्त सुग्रीव तथा अन्य कपियों को काट डालूँगा। तब इन्द्रजीत को घेरने के लिए सारे कपि दौड़ पड़े, किन्तु इन्द्रजीत के बाणों के कारण वे आगे न बढ़ सके। इन्द्रजीत को मारकर उन लोगों ने सीता को छीन लेना चाहा, लेकिन इन्द्रजीत भी कोई मामूली वीर नहीं था; वह यम के समान भयंकर था ॥ ३३० ॥

पवन-नन्दन आगे बढ़ने में असमर्थ रहे। तब माया-सीता रोने लगी। हाय प्रभु रघुनाथ, हाय देवर लक्ष्मण, इस समय तुम एक बार दर्शन दे दो। मैं राजा जनक की नन्दिनी हूँ और राम की पत्नी हूँ, आज दुर्दैव से राक्षस के हाथ प्राण गवाँ रही हूँ। हाय मेरे पिता जनक ऋषि कहाँ हैं? मैं समुद्र पार आकर विपत्ति में पड़ कर मर रही हूँ। मेरी सास कौशल्या शोक से आँसुओं से डूबी थीं, आते समय मैं उनकी सेवा भी न कर सकी। शायद उसी अपराध के कारण मेरी यह दुर्गति हो रही है, यह राक्षस मेरे प्राण ले रहा है। हे रघुपति तुम मेरी रक्षा करो। हे पवन-नन्दन हनुमान तुम मेरी रक्षा करो, इतना कहकर माया की सीता क्रन्दन करने लगी ॥ ३३१ ॥

तब क्रोधित होकर इन्द्रजीत ने हाथ में खड्ग लिया और उसे उठाकर सीता के अंग पर प्रहार किया। ब्राह्मण के गले में जिस ढंग से जनेऊ पड़ा

दुईखान ह'ये सीता भूमितले पड़े ❋ पलाय बानरगण हा-हुताश क'रे
हनूमान वले, कपि, रणे हओ स्थिर ❋ भूमिते लोटाय जेन इन्द्रजित्-शिर
सीतारे काटिया हर्षे इन्द्रजित् नाचे ❋ इन्द्रजित् मरिले सकल दुःख घुचे
हनूमान-वाक्ये फिरे सकल वानर ❋ लाफे लाफे प्रवेशिल रणेर भितर
असंख्य वानरे मारे कोटि-कोटि गाछ ❋ वड़-वड़ राक्षस पड़िल वाछेर वाछ
वानरेर युद्धे त्रास पेये इन्द्रजित् ❋ लंकार भितरे गिया उतरे त्वरित ३३२
हनूमान कहितेछे सकल वानरे ❋ सीतादेवी काटा गेल, जुझि कार तरे
श्रीरामेर स्थाने मोरा कहि गिया सवे ❋ श्रीरामेर जे आदेश, सेइमत हवे
श्रीरामेर स्थाने चले यत कपिगण ❋ जाम्ववाने कहिछेन राजीवलोचन
युद्ध करे हनूमान, महाशब्द शुनि ❋ रणे भाल-मन्द किवा, किछुइ ना जानि
तुमि जाह आपनार सैन्यगण ल'ये ❋ हनूर सैन्येते थाक अनुबल ह'ये
तव विद्यमाने यदि हनू-सैन्य भागे ❋ तार भाल-मन्द-दाय तोमाते से लागे
आज्ञामात्र जाम्ववान् चले ततक्षण ❋ पथे हनूमान-संगे हैल दरशन
हनूमान वले, केन जुझिते गमन ❋ सीतादेवी काटागेल, कि करिवे रण
आगे गिया कहि रघुनाथेर गोचर ❋ सीतार बिहने राम कि देन उत्तर ३३३

रहता है, उसी ढंग से माया की सीता को इन्द्रजीत ने काट डाला। दो खंड होकर सीता भूमि पर गिर गई, यह देखकर सारे वानर हाय-हाय करते हुए भागने लगे। हनुमान ने कहा, ऐ वानरो! रण में स्थिर हो जाओ। अब ऐसा करना है जिससे कि इन्द्रजीत का सिर भूमि पर लोटे। सीता को काट-कर इन्द्रजीत हर्ष से नाच रहा है, ऐसे इन्द्रजीत के मरने से सब दुःखों का अन्त होगा। हनुमान के कथन पर सारे वानर लौट आए और उछल-उछल कर रणक्षेत्र में टूट पड़े। अनगिनत बन्दरों ने करोड़ों पेड़ उखाड़-उखाड़ कर मारे, जिससे वड़े-बड़े राक्षस ढेर हो गये। वानरों के युद्ध से त्रस्त होकर इन्द्रजीत तुरन्त लंका के भीतर भाग गया॥ ३३२॥

हनुमान ने सारे वानरों से कहा, सीतादेवी को तो इसने काट डाला अब किसके निमित्त युद्ध करूँ। हम सब चलकर श्रीराम से सारी बातें कहें, फिर जैसी श्रीराम की आज्ञा होगी वैसा करेंगे। ऐसा कहकर सारे कपि श्रीराम के स्थान पर चल दिये। राजीवलोचन (राम) जाम्बवान से कह रहे हैं, हनुमान युद्ध कर रहा है, मैं घोर शब्द सुन रहा हूँ, लेकिन युद्ध के भले-बुरे के बारे में कुछ भी मालूम नहीं। तुम अपनी सेना लेकर जाओ और हनुमान की सेना की सहायक-सेना बनकर रहो। तुम्हारे रहते हुए यदि हनुमान का सैन्य भागता है तो उसकी जिम्मेवारी तुम पर है। राम की आज्ञा पाते ही जाम्बवान तुरन्त चल पड़ा, रास्ते में हनुमान से उसकी भेंट हो गई। हनुमान ने कहा, अब युद्ध करने क्या जा रहे हो, सीतादेवी

सैन्यसह दुइजना गेल रामस्थान ※ कान्दिते कान्दिते कहे वीर हनूमान
हनूमान बले, प्रभु, कर अवधान ※ इन्द्रजित् काटे सीता सबा-विद्यमान
शुनि ताहा रघुनाथ हइला मूर्च्छित ※ जलेर कलस कपि योगाय त्वरित
निर्म्मल उत्पल-जल गन्धे सुवासित ※ श्रीरामेर मस्तके ढालिल यथोचित
स्पन्दहीन विषण्ण श्रीराम अचेतन ※ विलाप करेन, आर कहेन लक्ष्मण
त्रिलोकेर नाथ तुमि धर्म्म-निकेतन ※ धर्म्म-लागि राज्य त्यागी, वाकल-वसन
फलमूलाहारी, शिरे जटाजूट धारी ※ स्त्री लागिया दुःख पाओ, जेमन संसारी
राजभोगे थाकिते जे दिव्य-सिंहासने ※ दुष्ट दशानन सीता देखित केमने
आपनार दोषेते हइला देशान्तरी ※ हाराले जन्मेर मत सीता-हेन नारी
पिता-माता-बन्धु-आदि सकलि अलीक ※ वृक्षमूले जेन मिले क्षणेक पथिक
स्त्री-पुत्र सकलि मिथ्या, केह कारो नय ※ पथिके-पथिके जेन पथे परिचय
संसार असार भाइ, कपटेर मेला ※ सूता सञ्चारिया जेन नाचाय पुतुला
विविध उत्पात पड़े, विविध प्रमाद ※ ज्ञानी लोक ताहे किछु ना करे विषाद

कट गई, अब क्या युद्ध करोगे। पहले जाकर रघुनाथ के समक्ष सारी बात बताऊँ, सीता के न रहने पर अब श्रीराम क्या उत्तर देते हैं, सुना जाय॥ ३३३॥

सैन्य के साथ दोनों राम के पास गये। रोते-रोते वीर हनुमान ने कहा, हे प्रभु सुनो, इन्द्रजीत ने सबके सम्मुख सीता जी को काट डाला। यह सुनते ही रघुनाथ मूर्छित हो गये। सारे वानर तुरन्त पानी के कलश ले आए और निर्मल कमल की सुगन्ध से बसा जल श्रीराम के सिर पर डालने लगे। स्पन्दनशून्य, विषण्ण राम अचेतन पड़े थे, तब लक्ष्मण विलाप करते हुए कहने लगे। तुम त्रिलोक के नाथ हो, धर्म-निकेतन हो, धर्म के कारण तुमने राज्य छोड़ा, वल्कल का वस्त्र धारण किया, फल-मूल का भोजन किया और सिर पर जटाएँ धारण कीं। स्त्री के कारण तुम ऐसा क्लेश पा रहे हो जैसे गृहस्थ लोग पाते हैं। अगर राज्य भोगते हुए दिव्य-सिंहासन पर बैठे रहते तो दुष्ट दशानन सीता को कैसे देख पाता। अपने ही दोष से तुम प्रवासी बने और सीता जैसी नारी को जन्म भर के लिए खो दिया। पिता, माता, बन्धु आदि सभी कुछ इस प्रकार मिथ्या है, मानों पेड़ तले मिलने वाले क्षणभर के बटोही हों। स्त्री-पुत्र सभी कुछ मिथ्या है, कोई भी किसी का नहीं होता, मानों पथ में पथिक-पथिक में परिचय मात्र हुआ। यह संसार असार है, कपटों का मेला है। डोरा हिलाकर मानों कठपुतलियों का नाच हो रहा है। विभिन्न प्रकार की विपत्तियाँ और तरह-तरह के उपद्रव भी आते हैं किन्तु ज्ञानी लोग इनके कारण शोकमग्न नहीं हो जाते। हे प्रभु! स्त्री के शोक से तुम ऐसा व्याकुल क्यों हो रहे हो। जो महाजन होता है वही विपत्तियों के समुद्र को पार कर जाता है। तुम्हारी भार्या भी क्या है? और तुम्हारा

स्त्रीर शोके प्रभु, केन ह'येछ कातर ※ महाजन संवरे से विपत्-सागर
तोमार किसेर भार्या, केवा वाप-भाइ ※ तोमार समान नाइ जगते गोसाँइ
सकलेर प्राण तुमि, सव तव छाया ※ तोमा छाड़ा नहे केह, सव तव माया
जीये कि ना जीये सीता, करह विचार ※ स्त्री लागिया अचेतन, एकि व्यवहार
महामुनि वशिष्ट जे कुल-पुरोहित ※ स्वर्गवासे गेला तिनि शरीर-सहित
स्वर्गे गिया ताँहारो जे दारा-पुत्र-शोक ※ स्वर्गभ्रष्ट हइया आइला मर्त्यलोक
तपस्या करिया इन्द्र हैल देवराज ※ शोकेते कातर हओ, नहे किछु काज ३४
श्रीराम वलेन, किवा बुझाओ लक्ष्मण ※ भार्या-शोक भाइ, कभु नहे विस्मरण
स्त्री-पुरुषे दोंहे जन्मे ए छार संसारे ※ स्त्री हइते पुत्र हय, वाड़े परिवारे
इष्ट वन्धु कुटुम्व घरेर यत लोक ※ सवा हैते भाइ रे, भार्यार वड़ शोक
देशे देशे पाइ भाइ, कामिनी अशेष ※ गुणवती स्त्री मरिले मरण-विशेष
स्त्री-बिना पुरुष सुखी, कोथाओ नाशुनि ※ स्त्री-शोक एड़ाय जेइ, से परम-ज्ञानी
राज्यहीन पितृहीन से सव पासरि ※ हाराइया नारी भाइ, पासरिते नारि
सीता ना देखिले आमि ना पारि रहिते ※ सीतार मरणे क्षमा दिव किसे चिते ३५
कान्दिया हइला राम शोके अचेतन ※ रामेर क्रन्दन शुनि एल विभीषण

वाप-भाई भी कौन है ? भला तुम तो जगत् के प्रभु हो, असामान्य हो। तुम्हीं सबके प्राण हो और बाकी लोग तुम्हारी छाया मात्र हैं। तुम्हारे बिना कोई कुछ नहीं है, सब माया है। पहले यह विचार कर लो कि सीता जीवित है या नहीं, तुम स्त्री के कारण अचेतन हो गये, यह तुम्हारा कैसा आचरण है। कुल-पुरोहित वशिष्ठ महामुनि थे और वे सदेह स्वर्ग गये, किन्तु स्वर्ग जाकर भी उनको दारा-पुत्र के शोक ने व्याकुल किया तभी वे स्वर्ग से भ्रष्ट होकर मृत्युलोक में आ गये। तपस्या करके इन्द्र देवराज बन गया। शोक से तुम व्याकुल हो रहे हो, यह कोई अच्छी बात नहीं है ॥ ३३४ ॥

तब श्रीराम ने कहा, हे लक्ष्मण ! तुम मुझको क्या समझा रहे हो, भार्या का शोक भुलाने वाला नहीं होता। इस मिथ्या संसार में स्त्री और पुरुष दोनों जन्म लेते हैं। स्त्री से पुत्र प्राप्त होता है, परिवार बढ़ता है। हे भाई ! इष्ट-मित्र कुटुम्ब और घर के सारे लोगों से भी भार्या का शोक अधिक होता है। सुनो भाई ! देश विदेश में कितनी ही कामिनियाँ मिलेंगी किन्तु गुणवती पत्नी की मृत्यु अपनी मृत्यु के समान है। ऐसा कभी नहीं सुना कि स्त्री के बिना पुरुष सुखी है। जो पत्नी-शोक पर विजय पा सकता है वह परम ज्ञानी है। राज्य नहीं रहा, पिता नहीं रहे, यह सब मैं भूल सकता हूँ किन्तु पत्नी गँवाने के बाद मैं उसको भुला नहीं सकता। सीता को बिना देखे मैं रह नहीं सकता। सीता की मृत्यु पर मैं मन को किस प्रकार दिलासा दूँ ॥ ३३५ ॥

इस प्रकार रोते-रोते राम शोक से अचेतन हो गये। राम का क्रन्दन

सकलेते शोकाकुल देखि उड़े प्राण ※ विभीषण कहे, वार्त्ता कह हनूमान
केन रामेर कोमलाङ्ग धूलाय धूसर ※ कातर हइया केन कान्दिछे बानर
श्रीराम बलेन, शुन मित्र विभीषण ※ सीतारे केटेछे आजि रावण-नन्दन
यत परिश्रम, सब हैल अकारण ※ वृथा केन करिलाम सागर-बन्धन
बिमाता हइया वैरी पाठाइला वने ※ हाराइनु प्राणेर जानकी एतदिने
काननें चलिया जेतो जानकी आमार ※ फिरे चेये देखिताम तिले शतवार
ननीर पुत्तली सीता आतपे मिलाय ※ च'ले जेते कुशांकुर फोटे पाय-पाय
चम्पक-वरणी सीता राजार दुहिते ※ स्वामी ह'ये सँपिलाम राक्षसेर हाते
मायामृग धरिवारे केन गेनु वने ※ कारे विलाइया दिनु सीता-हेन धने
दुष्ट इन्द्रजित् जबे काटिल जानकी ※ ना जानि कान्दिल कत सीता शशिमुखी
सीतार विहने प्राण त्यजिव एखन ※ अयोध्यार फिरे जाह प्राणेर लक्ष्मण ३६
विभीषण वले, राम, ना कर क्रन्दन ※ सीतारे काटिते देखियाछे कोन् जन
राम वले, देखियाछे पवन-नन्दन ※ विभीषण वले, हनू पशुते गणन
वनजन्तु वानर से, बुद्धि नाहि घटे ※ महालक्ष्मी मा जानकी, कार साध्य काटे
आर एक कथा कहि, शुन रघुमणि ※ परमा-सुन्दरी सीता भुवन-मोहिनी

सुनकर विभीषण आया। सभी को शोकमग्न देखकर उसके प्राण उड़ गये। विभीषण ने कहा, हनुमान, समाचार सुनाओ, राम के कोमल अंग धूल से क्यों सने हैं। सारे वानर व्याकुल होकर रो क्यों रहे हैं। श्रीराम ने कहा, मित्र विभीषण सुनो, आज रावण-नन्दन (इन्द्रजीत) ने सीता को काट डाला है। मेरा सारा परिश्रम व्यर्थ गया, नाहक मैंने सागर को बाँधा। वैरिन बनकर विमाता ने मुझे वन भेज दिया, इतने दिनों में प्राणों के समान जानकी को मैंने खो दिया। मेरी जानकी जब कानन में चलती थी तो मैं सौ-सौ बार उसको निहारता रहता था। माखन की गुड़िया सी सीता धूप में घुल जाती थी, चलते समय कुश के अंकुर उसके पैरों में चुभ जाते थे। राजा की कन्या सीता चम्पक वर्ण की थी मैंने पति होकर उसको राक्षसों के हाथ सौंप दिया। मायामृग पकड़ने के लिए मैं क्यों जंगल गया। सीता जैसे धन को मैंने किनको लुटा दिया। दुष्ट इन्द्रजीत ने जब चन्द्रमुखी सीता को काटा होगा उस समय जानकी न जाने कितना रोती होगी। सीता के विरह में मैं अभी प्राण त्याग दूँगा। हे प्यारे लक्ष्मण तुम अयोध्या लौट जाओ ॥ ३३६ ॥

तब विभीषण ने कहा, हे राम रोओ मत। सीता को काटते हुए किन लोगों ने देखा है। राम ने कहा, पवन-नन्दन ने देखा है। विभीषण ने कहा, हनुमान की गिनती पशुओं में है। वह वन का पशु है, उसके मस्तिष्क में बुद्धि नहीं है। माता जानकी महालक्ष्मी हैं, किसकी मजाल है कि उनको

मजाइल लंकापुरी जानकीर तरे ❊ तबु से तोमार सीता ना दिल तोमारे
सीतारे रेखेछे ल'ये अशोकेर बने ❊ साध्य कि जे, इन्द्रजित् सीतादेवी आने
दश-हाजार किङ्करी सीतारे आछे घेरे ❊ अन्य पुरुषेते सेथा जाइते कि पारे
सीतादेवी रावणेर लेगेछे नयने ❊ इन्द्रजित् हेन सीता पाइबे केमने
माया-सीता काटि बेटा कैल दुइखान ❊ से मायाते भुलेछे बानर हनूमान
प्रत्यय ना कर यदि आमार कथाय ❊ हनूमान गिया देखि आसुक् सीताय ३७
एतेक शुनिया सबे हैल हरषित ❊ अशोकेर वने हनूमान उपनीत
देखिल, बसिया आछे रामेर महिषी ❊ रघुनाथे समाचार दिल हनू आसि
कुशले आछेन सीता अशोकेर वने ❊ इन्द्रजित् माया-सीता काटिलेक एने
बिभीषणे कोल दिला राम-रघुवर ❊ 'राम-जय' ध्वनि करे सकल बानर ३३८

विभीषण-कर्त्तृक इन्द्रजितेर मरणोपाय-कथन

श्रीराम वलेन, शुन मित्र बिभीषण ❊ किरूपे हइवे इन्द्रजितेर पतन
बिभीषण वले, शुन राजीवलोचन ❊ सामान्येते इन्द्रजितेर ना हवे पतन
निकुम्भिला-यज्ञ करे दुष्ट निशाचर ❊ करियाछे यज्ञकुण्ड लंकार भितर

काट डाले। हे रघुमणि! एक वात और सुन लो, सीता परमसुन्दरी भुवन-मोहिनी है। रावण ने सीता के लिए अपनी लंकापुरी को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला फिर भी तुमको वापस नहीं दे गया। सीता को उसने अशोक-कानन में रखा है, इन्द्रजीत की क्या सामर्थ्य है कि सीतादेवी को ले आवे। सीता को घेरे दस हजार दासियाँ बैठी हैं. वहाँ अन्य पुरुष कैसे जा सकता है। सीतादेवी रावण की आँखों में चढ़ गई हैं, ऐसी सीता इन्द्रजीत को कहाँ से मिल जाती। उस दुष्ट ने माया की सीता को काटकर दो टुकड़े किये हैं। उसी माया से हनुमान भुलावे में आ गया है। अगर मेरी वातों पर विश्वास न हो तो हनुमान जाकर सीता को देख आवे॥ ३३७॥

इतना सुनकर सभी लोग हर्ष-मग्न हो गये। हनुमान अशोक-वन जा पहुँचा। वहाँ उसने देखा की राम की महिषी बैठी हुई है। हनुमान ने आकर राम को समाचार दिया कि सीता अशोक-वन में कुशल से हैं और इन्द्रजीत ने माया-सीता को लाकर काटा है। राम रघुवर ने विभीषण को अँक में भर लिया और सब वानरों ने जय-राम की ध्वनि की॥ ३३८॥

विभीषण द्वारा इन्द्रजीत का मरणोपाय कथन

श्रीराम ने कहा, मित्र विभीषण, यह बताओ कि इन्द्रजीत का पतन कैसे होगा। विभीषण ने कहा, हे राजीवलोचन सुनो, सामान्य रूप से इन्द्रजीत का पतन नहीं होगा। दुष्ट निशाचर निकुम्भिला यज्ञ करता है। लंका

यज्ञे पूर्णाहुति दिया यदि जाय रणे ❊ स्वर्ग-मर्त्य-पातालेते कार साध्यजिने
ब्रह्मा दियाछेन शाप, शुन नारायण ❊ इन्द्रजित्-यज्ञ-भंग करिबे जे जन
संग्रामे मरिबे इन्द्रजित् तार हाते ❊ लक्ष्मणे पाठाये देह आमार संगेते
आहुति ढालिया यज्ञ करितेछे सांग ❊ ए-समये गिया तार यज्ञ करि भंग
राम बलेन, विभीषण, धर्म्मे तव मति ❊ कि कथा कहिले, नाहि करि अवगति
बुझाइया कह देखि मित्र विभीषण ❊ केमने हइबे इन्द्रजितेर मरण ३३९
विभीषण बले, मित्र करह श्रवण ❊ मेघनादे ब्रह्म वर दिलेन जखन
मेघनाद, आमि आर राजा दशानन ❊ तिनजन छिलाम, ना छिल अन्यजन
ब्रह्मा बलिलेन, मेघनाद, माग वर ❊ मेघनाद बले, चाहि हइते अमर
विधि कन, मेघनाद, से वड़ प्रमाद ❊ वाञ्छामत अन्य वर माग मेघनाद
मेघनाद बले, यदि हइले सदय ❊ मनोमत वर तबे देह महाशय
यज्ञ करि येइदिन जाइबे युद्धेते ❊ हइबे संग्राम-जयी तोमार वरेते
शत्रुके मारिब बाण मेघ-आड़े थेके ❊ आमि जारे मारिब, से मोरे नाहि देखे
ब्रह्मा बले, जे चाहिले, दिनु सेइ वर ❊ जुझिबे लुकाये थाकि मेघेर भितर
यज्ञ करि जेदिन जाइबे जुझिवारे ❊ सेदिन नारिबे केह जिनिते तोमारे

के भीतर उसका यज्ञकुंड है। यदि यज्ञ में पूर्णाहुति चढ़ा कर वह रण में जाय तो स्वर्ग, मर्त्य, पाताल में किसी की भी शक्ति नहीं कि उसको हरा सके। सुनो नारायण, ब्रह्मा ने शाप दिया है कि जो इन्द्रजीत का यज्ञ भंग करेगा उसी के हाथों रण में इन्द्रजीत की मृत्यु होगी। लक्ष्मण को मेरे साथ भेज दो। जिस समय यज्ञ में आहुति डालकर वह यज्ञ समाप्त करने वाला हो उसी समय जाकर उसका यज्ञ भंग करो। श्रीराम ने कहा, विभीषण तुम्हारी मति धर्म से युक्त है। तुमने क्या कहा यह मेरी समझ में नहीं आया। हे मित्र विभीषण तुम मुझको जरा समझा कर बताओ कि इन्द्रजीत की मृत्यु कैसे होगी ॥ ३३६ ॥

विभीषण ने कहा, मित्र सुनो। ब्रह्मा ने जब मेघनाद को वर दिया तो वहाँ पर मेघनाद, मैं और रावण इन तीनों के अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं था। ब्रह्मा ने कहा, हे मेघनाद, वर माँगो। मेघनाद ने कहा, मैं अमर होना चाहता हूँ। ब्रह्मा ने कहा, मेघनाद, यह उन्माद तो असाध्य है, तुम अपनी इच्छा के अनुसार दूसरा कोई वर माँगो। मेघनाद ने कहा, प्रभो, अगर आप सदय हुए हैं तो मुझको मनमाना वर दीजिए कि जिस दिन यज्ञ कर मैं संग्राम में जाऊँ उस दिन तुम्हारे वर से रण में विजयी होऊँ। बादलों की आड़ में रहकर मैं शत्रु को मारूँ, मैं जिसको मारूँ वह मुझको नहीं देख सके किन्तु मैं उसको देख सकूँ। ब्रह्मा ने कहा, जैसा वर तुमने माँगा है मैं दे रहा हूँ; बादलों में छिपकर तुम युद्ध करोगे। जिस दिन तुम यज्ञ पूर्ण कर युद्ध

एइ यज्ञ भंग तव करिबे जेजन ※ मरिबे ताहार हाते, ना जाय खण्डन
मेघनादे मारिवार सन्धि आमि जानि ※ लक्ष्मणे आमार संगे देह रघुमणि
माया-सीता काटिया दुरन्त निशाचर ※ यज्ञे पूर्णा दिते गेल लंकार भितर
वानर-कटक ल'ये यज्ञ भंग क'रे ※ एखनि मारिब गिया रावण-कुमारे
लक्ष्मणे आमार संगे पाठाओ त्वरित ※ यज्ञभंग करिया मारिब इन्द्रजित् ३४०

वानरगन-कर्त्तृक इन्द्रजितेर निकुम्भिला-यज्ञ-भंग

श्रीराम वलेन, शुन मित्र-विभीषण ※ केमने संकटे आमि पाठाव लक्ष्मण
एके इन्द्रजित् सेइ दुष्ट निशाचर ※ ताहाते संकट-पुरी लंकार भितर
बालक लक्ष्मण हय सहजे कातर ※ मनोदुःखे फलाहारे शीर्ण-कलेवर
कष्ट पेये वलहीन, भावि ताइ मने ※ किरूपे करिबे युद्ध इन्द्रजित्-सने
बिभीषण वले, प्रभु, भाव कि करण ※ शत-इन्द्रजित्-वल धरेन लक्ष्मण
ताहाते सहाय आछे यत कपिगण ※ मुहूर्त्तेके इन्द्रजित् हइबे निधन
लक्ष्मणेर शक्ति आमि जानि भालमते ※ जखन रावण शेल मारिल बुकेते
रणस्थले पड़िलेन ठाकुर लक्ष्मण ※ कुड़िहाते ना पारिल नाड़िते रावण

में जाओगे उस दिन कोई भी तुमको हरा नहीं सकेगा। [किन्तु] इस यज्ञ को जो व्यक्ति भंग कर देगा उसी के हाथ तुम्हारी मृत्यु होगी—इसका कोई उल्लंघन नहीं होगा। इन्द्रजीत को मारने का उपाय मैं जानता हूँ, हे रघुमणि तुम मेरे साथ लक्ष्मण को दे दो। माया-सीता को काटकर तुरन्त निशाचर लंका के भीतर यज्ञ में पूर्णाहुति देने गया है। मैं वानर-कटक लेकर वहाँ जाऊँगा, उसका यज्ञ भंग करूँगा और रावणकुमार को अभी मार डालूँगा। लक्ष्मण को मेरे साथ झटपट भेजो—यज्ञ भंग कर इन्द्रजीत को मारूँगा ॥ ३४० ॥

वानरों द्वारा इन्द्रजीत का निकुम्भिला-यज्ञ भंग

श्रीराम ने कहा, मित्र विभीषण सुनो, इस संकट में मैं लक्ष्मण को कैसे भेज दूँ। एक तो इन्द्रजीत जैसा दुष्ट निशाचर, फिर संकटों से पूर्ण लंकापुरी के भीतर! बालक लक्ष्मण थोड़े में ही व्याकुल हो जाता है, फलाहार और मनःक्लेश के कारण शीर्ण-कलेवर हो गया है। मैं मन ही मन सोचता हूँ कि योंही वह शक्तिशून्य है, फिर वह इन्द्रजीत के साथ कैसे लड़ेगा। विभीषण ने कहा, प्रभु किस कारण तुम सोच करते हो—लक्ष्मण के शरीर में सौ इन्द्रजीत की शक्ति भरी है। तिसपर सारे कपि भी सहायक हैं—क्षणभर में इन्द्रजीत का निधन हो जायगा। मैं भलीभाँति लक्ष्मण की शक्ति से परिचित हूँ। जिस समय रावण ने लक्ष्मण के हृदय पर शेल मारा था और लक्ष्मण रणक्षेत्र में गिर पड़े तो रावण बीस हाथों से भी लक्ष्मण को हिला न सका। लक्ष्मण में कितनी शक्ति है, मैं भली प्रकार जानता हूँ।

लक्ष्मणेर जत शक्ति, ताहा आमि जानि ※ जुद्धेते लक्ष्मण-वीरे पाठाओ आपनि
मरेछे सकल वीर, ओइ वेटा आछे ※ इन्द्रजिते मारिया रावणे मारि पिछे
एकजनेर दुइजने मारा हवे भार ※ दु'जने दु'जन मार, एइ युक्ति सार
इन्द्रजिते मारिले रावण-राजे जिनि ※ सागर तरिले जेन गोष्पदेर पानि
अष्टकपि संगे देह, बले बिभीषण ※ हनूमान गवाक्ष आर से गन्धमादन
महेन्द्र-देवेन्द्र आर बानर सम्पाति ※ नल-नील चलिल प्रधान सेनापति
गड़मध्ये पाठाइते शंका हय मने ※ बिभीषण-हाते समर्पिलेन लक्ष्मणे
विभीषण बले, प्रभु, शुन दिया मन ※ लक्ष्मणेर भार मम लागे अनुक्षण
श्रीराम वलेन, भाइ, दाण्डाओ मम आगे ※ बिभीषणेर भाल-मन्द तोमारे जे लागे ४१
रामेर चरण वन्दि ठाकुर लक्ष्मण ※ बिभीषण-सह चले, संगे कपिगण
गड़ेर निकटे उपनीत महाबल ※ भांगिया गड़ेर द्वार प्रवेशे सकल
राक्षसेते द्वार राखे धनुके दिया चड़ा ※ हनू दाण्डाइल ल'ये पर्व्वतेर चूड़ा
घरपोड़ा देखिया राक्षसे भंग पड़े ※ धाइया बानर सब राक्षसेरे बेड़े
पलाय राक्षसगण हइया फाँफर ※ लक्ष्मणेर सैन्य ढोके गड़ेर भितर
बाण-वरिषण करे ठाकुर लक्ष्मण ※ वानरेते गाछ-पाथर करे बरिषण

आप वीर लक्ष्मण को मेरे साथ भेज दो। सारे वीर मर चुके, बस यही एक रह गया है, इन्द्रजीत को मारने के बाद रावण को मारेंगे। एक ही व्यक्ति दोनों को मारे तो उस पर ज्यादा भार आ पड़ेगा। दो जने दो जनों का वध करो, यही युक्तिपूर्ण बात है। इन्द्रजीत को मारने के बाद राजा रावण को जीतना वैसा ही होगा जैसा कि समुद्र पार कर लेने के बाद गढ़ैया का जल। विभीषण ने कहा, मेरे साथ हनुमान, गवाक्ष, गन्धमादन, महेन्द्र, देवेन्द्र, सम्पाति और प्रधान सेनापति नल और नील इन अष्ट कपिओं को कर दो। गढ़ के भीतर भेजने में मन में शंका होने पर भी लक्ष्मण को विभीषण के हाथों में उन्होंने सौंप दिया। विभीषण ने कहा, प्रभु ध्यान लगाकर सुन लो, लक्ष्मण का भार मुझपर प्रतिक्षण के लिए रहा। श्रीराम ने कहा, भाई, मेरे सामने खड़े हो जाओ। विभीषण का भला-बुरा तुम पर निर्भर है ॥ ३४१ ॥

राम के चरणों की वन्दना कर लक्ष्मण विभीषण के साथ चल दिये—उनके साथ में कपि भी चल पड़े। गढ़ के निकट पहुँचकर सब लोगों ने गढ़ का द्वार तोड़ा और अन्दर प्रवेश किया। धनुष तान कर राक्षस द्वार की रक्षा कर रहे थे, वहाँ पर्वत का शिखर लेकर हनुमान पहुँच गये। घर जलाने वाले को देखकर राक्षसों में भगदड़ मच गई। दौड़कर राक्षसों को वानरों ने घेर लिया। घबड़ा कर सारे राक्षस गढ़ के भीतर भागने लगे और लक्ष्मण की सेना गढ़ के भीतर प्रवेश कर गई। लक्ष्मण बाण और वानर पेड़-पत्थर बरसाने लगे। वानरों के खदेड़ने पर राक्षस भाग खड़े हुए और हनुमान

वानरेर ताड़ने राक्षसगणे भागे * हनूमान उत्तरिल इन्द्रजित्-आगे
इन्द्रजिते देखिया हनूर कोप बाड़े * एकलाफे पड़े गिया यज्ञकुण्ड-पाड़े
सम्मुखे दाण्डाय वीर परम-सन्धानी * पदाघाते निवाय से यज्ञेर आगुनि
हनूमान वीर, जेन सिंहेर प्रताप * यज्ञकुण्ड भरि तार करिल प्रस्राव
यज्ञकुण्ड-उपरेते हनूमान मुते * फल-फूल यज्ञेर भासिया जाय स्रोते
यज्ञद्रव्य छड़ाइया फेले चारिभित * देखि क्रोधे संग्रामे साजिल इन्द्रजित्
मेघवर्ण अंग, ताम्रवर्ण द्विलोचन * हनूर उपरे करे बाण-बरिषण
जाठि ओ झकड़ा शेल फेले महाकोपे * लाफे-लाफे हनूमान सव अस्त्र लोफे
हनूमान बले, बेटा, तोर रण चुरि * देखादेखि तोरे आजि दिव यमपुरी
ना जानि धरिते अस्त्र वानरेर जाति * एकारणे एतदिन तोर अव्याहति
मल्लयुद्ध करि बेटा, फेल् धनुर्ब्बाण * एकइ चापड़े तोर बधिब पराण४२
बिभीषण कहिलेन, ठाकुर लक्ष्मणे * ऐ देख इन्द्रजित् बिन्धे हनूमाने
मेघबर्ण ब'से आछे बटवृक्ष-तले * यज्ञ करे इन्द्रजित् नाम निकुम्भिले
यज्ञ-सांगे अग्निर निकटे पाबे वर * आछुक अन्येर काज, जिने पुरन्दर
र'येछे आश्रय करि बटवृक्ष-तला * यज्ञ-सह उहारे मारह एइ बेला३४३

इन्द्रजीत के सम्मुख जा पहुँचे। इन्द्रजीत को देखकर हनुमान का क्रोध बढ़ गया, एक छलाँग में वह यज्ञकुंड के किनारे जा पहुँचे। परम-सन्धानी वीर सम्मुख खड़ा हो गया और लात मार कर यज्ञ की आग बुझा दी। वीर हनुमान में मानों सिंह का प्रताप हो, उन्होंने यज्ञकुंड में लघुशंका कर दी। यज्ञकुंड पर हनुमान लघुशंका करने लगे जिससे यज्ञ के फल-फूल उसके वहाव में वहने लगे। चारों ओर उन्होंने यज्ञ के सामान विखेर कर फेंक दिये। यह देखकर इन्द्रजीत क्रोधित होकर युद्ध की सज्जा में सज्जित होने लगा। वादलों के रंग का शरीर और ताम्बे जैसी आँखें लिये वह हनुमान पर वाण वरसाने लगा। भयानक क्रोध में वह जाठि, झकड़ा और शेल जैसे अस्त्र फेंकने लगा और उछल-उछल कर हनुमान उन अस्त्रों को रोकने लगे। हनुमान ने कहा, अरे दुष्ट तू तो चोर सा युद्ध करता है, आज देख लेना मैं तुझको यमालय भेज दूँगा। मैं वानर जाति का होने के कारण अस्त्र चलाना नहीं जानता और इसी कारण तू आज तक वचा रहा। धनुष-वाण फेंक कर आ जा, मल्लयुद्ध कर, देख एक ही झाँपड़ में मैं तेरा प्राण ले लूँगा ॥ ३४२॥

विभीषण ने लक्ष्मण से कहा, वह देखो इन्द्रजीत हनुमान को (बाणों से) वींध रहा है। वटवृक्ष के नीचे मेघवर्ण बना वैठा यह इन्द्रजीत निकुम्भिला नामक यज्ञ कर रहा है। यज्ञ समाप्त करने के बाद वह अग्नि से वर प्राप्त करेगा। दूसरों की बात छोड़ दो, इसने पुरन्दर पर विजय प्राप्त कर ली है। वरगद के नीचे इसने आश्रय लिया है। इसको इसी दम यज्ञ करते हुए मार डालो ॥ ३४३ ॥

लक्ष्मण-कर्त्तृक इन्द्रजित्-वध

इन्द्रजित् लक्ष्मण दु'जने दरशन ※ सन्धान पूरिया वाण मारेन लक्ष्मण
लक्ष्मण बलेन, शुन बेटा इन्द्रजित् ※ आजि तोरे देखाइब शमन निश्चित ३४४
लक्ष्मणेर वाक्य इन्द्रजित् नाहि शुने ※ लक्ष्मणे एड़िया तबे बले बिभीषणे
एकवीर्ये जन्म खुड़ा, राक्षसेर कुले ※ धार्म्मिक वलिया तोमा सर्ब्बलोके बले
पितार समान तुमि पितृ-सहोदर ※ पितार समान सेवा क'रेछि विस्तर
बन्धुगण छाड़ि खुड़ा, आश्रय मानुषे ※ बाति दिते ना राखिले राक्षसेर वंशे
एत सब मारियाछ, क्षमा नाहि मते ※ दियाछ सन्धान बलि आमार मरणे
खाइले राक्षसकुल हइया निष्ठुर ※ तोमारे देखिले पाप वाड़ये प्रचुर
निगुण-सगुण हय, तबु बले ज्ञाति ※ ज्ञाति-बन्धु मिले लोक करये बसति
परकोले देखि खुड़ा परमा-सुन्दरी ※ आपनार भाग्ये नाइ कर धड़फड़ि
एत भ्रातु पुत्र मारि क्षमा नाहि ताते ※ कोन लाजे आसियाछ आमारे मारिते
बानर-कटक खुड़ा, करह अन्तर ※ यज्ञे पूर्णाहुति दिया मेगे लइ वर
एत बलि इन्द्रजित् करिछे आँटुनि ※आजि तोमा काटि खुड़ा, घुचाइब शनि४५

लक्ष्मण द्वारा इन्द्रजीत-वध

इन्द्रजीत और लक्ष्मण ने एक दूसरे को देख लिया। निशाना साधकर लक्ष्मण ने वाण मारा और कहा, सुन रे दुष्ट इन्द्रजीत, मैं आज तुझको यम से मिला दूँगा, यह निश्चित है ॥ ३४४ ॥

लक्ष्मण के वाक्य इन्द्रजीत ने नहीं सुने। लक्ष्मण को छोड़ उसने विभीषण से कहा, हे चाचा! राक्षस-वंश में तुम्हारा और मेरे पिता का एक वीर्य से जन्म हुआ। तुमको सभी लोग धार्मिक कहते हैं। तुम पिता के सहोदर हो इसलिए पिता के समान हो। पिता जैसा ही मान कर मैंने तुम्हारी बहुत सेवा की है। चाचा तुमने इष्ट-मित्रों को त्याग कर मनुष्य की शरण क्यों ले ली, राक्षस-वंश में दीया जलाने के लिए भी किसी को नहीं छोड़ा। तुमने सबको मरवा डाला है, तुम्हारे मन में जरा भी क्षमाभाव नहीं है, तुमने मेरी मृत्यु का सन्धान भी इनको बतला दिया है। निर्दय होकर तुमने राक्षस-कुल का ध्वंस किया, तुमको देखने से ही पाप लगता है। गुणवान् हो अथवा गुणहीन, फिर भी लोग उसको कुटुम्बी कहते हैं। कुटुम्ब-बन्धु मिलकर साथ-साथ निवास करते हैं। चाचा, तुम दूसरे की गोद में परमा-सुन्दरी देखकर व्याकुल हो रहे हो यदि वह तुम्हारे भाग्य में नहीं तो क्या करोगे। इतने सारे भतीजों को मार कर तुम्हारा जी नहीं भरा, किस मुँह से तुम मुझको मारने आ गये। चाचा, वानर-सेना को दूर ले जाओ, यज्ञ में पूर्णाहुति डाल कर वर माँग लूँ। इतना कहकर इन्द्रजीत मन ही मन मनसूबे

बिभीषण बले, बेटा, बलिस् विपरीत ❊ भालमते जाने सबे आमार चरित
राक्षस-कुलेते जन्म, नाहि कदाचार ❊ परद्रव्य नालइ, ना करि परदार
चौद्दहाजार देवकन्या तोर बापेर घरे ❊ एत स्त्री थाकिते तबु परदार करे
हरि आने परनारी तपे तपस्विनी ❊ शाप-गालि पाड़े, तबू ना छाड़े कामिनी
कत-शत मुनि-ऋषि मारि कैल पाप ❊ अन्त नाहि, जत पाप करे तोर बाप
त्रिभुवन-सने तोर बापेर विवाद ❊ कतकाल सबे पाप, पड़िल प्रमाद
सर्व्वदा ना फले वृक्ष, समयेते फले ❊ तोर बापेर पाप-फल फले एतकाले
निकट मरण तोर, ओरे इन्द्रजित् ❊ सबान्धवे लंका छाड़ि जा रे एकभित
अग्निर वरेते बेटा, जिनिस बारे-बार ❊ अग्निर निकटे वर पावे नाक आर
यज्ञ पूर्णा दिते चाह मरणेर बेला ❊ एखनि लक्ष्मण तोर काटिबेन गला४६
एत यदि दुइ जने हैल गालागालि ❊ हाते धनु आइल लक्ष्मण महाबली
लक्ष्मण बलेन, बेटा दुष्ट-निशाचर ❊ देख देखि एखनि पाठाव यमघर
मारिते एलाम तोरे लंकार भितरे ❊ सर्व्वदुःख घुचाइब काटि आज तोरे

बाँधने लगा, कि चाचा आज तुमको काटकर अपने सिर से सनीचर दूर करूँगा ॥ ३४५ ॥

विभीषण ने कहा, बेटा तू तो उल्टा गाने लग गया है। सभी लोग भलीभाँति मेरे चरित्र से अवगत हैं। राक्षस-कुल में जन्म लेकर मैंने कभी बुरे आचरण नहीं किये। मैं न दूसरों की वस्तु हड़पता हूँ और न दूसरों की औरतें। तेरे बाप के घर में चौदह हजार देव-कन्याएँ हैं। इतनी स्त्रियों के होते हुए भी तेरा बाप परदारा की कामना करता है। वह एक तपस्विनी पर-नारी का हरण कर लाया है, वह इतना सरापती तथा कुवचन कहती रही फिर भी उसने उस कामिनी को नहीं छोड़ा। सैकड़ों मुनि-ऋषियों को मार कर उसने महान् पाप अर्जित किया है। जितना पाप तेरे पिता ने किया है उसका कोई अन्त नहीं। तीनों लोकों से तेरे बाप का विरोध है। पाप कितने दिनों तक सहा जा सकता है—अब विपत्ति आ पड़ी है। वृक्ष में सदा फल नहीं फलता, समय पर ही फलता है—तेरे बाप के पापों का फल इतने दिनों में फला। अरे इन्द्रजीत, तेरी मृत्यु निकट है, भला हो कि तू अपने कुटुम्ब के साथ लंका छोड़ कर एक ओर चला जा। अरे दुष्ट, अग्नि के वर से तू बार-बार जीत जाता है लेकिन अब अग्नि से तुमको वर नहीं मिलेगा। मृत्यु के समय तू यज्ञ में पूर्णाहुति देना चाहता है—अभी लक्ष्मण तेरा गला काट डालेंगे ॥ ३४६ ॥

जब दोनों में इस प्रकार गाली-गलौज हो चुका तो महाबली लक्ष्मण हाथ में धनुष लेकर वहाँ आया। लक्ष्मण ने कहा, अरे दुष्ट निशाचर, मैं अभी तुमको यमालय भेजता हूँ। तुमको मारने के लिए मैं लंका के भीतर आ

पितृ-आगे कह गिया संग्रामेर कथा ❊ आजिकार रणे यदि थाके तोर माथा ४७
एत जदि लक्ष्मण तर्जन करि बले ❊ कुपिल से मेघनाद, अग्निहेन ज्वले
अष्ट बीर बानर उठिल तार रथे ❊ दुर्ज्जय बानर सब लागिल गर्जिते
सारथि-सहित रथ उलटिया फेले ❊ लाफ दिया इन्द्रजित् पड़े भूमितले
बिरथ हइल यदि रावण-नन्दन ❊ हरषित ह'ये बाण जोड़ेन लक्ष्मण
दु'जनार उपरे दु'जने विन्धे बाण ❊ केह कारे नाहि पारे, दु'जने समान
भय पेये इन्द्रजित् भावे मने-मन ❊ आपन कटके बीर डाकिल तखन
इन्द्रजित् बले, शुन यत निशाचर ❊ रथसज्जा क'रे आमि आसिब सत्वर
आजि नर-बानरे पाठाब यमालय ❊ क्षणेक थाकह सबे, ना करिह भय
एत बलि गोपनेते करिल गमन ❊ अन्येते कि जानिबे, ना जाने बिभीषण
मायाते से रथखान करिल निर्म्माण ❊ वायुवेग अष्टघोड़ा रथेर योगान
गायेते विचित्र शाना, माथाय टोपर ❊ हस्ते धनुः प्रवेशिल रणेर भितर
लक्ष्मण बलेन, बेटा मायार निदान ❊ देखेछिनु एक मूर्त्ति, एबे देखि आन
मेघनाद-माया देखि चिन्तित लक्ष्मण ❊ हेनकाले लक्ष्मणेरे कहे बिभीषण
विभीषण बले, तुमि ना हओ चिन्तित ❊ एखनि मरिबे बेटा दुष्ट इन्द्रजित्

गया हूँ, आज तुझको मार कर सारा दुख दूर करूँगा। अगर आज तेरे प्राण बच पाये तो फिर जाकर संग्राम की कथा अपने बाप से कहना ॥ ३४७ ॥

जब लक्ष्मण ने इतनी सारी बातें गरजते हुए कहीं तो मेघनाद क्रोध से आग की तरह जल उठा। अष्ट वीर वानर उसके रथ पर चढ़ गये और ये सभी अजेय वानर गरजने लगे। सारथि के साथ उन्होंने रथ को उलट दिया। तब कूद कर इन्द्रजीत भूमि पर आ गया। रावण-नन्दन जब बिना रथ के हो गया तो हर्षित होकर लक्ष्मण ने धनुष पर बाण साधा। दोनों एक दूसरे को बाणों से बींधने लगे। कोई भी किसी से कम नहीं था। दोनों बराबरी के थे। तब डर कर इन्द्रजीत ने मन ही मन सोचा और अपनी सेना को पुकार कर कहा, सारे निशाचरो सुनो, अभी रथ साज कर मैं झटपट लौट आऊँगा। आज मैं नर-वानरों को यमालय भेज दूँगा। तुम लोग थोड़ी देर रुके रहो, डरो मत। इतना कहकर वह चुपके से चला गया। दूसरों की क्या कहें विभीषण को भी इसका पता न लगा। उसने माया से रथ का निर्माण किया, जिसमें पवन-गति वाले आठ घोड़े जोते। शरीर पर कवच और सिर पर शिरस्त्राण लगाये और हाथ में धनुष लिये उसने रणक्षेत्र में प्रवेश किया। लक्ष्मण ने कहा, देख रहा हूँ कि यह दुष्ट तो माया का निधान है, इसकी एक मूर्त्ति देखी थी अब दूसरी मूर्त्ति देख रहा हूँ। मेघनाद की माया देखकर लक्ष्मण चिन्तित हो गये। ऐसे समय लक्ष्मण से विभीषण ने कहा, तुम चिन्ता न करो, अभी यह दुष्ट इन्द्रजीत मरेगा। मेघनाद अगर मेघों की आड़ में छिप जाता है तो इन्द्र अपनी हजार आँखों से भी उसको नहीं देख

मेघनाद लुकाय यदि मेघेर आड़ेते ॐ सहस्र-च'क्षेते इन्द्र ना पान देखिते
इन्द्रे बेंधे एनेछिल लंकार भितरे ॐ ब्रह्मा आसि मागिया लइल पुरन्दरे
मायारूपे गिया छिल लंकार भितर ॐ मायाते साजाये रथ आनिल सत्वर
रणेते प्रवेश आगे करुक इन्द्रजित् ॐ मारिब इहारे बन्दी करि चारिभित
उपरेते उठे यदि पाइया तरास ॐ हनूमान गिया रक्षा करये आकाश
अग्निर कुमार नील नाना-माया धरे ॐ सूक्ष्मरूपे जाइया पाताल रक्षा करे
लंकार जतेक सन्धि बिभीषण जाने ॐ जुड़िया लंकार पथ रहे बिभीषण
गगने पर्ब्बत-हाते रहे हनूमान ॐ सम्मुखे लक्ष्मण-बीर पूरिल सन्धान
बिभीषण-जुक्ति ना बुझिल इन्द्रजित् ॐ मेघनादे बेड़ि कपि मारे चारिभित
सम्मुखेते वाणवृष्टि करेन लक्ष्मण ॐ लक्ष्मणेर वाण गिया छाइल गगन४८
अस्त्रदेखि इन्द्रजित् पलाय तरासे ॐ रथेर सहित जाय उठिते आकाशे
सारथि देखिते पाय वीर हनूमाने ॐ पवन-बेगेते रथ चालाय दक्षिणे
लाफ दिया हनूमान पड़े तार रथे ॐ चूर्ण कैल रथखान एक पदाघाते
भांगिया रथेर ध्वज फेले चारिभित ॐ अन्तरीक्षे पलाइते चाहे इन्द्रजित्
शून्ये धाय इन्द्रजित्, देखे हनूमान ॐ दुइ पाये धरि तार दिल एक टान

पाता। वह इन्द्र को बाँधकर लंका के भीतर ले आया था और तब ब्रह्मा ने आकर इन्द्र को माँग लिया था। वह मायारूप धर कर लंका में गया था और माया से रथ सुसज्जित कर तुरन्त लौट आया है। पहले इन्द्रजीत रण में प्रवेश करे फिर उसको चारों ओर से बन्दी बनाकर मारूँगा। त्रस्त होकर यदि वह आकाश में शरण ले तो हनुमान आकाश में जाकर रक्षा करे। अग्नि के कुमार नील विभिन्न प्रकार की माया का अधिकारी है—वह सूक्ष्म रूप धर कर पाताल की रक्षा करे। लंका के बहुतेरे भेदों की जानकारी विभीषण को थी, वह लंका के पथ पर अड़ कर खड़ा रहा। गगन में हाथों में पर्वत लिये हनुमान प्रस्तुत हो गये और सामने वीर लक्ष्मण धनुष पर वाण चढ़ा कर डट गये। इन्द्रजीत को विभीषण की युक्ति समझ में नहीं आई। मेघनाद को घेर कर कपि चारों ओर से प्रहार करने लगे। सामने से लक्ष्मण वाण बरसाने लगे। लक्ष्मण के वाणों से आकाश छा गया॥ ३४८॥

अस्त्र देखकर इन्द्रजीत भयभीत होकर भागने लगा। रथ सहित उसने आकाश पर चढ़ना चाहा। सारथि ने वीर हनुमान को देख लिया और पवन-वेग से दक्षिण की दिशा में रथ चला दिया। हनुमान उसके रथ पर कूद पड़ा और एक ही लात में रथ को चूर-चूर कर दिया। रथ का ध्वज तोड़कर चारों ओर बिखेर दिया। इन्द्रजीत ने अन्तरिक्ष में भाग जाना चाहा। इन्द्रजीत शून्य में भाग रहा है यह देख कर हनुमान ने उसके दोनों पैरों को पकड़ कर घसीटा। दोनों अन्तरिक्ष में एक दूसरे से भिड़ गये और

अन्तरीक्षे दुइजने लागे हुड़ाहुड़ि ※ भूमितले पड़े दोंहे करि जड़ाजड़ि
हेंटे इन्द्रजित् पड़े, हनू से उपरे ※ बुके हाँटु दिया तार गला चापि धरे
शीघ्र एस कपिगण, डाके हनूमान ※ सबे मिलि इन्द्रजितेर वधह पराण
हनूमान-बाक्ये कपि जाय ताड़ाताड़ि ※ सकल बानर मिलि आसे रड़ारड़ि४९
कुपिल से इन्द्रजित् वले महाबली ※ बानर गणेरे देखि उठे ठेलाठेलि
बानर-उपरे करे बाण-वरिषण ※ कपिगण पलाय, सहिते नारे रण
इन्द्रजित् पलाये लंकाय जेते चाहे ※ चापिया लंकार द्वार बिभीषण रहे५०
बिभीषण वले, बाछा, जाबि आज कोथा ※ एखनि लक्ष्मण तोर काटिबेन माथा
शीघ्र एस लक्ष्मण, डाकेन बिभीषण ※ त्वरा करि दुष्ट बेटार बधह जीवन५१
बिभीषण-बचने लक्ष्मण आगुयान ※ इन्द्रजित्-काछे गेल पूरिया सन्धान
दु'जने देखिया बाण जोड़े दुइजने ※ दु'जने पड़िल ढाका दु'जनार बाणे
चारिदिके पड़े बाण, नाहि लेखा-जोखा ※ दुइजने बाण फेले, जार जत शिक्षा
अमर्त्त समर्थ बाण बाण पद्मासन ※ बिष्णुजाल इन्द्रजाल काल हुताशन
उल्काबाण बरुण विद्युत् खरशाण ※ गजेन्द्र नक्षत्र-जोग ज्योतिर्म्मय बाण
सूचीमुख शिलीमुख घोर-दरशन ※ सिंहदन्त वज्रदन्त बाण बिरोचन

जमीन पर गिर कर गुत्थम-गुत्था करने लगे। इन्द्रजीत नीचे गिरा और उसके ऊपर हनुमान। उसके सीने पर घुटना टेक कर उसने उसका गला धर दबोचा। हनुमान ने पुकारा, अरे वानरो, जल्दी आओ, सब लोग मिलकर इन्द्रजीत के प्राण ले लो। हनुमान के वाक्य सुनकर सारे वानर जल्दी-जल्दी दौड़ पड़े॥ ३४६॥

असामान्य बल वाला इन्द्रजीत क्रोधित हो गया। वानरों को देखकर उसने उनको एक ओर धकेल दिया और उन पर बाण बरसाने लगा। कपि भाग खड़े हुए, युद्ध का प्रचंड प्रहार वे सहन न कर सके। इन्द्रजीत ने भाग कर लंका में प्रवेश करना चाहा किन्तु विभीषण लंका का द्वार छेंके खड़ा रहा॥ ३५०॥

विभीषण बोले, बच्चा, आज कहाँ जाओगे, अभी लक्ष्मण तुम्हारा सिर काट गिराएँगे। विभीषण पुकारने लगे, लक्ष्मण जल्दी आओ, झटपट इस दुष्ट का वध करो॥ ३५१॥

विभीषण का वचन सुनकर लक्ष्मण आगे बढ़े और धनुष पर बाण साध कर इन्द्रजीत के पास गये। दोनों ने ही एक दूसरे को देखकर बाण साधे। दोनों ही एक दूसरे के बाणों से ढक गये। चारों ओर अनगिनत बाण गिरने लगे। दोनों ही अपनी-अपनी शिक्षा के अनुसार बाण फेंकने लगे। दोनों वीर मिलकर अमर्त्त, समर्थ, पद्मासन, विष्णुजाल, इन्द्रजाल, कालान्तक, यम, उल्का, वरुण, विद्युत, खरशाण, गजेन्द्र, नक्षत्र-योग, ज्योतिर्मय, सूचीमुख,

दण्ड-ऐषिकादि बाण, बाण कर्णिकार ※ चन्द्रमुख सूर्यमुख बाण सप्तसार
नील-हरिताल-बाण विकट शंकर ※ अर्द्धचन्द्र क्षुरपार्श्व बाण मनोहर
एत बाण दुइ वीरे करे अवतार ※ दशदिक् लंकापुरी बाणे अन्धकार
दु'जने वरिषे बाण दु'जने प्रवीण ※ बाणेर कुहके नाहि जानि रात्रि-दिन
लक्ष्मण अशक्त हैल प्रहारेर घाय ※ ब्रह्मा बले पुरन्दर करह उपाय
ब्रह्म-अस्त्र पुरन्दर करिलेन दान ※ लक्ष्मण से ब्रह्म-अस्त्रे पूरिला सन्धान
बाणेरे बुझाये कन ठाकुर लक्ष्मण ※ ब्रह्म भावि ब्रह्मा तोया करिला सृजन
जदि रघुनाथ हन विष्णु-अवतार ※ तबे तुमि इन्द्रजिते करिबे सहार
इन्द्रजित्-माथा काटि पाड़ भूमितले ※ निर्भये जाउक् निद्रा देवता-सकले
एत बलि ब्रह्म-अस्त्रे पूरिला सन्धान ※ अस्त्रे देखि इन्द्रजितेर उड़िल पराण
जाठा-जाठि कत एड़े अस्त्र काटिबारे ※ लोहार पावड़ा मारे, अस्त्र नाहि फिरे
अव्यर्थ ब्रह्मार बाण, केबा धरे टान ※ इन्द्रजितेर माथा काटि करे दुइखान ५२
पड़िल जे इन्द्रजित् संग्राम-भितरे ※ धाइया बानरगण राक्षसेरे मारे
पलाय राक्षसगण गणिया प्रमाद ※ "रामजय" बलि कपि छाड़े सिंहनाद
पड़िल मस्तक-सह मुकुट-कुण्डल ※ गड़ागड़ि जाय मुण्ड पड़ि भूमितल

शिलीमुख, भयानक-दर्शन, सिंहदन्त, वज्रदन्त, विरोचन, दंड, ऐषिकादि, कर्णिकार, चन्द्रमुख, सूर्यमुख, सप्तसार, नील, हरिताल, विकट शंकर, अर्धचन्द्र तथा छुरपार्श्व आदि अनेकों बाण चलाने लगे जिससे लंकानगरी की दसों दिशाएँ अंधकारमय हो गईं। दोनों ही प्रवीण बाण बरसाने लगे। बाणों के कुहरे में पता नहीं चलता था कि रात है या दिन। बाणों के प्रहार से लक्ष्मण शक्तिहीन होने लगे तब ब्रह्मा ने कहा, इन्द्र, कोई उपाय करो। तब इन्द्र ने लक्ष्मण को ब्रह्म-अस्त्र दिया। लक्ष्मण ने उस ब्रह्म-अस्त्र से निशाना साधा। लक्ष्मण ने बाण को समझाते हुए कहा, ब्रह्मा ने ब्रह्म समझकर तुम्हारा निर्माण किया। यदि रघुनाथ विष्णु के अवतार हैं तो तुम इन्द्रजीत का संहार करोगे। इन्द्रजीत का सिर काटकर भूमि पर गिराओ जिससे सारे देवता रात्रि को निर्भय सो सकें। इतना कहकर उन्होंने ब्रह्म-अस्त्र का निशाना साधा। अस्त्र देखकर इन्द्रजीत के होश उड़ गये। अस्त्र से बचने के लिए उसने कितने ही जाठा-जाठी और लोहे के फावड़े आदि फेंके किन्तु वह अस्त्र रोका नहीं जा सका। ब्रह्मा का बाण अचूक होता है, उसको कौन रोक सकता है। उस बाण ने इन्द्रजीत का सिर काटकर फेंक दिया ॥ ३५२ ॥

संग्राम में इन्द्रजीत का पतन होते ही सारे वानर दौड़-दौड़ कर राक्षसों को मारने लगे। विपत्ति-मारे राक्षस भागने लगे और 'रामजय' की हाँक लगाकर कपि सिंहनाद करने लगे। इन्द्रजीत के सिर के साथ-साथ उसके मुकुट-कुंडल भी गिरे और सिर भूमि पर लोटने लगा।

इन्द्रजितेर काटामुण्ड-उपरेते चड़ि ❋ कोन कपि लाथि मारे, केह मारे बाड़ि
कील-लाथि मारिया मस्तक करे गुँड़ा ❋जीयन्ते ना पारे कपि,मड़ार उपर खाँड़ा
कृत्तिवास-पण्डित कवित्व विचक्षण ❋ इन्द्रजित्-वध-गीत गान रामायण ३५३

इन्द्रजितेर मरणे देवगणेर आनन्द

जे धरिले धनुर्व्वाण, इन्द्र सदा कम्पमान, बीरदापे वसुमती फाटे।
त्रिभुवने जत वीर, जार बाणे नहे स्थिर, यक्ष-रक्ष ना जाय निकटे ।।
हेन बीर मैल रणे, जय जय त्रिभुवने, मुनिगण करे वेदध्वनि।
पुलकित चराचर, गन्धर्व्व किन्नर नर, जय जय शब्दमात्र शुनि ।।
रणे मैल इन्द्रजित्, सकलेते आनन्दित, धन्य वीर ठाकुर लक्ष्मण।
सुरासुर ऋषि यति, लक्ष्मणेर करे स्तुति, सबे कैला पुष्प-वरिषण ।।
इन्द्रजितेर मरणे, हरषित देवगणे, बाल-वृद्ध आनन्दित हय।
कहेन लक्ष्मण-प्रति, करिले ये अव्याहति, त्रिलोकेर घुचाइले भय ।।
हइल अपार सुख, खण्डिल मनेर दुख, कुतूहले निश्चिन्त सकल।
जत स्वर्ग-विद्याधरी, पाद्य-अर्घ्य हाते करि, सुरपुरे करे सुमंगल ।।

इन्द्रजीत के कटे मुंड पर चढ़ कर कोई वानर लात जमाता तो कोई उस पर प्रहार करता। लात और मुक्का मारकर वानरों ने उसका मुंड चूर-चूर कर दिया। जब वह जिन्दा था तो वे कुछ न कर सके, किन्तु मुर्दे पर प्रहार करने लगे। कवित्व में विचक्षण पण्डित कृत्तिवास ने रामायण में इन्द्रजीत-वध की कथा का गान किया है ।। ३५३ ।।

इन्द्रजीत की मृत्यु से देवताओं में आनन्द

जिसके धनुष-बाण हाथ में लेने पर इन्द्र भी काँपने लगता है और जिसके पदचाप से भूमंडल फटने लगता है, तीनों लोकों के सारे वीर जिसके बाणों के सम्मुख ठहर नहीं सकते और यक्ष-रक्ष भी जिसके निकट नहीं फटकते, वही वीर युद्ध में खेत रहा। तीनों लोकों में जयध्वनि हुई, मुनिगण वेदध्वनि करने लगे। चराचर संसार में गन्धर्व, किन्नर, नर, यह सभी जयध्वनि सुनकर पुलकित हो गये। समर में इन्द्रजीत मरा, यह सुनकर सभी हर्षमग्न हुए। लक्ष्मण जी भी अनुपम वीर हैं। सुरासुर, ऋषि, यति लक्ष्मण की स्तुति करने लगे और सभी लोगों ने फूल बरसाये। इन्द्रजीत की मृत्यु से सारे देवता प्रसन्न हुए, बच्चे-बूढ़े आनन्दमग्न हो गये। वे लक्ष्मण से कहने लगे, तुमने बहुत बड़ी रक्षा की तीनों लोकों का भय तुमने दूर किया। दुःख जाता रहा, अपार सुख की प्राप्ति हुई और सारी जनता का भय मिट गया। वह निश्चिन्त हो गई। स्वर्ग की सारी विद्याधरियाँ पाद्य-अर्घ्य हाथों में लिये

जतेक अमर-सती, ज्वालिला घृतेर बाति, सुखे क्रीड़ा करे सुरपति।
वेद पड़े बृहस्पति, सकलेर अब्याहृति, नाचे गाय हरषित अति ॥
त्रिभुवन-पराजय, जार अस्त्र नाहि सय, नाना शिक्षा जाहार धनुके।
रथखान सुशोभन, विपक्षे जेन शमन, भये केह ना रहे सम्मुखे ॥
करि रथ आरोहण, आइलेन देवगण, लक्ष्मणेरे कहे जोड़ हात।
विनाशिया लंकेश्वर, घुचाओ देवेर डर, उद्धार करह रघुनाथ ॥
रावण जाउक क्षय, रामेर हउक् जय, दूरे जाक देवेर तरास।
दीनजने कर दया, देह राम, पदछाया, नाचाड़ी गाहिल कृत्तिवास ३५४

इन्द्रजित्के वध करिया लक्ष्मणेर प्रत्यागमन

बाणे बाणे ह'येछेन लक्ष्मण पीड़ित ❊ हनूमान विभीषण उभय-सहित
दुइ हात तुलि दिया उभयेर स्कन्धे ❊ वहिर्गत हइलेन लंकार बृहन्दे
पाठाइया लक्ष्मणेरे श्रीराम चिन्तित ❊ मायायुद्धे तारे पाछे मारे इन्द्रजित्
मायावीर इन्द्रजित् मायार निधान ❊ पाछे वा से लक्ष्मणेर करे अकल्याण

सुरपुर में सुमंगल कृत्य करने लगीं। जितनी भी सतियाँ अमर हो गई हैं उन्होंने घी के दिए जलाये। सुरपति आनन्द से क्रीड़ा करने लगे। बृहस्पति वेदपाठ करने लगे, सभी लोगों को अव्याहति मिली और वे हर्ष से नृत्य-गीत करने लगे। तीनों लोकों को जिसने हराया, जिसके अस्त्र सहन योग्य नहीं थे, जिसको विभिन्न प्रकार की धनुर्विद्या प्राप्त थी, जिसका शोभन रथ सामने खड़ा हो तो ऐसा लगता था मानों विपक्ष में यम खड़ा है, जिससे कोई भी भय के मारे सम्मुख नहीं ठहरता था, आज वही इन्द्रजीत नहीं रहा। रथ पर सवार देवतागण आए और हाथ जोड़कर लक्ष्मण से कहने लगे। लंकेश्वर का विनाश कर देवताओं का भय दूर करो। हे रघुनाथ! उद्धार करो। रावण का क्षय हो, राम की जय हो और देवताओं का त्रास दूर हो। कृत्तिवास ने त्रिपदी छन्द में यह गान किया। हे राम अपने चरणों की छाया में स्थान दो और दीन जनों पर दया करो ॥ ३५४ ॥

इन्द्रजीत-वध के बाद लक्ष्मण की वापसी

वाणों से लक्ष्मण घायल हो गये थे। हनुमान और विभीषण दोनों के साथ वे चल पड़े। दोनों के कन्धों पर दो हाथ रखकर वे लंका की चौहद्दी से निकल पड़े। लक्ष्मण को भेजकर श्रीराम चिन्तित थे कि कहीं मायायुद्ध में इन्द्रजीत उसको मार न डाले। मायावीर इन्द्रजीत माया में कुशल है, कहीं वह लक्ष्मण का कोई अकल्याण न कर डाले। इतना सोचकर वे बार-बार पथ की ओर देखने लगे। ऐसे ही समय लक्ष्मण वहाँ जा पहुँचे। लक्ष्मण

एतभावि पथपाने चाहेन सघने ॐ हेनकाले उपनीत लक्ष्मण से-स्थाने
बहिछे शोणित धार लक्ष्मणेर गाय ॐ देखिया श्रीराम मने विद्यमान ताय
विभीषण बले, प्रभु, करि निवेदन ॐ आइलेन इन्द्रजिते वधिया लक्ष्मण ३५५

इन्द्रजितेर मृत्यु-श्रवणे श्रीरामचन्द्रेर आनन्द

जिनिया प्रचण्ड रिपु, लक्ष्मण सरक्त-बपु, उपनीत रामेर गोचर।
वामकरे शरासन, भयंकर से गठन, दक्षिण करेते एक शर॥
रिपुजय करि रंगे, संग्रामेर बेशे संगे, आइल सकल महाबीर।
आनन्दे प्रफुल्ल-काय, रक्तधारा बहे गाय, रणश्रमे हइया अस्थिर॥
शुनिया संग्राम-जय, श्रीराम आनन्दमय, भावेन, मरिल इन्द्रजिता।
सागर तरिनु हेले, कि आर गोखुर-जले, रावणे बधिले पाव सीता॥
यत सेनापति-संगे, सुग्रीव नाचेन रंगे, संगेते सकल अधिकारी।
नल नील बालि-सुत, सकले आनन्द-युत, कपिगण नाचे सारि-सारि॥
बैरिकुल करि नाश, आइलाम तव पाश, कहे बिभीषण गुणधाम।
लक्ष्मण नोङाये माथा, कहेन सकल कथा, शुनिया कौतुकी अति राम॥

के शरीर से रक्त की धारा वह रही है, यह देखकर श्रीराम मन ही मन बड़े खिन्न हुए। विभीषण ने कहा, हे प्रभु! निवेदन है कि लक्ष्मण इन्द्रजीत का वध करके आ रहे हैं॥ ३५५॥

इन्द्रजीत की मृत्यु की वार्त्ता सुनकर श्रीरामचन्द्र का हर्ष

प्रचंड शत्रु पर विजय प्राप्त कर, खून से लथपथ शरीर लिये लक्ष्मण राम के समक्ष उपस्थित हुए। उनके बाएँ हाथ में भयंकर दीखने वाला एक धनुष और दाहिने हाथ में एक वाण था। शत्रु पर अनायास विजय प्राप्त कर रणवेश में सभी महावीर आ पहुँचे। हर्ष से उनका शरीर रोमांचित है और तन से रक्तधारा वह रही है। सभी रण के परिश्रम से थके हैं। संग्राम में विजय हुई, सुनकर श्रीराम आनन्दमग्न हो गये और सोचने लगे, इन्द्रजीत तो मरा, जब अनायास सागर लाँघ लिया तो गढ़ही-गड्ढों की क्या परवाह। रावण का वध करते ही सीता मिल जायगी। सारे सेनापतियों के साथ उल्लास से सुग्रीव और उनके साथ-साथ सारे अधिकारी भी नाचने लगे। नल, नील, अंगद, सभी हर्षमग्न हो गये। सारे वानर नाचने लगे। गुणधाम विभीषण ने कहा, मैं शत्रुओं का नाश कर तुम्हारे पास आया हूँ। लक्ष्मण सिर झुका कर सारी वातें कहने लगे। सुनकर राम को बड़ा आनन्द आया। लक्ष्मण की बातें सुनकर श्रीराम ने उनको अंक में भर लिया और माथा चूम कर मुँह की ओर देखा। मस्तक सूँघ कर उन्होंने धनुष वाण को

शुनि लक्ष्मणेर बोल, श्रीराम दिलेन कोल, ललाट चुम्बिया मुख चाइ।
लइया मस्तक-घ्राण, चुम्बिला धनुक-बाण, तोमा वइ नाहि आर भाइ॥
लक्ष्मण करेन स्तुति, तुमि त्रिदशेर पति, क्षितितले विष्णु अवतार।
जारे तव आशीर्व्वाद, जिने कोटि मेघनाद, तारे जिने, हेन शक्ति कार॥
पशुपति बृहस्पति, शचीपति करे स्तुति, ताहार नाहिक यम-त्रास।
लक्ष्मण करिल स्तुति, आनन्दित रघुपति, नाचाड़ी रचिल कृत्तिवास ३५६

इन्द्रजितेर वाणाघाते क्षतांग लक्ष्मणेर आरोग्य-लाभ

श्रीराम वलेन, हे सुषेण वैद्यवर ❋ फुटियाछे लक्ष्मणेर सर्व्वांगेते शर
वाणफला रहियाछे शरीर-भितर ❋ केमने सहिल ए कोमल कलेवर
मेघनादे मारिया राखिल देवगण ❋ सीता-उद्धारेर मूल हइल लक्ष्मण
लक्ष्मणेर अंगे अस्त्र र'येछे फुटिया ❋ महौषध देह सब वाण उपाड़िया ३५७
एतेक वलेन जदि कमल-लोचन ❋ औषध वाहिर करे सुषेण तखन
एके-एके वाहिर करिल जत शर ❋ औषध लेपिया दिल अंगेर उपर
अंगेते प्रवेश कैल औषधेर घ्राण ❋ सुन्दर शरीर हैल पूर्व्वेर समान
मिलाये बाणेर चिह्न हइल सुन्दर ❋ पूर्व्वमत लक्ष्मणेर हैल कलेवर
आनन्द-अवधि नाइ, प्रभु रघुनाथ ❋ सुषेणेर अंगेते बुलान पद्महात

चूमा और कहा तुम्हारे जैसा कोई भाई नहीं। लक्ष्मण स्तुति करने लगे, तुम देवताओं के अधिपति हो और भूमंडल पर विष्णु के अवतार हो। जिसको तुम्हारा आशीर्वाद प्राप्त है, वह करोड़ों मेघनादों पर विजय प्राप्त कर सकता है। उसको हराने की शक्ति किसमें है? पशुपति, बृहस्पति और शचीपति (इन्द्र) जिसकी स्तुति करते हैं, उसको यम का त्रास नहीं है। लक्ष्मण की स्तुति से रघुनाथ प्रसन्न हुए, कृत्तिवास ने त्रिपद छन्द की रचना की॥ ३५६॥

इन्द्रजीत के वाणों से घायल लक्ष्मण का आरोग्य-लाभ

श्रीराम ने कहा, हे वैद्यवर सुषेण, लक्ष्मण के सारे अंगों में बाण चुभे हैं। वाणों के फल भी शरीर के अन्दर रह गये हैं। ऐसा कोमल शरीर कैसे यह सब सह सका। लक्ष्मण ने मेघनाद को मारकर देवताओं की रक्षा की और सीता-उद्धार का मूल कारण बन गये। लक्ष्मण के अंग में अस्त्र चुभे हुए हैं, तुम सारे बाण निकाल कर उन्हें महौषध दो॥ ३५७॥

कमल-लोचन राम ने जब इतना कहा तो सुषेण ने औषध निकाली। एक-एक कर शरीर से सारे बाण उसने निकाले और अंग पर औषध लेप दी। औषध की गन्ध शरीर में प्रवेश कर गई और लक्ष्मण का शरीर पहले जैसा ही सुन्दर हो गया। प्रभु रघुनाथ यह देखकर आनन्द से विभोर हो उठे और सुषेण के बदन पर अपना कमल-हस्त रखा। श्रीराम कहा, सुषेण,

श्रीराम बलेन, सुषेण, कि कब तोमारे ❋ तोमार समान वैद्य नाहिक संसारे
बारे-बारे प्राणदान दिले सबाकार ❋ त्रिभुवने एइ कीर्त्ति रहिल तोमार
वन्दिल सुषेण-वेज रामेर चरण ❋ कृत्तिवास-पण्डित रचिल रामायण ३५८

इन्द्रजितेर मृत्यु-श्रवणे रावणेर विलाप

मेघनाद पड़े रणे प्रभात-समय ❋ भये रावणेर आगे केह नाहि कय
गगने हइल बेला द्वितीय प्रहर ❋ वसिया मन्त्रणा करे जत निशाचर
स्थाने-स्थाने बसि युक्ति करिछे राक्षस ❋ कहिते रावण-आगे ना करे साहस
पात्र-मित्र सकलेते मन्त्रणा करिया ❋ भग्नदूत एकजन दिल पाठाइया
रावण सम्मुखे कहे करि जोड़हात ❋ रणेर संवाद शुन राक्षसेर नाथ
लंकापुरी वीरशून्या हैला एतदिने ❋ मेघनाद पड़े आजि लक्ष्मणेर वाणे ३५९
दूतमुखे शुनि मेघनादेर मरण ❋ सिंहासन हैते पड़े राजा दशानन
उच्चैःस्वरे डाकि बले कोथा इन्द्रजित् ❋ आछाड़ खाइया पड़े हइया मूर्च्छित
धरिया तुलिल जत पात्र-मित्र आसि ❋ दशमुण्डे ढाले जल कलसी-कलसी
अनेक कष्टेते राजा पाइल चेतन ❋ चेतन पाइया राजा करये क्रन्दन
राक्षसकुलेर चूड़ा पुत्र इन्द्रजिते ❋ प्राण हाराइले नर-बानरेर हाते

तुमसे क्या बताऊँ, तुम जैसा वैद्य इस संसार में नहीं है। बार-बार सभी लोगों को तुमने प्राणदान दिया। तुम्हारी यह कीर्त्ति त्रिभुवन में बनी रहेगी। सुषेण वैद्य ने राम का चरण वन्दन किया और कृत्तिवास पंडित ने रामायण की रचना की ॥ ३५८ ॥

इन्द्रजीत की मृत्यु सुनकर रावण का विलाप

सबेरे मेघनाद युद्ध में खेत रहा। मारे भय के कोई भी रावण के सम्मुख जाकर यह कह न सका। जब दोपहर दिन चढ़ गया तब निशाचर मिलकर सलाह करने लगे। जगह-जगह पर बैठकर राक्षस परामर्श कर रहे हैं, लेकिन किसी में भी रावण के सम्मुख जाकर कहने का साहस नहीं। सारे पात्र-मित्रों ने परामर्श के उपरान्त एक भग्नदूत को भेज दिया। रावण के सामने हाथ जोड़ कर वह कहने लगा, हे राक्षसों के नाथ! रण का समाचार सुनो। इतने दिनों बाद लंकानगरी वीर-शून्या हुई—लक्ष्मण के बाणों से आज मेघनाद खेत रहा ॥ ३५९ ॥

दूत के मुँह मेघनाद की मृत्यु सुनते ही दशानन सिंहासन से गिर पड़ा। ऊँची आवाज में उसने पुकारा 'इन्द्रजीत कहाँ!' फिर चक्कर खा कर भूमि पर गिर पड़ा और मूर्छित हो गया। सारे पारिषदों ने आकर उसको उठाया और उसके दसों सिरों पर जल के घड़े उंडेलने लगे। बड़ी मुश्किल से राजा

आमार सर्ब्बस्व तुमि लंका-अधिकारी ※ पिता दशानन तोर, माता मन्दोदरी
पर्ब्बत-काण्डार काँपे देखि तोर बाण ※ एकबाणे इन्द्रबेटा ना सहित टान
त्रिभुवने जोद्धा नाहि तोमार समान ※ मनुष्येर बाणे पुत्र, हाराइले प्राण
कुम्भकर्ण-भ्रातृशोक रहियाछे बुके ※ लंकार रावण मरि तोमा-पुत्र-शोके
भाइ नहे, चण्डाल पापिष्ठ विभीषण ※ यज्ञभंग करि तव बधिल जीवन
जदि प्राण बाँचे राम-तपस्वीर रणे ※ आगे आमि काटिव चण्डाल विभीषणे
हा हा पुत्र इन्द्रजित्, गेलि कोथाकारे ※ सम्मुख-संग्रामे आमि पाठाइव कारे
पुत्रशोके कान्दि राजा गड़ागड़ि जाय ※ दशमुण्ड-कलेवर धूलाते लोटाय
क्षणे अचेतन हय, क्षणेक चेतन ※ कि हैल कि हैल बलि कान्दिछे रावण ३६०

मन्दोदरीर-विलाप

कुड़िच'क्षे वारि-धारा लंका-अधिकारी ※ इन्द्रजित् मैल, वार्त्ता पाय मन्दोदरी
आछाड़ खाइया पड़े मन्दोदरी राणी ※ उच्चैःस्वरे कान्दे दश-हाजार सतिनी

रावण होश में आया। होश में आते ही रावण रोने लगा। हे इन्द्रजीत, तुम राक्षस कुल की चोटी के समान थे। हाय, तुमने नर-वानरों के हाथों प्राण खो दिये। हे लंका के अधिकारी, तुम मेरे सर्वस्व थे। तेरा पिता दशानन है और माँ मन्दोदरी है। तेरे वाण देखकर वन-जंगल-पहाड़ सभी काँप उठते थे। तुम्हारे एक वाण में वेचारा इन्द्र भाग खड़ा होता था। तीनों लोक में तुम सा कोई योद्धा नहीं था। हे पुत्र, तूने मनुष्य के वाण से प्राण गवाँ दिया। मेरे दिल पर भाई कुम्भकर्ण का शोक अभी ताजा है। मैं लंका का रावण आज तुम जैसे पुत्र के शोक से मर रहा हूँ। मेरा भाई विभीषण तो चंडाल और पापी है। यज्ञभंग कर उसने तेरा वध कराया। अगर तपस्वी राम के साथ युद्ध में मेरे प्राण वच गये तो सबसे पहले मैं उस चंडाल विभीषण को काट डालूँगा। हाय बेटा इन्द्रजीत, तू कहाँ चला गया ? आज मैं सम्मुख संग्राम में किसको भेजूँगा ? पुत्रशोक से राजा रोता हुआ लोट-पोट होने लगा। दसों मुंड सहित सारा शरीर धूल में लोटने लगा। क्षणभर में होश में आता तो क्षणभर में बेहोश हो जाता। क्या हो गया, क्या हो गया, कहकर रावण रोने लगा ॥ ३६० ॥

मन्दोदरी का विलाप

लंका के अधिकारी रावण की बीसों आँखों से आँसुओं का धारा बह निकली। इन्द्रजीत मर गया, यह सूचना मन्दोदरी को मिली। रानी मन्दोदरी यह सुनकर जमीन पर गिर पड़ी और उसकी दस हजार सौतें जोर-जोर से रोने लगीं। भूमि पर गिर कर मन्दोदरी निष्पन्द सी हो गयी। कोई उसके

स्पन्दहीन मन्दोदरी धरातले पड़े ❋ शिरे जल ढाले केह, देखे नेड़े-चेड़े
नासिकाते हस्त दिया देखिछे सबाइ ❋ केह बले बेंचे आछे, केह बले नाइ
एलोथेलो कबरी-बन्धन केशपाश ❋ च'क्षे बहे वारिधारा, घन बहे श्वास
चैतन्य पाइया बले, कोथा इन्द्रजित् ❋ देखा दिया प्राण राख मायेर त्वरित ६१
आमि नाना-उपहारे, पूजिया जे महेश्वरे, तोमापुत्र पाइलाम कोले।
किछुदिन छिल सुख, एखन घटिल दुख, हेन पुत्र पड़े रणस्थले।।
कि मोर बसति-वास, जीवने कि छार आश, कि करिबे नब-छत्रदण्ड।
कि आर पुष्पक-रथ, वीरभाग आछे यत, तोमा-बिना सब लण्डभण्ड।।
भूमितले लोटाइया, पुत्रशोके बिनाइया, क्रन्दन करिछे मन्दोदरी।
हाय पुत्र मेघनाद, केन एत परमाद, आजि से मजिल लंकापुरी।।
शची-सह शचीपति, सुखेते करुन स्थिति, सच्छन्दे भुञ्जुक दिनपति।
ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वर, हरषित सुरबर, देखिया ए लंकार दुर्गति।।
इन्द्र-आदि देवगणे, जिनियाछ तुमि रणे, तव डरे केह नहे स्थिर।
कि कहिब विभीषणे, शत्रु आने यज्ञस्थाने, तेंइ से बधिल रघुबीर।।

सिर पर पानी डालती तो कोई हिला-डुला कर देखती। सभी उसकी नाक पर हाथ रख कर देखतीं। कोई कहती कि जिन्दा है, कोई कहती कि नहीं है। उसके जूड़े के बन्धन खुल गये और बाल बिखर गये। दोनों आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली और साँस उखड़ी-उखड़ी चलने लगी। सुधि आते ही मन्दोदरी बोल पड़ी, हे इन्द्रजीत तुम कहाँ हो, दर्शन देकर माँ के प्राणों की तुरन्त रक्षा करो।। ३६१ ।।

नाना प्रकार की भेंट चढ़ाकर महेश्वर का पूजन कर मुझको गोद में तुम जैसा पुत्र प्राप्त हुआ। कुछ ही दिनों के लिए यह सुख रहा, अब दुख का प्रहार हुआ। मेरा ऐसा पुत्र रणभूमि में जाता रहा। मेरे लिए अब यह घर-द्वार भला क्या है, जीवन में मेरे लिए अब कौन सी आशा रह गई। नये राजछत्र और राजदंड का अब क्या मूल्य है। पुष्पक रथ भी भला क्या है। वीर के योग्य जो कुछ भी है वह अब सब व्यर्थ ही है। इस प्रकार भूमि पर लोटकर पुत्रशोक से मन्दोदरी जोर-जोर रोदन करने लगी। हाय पुत्र मेघनाद, ऐसी विपत्ति क्यों आन पड़ी, आज यह लंकापुरी ध्वंस के मुख पर है। शची (इन्द्राणी) के साथ शचीपति (इन्द्र) सुख से रहें, दिनपति सूर्य स्वच्छन्द विचरण करें। ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर तथा अन्य देवता लंका की यह दुर्दशा देखकर हर्षमग्न हैं। इन्द्र आदि देवताओं पर युद्ध में तुमने विजय प्राप्त की थी, तुम्हारे भय से कोई भी स्थिर नहीं था। विभीषण की क्या कहूँ, वही तो यज्ञस्थान पर शत्रु को ले आया। तभी तो रघुवीर ने उसका वध किया। विभिन्न रूप-गुण-सम्पन्ना यक्ष और विद्याधरों की कन्याओं के साथ

नाना-गुणे-रूपे धन्या, जक्ष-विद्याधर-कन्या, बिवाह दिलाम तोमा सह।
तारा ना पाइल सुख, भुञ्जिबे कतेक दुख, कत सबे पतिर विरह ॥
अजोनि-सम्भवा कन्या, रामेर सुन्दरी धन्या, हरिया आनिल तोर बापे।
सती पतिव्रता राणी, व्यर्थ नहे ताँर वाणी, ए लंका मजिल ताँर शापे ॥
पुत्र जबे यज्ञ करे, देवगण काँपे डरे, कोन लोक ना जाय सेखाने।
हेन पुत्र मरे जार, सकलि असार तार, हाय पुत्र कि मोर जीवने ॥
श्रीरामेर रूप धरि, संसारे आइला हरि, करिते राक्षसकुल-नाश।
नर नय सीतापति, हेन लय मोर मति, पाँचालि रचिल कृत्तिवास ३६२

रावणेर सीतावधे उद्यम ओ मन्दोदरी कर्त्तृक सान्त्वना

पुत्रशोके मन्दोदरी करिछे रोदन ॐ मन्दोदरी-क्रन्दनेते रुषिल रावण
सीता लागि मजिल कनक-लंकापुरी ॐ आजि सीता काटिया घुचाब सब वैरी
मायासीता केटेछिल पुत्र इन्द्रजित् ॐ काटिया साक्षात् सीता घुचाइव भीत
रावण लइल करे खड्ग एकधारा ॐ कुड़ि चक्षु हैल जेन आकाशेर तारा

तुम्हारा विवाह कराया। उनको कोई सुख प्राप्त न हो सका और वे अब पति के विरह में दुख भोगेंगी। अयोनिसंभवा (सीता) कन्या जो कि राम की सुन्दरी भार्या है उसको तेरा बाप हर लाया। वह सती और पतिव्रता रानी है, उसके वाक्य झूठे नहीं हो सकते। यह लंका उसी के अभिशाप से ध्वंस हो रही है। मेरा पुत्र जब यज्ञ करता था तब सारे देवता भय से काँपते रहते थे, कोई भी व्यक्ति उसके निकट नहीं फटकता था। ऐसा पुत्र जिसका मर जाय उसका जीवन सार-शून्य हो जाता है। हाय पुत्र, अब मेरे जीवन में भला क्या रह गया। श्रीराम का रूप धारण कर संसार में भगवान् राक्षस-कुल का विनाश करने आए हैं। यह सीतापति केवल मनुष्य ही नहीं हैं यही मेरा मन कहता है। कृत्तिवास ने गीत की रचना की ॥ ३६२ ॥

सीतावध के लिए रावण का तुल जाना और मन्दोदरी द्वारा सान्त्वना

पुत्रशोक से मन्दोदरी रो रही है। मन्दोदरी को रोते देखकर रावण क्रोध में भर गया। सीता के कारण ही स्वर्ण-लंका चौपट हुई, आज सीता को काटकर सारी शत्रुता का अन्त करूँगा। पुत्र इन्द्रजीत ने मायासीता को काटा था, मैं सदेह सीता को काटकर सारे भय का निवारण करूँगा। रावण ने एक तरफ धार वाला खड्ग अपने हाथों में उठा लिया। उसकी बीसों आँख मानों गगन के तारे बन गईं। उसके अंग-अंग से दोपहर के सूर्य के समान ज्योति निकलने लगी। रावण कालान्तक यम के समान क्रोधित हो उठा और पवन-गति से सीता को काटने के लिए दौड़ पड़ा।

दुइ प्रहरेर रवि अंगेर किरण ❋ कालान्तक यम जेन रुषिल रावण
सीतारे काटिते जाय पवनेर वेगे ❋ रावणेर पात्र-मित्र पिछे गिया लागे
खड्गहाते धाय राजा अशोकेर वने ❋ कार साध्य प्रवोधिया फिराय रावणे
प्रवेश करिल गिया अशोकेर वन ❋ रावणे देखिया सीता करेन क्रन्दन ६३
मनेते विचार करे राणी मन्दोदरी ❋ सर्व्वनाश ह'येछे, म'जेछे लंकापुरी
ताहाते रावण केन स्त्रीवध करिवे ❋ रमणी-वधेर पापे परकाल जावे
एत भावि मन्दोदरी संवरे क्रन्दन ❋ धूलाय धूसर अंग, लोहित लोचन
पागलिनी-प्राय राणी छुटे ऊर्द्ध्वमुखे ❋ उपनीत दशानन सीतार सम्मुखे
एके त रावण, ताहे क्रोधे कम्पमान ❋ घुरितेछे रक्तवर्ण विंशति नयान ६४
आतंके अस्थिरा सीता देखिया रावणे ❋ काटिवे रावण आजि, भाविलेन मने
पुत्रशोके आसितेछे, करिबे छेदन ❋ कोथा प्रभु रघुनाथ देवर लक्ष्मण
आभागीरे देखा दाओ अशोकेर वने ❋ रामेर महिषी आमि, काटिबे रावणे
उच्चैःस्वरे सीता देवी करेन क्रन्दन ❋ सीतारे काटिते खड्ग तुलिल रावण
पिछे थाकि सापटिया धरे मन्दोदरी ❋ छि छि महाराज, वधक'रो ना हे नारी ६५

उसके पीछे-पीछे उसके पारिषद भी दौड़ पड़े। हाथ में खड्ग लिये रावण जब अशोक-वन की ओर दौड़ा, तो कोई भी रावण को समझा-बुझा न सका। जब रावण अशोक-वन में पहुँचा तो सीता उसको देखकर क्रन्दन करने लगी ॥ ३६३ ॥

रानी मन्दोदरी ने मन ही मन विचार किया कि सर्वनाश तो हो ही गया है, लंकापुरी तो चौपट हो ही चुकी है, अब रावण नारी-वध क्यों करे। नारी-वध के कारण उसका परलोक भी बिगड़ेगा। इतना सोचकर मन्दोदरी ने रोना बन्द किया। धूल से धूसरित अंग और लाल-लाल आँखें लिए मन्दोदरी पागल जैसी दौड़ कर वहाँ जा पहुँची जहाँ दशानन सीता के सम्मुख खड़ा था। एक तो रावण क्रोध से काँप रहा था फिर उसके लाल-लाल बीस नयन घूम रहे थे ॥ ३६४ ॥

रावण को देखकर सीता आतंक से चंचल हो उठी। उसने मन ही मन सोचा, आज तो रावण मुझे काट ही डालेगा। यह पुत्रशोक में आ रहा है अतः अवश्य ही काट डालेगा। हे प्रभु रघुनाथ और देवर लक्ष्मण, तुमलोग कहाँ हो ? इस अभागिन को अशोक-कानन में दर्शन दो। मैं राम की महिषी हूँ और मुझको रावण काट डाले (यह आश्चर्यजनक है), ऐसा कहकर सीता देवी ऊच्चस्तर में क्रन्दन करने लगीं। जब रावण ने सीता को काटने के लिए दोनों हाथों खड्ग को उठाया तो पीछे से मन्दोदरी ने उसको बाँहों से जकड़ लिया। छी छी महाराज, नारी का वध मत करो ॥ ३६५ ॥

रावण बले, मायासीता काटें इन्द्रजिते * मरे पुत्र इन्द्रजित् सीतार जन्येते
सीता आनि सर्व्वनाश हैल लंकापुरे * घुचाव सकल शोक काटिया सीतारे
मन्दोदरी कहितेछे करि जोड़हात * परम पण्डित तुमि राक्षसेर नाथ
विश्वश्रवा पिता तव संसारे पूजित * तोमार ए नारीवध ना हय उचित
एके देख म'जेछे कनक-लंकापुरी * पापेते म'ज ना ताहे बध करे नारी३६६
करे धरि मन्दोदरी फिराय रावणे * भये सीता चाहिलेन रावणेर पाने
रावण देखिल, सीता फिराइल आँखि * दशानन भावे, सीता दिलेक कटाक्षि
भरसा पाइया गेल लंकार भितरे * सिंहासन त्यजि बैसे भूमिर उपरे
अभिमान-भरे भावे लंका-अधिकारी * घरे-घरे कान्दे जत वीरभाग-नारी३६७

रावणेर द्वितीय-वार युद्धे गमन

शोकेर उपरे शोक पाइल रावण * बसिले सोयास्ति नाइ, करये शयन
इन्द्रजित्-शोक तबु नहे पासरण * आपनि साजिल राजा करिवारे रण
स्त्रीलोकेर क्रन्दन शुनिया घरे-घर * अभिमाने परिपूर्ण राजा लंकेश्वर

रावण ने कहा इन्द्रजीत ने मायासीता को काटा था और इस सीता के लिए ही मेरा पुत्र इन्द्रजीत मरा। सीता लाकर ही लंका का सर्वनाश हो गया। सीता को काटकर ही सारा शोक दूर करूँगा। तब हाथ जोड़कर मन्दोदरी कहने लगी, हे राक्षसों के नाथ, तुम परमपंडित हो। तुम्हारे पिता विश्वश्रवा विश्व भर में पूजित हैं। तुम्हारे द्वारा यह नारीवध उचित नहीं। एक तो स्वर्ण-लंका चौपट हो ही गयी है फिर नारी का वध कर और पाप में मत डूबो ॥ ३६६ ॥

मन्दोदरी ने हाथों से पकड़कर रावण को लौटाया। भय से सीता ने रावण की ओर देखा। रावण ने देखा कि सीता ने उसकी ओर आँखें उठाई। दशानन ने सोचा कि सीता ने कटाक्ष किया। दिलासा पाकर वह लंका में गया। वहाँ सिंहासन छोड़कर वह जमीन पर बैठ गया। रूठ कर लंका-नरेश ने सोचा कि घर-घर में वीरभोग्या नारियाँ रो रही हैं ॥ ३६७ ॥

रावण का दूसरी वार युद्ध में जाना

रावण को शोक पर शोक मिलने लगा। जब उसे बैठने से शान्ति नहीं मिली तो वह लेट गया। फिर भी इन्द्रजीत का शोक भुलाये न भूला। युद्ध करने के लिए राजा ने अपने को सुसज्जित किया। घर-घर में नारियों का क्रन्दन सुनकर राजा क्षोभ से भर गया। वह अमूल्य-रत्नों से पूर्ण विचित्र सज्जा पहनने लगा। उसने सारे अंगों पर राजकीय आभूषण पहन लिये।

अमूल्य-रतने करे विचित्र साजन * सर्व्वांग भरिया परे राज-आभरण
मेघेर वरण अंगे धवल उत्तरी * परिलेक मृगमद सुगन्धि कस्तूरी
दशभाले दश मणि करे झलमल * कुड़ि-कर्णे चन्द्रसम कुड़िटा कुण्डल
नाना-अस्त्रे साजिलेक मनोहर बेशे * चौद्द-हाजार नारी आसि घेरे आशे-पाशे
इन्द्रजित्-शोके राजा ह'येछे कातर * चक्षेर कोणेते नाहि चाहे लंकेश्वर ३६८
धनुर्व्बाण ल'ये रावण जाय महाक्रोधे * राणी मन्दोदरी आसि पश्चाते बिरोधे
आपनार दोषे राजा, कैले वंशनाश * रामेर सीता रामे देह, थाक गृहवास
मन्दोदरी-पाने राजा फिरिया ना चाय * मृत्युकाले रोगी जेन औषध ना खाय
निकट-मरण जार, कि करे औषधे * ना रहे रावण मन्दोदरीर प्रबोधे
स्वामि-प्रदक्षिण करि पड़िल मंगल * मन्दोदरी-च'क्षे जल करे छलछल
अन्तरे बुझिया राणी कान्दिल प्रचुर * दश-हाजार सतिनीते निल अन्तःपुर ६९
वृहन्देर बहिर्गत हइल राजन् * रथ ल'ये सारथि जोगाय ततक्षण
कनक-रचित रथ सुबर्णेर चाका * रथेर उपरे शोभे नेतेर पताका
विचित्र-निर्म्माण रथ अष्टघोड़ा वहे * रथेर उपरे उठि दशानन कहे

मेघवर्ण शरीर पर सफेद रंग का उत्तरीय पहन लिया, मृगमद (कस्तूरी-सुगन्धि) का प्रयोग किया। दस मस्तकों पर दस मणियाँ झलमलाने लगीं, बीस कानों में चन्द्र के समान बीस कुंडल शोभा देने लगे। मनोहर वेश-भूषा धारण कर वह विभिन्न अस्त्रों से सज्जित हुआ। चौदह हजार नारियाँ आकर अगल-बगल खड़ी हो गईं। इन्द्रजीत के शोक से राजा अत्यन्त दुखी था, उसने आँखों की कोर से भी ताक कर उनकी ओर नहीं देखा ॥ ३६८ ॥

जब रावण महाक्रोध में धनुष-बाण लेकर चल पड़ा तो रानी मन्दोदरी ने आकर पीछे से विरोध किया। हे राजा, तुमने अपने दोष से ही अपने वंश का नाश किया। राम की सीता राम ही को दे दो और अपने घर ही में रहो। जिस प्रकार मृत्यु के समय रोगी दवा का सेवन नहीं करता उसी प्रकार मन्दोदरी की तरफ राजा ने पलट कर भी नहीं देखा। जिसकी मृत्यु निकट है उसको दवा क्या लाभ पहुँचा सकती है। रावण मन्दोदरी के परामर्श पर ठहरा नहीं। पति की प्रदक्षिणा कर उसने मंगल-वचन पढ़े। मन्दोदरी की आँखों में आँसू छलकने लगे। मन ही मन समझ कर रानी बहुत रोई, फिर दश हजार सौतों को साथ लेकर अन्तःपुर चली गई ॥ ३६९ ॥

राजा रावण चहारदिवारी से बाहर निकला। तब तक सारथी रथ लेकर आ पहुँचा। कनकरचित रथ में स्वर्ण के बने पहिए थे और रथ पर रेशमी झंडियाँ लगीं थीं। ऐसे रथ पर सवार होकर दशानन ने कहा, जो-जो वीर धनुष पकड़ना जानते हों वे छोटे-बड़े सभी वीर सुसज्जित हो मेरे साथ आ जायें। वीर-चूड़ामणि इन्द्रजीत युद्ध में काम आ गये अब किसको भेजूँ,

धनुक धरिते करे जे जे बीर जाने ❊ छोट-बड़ साजिया आसुक मोर सने
इन्द्रजित् पड़े रणे वीर-चूड़ामणि ❊ आर कारे पाठाइव, जाइब आपनि
पद्मकोटि ठाट छिल लंकार भितर ❊ साजिल रावण-संगे करिते समर
पश्चिम-दुयारे आछे श्रीराम-लक्ष्मण ❊ जुझिवारे सेइ द्वारे गेल से रावण
दाण्डाइल रावण धनुके दिया चाड़ा ❊ वायुवेगे सारथि चालाये दिल घोड़ा७०
सिंहासन छाड़ि रणे प्रवेशे रावण ❊ भंग दिया पलाय जतेक कपिगण
गन्धमादन सेनापति हैल आगुयान ❊ विमुख करिल तारे मारि पञ्चबाण
नीलबीरे दशानन देखिया सम्मुखे ❊ त्रिशबाण बिन्धिलेक नीलवीर-बुके
त्रिशबाणे पड़िल कुमुद महाबीर ❊ नयबाणे बिन्धे जाम्बवानेर शरीर
गज ओ गवाक्ष बिन्धे दश-दश बाणे ❊ दुइशत बाणे बिन्धे वीर हनूमाने
आशीगोटा वाण खेये अंगद पड़िल ❊ पञ्चदश वाणे बीर सुषेणे बिन्धिल
बानर-कटक पड़े, नाहि लेखाजोखा ❊ पड़िल बानर जत, नाहि तार संख्या७१
सारथिरे आज्ञा दिल राजा दशानन ❊ पशुर सहित युद्धे नाहि प्रयोजन
रथ लह राम आर लक्ष्मणेर काछे ❊ से-उभये मारिया बानरे मारि पिछे
रावणेर आज्ञा पेये सारथि सत्वर ❊ चालाइया दिल रथ श्रीराम-गोचर

स्वयं चलता हूँ। लंका के भीतर पद्मकोटि सेना थी, रावण के सहित युद्ध में जाने के लिए वह सभी सेना तैयार हो गयी। पश्चिम द्वार पर श्रीराम और लक्ष्मण थे, लड़ने के लिए रावण उसी द्वार पर गया। धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाकर रावण खड़ा हो गया और सारथी ने वायु की गति से घोड़ा भगा दिया ॥ ३७० ॥

जब सिंहासन छोड़ कर रावण ने रण में प्रवेश किया तो डर से सारे वानर मैदान छोड़कर भागने लगे। सेनापति गन्धमादन आगे बढ़े तो उनको पंचबाण मारकर भगा दिया। रावण ने सामने नीलवीर को देखा तो तीस बाण नीलवीर के सीने पर मारे। तीस बाणों से महावीर कुमुद गिरा। नौ बाणों से जाम्बवान का शरीर उसने छेद दिया। दस-दस बाणों से गय और गवाक्ष को उसने बींध डाला। दो सौ बाणों से उसने हनुमान को घायल किया। अस्सी बाण खाकर अंगद गिरा। वीर सुषेण को पन्द्रह बाणों से उसने बींधा। वानर सेना में कितने खेत रहे इसका कोई हिसाब-किताब नहीं। कितने वानर गिरे इसकी कोई संख्या नहीं ॥ ३७१ ॥

राजा दशानन ने सारथी को आज्ञा दी कि पशुओं के साथ लड़ने की अब कोई आवश्यकता नहीं, रथ को राम और लक्ष्मण के निकट ले चलो। उन दोनों को मार कर फिर पीछे वानरों को मारूँगा। रावण की आज्ञा पाकर सारथी ने झटपट श्रीराम के निकट रथ चला दिया। बिजली की तड़प जैसे रथ लपकता हुआ बढ़ा, चारों ओर लाख लाख सोने की घंटियाँ बजने लगीं।

रथखान आसे, जेन विद्युत् चमके ※ लक्ष-लक्ष स्वर्ण-घण्टा बाजे चारदिके
रथचक्र-शब्दे कपि भागे लाखे-लाखे ※ पार्ब्बतीय पाखी जेन उड़े झाँके-झाँके७२
हाते धनु करि गेल श्रीराम-सम्मुखे ※ वैकुण्ठेर नाथ रामे दशानन देखे
दक्षिणे अक्षय तूण, वामेते कोदण्ड ※ विष्णु-अवतार राम सुबाहु प्रचण्ड
सुन्दर नासिका किवा चौरस कपाल ※ फल-मूल खान, तबु विक्रमे विशाल
सुन्दर धनुक-बाण विचित्र-गठन ※ रावण रामेर देहे देखे त्रिभुवन
श्रीरामेर सर्व्व-अंग निरखिया देखे ※ पर्व्वत समुद्र सर्प देखे लाखे-लाखे
मने-मने चिन्ता करे राजा दशानन ※ प्रकाण्ड जानिनु, राम देव-नारायण
जद्यपि रामेर हाते हय त मरण ※ एकान्त बैकुण्ठे जाव, नाहय खण्डन
बिरस हइया केन हइब विमुख ※ रामेर सम्मुखे गेल पातिया धनुक३७३

रावणेर द्वितीय-बार युद्ध

दैवेर लिखन कभु ना हय खण्डन ※ श्रीराम-रावणे दोंहे बाजे महारण
शतबाण जोड़े बीर धनुकेर गुणे ※ काटिला बिंशति-बाणे राजीव-लोचने
बाछिया रावण वरिषये चोखा-शर ※ बिन्धिया कोमल-अंग करिल जर्ज्जर३७४

रथ के पहियों की आवाज से ही लाख-लाख कपि भागने लगे। ऐसा प्रतीत होता था मानों पहाड़ पर रहने वाले पक्षी कतारों में उड़ रहे हों ॥ ३७२ ॥

तब हाथ में धनुष लेकर श्रीराम उसके सामने आ गये। वैकुंठ के नाथ राम को दशानन देखने लगा। राम के दक्षिण में अक्षय तरकस और बाईं तरफ कोदंड है। विष्णु के अवतार राम सुन्दर बाहु वाले तथा अत्यन्त प्रचंड हैं। सुन्दर नाक और चौरस माथा है। फल-मूल खाते हैं लेकिन पराक्रम में विशाल हैं। विचित्र बनावट के धनुष-बाण अति सुन्दर हैं। रावण राम के शरीर में तीनों लोकों का दर्शन करने लगा। श्रीराम के सारे शरीर को वह निरख-निरख कर देखने लगा। उसने वहाँ पर्वत देखा, समुद्र देखा, लाख-लाख साँप देखे। राजा दशानन ने मन ही मन सोचा कि अब मैं निश्चित रूप से जान गया कि राम श्रीनारायण हैं। यदि राम के हाथ मृत्यु भी हुई तो मैं सीधे वैकुंठ जाऊँगा, इसके विपरीत नहीं। मन को छोटा कर क्यों उनसे दूर भाग जाऊँ। ऐसा सोचकर धनुष लेकर वह राम के सम्मुख जा खड़ा हो गया ॥ ३७३ ॥

रावण का दूसरी बार का युद्ध

दैव का लिखा हुआ कभी मिटता नहीं। श्रीराम और रावण दोनों में महायुद्ध छिड़ गया। वीर ने धनुष पर सौ बाण लगाये, राजीवलोचन राम ने बीस बाणों से उसे काट गिराया। चुन-चुन कर रावण पैने-पैने बाण चलाने लगा और उनके कोमल अंग को छेद कर जर्जर कर डाला ॥ ३७४ ॥

वाणाघाते रघुनाथ हैला अचेतन ※ रामे पाछु करि आगे दाँड़ाल लक्ष्मण
रावण-उपरे वीर शीघ्र एड़े वाण ※ दिव्यबाण मारिलेन पूरिया सन्धान
लक्ष्मण जे वाण मारे वले महावल ※ सारथिर मुण्ड काटि पाड़े भूमितल ७५
लक्ष्मणेर बाणेते से रथ हैल मुड़ा ※ गदाघाते विभीषण मारे अष्टघोड़ा
कोपे दशानन विभीषण-पाने चाय ※ तुलिया निलेक शेल, देखे भय पाय
बंशनाश करिलि पापिष्ठ विभीषण ※ मारिया पाड़िब आजि, राखे कोन जन
रथ ना संवरे, राजा गर्ज्जिया कोपेते ※ विभीषणे मारिवारे शेल लय हाते
शेलपाट एड़िलेक दिया हुहुँकार ※ स्वर्ग-मर्त्य-पाताले लागिल चमत्कार
शेलपाट देखि चमकित विभीषण ※ डाकि वले, प्राण राख ठाकुर लक्ष्मण
से शेलेर उद्देशे लक्ष्मण एड़े वाण ※ तिनवाणे शेल काटि कैल चारिखान
शेल काटा गेल, कपि दिल टिट्कारी ※ कुपिल रावण-राजा लंका-अधिकारी
कुड़िचक्षु घोरे तार, देखि भयंकर ※ आर शेल हाते निल यमेर दोसर
वज्रसम शेलपाट देखि लागे भय ※ जारे मारे शेल, तार जीवन-संशय

जब वाणों के आघात से रघुनाथ अचेतन हो गये तो उनको पीछे कर लक्ष्मण सामने आकर खड़े हो गये। रावण पर वह वीर लक्ष्मण तेज वाण चलाने लगे। निशाना साधकर इन्होंने दिव्य वाण फेंके। महावल नामक जो वाण लक्ष्मण ने फेंका उससे सारथी का मुंड कटकर धरती पर जा गिरा ॥ ३७५ ॥

जब लक्ष्मण के वाणों से रथ सारथी-शून्य हो गया तो विभीषण ने गदा के प्रहार से उसके आठो घोड़े मार डाले। क्रुद्ध होकर दशानन ने विभीषण की ओर देखा। उसने शेल उठा लिया जिसको देखते ही डर लगने लगता है। वह बोला, अरे पापी विभीषण, तूने वंशनाश किया, आज तुझको मैं मार गिराऊँगा, देखूँ कि कौन तुझको बचाता है। रथ संभले न संभले, राजा क्रोध से गरजते हुए, विभीषण को मारने के लिए, हाथों में शेल उठा लेता है। हुंकार करते हुए उसने शेल फेंका, यह देखकर स्वर्ग-मर्त्य-पातालवासी आश्चर्य करने लगे। शेल देखकर विभीषण चौंक पड़ा। उसने पुकार कर कहा, हे देव लक्ष्मण, मेरे प्राण बचाओ। उस शेल का निशाना साध लक्ष्मण ने वाण फेंके। तीन वाणों से शेल को काटकर चार टुकड़े कर दिये। शेल कट गया तो वानरों ने हर्षध्वनि की, जिसे सुनकर लंका का अधिकारी राजा रावण बहुत क्रोधित हुआ। उसकी बीसों आँखें लाल हो गईं, जो कि देखने में बहुत भयंकर लगती थीं। उसने एक दूसरा शेल हाथ में लिया जो यम के सदृश भयानक था। उस वज्र जैसे शेल को देखकर डर लगता था; जिसको उस शेल से मारा जायगा उसी का प्राण संशय में होगा। राम को मारने की इच्छा से वह उस शेल को लाया था, क्रुद्ध होकर उसने उसे विभीषण पर

एनेछिल शेल रामे मारिवार मने ※ कोपकरि सेइ शेल हाने विभीषणे
विभीषण फाँफर हइल शेल देखि ※ सेइ शेल काटिलेन लक्ष्मण धानुकि ३७६

लक्ष्मणेर शक्ति-शेल

कोपेते रावण चाहे लक्ष्मणेर पाने ※ मय-दानवेर शेल प'ड़े गेल मने
रावण कहिछे चक्षु करिया पाकल ※ देखिब, मानुष वेटा, धर कत वल
विभीषणे वाँचाइलि करि वीरपना ※ मारि शेल, राख देखि वाँचाये आपना
तोर बाणे विभीषण पेले प्रतिकार ※ मारि शेल तोरे, देखि के राखे एबार
एखनि मरिबि भण्ड लक्ष्मण तपस्वी ※ मृत्युकाले मने कर जानकी रूपसी
मा-बापेरे मने कर, वन्धु यतजन ※ मैले संगे आर नाहि हबे दरशन
राम-सुग्रीवेर ठाँइ मागह मेलानि ※ दियाछे अनेक युक्ति करि कानाकानि
गर्ज्जिया रावण-राजा शेलपाट झाँके ※ प्राण उड़े देवतार शक्ति शेल देखे
यक्ष-रक्ष काँपे आर गन्धर्व्व-किन्नर ※ काँपे अष्ट-लोकपाल देब-पुरन्दर
शमनेर भग्नी शेल शक्ति-नाम धरे ※ जारे मारे शक्तिशेल, सेइजन मरे
एकजने मारिले ना मरे अन्यजन ※ जारे शेल मारे, तार अवश्य मरण ३७७

दे मारा। शेल देखकर विभीषण के प्राण उड़ गये। धनुर्धारी लक्ष्मण ने उस शेल को काट डाला ॥ ३७६ ॥

लक्ष्मण का शक्तिशेल

कुपित होकर रावण ने लक्ष्मण की ओर देखा। उसको मयदानव का शेल याद आ गया। रावण ने आँखें लाल-लाल करते हुए कहा, अरे मनुष्य के पुत्र, मैं देखता हूँ कि तुम कितनी शक्ति रखते हो। वहादुरी दिखा कर तूने विभीषण को बचा दिया, अब मैं शेल मारता हूँ। तू अपने को बचा। तेरे वाण से विभीषण तो वच गया, तुझ पर शेल फेंकता हूँ, देखूँ तुझे कौन वचाता है। ऐ ढोंगी तपस्वी लक्ष्मण, अभी तू मरेगा। मरते वक्त रूपवती जानकी का स्मरण कर ले। अपने माँ-बाप को याद कर ले, जितने इष्ट-मित्र हैं सबको याद कर ले, क्योंकि मृत्यु के बाद किसी का दर्शन नहीं होगा। राम और सुग्रीव से विदा ले ले, कानाफूसी करके काफी परामर्श देते रहे हैं ये। ऐसा कहकर जब गरज कर राजा रावण शेल को घुमाने लगा तो उस शक्ति-शेल को देखकर देवताओं के प्राण उड़ गये। यक्ष, रक्ष, किन्नर, गन्धर्व, सभी काँप उठे। इन्द्र आदि आठों लोकपाल काँप उठे। यमराज की वहिन के सदृश शक्ति नामक यह शेल जिस पर फेंका जाता है वह अवश्य मरता है। एक को मारने पर दूसरा नहीं मरता। जिस पर शेल मारा जाता है उसकी मृत्यु अवश्यमेव हो जाती है ॥ ३७७ ॥

सूर्य्येर किरण जेन शेलपाट जाय ॐ भाविया त रघुनाथ ना पान उपाय
चिन्ता करे रघुनाथ भायेर कुशल ॐ शेलेरे करेन स्तुति, च'क्षे पड़े जल
देवमूर्त्ति शेल तुमि, देव-अधिष्ठान ॐ एवार लक्ष्मणे तुमि देह प्राणदान
फिरे जाओ शेलपाट रावणेर हाते ॐ भ्रातृदान मागि आमि तोमार साक्षाते
आपनि शमन मूर्त्तिमान् शेलमुखे ॐ लक्ष्मणे छाड़िया शेल, पड़ मोर बुके
मृत्यु निजे अधिष्ठित शेलेर उपर ॐ डाकिया श्रीरामे तबे करिछे उत्तर
आमारे करिछ केन एतेक स्तवन ॐ लक्ष्मणे छाड़िया नाहि मारि अन्यजन
थाकि आमि जार काछे, तार आज्ञाकारी ॐ जार काछे थाकि आमि, तार हित करि
श्रीरामे कातर देखि शेल नाहि थाके ॐ महावेगे पड़े शेल लक्ष्मणेर बुके
पड़िल लक्ष्मण-बीर रघुवंश-चूड़ा ॐ प्रवेशे सकल शेल, वाहिरेते गोड़ा
भूमिते पतित बीर, ना नाड़ेन पाश ॐ शेल विन्धि लक्ष्मणेर घन बहे श्वास ७८
लक्ष्मणे एड़िया सब पलाय बानर ॐ देखिया त रघुनाथ हइला फाँफर
लक्ष्मणे राखिवे, ना कि राखिवे आपना ॐ तिनठाँइ श्रीरामेर पड़िल भावना
वाहिर करिते शेल टानये वानरे ॐ आपनि सुग्रीव टाने, शेल नाहि नड़े
सुग्रीव टानिछे शेल, कपिगण चाहे ॐ एत टान देय, शेल नड़िवार नहे
शरभ-कुमुद-नल-नील-आदि वीर ॐ शेल धरि टाने, तबु नाहय वाहिर

जब सूर्य की किरणों के समान शेल लपका तो रघुनाथ को कोई भी उपाय न सूझ पड़ा। वे भाई की कुशलता की चिन्ता करने लगे। रघुनाथ शेल की स्तुति करने लगे और आँखों से आँसू बहाने लगे। हे शेल, तुम देव-मूर्त्ति हो, देव-अधिष्ठान हो, इस बार तुम लक्ष्मण को प्राणदान दो, रावण के हाथों में लौट जाओ। मैं तुमसे अपने भाई की भिक्षा माँगता हूँ। हे शेल, तुम स्वयं यमराज हो, लक्ष्मण को त्याग कर मेरे वक्ष पर आ गिरो। शेल पर स्वयं मृत्यु अधिष्ठित थी। उसने श्रीराम को बुलाकर कर कहा, तुम मेरा स्तव इतना क्यों कर रहे हो, लक्ष्मण को छोड़कर मैं किसी अन्य को नहीं मारूँगा। मैं जिसके पास रहता हूँ उसी का आज्ञाकारी हूँ। जिसके पास मैं रहता हूँ उसी का हित करता हूँ। श्रीराम को दुखी देखकर भी शेल रुका नहीं, जाकर लक्ष्मण के वक्ष पर गिरा। रघुवंश के शिखरवीर लक्ष्मण गिरे। सारा शेल अन्दर प्रवेश कर गया, केवल उसकी मूँठ बाहर रह गई। धरती पर पड़ा वीर करवट भी न ले सका। शेल से विंधा लक्ष्मण जोर-जोर से साँस लेने लगा ॥ ३७८ ॥

लक्ष्मण से कतरा कर सब वानर भागने लगे। यह देखकर रघुनाथ असमंजस में पड़ गये कि लक्ष्मण की रक्षा करें या अपनी। श्रीराम की चिन्ता तीनों दिशाओं में दौड़ी। शेल निकालने के लिए वानर खींचातानी करने लगे। स्वयं सुग्रीव भी खींचने लगा लेकिन शेल टस से मस नहीं हुआ।

वानरेर मध्ये हनूमानेरे बाखानि ❋ से हनू धरिया शेल करे टानाटानि
साहस करिया केह नाहि मारे टान ❋ पाछे टाने लक्ष्मणेर बाहिराय प्राण
टानिते वानरगण ना करे साहस ❋ जार टाने मरिबेन, तार अपजश
दिलेन धनुक-वाण सुग्रीवेर हाते ❋ शेल धरि टानिलेन प्रभु रघुनाथे
विश्वम्भर-मूर्त्ति धरि शेले दिला टान ❋ उपाड़िया शेल-पाट कैला खान-खान७९
लक्ष्मणे बेड़िया रहे जत कपिगण ❋ कोपेते रावण करे वाण-वरिषण
भंग दिया पलाय जतेक कपिवीर ❋ प्रवोध-वचने राम करिलेन स्थिर
लक्ष्मणे जिनिलि वलि ना भाविस मने ❋ मारिया पाड़िव बेटा, आजिकार रणे
जार लागि बन्धिलाम अलंघ्य सागरे ❋ जार लागि एत दुःख पेयेछि अन्तरे
जार लागि दुःखे दग्ध-हृदय तोमरा ❋ मारिया पाड़िब आजि परनारी-चोरा
पाइलाम जत दुःख सीतार हरणे ❋ मारिया घुचाब दुःख आजिकार रणे
पर्व्वत-उपरे वसि देख सवे सुखे ❋ मारिब रावणे आजि, कार वापे राखे
रघुनाथ-वाक्ये करि साहसेते भर ❋ लक्ष्मणेरे रक्षा कर जतेक वानर८०

सुग्रीव शेल खींच रहा है और वानर देख रहे हैं—इतनी खींचातानी पर भी शेल हिलता भर नहीं। शरभ, कुमुद, नल, नील आदि सभी वीर शेल पकड़कर खींचने लगे किन्तु वह नहीं निकला। वानरों में हनुमान की बड़ी प्रशंसा है, वही हनुमान शेल पकड़ कर खींचने लगा। कोई भी साहस कर झटके से शेल नहीं खींचता कि कहीं झटके से लक्ष्मण के प्राण न निकल जाँय। वानरों को खींचने की हिम्मत नहीं पड़ी। जिसके झटके से लक्ष्मण के प्राण चले जाएँगे उसी की बदनामी होगी। धनुष-बाण सुग्रीव के हाथों में देकर प्रभु रघुनाथ ने शेल पकड़ कर खींचा। विश्वम्भर-मूर्त्ति अपना कर उन्होंने शेल को खींचा और उसको निकालकर खंड-खंड कर डाला ॥ ३७६ ॥

जितने सारे वानर थे वे लक्ष्मण को घेर कर खड़े रहे। कुपित होकर रावण ने बाण बरसाना शुरू कर दिया। मैदान छोड़कर जितने कपि-वीर थे, सब भागने को हुए। रामचन्द्र ने ढाढ़स बँधाकर उनका हौसला बढ़ाया। वे रावण से बोले, लक्ष्मण को गिरा लिया इसलिए मन में कुछ मिथ्या धारणा मत बना। मैं आज के युद्ध में ही तुझको मार गिराऊँगा। फिर वानरों से बोले, हे वानरो! जिसके लिए अलंघनीय सागर को बाँधा, जिसके लिए इतना दुख सहते रहे, जिसके कारण क्लेश से तुम लोग भी पीड़ित हो, उस पर-नारी चोर को आज मार गिराऊँगा। सीता-हरण से जितनी पीड़ा मिली, आज के युद्ध में इसको मार कर सारी पीड़ा दूर करूँगा। पर्वत के ऊपर बैठकर तुमलोग आनन्द से देखते रहो, मैं आज रावण का वध करूँगा। किसका बाप इसे रोक सकता है। रघुनाथ के वचनों से साहस पाकर सारे वानर लक्ष्मण की रक्षा करने लगे ॥ ३८० ॥

भ्रातृशोके जुझे राम विक्रमे अपार ※ श्रीराम-रावणे युद्ध बाजिल आबार
बाछिया बाछिया राम प्रहारेन बाण ※ राक्षस-कटक काटि कैला खान-खान
श्रीरामेर बाणे राजा करे धड़फड़ ※ सहिते ना पारि राजा उठि दिल रड़
सारथिरे आज्ञा दिल राजा दशानन ※ लंकाते चालाओ रथ त्वरित-गमन
लंकाते पलाये गेल राजा लंकेश्वर ※ पश्चाते वानर धाय व'ले धर धर
रघुनाथ वाक्य कभु खण्डन ना जाय ※ सेइदिन मारितेन रावण-राजाय
लक्ष्मण पड़िया आछे शक्तिशेल-वाणे ※रण छाड़ि आइलेन बाँचाते लक्ष्मणें ३८१

लक्ष्मणेर शक्तिशेले श्रीरामचन्द्रेर विलाप

रण जिनि रघुनाथ पेये अवसर ※ लक्ष्मणेरे कोले करि कान्देन विस्तर
कि कुक्षणे छाड़िलाम अयोध्यार-नगरी ※ मैल पिता दशरथ राज्य-अधिकारी
जनक-नन्दिनी सीता प्राणेर सुन्दरी ※ दिन-दुइ-प्रहरे रावण कैल चुरि
हारानु प्राणेर भाइ अनुज लक्ष्मण ※ कि करिबे राज्यभोगे, पुनः जाइ वन
लक्ष्मण सुमित्रा-मार प्राणेर नन्दन ※ कि वलिया निवारिब ताँहार क्रन्दन
एनेछि सुमित्रा-मार अञ्चलेर निधि ※ आसिया सागर-पारे काल हैल विधि

भाई के शोक के कारण राम अपार पराक्रम से लड़ने लगे। फिर राम-रावण में युद्ध छिड़ गया। राम चुन-चुन कर वाण वरसाने लगे और राक्षस सेना को काट कर खंड-खंड करने लगे। श्रीराम के बाणों से राजा विचलित हो उठा, सह न सकने से वह भाग खड़ा हुआ। राजा दशानन ने सारथी को आज्ञा दी—झटपट तेज रफ्तार से रथ को लंका की ओर भगाओ।

राजा लंकेश्वर लंका को भाग गया। पीछे से सारे वानर पकड़ो-पकड़ो कह कर दौड़ने लगे। रघुनाथ का वाक्य कभी झूठा नहीं जाता। उसी दिन वे राजा रावण को मार डालते। लक्ष्मण शक्तिशेल से घायल पड़े हैं, युद्ध छोड़कर वे लक्ष्मण को बचाने के लिए चले आये ॥ ३८१ ॥

लक्ष्मण के शक्तिशेल लगने से राम का विलाप

युद्ध में विजय प्राप्त करने के उपरान्त अवकाश पाकर रामचन्द्र लक्ष्मण को गोद में लेकर बहुत रोने लगे। हाय! कैसे बुरे क्षणों में मैंने अयोध्या-नगरी छोड़ी कि राज्य के अधिकारी पिता दशरथ मर गये। प्राणप्यारी सुन्दरी जनकनन्दिनी सीता को दिन-दुपहरिया में रावण चुरा कर ले गया। प्राणों से अधिक अनुज लक्ष्मण को खो दिया। राज्य भोग कर क्या होगा, फिर वन की ओर चल दें। लक्ष्मण माता सुमित्रा को प्राणों से भी प्यारा है, मैं उनके रुदन को क्या कहकर रोक सकूँगा। माँ सुमित्रा के अंचलों की

मोर दुःखे लक्ष्मण ये दुःखी निरन्तर ※ केन रे निष्ठुर हलि, ना देह उत्तर
सबाइ सुधावे वार्त्ता आमि गेले देशे ※ कहिव तोमार मृत्यु केमन साहसे
आमार लागिया भाइ, कर प्राणरक्षा ※ तोमा ल'ये विदेशे मागिया खाव भिक्षा
राज्यधने कार्य नाइ, नाहि चाइ सीते ※ सागरे त्यजिब प्राण, तोमार शोकेते
उदयास्त यतदूर पृथिवी-सन्चार ※ तोमार मरणे ख्याति रहिल आमार
उठ रे लक्ष्मण भाइ, रक्ते डुबे पाश ※ केन वा आमार संगे एलि बनबास
सीतार लागिया तुमि हाराइले प्राण ※ तुमि जे लक्ष्मण, मम प्राणेर समान
सुबर्णेर बाणिज्ये माणिक्ये दिनु डालि ※ तोमा बधि रघुकुले राखिलाम कालि
केन वा रावण-संगे करिलाम रण ※ आमार प्राणेर निधि निल कोन जन
कार्त्तवीर्यार्ज्जुन-राजा सहस्रबाहु-धर ※ ताहा हैते लक्ष्मण जे गुणेर सागर
एमन लक्ष्मणे मोर मारिल राक्षसे ※ आर ना जाइब आमि अजोध्यार देशे
पितृ-आज्ञा हैल मोरे दिते छत्रदण्ड ※ कैकेयी सताइ ताहे हइल पाषण्ड
पितृसत्य पालिते आइनु वनबास ※ बिधि बादी हैल, ताहे एइ सर्व्वनाश

निधि लेकर आया हूँ। सागर पार कर विधि मेरे विपरीत हो गया। मेरे दुख से लक्ष्मण सदा दुखी होता रहा, आज वह क्यों इतना निर्दय हो गया कि मुझको कुछ उत्तर नहीं दे रहा है। देश में लौटने पर सभी लोग मुझसे कुशल-क्षेम पूछने आएँगे, तब मैं किस मुँह से तुम्हारी मृत्यु का समाचार दे सकूँगा। हे भाई, मेरे कारण तुम जी उठो, मैं तुमको लेकर परदेस चला जाऊँगा और भीख माँगकर खाऊँगा। मुझको राज्य-धन की कोई आवश्यकता नहीं और न मुझको सीता ही चाहिए। मैं तुम्हारे शोक के सागर में डूब कर अपने प्राण दे दूँगा। उदयाचल से अस्ताचल तक, जहाँ तक पृथ्वी का विस्तार है वहाँ तक मेरा अपयश तुम्हारी मृत्यु के कारण फैलेगा। अरे भाई लक्ष्मण तुम उठो, खून से तुम्हारा शरीर भीगा जा रहा है, क्यों मेरे साथ तुम वनवास चले आए। सीता के कारण ही तुमने प्राण गँवाये। हे लक्ष्मण, तुम मेरे प्राणों के समान हो। सोने का व्यापार करने आकर मैंने लाल गँवा दिये, तुम्हारे वध से मैंने रघुवंश में कलंक की कालिख पोत दी। रावण के साथ युद्ध भी क्यों किया। मेरे प्राणों की निधि को किसने हर लिया। राजा कार्त्तवीर्यार्जुन जो कि सहस्रबाहु वाले हैं उनसे भी अधिक लक्ष्मण गुणों का सागर है। मेरे ऐसे लक्ष्मण को राक्षसों ने मार डाला। अब मैं अयोध्या लौट कर नहीं जाऊँगा। पिता की आज्ञा मिली कि मुझको राज-छत्र और राज-दंड अर्पित किया जाय, सौतेली माँ कैकेयी इसमें निर्दय बन गई। पिता का सत्य पालन करने मैं वनवास चला आया, भाग्य मेरे विपरीत हो गया, तभी ऐसा सर्वनाश हुआ। अन्तरिक्ष से सारे देवता पुकार-पुकार कर

अन्तरीक्षे डाकि वले जत देवगण ※ ना कान्द, ना कान्द राम, पाइवे लक्ष्मण
भाइ भाइ बलि राम छाड़ेन नि:श्वास ※ श्रीरामेर क्रन्दन रचिल कृत्तिवास ३८२

लक्ष्मणेर जीवन-रक्षार्थ हनूमानेर गन्धमादन पर्व्वते औषध आनिते गमन

श्रीराम सुषेणे कन जोड़हात करि ※ लक्ष्मणे बाँचाओ आगे शोक परिहरि
आमार लक्ष्मण-बिना आर नाहि गति ※ जीयाओ लक्ष्मणे यदि, तबे अव्याहति
सुषेण वलेन, प्रभु, ना हओ कातर ※ वाँचिवेन अवश्य लक्ष्मण धनुर्द्धर
हस्ते-पदे आछे रक्त, प्रसन्न वदन ※ नासिकाय वहे श्वास, प्रफुल्ल लोचन
हेनजन नाहि मरे सवाकार ज्ञाने ※ आनिवारे औषध पाठाओ हनूमाने
श्रीराम वलेन, शोके हिया मम शोषे ※ आपनि पाठाह तारे औषध-उद्देशे ८३
सुषेण वलेन, शुन पवन-नन्दन ※ औषध आनिते जाह से गन्धमादन
गिरि गन्धमादन से सर्व्वलोके जानि ※ ताहाते औषध आछे विशल्यकरणी
छय-शृंग धरे सेइ अद्भुत-निर्म्माण ※ प्रथम संगेते तार महेशेर स्थान
आर शृंगे उदय करये शशधर ※ आर शृंगे तिनकोटि गन्धर्व्वेर घर
आर शृंगे वृक्ष आछे शाल ओ पियाल ※ आर शृंगे सिंह-व्याघ्र चरे पाले-पाल

कहने लगे, हे राम, मत रोओ, मत रोओ, तुमको लक्ष्मण फिर से मिल जायगा। भाई-भाई गुहारते हुए राम उसाँस लेने लगे। कृत्तिवास ने श्रीरामचन्द्र के क्रन्दन का वर्णन किया ॥ ३८२ ॥

लक्ष्मण की प्राण-रक्षा-हेतु हनुमान का गन्धमादन पर्वत पर औषध लेने जाना

श्रीराम ने हाथ जोड़कर सुषेण से कहा, शोक त्याग कर पहले लक्ष्मण को बचाओ। लक्ष्मण के बिना मेरी कोई गति नहीं। यदि लक्ष्मण को बचा लिया तभी मेरा बचाव है। सुषेण ने कहा, प्रभु आप कातर न होवें, धनुर्धारी लक्ष्मण अवश्य बच जाएँगे। हाथ-पैरों में ही खून है और चेहरा भी ताजा है, नाकों से साँस चल रही है, आँखें भी मलिन नहीं हैं। सभी लोगों को विदित है कि ऐसा व्यक्ति मरता नहीं। हनुमान को औषध लाने भेज दो। श्रीराम ने कहा, शोक से मेरा हृदय बिल्कुल सूख गया है, स्वयं ही उसको औषध लाने के लिए भेज दो ॥ ३८३ ॥

सुषेण ने कहा, हे पवननन्दन सुनो। औषध लाने के लिए गन्धमादन पर्वत पर चले जाओ। गन्धमादन पर्वत को सभी लोग जानते हैं, उसमें विशल्यकरणी नामक औषध है। यह पर्वत अद्भुत ढंग से बना हुआ है, उसमें छह चोटियाँ हैं। उसकी पहली चोटी पर महेश का निवास है। दूसरी चोटी पर चन्द्रमा का उदय होता है। तीसरी चोटी पर तीनकोटि गन्धर्वों का निवास है। चौथी चोटी पर साखू और चीड़ के वृक्ष हैं। पाँचवीं चोटी पर सिंह और बाघ घूमते रहते हैं। छठी चोटी पर बहुत ही वेगवती एक

आर शृंगे आछे तार खरतरा नदी ※ नदीर दु'कूले आछे विस्तर औषधि
नील वर्ण फल-फूल, पिंगवर्ण पाता ※ रक्तवर्ण डाँटा तार, स्वर्णवर्ण लता
आनह औषध हेन बिशल्यकरणी ※ रात्रिमध्ये आनह जावत् आछे प्राणी
रात्रिते औषध आन, वाँचाब सहजे ※ रजनी-प्रभाते प्राण जाबे सूर्यतेजे
बिलम्ब ना कर बीर, जाह एइक्षण ※ तोमार प्रसादे जीबे ठाकुर लक्ष्मण
आछये गन्धर्व्व सब मायार निधान ※ समयेते हनूमान, ह'यो सावधान
त्रिशकोटि गन्धर्व्व जे हाहा-हूहू आछे ※ बाद-बिसंबाद तार संगे कर पाछे८४
श्रीराम बलेन, पथ आठार-वत्सर ※ केमने आसिबे फिरे रात्रिर भितर
एतदूर पथ जाबे, आसिबेक राति ※ लक्ष्मणेर एबार ना देखि अब्याहति
केन वा सुषेण-वैद्य आमारे प्रबोधे ※लक्ष्मण मरिले आजि कि हबे औषधे८५
हासिया बलेन तबे पवन-नन्दन ※ ए रात्रे औषध आनि जीयाब लक्ष्मण
मने किछु रघुनाथ, ना कर विस्मय ※ औषध आनिया दिब रात्रे महाशय
श्रीराम-सुग्रीव-काछे मागिया मेलानि ※ औषध आनिते बीर करिल उठानि
उभलेज करिया सारिल दुइकान ※ एकलम्फे आकाशे उठिल हनूमान्
महाशब्दे चलिल शून्येते करि भर ※ लाँगूलेर टाने उड़े बृक्ष ओ पाथर

नदी है। इस नदी के दोनों तटों पर पर्याप्त परिमाण में यह औषधि है। नीले वर्ण के उसके फल-फूल होते हैं और पिंगल वर्ण की पत्तियाँ। लाल रंग का डंठल होता है और सोने के रंग की लता। ऐसी विशल्यकरणी औषध लक्ष्मण के प्राण रहते तुम लेकर आओ। रातों रात औषध ले आओ तो आसानी से जिला लूँगा। रात के बीतने पर सूर्य के तेज से प्राण चले जाएँगे। हे वीर, अब देर न करो, इसी क्षण चले जाओ। तुम्हारे प्रसाद से देव लक्ष्मण जी जायगा। वहाँ मायाधारी बहुत सारे गन्धर्व हैं, हे हनुमान समय देखकर सावधान रहना। तीस करोड़ गन्धर्वों में जो हाहा-हूहू हैं उनसे कहीं झगड़ा-फसाद न छेड़ देना ॥ ३८४ ॥

श्रीराम ने कहा, रास्ता तो अट्ठारह वर्ष का है, इतना रास्ता रात में जाकर रात ही में कैसे लौट आएगा। अब लक्ष्मण के बचने का कोई रास्ता नहीं। सुषेण वैद्य क्यों नाहक मुझको ढाढ़स देता है। लक्ष्मण आज मर गया तो दवा से क्या होगा ॥ ३८५ ॥

तब हँस कर पवननन्दन ने कहा, इसी रात को दवा लाकर मैं लक्ष्मण को जिलाऊँगा। हे रघुनाथ, तुम कुछ भी सोच और आश्चर्य मत करो, मैं रात भर में ही दवा लाकर दे दूँगा। श्रीराम और सुग्रीव से विदा माँग कर दवा लाने के लिए वह वीर उठ खड़ा हुआ। पूँछ को ऊपर उठाकर दोनों कानों को दबा कर हनुमान एक ही उछाल में आकाश पर तड़क गये। शून्य में महाशब्द करते हुए वह चले। उनकी पूँछ की चपेट से पेड़ और पत्थर

दश-जोजन हइल वीर आड़े परिसर ※ बिसजोजन दीर्घेते हइल कलेवर
लेज कैल दीर्घाकार जोजन पञ्चाश ※ उठिवा-मात्रेते लेज ठेकिल आकाश
महाशब्द करि जाय, शुनिते गभीर ※ देखिया मनेते प्रीति पान रघुवीर ३८६

हनुमान-कर्त्तृक गन्धकाली-अप्सरार उद्धार ओ कालनेमि-वध

दुर्ज्जय-शरीर वीर चले अन्तरीक्षे ※ लंकार भितरे थाकि दशानन देखे
रावण विस्मित ह'ये भाविल मनेते ※ घरपोड़ा बेटा कोथा जाय एतरेते
दशानन बुझिया करिल अनुमान ※ औषध आनिते जाय वीर हनूमान
विशल्य-करणी आछे गन्धमादनेते ※ कोनमते नाहि दिब लक्ष्मणे बाँचाते ३८७
ऐतेक भाविया तवे राजा दशानन ※ कालनेमि-निशाचरे डाके ततक्षण
रावण बले, शुन हे मातुल कालनेमि ※ लंकाते आमार बड़ हितकारी तुमि
चिरदिन करि आमि भरसा तोमार ※ आजि मामा, तुमि एक कर उपकार
आजि रणे लक्ष्मण प'ड़ेछे शक्तिशेले ※ मरिबे तपस्वी बेटा रात्रि पोहाइले
विशल्य-करणी आछे गन्धमादनेते ※ घरपोड़ा गेल सेइ औषध आनिते
गन्धमादनेते गिया करह उपाय ※ जयेते बानर बेटा औषध ना पाय

उड़ने लगे। चौड़ाई में वह वीर दस योजन का और लम्बाई में उसका शरीर बीस योजन का हो गया। उसने पूँछ पचास योजन लम्बी कर दी। उठते ही पूँछ आकाश को छूने लगी। महाशब्द करता हुआ वह उड़ चला और गंभीर शब्द सुन पड़ने लगा। यह देख कर रघुवीर का मन प्रसन्न हो गया ॥ ३८६ ॥

हनुमान द्वारा गन्धकाली अप्सरा का उद्धार और कालनेमि-वध

अजेय शरीर धारी वह वीर हनुमान अन्तरिक्ष में चला। लंका के भीतर रहकर दशानन ने देखा। रावण ने विस्मित होकर सोचा कि इतनी रात गये यह घर जलाने वाला अभागा कहाँ जा रहा है। दशानन ने अनुमान लगाया कि वीर हनुमान दवा लाने जा रहा है। गन्धमादन में विशल्य-करणी है। मैं किसी प्रकार से भी लक्ष्मण को जी उठने नहीं दूँगा ॥ ३८७ ॥

इतना सोचकर राजा दशानन ने निशाचर कालनेमि को बुलवाया। रावण ने कहा, मामा कालनेमि सुनो, लंका में तुम मेरे बड़े शुभचिन्तक रहे। तुम पर मैं सदा से बड़ा भरोसा करता रहा हूँ। आज मामा तुम मेरी एक भलाई करो। आज युद्ध में लक्ष्मण शक्तिशेल से घायल होकर गिरा है। रात समाप्त होते ही वह अभागा तपस्वी मर जायगा। घर जलाने वाला (हनुमान) गन्धमादन पर्वत पर विशल्यकरणी औषधी लाने के लिए गया है, इसलिए तुम गन्धमादन पर जाकर ऐसा कोई उपाय करो कि अभागे वानर

बुद्धे बृहस्पति तुमि, वृद्ध निशाचर ※ राक्षसेर मध्ये तुमि मायार सागर
मायार प्रवन्धे एस हनूमाने मेरे ※ लंकार अर्द्धेक राज्य दिलाम तोमारे८८
कालनेमि बले, मने करि बड़ भय ※ दुष्ट बड़ से बानरा, कि जाने कि हय
मायारूपे जाइ, जदि चिने हनूमान ※ एकइ आछाड़े मोर बधिबे पराण
वानर-प्रधान बेटा, बुद्धे बड़ शठ ※ केमने जाइते बल ताहार निकट
दशानन बले, एत भय केन तारे ※ जुक्ति करि जाह, जाहे चिनिते ना पारे
कालनेमि बले, वापु, जत बल मिछे ※कारो जुक्ति ना खाटिबे घरपोड़ार काछे८९
रावण बले, कालनेमि, ना हओ चिन्तित ※ हेन जुक्ति आछे, बेटा मरिबे निश्चित
गन्धमादनेर सब सन्धि आमि जानि ※ गन्धकाली-नामे एक आछे कुम्भीरिणी
सरोवरे प'ड़े थाके गन्धमादनेते ※ प्रकाण्ड शरीर तार, मुख विपरीते
सुरासुर शंका करे देखि कुम्भीरिणी ※ सेइ डरे केह नाहि छाँय तार पानि
केह नाहि जाय सरोवरेर निकटे ※ लक्ष-लक्ष प्राणिबध हैल तार पेटे
सहजे बानरजाति वीर हनूमान ※ गन्धमादनेर एत ना जाने सन्धान
तार आगे जाह तुमि तपस्वीर वेशे ※ आदर गौरव करि तुषिबे हरिषे

को औषधि न मिल सके। तुम बुद्धि में बृहस्पति के समान हो और राक्षसों में वृद्ध हो। तुम राक्षसों में माया के सागर हो। माया के प्रयोग से हनुमान को मार कर आओ। लंका का आधा राज्य मैं तुमको दिये देता हूँ ॥ ३८८ ॥

कालनेमि ने कहा, मुझे बड़ा डर लगता है। वह बानर बड़ा ही दुष्ट है, जाने क्या होगा। यदि मायारूप धर कर जाता हूँ और हनुमान पहचान ले तो एक ही पछाड़ में मेरे प्राण ले लेगा। वह बानरों में प्रधान है और बुद्धि से बड़ा शठ है, तुम कैसे मुझको उसके पास जाने को कह रहे हो। दशानन ने कहा, उससे इतना डरते भी क्यों हो। ऐसी व्यवस्था करके जाओ कि तुमको पहचान न सके। कालनेमि ने कहा, बेटा जो कुछ भी कहो सब बेकार है, उस घर जलाने वाले (हनुमान) के सामने सारी व्यवस्था धरी रह जायगी ॥ ३८९ ॥

रावण ने कहा, कालनेमि चिन्ता मत करो। ऐसी तरकीब है कि वह अभागा निश्चित रूप से मरेगा। गन्धमादन के सारे भेद मुझको मालूम हैं। वहाँ गन्धकाली नाम की एक मादा-मगर है। वह गन्धमादन के एक सरोवर में रहती है। उसका शरीर विशाल है और मुख विपरीत दिशा में है। उस मादा-मगर को देखकर सुर-असुर सभी डरते हैं। उसके डर से कोई उस सरोवर के निकट नहीं जाता और न उसका पानी छूता है। लाख-लाख प्राणियों की मृत्यु उसके पेट में हुई है। वीर हनुमान है तो बानर जाति का ही, उसको गन्धमादन का यह रहस्य मालूम नहीं है। उससे पूर्व तुम वहाँ

मायाते आश्रय करि रेखो फूल-फल ❀ कलसी भरिया रेखो सुवासित जल
नानामते हनूमाने करिबे आदर ❀ स्नानहेतु पाठाइबे सेइ सरोवर
अल्पबुद्धि हनूमान, पशुमध्ये गणि ❀ सरोवरे गेले धरि खावे कुम्भीरिणी
कुम्भीरिणी धरि खावे पवन-नन्दने ❀ हनू मैले औषध आनिबे कोन जने
राम मरिबेक तवे लक्ष्मणेर शोके ❀ पलावे सुग्रीव वेटा पड़िया विपाके
मायाते वधिया तारे एस मम आगे ❀ लंकापुरी ल'व दोंहे अर्द्ध-अर्द्ध-भागे९०
कालनेमि वले, ए कि वलिस् रावण ❀ घरपोड़ार काछे गेले हाराब जीवन
पूर्व्वे घरपोड़ा तोरे मारिल चापड़ ❀ रथ हैते पड़िया करिलि धरफड़
आमि ह'ले सेदिन जेताय जमघर ❀ भाग्ये बेंचे एसे छिलि लंकार भितर
हनूमाल-काछे कारो नाहिक निस्तार ❀ देखिले तखनि मोरे करिबे संहार
पाठाओ हाराते प्राण हनूमान-आगे ❀ आमि मैले लंका केवा लबे अर्द्धभागे९१
एत यदि कालनेमि रावणेरे वले ❀ शुनिया रावण-राजा अग्निहेन ज्वले
कालनेमि वले, क्रोध संवर रावण ❀ तुमि मार, से मारुक, अवश्य मरण
कालनेमि निशाचर घोर-दरशन ❀ अष्टबाहु, चारिमुण्ड, अष्ट जे लोचन

तपस्वी का वेश धरकर पहुँच जाओ। काफी आदर-सत्कार से तुम उसको प्रसन्न करना। माया से आश्रम का निर्माण कर उसमें फल-फूल का प्रबन्ध कर डालना। घड़े में सुगन्धित जल भर कर रखना। हर तरह से हनुमान की आवभगत करना और स्नान करने के लिए उस सरोवर में भेज देना। हनुमान की मैं पशुओं में गिनती करता हूँ, अस्तु है तो वह अल्पबुद्धि ही। सरोवर जाते ही मादा-मगर उसको पकड़ कर खा जायगी। जब मादा-मगर पवननन्दन को पकड़ कर खा जायगी तो हनुमान के मर जाने पर दवा कौन लाएगा। लक्ष्मण के शोक से राम प्राण दे देगा और सुग्रीव विपत्ति में पड़कर भाग खड़ा होगा। उसको माया के द्वारा वध कर मेरे सम्मुख आ जाओ, फिर हम लंकापुरी का आधा-आधा बँटवारा कर लेंगे ॥ ३९० ॥

कालनेमि ने कहा, अरे रावण, यह तू क्या कहता है; घरजलौवा के पास जाने पर मुझको प्राणों से हाथ धोना पड़ेगा। पहले एकबार घरजलौवा ने तुझे एक झापड़ मारा, तब तू रथ से गिरकर तड़फड़ाने लगा था। मैं होता तो उसी दिन यमघर चला गया होता। तेरा ही भाग्य था कि तू प्राण लेकर लंका के भीतर आ गया था। हनुमान से किसी का बचाव नहीं, मुझको देखते ही वह मेरा वध कर डालेगा। मुझको हनुमान के पास प्राण गँवाने भेज रहे हो, मेरे मरने पर लंका का आधा हिस्सा कौन लेगा ॥ ३९१ ॥

कालनेमि ने जब रावण से यह कहा तो राजा रावण क्रोध से आग की तरह भभक उठा। कालनेमि ने कहा, रावण अपना क्रोध संवरण करो। तुम मारो चाहे वह मारे, निशाचर कालनेमि के लिए भयंकर मृत्यु लिखी है।

चलिल से कालनेमि रावण-आदेशे ※ गन्धमादनेते आसे तपस्वीर वेशे
पवन-गमने जाय वीर हनूमान ※ कालनेमि उपनीत तार आगुयान
मायास्थान सृजिल मधुर फूल-फल ※ कलसी भरिया राखे सुवासित जल
जटाभार शिरेते, वाकल परिधान ※ हाते धरि जपमाला करितेछे ध्यान९२
हेनकाले उपनीत पवन-नन्दन ※ तपस्वी देखिया करे चरण-वन्दन
गैरिक-वसन परा, दीर्घ गोंप-दाड़ि ※ हनूमाने देखिया दिलेन जल-पिंड़ि
एसेछ अतिथि, आजि बड़इ मंगल ※ स्नान करि एस, किछु खाओ फूल-फल
हनूमान बले, गोसांइ, ना जान कारण ※ कोन सुखे खाब आमि, नहि लय मन
दशरथ-नामे राजा जन्म सूर्यवंशे ※ सत्यहेतु दुइ पुत्रे दिला बनबासे
ज्येष्ठपुत्र रामचन्द्र, अनुज लक्ष्मण ※ पालिते पितार सत्य एसेछेन बन
संगेते आसिला पत्नी जानकी सुन्दरी ※ शून्यघर पेये रावण सीता कैल चुरि
बानर-सहाये राम बान्धिला सागर ※ कटक-समेत गेला लंकार भितर
सीता लागि श्रीराम-रावणे वाजे रण ※ रावणेर शेले प'ड़े आछेन लक्ष्मण
ठाकुर लक्ष्मण पड़े रावणेर शेले ※ प्राणदान पावेन औषध ल'ये गेले
फूल-फल शिरे राखि, क्षमह आपनि ※ औषध चिनाये देह विशल्य-करणी

ऐसा कहकर भीषण रूप वाला कालनेमि जिसके आठ हाथ, चार मुंड और आठ आँखें हैं, रावण के आदेश से चल पड़ा। तपस्वी के वेश में वह गन्धमादन पर पहुँचा। वीर हनुमान पवन की गति से गया, किन्तु कालनेमि उससे भी पूर्व पहुँच गया। उसने मधुर फल-फूलों से भरे मायामय स्थान का निर्माण किया। सुगन्धित जल से भरे घड़े रख दिये। सिर पर जटाएँ और बदन पर वल्कल धारण कर हाथों में जपमाला लेकर वह ध्यान का ढोंग रचाने लगा॥ ३९२ ॥

ऐसे ही समय वहाँ पवननन्दन जा पहुँचा। तपस्वी देखकर उसने उसके चरणों की वन्दना की। गेरुआ कपड़े पहने लम्बी मूँछ-दाढ़ी वाले उस कालनेमि ने हनुमान को देखकर जल और पीढ़ा दिया और कहा, आज तुम अतिथि आए हो यह बड़ा ही मंगलसूचक है। जाओ स्नान करके आओ, कुछ फल-मूल खाओ। हनुमान ने कहा, हे प्रभु तुमको मालूम नहीं। किस सुख से मैं खाऊँ, मेरा मन नहीं करता। सूर्यवंश में जन्म लेकर दशरथ नामक राजा ने सत्यपालन के हेतु अपने दोनों पुत्रों को वनवास भेज दिया है। बड़ा बेटा रामचन्द्र और उसका छोटा भाई लक्ष्मण पिता का सत्य पालन करने वन चले आए हैं। उनके साथ राम की सुन्दरी पत्नी जानकी भी आई। सूनी कुटी पाकर रावण ने उसको चुरा लिया। राम ने वानरों की सहायता से समुद्र को बाँधा और सेना सहित लंका में प्रवेश किया। सीता के कारण राम-रावण में युद्ध छिड़ गया। रावण के शेल से घायल

तपस्वी बलेन, तोर छावालिया मति ※ भोके शोके केमने ए कुलावे आरति
मम स्थाने अतिथि थाकिले उपवासी ※ सब्ब तप नष्ट हय, किसेर तपस्वी
ये वाड़ी अतिथि आसि करे उपवास ※ अतिथिर उपवासे तार सर्व्वनाश
अतिथि देखिया येवा ना करे आश्वास ※ सर्व्बनाश हय तार, नरके निवास
एइ देख सरोवर तपेर प्रसाद ※ उलिया करह स्नान, घुचुक विषाद
पान यदि कर ओर एकाञ्जलि पानि ※ एकवर्ष क्षुधा-तृष्णा किछुइ ना जानि९३
राक्षसेर मायाते पण्डितजन भुले ※ स्नानहेतु हनूमान चलिलेन जले
झाँप दिया हनू जले पड़िल जखनि ※ हनूर से शव्द पेये धाय कुम्भीरिणी
कुम्भीरिषी-शव्द पेये पलाय यत माछ ※ योजन शरीर तार जिनि तालगाछ
हस्त-पद-नख जेन चोख-चोख छुरि ※ शमनेर दण्ड येन दन्त सारि-सारि
जलमध्ये कुम्भीरिणी हनू नाहि देखे ※ हात-पा पसारि आसि धरे हाते-नखे
कि कि बलि हनूमान धरिलेन तारे ※ एकलाफे उठे बीर पाड़ेर उपरे
कुम्भीरिणी तुलिलेन पवन-नन्दन ※ शरीर ताहार उच्च एकइ योजन

होकर लक्ष्मण पड़ा है, दवा ले जाने से उनको प्राण मिल जायगा। यह फल-मूल अपने पास रखो; मुझको क्षमा कर दो और मुझको विशल्य-करणी औषधि पहचनवा दो। तपस्वी ने कहा, तेरी भी बुद्धि बिल्कुल बच्चों जैसी है। भूखा रहकर और शोक में तू कैसे अपना मनोरथ पूर्ण कर सकेगा। मेरे स्थान पर यदि अतिथि उपवासी रह जाय तो मेरा सारा तप ही व्यर्थ हो जाता है। वह भी भला कैसा तपस्वी है; जिसके घर में अतिथि आकर उपवास करता है उसके उपवास के कारण उस घर का सर्वनाश हो जाता है। अतिथि को देखकर जो उसकी आवभगत नहीं करता उसका सर्वनाश हो जाता है और वह नरक में वास करने लगता है। यह देखो तप के प्रसाद से बना यह सरोवर है। डुबकी लगाकर इसमें नहा लो, सारा दुख दूर हो जायगा। यदि उसका अँजुरी भर पानी पी लो तो एकवर्ष तक भूख-प्यास नहीं रह जायगी॥ ३९३ ॥

राक्षस की माया में पड़कर पंडित भी भुलावे में आ जाते हैं। हनुमान भी नहाने के लिए जल की ओर चल पड़े। हनुमान उछल कर जल में कूद पड़े। हनुमान की आवाज़ सुनकर वह मादा-मगर भी लपकी। मगर की आहट पाकर सारी मछलियाँ भागने लगीं। ताड़ का पेड़ सा उसका शरीर योजन भर का था। उसके हाथ-पैर और नाख़ून मानों पैने-पैने छूरे थे और दाँतों की पंक्तियाँ मानों यमराज के दंड की कतार के समान थीं। वह मादा-मगर पानी में थी, हनुमान उसको नहीं देख सका। उसने आकर पंजों से हनुमान को पकड़ा। क्या है ? क्या है ? कहकर हनुमान ने उसको पकड़ लिया और एक ही छलाँग में वह कगार पर आ खड़ा हुआ। पवन-नन्दन

फेलिलेन कुम्भीरिणी पर्व्वत-प्रमाण ※ नखे चिरि हनूमान करे खान-खान ३९४
देवकन्या कुम्भीरिणी उठिल आकाशे ※ आकाशे उठिया हनूमानेरे सम्भाषे
देवकन्या छिनु आमि, नामे गन्धकाली ※ देवतार बाड़ी-बाड़ी करि नृत्य-केलि
कुबेर-निवासे जाइ नृत्य गीत-रंगे ※ ठेकिल आमार अंग दक्ष-मुनि-अंगे
पथे मुनि तप करे, तार नाम दक्ष ※ कोपे मुनि शाप दिल बड़इ अशक्य
ना जाय खण्डन, एक शाप दिल मुनि ※ थाक गन्दमादनेते ह'ये कुम्भीरिणी
लक्ष-लक्ष प्राणी मारि बाड़िवेक पाप ※ हनूमान-हस्ते तोर मुक्त हबे शाप
हइबेन नारायण राम-अवतार ※ ताँर सेवकेर हाते तोमार निस्तार
चिरजीवी ह'ये थाक, साध राम-काज ※ तोमार प्रसादे जाइ देवेर समाज
आर एककथा बलि, शुन हनूमान ※ भण्ड-तपस्वीर हाते ह'यो सावधान
एत बलि आकाशे चलिल गन्धकाली ※ रूपे आलो करे येन चमके बिजली ३९५
हेथा पथ-पाने चाहे तपस्वी सघने ※ हनूर विलम्ब देखि हरषित मने
मने-मने तपस्वी करिछे अनुमान ※ कुम्भीरिणी धरिया खेयेछे हनूमान
अतः पर जाइ आमि रावण-गोचर ※ अर्द्ध-लंका भाग करि लइब सत्वर

ने मादा-मगर को ऊपर उठा लिया, उसका शरीर एक योजन लम्बा था। उसने मादा-मगर को दे पटका और नाख़ून से चीर कर उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले ॥ ३९४ ॥

मादा-मगर जो कि एक देवकन्या थी आकाश में उड़ गई। आकाश में उड़कर उसने हनुमान से कहा, मैं गन्धकाली नामक देवकन्या थी, देवताओं के घरों में नाच-गाना करती फिरती थी। नृत्य-गीत के रंग में मैं कुवेर के भवन में गई, वहाँ दत्त-मुनि के शरीर से मेरा अंग छू गया। दत्त नामक वह मुनि उस समय पथ पर तपस्या कर रहे थे, कोप में आकर उन्होंने मुझको अचूक शाप दिया। मुनि ने शाप दिया कि गन्धमादन में जाकर मादा-मगर बन कर रहो और लाख-लाख प्राणियों को मार कर अपना पाप बढ़ाओ। हनुमान के हाथों ही तू शापमुक्त होगी। नारायण राम का अवतार लेंगे, उन्हीं के सेवक के हाथ तुम्हारा उद्धार होगा। चिरंजीव होकर राम का कार्य साधित करो, तुम्हारी ही कृपा से फिर से देव-समाज में जा रही हूँ; और हनुमान, तुमसे एक बात बताये जाती हूँ, उस ढोंगी तपस्वी से सावधान रहना। इतना कहकर गन्धकाली आकाश में चली गई। वह अपने सौन्दर्य से आकाश-मार्ग को यों प्रकाशित कर गई मानों बिजली हो ॥ ३९५ ॥

इधर तपस्वी बार-बार रास्ते की ओर देख रहा था। हनुमान के लौटने में देर हो रही है यह देखकर वह मन ही मन बड़ा खुश हो रहा था। उसने सोचा मगर ने हनुमान को खा डाला होगा अतः मैं अब रावण के पास चलूँ। आधी लंका का झटपट बँटवारा कर लूँ। उत्तर-दत्तिण रस्सी

दड़ि ध'रे ल'व भाग उत्तर-दक्षिणे ❊ पूर्व्वदिक लब आमि, नाजाव पश्चिमे
पश्चिम-सागरे यदि बाँध भेंगे जाय ❊ पश्चिम रावणे दिव, भाग यत हय
अश्व हस्ती सैन्य रथ भाण्डारेर धन ❊ सकल अर्द्धक बुझे लइव एखन
राणीगण आछे यत स्वर्ग-विद्याधरी ❊ तार अर्द्ध ल'व जेइ भागे मन्दोदरी
मन्दोदरी रूपे जिने स्वर्ग-विद्याधरी ❊ तार सह क्रीड़ा करि दिवाविभावरी९६
स्नान करि गेल हनू तपस्वी-गोचर ❊ हनूमाने देखिया काँपिछे निशाचर
हाते फूल-फल-डालि धीरे-धीरे नाड़े ❊ खाओ-खाओवलि हनूमान-प्रति एड़े
एकदृष्टे हनूमान तपस्वी नेहाले ❊ तपस्वी भाविछे हनू ना जानि कि वले९७
हनूमान वले, तुइ भण्ड ये तपस्वी ❊ स्वरूपे अतिथि हैले अतिथिरे हिंसि
रावणेर कार्य्य साध तपस्वीर वेशे ❊ मोर हाते पड़ि आजि जावि यम-पाशे
तोर फल-फूल बेटा, टेने फेल दूर ❊ मोर ठाँइ आजि तोर माया हवेचूर९८
तपस्वी भाविल, माया हइल विदित ❊ धरि राक्षस-मूर्त्ति अति-विपरीत
अष्टवाहु चारि मुण्ड अष्टटा लोचन ❊ वले, हनूमान तोरे वधिव एखन
प्रथमे गौरव, द्वितीयेते गालागालि ❊ तृतीयेते ठेलाठेलि परे चूलाचुलि

खींच नापकर अपना हिस्सा लूँगा, मैं पूरब का भाग लूँगा, पश्चिम का नहीं। पश्चिम सागर का अगर बन्धा टूट गया तो क्या होगा? इसलिए पश्चिम का भाग रावण को ही दूँगा। घोड़ा, हाथी, सेना, रथ, भंडार का धन, सभी का आधा-आधा समझ कर बँटवारा कर लूँगा। स्वर्ग की विद्याधरियाँ जो कि रानी बनी हुई हैं उनमें भी आधे का हिस्सा मैं लूँगा जिसमें कि मन्दोदरी भी होगी। मन्दोदरी रूप में स्वर्ग की विद्याधरियों को भी नीचा दिखाती है। उसी के साथ रातों-दिन क्रीड़ा किया करूँगा ॥ ३६६ ॥

नहाने के उपरान्त हनुमान तपस्वी के पास पहुँचा। हनुमान को देख कर राक्षस काँपने लगा। हाथ में फल-मूल की टोकरी लेकर, 'खाओ-खाओ' कहकर हनुमान से अनुरोध करने लगा। हनुमान टकटकी लगाये तपस्वी को देखता रहा। तपस्वी सोचने लगा, हनुमान जाने क्या कहने वाला है ॥ ३६७ ॥

हनुमान ने कहा, तू ढोंगी तपस्वी है। अगर तू सचमुच तपस्वी होता तो अपने अतिथि का वध क्यों कराता? तू तपस्वी का वेष अपना कर रावण का कार्य करने आया है। आज मेरे हाथों पड़कर तू यमालय जायगा। अभागे, अपना फल-मूल तू दूर फेंक दे, आज तेरी माया मैं अपने हाथों चूर-चूर करूँगा ॥ ३६८ ॥

तपस्वी ने सोचा, माया तो मेरी प्रकट हो गई। उसने अपनी राक्षस-मूर्त्ति अपना ली। आठ हाथ, चार सिर और आठ आँखों वाली विपरीत मूर्त्ति बना ली। हनुमान ने कहा, अब मैं तेरा वध करूँगा। पहले तो गौरव-बखान, फिर गाली-गलौज, फिर आपस में ठेलमठेल हुई; फिर

दुइजने मल्लयुद्ध, दु,जने सोसर ॐ दुइजने महायुद्ध' पव्वर्त-उपर
क्षणे नीचे हनूमान, क्षणेके उपरे ॐ टलमल करेगिरि दु'जनार भरे
लाफ दिया हनूमान कालनेमि धरे ॐ बुके हाँटु दिया हनू कालनेमि मारे
लेजे जड़ाइया तारे घुराय आकाशे ॐ लंकाते फेलिया दिल रावणेर पाशे
गन्धमादन-लंका-पथ आठार वत्सर ॐ एतदूरे टेने फेले रावण-गोचर
ब'सेछे रावण-राजा पात्रमित्र सने ॐ अन्धकारे कालनेमि पड़े मध्यस्थाने
कि पड़िल वलि सबे चमकिया उठे ॐ नेड़े चेड़े देखि वले, 'कालनेमि' वटे
कालनेमि देखि रावणेर उड़े प्राण ॐसर्व्वमाया कैल चूर्ण वीर हनूमान९९

रावणादेशे अर्द्धरात्रे सूर्य्योदय ओ हनूमान-कर्त्तृक सूर्य्यके कक्षतले धारण

लक्ष्मणे मरिया शेल भाविछे रावण ॐ डाक् दिया आनिल यतेक देवगण
आपनि आइल ब्रह्मा चड़ि राजहंसे ॐ आइलेन विश्वनाथ चड़ि वृद्ध-बृषे
इन्द्र-यम कुवेरादि आइल पवन ॐ चन्द्र-सूर्य्य दु'जने आइल ततक्षण४००
रावण वले, शुन वलि यत देवगण ॐ मयदानवेर शेले पड़ेछे लक्ष्मण
आमार बचन शुनु, वलि हे भास्कर ॐ उदित हओ हे गिया गिरिर उपर

एक दूसरे का झोंटा पकड़े गुँथ गये। दोनों में कुश्ती होने लगी, दोनों ही बराबरी के थे। पर्वत के ऊपर दोनों में महायुद्ध होने लगा। कभी हनुमान नीचे तो कभी ऊपर, दोनों के भार से पर्वत हिलने लगा। फिर उछल कर हनुमान ने कालनेमि को पकड़ लिया और उसके सीने को घुटने के नीचे दबा कर उसे मार डाला। फिर पूँछ में लपेट कर हनुमान उसे आसमान में घुमाने लगे और लंका में रावण के पास फेंक दिया। गन्धमादन से लंका अठारह वर्ष का रास्ता है, इतनी दूर हनुमान ने कालनेमि को रावण के पास फेंका। राजा रावण अपने सभासद आदि के साथ बैठा था कि अंधेरे में, बीच में आकर कालनेमि गिरा। क्या गिरा ? क्या गिरा ? कहकर सभी लोग चौंक पड़े। हिलाडुला कर देखने के बाद बोले 'कालनेमि ही है'। कालनेमि को देखकर रावण के प्राण उड़ गये। हाय! वीर हनुमान ने सारी माया ही चूर-चूर कर दी ॥ ३९९ ॥

रावण के आदेश से आधीरात को सूर्योदय और हनुमान द्वारा सूर्य को काँख में दबा लेना

लक्ष्मण को शेल मारने के बाद रावण सोचने लगा। सारे देवताओं को उसने बुलवाया। स्वयं ब्रह्मा राजहंस पर बैठे आ पहुँचे। बूढ़े साँड़ पर सवार विश्वनाथ भी आये। इन्द्र, यम, कुबेर, पवन आदि आए। चन्द्र और सूर्य भी तब तक आ गये ॥ ४०० ॥

रावण ने कहा, हे देवगण सुनो। मयदानव के बने शेल से घायल होकर

तोमार उदय हैले मरिबे लक्ष्मण ※ लक्ष्मण-मरणे राम त्यजिबे जीवन
तुमि गिया उठ, चन्द्र थाक् एइ ठाँइ ※ तोमार उदये लक्ष्मण बाँचिबेक नाइ ४०१
ए कथा शुनिया तबे बले दिवाकर ※ आमार वचन शुन लंकार ईश्वर
द्वितीय-प्रहर रात्रि हइल गगने ※ एखन उदित बल हइब केमने
रावण बले, हैल रात्रि, कि क्षति तोमार ※ बुझि, मने अमंगल चिन्तह आमार
रावणेर कथा शुनि भास्करेर त्रास ※ भयेते चलिल सूर्य्य हइते प्रकाश
सप्तघोड़ा योगान सूर्य्येर रथ बहे ※ कनक-रचित रथ त्रिभुवन मोहे
नाना-रत्न शोभा करे रथेर उपर ※ उदितहइते जान देव-दिवाकर ४०२
दिवाकर पूर्ब्बदिक प्रकाश करिल ※ ताहा देखि हनूमान् तरास पाइल
नेउटि उदयगिरि करिल गमन ※ दिवाकर-सन्निकटे दिल दरशन
रथ आगुलिया वीर दाण्डाय सत्वर ※ अचल हइल रथ सारथि फाँपर
पूर्ब्बदिक आगुलिल हनूमान-वीरे ※ पश्चिमे चालाय रथ सारथि सत्वरे
घोड़ारे प्रवोध-बाड़ि मारये सघने ※ पश्चिमे चलिल रथ पवन-गमने
कुपिल से हनूमान अति भयंकर ※ लाफ दिया अश्वगणे धरिल सत्वर

लक्ष्मण गिरा है। मेरा कहना सुनो, हे सूर्य जाकर उदय-गिरि पर उदित हो जाओ। तुम्हारे उदय से लक्ष्मण मरेगा और लक्ष्मण के मरते ही राम प्राण त्याग देगा। तुम जाकर उदित हो जाओ, चन्द्र इसी ठौर रहे। तुम्हारे उदय से लक्ष्मण फिर जिन्दा नहीं रह सकेगा ॥ ४०१ ॥

यह बात सुनकर दिवाकर ने कहा, हे लंका के ईश्वर मेरी बात सुनो। इस समय गगन में रात का द्वितीय प्रहर लगा है, इस समय में कैसे उदित हो सकता हूँ। रावण ने कहा, रात है तो तुमको क्या नुकसान है। मेरा ख्याल है तुम मन ही मन मेरा अमंगल सोचा करते हो। रावण का कहना सुनकर भास्कर को भय लगा और डर के मारे सूर्य प्रकट होने चल पड़ा। सूर्य के रथ पर सात घोड़े जोते गये। तीनों लोकों को मुग्ध करने वाला वह रथ कनक से बना था। उस रथ के ऊपर नाना प्रकार के रत्न शोभा पा रहे थे। देव-दिवाकर उदित होने के लिए चल पड़े ॥ ४०२ ॥

पूर्व-दिशा को दिवाकर प्रकाशित करने लगा तो हनुमान के मन में त्रास उपजा। लौटकर वह उदयगिरि जा पहुँचा और दिवाकर के सम्मुख जा खड़ा हो गया। रथ के सम्मुख पहुँचकर वीर हनुमान खड़ा हो गया, रथ अचल हो गया और सारथि हक्का-बक्का। हनुमान ने पूरब की दिशा अगोर ली तो सारथि ने पश्चिम की दिशा में रथ चला दिया। घोड़े को बार-बार चाबुक मारने लगा और रथ पवन-गति से पश्चिम की ओर चल पड़ा। हनुमान इससे भीषण क्रोधित हुआ और छलाँग मार कर उसने घोड़ों को जा पकड़ा। रथ पकड़कर हनुमान उसको घुमाने लगा—हवा में रथ यों घूमने

रथ धरि हनूमान घन देय पाक ✱ वायुभरे घोरे, येन कुमारेर चाक
छाड़ छाड़ वलि सूर्य्य घन-डाक छाड़े ✱ सूर्य्य यदि कोप करे, त्रिभुवन पोड़े ४०३
बुझिया रामेर कार्य्य सूर्य्य कृपामय ✱ सारथिरे जिज्ञासिल केबा एइ हय
सारथि कहिछे तवे सूर्य्येर गोचर ✱ रथ घुराइया राखे एकटा बानर
पर्व्वति-प्रमाण अंग विकृत-आकार ✱ अचल हइच रथ, नाहि चले आर
सूर्य्य वले, रथ, राख गगन-मण्डले ✱ पोड़ाइया वानरे पाड़िव भूमितले
एत शुनि दाण्डाइल पवन-नन्दन ✱ विनय करिया वले मधुर वचन
कोन महाशय तुति, कोन मायाधर ✱ स्वरूप करिया कह आमार गोचर
सूर्य्य कहे, आमि सूर्य्य, छाड़ि देह पथ ✱ उदित हइते जाब उदय-पर्व्वत
यत देवगण रावणेर द्वारेखाटि ✱ पुराण पड़ेन ब्रह्मा आर मुनि कोटि
बड़ युद्ध हइयाछे आजिकार रणे ✱ प'ड़ेछे लक्ष्मण-वीर शक्तिशेल-बाणे
रजनी प्रभात ह'ले मरिवे लक्ष्मण ✱ उदित हइते मोरे पाठाय रावण
रावणेर उपद्रव सहिते ना पारि ✱ उदित हइते जाइ थाकिते शर्व्वरी
आमार उदय हैले मरिबे लक्ष्मण ✱ लक्ष्मणेर शोके राम त्यजिबे जीवन
औषधि आनिते गेछे पवन-कुमारे ✱ लक्ष्मणे मरिब वीर ना आसिते फिरे ४०४
हनूमान बले, देव, कर अवधान ✱ पवनेर पुत्र आमि, नाम हनूमान

लगा मानों कुम्हार की चाक हो। छोड़ो-छोड़ो, कहकर सूर्य पुकारने लगा गया। सूर्य अगर नाराज़ हो गया तो त्रिभुवन जला डालेगा ॥ ४०३ ॥

कृपामय सूर्य ने राम का कार्य मन ही मन समझकर सारथि से पूछा कि यह कौन है। तब सारथि ने सूर्य से कहा, एक वानर रथ को घुमा रहा है। देखने में पर्वत के आकार का और भद्दी सूरत का है। रथ अचल हो गया है और आगे नहीं बढ़ रहा। सूर्य ने कहा, रथ को गगन-मंडल में रखो आज इस वानर को जलाकर पृथ्वी पर फेंकता हूँ। इतना सुनकर पवन-नन्दन खड़ा हो गया और विनय से मीठी-मीठी बातें करने लग गया। हे महाशय तुम कौन हो, कौन मायाधर हो मेरे सम्मुख अपना असली परिचय दो। सूर्य ने कहा, मैं सूर्य हूँ, मेरा रास्ता छोड़ दो, मैं उदय-पर्वत पर उदित होने जा रहा हूँ। हम सारे देवता रावण के द्वार पर नौकरी बजाते हैं। ब्रह्मा के साथ एक करोड़ मुनि वेदपाठ किया करते हैं। आज के युद्ध में बड़ी घनघोर लड़ाई हुई है। लक्ष्मण वीर शक्तिशेल से घायल होकर गिरे हैं। रात समाप्त होते ही लक्ष्मण मर जायगा। रावण ने मुझको उदित होने के लिए भेजा है। रावण का अत्याचार अब सहा नहीं जाता, रात रहते ही उदित होने जा रहा हूँ। मेरे उदय के साथ-साथ लक्ष्मण मर जायगा और लक्ष्मण के शोक से राम प्राण त्याग देगा। पवनकुमार औषध लाने के लिए गया है उसके लौटने से पूर्व लक्ष्मण को मारना है ॥ ४०४ ॥

हनुमान ने कहा, हे देव, मेरा कहना सुनो। मैं पवन का पुत्र हूँ, मेरा

औषधि आनिते आमि आइनु शिखरे ❋ एइ निवेदन करि तोमार गोचरे
प्राणदान लक्ष्मण ना पान यतक्षण ❋ तावत् उदय-गिरि ना कर गमन
सूर्य्य बले, केवा शुने तोमार वचन ❋ ना पारि रावण-आज्ञा करिते लंघन
हनूमान बले, तुमि देवेर प्रधान ❋ सदय हइया राख लक्ष्मणेर प्राण
रावणेर अनुरोधे जावे यदि बले ❋ रथ-सह डुवाइव सागरेर जले४०५
हासिया बलेन सूर्य्य, शुन हनूमान ❋ यत देवगण भावे रामेर कल्याण
साधे कि उदय-गिरि जाइ उदयेते ❋ देवेर निस्तार नाइ रावणेर हाते
कि जानि कि करे रावण, भावि एइ भय ❋ निशिते एलाम भये हइते उदय
रावणेर आज्ञा यदि ना करि पालन ❋ कोपेते विषम शास्ति दिवेक रावण
श्रीरामेर अनुरोधे फिरे यदि जाइ ❋ रावणेर कोपे वल रक्षा किसे पाइ४०६
हनूमान बले, आछे उपाय उहार ❋ निकटे आइस, वलि कर्णेते तोमार
तव नाम भानु, आर हनू मम नाम ❋ नामे नामे मिलियाछे दु'जने समान
खण्डिबे तोमार दोष रावणेर काछे ❋ साधिव रामेर कार्य्य, युक्ति हेन आछे
दुइदिक रक्षा पावे, सुमन्त्रणा वलि ❋ हनू भानु दुइजने करिब मितालि

नाम हनुमान है। औषध लाने के लिए मैं इस पर्वत की चोटी पर आया हूँ। तुमसे मैं यह निवेदन करता हूँ कि जब तक लक्ष्मण को प्राण न मिल जाय तब तक तुम उदय-गिरि पर मत जाओ। सूर्य ने कहा, तुम्हारी बात कौन सुनेगा, मैं रावण की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता। हनुमान ने कहा, तुम देवताओं में प्रधान हो, सदय होकर लक्ष्मण की प्राण-रक्षा करो। अगर तुम यह कहोगे कि रावण के आदेश से तुम जाकर रहोगे ही तो मैं तुमको रथ सहित समुद्र के जल में डुबो दूँगा ॥ ४०५ ॥

सूर्य ने हँसकर कहा, हनुमान सुनो, सारे देवता राम के कल्याण की कामना करते हैं। क्या मैं अपनी इच्छा से उदय-गिरि में उदित होने जा रहा हूँ, रावण के हाथों से देवताओं का निस्तार नहीं। जाने रावण क्या कर बैठे यही डर लगा रहता है, और तभी रात रहते ही उदित होने चला आया। रावण की आज्ञा का अगर पालन न करू तो कुपित होकर रावण बड़ी कड़ी सजा देगा। श्रीराम के अनुरोध पर अगर मैं लौट जाऊँ तो रावण के कोप से मुझको कैसे रक्षा मिलेगी ॥ ४०६ ॥

हनुमान ने कहा, इसका भी उपाय है। मेरे निकट आओ, मैं तुमको कानों में बताता हूँ। तुम्हारा नाम भानु है और मेरा नाम है हनु, हमारे नाम यों मिल गये हैं, हम दोनों ही समान हैं। रावण के सम्मुख तुम्हारे दोष का भी खंडन हो जायगा और राम का कार्य भी साधित होगा; ऐसी तरकीब मेरे पास है। दोनों पक्षों का काम बन जायगा ऐसी मंत्रणा मैं तुमको देता हूँ।

एत शुनि दिवाकर हरषित-मन ❋ हनूर निकटे आसि करे सम्भाषण ४०७
सूर्य्येरे धरिया हनू करे कोलाकुलि ❋ सापटिया सूर्य्यरे पूरिल कक्षतलि
महातेजोमय सूर्य्य, राखिते के पारे ❋ आपनि हइला बन्दी लक्ष्मणेर तरे
हनू-भानु-भंगि देखि देवगण हासे ❋ लंकाकाण्डे गाहिल पण्डित कृत्तिवासे ४०८

हनूमान-कर्त्तृक गन्धर्व्व-निग्रह ओ गन्धमादन पर्व्वत लइया लंका-यात्रा

पुनर्व्वार हनू जाय से गन्धमादन ❋ ओषध खुँजिया तथा घुरे अनुक्षण
पर्व्वते गन्धर्व्वगण आछये हरिषे ❋ नित्य करे नृत्य-गीत नारी ओ पुरुषे
गन्धर्व्वेर नारीगण परम-रुपसी ❋ केह देय करतालि, केह पूरे बाँशी
गीत-वाद्य रंग-रसे आछे आनन्दित ❋ हेनकाले पवन-नन्दन उपस्थित ४०९
हनूमाने देखि सबे चमकित-मन ❋ करजोड़े कहे कथा पवन-नन्दन
के तोमरा गीत-वाद्य कर निशाकाले ❋ निवेदन करि किछु, शुनह सकले
पितृसत्य पालिते श्रीराम आसे बन ❋ संगेते जानकी-देवी अनुज लक्ष्मण
रावण राक्षसराज लंका-अधिकारी ❋ दण्डक-कानने रामेर सीता कैल चुरि

इतना सुनकर दिवाकर हर्षित हुआ और हनु के निकट आकर उसने उससे सम्भाषण किया॥ ४०७॥

सूर्य को अंकवार में लेकर हनुमान उससे मिलने लगा फिर सूर्य को समेटकर अपनी काँख में धर दबाया। सूर्य महातेज से पूर्ण है, कौन उसको रख सकता है? किन्तु लक्ष्मण के कारण वह स्वयं बन्दी बन गया। हनु-भानु का काँड देखकर देवतागण हँसने लगे और लंकाकाण्ड में कृत्तिवास ने इसका गीतों में वर्णन किया॥ ४०८॥

हनुमान द्वारा गन्धर्व-निग्रह और गन्धमादन पर्वत लेकर लंका-यात्रा

दुबारा हनुमान गन्धमादन पर्वत पर गया, वहाँ औषध ढूँढ़ता फिरता रहा। पर्वत पर गन्धर्व बड़े आनन्द से रहते हैं। सदा वे नारी और पुरुष मिलकर नृत्य-गीत में रत रहते हैं। गन्धर्वों की नारियाँ बड़ी सुन्दर होती हैं। कोई तो तालियाँ दे रही हैं तो कोई बाँसुरी बजा रही है। गाना-बजाना रस-कौतुक में वे आनन्दमग्न हैं, ऐसे ही समय पवन-नन्दन हनुमान वहाँ जा पहुँचे॥ ४०९॥

हनुमान को देखकर सभी चौंक पड़े। हाथ-जोड़ कर पवन-नन्दन ने कहा, तुम लोग कौन हो जो रात्रि के समय नाच-गाना कर रहे हो। मैं कुछ निवेदन करता हूँ, तुम लोग सुनो। पिता का सत्य पालन करने श्रीरामचन्द्र वन आए। उनके साथ उनके छोटे भाई लक्ष्मण और देवी जानकी आईं। लंका के अधिकारी राजा रावण ने दंडक-वन में राम की सीता का हरण

रघुनाथ करेछेन सागर-बन्धन ※ ह,तेछे विषम युद्ध श्रीराम-रावण
शक्ति शेले प'ड़ेछेन ठाकुर लक्ष्मण ※ आमि आसि औषधि करिते अन्वेषण
फिरे जाब लंकापुरे थाकिते रजनी ※ औषधि चिनाये देह विशल्य करणी ४१०
कुपिल गन्धर्व्व सब, कि वले बानर ※ काहार नफर बेटा, काहार किंकर
हाहा-हूहू महाराज, एइमात्र जानि ※ कोथाकार राम तोर, कखन ना चिनी
आसिया बानर बेटा कोन कार्य्य फिरे ※ चुलेते धरिया सबे बेड़ा-किल मारे
हस्त तुलि हनू करे देवगणे साक्षी ※ मारिव गन्धर्व्वसब, कार बापे राखि
कोपे हनूमान हैल पर्व्वत-आकार ※ चड़-चापड़ेते वीर करे महामार
लाफे-लाफे मारे सबे आछाड़ि आछाड़ि ※ पड़िया गन्धर्व्वसब जाय गड़ागड़ि ११
हाहा-हूहू राजा आसे चड़ि दिव्यरथे ※ हनूमान मारिते बेड़िल चारिभिते
एक राज्ये दुइ राजा हाहा-हूहू नाम ※ हनूमान-काछे एल करिते संग्राम
लाफ दिया रथे गिया चड़े हनूमान ※ दु'जनार धनुक धरिया दिल टान
दु'जनार धनुक करिल खान-खान ※ कोपे हनूमान हैल शमन-समान
हाँटुर उपरे रखि भाँगे दुइ धनु ※ मालसाट दिया आगे दाण्डाइल हनू

किया। रघुनाथ ने सागर बाँध लिया है और श्रीराम और रावण में घोर संग्राम छिड़ा हुआ है। शक्तिशेल से आहत होकर लक्ष्मणजी गिरे हैं। मैं उनके लिए औषध ढूँढ़ने आया हूँ। रात रहते-रहते मुझको लंकापुरी लौट जाना है—मुझको विशल्यकरणी औषधि पहचनवा दो ॥ ४१० ॥

सारे गन्धर्व कुपित हो गये कि यह वानर क्या वक रहा है। जाने किसका नौकर है या किसका चाकर है। हमलोग केवल हाहा-हूहू महाराज को जानते हैं; तेरा यह राम कहाँ का है, कभी नहीं पहचानते। यह वानर किस काम से आकर यहाँ घूमता-फिरता है क्या जानें। सभी लोग चारों ओर से घेर कर उसको घूँसा-मुक्का मारने लग गये। हाथ उठा कर हनुमान ने देवताओं को साक्षी किया और कहा सारे के सारे गन्धर्वों को मार डालूँगा, देखें कौन वचाता है। क्रोध में आकर हनुमान ने पर्वत सा आकार वना लिया और झाँपड़-मुक्कों से महामार मचा दी। उछल-उछल कर एक-एक को पकड़-पकड़ कर वह पटकने लगे। गन्धर्व जमीन पर लोटने लग गये ॥ ४११ ॥

तव दिव्य रथ पर चढ़कर गन्धर्वों के राजा आए। हनुमान को मारने के लिए उसको चारों ओर से घेर लिया। एक राज्य में दो राजा, जिनका नाम था हाहा-हूहू। वे हनुमान से लड़ने के लिए आए। उछल कर हनुमान रथ पर जा चढ़े। दोनों के धनुष खींच कर उनके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। गुस्से में हनुमान यम के समान बन गये, घुटने पर रखकर उन्होंने दोनों धनुष तोड़ डाले; फिर उछाल मारकर हनुमान सामने खड़े हो गये। जव संग्राम में शूरवीर हनुमान विगड़ खड़े हुए तो मुक्का मारकर उन्होंने गन्धर्वों का सिर

कुपिल जे हनूमान संग्रामेर शूर ✻ कील मारि गन्धर्ब्बेर माथा कैल चूर
हनूमान एकेला, गन्धर्ब्ब बहु देखि ✻ हनूमान-अंगे सबे मारये मुटकि १२
मने भावे-हनूमान रात्रि ब'ये जाय ✻ गन्धर्ब्ब मारिया हबे किबा फलोदय
औषध ना पेये हनू भावे मने-मन ✻ शिखरे शिखरे भ्रमे पवन-नन्दन
भाविया चिन्तिया करि साहसेते भर ✻ डाले-मूले ल'ये जाय पर्ब्बत-शिखर
चौषट्टि-योजन सेइ गिरिवरखान ✻ एकटाने उपाड़िल वीर हनूमान
दुइ हाते धरिया पर्ब्बते दिल नाड़ा ✻ चौषट्टि-योजन उठे पर्ब्बतेर गोड़ा
बहुवृक्ष भाँगिल, छिंड़िल लता-पाता ✻ कोथाकार वृक्षशाखा पड़े गिया कोथा
नाना-जाति सर्प पलाय, शिरे मणि ज्वले ✻ पर्ब्बत लइया उठे गगन-मण्डले
माथाय पर्ब्बत तुले वीर हनूमान ✻ तुलि दिले पारे बुझि आर एक खान १३

हनूमान-कर्त्तृक भरतेर परीक्षा ओ गन्धमादन-पर्ब्बत लाइया लंकाय प्रवेश

पर्ब्बत लइया चले दक्षिण-मुखेते ✻ भरते प्रशंसे राम, पड़िल मनेते
मारिलाम कालनेमि मायार पुत्तलि ✻ कुम्भीरिणी मारि मुक्त कैनु गन्धकाली
तिनकोटि गन्धर्ब्बेर मारिनु सकल ✻ रामेर भाइ भरतेर बुझे जाब बल १४

चूर-चूर कर दिया। हनुमान अकेले हैं और गन्धर्व बहुत सारे हैं। सब लोग मिलकर हनुमान को मुक्का मारने लग गये ॥ ४१२ ॥

मन ही मन हनुमान सोचने लगा कि रात तो बीती जा रही है, गन्धर्वों को मारने से क्या लाभ होगा। औषध न पाकर हनुमान मन ही मन सोच करने लगा और पर्वत की चोटियों पर भटकने लगा। काफी सोचने-विचारने के बाद साहस कर उसने पेड़-पालो सहित वह पर्वत-शिखर उखाड़ लिया। चौंसठ योजन वाले उस गिरिवर को वीर हनुमान ने एक ही झटके में उखाड़ लिया। उन्होंने दोनों हाथों से जब पर्वत को पकड़ कर हिलाया तो चौंसठ योजन का वह पर्वत जड़ से उखड़ गया। बहुत सारे वृक्ष गिर गये, बेलें-लताएँ टूट गईं, कहीं की शाख कहीं जाकर गिरी। विभिन्न जाति के साँप सिर पर माणिक लिये भाग खड़े हुए। पर्वत लेकर वह गगन-मंडल में चढ़ गये। वीर हनुमान ने सिर पर पर्वत उठा लिया, यदि एक पर्वत और लाद दिया जाता तो वे उसे भी ढो सकते थे ॥ ४१३ ॥

हनुमान द्वारा भरत की परीक्षा और गन्धमादन पर्वत लेकर लंका में प्रवेश

पर्वत लेकर हनुमान दक्षिण की दिशा में चले तो उनको याद आ गया कि श्रीरामचन्द्र भरत की बड़ी प्रशंसा किया करते हैं। मैंने माया की मूर्त्ति कालनेमि को मारा, गन्धकाली नामक मादा-मगर को मारकर उसको मुक्त

एतेक भाविया हनूमान हरषित ※ नन्दीग्राम-अभिमुखे चलिल त्वरित
पर्व्वत लइया वीर दक्षिणेते जाय ※ पर्व्वत कान्तार नदी अनेक एड़ाय
ना देखि चन्द्रेर तेज, दिवा ना प्रकाशे ※ दक्षिणेते एड़ाइल पर्व्वत-कैलासे
बामभिते एड़ाइल नगर विस्तर ※ अविलम्बे उपनीत अयोध्या-नगर
राजपाट छाड़ि भरत नन्दीग्रामे वैसे ※ हनूमान चले नन्दीग्रामेर उद्देशे
नन्दीग्रामे वृक्ष-आदि देखिल विस्तर ※ छाड़ाइया प्रवेशिल नगर-भितर १५
सारथि सुमन्त्र आर वशिष्ठ पुरोहित ※ बसियाछे भरत ये पात्रेते वेष्टित
सिंहासन-उपरे पादुका बेड़ा नेते ※ श्वेत-चामर व्यजन ह'तेछे चारिभिते
स्वर्ण-सिंहासन जेन शशधर-ज्योति ※ ताहाते पादुका राखि धरे दण्ड-छाति
रत्नमय आसने पादुका शोभा पाय ※ आपनि भरत श्वेत-चामर ढुलाय
रामेर पादुका यत्ने सिंहासने थुये ※ धरासने र'येछेन भरत बसिये १६
पर्व्वत लइया जाय पवन-कुमार ※ अन्तरीक्षे थाकि देखे यत व्यवहार
पर्व्बत-छायाते देश हैल अन्धकार ※ सभा-सह भरतेर लागे चमत्कार
ना देखि चन्द्रेर तेज अन्धकारमय ※ रामेर पादुका लंघे, नाहि करे भय

किया, तीन करोड़ गन्धर्वों को मार गिराया, अब राम के भाई भरत की शक्ति का भी अनुमान लगाता जाऊँ ॥ ४१४ ॥

इतना सोचकर हनुमान बड़े हर्षित हुए और नन्दिग्राम की दिशा में तत्काल चल पड़े। पर्वत लेकर वीर दक्षिण की ओर चल पड़ा—पथ में कितने ही पहाड़ और नदियों को लाँघता चला। न तो चन्द्रमा का प्रकाश दिखाई पड़ता है और न दिन का आलोक। दक्षिण की ओर वह कैलाश पर्वत को कतरा गया और वामदिशा में बहुत सारे नगर [छोड़ता हुआ] जल्द ही वह अयोध्या-नगर में जा पहुँचा। राजपाट छोड़कर भरत नन्दिग्राम में रहने लगे थे। हनुमान भी नन्दिग्राम की ओर चले। नन्दिग्राम में उसने बहुत सारे वृक्ष देखे, उनको पार कर उसने नगर के भीतर प्रवेश किया ॥ ४१५ ॥

सारथि सुमन्त्र और पुरोहित वशिष्ठ एवं अन्य सभासदों के साथ भरत बैठे हैं। सिंहासन पर पादुका शोभायमान हैं और श्वेत-चँवर उसके चारों ओर डुलाये जा रहे हैं। स्वर्ण-सिंहासन मानों चन्द्रमा की ज्योति से पूर्ण है, उसपर पादुका रखकर ऊपर राजछत्र और राजदंड धारण किया गया है। रत्नमय आसन पर पादुका शोभायमान हैं और स्वयं भरत श्वेत-चँवर डुला रहे हैं। राम की पादुका बड़े यत्न से सिंहासन पर रखकर भरत स्वयं जमीन पर आसन बिछाये बैठे हैं ॥ ४१६ ॥

पवनकुमार पर्वत लेकर जा रहे हैं और अन्तरिक्ष में रहकर सारा हाल-चाल देखते जा रहे हैं। पर्वत की छाया से देश-भर में अन्धकार छा गया। सारी सभा सहित भरत आश्चर्य करने लगे कि चन्द्र का प्रकाश भी नहीं देख

भरत वलेन, रात्रे कार आगुसार ※ रामेर पादुका लंघे, एत अहंकार
महा-बुद्धिमान् भरत विक्रमे सुस्थिर ※ एक दृष्टे चाहेन भरत महावीर१७
शत्रुघ्न करिया कोप ऊर्द्धदृष्टे चान ※ कोथा के आकाश-पथे, ना हय सन्धान
शिशुकाले शत्रुघन करितेन केलि ※ खेलार बाँटुल पड़े आछे कतगुलि
लोहार निर्म्मित बाँटुल आशीलक्ष मण ※ भरतेर हाते तुलि दिला शत्रुघन१८
मने भावे भरत बाँटुल ल'ये हाते ※ विशेष ना जानि, केवा जाय शून्यपथे
शत्रुघ्न बलेन, भाइ, पाखी-हेन देखि ※ खाइते यज्ञेर धूम एल कोन पाखी
भरत कहेन, भाइ, केन एत भय ※ पक्ष यक्ष रक्ष कि किन्नर यदि हय
बाँटुल मारिया शास्ति करिब ताहारि ※ रामेर पादुका येवा लंघे, तारे मारि१९
एइरूपे विस्तर करिया अनुमान ※ पक्षी बटे बलि भरत पूरिल सन्धान
आशीलक्ष मण बाँटुल धनुगुणे जुड़ि ※ 'जय राम' बलिया बाँटुल दिल छाड़ि
भरतेर बाँटुल से अव्यर्थ-सन्धान ※ बाजिल हनूर लक्ष-वज्रेर समान
पदेर तालुका-भागे बाजिल बाँटुल ※ मूर्च्छित हइल हनू, बुद्धि हैल भूल
निस्तेज हइल वीर, शक्ति नाहि आर ※ अन्तरीक्षे घुरे बुले पवन-कुमार

पड़ता, चारों दिशायें अन्धकारमय हैं; यह राम की पादुका लाँघ कर जाता है इसको इतना डर भी नहीं। भरत ने कहा, रात को कौन आगे बढ़ रहा है, राम की पादुका लाँघ कर जाता है इतना अहंकार है इसको। बड़े ही बुद्धिमान और स्थिर पराक्रम वाले महावीर भरत टकटकी लगाये देखते रहे ॥ ४१७ ॥

शत्रुघ्न नाराज होकर ऊपर की ओर देखने लगे। आकाश-पथ पर कौन कहाँ है पता नहीं चलता। बचपन में शत्रुघ्न खेला करते थे, उस खेल के कुछ गेंद पड़े हुए थे। लोहे के बने गेंद अस्सी लाख मन वजन वाले थे, उन्हीं में से एक गेंद शत्रुघ्न ने भरत के हाथ में दे दिया ॥ ४१८ ॥

गेंद हाथ में लेकर भरत सोचने लगे, विशेष कुछ मालूम भी नहीं कि आकाश पथ पर कौन जा रहा है। शत्रुघ्न ने कहा, भाई पक्षी ऐसा लगता है, यज्ञ का धुआँ पीने यह कौन सा पक्षी आ गया। भरत ने कहा, भाई इसमें डरना क्या? पक्षी हो या यक्ष-रक्ष हो, चाहे किन्नर ही हो, गेंद मार कर उसको सजा दूँगा। राम की पादुका जो लाँघेगा उसी को मारूँगा ॥ ४१९ ॥

इस तरह बहुत अनुमान भिड़ाने के उपरान्त पक्षी समझकर भरत ने निशाना साधा। अस्सी लाख मन वाला गेंद धनुष पर साध कर 'जय-राम' कहकर उन्होंने छोड़ा। भरत का यह गेंद अचूक निशाने पर जा लगा और हनुमान को वह लाखों-वज्रों सा जाकर लगा। पैर के तलुवे से जाकर वह गेंद लगा। हनुमान मूर्च्छित हो गये, बुद्धि मन्द पड़ गई, तेजशून्य हो गये और उनमें शक्ति नहीं रही। अन्तरिक्ष में घूमते हुए पवन-कुमार गिरने लगे। गेंद से हनुमान मूर्च्छित हो गये, आँखों से उन्हें कुछ भी देख नहीं

बाँटुिले मुर्च्छित हनू, च'क्षे नाहि देखे ※ मुखे रक्त उठे तार झलके-झलके
हतज्ञान ह'ये पड़े पवन-नन्दन ※ नाहि छाड़े सूर्य आर से गन्धमादन
भूमे पड़ि करे हनू श्रीरामे स्मरण ※ मस्तके पर्व्वत आछे, घूर्णित लोचन २०
'राम-'नाम शुनिया भरत-शत्रुघन ※ निकटे हनूर एल भाइ दुइजन
भरत बलेन, कपि, थाक कोन स्थान ※ रामे जे स्मरिले, ताँर जान कि सन्धान
कोथा हैते आइले हे, कह विवरण ※ जान कोथा राम-सीता, कोथाय लक्ष्मण
श्रीराम लक्ष्मण सीता गियाछेन वने ※ देखा कि ह'येछे तव राम-सीता-सने २१
वाक्य नाहि सरे मुखे, व्यथाय आकुल ※ वज्रसम बाजियाछे विषम बाँटुल
सभा छाड़ि वशिष्ठ आइल सेइस्थाने ※ हनूरे सबल कैल मन्त्र-ब्रह्म-ज्ञाने
योगेते सकल कथा वशिष्ठ-गोचर ※ मुनि जाने, यत कर्म्म लंकार भितर
लोकाचारे प्रकाश ना करे महामुनि ※ भरतेर प्रति कन सचातुरी बाणी
मुनि बले, भरत, एमन बुद्धि केने ※ कि कार्य्य साधन हैल मारि हनूमाने
परम-धार्म्मिक देखि बानर-प्रधान ※ रामेर वृत्तान्त जान पवन-सन्तान २२
वशिष्ठेर मन्त्रे हनूर दूर हैल व्यथा ※ भरत-सम्मुखे कहे श्रीरामेर कथा
अवधान ठाकुर भरत-शत्रुघन ※ राम-सीता-लक्ष्मणेर शुन विवरण

पड़ता और मुँह से भल-भल खून निकलने लगा। होश गवाँकर पवन-नन्दन गिरे किन्तु सूर्य और गन्धमादन को नहीं छोड़ा। जमीन पर गिरकर हनुमान राम का स्मरण करने लगे—उनके सिर पर पर्वत है और आँखें घूम रही हैं ॥ ४२० ॥

'राम' का नाम सुनकर भरत और शत्रुघ्न दोनों भाई हनुमान के निकट आए। भरत ने कहा, हे कपि, तुम कहाँ रहते हो? तुमने राम का नाम लिया, उनके बारे में क्या जानते हो? तुम कहाँ से आये हो, इसका ब्योरा दो। क्या तुम जानते हो कि राम-सीता और लक्ष्मण कहाँ हैं? श्रीराम, लक्ष्मण और सीता वन गये हैं। क्या तुम्हारी भेंट राम-सीता के साथ हुई है? ॥ ४२१ ॥

मुँह से कोई आवाज नहीं निकल रही है, दर्द से वह व्याकुल हैं। भयंकर गेंद उनको वज्र जैसा आघात कर चुका है। सभा छोड़कर वशिष्ठ उस स्थान पर आए और हनुमान को ब्रह्मज्ञान मंत्र से सबल बनाया। वशिष्ठ को सारी बातें योग से विदित हैं। मुनि जानते हैं लंका में क्या-कुछ हो रहा है। लोकाचार के कारण महामुनि इन बातों को प्रकट नहीं करते। चतुराई से उन्होंने भरत से कहा, भरत ऐसी बुद्धि कैसे आई तुममें, हनुमान को मारकर कौन सा कार्य सिद्ध हुआ? यह वानर-प्रधान परम धार्मिक है। यह पवन-पुत्र हनुमान राम का हालचाल जानता है ॥ ४२२ ॥

वशिष्ठ के मन्त्र से हनुमान की पीड़ा जाती रही। भरत के सामने

बासा करि छिला राम पञ्चवटी-वने ※ शूर्पणखा-नाक-कान काटेन लक्ष्मणे
रावणेर भग्नी शूर्पणखा से राक्षसी ※ युद्ध कैला चौद्द-हाजार निशाचर आसि
सवारे मारेन राम दण्डक-कानने ※ परे योगिवेशे सीता हरिल रावणे
सुग्रीवेर संगे राम करिया मितता ※ बालि मारि सुग्रीवेरे देन दण्ड-छाता
बानर लइया राम बान्धिला सागर ※ मिलिल असंख्य कपि अति भयंकर
बाइश-अंकेते एक महा-अक्षौहिणी ※ इहार अधिक कपि गणिते ना जानि
राक्षस-बानरे युद्ध हइल अपार ※ तिनमास रात्रि-दिवा युद्ध महामार
कभु हारे, कभु जिने, तिनमास जुझे ※ राक्षसेर माया बल कार साध्य बुझे
रावणेर पुत्र इन्द्रजित् करे रण ※ नागपाशे बान्धिलेक श्रीराम-लक्ष्मण
श्रीराम-लक्ष्मणे बान्धि वैरीगण हासे ※ गरुड़ आसिया मुक्त कैल नागपाशे
मुक्त यदि हैल नागपाशेर बन्धन ※ अतिकाय-इन्द्रजिते मारिला लक्ष्मण
कुपिया रावण-राजा सान्धाइल रणे ※ मयदानवेर शेल मारिल लक्ष्मणे
लक्ष्मणे करिया कोले रामेर क्रन्दन ※ आमारे पाठाये देन औषध-कारण
औषधि चिनिते नाहि पारि कोनमते ※ पाड़िया ल'ये जाइ पर्ब्बत-समेते

वह राम के बारे में बताने लगे। हे भरत और शत्रुघ्न, सुनो, राम-सीता-लक्ष्मण का हाल सुनो। राम पंचवटी वन में कुटिया बनाकर रहते थे। लक्ष्मण ने शूर्पणखा के नाक-कान काट लिये। राक्षसी शूर्पणखा रावण की बहिन है। चौदह हज़ार राक्षसों ने आकर युद्ध किया। सभी को दंडक-वन में राम ने मार गिराया। बाद में योगी का भेष धरकर रावण ने सीता का हरण किया। सुग्रीव के साथ राम ने मित्रता की और बालि को मारकर सुग्रीव को राजदंड और छत्र दिया। वानरों को लेकर राम ने समुद्र को बाँधा। सारे कपि इकट्ठे हो गये और बड़ी भयंकर सेना बन गई। बाइस अंक से एक महा-अक्षौहिणी बनती है, इससे अधिक मुझ वानर को गिनती नहीं आती। वानरों और राक्षसों में अपार युद्ध हुआ। तीन महीने तक रात दिन घमासान युद्ध होता रहा। कभी हारते तो कभी जीतते। तीन मास तक जूझते रहे। भला राक्षसों की माया कौन समझ सकता है। रावण के पुत्र इन्द्रजीत ने युद्ध किया तो श्रीराम और लक्ष्मण को नागपाश से बाँध डाला। श्रीराम-लक्ष्मण को बाँधकर शत्रु हँसने लगे। गरुड़ ने आकर उनको नाग-पाश से मुक्त किया। अतिकाय और इन्द्रजीत को लक्ष्मण ने मार डाला। तब ताव खाकर राजा रावण लड़ाई करने आ गया। उसने लक्ष्मण को मयदानव की शेल से मार गिराया। लक्ष्मण को गोद में लेकर राम रोने लगे। मुझको औषध लाने के लिए भेज दिया। किसी तरह से भी मैं औषध नहीं पहचान सका तो समूचा पर्वत उखाड़ कर लिये जा रहा हूँ। मेरे जाने पर लक्ष्मण के प्राण बचेंगे। तुम्हारे प्रहार से मैं बेहोश हो

आमि गेले लक्ष्मणेर बाँचिवेक प्राण ॐ तोमार प्रहारे आमि हाराइनु ज्ञान
निस्तेज हइनु आमि बाँटुले तोमार ॐ पर्व्वत तुलिते शक्ति नाहिक आमार
तुमि राज्य निले हे, रावण निल नारी ॐ लक्ष्मण त्यजिबे प्राण पोहाले शर्व्वरी
तोमार प्रशंसा राम करने सदाइ ॐ सर्व्वदा चिन्तेन राम तोमा दुइ-भाइ
दिवानिशि सुमंगल भावेन दोंहार ॐ रामसंगे वैरीभाव देखि ये तोमार
आमारे मारिया तव एइ हैल लाभ ॐ प्रकाश हइल रामसंगे वैरिभाव
लंकार वृत्तान्त तुमि ना जान भरत ॐ सकलेते आमार चाहिया आछे पथ
फिरिया जाइते शक्ति ना हवे आमार ॐ सहजेते ना हइबे सीतार उद्धार
लक्ष्मणेर शोके राम प्रवेशिबे बन ॐ निस्कण्टके राज्यभोग कर दुइजन २३
एतेक बलिल यदि पवन-नन्दन ॐ धरातले पड़ि कान्दे भरत-शत्रुघन
शोकाकुल कान्दे दोंहे भूमितले पड़े ॐ श्रीराम-लक्ष्मण-सीता बलि डाक छाड़े
आमरा थाकिते केन एतेक दुर्गति ॐ कटाक्षे मारिते पारि लंका-अधिपति
भरत बलेन, शुन वीर हनूमान ॐ त्वरिते पर्व्वत ल'ये करह प्रयाण
आमिओ तोमार संगे जाइ लंकापुरे ॐ थाकुक शत्रुघ्न भाइ अयोध्या-नगरे
हनूमान वले, तुमि जाइबे किमते ॐ श्रीरामेर आज्ञा नाहि तोमा ल'ये जेते
भरत बलेन तवे, शुनह मारुति ॐ पर्ब्बत लइया तुमि जाह शीघ्रगति

गया। तुम्हारे गेंद के प्रहार से मैं तेजशून्य हो गया हूँ, अब मुझमें पर्वत उठाने की शक्ति नहीं रही। तुमने राज्य ले लिया, रावण ने पत्नी ले ली और रात समाप्त होते ही लक्ष्मण प्राण त्याग देंगे। राम सदा तुम्हारी प्रशंसा किया करते हैं, तुम दोनों भाइयों के बारे में सदा चिन्ता किया करते हैं। रातों-दिन तुम दोनों की मंगल-कामना करते हैं। लेकिन मैं देख रहा हूँ कि राम के साथ तुम्हारा शत्रुता का भाव है। मुझको मारकर तुमको यही लाभ हुआ कि राम के साथ तुम्हारा शत्रु-भाव प्रकट हो गया। भरत, तुमको लंका का हाल मालूम नहीं। सभी लोग मेरी बाट जोह रहे हैं। मुझमें लौट जाने की शक्ति नहीं आएगी और आसानी से सीता का उद्धार भी नहीं होगा। लक्ष्मण के शोक से राम वन चले जाएँगे, तुम दोनों भाई बेखटके राज्य का भोग करो ॥ ४२३ ॥

पवननन्दन ने जब इतना कहा तो भरत-शत्रुघ्न ज़मीन पर लोटकर रोने लगे। शोक से व्याकुल होकर दोनों ज़मीन पर पड़े रोते रहे। श्रीराम-लक्ष्मण-सीता का नाम ले-लेकर पुकारते रहे। हमलोगों के रहते हुए इतनी दुर्दशा क्यों? हमलोग पल-भर में लंका के अधिपति को मार सकते हैं। भरत ने कहा, हे वीर हनुमान सुनो, झटपट पर्वत लेकर रवाना हो जाओ। मैं भी तुम्हारे साथ लंका चलूँगा। भाई शत्रुघ्न यहीं अयोध्या में रहें। हनुमान ने कहा, तुम कैसे जा सकते हो? तुमको ले जाने के लिए श्रीराम की कोई आज्ञा नहीं।

हनूमान बले, गिरि नाड़िते ना पारि ❋ बलहीन हइयाछि, बल ना, कि करि
योजनेक उच्चे यदि पार तुलि दिते ❋ तबे आमि पारि ए-पर्व्वत ल'ये जेते२४
शत्रुघ्न कहिछेन हनूमान-आगे ❋ पर्व्वत तुलिया दिते कोन भार लागे
शत्रुघ्न आनिया दिल धनु एकखान ❋ गुण दिया भरत जुड़िला ताहे बाण
भरत बलेन, बाछा पवन-कुमार ❋ पर्व्वत-सहित उठे बाणेते आमार
आकर्ण पूरिया बाण एड़िला भरत ❋ हनूमान-सह शून्ये उठिल पर्व्वत
शतेक योजन ऊर्ध्वे तुलि दिल बाणे ❋ हनूमान भरतेर विक्रमे बाखाने
भरत बड़इ वीर, भावे हनूमान ❋ आमा-सह बाणेते तुलिला गिरिखान
सागर हइया पार चले वायुवेगे ❋ राखिल पर्व्वत ल'ये सबाकार आगे४२५

सुषेण-कर्त्तृक गन्धमादन-पर्व्वत हइते औषध-ग्रहण ओ तद्द्वारा लक्ष्मणेर जीवन-दान

पर्व्वत देखिया सबे पाइल विस्मय ❋ प्रणाम करिया हनू रघुनाथे कय
औषध चिनिते नाहि पारि कोनमते ❋ एकारणे आनिलाम पर्व्वत-समेते४२६
श्रीराम बलेन, बापु पवन-कुमार ❋ त्रिभुवने कोन कार्य असाध्य तोमार

भरत ने कहा, तो फिर सुनो मारुति, तुम शीघ्र पर्वत लेकर चले जाओ। हनुमान ने कहा मैं पर्वत को हिला नहीं पा रहा हूँ, मैं बलशून्य हो गया हूँ, बताओ मैं क्या करूँ? यदि योजन भर तुम मुझको ऊँचा कर उठा दो तो मैं यह पर्वत लेकर जा सकता हूँ॥ ४२४ ॥

शत्रुघ्न ने हनुमान से कहा, पर्वत को उठा देने में कौन सा भार है। शत्रुघ्न ने एक धनुष ला दिया, उसपर प्रत्यंचा चढ़ाकर भरत ने बाण साधा। भरत ने कहा, सुनो पवनकुमार मेरे बाण से तुम पर्वत के साथ ऊपर उठो। ऐसा कहकर कान तक खींचकर भरत ने बाण फेंका, हनुमान के साथ पर्वत शून्य में उठ गया। बाण ने उनको सौ योजन ऊपर उठा दिया। हनुमान ने भरत का विक्रम बखाना। हनुमान सोचने लगा, भरत बड़ा ही वीर है, मेरे साथ इस पर्वत को भी ऊपर उठा दिया। सागर पार कर वह वायुवेग से चला और जाकर सबके सम्मुख पर्वत को रख दिया॥ ४२५ ॥

सुषेण द्वारा गन्धमादन पर्वत से औषध निकालना और उसके द्वारा लक्ष्मण को प्राण-दान देना

पर्वत देखकर सभी लोगों को आश्चर्य हुआ। प्रणाम कर हनुमान ने रघुनाथ से कहा, किसी तरह से भी औषध नहीं पहचान सका इसी कारण पर्वत ही उठाकर लेता आया॥ ४२६ ॥

श्रीराम ने कहा, पुत्र, पवन-कुमार तुम्हारे लिए संसार में कौन सा कार्य

राम वले, हनू दिल पर्ब्बत आनिया ※ आपनि सुषेण, लह औषध चिनिया २७
श्रीरामेर आज्ञाते सुषेण-वैद्य जाय ※ सकल पर्ब्बतमय खुँजिया बेड़ाय
छय-शृंग पर्ब्बत से अद्भुत-निर्म्माण ※ प्रथम शृंगेते देखे शंकरेर स्थान
द्वितीय शृंगेते देखे दिव्य सरोवर ※ तृतीय शृंगेते पशु चरिछे बिस्तर
चतुर्थ शृंगेते देखे खरतरा-नदी ※ नदीर दुकूले देखे विस्तर औषधि
देवगण-आदि केलि करेन आनन्दे ※ मृतदेहे प्राण पाय औषधेर गन्धे
औषधेर गन्धे प्राण पाय मरा कत ※ एइजन्य नाम गन्धमादन-पर्ब्बत २८
आनन्दे सुषेण हनूमानेरे बाखानि ※ चिनिया औषध आने बिशल्य-करणी
औषध लइया बुड़ा नामे भूमितले ※ तखनि औषध बाटे रत्नमय शिले
स्मरण करिल मने पिता धन्वन्तरि ※ श्रीराम-लक्ष्मण-पदे नमस्कार करि २९
औषध आनिया दिल लक्ष्मणेर नाके ※ आनन्दे बानरगण 'राम-जय' डाके
औषधेर घ्राण जाय लक्ष्मण-उदरे ※ क्रमे-क्रमे सर्ब्ब-अंगे औषध सञ्चारे
भग्न छिल पाँजर, से लागिलेक जोड़ा ※ क्रमे-क्रमे लक्ष्मणेर जाना गेल साड़ा
अन्तरे अन्तरे बिन्धे औषधेर घ्राण ※ सज्ञान हइल बीर, सञ्चारिल प्राण

असंभव है। फिर राम ने सुषेण से कहा, हनुमान ने पर्वत ला दिया है, सुषेण तुम औषध पहचान लो ॥ ४२७ ॥

श्रीराम की आज्ञा से सुषेण वैद्य चल पड़ा और सारे पर्वत भर में ढूँढ़ने लग गया। छह चोटियों वाला वह पर्वत विचित्र बनावट का है। पहली चोटी पर शंकर का स्थान है। दूसरी चोटी पर दिव्य सरोवर है। तीसरी चोटी पर बहुत सारे पशु चर रहे हैं। चौथी चोटी पर तेज धार वाली नदी देखी। नदी के दोनों तटों पर पर्याप्त औषधि दिखाई पड़ी। उस पर देवता आदि आनन्द से केलि करते हैं। औषध की गन्ध से मृतदेह में भी प्राणों का संचार हो जाता है। कितने ही मृतों को इस गन्ध से प्राण मिल जाते हैं इसी कारण इस पर्वत का नाम गन्धमादन है ॥ ४२८ ॥

इस प्रकार आनन्द से सुषेण हनुमान की प्रशंसा करने लगा। वह विशल्य-करणी औषध को पहचान कर ले आया। औषध लेकर बूढ़ा सुषेण जमीन पर उतरा और फ़ौरन रत्नमय सिलवट्टे पर औषध पीसने लगा। उसने मन ही मन पिता धन्वन्तरि का स्मरण किया और श्रीराम-लक्ष्मण के चरणों में नमस्कार किया ॥ ४२९ ॥

औषध लाकर उसने लक्ष्मण के नाकों से लगायी। आनन्द से सारे वानर 'राम की जय' का नारा लगाने लगे। औषध की गन्ध लक्ष्मण के हृदय में पहुँची और धीरे-धीरे सारे अंगों में औषध का संचार हुआ। पसली टूट गई थी, वह जुड़ गई और धीरे-धीरे लक्ष्मण में स्पन्दन होने लगा। रोंए-रोंए में औषध की गन्ध प्रवेश कर गई, वीर लक्ष्मण के शरीर में प्राण आ गये और

चक्षु मेलि लक्ष्मण श्रीराम-पाने चान ※ भाये सुस्थ देखि रामेर स्थिर हैल प्राण
बिभीषण सुग्रीवेते करे कोलाकुलि ※ चारिदिके बानरेर पड़े हुलाहुलि
भाइ भाइ बलि राम हन उतरोल ※ पुलकेते श्रीराम लक्ष्मणे देनकोल
लक्ष्मणे लइया कोले तिलेक ना एड़े ※ श्रीरामेर च'क्षे जल मुक्ताधारा पड़े
रामायणे शक्तिशेल शुने जेइजन ※ अपार दुर्गति तार खण्डे ततक्षण४.३०

हनूमान-कर्त्तृक सप्त-राक्षसबध, यथास्थाने गन्धमादन-गिरि-स्थापना
ओ मृत-गन्धर्व्वगणेर प्राणदान

लक्ष्मण पाइल प्राण, कपिगण देखे ※ पर्व्वते बानरगण उठे लाखे-लाखे
लम्फे-झम्पे पर्व्वतेर वृक्षशाखा भाँगे ※ फल-फूल खाइछे बानरगण रंगे
बहुदिन उपवास, जुझिया विकल ※ उदर पूरिया खाय यत फूल-फल
फल-फूल खाइया छिड़िल यत लता ※ आनन्दे छिड़िया खाय नव-नव पाता
फल-फूल खाइया बृहत् हैल पेट ※ नड़िते चड़िते नारे, माथा करे हेंट४३१
जाम्बवान् कहिछे श्रीराम-विद्यमान ※ कार्यसिद्धि हइल, लक्ष्मण पाइल प्राण
पर्व्वत राखिते जाक् वीर हनूमाने ※ आज्ञा देन राम जाम्बवानेर बचने

वह होश में आ गये। आँखें खोलकर लक्ष्मण ने श्रीराम की तरफ़ देखा। भाई को स्वस्थ देखकर राम का चित्त शान्त हुआ। विभीषण और सुग्रीव एक दूसरे का आलिंगन करने लगे। चारों ओर वानरों में धूम मच गई। भाई-भाई कहकर श्रीराम व्याकुल हो उठे। पुलकित होकर श्रीराम ने लक्ष्मण को गोद में ले लिया। लक्ष्मण को अँकवार में लेकर श्रीराम की आँखों से मोतियों के दाने जैसे आँसू गिरने लगे। रामायण में शक्तिशेल वाला अध्याय जो व्यक्ति सुनता है उसकी अपार दुर्दशा भी दूर हो जाती है ॥ ४३० ॥

हनुमान द्वारा सप्त-राक्षस-वध, यथास्थान गन्धमादन गिरि-स्थापना
और गन्धर्वों को प्राणदान

वानरों ने देखा कि लक्ष्मण को प्राण मिल गये, वे लाखों की संख्या में पर्वत पर चढ़ गये। कूद-फाँद मचा कर वे पर्वत पर पेड़ों की शाखाएँ तोड़ने लगे। बहुत दिनों से अनाहार चल रहा है, लड़ते-लड़ते भी बेहाल हो गये हैं, पेट भर कर वे फल-फूल खाने लगे। फल-फूल खाकर सारी बेलें व लताएँ तोड़ डालीं, नई-नई कोंपलें तोड़कर खाने लगे। फल-मूल खाकर उनके पेट फूल गये और वे हिलने-डुलने से लाचार होकर सिर झुकाकर बैठ गये ॥ ४३१ ॥

तब जाम्बवान श्रीराम से कहने लगे, काम सफल हो गया, लक्ष्मण को प्राण मिल गये। वीर हनुमान पर्वत रखने चले जाएँ। जाम्बवान के कहने

राम-सुग्रीवेर काछे मागिया मेलानि ❋ पर्व्वत लइया वीर करिल उठानि ३२
पर्व्वत लइया माथे जाय अन्तरीक्षे ❋ लंकार भितरे वसि दशानन देखे
सातटा राक्षस छिल कटके प्रधान ❋ रावण करिल आज्ञा दिया गुया-पान
मस्तके पर्व्वत हनू, पड़िल विपाके ❋ एइबेला गिया घेरि मार चारिदिके
बाँकामुख ओष्ठवक्र प्रचण्ड-लोचन ❋ तालभंग सिंहमुख घोर-दरशन
उल्कामुख प्रभृति देखिते भयंकर ❋ आज्ञा पेये सातवीर चलिल सत्वर
मेरु जिनि एक-एकजनेर शरीर ❋ शून्यपथे हनूरे बलिछे सातवीर
देवता गन्धर्व्व नाहि मान कोनजना ❋ आजि बेटा वानरा, बुझिव वीरपना
फिरिया जाइबे, बुझि वाञ्छा कर मने ❋ यमालये पाठाइव आजिकार रणे ३३
हनू वले, तोदेर मत लक्ष यदि आसे ❋ रामेर प्रसादे मारि चक्षुर निमिषे
चारिदिके घेरि सवे जुझे एकवारे ❋ माथाय पर्व्वत, वीर चाहे क्रोधभरे
हात नाहि नाड़े वीर, पर्व्वत ना फेले ❋ पाक दिया सातजने जड़ाय लांगुले
लांगुले जड़ाये वीर मारिल आछाड़ ❋ भांगिल माथार खुलि, चूर्ण हैल हाड़ ३४
तालभंग निशाचर वड़इ सेयान ❋ दुइ हाते लेज धरि हेंटे दिल टान
माथा गलाइया बेटा प'ड़े गेल स'रे ❋ पलाइया जाय रड़े, नाहि चाहे फिरे

पर राम ने आज्ञा दी। राम और सुग्रीव से विदा लेकर वीर हनुमान पर्वत लेकर ऊपर उठ गये॥ ४३२॥

सिर पर पर्वत लेकर वह अन्तरिक्ष में जो चले तो लंका के भीतर बैठे दशानन ने देख लिया। सेना में सात राक्षस प्रधान थे, उनको पान-सुपारी देकर रावण ने आज्ञा दी—सिर पर पर्वत है, हनुमान इस समय असुविधा में है, इसी वक्त उसको चारों ओर से घेर कर मार डालो। बाँकामुख, ओष्ठवक्र, प्रचंडलोचन, तालभंग, सिंहमुख, घोरदर्शन और उल्कामुख ये भीषण-आकार वाले सात वीर आज्ञा पाकर चल पड़े। हनुमान के पास जाकर वे बोले, देवता, गन्धर्व आदि किसी को भी तुम मानते नहीं हो, अरे अबोध वन्दर, आज तुम्हारी बहादुरी देख लूँगा। शायद मन में लौट जाने की अभिलाषा लिये हो, आज के युद्ध में तुमको यमालय भेज दूँगा॥ ४३३॥

हनुमान ने कहा, तुम लोगों जैसे अगर लाख भी आ जाएँ तो पलभर में राम के प्रसाद से मार गिराऊँ। तब हनुमान को चारों ओर से घेरकर सब राक्षस एक साथ उन पर हमला कर बैठे। सिर पर पर्वत लिये वीर हनुमान क्रोध से देखने लगे। न तो वीर ने हाथ हिलाया और न पर्वत उतार कर रखा, पर उन सातों को पूँछ में लपेट लिया। पूँछ में लपेट कर वीर हनुमान ने उनको दे पटका। उनके सिर और हड्डियाँ चूर-चूर हो गई॥ ४३४॥

इनमें निशाचर तालभंग बड़ा ही चतुर था। उसने दोनों हाथों से पूँछ

लंकार भितर गेल पलाइया त्रासे ❊ रावणेरे वार्त्ता कहे, घन वहे श्वासे
अवधान कर राजा लंका-अधिपति ❊ घरपोड़ार हाते कारो नाहि अव्याहति
मारिवारे दाँड़ालाम सातजन वले ❊ मस्तके पर्व्वत, हनू जड़ाले लांगुले
आमि माथा गलाइया बाँचिलाम प्राणे ❊ लेजे बाँधि आछाड़ मारिल छयजने
आछाड़ेते चूर्ण हैल छ'जनार हाड़ ❊ आमि बेंचे आछि, किन्तु भाँगियाछे घाड़
लांगूल छाड़ाब वलि घन दिनु टान ❊ लेजेर घर्षणे छिड़े गेछे नाक-कान
प'ड़ेछिनु ये संकटे, शंकर ता' जाने ❊ तव पितृपुण्ये वाँचि आइलाम प्राणे
राक्षस-बचने रावणेर उड़े प्राण ❊ शमन-समान बैरी वीर हनूमान
यक्ष रक्ष दानव गन्धर्व्व विद्याधर ❊ एके एके हनूमाने बाखाने विस्तर३५
अन्तरीक्ष-पथे चले पवन-नन्दन ❊ यथास्थाने राखिलेन से गन्धमादन
हनूमान बले, आमि पवन-नन्दन ❊ यतेक गन्धर्व्वगणे क'रेछि निधन
जे औषधे लक्ष्मण पेलेन प्राणदान ❊ से औषधे सबाकार बाँचाइब प्राण
दुइ हाते कचाले औषध करे गुँड़ा ❊ जले गुले गन्धर्व्व-उपरे देय छड़ा

पकड़कर नीचे की ओर खींचा, फिर सिर निकाल कर तेज चाल से भाग खड़ा हुआ—पीछे पलट कर भी नहीं देखा। भयभीत होकर वह लंका के भीतर चला गया और रावण से सारा समाचार कहा। उसकी साँस तेज चल रही थी। वह बोला, हे लंका के अधिपति राजा रावण सुनो—इस घर-फूँकने वाले वानर के हाथों से किसी का बचाव नहीं। हम सातों उसको मारने के लिए कटिबद्ध हुए तो सिर पर पर्वत लिये उसने हमें पूँछ से लपेट लिया। अपना सिर निकाल कर मैं भाग खड़ा हुआ और बच गया। पूँछ से लपेट कर छहों को उसने दे पटका। पटकनी से उन छहों की हड्डियाँ चूर-चूर हो गईं। मैं जिन्दा तो हूँ लेकिन मेरी गर्दन टूट चुकी है। पूँछ हटाने के लिए मैंने जोर से गर्दन को खींचा तो पूँछ की रगड़ से मेरे नाक-कान कट गये हैं। किस संकट में मैं फँस गया था केवल शंकर जी को मालूम है, तुम्हारे पिता के पुण्य से ही जान लेकर लौट आया हूँ। राक्षस के इस वाक्य को सुनकर रावण के प्राण उड़ गये। वह बोला, यह हनुमान तो यम-सरीखा शत्रु है। यक्ष, रक्ष, दानव, गन्धर्व और विद्याधर आदि सभी एक-एक कर हनुमान की बड़ाई करने लगे ॥ ४३५ ॥

पवननन्दन हनुमान ने आकाश मार्ग से चलकर गन्धमादन को ठीक-ठौर पर रख दिया। हनुमान ने कहा, मैं पवन-नन्दन हूँ, जितने भी गन्धर्वों के मैंने प्राण लिये हैं, उनको उसी औषध से जिलाऊँगा जिससे लक्ष्मणजी को प्राण मिले हैं। दोनों हाथों से रगड़कर उसने औषध को चूर्ण किया, फिर पानी में घोल कर सारे गन्धर्वों पर छिड़क दिया। सारे गन्धर्व उठकर बैठ गये और चारों ओर देखने लगे। हनुमान को देखकर उसको खदेड़ने के लिए

उठिया गन्धर्ब्ब सब चारिदिके चाय ※ खेदाड़िया हनूमाने मारिवारे जाय
लाफ दिया हनूमान उठिल आकाशे ※लंकाकाण्ड गाहिल पण्डित कृत्तिवासे४३६

हनूमानेर कक्षतलस्त सूर्य्यदेवेर मुक्ति ओ ताहार पुरस्कार

हइया सागर पार अति कुतूहली ※ सेइ राते कटके आइल महाबली
कार्यसिद्धि करिया आइल हनूमान ※ श्रीरामेर निकटे पाइल बहु मान३७
ब'सेछेन बानरे बेष्ठित रघुनाथ ※ उपनीत हनूमान करि जोड़हात
कक्षतले ताहार देखिया दिनकरे ※ जिज्ञासा करेन राम पवन-कुमारे
कि अद्भुत देखि बापु पवन-नन्दन ※ तोमार शरीरे केन रविर किरण३८
हनूमान बले, प्रभु, कर अवगति ※ आनिवारे औषधि गेलाम राताराति
औषधि खुजिया आमि शिखरे बेड़ाइ ※ पूर्व्वदिके दिनपति देखिया डराइ
पर्ब्बत हइते गेनु भास्करेर ठाँइ ※ जोड़ हात करि स्तव करिनु गोसाँइ
तोमार सन्तान अति कातर श्रीराम ※ क्षणेक कश्यप-पुत्र, करह विश्राम
यावत् लक्ष्मण-बीर ना पान जीवन ※ तावत् उदित नाहि हइओ तपन
आमार ए वाक्य ना शुनेन दिनपति ※ धरिया एनेछि तेंइ ना पोहाते राति३९

वे दौड़ पड़े। हनुमान छलाँग मार कर आकाश में उठ गया। कृत्तिवास ने लंकाकाण्ड में यह गीत गाया॥ ४३६॥

हनुमान की काँख से सूर्यदेव की मुक्ति और उनका पुरस्कार

सागर लाँघ कर उसी रात को महाबली हनुमान अत्यन्त कौतूहल के साथ सेना में आ पहुँचे। हनुमान कार्य सिद्ध कर लौट आये, श्रीरामचन्द्र से उनको बड़ा सम्मान मिला॥ ४३७॥

रघुनाथ वानरों से घिरे बैठे थे कि हनुमान हाथ जोड़कर वहाँ जा पहुँचे। उनकी काँख के नीचे दिनकर को देख कर राम ने पवनकुमार से पूछा, क्यों पुत्र पवननन्दन, यह कैसी अनोखी बात देख रहा हूँ, तुम्हारे शरीर में सूर्य की किरणें कैसे दीख पड़ रही हैं?॥ ४३८॥

हनुमान ने कहा, प्रभु, सुनो। रातो-रात औषध लाने के लिए मैं गया। औषध ढूँढ़ते हुए मैं पर्वतों के शिखरों पर घूम रहा था कि पूरब की दिशा में सूर्य को देखकर डर गया। पर्वत से मैं भास्कर के स्थान पर गया। हाथ जोड़कर मैंने उनका स्तव किया। मैंने कहा, तुम्हारा वंशज श्रीराम अत्यन्त दुखी है। हे काश्यप-पुत्र थोड़ी देर के लिए विश्राम कर लो। जब तक वीर लक्ष्मण को प्राण प्राप्त न हो जाये तब तक हे तपन, उदित मत होना। मेरा कहना दिनपति ने नहीं सुना तो उनको मैं रात समाप्त होने से पूर्व ही पकड़ कर ले आया हूँ॥ ४३९॥

श्रीराम बलेन, बापु, ए कि चमत्कार ❋ ना पोहाय रजनी, ना घुचे अन्धकार
सूर्य्येर उदय-हेतु संसार प्रकाशे ❋ छाड़ह भास्करे, इनि उठुन आकाशे४०
रामेर बचने बीर तोले दुइ हात ❋ बाहिर हइल तबे जगतेर नाथ
सूर्य्येरे प्रणाम करे पवन-नन्दन ❋ यतेक बानर करे चरण-बन्दन
आदिकर्त्ता आपन-बंशेर दिवाकर ❋ शत-शत प्रणाम करेन रघुबर
उदय-पर्व्वते भानु करेन गमन ❋ पोहाइल विभावरी, प्रकाशे भुवन
कपिगण कहे, धन्य धन्य हनूमान ❋ त्रिभुवने बीर नाहि तोमार समान४१
श्रीराम बलेन, धन्य धन्य हनूमान ❋ तोमार प्रसादे भाइ पाइलेक प्राण
तोमारे प्रसाद दिब, कि आछे एमन ❋ चाह यदि, लह, करि आत्म-समर्पण
एतेक कहिया राम देन आलिंगन ❋ कृतार्थ बानरबंश माने कपिगण४२
बारमासी फल छिल सुग्रीवेर पाशे ❋ सुग्रीव प्रसाद दिल, यत मने आसे
दिलेक दाड़िम्ब पक्व बिदारिया सन्धि ❋ नारिकेल फल दिल सहस्त्रेक कान्धि
हाँड़िया हाँड़िया ताल दिलेक मधुर ❋ दिलेक खाइते बहु सुमिष्ट खेजुर
बड़ बड़ आम्र दिल खाइते रसाल ❋ विघत-प्रमाण कोष दिलेक काँटाल

श्रीराम ने कहा, भाई यह भी बड़ा चमत्कार है। न रात्रि समाप्त होगी और न अन्धेरा दूर होगा। सूर्य के उदय के कारण ही सारा संसार प्रकाशित होता है। भास्कर को छोड़ दो, वे गगन में उदित हों ॥ ४४० ॥

राम का वचन सुनकर वीर ने दोनों हाथ ऊपर उठा लिये। तब जगत् को प्रकाश देने वाले भास्कर बाहर निकल आए। पवननन्दन ने तब सूर्य को प्रणाम किया। सारे वानरों ने भी उनका चरण-वन्दन किया। अपने ही वंश के आदि पुरुष सूर्य का रघुवर ने शत-शत नमन किया। भानु उदय-पर्वत पर चले गये। रात्रि समाप्त हो गयी, सारा भुवन प्रकाशित हो गया। कपियों ने कहा, धन्य हो तुम हनुमान, तुम्हारे समान तीनों लोक में कोई वीर नहीं ॥ ४४१ ॥

श्रीराम ने कहा, हनुमान तुम धन्य हो। तुम्हारी ही कृपा से मेरे भाई को प्राण मिले। तुमको कुछ प्रसाद दूँ ऐसा मेरे पास है भी क्या। कहो तो मैं अपने को सौंप सकता हूँ। इतना कहकर राम ने उसे अँकवार में ले लिया। कपिगण सोचने लगे कि वानरों का वंश कृतकृत्य हो गया ॥ ४४२ ॥

सुग्रीव के पास बारहमासी फल था। सुग्रीव ने जी भर कर प्रसाद दिया। उसने अनार को तोड़ कर दिया और एक हजार नारियल के गौद दिये। बहुत बड़े-बड़े और मीठे ताड़ दिये और बहुत ही मीठा खजूर खाने को दिया। खाने में रसभरे बड़े-बड़े आम दिये और बालिश्त भर बड़े-बड़े कोये वाले कटहल दिये। सफ़ेद, काले, लाल आदि विभिन्न रंग के फल दिये। डोंगे भर-भर कर शहद पीने के लिए दिया। राजा ने फल-फूल

नाना वर्ण फल दिल श्वेत काल राँगा ※ मधुपान करिवारे दिल वहु डोंगा
फल-फूल विस्तर प्रसाद दिल राजा ※ लक्ष वानरेते वहे फल-फूल-बोझा
राज-प्रसाद वहु फल पेये हनुमान ※ प्राचीन वानरगण कैल कत दान
वाहक वानरे किछु-किछु दिया तोषे ※ लंकाकाण्ड गाहिल पण्डित कृत्तिवासे ४४३

महीरावणेर लंकाय आगमन ओ रावणके आश्वास-प्रदान

रावण मरिबे कबे, भावे कपिगण ※ हेनकाले श्रीरामेरे वलेन लक्ष्मण
कहिवार शक्ति नाहि, कन धीरे-धीरे ※ एखनो रावण आछे जीवित-शरीरे
रावणे मारिया दुःख घुचाओ अन्तरे ※ ना कर विलम्ब आर, उठह सत्वरे
बिक्रम करेन राम लक्ष्मणेर बोले ※ टलमल करे लंका कटकेर रोले ४४४
कोलाहल शुनि भावे राजा दशानन ※ मरिया मानुष वेटा पाइल जीवन
मरिया ना मरे एकि विपरीत वैरी ※ जानिलाम, मजिल कनक-लंकापुरी
मरिल सकल वीर, शून्य हैल लंका ※ आपनि जुझिव त्यजि मरणेर शंका
बन्धु-वान्धवादि कोथा केवा आछे आर ※ मने-मने चिन्ता करि देखि एकवार

प्रसाद में दिया। लाख-लाख वानर इन फल-फूलों का बोझ लाद कर ले गये। राज-प्रसाद से इतने फल पाकर हनुमान ने वृद्ध वानरों को कितना ही दान कर दिया। वाहक वानरों को भी कुछ-कुछ देकर उसने सन्तुष्ट किया। पंडित कृत्तिवास ने लंकाकाण्ड का गीत गाया ॥ ४४३ ॥

महीरावण का लंका में आना और रावण को आश्वासन देना

वानरगण सोच रहे थे कि रावण कब मरेगा, ऐसे ही समय श्रीराम से लक्ष्मण ने कहा। उनमें अब भी बोलने की शक्ति नहीं थी इसलिए उन्होंने धीरे-धीरे कहा, अब भी रावण जीवित शरीर लिये बचा है। रावण को मार कर हृदय का दुख दूर करो। अब देर मत करो, जल्दी उठो। लक्ष्मण के वाक्यों से राम जोश में आ गये। सेनाओं के कोलाहल से लंका डगमगाने लगी ॥ ४४४ ॥

शोरगुल सुनकर राजा दशानन सोचने लगा—यह मनुष्य मर कर भी जी गया। यह कैसा विपरीत वैरी है कि मर कर भी नहीं मरता। समझ गया कि सोने की लंकापुरी इतने दिनों में चौपट हुई। सारे वीर मर गये और लंकानगरी सूनी हो गयी। मृत्यु का भय त्याग कर अब स्वयं ही युद्ध करूँगा। इष्ट-मित्रों में अब कौन कहाँ बचा है, मन ही मन सोचकर एकबार देख लूँ। स्वर्ग में वीरबाहु था वह यहाँ आकर मरा, समझ में नहीं आता कि युद्ध में किसको भेजूँ। इन्द्रजीत तो रहा नहीं, अब रण में कौन जायगा ?

स्वर्गे छिल वीरबाहु मरिल आसिया * कारे पाठाइव युद्धे, ना पाइ भाविया
इन्द्रजित् नाहि, रणे जावे कोन जने * अश्रुधारा बहितेछे विंशति-लोचने
अभिमाने शीर्ण अंग, मलिन वदन * क्षणे उठे क्षणे वैसे राजा दशानन
क्षणे-क्षणे मूर्च्छा ह'ये भूमितले पड़े * एतदिने पार्व्वती-शंकर बुझि छाड़े४५
रावणेर माता से निकषा-नाम धरे * कान्दिते कान्दिते गेल रावण-गोचरे
सन्तानेर स्नेहवशे दुःखिता अन्तरे * रावणे बुझाय बुड़ी अशेष प्रकारे
तखन कहिनु बापु,ना शुनिले काने * मजिल राक्षसकुल श्रीरामेर बाणे
बिभीषण भाइ तोर धर्म्मशील अति * एसेछिल बुझाइते, तारे मार लाथि
सीता दिते कहिलाम अशेष प्रकारे * ना शुनिले वंशनाश करिवार तरे
भाग्येते आछिल दुःख, शुनह रावण * आपना राखिते युक्ति करह एखन
एक युक्ति आछे बापु, कहि ये तोमारे* दिग्विजये गेले जबे पाताल-भितरे
ब्रह्मार वरेते पेले सुन्दर नन्दन * महीते जन्मिल, नाम से महीरावण
पातालेते आछे पुत्र सर्व्व-गुणवान् * सेइ हैते हइबे दुःखेर अवसान४६
विषादे हरिष हैल निकषार बोले * मनेते पड़िल, पुत्र आछये पाताले
पाताले आछये पुत्र से महीरावण * महातेज धरे पुत्र, जिने त्रिभुवन

उसकी बीसों आँखों से आँसू ढरकने लगे। अभिमान से शरीर क्षीण हो गया है, वेश-भूषा मलिन हो गई है। राजा दशानन कभी बैठता तो कभी खड़ा हो जाता है, क्षण-क्षण में मूर्छित होकर धरती पर गिर पड़ता है, शायद इतने दिनों बाद शंकर-पार्वती उसका त्याग कर चले जा रहे हैं॥ ४४५॥

रावण की माँ का नाम था निकषा। वह रोती हुई रावण के पास गई। बेटे के प्रति स्नेह के कारण बुढ़िया मन ही मन बड़ी दुखी थी, उसने रावण को कितने ही प्रकार से समझाया-बुझाया। बेटा, मैंने तभी कहा था लेकिन तुमने सुना नहीं। श्रीराम के बाणों से राक्षसों का वंश ध्वंस हो गया। तेरा भाई विभीषण जो कि धार्मिक मनोभाव का है, तुझे समझाने आया था, उसकी तूने लातों से खबर ली। मैंने कितने ही प्रकार से तुझे कहा कि सीता को लौटा दो लेकिन वंशनाश करने के लिए ही तूने मेरा कहना नहीं माना। भाग्य में दुःख लिखा था। सुनो रावण, अब अपने को बचाने के लिए मेरा परामर्श मानो। तुमसे बताती हूँ, एक सलाह है। जब तुम दिग्विजय पर निकल कर पाताल के अन्दर गये थे तब ब्रह्मा के वर से तुमको एक सुन्दर पुत्र मिला था। वहीं (धरती) में उसका जन्म हुआ इसलिए उसका नाम पड़ा महीरावण। वह सर्वगुण-सम्पन्न पुत्र पाताल में है। उसी से तुम्हारा सारा दुःख दूर होगा॥ ४४६॥

निकषा के वचन से विषाद में हर्ष उत्पन्न हो गया। उसको याद आ गया कि पाताल में महीरावण नामक पुत्र है। महीरावण महातेजयुक्त पुत्र है,

हेन पुत्र थाकिते मजिल लंकापुरी ✽ ताहार सम्मुखे जुझिबेक कोन बैरी
कालिका पूजिया से पाइल वरदान ✽ अव्याहत माया जाने, सर्व्वत्र प्रमाण
आछये दुर्ज्जय पुत्र पाताल-भितरे ✽ मारिते दुर्ज्जय बैरी सेइजन पारे
पूर्व्वकथा आछे, ताहा हैल स्मरण ✽ विपदे स्मरण क'रो, आसिब तखन४७
एकमने चिन्ते तारे राजा लंकेश्वर ✽ टनक नड़िल तार कपाल-उपर
पातिलेक अंक मही खड़ि ल'ये हाते ✽ एके-एके त्रिभुवन लागिल गणिते
सकल पाताल-पुरी चिन्ते एके-एके ✽ आकाश-पाताल गणे, किछु नाहि देखे
पृथिवी गणिया स्थिर नाहि हय चित्ते ✽ कोन जन स्मरे मोरे पड़िया बिपत्ते
सागरेर उपरे कनक-लंकापुरी ✽ ताहाते आछये पिता लंका-अधिकारी
असमय पितार जानिल से कारण ✽ तथिर कारणे पिता करिल स्मरण४८
एतेक भाविया तबे स्थिर करि मन ✽ त्वराय भेटिते जाय पिता दशानन
शनिवारेर शव जेन संगे संगी चाय ✽ इन्द्रजितेर दोसर हइते मही जाय
दैवेर निर्व्वन्ध केह खण्डाइते नारे ✽ आपनि मरिते हाय यमे आने घरे
यात्रासिद्धि करि मन्त्र पड़िल त्वरिते ✽ ऊर्द्धवपथे सुड़ंग हइल आचम्बिते

वह तीनों लोक जीत चुका है। ऐसा पुत्र रहते हुए भी लंकापुरी ध्वंस हो गई। उसके सम्मुख कौन सा शत्रु है जो लड़ सकेगा। कालिका की पूजा कर उसको वरदान मिला है, उसको अव्याहत माया आती है और वह सर्वत्र जा सकता है। पाताल के भीतर अजेय पुत्र बैठा है, वही इस अजेय शत्रु को मार सकता हैं। पुरानी कथा है जो उसे अब याद आ गई—"विपत्ति में स्मरण करना, मैं तभी आ जाऊँगा" ॥ ४४७ ॥

राजा लंकेश्वर एक-मन हो उसका ध्यान करने लगा। उधर उसको भी अकस्मात् ही कुछ खटका। महीरावण ने खड़िया लेकर हिसाब लगाना शुरू कर दिया। सारे त्रिभुवन में सभी की गिनती करने लगा। एक-एक कर पाताल-पुरी में हरेक को सोचा। आकाश और पाताल गिनकर उसको कुछ भी नहीं मिला। पृथ्वी की गिनती लगाने पर उसका चित्त व्याकुल हो गया। विपत्ति में पड़कर कौन मेरा स्मरण कर रहा है। समुद्र के भीतर बनी हुई सोने की लंकापुरी है उसमें मेरे पिता लंका के अधिकारी हैं। पिता ने दुस्समय सोचकर स्मरण किया है, यह कारण उसको मालूम हो गया ॥ ४४८ ॥

इतना सोचने के उपरान्त उसने अपना मन स्थिर किया और तुरन्त पिता दशानन से भेंट करने चल पड़ा। शनिवार का शव जिस प्रकार अपना कोई साथी लेकर जाना चाहता है उसी प्रकार महीरावण भी इन्द्रजीत का साथी बनने चल पड़ा। दैव का लिखा कभी टल नहीं सकता, स्वयं मरने के लिए उसने यम को न्योता दिया। यात्रासिद्धि के लिए उसने झट मंत्रपाठ

अविलम्ब उपनीत लंकार भितर ※ सिंहासने बसि कान्दे राजा लंकेश्वर
महीरे देखिया राजा त्यजे सिंहासन ※ आलिंगन दिया कोले लइल नन्दन
कोलेते करिया शिरे करिल चुम्बन ※ मही कैल रावणेर चरण-बन्दन
सिंहासने दु'जने बसिल एकासने ※ कर जोड़ करि मही बले पितृस्थाने
कोन कार्य्ये पिता, मोरे करिले स्मरण ※ आशा कर, उद्धारिव कोन प्रयोजन
कान्दिया रावण बले' च'क्षे पड़े जल ※ लंकार दुर्गति यत, कहिछे सकल४९
रावण वले, शुन बापु, दु:खेर काहिनी ※ शूर्पणखा तव पिसी, आमार भगिनी
हइया मानुष तार काटे नाक-कान ※ केमने सहिब प्राणे एत अपमान
मही बले, कह पिता, शुनि बिबरण ※ आचम्बिते नाक-कान काटे कि कारण
रावण वले, शूर्पणखा भगिनी कनिष्ठा ※ पाइया वैधव्य-दशा सदाचारे निष्ठा
लंकार ऐश्वर्य-सुख परित्याग करि ※ पंचवटी वने छिल ह'ये वनचारी
चौद्द-हाजार निशाचर खर ओ दूषण ※ दियाछिनु शूर्पणखाय करिते रक्षण
गियाछिल शूर्पणखा पुष्प-अन्वेषणे ※ एतेक प्रमाद हबे, आगेते ना जाने
दशरथ-नामे राजा, जन्म सूर्य्यवंशे ※ श्रीराम-लक्ष्मण पुत्रे दिल बनवासे

किया और एकाएक ऊपर सुरंग बन गयी। उस सुरंग से वह अविलम्ब लंका जा पहुँचा। सिंहासन पर बैठे राजा लंकेश्वर रो रहे हैं। महीरावण को देखकर राजा रावण ने सिंहासन छोड़ दिया और दोनों बाहों में भरकर महीरावण का आलिंगन किया, उसको गोद में लेकर उसका सिर चूमा। महीरावण ने रावण का चरण-वन्दन किया। दोनों सिंहासन पर एक साथ बैठे। हाथ जोड़ कर महीरावण ने पिता से कहा। हे पिता, तुमने किस काम से मुझको याद किया। मुझको आज्ञा दो, तुम्हारा क्या काम है ? मैं पूरा करूँ। आँखों से आँसू बहाते हुए रावण ने रोते-रोते लंका की सारी दुर्दशा कह सुनाई ॥ ४४६ ॥

रावण ने कहा, बेटा दु:ख की कहानी सुनो। मेरी बहन शूर्पनखा जो तुम्हारी बुआ है, उसके नाक-कान मनुष्य होकर इन लोगों ने काट लिये ? इतना अपमान मैं कैसे सह सकता था। महीरावण ने कहा, पिता जी, पूरा ब्योरा सुनाओ, अचानक ही किस कारण उन्होंने नाक-कान काट लिये। रावण ने कहा, बहन शूर्पनखा सबसे छोटी है, विधवा होने के उपरान्त वह शुद्धाचार से रहने लगी। लंका की सुख-सम्पदा छोड़कर वह पंचवटी में वनवासिनी बन कर रहने लगी। शूर्पनखा की रक्षा के हेतु मैंने खर और दूषण के साथ चौदह हजार राक्षस भी नियुक्त कर दिये थे। फूलों की खोज में शूर्पनखा गई थी, ऐसी गड़बड़ी होगी यह उसे मालूम नहीं था। सूर्यवंश के एक राजा थे दशरथ, जिन्होंने अपने दोनों बेटों राम-लक्ष्मण को वनवास

संगेते बनिता तार, सीता-नामे नारी ※ शूर्पणखा-संगे कहे वाक्य दुइ-चारि
पुष्प लागि रसाभाष नारी दुइजने ※ कोप करि नाक-कान काटिल लक्ष्मणे
एइ अपमान कहे से खर-दूषणे ※ सैन्य ल'ये गिया युद्ध करिल दु'जने
करिया तुमुल युद्ध दु'जनार सने ※ राक्षस हाजार-चौद्द पड़े राम-बाणे
लंकाते आसिया भग्नी कान्दे मनोदुःखे ※ सर्व्व-अंग ज्व'ले गेल काटा नाक देखे
जिज्ञासिनु, ए-दुर्गति करिलेक केटा ※ शूर्पणखा बले, दादा, नर एक बेटा
दुइ-भाइ आसियाछे पंचबटी बने ※ परमा-सुन्दरी एक नारी तार सने
शूर्पणखा मुखे शुनि ए सकल कथा ※ कोपे हरि आनियाछि रामेर बनिता
वनेर बानरसब सहाय करिया ※ सागर बान्धिल राम गाछ-पाथर दिया
सागर वन्धिया राम लंकापुरी बेड़े ※ इद्रजित् वीरबाहु सबे रणे पड़े
सैन्य ओ सामन्त मारि दर्प कैल चूर्ण ※ रणे मैल सहोदर भाइ कुम्भकर्ण
दुर्ज्जय लक्ष्मण-रामे जिनिते ना पारि ※ संकटे पड़िया वापु, तोमारे ये स्मरि५०
रावण कहिला यदि एतेक काहिनी ※ से महीरावण कहे करि जोड़पाणि
स्वर्णपुरी लण्डभण्ड हैल तव दोषे ※ पश्चाते डाकिले सब करिया विनाशे
सागरेर पारे जबे श्रीराम-लक्ष्मण ※ तखन आमारे केन ना कैला स्मरण
मम डरे देव-दैत्य सबे करे शंका ※ आमि विद्यमाने मजे स्वर्णपुरी लंका

भेज दिया। उनके साथ सीता नामक उनकी स्त्री थी। शूर्पनखा के साथ उसने दो-चार बातें हँसी-ठिठोली में कीं। ताव खा कर लक्ष्मण ने नाक-कान काट लिये। उसने आकर खर-दूषण से इस अपमान के बारे में बताया। दोनों अपनी सेना लेकर युद्ध करने गये। दोनों के साथ घनघोर युद्ध हुआ। राम के बाणों से चौदह हज़ार राक्षस खेत रहे। लंका में आकर बहन अति दुखी मन से रोने लगी, उसकी नाक कटी देखकर मेरे तनबदन में आग लग गई। मैंने पूछा, तुम्हारी यह दुर्दशा किसने की ? शूर्पनखा ने कहा, दादा, एक मनुष्य ने मेरी यह दुर्गति की है। पंचवटी के वन में दो भाई आए हैं, उनके साथ एक परम-सुन्दरी नारी है। शूर्पनखा के मुँह ये बातें सुनकर मैं राम की स्त्री को चुरा लाया। वन के वानरों को अपना सहाय बनाकर राम ने पेड़-पत्थरों से समुद्र को बाँध डाला। समुद्र को बाँध कर राम ने लंकापुरी घेर ली। इन्द्रजीत, वीरबाहु सभी युद्ध में गिरे। सैन्य-सामन्त मारकर उसने मेरा घमंड चूर-चूर कर दिया। युद्ध में मेरा भाई कुम्भकर्ण भी मर गया। इन अजेय राम-लक्ष्मण को युद्ध में पराजित नहीं कर पा रहा हूँ। बेटा, संकट में पड़कर तुमको इसी लिए याद किया है ॥ ४५० ॥

रावण ने जब इतनी सारी कथा कह सुनाई तो महीरावण ने हाथ जोड़ कर कहा, तुम्हारे ही दोष से यह स्वर्ण-पुरी चौपट हुई। सब लोगों के विनाश

आमार बाणेर टान ना सहे संसारे ❋ नर-बानरेते एत अपमान करे
मोर डरे देवगण जाय स्वर्ग छाड़ि ❋ बान्धि आनि देवगणे गले दिया दड़ि
त्रिभुवने हेन कथा कोथाओ ना शुनि ❋ जारे खाइ, सेइ खाय, अपूर्व्ब काहिनी
कटाक्षे मारिब जारे, तार संगे रण ❋ हेन माया करिब, ना जाने कोनजन
इन्द्र-शची थाके यदि एक सिंहासने ❋ शचीरे आनिते पारि, इन्द्र नाहि जाने
नर-वानर भुलाइव कत वड़ काज ❋ आर दुःख ना भाविह, शुन महाराज
श्रीराम-लक्ष्मण तव बैरी दुइजने ❋ नरवलि दिब ल'ये पाताल-भुवने
राम-लक्ष्मणेरे आर नाहि तव शंका ❋ सीता ल'ये भोग कर स्वर्णपुरी लंका ५१
मही यदि करिलेक एतेक आश्वास ❋ हात बाड़ाइया जेन पाइल आकाश
रावण बले, पुत्र, तुमि प्राणेर समान ❋ तोमा हैते आमार हइबे परित्राण
बुझिलाम, तोमा हैते बैरी हबे क्षय ❋ तोमार गुणेते मोर सर्व्बत्रइ जय
मही वले शुन पिता लंका-अधिकारि ❋ स्थिर ह'ये बैस तुमि, वैरी आमि मारि ४५२

के वाद तुमने मुझे बुलाया। जब श्रीराम-लक्ष्मण सागर के दूसरी ओर थे तभी मुझको तुमने क्यों नहीं बुलाया। मेरे भय से देव-दैत्य सभी काँपते हैं और मेरे रहते हुए स्वर्ण-पुरी लंका ध्वंस हो जाये! मेरे वाणों की चोट सारा संसार नहीं सह सकता और नर-वानर मिल कर तुम्हारा ऐसा अपमान कर रहे हैं! मेरे भय से देवता स्वर्ग छोड़कर भाग खड़े होते हैं, मैं देवताओं के गले में रस्सी बाँधकर ले आता हूँ। त्रिभुवन में ऐसी बात कभी सुनने को नहीं मिली कि जिसको हम खाते हैं वही हमको खाने लग जाय। जिसको कटाक्ष में मार गिराऊँ उसके साथ युद्ध कैसा? मैं ऐसी माया करूँगा जिसे कोई नहीं जानता। इन्द्र-शची यदि एक सिंहासन पर बैठे हों तो शची को उड़ा लाऊँ और इन्द्र को पता भी न चले। नर-वानर को भुलावे में डालना कोई वड़ा काम नहीं है। अब तुम दिल को छोटा मत करो महाराज! तुम्हारे दोनों शत्रु श्रीराम और लक्ष्मण को पाताल ले जाकर वलि दूँगा। अब तुम श्रीराम-लक्ष्मण से कोई भय मत करो। सीता को लेकर स्वर्ण-पुरी लंका में आनन्द भोग करो॥ ४५१॥

महीरावण ने जब इतना आश्वासन दिया तो रावण को मानों हाथ बढ़ाते ही आकाश मिल गया। रावण ने कहा, बेटा तुम मेरे प्राणों के समान हो, तुम्हारे ही द्वारा मुझको इनसे त्राण मिलेगा। यह मैं समझ गया कि तुम्हारे ही द्वारा शत्रु का विनाश होगा, तुम्हारे ही गुणों के कारण मेरी सर्वत्र विजय होगी। महीरावण ने कहा, हे पिता, हे लंका के अधिकारी, तुम आराम से बैठो, मैं शत्रु का विनाश करता हूँ॥ ४५२॥

विभीषण-कर्त्तृक रावण ओ महीरावणेर मन्त्रणा-श्रवण एवं
राम-लक्ष्मणेर रक्षा-विधान

दुइजने कहे कथा वसि सिंहासने ※ विभीषण निवेदिल रामेर चरणे
जोड़हाते रघुनाथे बले विभीषण ※ निश्चिन्त हइया केन र'येछे रावण
इन्द्रजित् पड़ियाछे वीर नाहि आर ※ कि मन्त्रणा करे रावण देखि एक बार
प्रणमिया श्रीराम-लक्ष्मण-जाम्ववाने ※ पक्षिरूप धरिया चलिल विभीषणे
रावणेर अन्त:पुरे गेल अनिमिखे ※ रावण-सहिते महीरावणेरे देखे
पिता-पुत्रे दुइजने वसि एकासने ※ युक्ति करे दु'जनेते हरषित-मने
देखि महीरावणे चिन्तित विभीषण ※ रामेर निकटे एल त्वरित-गमन ५३
विभीषण कहे आसि करि जोड़हात ※ आजि वड़ संकट ये देखि रघुनाथ
रावणेर पुत्र एक से महीरावण ※ मायार सागर वेटा, बुद्धे विचक्षण
मन्दोदरी-गर्भे सेइ जन्मिल तनय ※ ताहार संग्रामे सुरासुर करे भय
पातालपुरेते थाके वापेर आदेशे ※ महा-वल-पराक्रम, सबे भय वासे
ताहार संग्रामे प्रभु नाहि कारो रक्षा ※ त्रिभुवन-विजयी, धनुक-बाण-शिक्षा

विभीषण द्वारा रावण और महीरावण का परामर्श सुनना और
राम-लक्ष्मण की सुरक्षा की व्यवस्था

दोनों (रावण-महीरावण) सिंहासन पर बैठे बातें कर रहे थे। विभीषण ने श्रीराम के चरणों में आकर निवेदन किया। रघुनाथ से विभीषण ने हाथ जोड़कर कहा, रावण यों निश्चिन्त क्यों बैठा हुआ है। वीर इन्द्रजीत मर गया है तो अब कोई वीर नहीं रहा। जरा देख आऊँ कि रावण क्या सलाह कर रहा है। श्रीराम-लक्ष्मण और जाम्ववान को प्रणाम कर विभीषण पक्षी का रूप धारण कर चल पड़ा। क्षणभर में वह रावण के अन्त:पुर में जा पहुँचा। वहाँ उसने रावण के साथ महीरावण को देखा। वाप-बेटे एक ही आसन पर बैठे हैं और काफ़ी आनन्दमग्न दशा में सलाह कर रहे हैं। महीरावण को देखकर विभीषण मन ही मन बड़ा चिन्तित हुआ। झट वह राम के पास वापस आ पहुँचा ॥ ४५३ ॥

लौटकर विभीषण ने हाथ जोड़ कर कहा, हे रघुनाथ, आज तो बड़ा संकट आया हुआ देख रहा हूँ। रावण का एक पुत्र है महीरावण। वह बुद्धि में विचक्षण तथा माया का समुद्र है। इस पुत्र ने मन्दोदरी के गर्भ से जन्म लिया। इसके साथ संग्राम में सुर-असुर सभी डरते हैं। वाप के आदेश से यह पाताल में रहता है। यह महा बलवान और पराक्रमी है, सभी लोग उससे डरते हैं। हे प्रभु, उसके साथ युद्ध में किसी की भी रक्षा नहीं। वह त्रिभुवन-विजयी है और धनुष-वाण की शिक्षा में निष्णात है। जिस प्रकार

माया पाति डाकिनी छाओयाले जेन हरे ※ सेइमत मही माया करि चुरि करे
कत माया धरे, केह नाहि जाने सन्धि ※ महामाया तार घरे सत्ये आछे बन्दी
जाहा मने करे, ताहा करिवारे पारे ※ त्रिभुवन काँपे महीरावणेर डरे
हेन दुष्ट आसियाछे लंकार भितर ※ आजि निशि जाग सबे हइया सत्वर
बुझिया सुयुक्ति कर मन्त्री जाम्बवान् ※ महीर मायाते किसे पावे परित्राण५४
जाम्बवान् कहे, शुन वीर हनूमान ※ विपदे नाहिक वन्धु तोमार समान
विभीषण-वचन करह अवगति ※किरूपे निस्तार पाव आजिकार राति५५
हनूमान बले, शुन यत वीरभागे ※ चोरा-बेटाय विनाशिब सारारात्रि जेगे
मरिल सकल वीर, मही बेटा आछे ※ बधि महीरावणे रावणे बधि पिछे
एखनो रावण बेटा जीते साध करे ※ उपाड़िया लंकापुरी डुबाब सागरे
चतुर्द्दश - भुवनेते सुग्रीवेरे गति ※ येखाने लुकाये थाके, नाहि अव्याहति
लेजेर कुण्डली-गड़ करिब निर्म्माण ※ सकले जागिया थाक ह'ये सावधान
रहिब सकल कपि गड़ आगुलिया ※कार साध्य जाइबेक आमारे भाण्डिया५६
विभीषण बले, शुन पवन-नन्दन ※ प्रतीत तोमार वाक्य हबे कोन जन

डायन मायाजाल बिछाकर बच्चा चुराती है उसी प्रकार महीरावण मायाजाल बिछाकर हरण करता है। ऐसी कितनी ही प्रकार की माया उसे आती हैं जो किसी को नहीं मालूम। वास्तव में महामाया उसके घर में बन्दिनी बनी हुई है। जो उसके दिल में आता है वही वह कर सकता है। महीरावण के डर से त्रिभुवन काँपता रहता है। ऐसा दुष्ट आज लंका के भीतर आया हुआ है। आज सभी लोग चौकन्ना होकर रात जागो। मंत्री जाम्बवान, आज समझ-बूझकर परामर्श करो कि महीरावण की माया से कैसे बचा जा सकता है॥ ४५४ ॥

जाम्बवान ने कहा, हे वीर हनुमान सुनो, विपत्ति में तुम्हारे समान कोई मित्र नहीं। विभीषण की बातें सुनो और बताओ कि आज की रात हमें किस प्रकार से निस्तार मिल सकता है॥ ४५५ ॥

हनुमान ने कहा, सारे वीरगण सुनो, इस दुष्ट चोर का विनाश हम सारी रात जाग कर करेंगे। सारे वीर मर चुके हैं बस यह महीरावण ही बचा है। इसको मारकर फिर हम रावण का वध करेंगे। अब भी यह रावण जीतने की आशा करता है। लंकापुरी उखाड़ कर समुद्र में डुबो दूँगा। चौदह भुवनों में सुग्रीव की गति है। कहीं पर भी कोई छिपा हो उसका बचाव नहीं। पूँछ की कुंडली बनाकर गढ़ का निर्माण करूँगा। सभी लोग सावधान होकर जागते रहो। सारे कपि इस गढ़ के पहरे में रहेंगे। देखें तो भला मुझको लाँघकर कौन चला जायेगा॥ ४५६ ॥

विभीषण ने कहा, पवन-नन्दन सुनो। तुम्हारे वाक्यों पर कौन विश्वास

यावत् ए कालानिशि प्रभात ना हय ※ तावत् आमार मने ना हबे प्रत्यय५७
श्रीराम बलेन, शुन पवन-कुमार ※ आजि रात्रि उद्धारिते भरसा तोमार
हासिया हासिया कन मन्त्री जाम्बवान् ※ हनूमान वीर वड़ कहिल प्रमाण
देखादेखि आसि यदि रणे देयहाना ※ तबे त ताहार संगे खाटे वीरपना
अलक्षिते आसि चोर जावे चुरि क'रे ※ देखिते ना पाबे हनू, कि करिवे तारे
अलक्षिते आसिबे से, चुरि विद्या जाने ※ एकत्तरे सवाइ थाकह जागरणे ५८
जाम्बवान बले, तव अतुल विक्रम ※ आजिकार रात्रि तुमि कर परिश्रम
एइबेला बैस सबे दृढ़ युक्ति करि ※ बेला-अवसान हैल, आइल शर्व्वरी
जाम्बवान-कथा यदि हैल अवसान ※ हेनकाले कर जुड़ि वले हनूमान
मायावी राक्षस सेइ कत माया जाने ※ सन्धान ना पाय जेन, थाक सावधाने५९
श्रीरामेरे कहिलेन पवन-नन्दन ※ विष्णुचक्र आकाशे करह आच्छादन
चक्र-आच्छादन यदि रहिल गगने ※ शून्येते आसिते पारे काहार पराणे
विश्वकर्म्मा-पुत्र नल मायार निधान ※ पाताले रहुक गिया ह'ये सावधान
सावधान ह'ये सबे रह सारि-सारि ※लेजे गड़ बान्धि आमि ताहे रहि द्वारी६०

करेगा। जब तक यह विपत्ति-भरी रात्रि समाप्त नहीं होती तब तक मेरे मन में विश्वास नहीं होगा ॥ ४५७ ॥

श्रीराम ने कहा, पवनकुमार सुनो। आज की रात तुम्हारे ही भरोसे हमारा उद्धार है। हँस कर वीर जाम्बवान ने कहा, यह सिद्ध हो गया कि हनुमान बहुत बड़ा वीर है। आमने-सामने आकर यदि युद्ध करने लग जाय तब तो उसके साथ दिलेरी चल सकती है। किन्तु अनदेखे आकर अगर कोई चोर चोरी कर ले जाय और हनुमान उसको देख न सके, तो उसका वह क्या बिगाड़ लेगा। जो चौर्य-विद्या-विशारद है वह अनदेखे आयेगा। सभी लोग एक स्थान पर इकट्ठे होकर जागते रहो ॥ ४५८ ॥

जाम्बवान ने कहा, तुम्हारा पराक्रम अतुलनीय है—आज की रात तुम परिश्रम करो। सभी लोग दृढ़संकल्प होकर अभी से बैठ जाओ, दिन समाप्त हो गया और रात आ गयी। जाम्बवान की बातें समाप्त हुईं तो हाथ जोड़कर हनुमान ने कहा, वह मायावी राक्षस जाने कितनी माया जानता है। उसको कुछ भी न पता लगने दो, सावधानी से रहो ॥ ४५९ ॥

श्रीराम से पवननन्दन ने कहा, विष्णुचक्र से गगन को आच्छादित कर दो। अगर गगन में यह चक्र-आच्छादन रहेगा तो शून्य के रास्ते कौन आ सकेगा। विश्वकर्मा का पुत्र नल भी माया का निधान है। वह पाताल पहुँचकर सावधान रहे। सभी लोग सावधान होकर कतार में रहो। पूँछ से गढ़ बनाकर मैं उसी का दरवान बन जाता हूँ ॥ ४६० ॥

लेज हय दीर्घाकार शतेक योजन ❋ गठिल विचित्र गड़ पवन-नन्दन
प्राचीर चौतार हैल अति मनोहर ❋ सकल कटक ढोके ताहार भितर
सुग्रीवेर कोले राम कमललोचन ❋ अंगदेर कोले र'न ठाकुर लक्ष्मण
लांगूलेर गड़े वीर जुड़िलेक देश ❋ ताहाते ससैन्ये राम करेन प्रवेश
अपूर्व्व लेजेर गड़ निर्म्माण जे करि ❋ विभीषण भ्रमितेछे हइया प्रहरी
सकल-कटक-माझे श्रीराम-लक्ष्मण ❋ गाछ-पाथर हाते कपि करे जागरण
लेजेते वान्धिल गड़, ठेकिल गगन ❋ उपरेते विष्णुचक्र फेरे घने-घन
गड़ेर द्वारेते द्वारी आपनि से रहे ❋ कार साध्य प्रवेश करिते पारे ताहे
एइरूप सकलेते तथाय रहिल ❋ कृत्तिवास रामायण यत्ने विरचिल४६१

महीरावण-कर्त्तृक मायाबले श्रीराम-लक्ष्मण-हरण

द्वितीय प्रहर निशि घोर अन्धकार ❋ विभीषण वले, शुन पवनकुमार
आपनि पवन यदि आसे तव पिता ❋ प्रवेश करिते तारे नाहि दिबे हेथा
एत वलि बाहिर हइल विभीषण ❋ गड़ेर चौदिके देखे करिया भ्रमण४६२
रावणे प्रणाम करि से महीरावण ❋ श्रीरामेर निकटेते करिल गमन
ठाट कटक हस्ती घोड़ा ना लय दोसर ❋ माया करि एकाकी चलिल निशाचर

पूँछ शत योजन लम्बी हो गई, उससे पवननन्दन ने विचित्र गढ़ का निर्माण कर लिया। चारों ओर मनोहर प्राचीर बन गई। सारी सेना उसी के भीतर आ गई। सुग्रीव की गोद में कमललोचन राम लेटे और अंगद की गोद में लक्ष्मणजी। पूँछ के गढ़ से वीर ने सारा युद्धक्षेत्र घेर लिया। उसी में अपनी सारी सेना के साथ राम ने प्रवेश किया। पूँछ वाले गढ़ के निर्माण के बाद विभीषण प्रहरी बनकर चक्कर लगाने लगा। सारे कटक के बीच में श्रीराम और लक्ष्मण हैं। हाथों में पेड़ और पत्थर लिये कपि जागने लगे। पूँछ से गढ़ बाँधा जो कि गगन छूने लगा और गगन में विष्णु-चक्र बड़े जोर से घूमने लगा। गढ़ के द्वार पर द्वारी बना वह स्वयं खड़ा हो गया। किसकी शक्ति है कि उसमें प्रवेश कर ले। इस प्रकार सभी लोग वहाँ अवस्थित हो गये। कृत्तिवास ने यत्न से रामायण की रचना की ॥ ४६१ ॥

महीरावण द्वारा मायाबल से श्रीराम-लक्ष्मण का हरण

रात का दूसरा पहर था, चारों ओर घोर अंधेरा छाया हुआ था, विभीषण ने कहा, पवन-कुमार सुनो अगर स्वयं तुम्हारे पिता पवन भी आवें तो भी उनको यहाँ घुसने मत देना। इतना कहकर विभीषण बाहर निकल गया और गढ़ के चारों ओर चक्कर लगाकर देखने लगा ॥ ४६२ ॥

रावण को प्रणाम कर महीरावण श्रीराम के पास गया। हाथी, घोड़ा,

आकाशे आसिते चक्र देखिल सत्वरे ❋ ठाठ कटक देखे सब गड़ेर भितरे
मने-मने भावे मही रावण-नन्दन ❋ मायाते हरिव आजि श्रीराम-लक्ष्मण
विभीषणे देखे तथा गड़ेर बाहिरे ❋ किरूपे जाइव आमि उहार गोचरे६३
मने-मने चिन्ता महा करिया तखन ❋ मायाते हइल अज-राजार नन्दन
दशरथ ह'ये आसि दिल दरशन ❋ दशरथ वले, शुन पवन-नन्दन
आमार सन्तान दु'टि श्रीराम-लक्ष्मण ❋ श्रीराम-लक्ष्मण-सने करि दरशन
हनूमान वले, गोसाँइ करि निवेदन ❋ क्षणेक विलम्ब कर, आसुक विभीषण
हेनकाले विभीषण दिला दरशन ❋ तरासे पलाये गेल से महीरावण
हनू वले, शुनह धार्म्मिक विभीषण ❋ राजा दशरथ एसेछिलेन एखन
विभीषण वले यदि आसे तव पिता ❋ प्रवेश करिते तबु नाहि दिवे हेथा६४
एत वलि विभीषण तथा हैते जाय ❋ अन्तरे थाकिया मही देखिवारे पाय
भरत हइया एल हनूमान-काछे ❋ श्रीराम-लक्ष्मण दुइ-भाइ कोथा आछे
चौद्दवर्ष वनवासी मस्तकेते जटा ❋ दशरथ-राजार आमरा चारि वेटा
श्रीराम-लक्ष्मण कोथा करि दशरन ❋ एत शुनि कहिछेन पवन-नन्दन

सेना आदि उसने साथ नहीं लिया, अकेला मायाबल से निशाचर महीरावण चला। आकाश से आते हुए उसने चक्र देखा, गढ़ के भीतर पूरी सेना को देखा। मन ही मन रावण-नन्दन महीरावण सोचने लगा, माया से आज राम-लक्ष्मण का हरण करना है। गढ़ के बाहर उसने विभीषण को देखा, सोचने लगा मैं किस प्रकार उनके निकट जाऊँ ? ॥ ४६३ ॥

मन ही मन विचार कर महीरावण ने तब माया से अज राजा के पुत्र (दशरथ) का रूप धारण कर लिया। दशरथ बनकर उसने दर्शन दिया। दशरथ ने कहा, हे पवन-नन्दन सुनो। मेरे दो पुत्र हैं राम और लक्ष्मण, मैं उन दोनों पुत्रों का दर्शन करना चाहता हूँ। हनुमान ने कहा, गुसाईं मेरा निवेदन सुनें, तनिक ठहरें, विभीषण को आने दीजिए। ऐसे ही समय वहाँ विभीषण आ गया। तब डरकर महीरावण वहाँ से भाग गया। हनुमान ने कहा, हे धार्मिक विभीषण सुनो, अभी राजा दशरथ आये थे। विभीषण ने कहा, यदि तुम्हारा पिता भी आ जाये तो भी उसको अन्दर प्रवेश मत करने देना ॥ ४६४ ॥

इतना कहकर विभीषण वहाँ से चला गया। आड़ में रहकर महीरावण ने देखा। भरत बनकर वह हनुमान के पास आया। श्रीराम-लक्ष्मण दोनों भाई कहाँ हैं ? चौदह वर्ष से वे वनवासी हैं, उनके सिर पर जटा हैं। हम लोग दशरथ के चार बेटे हैं। श्रीराम-लक्ष्मण कहाँ है ? उनका दर्शन करना चाहता हूँ। इतना सुनकर पवन-नन्दन ने कहा, तनिक ठहरें, विभीषण को आ जाने दीजिए। इतना सुनकर महीरावण भाग गया। ऐसे ही समय

क्षणेक विलम्ब कर,आसुक विभीषण ※ एत शुनि पाछु हाँटे से महीरावण
हेनकाले धाइया आइल विभीषण ※ हनू वले, भरत आइल एइक्षण
हनूमाने चाहि विभीषण कहे कथा ※द्वार ना छाड़िओ,यदि आसे तव पिता४६५
एत वलि विभीपण गेल अतिदूरे ※ कौशल्या हइया मही आइल सत्वरे
कौशल्या वलेन, शुन पवन-कुमार ※ श्रीराम-लक्ष्मणे मोरे देखाओ एकवार
हनूमान वले, माता, करि निवेदन ※ क्षणेक थाकह हेथा, आसुक विभीषण
एतेक शुनिया मही तिलेक ना थाके ※ विभीपण धाइया आइल दूरे थेके
विभीपणे देखि बुड़ी जाय गुड़ि-गुड़ि ※ ताहा देखि हनू करे दन्त कड़मड़ि
उपनीत हइल राक्षस विभीषण ※ कहिल सकल कथा पवन-नन्दन
विभीषण वले, शुन आमार वचन ※ द्वार ना छाड़िवे, यदि आइसे पवन४६६
एत वलि विभीषण करिला गमन ※ हइया जनक मही दिल दरशन
जनक वलेन, शुन पवन-नन्दन ※ राम-संगे आमार कराह दरशन
आमार जामाता हन श्रीराम-लक्ष्मण ※ चतुर्द्दश-वर्ष गत, नाहि दरशन
तोमारे ना चिनि, बले पवन-नन्दन ※ क्षणकाल थाकह, आसुक विभीषण
एतेक शुनिया ऋषि हनूमान-वोल ※ हनूमान-संगेते जुड़िल गण्डगोल
हेनकाले बिभीषण दिलेक हाँकार ※ पलाय जनक-ऋषि, देखा नाहि आर

विभीषण वहाँ आया। हनुमान ने कहा, अभी भरत आए थे। हनुमान की ओर देखते हुए विभीषण ने कहा, यदि तुम्हारे पिता भी आ जाएँ तो द्वार न छोड़ना॥ ४६५ ॥

इतना कहकर विभीषण अधिक दूर चला गया। फिर कौशल्या बनकर महीरावण वहाँ तुरन्त आ पहुँचा। कौशल्या ने कहा, हे पवन-कुमार सुनो, श्रीराम-लक्ष्मण को मुझको एकबार दिखा दो। हनुमान ने कहा, माता मेरा निवेदन सुनो, क्षणभर ठहरो, विभीषण आ जाय। इतना सुन कर महीरावण क्षणभर भी नहीं ठहरा। दूर से विभीपण भागता हुआ आया। विभीषण को देखकर बुढ़िया चुपचाप खिसक गई, यह देखकर हनुमान दाँत पीसने लगा। राक्षस विभीषण वहाँ आ पहुँचा तो पवन-नन्दन ने सारी बातें बता दीं। विभीपण ने कहा, मेरा वचन सुनो, यदि पवन भी आ जायें तो द्वार न छोड़ना॥ ४६६ ॥

इतना कहकर विभीपण चला गया। फिर महीरावण जनक बनकर प्रगट हुआ। जनक ने कहा, पवन-नन्दन सुनो, राम से मेरी भेंट करा दो। श्रीराम-लक्ष्मण मेरे दामाद हैं, चौदह वर्ष हो गये उनसे भेंट नहीं हुई। पवन-नन्दन ने कहा, मैं तुमको पहचानता नहीं, थोड़ा सा रुक जाओ, विभीपण आ जाएँ। हनुमान की ऐसी बातें सुनकर ऋषि (जनक) ने हनुमान के साथ विवाद करना शुरू कर दिया। ऐसे ही समय विभीषण ने हाँक लगाई

उपनीत हइल राक्षस बिभीषण ※ विभीषणे कहे सब पवन-नन्दन
बिभीषण बले, यदि आसे तव पिता ※ गड़ेर भितरे जेते ना दिओ सर्व्वथा६७
एतेक बलिया विभीषणेर गमन ※ विभीषण ह'ये मही दिल दरशन
हनूमान बले, तुमि गेले एइक्षणे ※ एत शीघ्र फिरे एले किसेर कारणे
महीरावण बले शुन पवन-नन्दन ※ चोरा-माया जाने कत से महीरावण
सावधाने थाक हनू, आजिकार निशि ※ राम-लक्ष्मणेर हाते रक्षा बेंधे आसि
एतेक वलिया मही गड़ेते प्रवेशे ※ अलक्षिते गेल राम-लक्ष्मणेर पाशे
सुग्रीव-अंगद-कोले आछेन दु' भाइ ※ मायारूपे निशाचर गेल सेइ ठाँइ
महामाया स्मरि धूला दिल उड़ाइये ※ राम-लक्ष्मण निद्रा जाय अचेतन ह'ये
अचैतन्य ह'ये पड़े यतेक वानर ※ हात हैते खसि पड़े गाछ ओ पाथर
श्रीराम-लक्ष्मण दोंहे घुमे अचेतन ※ सुड़ंगे लइया जाय आपन-भवन
निद्रा नाहि भाँगे, दोंहे आछेन शयने ※ घरेर भितरे ल'ये राखिल गोपने
चारिदिके निशाचर, नाना अस्त्र हाते ※ निजपुरे रहे मही हरिष-मनेते ६८
हेथाय गड़ेर द्वारे एल विभीषण ※ हनूमान-स्थाने वार्त्ता पूछे घने-घन

तो जनक ऋषि भाग खड़े हुए और दिखाई न पड़े। राक्षस विभीषण आ पहुँचे तो पवन-नन्दन ने उनसे सारी बातें बताईं। विभीषण ने कहा, यदि तुम्हारे पिता भी आ जाएँ तो भी उनको गढ़ के भीतर जाने मत देना ॥ ४६७ ॥

इतना कहकर ही विभीषण चले गये। तब महीरावण विभीषण बनकर प्रगट हुआ। हनुमान ने कहा, अभी-अभी तो तुम यहाँ से गये, इतनी जल्दी किस कारण लौट आए। महीरावण ने कहा, पवन-नन्दन सुनो, वह महीरावण जाने कितनी गुप्त-माया जानता है। आज की रात हनुमान तुम सावधानी से काटना, जाऊँ जाकर राम-लक्ष्मण के हाथों में (रक्षा की) राखी बाँध आऊँ। इतना कहकर महीरावण गढ़ में प्रवेश कर गया और अलक्षित रहकर राम-लक्ष्मण के पास पहुँचा। सुग्रीव और अंगद दोनों की गोद में दो भाई लेटे हैं। माया का रूप धरकर निशाचर उस ठाँव पहुँचा। महामाया का स्मरण कर उसने धूल फेंकी। राम-लक्ष्मण दोनों नींद में अचेतन सोने लगे। जितने वानर थे वे भी अचेतन हो गये और उनके हाथों से पेड़ और पत्थर गिर गये। राम-लक्ष्मण दोनों नींद में बेसुध पड़े हैं। उनको सुरंग के रास्ते वह अपने भवन ले गया। दोनों की नींद नहीं टूटी, दोनों ही लेटे हुए हैं। घर के भीतर ले जाकर उसने छिपाकर रख दिया। विभिन्न अस्त्र-शस्त्र हाथ में लिये निशाचर चारों ओर खड़े हैं और महीरावण हर्षमग्न होकर अपने भवन में है ॥ ४६८ ॥

यहाँ गढ़ के द्वार पर विभीषण पहुँचा। हनुमान से उसने बार-बार हाल-चाल पूछा। हनुमान जानता है कि विभीषण गढ़ के भीतर है और

हनू जाने, बिभीषण गड़ेर भितरे ※ एबे हनू देखे तारे गड़ेर वाहिरे
हनूमान वले, के राक्षस विभीषण ※ औषध बान्धिते तुमि गेले जे एखन
वाहिर हइया एले कोन पथ दिया ※ तोमारे देखिया मोर स्थिर नहे हिया
बुझिते ना पारि किवा आछे तव मने ※ रावणेर चर ह'ये आछ राम-स्थाने
रावणेर चर ह'ये आस जाह निति ※ कपट करिया राम-सह कैले मिति
मोर ठाँइ वेटा, तोर नाहिक निस्तार ※ लेजेर वाड़ीते ल'व यमेर दुयार
उपाड़िया लंकापुरी डुवाव सागरे ※ लंकार वसति पाठाइव यमपुरे
रावणेर दूत तुइ रामेर निकटे ※ कि वलिस्, तोर वाक्ये मोर वुक फाटे ६९
विभीषण वले, नाहि एसेछि कपटे ※ दिव्य करि हनूमान, तोमार निकटे
गोवधे ओ ब्रह्मवधे यत पाप हय ※ यदि छले एसे थाकि, लइव निश्चय
यत पाप हय ब्रह्मवधे सुरापाने ※ आमार से पाप, यदि खल थाके मने
हनूमान वले, तोर दिव्य किछु नय ※ ब्रह्मवधे, गोवधे राक्षसे कोथा भय
विभीषण वले, तुमि विचारे पण्डित ※ विचार न करि केन वल अनुचित
केमने वलह मोरे रावणेर चर ※ युक्ति दिया वधिलाम यत निशाचर
इन्द्रजित्-यज्ञभंग-सन्धि केवा जाने ※ युक्ति दिया वधिलाम आपन-सन्ताने

अब देखता है कि वह गढ़ के वाहर है। हनुमान ने कहा, राक्षस विभीषण कौन है? अभी तुम राखी वाँधने के लिए भीतर गये थे फिर किस रास्ते से वाहर निकल आए। तुमको देखकर मेरा हृदय चंचल हो रहा है। समझ में नहीं आता कि तुम्हारे मन में क्या है। रावण के चर वन कर राम के साथ हो। रावण के चर वनकर नित्य-प्रति आते जाते रहते हो, कपट से तुमने राम के साथ मित्रता की। मेरे निकट तेरा अब निस्तार नहीं, पूँछ के एक ही प्रहार से तुझे यम के घर भेज दूँगा। लंकापुरी को उखाड़ कर समुद्र में डुबो दूँगा और लंका के सारे निवासियों को यमालय भेज दूँगा। राम के निकट तू रावण का दूत है। तू क्या कहता है, तेरे वाक्य सुनकर मेरा हृदय फटा जाता है॥ ४६६॥

विभीषण ने कहा, हनुमान मैं सौगन्ध खाकर कहता हूँ, मैं कपट से तुम्हारे निकट नहीं आया हूँ। यदि मैं छल-कपट कर आया हूँ तो गोवध और ब्राह्मण-वध से जितना पाप लगता है मुझ पर लगे। यदि मेरे मन में दुष्टता हो तो जितना पाप ब्राह्मणवध और मदिरापान से होता है मुझ पर लगे। हनुमान ने कहा, तेरे सौगन्ध से कुछ भी नहीं होता। राक्षस को ब्रह्मवध-गोवध से कौन सा भय है। विभीषण ने कहा, तुम विचारने में पंडित हो, विना विचारे तुम अनुचित क्यों कह रहे हो। किस प्रकार से तुम मुझको रावण का चर कहते हो, युक्ति देकर मैंने कितने ही निशाचरों का वध कराया। इन्द्रजीत के यज्ञमंत्र की गुप्तकथा कौन जानता है, युक्ति देकर मैंने अपनी

कत रूप ह'ये एल से महीरावण ※ भुलाते ना पारि शेषे हैल विभीषण७०
हनूमान बले, कथा शुनि लागे डर ※ मायाते कि गेल मही गड़ेर भितर
लाजे हनूमान-वीर करे हेंटमाथा ※ विभीषणे भर्त्सिलाम, अनुचित कथा
पथ छाड़ि दिया आमि कैनु विपरीत ※ विभीषणे भर्त्सिलाम, नहे त उचित
हनूमान बले, कथा शुन विभीषण ※ आगे गिया देखि चल श्रीराम-लक्ष्मण
मारुतिर वाक्येते राक्षस विभीषण ※ प्रमाद पड़िल, मने जानिल तखन७१
बिभीषण बले, शुन पवन-नन्दन ※ चल तबे, देखि गिया श्रीराम-लक्ष्मण
द्रुतगति जाय दोंहे धेये ऊर्ध्वमुखे ※ श्रीराम-लक्ष्मण नाहि, शून्यमय देखे
आश्चर्य्य देखिल ताहे सुड़ंग-निर्म्माण ※ राम-लक्ष्मणेरे ना देखिया फाटे प्राण
कटकेर माझे नाहि श्रीराम-लक्ष्मण ※ भूमे गड़ागड़ि दिया कान्दे विभीषण
सुग्रीव-अंगद-आदि घुमे अचेतन ※ प्रमाद पड़िल, उठे, बले बिभीषण
कटक-भितरे शुनि हैल महागोल ※ वानर-मण्डले उठे क्रन्दनेर रोल
कान्दिछे सुग्रीव-राजा, नाहिक संवित् ※ कोथा गेले लक्ष्मण श्रीरामचन्द्र मित
धरणी लोटाये कान्दे वीर हनूमान ※ रामेर उद्देशे आमि त्यजिब पराण

सन्तान की हत्या कराई। कितने रूप धारण कर वह महीरावण आया और भुलावा देने में असफल होकर वह अन्त में विभीषण बन गया ॥ ४७० ॥

हनुमान ने कहा, बातें सुनकर डर लगता है, कहीं माया से महीरावण गढ़ के भीतर तो नहीं चला गया। लज्जा से वीर हनुमान का सिर झुक गया। विभीषण की मैंने भर्त्सना की और अनुचित बातें भी कीं। पथ छोड़ कर मैंने विपरीत कार्य कर डाला और विभीषण को जो भला-बुरा कहा वह भी कोई ठीक नहीं। हनुमान ने कहा, विभीषण मेरी बात सुनो। पहले चलकर राम-लक्ष्मण को देख लें। हनुमान के वाक्य सुनकर राक्षस विभीषण ने मन ही मन जान लिया कि विपत्ति आ चुकी है ॥ ४७१ ॥

विभीषण ने कहा, हे पवन-नन्दन सुनो, चलो, चलकर श्रीराम-लक्ष्मण को ही देख लें। दोनों मुँह उठाये तेज-चाल से वहाँ पहुँचे, देखा श्रीराम-लक्ष्मण नहीं हैं, जगह सूनी पड़ी है। यह देखकर वे और भी आश्चर्य करने लगे कि सुरंग निर्मित हुई है। राम लक्ष्मण को न देख कर दोनों के दिल टूक-टूक हो गये। सेना के मध्य श्रीराम-लक्ष्मण नहीं हैं यह देखकर विभीषण भूमि पर लोटकर रोने लगे। सुग्रीव, अंगद आदि नींद में अचेतन पड़े हैं। विभीषण ने कहा, विपत्ति आ गई, उठो। सेना के भीतर यह सुनकर काफी शोरगुल हुआ और वानर-मंडली में रोना-धोना मच गया। राजा सुग्रीव चेतना गँवाकर रोने लग गये, हाय मेरे मित्र रामचन्द्र और लक्ष्मण कहाँ गये। धरती पर लोट कर वीर हनुमान रोने लग गये, मैं राम के निमित्त प्राण दे दूँगा। अग्निकुंड बनाकर मैं उसमें कूद पड़ूँगा। इस जीवन में मन का यह

अग्निकुण्ड साजाइया ताहे दिब झाँप ※ जीवनेते ना घुचिबे मनेर सन्ताप
शिरे हात कान्दे वालिपुत्र युवराज ※ वृथाय शरीर, आर जीवने कि काज
आकुल हइया कान्दे सेनापति नील ※ वाँचिते वासना आर नाहि एकतिल७२
जाम्ववान बले, सबे ना कर क्रन्दन ※ उपाय करह, शुन आमार वचन
क्रन्दन संवर, शुन वानरेर राज ※ जेमते निस्तार पाइ, चिन्त सेइ काज
अस्थिर ना हओ केह विपत्ति-समय ※ सुस्थिर हइले सर्व्वकार्य्य सिद्धि हय
श्रीराम-लक्ष्मण देख जगतेर सार ※ विनाश करिते पारे, साध्य आछे कार
सुमन्त्रणा शुन ओहे सुग्रीव-राजन ※ मारुतिरे पाठाह करिते अन्वेषण
मारुतिर अगम्य नाहिक त्रिभुवने ※ अवश्य पाइवे देखा श्रीराम-लक्ष्मणे
आनिते ना पारे यदि श्रीराम-लक्ष्मण ※ तबे सबे अग्निकुण्डे त्यजिव जीवन
एतेक वलिल यदि ब्रह्मार कुमार ※ कहिल सुग्रीव-राजा, एइ युक्ति सार४७३

श्रीराम-लक्ष्मणेर अन्वेषणे हनूमानेर पातालपुरे गमन

सुग्रीव वलेन शुन पवन-कुमार ※ सीतार उद्देश कैले सागरेर पार
तुमि श्रीरामेर भक्त, जाने सर्व्वजन ※ क'रे एसो श्रीराम-लक्ष्मणे अन्वेषण

सन्ताप दूर न होगा। वालिपुत्र युवराज सिर पर हाथ धरकर रोने लग गये—यह शरीर बेकार है, इस जीवन से क्या लाभ है। सेनापति नील व्याकुल होकर रोते हुए कहने लगे कि अब एक क्षण भी जीने की इच्छा नहीं है॥ ४७२॥

जाम्बवान ने कहा, सब लोग अब मत रोओ, मेरी बात सुनो, कोई उपाय ढूँढ़ निकालो। सुनो वानर-राज, रुदन को रोको और जिस प्रकार से निस्तार मिल सकता है वैसे ही कार्य के बारे में चिन्ता करो। विपत्ति के समय चंचल नहीं होना चाहिए, स्थिर-चित्त रहने से ही सारा कार्य सिद्ध होता है। सुनो, श्रीराम-लक्ष्मण जगत् के सार हैं, उनका विनाश कर सके ऐसी सामर्थ्य किसमें है। हे राजा सुग्रीव, मेरा परामर्श सुनो, हनुमान को ढूँढ़ने के लिए भेज दो। त्रिभुवन में कोई भी स्थान हनुमान के लिए अगम्य नहीं है। श्रीराम-लक्ष्मण से उसकी अवश्य ही भेंट होगी। वह यदि श्रीराम-लक्ष्मण को लाने में असफल हो तो सभी लोग अग्निकुंड में कूद कर प्राण दे देंगे। जब ब्रह्मा के कुमार ने यह कहा तो सुग्रीव राजा बोले कि यही युक्ति श्रेष्ठ है॥ ४७३॥

श्रीराम-लक्ष्मण के अन्वेषण में हनुमान का पाताल-पुर जाना

सुग्रीव ने कहा, हे पवन-कुमार सुनो। सीता के निमित्त तुमने समुद्र लाँघा। तुम श्रीराम के भक्त हो यह सभी लोग जानते हैं। रावण-पुत्र तुमको

तोमारे भुलाये गेल रावण-कुमार ※ त्रिभुवने ए-कलंक रहिल तोमार
तव बुद्धि-भ्रमेते श्रीराम निल चोरे ※ अन्वेषण करिते पाठाब बल कारे४७४
सुग्रीवेर वाक्येते मारुति महाबल ※ लाजे अभिमाने आँखि करे छल-छल
मारुति बलेन, आमि जाव अन्वेषणे ※ स्वर्ग मर्त्य पाताल खुँजिव त्रिभुवने
तथापि ना पाइ यदि श्रीराम-लक्ष्मण ※ करिव जलधि-जले ए-देह पातन७५
एत कहि कान्दे हनू पवन-नन्दन ※ कोथा पाव श्रीराम-लक्ष्मण-अन्वेषण
एइखाने थाक सबे एकत्र हइया ※ यावत् ना आसि आमि त्रैलोक्य चाहिया
सुग्रीव-राजार काछे लइया विदाय ※ सुड़ंगे प्रवेश करि हनूमान जाय
ये-पथे लक्ष्मण-रामे ह'रेछे राक्षसे ※ सेइपथे गेल वीर चक्षुर निमिषे
पातालेते गिया देखे सूर्य्येर प्रकाश ※ विचित्र-निर्म्माण पुरी, येमन कैलास
प्रथमे देखिल वलिराजेर वसति ※ पुण्यतीर्थ गंगा देखे नामे भोगवती
महातपोवने देखे कत मुनि-ऋषि ※ नागिनी यक्षिणी यत परम-रूपसी
चतुर्भुज द्विभुज अशेषरूपी लोक ※ जरा-मृत्यु नाहि तथा, नाहि रोग-शोक
तिनकोटि पुरुषे कपिलमुनि वैसे ※ परमा-सुन्दरी कत देखे आशे-पाशे
विचित्र-निर्म्माण देखे कत तीर्थ-स्थान ※ राम-लक्ष्मणेर सेथा ना पान सन्धान७६

भुलावा देकर निकल गया, तीनों लोक में तुम्हारा यह कलंक रह जायगा। तुम्हारे बुद्धि-भ्रम से चोर श्रीराम को चुरा ले गये। अब तुम्हीं बताओ कि तलाश करने और किसको भेजूँ ॥ ४७४ ॥

सुग्रीव के वाक्य सुनकर महाबली हनुमान की आँखें लाज और अभिमान से डबडबाने लगीं। हनुमान ने कहा, मैं खोज में निकलूँगा। स्वर्ग, मर्त्य, पाताल तीनों लोकों में ढूँढूँगा। फिर भी यदि श्रीराम-लक्ष्मण नहीं मिले तो समुद्र के जल में इस शरीर को विसर्जित कर दूँगा ॥ ४७५ ॥

इतना कहकर पवन-नन्दन हनुमान रोने लगे। हाय, श्रीराम-लक्ष्मण को मैं ढूँढ़ कर कहाँ पाऊँगा। तुम सभी लोग यहाँ तब तक इकट्ठे रहो जब तक कि मैं तीनों लोक देखकर लौट न आऊँ। सुग्रीव राजा से विदा लेकर हनुमान सुरंग के रास्ते चला गया। जिस पथ से श्रीराम-लक्ष्मण को राक्षस चुराकर ले गया था उसी पथ से वीर हनुमान पलक झँपते ही चला गया। पाताल पहुँचकर उसने सूर्य का प्रकाश देखा। अद्भुत ढंग से निर्मित पुरी है, मानो कैलाश हो। पहले तो उसने वलिराजा का इलाका देखा, फिर भोगवती नामक पुण्यतीर्थ गंगा देखी। महा-तपोवन में कितने ही मुनि-ऋषि देखे। नागिनी यक्षिणी आदि कितनी ही परम रूपवती नारियाँ देखीं। चतुर्भुज और द्विभुज अशेषरूपी लोगों को देखा, वहाँ न जरा है और न मृत्यु है, रोग-शोक भी नहीं हैं। तीन कोटि पुरुषों को लेकर कपिलमुनि बैठे हैं।

सकल पाताल-पुरी भ्रमे एके-एके ※ महीरावणेर पुरी देखिल सम्मुखे
छद्मवेश धरिया खुँजिल सव पुरी ※ राक्षसेर पुरी येन अमर-नगरी
त्वरित-गमने गेल पुरीर भितर ※ पाषाण-रचित कत दीघि-सरोवर
असंख्य-पुरुष-नारी परम-सुन्दर ※ विचित्र-निर्म्माण देखे सुवर्णेर घर
वड़-वड़ वृक्ष तथा पर्व्वत-प्रमाण ※ अश्व हस्ती रथ देखे विचित्र-निर्म्माण
मने-मने चिन्ता करे पवन-कुमार ※ एइ पुरे आछे राम-लक्ष्मण आमार
मर्कट-रूपेते रहे वृक्षेर उपर ※ विचित्र-निर्म्माण घाट देखे सरोवर
वहुलोक आसि तथा करे स्नान-दान ※ वानर देखिया हय चमत्कार ज्ञान
वृक्षतले थाकि लोक नेहारिया देखे ※ एमन वानर वल एल कोथा थेके७७
आछिल तथाय एक वृद्धा चिरजीवी ※ वानरे देखिया वृद्धा मने-मने भावि
वृद्धा वले, शुन सबे आमार वचन ※ पूर्व्वेर वृत्तान्त एवे शुन दिया मन
करिल विस्तर तप मही महाराजा ※ विस्तर-प्रकारे कैल महामाया-पूजा
करिल विस्तर पूजा, वहु उपवास ※ अमर हइते राजार छिल वड़ आश
अमर हइते देवी नाहि दिला वर ※ देवी वले, अन्य वर चाह निशाचर

कितनी ही परमसुन्दरी नारियाँ आस-पास दिखाई पड़ीं। कितने ही विचित्र बनावट के तीर्थ-स्थान दिखाई पड़े, लेकिन राम-लक्ष्मण के दर्शन वहाँ भी नहीं मिल सके ॥ ४७६ ॥

सारी पाताल-पुरी में क्रम से घूमते हुए उसने सामने महीरावण की पुरी देखी। छद्मवेश धारण कर उसने सारी पुरी छान डाली। राक्षस की पुरी मानों अमरावती हो। शीघ्र-गति से वह पुरी के भीतर गया। पत्थरों से निर्मित कितने ही पोखर और सरोवर मिले। असंख्य परम सुन्दर नर-नारी भी दिखाई पड़े। विचित्र रूप से निर्मित स्वर्ण-भवन देखे। वहाँ पर्वत जैसे बड़े-बड़े वृक्ष देखे। हाथी, घोड़ा, रथ, सभी विचित्र ढंग से निर्मित देखे। मन ही मन पवन-कुमार ने सोचा, मेरे राम-लक्ष्मण इसी पुरी में हैं। मर्कट का रूप धरकर वह वृक्ष पर बैठ गये। अद्भुत ढंग से बना घाटवाला सरोवर है। उसमें बहुत सारे लोग आकर स्नान-दान कर रहे हैं। वानर को देखकर उनको आश्चर्य हुआ। पेड़ तले खड़े होकर वे लोग निहार-निहार कर देखने लगे कि ऐसा वानर कहाँ से आ गया ॥ ४७७ ॥

वहाँ एक चिरजीवी वृद्धा थी। वानर को देखकर वृद्धा ने मन ही मन सोचा और कहा तुम सब लोग मेरा वचन सुनो, ध्यान से पूर्व-वृत्तान्त सुनो। महाराजा महीरावण ने घोर तपस्या की और कितने ही प्रकार से महामाया की पूजा—अर्चना की। कितना ही व्रत-उपवास किया। (किन्तु देवी ने) अमर बनने का वर नहीं दिया और कहा, निशाचर तुम और कोई वर माँगो। महीरावण ने कहा, अहि, देवता, गन्धर्व, यक्ष, रक्ष, किन्नर, पिशाच इन सबमें किसी के

महि वले, अहि किंवा देवता गन्धर्व्व ❋ यक्ष-रक्ष-किन्नर पिशाच आदि सर्व्व
संग्रामेते कारो हाते मरण ना हय ❋ सेइ वर दिला देवी बुझिया आशय
मही वले, प्रकारेते हइनु अमर ❋ यत जाति योद्धा आछे, कारे नाहि डर
नर ओ वानर एइ दुइ वाकी आछे ❋ भक्ष्यजाति कि करिवे राक्षसेर काछे
भगवती वले, भय कारे नाहि आर ❋ नर, वानरेर हाते सवंशे संहार
अमर नहेन राजा, जानि विवरण ❋ नर-कपि एले हवे राजार मरण
बन्दी करि आनियाछे शिशु दुइ नर ❋ कोथा हैते उपनीत हइल वानर
एइकथा गुप्ते बुड़ी कहे एकजने ❋ चारिदिके देखे पाछे, अन्य केह शुने
शुनि हरषित हैल पवन-नन्दन ❋ कोथाय आछेन प्रभु, भावे मने-मन७८
हेनकाले नारी सव नगर-निवासी ❋ जल लइवारे आसे कक्षेते कलसी
एक नारी प्राचीना महीर पुरदासी ❋ ताहारे जिज्ञासा करे यतेक रूपसी
राजार वाटीते केन वाद्यभाण्ड-रोल ❋ केह नाचे, केह गाय, आनन्दे विभोल
महानन्दे आसितेछे द्विजगण सब ❋ राजार वाटीते आजि किसेर उत्सव
वृद्धा-नारी बले, शुन यतेक रूपसि ❋ राजार बाटीर कथा कैते भय बासि
कहिते निषेध आछे, कहिवार नय ❋ प्रकाश ना कर कथा दण्ड-चारि-छय

साथ भी संग्राम में मेरी मृत्यु न हो। देवी ने आशय समझ कर वर दिया। महीरावण ने कहा, एक प्रकार से मैं अमर ही वन गया, जितने प्रकार के योद्धा हैं उनसे कोई डर न रहा। वस नर और वानर रह जाते हैं। ये लोग तो हमारे भक्ष्य हैं, ये राक्षस के सामने क्या कर सकेंगे। भगवती ने कहा, किसी अन्य से और कोई भय नहीं, केवल नर-वानर के हाथ सवंश निधन होगा। राजा अमर नहीं हैं यह विवरण मैं जानती हूँ, नर और कपि के आने पर ही राजा की मृत्यु होगी। वह दो नर-बच्चों को वन्दी कर लाया है और यह वानर जाने कहाँ से आ टपका है। यह वात वुढ़िया ने एक से गुप्तरूप से कहा और चारों ओर देखने लगी, कहीं कोई सुन न ले। सुनकर पवन-नन्दन हर्ष-मग्न हो गये, वह मन ही मन सोचने लगे कि प्रभु कहाँ पर होंगे ॥ ४७८ ॥

ऐसे ही समय नगर में रहनेवाली नारियाँ पानी भरने के लिए घड़े लेकर आईं। महीरावण के भवन में एक वृद्ध नारी दासी थी, उसीसे सारी सुन्दरियाँ पूछने लगीं—राजा के घर यह गाजे-वाजे की ध्वनि कैसी है, आनन्द से विभोर होकर कोई गा रहा है तो कोई नाच रहा है। सारे द्विज उल्लास-मग्न होकर आ रहे हैं, आज राजा के महल में कौन सा उत्सव है। वृद्धा नारी ने कहा, अरी सुन्दरियो सुनो, राजा के घर की बातें कहने में डर लगता है, कहना मना है और कहना नहीं चाहिए। इस बात को चार-छह दंड कहीं प्रगट न करना। जब तुम लोगों ने पूँछ ही लिया तो गुप्तरूप से

जिज्ञासा करिले यदि, संगोपने वलि ❋ महामाया-काछे आजि हबे नरबलि
आनियाछे शिशु-दु'टि परम-सुन्दर ❋ ना देखि एमन रूप अवनी-भितर
कोन अभागीर पुत्र, देखि फाटे प्राण ❋ दण्ड-चारि-छय परे दिबे बलिदान
वन्दी करि राखियाछे संगोपन-घरे ❋ राजार वाटीर कथा ना कहिओ कारे ४७९

हनूमान-कर्त्तृक श्रीराम-लक्ष्मणेर प्रति आश्वास-प्रदान

एत वलि जल ल'ये गेल सबे वासे ❋ हनूमान शुनिलेन वृक्षोपरि ब'से
मने-मने भावे वीर, पाइलाम सन्धि ❋ एइखाने श्रीराम-लक्ष्मण आछे वन्दी
हृदये पुलक, भावे पवन-तनय ❋ एखानेते थाका आर उचित ना हय
चक्षुर निमिषे गेल राज-अन्तःपुरे ❋ श्रीराम-लक्ष्मण यथा वन्दी आछे घरे
दोहारा लोहार गड़ भितर-वाहिरे ❋ चारिदिके निशाचर नाना-अस्त्र धरे
चारिदिके निशाचर आछे अगणन ❋ घरेर भितरे आछे श्रीराम-लक्ष्मण
मक्षिरूपे प्रवेशिल घरेर भितरे ❋ शरीर-धारण करि दोंहे नमस्करे
आचम्विते मारुति नोयाय गिया माथा ❋ निद्राभंगे श्रीराम-लक्ष्मण कन कथा
लक्ष्मण बलेन, शुन पवन-नन्दन ❋ सुग्रीव अंगद कोथा, कोथा बिभीषण

वताऊँगी—महामाया के सम्मुख आज नरबलि होगी। दो बच्चों को वह ले आया है जो वड़े ही सुन्दर हैं, ऐसा रूप इस संसार में दिखाई नहीं पड़ता। देखकर मन टूक-टूक हो जाता है। जाने किस अभागिन के बेटे हैं। चार-छह दंड के बाद उनका वलिदान होगा। उनको वहुत ही गुप्त-कक्ष में वन्दी वना कर रखा गया है। राजा के घर की बातें किसी और से न कहना ॥ ४७९ ॥

हनुमान द्वारा श्रीराम-लक्ष्मण को आश्वासन-प्रदान

इतना कहकर सभी नारियाँ पानी लेकर अपने-अपने घर चली गईं। हनुमान ने वृक्ष पर बैठे-बैठे सब कुछ सुना। वीर ने मन ही मन सोचा, रहस्य का पता तो लग गया, श्रीराम-लक्ष्मण यहीं वन्दी हैं। मन में पुलक लिये पवन-तनय सोचने लगे कि यहाँ रहना अब ठीक नहीं है। पलभर में वह राजा के अन्तःपुर पहुँच गया। जिस कक्ष में श्रीराम-लक्ष्मण वन्दी हैं, उसमें दोहरे लोहे के किवाड़ अन्दर-बाहर दोनों ओर बने हैं और चारों ओर विभिन्न अस्त्रों से सज्जित निशाचर पहरे पर हैं। चारों ओर अनगिनत राक्षस हैं और कमरे के भीतर श्रीराम-लक्ष्मण हैं। मक्खी का रूप धरकर हनुमान ने भीतर प्रवेश किया और अपना रूप ग्रहण कर दोनों को नमस्कार किया। हनुमान ने अकस्मात् जाकर सिर नवाया और नींद के टूटने से श्रीराम-लक्ष्मण बात करने लगे। लक्ष्मण ने कहा, हे पवन-नन्दन, सुग्रीव और अंगद कहाँ हैं और विभीषण भी कहाँ हैं। हनुमान ने कहा, प्रभु आप सुध-बुध भूल गये

हनूमान बले, प्रभु पासरिले चिते ※ हरिया एनेछे मही दोंहे पातालेते
शुनिया कातर अति श्रीराम-लक्ष्मण ※ प्रबोध वचन बले पवन-नन्दन ४८०
हेनकाले राजपुरे पड़िल घोषणा ※ महामाया-पूजा हबे, बाजिल बाजना
बिस्तर छागल दिबे, महिष बिस्तर ※ बलिदान दिबे राजा आर दुइ नर
नाना सुवासित पुष्प गन्ध मनोहर ※ साजाइया ल'ये जाय महामाया-घर ८१
श्रीराम बलेन, शुन पवन-नन्दन ※ बिपाके, प'ड़েछि हेथा, हइबे केमन
नाहि सैन्य-सेनापति, धनुःशर आर ※ केमने राक्षस-हाते पाइब निस्तार ८२
जोड़ हस्ते कहे हनू श्रीरामेर आगे ※ राक्षस मारिते प्रभु, कोन भार लागे
त्रिभुवने ख्यात तव श्रीचरण-दास ※ वृक्ष-प्रस्तरेते रिपु करिव बिनाश
रावण-राजार वंशे येखाने जे थाके ※ तोमार प्रसादे सबे मारि एके-एके
अनेक ब्राह्मण हिंसे, बहु देव-ऋषि ※ गोहत्या प्रभृति पाप कैल राशि-राशि
दुर्ज्जय राक्षसवंश हइव संहार ※ राक्षस बधिते प्रभु, तव अवतार
अलक्षित माया तव, कोन जन जाने ※ मरण इच्छिया तोमा आनिल एखाने

हैं। आप दोनों को महीरावण पाताल में हरकर ले आया है। यह सुनकर श्रीराम-लक्ष्मण अत्यन्त दुखी हुए। तब पवन-नन्दन उनको दिलासा देने लगे ॥ ४८० ॥

ऐसे समय राजपुर में घोषणा हुई—महामाया की पूजा होगी और बाजा बजने लगा। राजा पर्याप्त संख्या में बकरे और भैंसे बलिदान करेगा और दो नरों का भी बलिदान होगा। तरह-तरह का सुगन्धित मनोहर पुष्प सजाकर महामाया के मन्दिर ले जाया जाने लगा ॥ ४८१ ॥

श्रीराम ने कहा, हे पवन-नन्दन सुनो, यहाँ बड़ी विपत्ति में फँस गया हूँ, क्या उपाय है। न तो सेना है और न सेनापति, धनुष-बाण भी नहीं है। राक्षस के हाथ कैसे निस्तार मिलेगा ॥ ४८२ ॥

हनुमान ने हाथ जोड़कर श्रीराम के सम्मुख कहा, राक्षस मारने में प्रभु कौन सी कठिनाई है। आपके श्रीचरणों का दास तीनों लोकों में प्रसिद्ध है—मैं पेड़-पत्थरों से ही शत्रु का विनाश करूँगा। रावण के वंश में जो भी जहाँ है, आपकी कृपा से सभी को एक-एक कर मार डालूँगा। अनेक ब्राह्मण तथा देव-ऋषियों के प्रति इन लोगों ने हिंसात्मक कार्य किये, गोहत्या आदि अनेक पाप इन्होंने किये। यह दुर्जय राक्षस-वंश विनष्ट होगा। हे प्रभु, इन राक्षसों के निधन के लिए तुमने अवतार लिया है। तुम्हारी माया अपरम्पार है, कौन उसको जान सकता है। हो सकता है कि मृत्यु की कामना करते हुए ही वह आपको यहाँ ले आया है। महीरावण के गृह में संसार की माता हैं, उनसे जाकर मैं दो चार प्रेमभरी बातें करूँगा। तिस पर भी यदि वह मही-रावण का हित करना चाहेंगी तो मन्दिर समेत उनको ले जाकर समुद्र में

महीर गृहेते आछे जगतेर माता ❋ प्रीतिवाक्ये कब गिया गुटिकत कथा
ताहे यदि महीर करिते चान हित ❋ सागरे डुबाब ल'ये मन्दिर-सहित
मनोनीत बुझे आसि महेश-जायार ❋ राम वले, कत क्षणे आसिबे आबार
मारुति वलेन, एकतिल छाड़ा नइ ❋ कि वलेन कात्यायनी, कथा-दुइ कइ४८३

हनूमानेर प्रति देवीर महीरावण-वध-विषयक उपदेश

एत बलि मारुति जे हइल विदाय ❋ महामाया-मन्दिरेते अविलम्बे जाय
मक्षिरूपे कहिलेन योगाद्यार काने ❋ महीबेटा आनियाछे श्रीराम-लक्ष्मणे
नरवलि दिवे शुनि बेला द्वि-प्रहरे ❋ आपनि कि एइ आज्ञा दियाछ महीरे
सवंशे मारिव मही, देखिवे पश्चाते ❋ डुवाव तोमारे जले मन्दिर-सहिते
रामेर किंकर आमि, सुग्रीवेर दास ❋ एत शुनि देवीर ईषत् हैल हास४८४
महादेवी कहिछेन अति संगोपने ❋ पवित्र हइल पुरी राम-आगमने
अशेष पापेर पापी ए महीरावण ❋ देव-द्विज-धर्म्म-हिंसा करे अनुक्षण
निशाचर नाशिते श्रीराम-अवतार ❋ रामेरे आनिल मही हइते संहार
मही-बिनाशेर युक्ति शुन हनूमान ❋ जखन आनिबे रामे दिते बलिदान

डुबो दूँगा। महेश-जाया महामाया का अभिप्राय समझ कर आ जाऊँ। राम ने कहा, कितनी देर में फिर आ जाओगे। मारुति ने कहा, पल भर भी मैं अन्यत्र नहीं हूँ, बस दो-चार बातें कर देख लूँ कि कात्यायनी क्या कहती है ॥ ४८३ ॥

हनुमान के प्रति देवी का महीरावण-वध-विषयक उपदेश

इतना कहकर हनुमान ने विदा ली और अविलम्ब ही वह महामाया-मन्दिर में पहुँच गया। मक्षिका के रूप में उसने योगाद्या (महामाया) के कानों में कहा—अभागा महीरावण श्रीराम-लक्ष्मण को ले आया है और सुना है कि दोपहर को नरबलि चढ़ाएगा। आपने क्या महीरावण को यह आज्ञा दी है। मैं महीरावण को उसकी सारी सन्तति के साथ मारूँगा, यह तुम बाद में देख लेना और तुमको मन्दिर के साथ पानी में डुबो दूँगा। मैं राम का किंकर हूँ और सुग्रीव का दास हूँ। यह सुनकर देवी कुछ हँस पड़ी ॥ ४८४ ॥

महादेवी ने बड़े ही गुप्तरूप से कहा, यह पुरी राम के आने से पवित्र हो गई। यह पापी महीरावण अनेक पापों का पापी है। देव-द्विज-धर्म से यह सदा हिंसा करता है। निशाचरों के विनाश के लिए ही राम ने अवतार लिया है, स्वयं मरने के लिए ही महीरावण राम को यहाँ ले आया है। महीरावण के विनाश के लिए, हनुमान तुम मेरा परामर्श सुनो। जब राम

रामेरे कहिवे कर देवीरे प्रणाम ❊ प्रणाम ना जानि, येन कहेन श्रीराम
राम कहिवेन, शुन हे महीरावण ❊ देखाइया देह देखि प्रणाम केमन
प्रणाम करिते मही देखावे रामेरे ❊ अष्टांग लोटाये रवे भूमिर उपरे
हेंटमुण्डे पड़ि मही प्रणाम करिबे ❊ एइ खड्‌ग ल'ये तुमि महीरे काटिवे
देवी वलिलेन, वाछा, एइ युक्ति सार ❊ श्रीरामेर कर्णे गिया कह समाचार
श्रीराम शिवेर गुरु, आमि ताहा जानि ❊ शिव-रामे अभेद, कहेन शूलपाणि
अनाथेर नाथ राम, जगतेर सार ❊ पलके उत्पत्ति स्थिति जगत्-संहार
योगे योगाधार राम, काले महाकाल ❊ राम-आगमने धन्य हइल पाताल
मूढ़बुद्धि मही चाहे रामे दिते वलि ❊ अवशेषे हवे जाहा, तोमारे से वलि ८५
देवीरे प्रणाम करि हनूमान गेल ❊ श्रीरामेर निकटेते उपनीत हैल
येखाने आछेन वन्दी श्रीराम-लक्ष्मणे ❊ कहिल देवीर कथा दु'जनार काने
उपाय कहिया देवी दिलेन मन्त्रणा ❊ यखन करिवे मही देवी-आराधना
यखन लइया जावे तोमा-दोंहाकारे ❊ सेइक्षणे आमि गिया प्रवेशिब घरे
मक्षिरूप हइया थाकिब अलक्षिते ❊ आसिवेक महीराजा देवीरे पूजिते
प्रणाम करिते कवे समर्पिया पूजा ❊ प्रणाम ना जानि मोरा, राजपुत्र राजा

को वलिदान देने वह लाएगा तो राम से कहेगा, देवी को प्रणाम करो। राम उनसे कहें कि प्रणाम करना नहीं जानता हूँ। राम कहेंगे, ऐ महीरावण सुनो, प्रणाम कैसे किया जाता है यह दिखा दो। महीरावण राम को प्रणाम करना दिखाने लगेगा और साष्टाँग भूमि पर लेट जायगा। सिर नीचे की ओर किये महीरावण प्रणाम करेगा और यह खड्ग लेकर तुम महीरावण को काट डालोगे। देवी ने कहा, वेटा यही परामर्श श्रेष्ठ है, जाकर राम के कानों में यह समाचार वता दो। श्रीराम शिव के गुरु हैं यह मुझको मालूम है। शिव और राम में कोई भेद नहीं, यह शूलपाणि कहते हैं। राम अनाथ के नाथ हैं, संसार के सार हैं, पल भर में विश्व की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय कर सकते हैं। योग में राम योगाधार हैं और काल में महाकाल हैं, राम के आगमन से पाताल धन्य हो गया। मूढ़मति महीरावण राम को वलि देना चाहता है, अन्त में जो कुछ होगा वही तुमसे वताती हूँ ॥ ४८५ ॥

देवी को प्रणाम कर हनुमान राम के समीप वहाँ उपस्थित हुए, जहाँ श्रीराम-लक्ष्मण वन्दी वने वैठे थे। देवी की वात उसने दोनों के कानों में वता दी। देवी ने मंत्रणा दी है और उपाय वता दिया है। जिस समय महीरावण देवी की आराधना करेगा उसी समय तुम दोनों को यहाँ से ले जायगा। उसी क्षण मैं भी द्वार से प्रवेश करूँगा और मक्खी का रूप धरे अदृश्य वना रहूँगा। महीरावण देवी की पूजा करने आएगा। पूजा समाप्त कर वह प्रणाम करने को कहेगा। हम लोग राजपूत राजा हैं, हमें प्रणाम

कि रूपे प्रणाम करे, किछुइ ना जानि ※ प्रणाम करिया राजा, देखाओ आपनि
प्रणाम करिबे राजा देवी-विद्यमान ※ मुण्ड काटि तखन करिव दुइखान
तव बाक्ये मही यदि ना करे प्रणाम ※ सवंशे वधिब तारे करिया संग्राम
बुके हाँटु दिया मुण्ड फेलिब छिंड़िया ※ जाइब महीर रक्ते देवीरे पूजिया
मारुतिर बाक्य शुनि हृष्ट दुइ-भाइ ※ तोमा हैते संकटेते परित्राण पाइ८६
एइ युक्ति करिया रहिल तिनजन ※ देवीरे पूजिते मही करिल गमन
आदेशिया आनाइल श्रीराम-लक्ष्मणे ※ दु'जनारे राखे आनि देवीर दक्षिणे
हेनकाले हनूमान प्रवेशिल घरे ※ अलक्षिते रहिलेन देवीर प्रान्तरे
पूजा करिबारे मही बसिल आसने ※ प्रतिमार आड़े थाकि हनू देखे शुने
निकट हइल काल से महीरावणे ※ कृत्तिवास विरचिल गीत रामायणे४८७

महीरावणेर पूर्व्वजन्म-वृत्तान्त

करजोड़े ब्रह्मारे कहेन सुरपति ※ राम-लक्ष्मणेर किसे हइबे निष्कृति
महीरावण हरिया ल'येछे दुइ-भाइ ※ केमने उद्धार पाबे, भावि मने ताइ४८८

करना मालूम नहीं। कैसे प्रणाम किया जाता है बिल्कुल नहीं मालूम। हे राजा, तुम ही स्वयं प्रणाम करके दिखा दो। देवी के सम्मुख राजा प्रणाम करेगा और उस समय मैं उसका सिर काट कर दो टुकड़े कर डालूँगा। तुम्हारे कहने पर यदि महीरावण प्रणाम नहीं करता है तो युद्ध कर उसको सारे वंश के साथ वध कर डालूँगा। सीने को घुटने से दबा कर उसका मुंड नोच डालूँगा और महीरावण के रक्त से देवी की पूजा करूँगा। हनुमान के ये वाक्य सुनकर दोनों भाई बड़े प्रसन्न हुए, और बोले, तुम्हारे द्वारा ही हम संकट से उबरते हैं ॥ ४८६ ॥

तीनों यह परामर्श किये बैठे रहे। देवी की पूजा करने महीरावण चला। आदेश देकर श्रीराम-लक्ष्मण को वहाँ मँगवा लिया। दोनों को लाकर देवी के दक्षिण में खड़ा कर दिया। ऐसे ही समय हनुमान ने कक्ष में प्रवेश किया और देवी की ओट में अदृश्य बने रहे। पूजा करने के लिए महीरावण आसन पर बैठ गया। प्रतिमा की आड़ में रहकर हनुमान ने सब देखा और सुना। महीरावण की मृत्यु निकट आ गई। कृत्तिवास ने रामायण के गीतों की रचना की ॥ ४८७ ॥

महीरावण का पूर्वजन्म-विवरण

सुरपति (इन्द्र) ने हाथ जोड़कर ब्रह्मा से कहा, राम-लक्ष्मण की मुक्ति कैसे होगी। महीरावण दोनों भाइयों को चुराकर ले गया है, मन में यही सोच रहा हूँ कि कैसे वे निस्तार पाएँगे ॥ ४८८ ॥

एतेक शुनिया ब्रह्मा इन्द्रेर वचन ❋ हासिया बलेन, शुन सर्व्व देवगण
शत्रुधनु-नामे छिल गन्धर्व्व-सन्तान ❋ विष्णुर सम्मुखे नित्य करे नृत्य-गान
नित्य-नित्य नृत्य करे विष्णुर सदन ❋ ताहारे बड़इ तुष्ट देव-नारायण
बिष्णु सम्भाषिते गेल अष्टावक्र-ऋषि ❋ बाँका मूर्त्ति-देखिया गन्धर्व्वे हैल हासि
मुनिरूप देखिया गन्धर्व्व करे व्यंग ❋ मुनिरे देखिते तार हैल ताल-भंग
मुनि कहे, मोरे देखि कर उपहास ❋ सुन्दर शरीर तव हइबे बिनाश
पापी ह'ये जन्म गिया राक्षसेर कुले ❋ धरिया बिकट-मूर्त्ति थाकह पाताले
शुनिया मुनिर शाप चिन्ते विद्याधर ❋ कि दोषे दारुण शाप दिले मुनिवर
अज्ञान पातकी आमि, तोमा नाहि चिनि ❋ त्रिभुवने पूजित आपनि महामुनि
कृपाकर, धरि आमि तोमार चरण ❋ कर प्रभु, ए पापीर पाप-विमोचन ४८९
शत्रुधनु-वचन शुनिया मुनिवर ❋ प्रसन्न हइया तारे करेन उत्तर
आमार वचन कभु ना हइबे आन ❋ पाताले रहिबे ह'ये राक्षस-प्रधान
तपःफले महामाया थाकिबेन घरे ❋ सुखेते करिबे राज्य महेशेर वरे
दुरन्त राक्षसवंश करिते संहार ❋ मनुष्य-रूपेते विष्णु हबे अवतार
सेइ राम-लक्ष्मणेरे ल'ये जावे ह'रे ❋ पाताले राखिबे ल'ये आपनार पुरे

इन्द्र का यह वचन सुनकर ब्रह्मा ने हँसकर कहा, सारे देवताओं, सुनो। शत्रुधनु नामक एक गन्धर्व-पुत्र था। वह विष्णु के सम्मुख नित्य प्रतिदिन नृत्य करता और गायन गाता था। विष्णु के सदन में वह नित्य-प्रति नृत्य करता था इससे देव नारायण बड़े सन्तुष्ट थे। विष्णु से मिलने अष्टावक्र मुनि आये। उनकी टेढ़ी-मेढ़ी मूर्त्ति को देखकर गन्धर्व को हँसी आ गई। मुनि का रूप देखकर गन्धर्व व्यंग्य करने लगा। मुनि को देखने में उसका ताल-भंग हो गया। मुनि ने कहा, मुझको देखकर उपहास करते हो। तुम्हारा सुन्दर शरीर विनष्ट हो जायगा। पापी होकर राक्षस-कुल में जाकर जन्म लो। विकट मूर्त्ति लेकर पाताल में वास करो। मुनि का शाप सुनकर विद्याधर चिन्ता करने लगा कि किस दोष से इस मुनिवर ने एक भयानक शाप दिया। वह कहने लगा मैं अबोध पापी हूँ, तुमको पहचानता नहीं हूँ। आप महामुनि त्रिभुवन में पूजित हैं। मैं तुम्हारे चरणों का स्पर्श करता हूँ, हे प्रभु कृपा करो और इस पापी को पाप से मुक्त कर दो ॥ ४८६ ॥

शत्रुधनु का वचन सुनकर मुनिवर ने प्रसन्न होकर उससे कहा, मेरा वचन अन्यथा नहीं होगा, तुम पाताल में राक्षस-प्रधान बनकर रहोगे। तुम्हारी तपस्या के बल पर महामाया तुम्हारे घर में रहेगी और तुम महेश के वर से सुख से राज्य करोगे। दुष्ट राक्षस-वंश का विनाश करने के लिए विष्णु अवतार लेंगे। उन्हीं राम-लक्ष्मण को तुम चुरा कर ले जाओगे और पाताल में अपने पुर में उनको रखोगे।

मुण्ड काटा जावे तव हनूमान-हाते ❊ शापे मुक्त ह'ये पुनः आसिवे स्वर्गेते
हनूमान-हाते हवे शाप-विमोचन ❊ आमार बचन मिथ्या नहे कदाचन
एतेक वलिया मुनि गेलेन स्वस्थाने ❊ सेइ हैल महीरावण पाताल-भुवने
मुनिर वचन कभु नहे त अन्यथा ❊ देवगण चलिगेल, दुइ-भाइ यथा४९०

हनूमान-कर्त्तृक महीरावण-वध

ब्रह्मा-आदि करिया यतेक देवगण ❊ कौतुके देखिते जान महीर मरण
यतेक देवतागण रहे शून्यपथे ❊ महामाया पूजे मही हरषित-चिते
राशि-राशि फूल-फल दिया राजा पूजे ❊ शंख घण्टा ढाक ढोल नानाबाद्य बाजे
अर्च्चना करिल राजा खाण्डा खरशान ❊ प्रणाम करिते मही कैल संविधान
श्रीराम-लक्ष्मण वले, प्रणाम ना जानि ❊ केमने प्रणाम करे, देखाओ आपनि
विधिर निर्व्वन्ध कभु खण्डाइते नारि ❊ श्रीरामे देखाये मही नमस्कार करि
शत दण्डवत् करे देवीर सम्मुखे ❊ प्रतिमार आड़े थाकि हनूमान देखे
देवीर हातेर खड्ग ल'ये हनूमान ❊ लाफ दिया महीरे करिल दुइखान
प्रतिमा-रूपिणी देवी महामाया हासे ❊ अनुचर गण देखि पलाय तरासे
मुक्त करिलेन हनू श्रीराम-लक्ष्मणे ❊ हनूर प्रताप देखि हासेन दु'जने

हनुमान के हाथों तुम्हारा मुंड काटा जायगा और शापमुक्त होकर फिर स्वर्ग में चले आओगे। हनुमान के हाथों ही तुम्हारा शाप-विमोचन होगा। मेरा वचन कभी मिथ्या नहीं होगा। इतना कहकर मुनि अपने-अपने स्थान चले गये और वह पाताल में महीरावण बन गया। मुनि के वाक्य कभी अन्यथा नहीं हो सकते। सारे देव वहीं चले गये जहाँ दोनों भाई हैं ॥ ४९० ॥

हनुमान द्वारा महीरावण-वध

ब्रह्मा आदि सारे देवता कौतुक-वश महीरावण की मृत्यु देखने चल पड़े। सारे देवता अन्तरिक्ष में रहे और महीरावण प्रसन्न चित्त महामाया की पूजा करता रहा। राजा फल और फूलों की राशि से पूजने लगा और शंख, घंटा, ढाक, ढोल आदि विभिन्न बाजे बजने लगे। राजा ने तीक्ष्ण धार वाले खड्ग की अर्चना की, फिर उसने दोनों भाइयों को प्रणाम करने का आदेश दिया। श्रीराम-लक्ष्मण ने कहा, हम प्रणाम करना नहीं जानते, कैसे प्रणाम किया जाता है स्वयं दिखा दो। विधना का लिखा कोई मेट नहीं सकता है। श्रीराम को महीरावण नमस्कार कर दिखाने लगा, देवी के सम्मुख वह दंडवत् प्रणाम करने लगा। प्रतिमा की ओट में रहकर हनुमान ने देखा। देवी के हाथ से खड्ग लेकर हनुमान कूद पड़े और एक ही बार में महीरावण के दो टुकड़े कर डाले। प्रतिमा-रूपिणी देवी महामाया हँसने लगी। सारे अनुचर

अन्तरीक्षे थाकिया बाखाने देवगण ※ हनूमाने कोल दिला श्रीराम-लक्ष्मण
अद्भुत अश्रुत कथा राम-अवतार ※ सेवक हइते हैल रामेर निस्तार
मुनिशापे मुक्ति हैल से महीरावण ※ गन्धर्ब्ब-रूपेते गेल अमर-भुवन
कृत्तिवास-पण्डित कवित्वे विचक्षण ※ लंकाकाण्डे गाहिलेन गीत रामायण४९१

अहिरावण-वध

रामगुण गाइते गाइते रे तनु पतन यदि रे हय।
जाय, अमर-भुवने चापिया बिमाने शमन चाहिया रय ॥
अर्द्ध-नाभिकूपे ल'ये रे यखन डुबाय।
शत शमन आसिये तारे, (मन) कि करिते पारे,
पातकी तराते श्रीरामेर नामटि ओगो एसेछे संसारे ॥ ४९२

महीरावण मैल देखि यत निशाचर ※ धाइया कहिल वार्त्ता पुरीर भितर
पलाय सकल लोक, केह नाहि रहे ※ कपाले या' लेखा थाके, खण्डिवार नहे
आचम्विते राजा ल'ये पड़िल प्रमाद ※ अन्तःपुरे महाराणी पाइल संवाद९३

यह देखकर भय से भाग खड़े हुए। हनुमान ने श्रीराम-लक्ष्मण को मुक्त किया। हनुमान का प्रताप देखकर दोनों हँसने लगे और अन्तरिक्ष में रहकर देवता प्रशंसा करने लगे। श्रीराम-लक्ष्मण ने हनुमान को अँकवार में ले लिया। राम-अवतार की कथा बड़ी ही अद्भुत और अश्रुत है। सेवक हनुमान के द्वारा ही राम का उद्धार हो सका। महीरावण मुनि के शाप से मुक्त हो गया और गन्धर्व-रूप अपनाकर अमरलोक चला गया। कवित्व में पण्डित कृत्तिवास विचक्षण हैं, उन्होंने लंकाकाण्ड में रामायण-गीत गाया ॥ ४६१ ॥

अहिरावण वध

यदि राम का नाम लेते हुए शरीर का पतन हो तो वह विमान पर सवार होकर अमरधाम की ओर चला जाता है और यम ताकता ही रह जाता है। अर्ध-नाभिकूप में लेजाकर डुबोने वाले ये सौ-सौ यमराज भी उसका क्या बिगाड़ सकते हैं। पापियों को तारने के लिए इस संसार में श्री राम का नाम आया है ॥ ४६२ ॥

महीरावण को मरते देखकर सारे राक्षस दौड़कर पुरी के भीतर गये और यह वार्त्ता सबसे कह सुनाई। वह सुनकर सारे लोग भागने लगे, कोई भी नहीं ठहरा। जो भाग्य में लिखा होता है, उसका खंडन नहीं हो सकता। अचानक ही राजा पर यह विपत्ति आ पड़ी है, यह समाचार महारानी को अन्तःपुर में मिला ॥ ४६३ ॥

राजार मरण शुनि राणी ज्वले कोपे ※ आलुथालु वेशभूषा, अधरोष्ठ काँपे
राणी वले, एइ छिल योगाद्यार मने ※ एतकाल पूजा खेये मारिल राजने
महीरे दिलेक बलि देवीर साक्षाते ※ मजिल आमार राज्य महामाया ह'ते
देवीर सहाय हय कपि आर नर ※ कि दोषेते महीरे भाविल देवी पर
आगे गिया प्रतिमा डुबाये दिव जले ※ नर-वानरेर प्राण ल'व शेषकाले९४
एतेक बलिया महीरावणेर नारी ※ धनुक लइया उठे मार मार करि
संगेते साजिल सेना असंख्य-गणन ※ हनूर उपरे करे बाण-वरिषण
बड़-बड़ वृक्ष यत मारे हनूमान ※बाणेते काटिया राणी करे खान-खान९५
मनेते भाविया किछु ना पाय मारुति ※ कोप करि राणीर उदरे मारे लाथि
दशमास गर्भ छिल राणीर उदरे ※ प्रसवे सन्तान एक महा-भयंकरे
अष्टगोटा बाहु तार, चारिगोटा मुण्ड ※ विकट-मूरति तार, देखिते प्रचण्ड
भूमिष्ठ हइल पुत्र अद्भुत-विक्रम ※ दुइचक्षु रक्तवर्ण युगान्तरे यम
महायुद्ध आरम्भिल हनूमान-सने ※ सापटिया कील-लाथि मारे हनूमाने
गर्भेर रुधिर-पूँजे व्यापित-शरीरे ※ आचम्बिते संग्रामेते सिंहनाद करे
उलंग उन्मत्त येन पागल-समान ※ ताहार बिक्रम देखि हासे हनूमान

राजा की मृत्यु सुनकर रानी क्रोध से जलने लगी। अस्त व्यस्त वेशभूषा में रानी के होंठ काँपने लगे। रानी ने कहा, यही योगाद्या भगवती के मन में था, इतने दिन पूजा खाकर अब राजा को मारा। देवी के सम्मुख महीरावण का बलिदान हुआ। महामाया के कारण ही मेरा राज्य उजड़ा। देवी की सहायता कपि और नर के लिए हुई! किस दोष से देवी ने महीरावण को पराया समझा। पहले जाकर प्रतिमा को जल में डुबो दूँगी फिर अन्त में नर-वानर के प्राण लूँगी॥ ४६४॥

इतना कहकर महीरावण की नारी धनुष लेकर मार-मार कर उठी। उसके साथ अगणित सेना भी सुसज्जित हुई। वे सब हनुमान पर बाण बरसाने लगे। हनुमान जितने भी बड़े-बड़े पेड़ों को फेंकता, रानी उनको बाण से काट-काट कर खंड-खंड कर देती॥ ४६५॥

हनुमान की समझ में नहीं आता कि क्या किया जाय, उन्होंने गुस्से में आकर रानी के पेट पर लात मारदी। रानी के पेट में दस महीने का गर्भ था उससे एक महाभयंकर पुत्र उत्पन्न हुआ। उसके चार मुंड और आठ हाथ थे। वह देखने में विकट-मूर्त्ति और प्रचंड था। अद्भुत विक्रम वाला पुत्र भूमिष्ठ हुआ। उसकी दोनों आँखें लाल-लाल थीं मानों वह युगान्त का यम हो। उसने हनुमान के साथ भीषण युद्ध करना आरम्भ कर दिया, हनुमान से लिपट कर उनको घूसा, मुक्का, लात जमाने लग गया। गर्भ के क्लेद रक्त से सने शरीर को लेकर वह अकस्मात् ही संग्राम में एक नंगे उन्मादी पागल के समान सिंहनाद

श्रीराम-लक्ष्मण हासे देखिया राक्षस ❋ हनूमान वले, बेटार वड़इ साहस
एखनि जन्मिया पुत्र करे घोर रण ❋ महीरावणेर बेटा से अहिरावण
आथालि पाथालि हाने मारुतिर बुके ❋ किछु नाहि वले हनू, संवरिया थाके
हनूमान वले, बेटार आम्बा देखि अति ❋ एखनि पाठाव तोरे यमेर संहति
मारिबारे हनूमान जाय उभरणे ❋ धरिते ना पारे, शिशु पिछलिया पड़े
हेनकाले हनूमान चिन्तिल उपाय ❋ पवन-स्मरणे रणे झड़ वहि जाय
विषम वातासे धूला लागे तार गाय ❋ पाछड़िया धरे हनू, आर कोथा जाय
दुइपदे धरि तारे ल'ये फेले दूर ❋ पाथरे आछाड़ मारि हाड़ कैल चूर९६
संग्रामे आइल आर यत-यत जन ❋ लइल सबार प्राण पवन-नन्दन
पातालबासी मुनि-ऋषि हैल आनन्दित ❋ भय दूरे गेल, सबे महा-हरषित
गेलेन देवतागण आपनार स्थान ❋ हनूमाने सकलेइ करिल कल्याण९७
शत्रुरे मारिया यात्रा कैला तिनजन ❋ महीर पूजिता देवी कहेन तखन
साधिया रामेर कार्य्य चलिला सत्वर ❋ सेवा के करिवे मम पाताल-भितर९८
एत शुनि हनूमान करि नमस्कार ❋ देवीरे पाताल हैते करिल उद्धार

कर उठा। उसका विक्रम देखकर हनुमान हँसने लगे श्रीराम-लक्ष्मण भी इस राक्षस को देखकर हँसने लगे। हनुमान ने कहा, अभागे का बड़ा साहस है, अभी-अभी जन्म लेकर घोर-रण करने लग गया। महीरावण का बेटा अहिरावण हनुमान के सीने पर तावड़तोड़ आघात करने लगा, हनुमान उससे कुछ नहीं बोले बस अपने को संवरण (रोक) कर खड़े रहे। हनुमान ने कहा, इस निगोड़े की देख रहा हूँ बड़ी उच्च अभिलाषा है। अभी तुझे यम के निकट भेजता हूँ। मारने के लिए हनुमान जो द्रुतवेग से दौड़ा तो उस बच्चे को पकड़ न सका, वह हाथों से फिसल गया। ऐसे समय हनुमान ने उपाय सोचा और पवन का स्मरण करने से वहाँ रण-स्थल में आँधी चलने लगी। तेज़ हवा में उसके वदन पर धूल लगी तो हनुमान ने उसको कस कर पकड़ लिया, अब कहाँ जायगा। दोनों पैरों से उसे पकड़ कर दूर दे फेंका। पत्थर पर पटक कर उसकी हड्डियाँ चूर-चूर कर दीं ॥ ४६६ ॥

संग्राम में और जितने भी जन आए पवन-नन्दन ने सभी के प्राण ले लिये। पाताल के रहने वाले मुनि-ऋषि बड़े प्रसन्न हुए, भय चला गया अतः वे बड़े हर्षित हुए। सभी देवता अपने-अपने स्थान पर लौट गये। सभी ने हनुमान की कल्याण-कामना की ॥ ४६७ ॥

शत्रु को मारने के बाद तीनों ने यात्रा की तो महीरावण की पूजिता देवी ने कहा, राम का कार्य सिद्ध कर तुम तो तुरन्त चल पड़े, अब मेरी सेवा इस पाताल में कौन करेगा ॥ ४६८ ॥

इतना सुनकर हनुमान ने नमस्कार कर देवी का पाताल से उद्धार

हइया हरिष-युक्त चले तिनजन ※ आगे राम, पाछे हनू मध्येते लक्ष्मण
सुड़ंगेर पथेते उठिला तिनजन ※ आपन-कटके गिया दिला दरशन९९
श्रीराम-लक्ष्मणे पेये सुग्रीव विभीषण ※ जाम्ववाने कोल दिल एइ तिनजन
हनूर प्रशंसा करे श्रीराम-लक्ष्मण ※ हनूमाने कोल दिल सुग्रीव विभीषण
जाम्ववान कोल दिया कैल आलिंगन ※ धन्य हनूमान, वले यत कपिगण
दुइ प्रहर आकाशे यखन दिवाकर ※ सिंहनाद छाड़े यत भल्लूक-वानर
चारिद्वार चापि कपि करे सिंहनाद ※ शुनिया रावण-राजा गणिल प्रमाद
महीरावण पड़िल शुनिया दशानन ※ जीवनेर आशा छाड़ि करिछे क्रन्दन
रामायण गाहिलेन कवि कृत्तिवास ※ जेइजन शुने, तार पूरे अभिलाष५००

रावणेर तृतीय-दिवस युद्धे गमन

राम या' कर निजगुणे, आमि भजन-साधन जानिने।
मिछे गेल दीनेर दिन, ना ह'ल भजन, घेरिल शमने॥
या' कर हे रामचन्द्र जगत्-गोसाँइ ※ आमार तोमा-बिने त्रिभुवने केह नाइ
मायानदीर तीरे आछि राम, तोमार चरण करि सार।
ओ राँगा-चरण-तरणी क'रे राम आमाय करहे पार॥ ५०१

किया। तीनों हर्षमग्न होकर चल पड़े। सामने राम पीछे हनुमान और बीच में लक्ष्मण। सुरंग के रास्ते से वे तीनों चले और अपनी सेना में पहुँचकर सबको दर्शन दिया॥ ४९९॥

श्रीराम और लक्ष्मण को पाकर सुग्रीव, विभीषण और जाम्बवान ये तीनों उनसे गले मिले। श्रीराम-लक्ष्मण ने हनुमान की प्रशंसा की। सुग्रीव और विभीषण हनुमान से गले मिले। जाम्बवान ने उनको आलिंगन बद्ध कर डाला। जितने कपि थे सभी 'धन्य-धन्य हनुमान' कहने लगे। आकाश में जब सूर्य दोपहर चढ़ आया तो भालू और वानरों ने मिलकर सिंहनाद किया। चारों ओर से कपियों का सिंहनाद सुनकर राजा रावण ने समझ लिया कि विपत्ति आई है। दशासन ने सुना कि महीरावण का पतन हुआ है तो जीवन की आशा त्यागकर वह रोने लग गया। कवि कृत्तिवास ने रामायण गायी, जो भी उसे सुनेगा उसकी अभिलाषा पूरी होगी॥ ५००॥

रावण का तीसरे दिन युद्ध में जाना

हे राम, तुम जो कुछ करते हो अपने गुण से ही करते हो। मुझको भजन-पूजन नहीं आता। इस दीन का दिन यूँही व्यर्थ बीत गया; भजन भी न कर सके और यमराज ने भी घेर लिया। हे जगत् के स्वामी रामचन्द्र! जो कुछ करना है करो, तीनों लोक में तुम्हारे बिना मेरा कोई नहीं है। हे राम!

स्त्रीलोकेर क्रन्दन उठिल घरे-घरे ※ अभिमाने शोके मत्त राजा लंकेश्वरे
जुझिबार तरे साजे राजा दशानन ※ सर्व्वांग भूपित कैल राज-आभरण
भये अभिमाने राजा आँखि छल-छल ※ कोपमने जुझिते चलिल रणस्थल
आपनि करिछे साज लंका-अधिकारी ※ मेघेर वरण अंगे धवल उत्तरी
दशमुण्डे रतन-मुकुट सारि-सारि ※ परिलेक मृगमद सुगन्धि कस्तूरी
नाना-अलंकारे करे भुवन उज्ज्वल ※ दशभाले दश-मणि करे झलमल
कोपे काँपे ओष्ठाधर, चले रणमुखे ※ दश-हाजार राणी एसे घेरे चारिदिके
केह धरे आशे पाशे, केह धरे कर ※ कारो पाने फिरिया ना चान लंकेश्वर
ना थाके रावण-राजा कारो उपरोधे ※ राणी मन्दोदरी गिया पश्चाते बिरोधे ५०२
मन्दोदरी वले, शुन लंका-अधिपति ※ बुद्धिमान ह'ये केन छन्न हैल मति
परम-पण्डित तुमि, वले महावीर ※ विश्वश्रवा-मुनि-पुत्र परम-सुधीर
स्वर्ग मर्त्त्य पाताल जिनिले वाहुवले ※ यम इन्द्र कम्पमान तोमारे देखिले
सर्व्वशास्त्रे विज्ञ तुमि लंका-अधिकारी ※ आमि कि वुझाव तोमा हीनबुद्धि नारी
तथापि किंचित् वलि करि परिहार ※ स्थिर ह'ये दाण्डाइया शुन एकवार

तुम्हारे चरणों का भरोसा किये मायानदी के किनारे पड़ा हूँ। अपने उन लाल-चरणों को तरणी बना कर मुझको पार लगा दो ॥ ५०१ ॥

घर-घर में नारियों का क्रन्दन गूँजने लगा। राजा लंकेश्वर अभिमान व शोक से प्रमत्त हो गया। राजा दशानन ने युद्ध करने के लिए सारे अंगों को राज-आभूपणों से भूषित किया। भय और अभिमान से राजा की आँखें सजल हो आईं। क्रोधित होकर वह रणभूमि की ओर चल पड़ा। लंका का अधिकारी स्वयं अपने को सुसज्जित करने लगा। अपने मेघ-सदृश अंग पर उसने धवल रंग की ओढ़नी डाल ली। दस मुंडों पर पंक्तियों में रत्न-मुकुट पहन लिये। मृगमद-सुगन्ध कस्तूरी का भी प्रयोग किया। विभिन्न अलंकारों से संसार उज्वल हो उठा। दस माथे पर दस माणिक चमक उठे। रोप से उसके होंठ काँपने लगे और वह रणस्थल की ओर चला। दस हजार रानियों ने आकर चारों ओर से उसे घेर लिया। किसी ने आकर वाजू पकड़ लिया तो किसी ने आकर हाथ थाम लिया। किन्तु लंकेश्वर ने किसी की तरफ पलट कर भी नहीं देखा। किसी के कहने पर भी राजा रावण नहीं रुका, ऐसे समय रानी मन्दोदरी ने जाकर पीछे से विरोध किया ॥ ५०२ ॥

मन्दोदरी ने कहा, हे लंका के अधिपति, सुनो। इतने बुद्धिमान् होते हुए भी तुम्हारी मति क्यों मारी गई। तुम परम पंडित हो, शक्ति में महावीर हो, विश्वश्रवा मुनि के पुत्र हो परम अचंचल हो। अपने वाहुवल से तुमने स्वर्ग, मर्त्य, पाताल तीनों लोकों पर विजय पाई है। यम और इन्द्र तुमको देखकर काँपने लगते हैं। हे लंका के अधिकारी, तुम सर्वशास्त्रों में पारंगत हो, मैं

मुनिगण कहे, सर्व्व-शास्त्रेते विहित ❊ रमणीर सुमन्त्रणा शुनिते उचित
विपदे सुबुद्धि यदि रमणीते वले ❊ से बुद्धे पुरुष थाके परम-कुशले
वहुकाल लंकापुरे करिले राजत्व ❊ कोन युगे देखियाछ एमन अनित्य
कोन काले वानरेते लंघेछे सागर ❊ कोन काले सलिलेते भेसेछे पाथर
अपरूप एमन शुनेछे कोन देशे ❊ पाषाण मनुष्य हय चरण-परशे
श्रीराम मनुष्य नन, विष्णु-अवतार ❊ सीता फिरि देह, युद्धे कार्य्य नाहि आर ५०३
दशानन वले, सीता दिते पारि फिरे ❊ हासिवेक विभीषण, ना स'वे शरीरे
कहिवेक इन्द्र-आदि यत देवगण ❊ युद्धे हारि सीता फिरि दिलेक रावण
छोट ह'ये खोंटा दिवे, वड़ भय वासि ❊ सुस्थिरा हइया गृहे वैसह प्रेयसि
वरञ्च रामेर शरे त्यजिव जीवन ❊ सीता फिरि दिते नाहि पारि कदाचन ४
मन्दोदरी वले, जानि भाग्य हैले हीन ❊ वल-वुद्धि-पराक्रम पासरे प्रवीण
आसन्न-समये वुझि घटे विपरीत ❊ कोप ना करिह राजा, शुनह किंचित्
संसारेर कर्त्ता राम पतित-पावन ❊ त्रिभुवने सकलेरे करेन पालन
सत्वगुणे जेइ प्रभु पालेन सवारे ❊ शत्रुभावे आइलेन मारिते तोमारे

हीनवुद्धि नारी होकर तुमको क्या समझा सकती हूँ। फिर भी प्रार्थना के रूप में दो शब्द कहूँगी—केवल खड़े होकर तनिक सुनलो। मुनियों का कहना है और सर्वशास्त्रों में भी यह कहा गया है कि रमणी का सु-परामर्श सुनना उचित है। विपत्ति में यदि रमणी सुवुद्धि दे तो उस वुद्धि के कारण पुरुष कुशल से रहता है। वहुत दिनों से तुम लंका में राज्य कर रहे हो, किस युग में तुमने ऐसी असंभव घटना देखी है। किस युग में वानरों ने समुद्र लांघा है या पानी पर पत्थर तैराया है। ऐसी अनोखी वात तुमने किस देश में सुनी है। पत्थर के स्पर्श से पत्थर की मनुष्य-मूर्ति वन जाती है। श्रीराम कोई मनुष्य नहीं हैं, वे विष्णु के अवतार हैं। सीता को लौटा दो, अव युद्ध की कोई आवश्यकता नहीं रही ॥ ५०३ ॥

दशानन ने कहा, सीता को तो मैं लौटा दे सकता हूँ, किन्तु विभीषण हँसेगा इसको मैं वरदाश्त नहीं कर सकूँगा। इन्द्र आदि सारे देवता कहेंगे कि युद्ध में हारकर रावण ने सीता को लौटा दिया। यह छोटे लोग लानत-मलामत करेंगे इससे मुझको वड़ा भय है। हे प्रिये, घर जाकर आराम से वैठो। राम के वाणों से प्राण दे सकता हूँ किन्तु सीता को कदापि नहीं लौटा सकता ॥ ५०४ ॥

मन्दोदरी ने कहा, जानती हूँ कि भाग्य खोटा होने पर प्रवीण मनुष्य का भी वल-वुद्धि और पराक्रम विसर जाता है। ऐसे आसन्न-समय में कहीं कुछ विपरीत न हो जाय। राजा, कोप न करो, तनिक सुनो। पतितपावन राम संसार के कर्ता हैं, वे त्रिभुवन में सभी का पालन करते हैं। सत्वगुण से वही

लक्ष्मीरूपा सीता देवी पूजिता भुवने ※ लक्ष्मीरे दितेछ दुःख अशोकेर बने
येजन पालन-कर्त्ता, सेइजन मारे ※ अभाग्य तोमार मत नाहिक संसारे ५
ईषत् हासिया कहे लंका-अधिकारी ※ सामान्य तोमार बुद्धि, राणी मन्दोदरी
शक्तिरूषा महालक्ष्मी सीता-ठाकुराणी ※ तुमिकि बुझावे मोरे, आमि ताहा जानि
जप यज्ञ पूजा करि राखिते ना पारे ※ विना-अर्च्चनाय पड़ि आछेन दुयारे
नीराहारे अनाहारे जपे कतजन ※ मृत्युकाले नाहि पाय जेइ श्रीचरण
ध्नानयोगे भाविया ना पाय मुनि-ऋषि ※ से राम भावेन मोरे निराहारे वसि
जागिछे आमार रूप श्रीरामेर मने ※ भाविछेन आमारे वधिवे कतक्षणे
मरिव रामेर हाते, भाग्ये यदि आछे ※ यमेर ना हवे साध्य घनाइते काछे
विष्णुदूते, ल'ये जावे तुलिया विमाने ※ समान-प्रतापे जाव जीवन-मरणे
इन्द्र-आदि देवता जीवने आज्ञाकारी ※ मरिया वैकुण्ठे आमि जाव सर्व्वोपरि
ना वुझिया भाग्यहीन कहिले आमारे ※ आमा-सम भाग्यवान् नाहिक संसारे
देखिव करिया युद्ध मरि किवा मारि ※ क्रन्दन संवरि गृहे जाओ मन्दोदरी ६
मरण निकटे जार, कि करे औषधे ※ ना रहे रावण मन्दोदरीर प्रबोधे

प्रभु सबका पालन किया करते हैं, वही शत्रु के रूप में तुमको मारने के लिए आये हैं। सीतादेवी लक्ष्मी के रूप में सारे संसार में पूजित हैं, तुम उस लक्ष्मी को अशोक-वन में कष्ट दे रहे हो। जो पालनकर्त्ता है वही मार रहा है, तुम सा अभागा इस संसार में कोई दूसरा नहीं है ॥ ५०५ ॥

लंका के अधिकारी ने मुस्करा कर कहा, हे रानी मन्दोदरी, तुम्हारी बुद्धि बहुत कम है। सीता शक्तिरूपिणी महालक्ष्मी हैं, यह तुम मुझको क्या समझाती हो, मैं यह भली-भाँति जानता हूँ। लोग इनको जप, यज्ञ, पूजा करके भी नहीं रख पाते हैं, और वह बिना अर्चना के हमारे द्वार पर पड़ी हैं। निराहार अनशन कर कितने ही लोग जप किया करते हैं किन्तु मृत्यु के समय इन चरणों की प्राप्ति नहीं हो पाती है। ध्यान में भी मुनि-ऋषि जिनको नहीं पाते हैं वह राम निराहार बैठे मेरी चिन्ता किया करते हैं। श्रीराम के मन में मेरा रूप जाग्रत है। सोच रहे हैं कि कितनी देर में मेरा वध करेंगे। अगर भाग्य में लिखा है कि राम के हाथों मरूँगा तो यम की क्या मजाल कि निकट आ सके। विमान पर बिठाकर विष्णुदूत ले जायगा। जीवन और मरण दोनों में समान पराक्रम दिखाऊँगा। जीवित दशा में इन्द्र आदि देवता मेरे आज्ञाकारी रहे और मरने के बाद मैं सबसे ऊपर वैकुंठ चला जाऊँगा। बिना जाने-बूझे तुमने मुझको अभागा कहा, मुझ सा भाग्यवान इस संसार में नहीं है। युद्ध कर यह फैसला करना है—मारूँगा या मरूँगा। मन्दोदरी, तुम रोना त्याग कर घर जाओ ॥ ५०६ ॥

जिसकी मृत्यु निकट हो उसको दवा क्या लाभ पहुँचा सकती है।

स्वामी प्रदक्षिण करि पड़िल मंगल ※ मन्दोदरी-च'क्षे जल करे छल-छल
अन्तरे जानिया राणी कान्दिल प्रचुर ※ दश-हाजार सतिनीते निल अन्तःपुर
अष्टादश वृहन्देर वाहिरे रावण ※ सारथि साजाये रथ योगाय तखन
कनक-रचित रथ, सुगठित चाका ※ उपरेते शोभा करे ध्वजेते पताका
विचित्र-निर्म्मित रथ सज्जित प्रचुर ※ रथेर उपरे राजा संग्रामेर शूर ७
दशानन बले, अस्त्रधारी यतजने ※ छोट-वड़ साजिया आसुक मम सने
महीरावण पड़िल वंशेर चूणामणि ※ आर कारे पाठाइव, जाइव आपनि ८
यतेक आछिल सैन्य लंकार भितर ※ साजिया रावण-संगे चलिल सत्वर
पश्चिम-द्वारेते आछे श्रीराम-लक्ष्मण ※ जुझिवारे सेइ द्वारे चलिल रावण५०९

श्रीरामेर साहाय्यार्थ इन्द्र-कर्त्तृक स्वीय-रथ प्रेरण

हाते धनु राम भ्रमिछेन रणस्थले ※ लंका तोलपाड़ बानरेर कोलाहले
कोलाहल शुनि रावण आइल त्वरिते ※ भुवनविजयी धनुर्व्बाण धरि हाते
चारि-चाका रथखान अष्टघोड़ा वहे ※ कनक-रचित रथ त्रिभुवन मोहे
हेन रथे उठि जुझे राजा-दशानन ※ श्रीराम-उपरे करे बाण-वरिषण१०

मन्दोदरी के परामर्श से रावण न रुका। मन्दोदरी ने पति की प्रदक्षिणा कर मंगल-वाक्य उच्चारित किए, उसकी आँखें सजल हो आईं। अन्तर में जान कर रानी बहुत रोई। दस हजार सौतों के साथ वह अन्तःपुर चली गई। अट्ठारह महल के वाहर रावण आया। सारथि ने आकर सुसज्जित रथ सामने रखा। सोने का बना हुआ रथ और उसके पहिए सुगठित हैं। उसके ऊपर ध्वज और पताकाएँ शोभित हैं। विचित्र ढंग से निर्मित रथ पर्याप्त रूप से सुसज्जित है, और रथ पर संग्राम के शूरवीर आसीन हुए॥ ५०७॥

दशानन ने कहा, जितने भी हथियार-बन्द लोग हैं, चाहे वे छोटे हों या बड़े, सुसज्जित हो मेरे साथ चले आवें। वंश का चूड़ामणि महीरावण जब समर में गिर चुका तो फिर किसको भेजूँ, स्वयं ही जाऊँगा॥ ५०८॥

लंका में जितनी सेना थी सब सुसज्जित होकर रावण के साथ शीघ्र चल पड़ी। पश्चिम द्वार पर श्रीराम-लक्ष्मण हैं। लड़ने के लिए रावण उसी-द्वार की ओर चल पड़ा॥ ५०९॥

श्रीराम की सहायता के लिए इन्द्र द्वारा अपना रथ भेजना

हाथ में धनुष लेकर राम रणभूमि में घूम रहे हैं और वानरों के कोलाहल से लंकानगरी गुंजित हो रही है। कोलाहल सुनकर रावण भुवनविजयी धनुष-बाण हाथ में लिये तुरन्त वहाँ जा पहुँचा। चार पहियों वाले उस रथ को आठ घोड़े खींच रहे हैं। स्वर्ण से बना वह रथ त्रिभुवन को मुग्ध कर देता था। ऐसे रथ पर सवार राजा दशानन श्रीराम पर बाण बरसाने लगा॥ ५१०॥

रथेते रावण जुझे, राम भूमितले ※ देवगण-कम्पमान गगन-मण्डले
लइया ब्रह्मार आज्ञा यतेक अमर ※ राम लागि रथ पाठाइल पुरन्दर
स्वर्ग हैते आसे रथ, पड़िछे विजलि ※ रथ हैते माथा नोआय सारथि मातलि
इन्द्र पाठाइल रथ दिव्य-धनुःशर ※ आर पाठाइल एक सुवर्ण-टोपर
रावणे मारिया प्रभु कर देव-हित ※ त्रिभुवने कीर्त्ति राख रामायण-गीत
राम-लक्ष्मण सुग्रीव राक्षस विभीषण ※ आचम्विते रथ देखि चमकित-मन
कोथाकार रथखान, काहार मातलि ※ रावण-प्रेरित रथ मायार पुत्तलि
रामेरे जिनिते नारे दुष्ट दशस्कन्ध ※ रथे तुलि कोथा लवे करिया प्रबन्ध
कृत्तिवास पण्डित कवित्वे विचक्षण ※ रथ देखि राम-सैन्य भावे मने-मन५११

श्रीरमेर सहित रावणेर युद्ध

रसना राम-नाम भुल ना रे।
देख, मिछे-मायाजाले, बद्ध करे काले, डुवाय अकूल-पाथारे ।। ५१२
इन्द्ररथ रावण देखिया रणस्थले ※ चिन्तित हइल मने, टुटे आसे बले
रथेर सारथि रामे कैल प्रदक्षिण ※ रथे उठे रघुनाथ संग्रामे प्रवीण

रावण रथ से युद्ध कर रहा है और राम भूमि पर खड़े-खड़े। गगन-मंडल में देवता कम्पित हो उठे। सारे देवताओं ने ब्रह्मा की आज्ञा लेकर इन्द्र का रथ राम के लिए भिजवा दिया। बिजलियाँ चमकने लगीं और स्वर्ग से रथ आ गया। रथ से उतर कर सारथि मातलि ने सिर झुकाया, और बोला आपके लिए इन्द्र ने रथ, दिव्य धनुष-बाण और एक स्वर्ण-मुकुट भेजा है। हे प्रभु आप शीघ्र रावण को मार कर देवताओं का हित करो और रामायण गीत के माध्यम से त्रिभुवन में अपनी कीर्त्ति फैला जाओ। राम, लक्ष्मण, सुग्रीव और राक्षस विभीषण ने अकस्मात् रथ देखा तो चकित रह गये। यह रथ कहाँ का है और यह सारथि भी भला किसका है ? अवश्य ही यह रथ रावण द्वारा प्रेषित माया की पुत्तलिका है। दुष्ट दशानन रथ पर राम को जीतने में असफल हो रथ पर विठा कर कहीं ले जाने का प्रबन्ध कर रहा है। कृत्तिवास पंडित कविताई में विचक्षण है। रथ देख कर राम-सेना मन ही मन विचारने लगी ।। ५११ ।।

श्रीराम के साथ रावण का युद्ध

ऐ रसना राम का नाम न भूल जाना। देखो, समय मिथ्या-मायाजाल में बाँध कर अपार समुद्र में डुबो रहा है ।। ५१२ ।।

इन्द्र का रथ रण-स्थल में देखकर रावण मन ही मन चिन्तित हुआ और उसका साहस टूटने लगा। रथ के सारथि ने राम की प्रदक्षिणा की और

चिनिल रावण-राजा इन्द्रेर बिमान ❋ मने-मने दशानन करे अनुमान
कोथा गेल इन्द्रजित् भाइ कुम्भकर्ण ❋ एखनि देवता बेटाय करिताम चूर्ण
एतदिन करि सेवा सेवकेर मत ❋ असमय देखि हैल शत्रु-अनुगत
शत्रुके पाठाय रथ आमा-बिद्यमाने ❋ एत बलि कोपदृष्टे चाहे स्वर्गपाने
कोप मने मातलिरे कहे लंकेश्वर ❋ सवलेर अनुबल यतेक अमर
एइबार युद्धे यदि वाँचये जीवन ❋ एके एके काटिव यतेक देवगण १३
कोप संवरिया राजा वसि मनो दुःखे ❋ रथ चालाइया दिल रामेर सम्मुखे
कोपेते रावण करे बाण-अवतार ❋ तिनलक्ष बाण मारे सर्पेर आकार
सर्पबाण देखि रामे लागिल तरास ❋ बुझि पुनः एड़िल वन्धन नागपाश
नागपाश-निवारणे जानेन सन्धान ❋ मन्त्र पड़ि श्रीराम एड़ेन खग-बाण
गरुड़ हइया बाण आकाशेते बुले ❋ रावणेर सर्पबाण ध'रे ध'रे गिले
सर्पबाण ब्यर्थ गेल, कुपिल रावण ❋ रामेर उपरे करे बाण-बरिषण
बाण बरषिया विन्धे इन्द्रेर मातलि ❋ जर्ज्जर इन्द्रेर अश्व, मुखे भाँगे नालि
कोपेते रावण वज्र-जाठा लय हाते ❋ जाठा देखि देवगण लागिल चिन्तिते
जाठागाछ हाते करि तर्ज्जे लंकेश्वर ❋ डाकिया श्रीरामे तबे करिछे उत्तर

संग्राम में प्रवीण रघुनाथ रथ पर सवार हो गये। दशानन ने मन ही मन अनुमान लगाया और इन्द्र का विमान पहचान लिया। हाय! इन्द्रजीत कहाँ गया और मेरा भाई कुम्भकर्ण भी कहाँ चला गया। वे होते तो अभी देवताओं को मज़ा चखा देते। इतने दिनों तक सेवक की तरह सेवा करते रहे और अब बुरा समय देखकर शत्रु के अनुगत बन गये हैं। मेरी मौजूदगी में ही वे शत्रु को रथ भेज रहे हैं, इतना कहकर उसने कोप से स्वर्ग की ओर देखा। क्रोधित होकर लंकेश्वर ने मातलि से कहा, जितने देवता हैं वे सबल के ही सहायक बनते हैं। इस बार के युद्ध में यदि प्राणों से बच कर गया तो एक-एक कर सारे देवताओं को काट डालूँगा ॥ ५१३ ॥

क्रोध को रोक कर राजा रावण ने दुखी चित्त से राम के सम्मुख रथ चला दिया। क्रोध से रावण बाण फेंकने लगा। सर्प के आकार वाले तीन लाख बाण उसने फेंके। सर्पबाण देखकर राम में त्रास का संचार हुआ, कहीं फिर से नाग-पाश का बन्धन तो नहीं फेंक रहा है। नागपाश के निवारण का उपाय वे जानते हैं। श्रीराम ने मंत्र पढ़कर खग-बाण फेका। गरुड़ बन कर वह बाण आकाश में भ्रमण करने लगा और रावण के सर्पबाणों को पकड़-पकड़ कर निगलने लगा। सर्पबाण व्यर्थ गया देखकर रावण क्रुद्ध हुआ। वह राम पर बाण बरसाने लगा, बाणों से उसने इन्द्र के सारथि मातलि को बींध डाला। इन्द्र का अश्व भी घायल हो गया और उसके मुँह से फेन निकलने लगा। कुपित हो रावण ने हाथ में वज्र-जाठा लिया। जाठा देखकर

एइ आमि जाठा मारि पूरिया सन्धान ❋ रक्षा कर देखि राम, धरि धनुर्ब्बाण
मन्त्र पड़ि दशानन जाठागाछ एड़े ❋ यतदूर जाय जाठा, ततदूर पुड़े
वृक्षेर निकटे गेले वृक्ष सब ज्वले ❋ आलो करि आसे जाठा गगन-मण्डले
यत बाण एड़े राम जाठा निवारिते ❋ सर्व्बअस्त्र पुड़ि जाय जाठार अग्निते
बाण पोड़ाइया जाठा जाय वायुवेगे ❋ मातलि तखन कहे श्रीरामेर आगे
इन्द्र पाठाइल शेल संसार-बिजय ❋ सेइ शेल मार प्रभु, जाठा हबे क्षय
एड़िलेन शेलपाट मातलिर बोले ❋ रावणेर जाठा काटि पाड़े भूमितले
जाठागाछ काटा गेल, रुषिल रावण ❋ रामेर उपरे करे बाण-बरिषण
बाछिया बाछिया बाण एड़े लंकेश्वर ❋ बाण फुटि रघुनाथ हइल कातर
कातर हइया राम धनु दिला टान ❋ रावणेर अंग बिन्धि कैला खान खान १४
दुइजने महायुद्ध संग्राम-भितरे ❋ कोपे राम गालि पाड़ि बले रावणेरे
सबे बले तोमारे रावण महाराज ❋ परस्त्री हरिते तोर मुखे नाहि लाज
सीता यदि आनितिस् मोर विद्यमाने ❋ सेइदिन पाठाताम खरेर सदने
विद्यमाने ना आनिया करिलिजे चुरि ❋ देख देखि आजि तोरे पाठाइ यमपुरी
दशमुण्ड साजायेछ नाना-अलंकारे ❋ गड़ागड़ि जाबे मुण्ड समुद्रेर धारे

देवगण चिन्तित हो गये। हाथ में जाठा लेकर लंकेश्वर तरजने लगा। उसने श्रीराम को पुकार कर कहा, मैं यह जाठा निशाना लगाकर फेंक रहा हूँ, अपना धनुष-बाण संभाल कर भला अपनी रक्षा तो करो। मंत्र पढ़कर दशानन ने जाठा फेंका। जाठा जितनी दूर जाता सब कुछ जलाता हुआ जाता। वृक्ष के निकट जाने पर वृक्ष जलने लगे, गगन-मंडल को प्रकाशित कर जाठा आने लगा। जाठा के निवारण के लिए राम जितने भी बाण चलाते सारे अस्त्र जाठा की आग में जल जाते। बाणों को जलाता हुआ जाठा वायुवेग से चलने लगा, तब मातलि ने राम से कहा, इन्द्र ने संसार-विजय शेल भेजा है। हे प्रभु उस शेल को फेंको तो जाठा का क्षय होगा। मातलि के कहने पर उन्होंने वह शेलपाट (शूल्यास्त्र) फेंका तो उसने जाकर रावण के जाठा को जमीन पर गिरा दिया। जाठा व्यर्थ गया तो रावण रुष्ट हुआ और राम पर बाण बरसाने लगा। लंकेश्वर ने चुन-चुन कर बाण बरसाये तो बाणों से बिंधकर राम कातर हो उठे। कातर होकर राम ने धनुष की प्रत्यंचा खींची तो रावण का अंग बिंध कर क्षत-विक्षत हो गया ॥ ५१४ ॥

संग्राम-स्थल पर दोनों में महायुद्ध ठन गया। कोप से राम रावण को कुशब्द कहने लगे। सब लोग तुझको महाराज रावण कहा करते हैं और तुझको दूसरे की नारी चुराते लाज नहीं आई। मेरे सम्मुख यदि तू सीता को लाया होता तो उसी दिन तुझको भी खर के साथ यम-सदन भेज देता। मेरे मौजूद न होने पर तुझने चोरी की। देख, आज तुझको यमपुरी भेजे देता हूँ।

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवेन्द्र वासुकि ❋ पड़िलि आमार हाते, कार साध्य राखि
गालि दिया श्रीरामेर बल बेड़े आसे ❋ वाछिया वाछिया बाण मारेन हरिषे
वानरेते गाछ-पाथर फेले चारि भिते ❋ चारि दिके मारे, रावण ना पारे सहिते
आयु:शेष ह'ये रावण टुटे आसे बले ❋ चारिदिके रामरूप रावण नेहाले
वज्र-अस्त्र मारे राम रावण-उपर ❋ मूर्च्छित हइया पड़े रथेर भितर
हात-पा आछाड़ि राजा करे धड़फड़ ❋ सारथि लइया रथ उठि दिल रड़१५
कतदूरे गिये राजा पाइल चेतन ❋ सारथिरे गालि पाड़े घूर्णित-लोचन
वैरी-सने रण आमि करि रणस्थले ❋ रथ ल'ये पलाइया एलि कार बोले
बले त्रुटि देखि बेटा हइलि कातर ❋ अल्पज्ञान कैलि बेटा, बुके नाहि डर
राम-सह युक्ति करि आछ मोर सने ❋ भंग दिया एलि बेटा, भय नाहि मने
भयेते सारथि कहे करि जोड़हात ❋ आमारे ना कर कोप राक्षसेर नाथ
रणे मूर्च्छा देखि तव, विषम संग्राम ❋ रणश्रमे घोड़ार वहिल कालघाम
सारथि फिराये रथ राखे योद्धापति ❋ सारथिर धर्म्म एइ, शुन नरपति
रणे मूर्च्छा देखि तव हइनु अन्तर ❋ अविचारे केन मोरे कह कटूत्तर

अपने दशमुंडों को तूने विभिन्न अलंकारों से सुसज्जित किया है। तेरे ये मुंड समुद्र के तट पर लुढ़केंगे। ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, देवेन्द्र और वासुकि किसकी शक्ति है कि तेरी रक्षा करे, तू मेरे हाथों पड़ा है। इस प्रकार धिक्कारने से श्रीराम की शक्ति बढ़ गई और वे चुन-चुन कर बाण बरसाने लगे। वानर चारों ओर पेड़-पत्थर बरसाने लगे और चारों ओर से मारने लगे। रावण से इतना सहा नहीं गया। आयु समाप्त हो रही है और रावण का बल टूटने लगा है। रावण चारों ओर राम का रूप निहारने लगा। राम ने रावण पर वज्र-अस्त्र फेंका तो वह मूर्छित होकर रथ के भीतर गिर पड़ा। हाथ-पैर पटक कर राजा छटपटाने लगा। सारथि रथ लेकर भाग खड़ा हुआ ॥ ५१५ ॥

कुछ दूर पहुँचकर रावण होश में आ गया। आँख गुरेरते हुए उसने सारथि को कुवचन कहे। वरी के साथ मैं रणभूमि में युद्ध कर रहा हूँ, किसके कहने पर तू रथ लेकर भाग आया। बल में ह्रास देखकर तू घबरा गया, तूने हीनबुद्धि का काम किया, क्या तुझे इसका डर नहीं ! राम के साथ सलाह कर तू मेरे साथ टिका हुआ है, रण से तू भाग आया, तुझे इसका कोई भय नहीं ! भय से सारथि ने हाथ जोड़कर कहा, हे राक्षसों के नाथ, मुझ पर क्रोधित मत होओ। घोरतर युद्ध के बीच तुमको मूछित होते देखा—रण के परिश्रम से घोड़े भी पसीने से लथपथ हो गये थे। हे नरपति, ऐसे क्षेत्र में सारथि रथ लौटा कर योद्धा को बचाता है, यही सारथि का धर्म है। रण में तुम्हारी मूर्छा देखकर मैंने यह कार्य किया, अन्याय ढंग से मुझको कटु वाक्य क्यों कह रहे हो। तुम्हारे हित की चिन्ता करने में यह कैसा विपरीत

हित-चिन्ता करिते हइल विपरीत ※ आमारे दितेछ दोष, नहे त उचित
कोप ना करह राजा, ना कहिओ बाड़ा ※ एत वलि चलाइया दिल अष्टघोड़ा
कोपमने अष्टपृष्ठे मारिल चाबुक ※ वेगे उत्तरिल रथ रामेर सम्मुख १६
राम बले, मातलि हे, हओ सावधान ※ आर वार रावण आइल विद्यमान
मने-मने चिन्तिया मरण कैल सार ※ म'रेछिल आर वार, पाइल निस्तार
इन्द्रेर सारथि बड़ बुद्धे विचक्षण ※ रथ चलाइया दिल त्वरित-गमन
रावणेर रथ उपनीत शीघ्रगति ※ दुइजने बाण बर्षे, यतेक शकति
दुइ रथ- पताका हइल ठेकाठेकि ※ अग्नि-सम बाण मारे दु'जने धानुकी
असुरे डाकिया बले, जिनुक रावण ※ रामेर हउक जय, कहे देवगण
हेनकाले रघुनाथ पूरिया सन्धान ※ रावणेर शरीरे मारिला तीक्ष्णबाण
सेइ बाण सहि राजा गदा निल हाते ※ तर्ज्जन करिया गदा छाड़े शून्यपथे
अर्द्धचन्द्र-बाणे राम सेइ गदा काटे ※ गदा काटि से वाण रावण-अंगे फुटे
रक्तवर्ण गदा रावण एड़े पुनर्ब्बार ※ पिशाच-अस्त्रेते राम करिला संहार
शिव-मन्त्र पड़ि रावण शिव-शूल एड़े ※ शंकर-बाणेते राम शून्ये काटि पाड़े
क्रोधे ज्वले रावणेर दु-आँखि देउटि ※ रामेर उपरे पुनः एड़े बाण जाठि

कार्य हुआ, तुम मुझ पर दोष लगा रहे हो यह तुम्हारे लिए उचित नहीं है। हे राजा, अधिक क्रोध मत करो, इतना कहकर उसने आठों घोड़े चला दिये। कुपित होकर उसने आठों घोड़ों की पीठ पर चाबुक मारा और वेग से राम के सम्मुख जा उपस्थित हुआ ॥ ५१६ ॥

राम ने कहा, हे मातलि, सावधान हो जाओ, फिर रावण सम्मुख आ गया है। मन ही मन सोचकर उसने मृत्यु का वरण कर लिया है। यह एक बार मरा था, फिर बच गया। इन्द्र का सारथि बुद्धि से बड़ा ही विचक्षण है, उसने तुरन्त रथ चला दिया। जल्द ही रावण का रथ आ पहुँचा। अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार दोनों ही बाण बरसाने लग गये। दोनों के रथ की पताकाएँ आपस में टकराईं। दोनो ही धानुकी आग के समान बाण मारने लगे। असुर लोग ध्वनि करने लगे, रावण की जय हो; और देवगण कहने लगे, राम की जय हो। ऐसे ही समय रघुनाथ ने निशाना साध कर रावण के शरीर पर पैना बाण चलाया। उस बाण को झेल कर रावण ने हाथ में गदा ले ली और शून्य के पथ पर गर्जन करते हुए उसको फेंका। अर्धचन्द्र बाण से राम ने रावण की वह गदा काट गिराई। गदा काटने के बाद वह बाण रावण के शरीर में जा चुभा। फिर रावण ने लाल रंग की गदा फेंकी, राम ने पिशाच-अस्त्र से उसका संहार किया। शिव-मंत्र का उच्चारण करते हुए रावण ने शिव-शूल फेंका। राम ने शंकर बाण से उसको शून्य में ही काट गिराया। रावण की दोनों आखें क्रोध से दीये की तरह

रक्तवर्ण जाठागाछ पञ्चाश-योजन ※ स्वर्ग मर्त्य पाताल काँपिल त्रिभुवन
सूर्य्यतेज धरे जाठा, अग्नि उठे मुखे ※ बिपरीत-शब्दे आसे रामेर सम्मुखे
जाठागाछ देखि रामेर हइल विस्मय ※ धनुके टंकार देन राम महाशय
आस्ते व्यस्ते रामचन्द्र नाना-अस्त्र एड़े ※ जाठार अग्निते वाण भस्म ह'ये पड़े
लक्ष-लक्ष वाण पुड़ि जाठागाछ आसे ※ त्रासेते पर्व्वत-वाण श्रीराम बरिषे
पवन-वेगेते जाठा आसे शीघ्रगति ※ कर-जोड़े बले तवे मातलि सारथि
देवराज पाठयेछे, जेइ शेलपाटे ※ झाट छाड़ सेइ शेल, जाठा पाड़ केटे१७
मातलिर वाक्ये राम शेलपाट एड़े ※ रावणेर जाठागाछ शेले काटि पाड़े
जाठागाछ काटा गेल, रावणेर त्रास ※ जाठा काटि शेल आसे श्रीरामेर पास
जाठा व्यर्थ देखि राजा जुड़े नागपाश ※ सहस्र-सहस्र फणी देखि लागे त्रास
पूर्व्वे राम प'ड़ेछिला जेइ नागपाशे ※ सेइ वाण देखि राम काँपिलेन त्रासे
श्रीराम गरुड़-अस्त्र एड़े वाहुबले ※ रावणेर नागगणे ध'रे ध'रे गिले
व्यर्थ गेल नागपाश, देखि दशानन ※ रामेर उपरे करे वाण-बरिषण
सप्तधार-बाणे राम नाना-अस्त्रकाटे ※ अस्त्र काटि रहे रावणेर अंगे फुटे१८
क्रोधे करे दुइजने वाण-बरिषण ※ लेखाजोखा नाहि, बाण बरिषे दु'जन

जलने लगीं, और फिर उसने राम पर जाठा फेंका। लाल रंग का यह जाठा पाचास योजन लम्बा था। इसको देखकर स्वर्ग, मृर्त्य, पाताल, त्रिभुवन काँप उठे। जाठा से सूर्य का तेज निकलता और मुख से अग्नि। घोर शब्द करता हुआ वह राम के सम्मुख आने लगा। जाठा देखकर राम को विस्मय हुआ। उन्होंने धनुष को टंकारा। अस्त-व्यस्त होकर रामचन्द्र विभिन्न-अस्त्र फेंकने लगे, किन्तु वे जाठा की आग में जल कर नष्ट हो गये। त्रास से श्रीराम ने पर्वतबाण फेंका। जाठा पवन-वेग से आने लगा। हाथ जोड़ कर सारथि मातलि ने कहा, देवराज ने जो शेलपाट भेजा है उसको झटपट फेंकिए और जाठा को काट गिराइए॥ ५१७॥

मातलि के कहने पर राम ने शेलपाट फेंका। शेलपाट ने रावण का जाठा काट गिराया। जब जाठा कट कर गिरा तो रावण त्रस्त हो उठा। जाठा काट कर शेल श्रीराम के पास लौट आया। जाठा व्यर्थ गया देखकर राजा (रावण) ने नागपाश फेंका। हजारों सर्प देखकर राम को डर लगने लगा, क्योंकि इससे पूर्व राम इसी नागपाश से बँधे थे, इसलिए उसी बाण को देखकर वे भयभीत हुए। श्रीराम ने फिर गरुड़-अस्त्र फेंका जो रावण के नागों को पकड़-पकड़ कर लीलने लगा। नागपाश व्यर्थ गया देखकर दशानन ने राम पर बाण बरसाये। सप्तधार बाण से राम ने रावण के विभिन्न अस्त्र काट डाले और अस्त्र काट कर रावण के अंग में वह बाण चुभा रह गया॥ ५१८॥

क्रोध में दोनों ही बाण बरसाते रहे। बाणों की संख्या की कोई गिनती

चक्षु मुदि धनुक टानये दुइजने ※ अग्निमय देखि कम्प लागे त्रिभुवने
अष्टबसु सूर्य्य-आदि काँपे रसातल ※ शून्येते देवतागण पलाय सकल
घन-घन उल्कापात तारागण खसे ※ त्रिभुवन विकम्पित श्रीरामेर त्रासे
श्रीचरण-भरे लंका करे टलमल ※ सिंहनादे उथलिल सागरेर जल
आकाश भाँगिया पड़े, मने हेन गणि ※ धनुकेर टंकार वाणेर ठन्ठनि
रुद्ध हैल चन्द्र-सूर्य्य-गमनागमन ※ दिवानिशि सप्ताह विच्छेद नाहि रण
सप्तदिन नाहि देखि, के आछे कोथाय ※ सुग्रीव-अंगद-आदि पलाइया जाय
नल नील सुषेण पलाय हनूमान ※ ससैन्ये पलाय सवे लइया पराण
शरभंग द्विविद पलाय उभराय ※ पनस केशरी छुटे, फिरिया ना चाय
आपन-कटके कपि पलाय अपार ※ दृष्टि नाहि चले, लंका वाणे अन्धकार
आछाड़ि फेलिल, हाते छिल शालवृक्ष ※ ऊद्र्ध्वमुखे ससैन्येते पलाय गवाक्ष
श्रीराम-लक्ष्मण क्रोधे शमन-समान ※ झाँके झाँके फेले दोंहे यम-सम बाण
यत निशाचर धाय फेलि धनुर्व्वाण ※ आशीकोटि भल्लूके पलाय जाम्बवान
राम-रावणेर युद्ध नाहि लेखा-जोखा ※ दोंहार अंगेर माँस हैल चाका-चाका
स्वर्गे काँपे इन्द्रदेव, पातालेते वलि ※ बाणेर आगुने दीप्त हय रणस्थली

ही नहीं। आँखें मूँद कर दोनों धनुष खींचने लगे और चारों ओर अग्निमय देखकर त्रिभुवन कम्पित हो उठा। अष्टवसु सूर्य आदि काँपने लगे, रसातल काँप उठा, शून्य में सभी देवता काँपने लगे, बार-बार उल्कापात होने लगा, तारे गिरने लगे, इस प्रकार श्रीराम के त्रास से त्रिभुवन कम्पित हो उठा। उनके श्रीचरणों की चाप से लंका डाँवाडोल होने लगी। सिंहनाद से सागर के जल में उथल-पुथल मच गई। ऐसा लगने लगा कि गगन टूटा पड़ रहा है। धनुष की टंकार और वाणों की ठनाठन। चन्द्र-सूर्य का आवागमन रुद्ध हो गया। दिवा निशि, सप्ताह—रण में कोई विराम नहीं। सात दिन हो गये, कौन कहाँ है दिखाई नहीं पड़ता। सुग्रीव, अंगद आदि भाग गये। नल नील, सुषेण, हनुमान भाग खड़े हुए। अपनी-अपनी सेना लेकर प्राण लेकर सब भागे। शरभंग, द्विविद बेतहाशा भागे। पनस, केशरी भागे तो पीछे पलट कर भी नहीं देखा। अपने कटक के साथ असंख्य कपि भागने लगे। वाणों से लंका अंधकार-मयी हो गई—दृष्टि नहीं काम करती थी। गवाक्ष के हाथ में एक साखु का वृक्ष था, उसको फेंक कर ऊपर मुख किये हुए वह अपनी सेना के साथ भाग खड़ा हुआ। श्रीराम-लक्ष्मण दोनों क्रोध से यमराज के समान हो गये और दोनों ही झुंड के झुंड वाण बरसाने लग गये। सारे राक्षस धनुष-वाण फेंक-फेंक कर भागने लगे। अस्सी करोड़ भालुओं को लेकर जाम्बवान भागे। राम-रावण के युद्ध में गिनती का कोई हिसाब नहीं, दोनों के अंग के मांस ही नष्ट हो गये। स्वर्ग में इन्द्रदेव और पाताल में बलिराजा काँपने लगे।

श्रीराम एड़ेन वाण तारा येन छुटे ❊ रावणेर अंगे ताहा काँटा-हेन फुटे
मारिलेन अग्नि-वाण घोर शब्द शुने ❊ हेन वाणे दशानन किछुइ ना जाने
श्रीराम एड़ेन वाण नामे वेड़ापाक ❊ रणस्थले फिरे येन कुमारेर चाक
झञ्झना पड़िछे येन उठे महाशब्द ❊ वाण खेये दशानन ह'ये रहे स्तब्ध
वज्रसम श्रीरामेर वाण वेगे जाय ❊ निस्तेज हइल रावण सेइ वाण-घाय
गायेर भूषण गेल, माथार मुकुटे ❊ रक्त-माँस नाहि गाय, अस्थि भेदि फुटे
अस्थि विन्धि रघुनाथ करिला जर्ज्जर ❊ तबु जुझे दशानन संग्राम-भितर१९
विभीषण वले, राम, धर्म्म-अस्त्र एड़ ❊ रावणेर स्वर्णपाटा भूमे काटि पाड़
कक्षपाटा गेल काटा, रावण चिन्तित ❊ मने भावे भगवती छाड़िला निश्चित
विशेष जानिनु राम विष्णु-अवतार ❊ जन्मिले मरण आछे, चिन्ता कि ताहार
सफल जीवन मम, राम यदि मारे ❊ रामेर सम्मुखे आजि त्यजि कलेवरे
जनम सफल हवे, जाब स्वर्गवास ❊ रामेर श्रीमुख देखि रावणेर हास
रावण बले, प्रीति-वाक्य ना कव रामेरे ❊ दया उपजिले नाहि मारिवे आमारे
रावण रामेरे वले, छाड़ अहंकार ❊ आजिकार रणे तोरे करिब संहार

वाणों की आग से सारी रणभूमि प्रदीप्त हो उठी। श्रीराम यों वाण फेंकते मानों नक्षत्र लपक रहा हो और रावण के अंग में वे वाण जाकर काँटों की तरह चुभते। उन्होंने अग्निवाण फेंका। चारों ओर घोर शब्द हुआ किन्तु रावण पर इस वाण का कोई असर न हुआ। श्रीराम ने वेड़ापाक नामक वाण फेंका जो कि रणस्थल में कुम्हार के चाक जैसा घूमने लगा। झनझना कर महाशब्द उठा। वाण खाकर दशानन स्तब्ध बना रहा। श्रीराम का वाण वज्र के समान लपका और उस वाण के आघात से रावण तेजशून्य हो गया। शरीर के आभूषण और सिर से मुकुट गिर गये। वदन पर रक्त-मांस नहीं रहा और अब हड्डियों में वाण बिंधने लगे। हड्डियों को बिंध कर रघुनाथ ने उसे जर्जर कर डाला फिर भी दशानन संग्राम-स्थल में लड़ता ही रहा ॥ ५१६ ॥

विभीषण ने कहा, हे राम, अब तुम धर्म-अस्त्र फेंको और रावण का स्वर्णनिर्मित कवच काट कर गिरा दो। जब कक्ष का कवच कट गया तो रावण चिन्तित हुआ। मन ही मन सोचने लगा कि भगवती ने अवश्य ही उसे त्याग दिया है। यह तो मैं जान ही गया कि राम विष्णु के अवतार हैं। जन्म लेने पर मरना ही पड़ेगा—उसकी कौन सी चिन्ता है। यदि राम मुझको मार गिराएँ तो मेरा जन्म सफल है। राम के सम्मुख आज शरीर त्याग कर जन्म सफल करता हुआ स्वर्गवास करने चला जाऊँगा। राम का सुन्दर मुख देखकर रावण के चेहरे पर हँसी आ गई। रावण ने सोचा कि मैं राम को कोई प्रेम-वचन नहीं कहूँगा, दया आ जाने से शायद वे मुझे न भी मारें। रावण

खर-दूषण नहि, आमि लंकार रावण ❋ एखनि पाठाव तोरे यमेर सदन
श्रीराम बलेन, तोर कठिन जीवन ❋ मम बाण खेये वेंचे आछिस् एखन२०
आर बार बाजे युद्ध श्रीराम-रावणे ❋ बाणेर आगुन गिया उठिल गगने
घोर अन्धकार रात्रि बाणे दीप्त करे ❋ चिकुर चमके येन संग्राम-भितरे
एड़िला शंकर-बाण राम रघुवर ❋ बुकेते वाजिया राजा हइल कातर२१
वाण खेये दशानन अन्तरेते काँपे ❋ पार्व्वतीर महाशूल एड़िलेक कोपे
शूल फुटि रघुनाथ हैला अचेतन ❋ चेतन पाइया करे बाण-बरिषण
सहस्राक्ष-बाण रामेर चले ऊर्द्ध्वमुखे ❋ अविलम्बे पड़े गिया रावणेर बुके
बाणाघाते महात्रास पाइल रावण ❋ बिष्णुमन्त्रे गदा राम मारेन तखन
कालचक्रे काटे गदा राजा दशानन ❋ गदा ब्यर्थ गेल, भावे कमललोचन
पाशुपत-बाण मारे राजा दशानन ❋ विष्णुचक्रे काटिलेन श्रीराम तखन
अतिक्रोधे एड़िलेन वाण महाकाल ❋ रावणेर बुके बिन्धि प्रवेशे पाताल२२
बाण खेये दशानन भावे मने-मन ❋ जोड़हाते स्तव करे श्रीरामे तखन
हातेर धनुक-बाण फेलि भूमितले ❋ कर जुड़ि करे स्तव वस्त्र दिया गले

ने राम से कहा, अपना गुमान छोड़ो, आज के युद्ध में मैं तेरा वध करूँगा। मैं कोई खर-दूषण नहीं हूँ, मैं हूँ लंका का रावण। अभी तुझे यम के घर भेजता हूँ। श्रीराम ने कहा, तू बड़े जीवट का है, मेरे वाण खाकर भी तू अभी तक जिन्दा है॥ ५२०॥

फिर एकबार राम-रावण में युद्ध छिड़ गया। वाण की आग गगन पर चढ़ गई। वाण घोर अँधेरी रात को प्रदीप्त करते रहे। युद्ध-स्थल पर मानों बिजलियाँ चमक रही हों। राम रघुवर ने शंकर वाण छोड़ा। रावण के वक्ष पर उसके लगने से वह कातर हो गया॥ ५२१॥

वाण खाकर दशानन का मन काँप उठा। उसने गुस्से में आकर पार्वती का महाशूल फेंका। शूल चुभने से रघुनाथ अचेतन हो गये। फिर चैतन्य होकर वाण बरसाने लगे। राम का सहस्राक्ष वाण उर्द्ध्वमुख होकर चला और तत्काल रावण के वक्ष पर जा लगा। वाण के आघात से रावण त्रस्त हो उठा। तब राम ने विष्णुमंत्र का जाप कर गदा चलायी। राजा दशानन ने कालचक्र से उस गदा को काट गिराया। गदा व्यर्थ गयी देखकर कमल-लोचन राम सोच में पड़ गये। तब राजा दशानन ने पाशुपत-वाण फेंका। राम ने उसे विष्णुचक्र से काटा और क्रोध में आकर महाकाल वाण फेंका। रावण के वक्ष को छेदता हुआ वह वाण पाताल में प्रवेश कर गया॥ ५२२॥

वाण से आहत हो दशानन ने मन ही मन सोचा तथा हाथ जोड़ गले में वस्त्र डाल कर वह श्रीराम की स्तुति करने लग गया। तुम विश्व के आराध्य हो, अगति के गति हो। पूरी सृष्टि की रचना के निमित्त तुम प्रजापति

बिश्वेर आराध्य तुमि अगतिर गति ❊ निदाने सृजिते सृष्टि तुमि प्रजापथि
तुमि सृष्टि, तुमि स्थिति, तोमाते प्रलय ❊ काले महाकाल विश्व काले कर लय
तुमि चन्द्र, तुमि सूर्य्य, तुमि चराचर ❊ कुबेर वरुण तुमि यम पुरन्दर
निराकार साकार सकल रूप तुमि ❊ तव महिमार सीमा कि जानिव आमि
ना जानि भकति स्तुति, जाति निशाचर ❊ श्रीचरणे स्थान-दान देह गदाधर
तुमि हे अनाद्य आद्य असाध्य-साधन ❊ कटाक्षे ब्रह्माण्ड कर खण्ड-विनाशन
आखण्डल चञ्चल चिन्तिया श्रीचरण ❊ कटाक्षे करुणा कर कौशल्या-नन्दन
जन्मिया भारत-भूमे आमि दुराचार ❊ करेछि पातक कत, संख्या नाहि तार
अपराध मार्ज्जना कर हे दयामय ❊ कुड़िहस्त जुड़ि राजा एकदृष्टे रय
कुड़िच'क्षे वारिधारा बहे अनिवार ❊ राम वले, ना हइला सीतार उद्धार
कार्य्य नाइ राजपाट पुनः जाइ बने ❊ रावण परम-भक्त, मारिब केमने
केमने एमन भक्ते करिब संहार ❊ बिश्वे केह राम-नाम ना लइबे आर
केमने मारिव वाण भक्तेर उपर ❊ एत बलि त्याजेन हातेर धनुःशर
बिमुख हइया राम वसिलेन रथे ❊ इन्द्र-आदि देवगण लागिल चिन्तिते २३
स्तवे तुष्ट हैला यदि कमल-लोचन ❊ तबे त मजिल सृष्टि, ना मैल रावण

हो। तुम ही सृष्टि हो, स्थिति हो और प्रलय हो। महाकाल के रूप में विश्व का संहार भी कर डालते हो। तुम चन्द्र हो, तुम सूर्य हो और तुम्हीं चराचर हो। तुम्हीं कुबेर हो, वरुण हो, यम हो, पुरन्दर हो। तुम निराकार भी हो और साकार रूपधारी भी हो। तुम्हारी महिमा की सीमा मैं क्या जानूँ। मैं राक्षस जाति का हूँ, न भक्ति जानता हूँ और न स्तुति, हे गदाधर अपने श्रीचरणों में स्थान दो। तुम ही आदि और अनादि हो, असाध्य-साधक हो। तुम कटाक्ष मात्र से ब्रह्मांड को खंड-खंड कर उसका ध्वंस कर डालते हो। इन्द्र चंचल हो तुम्हारे चरणों का ध्यान करने लगता है। हे कौशल्या-नन्दन तुम कटाक्ष में करुणा करते हो। भारत-भूमि पर जन्म लेकर मैं दुराचारी जाने कितना पाप कर चुका हूँ जिसकी गिनती नहीं। हे दयामय, मेरा अपराध क्षमा करो। इस प्रकार वीस हाथ जोड़कर राजा रावण एकटक देखता रहा। उसके बीस नेत्रों से लगातार आँसू गिरने लगे। राम ने कहा, सीता का उद्धार न हो सका, राजपाट की कोई जरूरत नहीं, फिर से वन चला जाऊँ। यह रावण तो परम-भक्त है, इसको कैसे मारूँ। ऐसे भक्त का मैं कैसे संहार कर सकता हूँ। फिर तो विश्व में कोई भी राम का नाम नहीं लेगा। भक्त पर क्योंकर मैं बाण चलाऊँ। इतना कहकर राम ने धनुष-बाण त्याग दिया। राम विमुख होकर रथ पर बैठ गये। इन्द्र आदि सभी देवता चिन्ता करने लग गये॥ ५२३॥

यदि कमललोचन (राम) स्तुति से तुष्ट हो गये तो सारी सृष्टि चौपट

एत बलि देवगण करिया जुकति ✲ उत्तरिला गिया, यथा देबी सरस्वती
देवगण बले, माता, करि निवेदन ✲ प्रमाद घटिल वड़, ना मैल रावण
श्रीरामे करिल स्तव दुष्ट निशाचर ✲ स्तवे तुष्ट ह'ये राम त्यजिला समर
तुमि बैस रावणेर कण्ठेर उपर ✲ रिपुभावे श्रीरामे वलाह कटूत्तर २४
एत शुनि वाग्वादिनी चलिला सत्वर ✲ वसिलेन रावणेर कण्ठेर उपर
डाक दिया वले रावण, शुन रघुपति ✲ प्राणेर भयेते तोमा नाहि करि स्तुति
अवश्य जुझिव आमि, आइस सत्वर ✲ एकवाणे भण्ड वेटा जावि यमघर२५
श्रीराम वलेन, मृत्यु इच्छिल रावण ✲ एखनि पाठाव तोरे यमेर सदन
एत वलि कोपेते कम्पित रघुवर ✲ पुनर्व्वार तुलिया निलेन धनु:शर
पुनर्व्वार लागे युद्ध श्रीराम-रावणे ✲ वाणे-वाणे काटाकाटि उठिल गगने
सिंहे-सिंहे पर्व्वते येमन वाजे रण ✲ सेइरूप वाजे युद्ध श्रीराम-रावण
पञ्चवाण जुड़े राम धनुकेर गुणे ✲ से-वाण रावण काटे अग्निमुख-वाणे
गन्धर्व्वास्त्र मारे राम रावणेर गाय ✲ मोह गेल दशानन सेइ अस्त्र-घाय२६
हेनकाले युक्ति दिला मित्र विभीषण ✲ ब्रह्म कवच काटि पाड़, मारुक रावण

हो जायगी और रावण नहीं मरेगा। इतना कहकर देवताओं ने परामर्श किया और वहाँ जा पहुँचे जहाँ देवी सरस्वती है। देवताओं ने कहा, हे माता हमारा निवेदन सुनो, बड़ी विपत्ति आ गई है, रावण मरा नहीं, दुष्ट निशाचर ने श्रीराम की स्तुति की। स्तुति से तुष्ट हो राम ने युद्ध करना छोड़ दिया है। तुम रावण के कंठ पर बैठ जाओ और शत्रुभाव से श्रीराम के प्रति कटुवाक्य उससे कहलाओ ॥ ५२४ ॥

इतना सुनकर वाग्देवी शीघ्र चल पड़ी और जाकर रावण के कंठ पर बैठ गई। रावण ने पुकार कर कहा, हे रघुपति सुनो, मैं प्राणों के भय से तुम्हारी स्तुति नहीं कर रहा हूँ, मैं अवश्य ही युद्ध करूँगा, झटपट आओ। ऐ ढोंगी तू एक वाण से ही यम के घर चला जायगा ॥ ५२५ ॥

श्रीराम ने कहा, ऐ रावण तूने मृत्यु की इच्छा प्रकट की, अभी तुझे यम के सदन भेजता हूँ। इतना कहकर रघुवर क्रोध से काँपने लगे और फिर अपना धनुष-वाण उठा लिया। फिर श्रीराम-रावण में युद्ध छिड़ गया और गगन में वाण आपस में टकराकर एक दूसरे को काटने लग गये। पर्वत में जिस प्रकार सिंह-सिंह में लड़ाई छिड़ जाती है, उस प्रकार श्रीराम और रावण में युद्ध ठन गया। राम ने धनुष की प्रत्यंचा पर पंचवाण जोड़ा जिसको रावण ने अग्निवाण से काट गिराया। राम ने रावण के शरीर पर गन्धर्वास्त्र फेंका तो उस अस्त्र के आघात से दशानन बेसुध हो गया ॥ ५२६ ॥

ऐसे ही समय मित्र विभीषण ने परामर्श दिया, ब्रह्म-कवच को काट कर गिरा दो, तो रावण मर जाया। ब्रह्म-मंत्र का पाठ कर राम ने ब्रह्म-अस्त्र

ब्रह्म-मन्त्र पड़ि राम ब्रह्म-अस्त्र हाने ※ कवच काटिया पड़े श्रीरामेर वाणे
ब्रह्म-कवच काटि राम तीक्ष्ण-अस्त्रहाने ※ तवु जुझे दशानन श्रीरामेर सने
डाक दिया श्रीरामेरे वलिछे रावणे ※ कि करिते पार राम मनुष्य-पराणे
रावणेर कथा शुनि श्रीरामेर हास ※ अवश्य, रावण तोरे करिब विनाश५२७
यत वाण मारे राम, ना मरे रावण ※ रावण मरिवे किसे, भावे नारायण
सन्धान पूरिया राम कालचक्र एड़े ※ रावणेर माथा काटि भूमितले पाड़े
एकमाथा काटा गेल, देखे देवगण ※ आर माथा सेइखाने उठे ततक्षण
आरवार रघुनाथ अर्द्धचन्द्र-वाणे ※ दुइ-माथा काटिया पाड़िल सेइखाने
रणस्थले रावणेर उठे दुइ-माथा ※ देखिया विस्मित हैल सकल देवता
आर वार रघुनाथ एड़े ब्रह्मजाल ※ तिन-माथा काटि वाण सन्धाय पाताल
तिन-माथा काटा गेल, देखे देवगणे ※ पुनः तार तिन-माथा उठे सेइक्षणे
आर बार सन्धान पूरिया रघुवीर ※ ऐषिक-वाणेते तार काटिलेन शिर
चारि-माथा काटा गेल, अति चमत्कार ※ ब्रह्म-वरे चारि-माथा उठे आर वार
माथा काटा गेल, नाहि मरे लंकेश्वर ※ ब्रह्म-अस्त्रे पञ्च-माथा काटेन सत्वर
पाँच-माथा काटि राम मने आनन्दित ※ सेइ पाँच-माथा तबे उठे आचम्बित

फेंका। श्रीराम के वाण से कवच कट कर गिर गया। ब्रह्म-कवच को काट कर राम तीखे अस्त्र फेंकने लगे, फिर भी दशानन राम के साथ युद्ध करता रहा। श्रीराम को पुकार कर रावण ने कहा, हे राम, मनुष्य के प्राण रखने वाले राम, तुम मेरा क्या बिगाड़ सकते हो। रावण की बात सुनकर श्रीराम ने हँसकर कहा, हे रावण मैं तेरा अवश्य ही वध करूँगा॥ ५२७॥

राम ने बहुत से वाण मारे किन्तु रावण की मृत्यु नहीं हुई। नारायण सोचने लगे कि रावण कैसे मरेगा। राम ने निशाना साधकर कालचक्र फेंका, रावण का सिर कटकर धरती पर जा गिरा। देवताओं ने देखा कि एक सिर कट कर गिरा और तत्काल दूसरा सिर आकर वहाँ लग गया। दूसरी बार रघुनाथ ने अर्धचन्द्र वाण फेंककर रावण के दो सिर काट कर गिराये। रावण के दोनों सिर फिर उठकर अपने स्थानों पर लग गये—यह देखकर सारे देवता विस्मित रह गये। फिर रघुनाथ ने ब्रह्मजाल फेंका, वह वाण तीन सिर काटने के बाद पाताल में प्रवेश कर गया। तीन सिर कट गये यह देवताओं ने देखा। फिर उसके तीन सिर उसी स्थान पर आकर तत्काल लग गये। बार-बार निशाना साधकर रघुवीर ने ऐषिक-वाण से उसका सिर काट डाला। चार सिर कट गये किन्तु चमत्कार देखो, ब्रह्मा के वर से चारों सिर फिर निकल आये। सिर कट जाता किन्तु लंकेश्वर मरता नहीं। ब्रह्म-अस्त्र से पाँच सिर उन्होंने फौरन काट डाले। पाँच सिर काट डालने के बाद राम मन ही मन अति प्रसन्न हुए। किन्तु

आर बार रामचन्द्र एड़ि यमदण्ड ※ मुकुट-सहित काटे छयगोटा मुण्ड
माथा काटा गेल, तबु रणे नाहि टुटे ※ सेइक्षणे रावणेर छय-माथा उठे
धर्म्मचक्र-वाण राम जुड़ेन धनुके ※ सात-माथा काटिलेन सर्व्वजन देखे
माथा काटा गेल, तबु जुझिछे रावण ※ सप्तमुण्ड रावणेर उठे ततक्षण
सप्तसार-वाणे राम अष्टमुण्ड काटे ※ ब्रह्मार वरेते तार अष्टमुण्ड उठे
नय-माथा काटिलेन रघुनाथ कोपे ※ सेइक्षणे नय-माथा उठे एकचापे
दश-माथा काटागेल, दश-माथा उठे ※ तथापि रावण जुझे रामेर निकटे५२८
श्रीराम वलेन, वेटा वड़इ दुर्व्वार ※ माथा काटा गेल, तबु जुझे आर बार
अर्द्धचन्द्र-वाणे राम पूरिया सन्धान ※ रावणेर मध्य काटि करे दुइखान
अर्द्ध-अंग पड़े येन पर्व्वतेर चूड़ा ※ ब्रह्म-वरे अर्द्ध-अंग अंगे लागे जोड़ा
तबु नाहि पड़े रावण वड़इ दुर्व्वार ※ रामेर उपरे करे वाण-अवतार
रावणेर वाणे राम जर्ज्जर-शरीर ※ संवरिया तीक्षणवाण एड़े रघुवीर
शतवार काटिलेन रावणेर माथा ※ काटिया-मात्रेते उठे, तिल नाहि व्यथा
ना मरे काटिले माथा, जुझये रावण ※ कृत्तिवास रचिलेन गीत-रामायण५२९

अचानक ही वे पाँचों सिर अपने स्थान पर आकर लग गये। फिर रामचन्द्र ने यमदण्ड फेंका और मुकुट के साथ छह मुंड काट कर गिरा दिये। सिर कट जाते फिर भी युद्ध समाप्त नहीं होता। उसी क्षण रावण के वे छह मुंड उठकर जुड़ गये। राम ने धनुष पर धर्मचक्र-वाण जोड़ा और सभी लोगों ने देखा कि उन्होंने सात मुंड काटकर गिरा दिये। सिर कट गये किन्तु तब भी रावण युद्ध करता रहा और तब तक रावण के सातमुंड उठकर लग गये। सप्तसार वाण चलाकर राम ने रावण के आठ मुंड काट डाले। ब्रह्मा के वर से उसके आठों मुंड आकर जुड़ गये। परम कोप से रघुनाथ ने नौ सिर काट डाले, तत्क्षण नौ मुंड एक साथ उठकर जुड़ गये। दस सिर कट गये फिर भी रावण राम से युद्ध करता ही रहा ॥ ५२८ ॥

श्रीराम ने कहा, यह दुष्ट बड़ा ही अजेय है। सिर कट गये फिर भी लड़े चला जा रहा है। अर्धचन्द्र वाण लेकर राम ने निशाना साधा और रावण को वीच से काट कर दो टुकड़े कर डाला। आधा अंग यों गिरा मानों पर्वत का शिखर हो। ब्रह्मा के वर से आधा अंग आधे अंग से आकर जुड़ गया। फिर भी यह रावण गिरता नहीं, बड़ा ही दुर्धर्ष है, राम के ऊपर वाण-वर्षा करता रहा। रावण के वाणों से राम का शरीर जर्जर हो उठा। कुछ सँभल कर रघुवीर ने तीखे-तीखे वाण चलाये और सौ वार रावण के सिर काट कर गिराये। कटने के साथ-साथ वे उठकर जुड़ जाते, उसे कोई पीड़ा नहीं होती। सिर के कटने पर भी रावण मरता नहीं, लड़ता ही रहता। कृत्तिवास ने रामायण-गीत की रचना की ॥ ५२९ ॥

रावणेर अम्बिका-स्मरण

एत देखि कोपे काँपे वीर दशानन ※ चापे चड़ाइया बाण करे बरिषण
आच्छन्न हइल रवि, नाहि चले दृष्टि ※ वाण वर्षे, येन मेघ वरिषये वृष्टि
बाणे-बाणे क्षत-अंग यतेक वानर ※ ताहा देखि हनूमान क्रोधित-अन्तर
लाफ दिया रावणेर सम्मुखे पड़िल ※ वज्रेर समान कील रावणे मारिल
मार खेये दशानन हाराय चेतन ※ धूलाय लोटाये करे रुधिर-वमन
चेतन पाइया कील हनूमाने मारे ※ 'राम-जय' वलिया मारुति-बीर सारे ३०
एइरूपे कतक्षण हइल संग्राम ※ परेते संग्राम करे आसिया श्रीराम
बाणे-बाणे क्षत-देह हैल दु'जनार ※ दशानन समर सहिते नारे आर
धूलाय धूसर राजा ह'ये अचेतन ※ चेतन पाइया करे अम्बिका-स्तवन ५३१

रावणेर अम्बिका-स्तव

कोथा मा तारिनि तारा, हओ गो सदय ※ वेखा दिया रक्षा कर मोरे असमय
पतित-पावनि पापहारिणि कालिके ※ दीनजन-जननि मा जगत्-पालिके
करुणा-नयने चाह कातर किंकरे ※ ठेकियाछि घोर दाये रामेर समरे

रावण का अम्बिका स्मरण

इतना देखकर वीर दशानन क्रोध से काँपने लगा। धनुष पर वाण चढ़ाकर उनकी वर्षा करने लगा। सूर्य ढक गया, दृष्टि व्यर्थ होने लगी। बाण यों वरसने लगे मानों बादलों से वर्षा हो रही हो। बाणों से सारे वानरों के शरीर घायल हो गये, यह देखकर हनुमान मन ही मन क्रोधित हो गया। छलाँग मार वह रावण के सामने जा खड़ा हुआ और वज्र जैसा एक मुक्का रावण को मारा। मार खाकर दशानन ने चेतना खो दी। धूल में लोट कर खून की उलटी करने लगा। चैतन्य होकर उसने हनुमान को मुक्का मारा, 'राम जय' कहकर वीर हनुमान खिसक गया ॥ ५३० ॥

इसी प्रकार से कितनी ही देर संग्राम होता रहा। फिर श्रीराम आकर संग्राम में जुट गये। वाणों से दोनों के शरीर चत-विचत हो गये। दशानन से अव युद्ध अधिक सहा न गया। धूलि में लथपथ राजा अचेतन पड़ा रहा। चैतन्य पाकर वह अम्बिका की स्तुति करने लगा ॥ ५३१ ॥

रावण की अम्बिका-स्तुति

हे माँ तारिणी, तुम कहाँ हो, मुझ पर सदय हो जाओ। इस असमय पर दर्शन देकर मेरी रत्ता करो। हे कालिके, तुम पतित-पावनी और पापहारिणी हो। हे जगत्पालिके, तुम दीनों की जननी हो। इस दुखी सेवक

आर केह नाहि मोर भरसा संसारे ❋ शंकर त्यजिल, तेंइ डाकि मा, तोमारे
तुमि दयामयी माता, शुनेछि पुराणे ❋ तुमि शक्ति तुमि तृप्ति व्याप्त सर्व्वस्थाने
नाम-गुण व्यक्त आछे ए तिन भुवन ❋ रूप-गुण अव्यक्त, नाहिक निरूपण
जे तव शरण लय, ना थाके आपद् ❋ प्रमाण, इन्द्रेर जाहे अमर-सम्पद्
आमार नाहिक आर डाकिवार लोक ❋ कृपावलोकन करि निवारह शोक
एइरूपे स्तव यदि करिल रावण ❋ आर्द्र हैला हैमवती, मन उचाटन
अम्बिकार स्तव करे आर्त्त दशानन ❋ कृत्तिवास गाहिलेन गीत रामायण ५३२

रावणेर प्रति अम्बिकार अभय-दान

स्तवे तुष्टा ह'ये माता दिला दरशन ❋ वसिलेन रथे कोले करिया रावण
आश्वास करिया कन, ना कर रोदन ❋ भय नाइ, भय नाइ, वाछा दशानन
आसियाछि आमि, आर कारे कर डर ❋ आपनि जुझिब, यदि आसेन शंकर
असित-वरणा काली, कोले दशानन ❋ रूपेर छटाय घन-तिमिर-नाशन
अलका झलका उच्च-कादम्बिनी-केश ❋ ताहे श्यामा रूपे नील-सौदामिनी-वेश
कर-पद-नखे शशि अनल प्रकाशे ❋ विम्व-फल तुलित अधरे मन्द हासे ५३३

की ओर करुणामय-नेत्रों से देखो। राम के साथ इस युद्ध में मैं बड़े संकट में फँस गया हूँ। संसार में और अन्य कोई सहाय नहीं। शंकर ने मुझे त्याग दिया, इसीलिए माँ तुमको पुकारता हूँ। तुम दयामयी माँ हो ऐसा पुराण में मैंने सुना है। तुम शक्ति हो, तुम तृप्ति हो, तुम सर्वत्र व्याप्त हो। इन तीनों भुवनों में तुम्हारा नाम और गुण व्यक्त है। रूप गुण अव्यक्त है, उसका निरूपण नहीं हो सकता। जो तुम्हारी शरण लेता है उस पर कोई विपत्ति नहीं आती। इसका प्रमाण है इन्द्र जिसके पास अमरत्व की सम्पदा है। अब मेरे निकट पुकारने योग्य कोई व्यक्ति नहीं। कृपादृष्टि डालकर मेरा शोक दूर करो। इस प्रकार जब रावण ने स्तुति की तो हैमवती (पार्वती) का हृदय प्रसन्न हो गया, वे दयालु हो गईं। आर्त्त दशानन अम्बिका की स्तुति करने लगा और कृत्तिवास ने रामायण गीत की रचना की ॥ ५३२ ॥

रावण के प्रति अम्बिका का अभय-दान

स्तुति से प्रसन्न होकर माँ ने दर्शन दिया और रथ पर रावण को गोद में लेकर बैठ गईं। आश्वासन देती हुई वह बोलीं, बेटा दशानन, मत रोओ, अब तुम्हें कोई डर नहीं। मैं आ गयी हूँ, अब तुमको किससे डरना है। यदि शंकर भी आ जाएँ तो मैं स्वयं युद्ध करूँगी। कृष्ण-वर्णा काली गोद में दशानन को लिये बैठी हैं, उनके रूप की छटा से घना अंधेरा छँट गया। ऊँचे बादलों जैसे केश में मानों बिजली झलक रही हो।

शोक-दुःख रावणेर गेल सेइक्षणे ❀ हइल सानन्द-चित्त देवी-दरशने
नयने गलित धारा, सविनये कय ❀ बले, दयामयी-विना सदया के हय
साक्षाते करिया स्तव राजा लंकेश्वर ❀ राम-सने संग्रामे चलिल अतःपुर
छाड़े घन हुहुंकार गभीर-गर्ज्जने ❀ वाण बरिषण करे भीषण तर्ज्जने ३४
आगुसरि युद्धे एल राम रघुपति ❀ देखिलेन रावणेर रथे हैमवती
विस्मित हइया राम फेलि धनुर्व्वाण ❀ प्रणाम करिला ताँरे करि मातृज्ञान
बिभीषणे कन तवे, त्रिलोकेर नाथ ❀ रावण-विनाशे मिता, घटिल व्याघात
कार साध्य विनाशिते पारे दशानने ❀ रक्षिछे रावणे आजि हर-वरांगने
ऐ देख रावणेर रथे विभीषण ❀ जलदवरणी-कोले राजा दशानन ३५
देखिया धार्म्मिक बिभीषण सविस्मय ❀ प्रमाद घटिल, किवा हबे दयामय
विषण्ण हइया राम बसिला भूतले ❀ परम-विमर्ष ह'ये चिन्तित सकले
तारा यदि करिलेन एमन व्याघात ❀ तवे आर के करिवे दशास्ये निपात

श्यामा रूप में नीली सौदामिनी का वेश। हाथ और पैरों के नाखून से चन्द्रमा की ज्योति प्रकट होती है और अधर पर मन्द-हास से मानों विम्ब-फल शोभा पा रहा हो ॥ ५३३ ॥

उसी क्षण रावण के सारे दुःख-क्लेश दूर हो गये। देवी का दर्शन पाते ही उसका चित्त आनन्द से पूर्ण हो गया। आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी और वह सविनय बोला, दयामयी के सिवा और कौन सदया हो सकती थी। इसी प्रकार सम्मुख स्तुति करने के उपरान्त राजा लंकेश्वर राम के साथ युद्ध करने चल पड़ा। बड़े जोर से हुंकार करने और घोर शब्द से गरजने लगा। बड़े ही तर्जन-गर्जन से वह बाणों की वर्षा करने लगा ॥ ५३४ ॥

राम रघुपति आगे बढ़कर युद्ध में आए। उन्होंने रावण के रथ पर हैमवती (पार्वती) को देखा। राम ने विस्मित हो धनुष-बाण फेंक दिया और माता जानकर उनको प्रणाम किया। तब त्रिलोकीनाथ राम ने विभीषण से कहा, हे मित्र, रावण के विनाश में अड़चन आ गई। अब किसकी सामर्थ्य है कि दशानन का वध कर सके, आज स्वयं शिव की भार्या भगवती उनकी रक्षा कर रही हैं। हे विभीषण रावण के रथ की ओर देखो। स्वयं जलद-वरणी (बादल के समान श्याम रंग वाली भगवती) की गोद में राजा दशानन बैठा है ॥ ५३५ ॥

यह देखकर धार्मिक विभीषण बड़ा ही विस्मित हुआ। ऐसी विपत्ति आ गयी, हे दयामय क्या होगा। राम विषण्ण होकर धरती पर बैठ गये और सभी लोग परम दुखी होकर चिन्ता करने लग गये। जब स्वयं तारा ने ऐसा व्याघात उपस्थित कर दिया तो दशानन का विनाश कौन करेगा।

उपाय नाहिक आर, करिब केमन ※ देखिया रामेर चिन्ता चिन्ते देवगण
ए समये हैमवती कि करिला आर ※ देवारिष्ट-विनाशे व्याघात चण्डिकार
विधातारे कहिलेन सहस्र-लोचन ※ उपाय करह विधि या' हय एखन
विधि कन, बिधि आछे चण्डी-आराधने ※ हइबे रावण-वध अकाल-बोधने
इन्द्र कन, कर भाइ बिलम्ब ना सय ※ इन्द्रेर आदेशे ब्रह्मा करिवारे जाय ३६
रावण-वधेर जन्य बिधाता तखन ※ आर श्रीरामेरे अनुग्रहेर कारण
एइ दुइ कर्म्म ब्रह्मा करिते साधन ※ अकाले शरते कैला चण्डीर बोधन
देवगण-सहिते पूजिला महामाय ※ एखाने चिन्तत राम, कि करि उपाय
आमा हैते नाहि हैल रावण-संहार ※ जनक-नन्दिनी सीतार ना हैल उद्धार
मिथ्या परिश्रम कैनु, संचय बानर ※ मिथ्या कष्टे करिलाम बन्धन सागर
मिथ्या करिलाम यत राक्षस-संहार ※ लक्ष्मणेर शक्तिशेल क्लेशमात्र सार
अनुपाय सकलि हइल एइबार ※ बिभीषणे कहेन, कि हवे मिता आर
नयनेते वहे जल, शुकाइल मुख ※ ताहा देखि विभीषणेर दुःखे फाटे बुक
बले, प्रभु, आमार नाहिक साध्य आर ※ आमा हैते हैले हैत उपाय इहार ३७

कोई उपाय दिखाई नहीं देता कि कैसे क्या किया जाय। राम की चिन्ता देखकर सारे देवता चिन्ता करने लग गये। ऐसे ही समय हैमवती (पार्वती) ने यह क्या कर डाला ?—देवों के शत्रु के निधन (वध) में चंडिका बाधा बन गई। सहस्रलोचन (इन्द्र) ने विधाता से कहा, हे विधाता जो कुछ भी हो, अब कोई उपाय करो। विधि ने कहा, चंडी की आराधना में ही विधि है—असमय-बोधन में ही रावण की मृत्यु है। इन्द्र ने कहा, ऐसा ही कीजिए, अब विलम्ब सहा नहीं जाता। इन्द्र के आदेश से ब्रह्मा वैसा ही करने चल पड़े ॥ ५३६ ॥

उस समय विधाता ने रावण-वध के लिए और राम के प्रति अनुग्रह के निमित्त—इन दोनों कार्यों के लिए असमय (शरद ऋतु) में चंडी का बोधन किया। उन्होंने देवताओं के सहित महामाता की पूजा की। यहाँ राम चिन्तित हैं कि क्या उपाय किये जायँ। मुझसे रावण-वध नहीं हो सका, जनक-नन्दिनी सीता का भी उद्धार नहीं हो सका। व्यर्थ ही इतना परिश्रम किया, सारे वानरों को एकत्रित किया, व्यर्थ ही इतना कष्ट उठाया और सागर को बाँधा। व्यर्थ ही मैंने इतने राक्षसों का संहार किया। लक्ष्मण को व्यर्थ ही शक्तिशेल का क्लेश सहना पड़ा। अब सब कुछ उपाय-शून्य हो गया। उन्होंने विभीषण से कहा, हे मित्र, अब क्या होगा। उनकी आँखों से आँसू गिरने लगे और मुख सूख गया। यह देखकर विभीषण का पीड़ा से वक्ष फटने लगा। उसने कहा, प्रभु मुझसे अब कुछ नहीं होगा। कदाचित आप ही द्वारा इसका कुछ उपाय हो सकता था ॥ ५३७ ॥

एत शुनि कान्देन आपनि रघुराय ❋ धूलाय लोटाय छिन्न नीलोत्पल-प्राय
लक्ष्मण कान्दिछे आर बीर हनूमान ❋ सुग्रीव अंगद नल नील जाम्बवान
रोदन करिछे सबे छाड़िया समर ❋ देखिया रामेर दुःख कातर अमर
देवराज बिधातारे सविनये कय ❋श्रीरामेर दुःख आर प्राणे नाहि सय५३८

रावण-वधार्थ ब्रह्मा-कर्त्तृक देवीर अकाल-बोधन ओ षष्ठ्यादि-कल्पारम्भ

शुनिया इन्द्रेर वाणी, कन कमण्डलु-पाणि, उपाय केवल देवीपूजा।
तुमि पूजि ये चरण, जिनिले असुरगण, बोधिया शरते दशभुजा॥
कैले पूजा राम ताँर, हवे रावण-संहार, शुन सार सहस्र-लोचन।
शुनि कहे सुरपति, जाह तुमि शीघ्रगति, जानाओ श्रीरामे विवरण॥
प्रेमे पुलकित-चित, पद्मयोनि आनन्दित, श्रीराम-निकटे उपनीत।
विनय करिया कय, शुन प्रभु दयामय, रावण-वधेर जे विहित॥
ब्रह्मार वचन शुनि, कन राम गुणमणि, कह विधि, कि उपाय करि।
मिथ्या श्रम करिलाम, अनुपाये ठेकिलाम, रक्षिल रावणे महेश्वरी॥

इतना सुनकर रघुनाथ स्वयं रोने लगे। धूलि में नीले कमल की नाईं वे लोटने लगे। लक्ष्मण और वीर हनुमान भी रोने लगे। सुग्रीव, अंगद, नल, नील, जाम्बवान सभी युद्ध छोड़कर रोदन करने लगे। राम का यह दुःख देखकर सभी देवता दुखी हुए। तब देवराज (इन्द्र) ने विधाता से सविनय कहा, अब श्रीराम का दुःख सहा नहीं जाता॥ ५३८॥

रावण-वध के लिए ब्रह्मा द्वारा देवी का अकाल-बोधन और षष्ठ्यादि कल्पारम्भ

इन्द्र का कथन सुनकर कमंडलु-पाणि (ब्रह्मा) ने कहा कि अब केवल देवीपूजा ही एकमात्र उपाय रह गया है। हे सहस्रलोचन (इन्द्र) सुनो, शरद् ऋतु में जिस दशभुजा के चरणों की पूजा कर तुमने असुरों पर विजय प्राप्त की, राम यदि उनकी पूजा करें तभी रावण का संहार होगा। यह सुनकर सुरपति (इन्द्र) ने कहा, जाओ, शीघ्र जाकर तुम श्रीराम से यह विवरण बताओ। प्रेम से पुलकित-चित्त हो आनन्दमग्न पद्मयोनि (ब्रह्मा) श्रीराम के पास पहुँचे। विनयपूर्वक उन्होंने कहा, हे दयामय प्रभु सुनो, रावण-वध के लिए क्या उचित है। ब्रह्मा का वचन सुनकर गुणमणि राम ने कहा, विधाता! तुम्हीं बताओ कि क्या उपाय है। व्यर्थ ही मैंने इतना परिश्रम किया और आकर इस उपाय-शून्य अवस्था में पहुँच गया, रावण की रक्षा महेश्वरी करने लगी। विधाता ने कहा, हे प्रभु, एक कार्य आप कीजिए, तभी रावण का संहार हो सकेगा। असमय-बोधन कर देवी महेश्वरी का पूजन करो, तभी इस क्लेश-समुद्र को पार कर सकोगे। तब श्रीराम ने कहा, किस प्रकार पूजन करना होगा उसका क्रम बताइए। श्रीराम ने स्वयं कहा, वसन्त

विधाता कहेन प्रभु, एक कर्म्म कर विभु, तबे हवे रावण-संहार।
अकाले बोधन करि, पूज देवी महेश्वरी, तरिवे हे ए-दुःख-पाथार ॥
श्रीराम कहेन तबे, कि रूपे पूजिते हबे, अनुक्रम कह शुनि तार।
श्रीराम आपनि कय, वसन्त शुद्ध-समय, शुरत् अकाल ए पूजार ॥
विधि आछे निरूपण, निद्रा भाँगिते बोधन, कृष्णा नवमीर दिने ताँर।
सेदिन हयेछे गत, प्रतिपदे आछे मत, कल्पारम्भे सुरथ-राजार ॥
सेदिन नाहिक आर, पूजा हबे कि प्रकार, शुक्ला षष्ठी मिलिवे प्रभाते।
कन्याराशि मास वटे, किन्तु पूजा नाइ घटे, अत्रयोग सब हैल जाते ॥
विधाता कहेन सार, शुन विधि दिइ तार, कर षष्ठी-कल्पेते बोधन।
व्याघात ना हबे ताय, विधि खण्डि पुनराय, कल्प खण्डे सुरथ-राजन ॥
एइ उपदेश कन, शुनि राम सुखि-मन, विधाता गेलेन निज-धाम।
प्रभात हइल निशा, प्रकाश पाइल दिशा, स्नान-दान करिला श्रीराम ॥
बनपुष्प-फल-मूले, गिया सागरेर कूले, कल्प कैला विधिर बिधान।
पूजि दुर्गा रघुपति, करिलेन स्तुति-नति, विरचिल चण्डी-पूजा-गान ॥ ५३९

श्रीरामचन्द्रेर दुर्गोत्सव

चण्डीपाठ करि राम करिला उत्सब ※ गीत-नाट्य करे, जय देय कपि सब
प्रेमानन्दे नाचे आर देवीगुण गाय ※ चण्डीर अर्च्चने दिवाकर अस्त जाय

ही एकमात्र शुद्ध समय है, इस पूजा के लिए शरद् असमय है। ऐसा विधान निर्धारित है कि निद्रा भंग करने के लिए कृष्णा नवमी का दिन ठीक है। वह दिन बीत चुका है, अब प्रतिपदा पर राजा सुरथ के कल्पारंभ का योग है। वह दिन भी नहीं रहा, पूजा किस प्रकार होगी, सवेरे ही शुक्ला षष्ठी होगी। मास कन्याराशि का अवश्य है किन्तु पूजा का कोई योग नहीं, सारी त्रुटि इसी में है। ब्रह्मा ने कहा, सुनो उसका भी विधान देता हूँ, षष्ठी-कल्प पर बोधन करो। इसमें कोई व्याघात नहीं होगा, विधि का खंडन कर राजा सुरथ ने कल्प-खंड आरम्भ किया था। इतना सारा उपदेश सुनकर राम प्रसन्न हुए और ब्रह्मा अपने धाम लौट गये। रात्रि बीतने पर और दिशाओं में प्रकाश आ जाने पर श्रीराम ने स्नान तथा दान किया। वनपुष्प और फल-मूल से सागर के तट पर जाकर ब्रह्मा के विधान के अनुसार उन्होंने कल्प किया। रघुपति ने दुर्गा की पूजा कर स्तुति और नमन किया और चंडी-पूजन का गीत विरचित हुआ ॥ ५३९ ॥

श्रीरामचन्द्र का दुर्गोत्सव

चंडीपाठ करने के उपरान्त राम ने उत्सव किया। गीत-गायन और नाटक-प्रदर्शन हुआ। सारे कपि जयध्वनि कर प्रेमानन्द से नाचने लगे और

सायाह्न-कालेते राम करिला बोधन * आमन्त्रण अभयार विल्वाधिवासन
आपनि गड़िला राम प्रतिमा मृण्मयी * संग्रामे हइते दुष्ट-रावण-विजयी
आचारेते आरति करिला अधिवास * वान्धिला पत्रिका नव-वृक्षेर विलास
एइरूपे उद्योग करिला द्रव्य यत * पद्धति-प्रमाणे आछे नियम येमत
असाध्य सुसाध्य ताहे नाहि अनुमान * त्रिभुवन भ्रमिया आनिल हनूमान ५४०
गत हैल षष्ठी-निशा, दिवा सुप्रभात * उदित हइल पूर्व्वे दिवसेर नाथ
स्नान करि आसि प्रभु पूजा आरम्भिला * वेद-विधिमते पूजा समाप्त करिला
शुद्ध-सत्व-भावे पूजा सात्त्विकी आख्यान * गीतनाट-चण्डीपाठे दिवा अवसान ४१
सप्तमी हइल साँग, अष्टमी आइल * पुनर्व्वार रघुनाथ अच्चर्ना करिल
निशाकाले सन्धिपूजा कैला रघुनाथ * नृत्य-गीते बिभावरी हइल प्रभात
नवमीते पूजे राम देवीर चरणे * नृत्य-गीत नानामते निशि जागरणे ४२
नवमीते रघुपति, पूजिवारे भगवती, उद्योग करिला फल-मूल ।
यथा वेद-विधि-मत, आनिला सामग्री यत, कपिगण योगाइछे फूल ॥
अशोक काञ्चन जवा, मल्लिका मालती धवा, पलाश पाटलि ओ बकुल ।
गन्धराज आदि यत, बनपुष्प नानामत, स्थलपद्म कदम्ब पारुल ॥

देवी का गुण गाने लगे। चंडी की आराधना में दिवाकर अस्त हो गया। संध्या समय राम ने बोधन किया। अभया को आमंत्रित कर विल्वाधिवासन किया। राम ने स्वयं मिट्टी की प्रतिमा बनाई। दुष्ट रावण पर समर में विजयी होने के लिए अधिवास के लिए यथाविधि आरती उतारी। नये वृक्ष की पत्तियाँ बाँधी। इसी प्रकार पद्धति-प्रकरण में जैसा नियम है उसी के अनुसार सारे द्रव्य जुटाये। उसमें यह नहीं देखा गया कि कौन सा अलभ्य है और कौन सा लभ्य। त्रिभुवन का भ्रमण कर हनुमान सभी कुछ ले आये ॥ ५४० ॥

षष्ठी की रात्रि समाप्त हुई, दूसरे दिन का सुप्रभात हुआ। दिनपति पूर्व दिशा में उदित हुए। स्नान करके आने के बाद प्रभु ने पूजन आरम्भ किया। और वेदोक्त विधि से उन्होंने पूजा समाप्त की शुद्ध और सात्विक ढंग से पूजा हुई। गीत-नाट्य और चंडीपाठ में दिवस का अन्त हुआ ॥ ५४१ ॥

सप्तमी का दिन गया, अष्टमी आ गई। पुनः रघुनाथ ने अर्चना की। निशाकाल में रघुनाथ ने सन्धिपूजा की। नृत्य-गीत में विभावरी कट गई। नवमी में राम ने नृत्य-गीत निशा-जागरण आदि विभिन्न ढंग से देवी के चरणों की पूजा की— ॥ ५४२ ॥

नवमी में रघुपति ने भगवती की आराधना के लिए फल-मूल की व्यवस्था की। वेदोक्त-विधि के अनुसार सारी सामग्री जुटाई गई, सारे कपि फूलों का जुगाड़ करने लगे। अशोक, कांचन, अड़हुल, मल्लिका, मालती, पलाश,

रक्तोत्पल शतदल, कुमुद कह्लार नल, आमलकी-पत्र पारिजात।
शेफाली करवी आर, कनक-चम्पक सार, कोकनद सहस्रेक-पात ।।
अतसी अपराजिता, याते दुर्गा हरषिता, झम्पक चम्पक-नागेश्वर।
काष्ठमल्लिका दुपाटि, जाति यूथी आचि झाँटि, द्रोणपुष्प माधवी टगर ।।
तुलसी तिसी धातकी, भूमि-चम्पक केतकी, पद्मवक कृष्णकलि आर।
स्वर्ण-यूथिका-बाँधुली, शीर्ष शिउली आँधूली, कुड़चि गोलाप-पुष्प सार ।।
कृष्णचूड़ा चमत्कार, पुष्प राखे भारे भार, सचन्दन कदलीर दले।
नैवेद्येर आयोजन, करिल वानरगण, अपूर्व्व अपूर्व्व वनफले ।। ५४३

नीलपद्म-आनयनेर मन्त्रणा

परम-आनन्दे राम पूजेन शंकरी ※ सात्विक भावेर भाव-बिधान आचरि
तन्त्र-मन्त्र-मते पूजा करे रघुनाथ ※ एकासने सभक्तिते लक्ष्मणेर साथ
अर्च्चना करिला यदि देव भगवान् ※ थाकिते नारिला देवी, घटे अधिष्ठान
कपटे करुणामयी रहिला गोपन ※ श्रद्धाय रामेर पूजा करिला ग्रहण ५४४
विधिमते पूजा साँग करिला श्रीहरि ※ किन्तु हैल सन्देह ना देखि महेश्वरी

पाटली, मौलश्री और गन्धराज आदि विभिन्न प्रकार के वनपुष्प, थलकमल, कदम्ब, पारुल, लाल पंखुड़ियाँ वाले शतदल, कुमुद, कल्हार, नल, आँवले की पत्ती, पारिजात, हरसिंगार, करवी, कनक-चम्पा, सहस्र पत्र वाला कोकनद, अतसी, अपराजिता (जिससे दुर्गा प्रसन्न होती हैं), झम्पक, चम्पक और नागेश्वर। काठमल्लिका, गुलमेंहदी, जूही, द्रोणपुष्प, माधवी, चाँदनी, तुलसी, अलसी, धातकी, भूचम्पक, केतकी, पद्मवक्र और कृष्णकलि। सोन-जूही, हरसिंगार, कुर्ची, गुलाब पुष्प, मनोहर कृष्णचूड़ा आदि पुष्पों का ढेर चन्दन चर्चित केले के गोदों के साथ रखा गया। वानरों ने अनोखे वनफलों के द्वारा नैवेद्य का आयोजन किया ।। ५४३ ।।

नील कमल लाने का परामर्श

राम परम आनन्द से शंकरी की पूजा करते हैं। सात्विक भाव से विधान आदि के अनुसार, तंत्र-मंत्र-मत से रघुनाथ पूजा करने लगे। लक्ष्मण के साथ एकासन पर बैठ भक्तिपूर्ण भाव से जब देव भगवान् ने पूजा की तो देवी से रहा नहीं गया, वे आकर अधिष्ठित हो गईं। छल से वह करुणामयी छिपी रहीं और श्रद्धा से राम की पूजा स्वीकार की ।। ५४४ ।।

श्रीहरि ने विधि के अनुसार पूजा सम्पन्न की। लेकिन महेश्वरी को न देख-कर उनको सन्देह हुआ। विभीषण से राम ने कहा, अब और क्या होगा।

विभीषणे कन राम, कि हइवे आर ❊ आमा-प्रति दया बुझि ना ह'ल दुर्गार
वञ्चना करिला देवी, बुझि अभिप्राय ❊ सीतार उद्धारे आर नाहिक उपाय
नयने बहिछे धारा, सशोक अन्तर ❊ कान्देन करुणामय प्रभु परात्पर ४५
कातर हइया तवे कन बिभीषण ❊ एक कर्म्म कर प्रभु, निस्तार-कारण
तुषिते चण्डीरे एइ करह विधान ❊ अष्टोत्तर-शत नीलोत्पल कर दान
देवेर दुर्ल्लभ पुष्प यथा तथा नाई ❊ तुष्टा हवेन भगवती, शुनह गोसाँइ
शुनिया ताहार वाक्य रघुनाथ कन ❊ कोथा पाव नीलपद्म, आनिव एखन
देवेर दुर्ल्लभ जाहा, कोथा पावे नर ❊ सकलि आमार भाग्ये विधान दुष्कर
कातर देखिया रामे हनूमान कय ❊ स्थिर हओ, चिन्ता दूर कर महाशय
दास आछे, केन प्रभु, चिन्ता कर मने ❊ थाके यदि नीलपद्म, आनिब एक्षणे
स्वर्ग मर्त्य पाताल भ्रमिया भूमण्डल ❊ एइ दण्डे आनि दिब शत नीलोत्पल
बिभीषण वले, वीर-हनूमान-काछे ❊ अवनीते देवीदहे नीलपद्म आछे
दश-वत्सरेर पथ हइवे निश्चय ❊ वीर कहे; आनि दिब, नाहिक संशय
रामचन्द्रे प्रणमिया वीर हनूमान ❊ देवीदह-उद्देशेते करिल पयान ५४६

लगता है कि दुर्गा मुझ पर प्रसन्न नहीं हुई। देवी ने मुझसे वंचना की, उनका अभिप्राय मैं समझ रहा हूँ। सीता के उद्धार का अब कोई उपाय नहीं रहा। करुणामय प्रभु के नयनों से अश्रुधारा गिरने लगी, हृदय शोक से पूर्ण हो गया और वे रुदन करने लगे ॥ ५४५ ॥

तब दुखी होकर विभीषण ने कहा, हे प्रभु, निस्तार के लिए एक कार्य करें। चंडी को तुष्ट करने के लिए ऐसा विधान करें। एक सौ आठ नील-कमल उनको दान करें। यह देव-दुर्लभ पुष्प जहाँ-तहाँ नहीं मिलता। हे गुसाँई, इससे भगवती तुष्ट होगी। उसका वचन सुनकर रघुनाथ ने कहा, इस समय कहाँ से नीलकमल लाऊँ, कहाँ मिलेगा। देवताओं के लिए जो दुर्लभ है वह नर होकर मुझको कहाँ मिल सकेगा। मेरे भाग्य से सारे के सारे विधान ही दुष्कर हो रहे हैं। राम को दुखी देखकर हनुमान ने कहा, हे भगवान्! आप चिन्ता न करें, निश्चिन्त रहें। हे प्रभु, मुझ दास के रहते हुए आप क्यों चिन्ता करते हैं। अगर नील-कमल कहीं हुआ तो अभी लिये आ रहा हूँ। स्वर्ग-मर्त्य-पाताल तीनों लोकों में घूमकर इसी घड़ी सौ नील-कमल ला दूँगा। विभीषण ने कहा, पृथ्वी पर देवीदह में नीलकमल हैं। अवश्य ही वह दश वर्षों का रास्ता होगा। वीर ने कहा, कोई शंका न करें, मैं ला दूँगा। रामचन्द्र को प्रणाम कर वीर हनुमान देवीदह के लिए रवाना हो गये ॥ ५४६ ॥

श्रीरामेर देवीस्तव ओ हनूमानेर नीलपद्म-आनयन

पाठाइया हनूमाने पद्म आनिवारे ※ श्रीराम करेन स्तव देबी चण्डिकारे
दुर्गे दुःखहरा तारा दुर्गति नाशिनी ※ दुर्गमे सरणि विन्ध्यगिरि-निवासिनी
दुराराध्या ध्यानसाध्या शक्ति सनातनी ※ परात्परा परमा प्रकृति पुरातनी
नीलकण्ठ-प्रिया नारायणी निराकारा ※सारात्सारा मूलशक्ति सच्चिदा साकारा
महिषमर्द्दिनी महामाया महोदरी ※शिव-सीमन्तिनी श्यामा शर्ब्बाणी शंकरी
बिरूपाक्षी शताक्षी सारदा शाकम्भरी ※ भ्रामरी भवानी भीमा धूमा क्षेमंकरी
काली कालहरा, कालाकाले कर पार ※ कुल-कुण्डलिनि, कर कातरे निस्तार
लम्बोदरा दिगम्बरा कलुषनाशिनी ※ कृतान्त-दलनी काल-ऊरु-बिलासिनी
इत्यादि अनेक स्तव करिला श्रीहरि ※ तुष्टा हैला हैमवती अमर-ईश्वरी
किन्तु रैला अदृश्येते नीलपद्म-आशे ※ रामेर कमल-आँखि अश्रुजले भासे ५४७
एइरूपे कतक्षण रहे भगवान ※ ओथा नीलोत्पल तुले वीर हनूमान
अष्टोत्तर-शत पद्म करि उत्तोलन ※ पवन-बेगेते वीर करे आगमन
रामचन्द्र-निकटे आसिया उत्तरिल ※ गणना करिया रामे नीलोत्पल दिल

श्रीराम द्वारा देवी-स्तुति और हनुमान द्वारा नील-कमल लाना

हनुमान को कमल लाने भेजकर श्रीराम देवी चंडिका की स्तुति करने लगे। हे दुःख हरने वाली दुर्गे, तुम दुर्गतिनाशिनी तारा हो, तुम दुर्गम विन्धय-गिरि की निवासिनी हो, तुम दुराराध्या, ध्यानसाध्या सनातनी शक्ति हो, तुम परात्परा परमा प्रकृति पुरातनी हो। तुम नीलकंठ-प्रिया, निराकारा नारायणी हो, तुम सारात्सारा मूलशक्ति सच्चिदा साकारा हो। तुम महिष-मर्दिनी, महामाया महोदरी हो, तुम शिव-सीमन्तिनी श्यामा, शर्वाणी, शंकरी हो। तुम विरुपाची, शताची, शारदा शाकम्भरी हो, तुम भ्रामरी, भवानी, भीमा, धूमा, चेमंकरी हो। तुम कालहरा काली हो, तुम कालाकाल को पार करती हो। तुम कुल-कुंडलिनी हो और कातर व्यक्ति का निस्तार करती हो। तुम लम्बोदरा, दिगम्बरा, कलुषनासिनी हो, तुम कृतान्त-दलनी, काल-उरु-विलासिनी हो। जब श्रीहरि ने इस प्रकार बहुत स्तुति की तो देवेश्वरी हैमवती देवी तुष्ट हो गईं। किन्तु नील-कमलों की आशा में अदृश्य बनी रहीं। राम के नयन-कमल आँसुओं से भरे रहे ॥ ५४७ ॥

इस प्रकार कितनी ही देर तक भगवान् स्थित रहे। वहाँ वीर हनुमान नीलकमल तोड़ने गये थे। एक सौ आठ कमल तोड़ने के बाद वह वीर पवन-वेग से चला और रामचन्द्र के निकट आ पहुँचा। उन्होंने राम को गिन कर नीलकमल दिये। नीलकमल पाकर राम अत्यन्त आनन्दित हुए और देवी के सम्मुख विचित्र चित्र का समावेश हुआ।

आनन्दित हैल राम पेये नीलपद्म ❋ देबीभागे करिल बिचित्र चित्र-सद्म
संकल्प करिल पद्म करिते अर्पण ❋ कृत्तिबास रचिलेन गीत-रामायण५४८

देवीर उद्देशे श्रीरामेर अष्टोत्तर-शत नीलपद्म-दानेर संकल्प एवं
देवी-कर्त्तृक एकटि पद्म-हरण

पुलकित-चित, बिधान-रचित, मूल-मन्त्र-उच्चारणे ।
क्रमे नीलोत्पल, सहस्रेक दल, सँपे-शंकरी-चरणे ॥
करिलेन छल, बुझिते सकल, देबी हर-मनोहरा ।
हरिलेन आर, एक पद्म तार, महेश्वरी परात्परा ॥
क्रमे पद्मसब, दिलेन राघव, राम जगत्-गोसाँइ ।
शेषेते बियोग, हैल अत्रयोग, एक पद्म मिले नाइ ॥
हइला बिस्मित, चित्त चमकित, संकल्प-भंगेते भय ।
हनूमाने कन, ब्रह्म सनातन, ए कि पवन-तनय ॥
संकल्प करिया, बिधान रचिया, शताष्ट आछे संख्याय ।
एक पद्म ताय, पाओया नाहि जाय, ठेकिलाम घोर दाय ॥
जाह पुनर्ब्बार, एक पद्म आर, आन गिया बाछा-धन ।
हनूमान कय, शुन महाशय, शताष्ट आछे गणन ॥
शुन हे गोसाँइ, आर पद्म नाइ, देबीदहे बनमाली ।
हेन लय चिते, तोमारे छलिते, पंकज हरिला काली ॥

राम ने कमल अर्घ्य देने का संकल्प किया, कृत्तिवास ने रामायण गीत की रचना की ॥ ५४८ ॥

देवी के उद्देश में श्रीराम का अष्टोत्तर-शत नील-कमल दान का संकल्प
और देवी द्वारा एक कमल का हरण

पुलकित चित्त से विधान के अनुसार मूल-मंत्र का उच्चारण करते हुए श्रीरामचन्द्र सहस्र-दल वाले नील-कमल शंकरी के चरणों में सौंपने लगे। शंकर-प्रिया देवी ने परीक्षा लेने के लिए छल किया और परात्परा महेश्वरी ने उनका एक कमल चुरा लिया। धीरे-धीरे जगत् के गुसाँई राघव राम ने सारे कमल चढ़ा दिये। अन्त में देखा गया कि एक कमल नहीं मिला—कम पड़ रहा है। चित्त चकित हो उठा और वे विस्मित हो गये। संकल्प-भंग का भय भी उपजा। सनातन ब्रह्म ने हनुमान से कहा, हे पवनतनय यह कैसी बात है। विधान की रचना कर, एक सौ आठ कमलों का संकल्प किया पर अब देखता हूँ कि उसमें एक कमल नहीं है, यह तो बड़ी अड़चन आ गई। जाओ बेटा, फिर जाओ और एक कमल लेते आओ। हनुमान ने कहा, हे भगवान्, गिनती में ये कमल एक सौ आठ थे। हे गुसाँई सुनो, देवीदह में

आमार विस्मय, अन्यथा ना हय, देखेछि गणना-क्रमे ।
निश्चय तारिणी, हरिला नलिनी, ना भुलिओ प्रभु, भ्रमे ॥
पवन-नन्दन, कहिल यखन, शुनिया बिस्मित राम ।
आँखि छल-छल, बहे अश्रुजल, कान्देन त्रिलोक-धाम ॥
बुझिलाम सार, कपाले आमार, आछे कतेक यन्त्रणा ।
कृत्तिवास गाय, एहेतु आमाय, अभयार बिड़म्बना ॥ ५४९

श्रीरामेर पुनराय देवीस्तुति

नमस्ते शर्व्वाणि, ईशानि इन्द्राणि, ईश्वरि ईश्वर-जाया ।
अपर्णा अभया, अन्नपूर्णा जया, महेश्वरि महामाया ॥
उग्रचण्डा उमे, आशुतोषि धूमे, अपराजिता ऊर्व्वशी ।
राज-राजेश्वरी, रमा रणकरी, शंकरी शिवे षोड़शी ॥
मातंगी बगले, कल्याणी कमले, भवानी भुवनेश्वरी ।
सर्व्व-विश्वोदरी, शुभे शुभंकरी, क्षिति क्षेत्र क्षेमंकरी ॥
सहस्र-सुहस्ता, भीमा छिन्नमस्ता, माता महिष-मर्द्दिनी ।
निस्तार-कारिणी, नरक-वारिणी, निशुम्भ-शुम्भ-घातिनी ॥

अब और कमल नहीं हैं। मेरा मन यों कहता है कि आपकी परीक्षा करने के लिए काली ने एक कमल चुरा लिया है। मैंने गिनकर देख लिये थे, मुझसे कोई गलती नहीं हुई, मुझको विस्मय है। अवश्य ही तारिणी देवी ने कमल चुरा लिया है, भ्रम से भुलावे में मत आओ। जब पवन-नन्दन ने ऐसा कहा, तो सुनकर राम विस्मित हुए। उनकी आँखें सजल हो उठीं, और त्रिलोकनाथ रोने लगे, आँसू बहाने लगे। मैंने जान लिया कि मेरे भाग्य में अनेक यातनाएँ लिखी हैं। कृत्तिवास गा रहा है कि इस कारण अभया मुझको विडम्बना में डाले हुई है ॥ ५४९ ॥

श्रीराम की पुनः देवी-स्तुति

हे शर्वाणि, ईशानि इन्द्राणि, ईश्वरि, ईश्वर-जाया नमस्ते। तुम अपर्णा, अभया, अन्नपूर्णा, जया, महेश्वरी और महामाया हो। हे उमे! तुम उग्रचंडा, आशुतोषिन, धूमा, अपराजिता, उर्वशी हो। तुम राज-राजेश्वरी हो, तुम रमा, रणकरी, शंकरी, शिवा, षोडशी हो। तुम मातंगी, बगला, कल्याणी, कमला हो, तुम भवानी भुवनेश्वरी हो। तुम सर्व-विश्वोदरी, शुभा-शुभंकरी हो, तुम क्षिति-क्षेत्र-क्षेमंकरी हो। तुम सहस्र-सुहस्ता, भीमा, छिन्नमस्ता हो, हे माता तुम महिषमर्दिनी हो। तुम निस्तार-कारिणी नरक-वारिणी, शुम्भ-निशुम्भ-घातिनी हो। तुम दैत्य-निकृन्तिनी, शिव-सीमन्तिनी, शैलसुता,

दैत्य-निकृन्ती, शिव-सीमन्तिनी, शैल सुते सुबदनी ।
विरिञ्चि-वन्दिनी, दुष्ट-निष्कन्दिनी, दिगम्बरेर घरणी ॥
देबी दिगम्बरी, दुर्गे दुर्ग-अरि, कालिके कराल-वेशी ।
शिवे शवारूढ़ा, चण्डी चन्द्रचूड़ा, घोररूपा एलोकेशी ॥
सर्व्ब-सुशोभिनी, त्रैलोक्य-मोहिनी, नमस्ते लोल-रसना ।
दिग्-विवसना, सर्व्ब-शवासना, विश्वा बिकट-दशना ॥
सारदा वरदा, शुभदा सुखदा, अन्नदा मोक्षदा श्यामा ।
मृगेश-वाहिनी, महेश-मोहिनी, सुरेश-वन्दिता बामा ॥
कामाख्या रुद्राणी, हरा हरराणी, हर-रमा कात्यायनी ।
शमन-त्रासिनी, अरिष्ट-नाशिनी, दयामयी दाक्षायणी ॥
हेर मा पार्व्बति, आमि दीन अति, आपदे प'ड़ेछि बड़ ।
सर्व्बदा चञ्चल, पद्म-पत्र-जल, भये भीत जड़सड़ ॥
बिपदे आमार, ना हय तोमार, बिड़म्बना करा आर ।
मम प्रति दया, कर गो अभया, भवार्णवे कर पार ॥ ५०
कातरे कहेन राम देबी-पदतले ※ आर्द्रचित्त रोमाञ्चित, भासे अश्रुजले
कृताञ्जलि ह'ये हरि स्तुति वाक्ये कय ※ हेर गो नयने कालि, मोर असमय
परातपरा सारात्सारा बिपद्-छेदिनी ※ महामाया-रूपे त्रिभुवन-आच्छादिनी
तुमि कर्म्म, तुमि मूल कर्म्मेर कारण ※ तुमि कीर्त्ति वृत्ति दया लज्जा-निवारण

सुवदनी हो। तुम विरिंच-वन्दिनी, दुष्ट-निष्कन्दिनी, दिगम्बर की घरणी हो। तुम देवी दिगम्बरी दुर्गे, दुर्ग-अरि, कालिके, कराल-वेशी हो। तुम शिवे, शवारूढ़ा, चंडी, चन्द्रचूड़ा, घोररूपा, एलोकेशी हो। तुम सर्व-सुशोभिनी, त्रैलोक्य-मोहिनी, लोल-रसना हो। तुम दिग्-विवसना, सर्व-शवासना, विकट-दशना विश्वा हो। तुम शारदा, वरदा, शुभदा, सुखदा, अन्नदा, मोक्षदा, श्यामा हो। तुम मृगेश-वाहिनी, महेश-मोहिनी, सुरेश-वन्दिता वामा हो। तुम कामाख्या, रुद्राणी, हरा, हररानी, हर-रमा, कात्यायनी, हो। तुम शमन-त्रासिनी, अरिष्ट-नाशिनी, दयामयी दाक्षायणी हो। हे माँ पार्वती, मैं बड़ा दीन हूँ, बड़ी विपत्ति में पड़ा हूँ। कमल-पत्र पर जल की नाईं भय से भीत सदा चंचल हूँ। मेरी विपत्ति में तुमको मुझे और विड़म्बित नहीं करना चाहिए। हे अभया, मुझ पर दया करो और मुझे भव-सागर से तार दो ॥ ५५० ॥

राम कातर होकर देवी के चरणों में कह रहे हैं और उनका हृदय विह्वल और रोमांचित है, नयन आँसुओं से भरे हैं। हाथ जोड़कर हरि स्तुतिवाक्य कहते हैं, हे काली, मेरे दुस्समय में जरा कृपादृष्टि से देखो। हे परात्परा, सारात्सारा, विपत्ति-छेदिनी, तुम महामाया के रूप में त्रिभुवन पर छायी हुई

सर्व्वमयी सर्व्व आत्मा तुमि सर्व्वशक्ति॰ तोमाते आश्रित जीव संसारानुरक्ति
सृष्टि-स्थिति-प्रलयेर कारण मा, तुमि ॰ सजीव अजीव व्याप्ति स्वर्ग सुरभूमि
सकलि कर मा, तुमि शुभाशुभ यत ॰ आपद् सम्पद् धर्म्माधर्म्म अनुगत
तुमि कर्म्माकर्म्म भोग मोक्ष प्रदायिनी॰ स्त्री पुरुष नपुंसक जीव-सहायिनी
योगमाया योगे मोरे आनिले भूतले ॰ बिडम्बना करिया भासाले शोक-जले
चिन्तामणि नाम दिया चिन्ता समर्पण॰ तुमि कर्म्मे प्रयोजक प्रयोज्य गगन
सर्व्वभूते सर्व्वरूपे भिन्न कर देह ॰ तुमि शक्ति सर्व्वाधारा, छाड़ा नहे केह
संसार तोमार माया छायावाजी प्राय॰ तोमार ए नाट्य-खेला पुत्तलिका-प्राय
कारे कर राजा, कारे मन्त्री कर तार॰ केह गजवाही, केह गज-रक्षाकार
केह दीर्घजीवी, केह अल्प दिने पात ॰ कारो शिरे छत्र, कारो शिरे वज्राघात
केह जाय शिविकाय, केह तारे वय ॰ केह सुखी महाभोगी, केह कष्टे रय
कारो स्वर्णपात्रे अन्न पञ्चाश व्यंजन॰ कारो अन्न नाहि मिले, भिक्षाय भक्षण
केह रोगी रागी केह केह वलान्वित ॰ केह साधु चोर केह, धर्म्मे धर्म्मातीत

हो। तुम कर्म हो और कर्म का मूल कारण भी हो। तुम कीर्त्ति, वृत्ति, दया, लज्जा और निवृत्ति भी हो। तुम सर्वमयी, सर्वात्मा, सर्वशक्तिमयी हो। तुम्हीं में संसार-अनुरागी सारे जीव आश्रित हैं। तुम्हीं सृष्टि-स्थिति-प्रलय की कारण हो। सजीव, अजीव, व्याप्ति स्वर्ग सुरभूमि में है। हे माँ, तुम्हीं सब कुछ शुभाशुभ करती हो। तुम्हीं (मनुष्यों को) सम्पदा, विपदा, धर्म, अधर्म के अनुगत बनाती हो। तुम्हीं कर्माकर्म तथा भोग-मोक्ष प्रदायिनी हो। तुम्हीं स्त्री-पुरुष-नपुंसक सभी जीवों की सहायिका हो। हे योगमाया, योग के द्वारा तुम्हीं मुझे भूतल पर लाईं और आज विड़म्बित कर शोक के आँसुओ में तुमने मुझे डुबो दिया। चिन्तामणि नाम वाली होकर भी तुमने मुझे चिन्ता समर्पित कर दी। तुम कर्म की योजना की प्रयोजिका हो। तुम सर्वभूत में, सर्वरूप में शरीर को भिन्न (अनेकरूप) करती हो। तुम शक्तिमयी सर्वाधारा हो, कोई भी विच्छिन्न नहीं। इन्द्रजाल के समान यह संसार तुम्हारी माया है। तुम्हारा यह नाटक कठपुतलियों जैसा है। तुम किसी को राजा तो किसी को उसका मंत्री, किसी को कोई गज पर सवारी करने वाला तो किसी को उस गज का रखवाला बना देती हो। कोई दीर्घजीवी तो किसी को स्वल्पायु बना देती हो। किसी के सिर पर छत्र धरती हो तो किसी के सिर पर गाज गिराती हो। किसी को पालकी की सवारी करने वाला तो किसी को उसे ढोने वाला बना देती हो। कोई सुखी और महायोगी है तो कोई बड़े कष्ट से रहता है। किसी के स्वर्णपात्र में पचास पकवान होते हैं तो किसी को अन्न ही नहीं मिलता, भीख माँगकर भोजन प्राप्त होता है। कोई रोगी है, तो कोई गुस्सैल और बलवान, कोई साधू है तो कोई चोर, कोई

एइरूपे संसारेर कर मा स्थापन ※ आमारे करेछ मात्र दुःखेर भाजन
त्रिभुवने दुःख-तापे रेखेछ आमाय ※ आर दुःख दिओ ना मा, निवेदि तोमाय
सुख-भाण्ड अल्प ह'लो, दुःख ताहे भारि ※ तथापि राखिछ दुःख पूर्व्व ना बिचारि
निषेध करि गो ताइ यदि भेंगे जाय ※ ए दुःख राखिते स्थान पाइबे कोथाय
ब'ले अवसन्न आमि, या जान ता कर ※ कृत्तिवास कहे जीर्ण शीर्ण कलेवर ५५१

देवीर प्रति श्रीरामेर निवेदन

जन्मावधि दुःख मा गो कि कहिव आर ※ तबु दुःख दाओ, दया ना हय तोमार
क्लेशे अवसन्न तनु, शुन गो तारिणि ※ दया कर दयामयि, पतितोद्धारिणि
कत दुःख दिले माता, भेवे देख मने ※ राज्य विनाशिया शेषे आनिला कानने
तथापि नाहिक क्षमा अरण्ये आनिले ※ रावणेर द्वारा शेषे जानकी हराले
कत कष्टे कटक-सञ्चय कपिगणे ※ शिला वृक्षे सेतु बान्धि समुद्र-तरणे
सीतार उद्धारे तारा हइनु तत्पर ※ राक्षस नाशिनु, शेष आछे लंकेश्वर
कष्टे रण करिलाम, हरेर अंगना ※ तथापि आपनि कालि करिछ वञ्चना

धार्मिक है तो कोई अधार्मिक। इसी प्रकार माँ तुम संसार का स्थापन किये हुई हो। मुझको तुमने केवल दुःख ही भोगने का पात्र बनाया है। मुझको तुमने त्रिभुवन में दुःख-क्लेश में रखा है। माँ, तुमसे निवेदन है कि अधिक दुःख मत दो। सुख-भांड थोड़ा हुआ और उसमें दुःख भारी हो गया। फिर भी पुरानी बातों का विचार किये बिना दुःख में रखे हुए हो। इसीलिए निवेदन कर रहा हूँ कि कहीं भंडा टूट न जाय, फिर यह दुःख रखने का ठाँव कहाँ मिलेगा। शक्ति से मैं अवसन्न हूँ, जैसा समझती हो वैसा ही करो। कृत्तिवास कहता है कि राम का शरीर जीर्ण-शीर्ण हो गया है ॥ ५५१ ॥

देवी के प्रति श्रीराम का निवेदन

हे माँ, क्या बताऊँ जन्म से ही दुःख सह रहा हूँ, फिर भी तुम दुःख देती ही जा रही हो, तुमको दया नहीं आती। क्लेश से मेरा शरीर अवसाद-पूर्ण है, हे तारिणी सुनो, हे दयामयी पतितोद्धारिणी, दया करो। माँ जरा सोच-विचार कर देख लो कितने ही कष्ट तुम देती रहीं। राज्य से हटाकर तुम मुझे जंगल में ले आईं, जंगल में लाकर भी तुमने क्षमा नहीं किया। रावण से जानकी का हरण कराया। कितने ही कष्ट से कपियों को लेकर मैंने सेना बनाई, शिला और वृक्षों से सेतु बनाकर समुद्र पार किया। सीता के उद्धार के लिए मैं तत्पर हुआ, राक्षसों का मैंने विनाश किया, केवल लंकेश्वर रावण बचा है। हे हर की अंगना, मैंने कष्ट से युद्ध किया फिर भी तुम स्वयं मेरी वंचना कर रही हो। अकाल-बोधन द्वारा मैंने तुम्हारी अर्चना की फिर

करिलाम अर्च्चना मा अकाल-बोधने * तबु ना हइल कृपा मोर आराधने
शेषे श्यामा नीलपद्मे पूजिब चरण * शत-अष्ट संकल्पेते करिनु रचन
तार मध्ये कृपणता करिले मोहिनी * हरिले गो हर-राणि संकल्प-नलिनी
आमि दीन हीन क्षीण अति अभाजन * हेर मा नयन-कोणे मानस पूरण
नीलपद्म देखाइया पूर्ण कर फल * ना सय यातना आर जीवन विफल५२
एइरूपे रामचन्द्र करेन बिनय * तथापि तारार ताहे साक्षात् ना हय
कान्दिया श्रीरघुनाथ हइला अस्थिर * गण्ड बहि वक्षेते पड़िछे अश्रुनीर
लक्ष्मण कान्देन आर बीर हनूमान * सुग्रीव सुषेण बिभीषण जाम्बवान
श्रीराम कहेन सवे किवा देख आर * निश्चय बुझिनु सीता ना हबे उद्धार
जाओ मिता सुग्रीव, स्वगणे ल'ये जाओ*मिछे आर केन कान्द, मिछे मुख चाओ
बिभीषणे राज्य दिव अयोध्या-भुवने * राखिव यतने तारे सत्येर पालने
झाँप दिव जले आमि समुद्र-भितरे * एत वलि कान्दे राम सशोक-अन्तरे
आकुल हइया रामे सकले बुझाय * कृत्तिवास विरचिल मधुर भाषाय५५३

देवीर निकटे श्रीरामेर वर-प्रार्थना

श्रीरामे कातर देखि कहे हनूमान * केन एत व्याकुलता हेरि भगवान

भी मेरी आराधना से तुमने कृपा नहीं की। अन्त में श्यामा के चरणों की पूजा एक सौ आठ नील-कमलों से करूँगा ऐसा संकल्प किया। उसमें भी हे मोहिनी, तुमने कृपणता की, हे हर-रानी (शंकर प्रिया) तुमने मेरे संकल्पित एक नीलकमल का हरण कर लिया। मैं दीन-हीन हूँ और वड़ा ही अभागा हूँ। हे माँ, कृपाकोर से दृष्टिपात कर मेरी मनोकामना पूर्ण करो, इस विफल जीवन में अब और यातना नहीं सही जाती ॥ ५५२ ॥

इस प्रकार रामचन्द्र ने विनय किया फिर भी तारा ने दर्शन नहीं दिया। श्रीरघुनाथ रोकर व्याकुल हो उठे, उनके गालों से आँसू ढरकने लगे। लक्ष्मण, वीर हनुमान, सुग्रीव, सुषेण, विभीषण और जाम्बवान रोने लगे। श्रीराम ने कहा, तुम लोग अब देखते क्या हो, सीता का उद्धार अब नहीं होगा यह मैंने निश्चय रूप से जान लिया। हे मित्र सुग्रीव, अपने गणों को तुम ले जाओ। व्यर्थ रोते क्यों हो, व्यर्थ ही मुंह ताकते हो। विभीषण को अयोध्या क्षेत्र में राज्य दूँगा। अपने सत्य का पालन करते हुए उसे यत्न से रखूँगा और मैं समुद्र में कूद पड़ूँगा, इतना कहकर राम शोकपूर्ण हृदय से रोने लगे। सभी लोग व्याकुल होकर राम को समझाने लगे। कृत्तिवास ने मधुर-भाषा में इसकी रचना की ॥ ५५३ ॥

देवी से श्रीराम का वर माँगना

श्रीराम को कातर देखकर हनुमान ने कहा, हे भगवान्, इतनी

साधिव सकल कर्म्म आमि आपनार ❊ मारिया रावणे सीता करिब उद्धार
एइरूपे सकलेते बुझाय तखन ❊ ना शुनि काहारो कथा करेन रोदन
शिरे कराघात करि करेन हुताश ❊ बलेन केवल मोर सकलि नैराश
भाविते भाविते राम करिलेन मने ❊ 'नील-कमलाक्ष' मोरे वले सर्व्वजने
नयन-युगल मोर फुल्ल नीलोत्पल ❊ संकल्प करिब पूर्ण बुझिवे सकल
एक चक्षु दिब आमि देवीर चरणे ❊ एत वलि कहे राम अनुज लक्ष्मणे
आर किवा देख भाइ, करि कि एखन ❊ ना हैल दुर्गार कृपा, बिफल जीवन
कमल-लोचन मोरे बले सर्व्वजने ❊ एक चक्षु दिव आमि संकल्प-पूरणे५४
एत बलि तूण हैते लइलेन बाण ❊ उपाड़िते जान चक्षु करिते प्रदान
कान्दिते कान्दिते राम करेन स्तवन ❊ देवीर हइल दुःख देखिया रोदन
चक्षु उपाड़िते राम वसिला साक्षाते ❊ हेन काले कात्यायनी धरिलेन हाते
कि कर कि कर प्रभु जगत्-गोसाँइ ❊ संकल्प तोमार पूर्ण चक्षु नाहि चाइ५५
कातरे श्रीराम कन देवीरे तखन ❊ अविरत-जल-धारे भासिछे नयन
भाल दुःख दिले माता पेये असमय ❊ किन्तु जननीर हेन उचित ना हय
पुत्र प्रति मातृ-स्नेह सर्व्व शास्त्रे गाय❊ मोर पक्षे मीन-भुजंगेर माता-प्राय

व्याकुलता किस बात की है। मैं आपका सारा काम पूरा करूँगा। रावण को मार कर सीता का उद्धार करूँगा। इस तरह सभी लोगों ने उस वक्त उनको समझाया पर किसी की भी न सुनकर वह रोते ही रहे। सिर पर हाथ मार कर विलाप करते रहे कि मेरे भाग्य में केवल निराशा ही निराशा है। सोचते-सोचते राम की समझ में आया कि लोग मुझको 'नील-कमलाक्ष' कहा करते हैं। मेरे दोनों नयन खिले हुए नीलोत्पल के समान हैं। आज मैं अपना संकल्प पूरा करूँगा, जिससे सब लोग भलीभाँति जान लेंगे। एक आँख मैं देवी के चरणों में अर्पित करूँगा। इतना कह कर राम ने अनुज लक्ष्मण से कहा, अब क्या देखते हो भाई, अब करूँ भी तो क्या। दुर्गा की कृपा नहीं हुई, जीवन ही विफल है। मुझको सब लोग कमल-लोचन कहा करते हैं, मैं संकल्प पूरा करने में एक आँख भेंट चढ़ाऊँगा ॥ ५५४ ॥

इतना कहकर उन्होंने तूण से बाण निकाला और आँख प्रदान करने के लिए उसे निकालने को उद्यत हुए। रोते हुए राम स्तुति करते रहे, यह देख कर देवी को दुख हुआ। जब राम आँख निकालने के लिए उद्यत हुए तो कात्यायनी ने उनका हाथ पकड़ लिया और बोलीं, जगत्-गुसाईं, प्रभु क्या करते हो, तुम्हारा संकल्प पूरा हो गया, मुझको आँख नहीं चाहिए ॥ ५५५ ॥

तब श्रीराम ने कातर-भाव से दोनों आँखों से लगातार आँसू ढरकाते हुए देवी से कहा, माँ तुमने असमय देखकर खूब क्लेश दिया लेकिन जननी के लिए ऐसा उचित नहीं है। सारे शास्त्रों में पुत्र के प्रति माता के स्नेह के बारे

ठेकेछि विपम दाये जानकी-उद्धारे ॐ अनुमति कर माता रावण-संहारे
या करिले से भाल बारेक फिरे चाओ ॐ शबे अस्त्राघाते, मिथ्या आक्षेप वाड़ाओ
भरसा तोमार, आर ना कर निराश ॐआशा आछे आश्वासेते दाओ मा आश्वास
काल-निवारिणी काली कालेर मोहिनीॐ प्रकृति परमेश्वरी परमशोभिनी
अशन-विहने तनु जीर्ण शीर्ण मोर ॐकृत्तिवास कहे, मा दुःखेर नाहि ओर५५६

देवीर निकटे श्रीरामेर वरलाभ ओ दशमी पूजान्ते विसर्जन

रामेर वचन शुनि, विषादे हरिष गणि, स्तुतिवाक्ये कात्यायनी कन ।
शुन प्रभु दयामय, अखिल ब्रह्माण्ड-चय, पति तुमि ब्रह्म-सनातन ॥
तुमि आदि भगवान, अखण्ड-काल समान, विश्व रहे तव लोम-कूपे ।
तुमि चराचर-गति, अच्युत अव्यय अति, व्यापकता परमाणु-रूपे ॥
मायाय मनुष्य तुमि, चतुर्व्यूह आसि भूमि, नाशिते राक्षस दुराचार ।
भव भाव्य प्रभु हओ, कभु कोन भावे रओ, शुद्धातत्व के जाने तोमार ॥
तोमार जानकी जिनि, परमा प्रकृति तिनि, रावणेर कि साध्य हरिते ।
सीता-हरणेर छले, सेतु वान्धि सिन्धु-जले, राक्षसेरे विनाश करिते ॥

में गाया जाता है किन्तु मेरे लिए तुम मीन या भुजंग की माता जैसी हो। जानकी-उद्धार में माँ मैं बड़ी विपत्ति में पड़ गया हूँ, रावण-संहार में माँ तुम अपनी सम्मति दो। जो कुछ किया सो अच्छा किया, अब तो कृपादृष्टि डालो, मेरे के ऊपर अस्त्र चलाकर तुम व्यर्थ दुख बढ़ाती हो। अब तुम्हारा ही भरोसा है, अब मुझे निराश मत करो। मुझको बड़ी आशा है, तुम मुझको आश्वासन दो। हे काल-निवारिणी काली, तुम काल की मोहिनी हो, तुम प्रकृति, परमेश्वरी, परमशोभिनी हो। भोजन के विना मेरा शरीर जीर्ण-शीर्ण है। कृत्तिवास कहता है, माँ मेरे दुःख का कोई ओर-छोर नहीं है ॥ ५५६ ॥

देवी से श्रीराम को वर-लाभ और दशमी पूजा के उपरान्त विसर्जन

श्रीराम के वचन सुनकर, विषाद तज हर्षित होकर कात्यायनी ने स्तुति वाक्य से कहा, हे प्रभु दयामय सुनो, इस सम्पूर्ण अखिल ब्रह्मांड के तुम पति हो—तुम सनातन-ब्रह्म हो। तुम अखंड काल के समान आदि-भगवान् हो, तुम्हारे रोएँ-रोएँ में अनन्त विश्व छिपे हैं। तुम ही चराचर की गति हो, तुम अच्युत अव्यय हो, तुम परमाणु के रूप में व्यापकता हो। तुम माया से मनुष्य हो, चतुर्व्यूह धारण कर भूमि पर दुराचारी राक्षस का वध करने आए हो। तुम भव के भाव्य (शिव के आराध्य) प्रभु हो, तुम कब किस ढंग से रहते हो, तुम्हारा यह शुद्धतत्व कौन जान सकता है। तुम्हारी जानकी परमा प्रकृति है, रावण की क्या सामर्थ्य कि उसका हरण करे।

देखह मने विचारि, रावण तोमार द्वारी, पूर्व्वे छिल बैकुण्ठ-नगरे ।
ब्रह्म-शापे धरा एल, शत्रु-भावेते पाइल, तेंइ प्रभु तुमि धरा परे ।।
अकाल-बोधने पूजा, कैले तुमि दशभुजा, विधिमते करिला विन्यास ।
लोके जानावार जन्य, आमारे करिते धन्य, अवनीते करिले प्रकाश ।।
रावणे छाड़िनु आमि, विनाश करह तुमि, एत वलि कैला अन्तर्द्धान ।
नाचे गाय कपिगण, प्रेमानन्दे नारायण, नवमी करिला समाधान ।।
दशमीते पूजा करि, विसर्ज्जिया महेश्वरी, संग्रामे चलिला रघुपति ।
आदेशे पाइया राम, सिद्ध कैल मनस्काम, चण्डी-लीला मधुर भारती ।।५५७

रावणेर शान्ति-कामनाय वृहस्पतिर चण्डीपाठ ओ हनूमान-कर्त्तृक चण्डीर श्लोक लोप-करण

संग्राम करिते हरि, चलिला धनुक धरि, ताहा देखि यत देवगण ।
इन्द्रेरे कहिया सवे, पवनेरे कहि तबे, पाठाइला रामेर सदन ।।
बिशेष कहिला दण्डी, अशुद्ध करिते चण्डी, परामर्श दिल रघुवरे ।
शुनिया दैव-बचन, बिभीषणे राम कन, पाठाइते पवन-कुमारे ।।

तुम सीता-हरण के वहाने समुद्र पर सेतु बाँधकर राक्षस के विनाश हेतु आए हो। मन में सोचकर देखो, वैकुंठ में रावण तुम्हारे द्वार का द्वारपाल था। ब्रह्म-शाप से वह पृथ्वी पर आया और तुमको शत्रु-रूप में पा गया, तभी प्रभु तुम धरती पर आये हो। तुमने असमय बोधन कर दशभुजा की पूजा की और समस्त विधि के अनुसार उसका विन्यास किया। मुझको धन्य करने के लिए और लोगों में प्रचारित करने के लिए धरती पर तुमने यह प्रकट किया। अब मैं रावण को छोड़कर जाती हूँ, अब तुम उसका विनाश करो, इतना कहकर वह अन्तर्धान हो गई। सारे वानर नाचने और गाने लगे, नारायण ने प्रेमानन्द में विभोर हो नवमी की पूजा समाप्त की। दशमी में पूजा करने के उपरान्त उन्होंने महेश्वरी को विसर्ज्जित किया, फिर रघुपति संग्राम करने चल पड़े। आदेश पाकर राम ने मनोकामना सिद्ध की। चंडी-लीला की यह वाणी बड़ी मधुर है ।। ५५७ ।।

रावण की शान्ति-कामना से बृहस्पति का चंडी-पाठ और हनुमान द्वारा चंडी का श्लोक लुप्त करना

संग्राम करने के लिए धनुष लेकर जब हरि (राम) चल पड़े तो देवताओं ने यह देखकर इन्द्र से कह-सुन कर पवन को राम के पास भेजा। विशेष रूप से दंडी (यमराज) ने रघुवर को परामर्श दिया कि चंडी अशुद्ध की जाये। दैव-वचन सुनकर राम ने विभीषण से कहा, पवनकुमार को भेज

श्रीरामेरे आज्ञा पाय, बीर हनूमान धाय, उत्तरे निमिषे हाँटि बाट ।
यथा बृहस्पति आछे, उपनीत ताँर काछे, एकमने करे चण्डीपाठ ।।
मक्षिकार रूप ध'रे, चाटिलेक द्वि-अक्षरे, देखिते ना पाय बृहस्पति ।
अभ्यास आछिल ताय, पड़िल अवहेलाय, हनूमान सुचिन्तित अति ।।
छाड़ि मक्षि-कलेवरे, आपनि विक्रम धरे, देखि गुरु पाइलेन भय ।
रंगे भंग देय पाठ, चक्षे नाहि देखे वाट, हनूमान पूँथि केड़े लय ।।
प्रथम माहात्म्य स्तोक, पुँछे फेले तिन श्लोक, चण्डी हैल अशुद्ध तखन ।
रावणे निराश करि, रण छाड़ि महेश्वरी, कैलासेते करिला गमन ।।
स्तव करि दशानन, कान्दे कत शोक-मन, फिरे ना चाहिला महेश्वरी ।
हेथा राम एल रणे, इन्द्र-रथ-आरोहणे, विजय-कोदण्ड धनु धरि ।। ५५८

हनूमान-कर्त्तृक रावणेर मृत्युवाण-हरण

राम लक्ष्मण सुग्रीव धार्म्मिक विभीषणे॥ चारि जने युक्ति करे, रावण ना जाने
दशानन भावे, राम जुझिते ना पारे ॥ पलाइया जावे बुझि त्यजिया सीतारे
एतेक भाविया राजा सुस्थ कैल बुक ॥ एखनो पाइले सीता दुःखोपरे सुख

दो। श्रीराम की आज्ञा पाकर वीर हनुमान दौड़ पड़े और क्षण भर में सारा रास्ता पार कर गये। जहाँ बृहस्पति ध्यान लगाकर चंडीपाठ कर रहे थे वहीं पहुँच गये। मक्खी का रूप बनाकर वह दो अक्षर चाट गये और बृहस्पति इसे नहीं देख सके। किन्तु उनको अभ्यास था इसलिए अनायास उसको पढ़ गये। तब हनुमान बड़े ही चिन्तित हुए। मक्खी का शरीर त्याग उन्होंने अपने पूर्ण विक्रम वाला रूप अपनाया तो गुरु डर गये और पाठ छोड़कर भाग खड़े हुए, भय के कारण उन्हें आँखों से रास्ता नहीं देख पड़ा। हनुमान ने उनकी पोथी छीन ली। प्रथम माहात्म्य वर्णन के तीन श्लोक उन्होंने पोंछ डाले और यों चंडी अशुद्ध हो गई। रावण को निराश करती हुई महेश्वरी रण छोड़ कैलास चली गई। दशानन दुखी होकर रोते हुए कितनी ही स्तुतियाँ करता रहा किन्तु महेश्वरी ने उसकी ओर पलट कर भी नहीं देखा। इधर रामचन्द्र इन्द्र के रथ पर सवार होकर हाथ में विजय-धनुष थामे रण-क्षेत्र में पहुँचे ।। ५५८ ।।

हनुमान द्वारा रावण का मृत्युबाण-हरण

राम, लक्ष्मण, सुग्रीव और धार्मिक विभीषण, चारों मिलकर परामर्श करने लगे, पर रावण को कोई पता न चला। रावण सोचने लगा, राम युद्ध नहीं कर पा रहे हैं। शायद सीता को छोड़कर ही भाग जायें। इतना सोचकर रावण ने अपने मन को स्वस्थ किया। अब भी सीता मिल जाये तो दुःख

मरियाछे इन्द्रजित्, से महीरावण ❊ सीता पेले सब दुःख हय निवारण ५५९
एत भावि दशानन हरषित रहे ❊ श्रीरामेरे उपदेश विभीषण कहे
पूर्व्वेर ए कथा प्रभु हइल स्मरण ❊ तपस्या करिनु जवे भाइ तिन जन
वर दिते पद्मयोनि आइल यखन ❊ चाहिल अमर-वर राजा दशानन
ब्रह्मा बलिलेन, शुन, ओहे निशाचर ❊ ना माग अमर-वर, चाह अन्य वर
दशानन बले, अन्य वर नाहि चाइ ❊ अतुल ऐश्वर्य धने किछु कार्य नाइ ६०
ब्रह्मा वले, दशानन, दुःख केन भाव ❊ प्रबन्धेते दिया वर अमर करिब
दश-मुण्ड कुड़ि-हस्त काटा यदि जाय ❊ तथापि तोमार मृत्यु नाहि हबे ताय
खण्ड खण्ड करि यदि काटे कलेवर ❊ ताहे तुमि ना मरिबे शुन निशाचर
संग्रामेर रीति एइ, शुन दशानन ❊ आकिञ्चन करे माथा करिते छेदन
हस्तपद काटि फेले मारि तीक्ष्ण शर ❊ अस्त्राघाते खण्ड खण्ड करे कलेवर
अतएव बलि तोमा शुन दशानन ❊ कर-पद-मुण्ड छेदन ना हवे मरण
काटामुण्ड जोड़ा लागिबेक तव स्कन्धे ❊ सहजे अमर हवे वरेर प्रबन्धे
मर्म्मे जबे ब्रह्म-अस्त्र पशिबे तोमार ❊ तखन रावण तव हइबे संहार

के उपरान्त सुख मिले। इन्द्रजीत और महीरावण दोनों मर गये इतने पर भी यदि सीता मिल जाय तो सारे दुःखों का अन्त हो जाय ॥ ५५९ ॥

यह सोच-सोच कर दशानन हर्षित होता रहा। विभीषण ने श्रीराम से कहा—हे प्रभु एक पुरानी बात याद पड़ गई। जब तीनों भाइयों ने मिलकर तपस्या की और जब पद्मयोनि हमलोगों को वर देने के लिए आए तो राजा दशानन ने अमर होने का वर माँगा। ब्रह्मा ने कहा, हे निशाचर सुनो, अमरता का वर मत माँगो, कोई दूसरा वर माँगो। दशानन ने कहा, मुझको दूसरा कोई वर नहीं चाहिए, मुझको अतुल धन-सम्पदा की कोई आवश्यकता नहीं ॥ ५६० ॥

ब्रह्मा ने कहा, दशानन दुखी क्यों होते हो। कौशल से वर देकर तुमको मैं अमर वना दूँगा। दस मुंड और बीस हाथ भी अगर तुम्हारे कट जायें फिर भी तुम्हारी मृत्यु नहीं होगी। हे निशाचर, यदि तुम्हारा शरीर कोई खंड-खंड कर काट भी डाले तो उससे भी तुम नहीं मरोगे। हे दशानन सुनो, संग्राम की रीति यह है कि वैरी लोग सिर को काट डालने की चेष्टा करते हैं तथा तीखे बाण चलाकर हाथ-पैर काट डालते हैं। अस्त्र के आघात से सारे शरीर को टुकड़े-टुकड़े कर डालते हैं। अतः हे दशानन, मैं तुमसे बताता हूँ सुनो, तुम्हारी मृत्यु हाथ पैर और मुंड कटने से नहीं होगी। कटा हुआ मुंड फिर तुम्हारे कन्धे से जुड़ जायगा, वर के कौशल से तुम सहज ही अमर हो जाओगे। जब तुम्हारे गर्भ में ब्रह्मास्त्र प्रविष्ट हो जायगा हे रावण तभी तुम्हारी मृत्यु होगी। दूसरा कोई अस्त्र तुम्हारे शरीर में प्रवेश

अन्य अस्त्र ना हइबे प्रविष्ट शरीरे ॐ तोमार जे मृत्यु-अस्त्र रबे तव घरे
सृजन क'रेछि आमि सेइ ब्रह्म-वाण ॐ धर धर दशानन, राख तव स्थान
बिपक्षे ए अस्त्र यदि पाय कोन-मते ॐ प्रहार करये यदि तोमार मर्म्मेते
तखनि मरिबे तुमि सन्द ताहे नाइ ॐ तोमार ए मृत्यु-अस्त्र राख तव ठाँइ६१
वर शुनि अस्त्र पेये तुष्ट दशानन ॐ स्वस्थाने रावण गेल, वाल्मीकिते कन
सेइ बाण राखियाछे मन्दोदरी राणी ॐ कोथाय रेखेछे अस्त्र किछुइ ना जानि६२
एइ कथा बिभीषण कहे श्रीरामेरे ॐ आर एकरूप कथा कहे मतान्तरे
सेइ अस्त्रे नाभिदेश भेदिबे यखन ॐ तखनि से रावणेर हइबे पतन ६३
कोन मतान्तरे वले शिव दिला वर ॐ रावणे राखिबे शिव संग्राम भितर
हस्त पद देह मुण्ड काटा जावे जवे ॐ शंकर कुड़ाये ल'ये अंगे जोड़ा दिबे
पुराण अनेक रूप के पारे कहिते ॐ विस्तारिया कहि शुन वाल्मीकीर मते६४
विभीषण कहिलेन रामेर गोचरे ॐ रावणेर मृत्युबाण रावणेर घरे
से अस्त्र आनिते कारो नाहिक शकति ॐ राम बले, ना मरिबे लंका-अधिपति
से वाण आनिते योग्य के आछे एमन ॐ कोथा आछे से वाण ना जाने बिभीषण
मन्दोदरी-निकटेते आछये निर्यास ॐ से वाण आनिले हय रावण-बिनाश

नहीं कर सकेगा, तुम्हारी मृत्यु का अस्त्र तुम्हारे घर पर ही रहेगा। मैंने उस ब्रह्म-वाण का निर्माण किया है, लो इसे लो और अपने स्थान पर रख दो। विपक्षी यदि यह अस्त्र किसी प्रकार पा जाये और उससे तुम्हारे हृदय पर आघात करे तभी तुम मरोगे, इसमें कोई सन्देह नहीं, अपना यह मृत्यु-अस्त्र अपने ठाँव पर ही सुरक्षित रूप से रख लो ॥ ५६१ ॥

यह वर सुनकर और अस्त्र पाकर दशानन बड़ा प्रसन्न हुआ। वाल्मीकि कहते हैं कि रावण अपने स्थान पर गया। उस बाण को रानी मन्दोदरी ने रखा है, वह अस्त्र कहाँ रखा है किसी को कुछ भी मालूम नहीं ॥ ५६२ ॥

विभीषण ने राम से इस प्रकार बातें की। अन्य मत के अनुसार उसने दूसरी बातें की। वह अस्त्र जब रावण की नाभि में प्रवेश करेगा तभी उसका पतन होगा ॥ ५६३ ॥

एक मत के अनुसार शिव ने वर दिया। शिव रावण की रक्षा संग्राम के भीतर करेंगे। हाथ पैर सिर जब कट जाएँगे तब शिव उनको लेकर धड़ से जोड़ देंगे। पुराणों में कितने ही प्रकार के वर्णन हैं—कौन बता सकता है। वाल्मीकि के अनुसार विस्तार से बताता हूँ, सुनो ॥ ५६४ ॥

विभीषण ने राम से कहा कि रावण का मृत्युबाण रावण के घर पर है। वह अस्त्र लाने की शक्ति किसी में नहीं है। राम ने कहा, लंका-अधिपति अब नहीं मरेगा। वह बाण ले आने योग्य यहाँ कौन है, विभीषण को भी मालूम नहीं कि वह बाण कहाँ है। यह तो निश्चित है कि वह मन्दोदरी के

मन्दोदरीर अन्तःपुर भयंकर स्थान ※ ब्रह्मा-आदि देवगण निकटे ना जान
रावणेर भये तथा ना वहे पवन ※ से स्थान हैते वाण आने कोन जन६५
एत यदि कहिल राक्षस विभीषण ※ हेनकाले उपनीत पवन-नन्दन
हनूमान बले, केन भाव रघुमणि ※ आमि गिया मृत्यु-वाण आनिब एखनि
राम वले, बहुश्रम कैले बारंबार ※ ना ह'लो रावण-वध, सकलि असार
हनूमान वले, प्रभु कर आशीर्व्वाद ※ एखनि आनिव बाण, किसेर प्रमाद६६
एत वलि रघुनाथे प्रणाम करिया ※ जाम्बवान-सुग्रीवेर पदधूलि लैया
धीरे धीरे अन्तःपुरे करिल प्रवेश ※ माया करि धरे वृद्ध-ब्राह्मणेर वेश
कक्षतले पाँजि-पुँथि, डानहस्ते वाड़ि ※ कपालेते दीर्घ फोंटा, जान गुड़ि गुड़ि
लोलित चक्षेर माँस, पाका सब केश ※ मलिन ह'येछे माँस, छाड़ि गण्डदेश
कुशमुष्टि कुशांगुरी यज्ञसूत्र गले ※ 'रावण राजार जय' घन घन बले
ज्योतिष-गणने आमि बड़इ पण्डित ※ एइ बलि राणीर अग्रेते उपनीत ६७
पार्व्वतीर आराधने छिल महाराणी ※ चारि दिके बेड़ि दश हाजार सतिनी
वृद्ध विप्र देखि राणी पुलकित-मन ※ बैस वैस बलि दिल रत्न-सिंहासन

पास है और वह वाण लाने पर ही रावण का विनाश होगा। मन्दोदरी का अन्तःपुर वड़ा भयंकर स्थान है वहाँ ब्रह्मा आदि देवता भी नहीं जा सकते। रावण के भय से वहाँ पवन भी नहीं पहुँचता, कौन है जो उस स्थान से बाण ले आयगा ॥ ५६५ ॥

राक्षस विभीषण ने जब इतना कहा तब तक वहाँ पवन-नन्दन जा पहुँचे। हनुमान ने कहा, हे रघुमणि क्यों सोच करते हो, मैं जाकर अभी मृत्यु-बाण ले आऊँगा। राम ने कहा, बार-बार तुमने कितना ही परिश्रम किया किन्तु अभी तक रावण-वध नहीं हुआ, सभी कुछ व्यर्थ हो गया। हनुमान ने कहा, प्रभु आशीर्वाद दो, मैं अभी वाण ले आता हूँ, प्रमाद कैसा ? ॥ ५६६ ॥

इतना कह रघुनाथ को प्रणाम कर जाम्बवान और सुग्रीव की पदधूलि लेकर हनुमान ने धीरे-धीरे अन्तःपुर में प्रवेश किया। माया से वृद्ध ब्राह्मण का वेश धारण कर लिया। काँख के नीचे पोथी-पत्रा, दाहिने हाथ में छड़ी, माथे पर लम्बा तिलक लगाये वह धीरे-धीरे पग-पग आगे बढ़ने लगे। उनकी आँखों के चारों ओर माँस में झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं, सारे बाल पके हुए थे, माँस का रंग मैला हो गया था, गाल लटक गये थे। मुट्ठी में कुश की पवित्री पहने और गले में जनेऊ डाले थे। वे बार-बार 'रावण राजा की जय' की ध्वनि करने लगे और बोले मैं ज्योतिष गणना में बड़ा ही प्रवीण हूँ, यह कहकर वह रानी के सामने जा पहुँचे ॥ ५६७ ॥

महारानी उस समय पार्वती की आराधना कर रही थीं। उसको घेरकर दस हजार सौतें बैठी थीं। बूढ़ा ब्राह्मण देखकर रानी का मन बड़ा प्रसन्न

राणीदिल सिंहासन, ताहे ना वसिये ※ कक्षे छिल कुशासन वसिल विछाये
द्विज बले, आमि वड़ ज्योतिषे पण्डित ※ चिरकाल चिन्ता करि रावणेर हित
नर-बानरेते आसि पाड़िल प्रमाद ※ हउक राजार जय, करि आशीर्व्वाद
प्रत्यह ज्योतिष गणे देखि पूर्व्वापर ※ कि करिते पारिवेक नर ओ वानर
मन्दोदरी जे धन तोमार आछे घरे ※ शत रामे रावणेर कि करिते पारे६८
मन्दोदरी वले, एमन आछये कि धन ※ द्विज वले, देखिलाम करिया गणन
ज्योतिष-गणने जानि यत समाचार ※ राजार जीवन-मृत्यु गृहेते तोमार
प्रवन्धे रावण राजा ह'येछे अमर ※ प्रकाशिया ना कहिबे काहारो गोचर
एतेक कहिया उठि चले द्विजवर ※ कहे राणी मन्दोदरी करि जोड़-कर
कि धन गृहेते मम आछये एमन ※ ज्योतिषेते कि देखिले करिया गणन६९
द्विज बले, मन्दोदरी क'रो ना छलना ※ वड़ असम्भव विद्या आमार गणना
लंकापुरे जे द्रव्य आछये जेखानेते ※ व'ले दिते पारि, यदि गणि खड़ि पेते
से सकल कथाय नाहिक प्रयोजन ※ कहिलाम जेखाने गोपने सेइ धन
व्रह्मा आसि कहे यदि तोमार साक्षाते ※ प्रकाशिया से कथा ना बल कोन मते७०

हो गया। बैठो-बैठो कहकर उसने रत्न-सिंहासन दिया। जब रानी ने सिंहासन दिया तो वह उसपर न बैठकर अपनी बगल से कुशासन निकाल उसको ज़मीन पर बिछाकर बैठ गया। उस द्विज ने कहा, मैं ज्योतिष में बड़ा प्रवीण हूँ और सदा से रावण के हित की चिन्ता करता हूँ। नर-वानर ने आकर विपत्ति खड़ी कर दी, मैं आशीर्वाद देता हूँ कि राजा की जय हो। प्रतिदिन ज्योतिष से गणना कर पूर्वापर देखा करता हूँ कि नर और वानर क्या कर सकेंगे और क्या नहीं कर सकेंगे। हे मन्दोदरी, तुम्हारे कमरे में जो धन है, उसके प्रभाव से यदि राम भी आ जाये तो रावण का क्या बिगाड़ सकते हैं॥ ५६८॥

मन्दोदरी ने कहा, ऐसा कौन सा धन है। द्विज ने कहा, मैंने गणना करके देख लिया है। ज्योतिष की गणना द्वारा मुझको कितने ही समाचार विदित हैं। राजा का जीवन और उसकी मृत्यु तुम्हारे ही घर में है। कौशल से रावण राजा अमर बन गया है, प्रकट रूप से यह बात किसी से भी मत कहना। इतना कहकर विप्रवर उठकर खड़ा हो गया और चल पड़ा। रानी मन्दोदरी ने हाथ जोड़कर कहा, ऐसा कौन सा धन मेरे घर में है जो कि ज्योतिष के द्वारा गिनकर आपने जाना है॥ ५६९॥

द्विज ने कहा, मन्दोदरी मेरे साथ छलना मत करो, मेरी गणना बहुत बड़ी विद्या है। लंकापुरी में जहाँ पर जो चीज़ है वह खड़िया से चारखाना बनाकर और गणना कर ठीक-ठीक से बता सकता हूँ। अब इन बातों की कोई आवश्यकता नहीं, मैंने कह दिया जहाँ वह गुप्त धन रखा है। ब्रह्मा

विप्रेर वचने राणी हइल बिस्मय ❋ सामान्य गणक एइ द्विजवर नय
एत भावे मन्दोदरी कहे द्विजवरे ❋ लुकाये रेखेछि ताहा परम-आदरे
द्विज बले तुष्ट आमि तोमार वचने ❋ सावधाने रेखो येन केह नाहि शुने ७१
एत बलि द्विजवर चलिला सत्वरे ❋ पाद दुइ गिया पुनः दाण्डाइल फिरे
द्विजवर कहे, शुन, राणी मन्दोदरी ❋ यत कह, तबु तुमि हीनबुद्धि नारी
रेखेछ गोपने सत्य, मिथ्या कथा नय ❋ तथापि तोमार वाक्य ना हय प्रत्यय
घरभेदी विभीषण ये दारुण बैरी ❋ प्रमाद घटाते पारे कुमन्त्रणा करि
विभीषण-अज्ञात लंकाते नाहि स्थान ❋ कि रूपे रावण राजा पाबे परित्राण
मन्दोदरी बले, द्विज ना भाव अन्तरे ❋ बिभीषणेर साध्य हैत थाकिले बाहिरे
परम हितैषी तुमि राजार पक्षेते ❋ बिशेष नाकब केन तोमार साक्षाते
तव आशीर्व्वाद ताहा के लइते पारे ❋ रेखेछि जड़ित एइ स्तम्भेर भितरे ७२
बिशेष नारीर मुखे शुनिया मारुति ❋ भाँगिल स्फटिक-स्तम्भ मारि एक लाथि

भी यदि आकर तुमसे स्वयं कहें तो किसी प्रकार भी उसको प्रकट मत करना ॥ ५७० ॥

विप्र की बातों से रानी बहुत ही विस्मित हुई; यह ब्राह्मण कोई मामूली गणक नहीं है। इतना सोचकर मन्दोदरी ने विप्रवर से कहा, उसको बड़े जतन से मैंने छिपा रखा है। द्विज ने कहा, यह सुनकर मुझको बड़ी प्रसन्नता हुई। उनको सावधानी से रखना, देखना किसी को भी पता न लगने पाए ॥ ५७१ ॥

इतना कहकर द्विजवर तुरन्त चल पड़ा। दो पग जाकर ही वह फिर पलट कर खड़ा हो गया। द्विजवर ने कहा, रानी मन्दोदरी सुनो, कितना भी कहो तुम हीनबुद्धि नारी ही हो। यह सच है कि तुमने उसे छिपा कर रखा है, यह कोई झूठ नहीं, फिर भी तुम्हारे वाक्य पर विश्वास नहीं होता। घर का भेदी विभीषण बड़ा ही घनघोर शत्रु है, कुपरामर्श देकर किसी भी समय विपत्ति ढा सकता है। विभीषण को लंका में कोई स्थान अज्ञात नहीं है, तब राजा रावण किस प्रकार से छुटकारा पायेगा। मन्दोदरी ने कहा, द्विज अपने हृदय में कतई कोई चिन्ता मत करो। विभीषण की क्या सामर्थ्य कि उसको निकाल सके। तुम राजा के पक्ष में परम हितैषी हो, तुम्हारे सामने विशेष रूप से क्यों न कहूँगी। तुम्हारे आशीर्वाद से उसको कौन ले सकता है, उसको मैंने इस खम्भे के भीतर चुन रखा है ॥ ५७२ ॥

नारी के मुँह से यह विशेष समाचार सुनकर हनुमान ने बिल्लौरी खम्भे पर एक लात जमाकर उसको तोड़ डाला। स्फटिक-स्तम्भ को तोड़ते ही बाण दिखाई पड़ गया। बाण लेकर वीर हनुमान ने छलाँग मारी। अपना

भांगिते स्फटिक-स्तम्भ दृष्ट हैल बाण॥ वाण ल'ये लाफ दिल वीर हनूमान
निज मूर्त्ति धरि गिया बसिल प्राचीरे॥ आर एक लाफे गेल श्रीराम-गोचरे५७३

रावण-वध

वाण दिया रघुनाथे करिल प्रणाम ॥ महानन्दे हनूमाने कोल देन राम
'राम-जय' शब्द करि डाकिछे बानर॥ केह बले मार मार, केह वले धर
श्रीराम बलेन, रावण कि भाविस् व'से॥ मरण निकटे तोर, युद्ध दे रे एसे५७४
एत वलि दिला राम धनुके टंकार ॥ श्रीराम रावणे युद्ध वाजे आर-वार
हइल बिषम युद्ध, ना जाय गणन ॥ महाकोपे वाण वृष्टि करिछे रावण
मातलि सारथि वाणे हइल अस्थिर ॥ वाणे वाण निवारण कैला रघुवीर७५
शून्य पथे थाकिया अमर-गण देखे ॥ मृत्युवाण रघुनाथ जुड़िला धनुके
हंसाकृति बाणेर जे मुखेर आकार ॥ बाण देखे देवगणे लागे चमत्कार
कनक-रचित वाण भुवन प्रकाशे ॥ वाणेर मुखेते अग्नि रहे गुप्त-वेशे
पशुपति वैसेन वाणेर मध्यखाने ॥ चालना करेन ऊनपञ्चाश पवने
धराधर गोड़ाते विराजे निरन्तर ॥ अलक्षिते यम रहे बाणेर उपर

वास्तविक रूप धारण करके वह प्राचीर पर जा बैठा और एक छलाँग मार कर वह श्रीराम के समक्ष पहुँच गया ॥ ५७३ ॥

रावण-वध

वाण देकर उन्होंने रघुनाथ को प्रणाम किया। वड़े प्रेम से राम ने हनुमान को गोद में ले लिया। सारे वानर 'राम-जय' की ध्वनि कर रहे हैं। कोई कहता है मारो-मारो तो कोई कहता है, पकड़ो-पकड़ो। श्रीराम कहते हैं, अरे रावण बैठे-बैठे सोचता क्या है आकर हमसे लड़, देख तेरी मौत तेरे सिर पर सवार है ॥ ५७४ ॥

इतना कहकर राम ने धनुष पर टंकार का शब्द किया। श्रीराम और रावण में फिर से युद्ध छिड़ गया। वड़ा घनघोर युद्ध हुआ, भीषण रूप से क्रोधित होकर रावण अगणित वाणों की वर्षा करने लगा। सारथि मातलि वाणों से विकल हो गया। तब राम ने वाण चलाकर उन वाणों का निवारण किया ॥ ५७५ ॥

शून्यपथ में रहकर देवताओं ने देखा, रघुनाथ ने अपने धनुष पर मृत्यु-वाण को स्थापित किया है। उस बाण के मुख का आकार हँस की तरह है। उस वाण को देखकर देवता आश्चर्य करने लगे। सोने का बना हुआ वह वाण सारे भूमंडल को प्रकाशमय कर रहा था। वाण के मुख में गुप्त-रूप से अग्नि स्थित है। वाण के मध्यस्थल पर पशुपति बैठे हैं और उनचास पवन द्वारा वह संचालित होता है। धरा और आकाश उसके मूल में विराजते हैं।

वाणेर गर्ज्जने त्रिभुवने लागे डर ❋ पर्ब्बत उपाड़ि पड़े, उथले सागर
कृष्णवर्ण वाणेर सकल अंगज्योति ❋ तिलेकेते विनाशिते पारे वसुमती
नाना पुष्प माल्य दिया वाणगोटा साजि ❋ मन्त्र पड़ि रघुनाथ ब्रह्म-वाण पूजि
मृत्यु-अस्त्र रघुनाथ जुड़े मन्त्रवले ❋ धूम उठे वाण-मुखे, ब्रह्म-अग्नि ज्वले
महाशव्द करिया सघने गर्ज्जे वाण ❋ देखिया जे रावणेर उड़िल पराण ५७६
चिनिल रावण राजा देखि मृत्युवाण ❋ जानिल जे एइ वाणे वाहिरिवे प्राण
विश्वामित्र स्मरि वाण छाड़े रघुवीर ❋ रावणेर वुके विन्धि कैल दुइ चिर
छटपट करे राजा पड़ि भूमितले ❋ ब्रह्मादि देवता देखे गगन-मण्डले ७७
सूर्य चन्द्र कुबेर बरुण पुरन्दर ❋ देवता तेत्रिस कोटि ह'ये एकत्तर
जुक्ति करे काणाकाणि जत देवगण ❋ केह बले एइवारे मरिल रावण
हस्त पद नाहि नड़े, मरिल निश्चय ❋ केह बले रावणेरे नाहिक प्रत्यय
कतबार मरे बेटा, आर-वार बाँचे ❋ मने करि कपट-भावेते प'ड़े आछे
कि जानि एवार यदि ना मरे रावण ❋ तवे रावणेर हाते ना रवे जीवन
अरि-भावे कार्य्य नाहि, ना जाव निकटे ❋ रावणेर चिताधूम यावत् ना उठे ७८

अलक्षित रूप से यम उस वाण पर स्थित हैं। वाण के गर्जन से त्रिभुवन डर जाता है, पर्वत उखड़ जाते हैं और सागर उच्छ्वसित हो उठता है। उस कृष्णवर्ण वाण की पूर्ण ज्योति क्षणभर में सारी वसुमती का विनाश कर सकती है। विभिन्न पुष्प-मालाओं से उस वाण को सुसज्जित कर रघुनाथ ने मंत्र पढ़कर पूजा की। रघुनाथ ने मंत्रवल से मृत्युवाण साधा। वाण के मुँह से धुँवा निकलने लगा और ब्रह्म-अग्नि प्रज्वलित हो उठी। महाशब्द करता वह बाण गरजने लगा, यह देखकर रावण के प्राण उड़ गये ॥ ५७६ ॥

मृत्युबाण देखते ही रावण राजा ने पहचान लिया। यह भी जान लिया कि इसी वाण से मेरे प्राण निकलेंगे। विश्वामित्र का स्मरण कर रघुवीर ने वाण छोड़ा। रावण के वक्ष में चुभ कर उसने वक्ष को चीर दिया। धरती पर गिरकर राजा छटपटाने लगा। ब्रह्मा आदि देवता गगनमण्डल में रहकर देखने लगे ॥ ५७७ ॥

सूर्य, चन्द्र, कुबेर, वरुण, पुरन्दर आदि तैंतीस करोड़ देवता एकत्र होकर आपस में बातचीत करने लगे। कोई कहता, अब रावण मर गया, उसके हाथ पैर नहीं हिल रहे हैं, अब निश्चयरूप से मर गया है। कोई कहता, रावण का कोई भी विश्वास नहीं। यह दुष्ट कितने ही बार मरता है और फिर जी उठता है। मेरा तो ऐसा विचार है कि यह छल से दुबका पड़ा हुआ है। क्या जाने इस बार अगर रावण नहीं मरा तो रावण के हाथों से प्राण नहीं बचेंगे। शत्रु चिन्ता करने लगे कि जब तक रावण की चिता का धुँवा नहीं निकलता तब तक निकट नहीं जाऊँगा ॥ ५७८ ॥

शिवदूत विष्णुदूत सबे फिरे जाय ❋ बेंचे आछे ब'ले केह निकटे ना जाय
मरेछे रावण ब'ले केह केह हासे ❋ बेंचे आछे ब'ले केह पलाय तरासे
केह बले रावण पड़िल कतबार ❋ दश माथा काटागेल, ना ह'लो संहार७९
रामायणे बाल्मीकि लिखिल पूर्व्बकाले ❋ 'महाशयन' करिबे रावण रणस्थले
रावण मरिबे हेन नाहिक पुराणे ❋ अतएव ना मरिबे, भावि हेन मने
कोन देव बले रावणेर मृत्यु आछे ❋ अमर हइते वर पाइल कार काछे
जानिल बाल्मीकि मुनि पुराणानुसारे ❋ रावण दुर्ज्जय हबे विख्यात संसारे
भये मुनि रावणेर मृत्यु नाहि लेखे ❋ कि जानि रावण रुष्ट हय पाछे देखे
मने मुनि जाने रावण हइबे दुर्ज्जय ❋ प्रकाशिये मृत्यु लेखा उपयुक्त नय
रावणेर मृत्यु मुनि लिखिला संकेते ❋ एवार म'रेछे रावण, सन्द नाइ ताते८०
निर्यास करिते नारे जत देवगणे ❋ हेनकाले रघुनाथ भाविलेन मने
आमार परम भक्त राजा दशानन ❋ शापेते राक्षस-जोनि ह'येछे एखन
शराघाते जरजर प'ड़े रणस्थले ❋ एकबार दरशन दिब एइकाले
एखनि मरिबे रावण नाहिक सन्देह ❋ मृत्युकाले देखा दिया मुक्त करि देह

शिवदूत, विष्णुदूत—सभी बार-बार लौट-लौट कर चले जाते थे। सभी यह सोचकर कि वह जिन्दा है निकट नहीं फटकते थे। कोई तो 'रावण मर गया है' कहकर हँसता तो कोई जिन्दा है जानकर त्रास से भाग खड़ा होता। कोई कहता रावण तो कितनी ही बार गिरा, दसों मुंड कट गये फिर भी उसकी मृत्यु नहीं हुई ॥ ५७९ ॥

प्राचीन युग में बाल्मीकि ने लिखा था कि रावण रणस्थल पर महाशयन करेगा। पुराण में कहीं भी ऐसा नहीं लिखा है कि रावण मरेगा अतः ऐसा ही विचार है कि वह मरा नहीं। कौन सा देव है जो कहता है कि रावण की मृत्यु होगी। किससे उसको अमर होने का वर प्राप्त हुआ। पुराण के अनुसार बाल्मीकि मुनि ने जाना कि रावण अजेय के रूप में संसार में विख्यात होगा। इस भय से मुनि ने रावण की मृत्यु के बारे में नहीं लिखा कि कहीं रावण उसको देखकर रुष्ट हो जाय। मन ही मन मुनि जानते थे कि रावण दुर्जेय होगा इसलिए प्रकट रूप से मृत्यु का लिखना उचित नहीं समझा। रावण की मृत्यु के विषय में मुनि ने संकेत से लिखा है। अबकी बार रावण मरा, इसमें अब कोई सन्देह नहीं है ॥ ५८० ॥

देवता कुछ भी निश्चय न कर सके। ऐसे ही समय रघुनाथ ने मन ही मन सोचा, राजा दशानन मेरा परम भक्त है, शाप से उसको राक्षस-योनि प्राप्त हुई है। बाण की चोट से जर्जर हो वह रणभूमि में पड़ा है इसलिए मैं एक बार उसको जाकर दर्शन दूँगा। इसमें सन्देह नहीं रावण अभी मरेगा, मृत्यु के समय उसको दर्शन देकर उसकी देह को मुक्त कर दूँ। लक्ष्मण को

लक्ष्मणेरे पाठाइया जानिब सन्धान ※ सेइरूप आछे, कि ह'येछे दिव्यज्ञान ५८१

रावणेर निकटे श्रीरामेर राजनीति-शिक्षा

एत भावि' रघुनाथ कहेन लक्ष्मणे ※ कहि एक उपदेश शुन सावधाने
राजार वंशेते जन्म लभि दुइ भाइ ※ चिरदिन वनवासे भ्रमिया वेड़ाइ
कतदिन वञ्चिलाम मुनिगण सने ※ राजनीति किछु ना शिखिनु पितृस्थाने
अरण्येते बधिलाम ताड़का राक्षसी ※ बिबाह करिया दोंहे अयोध्याय आसि
राजनीति शिखिवार साध छिल मने ※ से आशा निराश ह'लो बिधि-विड़म्बने
पितृसत्य पालिते आसिते हैल बने ※ बने बने चौद्द-वर्ष फिरि दुइ जने
भल्लूक बानर ल'ये बने बने फिरि ※ के शिखाबे राजनीति, कोथा शिक्षाकरि
अयोध्या-नगरे गिया पाब राज्यभार ※ नाहि जानि धर्म्माधर्म्म राज-व्यवहार
के शिखाबे राजधर्म्म, जाब कार काछे ※ अजोध्या-नगरे लोक निन्दा करे पाछे
रावण प्रवीण राजा, व्याख्या करे सबे ※ क'रेछे अधर्म्म-कर्म्म राक्षस-स्वभावे
राज-धर्म्म-कर्म्मे रावण परम पण्डित ※ राजनीति रावणेरे जिज्ञास किंचित्

भेजकर जान लूँ कि उसी प्रकार है या उसको दिव्यज्ञान प्राप्त हो चुका है ॥ ५८१ ॥

रावण के निकट श्रीराम की राजनीति-शिक्षा

इतना सोचकर रघुनाथ ने लक्ष्मण से कहा, एक उपदेश देता हूँ, सावधानी से सुनो। हम दोनों भाइयों ने राजा के वंश में जन्म लिया है, सदा से वन में घूमते-फिरते रहे हैं। कितने ही दिनों तक मुनियों की सेवा करते रहे हैं, पिता से कुछ भी राजनीति नहीं सीख सके। अरण्य में मैंने ताड़का-राक्षसी का वध किया, विवाह के उपरान्त दोनों भाई अयोध्या में आए। राजनीति सीखने की मन में साध थी किन्तु विधि की विडम्बना से वह आशा निराशा वन गई। पिता का सत्य पालन करने के लिए वन आना पड़ गया। चौदह वर्ष तक दोनों भाई वनों में ही भटकते रहे। भालू और वानर लेकर वन-वन घूमते फिर रहे हैं, कौन है जो मुझको राजनीति सिखायेगा, शिक्षा लूँ भी तो कहाँ से ? अयोध्या नगर पहुँचते ही राज्यभार मिलेगा, किन्तु न तो धर्माधर्म जानता हूँ और न राज-व्यवहार। कौन मुझको राजधर्म सिखायेगा, किसके पास जाऊँ ! कहीं अयोध्या नगर में लोग मेरी निन्दा न करने लग जायें। रावण प्रवीण राजा है, सभी शास्त्रों की व्याख्या कर सकता है। राक्षस-स्वभाव के कारण उसने अधर्मकर्म किया है। राज-धर्म-कर्म में रावण परम पंडित है, रावण से तनिक राजनीति पूछो। अभी राजा शरीर त्याग कर चला जायगा, उससे पूर्व उससे दो-चार नीतिवाक्य पूछ लो।

एखनि जाइबे राजा देह-परिहरि ※ जिज्ञासह नीतिवाक्य गोटा दुइ चरि
अमूल्य-रतन जदि अस्थानेते रय ※ ग्रहण करिते पारे, शस्त्रे हेन कय५८२
श्रीरामेर आज्ञा पेये लक्ष्मण सत्वर ※ उपनीत हैल जथा लंकार ईश्वर
ब्रह्म-अस्त्रे आकुल लंकार अधिपति ※ लक्ष्मणे देखिया करे सकरुण स्तुति
दशानन बले, शुन, ठाकुर लक्ष्मण ※ ए समये एकवार देह श्रीचरण
बहु जुद्ध करिलाम हइया बिवादी ※ शत शत अपराधे आमि अपराधी
अपराध मार्ज्जना करह महाशय ※ उपस्थित एइ मोर आसन्न समय ८३
लक्ष्मण बलेन, दोष नाहिक तोमार ※ जोगाजोग जत देख, लिपि विधातार
लंकार ईश्वर तुमि परम-पण्डित ※ पाठालेन राम मोरे सुधाइते नीत८४
लक्ष्मणेर वाक्ये कहे राजा लंकेश्वर ※ कोन नीति संसारेते राम-अगोचर
राजनीति आमि बल कि कव रामेरे ※ तवे यदि आज्ञा देन कहिते आमारे
सेवकेर मुखे जदि करेन श्रवण ※ दया क'रे एकवार दिन दरशन
भक्तिहीन हइयाछि वाहिराय प्राण ※ जाइते ना पारि आमि प्रभु-विद्यमान
दया क'रे जदि राम आसेन एखाने ※ जाहा जानि राजनीति निवेदि चरणे५८५
एतेक शुनिया तवे ठाकुर लक्ष्मण ※ श्रीरामेर अग्रे आसि सविशेष कन

अनमोल रत्न यदि कुठाँव में भी पड़ा हो तो उसको ग्रहण किया जा सकता है, शास्त्र में ऐसा कहा गया है ॥ ५८२ ॥

श्रीराम की आज्ञा पाकर लक्ष्मण तुरन्त लंकेश्वर के पास जा पहुँचे। लंकाधिपति उस समय ब्रह्म-अस्त्र से आहत हो व्याकुल पड़ा था। लक्ष्मण को देखते ही वह सकरुण स्तुति करने लगा। दशानन ने कहा, हे देव लक्ष्मण सुनो, इस समय एकबार अपना चरणकमल मुझे दो। झगड़ कर मैंने भयंकर युद्ध किया, मैं सैकड़ों अपराधों का अपराधी हूँ। हे महानुभाव, मेरा अपराध क्षमा कर दो, अब मेरा अन्तिम समय उपस्थित है ॥ ५८३ ॥

लक्ष्मण ने कहा, तुम्हारा कोई दोष नहीं है। ये सारे संयोग तो विधाता के लेख लिखे हैं। तुम लंका के स्वामी हो और परम विद्वान् हो, राम ने मुझको नीति सीखने के लिए आपके पास भेजा है ॥ ५८४ ॥

लक्ष्मण के ये वाक्य सुनकर लंकेश्वर ने कहा, संसार की कौन सी नीति ऐसी है जो राम को अज्ञात हो। भला बताओ मैं राम को राजनीति क्या बताऊँगा। हाँ, अगर वह मुझे कहने के लिए आदेश देते हैं, सेवक के मुँह से अगर सुनना चाहें तो कृपया एकबार दर्शन दे दें। मैं भक्तिशून्य हो गया हूँ, प्राण निकल रहे हैं, प्रभु के समक्ष नहीं जा सकता। यदि राम कृपया यहाँ आ जायें तो राजनीति जितनी जानता हूँ उनके चरणों में निवेदन करूँगा ॥ ५८५ ॥

इतना सुनकर लक्ष्मण जी श्रीराम के सम्मुख आकर बोले। दशानन ने

राजनीति आमारे ना कहे दशानन ※ वाञ्छा आछे तोमारे करिते दरशन
करिया अनेक स्तुति कहिल आमारे ※ उठिते ना पारे रावण विषम-प्रहारे
स्तुतिवाक्ये कहिलेक आमार साक्षाते ※ एकवार आनिया देखाओ रघुनाथे ५८६
रावणेर साक्षाते आइला रघुपति ※ बुझि रावणेर मन उठि शीघ्रगति
उठिते शकति नाइ राजा-दशानने ※ भक्तिभावे प्रणाम करिल मने मने
आघाते आकुल अंग, वाक्य नाहि सरे ※ विनय करिया कथा कय धीरे धीरे
रामेर सर्व्वांग राजा करे निरीक्षण ※ साक्षात् बिराट-मूर्त्ति ब्रह्म-सनातन
मायाते मानव-देह विश्वमय तुमि ※ तोमार महिमा प्रभु कि जानिब आमि
अनाथेर नाथ तुमि पतित-पावन ※ दया क'रे मस्तकेते देह श्रीचरण
चिरदिन आमि दास चरणे तोमार ※ शापेते राक्षसकुले जनम आमार
महीतले भ्रमिते ह'येछे तिन जन्म ※ आसुरिक बुद्धे नाहि जानि धर्म्माधर्म्म
अपराध क्षमा कर गोलोकेर पति ※ अनादि पुरुष तुमि आपना विस्मृति
राजनीति तोमारे कि कब रघुवर ※ संसारेर यत नीति तोमार गोचर ८७
राम बले, जे कहिले सकलि प्रमाण ※ तथापि शुनिते हय आछये विधान

मुझको राजनीति नहीं बताई। तुम्हारा दर्शन करने की उसे आकांक्षा है। मेरी बड़ी स्तुति करते हुए उसने मुझसे यह कहा है। घनघोर आघात के कारण वह उठ नहीं सकता। मुझसे विनयपूर्वक उसने कहा कि एक बार रघुनाथ को मेरे पास लाकर दर्शन करा दो॥ ५८६॥

रावण से मिलने के लिए रघुपति आए। रावण के मन में आया कि झट उठकर बैठ जायें। किन्तु राजा दशानन में उठने की शक्ति नहीं रही। उसने मन ही मन भक्तिभाव से राम को प्रणाम किया। प्रहार से उसके अंग बेकल हैं, मुँह से शब्द नहीं निकलते। धीरे-धीरे विनयपूर्वक वह बोलने लगा। रावण ने राम का सर्वांग निरीक्षण किया, यह तो साक्षात् विराट-मूर्त्ति ब्रह्म सनातन हैं। हे विश्वमय! माया से तुम मानव-देह ग्रहण किये हुए हो, तुम्हारी महिमा भला मैं क्या जानूँ। तुम अनाथों के नाथ हो, पतित-पावन हो। कृपा कर मेरे मस्तक पर अपने चरणकमल रखो। मैं सदा से तुम्हारे चरणों का दास हूँ। शाप से मेरा जन्म राक्षस-कुल में हुआ। तीन जन्म मुझको इस संसार में भटकना पड़ा है। असुर की बुद्धि के कारण धर्म और अधर्म का ज्ञान नहीं रहा। हे गोलोकपति! मेरे अपराध क्षमा कर दो। तुम अनादि पुरुष हो किन्तु अपने स्वरूप को भूले हुए हो। हे रघुवर तुमसे मैं राजनीति क्या बखानूँ, संसार की सारी नीतियाँ तुमको विदित हैं॥ ५८७॥

राम ने कहा, जो कुछ तुमने कहा वह सभी प्रमाण-सापेक्ष है। फिर भी

प्राचीन भूपति तुमि अति बिचक्षण * वाहुबले जिनेछ सकल त्रिभुवन
धर्म्माधर्म्म राजकर्म्म तोमार विदित * तव मुखे किंचित् शुनिव राजनीति८८
दशानन बले, मम संशय जीवन * कहिते बदने नाहि निःसरे वचन
यतक्षण वाँचि प्राणे आछि सचेतन * कहिव किंचित् नीति करह श्रवण८९
करिते उत्तम कर्म्म वाञ्छा जवे हवे * आलस्य त्यजिया ताहा तखनि करिबे
फेलिया राखिले कर्म्म पुनः हओयाभार * कहि शुन रघुनाथ प्रमाण ताहार ९०
एकदिन आसि आमि स्वर्गपुर हैते * यमपुरी दृष्ट हैल थाकि निज रथे
शून्य हैते देखिलाम यमेर भवन * तिन द्वारे नाना स्थाने आछे साधुजन
देखिलाम दक्षिणेते पातकीर थाना *दिबा किबा रात्रि, किछु नाहि जाय जाना
अन्धकारे चौराशीटा नरकेर कुण्ड * ताहाते डुबाये धरे पातकीर मुण्ड
परित्राहि डाके पापी बिषम-प्रहारे * ना देय तुलिते माथा, यमदूत मारे
ताहा देखि बड़ दया हइल मनेते * घुचाव पापीर दुःख शमनेर हाते
पापीर दुर्गति आर नाहि देखा जाय * एत भावि सेइ दिन एलेम लंकाय

ऐसा विधान है कि गुरु से ही विद्या सीखनी चाहिए। तुम प्राचीन भूपति हो, अति विचक्षण हो, त्रिभुवन को वाहुवल से तुमने जीता है। धर्माधर्म और राजकर्म तुमको विदित हैं, तुम्हारे मुख से मैं कुछ राजनीति सुनूँगा ॥ ५८८ ॥

दशानन ने कहा, मेरे प्राण कभी भी निकल जायें, मुँह से शब्द नहीं निकल रहे हैं। जब तक प्राण हैं और मैं सचेतन हूँ, तुम्हें कुछ नीति सुनाऊँगा, सुनो ॥ ५८९ ॥

कोई भी अच्छा कार्य करने की जब भी इच्छा हो आलस्य त्याग कर तभी उसको कर डालना चाहिए। काम को छोड़ रखने से फिर से उसका पूरा होना कठिन हो जाता है। इसके प्रमाण में हे रघुनाथ सुनो, मैं तुमको सुनाता हूँ ॥ ५९० ॥

एक दिन मैं स्वर्गपुर से आ रहा था कि रास्ते में अपने रथ से मुझको यमपुरी दिखाई पड़ी। शून्य से मैंने यम का भवन देखा। उसके तीनों द्वारों पर विभिन्न साधुजनों को देखा। दक्षिण में पापियों की चौकी देखी। वहाँ दिन है या रात कुछ भी पता नहीं चलता है। अन्धकार में चौरासी नरक के कुंड बने हैं जिनमें पातकियों के मुंड पड़े हुए हैं। विषम प्रहार से पापी त्राहि-त्राहि पुकार रहे हैं। यमदूत सिर नहीं उठाने देते—पीटने लगते हैं। यह देखकर मेरे मन में बड़ी दया उपजी। मैंने सोचा, मैं यम के हाथों पापियों का यह दुःख दूर करूँगा। पापियों की दुर्गति देखी नहीं जाती। इतना सोचकर उस दिन मैं लंका चला आया। रोज सोचता रहा कि नरक-कुंडों को तोप दूँगा, लेकिन आज कल करते हुए, वह उपेक्षा में पड़ा ही रह

पूराब नरक-कुण्ड नित्य करि मने ✻ आजि कालि करिया रहिल वहु दिने
हेलाय रहिल प'ड़े ना हय पूरण ✻ तार पर तब संगे बाजिल ए रण
कुण्ड पूराइते जबे करिनु मनन ✻ तखनि पूराले पूर्ण हइते से पण
हेलाय राखिनु फेले, ना हइल आर ✻ मनेर से दुःख मने रहिल आमार ९१
आर एक कथा शुन निवेदन करि ✻ लवण-समुद्र-माझे स्वर्ण-लंका-पुरी
एक दिन मनेते हइल एइ कथा ✻ सप्तटि समुद्र सृष्टि क'रेछेन धाता
दधि-दुग्ध-घृत-आदि समुद्र थाकिते ✻ केन आछि लवण-समुद्र-सलिलेते
स्वर्ग मर्त्य पाताल आमार करतल ✻ सिञ्चिया फेलिव आमि समुद्रेर जल
क्षीरोद-समुद्र एने राखिव एखाने ✻ एइ कथा चिरदिन आछे मोर मने
यखन मनेते हय, मने करि करि ✻ अन्य कर्म्मे थाकि सिन्धु सिंचिते पासरि
एइरूपे हेलाय अनेक दिन गेल ✻ तदन्तरे तव संगे संग्राम बाजिल
समुद्र-सेचन करा ना हइल आर ✻ मनेर से दुःख मने रहिल आमार
अतएव एइ कथा शुन रघुमणि ✻ मने ह'ले शुभ कर्म्म करिवे तखनि ९२
हेलाय राखिले कोन कार्य्य नाहि हय ✻ आर एक कथा कहि, शुन महाशय
नाग-नर-भूचर-खेचर-आदि सर्व्व ✻ भूत-प्रेत-पिशाचादि आछये गन्धर्व्व

गया। फिर तुम्हारे साथ यह युद्ध छिड़ गया। कुंड भरने के लिए जब मन में विचार किया था यदि तभी उसे पूरा करदेता तो प्रण पूर्ण होता। अवहेलना से उसे रख छोड़ा, इसी लिए वह काम फिर न वन सका, मन की वह कामना मन ही में रह गई ॥ ५९१ ॥

एक और वात मैं निवेदन करता हूँ, सुनो। लंकापुरी लवण-समुद्र के बीच में है। एक दिन मन में यह वात उपजी कि सातों समुद्रों की सृष्टि विधाता ने की है। दूध, दही और घी के समुद्र रहते हुए मैं क्यों लवण-समुद्र में पड़ा हुआ हूँ। मर्त्य, पाताल मेरी हथेली पर हैं। मैं इस समुद्र का जल सोख लूँगा और क्षीरसागर को लाकर यहाँ स्थापित करूँगा, यह बात हमेशा मेरे मन में जमी रही। जब भी याद आ जाती, जब भी करने को होता, तभी कोई दूसरा काम आ जाता और सागर सोखना भूल जाता। इस प्रकार उपेक्षा में वहुत दिन निकल गये, फिर तुम्हारे साथ युद्ध छिड़ गया। समुद्र सोखना रह गया। मेरे मन में यह दुःख भी बना रहा। अतः हे रघुमणि सुनो, यदि मन में कोई शुभकर्म करने की इच्छा हो तो उसे तत्काल कर डालना चाहिए ॥ ५९२ ॥

छोड़ रखने पर कोई भी काम हो नहीं पाता। हे भगवान् मैं तुम्हें एक वात और वता रहा हूँ। नाग, नर, भूचर, खेचर, भूत, प्रेत, पिशाच, गन्धर्व, आदि सभी जीव ब्रह्मा की सृष्टि में हैं। अमरपुर जाने से सभी

ब्रह्मार सृष्टिते आछे जीवगण यत ※ जाइते अमर-पुरे सकले वञ्चित
सकलेर शक्ति नाइ जाइते तथाय ※ केह केह दैव-शक्ति-अनुसारे जाय
ए शक्ति-विहीन जारा आछे पृथिवीते ※ स्वर्गपुरे जाइते ना पारे कदाचिते
मने मने साध करे जाइते अमरे ※ दैव-शक्ति-हीन तारा जाइते ना पारे
देखि दुःख ताहादेर भाविनु अन्तरे ※ कि रूपे जाइते जीव पारे स्वर्गपुरे
अनायासे येते सबे पारे देवलोके ※ निर्म्माब स्वर्गेर पथ विश्वकर्मा डेके
करिव एमन पथ सबे येन उठे ※ पृथिवी अवधि स्वर्ग क'रे दिब पैठे
थाकिबे अपूर्व्व कीर्त्ति संसारे पौरुष ※ त्रिभुवने सबे मोर घुषिबेक यश
तखनि करिताम यदि हैल जबे मने ※ कोन काले कार्यसिद्धि हैत एत दिने
हेलाय राखिया हैल बहुदिन गत ※ तारपर तव संगे युद्ध उपस्थित
अतएव शुभकर्म्म शीघ्र करा भालो ※ हेलाय राखिया ये वासना बृथा ह'लो९३
श्रीराम बलेन, शुन लंका-अधिपति ※ शुभकर्म्म शीघ्र करा एइ से जुकति
सुकृति कर्म्मेर कथा कहिले विस्तर ※ पाप-कर्म्भ-पक्षे किछु कह आर-बार
पाप-कर्म्म हेला क'रे राखे ये जन्येते ※ बलह ताहार नीति आमार साक्षाते
शीघ्र कैले पापकर्म्म कि हवे दुर्गति ※ विस्तार करिया कह सेइ राजनीति९४

वंचित हैं। वहाँ जाने की शक्ति सभी की नहीं है। कोई-कोई दैव-शक्ति के प्रभाव से जा सकते हैं। इस संसार के ये शक्तिहीन मनुष्य कभी स्वर्गपुर नहीं जा पाते हैं। अमरलोक जाने की उनकी मन ही मन साध है किन्तु दैव-शक्ति से शून्य होने के कारण वे नहीं जा पाते हैं। उनका दुःख देखकर मैंने मन में सोचा कि किस प्रकार से ये जीव स्वर्गपुर जा सकते हैं। सभी लोग अनायास देवलोक जा सकें इस हेतु मैं विश्वकर्मा को बुलवाकर स्वर्ग का पथ निर्मित कराऊँगा। ऐसे पथ का निर्माण करूँगा कि सभी लोग स्वर्ग जा सकें, मैं पृथ्वी से स्वर्ग तक का सोपान बनवा दूँगा। संसार में अपूर्व पौरुष और कीर्ति का नमूना रह जायगा और तीनों लोकों में मेरा यश गाया जायगा। जब यह मन में आया था तभी अगर यह करवा लेता तो जाने कब के मेरी कार्य-सिद्धि हो जाती। उपेक्षा से वह पड़ा रहा और बहुत दिन बीत गये, फिर तुम्हारे साथ युद्ध आरम्भ हो गया। अतः कोई भी शुभकार्य तत्काल कर डालना चाहिए। उपेक्षा से पड़े रह जाने से संकल्प व्यर्थ हो जाता है ॥ ५९३ ॥

श्रीराम ने कहा, हे लंका के अधिपति सुनो। शुभकर्म जल्दी करना चाहिए, यह एक नीति है। अच्छे कर्मों के विषय में तुमने बहुत कुछ कहा, अब कुछ पाप-कर्मों के विषय में भी बताओ। मुझसे वह नीति बताओ जिससे पाप-कर्म को उपेक्षा से डाल रखना चाहिए। तत्काल पाप-कर्म करने से क्या दुर्दशा होती है वह राजनीति स्पष्ट रूप से बताओ ॥ ५९४ ॥

दशानन वले, ताहा कहिते विस्तर ❋ कत आर विस्तारिया कव रघुवर
पापकर्म्म अनेक क'रेछि चिरदिन ❋ कहिते ना पारि, तनु प्रहारेते क्षीण
आछये अनेक कथा आमार मनेते ❋ कत कव रघुनाथ तोमार साक्षाते
एक कथा कहि राम देख विद्यमान ❋ लक्ष्मण काटिल शूर्पणखार नाक कान
सेइ एसे उपदेश कहिल आमारे ❋ ताहार बुद्धिते आमि सीता आनि ह'रे
शूर्पणखा कान्दिलेक चरणेते ध'रे ❋ मन हैल सीतारे हरिया आनिबारे
एकवार भाविलाम आपन मनेते ❋ आजि नहे कालि सीता आनिव पश्चाते
आवार विचार करि देखिलाम भेवे ❋ हेलाय राखिले शेषे आना नाहि हवे
अतएव शीघ्रगति हरि आनि सीते ❋ सर्व्वनाश हैल मोर सीतार जन्येते
एक लक्ष पुत्र मोर, सओया लक्ष नाति ❋ आपनि मरिनु शेषे लंका-अधिपति
यदि सीता आनिताम भेवे-चिन्ते मने ❋ तबे केन सवंशे मरिब तव बाणे
हेलाते ना हरि सीता राखिताम फेले ❋ तबे मोर संहार ना हैत कोनकाले
याहा जानि कहिलाम किछु नीति-कथा ❋ कहिते कहिते जिह्वाय हैल जड़ता
श्रीचरणे दृष्टि राखि प्राण-त्याग कैल ❋ हेनकाले सुरपुरे जयध्वनि हइल ५९५

दशानन ने कहा, पाप-कर्म तो वहुत हैं। हे रघुबर, उनको विस्तार से कहाँ तक बताऊँ। मैंने सदा ही बहुत से पापकर्म किये हैं। अब प्रहार से मेरा शरीर दुखी है, इसलिए मैं बता नहीं पा रहा हूँ। मेरे मन में बहुत सारी बातें हैं। हे रघुनाथ, मैं तुमसे क्या-क्या बताऊँ। हे राम, एक बात तुमको बता रहा हूँ, लक्ष्मण ने शूर्पणखा के नाक-कान काट डाले। उसी ने आकर मुझको सलाह दी। उसी की बुद्धि के अनुसार मैं सीता का हरण कर लाया। शूर्पणखा ने पैरों पड़कर रोया तो सीता को हर लाने का मन हुआ। एक बार मैंने अपने मन में सोचा, आज नहीं, कल सीता को पकड़ कर लाऊँगा। फिर सोच-विचार कर देखा कि यह काम उपेक्षा से पड़े रह जाने पर अन्त तक शायद सीता का लाना संभव न हो। अतः मैंने शीघ्रातिशीघ्र सीता का हरण किया और सीता के कारण ही मेरा सर्वनाश हुआ। मेरे एक लाख बेटे और सवा लाख पोते थे। अब वे सभी मर गये और अन्त में लंका का अधिपति मैं स्वयं मर रहा हूँ। अगर मैं सोचविचार कर सीता को लाया होता तो क्यों अपने सारे वंश के साथ तुम्हारे बाणों से मुझको मरना पड़ता। यदि उपेक्षा से सीता-हरण पड़ा रह जाता तो मेरा संहार कभी नहीं हो सकता था। जो कुछ मुझको मालूम थे वे नीति-वाक्य मैंने कह सुनाये। इतना कहते-कहते उसकी जीभ लड़खड़ाने लगी। श्रीचरणों पर दृष्टि जमा कर उसने अपने प्राण त्याग दिये। उसकी मृत्यु के समय सुरपुर में जयध्वनि हुई ॥ ५९५ ॥

विभीषणेर-विलाप

आमार आर केह नाहि भवे ।
(ओरे दयाल रामेर चरण बिने) ※ दारा-पुत्र-परिवार, केवा कोथा रवे,
आसिये शमन-दूत यखन बाँधिवे ※छेड़े संसार-माया भाव मन राघवे५९६
रावण पड़िल, देवगण हरषित ※ नृत्य करे अप्सरा, गन्धर्ब्ब गाय गीत
रावण पड़िल, राम कपि-पाने चान ※ पलाइया छिल कपि, एल विद्यमान
रथखान काड़ि लैल वीर हनूमान ※ अंगद लइल गदा दिया एक टान
कर्णेर कुण्डल लैल नील सेनापति ※ हातेर वलय लय नल महामति
केह केह काड़ि लय मुकुटेर फूल ※ केह उपाड़ये दाड़ि गोंप आर चूल
रावणे देखिते सबे करे मारामारि ※ पड़िल रावण राजा जगतेर बैरी९७
राम बले, कपिगण हओ एकपाश ※ रावणे देखिब आमि, आछे अभिलाष
राम लक्ष्मण सुग्रीव संगेते विभीषण ※ रावण-निकटे तबे गेला ततक्षण
पर्ब्बत जिनिया अंग धरणी लोटाय ※देखिया दयाल राम करे हाय हाय५९८
ताहा देखि विभीषण रावणे निल कोले ※ कान्दिते कान्दिते शोके बिभीषण बले

विभीषण का विलाप

दयालु राम के चरणों के सिवा इस संसार में मेरा कोई नहीं। जव यमदूत आकर बाँध ले जायगा तब दारा-पुत्र-परिवार कौन कहाँ रहेगा, इसलिए संसार की माया छोड़ राम में मन रमाओ ॥ ५९६ ॥

जब रावण गिरा तो देवता अत्यन्त हर्षमग्न हुए। अप्सरा नृत्य करने लगीं और गन्धर्व गान करने लगे। जब रावण गिरा तो राम ने कपियों की ओर देखा, जितने कपि भाग गये थे वे फिर लौटकर आ गये। वीर हनुमान ने रावण का रथ छीन लिया। अंगद ने गदा छीन ली। नील सेनापति ने कानों के कुंडल ले लिये। महामति नल ने हाथ के कड़े ले लिये। कोई-कोई मुकुट के फूल नोचने लगा तो कोई दाढ़ी-मूछ और केश नोचने लगे। रावण को देखने के लिए धक्का-मुक्की शुरू हो गयी। इस प्रकार संसार के वैरी राजा रावण की मृत्यु हुई ॥ ५९७ ॥

राम ने कहा, अरे वानरों, एक किनारे हो जाओ, मेरी ऐसी इच्छा है कि मैं रावण को देखूँ। उतनी देर में राम लक्ष्मण, सुग्रीव और विभीषण को साथ लिये रावण के पास गये। धरती पर उसका पर्वत सा शरीर लोट रहा है यह देखकर दयालु राम हाय-हाय करने लगे ॥ ५९८ ॥

यह देखकर विभीषण ने रावण को गोद में ले लिया। शोक से रोते-रोते विभीषण ने कहा, हे भाई, अपने बाहुबल से तुमने त्रिभुवन पर विजय

त्रिभुवन जिनिले भाइ निज बाहुबले ※ सेई अहंकारे भाइ रामे ना चिनिले
ना बुझिया सीतादेवी लंकाते आनिले ※ लक्ष्मीरे करिया चुरि सवंशे मजिले
मरण करिले सार, नाहि दिले सीता ※ पाये ध'रे साधिलाम, ना शुनिले कथा
सवंशे आपनि एवे हाराइले प्राण ※ ना शुनिले मम वाक्य ह'ये हतज्ञान
आपनार दोषे मैले, कलंक आमार ※ कार करे दिया जाओ लंका-अधिकार५९९
बिभीषण बले, राम, युक्ति बल सार ※स्वर्ग-मर्त्त्य-पाताल तोमार अधिकार
धार्म्मिक हइला भाइ धर्म्म नष्ट करे ※ मृत्यु लागि सीता आने लंकार-भितरे
चिरदिन भाइ मोर पूजिल शिवेरे ※ मरण-समये शिव ना चाहिला फिरे
हित बुझाइते मोरे भाइ मारे लाथि ※ तखनि जानिनु भायेर घटिल दुर्गति
पुरी शून्य करि भाइ त्यजिल जीवन※तोमा बिना गति आर नाहि नारायण६००
बिभीषणेर रोदने श्रीराम दुःख-मन ※ राम बले ना कान्द धार्म्मिक बिभीषण
भुवन जिनिया सुख भुञ्जिल अपार ※ पड़िया आमार बाणे गेल स्वर्गद्वार
रामेर वचने तबे संवरे क्रन्दन ※ कृत्तिवास विरचिल गीत-रामायण६०१

पाई। उसी अहंकार के कारण तुम राम को नहीं पहचान सके। तुम नासमझी से सीतादेवी को लंका ले आये। लक्ष्मी को चुराकर तुम अपने वंश के साथ नष्ट हो गये। तुमने मृत्यु को ही अपना लिया, लेकिन सीता को नहीं दिया। पैरों पड़कर मैंने तुमसे अनुरोध किया किन्तु तुमने मेरी एक भी न सुनी। अब अपने वंश के साथ तुमने अपने प्राण गँवाये, लेकिन ज्ञानभ्रष्ट होने के कारण मेरी बात नहीं मानी। मरे तो तुम अपने ही दोष से लेकिन मुझ पर कलंक लग गया, आज लंका का अधिकार तुम किसे सौंपे जा रहे हो॥ ५९९

विभीषण ने कहा, राम मुझको नीति बताओ। तुम्हारा स्वर्ग-मर्त्य-पाताल पर अधिकार है। धार्मिक होते हुए भी भाई धर्म-नष्ट कर रहा था, मृत्यु के लिए सीता को लंका में ले आया। सदा से मेरा भाई शिवजी की पूजा करता रहा; लेकिन मृत्यु के समय शिव ने पलट कर भी नहीं देखा। जब मैं उसे समझाने गया तो उसने मुझ पर लात जमा दी, तभी मैंने जान लिया कि भाई के भाग्य में दुर्दशा लिखी है। नगरी को सूनी करते हुए मेरे इस भाई ने प्राण दिये। हे नारायण, अब तुम्हारे बिना मेरी कोई गति नहीं॥ ६००॥

विभीषण के रोदन से श्रीराम का मन दुखी हुआ। राम ने कहा, धार्मिक विभीषण, मत रोओ। रावण ने भुवनों को जीत कर अपार सुख का भोग किया और मेरे बाण से मर कर स्वर्गद्वार को गया। राम के वचन से विभीषण ने रोना बन्द किया। कृत्तिवास ने रामायण-गीत की रचना की॥ ६०१॥

मन्दोदरीर-विलाप

एकवार बदन तुले फिरे चाओ हे,
उठ उठ लंकार अधिकारी ※ आमार शून्य ह'लो लंका-पुरी
ओहे त्यजे शय्या मनोहर ※ केन धूलाय धूसर-कलेवर ६०२
अन्तःपुरे जानाइल पड़िल रावण ※ देखिवारे धाइल यतेक नारीगण
रक्त-उत्पल जिनि कोमल चरण ※ रणस्थले छुटे जाय ह'ये अचेतन
रावणे वेड़िया कान्दे चौद्द हाजार नारी ※ शशधरे येन तारागण आछे घेरि
सोनार कमल अंग धूलाते मगन ※ मन्दोदरी कान्दे धरि स्वामीर चरण
आमारे छाड़िया प्रभु जाओ कोन स्थाने ※ केमने धरिव प्राण तोमार मरणे
केन वा आनिले सीता ए काल-सापिनी ※ स्वर्ण-लंका-पुरे ना रहिल एक प्राणी
कि काज करिल तव शंकर-शंकरी ※ राम-लक्ष्मण संहारिल स्वर्ण-लंका-पुरी
आपद् पड़िले देख केह कारो नय ※ सीतार कारणे ह'लो एतेक प्रलय
शमन हइल तव शूर्पणखा भग्नी ※ तार वाक्ये आनि सीता हाराले पराणी
भुवनेर वीर प्रभु पड़े तव वाणे ※ प्राण हाराइले नर-वानरेर रणे

मन्दोदरी का विलाप

हे लंका के अधिकारी, उठो-उठो, एक बार मुँह उठाकर पलट कर देखो। मेरी लंकापुरी सूनी हो गई है। मनोहर शय्या त्यागकर धूल में धूसरित हो लोट क्यों रहे हो ॥ ६०२ ॥

जब अन्तःपुर में यह प्रसिद्ध हो गया कि रावण का पतन हो गया है तो उसको देखने के लिए सभी नारियाँ दौड़ पड़ीं। जिनके पदतल लाल-कमल जैसे थे वे नारियाँ सुध-बुध खोकर रणभूमि में दौड़ने लगीं। रावण को घेर कर उसकी चौदह हज़ार नारियाँ रोने लगीं, मानों तारिकाएँ चन्द्र को घेरे हुए हों। उसका सोने के कमल जैसा शरीर धूल से सन गया, किन्तु मन्दोदरी पति का चरण पकड़े रोती रही। हे प्रभु, मुझको छोड़कर तुम कहाँ जा रहे हो, तुम्हारी मृत्यु के बाद मैं यह प्राण कैसे रख सकूँगी ? इस काली-नागिन सीता को तुम क्यों ले आए, सोने की लंकापुरी में एक भी प्राणी नहीं बच सका। तुम्हारे शंकर-शंकरी ने क्या किया ? राम-लक्ष्मण ने स्वर्ण की लंकापुरी का विनाश किया। विपत्ति आ पड़ने पर किसी का कोई नहीं होता। सीता के कारण इतना बड़ा प्रलय हो गया। तुम्हारी बहन सूर्पणखा तुम्हारे लिए यम बन गई। उसी के कहने पर सीता लाकर तुमने अपने प्राण गँवाये। तीनों भुवनों के वीर तुम्हारे बाणों से गिरते थे, पर तुमने नर-वानर के युद्ध में प्राण गँवा दिये। यह सोने की लंका तुम किसको दिये जा रहे हो, हे प्रभु, अपनी रानी मन्दोदरी तुम किसे दिये जा रहे हो। व्यर्थ ही तुम्हारी अतुल

कारे दिया गेले ए कनक-लंका-पुरी ※ कारे दिया जाओ प्रभु राणी मन्दोदरी
अतुल ऐश्वर्य्य तव गेल अकारणे ※ सब छारखार हैल तोमार बिहने
पति पुत्र मरिल, केमने प्राण धरि ※ धरणी लोटाये कान्दे राणी मन्दोदरी३
बिभीषण बले, शुन राणि मन्दोदरि ※ आर ना विलाप कर, चल अन्त:पुरी
एत वलि विभीषण राणी नमस्कारे ※ आपनि सकल ज्ञात दैवे यत करे
सीता दिते कहिलाम करिया मिनति ※ सभा विद्यमाने मोरे मारिलेन लाथि
पदाघाते हइलाम जलनिधि पार ※ सकल वृत्तान्त तुमि जानह आमार
एतेक वचन यदि कहे विभीषण ※ जुड़िल से मन्दोदरी द्विगुण क्रन्दन६०४

श्रीरामेर निकटे मन्दोदरीर अवैधव्य-वरलाभ

रावणेर मुण्ड कोले कान्दे उच्चैःस्वरे ※ दश हाजार सतिनीते प्रबोधिते नारे
ना कान्द ना कान्द राणि, मन कर स्थिर ※ तोमार क्रन्दने सबार बुक हय चिर५
मन्दोदरी वले, राजा मारिल जे जने ※ सेइ जने एकबार देखिब नयने
मनुष्य नहेन राम देव-नारायण ※ अवश्य देखिब आमि ताँहार चरण

सम्पदा नष्ट हो गई, तुम्हारे विना सब कुछ छिन्न-भिन्न हो जायगा। मेरे पति-पुत्र सभी मर गये, अब मैं कैसे प्राण रखूँ, यह कहकर रानी मन्दोदरी पृथिवी पर लोट-लोट कर रोने लगी॥ ६०३॥

विभीषण ने कहा, रानी मन्दोदरी सुनो। अब और विलाप न करो, अन्त:पुर चली चलो। इतना कहकर विभीषण ने रानी को नमस्कार किया और कहा तुम खुद सभी कुछ जानती हो, यह सब दैव का किया हुआ है। अनुनय-विनय करके जब मैंने सीता दे देने को कहा तो सभा के सम्मुख उन्होंने मुझ पर लात जमा दी। लात खाकर मैं समुद्र पार पहुँच गया। मेरा सारा विवरण तो तुम जानती ही हो। जब विभीषण ने इतना कहा तो मन्दोदरी जोर-जोर से रोने लगी॥ ६०४॥

श्रीराम से मन्दोदरी का अवैधव्य वर-लाभ

रावण का मुंड गोद में लिये मन्दोदरी जोर-जोर से रोने लगी। उसकी दस हज़ार सौतें भी उसको धीरज देने में असमर्थ रहीं। हे रानी, मत रोओ, मत रोओ, धीरज धरो। तुम्हारे रुदन से सभी का हृदय टूक-टूक हुआ जा रहा है॥ ६०५॥

मन्दोदरी ने कहा, जिसने राजा को मारा है उसको एक बार अपनी आँखों से देखना चाहती हूँ। राम मनुष्य नहीं हैं, नारायण देव हैं। मैं उनके चरण अवश्य ही देखूँगी। ऐसा कहकर अस्त-व्यस्त वस्त्रों में और खुले

वस्त्र ना संबरे राणी आउदर-चुली ❋ श्रीरामे देखिते जाय ह'ये उतरोली ६
कटके वेष्ठित ब'से आछेन श्रीराम ❋ हेनकाले मन्दोदरी करिल प्रणाम
सीता-ज्ञाने भावि राम राणी मन्दोदरी ❋ 'जन्मायती' हओ बलि आशीर्ब्बाद करि
रामेर चरणे राणी बले ततक्षण ❋ हेन वर दिले केन कमल-लोचन
चन्द्र-सूर्य्य-पृथिवी-समुद्र यदि छाड़े ❋ तबु रघुनाथ, तव वाक्य नाहि नड़े
श्रीरामेरे मन्दोदरी परिचय दिल ❋ कृत्तिवास पण्डित कवित्वे बिरचिल ६०७

मन्दोदरीर परिचय-दान ओ अवैधव्य-विषयक व्यवस्था

संसारे असीमा, जाँहार महिमा, शुनेछ मय-दानव ।
जाँर महाशेले, त्रिभुवन टले, लक्ष्मणेर पराभव ॥
ताँहार नन्दिनी, रावण-धरणी, नाम मम मन्दोदरी ।
एलेम चरण, करिते दर्शन, त्यजिया जे अन्तःपुरी ॥
शुन महाशय, जानिनु निश्चय, तुमि त्रिदिवेर नाथ ।
लंकार ईश्वरी, नाम मन्दोदरी, कहि जोड़ करि हात ॥
देवेर ईश्वर, देव पुरन्दर, तारे जे बान्धिया आनि ।
जेइ इन्द्रजित्, देवे माने भीत, आमि जे तार जननी ॥

बिखरे बालों सहित रानी उतावली सी होकर राम को देखने चल पड़ी ॥ ६०६ ॥

सेना से घिरे राम बैठे हैं। ऐसे समय मन्दोदरी ने आकर प्रणाम किया। रानी मन्दोदरी को सीता समझकर 'अखण्ड सौभाग्यवती' होओ, यह कहकर राम ने आशीर्वाद दिया। तब तक रानी ने राम के चरणों को पकड़कर कहा, हे कमललोचन तुमने ऐसा वर क्यों दिया। चन्द्र, सूर्य, पृथ्वी, समुद्र सभी अपना स्थान छोड़ सकते हैं किन्तु हे रघुनाथ, तुम्हारा वचन नहीं टल सकता है। ऐसा कहकर श्रीराम से मन्दोदरी ने अपना परिचय बताया। इस प्रकार पंडित कृत्तिवास ने कवित्त में रचना की ॥ ६०७ ॥

मन्दोदरी का परिचय-दान और अवैधव्य-विषयक व्यवस्था

संसार में जिसकी असीम महिमा है ऐसे मयदानव का नाम आपने अवश्य सुना होगा। जिसके महाशेल के प्रहार से तीनों लोक हिल जाते हैं तथा लक्ष्मण का भी पराभव होता है, मैं उन्हींकी बेटी और रावण की पत्नी हूँ, मेरा नाम मन्दोदरी है। मैं अन्तःपुर त्याग कर तुम्हारे चरणों का दर्शन करने आई हूँ। हे महाशय, मैंने निश्चय रूप से जान लिया है कि तुम तीनों लोकों के नाथ हो। मैं मन्दोदरी नामक लंका की रानी तुम से हाथ जोड़ कर कहती हूँ। जो देवताओं के ईश्वर पुरन्दर को बाँध लाता था, तथा

'जन्मायती' करि, वर दिले हरि, ए वचन नहे आन।
स्वामी एइ हत, आमार आयत, किरूपे कर विधान ॥
तुमि सत्यवादी, ओहे गुणनिधि, मिथ्या नहे तब वाणी।
दारुण प्रहारे, मारिये पतिरे, कि कथा कह आपनि ॥
सूर्य्य-वंश-जात, प्रभु रघुनाथ, कहेन ह'ये लज्जित।
सत्य मोर कथा, रावणेर चिता, ज्वालिया राख आयत ॥
शुन मन्दोदरि, जाओ निज पुरी, मने ना कर विलाप।
मोरे हाते म'रे, गेल स्वर्गपुरे, खण्डिल सकल पाप ॥
शुन मोर राणी, गृहे जाओ राणि, दुःख ना भाविओ चिते।
रामणेर चिता, रहिबे सर्व्वथा, चिरकाल थाक आयते ॥
रहिबेक चिता, मिथ्या-नहे कथा, शुन मन्दोदरी राणि।
आयत स्वभावे, सर्व्वकाल रबे, मिथ्या ना हइबे बाणी ॥
रामेर बचने, सुखी ह'ये मने, गृहे जाय ततक्षण।
लंका-काण्ड गीत, भाषा सुललित, कृत्तिवास-बिरचन ॥६०८

श्रीरामेर स्थाने वर पे'ये मन्दोदरी ॐ प्रणति करिया रामे गेल निजपुरी

जिसके भय से देवता भीत थे, उस इन्द्रजीत की मैं जननी हूँ। 'अखंड सौभाग्यवती रहो' यह कहकर तुमने वर दिया है, यह वचन भी व्यर्थ नहीं हो सकता। मेरा पति तो मृत पड़ा है तब किस प्रकार से मेरा सुहागिन बने रहने का आशीर्वाद दे रहे हो। हे गुणों के निधि, तुम सत्यवादी हो, तुम्हारी वाणी मिथ्या नहीं हो सकती। प्रचंड प्रहार से मेरे पति को मारकर तुम स्वयं यह कैसी बात कर रहे हो। तब सूर्यवंशजात रघुनाथ ने लज्जित होकर कहा, मेरा वचन सत्य रहेगा, रावण की चिता सदा के लिए प्रज्वलित रहेगी। हे मन्दोदरी सुनो, तुम अपने घर जाओ, विलाप मत करो। मेरे हाथों से मरकर रावण स्वर्ग गया और उसके सारे पाप धुल गये। मेरी बात सुनो, हे रानी, तुम अपने घर जाओ, मन में दुखी मत होओ। रावण की चिता सदा के लिए जलती रहेगी और तुम भी चिरकाल के लिए सधवा बनी रहोगी। हे मन्दोदरी रानी, यह बात झूठ नहीं है, यह चिता यों ही बनी रहेगी। तुम सधवा रूप में चिरकाल तक जीवित रहोगी। हे रानी, मेरी वाणी मिथ्या नहीं होगी। राम के वचन से रानी प्रसन्न होकर घर चली गई। लंकाकांड के गीत सुललित हैं, जिनकी रचना कृत्तिवास ने की है ॥ ६०८ ॥

रावण का सत्कार और उसकी मुक्ति

श्रीराम से वर पाकर मन्दोदरी राम को प्रणाम कर अपने घर चली

रावणेर सत्कार ओ मुक्ति

रावणे बधिया दु:ख हइल अपार ❊ ना धरिब धनु, राम कैला अंगीकार ६०९
राम बले, विभीषण, ना भाविओ मने ❊ आपनार दोषे मैल राजा दशानने
रावणेर अग्निकार्य्य कर विभीषण ❊ आर केह नाहि तार करिते तर्पण
क्रन्दन संवर मिता, शुन मम बाणी ❊ रावणेर तर्पण तुमि करह एखनि १०
श्रीराम-आज्ञाय जाय सत्कार करिते ❊ नाना द्रव्य वस्त्र आने भाण्डार हइते
अगुरु चन्दन-काष्ठ आने भारे-भार ❊ सुगन्धि चन्दन आने गन्ध मनोहर
पर्व्वत-समान बीर दुर्व्वह-शरीर ❊ रावणे वहिते एल सहस्रेक बीर
सकल राक्षस आसि रावणेरे धरे ❊ पर्व्वत-समान वीरे तुलिवारे नारे
दुर्ज्जय-प्रताप हनूमान महावीर ❊ कोले क'रे ल'ये गेल सागरेर तीर
रावणेरे स्नान कराइल सिन्धु-जले ❊ सुगन्धि चन्दन लेपे कण्ठ-वाहु-मूले
दिव्य वस्त्र पराइल सोणार पइते ❊ सागरेर कूले खुले रावणेर चिते
हाते अग्नि करिया कान्देन बिभीषण ❊ दश-मुखे अग्नि दिया पोड़ाय रावण
रावणेर चिता-धूम उठे ततक्षण ❊ मुक्त ह'ये गेल रावण वैकुण्ठे-भुवन.
कृत्तिवास पण्डितेर कवित्व-सुसार ❊ लंकाकाण्डे-गाइलेन रावण-उद्धार ६११

गई। रावण का वध कर राम को अपार दु:ख हुआ। राम ने प्रतिज्ञा की कि फिर कभी धनुष नहीं पकड़ेंगे ॥ ६०९ ॥

राम ने कहा, विभीषण मन में कोई सोच न करना। राजा दशानन अपने ही दोष से मरा। विभीषण, रावण का अग्निकार्य करो। उनका तर्पण करने के लिए अब कोई दूसरा नहीं बचा है। मित्र अपनी रुलाई रोको, मेरी बात सुनो, तुम अभी रावण का तर्पण करो ॥ ६१० ॥

श्रीराम की आज्ञा पाकर विभीषण उसका पालन करने चला। भंडार से वस्त्र आदि विभिन्न द्रव्य ले आया। ढेर के ढेर अगुरु चन्दन की लकड़ी लाई गई। मनोहर सुगन्ध वाला चन्दन लाया गया। वीर रावण का शरीर पर्वत के समान दुर्वह है—उसको कन्धा देने के लिए एक हजार वीर आए। सब राक्षसों ने आकर रावण को पकड़ा, लेकिन पर्वत समान वीर को उठाने में सभी असमर्थ रहे। परम पराक्रमी महावीर हनुमान ने उसको गोद में उठा लिया और समुद्र के किनारे पहुँचा दिया। रावण को समुद्र के जल में नहलाया गया, सुगन्धित चन्दन गले एवं बगल में लेप दिया गया। सुन्दर वस्त्र और सोने का बना जनेऊ पहनाया गया। सागर-तट पर रावण की चिता बनी। हाथों में आग लेकर विभीषण रोने लगे। दस मुखों में आग लगाकर रावण को जलाया। रावण की चिता से धुँवा उठा और तबतक रावण मुक्त होकर वैकुंठ चला गया। पंडित कृत्तिवास का कवित्व सर्वोत्कृष्ट है। उन्होंने लंकाकांड में रावण-उद्धार का गीत गाया ॥ ६११ ॥

श्रीराम कर्त्तृक बिभीषणके लंकाराज्ये अभिषेक

एकबार डाक मन राम-राम बलियेरे ※ देख एतिन भुवने, सीतानाथ बिने, के आर तरिबे तोमारे ६१२
रणे अवसर पे'ये कमल-लोचन ※ लक्ष्मण सहित गिया बसिल तखन
इन्द्रेर मातलि आसि मागिल मेलानि ※ मातलिरे कहिलेन सुमधुर वाणी
देवराजे कहिबे आमार परिहार ※ ताँर शत्रु रावणेरे करिनु संहार
रामेरे प्रणाम करि मातलि चलिल ※ रामेर वचन गिया इन्द्रेर कहिल १३
सुग्रीवे देखिया राम हरषित-मन ※ बाहु पसारिया तारे दिला आलिंगन
तुमि हेन मिता हइओ जन्म-जन्मान्तरे ※ भुवन जिनिते पारि पाइले तोमारे
तोमार प्रसादे हइलाम सिन्धु पार ※ तोमार प्रसादे सीता करिनु उद्धार
एक धार आमार र'येछे शुधिबार ※ बिभीषणे ना दिलाम लंका-अधिकार
एवे बिभीषणे करि' लंका-अधिपति ※ चारियुगे थाकिबेक आमार सुख्याति
आमार वचने मित्र कर आगुसार ※ बिभीषणे देह शीघ्र-लंका-अधिकार
हनूमान अंगद प्रभृति कपिवर ※ सबे कर विभीषणे लंकार ईश्वर १४
श्रीरामेर आज्ञा लंघिबे कोन जना ※ बिभीषण राजा हबे पड़िल घोषणा

श्रीराम द्वारा विभीषण का लंका-राज्य में अभिषेक

हे मन, एक बार राम-राम कहकर पुकारो। देखो, इन तीनों लोकों में सीतानाथ के विना तुमको तारने वाला कौन है ॥६१२॥

युद्ध से अवकाश पाकर कमललोचन राम लक्ष्मण के साथ जाकर बैठ गये। इन्द्र के मातलि ने आकर विदा माँगी। मातलि से उन्होंने मधुर वचन में कहा, देवराज इन्द्र से मेरा निवेदन कहना, उनके शत्रु रावण का मैंने संहार कर डाला है। राम का नमन कर मातलि चला गया और राम के वाक्यों को जाकर इन्द्र से कहा ॥ ६१३ ॥

सुग्रीव को देखकर राम बड़े प्रसन्न हुए। हाथ फैला कर उससे गले मिले और कहने लगे जन्म-जन्मान्तर में तुम जैसा मित्र मुझे मिला। तुम्हे पा जाऊँ तो मैं पृथ्वी जीत सकता हूँ। तुम्हारी ही कृपा से मैं समुद्र पार कर सका, तुम्हारी ही कृपा से सीता का उद्धार कर सका। मुझको अभी एक ऋण चुकाना है। विभीषण को अभी तक मैंने लंका का अधिकार नहीं दिया है। अब विभीषण को लंका का अधिपति बनाऊँ। चारों युगों में मेरा सुयश बना रहेगा। हे मित्र, मेरे कहने पर तुम आगे बढ़कर विभीषण को जल्दी से लंका का अधिकार दे दो। हे हनुमान तथा अंगद आदि कपिवर ! तुम लोग जाकर विभीषण को लंका का ईश्वर बनाओ ॥ ६१४ ॥

कौन है जो श्रीराम की आज्ञा का उल्लंघन कर सकता है। विभीषण

गन्धादि औषध दिल नाना तीर्थ-जल ❋ लंका-मध्ये स्त्री-पुरुषे गाइल मंगल
नाना बिध धन-रत्न जेखाने आछिल ❋ राक्षस-वानरे-सब वहिया आनिल
गायकेते गीत गाय, नटे करे नाट ❋ शुभक्षणे बिभीषणे देन राज्यपाट
आपनि माथाय जल ढालेन लक्ष्मण ❋ 'रामजय' शब्द करे जत कपिगण
नाना शब्दे बाद्य बाजे शुनिते सुन्दर ❋ आनन्देते नृत्य करे सकल वानर
एक लक्ष दगड़, द्विलक्ष करताल ❋ दुइलक्ष घण्टा बाजे, शुनिते विशाल
भेउरि झाँझरि वाजे, तिन लक्ष काड़ा ❋ चारि लक्ष जयढाक, छयलक्ष पड़ा
बाजिल चौरासी लक्ष शंख आर बीणा ❋ तिन लक्ष तासा वाजे दमामार साना
ढेमचा खेमचा वाजे, तिन लक्ष ढोल ❋ तिन लक्ष पखोयाज विस्तर मादोल
जयढाक रामकाड़ा वाजे जगझम्प ❋ शुनिया वाद्येर शब्द त्रिभुवन कम्प
बाजिल राक्षसी-ढाक पंचाश हाजार ❋ दुन्दुभि डमरु शिगा संख्या करा भार
तूरी भेरी खञ्जनी खमक आर बाँशी ❋ दगड़े रगड़ दिते लक्ष लक्ष काँसि
टिकारा टंकार आर चौतारा मोचंग ❋ वाद्य शुनि वानरेर बेड़े गेल रंग
'रामजय' शब्द करे जत कपिगण ❋ बिभीषणे अभिषेक कैला नारायण

राजा होगा, ऐसी घोषणा कर दी गई। विभिन्न तीर्थों का जल, गन्ध और औषधि लाए गये। लंका में नर-नारियों ने मंगल-गीत गाया। तरह-तरह के धन-रत्न जहाँ भी जो कुछ था राक्षस और वानर सब ढोकर ले आए। गायक गीत गाने लगे और नर्त्तक नृत्य करने लगे। शुभ घड़ी पर विभीषण को राजपाट सौंपा गया। लक्ष्मण स्वयं उसके सिर पर जल डालने लगे। सारे वानर 'राम जय' का शब्द करने लगे। विभिन्न प्रकार के शब्द करते हुए वाद्य बजने लगे और वानर आनन्द से नाचने लगे। जब एक लाख दगड़, दो लाख करताल और दो लाख घंटे बजने लगे तो प्रचंड शब्द होने लगा। भेरी और झांझर, तथा तीन लाख कड़े बजने लगे। चार लाख जयढाक और छह लाख पड़ा, चौरासी लाख शंख और बीणा बजने लगे। तीन लाख तासे नगाड़े के साथ बजने लगे। ढेमचा, खेमचा और तीन लाख ढोल बजने लगे। तीन लाख पखावज और पर्याप्त संख्या में मादल बजने लगे। जयढाक, रामकाड़ा और जगझम्प बजने लगे। इस प्रकार सभी वाद्यों की ध्वनि से तीनों लोकों में कँपकँपी होने लगी। पचास हज़ार राक्षसी ढाक बजाये गये, दुन्दुभि डमरू और तुरहियों की तो कोई संख्या ही नहीं। तुरही, भेरी, खंजड़ी, खमक और बाँसुरी बजीं। नगाड़े से ताल-लय मिलाते हुए लाख-लाख घड़ियाल बजाये जाने लगे। टिकारे की टंकार और चौतारा मोचंग का वादन सुनकर वन्दरों को बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। जितने कपि थे सब 'राम जय' की ध्वनि करने लगे और नारायण ने विभीषण का अभिषेक किया। छत्र और दंड दिया और स्वर्ण-लंकापुरी का राज्य भी दिया। अभिषेक करने के

छत्रदण्ड दिला आर स्वर्ण-लंका-पुरी ※ अभिषेक करि दिल राणी मन्दोदरी
विभीषण राजा हैल, राज्यखण्ड सुखी ※रहिल रामेर कीर्त्ति, विभीषण साक्षी ६१५
पुनर्व्वार श्रीराम कहिला बिभीषणे ※ मन्दोदरी लागि किछु ना भाविह मने
मन्दोदरी दिब तोमाय मम अंगीकार ※ राज-स्त्री राजाते लय, आछे व्यवहार
अतएव ना भाविओ मित्र बिभीषण ※ राणी मन्दोदरी तोमा दिलाम एखन
लंकापुरे भूपति हइल विभीषण ※कृत्तिवास बिरचिल गीत-रामायण६१६

हनूमान कर्त्तृक सीता-समीपे रावण-बध-वार्त्ता-ज्ञापन

पात्रमित्र ल'ये राम वसिल देओ याने ※ सीतारे आनिते पाठाइल हनूमाने
सीतारे आनिते जाय पवन-नन्दन ※ हनूरे प्रणाम करे निशाचर-गण
सबे वले, आचम्बिते एल हनूमान ※ ना जानि काहार एबे लइबे पराण
एइ कथा रक्षोगण भावे मने-मन ※ हनूमान प्रवेशिल अशोकेर वन
सीतारे देखिया हनू नोङाइल माथा ※ जोड़-हाते कहे वीर श्रीरामेर कथा
दुष्ट निशाचर दिल तोमारे ए ताप ※ सबान्धवे पड़िल रावण महापाप
श्रीराम पाठाये दिला मोरे तव पाश ※ समाचार कहिवारे मनेते उल्लास६१७

बाद रानी मन्दोदरी को भी दिया। विभीषण राजा हो गया, सारा राज्य सुखी हो गया, राम की कीर्त्ति बनी रही और विभीषण उसका साक्षी बना रहा ॥ ६१५ ॥

फिर राम ने विभीषण से कहा, मन्दोदरी के लिए मन में कुछ सोच मत करो। यह मेरा निश्चय कि मैं तुमको मन्दोदरी दूँगा। राजा की स्त्री को राजा ही ग्रहण करता है, यही नियम है। इसलिए मित्र विभीषण, चिन्ता मत करो। अब मैं तुम्हारे हाथों में रानी मन्दोदरी को सौंपता हूँ। इस प्रकार विभीषण लंकापुरी का राजा हुआ। कृत्तिवास ने रामायण-गीत की रचना की ॥ ६१६ ॥

हनुमान द्वारा सीता के समक्ष रावण-वध की सूचना देना

पात्र-मित्र लेकर राम सभा में बैठे। सीता को लाने के लिए हनुमान को भेज दिया। पवननन्दन सीता को लेने चल पड़े। सारे निशाचर हनुमान को प्रणाम करने लगे। सभी लोग बोले, अचानक ही हनुमान आया, जाने किसके प्राण ले ले। सारे राक्षस यही बात मन ही मन सोचने लगे। हनुमान ने अशोकवन में प्रवेश किया। सीता को देखकर हनुमान ने सिर नवाया। हाथ जोड़ कर वीर ने श्रीराम की बात बताई। जिस दुष्ट निशाचर ने तुमको इतना कष्ट दिया, अपने सारे सम्बन्धियों के साथ वह महापापी रावण विनष्ट हो गया। श्रीराम ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। यह समाचार सुनाते हुए मेरे मन में उल्लास हो रहा है ॥ ६१७ ॥

हनूर निकटे शुनि एतेक काहिनी ※ आनन्द-सागरे भासे सीता-ठाकुराणी
हनूमान् वले, माता, कि भाविछ मने ※ शुभ कथार उत्तर ना देहकि कारणे
सीता बले, जे बार्त्ता कहिले हनूमान ※ नाहि धन ताहार सदृश दिते दान
जद्यपि तोमारे करि राज्य-अधिकारी ※ तथापि तोमार धार शुधिवारे नारि
हनू वले, राज्य-धने नाहि प्रयोजन ※ राज्य-धन सब माता तव श्रीचरण
तबे यदि दान दिबे सीता-ठाकुराणी ※ एइ दान तव स्थाने मागि गो जननि
तोमार रक्षक आछे रावणेर चेड़ी ※ आमार साक्षाते तोमा उठाइत बाड़ि
करियाछे तोमार दुर्गति अपमान ※ ए सबार प्राण लव, मागि एइ दान
दन्त उपाड़िया चुल छिड़ि गोछे गोछे ※ आछाड़िया प्राण लव बड़ वड़ गाछे
समुद्रेर तीरे आछे वालि खरषाण ※ ताते मुख घषाड़िया लइव पराण
शुनिया हनूर वाक्य जत चेड़ीगण ※ भये सब चेड़ी धरे सीतार चरण
चेड़ीसब वले, शुन सीता-ठाकुराणी ※ हनूमान प्राण लय, राख गो आपनि १८
जानकी वलेन, तुमि विचारे पण्डित ※ जत दुःख पाइ आमि, कपाले लिखित
महावीर हनू, तुमि वुद्धे वृहस्पति ※ स्त्री-वध करिया केन राखिवे अख्याति
जतदिन छिल चेड़ी रावण-अधीन ※ दियाछे आज्ञाय तार दुःख ततदिन

हनुमान से इतनी कथा सुनने के वाद सीताजी आनन्द-सागर में वहने लगीं। हनुमान ने कहा, हे माता तुम मन में क्या सोच रही हो। इस शुभ-समाचार का कोई उत्तर क्यों नहीं दे रही हो। सीता ने कहा, हे हनुमान ! तुमने जो समाचार सुनाया, उसके समान दान देने को मेरे पास धन नहीं है। यदि तुमको राज्य का अधिकारी भी वना दे सकूँ फिर भी तुम्हारा ऋण चुका नहीं सकती। हनुमान ने कहा, मुझको न तो राज्य की आवश्यकता है और न धन की। मेरे लिए राज्य, धन आदि सभी कुछ तुम्हारे चरणकमल हैं। लेकिन हे सीतादेवी कुछ दान करना ही चाहती हो तो तुम से एक ही दान माँगना चाहता हूँ। माता ! रावण की बाँदियाँ तुम्हारी पहरेदारी करती थीं, मेरे ही सामने ये तुम पर हाथ उठाती थीं। तुम्हारी बड़ी दुर्दशा और अपमान इन्होंने किया है। तुमसे केवल यही दान माँगता हूँ कि इनके प्राण लूँगा। इनके दाँत उखाड़ लूँ और वालों के गुच्छे नोंच लूँ और वड़े-वड़े पेड़ों पर पटक कर इनको मार डालूँ। समुद्रतट पर धार-दार वालू है उसी पर उनके मुँह रगड़कर इनके प्राण ले लूँ। हनुमान के वाक्य सुनकर जितनी भी चेरियाँ थीं डरकर सीता के पैर पकड़ने लगीं। चेरियाँ कहने लगीं, तुम ही हमारी रक्षा करो ॥ ६१८ ॥

जानकी ने कहा, हनुमान तुम पंडित हो, जितना भी मुझको क्लेश मिल रहा है यह सब मेरे भाग्य का लेखा है। हे महावीर हनुमान, तुम वुद्धि में बृहस्पति के समान हो, नारी का वध कर क्यों वदनामी मोल लोगे।

म'रेछे सवंशे दुष्ट रावण एखन ❋ चेड़ीगण करे एवे आमार सेवन
कहिबे आमार दुःख श्रीरामेर स्थाने ❋ प्रणाम करिव गिया रामेर चरणे१९
चलिलेन हनूमान सीतार वचने ❋ कहिला सकल कथा श्रीरामेर स्थाने
जे सीतार लागिया करिला महामार ❋ से सीतार हइयाछे अस्थि-चर्म्म सार
चेड़ीर ताड़ने सीतार कण्ठागत प्राण ❋ तवु राम-बिना ताँर मने नाहि आन
एत जदि कहिलेन पवन-नन्दन ❋ श्रीराम वलेन, सीता आने कोन जन६२०

सीतार राम-सम्भाषणे यात्रा ओ सीतार प्रति मन्दोदरीर अभिशाप-प्रदान

एत भावि रघुनाथ विचारिया मने ❋ सीतारे आनिते पाठाइला बिभीषणे
चलिलेन बिभीषण रामेर वचने ❋ माथा नोङाइला गिया सीतार चरणे
बिभीषण वले, माता, निवेदि चरणे ❋ तोमारे जाइते हवे राम-दरशने
आनिला सुबर्ण-दोला रतने मण्डित ❋ सीतार सम्मुखे आनि कैला उपस्थित
बिभीषण बले, शुन जनक-नन्दिनी ❋ सुबर्ण-दोलाते आसि उठह आपनि
पर रत्न-आभरण, जेवा लय चिते ❋ राम-दरशने माता, चलह त्वरिते

जितने दिन तक ये चेरियाँ रावण के अधीन थीं उसी के आदेश से मुझको कलेश पहुँचाती रहीं। अब दुष्ट रावण अपने वंश के साथ मर चुका है, अब ये चेरियाँ मेरी सेवा करती हैं। मेरा दुःख श्रीराम से जाकर कहना। मैं राम के चरणों में जाकर प्रणाम करूँगी ॥ ६१९ ॥

सीता के कहने पर हनुमान राम के पास गये और सारी बातें उनको बता दीं। जिस सीता के लिए तुमने महायुद्ध किया वह सीता अब हड्डियों का ढाँचा भर रह गई है। चेरियों की ताड़ना से सीता की जान साँसत में है, फिर भी तुम्हारे विना, उनके मन में अन्य कोई नहीं है। जब पवननन्दन ने इतना कहा तो श्रीराम बोले, सीता को कौन ले आयेगा ॥ ६२० ॥

राम-सम्भाषण के निमित्त सीता की यात्रा और सीता के प्रति
मन्दोदरी का शाप-प्रदान

इतना सोच कर रघुनाथ ने मन ही मन विचार किया और सीता को लाने के लिए विभीषण को भेज दिया। राम के कहने पर विभीषण चल पड़े। जाकर सीता के चरणों पर सिर झुकाया। विभीषण ने कहा, माँ तुम्हारे चरणों में निवेदन करता हूँ, तुमको राम के दर्शन के लिए चलना पड़ेगा। रत्नों से जड़ी हुई सुवर्ण की डोली लाकर सीता के सम्मुख रखी गई। विभीषण ने कहा, हे जनकनन्दिनी स्वयं आकर सुवर्ण-डोली पर बैठ जाओ। जो जी में आवे रत्न-आभूषण पहन लो, और हे माता, राम-दर्शन के लिए जल्दी चलो। रावण मर गया और तुम्हारे दुःख का अन्त हुआ। अब अच्छी

मरिल रावण, तव दु:ख हैल शेष ✻ राम-सम्भाषणे चल करिया सुवेश
स्नान करि पर माता, विचित्र वसने ✻ सोनार दोलाय चल राम-सम्भाषणे
सीता वले, किबा स्नान, किबा मोर वेश ✻ अशोकेर वने दु:ख भुञ्जिनु अशेष
विभीषण वले, कथा कहिले प्रमाण ✻ केमने ए बेशे जावे आमा-विद्यमान २१
बिभीषण-परिवार सरमा-सुन्दरी ✻ स्नान द्रव्य ल'ये तथा एलो त्वरा करि
सिंहासने वसाइल सीता चन्द्रमुखी ✻ केह तैल देय गाय, केह आमलकी
पिठालि माखाये केह अंग-मलि तुले ✻ रत्नेर कलसे केह शिरे जल ढाले
नेतेर वसने केह मुछाइछे वारि ✻ यतने पराय वस्त्र यतेक सुन्दरी
जानकीर रूपे तथा पड़िछे बिजुलि ✻ सीतारे परान केह कनक-पाशुलि
रतने जड़ित बान्धे विचित्र कवरी ✻ नाना चित्र लेखा ताहे आछे सारि-सारि
नयने अंजन दिल अति सुशोभित ✻ नाना-अलंकार विश्वकर्म्मार निर्म्मित
अंगराग सिंदूर दिलेक अंगे भाले ✻ मरकत-निर्म्मित विचित्र हार गले
विचित्र-निर्म्माण दिल शंख दुइ वाइ ✻ पूर्ण शशधर जेन देखिवारे पाइ
लुकाते चाहेन रूप, ना हय गोपन ✻ जानकीर रूपे आलो करे त्रिभुवन २२
रत्नमय चतुर्द्दोल योगाइल आनि ✻ सानन्दे बसिला ताहे जनक-नन्दिनी

वेश-भूषा में राम से सम्भाषण करने चलो। हे माता, स्नान कर विचित्र वस्त्र पहन लो और सोने की डोली पर बैठकर राम-सम्भाषण करने चल पड़ो। सीता ने कहा, मेरा स्नान करना भी क्या और वेश-भूषा भी क्या! अशोकवन में मैंने अशेष दु:ख झेला है। विभीषण ने कहा, यह बात तो तुमने ठीक कही। इस वेश में मेरे समक्ष कैसे जा सकती हो॥ ६२१॥

तब विभीषण की पत्नी सुन्दरी सरमा झटपट स्नान के सामान लेकर आई। चन्द्रमुखी सीता को सिंहासन पर बिठा दिया। कोई वदन पर तेल मलने लगी तो कोई आँवला। कोई उबटन लगाकर अंग का मैल निकालने लगी। कोई रत्नजड़ित घड़े से सिर पर पानी उँडेलने लगी, तो कोई नेत-वस्त्र से जल पोंछने लगी। सारी सुन्दरियों ने मिलकर वस्त्र पहनाये। जानकी का रूप यों खिल उठा, मानों बिजली चमकी हो, कोई सीता को सोने की पायल पहनाने लगी। कोई रत्नों से जड़ा हुआ जूड़ा बाँधने लगी, जिसमें कि विभिन्न चित्र अंकित किये गये थे। नयनों में सुशोभन अंजन लगाया गया। विश्वकर्मा द्वारा बनाये हुए अनेक अलंकार पहनाये गये। अंगों पर अंगराग और माथे पर सिन्दुर लगाया गया। पन्ने का बना विचित्र हार गले में पहनाया गया। दो शंख निर्मित चूड़ियाँ पहनायीं गयीं। मानों पूर्णचन्द्र दिखाई पड़ने लगा। सीता ने अपना रूप छिपाना चाहा किन्तु वह छिप न सका। जानकी के रूप से त्रिभुवन प्रकाशित होने लगा॥ ६२२॥

घेरिलेक चतुर्द्दोल नेतेर वसने ❋ यात्रा कैला सीतादेवी राम-सम्भाषणे
जतने पातिल पथे नेतेर पाछड़ा ❋ राक्षसेते देय पथे चन्दनेर छड़ा
मल्लिका मालती पारिजात राशि-राशि ❋ पथेते बिस्तार कैल राक्षसेरा आसि
राक्षस-बानरे आसि बेड़े चारि भिते ❋ बिभीषण अग्रेते सुवर्ण-बेत हाते
जतेक वानर-सेना चारिभिते घेरे ❋ परस्पर द्वन्द्व सीता देखिबार तरे२३
देखिते ना पाय केह, च'क्षे वहे नीर ❋ लंकार जतेक नारी हइल बाहिर
वाल-वृद्ध-युवती लंकाय जत छिल ❋ सीतारे देखिते सवे धाइया चलिल
ना संबरे अन्तर, धाइया जाय एड़े ❋ वृद्ध-नारी द्रुत जेते उछटिया पड़े
शोकाब्धिते मग्न जत राक्षसेर नारी ❋ वेगे धाय द्रुतगति लज्जा परिहरि२४
मन्दोदरी प्रणाम करिल हेनकाले ❋ धूलाय धूसर अंगे, आलुलित चूले
मन्दोदरी बले, शुन जनक-नन्दिनी ❋ तोमा लागि हइलाम आमि अनाथिनी
पुरी-सह रावणे नाशिया कोपगुने ❋ आनन्दे च'लेछ तुमि राम-सम्भाषणे
ए आनन्दे निरानन्द हवे अकस्मात् ❋ बिषदृष्टे तोमारे देखिवे रघुनाथ
जदि सती हइ, थाके पति-प्रति मन ❋ कखनो आमार शाप ना हवे खण्डन

रत्नमय चौदोल लाया गया और उसपर जनकनन्दिनी सानन्द बैठ गईं। डोली को नेतवस्त्र से घेर दिया गया। सीतादेवी राम से मिलने के लिए चल पड़ीं यत्न से पथ पर सूक्ष्म रेशमी वस्त्र निर्मित चदरा बिछा दिया गया। राक्षस पथ पर चन्दन छिड़कने लगे। पथ पर राक्षसों ने मल्लिका, मालती और पारिजात के फूल बिछा दिये। राक्षस और वानर चारों ओर से घेर कर चले। सामने विभीषण सोने का बेंत हाथ में लिये चले। वानर सेना ने चारों ओर से घेर लिया। सीता को देखने लिए उनमें होड़ लग गई ॥ ६२३ ॥

जिनकी आँखों से आँसू ढरक रहे हैं, इस प्रकार सीता को देखने के लिए लंका की सारी नारियाँ निकल आईं। बच्चे, बूढ़े और युवती जितने भी लंका में थे सीता को देखने के लिए दौड़ पड़े। दौड़ कर जाने में बदन के कपड़े अस्त-व्यस्त हो जाते थे। वृद्धा नारी जल्दी चलने में ठोकर खा जाती थीं। राक्षस-नारियाँ शोक सागर में निमग्न हो लाज छोड़कर तेज़ गति से चलने लगीं ॥ ६२४ ॥

ऐसे ही समय मन्दोदरी ने आकर प्रणाम किया। उसका अंग धूल से धूसरित था और बाल बिखरे हुए थे। मन्दोदरी ने कहा, हे जनकनन्दिनी, तुम्हारे ही कारण मैं अनाथिनी बनी। सारी नगरी के साथ रावण को क्रोध की आग में जलाकर तुम आनन्द से राम से संभाषण करने जा रही हो। यह आनन्द तुम्हारा अकस्मात् ही निरानन्द में बदल जायगा। रघुनाथ तुमको विषदृष्टि से देखेंगे। अगर मैं सती हूँ और पति के प्रति ही मेरा मन रहा

एत बलि अन्तःपुरे गेल मन्दोदरी ❋ सीता ल'ये विभीषण गेल त्वरा करि २५
किछुदूर थाकिते ना जाय चतुर्द्दोले ❋ सीता देखिवारे बेड़े वानर-सकले
कनक-रचित ताँर श्रवण-कुण्डल ❋ लेगेछे ताहार छाया गगन-मण्डल
नाना वनपुष्प-माला-गन्धे अमोदित ❋ स्कन्धे करि आने दोला कनक-रचित
चलिलेन सीतादेवी राम-सम्भाषणे ❋ लंकार रमणी कान्दे सीतार गमने
राक्षस-रमणी-अंग दुःखे सदा दहे ❋ रोदन करिया सवे जानकीरे कहे
सुखे चलियाछ तुमि पति-सम्भाषणे ❋ एककाले विधवा हइनु सर्व्वजने
अशुभ-नयने राम तोमारे देखिवे ❋ आमादेर वाक्य कभु खण्डन ना हवे
कान्दिते कान्दिते सवे निजघरे नड़े ❋ राम-सम्भाषणे सीता चतुर्द्दोले चड़े २६
वाहिर हइल दोला लंकापुर-गड़े ❋ नेतेरे वसने दोला ल'येछेन बेड़े
दुइ ठाटे हुड़ाहुड़ि हैल ठेलाठेलि ❋ वहिते ना पारे वाट जत चतुर्द्दोली
राजा हये विभीषण भूमे वहे वाट ❋ कटकेर चाप देखि हाते निल छाट
छाट हाते लइल वानर कोटि-कोटि ❋ चारिदिके पड़े छाट, लागे चटचटि
फुटिया गायेर मांस रक्त पड़े धारे ❋ तबु देखिवारे जाय आपना पासरे

हो तो मेरा यह शाप खंडित नहीं हो सकता। इतना कह कर मन्दोदरी अन्तःपुर चली गई। विभीषण तुरन्त सीता को लेकर चला गया॥ ६२५॥

जब कुछ दूर रह गया तब चतुर्दोल आगे न बढ़ सका। सीता को देखने के लिए, सारे वानर घेर कर खड़े हो गये। उनके कानों के कुंडल सोने के बने हैं जिसकी छाया गगन-मंडल में जा पड़ी है। विभिन्न वन-फूलों की माला की सुगन्ध से महमहाती हुई स्वर्णनिर्मित डोली कन्धे पर लाद कर ले आई गई। सीतादेवी राम-सम्भाषण के लिए चलीं। सीता के चलने पर लंका की रमणियाँ रोने लगीं। राक्षस-रमणियों के शरीर दुख से सदा दहकते रहते हैं। वे सब रोती हुई जानकी से बोलीं, बड़े सुख से तुम पति-सम्भाषण करने जा रही हो। हम सभी एक ही साथ विधवा हो गई हैं। राम तुमको अशुभ नयनों से देखेंगे, हम लोगों के वाक्य कभी झूठे नहीं पड़ सकते! इस प्रकार रोती हुई सभी नारियाँ अपने-अपने घरों में चली गईं। राम-सम्भाषण के लिए सीता फिर चतुर्दोल पर बैठ गईं॥ ६२६॥

सीता की डोली लंकापुरी के गढ़ से बाहर निकल आई। नेत के वस्त्र से डोली घिरी हुई है। दोनों सेनाओं में ठेलमठेल और धक्कम-धक्का शुरू हो गया। वाहकों से डोली ढोना मुश्किल हो गया। राजा होकर भी विभीषण डोली का डंडा थामे हुए हैं। सेना का दबाव देखकर उन्होंने हाथ में छड़ी ले ली। छड़ी हाथ में लेकर वे कोटि-कोटि वानरों पर चटा-चट लगाने लगे। इससे वानरों के बदन का माँस कट कर खून निकलने लगा, फिर भी वे अपने को भुला कर सब देखने के लिए लपकते रहे।

परिश्रमे विभीषणेर घन वहे श्वास ※ वहुकष्टे गेल दोला श्रीरामेर पाश२७
बसिया आछेन राम गुणेर सागर ※ दक्षिणे बसिया मित्र सुग्रीव बानर
वामभिते वसियाछे अनुज लक्ष्मण ※ निकटेते जाम्ववान् जोड़हस्ते रन
पथ वाहि जाइते कटके ठेलाठेलि ※ छाट मारि विभीषण मध्ये करे गलि
कटकेर दु:खे राम कोप कैला मने ※ कोपे राम कहिलेन राजा बिभीषणे
राजार गृहिणी हय प्रजार जननी ※ माताके देखिबे पुत्र, इहाते कि हानि
केन वा घेरेछ दोला, आमि त' ना जानि ※ केन वा करिछ तुमि एत हानाहानि
घुचाओ दोलार वस्त्र, छाड़ छाड़ छाट ※ देखुक सकले सीता, घुचाओ झंझाट
जारे उद्धारिणु, तारे देखुक् सर्व्वलोके ※ सती जे हइबे, से राखिबे आपनाके२८
बुझिलेन हनूमान श्रीरामेर मन ※ सीतार परीक्षा-हेतु ह'येछे मनन
देखिया रामेर क्रोध भीत बिभीषण ※ परीक्षा करेन किंवा देन बिसर्ज्जन
घुचान दोलार वस्त्र राजा विभीषण ※ करिलेन जानकी भूमिते पदार्पण२९
दोला छाड़ि जानकी नामेन भूमितले ※ बिद्युतेर छटा जेन अंबनी-मण्डले
सीमन्ते सिंदूर-चिह्न, रंग बड़ लागे ※ चन्दन-तिलक शोभे कपालेर भागे

परिश्रम से विभीषण की साँस तेज चलने लगी। इस प्रकार बड़े कष्ट से डोली श्रीराम के पास पहुँची ॥ ६२७ ॥

गुणों के सागर राम बैठे हुए हैं। उनके दाहिनी ओर मित्र वानर सुग्रीव बैठा है। बाईं तरफ छोटे भाई लक्ष्मण बैठे हैं। निकट ही जाम्बवान हाथ जोड़े खड़ा है। पथ पर चलते समय सेना में ठेलमठेल होने लगा। छड़ी मार कर विभीषण बीच में रास्ता बनाता रहा। सेना के इस कष्ट पर राम के मन में क्रोध आया। राम ने क्रोधित होकर विभीषण से कहा, राजा की गृहिणी प्रजा की जननी के समान होती है, पुत्र माँ को देखेंगे इसमें कौन सी हानि है। मुझे नहीं मालूम कि डोली क्यों घेर रखी है और तुम इतनी मार-पीट भी क्यों कर रहे हो। डोली पर से कपड़ा हटा दो और छड़ी फेंक दो। सभी लोग सीता को देख लें और झंझट खत्म हो जाय। जिसका उद्धार किया उसको सभी लोग देखें। जो सती होगी वह अपनी रक्षा कर लेगी ॥ ६२८ ॥

हनुमान ने समझ लिया कि श्रीराम का मन सीता की परीक्षा करने को हो रहा है। राम का क्रोध देखकर विभीषण भयभीत हुए कि वे परीक्षा करते हैं या विसर्जन। राजा विभीषण ने डोली का वस्त्र हटाया। जानकी ने भूमि पर पैर रखा ॥ ६२९ ॥

जब डोली छोड़कर जानकी धरती पर उतर आईं तो ऐसा प्रतीत हुआ मानों भूमंडल पर बिजली की छटा फैल गई हो। उनकी माँग में सिन्दूर की रेखा देखने में कितनी सुन्दर लगती है। माथे पर चन्दन का टीका शोभा दे रहा है।

देखिते सुन्दर अति सीतार अधर ❊ पक्व-बिम्बफल जिनि अति शोभाकर
नाना रत्न परिधाने, रूपे नाहि सीमा ❊ चराचरे नाहि देखि सीतार प्रतिमा
पूर्णिमार चन्द्र जेन उदित गगने ❊ मूर्च्छित हइला सबे सीता-दरशने
जानकीरे देखे जेइ, से हय मूर्च्छित ❊ अन्येर कि कब कथा, देवता बिस्मित
केह भावे, आइलेन आपनि शंकरी ❊ श्रीरामेरे देखिते कैलास परिहरि
अन्ये वले, त्यजिया बिष्णुर वक्षःस्थल ❊ लक्ष्मी अवतीर्णा बुझि देखिते भूतल
केह वले, आपनि सावित्री मूर्त्तिमती ❊ केह बले, वशिष्ठ-गृहिणी अरुन्धती
देखियाछे सीतारे ये, से-इ सीता बले ❊ अन्यलोके कत तर्क करे नानास्थले
पाद-स्पर्शे पवित्र करेन वसुन्धरा ❊ वसुन्धरा-सुता सीता कृश-कलेवरा
उपस्थित हइलेन सभा-बिद्यमान ❊ हेरिया हरिषे सवे हय हतज्ञान
रामेर चरणे सीता करे नमस्कार ❊ करिलेन लक्ष्मणे वात्सल्य व्यवहार
करपुटे सीता रहिलेन सभास्थाने ❊ लक्ष्मण प्रणाम करे ताँहार चरणे ६३०

सीतार अग्नि-परीक्षा

श्रीराम व्याकुल अति हरिष-विषादे ❊ सती-स्त्री छाड़िते चान लोक-अपवादे
कारे किछु ना वलेन जानकी सभाय ❊ मने-मने भाविछेन, कि हवे उपाय ६३१

सीता के अधर देखने में कितने सुन्दर हैं मानों पके हुए बिम्बफल हों। विभिन्न रत्न-आभूषण पहने सीता के रूप की कोई सीमा नहीं। चराचर में सीता जैसी कोई प्रतिमा नहीं दिखाई पड़ती। गगन में मानों पूर्णचन्द्र का उदय हुआ हो। सीता का दर्शन करते ही सब मूर्च्छित हो गये। दूसरों का क्या कहना, देवता भी विस्मित हुए। कोई सोचने लगा कि स्वयं शंकरी राम को देखने के लिए कैलास से चली आई है। दूसरों ने कहा, विष्णु का वक्षस्थल त्याग कर स्वयं लक्ष्मीदेवी भूतल पर अवतीर्ण हुई हैं। कोई कहता, यह मूर्त्तिमती सावित्री है, तो कोई कहता कि यह वशिष्ठ की गृहिणी अरुन्धती है। जिन्होंने सीता को देखा है, केवल वही लोग कहने लगे कि सीता है, बाकी लोग जगह-जगह पर तर्क करने लग गये। पैरों के स्पर्श से वसुन्धरा को पवित्र करती हुई वसुन्धरा की बेटी कृश-काया सीता सभा के सम्मुख आ पहुँची। उसकी कान्ति देखकर सभा में सभी अपने होशहवास गँवा बैठे! राम के चरणों में सीता ने नमस्कार किया। लक्ष्मण से वात्सल्य का आचरण किया। हाथों पर हाथ रखे सीता सभा-स्थल के बीच खड़ी रही। लक्ष्मण ने सीता के चरणों में प्रणाम किया॥ ६३०॥

सीता की अग्नि-परीक्षा

हर्ष और विषाद से श्रीराम बड़े व्याकुल हो गये। लोकनिन्दा के हेतु

वहिछे चक्षुर जल, श्रीराम कातर ※ सीतारे बलेन किछु निष्ठुर उत्तर
आमार ना छिल केह सीता, तव पाश ※ व्यवहार तोमार ना जानि दशमास
सूर्य्यवंशे जन्म, दशरथेर नन्दन ※ तोमा-हेन नारिते नाहिक प्रयोजन
तोमारे लइते पुनः शंका हय मने ※ यथा-तथा जाओ तुमि, थाक अन्यस्थाने
एइ देख सुग्रीव बानर-अधिपति ※ इहार निकटे थाक, यदि लय मति
लंकार भूपति एइ देख विभीषण ※ इहार निकटे थाक, यदि लय मन
भरत शत्रुघ्न मम देशे दुइ भाइ ※ इच्छा हय, थाक गिया से-सवार ठाँइ
यथा-तथा जाह तुमि आपनार सुखे ※ केन कान्द दाँड़ाइया आमार सम्मुखे
थाकिते राक्षस-घरे, ना ह'तो उद्धार ※ त्रिभुवने अपयश गाहित आमार
घुचिल से अपयश तोमार उद्धारे ※ एखन मेलानि दिनु सभार भितरे३२
यतेक बलेन राम ताँरे रुक्षवाणी ※ रोदन करेन तत श्रीराम-घरणी
केह किछु नाहि बले, स्तब्ध सर्व्वजन ※ धीरे धीरे कन सीता मुछिया नयन
जनक-राजार वंशे आमार उत्पत्ति ※ दशरथ श्वसुर जे, तुमि-हेन पति
भालमते जान प्रभु, आमार प्रकृति ※ जानिया शुनिया केन करिछ दुर्गति

वे सीता का त्याग करना चाहते थे। जानकी ने सभा में किसी से कुछ भी नहीं कहा। मन ही मन वह सोचती रही कि क्या उपाय है ॥ ६३१ ॥

आँखों से आँसू निकल रहे हैं और श्रीराम बड़े दुखी हैं। सीता से उन्होंने कुछ कठोर बातें कीं। सीता! मेरा कोई भी व्यक्ति तुम्हारे पास नहीं था, दस महीने से तुम्हारे आचरण के बारे में कुछ नहीं जानता हूँ। मेरा जन्म सूर्यवंश में हुआ है, मैं दशरथ का पुत्र हूँ, तुम जैसी नारी की मुझे कोई आवश्यकता नहीं है। तुमको फिर से ग्रहण करने में मेरे मन में शंका हो रही है। जहाँ भी तुम्हारा जी चाहे चली जाओ, और कहीं जाकर रहो। यह देखो वानरों का राजा सुग्रीव है, अगर मन चाहे तो इसके साथ रह सकती हो। यह विभीषण लंका का राजा है, अगर चाहो तो इसके साथ रह सकती हो। देश में मेरे दो भाई भरत और शत्रुघ्न हैं, जी चाहे तो उनके साथ जाकर रहो। जहाँ भी जी चाहे वहाँ तुम सुख से चली जाओ, मेरे सामने खड़ी होकर रो क्यों रही हो। अगर तुम राक्षस के घर में पड़ी रहतीं और तुम्हारा उद्धार न हो सकता तो तीनों लोकों में मेरी बदनामी होती! तुम्हारे उद्धार से मेरा वह अपयश दूर हुआ। अब सभा के बीच तुमको त्याग रहा हूँ ॥ ६३२ ॥

राम जितना ही उससे रूखी-रूखी बातें करते जाते उतना ही राम-महिषी रोती जाती थीं। कोई कुछ भी नहीं कह पाया, सभी स्तब्ध बने रहे। धीरे-धीरे आँखें पोंछ कर सीता ने कहा, जनक राजा के वंश में मेरा जन्म है, दशरथ मेरा श्वसुर है और तुम मेरे पति हो। हे प्रभु, तुम भली भाँति मेरा

बाल्यकाले खेलिताम बालक मिशाले ※ स्पर्श नाहि करिताम पुरुष-छाओयाले
सबे मात्र छुँइयाछे पापिष्ठ रावण ※ इतर नारीर मत भाव कि कारण
हनूके आमार काछे पाठाले जखन ※ आमारे वर्ज्जन केन ना कैले तखन
करिताम विषपान अनल-प्रवेश ※ लंकार भितरे एत ना पेताम क्लेश
कटक पाइल दुःख सागर-बन्धने ※ आपनि विस्तर दुःख पाइला से रणे
एतेक करिया कर आमारे वर्ज्जन ※ तुमि-हेन स्वामी वर्ज्ज, वृथा ए जीवन
निमिकुले जन्मिया पड़िनु सूर्य्यकुले ※ आमार कि एइ छिल लिखन कपाले
वेश्या नटी नहि आमि, परे कर दान ※ सभा विद्यमाने कर एत अपमान
कृपा करि लक्ष्मण, ए करह प्रसाद ※ अग्निकुण्ड साजाह, घुचुक् अपवाद ३३
लक्ष्मण रामेर स्थाने चाहेन सम्मति ※ श्रीराम बलेन, कुण्ड साजाह सम्प्रति
सीतार जीवने भाइ, किछु नाहि काज ※ अग्निते पुड़ुक् सीता, दूरे जाक् लाज ३४
लक्ष्मण रामेर वाक्ये साजाइल कुण्ड ※ वानर-कटक बहु आनिल श्रीखण्ड
काष्ठ पुड़ि उठिल ज्वलन्त अग्निराशि ※ प्रवेश करिते जान श्रीराम-महिषी
सातवार रामेर चरणे प्रदक्षिण ※ प्रदक्षिण अग्निके करेन वार तिन

स्वभाव जानते हो। जानबूझ कर मेरी यह दुर्दशा तुम क्यों कर रहे हो। जब मैं बचपन में बालकों के साथ खेला करती थी तब भी पुरुष-बच्चों का स्पर्श नहीं करती थी। केवल पापी रावण ने मेरा स्पर्श किया है, कैसे तुमने मुझको नीच नारी जैसी समझ लिया! हनुमान को जिस समय तुमने मेरे पास भेजा था उसी समय तुमने मेरा वर्जन क्यों नहीं कर दिया। या तो मैं जहर खा लेती या अग्नि में प्रवेश कर जाती, लंका में इतना क्लेश न झेलती रहती। सारी सेना को समुद्र बाँधने में अपार क्लेश मिला, तुमको भी युद्ध में काफी कष्ट मिला। इतने पर भी मेरा वर्जन कर रहे हो। तुम जैसे पति का परित्याग कर यह जीवन व्यर्थ है। निमिकुल में जन्म लेकर सूर्यकुल में आई। क्या यही मेरे भाग्य में लिखा था। मैं कोई वेश्या या नटी नहीं हूँ जो दूसरों को दान दिये दे रहे हो और सभा के सम्मुख मेरा इतना अपमान कर रहे हो। हे लक्ष्मण, कृपा कर मेरे लिए कष्ट करो। अग्निकुंड सजाओ, मेरा अपयश दूर हो ॥ ६३३ ॥

लक्ष्मण ने सम्मति के लिए राम की ओर देखा। श्रीराम ने कहा, अब अग्निकुंड सजाओ। सीता के जीवन से अब कोई काम नहीं, सीता को आग में जल जाने दो, लज्जा दूर हो जाय ॥ ६३४ ॥

राम के कहने पर लक्ष्मण ने अग्निकुंड सजाया। वानर सेना बहुत सारी चन्दन की लकड़ी ले आई। लकड़ी जलने पर आग लपलपाने लगी। श्रीराम-महिषी उसमें प्रवेश करने चलीं। सात बार उन्होंने राम के चरणों की प्रदक्षिणा की। अग्नि की उन्होंने तीन बार प्रदक्षिणा की। अग्नि पर

कनक-अंजलि दिया अग्निर उपरे ❋ जोड़हाते जानकी बलेन धीरे-धीरे
शुन देव वैश्वानर, तुमि सर्व्व-आगे ❋ पाप-पुण्य लोकेर जानह युगे-युगे
कायमनो वाक्ये जदि हइ आमि सती ❋ तबे अग्नि, तव ठाँइ पाव अव्याहति
शिरे हात दिया कान्दे सबे सविशेष ❋ सीता-सती अग्नि मध्ये करेन प्रवेश ३५
अग्निते प्रवेशमात्र रामेर महिषी ❋ ढालिया दिलेक ताहे घृतेर कलसी
घृत पेये अनल अधिक उठे ज्व'ले ❋ कुण्डेर भितरे राम सीतारे नेहाले
कुण्डमध्ये चाहि राम सीतारे ना देखि ❋ झरिते लागिल ताँर दु'टि पद्म-आँखि
देखेन संसार शून्य, जेमन पागल ❋ भूमे गड़ागड़ि जान हइया विकल
कि करि लक्ष्मण भाइ, सीतार कि हइल ❋ सागर तरिया नौका तीरेते डुबिल
सीतार विहने मोर सकलि असार ❋ अयोध्याय छत्र-दण्ड ना धरिव आर
अग्नि हैते उठ सीता जनक-कुमारि ❋ तोमार विहने प्राण धरिते ना पारि
तोमार मरणे आमि पाइ वड़ दुःख ❋ अग्नि हैते उठ प्रिये, देखि चाँदमुख
चतुर्द्दश-वर्ष भ्रमिलाम नानादेशे ❋ सव दुःख घुचित, थाकिते जदि पाशे
लंकार रावण-राजा दशमुण्डधर ❋ कुड़ि हाते जुझे जेन यमेर सोसर
ताहाके मारिया तोमा करिनु उद्धार ❋ अग्निते पुड़िया सीता कैला छारखार ३६

कनक-अंजली देकर जानकी ने हाथ जोड़ कर धीरे-धीरे कहा, हे देव वैश्वानर (अग्नि), तुम युग-युग से लोगों के पाप-पुण्य को सबसे पहले जान लेते हो। मैं यदि मन, वचन और कर्म से सती हूँ तो तुमसे मुझे मुक्ति मिल जायगी। सिर पर हाथ रख कर सभी लोग रोने लगे और सती सीता आग में प्रवेश कर गई॥ ६३५॥

राम की महिषी के आग में प्रवेश करते ही उसमें घड़ाभर घी डाल दिया गया। घी पाकर आग जोरों से धधक उठी। राम ने कुंड के भीतर सीता की ओर देखा। कुंड में सीता को न देखकर राम के कमल-नयनों से आँसू झरने लगे। पागल-सरीखा वे संसार को सूना देखने लगे और वेकल होकर जमीन पर लोटने लग गये, और कहने लगे लक्ष्मण भाई, अब मैं क्या करूँ, सीता को क्या हो गया। सागर पार करने के बाद नाव किनारे आकर डूब गई। सीता के बिना मेरे लिए सभी कुछ निस्सार है। फिर मैं अयोध्या में छत्र-दंड धारण नहीं करूँगा। जनककुमारी सीता तुम अग्नि से निकल आओ, तुम्हारे बिना मैं प्राण नहीं रख सकता। तुम्हारी मृत्यु से मुझे बड़ा दुख मिलेगा। आग से निकल आओ, मैं तुम्हारा चाँद सा मुखड़ा देखूँ। चौदह वर्ष मैं देश-देश में भटकता रहा, सारा दुख मेरा दूर हो जाता यदि तुम मेरे पास होतीं। दस मुंडों वाला लंका का नरेश रावण यमराज के समान अपने बीस हाथों से जूझता रहा। हे सीता, उसको मार कर मैंने तुम्हारा उद्धार किया। हाय सीता, आग में जलकर तुम राख हो गई॥ ६३६॥

रामेर क्रन्दने कान्दे सर्ब्ब देवगण ※ कान्दिछे वरुणदेव शमन पवन
जत लोकपाल कान्दे, देव-पुरन्दर ※ जलेर भितरे थाकि कान्देन सागर
नल नील कान्दे आर सुग्रीव वानर ※ जाम्बवान् सुषेण ओ वालिर-कोङर
हनूमान वले, केन काँद हे लक्ष्मण ※ आमि जानि, जानकीर नाहिक मरण
श्रीरामेरे डाकिया वलेन देवगण ※ ना कान्द, ना कान्द, सीता पाइवे एखन
कान्दिते कान्दिते राम छाड़ेन निश्वास ※ सीतार परीक्षा-गीत गान कृत्तिवास ६३७

श्रीरामेर सीता-ग्रहण

कान्दिया श्रीरामचन्द्र हन अचेतन ※ धाइया आइल ब्रह्मा-आदि देवगण
कुबेर वरुण यम आइल पुरन्दर ※ जतेक देवता, सब आइल सत्वर
हस्त तुलि कन ब्रह्मा श्रीरामेरे डाकि ※ कार वाक्ये अग्निमध्ये राखिला जानकी
सीतादेवी ना मरेन अग्निते पुड़िया ※ एखनि पाइबा सीता, कान्द कि लागिया
देवेर ठाकुर तुमि, संसारेर सार ※ सामान्य मनुष्य-सम कर व्यवहार
तोमार गायेर लोमावली देवगण ※ सीतादेवी लक्ष्मी, तुमि स्वयं नारायण
श्रीराम वलेन, मम मानुषेते जन्म ※ मानुष हइया करि मानुषेर कर्म्म ६३८

राम के रुदन से सारे देवता रोने लगे। वरुण, पवन, शमन (यम), सभी रोने लगे। लोकपाल और देव पुरन्दर रोने लगे। पानी के भीतर रहने वाला सागर रोने लगा। नल, नील और सुग्रीव जैसे वानर रोने लगे। जाम्बवान, सुषेण और वालि-पुत्र अंगद रोने लगे। हनुमान ने कहा, लक्ष्मण, तुम क्यों रो रहे हो, मैं जानता हूँ कि जानकी की मृत्यु नहीं होगी। श्रीराम को पुकार कर देवता कहने लगे, मत रोओ मत रोओ, अभी तुमको सीता मिली जाती है। तब रोते-रोते राम ने दीर्घश्वास ली। इस प्रकार कृत्तिवास ने सीता-परीक्षा का गीत गाया ॥ ६३७ ॥

श्रीराम का सीता-ग्रहण

रोते-रोते श्रीरामचन्द्र मूर्च्छित हो गये। ब्रह्मा आदि सारे देवता-भागते हुए आए। कुबेर, वरुण, यम और पुरन्दर आ गये, सारे देवता बहुत शीघ्र आ पहुँचे। हाथ उठाकर ब्रह्मा ने श्रीराम को पुकार कर कहा, किसके कहने पर तुमने जानकी को आग में रखा। आग में जलकर सीतादेवी नहीं मर सकती हैं। अभी तुमको सीता मिल जायगी, रोते किस लिए हो। तुम देवताओं के प्रभु हो और संसार के सार हो, तुम तुच्छ मनुष्य जैसा आचरण कर रहे हो। तुम्हारे शरीर के रोएँ ही देवगण हैं, सीतादेवी लक्ष्मी हैं, और तुम स्वयं नारायण हो। श्रीराम ने कहा, मेरा जन्म मनुष्य से हुआ है इसलिए मनुष्य होकर मनुष्य जैसा काम कर रहा हूँ ॥ ६३८ ॥

विरिञ्चि बलेन,राम, वलि सारोद्धार ※ तव अवतारे प्रभु कौतुक अपार
मत्स्य-अवतारे कैला वेदेर उद्धार ※ कूर्म्म-अवतारे तुमि स्थापिला संसार
अवतार-तृतीये वराह-रूप धरि ※ धरारे धरिले तुमि दशन-उपरि
हिरण्यकशिपु-नामे दैत्य महाबल ※ स्वर्ग आदि त्रिभुवन जिनिल सकल
स्वर्ग-मर्त्य-पाताल ताहार भये काँपे ※ तारे संहारिला तुमि नरसिंह-रूपे
धरिया वामन-वेष पञ्चमावतारे ※ बलिके छलिया द्वारी हैला तार द्वारे
षष्ठेते परशुराम हैला भृगुपति ※ तिन सप्तवार निःक्षत्रिया कैला क्षिति
सप्तमेते राम-रूप धरि नारायण ※ वधिया राक्षसे रक्षा कैला त्रिभुवन
हलधर-रूपे राम, हल धरि हाते ※ दलिला असुरगण ताहार आघाते
जत जत अवतार अंशरूप धरि ※ राम-अवतारे तुमि आपनि श्रीहरि
आपनि श्रीराम, तुमि पूर्ण अवतार ※ सबंशे रावणे तुमि करिला संहार
जत जत क्षत्रिय पालिल भूमण्डल ※ सवार अधिक राम, तुमि धर बल
ना मरित दशानन अन्य कारो बाणे ※ बैकुण्ठ छाड़िला राम, सेइ से कारणे
तुमि ब्रह्मा, तुमि शिव, तुमि नारायण ※ सृष्टि-स्थिति प्रलयेर तुमिइ कारण
जेइजन शुने प्रभु, तव अवतार ※ इह-पर-लोके तार हइबे उद्धार

ब्रह्मा ने कहा, राम, तुम्हारे अवतार में अत्यधिक कौतुक का निर्वाह हुआ है। मत्स्य-अवतार में तुमने वेद का उद्धार किया। कूर्म्म अवतार में तुमने संसार की स्थापना की। तीसरे अवतार में तुमने वराह का रूप धारण किया और पृथ्वी को दाँत के ऊपर उठा लिया। हिरण्यकशिपु नाम से एक महाबलवान दैत्य था जिसने स्वर्ग-मर्त्य-पाताल को जीत लिया था। उसके भय से तीनों लोक काँपने लगे। तुमने नरसिंह का रूप धर कर उसका संहार किया। पंचम अवतार में तुमने वामन का वेश ले लिया और बलि राजा को छल कर उसके द्वार पर दरवान बन गये। छठे में भृगुपति परशुराम बने और इक्कीस बार धरती को क्षत्रिय-शून्य किया। सातवें अवतार में राम का रूप धारण कर हे नारायण, तुमने राक्षस का वध कर त्रिभुवन की रक्षा कर ली। हलधर का रूप लेकर राम तुमने हाथों में हल ले लिया और उसके आघात से असुरों को नष्ट किया। राम-अवतार में तुम स्वयं श्रीहरि हो, तुम स्वयं ही पूर्णावतार हो। तुमने रावण का सवंश संहार किया। जितने क्षत्रियों ने भूमंडल का पालन किया, हे राम, तुम उन सबमें सबसे अधिक शक्तिशाली हो। किसी और के बाण से दशानन नहीं मर सकता था। इसी कारण राम तुमने वैकुंठ त्यागा। तुम्हीं ब्रह्मा हो, तुम्हीं शिव हो, और तुम्हीं नारायण हो, तथा तुम्हीं सृष्टि, स्थिति और प्रलय के कारण हो। हे प्रभु, जो कोई भी तुम्हारे अवतार की कथा सुन लेता है उसका इहलोक, परलोक दोनों का उद्धार हो जाता है। ऐसा कौन है जो तुम्हारी माया को समझ सके, तुम

के बुझे तोमार माया, तुमि लोकपति ※ तुमि नारायण, सीता लक्ष्मी मूर्त्तिमती
हेन लक्ष्मी अग्निमध्ये राख कि कारण ※ मनुष्येर कर्म्म केन कर नारायण३९
ना शुनेन ब्रह्मार से प्रबोध-बचन ※ 'सीता सीता' बलि राम हन अचेतन
ब्रह्मा बलिलेन, अग्नि, उठह सत्वर ※ समर्पण कर सीता रामेर गोचर
ब्रह्मार आज्ञाय अग्नि उठिया सत्वर ※ आपनि प्रवेशे अग्नि-कुण्डेर भितर
आकाश-पाताल जुड़ि अग्नि शिखा ज्वले ※ आपनि उठिला अग्नि सीता ल'ये कोले
अग्नि हैते उठिलेन सीता-ठाकुराणी ※ जेमन तेमन आछे पटवस्त्रखानि
मस्तकेर पञ्चफूल, सेह ना आओरे ※ जोड़हाते रहिलेन रामेर गोचरे ४०
अग्नि बलिलेन, आमि पाप-पुण्य-साक्षी ※ लुकाइया पाप करे, ताहे आमि देखि
भाण्डाइते आमारे ना पारे कोनजन ※ ना देखि सीतार कोन पापेर कारण
आजि हैते राम, मोर सफल जीवन ※ करिलाम आजि सीता-सती-परशन
बलि राम, सीतारे ना दिओ मनस्ताप ※ राज्य दग्ध हइबे जानकी दिले शाप
जेइ नारी शुनिबेक सीतार चरित्र ※ सर्ब्बपाप खण्डिया से हइबे पबित्र
श्रीरामेर हाते सीता करि समर्पण ※ स्वस्थाने प्रस्थान अग्नि करेन तखन६४१

लोकपति हो। तुम नारायण हो, और सीता मूर्त्तिमती लक्ष्मी हैं। ऐसी लक्ष्मी को तुम किस कारण अग्नि में जला रहे हो। हे नारायण, तुम मनुष्य जैसा आचरण क्यों कर रहे हो ॥ ६३९ ॥

ब्रह्मा के सान्त्वना भरे ये वाक्य राम ने नहीं सुने। 'सीता-सीता' कहकर वे मूर्च्छित हो गये। ब्रह्मा ने कहा, हे अग्नि जल्दी उठो और सीता को राम के हाथों में सौंप दो। ब्रह्मा की आज्ञा से अग्नि झट उठकर स्वयं अग्निकुंड में प्रवेश कर गये। आकाश-पाताल को छूती हुई अग्नि शिखा जल रही थी। स्वयं अग्निदेव सीता को गोद में लिये हुए निकले। सीताजी आग से निकल आईं, उनके शरीर का पट्टवस्त्र ज्यों का त्यों बना हुआ है। मस्तक पर गूँथा हुआ पंचफूल तक नहीं मुरझाया। वे राम के सम्मुख हाथ जोड़कर खड़ी हो गईं ॥ ६४० ॥

अग्नि ने कहा, मैं पाप-पुण्य का साक्षी हूँ। जो आदमी छिपकर पाप करता है उसको भी देख लेता हूँ। मुझको कोई धोखा नहीं दे सकता। मैं तो सीता में कोई पाप का कारण नहीं देख पाता हूँ। हे राम, आज से मेरा जीवन सफल है कि मैंने सीता सती का स्पर्श किया। हे राम, तुम से मैं यह प्रार्थना करता हूँ कि तुम सीता के दिल को न दुखाना। जानकी यदि शाप दे दे तो तुम्हारा राज्य भस्म हो जायगा। जो भी नारी सीता का चरित्र सुनेगी उसके सारे पाप दूर हो जाएँगे और वह पवित्र हो जायगी। श्रीराम के हाथों में सीता को सौंप कर अग्निदेव अपने स्थान वापस चले गये ॥ ६४१ ॥

दशरथेर श्रीराम-सम्भाषण ओ भरतेर प्रति वरदान

विरिञ्चि वलेन, राम, करिले जे काज ※ ताहाते पाइल रक्षा देवता-समाज
तोमा लागि आछे अजोध्यार प्रजागण ※ देशे गिया सवाकारे करह पालन
तोमा लागि भरत-शत्रुघ्न प्राण धरे ※ चारि-भाइ मिलि राज्य करह संसारे
नाना-यज्ञ करह, करह नाना-दान ※ वंशे राजा करिया आइस निजस्थान
दशरथ मरिलेन तोमा-अदर्शने ※ मृत पिता एसेछेन तोमा-सम्भाषणे
पिता देख रामचन्द्र, अपूर्व्व-दर्शन ※ दुइ-भाइ कर पितृ-चरण-वन्दन
देव-रथारूढ़ राजा देव-वेशधारी ※ करिलेन प्रणाम लक्ष्मण रावणारि
पुत्रवधू श्वशुरेर वन्देन चरण ※ राजा दशरथ किछु कहेन बचन६४२
दग्ध हइलाम आमि कैकेयी-वचने ※ देह छाड़िलाम राम, तोमा-अदर्शने
पिता उद्धारिला, जथा अष्टावक्र-ऋषि ※ तोमार प्रसादे राम, स्वर्गे आमि बसि
देवगण जुक्ति करे, सव आमि शुनि ※ दशरथ-गृहे अवतीर्ण चक्रपाणि
लक्ष्मणेर गुण-व्याख्या करे देवगण ※ रामेर जेमन सेवा क'रेछे लक्ष्मण
सफल हइबे अजोध्यार पुरजन ※ तुमि राजा ह'ये सबे करिबे पालन

दशरथ का श्रीराम से सम्भाषण और भरत के प्रति वरदान

विरिंचि (ब्रह्मा) ने कहा, राम, तुमने जो काम किया उससे देवता-समाज की रक्षा हुई। तुम्हारे लिए अयोध्या की प्रजा प्रतीक्षा कर रही है। देश जाकर प्रजा-पालन करो। तुम लोगों के लिए ही भरत-शत्रुघ्न प्राण-धारण किये हुए हैं, जाओ, चारों भाई मिलकर संसार में राज करो। जाकर विभिन्न यज्ञ करो, तरह-तरह का दान करो और वंश में राजा छोड़कर अपने स्थान लौट आओ। तुम्हारे अदर्शन से दशरथ ने प्राण त्यागा था, वही मृत पिता तुमसे बात करने आए हैं। हे रामचन्द्र, अपने पिता को देखो, वे कितने दिव्य रूपधारी हैं, तुम दोनों भाई मिलकर पिता के चरणों की वन्दना करो। तब देव-रथ पर देव-वेश धारण किये राजा दशरथ को राम और लक्ष्मण ने प्रणाम किया। पुत्रवधू ने श्वसुर के चरणों की वन्दना की। तब राजा दशरथ ने कुछ वाक्य कहे ॥ ६४२ ॥

हे राम, कैकेयी के वचन से मेरा हृदय भस्म हो गया था, फिर तुम्हारे वियोग से मैंने देह त्याग दी। अष्टावक्र ऋषि ने जिस प्रकार अपने पिता का उद्धार किया था, हे राम, उसी प्रकार तुम्हारे प्रसाद से मैं स्वर्ग में वास कर रहा हूँ। देवता आपस में बातें करते रहते हैं, सभी कुछ मैं सुनता रहता हूँ कि दशरथ के घर में चक्रपाणि ने जन्म लिया है। देवता लक्ष्मण का गुण बखानते रहते हैं। जैसी सेवा लक्ष्मण ने राम की की है वैसी कोई नहीं कर सकता। अयोध्या के निवासी धन्य होंगे। तम राजा बनकर सबका

जानकीर चरित्रे आमार चमत्कार ※ शुद्ध ह'ये करिलेन कुलेर उद्धार
भरत कनिष्ठ भाइ प्राणेर सोसर ※ आमा तुल्य ताहारे पालिबे बहुतर
बलिल तोमारे जे कैकेयी कुवचन ※ माता-पुत्रे दुइजने करेछि वर्ज्जन६४३
एतेक बलेन जदि राजा दशरथ ※ कृताञ्जलि श्रीराम कहेन ताँर मत
मम दु:खे भरत जे ह'येछे दु:खित ※ तारे तव वर्ज्जा आर ना हय उचित
भरतेरे वर देह देव-बिद्यमान ※ ताहाते हइबे तृप्त, जुड़ाइवे प्राण
रामेर बचने राजा करेन विधान ※ भरतेर श्राद्ध मम अमृत-समान
भरतेरे वरदान देबगण शुने ※ आलिंगने तुषिलेन आत्मज लक्ष्मणे
करिया रामेर सेबा पाइले उद्धार ※ घुषिबे तोमार जस सकल संसार
बलेन सीतार प्रति प्रबोध-बचन ※ आमार बचने तुमि संवर क्रन्दन
दशमास छिले माता राक्षसेर घरे ※ तेंइ से तोमाय राम देशे निते नारे
हइला गो अग्निशुद्धा, देवलोक जाने ※ श्रीरामेर सह जाह आपनार स्थाने
जे कामिनी शुनिबेक तोमार चरित्र ※ सर्ब्बपाप घुचिबेक, हइबे पवित्र
देब-रथे चड़ि राजा देब-वेश धरि ※ पुत्रबधु सान्त्वाइया जान स्वर्गपुरी६४४

पालन करोगे। जानकी के चरित्र से मैं आश्चर्यचकित हो रहा हूँ, उसने अपने को शुद्ध सिद्ध कर वंश का उद्धार किया है। छोटा भाई भरत प्राणों के तुल्य है। उसको मेरे समान ही पालो-पोसोगे। जिस कैकेयी ने तुमको कुबोल बोले थे उन दोनों माँ-बेटे का मैंने त्याग कर दिया ॥ ६४३ ॥

जब राजा दशरथ ने इतना कहा तो हाथ जोड़ कर श्रीराम ने अपना अभिमत प्रगट किया। मेरे दु:ख से भरत दुखी हुआ है, इसलिए अब उसका वर्जन करना आपके लिए उचित नहीं है। देवताओं के सम्मुख भरत को वर दें जिससे मेरे मन को सन्तोष और तृप्ति मिले। राम के कहने पर राजा ने यह विधान दिया कि भरत का श्राद्ध मेरे लिए अमृत के समान होगा। भरत के प्रति वरदान सभी देवताओं ने सुना। अपने आत्मज लक्ष्मण को उन्होंने गले लगा कर सन्तुष्ट किया। और बोले, राम की सेवा कर तुमको निस्तार मिला तुम्हारा यश सारा संसार गायेगा। इसके बाद वे सीता के प्रति (दशरथ) सान्त्वना की बात करने लगे। हे पुत्री मेरे कहने पर तुम अपना रोना बन्द करो। हे पुत्री तुम दस महीने राक्षस के घर में रहीं, इसी कारण राम तुमको घर नहीं ले जा रहे थे। तुम अग्नि द्वारा शुद्ध हो गई यह देवता लोग जानते हैं, श्री राम के साथ तुम अब अपने स्थान जाओ। जो भी नारी तुम्हारी चरित्र-कथा सुनेगी उसके सारे पाप धुल जाएँगे और वह पवित्र हो जाएगी। इतना कह कर देव-वेश पहने हुए राजा देव-रथ पर सवार हो, पुत्रवधू को सान्त्वना देने के उपरान्त स्वर्ग चले गये ॥ ६४४ ॥

इन्द्र कर्त्तृक वानरगणेर जीवन-दान

हइल राक्षस क्षय, हृष्ट पुरन्दर ※ बलिलेन रामचन्द्रे, माग तुमि बर
देबे रक्षा करिला मारिया दशानन ※ बर माग, व्यर्थ राम, ना हबे बचन४५
श्रीराम बलेन, इन्द्र यदि दिबे बर ※ तव बरे जीये उठुक मृत जे बानर
धन-जन ना दिलाम, नहे भूमि-गाँति ※ एड़िया स्त्रीपुत्र एल आमार संहति
हृता सीता पाइलाम, हइलाम सुखी ※ बानरेर भार्य्या-पुत्र केन हबे दुःखी
एत जदि इन्द्रेरे बलेन रघुनाथ ※ बलिछेन पुरन्दर करि जोड़हात
भुबनेर नाथ तुमि स्वयं नारायण ※ मारिया जीयाते पार ए तीन भुबन
तुमि जान आपना, तोमारे जाने के ※ मरिया ना मरे, तव नाम जपे जे
आपनि चाहिले बर के करिबे आन ※ रूपे बेशे सबे होक देबता समान४६
इन्द्रेर आज्ञाय मेघ अमृत संचारे ※ सुधाबृष्टि हय मृत बानर-उपरे
काटा हात, काटा पद, सब लागे जोड़ा ※ चारिद्वारे उठे सैन्य दिया गात्रझाड़ा
जे बानर पड़ियाछे राक्षसेर रणे ※ मार मार करि उठे जुद्ध करि मने
कुम्भकर्ण मार बलि केह डाक छाड़े ※ इन्द्रजिते मार बलि केह डाक पाड़े

इन्द्र द्वारा वानरों का प्राण-दान

राक्षसों का नाश हुआ तो पुरन्दर (इन्द्र) अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन्होंने रामचन्द्र से कहा, वर माँगो : दशानन को मार कर तुमने देवताओं की रक्षा की ! राम, तुम वर माँग लो तुम्हारी याचना व्यर्थ नहीं जायगी ॥ ६४५ ॥

श्री राम ने कहा, हे इन्द्र ! यदि वर ही देना है तो तुम्हारे वर से सारे मृत वानर जी उठें। न तो उनको मैंने धन-दौलत दी और न जमीन-जायदाद, वे अपने बाल-बच्चों को पीछे छोड़ कर मेरे संग चले आए। चुरायी हुई सीता को पाकर मैं सुखी हुआ। तब वानरों की स्त्रियाँ और उनके बच्चे क्यों दुखी हों। जब रघुनाथ ने इन्द्र से इतना कहा तो इन्द्र ने हाथ जोड़कर कहा, तुम स्वयं नारायण हो, संसार के नाथ हो, मार कर इन तीनों लोकों को फिर से जिला सकते हो। तुम स्वयं अपने बारे में जानते हो, तुमको कौन जान सकता है, तुम्हारा नाम जप करने पर मरने वाला भी जी उठता है। स्वयं ही तुमने वर माँगा अब इसको कौन अन्यथा कर सकता है। ये लोग रूप और वेश में देवता के समान बन जायें॥ ६४६ ॥

इन्द्र की आज्ञा से मेघ अमृत बरसाने लग गया, मृत वानरों पर सुधा-वृष्टि हुई। कटे हाथ, कटे पैर सभी जुड़ गये, चारों द्वारों पर मरी पड़ी हुई वानर सेना बदन झटक कर उठ खड़ी हुई। जो वानर राक्षसों से लड़ता हुआ मरा था वह उठते ही युद्ध समझकर मार-मार करने लग जाता। कोई तो हाँक लगाता कि कुम्भकर्ण को मार डालो तो कोई चिल्लाने लगता, इन्द्रजीत

देबान्तक नरान्तक मार रे त्रिशिरा ※ रावनेरे मारो झाट परनारी चोरा
उन्मत्त पागल सबे हैल रणस्थले ※ इष्ट-मित्र बुझाय चापिया धरि कोले
कारे मार, कारे काट, किसेर संग्राम ※ हइल राक्षस नाश, शत्रुजयी राम
श्रीरामेर बामे देख जानकी सुन्दरी ※ देबगणे देख हेथा, एइ स्वर्गपुरी
हरिषेर कथा जदि शुनिल बानर ※ माथा नोङाइल गिया रामेर गोचर
त्रिभुवने नाहि देखि तोमार समान ※ मरिया प्रसादे तब पाइ प्राणदान
तोमा हेन प्रभु जेन पाइ जुगे जुगे ※ सेवा करि थाकि हे तोमाय राखि आगे
मरिल बानर जत, पेल प्राणदान ※ जिज्ञासा करेन राम देव-विद्यमान४७
राम बले देवराज, जिज्ञासि तोमारे ※ एक कथा सन्द बड़, आमार अन्तरे
उभय दलेते युद्ध हइल बिस्तर ※ पड़िल उभय सैन्य राक्षस-बानर
उभय सैन्येते हैल सुधा-बरिषण ※ बानरेर मृतदेह पाइल जीवन
अतएव जिज्ञासा हे करि तब स्थाने ※ प्राणदान राक्षसे ना पायकि कारणे४८
इन्द्र बले राक्षसे ना पाइल जीवन ※ इहार बृत्तान्त शुन कमललोचन
'रावणेरे मार' बलि कपिगण मरे ※ उद्धार पाइबे बल कि नामेर जोरे
'रामे मार' शब्द करि मरेछे राक्षसे ※ राम-नाम करे मरि गेछे स्वर्गबासे

को मार डालो। देवान्तक, नरान्तक, त्रिशिरा को मार डालो, परनारी चुराने वाले रावण को झट मार डालो। सभी रणभूमि पर बावले से हो गये, इष्टमित्र उनको बाहों में बाँधे समझाने लग गये। किसको मार रहे हो, किसको काट रहे हो, युद्ध भी कैसा है, राक्षसों का नाश हो गया है, राम शत्रु पर विजय पा चुके हैं। देखो श्री राम के बाएँ सुन्दरी जानकी बैठी हैं, देवताओं को देखो, यहीं स्वर्गपुरी बन गयी है। जब वानरों ने यह हर्षभरी बात सुनी तो सभी जाकर राम के सम्मुख सिर झुका कर खड़े हो गये। त्रिभुवन में तुम्हारे समान किसी को नहीं देख पाता हूँ। तुम्हारे प्रसाद से मर कर भी प्राण मिल गया। युग युग में तुम जैसा ही प्रभु मिले, तुमको सामने बिठा कर सदा तुम्हारी सेवा करता रहूँ। जितने वानर मर गये सभी को प्राण मिल गये। तब राम ने देवताओं की उपस्थिति में पूछा ।।६४७।।

राम ने कहा, देवराज, तुमसे पूछता हूँ। एक बात में मुझे बड़ा सन्देह है। दोनों दलों में काफी युद्ध हुआ राक्षस-वानर दोनों के सैन्य गिरे। तुमने सभी के ऊपर अमृत वर्षण किया। असंख्य वानर प्राण पाकर उठ खड़े हुए। अत: तुमसे यह पूछता हूँ कि किस कारण राक्षसों को प्राण नहीं मिले ।। ६४८ ।।

इन्द्र ने कहा, हे कमल-लोचन राम, राक्षसों को क्यों प्राण नहीं मिला इसका विवरण सुनो। 'रावण को मारो' कह कर वानर मर गये इसलिए किस नाम के बल पर उनको मुक्ति मिल सकती थी। 'राम को मारो' यह

श्रीराम बलिया प्राण वाहिराय जार ※ अक्लेशे वैकुंठे जाय पाइया उद्धार
मुक्तिपद पाइयाछे रामनाम गुणे ※ उद्धार पाइया गेछे बाँचिबे केमने
इन्द्र बलिलेन, सबे जाह निजबास ※ एतदिने सबाकार पूर्ण अभिलाष
चौद्दबर्ष वने, दशमास उपवास ※ श्रीराम जानकी दोंहे हउक सम्भाष
अविराम संग्रामेते ना छिल विश्राम ※ विश्राम करह राम जाइ स्वर्गधाम
श्री रामे सीतारे तबे करि समर्पण ※ देवगण चलिलेन आपन भवन ६४९
जखन जे कर्म्म, ताहा विभीषण जाने ※ एगार-श बृहन्दे नेतेर कापड़ टाने
कांचन-निर्मित घर अपूर्ब्ब-गठन ※ रत्न-सिंहासने पाते नेतेर वसन
उपरे चाँदोया दोले, खाटे शोभे तुलि ※ घर शोभा करे, जेन पड़िछे बिजली
स्वर्णमय प्रदीप ज्वलिछे चारिभित ※ पारिजात-पुष्प पाते, गन्धे आमोदित
बिश्व व्याप्त करे गन्धे एक पारिजाते ※ एकलक्ष पारिजात सिंहासने पाते
बिभीषण आपनि जे रहिल प्रहरी ※ आबासेर बाहिरे बानर सारि-सारि
बैकुंठ छाड़िया लक्ष्मी हैल अवतार ※ सीता-सह राम प्रवेशेन से आगार

शब्द कह कर राक्षस मरे, राम का नाम लेकर मरने के कारण वे सीधे स्वर्ग गये। श्री राम का नाम लेकर जिसके प्राण चले जाते हैं वह अनायास ही मुक्त होकर वैकुंठ चला जाता है। राम नाम के गुण से वे मुक्त हो गये हैं। जब वे उद्धार हो चुके हैं तो फिर जिएँगे कैसे। इन्द्र ने कहा, सब लोग अपने अपने निवास स्थानों को चले जाओ; इतने दिनों में सभी अभिलाषाएँ पूर्ण हुईं; चौदह वर्ष वन में फिर दस महीने से उपवास चल रहा है। श्री राम और जानकी आपस में बातें करें। अविराम संग्राम में आराम नहीं कर सके। राम अब तुम आराम करो, मैं स्वर्गधाम जाता हूँ। सारे देवता श्री राम के हाथों में सीता को सौंप कर अपने अपने भवन के लिए चल दिए॥ ६४९॥

जिस समय जो कार्य करना चाहिए वह विभीषण को ज्ञात है। ग्यारह सौ बृहन्दों ने रेशमी कपड़ा तान दिया। अनोखे आकार का कांचन-निर्मित भवन बना। रत्न-सिंहासन पर रेशमी कपड़ा बिछाया गया। ऊपर चँदवा है तो नीचे पलंग पर रुई भरी तोशक है। कमरा यों शोभायमान है मानों बिजली की आभा पड़ रही हो। चारों ओर स्वर्णमय दीपक जल रहे हैं। पारिजात पुष्प बिछाये गये जिनकी सुगन्ध से चारो दिशा महमहाने लगीं। एक पारिजात की गन्ध से विश्व भर महमहा उठता है, वैसे एक लाख पारिजात सिंहासन पर बिछाये गये। विभीषण स्वयं प्रहरी बना रहा और आवास के बाहर वानर भी कतारों में खड़े रहे। वैकुंठ छोड़ कर लक्ष्मी ने अवतार लिया। सीता के साथ राम ने उस गृह में प्रवेश किया। श्री राम के बगल में सीता जी बैठीं जिस प्रकार श्रीपति के बगल में लक्ष्मी

श्रीरामेर पाशे बसिलेन ठाकुराणी ❋ श्रीपतिर पाशे लक्ष्मी जेमन, तेमनि
राम-सीता दुइजने बसि सिंहासने ❋ पूर्ब्बदुःख स्मरिया बिषण्ण दुइजने ६५०
श्रीराम बलेन प्रिय तोमार बिच्छेदे ❋ जे दुःख पेयेछि, से कहिते मरि खेदे
तुमि धन, तुमि प्राण, तुमि से जीवन ❋ तोमार विरहे शून्य देखि त्रिभुवन
दश मास तोमार बदन-अदर्शने ❋ डुबेछिनु अन्धकारे मानि इहा मने
सुधाकरे ज्ञान करिताम दिवाकर ❋ तापभये न ह'ताम ताहार गोचर
भ्रमर-झंकार आर कोकिलेर ध्वनि ❋ शुनिले हइत ज्ञान, दंशे जेन फणी
जानकी पाइब आमि सागर-बन्धने ❋ ए आशाय प्राण राखियाछि एतदिने
पूर्व्वे जत दुःख पाइलेन देबी सीता ❋ रामेरे कहेन ताहा ह'ये हर्षान्विता
उभयेर मनेते वेदना जत छिल ❋ परस्पर आलापे सकल दूरे गेल ५१

विभीषण कर्त्तृक वानरगणेर सन्तोष-विधान

प्रभात हइल निशा, उदित भास्कर ❋ एके-एके सवे गेल रामेर गोचर
चतुर्द्दिके दाँड़ाइल शाखामृग गण ❋ योड़हात करि बले राजा बिभीषण
बहुकाल अनाहार, बहु पर्यटन ❋ करिया हयेछे श्रान्त श्रीरघुनन्दन

बैठती हैं। सिंहासन पर बैठ कर राम सीता दोनों पूर्वदुःख का स्मरण कर विषादमग्न हो गये ।। ६५० ।।

श्री राम ने कहा, प्रिये, तुम्हारे विरह में इतना क्लेश मिला कि कहने में भी कष्ट हो रहा है। तुम ही धन हो, तुम ही प्राण हो और तुम ही जीवन हो। तुमसे बिछुड़कर तीनों लोकों को मैं सूना देखने लगा। दस महीने तक तुम्हारे मुख के अदर्शन से मैं अन्धकार में डूबा हुआ था। सुधाकर (चन्द्र) दिवाकर (सूर्य) सा लगता था और उत्ताप के डर से मैं उसके सम्मुख नहीं जाता था। भौंरों की झंकार और कोयल की कूक यों लगती थी मानों नागिन ने डस लिया हो। सागर को बाँधने के बाद जानकी मिल जायगी इसी आशा में इतने दिनों तक मैंने अपने प्राण बचा रखे। सीता देवी ने इससे पूर्व जितना दुःख भोगा था, उसका वर्णन वे राम से हर्षमग्न होकर करने लगीं। दोनों के मन में जितनी पीड़ा थी वह सब परस्पर बातचीत से दूर हो गई ।। ६५१ ।।

विभीषण द्वारा वानरों को सन्तुष्ट करना

रात्रि बीत गई, प्रभात हुआ, सूर्य उदित हुआ। एक-एक कर सभी राम के निकट गये। चारों ओर वानर खड़े हो गयें। राजा विभीषण ने हाथ जोड़ कर कहा, बहुत दिनों से अनाहार चल रहा है और बहुत परिश्रम करने से हे रघुनन्दन तुम थक गये हो। दासियाँ तुम्हारी परिचर्या करें।

करुक तोमार परिचर्या दासीगण ※ आनुक कस्तुरी आर सुगन्धि-चन्दन
दूर्व्वादल-श्याम तनु हयेछे समल ※ से मल करिया दूर करुक निर्म्मल
सहस्र युवती-कन्या आछे मम पाश ※ करिया तोमार सेवा पुराउक आश
श्रीराम वलेन, ओहे राक्षसाधिपति ※ आमार बचन तुमि कर अवगति५२
लोके वले, विभीषण, तुमि धर्म्ममय ※ परनारी-चोर तुमि, मम मने लय
परपत्नी नाहि देखि नयनेर कोने ※ स्पर्शसुख दूरे थाक्, ना चाहि नयने
कोटि-कोटि देवकन्या एकठाँइ करि ※ सीता-तुल्य तार केह ना हय सुन्दरी
राजकुले जन्मिया भरत भाइ सुखी ※ केवल आमार दुःखे हये आछे दुःखी
हेन भरतेरे अग्रे करि आलिंगन ※ तवे से परिव वस्त्र सुगन्धि-चन्दन
चौद्द-वर्ष भ्रमिलाम वहु क्लेशे ※हेन युक्ति कर, जेन झाट जाइ देशे६५३
विभीषण वले, प्रभु, पेले वड़ क्लेश ※ एकदिन मध्ये तुमि जावे निजदेश
कुबेरेर रथ जे, पुष्पक तार नाम ※ एकदिने तोमारे लइबे निज धाम
एक दान चाहि आमि, वितर सम्प्रति ※ किछुदिन लंकापुरे करह बसति
सकल सैन्येर प्रभु करिव सेवन ※ लंकामध्ये भोग भुंजि करह गमन५४

कस्तूरी और सुगन्धित चन्दन ले आवें। तुम्हारा दूर्वादल सा साँवला तन मलिन पड़ गया है, उस मल को दूर कर वे निर्मल बना दें। मेरे निकट हजार-हजार युवती कन्याएँ हैं, तुम्हारी सेवा कर वे अपनी साध पूरी कर लें ॥ ६५२ ॥

श्री राम ने कहा, हे राक्षसों के अधिपति विभीषण, मेरा वचन सुनो। लोग कहते हैं कि विभीषण तुम धार्मिक हो लेकिन मेरा मन कहता है कि तुम पर-नारी-चोर हो। मैं नैनों के कोर से भी पर-पत्नी को नहीं देखता, उनका स्पर्श सुख पाना तो दूर उनकी ओर आँखें उठा कर भी नहीं देखता हूँ। करोड़ों देवकन्याओं को यदि एक स्थान में एकत्रित किया जाय तो भी सीता के समान एक सुन्दरी नहीं मिलेगी। राजवंश में जन्म लेकर भाई भरत सुखी है किन्तु मेरे दुःख से वह दुखी बना हुआ है। ऐसे भरत के साथ पहले आलिंगन कर फिर मैं वस्त्र और सुगन्धित चन्दन धारण करूँगा। चौदह वर्ष पथ-पथ भटकता रहा, कितने ही नद नदी सागर पार किये। ऐसी व्यवस्था करो कि मैं झट देश पहुँच जाऊँ ॥ ६५३ ॥

विभीषण ने कहा, प्रभु तुमने बड़े दुःख झेले। तुम एक दिन में अपने देश पहुँच जाओगे। वह कुबेर का रथ है—जिसका नाम है पुष्पक। वह तुमको एक दिन में अपने घर पहुँचा देगा। तुमसे एक दान माँगता हूँ, दे दो। कुछ दिन लंकापुरी में वास करो। हे प्रभु मैं सारे सैन्य की सेवा करूँगा। लंका में रह कर कुछ सुख भोग कर फिर जाना ॥ ६५४ ॥

श्रीराम वलेन, प्रीत हइनु तोमाते ※ बिलम्ब ना कर तुमि आमारे तुषिते
आहार ना करे जारा, मरण ना गणे ※ हेन वानरेर प्रीति भालबासि मने
सुगन्धि चन्दन कपिगणे देह दान ※ भुंजाइया नाना भोग करह सम्मान
वानर-प्रसादे तुमि लंकापुरे राजा ※ भालमते कर तुमि वानरेर पूजा६५५
पाइया रामेर आज्ञा राज ब्रिभीषण ※ नाना सुखे स्नान कराइल कपिगण
स्वर्णखाटे बानर बसिल सारि सारि ※ स्नानद्रव्य लइया आसिल विद्याधरी
देव-दानवेर कन्या गन्धर्व्व रूपसी ※ देखिया सवार मुखे नाहि धरे हासि
कंकन-झंकार आर अँगेर सुगन्ध ※ पाइया वानरगण सकले सानन्द
दिव्य नारायण-तैल सुगन्धि चन्दन ※ हाते हाते माखे सवे आनन्दे मगन
स्नान करि परे सवे विचित्र वसन ※ गलाय पुष्पेर माला, नाना आभरण
लंकार सामग्री जत भुवनेर सार ※ राजार आज्ञाय द्रव्य आने भारे भार
अपूर्व्व से भक्ष्य-द्रव्य, दिव्यनारी ताय ※ स्वर्णथाले परिबेषे, बानरेरा खाय
क्षीर लाड़ु पाँपड़ मोदक राशि राशि ※ पाका काँटालेर कोष खाय सबे चुषि
मधु पिये कपिगण भरि स्वर्णगाड़ु ※ गाल भरि कपिगण खाय झाल-लाड़ु
झाल-लाड़ु खाइते दु चक्षेते पड़े लोह ※ वाप-मा मरिले जेन पाइलेक मोह
गला आँचड़ाय केह, करे थो थो ※ बुड़ा बुड़ा कपि बले, हात बाड़िये थो

श्री राम ने कहा, मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ। मुझको प्रसन्न करने में तुम देर नहीं लगाते हो। जो लोग भोजन नहीं करते, मृत्यु की परवाह नहीं करते ऐसे वानरों के प्रति मेरा प्रेम सर्वाधिक है। सुगन्धित चन्दन वानरों को दो और विभिन्न प्रकार की विलास-सामग्रियों से तुष्ट कर उनका सम्मान करो। वानरों के कारण ही तुम आज लंकापुरी के राजा बने हो इसलिए अच्छी तरह से वानरों की पूजा करो॥ ६५५ ॥

राम की आज्ञा पाकर राजा विभीषण ने वानरों को विभिन्न सुख देते हुए स्नान कराया। सोने के खाट पर वानर पंक्तियों में बैठ गये। विद्याधरियाँ स्नानद्रव्य ले आईं। देव-दानव और गन्धर्व की रूपवती कन्याओं को देखकर सभी के चेहरे हँसी से चमक उठे। कंगन की झंकार और अंग की सुगन्ध पाकर सभी वानर आनन्द से विभोर हो गये। दिव्य नारायण-तैल और सुगन्धित चन्दन लेकर आनन्द से मग्न होकर अपने बदनों पर चुपड़ने लगे, स्नान करने के उपरान्त सभी ने विचित्र वस्त्र पहने, गले में फूल-माला और अन्य आभूषण धारण किये। लंका की वे सारी सामग्रियाँ जो कि संसार में सर्वश्रेष्ठ हैं, राजा की आज्ञा से ढेर के ढेर आने लगीं। वह भोजन-सामग्री भी अनोखी है और उनको स्वर्ण की थालियों में परोसने-वाली भी दिव्य नारियाँ हैं। वानर खाने लगे। खीर, लड्डू, पापड़, मोदक पर्याप्त मात्रा में। वे पके हुए कटहल के कोये चूसने लगे।

सोनार डावरे तारा करे आचमन ※ रतन-बाटाय करे ताम्बुल भक्षण
रतन-सिंहासने तारा करिल शयन ※ पदसेवा करिते आइल कन्यागण
स्वर्णखाटे शुइल वानर शय्या मेले ※ दश-दश दिव्यनारी प्रत्येकेर कोले
रावण हरियाछिल जतेक नागरी ※ कालवशे तारा शेषे वानरेर नारी
सुखेते वंचिल निशा निशाचर-पुरे ※ निशा ना प्रभात हय भाविछे अन्तरे
से आशाय निराश हइल कपिगण ※ पूर्व्वदिके चेये देखे, उदित तपन
आइल वानरगण श्रीराम-गोचर ※ प्रणाम करिया कहे, शुन रघुबर
तुमि हेन ठाकुर हइओ जुगे जुगे ※ सदा सेवा करि जेन तव पदनुगे
जे सुखे छिलाम कल्य करि निवेदन ※ वड़ प्रीत कराइल राज विभीषण
कन्यागुलि लये करि देशेते गमन ※ एइ आज्ञा कर प्रभु कमल-लोचन
आज्ञा कर, लंकाय आरो थाकि दुई मास ※ वानरेर कौतुकेते श्रीरामेर हास६५६
श्रीराम वलेन शुन मित्र विभीषण ※ कन्यादान करि तुमि तोष कपिगण

सोने की गड़ई भर-भर कर वानर मधु पीने लगे। मिर्च पड़े लड्डू वानर मुँह भर-भर कर खाने लगे। कड़वे लड्डू खाकर उनकी आँखों से आँसू गिरने लगे मानों माता-पिता के मरने से शोकग्रस्त हो गये हों। कोई तो गला खुजलाने लगा तो कोई "थुह-थुह" करने लगा तो बड़े-बूढ़े वानरों ने कहा कि उनको हाथ बढ़ाकर अलग रख दो। सोने की चिलमची से उन्होंने अपने मुँह हाथ धोये। रत्न निर्मित पानदान से पान खाये और रत्न-सिंहासन पर लेट गये। उनकी पदसेवा करने के लिए कन्याएँ आईं। सोने के पलंगों पर वानरों के बिस्तर बिछाये गये। हर एक की सेवा में दस-दस दिव्य-नारियाँ लग गईं। रावण ने जितनी नारियों का हरण किया था कालवश वे सभी अब वानरों की नारियाँ बन गईं। निशाचरों की नगरी में वानरों की रात्रि सुखपूर्वक बीती। वे मन ही मन सोचने लगे कि रात समाप्त न हो। किन्तु कपि निराश हुए, पूरब की ओर ताक कर देखा कि सूरज निकल आया है। वानर श्री राम के पास आए और प्रणाम कर कहने लगे, हे रघुवर सुनो—तुम जैसा ही प्रभु हमें युग-युग में मिले, सदा हमें तुम्हारे चरणों की सेवा करने को मिले। हम निवेदन करते हैं कि कल हम लोग बड़े सुख से रहे। राजा विभीषण ने हमलोगों को बड़ा प्रसन्न कर दिया। हे कमल-लोचन प्रभु ऐसी आज्ञा दो कि हम इन कन्याओं को लेकर देश लौट चलें या यह आज्ञा दो कि लंका में और दो महीने रह जायें। वानरों का कौतुक देखकर श्रीराम हँसने लगे ॥ ६५६ ॥

श्रीराम ने कहा, मित्र विभीषण सुनो, इन कन्याओं का दान कर

वानरेर प्रसादे लंकाय हैला राजा ※ भालमते कर तुमि वानरेर पूजा६५७
पाइया रामेर आज्ञा राजा बिभीषण ※ दिल नाना-रत्न गज-मुकुता कांचन
बसन-भूषण कत दिलेक माणिक ※ कुबेरेर धन बुझि ना हबे अधिक
नानाद्रव्ये बानरेर करिल सम्मान ※ समान-बयस-वेश कन्या करे दान
अन्य दाने नाहि गणे आनन्द तेमन ※ कन्यादाने यथा हय हृष्ट कपिगण
एकैक बानरे पेये दश दश नारी ※ निवेदन करे, प्रभु, देशे जात्राकरि६५८

श्रीरामेर स्वदेश जात्रा

आनिल पुष्पक-रथ देव-अधिष्ठान ※ तदुपरि आओयास कुठरि स्थाने-स्थान
रथ दश-योजन थाकये सर्व्वक्षण ※ वाड़िते चाहिले हय से कोटि-योजन
पुष्पक-रथेते वहु राजहंस जोड़े ※ चक्षुर निमिषे रथ योजनेक पड़े
चड़ेन पुष्पके राम सीता कुतूहले ※ मुख ढाकिलेन सीता नेतेर अंचले
सुमित्रा नन्दन वीर चड़िलेन ताते ※ एकपाशे रहिलेन धनुर्व्वाण हाते६५९
रथोपरि श्रीराम, भूमिते सैन्य गण ※ प्रसन्न बदने राम कहेन बचन

कपियों को तुष्ट करो। वानरों की कृपा से तुम लंका के राजा बने। अच्छी तरह से वानरों की पूजा करो ॥ ६५७ ॥

राम की आज्ञा पाकर राजा विभीषण ने गज-मोती तथा विभिन्न रत्न और कांचन दिये। वस्त्र, आभूषण और माणिक इतने दिये कि कुबेर के पास भी इससे अधिक धन न होगा। विभिन्न द्रव्यों से उसने वानरों का सम्मान किया। समान अवस्था वाली कन्याएँ भी दान में दीं। वानर अन्य दान से उतने हर्षित नहीं हुए जितना कन्या-दान से। एक-एक वानर को जब दस-दस नारियाँ मिल गईं तो उसने निवेदन किया, हे प्रभु अब देश जाने की आज्ञा मिल जाय ॥ ६५८ ॥

श्री राम की स्वदेश-यात्रा

देवता पुष्पक रथ ले आए। उस रथ पर जगह-जगह विभिन्न कमरे बने हैं। यह रथ सदा दस-योजन की गति से चलता है, गति बढ़ाने पर तो वह कोटि-योजन की गति से भी चलने लगता था। पुष्पक रथ में बहुत से राजहंस जोते गये और पलक झँपते ही रथ एक योजन आगे बढ़ गया। राम-सीता कौतूहल से पुष्पक रथ पर सवार हुए, रेशमी आँचल से सीता ने मुँह ढाँप लिया। वीर सुमित्रा-नन्दन भी रथ में चढ़े और एक किनारे धनुष-बाण हाथ में लिये बैठ गये ॥ ६५९ ॥

रथ के ऊपर श्री राम और भूमि पर सारी सेना खड़ी है। राम ने प्रसन्न-वदन होकर कहा, सुग्रीव की शक्ति, वानरों का स्वार्थत्याग और विभीषण

सुग्रीवेर शक्ति आर बानरेर हानि ※ गुणे विभीषणेर दुर्ज्जय लंकाजिनि
सर्व्व सेनापतिर करिब गुणगान ※ सर्व्वकार्य सिद्धि मोर कैल हनुमान
आपनार देशे गिया कर अधिकार ※ मेलानि मागिनु आमि करि परिहार
राक्षसे बानरे राम दिलेन मेलानि ※छल-छल करिया पड़िछे चक्षे पानि६६०
जोड़हाते वले निशाचर कपिगणे ※ श्रीराम हइबे राजा देखिब नयने
कौशल्यार चरणे करिव प्रणिपात ※ चारि भाइ तोमरा देखिब एक साथ
ए चक्षे ना देखिलाम तोमार सम्मान ※विदाय करिले नाहि जाब निजस्थान६६१
श्रीराम बलेन इथे बड़इ आनन्द ※ अयोध्याय जाबे जदि, चलह स्वच्छन्द
देशे तोमा-सवार जाइते नाहि चिते ※ जे जावे से चड़ एसे ए पुष्पक रथे
पाइया रामेर आज्ञा राक्षस-वानर ※ लाफे लाफे चड़े गिया रथेर उपर
रथोपरे दिव्य दिव्य वहु बाड़ी बेड़ा ※ एकैक बानरे करे दश बाड़ी जोड़ा
जेइ कपि पाइयाछे दश-दश नारी ※ सेइ कपि जोड़े गिया दश-दश वाड़ी
बने डाले बेड़ाइत जारा जूथे जूथे ※ देबकन्या लइया चड़िल गिया रथे६६२
तिनकोटि राक्षसे चलिल बिभीषण ※ रथेर एक कोने गिया रहिल तखन

के गुण से मैंने लंका पर विजय प्राप्त की। मैं सभी सेनापतियों का गुण बखानता हूँ। मेरे सारे कार्यों को हनुमान ने सफल किया है। अपने देश जाकर अपना अधिकार जताओ। मैं तुम लोगों से विदा-प्रार्थना करता हूँ। राक्षस और वानरों से राम ने विदा ली, उनकी सजल आँखों से आँसू गिरने लगे ।। ६६० ।।

तब हाथ जोड़ कर निशाचर और कपि कहने लगे, श्री राम राजा होंगे यह हम अपनी आँखों से देखेंगे। हम कौशल्या के चरणों में प्रणाम करेंगे। तुम चारों भाइयों को एक साथ देखेंगे। इन आँखों से हमलोग आपका राज्याभिषेक नहीं देख सके इसलिये यदि आप मुझे विदा भी दे दो तो भी हमलोग अपने-अपने स्थानों को लौट कर नहीं जायेंगे ।। ६६१ ।।

श्री राम ने कहा, इसमें बड़ा ही आनन्द है। अगर अयोध्या ही जाना है तो प्रसन्नता पूर्वक चलो। यदि देश लौट जाने की इच्छा तुमलोगों में नहीं है, तो जो भी साथ चलना चाहते हों आकर पुष्पक रथ पर सवार हो जायें। श्री राम की आज्ञा पाकर राक्षस-वानर कूद-कूद कर रथ पर चढ़ गये। रथ के ऊपर काफी घर और कमरे बने थे। एक-एक बन्दर ने दस-दस मकान घेर लिया। जिन-जिन वानरों को दस-दस नारियाँ मिली हुई हैं उन्होंने जाकर दस-दस मकानों पर कब्जा कर लिया। जो लोग जत्थों में जंगलों में डालियों पर घूमा फिरा करते थे वे देवकन्याओं को लेकर रथ पर सवार हुए ।। ६६२ ।।

तीन करोड़ राक्षसों को साथ लेकर विभीषण चल पड़े और रथ के एक

चड़िल छत्रिश-कोटि राक्षस-वानर ※ एतेक चड़िल गिया रथेर उपर
सीता उद्धारिया राम जान निजदेशे ※ लंकाकांड रचिल पंडित कृत्तिवासे ६६३

लक्ष्मण कर्त्तृक सेतुभंग

नेतेर कानात् दिया घेरिल चोउरि ※ तार मध्ये रहिलेन रामेर सुन्दरी
श्वेतबर्ण राजहंस पवनेर गति ※ रथे आनि जुड़िलेक करि पाँति पाँति
लइया पुष्पक रथ राजहंस उड़े ※ चक्षुर निमिषे रथ योजनेते पड़े
पबन-गमने रथ जाय जथा-जथा ※ सीतारे कहेन राम संग्रामेर कथा ६६४
उठिल पुष्पक रथ गगन-मंडल ※ सीतारे देखान राम संग्रामेर स्थल
रणस्थली सीता, तुमि देख भालमते ※ रांगा हैल वानर ओ राक्षस-शोणिते
एइखाने कुम्भकर्ण हइल निधन ※ इन्द्रजित एखाने पड़िल करि रण
हेथा पड़िलाम नागपाशेर वन्धने ※ नागपाशे मुक्त हैनु गरुड़-दर्शने
पड़िल लक्ष्मण हेथा रावणेर शेले ※ औषध आनिल हनू सुषेणेर बोले
पड़िल रावण हेथा जगतेर वैरी ※ एइस्थाने कान्दिल से राणी मन्दोदरी
शोन सीता, सागरेर कल्लोल भीषण ※ मम पूर्व्वपुरुषेते करिल खनन

कोने में ही समा गये। कुल छत्तीस करोड़ राक्षस और वानर रथ पर जाकर चढ़ गये। सीता का उद्धार कर राम अपने देश जा रहे हैं। पंडित कृत्तिवास ने लंकाकांड की रचना की ॥ ६६३ ॥

लक्ष्मण द्वारा सेतुभंग

सूक्ष्म वस्त्र के परदे से एक घेरा सा बनाया गया और उसके भीतर राम की पत्नी सीता बैठीं। सफेद रंग के राजहंस जिनकी गति पवन जैसी थी उनकी पाँत लाकर रथ में जोत दी गयी। पुष्पक रथ को लेकर राजहंस उड़ चले, पलक झँपते ही रथ अनेक योजन पार कर जाता था। जब रथ वायु-वेग से चलने लगा तो राम सीता से संग्राम की बातें बताने लगे ॥ ६६४ ॥

पुष्पक रथ गगन-मंडल में चढ़ गया। राम सीता को संग्राम की भूमि दिखाने लगे। हे सीता, यह रणभूमि तुम अच्छी तरह से देख लो। यह भूमि राक्षस और वानरों के खून से लाल हो गई थी। यहीं कुम्भकर्ण का निधन हुआ। यहीं इन्द्रजीत लड़ता हुआ मरा। यहीं हमलोग नागपाश के बन्धन में पड़ गये थे। गरुड़ के दर्शन से हमलोग नागपाश से मुक्त हुए। यहीं लक्ष्मण रावण के शेल से घायल होकर गिरा और सुषेण के कहने पर हनुमान दवा ले आया था। सारे संसार का शत्रु रावण भी यहीं गिरा और यहीं रानी मन्दोदरी रोती रही। सुन रही हो सीता, सागर कैसा भीषण कल्लोल कर रहा है। मेरे पुरखों ने इसे खोदा था।

तोमार लागिया सीता, वान्धिनु जांगाल ※ उपरे पाथर हेंटे तमाल पियाल ६६५
जानकी बलेन प्रभु कमल-लोचन ※ सागर बाँधिया देशे करिला गमन
राबण आनिल मोरे ललाट-लिखन ※ विनादोषे करियाछ सागर-बन्धन
जांगाल वाहिया जे राक्षस हबे पार ※ पृथिवीते ना थाकिबे जीबेर संचार ६६६
राम-सीता दुइजने कहेन काहिनी ※ पाताले थाकिया ता सागर-देव शुनि
उठिया कहेन जोड़ करि निज हात ※ आमार बचन शुन, प्रभु, रघुनाथ
आमारे बान्धिया कैला सीतार उद्धार ※ श्रीराम, बन्धन केन रहिल आमार
तुमि जदि ना घुचाओ आमार बन्धन ※ तीन जुगे घुचाय, एमन कोन् जन
सागरेर बोले राम लक्ष्मणे नेहाले ※ लक्ष्मण लइया धनु नामिल जांगाले
धनु-हुले तिनखानि पाथर खसाय ※ करि दश योजन एकैक पथ हय
जांगाल मांगिल, जल बहे खरस्रोते ※ लाफ दिया लक्ष्मण उठिल गिया रथे
कृत्तिवास पंडितेर लंकाकांड सार ※ अनायासे सकले सागर हैल पार ६६७

सेतु-मूले शिव-पूजान्ते श्रीरामेर भरद्वाजाश्रमे गमन

श्रीराम बलेन, शुन जानकी एखन ※ शिवपूजा करि देशे करिब गमन

सीता, तुम्हारे लिए नीचे साखू और आम के लट्ठे और ऊपर पत्थर रखकर हमने इस पर सेतु बनाया ॥ ६६५ ॥

जानकी ने कहा, हे कमललोचन प्रभु, सागर को बाँध कर तुम अपने स्वदेश चले जा रहे हो। भाग्य का फेर है कि रावण मुझको ले आया। विना अपराध के ही तुमने सागर को बाँध रखा है। इस सेतु से होकर यदि राक्षस समुद्र पार चले गये तो संसार में कोई जीव नहीं बचेगा ॥ ६६६ ॥

जब राम-सीता दोनों मिलकर इस प्रकार बातें करते थे तो पाताल में स्थित रहकर सागर-देव ने यह सुन लिया। ऊपर उठ, हाथ जोड़कर उन्होंने कहा, हे प्रभु रघुनाथ मेरी बात सुनो। मुझको बाँधकर तुमने सीता का उद्धार किया फिर मेरा यह बन्धन क्यों रह गया। हे श्रीराम यदि तुमने मुझे इस बन्धन से मुक्त नहीं किया तो तीन युग में कौन ऐसा आयेगा जो मुझको इससे मुक्त करेगा। सागर के इतना कहने पर राम ने लक्ष्मण की ओर देखा। धनुष लेकर लक्ष्मण सेतु पर उतर पड़े। धनुष के सिरे से उसने तीन पत्थर खिसका दिये और दस योजन का एक रास्ता बन गया। सेतु टूट गया और तेज धारा से पानी बह निकला। छलाँग मार कर लक्ष्मण रथ पर चढ़ गये। पंडित कृत्तिवास का यह लंका-कांड तत्त्वपूर्ण है। सभी लोग अनायास सागर पार कर गये ॥ ६६७ ॥

सेतु-मूल में शिव पूजा कर श्री राम का भरद्वाज आश्रम जाना

श्री राम ने कहा, सुनो जानकी, अब शिव-पूजा कर ही स्वदेश जाऊँगा।

शिवपूजा करिते रामेर हैल मन ※ बुझिया पुष्पक-रथ नामिल तखन
गड़िया वालिर शिव दिलेन लक्ष्मण ※ हनुमान आनिलेन कुसुम चन्दन
स्नान करि वसिलेन सीता ठाकुराणी ※ जांगालेर उपरे पूजेन शूलपाणि
जांगाल-उपरे शिव स्थापिलेन राम ※से कारणे सेतुबन्ध रामेश्वर नाम६६८
पुनः राम चड़िलेन रथे कुतूहले ※ राम-सीता दुइजने स्वर्ण-चतुर्दोले
चतुर्दोले द्वारी मात्र रहेन लक्ष्मण ※ राम-सीता दोंहे हय कथोपकथन
दृष्टि कर जानकि, समुद्र तीरे हेथा ※ घर साजाइनु मोरा दिया लता-पाता
लतार वन्धन घर, पातार छाउनि ※ एक योजनेर पथ घर एक खानि
एइखाने विभीषण-सहित मिलन ※ एइखाने सागर दिलेन दरशन
किष्किन्ध्यार देख एइ गाछेर मयालि※ सुग्रीव हइल मित्र, हेथा मारि वालि
ऋष्यमूक-पर्व्वत जे अत्युच्च शिखर ※ सुग्रीव मितार घर उहार उपर६६९
सीता वलिलेन, राम, कमल-लोचन ※ ए पर्व्वते देखिनु वानर पंचजन
वस्त्र छिँड़ि फेलिलाम गात्र-आभरण ※ श्रीराम लक्ष्मण वलि करिनु क्रन्दन
लता-पाता धरि आमि रहिवार मने ※छाड़ छाड़ वलि दुष्ट चुले धरिटाने६७०

राम को शिवपूजा करने का मन है यह समझकर पुष्पक-रथ नीचे उतर आया। लक्ष्मण ने वालू से शिवलिंग वना दिया। हनुमान फूल और चन्दन ले आए। स्नान कर सीता जी भी वैठ गईं। सेतु के ऊपर शूलपाणि शिवजी की पूजा होने लगी। सेतु के ऊपर राम ने शिव जी की स्थापना की। इस कारण इसका नाम सेतुवन्ध रामेश्वर पड़ा ॥ ६६८ ॥

फिर राम कौतूहल से रथ पर वैठ गये। स्वर्ण-चौडोल में राम और सीता वैठे। चतुर्दोल के द्वार पर केवल लक्ष्मण प्रहरी रहे। राम ने सीता से कहा, जानकी! जरा समुद्र के किनारे तो देखो। यहाँ हम लोगों ने पत्तियों और वेलों से कुटिया वनाई थी। लता के वन्धन और पत्तों का छावन रहा। (तुम्हारे वियोग के समय यहाँ का) एक-एक घर (एक-एक पैग) योजन भर रास्ते के समान रहा। यहीं पर विभीषण से भेंट हुई। यहीं सागर ने दर्शन दिया। किष्किन्ध्या के वृक्षों का पुंज देखो, यहीं सुग्रीव मेरा मित्र वना और यहीं मैंने वाली को मारा। ऋष्यमूक पर्वत पर जो ऊँची चोटी देख रही हो उसी पर मित्र सुग्रीव का घर है ॥ ६६९ ॥

सीता ने कहा, हे कमललोचन राम, इस पर्वत पर मैंने पाँच वानर देखे। कपड़ा फाड़ कर और शरीर का आभूषण निकालकर मैंने फेका था और श्री राम-लक्ष्मण कह कर रोती रही। रुकने के लिए मैं वेल और पत्तियों से चिमटने लगी तो दुष्ट रावण ने वालों के झोंटे पकड़कर मुझे खींचा था ॥ ६७० ॥

श्रीराम बलेन, नाहि कह से वचन ❋ तोमारे हरिया तार हइल मरण
चौद्युग छिल रावणेर परमायु ❋ तव चुल धरिया से हइल अल्पायु
पम्पा-सरोवर सीता कर निरीक्षण ❋ छिलेन उहार तीरे मतंग-ब्राह्मण
स्नान-वस्त्र राखिलेन मुनि वृक्ष-डाले ❋ हइल सहस्र वर्ष तबु नाहि गले
मरिल कवन्ध हेथा घोर-दरशन ❋ जाहार एकैक हाथ एकैक योजन
जटायु-पक्षीर स्थान देखह जानकि ❋ तोमा लागि जुद्ध करि प्राण दिल पाखी
प्रमोदिया घर देख करिल लक्ष्मण ❋ एइ घर हैते तोमा हरिल रावण
तोमा हाराइया मोर हइल हुताश ❋ एइ घरे करिलाम दुइ उपवास
ओइ आर रणस्थली देखह सुन्दरि ❋ चौद्द हाजार राक्षसे खर-दूषणेरे मारि
अगस्त्य-मुनिर स्थान देख पंचबटी ❋ जथा शूर्पणखार नासिका कान काटि
ओइ देख मुनि-पाड़ा शरभंग घर ❋ जथा धनुर्ब्बाण मोरे दिला पुरन्दर
अत्रिमुनि-गृह सीता नहे बहु दूर ❋ जेखाने परिला तुमि सुन्दर सिन्दुर
कुन्ती-नदी-तीर एइ कर प्रणिधान ❋ करिलाम जेखाने पितार पिंडदान
हाते पिंड निते पिता एलेन गोचरे ❋ शास्त्रमत थुइलाम कुशेर उपरे
चित्रकूट गिरि सीता, ऐ देखा जाय ❋ भरत आइल जथा लइते आमाय

श्री राम ने कहा, यह बातें मत करो। तुम्हारा हरण कर उसकी मृत्यु हुई। रावण की आयु चौदह युगों के बराबर थी, तुम्हारे बालों को छूते ही वह अल्पायु बन गया। हे सीता, यह देखो पम्पा सरोवर है। इसी के तट पर मतंग नामक ब्राह्मण रहते थे। उस मुनि ने वृक्ष की डाली पर स्नान-वस्त्र रख दिया था जो कि सहस्र वर्ष बीत जाने पर भी गला नहीं। यहाँ एक भीषण रूपवाला कबन्ध मरा जिसका एक-एक हाथ, एक-एक योजन लम्बा था। जानकी, यह देखो जटायु पक्षी का स्थान। उस पक्षी ने तुम्हारे लिए लड़कर प्राण दे दिये। देखो लक्ष्मण ने प्रसन्नतापूर्वक तुम्हारे लिए वह कुटी बनायी थी और उसी कुटी से रावण ने तुम्हारा हरण किया था। तुमको खोकर मैं विकल हो गया और इसी कुटी में मैंने दो दिन तक उपवास किया। हे सुन्दरी, यह देखो एक दूसरी रणभूमि है। यहाँ चौदह हजार राक्षसों के साथ मैंने खर-दूषण को मारा था। यह अगस्त्य मुनि का स्थान पँचवटी देखो जहाँ मैंने शूर्पनखा के नाक-कान काट लिये थे। वह देखो मुनियों का आश्रम है, शरभंग का घर है जहाँ पुरन्दर (इन्द्र) ने मुझको धनुष-बाण दिया था। हे सीता, अत्रि-मुनि का घर यहाँ से थोड़ी दूर पर है जहाँ तुमने भव्य सिन्दूर लगाया था। यह कुन्ती नदी का तट है यहीं मैंने पिता को पिंडदान किया था। यहाँ हाथों में पिंड लेने के लिए मेरे पिता साक्षात् आये थे। किन्तु शास्त्र के अनुसार मैंने पिंड को कुश पर रखा। हे सीता, वह देखो, चित्रकूट पर्वत दिखाई पड़ रहा है जहाँ

नारद बशिष्ठ एल कुल-पुरोहित ✻ भरत ब्रिनय करिलेक जथोचित
शुनिले भरत-बाक्य पितृसत्य नड़े ✻ कार्य्य-सिद्धि हइले सकले मने पड़े
शृंगबेर-पुरे देख गाछेर मयाल ✻ जाहे आछे मित्र मोर गुहक-चंडाल
नन्दिग्रामे देख सीता, गाछेर मयालि ✻ जेखाने भरत भाइ आछे महावली ६७१
नन्दिग्राम नाम शुनि बानर कौतुकी ✻ रथे थाकि देखे तारा दिया डँकि झुँकि
नन्दिग्राम-नामे सबे हरिष विशेष ✻ सबे वले, प्रभु, आजि जाब बुझि देश
श्रीराम वलेन, हेथा मुनि भरद्वाज ✻ तार सह सम्भाषिते हइबेक व्याज ६७२
वन्दिते मुनिर पद श्रीरामेर मन ✻ बुझिया आपनि रथ नामिल तखन
मुनि-तपोवने राम करिया प्रवेश ✻ देखिलेन सर्व्वत्र सकल सन्निवेश
मुनिर चरणे राम करि नमस्कार ✻ जिज्ञासेन, कह मुनि शुभ-समाचार
बहुकाल बनवासी, ना जानि कुशल ✻ कह आगे भरतेर राज्य बलाबल
माता कि ब्रिमाता कि पितार जत राणी ✻ के केमन आछेन, ता' किछु नाहि जानि
मुनि वले, राम, तुमि ना हओ उतरोल ✻ सकले आछेन भाल, आसि देह कोल
माता कि विमाता तब केह नाहि मरे ✻ देशे गिया सबारे देखिबे घरे-घरे

मुझको भरत लिवा ले जाने के लिए आये थे। कुल-पुरोहित वशिष्ठ और नारद आए और भरत ने भी यथोचित विनय किया। भरत का कहना मानने पर पिता के वचन का लंघन हो जाता। काम सफल हो जाते सब कुछ याद आ जाता है। शृंगबेर-पुर में वृक्षों का जमघट देखो जहाँ मेरा मित्र चंडाल गुहक रहता है। हे सीता, वह देखो नन्दी ग्राम है, जहाँ पेड़ों का झुंड है वहाँ मेरा महावली भाई भरत है ॥ ६७१ ॥

नन्दीग्राम का नाम सुनकर वानर कौतुक से भर गये। वे रथ में रहकर झाँक-झाँक कर देखने लगे। नन्दी ग्राम नाम से सभी को विशेष हर्ष हुआ, सभी कहने लगे, प्रभु आज शायद हमलोग देश पहुँच जाएँगे। श्री राम ने कहा, यहाँ मुनि भरद्वाज हैं, उनसे सम्भाषण करने में कुछ समय लगेगा ॥ ६७२ ॥

मुनि की पद-वन्दना करने को श्री राम का मन हुआ तो यह आभास पाकर स्वयं रथ नीचे उतर आया। मुनि के तपोवन में प्रवेश कर राम ने सब कहीं सारी व्यवस्था देखी। फिर मुनि के चरणों में प्रणाम कर राम ने पूछा, हे मुनिवर, अपना कुशल-मंगल सुनाइये। मैं बहुत दिनों से वनवासी हूँ इसलिए मुझे कोई कुशल समाचार ज्ञात नहीं। पहले भरत के राज्य की शक्ति और दुर्बलता के बारे में बताओ। मेरी माँ, विमाता और पिता की जितनी रानियाँ थीं वे कैसी हैं मैं कुछ भी नहीं जानता हूँ। मुनि ने कहा, राम, उतावले मत होओ, सभी कुशल से हैं, आओ गले मिलो। तुम्हारी माँ या विमाता कोई भी मरी नहीं, देश जाकर सभी को अपने-अपने घरों में पाओगे।

राजकार्य्ये भरतेर अपूर्व्व काहिनी ※ चारिजुगे त्रिभुवने कोथाओ ना शुनि
चतुर्द्दोल सिंहासन छाड़ि खाट पाट ※ हस्ती घोड़ा आछे, तबु भूमे वहे बाट
गाछेर बाकल परे, जटा धरे शिरे ※ अगुरु चन्दन चुया ना माखे शरीरे
भरत हइया राजा नहे राजभोगी ※ मुनि-व्यवहार करे जेन महाजोगी
रत्न-सिंहासनेते नेतेर वस्त्र पाति ※ तोमार पादुका थुये धरे दंड-छाति
पादुकार हेंटे वैसे कृष्णसार-चर्म्मे ※ वशिष्ठ नारदे लये थाके राजकर्म्मे
देओआन सारिया भरत घरे जवे जाय※ तव पादुकार ठाँइ मागये विदाय६७३
शुनिया मुनिर कथा रामेर उल्लास ※ आग्रह हइल ताँर करिते सम्भाष
मुनि वले, श्रीराम, आइला निकेतन ※ तव दरशने मम सफल जीवन
मुनिगण जज्ञ करे विष्णु प्रीति-फले ※ सेइ विष्णु आसियाछ कि तपेर बले
रामरूपे श्रीहरि, आइला मम पाश ※ कि करिव प्रार्थना, हेथाइ स्वर्गवास
जत दुःख पेले राम दंडक-कानने ※ ततोधिक दुःख तव सीतार हरणे
पाइला बिस्तर दुःख राक्षसेर रणे ※ सर्व्वदुःख पासरिला मारिया रावणे

भरत के राजकार्य की कथा अनोखी है, चारों युगों में तीनों लोकों में कभी ऐसी शासन व्यवस्था नहीं सुनी गई। भरत सिंहासन, खाट, चतुर्दोल आदि सभी छोड़े हुए हैं, उनके पास हाथी है, घोड़ा है, फिर भी पैदल चलते हैं। पेड़ की छाल पहनते हैं और सिर पर जटा रखे हुए हैं। शरीर पर अगुरु चन्दन आदि का लेप नहीं करते, भरत राजा होकर भी राजभोग नहीं करते, मुनियों जैसा आचरण करते हैं मानों महायोगी हो। रत्न-सिंहासन पर रेशमी वस्त्र बिछाकर उस पर तुम्हारी पादुका रख उस पर दंड और छत्र लगाते हैं। पादुका से नीचे काले हिरन की चाम पर बैठकर वशिष्ठ और नारद को लेकर राजकर्म में लगे रहते हैं। राज-सभा का कार्य समाप्त कर जब भरत घर जाते हैं तब तुम्हारे खड़ाऊँ से वह बिदा माँगते हैं ॥ ६७३ ॥

मुनि की बात सुनकर राम अत्यन्त प्रसन्न हुए और उनसे और भी बातें करने का आग्रह प्रकट किया। मुनि ने कहा, श्री राम ! तुम हमारे आश्रम में आए, तुम्हारे दर्शन से मेरा जीवन सफल हो गया। विष्णु की प्रीति प्राप्त करने के लिए मुनि यज्ञ किया करते हैं, जाने मेरे किस तप के फल से वही विष्णु तुम आज यहाँ आए हो। हे श्री हरि तुम आज मेरे पास राम का रूप धारण कर आए हो, तुमसे भला क्या प्रार्थना करूँ, मुझको इसी लोक में स्वर्गवास का आनन्द मिल रहा है। हे राम तुमको दंडक-वन में जितना दुःख मिला, उससे अधिक दुःख तुमको सीता-हरण पर मिला। रावण के साथ युद्ध में तुमको कितना ही कष्ट मिला लेकिन अब रावण को मारने के बाद तुम्हारा सब दुःख जाता रहा। हे राम तुमने

तुमि राम, उद्धारिला पृथिवीर भार ❋ जे कर्म्मेर कारणे तोमार अवतार
से सकल जानियाछि राम आमि ध्याने❋ एक भिक्षा देह प्रभु, चाहि तव स्थाने
जदि आसियाछ तुमि आमार आगारे ❋ भुंजाइव सवाकारे अतिथि-आचारे
तोमार प्रसादे दुःखी नहे एइ मुनि ❋ आज्ञा कर भुंजाव सत्तर अक्षौहिणी
दिव्य आओवास दिव, दिव्य दिव्यवासा ❋ भालमते करिब जे सैन्येरे सम्भाषा
आलापे तोमार संगे वंचिव रजनी ❋रजनी प्रभाते दिव तोमारे मेलानि६७४
श्रीराम वलेन, तव अलंध्य वचन ❋ आजि हेथा थाकि, कालि देशेते गमन
वानरेर भक्ष्यवस्तु फल से केवल ❋ तपोवृक्षे तोमार फलये नाना फल
एइ देशे आछे जत काँटाल रसाल ❋ अकाले धरुक फल-फुल डाले-डाल
शुष्कवृक्ष मंजरुक फल-फूल-पाते ❋ लागुक मधुर चाक डाले चारिभिते
नन्दिग्राम छाड़िया जाइते अजोध्याय ❋ पथे जेन बानरेरा फल खेते पाय
जत बर चान राम, तत देन ऋषि ❋ आलापे दोंहार मन दुइजने तुषि६७५
जज्ञशाले भरद्वाज करिलेन ध्यान ❋ सर्व्व-अग्रे विश्वकर्म्मा हन आगुयान
विश्वकर्म्मा निर्म्माइला सोनार चोउरि❋ स्वर्ण-घाट वान्धिलेन दीघल पुखरी

पृथ्वी का भार दूर किया, इसी कार्य के लिए तुमने अवतार लिया। राम, मैंने यह सब ध्यान में जान लिया है। हे प्रभु, मुझको एक भिक्षा दो, तुमसे चाहता हूँ। अगर तुम मेरे निवास-स्थान पर आये हो तो मैं सभी को अतिथि के रूप में भोजन कराऊँगा। तुम्हारी कृपा से मुझे कोई कष्ट न होगा, आदेश दो मैं तुम्हारी सत्तर अक्षौहिणी सेना को भोजन कराऊँगा। उनके लिए सुन्दर वासस्थान दूँगा अच्छे-अच्छे घर दूँगा और अच्छी तरह से सेना की आवभगत करूँगा। तुम्हारे साथ बातचीत करते हुए रात काट दूँगा और सवेरे तुमको विदा दे दूँगा ॥ ६७४ ॥

श्री राम ने कहा, आपके वचन मैं लांघ नहीं सकता। आज यहाँ रहूँगा और कल स्वदेश जाऊँगा। वानरों का भोजन है फल, तुम्हारे तपोवन के वृक्षों में तरह-तरह के फल फले हैं। इस देश में जितने आम-कटहल के वृक्ष हैं उनमें असमय फल-फूल पत्तियाँ निकल आवें। सूखे पेड़ भी फल-फूल पत्तियों से मँजरित हो उठें। चारों ओर की डालियों पर मधु-मक्खियों के छत्ते लग जायँ। नन्दीग्राम छोड़कर अयोध्या जाने के रास्ते वानरों को फल खाने को मिले। राम ने जो-जो वर माँगा ऋषि ने वही-वही वर दिया और बातचीत से एक दूसरे के मन को प्रसन्न करने लगे ॥ ६७५ ॥

यज्ञशाला में भरद्वाज मुनि ने ध्यान किया तो सबसे पहले विश्वकर्मा आगे बढ़ आए। विश्वकर्मा ने सोने का चबूतरा बनाया फिर बड़े पोखर पर सोने का घाट बनाया। अस्सी योजन का रास्ता निकालकर उन्होंने

आशी-जोजनेर पथ करि आयतन ❋ द्वितीय अमराबती करिला गठन
संसार आनिते मुनि पारेन ध्येयाने ❋ देवकन्यागणे मुनि आनिला सेखाने
ठाँइ ठाँइ बिचित्र सोनार नाट्यशाला ❋ देबता--गन्धर्व्व–विद्याधरादिर मेला
मुनिर तपेर फले त्रिभुवन मोहे ❋ जान्हवी-जमुना नदी सेइखाने वहे ६७६
आर वार भरद्वाज जुड़िलेक ध्यान ❋ आपनि कमलादेवी कैला अधिष्ठान
लक्ष्मीदेबी जज्ञे गिया करेन रन्धन ❋ देब कन्यागणे करे से परिवेषण
स्वर्णथाले परिबेषे, सबे वसि खाय ❋ केबा अन्न दिया जाय देखिते ना पाय
कि कव अन्नेर कथा कोमल मधुर ❋ खाइले मनेते हय, कि रस मधुर
कि मनोरंजन से ब्यंजन नानाबिधि ❋ चर्व्व्य चूष्य लेह्य पेय भक्ष्य चतुर्व्विध
जथेष्ट मिष्टान्न से प्रचुर मतिचुर ❋ जाहा निरखिबा मात्र हय मति चूर
निखुँत निखूँत मंडा आर रसकरा ❋ दृष्टिमात्र मनोहरा दिव्य मनोहरा
सरु-चाकलिर राशि लबण-ठिकरि ❋ गुड़पिठे रुटि लुचि खुरमा कचुरि
क्षीरक्षीरसारक्षीर-लाडु मुगेर साउलि ❋ अमृता चितुइ पुलि नारिकेल पुलि
कलाबड़ा तालबड़ा आर छानाबड़ा ❋ छानाभाजा खाजा गजा जिलापि पाँपड़ा

एक दूसरी अमरावती का निर्माण कर डाला। मुनि ध्यान द्वारा संसार को ला सकते हैं, उन्होंने तपोबल से देवकन्याओं को बुलाया। जगह-जगह पर सोने की विचित्र नाट्यशालाएँ बनीं जहाँ देवता-गन्धर्व तथा विद्याधरियों का मेला लग गया। मुनि के तपोबल से संसार मुग्ध हो गया, गंगा और यमुना दोनों वहीं बहने लगीं ॥ ६७६ ॥

फिर भरद्वाज मुनि ध्यान पर बैठ गये तो स्वयं देवी कमला आ उपस्थित हुईं। लक्ष्मी देवी ने जाकर यज्ञ में अन्न पकाया और देवकन्याएँ परोसने लग गईं। सोने की थाली, सोने का कटोरा, जलपात्र और पीढ़ा सब सजा दिये गये। अस्सी योजन लम्बे पथ पर सब कतारों में बैठ गये। सोने की थालियों में भोजन परोसा गया और सब बैठकर खाने लगे। कौन अन्न दे जाता कोई देख नहीं पाता। इस अन्न का क्या कहना, इतना कोमल और मधुर है कि खाते ही लगता कितना रसपूर्ण और मिठासभरा है। विविध प्रकार के व्यंजन सबका मनोरंजन करने लगे। चर्व्य, चोष्य, लेह्य, पेय चारों प्रकार के खाद्य-पदार्थ मिले। पर्याप्त मात्रा में मिठाई मिली। ऐसा मोतीचूर मिला जिसे देखते ही क्षणभर में मति मारी जाय। मंडा और रसकरा नामक मिठाइयों में कोई भी दोष नहीं। मनोहरा नामक मिठाई देखने में भी मनोहर है। महीन चाकली (चावल की बनी मिठाई) और ढेर सारी लवण-ठिकरी (नमक मिला चावल और नारियल का बना पिष्टक)। गुड़ की बनी मिठाई, रोटी, पूड़ी, कचौड़ी और खुरमा। खीर, खीरसा, खोवे का लड्डू, मूँग का लड्डू, इमरती, चितुइ, नारियल

सुगन्धि कोमल अन्न पायस पिष्टक ॐ भोजन करिल सुखे रामेर कटक
देबयोग्य भक्ष्य भोग रसाल सुमृदु ॐ जत पाय तत खाय, खाइते सुस्वादु
आकंठ पुरिया खाय जत धरे पेटे ॐ नड़िते चड़िते नारे, पेट पाछे फाटे
उलटिया डाबरे करिल आचमन ॐ स्वर्णखाटे शुये करे ताम्बूल भक्षण
ऊर्ध्वदृष्टे रहे सबे, नाहि चाय हेंटे ॐ कोनरूपे चित हये शुइलेक खाटे
देव-कन्या कोले करि निद्रा जाय सुखे ॐ सुखे रात्रि बंचे सबे मनेर कौतुके
श्रीराम लक्ष्मण सीता करेन आहार ॐ भरद्वाज-मुनिर जे फल तपस्यार
नाना सुखे हइल निशार अबसान ॐश्रीराम स्मरिया सबे करे गात्रोत्थान ६७७

श्री रामेर स्वदेश—गमन ओ स्वजन सम्भापण

हनुमाने श्रीराम करेन आज्ञादान ॐ भरतेरे समाचार देह हनुमान
नन्दिग्रामे जाह हनू, भरत-उद्देशे ॐ कहिवे सकल कथा अशेष-विशेषे
शृंगबेर-पुरे तुमि जावे आगुयान ॐचंडाल-मितारे मम जानाबे कल्याण ६७८
चक्षुर निमिषे हनू उठिल गगन ॐ भरत सम्भाषे जाय त्वरित गमन

की वर्फी। केले का वड़ा, ताड़ का वड़ा और छेने का वड़ा। छेनाभाजा, खाजा, गजक, जलेबी, पँपड़ी। सुगन्धित कोमल अन्न, पायस और पिष्टक। इन सभी खाद्य-पदार्थों का राम के कटक ने सुख से भोजन किया। देवताओं के योग्य रसभरा और स्वादिष्ट खाद्य जितना भी मिला खाते गये। आकंठ पेट भर कर उन लोगों ने खाया, सब लोग हिलने-डुलने से भी लाचार हो गये कि कहीं पेट न फट जाय। चिलमची उलट कर मुँह धोया और सोने की पलंग पर लेट कर पान चबाने लगे। सभी ऊपर की ओर दृष्टि किये हैं नीचे की ओर नहीं देखते। किसी प्रकार से चित्त होकर खाट पर लेटे रहे। गोद में देवकन्या लेकर सभी सुख से सोने लगे। सभी परमानन्द से रात्रि काटने लगे। श्रीराम-लक्ष्मण और सीता भी भोजन करने बैठे, यह भरद्वाज मुनि की तपस्या का फल था जो ऐसा हुआ। इस प्रकार तरह-तरह के सुखभोग के साथ रात्रि समाप्त हुई। श्रीराम का स्मरण कर सभी बिस्तर से उठे ॥ ६७७ ॥

श्री राम का स्वदेश गमन और स्वजन सम्भाषण

श्रीराम ने हनुमान को आदेश दिया, हनुमान, तुम जाकर भरत को समाचार दो। भरत से मिलने तुम नन्दीग्राम जाओ। सारी बातें उन्हें विस्तार से बता देना। तुम पहले शृंगवेर पुर पहुँचोगे वहाँ मेरे चण्डाल-मित्र से मेरा कुशल बताना ॥ ६७८ ॥

पलक झँपते ही हनुमान आकाश में उड़ गये। वह फुर्ती से भरत से

मने-मने चिन्ते वीर पवन-नन्दन ❊ कि रूप धरिया गुहे दिव दरशन
स्वभावे चंडाल जाति, वड़इ चंचल ❊ बानर देखिया मोरे करिवेक वल
भेटिव मनुष्य रूपे तार विद्यमान ❊ एइ जुक्ति मने-मने करे हनूमान
चक्षुर निमिषे गेल शृंगवेर-पुरे ❊ निज रूप त्यजिया मनुष्य रूप धरे
गजमुखी घर से छाउनी सब नाड़ा ❊ हनूमान भावे एइ चंडालेर पाड़ा
वसियाछे गुहक से, आपन देओयाने ❊ नर-रूपे हनूमान गेल विद्यमाने
गुहक चंडाल तार गले पुष्पमाल ❊ हनूमान कहे वार्त्ता, शुन हे चंडाल
जानाइला रामचन्द्र तोमारे कल्याण ❊ मित्र-सम्भाषणे चल त्यजिया देवान
हरिषे चंडाल पुछे गदगद-भाषे ❊ श्रीराम लक्ष्मण सीता कतदूर आसे
हनू कहे राम छिला भरद्वाज-पुरे ❊ पथे देखा पाबे तार चलह सत्वरे६७९
श्रीराम आइसे देशे, पड़े गेल साड़ा ❊झागुड़-गुड़ बाद्य बाजे,नाचे चंडाल-पाड़ा
उभ करि झुंटि वान्धे, टानि परे धड़ा❊ नाना-अस्त्रे साजे जाठि शेलओ झकड़ा
चतुर्द्दिके हात तुलि बाजाय चामुचे ❊ उफड़-धाफड़ करि चंडाल-फौज नाचे
नाचये चंडाल सब आनन्द करिये ❊ देखिया आनन्दे नाचे चंडालेर मेये

मिलने चल पड़े। पवन-नन्दन मन ही मन यह सोचते हुए चले कि गुह चण्डाल को मैं किस रूप में दर्शन दूँ। चण्डाल जातिवाले स्वभाव से बड़े चंचल होते हैं, मुझको वानर देखकर मुझसे बल आजमाने लगेगा। हनुमान ने मन ही मन निश्चित कर लिया, उसके साथ मनुष्य का रूप लेकर ही भट करूँगा। यही युक्ति हनुमान ने मन ही मन की। आँख झपकते ही वह शृंगवेरपुर जा पहुँचे अपना रूप त्याग कर उन्होंने मनुष्य का रूप रख लिया। गजमुख जैसा घर जिसकी छावन ढीली थी उसे देखकर ही हनुमान जान गया कि यही चण्डालों का टोला है। गुहक अपनी सभा में बैठा था कि हनुमान नर-रूप धारण किये उसके सम्मुख जा पहुँचे। चण्डाल गुहक के गले में फूलों की माला है। हनुमान ने कहा, हे चण्डाल, सन्देशा सुनो। रामचन्द्र ने तुमको अपना कुशल समाचार भेजा है। अपनी सभा छोड़ कर मित्र से सम्भाषण करने चलो। हर्ष से चण्डाल ने गदगद होकर पूछा, श्रीराम-लक्ष्मण और सीता कितनी दूर तक आ गये हैं। हनुमान ने कहा, राम भरद्वाज पुर में थे, जल्दी चलो रास्ते में भेंट हो जायगी ॥ ६७९ ॥

श्रीराम आ रहे हैं यह सुन कर चारों ओर हलचल मच गई। "झाँय-गुड़-गुड़" के शब्द करके बाजा बजने लगा और चण्डाल-टोला नाचने लग गया। बालों का झोंटा ऊँचे बाँध कर और धोती कसके पहनकर जाठि, शेल और झकड़ा जैसे अस्त्रों से सुसज्जित हो वे चल पड़े। चारों ओर हाथ फैला कर वे चामुचे नामक बाजा बजाने लगे। उछल-

गुह वले, धना मना दासी जे सकल ❊ मित्र-सम्भाषणे लवे शालुकेर फल
ओड़ा भरा मत्स्य लवे कै ओ उत्पल ❊ पद्मेर मृणाल लवे, आर पानिफल
चलिल गुहेर फौज दगड़े दिया सान ❊ सातकोटि चंडाल हइल आगुयान
एकैक चंडाल जाय देखिते पर्व्वत ❊ जुड़िया चलिल सात-प्रहरेर पथ
नाना द्रव्य गुहक रामेर काछे एड़े ❊ रामेर इंगित पेये वानरेरा नड़े ६८०
श्रीराम वलेन, मित्र, आछ त कुशले ❊ गुह वले, राम, तुइ आइलि भाले भाले
शुनिया गुहेर कथा रामेर सन्तोष ❊ भक्तिमात्र लन राम, नाहि लन दोष
श्रीराम गुहेर मनस्तुष्टिर कारण ❊ रथ हैते उलिया दिलेन आलिंगन
श्रीरामेर जगते एहेन ठाकुरालि ❊ चंडाले वानरे आर राक्षसे मिलालि
सात-कोटि चंडाल देखिल राम-रूप ❊ अनायासे उत्तीर्ण हइल भव-कूप
राम-सह सम्भाषणे लभि दिव्यज्ञान ❊ सर्व्वलोक स्वर्गे गेल चड़िया विमान
'राम राम' वलिया पराण जाय जार ❊ चरमे से स्वर्गे जाय, जन्म नाहि तार ६८१
निजरूपे हनुमान उठिल गगने ❊ भरत समीपे चले त्वरित-गमने

उछल कर चण्डालों की फौज नाचने लगी। सारे चण्डालों को आनन्द से नाचते देखकर चण्डाल की बेटी भी खुशी से नाचने लगी। गुह ने कहा, धना मना आदि जो दासियाँ हैं वे मेरे मित्र-सम्भाषण में कुमुद के फल ले चलें। टोकरा भरकर कवई और उत्पल मछली ले चलें। कमल के मृणाल और सिंघाड़े ले चलें। गुह की फौज नगाड़े पर चोट कर आगे बढ़ी। सात करोड़ चण्डाल चल पड़े। एक-एक चण्डाल ऐसे चलता मानों पर्वत चल रहा हो। सात पहर का रास्ता घेर कर वह चलता। विभिन्न द्रव्य लेकर गुहक राम के पास आया। राम का इशारा पाकर वानर जरा खिसक गये ॥ ६८० ॥

श्रीराम ने कहा, मित्र, कुशल से तो हो? गुह ने कहा, राम, तुम कुशल मंगलपूर्वक वापस आ गये। गुह की बात सुनकर राम को बड़ा सन्तोष हुआ, उन्होंने केवल भक्ति के वश, बुरा नहीं माना। श्रीराम गुह के सन्तोष के लिए रथ से उतर कर उससे गले मिले। श्रीराम की संसार में ऐसी प्रभुता है कि चण्डाल, वानर और राक्षस में मित्रता हो गई। सात करोड़ चण्डालों ने राम का स्वरूप देखा और अनायास ही वे संसार रूपी कूप से उबर आए। राम से सम्भाषण कर उनको दिव्य-ज्ञान प्राप्त हुआ और सारे के सारे लोग विमान में चढ़कर स्वर्ग चले गये। राम-राम कह कर जिसके प्राण निकलते हैं वह सीधे स्वर्ग जाता है और उसका फिर जन्म नहीं होता ॥ ६८१ ॥

अपना स्वरूप अपना कर हनुमान गगन पर चढ़ गये और तेज चाल से भरत के पास चल पड़े। विभिन्न तीर्थों को पार किया, कितनी

नाना तीर्थ एड़ाइल, नदी नाना स्थानी ※ हइल गोमती पार परम सन्धानी
हेंटे शालगाछ एड़े त्रिशत् जोजन ※ नन्दिग्रामे उत्तरिल पवन नन्दन
गगने-मंडले बीर रहे अन्तरीक्षे ※ तथाय थाकिया वीर नन्दिग्राम देखे
गड़ेर प्राचीर देखे पर्व्वतेर सार ※ हस्ति-अश्व देखे वीर पर्व्वत-आकार
सिंहासने पादुका वेष्टित शुभ्र नेते ※ श्वेत-चामरेर वायु पड़े चारिभिते
त्रियोजन प्रशस्त प्राचीर सुनिर्म्माण ※ सिंहद्वार शोभा करे विचित्र-विधान
पृथिवीते राजा आछे अजुत-अजुत ※ अष्ट-आशी कोटि राजा द्वारेते मजुत
विचित्र-निर्म्माण घर विचित्र आवास ※ अत्युच्च एकैक घर ठेकेछे आकाश
मरकत-स्तम्भे शोभे माणिक-रतन ※ हाति-घोड़ा संख्या नाइ, के करे गणन
ठाँइ ठाँइ विचित्र सोनार नाट्य-शाला ※ देव-दैत्य-गन्धर्व्व-आदिर जत मेला
रत्न-सिंहासनोपरि नेतवस्त्र पाति ※ तदुपरि पादुका राखिया धरे छाति
भरत ताहार नीचे कृष्णसार-चर्म्मे ※ वशिष्ठ नारदे लये थाके राजकर्म्मे ६८२
भरत साक्षात हन विष्णु-अधिष्ठान ※ अनुमाने भरते चिनिल हनूमान
उलिया तथाय वीर करिल प्रणाम ※ जोड़हात करि बले आपनार नाम
हनूमान नाम मोर, जातिते वानर ※ सुग्रीवेर पात्र आमि पवन-कोङर

ही नदियाँ लाँघ गये। परम सन्धानी गोमती भी पार कर गये। नीचे तीस योजन वाला साखू भी वह लाँघ गये। तब पवन-नन्दन नन्दीग्राम आ पहुँचे। गगन मंडल में शून्य में स्थित होकर उस वीर ने नन्दीग्राम देखा। किले की दीवार मानों पहाड़ सी ऊँची हो। वीर ने पर्वत के आकार वाले घोड़े और हाथी देखे। सिंहासन पर सफेद सूक्ष्मवस्त्रों से लिपटी हुई पादुकाएँ देखीं। श्वेत चँवर की हवा चारों ओर बह रही थी। तीन योजन प्रशस्त सुनिर्मित प्राचीर देखा। विचित्र गठन का सिंहद्वार शोभा दे रहा था। संसार में करोड़ों राजा हैं। अट्ठासी करोड़ राजा द्वार पर मौजूद हैं। विचित्र निर्माण के भवन और आवास अनोखे हैं। एक-एक मकान इतना ऊँचा है कि आकाश छू रहा है। पन्ने के बने स्तम्भों में माणिक जड़े हुए हैं। हाथी-घोड़ों की कोई गिनती नहीं, कौन गिने। जगह-जगह पर विचित्र सोने की नाट्यशालाएँ बनी हुई हैं जहाँ देव-दानव-गन्धर्व आदि का जमघट है। रत्न सिंहासन पर रेशमी वस्त्र बिछाकर उस पर पादुका रखकर छतरी थामे हैं। उससे नीचे कृष्णसार हिरण के चमड़े पर बैठकर भरत, वशिष्ठ और नारद के साथ राजकार्य में व्यस्त हैं ॥ ६८२ ॥

भरत साक्षात् विष्णु के अधिष्ठान हैं। अनुमान से हनुमान ने भरत को पहचान लिया। वहाँ हेल कर वीर ने प्रणाम किया और हाथ जोड़कर कहा—मेरा नाम हनुमान है, मैं जाति से वानर हूँ, राजा सुग्रीव

स्वयं विष्णु रघुनाथ, आमि ताँर दास॥ एइ पुण्ये पाइलाम तोमार सम्भाष
रघुवंशे भरत आपनि नारायण ॥ तोमा-दरशने हय पाप-विमोचन
केकय-राजेर कन्या तोमार जननी ॥ दशरथ-भूपतिर मध्यमा गृहिणी
राजार महिषी तिनि, राजार नन्दिनी ॥ सौभाग्ये ताँहार समा नहे अन्य राणी
करिला राजार सेवा प्रधाना महिषी ॥ जन्मिला जाँहार गर्भे तुमि पूर्णशशी
वर मागिलेन तिनि अति से अनार्य ॥ श्री रामेर वनवास, भरतेर राज्य
से दुर्नाम गेल ताँर तोमा-पुत्र-गुणे ॥ तोमार चरित्रे चमत्कृत त्रिभुवने
हस्ती घोड़ा रथ एड़ि भूमे वाट वह ॥ राजा हये भातृ-भक्त हेन नहे केह
भरत, भूपाल हये नह राज्यभोगी ॥ मुनि-व्यवहार कर, जेन महाजोगी
जाँहारे आनिते गेले ल'ये राज्यखंड ॥ जाँहार पादुका'परि धर छत्रदंड
वहुकाल दुःखी आछ जाँहार आश्वासे॥ सेइ राम पाठालेन तोमार उद्देशे६८३
शुभवार्त्ता कहे जदि पवन-नन्दन ॥ उठिया भरत तारे देन आलिंगन
हनूमाने कोल दिया छाड़िबारे नारे ॥ मुक्तार गाँथनि जेन चक्षे जल झरे
भरतेर नेत्रजले हनूमान तिते ॥ भरत प्रसाद दिते भाविछेन चिते

का मैं सभासद हूँ और पवन का पुत्र हूँ। स्वयं विष्णु रघुनाथ का दास हूँ और इसी कारण तुम्हारे साथ सम्भाषण हो सका। हे भरत तुम रघुवंश में स्वयं नारायण हो, तुम्हारे दर्शन से सारे पाप धुल जाते हैं। तुम्हारी माँ राजा केकय की बेटी हैं जो कि राजा दशरथ की मँझली रानी हैं। वे राजा की नन्दिनी हैं और सौभाग्य में उनके समान कोई दूसरी रानी नहीं है। प्रधानमहिषी के रूप में उन्होंने राजा की सेवा की और उन्हीं के गर्भ से तुमने पूर्णचन्द्र के समान जन्म लिया। उन्होंने बड़ा अनुचित किया जो श्रीराम का वनवास और भरत को राज्य का वर माँगा। उनकी वह बदनामी तुम जैसे पुत्र के गुण से दूर हो गयी। तुम्हारे चरित्र को सुनकर त्रिभुवन में सब आश्चर्य करते हैं। हाथी, घोड़े की सवारी त्याग कर तुम भूमि पर पैदल चलते हो। राजा होकर कोई भी ऐसा भातृभक्त नहीं रहता। भरत, तुम भूपाल होकर भी राज्य-भोग नहीं करते, मुनि जैसे आचरण करते हो मानों महायोगी हो। तुम राज्यखण्ड साथ लेकर जिनको लिवा लाने गये थे, जिनकी पादुका के ऊपर छत्रदंड थामे हुए हो, जिनकी प्रतीक्षा में वहुत दिनों से दुखी बने हुए हो उन्हीं राम ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है॥ ६८३॥

जब पवन-नन्दन ने यह शुभ-सन्देश सुनाया तो भरत ने उठकर उनको बाँहों में बाँध लिया। हनुमान को बाँहों में बाँधकर वह छोड़ नहीं पाये उनकी आँखों से मोतियों के समान झर-झर आँसू गिरने लगे। भरत के आँसुओं से हनुमान भीग गये। मन ही मन भरत उनको कोई पुरस्कार देने की सोच रहे हैं।

तिनशत गामी दिल वाछि भाल भाल ॐ दुइशत गाछ दिल रसाल काँटाल
अग्निवर्ण स्वर्ण दिल आशीलक्ष तोला ॐ मणिमुक्ता दिल कत मध्ये गाँथा पला
रूपे गुणे कुले शीले जाहार वाखान ॐ एमन एगार शत कन्या दिल दान
कन्यागणे देखि हासे पवन नन्दन ॐपशु आमि, कन्याय कि मोर प्रयोजन६८४
भरत, जे दान देह, किछुइ ना मानि ॐरामेर मंगल जाहे,ताहा आमि गणि६८५
एत जदि हनूमान कहिल वचन ॐ पुनश्च भरत तारे दिला आलिंगन
वहुदिने शुनिलाम अपूर्व्व काहिनी ॐ तुमि नहे वानर देवेर मध्ये गणि
भरत वलेन, वीर, जिज्ञासि तोमाय ॐ कि कार्य्ये वानरगण रामेर सहाय
कोन कोन सेनापति, कि तार व्याख्यान ॐदेशे एले सबाकार करिव सम्मान६८६
एत जदि पूर्व्वकथा जिज्ञासे भरत ॐ जथाक्रमे हनूमान कहिछे तावत्
राज्य छाड़ि गेला राम पंचवटी वन ॐ शूर्पणखा नाक-कान काटिला लक्ष्मण
मारिलेन तथा खर त्रिशिरा दूषण ॐ मायामृगच्छले सीता हरिल रावण
सुग्रीवेर सह सख्य सीता-अन्वेषण ॐ बालिरे मारिया राज्य सुग्रीवे अर्पण
समस्त बानर जड़ सुग्रीव-आदेशे ॐ सीता अन्वेषिते सवे जाइ देशे देशे

तीन सौ चुनी हुई अच्छी गाय दीं और आम व कटहल के दो सौ पेड़ दिये। आग के रंग वाला सोना अस्सी लाख तोला दिया। कितने ही मोती, मूँगे और माणिक दिये। रूप, गुण, कुल, शील से युक्त उच्चकोटि की ग्यारह सौ कन्याएँ भी दान में दीं ॥ ६८४ ॥

कन्याओं को देखकर पवन-नन्दन हँसने लगे और बोले मैं पशु हूँ, मुझको इन कन्याओं की क्या आवश्यकता है। भरत जो दान दे रहे हैं उसका कुछ भी मुझको स्वीकार नहीं। जिसमें राम का कल्याण हो उसी का मैं विचार करता हूँ ॥ ६८५ ॥

जब हनुमान ने यह कहा तो भरत फिर उनके गले लग गये और बोले बहुत दिनों में मुझे यह कहानी मालूम हुई। तुम वानर नहीं हो, तुम्हारी गणना मैं देवताओं में करता हूँ। भरत ने कहा, वीर तुमसे पूछता हूँ, किस कार्य में वानर राम के सहायक बने। कौन-कौन सेनापति थे उनका ब्योरा बताओ। उनके इस देश में आने पर सभी का सम्मान करूँगा ॥ ६८६ ॥

इतना कहकर भरत ने पूर्ववृत्तान्त सुनना चाहा। हनुमान भी ब्योरेवार सुनाने लग गये। राज्य छोड़ कर राम पंचवटी गये। लक्ष्मण ने शूर्पणखा के नाक-कान काट डाले। वहाँ (राम ने) खर, त्रिशिरा और दूषण का वध किया। माया-मृग के छल से रावण ने सीता का हरण किया। सीता की खोज करने निकल कर सुग्रीव के साथ मित्रता हुई। बाली को मार कर (राम ने) सुग्रीव को राज्य सौंपा। सुग्रीव के आदेश से हम सारे

एकमास मध्ये राजा करिल निश्चय ※ मासेर अधिक हैले प्राणेर संशय
पाताले प्रवेश करि महा अन्धकार ※ मारिब बानर-सैन्य, जुक्ति करि सार
अन्धकार पातालेते करिनु प्रवेश ※ चाहिया पाताल सप्त ना पाइ उद्देश
बिन्ध्याचले सम्पातिर सह हय देखा ※ राम-नाम बलिते उठिल तार पाखा
जटायूर ज्येष्ठ पक्षिश्रेष्ठ से सम्पाति ※ तार बाक्ये भरत डिंगाइ सरित्पति
सागरेर कुले गेनु सकल बानर ※ एकाकी भरत आमि डिंगाइ सागर
एकाकी लंकार मध्ये करिनु प्रवेश ※ अन्तःपुरे सीतार न पाइनु उद्देश
आवासे आवासे चाहि, सीता नाहि देखि ※ प्राचीरे बसिया कान्दि हये बड़ दुःखी
दुप्रहर रात्रि गेल तृतीय प्रहरे ※ सीता देखि अशोकेर कानन-भितरे
कोथा हैते आलि, जिज्ञासिलेन वैदेही ※ रामेर बृत्तान्त जत, ताहा आमि कहि
रामेर अंगुरी जे दिलाम निदर्शन ※ अंगुरी पाइया सीता करिला क्रन्दन
दिलेन रामेर तरे मस्तकेर मणि ※ कहिलेन जानाइते श्रीरामे काहिनी
से मणि आनिया दिनु राम-बिद्यमाने ※ मणि पेये कान्दिलेन भाइ दुइजने
बानरेर सहायता करि सेतुबन्ध ※ मारिलेन श्रीराम सवंशे दशस्कन्ध
प्रहस्त मरिल नील बानरेर तेजे ※ नागपाशे मुक्त करिलेन पक्षिराजे

वानर सीता की खोज में कितने ही देशों में गये। राजा ने एक महीने का समय दिया। महीना भर से अधिक हो जाने पर प्राणों के लाले पड़ जाएँगे। पाताल में प्रवेश कर देखा कि वहाँ बड़ा अँधेरा है, यह समझ लिया कि वानर-सेना सहित यहीं मर जाऊँगा। सातों पाताल ढूँढ़ने के बाद भी कोई पता नहीं चला। विन्ध्याचल में सम्पाति के साथ भेंट हो गई। राम का नाम लेते ही उसके पंख जम आये। वह सम्पाति जटायु से बड़ा और पक्षियों में श्रेष्ठ था हे भरत, उसी के कहने पर मैंने सागर लाँघा। हम सभी वानर समुद्र तट पर गये और मैंने अकेले ही समुद्र लाँघा और लंका में प्रवेश किया किन्तु अन्तःपुर में सीता का पता न चला। घर-घर में मैं देखता रहा किन्तु सीता नहीं मिली। तब दीवार पर बैठकर दुखी होकर मैं रोने लगा। रात के दो पहर बीत गये, तीसरे पहर में सीता को अशोक कानन में देखा। वैदेही ने मुझसे पूछा, कहाँ से आए हो। राम का सारा विवरण मैंने कह सुनाया। निदर्शन (निशानी) के रूप में मैंने राम की अंगूठी दी तो सीता रोने लगी। राम के लिए उन्होंने अपने मस्तक की मणि दे दी और अपनी सारी कथा श्रीराम से सुनाने के लिए कहा। वह मणि मैंने श्रीराम को लाकर दे दी। मणि पाकर दोनों भाई रोते रहे। वानरों की सहायता से सेतु का निर्माण कर श्रीराम ने दशानन का परिवार सहित विनाश किया। नील वानर के प्रहार से प्रहस्त मारा गया, पक्षीराज गरुड़ ने नागपाश से मुक्त किया।

इन्द्रजिते अतिकाये मारेन लक्ष्मण ※ श्रीरामेर हाते हत हइल रावण
शत्रुक्षय करिलेन राम बाहुबले ※ श्रीराम लक्ष्मण सीता आसेन कुशले
आसिलेन सुग्रीव राक्षस विभीषणे ※ पात्र मित्र लये चल राम-सम्भाषणे
छिलेन श्रीराम कल्य भरद्वाज-घरे ※ पथेते पाइवे देखा, चलह सत्वरे ६८७
शुभवार्त्ता कहे जदि बीर हनूमान ※ शत्रुघ्नेरे भरत डाकेन सन्निधान
सुदिन हइल भाइ, दुःख अवशेष ※ बहु दिवसेते राम आइलेन देश
प्रस्तर-प्रतिमा जत आछे स्थाने-स्थान ※ सुगन्धि चन्दने कराओ से सबारे स्नान
देबतार स्थाने वाद्य वाजाक वाइति ※ देह धूप नैबेद्य, घृतेरे ज्वाल बाति
फल-मूल नैबेद्य भरिया देह डाला ※ सुगन्धि चन्दन-काष्ठे ज्वालह पाँजाला
उच्च-नीच स्थान कर एकइ सोसर ※ पथ परिष्कार कर वाछह कंकर
प्रतिपुरे द्वारे द्वारे पोत बृक्ष-कला ※ गाछे गाछे पताका वान्धह पुष्पमाला
आलगोछे टाँगा वान्ध नेतेर उयाड़े ※ पुरनारी देखे जेन थाकि तार आड़े
रामेर चरण जे करिवे निरीक्षण ※ कोटि-कोटि-जन्म-पाय हइबे मोचन ६८८
जा बलिल भरत, करिल शत्रुघन ※ नन्दिग्राम हैल जेन अमर भुवन

इन्द्रजीत और अतिकाय को लक्ष्मण ने मारा। और श्रीराम के हाथों से रावण मारा गया। राम ने अपने बाहुबल से शत्रुओं का नाश किया। अब श्रीराम-लक्ष्मण और सीता सकुशल आ रहे हैं। सुग्रीव और राक्षस विभीषण भी आये हैं। अपने सभासदों के साथ राम की अगवानी करने चलो। कल राम भरद्वाज मुनि के घर पर थे। रास्ते में ही भेंट हो जायगी, जल्दी चलो ॥ ६८७ ॥

जब वीर हनुमान ने यह शुभ सन्देश सुनाया तो भरत ने शत्रुघ्न को निकट बुलवाया और कहा भाई, अब दुःख का अन्त हुआ, शुभदिन आ गया। बहुत दिनों के बाद राम देश आ रहे हैं। स्थान-स्थान पर जितनी प्रस्तर-प्रतिमाएँ बनी हुई हैं उनको सुगन्धित चन्दन से नहलाओ। जितने वादक हैं वे देवताओं के स्थानों में बाजा बजावें। धूप नैवेद्य दो और घी के चिराग जलाओ। फल, फूल, नैवेद्य डलिया भर कर दो। सुगन्धित चन्दन की लकड़ी से अग्निकुंड जलाओ। ऊबड़-खाबड़ जमीन को सपाट बना दो। रास्ते को साफ करो और कंकर चुनकर फेंक दो। प्रत्येक भवन के द्वार पर केले का वृक्ष लगा दो और पेड़ों पर पुष्पमाला और पताकाएँ लगा दो। हल्के से महीन रेशमी कपड़े के परदे टाँग दो, पुरनारियाँ उसकी आड़ में रहकर देखेंगी। श्रीराम के चरणों का जो दर्शन करेगा वह कोटि-कोटि जन्मों के पापों से मुक्त हो जायगा ॥ ६८८ ॥

भरत ने जो कुछ कहा, शत्रुघ्न ने पालन किया। नन्दीग्राम देवलोक सा बन गया। राम के खड़ाऊँ सिर पर धर कर भरत अपने सैकड़ों

रामेर पादुका शिरे करिया भरत ※ चलिलेन सामन्त-सहित शत-शत
पादुकार उपरे धरिल छत्रदंड ※ चाम ढुलाय ताय, आनन्द अखंड
प्रतिपद क्षेपेते करेन नमस्कार ※ भरत आनिते रामे सानन्द अपार
नारद वशिष्ठ चले कुल-पुरोहित ※ संसारेर लोक चले हये आनन्दित
मुद्रित हइल दोला नेतेर उयाड़े ※ सातशत सतीने कौशल्या देवी नड़े
ब्राह्मण क्षत्रिय बैश्य शूद्र चारिवर्ण ※ श्रीरामे देखिते लोक चलिल अगण्य
ऊर्ध्ववासे धाइया चलिल गर्भवती ※ लज्जा-भय त्यजि जाय कुलेर जुवती
काणा खोंड़ा शिशु बुड़ा लये अन्यजने ※ अन्धजन चक्षु पाय श्रीराम दर्शने
अनेक ब्राह्मण चले, अनेक ब्राह्मणी ※ ताहादेर घरे नाहि रहे एक प्राणी
अबधूत सन्यासी चलिल ऊर्द्धमुखे ※ नपुंसक चलिल, जे अन्त:पुर राखे
गाछे पाखी ना रहे, ना रहे पशु वने ※ स्थाबर जंगम कीट चलिल सघने
भूत प्रेत पिशाच जे थाके अन्तरीक्षे ※ रामेरे देखिते जाय, केह नाहि थाके
तेरशत वृहन्दे वाहिर हैल पथे ※ भरत श्रीरामचन्द्रे ना पान देखिते ६८९
भरत बलेन, हे, चंचल हनूमान ※ जत किछु बलिला, हइल सब आन
हनूमान बलेन, ना हओ उतरोल ※ गोमतीर पारे शुन कटकेर रोल

सामन्तों के साथ चल पड़े। खड़ाऊँ के ऊपर छत्र और दंड लगाये गये और चँवर डुलाये जाने लगे। अखंड आनन्द विराजने लगा। चलते हुए प्रति पग पर भरत नमस्कार करने लगे, अपार आनन्द से भरत राम को लेने के लिए चल पड़े। कुल-पुरोहित वशिष्ठ और नारद भी साथ चले। सभी पुरवासी लोग भी आनन्द से चलने लगे। डोलियाँ नेत (सूक्ष्म वस्त्र) के परदों से ढक दी गई, अपनी सात सौ सौतों के साथ कौशिल्या चल पड़ीं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र चारों वर्णों के अनगिनत लोग श्रीराम को देखने चल पड़े। गर्भवती नारियाँ भी बेतहाशा दौड़ कर चलीं। लोक-लाज और भय त्याग कुलनारी भी चल पड़ी। काने, लंगड़े, बच्चे, बूढ़े इन्हें लेकर दूसरे लोग चले। श्रीराम के दर्शन से अन्धे को आँखें मिल गई। बहुत से ब्राह्मण और ब्राह्मणियाँ भी चल पड़ीं। उन लोगों के घरों में एक भी प्राणी नहीं रुके। अवधूत संन्यासी मुँह उठाकर दौड़े अन्त:पुर का रक्षक नपुंसक भी चल पड़ा। न वृक्षों पर पक्षी रहे और न वनों में पशु। स्थावर जंगम कीट भी सवेग चले। अन्तरिक्ष में रहनेवाले भूत, प्रेत, पिशाच भी अपने स्थान छोड़ राम को देखने चल पड़े। तेरह सौ महलों के निवासी पथ पर निकल आए, भरत श्रीरामचन्द्र को नहीं देख सके॥ ६८९॥

भरत ने कहा, हे चंचल हनुमान, जो कुछ तुमने कहा वह सभी झूठा पड़ता जा रहा है। हनुमान ने कहा, व्याकुल मत होओ, गोमती के

भरद्वाज-मुनिर वरेते बिद्यमान ❋ शुष्कगाछे फल-फुल, लह एइ दान
ओइ देख रथखान आसिछे आकाशे ❋ ब्रह्मार रचित रथ बहे राजहंसे
कि कव रथेर कथा अपूर्व्व काहिनी ❋ उहार उपरे सैन्य सत्तर अक्षौहिणी
तीन कोटि राक्षस सहित विभीषण ❋ एक कोने रथेर रयेछे तुष्टमन
रथखान देख सबे ढाकिछे गगन ❋ ढाकिल सूर्येर तेज रथेर किरण६९०
एमत उभये हय कथोपकथन ❋ हेनकाले रथ लये आसिल पवन
भरते देखिया राम हलेन कातर ❋ अस्थि-चर्म्म-सार अति क्षीण कलेबर
चलिया आसिते पद उखड़िया पड़े ❋ हनूमान कोले करि रथे गिया चड़े
रथोपरि चारि भाये हैल दरशन ❋ चतुर्द्दश बत्सरान्ते देन आलिंगन
प्रेमे पूर्ण, आनन्दे बहिछे अश्रुधार ❋ श्रीरामेरे भरत करेन नमस्कार
जानकीरे प्रणिपात करेन भरत ❋ आशीर्व्वाद जानकी करेन शत-शत
ज्येष्ठ ज्ञाने भरत लक्ष्मणे नाहि बन्दे ❋ परस्पर कोलाकुलि परम आनन्दे
तिनेर अनुज वटे बीर शत्रुघन ❋ चारि भाइ एकवारे कैला आलिंगन
एक विष्णु चारि अंश मायार कारण ❋ देवगण बले, पाछे हय वा मिलन

अन्य तट पर सेना का कलरव सुनाई पड़ रहा है। भरद्वाज मुनि के वर से सूखे पेड़ों पर भी फल-फूल आ गये हैं, वह देखो आकाश में रथ आ रहा है। ब्रह्मा द्वारा निर्मित रथ राजहंस चला रहे हैं। रथ की बात क्या बखानूँ, उस पर सत्तर अक्षौहिनी सेना बैठी हुई है। तीन करोड़ राक्षसों के साथ विभीषण रथ के एक कोने में तुष्ट बैठा है। देखो, रथ आकाश को तथा सूर्य की किरणों को ढाँपे ले रहा है ॥ ६९० ॥

दोनों में ऐसी बातचीत होने लगी। ऐसे ही समय रथ लेकर पवन आ पहुँचा। भरत को देखकर राम बड़े व्याकुल हो गये। भरत के हाड़-पंजर निकल आए हैं और वे बड़े दुबले हो गये हैं। चलने में उनके पैर बारबार लड़खड़ा जाते हैं। हनुमान ने उन्हें गोद में ले लिया और रथ पर चढ़ गये। रथ के ऊपर चारों भाइयों में भेंट हो गई, चौदह वर्षों के बाद सब एक दूसरे से गले मिले। प्रेम से गदगद हो गये, आनन्द के आँसुओं की धारा बहने लगी। भरत ने श्रीराम को नमस्कार किया और जानकी को प्रणाम किया। जानकी ने सैकड़ों आशीर्वाद दिये। ज्येष्ठ होने के कारण भरत ने लक्ष्मण को प्रणाम नहीं किया दोनों बड़े आनन्द से गले मिले। वीर शत्रुघ्न तीनों के ही अनुज हैं इसलिए चारों भाइयों ने एक ही बार में उनका आलिंगन किया। वे चारों एक ही विष्णु के अंश हैं जो माया के कारण चार रूपों में हो गये हैं। देवगणों को शंका हुई कि कहीं एक ही में न मिल जायें। एक स्थान पर चारों भाइयों में मिलन हुआ तो आनन्द से सारे देवताओं ने फूल

एकठाँइ चारि भाये हइल मिलन * आनन्दे अमर करे पुष्प बरिषण
श्रीराम वशिष्ठ गुरु करेन बन्दन * सबारे वन्देन राम कुलेर ब्राह्मण६९१
पुत्रशोके कौशल्यार अस्थिचर्म्म सार * राम-राम बिना ताँर मुखे नाहि आर
सुमित्रार नेत्रे वारि झरे झर-झर * सर्व्वदा कान्दिछे वलि 'राम रघुवर'
हेनकाले सीता सह श्रीराम लक्ष्मण * रथ हैते नामि एल जननी-सदन
माता विमातारे राम करेन प्रणाम * आशीर्ब्बाद करे चिरजीबी हओ राम
अन्धेर नयन जेन हय पुनर्व्वार * सेइरूप आनन्द सतिनी दुजनार६९२
पुलके पूर्णित हये कान्दे दुइ राणी * दुइजने प्रणमिला सीता ठाकुराणी
कान्देन सुमित्रा राणी सीता लये कोले * तिनजने तितिलेन नयनेर जले६९३
सुमित्रार आगे राम जोड़हाते कन * एइ लह माता, तव प्राणेर लक्ष्मण
वनेते गमन आमि कैनु जेइकाले * हाते हाते लक्ष्मणेरे सँपि दियाछिले
प्राणेर दोसर मम लक्ष्मण जे भाइ * लक्ष्मणेर गुणे वने दुःख जानि नाइ
पितृसत्य पालिया आइनु देशे फिरे * तोमार लक्ष्मणे आनि दिलाम तोमारे
सुमित्रा वलेन, राम, कत कह आर * लक्ष्मण आमार नहे, जानिओ तोमार

वरसाये। श्रीराम ने गुरु वशिष्ठ को प्रणाम किया और कुल के सारे ब्राह्मणों का वन्दन किया ॥ ६६१ ॥

पुत्रशोक से कौशिल्या हड्डियों का ढाँचा मात्र रह गईं थीं, उनके मुँह से सिवाय राम नाम के और कोई शब्द नहीं निकलता था। सुमित्रा के नयनों से झर-झर आँसू गिर रहे हैं और वे 'राम रघुवर' कहकर रो रही हैं। ऐसे ही समय सीता को साथ लिये श्रीराम-लक्ष्मण रथ से उतर कर जननी के पास आए। माता और विमाता को राम ने प्रणाम किया। उन्होंने आशीर्वाद दिया—हे राम चिरंजीवी होओ। मानों अन्धों को फिर से नयन मिल गये हों, दोनों सौतों को ऐसा ही आनन्द प्राप्त हुआ ॥ ६६२ ॥

दोनों रानियाँ पुलक से भरकर रोने लगीं। दोनों को सीता जी ने प्रणाम किया। सीता को गोद में लेकर रानी सुमित्रा रोने लगी। तीनों आँसुओं से भीग गयीं ॥ ६६३ ॥

सुमित्रा के सम्मुख राम ने हाथ जोड़ कर कहा, माँ, अपने लक्ष्मण को लो। जिस समय मैं वन जा रहा था, तुमने लक्ष्मण को मेरे हाथों में सौंप दिया था। भाई लक्ष्मण मेरे प्राणों का साथी रहा। लक्ष्मण के गुण के कारण मुझको वन में कोई कष्ट न मिला। पिता का सत्य पालन कर देश लौट आया हूँ—तुम्हारा लक्ष्मण, मैं तुमको लौटाये देता हूँ। सुमित्रा ने कहा, राम यह तुम क्या कह रहे हो। लक्ष्मण मेरा नहीं है, यह जान लो कि वह तुम्हारा ही है। राम, मैं तुमसे एक बात पूछती हूँ, लक्ष्मण के

एक कथा राम, आमि जिज्ञासि तोमाके ※ केन ए शेलेर चिन्ह लक्ष्मणेर बुके
श्रीराम बलेन, माता, करि निवेदन ※ लंकापुरी-मध्ये हयेछिल महारण
रावणेर पुत्र इन्द्रजित नाम धरे ※ महाधनुर्द्धर सेइ भुवन-भितरे
ताहारे लक्ष्मण भाइ करे विनाशन ※ महाक्रोधे समरे आइल दशानन
महारणे लक्ष्मणेरे शक्ति प्रहारिल ※ सेइ शक्ति लक्ष्मणेर वक्षेते वाजिल
अचेतन हये भाइ पड़े रणस्थले ※ हइया व्याकुल आमि करिलाम कोले
हनूमान औषध आनिया तदन्तर ※ लक्ष्मणेर प्राणदान कैल वीरवर
अतएव एइ चिह्न शक्तिर प्रहार ※ से सब कहिते दुःख वाड़ये अपार
सुमित्रा बलेन, राम, शुनह बचन ※ शेलचिन्ह परे केन ना दिले चरण
जे पद-स्पर्शने स्वर्ण हैल काष्ठतरी ※ लक्ष्मणेर बुके केन नाहि दिले हरि
लक्ष्मणेर बर्ने स्वर्ण हइत मिलन ※ तबे शेल-चिह्न ना थाकित कदाचन ६९४
हेंट मुखे रहे राम हइया लज्जित ※ भरत पादुका आनि जोगाय त्वरित
सम्मुखेते राखिल पादुका दुइ पाट ※ रथ त्यजि रघुनाथ भूमे वहे बाट
भरत बलेन, गोसाइँ, करि निवेदन ※ महाव्रत करेछिनु पादुका-सेवन
व्रत सांग हैल मम तब आगमने ※ बारेक पादुका देह ओ रांगा चरणे

सीने पर यह शेल का दाग कैसा है। श्रीराम ने कहा, माँ, बताता हूँ। लंकापुरी में महायुद्ध हुआ था। रावण के पुत्र का नाम था इन्द्रजीत—वह संसार में महा धनुर्धर था। भाई लक्ष्मण ने उसका विनाश किया। महाक्रोध से रावण समर में आया और लक्ष्मण पर उसने शेल से प्रहार किया। वह शक्ति लक्ष्मण के सीने पर जा लगी। अचेतन होकर भाई लक्ष्मण रण-स्थल में गिर पड़े। व्याकुल होकर मैंने उन्हें गोद में ले लिया। इसके उपरान्त हनुमान ने औषध लाकर दिया। वीरवर ने लक्ष्मण के प्राण बचा लिये। यह दाग शेल के प्रहार से पड़ा है। यह सब कहते हुए क्लेश बढ़ता ही है। सुमित्रा बोली, राम, मेरी बात सुनो। तुमने शेल के चिन्ह पर अपना चरण क्यों नहीं रखा। जिन चरणों के स्पर्श से लकड़ी की नाव सोने की बन गई, उनको तुमने लक्ष्मण की छाती पर क्यों नहीं रख दिया। लक्ष्मण के शरीर का वर्ण और स्वर्ण घुलमिल जाता और शेल का चिह्न कतई न रह जाता ॥ ६९४ ॥

राम लज्जित होकर सिर झुकाये रहे। भरत ने आकर झट पादुका रख दी। सामने पादुका की जोड़ी रख दी गई तो रथ छोड़कर रघुनाथ भूमि पर उतर आए। भरत ने कहा, हे स्वामी, निवेदन करता हूँ कि मैंने पादुका-सेवा का महाव्रत ग्रहण किया था। तुम्हारे आने के साथ-साथ मेरा व्रत समाप्त हो गया। अपने लाल-लाल चरणों में यह पादुका पहन लो।

प्रजारा नोङाय माथा पादुका देखिये ❊ पादुका दिलेन पाये हरषित हये
राज्यखंडे जान राम परम हरिषे ❊लंकाकांड गाइल पंडित कृत्तिबासे६९५

श्री रामेर कैकेयी—सम्भाषण

आइल देशेते राम, आनन्द सबार ❊ शुनिल कैकेयी राणी शुभ-समाचार
अभिमाने कैकेयीर वारिपूर्ण आँखि ❊ कथा कि कबेन राम मा वलिया डाकि
जदि राम पूर्व्वमत करे सम्भाषण ❊ राखिव ए देह, नहे त्यजिव जीवन
एतेक भाविया राणी हैल अधोमुख ❊ करेते राखिल एक विषेर लड्डुक
जदि राम मा वलिया ना डाके आमारे❊त्यजिव ए पाप प्राण बिषपान करे६९६
एतवलि अभिमाने रहिलेन राणी ❊ अन्तरे जानिला ताहा राम रघुमणि
व्यथित हइल प्राण विमातार तरे ❊ अग्रेते चलिला राम कैकेयीर घरे६९७
धूलाय वसिया राणी विरस-बदन ❊ हेनकाले राम गिया वन्दिला चरण
कैकेयीरे श्रीराम कहेन जोड़करे ❊ देशेते आइनु माता चौद्दबर्ष परे
अरण्ये पड़ियाछिनु अनेक प्रमादे ❊उद्धार हयेछि सबे तब आशीर्व्वादे६९८

प्रजा पादुका देखकर सिर झुकाने लगी, राम ने सहर्ष पादुका पहन ली। परम हर्ष से राम ने अपने राज्य में प्रवेश किया। पंडित कृत्तिवास ने लंकाकांड का गायन किया ।। ६९५ ।।

श्रीराम-कैकेयी-संभाषण

राम स्वदेश लौट आए हैं इससे सभी को अपार आनन्द हुआ। रानी कैकेयी ने यह शुभ-समाचार सुना। अभिमान से कैकेयी की आँखें आँसुओं से भर गईं। यदि राम माँ कहकर पुकारें तो मैं क्या कहूँगी। यदि राम पहले ही की तरह सम्भापण न करेंगे तो यह शरीर त्याग दूँगी, प्राण छोड़ दूँगी। इतना सोचकर रानी मुँह लटकाये बैठी रही और हाथों में जहर का एक लड्डू रख लिया। अगर राम ने मुझे माँ कहकर नहीं पुकारा तो मैं यह विष खाकर पापी प्राण त्याग दूँगी ।। ६९६ ।।

इतना कह कर रानी रूठ कर बैठी रही। राम ने हृदय में यह जान लिया। विमाता के लिए उनके प्राण व्यथित हो उठे। राम सबसे पहले कैकेयी के ही कक्ष की ओर चल पड़े ।। ६९७ ।।

उदास चेहरा लिये रानी धूल में बैठी है। ऐसे ही समय राम ने जाकर उनके चरणों की वन्दना की। हाथ जोड़ कर राम ने कैकेयी से कहा, माँ चौदह वर्ष के बाद स्वदेश लौट आया हूँ। वन में बड़ी विपत्ति में फँस गया था, तुम्हारे आशीर्वाद से उन सब से उबर आया हूँ ।। ६९८ ।।

लज्जाय कैकेयी कहिछेन रघुनाथे ❋ कोन दोषे दोषी आमि तोमार अग्रेते
बने गेले देवतार कार्यसिद्धि लागि ❋ आमारे करिले केन निमित्तेर भागी
तुमि गोलोकेर पति, जाने ए संसार ❋ अवतार हयेछ हरिते क्षिति-भार
संसारेर सार तुमि, के चिनिते पारे ❋ सूर्यबंश पवित्र तोमार अवतारे
अरि मारि देवतार वांछा पूराइलि ❋ आमार माथाय दिया कलंकेर डालि
वाछा राम, वलि तोरे आर एक कथा ❋ एत जे दितेछ दुःख जानिया बिमाता
चिरकाल भरत-अधिक स्नेह करि ❋ कुकथा वलिनु मुखे, तोमार चातुरी
सर्व्वघटे स्थायी तुमि, सुख-दुःख-दाता ❋ एतेक दुर्गति कैले जानिया बिमाता ६९९
लज्जित हइया राम हेट कैल माथा ❋ जोड़हात करि राम कहिछेन कथा
कैकेयीरे तोषे राम विनय-बचने ❋ तव दोष नाहि माता, दैव बिड़म्बने
कालेते सकलि हय, बिधिर निर्व्वन्ध ❋ तोमार प्रसादे बधिलाम दशस्कन्ध
तोमा हैते पाइलाम सुग्रीव सुमित ❋ संकटेते सुग्रीव करिल बड़ हित
तोमार प्रसादे करि सागर-बन्धन ❋ रावणे मारिया तुषिलाम देबगण
जानिलाम लक्ष्मणेर जतेक भकति ❋ जानिलाम सीतादेबी पतिब्रता सती

लज्जा से कैकेयी ने रघुनाथ से कहा, तुम्हारे सम्मुख मैं दोषी हूँ। देवताओं की कार्य-सिद्धि के लिए तुम वन गये और मुझको निमित्त का भागी वना गये। यह सारा संसार जानता है कि तुम गोलोक के पति हो, संसार का भार दूर करने के लिए अवतार लिये हुए हो। तुम संसार के सार हो। तुमको कौन पहचान सकता है। तुम्हारे अवतार लेने से सूर्यवंश पवित्र हो गया। शत्रु को मार कर देवताओं की अभिलाषा पूरी की और [इसके निमित्त] मेरे सिर पर सारा कलंक थोप गये [संकोच न किया]। बेटा राम, तुम जो मेरे को इतना दुःख पहुँचा रहे हो उसका कारण है कि मैं विमाता हूँ। सदा से तुमको भरत से अधिक स्नेह करती हूँ। तुमको जो कुबोल वोली सो तुम्हारी ही माया थी। तुम सर्व स्थानों में स्थित हो, सुख-दुख-दायक हो, तुमने जो मेरी इतनी दुर्दशा की वह केवल विमाता समझकर ही की ॥ ६९९ ॥

राम ने लज्जित होकर सिर झुका लिया। हाथ जोड़कर राम कहने लगे। विनय वचन से राम कैकेयी को प्रसन्न करने लगे। तुम्हारा कोई भी दोष नहीं है माँ, सभी कुछ दैव की विडम्बना है। समय पर सभी कुछ होता है, विधि का लेखा है। तुम्हारी ही कृपा से दशानन का वध किया। तुम्हारे ही कारण मुझको सुग्रीव जैसा मित्र मिला। संकट में सुग्रीव ने मेरा वड़ा उपकार किया। तुम्हारी ही कृपा से मैंने सागर बाँधा। रावण को मारकर देवताओं को तुष्ट किया। लक्ष्मण का सारा भक्तिभाव जानने को मिला। यह भी जान सका कि सीता पतिव्रता और सती है। माँ तुम्ही

तोमा हइते धर्म्माधर्म्म जानिलाम माता ※ छलबाक्ये कैकेयी द्विगुण पाइल व्यथा
सबार आनन्द हैल राम-दरशने ※ आनन्दे रहिल राम मातार भवने
केह नाचे केह गाय मनेर हरिषे ※ लंकाकांड गाइल पंडितकृत्तिवासे ७००

श्रीरामेर राज्याभिषेक

बाहिर चौताराय राम करेन देओयान ※ छत्रिश कोटि सेनापति दांडाय प्रधान
सबाकारे आसन जोगाय शीघ्रगति ※ बसिल छत्रिश कोटि श्रेष्ठ सेनापति
भरते करान राम सैन्य-परिचय ※ देखह सुग्रीबराज सूर्य्येर तनय
युवराज अंगद जे वालिर कुमार ※ सुग्रीब दिलेन जारे सर्व्व अधिकार
देखह गबाक्ष गय से गन्धमादन ※ महेन्द्र देबेन्द्र देख सुषेण-नन्दन
ऋषभ कुमुद देख पनस सम्पाति ※ नल नील देख एइ मुख्य सेनापति
ऐ देख सुषेण ओ मंत्री जाम्बवान ※ औषधे ओ मंत्रणाते दोंहे सावधान
एइ देख हनूमान पवन-नन्दन ※ जाहार विक्रमे मारिलाम दशानन
इहार गुणेर कथा कि कव विशेष ※ हनूमान करियाछे सीतार उद्देश
हनूमान आमार सकल कार्ज्ये दड़ ※ चारि भाइ हैते मम हनूमान बड़
ऐ देख लंकेश्वर मित्र विभीषण ※ जाहार मंत्रणा गुणे मरिल रावण

से मैं धर्म-अधर्म, सभी कुछ जान सका। व्याजस्तुति पूर्ण ये वाक्य सुनकर कैकेयी को दुगुनी व्यथा मिली। सभी को राम के दर्शन से आनन्द प्राप्त हुआ। राम आनन्द से माँ के भवन में रहे। हर्ष से कोई नाचने लगा तो कोई गाने लगा। पंडित कृत्तिवास ने लंकाकांड का गायन किया ॥ ७०० ॥

श्रीराम का राज्याभिषेक

बाहर चबूतरे पर राम ने सभा की। छत्तीस करोड़ प्रधान सेनापति खड़े हो गये। सभी को झटपट आसन दिया गया। छत्तीस करोड़ श्रेष्ठ सेनापति बैठ गये। राम, भरत से सेना का परिचय देने लगे। वह देखो सूर्य का तनय राजा सुग्रीव है। वह देखो वालि का पुत्र अंगद है जिसे सुग्रीव ने सारा अधिकार दे रखा है। वह देखो गवाक्ष, गय और गन्धमादन हैं। महेन्द्र, देवेन्द्र और सुषेणनन्दन को देखो। ऋषभ, कुमुद और पनस, सम्पाति को देखो। मुख्य सेनापति नल और नील को देखो। वह देखो सुषेण है जो कि औषध और मंत्रणा में कुशल हैं, और यह मंत्री जाम्बवान है। यह हैं पवननन्दन हनुमान जिनके प्रताप से मैंने दशानन का वध किया। इनके गुण को मैं क्या बखानूँ, इन्होंने ही सीता को खोज निकाला था। मेरा यह हनुमान सारे कार्यों में कुशल है। यह हनुमान मेरे लिए चारों भाइयों से भी अधिक बड़ा है। वह देखो लंका के राजा मित्र विभीषण हैं जिनके

कहिलेन रघुनाथ जार जत गुण ※ सर्व्वलोके ताँर पाने चाहे पुनः पुनः
राक्षस-वानर सब धरे नाना माया ※ रामेर इंगिते तारा धरे नर-काया ७०१
भरत बलेन, साक्षी हओ सर्ब्बजन ※ प्रभुर चरणे आमि करि निवेदन
भरत प्रणाम करि रामेर चरणे ※ जोड़हाते बलेन सबार बिद्यमाने
स्थाप्य धन मम ठाँइ आछे पितृराज्य ※ तोमार आज्ञाते करियाछि राजकार्य्य
आज्ञा कर, राज्य लह, बैस सिंहासने ※ सेवा करि थाकि राम सीतार चरणे
महाराज्य राखिते आमार शक्ति नहे ※ केशरीर बिक्रम शृगाले कोथा बहे
सवलेर बोझा कि दुर्ब्बले निते पारे ※ महाराज्य महाबीर पारे राखिबारे
अद्य हैते राज्यभार आमारे ना लागे ※ क्रमागत राज्य राम, भुंज जुगे-जुगे ७०२
भरतेर कथा शुनि श्रीराम हासिया ※ भरते करेन कोले बाहु पसारिया
भरत बलेन पुनः बिनय-बचन ※ भरतेर प्रति राम कहेन तखन
तव व्यवहारे भाइ, हइलाम वश ※ पृथिवी जुड़िया तब घुषिबेक जश ७०३
जानाइल गणके उत्तम तिथि-वार ※ काटिते माथार जटा हइल सबार
चारि भाइ बसिलेन कांचनेर खाटे ※ शुभक्षणे नापित शिरेर जटा काटे

परामर्श से ही रावण की मृत्यु हो सकी। रघुनाथ ने जिसका गुण बखाना लोग उसी की ओर बार-बार देखने लगे। राक्षस और वानर लोग अनेक प्रकार की माया के जानने वाले थे, इसलिए राम के इशारे से सभी ने मनुष्य की काया धारण कर ली ॥ ७०१ ॥

भरत ने कहा, तुम सभी लोग साक्षी रहो। प्रभु के चरणों में मैं निवेदन करता हूँ, ऐसा कहकर चरणों में भरत ने प्रणाम किया। फिर सभी लोगों की उपस्थिति में हाथ जोड़कर कहने लगे, मेरे पास पिता का राज्य धरोहर के रूप में है। तुम्हारी आज्ञा से मैं राजकार्य चलाता रहा। अब आज्ञा दो, अपना राज्य स्वीकार करो और सिंहासन पर बैठ जाओ। मैं राम-सीता की सेवा करने हेतु रह जाऊँ। इस महान् राज्य को रखने की शक्ति मुझमें कहाँ है। सिंह का पराक्रम सियार में कहाँ होगा। बलवान का बोझ दुर्बल कैसे ढो सकता है। महाराज्य की रक्षा केवल महावीर ही कर सकता है। आज से राज्यभार मुझ पर न रहा। हे राम, तुम युग-युग तक इस राज्य का भोग करो ॥ ७०२ ॥

भरत की बात सुनकर राम ने हँसकर और बाँह पसार कर भरत को गले लगा लिया। भरत ने फिर विनय-वचन कहे। तब राम ने भरत से कहा, भाई, तुम्हारे आचरण से मैं तुम्हारे वशीभूत हो गया। संसार भर में तुम्हारा यश प्रसिद्ध होगा ॥ ७०३ ॥

ज्योतिषियों ने उत्तम तिथि लग्न बतायी। सभी को अपनी जटाएँ कटानी पड़ीं। चारों भाई स्वर्ण के पलँग पर बैठे और शुभघड़ी में

जटा-जूट मुंडन करिया सुबिधान ❋ सुवासित गंगाजले कराइल स्नान
अतःपर करिया वल्कल बिसर्ज्जन ❋ करिलेन परिधान विचित्र वसन
जानकीरे स्नान कराइला जत राणी ❋ वैकुंठ हइते लक्ष्मी आइला आपनि
करेछिला रामचन्द्र जेमत आचार ❋ वल्कल परिया सब आछिल संसार
अजोध्यार मनुष्य तपस्वि-वेशधारी ❋ परिल बसन से बल्कल परिहरि
श्रीरामेर दुःखे लोक छिल सब दुःखी ❋ ताँहार सुखेते लोक हइलेक सुखी
आनन्दे कौशल्या देवी करिला रन्धन ❋ चारि भाइ करिलेन अमृत-भोजन
जज्ञस्थाने सीतादेवी गेलेन आपनि ❋ भोजन करिल सैन्य सत्तर अक्षौहिणी
सुखे गेल विभावरी हइल प्रभात ❋ आइल सकल लोक रामेर साक्षात ७०४
श्रीराम भूपति हन गिया अजोध्याय ❋ बासना करिया सबे चलिल तथाय
चलिल रामेर संगे हाती घोड़ा चड़ि ❋ देखिवारे स्त्री-पुरुष आइल रड़ारड़ि
जे जेमन भावे छिल, सेइ भावे धाय ❋ वृद्ध काणा खोंड़ा शिशु केह नाहि रय
काणा खोंड़ा धरिया त आने अन्यजने ❋ सर्व्व दुःख घुचे तार राम दरशने
ऊर्द्धश्वासे धाइया आइसे गर्भवती ❋ लज्जा परिहरि सबे आइसे जुवती
कि करिवे स्वामी, कि करिवे धने-जने ❋ सर्व्वपाप घुचिवेक राम दरशने

नाई ने सिर की जटाएँ काट डालीं। जटाजूट काट कर मुंडित करके विधिपूर्वक सुगन्धित गंगाजल से उनको नहलाया गया। इसके बाद पेड़ के वल्कलों को उतार कर विचित्र (दिव्य) वस्त्र पहन लिये। जानकी को सभी रानियों ने नहलाया। वैकुंठ से स्वयं लक्ष्मी चली आईं। रामचन्द्र स्वयं जिस प्रकार रहते थे सभी लोग उसी प्रकार रहते थे। सारा संसार वल्कल पहने हुए था। अयोध्या के निवासी तपस्वी का वेश धारण किये हुए थे। वल्कल छोड़कर सब लोगों ने वस्त्र पहन लिये। श्रीराम के दुःख से जितने लोग दुखी थे वे सभी उनके सुख से सुखी हुए। देवी कौशल्या ने आनन्द से भोजन राँधा। चारों भाइयों ने अमृत समान भोजन किया। यज्ञस्थल पर सीतादेवी स्वयं गईं। सत्तर अक्षौहिणी सेना ने भोजन किया। रात सुख से बीत गई, सवेरा हुआ और सभी लोग राम से मिलने चले आये ॥ ७०४ ॥

अयोध्या में राम राजा बन रहे हैं। सभी लोग यही वासना लिये वहाँ के लिए चल पड़ें। हाथी, घोड़े पर सवार हो वे राम के दर्शन के लिए चल पड़े। देखने के लिए नर-नारी दौड़ते हुये आये। जो जिस दशा में था उसी दशा में दौड़ पड़ा। बूढ़ा, काना, लंगड़ा, बच्चा कोई भी पीछे नहीं रहा। अन्धे लूले को तो लोग सहारा देकर ले आते और राम के दर्शन से उनका सारा दुःख दूर हो जाता। गर्भवती नारी बेतहाशा भागती हुई आतीं, युवती नारी लज्जा और भय त्याग कर चली आतीं। भला पति से क्या होगा और धन-जन से भी क्या होगा, सारा पाप राम के दर्शन से दूर हो

चल सबे, देखि गिया रामेर बदन ※ जुड़ाइबे नयन, सुतृप्त हबे मन
मातंग छत्रिश कोटि आइल दन्ताल ※ वानर छत्रिश कोटि विक्रमे विशाल
हाती घोड़ा चड़ि सबे अजोध्याय जाय ※ शुष्क वृक्षे फल फुल छिड़ि सबे खाय ५
सुमंत्र जोगाय रथ जय-जय-नादे ※ रथोपरि चारि भाइ दिव्य परिच्छदे
धरेन भरत तबे अश्व-कड़ियाली ※ चामर ढुलाय श्री लक्ष्मण महाबली
शत्रुघ्न रामेर गाये करेन व्यजन ※ चारि अंशे विराजित रथे नारायण
दुई दिके सर्व्व लोक राम-पाने चाहे ※ श्रीरामेर जत गुण शत मुखे कहे
बहुपुण्ये पाइ प्रभु, तोमा हेन राजा ※ जन्मे जन्मे रघुनाथ करि तव पूजा
सर्व्वलोक मुग्ध हय करिया दर्शन ※ सर्व्वक्षण हेरि येन तब चन्द्रानन
हेरिया रामेर रूप भुवन-मोहन ※ पुर वनितार मन मजिल नयन
श्रीरामेर मन नहे, अन्येर जेमन ※ जे मन सीतार प्रति, के पाय से मन
जथा राम, तथा सीता, शोभे दुइजन ※ अन्य-पाने श्रीराम ना चान कदाचन
सीतार सौभाग्य, तारा बलिया अन्तरे ※ आपना निन्दिया सबे गेल घरे-घरे
घरे गिया नारीजने प्राण नहे स्थिर ※ अजोध्याय प्रबेश करेन रघुबीर
भरतेर प्रति राम करेन आदेश ※ कटक रहिते स्थान करह उद्देश

जायगा। चलो, सभी लोग चलकर राम का मुख देखें, उससे नैन शीतल हो जाएँगे और मन प्रसन्न होगा। दाँत वाले छत्तीस करोड़ हाथी आये। अति पराक्रमी छत्तीस करोड़ वानर आये। हाथी, घोड़े पर सवार होकर सभी अयोध्या को चल पड़े। सूखे पेड़ों से फल-फूल तोड़ते खाते, सब चलने लगे ॥ ७०५ ॥

जय-जय की ध्वनि करते हुए सुमन्त्र रथ लेकर आया। रथ पर चारों भाई दिव्य-वस्त्र पहन कर बैठे। भरत ने घोड़े के गले की कौड़ियों की बनी पट्टी थाम ली। महाबली लक्ष्मण चँवर डुलाने लगे। शत्रुघ्न राम के शरीर पर पंखा झलने लगे। अपने चारों अंशों में नारायण विराजने लगे। दोनों ओर सारे लोग राम की ओर देखते रहे। श्रीराम के सारे गुणों को बढ़-चढ़ कर बखानते हुए कहने लगे, हे प्रभु, बड़े पुण्य से तुम जैसा राजा मिला है। हे रघुनाथ, हम लोग जन्म-जन्म तुम्हारी पूजा करते रहें। सभी लोग राम का दर्शन कर मुग्ध हो गये, सारा समय वे उनके चन्द्रानन को ही देखते रहे। राम का भुवनमोहन रूप देखकर पुर-वनिताओं का मन मुग्ध हो गया। श्रीराम का मन दूसरों के मन जैसा नहीं। जो मन सीता में रमा हुआ हो उसको दूसरा कौन पा सकता है। जहाँ राम हैं, वहीं सीता हैं, दोनों शोभा पा रहे हैं। श्रीराम कभी दूसरी ओर नहीं देखते। सभी नारियाँ मन में यह कहती हुई कि यह सीता का सौभाग्य है, अपनों को कोसती हुई अपने-अपने घर चली गयीं। घर जाकर भी नारियों के प्राण शान्त नहीं हुए। रघुवीर ने अयोध्या में प्रवेश किया। राम ने भरत को आदेश दिया कि

पाइया रामेर आज्ञा भरत सत्वर ※ करिलेन निर्दिष्ट छत्रिश कोटि घर
एकवृन्द आओयास से देखिते रूपस ※ चाले शोभा करितेछे रत्नेर कलस
रत्नमय घरखान धरे नाना ज्योति ※ एइ घरे रहुक सुग्रीव नरपति
आर जे आवास देख निर्मल-कांचन ※ तिनकोटि राक्षसे रहुक बिभीषण
देख एइ घरे मणि-माणिक्य प्रस्तर ※ रहुक सैन्येर सह वालिर कोङर
आर जे आवास देख मुकुता-गठनि ※ एइखाने हनूमान थाकुक आपनि
सिन्धुनद-तीरे आर सरजूर तीरे ※ एतदूर चापि बैसे राक्षसे वानरे
सिन्धुनद सरजूते चल्लिश जोजन ※ एतदूर व्यापिया रहिल सैन्यगण
स्वर्णखाटे शुइल बानर शज्या तले ※ देवकन्या लइया बसिल कुतूहले ६
कहेन भरत गिया सुग्रीवेर घर ※ कालि छत्र दंड धरिबेन रघुबर
पुनर्ब्बसु नक्षत्र ओ पूर्ण चैत्र मास ※ श्रीराम हबेन राजा, आजि अधिवास
अन्य द्रव्य आनिब से कोन कार्ज्य गणि ※ आनिते नारिब चारि सागरेर पानी
दिलाम चारिटि रत्न निर्म्मित कलसी ※ चारि सागरेर जल आन, नहे वासि
सातशत नदी आछे पृथिवी-मंडले ※ श्रीरामेर अभिषेक हबे सेइ जले
सातशत स्वर्णकुंभ दिनु तव ठाँइ ※ सकल नदीर जल कालि जेन पाइ ७

सेना के रहने के स्थान की व्यवस्था करो। राम की आज्ञा पाकर भरत ने झटपट छत्तीस करोड़ घर निश्चित कर दिये। एक पंक्ति में बने आवास देखने में बड़े ही सुन्दर थे जिनकी छतों पर रत्न के कलश शोभायमान हो रहे थे। वे बोले, यह रत्नमय घर विभिन्न ज्योतियों से पूर्ण है, इसी घर में नरपति सुग्रीव रहें। निर्मल कांचन का बना दूसरा घर देखो, तीन करोड़ राक्षसों के साथ उसमें विभीषण रहें। इस घर में देखो मणि-माणिक्य बहुतायत से लगे हैं, इसमें बालि का बेटा अंगद अपनी सेना के साथ रहे। और मोती के आकार का जो आवास देख रहे हो वहाँ हनुमान स्वयं रहें। सिन्धुनद के तट से लेकर सरयू के तट तक की भूमि पर राक्षस और वानर डट कर जम गये। सिन्धुनद और सरयू में चालीस योजन का फासला है, इतनी दूर तक सेना फैली पड़ी रही। वानर सोने के पलंग पर लेटा और बिस्तर पर देवकन्या को गोद में लेकर कौतूहल से बैठा ॥ ७०६ ॥

सुग्रीव के निवास में जाकर भरत ने कहा, कल रघुवर छत्र-दंड धारण करेंगे। चैत का महीना है और पुनर्वसु नक्षत्र का योग है। श्रीराम राजा होंगे, आज अधिवास है। दूसरे सारे द्रव्य मैं लेता आऊँगा—वह कोई बड़ा काम नहीं है लेकिन चार समुद्रों का जल मैं नहीं ला सकूँगा। रत्न-निर्मित चार घड़े दे रहा हूँ। चार समुद्रों का ताजा जल लाओ—बासी नहीं। पृथ्वीमंडल में सात सौ नदियाँ हैं, श्रीराम का अभिषेक उसी जल से होगा। सात सौ स्वर्णकुंभ तुमको दे रहा हूँ, कलतक सब नदियों का जल मिल जाये ॥ ७०७ ॥

सुग्रीव बानर-पाने चाहे कटाक्षेते ※ धाइया बानर सैन्य कुम्भ निल हाते
राजा वले, सागरेर जले चिन्ह् आछे ※ नालि-जुलि जल भाँडाओ जे पाछे८
पाठाइला सुग्रीव बानर चतुर्भित ※ अधिवास रामेर करेन पुरोहित
वशिष्ट नारद-मुनि करेन वेदध्वनि ※ अखिल भुबने 'रामजय' शब्द शुनि
राम-सीता दुइजने कहेन काहिनी ※ आर एकदिन प्रभु, छिलाम एमनि
शुनिया सीतार कथा श्रीरामेर हास ※ मधुर वचने ताँरे करेन सम्भाष
पूर्ब्बदिने राम-सीता छिलेन संयत ※ परदिन राम राजा हन शास्त्रमत१०
प्रभात हईल, पूर्ब्बदिकेर प्रकाश ※ बानर कलसी हाते उठिल आकाश
अग्नि हेन उड़ि जाय नील जे बानर ※ चक्षुर निमिषे गेल से पूर्ब्ब सागर
अजोध्या सागर-पूर्ब्ब चारि-श योजन ※ राम-तेजे नील-बीर गेल ततक्षण
कलसी भरिया राख सागरेर घाटे ※ चिन्ह् चाहि नीलबीर भ्रमे तार तटे
रक्त-चन्दनेर डाल दिलेक ढाकनि ※ सुग्रीबेर काछे राखे प्रभात-रजनी११
जाम्बवान तार वाक्ये साहसे करि भर※ चक्षुर निमिषे गेल पश्चिम सागर
अजोध्या पश्चिम सिन्धु आट-श जोजन※ श्रीरामेर तेजेते से गेल ततक्षण

सुग्रीव ने वानरों की ओर कटाक्ष से देखा। वानर-सेना ने दौड़ कर हाथों में घड़े ले लिये। राजा ने कहा, समुद्र के जल में अपने लक्षण हैं, कहीं नहर या गढ़ैया का पानी लाकर धोखा देने की कोशिश न करना॥ ७०८॥

सुग्रीव ने चारों दिशाओं में वानरों को भेजा। पुरोहित राम का अधिवास कराने लगे। वशिष्ठ और नारद मुनि वेदमंत्र पाठ करने लगे। अखिल ब्रह्मांड में 'राम-जय' का शब्द गूँजने लगा। राम और सीता दोनों उपवास से रहे और सारी नगरी जागती रही॥ ७०९॥

राम-सीता दोनों बातें करने लगे। एक दिन और था जब प्रभु! हमलोग इसी प्रकार रहे। सीता की बात सुनकर राम हँसने लगे। मधुर वचनों से उससे बोलने लगे। पूर्व दिन राम और सीता संयम से रहे और अगले दिन राम शास्त्रानुसार राजा बन गये॥ ७१०॥

सबेरा हुआ, पूरब की दिशा में प्रकाश हो गया। वानर घड़ों को हाथ में लिए गगन पर चढ़ गये। वानर नील अग्नि के समान उड़ चला और पलक झँपते ही वह पूर्वी सागर पर पहुँच गया। अयोध्या और पूर्वी सागर में चार सौ योजन की दूरी है। राम के प्रताप से नीलवीर उतनी देर में पहुँच गया। घड़ा भर कर उसने समुद्र-तट पर रख दिया और निशानी के लिए किनारे भटकने लगा। रक्त-चन्दन के वृक्ष की टहनी से उसने घड़े को ढक दिया और ले जाकर सवेरा होते ही सुग्रीव के सम्मुख रख दिया॥ ७११॥

उसके वाक्य से साहस पाकर जाम्बवान आँखों के झपकते ही पश्चिम-सागर जा पहुँचा। अयोध्या और पश्चिम-सिन्धु में आठ सौ योजन की दूरी

राखिल कलसी भरि सागरेर पाड़े ※ चिन्ह अन्वेपिया वुड़ा भ्रमे उभरड़े
देवदारु डाल भांगि आच्छादिल पानि ※राखिल सुग्रीब-काछे प्रभात-रजनी १२
दक्षिण-सागरे गेल नल महाबीर ※ जेखाने से बाँधियाछे समुद्र गभीर
दक्षिण-सागर पाँच शत जे जोजन ※ श्रीरामेर तेजे नल गेल ततक्षण
नले देखि सागरेर उड़िल जीवन ※ आर वार नलवीर एल कि कारण
सागरेर त्रास देखि नले हइल हास ※ हासिया सागर-प्रति करिछे आश्वास
छिलाम रामेर संगे, तेंइ मम बल ※ कार शक्ति वान्धिवारे पारे तब जल
श्रीराम हवेन राजा अजोध्या-नगरे ※ जल-हेतु आसियाछि तोमार सागरे
मने तोलापाड़ा करे नल महाबल ※ रत्नकुम्भे भरिलेन सागरेर जल
कलसी भरिया राखे सेतुर उपरे ※ चिन्ह चाहि नलवीर भ्रमे तीरे-तीरे
सम्मुखे देखिल गाछ धवल चन्दन ※ डाल भांगि जलोपरि दिल आच्छादन
श्वेत-चन्दनेर डाले आच्छादिल पानि ※ सुग्रीवेर काछे राखे प्रभात-रजनी १३
उत्तर-सागर-पथ हाजार जोजन ※ कोन वीर जाइवे भाविछे मने-मन
श्रीराम सुग्रीव दोंहे करे अनुमान ※ हाते कुम्भ आकाशे उठिल हनूमान
शों शों शब्दे जाय वीर वायु करि भर ※ उपाड़े लेजेर टाने पादप-प्रस्तर

है। श्रीराम के पराक्रम से वह उतनी देर में पहुँच गया। सागर के किनारे घड़ा भर कर रखने के वाद बूढ़ा जाम्बवान् चिह्न ढूँढ़ता हुआ घूमने लगा। देवदारु की डाली तोड़कर उसने पानी को ढक लिया और रात समाप्त होते ही होते सुग्रीव के पास लाकर रख दिया॥ ७१२ ॥

महावीर नल दक्षिणसागर में गया जहाँ उसने सेतु बाँधा था। दक्षिण-सागर पाँच सौ योजन दूर है। श्रीराम के पराक्रम से वह उतनी देर में पहुँच गया। नल को देखकर समुद्र के प्राण सूख गये। फिर यह नलवीर किस कारण आ गया। सागर का त्रास देखकर नल को हँसी आ गई। हँस कर उसने सागर को ढाढ़स बँधाया। मैं राम के साथ था तभी मुझमें इतनी शक्ति थी, वर्ना तुम्हारे जल को कौन बाँध सकता है। अयोध्या नगरी में श्रीराम राजा होंगे, जल लेने के लिए तुम्हारे पास आया हूँ। महाबली नल मन में उथल-पुथल लिये समुद्र का जल भरने लगा। रत्नकुंभ में समुद्र का जल भर कर उसने सेतु के ऊपर घड़ा रख दिया और तट पर चिह्न के लिए घूमने लगा। सामने उसने श्वेतचन्दन का वृक्ष देखा तो डाली तोड़ कर पानी को ढक कर सुग्रीव के सम्मुख प्रभात होते ही लाकर रख दिया॥ ७१३ ॥

उत्तरी समुद्र का पथ हजार योजन है। मन ही मन सब सोच रहे हैं कि कौन सा वीर जायगा। श्रीराम और सुग्रीव दोनों ने अनुमान लगाया, और हाथ में कुम्भ लेकर हनुमान आकाश में उड़ गया। वायु पर सवार होकर वीर साँय-साँय शब्द से चलने लगा। पूँछ के प्रहार से पेड़-पत्थर उखड़ आये।

आकाशे उठिया गाछ जले-स्थले पड़े ❊ बन्धु अनुव्रज्जि जेन बान्धव बाहुड़े
पवन-गमने जाय पवन-नन्दन ❊ मुहूर्त्तेर मध्ये गेल हाजार जोजन
कलसी भरिया राखे सागरेर पाड़े ❊ चिन्ह चाहि हनूमान भ्रमे उभरड़े
चन्दनेर डाल ताहे दिलेक ढाकनि ❊ सुग्रीवेर काछे राखे प्रभात रजनी
सबाकार पाछे गेल वीर हनूमान ❊ आइल लइया जल सर्ब्ब-आगुयान १४
शरभ गबाक्ष गय ओ गन्धमादन ❊ केशरी कुमुद आर सुषेण-नन्दन
महेन्द्र देबेन्द्र आर बानर पनस ❊ आनिल तीर्थेर जल हाजार कलस १५
सीता-सह श्रीराम वैसेन सिंहासने ❊ अभिषेक करिल सुग्रीव-बिभीषणे
स्वर्ग-मर्त्य-पातालेते दु-राजा संचरे ❊ दुई राजा छत्र धरे रामेर उपरे
पृथिबीते जत राजा आछे चर्तुभित ❊ श्रीरामेर अभिषेके द्वारे उपस्थित
स्वर्गलोक मर्त्यलोक आइल पाताल ❊ अजोध्याय त्रिभुवन हइल मिशाल
रहिवार स्थान नाहि, सैन्य-कलकलि ❊ नाना शब्दे बाद्य बाजे आर करतालि
चारिभिते चामर ढुलाय राजगण ❊ रामेर सम्मुखे स्थित भाइ तिनजन १६
बिरिंचि बलेन, नाहि जाब राम स्थान ❊ देबकन्यागण गिया करुक कल्याण
देबता तेत्रिश कोटि रहे अन्तरीक्षे ❊ देवकन्यागण गेल रामेर सम्मुखे

ये पेड़ आकाश में चढ़कर यों जल-स्थल पर गिरने लगे ज्यों मित्रगण मित्र को विदा करने कुछ दूर साथ जाकर फिर लौट आते हैं। पवन-नन्दन पवन-गति से चले और क्षणभर में हजार योजन पार कर गये। घड़ा भर कर उन्होंने समुद्रतट पर रखा और चिह्न के लिए इधर-उधर घूमने लगे। चन्दन की टहनी तोड़ कर उसको ढक दिया और प्रात: होते ही सुग्रीव के सम्मुख लाकर रख दिया। वीर हनुमान सबसे बाद में गया और पानी लेकर सबसे पहले आ गया ॥ ७१४ ॥

शरभ, गवाक्ष, गय, गन्धमादन, केशरी, कुमुद, सुषेण-नन्दन, महेन्द्र, देवेन्द्र, पनस आदि वानर हजार घड़े तीर्थों का जल ले आये ॥ ७१५ ॥

सीता के साथ श्रीराम सिंहासन पर बैठ गये। सुग्रीव और विभीषण ने उनका अभिषेक किया। दो राजा स्वर्ग-मर्त्य-पाताल में संचरण करते रहते हैं—दोनों राजा राम के ऊपर छत्र थामे रहे। संसार में चारों ओर जितने राजा थे सभी श्रीराम के अभिषेक के समय द्वार पर आ पहुँचे। स्वर्गलोक, मर्त्यलोक और पाताललोक से सब आये—और अयोध्या में तीनों लोक घुल-मिल गये। रहने का कोई ठौर न बचा, सेना की कलकल ध्वनि से मुखरित है। विभिन्न शब्दों वाले बाजे और ताली के शब्द सुनाई पड़ने लगे। चारों ओर सारे राजा चँवर डुलाने लगे और राम के सम्मुख तीनों भाई खड़े रहे ॥७१६॥

विरिंचि ने कहा, मैं राम के स्थान पर नहीं जाऊंगा। देवकन्याएँ जाकर उनका कल्याण करें। तैंतीस करोड़ देवता अन्तरिक्ष में रहे और देवकन्याएँ

कृत्तिवास-कबिर कवित्व सुधाभांड ※ 'राम राजा' गाइलेन गीत-लंकाकांड७१७
रति सती हैमवती, लीलावती भानुमती, इत्यादि अनेक देव रामा।
आइलेन अजोध्याय, दास-दासी संगे जाय, बसने-भूषणे निरुपमा ॥
हाते ल'ये दूर्व्वा-धान, रामेर सम्मुखे जान, श्रीरामेर करिते कल्याण।
जय जय रघुबीर, पति हओ पृथिबीर, पृथिबीते तव गुणगान ॥
पृथिबीते जन्म निला, नरलीला प्रकाशिला, तुमि लक्ष्मीपति नारायण।
कि करिब आशीर्व्वाद, पूरिल मनेर साध, करिलाम तव दरशन ॥
आसिया किन्नरीगणे, अभिषेक निमंत्रणे, करिल रामेर गुण-गान।
बिद्याधर बिद्याधरी, आसिया अजोध्यापुरी, नृत्य-गीत बाद्येर बिधान ॥
जत राजा प्रजागण, सकलि सानन्द मन, श्रीरामेर अभिषेक-दिने।
नाना अर्थ-वितरणे, तुपिला ब्राह्मणगणे, कृत्तिवास अभिषेक भणे ॥ ७१८

सीता-राम-कर्त्तृक वानरगणके पुरस्कार-प्रदान

फेलिया दिलेन ब्रह्मा स्वर्णपद्म माला ※ अलक्ष्ये करिल शोभा श्रीरामेर गला
स्वर्ण-मणि-माणिक्ये निर्म्मित दिव्य हार※इन्द्र पाठाइया दिला आरो अलंकार

राम के सम्मुख आईं। कवि कृत्तिवास का कवित्व मानो सुधा का पात्र हो; उन्होंने लंकाकांड-गीत में 'राम-राजा' का गायन किया ॥ ७१७ ॥

रति, सती, हेमवती, लीलावती, भानुमती आदि अनेक देवकन्याएँ अयोध्या में आईं। उनके साथ मनोरम वस्त्रों से सुसज्जित दास-दासियाँ भी आईं। हाथों में धान और दूब लेकर वे राम के सम्मुख श्रीराम के कल्याण के लिए गईं। हे रघुवीर! तुम्हारी जय हो, तुम पृथ्वी के पति बनो, पृथ्वी में तुम्हारा गुण गाया जाय। तुम लक्ष्मीपति नारायण हो, पृथ्वी पर जन्म लेकर तुमने नरलीला दिखाई। मैं भला आशीर्वाद क्या दूँ, तुम्हारा दर्शन कर लिया इसी से हम लोगों के मन की साध पूरी हो गई। किन्नरियाँ अभिषेक-निमंत्रण में आकर राम का गुणगान करने लगीं। विद्याधर और विद्याधरियाँ अयोध्यापुरी में आकर नृत्य, गीत और वादन की व्यवस्था में जुट गईं। जितने राजा और प्रजा हैं, सभी राम के अभिषेक-दिवस पर आनन्दपूर्ण हैं। तरह-तरह के धन के वितरण द्वारा ब्राह्मणों को तुष्ट किया गया। कृत्तिवास ने अभिषेक का बखान किया ॥ ७१८ ॥

सीता-राम द्वारा वानरों को पुरस्कार प्रदान

अदृश्यरूप से ब्रह्मा ने स्वर्ण-कमलों की माला आकाश से फेंकी, जो श्रीराम के गले की शोभा बढ़ाने लगी। इन्द्र ने स्वर्ण-मणि-माणिक्य से बना हुआ दिव्य हार आदि अलंकार भेजे। नाना प्रकार के मणि-माणिक्य, पारस-पत्थर से

नानाविध मणि-मुक्ता परश पाथर ※ कुवेरेर हार शोभे कंठेर उपर
देवतार भूषणेते ह'ये विभूषित ※ राम राजा हइलेन जगते पूजित
श्रीरामेर अभिषेक शुने जेई नरे ※ ऐहिक सम्पद बाड़े, परलोके भरे७१९
कोटि कोटि द्विज जाय श्रीरामेर स्थान ※ जाहार जे अभिलाष, ताहा पाय दान
ग्राम भूमि स्वर्ण दान करेन श्रीराम ※ विमुख ना हय केह, सबे पूर्णकाम
पूर्ण चैत्र मास, पुनर्व्वसु सुनक्षत्र ※ शुभक्षणे श्रीराम धरेन दंड-छत्र
स्वर्ण-पद्म-माला गले सूर्य्य सम ज्वले ※ से माला दिलेन राम सुग्रीवेर गले
अंगदेर काछे राम छिलेन लज्जित ※ अपूर्व्व भूषणे तारे करेन भूषित
छत्रिश कोटि सेना पाय श्रीरामेर दान ※ अभिमाने नीरब रहिला हनूमान
श्रीरामेर दानेते सकले हैल सुखी ※ हनूमान केवल मुदिल दुइ आँखि
अपराध कि करिनु प्रभुर चरणे ※ सबारे तोषेन, मोरे ना तोषेन केने२०
बाहिर करेन सीता आपनार हार ※ कि कव ताहार मूल्य भुवनेर सार
से हार देखिया सबे चाहे परस्पर ※ नाना रत्न मणि ताहे परश पाथर
बड़ बड़ सेनापति परस्पर चाय ※ ना जानि सीतार हार कोनजन पाय२१
हाते हार करि सीता राम-पाने चान ※ अभिप्राय मने, इहा कारे देन दान

बना कुबेर का हार कंठ में शोभा देने लगा। देवताओं के आभूषण से सज्जित हो राजा राम संसार में पूजित हुये। जिस मनुष्य ने भी श्रीराम के अभिषेक के बारे में सुना उसी की पार्थिव सम्पदा बढ़ी और परलोक बन गया ॥ ७१९ ॥

करोड़ों ब्राह्मण श्रीराम के पास चल पड़े। जिसको जिस किसी वस्तु की अभिलाषा है उसको वही दान में मिलता। श्रीराम गाँव, भूमि, स्वर्ण आदि दान करते रहे, किसी को भी निराश नहीं होना पड़ा, सभी की मनोकामना पूरी हुई। चैत का महीना और पुनर्वसु नक्षत्र का योग, शुभघड़ी पर श्रीराम ने दंड-छत्र को धारण किया। गले में स्वर्ण-कमल की माला सूर्य सी चमचमा रही है। वह माला निकाल कर राम ने सुग्रीव के गले में डाल दी। अंगद के सम्मुख श्रीराम ने लज्जित होकर उसको अनोखे आभूषणों से भूषित किया। छत्तीस करोड़ सेना को राम के दान मिले। श्रीराम के दान से सभी सुखी हुए, केवल हनुमान रूठ कर चुप बने रहे। हनुमान ने दोनों आँखें मूँद लीं। मैंने कौन ऐसा अपराध किया कि प्रभु सबको तुष्ट कर रहे हैं किन्तु मुझे नहीं ॥ ७२० ॥

सीता ने अपना हार निकाल लिया। उसका मूल्य क्या कहा जाय, भुवन में वह अनमोल वस्तु थी। वह हार देखकर सब लोग एक दूसरे की ओर देखने लगे। उसमें तरह-तरह के मणि और रत्न जड़े हैं और पारस पत्थर भी हैं। बड़े-बड़े सेनापति एक दूसरे को देखने लगे। जाने किस व्यक्ति को सीता का यह हार मिल जाय ॥ ७२१ ॥

यह हार किसको दिया जाय, इस अभिप्राय से हाथों में हार लेकर सीता

बुझिया श्रीराम तार करेन विधान ❋ जारे तव इच्छा जाय, तारे कर दान
अनुद्देश समयेते उद्देश जे करे ❋ मरेछिनु सबे, प्राण दिल वारे-वारे
एमत बुझिया सीता, हार कर दान ❋ कोनजन ना करिबे इथे अभिमान
जानकी हनूर पाने चान वारे-वार ❋ धेये गिया हनूमान गले परे हार
मारुतिर गले शोभे जानकीर हार ❋ प्रणमिल हनूमान चरणे सीतार
सीता बले जतकाल थाकिबे पृथिवी ❋ रोग-शोक-हीन तुमि हओ चिरजीवी
जावत् थाकिवे चन्द्र-सूर्ज्येर प्रचार ❋ जावत् रामेर नाम घुषिबे संसार
तत काल हओ तुमि अक्षय अमर ❋ हनूमान तोमारे दिलाम एइ बर
राम-नाम-प्रसंग हइबे जेइ स्थाने ❋ जथा-तथा थाक तुमि, आसिवे सेखाने७२२

हनूमानेर वक्षो-विदारण ओ अस्थिमध्ये राम-नाम-प्रदर्शन

हासिते हासिते हनू हार लये हाते ❋ छिन्न-भिन्न करे हार चिवाइया दाँते
देखिया हनूर कर्म्म हासेन लक्ष्मण ❋ कुपित रहस्य- भावे वलेन तखन७२३
लक्ष्मण वलेन, प्रभु, करि निवेदन ❋ मारुतिर गले हार दिला कि कारण
सहजे वानर गण्य पशुर मिशाले ❋ रत्न-हार दिले केन वानरेर गले७२४

राम की ओर देखने लगीं—यह समझ कर राम ने अपना मत सुना दिया—जिसे जी चाहे तुम दे दो। जब कहीं कोई पता नहीं चल रहा था, तब जिसने सब पता लगाया, जब हम सब मर चुके थे उस समय जिसने हम सबको बार-बार प्राण दिये—ऐसा समझ-बूझ कर सीता इस हार को तुम दान करो—इससे किसी का भी मन छोटा नहीं होगा। जानकी बार-बार हनुमान की ओर देखने लगीं। दौड़कर हनुमान जानकी के पास पहुँच गये और गले में हार पहन लिया। मारुति के गले में हार शोभित होने लगा। सीता के चरणों में हनुमान ने प्रणाम किया। सीता ने कहा, जितने दिन तक यह पृथ्वी रहेगी—तुम रोग-शोक से रहित हो चिरजीवी बने रहो। जब तक चन्द्र-सूर्य रहेगा, जब तक राम का नाम संसार में घोषित होता रहेगा उतने दिनों तक तुम अक्षय अमर बने रहोगे। हनुमान, तुमको मैं यह वर देती हूँ। जिस किसी स्थान पर राम के नाम का प्रसंग होगा—चाहे तुम कहीं भी रहो, वहीं पहुँच जाओगे ॥ ७२२ ॥

हनुमान का वक्ष चीरकर हड्डियों में राम-नाम का प्रदर्शन

हाथों में हार लेकर हनुमान ने हँसते-हँसते उसको दाँतों से चबाकर तोड़ डाला। हनुमान का यह कार्य देखकर लक्ष्मण हँसने लगे। वह कोप से मर्म भरे शब्दों में बोले ॥ ७२३ ॥

हे प्रभु, निवेदन करता हूँ कि हनुमान के गले में तुमने यह हार क्यों

श्रीराम वलेन, शुन, प्राणेर लक्ष्मण ※ कि हेतु छिंड़िल हार पवन-नन्दन
इहार वृत्तान्त हनूमान भाल जाने ※ जिज्ञासह हनूमाने सभा-विद्यमाने२५
हनूमान वले, शुन ठाकुर लक्ष्मण ※ बहुमूल्य हार वलि करिनु ग्रहण
देखिलाम बिचार करिया तार परे ※ राम-नाम नाहि एइ हारेर भितरे
राम-नाम-हीन जाहा, एमन जे धन ※ परित्याग करा भाल, नाहि प्रयोजन२६
लक्ष्मण वलेन, शुन पवन-कुमार ※ राम-नाम-चिन्ह नाहि देहेते तोमार
तवे केन मिथ्या देह करेछ धारण ※ कलेवर त्याग कर पवन-नन्दन२७
एतेक शुनिया तवे पवन-कुमार ※ नखे चिरि बक्षस्थल करिल विदार
सभामध्ये देखाइल विदारिया वक्ष ※ अस्थिमय राम-नाम लेखा लक्ष-लक्ष
देखिया सभार लोक हैल चमकित ※ अधोमुखे रहिलेन लक्ष्मण लज्जित२८
लक्ष्मण बलेन, शुन वीर हनूमान ※ श्रीरामेर भक्त नाहि तोमार समान
तोमारे जानेन राम, रामे जान तुमि ※ तव महिमार सीमा कि जानिब आमि
हनूमान बले, आमि बनेर बानर ※ रामेर दासानुदास तोमार नफर
शुनिया हनूर कथा श्रीरामेर हास ※लंकाकांडे गाइल पंडित कृत्तिबास७२९

दिया ? ये वानर स्वाभाविक रूप से पशुओं में गिने जाते हैं। यह रत्न-हार वानर के गले में क्यों दिया ? ॥ ७२४ ॥

श्रीराम ने कहा, हे प्राणों के समान लक्ष्मण सुनो। पवननन्दन ने हार क्यों तोड़ डाला इसका विवरण हनुमान ही भलीभाँति जानते हैं—सारी सभा के सम्मुख हनुमान से ही पूछ लो ॥ ७२५ ॥

हनुमान ने कहा, हे महाराजा लक्ष्मण सुनिए—अनमोल समझकर मैंने यह हार ले लिया। फिर बाद में विचार कर देखा, इस हार में राम का नाम नहीं है। ऐसा धन जिसमें राम का नाम न हो उसको त्याग देना ही उचित है, उसकी कोई आवश्यकता नहीं ॥ ७२६ ॥

लक्ष्मण ने कहा, हे पवनकुमार सुनो, तुम्हारे शरीर पर राम का नाम नहीं। तब क्यों नाहक यह शरीर धारण किये हुए हो। हे पवननन्दन, यह कलेवर त्याग दो ॥ ७२७ ॥

पवनकुमार ने इतना सुना तो नाखून से सीना चीर कर उसको सामने कर दिया। सभा के भीतर वक्ष चीर कर उसने दिखाया कि सारी हड्डियों पर लाख-लाख राम नाम लिखे हैं। सभा के सारे लोग यह देखकर आश्चर्य करने लगे और लक्ष्मण ने लज्जित होकर सिर झुका लिया ॥ ७२८ ॥

लक्ष्मण ने कहा, हे वीर हनुमान, सुनो। तुम्हारे समान श्रीराम का कोई दूसरा भक्त नहीं। तुम राम को जानते हो और राम तुमको जानते हैं। तुम्हारी महिमा का ओर-छोर भला मैं क्या जानूँ। हनुमान ने कहा, मैं वन का वानर हूँ, राम का दासानुदास और तुम्हारा चाकर हूँ। हनुमान की बात पर राम हँस पड़े। पंडित कृत्तिवास ने लंकाकांड का गायन किया ॥ ७२९ ॥

वानर-भोजन ओ विभीषणादिर स्वदेश-गमन

बिभीषणे कन राम करिया आदर ❋ आजि हैते तुमि मम भाइ सहोदर
चारि भाइ छिनु मोरा, हैनु पंचजन ❋ पंचजन मिलि राज्य करिव पालन७३०
दान भिक्षा दिया सबे कर परिहार ❋ दाने शून्य कैल जत रामेर भांडार
सीता ठाकुरानी गिया करिला रन्धन ❋ चारि भाइ एक ठाँइ करिला भोजन
हनूमाने अन्न देन सीता ठाकुराणी ❋ कपिगणे अन्न देन जतेक रमणी
अन्न दिया जान सीता आनिते व्यंजन ❋ शुधु अन्न खाय सब पवन-नन्दन
शून्य पात्रे व्यंजन केमने दिबे पाते ❋ व्यंजन लइया फिरे जान देवी सीते
पुनर्व्वार देन अन्न आनिया हनूके ❋ व्यंजन आनिते अन्न खेये वसे थाके
एइरूपे यातायात तिन चारि वार ❋ देखिया सीतार मने लागे चमत्कार
सीता भावे, आमि किछु बुझिते ना पारि ❋ बिश्वेर पालने अन्नपूर्णा नाम धरि
दृष्टे सृष्टि पूर्ण करि नाना उपहारे ❋ अन्न दिते हारिलाम वनेर वानरे
बुझिते ना पारि आमि एइ कोन् जन ❋ स्वर्णथाल फेलि कैला हस्त-प्रक्षालन
ध्यान जोगे मा जानकी देखिला सत्वर ❋ वानर-रूपेते अवतीर्ण गंगाधर
कपिरूपे बसेछेन कैलासेर पति ❋ उदर पूराते पारे काहार शकति
ऊर्द्धमुखे अर्घ्य बिना ना पुरे उदर ❋ एतेक भाबिया सीता चलिल सत्वर

वानर-भोजन और विभीषण आदि का स्वदेशगमन

विभीषण से राम ने स्नेहपूर्वक कहा, आज से तुम मेरे सहोदर भाई हो। हम चार भाई थे, अब पाँच हो गये। पाँचों मिलकर राज्य पालन करेंगे ॥७३०॥

दान देकर सबको विदा करो। दान से राम का सारा भंडार सूना कर दिया गया। सीताजी ने जाकर खाना पकाया। चारों भाईयों ने मिलकर एक स्थान पर भोजन किया। हनुमान को सीताजी खाना देने लगीं। अन्य वानरों को बाकी अन्य रमणियाँ खाना देने लगीं। अन्न देकर सीता व्यंजन लाने गईं तो पवननन्दन ने भात ही खा डाला। सूने पात्र पर कैसे व्यंजन दिया जाय, यह सोचकर सीता अन्न लाने लौट गईं। पुनः लाकर उसको अन्न दिया और व्यंजन लेने गईं तो वह अन्न खाकर बैठा रहा। इस प्रकार तीन-चार बार आने-जाने के बाद सीता आश्चर्य करने लगीं, मैं कुछ भी समझ नहीं पा रही हूँ। विश्व का पालन करती हुई मैं अन्नपूर्णा नाम रखती हूँ। केवल मात्र दर्शन से सारी सृष्टि को पूर्ण कर देती हूँ और वन के वानर को मैं अन्न देने में हार गई। समझ में नहीं आता कि यह कौन है। स्वर्ण-थाली अलग फेंककर सीता ने हाथ धो लिया और ध्यानयोग से माँ जानकी ने देखा कि वानर का रूप लेकर स्वयं गंगाधर बैठे हैं। कपि का रूप अपनाये स्वयं कैलाशपति बैठे हैं। उनका पेट भर सके, ऐसी शक्ति

गोपनेते गिया माता हनूर पश्चाते ❋ 'नमः शिवाय' वलि अन्न दिला माथे
हासिया सम्मुखे आसि कहेन वचन ❋ कत अन्न हनूमान, करिया भोजन
मस्तक फुटिया अन्न उपरे उठिल ❋ हनूमान बले, माता, परिपूर्ण हैल ३१
आचमन कैला गिया पवन-कुमार ❋ सीतार चरणे हनु कैल परिहार
आमि कि जानिव माता, तोमार महिमा ❋ ब्रह्मा, विष्णु महेश्वर नाहि जाने सीमा
तोमार महिमा माता, कि वलिते जानि ❋ बिष्णुर प्रकृति तुमि लक्ष्मी ठाकुराणी ३२
एतेक शुनिया सीता हरषित मन ❋ सबारे विदाय राम दिलेन तखन
राक्षसे-वानरे राम दिलेन मेलानि ❋ गाहिया रामेर गुण चलिल तखनि
लता-पाता खेत कपि, परित काछटि ❋ श्रीरामेर प्रसादे कोंचार परिपाटी
केमने रामेर सव गुण पासरिव ❋ आर कबे श्रीरामेर चरण हेरिव ३३
एइरूप सर्व्वत्र करिया सुबिहित ❋ चारि भाइ राज्य करे जगते पूजित
करेन अजुत वर्ष लोकेर पालन ❋ ज्येष्ठ-सत्त्वे कनिष्ठेर नाहिक मरण
राम-राज्ये केह कारे नाहि करे हिंसा ❋ जत राजगण करे रामेर प्रशंसा
राम-राज्ये शोक नाहि जाने कोनजना ❋ 'राम-राज्य' वलि लोके हइल घोषणा ३४

किसमें है। उर्ध्वमुख अर्घ्य के विना उनका उदर भर नहीं सकता। इतना सोचकर सीता झटपट चल पड़ीं। माँ जानकी चुपके से हनुमान के पीछे जाकर 'नमः शिवाय' कहकर उसके सिर पर अन्न रख दिया। हँसकर सामने आकर कहने लगीं, हनुमान तुमने कितना अन्न खा लिया कि सिर फोड़कर निकलने लगा है। हनुमान ने कहा, माँ पेट भर गया॥ ७३१॥

पवनकुमार ने जाकर आचमन किया। सीता के चरणों में हनुमान ने निवेदन किया, मैं तुम्हारी महिमा भला कैसे जानूँ माँ, ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर भी उसकी टोह नहीं लगा सकते। माँ तुम्हारी महिमा मैं क्या कह सकता हूँ, तुम विष्णु की प्रकृति हो, लक्ष्मीजी हो॥ ७३२॥

इतना सुनकर सीता प्रसन्न हो गईं। तब सब लोगों को राम ने विदा कर दिया। राक्षसों और वानरों को राम ने विदा दी, राम का गुण गाकर वे तुरन्त चल पड़े। ये कपि पेड़ की पत्तियाँ चबाते और लंगोट पहनते थे। श्रीराम की कृपा से अब वे कछाना मारकर धोती पहनते हैं। राम के गुणों को कैसे भूल सकता हूँ—जाने कब श्रीराम के चरणों का फिर दर्शन हो॥ ७३३॥

इस प्रकार सब-कहीं उचित व्यवस्था कर चारों भाई संसार में पूजित होकर राज्य करने लगे। अयुत (१० हजार) वर्ष तक वे प्रजा-पालन करते रहे। राम के राज्य में ज्येष्ठ के रहते हुए कनिष्ठ की कभी मृत्यु नहीं हुई। राम-राज्य में कोई किसी से डाह नहीं करता था। सभी राजा राम की प्रशंसा करते थे। राम-राज्य में किसी को भी शोक का अनुभव नहीं हुआ। लोगों में 'राम-राज्य' की घोषणा हो गई॥ ७३४॥

पात्र-मित्र-सह राम जुक्ति अनुमानि ※ पुष्पक रथेरे तवे दिलेन मेलानि
कुबेरेर रथ तुमि, जाने सर्व्वजन ※ कुबेरे जिनिया तोमा निलेक रावण
ताहाके मारिया तोमा करिनु उद्धार ※ कुबेरे जानाओ गिया एइ परिहार ३५
चलिल से रथखान श्रीराम-आदेशे ※ चक्षुर निमिषे गेल पर्व्वत कैलासे
कुबेर वलेन रथ के दिल विदाय ※ रावण लइल तोमा जिनिया आमाय
शुन वलि रथ, तोमा निल लंकेश्वर ※ करिल कुकर्म्म कत तोमार उपर
रबे राम एकादश सहस्र वत्सर ※ रामेर सेबाय कर शुद्ध कलेबर
श्रीराम करिवे जबे बैकुंठे-गमन ※ फिरिया आमार काछे आसिओ तखन ७३६
रथखान चलिल से कुवेर-आदेशे ※ आइल रामेर काछे चक्षुर निमिषे
रथ वले, रघुनाथ, कर अवधान ※ किछुकाल चरण-निकटे देह स्थान
रामेर आज्ञाय रथ रहिल तथाय ※ सर्व्वक्षण श्रीरामेर दरशन पाय ७३७
जे दुःख पाइयाछिल राम गेले वने ※ प्रजालोक पासरिल सदा दरशने
एइरूपे श्रीराम हइया आनन्दित ※ राजत्व करेन तीन भ्रातार सहित
कृत्तिबास कविर कबित्व सुधा-भांड ※ एतदूरे समाप्त हइल लंका-कांड ७३८

लंकाकांड समाप्त

पात्र-मित्रों से परामर्श कर राम ने पुष्पक रथ को विदा कर दिया। सभी लोग जानते हैं कि तुम कुबेर के रथ हो, कुबेर को पराजित कर रावण ने तुमको ले लिया था। उसको मार कर मैंने तुमको मुक्त किया। कुबेर से जाकर मेरा यह निवेदन सूचित करना ॥ ७३५ ॥

श्रीराम की आज्ञा से वह रथ चल पड़ा। पलक झपकते वह कैलाश-पर्वत पर जा पहुँचा। कुबेर ने कहा, किसने यह रथ भेज दिया। रावण ने मुझको पराजित कर तुमको छीन लिया था। हे रथ, मेरी बात सुनो, तुमको लंकेश्वर ने लिया था, उसने तुम पर जाने कितने कुकर्म किये होंगे। राम ग्यारह हजार वर्ष रहेंगे—उनकी सेवा में अपने शरीर को शुद्ध-पवित्र कर डालो। श्रीराम जब वैकुंठ चले जाएँगे तब तुम लौटकर मेरे पास चले आना ॥ ७३६ ॥

कुबेर की आज्ञा से वह रथ चल पड़ा, और पल भर में राम के पास आ गया। रथ ने कहा, रघुनाथ सुनो, कुछ दिनों तक अपने चरणों में स्थान दो। राम की आज्ञा से रथ वहीं रह गया। सदा उसको राम का दर्शन मिलता रहा ॥ ७३७ ॥

राम के वन चले जाने पर प्रजाओं को जो क्लेश मिला था राम के दर्शन से वे सब भूल गये। इस प्रकार से आनन्दित हो श्रीराम तीनों भाइयों के साथ राजकाज करने लगे। कवि कृत्तिवास का कवित्व अमृत भरे पात्र के समान है। इतनी दूर आकर लंकाकांड समाप्त हुआ ॥ ७३८ ॥

लंकाकांड समाप्त

कृत्तिवास रामायण

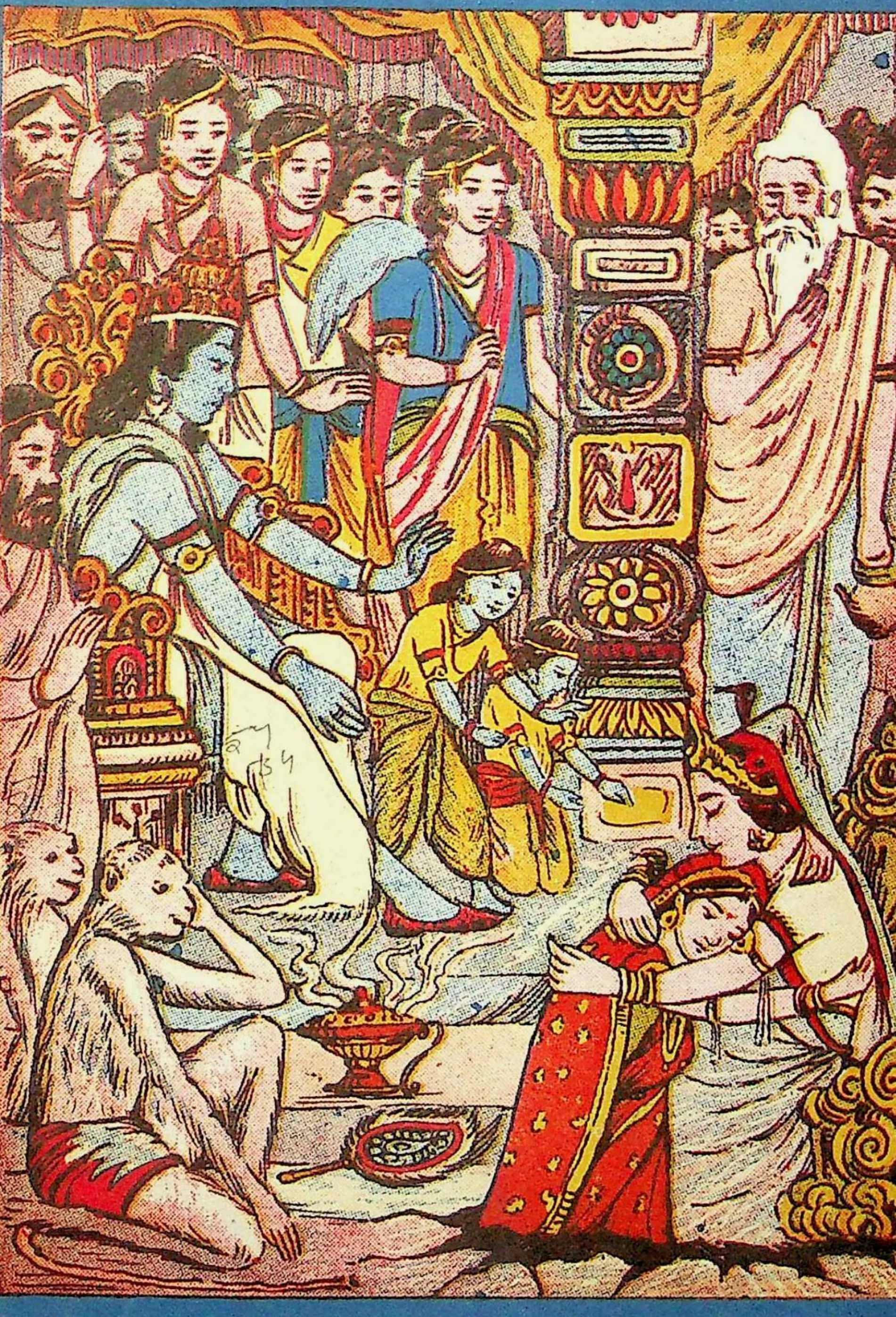

बँगला

कृत्तिवास रामायण

उत्तरकाण्ड

(तुलसी-रामचरितमानस से एक शती प्राचीन)

रचयिता

सन्त कृत्तिवास

[हिन्दी-अनुवाद सहित नागरी-लिप्यन्तरण]

अनुवादक एवं लिप्यन्तरणकार

नवारुण वर्मा

प्रकाशक

भुवन वाणी ट्रस्ट

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ–२२६००३

विश्वनागरी लिपि

।। ग्रामे-ग्रामे सभा कार्या, ग्रामे-ग्रामे कथा शुभा ।।

सब भारतीय लिपियाँ सम-वैज्ञानिक हैं !

All the Indian Scripts are equally scientific !

भारतीय लिपियों की विशेषता ।

'संसार की लिपियों में नागरी लिपि सर्वाधिक वैज्ञानिक है', यह कथन बिलकुल ठीक है । परन्तु यह कहते समय हमें याद रखना चाहिए कि वह सर्वाधिक वैज्ञानिकता, केवल हिन्दी, मराठी, नेपाली, लिखी जानेवाली लिपि में नहीं, वरन् समस्त भारतीय लिपियों में मौजूदहै। क, च, त, प आदि के रूपों में कोई वैज्ञानिकता नहीं है। वैज्ञानिकता है लिपि काध्वन्यात्मक होना। नियमित स्वरों का पृथक् होना। अधिक सेअधिक व्यंजनोंका होना । सबको एक 'अ' के आधार पर उच्चरित करना । ['अ' अक्षर-स्वर, सकल अक्षरोंका उस भाँति मूल आधार। सकलविश्व का जिस प्रकार'भगवान्'आदि है जगदाधार।]एक अक्षर से केवल एक ध्वनि । एक ध्वनि के लिए केवल एक अक्षर । स्माल्, कैपिटल्, इटैलिक्स् के समान अनेकरूपा नहीं; बस एक ही रूप में लिखना, बोलना, छापना और प्रत्येक अक्षर का समान वज़न पर

बंगला-देवनागरी वर्णमाला

অअ	আआ	ইइ	ঈई	উउ
ঊऊ	ঋऋ	ঌऌ	এए	ঐऐ
ওओ	ঔऔ		অংअं	আঃअः
কक	খख	গग	ঘघ	ঙङ
চच	ছछ	জज	ঝझ	ঞञ
টट	ঠठ	ডड	ঢढ	ণण
তत	থथ	দद	ধध	নन
পप	ফफ	বब	ভभ	মम
যय	রर	লल	বव	শश
ষष	সस	হह	ক্ষक्ष	জ্ঞज्ञ
শ্রश्र	ড়ड़	ঢ়ढ़	ৎत्	য়य

एकाक्षरी नाम। उच्चारण-संस्थान के अनुसार अक्षरों का कवर्ग, चवर्ग आदि में वर्गीकरण। फिर प्रत्येक वर्ग के अक्षरों का क्रम से एक ही संस्थान में थोड़ा-थोड़ा ऊपर उठते हुए अनुनासिक तक पहुँचना, आदि-आदि ऐसे अनेक गुण हैं जो अभारतीय लिपियों में एकत्र, एकसाथ नहीं मिलते। किन्तु ये गुण समान रूप से सभी भारतीय लिपियों में मौजूद हैं, अतः वे सब नागरी के समान ही विश्व की अन्य लिपियों की अपेक्षा 'सर्वाधिक वैज्ञानिक' हैं। सब ब्राह्मी लिपि से उद्भूत हैं। ताड़पत्र और भोजपत्र की लिखाई तथा देश-काल-पात्र के अन्य प्रभावों के कारण विभिन्न भारतीय लिपियों के अक्षरों में यत्र-तत्र परिवर्तन, हिन्दी वाली 'नागरी लिपि' को कोई श्रेष्ठता प्रदान नहीं करता। भारत की मौलिक सब लिपियाँ 'नागरी लिपि' के समान ही श्रेष्ठ हैं।

नागरी लिपि को 'भी' अपनाना श्रेयस्कर क्यों ?

"नागरी लिपि" की केवल एक विशेषता है कि वह कमोबेश सारे देश में प्रविष्ट है, जबकि अन्य भारतीय लिपियाँ निजी क्षेत्रों तक सीमित हैं। वहीं यह भी सत्य है कि नागरी लिपि में प्रस्तुत और विशेष रूप से हिन्दी का साहित्य, अन्य लिपियों में प्रस्तुत ज्ञानराशि की अपेक्षा कम और नवीनतर है। अतः समस्त भाषाओं की ज्ञानराशि को, सर्वाधिक फैली लिपि "नागरी" में अधिक से अधिक लिप्यन्तरित करके, क्षेत्रीय स्तर से उठाकर सबको सारे राष्ट्र में, यहाँ तक कि विश्व में ले आना परम धर्म है। विश्व की सब भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान (सत्साहित्य) है आत्मा, और 'नागरी लिपि' होना चाहिए उसका पर्यटक शरीर।

अन्य लिपियों को बनाये रखना भी कर्तव्य है।

वस्तुतः यह परम धर्म है कि समस्त सदाचार साहित्य को नागरी में तत्परता से प्राचुर्य में लिप्यन्तरित करना। किन्तु साथ ही यह भी परम धर्म है कि अन्य लिपियों को उत्तरोत्तर उन्नति के साथ बरक़रार रखना। यह इसलिए कि सबका सब कभी लिप्यन्तरित नहीं हो सकता। अतः अन्य लिपियों के नष्ट होने और नागरी लिपि मात्र के ही रह जाने से अ-लिप्यन्तरित हमारी समस्त ज्ञानराशि उसी प्रकार लुप्त-सुप्त होकर रह जायगी जैसे पाली, प्राकृत और अपभ्रंश का वाङ्मय रह गया। हमारे ही राष्ट्र का प्राचीन आप्तज्ञान विलुप्त हो जायगा।

नागरी लिपि वालों पर उत्तरदायित्व विशेष !

इन दोनों परम धर्मों की पूर्ति का सर्वाधिक भार नागरी लिपि वालों पर है, इसलिए कि उनको 'सम्पर्क लिपि' का श्रेष्ठ आसन प्रदत्त है। मैं कह सकता हूँ कि उन्होंने अपने कर्तव्य का, जैसा चाहिए था, वैसा निर्वाह नहीं किया। परन्तु उसकी प्रतिक्रिया में अन्य लिपि वालों को भी "अपराध के जवाब में अपराध" नहीं करना चाहिए। 'कोयला' बिहार का है

अथवा सिंहभूमि का है, इसलिए हम उसको नहीं लेंगे, तो वह हमारे ही लिए घातक होगा। कोयले की क्षति नहीं होगी। अपनी लिपियों को समुन्नत रखिए, किन्तु नागरी लिपि को भी अवश्य अपनाइए।

उपर्युक्त परिवेश में नागरी लिपि का पठन और समग्र श्रेष्ठ साहित्य का नागरी में लिप्यन्तरण तो आवश्यक है ही, किन्तु अन्य लिपियाँ भी अपनी लिपि में दूसरी भाषाओं के सत्साहित्य को लिप्यन्तरित तथा अनूदित कर सकती हैं। 'अधिकस्य अधिकं फलम्।' ज्ञान की सीमा नहीं निर्धारित है। 'भुवन वाणी ट्रस्ट' ने भी अवधी के रामचरितमानस को ओड़िआ भाषा में गद्य एवं पद्य अनुवाद-सहित, ओड़िआ लिपि में लिप्यन्तरित किया है। परन्तु सम्पर्क और एकीकरण की दृष्टि से 'नागरी लिपि' अनिवार्य है।

नागरी लिपि की वैज्ञानिकता मानव मात्र की सम्पत्ति है।

अब एक क़दम आगे बढ़िए। भारतीय लिपियों की सर्वाधिक वैज्ञानिकता युगों की मानव-शृंखला के मस्तिष्क की उपज है। क्या मालूम इस अनादि से चल रहे जगत् में कब, क्या, किसने उत्पन्न किया? भारत संयोग से इस समय इस विज्ञान का कस्टोडियन् है, स्रष्टा नहीं। भारत भी न जाने कब, कहाँ तक और कितना था? अतः हम भारतीयों को नागरी लिपि के स्वामित्व का गर्व नहीं होना चाहिए। वह आज के मानव के पूर्वजों की देन है, सबकी सम्पत्ति है, सकल विश्व उसका समान गौरव से उपयोग कर सकता है। हमारा 'अहम्' उस लिपि की उपयोगिता को रुद्ध कर देगा, जिसके हम सँजोये रखनेवाले मात्र हैं। किन्तु विदेशों में बसनेवाले बन्धुओं को भी नागरी लिपि के गुणों को अपने ही पूर्वजों की उपज मानकर परखना चाहिए। ये गुण इस निबन्ध के प्रथम अनुबन्ध में अधिकांशतः वर्णित हैं। न परखने पर उनकी क्षति है, विश्व की क्षति है। अरब का पेट्रोल हम नहीं लेंगे, तो क्षति किसकी होगी? पेट्रोल की नहीं, अपनी ही।

फिर याद दिला देना ज़रूरी है कि क, प आदि रूपों में वैज्ञानिकता नहीं है। वे काफ़, पे और के, पी, जैसे ही रूप रख सकते हैं, किन्तु लिपि में 'अनुबन्ध प्रथम' में ऊपर दिये हुए गुणों और क्रम को अवश्य ग्रहण करें। और यदि एक बनी-बनाई चीज को ग्रहण करके सार्वभौम सम्पर्क में समानता और सरलता के समर्थक हों, तो 'नागरी लिपि' के क्रम को अपनी पैतृक सम्पत्ति मानकर, ग़ैर न समझकर, मोजूदा रूप में भी ग्रहण कर सकते हैं। वह भारत की बपौती नहीं है। आज के मानव के पूर्वजों की वह सृष्टि है। इससे विश्व के मानव को परस्पर समझने का मार्ग प्रशस्त होगा।

नागरी लिपि में अनुपलब्ध विशिष्ट स्वर-व्यञ्जनों का समावेश।

हर शुभ काम में कजी निकालनेवाले एक दूर की कौड़ी यह भी लाते हैं कि "नागरी लिपि सर्वाधिक वैज्ञानिक होते हुए भी अपूर्ण है और अनेक स्वर-व्यंजनों को अपने में नहीं रखती। उनको कहाँ तक और कैसे समाविष्ट

किया जाय ?" यह मात्र तिल का ताड़ है। मौजूदा कर्तव्य को टालना है।

अलबत्ता अन्य भाषाओं में कुछ व्यंजन ऐसे हैं जो नागरी में नहीं हैं— किन्तु अधिक नहीं। भारतीय भाषा उर्दू की क़ ख़ ग़ ज़ फ़, ये पाँच ध्वनियाँ तो बहुत समय से नागरी लिपि में प्रयुक्त हो रही हैं। दु:ख है कि आज़ादी के बाद से राष्ट्रभाषा के पक्षधर ही उनको ग़ायब करने पर लगे हैं। इसी प्रकार मराठी ळ है। इनके अतिरिक्त अ़रबी, इब्रानी आदि के कुछ व्यञ्जन हैं, किन्तु उनको नागरी की दैनिक लिपि में अनिवार्यत: रखना आवश्यक नहीं। विशिष्ट भाषाई कार्यों में उन विशिष्ट भाषाई व्यंजनों को चिह्न देकर दरसाया जा सकता है।

तदर्थ अ़रबी लिपि का आदर्श सम्मुख।

और यह कोई नयी बात नहीं। नितान्त अपरिवर्तनशील कहे जाने वालों की लिपि 'अ़रबी' में केवल २७-२८ अक्षर होते हैं। भाषा के मामले में वे भी अति उदार रहे। "अ़िलम चीन (अर्थात् दूर से दूर) से भी लाओ"— यह पैग़म्बर का कथन है। जब ईरान में, फ़ारसी की नई ध्वनियों च, प, ग, आदि से सामना पड़ा तो उन्होंने उनको अ़रबी-पोशाक चे, पे, गाफ़ पहना दी। जब हिन्दोस्तान आये तो ट, ड, ड़ आदि से सामना पड़ने पर अ़रबी ही जामे में टे, डाल, ड़े आदि तैयार कर लिये। यहाँ तक कि सिन्धी में नागरी के सब महाप्राण और अनुनासिक, तथा सिन्धी के विशिष्ट अन्त:स्फुट अक्षरों को भी अ़रबी का लिबास पहना दिया गया। फिर 'नागरी' वाले तो औदार्य का दावा करते हैं, उनको परेशानी क्या है? और नागरी में भी तो परिवर्तन होते रहे हैं। ऋग्वेद के प्रथम मंत्र में प्रयुक्त ळ को छोड़ चुके हैं, और ड़, ढ़ आदि को अवर्गीय दशा में जोड़ चुके हैं। नागरी लिपि में कुछ ही व्यंजनों का अभाव है। उनमें से कुछ को स्थायी तौर पर और कुछ को अस्थायी प्रयोग के लिए गढ़ सकते हैं। 'भुवन वाणी ट्रस्ट' ने यह सेवा बड़ी सरलता, सफलता और सुन्दरता से की है।

स्वर और प्रयत्न (लहजा) का अन्तर।

अब रहे स्वर। जान लीजिए कि प्रमुख स्वर तीन ही हैं— अ, इ, उ; उनसे दीर्घ, संयुक्त (डिप्थांग) आदि बनते हैं। अतिदीर्घ, प्लुत, लघु, अतिलघु आदि फिर अनेक हैं जो विश्व में अनेक रूपों में बोले जाते हैं। भारतीय वैदिक एवं संस्कृत व्याकरण में अनेक हैं। वे स्वतंत्र स्वर नहीं हैं, प्रयत्न हैं, लहजा हैं। वे सब न लिखे जा सकते हैं, न सब सर्वत्र बोले जा सकते हैं। डायाक्रिटिकल मार्क्स कोशों में छाप-छापकर चमत्कार भले ही दिखा दिया जाय, प्रयोग में तो, "एक ही रूप में", अपने निजी शब्द निजी देशों में भी नहीं बोले जाते। स्वर क्या, व्यंजन तक। एक शब्द "पहले" को लीजिए। सब जगह घूम आइए, देखिए उसका उच्चारण किन-किन प्रकार से होता है। एक बिहार प्रदेश को छोड़कर कहीं भी "पहले" का उच्

च्चारण सुनने को नहीं मिलेगा। पंजाब, बंगाल, मद्रास के अंग्रेजी के भट विद्वान् अंग्रेजी में भाषण देते हैं—उनके लहजे (प्रयत्न) बिलकुल भिन्न होते हैं। फिर भी न उनका उपहास होता है, न अंग्रेजी भाषा का ह्रास।

शास्त्र पर व्यवहार की वरीयता।

शास्त्र और विज्ञान से हमको विरोध नहीं। लिपि की रचना, शोध, परिमार्जन, देश-काल-पात्र के अनुसार करते रहिए, परन्तु व्यवहारिकता को अवरुद्ध मत कीजिए। खाद्यपदार्थ के तत्त्वों का गुण-दोष, परिमाण, संतुलन, न्यूनाधिक्य, और खानेवाले की शक्ति के साथ उनका समन्वय, यह सब स्तुत्य है, कीजिए। किन्तु ऐसा नहीं कि उस समीक्षा के पूर्ण होने तक कोई भूखा रहकर मर ही जाय। थाली रखी है, उसे भोजन करने दीजिए। आज सबसे ज़रूरी है राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का एक-दूसरे की ज्ञानराशि को समझने के लिए एक सम्पर्क लिपि की व्यापकता।

'भुवन वाणी ट्रस्ट' ने स्थायी और मुक़ामी तौर पर अनेक स्वर-व्यंजनों की सृष्टि की है। दक्षिणी भाषाओं में प्रयुक्त एकार तथा ओकार की ह्रस्व, दीर्घ—दोनों मात्राएँ हम प्रयोग में ला रहे हैं। पढ़ने दीजिए, बढ़ने दीजिए। समस्त भाषाओं के ज्ञान-भण्डार को निजी क्षेत्रों से उठाकर धरातल पर नागरी लिपि के माध्यम से पहुँचाइए। नागरी लिपि मानव के पूर्वज की सृष्टि है, मानव मात्र की है। यहाँ से योरोप तक उसकी पहुँच है। योरोपियों की लिपि-शैली नागरी थी। अक्षरों के रूप कुछ भी रहे हों। किन्हीं कारणों से सामीकुलों में भटककर अलफ़ा-बीटा के क्रम को थोड़े अन्तर के साथ अपना लिया। फिर पुराने संस्कारों से याद आया, तो स्वर-व्यंजन पृथक् कर दिये। किन्तु उनके क्रम-स्थान जैसे के तसे मिले-जुले रहे। सामीकुल की भाषाओं ने भी प्रमुख स्वर तीन ही माने हैं, जबर-ज़ेर-पेश (अ इ उ)। ै और ौ का उच्चारण अरबी, संस्कृत, अवधी और अपभ्रंश का एक जैसा है— (अई, अऊ)। किन्तु खड़ी बोली व उर्दू के अै, और औ, ऐनक, औरत जैसे। यह स्वरों की भिन्नता नहीं है, वरन् लहजा (प्रयत्न) की भिन्नता है।

पूर्ण वैज्ञानिक कोई वस्तु मनुष्य के पल्ले नहीं पड़ सकती। "पूर्ण विज्ञान" भगवान् का नाम है। सा-रे-ग-म-प-ध-नी, ये सात स्वर; उनमें मध्य, मन्द, तार; कुछ में तीव्र, कोमल—बस इतने में भारतीय संगीत बँधा है। उनमें भी कुछ अदा नहीं हो सकते, अनुभूति मात्र हैं। किन्तु क्या इतने ही स्वर हैं? संगीत के स्वरों का इनके ही बीच में अनंत विभाजन हो सकता है। जैसे अणु से परमाणु का, और उसमें भी आगे। किन्तु शास्त्र एक वस्तु है, व्यवहार दूसरी। व्यवहार में उपर्युक्त षडज से निषाद तक को पकड़ में लाकर संगीत क़ायम है, क्या उसको रोककर इनके मध्य के स्वरों को पहले तलाश कर लिया जाय? तब तक संगीत को रोका जाय, क्योंकि वह पूर्ण नहीं है? क्या कभी वह पूर्ण होगा? पूर्ण

तो 'ब्रह्म' ही है। "बेस्ट् इज् द ग्रेटेस्ट् ऐनिमी ऑफ़् गुड् ।" (Best the greatest enemy of Good.) इसलिए शग़ल और शोब्दों की आड़ न ली जाय। नागरी लिपि पर्याप्त सक्षम है।

विश्व-व्यापकता के संदर्भ में नागरी लिपि के स्वरों का रूप।

लिखने के भेद— यदि नागरी को हिन्दी क्षेत्र की ही लिपि बनाये रखना है तो इ, उ, ए, ऐ, लिखने के अपने पुरानेपन के मोह में मुग्ध रहिए। और यदि उसे राष्ट्रलिपि अथवा विश्व तक में, यहाँ तक कि सामीकुल में भी आसानी से ग्राह्य बनाना चाहते हैं तो गुजराती लिपि की भांति अि, अु, अे, अै लिखिए। किन्तु कोई मजबूर नहीं करता। विनोबा जी ने भी इसका आग्रह नहीं रखा। आकार और रूप का मोह व्यर्थ है। पुराने ब्राह्मी-शिलालेखों को देखिए। आपके मौजूदा रूप वहाँ जैसे के तैसे कहाँ हैं ?

संस्कृत के तिरस्कार से भाषा-विघटन।

मेरा स्पष्ट मत है कि "संस्कृत" को राष्ट्रभाषा होना चाहिए था। वह होने पर, यह भाषा-विवाद ही न उठता। सबको ही (हिन्दी-भाषी को भी) समान श्रम से संस्कृत सीखने पर, स्पर्धा-कटुता का जन्म न होता, संस्कृत का अपार ज्ञान-भण्डार सबको प्रत्यक्ष होता, और हिन्दी की पैठ में भी प्रगति ही होती। उर्दू-हिन्दी की अपेक्षा, अन्य सभी भारतीय भाषाएँ, संस्कृत के अधिक समीप हैं। इसलिए कि प्रायः सभी भारतीय लिपियों में संस्कृत भाषा उसी प्रकार अबाध गति से लिखी जाती है जिस प्रकार नागरी लिपि में। संस्कृत ही एक भाषा है जिसकी अनेक लिपियाँ अपनी हैं। किन्तु अब वह बात हाथ से बेहाथ है; अब "हिन्दी" ही राष्ट्रभाषा सबको मान्य होना चाहिए। यह इसलिए कि अन्य भारतीय भाषाओं में हिन्दी ही एक भारतीय भाषा है जो देश के हर स्थल में कमोबेश प्रविष्ट है।

आज क्या करना है ?

सार यह कि हुज्जत कम, काम होना चाहिए। शास्त्र पर व्यवहार प्रबल है। समय बड़ा बलवान है, वह आवश्यकतानुसार ढलाई कर देता है। हिन्दी-क्षेत्र में ही घूम-घूमकर प्रतिमा-अनावरण, हिन्दी का महिमा-गान, अनुवादों की धूम, अमुक भाषा की हिन्दी को यह देन, अमुक भाषा में हिन्दी की यह छाप— यह सब दिशाविहीनता, क़िलेबन्दी और अभियान त्यागकर नागरी लिपि में विश्व का साहित्य लाइए। टूटी-फूटी ही सही, हिन्दी बोलना भी— ("ही" नहीं बल्कि "भी") बोलने का अभ्यास कीजिए। लिपि और भाषा की सार्थकता होगी। मानवमात्र का कल्याण होगा। हमारी एकराष्ट्रीयता और विश्वबन्धुत्व चरितार्थ होगा।

—नन्दकुमार अवस्थी
मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ।

प्रकाशकीय प्रस्तावना

देवनागरी अक्षयवट

भुवन वाणी ट्रस्ट के 'देवनागरी अक्षयवट' की देशी-विदेशी प्रकाण्ड-शाखाओं में, संस्कृत, अरबी, फ़ारसी, उर्दू, हिन्दी, कश्मीरी, गुरमुखी, राजस्थानी, सिन्धी, गुजराती, मराठी, कोंकणी, मलयाळम, तमिळ, कन्नड, तेलुगु, ओड़िया, बँगला, असमिया, नेपाली, मागधी, मैथिली, अंग्रेजी, हिब्रू, ग्रीक, अरामी आदि के वाङ्मय के अनेक अनुपम ग्रन्थ-प्रसून और किसलय खिल चुके हैं, अथवा खिल रहे हैं।

भाषाई अक्षयवट की बंगीय शाखा

बंगीय शाखा के इतिहास में एक वैचित्र्य है। तुलसी के मानस से एक शती प्राचीन बँगला कृत्तिवास रामायण के सानुवाद लिप्यन्तरण का कार्य, भुवन वाणी ट्रस्ट की स्थापना (१९६९ ई०) से १२-१४ वर्ष पूर्व आरम्भ हो चुका था। क़ुर्आन शरीफ़ के नागरी लिप्यन्तरण के लम्बे कार्यकाल में ही साथ-साथ कृत्तिवास रामायण का नागरी लिप्यन्तरण और अवधी पद्यानुवाद मन बदलने के निमित्त मैं करता रहता था। नागरी लिप्यन्तरण के इतिहास का यह शुभारम्भ था।

१९५९ ई० के आरंभ में इसका "आदिकाण्ड" सजधज के साथ श्री प्रभाकर साहित्यालोक, लखनऊ की ओर से प्रकाशित हुआ। समाज के सम्मुख यह सानुवाद लिप्यन्तरण एक अभिनव प्रयोग था। सबने कुतूहल से देखा और एक स्वर से सराहना की। साहित्य अकादमी ने प्रशंसा की। हिन्दी समिति, उत्तर प्रदेश ने पुरस्कृत किया। बिक भी गया।

पश्चात् आदि, अयोध्या, अरण्य, किष्किन्धा और सुन्दरकाण्ड एक साथ एक जिल्द में प्रकाशित हुए। वही नागरी लिप्यन्तरण और अवधी पद्यानुवाद। यह संस्करण भी बिक गया।

सौभाग्य से १९६९ ई० में भुवन वाणी ट्रस्ट की स्थापना हुई। उपर्युक्त पाँच काण्ड का पुनर्संस्करण ट्रस्ट के द्वारा १९७३ ई० में हुआ।

पश्चात् एक मित्र स्व० श्री प्रबोध मजुमदार के द्वारा गद्यानुवाद करवाकर ट्रस्ट की ओर से १९७३ ई० में लंकाकाण्ड प्रकाशित हुआ। श्री प्रबोध मजुमदार का स्वर्गवास हो गया। शेष उत्तरकाण्ड के सानुवाद लिप्यन्तरण की व्यवस्था सोचने लगे। इसी बीच ट्रस्ट की विद्वत्-परिषद् के स्थायी सदस्य गोहाटी के श्री नवारुण वर्मा ने असमिया का "माधव-कंदली रामायण" पूरा कर दिया था। हमने श्री नवारुण वर्मा से प्रार्थना की और उन्होंने हर्ष और तत्परता से कृत्तिवास रामायण (उत्तरकाण्ड) के सानुवाद लिप्यन्तरण का काम पूरा किया। उनके ही श्रम के फल-स्वरूप अब जनवरी, १९८४ ई० में उत्तरकाण्ड प्रकाशित होकर पाठकों के

सम्मुख प्रस्तुत है। इस वृत्त के अनुसार कृत्तिवास रामायण का समग्र प्रकाशन लगभग एक चौथाई शताब्दी में क्रमश: प्रकाशित होकर अब पूर्ण हुआ।

सन्त कृत्तिवास का जीवनवृत्त, ग्रन्थ का परिचय, उत्तर प्रदेश में पहले से ही इस सरस ग्रन्थ की चर्चा, बँगला वर्णमाला, बँगला उच्चारण, वर्ग्य और अवर्ग्य य, ज, व, ब तथा स्वर-व्यञ्जनों के उच्चारण की संवृत और विवृत प्रणाली आदि पर विवरण, पूर्व प्रकाशित काण्डों की प्रस्तावना में विस्तार से दिया जा चुका है। सार यह कि लगभग २५ वर्ष से चलते रहनेवाले बहुभाषाई सानुवाद लिप्यन्तरण में लगभग ६० ग्रन्थों के प्रकाशित होते रहने के कार्यकाल में बँगला कृत्तिवास रामायण सबके साथ शनैः शनैः छपते-छपते अब पूर्ण हुआ। यही वैचित्र्य है।

विश्वबन्धुत्व और राष्ट्रीय एकीकरण के संदर्भ में लिपि और भाषा

भूमण्डल पर देश-काल-पात्र के प्रभाव से मानव जाति, विभिन्न लिपियाँ और भाषाएँ अपनाती रही है। उन सभी भाषाओं में अनेक दिव्य वाणियाँ अवतरित हैं, जो विश्वबन्धुत्व और परमात्मपरायणता का पथ-प्रदर्शन करती हैं; किन्तु उन लिपियों और भाषाओं से अपरिचित होने के कारण हम इस तथ्य को नहीं देख पाते। अपनी निजी लिपि और भाषा में ही सारा ज्ञान और सारी यथार्थता समाविष्ट मानकर, दूसरे भाषा-भाषियों को उस ज्ञान से रहित समझते हुए हम भ्रमित होते हैं।

भूमण्डल की बात तो दूर, हमारे अपने देश 'भारत' में ही अनेक भाषाएँ और लिपियाँ प्रचलित हैं। एक ब्राह्मी लिपि के मूल से उत्पन्न होने के बावजूद उन सबसे परिचित न होने के कारण हम अपने को परस्पर विघटित समझने लगते हैं। किन्तु सारी लिपियाँ और भाषाएँ सीखना-समझना भी सम्भव नहीं है। सुतरां, यथासाध्य विश्व, और अनिवार्यत: स्वराष्ट्र की सभी भाषाओं के दिव्य वाङ्मय को राष्ट्रभाषा हिन्दी और सम्पर्कलिपि नागरी में सानुवाद लिप्यन्तरित करके, क्षेत्रीय स्तर से बढ़ाकर उसको सारे राष्ट्र को सुलभ कराना, समस्त सदाचार-साहित्य-निधि को सारे देश की सम्पत्ति बनाना, यह संकल्प भगवान की प्रेरणा से सन् १९४७ में मैंने अपनाया, और इसी उद्‌देश्य की पूर्ति हेतु १९६९ ई० में 'भुवन वाणी ट्रस्ट' की स्थापना हुई।

विश्वबन्धुत्व के सम्बन्ध में ट्रस्ट की अपेक्षाएँ

ट्रस्ट की यह मान्यता है कि धरातल का समस्त वाङ्मय मानवमात्र की सम्पत्ति है। विज्ञान का कोई अन्वेषण, किसी भी भूभाग में हुआ हो, वह मानवमात्र की मिलकियत हो जाता है। टेलीफ़ोन, वायरलेस, वायुयान का उपयोग करते समय कोई यह विचार नहीं करता कि यह उपलब्धि

किस देश की बदौलत है। लिपि, भाषा, ज्ञान सकल धरातल की सम्पत्ति है। लिपि और भाषा के पट को अनावृत कर सकल ज्ञान-भण्डार को सर्वसुलभ बनाना चाहिए। इससे, भले ही मानव की पार्थक्य-भावना का मूलनाश न हो, परन्तु एकीकरण की ओर कर्तव्य करते रहना हमारे लिए श्रेयस्कर है। सत्कार्य कभी नष्ट नहीं होता—

"पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते।
नहि कल्याणकृत्कश्चित् दुर्गति तात गच्छति ॥

—गीता ६ : ४०

नागरी लिपि पर उत्तरदायित्व

अत: नागरी लिपि पर यह उत्तरदायित्व ठीक ही रहा कि राष्ट्र की सभी लिपियों के साहित्य को नागरी जामा पहनाकर उसको राष्ट्र भर में फैलाए। देश का सकल साहित्य देश के कोने-कोने में सुपरिचित हो। नागरी लिपि का ही फैलाव इतना विशाल है कि इस उत्तरदायित्व को वहन कर सके।

नालन्दकालीन हमारा भाषा-उत्कर्ष

पुरातन काल में भी भारतीय लिपि और तत्कालीन सर्वोत्कृष्ट संस्कृत भाषा ने, न केवल भारत, वरन् "ग्रेट एशिया" के विशाल अन्य देशों को ज्ञान और संस्कृति प्रदान की।

नालन्द विश्वविद्यालय में दूर-दूर से विद्वान और अनेक राज्यों के प्रतिनिधि आकर शिक्षा ग्रहण करते थे। वे वहाँ से भारतीय लिपि (आज की भारतीय लिपियों का पूर्व रूप) सीखते थे और अपने देशों में उसी लिपि के आधार पर लिपि की सर्जना करते तथा संस्कृत भाषा के अपरिमित ज्ञान-भण्डार को उसी लिपि में लिप्यन्तरित अथवा अनूदित करते थे। अन्य देश हमारी लिपि को ग्रहण कर गौरव अनुभव करते थे, जब कि विदेश तो दूर, अपने देश में ही आज अपूर्ण और अवैज्ञानिक विदेशी लिपि का गुणगान किया जा रहा है। यह क्यों ?

भाषाई सेतुकरण का मार्ग

शासन और जनता, दोनों की भाषाई नीति है कि सभी भारतीय लिपियाँ और भाषाएँ सदैव बरक़रार रहें, क्योंकि उनमें भारतीय ज्ञान का अपार कोष वर्तमान है। साथ ही वह अपार ज्ञान का भण्डार क्षेत्रीय भाषाञ्चल से उठकर समग्र राष्ट्र को लाभान्वित करे, इसलिए एक जोड़ लिपि आवश्यक है। और सभी भारतीय अञ्चलों में कमोबेश अपनी पैठ रखनेवाली नागरी लिपि ही इसके लिए उपयुक्त है। नागरी लिपि को यह कोई श्रेष्ठता प्रदान नहीं की जा रही है, वरन् एक सेवा उसके सिपुर्द है। यह न भूलना चाहिए कि नागरी भी, एक ही ब्राह्मी लिपि से उद्भूत

अन्य सभी भारतीय भाषाओं की सम-समान एक परिवार की इकाई है। नागरी लिपि के माध्यम से अन्य सभी भाषाओं का वाङ्मय भी पढ़ा जाय।

हमारी लिपि का देश से बाहर विश्व में प्रसार

भारतीय लिपि ताड़पत्र और भोजपत्र में पृथक् लिखी जाने तथा देश-काल-पात्र के अनेक प्रभावों के फलस्वरूप मिलते-जुलते अनेक रूपों में प्रचलित है। यदि हम आज संगठित और केन्द्रित होते हैं तो विश्व भी हमारी लिपि को आदर के साथ ग्रहण करेगा। भारत की लिपि आज के मानव के पूर्वजों की सृष्टि है। मानवमात्र का उस पर समान अधिकार है। जब हम समृद्धि के उत्कर्ष पर थे, तब हमारी लिपि और भाषा का विश्व में स्वागत हुआ, प्रसार हुआ। उसका नमूना पृष्ठ १३-१४ पर देखिए।

भारतीय लिपि के विदेशों में प्रसार में बँगला लिपि की भूमिका

नालन्दकाल में भारतीय लिपि के विदेशों में प्रसार का विवरण दिया जा रहा है। ग्रेट एशिया में आदर के साथ स्वागत पानेवाली भारतीय लिपि की भोजपत्र पर लिखी जानेवाली रेखाप्रधान लिपि थी। इसी परिवार में मैथिली, बर्मी (ब्राह्मी), असमिया, भोटिया या तिब्बती तथा बंगाली भी है।

आज हममें से अनेक, उलटी गंगा बहाने पर उद्यत हैं। भारतीय लिपि की वैज्ञानिकता पर लुब्ध विदेशी जन, कहाँ तो उसको अपने देशों में सम्मान से ले जाते थे, कहाँ आज हम विदेशों की नितांत अवैज्ञानिक रोमन लिपि को अपने यहाँ लाने की वकालत करते हैं। उनसे विनम्र प्रश्न है कि केवल नागरी के प्रति रोष के कारण यदि वे नागरी की अपेक्षा रोमन को वरीयता देते हैं तो क्या वे अपनी क्षेत्रीय लिपियों को भी त्याग कर रोमन लिपि को अपनाएँगे? सदैव याद रखिए कि नागरी तथा अन्य सभी भारतीय लिपियाँ सम-समान रूप से वैज्ञानिक हैं। नालन्दकाल के अनुकरण पर अपनी यह वैज्ञानिकता विश्व के लाभ के लिए विश्व में प्रसारित कीजिए।

तिब्बती लिपि

तिब्बती लिपि के कुछ नमूने हम दे रहे हैं। सहस्रों वर्ष पूर्व हमारी लिपि की नुकीली रेखा वाली पद्धति भारत में मागधी, मैथिली, असमिया, बँगला, बर्मी (ब्राह्मी) में प्रचलित होने के साथ नेपाल, भूटान, तिब्बत और तत्काल के समृद्ध देश तिब्बत से बढ़कर मंचूरिया, मंगोलिया, चीन, जापान तक पहुँची। यही नहीं, सामान्य अन्तर के साथ उन देशों में ग्रहीत भारतीय लिपि में संस्कृत के अगणित ग्रन्थ अनुवादित किये गये। पाठकों की जानकारी के लिए कुछ उदाहरण आगे प्रस्तुत हैं:—

नास्ति प्रज्ञासमं चक्षुर्नास्ति मोहसमं तमः ।
नास्ति रोगसमः शत्रुर्नास्ति मृत्युसमं भयम् ॥

॥ ཤེས་རབ་སྡོང་བུ ॥

॥ ŚES. RAB. SDOṄ. BU ॥

॥ प्रज्ञादण्डः ॥

१

ཤེས་རབ་དང་མཉམ་	མིག་	མེད་དེ །
śes.rab.daṅ.mñam.	mig.	med.de ।
प्रज्ञा- समं	चक्षुः	नास्ति ।
རྨོངས་པ་དང་མཉམ་	མུན་པ་	མེད །
rmoṅs.pa.daṅ.mñam.	mun.pa.	med ।
मोह- समं	तमः	नास्ति ।
ནད་འདྲ་བ་ཡི་	དགྲ་བོ་	མེད །
nad.ḥdra.ba.yi.	dgra.bo.	med ।
रोग-समः	शत्रुः	नास्ति ।
འཆི་བ་དང་མཉམ་	འཇིགས་པ་	མེད ༎
ḥchi.ba.daṅ.mñam.	ḥjigs.pa.	med ॥
मृत्यु- समं	भयं	नास्ति ॥ 105

नागरी लिपि के स्वरों का तिब्बती लिप्यन्तरण में प्रयोग

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ
ཨ	ཨཱ	ཨི	ཨཱི	ཨུ	ཨཱུ	རྀ	རཱྀ
ऌ	ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः ।
ལྀ	ལཱྀ	ཨེ	ཨཻ	ཨོ	ཨཽ	ཨཾ	ཨཿ ।

क	ख	ग	घ	ङ ।	च	छ	ज	झ	ञ ।
ཀ	ཁ	ག	གྷ	ང ।	ཅ	ཆ	ཇ	ཛྷ	ཉ ।
ट	ठ	ड	ढ	ण ।	त	थ	द	ध	न ।
ཊ	ཋ	ཌ	ཌྷ	ཎ ।	ཏ	ཐ	ད	དྷ	ན ।
प	फ	ब	भ	म ।	य	र	ल	व ।	
པ	ཕ	བ	བྷ	མ ।	ཡ	ར	ལ	ཝ ।	
श	ष	स	ह	क्ष ।					
ཤ	ཥ	ས	ཧ	ཀྵ ।					

तिब्बती लिपि में 'अ', स्वर नहीं, व्यञ्जन के रूप में प्रयुक्त होता है। "अ" में भी स्वर की मात्राएँ लगती हैं। घ, झ, ढ, ध और भ का उच्चारण प्रयोग में नहीं आता। किन्तु संस्कृत ग्रन्थों का लिप्यन्तरण करते समय ग, ज, ड, द और ब के नीचे ह लगा कर इन व्यञ्जनों को गढ़ लिया है। (कलकत्ता यूनिवर्सिटी से प्रकाशित " भोटप्रकाशः " से साभार।)

आभार-प्रदर्शन

सदाशय श्रीमानों और उत्तरप्रदेश शासन (राष्ट्रीय एकीकरण विभाग) के प्रति हम आभारी हैं, जिनकी अनवरत सहायता से 'भाषाई सेतुकरण' के अन्तर्गत अनेक ग्रन्थों का प्रकाशन चलता रहता है। वे विविध भाषाई ग्रन्थ नागरी कलेवर में सारे भषाई अञ्चलों में जगमगा कर राष्ट्रीय एकीकरण की ज्योति को प्रदीप्त कर रहे हैं।

सौभाग्य की बात है कि भारत सरकार के राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) तथा शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय ने राष्ट्रभाषा हिन्दी-सहित सभी भाषाओं की समृद्धि और व्यापकता के लिए एक जोड़लिपि "नागरी" के प्रसार पर उपयुक्त बल दिया। उनकी सहायता से सन्त कृत्तिवास-प्रणीत बँगला कृत्तिवास रामायण (उत्तरकाण्ड) का यह प्रकाशन प्रस्तुत वर्ष में सम्पूर्ण हुआ है।

विश्ववाङ्मय से निःसृत अगणित भाषाई धारा।
पहन नागरी-पट, सबने अब भूतल-भ्रमण विचारा॥
अमर भारती सलिला की "बंगाली" पावन धारा।
पहन नागरी पट, उसने अब भूतल-भ्रमण विचारा॥

नन्दकुमार अवस्थी
प्रतिष्ठाता, भवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ—२

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
मङ्गलाचरण	१७
श्रीराम की सभा में मुनियों का आगमन तथा श्रीराम से वार्ता	१८
लक्ष्मण के चौदह वर्ष ब्रह्मचर्य, निद्रा-जय और उपवास का वृत्तान्त	२१
लक्ष्मण का भोजन करना	२६
हनुमान का भोजन-वर्णन	३३
शिव-विवाह का सम्बन्ध और लंका की उत्पत्ति	३५
शिव का चढ़ावे की सामग्री भेजना	३८
कुटुम्बी जनों का समागम और बारात की यात्रा	४०
हर-गौरी का विवाह	४४
शिव-सेवक भीम का भोजन	४६
हर-गौरी का कैलास-गमन	४७
लंकापुरी-निर्माण	४८
अगस्त्य द्वारा जन्म-वृत्तान्त-वर्णन	५०
माली, सुमाली और माल्यवान का जन्म-वृत्तान्त	५१
विश्वकर्मा द्वारा लंकापुरी-निर्माण और माली आदि का लंकापुर राज्य-स्थापन	५३
गरुड़ और पवन का युद्ध तथा गज-कच्छप का विवरण	५४
विष्णु से युद्ध में माली की मृत्यु और सुमाली-माल्यवान का पाताल-गमन	५६
कुबेर का जन्म, तपस्या, वर-प्राप्ति और लंका में राज्य करना	६४
रावण, कुम्भकर्ण और विभीषण का जन्म, तपस्या और वर-प्राप्ति	६८
रावण द्वारा कुबेर के पास से लंका राज्य ग्रहण करना	७६
रावण आदि का विवाह और मेघनाद की जन्म-कथा	७६
कुबेर को जीतने के लिए रावण की यात्रा	८१
रावण के साथ युद्ध में कुबेर के सेनापति योगवृद्ध और मणिभद्र की पराजय	८३
रावण के साथ कुबेर का युद्ध	८५
रावण को नन्दी का अभिशाप तथा रावण द्वारा कैलास उठाया जाना	८७
रावण द्वारा वेदवती की लांछना और रावण को वेदवती का अभिशाप	८८
राजा मरुत्त का यज्ञानुष्ठान और रावण से पराजय स्वीकार	९१
रावण द्वारा अनरण्य का वध और रावण को अनरण्य का अभिशाप	९३
कार्तवीर्यार्जुन के साथ रावण का युद्ध	९६
कार्तवीर्यार्जुन द्वारा रावण को बाँधना	१००
पुलस्त्य मुनि की प्रार्थना से कार्तवीर्यार्जुन द्वारा रावण की बन्धन-मुक्ति	१०३
बाली को जीतने हेतु रावण की युद्ध-यात्रा	१०६
बाली द्वारा रावण को बाँधना	१०७
बाली द्वारा रावण का बन्धन खोलना और बाली के साथ रावण का मिलन	१०९
यम पर विजय हेतु रावण की युद्धयात्रा	११०
रावण का यमलोक-परिदर्शन	११२
रावण द्वारा यम की पराजय	१२०
रावण का पातालपुरी-विजय हेतु जाना तथा वासुकि की पराजय	१२४
निपातक के साथ रावण का युद्ध	१२६
रावण द्वारा वरुणपुरी-विजय	१२७
बलि द्वारा रावण को बांधा जाना और लांछना	१२९

विषय	पृष्ठ
मान्धाता के साथ रावण का युद्ध और मैत्री-स्थापना	१३३
रावण का चन्द्रलोक-विजय करना	१३५
रावण का कुशद्वीप जाना और महापुरुष के साथ युद्ध	१३८
रावण द्वारा रम्भावती का अपमान और नलकूबर का रावण को श्राप देना	१४१
शूर्पणखा के वैधव्य का विवरण	१४८
रावण का स्वर्ग-विजय हेतु गमन	१५१
मधु दैत्य के साथ रावण का मिलन	१५५
रावण का अमरावती पर आक्रमण	१५६
रावण के साथ देवगणों का युद्ध और पराजय	१६२
हनुमान की जन्म-कथा	१७५
ब्रह्मा द्वारा रम्य वन-निर्माण तथा उसमें श्रीराम-सीता का विहार	१८०
स्वर्ण-सीता-निर्माण	१९५
कुत्ते और संन्यासी का विवाद	१९६
शत्रुघ्न द्वारा लवणासुर का वध	२०५
विप्रपुत्र की अकाल मृत्यु और शूद्र तपस्वी का शिरच्छेद	२१८
गिद्धनी और उलूक के विवाद की कथा	२२१
श्रीराम का अगस्त्य मुनि के आश्रम में जाना और दैत्यराज की कथा	२२६
दण्डकारण्य का वृत्तान्त	२२९
वृत्रासुर-वध का वृत्तान्त	२३३
राजा इला का उपाख्यान	२३७
श्रीरामचन्द्र का अश्वमेध यज्ञ-आरम्भ	२४१
यज्ञ के घोड़े की रक्षा हेतु शत्रुघ्न का जाना	२४५
लव-कुश द्वारा यज्ञ के अश्व का बाँधा जाना	२४८
लव-कुश के संग युद्ध में शत्रुघ्न का गिरना	२५०
लव-कुश के साथ युद्ध में भरत और लक्ष्मण का गिरना	२५५
लव-कुश के साथ युद्ध करने हेतु श्रीराम का आयोजन	२६७
लव-कुश के साथ श्रीराम का युद्ध	२७०
श्रीराम का विलाप	२७६
लव-कुश के साथ युद्ध में श्रीरामचन्द्र की पराजय और मूर्च्छा	२८२
सीता का लव-कुश से युद्ध-वर्णन-श्रवण और प्राण-त्यागने का संकल्प	२८४
वाल्मीकि-आगमन और सेना तथा भाइयों-समेत रामचन्द्र का जीवित होना	२८७
लव-कुश का श्रीराम के निकट गमन और रामायण गान	२९०
देवी सीता का पाताल-प्रवेश	२९६
लव-कुश का रुदन और रामचन्द्र के यज्ञ की समाप्ति	३०२
श्रीराम के अश्वमेध यज्ञ की समाप्ति और पुनः रामायण-गान	३०५
श्रीराम का विलाप	३०७
केकय देश में भरत द्वारा गंधर्व का वध और श्रीराम के पुत्रों की राज्य-प्राप्ति	३०८
अयोध्या में कालपुरुष का आगमन तथा लक्ष्मण का त्यागा जाना	३११
श्रीराम, भरत और शत्रुघ्न का बैकुण्ठ-गमन	३१६

।। श्री गणेशाय नमः ।।

कृत्तिवास रामायण

उत्तरकाण्ड

(हिन्दी गद्यानुवाद, बँगला मूल नागरी में)

मङ्गलाचरण

केकिकण्ठाभनीलं सुहृदयविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं।
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम् ।।
हस्ताब्जाबद्धचापं कपिनिकरयुतं बन्धुनासेव्यमानं ।
नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढदेवम् ।। १ ।।

कोशलेन्द्रतनयासुपालितं, पद्मयोनिगिरिजेशवन्दितम् ।
जानकीकरसरोहलालितं, चिन्तय तमनिशं मनोहितम् ।। २ ।।

इन्दुकुन्दवरगौरसुन्दरं, अम्बिकापतिमभीष्टमन्दिरम् ।
खञ्जनाक्षिभृशगञ्जिलोचनं, नौमि शङ्करमनङ्गशासनम् ।। ३ ।।

मङ्गलाचरण

मयूर के कंठ की आभा जैसे नीलवर्ण, सुन्दर हृदय में विप्र (भृगु) के चरण-कमल सुशोभित, शोभा देनेवाला पीतवस्त्रधारी, कमल-नयन, सदा-प्रसन्न रहनेवाले, कमल-करों में धनुष धारण किये हुए, कपिसमूह के संग रहनेवाले, भाइयों द्वारा सेवित होनेवाले पुष्पक पर आसीन देव, जानकी के ईश रघुवर को सदा प्रणाम है ।। १ ।। कोशलेन्द्रतनया द्वारा सुपालित, ब्रह्मा-शिव द्वारा वन्दित, जानकी के कमल-करों से लालित, मन के हितकारी उन प्रभु रामचन्द्र का निरन्तर चिन्तन करो ।। २ ।। खिले हुए कुन्द और चन्द्रमा जैसे गौरवर्ण, सुन्दर, अभीष्ट मन्दिर, खंजन को लजानेवाले सुन्दर नेत्रों वाले, अम्बिकापति, अनंगशासन शंकर को नमस्कार है ।। ३ ।।

श्रीरामेर सभाय मुनिगणेर आगमन ओ श्रीराम-सम्भाषण

आजि कालिकार येन बैकुण्ठनगरी। शङ्ख - चक्र - गदा - पद्म - दिव्य - शार्ङ्गधारी
नीलपद्म समान श्यामल कलेवर। पीताम्बर सतड़ित येन जलधर १
बनमाला गले दोले आर हेमहार। कपाले लम्बित मणि, शोभा कत तार
मकर कुण्डल भाल श्रवणेते दोले। ताहार उज्ज्वल आभा लेगेछे कपाले २
आजानुलम्बित बाहु, नाभि सुगभीर। चन्दने चर्च्चित अति सुठाम शरीर
श्रीवत्सलाञ्छित बक्षः अति मनोहर। गगन-उपरे येन शोभे शशधर ३
चरणे नूपुर बाजे, रुणु रुणु शुनि। नीलपद्म-कोले येन हंस करे ध्वनि
अङ्गद सहित राम मन्त्री बन्धुजन। भरत शत्रुघ्न आर यत मुनिगण ४
नारदादि गान करे सनक प्रभृति। विभीषण हनूमान सुग्रीव संहति
कि कब रामेर गुण कहिते अपार। राक्षस बनेर पशु गुणे बद्ध यार ५
त्रिभुवने नाहि देखि रामेर उपमा। चतुर्म्मुख चतुर्म्मुखे दिते नारे सीमा
हेन रामे देखि सबे आनन्दित चित। स्वयं नारायण राम संसारे पूजित ६
लक्ष्मी सरस्वती सदा करे आराधन। अयोध्याय अवतीर्ण बैकुण्ठेर धन
चारि भिते स्तुति करे बहु पारिषद। सनक ओ सनातन बाल्मीकि नारद ७

श्रीराम की सभा में मुनियों का आगमन तथा श्रीराम से वार्त्ता

(अयोध्यापुरी) मानो आजकल की वैकुण्ठपुरी बन गयी है। शंख, चक्र, गदा, पद्म, दिव्य शार्ङ्ग धनुषधारी, नील कमल जैसे श्यामल शरीर वाले, (शरीर पर) पीताम्बर ऐसा शोभित हो रहा है मानो बिजली-समेत मेघ हो ॥ १ ॥ गले में वनमाला और स्वर्ण-हार हिल रहे हैं; कपाल पर मणि लटक रही है; उसकी कितनी शोभा हो रही है। कानों में उत्तम मकराकृति कुण्डल हिल रहे हैं, उनकी आभा कपाल पर पड़ी हुई है ॥ २ ॥ (रामचन्द्र की) भुजाएँ आजानुलम्बित हैं, नाभि गहरी है, चन्दन-चर्चित शरीर बहुत ही सुन्दर है। श्रीवत्स-चिह्न से सुशोभित वक्ष अत्यन्त मनोहर है; मानो आकाश में चन्द्रमा शोभित हो रहा हो ॥ ३ ॥ चरणों में नूपुर रुन्-रुन् बजता सुनाई दे रहा है, मानो नील-कमल की गोद में हंस बोल रहे हों। अंगद-सहित मंत्री-बन्धुजन भरत-शत्रुघ्न और सारे मुनि ॥ ४ ॥ नारद-सनक आदि तथा विभीषण, हनुमान, सुग्रीव मिलकर उनका गान कर रहे हैं, राक्षस तथा वन के पशु भी जिनके गुणों से बँधे हैं, उन रामचन्द्र के गुण क्या कहूँ, कहने में उनका पार नहीं है ॥ ५ ॥ रामचन्द्र की उपमा हो सके त्रिभुवन में ऐसा कोई दिखाई नहीं देता। ब्रह्मा अपने चारों मुखों से वर्णन कर भी उसकी सीमा नहीं पा सकते। ऐसे रामचन्द्र को देखकर सभी मन में आनन्दित होते हैं। स्वयं नारायण रामचन्द्र संसार में पूजित हैं ॥ ६ ॥ लक्ष्मी-सरस्वती सदा उनकी आराधना करती हैं। वैकुण्ठ के धन भगवान अयोध्या में अवतरित हुए हैं। सनक, सनातन, वाल्मीकि, नारद और ब्रह्मा से लेकर जितने देवगण हैं;

ह्मा आदि करिया यतेक देवगण । कुबेर वरुण ऊनपञ्चाश पवन
रुड़ उपरे येन वसि नारायण । विष्णु रूपी श्रीरामे देखिल मुनिगण ८
ुनि सकलेर छिल यतेक वासना । सेइरूप श्रीरामे देखिल सर्व्व जना
ैकुण्ठ सम्पद राम दशरथ-घरे । जन्मिलेन रावण वधार्थ ए संसारे ९
ेइरूप सकले देखिल चक्रपाणि । विश्वरूप देखि त्रास पाय सब मुनि
ापनार मूर्ति राम जानेन आपनि । विष्णु-अवतार राम, जाने सब मुनि १०
ुनिगणे आगत देखिया निजधाम । गात्रोत्थान करिलेन तखनि श्रीराम
ृताञ्जलि हइया दिलेन अर्घ्य-जल । जिज्ञासेन मुनिगणे सबार कुशल ११
ुनिगण बले, राम सकल कुशल । आपनार अनामय अग्रे तुमि बल
ुमि आर लक्ष्मण जानकी ठाकुराणी । कुशले आइले देशे बड़ भाग्य मानि १२
राक्षस दुर्ज्जय बड़ बिधातार बरे । राक्षस मायाय राम कोन जन तरे
इन्द्रजित् दुर्ज्जय से त्रिभुवने जानि । लक्ष्मण मारेन तारे अपूर्ब्ब काहिनी १३
मारिले त्रिशिरा खर दूषण कबन्ध । मारीचेरे बिनाशिले मायार प्रबन्ध
देवान्तक नरान्तक अतिकाय वीर । मारिले निकुम्भ कुम्भ दुर्ज्जय शरीर १४
कुम्भकर्ण बिनाशिले बड़इ भीषण । पलाय याहार नामे आपनि शमन
रावणेर सह रण के करिते पारे । देवगणे कैले त्राण मारिया ताहारे १५

कुबेर, वरुण, उनचास पवन आदि समेत अनेक पारिषद्गण उन्हें चारों ओर से घेरकर स्तुति कर रहे हैं। नारायण मानो गरुड़ पर आसीन हैं, मुनियों ने इसी भाँति विष्णु रूपी श्रीराम को देखा ।। ७-८ ।। मुनियों की जैसी मनोभावना की, उसी के अनुरूप सब लोगों ने राम को देखा। वैकुंठ की सम्पदा (विष्णु भगवान) राम ने इस संसार में रावण के वध-हेतु दशरथ के घर में जन्म लिया है ।। ९ ।। सब लोगों ने वही चक्रधारी-स्वरूप देखा तथा रामचन्द्र का विश्वरूप देखकर सारे मुनि त्रस्त हो उठे। रामचन्द्र अपनी मूर्ति (अपना रूप) स्वयं ही जानते हैं, मुनिगण (केवल) यही जानते हैं कि राम विष्णु के अवतार हैं ।। १० ।। मुनियों को अपने यहाँ आये देख रामचन्द्र तुरन्त खड़े हो गये। हाथ जोड़कर उन्हें अर्घ्य और जल प्रदान किया और सभी मुनियों से कुशल पूछा ।। ११ ।। मुनियों ने कहा— रामचन्द्र, सभी कुशल है। पहले अपना कुशल आप बताइए। आप और माता जानकी कुशलतापूर्वक देश लौट आये, इसे हम बड़ा भाग्य मानते हैं ।। १२ ।। विधाता के वर से राक्षस बड़े दुर्जय हो उठे हैं। हे राम, राक्षसों की माया का भला कौन पार पा सकता है ? तीनों लोक जानता है कि इन्द्रजित् दुर्जेय था। लक्ष्मण ने उसे मारा, यह अपूर्व कहानी है ।। १३ ।। आपने त्रिशिरा, खर, दूषण, कबन्ध को मारा, माया का कार्य करनेवाले मारीच का विनाश किया। देवान्तक, नरान्तक, वीर अतिकाय, दुर्जेय शरीरवाले निकुम्भ, कुम्भ को मारा ।। १४ ।। बड़े भयंकर कुम्भकर्ण का विनाश किया, जिसके नाम से ही स्वयं यम भी भाग जाता है। रावण के साथ भला युद्ध कौन कर सकता था ? उसे मारकर

मारिले ए सब वीर ताहा नाहि गणि। इन्द्रजिते ये मारिल, ताहारे बाखानि
मायाधारी इन्द्रजित् युझे अन्तरीक्षे। ना देखेन देवराज सहस्रेक चक्षे १६
इन्द्रे बान्धि लये छिल लङ्कार भितरे। आनिलेन मागिया बिरिञ्चे पुरन्दरे
सेइ इन्द्रजिते ध्वंस करि एले घर। शुनिया ए सब कथा बिस्मित अन्तर १७
मारिले से सब वीर युद्धे यमदूत। मारिल लक्ष्मण इन्द्रजिते से अद्भुत
श्रीराम बलेन, राक्षसेर कि बिक्रम। एक एक राक्षस साक्षात् येन यम १८
राबणेर सेनापति केबा कारे चिने। रणे प्रवेशिले तारा यम-इन्द्रे जिने
राबण-भ्रातार डरे केहो नहे स्थिर। त्रिभुवन जिनि कुम्भकर्णेर शरीर १९
काटिले ना मरे से, ना धरे केहो टान। कुम्भकर्ण एड़ि इन्द्रजितेर बाखान
दश मुण्ड काटिया पाइयाछिल बर। तारे छाड़ि बाखान कि ताहार कोङर २०
अगस्त्य नामेते मुनि दक्षिणेते बास। राक्षसेर सकल जानेन इतिहास
राक्षसेर बृत्तान्त कहेन महामुनि। श्रीराम कहेन, मुनि, कह ताहा शुनि २१
कृत्तिवास पण्डितेर मधुर पाँचालि। गाहिल उत्तरकाण्डे प्रथम शिकलि

आपने देवताओं का उद्धार किया ॥ १५ ॥ इन सब वीरों को मारा —ये गणनीय नहीं हैं, परन्तु इन्द्रजित् को जो मारा है, हम उसी का बखान कर रहे हैं। मायाधारी इन्द्रजित् अन्तरिक्ष में युद्ध करता था, उसे सहस्रों आँखों से देवराज भी देख नहीं पाते थे ॥ १६ ॥ इन्द्र को बाँधकर वह लंका में ले गया था, तब ब्रह्मा उससे माँगकर इन्द्र को ले आये थे। उसी इन्द्रजित् को ध्वंस कर आप घर लौट आये, यह सब कथा सुन अन्तर् विस्मित हो रहा है ॥ १७ ॥ वह वीर युद्ध में यमदूत-सा था। उसने सारे वीरों को मार डाला। ऐसे इन्द्रजित को लक्ष्मण ने मार डाला। यह वास्तव में अद्भुत है। श्रीराम ने कहा, राक्षसों का विक्रम कितना प्रचण्ड था! एक-एक राक्षस मानो साक्षात् यम था ॥ १८ ॥ रावण का सेनापति कौन है, यह कौन पहचानता था (अर्थात् प्रत्येक वीर एक-एक सेनापति-सा था।) रण में प्रवेश करने पर वे यम-इन्द्र को भी जीत लेते थे। रावण के भाई के डर से कोई स्थिर नहीं रहता था; कुम्भकर्ण का शरीर त्रिभुवन के सदृश विशाल था ॥१९॥ वह काटने पर भी मरता नहीं था, कोई उसे पकड़ नहीं सकता था, ऐसे कुम्भकर्ण को छोड़कर आप इन्द्रजित् का बखान करते हैं? रावण ने अपने दसों सिर काटकर वर प्राप्त किया था, उसे छोड़कर उसके कुँवर का क्या बखान करते हैं?॥ २० ॥ दक्षिण में निवास करनेवाले अगस्त्य नाम के मुनि राक्षसों का सभी इतिहास जानते हैं। वे महामुनि राक्षसों का वृत्तांत कहेंगे। श्रीराम ने कहा, मुनि, कहिए, हम उसे सुनें ॥ २१ ॥ कृत्तिवास पंडित का पांचाली (कथा-गान) मधुर है। उन्होंने उत्तरकाण्ड की प्रथम कड़ी गा सुनाई है। (उनके द्वारा चरित उत्तर-काण्ड की पहली कड़ी पूरी हुई)।

लक्ष्मणेर चतुर्द्दश बत्सर ब्रह्मचर्य्य, निद्राजय ओ उपबास-बृत्तान्त

महामुनि अगस्त्य से बैसेन दक्षिणे। राक्षसेर बृत्तान्त सकल मुनि जाने २२
राक्षसेर कथा कहे से अगस्त्य मुनि। सभाखण्ड सह शुनिछेन रघुमणि
अगस्त्य बलेन राम जिज्ञासि तोमारे। किरूपे करिले युद्ध लङ्कार भितरे २३
धनुर्द्धारी तुमि आर ठाकुर लक्ष्मण। कोन कोन बीरे बध कैले कोन जन
श्रीराम बलेन, मुनि निवेदि चरणे। करिलाम बहुयुद्ध भाइ दुइजने २४
बधेछि राक्षस कत नाहाय गणन। शमन-समान-पराक्रम सर्व्बजन
रावण कुम्भकर्णे आमि करेछि निधन। अतिकाय इन्द्रजिते बधेछे लक्ष्मण २५
मुनि बले, शुन राम, निवेदि तोमारे। इन्द्रजित् बड़ बीर लङ्कार भितरे
इन्द्रे बान्धि एनेछिल लङ्कार भितरे। ब्रह्मा आसि मागिया लइल पुरन्दरे २६
थाकिया मेघेर आड़े युझे अन्तरीक्षे। मेघनाद समान बाणेर नाहि शिक्षे
ताहारे करेन बध ठाकुर लक्ष्मणे। लक्ष्मण समान बीर नाहि त्रिभुबने २७
राम कन, कि कहिले मुनि महाशय। महावीर कुम्भकर्ण रावण दुर्ज्जय
देवता गन्धर्व्ब रणे नाहि धरे टान। हेन रावण छाड़ि इन्द्रजिते बाखान २८
मुनि बले, रघुनाथ, कहि तब ठाँइ। इन्द्रजित् समे बीर त्रिभुवने नाइ
चौद्द बर्ष निद्रा नाहि याय येइ जन। चौद्द बर्ष स्त्रीमुख ना करे दरशन २९

लक्ष्मण के चौदह वर्ष ब्रह्मचर्य, निद्रा-जय और उपवास का वृत्तांत

महामुनि अगस्त्य दाहिनी ओर बैठे थे। वे मुनि राक्षसों का सारा वृत्तांत जानते थे ॥ २२ ॥ वही अगस्त्य मुनि राक्षसों की कथा कहने लगे। सभासदों समेत रघुमणि रामचन्द्र सुनने लगे। अगस्त्य ने कहा, रामचन्द्र, तुमसे पूछता हूँ, बताओ, लंका के भीतर तुमने कैसे युद्ध किया ? ॥ २३ ॥ देव लक्ष्मण और तुम धनुर्धर हो, किस-किस वीर का किस-किसने वध किया ? श्रीराम ने कहा, मुनि, आपके चरणों में निवेदन करता हूँ, हम दोनों भाइयों ने बहुत युद्ध किया ॥ २४ ॥ कितने राक्षसों का वध किया, उनकी गिनती नहीं है। वे सभी यम के समान पराक्रमी थे। मैंने रावण-कुम्भकर्ण का वध किया। लक्ष्मण ने अतिकाय और इन्द्रजित् का वध किया ॥ २५ ॥ मुनि ने कहा, राम, सुनो, मैं तुमसे निवेदन करता हूँ। इन्द्रजित् लंका में सबसे बड़ा वीर था। वह इन्द्र को बाँधकर लंका में ले आया था, तब ब्रह्मा आकर इन्द्र को माँग ले गये थे ॥ २६ ॥ इन्द्रजित् बादलों की ओट में रहकर अन्तरिक्ष में युद्ध करता था। मेघनाद जैसा बाण चलाने में निपुण और कोई न था। देव लक्ष्मण ने उसका वध किया, तो लक्ष्मण के समान वीर त्रिभुवन में कोई नहीं है ॥ २७ ॥ राम ने कहा— मुनिवर, आप क्या कहते हैं ? महावीर कुम्भकर्ण और रावण दुर्जेय थे। देवता, गन्धर्व भी उसके साथ युद्ध में बराबरी नहीं कर सकते थे। ऐसे रावण को छोड़कर आप इन्द्रजित् का बखान करते हैं ॥ २८ ॥ मुनि ने कहा— रामचन्द्र, तुमसे कहता हूँ, इन्द्रजित् जैसा वीर त्रिभुवन में नहीं है। जो व्यक्ति चौदह वर्ष निद्रित नहीं हुआ, चौदह वर्ष जिसने स्त्री-

चौद्द बर्ष येइ बीरे थाके अनाहारे। इन्द्रजिते बधिबारे सेइ जन पारे
श्रीराम बलेन मुनि, कि कहिले तुमि। चौद्द बर्ष लक्ष्मणेरे फल दिछि आमि ३०
सीता सङ्गे चौद्द बर्ष करेछे भ्रमण। केमने सीतार मुख ना देखे लक्ष्मण
कुटीरेते बञ्चिलाम सीतार सहिते। थकित लक्ष्मण भाइ भिन्न कुटिरेते ३१
चौद्द बर्ष किरूपेते निद्रा नाहि याय। केमने एमन कथा करिब प्रत्यय
मुनि बले, सभामध्ये आनह लक्ष्मण। हय नय जिज्ञासा करह नारायण ३२
राम बले, शीघ्र याह सुमन्त्र सारथि। सभामध्ये लक्ष्मणेरे आन शीघ्र गहि
चलिला सुमन्त्र तबे श्रीरामेर बोले। लक्ष्मण बसिया आछे सुमित्रार कोले ३३
सुमन्त्र सारथि गिया नोयाइल माथा। जोड़हात करि बले श्रीरामेर कथा
सुमन्त्रेर कथा शुनि कहेन लक्ष्मण। बन-दुःख बुझि सुधाबेन नारायण ३४
आगेते लक्ष्मण पीछे सुमन्त्र सारथि। प्रणाम करिल गिया यथा रघुपति
लक्ष्मणे बलेन, राम, मोर दिव्य लागे। ये कथा जिज्ञासि आमि कह सभा-आगे ३५
चौद्द बर्ष एकत्र छिलाम तिनजन। केमने सीतार मुख ना देख लक्ष्मण
तुमि फल आनिते राखिया मोरे घरे। फल दिया आपनि कि छिले अनाहारे ३६
बन मध्ये तुमि भिन्न कुटीरेते छिले। चौद्द बर्ष किरूपेते निद्रा नाहि गेले
लक्ष्मण बलेन, शुन राजीवलोचन। पापिण्ठ राबण सीता हरिल यखन ३७

मुख नहीं देखा, ॥ २९ ॥ जो वीर चौदह वर्ष अनाहारी रहा, वही व्यक्ति इन्द्रजित् का वध कर सकता था। श्रीराम ने कहा— मुनि, आप यह क्या कह रहे हैं? हम चौदह वर्ष लक्ष्मण को फल देते रहे हैं ॥ ३० ॥ सीता-सहित वह चौदह वर्ष भ्रमण करता रहा है, तो कैसे लक्ष्मण ने सीता का मुख नहीं देखा? हम सीता के साथ कुटिया में रहा करते थे, लक्ष्मण भाई दूसरी कुटिया में रहता था ॥ ३१ ॥ तो फिर वह चौदह वर्ष कैसे निद्रित नहीं रहा? ऐसी बात कैसे विश्वास करें? मुनि ने कहा— हे नारायण, लक्ष्मण को तुम सभा में ले आओ। बात सत्य है या नहीं, पूछो ॥ ३२ ॥ राम ने कहा— सारथी सुमन्त्र, शीघ्र जाओ, लक्ष्मण को शीघ्र ही सभा में ले आओ। श्रीराम की बात पर सुमन्त्र चला। लक्ष्मण सुमित्रा की गोद में बैठे थे ॥ ३३ ॥ सारथी सुमन्त्र ने जाकर सिर झुकाया और श्रीराम की बात बताई। लक्ष्मण ने सुमन्त्र की बात सुनकर कहा— नारायण संभवतः मुझसे वन के दुःखों के बारे में पूछेंगे? ॥ ३४ ॥ आगे-आगे लक्ष्मण और उनके पीछे सारथी सुमन्त्र ने रामचन्द्र के पास जाकर उन्हें प्रणाम किया। रामचन्द्र ने लक्ष्मण से कहा— मेरी शपथ है, मैं जो बात पूछूं उसे सभा के समक्ष बताओ ॥ ३५ ॥ हम तीनों जन चौदह वर्ष तक एक साथ रहे। हे लक्ष्मण, तुमने सीता का मुख भला कैसे नहीं देखा? मुझे घर पर रखकर तुम फल लाया करते थे। हमें फल देकर क्या तुम स्वयं अनाहारी रहते थे? ॥ ३६ ॥ वन में तुम दूसरी कुटिया में रहते, चौदह वर्ष तुम कैसे निद्रित नहीं हुए? लक्ष्मण ने कहा, राजीव-लोचन, सुनिए, जब पापी रावण ने सीता का हरण किया ॥ ३७ ॥ हम

ुइ जन भ्रमि बने करिया रोदन । ऋष्यमूके मा सीतार पाइ आभरण
ुग्रीवेर अग्रे तुमि सुधाले यखन । सीता-आभरण किना चिनह लक्ष्मण ३८
ामि ना चिनिनु प्रभु हार कि केयूर । सबे मात्र चिनिलाम चरण-नूपुर
त्य प्रभु, एकत्र छिलाम तिन जन । श्रीचरण बिना तार ना देखि वदन ३९
ातुर्दश वर्ष निद्रा ना याइ केमने । शुन शुन रघुनाथ कहि तव स्थाने
ुमि आर मा जानकी कुटीरे थाकिते । आमि द्वार राखिताम धनुःशर हाते ४०
ाच्छन्न करिल निद्रा आमार नयने । क्रोध करि निद्रारे विन्धिनु एक बाणे
हि शुन निद्रादेवी आमार उत्तर । ना एसो आमार काछे ए चौद्द वत्सर ४१
ाम यवे राजा हवे अयोध्या पुरेते । वसिवेन मा जानकी रामेर वामेते
त्रदण्ड धरि आमि दाँड़ाव दक्षिणे । सेइ काले एसो निद्रा आमार नयने ४२
ाहार प्रमाण प्रभु कहि तव स्थाने । तव वामे मा जानकी वसे सिंहासने
ामि दाण्डाइनु छत्र करिया धारण । हात हैते टलि छत्र पड़िल तखन ४३
इ काले निद्रा आसि करिल व्यापित । ईषत् हासिया आमि हइनु लज्जित
नाहारे चतुर्दश वर्ष छिनु बने । ताहार प्रमाण प्रभु कहि तव स्थाने ४४
ामि गिया काननेते आनिताम फल । तुमि प्रभु तिन अंश करिते सकल
ड़े कि ना पड़े मने राजीवलोचन । आमारे कहिते फल धररे लक्ष्मण ४५

ीनों रोते-रोते वन में भ्रमण करते थे, उस समय रिष्यमूक पर्वत पर माता ीता के आभूषण पाकर जब आपने सुग्रीव के समक्ष पूछा था, लक्ष्मण, सीता के आभूषण हैं या नहीं, पहचानो ॥ ३८ ॥ तब हे प्रभु, मैं हार ा केयूर को पहचान नहीं पाया । केवल चरणों के नूपुरों को पहचान ुका था । प्रभु, यह सत्य है कि हम तीनों एक साथ रहते थे, परन्तु मैं ाता सीता के श्रीचरणों को छोड़ उनके बदन को न देखा ॥ ३९ ॥ चौदह वर्ष कैसे निद्रित नहीं हुआ, रघुनाथ, सुनिए, आपसे बताता । आप और माता जानकी कुटिया में रहते, मैं हाथ में धनुष-बाण ाकर द्वार की रखवाली करता था ॥ ४० ॥ मेरे नयनों को जब निद्रा आच्छन्न कर लिया तो मैंने क्रोधित होकर निद्रा को एक बाण से बेध दया । हमने कहा, निद्रा देवी, मेरा उत्तर सुनो, यह चौदह वर्ष तुम रे समीप न आना ॥ ४१ ॥ जब रामचन्द्र अयोध्यापुरी में राजा ोंगे, माता जानकी रामचन्द्र के बायें आसीन होंगी, मैं छत्रदण्ड हाथ में दाहिनी ओर खड़ा होऊँ, हे निद्रा, उसी समय तुम मेरे नयनों में ाना ॥ ४२ ॥ प्रभु, उसका प्रमाण आपसे कहता हूँ, जब आपके बायें ाता जानकी सिंहासन पर बैठीं, मैं छत्र धारण कर खड़ा हुआ; तो मेरे ाथ से छत्र झुककर गिर पड़ा था ॥ ४३ ॥ उसी समय निद्रा ने आकर ुझे व्याप्त कर लिया था । मैं ज़रा-सा हँसकर लज्जित हो गया । मैं न में चौदह वर्ष अनाहारी था, प्रभु, उसका प्रमाण आपसे कहता ॥ ४४ ॥ मैं जंगल में जाकर फल लाया करता, प्रभु, आप उसे तीन ाग करते । हे राजीवलोचन, आपको स्मरण होता है या नहीं, आप ुझसे कहते, लक्ष्मण, फल रख लो ॥ ४५ ॥ मैं उसे कुटिया में लाकर

आमि धरे राखिताम कुटीरेते आनि । खाइते कखन नाहि बल रघुमणि
आज्ञा बिना केमनेते करिब आहार । चौद्द वत्सरेर फल आछये तोमार ४६
श्रीराम बलेन फल रेखेछ केमन । सभामध्ये आनि देह प्राणेर लक्ष्मण
हनूमाने आदेशिला ठाकुर लक्ष्मण । बन हैते फल आन पवननन्दन ४७
हनूमान गिया तबे देखिल कानने । चौद्द बत्सरेर फल आछे पूर्ण तूणे
देखिया फलेर तूण हनूमान बले । एइ कोन् कार्य्य हेतु आमारे पाठाले ४८
क्षुद्र एक बानरेते लये येते पारे । आमारे पाठाले प्रभु अविचार करे
एत यदि हनूर हइल अहङ्कार । हइल फलेर तूण लक्षगुण भार ४९
नाड़िते ना पारे तूण पवननन्दन । सभामध्ये उत्तरिल विरस बदन
हनू बले, प्रभु, आमि ना पारि बुझिते । ना पारि नाड़िते तूण आमार शक्तिते ५०
लक्ष्मणेर पाने चाहिं राजीवलोचन । हासिया बलेन, तूण आनह लक्ष्मण
निमिषे लक्ष्मण गिया धरि बामहाते । आनिया राखिल तूण सबार साक्षाते ५१
श्रीराम बलेन, शुनि प्राणेर लक्ष्मण । चौद्द बत्सरेर फल करह गणन
एके एके लक्ष्मण से गणिल सकल । केबल न मिलिल सप्त दिनेर फल ५२
श्रीराम बलेन, शुन प्राणेर लक्ष्मण । सप्तदिन फल तुमि करेछ भक्षण
लक्ष्मण बलेन, शुन देव नारायण । सप्तदिन फल के करेछे आहरण ५३

रख देता । हे रघुमणि, आपने कभी खाने के लिए नहीं कहा, बिना आज्ञा के मैं कैसे आहार करता ? चौदह वर्ष के वे तुम्हारे फल पड़े हुए हैं ॥ ४६ ॥ श्रीराम ने कहा— फल कैसे रखे हैं, प्राणप्रिय लक्ष्मण, तुम इस सभा में ला दो । देव लक्ष्मण ने हनुमान को आदेश दिया, पवन-नन्दन, वन में जाकर फल ले आओ ॥ ४७ ॥ हनुमान ने वन में जाकर देखा कि चौदह वर्ष वे फल तूण में भरे हुए हैं । फलों से भरे तूण को देखकर हनुमान कहने लगे, यह कैसे कार्य हेतु हमें भेजा है ? ॥ ४८ ॥ इसे तो एक छोटा-सा वानर ले जा सकता है । प्रभु ने अन्याय कर हमें भेजा है । हनुमान को जब ऐसा अहंकार हुआ तो फल का वह तूण लाख गुना भारी हो गया ॥ ४९ ॥ पवननन्दन वह तूण हिला भी नहीं सके । मुरझाये बदन से वे सभा में आकर उपस्थित हुए । हनुमान ने कहा — प्रभु, मैं समझ नहीं पा रहा हूँ, मैं अपनी शक्ति से उस तूण को हिला भी नहीं सकता ॥ ५० ॥ तब राजीवलोचन ने लक्ष्मण की ओर देखकर हँसते हुए कहा— लक्ष्मण, तूण ले आओ । पल में ही लक्ष्मण ने जाकर बायें हाथ से उठा लाकर उस तूण को सबके सामने रख दिया ॥ ५१ ॥ श्रीराम ने कहा— हे प्राणप्रिय लक्ष्मण, सुनो, चौदह वर्ष के फलों की गणना करो । एक-एक कर लक्ष्मण ने सारे फलों की गिनती की । केवल सात दिनों के फल नहीं मिले ॥ ५२ ॥ श्रीराम ने कहा— प्राणप्रिय लक्ष्मण, तुमने सात दिन तो फल खाये हैं । लक्ष्मण ने कहा— देव, नारायण, सुनिए, उन सात दिन फलों का संग्रह किसने किया था ? ॥ ५३ ॥ जिस दिन पिता के वियोग के समाचार से हम विलखित

येइ दिन पितार बियोग समाचारे । विश्वामित्र आश्रमे छिलाम अनाहारे
सेइ दिन फल नाहि करि आहरण । छय दिन कथा आर शुन नारायण ५४
ये दिन हरिल सीता पापिष्ठ रावण । शोकेते आकुल फल आने कोन् जन
इन्द्रजित् ये दिन बान्धिल नागपाशे । अचैतन्ये गेल दिन फल ना आइसे ५५
चतुर्थ दिनेर कथा निवेदि चरणे । इन्द्रजित् मायासीता काटिल ये दिने
सेइ दिन शोकानले दग्ध दुइ भाइ । मने करे देख प्रभु फल आनि नाइ ५६
आर एक दिन प्रभु पड़े किना मने । पाताले महीर घरे बन्दी दुइ जने
जिज्ञासह साक्षी तार पवननन्दन । सेइ दिन फल नाहि करि आहरण ५७
शक्ति शेल ये दिन मारिल दशानन । अधीर हइला मम शोके नारायण
नित्य आनिताम फल आमि ये गोसाँइ । नफर पड़िल, फल आना हलो नाइ ५८
सप्तम दिनेर कथा कि कहिब आर । ये दिन रावण बध आनन्द अपार
आनन्द-उत्सवे सब हइल चञ्चल । पुलकेते पासरिनु आनिबारे फल ५९
बिचार करिया देखि जगत गोसाँइ । चतुर्द्दश बर्ष आमि किछु नाहि खाइ
तब मने नित्य फल खाइत लक्ष्मण । पूर्व्व कथा केन प्रभु हले बिस्मरण ६०
विश्वामित्र स्थाने मन्त्र पाइ दुइ जने । तुमि भुलियाछ प्रभु आछे मोर मने
उपदेश दियाछेन विश्वामित्र ऋषि । एकारणे चतुर्द्दश वर्ष उपबासी ६१

के आश्रम में निराहार रहे, उस दिन फलों का संग्रह नहीं किया था। और छः दिन के बारे में सुनिए ॥ ५४ ॥ जिस दिन पापी रावण ने सीता का हरण किया, तो शोक से आकुल होने के कारण फल कौन लाता ? जिस दिन इन्द्रजित् ने नागपाश में बाँधा था, दिन भर अचेत रहे, इससे फल नहीं लाया जा सका ॥ ५५ ॥ चौथे दिन की बात चरणों में निवेदन करता हूँ। जिस दिन इन्द्रजित् ने माया-सीता को काटा था, उस दिन शोक रूपी अग्नि में दोनों भाई दग्ध होने के कारण हम फल नहीं लाये, प्रभु, स्मरण कर देखें ॥ ५६ ॥ प्रभु, और एक दिन की बात स्मरण है या नहीं, हम दोनों पाताल में महीरावण के यहाँ बन्दी थे। आप पूछ देखिए, उसके साक्षी पवननन्दन हैं। उस दिन फलों का संग्रह नहीं किया था ॥५७॥ जिस दिन रावण ने मुझे शक्ति मारी थी, नारायण, आप मेरे शोक से अधीर हो उठे थे। प्रभु, नित्य मैं ही फल लाता था, चूँकि यह दास पड़ा हुआ था, फल नहीं लाया गया ॥ ५८ ॥ सातवें दिन की बात क्या कहूँ— जिस दिन रावण-वध के कारण अपार आनन्द था, सब लोग आनन्द-उत्सव में चंचल हो उठे थे, उसी हर्ष में फल लाना भूल गया ॥ ५९ ॥ हे जगत् के नाथ ! आप विचार कर देखें, ये चौदह वर्ष हमने कुछ नहीं खाया। आपके मन में (यही धारणा) थी कि लक्ष्मण नित्य फल खाता है। आप पूर्व-कथा कैसे विस्मृत हो गये ? ॥ ६० ॥ हम दोनों को विश्वामित्र से मन्त्र मिला था। प्रभु, आप उसे भूल गये, मुझे स्मरण है। ऋषि विश्वामित्र ने जो उपदेश दिया था उसी कारण चौदह वर्ष उपवासी रह सका ॥ ६१ ॥ हम मुनि

पालिया मुनिर आज्ञा भ्रमिताम बने । एइ हेतु इन्द्रजित् पड़े मम बाणे
एत यदि बलिलेन ठाकुर लक्ष्मण । लक्ष्मणेरे कोले करि रामेर क्रन्दन ६२

लक्ष्मण-भोजन

एइरूपे सबाकारे बिदाय करिया । अन्तःपुरे गेला राम तिन भाये लैया
रामेर अन्दरे गिया चारि भाइ बसि । बनबास दुःख राम कन् हासि-हासि ६३
जनक नन्दिनी बैसे प्रभु-मुख हेरि । आसिला कौशल्यादेवी राम अन्तःपुरी
कोथाय आमार बाछा कमल-लोचन । चाँद-मुख हेरि तार जुड़ाक्-जीवन ६४
एइ कथा बलि माता वसिला आसने । प्रणमिला चारि भाइ मायेर चरणे
तखन जानकीदेवी वाहिर हइया । प्रणाम करिला आसि क्षिति लोटाइया ६५
बिचित्र आसन आनि आङ्गिनाते दिला । चारि भाइ सीता सङ्गे कौशल्या बसिला
चाहिया रामेर पाने कौशल्या जननी । कि कथा कहिले बापु राम रघुमणि ६६
राम कन, चौद्द-वर्ष बनबास-कथा । भरत-शत्रुघ्ने कहिते छिलाम माता
कौशल्या कहेन, बाछा, ए कथा ना शुनि । शुनिले बनेर नाम फाटये पराणी ६७
श्रीराम बलेन, माता, कर अवधान । भक्षण-सामग्री यत करह बिधान
गा तोल जननि मोर, त्यज अन्य कथा । चौद्द बत्सरेर अन्न आजि देह माता ६८

की आज्ञा का पालन करते हुए वन में भ्रमण करते, इसी कारण इन्द्रजित् मेरे बाणों से मारा गया । देव लक्ष्मण ने जब इतना कहा तो लक्ष्मण को गोद में लेकर रामचन्द्र रुदन करने लगे ।। ६२ ।।

लक्ष्मण का भोजन करना

इस प्रकार सबको विदा कर तीनों भाइयों को लेकर रामचन्द्र अन्तःपुर में गये । रामचन्द्र के अन्तःपुर में जाकर चारों भाई बैठे और रामचन्द्र हँस-हँसकर वनवास का दुःख कहने लगे ।। ६३ ।। प्रभु का मुख देखती हुई जनकनन्दिनी भी बैठी । कौशल्या देवी रामचन्द्र के अन्तःपुर में आयीं । हमारा वत्स, कमललोचन राम कहाँ है ? उसका चन्द्रमुख देखकर मेरा जीवन शीतल हो ।। ६४ ।। यह बात कहकर माता आसन पर बैठी । चारों भाइयों ने माँ के चरणों में प्रणाम किया । तब जानकी देवी ने बाहर आकर धरती पर पड़कर उन्हें प्रणाम किया ।। ६५ ।। विचित्र आसन लाकर आँगन में लगा दिया । चारों भाइयों और सीता-समेत कौशल्या उस पर आ बैठी । माता कौशल्या ने राम की ओर देखकर पूछा, वत्स रघुपति राम, तुम कौन सी कथा कह रहे थे ? ।। ६६ ।। राम ने कहा— माता, मैं चौदह वर्ष वनवास की कथा भरत-शत्रुघ्न से कह रहा था । कौशल्या बोली, वत्स, यह कथा मैं सुनना नहीं चाहती, वन का नाम सुनते ही प्राण फटने लगते हैं ।। ६७ ।। श्रीराम ने कहा— माता, सुनो, जितनी भोजन सामग्रियाँ हैं उनकी व्यवस्था करो । मेरी जननी, दूसरी

शुनेछ कि लक्ष्मणेर प्रतिज्ञा-काहिनी। अनाहारे चौद्द-वर्ष आछे गुणमणि
इन्द्रजित् अतिकाय रावण-कोङर। करिब कठोर तप, ब्रह्मा दिल बर ६९
येइ बीर चौद्द वर्ष निद्रा नाहि याबे। अन्न-जल, फल-मूल किछुइ ना खाबे
निद्रात्यागी, नारीमुख येबा ना देखिबे। तोमा दोंहाकारे रणे सेइ निपातिबे ७०
से सब बिधान भाई लक्ष्मण पूरिल। तेंइ से दुरन्त दोंहे समरे मारिल
फल-मूल खेये आमि पोहाइनु निशि। चौद्द-वर्ष लक्ष्मण से आछे उपबासी ७१
चमत्कृता कौशल्या से शुनि राम-कथा। लक्ष्मणे करिला कोले चुम्बितार माथा
तोमार एहेन गुण बाछारे लक्ष्मण। सागरे कामना करि पेयेछि रतन ७२
चौद्द वर्ष आछि आमि लोचन-बिहीन। पोहाइल काल-रात्रि हैल शुभ दिन?
आजि मोर सुप्रभात, सफल जीवन। लक्ष्मी करिबेन पाक अन्न ओ व्यञ्जन ७३
ए कथा कहिया माता चलिला अन्दरे। रामेर बचन गिया जानान सबारे
शुनि यत राणीगण सानन्द-अन्तर। सबे मिलि आसिलेन रामेर अन्दर ७४
सात शत-ऊनपञ्चाश दशरथेर राणी। नाना बिध भक्ष्य द्रव्य नाना मते आनि
प्रजालोक आने यत, संख्या किबा तार। अयोध्या नगरे द्रव्य आने भारे भार ७५
पात्रमित्र रड़ारड़ि कत द्रव्य आने। पुञ्ज-पुञ्ज राशि-राशि भूरि-भूरि माने
राणीगण दिल नाना आयोजन आनि। लक्ष्मी-वधू रान्धिबेन जनक-नन्दिनी ७६

लक्ष्मण की प्रतिज्ञा की कथा क्या तुमने सुनी है? यह गुणमणि चौदह वर्ष अनाहारी रहा है। रावण के पुत्र इन्द्रजित् और अतिकाय ने कठोर तप किया था, ब्रह्मा ने उन्हें वर दिया था ॥ ६९ ॥ कि जो वीर चौदह वर्ष निद्रित नहीं होगा, अन्न-जल, फल-फूल कुछ नहीं खायेगा, निद्रात्यागी होगा, नारी का मुख नहीं देखेगा, तुम दोनों को वही युद्ध में मार सकेगा ॥ ७० ॥ उन सारे विधानों को भाई लक्ष्मण ने पूरा किया, इसी कारण उन दोनों दुष्टों को युद्ध में मारा है। फल-मूल खाकर हमने रातें बितायीं, परन्तु चौदह वर्ष से भाई लक्ष्मण उपवासी रहा है ॥ ७१ ॥ राम का वह कथन सुनकर कौशल्या चमत्कृता हो उठी और लक्ष्मण का सिर चूमकर उन्हें गोद में ले लिया। वत्स लक्ष्मण, तुम्हारा ऐसा गुण है! वत्स लक्ष्मण, हमने सागर की कामना कर रत्न पाया है ॥ ७२ ॥ चौदह वर्ष हम नेत्रहीन जैसे थे। क्या अब काल-रात्रि बीती, शुभ दिन हुआ? आज मेरा सुप्रभात है, जीवन सफल है। आज हमारी लक्ष्मी अन्न, व्यञ्जन आदि बनायेंगी ॥ ७३ ॥ यह कहकर माता अन्तःपुर में चली गयी और सबको राम का वचन सूचित किया। सुनकर सभी रानियों का अन्तर् आनन्द से पूर्ण हो गया। सब मिलकर रामचन्द्र के अन्तःपुर में आयीं ॥ ७४ ॥ दशरथ की सात सौ उनचास रानियाँ नाना प्रकार के खाद्य-पदार्थ नाना प्रकार से लाने लगीं। प्रजा जितनी लाने लगी उनकी क्या गिनती है? वह अयोध्या नगर में भार-के-भार द्रव्य लाने लगी ॥७५॥ सामन्त-बन्धु-बान्धव दौड़-दौड़कर ढेर-के-ढेर, समूह-के-समूह, पुंज-के-पुंज कितने द्रव्य ला रहे थे। रानियों ने नाना प्रकार के आयोजन (द्रव्यादि) जुटा दिये, लक्ष्मी-बन्धु जनकनन्दिनी रसोई

विशाखा रेवती आर सीतार यत दासी । गन्ध आमलकी आनि सीतार गाये घसि
सुबर्ण पाटाली आनि दूर कैल मलि । रूपवती सीतादेवी हासिला बिजली ७७
दामिनी जिनिया हैल सीतार सुबेष । सोनार चिरुणी दिया आँचड़िल केश
सीताकुण्डे स्नान कैला सीता ठाकुराणी । परिला अमूल्य बस्त्र मूल्य नाहि-जानि ७८
करि बर-गति जिनि सीतार गमन । हिङ्गुल जड़ित येन दुखानि चरण
कौशल्या बलेन, शुन यत राणीगण । लक्ष्मी-बधू सीता मोर करिबे रन्धन ७९
शाशुड़ीर पदे सीता प्रणाम करिया । रन्धनेर हेतु शीघ्र बसिलेन गिया
बसिलेन बिधुमुखी रसुइ-शालेते । शाक-सूप आदि यत लागिला राँधिते ८०
तखन श्रीरामचन्द्र भरतेरे कन । पात्र-मित्र पुरजने कर निमन्त्रण
चौद्द-वर्ष आछे मोर भाइ अनाहारे । प्रथम भोजन भाइ, कराओ बिप्रेरे ८१
अयोध्याय बास करे यतेक ब्राह्मण । सबाकार बासे बासे देह आयोजन
देव-द्विजे सन्तुष्ट करह आगे भाइ । पश्चाते भोजन मोरा करिब सबाइ ८२
आज्ञामात्र भरत चलिला द्रुत गति । बिलाइल बहु धन ब्राह्मणेर प्रति
घरे घरे विस्तर सामग्री आनि दिल । राम नारायण जानि सबाइ लइल ८३
जाने जाने मुनिगण राम नारायण । ए हेतु सामग्री सब करिला ग्रहण
अपर यतेक छिल क्षत्री आदि करि । सबाकारे निमन्त्रण दिला त्वरा त्वरि ८४

बनायेंगी ॥ ७६ ॥ विशाखा, रेवती और सीता की जितनी दासियाँ थीं, सुगन्धित आँवले लाकर सीता के शरीर में मलने लगीं। सोने का पीढ़ा लाकर उस पर बिठाकर उनकी मैल दूर की। रूपवती सीता हँसती हुई बिजली-सी हो उठीं ॥ ७७ ॥ सीता का सुन्दर वेश बिजली को भी लजानेवाला था। सोने की कंघी से उनके बाल काढ़े गये। सीता-देवी ने सीताकुंड में स्नान किया और जिसको मूल्य का पता नहीं ऐसा अमूल्य वस्त्र धारण किया ॥ ७८ ॥ सीता की चाल गजराज की चाल से बढ़कर थी। उनके दोनों चरण हिंगुल से मंडित थे। कौशल्या ने कहा— रानियो, सुनो, मेरी लक्ष्मी-वधू सीता रसोई बनायेगी ॥ ७९ ॥ सास के चरणों में प्रणाम कर सीता शीघ्र ही रसोई बनाने बैठी। चन्द्रमुखी सीता रसोईघर में बैठी और साग-सूप आदि बनाने लगी ॥ ८० ॥ तब रामचन्द्र ने भरत से कहा— सामन्तों, मित्रों, पुरजनों को निमंत्रित कर आओ। मेरा भाई चौदह वर्ष अनाहारी रहा है। भाई, प्रथम विप्रों को भोजन करवाओ ॥ ८१ ॥ अयोध्या में जितने ब्राह्मण बसते हैं, सबके घर-घर में सामग्री दे आओ। भाई, पहले देव-द्विजों को सन्तुष्ट करो। इसके पश्चात् हम सभी भोजन करेंगे ॥ ८२ ॥ उनकी आज्ञा पाते ही भरत द्रुतगति से चल पड़े और ब्राह्मणों को अनेक धन दान किया। घर-घर में प्रचुर सामग्रियाँ ला दीं। राम नारायण हैं —ऐसा समझकर सभी ने ग्रहण किया ॥८३॥ मुनियों ने ध्यान लगाकर जान लिया था कि राम नारायण हैं। इस कारण सारी सामग्रियाँ उन्होंने ग्रहण की। दूसरे जितने क्षत्रिय आदि लोग थे, सबको शीघ्रता से निमंत्रण दिया ॥८४॥ सुग्रीव, अंगद, विभीषण

ीव अङ्गद बिभीषण आदि क'रे। सबाइ गमन कैला रामेर मन्दिरे
ाक्षे राँधेन लक्ष्मी पञ्चाश व्यञ्जन। भाजा-तोला आदि यत ना याय गणन ८५
टक-पायस रान्धि समापन कैला। रन्धन प्रस्तुत बलि रामे जानाइला
न कन, भरत, डाकह सर्ब्बजने। स्नान करि पङ्क्ति-क्रमे बसाओ अङ्गने ८६
्त भाषेण रामे युड़ि दुइ हात। आसिते अपेक्षा मात्र प्रभु रघुनाथ
िलेन आज्ञा राम तबे बसि बारे। भबने थाकिया ब्रह्मा जानिला अन्तरे ८७
। चिन्ति शिव-प्रति कन प्रजापति। रसुइ करेन सीता, शुन पशुपति
ाय आमाय चल प्रसाद पाइब। लक्ष्मीर रसुइ अन्नपूर्ण करि खाब ८८
ा शुनि महेश्वर सानन्द हइला। प्रेम भाव देखि ब्रह्मा शिवे कोल दिला
ः युक्ति करि दोंहे करिला गमन। मुहूर्त्तेके अयोध्याय आइला दुइजन ८९
न करि दुइ देव हइला ब्राह्मण। महल-निकटे गिया दिला दरशन
ूल निकटे एक रम्य स्थान छिल। ताहार निकटे गिया दु'-जने बसिल ९०
ाने सकल लोक बैसे सारि सारि। राक्षस बानर कैसे चण्डालादि करि
भाइ, श्रीरामेर लीला असम्भब। राक्षसे ना करे शंका देखिया मानब ९१
सि हासि हनूमाने बलेन श्रीराम। द्वारी हये द्वार राख, बापु हनूमान
्चाते प्रसाद पाबे भोजनान्ते मोर। सरम भरम हनू सब बाछा तोर ९२

ादि समेत सभी राम के मंदिर में गये। निमेष मात्र में लक्ष्मी सीता ने चासों व्यंजन राँधे। भाजी-तली कितनी चीज़ें बनीं थीं उनकी गणना नहीं ी सकती ॥ ८५ ॥ पिष्टक, (पीठा) पायस (खीर) आदि राँधकर रा किया। और रसोई हो चुकी है —ऐसा रामचन्द्र को सूचित किया। ाम ने कहा— भरत, सभी को बुलाओ। स्नान करवाकर सबको आँगन ं पंक्तिबद्ध कर बिठाओ ॥ ८६ ॥ भरत ने दोनों हाथ जोड़कर कहा— भु, रघुनाथ, आने की ही प्रतीक्षा है। तब राम ने सबको बैठने की आज्ञा ी। उधर अपने भवन में स्थित ब्रह्मा ने अपने अन्तर् में जान लिया ॥८७॥ न में चिन्तन कर प्रजापति ने शिव से कहा— पशुपति, सुनो, सीता सोई बना रही हैं। चलो तुम-हम चलकर प्रसाद पावें। लक्ष्मी के राँधे अन्न जी भरकर खायें ॥ ८८ ॥ यह सुनकर महेश्वर आनन्दित हुए। उनका प्रेम-भाव देखकर ब्रह्मा ने शिव को आलिंगन किया। एक युक्ति सोचकर दोनों ने यात्रा की और दोनों क्षण भर में अयोध्या आ पहुँचे ॥ ८९ ॥ छल करके दोनों देवता ब्राह्मण बन गये और राजभवन के समीप जा दर्शन दिया। राजभवन के समीप एक रमणीय स्थान था। वहाँ जाकर दोनों बैठ गये ॥ ९० ॥ इधर सभी लोग पंक्तियों में बैठ गये थे, चाण्डाल आदि समेत राक्षस-वानर आदि भी बैठे। भाई, रामचन्द्र की अद्भुत लीला देखो। राक्षसों को देखकर भी वहाँ के मानव शंका नहीं करते थे ॥ ९१ ॥ हँस-हँसकर हनुमान से श्रीराम ने कहा— वत्स हनुमान, तुम द्वारपाल बनकर द्वार की रखवाली करो। इसके पश्चात् मेरा भोजन हो चुकने पर प्रसाद पाना। वत्स हनुमान, मेरा लाज-सम्मान सब तुम्हारे ऊपर है ॥ ९२ ॥ 'जो आज्ञा' कहकर हनुमान द्वार

ये आज्ञा बलिया द्वारे रहे हनुमान। अहोभाग्य, प्रसाद दिलेन प्रभु राम
अन्तर्यामी रामचन्द्र जानेन सकल। शिव ब्रह्मा दुइजने आइला महीतल ६३
आपनि अनन्त देब सुमित्रानन्दन। ब्रह्मा-शिव बसि द्वारे, जानिला तखन
कृताञ्जलि हये तबे राम प्रति कन। अतिथि थाकिते मोर नाहबे भोजन ६४
अपूर्ब्ब अतिथि यदि पार आनिबारे। तबे त खाइब अन्न कहिनु तोमारे
तखन डाकिला राम पबनेर सुते। अपूर्ब्ब अतिथि एक आनह त्वरिते ६५
बिनातिथि लक्ष्मणेर भोजन ना हय। त्वराय आनह बापु पबन-तनय
एत शुनि हनूमान करिल गमन। चौताराय आसि देखे दुइटि ब्राह्मण ६६
हनूमान बले, केबा तोमा दुइजन। ब्रह्मा बलिलेन, मोरा अतिथि ब्राह्मण
हनू बले, एकजन चल मोर साथे। भोजन करिबा गिया रामेर अतिथे ६७
बिप्र बले, हनूमान, एका नाहि याब। दु'-जने जाइया मोरा प्रसाद पाइब
हनू बले, आज्ञा नाहि येते दुइजने। एक जन चल गिया जानाव श्रीरामे ६८
श्रीराम कहिले पुनः अन्य जन यावे। आज्ञा ल'ये आसि आमि ल'ये याब हबे
एत बलि हनूमान धरे द्विज-हाते। उठ उठ द्विजबर डाके बिधि मते ६९
शिव-हस्त धरि टाने पबन कोङर। उठाते ना पारे हनू काँपे थर थर
क्रोध करि हनूमान धरिला ब्राह्मणे। टानाटानि हुड़ाहुड़ि करे दुइ जने १००

पर रहे। उन्होंने सोचा— अहोभाग्य, प्रभु राम ने प्रसाद दिया। अन्तर्यामी रामचन्द्र सब कुछ जानते थे कि शिव-ब्रह्मा दोनों धरती पर आये हैं॥ ९३॥ देव सुमित्रानन्दन लक्ष्मण स्वय शेषनाग हैं, उन्होंने जान लिया कि ब्रह्मा-शिव द्वार पर बैठे हैं। उन्होंने हाथ जोड़कर राम से कहा, अतिथि के बिना भोजन किये मेरा भोजन नहीं होगा॥ ९४॥ यदि किसी अपूर्व अतिथि को ला दे सकें, आप से कहता हूँ, तभी अन्न खाऊँगा। तब रामचन्द्र ने हनुमान को बुलाकर कहा, शीघ्र एक अपूर्व अतिथि को बुला लाओ॥ ९५॥ अतिथि को भोजन कराये बिना लक्ष्मण का भोजन नहीं होगा। इसलिए वत्स हनुमान, तुम शीघ्र ही जाकर ले आओ। यह सुनकर हनुमान चल पड़े। चबूतरे के पास आकर देखा कि दो ब्राह्मण बैठे हैं॥ ९६॥ हनुमान ने पूछा, तुम दोनों कौन हो? ब्रह्मा ने कहा, हम अतिथि ब्राह्मण हैं। हनुमान ने कहा, एक व्यक्ति मेरे साथ चलो। रामचन्द्र की अतिथिशाला में चलकर भोजन करो॥ ९७॥ विप्र ने कहा— हनुमान, मैं अकेले नहीं जाऊँगा। हम दोनों चलकर प्रसाद पा सकते हैं। हनुमान ने कहा— दो व्यक्तियों के जाने की आज्ञा नहीं है। एक व्यक्ति चलो और रामचन्द्र को सूचित करें॥ ९८॥ यदि श्रीराम कहें तो दूसरा व्यक्ति चलना, उनकी आज्ञा लेने के पश्चात् मैं ले जाऊँगा। ऐसा कहकर हनुमान ने ब्राह्मण का हाथ पकड़ा और विधि के अनुसार 'उठो-उठो द्विजवर' कहा॥ ९९॥ पवन-पुत्र ने शिव का हाथ पकड़कर खींचा। पर उन्हें उठा न पाने के कारण हनुमान थर-थर काँपने लगे। तब हनुमान ने क्रोधित होकर ब्राह्मण को पकड़ा और दोनों खींचातानी, ठेलम-ठेल करने लगे॥ १००॥ दोनों वीर ठेलम-ठेल, धक्कम-धक्का

ाठेलि पेलापेलि करे दुइ वीर । शेषे दु'जनेर धूलि-भूषित शरीर
ा कन, हनूमान, द्वन्द्व कर केने । दुइजने याब मोरा जानाओ श्रीरामे १०१
जने ल'ये येते नारिबे निश्चय । श्रीरामे जानाओ गिया एइ समुदय
ले याइब, नहे फिरे याब घरे । एत शुनि चले हनूमान चले धीरे धीरे २
ह्मणेर विवरण राघवे कहिला । शुनिया हनुर सङ्गे हरि गा तुलिला
ह्मणेरा यथा रन तथा गेल राम । विप्रप्रिय विप्रे देखि करिला प्रणाम ३
मने शिव ब्रह्मा प्रणमिला रामे । दूर्व्वादल-श्याम देखि तुष्ट हैला मने
कन, दुइजन गा तोल सत्वरे । आमार अतिथि हैला, चल मोर घरे ४
निया रामेर कथा उठे दुइजन । दुइ विप्र लये राम करिला गमन
मान अनुमान करे मने मने । विषम दरिद्र एइ द्विज दुइ जने ५
इबे सकल अन्न अनुमाने पाइ । शेषकाले मोर भाग्ये देखि अन्न नाइ
ह्मणे लइया राम स्नान कराइला । सुवर्णेर पिढ़ि आनि दोंहे बसाइला ६
ल यतेक लोक यथा योग्य स्थाने । बसिवार रोल उठे भेदिया गगने
इ-शालाय राम गिया दाण्डाइला । भरत-शत्रुघ्न भाये कहिते लागिला ७
-भाये अन्न देह, कहिलेन हरि । जानकी कहेन रामे जोड़ हात करि
मति देह यदि अनाथ-बान्धव । सबाकारे दिइ आमि अन्न आदि सब ८

रने लगे। अन्त में दोनों के शरीर धूलि-धूसरित हो गये। ब्रह्मा कहा— हनुमान, तुम झगड़ा किसलिए करते हो? श्रीराम को सूचित रो कि हम दोनों ही जायेंगे ॥ १०१ ॥ तुम निश्चय ही एक व्यक्ति को नहीं जा सकते। यह सारी बात तुम श्रीराम को जाकर सूचित करो। दि वे कहें, तो जायेंगे, नहीं तो दोनों घर लौट जायेंगे। यह सुनकर ुमान धीरे-धीरे चले ॥ २ ॥ उन्होंने रामचन्द्र से जाकर ब्राह्मण बातें सुनायीं। सुनकर हनुमान के साथ हरि चल पड़े। राम वहाँ जहाँ दोनों ब्राह्मण थे, विप्रप्रिय राम ने विप्रों को देखकर ाम किया ॥ ३ ॥ शिव और ब्रह्मा ने मन-ही-मन राम को प्रणाम या। उनका दूर्वादल-श्याम रूप देख वे मन में बड़े तुष्ट हुए। राम कहा— दोनों व्यक्ति शीघ्र उठिए। हमारे अतिथि बने हैं, मेरे घर लिए ॥ ४ ॥ राम की बात सुनकर दोनों उठे। दोनों विप्रों को थ ले राम चल पड़े। हनुमान ने मन-ही-मन अनुमान किया, ये दोनों ह्मण बड़े ही दरिद्र हैं ॥ ५ ॥ जितना चाहे उतना पाकर सारा अन्न डालेंगे। देखता हूँ, अन्त में मेरे भाग्य में अन्न नहीं रहेगा। ब्राह्मणों ले जाकर राम ने स्नान करवाया, सोने के पीढ़े लाकर दोनों को ठाया ॥ ६ ॥ सभी लोग यथायोग्य स्थान पर आ बैठे, उनके बैठने ध्वनि आकाश पार कर गूँज उठी। राम रसोईघर में जाकर खड़े और भरत-शत्रुघ्न इन दोनों भाइयों से कहने लगे ॥ ७ ॥ हरि कहा— दोनों भाई सबको अन्न परोसो। तब जानकी ने हाथ जोड़कर म से कहा— हे अनाथ-बान्धव! यदि आप अनुमति दें तो मैं ही सबको

ये आज्ञा बलिया द्वारे रहे हनूमान। अहोभाग्य, प्रसाद दिलेन प्रभु राम
अन्तर्यामी रामचन्द्र जानेन सकल। शिव ब्रह्मा दुइजने आइला महीतल ९३
आपनि अनन्त देब सुमित्रानन्दन। ब्रह्मा-शिव बसि द्वारे, जानिला तखन
कृताञ्जलि हये तबे राम प्रति कन। अतिथि थाकिते मोर नाहबे भोजन ९४
अपूर्ब्ब अतिथि यदि पार आनिबारे। तबे त खाइब अन्न कहिनु तोमारे
तखन डाकिला राम पबनेर सुते। अपूर्ब्ब अतिथि एक आनह त्वरिते ९५
बिनातिथि लक्ष्मणेर भोजन ना हय। त्वराय आनह बापु पबन-तनय
एत शुनि हनूमान करिल गमन। चौताराय आसि देखे दुइटि ब्राह्मण ९६
हनूमान बले, केबा तोमा दुइजन। ब्रह्मा बलिलेन, मोरा अतिथि ब्राह्मण
हनू बले, एकजन चल मोर साथे। भोजन करिबा गिया रामेर अतिथे ९७
बिप्र बले, हनूमान, एका नाहि याब। दु'-जने जाइया मोरा प्रसाद पाइब
हनू बले, आज्ञा नाहि येते दुइजने। एक जन चल गिया जानाब श्रीरामे ९८
श्रीराम कहिले पुनः अन्य जन याबे। आज्ञा ल'ये आसि आमि ल'ये याब हबे
एत बलि हनूमान धरे द्विज-हाते। उठ उठ द्विजबर डाके बिधि मते ९९
शिव-हस्त धरि टाने पबन कोङर। उठाते ना पारे हनू कांपे थर थर
क्रोध करि हनूमान धरिला ब्राह्मणे। टानाटानि हुड़ाहुड़ि करे दुइ जने १००

पर रहे। उन्होंने सोचा— अहोभाग्य, प्रभु राम ने प्रसाद दिया। अन्तर्यामी रामचन्द्र सब कुछ जानते थे कि शिव-ब्रह्मा दोनों धरती पर आये हैं ॥ ९३ ॥ देव सुमित्रानन्दन लक्ष्मण स्वय शेषनाग हैं, उन्होंने जान लिया कि ब्रह्मा-शिव द्वार पर बैठे हैं। उन्होंने हाथ जोड़कर राम से कहा, अतिथि के बिना भोजन किये मेरा भोजन नहीं होगा ॥ ९४ ॥ यदि किसी अपूर्व अतिथि को ला दे सकें, आप से कहता हूँ, तभी अन्न खाऊँगा। तब रामचन्द्र ने हनुमान को बुलाकर कहा, शीघ्र एक अपूर्व अतिथि को बुला लाओ ॥ ९५ ॥ अतिथि को भोजन कराये बिना लक्ष्मण का भोजन नहीं होगा। इसलिए वत्स हनुमान, तुम शीघ्र ही जाकर ले आओ। यह सुनकर हनुमान चल पड़े। चबूतरे के पास आकर देखा कि दो ब्राह्मण बैठे हैं ॥ ९६ ॥ हनुमान ने पूछा, तुम दोनों कौन हो ? ब्रह्मा ने कहा, हम अतिथि ब्राह्मण हैं। हनुमान ने कहा, एक व्यक्ति मेरे साथ चलो। रामचन्द्र की अतिथिशाला में चलकर भोजन करो ॥ ९७ ॥ विप्र ने कहा— हनुमान, मैं अकेले नहीं जाऊँगा। हम दोनों चलकर प्रसाद पा सकते हैं। हनुमान ने कहा— दो व्यक्तियों के जाने की आज्ञा नहीं है। एक व्यक्ति चलो और रामचन्द्र को सूचित करें ॥ ९८ ॥ यदि श्रीराम कहें तो दूसरा व्यक्ति चलना, उनकी आज्ञा लेने के पश्चात् मैं ले जाऊँगा। ऐसा कहकर हनुमान ने ब्राह्मण का हाथ पकड़ा और विधि के अनुसार 'उठो-उठो द्विजवर' कहा ॥ ९९ ॥ पवन-पुत्र ने शिव का हाथ पकड़कर खींचा। पर उन्हें उठा न पाने के कारण हनुमान थर-थर काँपने लगे। तब हनुमान ने क्रोधित होकर ब्राह्मण को पकड़ा और दोनों खींचातानी, ठेलम-ठेल करने लगे ॥ १०० ॥ दोनों वीर ठेलम-ठेल, धक्कम-धक्का

ठेलाठेलि पेलापेलि करे दुइ वीर। शेषे दु'जनेर धूलि-भूषित शरीर
ब्रह्मा कन, हनूमान, द्वन्द्व कर केने। दुइजने याब मोरा जानाओ श्रीरामे १०१
एक जने ल'ये येते नारिबे निश्चय। श्रीरामे जानाओ गिया एइ समुदय
बलिले याइब, नहे फिरे याब घरे। एत शुनि चले हनूमान चले धीरे धीरे २
ब्राह्मणेर विवरण राघवे कहिला। शुनिया हनुर सङ्गे हरि गा तुलिला
ब्राह्मणेरा यथा रन तथा गेल राम। विप्रप्रिय विप्रे देखि करिला प्रणाम ३
मने मने शिव ब्रह्मा प्रणमिला रामे। दूर्व्वादल-श्याम देखि तुष्ट हैला मने
राम कन, दुइजन गा तोल सत्वरे। आमार अतिथि हैला, चल मोर घरे ४
शुनिया रामेर कथा उठे दुइजन। दुइ विप्र लये राम करिला गमन
हनूमान अनुमान करे मने मने। विषम दरिद्र एइ द्विज दुइ जने ५
खाइबे सकल अन्न अनुमाने पाइ। शेषकाले मोर भाग्ये देखि अन्न नाइ
ब्राह्मणे लइया राम स्नान कराइला। सुवर्णेर पिढ़ि आनि दोंहे वसाइला ६
बसिल यतेक लोक यथा योग्य स्थाने। बसिबार रोल उठे भेदिया गगने
रसुइ-शालाय राम गिया दाण्डाइला। भरत-शत्रुघ्न भाये कहिते लागिला ७
दुइ-भाये अन्न देह, कहिलेन हरि। जानकी कहेन रामे जोड़ हात करि
अनुमति देह यदि अनाथ-बान्धव। सबाकारे दिइ आमि अन्न आदि सब ८

करने लगे। अन्त में दोनों के शरीर धूलि-धूसरित हो गये। ब्रह्मा ने कहा— हनुमान, तुम झगड़ा किसलिए करते हो? श्रीराम को सूचित करो कि हम दोनों ही जायेंगे ।। १०१ ।। तुम निश्चय ही एक व्यक्ति को ले नहीं जा सकते। यह सारी बात तुम श्रीराम को जाकर सूचित करो। यदि वे कहें, तो जायेंगे, नहीं तो दोनों घर लौट जायेंगे। यह सुनकर हनुमान धीरे-धीरे चले ।। २ ।। उन्होंने रामचन्द्र से जाकर ब्राह्मण की बातें सुनायीं। सुनकर हनुमान के साथ हरि चल पड़े। राम वहाँ गये जहाँ दोनों ब्राह्मण थे, विप्रप्रिय राम ने विप्रों को देखकर प्रणाम किया ।। ३ ।। शिव और ब्रह्मा ने मन-ही-मन राम को प्रणाम किया। उनका दूर्वादल-श्याम रूप देख वे मन में बड़े तुष्ट हुए। राम ने कहा— दोनों व्यक्ति शीघ्र उठिए। हमारे अतिथि बने हैं, मेरे घर चलिए ।। ४ ।। राम की बात सुनकर दोनों उठे। दोनों विप्रों को साथ ले राम चल पड़े। हनुमान ने मन-ही-मन अनुमान किया, ये दोनों ब्राह्मण बड़े ही दरिद्र हैं ।। ५ ।। जितना चाहे उतना पाकर सारा अन्न खा डालेंगे। देखता हूँ, अन्त में मेरे भाग्य में अन्न नहीं रहेगा। ब्राह्मणों को ले जाकर राम ने स्नान करवाया, सोने के पीढ़े लाकर दोनों को बिठाया ।। ६ ।। सभी लोग यथायोग्य स्थान पर आ बैठे, उनके बैठने की ध्वनि आकाश पार कर गूंज उठी। राम रसोईघर में जाकर खड़े हुए और भरत-शत्रुघ्न इन दोनों भाइयों से कहने लगे ।। ७ ।। हरि ने कहा— दोनों भाई सबको अन्न परोसो। तब जानकी ने हाथ जोड़कर राम से कहा— हे अनाथ-बान्धव! यदि आप अनुमति दें तो मैं ही सबको

भाल भाल बलि रामे दिला ताहे साय। सबे ल'ये भोजने बसिला रघुराय
दुइ द्विजे बसाइला महा-समादरे। तिन भाये बसिलेन रामेर गोचरे ९
अन्न थाला लये हाते वसिलेन सीता। आगे दुइ द्विजे देन जनक-दुहिता
परे दिला राम-आदि भाइ चारि जने। तखन अपरे अन्न देन क्रमे क्रमे ११०
क्षणमाझे सबाकारे अन्न दिला माता। सबे कन मानुष नय स्वयं लक्ष्मी सीता
ब'सेछे अनेक लोक पात्र मित्र-यति। वानर राक्षस बिभीषण महामति १११
सबाकारे देन अन्न-शाक-सूप आदि। शिव-ब्रह्मा बसिलेन लक्ष्मण अवधि
लक्ष्मणे कहेन राम, अन्न खाओ भाइ। मोर दिब्य आछे, अन्न ध'रे रेख नाइ १२
लक्ष्मण ये आज्ञा बलि पतिलेन हात। प्रसादान्न ताहारे दिलेन रघुनाथ
ए चौद्द-बत्सर परे ठाकुर लक्ष्मण। राम-प्रसादान्न पेये करिला भक्षण १३
जय जय प्रसाद बलि सकले बसिल। आन आन, दाओ दाओ, एइ शब्द हैल
प्रथमते शाक दिया आरम्भे भोजन। तार परे सूप आदि दिलेन तखन १४
भाजा-झोल आदि करि पञ्चाश व्यंजन। क्रमे-क्रमे सब कारे कैला बितरण
शेषे अम्बलान्त ह'ले व्यंजन समाप्त। परे दधि परमान्न पिष्टकादि यत १५
लक्ष्मीर हातेर अन्न सुधार समान। ए हेन अमृत तौरा कभु नाहि खान
सबे कय, ए आश्चर्य कभु देखि नाइ। एका सीता सबाकारे अन्न दिला भाइ १६

सम्मति दी और सबको ले रघुनाथ भोजन करने बैठे। दोनों ब्राह्मणों को बड़े आदर से बिठाया, तीनों भाई राम के सामने बैठे ॥ ९ ॥ अन्न की थाली लेकर सीता बैठी। जनकनन्दिनी ने पहले उन दोनों द्विजों को देकर उसके पश्चात् राम आदि चारों भाइयों को दिया। इसके पश्चात् क्रमशः दूसरों को अन्न देने लगी ॥ ११० ॥ पल में सभी को माता ने अन्न दिया। सभी कहते थे, सीता मानवी नहीं, स्वयं लक्ष्मी है। वहाँ सामन्त-बन्धु-बांधव, संन्यासी, वानर, राक्षस, महामति विभीषण आदि अनेक लोग बैठे हुए थे ॥ १११ ॥ सीता सबको साग-सूप-अन्न आदि दे रही थी। शिव-ब्रह्मा लक्ष्मण के पास बैठे थे। राम ने लक्ष्मण से कहा— भाई, अन्न खाओ, मेरी शपथ है, अन्न को रख मत देना ॥१२॥ लक्ष्मण ने 'जो आज्ञा' कहकर हाथ फैला दिया। रघुनाथ ने उन्हें प्रसाद-अन्न दिया। उस चौदह वर्ष बाद देव लक्ष्मण ने राम का प्रसादान्न पाकर खाया ॥ १३ ॥ 'जय जय प्रसाद' कहकर सभी बैठ गये। 'लाओ, लाओ, दो-दो' यह शब्द गूंज उठा। पहले साग से भोजन आरम्भ किया, इसके पश्चात् 'सूप' आदि दिये ॥१४॥ भाजी-तली चीजें रसदार वस्तुएँ आदि समेत पचासों व्यंजन क्रमशः सबको वितरित किया। अन्त में अम्ल (खट्टी सब्ज़ी) के बाद व्यंजन समाप्त हुए, इसके पश्चात् दही, पकवान, पायस, पीठे आदि जितने हैं सब परोसे ॥ १५ ॥ लक्ष्मी के हाथों का अन्न अमृत-सा था। ऐसा अमृत उन सबने कभी नहीं खाया था। सबने कहा— ऐसी अचरज की बात तो कभी नहीं देखी थी।

एत जने परषिते एका केबा पारे। कमला कृतार्थ कैला आमा-सबाकार
राम नारायण, सीता लक्ष्मी चन्द्रमुखी। मोरा अति भाग्यबान राम सीता देखि १७
शिव ब्रह्मा आपनाके मेनेछेन धन्य। पवित्र हइनु मोरा, वाञ्छा हैल पूर्ण
एरूपे भोजन येइ समाप्त हइल। हेन काले हनूमान तथाय आइल १८
हनूमाने कन राम, वैस मोर थाले। रेखेछि प्रसाद बापु, खाओ यथा काले
'ये आज्ञा' वलिया हनू पेते दिल हात। 'हाते केन' वलि जिज्ञासिला रघुनाथ १९
हनू कय, अन्न प्रसाद आछे प्रभु-पाते। हाते दाओ, खेये हात मुछिब माथाते
काज नाइ, सीतानाथ, काञ्चन थालाते। तोमार प्रसाद-सुधा देह मोर हाते १२०
हनूर कथाय राम कहिलेन हासि। यत खाबे, तत दिब, खाओ तुमि बसि
जानकी दिबेन अन्न, अभाव किसेर। वसिया प्रसाद खाओ, पाबे बापु, ढेर १२१
हनू कय, खानकत पत्र आनि तबे। सुवर्णे भोजन मोर कदापि ना हबे
एत वलि चले हनू हाते ल'ये छुरि। कदली-बागाने वीर गेल शीघ्र करि २२
भाल भाल पत्र लय दीघल-दीघल। श-दुइ आकुटेर बोझा बान्धे महाबल
पत्र-बोझा हाते करि हासि हासि एल। पाकशाला निकटे उठाने व'से गेल २३
सारि सारि सकल बिछाल आड़े-आड़े। एकेक आकुट मेले काठा युड़ि पड़े
एकुनेते बिघा-पांच युड़ि गेल पाते। बले, माता अन्न देह ढालिया इहाते २४

अकेले कौन परोस सकता है? लक्ष्मी ने हम सबको कृतार्थ कर दिया, राम नारायण हैं, सीता लक्ष्मी चन्द्रमुखी हैं। राम-सीता को देखकर हम सभी बड़े भाग्यवान बने ।। १७ ।। शिव-ब्रह्मा ने अपने को धन्य माना है। हम पवित्र हुए, हमारी कामना पूरी हुई। इस तरह से जब भोजन समाप्त हुआ तो उसी समय हनुमान वहाँ पहुँचे ।। १८ ।। राम हनुमान से कहा, तुम मेरी थाली में बैठ जाओ। वत्स, मैंने प्रसाद रख छोड़ा है, समयानुसार उसे खाओ। 'जो आज्ञा' कहकर हनुमान ने हाथ फैला दिया। 'हाथ में क्यों ?' रघुनाथ ने पूछा ।। १९ ।। हनुमान ने कहा— अन्नप्रसाद तो प्रभु की थाली में है। मुझे हाथ में दीजिए, खाकर मैं हाथ सिर पर पोछूँगा। सीतानाथ, मुझे सोने की थाली की आवश्यकता नहीं, अपने प्रसाद रूपी अमृत मेरे हाथ में दीजिए ।। १२० ।। हनुमान की बात पर रामचन्द्र ने हँसकर कहा— तुम जितना खाओगे उतना दूँगा। तुम बैठकर खाओ। जानकी अन्न देगी, अभाव क्या है? वत्स, बैठकर प्रसाद खाओ, ढेर मिलेगा ।। १२१ ।। हनुमान ने कहा— तब कुछ पत्ते ले आता हूँ। सोने में तो मेरा भोजन कभी नहीं हो पाएगा। इतना कहकर हनुमान हाथ में छूरी लेकर चले। वीर शीघ्रता से केले के बाग़ में गये ।। २२ ।। लम्बे-लम्बे अच्छे-अच्छे पत्ते लिये। लगभग दो सौ आकुट-पत्तों का बोझा महाबली ने बाँधा। पत्तों का बोझा हाथ में ले हँसते-हँसते आये और रसोईघर के समीप आँगन में बैठ गये ।। २३ ।। सभी पत्तों को क़तारों में सीधे-सीधे बिछाया। एक-एक आकुट-पत्ता बिछाने पर एक-एक कट्ठे में फैल जाता। एक ओर से उन पत्तों से पाँच बीघा ज़मीन ढँक गयी। हनुमान ने कहा— माता, अन्न इसी में ढाल

पूर्ण करे पत्र पूरे अन्न देह माता । शुनि अल्प अल्प हासि गा तुलिला सीता
थाले थाले अन्न सीता वहिला विस्तर । प्रफुल्ल हइया गेल हनूर अन्तर २५
दृष्टि मात्र पूरे पत्र, अन्न हैल राशि । ताहा देखि हनूमान मने बड़ खुसि
भाजा-झोल आदि यत व्यंजन आछिल । चौदिके वेष्टन करि सीता-माता दिल २६
श्रीरामे चाहिया तबे कहे हनूमान । आज्ञा पेले भोजने वसिव भगवान
'वस, वस' वलि राम दिलेन सम्मति । लक्ष्मण भरत ताहे दिला अनुमति २७
प्रसादेर थाला हनू माथे करि निल । अन्न राशि-उपरेते प्रसाद ढालिल
'जय जय प्रसाद' बलि तुलि निल हाते । ग्रास-दुइ खेये भात हात तुले माथे २८
ग्रास-कत खाइतेइ अन्न फुराइल । देखि एक दृष्टे सब चाहिया रहिल
एक राशि अन्न देख पर्व्वतेर प्राप । दण्डेकेर मध्ये हनू सारा कैल ताप २९
आनिया प्रचुर अन्न पुनः देन माता । खाओ बाछा हनूमान, कहिलेन सीता
डाकिया कहेन राम, हनूमाने चेये । लज्जा त्यजि खाओ बापु, उदर भरिये १३०
हनू कहे, हेन आज्ञा ना कर गोसाँइ । पूरिते उदर मोर बहु अन्त चाइ
हेंट माथा हैला सीता हेन वाक्य शुनि । आन तबे जननि गो, अन्न कत गुणि १३१
आल्हादिता ह'ये सीता अन्न देन आनि । हेंट माथे खाय हनू राम-वाक्य शुनि
पुनः पुनः देन सीता अन्न ओ व्यञ्जन । यत देन तत खाय पवन-नन्दन ३२

दीजिए ।। २४ ।। माता, समूची पत्तल को पूरा कर अन्न दीजिए। सुनकर सीता ज़रा-ज़रा हिलकर उठ खड़ी हुई। सीता थालियों में प्रचुर अन्न ढो-ढोकर ले आयीं। इससे हनुमान का अन्तर् प्रसन्न हो गया ।। २५ ।। उनकी दृष्टि पड़ते ही पत्तल भर जाती, अन्न की ढेरी लग गयी। वह देख हनुमान मन में बहुत खुश हुए। तली हुई, रसदार जितनी वस्तुएँ थीं, उन्हें सब ओर से घेरकर सीता माता ने दिया ।। २६ ।। तब श्रीराम को देखकर हनुमान ने कहा— भगवान, यदि आज्ञा हो तो भोजन में बैठूं। 'बैठो, बैठो' कहकर राम ने सम्मति दी। लक्ष्मण और भरत ने भी खाने की अनुमति दी ।। २७ ।। हनुमान ने प्रसाद की थाल अपने सिर पर उठा लिया और अन्न की ढेरी पर वह प्रसाद ढाल दिया। 'जय-जय प्रसाद' कहकर उसे हाथ में उठाया। दो ग्रास खाकर हाथ को माथे पर लगा लिया ।। २८ ।। कुछ ग्रास खाते ही अन्न समाप्त हो गया, देख सब एकटक देखते रह गये। देखो, पर्वत-जैसे ऊँचे अन्न की ढेरी को एक दंड में ही हनुमान ने समाप्त कर दिया ।। २९ ।। माता सीता ने प्रचुर अन्न लाकर पुनः दिया। सीता ने कहा— वत्स हनुमान, खाओ। राम ने हनुमान की ओर देख पुकारकर कहा— वत्स, लज्जा छोड़ पेट भरकर खाओ ।।१३०।। हनुमान ने कहा— प्रभु, ऐसी आज्ञा न करें। मेरा पेट भरने के लिए बहुत-सा अन्न चाहिए। ऐसा वचन सुनकर सीता ने सिर झुका लिया। हे जननी, तब कई गुना अन्न ले आओ ।। १३१ ।। सीता आह्लादित होकर अन्न ला देने लगी। राम के वचन सुनकर हनुमान सिर झुका खाने लगे। सीता बार-बार अन्न-व्यंजन ला देती। जितना देती, पवननन्दन उतना ही खा

पुनः परषेन सीता, कटि करे व्यथा। भोजन संवर हनू, सीतार मनःकथा
चिनि नबात दधि दुग्ध भुञ्जे सुधाखण्डे। छले भात दिला सीता हनूमान-मुण्डे ३३
सीता बले, दधि दुग्ध खाओ चिनि नबात। अन्न ना खाइओ, माथा फुटि एल भात
सीता बले, हनूमान-माथाय बुलाओ हात। लज्जित हइल हनू माथाय देखि भात ३४
देखिया माथाय भात पवन-नन्दन। भोजन-संबरि बीर कैल आचमन
आचमन करि सबे बसिया आसने। कर्पूर ताम्बुल निल मुखेर शोधने ३५
प्रसाद पाइया महानन्द हैला हर। प्रेम भरे सदाशिव हैला दिगम्बर
प्रसाद पाइया ब्रह्मा मने आनन्दित। शिवेर डम्बुरे गाय राम-नाम गीत ३६
सम्मुखे देखेन राम ब्रह्मा-त्रिलोचन। दुइ हाते आलिङ्गिला कमल-लोचन
ब्रह्मा बले, विष्णु प्रसाद परम पवित्र। दर्शन करिया रामे पूत हैल नेत्र ३७
प्रेम भरे तिन भाइ कैला आलिङ्गन। बिदाय हैया गेला ब्रह्मा-त्रिलोचन
बानर-राक्षस बासे गेल सर्व्वजन। पात्र-मित्र-प्रजागण आपन-भवन ३८
लक्ष्मण भोजने चौद्द भुवने उल्लास। लक्ष्मण-भोजन बिरचिल कृत्तिबास

शिव बिबाहेर सम्बन्ध ओ लङ्कार उत्पत्ति

अगस्त्ये जिज्ञासे राम कमललोचन। कार तरे कैल ब्रह्मा लङ्कार सृजन ३९

जाते ॥ ३२ ॥ सीता पुनः परोसती, उनकी कमर दुखने लगी। सीता के मन में यह बात आने लगी, हनुमान खाना समाप्त करो। चीनी, खीर, दही, दूध, मिसरी खा रहे थे, छल से सीता ने हनुमान के सिर पर भात डाल दिया ॥ ३३ ॥ सीता ने कहा— दही, दूध, चीनी, खीर, खाओ पर अन्न मत खाना, सिर फोड़कर भात निकल आया है ॥ ३४ ॥ पवननन्दन ने अपने सिर पर भात देखकर, भोजन समाप्त कर आचमन किया। सब आचमन कर आसनों पर बैठ, मुख-शुद्धि हेतु कर्पूर, ताम्बूल लिये ॥ ३५ ॥ शिव प्रसाद पाकर बड़े आनन्दित हुए। प्रेम से भर उठने के कारण सदाशिव दिगम्बर हो गये। प्रसाद पाकर ब्रह्मा मन में आनन्दित हुए। शिव का डमरू राम-नाम गीत गाने लगा ॥ ३६ ॥ रामचन्द्र ने अपने सामने त्रिलोचन शिव और ब्रह्मा को देखा। कमल-लोचन राम को दोनों हाथों से आलिंगन कर ब्रह्मा ने कहा, विष्णु का प्रसाद परम पवित्र है। राम के दर्शन से नेत्र पवित्र हो गये ॥ ३७ ॥ प्रेम से भरकर तीन भाइयों ने आलिंगन किया। ब्रह्मा और शिव विदा ले चले गये। वानर-राक्षस सभी अपने-अपने निवास को गये। सामन्त, मित्र, प्रजा अपने-अपने भवनों को चले गये ॥ १३८ ॥ लक्ष्मण के भोजन से चौदह भुवनों में उल्लास हुआ। कृत्तिवास ने इस लक्ष्मण-भोजन की रचना की है।

शिव-विवाह का सम्बन्ध और लंका की उत्पत्ति

अगस्त्य से कमल-लोचन राम ने पूछा— ब्रह्मा ने किसके लिए लंका का सृजन किया था? ॥ १३९ ॥ मुनि ने कहा— पुराणों में उल्लिखित

मुनि बलिलेन शुन पुराण-उत्तर । लङ्कार सृजन हेतु शुन रघुबर
सुमेरु पबने वाद अयुत बत्सर । पबन लङ्घिते नारे सुमेरु शिखर १४०
तिन श‍ृङ्गे पर्व्वत से जुड़िल गगन । सुमेरुते चन्द्र सूर्य्येर नाहिक गमन
सकल पर्व्वत जिनि उभेते प्रवीण । नित्य नित्य सूर्य्य यान करि प्रदक्षिण १४१
हिमालय नन्दिनी से जन्मिला पार्व्वती । ताहाँ के करिते विभा गेला पशुपति
शिब आराधिया तप कैला तपोबने । शिब पार्व्वतीर हैल शुभ दरशने ४२
काहार दुहिता तुमि काहार बा नारी । ए बिषम स्थाने तुमि केन एकेश्वरी
हस्ती सिंह व्याघ्र आर महिष शूकर । हेन स्थाने केन तुमि एले एकेश्वर ४३
शङ्करेर कथा शुनि कन ततक्षण । निवेदन करि कथा, शुनि दिया मन
हिमालय-कन्या आमि, शुनि महाशय । हर लागि तप करि कारे मोर भय ४४
हासेन वचन शुनि देव शूल पाणि । मिलिल शङ्कर-वर, शुनह भामिन
अधिष्ठित ह'ये बर निजे दिला वर । शिव गेला निज पुरे, देवी एल घर ४५
ब्रह्मारे कहिला शिव एसब उत्तर । मोर काजे याह तुमि हिमालय घर
ब्रह्मा बिष्ण कुबेर ओ बरुण पवन । अष्ट ऋषि चले आर यत देबगण ४६
एकत्र हइया गेला हिमालय-घर । बाहिरिला हिमालय हरिष-अन्तर
बसिते आसन दिल पाद्य-अर्घ्य जल । जोड़ हाते देबगणे पुछेन कुशल ४७

उत्तर सुनो, हे रघुवर, लंका के सृजन का कारण सुनो। सुमेरु और पवन में दस हज़ार वर्ष तक विवाद चला। पवन सुमेरु शिखर को पार नहीं कर पाता था ॥ १४० ॥ उस पर्वत ने तीन शिखरों से समूचे आकाश को घेर लिया। सुमेरु में सूर्य-चन्द्र का जाना बन्द हो गया। सभी पर्वतों को जीतकर उदय में प्रवीण सूर्य नित्य उसकी प्रदक्षिणा कर जाते थे ॥ १४१ ॥ हिमालयनन्दिनी पार्वती के जन्म लेने के पश्चात् उनसे विवाह करने हेतु पशुपति शिव गये। पार्वती ने शिवजी की आराधना कर तपोवन में तपस्या की। वहीं शिव ने पार्वती को शुभ दर्शन दिया ॥ ४२ ॥ पूछा, तुम किसकी दुहिता हो ? किसकी नारी हो ? ऐसे बिषम स्थान में तुम अकेली क्यों हो ? हाथी, सिंह, बाघ और भैंसे-सूअर आदि जहाँ रहते हैं —ऐसे स्थान में तुम अकेली क्यों आयी ? ॥४३॥ शंकर की बात सुनकर पार्वती ने उसी क्षण कहा— मैं कथा निवेदन करती हूँ, मन देकर सुनें। सुनिए महाशय, मैं हिमालय की कन्या हूँ। जबकि शंकर के लिए तपस्या कर रही हूँ तो मुझे किसका भय है ? ॥४४॥ देव शूलपाणि शंकर सुनकर हँसे— भामिनी, सुनो, शंकर तो वर के रूप में तुम्हें मिल चुके हैं। वर के रूप में अधिष्ठित होकर शिव ने स्वयं वरदान दिया। शिव अपने पुर को गये, देवी अपने भवन लौट आयीं ॥ ४५ ॥ आगे चलकर शिव ने ब्रह्मा से यह सब बताकर कहा कि मेरे कार्य हेतु आप हिमालय के यहाँ जाइए। ब्रह्मा, विष्णु, कुबेर और वरुण, पवन समेत आठ ऋषि और सभी देवता मिलकर, ॥ ४६ ॥ हिमालय के यहाँ गये। हिमालय अन्तर में हर्षित हो (स्वागत हेतु) निकले। उन्होंने सबको बैठने को आसन दिये, पाद्य-अर्घ्य-जल दे हाथ जोड़ देवगण से कुशल

बलेन, कि हेतु तोमा-सबा आगमन। बड़ भाग्य मानि आजि सफल जीबन
ब्रह्माये बलेन गिरि एतेक उत्तर। शुनिया हइला ब्रह्मा सानन्द-अन्तर ४८

ब्रह्मा बले, शुन मोर कथार प्रबन्ध। मोर भाइ शिबे कर कन्यार सम्बन्ध
बिलम्ब ना कर देख बेला शुभक्षण। अङ्गीकारे तुष्ट होक यत देवगण ४९

हिमालय बले, मोर जीवन सफल। महादेवे कन्या दिब बड़इ मङ्गल
बिनय बचने गिरि करे परिहार। शिबे कन्या दिब आमि, कैनु अङ्गीकार १५०

रबि सोम भौम आर बुध बृहस्पति। शुक्र शनि राहु केतु नवग्रह-पति
यबे गौरी तपस्या करिल तपोबने। भवानी शङ्कर बिभा जाने ग्रहगणे १५१

शुभक्षणे ग्रहगण हैया समबाय। केह विघ्न ना करिब गौरीर बिभाय
एत वाक्य हिमालय कैला देवपाशे। वर एले बिभा दिब लग्न तार किसे ५२

अङ्गीकार कैला गिरि आपनार मुखे। देवगण गेला घर निज मनः सुखे
कन्या देखि देवगण कैला आगुसार। त्रिभुवने हरि ध्वनि जय जय कार ५३

सब कथा कहे गिया शङ्करेर ठांइ। बिबाहेर आयोजन करह शिबाइ
कालि बिभा हबे तब, आजि अधिवास। शङ्करेर सम्बन्ध ये गाइल कृत्तिबास ५४

पूछा ।। ४७ ।। कहा— आप सबका आगमन किस हेतु हुआ है ? मैं अपना बड़ा भाग्य मानता हूँ, आज मेरा जीवन सफल हो गया । जब पर्वतराज हिमालय ने ब्रह्मा से ऐसा कहा तो सुनकर ब्रह्मा का अन्तर् आनन्दित हो उठा ।।४८।। ब्रह्मा ने कहा— मेरे कथन का तात्पर्य सुनो, मेरे भाई शिव के साथ अपनी कन्या का सम्पर्क कर दो । विलम्ब न करो, समय की शुभ घड़ी, लग्न आदि देखो । तुम्हारी स्वीकृति से देवगण तुष्ट हों ।। ४९ ।। हिमालय ने कहा— मेरा जीवन सफल है । महादेव को कन्या दूँ, यह तो बड़ा ही मंगल है । विनय-वचन से गिरि हिमालय ने उनके संशय का निवारण करते हुए कहा— मैं अंगीकार करता हूँ कि शिव को कन्या प्रदान करूँगा ।। १५० ।। जब गौरी ने तपोवन में तपस्या की थी तो रवि, सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु तथा नवग्रहों के स्वामी ने यह जान लिया था कि भवानी और शंकर का विवाह होगा ।।१५१।। शुभ लग्न में ग्रहगणों ने मिलकर विचार किया कि गौरी के विवाह में कोई विघ्न नहीं डालेंगे । यह बात देवगणों से कहकर हिमालय ने कहा— वर के आने पर विवाह कर दूँगा, अब इसमें लग्न की क्या बात है ? ।।५२।। जब गिरिराज ने अपने मुख से अंगीकार किया तो देवगण मन में संतुष्ट हो अपने-अपने निवास को चले गये । कन्या देखकर देवगण आगे बढ़ आये और त्रिभुवन में उनकी हरि-ध्वनि और जय-जयकार छा गया ।। ५३ ।। उन्होंने सारी बात जाकर शंकर से कही— शिवजी, विवाह का आयोजन कीजिए । आज अधिवास (विवाह का पहला दिन) है । कल विवाह अवश्य होगा । कृत्तिवास शंकर के विवाह-संबंध की यह कथा गाते हैं ।। १५४ ।।

शिबेर अधिबास-द्रव्य प्रेरण

अधिबास द्रव्य सब पाठान शङ्कर। नारदेर सङ्गे दिला भीमा ये नफर
अधिबास द्रव्य दिला कत शत भार। रसाल कांठाल गुड़ नारिकेल आर ५५
खदि दधि कला दिला पाट-पाटाम्बर। लेखा जोखा नाइ द्रव्य चलिल विस्तर
अधिबास द्रव्य पाठाव नारवेरे दिया। सब द्रव्य नियोजे भीमारे आज्ञा दिया ५६
हिमालय घरे नारव याय आगु हये। पाछे पाछे याय भीमा सब द्रव्य लये
आगु हये गेला नारद हिमालय घर। बाहिरिला हिमालय सानन्द अन्तर ५७
भारीर सङ्गेते याय शिवेर नफर। भीमार पाछु पाछु याय यत अनुचर
सन्देश कदली देखि आनन्दित मन। मुद्रा भाङ्गि भाल द्रव्य करिल भक्षण ५८
अनेक सन्देश कला करिल आहार। खाइल कांठाल आम्र सहस्रेक भार
खाइते खाइते पथे याय हर्ष हैया। अर्द्धा-अर्द्धि खेये हाम्भि पूरे बालि दिया ५९
नदी वक्षे देखे यत निरमल बालि। शुखना बालिते सब पूरिल पातिली
शुखना बालिते सब पातिल पूरिया। भार पाछु पाछु भीमा आइला धाइया १६०
नारद बलेन, केन देरी एत क्षण। भीमा बले, माठे पाइ झड़-बरिषण
बड़ दुःख पेनु आमि झड़-बरिषणे। पलाल आमारे एड़ि यत भारीगणे १६१

शिव का चढ़ावे की सामग्री भेजना

शिव ने विवाह के अगले दिन चढ़ावे की सारी वस्तुएँ भेजीं। नारद के साथ भीमादास को भी भेज दिया। चढ़ावे की सामग्रियाँ कई सौ भार थीं। उनमें आम, कटहल, गुड़, नारियल, ॥१५५॥ खैर, दही, केले, पाट और पाटम्बर (रेशमी कपड़े) दिये। इतनी प्रचुर वस्तुएँ भेजी जिनका लेखा-जोखा नहीं। नारद द्वारा सारी वस्तुएँ भेजीं, भीमा को आदेश दे सारी वस्तुएँ सहेजीं ॥ ५६ ॥ नारद आगे-आगे हिमालय के घर चले। पीछे-पीछे सारी सामग्रियाँ लिये भीमा चला। नारद आगे-आगे चलकर हिमालय के यहाँ पहुँचे। हिमालय अन्त में आनन्दित होकर बाहर आये ॥५७॥ भारवाहकों के साथ शिव का दास भीमा आया, उसके पीछे-पीछे सारे अनुचर आये। संदेश और केले देख उनके मन में बड़ा आनन्द हुआ। संकोच छोड़कर उन सबने अच्छे द्रव्य खाये ॥ ५८ ॥ उन सबने प्रचुर संदेश और केले का आहार किया। आम-कटहल हज़ारों भार खाये। खाते-खाते वे हर्षित हो मार्ग में निकल आये। आधा-आधा खाकर रेत से खाली हाँड़ियों को भर दिया ॥ ५९ ॥ नदी के वक्ष पर जितनी निर्मल रेत देखी, उस सूखी रेत से सभी पतीलियों को भर लिया, सूखी रेत से सारी पतीलियाँ भरकर, भारवाहकों के पीछे-पीछे भीमा दौड़ा आया ॥ १६० ॥ नारद ने कहा— इतनी देर क्यों किया ? भीमा ने कहा— मैदान में तूफ़ान-वर्षा में पड़ गये। बस तूफ़ान-वर्षा में हमें बड़ा ही कष्ट हुआ। हमें छोड़कर सभी भारवाहक भाग गये ॥ १६१ ॥ हम

तपोबन मध्ये आसि प्रबेसि धाइया। सब भारी पलाइल भार फलाइया
नारद बलेन, कार्य्ये मार उपेक्षण। याहाते शिवेर कार्य्य हय सुशोभन ६२
नारद-बचने गिरिराजे नाहि हेला। आङ्गि नाते टानाइल पाटेर छाइला
चांदोया टाङ्गाल ताहे मुकुता झालर। आङ्गिनार थामे बान्धा सोनार चादर ६३
मध्य खाने घट तार करिल स्थापन। अधिबास-द्रव्य सब आनाल तखन
शुक्ल धुति, शुक्ल पाटा अति परिपाटि। हाते कुश बसे गिरि लये ताम्र बाटि ६४
हेमन्त सङ्कल्प करे बेला शुभक्षण। वेदध्वनि करे तबे यत मुनिगण
ततक्षणे बाहिरिल गौरी चन्द्रमुखी। देबी के देखिया सब देब हैल सुखी ६५
हाते पुष्प कैला देवी पूजा देवतार। गन्ध दिया कैला मुनि जय जयकार
मङ्गल उच्चारि गन्ध दिला कन्या माथे। मङ्गल-बिहित कर्म्म-सूत्र बान्धे हाते ६६
तबे शङ्ख पराइला चारु रूप देखि। कन्या के उठाते तबे एल सब सखी
मङ्गल द्रव्य लइया आसे सखिगण मिलि। कन्या-अधिबास करे दिया हुलाहुलि ६७
अधिबास साङ्ग हैल, सिद्ध सब काज। हेमन्ते मेलानि मागि चले मुनिराज
एयोगणे मिष्टि दिते माङ्गिल पातिली। पातिल-भितरे तबे देखे सब बालि ६८
हाँड़ीर भितरे बालि सर्व्वलोक हासे। पार्व्वतीर अधिबास गाय कृत्तिबासे

दौड़कर तपोवन में घुस गये। सभी भारवाहक भार फेंककर भाग गये। नारद ने कहा— अपने कार्य में उपेक्षा करनी नहीं चाहिए। ऐसा करो जिससे शिव का कार्य सुन्दर रूप से सम्पन्न हो ॥ ६२ ॥ नारद के वचनों की अवहेलना गिरिराज ने नहीं की। उन्होंने आँगन में पाट का मण्डप बनवाया। उसमें चँदोवा लगाया, जिसमें मोतियों की झालर लगी थी। आँगन के खम्भों में सोने के चद्दर मढ़े थे ॥ ६३ ॥ उसके बीच में घट-स्थापना की। और तब वहाँ चढ़ावे की चीजें मँगवायी। श्वेत धोती, श्वेत पाटम्बर बड़े ही सुन्दर ढंग से पहनकर हाथ में कुश और ताँबे की कटोरी लिये गिरि हिमालय बैठे ॥ ६४ ॥ शुभ क्षण में हेमन्त ने संकल्प किया, सारे मुनियों ने वेदमंत्रों की ध्वनि की। उसी क्षण चन्द्रमुखी गौरी बाहर आयी। देवी को देख सभी देवता सुखी हुए ॥६५॥ हाथों में फूल ले देवी ने देवताओं की पूजा की। गंध-धूप लगाकर मुनियों ने जय-जयकार किया। मंगल-उच्चारण के साथ कन्या के सिर पर सुगन्धित द्रव्य दिया तथा हाथ में मंगल विहित कर्म-सूत्र बाँध दिया ॥ ६६ ॥ इसके पश्चात् सुन्दर रूप देख शंख की चूड़ियाँ पहनायीं। तब कन्या को उठा ले जाने के लिए सारी सखियाँ आयीं! सखियाँ मिलकर मंगल-द्रव्य ले आयीं, उलुध्वनि (मुँह से आवाज़) कर कन्या का चढ़ावा दिया ॥ ६७ ॥ चढ़ावा समाप्त हुआ, सारे कार्य सिद्ध हो गये। हेमन्त से विदा माँग मुनिराज नारद चल पड़े। वहाँ आयी हुई महिलाओं को मिठाइयाँ देने के लिए जैसे ही पतीलियाँ तोड़ी तो पतीलियों के अन्दर सारी-की-सारी रेत ही देखी ॥ १६८ ॥ पतीलियों के अंदर रेत ही देखकर सब लोग हँसने लगे। पार्वती के विवाह के चढ़ावे की कथा कृत्तिवास गा रहे हैं।

कुटुम्ब समागम ओ बरानुगमन

प्रभात हइल रात्रि प्रत्यूष बिहाने। देशे देशे पाठाइल कुटुम्ब जानाने ६९
चारिदिके गिरिगणे दिला आमन्त्रण। आनन्दित देवगण ए तिन भुवन
आजि यावे कालि एस, ना कर बिलम्ब। चारि दिके धेये आन सकल कुटुम्ब १७०
सबाके जानान देह गृह-व्यवहार। आमन्त्रण पेले सबे हवे आगुसार
उदय ओ अस्तगिरि एल दुइजन। नीलगिरि मयभङ्ग एल नारायण १७१
आसिल अजय-मुख कलिङ्ग केशरी। रुद्रदास धर्म्मदास महीदास गिरि
बिन्दु मेघ एल आर कैलाश शिखर। शरासन ओ अञ्जन पर्व्वत श्रीधर ७२
बर्द्धमान कुमुद्वान से गन्धमादन। ऋष्यमूक-गिरि आर मलय चन्दन
त्रिकूट पर्व्वत एल आर हेमकूट। चन्द्रकूट बज्रकूट एल सूर्य्यकूट ७३
धवल ओ गोवर्द्धन बराह बासंत। बसन्त श्रीमन्त एल मैनाक-पर्व्वत
त्रिभुबनेर गिरिगण हैल आगुसार। पर्व्वत चलिते हैल संसार आँधार ७४
आइल पर्व्वत सब परम हरिषे। बुझिया आपन कार्य्य सुमेरु ना आसे
लड़िला मेनका आर हेमन्त नन्दन। सुमेरु के आने गिया करिया यतन ७५
सुमेरु हेमन्त पदे कैल नमस्कार। बसिते आसन दिल, कैल पुरस्कार
मनोगामी गिरिगण धरि मुनिवेश। बिचित्र नगरे घरे करिल प्रबेश ७६

कुटुम्बी जनों का समागम और बारात की यात्रा

रात बीती, प्रत्यूष होते ही हिमालय ने कुटुम्बी जनों को सूचना देने हेतु देश-देश में दूत भेजे ॥ १६९ ॥ चारों ओर के पर्वतों को आमंत्रण भेजा। देवगण तीनों भुवनों में आनन्दित हो उठे। हिमालय ने कहा—आज जाकर कल ही लौट आना, विलम्ब न करो, वेग से जाकर सभी कुटुम्बी जनों को ले आओ ॥ १७० ॥ सबको घर-परिवार का व्यवहार सूचित करना, आमंत्रण पाने पर सभी आगे आयेंगे। उदय और अस्तगिरि दोनों आये। नीलगिरि, मयभंग, नारायण भी आये ॥१७१ ॥ अजय-मुख, कलिग-केसरी आये! रुद्रदास, धर्मदास, महीदास गिरि आये। बिन्दुमेघ और कैलास शिखर, शरासन, अंजन पर्वत, श्रीधर आये ॥ ७२ ॥ वर्धमान, कुमुद्वान, गन्धमादन, ऋष्यमूक पर्वत और मलयचन्दन, त्रिकूट पर्वत और हेमकूट पर्वत आये। चन्द्रकूट, वज्रकूट, सूर्यकूट भी आये ॥७३॥ धवल, गोवर्धन, वराह, वसन्त श्रीमन्त, मैनाक पर्वत भी आये। त्रिभुवन पर्वत आगे बढ़े, पर्वतों के चलते संसार अँधेरा हो गया ॥ ७४ ॥ परम हर्ष से पर्वतगण आये। अपना कर्तव्य स्मरण कर केवल सुमेरु नहीं आया। मेनका और हेमन्तनन्दन आगे बढ़े और सुमेरु को बड़े यत्न से ले आये ॥ ७५ ॥ सुमेरु ने हिमवन्त के चरणों में प्रणाम किया, हिमालय ने उसे बैठने का आसन दे सम्मानित किया। मनोगामी पर्वत-गण मुनि-वेश धारण कर विचित्र नगरों और घरों में प्रवेश किया ॥ ७६ ॥ बैठने को

बसिते आसन दिल पाद्य अर्घ्य जल। स्नान पान करि सबे हइल शीतल
नाट्य गीत देखि शुनि अति कुतूहल। केह बेद पड़े, केह पड़ये मङ्गल ७७
नाना शुभ नाट्य गीत हिमालय घरे। परम आनन्दे लोक आपना पासरे
गिरिराज-घरे बाजे यतेक बाजन। होथा महारङ्गे आछे यत देबगण ७८
गङ्गारे आनिते गेला सुमन्तेर घरे। रन्धन करिले गङ्गा देबे भोजन करे
गङ्गारे लइया याबे यतन करिया। रन्धन करिले गङ्गा राखिह आनिया ७९
देबेर बचन आमि नाहि करि आन। गङ्गाके थाकिते बेला आन मोर स्थान
एतेक शुनिया हर बलेन वचन। रन्धन करिले गङ्गा देबेर भोजन १८०
रन्धन भोजने बेला हैल अबसान। करुणा-आधार हर गङ्गा लये यान
सुमन्त क्रोधित देखि बेला अबसान। गङ्गा लये गेला हर सुमन्तेर स्थान १८१
गङ्गा देखि सुमन्त रहेन कोप मने। एतेक बिलम्ब तोर हैल कि कारणे
तोर रूप देखे यत देबेर समाज। देबेर रान्धुनी हैते ना बासिलि लाज ८२
किमते देवता वेर करिलि रन्धन। तोर रूप यौवन देखिल देबिगण
केह बा देखिल तोर सुन्दर बदन। केह वा देखिल तोर युगल नयन ८३
अन्न दिते गेलि तुइ यार यार पाश। सेइ सर्ब देबे करे तोरे अभिलाष
अपबित्रा तुइ केन एलि मोर स्थान। स्वगौरबे याह, नहे पाबि अपमान ८४

आसन दिया, पाद्य-अर्घ्य-जल दिया, स्नान-पान कर सभी शीतल हुए। नाट्य-गीत देख-सुनकर सबको बड़ा कुतूहल हुआ। कोई वेद पढ़ता था, कोई मंगलाचार करता था ॥ ७७ ॥ हिमालय के यहाँ नाना प्रकार के गीत-मंगल-नाट्य आदि हो रहे थे। परम आनन्द से लोग आत्म-विस्मृत हो गये थे। गिरिराज के यहाँ सभी प्रकार के बाजे बज रहे थे, वहाँ सभी देवगण बड़े आनन्द में थे ॥ ७८ ॥ शिव सुमन्त के यहाँ से गंगा को लाने गये, क्योंकि गंगा के रसोई बनाने पर ही देवगण भोजन करेंगे। "गंगा को यत्न से ले जाओ, रसोई बनाने के बाद गंगा को यहाँ रख जाना ॥ ७९ ॥ देवता के वचन मैं अमान्य नहीं करता, पर सूरज डूबने के पहले ही गंगा को यहाँ पहुँचा जाना।" यह सुनकर शिव ने कहा— गंगा के रसोई बनाने पर ही देवगण भोजन करेंगे ॥ १८० ॥ रसोई बनाते, भोजन करते सूरज डूब गया। करुणाधार शिव गंगा को पहुँचाने गये। सूरज डूब गया देख सुमन्त क्रोधित हो गया। तभी गंगा को ले शिव सुमन्त के यहाँ पहुँचे ॥ १८१ ॥ गंगा को देख सुमन्त मन में क्रोधित हो रहा। तुझे इतना विलम्ब किसलिए हुआ? समूचे देव-समाज ने तेरा रूप देखा। देवों की रसोई बनानेवाली बनते तुझे लज्जा नहीं आयी? ॥ ८२ ॥ किस तरह से तूने देवताओं की रसोई बनाई, तेरा रूप-यौवन देवों ने देखा। किसी ने तेरा सुन्दर बदन देखा, किसी ने तेरे युगल-नयन देखे ॥ ८३ ॥ तू अन्न देने जिसके पास गयी है, उसी ने तुझे पाने की कामना कर ली है। री अपवित्रा, तू मेरे यहाँ क्यों आयी? अपने गौरव को बचाकर चली जा, नहीं तो अपमान होगा ॥ ८४ ॥

क्रोधे मुनि करिल से गङ्गारे वर्ज्जन। हासिया गङ्गारे सिरे धरे त्रिलोचन
महादेव-शिरे रहे गङ्गा गोसाँइनी। गङ्गारे धरिया शिरे हासे शूलपाणि ८५
सर्व्वाङ्गे विभूति शोभे गङ्गा शोभे शिरे। गलाते बासुकी नाग, भाले शशधरे
कखनो थाकेन गङ्गा महादेव-शिरे। कखनो वा ब्रह्मा-कमण्डलुर भितरे ८६
स्वर्ग हैते गङ्गा से आसिला मर्त्यलोके। गङ्गार महिमा लोक जाने दुःख शोके
यत किछु पाप लोक करे महीतले। सर्व्व पाप हरे स्नान कैले गङ्गा जले ८७
महादेव अधिबास कराय देवगण। ब्रह्मार बचने बैसे देव नारायण
प्रातःकाले देवलोके आमन्त्रण करि। स्नान-सन्ध्या-नान्दीमुख कैला त्रिपुरारि ८८
स्नान करि प्रवेशिला रन्धन-शालाते। देवगण एक ठांइ बैसे भोजनेते
मधुर अमृत तुल्य गङ्गार रन्धन। महासुखे देवलोक करिला भोजन ८९
नानाछन्दे वाजे सेथा विविध बाजन। नाना बेशे नाचे तथा यत देवगण
करेन शिवेर वेश निजे नारायण। सुबर्ण किरीट शिरे बाहुते कङ्कण १९०
ललाटे शोभित चन्द्र शिरे सुरेश्वरी। वृषपृष्ठे चापि तवे चले त्रिपुरारि
राजहंस रथे चापि चले प्रजापति। ऐरावते चापिया चलिला सुरपति १९१
मकरे वरुण चड़े, महिषे शमन। छागले चड़ेन अग्नि हिरणे पवन
गरुड़े चड़िया चले निजे नारायण। ये यार बाहने चड़ि चले देवगण ९२

मुनि ने क्रोधित हो गंगा का परित्याग कर दिया। तब शिव ने हँसकर गंगा को सिर पर धारण कर लिया। गगादेवी महादेव के सिर पर रहीं। गंगा को मस्तक पर धारण कर शिव हँसने लगे ॥ ८५ ॥ उनके सर्वांग में विभूति, सिर पर गंगा, गले में वासुकी नाग, कपाल पर चन्द्रमा सुशोभित थे। गंगा कभी शिव के मस्तक पर रहती, कभी ब्रह्मा के कमण्डल में रहतीं ॥ ८६ ॥ स्वर्ग से गंगा मर्त्यलोक में आयी, गंगा की महिमा सारा लोक दुःख-शोक में जानता है। संसार में लोग जितना पाप करते हैं, गंगाजल में स्नान करने पर गंगा सभी पाप हरण कर लेती है ॥ ८७ ॥ महादेव को देवताओं ने विवाह की पहली रात का कार्यक्रम कराया। ब्रह्मा के कहने पर देव-नारायण बैठे। प्रातःकाल में देवताओं को आमंत्रित कर त्रिपुरारि ने स्नान-संध्या नांदीमुख श्राद्ध किया ॥ ८८ ॥ स्नान कर वे रसोईघर में गये। देवगण एक स्थान में भोजन करने बैठे। गंगा की रसोई मधुर अमृत-तुल्य थी। महा-सुख से देवों ने भोजन किया ॥ ८९ ॥ वहाँ नाना छंदों से विविध वाद्य बजने लगे। सभी देवगण वहाँ अनेक वेश धारण कर नाचने लगे। स्वयं नारायण शिव को सजाने लगे। उनके सिर पर स्वर्णकिरीट, बाहु में कंकण, ललाट पर चन्द्र, सिर पर गंगा शोभित हुए। बृषभ पर आरूढ़ हो त्रिपुरारि चले। प्रजापति ब्रह्मा राजहंसों के रथ पर चढ़ चले, ऐरावत पर चढ़कर सुरपति इन्द्र चले ॥ १९०-१९१ ॥ वरुण मकर पर, यमराज भैंसे पर, अग्नि बकरे पर, पवन हिरन पर चढ़कर चले। स्वयं नारायण गरुड़ पर चढ़कर चले। इस प्रकार अपने-अपने वाहनों पर चढ़ देवगण चले ॥ ९२ ॥ संन्यासी, योगबल से सिद्ध तपस्वी, ब्रह्मचारी, निराहारी

सन्न्यासी तपस्वी तारा सिद्ध योगबले। ब्रह्मचारी निराहारी चलिला सकले
सर्व्वाग्रे नारद यान कलह लइया। कन्दलि धोकड़ि सात कांखेते करिया ९३
नारदे देखिया हरषित हिमाचल। हरिष बदने पुछे ताँहार कुशल
आगुभासे नारदेर कन्दलि धोकड़ि। यथा आछे शङ्करेर श्वशुर शाशुड़ी ९४
देखिया तोमार कन्या लागे बड़ व्यथा। सावधान हये शुन जामातार कथा
घरे भात नाहि तार, चाले नाहि खड़। शुइते नाहिक शय्या परिते कापड़ ९५
अमङ्गल चिता भस्म लेपे सर्व्व गाय। गलेते हाड़ेर माला सापिनी फोंपाय
त्रिनयने अग्नि ज्वले शिरे शोभेगाङ्ग। उलङ्ग उन्मत्त, खाय धुतुरा ओ भाङ्ग ९६
घरेर नफर नन्दी, काल भीमा भाया। घरे घरे घूरे तारा भातेर लागिया
घरे घरे मति केवा आनये तण्डुल। रन्धनेर काले सब हयत आकुल ९७
बलदे सखिया घरे यदे भीमा आसे। अर्द्धेक तण्डुल सेइ निजेखेये वसे
एत शुनि मेनका स्वामीके पाड़े गालि। कोपे गिरिराज धरे मेनका चुलि ९८
सात पाँच दश बिश करे मारामारि। केवा कारे मारे, नारद देय टिट्कारी
नारद बलेन केन कर मारामारि। ए तिन भुवने राजा देव त्रिपुरारि ९९
कोन्‌-जना बुझे बल महादेव-काज। महाधनी महादेव देवेर समाज
कन्दलि घुचाये नारद गेला देव-पाश। रचिला उत्तरकाण्ड कवि कृत्तिवास २००

सभी चले। सबसे आगे कलस ले, कन्दलि धोकड़ी के संग नारद चले ।। ९३ ।। नारद को देख हिमालय हर्षित हुआ। हर्षित बदन से उनका कुशल पूछा। नारद की कन्दलि धोकड़ी आगे आये, जैसे शिव के वे ससुर-सास हों ।। ९४ ।। कहा, तुम्हारी कन्या को देख हमें बड़ी वेदना हो रही है, तुम अपने जमाई की कथा सावधान हो सुनो। उसके घर में न भात है, न उसके छत पर फूस है, न सोने का बिस्तर है, न पहनने को कपड़ा ।। ९५ ।। वह अमंगल चिता-भस्म सारे शरीर में लगाता है। गले में हड्डियों की माला और फुफकारती साँपिनें हैं। उसके त्रिनयन में अग्नि जलती है, सिर पर नदी शोभित है, वह नंगा, उन्मत्त है, धतूरा और भाँग खाता है ।। ९६ ।। उसके घर के सेवक नन्दी और काल भीमा भाई भात के लिए घर-घर घूमा करते हैं। घर-घर से कहकर कोई चावल ले आते हैं। रसोई बनाते समय सब व्याकुल हो जाते हैं ।। ९७ ।। जब बैल को चराकर भीमा घर आता है तो आधा चावल वह स्वयं खा जाता है। यह सुनकर मेनका पति को गालियाँ देने लगीं। क्रोध से गिरिराज ने मेनका के बाल पकड़ लिये ।। ९८ ।। सात-पाँच, दस-बीस झगड़ा करते हुए मार-पीट करने लगे। एक-दूसरे को मारने लगे। नारद ठठोली करने लगे। नारद ने कहा— क्यों मार-पीट कर रहे हो ? देव त्रिपुरारी इन तीनों भुवनों के राजा हैं ।। ९९ ।। महादेव का कार्य भला कौन समझ सकता है ? देवों के समाज में महादेव महाधनी हैं। उनका झगड़ा छुड़ाकर नारद देवों के पास गये। कवि कृत्तिवास ने इस उत्तरकाण्ड की रचना की है ।। २०० ।।

हर-गौरीर बिबाह

समस्त देबता गेला हिमालय-घर । बहिरिला गिरिराज देखिया अमर
बर बेड़ि रहिला यतेक देबगण । बसिते आसन दिल करिया बरण २०१
दधि दुग्ध गङ्गाजल अगुरु चन्दन । गुया नारिकेल दिल उत्तम बसन
बरेर बरण कैल बेला शुभक्षणे । चारि दिके बेदध्वनि शुनि घने-घने २
बरेरे बरिया हिमालय गेला घर । आइला कन्यार माता देखिबारे बर
बरपाशे गेला से मङ्गल सज्जा लैया । मोहित हइला राणी बरेरे देखिया ३
पाये दधि दिल आर शिरे दूर्व्वा-धान । माथाय निछिया फेले शत शत पान
दुइ चक्षु ढाके राणी हेंट माथा करि । तखन नारद मुनि दिला टिटकारी ४
लाजे पलाय गिरिर झियारि बौयारि । हुड़ाहुड़ि करि याय हाते करि झारि
एतेक देखिया तबे कोपे नारायण । झाट कन्या आन बहि याय शुभक्षण ५
करेन बरेर बेश यत देबगण । आपनार मूर्त्ति धरे देब त्रिलोचन
त्रिभुबन मोहिलेन देब-त्रिपुरारि । पार्व्वतीर बेश करे देबतार नारी ६
त्रिभुबन मोहिलेन, रूपे बिद्याधरी । रूपे आलोकित कैल सकल नगरी
बदन ताहार जिनि पूर्ण-चन्द्र कला । पार्व्वती बाहिर हैला हाते पुष्पमाला ७

हर-गौरी का विवाह

सारे देवता हिमालय के यहाँ गये। देवताओं को देखकर हिमालय बाहर निकल आये। सभी देवता दुलहे शिव को घेरे रहे। उनकी अगवानी कर बैठने का आसन दिया ॥ २०१॥ दही, दूध, गंगाजल, अगरु, चन्दन, सुपारी, नारियल, उत्तम वस्त्र आदि दिये। शुभ क्षण लग्न देख कर वर का वरण किया। चारों ओर बार-बार वेदध्वनि सुनाई दे रही थी ॥ २ ॥ वर का वरण कर हिमालय घर गये, तब कन्या की माँ वर को देखने आयी। मांगलिक वस्तुएँ लेकर वह वर के पास गयी। वर को देख रानी मोहित हो गयी ॥३॥ उसके वर शिव के चरणों पर दही और सिर पर दूब और धान दिया। सिर पर घुमा-घुमाकर सैकड़ों पान फेंके। रानी सिर झुकाये आँखें बन्द किए थीं। तब नारद मुनि ने ठठोली की ॥ ४ ॥ लज्जा से गिरिराज की बहू-बेटियाँ भाग चलीं। हाथों में सुराही लिये वे हड़बड़ाती भागीं। यह देख नारायण क्रोधित हो उठे। कहा— शुभक्षण निकला जा रहा है, शीघ्र कन्या को ले आओ ॥ ५ ॥ सभी देवताओं ने वर का वेश धारण कर लिया और देव त्रिलोचन शिव ने अपना रूप धारण किया। देव त्रिपुरारि ने तीनों लोकों को मोहित कर लिया। देवताओं की नारियों ने पार्वती का वेश धारण किया ॥ ६ ॥ विद्याधरियों ने अपने रूप से त्रिभुवन मोहित कर लिया। अपने रूपों से सारी नगरी को आलोकित कर दिया। उनके मुखमंडल को पराजित कर पूर्णचन्द्र-कला पार्वती अपने हाथ में पुष्पमाला लेकर बाहर निकली ॥ ७ ॥

जटाते लुकाल देवी गङ्गा गोसाइनी। मुकुट उपर शोभे काल भुजङ्गिनी
ललाटेते शोभे चन्द्र भस्म सर्व्व गाय। हृदयेते हाड़ माला नागिनी फोंपाय ८
त्रासे लुकाइल साप, निभिल आगुनि। हरेर निकट गेला आपनि भवानी
शिरे परिजात माला मधु पिये अलि। विश्वकर्मा योगाइल अशोकेर डालि ९
सप्त सागरेर जल योगाइल आनि। शुभक्षणे हैल हर गौरीर मिलनि
दुन्दुभिर वाद्य, वाजे मधुताल शुनि। सुवेशे नाचये तथा इन्द्रेर नाचुनि २१०
कन्या लुकाइल गिया अन्धकार घरे। कन्यारे आनिते हर दाँड़ाल दुयारे
डानिहाते करे देवी कङ्कणेर ध्वनि। हाते धरि कन्या आने देव शूलपाणि २११
कन्या लये वैसे हर मण्डपेते आसि। चारिदिके बड़िल सकल देव ऋषि
चारिदिके वैसे देब छाड़िया बिमान। नानादान दिया गिरि कैल कन्यादान १२
मुनि सब वेद पड़े प्रफुल्ल बदन। गन्ध पुष्प अर्घ्य दिल आर ये काञ्चन
मन्त्र पड़ि करे गिरि कन्या समर्पण। सर्व्वकाल क'रो कन्या रक्षण-पोषण १३
जोड़ हाते बलि शुन यत देवगण। आमार कन्याय रक्षा क'रो सर्व्व क्षण
ए बोल शुनिया हासे ब्रह्मा-नारायण। तब झिके बल सबे करिते पालन १४
कुशण्डिका लाज होम कैल सावधाने। नानादान करे सब देब विद्यमाने

काल भुजंगिनी शोभित होने लगी। उनके ललाट पर चन्द्रमा शोभित था, समूचे शरीर पर भस्म लगी थी। उनकी छाती पर हड्डियों की माला थी और नागिन फुफकार रही थी ॥ ८ ॥ आतंक से साँप छिप गये, अग्नि बुझ गयी। तब स्वयं भवानी शिव के समीप गयी। उनके सिर पर पारिजात की माला थी, जिसका मधु भौंरे पी रहे थे। विश्वकर्मा ने अशोक की डाली ला दी ॥ ९ ॥ सात सागरों का जल लाया गया और शुभ लगन में हर-गौरी का मिलन हुआ। दुन्दुभि का वाद्य बजने लगा, मधुर ताल गूँज उठी, सुन्दर वेशधारिणी इन्द्र नर्तकियाँ वहाँ गाने लगीं ॥ २१० ॥ कन्या अँधेरे घर में जा छिपी। कन्या को लाने हेतु शिव द्वार पर जा खड़े हुए। देवी के दाहिनी हाथ में कंकण की ध्वनि हो रही थी। देव शूलपाणि हाथ पकड़ कन्या को ले आये ॥२११॥ कन्या को लेकर शिव मंडप में आ बैठे। सभी देवों, ऋषियों ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया; अपने विमान को छोड़ वहाँ आ बैठ गये। अनेक प्रकार के दान देकर गिरि हिमालय ने कन्यादान किया ॥ १२ ॥ प्रसन्नवदन सारे मुनि वेद पढ़ रहे थे। हिमालय ने सुगंधित द्रव्य, अर्घ्य और चन्दन दिये। मंत्रपाठ करते हुए गिरि ने कन्या-दान किया। कहा, चिरकाल कन्या का रक्षण-पोषण करें ॥ १३ ॥ हाथ जोड़कर कहता हूँ, देवगण सुनें, सर्वक्षण में हमारी कन्या की रक्षा किया करें। यह वचन सुनकर ब्रह्मा-नारायण हँस पड़े। कहा, अपनी बेटी से कहो कि वह सबका पालन करती रहे ॥ १४ ॥ कुशणिका धान का लावा का सावधानी से होम किया। सभी देवों के सम्मुख नाना प्रकार के दान किये। सास-ससुर [illegible] सबको विविध पकवान और पान-सुपारी

श्वशुर शाशुड़ी दोंहे करि अनुमान । विबिध पक्वान्न दिल आर गुमायान १५
नाना रङ्गे देखे लोक नृत्य आर गीत । गाइल उत्तरकाण्ड फुलिया पण्डित

भीमार भोजन

महादेवी बले, राजा तुमि आगे याह । झि-जामाता भोखे मरे भोजन कराह १६
जामाता लज्जित हय शाशुड़ी देखिया । एक वारे देह भात-व्यञ्जन आनिया
स्वर्ण थाल घुचाह परस-पात-पात । पायस-पिष्टक सह ताहे देह भात १७
दधि दुग्ध घृत दिते ना करिह हेला । घना वर्त्त दुग्ध देह मर्त्तमान कला
जल लये दुइजने कैल पञ्च ग्रासी । हरेर निकट तबे बैसे देव-ऋषि १८
भोजन करेन देव-ऋषि त्रिपुरारि । हरेर निकटे वसिलेन देवी गौरी
हेंटे देय गोमय उपरे आल्पना । दुइ पाशे करिल ये सूतार मेलना १९
कतेक भोजन कैला देव त्रिलोचन । नारद बले, छोंया गेछ, ना कर भोजन
आल्पना देखाये भीमा दिल नखरेख । सूता गाछ देखाये बले, देख परतेख २२०
देब-देबी छोंया पड़ि कैला आचमन । पाते याहाछिल भीमा करिल भोजन
एक स्थान हैल दोंहे करि आचमन । महासुखे भीमा तबे करिल भोजन २२१
सब भात खेये भीमा पेटे देय हात । हासि भीमा बले आन पिठा आर भात
राणी बले, तोर पेटे लागिल आगुनि । भीमार पाते आनि दिल हाँड़ीर फेलानि २२

दी ॥ १५ ॥ सारे लोकों के निवासी नाना रंग-रंगीले नृत्य-गीत देख रहे थे, फुलिया के पंडित (कृत्तिवास) ने यह उत्तरकाण्ड गाया है ।

(शिव-सेवक) भीम का भोजन

महादेवी ने कहा, राजा आप आगे जाइये । बेटी जमाई भूखे है, उन्हें भोजन कराइये ॥ १६ ॥ सास को देखकर जमाई लजाया करते हैं । उन्हें एक ही बार में भात और व्यंजन ला दो । सोने की थालियाँ हटाकर पत्तों पर परोसो । पायस (खीर), पीठे समेत उसी पर भात भी दो ॥ १७ ॥ दही, दूध, घी देने में कमी न करना । गाढ़ा जमाया दूध और मर्त्तबान केला देना । जल लेकर दोनों ने पंच-ग्रासी की, तब शिव के पास देव-ऋषिगण बैठे ॥ १८ ॥ देवर्षि त्रिपुरारि भोजन करने लगे । शिव के समीप देवी गौरी बैठी नीचे गोबर डालकर उसके ऊपर अल्पना बनायी । दोनों ओर सूत का घेरा बना दिया ॥ १९ ॥ देव त्रिलोचन ने कुछ भोजन किया, तभी नारद ने कहा— आप छू गये हैं, भोजन न करें । भीमा ने अल्पना दिखाकर नाखून से रेखा बना दी । सूत दिखाकर कहा, प्रत्यक्ष रूप से देख लें ॥ २२० ॥ देव देवी सबने छुए जाकर उठ गये और आचमन किया । इसके पश्चात जो कुछ बचा सब कुछ भीमा ने खाया ॥ २२१ ॥ सारा भात खाकर भीमा ने पेट पर हाथ रखा । हँसकर भीमा ने कहा, पीठा और भात ले आओ । रानी ने कहा तेरे पेट में आग लगी है । भीमा की पत्तल पर सारी हाँडियाँ लाकर रख दीं ॥ २२ ॥ जला भात और

घोड़ा मात दिल आर दिल खुद कुंड़ा । केह मासि भीमाक मारे झाँटार मुड़ा
शुनिया भीमार कथा सभाखण्ड हासे । गाइल उत्तरकाण्ड कवि कृत्तिबासे २३

हर गौरीर कैलास गमन

पुष्प शय्या करिलेक गन्धे मनोहर । सोनार चौखण्डी ताहे निर्म्मल बासर
पाड़िल सोनार खाटे नेतेर ये तुली । एयो सब मिलि दिल शुभ हुलाहुलि २४
चारिदिके रत्न दीप नारीगण-मेला । बरेर मोहन रूप राणी नेहारिला
शुइल सोनार खाटे देव पशुपति । सोनार प्रदीपे ज्वले घृतपूर्ण-वाति २५
स्नान-सन्ध्या कैला हर प्रत्यूष-बिहाने । देवगणे ल'ये हर बसिल देयाने
ब्रह्मा बले, गिरिराज देहत मेलानि । छाया मण्डपेते गिया बैसे शूलपाणि २६
नानारत्न नानाधन दिला व्यवहार । देवगण- ग्रेगिरि मागे परिहार
नड़िला सकल देव परम आनन्दे । गौरी के करिया कोले राजराणी कान्दे २७
बृषेते चापिया तबे चले शूलपाणि । सिंह चड़ि चले देवी आपुनि भवानी
परस हरषे चले यत देव गण । आपन वाहन चड़ि चले सर्व्वजन २८
ब्रह्मा विष्णु चलिलेन, चले पुरन्दर । महेशे मेलानि मागि सबे गेला घर
निज गण ल'ये हरि गेला निज पुरी । नानारङ्गे गेला हर कैलास नगरी २६
यत लोक छिल सङ्गे दिलेर मेलानि । घरेर सेवक भीमा डाके शूलपाणि

कोई आकर भीमा को झाड़ू के हत्थे से मारने लगे । भीमा की कथा सुनकर सभा के लोग हँसने लगे । कवि कृत्तिवास ने यह उत्तरकांड गाया है ।। २३ ।।

हर-गौरी का कैलास-गमन

वहाँ मनोहर सुगन्ध वाली पुष्प-सज्जा की गयी । सोने की चारपाई थी, उससे कोहबर बनाया गया ।। २४ ।। चारों ओर रत्नों के दीप जल रहे थे, नारियों का मेला लगा हुआ था । रानी ने दूल्हे का मोहक रूप देखा । देव पशुपति सोने की चारपाई पर सोये । सोने के घी भरे दीये में बत्ती जल रही थी ।। २५ ।। सबेरा होने पर पौ फटने के पहले ही शिव ने स्नान-संध्या किये । देवों के साथ शिव जनवासे में बैठे । ब्रह्मा ने कहा गिरिराज, हमें विदा दो । छाया-मंडप में जाकर शिव बैठे ।। २६ ।। उनके व्यवहार अनुसार नाना रत्न, नाना धन प्रदान किया । देवताओं के सामने गिरिराज ने क्षमा-याचना की । सभी देव परम आनन्द से चल पड़े । गौरी को गोद में लिये राजरानी रोने लगी ।। २७ ।। वृषभ पर सवार हो शूलपाणि शिव चले और सिंह पर सवार हो स्वयं भवानी चलीं । सभी देवगण परम हर्ष से चले । सभी अपने-अपने वाहनों पर चढ़कर चले ।। २८ ।। ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र चले । सब देवगण महेश से विदा लेकर अपने-अपने निवास को गये । हरि अपने वाहन समेत अपनी पुरी को चले । अनेक प्रकार के रंग-रास करते हुए शिव कैलास नगर गये ।। २९ ।। साथ जितने लोग थे सबको विदा दे दी और अपने घर के

गोसाँइ बचने भीमा आइल धाइया। क्षुधाय शरीर दहे, खाद्य आन गिया २३०
गौरी के लइया हर सुखे करे बास। गाइल उत्तरकाण्ड कवि कृत्तिबास

लङ्कापुरी निम्मर्माण

अगस्त्य बलेन, राम बाक्ये देब-मन। सबाके बिदाय दिला देब-त्रिलोचन २३१
भबानी-सहित गृहे रहे पञ्चानन। हास्य-परिहासे सदा अनन्दे मगन
हेथा शुन हेमन्तेर गृहेर काहिनी। बसिला हेमन्त गिरि ओ मेनका राणी ३२
हेन काले गिरिगण मागिला मेलानि। रहिते पर्ब्बतगणेबले प्रिय बाणी
स्नान-सन्ध्या करि सबे करह भोजन। तबेत तोमरा सबे करिह गमन ३३
स्नान-सन्ध्या कैल सबे भागीरथी जले। एक ठाञि हैल सबे भोजनेर काले
सुवर्णेर थाले अन्न दिला परिपाटि। सारि दिया बसिला पर्व्बत तिन कोटि ३४
बसिला सुमेरु मध्ये करिते भोजन। अदूरे थाकिया ताहा देखिल पवन
सम्वर्त्त आबर्त्त द्रोण आर ये पुष्कर। चारि मेघे हाँकारिया आने पुरन्दर ३५
आगे बायु, माझे इन्द्र, पिछे जलेश्वर। झड़-वरिषण करे सुमेरु उपर
सुमेरु काञ्चन शृंग शतेक योजन। भाङ्गिया दिलेन शृंग देबता पवन ३६

सेवक भीमा को शिव ने पुकारा। अपने प्रभु के बुलाने पर भीमा वेग से दौड़ा आया। उससे कहा, क्षुधा से शरीर जल रहा है, जाकर अनाज आदि ले आ ॥ २३० ॥ गौरी को लेकर शिव सुख से रहने लगे। कवि कृत्तिवास ने उत्तरकांड की रचना की।

लंकापुरी-निर्माण

अगस्त्य ने कहा— राम, बात पर ध्यान दो। देव त्रिलोचन ने सबको विदा दी ॥ २३१ ॥ भवानी समेत पंचानन घर में रहने लगे। वे सदा हास-परिहास में आनन्द-मग्न रहते थे। उधर हिमालय के यहाँ की कहानी सुनो। गिरि हिमालय और मेनका रानी एक साथ बैठे ॥ ३२ ॥ उसी समय पार्वतों ने उनसे विदा माँगी। उन सबने पर्वतों को ठहरने हेतु प्रिय वाणी में कहा। तुम सब स्नान संध्या कर भोजन करो, इसके पश्चात् सभी यहाँ से जाना ॥ ३३ ॥ सबने भागीरथी के जल में स्नान-संध्या की और भोजन के समय सभी एक जगह उपस्थित हुए। सोने की थालियों में सजाकर उन्हें हिमालय ने अन्न दिया, तीन करोड़ पर्वत पक्तियों में बैठ गये ॥ ३४ ॥ सुमेरु सबके बीच में भोजन करने बैठा। पवन ने नजदीक रहकर वह देखा। सम्वर्त, आवर्त, द्रोण, पुष्कर, इन चारों मेघों को पुकारकर इन्द्र ले आये ॥ ३५ ॥ आगे वायु, बीच में इन्द्र, पीछे जलेश्वर मेघ रहकर सुमेरु पर आँधी और वर्षा करने लगे। सुमेरु का स्वर्णशिखर सौ योजन फैला हुआ था। उस स्वर्ण-शिखर को पवन देवता ने तोड़ डाला ॥ ३६ ॥ कुमार पवन ने पर्वत का वह शिखर उठा

पर्वतेर शृंग लये पवनकुमार। माथाय काञ्चन शृंग सिन्धु हैल पार
सुमेरुर शृंग पड़े त्रिकूटेर चूड़े। दुइगिरि चूड़ा ल'ये सागरेते एड़े ३७
विश्वकर्म्मा ल'ये गेला देव पुरन्दर। मध्ये पुरी निर्म्माइल चौदिके सागर
सातटि प्राचीर ताहे करिल गठन। लोहाते प्राचीर गड़े उपरे काञ्चन ३८
परिखा योजन शत लङ्घिते ना पारि। प्रसार योजन शत विशाल चउरि
सुवर्ण गड़िल आर अष्टादश पुरी। नाटशाल पाठशाल विचित्र चउरी ३९
खाट पाट निर्म्माइल सोनार आवास। निर्म्माइल स्वर्णपुरी विरिञ्चिर हास
सुवर्णे बान्धिल घाट दीघी ओ पोखरि। राजगृह प्रजागृह गड़े सारि सारि २४०
यतन करिया गड़े राम-अन्तपुरी। बाहिर भितरे सब काञ्चनेर पुरी
निर्म्माइल चित्रघर विद्युतेर छटा। अन्तःपुर निर्म्माइल अयुतेक कोठा २४१
निर्म्माइल शत स्तम्भे देयान चौतारा। नाना रत्न खचित माणिक्य मणि-हीरा
घरेर उपरे शोभे सोनार बाहुरा। चारिभिते शोभे गज मुकुतार झारा ४२
सुवर्णेर आयतन, गड़े सिंहासन। चतुर्द्दोल हेरि येन रविर किरण
रत्ने निर्म्माइल घर करे झलमलि। निर्म्माइल सुवर्णेर पाखा-पाखी-आलि ४३
बड़ बड़ वृक्ष काण्ड सुवर्णे बान्धिल। अयुत प्रशस्त घर स्वर्णे निरमिल
सोनार पताका उड़े देखिते रूपस। घरेर उपरे शोभे सुवर्ण कलस ४४

लिया और सिर पर स्वर्ण-शिखर लिये सागर पार हो गया। सुमेरु का शिखर टूटकर त्रिकूट की चोटी पर पड़ा। इन दोनों पर्वत-चोटियों को लेकर सागर में छोड़ दिया ॥ ३७ ॥ इन्द्र वहाँ विश्वकर्मा को ले गये। विश्वकर्मा ने चारों ओर सागर के बीच पुरी का निर्माण किया। उसमें सात प्राचीर बनाये, वे प्राचीर लोहे के थे जिनके ऊपर सोना मढ़ा हुआ था ॥ ३८ ॥ सौ योजन फैली खाइयाँ थीं जिनको लाँघा नहीं जा सकता था। उसके विशाल नींव का विस्तार सौ योजनों में था। विश्वकर्मा ने सोने के और अठारह नगर बनाये, विचित्र चबूतरों वाले उन नगरों में नाट्यशाला और पाठशाला बनाईं ॥ ३९ ॥ सोने के भवन, चारपाई-पलंग आदि बनाये। ऐसा स्वर्णनगर बनाया जिसे देख ब्रह्मा हँस पड़े। सरोवर और पोखरों के घाट सोने से बँधवाये, कतारों में राजभवन और प्रजा के निवास-गृह बनाये ॥ २४० ॥ राज अंतःपुर को बड़े यत्न से बनाया। बाहर-भीतर समूची-स्वर्ण की पुरी थी। विद्युत की छटा जैसे चित्रघरों का निर्माण किया। अन्तःपुर बनाये जिनमें दसों हजार कमरे थे ॥ २४१ ॥ सौ खंभों वाला राजसभा भवन बनाया जिसमें नाना रत्न-मणि-माणिक्य-हीरा आदि जड़े हुए थे। भवनों के ऊपर सोने के आवरण शोभित थे। चारों ओर गज-मोतियों की झालर शोभित थी ॥ ४२ ॥ सोने का आधार बनाकर सिंहासन बनाया। पालकी ऐसी दीख पड़ती थी मानों रवि की किरणें हों। रत्न से बनाये भवन झिलमिला रहे थे। सोने के खग-खगी-भौंरे बनाये ॥ ४३ ॥ बड़े-बड़े वृक्षों के तने सोने से मढ़ दिये। दसों हजार बड़े भवन स्वर्ण से बनाये। सोने के झंडे जो देखने में बड़े सुन्दर थे, फहर रहे थे। घरों के ऊपर सुवर्ण के कलस शोभित हो रहे

बान्धित सोनाय तबे पुकुरेर घाट। निर्म्माइल सुवर्णेते घरेर कपाट
सुवर्णेते निर्म्माइल स्वर्ण लङ्कापुरी। सोनाय सृजिल यत दीघी औ पोखरी ४५
हइल अद्भुत पुरी देखिते सुन्दर। सप्त कोटि आछे ताहे इष्टकेर घर
नव कोटि कैल ताहे आश्रित-आलय। चारि लक्ष कैल ताहे पर्व्वत दुर्जय ४६
हेनमते निर्म्माइल स्वर्ण लङ्कापुरी। दानव गन्धर्व्व देब लङ्घते ना पारि
समुद्रेर माझे पुरी करिल निर्म्माण। जिनिया अमरावती ताहार बाखान ४७

अगस्त्य कर्तृक राक्षस गणेर जन्म-बृत्तान्त वर्णन

श्रीराम बलेन, मुनि तुमि अन्तर्य्यामी। संसारेर बिबरण सब जान तुमि
रावणेर जन्म कथा कह देखि शुनि। परम-आनन्द तबे हय महामुनि ४८
ब्रह्म-अंशे जन्म तार, सर्व्वलोके जाने। राक्षस हइल तबे किसेर कारणे
मुनि बले रघुनाथ कहि तब स्थाने। राक्षसेर जन्म कथा शुनह एक्षणे ४९
येमते रावण जन्मे शुन रघुमणि। सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा आगे सृजिलेन प्राणी
प्राणिगण बले, ब्रह्मा, करि निवेदन। कोन् कार्य्ये आमा सबे करिला सृजन २५०
ब्रह्मा बले, यत प्राणी करिये उत्पत्ति। तोमरा करिबे रक्षा प्राणेर शकति
ये ये प्राणी सृजन करिब ए संसारे। तोमरा प्रधान ह'ये पालिबे सबारे २५१

थे ॥ ४४ ॥ इसके पश्चात् पोखरों के घाट सोने से बाँधे, सोने से घरों के चौखटे भी बनाये। सोने से ही स्वर्ण लंकापुरी का निर्माण किया। सोने से ही सभी सरोवर व पोखरे बनाये ॥ ४५ ॥ देखने में सुन्दर वह अद्भुत पुरी बनी जिसमें ईंटों से बने सात करोड़ भवन थे। उसमें नौ करोड़ अतिथिशालाएँ बनायी। उसमें चार लाख दुर्जय पर्वत बनाये ॥४६॥ इस प्रकार विश्वकर्मा ने स्वर्ण-लंकापुरी का निर्माण किया। जिसे देव-दानव-गंधर्व कोई लाँघ नहीं सकता था। अमरावती भी जिसके सौन्दर्य के सामने हार जाती है, ऐसी पुरी का निर्माण समुद्र के बीच किया ॥४७॥

अगस्त्य द्वारा राक्षसों का जन्म-वृत्तान्त-वर्णन

श्री राम ने कहा, मुनि, आप अन्तर्यामी हैं। संसार का सारा विवरण आप जानते हैं। कृपया आप रावण की जन्म-कथा कहिये, जिसे सुनकर परम-आनन्द हो ॥ ४८ ॥ सब लोग जानते हैं कि उसका जन्म ब्रह्म-अंश से हुआ तो वह किस कारण राक्षस हो गया ? मुनि ने कहा रघुनाथ, कहता हूँ। अब राक्षसों की जन्म-कथा सुनो ॥ ४९ ॥ जिस प्रकार रावण का जन्म हुआ, रघुमणि, सुनो सृष्टिकर्ता ब्रह्मा ने पहले प्राणियों का सर्जन किया। प्राणियों ने कहा, ब्रह्मा जी, हम आपसे निवेदन करना चाहते हैं, हमारा सर्जन आपने किस उद्देश्य से किया ॥ २५० ॥ ब्रह्मा ने कहा हमने जितने प्राणियों का सर्जन किया, अपने प्राणों की शक्ति से तुम सब उसकी रक्षा करना। हम इस संसार में जिन-जिन प्राणियों का सर्जन करें, तुम सब प्रमुख बनकर उन सबका पालन करना ॥ २५१ ॥

प्राणिगण बले, ब्रह्मा, से बड़ दुष्कर। ना चाहि प्रभुत्व मोरा सबार उपर
ब्रह्मा शाप दिल, बेटा हओ रे राक्षस। हेति नाम हइल से राक्षस कर्कश ५२
बिदुयुतकुमारी नामे ब्रह्मार कुमारी। तारे बिभा करिल राक्षस दुराचारी
मन्दर पर्ब्बते दुइजने केलि करे। जन्मिल सन्तान एक कतदिन परे ५३
पर्ब्बतेर उपरेते फेलिया सन्ताने। मनेर आनन्दे केलि करे दुइजने
पिता-माता-स्नेह नाइ सन्तान-उपर। कातर हइया शिशु कान्दिल बिस्तर ५४
अश्रुजले श्रम जले फलेवर भासे। क्षुधाते आकुल प्राण, घन बहे श्वासे
वृषभ वाहने यान पार्ब्बती शङ्कर। शून्य हइते देखिते पाइल गङ्गाधर ५५
शङ्कर कहेन, सति, देख अति दूरे। एकाकी कान्दिछे शिशु पर्ब्बत-उपरे
महेशेर दया हैल सन्तान-उपर। प्रसन्न हइया शिव दिला तारे बर ५६
शिब कन, शुन ओहे, अनाथ सन्तान। मम बरे पितृ तुल्य हओ बलवान्
सर्ब्ब शास्त्रे बिज्ञ हओ, सर्ब्बाङ्ग सुन्दर। आज्ञा मात्र हैल शिशु बापेर सोसर ५७
विद्युतकुमारी-पुत्र सुकेश नाम धरे। महा बलबान हैल धूर्ज्जटीर बरे

माली, सुमाली ओ माल्यबानेर जन्म-वृत्तान्त

तबे सुकेशेरे बर दिलेन पार्ब्बती। ताहा हैते यत राक्षस उत्पत्ति ५८

प्राणियों ने कहा, ब्रह्मा जी, यह तो बड़ा दुष्कर कार्य है। हम सबके ऊपर अपना प्रभुत्व नहीं चाहते। ब्रह्मा ने शाप दिया, बेटे तुम सभी राक्षस बन जाओ। जिसका नाम हेति था वह निर्मम राक्षस बन गया ॥ ५२ ॥ विद्युतकुमारी नाम की ब्रह्मा की कन्या थी, उस दुराचारी ने उससे विवाह किया। दोनों मंदर पर्वत पर केलि करने लगे। कुछ दिन पश्चात् उनको एक संतान हुई ॥ ५३ ॥ उस संतान को पर्वत पर फेंककर दोनों बड़े आनन्द से केलि करने लगे। सन्तान पर पिता-माता का स्नेह न था। कातर होकर वह शिशु बहुत ही रुदन करने लगा ॥ ५४ ॥ अश्रुजल और पसीने से उसका सारा शरीर भीग गया। क्षुधा से उसके प्राण व्याकुल थे, उसकी साँसें तेजी से चल रही थीं। अपने वाहन वृषभ पर चढ़कर पार्वती और शंकर जा रहे थे। आकाश मार्ग से शंकर ने उस शिशु को देखा ॥ ५५ ॥ शंकर ने कहा सती, बहुत दूर वह देखो, पर्वत के ऊपर एकाकी वह शिशु रुदन कर रहा है। उस संतान पर महेश की दया हो आई। प्रसन्न होकर शिव ने उसे वर दिया ॥ ५६ ॥ शिव ने कहा, रे अनाथ संतान, सुन, मेरे वरदान से तू अपने पिता-जैसा बलवान हो जा। सारे शास्त्रों में निपुण, सर्वांग-सुन्दर बन जा। शिव की आज्ञा मात्र से वह शिशु अपने पिता जैसा हो गया ॥ ५७ ॥ विद्युतकुमारी के उस पुत्र का नाम सुकेश पड़ा। शिव के वरदान से वह महा-बलवान हो उठा।

माली, सुमाली और माल्यवान का जन्म-वृत्तान्त

इसके पश्चात पार्वती ने सुकेश को वर दिया। उसी से सभी

ताहारे गन्धर्व्व एक कन्या दिल दान
पार्व्वतीर बरे तार बाड़िल सम्मान। तिन पुत्र हैल तार कत दिन परे ५९
स्त्री-पुरुषे रहिलेक पृथिवी-भितरे। नाम राखे माल्यवान-माली ओ सुमाली
पुत्र देखे सुकेश परम कुतूहली। ब्रह्मा बले, किबा बर चाह निशाचर २६०
तिन भाइ मिली तप करिल बिस्तर। स्वर्ग मर्त्य पाताल जिनिब त्रिभुवन
मन्त्रणा करिया वर मागे तिन जन। एइ बर दिते ब्रह्मा करह बिधान २६१
संग्रामेते कोथाओ ना पाइ अपमान। संग्रामे बिष्णुर ठाँइ पराभब हबे
ब्रह्मा कन, त्रिभुवन जयी हवे सबे। देवता गन्धर्व्व धरि बेँधे बेँधे आने ६२
ब्रह्मार बरेते तारा त्रिभुबन जिने। तिन कन्या भूपतिर परमा सुन्दरी
आछिल गन्धर्व्व राजा शैव सदाचारी। दुइ नारी गर्भे जन्मे एगार सन्तान ६३
बिभा कैल माली ओ सुमाली माल्यबान। तालभङ्ग सिंहनाद माधव नन्दन
वीरबसु सूचिक से यज्ञ ओ कोपन। शोणिताक्ष बिड़ालाक्ष रणेते उत्कट ६४
प्रहस्त ओ अकम्पन धर्म्मेते बिकट। दु-जनार पुत्र हैल विषम दुष्कर
सत्राजित नामे पुत्र प्रबल प्रखर। रावणेर माता सेइ नामटि निकषा ६५
शेषे कन्या हैल दुष्कर कर्कशा। चारि पुत्र हैल तार धर्म्मशील अति
सुमाली राक्षस-नारी परम युवती। रहियाछे असि बिभीषणेर संहति ६६
बीर ओ अनल भीम राक्षस सम्पाति।

राक्षसों की उत्पत्ति हुई ।। ५८ ।। पार्वती के वर से उसका सम्मान बढ़ गया । उसे एक गंधर्व ने कन्यादान किया । वे दोनों पति-पत्नी पृथ्वी के भीतर रहने लगे । कुछ दिन पश्चात् उनके तीन पुत्र हुए ।। ५९ ।। पुत्रों को देख सुकेश को परम कौतूहल हुआ । उसने उन तीनों के नाम क्रमशः माल्यवान, माली और सुमाली रखा । उन तीनों भाइयों ने मिलकर बड़ी भारी तपस्या की, ब्रह्मा ने पूछा निशाचरो, तुम्हें कौन सा वर चाहिए ? ।। २६० ।। तब उन तीनों ने मंत्रणा कर यह वर माँगा कि हम तीनों स्वर्ग, मर्त्य, पाताल को जीत लें । संग्राम में जैसे कहीं भी हमें अपमानित होना न पड़े । ब्रह्मा जी, यही वर देने का विधान कीजिए ।। २६१ ।। ब्रह्मा ने कहा, तुम सभी त्रिभुवन-विजयी बनोगे । परन्तु संग्राम में विष्णु के हाथ तुम्हारी पराजय होगी । ब्रह्मा के वर से उन तीनों ने त्रिभुवन को जीत लिया और देवता-गंधर्व आदि को पकड़-पकड़कर बाँध-बाँध ले आये ।। ६२ ।। गंधर्वों का राजा शिव-भक्त और सदाचारी था । उस राजा की तीन परम सुन्दर कन्याएँ थीं । माली, सुमाली और माल्यवान ने उनसे विवाह किया । दो नारियों के गर्भ से ग्यारह संताने हुईं ।। ६३ ।। वीरवसु, भूचिक, यज्ञ, कोपन, माधवनन्दन ताल-भंग और सिंहनाद, धर्म में विकट प्रहस्त और अकम्पन, रण में उद्भट पराक्रमी शोणिताक्ष और बिडालाक्ष तथा सत्राजित नाम के प्रबल एवं प्रखर पुत्र हुए । उन दोनों के ये पुत्र बड़े विषम और दुष्कर कार्य करने वाले थे । अन्त में एक दुष्कर कर्कशा कन्या हुई, वही रावण की माता थी जिसका नाम निकषा था ।। ६४-६५ ।। राक्षस सुमाली की पत्नी परम

तिन भाई परिवार बाड़िल बिस्तर। सेई सब निशाचर अबनी-भितर
सकल राक्षस मिलि करिल युकति। एत रक्षः हैल कोथा करिब बसति ६७

विश्वकर्म्मार लंकापुरी निर्म्माण ओ माली प्रभृतिर लंकापुरे राज्य प्रतिष्ठा

ब्रह्मार बरेते तारा त्रिभुवन जिने। हाते गले बान्धिया ये बिश्वकर्म्मे आने
निशाचर बले, बिश्वकर्मा, लह पान। राक्षसेर पुरी तुमि करह निर्म्माण ६८
एत शुनि विश्वकर्मा हइल चिन्तित। पूर्ब्बेर बृत्तान्त मने पड़े आचम्बित
गरुड़-पवने युद्ध हैल येइ काले। सुमेरुर शृंग पड़े समुद्रेर जले ६९
से त्रिकूट गिरिरि प्रसार दुइ चूड़ा। परिमाण सत्तर योजन तार गोड़ा
सत्तर योजन ऊर्द्धे लेगेछे आकाशे। सोनार प्राचीर बेड़ा भितर आबासे २७०
बहिर चौपारि तार अति मनोहर। पवनेर गति नाहि अति भयङ्कर
देब दैत्य येते नारे लङ्कार भितर। बिश्वकर्मा निर्म्माइल पुरी मनोहर २७१
कत शत पुष्प बन कत सरोबर। कत शत बृन्द महापद्म कोटि घर
सोनार कपाट खिल शोभे चारि द्वारे। भयङ्कर पुरी हेन नाहिक संसारे ७२

भीम और सम्पाति ये चार राक्षस विभीषण के संग रह रहे हैं ।। ६६ ।। इन तीन भाइयों का परिवार बहुत अधिक बढ़ गया। संसार में वे ही सारे निशाचर हैं। सारे राक्षसों ने मिलकर परामर्श किया कि इतने राक्षस हो गये, अब कहाँ निवास करें ।। ६७ ।।

विश्वकर्मा द्वारा लंकापुरी निर्माण और माली आदि का लंकापुर राज्य स्थापन करना

ब्रह्मा के वर से उन सबने त्रिभुवन जीत लिया। हाथ-गले में बाँधकर वे विश्वकर्मा को ले आये। निशाचरों ने कहा— विश्वकर्मा, यह पीने की सामग्री लो और राक्षसों के लिए पुरी बनाओ ।।६८।। यह सुन विश्वकर्मा चिन्तित हुए। अकस्मात् उन्हें पहले की कथा स्मरण हो आयी। गरुड़ और पवन में जिस काल में युद्ध हुआ था, सुमेरु का शिखर टूटकर समुद्र के जल में गिरा था ।। ६९ ।। वह त्रिकूट पर्वत की दो मुख्य चोटियाँ बन गया। जिसका नीचे की ओर का फैलाव सत्तर योजन है। सत्तर योजन ऊपर वह आकाश से सटा हुआ है। जिसके भवनों का भीतरी भाग सोने की दीवारों से घिरा है ।। २७० ।। उसके बाहर की चहारदीवारी बहुत ही सुन्दर है। वह ऐसा भयंकर है कि उसमे पवन की भी गति नहीं है। उस लंका के भीतर देव-दैत्य कोई नहीं जा सकता। उस पुरी का निर्माण विश्वकर्मा ने किया है ।। २७१ ।। वहाँ कितने सौ फूलों के उपवन हैं, कितने सरोवर, कितने सौ वृन्द महापद्म कोटि घर हैं। पुरी के चारों द्वारों पर सोने के कपाट और कील शोभित हैं। वैसी भयंकर पुरी संसार में कोई नहीं है ।।७२।। उसके चारों ओर अपार समुद्र

चारिदिके अपार समुद्र आछे घिरे। पवनेर शक्तिते ता लङ्घिते न पारे
जाइते देवता यक्ष ना करे साहस। नेतेर पताका उड़े, सोनार कलश ७३
स्वर्ग मर्त्य पाताले एमत नाहि स्थान। एक मासे बिश्वकर्म्मा करिल निर्म्माण
पुरी देखि राक्षसेर हर्ष हैल अति। लङ्काते राक्षस गणे करिल वसति ७४
आगेते करिल राज्य माली ओ सुमाली। तार पर भूपति कुवेर महाबली
ताहार पश्चाते राज्य करिल रावण। अवशेषे भूपति हइल बिभीषण ७५
अगस्त्येर कथा शुनि श्रीरामेर हास। कह कह बलि राम करिला प्रकाश

गरुड़ पवनेर युद्ध ओ गज-कच्छपेर बिवरण

श्रीराम बलेन, मुनि, कह बिवरण। भाङ्गिल सुमेरु शृंग किसेर कारण ७६
कि लागिया बिसंबाद गरुड़-पवने। बिस्तारिया कह मुनि, शुनि तब स्थाने
मुनि बले, शुन राम, अपूर्व्व कथन। गरुड़-पवने युद्ध हैल ये-कारण ७७
सन्तापन नामे बिप्र छिल पूर्व्व काले। तिन कोटि धन राखि स्वर्ग वास चले
सन्तापनेर दुइ पुत्र परम सुन्दर। सुप्रताप बिभास ए दुइ-सहोदर ७८
ज्येष्ठ पुत्र स्थाने धन थुये गेल बापे। कनिष्ठ करये द्वन्द्व धनेर सन्तापे
धन शोके कनिष्ठ ये हइल दुःखित। ज्येष्ठेरे कहिल भाग देह समुचित ७९

घिरा हुआ है। पवन अपनी शक्ति से उसे लाँघ नहीं पाता। वहाँ जाने के लिए देवता-यक्ष भी साहस नहीं करते। रेशमी पताकाएँ फहरती हैं, घरों पर स्वर्ण-कलश स्थापित हैं ।। ७३ ।। स्वर्ग मर्त्य पाताल में ऐसा कोई स्थान नहीं; विश्वकर्मा ने उसका निर्माण महीने भर में किया है। वह पुरी देख राक्षसों को बड़ा हर्ष हुआ। राक्षसगण लंका में निवास करने लगे ।। ७४ ।। पहले वहाँ माली और सुमाली ने राज्य किया, इसके पश्चात् महाबली कुबेर भूपति बने। इसके पश्चात् वहाँ विभीषण ने राज्य किया ।। ७५ ।। अगस्त्य की कथा सुन श्रीराम हँसने लगे और उन्होंने 'कहिये, कहिये' कहकर अपना हर्ष प्रकट किया।

गरुड़ और पवन का युद्ध तथा गज-कच्छप का विवरण

श्रीराम ने कहा— मुनि, विवरण सुनाइये कि किस कारण सुमेरु शिखर टूट गिरा ? ।। ७६ ।। यह गरुड़ और पवन में बिवाद क्यों हुआ ? मुनि, विस्तार से कहिए, मैं आप से सुनना चाहता हूँ। मुनि ने कहा, राम, गरुड़ और पवन में युद्ध जिस कारण हुआ यह अपूर्व कथा सुनो ।। ७७ ।। प्राचीनकाल में सन्तापन नाम का विप्र था। तीन करोड़ धन रखकर वह स्वर्गवासी होने लगा। सन्तापन के परम सुन्दर दो पुत्र थे, सुप्रताप और विभास, ये दोनों सहोदर थे ।। ७८ ।। बाप ने बड़े पुत्र के पास धन रख दिया, छोटा भाई धन (न पाने) के दुख से झगड़ा करने लगा। धन के शोक से छोटा भाई बहुत ही दुखी हुआ। उसने बड़े भाई से कहा— समुचित भाग (मुझे) दो ।। ७९ ।।

ज्येष्ठ बले, पिता भाग न करिल धन । मम स्थाने भाग तुमि चाह्कि कारण
धन ना पाइया कहे बशिष्ठेर ठाँइ । पितृधन-अंश नाहि देय ज्येष्ठ भाइ २८०
कत अंश पाइ आमि, बलह एखन । सेइ मत करिया लइब पितृधन
बशिष्ठ बलेन, आछे वेदेर विहित । पञ्च अंशेर दु-अंश तोमार उचित २८१
कनिष्ठ कहिल गिया ज्येष्ठ विद्यमान । पितृधन दुइ-अंश करह प्रदान
आमि गियाछिनु भाइ बशिष्ठेर स्थाने । बशिष्ठ बलिल, भाग नाहि देय केने ८२
ज्येष्ठ बले, कनिष्ठ करिले हेन केने । जातिनाश करिले कहिया अन्य स्थाने
हीन जन ज्ञान बुझि कैल मुनिबर । धनेर लागिया एत हइले कातर ८३
बारे-बारे निषेधिनु ना शुनिले काने । गज ह'ये पापिष्ठ, प्रवेश कर बने
कनिष्ठ दिलेन शाप ज्येष्ठेर उपरे । कच्छप हइया तुमि थाक सरोबरे ८४
दु'येर शापेते जन्तु हय दुइ जन । कनिष्ठ गजेर देह करिल धारण
दश योजन गज-देह कनिष्ठ धरिल । गजेर गर्ज्जन गिया बने प्रवेशिल ८५
कच्छप सलिले गेल, गज गेल बन । शुण्डेर भितरे गज राखे येत धन
यतन करिया धन येइ जन राखे । खाइते ना पाय धन याय त विपाके ८६
धन पेये ये जन ना करे बितरण । यथाकार धन तथा याय अकारण
धनेते बिरोध बाधे शुन महाशय । यत व्यय करे तत परलोके हय ८७

भाई ने कहा— पिता ने तो धन बाँटा नहीं, तो तुम मेरे पास धन किस लिए चाहते हो ? धन न पाकर उसने वशिष्ठ के पास जाकर कहा— मेरा बड़ा भाई पिता के धन का अंश नहीं देता ॥ २८० ॥ मुझे कितना अंश मिलना है अब बताइये । उसी के अनुसार कर मैं पिता का धन लूंगा । वशिष्ठ ने कहा— वेद में विधान दिया हुआ है, पाँच भाग का दो भाग तुम्हें मिलना चाहिए ॥ २८१ ॥ छोटे भाई ने जाकर बड़े भाई से यह बात कही कि पिता के धन का दो भाग मुझे दें । भाई, मैं वशिष्ठ जी के यहाँ गया था, वशिष्ठ ने कहा है तुम्हारा भाग क्यों नहीं देता ॥ ८२ ॥ बड़े भाई ने कहा— तूने ऐसा क्यों किया ? दूसरे से यह बात कहकर तूने वंश नाश कर दिया । मुनिवर ने सम्भवतः हमें हीन व्यक्ति समझा होगा । तू धन के लिए इतना कायर हो गया ॥ ८३ ॥ मैंने बार-बार निषेध किया पर तूने कान से नहीं सुना । रे पापी, तू गज बनकर वन में जा । तब छोटे भाई ने बड़े भाई को शाप दिया— तुम कछुआ बनकर सरोवर में रहो ॥८४॥ दोनों एक दूसरे के शाप से जन्तु बन गये । छोटे भाई ने गज का शरीर धारण किया । छोटे भाई ने दस योजन विस्तार का गज-शरीर धारण किया और गज-गर्जना करते हुए वन में प्रवेश किया ॥ ८५ ॥ कछुआ पानी में गया, गज वन में गया । वह गज सारा धन अपने सूँड़ में रखता था । जो व्यक्ति बड़े यत्न से धन को सहेज रखता है, वह स्वयं तो खा पाता ही नहीं, धन दुर्दैव वश अकारण नष्ट हो जाता है ॥ ८६ ॥ धन पाकर भी जो व्यक्ति धन का वितरण नहीं करता, वह धन जहाँ का था वहाँ अकारण चला जाता है । महाशय राम, सुनो, धन से विरोध लगता है । धन जितना (सत्कार्यों में) व्यय करते हैं,

बशिष्ठेर शापे धन नाहि पाप रक्षा। गज-कच्छपेर शुन धनेर परीक्षा
कहिलाम धनेर बृत्तान्त तव स्थाने। गज-कच्छपेर कथा शुन सावधाने ८८
जलेते कच्छप आछे सेइ सरोबरे। दैवयोगे गज गेल जल खाइवारे
खर रौद्रेते गज तृष्णाय बिकल। सरोबरे देखि गज खेते गेल जल ८९
गजे देखि कच्छपेर पड़े गेल मने। पूर्ब्ब लोभे कच्छप से शुण्डे धरे टाने
गज टाने बनेते कच्छप टाने जले। गज आर कच्छप उभये तुल्य बले २९०
केह कारे नाहि पारे उभये सोसर। दुइ जने टानाटानि करये बत्सर
बिनता-नन्दन पक्षी उड़े अन्तरीक्षे। अन्तरीक्षे थाकिया गरुड़ ताहा देखे २९१
एक बर्ष युद्ध हैल अति भयङ्कर। केह कारे नाहि जिने एकइ बत्सर
कातर हइया गज स्मरे नारायण। पाप देह नारायण कर बिमोचन ९२
गजे देखि कातर गरुड़े दया हैल। बाम पद नख दिया दोंहारे तुलिल
गज कूर्म्म ल'ये पक्षी उड़िल तखन। मने करे कोथा ल'ये करिब भक्षण ९३
श्याम बर्ण वट बृक्ष शत योजन डाल। अशीति योजन मूल नेयेछे पाताल
चारि गोटा डाल तार पर्व्वतेर चूड़ा। सत्तर योजन युड़ि आछे तार गोड़ा ९४

इतना ही परलोक में मिला करता है ॥ ८७ ॥ बशिष्ठ के शाप से धन की रक्षा नहीं हो पायी। अब गज-कच्छप के धन की परीक्षा सुनो। तुमसे धन का वृत्तान्त कह सुनाया। अब गज-कच्छप की कथा सावधानी से सुनो ॥ ८८ ॥ जिस सरोवर के जल में कछुआ रहता था, दैवयोग से उसी में पानी पीने गज वहाँ गया। तेज धूप से वह हाथी प्यास से व्याकुल था। सरोवर देख वह पानी पीने गया ॥ ८९ ॥ हाथी को देख कछुए को (पुरानी बात) स्मरण हो आयी, पूर्व धन के लोभ से वह हाथी का सूँड़ पकड़कर खींचने लगा। हाथी वन की ओर खींचता, कछुआ पानी की ओर वे। दोनों हाथी और कछुआ बल में बराबर थे ॥ २९० ॥ कोई किसी को हटा नहीं पाता था, दोनों वर्ष भर खींचा तानी करते रहे। उसी समय विनतानन्दन पक्षिराज गरुड़ अन्तरिक्ष में उड़ रहे थे। आकाश में रहकर गरुड़ ने वह देखा ॥ २९१ ॥ दोनों में एक वर्ष तक बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। दोनों तुल्य बलशाली थे। कोई किसी को जीत नहीं पाता था। अन्त में हाथी ने कायर होकर नारायण का स्मरण किया। हे नारायण, मेरे इस पापमय शरीर को मुक्त करो ॥ ९२ ॥ हाथी को कायर देखकर गरुड़ को दया आ गयी। उन्होंने अपने बायें पैरों के पंजों के नाखूनों से दोनों को उठा लिया। पक्षिराज गरुड़ उन हाथी और कछुए को लेकर उड़ चले। मन में सोच रहे थे, इन्हें कहाँ ले जाकर भक्षण करें ॥ ९३ ॥ एक श्याम वर्ण का बरगद का पेड़ था, जिसकी सौ योजन लम्बी डालियाँ थीं; उसकी जड़ें पाताल के नीचे अस्सी योजन फैली थीं। उसकी चार डालियाँ पर्वत-शिखरों जैसी थी। उसका तना सत्तर योजन में फैला था ॥ ९४ ॥

गज-कूर्म्म लेया वसे गाछेर उपर। सहिते ना पारे वृक्ष तिन जन भर
भर नाहि सहे डाल मड़-मड़ करे। डाल भाङ्गि पड़े यदि, मुनिगण मरे ९५
दक्षिण पायेर नखे गरुड़ धरे डाले। मुनिगण एड़ाइल थाकि वृक्ष तले
फेलिल से डाल लये चण्डालेर देशे। डालेर चापने मरे नारी ओ पुरुषे ९६
बहु पापे ह'ये छिल चण्डाल-जनम। गरुड़ेर हाते पाप हइल मोचन
गज-कूर्म्म लेये गेल ब्रह्मार सदन। कह ब्रह्मा, कोथा ल'ये करिब भक्षण ९७
ब्रह्मा बले, कोथा सहिबेक एत भर। गज कूर्म्म ल' ये याह सुमेरु-सिखर
तथा गज-कच्छपेरे करह भक्षण। ब्रह्मार वचने पक्षी चले ततक्षण ९८
पर्व्वत उपरे वसे करिते भक्षण। हेन काले एल तथा देवता पवन
पवन बलेन, पक्षी, तुमि केन हेथा। मोर ठाँइ पड़िले छिंड़िब तब माथा ९९
यावत् तोमार नाहि करि अपमान। आपना जानिया बेटा, याह निज स्थान
गरुड़ कहेन तुमि गालि केन पाड़। उपयुक्त शास्ति दिब अहङ्कार छाड़ ३००
गरुड़े बचने पवन क्रोधे बले। फेलिब पर्व्वत ठेलि समुद्रेर जले
गरुड़ बलेन वायु बड़ाइ ना कर। सुमेरु पर्व्वत तुमि नाड़िते कि पार ३०१
गरुड़ वचने पवनेर क्रोध बाड़े। पर्व्वत समेत चाहे उड़ाइते झड़े
प्रलय हइल येन पर्व्वत-उपर। दुइ पाखे गिरि ढाके विनता कुमार २

गरुड़ हाथी और कछुवे को लेकर उसी पेड़ पर बैठे। वह वृक्ष उन तीनों का भार नहीं सह सका। भार न सह सकने के कारण डाली मड़-मड़ाने लगी। यदि डाली टूट गिरे तो मुनि मर जायेंगे ॥ ९५ ॥ तब गरुड़ ने अपने दाहिने पैर से उस डाली को पकड़ लिया। मुनिगण जो वृक्ष के नीचे रह रहे थे, बच गये। गरुड़ ने वह डाली उठाकर चांडालों के देश में फेंक दी। वहाँ के (चांडाल) नारी-पुरुष डाली से दबकर मर गये ॥ ९६ ॥ अनेक पापों के कारण उनको चांडाल का जन्म मिला था। गरुड़ के हाथ उनका वह पाप दूर हो गया। गरुड़ उन हाथी और कछुए को लिये ब्रह्मा के यहाँ गये। बताइये, ब्रह्मा जी, इन्हें कहाँ ले जाकर भक्षण करूँ ॥ ९७ ॥ ब्रह्मा ने कहा— इतना भार कौन सह सकता है ? इन गज और कछुए को लेकर सुमेरु शिखर पर चले जाओ। वहीं इन गज-कच्छपों का भक्षण करना। ब्रह्मा के वचन सुनकर पक्षि-राज गरुड़ उसी क्षण उड़ चले ॥ ९८ ॥ गरुड़ सुमेरु पर्वत के शिखर पर उनका भक्षण करने हेतु बैठे। इतने में वहाँ पवन देवता आ पहुँचे। पवन ने कहा— पक्षिराज, तुम यहाँ कैसे आये ? मेरे स्थान पर कुछ पड़े तो तुम्हारा सिर उतार लूंगा ॥ ९९ ॥ मैं तुम्हारा अपमान करूँ, उसके पहले ही, बेटा, अपना जानवर तुम अपने स्थान को लेकर चले जाओ। गरुड़ ने कहा— तुम गालियां क्यों देते हो ? मैं तुम्हें उचित दंड दूंगा, अहंकार छोड़ दो ॥ ३०० ॥ गरुड़ के बचन सुनकर पवन ने क्रोध से कहा— मैं पर्वत को धकेल कर समुद्र के जल में फेंक दूंगा। गरुड़ ने कहा— वायु, तू बड़ाई न मार। तू क्या सुमेरु पर्वत को हिला सकता है ॥ ३०१ ॥ गरुड़ के वचन से पवन का क्रोध बढ़ गया। उसने आंधी से उसे पर्वत

बाड़ाइया कैल पाखा सहस्र योपन। पाखा देखि पवन भाबेन मने मन
मवड़ेर पाखा येन बज्रेर सोसर। सात दिन शिला वृष्टि पाखार उपर ३
मेघेर गर्ज्जन आर पड़िछे जञ्झना। पर्व्वतेर तबु नाहि नड़े एक कोणा
प्रलय कालेते येन सृष्टि हय नाश। देखि यत देव गण पाइला तरास ४
ब्रह्मारे जिज्ञासा करे यत देवगण। आवम्बिते महा प्रलय हय कि कारण
सृष्टि करिलाम आदि अतिशय क्लेशे। हेन सृष्टि नष्ट कर, युक्ति ना आइसे ५
ना शुनि ब्रह्मार बाक्य कहिछे यखन। प्रलय याहाते हय करिब से रण
पबनेर ठाँइ ब्रह्मा शुनि से उत्तर। विरस हइया ब्रह्मा चलिल सत्वर ६
पबन एड़िया याय गरुड़ गोचरे। विरिञ्चि बलेन, पक्षी, बलि हे तोमारे
आमि सृष्टि करिलाम तुमि कर रक्षा। एकदिक हैते तुमि तुलि लह पाखा ७
ब्रह्मार बचन शुनि गरुड़ेर हास। तोमार बचने पाखा करिब प्रकाश
ब्रह्मा बले, ये येमन, आमि ताहा जानि। शतयुगे पबन तोमारे नाहि जिनि ८
ब्रह्मार बचने तबे गरुड़ेर हास। तबे त गरुड़ पाखा करिल प्रकाश
गरुड़ तुलिले पाखा गिरिवर नड़े। झड़ेते से पर्व्वतेर छेक शृंग पड़े ९
त्रिकूटि गिरि आछे सागर-भितरे। सुमेरुर शृंग पड़े ताहार उपरे

समेत उड़ा फेंकना चाहा। पर्वत के ऊपर मानों प्रलय हो गया। विनता-नन्दन गरुड़ ने दोनों पंखों से पर्वत को ढँक लिया ॥ २ ॥ उसने अपने पंख बढ़ाकर हजार योजन कर लिये। पंखों को देख पवन ने मन ही मन सोचा— गरुड़ के पंख वज्र के समान हैं, पंखों पर सात दिन ओले बरसाये; ॥ ३ ॥ मेघों की गर्जना और विद्युत् की झन-झनाहट पड़ रही है, तथापि पर्वत का एक कोना भी हिल नहीं रहा है। प्रलयकाल में जैसे सृष्टि का विनाश हो जाता है, वैसा ही देखकर देवगण भयभीत हो गये ॥ ४ ॥ सभी देवगण ब्रह्मा से पूछने लगे— अकस्मात् यह महा प्रलय किस कारण हो रहा हैं ? ब्रह्मा ने पवन से पूछा— हमने जिस संसार की सर्जना बड़े ही कष्ट से की उस सृष्टि को तुम नष्ट कर रहे हो, इसका कोई तर्क समझ में नहीं आता ॥ ५ ॥ ब्रह्मा के वचन न सुनकर पवन कहने लगा— जैसे प्रलय हो जाये, ऐसा रण मैं करूँगा। ब्रह्मा पवन का उत्तर सुनकर, मुरझाये-से होकर वहाँ से चल पड़े ॥ ६ ॥ पवन के पास से वे गरुड़ के यहाँ आये। ब्रह्मा ने कहा— पक्षिराज गरुड़, तुमसे कहता हूँ, मैंने सृष्टि की, तुम अब इसकी रक्षा करो। एक हिस्से से तुम अपने पंख हटा लो ॥ ७ ॥ ब्रह्मा के वचन सुनकर गरुड़ हँस पड़ा। बोला— तुम्हारे कहने से मैं अपने पख समेट लूंगा ? ब्रह्मा ने कहा— जो जैसा है, मैं उसे जानता हूँ। सैकड़ों युग में भी पवन तुम्हें जीत नहीं सकता ॥ ८ ॥ तब गरुड़ ब्रह्मा के वचन सुन हँस हड़ा। उसने अपने पंख समेट लिये। गरुड़ के पंख उठा लेने पर गिरिवर हिल उठा। आँधी में उसका एक शिखर ढह गया ॥ ९ ॥ सागर के भीतर त्रिकूट पर्वत था, सुमेरु का वह शिखर उसी पर जा गिरा। विश्वकम ने उसी

লঙ্কা নামে পুরী তাহে কৈল বিশ্বকর্ম্ম। এই রূপে শ্রীরাম লঙ্কার শুন জন্ম ৩১০

বিষ্ণুর সহিত যুদ্ধে মালীর মৃত্যু এবং সুমালী ও মাল্যবানের পাতালে পলায়ন

মাল্যবান রাক্ষস লঙ্কায় রাজ্য করে। ত্রিভুবন জিনিল সে পিতামহ বরে
মনে করে, আমি ব্রহ্মা বিষ্ণু মহেশ্বর। সকল দেবতা মারি ঘুচাইব ডর ৩১১
তবে দেবগণ গেলা শিবের গোচর। কহিল বৃত্তান্ত সদাশিব-বরাবর
সুকেশের সন্তান দুরন্ত নিশাচর। বড়ই দৌরাত্ম্য করে স্বর্গের উপর ১২
বিশ্বনাথ বলেন শুনহ দেব গণ। মারিতে আমার সাধ্য নহে কদাচন
হইয়াছে দুর্জ্জয় ব্রহ্মার পেয়ে বর। মরিবে আপনার দোষে দুষ্ট নিশাচর ১৩
দেব-দেবী-বিপ্র-হিংসা করে যেইজন। আপনার দোষে মরে, বেদের লিখন
এক উপদেশ বলি, শুন দেবগণ। রাক্ষস মারিতে পারে দেব নারায়ণ ১৪
রাক্ষসের কথা গিয়া কহ নারায়ণে। অবশ্য বিহিত হবে, শুন দেবগণে
মহেশের আজ্ঞা পেয়ে যতেক অমর। উপনীত হৈল গিয়া বৈকুণ্ঠ নগর ১৫
সম্ভ্রমে দেবতাগণ করি প্রণিপাত। রাক্ষসের কথা কহে করি যোড়হাত
সুকেশ রাক্ষস এক ছিল অবনীতে। তিন পুত্র হৈল তার বুদ্ধি বিপরীতে ১৬

पर लंका नाम की पुरी बनायी। श्रीराम, सुनो, इसी प्रकार से लंका का जन्म हुआ ।। ३१० ।।

विष्णु के साथ युद्ध में माली की मृत्यु एवं सुमाली और माल्यवान का पाताल में पलायन

राक्षस माल्यवान लंका में राज्य करता था। उसने पितामह ब्रह्मा के वर से त्रिभुवन जीत लिया। वह सोचता था, हमीं ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर हैं, सारे देवताओं को मारकर मैं डर मिटाऊँगा ।। ३११ ।। तब देवगण शिव के पास गये और सदाशिव से सारा वृत्तान्त कहा, सुकेश का पुत्र वह दुरन्त निशाचर स्वर्ग के ऊपर बड़ा अत्याचार कर रहा है ।। १२ ।। विश्वनाथ ने कहा— देवगण, सुनें, उस राक्षस को मारने का हमारा सामर्थ्य कदापि नहीं है। वह ब्रह्मा का वरदान पाकर दुर्जेय हो उठा है। वह दुष्ट निशाचर अपने ही दोष से मारा जायेगा ।। १३ ।। जो व्यक्ति देवी-देवताओं और विप्रों की हिंसा करता है, वेदों में लिखा है कि वह अपने ही दोष से मारा जाता है। मैं एक उपदेश देता हूँ, देवगण, सुनो, इस राक्षस को केवल देव नारायण ही मार सकते हैं ।। १४ ।। तुम लोग जाकर नारायण से राक्षस की कथा कहो। देवगण सुनो, अवश्य ही इसका विहित उपाय होगा। महेश की आज्ञा पाकर सभी देवता बैकुण्ठ नगर पहुँचे ।। १५ ।। सम्मान सहित देवताओं ने नारायण को प्रणाम कर हाथ जोड़ राक्षस के बारे में बताया कि संसार में सुकेश नाम का एक राक्षस था, उसके विपरीत बुद्धि वाले तीन पुत्र

देव-द्विज हिंसा करि फिरे अनुक्षण। स्वर्गपुरे थाकिते ना पारे देवगण
मारे शेल शूल जाठा, लोटे सब नारी। छिन्न-भिन्न करियाछे अमर-नगरी १७
ब्रह्मार बरेते तारा काटे नाहि माने। यक्ष-रक्ष किन्नरादि नाहि आंटे रणे
संसारेर कर्त्ता तुमि देव गदाधर। राक्षस मारिया रक्षा करह अमर १८
देवतार त्रास देखि श्रीहरि हास। कहे सुखे स्वर्गपुरे कर गिया बास
तोमा सबे हिंसे यदि दुष्ट निशाचर। सेइ क्षणे राक्षसे पाठाब यमघर १९
अश्वास करिल यदि देव नारायण। निर्भय अमरपुरे गेल देवगण
जानिया नारद मुनि ए सब संवाद। चलिलेन लङ्का पुरे परम-आह्लाद ३२०
बसियाछे तिन भाइ रत्न-सिंहासने। मुनि, देखि समादर कैल तिन जने
प्रणाम करिया दिल रत्न-सिंहासन। जिज्ञासिल, कह मुनि, शुनि बिवरण ३२१
लङ्कापुरे आगमन किसेर कारण। बलह हे थाय तव कोन् प्रयोजन
मुनि बले, तोमादेर हित चिंता करि। अमङ्गल शुनिया, आइनु लङ्का पुरी २२
एस ठाँइ मिलियाछे यत देवगण। युक्ति करि गियाछिल विष्णुर सदन
कहियाछे तोमादेर कथा नारायणे। श्रीहरि करिबे युद्ध तोमादेर सने २३
ह'येछे मन्त्रणा एइ वैकुण्ठ भुवने। शुनिया आमार बड़ दुःख हइल मने
आमार पितार भक्त यत निशाचर। विशेष अधिक स्नेह तादेर ऊपर २४

हुए ॥ १६ ॥ वे सभी निरंतर देव-द्विजों के प्रति हिंसा करते फिरते हैं। उनके अत्याचारों से देवगण स्वर्ग में रह नहीं पाते। वे शूल, शक्ति और भाले का प्रहार करते हैं, उन सबने अमरों की नगरी को छिन्न-भिन्न कर डाला है ॥ १७ ॥ ब्रह्माजी के वर के कारण वे किसी को कुछ भी नहीं मानते। यक्ष, रक्ष, किन्नर आदि युद्ध में उनकी समकक्षता नहीं कर सकते। प्रभु गदाधर, आप संसार के कर्ता हैं, राक्षसों को मारकर देवों की रक्षा करो ॥ १८ ॥ देवताओं का त्रास देखकर श्री हरि हँस पड़े। कहा, तुम सब सुख से स्वर्गपुरी में जाकर रहो। यदि वह दुष्ट निशाचर तुम सबकी हिंसा करे तो मैं उसी क्षण उस राक्षस को यमलोक भेज दूँगा ॥ १९ ॥ जब देव नारायण ने यह आश्वासन दिया, तो देवगण निर्भय रूप से अमरपुरी (स्वर्गलोक को) गये। नारद मुनि यह सब संवाद जानकर परम आह्लाद से लंकापुरी को चले ॥ ३२० ॥ तीन भाई रत्न-सिंहासन पर बैठे हुए थे, मुनि को देखकर उन तीनों ने समादर किया। प्रणाम कर रत्न-सिंहासन दिया, पूछा— मुनि, आप यह वृत्तान्त कहिये, हम सुनें ॥ ३२१ ॥ लंकापुर में आपका आगमन किस कारण हुआ ? कहिये यहाँ आपका कौन-सा प्रयोजन है ? मुनि ने कहा— तुम लोगों का हित-चिन्तन कर, तुम्हारे अमंगल की बात सुनकर, मैं लंकापुरी आया हूँ ॥ २२ ॥ सारे देवगण एक स्थान पर एकत्रित हो, विचार-विमर्श कर विष्णु के निवास स्थान को गये थे। तुम्हारी बातें नारायण से कही हैं, श्रीहरि तुमसे युद्ध करेंगे ॥ २३ ॥ इस वैकुंठलोक में मंत्रणा हुई है, जिसे सुनकर हमारे मन में बड़ा दुख पहुँचा है। सारे निशाचर हमारे पिता के भक्त हैं, इस कारण उन पर मेरा विशेष अधिक

ए-कारणे आइलाम दिते समाचार । मङ्गलेर पथ चिंता कर आपनार
एत बलि मुनिवर हइला बिदाय । निशाचर गण भावे कि हवे उपाय २५
एकत्र वसिया युक्ति करे तिन जन । हेन काले ब्रह्मा एल राक्षस-सदन
ताहार पुरेते एइ शुने समाचार । मनेते अधिक दुःख उपजे ब्रह्मार २६
यत निशाचर सब ब्रह्मार आश्रित । राक्षसेर मङ्गल चिन्तेन अविरत
शुनि अमंगल वाक्य बुझाइते हित । क्रोध भरे लङ्कापुरे हैल उपनीत २७
ब्रह्मा देखि सम्भ्रमे उठिल तिन जन । भकति करिया करे चरण-बन्दन
भक्ति भावे बसाइल रत्न-सिंहासने । पाद्य अर्घ्य दिया पूजा करिल चरणे २८
योड़हाते जिज्ञासा करिल तिन जन । आज्ञा कर कि हेतु लङ्काते आगमन
एत दिने पवित्र हइल लङ्कापुरी । या मने बासना कर सेइ कर्म्म करि २९
ब्रह्मा बले, सर्व्वदा बासना करि मने । लङ्काते करह राज्य परम कल्याणे
थाकिले आमार बाञ्छा हइबे कि कर्म्म । छाड़िते नारिबि तोरा स्वजातीय धर्म्म ३३०
देव-द्विज हिंसा कर, पाप कर्म्मे मति । दुराचार स्वभावेते घटिबे दुर्गति
तिन लोक उपरेते अमरेर पुरी । देवता गणेर बास ताहार उपरि ३३१
होम-यज्ञ-भाग दिया ये अर्च्चना करे । लइते यज्ञेर भाग यान तार घरे
कासे मन्दकारी हे देवगण यत । भक्ति भावे येइ डाके तार अनुगत ३२

स्नेह रहा है ।। २४ ।। इसी कारण मैं समाचार देने आया हूँ, तुम सभी अपने मंगल का मार्ग चिंतन करो । यह कहकर मुनिवर विदा ले चले । निशाचर सोचने लगे, अब क्या उपाय होगा ।। २५ ।। तीनों एकत्र बैठकर विचार-विमर्श करने लगे । इसी काल में ब्रह्मा राक्षसों के भवन पहुँचे । उनके पुर में यह समाचार सुनकर उनके मन में बड़ा ही दुःख हुआ ।। २६ ।। सारे निशाचर ब्रह्मा के आश्रित थे, वे निरन्तर राक्षसों का मंगल-चिन्तन करते थे । अमंगल की बातें सुनकर उनके हित की बात समझाने हेतु वे क्रोध में भरे हुए लंकापुरी पहुँचे ।। २७ ।। ब्रह्मा को आये देख तीनों सम्मान में खड़े हो गये । उनकी भक्ति करते हुए चरण वन्दना की । भक्ति-भाव से उन्हें रत्न-सिंहासन पर बिठाया और पाद्य-अर्घ्य देकर चरणों की पूजा की ।। २८ ।। हाथ जोड़कर तीनों ने पूछा—आज्ञा करें, किस हेतु लंका में पधारें हैं ? इतने दिनों में लंकापुरी पवित्र हुई, आपके मन में जो इच्छा है हम वही करेंगे ।। २९ ।। ब्रह्मा ने कहा—मैं अपने मन में यही कामना किया करता हूँ कि तुम परम कल्याण के साथ लंका में राज्य करते रहो । परन्तु हमारे मन में कामना रहने भर से क्या काम होगा ? तुम लोग तो स्वजातीय धर्म नहीं छोड़ोगे ।। ३३० ।। तुम लोग देव-द्विजों की हिंसा करते हो, पाप कर्मों में मति रखते हो, स्वभाव से दुराचारी हो, इस कारण दुर्गति होगी । अमरों की पुरी (स्वर्गलोक) तीनों लोकों से ऊपर है उस पर वेदों का निवास है ।। ३३१ ।। जो होम-यज्ञ-याग से उनकी अर्चना करता है उसका यज्ञ-भाग लेने हेतु देवगण उसके यहाँ जाया करते हैं । सारे देवगण किसी के अनिष्टकारी नहीं हैं । जो भक्ति-भाव से पुकारता है, वे उसी के अनुगत हैं ।। ३२ ।।

मुनिगण ऋषिगण थाके तपस्याते। देख मन्दकारी केह नहे कोन मते
देव-द्विज दुइ तुल्य, धर्म्म पथे मन। तार हिंसा ये करे से दुर्मति दुर्ज्जन ३३
अति अल्प आयु तोरा धर्म्मेते बिहीन। देबहिंसा करिया बाँचिबि कतदिन
हइयाछे एक युक्ति यत देबगण। देबतार सहाय ह'येछे नारायण ३४
विष्णु सने युझिबेक काहार शकति। एक जन ना थाकिबे बंशे दिते बाति
एत वलि कोप मने ब्रह्मार गमन। बिरले बसिया युक्ति करे तिन जन ३५
माल्यवान बले, भाइ, शङ्का त्यज मने। तिन जने युद्ध करि मारि नारायणे ३६
माल्यबान कथा शुनि कहिछे सुमाली। शुनियाछि नारायण बले महाबली ३७
हिरण्यकशिपु आदि करेछे संहार। हेन विष्णु मारे बल शक्ति आछे कार
माली बले, संग्रामेते बिनाशिब तारे। आर येन देबगण युद्ध नाहि करे ३८
विष्णु बड़ कुचक्री, कुयुक्ति यत तार। से मरिले देबतार टूटे अहङ्कार
तिन भाइ मिल आगे मारि नारायण। पश्चाते मारिब, आछे यत देब गण ३९
मुनि ऋषि मारिब, मारिब सिद्ध यति। घुचाइब देबतार स्वर्गेर बसति
एत बलि तिन जने युक्ति कैल सार। घोड़ा-हासी रथ-रथी साजिल अपार ३४०
तुलिल कटक-ठाट रथेर उपरे। वैकुण्ठे चलिल तारा बिष्णु जिनि बारे
सिंहनाद घोर शब्द करे घेन-घन। वैकुण्ठेर द्वारे गिया दिल दरशन ३४१

मुनि-ऋषिगण तपस्या में निरत रहते हैं। देखो, वे कभी, किसी के, किसी प्रकार से अनिष्टकारी नहीं हैं। देव-द्विज दोनों समान हैं; इनका चित्त धर्म-मार्ग में रहता है। जो इनकी हिंसा करता है वह दुर्मति दुर्जन है ॥ ३३ ॥ तुम सब अति अल्पायु हो, धर्म से हीन हो। तुम लोग देवों के प्रति हिंसा रखकर कितने दिन जीवित रहोगे? सारे देव-गण एक-जुट हो गये हैं। देवताओं के सहायक नारायण बने हैं ॥ ३४ ॥ विष्णु के साथ युद्ध कर सके, ऐसी शक्ति किसकी है। तुम सबके वंश में दीपक दिखानेवाला भी कोई नहीं बचेगा। ऐसा कहकर क्रोधित चित्त से ब्रह्मा चले गये। तब तीनों एकान्त में बैठकर विचार-विमर्श करने लगे ॥३५॥ माल्यवान ने कहा, भाई, मन से शंका छोड़ दो। हम तीनों लड़कर नारायण को मार डालेंगे ॥ ३६ ॥ माल्यवान की बात सुन सुमाली कहने लगा— सुना है, नारायण बल में महाबली है ॥३७॥ उसने हिरण्य-कशिपु आदि का संहार कर डाला है। ऐसे विष्णु को मार सके, ऐसा बल और शक्ति किसकी है। माली बोला, संग्राम में हम उसे विनष्ट कर डालेंगे। जैसे देवगण पुनः हमसे युद्ध न कर सकें ॥३८॥ विष्णु बड़ा ही कुचक्री है, ये सारी कु-परामर्श उसी का है। उसके मरते ही— देवताओं का अहंकार मिट जायेगा। तीनों भाई मिलकर पहले नारायण को मारें। इसके पश्चात् सारे देवों को मारेंगे ॥ ३९ ॥ हम (उसके पश्चात्) ऋषि-मुनियों को मारेंगे, सिद्ध-यतियों को मारेंगे और देवताओं का स्वर्ग में रहना समाप्त कर देंगे। यह कहकर तीनों ने इसी परामर्श को सार मान लिया और अनगिनत घोड़ा-हाथी-रथ-रथी सजाये ॥ ३४० ॥ उन सबने अपनी सेना लेकर रथ पर चढ़कर विष्णु को

गरुड़-वाहने चड़ि एल नारायण। नारायण-सम्मुखेते बाजे महारण
महाकोपे नाना अस्त्र मारे निशाचर। बाण बृष्टि करितेछे बिष्णुर उपर ४२
छाइल गगन-पथ दिग् दिगन्तर। पड़िछे असंख्य बाण पट्टिश तोमर
जाठा जाठि शेल-शूल मूषल-मुद्गर। लेखा जोखा नाहि, बाण पड़िछे बिस्तर ४३
नारायण-वीर दापे त्रिभुबन नड़े। राक्षसेर सैन्य सद मूर्च्छा ह'ये पड़
कुपिल सुमाली माली रणे आगुसरे। दुहातिया बाड़ि मारे गरुड़ेर शिरे ४४
झन्झना-चिकुर-सम गदा बाड़ि पड़े। बिष्णु ल'ये गरुड़ पलाय उभरड़े
गरुड़ेर भङ्ग देखि माल्यबान हासे। श्रीहरि फिरान तारे करिया आश्वासे ४५
विष्णु बले, गरुड़, तिलेक थाक रणे। पाठाब राक्षसगणे यमेर सदने
तोमार संग्रामे लागे त्रिभुबने भय। राक्षसेर रणे भङ्ग उचित ना हय ४६
उलटिया गरुड़ आइल महारणे। एड़िलेन चक्र बाण बिष्णु तत क्षणे
चक्रबाणे मालीर मस्तक काटि पाड़े। माल्यबान सुमाली पलाय उभ रड़े ४७
पुनः फिरे निशाचर, नाहि देय भंग। लोहार मुद्गर हाने, भये कांपे अंग
माल्यबान बले, तुमि थाकह श्रीहरि। आजि रणे तोमारे पाठाब यमपुरी ४८
श्रीहरि बलेन, शुन बेटा माल्यबान। प्रतिज्ञा क'रेछि आमि देबतार स्थान
अभय लइया गेछे यतेक अमर। तोरे मारि घुचाइब देबतार डर ४९

वैकुण्ठ पर चढ़ाई की। वे बार-बार सिंहनाद और घोर निनाद कर रहे थे। वे वैकुण्ठ के द्वार पर दिखाई पड़े ॥ ३४१ ॥ नारायण गरुड़-वाहन पर चढ़कर आये। नारायण के सम्मुख ही भयंकर युद्ध शुरू हो गया। प्रचंड क्रोध से निशाचर विष्णु पर नाना अस्त्रों का प्रहार करने लगे। वे बाण-वर्षा करने लगे ॥ ४२ ॥ समूचा आकाश-मार्ग दिग्-दिगन्त उनसे परिव्याप्त हो गया। असंख्य वाण, पट्टिश, तोमर आदि गिरने लगे। भाले-बरछे, शेल-शूल, मुसल, मुद्गर आदि की गिनती न थी, प्रचुर वाण गिरने लगे ॥ ४३ ॥ नारायण की वीरता से त्रिभुवन हिल उठा, राक्षसी सेना मूर्छित हो गिर पड़ी। तब सुमाली और माली क्रोध से भरकर आगे बढ़े और दोनों हाथों से गदा का प्रहार गरुड़ के सिर पर किया ॥ ४४ ॥ झन-झनाहट की ध्वनि से गदा की चोट पड़ी। विष्णु को लिये हुए गरुड़ मुड़कर भागने लगा। गरुड़ को भागते देख माल्यवान हँस पड़ा। श्रीहरि उसको आश्वासन दे लौटा लाये ॥ ४५ ॥ विष्णु ने कहा— गरुड़, तुम पल भर युद्ध में रहो। मैं राक्षसों को यम के घर भेजता हूँ। तुम्हारे संग्राम से तो त्रिभुवन आतंकित हो उठता है। इसलिए तुम्हें राक्षसों के साथ इस युद्ध में भागना उचित नहीं ॥ ४६ ॥ तब गरुड़ लौटकर महायुद्ध में आ गया। तब विष्णु ने तुरन्त चक्रबाण छोड़ा उस चक्रबाण ने माली का मस्तक काट गिराया। माल्यवान और सुमाली तेजी से भाग चले ॥ ४७ ॥ निशाचर पुनः लौट आये, वे युद्ध में हार नहीं मानते थे, वे लोहे के मुद्गर का प्रहार करते थे, भय से उनके अंग काँपते थे। माल्यवान बोला— श्रीहरि, तुम ठहरो। आज युद्ध मे तुम्हें यमपुरी भेज दूँगा ॥ ४८ ॥ श्रीहरि ने कहा— रे माल्यवान सुन !

अवनीते थाकिले वधिब सवकारे । प्राणलये याह बेटा, पाताल-भितरे
माल्यबान बले, बिष्णु, कथा बर टान । राक्षसेर संगे युद्धे हाराइबि प्राण ३५०
माल साट दिया तबे गेल माल्यबान । यत शक्ति आछे तोर, तत शक्ति हान
बिक्रम करिया रहे हरिर सम्मुखे । अग्नि बाण श्रीहरि मारेर तार बुके ३५१
अग्नि-बाणे राक्षसेर सर्ब्ब अङ्ग पोड़े । सहिते ना पारे बीर, धाय उभ रड़े
श्रीहरि कोपेते राक्षसे लागे डर । पलाये राक्षस गेल पाताल भितर ५२
श्रीहरि भये सबे प्रबेशे पाताल । कुबेर लङ्काय बसि करे ठाकुराल
प्रथमे लङ्काते राजा माली ओ सुमाली । परे राज्य करिल कुबेर महाबली ५३
चौद्दयुग राज्य करे लङ्काय राबण । तोमार प्रसादे एबे राजा बिभीषण
राबण वधिला तुमि, शक्ति अतिशय । राबण हइयाछिल राक्षस दुर्ज्जय ५४
अगस्त्येर कथा शुनि रामेर उल्लास । कह कह बलि राम करिला प्रकाश

कुवेरेर जन्म, तपस्या, बरलाभ ओ लंकाय राजत्व

श्रीराम बलेन, मुनि, करि निवेदन । ब्रह्म अंशी राक्षस जन्मिल कि कारण ५५

हमने देवता के यहाँ प्रतिज्ञा की है । सारे देवता हमसे अभय पाकर गये हैं । तुझे मारकर देवताओं का डर मिटा दूंगा ।। ४९ ।। धरती पर रहने पर मैं सबको मार डालूंगा । अरे, तुम सभी प्राण लेकर पाताल में चले जाओ । माल्यवान बोला, विष्णु, यह बात बड़ी विषम है, राक्षसों के साथ युद्ध में तुम्हें प्राण गँवाना पड़ेगा ।। ३५० ।। इसके पश्चात् यह चुनौती देकर माल्यवान चला । तेरी जितनी शक्ति है, उतनी शक्ति से प्रहार कर, वह परम विक्रम से हरि के सम्मुख खड़ा हो गया । श्रीहरि ने उसकी छाती पर अग्निवाण मारा ।। ३५१ ।। अग्निवाण से राक्षस का सारा अंग जलने लगा । वह वीर सह नहीं सका और तेजी से धावित हुआ । श्रीहरि के कोप से राक्षस भयभीत हो गये । सभी राक्षस भागकर पाताल में चले गये ।। ५२ ।। श्रीहरि के भय से सबने पाताल में प्रवेश किया । कुबेर लंका में बैठ शासन करने लगा । पहले लंका में माली और सुमाली राजा थे । इसके पश्चात् वहाँ महाबली कुबेर ने राज किया ।। ५३ ।। रावण ने लंका पर चौदह युग (युग = बारह वर्ष) राज किया । तुम्हारे प्रसाद से अब बिभीषण राजा हुआ । अत्यन्त शक्तिमान रावण का तुमने वध किया; रावण दुर्जेय राक्षस बन गया था ।। ५४ ।। अगस्त्य की बात सुनकर राम उल्लसित हुए ।। उन्होंने (आगे की कथा) 'सुनाइये, सुनाइये' कहकर अपना वह उल्लास प्रकट किया ।

कुवेर का जन्म, तपस्या, वर प्राप्ति और लंका में राज्य करना

श्रीराम ने कहा, मुनि, आपसे निवेदन करता हूँ, बताइये कि ब्रह्मा के अंश से भला राक्षस किस कारण उत्पन्न हुए ? ।। ५५ ।।

तेमति सन्तान हय, येरूप औरस । ब्राह्मणेर वीर्य्ये केन जन्मिल राक्षस
विश्वश्रवार पुत्र कुबेर दशानन । दुइ भाइ दुइ जाति हैल कि कारण ५६
कुबेर हइल यक्ष राक्षस रावण । एक वीर्य्ये दुइ जाति हैल दुइ जन
विश्वश्रवार दुइ पुत्र सर्व्व लोके जानि । रावण राक्षस केन, कह महामुनि ५७
अगस्त्य बलेन, राम, कर अवधान ॥ रावणेर जन्म कथा कहि तव स्थान
महामुनि ये पुलस्त्य ब्रह्मार नन्दन । ब्रह्मार समान महातपे तपोधन ५८
सुमेरु पर्व्वत थाके योगासन करि । केलि करिबारे एल अनेक सुन्दरी
देवता-गन्धर्व्व कन्या आइल विस्तर । सखी सखी मिलि केलि करे निरन्तर ५९
तृणबिन्दु-मुनि-कन्या रूपेते अप्सरा । त्रैलोक्यमोहिनी धनि नाम स्वयंबरा
मुनि थाके तपस्याते मुदि दुइ आँखि । सेइखाने नित्य आसे कन्या शशिमुखी ३६०
नाचे गाय मुनिर निकटे करे रङ्ग । प्रतिदिन मुनिर तपस्या करे भंग
कोपेते पुलस्त्य मुनि शाप दिला तारे । बिना-पुरुषेते गर्भ हइबे उदरे ३६१
तबु नाहि शुने कन्या, नाचे गाय सुखे । कोपेते पुलस्त्य मुनि शापिलेन ताके
ना शुन आमार कथा कोन् अहङ्कारे । मुनि शापे कन्यार स्तनेते दुग्ध क्षरे ६२
अपमान पेये गेल पितार आलय । कन्यार दुर्गति देखि पिता स्तब्ध हय
तृणबिन्दु शुनिया सकल बिवरण । पुलस्त्य निकटे गेल मलिन बदन ६३

औरस होता है, संतान भी वैसी ही होती है। ब्राह्मण के वीर्य से भला राक्षस कैसे उत्पन्न हुआ। कुबेर और दशानन दोनों विश्वश्रवा के पुत्र थे। दोनों भाई किस कारण भिन्न-भिन्न जाति के हुए ॥ ५६ ॥ कुबेर यक्ष बना, रावण राक्षस। एक ही वीर्य से उत्पन्न दोनों दो जातियों के बने। सभी जानते हैं कि विश्वश्रवा के दो पुत्र थे, रावण राक्षस किस लिये बना ? महामुनि, बताइये ॥ ५७ ॥ अगस्त्य ने कहा, राम सुनो, मैं रावण का जन्म-वृत्तान्त तुमसे सुनाता हूँ। ब्रह्मा के पुत्र जो पुलस्त्य हैं, ब्रह्मा जैसे महातप से जो तपोधन बने हैं ॥ ५८ ॥ वे सुमेरु पर्वत पर योगासन लगाये हुए थे, वहाँ केलि करने हेतु अनेक सुन्दरियाँ आयीं। वहाँ अनेक देवता-गंधर्व कन्याएँ आयीं, सभी सखियाँ मिलकर निरन्तर केलि करने लगीं ॥ ५९ ॥ तृणविन्दु मुनि की कन्या, रूप में अप्सरा के समान थी; उस त्रैलोक्यमोहिनी-कन्या का नाम स्वयवरा था। मुनि तपस्या में जब नेत्र बंद किये रहते, वह चन्द्रमुखी कन्या नित्य वहीं आया करती ॥ ३६० ॥ वह नाचती-गाती, मुनि के समीप नाना प्रकार के रंग-तमाशे करती रहती और प्रतिदिन मुनि की तपस्या भंग किया करती। तब क्रोधित हो पुलस्त्य मुनि ने उसे शाप दिया— तुम्हारे उदर में बिना पुरुष का ही गर्भ रह जायेगा ॥ ३६१ ॥ इतने पर भी वह कन्या बात नहीं सुनती थी, वह सुख से वैसा ही नाचा-गाया करती। क्रोध से पुलस्त्य मुनि ने उसे शाप दिया— तू मेरी बात किस अहंकार से नहीं सुनती ? मुनि के शाप से कन्या के स्तन से दूध झरने लगा ॥ ६२ ॥ अपमानित हो वह पिता के यहाँ गयी। कन्या की दुर्गति देख पिता स्तब्ध हो गया। तृणबिन्दु सारा विवरण सुनकर, मलिन-बदन हो पुलस्त्य के यहाँ गया ॥ ६३ ॥ पुलस्त्य

प्रणाम करिल गिया पुलस्त्येर पाय । जिज्ञासा करिल मुनि, बसति कोथाय
तृणबिन्दु बले, थाकि एइ गिरी पुरे । दियछ दारुण शाप आमार कन्यारे ६४
अनूढ़ा कन्यार गर्भ शुनि लागे त्रास । स्तन युगे दुग्ध झरे, एकि सर्व्वनाश
मुनि बले, तव कन्या बड़इ चञ्चला । भाङ्गिल तपस्या मोर करि अबहेला ६५
करिल ये कुकर्म्म यौवन अहङ्कारे । दियाछि ताहार मत प्रतिफल तारे
तृणबिन्दु बले, दोष क्षम महाशय । तुमि ना करिले दया जाति नाश हय ६६
मुनि बलिलेन आर किआछे उपाय । बलेछि ये कथा आर खण्डन ना याय
तृणबिन्दु बले, मुनि, कर अबधान । परम तपस्वी तुमि ब्रह्मार समान ६७
तोमार असाध्य किछु नाहिक संसारे । इहाते सकलि तुमि पार करिबारे
बालिका आमार कन्या बिबाह ना हय । हेन कन्या गर्भबती, शुनि लोग भय ६८
शापेते हइल गर्भ, केहना बुझिबे । बलह केमने मुनि, जाति रक्षा हबे
मुनि बले, तृणविन्दु, कि आछे युकति । किरूपे हइबे तब कन्यार निष्कृति ६९
तृणबिन्दु बले, यदि हइले सदय । सेइ कन्या बिभा तुमि कर महाशय
मुनिर हइल मन बिभा करिबारे । तृणविन्दु कन्यादान करिल मुनिरे ३७०
करिल मुनिर सेबा कन्या गुणवती । मुनि तारे दिल वर ह'ये हृष्टमति
मम शापे गर्भ ह'ये पेले अपमान । मम बरे प्रसविबे उत्तम सन्तान ३७१

के चरणों में प्रणाम किया । मुनि ने पूछा— कहाँ रहते हो । तृणविन्दु बोला— इसी गिरि-पुर में रहता हूँ, आपने हमारी कन्या को दारुण शाप दिया है ॥ ६४ ॥ अविवाहित कन्या का गर्भ रहेगा, यह सुनकर त्रास हो रहा है । उसके स्तनों से दूध झर रहा है, यह कैसा सर्वनाश है ? मुनि ने कहा तुम्हारी कन्या बड़ी चंचल है । उसने मेरी अवहेलना कर तपस्या भंग की ॥ ६५ ॥ यौवन के अहंकार में उसने जो कुकर्म किया, उसी के अनुरूप मैंने प्रतिफल दिया है । तृणविन्दु ने कहा— महाशय, मेरा दोष क्षमा करें । आप दया न करेंगे तो जाति नष्ट होगी ॥६६॥ मुनि ने कहा, और कौन-सा उपाय है ? हमने जो बात कह दी, उसका खंडन नहीं हो सकता । तृणबिन्दु बोला— मुनि, आप ब्रह्मा के समान हैं ॥६७॥ संसार में आपका असाध्य कुछ नहीं है । यहाँ आप सब कुछ कर सकते हैं । हमारी कन्या बालिका है, उसका विवाह नहीं हुआ है । ऐसी कन्या गर्भवती है, सुनकर भय होता है ॥ ६८ ॥ यह तो कोई नहीं समझेगा कि इसका गर्भ शाप के कारण हुआ है । कहिये मुनि, जाति-रक्षा कैसे होगी ? मुनि ने कहा— तृणविन्दु, और कौन-सी युक्ति है ? तुम्हारी कन्या का उद्धार कैसे होगा ॥ ६९ ॥ तृणविन्दु ने कहा— यदि आप सदय हुए तो महाशय, आप ही इस कन्या से विवाह कीजिये । मुनि की इच्छा भी विवाह करने की हुई । तृणविन्दु ने मुनि को कन्यादान किया ॥ ३७० ॥ उस गुणवती कन्या ने मुनि की सेवा की । मुनि ने प्रसन्नचित्त होकर उसे वर दिया । मेरे शाप से गर्भवती बनकर तुम्हें अपमान मिला, अब मेरे वर से तुम उत्तम संतान प्रसव करोगी ॥३७१॥ उस गर्भ से महामुनि विश्रवा

सेइ गर्भे विश्वश्रबा जन्मे महामुनि। भरद्वाज-कन्या बिभा करिलेन तिनि
भरद्वाज-मुनि कन्या नाम तार लता। तार गर्भे जन्मिला कुबेर महा रथा ७२
विश्वश्रबा और सेते कुबेरेर जन्म। कुबेर करिल तप अराधिया धर्म्म
कुबेर करिल तप सहस्र वत्सर। तार तप देखिया ब्रह्मार लागे डर ७३
कुबेर ब्रह्मार बरे हइल अमर। अमर हैल आर हैल धनेश्वर
पवन बरुड़ यम अग्नि पुरन्दर। सबे मिलि कुबेरे दिलेन बहुबर ७४
पाइल पुष्पक रथ, कि क'ब बाखान। आपनार हाते ब्रह्मा करिला निर्म्माण
रथ सज्जा करि दिल रथेर सारथि। राजहंस बहे रथ पवनेर गति ७५
दश योजन रथ से अति सुचिकण। पृथिवी भ्रमिते पारे, यदि करे मन
वर पेये कुबेरेर हर्ष हैल मने। प्रणाम करिल गिया पितार चरणे ७६
अतुल ऐश्वर्य ब्रह्मा दिला मोरे दान। सबे मात्र नाहि दिला थाकिबार स्थान
पितार निकटे यक्ष करिल मिनति। आज्ञाकर, कोथा पिता, करिब बसति ७७
विश्वश्रबा बले, तुमि धन-अधिकारी। तोमार बसति योग्य स्वर्ण लङ्कापुरी
राक्षसेर राज्य सेइ पुरी मनोहर। राक्षस पलाये गेछे पाताल-भितर ७८
कुबेर बलेन, पिता, करि निवेदन। राक्षस पलाये गेछे किसेर कारण
बिश्वश्रबा बले, दुष्ट निशाचरगण। दुष्ट देखि रिपु हइलेन नारायण ७९

का जन्म हुआ। उन्होंने भरद्वाज की कन्या से विवाह किया। भरद्वाज मुनि की उस कन्या का नाम लता था जिसके गर्भ से महारथी का जन्म हुआ ।। ७२ ।। विश्वश्रवा के औरस से कुबेर का जन्म हुआ। कुबेर ने धर्म की आराधना करते हुए तपस्या की। कुबेर ने एक सहस्र वर्ष तपस्या की। उसकी तपस्या देखकर ब्रह्मा को भय लगा ।। ७३ कुबेर ब्रह्मा के वर से अमर हुआ। अमर होने के साथ-साथ धनाधिपति भी बना। पवन, वरुण, यम, अग्नि, इन्द्र, इन सबने मिलकर कुबेर को अनेक वर दिये ।। ७४ ।। उसे पुष्पक रथ मिला, उस रथ का क्या वर्णन करें! ब्रह्मा ने अपने हाथ से उसका निर्माण किया था। उन्होंने रथ की सजावट करने के साथ-साथ रथ का सारथी भी दे दिया। उस रथ को राजहंस पवन-वेग से ले चलते थे ।। ७५ ।। दस योजन में फैला वह रथ बहुत ही चिकना था, इच्छा होने पर वह समूची पृथ्वी भ्रमण कर सकता था। वर पाकर कुबेर के मन में हर्ष हुआ, उसने जाकर पिता के चरणों में प्रणाम किया ।। ७६ ।। तात, ब्रह्मा ने मुझे अतुल ऐश्वर्य प्रदान किया है, केवल रहने का स्थान नहीं दिया। पिता के पास आकर यक्ष ने विनती की— पिता, आज्ञा करें, कहाँ जाकर निवास बनाऊँ? ।। ७७ ।। विश्वश्रवा ने कहा— तुम धनाधिपति हो, स्वर्ण-लंकापुरी तुम्हारे रहने योग्य स्थान है। वह मनोहर पुरी राक्षसों का राज्य है। परन्तु राक्षस पाताल भाग गये हैं ।। ७८ ।। कुबेर ने कहा, पिता, आपसे निवेदन करता हूँ, बताइए, राक्षस किस कारण वहाँ से भाग गये हैं। विश्वश्रवा ने कहा— राक्षसगण बड़े दुष्ट हैं। उनकी दुष्टता देखकर नारायण उनके शत्रु बन गये ।। ७९ ।। उन सबने विष्णु के साथ बहुत अधिक युद्ध

बिष्णुर सङ्गेते युद्ध करिल बिस्तर। बिष्णु चक्रे मरिल अनेक निशाचर
कोपेते करिल आज्ञा देव श्रीनिबास। पृथिवीते थाकिले करिब सर्व्वनाश ३८०
विष्णु भये भङ्गदिल यत निशाचर। लुकाइया रहे गिया पाताल-भितर
से अवधि शून्य पड़ि आछे लङ्कापुरी। तथा गिया थाक पुत्र धन-अधिकारी ३८१
पितृ-आज्ञा पेये से कुबेर हृष्ट मति। लङ्कार भितरे गिया करेन बसति

राबण, कुम्भकर्ण ओ बिभीषणेर जन्म, तपस्या ओ बर लाभ

पुष्पकविमाने कुबेर घोरे अन्तरीक्षे। पाताले थाकिया ताहा राक्षसेरा देखे ८२
देखिया द्विगुण खेद बाड़िल अन्तरे। राक्षसेर स्वर्णलङ्का लइल कुबेरे
वसिया मन्त्रणा करे ल'ये मंत्रीगणे। कुबेरेर स्थाने लङ्का लइब केमने ८३
बिश्वश्रवा अधिकारी ह'येछे लङ्कार। पितृधने ताहार ह'येछे अधिकार
पुनः यदि विश्वश्रव पुत्र एक हय। पितृधन बलि से लङ्कार अंशलय ८४
यदि हय दौहित्र विश्वश्रवार-नन्दन। दुइ दिक अधिकारी हवे हेन जन
एतेक मन्त्रणा करि भावित मनेते। बिश्वश्रवाय दान दिब आपन दुहिते ८५
खलेर स्वभाव खल छाड़िते ना पारे। कोपे डाके माल्यवान आपन कन्यारे
निकषा ताहार नाम नवीन-यौवनी। अकलङ्का शशिमुखी मराल गामिनी ८६

किया। विष्णु के चक्र से अनेक निशाचर मारे गये। क्रोधित लक्ष्मीपति विष्णु ने आज्ञा दी— यदि तुम सब पृथ्वी पर रहो तो मैं तुम्हारा सर्वनाश कर डालूँगा ॥ ३८० ॥ विष्णु के भय से सभी राक्षस युद्ध से भाग चले और पाताल में जाकर छिपकर रहने लगे। उसी समय से लंकापुरी सूनी पड़ी हुई है। पुत्र-धन के अधिकारी बनकर तुम वहीं जाकर रहो ॥ ३८१ ॥ पिता की वह आज्ञा पाकर प्रसन्नचित कुबेर ने जाकर लंका में निवास किया।

-रावण, कुम्भकर्ण और विभीषण का जन्म, तपस्या और वर-प्राप्ति

पुष्पक विमान पर बैठ कुबेर अन्तरिक्ष में घूमा करता। पाताल में रहनेवाले राक्षसों ने उसे देखा ॥३८२॥ देखकर उनके अन्तर में दुःख दुगुना बढ़ गया। (वे सोचने लगे) राक्षसों की स्वर्णलंका कुबेर ने ले लिया। वे बैठकर मंत्रियों से मंत्रणा करने लगे कि कुबेर के हाथ से हम लंका किस प्रकार ले सकते हैं ॥ ८३ ॥ विश्वश्रवा लंका का अधिकारी बना है, इस कारण पिता के धन पर कुबेर का अधिकार बना है। पुनः विश्वश्रवा का एक पुत्र यदि हो सके तो वह पिता का धन बताकर लंका का भाग ले सकेगा ॥ ८४ ॥ यदि विश्वश्रवा का पुत्र हमारी बेटी का लड़का (पोता) हो तो वह दोनों ओर का अधिकारी हो सकता है। ऐसी मंत्रणा करने के पश्चात् उन सबने मन में सोचा; अपनी कन्या का दान विश्वश्रवा को करेंगे ॥ ८५ ॥ खलों का स्वभाव खल छोड़ नहीं पाते। रोष से माल्यवान ने अपनी कन्या को बुलाया। उस नवीनयौवना, कलंकहीना, चन्द्रमुखी, मरालगामिनी कन्या का नाम निकषा था। [illegible]

मृगेन्द्र जिनिया कटि, राम रम्भा ऊरु । हरिणाक्षी, कामधनु जिनि युग्म भुरु
जिनि रम्भा तिलोत्तमा निरुपमा नारी । तिल फुल जिनि नासा निकषा सुन्दरी ८७
यौवन-तरङ्गे बक्षे भङ्गिमा सुठाम । पितार चरणे आसि करिल प्रणाम
माल्यवान बले एस, प्राणेर कुमारी । साबित्री समान हओ आशीर्व्वाद करि ८८
शुन बलि कन्या, तुमि रूपेते रूपसी । ताहाते मायाबी बड़, जातिते राक्षसी
एइ उपरोध करि तोमार गोचर । बिश्वश्रवा पाशे गिया माग पुत्रवर ८९
ताहार रमणी ह'ये थाक तार घरे । येरूपे जनमे पुत्र तोमार उदरे
पितार वचने अति हइया लज्जित । ये आज्ञा बलिया चले हइया त्वरित ३९०
एकेत रूपसी बाला भुबनमोहिनी । करिया बिचित्र साज चले सुबदनी
महामुनि बिश्वश्रबा रत तपस्याय । निकषा बिचित्र बेशे सम्मुखे दाँडाय ३९१
बिश्वश्रबा जिज्ञासिल, के तुमि रूपसी । निकषा कहिल, आमि पुत्र-अभिलाषी
पत्नी भावे आलयेते थाकिब तोमार । मुनि बले, थाक प्रिये, गृहेते आमार ९२
सर्व्वमते आदरिणी हबे मम बरे । एक कन्या तिन पुत्र धरिबे उदरे
ज्येष्ठ पुत्र हबे अति विकृत आकार । बाहुबले शासिबेक एतिन संसार ९३
हइबे मध्यम पुत्र से अति-दुर्ज्जन । धरिबे अद्भुत बल, अद्भुत भक्षण
करिबेक अनाचार देव-द्विजे हिंसे । आपनार दोषे तारा मरिबे सबंशे ९४

(की कमर) से बढ़कर थी, जाँघें राम केले के पोधे की भाँति थीं । उसकी आँखें हिरण की आँखों जैसी, दोनों भौंहें इन्द्रधनुष से बढ़कर थीं । वह नारी रंभा, तिलोत्तमा से बढ़कर अनुपम थी । सुन्दरी निकषा की नाक तिल फूल से बढ़कर सुन्दर थी ।। ८६-८७ ।। यौवन-तरंग से उसकी छाती का उभार बड़ा ही मोहक था । उसने आकर पिता के चरणों में प्रणाम किया । माल्यवान ने कहा— प्राणप्रिय कन्या, आओ । आशीर्वाद देता हूँ कि सावित्री के समान बनो ।। ८८ ।। कन्या, सुनो, तुम रूप में रूपसी हो । तिसपर जाति में राक्षसी होने के कारण बड़ी मायाविनी हो । तुमसे यह आग्रह करता हूँ कि तुम विश्वश्रवा के पास जाकर श्रेष्ठ पुत्र की माँग करो ।।८९।। उसकी पत्नी बनकर उसके यहाँ रहो जैसे कि तुम्हारे गर्भ से पुत्र उत्पन्न हो । पिता के वचन से बड़ी लज्जित होकर 'जो आज्ञा' कहकर वह तेज़ी से चली ।।३९०।। एक तो वह बाला रूपसी, भुवनमोहिनी थी, तिस पर वह सुवदनी विचित्र सजावट कर चली । महामुनि विश्वश्रवा तपस्या में निरत थे, निकषा विचित्र वेश से उनके सम्मुख खड़ी हुई ।। ३९१ ।। विश्वश्रवा ने पूछा— रूपसी, तुम कौन हो ? निकषा बोली, मैं पुत्र की अभिलाषा वाली हूँ । मैं पत्नी-रूप से आपके गृह में रहूँगी । मुनि ने कहा— प्रिये, मेरे गृह में रहो ।। ९२ ।। तुम मेरे वर से सब प्रकार से आदरणीय बनोगी । अपने गर्भ में तुम एक कन्या एवं तीन पुत्रों को धारण करोगी । तुम्हारा बड़ा पुत्र बड़े विकृत आकार का होगा । वह तीनों लोकों पर अपने बाहुबल से शासन करेगा ।। ९३ ।। तुम्हारा मँझला बेटा अत्यन्त दुर्जन होगा । वह अद्भुत बल धारण करेगा, अद्भुत भक्षण करेगा । देव-द्विजों की हिंसा कर अनाचार करेगा ।

न्या हबे दुरन्त दुःशीला अति लोभा । सेइ मजाइबे सृष्टि हइया विधबा
लेर उचित पुत्र हइवे कनिष्ठा । देव-द्विज-गुरु भक्त धर्म्मशील श्रेष्ठ ९५
तेक कहिल यदि मुनि महाशय । निकषार दुइ चक्षे वारिधारा बय
ोड़हाते कहे तवे मुनिर गोचर । आमारे केमन आज्ञा कैले मुनिबर ९६
ोमार औरसे पुत्र जन्मिबे येजन । धर्म्मशील ना हइवे ए कथा केमन
ुनि बले, बिषादित ना हओ सुन्दरी । दैबेर घटना आमि खण्डाइते नारि ९७
ग्निर पतन काले चाहियाछ बर । अग्नि हेन दुइ पुत्र हइवे दुष्कर
ुत बलि बिश्वश्रबा तपस्याते यान । निकषा प्रसब कैल चारिटि सन्तान ९८
थम सन्तान हय अपूर्व्व-दर्शन । दश-मुण्ड, कुड़ि बाहु बिंशति लोचन
र्व्व ज्येष्ठ राबण भुवन काँपे डरे । कुम्भकर्ण प्रसव करिल तार परे ९९
बकृत-आकार, देह विषम-लक्षण । तारे देखि अन्तरे काँपिल देबगण
ूतिका गृहेते एसेछिल यत नारी । मुखे पूरे एके बारे सापटिया धरि ४००
न्या रत्न भूमिष्ठ हइल तार परे । मुखेर गठन देखि सबे काँपे डरे
लहलिह करे जिह्वा, बिपरीत माथा । नाकेरे निःश्वास तार कामारेर जाँता ४०१
ङ्गुलिते नख येन कुलार आकार । शूर्पणखा नाम तार बिख्यात संसार
न्या देखि निकषार पुलकित मन । अबशेषे भूम्मिष्ठ धार्म्मिक बिभीषण २

अपने दोष के कारण वे सवंश मारे जायेंगे ॥ ९४ ॥ तुम्हारी कन्या बड़ी दुःशील, दुष्ट और बड़ी लोभी होगी। विधवा बनकर वही इस सारी (राक्षसी) सृष्टि को डुबो देगी। तुम्हारा छोटा बेटा कुलोचित (धर्म-वाला) होगा। वह देव-द्विज-गुरु का भक्त, और श्रेष्ठ धर्मशील होगा ॥ ९५ ॥ मुनि ने जब ऐसा कहा तो निकषा के नेत्रों से अश्रुधारा बह चली। उसने हाथ जोड़ मुनि से कहा— मुनिवर, भला मुझे यह कैसी आज्ञा दे रहे हैं ॥९६॥ आपके औरस से जो पुत्र जन्मेंगे, वे धर्मशील न हों, भला यह कैसी बात है ? मुनि ने कहा— सुन्दरी, तुम दुःखी मत होओ। दैव की घटना को मैं खंडित नहीं कर सकता ॥ ९७ ॥ तुमने अग्नि के पतनकाल में (सूर्यास्त के समय) वर माँगा है। इस कारण तुम्हारे पुत्र अग्नि जैसे प्रचंड प्रभावशाली होंगे। ऐसा कहकर विश्वश्रवा तपस्या करने चले गये। निकषा ने चार संतानें जनीं ॥ ९८ ॥ पहली सन्तान अपूर्व-दर्शन थी, उसके दस सिर, बीस हाथ और बीस आँखें थीं। सबसे बड़े पुत्र उस रावण के डर से संसार काँपने लगा। इसके पश्चात् निकषा ने कुम्भकर्ण को जन्म दिया ॥९९॥ उसका आकार विकृत, शरीर विषम-लक्षणों वाला था। उसे देखकर देवगण अंतर में काँप उठे। सूतिका-गृह में जितनी नारियाँ आयीं थी, उन सबको दोनों हाथों से पकड़कर उसने एक ही बार में मुँह में भर लिया ॥ ४०० ॥ उसके पश्चात् कन्यारत्न का जन्म हुआ। उसके मुँह की आकृति देख सभी डर गये। उसकी जीभ लप-लपा रही थी, सिर उलटे ढंग का था, नाक से सांस चलने पर ऐसा लगता था मानो लुहार की धौंकनी चल रही हो ॥ ४०१ ॥ उँगलियों में नाखून

तिन पुत्र, एक कन्या करिल प्रसब। शुभ समाचार पाय राक्षसेरा सब
अनेक राक्षस सङ्गे एल माल्यबान। बहु धन-रत्न दिया करिल कल्याण ३
क्षणमात्र देखिया सुस्थिर कैल मन। बिष्णुर भयेते करे पाताले गमन
बिश्वश्रवा-आश्रमेते निकषा रहिल। मनुष्य-आचारे तथा कत दिन गेल ४
दशानन बसि आछे निकषार काले। पिता सम्भाषिते एल कुबेर से' काले
कुबेर प्रणाम करे पितार चरणे। सङ्केते निकषा तारे देखाय राबणे ५
आसियाछे कुबेर देखह बिद्यमान। बैमात्रेय भ्राता तब यक्षेर प्रधान
बिधातादियेछे करि धन अधिकारी। सेइ अहङ्कारे भोग करे लङ्का पुरी ६
तव मातामह निर्म्माइल एइ लङ्का। राक्षसेर राज्य पेये नाहि करे शङ्का
उहारे जिनिया लङ्का पार यदि निते। तबे त आमार व्यथा घुचिबे मनेते ७
दशानन बले, माता, ना भाब बिषादे। केड़े ल'ब लङ्कापुरी तोमार प्रसादे
कठोर तपस्या यदि करिबारे पारि। कुबेर जिनिया तबे ल'ब लङ्कापुरी ८
शुनिया मायेर खेद हइया कातर। तपस्या करिते याय हिमाद्रि-शिखर
कुम्भकर्ण दशानन आर बिभीषण। गोकर्ण-बनेते तपकरे तिन जन ९
कुम्भकर्ण तप करे बड़इ दुष्कर। ऊद्‌र्ध्व पदे हेंट माथे थाके निरन्तर
ग्रीष्मकाले अग्निकुंड ज्वाले चारिपाशे। सेइ अग्नि-शिखा गिया लागये आकाशे ४१०

देख निकषा का मन आनन्दित हुआ। इसके पश्चात् धार्मिक विभीषण का जन्म हुआ ॥ २ ॥ उसने तीन पुत्रों एवं एक कन्या का जन्म दिया। यह शुभ समाचार सभी राक्षसों को मिला। अनेक राक्षसों के संग माल्यवान आया और अनेक धन-रत्न देकर कल्याण किया ॥ ३ ॥ संतानों को क्षण भर देखकर उसने मन को सुस्थिर किया और विष्णु के भय से पाताल चला गया। निकषा विश्वश्रवा के आश्रम में रही। मनुष्यों जैसा आचरण करते वहाँ कुछ दिन बीते ॥ ४ ॥ दशानन निकषा की गोद में बैठा था। उसी समय पिता से बात करने वहाँ कुबेर आया। कुबेर ने पिता के चरणों में प्रणाम किया। साथ ही निकषा ने उसे दिखाती हुई रावण से कहा— ॥ ५ ॥ वह सामने देखो, कुबेर आया है। वह तुम्हारा सौतेला भाई यक्षों का प्रमुख है। ब्रह्मा ने उसे धन का अधिकारी बना दिया है। उसी अहंकार से वह लंकापुरी का भोग कर रहा है ॥ ६ ॥ तुम्हारे मातामह (नाना) ने इस लंका का निर्माण किया था। राक्षसों का राज्य पाकर वह शंका नहीं करता, यदि उसे जीतकर लंका ले सको, तब हमारे मन की वेदना मिट सकती है ॥ ७ ॥ दशानन बोला— माँ, विषाद से चिन्ता न करो। तुम्हारे प्रसाद से मैं लंकापुरी को छीन लूंगा। यदि मैं कठोर तपस्या कर सकूं तो कुबेर को जीतकर लंकापुरी ले सकूंगा ॥ ८ ॥ माँ के दुःख की बात सुनकर कातर हो दशानन तपस्या करने हेतु हिमालय के शिखरों की ओर चला। कुंभकर्ण, दशानन और विभीषण, ये तीनों भाई गोकर्ण वन में तपस्या करने लगे ॥ ९ ॥ कुंभकर्ण सिर नीचे किये, पैरों को ऊपर फैलाये निरन्तर रहकर बड़ा दुष्कर तप कर रहा था। ग्रीष्मकाल में अपने चारों

शीतकाले जले थाके दिवस-रजनी। नाहिक आहार निद्रा, श्वासगत प्राणी
कतदिन फल-मूल करिल आहार। राक्षसेर तप देखि देवे चमत्कार ४११
कठोर तपस्या तारा करे तिन जन। वृक्षेर गलित पत्र करये भक्षण
अनाहारे निरन्तर वायु आहारेते। तिन भाइ तपस्या करिल बिधिमते १२
नाहिक शिशिर उष्ण, नाहिक बरिषे। करये कठोर तप राज्य-अभिलाषे
माथाय पिङ्गल जटा, बाकल पिधान। आचरिल तपस्यार येमत बिधान १३
काम-क्रोध-लोभ आदि छाड़ि छय रिपु। अस्थिचर्म्मसार हैल, जीर्णतम बपु
तपस्या करिल पञ्च सहस्र बत्सर। राक्षसेर तपस्याते त्रिभुवने डर १४
यतेक देबतागण चिन्तित अन्तरे। काहार सम्पद लवे दुष्ट निशाचरे
इन्द्र बले, आमार इन्द्रत्व पाछेलया। चन्द्र-सूर्य्य भावे सदा कि जानि कि हय १५
यम बले, लइबेक मम अधिकार। पाताले बासुकि भाबे, कि हबे आमार
ना जानि, कि बर चाहे दुष्ट निशाचर। सकल देवता गेल ब्रह्मार गोचर १६
ब्रह्मार निकटे गिया कहिला तखन। राक्षस तपस्या करे अतीब भीषण
कि जानि काहार पद लइबे काड़िया। निशाचरे सान्त्वना करह तुमि गिया १७
एतेक शुनिया ब्रह्मा गेलेन सत्वर। ब्रह्मा बलिलेन, बर माग निशाचर
रावण बले, बरयदि दिबे महाशय। आमारे अपर बर दिते आज्ञा हय १८

ओर अग्निकुंड जलाकर रखता, जिसकी अग्निशिखाएँ बढ़कर आकाश को छू लेती थीं ॥ ४१० ॥ शीतकाल में वह दिन-रात जल में रहता। उसने आहार-निद्रा छोड़ दिये, प्राण साँस में रह गये थे। कुछ दिन फल-मूल का आहार किया। राक्षसों की तपस्या देख देवता विस्मित हो गये ॥ ४११ ॥ वे तीनों कठोर तपस्या कर रहे थे। वे वृक्षों के सड़े पत्ते भक्षण करते। अनाहार में निरन्तर वायु का आहार करते हुए तीनों भाई विधिपूर्वक तपस्या की ॥ १२ ॥ सर्दी-गर्मी पर ध्यान न देते, और न वर्षा पर। वे राज्य की अभिलाषा से कठोर तप कर रहे थे। सिर पर पिंगल-जटा बढ़ाये, वृक्ष की छाल पहने वे तपस्या के सारे विधान का आचरण करते थे ॥१३॥ काम, क्रोध, लोभ आदि छः रिपुओं को छोड़ दिया। वे सूखकर अस्थि-चर्म मात्र रह गये, उनके शरीर अत्यधिक दुर्बल हो गये। उन तीनों ने पाँच हज़ार वर्ष तपस्या की। राक्षसों की तपस्या से त्रिभुवन में आतंक छा गया ॥ १४ ॥ सभी देवता अन्तर में चिन्तित हो उठे कि ये दुष्ट निशाचर न जाने किसकी सम्पदा ले लेंगे। इन्द्र कहता— संभवतः हमारा इन्द्रत्व ले लेंगे। चन्द्र-सूर्य सदा सोचते, न जाने क्या होगा ॥ १५ ॥ यम कहता— मेरा अधिकार छीन लेंगे। पाताल में वासुकी सोचता— न जाने हमारा क्या हो ! न जाने ये दुष्ट निशाचर कौन सा बर मांगेंगे। यह सोचकर सभी देवता ब्रह्मा के पास गये ॥ १६ ॥ उन सबने ब्रह्मा के पास जाकर कहा— राक्षस बड़ी भीषण तपस्या कर रहा है। न जाने यह किसका पद छीन ले। आप जाकर इन निशाचरों को शान्त करें ॥ १७ ॥ यह सुनकर ब्रह्मा तुरन्त वहाँ गये। कहा, निशाचरो,

ब्रह्मा बलिलेन, तुमि चाह अन्य वर । आमि ना पारिब तोमा करिते अमर
दुष्ट निशाचर जाति, नह धर्म्म पर । मजाइबि सृष्टि तोरा हइले अमर १९
रावण बलिल, यदि ना कर अमर । तोमार स्थानेते नाहि चाहि अन्य बर
यथा इच्छा तथा ब्रह्मा करह गमन । एत बलि पुनः तप करये रावण ४२०
राक्षसेर तप देखि काँपे त्रिभुवन । विषम उत्कट तप करे तिन जन
कुम्भकर्ण करे तप अतीव दुष्कर । हेंट माथा ऊद्ध्र्व मुखे रहे निरन्तर ४२१
ग्रीष्मकाले अग्निकुण्ड ज्वाले चारिपाशे । उपरेते खरतर-भास्कर प्रकाशे
वरिषाते चारिमास थाके पद्मासने । शिला-बरिषण-धारा वहे रात्रिदिने २२
शीतकाले हिम जले थाके निरन्तर । एइ रूपे तप करे अयुत बत्सर
अयुत बत्सर तप तपनेर स्थाने । ऊद्ध्र्व करे दुइ बाहु ठेकिछे गगने २३
अयुत बत्सर तप करे बिभीषण । स्वर्गेते दुन्दुभि बाजे, पुष्प-वरिषण
अयुत बत्सर तप करिल रावण । अनेक कठोर तप करे दशानन २४
एक माथा काटे एक हाजार बत्सरे । ब्रह्मारे आहुति देय अग्निर उपरे
नय माथा काटे नय हाजार वत्सरे । शेष मुण्ड काटिबारे भाविल अन्तरे २५
खड्ग धरि शेष मुण्ड करिते छेदन । ब्रह्मा आसि उपनीत रावण-सदन
ब्रह्मा बलिलेन, तप ना करिह आर । यत चाह तत दिब धन-अधिकार २६

अमर होने का वर दीजिये ।। १८ ।। ब्रह्मा ने कहा, तुम दूसरा कोई वर माँगो । मैं तुम्हें अमर बना नहीं सकूँगा । तुम सब दुष्ट निशाचर जाति के हो, धर्म में तत्पर नहीं रहते । अमर होने पर तो तुम सब सृष्टि को डुबो डालोगे ।। १९ ।। रावण बोला— यदि हमें अमर न करेंगे तो आपसे हम दूसरा वर नहीं चाहते । ब्रह्माजी, आप जहाँ चाहें चले जायें । यह कहकर रावण पुन: तप करने लगा ।। ४२० ।। राक्षसों की तपस्या देखकर तीनों लोक काँप उठे, वे तीनों विषम उत्कट तप कर रहे थे । कुंभकर्ण अत्यन्त दुष्कर तप कर रहा था । निरन्तर वह सिर नीचे और पैर ऊपर उठाये तप करता ।। ४२१ ।। ग्रीष्मकाल में अपने चारों ओर अग्निकुंड जलाये रखता, ऊपर प्रचंड सूर्य तपता रहता । वर्षाकाल में वह चार महीने पद्मासन लगाये रहता, रात-दिन शिला-वृष्टि की धारा सहन करता ।। २२ ।। शीतकाल में निरन्तर हिम-जल में रहता । इस प्रकार उसने दस हज़ार वर्ष तपस्या की । और दस हज़ार वर्ष सूर्य के सम्मुख दोनों हाथ आकाश तक ऊपर उठाये तपस्या की ।। २३ ।। विभीषण ने दस हज़ार वर्ष तपस्या की । स्वर्ग में दुन्दुभी बाजने लगी, पुष्पवर्षा होने लगी । रावण ने दस हज़ार वर्ष तपस्या की । दशानन ने अनेक कठोर तप किये ।। २४ ।। एक एक हज़ार वर्ष पर वह एक सिर काट डालता और ब्रह्मा के नाम पर अग्नि में उसकी आहुति देता । नौ हज़ार वर्षों में उसने नौ सिर काट डाले । उसने अन्तिम मस्तक काटने हेतु मन में चिन्तन किया ।। २५ ।। जैसे ही वह अन्तिम सिर काटने को उद्यत हुआ, ब्रह्मा रावण के पास पहुंचे । ब्रह्मा ने कहा, अब तपस्या न करो । तुम जितना चाहो, धन-अधिकार तुम्हें दूंगा ।। २६ ।। दशानन बोला, यदि

दशानन बले, यदि मोर दिबे वर। तव वरे संसारेते हइव अमर
ब्रह्मा बले, एइ वर बड़इ दुष्कर। छाड़िया अमर वर, चाह अन्य वर २७
रावण बलिल, यदि ना कर अमर। सदय हइया देह चाहि येइ वर
यक्ष रक्ष देवता कि गन्धर्व्व अप्सर। चराचर खेचर पिशाच बिषधर २८
कारो हाते ना मरिब एइ वर देह। सकले जिनिब आमि, ना पारिबे केह
ब्रह्मा बले, ये वर चाहिले निज मुखे। तुष्ट ह'ये सेइ वर दिलाम तोमाके २९
यत यत जाति वीर आछये संसारे। निज बाहुबले तुमि जिनिबे सबारे
बाकि आछे दुइ जाति नर ओ बानर। दशानन बले, मोर ताहे नाहि डर ४३०
बाकि ये बानर-नर धरि भक्ष्य मध्ये। नर आर बानरे कि जिनिबेक युद्धे
रावण बलिछे पुनः करि योड़ कर। काटा मुण्ड योड़ा यावे, देइ एइ वर ४३१
ब्रह्मा बले, दिइ वर शुन हे रावण। मुण्ड काटा गेले तव ना हबे मरण
काटा मुण्ड योड़ा तव लागिवेक स्कन्धे। रावण प्रणाम कैल मनेर आनन्दे ३२
तबे ब्रह्मा उपनीत बिभीषण स्थाने। वर माग विभीषण, याहालय मने
बिभीषण प्रणमिल युड़ि दुइ कर। धर्म्मेते हउक मति, मागि एइ वर ३३
ब्रह्मा बलिलेन तुष्ट हइलाम मने। अक्षय अमर हओ आमार वचने
बिनाश्रम सर्व्वशास्त्रे हइबे निपुण। त्रिभुवने सकले घूषिबे तव गुण ३४

मुझे वर देना चाहते हैं, तो मैं आपके वर से संसार में अमर होना चाहता हूँ। ब्रह्मा ने कहा— वह वर बड़ा ही दुष्कर है, अमर होने का वर छोड़कर तुम दूसरा कोई वर माँगो ॥ २७ ॥ रावण बोला, यदि मुझे अमर नहीं बनाते हैं, तो सदय होके मेरी कामना के अनुसार यह वर दीजिए। यक्ष-रक्ष-देवता या गंधर्व-अप्सरा, या संसार में जितने आकाशचारी, पिशाच, विषधर सर्पादि हैं, ॥ २८ ॥ मैं किसी के हाथ से न मरूँ, यही वर दें। मैं सबको जीत लूँ, हमें कोई जीत न सके। ब्रह्मा ने कहा— अपने मुँह से जो वर माँगा, सन्तुष्ट हो तुम्हें वही वर दे रहा हूँ ॥ २९ ॥ संसार में जितने भी जाति-वीर हैं, अपने बाहुबल से तुम सबको जीत लोगे। इनमें दो जातियाँ नर और बानर बच गयी हैं। दशानन बोला— मुझे इनसे कोई डर नहीं है ॥ ४३० ॥ बची हुई इन नर-वानर जातियों को हम अपने भक्ष्य में गिनते हैं। नर और बानर भला युद्ध में क्या जीतेंगे ? रावण ने पुनः हाथ जोड़कर कहा— मेरे कटे मस्तक जुड़ जायें, यह वर दीजिए ॥ ४३१ ॥ ब्रह्मा बोले, रावण सुनो, तुम्हें वर दे रहा हूँ कि सिर कट जाने पर भी तुम्हारी मृत्यु नहीं होगी। तुम्हारे कटे सिर गले से फिर जुड़ जायेंगे। तब रावण ने प्रसन्नता से उन्हें प्रणाम किया ॥ ३२ ॥ तब ब्रह्मा विभीषण के पास पहुँचे। कहा— विभीषण, मन में जो भावे, वर माँगो। विभीषण ने दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम किया, कहा— मैं यही वर माँगता हूँ कि धर्म में मेरी मति रहे ॥ ३३ ॥ ब्रह्मा ने कहा— मैं मन में संतुष्ट हूँ। मेरे आशीर्वाद से तुम अक्षय, अमर बनो, बिना परिश्रम के तुम सभी शास्त्रों में निपुण बनोगे। त्रिभुवन में सभी तुम्हारे गुण की घोषणा करेंगे ॥ ३४ ॥ इसके बाद वे कुंभकर्ण

तार परे कुम्भकर्णे गेला वर दिते । देखिया त देवगण लागिला काँपिते
देवगण बले, भाग्ये ना जानि कि हय । बिना बरे कुम्भकर्णे देखि लागे डर ३५
विधिर निकटे बर पेले कुम्भकर्ण । धरिया देवतागणे करिबेक चूर्ण
एत भावि देवगण करिया युकति । डाक दिया आनाइला देवी सरस्वती ३६
देवीरे कहिल तबे यत देवगणे । एइ निवेदन माता तोमार चरणे
बिधि गिया छेन कुम्भकर्णे दिते वर । बैस गिया राक्षसेर कण्ठेर उपर ३७
वर दिते प्रजापति चाहिबे यखन । तुमि ब'लो, निद्रा आमि याव अनुक्षण
पाठालेन युक्ति करि यतेक अमर । देवी वसिलेन तार कण्ठेर उपर ३८
विधि बले, किवा वर चाह निशाचर । कुम्भकर्ण बले, निद्रा याव निरन्तर
विरिञ्चि बलेन, बर चाहिले येमन । दिवानिशि निद्रा याह ह'ये अचेतन ३९
सरस्वती चलिलेन आपन भवन । निद्रा याय कुम्भकर्ण हये अचेतन
बर शुनि दशानन एल शीघ्र गति । ब्रह्मार चरणे धरि करये मिनति ४४०
दशानन बले, सृष्टि आपनि सृजिले । फल सह वृक्ष केन काट डाले-मूले
कुम्भकर्ण तोमार सम्बन्ध हय नाति । एमन दारुण शाप ना हय युकति ४४१
निद्रा याबे तव वाक्ये, ना हइबे आन । निद्रा-जागरण प्रभु, करह विधान
कातर हइया धरे ब्रह्मार चरणे । कुम्भकर्ण-वर शुनि हासे देवगणे ४२

को वर देने हेतु गये । उसे देखकर देवगण काँपने लगे । देवगण बोले, न जाने भाग्य में क्या होनेवाला है । बिना वर पाये कुंभकर्ण को देखते ही डर लगता है ।। ३५ ।। ब्रह्मा से वर पाने पर कुंभकर्ण देवताओं को पकड़कर चूर्ण कर डालेगा । ऐसा सोचकर देवताओं ने परामर्श कर युक्ति सोच, देवी सरस्वती को बुलवाया ।। ३६ ।। इसके पश्चात् देवताओं ने देवी से कहा— माता, तुम्हारे चरणों में यही निवेदन है । ब्रह्मा कुंभकर्ण को वर देने हेतु गये हैं । तुम उस राक्षस के कंठ में बैठ जाओ ।। ३७ ।। जब प्रजापति उसे वर देना चाहें, तो तुम कह देना, मैं निरन्तर सोता रहूँगा । यह युक्ति कर सभी देवताओं ने देवी सरस्वती को भेजा । देवी आकर उसके कंठ पर बैठ गयी ।। ३८ ।। ब्रह्मा ने पूछा, निशाचर, तुम कौन-सा वर चाहते हो । कुंभकर्ण बोला, मैं निरन्तर सोता रहूँगा । ब्रह्मा बोले, तुम जैसा वर माँगा, उसके अनुसार दिन-रात अचेत रहकर सोते रहो ।। ३९ ।। सरस्वती अपने भवन को चली गयी, कुंभकर्ण अचेत-सा होकर सोता रहा । उसके वर की बात सुनकर दशानन शीघ्रता से वहाँ आया और ब्रह्मा के चरणों को पकड़कर विनती करने लगा ।। ४४० ।। दशानन ने कहा— आपने सम्पूर्ण सृष्टि की सर्जना की है । अब फल-समेत वृक्ष को किसलिए जड़-मूल से काट रहे हैं । कुंभकर्ण आपके नाते में पोता लगता है । ऐसा दारुण शाप देना उचित नहीं ।। ४४१ ।। आपके वचन से वह सोता रहेगा, इसकी अन्यथा नहीं होगी । प्रभु, आप इसे निद्रा से जगने का भी विधान कर दीजिए । उसने कातर होकर ब्रह्मा के चरण पकड़े । कुंभकर्ण के वर की बात सुनकर देवगण हँसने लगे ।। ४२ ।। ब्रह्मा ने सदय होकर कहा—

सदय हइया ब्रह्मा बलिला बचन। छय मास निद्रा, एक दिन जागरण
अद्भुत धरिबे बल, अद्भुत भक्षण। एकेश्वरे समरे जिनिबे त्रिभुवन ४३
युद्धे केह ना आटिबे कुम्भकर्ण-बीरे। काँचा निद्रा भाङ्गिले याइबे यमघरे
एतेक बलिया ब्रह्मा गेलेन निजस्थाने। दुइ भाइ कुम्भकर्ण स्कन्धे करि आने ४४
बिश्वश्रवा घरेते आइल तिन जन। रावण पाइल वर, काँपे त्रिभुवन

रावण कर्तृक कुबेरेर निकट हइते लङ्काराज्य ग्रहण

शुनिया सुमाली ताहा अति हरषित। पाताल हइते तारा उठिल त्वरित ४५
सुमाली राक्षस उठे ल'ये परिजन। महोदर मारीच प्रहस्त अकम्पन
निज परिवार ल'ये उठे माल्यबान। वज्र मुष्टि बिरूपाक्ष धूम्र खरशान ४६
छिल माल्यबानेर तनयचारि जन। धार्म्मिक से चारि जने निल बिभीषण
माल्यबान कोल दिया कहे दशानने। उठिलाम पुनः सबे तोमार कल्याणे ४७
ये काले तोमार बापे कन्या दिनु दान। सेइ दिन भाबि दुःखे पाब परित्राण
बिष्णुभये ह'येछिनु पाताल निवासी। तोमार भरसा पेये पृथिवीते आसि ४८
राक्षसेर राज्य से कनक लपुङ्कारी। हयेछे से लङ्काय कुबेर अधिकारी
कुबेर निकटे दूत प्रेर एक जन। लङ्कापुरी छेड़े याक, नहे दिक रण ४९

यह छः मास सोयेगा, एक दिन जगेगा। यह अद्भुत बल धारण करेगा, अद्भुत भक्षण करेगा। यह अकेले त्रिभुवन को युद्ध में जीत लेगा ।। ४३ ।। कुम्भकर्ण वीर से युद्ध में कोई पार नहीं पायेगा परन्तु कच्ची नींद टूटने पर यमलोक जायेगा। यह कहकर ब्रह्मा अपनी जगह चले गये। दोनों भाई कुम्भकर्ण को कन्धे पर उठाकर ले आये ।। ४४ ।। तीनों विश्वश्रवा के घर आये। रावण को वर मिला, इससे त्रिभुवन कांपने लगा।

रावण द्वारा कुबेर के पास से लंका राज्य-ग्रहण करना

रावण की वर-प्राप्ति के बारे में सुनकर सुमाली बड़ा हर्षित हुआ। वे सभी राक्षस पाताल से शीघ्र ही ऊपर आ गये ।।४५।। राक्षस सुमाली महोदर, मारीच, प्रहस्त, अकम्पन आदि अपने परिजनों को लेकर ऊपर आ गया। माल्यवान भी अपने परिवार के लोगों को लेकर ऊपर आया। वज्रमुष्ठि, बिरूपाक्ष, धूम्र, खरशान माल्यवान के ये चार पुत्र थे। उन चारों धार्मिकों को विभीषण ने अपने साथ ले लिया। माल्यवान ने दशानन को आलिंगन कर कहा, तुम्हारे अनुग्रह से ही हम सभी उबरकर ऊपर आये हैं ।। ४६-४७ ।। जिस समय मैंने तुम्हारे पिता को कन्यादान किया था, उस दिन का स्मरण कर हमें दुःख से परित्राण मिलेगा। विष्णु के भय से हम पाताल-निवासी बने थे। अब तुम्हारा भरोसा पाकर पृथ्वी पर आये हैं ।। ४८ ।। राक्षसों का राज्य वह सुवर्णमयी लंकापुरी है। कुबेर उस

अनावासे एरूप रहिब कतकाल । लङ्कापुरी केड़े ल'ये कर ठाकुराल
रक्ष बले, मातामह, कि कह आपनि । ज्येष्ठ भ्राता महागुरु पितृ तुल्य मानि ४५०
ज्येष्ठ-सङ्गे विसंवाद कोन् जन करे । हेन वाक्य न बलिह सभार भितरे
रावण एतेक यदि कहे माल्यवाने । प्रहस्त डाकिया बले सभा विद्यमाने ४५१
कुबेरेर मान राख, ज्ञातिगण दुःखी । त्रिभुवने के आछे भ्रातार सुखे सुखी
देख देवदानव गन्धर्ब्ब दैत्यगण । भ्राता के मारिया राज्य लय कत जन ५२
ताहार प्रमाण देख कहि तव स्थान । मन दिया शुन तवे ताहार विधान
वैमात्रेय भाइ मारे देब पुरन्दर । भाइ मारि स्वर्गेते हइल दण्डधर ५३
गरुड़ेर भाइ नाग सर्ब्बलोके जाने । गरुड़ पाइले खाय हेन सर्पगणे
सर्ब्बजन भाइ मेरे करे ठाकुराल । भायेर गौरव के रेखेछे कतकाल ५४
गुरु बलि मान, किन्तु ज्ञाति मनोदुःख । कुबेरे प्रभुत्व करे तोमार कि सुख
पूर्ब्बे जननी के तुमि दियाछ आश्वास । जिनिया लइब लङ्का कुबेरेर पाश ५५
भुलिले से सब कथा तुमि कि कारण । इहा शुनि उद्योगी हइल दशानन
तखनि डाकिया दूते कहिछे रावण । दूत, तुमि याह शीघ्र, कह बिवरण ५६
रावणेर दूत गिया नोआइल माथा । योड़हाते कुबेरेर स्थाने कहे कथा
राक्षसेर राज्य एइ स्वर्ण-लङ्कापुरी । ए-स्थाने केमने रवे धन-अधिकारी ५७

वह या तो लंकापुरी छोड़ जाये, या युद्ध करे ।। ४९ ।। बिना निवास के इस तरह से कितने समय रहेंगे । लंकापुरी को छीनकर तुम वहाँ अपना प्रभुत्व स्थापित करो । राक्षस रावण बोला, मातामह, आप क्या कहते हैं ? बड़े भाई को मैं महागुरु, पितृ-तुल्य मानता हूँ ।। ४५० ।। बड़े भाई के संग झगड़ा भला कौन करेगा ? सभा में आप ऐसी बात न कहें । रावण ने जब माल्यवान से ऐसा कहा, तो प्रहस्त ने सभाजनों के सम्मुख पुकारकर कहा— ।। ४५१ ।। तुम कुबेर का मान रखते हो, उधर तुम्हारे कुटुम्बी जन दुःखी हैं । भला, भाई के सुख से त्रिभुवन में कौन सुखी हो सका है । देव, दानव, गंधर्व, दैत्यों को देखो, कितने लोग भाई को मार-मारकर राज्य ले रहे हैं ।। ५२ ।। उसका प्रमाण तुमसे कहता हूँ, उनके संबंध में ध्यान देकर सुनो । देवराज इन्द्र ने अपने सौतेले भाई को मार डाला था और भाई को मारकर स्वर्ग का शासक बना ।। ५३ ।। सब जानते हैं कि नाग गरुड़ के भाई हैं । ऐसे सर्पों को पाते ही गरुड़ उन्हें खा डालते हैं । सभी लोग भाइयों को मारकर प्रभुत्व करते हैं, भाई का गौरव भला किसने कितने समय रखा है ? ।। ५४ ।। तुम उसे भाई मानते हो पर तुम्हारे कुटुम्बी मनोदुःख में हैं । कुबेर प्रभुत्व करता है तो उससे तुम्हें कौन-सा सुख मिल रहा है ? ।। ५५ ।। पहले ही तुमने अपनी माता को आश्वासन दे रखा है कि मैं कुबेर के हाथ से लंका जीत लूंगा । तुम भला वे सारी बातें भूल किसलिए गये ? यह सुनकर दशानन युद्ध करने हेतु उद्योगी हुआ । उसी समय दूत को बुलाकर रावण ने कहा— दूत, तुम शीघ्र जाकर (कुबेर से) यह विवरण कह सुनाओ ।। ५६ ।। तब दूत ने जाकर कुबेर को प्रणाम कर, हाथ जोड़ यह बात कहने लगा— यह

आपन गौरव राख रावण-सम्मान । छाड़िया कनक-लङ्का याह अन्य स्थान
दुरन्त राक्षस जाति, बुद्धिविपरीत । लङ्का दिया रावणेरे करह पिरीत ५८
मातामह राज्य ताइ अधिकार करे । कि सम्पर्के आछ तुमि लङ्कार भितरे
रावण-गौरव राख शुन लङ्केश्वर । छाड़िया कनक-लङ्का याह स्थानान्तर ५९
रावणेर दूत यदि एतेक कहिल । कुबेर पितार काछे सब जानाइल
विश्वश्रवा बले, शुन धन-अधिकारी । दुरन्त राक्षस, आमि कि करिते पारि ४६०
ब्रह्मार वरेते नाहि माने बाप-भाइ । थाक गिया स्थानान्तरे द्वन्द्वे काज नाइ
कैलासपर्व्वते याह, यथा भागीरथी । सेइ खाने गिया तुमि करह वसति ४६१
विश्वश्रवा वचने कुबेर पुलकित । रावणेर दूत गेल कहिते त्वरित
कुबेर पाठाय दूत करिया मिनति । मम आशीर्व्वाद बल रावणेर प्रति ६२
छाड़िया कनक-लङ्का याब स्थानान्तर । किन्तु नाहि अंशा-अंशी धनेर उपर
त्रिशकोटि यक्षे वहे कुबेरेर धन । लङ्का छाडि कैलासेते करिल गमन ६३
लङ्कापेये राक्षसेर परम पिरीति । लङ्काते करये राज्य राक्षस दुर्म्मति
मन्त्रणा करिया तबे यत निशाचरे । रावणे करिल राजा लङ्कार भितरे ६४

स्वर्ण लंकापुरी राक्षसों का राज्य है। धनाधिपति कुबेर, आप यहाँ किस प्रकार रहेंगे ? ॥ ५७ ॥ आप अपना गौरव तथा रावण के सम्मान की रक्षा कीजिये, सोने की लंका छोड़कर अन्य स्थान में चले जाइये। राक्षस-जाति बड़ी दुष्ट है, बुद्धि उलटी है। आप रावण को लंका सौंपकर मैत्री कर लीजिये ॥ ५८ ॥ अपने नाना का राज्य वह अधिकार करेगा। आप लंका में किस नाते रह रहे हैं ? लंकेश्वर कुबेर, सुनिये, रावण का मान रखिये, स्वर्ण लंका छोड़कर अन्यत्र चले जाइये ॥ ५९ ॥ जब रावण के दूत ने ऐसा कहा तब कुबेर ने अपने पिता से सब कुछ बताया। विश्वश्रवा ने कहा, धनाधिपति कुबेर, सुनो, ये राक्षस बड़े दुष्ट हैं, मैं भला क्या कर सकता हूँ ? ॥ ४६० ॥ ये ब्रह्मा के वर के कारण बाप-भाई किसी को मानते नहीं। इनसे विवाद करने की आवश्यकता नहीं, तुम अन्यत्र जाकर रहो। जहाँ भागीरथी निकलती है, तुम उस कैलास पर्वत पर चले जाओ। वहीं जाकर तुम निवास करो ॥ ४६१ ॥ विश्वश्रवा के कथन से कुबेर पुलकित हुआ। रावण का दूत वह समाचार कहने हेतु वहाँ से वेग से चला। कुबेर ने दूत से विनय वचन कह भेजा, रावण से तुम मेरा आशीर्वाद कहना ॥६२॥ हम सोने की लंका छोड़कर अन्यत्र चले जायेंगे। परन्तु सम्पत्ति पर भाग-बँटवारा नहीं होगा। तीस करोड़ यक्ष कुबेर के धन को ढोकर ले चले। कुबेर लंका छोड़कर कैलास में चला आया ॥ ६३ ॥ लंका को पाकर राक्षसों को बड़ा हर्ष हुआ। दुर्मति राक्षस लंका में राज्य करने लगे। सारे निशाचरों ने मंत्रणा कर रावण को लंका का राजा बनाया ॥ ६४ ॥

रावण प्रभृतिर बिबाह ओ मेघनादेर जन्म-कथा

मृगया करिते गेल भाइ तिन जन । मयदानबेर सने हैल दरशन
कन्यारत्न आछे तार सर्व्वलोके जानि । त्रिभुवन जिनि कन्या रूपेते मोहिनी ६५
कन्या देखि पिता-माता बड़इ भावित । कारे बिभादिब कन्या, न जानि बिहित
रावण बले, कन्या लये केन आछ बने । दानब आपन-कथा कहे, राजा शुने ६६
दानव बलिल, अवधान महाशय । कोन्‌कुले जन्म तब देह परिचय
रावण बले, आमि विश्वश्रबार नन्दन । राक्षसेर राजा आमि नाम दशानन ६७
मय वले, आमि बिश्वश्रवाय भाल जानि । बिबाह करह मोर कन्यारे आपनि
कन्यादान करे मय पाइया कौतुक । शक्ति नामे शेल पाट दिलेन यौतुक ६८
यमनेर भग्नी शेल जगते विदित । सेइ शेले हइलेन लक्ष्मण मूर्च्छित
रावणेर ब्रह्मशाप दानव ना जाने । कन्यादान करिया बिस्मित हैल मने ६९
वलिराज दौहित्री से नामे वज्रज्वाला । कुम्भकर्ण बिभाकैल रूपे चन्द्र-कला
सात योजन दीर्घ-अङ्ग कुम्भकर्ण बीर । तिन योजन दीर्घाकार कन्यार शरीर ४७०
बर कन्या उभये हइल सुशोभन । कि राजयोटक ब्रह्मा करिल सृजन
सरमा नामेते छिल गन्धर्व्व कुमारी । बिभीषण बिभाकैल परमासुन्दरी ४७१

रावण आदि का विवाह और मेघनाद की जन्म-कथा

तीनों भाई शिकार खेलने गये। वहाँ मय दानव से उनकी भेंट हुई। सारे लोकों में प्रसिद्ध उसकी एक कन्या थी। वह कन्या रूप में तीनों लोकों में सबसे बढ़कर सुन्दरी मोहिनी थी ॥ ६५ ॥ उस कन्या को देख माता-पिता बड़े चिन्तित थे कि यथोचित न जानकर किससे इस कन्या को विवाह दें। रावण बोला, कन्या को लेकर तुम वन में क्यों रहते हो ? मयदानव ने अपनी बात कही, राजा रावण ने सुनी ॥६६॥ दानव बोला, महाशय, ध्यान से सुनिये। आपका जन्म किस कुल में है, परिचय दें। रावण बोला, मैं विश्वश्रवा का पुत्र हूँ। राक्षसों का राजा हूँ। मेरा नाम दशानन है ॥ ६७ ॥ मय ने कहा, मैं विश्वश्रवा को अच्छी तरह जानता हूँ। आप मेरी कन्या से विवाह कीजिये। मय दानव ने हर्षित होकर कन्यादान किया और उसने दहेज में "शक्ति" नाम का अस्त्र प्रदान किया ॥ ६८ ॥ वह शक्ति यम की बहिन के रूप में विश्वविख्यात है। उसी शक्ति से लक्ष्मण मूर्च्छित हो गये थे। रावण को मिले ब्रह्मशाप के बारे में मय दानव नहीं जानता था। कन्यादान कर वह मन में विस्मित हुआ ॥ ६९ ॥ राजा बलि की पोती जिसका नाम वज्रज्वाला था, रूप में चन्द्रकला-सी उस बाला से कुम्भकर्ण का विवाह करवाया। वीर कुंभकर्ण का शरीर सात योजन लम्बा था, उस कन्या का शरीर तीन योजन दीर्घाकार था ॥ ४७० ॥ वर-कन्या दोनों ही बड़े सुशोभित हुए। ब्रह्मा ने वह कैसी राज-जोड़ी बनाई थी। सरमा नाम की एक गंधर्व-कुमारी थी, उस परमासुन्दरी से विभीषण ने विवाह किया ॥ ४७१ ॥

मृगयाते गिया ब्रिमाकेल तपोबने। बिबाह करिया घेर एल तिन जने
मन्दोदरी-गर्भे जन्मे पुत्र मेघनाद। तारे देखि देबगणे गणये प्रमाद ७२

मेघेर गर्ज्जने गर्ज्जे लङ्कार भितरे। देब दैत्य त्रिभुवन कांपे यार डरे
कौतुके रावण-राजा आछे लङ्कापुरे। देब-दानबेर कन्या लये केलि करे ७३

लङ्कापुरे कुम्भकर्ण निद्रा-अचेतन। त्रिशत् योजन घर बान्धिल रावण
परिखा योजन दश आड़े परिसर। कुम्भकर्ण निद्रायाय ताहार भितर ७४

त्रिशकोटि राक्षसे गृहेर द्वार राखे। कुम्भकर्ण निद्रायाय आपनार सुखे
चारि चारि क्रोश युड़े घरेर दुआर। रतन पालङ्के शुये बीर अबतार ७५

शुन्य हैते दुष्ट हय अर्द्ध कलेबर। कुम्भकर्ण देखि कांपे यतेक अमर
कुम्भकर्ण निद्राभाङ्गि उठिबे ये-दिने। स्वर्ग-मर्त्य-पाताले सकले ताहा जने ७६

सेइदिन सकलेते साबधाने फिरे। देबगण कम्पमान अमर-नगरे
कुम्भकर्ण निद्रायाय घरेर भितरे। देखिया त पुरन्दर चिन्तित अन्तरे ७७

रावण बिधिर बरे कारे नाहि माने। बेब-दानबेर कन्या ध'रे ध'रे आने
इंद्रेर नन्दनबन आने उपाड़िया। कार साध्य निबारण करिबे आसिया ७८

मुनि ऋषि-देबतार हिंसा करे फिरे। यम नाहि निद्रायाय रावणेर डरे

उन तीनों ने शिकार खेलने जाकर तपोवन में विवाह किया और विवाह के पश्चात् तीनों घर लौटे। मन्दोदरी के गर्भ में पुत्र मेघनाद का जन्म हुआ। उसे देखकर देवगण ने भयंकर संकट देखा ॥ ७२ ॥ वह लंका में मेघ-गर्जन की भाँति गरजने लगा। देव-दैत्य त्रिभुवन उसके डर से काँपने लगे। राजा रावण बड़े आनन्द से लंकापुरी में रहता था और देव-दानवों की कन्याओं को लेकर केलि करता था ॥ ७३ ॥ लंका में कुंभकर्ण निद्रा में अचेत पड़ा रहता था। उसके लिए रावण ने तीस योजन लम्बा घर बनवाया। चौड़ाई में उसकी खाईं दस योजन थी। कुंभकर्ण उसके अन्दर सोता था ॥ ७४ ॥ तीस करोड़ राक्षस घर के दरवाज़ों का पहरा देते थे। कुम्भकर्ण अपने आनन्द से सोता रहता था। उसके घर के द्वार चार-चार कोश बड़े थे। वीर-अवतार कुंभकर्ण रत्नों की पलंग पर सोता था ॥ ७५ ॥ उसका आधा शरीर आकाश से दिखाई देता था। कुम्भकर्ण को देखकर सभी देवता काँपते रहते थे। जिस दिन कुंभकर्ण नींद से जगता था, स्वर्ग-मर्त्य-पाताल में सभी लोग उसे जानते थे ॥ ७६ ॥ उस दिन सभी बड़ी सावधानी से घूमा-फिरा करते। अमरावती में देवगण काँपते रहते। कुंभकर्ण घर के अन्दर सोता रहता था, उसे देख-देखकर इन्द्र मन में बड़ा चिन्तित रहता ॥ ७७ ॥ ब्रह्मा के वर के कारण रावण किसी को नहीं मानता था। वह देव-दानवों की कन्याओं को पकड़-पकड़कर लाता था। वह इन्द्र के नन्दन वन से पौधे उखाड़ लाता था। उसे रोक सके ऐसा सामार्थ्य किसमें था ? ॥ ७८ ॥ वह मुनि-ऋषि-देवताओं की हिंसा करता फिरता। रावण के डर से यम को निद्रा नहीं आती थी।

रावणेर कुबेर-बिजयार्थ यात्रा

रावणेर यत कर्म्म कुबेर शुनिला। बुझाइते धर्म्म तारे दूत पाठाइला ७९
दूत गिया रावणेरे नोआइला माथा। योड़हात करि कहे कुबेरेर कथा
दूत बले, महाराज, तब हित चाइ। तोमार बुझाते पाठाइल तब भाइ ४८०
बिश्वश्रबा पुत्र तुमि, कुले अबतार। तोमारे करिते हय उत्तम आचार
देबतार हिंसा कर, देबगण दुःखी। ऋषि-तपस्वीर हिंसा कोन् शास्त्रे लिखि ४८१
देबता-ऋषिर कोपे बिपरीत घटे। साधुजने हिंसा करि पड़ेत संकटे
देबतार शापे दुःख पाय निरन्तर। आमार ठाकुर यक्षराज धनेश्वर ८२
करिलेन उग्रतप मलय-शिखरे। सर्ब्बदा बिराजे तथा पार्ब्बती शंकरे
छद्मरूपे भ्रमेण, चिनिते केह नारे। दुजने करेन केलि मलय-शिखरे ८३
केलि क्रीड़ा-कौतुकेते छिलेन दु'जने। कुबेर चाहियाछिल बाम चक्षु-कोणे
कुपिलेन भबानी कुबेर दरशने। कुबेरेर बाम चक्षु पुड़े सेइ क्षणे ८४
एक चक्षु पुड़े गेल, शुन लङ्केश्वर। एक चक्षे तप करे सहस्र बत्सर
तथापि ना घुचिल देबीर कोपानल। कुबेरेर आँखि आछे हइया पिङ्गल ८५
देबतार शाप कभु ना याय खण्डन। देबता गणेर हिंसा कर कि कारण

कुबेर को जीतने के लिए रावण की यात्रा

कुबेर ने रावण के सारे कर्मों के बारे में सुना। उसे समझाने के लिए अपना दूत भेजा ॥ ७९ ॥ दूत ने जाकर रावण को सिर झुकाया और हाथ जोड़कर कुबेर की कही बातें कहने लगा। दूत ने कहा—महाराज, तुम्हारे हित को देखते हुए तुम्हें समझाने हेतु तुम्हारे भाई ने मुझे भेजा है ॥ ४८० ॥ तुम विश्वश्रवा के पुत्र हो, उनके कुल में अवतरित हुए हो, तुम्हें उत्तम आचार का पालन करना चाहिए। तुम देवताओं की हिंसा करते हो, इससे देवगण दुखी हैं। भला, ऋषि-तपस्वियों की हिंसा करना किस शास्त्र में लिखा है ? ॥ ४८१ ॥ देवता और ऋषियों के शाप से अमंगल होता है। जो साधुओं से हिंसा करता है, वह संकट में पड़ता है। देवताओं के शाप से वह निरन्तर दुःख पाता है। हमारे प्रभु यक्षराज धनेश्वर कुबेर ने उस मलय-पर्वत-शिखर पर घोर तपस्या की थी। जहाँ पार्वती और शंकर सदा विराजमान रहते हैं। वे अवेश धारण कर घूमा करते हैं, उन्हें कोई पहचानता नहीं। दोनों मलय-शिखर पर केलि किया करते हैं ॥ ८२-८३ ॥ दोनों केलि-क्रीड़ा-कौतुक में लगे थे। जिसे कुबेर ने अपनी बायीं आँख के कोने से कटाक्ष कर देखा था। कुबेर के वैसे देखने पर भवानी कुपित हो गयी, इससे कुबेर की बायीं आँख उसी क्षण जल गयी ॥८४॥ हे लंकेश्वर रावण, सुनो, उनकी एक आँख जल गयी। उन्होंने एक ही आँख से हज़ार वर्ष तक तपस्या की। फिर भी देवी का क्रोध रूपी अनल शान्त नहीं हुआ। कुबेर की वह आँख पीली हो गयी ॥ ८५ ॥ देवता का शाप कभी खंडन नहीं हो सकता। तुम देवताओं की हिंसा

तब अमङ्गल देव चिन्तिबे सदाइ। तोमा बुझाइते पाठाइल तब भाइ ८६
एत यदि कहे दूत रावण-गोचरे। शुनिया रावण-राजा कुपिल अन्तरे
आमाके पाठाय दूत आपना ना जाने। तोरे काटि आजि तारे बधिब जीवने ८७
ज्येष्ठ भ्राता बलि तारे एतदिन सहि। निकट मरण तार शोन् तोरे कहि
कोन् अहङ्कारे एत कहिल कुकथा। हाते खाण्डा करिया दूतेर काटे माथा ८८
दूते काटिसाजिल कुवेर काटि बारे। दिग्विजय करिते साजिल लङ्केश्वरे
त्रिभुवन जिनिते साजिल दशानन। रावणेर रण साजे काँपे देवगण ८९
शत अक्षौहिणी साजे मुख्य सेनापति। साजिया रावण सङ्गे चले शीघ्रगति
शत अक्षौहिणी निल जाठि ओ झकड़ा। तिन कोटि साजिया चलिल ताजा घोड़ा ४९०
तिन कोटि बृन्द रथ करिल साजन। माणिकेर चाका रथ सोनार गठन
राहुत पाहुत हस्ती साजिल अपार। आछुक अन्येर काज देवे चमत्कार ४९१
सेनापति गण नड़े बड़ बड़ बीर। ये-सबार बाणाघाते गिरि हय चिर
अकम्पन प्रहस्त चले शट् ओ निशट्। शोणिताक्ष बिरुपाक्ष रणेते उत्कट ९२
धूम्राक्ष-भास्कर आदि तपन पनस। बड़ बड़ बीर साजे अनेक राक्षस
मारीच राक्षस चले नाना माया धरे। यत यत बीर छिल लङ्कार भिहरे ९३

किसलिए करते हो? इससे तो देवता सदैव तुम्हारा अमंगल चिन्तन ही करेंगे। इस कारण तुम्हारे भाई ने तुम्हें समझाने के लिए भेजा है ॥ ८६ ॥ जब उस दूत ने रावण से ऐसा कहा, तो उसे सुनकर राजा रावण अन्तर में कुपित हो गया। अरे वह कुवेर अपनी गति न समझकर मेरे पास दूत भेजता है; मैं तुझे काटकर उसके भी प्राण ले लूँगा ॥ ८७ ॥ उसे तो बड़ा भाई मानकर इतने दिन सहता आया हूँ। सुन, तुझसे कहता हूँ, उसका मरण निकट है। किस अहंकार से उसने ऐसी बुरी बात कही है। यों कहकर हाथ में खड्ग लेकर उसने दूत का सिर काट लिया ॥ ८८ ॥ दूत को काटकर वह कुवेर को काटने हेतु युद्ध सज्जा की। लंकेश्वर रावण दिग्विजय करने हेतु लंकेश्वर ने तैयारी की। दशानन त्रिभुवन विजय करने हेतु रण-सज्जा की। रावण की उस रण-सज्जा से देवगण काँपने लगे ॥ ८९ ॥ मुख्य सेनापति ने सौ अक्षौहिणी सेना सजाकर शीघ्रता से रावण के संग चला। सौ अक्षौहिणी भाले और गाड़ियाँ लेकर वह (महाबली) चला और तीन करोड़ ताजा घोड़े सजाकर चला ॥ ४९० ॥ तीन करोड़ वृन्द रथ सजाये जिनके पहिये रत्ननिर्मित और रथ सोने से बने थे। चालक, महावत-समेत अपार हाथियों की सेना सजायी। और तो और ये दूसरों के लिए भी विस्मयकारी कर्म करते थे ॥ ४९१ ॥ बड़े-बड़े वीर सेनापति चलने लगे जिनके बाणों के आघात से पर्वत फटकर छिन्न-भिन्न हो जाते थे। अकम्पन, प्रहस्त, शट्, निशाट्, शोणिताक्ष, रण में उत्कट वीरता दिखानेवाला विरूपाक्ष ॥ ९२ ॥ धूम्राक्ष, भास्कर, तपन, पनस आदि बड़े-बड़े वीर समेत अनेक राक्षस सजकर चले। अनेक माया धारण करनेवाला राक्षस मारीच चला। लंका में जितने वीर थे ॥ ९३ ॥ राक्षसों के [illegible]

रक्षो-महापाव चले खर ओ दूषण । बाँका मुख ओष्ठवक्र घोर दरशन
शुक सारण शार्दूल चले जम्बुमाली । वज्रदन्त विद्युज्जिह्व चले महाबली ९४
महापाश महोदर दुइ सहोदर । चलिल से मकराक्ष महाधनुर्द्धर
त्रिभुवन जिनिते रावण राजा साजे । ढाक ढोल आदि करि नाना वाद्य बाजे ९५
लङ्काय रहिल मेघनाद बिभीषण । कुम्भकर्ण रहिल निद्राय अचेतन
खाण्डा खरशाण टाङ्गि अति भयङ्कर । नाना अस्त्रे साजिया चलिल लङ्केश्वर ९६
नाना आभरण प'रे दशानन साजे । नाहिक एमन रूप त्रिभुवन-माझे

रावणेर सहित युद्धे कुबेर सेनापति योगवृद्ध ओ मणिभद्रेर पराजय

ससैन्येते रावण सागर हैल पार । कैलास पर्व्वते उठि करे मार मार ९७
दूत गिया कहिल कुबेर बराबर । युझिबारे आइल रावण निशाचर
त्रिश कोटि यक्षे रोषे कुबेर प्रेरिल । यक्ष ओ राक्षसे युद्ध भीषण हइल ९८
राक्षस बरिषे बाण यक्षेर उपर । जाठा-जाठि शेल-शूल मुषल-मुद्गर
पलाय सकल यक्ष राक्षसेर डरे । रावणेर युद्ध केह सहिते ना पारे ९९
यक्षेर उपरे करे बाण बरिषण । पलाय सकल यक्ष, नाहि सहे रण
योगवृद्ध नामे कुबेरेर सेनापति । युझिते कुबेर तारे दिला अनुमति ५००
बिष्णु चक्र समान ताहार चक्रे धार । राक्षस उपरे करे बाण अवतार

जिनके मुँह टेढ़े थे, ओंठ टेढ़े हैं, उनका रूप देखने में घोर था। शुक-सारण-शार्दूल-जम्बुमाली। महाबली वज्रदन्त, विद्युज्जिह्व ॥ ९४ ॥ महोदर और महापाश दोनों भाई-भाई थे वे और राक्षस महाधनुर्धर मकराक्ष भी चला। राजा रावण ने तीनों लोक जीतने की अभिलाषा से ऐसा साज बना लिया। नगाड़े, ढोल समेत अनेक बाजे बजने लगे ॥ ९५ ॥ मेघनाद और विभीषण लंका में रह गये। कुम्भकर्ण तो निद्रा में अचेतन पड़ा रहा। वे खड्ग, बाण, फरसे आदि भयंकर अस्त्रों से सजकर लंकेश्वर रावण चला ॥ ९६ ॥ अनेक अलंकार पहनकर राजा रावण सुशोभित था। ऐसा सुन्दर रूप त्रिभुवन में और नहीं हैं।

रावण के साथ युद्ध में कुबेर के सेनापति योगवृद्ध और मणिभद्र की पराजय

रावण ने सेना-सहित सागर पार किया और कैलास पर्वत पर चढ़कर मार-मार करने लगे ॥ ९७ ॥ दूत ने कुबेर से जाकर कहा कि निशाचर रावण युद्ध करने आया है। कुबेर ने रोष में भरकर तीन कोटि यक्षों को भेजा। तब यक्षों और राक्षसों में भयंकर युद्ध हुआ ॥ ९८ ॥ राक्षस यक्षों पर बाण-वर्षा करने लगे। भाले, बरछे, शक्ति, शूल, मूसल, मुद्गर आदि चलाने लगे। राक्षसों से डरकर सारे यक्ष भागने लगे। रावण के साथ लड़ाई में कोई टिक नहीं सकता था ॥ ९९ ॥ राक्षस यक्षों पर बाण-वर्षा कर रहे थे, युद्ध में सहन न कर पाने हेतु सभी यक्ष भागने लगे। योगवृद्ध नाम का कुबेर का सेनापति था उसे कुबेर ने लड़ने की अनुमति दी ॥ ५०० ॥ उसके चक्र की धार विष्णु के चक्र की भाँति थी।

चक्रघाते महोदर हइल कातर । रुषिल रावण राजा लङ्कार ईश्वर
कोपेते रावण करे बाण-वरिषण । भङ्गदिल योगवृद्ध नाहि सहे रण १
पलाइया याय तबे आओयासेर गड़े । द्वारेर निकटे रहे कपाटेर आड़े
रथ हैते रावण पड़िल दिया लम्फ । सर्परे धरिते येन गरुड़ेर झम्प २
द्वारपाल रूपे सूर्य्य आछेन दुयारे । राखिला कबाट दिया रावणेर डरे
कुपिल रावण राजा बले महाबली । पुरीर भितरे याय क'रे ठेला ठेलि ३
पाथरेर कपाट तुलिया एक टाने । कोपे द्वारपाल रावणेर सिरे हाने
रक्ते राङ्गा हये पड़े राजा दशानन । भाग्येते रहिल प्राण ना हैल मरण ४
रावण से शिला तुलि द्वारपाले हाने । पड़िल से द्वारपाल पाथर चापने
द्वारपाल अचेतन कुवेर चिन्तित । सेनापति मणि भद्रे डाकिल त्वरित ५
मणिभद्र शुनह प्रधान सेनापति । अधिकार युद्धे तुमि हओ गिया कृति
बाछिया कटक कर सत्वरे साजन । हाते गले बान्धिआन लङ्कार रावण ६
दिलेक दानव यक्ष बहु सेनापति । चब्बिश कोटि सेना दिल ताहार संहति
लइया विकट सैन्य मणि भद्र नड़े । गर्ज्जिया कटक चले, महाशब्द पड़े ७
मणिभद्र आसि करे बाण बरिषण । चारिदिके भङ्ग दिल निशाचर गण
रावणेर सेनापति यतेक प्रधान । यक्षेर कटक बिंधि करे खानखान ८

वह राक्षसों पर बाण-वर्षा करने लगा । चक्रघात से महोदर व्याकुल हो उठा । लंकाधिपति रावण तब रुष्ट हो उठा । क्रोध से रावण बाणों की वर्षा करने लगा । उस युद्ध में प्रहार सह न पाकर योगवृद्ध भाग चला ।। १ ।। तब वह आवास के किले में भाग चला और द्वार के समीप जाकर दरवाज़े की ओट में खड़ा हो गया । रावण रथ से कूद पड़ा, मानो सर्प को पकड़ने के लिए गरुड़ ने छलाँग लगाई हो ।। २ ।। द्वार पर द्वार-पाल के रूप में सूर्य थे । रावण के डर से उन्होंने दरवाजा बन्द कर दिया । कुटिल राजा रावण महाबली था । पुरी के अन्दर जाने हेतु धक्कम-धक्का करने लगा ।। ३ ।। तब क्रुद्ध द्वारपाल ने पत्थर का दरवाज़ा एक झटके से खोलकर उठा लिया और उसे रावण के सिर पर दे मारा । तब राजा दशानन खून से लाल हो उठा, सौभाग्य बड़ा कि उसके प्राण बच गये, मृत्यु नहीं हुई ।। ४ ।। रावण ने वही शिला उठाकर द्वारपाल पर दे मारा । वह द्वारपाल चट्टान से दब गया । द्वारपाल अचेत हो गया, तब कुबेर चिन्तित हुआ और तुरन्त मणिभद्र को बुलाया ।। ५ ।। प्रधान सेनापति मणिभद्र, सुनो, इस अधिकार के संग्राम में तुम यशस्वी बनो । तुम चुन-चुनकर शीघ्र सेना सजाओ, और लंका के रावण को हाथ और गले में बाँधकर ले आओ ।। ६ ।। कुवेर ने उसे अनेक दानव-यक्ष और सेनापति सौंपे, उसके साथ चौबीस करोड़ सेना दी, उस विकराल वाहिनी को लेकर मणिभद्र चल पड़ा । सेना गरजती चली, उससे प्रचंड नाद उत्पन्न हुआ ।। ७ ।। मणिभद्र आते ही बाणों की वर्षा करने लगा । निशाचरों का समूह चारों ओर भाग चला । रावण के प्रमुख सेनापतियों ने यक्षों की सेना को वेधकर छिन्न-भिन्न कर डाला ।। ८ ।। राक्षस-सेना

नाना अस्त्र राक्षस फेलाय चारिभिते। मङ्गदिल यक्षगण ना पारि सहिते
उभरड़े पलाइल आउवर चुलि। देखिया रुषिल मणिभद्र महाबली ९
मणिभद्रे देखिया राक्षस भागे डरे। देखिया रुषिल तबे लङ्कार ईश्वरे
मणिभद्र दशानन दुइ जने रण। गदा हाते मणिभद्र धाय ततक्षण १०
पर्व्वत योजन दश आनि वायु भरे। गर्ज्जिया पर्व्वत हाने रावणेर सिरे
रावण मारिल बाण उठिया आकाशे। सेइ बाण मणिभद्र गिलिलेक ग्रासे ११
मणिभद्र-मुख देखि रुषिल रावण। कुड़ि हाते चापि तार बधिल जीवन
मणिभद्र पड़िल राक्षसगण हासे। कुबेरेर भग्नदूत कहे ऊर्ध्व श्वासे १२

रावणेर सहित कुबेरेर युद्ध

मणिभद्र पड़े रणे कुबेर चिन्तित। आपनि आइल रणे पात्रेते बेष्टित
डाक दिया बले, शुन भाइरे रावण। आमार सहित तब युद्ध कि कारण १३
मणिभद्र पाठाइनु युझिबार तरे। कुड़ि हाते चापि तुमि बधिले ताहारे
अपार्य्य-पक्षेते आमि एसेछि युद्धेते। बधिते नारिबे आर चापि कुड़ि हाते १४
क'रेछ अनेक तप अस्थि चर्म्म सार। नारिले अमर ह'ते केन अहङ्कार

चारों ओर नाना अस्त्रों को फेंककर प्रहार करने लगी, उनका आघात न सह पाने के कारण यक्षगण भाग चले। वे ऐसे भागे कि उनके बाल बिखरकर उदर तक फैल गये। यह देख महाबली मणिभद्र कुपित हो उठा ॥ ९ ॥ मणिभद्र को देखकर राक्षस डर के मारे भागने लगे। यह देखकर लंकेश्वर रावण कुपित हुआ। मणिभद्र और रावण दोनों में युद्ध होने लगा। तत्क्षण गदा हाथ में ले मणिभद्र दौड़ पड़ा ॥ १० ॥ दस योजन विस्तृत पर्वत को अनायास वायु जैसे उठा लिया और गरजते हुए उससे रावण के सिर पर प्रहार किया। रावण आकाश में चला गया और बाण मारा। उस बाण को मणिभद्र ग्रास बनाकर निगल गया ॥११॥ मणिभद्र का मुख देख रावण रुष्ट हो उठा और बीस हाथों से दबाकर उसके प्राणों का वध कर डाला। मणिभद्र के मारे जाने पर राक्षस हँसने लगे। कुबेर के दूतों ने तेजी से भागकर उससे यह घटना सुनायी ॥ १२ ॥

रावण के साथ कुबेर का युद्ध

युद्ध में मणिभद्र के पतन से कुबेर चिन्तित हो उठा। मंत्रियों से घिरा हुआ वह स्वयं युद्धक्षेत्र में आया। उसने पुकारकर कहा— भाई रावण, सुन, तू मेरे साथ युद्ध किसलिए करता है ? ॥ १३ ॥ मैंने लड़ने के लिए मणिभद्र को भेजा था जिसे तूने बीस हाथों से दबाकर मार डाला। जिससे तू पार नहीं पा सकता ऐसे पक्ष से मैं अब युद्ध में आया हूँ, अब मुझे तू बीस हाथों से दबाकर मार नहीं सकेगा ॥ १४ ॥ तूने अनेक तप किया, अपने शरीर को सुखाकर अस्थिचर्म-सार बना डाला, फिर भी अमर हो नहीं पाया, तो क्या अहंकार करता है ? मैं तपस्या के प्रभाव

अमर हइनु आमि तपेर प्रसादे। कुकर्म्म करिया भाइ, पड़िबे प्रमादे १५
यथा तथा युद्ध कर, अवश्य मरण। मृत्युकाले मने क'रो आमार वचन
अमर हयेछि, किसे लइबे पराण। हारि यदि रणेते करिबे अपमान १६
एत यदि कहिल कुबेर यक्षराजे। रावणेर पात्र मित्र सब पड़े लाजे
कुबुद्धि घटिल राजा दुष्ट निशाचरे। दोहातिया बाड़ि मारे कुबेरेर शिरे १७
छि छि बलि कुबेर दिलेक टिटकारी। एइ मुखे खावे भाइ, स्वर्ण लङ्कापुरी
दुइ कटकेते युद्ध हइल बिस्तर। कुबेरेर बाणे राजा हइल जर्ज्जर १८
जर्ज्जर रावण रणे कुबेरेर बाणे। केमने जिनिब रण भावे मने मने
संसारेर माया जाने पापिष्ठ रावण। मायारूपे कुबेरेर सने करे रण १९
शार्द्दूल हइया कामडाये मारे। बराह हइया केह दन्त दिया चिरे
मेघ हैया पड़े केह अङ्गेर उपरे। झञ्झना पड़ये येन गदार प्रहारे २०
शेल शूल मारे केह करिया गर्ज्जन। कुबेर प्रहार करे राजा दशानन
रक्ते आर्द्र कुबेर पड़िल भूमितले। उपाड़िले वृक्षयेन पड़ये समूले २१
कुबेरे धरिया लय यत अनुचर। धरिया राखिल लये पुरीर भितर
कुबेरेर भाण्डार लुटिल दशानन। विशेष पुष्पक-रथ आर अन्य धन २२

से अमर बना हूँ। भाई, कुकर्म करने पर तू प्रमाद में पड़ेगा ॥ १५ ॥ जैसे-तैसे भी युद्ध कर, तेरा मरण तो अवश्य होगा। मृत्यु-काल में मेरे वचनों का स्मरण करना। मैं तो अमर हो चुका हूँ, मेरे प्राण कैसे ले सकेगा। यदि रण में हार गया तो केवल अपमान-मात्र होगा ॥ १६ ॥ यक्षराज कुबेर ने जब इतना कहा, तो रावण के मंत्री-सामन्त-मित्र सभी लज्जित हो गये। तब निशाचरों के दुष्ट राजा के मन में कुबुद्धि उत्पन्न हुई, उसने आगे बढ़कर कुबेर के सिर पर दोहत्थड़ मारा ॥ १७ ॥ 'छिः-छिः' कहकर कुबेर ने उस पर व्यंग्य किया। अरे भाई, तू इसी मुँह से स्वर्णमयी लंकापुरी को खा डालेगा। दोनों सेनाओ में व्यापक युद्ध हुआ। कुबेर के बाणों से राजा रावण जर्जर हो गया ॥ १८ ॥ राजा रावण कुबेर के बाणों से जर्जर हो गया। वह मन ही मन सोचने लगा, 'मैं युद्ध में कैसे जीतूं ?' पापी रावण संसार भर की मायाएँ जानता था। वह कुबेर के साथ भी माया-रूप धारण कर संग्राम करने लगा ॥ १९ ॥ कभी कोई शार्दूल बनकर काटने लगा, कभी कोई बराह बनकर दाँतों से फाड़ने लगा, कभी कोई बादल बनकर अंगों पर गिरने लगा मानो गदा के प्रहार से बिजली गिरने लगी ॥ २० ॥ कोई गरजकर बरछे, शूल मारने लगा। इस तरह (अनेक रूप धरकर) राजा दशानन कुबेर पर प्रहार करने लगा। रक्त से भीगकर कुबेर धरती पर गिर पड़ा। मानो जड़ समेत कोई वृक्ष उखड़ गिरा हो ॥२१॥ कुबेर ने सभी अनुचरों को पकड़ लिया और उसे ले जाकर पुरी के भीतर रखा। दशानन ने कुबेर का भंडार लूट लिया। विशेष रूप से पुष्पक रथ और दूसरी सम्पदाओं को लूटा ॥२२॥ रावण कुबेर के अन्तःपुर में घुसा, उसे देख सभी नारियाँ भाग चलीं।

প্রবেশিল রাবণ তাহার অন্তঃপুরী। দেখিয়া পলায় সবে যত ছিল নারী
কুবেরের অন্তঃপুরে হৈল হাহাকার। রাবণ লুটিয়া সব করে ছারখার ২৩

রাবণের প্রতি নন্দীর অভিশাপ ও রাবণ কর্তৃক কৈলাস-উত্তোলন

কুবেরে জিনিয়া যায় শঙ্করের পুরী। মহাদেব-সহ সম্ভাষিতে ত্বরা করি
কার্তিকের জন্মস্থান স্বর্ণ শরবন। ঠেকিয়া তাহাতে রথ রহিল রাবণ ২৪
বনেতে ঠেকিয়া রথ, নহে আগুসার। রাবণ পাত্রের সহ যুক্তি করে সার
মারীচ রাক্ষস কহে রাবণের কাণে। কুবেরের এই রথ রাক্ষসে না মানে ২৫
সারথি চালায় রথ, রথ নাহি নড়ে। দেখিতে দেখিতে শিব-দূত আসি পড়ে
না চলাও রথ এই কৈলাসশিখর। গৌরী সহ কেলি করিছেন মহেশ্বর ২৬
হেথা দেব-দানব গন্ধর্ব্ব নাহি আসে। এ পর্ব্বতে আসিতেছ কাহার সাহসে
কুপিল রাবণ রাজা দূতের বচনে। রথ হইতে নামিয়া আইল শিবস্থানে ২৭
নন্দী নামে দ্বারী ছিল, রাবণ তা দেখে। হাতে জাঠা করি নন্দী সেই দ্বার রাখে
বানরের মত মুখ দেখিয়া নন্দীর। উপহাস করিল রাবণ মহাবীর ২৮
নন্দী বলে, আমি শঙ্করের দ্বারপাল। আমার সম্মুখে কেন কর ঠাকুরাল
দেখিয়া আমার মুখ কর উপহাস। এই মুখ হ'তে তোর হবে সর্ব্বনাশ ২৯

कुबेर के अन्तःपुर में हाहाकार मच गया। रावण ने सब कुछ लूटकर छिन्न-भिन्न विनष्ट कर डाला ।। २३ ।।

रावण को नन्दी का अभिशाप तथा रावण द्वारा कैलास उठाया जाना

रावण कुबेर को जीतकर शंकर की पुरी कैलास की ओर, शंकर से वार्त्ता करने हेतु शीघ्रता से चला। कार्तिक के जन्म-स्थान स्वर्ण-शर वन पहुँचकर उसका रथ रुक गया ।। २४ ।। जंगल में रथ रुक गया, वह आगे नहीं बढ़ता था। रावण तब सामन्तों के साथ परामर्श करने लगा। राक्षस मारीच ने रावण के कानों में कहा, कुबेर का यह रथ, राक्षसों के लिए उपयोगी नहीं ।। २५ ।। सारथी रथ चलाता था मगर रथ हिलता ही नहीं था। देखते-देखते वहाँ शिव के दूत आ गये। उन सबने कहा— इस कैलास शिखर पर रथ न चलाओ। यहाँ गौरी के संग महेश्वर केलि कर रहे हैं ।। २६ ।। यहाँ देव-दानव-गंधर्व नहीं आते। तुम इस पर्वत पर किस साहस से आ रहे हो? दूत के वचन सुनकर राजा रावण कुपित हो उठा। वह रथ पर से उतरकर शिव के स्थान पर आया ।। २७ ।। वहाँ नन्दी नाम का द्वारपाल था, रावण ने उसे देखा, नन्दी हाथ में भाला लिये द्वार की रक्षा कर रहा था। नन्दी का बन्दर-जैसा मुँह देखकर महावीर रावण ने उसका उपहास किया ।। २८ ।। नन्दी बोला, मैं शंकर का द्वारपाल हूँ, हमारे सामने अपनी ठकुराई-बड़प्पन क्या दिखाता है? मेरा मुँह देखकर उपहास कर रहा है, इसी मुख से तेरा सर्वनाश हो जायेगा ।। २९ ।। रे दुराचारी रावण, तुझे मारकर मेरा क्या होगा?

दुराचार तोरे मारि कोन् प्रयोजन। निज दोषे सवंशे मरिबि दशानन
रावण नन्दीर शाप नाहि सुने काने। कुड़िहाते सापटिया से कैलासे टाने ३०
कैलास धरिया दशानन दिल नाड़ा। सत्तर योजन नड़े कैलासेर गोड़ा
टल मल करे गिरि, देव कांपे डरे। पर्व्वत निबासी गेल धूर्ज्जटीर आड़े ३१
सबे बले, महादेब, कर परित्राण। कोन बीर आसिया पर्व्वते दिल टान
रावणेर क्रिया देखि हासे कृत्तिबास। वाम चरणेर नखे चापेन कैलास ३२
व्यथाय रावण छाड़े भीषण चीत्कार। शिवेर निकटे कि ताहार अहङ्कार
हइल पुष्पक मुक्त धूर्ज्जटिर बरे। सेइ रथे चड़िया रावण जय करे ३३
कृत्तिबास पण्डितेर जन्म शुभक्षणे। गाइल उत्तरकाण्ड गीत रामायणे

रावण कर्तृक बेदवतीर लाञ्छना ओ रावणेर प्रति बेदवतीर अभिशाप

अगस्त्येर कथा शुनि श्रीरामेर हास। कह कह मुनिबर कहिया प्रकाश ३४
कैलास एड़िया कोथा गेल दशानन। कह देखि, शुनि मुनि, पुराण-कथन
अगस्त्य बलेन, राम, कर अवधान। आरो किछु रावणेर कहि उपाख्यान ३५
बेदवती नामे कन्या परम शोभना। तपस्या करेन बने हिमांशुबदना
पबित्र आकृति तार, पबित्र प्रकृति। शुद्ध सत्त्वा, शुद्धमति, सूर्य्य-सम द्युति ३६

अपने दोष से तू सवंश मारा जायेगा। रावण ने नन्दी के अभिशाप पर कान नहीं दिया। वह बीसों हाथों से पकड़कर कैलास को खींचने लगा ॥३०॥ दशानन ने कैलास को पकड़कर हिलाया, कैलास की जड़ सत्तर योजन हिल गयी। पर्वत डगमगाने लगा। देवगण डर के मारे काँपने लगे। पर्वतनिवासी धूर्जटी के शरण में उनकी ओट में चले गये ॥ ३१ ॥ सबने कहा— हे महादेव जी, हमारा परित्राण कीजिये। किस वीर ने आकर पर्वत को खींचा है ? रावण की करतूत देख कृत्तिवास-कृतियों के आधार शंकर, हँस पड़े और बायें पैर के नाखून से कैलास को दबा दिया ॥ ३२ ॥ दब जाने के कारण वेदना से रावण भयंकर चीत्कार करने लगा। शिव के सम्मुख भला क्या उसका अहंकार रह सकता है ? अन्त में धूर्जटी के वर से पुष्पक मुक्त हुआ, उस रथ पर चढ़कर रावण विजय करने लगा ॥ ३३ ॥ कृत्तिवास पंडित का जन्म शुभक्षण में हुआ है, जिन्होंने रामायण के उत्तरकांड का गीत गाया है।

रावण द्वारा वेदवती को लांछना और रावण को वेदवती का अभिशाप

अगस्त्य की बात सुनकर श्रीराम हँसने लगे। कहा— हे मुनिवर ! आप प्रकट कर कहिये ॥ ३४ ॥ कैलास को छोड़कर दशानन कहाँ गया ? मुनि, आप पुराण-कथा सुनाइये, मैं सुनना चाहता हूँ ! अगस्त्य ने कहा, राम, सुनो ! रावण की कथा मैं और कुछ सुनाता हूँ ॥ ३५ ॥ परम सुन्दरी वेदवती नाम की चन्द्रवदनी कन्या वन में तपस्या कर रही थी। उसकी आकृति पवित्र थी, प्रकृति भी पवित्र थी। वह शुद्ध-सत्त्व, शुद्ध-

दैवयोगे रावण तथाय उपनीत । कन्याके देखिया दुष्ट हइल मोहित
अतिथि आचारे कन्या दिलेक आसन । कामे मुग्ध दशानन जिज्ञासे तखन ३७
केतुमि, काहार कन्या, काहार कामिनी । कि जन्ये ए महारण्ये थाक एकाकिनी
ए-रूप-यौवन-धन ना कर विलास । कि हेतु कठोर तप कर उपवास ३८
कन्या बले, मोर कथा कहिते विस्तर । ये हेतु तपस्या करि, शुनि लङ्केश्वर
कुशध्वज पिता, पितामह बृहस्पति । से कुशध्वजेर कन्या आमि वेदवती ३९
वेदपाठे रत पिता छिला येइ क्षणे । जन्मिलाम सेइ क्षणे ताँहार वदने
अयोनि सम्भवा नाम थुइल वेदवती । पितार अधिक स्नेह हैल आमा-प्रति ४०
दिबेन उत्तम पात्रे, एइ तार पण । के आछे उत्तम पात्र विना-नारायण
अत एव विष्णुसह विवाह आमार । दिबेन, ए वाञ्छा छिल नितान्त पितार ४१
इति मध्ये शुम्भनामे दैत्य हस्ते पिता । मरिलेन, माता हइलेन अनुमृता
आजन्म तपस्या करि एइ अभिलाषे । कतदिन पाइब से श्याम पीतवासे ४२
शुनिया कन्यार कथा दशानन हासे । रथ हैते नामिया कहिछे मृदुभाषे
त्रैलोक्य जिनिया रूप गुण तुमिधर । सुन्दरि, केन से वृद्ध वर इच्छा कर ४३
कुटिल से काल रूप कोथा नारायण । नागाल पाइले तार बधिब जीवन
कन्या बले हेन वाक्य ना आन वदने । कृष्ण-बिना केबा आछे ए तिन भुवने ४४

मति और सूर्य की भाँति दीप्तिमयी थी ॥ ३६ ॥ संयोगवश रावण वहाँ पहुँच गया। उस कन्या को देख वह दुष्ट मोहित हो गया। अतिथि-सत्कार का कर्तव्य पालन कर कन्या वेदवती ने उसे बैठने हेतु आसन दिया। तब काम-मुग्ध रावण ने उससे पूछा— ॥ ३७ ॥ तुम कौन हो, किसकी कन्या हो, किसकी कामिनी हो ? किस कारण इस भयंकर वन में अकेली रहती हो ? अपने इस रूप-यौवन रूपी धन रहते हुए भी तुम विलास क्यों नहीं करती ? किस प्रयोजन से तुम यह कठोर व्रत, और उपवास कर रही हो ? ॥ ३८ ॥ कन्या बोली— मेरी कथा बड़ी लम्बी है, लंकेश्वर, मैं जिस कारण तपस्या करती हूँ, सुनो; मेरे पितामह बृहस्पति और पिता कुशध्वज हैं, मैं उन्हीं कुशध्वज की कन्या वेदवती हूँ ॥ ३९ ॥ जिस समय पिता वेद-पाठ में निरत थे, उसी समय मैं उनके मुख से उत्पन्न हुई। मैं अयोनिसंभवा थी, उन्होंने मेरा नाम वेदवती रखा। मुझ पर पिता का अधिक स्नेह रहा ॥ ४० ॥ उनका प्रण था कि मुझे वे उत्तम पात्र को सौंपेंगे। परन्तु नारायण के सिवा दूसरा उत्तम पात्र कौन है ? इसी कारण पिता की नितांत इच्छा थी कि विष्णु से मेरा विवाह करवायेंगे ॥ ४१ ॥ इसी बीच शुंभ नाम के दैत्य के हाथ पिता मारे गये, माता ने उनके साथ सहमरण अपनाया। मैं आजीवन इसी कामना से तपस्या कर रही हूं कि उन पीताम्बरधारी श्याम को कब पा सकूँगी ॥ ४२ ॥ कन्या की बात सुन दशानन हँसा। वह रथ से उतरकर मृदु वचन कहने लगा। तुम तीनों लोक जीतनेवाले रूप-गुण धारण करती हो। तो हे सुन्दरी, फिर उस वृद्ध वर की कामना क्यों करती हो ? ॥ ४३ ॥ वह कुटिल कालरूप नारायण कहाँ है ? अगर उसे पा

शुनिया कन्यार कथा दुष्ट यातुधान । धरिया कन्यार केशे करे अपमान
अपमान करि शेषे छाड़िल रावण । कन्या बले, अपमान कर कि कारण ४५
प्रवेश करिब आमि ज्वलन्त आगुने । अपबित्र शरीर राखिब कि कारणे
पाइया ब्रह्मार बर ह'लि पापकारी । अल्पप्राणी नारी हइ, कि करिते पारि ४६
तपस्यार फले यदि तोरे नष्ट करि । बिफल हइबे एत तपस्या आमरि
अग्नि-कुण्ड ज्वलिल, आनिया काष्ठ राशि । प्रबेश करिते याय से कन्या रूपसी ४७
अग्निके प्रार्थना करे करि बहु सेबा । श्रेष्ठ कुल जन्मि येन अयोनि सम्भवा
नारायण स्वामी हबे जन्म-जन्मान्तरे । मोर लागि राबण सवंशे येन मरे ४८
राबण लागिया मरि, सर्व्वलोके दुःखी । रावण मरिबे, मोर लागि लोक साक्षी
प्रवेश करिल कन्या पूतवैश्वानरे । आकाशते देवगण पुष्पवृष्टि करे ४९
जनक राजार कन्या नाम धरे सीता । पतिव्रता अवतीर्णा सेइ शुभान्विता
पतिव्रता शाप कभु नहे अन्यमत । मरिल राबण सीता लागि आदियत ५०
त्रेता युगे रघुनाथ तुमि तार पति । अयोनि सम्भवा सीता सेइ वेदवती
अहङ्कारे दशानन सवंशेते मजे । अधर्म्मी हइले सुख नाहि कोन काजे ५१

जाऊँ तो मैं उसका जीवन-वध कर डालूंगा । कन्या बोली— ऐसी बात मुंह में न लाओ । उस (विष्णु रूपी) कृष्ण के सिवा तीनों लोकों में और कौन है ? ।। ४४ ।। उस दुष्ट निशाचर ने कन्या की बात सुनकर केश पकड़कर उसका अपमान किया । अपमान करने के पश्चात् रावण ने उसे छोड़ दिया । कन्या बोली— तूने मेरा अपमान किसलिए किया ।। ४५ ।। मैं अब जलती अग्नि में प्रवेश करूँगी, अपवित्र इस शरीर को अब क्यों रखूं ? तू ब्रह्मा का वर पाकर पापाचारी हो गया है । मैं अबला नारी होने के कारण तेरा क्या कर सकती हूँ ? ।। ४६ ।। यदि अपनी तपस्या के बल से तुझे नष्ट कर दूं, तो मेरी सारी तपस्या विफल हो जायेगी । यह कहकर कन्या ने लकड़ियाँ लाकर अग्नि-कुंड जलाया और उसमें वह रूपवती-कन्या प्रवेश करने लगी ।। ४७ ।। अनेक विनती करती हुई उसने अग्नि से प्रार्थना की, मैं जैसे अयोनिसंभवा बनकर श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न होऊँ । नारायण मेरे जन्म-जन्मान्तर के स्वामी बनें, और मेरे कारण रावण का सवंश वध हो जाये ।। ४८ ।। मैं रावण के कारण मर रही हूँ, इसी के कारण सारे लोक दुःखी हैं । लोक-साक्षी रहें, रावण मेरे ही कारण मरेगा । कहकर वह कन्या पवित्र अग्नि में प्रवेश कर गयी । देवगण आकाश से पुष्प-वर्षा करने लगे ।। ४९ ।। वही कल्याणी वेदवती जनक राजा की सीता नाम की पतिव्रता पुत्री बनकर अवतरित हुई । पतिव्रता का अभिशाप कभी अन्यथा नहीं होता । रावण आदि उसके कुल के सभी राक्षस सीता के कारण ही मारे गये ।। ५० ।। हे रघुनाथ, त्रेतायुग में तुम उसके पति बने, अयोनिसंभवा सीता वही वेदवती है । अपने अहंकार के कारण रावण का सवंस विनाश हुआ । अधर्मी होने पर कभी किसी कर्म में सुख नहीं मिलता ।। ५१ ।। अगस्त्य

अगस्त्येर कथा शुनि श्रीरामेर हास। कह कह बलि राम करेन प्रकाश

मरुत्त राजार यज्ञानुष्ठान ओ रावणेर निकटे पराजय-स्वीकार

श्रीराम बलेन, मुनि, कह विवरण। वेदवती लाञ्छि कोथा गेल से रावण ५२
अगस्त्य बलेन, कारे रावण ना माने। शाप गालि देय यत किछु नाहि शुने
यत यत राजा आछे पृथिवी मण्डले। सबारे जिनिल दशानन बाहुबले ५३
यज्ञ करे मरुत्त भूपति महाधनी। समस्त ब्राह्मण यज्ञे करे वेद ध्वनि
यज्ञभाग लइते आइल देवगण। रथे चड़ि सेइ खाने चलिल रावण ५४
त्रासपाय देवगण रावणेरे देखि। सर्प येन नत हय देखि तार्क्ष्य पाखी
ना देखिया उपाय सकल देवगण। पक्षिरूप धरि सबे हैल अदर्शन ५५
इन्द्र हन मयूर कुबेर कृकलास। काकरूप हन यम, वरुण से हांस
मरुत्त भूपति यज्ञ करे महा सुखे। रण देह बलिया रावण तोर डाके ५६
मरुत्त बलेन, आमि तोमारे ना चिनि। परिचय देह मोरे तबे आमि जानि
दशानन बले, आमि भुवने विदित। रावण आमार नाम संसारे पूजित ५७
कुबेर आमार ज्येष्ठ धन-अधिकारी। लइ लाम ताहार कनक-लङ्कापुरी
आपन बड़ाइ करे रावण से स्थले। शुनिया मरुत्त राजा अग्नि हेन ज्वले ५८

मुनि की बात सुन श्रीरामचन्द्र हँस पड़े। उन्होंने कहा, हे मुनि, आगे की कथा कहिये।

राजा मरुत्त का यज्ञानुष्ठान और रावण से पराजय स्वीकार

श्रीराम ने कहा— मुनि, वह विवरण बताइये कि वेदवती की लांछना करने के बाद वह रावण कहाँ गया? ॥ ५२ ॥ अगस्त्य बोले, रावण किसी को भी नहीं मानता था, वह सभी को शाप और गालियाँ देता था, किसी की बात नहीं सुनता था। पृथ्वी पर जितने राजा थे, दशानन ने अपने बाहु-बल से उन सभी को जीत लिया ॥ ५३ ॥ महाधनी राजा मरुत्त यज्ञ कर रहे थे, सारे ब्राह्मण उनके यज्ञ में वेद-पाठ कर रहे थे। देवगण उस यज्ञ में यज्ञभाग लेने आये। रावण रथ पर सवार हो वहाँ चला ॥ ५४ ॥ रावण को देखकर देवगण वैसे ही संत्रस्त हो उठे जैसे तार्क्ष्य (गरुड़-) पक्षी को देखकर सर्प विनत हो जाता है। (रावण से बचने का) कोई उपाय न देखकर सभी देवता पक्षीरूप धारण कर अन्तर्हित हो गये ॥ ५५ ॥ इन्द्र मयूर, कुबेर कृकलास (गिरगिट), यम कौआ, वरुण हंस, बनकर अदृश्य हो गये। राजा मरुत्त बड़ी प्रसन्नता से यज्ञ कर रहे थे, रावण ने उन्हें, युद्ध दे, कहकर पुकारा ॥ ५६ ॥ मरुत्त बोले, मैं तुम्हें नहीं पहचानता, मुझे परिचय दो, तब मैं जानूँगा। दशानन बोला, मैं विश्व में प्रसिद्ध हूँ, मैं संसार में पूजित हूँ, मेरा नाम रावण है ॥ ५७ ॥ धनाधिपति कुबेर मेरा बड़ा भाई है। मैंने उससे स्वर्ण-लंकापुरी ले ली है। रावण वहाँ अपनी बड़ाई करने लगा। सुनकर राजा मरुत्त अग्नि-जैसे जल

ज्येष्ठेर हरिले मान कहिछ आपनि । हेन कथा लोक मुखे कखन ना शुनि
धार्म्मिकेर अपमान अधार्म्मिक करे । धार्म्मिक ताहार निन्दा सहिते ना पारे ५९
पाइया ब्रह्मार वर कारे नाहि डर । मानुषेर हाते आजि याबि यमघर
अस्त्र लये याय राजा युझिबार मने । हात पसारिया राखे समस्त ब्राह्मणे ६०
महेशेर यज्ञे राजा अनुचित कोप । आपनि पाइबे दुष्ट सवंशेते लोप
यज्ञ पूर्ण ना हइले अति बड़ दोष । पराजय मान राजा, लभुक सन्तोष ६१
ब्राह्मणेर वाक्ये राजा कोप करे दूर । कहिल, पापिष्ठ बेटा बड़इ निष्ठुर
पराजय मानिल मरुत्त यज्ञस्थाने । यज्ञेर ब्राह्मण सबे डाक दिया आने ६२
दश बिश ब्रह्मणेरे सापटिया धरे । दुष्ट दशानने सबाकारे फेले दूरे
करिया संग्राम जय रावण चलिल । देवगण पक्षी हैते बाहिर हइल ६३
पक्षी हये देवता पाइल परित्राण । पक्षिगणे देवगण करेन कल्याण
इंद्र बले, मयूर तोमारे दिनु वर । हउक सहस्र चक्षु पुच्छेर उपर ६४
पूर्ब्बेते मयूर छिल सामन्य आकार । इन्द्र-वरे सहस्र लोचन हैल तार
यखन आकाशे मेघ करिबे गर्ज्जन । पेखम धरिया तुमि करिबे नर्त्तन ६५
कृकलासे वर तबे दिला धनेश्वर । स्वर्ण वर्ण हउक तोमार कलेबर
कुबेरेर बरे तार निज वर्ण खण्डे । स्वर्ण वर्ण हइल मुकुट धरे मुण्डे ६६

उठे ।। ५८ ।। वे बोले, तुमने अपने बड़े भाई का मान हरण कर लिया और उसे स्वयं वता रहे हो, ऐसी बात तो लोगों के मुँह से कभी सुनायी नहीं देती । धार्मिक का अपमान अधार्मिक ही किया करता है । परन्तु धार्मिक पुरुष तो अधर्मी की निंदा भी सह नहीं सकता ।। ५९ ।। ब्रह्मा का वरदान पाकर तुम किसी से नहीं डरते । परन्तु आज मनुष्य के हाथ तुम्हें यमलोक जाना पड़ेगा । राजा मरुत्त अस्त्र ले लड़ने की इच्छा से चले । तव सारे ब्राह्मणों ने हाथ पसार कर उन्हें रोका ।। ६० ।। हे राजा, महेश के यज्ञ में क्रोध करना अनुचित है । यह दुष्ट अपने आप सवंश विनष्ट हो जायेगा । यज्ञ का पूर्ण न होना बहुत वड़ा दोष है । हे राजा, तुम रावण से पराजय मान लो, वह सन्तुष्ट हो जाये ।। ६१ ।। ब्राह्मणों के वचन से राजा ने क्रोध छोड़ दिया । कहा, यह दुष्ट पापी बड़ा निर्मम है । मरुत्त ने यज्ञस्थान में पराजय मान ली । तब रावण ने यज्ञ के ब्राह्मणों को बुलाया ।। ६२ ।। दस-वीस ब्राह्मणों को बाँहों में पकड़ दुष्ट दशानन ने उछालकर दूर फेंक दिया । रावण संग्राम में विजय प्राप्त कर चला । तब देवगण पक्षी-रूप से बाहर निकले ।। ६३ ।। पक्षी-रूप धारण कर देवगण बच गये, इस कारण देवगण पक्षियों का कल्याण किया करते हैं । इन्द्र बोले, मोर, तुम्हें वर देता हूँ, तुम्हारी पूँछ पर हज़ारों आँखें बनें ।। ६४ ।। पहले मोर सामान्य आकार वाला पक्षी था, इन्द्र के वरदान से उसकी सहस्र आँखें बन गयीं । (इन्द्र ने वर दिया) जब आकाश में मेघ गरजें, तुम पूँछ फैलाकर नृत्य करना ।।६५।। तब धनेश्वर कुबेर ने कृकलास (गिरगिट) को वर दिया, तुम्हारा शरीर स्वर्णवर्ण का बन जाए । कुबेर के वरदान से उसका निजी वर्ण बदल गया, तब सुनहला

बरुण बलेन, हंस दिलाय ए बर। चन्द्र हेन हउक तोमार कलेबर
आमि एक लोकपाल सलिलेर पति। जलेते चरिते तब हइबे पिरीति ६७
यम बले, काक आमि दिलाय ए बर। तोमार नाहिक रबे मरणेर डर
रोग पीड़ा तोमार ना हइबे संसारे। तब मृत्यु हबे यदि मानुषेते मारे ६८
येइ जन योगाइबे तोमार आहार। यमलोके तृप्ति तार हइबे अपार
पक्षीरा आपन स्थाने चलिल ये यार। बर दिया देवगण गेल स्वर्ग द्वार ६९
मरुत्तेर यज्ञ कथा अति चमत्कार। ताहाते सोनार पात्र पर्व्वत-आकार
स्वर्णपात्रे भुञ्जि नित्य करेन वर्ज्जन। सेइ सोना भरियाछे त्रिलक्ष योजन ७०
कुबेरेर धन जिनि मरुत्तेर धन। मरुत्त-समान आर नाहि कोन जन
मरुत्त राजार धन संसारेते घोषे। एमन भूपाल छिल चन्द्रमार वंशे ७१

रावण कर्तृक अनरण्य-बध ओ रावणेर प्रति अनरण्येर अभिशाप

अगस्त्येर कथा शुनि श्री रामेर हास। कह कह बलि राम करेन प्रकाश
मरुत्ते जिनिया कोथा गेल से रावण। कह देखि मुनि शुनि पुराण-कथन ७२
मुनि बले, यदि शुने बीर तथा आछे। तखनि रावण याय द्रुत तार काछे
कहे गिया आमारे सत्वरे देह रण। पराजय मानिले, ना मारे दशानन ७३

बन गया, वह सिर पर मुकुट धारण करने लगा ।। ६६ ।। वरुण बोले, हंस, तुम्हें यह वर देता हूँ कि तुम्हारा शरीर चन्द्रमा जैसे वर्ण का बन जाए। मैं जलाधिपति वरुण एक लोकपाल हूँ। जल में विचरण करना तुम्हें प्यारा लगेगा ।। ६७ ।। यम बोले, कौआ, मैं तुम्हें यह वर देता हूँ, तुम्हें मरण का भय नहीं होगा। संसार में तुम्हें रोग-पीड़ा नहीं होगी, यदि मनुष्य मारें तभी तुम्हारी मृत्यु होगी ।। ६८ ।। जो तुम्हें भोजन देगा, उसे यमलोक में अपार तृप्ति मिलेगी। पक्षी अपने-अपने स्थान पर चले गये। उन्हें वर देकर देवगण स्वर्गलोक चल पड़े ।। ६९ ।। राजा मरुत्त के यज्ञ की कथा बड़ी अद्भुत है। वहाँ सोने के बर्तन पर्वत के आकार जैसी ढेरियों में पड़े थे। लोग स्वर्ण-पात्र में भोजन कर उस (जूठे) पात्र को छोड़ देते थे। वे ही बर्तन तीन लाख योजनों में भरे पड़े हैं ।। ७० ।। मरुत्त के धन के सामने कुबेर का धन भी हार मानता है। मरुत्त के जैसा कोई जन नहीं है। राजा मरुत्त के धन का घोष सारे संसार में होता है, कि चन्द्रवंश में ऐसे भी एक भूपाल थे ! ।। ७१ ।।

रावण द्वारा अनरण्य का वध और रावण को अनरण्य का अभिशाप

अगस्त्य मुनि की बात सुनकर श्रीराम हँसे। उन्होंने कहा— मुनि, सुनाइये। मरुत्त को जीतकर वह रावण कहाँ गया। मुनि, मैं वह पुरानी कथा सुनना चाहता हूँ। आप कहिये ।। ७२ ।। मुनि बोले, रावण यदि सुनता कि कहीं कोई वीर है, तो वह द्रुतगति से वहाँ जा पहुँचता। कहता, हमसे शीघ्र युद्ध करो ! यदि वह पराजय मान लेता, तो रावण

पराजय ये ना माने, करे अहङ्कार। रावणेर ठाँइ तार नाहिक निस्तार
पुरन्दर निज मुखे माने पराजय। पराजय मानिले संग्राम नाहि हय ७४
ए रूपे रावण भ्रमे पृथिवी-मण्डले। अयोध्या जिनिते याय जय जय ब'ले
अनरण्य नामे राजा छिल अयोध्याय। बार्त्ता पेये दशानन तार काछे याय ७५
तव पूर्व्व पुरुष से अनरण्य नाम। रावण ताँहार काछे चाहिल संग्राम
लङ्कार रावण आमि शुन अनरण्य। रण देह मोरे, नाहि चाहि किछु अन्य ७६
शुनि अनरण्य कोपे करे अहङ्कार। कटकेते मिशामिशि हैल महामार
प्राचीन वयस राजा, मांसे चक्षु ढाके। भ्रूद्वय तुलिया बान्धि राजा सब देखे ७७
बहुकाल जीवी राजा पृथिवी-भितर। राजार वयस बाइश हाजार बत्सर
साजिल राजार सैन्य हस्ती अश्व यत। अस्त्र शस्त्र लइल याहार छिल यत ७८
दुइ कोटि सैन्येते साजिल महाबल। राक्षसे मानुषे युद्ध हइल प्रबल
अनरण्य राजा करे बाण-बरिषण। रावणेर सेनापति करे पलायन ८०
सेनापति-भङ्ग देखि रावण फाफर। अनरण्य-सह युझे क्रोधे लङ्केश्वर
रावण असंख्य बाण करे बरिषण। बुड़ा राजा समरे हइला अचेतन ८१
आपना सारिया करे बाण-बरिषण। बाणेते जर्ज्जर देह हइल रावण
रावणेर गा बहिया रक्त पड़े धारे। येमन गङ्गार धारा पर्ब्बत-शिखरे ८२

उसे न मारता ॥ ७३ ॥ जो पराजय न मानता, अहंकार करता था, वह रावण से बच नहीं पाता था। इन्द्र ने स्वयं अपने मुँह से पराजय स्वीकार किया था। कोई पराजय मान लेता तो उससे संग्राम नहीं होता था ॥ ७४ ॥ इसी तरह रावण पृथ्वी-मंडल पर भ्रमण करने लगा। अपनी जय-जयकार करता हुआ वह अयोध्या को जीतने चला। (उन दिनों) अयोध्या में अनरण्य नामक राजा था। समाचार पाकर रावण वहाँ पहुँचा ॥ ७५ ॥ अनरण्य नाम के वे राजा तुम्हारे पूर्वज थे। रावण ने युद्ध के लिए उन्हें ललकारा। उसने कहा— अनरण्य, सुनो। मैं लंका का राजा रावण हूँ। मुझसे युद्ध करो, मैं तुमसे और कुछ नहीं चाहता ॥ ७६ ॥ यह सुनकर अनरण्य ने कुपित होकर अपना अहंकार प्रकट किया अथवा प्रचंड नाद किया। दोनों की सेनाएँ आपस में गुँथ गयी, प्रचंड मारकाट होने लगी। राजा की पुरानी आयु के हो गये थे, उन (की पलकों) का मांस बढ़ जाने के कारण आँखें ढँक गयी थी। अपनी भौहों को ऊपर उठा बाँधकर राजा सब देखते थे ॥७७-७८॥ राजा संसार में बहुकाल-जीवी थे। राजा की आयु बाईस हज़ार वर्ष हो चुकी थी। राजा की सेना, हाथी, घोड़े जितने थे, सभी सज गये। जिसके पास जितने अस्त्र-शस्त्र थे, ले लिये ॥ ७९ ॥ दो करोड़ सेना की महा-वाहिनी सजी, राक्षसों-मनुष्यों में प्रबल युद्ध होने लगा। राजा अनरण्य बाण-वर्षा करने लगे। रावण के सेनापति भागने लगे ॥ ८० ॥ सेनापतियों को भागते देख रावण परेशान हो गया। अनरण्य के संग युद्ध में लंकेश्वर कुपित हो उठा। रावण असंख्य बाणों की वर्षा करने लगा। वे बूढ़े राजा युद्ध में अचेत हो गये ॥ ८१ ॥ अपने को प्रकृतिस्थ कर

केहू ना जिनिते पारे, नाहि पाय आश। उभये बरषे बाण नाहि फेले श्वास
दशानन बाण एड़े, शून्य हैल तूण। तखन बुड़ार बाण आछये द्विगुण ८३
आर बाण यावत् ना योगाय सारथि। तावत् रावण मने करिल युकति
रावण राजार बुके मारिल चापड़। भूमिते पड़िया राजा करे धड़फड़ ८४
मृत्युकाले बुड़ा राजा करे छटपट। धाइया रावण गेल राजार निकट
राजभोगे वृद्ध, कभु नाहि जाने रण। आमार सहित युद्धे अवश्य मरण ८५
जगत् जिनिया भ्रमि आपनार तेजे। तार मृत्यु अवश्य ये मोर सने युझे
गर्व्व करे बले राजा मरणेर काले। शाप बर देइ यावे ततक्षणे फले ८६
अनरण्य बले किबा कर अहङ्कार। कभु हारि, कभुजिनि, रण ब्यवहार
बहु यज्ञ करि तुषिलाम देवगणे। नाना रत्न दाने तुषिलाम विप्रगणे ८७
राजा हये करिलाम प्रजार पालन। तिन लक्ष द्विजे नित्य कराइ भोजन
ए सब आमार पुण्य जाने सब भाले। तोरे ये बधिबे, से जन्मिबे मोर कुले ८८
संग्रामे पड़िया राजा गेल स्वर्गपुर। दिग्विजय करि भ्रमे लङ्कार ठाकुर
तव पूर्व्व पुरुषे ये जिनिलेक रणे। से रावण पड़िल श्रीराम, तव बाणे ८९

वे बाण-वर्षा करने लगे। बाणों से रावण का शरीर जर्जर हो गया। रावण के शरीर से धारा में रक्त बहने लगा। जैसा कि पर्वत-शिखर पर गंगा की धारा बहती हो ॥ ८२ ॥ कोई किसी को जीत नहीं पाता था, किसी को कोई अवसर नहीं मिलता था, दोनों बिना साँस लिये बाण-वर्षा करते जा रहे थे। दशानन ने इतने बाण छोड़े कि उसके तरकश खाली हो गये। परन्तु तब भी बूढ़े राजा के वहाँ दूने बाण थे ॥ ८३ ॥ सारथी और भी बाण जब तक लाकर नहीं जुटाता, तब तक रावण ने मन में यह युक्ति सोची। रावण ने आकर राजा की छाती पर थप्पड़ मारा। राजा भूमि पर गिरकर तड़पने लगे ॥८४॥ मृत्यु-काल में बूढ़े राजा छटपटाने लगे। रावण दौड़कर राजा के पास पहुँचा। वह बोला— राज-भोग करते हुए तुम वृद्ध हो गये, कभी युद्ध करना नहीं जानते। मेरे साथ युद्ध में तुम्हारी मृत्यु अवश्य होगी ॥ ८५ ॥ अपने तेज से विश्व को जीतकर मैं घूम रहा हूँ। जो मेरे साथ युद्ध करेगा उसकी मृत्यु अवश्य होगी। तब राजा अनरण्य ने मरते समय गर्व से कहा, तुझे ऐसा शाप देता हूँ जो शीघ्र ही फलीभूत होगा ॥ ८६ ॥ अनरण्य बोले, तू अहंकार क्यों कर रहा है ! कभी हार, कभी जीत यह तो रण का नियम है। मैंने अनेक यज्ञ कर देवगणों को तुष्ट किया है, अनेक रत्नों के दान से विप्रों को संतुष्ट किया है ॥ ८७ ॥ राजा के रूप में मैं प्रजा का पालन करता आया हूँ। नित्य दस लाख द्विजों को भोजन करवाता रहा हूँ। मेरे इन पुण्यकर्मों के बारे में सब लोग भलीभाँति जानते हैं। तुझे वध करनेवाला मेरे ही कुल में उत्पन्न होगा ॥ ८८ ॥ संग्राम में मारे जाकर राजा अनरण्य स्वर्गलोक सिधारे। लंका का राजा रावण दिग्विजय कर घूमता रहा। हे श्रीराम, तुम्हारे पूर्वज राजा अनरण्य को जिसने युद्ध मे जीता था, वह

पूर्ब्ब कथा शुनिया श्रीरामेर उल्लास। गाइल उत्तरकाण्ड गीत कृत्तिवास

कार्त्तवीर्य्यार्ज्जुनेर सहित राबणेर युद्ध

श्रीराम बलेन, बृद्धछिलेन दुर्ब्बल। सेकारणे हयेछिल राबण प्रबल ९०
बीर शून्या पृथिबी आछिल से समय। ताइ राबणेर बृद्धि छिल अतिशय
सेकालेर राजा ब्रह्म-अस्त्र नाहि जाने। राबणेर पराजय नहे सेकारणे ९१
मुनि बले, दशानन नाना माया धरे। राक्षसे करिले माया कोन् जन तरे
माया रणे देखा रणे अनेक अन्तर। तेकारणे पराजित नहे लङ्केश्वर ९२
मानुष हइया यिनि बिष्णु-अधिष्ठान। ताँर ठाँइ राबण ये पाय अपमान
कार्त्तवीर्य्यार्ज्जुन राजा छिल चन्द्रबंशे। ताँहार सहस्रबाहु जन्म बिष्णु-अंशे ९३
नाना बुद्धि धरिया से राजा राज्य राखे। याँर नामे हाराधन आसये सम्मुखे
शत शत कामिनी लइया कुतूहले। अर्ज्जुन करित केलि नर्म्मदार जले ९४
माहिष्मती-नगरे ताँहार छिल घर। तथा गिया बार्त्ता पुछे राजा लङ्केश्वर
लङ्कार राबण आमि, चाहि आजि रण। कार्त्तवीर्य्यार्ज्जुन कि करिल पलायन ९५
राक्षस कटक-चाप अति भयङ्कर। अर्ज्जुन राजार ताहे नाहि कोनो डर

रावण तुम्हारे बाणों से मारा गया ॥ ८९ ॥ पूर्व-कथा सुनकर श्रीराम को बड़ा हर्ष हुआ। कवि कृत्तिवास ने उत्तरकांड गीत गाया।

कार्तवीर्यार्जुन के साथ रावण का युद्ध

श्रीराम ने कहा— वे वृद्ध (राजा) कमजोर थे। इसी कारण रावण प्रबल था ॥ ९० ॥ उस समय पृथ्वी वीर-शून्य थी, इसी कारण रावण की अत्यन्त वृद्धि हुई थी। उस काल के राजाओं को अस्त्र-शस्त्रों का ज्ञान न था। इसी से रावण की हार नहीं होती थी ॥ ९१ ॥ मुनि बोले— रावण अनेक प्रकार की माया धारण करता था। राक्षस जब माया करते हैं तो भला कौन पार पा सकता है ? माया से किये जानेवाले युद्ध और आँखों के सम्मुख होनेवाले युद्ध में अनेक अन्तर है। इसी से लकेश्वर रावण पराजित नहीं होता था ॥ ९२ ॥ मनुष्य होने पर भी जो विष्णु-अधिष्ठान (विष्णु के अवतार) हैं, रावण उनसे अपमानित हुआ है। राजा कार्तवीर्यार्जुन चंद्रवंशी राजा था। उसका जन्म विष्णु के अंश से हुआ था ॥९३॥ उसकी सहस्रों भुजाएँ थीं। अनेक युक्तियों से वह राजा अपने राज्य की रक्षा किया करता था। उसका नाम लेते ही खोया हुआ धन सामने आ जाता था। सैकड़ों कामिनियों को साथ लेकर बड़े आनन्द से कार्तवीर्यार्जुन नर्मदा के जल में जल-केलि किया करता ॥ ९४ ॥ उसका निवास माहिष्मती पुरी में था। राजा लंकेश्वर ने वहाँ जाकर उसकी वार्त्ता पूछी। मैं लंका का राजा रावण हूँ, आज युद्ध करना चाहता हूँ। क्या कार्तवीर्यार्जुन भाग गया ? ॥ ९५ ॥ राक्षसों की सेना बड़ी भयंकर थी पर उससे राजा सहस्रार्जुन को कोई डर न था।

लोके बले, किबा चाह तुमि एइ स्थले । भूपति करेन क्रीड़ा नर्म्मदार जले ९६
नर्म्मदाय धाय वीर अर्ज्जुन-उद्देशे । पथे येते बिन्ध्यगिरि देखिल हरिषे
नाना फल-फुल देखे अति मनोहर । नाना पक्षी करे केलि, शोभे सरोबर ९७
नृत्य करे मयूर, झङ्कारे मधुकर । राजहंस करे केलि देखिते सुन्दर
दानव गन्धर्व्व देब यक्ष बिद्याधर । कामिनी लइया क्रीड़ा करे निरन्तर ९८
रावणे देखिया देबगण कांपे डरे । पलाय छाड़िया केलि पर्व्वत-उपरे
धमरड़े देबगण पलाइल त्रासे । देबता पलाय देखि दशानन हासे ९९
निर्म्मल नदीर जल गिरि हैते वय । नानाबिधि लोक तथा करये आलय
बिन्ध्यगिरि एड़ि गेल नर्म्मदार कूले । जल केलि करे तथा केशरी-शार्द्दूले १००
शुक-सारणादि सह यत परिजन । रथ हैते सेइखाने नामिल रावण
मध्यान्ह कालेर रौद्रे तापिता पृथिवी । रावणे देखिया मन्द तेज हैल रबि १०१
दुइ कूले बालि ये स्फटिक हेन देखि । बहु जन्तु केलि करे नानाबिधि पाखी
नर्म्मदार जल सेइ अतीब निर्म्मल । धीरे धीरे बहे बायु अति सुशीतल २
सैन्य सङ्गे नामिया रावण याय जले । धुइल गायेर रक्त लग्न रणस्थले
सांतारे रावण राजा नर्म्मदार जले । आनन्दे करिया स्नान उठिलेक कूले ३

लोगों ने कहा— तुम इस स्थान पर क्या चाहते हो ? राजा तो नर्मदा के जल में क्रीड़ा कर रहे हैं ।। ९६ ।। तब वीर सहस्रार्जुन को खोजता हुआ रावण नर्मदा-तट पर पहुँचा । मार्ग में जाते हुए उसने हर्ष से विंध्याचल पर्वत को देखा । वहाँ उसने अत्यन्त मनोहर नाना प्रकार के फल-फूल देखे । वहाँ नाना प्रकार के पक्षी केलि कर रहे थे जिनसे सरोवर सुशोभित हो रहा था ।। ९७ ।। मोर नृत्य कर रहे थे, मधुकर गुंजार रहे थे, राजहंस केलि कर रहे जो देखने में बड़े सुन्दर लगते थे । दानव-गन्धर्व-देव-यक्ष-विद्याधर आदि कामिनियों को लेकर निरन्तर क्रीड़ा कर रहे थे ।। ९८ ।। रावण को देखकर देवगण डर के मारे काँपने लगे । वे केलि करना छोड़ पर्वत के ऊपर भाग गये । देवगण बड़े त्रास से तेजी से भाग चले । देवताओं को भागता देख दशानन हँसने लगा था ।। ९९ ।। नदी का निर्मल जल पर्वत पर से बह रहा था । वहाँ अनेक प्रकार के लोगों के निवास थे । वह विंध्याचल को पार कर नर्मदा-तट पर पहुँचा । वहाँ सिंह-शार्दूल आदि भी जल-केलि किया करते थे ।। १०० ।। शुक-सारण समेत जितने परिजन थे उन सबके साथ रावण वहाँ उतरा । दोपहर की धूप से पृथ्वी तप्त हो रही थी, परन्तु रावण को देखते ही सूर्य का तेज मंद पड़ गया ।। १०१ ।। नदी के दोनों ओर रेत स्फटिक-सी दिखायी देती थी । वहाँ अनेक जन्तु और अनेक प्रकार के पक्षी केलि कर रहे थे । नर्मदा का वह जल बड़ा निर्मल था । वहाँ बड़ी शीतल वायु मंद-मंद बह रही थी ।। २ ।। सेना समेत रावण जल में उतरा और रणभूमि में शरीर पर जो रक्त लगा था उसे धोया । राजा रावण नर्मदा के जल में तैरने लगा और

देबदेब महादेब जगतेर राजा । नाना उपचारे रक्षः करे तांर पूजा
स्वर्ण शिवलिङ्ग ताहे काञ्चन मेखला । भक्तिते रावण पूजे देबार्च्चन-बेला ४
शत सुबर्णेर पात्र लागे पूजा-साजे । शङ्ख घण्टा दुन्दुभि ये चारिदिके बाजे
कराइल शिबलिङ्ग स्नान सेइ जले । कलसे करिया गन्ध तदुपरि ढाले ५
मन्त्र जप करिल लइया जपमाला । मौन नाहि भाङ्गे तार देबार्च्चन-बेला
कुड़िहात प्रसारिया नाचे रङ्ग-भङ्गे । राबण प्रणाम करे सेइ शिबलिङ्गे ६
एदिके अर्ज्जुन राजा हये दृष्टमति । जलक्रीड़ा करे, सङ्गे शतेक युबती
प्रसारे नदीर माझे हस्त से दीघल । हातेते जाङ्गाल बान्धि राखे तार जल ७
छिल ये कांकालि जल हइल पाथार । शत शत कन्या दिते लागिल सांतार
हात सम्बरिया राजा बान्धि दिल जल । आकुल हइया डाके रमणी सकल ८
हातेते जाङ्गाल बान्धे, राणी सब भासे । देखिया अर्ज्जुन राजा कौतुकेते हासे
हातेर उपरे हात देय काते-काते । से जल उजान बहे कूल बहे स्रोते ९
शिब पूजा करिछे राबण सेइ कूले । स्रोते तार फल-फुल भासाइल जले
आपनि राबण गाय आपनि से नाचे । बार्त्ता जानि बारे शुक-सारणेरे पुछे ११०
नामाङ्गे राबण मौन हाते तुड़ि दिल । बृत्तान्त जानिते शुक सारण चलिल

देव-देव महादेव जगत के राजा हैं, राक्षस रावण अनेक उपचारों से उनकी पूजा करने लगा। वह शिवलिंग सोने का था, उस पर सोने की मेखला थी; देवार्चन के समय रावण बड़ी भक्ति से उनकी पूजा करने लगा ॥ ४ ॥ पूजा की सामग्रियों के लिए सोने के सौ पात्र लगते थे। शंख-घंटा-दुन्दुभि चारों ओर बजने लगे। नर्मदा के उस जल से उसने शिवलिंग को स्नान कराया। उस पर घड़ों में भरे सुगन्धित द्रव्यों का अर्घ्य चढ़ाया ॥ ५ ॥ हाथ में जपमाला ले उसने मंत्र जप किया। देवार्चना के समय भी उसका मौन नहीं टूटा। अपने बीस हाथ प्रसारित कर वह नाना अंग-भंगी कर नाचने लगा। और रावण ने उस शिवलिंग को प्रणाम किया ॥ ६ ॥ इधर राजा सहस्रार्जुन मन में अत्यन्त आनन्दित हो जल-क्रीड़ा कर रहा था, उसके संग सैकड़ों युवतियाँ थीं। उसने नदी में अपनी भुजाएँ फैला दीं और हाथों से ही बाँध बनाकर पानी को रोक दिया ॥ ७ ॥ जहाँ कमर तक पानी था वहाँ सागर जैसा हो गया, सैकड़ों कन्याएँ तैरने लगी। अपनी भुजाओं को समेट कर राजा ने पानी को बाँध दिया, नारियाँ व्याकुल होकर पुकार मचाने लगीं ॥ ८ ॥ सहस्रार्जुन ने भुजाओं से बाँध बना दिया, रानियाँ बहने लगीं। यह देख राजा सहस्रार्जुन कौतुक से हँसने लगा। उसने भुजा पर भुजा आड़ी-तिरछी रखी, जिससे (नदी का प्रवाह रुककर) नदी की उलटी दिशा में बहने लगा, जिसकी धारा में तट डूबने लगा ॥ ९ ॥ रावण उसी तट पर शिव-पूजा कर रहा था। प्रवाह से उसके फल-फूल पानी में बह गये। रावण स्वयं (स्तोत्र) गाता था, अपने-आप नाचता था। समाचार जानने के लिए उसने शुक-सारण से

निष्ठा वार्त्ता जानिया ये ताहारा जनाय। तोमारे भेटिते कार्त्तवीर्य्यार्ज्जुन चाय ১১১
सुन्दर अर्ज्जुन राजा येन देवपति। जल क्रीड़ा करे सब लइया युबती
नदीते सहस्र हस्त प्रसारे दीघल। सहस्र हस्तेते तार बद्ध राखे जल ১২
सहस्र हस्तेते सेतु बान्धि राखे जल। भाटा जल उजान बय से अपूर्ब्ब काल
जाङ्गाल सहस्रहाते बान्धि राखे नदी। से कारणे भासितेछे फल-फुल आदि ১৩
से कार्त्तबीर्य्यर हेतु हेथा आगमन। नर्म्मदार जले तारे कर दरशन
अर्ज्जुनेर वार्त्ता पेये चले दशानन। दुइ क्रोश पथ गिया करे निरीक्षण ১৪
अर्ज्जुन सहस्र करे करे जल खेला। सहस्र सहस्रतार बेष्टित महिला
ताँहार पात्रेर स्थाने कहिछे रावण। अर्ज्जुनेर कह गिया मम आगमन ১৫
स्त्री लइया तोर राजा सुखे करे स्नान। बलगिया राजारे रावण रण चान
यत यदि रावण पात्रेर प्रति बले। कुपित से राजपात्र रावणेर बोले ১৬
स्त्री लइया महाराज सुखे केलि करे। ए समये कोन् जन बले युझिवारे
रणेर समय ना जानिस निशाचर। अर्ज्जुनेर हाते आजि यावि यमघर ১৭
स्त्री लइया राजा करे हास्य-परिहास। तोर वाक्ये केन आमि याब ताँर पाश
बिंशति हस्तेते तोर एत अहङ्कार। सहस्र हस्तेते कार्त्तबीर्य्य अबतार ১৮

दिया, घटना का विवरण जानने के लिए शुक-सारण चल पड़े। सही समाचार जानकर वे लौट आये और रावण को सूचित किया कि कार्तवीर्यार्जुन आपसे मिलना चाहते हैं ॥१११॥ राजा अर्जुन देवराज इन्द्र जैसे सुन्दर हैं। युवतियों को साथ लेकर वे जल-क्रीड़ा कर रहे हैं। नदी में उन्होंने सहस्रों लम्बे हाथ पसारे रखा है और उन सहस्र हाथों ने जल को बाँध रखा है ॥ १२ ॥ सहस्र हाथों से पुल या बाँध जैसे बनाकर उन्होंने पानी को रोक दिया है। उनके कुछ अपूर्व कौशल के कारण नीचे की ओर बहने वाला जल इसी कारण उलटी दिशा में बह रहा है। उन्होंने सहस्रों हाथों से दीवार जैसे बाँध बनाकर नदी को रोक दिया है, इसी कारण उसमें फल-फूल आदि बह गये हैं ॥ १३ ॥ उसी कार्तवीर्य के लिए यहाँ आये हैं, आप उन्हें नर्मदा के जल में दर्शन कीजिये। सहस्रार्जुन का समाचार पाकर दशानन चला। दो कोस आगे बढ़कर निरीक्षण किया ॥ १४ ॥ सहस्रार्जुन सहस्र हाथों से जल-क्रीड़ा कर रहे थे। सौ-सौ महिलाएँ उन्हें घेरे हुए थीं। उनके मंत्री से जाकर रावण ने कहा—जाकर अर्जुन से मेरा आगमन बताओ ॥ १५ ॥ तुम्हारा राजा नारियों को लेकर सुख से स्नान कर रहा है; जाकर उससे कहो कि रावण लड़ाई करना चाहता है। रावण ने जब मंत्री से यह बात कही, तो वह राजमंत्री रावण की बात पर कुपित हो उठा ॥ १६ ॥ महाराज इस समय नारियों के संग सुख से केलि कर रहे हैं, इस अवसर पर उन्हें लड़ाई के लिए कौन कह सकता है ? अरे निशाचर, तुम लड़ाई का समय नहीं जानते। आज तुम्हें अर्जुन के हाथ यमलोक जाना पड़ेगा ॥ १७ ॥ राजा नारियों को लेकर हास-परिहास कर रहे हैं, तेरी बात से आज मैं उनके पास क्यों जाऊँ ? केवल बीस हाथ होने के कारण ही तेरा इतना अहंकार है।

बीर हेन देखिस कि तुइ आपनारे। करिते आइलि युद्ध बिधातार बरे
अर्ज्जुने पाइले तोरे मारिबे आछाड़। दशमुण्ड भाङ्गिया करिबे चूर्ण हाड़ १९
देब दैत्य जिनिया बेड़ास येन सर्प। तेँइ से कारणे तोर बाड़ियाछे दर्प
अर्ज्जुन राजार काछे कर अहङ्कार। मानुष हइया तिनि देब-अबतार १२०
जन्मिलि राक्षस-कुले नाना मायाधर। हरे देख, राजा, मम मायार सागर
आकाशे थाकिया युझे कभुनाहि देखि। मेघ रूपे बर्षे जल उड़े येन पाखी १२१
सरले सरल तिनि बाँका प्रति बाँका। पड़िले ताँहार ठाँइ तबे याय देखा
अर्ज्जुनेरे ना पारिबि, एलि मरिबारे। प्राण रक्षा कर गिया झाँट याह घरे २२
आमार समरे यदि पास अब्याहति। तबे गिया घाटाइस् अर्ज्जुन नृपति

कार्त्तबीर्य्यार्ज्जुन कर्तृक रावणेर बंधन

कुपित राबण राजा महा भयङ्कर। राक्षस मानुषे युद्ध बाधिल बिस्तर १
शुक सारण मारीच राक्षसादि बीर। राक्षसेर माया-रणे नर नहे स्थिर
राक्षसेर संग्रामे मानुष सैन्य नड़े। अर्ज्जुनेर काछे गिया दूत बले रड़े २

पर कार्तवीर्य का अवतार सहस्र हाथों वाला है ॥ १८ ॥ तू क्या अपने को वीर जैसा देख रहा है ? विधाता-ब्रह्मा से वर लेकर तू युद्ध करने आ गया है ? कार्तवीर्य अर्जुन अगर तुझे पकड़ लें तो पटक देंगे, दसों शिरों को तोड़कर सारी अस्थियाँ चूर-चूर कर डालेंगे ॥ १९ ॥ देव-दैत्य को जीतकर तू सर्प-जैसा घूम रहा है, इसी कारण तेरा दर्प बढ़ गया है। तू राजा अर्जुन के सामने अहंकार कर रहा है। मनुष्य होने पर भी वे देव-अवतार हैं ॥ १२० ॥ तू अनेक माया धारण करनेवाला राक्षसकुल में उत्पन्न हुआ है। अरे, देख, हमारे राजा मायाओं के सागर ही हैं। वह आकाश में रहकर लड़ते हैं, जिससे दिखाई नहीं देते। मेघ के रूप में पानी बरसाते हैं, पक्षी जैसे उड़ जाते हैं ॥ १२१ ॥ वे सीधे आदमी के लिए सीधे हैं, टेढ़े के लिए टेढ़े। उनके सामने पड़ जाने पर ही (उनका विक्रम) देखा जा सकता है। तू अर्जुन से पार नहीं पा सकेगा, मरने के लिए ही आ पहुँचा है। शीघ्र यहाँ से चले जाकर अपनी प्राण-रक्षा कर ॥ २२ ॥ यदि हमारे साथ युद्ध कर बच जाये, तभी जाकर राजा अर्जुन को हराना।

कार्तवीर्यार्जुन द्वारा रावण को बाँधना

यह सुनकर राजा रावण अत्यंत कुपित हो महा भयंकर हो उठा। तब राक्षसों और मानवों के बीच प्रचंड युद्ध छिड़ गया ॥ १ ॥ शुक, सारण, मारीच आदि राक्षस-वीरों के मायामय युद्ध में वे मानव डटे नहीं रह सके। राक्षस के साथ संग्राम में मानवी सेना भागने लगी। तेजी से दूत अर्जुन के पास जाकर कहने लगा— ॥ २ ॥ आपकी सेना को रावण ने

मारिया तोमार सैन्य फलिल रावण। अग्नि हेन ज्वले कोपे शुनिया राजन्
युझिबारे चलिल अर्ज्जुन महावीर। भये राज नितम्बिनी केह नहे स्थिर ३
स्त्रीलोकेर कलरव उठिल गम्भीर। सवारे अभय दाने राजा करे स्थिर
पात्र सह स्त्रीगणे पाठाय अन्तःपुरी। धाइल अर्ज्जुन स्वर्ण गदा हाते करि ४
गम्भीर गर्ज्जने आसे पर्ब्बत आकार। गदा हाते राक्षसेरे करे मार मार
दुर्ज्जय शरीर राजा अति-भयङ्कर। तिन शत योजन युड़िया परिसर ५
छय शत योजन शरीर दीर्घतर। सहस्र हस्तेते धरे सहस्र भूधर
देखिया कुपिल से प्रहस्त महाबल। अर्ज्जुनेर शिरे मारे लोहार मूषल ६
पड़िल मूषल येन झञ्झना-चिकुर। अर्ज्जुनेर गदाय ठेकिया हैल चूर
अर्ज्जुन सहस्र हाते गदा एक चापे। प्रहस्तेर माथाय मारिल महाकोपे ७
मोह गेल प्रहस्त से अत्यन्त कातर। देखिया कातर तारे रोषे लङ्केश्वर
कुड़ि हाते अस्त्र फेले राक्षस रावण। सहस्र हस्तेते लोके अर्ज्जुन राजन् ८
दुइ गिरि ठेका ठेकि शुनि ठन्ठनि। त्रिभुवन जल स्थल कम्पिता मेदिनी
उभय हस्तीर युद्ध, दन्ते हानाहानि। दुइ सूर्य्य युद्ध करे मने हेन मानि ९
दुइ सिंह रणे येन छाड़े सिंहनाद। दुइ वीर रण करे नाहि अवसाद

मार डाला। राजा अर्जुन यह सुनकर अग्नि-जैसा कुपित हो उठा। महावीर अर्जुन लड़ने को चला। डर के मारे राजा की विलास-संगिनी नारियाँ कोई स्थिर न रह सकीं ॥ ३ ॥ नारियों का प्रचंड कलरव गूँज उठा। राजा अर्जुन ने सबको अभय दे शान्त किया। उसने मंत्रियों-सामन्तों के साथ नारियों को अन्तःपुर भेज दिया। राजा अर्जुन हाथ में स्वर्ण-निर्मित गदा लिये दौड़ पड़ा ॥ ४ ॥ वह पर्वताकार राजा अर्जुन प्रचंड गरजता हुआ आया और हाथ में गदा लिये 'मार, मार' करता राक्षसों पर टूट पड़ा। दुर्जय शरीर वाला राजा बड़ा भयंकर था। उसके शरीर का आकार तीन सौ योजन फैला था ॥ ५ ॥ उसका शरीर छः योजन लम्बा था। हज़ारों हाथों में वह हज़ारों पर्वतों को उठाये हुए था। उसे आता देख महाबली प्रहस्त कुपित हो उठा और अर्जुन के सिर पर लोहे के मूसल से चोट की ॥ ६ ॥ मूसल झनझनाता हुआ वज्रपात की भाँति उस पर गिरा पर अर्जुन की गदा से लगकर चूर-चूर हो गया। अर्जुन ने हज़ारों हाथों से बल लगाकर, प्रचंड क्रोधित होकर प्रहस्त के सिर पर मारा ॥ ७ ॥ अत्यन्त कातर होकर प्रहस्त अचेत हो गया। उसे कातर देख लंकेश्वर रावण कुपित हो उठा। रावण बीस हाथों से अस्त्रों का प्रहार करने लगा। जिन्हें हजार हाथों से अर्जुन लपक लेता था ॥ ८ ॥ लगता था दो पर्वतों में टकराहट से ठन-ठन की आवाज़ हो रही हो। जिससे त्रिभुवन, जल-स्थल और मेदिनी काँप उठी। दोनों के हाथियों की लड़ाई होने लगी और वे एक-दूसरों को दाँतों से बेधने लगे। देखकर मन में लगता था कि दो सूरज आपस में जूझ रहे हैं ॥ ९ ॥ लगता था, मानो दो सिंह युद्ध में सिंहनाद कर रहे हैं। दोनों वीर युद्ध कर रहे थे, कोई थकता न था। दोनों ही धनुर्धर थे,

उभये बरिषे बाण, दोंहे धनुर्द्धर। दोंहे दोंहा बिन्धिया करिल जर-जर १०
केह कारे नाहि पारे तुल्य दुइ जन। देबता, असुरे येन पूर्व्वे हैल रण
राबण मूसलाघात करिल निष्ठुर। अर्ज्जुनेर बुकेते ठेकिया हैल चूर ११
धरिया दुर्ज्जय गदा अर्ज्जुन-नृपति। राबणेर बुकेते मारिल शीघ्रगति
राबणेर मोह हैल गदार आघाते। एड़िया धनुक बाण लागिल काँपिते १२
लाफ दिया अर्ज्जुन धरिल लङ्केश्वरे। गरुड़ छुंइया येन निल अजगरे
धरिया सहस्र हाते राखे कक्षतलि। पाताले ये मन हरि बान्धिलेन बलि १३
बान्धिल सहस्र हस्ते तार कुड़ि हात। राबण भाविछे, एकि हइल उत्पात
साधु साधु बलिछे आकाशे देबगण। अर्ज्जुन-उपरे करे पुष्प-बरिषण १४
हस्ती मारि येन सिंह छाड़े सिंहनाद। मृग मारि ब्याध येन पासरे बिषाद
नाना अस्त्र राक्षस फेलिल चारि भिते। राक्षसेर अस्त्र सब राजा लोके हाते १५
कत हाते घेरिया रहिछे दशानने। कत हाते खेदाड़े से निशाचर गणे
मारीच दूषण खर प्रहस्त महाबल। अर्ज्जुनेर स्तुति करे राक्षस सकल १६
राक्षसेर स्तबेते अर्ज्जुन राजा हासे। कक्षे राबणेरे चापि चलिल आबासे
राबणे लइया राजा पद ब्रजे याय। राबणेर दुर्द्दशा देखिते सबे पाय १७

दोनों ही (एक-दूसरे पर) बाण-वर्षा कर रहे थे। दोनों ने दोनों को बेधकर जर्जर कर डाला ॥ १० ॥ कोई किसी से पार नहीं पाता था, दोनों ही बराबर थे। पहले देवों और असुरों में जैसा संग्राम हुआ था, वैसा ही युद्ध होने लगा। रावण ने निर्ममता से मूसल से चोट की। वह मूसल अर्जुन की छाती से लगकर चूर-चूर हो गया ॥ ११ ॥ राजा अर्जुन ने दुर्जय गदा लेकर तेज़ी से बड़े वेग से रावण की छाती पर मारा। गदा की चोट से रावण अचेत हो गया। धनुष-बाण (उसके हाथ से) छूट गये, वह काँपने लगा ॥ १२ ॥ अर्जुन ने कूदकर रावण को पकड़ लिया। मानो गरुड़ ने झपट्टा मारकर अजगर को पकड़ लिया हो। हज़ार हाथों से पकड़कर उसे काँख के नीचे दबा लिया। वैसे ही जैसा कि पाताल में हरि ने बलि को बाँध लिया था ॥ १३ ॥ अर्जुन ने उसे सहस्र हाथों से बाँध लिया, रावण के केवल बीस ही हाथ थे। रावण सोचने लगा, भला यह कैसी बला आ पड़ी। आकाश में देवगण 'साधु, साधु' कहने लगे और अर्जुन पर पुष्प-वर्षा करने लगे ॥ १४ ॥ रावण को वन्दी कर राजा अर्जुन वैसा ही हुआ जैसे सिंह हाथी को मार कर सिंहनाद करता है। जैसे मृग मारकर व्याध अपना विषाद भूल जाता है। राक्षस जब चारों ओर से राजा अर्जुन पर अस्त्रों का प्रहार करने लगे तब राजा सहस्रार्जुन उन सारे अस्त्रों को हाथों से लोक लेने लगा ॥ १५ ॥ वह कुछ हाथों से दशानन रावण को घेरे हुए था, और कुछ हाथों से निशाचरों को खदेड़ रहा था। मारीच-दूषण-खर-प्रहस्त आदि महाबली राक्षस भी राजा अर्जुन की स्तुति करने लगे ॥ १६ ॥ राक्षसों का स्तव सुनकर राजा अर्जुन हँसने लगा। वह रावण को काँख के तले दबाये अपने निवास की ओर चल पड़ा। रावण को लिये हुए राजा अर्जुन पैदल चला।

अर्ज्जुनेरे डाकदिया बले देबगणे। चिरकाल बन्दी करि राखह रावणे
देबगण अर्ज्जुनेर करेन बाखान। तोमार प्रसादे आजि पाइ सबे त्राण १८
कुतूहले देबगण करे हुलाहुलि। रावणेरे ल'ये पुरे सान्धाइल बली
बन्दीशाले ल'ये फेले मड़ार आकार। टुटिल से रावणेर सब अहङ्कार १९
कुड़िहाते बेड़िलेक तार दश गला। दृढ़ बान्धिलेन दिया लोहार शिकला
बन्धनेर टाने दुष्ट हइल कातर। बुकेते तुलिया दिल दारुण पाथर २०
पाथर तुलिया दिल सत्तर योजन। पाश उलटिते नारे दुरन्त रावण
रावणेरे बद्ध करि राखे कारागारे। अर्ज्जुन करिते केलि गेल अन्तःपुरे २१
धरिल सहस्र हाते सहस्र युबती। मनोसुखे केलि करे अर्ज्जुन नृपति
अर्ज्जुनेर नामे हय पाप बिमोचन। अर्ज्जुनेर नामे पाइ हाराइले धन २२
बिष्णु-अबतार राजा बले महाबली। कृत्तिबास रचे अर्ज्जुनेर जलकेलि

पुलस्त्येर प्रार्थनाय कार्त्तवीर्य्यार्ज्जुन कर्त्तृक रावणेर बन्धन-मोचन

अर्ज्जुन करिया बन्दी राखे दशानने। घरे घरे वार्त्ता कहे यत देबगणे १

सब लोग रावण की दुर्दशा देखने लगे ॥१७॥ अर्जुन को बुलाकर देवताओं ने कहा— इस रावण को चिरकाल बन्दी बनाकर रखो। देवराज इंद्र अर्जुन की प्रशंसा करने लगे। तुम्हारे प्रसाद से आज हम सबको परित्राण मिला ॥ १८ ॥ कौतूहल के मारे देवगण आनन्द-ध्वनि करने लगे। बली सहस्रार्जुन ने रावण को लेकर पुरी में प्रवेश किया। उसे ले जाकर मृतक की भाँति कारागार में डाल दिया। उस रावण का सारा अहंकार टूट गया ॥ १९ ॥ राजा अर्जुन ने रावण के बीस हाथों से उसके दस गरदनों को घेरकर उसे लोहे की जंजीर से दृढ़ता से बाँध दिया। बंधन के खिचाव से दुष्ट रावण कातर हो गया। फिर उसकी छाती पर भयंकर चट्टान चढ़ा दी ॥ २० ॥ सत्तर योजन का पत्थर चढ़ा दिया, जिससे दुरन्त रावण करवट भी बदल नहीं सकता था। रावण को बाँधकर उसने कारागार में रख दिया। इसके पश्चात् अर्जुन केलि करने को अन्तःपुर में चला गया ॥ २१ ॥ हजार हाथों से हजार युवतियों को पकड़ा और राजा अर्जुन मनोसुख से केलि करने लगा। सहस्रार्जुन के नाम से पाप मिट जाता है और उसका नाम लेने पर खोयी सम्पदा मिल जाती है ॥ २२ ॥ विष्णु का अवतार राजा सहस्रार्जुन महाबलशाली था। कृत्तिवास अर्जुन की जलकेलि (की कथा) की रचना कर रहे हैं।

पुलस्त्य मुनि की प्रार्थना से कार्त्तवीर्यार्जुन द्वारा रावण की बन्धन-मुक्ति

राजा सहस्रार्जुन ने रावण को बन्दी बनाकर रखा। सारे देवता

महामुनि पुलस्त्य से स्वर्गलोके बैसे । शुनिया नातिर वार्त्ता मर्त्यलोके आसे
दशदिक आलो करे मुनिर किरण । अर्ज्जुनेर घरे आसि दिला दरशन २
पात्र मित्र सह राजा आइल सत्वरे । पाद्य-अर्घ्य दिया से मुनिर पूजा करे
सहस्र हस्तेते पञ्चशत पुटाञ्जलि । भूमे पड़ि नति करे राजा कुतूहली ३
छाड़िया अमराबती केन आगमन । मोर काछे प्रभु तब किबा प्रयोजन
आजि हैते बंश मोर हइल निर्म्मल । आजि हैते राज्य मोर हइल उज्ज्वल ४
देवगण बन्दे गिया याँहार चरण । आमार आलये आजि ताँर आगमन
पुत्र पौत्र आछे प्रभु तोमा विद्यमान । कि कार्य्य करिब मुनि कर संबिधान ५
मुनि बले राजा तब सफल जीवन । तोमार सदृश प्रिय आछे कोन् जन
घुषिबे तोमार यश ए तिन भुबने । आमार गौरब राख छाड़िया राबणे ६
राबण हय आमार सम्बन्धेते नाति । नाति-दान दिले तबे पाइ अब्याहति
राखियाछ बन्दी करि शुनि बन्दी शाले । हस्त पद बान्धि तार लोहार शिकले ७
आमार गौरब राख करह सम्मान । आमारे करिया क्षमा देह नाति-दान
एतेक शुनिया राजा मुनिर बचन । पात्रेरे बलिल शीघ्र आनह राबण ८
दुइ पात्र कारागारे गेल दिया रड़ । खसाइल राबणेर गलार निगड़
कुड़िहात राबणेर बद्ध योड़े-योड़े । राजार आज्ञाय से समस्त बन्ध छाड़े ९

स्वर्गलोक में निवास करते थे। पोते का समाचार सुनकर वे मर्त्यलोक में आ पहुँचे। मुनि की छटा दसों दिशाओं को आलोकित करती थी। वे आकर अर्जुन के निवास पर प्रगट हुए ॥ २ ॥ (मुनि के आने का समाचार पाकर) राजा मंत्रियों-सामन्तों सहित तुरन्त वहाँ आ पहुँचा और पाद्य-अर्घ्य देकर मुनि की पूजा की। कुतूहली राजा सहस्रार्जुन ने अपने हज़ार हाथों से पाँच सौ अंजलियाँ बनाकर धरती पर पड़कर प्रणाम किया ॥ ३ ॥ उसने पूछा— अमरावती छोड़कर आप यहाँ किसलिए पधारे हैं? प्रभु, मुझसे आपका प्रयोजन क्या है? आज से मेरा वंश निर्मल हो गया। आज से मेरा राज्य उज्ज्वल हो गया ॥४॥ देवगण भी जाकर जिनके चरणों की वन्दना किया करते हैं, हमारे निवास में आज उन्हीं का आगमन हुआ है। प्रभु, आपके सम्मुख मेरे पुत्र-पौत्र आदि उपस्थित हैं, हम आपका कौन-सा कार्य करें; प्रभु, निर्देशित कीजिये ॥५॥ मुनि बोले, राजा, तुम्हारा जीवन सफल है। तुम्हारे सदृश मेरा प्रिय जन और कौन है? तीनों लोकों में तुम्हारा यश प्रचारित होगा। रावण को छोड़कर मेरा मान रखो ॥ ६ ॥ रावण नाते में मेरा नाती लगता है। मुझे नाती का दान कर दो, तभी मुझे मुक्ति मिले। मैंने सुना है, तुमने रावण को हाथ-पैर लोहे की जंजीर से बाँध बंदी बनाकर कारागार में डाल रखा है ॥ ७ ॥ मेरा मान-सम्मान रखो, (नाती को) क्षमा कर मुझे नाती-दान कर दो। राजा ने मुनि का यह वचन सुनकर मंत्रियों से कहा, शीघ्र रावण को ले आओ ॥ ८ ॥ दो मंत्री बड़े वेग से कारागार में गये। उसके गले की जंजीर खोल दी। रावण के बीस हाथ जोड़ी-जोड़ी बनाकर बँधे हुए थे।

खसाइल पायेर दाँड़ाकु दृढ़तर । घुचाइल रावणेर बुकेर पाथर
कुड़िहात युड़िया बान्धियाछिल चामे । करिल बन्धन मुक्त से-सकल क्रमे १०
रावणे आनियादिल मुनि बिद्यमाने । माथा तुलि रावण ना चाहे अपमाने
स्नान कराइया पराइल दिव्य बास । दिव्य अलङ्कार दिल माणिक-प्रकाश ११
सुगन्धि चन्दन-पुष्प दिल बिभूषण । पुलस्त्य मुनिर करे करे समर्पण
मुनिर बचने तथा धर्म्म अग्नि ज्वालि । अर्ज्जुन रावण सने करेन मिताालि १२
पुलस्त्य गेलेन स्वर्ग, दशानन लङ्का । मुनिर प्रसादे दूरे गेल तार शङ्का
अगस्त्य बलेन पुनः सुन रघुबर । अर्ज्जुनेर पिता तप करिल बिस्तर १३
आपनि दिलेन बर तारे नारायण । अर्ज्जुन-स्वरूप आमि तोमार नन्दन
तोमार अर्ज्जुन ये सहस्र हस्त धरे । ए हेन अर्ज्जुने केहु जिनिते नापारे १४
बलाबल नाहि तथा, नाहि डाका-चुरि । राज्येते कोहाल नाहि, आपनि प्रहरी
हराइले धन पाय अर्ज्जुन-स्मरणे । चन्द्रबंशे राजा नाहि तार सम गुणे १५
चराचरे महाबीर बिष्णु अंशधर । से-अर्ज्जुन राजारे मारेन भृगुबर
अनित्य शरीर नित्य ज्ञान करा बृथा । अर्ज्जुनेर एइ दशा अन्ये किबा कथा १६
अर्ज्जुनेर कीर्ति गाने पूरित संसार । कृत्तिबास रचिल अर्ज्जुन-अवतार

बन्धन खोल दिये गये ॥ ९ ॥ पैरों की मज़बूत ज़ंजीरें खोल दीं, और रावण की छाती पर की चट्टान हटा दी। बीस हाथों को एक साथ मजबूती से चमड़े की डोरी से बाँध रखा था। वे सभी बंधन एक-एक कर खोल दिये गये ॥ १० ॥ इसके बाद रावण को मुनि के पास ला दिया। अपमान के मारे रावण सिर उठाकर देख नहीं पाता था। उसे नहलाकर दिव्य वस्त्र पहनाया गया। मणियों की चमक वाले दिव्य गहने पहनाये ॥ ११ ॥ सुगन्धित चन्दन-पुष्पों से उसे सजा दिया और उसे पुलस्त्य मुनि के हाथ समर्पित किया। मुनि के कहने पर वहाँ धर्म-अग्नि जलाकर अर्जुन ने रावण के साथ मित्रता कर ली ॥ १२ ॥ फिर पुलस्त्य स्वर्ग को चले गये, रावण लंका चला गया। मुनि के आग्रह से उसकी शंका मिट गयी। इसके पश्चात् अगस्त्य ने कहा— रघुबर, सुनो, अर्जुन के पिता ने काफ़ी तपस्या की थी ॥ १३ ॥ तब उन्हें स्वयं नारायण ने वर दिया था, अर्जुन-सदृश रूपधारी हम तुम्हारे पुत्र बनेंगे। तुम्हारा अर्जुन तो सहस्रों हाथ वाला होगा, ऐसे अर्जुन को कोई जीत नहीं सकता ॥ १४ ॥ वहाँ उसके राज्य में कोई शक्तिमान या दुर्बल नहीं रहेगा, चोरी-डकैती नहीं होगी। राज्य में कोई कोलाहल, चीख-पुकार नहीं होगी, स्वयं राजा ही प्रहरी रहेगा। खोया धन अर्जुन के स्मरण से मिल जायेगा। चंद्रवंश में गुण में उसके जैसा कोई और राजा नहीं होगा ॥ १५ ॥ चराचर विश्व में जो विष्णु का अंश था, ऐसे राजा अर्जुन को भृगुवर परशुराम ने मार डाला। इस अनित्य शरीर को नित्य समझना व्यर्थ है। जबकि अर्जुन की ऐसी अवस्था हुई तो दूसरे की बात ही क्या है ? ॥ १६ ॥ अर्जुन के कीर्ति-गान से संसार परिपूर्ण है।

बालि-बिजयार्थे रावणेर युद्धयात्रा

शुनिया मुनिर बाक्य रामेर उल्लास। कह कह बलि राम करेन प्रकाश १
सेथा हैते आर कोथा गेल दशानन। कह कह मुनि शुनि, अपूर्व्व कथन
मुनि बले, सदा दुष्ट युद्ध-चिन्ता करे। बालिर निकटे गेल किष्किन्ध्या नगरे २
भुबन जिनिया भ्रमे नाहि अबसाद। बालिर दुयारे गिया छाड़े सिंहनाद
बालिर दुयारे देखे अनेक बानर। आपनार परिचय कहे लङ्केश्वर ३
लङ्कार रावण आमि दशमुण्ड धरि। बाञ्छा करि, बालिर सहित युद्धकरि
बलिल बानरगण, ओरे दुराचार। एमन बचन मुखे ना आनिस आर ४
हइले बालिर सने तोर दरशन। दशमुण्ड खण्ड करि बधिबे जीबन
ये बीर करिया दर्प युद्ध चाहे आसि। हेथा देख से-सबार हाड़ राशि राशि ५
सन्ध्या करितेछे बालि दक्षिण-सागरे। क्षणेक थाकिस यदि याबि यमघरे
महा पराक्रम बालि ख्यात त्रिभुबने। तृण ज्ञान नाहि करे सहस्र रावणे ६
बालिर बिक्रम कथा शोन् निशाचर। दुर्ज्जय शरीर बालि, बलेर सागर
प्रभाते उठिया बालि, अरुण उदय। चारि सागरेते सन्ध्या करे महाशय ७

बाली को जीतने हेतु रावण की युद्ध-यात्रा

मुनि के वचन सुनकर रामचन्द्र को बड़ा उल्लास हुआ। 'कहिये, कहिये, मुनि', कहकर अपने उल्लास को प्रकट करते हुए उन्होंने पूछा— ॥१॥ वहाँ से रावण फिर कहाँ गया? कहिये मुनिवर, मैं वह अपूर्व कथा सुनना चाहता हूँ। मुनि बोले, दुष्टजन सदा युद्ध की चिन्ता किया करते हैं। (दुष्ट रावण भी सदा युद्ध की ही चिन्ता किया करता था।) वह किष्किन्धा नगर में बाली के पास गया ॥ २ ॥ वह संसार को जीतता हुआ चक्कर लगा रहा था, उसे कोई अवसाद या थकावट नहीं थी। बाली के पास जाकर उसने सिंहनाद किया। बाली के द्वार पर उसने अनेक बानरों को देखा। उनसे रावण ने अपना परिचय बताया ॥ ३ ॥ दस सिर धारण करनेवाला मैं लंका का रावण हूँ। बाली के साथ युद्ध करने की मेरी इच्छा है। बानरों ने कहा, अरे दुराचारी, ऐसी बात तू और मुँह में न लाना ॥ ४ ॥ यदि बाली से तेरी भेंट हो जाये तो वह तेरे दस सिरों को काटकर मार डालेगा। जो वीर अहंकार से यहाँ आकर युद्ध करना चाहता है, उन सबकी हड्डियों के ढेर उधर देख ॥ ५ ॥ बाली दक्षिणी सागर के किनारे जाकर संध्या-वन्दन कर रहा है, कुछ क्षण यदि तू यहाँ रुका रहे तो यमलोक सिधारेगा। महापराक्रमी बाली त्रिभुवन में विख्यात है। वह सहस्रों रावणों को तृण जैसा भी नहीं समझता ॥ ६ ॥ अरे निशाचर, तू बाली के विक्रम की कथा सुन! बाली दुर्जेय शरीर वाला, बल का सागर है। महान आशय वाला बाली, प्रभात काल में उठकर अरुणोदय होते ही चार सागरों के किनारे जाकर संध्या किया करता है ॥७॥

आकाशे उपाड़ि फेले पर्ब्बत शिखर। पुनः हस्त प्रसारिया लोके से सत्वर
सप्त द्वीप भ्रमे बालि एक निमिषेते। कि कब अन्येरे बायु ना पारे छुँइते ८
अमर भाबिया हेन करिस अहङ्कार। पड़िले बालिर हाते याबि यमद्वार
कुपिल रावण राजा दुयारी उपरे। उत्तरिल गिया शीघ्र दक्षिण-सागरे ९
सुमेरु-पर्ब्बत येन सागरेर कूले। सूर्य्येर किरण येन, राङ्गामुख ज्वले
सत्तर योजन येह उभेते बोथल। उच्च तेज स्पर्श करे गगन मण्डल १०
दूरे थाकि रावण नेहाले तथा बालि। शशकेर दृष्टे येन सिंह महाबली
निःशब्दे बालिर काछे चलिल रावण। सिंहेर निकटे चले शृगाल येमन ११

बालि कर्तृक रावण-बन्धन

अकस्मात् बालि राज मेलिल नयन। देखिल निकटे आसे दुष्ट दशानन
मने मने हासिल बुझिया अभिप्राय। आसितेछे आशा करि जिनिबे आमाय १
बालि बले, दशानन, मरिबि निश्चय। मरिबार आशे एलि, प्राणे नाहि भय
ब्रह्मार बरेते हइयाछे अहङ्कार। आजिरे रावण तोरे करिब संहार २

बढ़ाकर उन्हें लोक लेता है। एक ही क्षण में बाली सातों द्वीपों का चक्कर लगा लेता है। दूसरों की बात ही क्या, वायु भी उसे छू नहीं पाती ॥ ८ ॥ अपने को अमर मानकर तू ऐसा अहंकार कर रहा है, परन्तु बाली के हाथ पड़ते ही तुझे यम के द्वार जाना पड़ेगा। राजा रावण द्वारपाल पर क्रुद्ध हो उठा। वह शीघ्रता से दक्षिण-सागर के तट पर जा पहुँचा ॥ ९ ॥ सागर-तट पर सुमेरु पर्वत-जैसा (बाली बैठा था), उसका लाल मुख सूर्य-किरण-सा जल रहा था। उसकी देह दोनों ओर से लम्बाई में सत्तर योजन फैली हुई थी। उसकी ऊँचाई का तेज गगन-मडल को स्पर्श कर रहा था ॥ १० ॥ खरगोश अपनी दृष्टि से महाबली सिंह को जैसा देखता है उसी प्रकार दूर रहकर राजा रावण बाली को निहारने लगा। शृगाल सिंह के पास जैसे जाता है उसी प्रकार रावण चुपचाप बाली के पास चला ॥ ११ ॥

बाली द्वारा रावण को बाँधना

अचानक राजा बाली ने अपनी आँखें खोलीं। देखा कि दुष्ट दशानन पास आ रहा है। उसका अभिप्राय समझकर वह मन-ही-मन हँसा कि यह मुझे जीतने के लिए आशा कर आ रहा है ॥ १ ॥ बाली ने कहा, दशानन, तू अवश्य मरेगा। तू मरने के लिए आया है, तेरे प्राणों में क्या डर नहीं है ? ब्रह्मा के वर से तुझे अहंकार हुआ है, अरे रावण, मैं आज तेरा संहार करूँगा ॥ २ ॥ तू अपने घर कैसे लौट जायेगा ?

केमने फिरिया यावि घरे आपनार । पड़िलि आमार हाते रक्षा नाहि आर
मारिते आइसे येइ तारे आमि मारि । ये जन समर चाहे, सेइ जन अरि ३
आमारे जिनिते एलि मरिबार आशे । साध ना करिस बेटा पुनः यावि देशे
निर्जीव करिब आजि राजा लङ्केश्वरे । लेजे बान्धि डुबाइब चारिटा सागरे ४
लेजेते बान्धिब आजि दुष्ट दशानने । कौतुक देखुक आजि ए तिन भुवने
रावणेरे देखि बालि करिल गर्ज्जन । सर्प दरशने येन विनतानन्दन ५
पाछु गिया दशानन धरिल काँकालि । लेजे बान्धि रावणे गगने उठे बालि
दशमुण्ड कुड़ि हात करे नड़ बड़ । भुजङ्ग धरिया येन गरुड़ेर रड़ ६
फाँफर राक्षसगण चाहे चारि भिते । मेघ येन धेये याय सूर्य्य आच्छादिते
अति शीघ्र धाय बालि पवनेर वेगे । राक्षस ना पाय लाग, अवसादे भागे ७
पूर्ब्ब दिके सागर योजन चारि शत । तथा गिया सन्ध्या करे बालि शास्त्रमत
सेइ स्थाने सन्ध्या करि उठिल आकाशे । लेजेते रावण नड़े, सर्ब्बलोके हासे ८
लेजेर बन्धन हेतु रावण मूर्च्छित । झलके झलके मुखे उठिल शोणित
लेजेर सहित तारे थुये कक्ष तलि । उत्तर सागरे सन्ध्या करे राजा बालि ९
तथाय करिया सन्ध्या उठिल गगने । लेजे बद्ध रावणेरे देखे सर्ब्बजने

तू मेरे हाथों में आ पड़ा है, अब तेरी रक्षा नहीं हो सकती। जो मुझे मारना चाहता है, उसे मैं मारता हूँ, जो मुझसे युद्ध चाहता है, वही मेरा शत्रु है ॥ ३ ॥ तू मुझे मारने की आशा से जीतने आया है। पर अरे दुष्ट, फिर से लौटकर अपने देश जा सकेगा इसकी साध न करना। आज मैं राजा लंकेश्वर रावण को निर्जीव कर डालूँगा। तुझे पूँछ से बाँधकर चारों सागरों में डुबो दूँगा ॥ ४ ॥ मैं दुष्ट दशानन को पूँछ से बाँध लूँगा; आज यह कौतुक तीनों लोक देखें। रावण को देखकर बाली ने गर्जना की। जैसा कि सर्प को देखकर गरुड़ (गर्ज उठता है) ॥ ५ ॥ तब दशानन ने पीछे से जाकर बाली की कमर पकड़ ली। तब रावण को पूँछ में बाँधकर बाली आकाश में उड़ गया। सर्प को पकड़कर गरुड़ जैसे वेग से उड़ते हैं, वैसे ही रावण अपने दसों सिरों, बीसों हाथों को इधर-उधर मारने लगा ॥ ६ ॥ राक्षसगण दंग होकर चारों ओर देखने लगे। ऐसा लगता था, मानो सूरज को ढँकने के लिए मेघ दौड़े जा रहे हैं। बाली वैसे ही पवन-वेग से शीघ्रता से भाग रहा था। राक्षस उसके पास पहुँच नहीं पाते थे, वे (भयभीत होकर) अवसाद से भाग रहे थे ॥ ७ ॥ पूरब दिशा में चार सौ योजन तक फैला हुआ सागर था, बाली वहाँ जाकर शास्त्र के अनुसार संध्या करने लगा। वहाँ संध्या करने के पश्चात् वह पुनः आकाश में उड़ गया। उसकी पूँछ में बँधा रावण तड़प रहा था, (जिसे देखकर) सब लोग हँस रहे थे ॥ ८ ॥ पूँछ में बँधने के कारण रावण मूर्च्छित हो गया। उसके मुँह से भक्-भक् रक्त बहने लगा। पूँछ में बँधे उसे अपनी काँख के तले दाबकर राजा बाली ने उत्तर सागर में जाकर संध्या की ॥ ९ ॥ वहाँ संध्या कर बाली आकाश में उड़ा,

रावणेर दुर्गतिते सबे हास्य करे। पश्चिम सागरे बालि गेल तार परे १०
डुबाय सागर-जले बालि लङ्केश्वरे। एत जल खाइल ये, पेटे नाहि धरे
आकट-बिकट करे पड़िया तरासे। रावण जलेर मध्ये बालि तो आकाशे ११
चारि सागरेते सन्ध्या करे मन्त्र पड़े। रावणे लइया बालि किष्किन्ध्याय चड़े

बालि कर्तृक रावणेर बन्धन-मोचन ओ बालिर सहित रावणेर मित्रता

देशे गिया बालिराज छाड़े रावणेरे। हासि बले, कोथा हते आइसे एखाने १
रावण बलिछे, आमि बीरके परखि। तोमा-हेन बीर आमि कोथाओ ना देखि
अर्ज्जुन बरुण वायु तुमि ये वानर। चारि जने देखिलाम एकइ सोसर २
देखाइला सप्त द्वीप पृथिवीर अन्त। तोमाय आमाय सिंह-शृगाल वृत्तान्त
आमा हेन बीर तुमि बान्धिले लाङ्गूले। चारि सागरेर सन्ध्या ध्यान नाहि टरे ३
बले टुटा पाइ यदि, आछाड़िया मारि। आमा हैते अधिक पाइले मिता करि
आजि हैते तुमि मोर भाइ सहोदर। मोर लङ्का तोमार से भागेर भितर ४
उभये मितालि करे अग्नि साक्षी करि। उभये हइल सुखी उभय-उपरि

पूंछ में बंधे रावण को सभी लोगों ने देखा। रावण की दुर्गति देख सभी हँसने लगे। इसके पश्चात् बाली पश्चिम सागर तट पर गया ॥ १० ॥ बाली ने वहाँ रावण को सागर-जल में डुबोया। रावण ने इतना पानी पी लिया जो कि उसके पेट में नहीं अँटता था। वह त्रास से तड़पने-छटपटाने लगा। रावण जल में, और बाली आकाश में था ॥ ११ ॥ इस प्रकार बाली ने चार सागरों के तटों पर संध्या की, मंत्र पढ़े और इसके पश्चात् रावण को लिये वेग से किष्किन्धा चला गया।

बाली द्वारा रावण का बन्धन खोलना और बाली के साथ रावण का मिलन

देश में पहुँचकर राजा बाली ने रावण को छोड़ दिया। हँसकर बोला— तू कहाँ से यहाँ आया है ? ॥ १ ॥ रावण बोला, मैं वीर की जाँच करता हूँ, तुम्हारे जैसा वीर मैंने कहीं नहीं देखा। मैंने पाया कि राजा अर्जुन, वरुड़, वायु और वानरों में तुम, ये चारों बराबर ही हैं ॥ २ ॥ तुमने सप्तद्वीपा पृथ्वी का अन्तिम हिस्सा भी मुझे दिखला दिया। तुममें और मुझमें कथा में वर्णित सिंह और शृगाल (जैसी स्थिति) है। मुझ जैसे वीर को तुमने पूँछ में बाँध लिया। (तिस पर भी) चार सागरों की संध्या और ध्यान करना तुमने नहीं छोड़ा ॥ ३ ॥ यदि मैं किसी को अपने से कमज़ोर पाता हूँ, तो उसे पटककर मार डालता हूँ। मुझसे जिसका बल अधिक है, मैं उससे मित्रता कर लेता हूँ। आज से तुम मेरे सहोदर भाई हो। मेरी लंका तुम्हारे (राज्य) भाग के भीतर है ॥ ४ ॥ दोनों ने अग्नि को साक्षी बनाकर मित्रता की। दोनों दोनों से सुखी हो गये। श्रीराम, वे दोनों ही तुम्हारे बाणों से मारे गये। जो

श्रीराम, से दुष्ट जन पड़े तब बाणे। ये जाने तोमार तत्त्व सेइ सब जाने ५
शुनिया मुनिर कथा श्रीरामेर हास। गाइल उत्तरकाण्ड कबि कृत्तिबास

रावणेर यम बिजयार्थ युद्धयात्रा

कह कह मुनि राम करेन प्रकाश। आर किछु कहत पुराण इतिहास १
से स्थान छाड़िया कोथा गेल से रावण। कह कह मुनि, शुनि अपूर्ब्ब-कथन
मुनि बले, युद्ध चाहि बेड़ाय रावण। नारदेर सने पथे हैल दरशन २
नारदे प्रणाम तबे करे दशानन। आशीर्ब्बाद करिया कहेन तपोधन
रावण ब्रह्मार बर पेले बहु तपे। देब दैत्य स्थिर नहे तोमार प्रतापे ३
रोगे शोके लोक सब जराय पीड़ित। केह हासे केह कान्दे केह आनन्दित
अबश्य मरण-पथ केह नाहि देखि। बन्धु-बान्धबेर दुःखे सर्ब्बलोक दुःखी ४
यम मुखे पड़ियाछे सकल संसार। यमेर एड़िया अन्ये मार, कि आचार
तोमार संग्रामे यम पाबे पराजय। यमेरे मारिया लोके कराओ निर्भय ५
दैत्य मारि लोके बिष्णु करिलेन सुखी। लोक हिते सर्प खाय से गरुड़ पाखी
पाइया ब्रह्मार बर जिनिते भुबन। तोमार बाणेते स्थिर नहे देबगण ६

तुम्हारा तत्त्व जान लेता है वही (संसार में) सब कुछ जानता है ॥ ५ ॥ मुनि के वचन सुनकर श्रीराम हँसने लगे। कवि कृत्तिवास ने उत्तरकांड गाया।

यम पर विजय हेतु रावण की युद्ध-यात्रा

श्रीराम ने अपनी भावना प्रकट करते हुए कहा— कहिये, मुनिवर, (मुझे) कुछ और पुराण-इतिहास सुनाइये ॥ १ ॥ वह जगह छोड़कर रावण कहाँ गया? कहिये मुनि, मैं वह अपूर्व कथा सुनूं। मुनि बोले, रावण युद्ध की कामना करता हुआ घूम रहा था। उसी समय मार्ग में नारद से उसकी भेंट हो गयी ॥ २ ॥ तब रावण ने नारद को प्रणाम किया। उन तपस्वी ने उसे आशीर्वाद देकर कहा— रावण, तुमने अनेक तपस्या के बाद ब्रह्मा का वर प्राप्त किया है। तुम्हारे प्रताप से देव-दैत्य कोई स्थिर नहीं रह सका है ॥ ३ ॥ यह सारा लोक रोग, शोक और जरा से पीड़ित है। कोई हँसता है, कोई रोता है, कोई आनन्दित है। मरण का निश्चित पथ किसी को दिखाई नहीं देता। सारा लोक बन्धु-बान्धवों के दुःखों से दुःखी है ॥ ४ ॥ सारा संसार यम के मुंह में पड़ा हुआ है। फिर तुम यम को छोड़कर दूसरों को मारते हो, भला यह कैसी रीति है? तुम्हारे साथ संग्राम करने पर यम पराजित होगा। यम को मारकर तुम सम्पूर्ण लोक को निर्भय बनाओ ॥ ५ ॥ विष्णु ने दैत्यों को मारकर लोकों को सुखी बनाया है, पक्षीराज गरुड़ लोक-हितार्थ सर्पों को खाया करता है। ब्रह्मा का वर पाकर तुमने संसार को जीत लिया है। तुम्हारे बाणों से देवगण अविचल नहीं रहे ॥ ६ ॥ तुम यम

यमेर मारिया नाश लोकेर तरास। यम-हेतु लोक मरे, लोके उपहास
यमेरे मारिया बीर, कर उपकार। रावण ताँहार कथा करिल स्वीकार ७
शुनिया मुनिर कथा बलिछे रावण। स्वर्ग मर्त्य पाताल जिनिब त्रिभुवन
प्रथमे जिनिब मर्त्य, तत्परे पाताल। तबे से जिनिब गिया अष्ट लोकपाल ८
छोट जिने बड़ जिनि एइ परिपाटी। बड़ जिने छोट जिनि पौरुषेते घाटि
मुनि बले, यदि यमे ना कर दमन। तबे त रहिबे सर्व्वलोकेर मरण ९
कुड़ि पाटी दसने से दश मुखे हासे। चतुर्द्दिशे केया येन फुटे भाद्रमासे
भुवन जिनिब आमि कौतुकेर तरे। तोमार आज्ञाय याब यम जिनिबारे १०
मुनिर वचने याय रावण दक्षिणे। से गेले नारद मुनि भावे मने मने
हेन जन नहे ये यमेर नहे बश। यमे जिनिबारे याय बड़इ साहस ११
यत प्राणी आछे यम सबार ईश्वर। भुवन-वृत्तान्त यत ताहार गोचर
पाइया ब्रह्मार बर दुर्ज्जय रावण। यमनेर सह युद्धे जिने कोन् जन १२
उभयेर के जिनिबे, जानिते ना पारि। नारद देखिते युद्ध चले यमपुरी
अबिबादे बिसंबाद घटाय नारद। नारद याहाते याय, घटाय आपद १३
हइले शमिर दृष्टि पुड़े सर्व्व लोके। रावणे ठेकाये गेल यमेर सम्मुखे

को मारकर लोकों का आतंक दूर करो। 'यम के कारण ही लोग मरते हैं, इस बात पर लोग जैसे उपहास करें। हे वीर, यम को मारकर तुम (संसार का) उपकार करो। रावण ने नारद की यह बात स्वीकार कर ली ॥ ७ ॥ मुनि की बात सुनकर रावण ने कहा, मैं स्वर्ग-मर्त्य-पाताल इन तीनों भुवनों को जीत लूँगा। पहले मैं मर्त्यलोक को जीतूँगा, उसके पश्चात् पाताल को। इसके पश्चात् आठों लोकपालों को ॥ ८ ॥ पहले छोटे को जीतने के बाद बड़े को जीतना चाहिए —यही परम्परा है। यदि बड़े को जीतकर छोटे को जीता तो पौरुष की अवनति होती है। मुनि बोले, यदि तुम यम का दमन न करोगे तो सभी लोकों की मृत्यु बनी रहेगी ॥ ९ ॥ तब दशानन अपने बीस दन्त-पंक्तियों को फैलाकर हँसने लगा। लगा, मानो भादों के महीने में चारों ओर काँस के फूल खिले हुए हैं। बोला, आपके आदेश से मैं यम पर विजय पाने के लिए जाऊँगा। इसके बाद केवल कौतुक के लिए ही संसार को जीतूँगा ॥ १० ॥ मुनि के कहने पर रावण दक्षिण दिशा को चल पड़ा। उसके जाने के बाद नारद मुनि ने मन ही मन सोचा। ऐसा तो कोई नहीं जो यम के वश में न होता हो। पर रावण यम को जीतने चला है, यह तो इसका बड़ा भारी साहस है ॥ ११ ॥ जितने भी प्राणी हैं, यम उन सबके प्रभु हैं। सारे संसार का बिवरण उनके सामने रहता है। ब्रह्मा का वर पाकर रावण दुर्जेय बन गया है, (अब देखना है) यम के साथ युद्ध में कौन विजयी होता है ॥ १२ ॥ 'दोनों में कौन जीते, पता नहीं।' (यह सोचकर) नारद युद्ध देखने हेतु यमपुरी चल पड़े। जहाँ कोई विवाद नहीं, नारद वहाँ भी झगड़ा लगा देते हैं। नारद जहाँ

नायाइते रावण मुनिर आगुसार। येखाने करेन यम धर्म्मेर विचार १४
नारदे देखिया यम उठिया सम्भ्रमे। प्रणाम करिया जिज्ञासेन भक्ति भरे
त्रिदिव छाड़िया केन हैया आगमन। आमार निकटे तव कोन् प्रयोजन १५
नारद बलेन, यम, छिला निरुद्वेगे। तोमा सह युझिते रावण आसे वेगे
दण्डहस्ते समर करिओ दण्डधर। देखिबारे आसिलाम दोंहार समर १६
नारदेर वाक्ये यम चाहे बहुदूर। राक्षस-कटक-चाप देखिल प्रचुर
कृत्तिवास कवि से कवित्वे विचक्षण। यमलोके दशानन प्रवेशे तखन १७

रावणेर यमलोक-परिदर्शन

चड़िया पुष्पक रथे आइल रावण। बहु सैन्य प्रवेशिल यमेर भुवन
आगे थाना प्रवेशिल तार पूर्ब्ब द्वार। देखे तथा सर्व्वलोक धर्म्म-अवतार १८
सत्यवादी देवपितृ भक्त येइ जन। ताहार सम्पद देखि विस्मित रावण
गोदान करिया येइ तुषेछे ब्राह्मण। घृत दुग्धे देखे तार अपूर्व्व भोजन १९
दुःखीके देखिया येबा करे अन्नदान। सुवर्णेर पात्रे सेइ करे सुधा पान
वस्त्रहीने वस्त्र देय, पिपासाय जल। रावण ताहार देखे सम्पद सकल २०

पड़ने पर सारा संसार दग्ध हो जाता है, रावण उसे भी पारकर यम के पास पहुँचा। रावण के पहले ही नारद मुनि आगे बढ़कर वहाँ पहुँच गये, जहाँ यमराज धर्म-विचार किया करते हैं ।। १४ ।। नारद को आये देखकर यमराज सम्मान में उठ खड़े हुए और भक्ति-पूर्वक प्रणाम कर पूछा, स्वर्गलोक को छोड़कर यहाँ किस हेतु आपका आगमन हुआ ? मुनि, मुझसे आपकी कौन-सी आवश्यकता आ पड़ी ।। १५ ।। नारद बोले, यमराज, तुम अब तक निश्चिंत रह रहे थे। अब तो तुमसे युद्ध करने हेतु रावण वेग से चला आ रहा है। हे दंडधर, यम-दण्ड हाथ में लेकर तुम युद्ध करना। मैं तुम दोनों का युद्ध ही देखने हेतु आया हूँ ।। १६ ।। नारद के वचन सुनकर यम ने दूर दृष्टि डाली। उन्हें असंख्य राक्षसों की धनुष-धारी सेना आती दिखायी पड़ी। कृत्तिवास कवि कवित्व में विचक्षण हैं (जिन्होंने यम-रावण-युद्ध का वर्णन किया है)। दशानन ने उसी समय यमपुरी में प्रवेश किया ।। १७ ।।

रावण का यमलोक-परिदर्शन

रावण पुष्पक-विमान पर सवार होकर आया। अनगिनत राक्षसी सेना यमपुरी में घुस गयी। पहले पूर्वद्वार की ओर से उसने प्रवेश किया। उसने देखा, वहाँ सभी साक्षात् धर्म-अवतार हैं ।।१८।। सत्यवादी, देवता-पिता-पितरों के जो भक्त हैं वहाँ उनकी सम्पदा देखकर रावण विस्मित हो गया। जिसने गोदान कर ब्राह्मणों को तुष्ट किया था, वहाँ उन्हें घी-दूध से अपूर्व भोजन करते हुए देखा ।।१९।।

ब्राह्मणेरे भूमिदान करे येइ जन। यमपुरे देखे तारे राज्येर भाजन
अन्यके तुषिल येबा बलि प्रियबाणी। तार सुख देखिया रावण अभिमानी २१
ये करे अतिथि सेवा दिया बासाघर। सोनार आबास तार देखे लङ्केश्वर
स्वर्णदान करिया ये तुषेछे ब्राह्मण। स्वर्ण खाटे शुये आछे, देखिल रावण २२
ब्राह्मणेर सेवा ये करेछे एक मने। ताहार सम्पद देखि रावण बाखाने
करेछे उत्तम पात्रे येबा कन्यादान। सब हैते देखे रावण ताहार सम्मान २३
ये बिष्णु कीर्त्तन करियाछे निरन्तर। ताहार सम्पद देखि दुष्ट लङ्केश्वर
चतुर्भुज यम तारे करिया स्तवन। पाद्य-अर्घ्य दिया तोर दिलेन आसन २४
याय सेइ बैकुण्ठे, ना याय स्वर्गबास। दिव्य देह धरि ताय हलेन प्रकाश
चतुर्भुज रूपे तारे सम्भाष करिला। नानाबिध प्रकारेते ताहारे तुषिला २५
से लोक पुण्येर तेजे एत सुख करे। आपना भाबिया दशानन पुड़ि मरे
लोक-सुख देखि दुष्ट निकषा-कुमार। पूर्ब्ब द्वार एड़ि गेल पश्चिम दुयार २६
बहुतप पुण्य करियाछे येइ जन। ताहार सम्पद देखि दुष्ट दशानन
रावण उत्तर द्वारे करिल गमन। तथा पुण्यबान लोक करे दरशन २७
आगम पुराण शुनियाछे येइ राजा। पुत्र हेन पालियाछे येबा निज प्रजा

वहाँ स्वर्ण-पात्र में अमृत-पान करते हैं। जो वस्त्र-हीन को वस्त्र देता है, प्यासे को पानी देता है, रावण ने देखा, वे वहाँ सारी सम्पदाओं से पूर्ण हैं ।। २० ।। जो ब्राह्मणों को भूमिदान करते हैं, यमलोक में उन्हें राज्य का अधिकारी बने हुए देखा। जिन लोगों ने दूसरों को प्रिय वचन कहकर तुष्ट किया था, उसके सुख देखकर रावण ईर्ष्यालु हो गया ।। २१ ।। अतिथि को निवास का घर देकर जो अतिथि-सेवा करता है, लंकेश्वर ने देखा उसका निवास स्वर्ण-निर्मित है। जिसने स्वर्ण-दान कर ब्राह्मण को तुष्ट किया था, रावण ने देखा, वह सोने की खाट पर सोया हुआ है ।। २२ ।। जिसने एक चित्त से ब्राह्मण की सेवा की थी, उसकी सम्पदा देख रावण प्रशंसा करने लगा। जिसने उत्तम पात्र को कन्यादान किया है, रावण ने वहाँ उसका सबसे अधिक सम्मान होते देखा ।। २३ ।। जिसने निरन्तर विष्णु-कीर्तन किया था, उसकी सम्पदा देख लंकेश्वर मुग्ध हुआ। ऐसे व्यक्ति को चतुर्भुज यमराज स्तवन कर पाद्य-अर्घ्य दे, आसन प्रदान कर रहे थे ।। २४ ।। वह व्यक्ति वैकुंठ जाता है, स्वर्गवासी नहीं होता। वह वहाँ दिव्य देह धारण कर प्रकट हुआ था। यमराज ने चतुर्भुज रूप धरकर उससे वार्त्ता की और अनेक प्रकार से उसे संतुष्ट किया ।। २५ ।। वह व्यक्ति पुण्य-बल से इतना सुख भोग करता है। (यह सोच) अपने बारे में चिन्ता कर दशानन (अन्तर् में) जल मरा। (वहाँ पहुँचे पुण्यवान) जनों का सुख देख निकषा का पुत्र रावण मुग्ध हुआ। वह पूर्व-द्वार को पार कर पश्चिमी द्वार पर पहुँचा ।। २६ ।। जो जन अनेक तप का पुण्य संचय कर चुके हैं, उनकी सम्पदा देखकर दशानन मोहित हो उठा। रावण उत्तर-द्वार पर पहुँचा। और वहाँ पुण्यवान् लोगों के दर्शन किये ।। २७ ।।

महा महैश्वर्य्यं तार देखिल रावण २८
परहिंसा परदार ना करे ये जन । तिन द्वारे धार्म्मिक से देखिल बिस्तर
पूर्ब्ब आर पश्चिम ये दुयार उत्तर । रात्रिदिन नाहि तथा, सब एकाकार २६
यमेर दक्षिण द्वार घोर अन्धकार । एकत्र थाकिया केहु कारे नाहि देखे
यत यत पापो लोक सेइ द्वारे थाके । नरके डुबाये सब यमदूते मारे ३०
चौरासी सहस्र कुण्ड दक्षिण दुयारे । कलरब शुनि तथा गेल लङ्केश्वर
यमेर प्रहारे लोक ह'येछे कातर । विषम प्रहार तथा देखिछे तखन ३१
प्रबेशिल दक्षिण द्वारेते दशानन । यमदूत प्रहारिछे, याहार येमन
यत यत पाप करियाछे यत जन । कुम्भीपाके पड़ि सेइ डुबिछे नरके ३२
येइ यत परदार करेछे कौतुके । ताहाते धरिया फेले, याय गात्र छाल
सुतप्त तैलेर कुण्ड, अग्निर ज्वाल । तार प्रहारेर शुन भीषण काहिनी ३३
अगम्यागमन करे, ये हरे ब्राह्मणी । रुषिया डाङ्गसमारे, याहे लौह काँटा
लोहार डाङ्गस मारे, मारे गोटा गोटा । अर्ब्बुद अर्ब्बुद पोका खुले खाय अंश ३४
सर्ब्बाङ्ग छेदने तार पचे याय मांस । माथार उपरे तुलि मारे लौह बाड़ि
हाते गले बान्धे तारे दिया चर्म्म दड़ि । परित्राहि डाके तारा दारुण प्रहारे ३५
मस्तक फाटिया याय, रक्त पड़े धारे ।

जिस राजा ने आगम-पुराण श्रवण किया था, जिसने प्रजा को पुत्र-जैसा पालन किया था, जो पर-हिंसा नहीं करता था, परायी पत्नी (से अवैध संबंध) नहीं रखता था, रावण ने उनका महा-महैश्वर्य देखा ॥ २८ ॥ पूर्व-पश्चिम और उत्तर ओर के तीनों द्वारों पर उसने अनेक धर्मात्माओं को देखा । यम का दक्षिणी द्वार घोर अंधकारमय है । वहाँ दिन-रात नहीं होते, सब कुछ एकाकार रहता है ॥ २९ ॥ जितने पापी जन उस द्वार पर रहते हैं, साथ-साथ रहने पर भी उनमें कोई किसी को देख नहीं सकता । दक्षिणी-द्वार पर चौरासी हज़ार कुंड हैं । सबको नरक में डुबोकर यम-दूत मारा करते हैं ॥ ३० ॥ यम के प्रहारों से वे जन कातर हो रहे थे । उसका कोलाहल सुनकर रावण वहाँ पहुँचा । दशानन ने दक्षिणी द्वार में प्रवेश किया । उसने वहाँ उस समय (यमदूतों का) विषम प्रहार होते देखा ॥ ३१ ॥ जिस-जिस व्यक्ति ने जितना-जितना पाप किया था, जिसकी जैसी (करतूत रही) है, यमदूत उसे वैसे ही प्रहार कर रहे थे । जिस व्यक्ति ने कौतुक से जितनी पर-नारियों से भोग किया था, उसे कुम्भी-पाक में डालकर नरक में डुबोया गया था ॥ ३२ ॥ अत्यन्त तप्त तेल के कुंड में, (जिसके चारों ओर) अग्नि की लपटें निकल रही थीं, (यमदूत) उस पापी को पकड़कर उसमें फेंक देते थे जिससे चमड़ी जल जाती थी । जिसने अगम्यागमन किया है, (या) जिसने ब्राह्मणी का हरण किया है, उसे प्रहार करने की भयंकर कथा सुनो ॥ ३३ ॥ यमदूत उसे लोहे के मुद्गरों से एक-एक कर पीटते हैं । क्रोधित होकर ऐसे मुद्गरों से पीटते हैं जिसमें लोहे के कांटे लगे हुए हैं । उसके समूचे शरीर को छेदने के कारण मांस सड़ जाता है और करोड़ों कीड़े खोद-खोदकर खाते हैं ॥३४॥ उसके हाथ और गले को चमड़ी की डोरियों से बाँध रखते हैं और लोहे का डंडा उठाकर

गदाघाते माथा फाटि रक्त पड़े स्रोते । बिषम प्रहार तारे करे यमदूते
नरके धरिया फेले पापी सकलेरे । बिष्ठा खेये पापी लोक फांपरिया मरे ३६
गृधिनी शकुनि मांस टाने चारि भिते । उपाड़े सांड़ासि दिया चक्षु यमदूते
हस्त पद नासा कर्ण नयन जिह्वाय । लोहार मुद्गर मारे असह्य से दाय ३७
पाप-पुण्य-भागी हय ये इन्द्रियगण । बिषम प्रहारे भुन्जे यमेर ताड़न
पर स्त्री के ये जन दियाछे आलिंगन । शुनह बिषम तार यमेर ताडन ३८
लोहमयी एक नारी आने यमदूते । अग्नि मध्ये ताहारे ताताय भाल मते
सेइ लोहा अग्नि सम ज्वलन्त भीषण । पापी सब तारे धरि देय आलिगन ३९
गात्र मांस ज्वले, परित्राहि डाके पापी । ताहा देखि रावण हइल अति तापी
परित्राहि डाके पापी दारुण प्रहारे । ज्वालाय ज्वलिया पापी धड़फड़ करे ४०
परदार हरियाछे रावण बिस्तर । बिषम प्रहार देखि चिन्तित-अन्तर
परस्त्री दर्शन येइ करे एक चिते । दुइ चक्षु ताहार उपाड़े यमदूते ४१
करिछे यमेर दूत बिषम ताड़ना । हरिले परे नारी एतेक यन्त्रणा
परस्त्री हरिया येवा करेछे रमण । चिर कालावधि भोगे नरक से-जन ४२
ताहाते सन्तति हय बाड़े परिबार । कोटि कल्पे नापाय से नरके उद्धार
तथापि नरेर मने नाहि ज्ञानोदय । परधन परदारे सदा मन रय ४३
शरण लइले तार ये हरे पराण । कराते चिरिया तार करे खान खान
निदारुण पिपासाय तालु तार शोषे । पानीये चाहिले मारे यमदूत रोषे ४४

उसके सिर पर चोट मारते हैं। उसका सिर फट जाता है, धाराओं में रक्त बहता है। उस दारुण प्रहार से वह बचाओ, बचाओ पुकार करता है ।। ३५ ।। गदा की चोट से उसका सिर फट जाता है, झरने की भाँति धारा से रक्त गिरता है। यमदूत उस पर भयंकर प्रहार करते हैं। ऐसे सभी पापियों को पकड़कर नरक में डाल देते हैं। बिष्ठा खाते हुए वे पापी जन तड़प-तड़पकर मरते हैं ।। ३६ ।। गिद्ध-गिद्धनियाँ चारों ओर से उनके मांस नोचते हैं, और यमदूत चिमटों से उनकी आँखें निकाल लेते हैं। उनके हाथ, पैर, नाक, कान, आँख और जीभ पर वे यमदूत लोहे के मुद्गरों से पीटा करते हैं। उनका वह कष्ट असहनीय होता है ।। ३७ ।। पाप-पुण्य की भागी इन्द्रियाँ यम की भयंकर मार झेलती हैं। जो लोग परस्त्री का आलिङ्गन करते हैं, उन पर यम की विषम यातना सुनो ।। ३८।। यमदूत एक लोहे की नारी को लाकर उसे अग्नि में अच्छी तरह गर्म करते हैं। जब वह लोहा अग्नि की भाँति भयंकर ज्वलन्त हो उठता है, तब पापियों को उसका आलिंगन करना पड़ता है ।।३९।। उसके शरीर का मांस जलता है, पापी 'त्राहि, त्राहि' पुकारते हैं। वह (पापियों की यातना) देखकर रावण जल उठा। पापी प्रचंड प्रहार से 'बचाओ, बचाओ' पुकार रहे थे। ज्वाला में जलते हुए छटपटा रहे थे ।। ४० ।। रावण स्वयं अनेकों पर-नारियों का हरण किया था। वह भयंकर प्रहार देखकर उसका अन्तर् चिन्तित हो उठा। जो एकटक पर-स्त्री की ओर देखता है, यमदूत उसकी दोनों आँखें निकाल लेते हैं ।।४१।। यमदूत प्रचंड रूप से मारते हैं; पर-नारी का हरण

ब्राह्मण देबेर बस्तु हरे येइ जन। तार प्रहारेर कथा करि निबेदन
हस्त-पद बान्धे तार बिया चर्म्म दड़ि। माथार उपरे मारे डाङ्गसेर बाड़ि ४५
बुके शूल मारे केह, चक्षुटानि धरे। परित्राहि डाके पापी दारुण प्रहारे
देबता स्थापिया येबा ना करे पूजन। शुनह बिषम तार यमेर ताड़न ४६
हात-पा बान्धिया फेले दिया चर्म्म दड़ि। ताहार उपरे मारे दोहातिया बाड़ि
घाड़-मुड़ बान्धि फेले अग्निर भितर। बिषम प्रहार भुञ्जे सहस्र बतसर ४७
पर-धन येइ जन करे डाका-चुरि। क्षुर धारे काटे तारे खण्ड खण्ड करि
पर-हिंसा पर-द्वेष करेछे ये जन। तार प्रहारेर कथा अकथ्य कथन ४८
मिथ्या शाप देय आर बले मिथ्या बाणी। तार प्रहारेर कत कहिब काहिनी
सुतप्त साँड़ासि दिया जिह्वालय काड़ि। माथार उपरे मारे डाङ्गसेर बाड़ि ४९
ये हरे गच्छित आर हरे स्थाप्य धन। नरके डुबाय तारे यमदूत गण
ब्राह्मणेरे मन्द बले, मारे ज्येष्ठ भाइ। मुषले ताहारे मारे, तार रक्षा नाइ ५०

करने पर ऐसी यंत्रणा मिलती है। जो पर-स्त्री का हरण कर रमण करता है, वह चिरकाल तक नरक-भोग करता है ॥ ४२ ॥ वहीं उसकी संतति होती है, उसका परिवार बढ़ता है। कोटि-कोटि कल्प में भी वह नरक से उद्धार नहीं पाता। तथापि मनुष्य के मन में ज्ञान नहीं होता। वह पर-धन और पर-नारी में सदा मन दिये रहता ॥ ४३ ॥ (पराजित शत्रु के) शरण लेने पर यदि कोई शरणागत के प्राण ले लेता है तो उसे यमदूत आरी से चीरकर टुकड़े-टुकड़े कर डालते हैं। भयंकर प्यास से उसकी तालू सूख जाती है; यदि वह पानी माँगता है (या पानी की ओर देखता है) तो यमदूत उसे क्रोध से पीटते हैं ॥ ४४ ॥ जो व्यक्ति ब्राह्मण और देवता की वस्तु का हरण करता है, उसे किस प्रकार प्रहार करते हैं, यह बताता हूँ। उसके हाथ-पैर चमड़े की डोरियों से बाँधते हैं और सिर पर मुद्गर की चोट करते हैं ॥ ४५ ॥ कोई छाती पर शूल से मारता है, कोई आँखें खींच निकालता है, पापी भयंकर प्रहार से 'बचाओ-बचाओ' पुकारते हैं। जो लोग देवता की स्थापना कर उनका पूजन नहीं करते, उसे यम की कैसी भयंकर ताड़ना मिलती है, सुनो ॥ ४६ ॥ उसके हाथ-पैर चमड़े की डोरी से बाँध डालते हैं और उस पर दुहत्थे डंडे से चोट करते हैं। उसके गले और सिर को बाँधकर आग में डाल देते हैं और वे हजारों साल तक वैसे भयंकर प्रहार भोगते रहते हैं ॥ ४७ ॥ जो पर-धन पर डाका डालता है, या चोरी करता है उसे यमदूत तीखे छूरे से काटकर टुकड़े-टुकड़े कर डालते हैं। जो जन पर-हिंसा, पर-द्वेष करते हैं, उनपर कैसा प्रहार होता है, वह अनिर्वचनीय है ॥ ४८ ॥ जो मिथ्या शाप देता है और मिथ्या वचन बोलता है, उस पर कितना प्रहार होता है, भला कैसे वर्णन करें? अत्यधिक गर्म सँड़सी से यमदूत उसकी जीभ नोच लेते हैं और सिर पर मुद्गरों से चोट करते हैं ॥ ४९ ॥ जो व्यक्ति किसी का

परहिंसा करे, बले असत्य बचन। बिषम ताहार हय यमेर ताड़न
अपात्रेते कन्या देय, आर लय कड़ि। ताहार माथाय देय मांसेर चुबड़ि ५१
मांस 'लह' 'लह' बलि सदा डाक छाड़े। मांसेर रसानि तार, बुक ब'ये पड़े
मिथ्या साक्ष्य देय येइ सभामध्ये बसि। तार जिह्वा टाने दिया ज्वलन्त सांड़ासि ५२
तार पूर्ब्ब पुरुषेरा भुञ्जे सेइ पाप। चिरकाल पाप भुञ्जे, पाय बड़ ताप
अतिथि पाइया येबा न करे जिज्ञासा। अपार दुर्गति तार नरकेते बासा ५३
एक जन दान करे, अन्ये हय हांता। तार बुके देय यम जगद्दल जांता
सीमा हरे येजन, पोड़ाय परघर। बिषम प्रहार करे यमेर किङ्कर ५४
उभयेर न्याये येइ करे पक्षपात। कुम्भीपाके फेले तारे करिया आघात
बिजिते जिताय येइ हइया स्वपक्ष। यमदूते मारे तारे कहिते अशक्य ५५
चुरि-डाका करे ये, ना करे लोकहित। यमदूते ताहारे प्रहारे बिपरीत
लोके पीड़ा दिया येइ तुषेछे ईश्वर। पाय से कुक्कुर जन्म सहस्र बत्सर ५६
लोक रक्षा ना करि ये राजा करे नाश। लइया शृगाल जन्म खाय मृत-मांस
ना चिन्तिया राजहित चिन्ते प्रजाहित। बिषम प्रहार तार हय समुचित ५७

गच्छित धन और थाती का धन हड़प लेता है, उसे यमदूत नरक में डुबो देते हैं। जो ब्राह्मणों की निन्दा करते हैं, बड़े भाई को मारते है, उसे यमदूत मूसलों से मारते हैं, वह बच नहीं पाता ॥ ५० ॥ जो पर-हिंसा करता है, असत्य वचन बोलता है, उसे यम की भयंकर ताड़ना मिलती है। जो अपात्र को कन्या-दान करता है और कन्या के लिए धन लेता है, उसके सिर पर मांस की टोकरी चढ़ा देते हैं ॥ ५१ ॥ 'मांस लो' कहकर सदा पुकारते हैं। मांस की रसानी उसकी छाती पर से बहती रहती है। जो सभा में बैठकर झूठी गवाही देता है, जलते हुए चिमटे से यमदूत उसकी जीभ खींच लेते हैं ॥ ५२ ॥ उसके पितर उस पाप को भोगते हैं। वह चिरकाल तक पाप भोगता रहता है और बहुत कष्ट सहता है। अतिथि के आने पर भी जो उसकी पूछताछ नहीं करता, उसकी अपार दुर्गति होती है, उसे नरकवास मिलता है ॥ ५३ ॥ कोई दान करता हो और दूसरा उसमें रुकावट डाले, तो उसकी छाती पर यमराज जगत को दलन करनेवाले (विशाल चट्टान की) चक्की चढ़ा देते हैं। जो दूसरों की भूमि-सीमा का अपहरण करता है, दूसरों का घर जलाता है, उसपर यमदूत प्रचंड प्रहार करते हैं ॥ ५४ ॥ दोनों ओर के (वादी और विवादी के) न्याय में जो पक्षपात करता है, यम-दूत उस पर चोट करते हुए कुंभीपाक नरक में डाल देते हैं। अपने पक्ष का होते हुए भी (विश्वासघात कर) जो व्यक्ति हारे को जिताता है, यमदूत उसे इतना मारते हैं कि कहा नहीं जा सकता ॥ ५५ ॥ जो चोरी-डकैती करता है, लोक-हित नहीं करता, उसे यमदूत सिर उलटा कर भयंकर प्रहार करते हैं। जनता को पीड़ा देकर जो ईश्वर की पूजा है करता है, वह सहस्र वर्ष कुत्ते का जन्म पाता है ॥ ५६ ॥ जो राजा लोक-रक्षण न

ब्रह्महत्या सुरापान करे येइ जन। विषम यातना भोग करे अनुक्षण
गुरुपत्नी हरणेते यत पाप हय। ताहार उचित दण्ड शरीरे ना सय ५८
मरणे मरण नाहि दुःख मात्र सार। कर्म्मभोग भुञ्जे लोके, ना देखे निस्तार
ब्राह्मण हइया करे शूद्राणी-गमन। पापे हय से सबार स्वधर्म्मे पतन ५९
चण्डाल-जनम हय शूद्राणी-गमने। सर्व्व कर्म्म नष्ट हय तार दरशने
देवकार्य्य पितृकार्य्य सब पण्ड हय। शूद्रगामी ब्राह्मणे ये जन नेहारय ६०
पातकी जनेर सह ये जन सम्भाषे। धार्म्मिकेर धर्म्म लोप हय सेइ दोषे
राजा ह'ये प्रजा यदि ना करे पालन। परलोके ताहार नरक अखण्डन ६१
पुत्रेर समान यदि राजा पाले प्रजा। कोटि कल्प स्वर्गसुख भुञ्जे सेइ राजा
अर्थेर लोभेते हय देवल ब्राह्मण। शुद्धमते ये जन ना करेन पूजन ६२
येवा हरे देवस्व बा करे दुराचार। देवलिया ब्राह्मणेर नाहिक निस्तार
हाते करि घृत देय नैवेद्य-उपरे। सेइ घृत ढुके तार नखेर भितरे ६३
से घृत अन्नेर तापे उनाइया पड़े। अन्न सह घृत याय शरीर भितरे
शास्त्रे आछे, सघृत नैवेद्ये करे पूजा। से पापे ब्राह्मण हय कालिञ्जरे राजा ६४

कर प्रजा का विनाश करता है, वह शृगाल का जन्म ले मृतक-मांस-भोजी होता है। जो राजहित-चिंतन न कर केवल प्रजा का हित-चिंतन करता है, उसे भी समुचित भयंकर प्रहार मिलता है ॥ ५७ ॥ जो व्यक्ति ब्रह्म-हत्या करता है, सुरापान करता है, वह निरन्तर भीषण यातना भोगता है। गुरुपत्नी के हरण से जितना पाप होता है, उसका उचित दंड (इतना भयंकर होता है कि) उसका शरीर सहन नहीं कर पाता ॥ ५८ ॥ केवल मरण हो जाने पर ही मरण नहीं होता, (मरण के बाद भी) केवल दुःख ही मिलता है। लोग कर्म-भोग ही भोगा करते हैं; उससे निस्तार नहीं होता। जो ब्राह्मण होकर भी शूद्राणी से संभोग करते हैं, उनके पाप तो होते ही हैं, वे स्वधर्म से भी पतित हो जाते हैं ॥ ५९ ॥ शूद्राणी से संभोग करने पर चांडाल का जन्म मिलता है। उसके दर्शन से भी सभी धर्म नष्ट हो जाते हैं। जो लोग शूद्रा से संभोग करनेवाले ब्राह्मण को देखते हैं उनके देवकार्य, पितृकार्य सब नष्ट हो जाते हैं ॥ ६० ॥ जो लोग पातकी जनों से संभाषण करते हैं, उन धार्मिक जनों का उसी दोष के कारण धर्म-लोप हो जाता है। राजा होकर यदि प्रजा का पालन नहीं करता, तो परलोक में उसे निश्चित रूप से नरक मिलता है ॥ ६१ ॥ यदि राजा प्रजा को पुत्र-जैसा पालन करता है तो वह राजा कोटि कल्प तक स्वर्ग-सुख भोगता है। जो जन शुद्ध रूप से पूजा नहीं करते, अर्थ-लोभ के कारण वे देवल (पुजारी) ब्राह्मण होते हैं ॥ ६२ ॥ जो जन देवोत्तर-सम्पदा का हरण करता है, या दुराचार करता है ऐसे देवलिया (पुजारी) ब्राह्मण (नरक से) बच नहीं पाते। (हवन-काल में) हाथ से जो नैवेद्य पर घी देता है, वह घी उनके नाखूनों में घुस जाता है ॥ ६३ ॥ वह घी अन्न के ताप पिघल जाता है और अन्न के साथ वह शरीर के अन्दर चला

ए सकल कथा शुनि लागे चमत्कार। देबल बिप्रर कभु नाहिक निस्तार
शूद्र ह'ये येइ जन हरेछे ब्राह्मणी। ताहार बिषम रोल, बड़ डाक शुनि ६५
लक्ष लक्ष साँड़ासिते गात्र मांस टाने। छिंड़ि खाय गात्र मांस सहस्र सञ्चाने
डाङ्गसेर बाड़िमारी करे खान खान। कोटि कल्प पाप भुञ्जे, नाहिक एड़ान ६६
ये जन करिया ऋण ना करे शोधन। तार पितृलोके भुञ्जे यमेर ताड़न
विघत प्रमाण पोका पुरीषेर कुण्डे। ताहार उपरि फेले धरि तार मुण्डे ६७
प्रतप्त तैलेर कुण्डे अग्निर ज्वाल। ताहार उपरे फेले याय गात्रछाल
अग्नि मध्ये साँड़ासि ताताय भाल मते। ताहा दिया गात्र मांस टाने यमदूते ६८
इत्यादि नरक-भोग करे बहुवार। ब्रह्मस्व हरण पापे नाहिक निस्तार
परनिन्दा करे येबा, सुजनेरे निन्दे। चर्म्म दड़ि दिया तारे यमदूते बान्धे ६९
गलाय बंड़शी दिया करे टाना टानि। खाण्डा दिया तार माथे करे हाना हानि
छोट काँटा दिया तारे बड़ काँटाय लय। गले गल गण्ड तार बड़इ संशय ७०
देखिल रावण पुरुषेर ये यन्त्रणा। ए हते बाइश गुण नारीर यातना
छोट किबा बड़ येबा यत करे पाप। पाप-अनुसारे भुञ्जे शमनेर ताप ७१

जाता है। शास्त्रों में कहा गया है, वैसे घी और नैवेद्य से जो पूजा करता है, वह ब्राह्मण उस पाप से कालिञ्जर-राजा बनता है ॥ ६४ ॥ ये बातें सुनने में अद्भुत-सी लगती हैं, देवल-विप्र की (नरक से) रक्षा नहीं हो सकती। शूद्र होकर जो ब्राह्मणी का हरण करता है, नरक में उसकी बड़ी चीख़-पुकार सुनायी पड़ती है ॥ ६५ ॥ ऐसे पापियों को यमदूत लाखों सँड़सियों से शरीर का मांस नोचते हैं, उनके शरीर का मांस सहस्रों कौवे नोच खाते हैं, मुद्गरों की चोट से टुकड़े-टुकड़े कर डालते हैं। उन्हें कोटि कल्प तक पाप (का दण्ड) भोगना पड़ता है, वे (पाप के दण्ड-भोग से) किसी प्रकार भी बच नहीं पाते ॥ ६६ ॥ ऋण लेने के बाद जो उसे चुकाता नहीं, उसके पितर भी यम की यातना भोगते हैं। बित्ते भर भर के कीड़ों वाले मल के कुंडों में, उसके सिर को पकड़ कर फेंकते हैं ॥ ६७ ॥ जलती अग्नि से अत्यधिक तप्त तैल के कुंड में उसे फेंकते हैं, जिससे शरीर की चमड़ी उधड़ जाती है। अग्नि में वे सँड़सी को अच्छी तरह से लाल कर लेते हैं और उससे यमदूत शरीर का मांस खींच लेते हैं ॥ ६८ ॥ जो ब्राह्मण का धन हरण करते हैं उन्हें आदि से अन्त तक नरक-भोग अनेक बार करते रहना पड़ता है। उस पाप (के फल-भोग) से बच नहीं सकते। जो पर-निन्दा करते हैं, सज्जनों की निन्दा करते हैं, चमड़ी की डोरी से उन्हें यमदूत बाँधा करते हैं ॥ ६९ ॥ उनके गले में बंशी फँसाकर खींचते हैं, खड्ग से उनके सिर पर प्रहार करते हैं। छोटे काँटों में फँसाकर उन्हें बड़े काँटों में डाल लेते हैं, उनका गल-गंड गलने लगता है वे बड़ी यंत्रणा भोगते हैं ॥ ७० ॥ रावण ने पुरुषों की जो यंत्रणा देखी, नारियाँ उससे बाईस गुनी अधिक यंत्रणा भोग रही थीं। छोटा हो या बड़ा, जो जितना पाप करता है, पाप के अनुसार ही वह यम-यंत्रणा भोग करता है ॥ ७१ ॥

रावण कर्तृक यमेर पराजय

लोकेर यातना दशानन भावि चिते । बन्दी मुक्त करे से मारिया यमदूते
शराघाते रावण करिछे चूर मार । यमदूत मारि करे बन्दीक उद्धार १
यत पाप करे लोक भुञ्जे तार फले । पापेते बान्धिया आने दड़ि दिया गले
पापेर कारणे पापी चक्षे नाहि देखे । पाप दोषे आर बार पड़िल नरके २
दशानन बले, बन्दी करिनु उद्धार । आर बार केन तारे करिछ प्रहार
दूत बले, रावण आमारे केन गञ्जे । आपनार पाप लोक आपनि से भुञ्जे ३
इहलोके रावण यतेक कर पाप । परलोके एमनि भुञ्जिबे परिताप
परलोके तब सने हेथा हवे देखा । तखन तोमार सने हवे लेखा जोखा ४
कुपिल रावण राजा दूतेर बचने । सन्धान पूरिया बाण यमदूते हाने
यमेर किङ्कर यत नाना अस्त्र धरे । शेल जाठि मुद्गर फेलिछे तदुपरे ५
यमदूत सकल सहजे भयङ्कर । राबणेर सने युद्ध करिल विस्तर
बड़ बड़ शाल गाछ फेलिछे पाथर । भाङ्गिल रथेर चाका, रावण फाँफर ६
ब्रह्मार बरेते रथ अक्षय अव्यय । यत भाङ्गे, तत हय, नाहि अपचय
नाना शिक्षा जाने सेइ ब्रह्मार कारण । बिचक्षण शेले रावण करिछे ताड़न ७

रावण द्वारा यम की पराजय

रावण ने लोगों की नरक-यातना के बारे में अपने चित्त में सोचा और यमदूतों को मार भगा दिया उसने बन्दियों को मुक्त कर दिया। बाणों की चोटों से रावण यमदूतों को चूर-चूर करने लगा और उन्हें मारकर बंदियों का उद्धार करने लगा ॥ १ ॥ लोग जितने पाप करते हैं, (नरक में) उसी का फल-भोग करते हैं। पापों के कारण उन्हें गले में रस्सी बाँधकर (यमदूत) ले आते हैं। वे पापी पाप के कारण ही आँखों से कुछ देख नहीं पाते थे और पाप-दोष के कारण (रावण के छुड़ा देने पर भी) पुनः नरक में पड़ जाते थे ॥ २ ॥ दशानन बोला, मैंने तो बन्दियों का उद्धार कर दिया, उन पर पुनः किसलिए प्रहार कर रहे हो ? यमदूत बोले— रावण, हमें क्यों गंजना देते हो ? लोग अपना पाप ही स्वयं भोगते हैं ॥ ३ ॥ इस लोक में (मर्त्यलोक में) रावण, तुम जितने पाप कर रहे हो, परलोक में उसी के अनुसार दंड भोगोगे। परलोक में तुम्हारे संग यहीं भेंट होगी, तब तुम्हारा लेखा-जोखा लिया जायेगा ॥ ४ ॥ यमदूत के वचन सुनकर राजा रावण कुपित हो उठा। धनुष पर बाण चढ़ा निशाना लगा, यमदूतों पर प्रहार करने लगा। सभी यमदूत शक्ति, शूल, मुद्गर आदि अनेक प्रकार के अस्त्र लेकर रावण पर प्रहार करने लगे ॥५॥ यमदूत तो स्वभाव से ही भयंकर होते हैं। उन सबने रावण के साथ भयंकर युद्ध किया। बड़े-बड़े शालवृक्ष, पत्थर उस पर फेंकने लगे जिससे रावण के रथ का पहिया टूट गया, रावण संकट में पड़ गया ॥ ६ ॥ ब्रह्मा के वर के कारण उसका रथ अक्षय, अव्यय था। वह जितना टूटता

तितिल रावण अङ्ग आपन शोणिते । रावणेर गा बहिया रक्त पड़े स्रोते
यमेर किङ्कर सब बड़इ चतुर । रावणेर सने रण करिल प्रचुर ८
नील-हरिताल-बाण यमदूते मारे । रावण मूर्च्छित हये रथ हैते पड़े
छट-पट करितेछे बाणेर ज्वालाय । कुड़ि चक्षु राङ्गा करि दूत-पाने चाय ९
थाक थाक करि सबे गर्जिछे रावण । पाशुपत बाण एड़े रुषिया तखन
आलो करि आसे बाण अग्नि अबतार । यमदूत पुड़े सब हइल संहार १०
पुड़िया मरिल यमदूत अग्नि-तेजे । रावणेर रथो परे जय ढाक बाजे
रथोपरि सिंहनाद छाड़िछे रावण । बाहिर हइल रथे रविर नन्दन ११
राङ्गामुख रथ खान अष्ट घोड़ा वहे । त्वरिते आसिया रावणेर आगे रहे
ये मूर्त्तिते यमराज पृथिवी संहारे । से मूर्त्तिते धर्म्मराज आइल समरे १२
मृत्युकाल दण्ड-अस्त्र यमेर प्रधान । युझिवार वेला आसि-हैल अधिष्ठान
यमेरे कहिछे मृत्यु, कर आज्ञा दान । परशिया रावणेरे करि खान खान १३
परशने किवा काज दरशने मरे । आज्ञा कर, आमि गिया मारि लङ्केश्वरे
यम बले, मृत्यु, देख संग्राम सरस । दण्ड हस्ते मारि पाड़ि रावण राक्षस १४

था, तुरन्त ठीक हो जाता था। उसकी कोई क्षति नहीं होती थी। ब्रह्मा के वर से रावण अनेक प्रकार की शिक्षा, रणकौशल जानता था। प्रचंड शक्ति हाथ में लेकर रावण यमदूतों पर प्रहार करने लगा ॥ ७ ॥ रावण के अंग उसके अपने रक्त से भीग गया। उसके शरीर से धाराओं में रक्त बहने लगा। यमदूत बड़े चतुर होते हैं। उन सबने रावण से बड़ा संग्राम किया ॥ ८ ॥ यमदूतों ने नील-हरिताल बाणों का प्रहार किया जिससे रावण मूर्च्छित होकर रथ से गिर पड़ा। वह बाणों की ज्वाला से तड़पने लगा और बीस आँखें लाल-लाल कर दूतों की ओर देखने लगा ॥९॥ 'ठहर, ठहर', कहकर रावण सब पर गरजने लगा और कुपित होकर उसने पाशुपत बाण छोड़ा। अग्नि का अवतार वह बाण आलोकित कर तेजी से आया। सारा यमदूत जल गये। उनका संहार हो गया ॥१०॥ अग्नि के तेज से यमदूत जल मरे, रावण के रथ पर विजय-दुन्दुभी बजने लगी। रथ पर से रावण सिंहनाद कर रहा था, तब रविनन्दन यमराज बाहर निकले ॥ ११ ॥ उनका मुख लाल था, उनके रथ को आठ घोड़े खींच रहे थे, तेज़ी से आकर उनका रथ रावण के पास रुक गया। जैसी मूर्ति-धारण कर यमराज विश्व का संहार करते हैं, वैसी ही मूर्ति धारण कर वे संग्राम में आये ॥ १२ ॥ यमराज के मुख्य अस्त्र हैं, मृत्यु और काल-दण्ड। संग्राम के समय वे भी आकर (उनके पास) अधिष्ठित हो गये। मृत्यु ने यमराज से कहा— आप आज्ञा दें, तो रावण का स्पर्श कर मैं उसे खंड-खंड कर डालूँ ॥ १३ ॥ या मेरे स्पर्श करने की क्या आवश्यकता है, वह तो मेरे देखने मात्र से मर जाए। आज्ञा दें, मैं जाकर लंकेश्वर रावण को मार डालूँ ! यम ने कहा, मृत्य, यह सरस संग्राम देखो ! मैं दण्ड हाथ में लेकर राक्षस रावण को मार गिराऊँगा ॥ १४ ॥ तुम्हारा संग्राम

तोमार संग्राम अजि क्षणेक थाकुक । मारिया रावणे पाड़ि, देखह कौतुक
कालदण्ड मुखे उठे अग्नि खरशाण । यार दरशने लोक हाराय पराण १५
चारि भिते अस्त्र यार सर्पेर आकार । काल दण्ड-अस्त्रे कारो नाहिक निस्तार
हेन काल दण्ड यम तुलि निला हाते । ताहा हैते सर्प बाहिराय चारि भिते १६
अजगर काल सर्प शाङ्खिनी चित्राणी । मुखे विष अग्नि ज्वले, शिरे ज्वले मणि
सर्पेर बिकट दन्त स्पर्श मात्र मरि । दण्ड देखि त्रिभुवन कांपे थरहरि १७
दण्डमुखे अग्नि ज्वले लोकेर तरास । सर्ब्ब लोके देखे दशाननेर बिनाश
डाक दिया यमे सबे करिछे वाखान । रावण मरिले देवगण पाय त्राण १८
आज यदि यम तुमि मारह रावणे । तोमार प्रसादे एड़ाइबे देवगणे
देवता सहित ब्रह्मा आछे अन्तरीक्ष । यमहस्ते दण्ड देखि आइल समक्षे १९
शमनेरे चतुर्मुख कहेन वचन । क्षान्त हओ यमराज, ना करिह रण
रावण पाइल बर, नाहि तब मने । रावणे हठात् तुमि मारिबे केमने २०
दण्ड सृजिलाम आमि मृत्युर कारण । याहार आघाते लुप्त हय त्रिभुवन
याहार दर्शने मरे, स्पर्शे किबा कथा । हेन दण्ड रावणे मारिबे केन वृथा २१
दण्ड व्यर्थ याबे, नाहि मरिबे रावण । आमार बचन शुन, ना करिह रण
दण्ड राख, दण्ड राख, शुन दण्डधर । रावणेरे जय दिया याह तुमि घर २२

आज क्षण भर रहने दो, मैं रावण को मार गिराता हूँ, तुम कौतुक देखो। काल-दण्ड के मुँह से तेज अग्नि निकल रही थी, जिसके देखने मात्र से लोगों के प्राण चले जाते हैं ।। १५ ।। जिसके चारों ओर सर्पाकार अस्त्र हैं, उस कालदण्ड रूपी अस्त्र से कोई बच नहीं सकता। ऐसे कालदण्ड को यम ने हाथ में उठा लिया। उससे चारों ओर सर्प निकलने लगे ।। १६ ।। अजगर, काल-सर्प, शंखिनी, चित्रणी, जिनके मुख पर विष-अग्नि और सिरों पर मणियाँ जल रही थीं, उन सर्पों के विकट दन्तों के स्पर्श से मृत्यु हो जाती है। उस दण्ड को देखकर त्रिभुवन थर-थर काँपने लगा ।।१७।। कालदण्ड के मुख पर अग्नि जलते देख लोग संत्रस्त हो उठे। सारे लोकों ने देखा, दशानन का विनाश होने ही वाला है। सब यम को पुकार कर बखान करने लगे, रावण के मर जाने पर देवों का उद्धार होगा ।। १८ ।। यमराज, आज यदि आप रावण को मार डालें तो आपके प्रसाद से देवगण की मुक्ति होगी। देवगण के साथ ब्रह्मा अन्तरिक्ष में थे, यम के हाथ में कालदण्ड को देखकर वे सामने आ गये ।। १९ ।। वे यमराज से कहने लगे, यमराज, रुक जाओ, संग्राम न करो। रावण को वरदान मिला है, तुम्हें क्या स्मरण नहीं है। तुम रावण को अकस्मात कैसे मारोगे? ।।२०।। मैंने मृत्यु के लिए काल-दण्ड का सर्जन किया, जिसके आघात से त्रिभुवन लुप्त हो जाता है। जिसके दर्शन मात्र से मृत्यु होती है, स्पर्श होने पर तो बात ही क्या है। ऐसा दण्ड भला रावण पर व्यर्थ क्यों मारोगे ? ।।२१।। (दण्ड से आघात करने पर) काल-दण्ड ही व्यर्थ हो जायेगा, रावण नहीं मरेगा। मेरे वचन सुनो, संग्राम न करो। हे दण्डधारी यमराज, दण्ड रख दो, रावण को विजय देकर तुम घर चले जाओ ।। २२ ।। यम ने

यम बले, तब बरे सबे ठाकुराल । ये लङ्घे तोमार बाक्य याबे से पाताल
यमराज कालदण्ड मृत्यु तिनजन । ए तिनेर मृत्यु देखि काँपे त्रिभूवन २३
यम कालदण्ड मृत्यु ए तिनेर गन्धे । पलाय राक्षस सैन्य चुल नाहि बान्धे
बड़ बड़ राक्षस से रावण सोसर । ए तिनेर मूर्त्ति देखि हइल फांफर २४
ए तिनेर बिक्रम सहिवे कार प्राणे । पलाय राक्षस सब त्यजिया रावणे
पलाय अमात्य सब छाड़िया रावणे । एकेश्वर रावण रहिल मात्र रणे २५
बुझिवार काज थाक, देखि यमराजे । हेन बीर नाहि ये सम्मुख हए युझे
निर्भय रावण राजा बिधातार बरे । यमेर सम्मुखे युझे, शङ्का नाहि करे २६
दशदिक दशानन छाइ लेक बाणे । रावणेर बाण यम किछुइ ना गणे
जाठि शेल शूल एड़े रविर नन्दन । रावण जर्जर हय तबु करे रण २७
छाइल यमेर रथ रावणेर बाणे । दश बाणे सारथिरे बिन्धे दशानने
सन्धान पूरिया से धनुके योड़े शर । सहस्रेक बाण मारे यमेर उपर २८
मृत्युर उपरे करे बाण-बरिषण । बाण व्यर्थ हय देखि चिन्तित रावण
अति मत्त रावण से बिधातार वरे । मृत्युर उपरे बाण बर्षे, नाहि डरे २९
मृत्युर नाहि ये मृत्यु कि करिबे बाणे । अबोध रावण तबु युझे तार सने
बाण खेये मृत्यु तबे अति कोपे ज्वले । योड़ हात करिया यमेर आगे बले ३०

कहा— 'आपके वरदान से ही सभी प्रभावशाली बने हुए हैं। जो आपके वचनों का उल्लंघन करेगा वह रसातल को जायेगा।' यमराज, कालदण्ड और मृत्यु ये तीन (मृत्यु-हीन हैं)। इन तीनों की मृत्यु देख (पराभव देख) त्रिभुवन काँपने लगा ॥ २३ ॥ यमराज काल-दण्ड और मृत्यु —इन तीनों की गंध मात्र पाकर राक्षसी-सेना बाल खोले बेतहाशा भागने लगी। रावण के बराबर ही पराक्रमी बड़े-बड़े राक्षस इन तीनों के रूप देख भयभीत हो गये ॥ २४ ॥ उन तीनों का विक्रम किसके प्राण सह सकते थे ? सारे राक्षस रावण को छोड़कर भागने लगे। सारे अमात्य रावण को छोड़कर भागने लगे, संग्राम में अकेला रावण रह गया ॥ २५ ॥ यमराज से लड़ना तो दूर, यमराज को युद्ध में सामना करे ऐसा कोई वीर न था। परन्तु राजा रावण विधाता के वरदान से निर्भय था, वह यम के सम्मुख निर्भय रूप से संग्राम कर रहा था ॥ २६ ॥ अपने बाणों से रावण ने दसों दिशाओं को परिव्याप्त कर दिया। पर रावण के बाणों यमराज के लिए नगण्य थे। यमराज, भाले, शेल, शूल छोड़ रहे थे, रावण जर्जर हो रहा था, फिर भी वह युद्ध करता जा रहा था ॥२७॥ रावण के बाणों ने यमराज के रथ को ढँक लिया। दशानन ने दस बाणों से यम के सारथी को भी बेध दिया, निशाना साधकर उसने धनुष पर बाण रखे (और इस प्रकार) यमराज पर सहस्रों बाण छोड़े ॥ २८ ॥ वह मृत्यु पर भी बाण-वर्षा कर रहा था। पर अपने बाणों को व्यर्थ होते देखकर रावण चिन्तित हो उठा। विधाता के वरदान से रावण बड़ा मत्त हो उठा था। इसी कारण वह बिना डरे, मृत्यु पर बाण-वर्षा कर रहा था ॥२९॥ मृत्यु की तो मृत्यु होती नहीं, बाण भला क्या कर सकते हैं ?

निवेदन करि प्रभु, कर अवधान । तोमार अस्त्रेर मध्ये आमि से प्रधान
मधु-कैटभादि यत छिल दैत्यगण । बालि बलि मान्धाता करियाछिल रण ३१
पाइया ब्रह्मार बर रावण दुर्ज्जय । तार सह युद्ध करा उचित ना हय
तोमार बचन प्रभु, करि अमि दड़ । रण छाड़ि तव बाक्ये बिनु आमि रड़ ३२
रथ सह यम-मृत्यु हैला अदर्शन । धर धर बलिया डाकिछे दशानन
मन्द मन्द हासिया रावण राजा भाषे । पलाइया याय यम आमार तरासे ३३
यम यदि पलाइल, देखिल रावण । आमि यमजयी बुलि भावे दशानन
कृत्तिवास-कवित्व शुनिते चमत्कार । सर्ब्ब लोके रामायण हइल प्रचार ३४

रावणेर पातालपुरी जिनिते गमन ओ बासुकिर पराजय

श्रीराम बलेन, मुनि जिज्ञासि कारण । विषम शुनिनु आमि यमेर ताड़न
पापीर प्रहार शुनि लागे चमत्कार । पातक करिले कि ना हय प्रतिकार १
मुनि बले, राम, तुमि करा अवधान । तव अवतारे पापी पाय परित्राण
येइ जन शुद्ध चित्ते शुने रामायण । यमेर सहित तार नाहि दरशन २

तथापि अबोध रावण उससे लड़ रहा था । बाणों के प्रहार से मृत्यु अत्यन्त क्रोध से जल उठा और यम के सम्मुख हाथ जोड़ कहने लगा ॥३०॥ प्रभु, मैं जो निवेदन करता हूँ, सुनें, आपके अस्त्रों में मैं ही प्रमुख हूँ ! मधु-कैटक आदि जितने भी दैत्य हैं, बालि, बलि, मान्धाता आदि ने भी संग्राम किया था ॥ ३१ ॥ पर ब्रह्मा का वरदान पाकर रावण दुर्जय हो उठा है, उसके साथ युद्ध करना उचित नहीं है । प्रभु, मैं आपका वचन मानता हूं । आपके कहने से रण करना छोड़कर वेग से यहाँ से प्रस्थान कर रहा हूं ॥ ३२ ॥ रथ के साथ ही यम और मृत्यु अन्तर्हित हो गये । दशानन 'पकड़ो, पकड़ो' कहकर पुकार रहा था । मंद-मंद हँसकर राजा रावण कहने लगा । मुझसे संत्रस्त होकर यम भाग रहा है ॥ ३३ ॥ जब रावण ने देखा, यम भाग गया, तो वह दशानन सोचने लगा, मैं यम पर विजय हूँ । कृत्तिवास का कवित्व सुनने में अपूर्व है । उससे सारे लोक में रामायण का प्रचार हो गया है ॥ ३४ ॥

रावण का पातालपुरी विजय हेतु जाना तथा वासुकी की पराजय

श्रीराम ने कहा— मुनि, मैं कारण जानना चाहता हूँ । यमराज की ऐसी ताड़ना हुई, यह सुनकर बड़ा अचरज लगा । पापियों पर (यमलोक में हुए) प्रहार भी अद्भुत-सा लगता है, क्या पाप करने पर उसका निराकरण नहीं होता ? ॥१॥ मुनि बोले, राम, सुनो ! तुम्हारे अवतार से पापी को भी परित्राण मिल जाता है । जो जन शुद्ध चित्त से रामायण सुनते हैं, यम से उनकी भेंट नहीं होती ॥ २ ॥ पापी सावधानी से राम-नाम सुनें, इसके बिना पापी का परित्राण नहीं होता । चारों वेदों

इहा बिना पापीर नाहिक परित्राण। राम नाम शुनिवेक पापी सावधान
चारि वेद अध्ययने यत पुण्य हय। एक बार राम नामे तत फलोदय ३
शुनिया सुनिर कथा रामेर उल्लास। कह कह बलि राम करेन प्रकाश
तथा हैते कोथा गेल दुष्ट दशानन। कह कह मुनि शुनि अपूर्व्व कथन ४
मुनि वले, रावण जिनिल सर्व्व देश। पाताल जिनिते सवे करिल प्रवेश
बासुकिर विषे दग्ध हय त्रिभवन। ताहाके जिनिते याय पाताल भुवन ५
चलिल रावण राजा अद्भुत साजनि। आइल तिरासी कोटि काल-भुजङ्गिनी
एक एक भुजङ्गेर विषे बिश्व पोड़े। नागिनी तिराशी कोटि रावणेरे वेड़े ६
चारि दिके वेड़े सर्प रावण फाँफर। रावणे एड़िया सेनापति दिल रड़
रावण मुद्गर घोर फेले चारि भिते। पलाय नागिनी-सब ना पारे सहिते ७
बासुकिरे एड़िया पलाय उभरड़े। आसिया रावण राजा बासुकिरे वेड़े
बासुकि करिल विष-बाण-अवतार। ब्रह्मजाल वाणे करे रावण संहार ८
महाविष बिषजाल वासुकि से एड़े। रावण से बिष जाल सहिते नापारे
मायाधारी रावण से जाने नाना सन्धि। बासुकिरे महाजाल बाणे करे बन्दी ९
बासुकिरे बन्दी करि लोटे तार पुरी। बिचित्र आवास घर पूर्ण नागपुरी
बन्दी ह'ये वासुकि मानिल पराजय। रावण ताहार प्रति दिलेन अभय १०

के अध्ययन से जितना पुण्य होता है, राम-नाम से एक ही बार उतना ही फल मिल जाता है ॥ ३ ॥ मुनि की बात सुनकर राम को प्रसन्नता हुई। उन्होंने (अपनी भावना) प्रकट करते हुए कहा— मुनि, कहिये ! दुष्ट दशानन वहाँ से कहाँ गया ? मुनि, कहिये, वह अपूर्व कथा मैं सुनना चाहता हूँ ॥ ४ ॥ मुनि बोले, रावण ने सभी देशों को जीत लिया। इसके पश्चात् पाताल को जीतने के लिए वहाँ प्रवेश किया। वासुकी के विष से त्रिभुवन दग्ध हो जाता है। रावण उसे जीतने के लिए पाताल-लोक को चला ॥ ५ ॥ अद्भुत सज-धज से राजा रावण चला। तब वहाँ तिरासी करोड़ काल-भुजंगिनियाँ निकल आयीं। उनमें एक-एक भुजंग के विष से विश्व जल जा सकता था। उन तिरासी करोड़ नागिनियों ने रावण रावण को घेर लिया ॥६॥ जब सर्पों ने चारों ओर से घेर लिया तो रावण संकट में पड़ गया। रावण को छोड़ सेनापति भाग चला। रावण चारों ओर प्रचंड मुद्गर फेंक मारने लगा। उस मुद्गर की चोट सह न सकने के कारण नागिनियाँ भाग चलीं ॥ ७ ॥ वासुकी को छोड़कर वे बड़ी तेज़ी से भाग गयी। तब राजा रावण ने आकर वासुकी को घेर लिया। वासुकी ने विष-बाण का संधान किया; रावण ने ब्रह्मजाल बाणों से उसको नष्ट कर दिया ॥ ८ ॥ बासुकी ने महाविष का विषजाल छोड़ा। वह विष-जाल रावण सह न सका। मायाधारी रावण अनेक तरह की युक्तियाँ जानता था। उसने महा-जाल बाण से बासुकी को बंदी कर लिया ॥ ९ ॥ वासुकी को बंदी बनाकर वह अपनी नगरी में लौट आया। बंदी होकर वासुकी ने हार मान ली। रावण ने तब उसे अभय दिया ॥१०॥ जो सैकड़ों सिर, हज़ारों फन धारण करते हैं, जिनकी विष-अग्नि से सारा

शत मुण्ड, सहस्रेक फणा येइ धरे। यार बिषाग्निते सर्व्व चराचर पुड़े
मुखे यार ज्वले अग्नि शिरे मणि ज्वले। हेन सब सर्प जिने गिया से पाताले ११

रावणेर निपातकेर सहित युद्ध

जिनिया सर्पेर देश नामे भोगवती। निपातक राज्येते चलिल शीघ्रगति
निपातक् राज्ये तार नाहि कोनो डर। पाइया ब्रह्मार बर रावण दुर्धर १२
रावण डाकिया बले निपातक-ठांइ। लङ्कार रावण आमि, आजि युद्ध चाइ
निपातक राजा सेइ यम-दरशन। धाइया आइल शीघ्रे करिबारे रण १३
शेल जाठि झकड़ा से अस्त्र खरशाण। खाँड़ा आर डाङ्गसबिचित्र धनुर्व्वाण
नाना अस्त्र लइया उभये करे रण। उभयेर अस्त्र गिया छाइल गगन १४
दुइ हस्ती रणे येन दन्ते हाना हानि। दुइ सूर्य्य तेज येन छाइल मेदिनी
दुइ सिंह रणे येन छाड़े सिंहनाद। दुइ जने युद्ध करे नाहि अवसाद १५
उभयेर युद्धेते हइल महामार। सकल पातालपुरी हैल अन्धकार
केह कारे नाहि पारे, दु'जने सोसर। दु'जने मासेक युद्ध करे निरन्तर १६
एक मास युद्ध करे केह कारे नारे। देवगणे लने ब्रह्मा आइल सत्वरे
ब्रह्मा बले, निपातक, शुनह बचन। तोमारे जिनिते नाहि पारिबे रावण १७

चराचर जगत जल सकता है, जिनके मुँह में अग्नि और सिर पर मणि जलती है, पाताल में जाकर ऐसे सर्पों को भी उसने जीत लिया ।। ११ ।।

निपातक के साथ रावण का युद्ध

भोगवती नामक सर्पों के देश पर विजय प्राप्त कर, रावण शीघ्रता से निपातक राज्य में चला। निपातक राज्य से उसे कोई डर न था क्योंकि ब्रह्मा का वरदान पाकर रावण दुर्धर्ष हो उठा था ।।१२।। निपातक के स्थान पर पहुँचकर रावण ने पुकारकर कहा— मैं लंका का रावण हूँ, मैं आज युद्ध चाहता हूँ। निपातक राजा देखने में यमराज-जैसा था। वह युद्ध करने हेतु वेग से धावित हुआ ।। १३ ।। शेल, भाले, बरछे आदि पैने अस्त्र, खड्ग, काँटेदार मुद्गर तथा विचित्र धनुष-बाण आदि ले दोनों युद्ध करने लगे। दोनों के अस्त्र आकाश में जाकर व्याप्त हो गये ।। १४ ।। मानो युद्ध में दो हाथी एक-दूसरे को दाँतों से चोटें कर रहे थे। मानो दो सूर्यों के तेज से धरती छा गयी थी। मानो युद्ध में दो सिंह सिंहनाद कर रहे थे। दोनों को युद्ध में कोई थकावट न थी ।। १५ ।। दोनों के संग्राम में प्रचंड मार-काट हुई। सारी पातालपुरी अंधकार हो गयी। कोई किसी को हरा नहीं पाता था, दोनों ही बराबर बली थे। दोनों निरन्तर महीने भर युद्ध करते रहे ।। १६ ।। महीने भर दोनों युद्ध करते रहे, कोई किसी को हरा नहीं पाता था। तब देवगण को साथ ले ब्रह्मा वहाँ शीघ्रता से आये। ब्रह्मा ने कहा— निपातक सुनो, रावण तुम्हें जीत नहीं सकता ।। १७ ।। इस प्रकार निपातक को कुछ सांत्वना देकर, ब्रह्मा

निपातके प्रबोधिया बिरिञ्चि तखन। रावणेर प्रति किछु कहेन बचन
रावण, तोमारे बलि, शुनह बचन। निपातके जिनिते ना पारिबे कखन १८
मम बरे दुइ जन ह'येछ दुर्ज्जय। दुइ जने प्रीति करि थाकह निर्भय
लङ्घिबारे पारे केबा ब्रह्मार बचन। अस्त्र-शस्त्र छाड़ि प्रीति करे दुइजन १९
नाना भोगे रावणेरे राखिल सम्माने। एक वर्ष रावण रहिल सेइ स्थाने

रावण कर्तृक बरुण पुरी बिजय

लङ्कार अधिक भोग भुञ्जि तार घर। बरुणेरे जिनिते चलिल लङ्केश्वर २०
रत्नेते निर्म्मित पुरी दिक आलो करे। सुरभि आछेन सेइ बरुण-नगरे
रावण करिल सुरभिरे दरशन। क्षीर धारा झरे ताँर स्तने अनुक्षण २१
यार क्षीरे भरियाछे क्षीरोद-सागर। हेन धेनु प्रदक्षिण करे लङ्केश्वर
सुरभिके देखिया रावण मने भावे। ये या चाय, ताइ पाय, आमि चाहि तबे २२
बरुण जिनिया येन आसि शीघ्र गति। गमन-समये तोमा लइब संहति
बरुणे जिनिते करे रावण पयान। हेन काले सुरभि इइल अन्तर्द्धान २३
बरुणेर द्वारे गिया डाकिल रावण। कोथा गेले बरुण, आसिया देह रण
बरुणेर पात्र बले, तिनि नाहि घरे। कार ठाँइ युद्ध चाह ए शून्य नगरे २४

ने रावण से कुछ बातें कहीं। रावण, तुमसे मैं कहता हूँ, सुनो। तुम कभी निपातक को जीत नहीं सकते ।। १८ ।। मेरे बरदान से तुम दोनों ही दुर्जेय हो। अतः दोनों परस्पर प्रीति रखकर निर्भय बने रहो। ब्रह्मा के बचनों का उल्लंघन कौन कर सकता है ? दोनों ने अस्त्र-शस्त्र छोड़कर आपस में मैत्री कर ली ।। १९ निपातक ने (रावण को) अनेक प्रकार की भोग्य वस्तुएँ दे सम्मानित कर (अपने यहाँ) रखा। रावण वहाँ एक वर्ष रहा।

रावण द्वारा वरुणपुरी-विजय

निपातक के यहाँ लंका से अधिक भोग भोगने के बाद रावण वरुण को जीतने चला ।। २० ।। वरुण की रत्न-निर्मित पुरी चारों दिशाओं को आलोकित किये हुए थी। सुरभि उसी वरुण नगरी में रहती हैं। रावण ने सुरभि के दर्शन किये। उसके थनों से लगातार दूध की धारा झरती रहती है ।। २१ ।। जिसके दूध से क्षीर-सागर भरा हुआ है, रावण ने उस सुरभि गौ की प्रदक्षिणा की। सुरभि को देखकर रावण ने मन-ही-मन सोचा, (सुरभि से) कोई जो कुछ चाहता है, पाता है। तब मुझे भी कामना करनी चाहिए ।। २२ ।। मैं जैसे शीघ्रता से वरुण को जीतकर लौटूं, लौटते समय तुम्हें अपने साथ लेता जाऊँगा। (यह कामना कर) रावण ने वरुण को जीतने के लिए (जैसे ही) प्रस्थान किया, तभी सुरभि वहाँ से अन्तर्हित हो गयी ।। २३ ।। तब रावण ने वरुण के द्वार पर जाकर

बरुण गियाछे कोथा, जिज्ञासे रावण। तथा गिया आजि आमि करि महारण
बरुणेर पुत्रगण सबे महावीर। लइया सामन्त सैन्य हइल बाहिर २५
से सबारे रावण ये आकाशे निरखे। रावण चड़िया रथे याय अन्तरीक्षे
बरुणेर पुत्र करे वाण वरिषण। बाणे बिद्ध रावण हइल अचेतन २६
सर्व्वाङ्गे फुटिया बाण हइल कातर। ताहा देखि रुषिल राक्षस महोदर
महोदर बीर येन मदमत्त हाती। बाणेते विन्धिया पाड़े रथेर सारथि २७
पड़िल सारथि तार बाण बिन्धि बुके। तिन भाइ पलाइया याय अन्तरीक्षे
अन्तरीक्षे थाकि करे बाण वरिषण। बाणे बिद्ध महोदर हैल अचेतन २८
महोदरे अचेतन देखि लङ्केश्वर। सन्धान पूरिया बाण एड़िछे विस्तर
आकाशे रहिते नारे तिन सहोदर। भूमिते पड़िया हय धूलाय धूसर २९
तिन भाये धरिल अनेक अनुचर। ता'देरे आनिल धरि पुरीर भितर
रण जिनि रावणेर हरिष अन्तर। बरुणेर अन्वेषण करे लङ्केश्वर ३०
बरुणेर पुत्रे जिनि बरुणेरे चाहे। प्रभास नामेहे पात्र रावणेरे कहे
ब्रह्मलोके गीत गाय शुनिते सुन्दर। गियाछेन सेखाने बरुण जलेश्वर ३१

पुकारा— वरुण, कहाँ गये ? आकर मुझसे संग्राम करो। वरुण के मंत्री ने कहा— वे घर में नहीं हैं। तुम इस सूने नगर में भला किससे युद्ध करना चाहते हो ? ॥ २४ ॥ रावण ने पूछा, वरुण, कहाँ गये ? वहीं जाकर मैं आज महा संग्राम करूँगा। वरुण के सभी बेटे महावीर थे। वे सेना-सामन्त लेकर बाहर निकले ॥ २५ ॥ रावण ने देखा, वे सब आकाश में हैं। रावण रथ पर सवार हो अन्तरिक्ष में जा पहुँचा। वरुण के पुत्रों ने बाण-वर्षा करना शुरू किया। बाणों से बिंधकर रावण अचेत हो गया ॥ २६ ॥ सारे अंगों में बाणों से छिदकर वह कातर हो उठा। यह देख राक्षस महोदर कुपित हो उठा। महोदर मदमत्त हाथी जैसा वीर था, उसने बाण से बेधकर वरुण के पुत्रों के रथ के सारथी को गिरा दिया ॥ २७ ॥ उसके बाण छाती में बिंध जाने के कारण सारथी गिर पड़ा और तीनों भाई भागकर अन्तरिक्ष में जा पहुँचे। वे अन्तरिक्ष में रहकर बाण-वर्षा करने लगे। उनके बाणों से बिंधकर महोदर अचेत हो गया ॥ २८ ॥ महोदर को अचेत देख लंकेश्वर निशाना साधकर अनेक बाण छोड़े। इससे तीनों भाइयों के लिए आकाश में रहना कठिन हो गया, वे धरती पर गिरकर धूलि-धूसरित हो गये ॥ २९ ॥ तीनों भाइयों को अनेक अनुचरों ने पकड़ लिया और (उन्हें पकड़कर) पुरी के भीतर ले आये। रण में जीतकर रावण का अन्तर् हर्षित हो उठा और वह वरुण की खोज करने लगा ॥ ३० ॥ वरुण के पुत्रों को पराजित कर वह वरुण को पाना चाहता था। तब प्रभास नाम के मंत्री ने रावण को बताया— ब्रह्मलोक में श्रुतिमधुर संगीत (का आयोजन) हो रहा है। जलेश्वर वरुण वहीं गये हुए हैं ॥३१॥ यह सुनकर रावण वरुण के अन्तःपुर में चला गया। उसने पलंग पर वरुण का नागपाश पा लिया।

एत शुनि गेल रावण भितर आवास। पालङ्के पाइल वरुणेर नागपाश
नागपाश पाइया से सिंहनाद छाड़े। बिदाय हैया रावण तथा हैते नड़े ३२

बलि कर्तृक रावणेर बन्धन ओ लाञ्छना

अगस्त्येर कथा शुनि श्रीरामेर हास। कह कह बलि राम करेन प्रकाश
सेथा हैते आर कोथा गेल से रावण। कह देखि मुनि शुनि पुराण-कथन १
मुनि बले बलिराज पातालेते वसे। दशानन गेल तथा जिनि बार आशे
पाताले आबास घर अति सुनिर्म्मित। देखिया रावण राजा हैल चमकित २
सोनार प्राचीर घर पर्व्वत-प्रमाण। विष्णुर आज्ञाय बिश्वकर्म्मार निर्म्माण
प्रहस्तके रावण पाठाय जिनिबारे। राज-आज्ञा पाइया प्रहस्त गेल द्वारे ३
बलिर दुयारे द्वारी स्वयं नारायण। शरीरेर ज्योति कोटि सूर्य्येर किरण
बसिया आछेन द्वारे रत्न सिंहासने। श्वेत चामरेर वायु पड़े घने घने ४
प्रहस्त बिस्मित हु'ये आसिया सत्वर। निबेदन करिछे शुनहे लङ्केश्वर
देखिलाम महाराज दुयारे बलिर। परम पुरुष एक सुन्दर शरीर ५
आजानुलम्बित तार भुज चतुष्टय। शङ्ख चक्र गदा शार्ङ्ग ताहे शोभा पाय
श्यामल कोमल तनु सुपीत बसन। तड़ित जड़ित येन देखि नव घन ६

नागपाश को पाकर रावण ने सिंहनाद किया। वहाँ से विदा होकर रावण चल पड़ा ॥ ३२ ॥

बलि द्वारा रावण को बाँधा जाना और लांछना

अगस्त्य मुनि की बात सुनकर श्रीराम हँसने लगे। (मन का आनन्द) श्रीराम ने प्रकट करते हुए कहा— मुनि, कहिये; वहाँ से रावण फिर कहाँ गया ? मुनि, कहिये, मैं पुराण-कथन सुनना चाहता हूँ ॥ १ ॥ मुनि बोले— राजा बलि पाताल में निवास करते हैं। उन्हें जीतने के लिए दशानन वहाँ पहुँचा। पाताल में उनका आवास-गृह बहुत ही सुंदर ढंग से बना हुआ था। देखकर राजा रावण चकित हो उठा ॥ २ ॥ सोने की दीवारों वाला वह घर पर्वत-जैसा ऊँचा था जिसे विष्णु के आदेश से विश्वकर्मा ने निर्माण किया था। रावण ने बलि को जीतने के लिए प्रहस्त को भेजा। राजा का आदेश पाकर प्रहस्त द्वार पर पहुँचा ॥ ३ ॥ बलि के द्वार पर स्वयं नारायण द्वारपाल थे। उनके शरीर की ज्योति कोटि सूर्य की किरणों जैसी थी। वे द्वार पर रत्न-सिंहासन पर विराजमान थे। उन पर श्वेत चँवर से बार-बार हवा की जा रही थी ॥ ४ ॥ प्रहस्त विस्मित हो वहाँ से तुरन्त आकर रावण से कहने लगा— लंकेश्वर, सुनिये ! महाराज, मैंने बलि के द्वार पर एक सुन्दर शरीर वाले परमपुरुष को देखा है ॥ ५ ॥ उनकी आजानुलम्बित चार भुजाओं में शंख-चक्र-गदा और शार्ङ्ग धनुष सुशोभित हैं ! उनका शरीर कोमल श्यामल है तथा वे सुन्दर पीताम्बर पहने हुए हैं। मानो विद्युत्-जटित बादल हों ॥ ६ ॥ उनका वक्षःस्थल

वक्षःस्थल कौस्तुभे शोभित अतिशय। वनमाला तदुपरि करेछे आश्रय
शुनिया रावण याय पुरुषेर पाशे। पुरुष रावणे देखि मृदु मृदु हासे ७
रूपे आलो करियाछे बलिर दुयार। निरखिया रावणेर लागे चमत्कार
रावण बलिछे, द्वारी, पलाबि कोथाय। लङ्कार रावण आमि युद्ध दे आमाय ८
शुनिया पुरुष मृदु हासिया सम्भाषे। बलि सने युज गिया भितर आवासे
वीरमध्ये वीर आमि, मुनिमध्ये मुनि। त्रिभुवन सब आमि, दिवस रजनी ९
आमासह युझिबे शुनिते उपहास। कारो सने युझिते ना करि अभिलाष
समाने समाने युद्ध हयत उचित। तोमार आमार सने युद्ध अनुचित १०
आमि बलि तोमारे, शुनह दशानन। बलिके जिज्ञासा कर आमि कोन् जन
एतेक शुनिया राजा दशानन हासे। बलिर निकटे गेल भितर आवासे ११
पाद्य अर्घ्य दिल बलि बसिते आसन। जिज्ञासिल पातालेते एले कि कारण
से बले, पाताले विष्णु राखिल तोमारे। साजिया आइनु आमि विष्णु जिनिबारे १२
बलि बले, हेन वाक्य नाहि बल तुण्डे। त्रिभुवन आइले बन्धन नाहि खण्डे
दुयारे याहार सने हैल दरशन। से पुरुष सृजिलेन एइ त्रिभुवन १३
याँहार उपरे कारो नाहि अधिकार। सकलि सृजिया तिनि करेन संहार
रावण बलिछे, यम मृत्यु कालदण्ड। इहादेर संते केबा आछे हे प्रचण्ड १४

कौस्तुभ-मणि से अत्यन्त सुशोभित है। उसके ऊपर वनमाला भी पड़ी हुई है। यह सुनकर रावण उस पुरुष के पास पहुँचा। वह पुरुष रावण को देख मंद-मंद हँस पड़ा ॥ ७ ॥ अपने रूप से बलि के द्वार को आलोकित किये हुए, उसे देखकर रावण को बड़ा विस्मय हुआ। रावण बोला, ओ द्वारपाल, तू कहाँ भागेगा ? मैं लंका का राजा रावण हूँ। मुझसे युद्ध कर ॥ ८ ॥ यह सुनकर उस पुरुष ने मंद हँसकर कहा— तुम अन्तःपुर में जाकर बलि से लड़ो। मैं वीरों में वीर हूँ, मुनियों में मुनि हूँ, त्रिभुवन में मैं ही सब कुछ हूँ, दिन-रात मैं ही हूँ ॥ ९ ॥ तुम हमारे संग लड़ोगे यह तो सुनने में भी उपहास-सा है। मैं किसी से लड़ने की अभिलाषा नहीं रखता। युद्ध तो बराबरी वालों में ही उचित होता है। तुममें-मुझमें युद्ध अनुचित है ॥ १० ॥ रावण, मैं तुमसे बता रहा हूँ, मैं कौन हूँ, यह जाकर बलि से पूछो। यह सुनकर राजा दशानन हँस पड़ा और अन्तःपुर में बलि के पास चला गया ॥ ११ ॥ बलि ने रावण को पाद्य-अर्घ्य दिया, बैठने को आसन दिया और पूछा, तुम पाताल में किसलिए आये ? रावण ने कहा, विष्णु ने तुम्हें पाताल में ला रखा है, मैं उसी विष्णु को पराजित करने हेतु सजकर आया हूँ ॥ १२ ॥ बलि ने कहा, तुम घमंड से ऐसी बात न कहो। त्रिभुवन भी आ जाये तो भी मेरा यह बन्धन नहीं कटेगा। द्वार पर तुम्हें जिसका दर्शन मिला, उन्हीं पुरुष ने इस त्रिभुवन को सरजा है ॥ १३ ॥ उन पर किसी का अधिकार नहीं है। वे ही सब कुछ सर्जन कर संहार भी किया करते हैं। रावण बोला— यम, मृत्यु, कालदण्ड, भला इनसे और अधिक प्रचंड कौन है ? ॥१४॥ बलि ने कहा— भाई, यमराज उनका क्या कर सकते हैं ? उस

बलि बले, भाइ कि करिबे यमराज। त्रिभुबने नाहि केह पुरुष-समाज
यम इन्द्र बरुण यतेक लोकपाल। पुरुषेर प्रसादेते सकले बिशाल १५
इँहार प्रसावे देब हयेछे अमर। एँर बड़ बीर नाइ त्रैलोक्य-भितर
बानब-राक्षस आदि बड़ बड़ बीर। पुरुष दर्शने भाइ केह नहे स्थिर १६
सेइ से पुरुष बर स्वयं नारायण। किञ्चित तोमारे कहि, शुन हे रावण
सेइ देब नारायण मधु कैटभारि। चतुर्भुज शङ्ख-चक्र-गदा-पद्मधारी १७
रावण शुनिया इहा हइल बाहिर। पुरुषेर देखा नाहि अदृश्य शरीर
रावण बलिछे, त्रासे हैल अदर्शन। पेले चड़े वधिताम ताहार जीबन १८
रावण आवार गेल पुरुष-उद्देशे। उपस्थित हइल से भितर-आबासे
बलि बले, रावणेर नाहि पाइ मन। पुनः पुनः आबासे आइसे कि कारण १९
पात्र ल'ये बसि तबे करे अनुमान। बिना युद्धे रावणे करिब अपमान
बलिरे धरिते याय रावण सेखाने। आपन बन्धन बलि दिल ततक्षणे २०
बन्धने पड़िल दुष्ट आपनार दोषे। रावण हइल बन्दी बलिराज हासे
रावणेरे बन्दी देखि तुष्ट देवगण। स्वर्गेते दुन्दुभि बाजे, पुष्प-बरिषण २१
यत देबकन्या तारा करे हुलाहुलि। बलिर उपरे फेले पुष्पेर अञ्जलि
इंद्र आदि वेबगण आर देब-ऋषि। स्वर्गेते बेड़ाय नाचि यत स्वर्गबासी २२

पुरुष के समकक्ष त्रिभुवन में कोई पुरुष-समाज नहीं है। यम, इन्द्र, वरुण आदि जितने भी लोकपाल हैं, उस पुरुष के प्रसाद से ही वे सभी विशाल बने हैं ।। १५ ।। इन्हीं के प्रसाद से देव भी अमर बने हैं। त्रैलोक्य में इनसे बड़ा वीर और कोई नहीं है। दानव-राक्षस आदि बड़े-बड़े वीरों में, भाई, इन पुरुष के देखने मात्र से कोई अविचल नहीं रह सकता ।। १६ ।। वे वही पुरुषश्रेष्ठ स्वयं नारायण हैं। तुमसे थोड़ा कुछ कहता हूँ, रावण सुनो। वे ही मधु-कैटभ को मारनेवाले, शंख-चक्र-गदा-पद्मधारी चतुर्भुज देव-नारायण हैं ।। १७ ।। यह सुनकर रावण बाहर निकल आया। पर उसने पुरुष को वहाँ नहीं देखा। वे अपनी शरीर से अदृश्य हो गये थे। रावण कहने लगा। वह डर के मारे ओझल हो गया। अगर उसे पा जाता तो थप्पड़ मारकर उसका जीवन वध कर डालता ।। १८ ।। उस पुरुष की खोज में रावण पुनः अन्तःपुर में जाकर उपस्थित हुआ। बलि बोले, रावण के भाव समझ में नहीं आता। यह पुनःपुनः मेरे अन्तःपुर में क्यों आता है ? ।। १९ ।। मंत्रियों के साथ बैठकर उन्होंने विचार किया कि युद्ध किये बिना ही रावण का अपमान करेंगे। रावण वहाँ बलि को पकड़ने गया। तुरन्त बलि ने अपना बंधन उस पर डाल दिया ।। २० ।। वह दुष्ट अपने ही दोष से बन्धन में पड़ गया। रावण को बन्दी बना देख राजा बलि हँसने लगे। रावण को बंदी बने देख देवगण भी संतुष्ट हुए। स्वर्ग में दुन्दुभी बजने लगी, पुष्प-वर्षा होने लगी ।। २१ ।। सारी देवकन्याएँ मुँह से उलुध्वनि करने लगीं और बलि पर फूलों की अंजलि डालने लगीं। इन्द्र आदि देवगण और देव-ऋषिगण आदि सभी स्वर्ग-वासी स्वर्ग में नाच-नाचकर घूमने

आजि हैते देवगण पाइन निस्तार । देखिया राक्षसगण करे हाहाकार
एइ मत बन्दीशाले रहिल रावण । कौतुके बेड़ाय नाचि यत देवगण २३
बलि भूपतिर आछे सात शत दासी । देखिले मोहित सबे परम रूपसी
उच्छिष्ट-व्यञ्जन-अन्न-पूर्ण-स्वर्ण थाले । पाखालिते याय तारा सागरेर जले २४
रावण बले, कन्यागण, शुनह वचन । एक मुष्टि अन्न दिया राखह जीवन
चेड़ी सब बले, शुन राजा लङ्केश्वर । दितेछि तुलिया अन्न मेलह अधर २५
दया करि चेड़ी अन्न दिल ततक्षण । मुख प्रसारिया अन्न खाइल रावण
रावण बलिल, चेड़ी, शुनह वचन । बारेक चुम्बन दिया राखह जीवन २६
एतेक बलिल यदि राजा दशानन । त्रासे पलाइया याय यत चेड़ीगण
कुंजी बले, रावण हे तुमि महाराज । उच्छिष्ट खाइते तुमि नाहि वास लाज २७
बन्धन लइते बलि चिन्ते मने-मने । आपनार बन्धन लइल ततक्षणे
लज्जा पेये रावण करिल हेँट माथा । रावण बन्धन छाड़ि पलाइल कोथा २८
यथाय यथाय रहे विष्णु-अधिष्ठान । तथा तथा रावण पाइल अपमान
अगस्त्येर कथा शुनि श्रीराम कौतुकी । पुनर्व्वार जिज्ञासा करेन ह'ये सुखी २९
सेथा हैते आर कोथा गेल से रावण । कह देखि मुनि, शुनि अपूर्व्व कथन

लगे ॥ २२ ॥ आज से देवों को मुक्ति मिली । यह देखकर राक्षस हाहाकार करने लगे । इसी तरह रावण कारागार में रहा । सारे देवगण कौतुक से नाचते हुए घूमने लगे ॥ २३ ॥ राजा बलि की सात सौ ऐसी दासियाँ थीं जो देखने पर सबको मुग्ध करनेवाली, परम रूपवती थीं । जूठे अन्न-व्यंजन से पूर्ण स्वर्ण-थालियों को वे सागर-जल में धोने ले जा रही थीं ॥ २४ ॥ रावण बोला, हे कन्यागण, मेरे वचन सुनो ! मुट्ठी भर अन्न देकर मेरे जीवन की रक्षा करो । दासियाँ बोली, राजा लंकेश्वर, सुनो । हम अन्न उठाकर दे रही हैं, तुम अपना मुँह खोलो ॥ २५ ॥ तब दासियों ने उस पर दया कर अन्न दिये । रावण ने मुँह फैलाकर अन्न खाया । रावण बोला, दासियो, सुनो । केवल एक बार अपना चुम्बन देकर मेरे जीवन की रक्षा करो ॥ २६ ॥ राजा रावण ने जब ऐसा कहा, तो सारी दासियाँ संत्रस्त होकर भागने लगीं । कुंजी (कुबड़ी) ने कहा—रावण, तुम तो महाराज हो । जूठा खाने में तुम्हें शर्म नहीं आयी ॥२७॥ (इसके पश्चात्) बलि ने अपना वह बन्धन पुनः अपना लेने हेतु मन ही मन चिन्तन किया और तत्क्षण अपना बन्धन स्वयं ले लिया । लज्जित होकर रावण ने शिर झुका लिया । रावण बन्धन से निकलकर कहीं भाग गया ॥ २८ ॥ (संसार में) जहाँ-जहाँ विष्णु के अधिष्ठान रहे, वहाँ-वहाँ रावण को अपमानित होना पड़ा । अगस्त्य मुनि के वचन सुनकर रामचंद्र को परम आनन्द हुआ । उन्होंने सुखी होकर पुनः प्रश्न किया ॥ २९ ॥ मुनि, वहाँ से रावण फिर कहाँ गया, कहिये । मैं वह अपूर्व कथन सुनना चाहता हूँ ।

मान्धातार सहित रावणेर युद्ध ओ सख्य स्थापन

मुनि बले, रावण आछये रथोपर। दिव्य रथे चड़ियाय एक नरवर १
स्वर्ण रथ खान तार वहे राज हंसे। सात शत देवकन्या पुरुषेर पाशे
केह हासे, केह नाचे, कारो मुखे बाँशी। स्त्री-गण वेष्टित से पुरुष स्वर्गवासी २
रथेर उपरे याय शृंगार-कौतुके। आपनार रथे थाकि रावण ता देखे
रावण बलिछे, कोथा पुरुष, पालाओ। लङ्कार रावण आमि युद्ध मोरे दाओ ३
देखिया तोमार नारी व्याकुलित प्राण। कतगुलि नारी मोरे दिया याह दान
पुरुष डाकिया बले, शुन लङ्केश्वर। बहुदिन करिलाम तपस्या बिस्तर ४
पृथिवीते राजा आमि छिलाम प्रधान। तोमा हेन अनेकेर लइयाछि प्राण
ना करिल केह मोरे युद्धे पराजय। स्वर्गवासे याइ आमि, एकथा निश्चय ५
आमारे जिनिते केह नारिल संग्रामे। पूर्व्वेते छिलाम आमि पूर्व्व मुनि नामे
स्त्रीगण वेष्टित आमि याइ स्वर्गवासे। एहेन समये युद्ध युक्ति ना आइसे ६
रावण बलिल, तुमि मोर धर्म्म बाप। पूर्व्वे मोर पितृसह तोमार आलाप
दिग्विजय करि आमि त्रिभुवन जिनि। कार सने युद्ध करि, मने अनुमानि ७
दिनेक रहिते नारि आमि बिना-रणे। तुमि युक्ति बल आमि युझिकार सने

मान्धाता के साथ रावण का युद्ध और मैत्री-स्थापना

मुनि बोले— रावण रथ पर (जा रहा) था। तभी एक नरश्रेष्ठ दिव्य रथ पर सवार होकर जा रहा था ॥ १ ॥ उसके स्वर्ण-रथ को राजहंस ढो रहे थे। उस पुरुष के पास सात सौ देवकन्याएँ थीं। कोई हँस रही थी, कोई नाच रही थी, किसी के मुँह में बाँसुरी थी। वह स्वर्ग-वासी पुरुष नारियों से घिरा हुआ था ॥ २ ॥ वह शृंगार-लीला करता हुआ रथ पर जा रहा था, रावण ने अपने रथ से उसे देखा। रावण कहने लगा— ओ पुरुष, तुम कहाँ भाग रहे हो ? मैं लंका का रावण हूँ। तुम मुझसे युद्ध करो ॥ ३ ॥ तुम्हारी नारियों को देखकर मेरे प्राण व्याकुल हो रहे हैं। मुझे कुछ नारियाँ दान देते जाओ। उस पुरुष ने पुकारकर कहा— लंकेश्वर, सुनो, मैंने अनेक दिन प्रचंड तपस्या की ॥ ४ ॥ मैं संसार में प्रधान राजा था। तुम जैसे अनेकों के प्राण ले लिये थे। मुझे कोई युद्ध में पराजित नहीं कर सकता था। यह तो निश्चित था कि मैं स्वर्ग में निवास हेतु जाऊँगा ॥ ५ ॥ मुझे कोई संग्राम में जीत नहीं सका। मैं पहले पूर्व-मुनि नाम से परिचित था। अब स्त्रियों से परिवेष्ठित होकर मैं स्वर्ग-वास हेतु जा रहा हूँ। इस समय तुमसे युद्ध करने की कोई युक्ति नहीं है ॥ ६ ॥ रावण बोला— तुम मेरे धर्म-पिता हो। पहले मेरे पिता के साथ तुम्हारी बातचीत थी। दिग्विजय करते हुए मैंने त्रिभुवन जीत लिया है, अब मन में सोच रहा हूँ कि किससे युद्ध करूँ ? ॥ ७ ॥ बिना युद्ध के तो मैं एक दिन भी रह नहीं सकता। तुम युक्ति बताओ कि मैं किसके साथ लड़ूँ ? पूर्व-मुनि ने कहा— मान्धाता

पूर्व्व मुनि बले काछे मान्धाता नृपति । तार सने युझह से सप्त द्वीप पति ८
उत्तर दिकेते गेल से देश भ्रमिते । थाक आज वासा करि रम्य ए पर्व्वते
ए-पर्व्वते तार सने हबे दरशन । मान्धाता आइले युद्ध करिओ तखन ९
एत बलि पूर्व्व मुनि गेल स्वर्गबासे । हेन काले मान्धाता, कटक सह आसे
मान्धाता के देखिया ये रूषिल रावण । मान्धाता रावण दोंहे बाजे महारण १०
दिग्विजय करिया बेड़ाय दुइ जन । नाना अस्त्र दुइ राजा करे बरिषण
दुइ राजा नाना अस्त्र करे अवतार । उभय राजार सेना पलाय अपार ११
मान्धाता हीरार टाङ्गी पाक दिया एड़े । रावण खाइया टाङ्गी रथ हैते पड़े
पड़िल रावण राजा, बेड़े सेनापति । हर्षे सिंहनाद छाड़े मान्धाता नृपति १२
चक्षुर निमिषे पाय रावण संबित । धनुक पातिया युझे, मान्धाता चिन्तित
अग्निबाण एड़िलेक राक्षस रावण । ज्वलिया आग्नेय बाण, उठिल गगन १३
देखिया त्रिदशगणे लागे चमत्कार । मान्धाता पड़िल, सैन्य करे हाहाकार
संबित पाइया उठे चक्षुर निमिषे । उठि सिंहनाद करे मान्धाता हरिषे १४
उभयेर सिंहनादे पृथिवी उलटे । दुइ राजा बाण एड़े दुइ राजा काटे
दुइ राजा क्रोधे बाण एड़िछे बिस्तर । महाशब्द करे बाण तूणेर भितर १५

नाम का राजा है । उसके साथ तुम जूझो, वह सप्त-द्वीपों का अधिपति है ॥ ८ ॥ वह देश-भ्रमण के लिए उत्तर दिशा में गया हुआ है । आज तुम इसी रमणीय-पर्वत पर निवास बनाकर रहो । इसी पर्वत पर उससे भेंट होगी, मान्धाता के आने पर उससे युद्ध करना ॥ ९ ॥ ऐसा कहकर पूर्वमुनि स्वर्ग में निवास हेतु चला गया । उसी समय सेना-सहित वहाँ मान्धाता आया । मान्धाता को देखकर रावण रुष्ट हो उठा । मान्धाता और रावण दोनों में महान संग्राम होने लगा ॥ १० ॥ दोनों ही राजा दिग्विजय करते घूम रहे थे । दोनों ही एक-दूसरे पर नाना प्रकार के अस्त्रों की वर्षा करने लगे । दोनों राजा नाना प्रकार के अस्त्र प्रकट कर रहे थे, दोनों राजाओं की अपार सेना भागने लगी ॥ ११ ॥ मान्धाता ने हीरे की कुल्हाड़ी घुमाकर फेंकी । कुल्हाड़ी की चोट खाकर रावण रथ से गिर पड़ा । राजा रावण को गिर पड़ा देख सेनापतियों ने उसे घेर लिया । राजा मान्धाता ने हर्ष से सिंहनाद किया ॥ १२ ॥ पलक मारते ही राजा रावण सचेत हो गया । वह धनुष उठाकर जूझने लगा, मान्धाता चिन्तित हो उठा । राक्षस रावण ने अग्निबाण छोड़ा । जलता हुआ अग्नि-बाण आकाश में पहुँच गया ॥ १३ ॥ यह देख देवताओं को अचरज हुआ । मान्धाता गिर पड़ा, उसकी सेना हाहाकार कर उठी । वह पलक मारते ही सचेत हो गया । हर्ष में भरकर मान्धाता सिंहनाद करने लगा ॥ १४ ॥ दोनों के सिंहनाद से लगा, मानो धरती उलट-सी गयी । दोनों राजा बाण छोड़ते थे और दोनों ही काट भी डालते थे । दोनों राजा क्रोधित होकर असंख्य बाण छोड़ रहे थे । तूण के अन्दर उनके बाण भी महा शब्द करते थे ॥ १५ ॥ कोई किसी को जीतते का

केह कारे जिनिबारे नाहि पाय आश । उभये समान, युद्ध करे दश मास
मान्धाता एड़िल बाण नामे पाशुपत । स्थावर जङ्गम काँपें पृथिवी पर्व्वत १६
सप्तस्वर्ग काँपे आर से सप्तसागर । शुनिया बाणेर शब्द स्वर्गे लागे डर
ब्रह्मा पाठाइया दिल महर्षि भार्गवे । अविलम्बे तथा आसि कन मुनि तवे १७
समर संवर, क्रोध ना कर मान्धाता । ब्रह्मा पाठाइया दिला, शुन ताँर कथा
आछे ये ब्रह्मार वर रावण ना मरे । तव बाणे रावणेर कि करिते पारे १८
तव वंशे ये पुरुष जन्मि बेन शेषे । ताँर ठाँइ दशानन मरिबे सवंशे
तव बाणे ना मारिबे लङ्कार रावण । अस्त्र संवरिया प्रीति कर दुइ जन १९
मुनिर वचन राजा ना करिल आन । सम्प्रीति करिया दोँहे गेल निज स्थान
मान्धाता रावण दुइ जन सम रणे । जय पराजय कारो नहिल से क्षणे २०
अगस्त्येर कथा शुनि राम उल्लसित । कह, बलि मुनिके करेन उत्साहित
मान्धाता छाड़िया कोथा गेल दशानन । कह देखि मुनि शुनि अपूर्व्व कथन २१

रावणेर चन्द्रलोक विजय

मुनि बले, एक दिन घटिल एमन । रथोपरि चड़िया भ्रमिछे दशानन
हेन काले गगने हइल चन्द्रोदय । देखिया हइल रुष्ट दुष्ट, स्पष्ट कय १

कोई मौक़ा नहीं पाता था। दोनों ही बराबर थे और दस महीने तक युद्ध करते रहे। मान्धाता ने पाशुपत नाम का बाण छोड़ा। जिससे स्थावर, जंगम, पृथ्वी-पर्वत काँप उठे ।। १६ ।। सातों स्वर्ग और सातों सागर काँप उठे। बाणों की आवाज़ सुनकर स्वर्ग में भी भय लगने लगा। तब ब्रह्मा ने महर्षि भार्गव को भेजा। भार्गव मुनि शीघ्रता से वहाँ आकर कहने लगे— ।। १७ ।। मान्धाता, युद्ध रोको। क्रोध मत करो। ब्रह्मा ने मुझे भेजा है, उनकी बात सुनो। ब्रह्मा का तो यह वरदान रहा कि रावण मरेगा नहीं। अतः तुम्हारे बाण भला उसका क्या कर सकते हैं ? ।। १८ ।। तुम्हारे वंश में अन्त में जो पुरुष जन्म लेंगे, उनके द्वारा दशानन सवंश मारा जायेगा। तुम्हारे बाणों से लंका का रावण नहीं मरेगा। इसलिए अस्त्र समेटकर दोनों आपस में प्रीति कर लो ।। १९ ।। राजा ने मुनि के वचन की अवज्ञा नहीं की। दोनों परस्पर मैत्री कर अपने-अपने स्थान को चले गये। मान्धाता और रावण दोनों ही युद्ध में बराबर थे। इस कारण उस समय किसी की हार-जीत नहीं हुई ।। २० ।। मुनि अगस्त्य की बात सुनकर राम उल्लसित हो उठे। उन्होंने, मुनि (और भी) सुनाइये, कहकर मुनि को उत्साहित किया। (रामचन्द्र ने पूछा—) मान्धाता को छोड़कर रावण कहाँ गया ? मुनि, कहिये, मैं वह अपूर्व कथा सुनना चाहता हूँ ।। २१ ।।

रावण का चन्द्रलोक-विजय करना

मुनि बोले— एक दिन ऐसी घटना हुई; रावण रथ पर सवार हो घूम

आमार बाणेते मेरु नाहि धरे टान। आमार उपर दिया करिछे प्रयाण
स्वर्ग मर्त्य पाताल कम्पित चार डरे। लङ्कार रावण आमि, ग्राह्य नाहि करे २
देखिब केमन चन्द्र कत तार बल। ताहारे जिनिब आर हरिब सकल
एइ मत भाबिया से उठिल आकाशे। चन्द्रलोके गेल चन्द्र जिनि बार आशे ३
चन्द्रलोक दुइ लक्ष योजनेर पथ। सप्त स्वर्ग जिनिया याइबे चढ़ि रथ
उठिल प्रथम स्वर्गे राजा दशानन। पर्ब्बत एड़िया उठे सहस्र योजन ४
उठिल द्वितीय स्वर्गे याइते याइते। सहस्र योजन उठे पर्ब्बत हइते
उठिल तृतीय स्वर्गे सेइ महारथी। सेइ स्वर्गे बिराजिता गङ्गा भागीरथी ५
राजहंस आदि पक्षी चरे गङ्गा नीरे। रावण कटक सह गङ्गास्नान करे
गङ्गा तटे नित्यकर्म करि समापन। सकल कटक रथे करिल गमन ६
आछेन शङ्कर-गौरी ताहार उपर। रथे चड़ि सेइ स्वर्गे गेल लङ्केश्वर
गौरी भक्त येइ जन पूजेछे पार्ब्बती। से-स्थाने रावण देखे ताहार बसति ७
तदुपरि शिवलोके उठिल रावण। देखे यक्ष पिशाच से शङ्करेर गण
तिन कोटि देव छिल धूर्ज्जटीरपाशे। रावणे देखिया तारा पलाय तरासे ८
तदुपरि बैकुण्ठेते उठिल रावण। पुरी प्रदक्षिण करि करिल गमन
ब्रह्मलोके गेल से ब्रह्मार निज स्थान। आड़े दीर्घे अयुतेक योजन प्रमाण ९

रहा था, उसी समय आकाश में चाँद उगा। उसे देखकर दुष्ट रावण रुष्ट हो उठा। वह स्पष्ट रूप से कहने लगा— ॥१॥ हमारे बाण से मेरुपर्वत भी तना नहीं रहता, यह चन्द्रमा मेरे ऊपर से जा रहा है। जिसके डर से स्वर्ग-मर्त्य-पाताल भी कंपित है, मैं वही लंका का रावण हूँ (यह चन्द्रमा) मेरी परवाह नहीं करता ॥ २ ॥ मैं देखूंगा, चन्द्रमा कैसा है; उसका बल कितना है; मैं उसे जीतूंगा और उसका सब कुछ हर लूंगा। ऐसा सोच कर वह आकाश में चला गया और चन्द्रमा पर विजय हेतु चंद्रलोक में जा पहुँचा ॥ ३ ॥ चंद्रलोक दो लाख योजन का मार्ग था। सात स्वर्ग को जीतने के बाद रथ पर सवार हो उसे जाना था। पर्वतों से आगे सहस्र योजन पार कर पहले स्वर्ग में राजा दशानन पहुँचा ॥ ४ ॥ वहाँ से पर्वतों से आगे सहस्र योजन पार कर रावण आगे बढ़ दूसरे स्वर्ग में जा पहुँचा। (इसके बाद) जहाँ भागीरथी-गंगा विराजमान है उस तीसरे स्वर्ग में रावण पहुँचा ॥ ५ ॥ वहाँ राजहंस आदि पक्षी गंगा के जल में विचरण कर रहे थे। रावण ने सेना-सहित गंगा-स्नान किया। गंगा-किनारे नित्यकर्म सम्पन्न करने के बाद सारी सेना रथों पर आगे बढ़ी ॥ ६ ॥ उस (चौथे) स्वर्ग में जहाँ शिव-पार्वती विराजमान हैं, रावण रथ पर सवार हो वहाँ पहुँच गया। रावण ने देखा, गौरी के जिस भक्त ने देवी पार्वती का पूजन (इस लोक में) किया है, वही उस स्थान में निवास कर रहा है ॥ ७ ॥ उससे ऊपर रावण शिवलोक में पहुँचा। उसने वहाँ यक्ष-पिशाचादि शंकर के गणों को देखा। शंकर के समीप तीन करोड़ देवता थे। रावण को देखते ही वे आतंकित हो भाग चले ॥ ८ ॥ उसके ऊपर रावण वैकुंठ में पहुँचा और पुरी की

ताह्याते सहस्र स्वर्ग देखिल निर्म्माण। विश्वकर्म्माकृत पुरी अद्भुत विधान
सप्त स्वर्ग जिनिया से उठिल रावण। चन्द्रेर सहित परे हइल मिलन १०
रावणे देखिया चन्द्रदेव बड़ रोषे। सहस्र सहस्र गुण तुषार बरिषे
हिम-वरिषणे कटकेर हैल जाड़। कटकेर हस्त पद जाड़े हैल आड़ ११
हस्तपद नाहि सरे बद्ध ह'ये जाड़े। तथापि रावण राजा रण नाहि छाड़े
प्रहस्त बलिछे, जाड़े जोर नाहि हाते। पलाइया चल याइ, बांचि कोन मते १२
रावण कातर हैल, युझिते ना पारे। प्राण याय तथापि संग्राम नाहि छाड़े
रावण करिल एइ उपाय प्रधान। बाहिर करिल अग्निमय महाबाण १३
ब्रह्म-अग्नि ज्वले से बाणेर अग्रभागे। से बाणेर प्रतापे सबार जाड़ भागे
अग्नि बाण एड़िलेक राजा लङ्केश्वर। बाणे विद्ध चन्द्रमा हइल जर जर १४
बाणाघाते चन्द्रमा हइल अचेतन। पाइया चेतन पुन: उठे सेइ क्षण
उभरणे चन्द्रमा पलाय त्यजि रण। जलाय चीत्कार करि यत तारागण १५
प्राण ल'ये गेल चन्द्र गणिया प्रमाद। ब्रह्मलोके गिया चन्द्र करेन बिषाद
क्रन्दन करेन चन्द्र, ब्रह्मा पान दुख। त्वरित गेलेन ब्रह्मा रावण-सम्मुख १६

प्रदक्षिणा कर आगे बढ़ा। इसके पश्चात् वह ब्रह्मा के अपने स्थान ब्रह्मलोक में पहुँचा। वह लोक लम्बाई-चौड़ाई में लगभग दस हज़ार योजन फैला था ॥ ९ ॥ वहाँ उसने बने हुए सहस्रों स्वर्ग देखे। वे सारी नगरियाँ विश्वकर्मा द्वारा अद्भुत तरीक़े से बनायी हुई थीं। उन सातों स्वर्गों को जीतकर रावण ऊपर चला। इसके पश्चात् चंद्रमा से उसकी भेंट हुई ॥ १० ॥ रावण को देख चंद्रदेव बहुत ही क्रोधित हो उठे और सहस्रों गुनी तुषार-वर्षा करने लगे। हिम की वर्षा से रावण की सेना ठंड में पड़ गयी। सेना के हाथ-पैर जाड़े के मारे सुन्न हो गये ॥ ११ ॥ जाड़े से सेना के हाथ-पैर बँध-से गये और वे हिल-डुल नहीं पाते थे। तथापि राजा रावण ने युद्ध करना नहीं छोड़ा। प्रहस्त बोला— जाड़े के मारे हाथों में कोई बल नहीं रहा है। चलो यहाँ से भागकर किसी तरह से बच जायें ॥ १२ ॥ रावण कातर हो गया, वह लड़ नहीं पाता था। उसके प्राण जा रहे थे, फिर भी उसने संग्राम करना नहीं छोड़ा। रावण ने ऐसा बड़ा उपाय किया कि उसने अग्निमय महाबाण निकाला ॥ १३ ॥ उस बाण की नोक पर ब्रह्म-अग्नि जल रही थी। उस बाण के प्रभाव से सबका जाड़ा भाग जाता है। राजा लंकेश्वर ने वह अग्नि-बाण छोड़ा। उस बाण से बिंधकर चन्द्रमा जर्जर हो गया ॥ १४ ॥ बाण के आघात से चन्द्रमा अचेत हो गया पर तुरन्त चेतना पाकर उठ गया। चंद्रमा पीछे मुड़कर लड़ाई छोड़ भाग चला। सारे तारागण भी चीख़ते हुए भाग चले ॥ १५ ॥ भयानक संकट देखकर प्राण लिये चंद्रमा भाग चला और ब्रह्मलोक में जाकर चंद्रमा विषाद करने लगा। चंद्रमा रो रहा था, इससे ब्रह्मा को बड़ा दुःख हुआ। ब्रह्मा तुरन्त रावण के सामने पहुँचे ॥ १६ ॥ ब्रह्मा बोले, अबोध रावण, सुन,

ब्रह्मा बलिलेन, शुन अबोध रावण। चन्द्रर सहित युद्ध कर कि कारण
सर्व्वलोके बन्दे देख द्वितीयार चन्द्र। पूर्णिमार चन्द्र करे जगत् आनन्द १७
सर्व्वलोके हृष्ट करे जोछना रजनी। चन्द्रेर सहित केन कर हाना हानि
कारो मन्द ना करे सबार करे हित। हेन चन्द्रे मारिते तोमार अनुचित १८
शुन रे रावण, मन्त्र कहि तोर काणे। परेरे मारिते पाछे निज मर प्राणे
दुइ जने युद्ध हैले मरे एक जन। अतः पर क्षमा देह अबोध रावण १९
विधातार बचन लङ्घिबे कोन जन। रावण प्रबोध मानि करिल गमन
अगस्त्येर कथा शुनि हृष्ट रघुमणि। पुनर्व्वार जिज्ञासा करेन, कह मुनि २०
चन्द्रके जिनिया कोथा गेल दशानन। कह देख मुनि, शुनि पुराण कथन

रावणेर कुशद्वीपे गमन ओ महापुरुषेर सहित युद्ध

अगस्त बलेन, शुन जानकी बल्लभ। रावणेर दिग्विजय कहि आमि सब १
जम्बूद्वीप पार हये गेल लङ्केश्वर। कुशद्वीपे देखे एक पुरुष प्रबर
सुमेरु-पर्व्वत येन देहेर आकार। देवेर देवता येन देवतार सार २
बार योजनेर पथ आड़े परिसर। बारशत योजन शरीर दीर्घतर

तू भला चंद्रमा के साथ युद्ध किसलिए कर रहा है? देव, सारे लोक द्वितीया के चंद्रमा की वंदना किया करते हैं, पूर्णिमा का चंद्रमा विश्व को आनन्दित किया करता है ॥ १७ ॥ सभी लोगों को ज्योत्स्ना की रात आनन्दित करती है। ऐसे चंद्रमा के साथ तू लड़ाई क्यों कर रहा है। चंद्रमा तो किसी का अनिष्ट नहीं करता। सबका हित ही करता है। ऐसे चंद्रमा को मारना तुम्हारे लिए अनुचित है ॥ १८ ॥ सुन रे रावण, तेरे कानों में यह मन्त्र कहता हूँ, दूसरों को मारने में अन्त में तू स्वयं मरने जा रहा है। दो व्यक्तियों में युद्ध होने पर एक व्यक्ति मारा ही जाता है। इसी कारण, ओ अबोध रावण, तू क्षमा-दान कर ॥ १९ ॥ विधाता के वचनों का उल्लंघन कौन कर सकता है? रावण उनका उपदेश मानकर वहाँ से चल पड़ा। मुनि अगस्त्य की बात सुनकर रामचंद्र हर्षित हो उठे। उन्होंने पुनः पूछा, मुनि, कहिये ॥ २० ॥ चंद्रमा को जीतने के बाद रावण कहाँ गया? मुनि बताइये, मैं पुराण-कथा सुनना चाहता हूँ।

रावण का कुशद्वीप जाना और महापुरुष के साथ युद्ध

अगस्त्य ने कहा, जानकीनाथ, सुनिये। मैं रावण का सारा दिग्विजय वर्णन कर रहा हूँ ॥ १ ॥ लंकेश्वर जम्बूद्वीप से और आगे बढ़ा। उसने कुशद्वीप में एक महापुरुष को देखा। उसके शरीर का आकार सुमेरु पर्वत जैसा था। वह देवताओं का देवता, सभी देवताओं का सार-भूत था ॥२॥ उसका परिसर बारह योजन का मार्ग घेरे हुए था। उसका शरीर बारह सौ योजन लम्बा था। रावण ने पूछा— हे पुरुष, तुम कौन

रावण बलिछे हे पुरुष केबा तुमि । देह रण संग्राम चाहिया आमि भ्रमि ३
पुरुषेर काछे गिया दशानन तर्ज्जे । अजगर सर्प येन से पुरुष गर्ज्जे
पुरुष बलेन आमि घुचाइ बिषाद । कत दिन स'ब आर तोर अपराध ४
कुड़ि हाते रावण से नाना अस्त्र एड़े । पुरुषेर गाये पड़ि उखाड़िया पड़े
नर नहे पुरुष आपनि नारायण । बाण व्यर्थ याय देखि चिन्तित रावण ५
पर्व्वत-युगल येन उरु दुइ खण्ड । आजानुलम्बित दुइ महाबाहु दण्ड
अष्ट बसु आछे सेइ पुरुष-शरीरे । बहिछे सागर सप्त पुरुष-उदरे ६
दश दिक्पाल आछे पुरुषेर पाशे । उन पञ्चाशत् बायु सह बायु बसे
पुरुषेर हृदि पद्मे ब्रह्मार बसति । नाभि पद्म आसने बसेन हैमबती ७
ताँहार ललाटे सन्ध्या-गायत्री-लिखन । अद्भुत देखिल येन मेघेर मतन
देब दैत्य गन्धर्व्व दानब बिद्याधर । तिन कोटि देबकन्या ताँहार दोसर ८
करण नक्षत्र योग ग्रह तिथि बार । गात्रे लोमाबली-रूपे आछे अबतार
बासुकीर बिष जाले बिश्व दग्ध करे । से बासुकि पुरुषेर मस्तक-उपरे ९
रसनाय सरस्वती सदा स्फूर्तिमती । चन्द्र सूर्य्य दुइ चक्षु सदा करे द्युति
रावणेरे चारि हाते धरेन तखन । बिश हस्त रावण से हैल अचेतन १०
अचेतन ह'ये भूमे लोटाय रावण । पुरुष गेलेन परे पाताल-भुबन
उलटिबा चाहिते लागिल लङ्केश्वर । देखिते ना पाय किछु हइल कातर ११

हो ? मैं संग्राम करने की इच्छा से घूम रहा हूँ । मुझसे संग्राम करो ।।३।। उस पुरुष के पास जाकर दशानन तरजकर बोला । वह पुरुष तब अजगर सर्प की भाँति गरजने लगा । पुरुष ने कहा— 'मैं (संसार के) दुःख-बिषाद मिटानेवाला हूँ । तेरा अपराध अब कब तक सहूँ ?' ।।४।। रावण बीस हाथों से तरह-तरह के अस्त्र छोड़ने लगा । वे अस्त्र उस पुरुष के शरीर में लगकर विफल होकर गिर-गिर पड़ते थे । वह पुरुष तो नर नहीं, स्वयं नारायण था । अपने बाणों को व्यर्थ जाते देख रावण चिन्तित उठा हो ।। ५ ।। उसकी दोनों जाँघें दो पर्वतों जैसी थीं । उसके दोनों महाबाहुदंड अजानुलम्बित थे । उस पुरुष के शरीर में आठों वसु थे, पुरुष के उदर में सातों समुद्र प्रवाहमान थे ।। ६ ।। दसों दिग्पाल पुरुष के भीतर थे, उनचास पवन उसकी साँसों में बसे हुए थे । उस पुरुष के हृदय-कमल पर ब्रह्मा का निवास था । नाभि-कमल के आसन पर हैमवती बैठी थी ।। ७ ।। उसके ललाट पर संध्या-गायत्री का आलेख था । वह ऐसा अद्भुत दिखाई पड़ा मानो मेघ हो । देव-दैत्य-गंधर्व-दानव-विद्याधर, तीन करोड़ देवकन्याएँ उससे जुड़े हुए थे ।। ८ ।। करण, नक्षत्र, योग, ग्रह, तिथि, वार आदि रोमावलि के रूप में उसमें प्रकट थे । जिस वासुकी की विष-ज्वाला विश्व को दग्ध करती है, वह वासुकी उस पुरुष के मस्तक के ऊपर (फन फैलाये) था ।। ९ ।। उसकी रसना पर सदा सरस्वती स्फूर्तिमती बनी रहती है । चंद्र-सूर्य दोनों नेत्र सदा द्युतिमान रहते हैं । उसने अपने चार हाथों से रावण को पकड़ा । बीस भुजाओं वाला रावण अचेत हो गया ।। १० ।। रावण अचेत होकर भूमि पर पड़ गया । इसके

शरीर झाड़िया शुक-सारणेरे पुछे। पुरुष आमारे मारि गेल कार काछे
बले शुक-सारण शुनह लङ्केश्वर। तोमारे मारिया गेल पाताल भितर १२
रावण पाताले गेल पुरुष-उद्देशे। कोटि चतुर्भुज देखे पुरुषेर पाशे
सकल पातालपुरी करे निरीक्षण। मायारूपी तिनि, तारे नाचिने रावण १३
त्रास पेये मने मने चिन्तित रावण। पुरुष रावणे देखा देन ततक्षण
पुरुष सुवर्ण खाटे हरिष-अन्तरे। तिन कोटि देवकन्या परिचर्य्या करे १४
बसियाछे देवकन्यागण कुतूहले। कामार्त्त रावण याय धरि बरे बले
कोप दृष्टे पुरुष रावण पाने चाय। अग्निते पुड़िया भूमे रावण लोटाय १५
उठ उठ बलिया पुरुष डाके तारे। उठिया रावण से गायेर धूला झाड़े
रावण बलिछे, तुमि कोन् अवतार। परिचय देह तुमि भुवनेर सार १६
पुरुष डाकिया बले, शुनरे रावण। तोरे परिचय दिया कोन् प्रयोजन
योड़ हात करिया बलिछे लङ्केश्वर। ब्रह्मार प्रसादे मोर कारे नाहि डर १७
तुमि हे आमारे मार, तबे से मरण। तोमा बिना अन्य हाते ना मरे रावण
रावणेर कथा शुनि पुरुषेर हास। नितान्त आमार हस्ते हइबे बिनाश १८
परिचय दिलेन पुरुष रावणेरे। रावण बिदाय ल'ये तथा हैते सरे
श्रीराम बलेन, कह मुनि महाशय। से पुरुष कोन जन, देह परिचय १९

पश्चात् वह पुरुष पाताल-लोक चला गया। रावण मुड़कर देखने लगा। उसे कुछ भी दिखाई नहीं पड़ा तो वह व्याकुल हो गया ॥ ११ ॥ शरीर झाड़कर उसने शुक-सारण से पूछा— मुझे मारकर वह पुरुष कहाँ चला गया ? शुक-सारण ने कहा— लंकेश्वर, सुनो। तुम्हें मारकर वह पाताल के अन्दर चला गया है ॥ १२ ॥ रावण उस पुरुष के लिए पाताल में गया। उसने देखा, उस पुरुष के पास करोड़ों चतुर्भुज उपस्थित हैं। वह सारी पातालपुरी का निरीक्षण करने लगा। वे माया रूपी थे, जिन्हें रावण पहचानता न था ॥ १३ ॥ संत्रस्त होकर रावण मन ही मन चिन्तित हो उठा। तभी वह पुरुष रावण के समक्ष प्रकट हुआ। पुरुष स्वर्ण-शय्या पर शयन किये था, तीन करोड़ देवकन्याएँ उसकी परिचर्या कर रही थीं ॥ १४ ॥ देवकन्याएँ कौतूहल से वहाँ बैठी हुई थीं, कामार्त रावण उन्हें बलपूर्वक पकड़ने लगा। कोप-दृष्टि से उस पुरुष ने रावण की ओर देखा। रावण अग्नि से झुलसकर भूमि पर गिर पड़ा ॥ १५ ॥ 'उठो, उठो' कहकर उस पुरुष ने उसे पुकारा। रावण ने उठकर शरीर की धूल झाड़ी। रावण ने पूछा— तुम कौन अवतार हो ? तुम संसार के सार हो, मुझे अपना परिचय दो ॥ १६ ॥ पुरुष ने पुकार कर कहा— रावण सुन, तुझे परिचय देने की क्या आवश्यता है ? हाथ जोड़कर लंकेश्वर ने कहा— ब्रह्मा के प्रसाद से मुझे किसी से डर नहीं ॥ १७ ॥ यदि तुम्हीं मुझे मारो तभी मेरी मृत्यु होगी। तुम्हारे बिना दूसरे के हाथ रावण नहीं मरेगा। रावण की बात सुनकर वह पुरुष हँसने लगा। अवश्य, मेरे हाथ ही तेरा विनाश होगा ॥ १८ ॥ (इसी प्रकार) पुरुष ने रावण को परिचय दे दिया। रावण बिदा ले

अगस्त्य बलेन, तिनि भुबने सार। चतुर्भुज तिन कोटि तांर परिबार
जिज्ञासा करेन पुनः कौशल्यानन्दन। तथा हैते आर कोथा गेल से राबण २०

रावण कर्तृक रम्भावतीर अपमान ओ नलकूबर कर्तृक राबणेर प्रति अभिशाप

अगस्त्य बलेन, राम कर अवधान। रावणर पूर्व्वकथा कहि तब स्थान
कैलास पर्व्वते गेल बेला अवसाने। बासा करि राबण रहिल सेइ स्थाने २१
द्वितीय प्रहर रात्रे जागे दशानन। चन्द्रेर उदय हेतु निर्म्मल गगन
सुशीतल रात्रि, बहे वायु मनोहर। धवल रजनी शोभा करे सुधाकर २२
राबण मदने मत्त, नारी नाहि पाशे। हेन काले रम्भा याय उपर-आकाशे
रम्भा नामे अप्सरा से परमा सुन्दरी। कपाले तिलक तार शोभे सारि सारि २३
रूपेते करिल आलो येन चन्द्र कला। देखिया रावण राजा कामे हैल भोला
रम्भा रम्भा बलिया रावण धरे हाते। तुषिते काहार प्राण याह एत राते २४
कोन् नागरेर हेतु याह रसबती। ताहारे एड़िया मोरे भज लो युबती
रति शास्त्र अष्टादश विध आमि जानि। तुमि आमि केलि करि दिबस-यामिनी २५

वहाँ से हट गया। श्रीराम ने पूछा— मुनिवर, कहिये, वह पुरुष कौन है, उसका परिचय दीजिए ॥ १९ ॥ अगस्त्य ने कहा— वे सारे संसार के सार हैं, तीन करोड़ चतुर्भुज उनके परिवार हैं! कौशल्यानन्दन राम ने पुनः पूछा— वहाँ से रावण फिर कहाँ गया ? ॥ २० ॥

रावण द्वारा रंभावती का अपमान और नलकूबर का रावण को शाप देना

अगस्त्य ने कहा— रामचंद्र सुनो। रावण की पूर्व कथा तुम्हें सुना रहा हूँ। कुछ दिन बीत जाने पर रावण कैलास पर्वत पर पहुँचा और वहीं डेरा बनाकर रहा ॥ २१ ॥ रात के दूसरे पहर— रावण जल उठा। चन्द्रोदय के कारण आकाश निर्मल था। रात बड़ी शीतल थी, मनोरम वायु बह रहा था। चंद्रमा श्वेत रात को शोभित कर रहा था ॥ २२ ॥ रावण कामोन्मत्त हो उठा, परन्तु समीप कोई नारी न थी। उसी समय रंभा ऊपर आकाश-मार्ग से जा रही थी। रंभा नाम की वह अप्सरा परम सुन्दरी थी। उसके ललाट पर क़तारों में तिलक सुशोभित था ॥ २३ ॥ वह चन्द्रकला की भाँति अपने रूप से विश्व को आलोकित कर रही थी। उसे देखकर राजा रावण कामोन्मत्त हो सुध-बुध खो बैठा। 'रंभा, रंभा', कहता हुआ रावण ने उसका हाथ पकड़ लिया। तुम किसके प्राणों को संतुष्ट करने हेतु इतनी रात को जा रही हो ? ॥ २४ ॥ हे रसवती, तुम किस नागर के उद्देश्य से जा रही हो। हे युवती, उसे छोड़ अब मुझे भज लो! मैं अठारह प्रकार के रति-शास्त्र का ज्ञाता हूँ। चलो, हम-तुम मिलकर दिन-रात केलि करें ॥ २५ ॥ लज्जा से सिर झुकाकर हाथ

लाजे हेँट माथा रम्भा बले योड़ हात । आमार श्वशुर तुमि राक्षसेर नाथ
श्वशुर हइया तुमि ना धरिह हाते । केन वा आइनु आमि हेन छार पथे २६
रावण बलिल, तुमि काहार सुन्दरी । कि सम्बन्धे तुमि से आमार बहुयारी
रम्भा बले, कर यदि सम्बन्ध-विचार । आमाके छाड़िया देह करि परिहार २७
श्री नलकूवर-नामे कुबेर-कुमार । पतिव्रता हइ आमि रमणी ताँहार
कुबेर तोमार ज्येष्ठ धन-अधिकारी । ताँर पुत्रबधू आमि तव बहुयारी २८
श्वशुर हइया कर बधुरे हरण । आमारे आपेक्षि आछे कुबेर-नन्दन
धर्म्मे मति देह राजा, छाड़ परिहास । हात छाड़ि देह, याइ नायकेर पाश २९
छाड़ि देह लङ्केश्वर, आजिकार राति । कल्य आसि तव सङ्गे करिब पिरीति
रम्भा वाक्य शुनि कहे हासिया रावण । ए समय पेले नारी छाड़े कोन् जन ३०
पुरुष हइया यदि पाय से रमणी । प्राणान्ते नाहिक छाड़े, शुन सुवदनी
मनेते भाविया रम्भा, देखह आपनि । देवराज हरिलेन गुरुर रमणी ३१
एतेक कहिल यदि राजा लङ्केश्वर । मने मने भावे रम्भा, या करे ईश्वर
दशानन बले, तुमि कि भाविछ आर । कालि थेके पुत्रबधू हइओ आमार ३२
रम्भा बले, महाराज, कर परिहार । कालि आमि तव सङ्गे करिब विहार
रम्भार वचन शुनि दशानन हासे । आजि बहुयारी कालि घुचिवेक किसे ३३
रम्भा बले, शुन बलि आमार नियम । ये दिन याहार पाशे करिब गमन

जोड़ रंभा बोली, राक्षसों के नाथ, तुम मेरे ससुर लगते हो। ससुर होकर तुम मेरे हाथ न पकड़ो। मैं भला ऐसे बुरे रास्ते से क्यों आयी ? ॥२६॥ रावण बोला— तुम किसकी सुन्दरी (पत्नी) हो ? किस नाते तुम मेरी बहू लगती हो ? रंभा बोली, अगर नाते का विचार करें तो मुझे छोड़ दें ॥ २७ ॥ कुबेर-कुमार, जिनका नाम श्री नलकूबर है, मैं उन्हीं की पतिव्रता-पत्नी हूँ। धनाधिपति कुबेर आपके बड़े भाई हैं। मैं उन्हीं की पुत्रबधू और आपकी पतोहू हूँ ॥ २८ ॥ ससुर होकर आप पतोहू का हरण कर रहे हैं, कुबेर-नन्दन नलकूबर मेरी प्रतीक्षा में हैं। हे राजा, आप धर्म में मति रखिये, परिहास करना छोड़ दें। मेरे हाथ छोड़ दें, मैं अपने पति के पास जाऊँ ॥ २९ ॥ हे लंकेश्वर, आज रात को मुझे छोड़ दें, कल आकर आपसे प्रीति करूँगी। रंभा का वचन सुनकर रावण हँसकर बोला— ऐसे समय में नारी को पाकर भला कौन छोड़ता है ? ॥ ३० ॥ पुरुष होकर यदि कोई नारी को पा जाये, तो हे सुन्दर वदन वाली, सुनो, प्राण जाने पर भी उसे छोड़ता नहीं। हे रंभा, तुम मन में स्वयं सोच देखो, देवराज इन्द्र ने भी गुरु की पत्नी को हर लिया था ॥ ३१ ॥ राजा लंकेश्वर ने जब ऐसा कहा, तो रंभा मन ही मन सोचने लगी, अब ईश्वर चाहे जो करे ! दशानन बोला, तुम और क्या सोच रही हो ? कल से तुम मेरी पतोहू बनना ! ॥ ३२ ॥ रंभा बोली, महाराज, छोड़ दीजिये। मैं कल आपके साथ विहार करूँगी। रंभा का वचन सुन दशानन हँसने लगा। बोला, आज जो पतोहू बनोगी तो कल वह कैसे बदलेगा ? ॥ ३३ ॥ रंभा बोली, सुनिये अपना नियम मैं

सेइ दिन पति सेइ जानिह निश्चय । ए कथा अन्यथा नाहि कदाचित हय ३४
विधिर निर्ब्बन्ध शुन राक्षसेर पति । चिरदिन धर्म्म राखि एइ रूपे सती
नलकूबरेर लागि करे'छि प्रयाण । आजि छाड़ि देह राजा, राख मोर मान ३५
धर्म्म राख नलकूबरेर अनुरोध । विलम्ब देखिले तिन करि बेन क्रोध
आजि राजा छाड़ि देह तुमि मोर आश । दश दिन थाकिब आसिया तव पाश ३६
विश्वश्रवा पुत्र तुमि सुबुद्धि सुधीर । पण्डित हइया केन एतेक अस्थिर
रावण बले, ओ कथा मोरे नाहि लागे । आर दिन तव काछे केबा रति मागे ३७
दैवेर घटने आजि गेछ हाते पड़े । हेन जन केबा आछे, स्त्री पाइले छाड़े
पृथिवीर नारी यदि हइत घटना । पाइले ना छाड़ि आमि, तार एक जना ३८
एत यदि कहिलेक राजा दशानन । नाके हात दिया रम्भा भावे मने मन
रावणेर हाते बुझि परित्राण नाइ । मौन ह'ये थाकि एबे या करे गोसाँइ ३९
एत भावि मौन भावे थाके रम्भावती । रावण बुझिल, रम्भा दिलेक सम्मति
किछु ना वलिया रम्भा मौनेते थाकिल । रम्भा के चापिया तवे रावण धरिल ४०
हेंट मुखे रहे रम्भा रावण-गोचर । भाल-मन्द किछु रम्भा ना दिल उत्तर
अनुमाने रावण बुझिल तार मन । धरिया शृङ्गार करे राजा दशानन ४१

सुनाती हूँ । मैं जिस दिन जिसके पास जाती हूँ, यह निश्चय जानें, कि दिन वही मेरा पति होता है । इस बात की अन्यथा कभी नहीं होती ॥३४॥ हे राक्षसों के स्वामी, सुनिये, यह विधि का निर्बंध है, इसी तरह मैं चिरकाल धर्म-रक्षा करती हूँ, इसी प्रकार सती बनी रहती हूँ । मैं आज नलकूबर के लिए निकल चुकी हूँ । हे राजा ! आज मुझे छोड़ दीजिये, मेरा मान रखिये ! ॥ ३५ ॥ मेरा अनुरोध है कि नलकूबर के धर्म की रक्षा कीजिये, अगर वे मेरा विलम्ब देखेंगे तो क्रोधित हो उठेंगे । हे राजा, आज आप मेरी आशा छोड़ दीजिये, इसके बाद मैं आपके पास दस दिन रहूँगी ॥ ३६ ॥ आप विश्वश्रवा के पुत्र, उत्तम बुद्धि वाले, सुधीर हैं ! पंडित होकर भी ऐसे अधीर क्यों होते हैं ? रावण बोला, मुझे उन बातों से कोई प्रयोजन नहीं । दूसरे दिन भला तुमसे रति की याचना कौन करेगा ? ॥ ३७ ॥ दैव-योग से आज तुम मेरे हाथ पड़ गयी हो । ऐसा कौन है जो स्त्री को पाकर छोड़ दे ? अगर संसार की सभी नारियाँ इकट्ठी हो जातीं तो मैं उनमें से किसी को पाकर नहीं छोड़ता ? ॥ ३८ ॥ राजा दशानन ने जब ऐसी बात कही, तो रंभा नाक पर हाथ रख मन ही मन सोचने लगी । संभवत: रावण के हाथ से बच नहीं पाऊँगी । इसीलिए अब तो मौन होकर ही रहूँ; ईश्वर चाहे जो करें ॥ ३९ ॥ ऐसा सोचकर रंभावती मौन रह गयी । रावण ने समझा, रंभा ने सम्मति दे दी है, कुछ उत्तर न दे रंभा मौन रही । तब रावण ने रंभा को दबोच लिया ॥ ४० ॥ रावण के सम्मुख रंभा सिर झुकाये रही । अच्छा-बुरा कोई उत्तर न दिया । अनुमान से ही रावण ने उसके मन की भावना को समझा । उसे पकड़कर रावण ने उससे संभोग किया ॥ ४१ ॥ एक तो रावण (महाभोगी) था, दूसरे रंभा

एकेत रावण, ताहे रम्भार इङ्गित। इङ्गिते शृङ्गार राजा करे बिपरीत
एके दशानन ताहे शृङ्गारे प्रवीण। एकासने शृङ्गार करये सप्त दिन ४२
रावणेर शृङ्गार ना सहे कोन नारी। सबे मात्र सहे रम्भा, आर मन्दोदरी
हात-पा आछाड़े रम्भा रावणेर कोले। रावण शृङ्गार करे धरि तार चुले ४३
रह रह बलि रम्भा बले रावणेरे। मुखेते तर्ज्जन करे, हरिष अन्तरे
पुरुषेर अष्ठ गुण स्त्रीलोकेर काम। ताहार बृत्तान्त कहि शुनह श्रीराम ४४
स्वभावे पुरुष हैते कामे मत्ता नारी। तबु स्त्रीलोकेर मन बुझिते ना पारि
हृदये आनन्द, मुखे करये तर्ज्जन। तिन लोके नारीर बुझिते नारे मन ४५
प्रकाश ना करे मुखे, मने पुड़े मरे। प्रकाशिया नाहि कहे पुरुष-गोचरे
कठिन रमणी जाति सृजिलेन धाता। अन्तरे पुड़िया मरे, नाहि कहे कथा ४६
पुरुष-अधिक नारी कामेते पागल। तथापि पुरुष मन्द, स्वाभावे चञ्चल
रमणी चञ्चल हय, कदाच ना शुनि। पुरुष एमन जाति, भुले याय मुनि ४७
काम क्रोध लोभ मोह, छाड़ेन सकल। हेन मुनि स्त्री देखिले हयेन पागल
केह ना बुझिते पारे स्त्रीलोकेर छल। पुरुष भुलाते नारी फांदे नाना कल ४८
शास्त्र मुखे जानि राम सर्व्व बिवरण। नारीते मजिले यश, गौरव निधन
राम बले, यत बल सकलि स्वरूप। विशेष पुरुष नहे नारी-अनुरूप ४९

का संकेत। संकेत से राजा रावण विपरीत नियम से संभोग करने लगा। एक तो दशानन (महाभोगी) था, दूसरे वह संभोग में प्रवीण था, एक ही आसन पर उसने लगातार सात दिन तक संभोग किया ॥ ४२ ॥ रावण के संभोग का वेग कोई नारी सह नहीं सकती थी। केवल रम्भा और मन्दोदरी ही सह सकती थीं। रावण के अंक में पड़ी रंभा हाथ-पैर पटक रही थी, रावण उसके बाल पकड़ संभोग कर रहा था ॥ ४३ ॥ रंभा रावण से 'रुको, रुको' कहती थी, मुँह से डाँटती थी, पर अन्तर् में हर्ष भी था। नारियों में पुरुषों की अपेक्षा काम आठ गुना होता है, श्रीराम, उसका वृत्तान्त सुनाता हूँ ! सुनो ! ॥४४॥ पुरुष की अपेक्षा नारी अधिक कामोन्मत्त होती है। तथापि नारियों का मन समझा नहीं जाता। वह हृदय में आनन्दित होती है, मुँह से गरजती है, तीनों लोक नारी का मन समझ नहीं पाते ! ॥ ४५ ॥ वह मुँह से प्रकट नहीं करती पर मन में दुःख से जलती रहती है, वह पुरुष के समक्ष खुलकर नहीं कहती। विधाता ने नारी जाति को कठोर बनाकर सर्जन किया है। वह अन्तर् में जल मरती है, पर कोई बात नहीं करती ॥ ४६ ॥ नारी पुरुष से अधिक काम में पागल होती है। तथापि पुरुष मंद है, स्वभाव से वह चंचल होता है। नारी चंचल है, ऐसी बात कहीं सुनी नहीं जाती। पर पुरुष की जात ऐसी है कि मुनि भी (अपने को) भूल जाते हैं ॥ ४७ ॥ जो मुनि काम, क्रोध, लोभ, मोह सब कुछ छोड़ देते हैं वैसे मुनि भी स्त्री को देखकर पागल बन जाते हैं। स्त्रियों का छल कोई समझ नहीं पाता। पुरुष को भुलाने के लिए नारियाँ तरह-तरह के कौशल किया करती हैं ॥ ४८ ॥ शास्त्रों के वचनों से सारा विवरण जाना जाता है। नारी में लीन होने

मुनि बलिलेन, यार बड़ भाग्योदय। लोभ संबरण करि तार नारी रय
शृङ्गारेते रमणीय बाड़े अभिलाषा। जनम-अबधि तार नाहि पूरे आश ५०
दिने दिने बाड़े लोभ नहे संबरण। संबरिते पारे यदि नारी करे मन
ये रमणी पाप कर्म्मे नाहि करे मति। उत्तमा रमणी जेनो सेइ गुणबती ५१
सतीर अनेक गुण सुन रघुपति। अनेक खुंजिले नाहि मिले एक सती
एक गुणा नहे नारी अनेक लक्षणा। सर्व्वगुण धरे देहे सती येइ जना ५२
सतीर देहेते महालक्ष्मी मूर्तिमती। पूजा कैले खण्डे पाप, ना थाके दुर्गति
एक सहस्रेते नारी मिलये सकटि। सती पाओया दुर्ल्लभ, असती कोटि कोटि ५३
सती सदा करे निज कुल प्रतिकार। असती हइले कभु नाहिक निस्तार
सतीर प्रशंसा राम सकल पुराणे। असतीर अपमान देख त्रिभुबने ५४
असती असत्यबादी, शुनह लक्षण। एक महादोष तार अधिक भोजन
याहा देखे ताहा खेते मने करे साध। रात्रि दिन खाय तबु करये बिबाद ५५
यत खाय, क्रमे क्रमे तत बाड़े आश। यार घरे हेन नारी तार सर्व्वनाश
ताहार उदरे यत सन्तान-सन्तति। मातृदोष तारा सब हय त कुमति ५६

पर यश-गौरव खत्म हो जाता है। राम ने कहा— आपने जो कुछ कहा, सत्य है। नारी का मनपसंद कोई एक विशेष पुरुष नहीं होता ॥ ४९ ॥ मुनि बोले, जिसका बड़ा भाग्योदय होता है, उसकी नारी ही लोभ-संवरण कर रह जाती है। संभोग में रमणी की अभिलाषा बढ़ जाती है। जीवन भर उसकी आशा पूरी नहीं होती ॥ ५० ॥ दिनोंदिन उसका लोभ बढ़ता जाता है, संयमित नहीं होता। यदि नारी चाहे तो उसे संयत कर सकती है। जो नारी पापकर्म में मति नहीं देती, उसी गुण-वती को उत्तम रमणी समझो ॥ ५१ ॥ हे रघुपति, सुनिये, सती के अनेक गुण होते हैं। बहुत खोजने पर भी एक सती नहीं मिलती। नारी अनेक लक्षणों वाली होती है, एक गुण वाली नहीं। जो सती होती है, वह सभी गुणों का आधार होती है ॥ ५२ ॥ सती के शरीर में महालक्ष्मी मूर्तिमती होती है, उसकी पूजा करने पर पाप खंडन होता है, दुर्गति नहीं होती। हजारों में कोई एक (सती) नारी मिलती है, सती मिलना दुर्लभ है, असती तो करोड़ों होती है ॥ ५३ ॥ सती सदैव अपने कुल की रक्षा करती है, असती होने पर कभी निस्तार नहीं होता। रामचन्द्र, सती की प्रशंसा सभी पुराणों में है। असती का अपमान भी तीनों लोकों में होता है ॥ ५४ ॥ असती नारियाँ असत्यवादी होती हैं, उनके लक्षण सुनो। उसका एक महादोष यह होता है कि वह अधिक भोजन करनेवाली होती है। जो देखती है, वही खाने को मन में अभिलाषा करती है। रात-दिन खाती रहती है, फिर भी विवाद करती है ॥ ५५ ॥ जितना खाती है, क्रमशः उतनी ही आशा बढ़ती रहती है। जिसके घर में ऐसी नारी होती है उसका सर्वनाश होता है। उसके पेट से जितनी संतान-संतति होती हैं, मातृ-दोष के कारण वे सभी दुर्मति होते

ये कर्म्म प्रवृत्त हय, करे अनाचार। अनाचारे ब्रह्मशापे बंशेर संहार
विपरीत ब्रह्मशाप हय तार कुले। ब्रह्मशापे सबंशेते पड़े डाले मूले ५७
पापमति स्त्री-पुरुष येइ कुले थाके। पापे मजि तार बंश याय त नरके
अपकीर्ति गाय तार सकल संसार। मरिले नरके याय, नाहिक निस्तार ५८
असती देखिले पाप बाड़ये विस्तर। सतीरे देखिले पाप पलाय सत्वर
सत्येर पालन करे, मिथ्या परित्याग। दिने दिने धर्म्म पथे बाड़े अनुराग ५९
धार्म्मिकेर बंशे जन्मि करे अनाचार। आपनार दोषे हय बंशेर संहार
मुनि पुत्र दशानन जन्म ब्रह्म-अंशे। अनाचार पापकर्म्मे सर्व्वलोके हिंसे ६०
सृष्टिरे सृजिया ब्रह्मा करेन पालन। बिश्वश्रबा करे देख धर्म्म-उपासन
हेन अंशे जन्मि रक्षः करे कोन् कर्म्म। धर्म्मेर नाहिक लेश, सकलि अधर्म्म ६१
श्रीराम बलेन, तब नाहि अगोचर। रम्भार बृत्तान्त किछु कह अतः पर
मुनि बलिलेन, शुन पुराण-कथन। तदन्तरे रम्भावती करिल गमन ६२
शृङ्गारे रम्भार बेश हइल संचूर। स्वामीर चरण धरि कान्दिल प्रचुर
से नलकूबर बले, बेश केन आन। कार ठाँइ पाइयाछ एत अपमान ६३
कान्दिते कान्दिते रम्भा तार पाये पड़े। तब कोपानले प्रभु, त्रिभुवन पुड़े
एतदिन भ्रमि आमि त्रिभुवनमय। हेन अपमान मम कभु नाहि हय ६४

हैं ! ॥ ५६ ॥ जिस कार्य में वे प्रवृत्त होते हैं, अनाचार करते हैं। उनके अनाचार और ब्रह्मशाप से वंश का संहार हो जाता है। उसके कुल में विपरीत ब्रह्मशाप पड़ता है। ब्रह्मशाप से मूल-शाखाओं समेत सवंश नष्ट हो जाता है ॥५७॥ पापमति स्त्री-पुरुष जिस कुल में रहते हैं, पाप में डूबकर उसका वंश नरक में चला जाता है। उसकी अपकीर्ति समूचा संसार गाता रहता है। मरने पर वह नरक में जाता है, उसका निस्तार नहीं होता ॥ ५८ ॥ असती को देखने पर अनेक पाप बढ़ जाता है और सती को देखने पर पाप तुरन्त भाग जाता है। जो मिथ्या का परित्याग कर सत्य का पालन करते हैं, दिनों-दिन धर्म-मार्ग में उसका अनुराग बढ़ जाता है ॥ ५९ ॥ धार्मिक के वंश में जन्म लेकर जो अनाचार करता है, उसके अपने दोष से वंश का संहार हो जाता है। रावण मुनि-पुत्र था, ब्रह्मा के अंश से उसका जन्म हुआ था, वह अनाचार और पाप-कर्म से सारे लोगों की हिंसा करता था ॥ ६० ॥ देखो, सृष्टि की सर्जना कर ब्रह्मा पालन करते हैं, विश्वश्रवा भी धर्म-उपासना करते हैं, ऐसे पिता के अश से जन्म लेकर राक्षस रावण कैसा कर्म करता है। उसमें धर्म का लेश मात्र नहीं है, सब कुछ अधर्म है ॥६१॥ श्रीराम ने कहा, मुनि, आपका अगोचर कुछ भी नहीं है। इसके पश्चात् रंभा का कुछ वृत्तान्त सुनाइये। मुनि बोले, पुराण-कथा, सुनो। उसके पश्चात् रंभावती वहाँ से चली ॥६२॥ संभोग के कारण रंभा का वेश कुरूप हो गया था। स्वामी के चरण पकड़ उसने बड़ा रुदन किया। तब उस नलकूबर ने पूछा, तुम्हारा वेश ऐसा दूसरा क्यों हो रहा है ? किससे तुम्हें इतना अपमान मिला है ! ॥ ६३ ॥ रो-रोकर रंभा उसके पैरों पर पड़ने लगी। कहने लगी, प्रभु, तुम्हारे कोपानल

कोथाकार कार्य्य कोथा विधाता घटाय । आचम्बिते रावण आमार देखा पाय
ये दिन हइवे या बिधि सब जाने । दैवेर घटन हेन, बुझि अनुमाने ६५
एमत विपत्ति नाहि देखि कोन काले । पथे पेये रावण चापिया धरे कोले
धर्म्म लोप करिलेक बले चापि धरि । बलहीना नारी जाति कि करिते पारि ६६
देवता ना पारे तारे आमि नारी जाति । रावणेर हाते किसे पाब अव्याहति
यतेक मिनती करि तत कोप बाड़े । सप्त रात्रि पापिष्ठ आमारे नाहि छाड़े ६७
नलकूवर बले, रम्भा जानि तुमि सती । तब दोष नाहि देखि रावण दुर्म्मति
कुकर्म्म देखिया नलकूबरेर रोष । ध्यानेते जानिल से रम्भार नाहि दोष ६८
क्रोधे नलकूवर से लागिल ज्वलिते । रावणेरे शाप दिते जल निल हाते
आजि हैते शाप मोर हउक प्रचार । बले धरि रावण येइ करिबे शृङ्गार ६९
सेइ क्षणे मरिबेक, यावे दशमाथा । नलकूबरेर शाप ना हबे अन्यथा
रावणेर शापे हैल हृष्ट देवगण । सीतार सतीत्व-रक्षा एइ से कारण ७०
निद्रा हैते उठिल रावण रति-साधे । शाप शुनि अमनि से बसिल बिषादे
शुनिया रावण राजा दुःख भावे चिते । केन आइ लाम आमि हेन छार पथे ७१

नल में त्रिभुवन जलता है, इतने दिन मैं तीनों लोकों में भ्रमण करती थी, परन्तु ऐसा अपमान मेरा कभी नहीं हुआ था ।। ६४ ।। कहाँ का कार्य, विधाता कहाँ घटित करता है ! अचानक रावण ने मुझे देखा । जिस दिन जो जिस तरह से होनेवाला है, सब वह जानता है । मैंने अनुमान में समझा है, यह दैव की ही लीला है ।। ६५ ।। इस तरह की विपत्ति किसी काल में दिखाई नहीं पड़ी थी । मार्ग में रावण ने मुझे पाकर अंक में दबोच लिया । बलपूर्वक दबोच कर उसने मेरा धर्म-लोप कर डाला । मैं बलहीना नारी-जाति भला क्या कर सकती हूँ ।। ६६ ।। देवता भी उससे पार नहीं पाते, और मैं तो ठहरी नारी-जाति ! रावण के हाथ से भला कैसे बच सकती थी ? उससे जितनी विनती करती थी उसका क्रोध उतना ही बढ़ता जाता था । उस पापी ने मुझे सात रात तक नहीं छोड़ा ।। ६७ ।। नलकूबर बोला— रंभा, जानता हूँ, तुम सती हो, मैं तुम्हारा दोष नहीं देखता । रावण ही दुर्मति है । रावण का दुष्कर्म देख नलकूबर रुष्ट हो उठा । उसने ध्यान लगाकर जाना कि रंभा का कोई दोष नहीं है ।। ६८ ।। क्रोध के मारे नलकूबर जल उठा । उसने रावण को अभिशाप देने हेतु हाथ में जल लिया । (उसने शाप दिया) आज से मेरा यह अभिशाप प्रचारित होवे ! रावण यदि बलपूर्वक किसी से संभोग करेगा ।। ६९ ।। तो उसी क्षण वह मर जायेगा, उसके दसों सिर गिर पड़ेंगे । नलकूबर का यह अभिशाप अन्यथा नहीं होगा । रावण को शाप मिलने के कारण देवगण हर्षित हुए । सीता की सतीत्व-रक्षा का कारण भी यही है ।। ७० ।। रावण संभोग की कामना से जब नींद से जगा, तभी शाप सुनकर वह विषाद से बैठ गया । अभिशाप की बात सुनकर राजा रावण मन में दुःखी होकर सोचने लगा— मैं भला ऐसे

घोर शाप दिल मोरे कुबेर-नन्दन। बले रति करिते ना पारिब कखन
यदि अन्य शाप दित ताहा प्राणे सय। घोर शाप दिल मोरे, पुड़िछे हृदय ७२
एइ से रहिल मोर मने अनुताप। भाइपो हइया मोरे दिल हेन शाप
अगस्त्येर कथा शुनि रामेर उल्लास। आर किछु कह मुनि, तार इतिहास ७३
रम्भारे धरिया कोथा गेल से रावण। कह कह मुनि, शुनि पुराण-कथन

सूर्पनखार वैधव्येर बिबरण

मुनि बले, दशानन देशे देशे चले। एक दिन उठिल से गगन मण्डले १
तिन कोटि दैत्य तथा काल कुलपति। रावणेर वेड़े तार सब सेनापति
तिन कोटि दैत्य तारा यमेर दोसर। रावणेरे बाणे विन्धि करिल जर्ज्जर २
जिनिते ना पारे दैत्ये चिन्तित रावण। अग्निबाण धनुकेते युड़िल तखन
अग्निबाण एड़िलेक अग्नि अवतार। अग्नि-बाणे दैत्य सब हइल संहार ३
एक बाणे तिन कोटि करिल संहार। रावण बलिल, लुट दैत्येर भाण्डार
पाइया राजार आज्ञा निशाचरगण। बाछिया बाछिया लुटे रमणी रतन ४
से सबार रूप देखि कामे दहे मन। शाप भये शृङ्गार ना करे दशानन

बुरे मार्ग में क्यों आया ? ॥ ७१ ॥ कुबेर-नन्दन नलकूबर के मुझे घोर शाप दिया है, अब किसी से मैं बलपूर्वक संभोग नहीं कर सकता। यदि वह मुझे कोई दूसरा शाप देता तो मेरे प्राण उसे सह लेते। उसने मुझे घोर शाप दे दिया, इससे हृदय जल रहा है ॥ ७२ ॥ मेरे मन में यही अनुताप रह गया, मेरा भतीजा होकर भी उसने मुझे ऐसा अभिशाप दे दिया। अगस्त्य की बात सुनकर रामचन्द्र उल्लसित हुए। मुनि, उसका इतिहास कुछ और कहिए ॥ ७३ ॥ रंभा को पकड़ने के बाद रावण कहाँ गया ? कहिये, कहिए मुनि, मैं पुराण-कथन सुनूं।

शूर्पणखा के वैधव्य का विवरण

मुनि बोले, दशानन देश-देश में जाता। एक दिन वह गगन-मंडल पर चढ़ गया ॥ १ ॥ तीन करोड़ दैत्य और काल-कुलपति वहाँ थे, उसके सारे सेनापतियों ने रावण को घेर लिया। वे तीन करोड़ दैत्य यमराज के बराबर थे। उन सबने रावण को बाणों से बेधकर जर्जर कर डाला ॥ २ ॥ उन दैत्यों को जीत न पाकर रावण चिन्तित हुआ। तब उसने धनुष पर अग्निबाण चढ़ाया। उसने अग्नि-अवतार अग्नि-बाण छोड़ा। अग्निबाण से सभी दैत्यों का संहार हो गया ॥ ३ ॥ एक ही बाण से तीन करोड़ दैत्यों का संहार कर डाला। रावण बोला— दैत्यों का भंडार लूट लो। राजा की आज्ञा पाकर निशाचर चुन-चुनकर रमणी, रत्न लूटने लगे ॥ ४ ॥ उन रमणियों को देख कामवश रावण का मन जल रहा था, पर शाप-भय से वह संभोग नहीं करता था। रावण ने

रावण प्रस्थान करे देशे कुतूहले। लुटिया सुन्दरी गणे रथे निल तुले ५
से-सबार नेत्रजले रथ खान तिते। श्रावण मासेर धारा वहे येन स्रोते
कन्यागणे प्रबोधे, प्रबोध नाहि माने। कान्दितेछे केवल रावण-विद्यमाने ६
रावण प्रार्थना करे चाहि रतिदान। पितृ-मातृ शोके कन्यागण हत ज्ञान
रावण भाविछे यदि ना हइत शाप। एतक्षण तबे केवा सहे काम ताप ७
घोर शाप दिल मोरे कुवेर-नन्दन। बले धरि शृङ्गार ना करि से कारण
कठिन कामिनी जाति सृजिल विधाता। अन्तरे पुड़िया मरे, मुखे नाहि कथा ८
महोदर बले, राजा करह श्रवण। लज्जा भये तोमारे ना भजे कन्यागण
एके कुल बाला, ताहे मने भय बासे। सब कन्या भजिबेक तुमि गेले देशे ९
लङ्काय तोमार दश सहस्र ये राणी। रूपे गुणे कुले-शीले त्रिभुवन जिनि
एत स्त्री थाकिते तबु ना पूरिल साध। रम्भावती हरि केन घटाले प्रमाद १०
महोदर कहे यत, रावण लज्जित। देशेते प्रस्थान करे ह'ये त्वरान्वित
दिग्विजय करिलेक शतेक वत्सर। उपस्थित हइल लङ्काते लङ्केश्वर ११
सङ्गे छिल दैत्य कन्या परमा सुन्दरी। लइया से सब कन्या गेल अन्तःपुरी
रावण याहार पाय अङ्गीकार-वाणी। अन्तःपुरे ल'ये तारे करे मुख्या राणी १२

कौतूहल से अपने देश को प्रस्थान किया और सुन्दरियों को लूटकर रथ पर चढ़ा लिया ॥ ५ ॥ उनके आँसुओं से रथ भीग गया, मानो सावन महीने की धारा प्रवाहित हो रही थी। वह कन्याओं को सांत्वना देता था, पर वे शान्त नहीं होती थीं। वे केवल रावण के समक्ष रो रही थी ॥ ६ ॥ उनसे रावण संभोग-याचना करता था, कन्याएँ पिता-माता के शोक से बेसुध थीं। रावण सोच रहा था, अभिशाप न होता, तो इतनी देर तक कौन काम की ज्वाला सहता ? ॥ ७ ॥ कुबेर-नन्दन ने मुझे घोर अभिशाप दे दिया है। इसी कारण किसी को बलपूर्वक पकड़कर संभोग नहीं कर सकता। विधाता ने नारी-जाति को कठिन बनाकर सर्जन किया है। वे अन्तर् में जलती रहती हैं, पर मुँह से नहीं बोलतीं ॥ ८ ॥ महोदर ने कहा— राजा, सुनिए, ये कन्याएँ लज्जा के कारण आपको नहीं भजतीं। एक तो ये कुल-बालाएँ हैं, दूसरे इनके मन में आतंक बसा हुआ है, आप इन्हें लेकर यदि देश चले जायँ तो ये सारी कन्याएँ आपको भजेंगी ॥ ९ ॥ लंका में दस सहस्र रानियाँ हैं, जो रूप-गुण-शील में त्रिभुवन जीतनेवाली हैं। इतनी स्त्रियों के रहते भी आपकी साध पूरी नहीं हुई। रंभावती को हरण कर अपना अनिष्ट क्यों किया ? ॥ १० ॥ महोदर जितना कहता था, रावण उतना ही लज्जित होता था। उसने जल्दी से देश को प्रस्थान किया। उसने सौ वर्षों तक दिग्विजय किया। उसके पश्चात् लंकेश्वर लंका में उपस्थित हुआ ॥ ११ ॥ उसके साथ परम सुन्दरी दैत्यकन्याएँ थीं। उन कन्याओं को लेकर वह अन्तःपुर में चला गया। रावण जिससे स्वीकृति पा लेता, उसे अन्तःपुर में ले जाकर मुख्य रानी बना लेता ॥ १२ ॥ जिस कन्या से उसे

ये कन्यार रावण ना पाय अङ्गीकार। थुइया अशोक बने करये प्रहार
रावण प्रतापी अति स्वर्ण लङ्कापुरे। स्त्री-दश-हाजार-सह सुखे केलि करे १३
सूर्पनखा नामे छिल रावण भगिनी। रावणेर काछे कान्दे, चक्षे पड़े पानि
सूर्पनखा बले, भाइ, तुमि मोर अरि। बिधवा करिले मोरे पति मोर मारि १४
तिन कोटि दैत्य ये मारिले तुमि बले। मारिले आमार स्वामी ताहार मिशाले
पात्र-मित्र-आदि आर बिभीषण भाइ। सकले बिबाह दिल दानबेर ठाँइ १५
ये दिन बिबाह, से दिन हइनु राँड़ी। सागरे प्रवेश करि आमि प्राण छाड़ि
सूर्पनखा हाते धरि बले रक्षो राज। अज्ञाते हइल कर्म्म, नाहि देह लाज १६
दुइ भाइ आछे खर आर ये दूषण। ताहारा तोमारे सदा करिबे पालन
स्वतन्त्रा हइया तुमि थाक जनस्थाने। स्वतन्त्रार नामे राँड़ी हृष्ट हय मने १७
आर यत राँड़ी घरे बञ्चये यौबन। स्वतन्त्रा करिल तारे कुबुद्धि रावण
सूर्पनखा चलिल ये रावण-आदेशे। सबंशे रावण मरे से राँड़ीर दोषे १८
से राँड़ीर नाक-काण काटिल लक्ष्मण। ताहा हैते सवंशेते मरिल रावण
अगस्त्येर कथा शुनि श्रीरामेर हास। कह कह बलि राम करिला प्रकाश १९

स्वीकृति नहीं मिलती थी, उसे अशोक वन में रखकर प्रहार करता था। स्वर्णमयी लंका में रावण बड़ा ही प्रतापी था। वह दस हज़ार स्त्रियों के संग सुखपूर्वक केलि किया करता ॥ १३ ॥ शूर्पणखा नाम की रावण की बहिन थी। वह रावण के पास आकर रोने लगी। उसकी आँखों से आँसू वह रहे थे। शूर्पणखा बोली, भाई, तुम मेरे शत्रु हो। तुमने मेरे पति को मारकर विधवा कर डाला ॥ १४ ॥ तुमने बलपूर्वक जिन तीन करोड़ दैत्यों को मारा है, उन्हीं में मिले हुए मेरे पति को भी तुमने मार डाला। यहाँ के सभी सामन्तों, इष्ट-मित्रों और भाई विभीषण आदि सबने मिलकर मुझे उस दानव से विवाह कराया था ॥ १५ ॥ विवाह जिस दिन हुआ, उसी दिन मैं राँड़ हो गयी। अब सागर में प्रवेश कर मैं अपने प्राण दे दूँगी। शूर्पणखा का हाथ पकड़कर राक्षसराज रावण बोला— यह कर्म मेरे अनजाने हो गया, मुझे लज्जित न करो ॥ १६ ॥ मेरे दो भाई खर और दूषण सदैव तुम्हारा पालन करेंगे। तुम स्वतंत्र होकर जन-स्थान में निवास करो। स्वतंत्र रहने की बात से वह राँड़ शूर्पणखा मन में हर्षित हुई ॥ १७ ॥ और जितनी विधवा नारियाँ हैं, सब घर में ही रहकर अपना यौवन बिताया करती हैं। परन्तु कुबुद्धि रावण ने उसे स्वतंत्र कर दिया। रावण के आदेश से शूर्पणखा वहाँ से चली। उसी राँड़ के दोष से रावण सवंश मारा गया ॥ १८ ॥ उस राँड़ के नाक-कान लक्ष्मण ने काट डाले, उसी के फलस्वरूप रावण सवंश मारा गया। अगस्त्य की बात सुनकर श्रीराम हँसने लगे। 'मुनि, (आगे की कथा) कहिए, कहिए —कहकर वचन प्रकट किया ॥ १९ ॥

रावणेर स्वर्ग जिनिते गमन

अगस्त्य बलेन, राम, कर अवधान । इन्द्र-रावणेर युद्ध कहि तव स्थान
कौतुके रावण-राजा आछे लङ्कापुरे । देव-दानवेर कन्या लये केलि करे १
परनारी लये केलि करे दशानन । हेन काले रावणेरे बले बिभीषण
बलेते हरिया तुमि आन परनारी । मधुदैत्य आसि तव भग्नी कैल चुरि २
यत पाप कर तुमि, तोमार से फले । कुम्भनसी भग्नी दैत्य हरे निल बले
प्रहस्त मामार कन्या नामे कुम्भनसी । रात्रिते करिल चुरि मधुदैत्य आसि ३
अपमान शुनि राजा कहिछे बिषादे । लङ्कापुरे कि करिते आछे मेघनादे
सुमेरु काटिया पाड़े मेघनाद बाणे । एत अपमान करे तार विद्यमाने ४
तुमि आछ विभीषण, भाइ, सहोदर । एत सब बीर आछे लङ्कार भितर
कारो शक्ति नाहि, युद्ध करे दैत्य सने । तोमा सबा कारे धिक्, कि फल जीवने ५
बीर कुम्भकर्ण यदि लङ्कापुरे जागे । भुवनेर शत्रु नाहि आसे तार आगे
दिग्विजय करि आसिलाम त्रिभुवन । थाकुक दैत्येर कथा, आगे देवगण ६
त्रिभुवन जिनिया आइनु एकेश्वर । भगिनी राखिते नार घरेर भितर
कुम्भकर्ण आर आमि आछि दुइजन । मेघनाद प्रभृतिर शक्ति अकारण ७

रावण का स्वर्ग-विजय हेतु गमन

अगस्त्य ने कहा, राम, सुनो ! तुमसे इंद्र और रावण के युद्ध का वर्णन कर रहा हूँ । राजा रावण लंकापुरी में बड़े ही आनन्द से रह रहा था । वह देव-दानवों की कन्याओं को लेकर केलि करता था ।। १ ।। पर-नारियों को लेकर दशानन केलि करता था । उसी समय विभीषण ने रावण से कहा— तुम बलपूर्वक पर-नारियों को हरण कर ले आते हो, उधर मधु दैत्य आकर तुम्हारी बहिन को चुरा ले गया है ।। २ ।। तुम जितने पाप करते हो, उसी के फलस्वरूप वह दैत्य बहिन कुंभीनसी को बलपूर्वक हर ले गया है । मामा प्रहस्त की कुंभीनसी नाम की कन्या को मधु दैत्य रात को आकर चुरा ले गया ।। ३ ।। यह अपमान की बात सुनकर राजा रावण ने विषाद से कहा—— भला लंकापुरी में मेघनाद किसलिए है ? मेघनाद अपने बाणों से सुमेरु को ढहा सकता है । उसके रहते मधु दैत्य ने इतना अपमान किया ? ।।४।। तिस पर सहोदर भाई विभीषण तुम भी हो, लंका में इतने सारे वीर हैं । क्या किसी की शक्ति नहीं थी कि उस दैत्य के साथ युद्ध करते ? तुम सबको धिक्कार है, तुम्हारे जीवित रहने से क्या फल है ? ।।५।। वीर कुम्भकर्ण अगर लंकापुरी में जागता रहे तो संसार का कोई शत्रु उसके सामने नहीं आ सकता । मैं तीनों लोकों का दिग्विजय कर आया हूँ । दैत्यों की तो बात ही क्या, देवगण भी भाग गये हैं ।। ६ ।। मैं अकेले त्रिभुवन जीत आया हूँ । तुम सब घर के अन्दर बहिन को रख नहीं सकते ? कुम्भकर्ण और मैं क्या केवल ये ही दो रह गये हैं ? मेघनाद आदि की शक्ति तो व्यर्थ है ।। ७ ।। लज्जित होकर विभीषण ने कहा—— इसमें

लज्जापेये रावणेरे बले बिभीषण । कारो दोष नाहि, दोष देह अकारण
मेघनाद यज्ञ करे हइया तपस्वी । फल-मूल खाइ आमि, थाकि उपवासी ८
कुम्भकर्ण निद्रा याय हैया अचेतन । सन्धान पाइया हाना दिल दैत्यगण
रावण बले, यज्ञ केन करे मेघनाद । यज्ञ लागि लङ्कापुरे एतेक प्रमाद ९
मेघनाद-यज्ञ कथा शुनिया रावण । बिभीषण-सह तथा करिल गमन
बिचित्र यज्ञेर स्थान बटबृक्ष तला । यज्ञ करे मेघनाद नामे निकुम्भिला १०
अनाहारे यज्ञशाले रात्रिदिन थाके । द्वादश बत्सर नारी मुख नाहि देखे
स्वर्ण नामे आछिल प्रधान पुरोहित । ताहारे लइया याग करये त्वरित ११
न्यास करि पुरोहित अग्निकुण्ड पूजे । अग्नि आसि अधिष्ठान हन मन्त्र तेजे
अधिष्ठित ह'ये अग्नि रहिला सम्मुखे । मेघनाद पूजा देय दशानन देखे १२
यज्ञेर आहुति खेये अग्निर सन्तोष । मेघनादे बर देन पेये परितोष
अग्नि बले मेघनाद बर दिनु तोरे । यज्ञ करि यथा-तथा याय युझिबारे १३
पराजय नाए हइबे दिनु आमि बर । अन्तरीक्षे युझिबे रिपु-अगोचर
यज्ञे आसि बर दिब तक विद्यमाने । एतेक बलिया अग्नि गेल निजस्थाने १४
चमत्कार लागिल ये देखिया रावणे । रावण कहिल पुत्र, चल मोर सने
त्रिभुवन जिनिलाम आमि एकेश्वर । तोमारे लइया आजि जिनि पुरन्दर १५

किसी का दोष नहीं, तुम बिना कारण दोष दे रहे हो। मेघनाद तो तपस्वी बनकर यज्ञ कर रहा है। मैं फल-मूल खाकर उपवासी रहता हूँ ॥ ८ ॥ कुम्भकर्ण अचेत-सा निद्रित है। इन बातों का पता लगाकर दैत्यों ने लंका पर आक्रमण किया। रावण बोला— मेघनाद यज्ञ किसलिए कर रहा है? उसके यज्ञ करने के कारण ही लंकापुरी में इतना अंधेर मचा है ॥ ९ ॥ मेघनाद के यज्ञ करने की बात सुन रावण विभीषण के साथ वहाँ गया। वट-वृक्ष के नीचे यज्ञ का विचित्र स्थान बना हुआ था। निकुंभिला नामक स्थान में मेघनाद यज्ञ कर रहा था ॥ १० ॥ वह बिना खाये दिन-रात वहाँ रह रहा था, बारह वर्ष तक उसने नारी का मुँह नहीं देखा था। स्वर्ण नाम का उसका मुख्य पुरोहित था, उसे लेकर वह शीघ्रता से यज्ञ कर रहा था ॥ ११ ॥ वह पुरोहित न्यास करते हुए अग्निकुण्ड की पूजा करता, उनके मन्त्र-बल से अग्निदेव आकर वहाँ अधिष्ठित थे। अग्निदेव अधिष्ठित हो उसके सम्मुख स्थित थे। रावण ने देखा, मेघनाद उनको पूजा चढ़ा रहा है ॥ १२ ॥ यज्ञ की आहुति खाकर अग्निदेव संतुष्ट हुए तथा परितुष्ट हो मेघनाद को वर दिया। अग्नि देव बोले— मेघनाद, तुम्हें मैं वर दे रहा हूँ, तुम यज्ञ करने के पश्चात् जहाँ चाहो युद्ध करने जा सकते हो ॥ १३ ॥ मैं वर देता हूँ, तुम्हारी पराजय नहीं होगी। तुम शत्रुओं से ओझल रहकर अंतरिक्ष से लड़ाई कर सकोगे! यज्ञ में तुम्हारे सम्मुख आकर मैं वर दिया करूँगा। यों कहकर अग्निदेव अपने स्थान को चले गये ॥ १४ ॥ वह देखकर रावण को बड़ा विस्मय हुआ। रावण बोला, पुत्र, मेरे साथ चलो, मैंने अकेले ही त्रिभुवन जीत लिया है। अब तुम्हारे संग मैं आज इन्द्र को जीतूँगा ॥ १५ ॥

त्रिभुवन उपरेते इन्द्र हन राजा । इन्द्रेरे जिनिले सबे करे मोर पूजा
साक्षाते देखिब तब यज्ञेर सुफल । इन्द्रसने किरूपेते युझ कत बल १६
आपन कटक लये चलह सत्वर । शीघ्र गति उठ गिया रथेर ऊपर
चौद्दवर्ष अनाहारे आछे मेघनाद । मधुपान करिया घुचिल अबसाद १७
नय हाजार स्त्री तार परमा सुन्दरी । देव-दानवेर कन्या रूपे विद्याधरी
अन्तःपुरे नाहि याय से चौद्द बत्सर । प्रकाश ना करे लाछे राजार गोचर १८
नारी सम्भाषणे पुत्र नाहि गेल लाजे । यज्ञस्थल हैते बीर युझिबारे साजे
शतकोटि हस्ती नड़े लक्ष कोटि घोड़ा । तेर अक्षौहिणी साजे जाठि ओ झकड़ा १९
सारथि जानिल आजि संग्रामे गमन । संग्रामेर रथखान करिल साजन
साजाये आनिल रथ अति मनोहर । संग्रामेर अस्त्र तुले रथेर उपर २०
बीर दापे मेघनाद रथे गिया चड़े । हस्ती अश्व ठाट सैन्य सङ्गे सब नड़े
निज ठाटे मेघनाद करिछे साजनि । बाद्य भाण्ड सङ्गे निल तिन अक्षौहिणी २१
राजार छत्रिश कोटि मुख्य सेनापति । साजिया रावण-सङ्गे चले शीघ्रगति
महोदर महापाश खर ओ दूषण । ताल भङ्ग सिहबर घोर-दरशन २२
महाबाहु शुकबाहु यज्ञधूम आर । माकामुख मेघमाली बिक्रमे अपार
शार्द्दुल सारण शुक चले विद्युन्माली । शोणिताक्ष बिड़ालाक्ष बले महाबली २३

इन्द्र त्रिभुवन में सबसे बढ़कर राजा हैं। इंद्र को जीत लेने पर सभी मेरी पूजा करेंगे। मैं उस युद्ध में तुम्हारे यज्ञ का सुफल देखूंगा कि तुम इंद्र से किस तरह लड़ते हो, तुममें कितनी शक्ति है? ॥ १६ ॥ अपनी सेना लेकर तुम शीघ्र चलो! तुरन्त रथ पर सवार हो जाओ। मेघनाद चौदह वर्ष अनाहारी था। मधु-पान कर उसकी थकावट मिट गयी ॥१७॥ उसकी परम-सुन्दरी नौ हज़ार स्त्रियाँ थीं। जो देव-दानवों की कन्याएँ थीं, रूप में वे विद्याधरियों-सी थीं। वह चौदह वर्ष अन्तःपुर में नहीं गया, यह बात उसने लज्जा के कारण राजा रावण से प्रकट नहीं किया ॥ १८ ॥ लाज के मारे पुत्र मेघनाद अपनी नारियों से संभाषण हेतु नहीं गया! वह वीर यज्ञ-स्थली से ही युद्ध करने हेतु सजकर चला! उसके साथ सौ करोड़ हाथी, लाख करोड़ घोड़े चले! शूल-बरछे लेकर तेरह अक्षौहिणी सेना चली ॥ १९ ॥ सारथी ने समझा, आज मेघनाद संग्राम करने चला है। उसने संग्राम का रथ सजाया। अति मनोहर रथ सजाकर सारथी ले आया। उसने संग्राम के अस्त्रों को रथ पर चढ़ाया ॥ २० ॥ वीर-दर्प से मेघनाद रथ पर सवार हुआ। हाथी-घोड़े-पैदल समेत सारी सेना चल पड़ी। अपनी सेना को मेघनाद ने सजाया। अपने संग उसने तीन अक्षौहिणी बाद्य-भाण्ड-नगाड़े आदि ले लिये ॥ २१ ॥ राजा रावण के छत्तीस करोड़ मुख्य सेनापति थे। वे सजकर रावण के साथ तेज़ी से चले। महोदर, महापार्श्व, खर, दूषण, तालभंग, सिहबर आदि देखने में भयंकर थे ॥ २२ ॥ महाबाहु, शुकबाहु, यज्ञधूम, माकामुख और मेघमाली अपार विक्रमी थे। शार्दूल, शुक, सारण, विद्युन्माली भी चले, शोणिताक्ष, बिड़ालाक्ष आदि बल में महाबली थे ॥ २३ ॥ विक्रम-केशरी

चले से निशठ शठ विक्रम-केशरी । रावणेर सैन्य यत कहिते ना पारि
रथे अश्वे गजेते कुमार भागे नड़े । शिक्षामत ये याहार बाहनेते चड़े २४
चले अक्षकुमारादि बीर देवान्तक । त्रिशिरा ओ अतिकाय चले नरान्तक
नाना अस्त्रे साजि चले कुमार त्रिशिरा । रथेर साजनि कत माणिक्यादि हीरा २५
कुम्भकर्ण पुत्र कुम्भ निकुम्भ दुजन । याहादेर भयेते कम्पित त्रिभुवन
कनक-रचित रथ प्रभाकर-ज्योति । चड़े ताहे प्रधान यतेक सेनापति २६
तिन कोटि साजिया चलिल तेजी घोड़ा । शत अक्षौहिनी ठाट जाठि ओ झकड़ा
मुद्गर मुषल टाङ्गि खाण्डा खरशान । बाछिया बाछिया तोले खरतर बाण २७
मकराक्ष चलिल दुर्ज्जय धनुर्द्धर । तार सम बीर नाहि लङ्कार भितर
कुम्भकर्ण निद्रा भङ्ग तैल सेइ दिने । इन्द्रे जिनिबारे चले रावणेर सने २८
एक दिन जागे छय मासेर अन्तर । निद्राभङ्ग हये उठे क्षुधाय कातर
छय मास क्षुधाते ना खाय अन्न जल । निद्रा भाङ्गि उठे बीर क्षुधाय बिकल २९
पान करे सात शत मदेर कलसी । पर्ब्बत-प्रमाण मांस खाय राशि राशि
अर्द्ध लङ्कार भोग करिल भक्षण । साजिल से कुम्भकर्ण करि बारे रण ३०
भूमि कम्प हय येन देखि भय करे । टलमल करे लङ्का कटकेर भरे
रावणेरे रथ ल'ये योगाय सारथि । राजहंस बहे रथ पवनेर गति ३१

शठ और निशठ भी चले । रावण की सेना कितनी थी, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता । रथों, घोड़ों और हाथियों पर सवार कुमारगण तेज़ी से चल रहे थे । अपनी शिक्षा के अनुसार वे अपने-अपने वाहनों पर चढ़े थे ।। २४ ।। अक्षकुमार, वीर देवान्तक, त्रिशिरा, अतिकाय, नरान्तक आदि चले । कुमार त्रिशिरा अनेक अस्त्रों से सजकर चला । उसका रथ अनेक मणि-माणिक-हीरों से सजाया गया था ।। २५ ।। कुंभकर्ण के दो पुत्र कुम्भ और निकुंभ, जिनके भय से त्रिभुवन काँपता था, वे भी चले । सूर्य के समान ज्योतिर्मय स्वर्ण-रचित रथ पर सभी प्रमुख सेनापति चढ़कर चले ।।२६।। तीन करोड़ तेज़ घोड़े सजाकर चले, भाले और बरछे लिये सौ अक्षौहिणी सेना चल पड़ी । मुद्गर, मूसल, कुठार, खड्ग, तलवार तथा चुन-चुनकर नुकीले बाण उन सबने उन पर चढ़ा लिया ।। २७ ।। दुर्जेय धनुर्धर मकराक्ष, जिसके बराबर कोई वीर लंका में न था, चल पड़ा । उसी दिन कुंभकर्ण नींद से जगा था । वह भी इन्द्र पर विजय पाने हेतु रावण के संग चल पड़ा ।। २८ ।। वह छः महीने में एक दिन जगता था । नींद से जगते ही वह भूख से कातर हो उठता था । छः महीने भूखा रहकर वह अन्न-जल कुछ नहीं खाता था ! निद्रा-भंग होते ही वह वीर क्षुधा से व्याकुल हो उठता था ।।२९।। वह मदिरा से भरे सात सौ घड़े पी डालता था । पर्वतों जैसी मांस की ढेरियाँ खा जाता था । समूची लंका के आधे भोग्य-सामग्रियों को उसने खा डाला । इसके पश्चात् कुम्भकर्ण युद्ध करने को सज्जित होकर चला ।। ३० ।। उस सेना को देखकर भय के मारे लगता था मानो भूकम्प हो रहा हो । सेना के भार से लंका हिल उठी ! सारथी ने रावण के रथ को लाकर खड़ा किया । उस पवन

हस्ती अश्व नड़े ठाट कटक-अपार। सप्तद्वीपा पृथिवीते लागे चमत्कार
इन्द्रे जिनिबारे करे एतेक साजनि। निज ठाट रावणेर शत अक्षौहिणी ३२
इन्द्रे जिनिबारे सबे करिल गमन। चारिदिके नाना शब्दे बाजिछे बाजन
शत लक्ष काँसि, तिन लक्ष करताल। सहस्रेक घण्टा बाजे शुनिते रसाल ३३
भेरी ओ झाँझरी बाजे तिन कोटि काड़ा। आगे चले लक्ष लक्ष दामामा दगड़ा
खञ्जनी खमक बाजे लक्ष लक्ष बीणा। असंख्य राक्षसी ढाक ना हय गणना ३४
ढेमचा-खेमचा बाजे, झम्प कोटि कोटि। सात लक्ष दगड़ेते घन पड़े काठि
बिरानब्बइ लक्ष बीणा, तिन कोटि शङ्ख। दोहारी मोहारी शाणी गणिते असंख्य ३५
पाखोज सेतारा ढोल तिन लक्ष काँसि। खञ्जनीते मिलाइते दुइ लक्ष बाँशी
गभीर शब्देते बाजे असंख्य मादोल। प्रलय कालेते येन हय गण्डगोल ३६
रावणेर साजने देबेर चमत्कार। महाशब्दे रथेते सागर हैल पार

मधु दैत्येर सहित रावणेर मिलन

मनेते भाबिया तबे बले लङ्केश्वर। आगे मधु दैत्य जिनि, पिछे पुरन्दर १
सागर हइया पार चले सैन्य त्वरा। चक्षुर निमिषे येन नगर मथुरा

जैसे गतिमान रथ को राज-हंस ढोया करते थे ॥ ३१ ॥ हाथी, घोड़े आदि समेत अपार सेना चल पड़ी। सप्त-द्वीपा पृथ्वी पर वह विस्मयकारी लगती थी। इन्द्र को जीतने के लिए ऐसी सज्जा रावण ने की। रावण की अपनी सेना सौ अक्षौहिणी थी ॥ ३२ ॥ सब इन्द्र को जीतने हेतु चल पड़े। चारों ओर अनेक प्रकार के शब्द करते हुए बाजे बज रहे थे। सौ लाख घंटियाँ, तीन लाख करताल, हजारों घण्टे बज रहे थे, जो सुनने में बड़े मधुर थे ॥ ३३ ॥ तीन करोड़ भेरी, झाँझरी और काढ़ा (कटाह) बज रहे थे, उनके आगे-आगे लाखों दमामे-दगड़े (विशाल नगाड़े) बजते चल रहे थे। खंजड़ी, खमक (खंजड़ी-जैसा बाजा) बज रहे थे। लाखों वीणाएँ बजती थीं, राक्षसी-ढोल तो अनगिनत थे जिनकी गणना नहीं हो सकती थी ॥ ३४ ॥ ढेमचा-खेमचा (डुग्गी जैसे बाजे) करोड़ों झम्प (झाँझ) बज रहे थे। सात लाख नगाड़ों पर लगातार डंडे पड़ रहे थे। बानबे लाख वीणा, तीन करोड़ शंख, तथा दोहारी, मोहारी और शाणी नाम के बाजे अनगिनत थे ॥३५॥ पखावज, सितार, ढोल, तीन लाख काँसे के घंटे और खँजड़ियों के लय में मिलकर दो लाख बंशियाँ बज रही थीं। गंभीर नाद से असंख्य मृदंग बज रहे थे, प्रलयकाल-जैसा कोलाहल गूंजने लगा ॥ ३६ ॥ रावण की सेना की सजावट देखकर देवगण विस्मित हो उठे। रावण की सेना घोर नाद करती हुई सागर पार हुई।

मधु दैत्य के साथ रावण का मिलन

तब मन में सोचकर लंकेश्वर बोला, पहले मधु दैत्य को जीत लूं, इसके पश्चात् पुरन्दर को जीतूंगा ॥ १ ॥ सागर पार कर उसकी

घेरिल मथुरापुरी राक्षस सकल । सुखे निद्रा याय मधु दैत्य महाबल २
निद्राय कातर दैत्य खाटेर उपरि । कुम्भनसी बाहिर हइल एकेश्वरी
रावण बले, कह भगिन, दैत्य गेल कोथा । आजि देखा पाइले काटिब तार माथा ३
आमि यदि थाकिताम लङ्कार भितर । सेइ दिन पाठाताम तारे यमघर
रावणेर कथा शुनि कुम्भनसी भाषे । पलाइया गेल दैत्य तोमार तरासे ४
तोमार बाणेते भाइ कारो नाहि रक्षा । राँड़ी कैले सहोदरा भग्नी सूर्पणखा
तार स्वामी मारिले, हइया महाराज । मोरे राँड़ी करि भाइ, साधिबे कि काज ५
धर्म्मपथे रहियाछे पति-से आमार । सम्मुखे दाण्डाये एइ भागिना तोमार
आपनार कथा भाइ बलिह आपनि । चौद्द हाजार स्त्री तव बिभा कय राणी ६
तुमि बले हरि आनि परेर सुन्दरी । सबे मात्र बिभा तव राणी मन्दोदरी
हइले तोमार कोप कम्पे देवगण । अनन्त बासुकि भागे दैत्य कोन जन ७
कोप छाड़ मोरे चाहि देह स्वामी दान । लवण-नामेते पुत्र देख विद्यमान
कुड़िपाटि दन्त मेलि दशानन हासे । केतकी कुसुम येन फुटे भाद्रमासे ८
दशानन बले आमि नामारिब प्राणे । इन्द्रे जिनिबारे याब, याक मोर सने
कुम्भनसी चलिल रावण आज्ञा पेये । शुयेछिल मधु दैत्य, तथा गेल धेये ९

सेना तेज़ी से चली। पलक मारते ही मानो वह मथुरा में पहुँच गयी। सारे राक्षसों ने मथुरापुरी को घेर लिया। वहाँ महाबली मधु दैत्य सुखपूर्वक निद्रा में था ॥ २ ॥ निद्रा से बेसुध वह दैत्य चारपाई पर पड़ा था। कुम्भीनसी अकेले बाहर निकली। रावण ने कहा— बहिन बताओ, वह दैत्य कहाँ गया ? आज उससे भेंट होने पर सिर काट लूँगा ॥ ३ ॥ अगर मैं लंका में रहता तो उसी दिन उसे यमलोक भेज देता। रावण की बात सुनकर कुम्भीनसी बोली— वह दैत्य तुमसे भयभीत होकर भाग गया है ॥ ४ ॥ भाई, तुम्हारे बाण से कोई बच नहीं सकता। तुमने अपनी बहिन शूर्पणखा को भी विधवा कर डाला। महाराज होकर उसके पति को मार डाला। अब मुझे विधवा बनाकर भाई, तुम कौन सा कार्य सिद्ध करोगे ? ॥ ५ ॥ मेरा वह पति धर्म-मार्ग में है। तुम्हारे सम्मुख यह तुम्हारी भगिनी खड़ी है। भाई, आप अपनी बात स्वयं बताओ, तुम्हारी चौदह हज़ार स्त्रियाँ हैं, उनमें कितनी रानियों को तुम विवाह कर लाये हो ? ॥ ६ ॥ दूसरों की सुन्दरियों को बलपूर्वक तुम हर लाये हो। केवल रानी मन्दोदरी तुम्हारी विवाहिता है। तुम्हारा कोप होने पर देवगण काँपते हैं। अनन्त वासुकी भागते हैं, फिर उस दैत्य की तो बात ही क्या है ? ॥ ७ ॥ मेरी ओर देखते हुए क्रोध छोड़ दो और मुझे स्वामी का दान करो। देखो यह लवण नाम का पुत्र तुम्हारे सामने है। तब रावण दाँतों की बीसों पंक्तियाँ निकाल कर हँसने लगा। लगता था, मानो भादों महीने में केतकी के फूल खिले हुए हैं ॥ ८ ॥ दशानन बोला— मैं उसे जान से नहीं मारूँगा; मैं इन्द्र को जीतने जा रहा हूँ, वह मेरे संग चले। रावण की आज्ञा पाकर कुंभीनसी चल पड़ी। जहाँ मधु दैत्य सोया हुआ था वहाँ दौड़ गयी ॥ ९ ॥ बाल

কুম্ভনসী ধেয়ে যায় আলুলিত চুলে। নিদ্রা ভাঙ্গি উঠে মধু দৈত্য হেন কালে
ঘূর্ণিত লোচন দৈত্য শয্যা' পরি বসে। কুম্ভনসী ত্রাস দেখি তাহারে জিজ্ঞাসে ১০
আচম্বিতে মথুরায় কেন গণ্ডগোল। গড়ের বাহিরে কেন কটকের রোল
কুম্ভনসী বলে, তুমি নাজান কারণ। তোমারে বধিতে এল লঙ্কার রাবণ ১১
লঙ্কা হতে তুমি বলে আনিলে আমারে। সেই কোপে আসিল তোমারে কাটিবারে
দৈত্য বলে, আন শীঘ্র শঙ্করের শূল। সবংশে রাবণ আজি করিব নির্ম্মূল ১২
শুনিয়া দৈত্যের কথা কুম্ভনসী কয়। রাবণের সনে বাদ মরণ নিশ্চয়
থাকুক তোমার কার্য্য, না পারে বিধাতা। রাবণের সঙ্গে বাদ, অন্যের কি কথা ১৩
রাবণের দোষ নাহি, তুমি সর্ব্ব দোষী। আমারে আনিলে হরি ত্রিপ্রহর নিশি
অবিচার কর্ম্ম কেন করিলে আপনে। আপনি করহ কোপ কিসের কারণে ১৪
রাবণের কাছে আমি গিয়াছিনু আগে। তুষ্ট করি আসিয়াছি মিষ্ট অনুযোগে
তুষ্ট হ'য়ে কহিল আমার বিদ্যমানে। দৈত্য আসি সম্ভাষ করুক মোর সনে ১৫
প্রধান কুটুম্ব তব হয় মম ভ্রাতা। আদরে বাটীতে আন কহি মিষ্ট কথা
পূর্ব্ব কোপে যদি কিছু কহে মোর ভাই। সহ্য সমাবেশ কর তাহে ক্ষতি নাই ১৬
কুম্ভনসী কথা শুনি মধু দৈত্য হাসে। যোড়হাত করি গেল রাবণের পাশে
রাবণ বলে, করেছিলে বড়ই প্রমাদ। আমার ভগিনী আন, এত বড় সাধ ১৭

बिखेरे कुम्भीनसी दौड़ चली, उसी समय मधु दैत्य निद्रा से जाग उठा। गोल-गोल आँखों वाला वह दैत्य शय्या पर उठ बैठा। कुंभीनसी को संत्रस्त देख, उसने उससे पूछा ॥१०॥ मथुरा में अकस्मात् यह हलचल किसलिए मची है ? क़िले के बाहर सेना का शोर क्यों हो रहा है ? कुम्भीनसी बोली, तुम कारण नहीं जानते। लंका का रावण तुम्हें मारने के लिए आया है ॥ ११ ॥ लंका से तुमने बलपूर्वक हमारा अपहरण किया है, उसी क्रोध से (रावण) तुमको काटने के लिए आया है। दैत्य बोला, शीघ्र शंकर का शूल ले आओ। मैं रावण को आज सवंश निर्मूल कर डालूंगा ॥ १२ ॥ दैत्य की बात सुनकर कुम्भीनसी बोली, रावण के संग विवाद करने पर मृत्यु निश्चित है। तुम्हारे कार्य तो रहने दो। रावण से विवाद कर विधाता भी पार नहीं पाता, फिर दूसरे की तो बात ही क्या है ! ॥ १३ ॥ रावण का तो कोई दोष नहीं, तुम्हीं सभी दोषों से अपराधी हो। तुम मुझे रात के तीसरे पहर हर लाये हो। तुमने स्वयं ऐसा अन्याय कर्म क्यों किया ? फिर आप ही क्रोध क्यों कर रहे हो ? ॥ १४ ॥ मैं रावण के पास पहले गयी थी; मधुर वचनों से विनती कर उसे संतुष्ट कर आयी हूँ। तुष्ट होकर रावण ने मुझसे कहा— दैत्य स्वयं आकर मुझसे बात करे ॥ १५ ॥ मेरा भाई तुम्हारा मुख्य कुटुंबी है। मधुर वचन कहकर उसे आदरपूर्वक घर ले आओ। यदि पहले के कोप के कारण मेरा भाई कुछ कहे भी, तो उत्तेजित न होकर उसे सहन कर लो, उससे कोई क्षति नहीं है ॥ १६ ॥ कुम्भीनसी की बात सुनकर मधु दैत्य हँसने लगा। वह हाथ जोड़कर रावण के पास गया। रावण बोला— तुमने बड़ी ग़लती कर डाली, मेरी

स्वर्ग मर्त्य पाताले आमारे करे डर । यम नाहि याय भये लङ्कार भितर
कत बल धर तुमि, कत आछे सेना । कोन् साहसेते तेह लङ्कापुरे हाना १८
तारे बान्धि लइताम सागरेर पार । भस्मराशि करिताम मथुरा तोमार
भग्नी आसि बिस्तर कांदिल पाये धरे । भग्नीरे कातर देखि क्षमिलाम तोरे १९
मधु दैत्य रावणेर बन्दिल चरण । योड़हात करि बले, शुनह रावण
तोमार संग्रामे हरि-हर करे भय । आमारे करह कोप, उपयुक्त नय २०
हीन वीर्य्य दैत्य आमि, तुमि महाबल । क्षमा कर अपराध-आमार सकल
परम पण्डित तुमि लङ्कार ईश्वर । आमार मथुरा तव भोगेर भितर २१
मार्ज्जना करह दोष अबोध जनार । पद-धूलि देह आसि आलये आमार
हासि हासि रथ हैते नामिया रावण । मधु दैत्य आलयेते करिल गमन २२
आगे आगे मधु दैत्य पश्चाते रावण । अन्तःपुरे प्रबेश करिल दुइ जन
सिंहासने बसाइल राजा दशानने । यथायोग्य स्थाने बसे अन्य यत जने २३
दैत्येर आदरे तुष्ट लङ्कार ईश्वर । दशानन बले, तव चरित्र सुन्दर
मधु दैत्य बले, आजि थाक एइ खाने । कालि गिया युद्ध कर पुरन्दर सने २४
राजा बले, कालि कुम्भकर्णेर शयन । कुम्भकर्ण निद्रागेले युझे कोन जन
नाना भोगे रावनेर भुञ्चाय दानब । तथा हैते चले राजा पाइया गौरव २५

बहिन को तुम हर ले आये, तुम्हारी इतनी बड़ी दुरभिलाषा रही ! ॥१७॥ स्वर्ग-मर्त्य-पाताल तक के निवासी मुझसे डरते रहते हैं । यम भी डर के मारे लंका के भीतर नहीं जाता । तुम कितने वलशाली हो ? तुम्हारी सेना कितनी है ? किस साहस से तुमने लंकापुरी पर आक्रमण किया ! ॥ १८ ॥ मैं तो तुम्हें बाँधकर सागर के पार ले जाता, और तुम्हारी मथुरापुरी को भस्म की ढेरी वना डालता । परन्तु बहिन आकर पैर पकड़ बहुत रोयी, बहिन को विकल देखकर ही तुम्हें क्षमा कर दी ॥ १९ ॥ तब मधु दैत्य ने रावण के चरणों की वंदना की । हाथ जोड़कर वह बोला— रावण, सुनो । तुमसे संग्राम में हरि-हर भी डरते हैं । मुझ पर क्रोध करना तुम्हारे लिए उचित नहीं है ॥२०॥ मैं हीन वीर्य दैत्य हूँ, तुम महाबली हो । मेरे सभी अपराध क्षमा कर दो । तुम लंका के अधीश्वर, परम पण्डित हो, हमारी इस मथुरापुरी को अपने भोग के भीतर मान लो (तुम इसका भोग कर सकते हो) ॥ २१ ॥ अवोध जनों के दोष तुम क्षमा कर दो । मेरे भवन में चलकर अपनी पद-धूलि प्रदान करो । तब रावण हँसते-हँसते रथ से उतरा और मधु दैत्य के भवन में गया ॥ २२ ॥ आगे-आगे मधु दैत्य उसके पीछे रावण चला । दोनों ने अन्तःपुर में प्रवेश किया । उसने राजा रावण को सिंहासन पर बिठाया । दूसरे सभी जन यथायोग्य स्थानों पर बैठ गये ॥ २३ ॥ दैत्य के आदर से लंकेश्वर रावण संतुष्ट हुआ । दशानन बोला— तुम्हारा चरित्र सुन्दर है । मधु दैत्य बोला— आज तुम यहाँ रहो, कल यहाँ से चलकर इन्द्र से युद्ध करना ॥ २४ ॥ राजा रावण बोला— कल कुंभकर्ण के सो जाने का दिन है । कुंभकर्ण के सो जाने पर लड़ाई कौन करेगा ? दानव मधु ने अनेक प्रकार की भोग्य-

रावण बलिछे, दैत्य, शुन मोर बाणी। आरम्भ करिब युद्ध थाकिते रजनी
कत अस्त्र आछे तब जाठि ओ झकड़ा। कत सेना आछे तब हाती आर घोड़ा २६
आपन कटक लये चलह सत्वर। लुटिब अमरावती रात्रिर भितर
रात्रिर भितर स्वर्गे करिब संग्राम। आसिबार काले हेथा करिब विश्राम २७
मधु दैत्येर हाती घोड़ा कटक बिस्तर। साजिया रावण सङ्गे चलिल बिस्तर

रावणेर अमरावती आक्रमण

अन्तरीक्षे ठाट सब उठे मुड़े-मुड़े। रात्रि दुइ प्रहरे अमरावती बेड़े १
बिषम अमरावती नापारे लङ्घिते। रहिल असंख्य ठाट बेढ़ि चारि भिते
त्रिभुवन जिनि स्थान अमर नगरी। प्रबाल माणिक्य मणि शोभे सारि सारि २
सुबर्ण निर्म्मित पुरी बिचित्र गठनं। पड़ भेते प्राचीर तिन शतेक योजन
शतेक योजन पुरी आड़े परिसर। दीर्घे ओर ताहि तार, बायु-अगोचर ३
एकेक योजन एक दुयार गठन। बहु अक्षौहिणी ठाट द्वारेर रक्षण
सोनार कपार खिल पर्व्वतेर चूड़ा। सोनार हुड़का ताहे नबरत्न बड़ा ४

सामग्रियाँ रावण को उपभोग के लिए प्रदान कीं। राजा रावण वहाँ से गौरव प्राप्त कर आगे चला ॥ २५ ॥ रावण बोला— दैत्य, मेरे वचन सुनो ! रात रहते ही हम युद्ध आरंभ करेंगे। तुम्हारे पास भाले और बरछे कितने हैं ? सेना, हाथी और घोड़े कितने हैं ? ॥ २६ ॥ अपनी सेना लेकर तुरन्त चलो, रात रहते ही हम अमरावती को लूट लेंगे। रात के भीतर ही स्वर्ग में जाकर संग्राम करेंगे ! वहाँ से लौटने के समय यहाँ आकर विश्राम करेंगे ॥ २७ ॥ मधु दैत्य की अनेक हाथियों और घोड़ों की बड़ी सेना थी। अपनी उस सेना को व्यापक रूप से सजाकर मधु दैत्य रावण के संग चला।

रावण का अमरावती पर आक्रमण

रावण की सारी सेना चक्कर लगाती हुई अन्तरिक्ष पर चढ़ गयी और रात के दो पहर में जाकर अमरावती को घेर लिया ॥ १ ॥ अमरावती पुरी बड़ी दुर्गम थी, उसकी दीवारों को पार न कर पाने के कारण अनगिनत सेना ने चारों ओर से घेर लिया। अमरों की वह पुरी त्रिभुवन में सर्वश्रेष्ठ स्थान थी। उसमें पंक्तियों में प्रवाल, मणि-माणिक्य सुशोभित हो रहे थे ॥ २ ॥ स्वर्ण-निर्मित वह पुरी विचित्र रूप से बनी हुई थी। ऊँचाई में दीवारें तीन सौ योजन फैली हुई थीं। उस पुरी का विस्तार चौड़ाई में लगभग सौ योजन था। लम्बाई में तो उसका छोर नहीं था। वायु भी उसे देख नहीं पाता ! ॥ ३ ॥ एक-एक द्वार एक-एक योजन का बना हुआ था। द्वारों की रक्षा अनेक अक्षौहिणी सेना कर रही थी। उन द्वारों में सोने के कपाट लगे थे, पर्वत-शिखर उसकी कीलें थीं, सोने

शत अक्षौहिणी ठाट इन्द्रेर गणना । चारि अंशे करि सेना चलि द्वारे थाना
ऐरावत उच्चैःश्रवा थाके चारि द्वारे । नाहिक काहार शक्ति पथ लङ्घिबारे ५
शतबृन्द भितरे आछये अन्तःपुरी । शची देवकन्या ताहे परमा सुन्दरी
परमा सुन्दरी शची तिनि मुख्या राणी । त्रिभुवन जिनि रूप देवता मोहिनी ६
पद्म कोटि घर आछे पुरीर भितर । नाना रत्न परिपूर्ण परम-सुन्दर
रत्नेते निर्म्मित मर, घयार चौतारा । कत देवकन्या ताहे रूपे मनोहरा ७
स्थाने स्थाने शोभित विचित्र नाट्यशाला । देवकन्या ल'ये इन्द्र करे ताहे खेला
नाहि शोक-दुःख नाहि अकाल-मरण । त्रिभुवन जिनि स्थान भुवन मोहन ८
सदानन्दमय से अमरावती नाम । यत देव आसि तथा करये विश्राम
नाना रङ्गे नृत्य तथा करे पक्षिगण । कुसुम सुगन्धे सबे आनन्दे मगन ९
प्रमाद पड़िल, ताहा इन्द्र नाहि जाने । अमरनगरी आसि बेढ़िल रावणे
रावण बेढ़िल स्वर्ग शुनि पुरन्दर । देवगणे ल'ये गेल विष्णुर गोचर १०
विष्णुर निकटे इन्द्र करेन स्तवन । रावणे मारिया रक्षा कर देवगण
देखिया इन्द्रेर त्रास हासे नारायण । देवगणे आश्वासिया बलेन वचन ११
नारायण बलेन, शुनह पुरन्दर । ए शरीरे आमि ना मारिब लङ्केश्वर
तोमारे कहि ये इन्द्र, शुनह कारण । आमा-बिना कारो हाते ना मरे रावण १२

के अड़कन (ब्योंड़े) थे जिनमें नवरत्न मंडित थे ।। ४ ।। इन्द्र की गणना के अनुसार सौ अक्षौहिणी सेना थी जिसे चार-अंशों में बाँटकर चारों द्वारों पर थाने या अड्डे बनाये गये थे । चारों द्वारों पर ऐरावत और उच्चैःश्रवा स्थित रहते थे । उन मार्गों को पार कर जाने की शक्ति किसी की नहीं थी ।। ५ ।। ऐसे सैकड़ों समूहों के अन्दर अन्तःपुर था जिनमें देव-कन्या परम सुन्दरी शची रहती थी । शची परमा सुन्दरी थी, वह पटरानी थी । उसका देवता-मोहिनी रूप त्रिभुवन-विजयी था ।। ६ ।। उस पुरी के भीतर पद्म-कोटि भवन थे । जो नाना रत्नों से परिपूर्ण और परम सुन्दर थे । वे भवन, द्वार और चबूतरे रत्न-निर्मित थे । मनोहर रूप वाली कितनी ही देवकन्याएँ उनमें रहती थीं ।। ७ ।। वहाँ स्थान-स्थान पर विचित्र नाट्य-शालाएं सुशोभित थीं, देवकन्याओं को लेकर इन्द्र वहाँ क्रीड़ा किया करते थे । वहाँ शोक, दुःख, अकाल-मरण नहीं था । उस भुवन-मोहन स्थान की समकक्षता त्रिभुवन में कोई नहीं कर सकता था ।। ८ ।। अमरावती नाम की वह पुरी सदा आनन्दमयी थी, सारे देवगण वहाँ आकर विश्राम किया करते थे । वहाँ उल्लास से भरे अनेक प्रकार पक्षी गण नृत्य किया करते, फूलों की सुगन्ध से सभी आनन्द में मग्न रहते ।।९।। इन्द्र को यह पता न था कि उन पर भयावह संकट आ पड़ा है । रावण ने आकर अमरों की नगरी को घेर लिया । रावण ने स्वर्ग को घेर लिया, सुनकर इंद्र देवगण को संग लेकर विष्णु वहाँ गये ।। १० ।। इन्द्र ने विष्णु के पास जाकर स्तवन किया— आप रावण को मारकर देवों की रक्षा करें । इन्द्र को सन्त्रस्त देख नारायण हँसने लगे । उन्होंने देवगण को आश्वासन देकर कहा— ।। ११ ।। नारायण बोले, इन्द्र, सुनो, मैं इस

ब्रह्मा दियाछेन वर तपे हये तुष्ट। बिना नर-बानरेते ना मरिबे दुष्ट
पृथिबी-मण्डले आमि हब अवतार। सवंशेते रावणेरे करिब संहार १३
देबतार हाते कभु ना मरे रावण। युद्ध करि खेदाड़िया देह देबगण
बिष्णुर आज्ञाय इन्द्र याय शीघ्र गति। युझिबारे साजिलेन अमरेर पति १४
त्रिभुबन उपरे इन्द्रेर अधिकार। दश दिक्‌पाल आसि हैल आगुसार
दक्षिणे कुबेर आर कैलास उत्तरे। यक्ष-रक्ष ल'ये आसे युझिबार तरे १५
एक बार रावणेर युद्धे पाय लाज। आर बार आइल कुबेर यक्षराज
यम-मृत्यु संग्रामे आइल दुइ जन। एक बार युद्धे दों'हे जिनिल रावण १६
भङ्ग दिया पलाइल रावणेर युद्धे। आरबार आइल इन्द्रेर अनुरोधे
पातालेते बासुकीरे जिनिल रावण। सेइ कोपे युझिते आइल नागगण १७
आइल तिराशी कोटि चित्रिणी शङ्खिनी। याहादेर बिषज्वाले दहये मेदिनी
एक बार रावण जिनेछे बरुणेरे। सेइ कोपे बरुण युझि बारे १८
मरुत् असुर आर एल बिद्याधर। भूत-प्रेत पिशाचादि आइल बिस्तर
चन्द्र सूर्य्य आसिल नक्षत्र आरबार। रावणेर रणेते हइल आगुसार १९
शनि-राहु-केतु-आदि यत ग्रहगण। रात्रि दिबा झड़-बृष्टि एल सर्व्व जन
समर देखिते आसिलेन महेश्वरी। चौषट्टि योगिनी ताँर सङ्गे सहचरी २०

शरीर से लंकेश्वर रावण को नहीं मारूँगा। इन्द्र, इसका कारण बताता हूँ, सुनो। मेरे सिवा अन्य किसी के हाथ से रावण मरनेवाला नहीं है ॥१२॥ रावण की तपस्या से संतुष्ट होकर ब्रह्मा ने वर दिया है, नर-वानरों के सिवा (और किसी से) वह दुष्ट नहीं मरेगा। मैं धरती-मण्डल पर अवतार धारण करूँगा और रावण का सवंश-संहार करूँगा ॥ १३ ॥ देवताओं के हाथों रावण कभी नहीं मरेगा। हे देवगण, तुम लोग युद्ध कर उसे खदेड़ दो। विष्णु के आदेश से इन्द्र शीघ्रता से वहाँ से चल पड़े। देवताओं के राजा इन्द्र लड़ने हेतु सज्जित हुए ॥ १४ ॥ इन्द्र का त्रिभुवन पर अधिकार है, दसों दिग्पाल वहाँ आकर आगे बढ़े। दक्षिण से कुबेर और उत्तर से कैलास यक्षों और रक्षों को लेकर लड़ने पहुँचे ॥ १५ ॥ एक बार रावण के संग लड़ाई में यक्षराज कुबेर (पराजित होकर) लज्जित हुआ था। उस संग्राम में यम और मृत्यु दो जन आये, क्योंकि एक बार युद्ध में रावण ने दोनों को जीत लिया था ॥ १६ ॥ रावण से युद्ध में वे हारकर भाग गये, अतः इन्द्र के अनुरोध से वह पुनः आये। रावण ने पाताल में वासुकी को जीत लिया था, इसी क्रोध के कारण नाग गण युद्ध करने पहुँचे ॥ १७ ॥ तिरासी करोड़ चित्रिणियाँ और शंखिनियाँ, जिनकी विष-ज्वाला से धरती तक जल जाती है, वहाँ आयीं। रावण एक बार वरुण को जीत चुका था। उसी क्रोध से वरुण लड़ने के लिए आया ॥ १८ ॥ मरुत्, असुर और विद्याधर आये। अनेक भूत-प्रेत-पिशाच आदि वहाँ आ पहुँचे। चन्द्रमा, सूर्य, नक्षत्र आदि फिर आ पहुँचे। सभी रावण से लड़ने हेतु आगे बढ़े ॥ १९ ॥ शनि, राहु, केतु आदि जितने ग्रह थे, दिवा-रात्रि आँधी, वर्षा आदि सब वहाँ आये। देवी

देबीर असीम मूर्त्ति षोड़शी बगला। इन्द्राणी रुद्राणी देबी ब्रह्माणी कमला
नारसिंही, बाराही धरेन नाना कला। कात्यायनी, चामुण्डा गलेते मुण्डमाला २१
रणे आइलेन देबी, बेश भयङ्कर। आछुक अन्येर कथा देबे लागे डर
रक्तबीज, आदि सेबे मारिला कटाक्षे। राबणेर तरे रहिलेन अन्तरीक्षे २२

राबण सह देबगणेर युद्ध ओ पराजय

स्वर्गलोक मर्त्यलोक आइल पाताल। चारि दिके पड़े अस्त्र अग्निर उथाल
नाना अस्त्र पड़े, नाहि याय संख्या करा। अमराबतीते येन बरिषये धारा १
राक्षस करिछे नाना अस्त्र अबतार। सुरपुरी बाणेते हइल अन्धकार
जाठा-जाठि शेल, शूल, मुषल, मुद्गर। खाण्डा खरशाण बाण अति भयङ्कर २
पड़े गदा शाबल नाहिक लेखा जोखा। चारि दिके फेले बाण यार यत शिक्षा
रथे रथे ठेकाठेकि, भाङ्गि पड़े कत। हस्ती-अश्व चापनेते हस्ती-अश्व हत ३
पड़े देब दानब गन्धर्ब्ब-बिद्याधर। लेखा जोखा नाहि बाण पड़िछे बिस्तर
देबता राक्षसे करे अस्त्र अबतार। समग्र अमराबती बाणे अन्धकार ४

महेश्वरी समर देखने हेतु आयीं। चौसठ योगिनियाँ उनके संग सहचरी थीं ॥ २० ॥ दुर्गादेवी की असीम मूर्ति, षोड़सी, बगला, इन्द्राणी, रुद्राणी, देवी ब्रह्माणी, कमला, नारसिंही, बराही, कात्यायनी, गले में मुण्डमाला पहने चामुण्डा आदि नाना कलाएँ धारण कर उपस्थित हुईं ॥ २१ ॥ दुर्गा देवी रण में आयीं, उनका वेश भयंकर था। अन्यों की तो बात ही क्या उन्हें देख देवताओं को भी डर लगता था। उनके कटाक्ष से रक्तबीज आदि सारे दैत्य मर गये थे। वे रावण (से लड़ने) के लिए अन्तरिक्ष में स्थित हो गयीं ॥ २२ ॥

रावण के साथ देवगणों का युद्ध और पराजय

वहाँ स्वर्गलोक, मर्त्यलोक, पाताल भी आ गये। चारों ओर उत्ताल अग्नि गिरने लगी। नाना प्रकार के अनगिनत अस्त्र गिरने लगे। मानो अमरावती में वर्षा की धारा बरस रही हो ॥ १ ॥ राक्षस अनेक प्रकार के अस्त्र प्रकट कर रहे थे। देवलोक उनके बाणों से अंधकार हो गया। भाले, बरछे, शेल, शूल, मूसल, मुद्गर, खड्ग, तेज़ नुकीले बाण बड़े ही भयंकर थे ॥२॥ गदा, खन्ते, कितने गिर रहे थे, कोई लेखा-जोखा न था। जिसकी जितनी शिक्षा थी वह उसी के अनुसार चारों ओर बाण चला रहा। रथ से रथ की टक्कर हो रही थी, कितने ही रथ टूट रहे थे। हाथी-घोड़ों के पैरों तले हाथी-घोड़े कुचल कर मरे जा रहे थे ॥ ३ ॥ देव-दानव-गंधर्व-विद्याधर गिर रहे थे बाण इतने अधिक गिर रहे थे जिनका लेखा-जोखा न था। देवता-राक्षस अपने-अपने अस्त्र प्रकट कर रहे थे। सारी अमरावती बाणों के (छा जाने के) कारण अँधेरी हो

दुइ सैन्य युद्धे पड़े रक्ते ह'ये राङ्गा। रक्ते नदी बहे, येन भाद्रमासे गङ्गा
हस्ती घोड़ा ठाट कत रक्तो परि भासे। हरिषे पिशाच गुला मने मने हासे ५
बिम्बके-बिम्बके रक्ते बान्धि ओठे फेना। शकुनि गृधिनी ताहे करिछे पारणा
इन्द्र बले, राबण करह युद्ध छल। जने जने युझ, देखि कार कत बल ६
शुनिया इन्द्रेर कथा हासिल राबण। मोर सने युझेछे सकल देबगण
बरुण कुबेर यम जिनेछि मान्धाता। युझिबे आमार सने के आछे देबता ७
हेन काले शनि गेल राबणेर पाशे। दशमाथा खसि पड़े देबगण हासे
राबण बिकृत देह संग्राम भितरे। देखि यत देबगण उपहास करे ८
दशमाथा खसि पड़े बल नाहि टुटे। ब्रह्मार बरेते तार दशमाथा उठे
एक बार भिन्न शनिर नाहि आर रण। उड़िल शनिर प्राण देखिया राबण ९
ब्रह्मार बरेते माथा खसिले ना मरे। पलाइया गेल शनि राबणेर डरे
शनि पलाइल देखि राक्षसेरा हासे। हेन काले गेल यम राबणेर पाशे १०
यमेरे देखिया अग्रे दशानन हासे। मरिबारे केन यम एलि मोर पाशे
यम बले, राक्षस, कि करिस अहङ्कार। करिताम तोरे आमि से दिन संहार ११
भाग्येते बाँचिलि प्राणे ब्रह्मार कारण। ब्रह्मा आजि नाहि हेथा, जीबी कतक्षण
आछये चौषट्टि रोग यमेर संहति। राबणेर अङ्गे प्रबेशिल शीघ्र गति १२

गयी ॥ ४ ॥ दोनों ओर की सेनाएँ युद्ध में रक्त से सनकर लाल हो गिर रही थी। भादों महीने की गंगा की भाँति रक्त की नदी बह रही थी। उस रक्त के ऊपर कितने ही हाथी, घोड़े, सेनाएँ तिर रहे थे। हर्ष के मारे पिशाच-गण मन ही मन हँस रहे थे ॥ ५ ॥ रक्तधारा में प्रचंड बुलबुले उठने के कारण फेन उमड़ रहा था। उसमें, गिद्ध-गिद्धिनियाँ पारण कर रहे थे। इन्द्र बोले, रावण, तुम छलना से युद्ध कर रहे हो। एक-एक के साथ एक-एक लड़ो, (तब देखा जाये) किसका कितना बल है ॥ ६ ॥ इन्द्र की बात सुनकर रावण हँस पड़ा। बोला, मेरे साथ तो सभी देवता लड़ रहे हैं। मैंने वरुण, कुबेर, यम, मान्धाता को जीता है। मेरे साथ लड़ सके ऐसा देवता कौन है ? ॥ ७ ॥ उसी समय शनि रावण के पास पहुँचा। (शनि की दृष्टि से) रावण के दसों सिर गिर पड़े, देख कर देवगण हँसने लगे। संग्राम में रावण का शरीर विकृत हो गया, देख, देवगण उपहास करने लगे ॥ ८ ॥ रावण के दसों सिर टूट गिरे पर उसका बल नहीं घटा। ब्रह्मा के वरदान के कारण उसके दसों सिर फिर निकल आये। शनि एक बार के सिवा फिर युद्ध नहीं करता। रावण को देखकर शनि के प्राण निकलने लगे ॥९॥ ब्रह्मा के वर के कारण सिर गिर जाने पर भी रावण मरता न था। रावण के डर से शनि भाग गया। शनि को भाग गया देख राक्षस हँसने लगे। तब यम रावण के पास पहुँचे ॥ १० ॥ यमराज को सामने देख दशानन हँस पड़ा। बोला— यम, तू मरने के लिए मेरे पास क्यों आया ? यम बोले, राक्षस, तू अहंकार क्या करता है ? तुझे तो मैं उसी दिन संहार कर डालता ॥ ११ ॥ तू भाग्यवश ब्रह्माजी के कारण बच गया। आज

जगतेर माया जाने राजा दशानन। ब्रह्म-अग्नि शरीरेते ज्वालिल तखन
पुड़ि मरे रोग सब परित्राहि डाके। सबे गेल यम ठाँइ पड़िया बिपाके १३
रोग पीड़ा पलाइल दशानन हासे। मोर काछे यम तुमि दर्प कर किसे
यम बले, रावण कि करिस अहङ्कार। मोर हाते हबे तोर सबंशे संहार १४
रोग पीड़ा पलाइल मने पेलि आश। आमार दण्डेते तोर सबंशे बिनाश
करिलि बिस्तर तप हइते अमर। अमर हइते ब्रह्मा नाहि दिला बर १५
अबश्य मरण हबे याबि मोर घर। चक्षु पाकाइया गर्ज्जे यमेर किङ्कर
यमराज-रावण दुजने गालागालि। दूर हैते शुने कुम्भकर्ण महाबली १६
धेये याय कुम्भकर्ण यमे गिलिबारे। कुम्भकर्ण देखि यम पलाइया डरे
पलाइया रहे यम इन्द्रेर गोचर। देखिया यमेर भङ्गे कहे पुरन्दर १७
सर्ब्बजन मरे यम तोमा-दरशने। तुमि भङ्गे दिले यम युझे कोन जने
हेन काले पवन बहिल महा झड़। उड़ाइया राक्षसे एमत्र कैल जड़ १८
रावणेर यत ठाट झड़े उड़ाइल। भयेते रावण राजा चिन्तित हइल
कुम्भकर्ण बीरे झड़े उड़ाइते नारे। कुम्भकर्ण चलिल पवने गिलिबारे १९

यहाँ ब्रह्मा नहीं है, तू कितने क्षण जीवित रहेगा ? यम के संग चौंसठ व्याधियाँ थीं, वे शीघ्र गति से रावण के अंगों में प्रवेश कर गयीं ॥ १२ ॥ राजा दशानन संसार भर की माया जानता था। उसने अपने शरीर में तभी ब्रह्म-अग्नि जला ली। सारे रोग उस अग्नि से जलकर मरने लगे; रक्षा करो—पुकारने लगे। चक्कर में पड़कर सब यम के पास लौट गये ॥ १३ ॥ रोग-पीड़ा भाग गये देख, दशानन हँसने लगा। बोला—यम, तुम मेरे सामने दर्प किसलिए करते हो ? यम ने कहा— रावण, तू अहंकार क्या करता है ? मेरे हाथ तेरा सवंश-संहार हो जायेगा ॥ १४ ॥ रोग-पीड़ा भाग गये, इससे तू मन में आशा पा गया है। मेरे दण्ड से तेरा सवंश विनाश हो जायेगा। तूने अमर बनने के लिए बड़ा तप किया था, पर ब्रह्मा ने तुझे अमर होने का वर नहीं दिया ॥ १५ ॥ तेरी मृत्यु अवश्य होगी, तुझे मेरे घर जाना ही है। यमराज के दूत भी आँखें तरेर कर गरजने लगे। यमराज और रावण दोनों एक-दूसरे को गालियाँ देने लगे। महाबली कुंभकर्ण दूर से सुन रहा था ॥ १६ ॥ कुंभकर्ण यमराज को लील जाने के लिए दौड़ पड़ा। कुम्भकर्ण को देख, यमराज डर के मारे भाग गये। यमराज भागकर इन्द्र के पास गये। यम को युद्ध में पराजित देख इन्द्र ने कहा— ॥ १७ ॥ यम, तुम्हें देखते ही सब लोग मर जाते हैं, जबकि तुम्हीं युद्ध में पराजित हो भाग आये, फिर तो लड़ेगा कौन ? उसी समय पवन ने प्रचंड आँधी चला दी और सारे राक्षसों को उड़ा एक जगह जमा कर दिया ॥ १८ ॥ रावण की सारी सेना को आँधी ने उड़ा दिया। भय से राजा रावण चिन्तित हो उठा। बीर कुम्भकर्ण को आँधी उड़ा नहीं सकती थी। कुम्भकर्ण आँधी को ही लीलने चला ॥ १९ ॥ कुम्भकर्ण को देख पवन भाग चला। पवन

कुम्भकर्णे देखिया पवन दिल रड़ । पलाइल पवन, घुचिल सब झड़
पवन पलाये गेल पेये मने डर । बरुण प्रवेश करे रणेर भितर २०
बरुणेर मायाते समल जलमय । जल देखि रावणेर लागे बड़ भय
कुम्भकर्णेर नाहि भय, दुर्ज्जय शरीर । आर यत सेना सबे हइल अस्थिर २१
बरुणेर माया चूर्ण करिते रावण । अग्निबाण धनुकेते युड़िल तखन
अग्निबाण रावणेर अग्नि-अवतार । अग्नि-बाणे सब जल करिल संहार २२
बरुणेर माया यदि भाङ्गिल रावण । रणेते प्रवेश करे यत ग्रह गण
एकादश रुद्र एल, द्वादश भास्कर । स्वर्ग, मर्त्य, पाताल हइल दीप्तिकर २३
एके वारे हइल द्वादश सूर्य्योदय । भयेते राक्षसगण गणिल संशय
धनुकेते योड़े राजा बाण ब्रह्मजाल । बाण हैते वरिषये अग्निर उथाल २४
रावणेर बाणेते देवतागण काँपे । सूर्य्ये तेज निभाइल रावण प्रतापे
यतेक देवतागणे जिनिल रावण । मेघनाद जयन्त दुजने बाजे रण २५
दुइ राजपुत्र युझे, दुजने प्रधान । केह कारे नाहि जिने, दुजने समान
मेघनाद बाणेते जयन्त पाय डर । पलाये जयन्त गेल पाताल भितर २६
पुलोम दानब तार मातामह हय । पाताले लुकाये रहे ताहार आलय
इन्द्रस्थाने बार्त्ता कहे यत देवगण । आचम्बिते जयन्ते ना देखि कि कारण २७

भाग गया, सारी आँधी मिट गयी। मन में आतंकित हो पवन भाग गया; तब बरुण युद्ध-भूमि में आया ॥ २० ॥ वरुण की माया से सभी जलमय हो गया। जल देख रावण को बड़ा भय हुआ। कुम्भकर्ण को कोई डर न था, वह दुर्जेय शरीर वाला था। परन्तु और सारी सेना अस्थिर हो उठी ॥ २१ ॥ तब रावण ने वरुण की माया को चूर करने हेतु, धनुष पर अग्नि-बाण चढ़ाया। रावण का अग्नि-बाण साक्षात् अग्नि-अवतार था। उस अग्नि-बाण ने सारे जल का संहार कर डाला ॥ २२ ॥ जब रावण ने वरुण की माया को नष्ट कर दिया, तब सारे ग्रह युद्ध करने आये, ग्यारह रुद्र आये, बारह भास्कर आये, जिनसे स्वर्ग, मर्त्य, पाताल दीप्तिमान हो उठे ॥ २३ ॥ एक ही साथ बारह सूर्य उग आये। भय के मारे राक्षसों का (प्राण-) संशय हो गया। तब राजा रावण ने धनुष पर ब्रह्मजाल-बाण चढ़ाया। उस बाण से अग्नि की प्रचंड लपटें निकलने लगीं ॥ २४ ॥ रावण के बाणों से देवगण काँपने लगे ! रावण के प्रताप से उन सूर्यों का तेज बुझ गया। सभी देवों को रावण ने युद्ध में जीत लिया। मेघनाद और जयन्त दोनों युद्ध में एक-दूसरे से भिड़ गये ॥२५॥ दो राजपुत्र जूझ रहे थे, दोनों ही प्रधान थे। कोई किसी को जीत नहीं पाता था, दोनों ही बराबर थे। मेघनाद के बाणों से जयन्त डर गया। जयन्त भागकर पाताल में चला गया ॥ २६ ॥ पुलोम दानव उसका मातामह (नाना) लगता था, पाताल में वह उसके भवन में छिपा रहा। देवों ने इन्द्र को यह समाचार दिया कि अचानक जयन्त दिखाई नहीं पड़ता, इसका कारण क्या है ? ॥ २७ ॥ संभवत: मेघनाद के बाण सह न सकने के कारण वह जीवित है या नहीं; कह नहीं सकते। अन्त:पुर में नारियाँ

मेघनाद बाण बुझि ना पारि सहिते। आछे किना बेंचे, ना पारि बलिते
अंतःपुरे नारीगण जुड़िल क्रन्दन। यम गिया इन्द्रे कहे प्रबोध बचन २८
परलोके गेले मोर सङ्गे हैत देखा। मरे नाइ जयन्त से पाइयाछे रक्षा
पुलोम दानब, तार पाताले निबास। लुकाइया जयन्त रयेछे तार पाश २९
यमेर प्रबोधे इन्द्र संबरे क्रन्दन। तबे देबराज गेल चण्डीर सदस
तोमा विद्यमाने देबगणेर संहार। रावणे मारिया माता कर प्रतिकार ३०
चौषट्टि योगिनी छिल देबीर संहति। युझिते योगिनीगण चले शीघ्र गति
युझिते योगिनीगण नाना काच काचे। रक्त-मांस खाइया योगिनी सब नाचे ३१
देखिले योगिनी सबे महाभय करे। एकेक योगिनी शत राक्षसे संहारे
दशानन बले, माता कर अवधान। युद्ध संबरिया तुमि याह निज स्थान ३२
रावण योगिनी-युद्ध देखि भयङ्कर। योड़ हाते स्तुति करे देबीर गोचर
मोर सने माता तब किसे विसंबाद। तोमार चरणे नाहि करि अपराध ३३
शङ्कर सेबक आमि, तुमि मा शङ्करी। ए कारण तब सने युद्ध नाहि करि
आमारे जिनिया तब हइबे कि काज। तुमि यदि हार माता, पाबे बड़ लाज ३४
रावणेर बचने चण्डीर हैल हास। चौषट्टि योगिनी लये चलिला कैलास
एके एके देबगणे जिनिल रावण। इन्द्र ओ रावण दुइ जने बाजे रण ३५

रुदन करने लगीं। यम ने जाकर इंद्र को सांत्वना देते हुए यह वचन कहा ।। २८ ।। यदि जयन्त परलोक में जाता तो मेरे साथ उसकी भेंट होती। जयन्त मरा नहीं है, वह बचा हुआ है। पुलोम दानव, जो पाताल में रहता है, जयन्त उसी के यहाँ छिपा हुआ है ।। २९ ।। यम के धीरज बँधाने पर इन्द्र ने रोना बन्द किया। तब देवराज चंडी के निवास में गये। बोले— देवी, तुम्हारे रहते देवगणों का संहार हो रहा है, माता, रावण को मारकर इसका प्रतिकार करो ।। ३० ।। देवी के साथ चौंसठ योगिनियाँ थीं। वे योगिनियाँ शीघ्रता से लड़ने चलीं। योगिनियाँ लड़ने के लिए नाना प्रकार से कछनी काछकर आयीं। रक्त-मांस खाकर सारी योगिनियाँ नाचने लगीं ।। ३१ ।। योगिनियों को देखकर सभी बड़े आतंकित हुए। एक-एक योगिनी सौ-सौ राक्षसों का संहार करती थी। दशानन बोला— माता, सुनो, युद्ध बन्द कर अपने स्थान पर चली जाओ ।। ३२ ।। योगिनियों का भयंकर युद्ध देखकर रावण हाथ जोड़कर देवी के सम्मुख स्तुति करने लगा। माता, मुझसे तुम्हारा कौन-सा विरोध हुआ है ? तुम्हारे चरणों में तो मैंने कोई अपराध नहीं किया है ।। ३३ ।। माँ, मैं शंकर का सेवक हूँ, तुम शंकरी हो। इसी कारण मैं तुमसे युद्ध नहीं करूँगा। मुझे पराजित कर तुम्हारा कौन सा प्रयोजन सिद्ध होगा ? माता, तुम यदि मुझसे हार जाओ तो बड़ी लज्जित होओगी ।। ३४ ।। रावण के वचन सुनकर चंडी हँस पड़ी। चौंसठ योगिनियों के साथ वे कैलास चली गयीं। रावण ने एक-एक कर देवों को जीत लिया। इन्द्र और रावण ये दोनों लड़ने लगे ।। ३५ ।। हाथों में वज्र लिये इन्द्र ऐरावत पर सवार हुए। राजा रावण दिव्य रथ पर सज्जित होकर आया।

ऐरावत चड़े इन्द्र, बज्र-अस्त्र हाते । साजिया रावण-राजा एल दिव्य रथे
इन्द्रेर से वज्र-अस्त्र करिछे गर्ज्जन । बज्रेर गर्ज्जन शुनि चिन्तित रावण ३६
हेन काले कुम्भकर्ण आइल धाइया । इन्द्रेर सम्मुखे आसि रहे दाण्डाइया
कुम्भकर्ण बले, इन्द्र आर याबि कोथा । स्वर्गपुरी निबसति करिब देवता ३७
बज्र-बिना इन्द्र, तोर आर नाहि वाड़ा । दन्ते चिबाइया बज्र करे याब गुंड़ा
इन्द्र बले, कुम्भकर्ण, छाड़ अहङ्कार । बज्र-अस्त्रे आमि तोरे करिब संहार ३८
महामन्त्र पड़ि इन्द्र बज्रबाण फेले । लाफ दिया कुम्भकर्ण बज्र-अस्त्र गिले
बज्र-अस्त्र गिलि बीर छाड़े सिंहनाद । देखि यत देवगण गणिल प्रमाद ३९
चलिल से कुम्भकर्ण देवता गिलिते । भयेते देवतागण चाय चारि भिते
सृष्टि नाश हेतु तारे सृजिल विधाता । चारि भिते लाफ दिया गिलिछे देवता ४०
अमर देवतागण, नाहिक मरण । नासिका कर्णेर पथे पल तखन
श्रवण-नासिका-पथ घरेर दुयार । ताहा दिया देवगण पलाय अपार ४१
स्वर्ग हैते देवगणे आछाड़िया फेले । हात-पा भाङ्गिया याय पड़ि भूमि तले
कुम्भकर्ण रणे कारो नाहि अव्याहति । हइल समर स्वर्गे समुदय राति ४२
एक दिवा रात्रि मात्र कुम्भकर्ण जागे । कुम्भकर्ण निद्रा गेल सुखी देव भागे
छय मासे कुम्भकर्ण एक दिन जागे । रजनी-प्रभाते रक्षा पाय देव भागे ४३

इन्द्र का वह अस्त्र— वज्र गरज रहा था। वज्र की गर्जना सुन रावण चिन्तित हो उठा ॥ ३६ ॥ इसी समय कुम्भकर्ण वहाँ दौड़ा आया। वह इन्द्र के सम्मुख आकर खड़ा हो गया। कुम्भकर्ण बोला, इन्द्र, तू और कहाँ जायेगा ? मैं स्वर्गपुरी को देवताओं से सूना कर डालूँगा ॥ ३७ ॥ इन्द्र, तेरे पास बज्र के सिवा और कोई बड़ा साधन नहीं है, मैं वज्र को दाँतों से चबाकर चूरा कर डालूंगा। इंद्र बोले, कुम्भकर्ण, अहंकार करना छोड़ दे। मैं वज्र-अस्त्र से तेरा संहार कर डालूँगा ॥ ३८ ॥ इन्द्र ने महामंत्र पढ़कर वज्र-बाण छोड़ा। उस वज्र-अस्त्र को कुम्भकर्ण ने कूदकर निगल लिया। वज्र-अस्त्र को निकलकर उस वीर ने सिंहनाद किया। यह देखकर देवगण सुध खो बैठे ॥३९॥ कुम्भकर्ण देवताओं को निगलने के लिए चला। डर के मारे देवगण चारों ओर देखने लगे। विधाता ने सृष्टि के विनाश हेतु ही उसे सिरजा है। वह चारों ओर कूद-कूदकर देवताओं को निगलने लगा ॥ ४० ॥ देवतागण अमर हैं। उनका मरण नहीं होता। वे कुम्भकर्ण की नाक और कान की राह से निकल भागने लगे। उसके कान और नाक के मार्ग घर के द्वारों जैसे थे। उनसे होकर निकलकर अनगिनत देवगण भागने लगे ॥ ४१ ॥ कुम्भकर्ण स्वर्ग से देवताओं को नीचे पटक दे रहा था, भूतल पर गिरकर उनके हाथ-पैर टूट जा रहे थे। कुम्भकर्ण के साथ युद्ध में कोई बचनेवाला न था। स्वर्ग में रात भर संग्राम होता रहा ॥४२॥ कुम्भकर्ण केवल एक दिन एक रात जगा रहता था। कुम्भकर्ण को निद्रा आ गयी। देवगण सौभाग्य से सुखी हो गये। छः महीने में कुम्भकर्ण एक दिन जगता था। रात के प्रभात होने पर सौभाग्य से देवगण की रक्षा हो गयी ॥४३॥ रात बीती।

रात्रि पोहाइल, बीर निद्राय विह्वल । एतक्षणे रक्षा पाय देबता सकल
कुम्भकर्ण निद्रा गेले राबण चिन्तित । रथे तुलि लङ्कापुरे पाठाय त्वरित ४४
इन्द्र सह राबणेर बाजे महारण । दुइ जने नाना बाण करे बरिषण
दुइ जने बाण मारे, नाहि लेखा-जोखा । चारि दिके फेले बाण यार यत शिखा ४५
दुइ जने सम, केह ना पारे जिनिते । प्रस्वापण बाण इन्द्रेर पड़िल मनेते
इंद्र बले, कौतुक देखह देबगण । प्रस्वापण-बाणे बन्दी करिब राबण ४६
ब्रह्म-मन्त्र पड़ि इन्द्र प्रस्वापण-एड़े । ब्रह्म-अस्त्र राबणेर गाये गिया पड़े
स्पर्श मात्र निद्रा याय हेन प्रस्वापण । रथोपरि राबण निद्राय अचेतन ४७
अचेतन ह'ये पड़े रथेर उपरे । सकल देबता आसि बेड़े राबणेरे
लोहार शिकले बान्धे हाते ओ गलाय । राबणे बान्धिया लैल ऐराबत पाय ४८
अबनीते लोटे राबणेर दश माथा । दशानन-दशा देखि हासेन देबता
हिँचड़िया ल'ये याय, बुक छ'ड़े याय । ऐराबत-दन्त ठेके राबणेर गाय ४९
खान खान हय अङ्ग, दन्त दिया चिरे । परित्राहि डाके राजा विषम प्रहारे
हरषित देबगण जिनिया राबण । शिरे हात दिया कान्दे निशाचरगण ५०
राबण हइल बन्दी देखे मेघनाद । रथे चड़ि अन्तरीक्षे करे सिंहनाद
मेघनाद गर्ज्जे येन मेघेर गर्ज्जन । घरे नाहि यास इन्द्र, फिरि दे रे रण ५१

वीर कुम्भकर्ण निद्रा से विह्वल हो गया। अब देवगण की रक्षा हुई। कुम्भकर्ण के निद्रित हो जाने पर रावण चिन्तित हो उठा। उसे रथ पर चढ़ाकर उसने तुरन्त लंकापुरी भेज दिया ॥ ४४ ॥ इन्द्र के साथ रावण का महायुद्ध लग गया। दोनों नाना प्रकार के महाबाण बरसाने लगे। दोनों जो बाण मार रहे थे उनका कोई लेखा-जोखा न था। अपने-अपने प्रशिक्षण के अनुसार वे चारों ओर बाण-वर्षा कर रहे थे ॥ ४५ ॥ दोनों ही बराबर थे। कोई किसी को जीत नहीं पाता था। तब इन्द्र को प्रस्वापण नामक बाण की याद आयी। इन्द्र बोले, हे देवगण, तुम लोग कौतुक देखते रहो, मैं प्रस्वापण बाण से रावण को बंदी कर लूँगा ॥ ४६ ॥ ब्रह्म-मंत्र पढ़कर इन्द्र ने प्रस्वापण बाण छोड़ दिया। वह ब्रह्म-अस्त्र रावण के शरीर पर जा गिरा। वह प्रस्वापण बाण ऐसा था कि जिसके स्पर्श मात्र से निद्रा आ जाती थी। रावण रथ पर निद्रा से अचेतन हो गया ॥ ४७ ॥ वह अचेतन होकर रथ पर पड़ गया। (तब) सभी देवताओं ने आकर रावण को घेर लिया। लोहे की ज़ंजीरों से उसके हाथ और पैर गले को बाँध लिया। और रावण को ऐरावत के पैरों में बाँध दिया ॥ ४८ ॥ रावण के दसों सिर धरती पर लोटने लगे। दशानन की दशा देख देवगण हँसने लगे। ऐरावत उसे घसीट कर ले जाने लगा, उसकी छाती चिर जाने लगी, ऐरावत के दाँत रावण के शरीर में गड़ जाने लगे ॥ ४९ ॥ उसके अंग खंड-खंड होने लगे। ऐरावत ने दाँतों से उसे चीर दिया। भयंकर प्रहार से राजा रावण 'बचाओ, बचाओ' पुकारने लगा। रावण को जीतकर देवगण हर्षित हुए। सिरों पर हाथ रखे निशाचरगण रोने लगे ॥ ५० ॥ मेघनाद ने देखा,

रावण कुमार आमि नाम मेघनाद । आजिकार युद्धे तोर पड़िल प्रमाद
पितारे करिलि बन्दी आमा-बिद्यमाने । बिनाशिब स्वर्गपुरी आजिकार रणे ५२
गर्जिजतेछे मेघनाद थाकिया आकाशे । मेघनाद-गर्ज्जनेते देबराज हासे
तोर ठाँइ शुनिलाम अपूर्ब्ब काहिनी । पिता हैते पुत्र बड़, कोथाओ ना शुनि ५३
एत यदि दुइ जने हैल गाला गालि । दुइ जने युद्ध बाजे, दोँहे महाबली
अन्तरीक्षे मेघनाद मेघे हय लुकि । मेघेर आड़ेते युझे कुमार धानुकी ५४
नाना अस्त्र मेघनाद फेले चारि क्षिते । फाँफर हइल इन्द्र, ना पारे सहिते
अन्तरीक्षे थाकि बाण फेले झाँके झाँके । कोथा हैते पड़े बाण केह नाहि देखे ५५
खाण्डा खरशाण शेल शूल एक धारा । चारि भिते पड़े येन आकाशेर तारा
नाना अस्त्र मेघनाद करे वरिषण । जर्ज्जर हइल बाणे यत देबगण ५६
इन्द्रे छाड़ि देबगण पलाय तखन । एकेश्वर थाकि इन्द्र करे महारण
सन्धान पूरिया इन्द्र ऊर्द्ध्व दृष्टे चाय । कोथा हैते आसे बाण देखिते ना पाय ५७
सहस्र चक्षेते इंद्र ना पाय देखिते । देखिते ना पाय, आर ना पारे सहिते
मेघनाद जुड़िलेक बन्ध नागपाश । ताहा देखि देबगणे लागिल तरास ५८

रावण बन्दी हो गया। वह रथ पर चढ़ अन्तरिक्ष में चला गया और सिंहनाद करने लगा। मेघनाद मेघों की गर्जना जैसे गरजने लगा—रे इंद्र, तू घर लौटकर न जा, लौटकर संग्राम कर! ॥ ५१ ॥ मैं रावण का कुमार हूँ, मेरा नाम मेघनाद है। आज के इस युद्ध में तेरा विनाश आ गया है। मेरे रहते तूने पिता को बंदी कर लिया है। आज के युद्ध में मैं स्वर्गपुरी का बिनाश कर डालूँगा।। ५२ ।। मेघनाद आकाश में रहकर गरज रहा था। मेघनाद की गर्जना सुन देवराज हँस पड़े। बोले, यह अपूर्व कथा तुझी से सुन रहा हूँ, पुत्र पिता की अपेक्षा बड़ा हो, यह बात तो कहीं नहीं सुनी ।। ५३ ।। दोनों में इस तरह गाली-गलौवल होने के बाद दोनों युद्ध करने लगे। दोनों ही महाबली थे। मेघनाद अंतरिक्ष में जाकर मेघों के बीच छिप जाता था। धनुष-धारी कुमार मेघनाद मेघों की ओट से जूझ रहा था ।।५४।। मेघनाद चारों ओर नाना प्रकार के अस्त्रों का प्रहार कर रहा था। उनका (प्रहार) सह न सकने के कारण इन्द्र संकट में पड़ गये। मेघनाद अन्तरिक्ष में रहकर झुंड के झुंड बाण फेंकने लगा। वे बाण कहाँ से आकर गिर रहे हैं कोई देख नहीं पाता था ।। ५५ ।। तेज़ धार वाले खड्ग, शेल, शूल, लगातार चारों ओर से ऐसे गिर रहे थे मानो आकाश के तारे हों! मेघनाद नाना अस्त्रों की वर्षा कर रहा था। सारे देवगण उसके बाणों से जर्जर हो गये ।। ५६ ।। तब देवगण इन्द्र को छोड़कर भाग गये। अकेले इन्द्र महान युद्ध करने लगे। निशाना साधकर इन्द्र ऊपर आँखें उठाकर देखने लगे; पर वे बाण कहाँ से आ रहे हैं, दिखाई नहीं पड़ता था ।। ५७ ।। अपनी हजारों आँखों से भी इन्द्र देख नहीं पा रहे थे। वे देख नहीं पाते थे, और (प्रहार) सह नहीं पा रहे थे। मेघनाद ने बाँधनेवाला नागपाश चढ़ाया। उसे

मेघनाद जाने नाना बाणेर सुशिक्षा । यज्ञेते पाइल बाण, नाहि कारो रक्षा
एक बाणे भुजङ्गम अनेक जन्मिल । हाते गले देबराजे बान्धिया पाड़िल ५९
बिषेर ज्वालाय इन्द्र हइल मुर्च्छित । इन्द्रे छाड़ि देबगण पलाय त्वरित
स्वर्ग छाड़ि पलाय यतेक देबगण । राक्षसेते रावणेर छाड़ाय बन्धन ६०
इन्द्रे बाँधे मेघनाद पिता बिद्यमान । मेघनादे दशानन करिछे बाखान
आमारे बान्धियाछिल इन्द्र देबराज । हेन इन्द्रे बान्धिया करिले पुत्र काज ६१
इन्द्र के बान्धिया पुत्र, लह लङ्कापुरी । तबे आमि लुटिब ए अमर-नगरी
मेघनाद बले, पिता, आज्ञा कर तुमि । इन्द्र के बान्धिया आगे ल'ये याइ आमि ६२
मेघनाद बाक्य शुनि कहे दशानन । आज्ञाबिनु, कर ताहा याहे तब मन
आज्ञा पेये मेघनाद इन्द्र के धरिल । रथेर निकटे गिया कहिते लागिल ६३
पितारे बान्धियाछिलि ऐराबत-पाय । बान्धिब तोमारे इन्द्र, रथेर चाकाय
इन्द्रे बान्धि पाठाइल लङ्कार भितर । अमर नगरी लुटे राजा लङ्केश्वर ६४
एके दशानन, ताहे अमर-नगरी । बाछिया बाछिया लुटे, स्वर्ग-विद्याधरी
नाना-रत्न-माणिक्य भाण्डार हैते निल । स्वर्ग-बिद्याधरी तथा अनेक पाइल ६५
शचीरे खुँजिया फिरे राजा दशानन । शची ल'ये देबगण हैल अदर्शन
शची तरे रावणेर छिल बड़ आश । शचीरे ना पेये राजा हइल निराश ६६

देख, देवगण में आतंक फैल गया ॥ ५८ ॥ सुशिक्षा-प्राप्त मेघनाद अनेक प्रकार के बाणों की जानकारी रखता था। उसे यज्ञ में वे बाण मिले थे, उनसे किसी की रक्षा न थी ! उस एक ही बाण से नागपाश से अनेकों भुजंग उत्पन्न हो गये और देवराज को हाथ-गले में बाँधकर गिरा दिया ॥ ५९ ॥ विष की ज्वाला से इन्द्र अचेत हो गये। इन्द्र को छोड़कर देवगण तेजी से भागने लगे। सभी देवता स्वर्ग छोड़कर भागने लगे। राक्षसों ने रावण को बंधन से मुक्त कर दिया ॥ ६० ॥ मेघनाद ने पिता के सम्मुख ही इन्द्र को बंदी कर लिया। दशानन मेघनाद की प्रशंसा करने लगा। मुझे देवराज इन्द्र ने बाँध लिया था, ऐसे इन्द्र को बंदी कर पुत्र, तूने बड़ा कार्य किया है ॥ ६१ ॥ पुत्र, इन्द्र को बाँधकर लंकापुरी ले चल। इसके पश्चात् मैं अमरों की इस पुरी को लूटूँगा। मेघनाद बोला— पिताजी, आप आज्ञा दें; मैं इन्द्र को बाँधकर पहले ले जाऊँ ॥ ६२ ॥ मेघनाद की बात सुनकर रावण बोला— मैं आज्ञा देता हूँ, तुम्हारी जैसी इच्छा हो, करो। आज्ञा पाकर मेघनाद ने इन्द्र को पकड़ लिया और रथ के समीप जाकर कहने लगा ॥ ६३ ॥ तूने पिता को ऐरावत के पैरों में बाँधा था, इन्द्र, तुझे मैं रथ के पहिये से बाँधूंगा। इन्द्र को बंदी कर मेघनाद ने लंका में भेज दिया। राजा लंकेश्वर अमरों की नगरी को लूटने लगा ॥ ६४ ॥ एक तो (लूटनेवाला) रावण था, दूसरे वह पुरी अमर-नगरी अमरावती थी; रावण चुन-चुन स्वर्ग की विद्याधरियों को लूटने लगा। देवों के भंडार से विविध रत्न-मणि-माणिक निकाल लिये, वहाँ उसे स्वर्ग की अनेक विद्याधरियाँ मिलीं ॥ ६५ ॥ राजा रावण शची को खोजने-फिरने लगा। पर शची को लेकर देवता अदृश्य हो गये। शची को पाने

ইন্দ্রের নন্দন বন দেখে মনোহর। প্রবেশে নন্দন বনে রাজা লঙ্কেশ্বর
পারিজাত-বৃক্ষ উপাড়িল ডালে মূলে। লুটিয়া অমরাবতী চলে কুতূহলে ৬৭
লঙ্কার ভিতরে গিয়া করিল দেয়ান। ছত্রিশ কোটি সম্মুখে কটক প্রধান
মেঘনাদ গেল তবে বাপের গোচর। বান্ধিয়া রেখেছি ইন্দ্রে লঙ্কার ভিতর ৬৮
লোহার শৃঙ্খলে বান্ধিয়াছি হাতে গলে। পাথর চাপায়ে বুকে রাখি যজ্ঞস্থলে
এত যদি কহে মেঘনাদ বীরবর। রাজার প্রসাদ পায় বাপের গোচর ৬৯
মেঘনাদে রাজা তবে করেছে বাখান। ধন্য ধন্য পুত্র মোর বীরের প্রধান
নানা-অলঙ্কার দিল, মাথে দিল মণি। অযুতেক বিদ্যাধরী দিলেক নাচনী ৭০
বাপের প্রসাদ পেয়ে হরিষ-অন্তরে। কুতূহলে দেবকন্যা ল'য়ে রতি করে
বহু ধন পায় লুটি অমরনগরী। দিগ্‌বিজয় দ্রব্য রাজা আনে লঙ্কাপুরী ৭১
দেব-দানবের কন্যা লয়ে কেলি করে। ত্রিভুবন জিনিল সে রাজা লঙ্কেশ্বরে
কৌতুকেতে লঙ্কাপুরে আছে লঙ্কেশ্বর। সকল দেবতা গেল ব্রহ্মার গোচর ৭২
আচম্বিতে ব্রহ্মা, তব সৃষ্টি পায় নাশ। দিবা রাত্রি নাহি চন্দ্র-সূর্য্যের প্রকাশ
আচম্বিতে স্বর্গ আসি বেড়ে লঙ্কেশ্বর। ইন্দ্র কে বান্ধিয়া নিল লঙ্কার ভিতর ৭৩

की रावण की बड़ी आशा थी। शची को न पाकर राजा रावण निराश हो गया ॥ ६६ ॥ उसने इन्द्र का मनोरम नन्दन वन देखा। राजा रावण ने उस नन्दन वन में प्रवेश किया। उसने पारिजात वृक्ष को जड़ से उखाड़ लिया और अमरावती को लूटकर बड़ी प्रसन्नता से चल पड़ा ॥ ६७ ॥ लंका में जाकर रावण ने राज-सभा बुलाई। उसके सामने छत्तीस करोड़ सेनापति बैठे। तब मेघनाद पिता के पास गया। कहा— इन्द्र को मैंने लंका में बाँध रखा है ॥ ६८ ॥ मैंने इन्द्र को हाथ और गले में लोहे की ज़ंजीरों में बांधा है। यज्ञभूमि में उसकी छाती पर चट्टान चढ़ाये देता हूँ। वीरवर मेघनाद ने जब यह बात कही तो बाप ने उसे राज-अनुग्रह दिखाया ॥ ६९ ॥ राजा रावण उस समय मेघनाद की प्रशंसा करने लगा— वीरों में प्रधान, मेरा पुत्र, तू धन्य है, धन्य है। उसने उसे अनेक प्रकार के आभूषण दिये। उसके सिर पर मणि पहनाई। दसों हज़ार विद्याधरियाँ और नर्तकियाँ दीं ॥ ७० ॥ बाप का अनुग्रह पाकर मेघनाद अन्तर् में बहुत हर्षित हुआ। परम आनन्द से वह देव-कन्याओं को लेकर रति-क्रीड़ा करने लगा। अमरों की नगरी को लूटकर रावण ने अनेक धन प्राप्त किया और दिग्‌विजय में मिली वस्तुओं को वह लंकापुरी ले आया ॥ ७१ ॥ देव-दानवों की कन्याओं को लेकर राजा रावण केलि करने लगा। राजा लंकेश्वर ने त्रिभुवन को जीत लिया। राजा लंकेश्वर रावण परम आनन्द से लंकापुरी में रहने लगा। उधर देवगण ब्रह्मा के पास पहुँचे ॥ ७२ ॥ वे बोले, ब्रह्माजी, अकस्मात् आपकी सृष्टि नाश होनेवाली है। अब तो दिन-रात चन्द्रमा और सूर्य का प्रकाश रुका हुआ है। राजा लंकेश्वर रावण ने अकस्मात् आकर स्वर्ग को घेर लिया और इन्द्र को बाँधकर लंका में ले गया है ॥ ७३ ॥ देवता स्वर्ग का निवास छोड़

छाड़ियाछे देबगण स्वर्गेर बसति । कि प्रकारे देबराज पाबे अव्याहृति
एतेक शुनिया ब्रह्मा भाबेन बिषादे । राबणेरे बर दिये पड़िनु प्रमादे ७४
देबगणे राखि ब्रह्मा चलिल सत्वर । एकेश्वर ब्रह्मा गेल लङ्कार भितर
पाद्य-अर्घ्य दिया पुजा करिल राबण । भक्ति भरे पूजे राजा ब्रह्मार चरण ७५
आचम्बिते केन प्रभु हेया आगमन । आज्ञा कर, आछे तब कोन् प्रयोजन
बिरिञ्चि बलेन, दुष्ट केलि सृष्टि-नाश । रात्रि-दिन नाहि चन्द्र सूर्य्येर प्रकाश ७६
इन्द्रे बान्धि लङ्काते आनिलि कि कारण । स्वर्गपुरे नाहि रहे यत देबगण
योड़ हाते बले राजा ब्रह्मार गोचर । त्रिभुबन जिनिलाम पेये तब बर ७७
सकले जिनिनु आमि तोमार प्रसादे । इन्द्रे बान्धियाछे मोर पुत्र मेघनादे
यज्ञशाले राखियाछे देब पुरन्दरे । आज्ञाकर, आनि आमि तोमार गोचरे ७८
ब्रह्मा बलिलेन, राजा, चल यज्ञशाला । देखाइबे मेघनाद-यज्ञ निकुम्भिला
आगे-आगे यान ब्रह्मा, पश्चाते राबण । तार पाछु चलिला राक्षस बिभीषण ७९
मेघनाद-यज्ञ देखि बिधातार हास । मेघनादे बले ब्रह्मा करिया प्रकाश
तब पिता इन्द्र-रणे पाय पराजय । हेन इन्द्रे जिन तुमि संग्रामे दुर्ज्जय ८०
तब बाणे त्रिभुबन हइल कम्पित । आजि हैते तब नाम हैल इन्द्रजित
बर माग इन्द्रजित् तुष्ट हैतु आमि । सृष्टि रक्षाकर इन्द्रे छाड़ि दिया तुमि ८१

चुके हैं, अब देवराज को छुटकारा कैसे मिलेगा ? यह सुनकर ब्रह्मा विषाद से सोचने लगे । रावण को वर देकर बड़ी विपत्ति में पड़ गया ।। ७४ ।। देवगणों को वहीं रखकर ब्रह्मा तुरंत चल पड़े । वे अकेले ही लंका में गये । रावण ने पाद्य-अर्घ्य देकर उनकी पूजा की । राजा रावण ने भक्तिपूर्वक ब्रह्मा के चरणों की पूजा की ।। ७५ ।। पूछा— प्रभु, अकस्मात् आपका यहाँ आगमन किस हेतु हुआ है ? आप आज्ञा दें, आपका कौन-सा प्रयोजन है ? ब्रह्मा बोले, दुष्ट, तूने सारी सृष्टि नष्ट कर डाली । अब तो दिन-रात चन्द्र-सूर्य का प्रकाश रुका हुआ है ।। ७६ ।। तू इन्द्र को बाँधकर लंका में किसलिए ले आया ? अब देवगण स्वर्गलोक का निवास छोड़ चुके हैं । तब हाथ जोड़कर राजा रावण ब्रह्मा से बोला— आपका वर पाकर मैंने त्रिभुवन जीत लिया ! ।। ७७ ।। आपके प्रसाद से मैंने सबको जीत लिया । इन्द्र को मेरा पुत्र मेघनाद बाँध लाया है । उसने इन्द्र को यज्ञशाला में रख दिया है । आप आज्ञा करें, आपके सम्मुख ले आवें ! ।। ७८ ।। ब्रह्मा बोले, राजा रावण, यज्ञशाला में चलो । मुझे मेघनाद का यज्ञ-स्थान निकुंभिला दिखलाओ । आगे-आगे ब्रह्मा चले, पीछे रावण चला । उसके पीछे राक्षस विभीषण चला ।। ७९ ।। मेघनाद का यज्ञ देखकर ब्रह्मा हँस पड़े । ब्रह्मा ने मेघनाद से प्रकट रूप से कहा— तुम्हारे पिता की इन्द्र से युद्ध में पराजय हुई थी । ऐसे इन्द्र को तुमने जीत लिया, तुम संग्राम में दुर्जेय हो ।। ८० ।। तुम्हारे बाणों से त्रिभुवन कंपित हो गया है । इसी कारण आज से तुम्हारा नाम इन्द्रजित् होगा । इन्द्रजित्, मैं तुम पर संतुष्ट हूँ, तुम वर माँगो ! इन्द्र को छोड़कर तुम सृष्टि की रक्षा करो ।। ८१ ।।

इन्द्रजित् बले, आगे देह तुमि बर। तबे आमि छाड़िब ए देब पुरन्दर
अमर हइब आमि, कर संबिधान। अन्य बर आमि नाहि चाहि तव स्थान ८२
इन्द्रजित् कथा शुनि बिरिञ्चिर हास। अमर हइले तुमि मोर सर्ब्बनाश
ब्रह्मा बले, दिनु बर शुन भाल मते। त्रिभुवन जिनिबे ये यज्ञेर फलेते ८३
एइ यज्ञ भङ्ग तोर करिबे ये जन। सेइ जन हबे तोर बधेर कारण
ए सन्धि शुनियाछिल रक्षः बिभीषण। तारि जन्ये इन्द्रजिते बधिल लक्ष्मण ८४
इन्द्रे एने दिल तबे ब्रह्मा-बिद्यमान। अधोमुखे रहे इन्द्र पेये अपमान
ब्रह्मा बलिलेन, इन्द्रे, किबा भाब मने। ए दुःख पाइले ब्रह्म शापेर कारणे ८५
तोमार शापेर कथा पड़े मोर मने। पूर्ब्बकथा कहि इन्द्र, शुन सावधाने
कौतुकेते एक कन्या सृजिलाम आमि। राज्य भोगे पूर्ब्बकथा पासरिले तुमि ८६
अहल्या कन्यार नाम राखिनु यतने। आइल गौतम मुनि आमा-दरशने
अहल्यार रूप देखि मुनि अचेतन। लाजे मुनि प्रकाश ना करे कदाचन ८७
बुझिया मुनिर मन कन्या दिनु दान। कन्या ल'ये कैल मुनि स्वस्थाने प्रस्थान
तपस्याते गेल मुनि तमसार कूले। हेन काले गेले तुमि पड़िबार छले ८८
अहल्या गौतम-पत्नी परमा सुन्दरी। गौतमेर रूप धरि गेले तार पुरी
सती कन्या अहल्या से सर्ब्बलोके जाने। तोमारे आसन जल दिल स्वामी-ज्ञाने ८९

इन्द्रजित् बोला, पहले आप मुझे वर दीजिए। उसके पश्चात् में इस देव पुरन्दर को छोड़ूंगा। मैं अमर बनूँ, ऐसा विधान कर दीजिए। मुझे आपसे कोई दूसरा वर नहीं चाहिए॥ ८२॥ इन्द्रजित् की बात सुन ब्रह्मा हँसने लगे। तुम अमर हो जाओ तो मेरा सर्वनाश हो जाए। ब्रह्मा बोले, ध्यान देकर सुनो, मैं तुम्हें वर दे रहा हूँ। इस यज्ञ के फल-स्वरूप तुम त्रिभुवन जीत लोगे॥ ८३॥ जो व्यक्ति तुम्हारा यह यज्ञ-भंग करेगा, वही तुम्हारे वध का कारण बनेगा। राक्षस विभीषण ने (ब्रह्मा तथा मेघनाद के बीच हुई) यह संधि सुन ली थी। उसी कारण इन्द्रजित् को लक्ष्मण मार सके!॥ ८४॥ तब मेघनाद ने इन्द्र को ब्रह्मा के सम्मुख ला दिया। अपमानित होकर इन्द्र सिर झुकाये रहे। ब्रह्मा बोले, इन्द्र, तुम क्या सोच रहे हो? यह दुःख तो तुम्हें ब्रह्मशाप के कारण मिला है॥ ८५॥ तुम्हारे शाप की बात मुझे स्मरण हो रही है। इन्द्र, मैं पूर्व-कथा सुनाता हूं, सावधानी से सुनो। राज्य-भोग में लगे रहने के कारण तुम वह पूर्व-कथा भूल चुके हो। मैंने कौतुकवश एक कन्या का सर्जन किया था॥ ८६॥ बड़े यत्नपूर्वक उस कन्या का नाम अहल्या रखा! इसके पश्चात् गौतम मुनि मेरे दर्शन हेतु आये। अहल्या का रूप देखकर मुनि सुध-बुध भूल गये। परन्तु लाज के मारे मुनि ने कदापि वह बात प्रकट नहीं की॥ ८७॥ मैंने मुनि का मनोभाव समझकर उन्हें वह कन्या दान कर दी। कन्या को लेकर मुनि अपने स्थान को चले गये। तपस्या करने हेतु मुनि तमसा के तट पर गये। उसी समय तुम पढ़ने के बहाने वहाँ पहुँचे॥ ८८॥ गौतम-पत्नी अहल्या परमासुन्दरी थी। तुम गौतम का रूप धारण कर उसके निवास पर गये। अहल्या सती कन्या है, यह सब

नारी-जाति नाहि जाने माया-व्यवहार। बले धरि तुमि तारे करिले शृङ्गार
हेन काले तप करि, मुनि एल घरे। सर्व्वज्ञ गौतम मुनि चिनिल तोमारे ९०
अहल्यारे आगे शाप दिला मुनिवर। पाषाण हइया थाक अनेक बत्सर
आपनि हबेन प्रभु राम-अबतार। पद-धूलि दिले तिनि तोमार निस्तार ९१
अहल्या पाषाणी हैल ये मुनिर शापे। तोमारे से मुनि शाप दिल महाकोपे
तोर अनाचार इन्द्र, रहिल घोषणा। तोरे पड़ाइया भाल पेलाम दक्षिणा ९२
भगे अभिलाष तोर, इन्द्र तुइ ठग। आमार शापेते तोर गाये ह'क भग
शाप दिल महामुनि, खण्डन ना याय। हइल सहस्र भग, इन्द्र, तब गाय ९३
धरिया मुनिर पाये करिले क्रन्दन। परदार-पाप मोर करह खण्डन
मुनि बले, खण्डन नायाय एइ पाप। एइ पापे परे तुमि पाबे मनस्ताप ९४
मुनिर बचन कभु ना याय खण्डन। एत दुःख पेले ब्रह्म-शापेर कारण
बिरिञ्च बलेन, इन्द्र, कहि तब काणे। राम नाम मन्त्र तुमि जप रात्रि-दिने ९५
इहा बिना तोमार नाहिक प्रतिकार। राम नामे हय सर्व्व पापेर संहार
एक नामे सहस्र नामेर फल हय। राम-नाम तुल्य नाहि चारि वेदे कय ९६
एतेक बलिया ब्रह्मा गेलेन स्वस्थान। इन्द्र गेल स्वर्गपुरे पेये प्राणदान
ब्रह्मार कारणे इन्द्र पेये अव्याहति। आइल अमराबती आपन बसति ९७

लोग जानते हैं। तुम्हें स्वामी मानकर उसने आसन और जल दिया ॥८९॥ नारी-जाति तो माया (छलना) का व्यवहार नहीं जानती। बलपूर्वक पकड़कर तुमने उससे संभोग किया। उसी समय तपस्या करने के बाद मुनि घर लौटे। सर्वज्ञ मुनि गौतम ने तुम्हें पहचान लिया ॥ ९० ॥ पहले मुनि ने अहल्या को अभिशाप दिया— तू अनेक वर्षों तक शिला बनी रह। प्रभु स्वयं राम-अवतार धारण करेंगे। वे जब अपनी चरण-धूलि देंगे तो तेरी मुक्ति हो जायगी ॥ ९१ ॥ जिस मुनि के शाप से अहल्या शिला बन गयी, उसी मुनि ने महाक्रोध से तुम्हें शाप दिया। रे इन्द्र, तेरा अनाचार संसार में घोषित होता रहेगा। तुझे पढ़ाकर मुझे यह अच्छी दक्षिणा मिली ॥ ९२ ॥ रे इन्द्र, तू ठग है। नारी की योनि की ही तुझे अभिलाषा रही। मेरे शाप से तेरे शरीर में योनियाँ बन जायें। महामुनि ने जो शाप दिया वह खंडित नहीं हो सकता था। इन्द्र, उसी से तुम्हारे शरीर में सहस्रों योनियाँ बन गयीं ॥ ९३ ॥ तब तुम मुनि के चरण पकड़कर रुदन करने लगे, पर-नारी के संग संभोग का मेरा पाप खंडन कर दो। मुनि बोले, यह पाप खंडित नहीं हो सकता। इस पाप के कारण आगे चलकर तुम मनस्ताप पाते रहोगे ॥ ९४ ॥ मुनि के वचन कभी खंडित नहीं हो सकते। इसी कारण उसी ब्रह्मशाप से तुम्हें इतना दुःख उठाना पड़ा। ब्रह्मा बोले— इन्द्र, तुम्हारे कानों में कहता हूँ, तुम दिन-रात राम-नाम मंत्र जपते रहो ॥ ९५ ॥ इसके बग़ैर तुम्हारा और कोई प्रतिकार नहीं है। राम-नाम से सभी पापों का संहार हो जाता है। इस एक ही नाम से सहस्रों नामों का फल मिलता है। चारों वेद कहते हैं, राम-नाम की समता करनेवाला कोई नहीं है ॥ ९६ ॥ यों कहकर ब्रह्मा

देबराज रात्रिदिन राम नाम जपे। परित्राण पाय इन्द्र परदार पापे
दिग्‌बिजय करि राबण एल निज घर। चौद्द युग राज्य करे लङ्कार ईश्वर ९८
आर चौद्द युग छिल राबणेर आयु। सीतार चुलेते धरि हइल अल्पायु
लङ्काते करिल राज्य माली ओ सुमाली। परे राज्य करिल कुबेर महाबली ९९
तत्परे लङ्काय राज्य करिल राबण। तब कृपा बले एबे राजा बिभीषण
अगस्त्येर कथा शुनि श्रीरामेर हास। कह कह बलि राम करिला प्रकाश १००
राबणेर दिग्‌बिजय कहिला हे मुनि। राबण-अधिक हनुमानेरे बाखानि
बहुस्थाने शुनि राबणेर पराजय। हनुमान-पराजय कोथाओ नाहय १०१
गिरि गाधमादन रात्रिर मध्ये आने। हनुमान-सम बीर नाहि त्रिभुबने

हनूमानेर जन्मकथा

अगस्त्य बलेन, कि कहिब तार कथा। हनूमान गुण कत ना जाने देबता १
ताहार यतेक गुण कहिते ना जानि। संक्षेपते कहि किछु, शुन रघुमणि
जननी अञ्जना तार, जनक पबन। हनूमान जन्मकथा करिब बर्णन २

अपने स्थान को चले गये। प्राण-दान पाकर इन्द्र भी स्वर्गपुरी चले गये। ब्रह्मा के कारण छुटकारा पाकर इन्द्र अपने निवासस्थान अमरावती आये ॥ ९७ ॥ देवराज रात-दिन राम-नाम जपने लगे। और उससे परनारी के संभोग के पाप से उन्हें परित्राण मिला। उधर दिग्विजय कर रावण अपने घर पहुँचा। लंका के अधीश्वर रावण ने चौदह युगों तक राज्य किया ॥ ९८ ॥ और चौदह युग तक की रावण की आयु थी, परन्तु सीता के बाल पकड़ने के कारण वह अल्पायु हो गया। लंका पर माली और सुमाली ने पहले राज किया था, उसके बाद महाबली कुबेर ने राज किया ॥ ९९ ॥ उसके बाद लंका पर रावण ने राज किया। तुम्हारे कृपा के बल से अब वहाँ विभीषण राजा है। अगस्त्य मुनि की बात सुन रामचन्द्र हँसने लगे। मुनि, (आगे की कथा) सुनाइये, कहकर (अपनी इच्छा) प्रकट की ॥ १०० ॥ हे मुनि, आपने तो रावण के दिग्विजय के बारे में बताया, परन्तु मैं तो रावण की अपेक्षा हनुमान को ही बखानता हूँ। अनेक स्थानों में रावण की पराजय की बात सुनी गयी है, पर हनुमान की पराजय कहीं नहीं होती ॥ १०१ ॥ रात भर के भीतर गंधमादन पर्वत को जो ले आ सकते हैं, ऐसे हनुमान-जैसा वीर त्रिभुवन में कोई नहीं है।

हनुमान की जन्म-कथा

अगस्त्य मुनि बोले— उनकी बात क्या बताऊँ ? हनुमान के गुण कितने हैं, देवता भी नहीं जानते ॥ १ ॥ उनके जितने गुण हैं उन्हें कहने में मैं असमर्थ हूँ। मैं संक्षेप में कुछ कहता हूँ, रघुमणि, सुनिए। हनुमान की

अञ्जना बानरी छिल परमा सुन्दरी। तारे बिभा करिलेक बानर केशरी
बानरीर रूप-गुण बड़इ अद्भुत। रूपे आलो करे, येन पड़िछे बिद्युत् ३
मलय-पर्ब्बत परे केशरीर घर। अञ्जना लइया केलि करे निरन्तर
प्रबेशिल चैत्र-मास बसन्त-समय। आइल-पबन-देब पर्ब्बत-मलय ४
अञ्जनार रूपे बायु आकुल-हृदय। करिते ना-पारे किछु केशरी-दुर्ज्जय
एक दिन एकाकिनी पाइया पबन। परिधान उड़ाइया दिल आलिङ्गन ५
अञ्जना बलेन, बायु, कैले जाति-नाश। देबता हइया तब बानरी-बिलास
बायु बले, किछु आर ना बल अञ्जना। तब रूप देखि आमि पासरि आपना ६
शास्त्रे महापाप पर-रमणी-गमने। जाति कुल बिचार करये कोन् जने
सकल संबरि तुमि याह निज घरे। जन्मिबे दुर्ज्जय बीर तोमार उदरे ७
एतेक बलिया बायु गेल निज स्थान। आठार मासेते जन्म निल हनूमान
अमाबस्या दिने हैल हनूर जनम। जन्म मात्रे सेइ दिन बिशाल बिक्रम ८
जन्मिया मायेर कोले करे स्तन्यपान। उदित हइल रक्त बर्ण भानुमान
फल ज्ञाने धरिते से चाहिल कौतुके। अञ्जनार कोल हते उठे अन्तरीक्षे ९
पर्ब्बत हइते सूर्य्य लक्षैक योजन। एक लाफे उठे तथा पबन-नन्दन
जन्म-मात्र बालक से उठिल आकाशे। सूर्य्य के धरिते याय असीम साहसे १०

जननी अंजना और पिता पवन हैं। मैं हनुमान की जन्म-कथा वर्णन करूँगा ॥ २ ॥ वानरी अंजना परम सुन्दरी थी। वानर केशरी ने उससे विवाह किया था। उस वानरी अंजना के रूप-गुण बड़े ही अद्भुत थे। वह अपने रूप से ऐसे आलोकित करती थी, मानो गिरती हुई विद्युत् हो! ॥ ३ ॥ केशरी का घर मलयपर्वत पर था। अंजना को लेकर वह वहाँ निरंतर केलि किया करता था। (एक बार) जब वसन्त का समय चैत का महीना आरंभ हुआ, पवन-देवता मलय-पर्वत पर आये ॥४॥ अंजना का रूप देखकर वायुदेव हृदय में व्याकुल हो उठे। पर दुर्जेय केशरी के कारण वे कुछ कर नहीं सके। एक दिन अंजना को अकेली पाकर उसका पहनावा उडाकर उसे आलिगन में ले लिया ॥ ५ ॥ अंजना बोली, वायु, तुमने जाति नाश कर दिया। देवता होकर भी तुमने वानरी से विलास किया। वायु ने कहा— अंजना, अब कुछ न बोलो! तुम्हारा रूप देख मैं अपने को भूल गया था ॥ ६ ॥ पर-नारी से संभोग करने पर शास्त्रों के अनुसार महापाप होता है। पर ऐसी स्थिति में जाति-कुल का विचार कौन करता है? सब कुछ सँभाल कर तुम अपने घर चली जाओ। तुम्हारे उदर से दुर्जेय वीर जन्म लेनेवाला है ॥ ७ ॥ यों कहकर वायु अपने स्थान चले गये। अठारह महीने बाद हनुमान का जन्म हुआ। अमावस्या के दिन हनुमान का जन्म हुआ। जन्म होते ही उसी दिन उन्होंने महा विक्रम दिखाया ॥ ८ ॥ जन्म लेने के पश्चात् माँ की गोद में वे स्तन्यपान कर रहे थे। उसी समय रक्त-वर्ण सूर्यदेव उदित हुए। हनुमान ने सूर्य को फल समझकर कौतुक से पकड़ना चाहा और अंजना की गोद से अन्तरिक्ष में चढ़ गये ॥ ९ ॥ पर्वत से सूर्य की दूरी लगभग एक

ग्रहण लागिबे सूर्य्य सेइ से दिवसे। धाइयाछे राहु सूर्य गिलिवार आशे
हनूमाने देखि राहु पलाइल डरे। कहिल सकल कथा इन्द्रेर गोचरे ११
मम अधिकार इन्द्र दिले तुमि कारे। ना जानि, के आसियाछे सूर्य्य गिलिबारे
शुनिया राहुर कथा इन्द्रेर तरास। सूर्य्य के गिलिबे केवा करियाछे आश १२
ऐरावते चड़ि इन्द्र वज्र हाते लये। सूर्य्येर निकट हनू देखिल आसिये
हनूमाने देखि इन्द्र भयेते अस्थिर। सुमेरु पर्व्वत जिनि प्रकाण्ड शरीर १३
ऐरावत-माथा राङ्गा हिङ्गुले मण्डित। ताहा देखि हनूमान हैल हरषित
सूर्य्य एड़ि धाय ऐरावतेरे धरिते। कोपेते उठिल इन्द्र बज्र ल'ये हाते १४
क्रुद्ध ह'ये देवराज आपना पासरे। बिना दोषे बज्राघात हनू सिरे करे
हनूमान पीड़ित हइल बज्राघाते। अचेतन ह'ये पड़े मलय पर्व्वते १५
निरखिया अञ्जनार उड़िल पराण। व्याकुल हइया कान्दे, कोले हनूमान
पुत्र पुत्र बलि करे अञ्जना क्रन्दन। हेन काले आइलेन देवता पवन १६
अञ्जना बलेन नाथ, तव अपकर्म्मे। पापेते जन्मिल पुत्र, मरिल अधर्म्मे
अञ्जनार बचने पवन पड़े लाजे। जगतेर प्राण आमि धरि कोन् काजे १७
जगते त हइ आमि जीवनेर निधि। पुत्र मरे आमार कौतुक देखे बिधि
बिधाता करिल सृष्टि करि बड़ आश। स्वर्ग-मर्त्य आदि आमि करिब बिनाश १८

लाख योजन है। एक ही छलाँग से पवन-नन्दन वहाँ पहुँच गये। जन्म होते ही वह बालक आकाश में चढ़ गया और असीम साहस से सूर्य को पकड़ने चला ।। १० ।। उसी दिन सूर्यग्रहण लगनेवाला था। सूर्य को निगलने हेतु राहु वेग से चला आ रहा था। हनुमान को देखकर राहु डर के मारे भाग चला। उसने सारी बात इन्द्र से बतायी ।। ११ ।। इन्द्र, तुमने भला मेरा अधिकार किसे दे दिया ? पता नहीं सूर्य को निगलने के लिए यह कौन आया है ? राहु की बात सुनकर इन्द्र संत्रस्त हो उठे। सूर्य को निगलने की इच्छा यह किसने की है ? ।। १२ ।। इन्द्र हाथ में वज्र ले ऐरावत पर चढ़कर सूर्य के निकट आये और वहाँ हनुमान को देखा। सुमेरु पर्वत से भी बढ़कर विशाल शरीर वाले हनुमान को देखकर इन्द्र भय से अस्थिर हो उठे ।। १३ ।। ऐरावत का मस्तक लालहिंगुल में मंडित था। उसे देख हनुमान हर्षित हो उठे। सूर्य को छोड़ वे ऐरावत को पकड़ने चले। इन्द्र तब क्रोध से वज्र हाथ में ले उठ पड़े ।। १४ ।। क्रोधित होकर देवराज इन्द्र अपने को भूल गये और बिना किसी अपराध के हनुमान के सिर पर वज्र से आघात किया। हनुमान वज्राघात से पीड़ित हुए। वे अचेत होकर मलय-पर्वत पर गिर पड़े ।। १५ ।। उन्हें गिरा देख अंजना के प्राण मानो उड़ गये। वह हनुमान को गोद में ले व्याकुल होकर रोने लगी। अंजना, 'पुत्र-पुत्र, कहकर रुदन करने लगी। तभी वहाँ पवन-देवता आ पहुँचे ।। १६ ।। अंजना ने कहा— नाथ, आपके अपकर्म के कारण पुत्र पाप से जन्मा और अपकर्म से ही मरा ! अंजना के वचन से पवन लाज में पड़ गये। (वे सोचने लगे) मैं भला जगत के प्राण किस प्रयोजन से धारण करूँ ? ।। १७ ।। संसार में तो

वहे श्वास पवन से लोकेर जीवन। पवन रोधिल अचेतन त्रिभुवन
स्थावर जङ्गम आदि मरे यत जीवी। अचेतन मुनि सब सकल पृथिवी १९
अचेतन इन्द्र आदि सकल देवता। सृष्टि नाश हय देखि चिन्तित विधाता
मलय-पर्व्वते ब्रह्मा आसिया सत्वर। बलेन, पवन, शुन आमार उत्तर २०
सृष्टि सृजिलाम आमि बहुतर क्लेशे। हेन सृष्टि नाश कर, युक्ति ना आइसे
पवने सृजिनु आमि लोकेर जीवन। श्वासेते पवन वहे एइ से कारण २१
हेन वायु रोध करि मारिला जगत। आपनि मरिबे बुझि, कर सेइ मत
आत्मा राख, सृष्टि राख, शुनह उत्तर। चारि युगे पुत्र तव हइवे अमर २२
शुनिया ब्रह्मार कथा पवनेर हास। रुद्ध छिल पवन, से करिल प्रकाश
आपना प्रकाश यदि करिल पवन। स्वर्ग-मर्त्य-पाताल उठिल त्रिभुवन २३
विधाता बलेन, शुन कहि देवगण। हनूमाने आशीर्व्वाद करह एखन
सर्व्व-अग्रे यम बले आमि दिनु वर। आमाहैते नाहि तव मरणेर डर २४
देवता वरुण वर दिलेन तखन। ना हबे आमार जले तोमार मरण
अग्नि बले, हनूमान, दिलाम ए वर। अग्निते ना पुड़िवे तोमार कलेवर २५

मैं जीवन-निधि हूँ। मेरा पुत्र मर गया है, और विधाता कौतुक से देख रहा है। विधाता ने बड़ा आशा से इस संसार की सर्जना की थी। अब मैं स्वर्ग, मर्त्य आदि का विनाश कर डालूँगा ।। १८ ।। जो साँस वहती है, वही पवन संसार का जीवन है। पवन ने उसे रोक दिया, इससे त्रिभुवन अचेतन हो गया। स्थावर, जंगम आदि जितने भी जीवधारी हैं, मरने लगे। सारे मुनि और सारी पृथ्वी अचेतन हो गई ।। १९ ।। इन्द्र आदि सारे देवता अचेत हो गये। सृष्टि का विनाश हुआ देख विधाता चिन्तित हो उठे। ब्रह्मा तुरन्त मलयपर्वत पहुँचे। बोले— पवन, मेरा उत्तर सुनो! ।।२०।। मैंने अनेक कष्ट से इस सृष्टि की सर्जना की है। ऐसी-सृष्टि को तुम नाश कर डालो, इसका कोई औचित्य तो समझ में नहीं आता। पवन द्वारा मैंने लोकों के जीवन की सर्जना की है। साँसों में जो पवन बहता है, उसका यही कारण है ।। २१ ।। ऐसी वायु को रोककर तुम जगत को मार रहे हो। यह संसार तो स्वयं मरनेवाला है ही, ऐसा समझकर, उसके अनुसार काम करो। मेरा उत्तर सुनो, तुम आत्मा को बचाओ, सृष्टि को बचाओ। तुम्हारा पुत्र चारों युगों में अमर रहेगा ।। २२ ।। ब्रह्मा की बात सुनकर पवन हँसने लगे। जो पवन रुका हुआ था, उसे प्रकट कर दिया। जब पवन ने अपने को प्रकट कर दिया, तब स्वर्ग-मर्त्य-पाताल त्रिभुवन सचेत हो उठे ।। २३ ।। विधाता ने कहा, देवगण सुनो, तुम लोग अब हनुमान को आशीर्वाद दो। सबसे पहले यम ने कहा— मैं वर देता हूँ, मुझसे तुम्हें मरण का डर नहीं रहेगा ।। २४ ।। देवता वरुण ने तब वर दिया— मेरे जल में तुम्हारा मरण नहीं होगा। अग्नि बोले— हनुमान, मैं यह वर देता हूँ, अग्नि में तुम्हारा कलेवर नहीं जलेगा! ।। २५ ।। जो-जो देवता जितना बल धारण करते हैं, उन सबने

यत यत देबता यतेक बल धरे। आपन आपन बल दिलेन ताहारे
इन्द्र बले, हनूमान पबननन्दन। बड़ लज्जा पाइलाम तोमार कारण २६
येइ बज्राघाते तुमि हइला अस्थिर। से बज्रसमान ह'क तोमार शरीर
ब्रह्मा बले, मारुति, तोमारे दिनु बर। मम बरे हओ तुमि अजर अमर २७
आपनि दिलेन बर, आपनि बिमर्ष। ध्याने जानिलेन, ब्रह्मशाप हबे शेषे
बर दिया देबगण गेल निज स्थान। मलय पर्ब्बते रहिलेक हनूमान २८
पितृघरे आछे बीर पर्ब्बत शिखर। नाना बिद्या मल्ल युद्ध शिखिल बिस्तर
पड़िबारे गेल बीर भार्गबेर स्थाने। चारि बेद मल्ल युद्ध शिखे चारि दिने २९
पड़ाइते नारे, गुरु तारे घृणा करे। कुपिया भार्गब मुनि शाप दिला तारे
बानर हइया कर गुरु के ये घृणा। बल-बुद्धि-बिक्रम से पासर आपना ३०
सेइ पापे हनूमान आपना पासरे। तेंइ पलाइयाछिल से बालिर डरे
हनूमान बीर यदि आपनारे जाने। भुवन जिनिते पारे दिनेकेर रणे ३१
अयुत बत्सर यदि करि परिश्रम। बलिते ना पारि हनूमानेर बिक्रम
राम, तुमि आपनि साक्षात् नारायण। तोमार सेबक तार कि कब कथन ३२
यत गुण धरे बीर, कि कहिते पारि। श्रीराम बिदाय देह देशे गति करि
दुइ बर्ष धरि पूर्ब्ब बृत्तान्त कहिया। स्वदेशे गेलेन मुनि बिदाय लइया ३३

हनुमान को अपना-अपना बल दान किया। इन्द्र बोले, पवननन्दन हनुमान! तुम्हारे कारण मुझे बड़ा लज्जित होना पड़ा ।। २६ ।। जिस वज्र के आघात से तुम अस्थिर हो उठे थे, तुम्हारा शरीर उसी वज्र-समान हो। ब्रह्मा बोले, मारुति, तुम्हें मैं वर देता हूँ, मेरे वर से तुम अजर-अमर बनो ।। २७ ।। उन्होंने स्वयं वर दे दिया, पर स्वयं सोचने भी लगे। उन्होंने ध्यान लगाकर जान लिया इन्हें अन्त में, ब्रह्म-शाप लगेगा। हनुमान को वर दे देवगण अपने स्थानों को चले गये। हनुमान मलय-पर्वत पर रहने लगे ।। २८ ।। वह वीर पर्वत-शिखर पर पिता के यहाँ रहने लगे और अनेक विद्याएँ तथा मल्लयुद्ध की व्यापक शिक्षा प्राप्त की। फिर वे वीर हनुमान भार्गव के यहाँ पढ़ने गये और वहाँ केवल चार दिन में चारों वेदों तथा मल्लयुद्ध की शिक्षा प्राप्त कर ली ।। २९ ।। गुरु पढ़ा नहीं पाते थे, इस कारण हनुमान उनसे घृणा करने लगे। कुपित हो, भार्गव मुनि ने उन्हें शाप दे दिया। वानर होकर तुम गुरु से घृणा कर रहे हो, इसी कारण अपना-बल-बुद्धि-विक्रम तुम भूल जाओ! ।। ३० ।। उसी पाप के कारण हनुमान अपने को भूले रहे। इसी से वे बाली के भय से भागे थे। यदि वीर हनुमान अपने को जान ले, तो एक ही दिन के संग्राम में वे संसार को जीत सकते हैं ।। ३१ ।। दस हज़ार वर्ष परिश्रम करने पर भी हनुमान के विक्रम का वर्णन नहीं किया जा सकता। राम, तुम स्वयं साक्षात् नारायण हो! जो तुम्हारा सेवक है उसके बारे में और क्या कहें? ।। ३२ ।। वह वीर जितना गुण धारण करता है, क्या उसका वर्णन किया जा सकता है? श्री राम, अब विदा दें, मैं अपने देश जाऊँ! दो वर्ष तक पूर्व-वृत्तान्त सुनकर मुनि विदा ले अपने देश को चले गये ।। ३३ ।। रामचन्द्र ने अनेक

नाना धने पूजा राम करेन ताँहार। महा दुष्ट अगस्त्य पाइया पुरस्कार
कृत्तिबास पण्डितेर बाक्य सुधाभाण्ड। बाल्मीकि-आदेशे गाय गीत उत्तरकाण्ड ३४

ब्रह्मा कर्तृक रम्य वन गठन ओ तन्मध्ये श्रीराम-सीतार बिहार

श्रीराम करेन राज्य धर्म्म-परायण। राज्ये नाहि दुर्भिक्ष कि अकाल-मरण
श्रीराम बलेन, भरत, शुनह बचन। करह राज्येर चर्च्चा ल'ये सभाजन १
युद्ध करि अवसाद ह'येछे आमार। अन्तःपुरे रब आमि दिया राज्य-भार
किछुदिन बिश्राम करिब, आछे मन। तिनि भाइ मिलि कर प्रजार पालन २
मन दिया शुन भाइ वचन आमार। सावधाने थाकिया पालिबे राज्य भार
अन्तःपुरे रब आमि, करियाछि मने। निरन्तर साबधाने पाल प्रजागणे ३
योड़ हाते भरत करेन निबेदन। सेबक हइया राज्य करेछि पालन
चौद्द बर्ष राज्य छाड़ि करिले गमन। पादुका करिया राजा पालि प्रजागण ४
साक्षाते आपनि आछ राज्येर ईश्वर। त्रिभुवन भितरे काहारे करि डर
सुखे अन्तःपुरे तुमि थाक मनोरथे। सेवक हइया राज्य पालिबे भरते ५
भरतेर बाक्ये तुष्ट हैला रघुनाथ। आलिङ्गन दिला राम प्रसारिया हात
तिन भाइ श्रीरामे करिला प्रणिपात। अन्तःपुरे चलिलेन प्रभु रघुनाथ ६

धन देकर उनकी पूजा की। पुरस्कार पाकर अगस्त्य मुनि बड़े हर्षित हुए। कृत्तिवास पंडित का वचन अमृत-कलस है। वाल्मीकि के आदेश से उत्तरकांड का गायन करते हैं ॥ ३४ ॥

ब्रह्मा द्वारा रम्य वन-निर्माण तथा उसमें श्रीराम-सीता का बिहार

श्रीराम धर्मपरायण राज्य करते थे। उनके राज्य में दुर्भिक्ष या अकाल मरण नहीं था। श्रीराम बोले, भरत, सुनो, सभासदों के संग तुम राज्य (शासन-सम्बन्धी) चर्चा करो ॥ १ ॥ युद्ध करते-करते मुझे अवसाद आ गया है। मैं अब तुम लोगों पर राज्य-भार देकर अन्तःपुर में रहा करूँगा। मेरे मन में इच्छा है कि कुछ दिन विश्राम करूँ। तुम तीनों भाई मिलकर प्रजा का पालन करो ॥ २ ॥ भाई, ध्यान देकर मेरा वचन सुनो। तुम लोग सावधान रहकर राज्य-भार पालन करो। मैंने मन में सोचा है, अंतःपुर में रहूँ। तुम लोग निरंतर सावधान रहकर प्रजाजनों का पालन करो ॥ ३ ॥ हाथ जोड़कर भरत ने निवेदन किया, मैं सेवक बनकर राज्य का पालन करता रहा हूँ। आप चौदह वर्ष राज्य छोड़कर वन में चले गये थे। मैंने आपकी चरण-पादुका को राजा बनाकर प्रजाजनों का पालन किया है ॥ ४ ॥ अब राज्य के ईश्वर आप जब साक्षात् सामने हैं, तब फिर त्रिभुवन में मैं किससे डरूँ? अपनी मनोकामना के अनुसार आप सुखपूर्वक अन्तःपुर में रहिये, सेवक बनकर यह भरत राज्य का पालन करता रहेगा ॥ ५ ॥ भरत के वचनों से रघुनाथ संतुष्ट हुए। राम ने हाथ फैलाकर भरत को आलिंगन किया। तीनों भाइयों ने

अन्तःपुरे गेला राम हरषित-मन । सीता करिलेन राम-चरण-वन्दन
राम बले, शुन सीता आमार वचन । लङ्कापुरे यथा स्वर्ण-अशोक-कानन ७
देव-कन्या ल'ये रावण तथा केलि करे । ताहार अधिक पुरी रचिब सुन्दरे
तुमि आमि ताहे केलि करिब दु'जन । नाना वर्ण पुष्प वृक्ष करिब रोपण ८
रघुनाथेर आनन्दे ब्रह्मा पुलकित । डाक दिया विश्वकर्म्मे आनिला त्वरित
ब्रह्मा बले, विश्वकर्म्मा, कर अवधान । रामेर अशोक-वन करह निर्माण ९
ब्रह्मार वचने विश्वकर्म्मा हरषित । अयोध्या नगरे आसि हैल उपनीत
वसि आछे रघुनाथ हरषित-मन । हेनकाले विश्वकर्मा बन्दिल चरण १०
ब्रह्मा पाठाइया दिल मोरे तवस्थान । सोनार अशोक वन करिते निर्म्माण
मने मने विश्वकर्म्मा करेन युकति । निर्म्माये अशोक-बन जन्माइ-पिरीति ११
सोनार अशोक वन करिल निर्म्माण । देखिते सुन्दर बड़ हैल सेइ स्थान
सुवर्णेर वृक्ष सब फल फुल धरे । मयूर मयुरी नाचे भ्रमर गुञ्जरे १२
सुललित पक्षिरब शुनिते मधुर । नाना वर्ण पक्षी डाके आनन्दे प्रचुर
विकशित पद्मबन शोभे सरोबरे । राजहंस गण आसि तथा केलि करे १३
सरोवर चारि पार्श्वे सुवर्णेर गाछ । केलि करे जल-जन्तु नाना वर्ण माछ
मणि-माणि क्यते बाँन्धा यत वृक्ष गुंड़ि । स्थाने स्थाने स्थापियाछे रत्नमय-पीँड़ि १४

रामचन्द्र को प्रणाम किया। प्रभु रघुनाथ इसके पश्चात् अन्तःपुर में चले गये ॥ ६ ॥ रामचन्द्र प्रसन्न मन से अन्तःपुर में चले गये। वहाँ सीता ने राम की चरण-वंदना की। राम ने कहा— सीता, मेरा वचन सुनो। लंकापुरी में जैसा कि स्वर्ण-मय अशोक-वन था ॥ ७ ॥ देवकन्याओं के संग रावण वहाँ केलि करता था, मैं उससे अधिक सुन्दर पुरी का निर्माण करूँगा। वहाँ तुम और मैं दोनों जन केलि करेंगे। और वहाँ नाना वर्णों के फूलों के वृक्ष लगायेंगे ॥ ८ ॥ रामचन्द्र के आनन्द से ब्रह्मा भी पुलकित हुए। उन्होंने तुरंत विश्वकर्मा को बुलवाया। ब्रह्मा ने कहा, विश्वकर्मा, ध्यान से सुनो। रामचन्द्र के लिए अशोक-वन का निर्माण करो ॥ ९ ॥ ब्रह्मा के वचन सुन विश्वकर्मा हर्षित हुए और अयोध्या नगरी में आ पहुंचे। वहाँ रघुनाथ हर्षित-मन बैठे हुए थे। तभी विश्वकर्मा ने आकर उनके चरणों की वन्दना की ॥ १० ॥ वे बोले, सोने का अशोक-वन निर्माण करने हेतु मुझे ब्रह्मा ने आपके पास भेजा है। मन ही मन विश्वकर्मा ने यह युक्ति सोची कि अशोक-वन निर्माण कर मैं रामचन्द्र के मन में प्रीति उत्पन्न करूँगा ॥ ११ ॥ विश्वकर्मा ने सोने के अशोक-वन का निर्माण किया। वह स्थान देखने में बड़ा ही रमणीय हो गया। सभी सुवर्ण के वृक्षों में फल-फूल खिले रहते थे। वहाँ मोर-मोरनियाँ नाचते थे, भौंरे गुंजारते थे ॥ १२ ॥ वहाँ पक्षियों का सुललित स्वर सुनने में मधुर था। नाना वर्ण के अनेक पक्षी अति आनन्द से चहकते थे। सरोवरों में विकसित कमल के वन सुशोभित थे। वहाँ राजहंस गण आकर केलि किया करते थे ॥ १३ ॥ सरोवरों के चारों ओर सोने के वृक्ष लगे थे। उनमें जल-जन्तु और विविध वर्णी मछलियाँ

चन्द्रोदय हय येन आकाश-उपरे। तेमनि उद्यान-शोभा पुरीर भितरे
बिश्वकर्म्मा निर्म्माइल अशोक-कानन। त्रिभुवन जिनि स्थान अति सुशोभन १५
अशोक-कानन देखि राम हैला सुखी। प्रवेश करेन ताहे लइया जानकी
अशोकेर वृक्षतले चलिलेन रङ्गे। जानकीरे ल'ये तथा बसान उत्सङ्गे १६
शत शत बिद्याधरी सीतार ये दासी। नाना रूपे सेबा करे रघुनाथे तुषि
सीता-रूप देखि राम हरषित मने। सीतारे तोषेन राम मधुर-बचने १७
विद्याधरी गण एल अप्सरा विमला। प्रथम यौबना तारा जिनि शशिकला
बिद्याधरी गण आछे श्रीरामेर पाशे। सीतारे देखिया राम अन्ये नाहि भाषे १८
प्रथम यौबना सीता लक्ष्मी-स्वरूपिणी। त्रैलोक्य जिनिया रूप भुबन-मोहिनी
एत रूप दिया तारे सृजिला बिधाता। कांचा स्वर्ण-बर्ण रूपे आलोकरे सीता १९
देखिया सीतार रूप जुड़ाय ये आँखि। चन्द्रानन रामचन्द्र, सीता चन्द्रमुखी
पूर्ण-अबतार राम सीता मनोहरा। चन्द्रेर पाशेते येन शोभा पाय तारा २०
आनन्दे आछेन राम सीता-सम्भाषणे। राजकर्म्म एड़ि केलि करे रात्रि दिने
सीतार सेबाय राम सदा तुष्ट मति। शचीर सेबाय यथा तुष्ट शचीपति २१

केलि करती थीं। वृक्षों के तने मणि-रत्नों से मढ़े हुए थे। स्थान-स्थान पर रत्नमय चबूतरे बने थे ॥ १४ ॥ आकाश में जैसा कि चन्द्रोदय होता है, उसी प्रकार पुरी में वह उद्यान शोभित होता था। विश्वकर्मा ने अशोक-वन का निर्माण किया। वह स्थान त्रिभुवन में सबसे बढ़कर अत्यन्त सुशोभन था ॥ १५ ॥ उस अशोक-वन को देख रामचन्द्र सुखी हुए। जानकी को लेकर उन्होंने उसमें प्रवेश किया। बड़ी प्रसन्नता से वे अशोक वृक्ष के नीचे चले और बड़े उत्साह से वहाँ जानकी को ले जाकर बिठाया ॥ १६ ॥ सैकड़ों विद्याधरियाँ सीता की दासियाँ थीं। वे सभी रघुनाथ को संतुष्ट करती हुई नाना प्रकार से सेवा करती थीं। सीता का रूप देखकर राम मन में हर्षित हुए। मधुर-वचनों से रामचन्द्र ने सीता को तुष्ट किया ॥ १७ ॥ वहाँ विद्याधरियाँ आयीं, विमला अप्सराएँ आयीं। वे नवयुवतियाँ शशि-कला से बढ़कर सुन्दरी थीं। विद्याधरियाँ श्रीराम के पास रहती थीं, परन्तु रामचन्द्र सीता को देख दूसरे से संभाषण नहीं करते थे ॥ १८ ॥ नवयौवना सीता लक्ष्मी-स्वरूपिणी थीं। उनका रूप तीनों लोकों में सबसे बढ़कर था। वे भुवन-मोहिनी थीं। विधाता ने उनको इतना रूप देकर सर्जन किया था। विशुद्ध स्वर्ण के समान वर्ण तथा रूप वाली सीता सबको आलोकित करती थीं ॥ १९ ॥ सीता का रूप देख आँखें ठंडी हो जाती थीं। रामचन्द्र का मुखमंडल चन्द्रमा-सा था, सीता चन्द्रमुखी थी। राम पूर्ण अवतार थे, सीता मनोहरा थीं। मानो चन्द्रमा के पास तारा सुशोभित हो रहा हो ॥ २० ॥ सीता से संभाषण करते हुए रामचन्द्र बड़े आनन्द में थे। राज-कर्म (दूसरों पर) छोड़कर दिन-रात केलि किया करते थे। सीता की सेवा से राम सदा संतुष्ट रहते जैसे शची की सेवा से शचीपति इन्द्र संतुष्ट रहते

एक-एक दिने सीता एकेक मुर्ति धरे। एक दिन अन्य रूप बिष्णु भाण्डिबारे
सात हाजार वर्ष राम सीता देवी सङ्गे। छय ऋतु बञ्चन करेन नाना रङ्गे २२
निदाघ कालेते चैत्र बैशाख ये मासे। आनन्दे डुबेन राम केलि रङ्ग-रसे
बिकसित पद्म शोभे चारि सरोबरे। मधुलोभे नलिनीते भ्रमर गुञ्जरे २३
रौद्रेते पृथिबी पुड़े, रबि ये प्रबल। सीतार सङ्गेते राम सदा सुशीतल
बरषा देखिया राम परम कौतुकी। जल-जन्तु कलरब, तृषित चातकी २४
प्रमत्त मयूर नाचे मयूरीर सङ्गे। अशोक बनेते राम बञ्चिलेन रङ्गे
सीतार सङ्गेते राम परम उल्लासे। बरषा हइल गत शरत् प्रकाशे २५
आसिया शरत्ऋतु प्रकाश हइल। निर्म्मल चन्द्रमा आर कुमुद फुटिल
कुटिल केतकी देखि अति-सुशोभन। छाडिल बरसा डाक, शरत्-गर्ज्जन २६
मन्द मन्द बरिषण, बायु बहे धीरे। आनन्देते शरत् बञ्चिला रघुबरे
कार्त्तिके हेमन्त ऋतु बरिषे सघने। हिममय बरिषण अशोकेर बने २७
सुरङ्ग नारङ्ग फल बिस्तर सुन्दर। नारिकेल आदि यत फल बहुतर
परम हरषे आर सुखेते बिशेष। एइरूपे श्रीरामेर हेमन्तेर शेष २८
शिशिर-उदये हैल प्रबल ये शीत। शीतकाल पेये राम परम-पिरीत
दिने दिने मलिन हइल शशधर। रजनी प्रबल हैल अति भयङ्कर २९

हैं ॥ २१ ॥ प्रतिदिन सीता नये-नये रूप धारण करतीं। विष्णु (रूपी रामचन्द्र) के मनोरंजन के लिए किसी दिन कोई दूसरा ही रूप ले लेतीं। सीतादेवी के संग रामचन्द्र सात हजार वर्ष छहों ऋतुओं में अनेक प्रकार के आनन्द करते हुए बिताये ॥ २२ ॥ चैत-बैशाख महीने के ग्रीष्मकाल में रामचन्द्र केलि-रंग-रस में तल्लीन रहते। चारों सरोवरों में खिले हुए कमल शोभित रहते! कमल पर मधु-लोभी भौंरे गुंजारते थे ॥ २३ ॥ सूर्य के प्रखर होने से धूप से धरती जलती रहती पर सीता के संग रहते हुए रामचन्द्र सदा सुशीतल रहते। वर्षा को देखकर राम परम प्रसन्न हुए। जल-जन्तुओं और प्यासी चातकी का कोलाहल होने लगा ॥ २४ ॥ प्रमत्त मयूर मयूरी के संग नाचने लगा। राम ने प्रसन्नता से अशोक-वन में वर्षा बितायी! सीता के संग रामचन्द्र परम उल्लास में रहे। वर्षा बीती, शरद्-ऋतु प्रकाशित हुई ॥ २५ ॥ शरत्-ऋतु प्रकट हुई! निर्मल चन्द्रमा उगा और कुमुद खिल उठे। कुटिल (काँटों वाली) केतकी अति सुन्दर दिखाई देने लगी। वर्षा ने अपनी झड़ी बन्द कर दी, शरद् गर्जना करने लगा ॥ २६ ॥ शरद्काल में मंद-मद वर्षा होती, वायु धीरे बहती। इस प्रकार रघुपति राम ने आनन्द से शरद्काल बिताया। कार्तिक महीने में हेमन्त ऋतु आयी। अशोक वन में हिममय सघन वर्षा होने लगी ॥ २७ ॥ सुन्दर रंग वाले (सुन्दर प्रचुर) नारंगी फल तथा नारियल आदि अनेक प्रकार के बहुत से फल परिपूर्ण थे। इस प्रकार परम हर्ष और विशेष सुख से श्रीराम का हेमन्त बीता ॥ २८ ॥ शिशिर ऋतु के आने पर शीत प्रबल हो गया। शीतकाल आने पर रामचन्द्र परम संतुष्ट हुए। दिनोंदिन चन्द्रमा मलिन होने लगा। रातें प्रबल

देखि कोटि सूर्य्य तेज धरे रघुबीर। दूरे गेल शीत, राम बञ्चिला शिशिर
उदित बसन्त ऋतु सर्व्व ऋतु-सार। कौतुक-सागरे राम करेन बिहार ३०
फुटिल अशोक ये माधबी नागेश्बर। प्रमत्त मयूर नाचे, गुञ्जरे भ्रमर
परम कौतुकी राम देखि ऋतुराज। केलि रस बिना तार नाहि किछु काज ३१
एइ रूपे दोँहे सात हाजार बत्सर। रात्रिदिन केलि रसे थाके निरन्तर
पञ्चमास गर्भ हैल सीतार उदरे। कौतुके श्रीराम किछु जिज्ञासे सीतारे ३२
गर्भबती हैले, किबा खेते अभिलाष। कोन् द्रव्य खाबे, सीता करह प्रकाश
लाजे हेँट माथा करे सीता चन्द्रमुखी। संसारेर द्रव्ये अभिलाष नाहि देखि ३३
एक द्रव्य खेते मोर हइयाछे मन। एकदिन आज्ञा पेले याइ तपोबन
यमुनार कोले श्राद्ध करे मुनिगणे। खाइताम से तण्डुल मुनिकन्या सने ३४
मुनिपत्नी संगे येताम स्नान करिबारे। हंस खेदाड़िया पिण्ड खाइताम तीरे
योगी ऋषि मुनि तथा करे पिण्ड दान। हंसेते भांगिया पिण्ड करे खान खान ३५
सत्य करियाछि आमि मुनिपत्नी-स्थाने। देशे गेले सम्भाष करिब तोमा सने
एइ सत्य पालिबारे देह त मेलानि। नाना धने तुषिब से मुनिर रमणी ३६
सीतार कथाय राम बिस्मित ये मने। कालि दिब मेलानि, याइते तपोबने

और अति भयंकर हो उठीं ॥ २९ ॥ यह देख रामचन्द्र ने करोड़ों सूर्यों का तेज धारण किया। शीत दूर चला गया। इस प्रकार रामचन्द्र ने शीत बिताया। इसके पश्चात् सर्व-सुख-सार वसन्तऋतु का आगमन हुआ। रामचन्द्र आनन्द-सागर में विहार करने लगे ॥ ३० ॥ अशोक, माधवी, नागेश्वर आदि फूल खिल उठे। मतवाले मयूर नाचने लगे, भौंरे गुंजारने लगे। ऋतुराज वसन्त को देखकर रामचन्द्र परम कौतुकी हो उठे। केलि-रस के सिवा उन्हें और कोई काम नहीं था ॥ ३१ ॥ इस प्रकार दोनो सात हजार वर्ष दिन-रात केलि रस में निरंतर तल्लीन रहे। सीता के उदर में पाँच महीने का गर्भ था। रामचन्द्र ने कुछ कौतुक वश सीता से पूछा ॥ ३२ ॥ तुम गर्भवती हुईं। क्या कुछ खाने की अभिलाषा है ? सीता, तुम कौन-सी वस्तु खाओगी, मुझसे प्रकट करो। तब चन्द्रमुखी सीता ने लाज के मारे सिर झुका लिया। बोलीं— सांसारिक द्रव्यों में मेरी कोई अभिलाषा नहीं है ॥ ३३ ॥ एक चीज खाने की मेरी इच्छा है, यदि आज्ञा मिले तो एक दिन तपोवन में जाऊँ। मुनिगण यमुना की गोदी (तट) पर श्राद्ध किया करते हैं। मैं मुनिकन्याओं के साथ वहीं चावल खाया करती थी ॥ ३४ ॥ मैं मुनि-पत्नियों के संग स्नान करने वहाँ जाया करती थी। उन हंसों को खदेड़कर मैं उन्हें खाया करती थी योगी ऋषि-मुनि वहाँ पिंड-दान किया करते। हंस उन पिंडों को तोड़कर टुकड़े-टुकड़े कर डालते थे ॥ ३५ ॥ मैंने मुनि-पत्नियों को वचन दिया है कि अपने देश लौट जाने पर भी तुम लोगों से वार्ता करूँगी। इस सत्य का पालन करने हेतु मुझे अनुमति दें। मैं विविध धन देकर मुनि-पत्नियों को तुष्ट करूँगी ॥ ३६ ॥ सीता की बात पर रामचन्द्र मन में विस्मित हुए। बोले— कल तपोवन में जाने हेतु मैं तुम्हें अनुमति दूँगा ॥

श्रीरामेर सीता-विषयक जनापवाद-श्रवण

एतेक आश्वास राम दिलेन सीतारे। सात हाजार बत्सरान्ते आइला बाहिरे १
सहस्र बृहन्व बाहि आइला यखन। पात्र-मित्र काणाकाणि करिछे तखन
राबणेर घरे सीता छिला दशमास। हेन सीता ल'ये राम करेन विलास २
हेन काले आसि राम बाहिर चौतारा। देयाने बसिला राम सभाखण्ड पूरा
पात्र-मित्र भय पेये करे काणाकाणि। सीता-निन्दा रघुनाथ शुनिला आपनि ३
सीता-निन्दा शुनि राम त्रासित अन्तरे। सीतादेवी ना जानेन थाकि अन्तःपुरे
धर्म्म-राज्य कैल बड़ दशरथ बाप। नाना सुख भुञ्जे लोक, ना जाने सन्ताप ४
आमि राजा हैते हे के आछे केमन। राज्य-व्यवहार किछु कह पात्रगण
एतेक जिज्ञासे राम सभार भितर। निःशब्द हइल लोक ना देय उत्तर ५
भद्र-नामे महापात्र उठे आचम्बिते। रामेर सम्मुखे कथा कहे योड़ हाते
पात्र से दुर्म्मुख बड़, कारे नाहि भय। निष्ठुर हइया कथा राम अग्रे कय ६
पात्र बले, रघुनाथ, कर अबधान। रघुबंशे आछि आमि पात्रेर प्रधान
सर्व्वलोके चिन्ते प्रभु तोमार कल्याण। तोमार प्रसादे राज्ये नाहि असम्मान ७
दशरथ राजार राजत्व येइ काले। सुवर्णेर पात्र प्रजा नित्य नित्य फेले
एखन फेलिछे पात्र दिनेक अन्तर। निर्धन ह'तेछे राज्य शुन रघुबर ८

श्रीराम का सीता-विषयक जनापवाद सुनना

रामचन्द्र ने सीता को यह आश्वासन दिया। सात हज़ार वर्ष बाद वे बाहर आये ॥१॥ हज़ारों बहिर्द्वारों को पारकर जब वे बाहर आये तब मित्र-सामन्त आदि आपस में कानाफूसी कर रहे थे। रावण के यहाँ सीता दस महीने रहीं। ऐसी सीता को लेकर राम विलास कर रहे हैं ॥ २ ॥ उसी समय रामचन्द्र बाहर के आँगन में आये। वे राजसभा में बैठे, सारे सभासद भी वहाँ बैठे। मंत्री-सामन्त आदि भयभीत हो आपस में कानाफूसी करने लगे। सीता की निन्दा रघुनाथ ने स्वयं सुनी ! ॥ ३ ॥ सीता की निन्दा सुनकर रामचन्द्र अन्तर् में संत्रस्त हुए। सोचने लगे— सीतादेवी तो अन्तःपुर में रहकर यह सब नहीं जानतीं। उन्होंने कहा, पिता दशरथ ने बड़े धर्मपूर्वक राज किया था। लोग (उनके राज्य में) नाना सुख भोगते थे; सन्ताप कैसा होता है, नहीं जानते थे ॥ ४ ॥ मेरे राजा होने पर कौन कैसे हैं, हे मंत्रीगण, राज्य-व्यवहार कुछ सुनाइये। जब राजसभा में रामचन्द्र ने ऐसा पूछा तो लोग मौन रह गये। कोई उत्तर नहीं दिया ॥ ५ ॥ भद्र नाम का महामंत्री अकस्मात् उठ खड़ा हुआ। वह हाथ जोड़कर रामचन्द्र से कहने लगा। वह मंत्री बड़ा दुर्मुख अनियंत्रित वचन बोलनेवाला था। वह किसी से नहीं डरता था। निष्ठुरता से रामचन्द्र के सम्मुख वह कहने लगा— ॥ ६ ॥ वह मंत्री बोला— रघुनाथजी, सुनिये। मैं रघुवंश के मंत्रियों में सबसे प्रधान हूँ। सभी लोग आपकी कल्याण-चिन्ता ही करते हैं। प्रभु,

श्रीराम बलेन, केन निर्धन संसार। राजा ह'ये करिलाम कोन अबिचार
राजार पुण्येते प्रजा बञ्चे अति सुखे। नृपतिर पापे प्रजा थाके अति दुखे ९
भद्र बले, रघुनाथ, कहिते ये नारि। पात्र ह'ये अधिक कहिते भय करि
श्रीराम बलेन, भद्र, ना हओ चिन्तित। ये पात्र निर्भये कह, सेइ से उचित १०
योड़ हाते कहे भद्र, करिया प्रणाम। एक निबेदन मोर शुन प्रभु राम
भद्र बले, रघुनाथ, याइ यथा तथा। सर्व्वलोके कहे प्रभु सीतार बारता ११
देबासुर युद्ध-मत हइयाछे रण। सीता उद्धारिला राम मारिया रावण
दोष ना बुझिया सीता आनियाछे घर। निर्म्मल कुलेते कालि दिला रघुबर १२
ये नारी कोलेते करि लइल राक्षसे। राखियाछे सेइ नारी निज गृह बासे
एइ अपयश तब सर्व्वजन घोषे। तोमार सम्मुखे केह नाहि कय त्रासे १३
एत यदि कहे भद्र पात्र से दुर्म्मुख। बज्राघात पड़े येन रामेर सम्मुख
रामेर निकटे छिल यत पात्रगण। श्रीराम बलेन, कह यथार्थ बचन १४
पाइया रामेर आज्ञा बले पात्रगण। या कहिल भद्र प्रभु, से सत्य बचन
शुनिया श्री रघुनाथ छाड़ेन निःश्वास। गाहिल उत्तरकाण्ड कवि कृत्तिवास १५

आपके प्रसाद से राज्य में कोई असम्मान नहीं होता ॥ ७ ॥ जब राजा दशरथ का राज था, प्रजाजन सुवर्ण के पात्रों को नित्य फेंक दिया करते थे। अब तो एक दिन के अन्तर से फेंका करते हैं। रघुवर, सुनिये, राज्य निर्धन होता जा रहा है ॥ ८ ॥ श्रीराम बोले— संसार निर्धन क्यों हो रहा है? राजा बनकर मैंने कौन-सा अन्याय किया है? राजा के पुण्य से ही प्रजा अति सुख से दिन बिताया करती है। नृपति के ही पाप से प्रजा अति दुःख में रहती है ॥ ९ ॥ भद्र बोला, रघुनाथ, वह बात कही नहीं जाती। मंत्री होने के कारण अधिक कहने में डर लगता है। श्रीराम बोले, भद्र, चिन्तित न होओ। जो मंत्री है उसे तो निर्भयता से, (सब कुछ) कहना ही उचित है ॥ १० ॥ हाथ जोड़ प्रणाम कर भद्र बोला— प्रभु राम, मेरा एक निवेदन सुनें! भद्र बोला— रघुनाथ, मैं जहाँ-तहाँ जाया करता हूँ। प्रभु, सभी लोग सीता के बारे में ही कहा करते हैं ॥ ११ ॥ (राम-रावण में) देवासुर-युद्ध की भाँति संग्राम हुआ। रामचन्द्र ने रावण को मारकर सीता का उद्धार किया। दोष न समझकर सीता को वे घर ले आये। रघुवर ने निर्मल कुल में कलंक लगाया है ॥ १२ ॥ जिस नारी को राक्षस गोद में उठाकर ले गया था, उसी नारी को अपने गृह-वास में लाकर रखा है। सभी लोग आपका यह अपयश फैलाते हैं। आपके सम्मुख त्रास के मारे कोई नहीं कहता ॥ १३ ॥ उस दुर्मुख मंत्री भद्र ने जब इतना कहा— तो राम के सम्मुख मानो वज्राघात पड़ा। राम के सम्मुख और जो मंत्री थे, उनसे श्रीराम ने कहा—आप लोग यथार्थ वचन कहिये ॥ १४ ॥ रामचन्द्र की आज्ञा पाकर मंत्रियों ने कहा— प्रभु, भद्र ने जो कहा है, वह वचन सत्य है। यह सुनकर श्रीरघुनाथ ने लम्बी साँस ली। कवि कृत्तिवास उत्तरकांड का गायन करते हैं ॥ १५ ॥

सीतार अपवाद

पात्र-मित्र सबाकारे दिलेन मेलानि । अभिमाने श्रीरामेर चक्षे झरे पानि
निदाघ-समय, रबि अति खरतर । सरोवरे स्नान-हेतु यान रघुबर १
एकेश्वर यान, केह नाहिक सहित । सरोवर कूले गिया हैल उपनीत
पर्ब्बत जिनिया सेइ सरोबर-पाड़ । चारि धारे शोभिछे बिचित्र फुल-झाड़ २
दक्षिणे रजक वस्त्र काचे स्वर्ण-पाटे । स्नान हेतु चले राम उत्तरेर घाटे
अङ्ग डुबाइया राम शिरे ढाले पानि । द्वन्द्व हय राजकेर शुनेन काहिनी ३
दुइ जने कथा कहे श्वशुर जामाइ । एइ दुइ जन बिना केह आर नाइ
श्वशुर वलिछे तुमि कुलेते कुलीन । सर्व्वगुण-धर तुमि धोपेते धुपिन ४
निज गोत्र-प्रधान आछिल तव पिता । धनी-मानी देखि तोरे दिलाम दुहिता
किवा दोष करे कन्या, मार कोन् छले । आमार वाटीते कन्या एल रात्रि काले ५
एकेश्वरी एल कन्या, बड़ पाइ भय । पितृगृहे युवकन्या शोभा नाहि पाय
एत यदि जामातारे वलिल श्वशुर । वाक्छले जामाता से बलिछे प्रचुर ६
ये कथा कहिले तुमि कहिते ना पारि । थाकुक तोमार गृहे तोमार झियारी
द्वितीय प्रहर निशि, केह नाहि साथी । काहार आश्रये कालि बञ्चिलेक राति ७

सीता का अपयश

रामचन्द्र ने मंत्री-बांधव सबको विदा दे दी। अभिमान से श्रीराम के नेत्रों से आँसू झरने लगे। ग्रीष्मकाल का समय था, सूर्य अत्यन्त प्रखरता से तप रहा था। रामचन्द्र सरोबर में स्नान करने हेतु चले ॥ १ ॥ वे अकेले ही चले, उनके संग कोई न था। वे सरोवर के तट पर जा पहुँचे। उस सरोवर का किनारा पर्वत से बढ़कर ऊँचा था। उसके चारों ओर विचित्र फूलों की झाड़ियाँ सुशोभित थीं ॥ २ ॥ दक्षिणी ओर एक धोबी सोने के पाट पर कपड़े धो रहा था। अतः रामचन्द्र स्नान हेतु उत्तर के घाट पर चले। सरोवर में अपने शरीर को डुबोये रखकर रामचन्द्र अपने सिर पर पानी ढालने लगे। उधर धोबियों में झगड़ा हो रहा था, रामचन्द्र उनकी कहानी सुनने लगे ॥ ३ ॥ ससुर और जमाई दोनों बातें कर रहे थे। वहाँ उन दोनों के सिवा और कोई न था। ससुर कह रहा था— तुम कुलीन कुल वाले हो। तुम सर्व-गुणधर हो। धोबियों में श्रेष्ठ हो ॥ ४ ॥ तुम्हारे पिता अपने गोत्र-प्रमुख थे। धनी-मानी देखकर ही मैंने तुम्हें अपनी कन्या दी थी। मेरी कन्या ने कौन-सा दोष किया, उसे किस बहाने मारते हो ? रात को कन्या हमारे घर चली आयी ॥ ५ ॥ कन्या अकेली आ गयी, उससे हमें बड़ा डर लगा। युवा-कन्या का पिता के घर में रहना शोभा नहीं देता। जमाई से जब ससुर ने यह बात कही तो उसी बात के बहाने वह जमाई बहुत बढ़-बढ़कर बातें कहने लगा ॥ ६ ॥ तुमने जो बात पूछी, वह

पृथिवीर राजा राम संबरिते पारे। रावण हरिल सीता, फिरि आने घरे
राम हेन नाहि आमि पृथिबीर पति। ज्ञाति-बन्धु खोँटा दिबे, अमि हीन जाति ८
श्वशुर घरे ते गेल शुनिया बचन। थाकिया उत्तर घाटे शुने नारायण
भद्र यत बलिल, रामेर मने लय। श्रीराम भाबेन, भद्र वाक्य मिथ्या नय ९
रजकेर मुखे शुनि निष्ठुर बचन। घटे चलिलेन राम बिरस-बदन
मनेते भाबेन राम अनेक बिषाद। सीता ल'ये पड़े हेथा आर परमाद १०
पञ्च मास गर्भ आछे सीतार उदरे। जाये-जाये एकठाँइ बसेछेन घरे
सीतार माथाय केह दितेछे चिरुणी। सीतारे जिज्ञासा करे यतेक रमणी ११
सीतारे चाहिया बले यत नारीगण। दशमुण्ड कुड़ि हस्त केमन रावण
तोमाल'ये लङ्का पुरे करेछे दुर्गति। भूमिते लिखह, तार मुण्डे मारि लाथि १२
सीता बले, से छारे ना देखि कोन काले। छाया मात्र देखियाछि सागरेर जले
तथापि जिज्ञासा करे यत नारीगण। जलेते देखेछ छाया केमन रावण १३
रावण लिखिते सीता मने कैल साध। विधिर निर्ब्बन्ध हेथा पड़िल प्रमाद
हाते खड़ि धरे सीता दैबेर निर्ब्बन्ध। दश मुण्ड कुड़ि हस्त लिखे दशस्कन्ध १४
गर्भबती नारी हाइ उठे सर्ब्ब क्षण। सदाइ अलस सीता भूमिते शयन
सुखेर सागरे दुःख घटाय विधाता। नेतेर अञ्चल पाति शुइलेन सीता १५

पहर बीत गया था, उसके संग कोई साथी भी न था। तो कल किसके आश्रय में उसने रात बितायी ? ॥ ७ ॥ संसार के राजा राम इसे सह सकते हैं। रावण सीता को हर ले गया, वे उसे लौटाकर घर ले आये। हम तो राम-जैसे संसार के अधिपति नहीं हैं। हम तो हीन जाति के हैं। हमें तो आत्मीय जन ताने देंगे ॥ ८ ॥ जमाई की बात सुनकर ससुर घर लौट गया। उत्तर के घाट पर रहकर नारायण राम ने यह सुना। भद्र ने जो कुछ कहा था, राम के अन्तर ने उसे सही माना। श्रीराम ने सोचा, भद्र की बात मिथ्या नहीं है ॥ ९ ॥ धोबी के मुँह से निष्ठुर वचन सुनकर राम उदास होकर घर चले। राम के चित्त में बड़ा विषाद हो रहा था। वे सोच रहे थे— सीता को लेकर यहाँ प्रमाद फैला हुआ है ॥ १० ॥ सीता के उदर में पाँच महीने का गर्भ था। सभी घर में इकट्ठी बैठी हुई थीं। कोई कोई सीता के बालों में कंघी कर रही थी। सीता से सभी नारियाँ बातें पूछ रही थीं— ॥ ११ ॥ सीता की ओर देखती हुई उन नारियों ने कहा— दस सिरों बीस हाथों वाला वह रावण कैसा था ? तुम्हें लंकापुरी में ले जाकर उसने दुर्गति की, धरती पर (उसका चित्र) बना दो, उसके सिरों पर हम लात मारेंगी ॥ १२ ॥ सीता बोली, उस दुष्ट को तो मैंने कभी देखा न था। केवल सागर के जल में उसका प्रतिबिम्ब ही देखा था। तथापि नारियों ने पूछा— रावण कैसा था, उसकी छाया तो तुमने जल में देखी है ॥ १३ ॥ तब सीता के मन में रावण (का चित्र) बना देने की इच्छा हुई। परन्तु विधि-निर्बन्ध से वहाँ संकट उपस्थित हो गया। हाथ में खड़िया लेकर दैवयोग से दस सिरों बीस हाथों वाले रावण (का चित्र) बनाने लगीं ॥ १४ ॥ तब गर्भवती

भाविते भाविते राम यान अन्तःपुरी। रामे देखि बाहिर हइल यत नारी
सीता पार्श्वे देखे राम रावण लिखन। सत्य अपयश मम करे सर्व्वजन १६
पड़िया आमार हाते जन्म गेल दुःखे। तवु उच्च वचन नाहिक सीता-मुखे
साधे कि सीतारजन्य लोके करे वाद। सीतात्यागी हब आमि आर नाहि साध १७
सीतारे देखिया राम आसिला वाहिरे। मनोदुःखे ताँहार नयने अश्रु झरे
सत्यहेतु मम पिता त्यजेन आमाय। सत्य कार्य्य करि यदि, लोके शोभा पाय १८
सीता सम रूप गुण कोथाओ ना शुनि। रूप गुण देखि तारे नादिनु सतिनी
सीता लागि वलिलेन पिता दशरथे। आपनि आसिया ब्रह्मा दिला हाते हाते १९
देशे आनिलाम सीता करिया आश्वास। हेन सीता लागि लोके करे उपहास
उपहास करे लोक, सहिते ना पारि। डाक दिया रघुनाथ आनिला दुयारी २०
दुयारी डाकिया राम वलेन वचन। झाँट आन शत्रुघ्न, भरत, लक्ष्मण
पाइया रामेर आज्ञा से द्वारी सत्वर। तिन जने आनि दिल रामेर गोचर २१
तिन भाइ आसिया वन्दिल श्रीचरण। तिन भाये ल'ये युक्ति करेन तखन
ये कर्म्म करि लज्जा पाय सभा भाग। आमा सवाकार युक्ति करि परित्याग २२

नारी थीं, निरन्तर जम्हाइयाँ आ रही थीं। सदा आलस्य के कारण सीता भूमि पर ही शयन करती थी। विधाता सुख के सागर में दुःख उत्पन्न कर देता है। अपना रेशमी आँचल बिछाकर सीता वहीं सो पड़ी। १५ इधर राम सोचते हुए अन्तःपुर में आये। राम को आये देख सभी नारियाँ बाहर चली गयीं। राम ने देखा, सीता के पास ही रावण (का चित्र) बना हुआ है। (उन्होंने सोच लिया) मुझ पर सच्चा अपयश ही लगा रहे हैं ॥ १६ ॥ हमारे हाथ में पड़कर सीता को आजन्म दुःख भोगना पड़ा है। तथापि सीता के मुँह से कभी ऊँचे स्वर से वचन नहीं निकला! लोग क्या किसी साध से सीता की बदनामी कर रहे हैं? मैं अब सीता को त्याग दूंगा। (सीता के लिए) अब मेरी कोई साध नहीं रही ॥ १७ ॥ सीता को देखकर राम बाहर निकल आये। मनोवेदना से उनके नेत्रों से आँसू झर रहे थे। (वे सोच रहे थे) सत्य-रक्षा हेतु पिता ने मुझे त्यज दिया था। यदि मैं सत्य कर्म करूँ तो वह लोक में शोभित होगा ॥ १८ ॥ सीता के जैसा रूप-गुण कहीं सुना नहीं जाता, उसके रूप-गुण देखकर मैं उसपर दूसरी सौत नहीं लाया। सीता की शुद्धता के बारे में पिता दशरथ ने बताया था, स्वयं ब्रह्मा ने आकर मेरे हाथों सौंपा था ॥ १९ ॥ मैं आश्वस्त होकर सीता को अपने देश ले आया। ऐसी सीता के लिए लोग मेरा उपहास कर रहे हैं। लोग उपहास करें, ऐसी बात मैं सह नहीं सकता। रघुनाथ ने द्वारपाल को पुकार कर बुलाया ॥ २० ॥ द्वारपाल को बुलाकर रामचन्द्र ने यह वचन कहा— शीघ्र भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न को बुलाओ। राम का आदेश पाकर द्वारपाल तुरंत उन तीनों को रामचन्द्र के समीप बुला लाया ॥ २१ ॥ तीनों भाइयों ने आकर रामचन्द्र के श्रीचरणों की वन्दना की। तब रामचन्द्र तीनों भाइयों के साथ परामर्श

श्रीराम बलेन, आर ना बल उत्तर। सीता लागि लज्जा पाइ सभार भितर
मोर अपयश यत, नारीर कारण। अकीर्ति हइले वर्जि तोमा तिन जन २३
आमार बचन शुन भाइ रे लक्ष्मण। सीता ल'ये राख गिया मुनि-तपोबन
बाल्मीकिर तपोवन ख्यात चराचरे। देशेर बाहिरे सीता राख ल'ये दूरे २४
कालि सीता बलिलेन आमारे आपनि। नाना रत्ने तुषिब से मुनिर ब्राह्मणी
एइ कथा कह गिया प्राणेर लक्ष्मण। रामेर आज्ञाय तुमि चल तपोबन २५
एकथा कहिले तांर पड़िबेक मने। सीता याबे आपनि मुनिर तपोबने
शीघ्र याह लक्ष्मण आमार कर हित। रथे तुलि ल'ये याह सुमन्त्र-सहित २६
तुमि आर सीतादेवी सुमन्त्र सारथि। आर येन कोन जन ना याय संहति
एत यदि निष्ठुर कहिला रघुनाथ। तिन भायेर मुण्डे येन पड़े बज्राघात २७
हाहाकार करि लक्ष्मण छाड़ये निःश्वास। कि दोषे सीतारे तुमि दिबे बनबास
तुम स्वामी थाकिते हइबे अनाथिनी। केमने बञ्चिबे बने ह'ये राज राणी २८
बिना दोषे सीतारे ना देह मनस्ताप। रघुबंश नष्ट हबे, सीता दिले शाप
देशेर बाहिर नाहि कर सीता-स्त्री। सीता छाड़ा हैले हबे हत-लक्ष्मी-श्री २९

करने लगे। जिस कर्म के कारण सभा को लज्जित होना पड़े, हम सबको उचित है कि उस (कर्म) का त्याग ही कर दें! ॥ २२ ॥ श्रीराम बोले, तुम लोग और कोई उत्तर न देना। हमें सीता के कारण सभा में लज्जित होना पड़ता है। मुझपर जो अपयश लगाया जाता है, वह नारी के कारण है। अपयश होने पर मैं तो तुम तीनों को भी परित्याग कर सकता हूँ ॥ २३ ॥ भाई लक्ष्मण, मेरा वचन सुनो। तुम सीता को ले जाकर मुनि के तपोवन में रख आओ। वाल्मीकि मुनि का तपोवन चराचर-विख्यात है। सीता को देश से बाहर ले जाकर वहीं दूर रख दो ॥ २४ ॥ कल सीता ने स्वयं मुझसे कहा था— वह नाना रत्नों से मुनियों की ब्राह्मणियों को तुष्ट करना चाहती है। प्राणप्रिय लक्ष्मण, तुम जाकर सीता से यही बात कहो, राम की आज्ञा से तुम तपोवन चलो ॥२५॥ यह बात कहते ही सीता को याद हो आयेगी। सीता स्वयं मुनि के तपोवन में जायेगी। लक्ष्मण, तुम शीघ्र जाओ, मेरा हित करो। सुमंत्र सहित तुम सीता को रथ पर चढ़ाकर ले जाओ ॥ २६ ॥ तुम, सीता और सारथी सुमंत्र के सिवा और कोई तुम्हारे साथ न जाये। तब रघुनाथ के ऐसे निर्मल वचन कहने पर मानो तीनों भाइयों के सिर पर वज्राघात हो गया ॥ २७ हाहाकार कर लक्ष्मण लम्बी साँसें लेने लगे। किस दोष से आप सीता को वनवास देंगे? आप जैसे पति के रहते क्या वह अनाथिनी बनेगी? जो राजरानी है, वह वन में कैसे रह सकेगी? ॥ २८ ॥ बिना दोष से सीता को मनस्ताप न दें। सीता यदि शाप दे तो रघुवंश नष्ट हो जायेगा। सीता जैसी पत्नी को देश से बाहर न करें। सीता से विहीन होने पर लक्ष्मी-श्री विनष्ट हो जायेगी ॥ २९ ॥ रघुनाथजी, यदि सीता का परित्याग करना ही चाहते

यदि रघुनाथ, सीता करिबे बर्ज्जन। भिन्न गृहे राख सीता एइ निबेदन
श्रीराम बलेन, भाइ, ना कर बिषाद। सीता गृहे थाकिले, हइबे अपबाद ३०
दिलाम आमार दिब्य, कर परिहार। सीतार लागिया केन कह बार बार
श्रीरामेर कथाय लक्ष्मणे लागे भय। सुमन्त्र आनिया तबे कथा बार्त्ता कय ३१

सीतार बनबास

रथ सह सुमन्त्रेरे राखिया दुयारे। लक्ष्मण प्रबेश करे सीतार आगारे
अश्रुजले लक्ष्मणेर सर्ब्ब-अङ्ग तिते। लक्ष्मणे देखिया परिहास करे सीते १
आइस देवर, आजि बड़ शुभदिन। एबे हे देबर तुमि हये'छ प्रबीण
चौद्द बर्ष एकत्रेते बञ्चिलाम बने। राज्यश्री पाइया तुमि पासरिले मने २
कहियाछि कत मन्द कथा अबिनय। ते कारणे देबर हे, हयेछ निर्द्दय
बैसह निकटे तुमि, सीतादेबी बले। बार्त्ता कह देबर हे, आछत कुशले ३
तोमा ना देखिया सदा पोड़े मम मन। उत्तर ना देह केन बिरस-बदन
लक्ष्मण बलेन, यत बल अनुचित। तोमा दरशने, मम आछये निश्चित ४
राजार महिषी तुमि, थाक अन्तःपुरे। सेबक आदेश-बिना आसिते कि पारे
सीतारे प्रणाम करि बन्दिला चरण। भाग्य फले पाइलाम तोमार दर्शन ५

हैं तो यही निवेदन है कि उन्हें अन्य गृह में रखें। श्रीराम बोले— भाई, विषाद न करो। सीता यदि घर में रहे तो कलंक और निन्दा होती ही रहेगी ॥ ३० ॥ मैं अपनी शपथ देता हूँ, यह सब बात कहना छोड़ दो। सीता के लिए तुम बार-बार क्यों कहते हो ? श्रीराम की बातों से लक्ष्मण को डर लगा। तब उन्होंने सुमंत्र को बुलाकर बात की ॥ ३१ ॥

सीता का बनवास

रथ समेत सुमंत्र को द्वार पर रखकर लक्ष्मण ने सीता के भवन में प्रवेश किया। आँसुओं से लक्ष्मण का सारा शरीर भीग रहा था। लक्ष्मण को देख सीता परिहास करने लगीं ॥ १ ॥ देवर, आओ, आज तो बड़ा ही शुभ दिन है। देवर, अब (इतने दिन पर) तुम प्रवीण बने हो। चौदह वर्ष एक संग हमने वन में बिताये। अब राज्यलक्ष्मी पाकर तुम मन से भूल ही गये ॥ २ ॥ तुमसे कितनी बुरी बातें उद्दंडता से मैं कहा करती थी। उसी कारण देवर, तुम निर्मम हो गये हो। देवी सीता बोली— तुम निकट बैठो। देवर, समाचार बताओ, तुम सकुशल तो हो न ? ॥ ३ ॥ तुम्हें बिना देखे मेरा मन सदा संतप्त रहता है। तुम उत्तर क्यों नहीं देते ? तुम्हारा चेहरा क्यों उदास है ? लक्ष्मण बोले— तुम जो कहती हो, अनुचित है। मैं तो तुम्हारा दर्शन निश्चित रूप से करना चाहता हूँ ॥ ४ ॥ तुम राजा की महारानी हो, अंतःपुर में रहती हो, सेवक क्या आदेश के बिना आ सकता है ? लक्ष्मण ने सीता को प्रणाम कर चरण-वंदना की। बोले— सौभाग्य से आज तुम्हारा दर्शन मिला है ॥ ५ ॥

आशीर्व्वाद करि कहे सीता-ठाकुराणी। कि कारणे अन्तःपुरे आइला आपनि
अकस्मात देबर हे, केन आगमन। मनते बिस्मित हैनु ना जानि कारण ६
लक्ष्मण बलेन, माता, कर अवधान। श्रीरामेर आज्ञाय आइनु तब स्थान
कालि तुमि कहियाछ राम-बिद्यमाने। साक्षात् करिते यावे मुनिपत्नी सने ७
आइलाम तव स्थाने एइ से कारण। मम सङ्गे चल वाल्मीकिर तपोबन
मणि रत्न धन लह येबा लय चिते। नाना रत्न लये आसि उठ दिव्य रथे ८
एत शुनि जानकीर हइल उल्लास। स्वरूप कहिले तुमि किम्बा उपहास
लक्ष्मण बलेन देबी, बुझह आपनि। तोमा दु'जनार कथा आमि किसे जानि ९
कहिते एमन कथा के साहस करे। परिहास करिते तोमारे केबा पारे
इहा शुनि सीतादेबी चलिला भाण्डारे। नाना रत्न आनिलेन अति यत्न करे १०
हीरा-मणि माणिक्येर आभरण आनि। लइला चन्दन-गन्ध सीता-ठाकुराणी
नाना रत्न अलङ्कार सीतादेबी ल'ये। पट्ट बस्त्रे बान्धिलेन आनन्दित ह'ये ११
बहुमूल्य धन ल'ये सीतादेबी नड़े। परम कौतुके सीता रथे गिया चड़े
हेन काले जानकीरे बलेन लक्ष्मण। तुमि आमि सुमन्त्र-सारथि तिन जन १२
आछये रामेर आज्ञा याव गुप्तवेशे। बाल-वृद्ध-युबा केह नाहि जाने देशे
सीता सङ्गे येते चाहे अनेक रमणी। सबारे आश्वास देन सीता-ठाकुराणी १३

देवी सीता ने उन्हें आशीर्वाद देकर पूछा— तुम आप ही अंतःपुर में किसलिए आये ? देवर, अचानक यहाँ तुम्हारा आगमन क्यों हुआ ? कारण समझ न पाकर मैं मन-मन में विस्मित हो रही हूँ ।। ६ ।। लक्ष्मण बोले, माता, सुनो, मैं श्रीराम के आदेश से तुम्हारे यहाँ आया हूँ। कल तुमने श्रीरामचन्द्र से कहा था कि मुनि-पत्नियों से भेंट करने जाना चाहती हो ।। ७ ।। उसी कारण तुम्हारे पास आया हूँ। मेरे संग वाल्मीकि के तपोवन को चलो। इच्छानुसार मणि-धन-रत्न आदि ले लो। विविध रत्नों को ले आकर दिव्य रथ पर सवार होओ ।। ८ ।। यह सुनकर जानकी को बड़ा उल्लास हुआ। बोली— क्या तुम सत्य कहते हो, या उपहास करते हो ? लक्ष्मण बोले— देवी, तुम स्वयं समझो। तुम दोनों में जो वार्ता हुई थी, उससे मैं कैसे जान सकता था ।। ९ ।। तुमसे ऐसी बात कहने का साहस कौन कर सकता है ? तुमसे परिहास भी कौन कर सकता है ? यह सुनकर देवी सीता भंडार में गयीं और बहुत यत्न से नाना प्रकार के रत्न ले आयीं ।। १० ।। हीरा-मणि-रत्नों के आभूषण लाकर, देवी सीता ने चन्दन-गन्ध आदि प्रसाधन भी ले लिये। विविध रत्न-आभूषण लेकर देवी सीता ने बड़ी प्रसन्नता से उन्हें रेशमी बस्त्रों में बाँधा ।। ११ ।। बहुमूल्य धन लेकर सीतादेवी चलीं और परम आनन्द से चलकर रथ पर सवार हो गयीं। इसी समय लक्ष्मण ने जानकी से कहा— तुम, मैं और सारथी सुमंत्र ये तीन व्यक्ति ही ।। १२ ।। गुप्त-वेश में जायेंगे। हमारे जाने की बात जैसे देश का कोई बालक-वृद्ध-युवा जान न पाये। रामचन्द्र की ऐसी ही आज्ञा है। अनेक नारियाँ सीता के संग जाना चाहती थीं। महारानी सीता ने उन सभी को आश्वासन दिया ।। १३ ।। तुम लोग

सीता संबरिया सबे थाक निज घरे। मुनि-पत्नी प्रणमिया आसिब सत्वरे
रथेते चड़िल सीता परम-हरषे। घरे चलि गेल सबे सीतार आश्वासे १४
सीता-रूपे आलोकरे द्वादश-योजन। सीता-बिना अन्धकार रामेर भवन
दुर्ब्बल हइल लोक, छाड़े राजलक्ष्मी। राज्य खण्डे अमङ्गल हइतेछे देखि १५
नदी स्रोत छाड़े, लोक छाड़िल आहार। दिवस दुपुरे हैल घोर अन्धकार
सूर्य्येर किरण छाड़े पृथिबी मण्डल। सीतार बिदाय देखि वृक्ष छाड़े फल १६
भरत-शत्रुघ्न आछे रामेर निकटे। लक्ष्मण सीतारे लये याइल कपटे
सीता बले, आजि केन देखि अमङ्गल। नाहि जानि आमि रघुनाथेर कुशल १७
शाशुड़ीरे ना कहिनु आसिबार काले। मनोदुःख बुझि ताँर हैल सेइ फले
बामेते देखेन सर्प, शृगाल दक्षिणे। अमङ्गल देखि सीता कहेन लक्ष्मणे १८
लक्ष्मण, अशुभ नाना देखि केन पथे। ना याब अयोध्या फिरे, हेन लयचिते
लक्ष्मण सीतार वाक्ये हेँट कैल माथा। रामेर भयेते किछु ना कहिल कथा १९
अधोमुखे कान्दे शुधु चक्षे वहे पानि। उत्तर ना करे बीर सीता-वाक्य शुनि
सीता कन, केन तव बिरस-बदन। देशे फिरे याब, रथ चालाओ लक्ष्मण २०
आपनि विदाय लब प्रभुर चरणे। तबे से याइब बाल्मीकिर तपोबने
लक्ष्मण बलेन, देबि, ना हओ व्याकुल। देख एइ आइलाम यमुनार कूल २१

अपनी ममता को संयत रखकर घर में ही रहो। मैं तो मुनि-पत्नियों को प्रणाम कर शीघ्र ही लौट आऊँगी। सीता परम हर्ष से रथ पर सवार हुईं। सीता के आश्वासन से सारी नारियाँ घर में चली गयीं ॥ १४ ॥ सीता का रूप बारह योजन तक आलोकित कर रहा था। सीता के बिना राम का भवन अंधकारमय हो गया। लोक दुर्बल हो गया। राजलक्ष्मी ने घर छोड़ दिया ॥ १५ ॥ राज्यखंड में अमंगल होता देख नदियों ने धारा छोड़ दी; लोगों ने भोजन छोड़ दिया, दिन-दोपहर को घोर अँधेरा छा गया। सूर्य-किरणों ने पृथ्वी-मंडल को छोड़ दिया। सीता को विदा लेते देख, वृक्षों ने फलना छोड़ दिया ॥ १६ ॥ भरत और शत्रुघ्न राम के पास रहे। लक्ष्मण बहाने बनाकर कपट से सीता को ले चले। सीता बोली— आज ये असगुन क्यों देख रही हूँ? रघुनाथजी कुशल से हैं या नहीं, पता नहीं ॥ १७ ॥ आते समय मैं सास जी से भी कुछ कह नहीं आयी। संभवतः उस दुःख से उनके मन में भी कष्ट हुआ है। सीता ने अपने बायीं ओर साँप और दाहिनी ओर सियार देखा। इन अमंगल के सूचकों को देखकर सीता लक्ष्मण से कहने लगी— ॥ १८ ॥ लक्ष्मण, मार्ग में ये नाना प्रकार के अशुभ किसलिए देख रही हूँ? मन में ऐसी आशंका हो रही है कि अब फिर अयोध्या लौट नहीं सकूँगी! सीता की बात सुन लक्ष्मण ने सिर झुका लिया। राम के भय से उन्होंने कुछ नहीं कहा ॥ १९ ॥ वे सिर झुकाये रहे, कातरता के कारण केवल आँखों से आँसू झरते रहे। सीता की बात सुन वीर लक्ष्मण ने कुछ उत्तर नहीं दिया। सीता बोली— लक्ष्मण, तुम्हारा मुखमंडल उदास क्यों है? चलो, हम देश लौट चलें, लक्ष्मण (उधर) रथ चलाओ ॥ २० ॥ मैं स्वयं चलकर प्रभु के

बिधिर निर्ब्बन्ध कर्म्म खण्डन ना याय। ए कूले राखिया रथ दोँहे चड़े नाय
पार ह'ये यान बाल्मीकिर तपोबन। आगे सीतादेबी यान पश्चाते लक्ष्मण २२
कान्दितेछे लक्ष्मण मनेते पेये भय। लक्ष्मणेर क्रन्दनेते सीता भीत हय
कि दुःख हइल मने देबर लक्ष्मण। कि-कारणे उच्चैःस्वरे करिछ क्रन्दन २३
लक्ष्मण कहेन, कब केमन साहसे। रामेर आज्ञाय तोमा आनि बनबासे
महात्रास पान सीता शुनिया काहिनी। श्राबणेर धारा-सम चक्षे झरे पानि २४
एत दूरे आसि मोरे बलिले लक्ष्मण। कपटे आनिले बाल्मीकिर तपोबन
धर्म्मेते धार्म्मिक राम संसारे प्रशंसा। देशे राखि केन नाहि करिला जिज्ञासा २५
ना दिबेन देशेर मध्येते यदि स्थान। परीक्षा करिया केन कैला अपमान
यमुनाय त्यजि प्राण तोमार सम्मुखे। रघुबंशे-कलङ्क घुचुक सब्ब लोके २६
पाँच मास गर्भ मोर देख बिद्यमान। आमि मैले मरिबेक रामेर सन्तान
आमा लागि लज्जा प्रभु पाइला सभाय। बिना अपराधे त्याग करिला आमाय २७
राम हेन स्वामी होक जन्म-जन्मान्तरे। आमि मैले कोटि नारी मिलिबे ताँहारे

चरणों में बिदा लूँगी। इसके पश्चात् वाल्मीकि के तपोवन को जाऊँगी। लक्ष्मण बोले, देवी, व्याकुल न हों, देखो, हम तो यह यमुना-तट पर आ पहुँचे ॥ २१ ॥ विधि का लिखा हुआ कर्म मिटाया नहीं जा सकता। रथ को इस पार रखकर दोनों नाव पर सवार हुए। यमुना पार कर वाल्मीकि के तपोवन में पहुँचे। सीतादेवी आगे-आगे और लक्ष्मण पीछे-पीछे चले ॥ २२ ॥ लक्ष्मण मन में डरते हुए रो रहे थे। लक्ष्मण को रोते देख सीता को भय हुआ। बोलीं, देवर लक्ष्मण, तुम्हारे मन में यह कौन-सा दुःख हुआ है ? किस कारण तुम ऊँचे स्वर से रुदन कर रहे हो ? ॥ २३ ॥ लक्ष्मण बोले, मैं किस साहस से बताऊँ ? राम के आदेश से मैं तुम्हें वनवास देने ले आया हूँ। यह कथन सुनकर सीता को महान् त्रास हुआ। सावन की धारा-जैसे उनकी आँखों से आँसू झरने लगे ॥ २४ ॥ लक्ष्मण, तुमने इतनी दूर आने के बाद अब यह बात बतायी। तुम मुझे कपट से वाल्मीकि के तपोवन में ले आये ! अपने धर्म में सदा अविचल रहनेवाले धार्मिक पुरुष के रूप में संसार भर में रामचन्द्र की प्रशंसा फैली हुई है। देश में रखकर ही उन्होंने मुझसे क्यों नहीं पूछा ? ॥ २५ ॥ यदि मुझे देश में स्थान ही न देना था तो मेरी परीक्षा लेकर मेरा अपमान क्यों किया था ? मैं तुम्हारे सम्मुख ही यमुना में प्राण त्यज देती जिससे लोक में रघुवंश का जो कलंक फैला है, वह मिट जाता ॥ २६ ॥ पर देखो, अब तो मेरा पाँच महीने का गर्भ है। मेरे मर जाने पर तो राम की संतान भी मर जायेगी। मेरे कारण प्रभु को सभा में लज्जित होना पड़ा है, इसी कारण मेरा कोई दोष न होने पर भी उन्होंने मुझे त्याग दिया है ॥ २७ ॥ राम जैसे मेरे स्वामी जन्म-जन्मान्तर में हों; मेरे मरने पर उन्हें तो करोड़ों नारियाँ मिल जायेंगी। सीता का रुदन सुन लक्ष्मण कातर हो उठे। दोनों वाल्मीकि के तपोवन

सीतार क्रन्दन शुनि कातर लक्ष्मण । दु'जने बसिला वाल्मीकिर तपोबन २८
लक्ष्मण विदाय मागे करि योड़हात । कान्दिया बलेन सीता, कोथा रघुनाथ

स्वर्ण-सीता निर्म्माण

सीतादेवी राखिया लक्ष्मण वीर नड़े । कान्दिते कान्दिते वीर नाये गिया चड़े १
नौकाय हइया पार चड़िलेन रथे । कोथा राम बलि सीता लागिला कान्दिते
कान्दिते लागिला सीता हइया फाँफर । हेन काले चतुर्द्दिके देखे भयङ्कर २
चारि दिके चान सीता, देखे बनमय । शार्द्दूल भल्लुक देखि पान बड़ भय
उच्चैःस्वरे कान्दे सीता बनेर भितर । शिष्य सङ्गे आइल वाल्मीकि मुनिबर ३
सीता-वनवास पूर्व्वे रचेछेन मुनि । आसिया सीतार स्थाने जिज्ञासे आपनि
जनकेर कन्या, तुमि रामेर गृहिणी । दशरथ-बधूयारी मेदिनी-नन्दिनी ४
लोक-अपबादे राम पाइया तरास । बिना अपराधे तोमा दिला बनबास
त्रिभुबने साध्वी नाहि तोमार समान । अयोध्या काण्डेते आछे ताहार प्रमाण ५
परम आदरे सीता ल'ये यान मुनि । सीतारे राखिल ल'ये यथाय ब्राह्मणी
सीतार रूपेते तपोबन आलोकरे । मुनि-पत्नी बले, लक्ष्मी एल मोर घरे ६

में बैठ गये ॥ २८ ॥ लक्ष्मण ने हाथ जोड़कर सीता से विदा माँगी । सीता रोती हुई कहने लगी—रघुनाथ, कहाँ हो ?

स्वर्ण-सीता-निर्माण

सीतादेवी को वहीं रखकर वीर लक्ष्मण चल पडे । रोते-रोते वे वीर चलकर नाव पर सवार हो गये ॥ १ ॥ नाव से यमुना पार कर वे रथ पर सवार हो गये । 'राम, कहाँ हो' कहती हुई सीता रोने लगीं । सीता विह्वल होकर रोने लगीं । उस स्थिति में सीता को चारों ओर भयंकर दिखाई पड़ा ॥ २ ॥ सीता चारों ओर देखने लगीं, देखा, सभी ओर वन ही वन है । शार्दूल, भालू आदि को देख उन्हें बड़ा भय लगा । सीता वन में ऊँचे स्वर से रोने लगीं, तभी वहाँ शिष्यों-सहित मुनिवर वाल्मीकि आये ॥ ३ ॥ सीता-वनवास की रचना मुनि ने पहले ही की थी । अब वे सीता के समीप आकर स्वयं ही पूछने लगे— तुम जनक की कन्या, रामचन्द्र की गृहिणी, दशरथ की पुत्रवधू, धरती की कन्या हो ॥ ४ ॥ लोकापवाद के कारण रामचन्द्र ने संत्रस्त होकर बिना किसी अपराध के तुम्हें वनवास दे दिया है । त्रिभुवन में तुम जैसी साध्वी कोई नहीं है । अयोध्याकांड में ही उसका प्रमाण है ॥ ५ ॥ मुनि सीता को परम आदर से अपने यहाँ ले चले । उनकी ब्राह्मणी जहाँ थी वहाँ ले जाकर सीता को रखा । सीता के रूप से तपोवन आलोकित हो उठा । मुनिपत्नी बोली, मेरे घर में लक्ष्मी आ गयी ॥ ६ ॥ मुनिपत्नी ने जानकी का आलिंगन किया । सीता की प्रशंसा करती हुई मधुर वचन

जानकीरे मुनि-पत्नी दिला आलिङ्गन । सीतारे प्रशंसि बले मधुर बचन
शुभ दिन हैल माता एले मोर घर । तोमा दरशने मोर हरिष अन्तर ७
सीता बले, कर्म्म दोषे आमार बर्ज्जन । तोमा दरशने मोर सफल जीबन
मुनिपत्नी-सहित रहेन तपोवने । कान्दिया लक्ष्मण चले अयोध्या भुवने ८
सुमन्त्र बलेन, शुन ठाकुर लक्ष्मण । पूर्ब्बेर काहिनी मोर हइल स्मरण
वृद्ध नृपतिर कथा पड़ियाछे मने । रघुबंशे सारथि आमि याइब कानने ९
बाल्मीकि-कबिता किछु पड़े मोर मने । दशरथ यज्ञकथा शुन सावधाने
सप्तद्वीपेर यत मुनि एल सेइ स्थाने । दशरथ राजार यज्ञेर निमन्त्रणे १०
यज्ञशाले आसिबारे मुनिगण-मेला । सबे मिलि राजारे दिलेन यज्ञशाला
यज्ञफले नृपतिर चारि पुत्र हवे । सुरासुर-अमरादि सकले काँपिबे ११
सर्ब्ब गुण धरिबेक तोमार कुमार । एक अंशे चारि पुत्र बिष्णु अवतार
चारि तनयेर पिता तुमि गुणधाम । शत्रुघ्न, लक्ष्मण आर भरत-श्रीराम १२
पितृ सत्य पालिते श्रीराम यावे बन । शून्य घर पेये सीता हरिबे रावण
बान्धिया सागर राम सैन्य करि पार । रावणे बधिया सीता करिबे उद्धार १३
एगार हाजार वर्ष प्राजार पालन । सात हाजार बर्ष परे सीतार बर्ज्जन
दुर्ब्बासा आसिया द्वारे रहिबेन कोपे । लक्ष्मणे बर्जिजबे राम सेइ मुनि-शापे १४

बोली— माँ, तुम मेरे घर आयीं, इससे हमारा शुभदिन आ गया। तुम्हारे दर्शन से मेरा अन्तर् हर्षित हो उठा है ॥ ७ ॥ सीता बोली— कर्म-दोष से मुझे त्याग दिया गया है। तुम्हारे दर्शन से मेरा जीवन सफल हो गया। सीता मुनि-पत्नी के संग तपोवन में रहने लगीं। लक्ष्मण रोते हुए अयोध्या पुरी को चले ॥ ८ ॥ सुमंत्र बोला— प्रभु लक्ष्मण! सुनें! एक पूर्व-कथा मुझे स्मरण हो आयी है। हमारे बूढ़े महाराज की बात स्मरण हुई है। जब कि राम वनवास के समय मैं रघुवंश का सारथी बनकर रामचन्द्र के साथ वन में जा रहा था (महाराज दशरथ ने यह बात सुनायी थी) ॥ ९ ॥ वाल्मीकि मुनि की कविता मुझे कुछ स्मरण हो रही है। (उसमें कही गयी) महाराज दशरथ के यज्ञ में हुई वह कथा सावधानी से सुनें। महाराज दशरथ के आमंत्रण से सप्त द्वीपों के सारे मुनि वहाँ आये हुए थे ॥ १० ॥ यज्ञशाला में आने के लिए मुनियों का समूह चला। सबने मिलकर राजा दशरथ को यज्ञशाला प्रदान की। यज्ञ के फल से राजा के चार पुत्र होंगे। (जिनके बल से) सुर-असुर-अमर आदि सभी काँपेंगे ॥ ११ ॥ तुम्हारे पुत्र सर्व गुण-धारी बनेंगे। विष्णु के एक अंश से चारों पुत्र अवतार लेंगे। श्रीराम लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न चारों गुणधाम पुत्रों के तुम पिता होओगे ॥ १२ ॥ रामचन्द्र पिता के सत्य का पालन करने हेतु वन में जायेंगे। वहाँ सूना घर पाकर रावण सीता को हर लेगा। राम सागर को बाँधकर, अपनी सेना पार करेंगे, और रावण का वध कर सीता का उद्धार करेंगे ॥ १३ ॥ रामचन्द्र ग्यारह हजार वर्ष प्रजा का पालन करेंगे, सात हजार वर्ष बीतने पर वे सीता का परित्याग करेंगे। दुर्वासा क्रोधपूर्वक आकर उनके द्वार पर रहेंगे। उस मुनि के

एत शुनि महाराज हेँट कैल माथा। आमारे कहिल व्यक्त ना कर ए कथा
आमारे निषधि राजा गेल स्वर्गबास। तोमारे निकटे आमि करिये प्रकाश १५
सीतार लागिया तुमि करह क्रन्दन। तोमा हेन माये राम करिवे बर्ज्जन
पूर्व्वेर बृत्तान्त एइ कहिनु लक्ष्मण। शुनिया लक्ष्मण वीर विरस बदन १६
लक्ष्मण बलेन, तुमि कहिले संवाद। ना पारि सहिते आमि सीतार विषाद
आगे केन राम मोरे ना कैल वर्ज्जन। एड़ाताम एइ दुःख देखिते एखन १७
आपनार दुःख आमि सहिवारे पारि। सीतार यन्त्रणा आर देखिते ये नारि
एइरूप कथा वार्ता कहे दुइजन। अयोध्याय राम-काछे गेलेन लक्ष्मण १८
कान्दिते कान्दिते वीर नोयाइल माथा। श्रीराम बलेन, सीता थुये एल कोथा
आमार सन्दिग्ध मन, चञ्चल हृदय। बर्जिलाम सीता नारी लोकेर कथाय १६
मोरे छाड़ि सीता नाहि थाके एक राति। एकेला थाकिबे बने काहार संहति
राज्य-धन सिंहासन बिफल आमार। सीतार बिहने मोर सब अन्धकार २०
कोन् बने रहिलेन जानकी रूपसी। कि बलिबे शुनिले जनक महा ऋषि
कार मुख चेये सीता रवे कार पाश। सिंह-व्याघ्र देखि तार लागिवे तरास २१
कह कह कह भाइ, शुनि आरबार। कोन् बने थुये एले जानकी आमार
लक्ष्मण बलेन, तुमि करिले बर्ज्जन। आपनि बर्जिया केन करह क्रन्दन २२

शाप से रामचन्द्र लक्ष्मण को त्याग देंगे ।। १४ ।। यह सुनकर महाराज ने सिर झुका लिया। मुझसे उन्होंने कहा, यह बात तुम प्रकट न करना। मुझे कहने को मना कर महाराज स्वर्गवासी हो गये। अब मैं आप से यह प्रकट कर रहा हूँ ।। १५ ।। सीता के लिए आप रुदन कर रहे हैं, परन्तु आप जैसे भाई को भी रामचन्द्र परित्याग कर देंगे। हे लक्ष्मण, मैंने यह पूर्व-कथा आपको सुनायी। (सुमंत्र की बात) सुनकर वीर लक्ष्मण का मुख-मंडल उदास हो गया ।। १६ ।। लक्ष्मण ने कहा, तुमने संवाद तो सुना दिया, पर मैं सीता की वेदना सह नहीं पा रहा हूँ। रामचन्द्र ने पहले ही मेरा परित्याग क्यों नहीं किया ? तब तो आज यह दुःख देखने से मैं बच जाता ।। १७ ।। अपना दुःख तो मैं सह सकता हूँ पर सीता की यंत्रणा तो अब देखी नहीं जाती। लक्ष्मण और सुमंत्र दोनों इस प्रकार बातचीत करते रहे। अयोध्या पहुँचकर लक्ष्मण राम के पास गये ।। १८ ।। रोते-रोते वीर लक्ष्मण ने सिर झुकाया। श्रीराम ने कहा— तुम सीता को कहाँ रख आये ? मेरा मन संदिग्ध है, हृदय चंचल है, सीता जैसी नारी को मैंने लोगों की बात पर त्यज दिया ।। १९ ।। मुझे छोड़कर सीता एक रात भी नहीं रह पाती थी। अब वह वन में किसके संग रहेगी ? मेरा राज्य-धन-सिंहासन सब कुछ विफल है। सीता के बिना मेरा सब कुछ अंधकार है ।। २० रूपसी जानकी किस वन में रह रही है ? महा-ऋषि जनक जब यह बात सुनेंगे तो क्या कहेंगे ? सीता किसका मुँह देखकर किसके पास रहेगी ? वन में सिंह-बाघ आदि देखकर वह संत्रस्त होगी ।। २१ ।। भाई लक्ष्मण, कहो, कहो मैं पुनः सुनूँ। तुम किस वन में मेरी जानकी को रख आये ? लक्ष्मण बोले, आपने तो सीता

क्रन्दन संबर प्रभु, क्षमा देह मने। सीता थुये आइलाम बाल्मीकिर बने
यदि रघुनाथ मोरे कर आज्ञा दान। रात्रिर भितरे सीता आनि तव स्थान २३
श्रीराम बलेन, सीता, थुयेछि बाहिरे। बड़ लज्जा हवे पुनः आनिले सीतारे
सीतारे ना देखि भाइ, ना पारि रहिते। केमने सीतार शोक पासरिबे चिते २४
आमार बचन शुन भाइ तिन जन। रात्रिमध्ये स्वर्ण-सीता करह गठन
जानकी आनिले निन्दा करिबे ये लोक। देखिया सोनार सीता पासरिब शोक २५
एतेक बलिया राम करेन क्रन्दन। बिश्वकर्म्मा एलो तथा बुझि ताँर मन
शत मन सोना लये दिल ताँर स्थान। स्वर्ण-सीता बिश्वकर्म्मा करिल निर्म्माण २६
येमन सीतार रूप किछु नाहि नड़े। सबे मात्र एइ चिह्न वाक्य नाहि सरे
स्वर्ण-सीतारे पराम बस्त्र-आभरण। सुगन्धि पुष्पेर माल्य, सुगन्धि चन्दन २७
सीता सीता बलि राम डाके निरन्तर। सीता नहे, रघुनाथे के दिबे उत्तर
एक-दृष्टे चाहि रन स्वर्ण-सीता मुख। उत्तर ना पेये राम बड़ हय दुख २८
बत्सर हाजार सात सीतार संहति। स्वर्ण सीता देखिया बञ्चिला सात राति
सात राति बञ्चि राम आइला बाहिर। श्रावणेर धारा-सम चक्षे बहे नीर २९

का परित्याग कर दिया, स्वयं त्याग कर अब रुदन क्यों कर रहे हैं ? ।। २२ ।। प्रभु, रुदन बंद कीजिये, हृदय से मुझे क्षमा कर दें। मैं सीताजी को वाल्मीकि के तपोवन में रख आया हूँ। रघुनाथजी, यदि आप मुझे आज्ञा दें, तो रात के भीतर ही सीताजी को आप के समीप ला दूंगा ।। २३ ।। श्रीराम बोले, सीता को तो मैंने (देश से) बाहर रखवा दिया है। पुनः यदि सीता को ले आऊँ तो वह बड़ी लज्जा की बात होगी। भाई, सीता को बिना देखे मैं तो रह नहीं सकता। भला मेरा चित्त सीता का शोक कैसे भूले ! ।। २४ ।। तीनों भाई, तुम लोग मेरी बात सुनो, आज रात भर में सोने की सीता बनवा लो। जानकी को लाने पर तो लोग निन्दा ही करेंगे। सोने की सीता को देखकर ही मैं शोक भूला रहूँगा ।। २५ ।। इतना कहकर राम क्रन्दन करने लगे। उनके मन की भावना समझकर विश्वकर्मा वहाँ पहुँचे। उन्हें सौ मन सोना दिया गया। तब विश्वकर्मा ने स्वर्ण-सीता का निर्माण किया ।। २६ ।। सीता का जैसा रूप था उस प्रतिमा में उससे कुछ भी अन्तर न था। (वह सीता सोने की है) उसका चिह्न केवल यही था कि उससे बोली नहीं निकलती थी। उस स्वर्ण-सीता को वस्त्र और आभूषण, सुगन्धित पुष्पों की माला आदि पहनाये गये, सुगन्धित चन्दन लगाया गया ।। २७ ।। रामचन्द्र निरंतर 'सीता-सीता' कहकर पुकारने लगे। वह तो सीता न थी, भला रघुनाथ को उत्तर कौन देता ? रामचन्द्र एकटक स्वर्ण-सीता का मुख निहारते रहे। अपनी पुकार का कोई उत्तर न पाकर उन्हें बड़ा दुःख हुआ ।। २८ ।। वे सीता के संग सात हजार वर्ष रहे, स्वर्ण-सीता को देखते हुए उन्होंने सात रातें बितायीं ! सात रातें बिताकर रामचन्द्र बाहर निकले। उनके नेत्रों से सावन की धारा जैसे

भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न तिन जने। बाहिर-चौतारे राम बसिला बेओयाने
पात्र-बन्धु मित्रादि आइला राम स्थाने। शून्यमय देखे राम सीतार बिहने ३०
बिबाह करिते ताँर नाहि लय मन। सम्मुखे सोनार सीता राखे सर्व्वक्षण
पात्र-मित्र-बन्धुबर्ग बुझाय सकले। बिबाह करह राम, सकलेते बले ३१
यत यत राजकन्या आछे स्थाने-स्थान। शुनिया रामेर गुण करे अनुमान
सीता हेन नारी याय ना लागिल मने। से जनार मनोनीत हइबे केमने ३२
एइ युक्ति कन्यागण करे निरन्तर। आर बिभा ना करिबे राम रघबर
सीता सीता बलि राम छाड़िल निःश्वास। गाइल उत्तरकाण्डे कवि कृतिबास ३३

कुक्कुर ओ सन्न्यासीर बिबाद

लक्ष्मण बलेन, प्रभु, उचित ए नय। सात दिन हैल, राजकार्य्य नाहि हय
सात दिन हइयाछे सीतार बर्ज्जन। सीतार शोकेते कर्म्मे किछु नाहि मन १
राजा हैया काज कर्म्म ना करे जिज्ञासा। परिणामे नरक-भितरे हय बासा
राज्य चर्च्चा छाड़िलेन पूर्ब्बे राजा नृग। सेइ पापे नरक भुञ्जिल चारि युग २

आँसू बहते थे ॥ २९ ॥ भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न इन —तीनों के संग राम बाहर चबूतरे पर बैठे। मंत्री, कुटुम्बी, मित्र आदि राम के पास आये। परन्तु रामचन्द्र सीता के बिना सब कुछ सूना-सूना देख रहे थे ॥ ३० ॥ (दूसरा) विवाह करने को उनका मन नहीं होता था। वे स्वर्ण-सीता को निरंतर अपने सम्मुख रखते थे। मंत्री, कुटुम्बी, मित्र आदि सभी उन्हें समझाते थे, रामचन्द्र आप विवाह कर लें ॥ ३१ ॥ स्थान-स्थान में कितनी ही राज-कन्याएँ हैं, राम के गुण सुनकर वे मन ही मन अनुमान लगा रही है (कि रामचन्द्र उससे विवाह करेंगे), पर सीता जैसी नारी जिनके मन नहीं आयी भला वे कन्याएँ उनके मनोनीत कैसे हो सकेंगी ॥ ३२ ॥ कन्याएँ इस प्रकार निरंतर चर्चाएँ करती थीं कि रघुवर रामचन्द्र और विवाह नहीं करेंगे। (विवाह का सुझाव सुनकर) रामचन्द्र ने सीता-सीता कहकर साँस छोड़ी ! कवि कृत्तिवास ने उत्तरकांड की यह कथा गायन की है ॥ ३३ ॥

कुत्ते और संन्यासी का विवाद

लक्ष्मण बोले, प्रभु, यह तो उचित नहीं है। सात दिन हो गये कोई राजकार्य नहीं किया गया है। सीता को परित्याग किये हुए सात दिन हो चुके हैं। सीता के शोक से राजकार्य में मन ज़रा भी नहीं बैठता ॥ १ ॥ राजा होकर जो राजकार्य के बारे में जानकारी-पूछताछ नहीं रखता, परिणामस्वरूप उसे नरक में निवास करना पड़ता है। पूर्वकाल में राजा नृग ने राज्य-चर्चा छोड़ दी थी, उसी पाप से उसे चार युग तक नरक भोगना पड़ा था ॥ २ ॥ पुष्कर देश में नृगेश्वर नाम का राजा था।

पुस्कर देशेर राजा नाम नृगेश्वर । धर्म्मेते धार्म्मिक राजा गुणेर सागर
प्रभासेर तीरे राजा करिल गमन । एक लक्ष धेनुदाने तुषिल ब्राह्मण ३
अग्निवैश्येर धेनु एक छिल तार पाले । नृग राजा दान कैल धेनुर मिशाले
अग्निवैश्य ब्राह्मणेरे जगते बाखानि । तपे जपे ब्रह्मचर्य्ये द्विज महाज्ञानी ४
धेनुर शोकेते द्विज जर-जर तनु । नाना देशे तत्त्व करे ना पाइल धेनु
भ्रमिते भ्रमिते गेल प्रभासेर तीरे । आपनार धेनु देखे पालेर भितरे ५
धेनु देखि ब्राह्मणेर हरषित मन । जीब-बत्सा बलि मुनि डाकिल तखन
हाम्बा-रबे एल धेनु अग्निवैश्य-पाशे । धेनु ल'ये द्विजबर चलिल हरिषे ६
यारे दान दियाछिल नृग महीपाले । सेइ द्विज धाइया आइल हेन काले
अग्निवैश्य धेनु ल'ये करिछे गमन । गो चोर बलिया तारे धरिल ब्राह्मण ७
धेनु लागि बिसंबाद हैल दुइ जने । राजद्वारे महायुद्ध ब्राह्मणे-ब्राह्मणे
द्वारी गिया भूपतिरे कहिल संबाद । धेनु लागि दुइ द्विजे ह'तेछे बिबाद ८
लक्ष धेनु दान तुमि कैले येइ काले । अग्निवैश्येर धेनु एक छिल सेइ पाले
एतेक शुनिया राजा भाबिये बिषाद । अबिचारे दान क'रे पड़िल प्रमाद ९
एतेक भाविया राजा ना दिल दर्शन । राजद्वारे हुड़ाहुड़ि बिप्र दुइजन
दुइ बिप्र कोन्दल करये राजद्वारे । द्वि-प्रहर हैल, देखा ना पाय राजारे १०

वह धर्मानुरागी धार्मिक राजा गुणों का सागर था। वह राजा प्रभास के तट पर गया और एक लाख गायों का दान कर उसने ब्राह्मणों को तुष्ट किया ॥ ३ ॥ अग्निवैश्य की एक गाय उसके झुंड में थी। गायों में मिले रहने के कारण राजा नृग ने दूसरी गायों के साथ उसे भी दान कर दिया। ब्राह्मण अग्निवैश्य की प्रशंसा सारा जगत करता था। जप-तप-ब्रह्मचर्य में वह द्विज महाज्ञानी था ॥ ४ ॥ गाय के (खोने के) शोक के कारण उस द्विज का शरीर जर्जर हो गया था। विभिन्न देशों में खोज करने पर भी वह गाय नहीं मिली थी। वह घूमता हुआ प्रभास के तट पर पहुँचा। उस झुंड में उसने अपनी गाय देखी ॥ ५ ॥ गाय को देखकर ब्राह्मण का मन हर्षित हुआ। तब 'जीव-वत्सा' कहकर उसे पुकारा। हँकारती हुई वह गाय अग्निवैश्य के पास आ गयी। अपनी गाय को लेकर द्विजवर हर्षित हो चल पड़ा ॥ ६ ॥ उसी समय जिस द्विज को राजा नृग ने दान दिया था, वह द्विज दौड़ा हुआ आया। अग्निवैश्य गाय को लेकर चला जा रहा था। 'गाय-चोर' कहकर उस ब्राह्मण ने उसे पकड़ा ॥ ७ ॥ गाय को लेकर दोनों में विवाद होने लगा। ब्राह्मण-ब्राह्मण में राज-द्वार पर महायुद्ध मच गया। द्वारपाल ने जाकर राजा से समाचार कहा कि गाय के लिए दो ब्राह्मणों में विवाद हो रहा है ॥ ८ ॥ आपने जिस समय लाखों गायों का दान किया था, उस झुंड में अग्निवैश्य की एक गाय थी। यह सुनकर राजा सोचते हुए विषाद-मग्न हो गया। बिना विचार किये दान करने के कारण यह प्रमाद हो गया है ॥ ९ ॥ ऐसा सोचकर राजा उनके सामने नहीं आया। दोनों ब्राह्मण राजद्वार पर झगड़े कर रहे थे। दोपहर हो गया पर राजा

ना पाये भूपेर देखा, दोंहे हैल ताप। क्रोध भरे दुइ बिप्र भूपे दिल शाप
पर-धन-दान हेतु लागिल कोन्दल। देखा ना पाइया बिप्र छाड़े राजस्थल ११
देखा ना पाइया भूपे कहे कटूत्तर। कृकलास ह'ये थाक नरक-भितर
उभये मिलिया घरे गेलेन ब्राह्मण। प्रमाद पड़िल एत दिया परधन १२
ब्रह्मशाप नृग राजा भुञ्जे चिरकाल। ना करे राज्येर चर्च्चा एतेक जञ्जाल
राम बले जानि, शास्त्रे कहे मुनि-ऋषि। अबिचारे धर्म्म कार्य्य कैले पापराशि १३
चिरदिन तोमरा करह राज्य खण्ड। क'रेछ भूपति मोरे दिया छत्रदण्ड
एत बलि श्रीराम वसिला सभा करि। राजद्वारे लक्ष्मण बसेन ह'ये द्वारी १४
एलेन बशिष्ठ मुनि कुल-पुरोहित। कश्यप, नारद-आदि हैल उपनीत
पात्र मित्र ल'ये चर्च्चा करेन भरते। आछेन लक्ष्मण द्वारे स्वर्ण-छड़ि हाते १५
मुनिगण कहिछेन शुनह लक्ष्मण। रघुनाथ सङ्केते कराह दरशन
प्रजा सब बले, शुन ठाकुर लक्ष्मण। रामेर पालने सुखी आछे प्रजागण १६
राम हेन राजा नाहि देखि कोन युगे। पुत्र पौत्रे लोके रत आछे नाना भोगे
एत सुनि हरषित लक्ष्मण ठाकुर। हेन काले तथा एक आइल कुक्कुर १७
रक्त-आँखि कुक्कुरेर सर्वाङ्ग धवल। पथ श्रमे उपबासे ह'येछे बिकल
तिन पदे चले, तार एक पद खञ्ज। दण्डेर आघाते शिरे रक्त पुञ्ज पुञ्ज १८

से भेंट नहीं हुई ॥ १० ॥ राजा से न मिल पाने के कारण दोनों को दुःख हुआ। क्रोध से दोनों विप्रों ने राजा को शाप दे दिया। राजा ने दूसरे के धन का दान किया था, इस कारण उनमें विवाद लगा था। राजा से भेंट न होने पर दोनों राज-निवास से चले गये ॥ ११ ॥ राजा से भेंट न होने के कारण वे राजा को कटु-वचन कहने लगे— 'तू गिरगिट बनकर नरक में पड़ा रहा। इसके पश्चात् दोनों ब्राह्मण घर चले गये। इतना धन देने पर भी राजा पर ऐसा संकट आ पड़ा ॥ १२ ॥ राजा नृग चिरकाल ब्रह्मशाप भोगता रहा। राज्य की चर्चा-विचार-विमर्श न करने के कारण ही ऐसी गड़बड़ी हुई थी। राम बोले, जानता हूँ। मुनि-ऋषियों ने शास्त्रों में कहा है, बिना विचारे धर्म-कार्य करने पर महान् पाप हो जाता है ॥ १३ ॥ तुम लोग चिरकाल यहाँ राज करते रहो। (तुम्हीं ने) मुझे छत्र और राजदंड देकर राजा बनाया है। यह कहकर श्रीराम सभा जुटाकर बैठे। लक्ष्मण राजद्वार पर द्वारपाल बनकर रहे ॥ १४ ॥ कुल-पुरोहित वशिष्ठ मुनि वहाँ आये। कश्यप, नारद आदि भी उपस्थित हुए। मंत्रियों, सामन्तों के संग रामचन्द्र भरत से चर्चा करने लगे। लक्ष्मण सोने का दंड ले द्वार पर थे ॥ १५ ॥ मुनियों ने कहा— लक्ष्मण, सुनो, रघुनाथ से हमारी भेंट करवाओ। लक्ष्मण सुनो, सारी प्रजा कहती है कि राम के राज्य-पालन से वह सब सुखी है ॥ १६ ॥ राम जैसा राजा किसी युग में नहीं देखा। लोग पुत्र-पौत्र सहित अब नाना भोग भोग रहे हैं। लक्ष्मण यह सुनकर बड़े हर्षित हुए। तभी वहाँ एक कुत्ता आया ॥ १७ ॥ उस कुत्ते की आँखें रक्तवर्ण थीं, सारा अंग श्वेत था। यात्रा की थकावट और उपवास से वह विकल था। वह तीन पैरों से

तिन पदे चलिया आइल धीरे धीरे। लक्ष्मणे प्रणाम करि भासे अश्रुनीरे
कुक्कुरे जिज्ञासा करे ठाकुर लक्ष्मण। कि कारणे कुक्कुर हेथाय आगमन १९
कुक्कुर कहिल, शुन, ठाकुर लक्ष्मण। कहिब आमार दुःख श्रीराम-सदन
यदि आज्ञा देह राम घृणा ना करिया। कहिब आमार दुःख सभामध्ये गिया २०
लक्ष्मण गेलेन तबे रामेर निकटे। कुक्कुरेर वृत्तान्त कहेन कर पुटे
द्वारेते कुक्कुर एक हैल आगुसार। सभाते आसिते चाहे, कि आज्ञा तोमार २१
कुक्कुरे आनिते राम बलेन सत्वर। कुक्कुरे आनिल तबे रामेर गोचर
राज-व्यवहारे कुक्कुर नोङाइल माथा। योड़हाते स्तब करे, बले नीति कथा २२
तुमि ब्रह्मा, तुमि विष्णु, तुमि महेश्वर। कुबेर बरुण तुमि, यम पुरन्दर
तुमि चन्द्र, तुमि सूर्य्य, तुमि दिक्‌पाल। तोमार सकल सृष्टि, तुमि परकाल २३
तुमि विष्णु, अवतार ख्यात त्रिभुबने। सफल कुक्कुर-देह तोमा-दरशने
राम बले, कत स्तुति कर बारे बारे। कोन् कार्य्ये आसियाछ, कहता आमारे २४
कान्दिया कुक्कुर बले अश्रुजले भासि। बिना-अपराधे मोरे मेरेछे संन्यासी
संन्यासीर दण्डाघाते हइया कातर। तिन-उपबासे आसि तोमार गोचर २५
कोन् अपराध-हेतु मोरे करे दण्ड। संन्यासीरे जिज्ञासा करह सभाखण्ड
राम बले, सभाखण्ड, शुनिले उत्तर। संन्यासीरे आन शीघ्र आमार गोचर २६

चलता था, उसका एक पैर लँगड़ा था। लाठी के आघात से उसके सिर पर रक्त के धब्बे जमे हुए थे ।। १८ ।। वह तीन पैरों से चलता हुआ धारे-धीरे आया। लक्ष्मण को प्रणाम कर वह आँसुओं की धारा बहाने लगा। कुत्ते से लक्ष्मण ने पूछा— कुत्ते, तुम्हारा आगमन यहाँ किसलिए हुआ है ? ।। १९ ।। कुत्ता बोला— देव, लक्ष्मण, सुनें। अपना दुःख मैं श्रीरामचन्द्र से कहना चाहता हूँ। रामचन्द्र यदि मुझसे घृणा न कर आज्ञा दें, तो मैं अपना दुःख सभा में जाकर कहना चाहता हूँ ! ।। २० ।। तब लक्ष्मण राम के पास गये और हाथ जोड़कर कुत्ते का वृत्तान्त कह सुनाया। प्रभु, द्वार पर कुत्ता आया हुआ है। वह सभा में आना चाहता है, आपकी क्या आज्ञा है ? ।। २१ ।। रामचन्द्र ने तुरंत कुत्ते को ले आने के लिए कहा। तब लक्ष्मण कुत्ते को रामचन्द्र के पास ले आये। राज-सभा में व्यवहार के अनुसार कुत्ते ने सिर झुकाया। हाथ जोड़कर स्तवन करता हुआ नीति-कथा कहने लगा ।। २२ ।। तुम ब्रह्मा हो, तुम विष्णु हो, तुम महेश्वर हो, तुम कुबेर-वरुण हो, यम-पुरन्दर हो। तुम चन्द्र हो, तुम सूर्य हो, तुम्हीं दिक्‌पाल हो। सारी सृष्टि तुम्हारी है, तुम्हीं पर-काल भी हो ।। २३ ।। तुम विष्णु के अवतार त्रिभुवन-विख्यात् हो। तुम्हारे दर्शन से मेरा यह कुत्ते का शरीर सफल हो गया। श्रीराम बोले— तुम बार-बार कितनी स्तुति कर रहे हो, तुम किस कार्य से आये हुए हो, मुझसे बताओ ।। २४ ।। कुत्ते ने रोकर आँसू बहाते हुए कहा— मुझे बिना अपराध के संन्यासी ने मारा है। संन्यासी के दंड के आघात से कातर होकर मैं तीन दिन उपवासी रह तुम्हारे पास न्याय हेतु आया हूँ ।। २५ ।।

भाल मन्द बिचार करह सर्ब्बजने । संन्यासी हइया जीव-हिंसे कि कारणे
रामेर आज्ञाय दूत चलिल सत्वरे । कुक्कुर आसिया देखाइल संन्यासीरे २७
हस्ते कमण्डलु, स्कन्धे मृगचर्म्म तार । संन्यासीरे देखि दूत करे नमस्कार
संन्यासीरे ल'ये गेल यथाय लक्ष्मण । लक्ष्मण आनिया दिल रामेर सदन २८
संन्यासीरे रघुनाथ करेन जिज्ञासा । स्वधर्म्म छाड़िया केन कर जीबहिंसा
अधर्म्म करिले हय नरके निबास । क्रोधे अङ्ग परिपूर्ण, किसेर संन्यास २९
परनिन्दा, परहिंसा, परम पातक । संन्यासी हिंस्रक हैले बिषम नरक
लोभ, मोह, काम, क्रोध, येबा करे त्याज्य । एमत संन्यासी हय संसारेते पूज्य ३०
संन्यासी हइया क्रोध कर अकस्मात् । कि दोषेते कुक्कुरे करिले दण्डाघात
योड़ हाते कहे तबे संन्यासी ब्राह्मण । दोषादोष आमार शुनह नारायण ३१
सारादिन सन्ध्या जप करि गङ्गा तीरे । सन्ध्या काले भिक्षा-आशे येताम नगरे
क्षुधानले पुड़े-अङ्ग फिरि मागि भिक्षे । पथ युड़ि शुये आछे कुक्कुर सम्मुखे ३२
पथ छाड़ बलि डाक देइ उच्चैः स्वरे । कपटे रहिल, पथ ना छाड़िल मोरे
एक चक्षे निद्रा याय आर चक्षे चाय । क्रोधे ज्व'लि दण्डाघात करेछि माथाय ३३

संन्यासी से ही पूछें। श्रीराम ने कहा, सभासदगण, आप लोगों ने कुत्ते का उत्तर सुना। अब उस सन्यासी को शीघ्र मेरे सम्मुख ले आयें ॥ २६ ॥ सभी जन इसके भले-बुरे का विचार करें कि वह व्यक्ति संन्यासी होकर भी जीवहिंसा किसलिए करता है ? राम के आदेश से दूत तुरंत चल पड़ा, कुत्ते ने उसके साथ जाकर संन्यासी को दिखला दिया ॥ २७ ॥ उसके हाथ में कमंडल, कंधे पर मृग-चर्म था। संन्यासी को देखकर दूत ने नमस्कार किया। दूत संन्यासी को लेकर लक्ष्मण के वहाँ पहुँचा। लक्ष्मण ने संन्यासी को राम के निवास स्थान पर पहुँचा दिया ॥ २८ ॥ रघुनाथ ने संन्यासी से पूछा— तुम स्वधर्म छोड़कर जीव-हिंसा किसलिए कर रहे हो ? अधर्म करने पर तो नरकवास होता है। तुम्हारा अंग क्रोध से परिपूर्ण है, यह कैसा संन्यास है ? ॥ २९ ॥ पर-निन्दा, पर-हिंसा परम-पाप है। संन्यासी हिंसक हो तो उसे विषम नरक मिलता है। जो व्यक्ति लोभ, मोह, काम, क्रोध आदि त्याग देता है, ऐसा संन्यासी ही जगत् में पूजनीय होता है ! ॥ ३० ॥ संन्यासी होकर तुम अकस्मात् क्रोध करते हो। किस दोष से तुमने कुत्ते पर लाठी से प्रहार किया ? तब उस संन्यासी ब्राह्मण ने हाथ जोड़कर कहा— हे नारायण, मेरा दोष-अदोष सुनिये ॥ ३१ ॥ मैं दिन भर गंगा के तट पर संध्या और जाप करता रहता हूँ। संध्याकाल में भिक्षा की आशा से नगर में जाया करता था। मेरे अंग क्षुधा रूपी अग्नि से जल रहे थे, मैं घूम-फिरकर भीख माँग रहा था। यह कुत्ता मार्ग को घेरकर सम्मुख सोया हुआ था ॥ ३२ ॥ 'मार्ग छोड़ दे' कहकर मैंने ऊँचे स्वर से पुकारा। वह कपट से पड़ा रहा, मेरे लिए मार्ग नहीं छोड़ा। एक आँख बंद कर सो रहा था, दूसरी आँख से देख रहा था। इसी कारण क्रोध से जलकर मैंने

एइ कहिलाम आमि सभार भितरे। ये हय उचित दण्ड करह आमारे
राम बले, सभाखण्ड करह बिचार। काहार करिब दण्ड अपराध कार ३४
योड़ हात करि तबे सभाखंड कय। आमादेर बुझि साध्य मत एइ हय
राजपथ नहे कारो राज-अधिकार। उत्तम अधम पथे चले त संसार ३५
यदि शीघ्र काज थाके, याबे एक पाशे। संन्यासीर हइल दोषी आपनार दोषे
श्रीराम बलेन तबे शुन सभाखण्ड। धर्म्मशास्त्रे संन्यासीर कि करिब दण्ड ३६
योड़ हाते रघुनाथे बले सभाखण्ड। गङ्गास्नान माना करा संन्यासीर दण्ड
कुक्कुर उठिया बले सभार भितरे। कदाचित् दण्ड नाहि कर संन्यासीरे ३७
आमार बचने किछु कर पुरस्कार। कालिञ्जरे संन्यासीरे देह राज्यभार
कुक्कुरेर कथा शुनि सभाजन हासे। संन्यासीरे राजा करे कालिञ्जर-देशे ३८
राज्य पेये संन्यासी मातङ्ग पृष्ठे चड़े। राजदण्डे संन्यासीर ऐश्वर्य्य ये बाड़े
आनन्दे संन्यासी याय कालिञ्जर देशे। संन्यासीर वेश देखि सर्व्वलोके हासे ३९
परिधान कौपीन मस्तके छत्रदण्ड। रघुनाथे जिज्ञासा करेन सभाखण्ड
आनिले संन्यासी धरि दण्ड करिवारे। कि कारणे राज्य पद दिले संन्यासीरे ४०
राम बले, राज्य दिनु कुक्कुर-बचने। इहार ये बृत्तान्त कुक्कुर भाल जाने
इहा शुनि सभाखण्ड जिज्ञासे कुक्कुरे। कुक्कुर विनय करि कहिछे सत्वरे ४१

उसके सिर पर डंडे से प्रहार किया था ॥ ३३ ॥ मैंने सभा में यह बात बता दी। अब जो उचित दंड हो, मुझे दें। श्रीराम ने कहा— सभासदो, विचार करें। अपराध किसका है, दंडित किसे किया जाये ? ॥ ३४ ॥ सभासदों ने हाथ जोड़कर कहा— हमारा बुद्धि-साध्य विचार यह है, राज-मार्ग पर किसी का राज-अधिकार नहीं होता। संसार भर के लोग चाहे उत्तम हों, या अधम, मार्ग पर चला करते हैं ॥ ३५ ॥ यदि शीघ्र कोई काम रहे तो एक किनारे से होकर आगे निकल जाना चाहिए। यह संन्यासी अपने दोष के कारण दोषी बना है। श्रीराम बोले— तब सभासदगण, सुनें, धर्मशास्त्र के अनुसार इस संन्यासी को कौन-सा दंड दिया जाये ? ॥ ३६ ॥ सभासदों ने हाथ जोड़कर रघुनाथ से कहा— गंगास्नान निषेध कर देना ही संन्यासी का दंड होता है। तब कुत्ते ने उस सभा में उठकर कहा— संन्यासी को कोई दंड न दें ॥ ३७ ॥ मेरे कथनानुसार उसे कुछ पुरस्कार दे दें। इस संन्यासी को कालिंजर में राज्य-भार दे दें। कुत्ते की बात सुनकर सभासदजन हँसने लगे। संन्यासी को कालिंजर देश का राजा बना दिया गया ॥ ३८ ॥ राज्य पाकर संन्यासी हाथी की पीठ पर चढ़ा। राजदंड पाकर संन्यासी का ऐश्वर्य बढ़ गया। संन्यासी आनन्दपूर्वक कालिंजर देश को चला। संन्यासी का वेश देखकर सब लोग हँसने लगे ॥ ३९ ॥ उनके पहनावे में कौपीन और मस्तक पर छत्र-दंड था। सभासद रघुनाथ से पूछने लगे— संन्यासी को तो आप दंड देने हेतु पकड़वा मँगाये थे। किस कारण उस संन्यासी को राज-पद दे दिया ॥ ४० ॥ श्रीरामचन्द्र ने कहा— मैंने उसे कुत्ते के कथनानुसार राज्य दिया है। इसका कारण कुत्ता ही अच्छी तरह

पूर्व्व जन्मे कालिञ्जरे आमि छिनु राजा। नित्य नित्य करिताम सदाशिव-पूजा
नीलबर्ण शिवलिङ्ग तथा अधिष्ठान। राजा-बिने अन्य जने पूजिते ना पान ४२
बिशेष प्रकारे पूजा करिया शङ्करे। प्रसाद खाइते हय प्रत्यह राजारे
राजार शिबेर शाप आछये एमन। मरिले कुक्कुर-योनि ना हय खण्डन ४३
कालिञ्जर देशे शिव बड़इ निष्ठुर। राजा छिनु, एबे आमि ह'येछि कुक्कुर
पाइया कुक्कुर-देह एतेक दुर्गति। तोमा दरशने एबे हइबे निष्कृति ४४
सबे बले, संन्यासीर बाड़िल विषय। विषय ए नहे, प्रभु बड़इ संशय
कालिञ्जरे येइ जन हइबे राजन्। मरिले कुक्कुर हबे, ना हय खण्डन ४५
कुक्कुर एतेक वलि रामे नमस्कारे। बाराणसी चलिल कुक्कुर धीरे धीरे
प्राण त्यजे कुक्कुर करिया उपवास। राम-दरशने लाभ हैल स्वर्गबास ४६

शत्रुघ्न कर्तृक लवणासुर-बध

सभासने रघुनाथ बसिल येयाने। पात्र-मित्र सभाजन आछे बिद्यमाने
उपनीत लक्ष्मण रामेर बिद्यमान। प्रणिपात करि कहे श्रीरामेर स्थान १

जानता है। यह सुनकर सभासदों ने कुत्ते से पूछा। कुत्ता तुरंत विनयपूर्वक बोला— ॥ ४१ ॥ मैं पूर्वकाल में कालिंजर का राजा था। मैं नित्य सदाशिव की पूजा किया करता था। वहाँ अधिष्ठित शिवलिंग नील वर्ण का है। राजा के सिवा और कोई उसकी पूजा नहीं कर पाता ॥ ४२ ॥ विशेष प्रकार से शंकर की पूजा कर नित्य राजा को प्रसाद खाना पड़ता है। वहाँ के राजा को शिव का ऐसा शाप है कि मरने पर कुत्ते की योनि मिलने से रोका नहीं जा सकता ॥ ४३ ॥ कालिंजर देश में शिव बड़े ही निर्मम हैं। मैं वहाँ का राजा था, अब कुत्ता बना हुआ हूँ। कुत्ते का शरीर पाकर इतनी दुर्गति हुई है। अब तुम्हारे दर्शन से मुझे मुक्ति मिलेगी ॥ ४४ ॥ सबने कहा— अब तो संन्यासी का विषय-भोग बढ़ गया। प्रभु, यह विषय-भोग तो नहीं, बड़े संशय का विषय है। कालिंजर में जो राजा होगा, मरने पर वह कुत्ता बनेगा, इसका खंडन नहीं हो सकता ! ॥ ४५ ॥ कुत्ते ने यह कहकर रामचन्द्र को नमस्कार किया। वह कुत्ता धीरे-धीरे वाराणसी चला गया। कुत्ते ने उपवास कर अपने प्राण त्याग दिये। श्रीराम के दर्शन से उसे स्वर्ग में निवास प्राप्त हुआ ॥ ४६ ॥

शत्रुघ्न द्वारा लवणासुर का वध

सभासदों के साथ रघुनाथ राज-सभा में बैठे। वहाँ मंत्री, मित्र तथा दरबारी उपस्थित थे। लक्ष्मण रामचन्द्र के सम्मुख आये और प्रणाम कर श्रीराम से कहने लगे ॥ १ ॥ महामुनि भार्गव गंगा-तट पर रहते हैं। वे मुनि आपके दर्शन हेतु द्वार पर आये हुए हैं। श्रीराम

महामुनि भार्गव वैसेन गङ्गातीरे। तोमा दरशने मुनि आइलेन द्वारे
राम कहे, ज्ञाट आन, द्वारे कि कारण। बड़भाग्य आजि मम मुनि दरशन २
श्रीरामेर आज्ञा पेये लक्ष्मण-सत्वर। सशिष्य मुनिरे आने रामेर गोचर
नमस्कार करि राम बन्दिला चरण। पाद्य-अर्घ्य दिया दिला बसिते आसन ३
भार्गव बलेन, राम, कर अवधान। महादुःख निबेदिते आसि तव स्थान
पूर्ब्बे राजगणे दिनु यत यत भार। राजगण पालिल आमार अङ्गीकार ४
त्रिभुवन राखिले हे मारिया राबण। रावण हइते एक आछये दुर्ज्जन
सत्ययुगे छिल मधु दैत्येर प्रधान। हिरण्यकशिपु-पुत्र महाबलबान् ५
सदाशिव प्रिय भक्त दैत्य महाबल। शिबेर बरेते जिनेछिल भूमण्डल
जाठा एक शिव तोर दियाछेन दान। जाठार तेजेर कथा कि क'ब बाखान ६
मन्त्र पड़ि मधुदैत्य जाठा यदि एड़े। जाठा मुखे त्रिभुवन भस्म ह'ये उड़े
मधुपुत्र हइल लवण महाबल। जिनिल जाठार तेजे पृथिवी-मंडल ७
कुम्भनसी-गर्भे जन्म रावण-भागिने। ताहार समान बीर नाहि त्रिभुवने
महादुष्ट लवण से मथुराते घर। जन्मावधि महापाप करे निरन्तर ८
महाबीर मधुदैत्ये हइले पतन। ताहार से जाठागाछ पाइल लवण
लवण जाठार तेजे जिने त्रिभुवन। लवणे मारिते युक्ति करह एखन ९

बोले, उन्हें शीघ्रता से ले आओ, वे द्वार पर क्यों रुके हैं? यह मेरा बड़ा सौभाग्य है कि आज उन मुनि का दर्शन मिला ॥ २ ॥ श्रीराम की आज्ञा पाकर लक्ष्मण तुरंत मुनि को उनके शिष्यों-सहित राम के सम्मुख ले आये। रामचन्द्र ने नमस्कार कर मुनि की चरण-वंदना की। उन्हें पाद्य-अर्घ्य देकर बैठने को आसन दिया ॥ ३ ॥ भार्गव बोले, रामचन्द्र, सुनिये। हम महादुःख से आपसे यह निवेदन करने आये हैं। पहले के राजाओं को हमने जितने भार दिये, उन सब राजाओं ने हमारे वचन का पालन किया ॥ ४ ॥ आपने रावण को मारकर त्रिभुवन की रक्षा की। पर रावण की अपेक्षा भी एक और दुर्जन है। सत्य-युग में मधु, दैत्यों में प्रधान था। वह हिरण्यकशिपु का पुत्र महाबलवान् था ॥ ५ ॥ वह महाबली दैत्य सदा शिव का प्रिय भक्त था। शिव के वर से उसने भूमंडल को जीत लिया था। शिव ने उसे एक शूल प्रदान किया है। उस शूल के तेज की बात का वर्णन भला क्या करूँ? ॥ ६ ॥ मंत्र पढ़कर यदि मधुदैत्य उस शूल को छोड़े तो उसकी नोक से त्रिभुवन भस्म होकर उड़ जाये। उसी मधु दैत्य का पुत्र महाबली लवण हुआ है। उसने उस शूल के तेज से पृथ्वी-मंडल को जीत लिया है ॥ ७ ॥ उसका जन्म कुंभीनसी के गर्भ से हुआ है, वह रावण का भांजा है। उसके जैसा वीर त्रिभुवन में कोई नहीं है। मथुरा में रहनेवाला वह लवण महादुष्ट है। वह जन्म से ही निरन्तर महापाप करता रहा है ॥ ८ ॥ महावीर मधुदैत्य के मरण के पश्चात् उसका वह शूल लवण को मिला। लवण भी उस शूल के तेज से त्रिभुवन जीत चुका है। अब आप लवण को मारने का उपाय कीजिये ॥ ९ ॥ यदि लवण शूल लेकर युद्ध करने आये तो

जाठा लइया लबण आसे यदि रणे। ताहारे रणेते जिने, नाहि त्रिभुबने
लबणेर सने हबे दुर्ज्जय संग्राम। तार कथा कहि किछु शुनह श्रीराम १०
मान्धाता नामेते राजा जन्म सूर्य्यवंशे। अयोध्याय राज्य करे, त्रिभुबन शासे
इन्द्रे जिनिबारे गेल अमर-भुवन। भये इन्द्र पलाइया हैल अदर्शन ११
मान्धातार प्रति तबे कहे देवगणे। अर्द्धराज्य भोग कर पुरन्दर सने
धनेते अर्द्धेक लह ए अमरावती। इन्द्रेरे सहित याह करिया पिरीत १२
मान्धाता बलेन, चाहि करिबारे रण। इन्द्रे जिनि स्वर्ग लब शुन देबगण
राखिब पौरुष आमि पुरन्दरे जिनि। त्रिभुबने घोषे येन ए यश-काहिनी १३
देबगणे ल'ये देबराज युक्ति करे। बिना-युद्धे पाठाइब यमेर दुयारे
इन्द्र बले, शुनह मान्धाता महाराज। पृथिवी जिनिते नार बीरेर समाज १४
पृथिबी जिनिते येइ राजा नाहि पारे। लज्जा नाहि, आसियाछ स्वर्ग जिनिबारे
आछये लबण दैत्य, से बड़ कर्कश। राक्षसी-गर्भेते जन्म जातिते राक्षस १५
निष्कण्टके राज्य करे मथुरार देशे। तारे जिनि तबे स्वर्ग जिन आसि शेषे
इन्द्रेर बचने लाज पाइया मान्धाता। मनोदुःखे म्रियमान करे हेंट माथा १६
स्वर्ग छाड़ि आइल लबणे जिनिबारे। दूत पाठाइल से लबणे जानाबारे
त्वरा करि गेल दूत लबण-गोचरे। मान्धाता राजन् आसे तोमा जिनि बारे १७

उसे रण में जीत सके, ऐसा कोई व्यक्ति त्रिभुवन में नहीं है। लवण के संग दुर्जय संग्राम होगा। हे रामचन्द्र, उसके बारे में कुछ कथा सुनाता हूँ, सुनिये ! ॥ १० ॥ सूर्यवंश में उत्पन्न मान्धाता नाम का राजा अयोध्या में राज करता, त्रिभुवन पर शासन करता था। वह इन्द्र को जीतने हेतु देवलोक में गया। भय के मारे इन्द्र भागकर ओझल हो गया ॥ ११ ॥ तब देवताओं ने मान्धाता से कहा, तुम पुरन्दर के साथ आधा राज्य भोगो। धन में आधा यह अमरावती ले लो और इन्द्र से मित्रता करके जाओ ॥ १२ ॥ मान्धाता बोला— मैं तो युद्ध करना चाहता हूँ। देवगण, सुनो ! मैं इन्द्र को जीतकर स्वर्ग ले लूंगा। मैं पुरन्दर को जीतकर अपना पौरुष दिखा देना चाहता हूँ, ताकि त्रिभुवन यह कीर्ति-कथा घोषित करता रहे ॥ १३ ॥ तब इन्द्र ने देवताओं के साथ परामर्श किया। हम युद्ध किये बग़ैर इसे यम के दरवाजे भेज देंगे। इन्द्र ने कहा, मान्धाता महाराज, सुनिये ! पृथ्वी पर रहनेवाले वीरों के समाज को भी तुम जीत नहीं सके हो ॥ १४ ॥ जो राजा पृथ्वी को जीत नहीं सकता, वही तुम हो ! तुम्हें लज्जा नहीं कि स्वर्ग जीतने हेतु आये हो ? लवण नाम का एक बड़ा कठोर दैत्य है। राक्षसी के गर्भ से वह जन्मा है, जाति से भी वह राक्षस है ॥ १५ ॥ वह मथुरा देश में निष्कंटक राज्य करता है। पहले उसे जीत लो, तब आकर स्वर्ग को जीतना ! इन्द्र के वचन से मान्धाता लज्जित हुआ, मनोवेदना से म्रियमाण हो उसने सिर झुका लिया ॥ १६ ॥ स्वर्ग छोड़कर वह लवण को जीतने के लिए आया। उसने लवण को सूचना देने हेतु दूत भेजा। दूत शीघ्रता से लवण के पास गया। बोला— राजा मान्धाता तुम्हें जीतने के लिए आ रहे

शुनिया लवण दूत कुपित हइल। लवणेर क्रोध देखि दूत चलि गेल
दूतेर बिलम्ब देखि मान्धाता भूपति। युझिबारे गेल बीर कटक-संहति १८
मान्धातार तेज येन सूर्य्येर किरण। मान्धातार तेज देखि रुषिल लवण
मान्धातार सेनापति करे मार मार। लवण उपरे करे बाण-अवतार १९
जाठा हाते करिया लवण बीर रोषे। एड़िलेक जाठागाछ मान्धाता उद्देशे
रथ अश्व कटक जाठार तेजे पुड़े। मान्धाता जाठार तेजे भस्म ह'ये उड़े २०
पुनर्व्बार जाठा गेल लवणेर हाते। पड़िल मान्धाता, यतराजा भये चिन्ते
पूर्व्वपुरुष तोमार मान्धाता भूपति। लवण मान्धाता मारि राखिल खेयाति २१
कत शत राजगणे करिल संहार। लवणे मारिया राम, कर प्रतिकार
शुनिया मुनिर कथा भाइ तिन जन। योड़ हाते दाण्डाइल रामेर सदन २२
योड़ हाते कहेन ठाकुर शत्रुघन। तुमि भाइ लक्ष्मण करेछ बहुरण
आमारे करह आज्ञा मारिते लवण। लवणे मारिले यश घोषे त्रिभुवन २३
शत्रुघ्नेर बचने रामेर हैल हास। लवणे मारिते राम दिलेन आश्वास
शत्रुघन चलिलेन मारिते लवण। कहेन भार्गव मुनि, शुन शत्रुघन २४
कुड़ि हाजार मत्त हस्ती मारि खाय दिने। लवणेर सङ्गे युद्ध, थेक सावधाने
एतबलि भार्गव गेलेन निज स्थान। भ्रातृगणे ल'ये राम करे अनुमान २५

हैं ।। १७ ।। यह सुनकर लवण अत्यधिक क्रोधित हो उठा। लवण का क्रोध देख दूत वहाँ से चला गया। दूत को (लौटने में) विलम्ब होता देख वीर राजा मान्धाता अपनी सेना-सहित लड़ने चला ।। १८ ।। मान्धाता का तेज सूर्य-किरणों-सा था। मान्धाता का तेज देख लवण कुपित हो उठा। मान्धाता के सेनापति 'मार, मार,' कहते हुए लवण पर बाणों की वर्षा करने लगे ।। १९ ।। शूल हाथ में ले वीर लवण कुपित हो उठा और मान्धाता पर निशाना साधकर उसने शूल फेंका। उस शूल के तेज से मान्धाता के रथ, घोड़े, सेनाएँ सब जल गये। मान्धाता भी शूल के तेज से भस्म होकर उड़ गया ।। २० ।। इसके पश्चात् वह शूल पुनः लवण के हाथ चला गया। मान्धाता मारा गया, देखकर सभी राजा भय के मारे चिन्तित हो उठे। हे रामचन्द्र, वह राजा मान्धाता तुम्हारे पूर्वज थे। लवण ने मान्धाता को मारकर अपनी ख्याति रख ली ।। २१ ।। उसने कई सौ राजाओं का संहार किया है। रामचन्द्र, लवण को मारकर इसका प्रतिकार करें। मुनि की बात सुनकर तीनों भाई हाथ जोड़कर राम के सम्मुख खड़े हुए ।। २२ ।। हाथ जोड़कर शत्रुघ्न ने कहा— आप और भाई लक्ष्मण ने बहुत से युद्ध किये हैं। अब मुझे लवण को मारने की आज्ञा दें। लवण को मारने पर त्रिभुवन में यश फैलेगा ।। २३ ।। शत्रुघ्न के वचनों पर रामचन्द्र हँसने लगे। लवण को मारने हेतु उन्होंने शत्रुघ्न को आज्ञा दी। शत्रुघ्न लवण को मारने चले। तब मुनि भार्गव ने कहा— शत्रुघ्न, सुनो ।। २४ ।। लवण दिन में बीस हजार मतवाले हाथियों को मारकर खा जाता है, अतः लवण के साथ युद्ध

राम बले, शत्रुघने करिलाम राजा । लबणे मारिया पाल मथुरार प्रजा
लबणे मारिया तुमि ह'ये अधिकारी । प्रजार पालन कर मथुरा-नगरी २६
शत्रुघ्न बलेन, प्रभु कर अबधान । ज्येष्ठ सत्त्वे कनिष्ठेर ए नहे बिधान
श्रीराम बलेन, शुन, भाइ शत्रुघन । तोमाते आमाते भेद नहे कदाचन २७
चलिलेन शत्रुघन मारिते लबण । रामे प्रदक्षिण करि बन्दिला चरण
बिष्णु अस्त्र छिल तांर अस्त्रेर प्रधान । लबणे मारिते शत्रुघने दिला दान २८
एक लक्ष रथ चले, एक लक्ष हाती । एक लक्ष घोड़ा चले पबनेर गति
लबणे मारिते बीर करिल साजनि । बाद्यकर चले सङ्गे सात अक्षौहिणी २९
लिखने ना याय, ठाट कटक अपार । शुनिया बाद्येर शब्द लागे चमत्कार
हइल आषाढ़ गत, श्राबण प्रबेशे । गेलेन यमुना-पारे बाल्मीकिर देशे ३०
शत्रुघन बन्दिलेन मुनिर चरण । शत्रुघने देखि मुनि हरषित-मन
शत्रुघन बले, मुनि, करि निबेदन । रामेर आदेशे याइ बधिते लबण ३१
कटक-सहित आमि आइनु ए-देशे । अद्य-रात्रि तबाश्रमे बञ्चिब हरिषे
एतेक शुनिया मुनि हरषित-मन । ब्रह्ममन्त्र बेदध्वनि करिला तखन ३२
शत्रुघने कराइला उत्तम भोजन । जानिला लबण शीघ्र हइबे निधन
मुनि आर शत्रुघन दोंहे कय कथा । हेन काले दुइ पुत्र प्रसबिला सीता ३३

श्रीरामचन्द्र भाइयों को साथ ले विचार करने लगे ॥ २५ ॥ श्रीराम ने कहा— मैं शत्रुघ्न को (मथुरा का) राजा बना रहा हूं, तुम लबण को मारकर मथुरा की प्रजा का पालन करते रहो। लवण को मारकर तुम वहाँ के अधिकारी बनो, और मथुरा नगरी की प्रजा का पालन करो ॥ २६ ॥ शत्रुघ्न बोले— प्रभु, सुनिये। बड़े भाई के रहते छोटे भाई के लिए ऐसा विधान करना उचित नहीं है। श्रीराम बोले— भाई शत्रुघ्न, सुनो, तुममें-मुझमें कदापि कोई भेद नहीं है ॥ २७ ॥ तब शत्रुघ्न लवण को मारने चले। उन्होंने रामचन्द्र की प्रदक्षिणा कर उनकी चरण-वंदना की। रामचन्द्र के पास अस्त्रों में श्रेष्ठ विष्णु-अस्त्र था। लवण को मारने-हेतु उसे उन्होंने शत्रुघ्न को दान किया ॥ २८ ॥ शत्रुघ्न के साथ एक लाख रथ चले, एक लाख हाथी चले, पवन जैसी गति वाले एक लाख घोड़े चले। वीर शत्रुघ्न ने लवण को मारने हेतु सैन्य-सज्जा की। उनके साथ सात अक्षौहिणी बाजे बजानेवाले चले ॥ २९ ॥ वह अपार सेना-वाहिनी कैसी थी, यह लिखा नहीं जा सकता। बाजों का नाद सुनकर बड़ा विस्मय होता था। आषाढ़ बीत चुका था। सावन का महीना आरंभ हो गया था। शत्रुघ्न यमुना-तट पर बाल्मीकि के देश में पहुँचे ॥ ३० ॥ शत्रुघ्न ने मुनि की चरण-वन्दना की। शत्रुघ्न को देख मुनि का मन हर्षित हुआ। शत्रुघ्न बोले, मुनिवर, मैं आपसे निवेदन करता हूँ। मैं रामचन्द्र के आदेश से लवण को मारने चला हूँ ॥ ३१ ॥ मैं सेना-समेत इस देश में आया हूँ। आज की रात आपके आश्रम में हर्षपूर्वक बिताना चाहता हूं। यह सुनकर मुनि मन में बड़े हर्षित हुए। उन्होंने तब

दुइ पुत्र यमज प्रसव कैला सीते
शिष्यगण कहे आसि मुनिर साक्षाते। एइ कथा येन नाहि शुने शत्रुघन ३४
मुनि बले, गोपनेते राख शिष्यगण। यमुनार तीरे मुनि करेन तर्पण
मतान्तरे आछे इहा, शुन सर्व्वजन। प्रसव करिल सीता यमज-नन्दन ३५
मुनिके संबाद देय शिष्य एक जन। शिशु के माखाते बल लब आर कुशे
आनन्दित ह'ये मुनि कहिलेन शिष्ये। हरषित ह'ये सीता पुत्रेरे माखाय ३६
शुनिया मुनिर कथा, कहिल सीताय। हासि कहे तब पुत्रे देखाओ आमारे
स्नान करि मुनिराज आसिलेन घरे। लब माखि लब हैल, कुश कुशे मेखे ३७
लब आर कुश नाम मुनिबर राखे। एखन ये कहिब लबण बध-कथा
दिने दिने बाड़े दुइ शिशु महारथा। शत्रुघन मुनि दोँहे कथा बार्त्ता हय ३८
एतेक बलिया मुनि सानन्द-हृदय। प्रभाते उठिया याय करिया साजनि
कथोपकथने दोँहे बञ्चिला रजनी। भार्गबेर बाटि गेल यमुनार तीर ३९
मुनि प्रणमिया चले शत्रुघन बीर। मुनि बले, सु-मन्त्रणा करिब बिहित
मुनिरे प्रणमि करे युक्ति समुचित। किरूपे मारिब तारे शत्रुघन कय ४०
लबण नामेते दैत्य संग्रामे दुर्ज्जय।

को उत्तम भोजन करवाया। वे समझ गये कि लवण का शीघ्र निधन होनेवाला है। मुनि और शत्रुघ्न दोनों वार्त्ता करने लगे। उसी समय देवी सीता ने दो जुड़वे पुत्रों को जन्म दिया ॥ ३३ ॥ शिष्यों से यह समाचार सुनकर मुनि बोले, शिष्यो, यह गुप्त ही रखो ताकि यह बात शत्रुघ्न सुन न पायें ॥ ३४ ॥ सभी जन सुनें— एक दूसरा मत यह भी है कि मुनि वाल्मीकि यमुना के तट पर तर्पण कर रहे थे। उसी समय मुनि के एक शिष्य ने समाचार दिया कि सीता ने जुड़वे पुत्रों को जन्म दिया है ॥ ३५ ॥ मुनि ने आनन्दित होकर शिष्यों से कहा— उन शिशुओं को क्रमशः 'लव' (सनई का अगला हिस्सा) तथा 'कुश' (सनई का निचला हिस्सा) से मार्जन करने को कहो। मुनि की बात सुन शिष्यों ने जाकर सीता से कहा— सीता ने हर्षित हो पुत्रों को (उसी प्रकार से) मार्जन कराया ॥३६॥ स्नान कर चुकने के पश्चात् मुनिवर घर लौटे। उन्होंने हँसकर सीता से कहा— अपने पुत्रों को मुझे दिखाओ। मुनि ने उनके नाम 'लव' और 'कुश' रखे। लव से मार्जन करने के कारण 'लव' नाम हुआ। कुश से मार्जन करने के कारण 'कुश' नाम पड़ा ॥ ३७ ॥ वे दोनों महारथी शिशु दिनोंदिन बढ़ते गये। इसके पश्चात् अब लवण-वध की कथा कह रहा हूँ। शिष्यों से वह बात कहकर मुनि का हृदय बड़ा आनन्दित हुआ। शत्रुघ्न और मुनि वाल्मीकि दोनों वार्त्ता करने लगे ॥ ३८ ॥ दोनों में बातें करते रात बीत गयी। शत्रुघ्न प्रातःकाल उठकर सेना सजाकर चल पड़े। वीर शत्रुघ्न मुनि को प्रणाम कर चल पड़े और यमुना के किनारे भार्गव के निवास पर पहुँचे ॥ ३९ ॥ वे मुनि को प्रणाम कर लवण के वध का समुचित उपाय सोचने लगे। मुनि बोले— मैं तुम्हें यथोचित सु-मंत्रणा दूंगा। शत्रुघ्न ने पूछा, लवण नाम का वह दैत्य संग्राम में दुर्जेय है, उसे मैं किस तरह से मार सकूँगा ? ॥ ४० ॥

मुनि बले, अतिशय दुष्ट से लबण। कहि हित उपदेश, शुन शत्रुघन
रजनी प्रभाते यावे मृगेर उद्देशे। आपना पासरे बेठा भक्षणेर आशे ४१
जाठा गाछ थुये याय शिब पूजा-घरे। फिरे आसे निवासे दिवस द्वि-प्रहरे
हित उपदेश बलि, शुनह सत्वर। मृगयार छले बेड़ि रह तार घर ४२
कोन मते जाठा गाछ ना पाय राक्षस। लबण मारिते तवे करह साहस
जाठा बन्दी करिते ना पार शत्रुघन। ना हवे तोमार शक्ति मारिते लबण ४३
शत्रुघन पाइया एतेक उपदेश। लबण मारिते याय मथुरार देश
प्रभाते लबण गेल करिते आहार। शत्रुघन ससैन्ये यमुना हैल पार ४४
जाठागाछ-घर गिया कटकेते बेड़े। मृगभार स्कन्धेते लबण आसे घरे
सैन्येते सकल पथ रहिल आगुले। कुपिया लबण बीर मृगभार फेले ४५
मधु-दैत्य-पुत्र सेइ मथुराते थाना। विक्रमे नाहिक अन्त, रावण-भागिना
लबण बले, मिछा युड़िस् धनुर्व्वाण। तोर मत कत शत ल'येछि पराण ४६
कहिछेन शत्रुघन, लबण बचने। काटिब मस्तक तोर एइ धनुर्व्वाणे
मामा तोर बीर छिल सेइ अहङ्कार। आमार भ्रातार हाते ताहार संहार ४७

मुनि बोले, वह लवण, अत्यन्त दुष्ट है, मैं हित का उपदेश देता हूँ, शत्रुघ्न सुनो। रात बीतते ही वह मृगों को मारने के लिए जाता है। भक्षण की आशा से वह दुष्ट अपनी सुध-बुध खो बैठता है ॥ ४१ ॥ उस समय वह अपने उस शूल को शिव के पूजा-मंदिर में रख जाता है और दिन के दोपहर को वह अपने निवास-स्थान में लौट आता है। मैं तुम्हें कल्याण का उपदेश दे रहा हूँ, तुरंत सुन लो। मृगया के बहाने उसके घर को घेर लो ॥ ४२ ॥ किसी भी प्रकार से जैसे वह शूल वह राक्षस न पा सके। (ऐसा करने पर ही) लवण को मारने का साहस करना। शत्रुघ्न, यदि उसके शूल को बंदी न कर सका, तो लवण को मारने की शक्ति तुममें नहीं होगी ॥ ४३ ॥ मुनि का ऐसा उपदेश पाकर शत्रुघ्न लवण को मारने हेतु मथुरा-देश चले। जब प्रातःकाल लवण भोजन करने चला गया तभी शत्रुघ्न सेना-सहित यमुना पार हुए ॥ ४४ ॥ जहाँ वह शूल रखा हुआ था, उस घर को जाकर सेना ने घेर लिया। मृगों का भार कंधों पर उठाये लवण घर आ रहा था। शत्रुघ्न की सेना ने सारा मार्ग घेर लिया। तब कुपित होकर वीर लवण ने मृगों का भार फेंक दिया ॥ ४५ ॥ वह मधु दैत्य का पुत्र मथुरा में निवास करता था। रावण के उस भांजे के पराक्रम का कोई अन्त नहीं था। लवण बोला, तू धनुष-बाण बेकार ही चढ़ा रहा है। तेरे जैसे कितने सौ व्यक्तियों के प्राण हमने ले लिये हैं ॥ ४६ ॥ शत्रुघ्न ने लवण के वचन सुनकर कहा— इस धनुष-बाण से मैं तेरा मस्तक काट डालूंगा। तेरा मामा वीर था, यही तेरा अहंकार है। हमारे भाई रामचन्द्र के हाथ उसका संहार हो गया ॥ ४७ ॥ मैं उसी राम का भाई हूँ। तेरी बातों से क्या मैं भटक सकता हूँ। मैं तेरा सिर काट कर श्रीराम को उपहार दूंगा। मनुष्यों और गायों को खाकर तेरा

रामेर भाइ आमि, तोर बाक्ये भुलि । तोर माथा काटिया श्रीरामे दिब डालि
छाइया मानुष गरु पूर्ण हैल काल । तोरे मारि बसाब मथुरा चाले चाल ४८
लबण बलिछे क्रोधे, शुन शत्रुघन । तोरे मारि घुचाइब मायेर क्रन्दन
मामारे मारिल तोर ज्येष्ठ सहोदर । मायेर क्रन्दन शुनि ज्वलि निरन्तर ४९
सेइ तापे आजि तोर करि सर्व्वनाश । मरिते मानुष बेटा एलि मोर पाश
तोर बंशे यत राजा तृण हेन बासि । मान्धातारे पोड़ाये करेछि भस्मरासि ५०
शत्रुघन कहेन, एसेछि सेइ कोपे । तोर माथा काटिब, राखिबे कार बापे
मेरेछिस् सूर्य्यबंशे मान्धाता भूपति । तार शोधे पाठाइब यमेर बसति ५१
रामेर कनिष्ठ आमि बीर अबतार । तोरे मारि शोधिब बंशेर यत धार
शत्रुघ्नेर बचनेते रुषिल लबण । मानुष बेटार कथा स'ब कत क्षण ५२
हाते हात चापि करे दन्त कड़मड़ि । शीघ्र गति चलिल आनिते जाठा-बाड़ि
लबणेर मन बुझि शत्रुघन हासे । मने कि करिस बेटा, फिरे याबि बासे ५३
शुनिया लबण बीर सिंह हेन गर्ज्जे । गर्ज्जन करिया आसे युझिबार साजे
लबण पाथर गाछ सघने उपाड़ि । शत्रुघ्नेन माथे मारे दु'हातिया बाड़ि ५४
सेइ घाये शत्रुघन हैल अचेतन । भयङ्कर शब्दे लबण करिछे गर्ज्जन
शत्रुघन पड़े सैन्य करे हाहाकार । घरे चले लबण लइया मृग भार ५५

काल आ गया । तुझे मार कर मैं पुरी को एक छत से दूसरा छत लगाकर (याने बहुत अधिक घना नगर) बसाऊँगा ।। ४८ ।। लवण क्रोध से बोला— शत्रुघ्न, सुन, तुझे मारकर मैं माँ की रुलाई मिटा दूंगा । तेरे बड़े भाई ने मामा को मार डाला है । मैं माँ की रुलाई सुनकर निरंतर जलता रहता हूँ ।। ४९ ।। उसी वेदना से आज तेरा सर्बनाश कर डालूंगा । अरे नगण्य मनुष्य ! तू मरने के लिए मेरे पास आया है । तेरे वंश में जितने राजा थे, उन्हें मैं तृण-जैसा समझता हूँ । मैंने मान्धाता को जलाकर भस्म कर डाला है ।। ५० ।। शत्रुघ्न बोले, मैं तो उसी क्रोध के मारे आया हूं । तेरा सिर काट डालूंगा । कौन बाप तुझे बचा सकेगा ? तूने सूर्यवंशी राजा मान्धाता को मारा है । उसका प्रतिशोध लेने हेतु मैं तुझे यमलोक भेज दूँगा ।। ५१ ।। मैं राम का छोटा भाई वीर-अवतार हूँ । तुझे मारकर अपने वंश का सारा ऋण चुका दूँगा । शत्रुघ्न के वचन से लवण क्रोधित हो उठा । मैं भला इस नगण्य मनुष्य की बात कब तक सहता रहूँ ? ।। ५२ ।। हाथ से हाथ दबाकर दाँत पीसता हुआ वह शीघ्रता से भाला लाने चल पड़ा । लवण की मनोभावना समझकर शत्रुघ्न हँस पड़े । अरे दुष्ट, तू क्या मन में यह सोच रहा है कि लौटकर घर पहुँच सकेगा ! ।। ५३ ।। यह सुनकर वीर लवण सिंह की भाँति गर्जना करने लगा । गरजता हुआ वह युद्ध के लिए तैयार होकर आया । बार-बार पत्थर, पेड़ आदि उखाड़कर वह शत्रुघ्न के सिर पर दोनों हाथों से प्रहार करने लगा ।। ५४ ।। उसके उस प्रहार से शत्रुघ्न अचेत हो गये । लवण भयंकर नाद से गर्जना करने लगा । शत्रुघ्न के गिर जाने पर सेना हाहाकर कर उठी । लवण मृगों का भार उठाकर घर को चल पड़ा ।। ५५ ।।

हेन काले उठिल से शत्रुघ्न दुर्ज्जय। धनुक पातिया युझे, नाहि करे भय
बिष्णु-बाण शत्रुघन युड़िल धनुके। स्थावर जङ्गम मेरु दिग्‌पाल कांपे ५६
उल्कापात हय येन सेइ बिष्णु बाणे। प्रलय हइया देखि भाबे देबगणे
आचम्बिते सृष्टि-नाश हय कि कारण। शुनिया प्रलय शब्द कांपे देबगण ५७
कोन युगे हेन शब्द कभु नाहि शुनि। प्रलय कि हइल निश्चित नाहि जानि
ब्रह्मा बले, देबगण, ना करिह डर। लबण बधिते गर्ज्जे शत्रुघ्नेर शर ५८
सृजिलेन बाण बिष्णु आपनार हाते। मैल मधुकैटभादि सेइ बाणाघाते
बाणेर उपरे बिष्णु ह'न अधिष्ठान। सेइ बाणाघाते कारो नाहि रहे प्राण ५९
बिष्णु-बाण उपरेते ब्रह्म-अग्नि ज्वले। से बाण नाहिक व्यर्थ हय कोन काले
बिष्णु-बाण शत्रुघन एड़िल लबणे। शून्य मार्गे थाकिया देखेन देबगणे ६०
सिंहनाद करि डाके बीर शत्रुघन। कोथा आछ, ओरे बेटा, देह आसि रण
बाणेर गर्ज्जन शुनि लबणेर डर। कहितेछे शत्रुघने त्रासित अन्तर ६१
क्षणेक क्षमह मोरे, खाइ भक्ष्य-पानि। बाहुड़िया आसि युद्ध करिब एखनि
मने भावे, जाठा आछे देवपूजा-घरे। लइब सबार प्राण जाठार प्रहारे ६२
ताहार मनेर कथा बुझि-शत्रुघन। कहिते लागिल बीर करिया तर्ज्जन
करिबि भोजन तुइ, आमि उपबासी। उपबासे दोँहे युद्ध आमि भाल बासि ६३

उसी समय दुर्जेय शत्रुघ्न उठ पड़े। वे धनुष लेकर निर्भयता से लड़ने लगे।
शत्रुघ्न ने अपने धनुष पर विष्णु-बाण चढ़ाया। उससे स्थावर-जंगम मेरु-
दिग्पाल काँपने लगे ॥ ५६ ॥ उस विष्णु-बाण से मानो उल्कापात
होने लगा। उसे देख देवगण सोचने लगे मानो प्रलय हो रही है। अकस्मात्
सृष्टि के इस विनाश का कारण क्या है? बाण का प्रलयंकर शब्द सुनकर
देवगण काँपने लगे ॥ ५७ ॥ किसी भी युग में ऐसा नाद कभी सुना नहीं गया
था। क्या प्रलय हो गया है, यह निश्चित रूप से पता नहीं। ब्रह्मा
बोले, देवगण, डरो मत! लवण का वध करने हेतु यह शत्रुघ्न का बाण
गरज रहा है ॥ ५८ ॥ इस बाण की सर्जना विष्णु ने अपने हाथों किया
है। मधु-कैटभ आदि दैत्य उसी बाण के प्रहार से मारे गये हैं।
उस बाण पर विष्णु अधिष्ठित रहते हैं। उस बाण के प्रहार से किसी के
प्राण नहीं बचते ॥ ५९ ॥ विष्णु-बाण के ऊपर ब्रह्म-अग्नि जलती है।
वह बाण किसी काल में व्यर्थ नहीं होता। शत्रुघ्न ने वह विष्णु-बाण
लवण की ओर छोड़ दिया। देवगण आकाश-मार्ग में स्थित रहकर देखने
लगे ॥ ६० ॥ वीर शत्रुघ्न सिंहनाद कर ललकारने लगे— अरे बच्चू,
तू कहाँ है, आकर मुझसे युद्ध कर! बाण की गर्जना सुनकर लवण डर
गया। वह अन्तर में भयभीत होकर शत्रुघ्न से बोला— ॥ ६१ ॥ क्षण
भर मुझे क्षमा करो! मैं अपना भोजन खा लूँ, पानी पी लूं। लौट आकर
अभी मैं युद्ध करूँगा। उसे याद थी— 'शूल देवता के पूजा-घर में है। शूल
के प्रहार से सबके प्राण ले लूंगा' ॥ ६२ ॥ उसके मन की बात समझकर
वीर शत्रुघ्न गरजकर कहने लगे। तू भोजन करेगा, मैं उपवासी हूं।
हम दोनों उपवासी रहकर ही युद्ध करें, मुझे यही भला लगता है ॥ ६३ ॥

एखन भोजन आर उचित नाहय । भोजन करिबि बेटा, गिया यमालय
कुपिल लबण बीर दुर्ज्जय प्रताप । आहार करिते नाहि दिलि महापाप ६४
रघुबंशे जन्म तोर सर्व्वलोके जाने । रघुकुल उज्ज्वल करिलि एत दिने
शत्रुघ्नेरे मारिबारे आइल लबण । सन्धान पूरिया बाण एड़े शत्रुघन ६५
महाशब्दे याय बाण ज्वलन्त आगुनि । लबणेर बुके बिन्धि सान्धाय मेदिनी
बिष्णु बाण बुके ठेकि पड़िल लबण । देवतार जाठागाठ गेल ततक्षण ६६
शक्तिमान जाठागाछ गेल अन्तरीक्षे । पड़िल लबण बीर सर्व्वलोके देखे
जय जय, शब्द करे यत देवगण । शत्रुघ्न-उपरे करे पुष्प-बरिषण ६७
स्वर्गेते दुन्दुभि बाजे, नाचे बिद्याधरी । आनन्दे हइल मग्न यत सुरपुरी
शत्रुघ्ने डाकिया ब्रह्मा कहिला तखन । बर माग महाबीर, याहा लय मन ६८
निज बाहुबले बीर, लबणे मारिले । स्वर्ग, मर्त्य पातालेर शङ्का निबारिले
ये बर मागिबे तुमि देबतार स्थाने । से बर तोमारे दिबे सर्व्ब देबगणे ६९
कहिछेन रामानुज युड़ि दुइ पाणि । मथुराते बसति हउक पद्मयोनि
तथास्तु बलिया बर दिल ततक्षण । बर दिया स्वर्गे गेल यत देबगण ७०

इस समय भोजन करना उचित नहीं । अरे बच्चू, अब यमलोक जाकर ही भोजन करना । दुर्जेय प्रतापी वीर लवण कुपित हो उठा । बोला— महापापी, तूने मुझे भोजन करने नहीं दिया ।। ६४ ।। सब लोग जानते हैं तेरा जन्म रघुवंश में हुआ है । इतने दिन बाद अब रघुवंश को तू उज्ज्वल कर रहा है (कहता हुआ) लवण शत्रुघ्न को मारने के लिए आया । तब शत्रुघ्न ने निशाना साधकर बाण छोड़ दिया ।। ६५ ।। जलती हुई अग्नि के समान प्रचंड शब्द करता हुआ बाण चला । वह लवण की छाती को भेदकर धरती में घुस पड़ा । विष्णु का बाण छाती में लग जाने के कारण लवण मारा गया । देवता का दिया उसका वह शूल उसी क्षण वहाँ से चला गया ।। ६६ ।। वह शक्तिमान शूल अन्तरिक्ष में चला गया । सभी लोगों ने देखा, वीर लवण मारा गया । सारे देवता 'जय, जय' नाद करने लगे । शत्रुघ्न पर वे पुष्प-वर्षा करने लगे ।। ६७ ।। स्वर्ग में दुन्दुभि बजने लगी, विद्याधरी नाचने लगीं ! सम्पूर्ण स्वर्ग-पुरी आनन्दमग्न हो उठी । तब शत्रुघ्न को बुलाकर ब्रह्मा ने कहा— महावीर शत्रुघ्न तुम्हारी जो इच्छा हो, वर माँगो ।। ६८ ।। वीर, तुमने अपने बाहुबल से लवण को मारा, तथा स्वर्ग, मर्त्य और पाताल की शंका मिटा दी । देवताओं से तुम जो भी वर माँगोगे, सभी देवता तुम्हें वे वर देंगे ! ।। ६९ ।। राम के छोटे भाई शत्रुघ्न हाथ जोड़कर कहने लगे— हे पद्मयोनि ब्रह्माजी, मथुरा में मनुष्यों का निवास बस जाये । 'तथास्तु' कहकर उसी क्षण वर देकर सभी देवता स्वर्ग चले गये ।। ७० ।। वीर शत्रुघ्न ने देश को बसाने हेतु मंत्रियों से परामर्श किया और अद्भुत रूप से मथुरापुरी का निर्माण किया । उन्होंने घर-बार बनवाये, सरोवर बनवाये, उनमें मछली आदि नाना जलचरों को बसवाये ।। ७१ ।। वहाँ

देश बसाइते बीर पात्रे संविधान। करिल मथुरापुरी अद्‌भुत निर्म्माण
बाड़ी घर निर्म्माइल आर सरोवर। निर्म्माइल मत्स्य आदि नाना जलचर ७१
बन-उपबन भाङ्गि करिल बसति। बसाइल प्रजागण नर नाना जाति
बृक्षोपरि पक्षी सब करे कलध्वनि। मुनि-मन हरे हेरि मयूर-नाचनि ७२
राजबाटी निर्म्माइल देखिते सुन्दर। रहिलेन शत्रुघन ताहार भितर
नगरेर मध्ये यत साधुलोक बैसे। अन्य देश हैते लोक मथुराय आसे ७३
पद्म कोटि घर कैल सुवर्ण गठन। क्षत्र-वैश्य-शूद्र आसि बसिल ब्राह्मण
द्वादश बत्सर रन् मथुरा नगरे। प्रजारे पालेन सदा हरिष-अन्तरे ७४
मथुरा नगरी आनि निज सुशासने। अयोध्याय चलिलेन राम-सम्भाषणे
कटक-सहित गेल बाल्मीकिर देश। सैन्य सह तपोबने करिला प्रवेश ७५
शत्रुघ्ने देखिया मुनि हरषित-मन। शत्रुघ्न करिल तांर चरण-बन्दन
मुनि बले, महावीर तुमि शत्रुघन। लबणे मारिया रक्षा कैला त्रिभुवन ७६
अनेक कष्टेते राम बधिल रावणे। लबणे मारिले तुमि दिनेकेर रणे
मनुष्य खाइया बेटा देश कैल बन। लबणे मारिया कैले नगर-पत्तन ७७
आलिङ्गन दिया मुनि परम-आदरे। राखिला सकल सैन्य अतिथि-व्याभारे
सुगन्धि कोमल अन्न पायस पिष्टक। नाना उपहारे भुञ्जे सकल कटक ७८
सोनार पालङ्के बीर करिल शयन। मुनिर बाटिते शुने गीत-रामायण
बीणार स्वरेते नाद हैल आचम्बित। मधुस्वरे गान हय रामायण-गीत ७९

के जंगल, झाड़ आदि को कटवाकर लोगों की बस्ती बसाई। और नाना जाति के मनुष्यों-प्रजाजनों को बसाया। मथुरा के वृक्षों पर पक्षी मधुर ध्वनियाँ करने लगे। मयूरों का नाच मुनियों का मन हर लेता था ।। ७२ ।। उन्होंने देखने में सुंदर राजभवन बनवाया। शत्रुघ्न उसी राजभवन में रहने लगे। नगर में सारे साधुपुरुष निवास करते थे। अन्य देशों से भी लोग मथुरा में आने लगे ।। ७३ ।। वहाँ सोने के पद्म-कोटि घर बनवाये। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि आकर वहाँ बसने लगे। शत्रुघ्न बारह वर्ष मथुरा में रहे। वे प्रसन्न-चित्त से प्रजा का पालन करते थे ।। ७४ ।। अपने सुशासन के अन्तर्गत मथुरापुरी को लाकर शत्रुघ्न श्रीराम से भेंट करने चले। वे सेना-सहित वाल्मीकि के देश में पहुँचे। सेना-सहित उन्होंने तपोवन में प्रवेश किया ।। ७५ ।। शत्रुघ्न को देखकर मुनि अन्तर में बड़े प्रसन्न हुए। शत्रुघ्न ने उनकी चरण-वन्दना की। मुनि बोले, शत्रुघ्न, तुम महावीर हो। लवण को मारकर तुमने त्रिभुवन की रक्षा की है ।। ७६ ।। रामचन्द्र ने अनेक कष्ट उठाकर रावण को मारा था। तुमने तो लवण को एक ही दिन के युद्ध में मार डाला है। उस दुष्ट ने मनुष्यों को खाकर देश को जंगल बना डाला था। तुमने लवण को मारकर नगर-पत्तन बसा दिये ।। ७७ ।। मुनि ने परम आदर से शत्रुघ्न को आलिगन कर सारी सेना को अतिथि जैसे उचित व्यवहार से रखा। सुगन्धित कोमल अन्न, पायस, पिष्टक (पीठा) आदि विविध [illegible] सारी सेना ने खायीं ।। ७८ ।। वीर शत्रुघ्न ने सोने के

देश छाड़ि सीता आर श्रीराम-लक्ष्मण । गाछेर बाकल परि प्रवेशिला बन
श्रीराम याइते बने कान्दे सर्ब्बलोक । दशरथ मरिलेन पेये पुत्रशोक ८०
राजार मरणे यत राजराणीगण । येमते करिला ताँर श्राद्धादि-तर्पण
राम गेला बने, भरत मातुल-पाड़ा । चारि पुत्र सत्त्वे राजा ह'ल बासि मड़ा ८१
चौद्द बर्ष रहे राम पञ्चबटी-बने । सीता ह'रि लइलेक लङ्कार रावणे
सबंशे रावणे राम करिया संहार । बहु युद्धे करिलेन सीतार उद्धार ८२
सुमधुर स्वरे गीत करिला यखन । सर्ब्बलोक मोहित शुनिया रामायण
दुइ शिशु गीत गाय बाजाइया बीणा । सर्ब्बलोक शुने येन अमृतेर कणा ८३
शत्रुघ्न चक्षेर जल नारेन राखिते । दुइ चक्षे बारि धारा मुछेन दुहाते
श्रीरामेर दुःख शुनि शत्रुघ्न बिकल । मोह संबरिते नारे, चक्षे पड़े जल ८४
पात्र-मित्र सबे बले, शुन महामुनि । एमत अमृत-गान कभु नाहि शुनि
चारि प्रहर रजनी मधुर गीत शुने । सर्ब्बलोक निद्रा याय, निशि जागरणे ८५
शत्रुघ्न बलेन, मुनि करि निबेदन । कोथाकार दुइ शिशु गाय रामायण
शुनितेछि रामायण मधुर सङ्गीत । कह मुनि, एइ गीत काहार रचित ८६

पलंग पर शयन किया । उन्होंने मुनि के निवास में रामायण-गीत सुना ! वहाँ वीणा के स्वरों में अद्भुत नाद हुआ तथा मधुर-स्वरों से रामायण गीत का गायन होने लगा ॥ ७९ ॥ देश छोड़कर सीता और श्रीराम-लक्ष्मण वल्कल धारण कर चले और वन में प्रवेश किया । श्रीराम के वन में जाते देख, सारे लोग रोने लगे । राजा दशरथ पुत्र-शोक से मर गये ॥ ८० ॥ राजा की मृत्यु से सारी राज-रानियों ने जिस प्रकार से उनका श्राद्धादि तर्पण किया । (उसका गायन हुआ) राम वन में चले गये, भरत मामा के गाँव गये हुए थे । चार पुत्रों के रहते हुए भी राजा का शव बासी पड़ा रहा ॥ ८१ ॥ रामचन्द्र चौदह वर्ष तक पंचवटी वन में रहे । वहाँ से लंका के रावण ने सीता को हरण कर लिया । अनेक युद्ध के बाद रावण का सवंश संहार कर रामचन्द्र ने सीता का उद्धार किया ॥ ८२ ॥ सुमधुर स्वर से जब वहाँ गीत होने लगा, तो सब लोग रामायण सुनकर मोहित हो उठे । वहाँ दो बालक वीणा बजाकर गीत गा रहे थे । सारे लोग उसे ऐसे सुन रहे थे मानो अमृत-कण हों ॥ ८३ ॥ शत्रुघ्न आँखों से आँसू रोक नहीं पा रहे थे । दोनों आँखों से बहती हुई आँसुओं की धारा दोनों हाथों से पोंछने लगे । श्रीराम की वेदना सुनकर शत्रुघ्न विकल हो उठे । वे मोह का संवरण कर नहीं पाते थे, आँखों से आँसू झर रहे थे ॥ ८४ ॥ मंत्री तथा कुटुम्बी मित्र सभी कहने लगे, महामुनि, सुनिये । ऐसा अमृत-गीत तो हमने कभी नहीं सुना था । लोग चार पहर रात तक (सारी रात) मधुर गीत सुनते रहे । रात बीतने पर (गीत बंद हुआ) सभी निद्रित हो गये ॥ ८५ ॥ शत्रुघ्न बोले, मुनि, आपसे निवेदन करता हूँ, ये रामायण गानेवाले दो शिशु कहाँ के हैं ? हम यह जो रामायण का मधुर संगीत सुन रहे हैं, मुनि, कहिये, यह

मुनि बले, वार्त्ता जिज्ञासिले शत्रुघन । दुइ शिशु गान करे शिष्य दुइ जन
आमि रचियाछि रामायण सप्त काण्ड । शुनि लोक मोक्ष पाय, अमृतेर भाण्ड ८७
कहिते ए कथा-वार्त्ता प्रभात-रजनी । प्रभाते चलिला बीर बन्दि महामुनि
शत्रुघ्न ससैन्ये यमुना हैल पार । शत्रुघ्नेर सङ्गे वाद्य बाजिछे अपार ८८
तिन दिने गेल बीर अयोध्या नगर । योड़ हाते रहिलेन रामेर गोचर
शत्रुघ्न श्रीरामे कहे बन्दिया चरण । तोमार प्रसादे प्रभु मारिनु लवण ८९
मारिनु लवणे युद्ध करिया बिशाल । मथुराते बसाइनु प्रजा चाले-चाल
बार वर्ष ना देखिया तोमार चरण । धरिते ना पारि प्राण, हैल उचाटन ९०
तव अदर्शने प्रभु, जीवने कि कार्य्य । कि करिबे सुख भोग मथुरार राज्य
शत्रुघ्ने श्रीराम तबे दिला आलिङ्गन । राम बले, भाइ, तव मधुर वचन ९१
सबार कनिष्ठ भाइ, गुणेर सागर । तोमारे देखिले दुःख पासरि बिस्तर
पञ्च दिन चारि भाइ बञ्चिब हरिषे । पञ्चदिन परे येओ मथुरार देशे ९२
श्रीराम लक्ष्मण ओ भरत शत्रुघन । चारि भाइ एकत्र करिल सम्भाषण
चारि भाइ पञ्च दिन एकत्रे रहिला । शत्रुघ्नेरे मथुराय बिदाय करिला ९३
हइलेन शत्रुघन मथुरार राजा । अयोध्याय श्रीराम पालेन सब प्रजा
श्रीरामेर राज्ये लोक सुखे करे वास । गाइल उत्तरकाण्ड कवि कृत्तिवास ९४

पूछी है, सुनो ये गान करनेवाले दोनों शिशु मेरे दो शिष्य हैं । मैंने सप्तकांड रामायण की रचना की है । यह अमृत का कलस है, इसे सुनकर लोगों को मोक्ष मिलता है ॥८७॥ यह वार्त्तालाप करते हुए रात बीत गयी प्रभात हो गया । प्रातःकाल शत्रुघ्न मुनि की चरण-वन्दना कर वहाँ से चल पड़े । शत्रुघ्न सेना-सहित यमुना पार हुए । शत्रुघ्न के साथ अपार वाद्य बज रहे थे ॥ ८८ ॥ वीर शत्रुघ्न तीन दिन में अयोध्या नगर पहुँचे । राम के सम्मुख जाकर वे हाथ जोड़ खड़े हो गये । श्रीराम की चरण-वन्दना कर शत्रुघ्न बोले— प्रभु, आपके प्रसाद से मैंने लवण को मारा है ॥८९॥ प्रचंड युद्ध कर मैंने लवण को मारा तथा छत से छत मिलाकर (सघन बसाकर) मथुरा में प्रजा को बसाया । बारह वर्ष आपके चरणों का दर्शन न कर पाने के कारण प्राण-धारण करना कठिन हो गया था । जी उचट गया था ॥९०॥ प्रभु, आपके दर्शन न हों तो जीवन से क्या प्रयोजन है । मथुरा का राज्य और सुख-भोग से क्या होगा ? तब श्रीराम ने शत्रुघ्न को आलिंगन किया । राम बोले, भाई तुम्हारा वचन बड़ा मधुर है ॥ ९१ ॥ तुम सबसे कनिष्ठ भाई गुणों के सागर हो । तुम्हें देखकर महान् दुःख भी भूल जाता हूँ । हम चारों भाई पाँच दिन आनन्द से एक संग रहें । पाँच दिन बाद मथुरा जाना ॥ ९२ ॥ श्रीराम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न चारों भाइयों ने एक साथ वार्त्तालाप किया । चारों भाई पाँच दिन एक संग रहे । उसके बाद शत्रुघ्न को मथुरा के लिए विदा किया ॥ ९३ ॥ शत्रुघ्न मथुरा के राजा बने । अयोध्या में श्रीरामचन्द्र सारी प्रजा का पालन करने लगे । श्रीराम के राज्य में सब लोग सुख से निवास करते थे । कवि कृत्तिवास ने उत्तरकांड का गायन किया है ॥ ९४ ॥

बिप्र-पुत्रेर अकाल मृत्यु ओ शूद्र-तपस्वीर मस्तक-छेदन

अयोध्यार राजा राम धर्म्मेते तत्पर। अकाल मरण नाहि राज्येर भितर
अकस्मात् विप्र एक आइल काँदिया। मृत एक शिशु पुत्र कोलेते करिया १
पञ्च बत्सरेर मृत-पुत्र तार कोले। श्रीरामेर द्वारे आसि कान्दे उच्च रोले
धर्म्मेर संसार मोर पाप नाहि करि। अकस्मात् पुत्र शोके केन पुड़े मरि २
ना करेन राज्य-चर्च्चा राम रघुबर। ब्रह्मशाप दिब आजि रामेर उपर
कि पापे मरिल पुत्र, किछुइ ना जानि। पुत्र कोले करि कान्दे ब्राह्मण-ब्राह्मणी ३
बृथा गर्भे धरि पुत्र पञ्च बर्ष पुषि। अकाले मरिल पुत्र रामराज्ये बसि
पिता माता राखि पुत्र छाड़ि गेल कोथा। कोन् दोषे मैल पुत्र प्राणे दिया व्यथा ४
अधर्म्मेर राज्ये हय दुर्भिक्ष मड़क। कर्म्मदोषे सेइ राजा भुञ्जये नरक
अकालेते मरे पुत्र श्रीरामेर राज्ये। नहे अन्य देशे याब एइ राज्य त्यजे ५
एत बलि स्त्री-पुरुष भासे अश्रुनीरे। लक्ष्मण सत्वर यान रामेर गोचरे
अकस्मात् प्रमाद पड़िल रघुमणि। मृत पुत्र लये एल ब्राह्मण-ब्राह्मणी ६
बयसेते बृद्ध दोँहे, पुत्र नाहि आर। क्रन्दने व्याकुल करिछेन राजद्वार
द्विज बले, पाप नाहि आमार शरीरे। तबे अकालेते मोर पुत्र केन मरे ७

विप्र-पुत्र की अकाल मृत्यु और शूद्र-तपस्वी का शिरच्छेद

अयोध्या के राजा बनकर रामचन्द्र धर्म में तत्पर रहते थे। राज्य में अकाल-मरण नहीं होता था। अचानक एक विप्र रोता हुआ अपने मृतक पुत्र को गोद में लेकर आया ।। १ ।। उसकी गोद में पाँच वर्ष का मृतक-पुत्र था। श्रीराम के द्वार पर आकर वह ऊँचे स्वर से रोने लगा। (वह कहने लगा) मेरा धर्म का संसार है, मैं पाप नहीं करता। अकस्मात् पुत्रशोक से मुझे किस कारण जल-मरना पड़ रहा है? ।। २ ।। रघुवर रामचन्द्र आजकल राज्य-संबंधी चर्चा नहीं करते। (इसीलिए) मैं रामचन्द्र को ब्रह्मशाप दूँगा। मेरा पुत्र किस पाप से मरा है, पता नहीं। (कहते हुए) वे ब्राह्मण-ब्राह्मणी पुत्र को गोद में लिये रोने लगे ।। ३ ।। पुत्र को हमने व्यर्थ गर्भ में धारण किया, व्यर्थ ही पाँच वर्ष पाला-पोसा, राम-राज्य में निवास कर मेरा पुत्र अकाल में मरा! पिता-माता को छोड़कर हमारा पुत्र भला कहाँ चला गया। प्राणों में वेदना जगाकर किस अपराध से हमारा पुत्र मर गया ।। ४ ।। दुर्भिक्ष-महामारी आदि अधर्म के राज्य में ही हुआ करते हैं, कर्म-दोष के कारण उस राजा को नरक भोगना पड़ता है। श्रीराम के राज्य में पुत्र अकाल में मरा है। (पुत्र न रहे) तो हम इस राज्य को छोड़ अन्य देश में चले जायेंगे ।। ५ ।। यों कहकर दोनों पति-पत्नी लगातार आँसू बहाते रहे। तब लक्ष्मण तुरंत राम के पास गये। उन्होंने कहा— हे रघुनाथ! अकस्मात् यह विपत्ति आ पड़ी है। अपने मृत-पुत्र को लेकर ब्राह्मण-ब्राह्मणी आये हैं ।। ६ ।। वे दोनों वृद्ध हो गये हैं, उनका और कोई पुत्र नहीं। अपनी रुलाई से उन

एत बलि स्त्री-पुरुषे करये रोदन । श्रीराम शुनिया हैला बिरस-बदन
त्रास पान रघुनाथ शुनिया बचन । अकाले द्विजेर पुत्र मरे कि कारण ८
पात्र-मित्र सभासद करे हाहाकार । रामेर आज्ञाते सबे हैल अगुसार
आइल बशिष्ठ मुनि कुलपुरोहित । कश्यप नारद आदि हैल उपनीत ९
पात्र-मित्र लये राम बसिला देयाने । ब्राह्मणेर कथा राम कहे सभास्थाने
तोमा सबा ल'ये आमि करि राजकाज । अकाले ब्राह्मण मरे पाइ बड़ लाज १०
रामबाक्य शुनि सबे गणिछे बिपद । श्रीरामेर पाने चाहि कहेन नारद
मुनि बले, रघुनाथ, शास्त्रेर बिचार । सत्ययुगे तपस्याय द्विज-अधिकार ११
त्रेतायुगे तपस्याय क्षत्र-अधिकार । द्वापरेते बैश्य-तप शास्त्रेर बिचार
कलियुगे तपस्या करिबे शूद्र जाति । तपस्यार नीति एइ शुन रघुपति १२
अकाले अनधिकारे शूद्र तप करे । सेइ राज्ये अकाले द्विज-पुत्र मरे
कलिकाले शूद्र आर पतिहीना नारी । तपस्या करिले सृष्टि नाशिबारे पारि १३
अकाले करिले तप घटाय उत्पात । अकाल-मरण-रीति शुन रघुनाथ
ना मरे तोमार पापे द्विजेर कुमार । तपस्या करिछे कोथा शूद्र दुराचार १४

दोनों ने राज-द्वार को व्याकुल कर रखा है। वह ब्राह्मण कहता है— यदि पाप हमारे (राजा के) शरीर में नहीं है तो फिर हमारा पुत्र किसलिए मरा है ? ॥ ७ ॥ यह कहकर दोनों पति-पत्नी रुदन कर रहे हैं। यह बात सुनकर श्रीरामचन्द्र उदास हो गये। रघुनाथ वह बात सुनकर त्रस्त हो उठे। अकाल में विप्र-पुत्र के मरने का कारण क्या है ? ॥ ८ ॥ मंत्री-मित्र, सभासद सभी हाहाकार करने लगे। राम की आज्ञा से सभी आगे बढ़े। कुल-पुरोहित वशिष्ठ मुनि वहाँ पहुँचे। कश्यप-नारद आदि भी वहाँ उपस्थित हुए ॥ ९ ॥ मंत्रियों-मित्रों के साथ रामचन्द्र राज-सभा में बैठे और उन्होंने ब्राह्मण की बात सभा से कही। तुम सबको लेकर मैं राजकार्य चलाया करता हूँ। ब्राह्मण अकाल में मर गया इससे मैं बड़ा लज्जित हुआ हूँ ॥ १० ॥ राम के वचन सुनकर सभी ने संकट की आशंका देखी, श्रीराम की ओर देखते हुए नारद कहने लगे। मुनि ने कहा— रघुनाथ, शास्त्रों का यह विधान है कि सत्ययुग में तपस्या में ब्राह्मण का अधिकार होता है ॥ ११ ॥ त्रेतायुग में तपस्या में क्षत्रिय का अधिकार होता है। शास्त्रों के विचार से द्वापर में तपस्या में वैश्य का अधिकार होता है। कलियुग में शूद्र जाति भी तपस्या करेगी। रघुपति, तपस्या की रीति यही है ॥ १२ ॥ अकाल में शूद्र अनधिकार से तप करे तो उस राज्य में अकाल में ब्राह्मण-पुत्र की मृत्यु होती है। कलिकाल में शूद्र और पतिहीना नारी तप करने लगें तो आगे चलकर विधाता द्वारा सृष्टि का विनाश किया जा सकता है ॥ १३ ॥ अकाल में तप करने से उपद्रव होते हैं। रघुनाथ सुनें, अकाल-मृत्यु का कारण यही है। आपके पाप के कारण ब्राह्मण का पुत्र नहीं मरा। कहीं दुराचारी शूद्र तपस्या कर रहा होगा ! ॥ १४ ॥ इसी कारण आपको झूठ-मूठ दोषी बनाकर ब्राह्मण-

एइ हेतु मिथ्या दोषी करये तोमाके। ब्राह्मण-ब्राह्मणी द्वारे कान्दे पुत्रशोके
नारदेर बचन रामेर लय मने। डाक दिया सभामध्ये आनने लक्ष्मणे १५
पात्र मित्र ल'ये भाइ बसह बिचारे। प्रिय बाक्ये ब्राह्मणेरे राखह दुयारे
याबत् ना आसि आमि करिया बिचार। तावत् राखिह द्विजे, ना छाड़िह द्वार
नारायण-तैले फेलि राख द्विजसुते। देह येन नष्ट नाहि हय कोन मते १६
एत बलि कैला राम रथे आरोहण। पश्चिम दिकेते राम करिला गमन
पश्चिमेर यत देश करिया बिचार। उत्तरदिकेते राम कैला आगुसार १७
उत्तरेर यत देश करि अन्वेषण। पूर्व्वदिके रघुनाथ करेन गमन
पूर्व्व-दिके अन्वेषिया गेलेन दक्षिणे। शूद्र एक तप करे महाघोर बने १८
करये कठोर तप बड़इ दुष्कर। अधोमुखे ऊर्द्धपदे आछे निरन्तर
बिपरीत अग्नि-कुण्ड ज्वलिछे सम्मुखे। व्यापिल वह्निर धूम सुवर्ण राशिके १९
देखिया कठोर तप श्रीरामेर त्रास। 'धन्य, धन्य' बलि राम यान तार पाश
जिज्ञासा करेन तारे कमललोचन। कोन् जाति, तप कर कोन् प्रयोजन २०
तपस्वी बलेन आमि हइ शूद्र जाति। शम्बुक आमार नाम शुन महामति
करिब कठोर तप दुर्ल्लभ संसारे। तपस्यार फले याब बैकुण्ठ-नगरे २१
तपस्वीर बाक्ये कोपे काँपे राम-तुण्ड। खड्ग हस्ते काटिलेन तपस्वीर मुण्ड
साधु साधु शब्द करे यत देबगण। रामेर उपरे करे पुष्प-बरिषण २२

ब्राह्मणी पुत्र-शोक से द्वार पर रो रहे हैं। नारद का वचन रामचन्द्र को भा गया। उन्होंने लक्ष्मण को पुकार कर सभा में बुलाया ॥ १५ ॥ बोले, भाई, मंत्रियों और मित्रों के साथ विचार-विमर्श करो और प्रिय-वचन कहकर ब्राह्मण को द्वार पर बिठा रखो। जब तक मैं खोजकर लौट न आऊँ, तब तक ब्राह्मण को बिठाये रखना, द्वार न छोड़ना। ब्राह्मण के पुत्र को नारायण-तैल में डुबो रखो, उसका शरीर जैसे किसी भी प्रकार से नष्ट न हो ॥ १६ ॥ यह कहकर रामचन्द्र रथ पर सवार हुए और पश्चिम दिशा में चले। पश्चिम के सारे देशों में खोज करने के बाद राम उत्तर की ओर आगे बढ़े ॥ १७ ॥ उत्तर के सारे देशों में खोजकर रामचन्द्र पूर्व-दिशा में गये। पूर्व-दिशा में खोज करने के पश्चात् वे दक्षिण की ओर गये। वहाँ एक शूद्र महा घोर वन में तपस्या कर रहा था ॥ १८ ॥ वह बड़ा ही दुष्कर कठोर तपस्या कर रहा था। वह निरंतर पैर ऊपर की ओर और मुँह नीचे किये हुए था। उसके सम्मुख विपरीत (ढंग से निर्मित) अग्निकुंड जल रहा था। सुवर्ण-राशि को व्याप्त कर अग्नि का धुआँ उठ रहा था ॥ १९ ॥ उसका कठोर तप देखकर श्रीराम त्रस्त हो उठे। 'धन्य, धन्य' कहकर राम उसके पास गये। कमललोचन रामचन्द्र ने उससे पूछा, तुम किस जाति के हो, किस प्रयोजन से तपस्या कर रहे हो ? ॥ २० ॥ तपस्वी बोला— मैं शूद्रजाति का हूँ। हे महामति, सुनिये, मेरा नाम शम्बुक है। (मेरी इच्छा है) इस दुर्लभ संसार में कठोर तपस्या करूँ और तपस्या के फल से वैकुंठ-नगर में जाऊँ ॥ २१ ॥ तपस्वी की बात से क्रोध के मारे रामचन्द्र का शरीर

ब्रह्मा बलिलेन, राम, कैले बड़ काज। शूद्र ह'ये तप करे, पाइ बड़ लाज
तुष्ट ह'ये पुनः ब्रह्मा कहेन तखन। मनोनीत वर मागि लह हे एखन २३
श्रीराम बलेन यदि दिबे वरदान। तब बरे जिये येन ब्राह्मण-सन्तान
ब्रह्मा बले ए बर ना चाह रघुमणि। शूद्र काटा गेल, द्विज बाँचिल आपनि २४
आपना बिस्मृत तुमि देब नारायण। मारिया बाँचाते पार ए तिन भुबन
दृष्टे सृष्टि नाश कर निमेषे सृजन। तोमार आश्चर्य माया बुझे कोन् जन २५
एत बलि अन्तर्द्धान हन पद्मासन। शुनिया श्रीराम अति हरषित मन
एखाने बाँचिया उठे द्विजेर कुमार। देखि सभासद जने लागे चमत्कार २६
भरत-लक्ष्मणे कहि द्विज गेल घर। रघुनाथे आशीर्बाद करिया बिस्तर
हइल रामेर हाते तपस्वी-विनाश। चड़ि स्वर्ण बिमाने से गेल स्वर्गबास २७
ब्रह्मार बचन शुनि श्रीरामेर हास। रचिल उत्तरकाण्ड कबि कृत्तिबास

गृधिनी ओ पेचकेर द्वन्द्व वृत्तान्त

अयोध्याते रघुनाथ यान शीघ्र गति। पात्र मित्र राज्यखण्ड रामेर संहति १

काँपने लगा, उन्होंने हाथ में खड्ग लेकर तपस्वी का सिर काट डाला। सारे देवता 'साधु, साधु' ध्वनि करने लगे और राम के ऊपर पुष्प-वर्षा करने लगे ॥ २२ ॥ ब्रह्मा बोले, रामचन्द्र, तुमने बड़ा काम किया ! शूद्र होकर यह तप कर रहा था इससे मैं बड़ा लज्जित था। तुष्ट होकर ब्रह्मा ने तब कहा— हे राम, तुम अब इच्छानुसार वर माँग लो ॥ २३ ॥ श्रीराम ने कहा— यदि आप मुझे वर देना चाहते हैं तो (यही वर दें) आपके वरदान से वह ब्राह्मण का पुत्र जी उठे। ब्रह्मा ने कहा— रघुमणि, यह वर न माँगो। (क्योंकि) शूद्र को जिस क्षण काटा गया, उसी क्षण वह ब्राह्मण अपने आप जी उठा है ॥ २४ ॥ देव नारायण, तुम अपने आपको भूल गये हो। तुम इन तीनों लोकों को मारकर जिला सकते हो। अपनी दृष्टि से सृष्टि का विनाश कर सकते हो, निमिष मात्र में सर्जन कर सकते हो। तुम्हारी अद्भुत-माया कौन समझ सकता है ? ॥ २५ ॥ ऐसा कहकर ब्रह्मा अन्तर्द्धान हो गये। उनके वचन सुनकर रामचन्द्र बड़े हर्षित हुए। उधर ब्राह्मण का पुत्र जी उठा। देखकर सभासदों को विस्मय हुआ ॥ २६ ॥ वह ब्राह्मण रामचन्द्र को अनेक आशीर्वाद दे, भरत और लक्ष्मण से कहकर घर चला गया। राम के हाथ से तपस्वी का विनाश हुआ। वह स्वर्ग के विमान पर सवार होकर स्वर्ग में निवास करने चला गया ॥ २७ ॥ ब्रह्मा के वचन सुन श्रीरामचन्द्र हँसने लगे। कवि कृत्तिवास ने उत्तरकांड का गायन किया है।

गिद्धनी और उलूक के विवाद की कथा

श्रीराम शीघ्रता से अयोध्या चले। मंत्री, बंधु-बांधव, सभासद राम

महामुनि अगस्त्येर बाटी दक्षिणेते । श्रीराम बलेन, सबे चल सेइ पथे
अगस्त्येर बाटी राम यान दिव्य रथे । पक्षीर कोन्दल राम शुनिलेन पथे २
गृधिनी पेचके द्वन्द्व बासार लागिय । आसियाछे बहु पक्षी दुइ पक्ष हैया
अनेक पक्षीर घर बनेर भितर । नाना जाति पक्षी सबे आछे एकत्तर ३
सारस-सारसी डाक काक कादाखोंचा । गृधिनी कोकिल चिल आर काल पेँचा
सारि शुक काकातुया चड़ा मत्स्य रङ्ग । खञ्जन-खञ्जनी फिङ्गे धकड़िया कङ्क ४
बाउइ पाउइ शिखी पक्षी हरिताल । पायरा प्रबाज आर शिकरा सञ्चाल
बक-बकी बादुड़-बादुड़ी नुरी टिया । झाँके झाँके चामचिके काठ ठोकरिया ५
जले स्थले आछिल येखाने यत पक्ष । करितेछे महा द्वन्द्व ह'ये दुइ पक्ष
गृधिनी कहिछे पेँचा, छाड़ मोर बासा । परघरे रहिबे केमने कर आशा ६
पेँचा बले कोथा हैते आइलि गृधिनी । एत काल बासा मोर तोरे नाहि चिनि
दोँहे मिलि करये कोन्दल मारामारि । श्रीरामे देखिया दोँहे कहे धीरि धीरि ७
गृधिनी बलिछे राम कर अबधान । बिचारे पण्डित नाहि तोमार समान
युद्धेते जिनिते तुमि पार सुरपति । शशधर जिनि तव श्री अङ्गेर ज्योति ८
दिवाकर जिनि तेज बिशाल तोमार । सागर जिनिया बुद्धि अगाध अपार
पवन जिनिया तव त्वरित गमन । अमृत जिनिया तव मधुर बचन ९

के साथ थे ।। १ ।। महामुनि अगस्त्य का निवास दक्षिणी दिशा में था । श्रीराम ने कहा— सब लोग उसी मार्ग से चलें । दिव्य रथ पर सवार रामचन्द्र अगस्त्य मुनि के निवासस्थान पर चले, मार्ग में उन्होंने पक्षियों का विवाद सुना ।। २ ।। अपने निवास के लिए एक गिद्धनी और एक उलूक झगड़े कर रहे थे । बहुत से पक्षी वहाँ दोनों के पक्ष में आये । वन के अन्दर अनेक पक्षियों का निवास था । विभिन्न जातियों के सारे पक्षी वहाँ एक साथ रह रहे थे ।। ३ ।। सारस-सारसी, डाहुक पक्षी, कौवे, कादा-खोंचा, गिद्धनी, कोकिल, चील, और काले उलूक, सारिका, तोते, काकातुआ, गौरैया, मत्स्यरंग, खंजन-खंजनी, फिंगा पक्षी, धकड़िया, कंक, ।। ४ ।। बाउई-पाउइ, मोर, हरिताल, कबूतर, प्रबाज, शिकरा, संचाल, बगुला-बगुली, चमगादड़, मादा-चमगादड़, नुरी-तोता, कठफोड़वा आदि झुंड के झुंड ।। ५ ।। जल-स्थल में जहाँ जितने पक्षी थे, सभी दो पक्षों में विभाजित होकर बड़ा विवाद कर रहे थे । गिद्धनी कह रही थी, उलूक, तू मेरा घोंसला छोड़ दे । तू भला दूसरे के घर में रहने की आशा कैसे करता है ? ।। ६ ।। उलूक बोला, अरी गिद्धनी, तू कहाँ से आयी ? मैं यहाँ इतने समय से रह रहा हूँ, पर तुझे तो नहीं पहचानता । दोनों एक-दूसरे के साथ भयंकर झगड़े और मारपीट कर रहे थे । श्रीराम को देखकर दोनों धीरे-धीरे कहने लगे ।। ७ ।। गिद्धनी बोली, श्रीराम, सुनिये । आप-जैसा न्याय का पंडित दूसरा कोई नहीं है । आप युद्ध में देवराज को भी जीत सकते हैं । आपके श्रीअंगों की ज्योति चन्द्रमा से बढ़कर है ।। ८ ।। आपका तेज सूर्य से भी बढ़कर है । आपकी बुद्धि सागर से अधिक गंभीर

पृथिवी पालिते तुमि दयाल-शरीर । गुणेर सागर तुमि रणे महावीर
स्वर्ग मर्त्य पाताले तोमारे करे पूजा । त्रिभुवन मध्ये राम तुमि महाराजा १०
रजोगुण धर तुमि सृष्टिर कारण । सत्वगुणे सबाकारे करह पालन
संसार नाशिते तुमि तमोगुण धर । आत्मनिवेदन करि तोमार गोचर ११
बहुश्रमे सृजिलाम बासा महाशय । बलेते पेचक सेइ बासा काड़ि लय
पेँचा बले राम तुमि बिष्णु-अबतार । रजोगुणे सृष्टि कैले सकल संसार १२
तुमि चन्द्र, तुमि सूर्य्य, तुमि दिबा राति । अनाथेर नाथ तुमि, अगतिर गति
धर्म्मेते धार्म्मिक तुमि परम शीतल । बिपक्ष नाशिते तुमि ज्वलन्त अनल १३
आदि-अन्त्य-मध्य तुमि, निर्धनेर धन । सेबक-बत्सल तुमि देब-नारायण
अन्धेर नयन तुमि दुर्ब्बलेर बल । अपराधी यदि हइ, देह प्रतिफल १४
सभा कैल रघुनाथ बसि बृक्ष तले । पात्र मित्र सभासद बसिल सकले
बशिष्ठ नारद आदि एल मुनिगण । सुमन्त्र कश्यप मुनि एल दुइ जन १५
श्रीराम बलेन कथा, सभासद शुने । हेन काले देवगण एल सेइ खाने
गृध्रिनीरे कत राम, सभार भितर । कत काल हैते तोर एइ बासाघर १६
गृध्रिनी कहिछे शुन बचन आमार । महा प्रलयेते यबे सब निराकार
बिष्णुनाभि पद्ममूले ब्रह्मार उत्पत्ति । बिधि देब दानब सृजिला नाना जाति १७

से बढ़कर मधुर हैं ।। ९ ।। पृथ्वी को पालन करने हेतु आपने कृपालु शरीर धारण किया है। आप युद्ध में महावीर और गुणों के सागर हैं। स्वर्ग, मर्त्य, पाताल आपकी पूजा करते हैं। श्रीराम, आप त्रिभुवन में महाराजा हैं ।। १० ।। आप सृष्टि के लिए रजोगुण धारण करते हैं। सत्त्वगुण से सबका पालन करते हैं। संसार के विनाश हेतु आप तमोगुण धारण करते हैं। मैं आपके सम्मुख आत्मनिवेदन कर रही हूँ ।। ११ ।। मैंने बड़े परिश्रम से अपना घोंसला बनाया है, इस उलूक ने बलपूर्वक वह घोंसला छीन लिया है। उलूक बोला, रामचन्द्र आप विष्णु-अवतार हैं। रजोगुण द्वारा आपने समस्त संसार का सर्जन किया है ।। १२ ।। आप चन्द्रमा हैं, आप सूर्य हैं, आप दिवा-रात्रि हैं, आप अनाथ के नाथ और अगति की गति हैं। आप धर्म-पालन में परम धार्मिक हैं, परम शीतल हैं, विपक्ष के विनाश में आप ज्वलन्त अग्नि हैं ।। १३ ।। (संसार का) आदि-अन्त-मध्य आप ही हैं तथा निर्धन के धन हैं, आप सेवक-वत्सल देव नारायण हैं। आप अंधे के नयन और दुर्बल के बल हैं। यदि मैं अपराधी हूँ तो मुझे उसका प्रतिफल दें ।। १४ ।। तब रामचन्द्र ने उस वृक्ष के नीचे बैठकर सभा की। वहाँ मंत्री-मित्र-सभासद सभी बैठ गये। वशिष्ठ, नारद आदि मुनिगण आये। सुमंत्र और कश्यपमुनि ये दोनों भी आये ।। १५ ।। श्रीराम यह कहने लगे, सभासदगण सुनने लगे। उसी समय देवगण वहाँ आये। रामचन्द्र ने सभा में गिद्धनी से कहा— तेरा यह घोंसला यहाँ कितने काल से है ? ।। १६ ।। गिद्धनी बोली, मेरा वचन सुनिये। जब महाप्रलय में सभी निराकार थे, विष्णु के नाभि-कमल के मूल में ब्रह्मा की उत्पत्ति

तखन अवधि बासा ए डाले आमार । कोन् लाजे पेँचा बेटा करे अधिकार
ईषत् हासेन राम गृधिनी-वचने । पेँचारे जिज्ञासे राम बिचार-बिधाने १८
पेँचा बले, निवेदन शुन रघुवर । बृक्षेर उत्पत्ति हैल धरणी-उपर
तार परे उत्पत्ति हैल यत डाल । एइ रूप बन मध्ये याय कतकाल १९
उड़िते अशक्त हैनु, हैल वृद्ध दशा । तार परे एइ डाले करिलाम बासा
राम बले, सभाखण्ड करह विचार । मिथ्या द्वन्द्व करे केन एइबासा कार २०
सभाते बसिया येबा सत्य नाहि कय । कोटि कल्प बत्सर नरक माझे रय
एक एक बत्सरे बन्धन नाहि खसे । तिन कुल नष्ट हय मिथ्या साक्ष्य दोषे २१
श्रीरामेर बचनेते कहे सभाखण्ड । गृधिनीर उपरे उचित राजदण्ड
चारि बेद सर्ब्ब शास्त्र तोमार गोचर । साक्षाते शुनिले प्रभु, गृधिनी उत्तर २२
प्रलय हइल यबे सृष्टिर संहारे । स्थावर जंगम किछु नाछिल संसारे
त्रिभुवन शून्य यबे एका निरञ्जन । सेइ निरञ्जन हैल सृष्टिर कारण २३
जलेते पृथिबी छिल करिया उद्धार । पृथिबी सृजिया कैल जीवेर सञ्चार
बिष्णुनाभि पद्मे हैल ब्रह्मार उत्पत्ति । देबादि नरादि सृष्टि कैल नाना जाति २४
आगे जीब सृजिलेन, बृक्ष हैल पिछे । किरूपे गृधिनी आसि बासा कैल गाछे
गृधिनी अन्याय बले सभार भितर । राजदण्ड अर्हे प्रभु गृधिनी-उपर २५

हुई, ब्रह्मा ने देव-दानव तथा नाना जातियों का सर्जन किया ॥ १७ ॥ उसी समय से इस डाली पर मेरा घोंसला है । भला यह दुष्ट उलूक किस मुँह से इसपर अधिकार करता है ? गिद्धनी की बात सुनकर राम मुस्कुराने लगे । न्याय-विधान के अनुसार उन्होंने उलूक से पूछा ॥ १८ ॥ उलूक बोला, रघुवर, मेरा निवेदन सुनें ! जब धरती पर वृक्ष की उत्पत्ति हुई, उसके पश्चात् उसमें डालियों की उत्पत्ति हुई, इसके पश्चात् जंगल में कुछ समय बीता ॥ १९ ॥ मैं उड़ने में असमर्थ हो गया, मेरी वृद्धावस्था आ पहुँची । उसके पश्चात् इस डाली पर घोंसला बनाया । श्रीराम ने कहा— सभा अब विचार करे, ये झूठ-मूठ झगड़ा क्यों कर रहे हैं ? यह घोंसला किसका है ? ॥ २० ॥ सभा में बैठकर जो सच नहीं कहता, उसे कोटि कल्प-वर्ष नरक में रहना पड़ता है । एक-एक वर्ष में वह बन्धन नहीं खुलता । झूठी गवाही देने के अपराध से तीनों कुल नष्ट हो जाते हैं ॥ २१ ॥ श्रीराम का वचन सुनकर सभाजनों ने कहा— इस गिद्धनी पर राजदंड करना उचित है । प्रभु, आप चारों वेदों तथा सभी शास्त्रों के ज्ञाता हैं । आपने स्वयं गिद्धनी का उत्तर सुना है ॥ २२ ॥ सृष्टि का संहार होने पर जब प्रलय हो गया था, तब संसार में स्थावर-जंगम कुछ भी न था । त्रिभुवन जब शून्य हो गया तो अकेले निरंजन रह गये । वे ही निरंजन सृष्टि के कारण बने ! ॥ २३ ॥ पृथ्वी जल में थी, उसका उद्धार कर, पृथ्वी का सर्जन कर (निरंजन ने) उस पर जीव का संचार किया । विष्णु के नाभि-कमल से ब्रह्मा की उत्पत्ति हुई । ब्रह्मा ने देव, नर आदि नाना जातियों की सर्जना की ॥ २४ ॥ पहले उन्होंने जीवों की सर्जना की, वृक्ष बाद को हुए । इस गिद्धनी ने तब किस प्रकार से इस वृक्ष

सभामध्ये मिथ्या कहे, नाहि धर्म्म भय। गृधिनीर प्राणदण्ड उपयुक्त हय
देवगण कहे, राम, करि निवेदन। स्वाभाविक गृधिनी ये नहे एइ जन २६
रयेछे गृधिनी पक्षी ह'ये ब्रह्मशापे। शापमुक्त कर पक्षी, ना मारिह कोपे
श्रीराम बलेन, कह, एबा कोन जन। ब्रह्मशाप भोग करे किसेर कारण २७
देवगण कहे, इइ छिल ये राजन्। प्रत्यह करा' त लक्ष ब्राह्मण-भोजन
दैवे एक विप्र चुल पाइल अन्नेते। नृपति रे शाप द्विज दिलेन क्रोधेते २८
ब्राह्मणेरे मांस दिया नष्ट कैले व्रत। गृधिनी हइया बञ्च, खाओ मांस-रक्त
शाप शुनि नृपतिर विरस-वदन। द्विजेर चरणे धरि करिला क्रन्दन २९
शाप विमोचन प्रभु, करह एखन। कत दिने हबे मोर शाप-विमोचन
स्तवे तुष्ट हये विप्र कहिते लागिल। शापे मुक्त हबे बुलि आश्वास करिल ३०
रघुवंशे जन्मिबेन विष्णु येइ काले। शापे मुक्त हबे तुमि तांरे परशिले
ब्रह्मशापे पक्षि योनि हइल भूपति। गृधिनी-वृत्तान्त एइ शुन रघुपति ३१
बहु दुःख पेये राजार एतेक दुर्गति। तुमि परशिले हय पक्षीर सद्गति
देवतार वाक्य शुनि राम रघुमणि। गृधिनीर देह स्पर्श करेन तखनि ३२
पक्षी देह परिहरि निज देह धरि। बिमानेते भूपति चलिल स्वर्गपुरी
दिव्य रथे चड़ि राजा गेल स्वर्गवास। गाइल उत्तरकाण्ड कवि कृत्तिवास ३३

पर घोंसला बनाया था। गिद्धनी ने सभा में आकर अन्याय कहा है, इसलिए इस पर राजदण्ड होना चाहिए ॥ २५ ॥ धर्म का भय किये वग़ैर जो सभा में मिथ्या कहती है, ऐसी इस गिद्धनी को प्राण-दंड देना ही उचित है। तब देवताओं ने कहा— राम, हम आपसे निवेदन करते हैं, यह गिद्धनी तो प्रकृतितः गिद्धनी नहीं है ॥ २६ ॥ यह ब्रह्म-शाप से गिद्धनी पक्षी बनी हुई है। क्रोध से न मारें, इसे शाप से मुक्त कर दें। श्रीराम ने कहा— कहिए, यह कौन है ? यह किस कारण ब्रह्म-शाप भोग रही है ? ॥ २७ ॥ देवगण बोले, यह तो पहले एक राजा थी, जो प्रतिदिन लाखों ब्राह्मणों को भोजन कराया करता था। दैवयोग से एक विप्र ने अपने अन्न में एक बाल पाया। क्रोध में आकर राजा को उसने अभिशाप दिया ॥ २८ ॥ (मुझ) ब्राह्मण को (बाल रूपी) मांस देकर (मेरा) व्रत नष्ट कर दिया। अब तुम गिद्धनी बनकर रहो, मांस-रक्त खाया करो। यह शाप सुनकर राजा का मुँह उदास हो गया। द्विज के चरण पकड़कर वह रोने लगा ॥ २९ ॥ प्रभु, आप अब शाप से मुक्त कर दें। (बता दें) कितने दिनों में मेरा शाप मिटेगा ? स्तव से तुष्ट होकर विप्र कहने लगा— तुम शाप से मुक्त हो जाओगे। कहकर उसे आश्वासन दिया ॥ ३० ॥ जिस काल में रघुवंश में विष्णु उत्पन्न होंगे, तुम उन्हें स्पर्श कर शाप से छुटकारा पा जाओगे। वह राजा ब्रह्म-शाप के कारण पशु-योनि में पड़ा ! हे रघुपति, सुनिये, इस गिद्धनी का वृत्तान्त यही है ॥ ३१ ॥ अनेक दुःख पाकर इस राजा की अशेष दुर्गति हो रही है। आप यदि इसे स्पर्श कर दें तो इसकी सद्गति हो जाए। देवताओं का कथन सुनकर रघुमणि रामचन्द्र ने उसी समय गिद्धनी के शरीर का स्पर्श किया ॥ ३२ ॥

श्रीरामेर अगस्त्य मुनिर आश्रमे गमन ओ दैत्यराजेर उपाख्यान

श्रीरामेरे सम्भाषिया यत देवगण। सकले चलिया गेल अमर-भुवन
सैन्य सह रामचन्द्र चलेन तखन। अगस्त्येर बाटी गिया दिला दरशन 1
अगस्त्य-चरण राम करेन बन्दन। पाद्य-अर्घ्य दिला मुनि वसिते आसन
येइ अलङ्कार बिश्वकर्म्मार निर्म्माण। सेइ अलङ्कार मुनि रामे दिला दान २
राम बले, शुन मुनि ए नहे बिधान। क्षत्र हये नाहि लय ब्राह्मणेर दान
अगस्त्य बलेन, राम, शुन मोर बाणी। अबधान कर, कहि इहार काहिनी ३
सत्ययुगे बिधि एइ ब्राह्मणेर पूजा। ब्राह्मणेर पूजा करे यत क्षत्र राजा
स्वर्गे देवराजा करे देवेर पालन। पृथिबीते क्षत्रराज पालेन ब्राह्मण ४
लोकपाल अंशे क्षुप नामे क्षत्रराजा। ल'ये छिला यत्न करि ब्राह्मणेर पूजा
देवराज बाञ्छाये क्षत्रिये दिते दान। लोकपाल-मध्ये राम तुमि से प्रधान ५
क्षत्र कुले जन्म तब बिष्णु अवतार। तोमारे करिते दान उचित आमार
तोमार शरीर योग्य एइ अलङ्कार। अलङ्कार दिया मुनि कैला पुरस्कार ६

पक्षी का शरीर त्यजकर अपना शरीर धारण कर वह राजा स्वर्ग-पुरी को चला। दिव्य-रथ पर सवार हो वह राजा स्वर्ग में निवास करने चला गया। यह उत्तरकांड कवि कृत्तिवास ने गाया है ॥ ३३ ॥

श्रीराम का अगस्त्य मुनि के आश्रम में जाना और दैत्यराज की कथा

श्रीराम से संभाषण कर सारे देवता स्वर्ग-लोक को चले गये। तब रामचन्द्र वहाँ से चले और अगस्त्य मुनि के निवास-स्थान में जाकर मुनि को दर्शन दिया ॥ १ ॥ रामचन्द्र ने अगस्त्य मुनि के चरणों की वंदना की। मुनि ने उन्हें पाद्य-अर्घ्य देकर बैठने का आसन दिया और विश्वकर्मा-निर्मित आभूषण रामचन्द्र को दान कर दिया ॥ २ ॥ श्रीराम बोले, मुनि, सुनिये, यह तो कोई नीति नहीं है; क्षत्रिय होकर कोई ब्राह्मणों का दान नहीं लेता! अगस्त्य बोले, श्रीराम, मेरा वचन सुनो! मैं इसकी कहानी सुनाता हूँ, सुनो! ॥ ३ ॥ सत्ययुग में यह बिधि है कि ब्राह्मणों की पूजा हो। सभी क्षत्रिय राजा ब्राह्मणों की पूजा किया करते हैं। स्वर्ग में देवराज देवों का पालन किया करते हैं। धरती पर क्षत्रिय राजागण ब्राह्मणों का पालन किया करते हैं ॥ ४ ॥ लोकपालों के अंश से उत्पन्न क्षुप नाम के क्षत्रिय राजा ने बड़े यत्न से ब्राह्मणों की पूजा ग्रहण की थी। देवराज भी क्षत्रियों को दान करने की अभिलाषा करते हैं, तिस पर हे रामचन्द्र, तुम तो लोकपालों में सबसे प्रधान हो ॥ ५ ॥ क्षत्रिय-कुल में जन्म लेनेवाले तुम विष्णु-अवतार हो। तुम्हें दान देना हमारे लिए उचित है। ये आभूषण तुम्हारे शरीर के योग्य हैं। (ऐसा कहकर) उन आभूषणों को देकर मुनि ने रामचन्द्र को पुरस्कृत किया ॥ ६ ॥ श्रीराम ने कहा— मुनि, मैं आपसे कारण पूछता

श्रीराम बलेन, मुनि, जिज्ञासि कारण। कोथाय पाइले तुमि एइ आभरण
हेन अलङ्कार नाहि संसार-भितरे। कोथा पेले एइ रत्न बलह आमारे ७
अगस्त्य बलेन, तवे शुन रघुबर। सत्ययुगे तप करि वनेर भितर
एकेश्वर तप करि हरिष-अन्तर। घोर काननेते एका थाकि निरन्तर ८
से बनेर गुण कत, कहिते ना पारि। चारि क्रोश पथ युड़ि आछे एक पुरी
पुरी खान देखि तथा अति-मनोहर। अनाहारे तप आमि करि निरन्तर ९
मनोहर सरोबर बनेर भितरे। नित्य-नित्य स्नान करि सेइ सरोबरे
एक दिन प्रत्यूषेते करि गात्रोत्यान। सरोबर-तीरे जाइ करिबारे स्नान १०
आश्चर्य देखिनु अति गिया सेइ घाटे। शब एक पड़े आछे सरोबर-तटे
मड़ा ह'ये क्षय नाहि, अति मनोहर। बिष्णु-अधिष्ठान येन परम-सुन्दर ११
चन्द्रेर किरण प्राय, सूर्य्य हेन ज्योति। अति मनोहर शब, सुन्दर-मूरति
हेन जन नाहि तथा जिज्ञासि कारण। शब, रूप देखिया विस्मित हैल मन १२
सेइ शब, रूप आमि करि निरीक्षण। हेनकाले अमर आइला एक जन
सुवर्णेर रथखान वहे राजहंसे। सातशत देवकन्या पुरुषेर पाशे १३
केह नाचे, केह गाय, केह पुरे बाँशी। आइलेन अबनीते अमर-निबासी
सेइ सरोवर-जले अङ्ग पाखालिल। सुगन्धि चन्दन दिया अङ्गशोभा कैल १४

हूँ, बताइये, ये आभूषण आपको कहाँ से मिले ? ऐसे आभूषण तो संसार में नहीं हैं। ये रत्न आपको कहाँ मिले ? हमें बताइये ॥ ७ ॥ अगस्त्य बोले— रघुवर, तब सुनिये ! सत्ययुग में मैं वन में तपस्या कर रहा था। मन में प्रसन्न रहकर मैं अकेला तप कर रहा था। उस घोर वन में मैं निरन्तर अकेले रहता था ॥ ८ ॥ उस वन के गुणों का वर्णन किया नहीं जा सकता। वहाँ चार कोस के मार्ग से घिरी एक विस्तृत पुरी थी। वह पुरी वहाँ बड़ी मनोहर दीख रही थी। मैं वहाँ निरंतर अनाहारी रहकर तपस्या करता था ॥ ९ ॥ वन के भीतर एक मनोहर सरोवर था, उसी सरोवर में मैं नित्य स्नान करता था। एक दिन बड़े सबेरे उठकर मैं स्नान करने हेतु उसी सरोवर के तट पर गया ॥ १० ॥ उस घाट पर पहुँचकर मैंने एक आश्चर्य देखा। देखा कि सरोवर के तट पर एक शव पड़ा हुआ है। मरा हुआ होने पर भी वह शरीर जरा भी नष्ट नहीं हुआ था। वह बड़ा ही मनोहर था। वह मानों विष्णुअधिष्ठान-सा परम सुन्दर था ॥ ११ ॥ वह शव चन्द्र-किरण-सा था। उसकी ज्योति सूर्य-सी थी। सुन्दर-प्रतिमा जैसा वह शव अत्यन्त मनोहर था। वहाँ ऐसा कोई जन न था, जिससे कारण पूछता ! उस शव का रूप देखकर मन विस्मित हो उठा ॥ १२ ॥ मैं उस शव के रूप का निरीक्षण कर रहा था, तभी वहाँ एक देवता आया। उसके सोने के रथ को राजहंस ढो रहे थे। उस पुरुष के साथ सात सौ देवकन्याएँ थीं ॥ १३ ॥ कोई नाच रही थी, कोई गा रही थी, कोई बाँसुरी बजा रही थी। वह अमरलोकनिवासी देवता धरती पर आया। उसने उस सरोवर के जल में अपने अंगों को धोया और सुगन्धित चन्दन से अपने अंगों को सुशोभित किया ॥ १४ ॥

सेइ मड़ा लये तिनि करिया भक्षण । हरषिते रथे गिया कैला आरोहण
रथे आरोहण करि स्वर्गबासे याय । हेन काले योड़हाते जिज्ञासिनु ताय १५
देवरथे चड़ियाछ देब-अबतार । देबता हइया मड़ा करिले आहार
इहार बृत्तान्त मोरे कह देखि शुनि । कहिते लागिल मोरे करि योड़पाणि १६
स्वर्गराज-पुत्र आमि दैत्य नाम धरि । पितृ बिद्यमाने आमि स्वर्ग राज्य करि
स्वर्गबासे गेल पिता कतदिन परे । राज्यभार दिया आमि कनिष्ठ सोदरे १७
अनाहारे तप आमि करिनु बिस्तर । स्वर्ग प्राप्ति हैल मोर त्यजि कलेबर
क्षुधा-तृष्णा हैले आमि सहिते ना पारि । जिज्ञासिनु बिरिञ्चिरे करयोड़ करि १८
स्वर्गपुरे आइलाम तपस्यार फले । क्षुधानले सतत आमार अङ्ग ज्वले
ब्रह्मा बलिलेन, भुञ्ज आपनार फल । क्षुधार्त्तेरे तुमि नाहि दिले अन्नजल १९
याहा देय, ताहा पाय वेदेर लिखन । आपनि भाबिया राजा, बुझह एखन
आपना करिले तुष्ट भोजनेर आशे । निज अङ्ग खाओ तुमि मनेर हरषे २०
ना पचिबे, ना गलिबे, मधुर सुस्वाद । से शरीर खाइले घुचिबे अबसाद
ब्रह्मार मुखेते शुनि एतेक बचन । एतेक दुर्गति मोर खण्डन कारण २१
कातरे कहिनु धरि ब्रह्मार चरणे । एइ दुःख-अबसान हबे कत दिने
ब्रह्मा कहिलेन, कथा शुनह राजन । येमते हइ तब पाप-बिमोचन २२

उस मृतक को लेकर उसने भक्षण किया और हर्षित हो अपने रथ पर सवार हुआ। वह रथ पर सवार हो स्वर्ग को जा रहा था, तभी मैंने हाथ जोड़कर उससे पूछा ।। १५ ।। आप देव-अवतार हैं, देव-रथ पर सवार हैं, देवता होकर भी आपने मृत देह का भक्षण किया। इसका वृत्तान्त आप मुझसे कहिये, मैं सुनना चाहता हूँ। तब वह हाथ जोड़कर कहने लगा ।। १६ ।। मैं स्वर्ग-निवासी राजपुत्र हूँ, पहले मैं दैत्य नाम धारण कर पिता के रहते हुए स्वर्ग में राज करता था। कुछ दिन पश्चात् पिता स्वर्ग-वासी हुए। तब मैंने अपने छोटे भाई को राज्य सौंप कर ।। १७ ।। उपवासी रहकर बड़ी तपस्या की। इससे शरीर छोड़ने के बाद मुझे स्वर्ग प्राप्त हुआ। (स्वर्ग प्राप्त होने पर भी) मैं भूख-प्यास सह नहीं पाता था। मैंने हाथ जोड़कर ब्रह्माजी से पूछा ।। १८ ।। मैं तो तपस्या के फल से स्वर्गपुरी आया हूँ। फिर भी क्षुधा की ज्वाला से मेरे अंग निरंतर जलते रहते हैं। ब्रह्मा बोले— अपना कर्म-फल भोगो। तुमने (पहले) किसी क्षुधार्त जन को अन्न-जल नहीं दिया था ।। १९ ।। वेदों में लिखा है, जो, जो देता है उसे वही मिलता है। राजा, अब तुम स्वयं सोचकर देखो ! तुमने भोजन की अभिलाषा से केवल अपने को ही तुष्ट किया है। अब अपने मन की प्रसन्नता से तुम अपने ही अंगों को भोजन करो ।। २० ।। तुम्हारा शव न सड़ेगा, न गलेगा, वह (खाने में) मधुर सुस्वादु लगेगा। उस शरीर को खाने पर अवसाद मिटेगा। ब्रह्मा के मुँह से यह वचन सुनकर, अपनी इस दुर्गति को खंडन करने का उपाय ।। २१ ।। जानने के लिए मैंने ब्रह्मा के चरण पकड़कर कहा— मेरे इस दुःख का अवसान कितने दिनों में होगा ? ब्रह्मा बोले— राजा, सुनो, तुम्हारा पाप जिस प्रकार से मिट सकता है,

जावे तप करिते अगस्त्य मुनिबर। निदाघ-समये तप करे एकेश्वर
तोमार सहित तार हबे दरशन। तारे दान दिले तब पाप-विमोचन २३
बहु तप करियाछ, ना करिले दान। अगस्त्येरे दान दिले पाबे परित्राण
से अवधि मड़ार शरीर खाइ आमि। एहेन पापेते यदि रक्षा कर तुमि २४
चारि युग मड़ा खाइ विधिर बचने। आजि शुभ दिन मम तव दरशने
तोमा-बिना आमार नाहिक अन्य गति। तुमि त्राण करिले आमार अव्याहति २५
कृपा कर मुनिबर, करि परिहार। तुमि दान निले हय आमार उद्धार
स्तुतिबशे दान आमि करिनु ग्रहण। अङ्ग हैते खसाइया दिल आभरण २६
तार दान लइलाम एइ से कारण। मृतदेह नष्ट तार हइल तखन
अनाथेर नाथ तुमि, अगतिर गति। तोमारे ए दान दिले आमार मुकति २७
मोरे दान दिये राजा पाइयाछे त्राण। मम परित्राण हय तुमि निले दान
अगस्त्येर कथा शुनि श्रीरामेर हास। कह कह बलि राम करेन प्रकाश २८

दण्डकारण्येर बृत्तान्त

विदर्भ देशेते राजा श्वेत नरेश्वर। बनमध्ये तप राजा करे निरन्तर
से बनेते जन्तु नाइ, किसेर कारण। एमन आश्चर्य बन शतेक योजन १

बताता हूँ ।। २२ ।। मुनिवर अगस्त्य तपस्या करने जायेंगे। ग्रीष्म काल में वे अकेले तप करेंगे। तुमसे उनकी भेंट होगी। उन्हें दान देने पर तुम्हारा पाप मिट जायेगा ।। २३ ।। तुमने बड़ी तपस्या की है पर दान नहीं किया है। (इस दोष से) अगस्त्य मुनि को दान करने पर तुम्हें मुक्ति मिलेगी ! उसी समय से मैं अपने शव का शरीर खाया करता हूँ। ऐसे पाप से चाहें तो आप ही उबार सकते हैं ।। २४ ।। ब्रह्मा के कथनानुसार मैं चार युग तक शव खाता रहा हूँ। आज के इस शुभ दिन में मुझे आपका दर्शन मिला है। आपके बिना मेरी अन्य गति नहीं है। आप त्राण करें तो मुझे मुक्ति मिल सकती है ।। २५ ।। मुनिवर, कृपा करें, जिससे मैं (यह शव-भक्षण) छोड़ सकूँ। आप दान ग्रहण करें तो मेरा उद्धार हो सकता है। राजा का स्तुति-वचन सुनकर मैंने दान ग्रहण किया। राजा ने अपने शरीर से आभूषण खोलकर दे दिये ।। २६ ।। मैंने इसी कारण उनका दान ग्रहण किया। तभी उसका शव नष्ट हो गया। हे राम, तुम अनाथ के नाथ हो, अगति की गति हो। तुम्हें यह दान देने पर मुझे भी मुक्ति मिल जायेगी ।। २७ ।। मुझे दान देकर राजा को परित्राण मिला। अब तुम दान ले लो तो मुझे भी मुक्ति मिल जाये। अगस्त्य मुनि की बात सुनकर श्रीराम हँसने लगे। उन्होंने कहा— मुनिवर, आगे की कथा सुनाइए ।। २८ ।।

दंडकारण्य का वृत्तान्त

राजा श्वेत विदर्भ देश का राजा था। वह राजा वन में निरंतर तप

मुनि बलिलेन, राम, तब पूर्व्व-बंशे। नल नामे राजा छिल बिदर्भेर देशे
पृथिबी-बिख्यात राजा धर्म्मे राज्य करे। तार पुत्र हइल इक्ष्वाकु नाम धरे २
इक्ष्वाकु हइते सूर्य्यबंशेर प्रचार। पृथिबी-भितरे कारो नाहि अधिकार
सत्य कराइया राजा पुत्रे राज्य दिल। तपस्या करिया राजा स्वर्गबासे गेल ३
इक्ष्वाकु-कनिष्ठ पुत्र हइल पाषण्ड। दुराचार राजा नाम दिल दण्ड
सूर्य्यबंशे जन्मि दण्ड करे अनाचार। पर्व्वत माझारे तारे दिल राज्यभार ४
ऋष्यभृङ्ग पर्व्वते से दण्ड राज्य करे। मधु नामे पुरी तथा बसाइल परे
रचिया बिचित्रपुरी दण्ड नरेश्वर। इन्द्रेर अधिक सुख भुञ्जे निरन्तर ५
सुखेते थाकिते ताय देवता पाषण्ड। शुक्रेर बाटीते गेल एक दिन दण्ड
अब्जा नामेते एक शुक्रेर कुमारी। पुष्प तुलिबारे एल परमासुन्दरी ६
रूपे आलोकरे कन्या सुखे तुले फुल। कन्यारे देखिया राजा हइल व्याकुल
देखिया कन्यार रूप कामे अचेतन। हस्तेते धरिया कहे मधुर बचन ७
काहार युबती तुमि, कन्या बल कार। अवश्य कहिबे मोरे सत्य समाचार
कन्या बले, शुन राजा, निवेदन करि। शुक्रमुनि-कन्या आमि, अब्जा नाम धरि ८
मोर पिता हय तब कुलपुरोहित। आमार सहित रङ्ग ना हय उचित
राजा बले, तब रूपे प्राण नाहि धरि। प्राण रक्षा कर मोर, शुन लो सुन्दरी ९

करता था। उस वन में किसी कारण से कोई जन्तु न था। ऐसा वन लगभग सौ योजन फैला हुआ था ॥ १ ॥ मुनि बोले— राम, तुम्हारे पूर्व-वंश में विदर्भ देश में नल नाम का राजा था। वह पृथ्वी-विख्यात राजा धर्मपूर्वक राज्य करता था। उसका पुत्र इक्ष्वाकु नाम का राजा हुआ ॥ २ ॥ उस इक्ष्वाकु से ही सूर्यवंश का प्रसार हुआ। धरती पर और दूसरे का अधिकार न था। राजा ने पुत्र को शपथ करवाकर राज्य प्रदान किया और तपस्या कर स्वर्गवासी हुआ ॥ ३ ॥ इक्ष्वाकु का कनिष्ठ पुत्र पाषण्ड था। उस दुराचारी का नाम राजा ने दंड रखा। सूर्यवंश में जन्म लेकर दंड अनाचार करता था, इसी कारण पर्वतों के बीच उसे राज्य-भार दिया गया ॥ ४ ॥ कृष्णशृंग पर्वत पर वह दंड राज करने लगा। इसके पश्चात् उसने वहाँ मधु नाम की पुरी बसायी। विचित्र पुरी का निर्माण कर राजा दंड इन्द्र से भी अधिक सुख भोगने लगा ॥ ५ ॥ वह पाषण्ड देवता जैसा सुख से रहता था। एक दिन दंड शुक्राचार्य के यहाँ पहुँचा। शुक्राचार्य की अब्जा नाम की एक कुमारी कन्या थी। वह परमा सुन्दरी फूल चुनने के लिए आयी थी ॥ ६ ॥ वह कन्या अपने रूप से आलोकित करती आनन्द से फूल चुन रही थी। उस कन्या को देखकर राजा व्याकुल हो गया। कन्या का रूप देखकर वह काम से अचेत-सा हो गया। उस कन्या का हाथ पकड़कर वह मधुर वचन से बोला ॥ ७ ॥ बताओ, तुम किसकी युवती (पत्नी) हो, किसकी कन्या हो? तुम मुझे अवश्य ही सत्य-समाचार सुनाओ। कन्या बोली, राजा सुनिये, मैं निवेदन करती हूँ। मैं मुनि शुक्र की कन्या हूँ, मेरा नाम अब्जा है ॥ ८ ॥ मेरे पिता आपके कुल-पुरोहित हैं। मेरे साथ

आमार रमणी हैले हव तब दास। तोमा-बिना आर नारी ना लइब पाश
शत शत महादेबी करे दिब दासी। सर्व्व नारी जिनि हबे आमार महिषी १०
यदि नाहि शुन कन्या, आमार बचन। बले धरि शृङ्गार करिब एइक्षण
राजार बचन शुनि क्रोधे बले अब्जा। मोरे बल करिले मरिबे तुमि राजा ११
मोरे बल करिले पितार मनस्ताप। सबंशे मरिबे राजा, पिता दिले शाप
आमार पितार आगे लह अनुमति। तबे आमि तब सङ्गे करिब पिरीति १२
राजा बले, तब पिता आसिबे कखन। तदवधि धैर्य नाहि धरे मोन मन
तोमा-बिना आर मम मने नाहि आन। पाये धरि कन्या, मोरे देह रतिदान १३
प्राणरक्षा कर मोरे दिया आलिङ्गन। तब आलिङ्गन-बिना ना रहे जीवन
योड़हाते भूपति पड़िल कन्या-पाय। सम्मति ना देय कन्या, अशेष बुझाय १४
देवर निर्व्बन्ध, कन्या नृपे देय गालि। बले धरि शृङ्गार करये महाबलि
हात पा आछाड़े कन्या, आलुलित केश। शृङ्गार सहिते नारे, यन्त्रणा अशेष १५
शृङ्गारेते शुक्र-कन्या कातर हइल। एतक देखिया राजा सत्वरे छाड़िल
शृङ्गार करिया दण्डराजा गेल घर। कोथा पिता बलि कन्या कान्दिल बिस्तर १६

संभोग करना आपके लिए उचित नहीं। राजा बोला, तुम्हारा रूप देखकर मेरे प्राण निकले जा रहे हैं। हे सुन्दरी, सुनो, तुम मेरी प्राण-रक्षा करो ! ॥ ९ ॥ तुम अगर मेरी पत्नी बन जाओ तो मैं तुम्हारा दास बनूंगा। तुम्हें छोड़कर किसी और नारी को अपने पास नहीं लूँगा। सैकड़ों पटरानियों को तुम्हारी दासी बना दूँगा। सभी नारियों से ऊपर तुम मेरी पटरानी बनोगी ॥ १० ॥ हे कन्या, यदि तुम मेरी बात न सुनोगी, तो मैं बलपूर्वक तुम्हें पकड़कर इसी क्षण संभोग करूँगा। राजा का वचन सुनकर अब्जा ने क्रोध से कहा— राजा, यदि मुझ पर बल-प्रयोग करोगे तो तुम मारे जाओगे ॥ ११ ॥ मुझ पर बल-प्रयोग करने पर पिता को मनस्ताप होगा, पिता यदि शाप दे दें तो राजा, तुम सवंश मारे जाओगे। पहले मेरे पिता से अनुमति ले लो, इसके पश्चात मैं तुमसे प्रेम करूँगी ॥ १२ ॥ राजा बोला, तुम्हारे पिता कब आयेंगे ? उतने समय तक मेरा मन धीरज नहीं धर पा रहा है। तुम्हें छोड़कर मेरे मन में और दूसरा कुछ भी नहीं है। हे कन्या, मैं तुम्हारे पैर पकड़ता हूँ, मुझे रति-दान करो ॥ १३ ॥ मुझे आलिंगन देकर प्राण-रक्षा करो। तुम्हारे आलिंगन के बिना मेरा जीवन नहीं रहेगा। राजा हाथ जोड़कर कन्या के चरणों पर गिर पड़ा। कन्या उसे सम्मति न देती थी, उसे बहुत समझाती थी ॥ १४ ॥ वह दैव का लेखन था। कन्या राजा को गालियाँ दे रही थी। पर वह महाबली राजा उसे बलपूर्वक पकड़कर संभोग करने लगा। कन्या हाथ-पैर पटकने लगी, उसके बाल बिखर गये। वह संभोग सह नहीं पा रही थी, उसे असीम यत्रणा हो रही थी ॥ १५ ॥ संभोग से शुक्र-कन्या कातर हो उठी, वह देखकर राजा ने उसे तुरंत छोड़ दिया। उससे संभोग करने के बाद राजा दंड घर चला गया। पिताजी

आइलेन शुक्राचार्य लये शिष्यगण । हेँटमाथा करि कन्या करिछे क्रन्दन
कान्दितेछे अब्जा कन्या, सम्मुखे देखिल । ध्यानस्थ हइया मुनि सकलि जानिल १७
क्रोधेते हइल मुनि येन अग्निशिखा । गुरुकन्या हरे राजा, ना करे अपेक्षा
अभिशाप दिल मुनि सह-शिष्यगणे । पुड़िया मरुक राजा अग्नि-बरिषणे १८
अग्निवृष्टि राज्येते हइल सात राति । सवंशे पुड़िया मरे दण्ड नरपति
घोड़ा-हाथी पुड़े, आर यतेक भाण्डार । शतेक योजन पुड़ि हइल अङ्गार १९
सवंशेते दण्डराजा हइल विनाश । शुक्रमुनि बसिलेन छाड़िया निःश्वास
ब्रह्मशापे शत योजन नाहिक वसति । दण्डारण्य बलिया से वनेर ख्याति २०
ब्रह्मशापे नाहि पशु-पक्षी मुनिगण । वनेर वृत्तान्त एइ राजीबलोचन
उपनीत हैल सन्ध्या बेला-अवसाने । दुइजन करिलेन सन्ध्या सेइस्थाने २१
मिष्टान्न-भोजन मुनि कराइला रामे । सेइ दिन बञ्चे राम मुनिर आश्रमे
रजनी-प्रभाते राम मागिया मेलानि । मुनिरे प्रणामि कहे सुमधुर बाणी २२
तोमा-दरशने मोर सफल जीवन । आरबार देखि जेन तोमार चरण
मुनि बले, राम, तब मधुर बचन । तोमार वचने तुष्ट यत देवगण २३
अनाथेर नाथ तुमि, अगतिर गति । तोमा-दरशने बड़ पाइलाम प्रीति

कहाँ है, कहकर कन्या बहुत रोने लगी ॥ १६ ॥ शुक्राचार्य शिष्यों को लेकर आ पहुँचे । कन्या सिर झुकाये रुदन कर रही थी । उन्होंने सामने देखा कि कन्या अब्जा रो रही है । तब मुनि ने ध्यान लगाकर सब कुछ जान लिया ॥ १७ ॥ क्रोध के मारे मुनि अग्नि-शिखा जैसे हो गये । राजा दंड ने प्रतीक्षा किये वग़ैर गुरु-कन्या का हरण किया ! शिष्यों-सहित मुनि ने अभिशाप दिया, यह राजा अग्नि-वर्षा से जल मरे ॥ १८ ॥ सात रात तक उस राज्य में अग्नि-वर्षा होती रही । राजा दंड उस अग्नि-वर्षा से सवंश जल मरा । उसके हाथी-घोड़े और जितने भंडार थे सब जल गये । सौ योजन जलकर भस्म हो गया ॥ १९ ॥ राजा दंड का सवंश विनाश हो गया । इससे (संतप्त होकर) शुक्र मुनि लम्बी साँसें लेने लगे । ब्रह्मशाप के कारण सौ योजन में कोई आबादी नहीं रही । उस वन की प्रसिद्धि दंडारण्य (दंडकारण्य) के रूप में है ॥ २० ॥ ब्रह्म-शाप के कारण वहाँ न पशु-पक्षी रहते थे और न मुनिगण ! हे राजीव-लोचन राम ! उस वन का वृत्तान्त यही है । दिन बीतने पर सन्ध्या समय आ गया । उन दोनों ने वहीं संध्या की ॥ २१ ॥ रामचन्द्र को मुनि ने मिष्टान्न भोजन करवाया । रामचन्द्र ने वह दिन मुनि के आश्रम में बिताया । रजनी-प्रभात होने पर रामचन्द्र ने विदा लेकर, मुनि को प्रणाम कर, यह सुमधुर वचन कहा ॥ २२ ॥ आपके दर्शन पाकर मेरा जीवन सफल हो गया । पुनः जैसे आपके चरणों के दर्शन कर सकूँ । मुनि बोले, राम, तुम्हारा वचन मधुर है । तुम्हारे वचन से सभी देवता संतुष्ट रहते हैं ॥ २३ ॥ तुम अनाथों के नाथ, अगति की गति हो । तुम्हारे दर्शन से मुझे बड़ा आनन्द हुआ है । मुनि के चरणों में नमस्कार

मुनिर चरणे राम नमस्कार करि। उपनीत हैल गिया अयोध्यानगरी २४
शुनिले रामेर गुण सिद्ध अभिलाष। गाइल उत्तरकाण्ड कवि कृत्तिवास

वृत्रासुर-बध-बृत्तान्त

सभा करि बसिलेन कमललोचन। भरत-शत्रुघ्न आसि बन्दिले चरण १
राम कहे, भरत लक्ष्मण शत्रुघन। एकमने शुन सबे आमार बचन
ब्रह्मबध करिया करेछि महापाप। से-कारणे पाइ आमि बड़ मनस्ताप २
राजसूय यज्ञ आमि करिब एखन। ताहार उद्योग कर भाइ तिनिजन
एत शुनि तिन भाइ करे हाहाकार। राजसूये-यज्ञे हय सबंश संहार ३
पूर्व्वे राजसूय कैला राजा शशधर। गृह-पक्षी पुड़ि लोक मरिल विस्तर
राजसूय-यज्ञ कैल देवता वरुण। मरिल मकर-मत्स्य पुड़ि सेकारण ४
राजसूय यज्ञ कैल देव पुरन्दर। सुरासुर युद्ध ताहे हइल बिस्तर
सगर-नृपति पूर्व्वबंशेते तोमार। पृथिवीर राजा छिल गुणे बस यार ५
राजसूय-यज्ञ कैल से महाशय। बंश मजाइल, शेषे आपना संशय
भरतेर बाक्ये, रामे लागे चमत्कार। भरत रामेर प्रति कहे आरबार ६
हरिश्चन्द्र नामे राजा तव पूर्व्वबंशे। राजसूय यज्ञ करि दुःख पाय शेषे
राजा हरिश्चन्द्र दान करिया पृथिवी। बिक्रय करिल पुत्र-आदि महादेवी ७

कर रामचन्द्र अयोध्या नगरी चले आये ॥ २४ ॥ रामचन्द्र के सुनने पर अभिलाषाएँ सिद्ध होती हैं। कवि कृत्तिवास ने इस उत्तरकांड का गायन किया है।

वृत्रासुर-वध का वृत्तान्त

कमल-लोचन रामचन्द्र राजसभा बुलाकर बैठे। भरत-शत्रुघ्न ने आकर उनकी चरण-वन्दना की ॥ १ ॥ राम बोले, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, मन लगाकर सभी मेरी बात सुनो। मैंने ब्रह्म-वध कर महान् पाप किया है। उसी कारण मेरे मानस में बड़ा संताप हो रहा है ॥ २ ॥ मैं अब राजसूय यज्ञ करूँगा। तुम तीनों भाई उसका उद्योग करो। यह सुनकर तीनों भाई हाहाकार करने लगे। राजसूय यज्ञ में तो सवंश संहार हो जाता है ॥ ३ ॥ पहले राजा शशधर ने राजसूय यज्ञ किया था। जिससे गृह-पक्षी जलकर अनेक लोग मारे गये! वरुण देवता ने राजसूय यज्ञ किया था, जिससे मकर-मत्स्य आदि जल मरे ॥ ४ ॥ देव पुरंदर ने राजसूय यज्ञ किया था, जिससे प्रचंड देवासुर-संग्राम हुआ। आपके पूर्व इस वंश में राजा सगर थे, जिनके गुणों से संसार के सभी राजा वशीभूत थे ॥ ५ ॥ उन महदाशय राजा ने राजसूय यज्ञ किया था, जिस कारण उनका वंश समाप्त हो गया, अंत में उनका अपना (जीवन)-संशय उपस्थित हो गया। भरत के वचन सुनकर राम को बड़ा अचरज हुआ। रामचन्द्र से भरत पुनः कहने लगे— ॥ ६ ॥ आपके वंश में

राज्य छाड़ि हरिश्चन्द्र जाय बाराणसी । दक्षिणा चाहिल तारे बिश्वामित्र ऋषि
दण्डेर आघाते मुनि करिल ताड़ना । स्त्री-पुत्र बेचिया राजा दिले दक्षिणा ८
एत दुःख, तबु ना पाइल स्वर्गबास । राजसूय-यज्ञे राजार हेन सर्ब्बनाश
अन्तरीक्षे फिरे राजा कर्म्मेर दोषेते । स्थान ना पाइल स्वर्ग-मर्त्य-पातालेते ९
हेन राजसूय यज्ञे केन कर मन । राजसूय यज्ञ कैले सबंशे मरण
अनाथेर नाथ तुमि त्रिजगत-पति । राजसूय यज्ञ कैले घटिबे दुर्गति १०
राजसूय ना हइल भरत-कारण । भरतेर बाक्ये श्रीरामेरे अन्य मन
भरतेर बाक्य यदि हैल अबसान । लक्ष्मणे कहेन, तबे राम विद्यमान ११
योड़हाते कहिलेन ठाकुर लक्ष्मण । अश्वमेध यज्ञ कर कमललोचन
पूर्ब्बे ब्रह्मबध कैल देब पुरन्दरे । ब्रह्महत्या एड़ाइल अश्वमेध करे १२
बृत्र नामे असुर से बिप्रेर नन्दन । आपनार बाहुबले जिने त्रिभुबन
ठेकये ताहार माथा आकाशमण्डल । बृत्रासुर प्रतापते काँपे आखण्डल १३
धार्म्मिक से बृत्रासुर धर्म्मे राज्य पाले । बिना बृष्टि-बरिषणे नाना शस्य फले
पुत्रे राज्य दिया गेल तपस्या-कारण । असुरेर तपस्याते काँपे देबगण १४

पहले हरिश्चन्द्र नाम के राजा थे, जिन्होंने राजसूय यज्ञ कर अन्त में दुःख पाया था। राजा हरिश्चन्द्र ने पृथ्वी का दान कर दिया, पुत्र आदि समेत अपनी पटरानी को बेच दिया ॥ ७ ॥ राज्य छोड़कर हरिश्चन्द्र वाराणसी में गये (क्योंकि) उनसे ऋषि विश्वामित्र ने दक्षिणा माँगी थी। मुनि विश्वामित्र ने दंड के आघात से उनकी ताड़ना की थी। राजा ने अपने स्त्री-पुत्र को बेचकर दक्षिणा चुकाई थी ॥ ८ ॥ इतना दुःख मिला, तथापि उन्हें स्वर्ग-वास प्राप्त नहीं हुआ। राजसूय यज्ञ से राजा का ऐसा सर्वनाश हो गया। राजा हरिश्चन्द्र अपने कर्मदोष से अन्तरिक्ष में चक्कर लगाते रहते हैं। उन्हें स्वर्ग, मर्त्य, पाताल में स्थान नहीं मिला ॥ ९ ॥ ऐसे राजसूय यज्ञ करने की इच्छा आप क्यों करते है ? राजसूय यज्ञ करने पर सवंश मरण होता है। आप अनाथों के नाथ और त्रिभुवन के पति हैं। राजसूय-यज्ञ करने पर दुर्गति होगी ॥ १० ॥ भरत के इस प्रकार कहने के कारण राजसूय यज्ञ नहीं हुआ। भरत के वचन से श्रीराम का मन वदल गया। भरत की बातें समाप्त होने पर लक्ष्मण राम से कहने लगे ॥ ११ ॥ देव लक्ष्मण ने हाथ जोड़कर कहा— हे कमल-लोचन, आप अश्वमेध यज्ञ कीजिए। पूर्व काल में देवराज इन्द्र ने ब्रह्म-वध किया था। अश्वमेध यज्ञ कर उन्होंने उस ब्रह्म-हत्या से छुटकारा पाया था ॥ १२ ॥ ब्राह्मण का पुत्र वह वृत्र नाम का असुर था। अपने बाहुबल से उसने त्रिभुवन जीत लिया था। उसका मस्तक आकाश-मंडल को छू लेता था। वृत्रासुर के प्रताप से स्वर्ग-लोक काँपता था ॥ १३ ॥ वृत्रासुर धार्मिक था, वह धर्म-पूर्वक राज्य का पालन करता था, उसके राज्य में बिना वर्षा के नाना प्रकार के अनाज उत्पन्न होते थे। अपने पुत्र पर राज्य-भार सौंपकर वह तपस्या करने

देवगण चलि गेल बिष्णुर गोचर। वृत्रासुर-तप-कथा कहे पुरन्दर
धार्म्मिक से वृत्रासुर, बले महाबल। तार सम राजा नाहि अवनीमण्डल १५
बहु तप करे से, पुण्येर नाहि संख्या। जाहा चावे ताहा पावे, कारो नाहि रक्षा
बहु स्तुति करे सबे विष्णुर चरणे। वृत्रासुरे मारि रक्षा कर देवगणे १६
बिष्णु कहे वृत्रासुर वड़ह चतुर। आमार सेबाते मान बेड़েছে प्रचुर
स्वहस्ते मारिते कभु युक्ति नाहि हय। प्रकारे बधिया तारे घुचाइब भय १७
तिन अंशे हइब असुर मारिबारे। एक अंशे र'ब गिया पाताल-भितरे
आर एक अंशे आमि र'ब मर्त्यपुरे। आर एक अंशे र'ब तोमार शरीरे १८
तोमार शरीरे आमि हइनु दोसर। वृत्रासुरे मारिबारे चलह सत्वर
युद्धते चलिल इन्द्र विष्णुर वचने। प्रवेश करिल गिया वृत्रासुर-रणे १९
वृत्रासुरे देखि देवे लागे चमत्कार। इन्द्रेरे बलिल, हव सहाय तोमार
बिष्णुतेजे वृत्र-अरि बहु शक्ति धरे। बज्र हानिलेक वृत्रासुरेर उपरे २०
बज्रअस्त्र आघातेते वृत्रासुर मरे। ब्रह्मबध प्रवेशिल इन्द्रेर शरीरे
ब्रह्महत्या-भये इन्द्र त्रासित अन्तरे। वृत्रासुरे मारि इन्द्रे महापापे घेरे २१

चला गया। उस असुर की तपस्या से देवगण काँपने लगे ॥ १४ ॥ देवगण तब विष्णु के पास गये। उनसे इन्द्र ने वृत्रासुर की तपस्या की बात सुनायी। वह वृत्रासुर धार्मिक है, बल में महाबली है। उसके समान राजा धरती पर कोई नहीं है ॥ १५ ॥ वह अनेक तप करता है, उसके पुण्यों की गिनती नहीं है, तपस्या के बल से वह जो चाहेगा, वही पा लेगा। उससे किसी की रक्षा नहीं। सब देवता विष्णु के चरणों में अनेक स्तुति करने लगे। आप वृत्रासुर को मारकर देवगणों की रक्षा करें ॥ १६ ॥ विष्णु बोले— वृत्रासुर बड़ा ही चतुर है। मेरी सेवा करने के कारण उसका मान बहुत बढ़ गया है। उसे अपने हाथ से मारने का कोई औचित्य नहीं है। दूसरे प्रकार से उसका वध कर मैं तुम्हारा भय दूर करूँगा ॥ १७ ॥ असुर को मारने के लिए मैं तीन अंशों में अवतार लूंगा। एक अंश से मैं जाकर पाताल में रहूँगा। एक और अंश से मैं मर्त्यलोक में रहूँगा और एक अंश से मैं तुम्हारे शरीर में रहूँगा ॥ १८ ॥ मैं तुम्हारे शरीर में साथी बनकर प्रविष्ट हो रहा हूँ। अब तुम वृत्रासुर को मारने के लिए शीघ्र चलो। विष्णु के वचन सुनकर इन्द्र युद्ध करने चले ! उन्होंने वृत्रासुर के साथ संग्राम हेतु (रणभूमि में) प्रवेश किया ॥ १९ ॥ वृत्रासुर को देखकर देवगण चमत्कृत हो उठे। (उन सबने) इन्द्र से कहा— हम आपकी सहायता करेंगे। वृत्र-अरि इन्द्र विष्णु के तेज से अनेक शक्तिमान हो उठे थे। उन्होंने वृत्रासुर पर वज्र का प्रहार किया ॥ २० ॥ वज्र-अस्त्र के प्रहार से वृत्रासुर मारा गया। तब इन्द्र के शरीर में ब्रह्म-हत्या प्रवेश कर गयी। ब्रह्म-हत्या के भय से इन्द्र संत्रस्त हो उठे। वृत्रासुर को मारने के कारण इन्द्र को महा-पाप ने घेर लिया ॥ २१ ॥ पाप से पूर्ण होकर इन्द्र विषाद से सोचने

पापे पूर्ण हये इन्द्र भाबेन बिषादे। बृत्रासुरे मारि आमि पड़िनु प्रमादे
सकल देबता गेला बिष्णुर सदन। ब्रह्महत्या-पापे इन्द्रे करह मोचन २२
बृत्रासुर बध इन्द्र कैल तब तेजे। ब्रह्मबध-पापे रक्षा कर देबराजे
बिष्णु बलिलेन, अश्वमेध आर पूजा। अश्वमेध यज्ञ कर इन्द्र देबराजा २३
ब्रह्मबध-पापे इन्द्र हैल अचेतन। तप जप यज्ञ होम छाड़े त्रिभुबन
नदी स्रोत छाड़े, आर योगी छाड़े योग। राज्यचर्च्चा छाड़े राजा, छाड़े उपभोग २४
ब्रह्मबध-पापे इन्द्र अज्ञान हइल। इन्द्र अचेतन, यज्ञ देबगण कैल
अश्वमेध यज्ञ आरम्भिल देबराजा। नाना भोग दिया सबे करे बिष्णुपूजा २५
अश्वमेध यज्ञ यदि हैल अवसान। ब्रह्मबध पाप नाहि थाके सेइ स्थान
एक अंश ब्रह्मबध जलोपरि भासे। आर अंश ब्रह्मबध बृक्षोपरि बैसे २६
आर अंश ब्रह्मबध नारी रजस्वला। अग्निरूपे पाताले सान्धाय एक कला
चारि भाग ब्रह्मबध रहे चारि स्थान। ब्रह्मबध-पापे इन्द्र पाइलेन त्राण २७
ब्रह्मबध-पाप नाशे अश्वमेध-तेजे। राजसूय यज्ञ कैले सबंशेते मजे
संसारेर कर्त्ता तुमि, पालिछ संसार। राजसूय-यज्ञ कैले सकलि संहार २८
राजसूय यज्ञे छिल श्रीरामेर मन। अश्वमेध यज्ञे मति दिल सर्व्वजन
राम बले, राजसूय यज्ञे छिल मन। तोमा सबाकार बाक्ये करिनु बर्ज्जन २९

लगे— वृत्रासुर को मारकर मैं प्रमाद में पड़ गया हूँ। सारे देवता विष्णु के पास पहुँचे। (उन सबने कहा)— इन्द्र को ब्रह्म-हत्या के पाप से मुक्त कीजिए ॥ २२ ॥ इन्द्र ने आपके तेज से ही वृत्रासुर का वध किया है। देवराज को ब्रह्महत्या-पाप से रक्षा कीजिए। विष्णु बोले— (इसके उपाय हैं) अश्वमेध यज्ञ और पूजा! देवराज, तुम अश्वमेध यज्ञ करो ॥ २३ ॥ ब्रह्म-वध के पाप से इन्द्र अचेत हो गये। इससे त्रिभुवन में तप-जप-यज्ञ-होम बंद हो गये। नदी ने धारा (बहना) छोड़ दी। योगी ने योग तज दिया, राजा ने राज्य-चर्चा छोड़ दी, उपभोग करना छोड़ दिया ॥ २४ ॥ ब्रह्म-वध के पाप से इन्द्र अचेत हो गये। तब इन्द्र को अचेत हो गया देख, देवताओं ने यज्ञ किया। देवराज इन्द्र ने अश्वमेध यज्ञ प्रारंभ किया। सबने नाना प्रकार भोग-पदार्थों से विष्णु की पूजा की ॥ २५ ॥ जब अश्वमेध यज्ञ पूरा हो गया, तो उस स्थान पर ब्रह्म-हत्या का पाप नहीं रह सका। ब्रह्म-हत्या का एक अंश जल के ऊपर तिरने लगा। दूसरा अंश वृक्ष पर जा बसा ॥ २६ ॥ एक और अंश रजस्वला नारी में चला गया। उसका एक अंश पाताल में समा गया। इस प्रकार ब्रह्म-हत्या के चार अंश चार स्थानों में रहने लगे और इन्द्र को ब्रह्म-हत्या के पाप से छुटकारा मिला ॥ २७ ॥ अश्वमेध यज्ञ के तेज से ब्रह्म-हत्या का पाप नष्ट हो जाता है। लेकिन राजसूय यज्ञ करने पर सवंश विनाश हो जाता है। आप संसार के कर्ता हैं। संसार का पालन करते हैं। राजसूय यज्ञ करने पर सबका संहार हो जायेगा ॥ २८ ॥ श्रीराम की इच्छा राजसूय यज्ञ करने की थी, परन्तु सारे जनों ने अश्वमेध यज्ञ करने की राय दी। राम बोले, मेरा मन तो था कि राजसूय यज्ञ

भाल युक्ति सभामध्ये कहिल लक्ष्मण। अश्वमेध करिते हइल मोर मन

इला राजार उपाख्यान

प्रजापति नृपतिर पुत्र गुणधर। इला-नाम धरे सेइ राज्येर ईश्वर १
सर्व्वगुण धरिया से प्रजागणे पाले। सर्व्वलोके सम पूज्य पृथिवीमण्डले
सुदिन प्रवेशे यबे एल मधुमास। मृग मारिबारे गेल पर्व्वत-कैलास २
कैलासेर प्रान्तभागे बन मनोहर। पार्व्वती लइया केलि करेन शंकर
पार्व्वती सहजे नारी, शिब ह'ये नारी। मनेर आनन्दे दोँहे जलकेलि करि ३
महेशेर शाप तथा आछये एमनि। जलजन्तु बनजन्तु हयेछे रमणी
पुरुष-मात्रेते केह नाहि सेइ बने। पार्व्वती शंकर केलि करेन दुजने ४
जलकेलि दुजने करेन कुतूहले। इला राजा सेइ बने गेल हेनकाले
इला राजा उपनीत ताहार समीपे। गतमात्रे नारी हैल शंकरेर शापे ५
यत अनुचर छिल राजार संहति। सैन्य-सेनापति सबे हइल स्त्रीजाति
देखिया रमणीजाति यत अनुचरे। लज्जा पेये इला राजा आपना पासरे ६

करूँ। पर तुम सबके वचनों से हमने उसका त्याग कर दिया ।। २९ ।। सभा में लक्ष्मण ने अच्छी युक्ति दी है। मेरी इच्छा अश्वमेध यज्ञ करने की हुई है।

राजा इला का उपाख्यान

प्रजापति नृपति का एक गुणवान् पुत्र था। उस राज्य का अधीश्वर बनकर उसने 'इला' नाम धारण किया ।। १ ।। सारे गुण धारण कर वह प्रजाजनों का पालन करता था। वह पृथ्वीमंडल पर सभी लोगों से समान रूप से पूज्य था। सुदिन आने पर जब वसन्त का महीना आया तो वह राजा मृगों का शिकार करने कैलास पर्वत पर गया ।। २ ।। कैलास के समीप मनोहर वन था। वहाँ पार्वती को संग लेकर शंकर केलि किया करते हैं। पार्वती तो स्वभावतः नारी थी, शिव भी नारी बनकर दोनों मन के आनन्द से जलकेलि किया करते हैं ।। ३ ।। वहाँ के लिए शंकर का ऐसा शाप है कि जल-जन्तु, वन-जन्तु सभी नारी बन जाते हैं। उस वन में पुरुष कोई नहीं है। वहाँ पार्वती और शंकर ये दोनों केलि किया करते हैं ।। ४ ।। दोनों बड़े कौतूहल से जल-केलि कर रहे थे। उसी काल में राजा इला उस वन में पहुँचा। इला राजा उसके समीप पहुँचा। पहुँचते ही शंकर के शाप के कारण वह नारी बन गया ।। ५ ।। राजा के जितने अनुचर थे, वे सारे सैनिक, सेनापति नारी बन गये। अपने सारे अनुचरों को नारी बने देख राजा इला शर्मिन्दा होकर अपने को भूल गया ।। ६ ।। नारी बनकर उसने अपने सारे शरीर को वस्त्र से ढँक लिया और शंकर के चरणों में बड़ी विनती की। तब

सर्व्वाङ्ग बसने ढाके हइया स्त्रीजाति। शंकरेर चरणेते कैल बहु स्तुति
उठ उठ बलिया डाकेन महेश्वर। पुरुष करिते नारि चाह अन्य बर ७
स्त्रीजाति लइया आमि करि जलकेलि। मोरे लज्जा दिते केन एखाने आइलि
तोर सङ्गे आसियाछे यत अनुचर। पुरुष हइया सबे याक् निज घर ८
पुरुष हइया सबे चलि याक् देशे। तुमि थाक नारी हये आपनार दोषे
शुनि राजा महेशेर निष्ठुर बचन। पार्व्वती पाये धरि करिल रोदन ९
पार्व्वती बलेन, मम बाक्य नहे आन। मासेक पुरुष हबे, करिब बिधान
मासेक पुरुष हबे, ना हबे अन्यथा। मन दिया शुन तबे बलि एक कथा १०
ये मासे पुरुष हबे रबे सेइखाने। नारी हले से कथा बिस्मृत हबे मने
ये ये मासे पुरुष हइबे नरपति। रमणी-मासेते ताहा हइबे बिस्मृति ११
पुरुष हइया राजा गेल निज देशे। नारी हये आरबार बनेते प्रबेशे
पुरुष हइल राजा सह-अनुचर। रमणी हइया राजा भ्रमे एकेश्वर १२
एतेक शुनिया यत सभाजन हासे। नारी हये केमने बञ्चिल एकमासे
पुरुष हइया पुनः किरूपेते बञ्चे। एहेन दारुण शाप कतदिने घुचे १३
राम बले, राजा नारी हैल येइ मासे। लज्जित हइया गिया कानने प्रबेशे
बनेर भितरे आछे ब्रह्म जलाशय। तथा तप करे बुध चन्द्रेर तनय १४

शंकर ने उसे 'उठो, उठो' कहकर पुकारा। उन्होंने कहा— मैं तुम्हें तो पुरुष नहीं बना सकता। तुम दूसरा बर माँगो ॥ ७ ॥ मैं स्त्रियों को साथ लेकर यहाँ जल-केलि किया करता हूँ। मुझे लज्जित करने हेतु तुम यहाँ किसलिए आये। तुम्हारे संग जितने अनुचर आये हैं, वे पुनः पुरुष बनकर अपने-अपने घर चले जायँ ॥ ८ ॥ ये सब पुरुष बनकर अपने देश चले जायें, पर तुम अपने दोष के कारण नारी बनकर रहो। शंकर का निर्मम वचन सुनकर राजा पार्वती के चरण पकड़ रुदन करने लगा ॥ ९ ॥ पार्वती बोली— मेरी बात भी भिन्न नहीं है। पर मैं ऐसी व्यवस्था कर दूँगी कि एक महीना पुरुष बनकर रहो। एक महीना नारी बनकर रहोगे, इसकी अन्यथा नहीं होगी। मन लगाकर सुनो, एक बात बता रही हूँ ॥ १० ॥ जिस महीने में पुरुष बनोगे, तुम वहीं रहोगे। नारी बन जाने पर वह बात मन से भूल जाओगे। जिस-जिस महीने में पुरुष बनोगे, नारी महीने की बातें उस महीने तुम्हें स्मरण नहीं रहेंगी ॥ ११ ॥ राजा पुरुष बनकर अपने देश में गया। दूसरी बार नारी बनकर वह वन में प्रवेश करता था। अनुचरों के साथ राजा पुरुष बन गया, पर नारी बनकर वह अकेले घूमा करता था ॥ १२ ॥ यह बात सुनकर सारे सभासद हँसते थे, कि नारी बनकर (राजा ने) एक महीना कैसा बिताया? पुनः पुरुष बनकर फिर किस प्रकार दिन बिता रहा है। ऐसा भयंकर पाप कितने दिनों में मिटेगा? ॥ १३ ॥ रामचन्द्र कहते गये— राजा जिस महीने नारी बन जाता था, वह लज्जित होकर वन में प्रवेश कर जाता। उस वन में एक ब्रह्म-जलाशय था। चन्द्र का पुत्र बुध वहाँ तपस्या करते थे ॥ १४ ॥ महामना बुध वहाँ कठोर तप किया करते थे। (उन्हें

करेन कठोर तप बुध महाशय । पूर्णिमार चन्द्र येन हयेछे उदय
रमणी देखिया बाड़े पुरुषेर रङ्ग । बुध-हेन तपस्वीर हैल तपोभङ्ग १५
इलारे सम्भाषे बुध, कामे अचेतन । कार कन्या एकाकिनी करिछ भ्रमण
चन्द्रेर कुमार आमि, बुध नाम धरि । तोमार रूपेते प्राण धरिते ना पारि १६
बुधवाक्य शुनिया इलार हैल हास । बुधेर सहित बने वञ्चे एक मास
पुरुषेर अष्टगुण कामार्थी स्त्रीलोके । बुधेर सङ्गेते रहे शृङ्गार-कौतुके १७
केलिरसे मासेक हइल अवशेष । हइल पुरुष-मास राजार प्रवेश
ना जाने ए-सब तत्त्व चन्द्रेर कुमारे । आरबार तप करे सरोबर तीरे १८
आपनार राज्य राजार हैल स्मरण । पुत्र कन्या जाया भाबि करछे रोदन
बनबिन्ध्य-नामे पुत्र आछये आमार । शिशु हये केमने पालिछे राज्यभार १९
भाबिते भाबिते तार गत एकमास । नारीरूप हये गेल चन्द्रपुत्र-पास
परमासुन्दरी इला हयेछे युवती । रात्रिदिन केलि करे बुधेर संहति २०
दिबानिशि रङ्गरसे दोँहे केलि करे । कतदिने गर्भ हैल इलार उदरे
एकमासे स्त्री हय पुरुष आर मासे । पुरुष-मासेते नाहि याय बुध-पाशे २१
इला-लये गेल बुध आपन भवने । देखिया इलार रूप सुखी मने मने
हइल पुरुष मास आर मासे नारी । इला लये क्रोड़े बुध आपनार पुरी २२

देखकर लगता था) मानो पूर्णिमा का चन्द्रमा उदित हुआ हो। रमणी को देखकर पुरुष की उमंग बढ़ जाती है, बुध जैसे तपस्वी का भी तप भंग हो गया ॥ १५ ॥ काम से अचेत-सा होकर, बुध ने इला को सम्बोधित करते हुए कहा— तुम किसकी कन्या हो, अकेली घूम रही हो ! मैं चन्द्रमा का पुत्र हूँ, मेरा नाम बुध है। तुम्हारा रूप देख, मेरे प्राण निकले जा रहे हैं ॥ १६ ॥ बुध के वचन सुनकर इला हँस पड़ी। उसने बुध के साथ वन में एक महीना बिताया। पुरुष की अपेक्षा नारियाँ आठगुनी कामार्थी होती हैं। वह बुध के संग संभोग-कौतुक करती रही ॥ १७ ॥ केलि-रस में एक महीना निकल गया। राजा का पुरुष महीना आ पहुँचा। चन्द्रमा के कुमार को इन सब तत्त्वों का पता न था। वह पुनः सरोवर के तट पर तप करने लगा ॥ १८ ॥ इधर राजा को अपने राज्य का स्मरण हो आया। अपने पुत्र, कन्या, पत्नी आदि की बात स्मरण कर राजा रुदन करने लगा। वनविंध्य नाम का मेरा पुत्र है, शिशु होने के कारण न जाने वह राज्य-भार का पालन किस तरह से कर रहा है ॥ १९ ॥ सोचते-सोचते उसका एक महीना निकल गया। पुनः नारी-रूप बन जाने पर वह चन्द्र-पुत्र बुध के पास गया। परमसुन्दरी इला युवती बन गयी थी। वह बुध के संग दिन-रात केलि करती थी ॥ २० ॥ दिन-रात वे रंग-रस से केलि करते थे। कुछ दिन बाद इला के उदर में गर्भ रह गया। वह एक महीना स्त्री बन जाता था, दूसरे महीने पुरुष। पुरुष के महीने में वह बुध के पास नहीं जाता था ॥ २१ ॥ बुध इला को अपने भवन में ले गये। इला का रूप देख वह मन ही मन सुखी थे ! पुनः पुरुष-मास आया, दूसरे महीने पुनः स्त्री बना। बुध इला को लेकर

रङ्गरसे भूपतिर एक मास गेल। पुरुष-मासेते राजा स्थानान्तर हैल
नय मासे एक पुत्र प्रसविला इला। परमसुन्दर पुत्र रूपे शशिकला २३
पुरूरबा नाम तार, हैल महातेजा। श्राद्धकाले बिप्रभागे करे यार पूजा
आरबार पुरुष हइल दशमासे। ए सकल कथा बुध ना जाने बिशेषे २४
एकादश मासे आरबार हैल नारी। बुधेर सहित बञ्चे हइया सुन्दरी
बारमासे पुरुष हइल आरबार। पुरुष देखिया बुधे लागे चमत्कार २५
जिज्ञासिते इला राजा दिल परिचय। पुरुष जानिया बुधे घृणा बड़ हय
पुरुषे रमणी-ज्ञाने करेछि बिहार। उपयुक्त प्रायश्चित्त कि करि इहार २६
द्विजराज चन्द्र, बुध ताहार नन्दन। आदेशेते आइल यतेक मुनिगण
मुनिगण लये बुध करिला युकति। किरूपेते इला राजा पाइबे निष्कृति २७
आमि किसे परित्राण पाब एइ पापे। बिबरिया मुनिगण, कहत स्वरूपे
मुनिगण कहे, शुन चन्द्रेर कुमार। अज्ञाने करेछ कर्म्म, कि पाप तोमार २८
अश्वमेध-यागे तुष्ट सकल अमर। अश्वमेध याग कर, इला पाबे बर
शंकरेर शापे इलार एतेक दुर्गति। शंकर सन्तुष्ट हेले पाबे अव्याहति २९
बुध बले, युक्ति बटे, ना करि निषेध। बुधेर आश्रमे इला करे अश्वमेध
आपनि आइला शिब यज्ञ देखिबारे। इला राजा पुरुष हइल शिबबरे ३०

अपनी पुरी में क्रीड़ा करते रहे ॥ २२ ॥ रंग-रस में राजा का एक महीना निकल गया। पुरुष-मास में वह राजा दूसरे स्थान को चला गया। इसी तरह नौ महीने पर इला ने एक पुत्र को जन्म दिया। वह पुत्र परम सुन्दर, चन्द्रमा की कला जैसा था ॥ २३ ॥ उसका नाम पड़ा पुरूरवा। वह महान् तेजस्वी हुआ। श्राद्ध के समय विप्रगण उसकी पूजा किया करते हैं। दसवें महीने में राजा पुनः पुरुष बन गया। बुध को ये बातें विशेष ज्ञात नहीं थीं ॥ २४ ॥ ग्यारहवें महीने वह पुनः नारी बन गया। सुन्दरी बनकर वह बुध के संग दिन बिताने लगा। बारहवें महीने में वह पुनः पुरुष बन गया। पुरुष को देख बुध को अचरज हुआ ॥ २५ ॥ पूछने पर इला राजा ने अपना परिचय दिया। उसे पुरुष जानकर बुध को बड़ी घृणा हुई। (वह सोचने लगे) मैंने पुरुष को नारी समझकर विहार किया है। अब इसका कौन-सा उपयुक्त प्रायश्चित्त करूँ ? ॥ २६ ॥ चन्द्रमा द्विजराज है, बुध उसका पुत्र है, उसके आदेश से वहाँ अनेक मुनि आये। मुनियों के संग बुध ने परामर्श किया कि राजा इला को किस प्रकार से मुक्ति मिले ॥ २७ ॥ इस पाप से मुझे किस प्रकार से छुटकारा मिले ? हे मुनिगण, आप लोग विस्तारपूर्वक सत्य बताइए। मुनि बोले— चन्द्रमा के कुमार बुध, सुनो, तुमने अनजान में यह कर्म किया है, तब तुम्हें पाप कसा ? ॥ २८ ॥ अश्वमेध यज्ञ से सारे देवता संतुष्ट होते हैं। तुम अश्वमेध यज्ञ करो, इला को वरदान मिलेगा। शंकर के अभिशाप के कारण इला की ऐसी दुर्गति हुई है। यदि शंकर संतुष्ट हों, तो इसे मुक्ति मिल सकती है ॥ २९ ॥ बुध बोले— हाँ, यह युक्ति सही है, मैं इसका निषेध नहीं करता। बुध के आश्रम में इला ने अश्वमेध यज्ञ

यज्ञ साङ्ग करि स्तव करेन बिस्तर। तुष्ट हये इलारे महेश दिला बर
पुरुष हइया गेल राज्ये आपनार। आनन्दे आपन राज्य करे आरबार ३१
शंकरेर वरे तार बाड़िल सम्पद्। यज्ञफले भूपति हइल निरापद
श्रीरामेर मुखे शुनि इलार चरित्र। भरत-लक्ष्मण दोंहे हर्षेते मोहित ३२
कृत्तिबास-पण्डितेर अमृत बचन। गाइल उत्तरकाण्डे गीत रामायण

श्रीरामचन्द्रेर अश्वमेध-यज्ञारम्भ

राम बले, अश्वमेध करिलाम सार। अश्वमेध-यज्ञ सम फल नाहि आर १
एत यदि कहिलेन कमललोचन। शुनिया सन्तुष्ट हैला भरतलक्ष्मण
यज्ञ करिबेन, राम ब्रह्मा हरषित। डाक दिया बिश्वकर्मे आनिला त्वरित २
ब्रह्मा बले, बिश्वकर्मा, कर संबिधान। श्रीरामेर यज्ञस्थान करह निर्म्माण
चलिलेन बिश्वकर्म्मा ब्रह्मार बचने। भरत-लक्ष्मण दोंहे आछेन येखाने ३
सेइखाने बिश्वकर्म्मा करिल गमन। हरषित बिश्वकर्म्मे देखि दुइजन
नाना रत्न आनि दिल बिश्वकर्म्मा स्थान। बिश्वकर्म्मा यज्ञशाला करेन निर्म्माण ४
भरत-लक्ष्मण-ठाट दुइ अक्षौहिणी। भाण्डार हइते रत्न वहिया ये आनि

किया। उस यज्ञ को देखने हेतु स्वयं शिव पधारे। शिव के वर से राजा इला पुरुष बन गया ।। ३० ।। यज्ञ समाप्त कर उसने बड़ी स्तुति की। तुष्ट होकर महेश ने इला को वरदान दिया। वह पुरुष बनकर अपने राज्य को चला गया। वह पुनः आनन्द से अपना राज्य करने लगा ।। ३१ ।। शंकर के वरदान से उसकी सम्पदा बढ़ गयी। यज्ञ के फलस्वरूप राजा निरापद हो गया। श्रीराम के मुख से इला का चरित्र सुनकर भरत और लक्ष्मण दोनों हर्ष से मोहित हो गये ।। ३२ ।। पंडित कृत्तिवास के वचन अमृत जैसे हैं। उन्होंने उत्तरकांड में गीत-रामायण गायी है।

श्रीरामचन्द्र का अश्वमेध यज्ञ-आरंभ

श्रीराम बोले— मैंने अश्वमेध यज्ञ करने का ही निश्चय किया। अश्वमेध यज्ञ के समान फल और किसी में नहीं है ।। १ ।। जब कमल-लोचन राम ने इतना कहा तो भरत और लक्ष्मण सुनकर संतुष्ट हुए। राम यज्ञ करेंगे, जानकर ब्रह्मा हर्षित हुए। उन्होंने तुरंत विश्वकर्मा को बुलाया ।। २ ।। ब्रह्मा बोले, विश्वकर्मा, तुम उचित व्यवस्था करो। श्रीराम के लिए यज्ञ-भूमि का निर्माण करो। विश्वकर्मा ब्रह्मा के वचन सुनकर चल पड़े और वहाँ पहुँचे जहाँ भरत और लक्ष्मण दोनों थे ।। ३ ।। विश्वकर्मा को आया देखकर दोनों हर्षित हुए। उन्होंने विश्वकर्मा के पास नाना प्रकार के रत्न ला दिये। विश्वकर्मा ने यज्ञशाला का निर्माण किया ।। ४ ।। भरत और लक्ष्मण की दो अक्षौहिणी सेना भंडारों से रत्न

धातु ओ प्रबाल-रतन शुने येइ देशे । सर्व्वधन वहि आने चक्षुर निमिषे ५
दिल मणि-मणिक्यादि प्रवाल बिस्तर । बिश्वकर्म्मा यज्ञकुण्ड निर्म्माय सत्वर
कुण्ड चारि-योजन से आड़े परिसर । कुण्ड चारि योजन उभे दीर्घतर ६
करिल योजन छय कुण्डेर मेखला । द्वादश योजन घर बान्धे यज्ञशाला
दधि-दुग्ध-घृतेर करिल सरोबर । तिल यब धान्य मुंगे तिन कोटि घर ७
सोणार प्राचीर घर स्वर्ण-आओयारी । स्वर्ण नाट्यशाला बान्धे स्तम्भ सारि सारि
इन्द्र आदि करिया यतेक देवगण । यज्ञघर देखिते करिल आगमन ८
देखिते आसिबे यज्ञ पृथिवीर राजा । ब्रह्मा आदि करिया यतेक आछे प्रजा
देखिते आसिबे यज्ञ पृथिबीर मुनि । ता सबार घर करे मुकुता गाथनि ९
आशी योजनेर पथ करे आयतन । ताहाते बिचित्र कुण्ड करिल गठन
एक मासे पुरीखान करिल निर्म्माण । बिश्वकर्म्मा चलिया गेलेन निज स्थान १०
इन्द्र यम बरुण यज्ञेर हैल होता । हइल यज्ञेर अग्नि आपनि बिधाता
बड़ बड़ यत मुनि आछेन भुवने । एके एके सब मुनि आइल से स्थाने ११
जमदग्नि आइल भार्गव पराशर । साबर्ण कश्यप दुइ एल मुनिबर
भरद्वाज हस्तदीर्घ एल शीघ्रगति । आइल दुर्व्वासा मुनि बड़ क्रोधमति १२
आइल आस्तिक मुनि गौतम ब्राह्मण । मत्स्यकर्ण आइल ऋषि सङ्कोपन

आदि ढो-ढोकर लाने लगी । जिस देश में धातु और प्रवाल आदि रत्नों के रहने की बात सुनते थे वहाँ से पलक मारते ही सारा धन ढोकर ले आते थे ।। ५ ।। उन्होंने मणि-माणिक्य-प्रवाल आदि प्रचुर ला दिये, विश्वकर्मा शीघ्रता से यज्ञकुंड का निर्माण करने लगे । उस कुंड का परिसर चौड़ाई में चार योजन था और लम्बाई में वह कुंड चार योजन था ।। ६ ।। यज्ञ-कुंड की मेखला छः योजन की बनायी । यज्ञशाला का घर बारह योजन में बनाया । दही, दूध, घी के तो सरोवर बना दिये । तिल, जौ, धान, मूंग आदि के तीन करोड़ घर बनाये ।। ७ ।। उन्होंने सोने की दीवारों वाले घर बनाये और पंक्तियों में खंभे बनाकर स्वर्ण-नाट्य-शाला बनायी । इन्द्र आदि समेत जितने देवगण थे, वे सभी यज्ञ का भवन देखने के लिए आये ।। ८ ।। पृथ्वी के राजागण यज्ञ देखने आयेंगे, ब्रह्मा से लेकर सारी प्रजा भी आयेगी, पृथ्वी पर रहनेवाले मुनिगण भी यज्ञ देखने आयेंगे, उन सबके लिए मोतियों से गूँथकर घर बनाये ।। ९ ।। अस्सी योजन लम्बाई का मार्ग बनाया, उसमें (जगह-जगह) विचित्र कुण्ड बनाये ! एक महीने में उन्होंने पुरी का निर्माण किया । इसके पश्चात् विश्वकर्मा अपने स्थान को चले गये ।। १० ।। उस यज्ञ में इन्द्र, यम, वरुण होता बने । स्वयं विधाता (ब्रह्मा) यज्ञ की अग्नि बने । संसार में जितने बड़े-बड़े मुनि थे, एक-एक कर सारे मुनि वहाँ आये ।। ११ ।। जमदग्नि, भार्गव, पराशर आये । सावर्ण और कश्यप ये दो मुनि भी आये । भरद्वाज और हस्तदीर्घ मुनि शीघ्रता से आये । बड़े क्रोधित विचार वाले दुर्वासा मुनि भी आये ।। १२ ।। आस्तिक मुनि,

पर्व्वत हइते एल दक्ष महामुनि । आइल एषिक कुशध्वज महाज्ञानी १३
बिष्णुपद मुनि एल और्व्व ओ च्यवन । सनातन सनक आइल दुइजन
करिल शाण्डिल्य गर्ग-मुनि आगुसार । आइल कपिल मुनि बिष्णु-अवतार १४
जैमिनि दधीचि मुनि एल शरभङ्ग । चित्रबिक कौशिक ये आइल मातङ्ग
आइल देवर्षि यत परम-आनन्द । बिभाण्डक ऋष्यशृङ्ग आर शतानन्द १५
बिश्वश्रवा आइलेन आर जह्नु मुनि । पृथिवीर मुनि एल अपूर्व्व काहिनी
यत मुनि आइलेन, नाम नाहि जानि । आइलेन आदि कबि वाल्मीकि आपनि १६
मुनिगण सकले करिल बेदध्वनि । यज्ञ करिबारे राम बसेन आपनि
सस्त्रीक हइया यज्ञ करे एइ स्थाने । स्वर्णसीता आनिल ये शास्त्रेर बिधाने १७
सर्व्वत्र हइल से यज्ञेर निमन्त्रण । पात्रापात्र से यज्ञे आइल सर्व्वजन
सुग्रीव-अङ्गद-आदि शाखामृगगण । महेन्द्र देवेन्द्र आर सुषेण-नन्दन १८
शरभ कुमुद आर मन्त्री जाम्बुवान । नल नील आइलेन बीर हनुमान
सागरेर पार गेल एइ निमन्त्रण । तिन कोटि ज्ञातिसह एल बिभीषण १९
देशे देशे चलिल यज्ञेर निमन्त्रण । निमन्त्रण पाइया आइल राजगण
मिथिला हइते एल जनक राजर्षि । महाराज शाल्व एल राढ़देश-बासी २०
नेपालेर राजा एल दुर्ज्जय दुर्द्धर । राजा गिरिराज्येर आइल धुरन्धर
अङ्गेर अधिप एल लोमपाद-नाम । बेहारेर राजा एल, सीता गिरि धाम २१

गौतम ब्राह्मण, सदा छिपे रहनेवाले ऋषि मत्स्यकर्ण भी आये। पर्वत पर से महामुनि दक्ष आये, महाज्ञानी ऐषिक और कुशध्वज भी आये ।। १३ ।। मुनि विष्णुपद, और्व और च्यवन आये। सनक-सनातन दोनों आये। शांडिल्य और गर्ग मुनि आगे बढ़कर आये। विष्णु के अवतार कपिल मुनि आये ।। १४ ।। जैमिनी, दधीचि मुनि और शरभंग मुनि आये। चित्रविक, कौशिक और मातंग मुनि आये। सारे देवर्षि परम आनन्द से आये। विभाण्डक, ऋष्यशृंग और शतानन्द भी आये ।। १५ ।। विश्वश्रवा और जह्नु मुनि भी आये। संसार के सारे मुनि वहाँ जैसे उपस्थित हुए वह अपूर्व कहानी है। जितने मुनि आये उन सबके नाम कोई नहीं जानता था। आदिकवि वाल्मीकि स्वयं वहाँ आये ।। १६ ।। सारे मुनियों ने वेदध्वनि की। रामचन्द्र स्वयं यज्ञ करने बैठे। वे सस्त्रीक वहाँ यज्ञ करने लगे। शास्त्र के विधानानुसार वहाँ सोने की सीता को लाया गया ।। १७ ।। उस यज्ञ का निमंत्रण सर्वत्र दिया गया। उस यज्ञ में पात्र-अपात्र सारे जन वहाँ उपस्थित हुए। सुग्रीव, अंगद आदि वानर, महेन्द्र, देवेन्द्र और सुषेण-नन्दन ।। १८ ।। शरभ, कुमुद और मंत्री जाम्बवान, नल-नील, वीर हनुमान भी आये। यज्ञ का यह निमंत्रण सागर के पार लंका में भी भेजा गया। अपने तीन करोड़ कुटुम्बी जनों के साथ विभीषण भी आया ।। १९ ।। देश-देश में यज्ञ का निमंत्रण भेजा गया। निमंत्रण पाकर राजागण आये। मिथिला से राजर्षि जनक आये। राढ़ देश-निवासी महाराज शाल्व आये ।। २० ।। दुर्जय, दुर्धर्ष नेपाल के राजा आये। गिरि राज्य का राजा धुरंधर भी आया। अंग देश का

बिजयनगर काञ्ची कलिङ्ग कर्णाट। चौदिकेर राजा एल, सङ्गे कत ठाट
राजगण थाके सदा श्रीरामेर काछे। आरो यत नृपगण एल यत आछे २२
लिङ्ग तेलङ्ग देश कलिङ्ग गान्धार। आटाइश कोटि आसे पश्चिमेर सार
सिंहल सिद्धान्त देशे मनु नामे पुरी। आइल सातश लक्ष अयोध्यानगरी २३
तेक नृपति से उत्तर देशे बैसे। आइला सत्तर लक्ष श्रीरामेर पाशे
त यत राजा आछे भारत भितर। राजचक्रवर्त्ती राम सबार उपर २४
आइल अनेक राजा रामेर निकटे। रामेर आज्ञाय तारा दासवत् खाटे
पृथिवीते राजा आछे अयुत अयुत। श्रीरामेर द्वारे आसि हइल मजुत २५
अबधुत संन्यासी आइल देशान्तरी। गन्धर्व्व किन्नर एल स्वर्गविद्याधरी
पृथिवीते यत छिल दरिद्र ब्राह्मण। यज्ञेर दक्षिणा निते कैल आगमन २६
स्वर्गलोक मर्त्यलोक आइल पाताल। देबलोक नरलोक हइल मिशाल
त्रिभुवने यत लोक आइल अपार। शत्रुघ्न मथुरा हैते हइल आगुसार २७
वशिष्ठ विशिष्ट आर सुमन्त्र सारथि। यज्ञेर यतेक द्रव्य करिल सङ्गगति
यब धान गोधुम ये आतप तण्डुल। दधि दुग्ध घृत मधु आनिल बहुल २८
सूर्य्यसम सभाय बसिल सब ऋषि। पर्व्वत-प्रमाण चाहे तिल राशि राशि
तिन कोटि बृन्द चाहे श्रीफलेर काठ। आइल सकल द्रव्य, यथा यज्ञबाट २९

लोमपाद नाम का राजा आया। सीतागिरि-धाम का बिहार का राजा आया ॥ २१ ॥ विजयनगर, कांची, कलिंग, कर्णाटक चारों दिशाओं के राजा आये। उनके साथ कितनी ही सेना थी। राजागण सदा श्रीरामचन्द्र के साथ रहते थे। इनके अलावा और भी जितने राजा थे सभी आये ॥ २२ ॥ हैलंग, तैलंग देश, कलिंग, गांधार आदि के पश्चिम के जो श्रेष्ठ राजा थे वे अट्ठाईस करोड़ राजा आये। सिंहल-सिद्धान्त देश में मनु नाम की पुरी से सात सौ लाख राजा अयोध्या नगरी आये ॥ २३ ॥ उत्तर देश में जितने नृपति रहते थे वे सत्तर लाख राजा श्रीराम के पास आये। भारत में जितने राजा हैं, राज-चक्रवर्ती रामचन्द्र उन सबसे ऊपर हैं ॥ २४ ॥ रामचन्द्र के यहाँ अनेक राजा आये। रामचन्द्र के आदेश से वे दासवत् काम करते थे। पृथ्वी पर लाखों राजा रहे। उस यज्ञ में वे सभी रामचन्द्र के द्वार पर आ पहुँचे ॥ २५ ॥ अवधूत संन्यासी, प्रवासी जन, गंधर्व, किन्नर, स्वर्ग की विधाधरियाँ, आदि सभी आये, पृथ्वी पर जितने दरिद्र ब्राह्मण थे, वे सभी यज्ञ की दक्षिणा लेने वहाँ उपस्थित हुए ॥ २६ ॥ स्वर्गलोक, मर्त्यलोक, पाताललोक (के वासी) आप पहुँचे। देवलोक, नरलोक (के जन) वहाँ मिलकर एकाकार हो गये। त्रिभुवन के अपार लोग वहाँ आये। शत्रुघ्न मथुरा से आगे बढ़ वहाँ पहुँचे ॥ २७ ॥ विशिष्ट मुनि वशिष्ठ और सारथी सुमंत्र ने यज्ञ की सारी सामग्रियाँ इकट्ठी की। जौ, धान, गेहूँ, अरवा चावल, दही, दूध, घी आदि प्रचुर परिमाण में लाये गये ॥ २८ ॥ सारे ऋषि सभा में सूर्य के समान (ज्योतिष्मान होकर) बैठे। (हवन हेतु) पर्वत जैसी तिल की ढेरियाँ उन्होंने माँगी। तीन करोड़ मुनियों को

बंशेर प्रधान पात्र सुमन्त्र सारथि। इङ्गिते सकल द्रव्य आने शीघ्रगति
यखन भरत येइ आज्ञा दान करे। सेइ द्रव्य शत्रुघ्न योगाय सत्वरे ३०
शत्रुघ्नेर कटक ये दुइ अक्षौहिणी। यज्ञेर यतेक द्रव्य वहिल आपनि
ये राक्षस देखिले पलाय मुनिगण। से राक्षसे मुनिदेरधोयाय चरण ३१
नृत्य गीत मङ्गल ये नाना बाद्य शुनि। अखिल भुबने हय रामजय-ध्वनि
बहु यज्ञ करिल भूपति कोटि कोटि। काहारो ना हइल एमन परिपाटि ३२

यज्ञाश्व-रक्षार्थ शत्रुघ्नेर यात्रा

तुरङ्ग नगर हैते आइल तुरङ्ग। अश्व सओयार कत शत तार सङ्ग
श्यामबर्ण अश्व, श्वेतबर्ण चारि खुर। नाना अलङ्कार शोभे सुहार केयुर १
लेज शोभा करे, येन धबल चामर। कपाले चामर तार अति शोभाकर
सर्ब्ब गाये खामि-खामि सुवर्ण अद्भुत। जलदमण्डले येन खेलिछे विद्युत २
स्वर्णबर्ण कर्ण तार, धरे नाना ज्योति। दुइ चक्षु ज्वले येन रतनेर बाति
गले लोमाबलि येन मुकुतार झारा। राङ्गा जिह्वा मेले येन आकाशेर तारा ३

दस अरब श्रीफल (वेल) की लकड़ियों की आवश्यकता हुई। यज्ञ में जो भी आवश्यक थी सारी सामग्रियाँ लायी गयीं ॥ २९ ॥ सारथी सुमंत्र रघुवंश के मंत्रियों में प्रमुख था। संकेत मात्र से वह शीघ्रता से सारी सामग्री जुटा देता था। भरत जब जो आज्ञा देते थे, वह सामग्री शत्रुघ्न तुरंत जुटा देते थे ॥ ३० ॥ शत्रुघ्न के दो अक्षौहिणी सैनिक यज्ञ की सारी सामग्रियाँ स्वयं ढो रहे थे। जिन राक्षसों को देखते ही मुनिगण भाग जाते थे, वे राक्षसगण मुनियों के चरण धो रहे थे ॥ ३१ ॥ वहाँ नृत्य-गीत तथा अनेक वाद्ययंत्रों की ध्वनियाँ, गूंज रहीं थी, सारे भुवन में रामचन्द्र का जय-नाद हो रहा था। करोड़ों राजाओं ने अनेकों यज्ञ किये हैं पर किसी का यज्ञ इतने सुचारू रूप से नहीं हुआ था ॥ ३२ ॥

यज्ञ के घोड़े की रक्षा हेतु शत्रुघ्न का जाना

तुरंग-नगर से यज्ञ का अश्व लाया गया। उसके संग कितने सौ घुड़सवार थे। श्यामवर्ण उस अश्व की चारों टापें श्वेत वर्ण की थीं; वह सुन्दर हार, केयूर आदि विविध आभूषणों से सुशोभित था ॥ १ ॥ उसकी पूँछ श्वेत चँवर की भाँति शोभित थी, उसके कपाल पर लम्बे केश बड़े शोभायमान हो रहे थे। उसके समूचे शरीर पर अद्भुत रूप से स्तर-स्तर में सोना मंडित था। लगता था, मानो मेघ-मंडल पर विद्युत् खेल रही हो ॥ २ ॥ उसके कानों का वर्ण सुनहला था, जो नाना प्रकार की ज्योति धारण किये हुए था। उसके दोनों नेत्र रत्नों के प्रदीप की भाँति दमक रहे थे। उसके गले पर के लम्बे केश मोतियों की लड़ियों जैसे थे। वह लाल जीभ ऐसे निकालता था, मानो आकाश का तारा हो ॥ ३ ॥ उस अश्व के सिर पर विजय-पत्र का लेख था। रामचन्द्र

जयपत्र घोटकेर कपाले लिखन । दिलेन शत्रुघ्न बीरे अश्वेर रक्षण
श्रीराम बलेन शुन शत्रुघन भाइ । यज्ञपूर्णकाले येन एइ अश्व पाइ ४
दुइ अक्षौहिणी ठाटे यान शत्रुघन । रङ्गेते सङ्गेते चले शत शत जन
बसिलेन यज्ञस्थाने राम मुनिबेशे । छाड़िया दिलेन अश्व भ्रमे देशे देशे ५
पूर्व्वदेशे गेल अश्व बहुदूर पथ । नद नदी एड़ाइया उठिल पर्व्वत
अश्वेर पश्चाते यान बीर शत्रुघन । पर्व्वत उपरे भ्रमे स्वेच्छाय गगन ६
सेइ पर्व्वतेर नाम बिरूपाक्ष गिरि । महाबल से राजा पर्व्वत नामधारी
राजपुरे अग्निगड़ ज्वले चारिभिते । गड़ लङ्घि यज्ञ अश्व चले आनन्देते ७
गड़ेर भितरे अश्व करिल प्रबेश । हेनकाले शत्रुघ्न गेलेन सेइ देश
सकल कटके अश्व चारिदिके घेरे । शत्रुघ्न कटक लये रहिल बाहिरे ८
शत्रुघ्नेर कटक ये दुइ अक्षौहिणी । निभाइल गड़ेर से सकल आगुनि
गड़मध्ये प्रबेश करेन शत्रुघन । शत्रुघ्नेर सहित राजार बाजे रण ९
रामसम शत्रुघन बीर-अबतार । शत्रुघ्नेर बाणेते राजार चमत्कार
महाबल शत्रुघ्न बाणेर जाने सन्धि । हाते गले से राजारे करिलेन बन्दी १०
बान्धिया पाठाय तारे बीर शत्रुघन । राम-दरशने तार बन्धन-मोचन
पूर्व्वदिक जय करि एल शत्रुघन । उत्तरदिकेते अश्व करिल गमन ११

ने उस अश्व की रक्षा का भार शत्रुघ्न पर सौंपा। श्रीराम ने कहा— भाई शत्रुघ्न, सुनो, मैं यही चाहता हूँ कि यज्ञ की पूर्णता के समय यह अश्व यहाँ मिल जाए ।। ४ ।। शत्रुघ्न दो अक्षौहिणी सेना के साथ चले। उनके संग सैकड़ों लोग बड़ी उमग में भरकर चले। मुनि-वेश धारणकर राम यज्ञ-स्थान में बैठे। उन्होंने अश्व छोड़ दिया, वह देश-देश में भ्रमण करने लगा ।। ५ ।। वह अश्व बहुत दूर का मार्ग पार कर पूर्व-देश में गया। नद-नदियों को पार कर पर्वत पर चढ़ गया। उस अश्व के पीछे-पीछे वीर शत्रुघ्न चले, वह स्वेच्छागामी अश्व पर्वत पर भ्रमण करने लगा ।। ६ ।। उस पर्वत का नाम विरूपाक्षगिरि था। पर्वत नामधार वह राजा महाबली था। उस राज-पुरी के चारों ओर अग्नि-गढ़ धधक रहा था। उस गढ़ को लाँघकर वह यज्ञ-अश्व बड़े आनन्द से आगे चला ।। ७ ।। उस अश्व ने गढ़ के भीतर प्रवेश किया। उस समय शत्रुघ्न भी उस देश में पहुँच गये। वहाँ की सेना ने उस अश्व को चारों ओर से घेर लिया। शत्रुघ्न अपनी सेना के संग गढ़ के बाहर रहे ।। ८ ।। शत्रुघ्न की दो अक्षौहिणी सेना थी। उस सेना ने गढ़ की आग बुझा डाली। इसके पश्चात् शत्रुघ्न ने गढ़ के भीतर प्रवेश किया। शत्रुघ्न के साथ वहाँ के राजा की लड़ाई छिड़ गयी ।। ९ ।। शत्रुघ्न श्रीराम के समान ही वीर-अवतार थे। शत्रुघ्न के बाणों (की बौछार) से राजा विस्मित रह गया। महाबली शत्रुघ्न बाण चलाने की कला में दक्ष थे। उन्होंने उस राजा के हाथ और गले को बाँधकर बंदी बना लिया ।। १० ।। वीर शत्रुघ्न ने उसे बंदी बनाकर राम के समक्ष भेज दिया। राम के दर्शन के पश्चात् ही उसे बंधन से छुटकारा मिला। इस प्रकार शत्रुघ्न ने

उत्तरदिकेते अश्व गेल बायुगति । शत्रुघ्न कटक लये ताहर संहति
दिग्‌दिगन्तरे अश्व याय देशे देशे । क्षमासेर पथ याय चक्षुर निमिषे १२
जयपत्र तुरङ्गेर कपाले लिखन । अश्व देखि प्राण उड़े यत राजगण
मिलि सकल राजा आसिया तथाइ । पराजय मानिलेक शत्रुघ्नेर ठाइ १३
अश्व गेल हिमालय पर्व्वतेर शेष । सेइ देशे राजा येइ, बिक्रमे बिशेष
अश्व देखि राजार धरिते गेल साध । राजासह शत्रुघ्नेर लागिल बिबाद १४
केह कारे नाहि पारे, तुल्य दुइजन । दोँहाकार बाण गिया छाइल गगन
बाछिया बाछिया बाण एड़े शत्रुघन । से बाण फुटिया राजा हय अचेतन १५
ना पारे कहिते कथा, अत्यन्त कातर । तारे बान्धि पाठाइल अयोध्यानगर
दर्शन दिलेन तारे कमललोचन । ताहाते हइल तार बन्धन-मोचन १६
से घोटक आटक ना हय कोन कोटे । पश्चिमदिकेते अश्व तारा सम छोटे
एक दिके घोटक ना जाय दुइबार । पश्चिमदिकेते गेल सिन्धुनद पार १७
शत्रुघन फाफर अश्वे नाहि देखे । सिन्धुनद पारे गेल सकल कटके
बिकृत-आकार तारा, हाते चेरा बाँश । हाती घोड़ा मारि खाय यत रक्तमांस १८

पूर्व दिशा में विजय कर लिया, अब वह अश्व उत्तर दिशा की ओर चला ॥ ११ ॥ वह अश्व वायु गति से उत्तर दिशा की ओर गया। शत्रुघ्न सेना ले उसके संग गये। वह अश्व दिग्-दिगन्त में चारों ओर देश-देश में पहुँचता। वह छः महीने का मार्ग पलक मारते पार कर जाता था ॥ १२ ॥ उस अश्व के सिर पर विजय-पत्र का लेख था। उस अश्व को देखकर सारे राजा हवा हो जाते थे। अंत में सभी राजा वहाँ मिलकर शत्रुघ्न के पास आये और पराजय स्वीकार किया ॥ १३ ॥ अब वह अश्व हिमालय पर्वत के सिरे पर जा पहुँचा। उस देश का जो राजा था वह वीरता में बढ़ा-चढ़ा था। उस अश्व को देख राजा को पकड़ने की इच्छा हुई। तब राजा के संग शत्रुघ्न की लड़ाई होने लगी ॥ १४ ॥ कोई किसी को हरा नहीं पाता था, दोनों ही बराबर थे। दोनों के छोड़े बाणों ने आकाश को ढँक लिया शत्रुघ्न चुन-चुनकर बाण छोड़ने लगे; उन बाणों से बिधकर राजा अचेत हो गया ॥ १५ ॥ वह बात कर नहीं पाता था, अत्यन्त कातर हो उठा। शत्रुघ्न ने उसे बंदी कर अयोध्यापुरी भेज दिया। कमललोचन रामचन्द्र ने जब उसे दर्शन दिया, तभी उसे बंधन से छुटकारा मिला ॥ १६ ॥ उस अश्व को किसी क़िले में बंदी नहीं रखा जा सकता था। वह अश्व पश्चिम दिशा में तारा (उल्का) की भाँति दौड़ने लगा। एक ही दिशा में वह अश्व दूसरी बार नहीं जाता था। वह पश्चिमी दिशा में सिन्धुनद पारकर आगे गया ॥ १७ ॥ (वहाँ अश्व ओझल हो गया) अश्व को देख न पाकर शत्रुघ्न संकट में पड़ गये। सारी सेना को लेकर वे सिंधुनद के पार चले गये। वहाँ के लोग विकृत आकार वाले थे, उनके हाथों में फटे बाँस थे। वे हाथी-घोड़ों को मारकर उनके सारे रक्त-मांस खा डालते

पिशाच-भोजन आर पिशाच आचार। जीव-जन्तु मारि तारा करये आहार
सकल व्याधेते घोड़ा बेड़े चारिभिते। कुपिल शत्रुघ्न बीर धनुर्व्बाण हाते १६
महाबल शत्रुघन बीर अवतार। एकबाणे सब व्याध करिल संहार
तिनदिक शत्रुघन करि आसे जय। अश्व लये शत्रुघन यज्ञ-काछे जाय २०

लव-कुश कर्त्तृक यज्ञाश्व-बन्धन

त्रैलोक्य-विजय यज्ञ अति परिपाटि। आतपतण्डुले होम करे कोटि कोटि
लक्ष लक्ष शुभ्र वस्त्र ब्राह्मणेर हाते। इन्द्र यम बरुण यज्ञेर चारिभिते १
प्राय यज्ञ-समापन हय एइक्षणे। दैबेर निर्व्बन्ध, अश्व गेल से दक्षिणे
तुरङ्ग पवनवेगे करिल प्रयाण। उपस्थित हइल बाल्मीकि मुनि स्थान २
ये दिन या हवे, ताहा मुनि सब जाने। लव-कुश दुइ भाये डाक दिया आने
मुनि बले, लव-कुश, शुनह बिशेष। तपस्या करिते याइ चित्रकूट देश ३
तपोबन रक्षा कर भाइ दुइ जन। तथाय बिलम्ब मम हवे बहुदिन
कारो सङ्गे ना करिह बाद बिसंबाद। मुनि सब जाने, यत पड़िबे प्रमाद ४
दुइ भाइ प्रणाम करिल करपुटे। शिष्यगण-सह मुनि गेल चित्रकूटे

थे ॥ १८ ॥ उनका भोजन पैशाचिक था, आचार भी पैशाचिक था। वे जीव जन्तुओं को मारकर खा डालते थे। उन सारे व्याधों ने यज्ञ के अश्व को चारों ओर से घेर लिया। तब वीर शत्रुघ्न कुपित होकर हाथ में धनुष-बाण उठा लिया ॥ १९ ॥ महाबली शत्रुघ्न वीर-अवतार थे। उन्होंने एक ही बाण से सारे व्याधों का संहार कर डाला। शत्रुघ्न ने तीन दिशाओं में विजय प्राप्त किया। इसके पश्चात् शत्रुघ्न उस अश्व के साथ यज्ञ-भूमि को चल पड़े ॥ २० ॥

लव-कुश द्वारा यज्ञ के अश्व का बाँधा जाना

श्रीरामचन्द्र का वह त्रैलोक्य-विजय यज्ञ बड़े सुचारु रूप से हो रहा था। करोड़ों होता अरवा चावल से होम कर रहे थे। ब्राह्मणों के हाथों में लाखों श्वेत-वस्त्र थे। इन्द्र, यम, वरुण उस यज्ञ के चारों ओर विराजित थे ॥ १ ॥ उसी समय यज्ञ लगभग समाप्ति पर था। दैवयोग से वह अश्व दक्षिण दिशा में चल पड़ा। वह अश्व पवन-वेग से चल पड़ा और वाल्मीकि मुनि के आश्रम में पहुँच गया ॥ २ ॥ जिस दिन जो कुछ होनेवाला है, मुनि वाल्मीकि सब जानते थे। उन्होंने लव-कुश दोनों भाइयों को बुलवाया। मुनि बोले, लव-कुश, मेरी विशेष बात सुनो, मैं तपस्या करने हेतु चित्रकूट देश में जा रहा हूँ ॥ ३ ॥ तुम दोनों भाई तपोवन की रक्षा करते रहना, वहाँ से (आने में) मुझे अनेक दिन विलम्ब होगा। तुम किसी के संग वाद-विवाद न करना। जो संकट आनेवाला था, मुनि सब जानते थे ॥ ४ ॥ तब दोनों भाइयों ने मुनि को हाथ जोड़कर प्रणाम किया। शिष्यों के साथ मुनि चित्रकूट चले गये।

बार शत शिष्यसह गेल मुनिबरे। दुइ भाइ खेला करे धनुर्व्बाण-करे ५
धनुर्व्बाण-हाते दुइ भाइ खेला खेले। मृग पक्षी सब बिन्धे बसि बृक्षतले
सन्धान पुरिया दुइ भाइ एड़े बाण। देश-देशान्तरे बाण भ्रमे स्थाने-स्थान ६
नद-नदी बिन्धे, आर बिन्धे ये पर्व्वत। एकदिने याय बाण छ दिनेर पथ
षट्चक्र बाण ये बेड़ाय देशे-देशे। लक्ष-लक्ष मृग मारि पुनः तूणे आसे ७
एमन बाणेर शिक्षा नाहि त्रिभुबने। केबा शिखाइल बाण, कोथा हैते जाने
दुइ भाइ बृक्षतले नाना खेला खेले। हेनकाले अश्व एल से गाछेर तले ८
अश्व देखि हरषित हइल दुइजन। जयपत्र भाले तार देखिल लिखन
राजा दशरथ जन्म निला सूर्य्यवंशे। तिनि सत्य पालिया गेलेन स्वर्गबासे ९
तार पुत्र रघुनाथ भुवन-भितरे। अयोध्याय राज्य करे चारि सहोदरे
श्रीराम लक्ष्मण ओ भरत शत्रुघन। अश्वमेध श्रीराम करेन आरम्भन १०
से अश्वमेधेर अश्व राखे शत्रुघन। दुइ अक्षौहिणी ठाट ताहार भिड़न
जयपत्र देखि दुइ भाइ कोपे ज्वले। साहस करिया घोड़ा बान्धे बृक्षमूले ११
दुइ अक्षौहिणी अश्वे ना पारे राखिते। हेन अश्व दुइ भाइ बान्धे भालमते
अश्व बान्धि मार काछे गेल दुइजन। मिष्टान्न प्रभृति दोँहे करिल भोजन १२

बारह सौ शिष्यों के साथ मुनिवर चले गये। दोनों भाई हाथों में धनुष-बाण लेकर खेल करने लगे ॥ ५ ॥ हाथों में धनुष-बाण लेकर दोनों भाई खेल खेल रहे थे। वे वृक्षों के नीचे बैठे मृग-पक्षी आदि को बेध डालते थे। निशाना लगाकर दोनों भाई बाण छोड़ते। वे बाण देश-देशान्तर में जगह-जगह चक्कर लगाते ॥ ६ ॥ वे नद-नदियों, पर्वतों आदि को बेध डालते थे। वे बाण छः दिन का मार्ग एक ही दिन में पार कर जाते थे। उनके षट्चक्र बाण देश-देश में चक्कर लगाते और लाखों मृगों को मारकर पुनः लौटकर तूण में आ जाते ॥ ७ ॥ ऐसी बाण-विद्या की शिक्षा त्रिभुवन में और कहीं नहीं थी। किसने यह बाण चलाना सिखाया, भला कोई कैसे जानता ? दोनों भाई वृक्ष के नीचे बैठ, तरह-तरह के खेल खेला करते। उसी समय वह अश्व उस वृक्ष के नीचे पहुँचा ॥ ८ ॥ अश्व को देख वे दोनों हर्षित हो उठे। उन दोनों ने उसके सिर पर विजय-पत्र का लेख देखा। (उस पर लिखा था) राजा दशरथ का जन्म सूर्यवंश में हुआ था, जो अपने तीन प्रणों का पालन कर स्वर्गवासी हो गये ॥ ९ ॥ संसार में उनके पुत्र रघुनाथ हैं। वे चारों भाई श्रीराम-लक्ष्मण-भरत और शत्रुघ्न अयोध्या में राज्य कर रहे हैं। महाराज श्रीरामचन्द्र ने अश्वमेध यज्ञ प्रारंभ किया है ॥ १० ॥ उस अश्वमेध यज्ञ के अश्व की रक्षा शत्रुघ्न कर रहे हैं, उनके साथ दो अक्षौहिणी सेना (शत्रुओं से) लड़ने के लिए है। उस विजय-पत्र को देखकर दोनों भाई क्रोध से जल उठे। उन दोनों ने साहस से उस घोड़े को वृक्ष की जड़ में बाँध दिया ॥ ११ ॥ जिस अश्व को दो अक्षौहिणी सेना रोक नहीं पाती थी, उस अश्व को दो भाइयों ने भलीभाँति बाँध डाला। अश्व को बाँधकर

लब-कुशेर सहित युद्धे शत्रुघ्नेर पतन

श्रीरामे बलेन, अश्व आन शत्रुघन। यज्ञे साङ्गे पूर्णाहुति दिब त एखन
सौमित्रिरि आगे दूत कहे बारबार। महाराज, अश्व बन्दी हइल तोमार १
शुनिया सौमित्रि वीर करेन बिषाद। बिधिर निर्ब्बन्धे किबा पड़िल प्रमाद
बिषम दक्षिण-दिक बड़इ संकट। कोन् बीर याबे आजि ताहार निकट २
अनेक शक्तिते आमि मारिनु लबण। ना जानि काहार सने हय पुनः रण
एतेक चिन्तिया तबे बीर शत्रुघन। अश्वेर उद्देश-हेतु करिल गमन ३
अश्व लये दुइ भाइ खेले बारेबार। लब-कुशे देखिया लागे चमत्कार
लब-कुश खेला करे देखि शत्रुघन। जिज्ञासा करये, अश्व बान्धे कोन्‌जन ४
कोन् बेटा करियाछे मरिबार साध। सबंशे मरिते श्रीरामेर सङ्गे बाद
शत्रुघ्नेर कथा शुनि दुइ भाइ भाषे। कि नाम धरह तुमि, थाक कोन् देशे ५
शत्रुघ्न बलेन, मम जन्म सूर्य्यबंशे। चारिभाइ थाकि मोरा अयोध्या-प्रवेशे
दाशरथि आमरा ये भाइ चारिजन। श्रीराम लक्ष्मण आो भरत शत्रुघन ६
स्वयं बिष्णु रघुनाथ त्रिलोक बिजयी। रामेर बिक्रम-कथा शुन तबे कहि
रामेर बाणेते मरे लङ्कार रावण। मरिल आमार बाणे दुर्ज्जय लबण ७

वे दोनों माँ के पास चले गये और (माँ से लेकर) दोनों ने मिष्टान्न आदि भोजन किया ।। १२ ।।

लव-कुश के संग युद्ध में शत्रुघ्न का गिरना

श्रीराम बोले— शत्रुघ्न, अश्व को ले आओ। यज्ञ पूरा हो जाने पर अब मैं पूर्णाहुति दूँगा। उधर सुमित्रानन्दन शत्रुघ्न से दूत बार-बार कह रहा था— महाराज, आपका अश्व तो बंदी हो गया है ।। १ ।। यह सुनकर वीर शत्रुघ्न विषाद-मग्न हो उठे। सोचने लगे— विधि के विधान से यह कोई विपत्ति आ पड़ी है। दक्षिण दिशा बड़ी विषम है, उधर बड़े संकट रहते हैं। उसके पास आज कौन वीर जायेगा ? ।। २ ।। बड़ी शक्ति लगाकर मैंने लवण को मारा है, अब पुनः किसके साथ संग्राम करना पड़े, कौन जाने ? इतना सोचकर वीर शत्रुघ्न ने अश्व के उद्देश्य से प्रस्थान किया ।। ३ ।। उधर उस अश्व को लेकर वे दोनों भाई बार-बार खेल रहे थे। लव-कुश को देखकर शत्रुघ्न को विस्मय हुआ। लव-कुश को खेल करते देखकर शत्रुघ्न ने पूछा— अश्व को किस व्यक्ति ने बाँधा है ? ।। ४ ।। किस दुष्ट ने मरने की साध की है ? सवंश मारे जाने के लिए ही उसने श्रीराम से विवाद किया है। शत्रुघ्न की बात सुनकर दोनों भाई कहने लगे— तुम्हारा नाम क्या है ? किस देश में रहते हो ? ।। ५ ।। शत्रुघ्न बोले— मेरा जन्म सूर्यवंश में हुआ है। हम चार भाई अयोध्या प्रदेश में रहते हैं। हम श्रीराम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न चारों भाई राजा दशरथ के पुत्र हैं ।। ६ ।। रघुनाथ त्रिलोक-विजयी रामचन्द्र स्वयं विष्णु हैं। सुनो, तुम्हें रामचन्द्र के पराक्रम की कथा सुनाता हूँ।

जेष्ठ भाइ आमार ये रणेते पण्डित । तार बाणे मरे अतिकाय इन्द्रजित
मरिल ये सब बीर, त्रिभुवन जिने । आर कोन् बीर युझे मोसबार सने ८
एतेक बड़ाइ करे बीर शत्रुघन । रुषिया से लव-कुश करिछे तर्ज्जन
चारि भाइ तोमरा, आमरा दुइ भाइ । आजि अश्व लये याओ, मोरा ताइ चाइ ९
मरिबारे केन एले मोदेर निकटे । केमने लइबे अश्व पड़िले संकटे
खुड़ा भाइपोते गालि, केह नाहि चिने । गालागालि महायुद्ध बाजे तिनजने १०
नाना अस्त्र दुइ भाइ फेले चारिभिते । शत्रुघ्न कातर अति, ना पारे सहिते
शत्रुघन बले, सैन्य कोन् कर्म्म कर । सकल कटके बेड़ि दुइ शिशु मार ११
दुइ अक्षौहिणी छिल शत्रुघ्नेर ठाट । लव-कुशे बेड़िया करिल बन्ध बाट
लव-कुश बले, बीर ना हओ बिमुख । सकल कटके मारि, देखह कौतुक १२
शत्रुघ्न बलेन, देखि तोमरा बालक । बालकेर सने युद्ध, हासिबेक लोक
कटक थाकिते केन युझिब आपनि । आमार सहित ठाट दुइ अक्षौहिणी १३
कटकेर ठाँइ यदि जयी हओ रणे । तबे से युद्धेर योग्य हओ मम सने
शत्रुघ्नेर कथा शुनि दुइ भाइ भाषे । आगे मारि कटक तोमारे मारि शेषे १४

श्रीराम के बाण से लंका का रावण मारा गया है। मेरे बाणों से दुर्जेय लवण की मृत्यु हुई है ॥ ७ ॥ हमारे बड़े भाई लक्ष्मण रण में निपुण हैं। उनके बाणों से अतिकाय और इन्द्रजित् मारे गये हैं। जो वीर मारे गये हैं, वे सभी त्रिभुवन को जीतनेवाले थे। और कौन वीर हम सबसे लड़ सकता है ? ॥ ८ ॥ वीर शत्रुघ्न इसी प्रकार बड़ाई कर रहे थे। तब लव-कुश रुष्ट हो गरजकर कहने लगे— तुम लोग चार भाई हो, हम दो भाई हैं। आज तुम इस अश्व को ले जाओ (तो देखें)। हम यही चाहते हैं ॥ ९ ॥ तुम मरने के लिए भला हमारे पास क्यों आये ? यह अश्व अब कैसे ले जाओगे ? तुम संकट में पड़ गये हो। इस प्रकार चाचा-भतीजा एक-दूसरे को गालियाँ देने लगे। (क्योंकि) कोई किसी को पहचानता न था। उन तीनों में गाली-गलौज और महायुद्ध होने लगा ॥ १० ॥ दोनों भाई चारों ओर अनेक अस्त्रों का प्रहार करने लगे। उनका प्रहार सह न पाकर शत्रुघ्न बड़े ही विह्वल हो उठे। शत्रुघ्न बोले, सैनिको, तुम सब ऐसे कर्म करो, सारी सेना से घेरकर इन दोनों शिशुओं को मार डालो ॥ ११ ॥ शत्रुघ्न की दो अक्षौहिणी सेना थी। उसने लव-कुश को घेरकर उनका मार्ग बंद कर दिया। लव-कुश बोले, वीर, तुम मुँह न मोड़ो। हम सारी सेना को मार डाल रहे हैं, तुम कौतुक देखते रहो ॥ १२ ॥ शत्रुघ्न बोले, हम देखते हैं, तुम लोग तो बालक हो, बालकों से युद्ध करने पर लोग हम पर हँसेंगे। सेना के रहते मैं स्वयं तुमसे युद्ध क्यों करूँ ? हमारे संग तो दो अक्षौहिणी सेना है ॥ १३ ॥ यदि तुम लोग सेना के संग लड़ाई में विजयी हो सको, तब तुम हमारे संग युद्ध करने के योग्य हो सकोगे। शत्रुघ्न की बात सुनकर दोनों भाई कहने लगे— पहले तुम्हारी सेना को मारकर तब अंत में तुम्हें मारेंगे ॥ १४ ॥

कुश बले, लव, तुमि एइखाने थाक। कटक संहारि आमि, तुमि मात्र देख
लवेर अग्रेते कुश पातिल धनुक। भ्रातार समरे लव देखिछे कौतुक १५
कुशेर प्रधान बाण बेड़ापाक नाम। बेड़ापाक-बाणे कुश पूरिल सन्धान
पृथिवीते फिरे बाण कुमारेर चाक। सकल कटके बेड़ि मारे बेड़ापाक १६
बेड़ापाक बाणे कारो नाहिक निस्तार। बेड़ापाक बाणे सब करिल संहार
पड़िल सकल ठाट, नाहि एकजन। सबे मात्र एकाकी रहिल शत्रुघन १७
ठाँइ-ठाँइ कटक पड़िल गादि-गादि। संग्रामेर स्थाने बहे शोणितेर नदी
डाक दिया बले कुशे, शुन शत्रुघन। कोथा गेल सैन्य तव, नाहि एकजन १८
लवेर कनिष्ठ आमि, रणे नाहि टूटे। लव भाइ युझिले पृथिवी नाहि आटे
कुशेर वचन शुनि बले शत्रुघन। पलाइया याब कि तोमारे दिब रण १९
पलाइया गेले परे थाकिबे अख्याति। यदि युद्ध करि, तबे नाहि अव्याहति
कुश बले, दृढ़ युक्ति कर शत्रुघन। सेइ युक्ति कर, येबा लय तव मन २०
शत्रुघ्न बलेन, कुश मिथ्या किछु नय। यत किछु बल तुमि, सब सत्य हय
तोमार सहित युद्धे अवश्य संहार। बुझिते ना पारि तुमि कोन् अवतार २१
तोमार संग्रामे कुश, कार बापे तरि। एकबार युझ करि मारि किबा मरि
कुश बले, शत्रुघ्न, मरण दृढ़ कर। एइ आमि बाण एड़ि, याओ यमघर २२

कुश बोला, लव, तुम यहीं रहो। मैं सेना का संहार कर डाल रहा हूँ। तुम केवल देखते रहो। लव से पहले ही कुश ने अपना धनुष चढ़ा लिया। भाई के संग्राम में लव कौतुक देखता रहा ॥ १५ ॥ 'बेड़ा-पाक' (चक्कर खानेवाला) नाम का वाण कुश का प्रमुख बाण था। उसी 'बेड़ा-पाक' बाण को कुश ने धनुष पर चढ़ाया। वह बाण पृथ्वी पर कुम्हार के चाक की भाँति चक्कर लगाने लगा। वह 'बेड़ा-पाक' बाण सारी सेना को घेर कर मारने लगा ॥ १६ ॥ बेड़ा-पाक बाण से कोई बच नहीं पाता। बेड़ा-पाक बाण ने सबका संहार कर डाला। सारी सेना मारी गयी, कोई नहीं बचा। अकेले शत्रुघ्न रह गये ॥ १७ ॥ जगह-जगह ढेर के ढेर सैनिक मारे गये। संग्राम-स्थल में शोणित की नदी बहने लगी। कुश ने पुकारकर कहा— शत्रुघ्न, सुनो, तुम्हारी सेना कहाँ चली गयी, यहाँ तो कोई नहीं है ॥ १८ ॥ मैं तो लव का छोटा भाई हूँ जो युद्ध में कभी नहीं हारता। यदि भैया लव लड़ने लगें तो संसार उनसे पार नहीं पा सकता। कुश का वचन सुनकर शत्रुघ्न बोले— मैं भाग जाऊँ या तुमसे युद्ध करूँ? ॥ १९ ॥ परन्तु भाग जाने पर तो कलंक रह जायेगा। यदि युद्ध करूँ तो तुमसे पार पाना कठिन है। कुश बोला, शत्रुघ्न, तुम अपने मन में दृढ़-संकल्प कर लो। वैसा ही संकल्प करो, जैसा कि तुम्हारा मन चाहता हो ॥ २० ॥ शत्रुघ्न बोले, कुश, तुम कुछ भी असत्य नहीं कह रहे हो, जो कुछ कहते हो सभी सत्य है। तुम्हारे संग युद्ध में अवश्य मेरा संहार हो जायेगा। मुझे समझ नहीं आ रहा है कि तुम कौन-सा अवतार हो! ॥ २१ ॥ कुश, किसके बाप की शक्ति है कि तुमसे संग्राम कर पार पा जाये! तथापि एक बार युद्ध करता हूँ, चाहे

लव बले, कुश, शुन आमार बचन। तुमि सैन्य मार, आमि मारि शत्रुघन
कुश बाण युड़िल लबेरे करि पाछे। सन्धान पुरिया गेल सौमित्रिर काछे २३
कुश बले, सौमित्रि हे, एइ बाण फेलि। ए बाण सहिते पार, तबे वीर बलि
सौमित्रि बलेन, आगे आमि बाण मारि। सहिते पारिले तोमा बीर ज्ञान करि २४
तिन लक्ष बाण बीर शत्रुघन एड़े। आकाश गगने बाण उखड़िया पड़े
बाण वृष्टि करे दोँहे, दोँहे धनुर्द्धर। दोँहे, दोँहा बिन्धिया करिल जरजर २५
उभयेर बाण गिया गगनेते उठे। उभये बरिषे बाण, उभयेते काटे
नाना अस्त्र दुइजन करे अवतार। चारिदिके पड़े बाण अग्निर सञ्चार २६
सौमित्रि एड़ेन तबे महापाश बाण। अर्द्धचन्द्र बाणे कुश करे खान-खान
एड़िल सकल बाण सौमित्रि निपुण। फुराइल सब बाण शून्य हैल तूण २७
विष्णु-अस्त्र शत्रुघ्न बीरेर ममे पड़े। तूण हइते ताहा निया धनुकेते योड़े
निरखिया कुश बीर चिन्ते मने मन। महाबिष्णु बाण युड़े धनुके तखन २८
बाण देखि शत्रुघ्नेर लागे चमत्कार। महाविष्णु बाणे बिष्णुबाणेर संहार
कुश बले, शत्रुघन आर बाण आछे। फुराल तोमार अस्त्र, आमि एड़ि पाछे २९

तुम्हें मारूँ या स्वयं मर जाऊँ। कुश बोला, शत्रुघ्न, यह दृढ़ता से समझ लो कि तुम्हारा मरण होनेवाला है। यह अभी मैं बाण छोड़ रहा हूँ, तुम यमलोक सिधारो ॥ २२ ॥ लव बोला, कुश, तुम सेना को मारो मैं शत्रुघ्न को मारूँगा। कुश ने लव को पीछे कर धनुष पर बाण चढ़ाया। निशाना साधकर वह शत्रुघ्न के पास गया ॥ २३ ॥ कुश बोला, सुमित्रानन्दन शत्रुघ्न, यह बाण छोड़ रहा हूँ। यह बाण अगर सह सको तो तुम्हें वीर कहूँगा। सुमित्रानन्दन शत्रुघ्न ने कहा— पहले मैं बाण मारता हूँ, यदि सह सको तभी तुम्हें वीर समझूंगा ॥ २४ ॥ वीर शत्रुघ्न ने तीन लाख बाण छोड़े। वे बाण आकाश-मंडल में परिव्याप्त हो गये। दोनों धनुर्द्धर थे, दोनों ही बाण-वर्षा कर रहे थे। दोनों ने दोनों को बेधकर जर्जर कर डाला ॥ २५ ॥ दोनों के बाण आकाश में ऊँचे चढ़ जाते थे। दोनों ही बाण-वर्षा करते, फिर दोनों ही काट डालते थे। दोनों नाना प्रकार के अस्त्रों का अवतरण करते थे। बाण गिरने के साथ-साथ चारों ओर अग्नि-संचार हो जाता था ॥ २६ ॥ तब शत्रुघ्न ने 'महापाश' नाम का बाण छोड़ा! उसे अर्धचन्द्र बाण से कुश ने खंड-खंड कर डाला। निपुण शत्रुघ्न ने अपने सारे बाण छोड़े, उनके सारे बाण समाप्त हो गये। तरकश खाली हो गया ॥ २७ ॥ शत्रुघ्न को विष्णु-अस्त्र की याद आयी, उसे तरकश से निकालकर उन्होंने धनुष पर चढ़ाया। वीर कुश ने उसे देखकर मन ही मन सोचा, उसने उसी समय अपने धनुष पर महाविष्णु-बाण चढ़ाया ॥ २८ ॥ उस बाण को देखकर शत्रुघ्न विस्मित रह गये। महाविष्णु-बाण ने विष्णुबाण का संहार कर डाला। कुश बोला, शत्रुघ्न, तुम्हारे पास क्या और भी बाण है? तुम्हारे अस्त्र तो समाप्त हो गये। अब मैं (अपना अस्त्र) छोड़ रहा हूँ ॥ २९ ॥ तब वीर

कुशेरे डाकिया बले बीर शत्रुघन। तोमाय आमाय एइ हइल ये रण
कारो पराजय नहे, उभये सांसर। रणे क्षमा दिया याह दुइजने घर ३०
सौमित्रिर कथा शुनि कुश बीर हासे। अवश्य मारिव तोमा, ना याइबे देशे
महापाश बाण कुश युड़िल धनुके। सिंहेर गर्ज्जने बाण उठे अन्तरीक्षे ३१
सकल पृथिवी हैल अन्धकारमय। निरखिया शत्रुघ्नेर लागिल संशय
अन्धकारे युझिते ना पारे शत्रुघन। युझिते ना पारे, हय मृत्यु-दरशन ३२
एकदृष्टे रहिल से धनुर्व्बाण-हाते। शत्रुघ्ने मारिते बाण चलिल त्वरिते
महापाश बाण तवे याय नाना छन्दे। हाते गले शत्रुघने अवशेषे बान्धे ३३
गलाय लागिल पाश मृत्यु-दरशन। महापाश बाणघाते परे शत्रुघन
शत्रुघन पड़िया रहे रणेर भितर। महानन्दे दुइ भाइ चलिलेक घर ३४
कहिते लागिल गिया मायेर गोचर। दुइ भाइ खेलिलाम ए दुइ प्रहर
यत यत भूपति आइसे तपोवने। कौतुके खेलाइ माता से सबार सने ३५
दुइ शिशु लये सीता कराइल स्नान। अगुरु चन्दने अङ्ग करिल सुघ्राण
मिष्ट अन्न कराइल दोँहारे भोजन। बिचित्र शय्याय दोँहे करिल शयन ३६
दुइ शिशु लये सीता रहिल सन्तोषे। शत्रुघ्नेर वार्त्ता लये दूत गेल देशे
एत सैन्य माझे एड़ाइल सात जन। देशेते गमन करे करिया क्रन्दन ३७

शत्रुघ्न ने कुश को पुकार कर कहा, तुम्हारे और मेरे बीच जो यह संग्राम हुआ, इसमें किसी की पराजय नहीं हुई, दोनों समतुल्य रहे। अब तुम दोनों इस युद्ध में हमें क्षमा कर घर लौट जाओ ।। ३० ।। शत्रुघ्न की बात सुनकर वीर कुश हँसने लगा। बोला, मैं तुम्हें अवश्य मारूँगा, तुम देश नहीं लौट पाओगे। कुश ने धनुष पर महापाश बाण चढ़ाया। सिंहनाद करता हुआ वह बाण अन्तरिक्ष में चढ़ गया ।। ३१ ।। सारी पृथ्वी अंधकारमयी हो गयी। वह देख शत्रुघ्न को बड़ा संशय हुआ। शत्रुघ्न अंधकार में युद्ध नहीं कर पाते थे। युद्ध न कर पाने के कारण, वे अपने सम्मुख मृत्यु आयी हुई है, ऐसा देखने लगे ।। ३२ ।। धनुष-बाण लिये हुए वे एकटक देखते रहे। शत्रुघ्न को मारने के लिए कुश का बाण तेजी से चला। उस समय महापाश बाण विभिन्न प्रकार की गति से चला और अन्त में जाकर शत्रुघ्न के हाथ और गले को बाँध लिया ।। ३३ ।। वह पाश उनके गले में लगा, वे मृत्यु आयी हुई देखने लगे। उस महापाश बाण के प्रहार से शत्रुघ्न गिर पड़े। शत्रुघ्न युद्ध-भूमि में पड़े रहे। दोनों भाई बड़े ही आनन्द से घर लौटे ।। ३४ ।। वे जाकर माँ से कहने लगे, हम दोनों आज दोपहर तक खेलते रहे। माँ, जितने राजा इस तपोवन में आये थे, उन सभी के साथ हमने कौतुक से खेल किया है ।। ३५ ।। तब सीता ने अपने दोनों पुत्रों को नहलाया। अगरु और चन्दन लगाकर उन्हें सुवासित किया। दोनों को मिष्टान्न भोजन करवाया। इसके पश्चात् दोनों विचित्र शय्या पर सो पड़े ।। ३६ ।। अपने दोनों शिशुओं को लेकर सीता परम सन्तुष्ट थी।

लब-कुशेर युद्धे भरत ओ लक्ष्मणेर पतन

पात्रमित्र सह राम आछे यज्ञस्थाने। हेनकाले सातजन गेल सेइखाने
सात जन वार्त्ता कहे गिया ऊर्द्ध्वश्वासे। दुइ शिशु युद्ध करे बाल्मीकिर देशे १
लब-कुश नामे से यमज दुइ भाइ। त्रिभुवन पराजित से दोँहार ठाँइ
भय बासि प्रभु, बलिबारे विवरण। सैन्यसह युद्धेते पड़िल शत्रुघन २
शुनिया श्रीराम अति चिन्तित हइया। जिज्ञासा करेन तारे प्रमाद भाविया
कह दूत कार सङ्गे घटिल ए रण। कि आश्चर्य शत्रुघ्नेर समरे पतन ३
दूत कहे, महाराज, दुइ मुनिसुत। युद्ध करे समरे साक्षात यमदूत
तारा यदि युद्ध करे तोमार सहिते। जिनिते नारिबे प्रभु हेन लय चिते ४
अश्व बन्दी करिल ताहारा दुइ जन। एतेक प्रमाद पड़े अश्वेर कारण
से कथा शुनिया राम करेन चिन्तन। प्रमाद पड़िल, दैव ना जाय खण्डन ५
सूर्य्यबंशे जन्मिल यत यतेक महाराज। समरे पड़िया केह ना पाइल लाज
अनरण्य-महाराजे मारिल रावणे। से रावण सबंशे पड़िल मोर रणे ६
दुर्जय लबण छिल रावण-भागिने। देब दैत्य आदि यत काँपे सर्व्वजने
रावण हइते कत बड़ से लबण। ताहारे मारिल मोर भाइ शत्रुघन ७

उधर शत्रुघ्न का समाचार दूत अपने देश ले गया। इतनी सेना में केवल ये सात ही लोग बचे और रोते-रोते अपने 'देश' चले गये ।। ३७ ।।

लव-कुश के साथ युद्ध में भरत और लक्ष्मण का गिरना

श्रीरामचन्द्र मंत्रियों और बांधवों के साथ यज्ञभूमि में थे। तभी वे सातों व्यक्ति वहाँ पहुँचे। उन सातों ने बेतहासा वहाँ जाकर यह समाचार सुनाया। वाल्मीकि के देश में दो शिशु युद्ध कर रहे हैं ।। १ ।। वे लव-कुश नाम से दो जुड़वें भाई हैं। उनसे त्रिभुवन हार गया है। हे प्रभु, आपसे विवरण सुनाते भय हो रहा है। वहाँ सेना-सहित शत्रुघ्न युद्ध में मारे गये हैं ।। २ ।। यह सुनकर रामचन्द्र ने अत्यन्त चिन्तित होकर कि महान संकट आ पड़ा है, उससे पूछने लगे— बताओ दूत, यह युद्ध किसके संग हो रहा है ? शत्रुघ्न युद्ध में गिर पड़े, यह कितने आश्चर्य की बात है ।। ३ ।। दूत बोला— महाराज, वे दोनों मुनिपुत्र हैं। वे साक्षात् यमदूत की भाँति युद्ध करते हैं। यदि वे आपके साथ युद्ध करें, तो हमारे मन में ऐसा लग रहा है कि प्रभु, आप उन्हें जीत नहीं सकेंगे ! ।। ४ ।। उन दोनों ने अश्व को बंदी कर लिया है। उसी अश्व के लिए यह संकट आ पड़ा है। वह बात सुनकर राम सोचने लगे, (यज्ञ में) संकट आ पड़ा। प्रारब्ध को खंडन नहीं किया जा सकता ? ।। ५ ।। सूर्यवंश में जहाँ जितने महाराज हुए, युद्ध में मारे जाकर उनमें से किसी को लज्जित होना नहीं पड़ा है। रावण ने अनरण्य महाराज को मारा। वह रावण मेरे साथ युद्ध में सवंश मारा गया ।। ६ ।। रावण का भानजा लवण भी दुर्जेय था। उससे देव-दैत्य आदि सभी काँपते रहते थे। वह

रामेर प्रबोध वेन भरत लक्ष्मण। क्षत्रियेर धर्म्म एइ, युद्धेते मरण
बिलाप संवर प्रभु, ना कर बिषाद। कारो दोष नाहि, दैवे पड़िल प्रमाद ८
पतिब्रता सीता तुमि बर्ज्जिले यखन। जेनेछि, तखनि ह'ल बिधि-बिड़म्बन
देबता जानेन ये सीतार नाहि पाप। विना दोषे सीतारे दिलेन मनस्ताप ९
आजि यदि श्रीराम, तोमार आज्ञा पाइ। शिशु धरिबारे याइ मोरा दुइ भाइ
एतेक बलिल यदि भरत लक्ष्मण। श्रीराम दिलेन आज्ञा उभये तखन १०
जाओ भाइ, कल्याण करुन त्रिलोचन। सावधाने दुइ भाइ कर गिया रण
शत्रुघ्न-भ्रातार शोक सान्धाइल बुके। पाछे पाइ आर शोक मरि सेइ दुःखे ११
दुइ भाइ कर युद्ध, यदि युद्ध घटे। दुइ शिशु धरि आन आमार निकटे
विदाय लइया यान भरत लक्ष्मण। चारि अक्षौहिणी सैन्य करिल साजन १२
मुख्य सेनापति गिया चड़िलेक रथे। हस्ती घोड़ा ठाट कत चले तार साथे
जाठि ओ झकड़ा शेल मुषल मुद्गर। खाण्डा आर डाङ्गस देखिते भयङ्कर १३
दुर्ज्जय नामेते हस्ती आरोहे भरत। धनुर्व्वाणे लक्ष्मणेर पूर्ण महारथ
हस्ती घोड़ा रथ सब चलिल अशेष। बाल्मीकिर तपोवने करिल प्रवेश १४

लवण रावण की अपेक्षा कितना बढ़ा-चढ़ा है, उसे भी मेरे भाई शत्रुघ्न ने मार डाला ॥ ७ ॥ भरत और लक्ष्मण ने रामचन्द्र को धीरज बँधाते हुए कहा— युद्ध में मृत्यु हो, यही तो क्षत्रियों का धर्म है। प्रभु, आप विलाप न करें, विषाद करना छोड़ दें। इसमें किसी का दोष नहीं है। दैव के कारण ही यह संकट आ पड़ा है ॥ ८ ॥ आपने जिस समय पतिव्रता सीता का त्याग किया, उसी समय हम जान गये थे कि विधि-विडम्बना आ पड़ी है। जिस सीता के बारे में देवता जानते हैं कि उनका कोई पाप नहीं है, उसी सीता को बिना अपराध के आपने मनस्ताप दिया है ॥ ९ ॥ हे रामचन्द्र, आज यदि आपकी आज्ञा मिले, तो हम दोनों भाई उन शिशुओं को पकड़ लाने हेतु जायें! जब भरत और लक्ष्मण ने यह बात कही, तब श्रीराम ने उन दोनों को आज्ञा दे दी ॥ १० ॥ जाओ भाई, त्रिलोचन शंकर तुम्हारा कल्याण करें। तुम दोनों भाई जाकर सावधानी से संग्राम करो। भाई शत्रुघ्न का दुःख छाती में चुभ गया है। इसके पश्चात् कहीं और भी शोक भोगना न पड़े, इसी दुःख से मरा जा रहा हूँ ॥ ११ ॥ यदि युद्ध करना पड़े, तो दोनों भाई युद्ध करना और उन दोनों भाइयों को मेरे पास पकड़ लाना। भरत और लक्ष्मण विदा लेकर चले। उन्होंने चार अक्षौहिणी सेना सजायी ॥ १२ ॥ मुख्य सेनापति जाकर रथ पर सवार हो गया। उसके साथ हाथी-घोड़े-सेना कितने ही चले! भाले, बरछे, शेल, मूसल, मुदगर, खड्ग, परिघ आदि देखने में बड़े भयंकर थे ॥ १३ ॥ भरत दुर्जय नाम के हाथी पर सवार हुए। धनुष-बाण से लक्ष्मण का विशाल रथ पूर्ण था। अनगिनत हाथी-घोड़े-रथ आदि चले। सबने जाकर वाल्मीकि के तपोवन में प्रवेश किया ॥ १४ ॥ जहाँ सेना-सहित शत्रुघ्न पड़े हुए थे, श्रीभरत और लक्ष्मण वहाँ गये। सियार,

कटक समेत पड़ि आछे शत्रुघन। सेइखाने गेलेन श्रीभरत लक्ष्मण
शृगाल कुक्कुर आर शकुनि गृधिनी। कटकेर मांस लये करे टानाटानि १५
भरत लक्ष्मण दोंहे करे अनुमान। महायुद्धे आसिया हइनु अधिष्ठान
रणस्थले देखिलेन भरत लक्ष्मण। हाते धनु पड़िया आछेन शत्रुघन १६
सौमित्रिरे दुइभाइ कोले करि कांदे। प्राण हाराइले भाइ, शिशुर विवादे
यमुनार कूले भाइ, मारिले लवण। एखाने आसिया भाइ, हाराले जीवन १७
रणस्थले कान्दिछेन भरत लक्ष्मण। पात्रमित्र देन दोंहे प्रबोध-बचन
शोक करिबार बेला नहेत एखन। समरे आसिया शोक कर कि कारण १८
सेइ दुइ शिशु मार पुरिया सन्धान। युद्धस्थले आसि शोक नहे त विधान
एतेक वचन शुनि भरत लक्ष्मण। क्रन्दन संवरि दोंहे स्थिर करे मन १९
युद्धार्थे कटक रहे पुरिया सन्धान। लक्ष्मण-भरत दोंहे हल आगुयान
चारिदिके राम-सेना रहे सावधाने। कटकेर महारोल सीतादेवी शुने २०
सीता बलिलेन लव-कुशेरे तखन। कि प्रमाद पाड़ियाछ भाइ दुइजन
कार सने करियाछ बाद बिसंवाद। लव-कुश, ना जानि कि पाड़िलि प्रमाद २१
शुनिया मायेर कथा दुइ भाइ हासे। मायेरे प्रबोध करे अशेष बिशेषे
लव-कुश बले, माता, ना जान कारण। मृगया करिते राजा आसे तपोबन २२

कुत्ते और गिद्ध-गिद्धनी वहाँ सेना का मांस लेकर खींचातानी कर रहे थे ॥ १५ ॥ भरत और लक्ष्मण दोनों ने अनुमान लगाया, हम किसी महायुद्ध में आ पहुँचे हैं। रणभूमि में आकर भरत और लक्ष्मण ने देखा, हाथ में धनुष लिये शत्रुघ्न गिरे हुए हैं ॥ १६ ॥ दोनों भाई शत्रुघ्न को गोद में लेकर रोने लगे। भाई, तुम्हें शिशुओं के साथ युद्ध में प्राण देने पड़े। भाई, तुमने तो यमुना-तट पर लवण का वध किया था। यहाँ आकर भाई, तुम्हें जीवन खोना पड़ा ॥ १७ ॥ रणभूमि में भरत और लक्ष्मण रो रहे थे। मंत्री-बांधव सभी उन्हें अपने वचनों से धीरज बँधा रहे थे। अब तो शोक करने का समय नहीं है। आप लोग युद्ध में आकर शोक क्यों कर रहे हैं ? ॥ १८ ॥ उन दोनों शिशुओं को निशाना साधकर मारिए। युद्धभूमि में आकर शोक करना उचित नहीं है। यह वचन सुनकर भरत और लक्ष्मण ने रुदन करना छोड़ अपने मन को स्थिर किया ॥ १९ ॥ सेना युद्ध-हेतु निशाना साधे हुए थी ! भरत और लक्ष्मण दोनों आगे बढ़े। राम की सेना चारों ओर बड़ी सतर्कता से तैनात थी। उस सेना का महान् कोलाहल देवी सीता ने सुना ॥ २० ॥ तब सीताजी ने लव-कुश से कहा, तुम दोनों भाइयों ने कौन-सी विपत्ति बुला ली है ? तुम लोगों ने किसके संग वाद-विवाद किया है ? अरे लव-कुश, पता नहीं, तुम लोगों ने कौन-सा प्रमाद किया है ? ॥ २१ ॥ माँ की बात सुन दोनों भाई हँसने लगे। तरह-तरह की बातें कहकर विविध प्रकार से उन्होंने माँ को धीरज बँधाया। लव-कुश बोले— माँ, तुम कारण नहीं जानती। राजागण तपोवन में शिकार हेतु आया करते हैं ॥ २२ ॥ चन्द्रवंश और सूर्यवंश में जितने भी राजा हैं, सब लोग

यत यत राजा आछे चन्द्र-सूर्य्यकुले । मृगया करिते सबे आसे एइ स्थले
अवश्य राजार सह आइसे सामन्त । राजार सैन्येर रोले तुम केन चिन्त २३
आमा दुइ भाइ मुनि थुये गेल देशे । कोन् राजा आसियाछे ना जानि बिशेष
मुनिर आज्ञाय मोरा राखि तपोवन । नाहि जानि, आसियाछे, कोन् महाजन २४
आश्रम हइले नष्ट मुनि दिबे दोष । बड़ भय वासि मा, करिले मुनि रोष
प्रबोधिया मायेरे तखन बाक्छले । शीघ्रगति दुइ भाइ युझिबारे चले २५
तूण पूर्ण बाण निल, धनु निल हाते । महाह्लादे दुइ भाइ याय समरेते
दुइ भाइ गेल यथा भरत लक्ष्मण । तृणज्ञान करे देखि यत सेनागण २६
लव-कुशे देखि सेना कम्पित-अन्तर । गरुड़े देखिया येन भुजङ्गेर डर
मनोहर दुइ भाइ दुर्ब्वादलश्याम । सकल कटक बले, एल दुइ राम २७
राम यदि आसितेन एखाने एखन । तिन राम एक स्थाने हइत मिलन
सेइ तेज, सेइ बल, सेइ धनुर्ब्बाण । आकृति, प्रकृति देखि रामेर समान २८
एक रामे जिनिते ना पारे त्रिभुवन । दुइ राम इहारा जिनिबे कोन् जन
भरत-लक्ष्मण दोँहे हइल बिस्मय । के तोमरा दुइ भाइ, देह परिचय २९
हासिया उत्तर करे भाइ दुइजन । जाति कुले मोदेर कि तब प्रयोजन
बारशत शिष्य पड़े वाल्मीकिर ठाँइ । ताँर शिष्य आमरा यमज दुइ भाइ ३०

शिकार खेलने इस स्थान में आया करते हैं। राजाओं के संग उनके सामन्तगण भी अवश्य आते हैं। राजा की सेना के कोलाहल से तुम चिन्तित क्यों होती हो ? ॥ २३ ॥ इस देश में हम दोनों भाइयों को रखकर मुनि (तपस्या के लिए) चले गये हैं। कौन से राजा यहाँ आये हैं, हम विशेष नहीं जानते। मुनि के आदेश से हम तपोवन की रखवाली कर रहे हैं। हमें पता नहीं यहाँ कौन महान् पुरुष आया है ॥ २४ ॥ यदि आश्रम नष्ट हो जाये तो मुनि हमें दोष देंगे। माँ, मुनि के रोष से हम बहुत डरते हैं। अपनी वचन-चातुरी से माँ को धीरज बँधाकर वे दोनों भाई शीघ्रता से लड़ने के लिए चल पड़े ॥ २५ ॥ तरकश बाणों से भर लिया, हाथों में धनुष ले लिया। महा-आनन्द से दोनों भाई युद्ध करने चले। भरत-लक्ष्मण जहाँ थे, दोनों भाई वहाँ पहुँचे। सेना को देख उन दोनों ने उसे तृण-जैसा नगण्य समझा ॥ २६ ॥ लव-कुश को देखकर सेना का अन्तर् काँप उठा, जैसे गरुड़ को देखकर भुजंग डर जाते हैं। वे दोनों भाई दूर्वा-दल-श्याम वर्ण के बड़े मनोहर थे। सारी सेना कहने लगी, दो राम आ गये हैं ॥ २७ ॥ यदि यहाँ राम आ जाते तो अभी यहाँ तीन रामों का एक ही स्थान पर मिलन हो जाता। इनके भी वही तेज, वही बल, वे ही धनुष-बाण हैं। इनकी आकृति-प्रकृति भी राम के समान ही देखते हैं ॥ २८ ॥ एक राम को ही त्रिभुवन (में कोई) जीत नहीं सकता। ये दो राम यहाँ आ गये हैं, इन्हें कौन जीत सकता है ? भरत और लक्ष्मण दोनों विस्मित हो उठे, पूछा— तुम दोनों भाई कौन हो, अपना परिचय दो ! ॥ २९ ॥ दोनों भाइयों ने हँसकर उत्तर दिया— हमारे जाति-कुल से तुम्हें क्या प्रयोजन है ? मुनिवर वाल्मीकि के यहाँ

सब शिष्य लये मुनि गेल परवासे। आमादेर दुइ भाइये थुइया गेल देशे
दशरथ भूपतिर पुत्र शत्रुघन। सैन्यसह देख तार समरे पतन ३१
दुइ भाइ युझिले पृथिवी नाहि आटे। कोन कार्ये आसियाछे मोदेर निकटे
कटक लइया केन एले तपोवन। परिचय देह, एले किसेर कारण ३२
ताहा शुनि श्रीभरत लक्ष्मणेर हास। मुखेते तर्ज्जन मात्र, अन्तरे तरास
चारि भाइ आमरा सबार ज्येष्ठ राम। तिनेर कनिष्ठ भाइ शत्रुघन नाम ३३
मध्यम आमरा दुइ भरत लक्ष्मण। शत्रुघ्ने मारिया कि राखिबे जीवन
एत यदि चारि जने हैल गालागालि। चारिजने युद्ध बाजे, चारि महाबली ३४
कुशे आर भरते, बाजिल महारण। महायुद्ध करे लव सहित लक्ष्मण
भरत लक्ष्मण सह चारि अक्षौहिणी। भरत डाकिया सैन्ये बलेन आपनि ३५
शिशुज्ञाने तोमारा ना हओ अन्यमन। दुइ भाग हये युद्ध कर सेनागण
दुइ अक्षौहिणी युझे भरतेर काछे। आर दुइ अक्षौहिणी लक्ष्मणेर पिछे ३६
मध्ये दुइ शिशु ये कटक चारिभिते। हस्तिस्कन्धे भरत लक्ष्मण महारथे
लबेर बाणेर शिक्षा बड़ चमत्कार। धूमबाण एड़े, दश दिक् अन्धकार ३७

बारह सौ शिष्य पढ़ा करते हैं। हम दोनों जुड़वें भाई उनके ही शिष्य हैं ।। ३० ।। 'दूसरे सभी शिष्यों को लेकर मुनि प्रवास में चले गये हैं। हम दोनों भाइयों को इस देश में रख गये हैं। वह देखो, राजा दशरथ के पुत्र शत्रुघ्न सेना-सहित युद्धभूमि में पड़े हुए हैं ।। ३१ ।। हम दोनों भाई यदि युद्ध करें तो संसार (का कोई भी) हमारा मुक़ाबला नहीं कर सकता। तुम लोग किस कार्य से हमारे समीप आये हो? तुम लोग सेना लेकर इस तपोवन में किसलिए आये? परिचय दो, तुम लोग किस कारण आये हो? ।। ३२ ।। यह बात सुनकर भरत और लक्ष्मण हँस पड़े। वे मुँह से गरजकर कहने लगे, यद्यपि अन्तर् में संत्रास बसा हुआ था। हम चार भाई हैं, रामचन्द्र सबसे बड़े भाई हैं। तीनों से छोटे भाई का नाम शत्रुघ्न है ।। ३३ ।। हम भरत और लक्ष्मण दोनों मँझले भाई हैं। शत्रुघ्न को मारकर तुम लोग जीवित रह सकते हो? जब चारों में ऐसी गाली-गलौज हुई, उसके पश्चात् उन चारों में युद्ध छिड़ गया। चारों ही महाबली थे ।। ३४ ।। कुश और भरत में महान् युद्ध होने लगा, लव के साथ लक्ष्मण महायुद्ध करने लगे। भरत और लक्ष्मण के संग चार अक्षौहिणी सेना थी। सेना को पुकारकर भरत ने स्वयं कहा— ।। ३५ ।। इन दोनों भाइयों को शिशु समझकर तुम लोग अनमने-से न रहो। सैनिको, तुम दो भागों में बँटकर युद्ध करो। दो अक्षौहिणी सेना भरत के पास रहकर लड़ने लगी। और दो अक्षौहिणी लक्ष्मण के पीछे रहकर युद्ध करने लगी ।। ३६ ।। बीच में दोनों बालक और उनके चारों ओर समूची सेना घेरे हुए थी। भरत हाथी पर और लक्ष्मण विशाल रथ पर थे। लव को बाणों का अद्भुत प्रशिक्षण मिला था। उसने धूम्र-बाण छोड़ा, जिससे दसों दिशाएँ अन्धकारमय हो गयीं ।। ३७ ।। सारा जगत अन्धकारमय

जगत हइल सब अन्धकारमय। पलाय सकल ठाट गणिया संशय
तिमिर हइल येन, चक्षे नाहि देखे। पर्व्वत गुहार मध्ये केह गिया ढोके ३८
पलाइया येते कारो कारो पा पिछले। झम्प दिया पड़े केह नद-नदी जले
केह कारे नाहि देखे, केबा कोथा जाय। लक्ष्मणे एड़िया यत कटक पलाय ३९
पलाइल सब ठाट, नाहिक दोसर। सबे मात्र लक्ष्मण रहेन एकेश्वर
एमन बाणेर शिक्षा नाहि कोन स्थाने। केबा शिखाइल कोथा हते केबा जाने ४०
रावणेर कुमार ये वीर इन्द्रजित। यार बाणे त्रिभुवन हइत कम्पित
ताहारे मारिते आमि ना करिनु भय। हइल शिशुर युद्धे जीवन संशय ४१
ये हउक, से हउक, आजि रण करि। ना करि प्राणेर भय, मारि किम्बा मरि
साहसे करिया भर युझेन लक्ष्मण। धनुके ब्रह्माग्नि बाण युड़ेन तखन ४२
ज्वलिया ब्रह्माग्नि बाण उठिल आकाशे। अन्धकार दूर हैल, पृथिवी प्रकाशे
अन्धकार दूर हैल, ठाट दूरे देखे। सकल कटक एल लक्ष्मण-सम्मुखे ४३
लक्ष्मणेर बाण-शिक्षा अति चमत्कार। पलाइल यत सैन्य, एल आरबार
लक्ष्मणेर बाण देखि लव पाय त्रास। तार त्रास देखिया लक्ष्मण पान आश ४४
लव बले, लक्ष्मण, कि कर अहङ्कार। मोर ठाँइ पड़िले निस्तार नाहि आर
आछये अक्षय बाण तूणेर भितर। ओर नाहि, एड़ि बाण शतेक वत्सर ४५

हो गया। सारी सेना जीवन-संशय जानकर भागने लगी। चारों ओर घोर अंधकार-सा छा गया। आँखों से कुछ दिखायी नहीं पड़ता था। कुछ तो पर्वत-गुफाओं में जाकर घुस पड़े ॥ ३८ ॥ भागते समय किसी-किसी के पैर फिसल जाते थे। कोई-कोई कूदकर नद-नदी के जल में गिर जाते थे। कौन कहाँ जा रहा है, कोई किसी को नहीं देखता था। लक्ष्मण को छोड़कर सारी सेना भागने लगी ॥ ३९ ॥ सारी सेना भाग गयी, कोई दूसरा नहीं रहा, केवल लक्ष्मण अकेले रह गये। ऐसे बाण का प्रशिक्षण और कहीं नहीं है। इन्हें किसने कहाँ से सिखाया कौन जाने ? ॥ ४० ॥ रावण-कुमार वीर इन्द्रजित्, जिसके बाणों से त्रिभुवन कंपित रहता था, उसे मारने में भी मुझे कोई डर नहीं लगा। पर इन बालकों के साथ युद्ध में तो जीवन-संशय उपस्थित हो गया है ॥ ४१ ॥ अब जो होना है, वह हो, आज युद्ध करूँगा। मैं प्राणों का भय नहीं करता, या तो इन्हें मारूँगा या स्वयं मर जाऊँगा। साहस का आधार लेकर लक्ष्मण संग्राम करने लगे। उन्होंने अपने धनुष पर ब्रह्माग्नि बाण चढ़ाया ॥ ४२ ॥ ब्रह्माग्नि बाण जलता हुआ आकाश में चढ़ गया। अँधेरा मिट गया, धरती प्रकाशित हो गयी। सेना ने दूर से देखा, अँधेरा मिट गया, तब सारी सेना लक्ष्मण के सम्मुख आ गयी ॥ ४३ ॥ लक्ष्मण के बाणों का बड़ा अद्भुत प्रशिक्षण भी मिला हुआ था। जो सारी सेना भाग गयी थी, वह पुनः लौटकर आ गयी। लक्ष्मण के बाणों को देखकर लव आतंकित हो उठा। उसे आतंकित देख लक्ष्मण को आशा बँधी ! ॥ ४४ ॥ लव बोला, लक्ष्मण, तुम अहंकार क्या कर रहे हो। मेरे साथ लड़ने पर तुम बच नहीं सकते, मेरे तरकश में अक्षय बाण हैं।

तोमार कटक आछे, एइ त भरसा । जल हेन शुषिब ये, ना राखिब आशा
संहारिब सकल तोमार विद्यमाने । अवशेषे तोमारे ये मारिव पराणे ४६
एतेक बलिया लव योड़े धनुर्व्वाण । सकल सामन्त काटि करे खान खान
षट्चक्र बाण लव युड़िल धनुके । सिंहेर गर्ज्जने बाण उठे अन्तरीक्षे ४७
महाशब्दे याय बाण, तारा येन छुटे । एक बाणे लक्ष्मणेर सब सैन्य काटे
षट्चक्र बाणेते एड़ाय येइ सब । से सकल सैन्ये नाहि मारिलेन लब ४८
रक्तमय हइल सकल युद्धस्थल । भाद्रमासे गङ्गा येन करे टलमल
डाकिया बलेन लब, शुन हे लक्ष्मण । कोथा गेल सैन्य तव, नाहि एकजन ४९
मारिले हे इन्द्रजित, रावण-कुमारे । तोमारे मारिया यश राखिब संसारे
तोमारे मारिले परे मोर यश रहे । बलिया लक्ष्मणजित सर्व्वलोके कहे ५०
लक्ष्मण बलेन, लब, एकि अहङ्कार । मोर सने युद्धे तब नाहिक निस्तार
कुपिया लक्ष्मण वीर एड़े ब्रह्मजाल । संहार कालेते येन अग्निर उत्थाल ५१
लब वीर विषण्ण भाविछे मने-मन । धनुके बरुण बाण युड़िल तखन
सन्धान पुरिया लब से बाण एड़िल । समुद्र-तरङ्ग येन गगने लागिल ५२
ब्रह्मजाल व्यर्थ गेल, चिन्तित लक्ष्मण । कि हबे आमार, बुझि संशय जीवन
लक्ष्मणेर यत शिक्षा यत अस्त्र जाने । सन्धान पूरिया बाण एड़े ततक्षणे ५३

उनका अंत नहीं, सौ साल तक मैं बाण चलाता रह सकता हूँ ।। ४५ ।। तुम्हारे मन में तो यही भरोसा है न कि तुम्हारे पास सेना है । मैं उसे जल की भाँति सोख लूँगा, कोई आशा न छोड़ूँगा । तुम्हारे रहते हुए सबका संहार कर डालूँगा । अन्त में तुम्हें भी प्राणों से मार डालूँगा ।। ४६ ।। कहकर लव ने धनुष पर बाण चढ़ाया और सारे सामन्तों को काटकर खंड-खंड कर डाला । लव ने धनुष पर षट्चक्र बाण चढ़ाया, सिंह जैसा गरजता हुआ वह बाण आकाश में चढ़ गया ।। ४७ ।। वह बाण घोर नाद करता हुआ उल्का की भाँति तेजी से चला । उसी एक बाण ने लक्ष्मण की सारी सेना को काट डाला । षट्चक्र बाण से जो बचे रहे, लव ने उन सैनिकों को नहीं मारा ।। ४८ ।। सारी युद्धभूमि रक्तमयी हो उठी, जैसे भादों महीने की गंगा तरंगित हो रही हो । लव ने पुकारकर कहा— लक्ष्मण, सुनो, तुम्हारी सेना कहाँ गयी, यहाँ तो एक भी नहीं है ।। ४९ ।। तुमने तो रावण-कुमार इन्द्रजित् को मारा है, अब तुम्हें मारकर मैं संसार में कीर्ति रखूँगा । तुम्हें मारने के पश्चात् मेरा यश रह जायेगा, सब लोग मुझे 'लक्ष्मण-जित्' कहेंगे ।। ५० ।। लक्ष्मण बोले, लव, यह कैसा अहंकार करते हो ? मेरे साथ युद्ध में तुम बच नहीं सकते । वीर लक्ष्मण ने कुपित होकर ब्रह्मजाल छोड़ा । मानो (प्रलय के) संहार काल में आग की प्रचंड लपटें हों ।। ५१ ।। वीर लव विषण्ण होकर मन ही मन सोचता रहा, उसके बाद उसने धनुष पर वरुण-बाण चढ़ाया । निशाना साधकर लव ने वह बाण छोड़ा । ऐसा लगा, मानो समुद्र की तरंगें उठकर आकाश छूने लगी हों ।। ५२ ।। ब्रह्मजाल को व्यर्थ गया देख लक्ष्मण चिन्तित हो उठे । सोचने लगे— हमारा क्या होगा, संभवतः

समस्त पृथिवी हैल बाणे अन्धकार। लक्ष्मणेर बाण देखि लागे चमत्कार
चिन्तित हइया लव भावे मने-मन। अक्षय अजित-बाण युड़िल तखन ५४
सन्धान पूरिया एड़े तारा येन छुटे। सेइ बाणे लक्ष्मणेर महाबाण काटे
हेन बाण व्यर्थ गेल चिन्तित लक्ष्मण। मने भावे, शिशु नहे, साक्षात् शमन ५५
अर्ब्बुद अर्ब्बुद बाण लक्ष्मण ये एड़े। कत दूरे गिया बाण उखाड़िया पड़े
देखिया त लक्ष्मणेर लागे चमत्कार। फुराइल सब बाण, तूणे नाहि आर ५६
शून्य हैल तूण फुराइल अस्त्रगण। देखिया उद्विग्न बड़ हइल लक्ष्मण
बलेन लक्ष्मण परे लव-विद्यमान। एतदूरे मोर युद्ध हैल अवसान ५७
सर्व्व शास्त्र जान तुमि, बिचारे पण्डित। बुझिया करह कार्य, ये हय उचित
शुनिया ताहार कथा लव वीर भाषे। अवश्य मारिब तोमा, ना जाइबे देशे ५८
एक बाण एड़ि आमि, ना भाबिओ मन्द। या होक् ता होक् तब, ये थाके निर्ब्बन्ध
एइ बाणे यदि तुमि पाओ परित्राण। तबे त लक्ष्मण, तब ना लइब प्राण ५९
करिनु प्रतिज्ञा एइ, शुनह वचन। एइ बाण व्यर्थ गेले ना करिब रण
पाशुपत बाण से लवेर मने पड़े। तूण हैते बाण लये धनुकेते योड़े ६०

जीवन-संशय उपस्थित हो गया है। लक्ष्मण की जितनी शिक्षा थी, वे जितने अस्त्र जानते थे, उन सबको उसी क्षण निशाना साधकर छोड़ने लगे ।।५३।। सारी पृथ्वी बाणों से ढँककर अंधकारमयी हो गयी। लक्ष्मण के बाणों को देखकर सबको बड़ा विस्मय हुआ। लव चिन्तित होकर मन ही मन सोचने लगा और तब उसने अक्षय अजित नाम का बाण धनुष पर चढ़ाया ।। ५४ ।। निशाना साधकर उसने बाण छोड़ दिया, वह तारे (उल्का) की भाँति तेज गति से चल पड़ा। उस बाण ने लक्ष्मण के महा-बाण को काट डाला। ऐसा बाण व्यर्थ हो गया इससे लक्ष्मण चिन्तित हो उठे। वे मन ही मन सोचने लगे, यह तो बालक नहीं है, साक्षात् यमराज है ।। ५५ ।। जो अरबों बाण लक्ष्मण छोड़ते थे, कुछ दूर जाकर वे बाण कटकर गिर रहे थे। वह देखकर लक्ष्मण को बड़ा विस्मय हुआ। उनके सारे बाण खो गये, तरकश में और बाण नहीं रहा ।। ५६ ।। तरकश खाली हो गया। अस्त्र समाप्त हो गये। यह देखकर लक्ष्मण बड़े उद्विग्न हुए। तब लक्ष्मण लव से कहने लगे— अब यहीं तक पहुँचकर मेरा युद्ध समाप्त हो गया ।। ५७ ।। तुम सभी शास्त्रों के ज्ञाता हो, विचारों में पंडित हो। अब समझकर जो कार्य करना हो, तुम वही करो। उनकी बात सुनकर वीर लव कहने लगा, तुम्हें मैं अवश्य मार डालूँगा, तुम लौटकर देश नहीं जा सकोगे ।। ५८ ।। लक्ष्मण, मैं एक बाण छोड़ रहा हूँ, तुम बुरा न मानना। अब तो जो तुम्हारे प्रारब्ध में होगा, वही हो। इस बाण से यदि तुम बच जाओ तो, लक्ष्मण, मैं तुम्हारे प्राण नहीं लूँगा ।। ५९ ।। मैं यही प्रतिज्ञा करता हूँ, मेरे वचन सुनो। यह बाण यदि व्यर्थ हो जाए तो मैं युद्ध नहीं करूँगा। तब लव को पाशुपत बाण का स्मरण हो आया। तरकश से वह बाण निकालकर उसने धनुष पर

वासुकि तक्षक येन बाणेर गर्ज्जन। पाशुपत बाणे बिन्धि पड़िल लक्ष्मण
लक्ष्मणे जिनिया याय भायेर उद्देश्ये। हेथा युद्ध बाजिल भरत आर कुशे ६१
कुशेर सहित लव नाहि करे देखा। लुकाइया देखे ये कुशेर अस्त्र शिक्षा
शत्रुघ्ने मारिया तार बाड़ियाछे आश। भरतेर सने युझे नाहि करे त्रास ६२
एका भाइ यद्यपि जिनिते नारे रण। निर्म्मूल करिब ये, ना रहे एकजन
एतेक भाविया लव लुकाइया थाके। भरतेर सहित कुशेर युद्ध देखे ६३
भरतेर सने ठाट कटक विस्तर। चारिभिते युद्ध करे कुश एकेश्वर
बेड़ापाक नामेते कुशेर एक बाण। सेइ बाणे कुशबीर पूरिल सन्धान ६४
बेड़ापाक बाण से प्रवेशे पाके पाक। हस्तपद काटे कारो, कारो काटे नाक
एक ठाइ मुण्ड पड़े, स्कन्ध आर ठाइ। भरतेर ठाट पड़े, लेखाजोखा नाइ ६५
एक बाणे अरि-सैन्य करिल संहार। पर्व्वत-प्रमाण ठाट पड़िल अपार
रक्तनदी बहिल से संग्रामेर स्थाने। सबे सैन्य पड़े एड़ाइल सात जने ६६
उच्चैःस्वर करि तारा भरतेरे डाके। पलाइया याय केह फिरे फिरे देखे
भावे तारा परित्राण पाइबे केमने। क्षत्रियेर धर्म्म नहे, भङ्ग दिते रणे ६७

चढ़ाया ॥ ६० ॥ वह बाण वासुकि और तक्षक के समान गरज उठा। उस पाशुपत बाण से बिंधकर लक्ष्मण गिर पड़े। लक्ष्मण को जीतकर लव भाई के पास चला, जहाँ भरत और कुश में युद्ध हो रहा था ॥ ६१ ॥ वहाँ पहुँचकर लव कुश के सामने नहीं गया। वह छिपकर कुश के अस्त्र-शिक्षण की निपुणता देखने लगा। शत्रुघ्न को मारकर उसका साहस बढ़ गया था। वह भरत से लड़ते हुए त्रस्त न था ॥ ६२ ॥ यदि कुश भाई अकेले युद्ध में विजय नहीं पा सके तो मैं (शत्रुपक्ष को) निर्मूल कर डालूँगा, कोई एक व्यक्ति भी जीवित नहीं रहेगा। ऐसा सोचकर लव छिपा रहा और भरत के साथ कुश का युद्ध देखता रहा ॥ ६३ ॥ भरत के साथ अनेक सेना थी। कुश अकेला उन सबसे चारों ओर युद्ध कर रहा था। 'बेड़ापाक' (चक्करदार घेरे वाला) नाम का एक बाण कुश का था। वीर कुश ने उसी बाण से निशाना साधा ॥ ६४ ॥ वह 'बेड़ापाक' बाण सेना में चक्कर लगाता हुआ घुस जाता था, वह किसी के हाथ-पैर काट डालता था, किसी की नाक काट लेता था। किसी का सिर एक जगह, तो कन्धा दूसरी जगह गिर रहा था; भरत की कितनी सेना मारी जा रही थी उसका लेखा-जोखा न था ॥ ६५ ॥ उस एक ही बाण से कुश ने शत्रु की सेना का संहार कर डाला। अनगिनत सेना के शव पर्वतों-जैसे हो गये। उस संग्राम-स्थल में रक्त की नदी बह चली। सारी सेना मारी गयी। केवल सात सैनिक बचे रहे ॥ ६६ ॥ ऊँचे स्वर से वे भरत को बुलाने लगे। वे भाग रहे थे, कोई-कोई मुड़-मुड़कर पीछे देख रहा था। वे सोच रहे थे, हमें परित्राण कैसे मिलेगा, रणक्षेत्र में भाग जाना तो क्षत्रिय का धर्म नहीं है ॥ ६७ ॥ भरत बोले, कुश, युद्ध रोक दो। हम ये आठ व्यक्ति

भरत बलेन, कुश, क्षान्त कर रण । देशे पलाइया याइ एइ अष्ट जन
कुश बले, भरत, ना बल ए बचन । केमने याइबे देशे एइ अष्टजन ६८
सात जन याक देशे रामेर गोचर । वार्त्ता पेये येन राम आसेन सत्वर
सुनह भरत वीर, आमार उत्तर । क्षत्रिय हइया केन हइला कातर ६९
मने भाव, पलाइया पाबे अव्याहति । यत काल जीबे तब था किबे अख्याति
अपयश थाकिबे ये पलाइया गेले । अनन्त पौरुष थाके युझिया मरिले ७०
भरत बलेन, कुश इहा मिथ्या नय । श्रीरामेर रूप देखि, तेँइ वासि भय
श्रीरामेर तेज-बल ताँरि धनुर्व्वाण । हारिले तोमार ठाँइ नाहि अपमान ७१
कुश बले, राम बलि कत गर्व्व कर । राम कि करिबे यदि आजि तुमि मर
आजि तुमि पड़िबे ये आमार संग्रामे । अतः पर आसिया कि करिबेन रामे ७२
मोदेर समरे यदि जयी हन राम । तबे व्यर्थ धरि मोरा लव-कुश नाम
तोमारे छाड़िया दिले लव पाछे हासे । बलिबेन भरते कि ना मारिले त्रासे ७३
कोन्‌काले भाइ मोर मारिल लक्ष्मण । तोमारे मारिते ये बिलम्ब एतक्षण
एक बाण बिना आर ना एड़िब बाण । एक बाणे भरत लइब तब प्राण ७४
भरत बलेन, तब बुद्धि भाल नय । श्रीरामेर रूप देखि, तेँइ वासि भय
कुश बले, राम हेन कोटि यदि आसे । बाहुड़िया एकजन नाहि याबे देशे ७५

भागकर अपने देश चले जायें । कुश बोला, भरत, ऐसा वचन न कहो । ये आठ व्यक्ति भला भागकर देश कैसे जायेंगे ? ।। ६८ ।। (तुम ऐसा सोचते हो कि) सात व्यक्ति राम के पास जायें और वे समाचार पाकर तुरंत आ जायें ! वीर भरत, हमारा उत्तर सुनो, क्षत्रिय होकर भी तुम ऐसे कातर क्यों हो गये ? ।। ६९ ।। तुम मन में सोच रहे हो कि भागकर हमें छुटकारा मिल जायेगा ? इससे तो तुम जितने समय जीओगे, तुम्हारी बदनामी रह जायेगी । तुम भाग जाओ, तो तुम्हारे ऊपर कलंक रह जायेगा । लड़कर मर जाने पर अनन्त पौरुष रह जाता है ।। ७० ।। भरत बोले, कुश, यह तो मिथ्या नहीं । पर (तुम लोगों में) श्रीराम का रूप देख रहा हूँ, इसी से मुझे भय हो रहा है । (तुम लोगों में) श्रीराम का तेज-बल, उन्हीं के धनुष-बाण, (तुम्हारे हाथ हैं) । तुम्हारे हाथों हार जाना कोई अपमान की बात नहीं है ।। ७१ ।। कुश बोला, राम का नाम लेकर कितना गर्व करते हो ? यदि तुम आज मर जाओ तो राम क्या करेगा ? मेरे साथ संग्राम में आज तुम्हें मरना है । इसके पश्चात् राम आकर क्या करेंगे ? ।। ७२ ।। यदि हमारे साथ युद्ध में राम विजयी हो जाएँ तब तो हमने लव-कुश नाम व्यर्थ ही रखा है । यदि तुम्हें छोड़ दूँ तो हो सकता है कि लव मुझ पर हँसें । कहेंगे कि क्या भरत को तुमने भय के मारे नहीं मारा ? ।। ७३ ।। मेरे भाई ने कितनी देर पहले लक्ष्मण को मार गिराया है, तुम्हें मारने में इतना विलम्ब हो रहा है । एक बाण के सिवा मैं और बाण नहीं छोड़ूँगा । इस एक ही बाण में भरत, मैं तुम्हारे प्राण ले लूँगा ।। ७४ ।। भरत बोले, तुम्हारी मति अच्छी नहीं । (तुममें) मैं श्रीराम का रूप देख रहा हूँ । इसी से डर रहा हूँ ।

भरत बलेन, कुश, कर बाड़ाबाड़ि । श्रीरामेर निन्दा कर सहिते ना पारि
शिशु हये कुश, तब एतेक बड़ाइ । आछुक रामेर कार्य्य, जिन मोर ठाँइ ७६
लब लब बलिया ये कर अहंकार । लक्ष्मणेर रणे तार प्राण बाचा भार
लक्ष्मणेर बाणे कारो नाहिक निस्तार । अबश्य लक्ष्मण प्राण लयेछे ताहार ७७
लक्ष्मणेर बाणे लब यद्यपि बाँचित । आसिया तोमारे से अवश्य देखा दित
भरतेर कथा शुनि कुशवीर कय । कोन्‌काले लक्ष्मणेर हइयाछे क्षय ७८
लक्ष्मण लबेर बाणे पाइले निस्तार । ना हबे भरत, तबे तोमार संहार
एत यदि दुइ जने हैल गालागालि । दुइजने युद्ध बाजे, दोँहे महाबली ७९
एड़िल तिराशी कोटि बाण श्रीभरत । दशदिक् जल स्थल ढाकिल पर्ब्बत
भरतेर बाणेते हइल अन्धकार । देखिया कुशेर मने लागे चमत्कार ८०
कुश वीर एड़े बाण भरत-सम्मुखे । भरतेर यत बाण, काटे एके एके
सब बाण व्यर्थ गेल, भरत चिन्तित । भरत गन्धर्ब्ब अस्त्र एड़िल त्वरित ८१
तिन कोटि गन्धर्ब्ब जन्मिल एकबाणे । कुश सह युद्ध करे अति साबधाने
गन्धर्ब्बेर बिक्रमे कुशेर लागे डर । एड़िल अजयजित बाण से सत्वर ८२

कुश बोला, राम जैसे करोड़ों पुरुष यदि आयें तो भी उनमें से एक भी यहाँ से देश नहीं लौट सकेंगे ॥ ७५ ॥ भरत बोले, कुश, तुम बड़ी ज़ियादती कर रहे हो । तुम श्रीराम की निन्दा करते हो, यह मुझसे सहा नहीं जाता । शिशु होकर भी कुश, तुम ऐसा अभिमान रखते हो, (तब) राम की बात रहने दो, पहले मुझे ही जीत तो लो ॥ ७६ ॥ तुम 'लव, लव' कहकर जो अहंकार कर रहे हो, (याद रखो) लक्ष्मण के संग युद्ध में उसका जीवित रहना कठिन है । लक्ष्मण के बाणों से किसी का निस्तार नहीं है । लक्ष्मण ने अवश्य ही उसके प्राण ले लिये हैं ॥ ७७ ॥ लव यदि लक्ष्मण के बाणों से बचा होता, तो वह अवश्य आकर तुमसे मिलता । भरत की बात सुनकर वीर कुश बोला— अरे लक्ष्मण का विनाश तो कितने समय पहले ही हो चुका है ॥ ७८ ॥ लव के बाणों से यदि लक्ष्मण बच जाये, तो भरत, तुम्हारा संहार नहीं होगा । जब दोनों में ऐसी गाली-गलौज हो चुकी तब दोनों लड़ने लगे, दोनों ही महाबली थे ॥ ७९ ॥ भरत ने तिरासी करोड़ बाण छोड़े । उन बाणों ने जल-स्थल, दसों दिशाओं और पर्वतों को ढँक लिया । भरत के बाणों से अँधेरा छा गया । वह देखकर कुश के मन में विस्मय हुआ ॥ ८० ॥ वीर कुश भरत के सम्मुख बाण छोड़ने लगा । भरत के जितने बाण थे, सबको एक-एक कर काट डाला । सारे बाण व्यर्थ हो गये, देखकर भरत चिन्तित हुए । तब भरत ने तुरंत गंधर्वास्त्र छोड़ा ॥ ८१ ॥ उस एक बाण से वहाँ तीन करोड़ गंधर्व उत्पन्न हो गये । वे बड़ी सावधानी से कुश के संग संग्राम करने लगे । गंधर्वों के विक्रम से कुश को भय हुआ । उसने तुरंत 'अजयजित' नाम का बाण छोड़ा ॥ ८२ ॥ कुश के बाणों से गंधर्वों का संहार हो गया । देखकर भरत को विस्मय हुआ । कुश

हइल कुशेर बाणे गन्धर्व्व संहार। देखि भरतेर मने लागे चमत्कार
कुश बले, भरत आर कत बाण एड़। आमि एइ बाण एड़ि, यमघरे नड़ ८३
युड़िल ऐषिक बाण कुश ये धनुके। सिहेर गर्ज्जने बाण उठे अन्तरीक्षे
महाशब्द करि बाण उठिल आकाशे। देखिया भरत व्यस्त हइलेन त्रासे ८४
भरत कातर हये ऊद्‌र्ध्वदिके चाय। वायुवेगे पड़े बाण भरतेर गाय
फुटिया ऐषिक वाण पड़िल भरत। पृथिवीते शतधारे बहे रक्तस्रोत ८५
भरत कटक सह पड़िलेन रणे। धेये गेल लब से कुशेर विद्यमाने
रक्ते राङ्गा दुइ भाइ करे कोलाकुलि। जले गिया युद्धरक्त फेलिल पाखालि ८६
संग्रामेर वेश राखि बृक्षेर कोटरे। शून्यहस्ते गेल दोँहे मायेर गोचरे
जानकी बलेन रे बिलम्ब की कारण। कोन् कार्य्ये लब कुश, व्याज एतक्षण ८७
लब-कुश बले, माता, ना जानि विशेष। मृगया करिया राजा गेल निज देश
एतेक प्रमाद सीता किछु नाहि जाने। मिथ्या कहि मायेरे प्रतारे दुइजने ८८
कोन चिन्ता नाहि मागो, तोमार प्रसादे। तपोबन राखि मोरा मुनि-आशीर्व्वादे
मिष्ट अन्न लये दोँहे करिल भोजन। सुगन्धि-चन्दन-माल्य परिल तखन ८९
परम हरिषे घरे रहे दुइ भाइ। सात जन पलाइया गेल राम ठाँइ

बोला, भरत, और कितने बाण छोड़ोगे ? मैं यह बाण छोड़ रहा हूँ, अब यम के घर जाओ ॥ ८३ ॥ कुश ने धनुष पर ऐषिक बाण चढ़ाया। वह बाण सिंह-गर्जना करता हुआ अन्तरिक्ष में चला। घोर नाद करता हुआ वह बाण आकाश में चढ़ गया। देखकर भरत त्रास से विकल हो उठे ॥ ८४ ॥ भरत कातरता से ऊपर की ओर देखने लगे। वह बाण वायु-वेग से भरत के शरीर पर गिरा। ऐषिक बाण (उनके शरीर में) चुभ गया तो भरत गिर पड़े। पृथ्वी पर सैकड़ों धाराओं में रक्त-स्रोत बहने लगा ॥ ८५ ॥ सेना समेत भरत युद्ध में गिर पड़े, तब लव कुश के पास दौड़ गया। रक्त से लाल होकर दोनों भाई एक-दूसरे का आलिंगन करने लगे। (इसके पश्चात्) पानी में उतर कर युद्ध में लगे रक्त को धो दिया ॥ ८६ ॥ संग्राम का वेश (पहनावा) पेड़ के कोटर में रखकर दोनों खाली हाथ माँ के पास गये। जानकी बोली, अरे, तुम्हारे आने में आज बिलम्ब क्यों हुआ ? लव-कुश, तुमने किस काम में इतना समय बिताया है ? ॥ ८७ ॥ लव-कुश बोले, माता, हम विशेष कुछ नहीं जानते, वह राजा तो शिकार खेलने के पश्चात् अपने देश चला गया। उधर जो महान् संकट आया है, सीता को उसका कुछ भी पता न था। मिथ्या वचन कहकर दोनों ने माँ से छलावा किया ॥ ८८ ॥ माता तुम्हारे प्रसाद से हमें कोई चिन्ता नहीं। मुनि के आशीर्वाद से हम तपोवन की रखवाली करते हैं। दोनों ने मीठा अन्न लेकर भोजन किया उसके पश्चात् सुगंधित चन्दन की माला पहनी ॥ ८९ ॥ दोनों भाई परम हर्ष से घर पर ही रहे। उधर (भरत के) सात व्यक्ति भागकर राम के पास पहुँचे।

लब-कुशेर सहित श्रीरामेर युद्ध करिबार आयोजन

मुनिगणमध्ये राम आछे यज्ञस्थाने। हेनकाले सातजन गेल सेइखाने १
सात जने देखि तबे श्रीराम चिन्तित। जिज्ञासेन भरत ओ लक्ष्मणेर हित
कृताञ्जलि सात जन करे निवेदन। कि कहिब रघुनाथ, दैवेर घटन २
प्रमाद पड़िल प्रभु, भये नाहि कहि। सात जन आइलाम आर केह नाहि
चारि अक्षौहिणी पड़े भरत-लक्ष्मण। सबे मात्र एड़ाइया आसि सात जन ३
दुइ शिशु नर नहे, बिष्णु अबतार। तोमार यतेक सेना करिल संहार
आपनि यद्यपि राम युझ तार सने। जिनिते नारिबे प्रभु, हेन लय मने ४
त्रैलोक्येर नाथ तुमि, जगत-पूजित। जिनिते नारिबे रण, कहिनु निश्चित
शुनिया मूर्च्छित राम कमललोचन। चैतन्य पाइया राम करेन क्रन्दन ५
कोथा भाइ शत्रुघन भरत-लक्ष्मण। आमारे त्यजिया कोथा गेले तिनिजन
पूर्व्वते आमार प्रति आछिला सदय। रणस्थले गिया भाइ, हइला निर्द्दय ६
श्रीरामेर सर्व्वाङ्ग तितिल नेत्रनीरे। भागीरथी बहे येन हिमालयोपरे
तिन भाये स्मरण करिया बहुतर। 'हाय, हाय' करिया बिलापे रघुबर ७
आमा लागि लक्ष्मण ये राज्य परिहरि। बनवासे गेला सेइ बाकल ये परि
चतुर्द्दश बर्ष दुःख पेले तपोबने। इन्द्रजित पड़िल तोमार तीक्ष्णबाणे ८

लव-कुश के साथ युद्ध करने हेतु श्रीराम का आयोजन

रामचन्द्र मुनियों के बीच यज्ञभूमि में थे। इतने में वे सात व्यक्ति वहाँ पहुँचे ॥ १ ॥ उन सातों को देख श्रीराम चिन्तित हुए। उन्होंने उनसे भरत और लक्ष्मण का कुशल पूछा। उन सात व्यक्तियों ने हाथ जोड़कर निवेदन किया, रघुनाथजी, दैव की घटना क्या बतायें ? ॥ २ ॥ प्रभु, महान् संकट आ पड़ा है, हम भय से कुछ कह नहीं पाते। केवल हम सात व्यक्ति आ पाये हैं, और कोई नहीं आ पाया। भरत-लक्ष्मण समेत चार अक्षौहिणी सेना मारी गयी है। केवल हम सात व्यक्ति बचकर आ रहे हैं ॥ ३ ॥ वे दोनों शिशु तो नर नहीं हैं, विष्णु-अवतार हैं। आपकी सारी सेना का उन्होंने संहार कर डाला। हे रामचन्द्र, आप यदि स्वयं उनसे युद्ध करें तो ऐसा लगता है कि आप उन्हें जीत नहीं सकेंगे ॥ ४ ॥ आप त्रिलोक-नाथ हैं, जगत आपकी पूजा करता है। हम निश्चित रूप से कह रहे हैं— आप युद्ध में उन्हें जीत नहीं सकेंगे। यह सुनते ही कमललोचन राम मूर्च्छित हो गये। चेतना लौटने पर राम रुदन करने लगे ॥ ५ ॥ 'भाई शत्रुघ्न, भरत, लक्ष्मण, तुम कहाँ हो, हमें छोड़कर तुम तीनों कहाँ चले गये ? भाई, पहले तो तुम मुझ पर सदय थे, पर युद्धभूमि में जाकर निर्दय हो गये !' ॥ ६ ॥ श्रीराम का सारा अंग आँसुओं से भीग गया। मानो हिमालय के ऊपर भागीरथी बह रही हों। उन्होंने अनेक प्रकार से तीनों भाइयों का स्मरण किया। रघुवर, 'हाय, हाय' कर विलाप करने लगे ॥ ७ ॥ हे लक्ष्मण, उन दिनों, राज्य छोड़कर, वल्कल पहनकर तुम

लक्ष्मणेर तुल्य भाइ नाहि त्रिभुवने। हेन भाइ पड़े मोर छावालेर रणे
भरतेर यत गुण कहिते ना पारि। आमि बने गेले हयेछिल ब्रह्मचारी ९
चौद्दवर्ष दुःख पेये परिल बाकल। राजभोग त्यजिया खाइल वृक्ष-फल
शिशुर विरोधे भाइ गेला रसातल। एतेक भाविया राम हलेन बिकल १०
शत्रुघ्न भाइ मोर प्राणेर सोसर। तव तुल्य बीर नाहि पृथिवी-भितर
बहुदिन-युद्धे आमि मारिनु रावणे। दिनेकेर युद्धे तुमि मारिले लवणे ११
हेन भाइ पड़िल ये शिशुर संग्रामे। या थाके कपाले, ताहा घटे क्रमे क्रमे
नेत्रनीरे श्रीरामेर तितिल वसन। सुग्रीब प्रभृति कहे प्रबोध-बचन १२
आपनि श्रीराम, तुमि बिचारे पण्डित। तोमार क्रन्दन प्रभु, नहे त उचित
क्रन्दन संवर राम, स्थिर कर मति। दुइ शिशु धरि गिया, चल शीघ्रगति १३
श्रीराम बलेन, याइ मायेर उद्देशे। तिन भाइ गेल यदि, आमि आछि किसे
दुइ शिशु मारि शुधिव भायेर धार। अयोध्याय तबे से फिरिव पुनर्ब्बार १४
शुनिया रामेर कथा सुग्रीव राजन। श्रीरामेर प्रति कहे प्रबोध-बचन
राक्षस बानर आर यत आछे सेना। साजन करिया मारि शिशु दुइजना १५

हमारे लिए वनवास में गये थे। तपोवन में चौदह वर्ष दुःख भोगा। तुम्हारे तेज़ बाणों से इन्द्रजित् मारा गया ॥ ८ ॥ लक्ष्मण के तुल्य भाई त्रिभुवन में कोई नहीं है। मेरा ऐसा भाई बालकों के साथ रण में मारा गया! भरत के गुणों का तो मैं बयान नहीं कर सकता। मैं जब वन में गया था तो वह ब्रह्मचारी बना था ॥ ९ ॥ चौदह साल दुःख भोग कर वल्कल पहना। राज-भोग तजकर वृक्षों के फल खाये। ऐसा भाई, शिशुओं के साथ लड़ाई में रसातल को चला गया (विनष्ट हो गया)— सोचते हुए रामचन्द्र व्याकुल हो उठे ॥ १० ॥ मेरे प्राणों के समान भाई शत्रुघ्न, तुम्हारे जैसा वीर तो पृथ्वी में कोई नहीं है। बहुत दिन युद्ध कर हमने रावण को मारा। तुमने तो एक ही दिन में लवण को मार डाला था ॥ ११ ॥ ऐसा भाई शिशुओं के संग संग्राम में मारा गया। ललाट में जो लिखा होता है वह क्रमशः घटित होता रहता है। आँसुओं से श्रीराम के वस्त्र भीग गये। सुग्रीव आदि उन्हें धीरज बँधाने लगे! ॥ १२ ॥ हे श्रीराम, आप स्वयं न्याय के पंडित हैं। प्रभु, आपका रुदन करना तो उचित नहीं। हे राम, आप रोना छोड़ दें। मति को स्थिर रखें। हम उन दोनों शिशुओं को पकड़ें, इस हेतु आप शीघ्रता से चलिए ॥ १३ ॥ श्रीराम बोले, मैं भाइयों के उद्देश्य से जा रहा हूँ जब कि तीन भाई चले गये, तो फिर मैं किसलिए रहूँ? उन दोनों भाइयों को मारकर मैं भाइयों का ऋण चुकाऊँगा। तभी फिर अयोध्या में लौटूँगा ॥ १४ ॥ रामचन्द्र की बात सुनकर राजा सुग्रीव ने श्रीराम को धीरज बँधाते हुए कहा— (हमारे यहाँ) राक्षसों, वानरों समेत जितनी सेना है, सबको सजाकर चलिए, हम दोनों शिशुओं को मार डालें ॥१५॥ सुमंत्र को रामचन्द्र ने सूचित किया, देखने में अपूर्व जितने रथ हैं सबको चुन-चुनकर सजाओ। राम का आदेश

सुमन्त्रेर प्रति राम करेन ज्ञापन। वाछिया साजाओ रथ अपूर्ब्ब दर्शन
पाइया रामेर आज्ञा सुमन्त्र सारथि। कनके रचित रथ आने शीघ्रगति १६
चड़ेन पुष्पक-रथे श्रीराम प्रबीण। शुभयात्रा करि राम चलेन दक्षिण
चलिल छाप्पान्न कोटि मुख्य-सेनापति। तिन कोटि चले ताहे मदमत्त हाती १७
चलिल तिराशी कोटि श्रेष्ठ-जाति घोड़ा। चलिल सत्तर अक्षौहिणी भूमि जोड़ा
तिन कोटि महारथी चलिल प्रधान। सर्व्वक्षण थाके तारा राम-विद्यमान १८
महारथी चलिल यतेक राजधानी। पात्रमित्र सबे चले करिया साजनि
श्रीरामेर सेना-ठाट-कटक अपार। देखिले यमेर चित्त लागे चमत्कार १९
सुग्रीव अङ्गद चले लये कपिगण। शरभ गवाक्ष गय से गन्धमादन
महेन्द्र देबेन्द्र चले वानर सम्पाति। चलिल छत्रिश-कोटि मुख्य सेनापति २०
आशीकोटि बीरे चले पवन-नन्दन। तिन कोटि राक्षसे चलिल बिभीषण
महाशब्द करि याय रक्षः कपिगण। आर यत सेना याय के करे गणन २१
बिजय सुमन्त्र नड़े कश्यप पिङ्गल। सत्राजित महाबल चलिल सकल
रुद्रमुख चले आर सुरक्तलोचन। रक्तबर्ण महाकाय घोर-दरशन २२
रथेर उपर राम चड़ेन सत्वर। महाशब्द करि याय राक्षस-बानर
कटकेर पदभरे काँपिछे मेदिनी। श्रीरामेर वाद्य बाजे तिन अक्षौहिणी २३
कृत्तिबास कबि कहे अमृत काहिनी। दुइटि बालक तरे एतेक साजनि

पाकर सारथी सुमंत्र ने शीघ्रता से स्वर्ण-निर्मित रथ ले आया ॥ १६ ॥ प्रवीण श्रीरामचन्द्र पुष्पक रथ पर सवार हुए। शुभ-यात्रा करते हुए रामचन्द्र दक्षिण की ओर चले। (उनके संग) छप्पन करोड़ मुख्य सेनापति चले, उसके साथ तीन करोड़ मदमत्त हाथी चले ॥ १७ ॥ तिरासी करोड़ श्रेष्ठ जाति के घोड़े चले। सत्तर अक्षौहिणी सेना सारी भूमि व्याप्त कर चली। तीन करोड़ प्रमुख महारथी चले। वे सदैव रामचन्द्र के संग रहते थे ॥ १८ ॥ राजधानी में जितने महारथी थे, सभी चले। मंत्री-सामन्त सभी सजकर चले। श्रीराम की सेना में अपार सैनिक थे। उन्हें देखकर यमराज के चित्त में भी बड़ा विस्मय होने लगा ॥ १९ ॥ सुग्रीव और अंगद वानरों को लेकर चले। शरभ, गवाक्ष, गय, गंधमादन, महेन्द्र, देवेन्द्र, वानर सम्पाति चले। छत्तीस करोड़ मुख्य सेनापति भी चले ॥ २० ॥ अस्सी करोड़ वीरों के संग पवन-नन्दन हनुमान चले। तीन करोड़ राक्षसों के संग विभीषण चले। राक्षस और वानर महान् नाद करते हुए चले। और जितनी सेना चल रही थी उनकी गणना कौन कर सकता है ? ॥ २१ ॥ विजय, सुमंत्र, कश्यप, पिंगल आदि तेजी से चले। सत्राजित, महाबल आदि सभी चले। रुद्रमुख और सुरक्तलोचन भी चले। देखने में भयंकर रक्तवर्ण महाकाय चला ॥ २२ ॥ रामचन्द्र शीघ्रता से रथ पर सवार हुए। राक्षस, वानर महान् नाद करते हुए चले। सेना के पद-भार से धरती काँप रही थी, श्रीराम के तीन अक्षौहिणी बाजे बज रहे थे ॥ २३ ॥ कवि कृत्तिवास अमृत-कथा सुना रहे हैं। दो बालकों (को मारने) के लिए इतनी सज-धज थी।

लव-कुशेर सहित श्रीरामेर युद्ध

कटक हइल पार नद-नदी-नीरे । जल शुकाइल कटकेर पदभरे १
नदी शुकाइया माटि हैल गुंड़ा गुंड़ा । गगनमण्डले लागे कटकेर धूला
समरे गेलेन राम कमललोचन । पड़ियाछे भरत लक्ष्मण शत्रुघन २
आर पड़ियाछे ठाट छय अक्षौहिणी । देखिया उद्विग्न हइलेन रघुमणि
लव-कुश दुइ भाइ करे अनुमान । एइ बुझि सैन्य लये आसिलेन राम ३
संग्रामे पण्डित अति विख्यात श्रीराम । इहांके मारिते पारि, तबे थाके नाम
एइ युक्ति दुइ भाइ करे कानाकानि । हेनकाले आइलेन सीता ठाकुराणी ४
जानकी बलेन, किबा कर दुइ भाइ । कटकेर महारोल शुनिते ये पाइ
कार सने करियाछ बाद-विसंबाद । कोन् दिने लव-कुशे पाड़िबे प्रमाद ५
उभये करेन सीतादेवी सावधान । शत शत आशीर्व्वाद करेन कल्याण
अभागीर पुत्र तोरा, निर्धनेर धन । अन्धेर नयन तोरा मायेर जीवन ६
कायमनोवाक्ये यदि हइ आमि सती । तो'सबार युद्धे कारो नाहि अव्याहति
तो'सबार सने येइ आसि करे रण । बाहुड़िया देशेते ना याबे एकजन ७
अव्यर्थ सीतार वाक्य, नहे अन्यमत । याहारे बलेन याहा, ता फले निश्चित
एतेक बलिया सीता चलिलेन घर । चरण वन्दिया चले दुइ सहोदर ८

लव-कुश के साथ श्रीराम का युद्ध

जल से भरे नद-नदियों को वह सेना पार करती हुई चली। सेना के पद-भार से उनका जल सूख गया ॥ १ ॥ नदियाँ सूख गयी, उनकी मिट्टी धूल की भाँति चूर-चूर हो गयी। सेना के चरणों से उठी हुई धूल गगन-मंडल पर जा लगी। कमललोचन राम युद्ध में गये। वहाँ भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न पड़े हुए थे ॥ २ ॥ और छः अक्षौहिणी सेना पड़ी हुई थी। उसे देखकर रघुमणि राम उद्विग्न हो उठे। उधर लव-कुश दोनों भाइयों ने अनुमान लगाया, संभवतः अब राम सेना लेकर आये हैं ॥ ३ ॥ श्रीराम समर में अति विख्यात पंडित हैं। यदि इन्हें मार सकें तो नाम रह जाए। दोनों भाई यही विचार करते हुए कानाफूसी कर रहे थे। उसी समय वहाँ देवी सीता आयी ॥ ४ ॥ जानकी बोली, तुम दोनों भाई क्या कर रहे हो, उधर मैं सेना का प्रचंड नाद सुन रही हूँ। तुम लोगों ने किसके साथ वाद-विवाद किया है ? लव-कुश, किसी दिन तुम लोग विपत्ति बुलाओगे (तुम्हारे कारण सकट आ पड़ेगा) ॥ ५ ॥ ऐसा कहकर देवी सीता ने दोनों को सावधान किया। उनके कल्याण हेतु सौ-सौ आशीर्वाद दिये। (वह कहने लगी) तुम दोनों इस अभागिन के बेटे हो। तुम अंधों के नयनों जैसे इस माँ का जीवन हो ॥ ६ ॥ यदि मैं तन-मन-वचन से सती होऊँ तो तुम दोनों से युद्ध करने पर कोई बच नहीं पायेगा। तुम दोनों से जो आकर युद्ध करेगा, वह कोई भी अपने देश पुनः लौट नहीं पायेगा ॥ ७ ॥ सीताजी के वचन अव्यर्थ हैं, इनकी अन्यथा नहीं हो सकती (इनमें अन्य मत

रामेर सहित युद्ध करे, एइ मन। सेइमत करिलेक वेश दुइजन
तूणपूर्ण बाण निल, धनु निल हाते। युझिबारे दुइ भाइ चले आनन्दते ९
येखाने श्रीराम, तथा गेल दुइजन। तिन राम एक ठाँइ देखे सर्व्वजन
एक बल, एक रूप, एकइ सुठाम। एकइ बिक्रम सबे देखे तिन राम १०
राक्षस वानर आदि यत सेनापति। अनुमान करे तारा बुद्धे बृहस्पति
पञ्चमास गर्भवती जानकी यखन। सेकाले ताँहारे राम करेन बर्ज्जन ११
लक्ष्मण आनिया ताँरे राखे एइ बने। इहारा सीतार पुत्र हेन लय मने
सेइ गर्भे हइल यमज सहोदर। त्रिभुवनजयी दुइ बीर धनुर्द्धर १२
एइ कथा रघुनाथ, करि अनुमान। नतुबा इहारा केन तोमार समान
ए दुयेर युद्धे राम ना देखि निस्तार। प्राण लये वेश प्रति हओ आगुसार १३
एइ युक्ति श्रीरामेरे बले सेनापति। हेनकाले निबेदये सुमन्त्र सारथि
पञ्चमासे यखन जानकी गर्भवती। हेनकाले ताँहारे बर्जिला रघुपति १४
थुइलाम ताँहारे ये एइ बनवासे। आमि ओ लक्ष्मण दोंहे फिरिलाम देशे
अतएव रघुनाथ, एइ सेइ बन। ए दुइ सीतार पुत्र हेन लय मन १५
यमज सोदर दुइ, बुझि ए प्रकार। परिचय लह प्रभु, तोमार कुमार
सुमन्त्रेर कथा शुनि रामेर बिस्मय। उभयेर काछे गिया देन परिचय १६

नहीं है)। वह जिससे जो कह देतीं, वह निश्चित रूप से फलीभूत होता। वैसा कहकर सीताजी घर चली। दोनों सहोदर उनके चरणों की बंदना कर चले ॥ ८ ॥ उनके मन में यह भाव था कि राम के साथ युद्ध करें! उन दोनों ने उसी तरह से वेश-सज्जा की। उन दोनों ने तूण भरकर बाण लिये, हाथों में धनुष ले लिये, और दोनों भाई आनन्द से लड़ने चले ॥ ९ ॥ जहाँ श्रीराम थे, वहीं दोनों भाई पहुँचे। सबने (मानो) तीन राम एक स्थान पर देखे। सबने देखा, एक ही जैसे बल, एक जैसे रूप, एक ही जैसी सुन्दर आकृति एक ही जैसे बिक्रम वाले तीन राम हैं ॥ १० ॥ राक्षस, वानर आदि के सारे सेनापति, जो विचार में बृहस्पति जैसे थे, वे अनुमान करने लगे— जानकी जब पाँच महीने की गर्भवती थी, उसी काल में रामचन्द्र ने उन्हें त्याग दिया था ॥ ११ ॥ लक्ष्मण ने उन्हें (सीता को) लाकर इसी वन में रखा था। हमारे मन में ऐसा लगता है कि ये सीता के ही पुत्र हैं। सीता के उसी गर्भ से ये त्रिभुवनविजयी दोनों वीर धनुर्धर जुड़वें सहोदर उत्पन्न हुए हैं ॥ १२ ॥ हे रघुनाथ, हम यही अनुमान कर रहे हैं, नहीं तो ये आपके समान क्यों होते? हे राम, इन दोनों के साथ युद्ध में हम निस्तार नहीं देखते। चलिये, हम प्राण बचाकर देश को लौट जायें ॥ १३ ॥ सेनापतिगण राम को जब यह सुझाव दे रहे थे, उसी समय सारथी सुमंत्र ने उनसे निवेदन किया— हे रघुपति, जब जानकी पाँचवें महीने की गर्भवती थी, उसी समय आपने उन्हें तज दिया था ॥ १४ ॥ उन्हें इसी (स्थान में) वनवास में रखकर मैं और लक्ष्मण दोनों देश लौटे थे। अतः रघुनाथ, यही वह वन है, मन में ऐसा लगता है कि ये दोनों सीता के पुत्र हैं ॥ १५ ॥ प्रभु, हम ऐसा समझते हैं कि ये

राजा दशरथेर तनय आमि राम। तोमरा आमारि मत धर रूप श्याम
तेज धर आमार, आमारि धनुर्व्बाण। आकृति-प्रकृति देखि आमार समान १७
पराक्रम आमारि, ना हय अन्य ज्ञान। अतएब कहि आमि, बलह बिधान
तेइ से कारणे आमि परिचय चाइ। परिचय देह, के तोमरा दुइ भाइ १८
परिचय देह, किबा आमार नन्दन। एमन हइले आमि ना करिब रण
ना जानिया मारिब कि आपन तनय। यावत् ना लब प्राण देह परिचय १९
शुनिया से कथा दोँहे करे कानाकानि। केमने बलिब नाम, बापे नाहि चिनि
आजि गिया जिज्ञासिब जननीर ठाँइ। कार पुत्र आमरा यमज दुइ भाइ २०
दुइ भाइ युक्ति करे, केह नाहि शुने। डाकिया रामेरे बले तर्ज्जन गर्ज्जने
एतदिने अबोधेर सने दरशन। परिचय दिले हबे कोन् प्रयोजन २१
पुत्र हये पितृसने केबा करे रण। आपनार पुत्र बलि भाब मने-मन
आमा दोँहे देखिया ये काँपिला अन्तरे। परिचय ते-कारणे चाह बारे बारे २२
तोमारे कहिब, शुन अबोध श्रीराम। बड़ भय पाओ तुमि करिते संग्राम
दुइ भाइ चतुर ना जाने पितृनाम। भाण्डाइल छल करि बुझिलेन राम २३

जुड़वें सहोदर भाई आपके कुमार हैं। आप इनका परिचय लीजिए। सुमंत्र की बात सुनकर रामचन्द्र को विस्मय हुआ। उन्होंने दोनों के पास जाकर अपना परिचय देते हुए कहा—।। १६ ।। मैं राजा दशरथ का पुत्र हूँ। तुम लोग मेरे जैसे ही श्याम रूप वाले हो। मेरे जैसे ही तेजस्वी हो, मेरे जैसे धनुष-वाण धारण करते हो। तुम्हारी आकृति-प्रकृति भी मेरी ही जैसी हैं।। १७ ।। पराक्रम भी मेरे ही जैसा है, (तुम्हें देखकर) कोई दूसरे हो ऐसा नहीं लगता। अतः मैं कहता हूँ, अपना विवरण बताओ! मैं इसी कारण तुम्हारा परिचय चाहता हूँ। तुम परिचय दो, तुम दोनों भाई कौन हो? ।। १८ ।। परिचय दो, क्या तुम मेरे पुत्र हो? ऐसा हो तो मैं युद्ध नहीं करूँगा। क्या बिना जाने अपने पुत्र को मार डालूँ? जब तक मैं तुम्हारे प्राण न ले लूँ, अपना परिचय दे दो।। १९ ।। यह बात सुन दोनों कानाफूसी करने लगे। बाप को तो हम पहचानते नहीं तो भला नाम कैसे बतायें। आज जाकर माँ से पूछेंगे, हम दोनों जुड़वें भाई किसके पुत्र हैं।। २० ।। दोनों भाई आपस में विचार कर रहे थे; उनकी बातें दूसरा कोई सुन नहीं पाता था। उन दोनों ने राम को पुकार कर तर्जन-गर्जन करते हुए कहा— इतने दिन पश्चात् इस अबोध से भेंट हुई है। हमारा परिचय देने पर भला कौन-सा कार्य सिद्ध होगा? ।। २१ ।। पुत्र होकर भला पिता के साथ युद्ध कौन करता है? तुम अपना पुत्र समझकर मन ही मन सोचते रहो। हम दोनों को देखकर मन में (भय से) काँप उठे हो, इसी कारण बार-बार हमारा परिचय चाहते हो।। २२ ।। हम कहेंगे, अबोध श्रीराम, सुनो, तुम संग्राम से बहुत डरते हो। दोनों भाई चतुर थे, वे पिता का नाम नहीं जानते थे, बहाना बनाकर धोखा दे दिया। यह बात रामचन्द्र समझ गये।। २३ ।। उनमें परिचय नहीं हुआ। एक-दूसरे को

परिचय नाहैल हइल गालागालि । सर्व्व सैन्य बेड़े लव-कुश महाबली
श्रीराम बलेन नाहि दिले परिचय । सावधाने युझ सैन्य, ना करिह भय २४
आमार छाप्पान्न कोटि मुख्य सेनापति । तिन कोटि आमार ये मदमत्त हाती
आछये तिराशी कोटि श्रेष्ठजाति घोड़ा । अक्षौहिणी सत्तर कटके पृथ्वी जोड़ा २५
सुग्रीव ओ अङ्गदेर आछे कोटि सेना । यार युद्धे देव-दैत्य काँपे सर्व्वजना
भल्लुक असंख्य आछे, राक्षस-वानर । आमार अनेक ठाट कटक बिस्तर २६
एतेक कटक यदि पड़े आजि रणे । तबे अपयश मोर घुषिबे भुबने
बाछिया बाछिया बीर देह चारिभिते । बेड़ येन दुइ शिशु नारे पलाइते २७
मन्त्रिगण-सह राम करेन मन्त्रणा । बाछिया कटक दिल चारिभिति थाना
हस्ती घोड़ा चलाइल प्रथमतः रणे । बिपक्ष मरुक घोड़ा-हस्तीर चापने २८
पाइया रामेर आज्ञा कटकेर त्वरा । चालाय प्रथम रणे हाती आर घोड़ा
राहुत माहुत धाय शिशु धरिबारे । दुइ भाइ दुइ भिते धनुर्व्बाण जोड़े २९
लब बले, कुश भाइ, युक्ति कर सार । राम-सैन्य काटिया करिब चूरमार
दुइ भाइ कुपिया धनुके बाण जोड़े । हस्ती घोड़ा काटिया गगने बाण उड़े ३०
लब एड़िलेन बाण नामेते आहुति । एक बाणे काटिया पाड़िल कोटि हाती
कुश बाण एड़िल नामेते अश्वकला । काटिल तिराशी कोटि तुरङ्गेर गला ३१

गालियाँ दी (तिरस्कार किया)। महाबली लव-कुश ने सारी सेना को घेर लिया। श्रीराम बोले, इन दोनों ने तो अपना परिचय नहीं दिया। सेना-गण, तुम लोग सावधानी से युद्ध करो, भय न करो ॥ २४ ॥ हमारे छप्पन करोड़ मुख्य सेनापति हैं, तीन करोड़ मदमाते हाथी हैं। तिरासी करोड़ श्रेष्ठ जाति के घोड़े हैं। सत्तर अक्षौहिणी सेना से पृथ्वी परिपूर्ण है ॥ २५ ॥ सुग्रीव या अंगद की करोड़ों सेना है। जिसके साथ युद्ध में देव-दैत्य सभी काँपते रहते हैं। अनगिनत भालू हैं, राक्षस-वानर हैं। हमारी अनेक सेना और असंख्य सैनिक हैं ॥ २६ ॥ यदि आज इतनी सेना युद्ध में मारी जाय तो संसार में मेरा अपयश घोषित होगा। चुन-चुनकर वीरों को चारों ओर लगा दो। उन दोनों शिशुओं को घेर लो जैसे वे दोनों भाग न सकें ॥ २७ ॥ मंत्रियों के साथ रामचन्द्र ने मंत्रणा की। चुने हुए सैनिकों को चारों ओर जमा दिया। पहले युद्ध में हाथी-घोड़ों को आगे बढ़ाया, जिससे विपक्ष के (बच्चे) हाथी-घोड़ों के पैरों तले कुचल-कर मर जायें ॥ २८ ॥ राम की आज्ञा पाकर सेना में जल्दी मच गयी। युद्ध में पहले हाथी और घोड़े आगे बढ़ाये गये। और महावत उन शिशुओं को पकड़ने धावित हुए। उधर दोनों भाइयों ने दो ओर से धनुष पर बाण चढ़ा लिये ॥ २९ ॥ लव बोला— भैया कुश, हम उचित परामर्श करें। (जिससे) राम की सेना को काटकर चूर-चूर कर डालें। दोनों भाइयों ने कुपित होकर धनुष पर बाण चढ़ाये। हाथी-घोड़ों को काटकर उनके बाण आकाश में उड़ने लगे ॥ ३० ॥ लव ने आहुति नाम का बाण छोड़ा। एक बाण ने करोड़ों हाथियों को काटकर गिरा दिया। कुश ने अश्वकला नाम का बाण छोड़ा और तिरासी करोड़ घोड़ों के गले काट

चारिभिते सैन्य युझे, लव-कुश माझे। नाना अस्त्र लइया से दुइ भाइ युझे
सैन्य देखि दुइ भाइ भाबित-अन्तर। केमने मारिबे ठाट-कटक बिस्तर ३२
एत सैन्य लइया युझिते एल राम। इहाके मारिते पारि, तबे रहे नाम
सतीपुत्र हइ यदि, थाके मुनि-बर। एखनि मारिया पाठाइब यमघर ३३
मुनिर आशीषे हय सर्व्वत्र कल्याण। सन्धान पूरिया लव-कुश एड़े बाण
षट्चक्र बाणे लव पूरिल सन्धान। त्रिभुवन युझे यदि, नाहि धरे टान ३४
बेड़ापाक नामे बाण कुशेर प्रधान। सेइ बाण लये कुश पुरिल सन्धान
हेन बाण दुइ भाइ युड़िल धनुके। सन्धान पूरिया एड़े, उठे अन्तरीक्षे ३५
सिहेर गर्ज्जने बाण तारा हेन छुटे। श्रीरामेर सेना यत दुइ भाइ काटे
समरे आसियाछिल भल्लुक-बानर। केह हाते करि गाछ केह बा पाथर ३६
सुग्रीव अङ्गद युझे बीर हनुमान। कोटि कोटि सेनापति युझे सावधान
राक्षस भल्लुक कपि रूपे भयङ्कर। नाना अस्त्र एड़े तारा पादप-पाथर ३७
राक्षस बानर आर यतेक भल्लुक। निरखिया लव-कुश करिछे कौतुक
लव बले, कुश भाइ, शुनह बचन। देख देख कटकेर बिकट बदन ३८
हेन सब मुख कभु नाहि देखि आर। देखिते शरीर येन पर्व्वत-आकार
बानर भल्लुक बीर युझिछे बिस्तर। नाना-अस्त्र एड़े तारा पादप-पाथर ३९

डाले ॥ ३१ ॥ राम की सेना चारों ओर से लड़ रही थी, लव-कुश बीच में थे। वे दोनों भाई नाना प्रकार के अस्त्र लेकर लड़ने लगे। राम की (विशाल) सेना देख दोनों भाई अन्तर् में चिन्ता करने लगे, इन अनगिनत सैनिकों और सेनाओं को किस प्रकार मारें ! ॥ ३२ ॥ इतनी सेना लेकर रामचन्द्र लड़ने आये हैं, यदि इन्हें मार सकें तो नाम रह जाए। यदि हम सती के पुत्र हों, मुनि का वरदान हमें मिला हो तो इन्हें अभी मारकर यमलोक भेज देंगे ॥ ३३ ॥ मुनि के आशीर्वाद से सर्वत्र कल्याण होता है। लव-कुश निशाना साधकर बाण छोड़ने लगे। लव ने षट्चक्र बाण चढ़ाकर निशाना साधा। (वह बाण ऐसा था कि) यदि त्रिभुवन भी (उसके विरुद्ध) लड़े तो उसे रोका नहीं जा सकता था ॥ ३४ ॥ कुश के बाणों में सर्वप्रमुख 'बेड़ापाक' नाम का बाण था। उसी बाण को लेकर कुश ने निशाना साधा। वैसे बाणों को लेकर दोनों भाइयों ने धनुष पर चढ़ाया। निशाना साधकर छोड़े वे बाण अन्तरिक्ष में जा चढ़े ! ॥३५॥ सिंहनाद करते हुए वे बाण तारों जैसे तेजी से चले। श्रीराम की सारी सेना को उन दोनों भाइयों ने काट डाला। भालू-वानर युद्ध में आये हुए थे। कोई हाथ में पेड़ लिये हुए था, तो कोई पत्थर ॥ ३६ ॥ सुग्रीव, अंगद और वीर हनुमान तथा सतर्कता से युद्ध करनेवाले करोड़ों सेनापति लड़ने लगे। राक्षस, भालू, वानर आदि के रूप बड़े भयंकर थे। वे नाना प्रकार के अस्त्र, वृक्ष और पत्थर फेंकते थे ॥ ३७ ॥ राक्षस, वानर और जितने भालू थे, उन्हें देखकर लव-कुश बड़ा कौतुक करने लगे। लव बोला, भाई कुश, सुनो। उस सेना के विकट मुखों को तो देखो ॥ ३८ ॥ ऐसे मुख तो कभी और नहीं देखे थे। इनके शरीर देखने में पर्वतों के आकार

राक्षसेरा बाण एड़े पूरिया-सन्धान । लब-कुशे देखिया ना हय आगुयान
लब बले कुश भाइ, कार मुख चाइ । बिकट कटक मारि पाड़ि दुइ भाइ ४०
सेइ दिके दुइ भाइ पूरिल सन्धान । सन्धान पूरिया एड़े चोका चोका बाण
बाणे बिद्ध राक्षस बानर यत पड़े । येमन कदली बृक्ष पड़े महाझड़े ४१
लब बले, कुशेर कि शिक्षा चमत्कार । राक्षस बानर आदि पड़िल अपार
परे आइलेक युद्धे सुग्रीव बानर । द्वादश योजन आने पर्ब्बत सत्वर ४२
क्रोधभरे पर्ब्बत उपाड़े दुइ हाते । इच्छा करे, मारे लब-कुशेर शिरेते
बाणे काटि लब-कुश करे खान खान । आर बाणे सुग्रीबेर लइल पराण ४३
तवे त अङ्गद बीर आइल सत्वरे । धरिबार चाहे दोँहे आपनार जोरे
एतेक भाविया बीर लाफ दिया याय । लब-कुश बाण एड़े, पड़े तार गाय ४४
पड़िल अङ्गद बीर, सेइ बाण धाये । हनूमान आइलेन हाते गिरि लये
पर्ब्बत एड़िल लब-कुशेर उद्देशे । बाणे काटि लब-कुश उड़ाय आकाशे ४५
कुश बाण मारे हनूमानेर उपरे । मूर्च्छित हइया हनू पड़िल समरे
देखिया हनूर दशा अपर बानर । त्रासे पलाइया याय हइया कातर ४६

के हैं। अनेक वानर और भालू वीर लड़ रहे हैं। ये नाना प्रकार के अस्त्रों, पेड़ों और पत्थरों से प्रहार करते हैं ॥ ३९ ॥ राक्षसगण निशाना साधकर बाण छोड़ते थे, परन्तु लव-कुश को देखकर वे आगे नहीं बढ़ते थे। लव बोला, भाई अब भला किसका मुँह देखना है ? हम दोनों भाई अब इस विकट सेना को मार गिरायें ॥ ४० ॥ दोनों भाइयों ने उसी दिशा में निशाना साधा। निशाना साधकर वे नुकीले बाण छोड़ने लगे ! बाणों से बिंध-बिंधकर सारे राक्षस-वानर ऐसे गिरने लगे, जैसे महान् आँधी में केले के वृक्ष गिरते हैं ॥ ४१ ॥ लव बोला, कुश की शिक्षा कैसी विस्मयकारी है। (उसके बाणों से) अपार राक्षस-वानर आदि मारे गये। उनके (गिरने के बाद) वानर सुग्रीव युद्ध में आया। शीघ्रता से बारह योजन का पर्वत वह उठा लाया ॥ ४२ ॥ उसने क्रोध में भरकर दोनों हाथों से पर्वत को उखाड़ लिया और चाहा कि वह पर्वत लव-कुश के सिर पर दे मारे। परन्तु लव-कुश ने बाण मार, उस पर्वत को काटकर टुकड़े-टुकड़े कर दिये। दूसरे बाण से उसने सुग्रीव के प्राण ले लिये ॥ ४३ ॥ तब तुरंत वीर अंगद वहाँ आया। दोनों को उसने अपने बल से पकड़ लेना चाहा। ऐसा सोचकर वीर अंगद कूदता हुआ चला। लव-कुश ने बाण छोड़े, जो उसके शरीर में लगे ॥ ४४ ॥ उन बाणों के आघात से वीर अंगद गिर पड़ा। तब हनुमान हाथों में पर्वत लेकर वहाँ आये। उन्होंने लव-कुश की ओर पर्वत को फेंका। उसे बाणों से काटकर लव-कुश ने आकाश में उड़ा दिया ॥ ४५ ॥ कुश ने हनुमान पर बाण मारा जिससे हनुमान मूर्च्छित होकर युद्धभूमि में गिर पड़े। हनुमान की दशा देख दूसरे वानर भय के मारे कातर हो (युद्ध-भूमि से) भागने लगे ॥ ४६ ॥ इसके बाद कुश ने 'बेड़ापाक' बाण से

बेड़ापाक बाणे कुश पूरिल सन्धान । बेड़ापाके सबाकार लइल पराण
राक्षस-भल्लुक आदि पड़े कपिगण । एसबार मध्ये एड़ाइल तिन जन ४७
अमर कारणे एड़ाइल तिन बीर । दुइ कटकेर रक्त बहे येन नीर
रक्तेते भासिया नदी हइल पाथार । देखिया रामेर मने लागे चमत्कार ४८
आछिल छाप्पान्न कोटि श्रीरामेर सेना । हस्ती घोड़ा ठाट, तार नाहि एक जना
श्रीरामेर सेनापति बीर महामति । गिया छिल रणस्थले सैन्येर संहति ४९
श्रीरामेर आगे कहे योड़ करि हात । प्राण लये देशेते चलह रघुनाथ
यदि रघुनाथ, देशे करह गमन । तबे त सबार रक्षा, नतुवा मरण ५०
शिशु नहे, दुइजन साक्षात् शमन । ए दोंहार सम बीर नाहि त्रिभुवन
श्रीराम बलेन, आइलाम सैन्य-साथे । सब सैन्य मजाइया याइब किमते ५१
मजाइया सर्ब्बस्व केमने याव घर । सावधाने युझ सबे, ना करिह डर
सेनापति सकले रामेर आज्ञा पाय । धनुर्ब्बाण हाते करि युझिवारे याय ५२
एकेवारे सब सैन्य पूरिल सन्धान । सन्धान पूरिया एड़े चोका चोका बाण
कोटि कोटि चोकाबाण सेनापति एड़े । लव-कुशे निरखिया आगु नाहि नड़े ५३
सेनापति सकलेते लागे चमत्कार । पलाइया सब सैन्य हैल छत्राकार
भङ्ग दिल सेनापति, लव-कुश हासे । डाक दिया श्रीरामेरे बले लव-कुशे ५४

निशाना साधा । उस 'बेड़ापाक' बाण ने सबके प्राण ले लिये । राक्षस, भालू, वानर आदि सभी मारे गये । इन सबमें केवल तीन व्यक्ति बचे रहे ॥ ४७ ॥ अमर होने के कारण ये तीन वीर बचे रहे । (वानरों एवं राक्षसों) इन दोनों सेनाओं के रक्त पानी की भाँति बहने लगे । रक्त से उमड़कर मानो वह नदी सागर बन गयी ! यह देखकर रामचन्द्र के मन में विस्मय हुआ ॥ ४८ ॥ श्रीराम की छप्पन करोड़ सेना थी ! हाथियों-घोड़ों के समूह थे । उनमें कोई नहीं बचा । श्रीराम का सेनापति वीर महामति सेना के संग गया हुआ था ॥ ४९ ॥ उसने श्रीराम के सामने हाथ जोड़कर कहा— हे रघुनाथजी, प्राण लेकर अब अपने देश लौट चलें । रघुनाथजी, यदि आप देश को चले जायें, तब तो (आपके वचने से) सबका बचाव है, नहीं तो सबकी मौत होगी ॥ ५० ॥ ये तो शिशु नहीं है, साक्षात् यमराज हैं । इन दोनों के समान वीर त्रिभुवन में नहीं है । श्रीराम बोले— मैं तो सेना के साथ आया था, अब सेना को खोकर भला कैसे चला जाऊँ ? ॥ ५१ ॥ सब कुछ खोकर मैं घर कैसे चला जाऊँ ? तुम सब लोग सावधानी से युद्ध करो, डरो मत । सभी सेनापति रामचन्द्र की आज्ञा पाकर हाथों में धनुष-बाण ले लड़ने चले ॥ ५२ ॥ सारी सेना ने एक साथ निशाना साधा । निशाना लगाकर नुकीले बाण छोड़ने लगे । सेनापतिगण करोड़ों नुकीले बाण छोड़ने लगे । पर वे लव-कुश को देखकर आगे नहीं बढ़ते थे ॥ ५३ ॥ सारे सेनापति चमत्कृत हो उठे । सारी सेना भागकर बिखर गयी । सेनापति भाग गये, लव-कुश हँसने लगे । श्रीराम को पुकारकर लव-कुश ने कहा— ॥ ५४ ॥

भङ्ग दिल युद्धे तव यत सेनापति । हेन ठाट केन राम, आनह संहति
श्रीराम पाइया लज्जा करेन उत्तर । याय याक ठाट, आमि आछि एकेश्वर ५५
आमि आछि एकाकी, तोमरा दुइ जन । एक बाणे पाठाइब यमेर सदन
एत यदि तिन जने बोलचाल हैल । से-सकल सेनापति आबार आसिल ५६
चारिदिके लव-कुशे बेड़िल सकले । निरखिया लब-कुश अग्नि-हेन ज्वले
सेनापति सकले धनुके जोड़े बाण । लव-कुशे देखिया ना हय आगुवान ५७
सेनापतिगण-हस्ते यत अस्त्र छिल । फुराइल सब बाण, तूण शून्य हैल
सेनापतिगणे रणे करिया विरति । लब-कुश वले सेना-सकलेर प्रति ५८
तोमा सवाकार युद्ध हैल अवसान । एबे मोरा दुइ भाइ पूरि ये सन्धान
एड़िलेक बाण गोटा तारा येन छुटे । सेनापति छाप्पान्न कोटिर माथा काटे ५९
वासुकि तक्षक येन बाणेर गर्ज्जन । पड़िल सकल सैन्य नाहि एकजन
पड़िल सकल सैन्य नाहिक दोसर । सबे मात्र श्रीराम आछेन एकेश्वर ६०
चिन्ता करिलेन राम हइया उदास । डाक दिया लब-कुश करे उपहास
सर्व्वलोके बले तोमा धार्म्मिक श्रीराम । अलक्षिते यत तुमि करिला संग्राम ६१
दुजनेर प्रति यदि तिन जन रोषे । धर्म्मनाश हय, मरे आपनार दोषे
हस्ती घोड़ा ठाट कटकेर नाहि संख्या । सतीपुत्र आमरा ये, तेइ पाइ रक्षा ६२

तुम्हारे सारे सेनापति युद्ध से भाग गये। हे राम, तुम ऐसी सेना को साथ क्यों लाते हो? श्रीराम ने लज्जित होकर कहा— यदि सेना चली गयी तो जाने दो, मैं अकेला यहाँ हूँ ॥ ५५ ॥ मैं अकेला हूँ, तुम दो हो। तुम्हें एक ही बाण से यमलोक भेज दूंगा। तीनों में ऐसी बातचीत हो रही थी, तभी वे सेनापति फिर लौट आये ॥ ५६ ॥ सबने लव-कुश को चारों ओर से घेर लिया। यह देख लव-कुश अग्नि की भाँति जल उठे। सारे सेनापतियों ने धनुष पर बाण चढ़ाये। पर लव-कुश को देख वे आगे न बढ़े ॥ ५७ ॥ सेनापतियों के हाथ जितने अस्त्र थे, वे सारे बाण समाप्त हो गये, उनके तूणीर खाली हो गये। तब सेनापतिगण युद्ध से विरत हो गये। लव-कुश ने तब सेना को संबोधित करते हुए कहा— ॥ ५८ ॥ तुम सबका युद्ध समाप्त हो गया। अब हम दो भाई निशाना साध रहे हैं। उन लोगों ने एक बाण छोड़ा, जो तारे (उल्का) की भाँति तेजी से चला और छप्पन करोड़ सेनापतियों के सिर काट डाले ॥ ५९ ॥ वह बाण वासुकी एवं तक्षक की भाँति गरज रहा था। सारी सेना मारी गयी, एक भी न रहा। सारी सेना मारी गयी, दूसरा कोई न रहा। केवल अकेले रामचन्द्र रह गये ॥ ६० ॥ रामचन्द्र ने उदास होकर सोचा। उन्हें पुकारकर लव-कुश उपहास करने लगे। श्रीराम, सब लोग तुम्हें धार्मिक कहते हैं, तुमने जो संग्राम किये थे, उसे हमने नहीं देखा ॥ ६१ ॥ (यह धर्मयुद्ध की रीति है) दो व्यक्तियों पर यदि तीन व्यक्ति कुपित होकर लड़ते हैं, तो धर्म-नाश होता है। अपने ही दोष से उनका विनाश होता है। (हम दो के विरुद्ध) तुम्हारे हाथी, 'घोड़े, सेना-सैनिकों की गिनती नहीं है। हम सती-पुत्र हैं, इसी कारण बच सके हैं ॥ ६२ ॥ श्रीराम ने कुछ

कहेन श्रीराम किछु हइया लज्जित। तोमरा या' किछु बल, नहे अनुचित
पृथिबी-मण्डले आमि राज-चक्रवर्त्ती। ना जानि, कतेक ठाट आइल संहति ६३
आमारे जिनिते केबा पारे त्रिभुबने। पुत्र-बिना आमारे नाहिक केह जिने
आछये पुत्रेर स्थाने मोर पराजय। पिताके जिनिते पुत्र पारे, शास्त्रे कय ६४
आमार आकृति देखि तोमरा दुजन। मम पुत्र हओ यदि, ना करिब रण
परिचय देह, किवा आमार नन्दन। लव-कुश बलिया तोमरा दुइजन ६५
रावण दुर्ज्जय बीर छिल लङ्कादेशे। आमार सहित रणे मरिल सबंशे
शुनिया रामेर कथा दुइ भाइ हासे। डाक दिया रामेरे बलिछे अबशेषे ६६
शुनह तोमारे बलि अबोध श्रीराम। बड़ भय पेले तुमि करिते संग्राम
पुत्र पुत्र बलिया चाहिछ परिचय। हेन बुझि समर करिते त्रास भय ६७
कोथा शुनियाछ तुमि पिता-पुत्रे रण। आपनार पुत्र बलि भाब मने-मन
रणेते पण्डित तुमि, निजे महाराज। बारे बारे पुत्र बल, नाहि बास लाज ६८
रावणे मारिया कत आपना बाखान। पड़िले बीरेर हाते भाल मते जान
अधिक कि कब राम, शुनह उत्तर। क्षत्रिय हइया केन हइला कातर ६९
आमरा मुनिर पुत्र, सेइमत बल। तुमि त धरणीपति, केन कर छल
श्रीराम बलेन, शुन बलि लब-कुश। बालकेर सह युद्धे कि हबे पौरुष ७०

लज्जित होकर कहा— तुम लोग जो कुछ कहते हो, वह अनुचित नहीं है। मैं पृथ्वी-मंडल पर राज-चक्रवर्ती हूँ, मुझे तो पता नहीं मेरे संग कितनी सेना आयी ॥ ६३ ॥ हमें त्रिभुवन में कौन जीत सकता है? पुत्र के सिवा ऐसा कोई नहीं है जो हमें जीत सके। अपने पुत्र के हाथ मेरी पराजय होनी है। शास्त्र कहते हैं, पिता को पुत्र जीत सकता है ॥ ६४ ॥ देखता हूँ, तुम दोनों मेरी ही आकृति वाले हो। यदि तुम मेरे पुत्र हो तो मैं युद्ध नहीं करूँगा। तुम परिचय दो, लव-कुश नाम वाले तुम दोनों क्या मेरे पुत्र हो? ॥ ६५ ॥ लका देश में रावण दुर्जेय वीर था, हमारे साथ युद्ध में वह सवंश मारा गया। राम की बात सुनकर दोनों भाई हँसने लगे। अन्त में राम को पुकारकर कहने लगे— ॥ ६६ ॥ अबोध श्रीराम, सुनो, तुमसे हम कहते हैं, तुम संग्राम करने में बहुत ही भयभीत हो गये हो। 'पुत्र, पुत्र' कहकर तुम परिचय पाना चाहते हो। युद्ध करने में तुम्हें ऐसा ही डर लग रहा है? ॥ ६७ ॥ पिता-पुत्र में युद्ध होने की बात तुमने कहाँ सुनी है? इसी कारण 'अपने पुत्र हैं' ऐसा मन ही मन सोच रहे हो। महाराज, तुम स्वयं रण के पंडित हो। बार-बार 'पुत्र' कहने में क्या तुम्हें लज्जा नहीं आती? ॥ ६८ ॥ रावण को मारकर अपना कितना बखान करते हो। यह भलीभाँति जान लो कि तुम अब वीरों के हाथ पड़े हो। हम और अधिक क्या कहें, राम, हमारे उत्तर सुनो! तुम क्षत्रिय होकर भी ऐसे कातर क्यों हो गये? ॥ ६९ ॥ हम मुनि के पुत्र हैं, हमारा बल उसी के अनुसार है। तुम तो धरती के अधीश्वर हो, तो फिर छल क्यों करते हो? श्रीराम बोले— लव-कुश, सुनो, बालकों के साथ युद्ध करने में भला पौरुष क्या होगा? ॥ ७० ॥ तुम

तोमा-दोंहे देखि येन आमार आकृति। परिचय नाहि दिलि तोरा अल्पमति
कटक पड़िल, आमि ना याइब देशे। अवश्य करिब रण, येबा हय शेषे ७१
आमार सहित युद्धे नाहि कारो रक्षा। एखनि देखाइ यत अस्त्रेर परीक्षा
पिता-पुत्रे गालागालि, केह नाहि चिने। गालागालि, महायुद्ध बाजे तिन जने ७२
महाक्रोधे रघुनाथ पूरेन सन्धान। दुइ शिशु उपरे एड़ेन महाबाण
नाना अस्त्र एड़ेन श्रीराम कोपान्वित। महाव्यस्त लव-कुश पलाय त्वरित ७३
दुइ भाइ पलाइल, राम पान आश। श्रीरामेर बाण गिया छाइल आकाश
अन्धकार हल धरा सेइ सब बाणे। आगु हैया युझिते ना पारे दुइजने ७४
एइ मत दुइ भाइ गेल पलाइया। विलाप करेन राम रथेते बसिया

श्रीरामेर बिलाप

हरि हरि क्षुण्ण मन, देखिया अद्भुत रण,
भूमिते बसिया रघुनाथ।
भ्रातृ-मृत्यु सैन्य-ध्वंस, पराभूत रघवंश,
शोकानले हय अश्रुपात। १
दैब यदि हय बाम, सिद्ध नहे कोन काम,
यज्ञ हैल संहार-कारण।

दोनों को मैं अपनी आकृति का देख रहा हूँ। अल्पबुद्धि बालक, तुमने अपना परिचय नहीं दिया। सारी सेना मारी गयी, अब मैं देश नहीं लौटूँगा। अवश्य ही युद्ध करूँगा। अन्त में चाहे जो हो ॥ ७१ ॥ मेरे साथ युद्ध में कोई बचेगा नहीं। अभी मैं अपने सारे अस्त्रों का प्रभाव दिखाता हूँ। इसी तरह पिता-पुत्र के बीच गाली-गलौज होती रही, कोई किसी को पहचानता न था। गाली-गलौज के बाद तीनों में महायुद्ध होने लगा ॥ ७२ ॥ महा क्रोध से रघुनाथ ने निशाना साधा! दोनों बालकों पर उन्होंने महाबाण छोड़ा। क्रोधित रामचन्द्र ने नाना प्रकार के अस्त्र छोड़े। तब अत्यन्त व्यस्त होकर लव-कुश भागने लगे ॥ ७३ ॥ दोनों भाई भाग गये, तब राम को कुछ आशा हुई। श्रीराम के बाण आकाश में छा गये। उन बाणों से धरती पर अन्धकार छा गया। अब लव-कुश दोनों आगे बढ़कर लड़ नहीं पाते थे ॥ ७४ ॥ इसी प्रकार दोनों भाई भाग गये। तब रामचन्द्र रथ पर बैठकर विलाप करने लगे।

श्रीराम का विलाप

हरि, हरि, (हा, हा,) उस अद्भुत संग्राम को देख रामचन्द्र विषण्ण मन से भूमि पर बैठ गये। भाइयों की मृत्यु, सेना का विध्वंस, रघुवंश की पराजय, आदि के शोक रूपी अनल से (दग्ध हो) आँसू बहाने लगे ॥ १ ॥ यदि दैव वाम होता है तो कोई काम सिद्ध नहीं होता, यह यज्ञ संहार का कारण

तखनि जानिल मन, जिनिते नारिब रण,
यखन पड़िल शत्रुघन ।
सुदिन कुदिन दुइ, विधातार सृष्टि एइ,
एबे सेइ बीर हनूमान ।
ये गन्धमादन आने, कुम्भकर्ण जिने रणे,
लोटाय शिशुर खेये बाण । २

सुग्रीब प्रभृति बले, सहाय सागर-जले,
महायुद्ध कैल लङ्कापुरे ।
हेन जने शिशु मारे, अङ्गद देवेन्द्र मरे,
एत कराइल दैबे मोरे ।
कत ब्रह्मबध कैनु, यज्ञमध्ये भस्म दिनु,
पातक करिनु कत आर ।
कत बड़ नाम छिल, दण्डमध्ये भस्म हैल,
पराभव हइल आमार । ३

ये-बंशे सगर राजा, रघुबीर महातेजा,
भगीरथ बेण महाशय ।
हेन बंशे जनमिया, नाकरि बंशेर क्रिया,
जिने मोरे मुनिर तनय ।
मरिल ये तिन भाइ, मित्रबर्ग केह नाइ,
ये-सबारे आनिलाम रणे ।
मरिल याहार पति, अनाथा हइला सती,
अकीर्ति रहिल ए-भुबने । ४

बन गया । जब शत्रुघ्न गिर पड़े तभी मेरे मन ने समझ लिया था, यह युद्ध जीता नहीं जा सकता ! सुदिन-कुदिन दोनों इसी विधाता की सृष्टि हैं । ये वे ही वीर हनुमान हैं जो गंधमादन उठा लाये थे, कुंभकर्ण को जीता था, वे आज शिशु के बाण-प्रहार से भूमि पर पड़े हुए हैं ॥ २ ॥ जिन सुग्रीव आदि ने अपने बल से सागर-जल में सहायता की थी, लंकापुरी में महायुद्ध किया था, ऐसे लोगों को शिशुओं ने मार डाला । अंगद-देवेन्द्र आदि मारे गये ! दैव ने मुझसे इतना करवाया । हमने कितने ब्रह्म-वध किये ? किस यज्ञ में राख डाली (यज्ञ नष्ट किया) ? और कितने पाप किये ? (जिस कारण) हमारा कितना बड़ा नाम था, जो पल भर में भस्म हो गया (नष्ट हुआ), हमारी पराजय हो गयी ! ॥ ३ ॥ जिस वंश में राजा सगर हुए, वीर महा तेजस्वी रघु, भगीरथ, वेण आदि महान चरित्र वाले राजा हुए, ऐसे वंश में जन्म लेकर, वंश के कर्म किये बग़ैर मुझे मुनि के पुत्रों ने जीत लिया ! जिनको मैं युद्ध में लाया था, वे तीनों भाई मर गये, मित्रवर्ग कोई नहीं बचा ! जिनके पति मारे गये वे सतियाँ अनाथिनी हो गयीं । संसार में मेरा अपयश रह गया ॥ ४ ॥ पहले इतना ऊँचा चढ़ाकर अन्त में निर्दय होकर विधाता ने सर्वनाश कर

বিধাতা নির্দ্দয় হৈয়ে, এত বড় বাড়াইয়ে,
সর্ব্বনাশ করিলেক শেষে।
হায় হায় কি হইল, বংশে কেহ না থাকিল,
পৃথিবী পূরিল অপযশে।
মাতৃগণ আছে ঘরে, প্রাণ দিবে অনাহারে,
শত্রুগণে নাশিবেক পুরী।
অযোধ্যা কিষ্কিন্ধ্যা লঙ্কা, হইল জীবন-শঙ্কা,
পতিহীনা হইল সর্ব্বনারী। ৫
সূর্য্য-বিনা দিবা নহে, জল-বিনা মৎস্য দহে,
অরাজক-পুরীর সংহার।
এই সে থাকিল দুখ, না দেখি বন্ধুর মুখ,
কোথায় রহিল পরিবার।
বিদরিয়া যায় বুক, না দেখি সীতার মুখ,
মজিল যে অযোধ্যার রাজ্য।
চারি ভাই একমাসে, মরিলাম এক দেশে,
প্রতিকূল বিধির এ কার্য্য। ৬
দুই শিশু যম-সম, নর বলি করি ভ্রম,
কুম্ভকর্ণ কিবা দশানন।
জাতিস্মর দুই জন, করিতে আইল রণ,
পূর্ব্ব বৈর করিতে সাধন।
কিবা সে দূষণ খর, হইয়া আইল নর,
পূর্ব্ব-বৈরী করিতে সংহার।
মারিল সকল-জনে, সুগ্রীব ও বিভীষণে,
যত সব সুহৃদ্ে আমার। ৭

डाला। हाय, हाय, यह क्या हो गया ? वंश में अब कोई न रहा, पृथ्वी अपयश से भर गयी। हमारी माताएँ घर पर हैं, वे (यह सुनकर) अनाहार से प्राण दे देंगी। शत्रुगण पुरी का विनाश कर डालेंगे। अयोध्या, किष्किन्ध्या, और लंका की जीवन-शंका आ पड़ी, सारी नारियाँ पतिहीना हो गयीं ! ॥ ५ ॥ सूर्य के बिना जैसे दिन नहीं होता, जल के बिना मछली तड़पती है, वैसे ही अराजक पुरी का संहार हो जाता है। यही दुःख रह गया कि मैं भाई-बन्धुओं का मुँह नहीं देख पाऊँगा। परिवार कहाँ रह गया ? सीता का मुख न देखकर हृदय फटा जा रहा है, अयोध्या का राज्य भी नष्ट हो चला है। प्रतिकूल विधाता का ही यह कार्य है कि हम चारों भाई एक ही महीने में, एक ही देश में मर रहे हैं ! ॥ ६ ॥ ये दो शिशु यम के समान हैं। मनुष्य मानकर भ्रम ही हुआ है। संभवतः पूर्व जन्म की बातें स्मरण रखनेवाले रावण या कुंभकर्ण ये दोनों अपने पुराने वैर का प्रतिशोध लेने हेतु युद्ध करने आये हैं। अथवा वे खर-दूषण अपने पहले के वैरियों का संहार करने आये हैं। सुग्रीव और विभीषण सहित हमारे जितने सुहृद् थे सारे जनों को मार डाला ! ॥ ७ ॥

सुहृद् आछिल यारा, प्राय गतप्राण तारा,
आर कारे करिब सहाय।
आजि दुइ शिशु मारि, अथवा आपनि मरि,
तबे क्षत्रधर्म्म रक्षा पाय।
आजि दुइ शिशु मारि से रक्ते तर्पण करि,
तबे आमि रघुबंश हइ।
युझिब शिशुर सने, एइ दाँड़ाइनु रणे,
नाहि देखि गति इहा बइ। ८
एतेक भाविया मने, श्रीराम चलेन रणे,
जीबनेते हइया हताश।
रामायण सुधाभाण्ड, ताहार उत्तरकाण्ड,
गाइल पण्डित कृत्तिबास।

लब ओ कुशेर युद्धे श्रीरामचन्द्रेर पराजय ओ मूर्च्छा

कुश बले, लव तुमि मोर ज्येष्ठ भाइ। हारिया कि पलाइब मोरा राम-ठाँइ १
एकेबारे दुइ भाइ करिब संग्राम। झाट चल मारि गिया आमरा श्रीराम
कुश हैते अस्त्रशिक्षा लव भाल धरे। एड़िया चिकुर वाण दिक् आलोकरे २
लवेर बाणेते व्यर्थ श्रीरामेर वाण। आकाशेते अग्नि ज्वले पर्व्वत-समान
लवेर बाणेते सब अन्धकार घुचे। सन्धान पुरिया गेल श्रीरामेर काछे ३

हमारे जितने सुहृद् रहे, लगभग सभी प्राणहीन हो गये हैं, मैं अब किसकी सहायता करूँगा ? आज या तो इन दोनों शिशुओं को मार डालूँगा या स्वयं मारा जाऊँगा, तभी क्षत्रिय धर्म की रक्षा होगी ! आज दोनों शिशुओं को मारकर उनके रक्त से तर्पण करूँगा तभी मैं रघुवंशी हूँ। मैं इन शिशुओं से लड़ूँगा, मैं यहीं युद्ध में खड़ा हो रहा हूँ ! इसके सिवा और कोई गति नहीं दिखायी देती ! ॥ ८ ॥ ऐसा सोचकर श्रीराम जीवन में हताश होकर युद्ध करने चले। रामायण अमृत-भांड है। पंडित कृत्तिवास ने उसके उत्तरकांड का गायन किया है।

लव-कुश के साथ युद्ध में श्रीरामचन्द्र की पराजय और मूर्च्छा

कुश बोला, लव, तुम मेरे बड़े भाई हो। क्या हम राम से हारकर भाग जायें ? ॥ १ ॥ हम दोनों भाई चलकर एक ही बार में संग्राम करें। शीघ्र चलो, हम दोनों चलकर श्रीराम को मारें ! कुश की अपेक्षा लव का अस्त्र-प्रशिक्षण उत्तम था। उसने 'चिकुर' नाम का बाण छोड़कर दिशाओं को आलोकित कर दिया ॥ २ ॥ लव के बाणों से रामचन्द्र के बाण व्यर्थ हो गये। आकाश में पर्वत-जैसी आग जलने लगी। लव के बाणों ने सारे अंधकार को नष्ट कर डाला। वह निशाना साधकर श्रीराम के पास गया ॥ ३ ॥ दोनों भाइयों ने एक साथ निशाना साधा।

एकेबारे दुइ भाइ पूरिल सन्धान। बाणेर प्रताप देखि पाछु हन राम
क्षणे राम आगु हन, क्षणे दुइ भाइ। बाण-ठनृठनि शुनि, लेखाजोखा नाइ ४
हइल रामेर बाणे क्लान्त दुइ जन। शङ्कान्वित लब-कुश भाबे मन-मन
ये अस्त्र योड़ेन राम करिया शृङ्खला। लब-कुश गले ताहा हय पुष्पमाला ५
लब-कुश दुइ भाइ येइ अस्त्र फेले। रामेर चरण बन्दि प्रवेशे पाताले
एइ रूपे पिता-पुत्रे बाधिल समर। स्वर्गेते कौतुक देखे यतेक अमर ६
केह कारे नाहि पारे, समान उभय। पितार सदृश पुत्र, केह छोट नय
दुइ दिके दुइ भाइ राम एकेश्वर। बाणे बिद्ध रामचन्द्र हलेन कातर ७
नाना अस्त्र दुइ भाइ एड़े दुइ भित। कोन् दिक् राखिबेन, श्रीराम चिन्तित
चाहिते लबेर पाने कुश एड़े बाण। लब बिन्धे यद्यपि कुशेर पाने चान ८
एकेबारे दुइ भाइ पूरिल सन्धान। मूर्च्छित हइया भूमे पड़ेन श्रीराम
पूर्ब्बे निर्ब्बन्ध आछे येइ ब्रह्मशाप। समरे पुत्रेर हाते हारिबेन बाप ९
लब एड़िलेन बाण नामे अस्त्रकला। धनुर्ब्बाण सहित रामेर बान्धे गला
कुश बाण एड़िल अक्षयजित नाम। बुकेते बाजिया भूमे पड़िलेन राम १०
छट्फट् करे राम, प्राणमात्र आछे। शीघ्र गेल दुइ भाइ श्रीरामेर काछे
नड़िते नारेन राम, बाणे अचेतन। लब-कुश काड़ि लन गात्र आभरण ११

उनके बाणों का प्रताप देखकर श्रीराम पीछे हट गये। क्षण में राम आगे बढ़ते, क्षण में वे दोनों भाई। बाणों के एक-दूसरे से लगने से ठनकार सुनायी देती थी। उन बाणों का लेखा-जोखा नहीं रहा है ॥ ४ ॥ दोनों रामचन्द्र के बाणों से क्लान्त हो उठे। शंकित होकर लव-कुश मन ही मन सोचने लगे। रामचन्द्र जिन अस्त्रों को सिलसिलेवार बनाकर छोड़ते थे, वे लव-कुश के गले में पुष्प-माला बन जाते थे ॥ ५ ॥ लव-कुश दोनों भाई जो अस्त्र छोड़ते थे, वे राम के चरणों का वन्दन कर पाताल में प्रवेश कर जाते थे। इसी प्रकार पिता-पुत्र में संग्राम छिड़ गया। सारे देवता स्वर्ग में वह कौतुक देखने लगे ॥ ६ ॥ कोई किसी से पार नहीं पाता था, दोनों ही बराबर थे। पुत्र पिता के समकक्ष थे, कोई किसी से छोटा न था। दो भाई दोनों ओर थे और राम अकेले। बाणों से बिंधकर रामचन्द्र विकल हो उठे ॥ ७ ॥ दोनों ओर से दोनों भाई अस्त्र छोड़ रहे थे। श्रीराम चिन्तित थे कि वे किस ओर बचायें। लव की ओर देखने पर कुश बाण छोड़ता था। जब कुश की ओर देखते तो लव उन्हें बेध डालता था ॥ ८ ॥ दोनों भाइयों ने एक ही साथ बाणों का निशाना साधा। श्रीराम मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पड़े। पहले का भाग्य-लेख जो ब्रह्म-शाप (के कारण) था कि युद्ध में पुत्र के हाथ पिता पराजित होंगे ॥ ९ ॥ लव ने अस्त्र-कला नाम का बाण छोड़ा, जिसने धनुष-बाण समेत राम का गला बाँध डाला। कुश ने अक्षयजित नाम का बाण छोड़ा। वह बाण छाती में लगने के कारण राम भूमि पर गिर पड़े ॥ १० ॥ श्रीराम छटपटाने लगे, उनका केवल प्राण-भर बचा हुआ था। दोनों भाई शीघ्रता से श्रीराम के पास गये। राम हिल नहीं पा रहे थे, वे बाण से अचेत हो

काणेर कुण्डल निल, माथार टोपर। निल हार केयुर हातेर धनुःशर
संग्रामेर बेश काड़ि लय दुइ भाइ। अस्त्र-शस्त्र धनुर्ब्बाण किछु छाड़े नाइ १२
हनूमान जाम्बुवान, उभये अमर। दुइजन नाहि मरे शत मन्वन्तर
उठिबार शक्ति नाइ, बाणे अचेतन। सेइ पथ दिया लव-कुशेर गमन १३
याइते देखिल पथे वानर-भल्लुक। मुख देखि उभयेर बाड़िल कौतुक
साङ्गि बान्धि उभयेरे लइलेक स्कन्धे। रणजयी दुइ भाइ चलिल आनन्दे १४

सीतार निकट लव-कुशेर युद्धवार्त्ता कथन, सीतार विलाप ओ प्राणत्यागेर संकल्प

समर जिनिया गेल दुइ भाइ घर। कान्दिया जानकीदेवी अत्यन्त कातर
हनूमान जाम्बुवान दुर्जय शरीर। द्वारे ना सान्धाय, तेइ थुइल बाहिर १
एकदृष्टे जानकी चाहेन करि ध्यान। हेनकाले दुइ भाइ गेल सेइ स्थान
देखिया जानकी हइलेन उतरोली। दुइ भाइ लइल मायेर पदधूलि २
दुइ भाइ बसिल मायेर विद्यमान। युद्धकथा कहिते लागिल तार स्थान
श्रीराम लक्ष्मण ओ भरत शत्रुघन। ए-सबार सहित करिनु महारण ३

गये थे। लव-कुश ने उनके शरीर पर के आभूषण आदि उतार लिये ॥ ११ ॥ उन दोनों ने कानों के कुंडल, सिर के टोप (मुकुट), हार, केयूर (भुजबंद) और हाथ के धनुष-बाण ले लिये। दोनों भाइयों ने रामचन्द्र के संग्राम के पहनावे को उतार लिया। अस्त्र-शस्त्र धनुष-बाण कुछ भी नहीं छोड़ा ॥ १२ ॥ हनुमान, जाम्बवान दोनों अमर थे। सैकड़ों मन्वन्तर में भी उन दोनों की मृत्यु नहीं होती। उनकी उठने की शक्ति न थी, वे बाणों से अचेत हो गये थे। लव-कुश उसी मार्ग से चले ॥ १३ ॥ उस ओर से जाते हुए उन्होंने मार्ग में वानर-भालुओं को देखा। उनके चेहरे देखकर दोनों का कौतुक बढ़ गया। काँवर (सेंगा) बनाकर उन दोनों (हनुमान और जाम्बवान) को कन्धे पर चढ़ा लिया और रण-जयी दोनों भाई आनन्द से चल पड़े ॥ १४ ॥

सीता से लव-कुश का युद्ध का समाचार कहना, सीता का विलाप और प्राण त्यागने का संकल्प

युद्ध में विजय पाकर दोनों भाई घर गये। जानकीदेवी (उनके लिए) रो-रोकर बड़ी विकल हो रही थीं। हनुमान और जाम्बवान के दुर्जेय विशाल शरीर द्वार से नहीं निकलते थे। इसी कारण उन्हें उन दोनों ने बाहर ही रख दिया था ॥ १ ॥ जानकी ध्यान से एकटक उन्हें देख रही थी, उसी समय वे दोनों माँ के यहाँ पहुंचे। उन्हें देखकर जानकी उतावली हो उठी। दोनों भाइयों ने माँ की चरण-धूलि ली ॥ २ ॥ दोनों भाई माँ के पास बैठे। और उन्हें युद्ध की कथा

बहु अक्षौहिणी सेना, भाइ चारिजन। बाहुड़िया देशेते ना करिल गमन
एसेछिल यत सेना, केह तार नाइ। कहि से अपूर्व्व-कथा, शुन माता, ताइ ४
दुर्ज्जय दुइटि जन्तु एनेछि बान्धिया। द्वारे ना आइसे मागो, देखह आसिया
धनुर्व्वाण आनियाछि युद्धेर साजन। एइ देख एनेछि रामेर आभरण ५
देखिया जानकीदेवी चिनिला तखन। शिरे कराघात करि करये रोदन
हाय हाय कि करिलि ओरे लब-कुश। पितृहत्या करिया कि राखिलि पौरुष ६
कोनखाने मारिल से कमललोचने। झाट चल पड़ि गिया प्रभुर चरणे
केमने देखिब गिया श्रीराम-लक्ष्मण। केमने देखिब से भरत-शत्रुघन ७
कोन्खाने हयेछिल समर प्रसङ्ग। शृगाल-कुक्कुर पाछे स्पर्शे प्रभु अङ्ग
धेये याय सीतादेवी, केश नाहि बान्धे। तार पिछे शिरे हात, दुइ भाइ कान्दे ८
सीता आसि बाहिरे देखेन विद्यमान। हस्तपद बान्धा हनूमान जाम्बुबान
मृतप्राय अचेतन, बहे मात्र श्वास। देखिया सीतार मने हइल हुताश ९
जानकी बलेन, लव करिलि कि कर्म्म। तोरा विद्या शिखिया नाशिलि जातिधर्म्म
तोमा हते ज्येष्ठ पुत्र हय हनूमान। एइ हनूमान मोर दिला प्राणदान १०

सुनाने लगे। हमने श्रीराम-लक्ष्मण और भरत-शत्रुघ्न इन सबके साथ महान् संग्राम किया है ॥ ३ ॥ उनकी अनेक अक्षौहिणी सेना और चारों भाई लौटकर अपने देश नहीं जा सके। जितनी सेना आयी थी उनमें कोई भी नहीं बचा है। वह अपूर्व-कथा सुनाते हैं, माता, सुनो ॥ ४ ॥ हम दो दुर्जेय जानवरों को बाँधकर लेते आये हैं। दरवाज़े से वे समा नहीं रहे हैं, माँ, तुम आकर देखो। हम उनके युद्ध के पहनावे और धनुष-बाण ले आये हैं। यह देखो हम रामचन्द्र के पहनावे ले आये हैं ॥ ५ ॥ तब जानकीदेवी ने उसे देखकर पहचान लिया। वे अपने सिर को पीट-पीटकर रुदन करने लगी ! अरे लव-कुश, हाय, हाय, तुमने यह क्या कर डाला ! पितृहत्या कर तुमने कौन-सा पौरुष दिखाया ! ॥ ६ ॥ उन कमललोचन राम को कहाँ मारा ? शीघ्र चलो, प्रभु के चरणों में हम जा गिरें। मैं श्रीराम-लक्ष्मण को कैसे देख सकूँगी ? उन भरत-शत्रुघ्न को कैसे देखूँगी ? ॥ ७ ॥ युद्ध का यह आयोजन कहाँ हुआ था (चलो हम देखें)। कहीं सियार-कुत्ते प्रभु के अंग स्पर्श न कर डालें। यह कहती हुई सीतादेवी अपने खुले बालों को बाँधे बग़ैर दौड़ चली। उनके पीछे-पीछे सिरों पर हाथ रखे दोनों भाई रोते हुए चले ॥ ८ ॥ सीता ने बाहर निकलकर देखा, वहाँ हाथ-पैर बँधे हनुमान और जाम्बवान पड़े हैं। वे मृतप्राय अचेत-से थे, केवल साँस-भर चल रही थी। उन्हें देख सीता के मन में बड़ा शोक हुआ ॥ ९ ॥ जानकी बोली— लव, तूने यह कैसा कर्म कर डाला ? तुम लोगों ने विद्या सीखकर भी जाति-धर्म का नाश कर डाला ! यह हनुमान तुम दोनों से बड़ा मेरा पुत्र है। इसी हनुमान ने मेरे प्राण बचाये थे ॥ १० ॥ वानर होकर भी सागर के पार जाकर पुत्र हनुमान ने मेरा उद्धार किया था। अरे अबोध बालको, तुमने इसका वध

बानर हइया गेल सागरेर पार । हनूमान पुत्र मोर करेछे उद्धार
इहारे करिलि वध अबोध बालक । शुनिले ए सब कथा कि कहिबे लोक ११
पिता-पितृव्येर तोरा बधिलि जीवन । बिषपान करि प्राण त्यजिब एखन
एखनि मरिब आमि प्रभुर साक्षाते । कलङ्क ना लुकाइबे, घुषिबे जगते १२
कोथाय मारिलि तारे शीघ्र चल देखि । एतक्षण प्राण आर कार तरे राखि
अश्रुजले जानकीर तितिल वसन । लव-कुश-प्रति कत करेन भर्त्सन १३
लव-कुश, शीघ्र एइ घुचाओ बन्धन । हनूमाने जाम्बुबाने करह मोचन
पाइया मायेर आज्ञा भाइ दुइ जन । खसाइला उभयेर से दृढ़ बन्धन १४
उठिया बसिल जाम्बुवान, हनूमान । कहिलेन सीतादेवी आसि विद्यमान
एक सत्य हनूमान, करिह पालन । कारो ठाँइ ना कहिओ ए-सब-बचन १५
तोमार रामेर पुत्र एइ दुइ भाइ । ना चिनि करिल युद्ध क्रोध कोरो नाइ
यान सीता मणिहारा भुजङ्गिनी-प्राय । क्रन्दन करिया पिछे लव-कुश याय १६
श्रीरामेर उद्देशे चलेन तिन जन । उपस्थित हइलेन, यथा हैल रण
देखिलेन संग्रामे पड़िया चारिजन । श्रीराम-लक्ष्मण ओ भरत-शत्रुघन १७
हस्ती-घोड़ा ठाट कत पड़ेछे अपार । देखिया त जानकी करेन हाहाकार
कातर हइया सीता करेन क्रन्दन । रामेर चरण धरि कहेन तखन १८
हइया तोमार पुत्र मारिल तोमारे । ए केबल घटे से आमार कर्म्म फेरे
मन्दर तोमार बाणे नाहि धरे टान । छाबालेर बाणे प्रभु हाराइले प्राण १९

कर डाला ! ये बातें सुनकर भला लोग क्या कहेंगे ? ॥ ११ ॥ अपने पिता और चाचाओं के जीवन का तुम दोनों ने वध कर डाला। मैं अब विषपान कर अपने प्राण तज दूँगी ! अभी मैं प्रभु के सामने मर जाऊँगी। तब कलंक छिपेगा, नहीं सम्पूर्ण जगत में घोषित होगा ॥ १२ ॥ उन्हें कहाँ मारा है ? चल शीघ्र देखूँ। अब तक भला मैं किसके लिए प्राण रखे हुए हूँ ! आँसुओं से जानकी के वस्त्र भीग गये। वे लव-कुश के प्रति कितनी ही भर्त्सना करने लगीं ॥ १३ ॥ लव-कुश, ये बंधन शीघ्र खोल दो। हनुमान और जाम्बवान को मुक्त कर दो। माँ की आज्ञा पाकर दोनों भाइयों ने उन दोनों (हनुमान और जाम्बवान) के दृढ़ बन्धन शीघ्रता से खोल दिये ! ॥ १४ ॥ जाम्बवान और हनुमान दोनों उठ बैठे। उनके पास आकर सीतादेवी कहने लगी ! हनुमान, मेरी एक शपथ तुम पालन करना, ये सारी बातें तुम किसी से न कहना ! ॥ १५ ॥ ये दोनों भाई तुम्हारे रामचन्द्र के पुत्र हैं। न पहचानने के कारण युद्ध किया, क्रोध न करना। सीता मणि-हीना भुजंगिनी की भाँति (व्याकुल होकर) जाने लगी, लव-कुश भी रोते-रोते उनके पीछे-पीछे चले ॥ १६ ॥ वे तीनों श्रीराम के उद्देश्य से चले और जहाँ युद्ध हुआ था, वहाँ जाकर उपस्थित हुए। उन्होंने देखा, संग्राम में (मृत) श्रीराम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न ये चारों पड़े हैं ॥ १७ ॥ हाथी-घोड़ों की अपार सेना कितनी ही पड़ी हुई है। उसे देखकर जानकी हाहाकार करने लगी। सीता विकल होकर क्रन्दन करने लगी और राम के चरण पकड़कर कहने लगी ॥ १८ ॥ तुम्हारे

सब्बंलोके बलितेन अविधवा सीता । आमारे बिधबा करे, केमन बिधाता
अग्निते प्रवेश करि त्यजिब जीवन । जन्मे-जन्मे पाइ येन तोमार चरण २०
शिरे हात लब-कुश करिछे क्रन्दन । रामेर चरण धरि बलिछे बचन
क्षमा कर जननी गो, ना कर क्रन्दन । मजिलाम तव दोषे मोरा तिन जन २१
तुमि ना बलिले माता राम मम पिता । आपनार दोषे एत हइले ता पिता
पितृबध करिया पाइनु बड़ लाज । अग्निते पुड़िया मरि, प्राणे नाहि काज २२
एइ महापापे आर नाहिक निस्तार । अग्निते पुड़िया आजि हइब अङ्गार
सीता बले, आगे अग्नि करिब प्रवेश । याहा इच्छा ताहाइ करिओ अबशेष २३
तिनजन गेल तारा यमुनार तीरे । तिन कुण्ड काटिलेक दुइ सहोदरे
ताहाते आनिया काष्ठ ज्वालिल अनल । ज्वलिया उठिल अग्नि गगनमण्डल २४
स्नान करि परिलेन पवित्र बसन । अग्नि प्रदक्षिण करिलेन तिन जन

बाल्मीकिर आगमन ओ सैन्य एवं भ्रातासह रामचन्द्रेर जीवनलाभ

चित्रकूट पब्बते बाल्मीकि तपोधन । देखिया अग्निर धूम बिचलित मन १

पुत्र होकर भी (इन दोनों ने) तुम्हें मार डाला । मेरे कर्म-विपाक से ही ऐसा घटित हो सका है । प्रभु, तुम्हारे बाणों के सामने तो मंदर भी ठहर नहीं सकता था; (ऐसे तुम) बच्चों के बाणों से मारे गये ।। १९ ।। सब लोग कहते थे, सीता कभी विधवा नहीं होनेवाली है (सदा सुहागिन है) । वह विधाता कैसा है (जिसने) मुझे बिधवा बना डाला । मैं अग्नि में प्रवेश कर जीवन तज दूंगी, जिससे जन्म-जन्म में तुम्हारे चरण ही मुझे मिल सकें ।। २० ।। लव-कुश सिर पर हाथ रख क्रन्दन करने लगे, और राम के चरण पकड़कर कहने लगे— जननी, हमें क्षमा कर दो, रुदन न करो । तुम्हारे ही दोष से हम तीनों डूब चुके हैं ! ।। २१ ।। माता, तुमने यह नहीं बताया कि रामचन्द्र हमारे पिता हैं । अपने ही दोष से तुम्हें संतप्त होना पड़ा है । पितृ-वध करने के कारण हमें बड़ी लज्जा हुई है । हमारे जीवन से कोई प्रयोजन नहीं, हम अग्नि में जल मरेंगे ।। २२ ।। इस महापाप से अब हमारा निस्तार नहीं है । अग्नि में जलकर हम अंगारे बन जायेंगे (भस्म हो जायेंगे) । सीता बोली, पहले मैं अग्नि में प्रवेश कर जाऊँ, उसके पश्चात् तुम्हारी जो इच्छा हो करना ।। २३ ।। वे तीनों यमुना के तट पर गये और वहाँ दोनों भाइयों ने तीन कुंड बनाये ! उनमें लकड़ियाँ लाकर सजाया और आग जलायी । आग जलकर गगन-मंडल तक पहुँच गयी ।। २४ ।। फिर तीनों ने स्नान कर पवित्र वस्त्र पहन लिये और अग्नि की प्रदक्षिणा की ।

बाल्मीकि का आगमन और सेना तथा भाइयों-समेत रामचन्द्र का जीवित होना

तपोधन वाल्मीकि चित्रकूट पर्वत पर (तपस्या कर रहे थे) अग्नि का धुआँ देख उनका मन विचलित हो उठा ।। १ ।। (वे जिस जल से तर्पण

रक्तेते तर्पण करे, मुनिर बिस्मय । तर्पण करेन, सब येन रक्तमय
मुनि बले, लब-कुश पाड़िल प्रमाद । देशेते चलेन मुनि करिया बिषाद २
छ'मासेर पथ एल चक्षुर निमेष । वेखे तिन जने अग्नि करिछे प्रबेश
अग्निकुण्ड ज्वालियाछे, महामुनि देखे । हेनकाले गेल मुनि सीतार सम्मुखे ३
गृधिनी-शकुनि आर शृगालेर रोल । कलकल-ध्वनि तुले जलेर हिल्लोल
देखिया सीतार प्रति जिज्ञासेन मुनि । प्रमाद पड़िल किबा कह सीता, शुनि ४
जानकी बलेन, प्रभु, ना जान कारण । लब-कुश तोमार करिल महारण
पड़िलेन ताहाते राघब चारि जन । श्रीराम-लक्ष्मण ओ भरत-शत्रुघन ५
केमने कहिब कथा, मुखे ना आइसे । पितृबध करिलेक लब आर कुशे
एतदिन भाल छिनु तोमार प्रसादे । धनुर्बिद्या शिखि एरा पाड़िल प्रमादे ६
तुमि शिखाइले मुनि, नाना अस्त्रशिक्षा । त्रिभुवन युझे यदि नाहे कारो रक्षा
आपनि श्रीरघुनाथ त्रिभुबन जिने । शिशु ह'ये से रामेरे जिने दुइ जने ७
रघुनाथ बिना मोर ना रबे जीबन । अग्निते प्रबेश करि एइ तिन जन
बाल्मीकि बलेन, सीता, ना त्यज जीबन । बाँचिबेन एखनि राघब चारिजन ८
श्रीराम-लक्ष्मण ओ भरत-शत्रुघन । उठिबेन, पड़ियाछे आर यत जन
क्षमा देह जानकी, तोमारे बलि आमि । दुइ पुत्र लइया आश्रमे चल तुमि ९

कर रहे थे वह रक्त हो गया था ।) रक्त से तर्पण कर रहे हैं देख, मुनि को विस्मय हुआ । वे जो भी तर्पण करते, सब रक्तमय हो जाता । मुनि बोले, लव-कुश ने प्रमाद कर डाला है । विषाद करते हुए मुनि अपने देश को चले ।। २ ।। छः महीने का मार्ग मुनि ने पल भर में पार कर लिया । उन्होंने देखा, तीनों अग्नि में प्रवेश कर रहे हैं । महामुनि ने देखा, अग्निकुंड जला लिया है । तभी मुनि सीता के सम्मुख पहुँचे ।। ३ ।। वहाँ गिद्धनी, शकुनी और सियार का कोलाहल हो रहा था । जल के हिल्लोल से कलकल की ध्वनि उठ रही थी । वह देखकर मुनि ने सीता से पूछा— सीता, बताओ, मैं सुनना चाहता हूं कि कैसा प्रमाद आ पड़ा है ।। ४ ।। जानकी बोली, प्रभु, आप कारण नहीं जानते ! आपके इन लव-कुश ने महा-संग्राम किया, जिस संग्राम में राम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न ये चारों रघुवंशी मारे गये हैं ।। ५ ।। मैं कैसे यह बात बताऊँ, जो मुँह में नहीं आ रही है । लव-कुश ने पितृ-वध कर डाला है । इतने दिन आपके प्रसाद से हम अच्छे थे । लेकिन इन दोनों ने धनुर्विद्या सीख कर प्रमाद कर डाला ।। ६ ।। मुनि, आपने इन्हें नाना प्रकार की अस्त्र-शिक्षा दी है । इनसे त्रिभुवन भी लड़े तो भी कोई बच नहीं सकता । स्वयं श्रीरघुनाथ त्रिभुवन-विजयी हैं, उन रामचन्द्र को शिशु होकर भी इन दोनों ने जीत लिया ।। ७ ।। रघुनाथ के बिना मेरा जीवन नहीं रहेगा । इसी कारण हम तीनों अग्नि में प्रवेश कर रहे हैं । वाल्मीकि बोले— सीता, तुम जीवन त्याग न करो । अभी-अभी चारों रघुवंशी जीवित हो जायेंगे ।। ८ ।। श्रीराम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न तथा और जितने भी जन मारे गये हैं सब उठ जायेंगे । जानकी, मैं तुमसे कह

जानकी बलेन, देखि प्रभुर चरण। तबे त आश्रमे आमि करिब गमन
एतेक शुनिया मुनि बसिलेन ध्याने। त्रिभुवने यत कथा, मुनि सब जाने १०
तपोवन कुण्डे आछे मृत्युजीविजल। मुनि ध्यान करिया से जानिल सकल
मुनि बले, शुन शिष्य, आमार बचने। एइ जल छड़ाइया देह तपोबने ११
मृत सैन्य पड़ियाछे यत यत दूरे। तत दूरे छड़ाइया देह एइ नीरे
एक मन्त्र पड़ि जल दिल महामुनि। तपोबने छड़ाइया दिलेक तखनि १२
कटकेर गायेते यतेक लागे छड़ा। असंख्य कटक उठे दिया अङ्ग झाड़ा
मृत्युजीवी जल यदि हैल परशन। श्रीराम-लक्ष्मण आदि उठिल तखन १३
उठिल छाप्पान्न कोटि मुख्य सेनापति। तिन कोटि उठिलेक मदमत्त हाती
उठिल तिराशी कोटि श्रेष्ठ जाति घोड़ा। सत्तर अक्षौहिणी उठे जाठि-झकड़ा १४
सुग्रीव अङ्गद उठे लये कपिगण। भल्लुक राक्षस यत उठे ततक्षण
कटकेर कोलाहले हैल गण्डगोल। मुनि बले, शुन सीता, कटकेर रोल १५
श्रीराम-लक्ष्मण आदि यत यत वीर। उठिल सामन्त सैन्य अक्षत शरीर
श्रीराम-लक्ष्मण ओ भरत-शत्रुघन। दूर हैते देखि सीता, पाइल जीवन १६
'रामजय' करिया डाकिछे कपिगण। मुनि बले, शुन सीता, आमार बचन
आमि हेथा थाकिले ना हइत एमन। दुइ पुत्र लये घरे करह गमन १७

रहा हूँ, क्षमा कर दो। दोनों पुत्रों को लेकर तुम आश्रम में चलो ।। ९ ।। जानकी बोली, जब प्रभु के चरण देख पाऊँगी, तभी मैं आश्रम में जाऊँगी। यह सुनकर मुनि ध्यान में निमग्न हो गये, त्रिभुवन में जो भी बात होती है मुनि सब कुछ जानते हैं ।। १० ।। मुनि ने ध्यान लगाकर यह सब कुछ जान लिया कि तपोवन के कुंड में मृत्यु-जीवी जल है। मुनि बोले, शिष्यो, मेरा वचन सुनो, यह जल तपोवन में छिड़क दो ।। ११ ।। मृत सेना जहाँ-जहाँ जितनी दूरी में पड़ी है, उतनी दूर यह जल छिड़क दो। महामुनि ने एक मंत्र पढ़कर जल दिया। उसे तभी तपोवन में छिड़क दिया ।। १२ ।। कटक के शरीर में छिड़का जल जितना लगता, असंख्य सेना अंग झाड़कर उठ पड़ने लगी। जब मृत्यु-जीवी जल का स्पर्श हुआ, तब श्रीराम-लक्ष्मण आदि तुरंत उठ पड़े ।। १३ ।। छप्पन करोड़ मुख्य सेनापति उठ पड़े। तीन करोड़ मदमत्त हाथी उठ पड़े। श्रेष्ठ जाति के तिरासी करोड़ घोड़े उठे। सत्तर अक्षौहिणी भाले-बरछे वाले उठ पड़े ।। १४ ।। कपियों के साथ सुग्रीव-अंगद उठे। उसी क्षण सारे भालू और राक्षस उठ गये। सेना के कोलाहल से हलचल मच गयी। मुनि बोले, सीता, सेना का कोलाहल सुनो ।। १५ ।। श्रीराम-लक्ष्मण आदि जितने वीर थे, जितने सामन्त-सैनिक थे, सभी उठ पड़े हैं। उनके शरीर के सारे क्षत मिट गये हैं। श्रीराम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न को दूर से देखकर सीता को जीवन मिला ।। १६ ।। वानरगण 'रामचन्द्र की जय' पुकार रहे हैं। मुनि बोले, सीता, मेरे वचन सुनो। अगर मैं यहाँ रहता तो ऐसा नहीं होता। अब दोनों पुत्रों को ले, घर चली जाओ ।। १७ ।।

লব-কুশ-সীতা তিনে মুনি নমস্কারী। লুকাইয়া রহিলেন বাল্মীকির পুরী
সীতাকে চিনিয়া ছিল পবন-নন্দন। পাসরিল বাল্মীকির মায়াতে তখন ১৮
শ্রীরামের সঙ্গে মুনি করে সম্ভাষণ। চারি ভাই করিলেক মুনিরে বন্দন
শ্রীরাম বলেন, মুনি, তোমার প্রসাদে। রক্ষা পাইলাম সবে পড়িয়া প্রমাদে ১৯
কিন্তু মুনি জানিতে বাসনা মনে হয়। কাহার তনয় দুটি দেহ পরিচয়
মুনি বলে, রাম, আমি না ছিলাম দেশে। কাহার তনয় তারা, না জানি বিশেষে ২০
এখন সে বালকের না পাবে দর্শন। দেশে লয়ে আমি দোঁহে করাব মিলন
অশ্ব লয়ে রঘুনাথ, যাহ নিজ দেশে। যজ্ঞ পূর্ণ দেহ গিয়া অশেষ-বিশেষে ২১
সকল-সহিত রাম চলিলেন দেশে। রচিল উত্তরকাণ্ড কবি কৃত্তিবাসে

লব-কুশের শ্রীরামের নিকট গমন ও রামায়ণ গান

এ সব গাহিল গীত জৈমিনী-ভারতে। সম্প্রতি যে কিছু গাই বাল্মীকির মতে ১
অশ্ব আনি কৈলা রাম যজ্ঞ-সমাপন। নানা দেশী ব্রাহ্মণে দিলেন বহু ধন
বহু পরিপাটী যজ্ঞ করেন দুষ্কর। শিষ্যসহ আইল বাল্মীকি মুনিবর ২
মুনিরে দেখিয়া রাম সম্ভ্রমে উঠিয়া। বসিতে আসন দেন পাদ্য-অর্ঘ্য দিয়া
বার শত শিষ্য এল মুনির সংহতি। লব-কুশ দুই ভাই মিশাইল তথি ৩

लव-कुश-सीता तीनों मुनि को नमस्कार कर वाल्मीकि के निवास में जाकर छिप रहे। पवन-नन्दन हनुमान ने सीता को पहचाना था। पर वाल्मीकि की माया से तभी (सब कुछ) भूल गये ।। १८ ।। मुनि वाल्मीकि श्रीराम के साथ संभाषण करने लगे। चारों भाइयों ने मुनि का वंदन किया। श्रीराम बोले, मुनि, आपके प्रसाद से हम सब संकट में पड़कर भी बच गये ।। १९ ।। परन्तु हे मुनि, मन में यह जानने की इच्छा होती है कि वे दोनों किसके पुत्र हैं ? आप परिचय दें। मुनि बोले, राम, मैं इस देश में नहीं था। वे दोनों किसके पुत्र हैं, विशेष नहीं जानता ।। २० ।। आप अभी उन बालकों को देख नहीं पायेंगे। उन दोनों को आपके देश ले जाकर मैं आपसे मिलन करवाऊँगा। हे रघुनाथ, आप, यज्ञ के अश्व को ले अपने देश जाइए। अनन्त विशेषताओं से पूर्ण अपने यज्ञ की पूर्णाहुति दें ।। २१ ।। तब सबके सहित रामचन्द्र देश को चले। कवि कृत्तिवास ने इस उत्तरकांड की रचना की है।

लव-कुश का श्रीराम के निकट गमन और रामायण-गान

यह इतना सारा जैमिनी भारत में गाया गया है। सम्प्रति जो कुछ गायन करता हूँ वह वाल्मीकि के अनुसार है ।। १ ।। अश्व को लाकर रामचन्द्र ने अपना यज्ञ पूरा किया। विभिन्न देशीय ब्राह्मणों को बहुत-सा धन दिया। अनेक विधि-विधान से उन्होंने दुष्कर यज्ञ किया। उस यज्ञ में मुनिवर वाल्मीकि भी आये ।। २ ।। मुनि को देखकर रामचन्द्र

मुनिर मिशाले आछे, नाहि परिचय। बिष्णु-अबतार दोँहे रामेर तनय
श्रीराम बलेन, शुन भरत, एखन। मुनि रहिबारे देह बिव्य आयोजन ४
लव-कुश दुइ भाइ मुनिर संहति। दुइ भाइ लैया मुनि करेन युकति
मुनि बले, लब-कुश, शुन सावधाने। धनुक-संगीत-विद्या पेले मोर स्थाने ५
धनुर्व्विद्या देखाइला आमार गोचर। बिक्रमे दुर्ज्जय हओ दुइ सहोदर
स्वयं बिष्णु रघुनाथ त्रिभुवन जिने। शिशु हये ताँहारे जिनिला दुइजने ६
धनुर्व्विद्या तोमारा ये करिले सुशिक्षा। साक्षाते पेलेम आमि ताहार परीक्षा
गीत-विद्या रामायण शिखिले दुजन। श्रीरामेर आगे कालि गेओ रामायण ७
अनेक द्वीपेर राजा आइल ए स्थाने। रामायण-गीत कालि गाइबे दुजने
दुइ भाइ कर मोर कबित्व प्रचार। घुषिबारे थाके येन सकल संसार ८
याहारे प्रसन्न हन सरस्वती देवी। आमि-आदि करिया सकले ताँरे सेवि
सभा करि बसिबेन श्रीराम यखन। सावधाने गाहिबे तोमरा रामायण ९
जिज्ञासिबे यबे राम सभार भितर। बाल्मीकिर शिष्य, हेन करिओ उत्तर
आर युक्ति बलि, शुन तोमा दुइ जन। मिष्टस्वरे उभये गाहिबे रामायण १०
यखन गाहिबे गीत सीतार बर्ज्जन। ना बलिओ श्रीरामेरे कोन कुबचन
जगतेर नाथ राम परम पण्डित। कुकथा कहिते ताँरे ना हय उचित ११

बड़े सम्मान से उठे और उन्हें पाद्य-अर्घ्य दे बैठने हेतु आसन दिया। मुनि के संग बारह सौ शिष्य आये। लव-कुश दोनों भाई उन्हीं में मिलकर आये ॥ ३ ॥ वे मुनियों में मिलकर (मुनि-वेश में) आये थे, इसलिए कोई उन्हें पहचान नहीं पाया। वे दोनों विष्णु-अवतार रामचन्द्र के पुत्र थे। श्रीराम बोले, भरत अब सुनो! मुनि को रहने हेतु दिव्य आयोजन कर दो! ॥ ४ ॥ लव-कुश दोनों भाई मुनि के साथ थे। उन दोनों को लेकर मुनि परामर्श करने लगे! मुनि बोले, लव-कुश, सावधानी से सुनो, तुम लोगों ने हमसे धनुष और संगीत-विद्या सीखी है ॥ ५ ॥ हमारे सामने ही तुम लोगों ने धनुर्विद्या दिखाई है। दोनों सहोदर विक्रम में दुर्जेय होओ। स्वयं विष्णु रूपी रामचन्द्र त्रिभुवन-विजयी हैं। शिशु होकर भी तुम दोनों ने उन्हें जीत लिया ॥ ६ ॥ तुम लोगों ने धनुर्विद्या की सुशिक्षा पायी है, उसकी परीक्षा मैं अपने सम्मुख ही पा गया हूँ। तुम दोनों ने गीत-विद्या रामायण सीख ली है। श्रीराम के सामने कल उसी रामायण को गाओ! ॥७॥ अनेक द्वीपों के राजा इस स्थान में आये हैं, (उन्हें भी सुनाने हेतु) कल दोनों रामायण-गीत गाना। दोनों भाई मेरे कवित्व का प्रचार करना। जैसे सारे संसार में (मेरी कवित्व प्रतिभा) घोषित हो जाए ॥ ८ ॥ जिससे देवी सरस्वती प्रसन्न हो जायें। मुझसे आरंभ कर सभी उनकी सेवा करें! जब श्रीराम सभा लगाकर बैठें, तब तुम लोग सावधानी से रामायण-गायन करना ॥ ९ ॥ जब राम सभा में (तुम्हारा परिचय) पूछें तो 'हम वाल्मीकि के शिष्य हैं', यही उत्तर देना। और भी सुझाव दे रहा हूँ, तुम दोनों सुनो! मीठे स्वर से दोनों रामायण गाना ॥ १० ॥ जब सीता के परित्याग का प्रसंग गाना, तो

यखन याइबे दोँहे रामेर सभाय । तखन करिबे बेश तपस्वीर प्राय
बीरबेशे देखिया पाबेन राम त्रास । आरबार एड़ेन कि जीबनेर आश १२
बिभाबरी प्रभात, उदित भानुमान । दुइ भाइ करेन बाकल परिधान
शिरे जटा बान्धिलेन देखिते सुठाम । पूर्णचन्द्र मुख, बर्ण दुर्ब्बादलश्याम १३
हाते बीणा करि दोँहे करेन गमन । मधुर-ध्वनित गान बेद रामायण
हाटे माठे गीत गान नगरे बाजारे । शुनिया सुस्वर सबे आपना पासरे १४
कहिछे अमात्यगण श्रीरामे त्वरित । शिशुमुखे मिष्ट गीत शुनिते उचित
आनिते तादेर राम करेन आदेश । यज्ञस्थाने दुइ भाइ करिल प्रवेश १५
बीणा हाते करि तारा बसिल सभाय । रामायण शुनिते सकल लोक याय
अबसर पाइया यज्ञेर अबशेषे । बसिलेन श्रीराम सभाय शुद्ध बेशे १६
स्वर्ग-मर्त्य-पाताल-निबासी यत जन । आगमन करिल शुनिते रामायण
बसिल पण्डितगण ज्ञानेते पूरित । गन्धर्ब्ब किन्नर यक्ष रक्ष चारिभिति १७
दुइ भाइ गीत गाय बाजाइया बीणा । सर्ब्बलोक शुने गीत अमृतेर कणा
बीणायन्त्र बाजे, आर गीत गाय स्वरे । शुनिया सकल लोक आपना पासरे १८
चारि भाइ रघुनाथ गीते देन मन । मोहित हइल लोक शुने रामायण
सर्ब्बलोक सभाय करिछे कानाकानि । रामेर आकृति दुइ शिशु, अनुमानि १९

श्रीराम के प्रति कोई दुर्वचन न कहना। जगत के नाथ श्रीरामचन्द्र परम पंडित हैं। उन्हें दुर्वचन कहना उचित नहीं ॥ ११ ॥ जब दोनों राम की सभा में जाना, तब तपस्वियों-जैसा वेश बना लेना। तुम्हें वीर-वेश में देखने पर राम संत्रस्त हो जायेंगे। संभवत: पुन: जीवन की आशा छोड़ बैठेंगे ॥ १२ ॥ रात बीती, प्रभात हुआ, सूर्योदय हुआ। तब दोनों भाइयों ने वल्कल पहने। अपने मस्तक पर देखने में सुन्दर जटा बाँधी। उनका मुख पूर्णचन्द्र जैसा था, वर्ण दूर्वादलश्याम था ॥ १३ ॥ दोनों अपने हाथों में वीणा ले वहाँ गये। और मधुर ध्वनि से रामायण-वेद का गायन करने लगे! वे हाट-घाट में, नगर-बाज़ार में गीत गाने लगे। उनके मधुर स्वर सुनकर सभी आत्मविभोर हो उठे ॥ १४ ॥ मंत्रियों ने श्रीरामचन्द्र से तुरंत कहा, इन शिशुओं के मुँह से मीठे गीत सुनना उचित है। रामचन्द्र ने उन्हें लाने का आदेश दिया। दोनों भाइयों ने यज्ञभूमि में प्रवेश किया ॥ १५ ॥ हाथों में वीणा लेकर वे दोनों आकर सभा में बैठे। सभी लोग रामायण सुनने वहाँ चल पड़े। यज्ञ के अन्त में अवसर पाकर श्रीराम सभा में शुद्ध वेश धारण कर बैठे ॥ १६ ॥ स्वर्ग-मर्त्य-पाताल निवासी जितने लोग थे सभी रामायण सुनने वहाँ आये। ज्ञान-पूर्ण पंडितगण वहाँ बैठे। गंधर्व, किन्नर, यक्ष, रक्ष चारों ओर बैठे ॥ १७ ॥ दोनों भाई वीणा बजाकर गीत गाने लगे। सभी लोग अमृत-कणों जैसे वे गीत सुनने लगे। वीणा-यंत्र बजने लगे, और वे दोनों स्वर लगाकर गीत गाने लगे। समस्त लोक उत्सुकता से सुनने लगे ॥ १८ ॥ रघुनाथ चारों भाई मन लगाकर गीत सुनने लगे। लोग मुग्ध होकर रामायण सुनने लगे। सभी लोग सभा में कानाफूसी

जटा आर बाकल ये एइ मात्र आन। आकृति-प्रकृति देखि रामेर समान
एइ दुइ शिशु-सह करिलेन रण। श्रीराम-लक्ष्मण ओ भरत-शत्रुघ्न २०
युद्ध करे, त्रिभुवन ना पारे सहिते। संसार मोहित करे रामायण गीते
तपस्वीर बेश दोँहे धरिल एखन। शिशु नहे, दुइजन साक्षात शमन २१
श्रीराम हइते दुइ बालक दुर्ज्जय। श्रीरामेरे इहारा करिल पराजय
कोन् बिधि निर्म्माण करिल दुइजने। एत गुण धरे, केबा आछे त्रिभुबने २२
एइ युक्ति तारा सब करे सर्व्बक्षण। भुवन मोहित हैल शुनि रामायण
यतेक सभार लोक अनुमान करे। रामेर ए दुइ पुत्र, कभु नाहि नड़े २३
गाइल प्रथम दिने बिंशति शिकलि। सुरस सुछन्द सुप्रसन्न पदाबली
दुइ भाइ गीत यदि कैल अबसान। श्रीराम बलेन, राख गायकेर मान २४
श्रीरामेर बचन से शुनिया लक्ष्मण। अशीति सहस्र तोला आनेन काञ्चन
गायकेरे दिलेन पूरिया स्वर्णथाला। पीताम्बर अलङ्कार आर पुष्पमाला २५
उभय गायक बले, श्रीरघुनाथ। बस्त्र-अलङ्कारे किछु नाहि प्रयोजन
कि करिब धने वस्त्रे आर अलङ्कारे। बस्त्र-अलङ्कार राख आपन भाण्डारे २६
श्रीराम बलेन, हे जिज्ञासि एक बाणी। काहार कबित्व रामायण कह शुनि
इहा यदि शुने लोके, किबा हय फल। बिशेष जानह यदि, कह ए सकल २७

करने लगे हमें ऐसा अनुमान होता है ये दोनों शिशु राम की आकृति के हैं ॥ १९ ॥ उनकी जटा और वल्कल ही अलग हैं, इनकी आकृति-प्रकृति भी राम के समान ही दिखाई दे रही है। इन्हीं दोनों शिशुओं से श्रीराम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न ने लड़ाई की है ॥ २० ॥ ये ऐसा युद्ध करते हैं जिसे त्रिभुवन सह नहीं सकता, ये रामायण-गीत से संसार को मोहित करते हैं। इन दोनों ने अब तपस्वी का वेश धारण कर लिया है। ये शिशु नहीं, दोनों साक्षात् यमराज हैं ॥ २१ ॥ ये दोनों बालक श्रीराम की अपेक्षा भी दुर्जेय हैं। इन दोनों ने श्रीराम को पराजित किया था। इन दोनों को किस विधाता ने बनाया है, त्रिभुवन में इनके जैसा इतने गुण धारण करनेवाला और कौन है? ॥ २२ ॥ वे लोग सभी समय यही चर्चा करते थे। उनसे रामायण सुनकर संसार मोहित हो गया। सभा के सभी लोग अनुमान करने लगे, ये दोनों रामचन्द्र के पुत्र हैं जो कभी विचलित नहीं होते ॥ २३ ॥ पहले दिन उन्होंने सुरस, सुन्दर छन्द वाली, सुप्रसन्न पदावलियों वाली बीस कड़ियाँ गायीं। दोनों भाइयों ने जब गीत समाप्त किया, तब रामचन्द्र ने कहा, गायक का मान रखो ॥ २४ ॥ श्रीराम का वचन सुनकर लक्ष्मण अस्सी तोला सोना ले आये। उन्होंने सोने की थाली भरकर पीताम्बर, आभूषण और पुष्पमालाएँ गायकों को दिये ॥ २५ ॥ दोनों गायकों ने कहा, श्रीरघुनन्दन, हमें वस्त्र और आभूषणों की कोई आवश्यकता नहीं। धन, वस्त्र और आभूषणों से हमें क्या करना है? ये वस्त्र-आभूषण अपने भंडार में रख दीजिये ॥ २६ ॥ श्रीरामचन्द्र बोले, मैं तुम लोगों से एक बात पूछता हूँ। बताओ, यह रामायण किसका रचित काव्य है? इसे सुनने पर

एत यदि जिज्ञासा करेन रघुनाथ। उठे दुइ गायक ये योड़ करि हात
दुइ शिशु बले, शुन श्रीरघुनन्दन। जिज्ञासिला यत किछु, कहि बिबरण २८
चतुर्ब्बिंद बिंसति ये श्लोक-परिणाम। पञ्चशत सर्ग हय काव्येर बाखान
येइ जन शुनिबारे करे अभिलाष। सर्ब्बपाप घुचे तार, स्वर्ग हय वास २९
अपुत्रक शुनिले से पाय पुत्रबर। ये याहा बासना करे, पूरय सत्वर
अश्वमेध करिले ये श्रीराम, एखन। एइ फल पाय से, ये शुने रामायण ३०
तुमि ना जन्मिते षाटि हाजार बत्सर। अनागत पुराण रचिला मुनिबर
अबतार ना हइते बाल्मीकिर गाथा। आदिकाण्डे श्रीराम तोमार जन्मकथा ३१
श्रीराम, अयोध्याकाण्डे पेले छत्रदण्ड। राज्य हरि निल ताहे कैकेयी पाषण्ड
तब पिता दशरथ स्त्रीबश हइया। पाठाय तोमारे बने सत्येर लागिया ३२
अयोध्या छाड़िया गेला तुमि बनवासे। शिरे हात दिया कान्दे स्त्री आर पुरुषे
संसार देखिया शून्य कान्दे सर्ब्बलोक। मरिलेन दशरथ पेये तब शोक ३३
तुमि बने, भरत से मातुलेर पाड़ा। चारि पुत्र सत्वे राजा हैल बासि मड़ा
बासि मड़ा तैलेर भितरे दशरथ। आनि कैल देशे आसिया भरत ३४

लोगों को कौन-सा फल मिलता है? यदि तुम लोग ये सब बातें विशेष जानते हो तो बताओ ॥ २७ ॥ रामचन्द्र ने जब इतना पूछा तो दोनों गायक हाथ जोड़कर खड़े हो गये। दोनों शिशुओं ने कहा— श्रीरघुनन्दन, सुनिए, आपने जो कुछ पूछा, सारा विवरण हम बताते हैं ॥ २८ ॥ इस काव्य में चौबीस हज़ार श्लोक हैं तथा पाँच सौ सर्गों में इस काव्य का वर्णन किया गया है। इसे सुनने की अभिलाषा जो करता है उसके सारे पाप मिट जाते हैं, उसे स्वर्ग में निवास प्राप्त होता है ॥ २९ ॥ पुत्रहीन इसे सुने तो उसे श्रेष्ठ पुत्र मिलता है। जो भी मनुष्य जो कामना करता है, वह तुरंत पुरी हो जाती है। श्रीराम, अभी आपने जो अश्वमेध यज्ञ किया है, जो जन रामायण सुनता है, उसे वैसे ही अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है ॥ ३० ॥ हे रामचन्द्र, आपके जन्म के साठ हज़ार वर्ष पहले इस अनागत पुराण की रचना मुनिवर बाल्मीकि ने की है। आपके अवतार लेने के पहले ही बाल्मीकि ने यह गाथा रची है। श्रीराम, इसके आदिकांड में आपकी जन्म-कथा है ॥ ३१ ॥ श्रीराम, अयोध्याकांड में आपको छत्रदंड मिलने की कथा है। उसी में पाषंड कैकेयी ने राज्य हरण कर लिया (इसका भी विवरण है)। आपके पिता दशरथ ने स्त्री के वश में होकर अपनी सत्य-रक्षा के लिए आपको वन में भेज दिया ॥ ३२ ॥ आप अयोध्या को छोड़कर वनवास में चले गये। जिससे (अयोध्या के) स्त्री-पुरुष सिर पर हाथ रख रोने लगे। सभी लोग संसार को सूना देख रोने लगे। आपके शोक से दशरथ ने प्राण त्याग दिये ॥ ३३ ॥ आप वन में चले गये, भरत अपने मामा के गाँव में थे; चार पुत्रों के होते हुए भी राजा का शव 'बासी-मरा' होकर पड़ा रहा। दशरथ का 'बासी मरा' शव तेल में रखा गया था, भरत ने देश में

अरण्यकाण्डेते सीता हरे लङ्केश्वर। बधिला राक्षस बहु यार मुख्य खर
दुइ शोके श्रीराम बड़ ताप पाइले। किष्किन्ध्याय वाली मारि सुग्रीवे लभिले ३५
सुन्दरेते श्रीराम, सागर हैला पार। लङ्काकाण्डे रावणेरे करिले संहार
सीतार परीक्षा आर राजा बिभीषण। स्वर्गपिता सम्भाषिया देशे आगमन ३६
आसिया हइले तुमि पृथिबीर राजा। अयोध्याय थाकिया पालिछ तुमि प्रजा
दश हाजार वर्ष तव प्रजार पालन। न'हाजार बर्षे बृद्ध राजार मरण ३७
हाजार वत्सर छिल पितृ-परमाइ। परमायु पितार पाइले चारि भाइ
एगार हाजार वर्ष करिबे पालन। सात हाजार वर्षे कर सीतारे बर्ज्जन ३८
गीत गाय यखन मायेर बनबास। तखन दोहाँर हय गद्गद भाष
शिखिल ताहारा गीत बाल्मीकिर स्थाने। संसार मोहित हय से गीतेर ताने ३९
दुर्व्वासा आसिया द्वारे रहिबेन कोपे। लक्ष्मणेरे वर्जिवेन सेइ मुनिशापे
स्वर्गबासे याइबेन लइया संसार। इहा-विना बाल्मीकि ना लिखिलेन आर ४०
शुनिया श्रीराम सेइ रामायण-गान। निज पुत्र बलि दोंहे करे अनुमान
लव-कुश सङ्गीत गाहिल एकमास। रचिल उत्तरकाण्ड कबि कृत्तिबास ४१

आकर उसकी अन्त्येष्टि की ॥ ३४ ॥ अरण्यकांड में (यह कथा है कि) आपने अनेक राक्षसों का वध किया, जिनमें मुख्य खर था। लंकेश्वर रावण सीता को हर ले गया। श्रीराम, दो प्रकार के शोक (वनवास और सीता-हरण) से आप बड़े संतप्त हुए। किष्किन्ध्या में बाली को मारकर सुग्रीव से मिले (यह कथा किष्किन्ध्याकांड में है) ॥ ३५ ॥ श्रीराम, अपने सागर पार किया, यह कथा सुन्दरकांड में है। लंकाकांड में आपने रावण का संहार किया, सीता की परीक्षा ली और विभीषण को राजा बनाया। अपने स्वर्गवासी पिता से संभाषण कर देश में आगमन किया ॥३६॥ देश आकर आप पृथ्वी के राजा बने, अयोध्या में रहकर अब आप प्रजा-पालन कर रहे हैं। दस हज़ार वर्ष आपको प्रजा-पालन करना है। नौ हज़ार वर्ष राज्य करने के पश्चात् वृद्ध राजा दशरथ का स्वर्गवास हुआ था ॥ ३७ ॥ पिता की परमायु और हज़ार वर्ष थी, पिता की वह रमायु आप चार भाइयों को मिली है। इस प्रकार आप ग्यारह हज़ार वर्ष जा-पालन करेंगे। सात हज़ारवें वर्ष में आपने सीता का परित्याग किया ॥३८॥ लव-कुश जब अपनी माँ सीता के वनवास के गीत गाने लगे, तब न दोनों के वचन गद्गद हो उठे। उन दोनों ने वाल्मीकि से गीत सीखा , उस गीत के तान से संसार मोहित हो उठा ॥३९॥ (आगे चलकर) र्वासा क्रोधित होकर द्वार पर रहेंगे, उन्हीं मुनि के शाप से रामचन्द्र लक्ष्मण । परित्याग कर देंगे। अपने परिवार-परिजन को लेकर स्वर्ग-वास को ायेंगे। इन घटनाओं से आगे मुनिवर वाल्मीकि ने और नहीं लिखा ॥४०॥ राम ने वह रामायण-गान सुनकर यह अनुमान किया कि ये दोनों अपने हैं। लव-कुश ने रामायण-संगीत का गायन एक महीने तक किया। वि कृत्तिवास ने इस उत्तरकांड की रचना की है ॥ ४१ ॥

सीतादेवीर पाताले प्रवेश

एकमासे गीत यदि हइल बिराम। जिज्ञासा करेन तबे दोहाँरे श्रीराम
आमि तोमा दोहाँरे जिज्ञासि बिबरण। कोन् बंशे जन्मिला बा काहार नन्दन १
लब-कुश तखन श्रीरामेर साक्षाते। छले परिचय देन दोँहे हेँटमाथे
ना जानि पितार नाम, मातृ नाम सीता। बाल्मीकिर शिष्य मोरा, नाहि चिनि पिता २
एइ परिचय पेये श्रीरघुनन्दन। दुइ पुत्र कोले करि करेन क्रन्दन
आर पत्नी ना करिनु, नहिल सन्तति। कोन् दोषे बञ्चिलाम सीता गर्भबती ३
श्रीराम बलेन, हे बाल्मीकि ज्ञानबान्। जान भूत भबिष्यत आर बर्त्तमान
एतेक जानिया तुमि ना कह आमारे। परीक्षा लइब सीता आन मम घरे ४
यत लोक आसियाछे, येबा ना आइसे। शुनिया सीतार कथा आइल हरिषे
स्त्री-पुरुष आसिलेक सकल संसार। बृद्ध-शिशु काणा खोँड़ा हैल आगुसार ५
कुलबधु यत काछे राजार कुमारी। सीतार परीक्षा शुनि एल सारि सारि
आसिया सकल नारी कहे परस्पर। श्रीराम जानेन ना कि सीतार अन्तर ६
तबे केन सीतारे दिलेन बनवास। केन वा परीक्षा लन, एकि सर्ब्बनाश
एइरूपे बामागण करे कानाकानि। हेनकाले आइलेन बृद्धा तिन राणी ७

देवी सीता का पाताल-प्रवेश

एक महीने में जब उनका गायन पूरा हो गया, तब श्रीराम ने दोनों से पूछा। हम तुम दोनों से विवरण पूछते हैं। तुम दोनों किस वंश में जन्मे हो, या किनके पुत्र हो ? ॥ १ ॥ तब श्रीराम के सम्मुख लव-कुश ने सिर झुकाकर संकेत से अपना परिचय दिया। हम अपने पिता का नाम नहीं जानते, माँ का नाम सीता है, हम वाल्मीकि के शिष्य हैं, पिता को हम पहचानते नहीं ॥ २ ॥ श्रीरघुनन्दन ने यह परिचय प्राप्त कर दोनों पुत्रों को गोद में ले रुदन करने लगे। मैंने (सीता के सिवा) और दूसरी पत्नी नहीं ली। कोई संतति भी नहीं हुई। मैंने किस दोष से गर्भवती सीता का परित्याग किया ? ॥ ३ ॥ श्रीराम बोले, हे ज्ञानवन्त वाल्मीकि, आप भूत, भविष्य और वर्तमान जानते हैं। ऐसा सब कुछ जानकर भी आप हमसे नहीं बताते ! आप सीता को मेरे यहाँ ले आइये, मैं उसकी परीक्षा लूंगा ॥ ४ ॥ वहाँ जितने लोग आये थे, जो लोग नहीं भी आये थे, सभी सीता की बात सुनकर प्रसन्नता से आ पहुँचे। संसार भर के स्त्री-पुरुष आये, बूढ़े, शिशु, अन्धे, लँगड़े सभी आगे बढ़ आये ॥ ५ ॥ जितनी राजकुमारियाँ कुलवधुएँ थीं, सीता की परीक्षा की बात सुन वे सभी कतारों में आयीं। वहाँ आकर नारियाँ आपस में कहने लगीं, श्रीराम क्या सीता का अन्तर नहीं जानते ? ॥ ६ ॥ तो फिर उन्होंने सीता को वनवास क्यों दिया ? उनकी परीक्षा ही किसलिए ले रहे हैं ? यह कैसी सर्वनाश की बात है। नारियाँ इस तरह से कानाफूसी करने लगीं, उसी समय वहाँ तीनों वृद्धा रानियाँ आ पहुँचीं ! ॥ ७ ॥

कौशल्या कैकेयी आर सुमित्रा सतिनी। रामेरे बुझाम तिन राजार गृहिणी
लइया परीक्षा एक सागरेर पार। कि हेतु परीक्षा निते चाह आरबार ८
धन्य जनकेर मान जानकीर बाप। हेन जनकेर आर नाहि बिओ ताप
सीताके ना जान, तिनि कमला आपनि। नाहिक सीतार पाप, जाने सर्व्व प्राण ९
सीतारे लइया तुमि थाक गृहबासे। जनक सन्तुष्ट हये याक् निज देशे
श्रीराम बलेन, माता, ना कर बिषाद। परीक्षा ना निले दिबे लोके अपबाद १०
महाराज जनकेर नाहि उपरोध। परीक्षा लइले सबे पाइबे प्रबोध
राजा हये स्त्रीर यदि ना करे विचार। स्त्रीर अनाचारे नष्ट हइबे संसार ११
एत यदि रघुनाथ बलेन निष्ठुर। कान्दिते कान्दिते राणी गेल अन्तःपुर
श्रीराम बलेन, हे बाल्मीकि तपोधन। आपनि आपन देशे करह गमन १२
सङ्गे रथ लये याक सुमन्त्र सारथि। रथे करि आनह सीतारे शीघ्रगति
महामुनि श्रीरामेर अनुज्ञा पाइया। स्वदेशे गेलेन मुनि सुमन्त्रे लइया १३
मुनिर चरणे सीता करि नमस्कार। मुनिके जिज्ञासा करे, कह सारोद्धार
पिता पुत्रे केमने हइल परिचय। से-सब कहेन मुनि सीतार आलय १४
शुनह आमार वाक्य जनक-दुहिते। पूर्व्वेर निर्व्वन्ध याहा के पारे खण्डिते
रामेर आज्ञाय देशे करह गमन। परीक्षा देखिते एल यत देवगण १५

कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा ये तीनों राज-गृहिणी सौतें राम को समझाने लगीं, सागर के उस पार (लंका में) एक बार सीता की परीक्षा लेकर किस कारण तुम दूसरी बार परीक्षा लेना चाहते हो ? ॥ ८ ॥ तुम सीता को नहीं जानते, वह साक्षात् लक्ष्मी है। सीता का कोई पाप नहीं है, यह सारे जीव जानते हैं ॥ ९ ॥ सीता को लेकर तुम अपने घर में रहो, राजा जनक भी संतुष्ट होकर अपने देश को जायें! श्रीराम बोले, माताओ, विषाद न करो। यदि मैं परीक्षा न लूं तो लोग अपयश लगाते रहेंगे ॥ १० ॥ महाराज जनक ने भी कोई आग्रह नहीं किया है। सीता की परीक्षा लेने पर सभी को शान्ति मिलेगी। राजा होकर भी यदि स्त्री का न्याय नहीं करता तो स्त्री के अनाचार से संसार नष्ट हो जायेगा ॥ ११ ॥ रघुनाथ ने जब निर्मम होकर ऐसा कहा तो रानियाँ रोती हुई अन्तःपुर में चली गयीं। श्रीराम बोले, हे तपोधन वाल्मीकिजी, आप अपने देश को जायें ॥ १२ ॥ सारथी सुमंत्र आपके साथ रथ लेकर जाये और आप शीघ्रता से रथ पर बिठा सीता को ले आयें। महामुनि वाल्मीकि ने श्रीराम का आदेश पाकर सुमंत्र को ले, अपने आश्रम में गये ॥ १३ ॥ मुनि के चरणों में सीता ने नमस्कार किया और उनसे पूछा— (वहाँ जो कुछ हुआ है) उसका सार सुनाइए। पिता और पुत्र से किस प्रकार परिचय हुआ! वह सब मुनि ने आश्रम में सीता से कहा ॥ १४ ॥ हे जनकनन्दनी, मेरे वचन को सुनो। पूर्व का निर्बन्ध (कर्मफल) यहाँ पर कौन खण्डित कर सकता है। श्रीराम की आज्ञा से देश (अयोध्या) को गमन करो। अभी तक जो देवगण थे वे (तुम्हारी) परीक्षा ले रहे हैं ॥ १५ ॥ तुमने पहले जो परीक्षा दी थी, वह संसार

प्रथमे परीक्षा दिले संसारे विदित । आबार परीक्षा तब ललाटे लिखित
एक ठांइ हइयाछे सर्व्व देवगण । कारो वाक्य ना मानेन श्रीरघुनन्दन १६
जानकीरे एइमत कहिलेन मुनि । सीतार नयन-जल झरिल अमनि
मुनिर तनया-बधु तापेते आकुलि । से-सबार सङ्गे सीता करे कोलाकुलि १७
विदाय चाहेन सीता करि नमस्कार । मेलानि देह मा, देखा नाहि हबे आर
मुनिपत्नी बले, लक्ष्मी, छाड़ि याह कोथा । बुके शेल रहिल, थाकिल मर्म्मव्यथा १८
जानकी बलिया मोरा ना डाकिब आर । ना शुनिब मधुर ये बचन तोमार
रथेते चड़िया सीता करिल गमन । बाल्मीकिर तपोवने उठिल क्रन्दन १६
तपोबन छाड़ि यान जानकी सुन्दरी । येइ देशे यान तिनि, आलो सेइ पुरी
निज देश अयोध्याय करिल गमन । जय जय हुलाहुलि लक्ष्मी-आगमन २०
जगतेर यत लोक अयोध्या-नगरे । हेनकाले गेल सीता सभार भितरे
भूमिते आछेन सीता रथ हैते उलि । रूपे पुरी आलोकरे, ढालिछे बिजुलि २१
कि कब अन्येर कथा, यत मुनिगण । देखिया सीतार रूप सबे अचेतन
श्रीराम-चरण सीता करिल बन्दन । बाल्मीकि रामेर प्रति कहेन तखन २२
च्यबनेर पुत्र ये बाल्मीकि नाम धरि । मन दिया शुन राम, निवेदन करि
बहु तप करिलाम त्यजि भक्ष्य-पानि । सीतार शरीरे पाप नाहि, आमि जानि २३

जानता है। अब तुम्हारे भाग्य में फिर परीक्षा देने की बात लिखी हुई है। वहाँ सारे देवगण एकत्र हुए हैं परन्तु श्रीरघुनन्दन किसी की बात नहीं मानते ।। १६ ।। मुनि ने जानकी से इस प्रकार कहा तो सीता की आँखों से तभी आँसू बहने लगे। वहाँ मुनि-कन्याएं, मुनि-वधुएँ सीता के दुःख से व्याकुल हो उठीं। सीता ने उन सबसे अँकवार भेंट की ।। १७ ।। उन सबको नमस्कार कर सीता ने विदा माँगी। माँ, हमें विदा दो, अब आगे आपसे भेंट नहीं होनेवाली है। मुनि-पत्नी ने कहा— लक्ष्मी, तुम हमें छोड़कर कहाँ जा रही हो ? हमारे हृदय में यह शेल रह गया, मर्म-वेदना रह गयी ।। १८ ।। हम अब जानकी कहकर तुम्हें पुकार नहीं पायेंगी, तुम्हारे वे मधुर वचन सुन नहीं पायेंगी। सीता रथ पर चढ़कर चलीं। वाल्मीकि के तपोवन में रुलाई उठी ।। १९ ।। सुन्दरी जानकी तपोवन छोड़कर जाने लगी, वे जिस देश में जाती, वही पुरी आलोकमयी हो उठती। वे अपने देश अयोध्या गयीं। लक्ष्मी के आगमन से वहाँ जय-नाद और उलुध्वनि (मुँह से की जानेवाली ध्वनि) होने लगे ।। २० ।। जगत के सारे लोग अयोध्या नगर में आ पहुँचे। तभी सीता सभा में गयी। सीता रथ से भूमि पर उतरीं। वह अपने रूप से मानो बिजली की धारा बहाकर पुरी को आलोकित करती थीं ।। २१ ।। दूसरों की बात क्या कहें, जितने मुनि थे, सीता का रूप देखकर सभी अचेतन (जड़) जैसे हो गये। सीता ने श्रीराम के चरणों की वन्दना की। तब वाल्मीकि ने राम के प्रति यह वचन कहा— ।। २२ ।। मैं च्यवन का पुत्र, वाल्मीकि नाम धारण करता हूँ। हे राम, मेरा निवेदन ध्यान देकर सुनिये। खाना-पीना छोड़कर मैंने बहुत तप किया है। मैं जानता हूँ कि सीता के शरीर में

आमि जानि, पाप नाइ सीतार शरीरे । महासती सीता, आमि जानिनु अन्तरे
सीता ये परम-सती जाने त्रिसंसार । सीतार चरित्रे लागे मम चमत्कार २४
पापमति नहे सीता, परम पवित्र । ध्याने जानिलाम आमि सीतार चरित्र
घरे लह सीतारे कि करह बिचार । लव-कुश दुइ पुत्र सीतार कुमार २५
आमार बचन राम, ना करह आन । दुइ-पुत्रे लये राख आपनार स्थान
एतेक बलिया मुनि काँपे बार-बार । शापे पुड़ि मरे पाछे सकल संसार २६
मुनि प्रति श्रीराम कहेन योड़हाते । सीतार चरित्र आमि जानि भालमते
अग्निशुद्धा हइलेक देव-विद्यमाने । जानकीरे आनिलाम देशे सेकारणे २७
आमि जानि, सीतार शरीरे नाहि पाप । बिधिर निर्ब्बन्ध, एइ घटिल सन्ताप
आर किछु महामुनि, ना बलहि मोरे । सीतार परीक्षा लब सभार भितरे २८
श्रीराम बलेन, सीता, शुन ए बचन । देख त्रिलोकेर ये आइल सर्ब्बजन
प्रथमे परीक्षा दिले सागरेर पार । देवगण जाने, ताहा ना जाने संसार २९
पुनश्च परीक्षा दिबे सबाकार आगे । देखिया लोकेर येन चमत्कार लागे
एत यदि रामचन्द्र बलेन सीतारे । योड़हाते जानकी बलेन धीरे धीरे ३०
कि कार्य्य आमार रघुनाथ, ए-जीवने । प्रवेश करिब अग्नि तोमार बचने
परीक्षा दिलाम पूर्ब्ब देव-विद्यमाने । या कहिला देवगण, शुनिले आपने ३१

कोई पाप नहीं है ।। २३ ।। मैं जानता हूँ, सीता के शरीर में कोई पाप नहीं है । मैं अन्तर से जानता हूँ; सीता महासती है, सीता परम सती हैं, यह तीनों लोक जानते हैं । सीता के चरित्र से मुझे विस्मय होता है ।। २४ ।। सीता पाप-विचार की नहीं है; परम पवित्र हैं । मैंने ध्यान से सीता का चरित्र जान लिया है । आप विचार क्या कर रहे हैं, सीता को अपने घर में अपना लीजिए । ये लव-कुश दोनों सीता के कुमार हैं ।। २५ ।। राम, मेरे वचन की अन्यथा न करें । दोनों पुत्रों को अपने यहाँ रखिए । ऐसा कहकर मुनि बार-बार काँपने लगे । लगा, कहीं उनके शाप से सारा संसार जल न मरे ।। २६ ।। श्रीराम ने हाथ जोड़कर मुनि से कहा— मैं सीता का चरित्र भलीभाँति जानता हूँ । यह देवताओं के समक्ष अग्नि-शुद्धा बनी है । उसी कारण मैं जानकी को घर ले आया ।। २७ ।। मैं जानता हूँ, सीता के शरीर में कोई पाप नहीं है । विधि के निर्बन्ध से उन्हें यह संताप भोगना पड़ा है । हे महामुनि, मुझसे और कुछ न कहें । मैं सभा में सीता की परीक्षा लूँगा ।। २८ ।। श्रीराम बोले, सीता, यह वचन सुनो । देखो, ये त्रिलोक के सभी जन आये हुए हैं । तुमने पहले सागर के उस पार (लंका में) परीक्षा दी थी । वह देवगण जानते हैं, पर संसार नहीं जानता ।। २९ ।। पुनः तुम्हें सबके आगे परीक्षा देनी है, जिसे देखकर लोगों को विस्मय हो । जब रामचन्द्र ने यह बात कही तो जानकी ने हाथ जोड़कर धीरे-धीरे कहा— ।। ३० ।। हे रघुनाथ, मेरे इस जीवन से अब कौन-सा प्रयोजन है ? आपके वचनों से मैं अग्नि में प्रवेश करूँगी ! पहले देवों के समक्ष मैंने परीक्षा दी । देवताओं ने जो कुछ

देशेते आनिला तुमि दिया ये आश्वास । अकस्मात् मोरे केन दिला वनबास
महादेवी हइया मुनिर घरे बसि । फल मूल खाइ आमि नित्य उपबासी ३२
पतिकुले पितृकुले नाहि पाइ स्थान । अग्निते परीक्षा करि कर अपमान
ब्रह्मा बलिलेन, यत शुनिले आपनि । मृत पिता आसि कत बुझाले काहिनी ३३
साक्षाते शुनिले तुमि पितार वचन । तबे से आमारे लये देशे आगमन
कुलबधू यत नारी, सेइ थाके घरे । सभाते परीक्षा दिते आसि बारे बारे ३४
सर्व्वगुण धर तुमि, बिचारे पण्डित । बुझिया परीक्षा निते हयत उचित
अदेखा हइब प्रभु, घचाब जञ्जाल । संसारेर साध नाहि, याइब पाताल ३५
आज हैते घुचुक तोमार लाज दुख । आर येन नाहि देख जानकीर मुख
निरबधि अपबाद दितेछ-आमारे । सभाय परीक्षा दिते आसि बारे बारे ३६
जन्मे-जन्मे प्रभु, तुमि होओ मोर पति । आर कोन जन्मे मोर करो ना दुर्गति
मेलानि मागिनु प्रभु, तोमार चरणे । एतेक कहिला सीता सभा-विद्यमाने ३७
सीतार वचन ये शुनिल सर्व्वलोके । लज्जाय कातर सीता पृथिवीके डाके
मा हइया पृथिवी मायेर कर काज । कन्यार हइले लज्जा तोमार से लाज ३८
कत दुःख सहे मागो, आमार पराणे । सेवा करि थाकि सदा तोमार चरणे
उदरे धरिले मोरे, ताकि मने नाइ । तोमार चरणे सीता मागे किछु ठाँइ ३९

आये थे, तब फिर मुझे अकस्मात् वनवास किसलिए दे दिया ? महादेवी (पटरानी) होने के बावजूद मुझे मुनि के यहाँ रहना पड़ा। नित्य उपवासी रहकर फल-मूल खाते रहना पड़ा ॥ ३२ ॥ पतिकुल या पितृ-कुल में मुझे स्थान नहीं मिला। अग्नि में परीक्षा लेकर भी आप मेरा अपमान करते हैं। ब्रह्मा ने जो कुछ कहा, आपने स्वयं सुना; मृत पिता ने आकर आपको कितनी कथाएँ सुनाकर समझाया ॥ ३३ ॥ अपने सामने ही आपने पिता के वचन सुने थे, उसके बाद ही मुझे लेकर देश आये थे। जो कुल-वधुएँ होती है, वे नारियाँ घर में रहा करती है; परन्तु मुझे बार-बार सभा में परीक्षा देने आना पड़ रहा है ॥ ३४ ॥ आप सर्व-गुणाधार, विचार में पंडित हैं। अत: आपको समझ-बूझकर परीक्षा लेना उचित है। प्रभु, अब मैं आपसे ओझल हो जाऊँगी, सारा जंजाल मिट जायेगा। अब मुझे संसार में रहने की साध नहीं है, मैं पाताल चली जाऊँगी ॥ ३५ ॥ आज से आपकी (लोक) लज्जा और दु:ख मिट जाए। अब से जैसे आपको जानकी का मुँह दिखाई न दे। आप निरन्तर मुझे अपयश लगाते रहे हैं, (इसी कारण) बार-बार मुझे सभा में परीक्षा देने के लिए आना पड़ता है ॥ ३६ ॥ प्रभु, जन्म-जन्म में आप मेरे पति बनें, और किसी जन्म में जैसे मेरी दुर्गति न करें। प्रभु, मैं आपके चरणों में विदा माँग रही हूँ। सीताजी ने सभा के सम्मुख यह बात कही ॥ ३७ ॥ सभी लोगों ने सीता के वचन सुने ! लज्जा से कातर हो सीता धरती माता को पुकारने लगी ! हे धरती माता, माँ होकर तुम माँ का कार्य करो। कन्या की लज्जा हो तो वह तुम्हारी ही

करिलेन पृथिबीके सीता एइ स्तुति। सप्त पातालेते थाकि शुने बसुमती
सीता निते पृथिबी कपिल आगुसार। से सप्त पाताल हैते हैल एक द्वार ४०
अकस्मात् उठिल सुबर्ण सिंहासन। दशदिक् आलोकरे अयोध्या-भुबन
नानाबिध बसन भूषण परिधान। मूर्त्तिमती पृथिबी रहिल बिद्यमान ४१
झि बलिया पृथिबी सीतारे डाके घने। कोले करि सीतारे तुलिल सिंहासने
परीक्षा लइते चान लोकेर कथाय। लोक लये सुखे राम थाकुन हेथाय ४२
माये झिये दुइजने थाकिब पाताले। सर्व्वलोक शुनिल पृथिबी यत बले
नाहि चाहिलेन सीता उभय छाबाले। श्रीरामेरे निरखिया प्रबेशे पाताले ४३
पाताले येते राम धरेन तार चुले। हस्ते चुलमुठा रैल, सीता गेल तले
पातालेते प्रबेशिया तिलके ना थाकि। बैकुण्ठे स्वमूर्त्ति धरि गेलेन जानकी ४४
बैकुण्ठे गेलेन लक्ष्मी हृष्ट देबगण। अयोध्या नगरे हेथा उठिल क्रन्दन
श्रीरामेर क्रन्दन हइल अनिवार। हाहाकार शब्द करे सकल संसार ४५
सीतार चरित्र कथा शुने येइ लोके। पुञ्ज-पुञ्ज पुण्य हय, पाप नाहि थाके
कृत्तिबास रचिल ए काब्य चमत्कार। गाहिल उत्तरकाण्डे चरित्र सीतार ४६

तुम्हारे चरणों में मैं सदा सेवा करती रहती हूँ। तुम्हें क्या स्मरण नहीं है कि तुमने मुझे अपने उदर में धारण किया था। अब तुम्हारे चरणों में सीता कुछ स्थान माँगती है ॥ ३९ ॥ सीता ने धरती की यह स्तुति की। वसुमती ने सप्त-पाताल से उसे सुना। सीता को ले जाने के लिए धरती आगे बढ़ी। उस सप्त-पाताल से एक द्वार बन गया ॥ ४० ॥ अकस्मात् वहाँ से एक स्वर्ण-सिंहासन निकल आया। उस (सिंहासन) से अयोध्या (समेत) सम्पूर्ण भुवन आलोकित हो उठे। अनेक प्रकार के वस्त्रों और आभूषणों से अलंकृत मूर्तिमती धरती माता वहाँ विद्यमान थी ॥ ४१ ॥ 'बेटी' कहकर धरती सीता को बार-बार पुकार उठी! सीता को गोद में लेकर सिंहासन पर चढ़ा लिया। और बोली— लोगों की बात पर राम परीक्षा लेना चाहते हैं, अब लोगों को लेकर राम यहाँ सुख से रहें ॥ ४२ ॥ हम दोनों माँ बेटी पाताल में रहेंगी। धरती ने जो कुछ कहा, सभी लोगों ने सुना। सीता ने दोनों पुत्रों की ओर नहीं देखा। श्रीराम की ओर देखती हुई वह पाताल में प्रवेश कर गयीं ॥ ४३ ॥ वह जब पाताल में चली जाने लगीं (उसे रोकने के लिए) राम ने उनके बाल पकड़ लिये। परन्तु वे बाल उनके हाथों में रह गये, सीता नीचे चली गयीं। पाताल में पहुँचकर वहाँ पल भर भी नहीं रहीं। स्वमूर्ति (लक्ष्मीस्वरूप) धारण कर जानकी वैकुंठ में चली गयीं ॥ ४४ ॥ लक्ष्मी वैकुंठ में चली आयी देख देवगण हर्षित हो उठे। इधर अयोध्या नगरी में रुदन होने लगा। श्रीराम अपार रुदन करने लगे! सारा संसार हाहाकार करने लगा ॥ ४५ ॥ जो सीता की चरित-कथा सुनते हैं, उन्हें पुण्यों का समूह (अपार पुण्य) मिलता है, उनका पाप नहीं रहता। कृत्तिवास ने यह अपूर्व

लब-कुशेर रोदन ओ रामेर यज्ञ-समापन

लब-कुश शुनिया हातेर फेले बीणा। भूमे लोटाइया कान्दे भाइ दुइ जना
कोथा गेले जननी गो जनक दुहिते। आमरा तोमार शोक ना पारि सहिते १
तोमा बिना माता गो अन्यके नाहि जानि। तुमि बिना आर केबा दिबे अन्न-पानि
क्षुधा हैले अन्न देह, जल पिपासाय। ससारे दुर्ल्लभ गुण, से गुण तोमाय २
दशमास आमा दोंहे धरिल॰ उदरे। ये दुःख पाइले, ताहा के बलिते पारे
छोटके करिले बड़ लालिया पालिया। पलाइया माता, हेन पुत्र कारे दिया ३
जनकेर कन्या तुमि श्रीरामघरणी। अयोनिसम्भबा लब-कुशेर जननी
मातृहीन बालक ये सर्व्वदा अस्थिर। यार माता आछे तार सफल शरीर ४
आजि हैते अनाथ हलाम दुइ जन। एइ दुइ पुत्रे माता, हइला निर्म्मम
पाइया बिस्तर दुःख गेले मा पाताले। अनाथ करिया गेले ए दुइ छाबाले ५
लब-कुश कान्दितेछे लोटाइया धूलि। धूलाय धूसर अङ्ग ननीर पुत्तली
पुत्रेर क्रन्दने राम हइया कातर। अन्तःपुरे पाठालेन मायेर गोचर ६
कौशल्या कैकेयी आर सुमित्रा ए-तिने। यतेक प्रबोध देन प्रबोध ना माने
मा हये पुत्रेर प्रति ये हय निर्द्दय। से मायेर तरे कांदा उचित ना हय ७

लव-कुश का रुदन और रामचन्द्र के यज्ञ की समाप्ति

लव-कुश ने सुनकर (देखकर) हाथ की वीणाएँ फेंक दीं और दोनों भाई भूमि पर लोट-लोटकर रोने लगे। (वे कहने लगे—) हमारी जननी, जनक-नन्दिनी, तुम कहाँ चली गयी ? हम लोग तुम्हारा शोक सह नहीं पा रहे हैं ॥ १ ॥ हे माता, हम तुम्हारे सिवा और किसी को नहीं जानते। तुम्हारे बिना हमें अब अन्न-जल कौन देगा ? हमें भूख लगने पर तुम अन्न देती थी, प्यास लगने पर जल देती थी। संसार में जो भी दुर्लभ गुण हैं, वे सभी तुममें थे ॥ २ ॥ तुमने हम दोनों को दस महीने उदर में धारण किया, तुम्हें जो दुःख मिला उसका वर्णन कौन कर सकता है ? तुमने लालन-पालन कर छोटे को बड़ा किया। माता, ऐसे पुत्रों को किसे सौंपकर तुम भाग गयीं ? ॥ ३ ॥ तुम जनक की कन्या और श्रीराम की धर्मपत्नी तथा स्वयं अयोनिसंभवा हो। हम लव-कुश की जननी हो। मातृहीन बालक तो सदा अस्थिर होते हैं। जिसकी माँ होती है उसका शरीर सफल है ॥ ४ ॥ आज से हम दोनों अनाथ हो गये। माता, तुम अपने इन दोनों पुत्रों पर निर्मम हो गयीं। अनेक दुःख भोगकर, माँ, तुम पाताल चली गयीं। अपने इन पुत्रों को तुम अनाथ कर गयीं ॥ ५ ॥ लव-कुश धूल में लोट-लोटकर रो रहे थे। नवनीत के पुतले उनके अंग धूल-धूसरित थे। पुत्रों की रुलाई से राम कातर हो उठे और उन दोनों को अपनी माँ कौशल्या के पास अंतःपुर में भेज दिया ॥ ६ ॥ कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा —ये तीनों, लव-कुश को

ना पबे मायेर देखा गेल दूर देशे। पितामही आमरा ये आछि सबिशेषे
दुइ नाति प्रबोधिते नारे तिन बुड़ी। प्रबोध करिते तबे गेल तिन खुड़ी ८
बिधिर निर्ब्बन्ध बापु, आर कर्म्मफले। ए-सुख एड़िया सीता पशिल पाताले
उठ बापु लव-कुश, कान्द कि कारण। सीतार समान हइ मोरा तिन जन ९
मातृ-सङ्गे तोमादेर ना हबे दर्शन। आमा-सबा देखि बापु, संबर क्रन्दन
दु-भायेर नेत्रजले तितिल मेदिनी। प्रबोध करिते नारे कोन ठाकुराणी १०
भरत लक्ष्मण शत्रुघन तिन जन। चलिलेन अन्तःपुरे प्रबोध कारण
दुइ भाये बसाइया रत्न-सिंहासने। तिन खुड़ा प्रबोधेन मधुर बचने ११
शुन लब, शुन कुश, मोदेर वचन। अस्थिर ना हओ बापु, स्थिर कर मन
पिता माता भ्राता कार थाके निरन्तर। अनित्य लागिया केन हइले कातर १२
कालि बा परश्व बापु, हइबे ये राजा। अस्थिर हइले बापु, के पालिबे प्रजा
गङ्गा आनिलेन राजा नाम भगीरथ। तार नाम गाय सदा सकल जगत १३
तोमा-सबे बर्ज्जिलेन जानकी निश्चित। सर्ब्बलोके गाहिबेक सीतार चरित
तिन खुड़ा प्रबोधेन, प्रबोध ना माने। दुइ बालकेरे दिले राम-बिद्यमाने १४

के प्रति जो निर्दय हो, उस माँ के लिए रोना उचित नहीं ॥ ७ ॥ अब तो माँ से तुम्हारी भेंट नहीं होगी, वह दूर देश को चली गयी। अब विशेष रूप से हम तुम्हारी दादियाँ (यहाँ) हैं। (आदि कहकर) वे तीनों वृद्धाएँ दोनों नातियों को धीरज नहीं बँधा पाती थीं। तब उन्हें धीरज बँधाने के लिए उनकी तीनों चाचियाँ आयीं ॥ ८ ॥ (वे कहने लगीं—) बेटो, विधि के लेख और कर्म-फल से सीता इस संसार का सुख छोड़कर पाताल में प्रविष्ट हो गयी। लव-कुश बेटो, उठो, तुम किस कारण रोते हो ? हम तीनों सीता के समान ही हैं ॥ ९ ॥ अब तो माँ के संग तुम लोगों की भेंट नहीं होगी। बेटो, हम सबको देखकर तुम रोना छोड़ो। दोनों भाइयों के आँसुओं से धरती भीग गयी। कोई राज-वधू उन्हें धीरज नहीं बँधा पायी ॥ १० ॥ तब भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न ये तीनों उन्हें धीरज बँधाने अंतःपुर में आये। दोनों भाइयों को रत्न-सिंहासन पर बिठाकर, तीनों चाचा मधुर वचनों से उन्हें धीरज बँधाने लगे ॥ ११ ॥ लव-कुश, हमारे वचन सुनो। बेटो, अस्थिर न होओ, अपना मन स्थिर करो। पिता, माता, भाई आदि सदा किसके रहते हैं ? इसलिए अनित्य (माँ) के लिए तुम यों विकल क्यों हो गये हो ? ॥ १२ ॥ बेटो, कल या परसों तो तुम्हें राजा बनना है। बेटो, तुम लोग ऐसे अस्थिर होओगे तो प्रजा का पालन कौन करेगा ? भगीरथ नाम के राजा गंगा को ले आये थे, उनका नाम सदा सारा संसार गाया करता है (तुम्हें भी वैसा ही यशस्वी बनना है।) ॥ १३ ॥ जानकी तो निश्चित रूप से तुम्हें त्याग कर गयी है। सीता के चरित्र का गान सभी लोग किया करेंगे। (अतः तुम्हें रोना नहीं चाहिए।) तीनों चाचा लव-कुश को धीरज बँधा रहे थे, पर वे धीरज नहीं धरते थे। तब उन दोनों बालकों को राम के सामने

दुयेर क्रन्दने राम कान्देन आपनि । उभयेर नेत्रजले तितिल मेदिनी
दोंहारे बाल्मीकि मुनि यतेत बुझान । सीता-हेतु कान्दिया श्रीराम हतज्ञान १५
सीतार समान नारी ना हेरि नयने । कि करिब राजा हैया सीतार बिहने
मोर अगोचरे सीता लइल रावणे । सबंशे मरिल सेइ जानकी-कारणे १६
आमार साक्षाते सीता हरिलेक धरा । ताहारे खुँदिया निब सीता मनोहरा
यज्ञेते जनक-राजा यज्ञभूमि चषे । पृथिवीर मध्ये सीता उठिलेन चाषे १७
चाषभूमि सीतार जन्मेर अनुबन्ध । तेकारणे बसुमती शाशुड़ी सम्बन्ध
आर यत नारी जन्मे भारत-भुवने । सीता तुल्य नारी नाहि आमार नयने १८
कृताञ्जलि शुन बलि शाशुड़ी गर्व्बिता । ना देह आमारे दुःख, आनि देह सीता
कातर हइया राम बलिलेन यत । तदुत्तर ना पाइया ज्वलिलेन तत १९
श्रीराम बलेन, भाइ, आन धनुर्व्बाण । पृथिबी काटिया आजि करि खान खान
शाशुड़ी ना दिला, तबे एइ बाण युड़ि । केमने बाँचिबे तुमि, काहार शाशुड़ी २०
सीता निते यखन करिला आगुसार । तखनि पाठाइताम यमेर दुयार
पृथिबी काटिते राम पूरेन सन्धान । त्रास पेये पृथिबी हलेन आगुयान २१
देखिया रामेर कोप ब्रह्मा चिन्ते मने । सत्वर आइसे ब्रह्मा राम-बिद्यमाने
बलिलेन, राम, तुमि बिष्णु अवतार । संसारे हइल तब गुणेर प्रचार २२

ले गये ॥ १४ ॥ दोनों की रुलाई से रामचन्द्र स्वयं रोने लगे। उन दोनों के आँसुओं से धरती भीग गयी। उन दोनों को वालमीकि मुनि भी जितना समझाते थे, श्रीराम भी उतना ही सीता के लिए रो-रोकर अचेतन-से हो जाते थे ॥ १५ ॥ राम कह रहे थे, सीता के समान नारी आँखों से नहीं देखता। सीता के बिना राजा बनकर क्या करूँगा। मेरे अगोचर में रावण सीता को हर ले गया था, जानकी के कारण वह सवंश मारा गया! ॥ १६ ॥ मेरे सामने धरती ने सीता को हर लिया है, मैं उसे खोदकर मनोहरा सीता को ले आऊँगा। यज्ञ करने हेतु राजा जनक ने यज्ञभूमि का कर्षण किया था, हल चलाते समय धरती से सीता निकली थी ॥ १७ ॥ उस कृषि-क्षेत्र के साथ सीता का जन्म का अनुबंध रहा है। इस कारण धरती नाते से मेरी सास होती है। भारत-भू पर और जितनी भी नारियाँ जन्मी हैं, मेरी दृष्टि में, उनमें सीता-तुल्य नारी कोई नहीं है ॥ १८ ॥ अहंकारिणी सास! मैं हाथ जोड़कर तुमसे कहता हूँ, सुनो। मुझे दुःख न दो, सीता को ला दो। राम व्याकुल होकर जितना कहते थे, उसका कोई उत्तर न पाकर उतना ही जल उठते थे ॥ १९ ॥ श्रीराम बोले, भाई, धनुष-वाण ले आओ। मैं आज धरती को काटकर टुकड़े-टुकड़े कर डालूँ। सास धरती, यदि (सीता को) न लौटायें, तो (धनुष पर) यह बाण चढ़ा रहा हूँ। देखना, तुम किसकी सास हो, कैसे बच पाओगी! ॥ २० ॥ तुम जब सीता को ले जाने के लिए आगे बढ़ी थी, तभी तुम्हें मैं यम के दरवाज़े भेज देता। ऐसा कहकर रामचन्द्र ने धरती को काट डालने के लिए निशाना साधा। तब त्रस्त होकर धरती आगे बढ़ी ॥ २१ ॥ रामचन्द्र का कोप देखकर ब्रह्मा ने

जन्म ना हइते राम, तोमार चरित । अबतार ना हइते हैल तब गीत
भूत भबिष्यत् ये सकल मुनि जाने । सर्व्व दुःख खण्डे येइ रामायण शुने २३
आदि कबि बाल्मीकि रचिल रामायण । शुनिले पापेर क्षय, दुःख-बिमोचन
आपनि श्रीराम, तुमि साक्षात् नारायण । पृथिबीते गुणगान करे सर्व्वजन २४
अनाथेर नाथ तुमि, सकलेर गति । पृथिबी काटिया तुमि राखिबे अख्याति
तब स्मरणे पापीर पाप नाहि थाके । बिकल हइले तुमि जानकीर शोके २५
इन्द्र-आदि करिया देबता आर ऋषि । तब सङ्गे रामायण शुने भालबासि
देबगण मुनिगण बसिया कौतुके । सर्व्वलोके रामायण शुने महासुखे २६
बाल्मीकि रचिल येइ अदभुत आख्यान । शुनिले पापेर क्षय, दुःख-अबसान

श्रीरामेर अश्वमेध यज्ञ समापन ओ पुनर्ब्बार रामायण-गान

एइरूपे ब्रह्मा प्रबोधेन नाना छले । श्रीरामेरे पृथिबी बलेन हेनकाले १
श्रीराम, आमारे कोप कर अनुचित । अबश्य भुगिते हय, ललाटे लिखित
कोन् दोषे मम कन्या दिले बनबास । बनबास दिया केन आन निज बास २

मन में चिन्तन किया और तुरंत रामचन्द्र के पास आये । कहा— राम, आप विष्णु के अवतार हैं । संसार में आपके गुणों का प्रचार हुआ है ।। २२ ।। राम, आपके जन्म के पहले ही आपका चरित रचित हुआ है । अवतार होने के पहले ही आपका गीत गाया जाता है । ये मुनिगण भूत-भविष्य सब जानते हैं । जो रामायण सुनते हैं उनका सारा दुःख मिट जाता है ।। २३ ।। आदिकवि वाल्मीकि ने रामायण की रचना की है; जिसे सुनने से पाप नष्ट होते हैं, दुःख दूर होता है । श्रीराम आप स्वयं साक्षात् नारायण हैं । संसार में आपका गुणगान सारे जन किया करते हैं ।। २४ ।। आप अनाथ के नाथ हैं, सबकी गति हैं । धरती को काट डालें तो आपका अपयश रह जायेगा । आपके स्मरण से पापी का पाप नहीं रहता । आप जानकी के शोक से विकल हो उठे हैं ।। २५ ।। इन्द्र समेत देवता और ऋषिगण आपके संग बड़े प्रेम से रामायण सुना करते हैं । देवगण, मुनिगण आदि सभी कौतूहल से बैठकर बड़े सुख-पूर्वक रामायण सुनते हैं ।। २६ ।। वाल्मीकि ने जिस अद्भुत आख्यान की रचना की है, उसे सुनने से पाप नष्ट होता है, दुःख का अवसान होता है ।

श्रीराम के अश्वमेध यज्ञ की समाप्ति और पुनः रामायण-गान

इसी प्रकार अनेक वचन कहकर ब्रह्मा ने श्रीराम को धीरज बँधाया । धरती ने तब श्रीराम से कहा— ।। १ ।। श्रीराम, आपका मुझ पर क्रोध करना अनुचित है । जो ललाट में लिखा है, वह अवश्य भोगना पड़ता है । किस दोष से आपने मेरी कन्या को वनवास दिया था ? यदि वनवास दिया ही

आमार निकटे कन्या तिलेक ना थाके । स्वमूर्त्ति धरिया तिनि गेलेन गोलोके
बिष्णु स्थाने हइलेन आपनि कमला । नागलोके सीता सञ्चारिला एक कला ३
मर्त्ये आछे यत लोक पूजेन देबता । एक कला तथाय ये सञ्चारिला सीता
दैबयोगे सीता सञ्चारिला तिनलोक । सीतार लागिया राम, केन कर शोक ४
एइ लोके सीता-सने नाहि दरशन । बैकुण्ठे लक्ष्मीर सने हबे सम्भाषण
ये नारी स्पर्शिल सीता सेइ हैल सती । ताँहार समान नहे लक्ष्मी भगबती ५
यतेक असती नारी करे अनाचार । सेइ अनाचारे नष्ट हय त संसार
यत यदि पृथिबी रामेरे बले बाणी । हेनकाले श्रीरामेरे प्रबोधेन मुनि ६
सीतार लागिया केन करह रोदन । भालमते प्रभाते शुनिह रामायण
प्रभाते प्रभातकृत्य करि समापन । बसिलेन श्रीराम शुनिते रामायण ७
सङ्गीत शुनिते राम बसेन सभाय । रामेर तनय दुटि रामायण गाय
हाते बीणा करिया ललित गीत गाय । शुनिया सकल लोक मोहित सभाय ८
यज्ञ-अवसाने गीत छिल अबशेष । गाइते लागिल गीत ताहार बिशेष
कालपुरुषेर सने रामेर दर्शन । संसार छाड़िया राम करिबे गमन ९

था तो उसे फिर अपने यहाँ क्यों ले आये ? ॥ २ ॥ मेरी कन्या तो मेरे पास एक पल भी नहीं रही । वह तो स्व-मूर्ति (निजस्वरूप) धारण कर गोलोक में चली गयी है । वह विष्णु के स्थान में पहुँचकर लक्ष्मी बन गयी है । नागलोक में सीता ने अपनी एक कला का संचार किया है ॥ ३ ॥ मर्त्यलोक में देवताओं का पूजन करनेवाले जितने लोग हैं, (उनके लिए) वहाँ सीता अपनी एक कला संचार कर गयी है । इस प्रकार दैवयोग से सीता तीनों लोकों में संचारित हो गयी हैं । हे राम, भला आप सीता के लिए शोक क्यों कर रहे हैं ? ॥ ४ ॥ इस लोक में अब सीता के संग आपकी भेंट नहीं होगी । अब तो वैकुंठ में जाकर आप लक्ष्मी से संभाषण कर सकेंगे ! जिस नारी को सीता ने स्पर्श किया है वही सती बन गयी है । उनके समान लक्ष्मी भगवती भी नहीं है ॥ ५ ॥ असती नारियाँ जो अनाचार करती हैं, उनके उन अनाचारों से संसार नष्ट होता है । जब धरती ने रामचन्द्र से यह वचन कहा तो उसके पश्चात् मुनि (वाल्मीकि) राम को सांत्वना देते हुए बोले— ॥ ६ ॥ हे रामचन्द्र, आप सीता के लिए रुदन क्यों कर रहे हैं ? आप कल प्रातः अच्छी तरह से रामायण सुनियेगा । तब दूसरे दिन प्रातःकाल नित्यकर्म समाप्त कर श्रीरामचन्द्र रामायण सुनने बैठे ॥ ७ ॥ श्रीराम संगीत सुनने सभा में बैठे । रामचन्द्र के दोनों पुत्र रामायण गाने लगे । वे हाथों में वीणा ले ललित गीत गाने लगे । सुनकर सभा में सभी लोग मोहित हो गये ॥ ८ ॥ यज्ञ के अवसान होने पर रामायण-गीत का जो अवशेष था उसका विशेष अंश वे गाने लगे । कालपुरुष से राम की भेंट होगी, संसार छोड़कर रामचन्द्र चले जायेंगे ॥ ९ ॥ राजद्वार पर आकर दुर्वासा क्रोधित होकर रहेंगे, उस मुनि के अभिशाप से रामचन्द्र लक्ष्मण का त्याग कर देंगे ।

दुर्व्वासा आसिया द्वारे रहिवेन कोपे। लक्ष्मणेरे बर्ज्जिवेन से-मुनिर शापे
स्वर्गबासे याइबेन लइया संसार। इहा बिना बाल्मीकि ना लिखिलेन आर १०
एइ गीत शुनि राम दुःखित अन्तरे। सर्व्वलोके बिदाय करेन यज्ञ-परे
बिप्र सब तुष्ट हैल श्रीरामेर दाने। धनी हये मुनिगण गेल निज स्थाने ११
मेलानि मागिया देशे याय बिभीषण। सुग्रीव अङ्गद चले लये कपिगण
बिदाय लइया चले पृथिवीर राजा। नाना धने श्रीराम करेन सबे पूजा १२
जनक राजारे राम करेन स्तवन। यज्ञेर दक्षिणा देन बहुमूल्य धन
बाल्मीकि प्रभृति करि यत महामुनि। निजस्थाने गेल सबे करिया मेलानि १३
ब्रह्मा आदि करिया यतेक देवगण। समस्त उत्तरकाण्डे अपूर्व्व कथन
ए उत्तरकाण्डे लव-कुशेर आख्यान। कृत्तिवास गाय गीत अमृत-समान १४

श्रीरामेर बिलाप

श्रीराम देखेन शून्य सीतार बिहने। श्रीरामेर नेत्रनीर वहे रात्रिदिने
पात्रमित्र माता आर बिमाता सोदर। बिबाह करिते रामे बुझान बिस्तर १
कत स्थाने आछे कत राजार कुमारी। अनुमान करिछे दिवस बिभावरी
श्रीराम बिबाह करिबेन ए निश्चय। ना जानि के भाग्यवती रामपत्नी हय २

सारे संसार को लेकर रामचन्द्र स्वर्ग-वास हेतु गमन करेंगे। इसके पश्चात् वालमीकि ने और कुछ नहीं लिखा ॥ १० ॥ यह गीत सुनकर श्रीराम अन्तर् में दुःखी हो उठे। उन्होंने यज्ञ समाप्त होने पर सबको विदा की। श्रीराम के दानों से विप्रगण तुष्ट हुए। धनवान बनकर मुनिगण अपने-अपने स्थानों को चले गये ॥ ११ ॥ विभीषण भी विदा ले अपने देश गया। वानरों को लेकर सुग्रीव-अंगद चले। पृथ्वी पर के राजागण विदा लेकर चले। श्रीराम ने सबको नाना प्रकार के धन देकर पूजा की ॥ १२ ॥ रामचन्द्र ने राजा जनक का स्तवन किया। यज्ञ की दक्षिणा में बहुमूल्य धन दिया। वालमीकि से लेकर जितने महामुनि थे, ब्रह्मा समेत जितने देवगण थे, सब विदा ले-लेकर अपने-अपने स्थान को गये ॥ १३ ॥ सम्पूर्ण उत्तरकांड में यही अपूर्व कथा है। इस उत्तरकांड में लव-कुश का आख्यान है, कवि कृत्तिवास ने अमृत-समान यह गीत गाया है ॥ १४ ॥

श्रीराम का विलाप

सीता के बिना श्रीराम सब कुछ सूना देखने लगे। श्रीराम के आँसू दिन-रात बहने लगे। मंत्री-सामन्त, माता, विमाताएँ तथा भाई पुनर्विवाह करने हेतु श्रीराम को बहुत समझाने लगे ॥ १ ॥ कितने स्थानों में कितनी राजकुमारियाँ हैं, यह बात वे दिन-रात अनुमान लगाने लगे। (वे सोच रहे थे) श्रीराम बिवाह करेंगे, यह तो निश्चित है। पता नहीं, कौन भाग्यवती रामचन्द्र की पत्नी बने ॥ २ ॥ वे निरन्तर यही बात सोचते

एइ युक्ति तारा सबे करे सर्व्वक्षण । बिवाहे बिमुख किन्तु श्रीरामेर मन
सीता सीता बलि राम करेन क्रन्दन । सीता-बिना श्रीरामेर अन्य नाहि मन ३
सीता सीता बलि राम डाकेन बिस्तर । सीता नाहि, श्रीरामेर के दिबे उत्तर
स्वर्णसीता पाने राम एकदृष्टे चान । उत्तर ना पेये तार आरो दुःख पान ४
जगतेर नाथ राम एमन बिकल । ताँहार क्रन्दने लोक कान्दिल सकल
सीताके भाबिया राम छाड़ेन-निःश्वास । रचिल उत्तरकाण्ड कबि कृत्तिबास ५

केकय-देशे भरत कर्त्तृक गन्धर्व्व बध ओ श्रीरामादिर पुत्रगणेर राज्य-प्राप्ति

एगार हाजार वर्ष लोकेर पालन । सुखे आछे पात्रमित्र आर प्रजागण
चारि भायेर मा करे काल-अबसाने । भाण्डार बिलान राम नानाबिध दाने १
कौशल्या कैकेयी आर सुमित्रा सुन्दरी । दशरथ नृपतिर प्रिय सहचरी
क्रमे मरिलेन आर सात शत कामिनी । निजालये आनिलेन क्रमे दण्डपाणि २
दशरथ भूपतिर सङ्गे नाना मते । सुरपुरे केलि करे चड़ि दिब्य रथे
यार पुत्र भगवान् राम महामति । तार स्वर्गबासे केबा करये व्याहति ३

थे। परन्तु श्रीराम का मन विवाह से विमुख था। रामचन्द्र 'सीता, सीता' कहकर रुदन करते थे। सीता के बिना और किसी पर श्रीराम का मन नहीं था ॥ ३ ॥ श्रीराम बार-बार 'सीता-सीता' कहकर पुकारा करते थे, परन्तु सीता नहीं थी, उन्हें उत्तर कौन देता ? रामचन्द्र स्वर्ण-सीता की ओर एकटक देखते रहते। उनसे कोई उत्तर न पाकर उन्हें और भी दुःख होता था ॥ ४ ॥ जगत के नाथ राम ऐसे विकल थे कि उनके रुदन से सम्पूर्ण लोक रोने लगे। सीता की बात सोचते-सोचते राम लम्बी साँसें छोड़ते थे ! कवि कृत्तिवास ने इस उत्तरकांड की रचना की है ॥ ५ ॥

केकय देश में भरत द्वारा गंधव का वध और श्रीराम के पुत्रों की राज्य-प्राप्ति

श्रीरामचन्द्र ने ग्यारह हज़ार वर्ष तक लोकों का पालन किया। (उनके शासन में) मंत्री-सामन्त और सारे प्रजाजन सुख से थे। काल पूरा हो जाने पर चारों भाइयों की माताएँ स्वर्गवासी हुईं। तब रामचन्द्र ने अनेक प्रकार के दान कर अपना भंडार खाली कर दिया ॥ १ ॥ कौशल्या, कैकेयी और सुन्दरी सुमित्रा राजा दशरथ की ये प्रिय पटरानियाँ मर गयीं। और सात सौ कामिनियों को दंडपाणि यमराज क्रमशः यमलोक ले गये ॥ २ ॥ वे स्वर्गलोक में जाकर राजा दशरथ के साथ दिव्य रथों पर चढ़कर नाना प्रकार की क्रीड़ाएँ करने लगीं। जिनके पुत्र महामति भगवान रामचन्द्र हैं, उन्हें स्वर्गवास से कौन रोक सकता है ? ॥ ३ ॥ त्रेतायुग में श्रीराम-अवतार हुआ, (इससे) उनके योग्य भक्तों के लिए स्वर्ग-द्वार खुला हुआ है। मंत्रियों-सामन्तों सहित रामचन्द्र

त्रेतायुगे हइल श्रीराम अवतार। उपयुक्त भक्त-प्रति मुक्त स्वर्गद्वार
पात्रमित्र सह राम आछे राजकार्य्ये। केकये देशेर द्विज आइल से राज्ये ४
दधि दुग्ध आर मधु कलसी-कलसी। सन्देश अमृत-तुल्य आने राशि राशि
मृग पक्षी जीव-जन्तु आने यत पारे। अन्य अन्य द्रव्य यत आने भारे भारे ५
वसन भूषण आर नाना वस्त्र आने। राखिल सकल द्रव्य राम-विद्यमाने
लोमश गन्धर्व्व राज सर्व्वलोके जाने। दौरात्म्य आमार राज्ये करे रात्रिदिने ६
आपनि आसिया तार करह दमन। अथवा श्रीराम, तुमि पाठाओ नन्दन
मामार संवाद पेये राम हरषित। डाक दिया भरतेर कहेन त्वरित ७
शत्रुजित मामा मोर, के ना ताँरे जाने। पाठाइल वार्त्ता एइ द्विजवर-स्थाने
तिन कोटि गन्धर्व्व से बड़इ दुर्ज्जय। तार राज्य निते चाहे, पाइ बड़ भय ८
दुइ पुत्र तोमार ये समरे प्रखर। विक्रमे दुर्ज्जय तारा दोँहे धनुर्द्धर
गन्धर्व्व मारिया दुइ पुत्रे कर राजा। राज्य बसाइया ये पालह सुखे प्रजा ९
रामेर गन्धर्व्व-अस्त्र आछिल प्रधान। से गन्धर्व्व-अस्त्र ताँरे करेन प्रदान
दुइ पुत्र लइया भरत तथा यान। धाय प्रेत पिशाच करिते रक्तपान १०
ससैन्ये भरत यान मातुलेर घरे। रहिल सामन्त सैन्ये बाटीर बाहिरे
भागिनेय देखि हरषित शत्रुजित। भोजन करिया दोँहे बसिल सहित ११

राजकार्य में लगे थे। उन्हीं दिनों केकय देश का ब्राह्मण उस राज्य में आया ।। ४ ।। वह घड़ों में भरकर दही, दूध और मधु तथा अमृत-तुल्य संदेश-मिठाई ढेर के ढेर; जितना हो सका मृग, पक्षी आदि जीव-जन्तु तथा भारों में भर-भरकर अन्यान्य द्रव्य भी ले आया था ।। ५ ।। वस्त्र-आभूषण और विभिन्न प्रकार के वस्त्र भी वह ले आया था। उसने सारी सामग्रियाँ राम के सामने रखीं। उसने कहा— गंधर्वराज लोमश को सब लोग जानते हैं। वह हमारे राज्य में दिन-रात उत्पीड़न किया करता है ।। ६ ।। आप स्वयं चलकर उसका दमन करें, अथवा हे श्रीराम, आप अपने पुत्रों को भेजें। मामा की वार्ता पाकर राम हर्षित हुए। उन्होंने भरत को पुकारकर तुरन्त कहा— ।। ७ ।। मेरे मामा शत्रुजित को कौन नहीं जानता ? उन्होंने इस द्विजवर के जरिए यह वार्ता भेजी है। वे तीन करोड़ गंधर्व बड़े ही दुर्जेय हैं। वे गंधर्व उनका राज्य छीन लेना चाहते हैं, इससे मुझे बड़ा डर लग रहा है ।। ८ ।। तुम्हारे दो पुत्र तो युद्ध करने में बड़े ही निपुण हैं, वे दोनों धनुर्धर विक्रम में दुर्जेय हैं। गंधर्वों को मारकर अपने उन दोनों पुत्रों को वहाँ के राजा बनाओ। वहाँ राज्य बसाकर सुख से प्रजाजनों का पालन करो ।। ९ ।। गंधर्वास्त्र रामचन्द्र का प्रमुख अस्त्र था। वह गंधर्वास्त्र उन्होंने भरत को दे दिया। अपने दोनों पुत्रों को लेकर भरत वहाँ के लिए चल पड़े। वहाँ जाने पर प्रेत-पिशाच आदि उनका रक्तपान करने दौड़े आये ।। १० ।। भरत सेना-सहित अपने मामा के यहाँ पहुँचे। उनके सारे सामन्त एवं सैनिक मामा के भवन के बाहर ही रहे। अपने भानजे को आया देख शत्रुजित हर्षित हुआ। दोनों भोजन के पश्चात एक संग बैठे ।। ११ ।। इस प्रकार रात

एइरूपे प्रभात हइल विभावरी। तिन कोटि गन्धर्व्व आइल त्वरा करि
चारिभिते मारे शेल जाठि ओ झकड़ा। अस्त्र विन्धि पड़े भरतेर हाती घोड़ा १२
सात दिन युद्ध हैल, कारो नाहि जय। देखिया अमरगणे लागिल विस्मय
ना मरे गन्धर्व्वगण अति भयङ्कर। भरत गन्धर्व्व-अस्त्र छाड़ेन सत्वर १३
एकवाणे जन्मिल गन्धर्व्व तिन कोटि। छय कोटि गन्धर्व्व लागिल काटाकाटि १४
सहजे गन्धर्व्व जाति बड़इ दुर्नीत। ताहाते अधिक युद्ध ज्ञातिर सहित
छय कोटि गन्धर्व्व उठिल महामार। गन्धर्व्व-अस्त्रेते हय गन्धर्व्व-संहार १५
गन्धर्व्व मारिया एक देश बसाइल। दुइ पुत्रे अभिषेक भरत करिल
पुष्करेर जन्य राम दिल सेइ पुरी। पुष्कर देशेर से पुष्कर अधिकारी १६
द्वादश वत्सरे बसाइया सेइ पुरी। आइलेन श्रीभरत अयोध्यानगरी
महाह्लादे श्रीराम करेन सम्भाषण। शुनिया गन्धर्व्व-बध हरषित-मन १७
श्रीराम बलेन, योग्य भरत कुमार। दुइ भ्रातुष्पुत्रे देन राज्य-अधिकार
चन्द्रकेतु अङ्गद ए दुइ सहोदर। रामेर आज्ञाय दोंहे हैल दण्डधर १८
मल्लदेश अङ्गद, पाइल अधिकार। अश्वदेश-अधिपति चन्द्रकेतु आर
लक्ष्मणेर दुइ पुत्र हइलेक राजा। राज्य बसाइया पाले विधिमते प्रजा १९

बीती, प्रभात हुआ। तीन करोड़ गंधर्व वहाँ शीघ्रता से आ पहुँचे। वे चारों ओर से, शूल, भाले, बरछे आदि से प्रहार करने लगे। उनके अस्त्रों से बिंधकर भरत के हाथी-घोड़े गिर पड़े ॥ १२ ॥ सात दिन युद्ध हुआ, किसी की विजय नहीं हुई। यह देख देवताओं को बड़ा विस्मय हुआ। वे अति भयंकर गंधर्व मारे नहीं मरते थे, तब भरत ने शीघ्रता से गंधर्वास्त्र छोड़ा ॥ १३ ॥ उनके उस एक बाण से तीन करोड़ गंधर्व उत्पन्न हो गये। अब (शत्रुपक्ष के तीन करोड़ और इनके तीन करोड़) छहों करोड़ गंधर्वों में मारकाट मच गयी ॥ १४ ॥ गंधर्व-जाति के लोग यों ही स्वभाव से ही बड़े दुर्विनीत हुआ करते हैं। तिस पर यह कुटुम्बी जनों के साथ संग्राम था। (अतः वे और अधिक हिंसक हो उठे) छहों करोड़ गंधर्वों में प्रचंड मारकाट मच गयी। उस गंधर्व-अस्त्र से गंधर्वों का संहार हो गया ॥ १५ ॥ भरत ने गंधर्वों को मारकर वहाँ एक नगर बसाया और अपने दोनों पुत्रों का अभिषेक किया। रामचन्द्र ने वह पुरी पुष्कर के लिए दे दी। उस पुष्कर नामक देश का अधिकारी पुष्कर बना ! ॥ १६ ॥ बारह वर्ष में उस पुरी को बसाकर भरत अयोध्या नगरी को लौटे। रामचन्द्र ने बड़ी ही प्रसन्नता से उनसे संभाषण किया; और उनसे गंधर्वों के वध का विवरण सुन वे मन में हर्षित हुए ॥ १७ ॥ श्रीराम ने कहा, भरत के कुमार बड़े योग्य हैं, उन दोनों भतीजों को उन्होंने राज्याधिकार प्रदान किया। चन्द्रकेतु और अंगद दोनों सहोदर राम की आज्ञा से दंडधर राजा बने ॥ १८ ॥ अंगद को मल्ल देश का अधिकार दिया गया, और चन्द्रकेतु को अश्व देश का अधिपति बनाया गया। लक्ष्मण के दोनों पुत्र राजा बने। वे राज्य को बसाकर विधिवत

शत्रुघ्नेर दुइ पुत्र परमसुन्दर। शत्रुघाती सुबाहु ए दुइ सहोदर
चारि भायेर अष्ट पुत्र हैल महामति। शत्रुघ्नेर दुइ पुत्र मथुराधिपति २०
लव-कुश पाइल अयोध्या नन्दीग्राम। अष्ट जने अष्ट राज्य दिलेन श्रीराम
एगार हाजार वर्ष रामेर पालने। सुखे आछे पात्रमित्र-आदि सर्व्वजने २१
कृत्तिबास-कवित्व अमृते आलोड़ित। गाइल उत्तरकाण्डे रामेर चरित

अयोध्याय कालपुरुषेर आगमन ओ लक्ष्मण-बर्ज्जन

परे कालपुरुष से संसारबिनाशी। अयोध्याय प्रवेशिल हइया संन्यासी १
सभाते बसिया राम, दुयारी लक्ष्मण। यथारीति बसियाछे पात्रमित्रगण
हेनकाले आसि कालपुरुष बलिल। आमि ब्रह्मार ये दूत, ब्रह्मा पाठाइल २
लक्ष्मण रामेर काछे कर निबेदन। ताँहार सहित आछे कथोपकथन
श्रीरामेर काछे गिया लक्ष्मण सम्भ्रमे। योड़हात करि तबे जानान श्रीरामे ३
आइल ब्रह्मार दूत द्वारे आचम्बिते। आज्ञा कर रघुनाथ, उचित आनिते
श्रीराम बलेन, आन करि पुरस्कार। किहेतु आइल दूत जानि समाचार ४
पाइया रामेर आज्ञा लक्ष्मण सत्वर। कालपुरुषेरे निल रामेर गोचर
पाद्य-अर्घ्य दिया राम दिलेन आसन। योड़हस्ते जिज्ञासेन, कह प्रयोजन ५

प्रजा का पालन करने लगे ॥ १९ ॥ शत्रुघ्न के परम-सुन्दर दो पुत्र थे, शत्रुघाती और सुबाहु; ये दोनों सहोदर थे। चारो भाइयों के आठों पुत्र महा मतिमान् थे। शत्रुघ्न के दोनों पुत्र मथुरा के अधिपति बने ॥ २० ॥ लव-कुश को अयोध्या और नन्दीग्राम का राज्य मिला। इस प्रकार आठों को रामचन्द्र ने आठ राज्य दिये। श्रीराम ने ग्यारह हज़ार वर्ष प्रजा-पालन किया। उनके शासन में मित्र-सामन्त आदि सभी जन बड़े सुख में थे ॥ २१ ॥ कवि कृत्तिवास की कवित्व-शक्ति अमृत से आप्लावित है। उन्होंने उत्तरकांड में राम-चरित का गान किया है।

अयोध्या में कालपुरुष का आगमन तथा लक्ष्मण का त्यागा जाना

इसके पश्चात् संसार का विनाश करनेवाले कालपुरुष ने अयोध्या में संन्यासी का वेश धारण कर प्रवेश किया ॥ १ ॥ रामचन्द्र सभा में बैठे हुए थे, लक्ष्मण उनके द्वारपाल थे। सभी मंत्री एवं सामन्त यथारीति बैठे हुए थे। उसी समय काल-पुरुष ने आकर कहा— मैं ब्रह्मा का दूत हूँ, मुझे ब्रह्मा ने भेजा है ॥ २ ॥ हे लक्ष्मण, रामचन्द्र से तुम निबेदन करो, उनके संग मुझे वार्ता करनी है। लक्ष्मण ने श्रीराम के पास जाकर सम्मानपूर्वक हाथ जोड़कर यह बात सूचित की ॥ ३ ॥ ब्रह्मा का दूत अकस्मात् द्वार पर आया हुआ है, हे रघुनाथ, उसे लाना उचित है, आप आज्ञा दें। श्रीराम बोले, उस दूत को सम्मानपूर्वक ले आओ, वह दूत किसलिए आया है, इसका समाचार मैं जानना चाहता हूँ ॥ ४ ॥
श्रीराम की आज्ञा पाकर लक्ष्मण शीघ्र कालपुरुष को राम के सम्मुख ले

से कालपुरुष बले, शुनह बचन। ये-कथा कहिब पाछे शुने अन्य जन
ए समये ये करिबे हैथा आगमन। ब्रह्मार बचने तारे करिबे वर्ज्जन ६
एइ सत्य ब्रह्मार ये करिबे पालन। द्वाररक्षा हेतु तबे राख एकजन
श्रीराम बलेन, शुन प्राणेर लक्ष्मण। साबधाने थाक, ना आइसे कोन जन ७
अधिक कि कहिब, ये द्वारपाने चाय। ताहारे त्यजिब आमि, जानिह निश्चय
एइ सत्य करिलाम दूतेर गोचरे। साबधाने लक्ष्मण, रहिबा तुमि द्वारे ८
बिधातार निर्ब्बन्ध ये ना याय खण्डन। कालपुरुषेर सङ्गे हय सम्भाषण
से कालपुरुष बले, परिचय करि। मर्त्यते रहिले, शून्य बैकुण्ठनगरी ९
संसारेर लोक नाशि मोर दूते आने। तोमारे लइते आमि आइनु आपने
ब्रह्मार बचन राम, कर अबधान। संसार छाडिया तुमि चल निज स्थान १०
एगार हाजार वर्ष अबतार करि। भुलिया रहिला प्रभु, येमन संसारी
रहिबार योग्य नहे मर्त्येर भितर। आमारे कि आज्ञा राम बलह सत्वर ११
श्रीराम बलेन, यम, ये कह एखन। संसार छाड़िया आमि करिब गमन
दैबेर निर्ब्बन्ध आछे, ना याब खण्डन। ब्रह्मार मायात दुर्ब्बासार आगमन १२

गये। रामचन्द्र ने उसे पाद्य-अर्घ्य देकर बैठने का आसन दिया और हाथ जोड़कर पूछा— आपके आने का प्रयोजन क्या है ? बताइये ॥ ५ ॥ उस कालपुरुष ने कहा, रामचन्द्र, मेरे वचन सुनें। मैं जो बात कहने आया हूँ, उसे कहीं दूसरा कोई सुन न ले। आपसे बात करने के समय जो यहाँ आ जाए, ब्रह्मा के कहे अनुसार आप उसका त्याग कर दें ॥ ६ ॥ ब्रह्मा की दी हुई यह शपथ जो पालन करे, ऐसे व्यक्ति को आप द्वार पर नियत करें। श्रीराम बोले, प्राणप्रिय लक्ष्मण, सुनो, तुम सावधान रहना, जिससे कोई व्यक्ति यहाँ आ न सके ॥ ७ ॥ और अधिक क्या कहूँ, जो व्यक्ति मेरे इस द्वार की ओर देख भी लेगा, यह निश्चय जान लो कि उसे भी में परित्याग कर दूंगा। मैं दूत के सम्मुख यह प्रतिज्ञा कर रहा हूँ। अतः लक्ष्मण, तुम द्वार पर सावधानी से रहना ॥ ८ ॥ विधाता का लेख खंडन नहीं किया जा सकता। कालपुरुष के साथ रामचन्द्र वार्ता करने लगे। कालपुरुष ने रामचन्द्र को अपना परिचय देकर कहा, आप मर्त्य-लोक में रह रहे हैं, उधर वैकुंठपुरी सूनी पड़ी है ॥ ९ ॥ संसार के लोगों का विनाश कर मेरे दूत ही यहाँ से ले जाया करते हैं, पर आपको ले जाने हेतु मैं स्वयं आया हूँ। हे रामचन्द्र, आप ब्रह्मा का वचन सुनिए। (उन्होंने कहा है—) संसार को छोड़कर अब आप अपने स्थान को चलें ॥ १० ॥ हे प्रभु, अपने अवतार लेने के बाद (राज्याभिषेक के पश्चात्) ग्यारह हज़ार वर्ष तक आप भी संसारी-पुरुषों की भाँति भूले रहे। मर्त्यलोक में अब आपका रहना उचित नहीं है। (कालपुरुष ने कहा—) हे राम, अब आप मुझे कौन-सी आज्ञा देते हैं, शीघ्र कहिए ॥ ११ ॥ श्रीराम बोले, यमराज, आप अभी जो कह रहे हैं, (उसके अनुसार) मैं संसार छोड़कर चला जाऊँगा। दैव ने जो लिखा है

मा करि द्वारे बसि आछेन लक्ष्मण। मुनि बले, गिया करि राम सम्भाषण
क्ष्मण बलेन, कृपा कर दास ब'ले। ब्रह्मार दूतेर सने आछेन बिरले १३
कर्म्म साधिबे करि राम-सम्भाषण। आज्ञा कर, साधि आमि सेइ प्रयोजन
पिल दुर्व्वासा मुनि लक्ष्मणेर प्रति। लक्ष्मणेर पाने चाहि कहे कोपमति १४
क्ष्मण, आमार शापे कार बापे तरि। शाप दिया पोड़ाइ अयोध्यानगरी
त राज्यखण्ड आजि करिब संहार। पोड़ाइया अयोध्याय करिब छारखार १५
लक-बनिता-बृद्ध आजि करि ध्वंस। दशरथ भूपतिरे करिब निर्व्वंश
खिया मुनिर कोप लक्ष्मणेर त्रास। भावेन, आमार लागि हय सर्व्वनाश १६
ज्ञि राम करिबेन आमारे बर्ज्जन। एड़ाइते नारि आमि ललाट-लिखन
र्ज्जन मरण दुइ एकइ प्रकार। आमा-हेतु बंश केन हइबे संहार १७
ामारे बर्ज्जिले आमि मरि एकजन। पितृबंश नाश करि किसेर कारण
र्व्वकथा लक्ष्मणेर पड़िलेक मने। ए बर्ज्जन सुमन्त्र कहिल तपोबने १८
ालपुरुषेर सङ्गे रामेर कथन। मुनिरे लइया तथा गेलेन लक्ष्मण
ालपुरुषेरे राम करिया बिदाय। प्रणाम करेन राम मुनि दुर्व्वासाय १९

उसका खंडन नहीं किया जा सकता। ब्रह्मा की माया से तभी वहाँ मुनि दुर्वासा का आगमन हुआ ॥ १२ ॥ लक्ष्मण सभा-गृह के द्वार पर बैठे हुए थे। मुनि ने कहा, मैं अभी जाकर राम से वार्ता करूँगा। लक्ष्मण बोले, अपना दास समझकर आप हम पर कृपा करें। श्रीराम अभी ब्रह्मा के दूत के संग एकान्त में चर्चा कर रहे हैं ॥ १३ ॥ राम से वार्ता कर आप जो कार्य करना चाहते हैं, आप मुझे आज्ञा दें, मैं वह प्रयोजन सिद्ध कर दूँ। तब मुनि दुर्वासा लक्ष्मण पर कुपित हो उठे। वे कोप-मति होकर लक्ष्मण की ओर देखने लगे ॥ १४ ॥ लक्ष्मण, मेरे अभिशाप से बच सके, ऐसी शक्ति किसके बाप की है ? मैं शाप देकर अयोध्यापुरी को भस्म कर डालूँगा। समूचे राज्यखंड को मैं आज संहार कर डालूँगा। अयोध्यापुरी को जलाकर भस्म-शेष कर डालूँगा ॥ १५ ॥ आज बालक-नारी-वृद्ध सबको ध्वंस कर राजा दशरथ को निर्वंश कर डालूँगा। मुनि का कोप देखकर लक्ष्मण को बड़ा त्रास हुआ। सोचने लगे, मेरे ही कारण अब सर्वनाश होनेवाला है ॥ १६ ॥ जानता हूँ कि (आज्ञा का उल्लंघन होने पर) श्रीराम मुझे त्याग देंगे मगर भाग्य-लेख तो मैं मिटा नहीं सकता। चाहे त्याग देना हो, या मृत्यु हो, दोनों बराबर हैं। मेरे लिए वंश का संहार भला क्यों हो ? ॥ १७ ॥ रामचन्द्र यदि मुझे त्याग दें, तो केवल एक मैं ही मरूँगा। फिर मैं पितृवंश का नाश क्यों करूँ ? तब लक्ष्मण को पूर्व कथा स्मरण हो आयी। सुमन्त्र ने उनके परित्याग की बात तपोवन में बताई थी ॥ १८ ॥ अन्त में जहाँ रामचन्द्र कालपुरुष के संग वार्ता कर रहे थे, लक्ष्मण मुनि को लेकर वहाँ गये। तब रामचन्द्र ने कालपुरुष को विदा दे, मुनि दुर्वासा को प्रणाम किया ॥ १९ ॥ राम ने विनयपूर्वक पूछा— आप किस प्रयोजन से

विनये बलेन राम, कोन् प्रयोजन । दुर्व्वासा बलेन, चाहि उचित भोजन
एक बर्ष करियाछि आमि अनाहार । देह अन्न व्यञ्जन ये अमृत-सुसार २०
दुर्व्वासार कथाय रामेर हैल हाल । एक बर्ष केमने करिले उपबास
श्रीराम बलेन, मुनि, ए नहे कारण । अनुमाने बुझि हे मजिल पुरीजन २१
भोजन दिलेन राम अमृत-सुसार । भोजन करिया मुनि गेल निजागार
श्रीराम बलेन, मुनि पाड़िल प्रमाद । केमने बर्ज्जिब भाइ, करेन विषाद २२
कालपुरुषेर सङ्गे आलाप यखन । दुर्व्वासार सङ्गे गेल लक्ष्मण तखन
सत्य यदि लङ्घि, तबे व्यर्थ ए जीवन । सत्य पालि यदि, हय लक्ष्मण-बर्ज्जन २३
लक्ष्मणे बर्ज्जिते राम अत्यन्त बिकल । बशिष्ठ-नारद आदि डाकेन सकल
केमने करेन राम सत्येर पालन । सभामध्ये श्रीराम कहेन बिबरण २४
श्रीराम बलेन, सीता आर राज्य धन । इहार अधिक मोर भाइ ये लक्ष्मण
सकलि त्यजिते पारि जानकी सुन्दरी । लक्ष्मण-बिहने आमि रहिते ना पारि २५
मुनिगण बले राम, कि भाविछ मने । सत्य यदि पाल, तबे बर्ज्जह लक्ष्मणे
यदि सत्य लङ्घ हय, व्यर्थ ए जीवन । लक्ष्मण बर्ज्जिया कर सत्येर पालन २६

पधारे हैं ? दुर्वासा बोले— मुझे उचित भोजन चाहिए । मैं एक वर्ष उपवासी रहा हूँ । अब मुझे ऐसा अन्न-व्यंजन दें जो अमृत-तुल्य उत्तम सार वाला हो ॥ २० ॥ दुर्वासा की बात पर रामचन्द्र को हँसी आ गयी । मुनि, आपने एक वर्ष उपवास कैसे किया ? श्रीराम बोले— मुनिवर, (आपके आगमन का) यह कारण नहीं है । मैं अनुमान से समझ गया हूँ, अब सारे नगरवासी डूब गये । (उनका विनाश हो जायेगा) ॥ २१ ॥ मुनि भोजन कर अपने निवास को चले गये । श्रीराम ने कहा, मुनि ने संकट में डाल दिया । वे विषाद करने लगे, भाई लक्ष्मण को कैसे तज दूँ ? ॥ २२ ॥ मैं जब कालपुरुष के संग वार्ता कर रहा था, लक्ष्मण उस समय वहाँ दुर्वासा के साथ गया । यदि मैं सत्य का उल्लंघन करता हूँ, तब तो यह जीवन व्यर्थ है । यदि मैं सत्य का पालन करूँ, तो लक्ष्मण का त्याग करना पड़ता है ॥ २३ ॥ लक्ष्मण को त्यागने (की बात) से रामचन्द्र अत्यन्त व्याकुल हो उठे । उन्होंने वशिष्ठ, नारद आदि सभी को बुलाया । राम सत्य का पालन कैसे करें; (इसका उपाय जानने के लिए) श्रीराम ने सभा में सारा विवरण कह सुनाया ॥ २४ ॥ श्रीराम बोले, सीता तथा राज्य व धन इनकी अपेक्षा मेरा भाई लक्ष्मण अधिक है । सुन्दरी जानकी समेत मैं सब कुछ तज सकता हूँ । पर लक्ष्मण को छोड़कर मैं रह नहीं सकता ॥ २५ ॥ मुनियों ने कहा, रामचन्द्र, आप मन में क्या सोच रहे हैं ? यदि आप सत्य का पालन करें तो लक्ष्मण का त्याग कर दें । यदि सत्य का उल्लंघन हो, तो यह जीवन व्यर्थ है । लक्ष्मण को त्यागकर आप सत्य का पालन करें ॥ २६ ॥ सत्य-हेतु आपके पिता ने आप-जैसे पुत्र का त्याग कर दिया था । सत्य का पालन कर वे मरकर स्वर्गराज्य में गये । आप

त्य हेतु तब पिता तोमा-पुत्रे बर्ज्जे । सत्य पालि मरिया गेलेन स्वर्गराज्ये
त्रदण्डधर तुमि, हैल अधिबास । पितृसत्य पालिते ये गेले बनबास २७
ग्निशुद्धा एइ तुमि परमासुन्दरी । सीता एड़ि राज्य एड़ हये ब्रह्मचारी
सब बर्ज्जिते राम, ना कर मन्त्रणा । लक्ष्मणे बर्ज्जिते केन एत आलोचना २८
नकाले श्रीरामेरे बलेन लक्ष्मण । आमारे बर्ज्जिया कर सत्येर पालन
दि सत्य लङ्घ, तबे बड़ अनाचार । तुमि सत्य लङ्घिले मजिबे ए संसार २९
त किछु आजि राम, आमार कारण । बुझिबे तोमार माया बल कोन् जन
ंसार छाड़िले राम, घुचे मायामोह । दुइ भाइ कोलाकुलि, चक्षे पड़े लोह ३०
भाय बलेन राम, बर्ज्जिनु लक्ष्मण । लक्ष्मण-पश्चाते आमि करिब गमन
ुनि सर्व्वलोकेर चक्षेते पड़े पानी । चलिल लक्ष्मण बीर करिया मेलानि ३१
ड़ेन हातेर बेत्र गात्र-आभरण । श्रीरामेरे प्रदक्षिण करिला लक्ष्मण
न्दिलेन वशिष्ठ ओ नारद-चरण । आर यत बन्दिलेन कुलेर ब्राह्मण ३२
रतेर पदद्वय करेन वन्दन । भरत कातर अति करेन क्रन्दन
जा-समूहेर प्रति कहेन लक्ष्मण । सम्प्रीतिते बिदाय करह प्रजागण ३३

छत्र-दंडधारी थे, आपका दूसरे दिन अभिषेक होनेवाला था, परन्तु पिता के सत्य का पालन करने हेतु आप वन में गये ।। २७ ।। अग्निशुद्धा परम सुन्दरी सीता को आपने त्याग दिया, सीता को त्यागकर, राज्य को त्याग आप ब्रह्मचारी बने रहे । इन सबका त्याग करने के समय, रामचन्द्र, आपने कोई मंत्रणा नहीं की । तब लक्ष्मण का त्याग करने में इतना विचार-विमर्ष क्यों कर रहे हैं ? ।। २८ ।। तभी लक्ष्मण ने श्रीराम से कहा— आप मुझे त्याग कर सत्य का पालन करें । यदि आप सत्य का उल्लंघन करें तो यह बड़ा अनाचार होगा । आप यदि सत्य का उल्लंघन करें तो सारा संसार डूब जायेगा ! (कोई सत्य का पालन नहीं करेगा, संसार में सब अनाचारी बन जायेंगे ।) ।। २९ ।। रामचन्द्र, जो कुछ आज मेरे कारण हुआ है (वह आपकी ही माया है), आपकी वह माया, कहिये, कौन समझ सकता है ? हे रामचन्द्र, संसार छोड़ने पर सारे माया-मोह नष्ट हो जाते हैं । तब दोनों भाई परस्पर आलिंगन करने लगे, उनकी आँखों से आँसू बहने लगे ।। ३० ।। रामचन्द्र ने सभा में कहा— मैं लक्ष्मण का त्याग कर रहा हूँ । लक्ष्मण के पश्चात् मैं भी गमन करूँगा । यह सुनकर सबकी आँखों से आँसू गिरने लगे । वीर लक्ष्मण विदा लेकर चल पड़े ।। ३१ ।। उन्होंने अपने हाथ का बेंत का दंड रख दिया, शरीर के आभूषण उतार दिये, और श्रीराम की प्रदक्षिणा की । लक्ष्मण ने वशिष्ठ और नारद की चरण-वंदना की तथा कुल के सभी ब्राह्मणों का वंदन किया ।। ३२ ।। उन्होंने भरत के चरणों की वंदना की । भरत अत्यन्त कातर होकर रुदन करने लगे । लक्ष्मण प्रजाजनों से कहने लगे— हे प्रजाजनो, आप लोग मुझे प्रेमपूर्वक विदा दें ।। ३३ ।। प्रजाजन कहने लगे— लक्ष्मणजी, सुनिये, आपके बिना हम भला जीवन धारण

प्रजागण बले, शुन ठाकुर लक्ष्मण । तोमा-बिना केमने धरिब ए जीवन
लक्ष्मण रामेर पदे करेन प्रणति । जन्मे-जन्मे थाके येन भक्ति तोमा-प्रति ३४
लक्ष्मणेर बाक्ये राम हइया कातर । अचेतन हइलेन, नाहिक उत्तर
पात्रमित्र-प्रति वीर करिया मेलानि । चाहिया सबार पाने-बक्षे पड़े पानि ३५
राज्यखण्ड आदि करि सह-सर्व्वजन । सरयु नदीर तीरे करेन गमन
प्रार्थना करेन तांरे करिया प्रणाम । आमाते प्रसन्न येन थाकेन श्रीराम ३६
सरयुर स्रोत बहे अति खरशान । लक्ष्मण नामिया स्रोते त्यजिलेन प्राण
नरदेह परिहरि गेलेन गोलोक । अयोध्या नगरे तबे बाड़े महाशोक ३७
हाहाकार रोदन उठिल चतुर्द्दिक । बिलाप करेन राम, बर्णिते अधिक
आमारे एड़िया कोथा गेले हे लक्ष्मण । तोमा-बिना ना राखिब बिफल जीवन ३८
सीतारे बर्ज्जिनु आमि लोक अपबादे । तोमारे बर्ज्जिनु भाइ, कोन् अपराधे
लक्ष्मण-बर्ज्जने मोर मिथ्या ए संसार । लक्ष्मण-समान भाइ ना पाइब आर ३९
लक्ष्मण-बिहने आमि थाकि कि कुशले । ये जले ना मिल भाइ नामिब से जले
ये दिके लक्ष्मण गेल, उत्तर से दिक् । लक्ष्मण-बिहने प्राण राखाइ ये धिक् ४०
करिला बिस्तर सेबा हइया सदय । बर्ज्जिनु तोमारे आमि हइया निर्द्दय
लक्ष्मणेर मरणे कातर प्राण अति । छत्रदण्ड धरिते ना-पान रघुपति ४१

कैसे करें ? लक्ष्मण ने राम के चरणों में सिर नवाया, और कहा— जैसे जन्म-जन्म में आपके प्रति मेरी भक्ति रहे ।। ३४ ।। लक्ष्मण के वचन से रामचन्द्र कातर हो उठे, वे अचेत हो गये, कोई उत्तर नहीं दिया। मंत्रियों-सामंतों आदि से विदा माँगकर वीर लक्ष्मण ने सबकी ओर देखा, उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे ।। ३५ ।। समूचे राज्य-खंड के सभी जनों के साथ वे सरयू नदी के तट पर गये । सरयू को प्रणाम कर उनसे प्रार्थना की, श्रीराम जैसे मुझ पर प्रसन्न रहें ।। ३६ ।। सरयू का प्रवाह बड़े वेग से प्रवाहित हो रहा था । उस धारा में उतरकर लक्ष्मण ने अपने प्राण तज दिये । नरदेह त्यागकर वे गोलोक में चले गये । तब अयोध्या नगर में महाशोक बढ़ गया ।। ३७ ।। चारों ओर हाहाकार और रुदन होने लगा । रामचन्द्र विलाप करने लगे, जिसका वर्णन करना बाहुल्य है । हे लक्ष्मण, तुम मुझे छोड़कर कहाँ चले गये ? तुम्हारे बिना अब मैं अपना यह विफल जीवन नहीं रखूँगा ।। ३८ ।। लोकापवाद के कारण मैंने सीता का परित्याग किया था, पर भाई, तुम्हें किस अपराध से मैंने त्यागा है ? लक्ष्मण के त्यागने के कारण मेरा यह संसार मिथ्या हो गया है । लक्ष्मण जैसा भाई अब मुझे नहीं मिलेगा ।। ३९ ।। लक्ष्मण के बिना क्या मैं कुशलपूर्वक रह सकता हूँ ? भाई लक्ष्मण, जिस जल में उतरा है मैं उसी जल में उतरूँगा । जिस दिशा में भाई लक्ष्मण गया है, वह उत्तर-दिशा है (देवलोक है) । लक्ष्मण के बिना मेरा प्राण रखना ही धिक्कार है ।। ४० ।। हे भाई, तुमने सदय बनकर मेरी बड़ी सेवा की; और मैंने निर्दय बनकर तुम्हारा परित्याग कर दिया । लक्ष्मण के मरण से जिनके प्राण अत्यन्त कातर हो रहे थे, वे रघुनाथजी, छत्र-दंड

भरते करिते राजा श्रीरामेर मति। भरत कहेन किछु श्रीरामेर प्रति
एतकाल नाना सुख करिलाम राम। याइते तोमार सङ्गे एवे मनस्काम ४२
भरतेर कथा शुनि श्रीराम उदास। हेंटमाथा करि राम छाड़ेन निःश्वास
श्रीराम बलेन, शुन आमार उत्तर। आनिते शत्रुघ्ने दूत पाठाओ सत्वर ४३
रामेर आज्ञाय दूत पाठाइल त्वरा। तिन दिबसेते गेल नगर मथुरा
शत्रुघ्नेर ठाँइ दूत कहे काने काने। याइवे सकल लोक श्रीरामेर सने ४४
भरतादि करिया यतेक पुरजन। श्रीरामेर सङ्गे स्वर्ग करिबे गमन
रामेर बर्ज्जने छाड़े लक्ष्मण शरीर। लक्ष्मण-बर्ज्जने राम हलेन अधीर ४५
महाराज शत्रुघन, ना भाविह मने। सत्वर चलह तुमि राम-सम्भाषणे
एत शुनि शत्रुघन करे हेंटमाथा। पात्रमित्रे आनिया कहेन सब कथा ४६
पुत्र सुबाहुरे करे मथुराय राजा। सावधाने पालिते कहेन सब प्रजा
दुइ पुत्र प्रति राज्य करि समर्पण। अयोध्याय करिलेन यात्रा शत्रुघन ४७
तिन दिबसेते आसि अयोध्यानगरी। प्रणाम करेन श्रीरामेर पद धरि
शत्रुघ्ने देखिया राम हरषित-मन। पुनश्च रामेर पद वन्दे शत्रुघन ४८
तोमार चरण-बिना नाहि आर गति। स्वर्गबासे याब प्रभु, तोमार संहति
योड़हस्ते श्रीरामे कहेन सर्व्वलोके। तोमार प्रसादे राम, स्वर्ग याब सुखे ४९

धारण करना नहीं चाहते थे ! ॥ ४१ ॥ भरत को राजा बना देने का विचार रामचन्द्र का हुआ। तब भरत ने श्रीराम से कहा— हे रामचन्द्र, इतने समय तक हमने नाना प्रकार के सुख भोगे। अब मेरी मनोकामना आपके संग जाने की है ॥ ४२ ॥ भरत की बात सुन श्रीराम उदास हो गये। सिर झुकाकर उन्होंने लम्बी साँस ली। श्रीराम बोले, मेरा उत्तर सुनो ! तुम शत्रुघ्न को लाने के लिए तुरन्त दूत भेजो ! ॥ ४३ ॥ राम के आदेश से उन्होंने तुरन्त दूत को भेजा। वह दूत तीन दिन में मथुरा नगर पहुँचा। उस दूत ने शत्रुघ्न से कानोंकान कहा— सभी लोग श्रीराम के संग (परलोक) जानेवाले हैं ॥ ४४ ॥ भरत आदि समेत जितने पुरजन हैं, वे सभी रामचन्द्र के संग स्वर्गगमन करेंगे ! राम के त्याग देने के कारण लक्ष्मण ने अपना शरीर तज दिया है। लक्ष्मण के त्यागने के कारण रामचन्द्र अधीर हो उठे हैं ॥ ४५ ॥ महाराज शत्रुघ्न, आप मन में सोच-विचार न करें। आप तुरंत रामचन्द्र से वार्ता करने चलें। यह सुनकर शत्रुघ्न ने सिर झुका लिया। मंत्रियों-सामन्तों को बुलाकर सारी बातें कहीं ॥ ४६ ॥ उन्होंने पुत्र सुबाहु को मथुरा का राजा बनाया। और सारी प्रजा का पालन सावधानी से करने को कहा। अपने दोनों पुत्रों को राज्य सौंपकर शत्रुघ्न ने अयोध्या के लिए प्रस्थान किया ॥ ४७ ॥ वे तीन दिन में अयोध्यापुरी आ पहुँचे तथा श्रीराम के चरण पकड़कर प्रणाम किया। शत्रुघ्न को देखकर राम का मन हर्षित हुआ। शत्रुघ्न ने पुनः रामचन्द्र की चरण-वन्दना की ॥ ४८ ॥ उन्होंने कहा— आपके चरणों के बग़ैर हमारी और कोई गति नहीं है। हे प्रभु, आपके संग हम भी स्वर्ग ... चलेंगे। श्रीराम को हाथ जोड़ सभी

तोमार जीबने राम सबार जीवन। तोमार मरणे प्रभु, सबार मरण
शुनिया श्रीराम करिलेन अङ्गीकार। आमार सहित चल, बाञ्छा थाके यार ५०
जीबनेर आशा छाड़ि सबार ए आश। श्रीरामेर सङ्गे गिया करे स्वर्गबास
तिन कोटि राक्षसे आइल बिभीषण। सुग्रीव अङ्गद एल सह कपिगण ५१
नल नील आइल से मन्त्री जाम्बुबान। महेन्द्र देबेन्द्र एल बीर हनूमान
आर यत लोक छिल अयोध्यानगरे। यत यत लोक छिल पृथिबी-भितरे ५२
स्त्री-पुरुष एल सबे अयोध्यानगरे। बाल-बृद्ध, आदि केह नाहि रहे घरे
रामेर निकटे एल सबे शीघ्रगति। योड़हात करि सबे रामे करे स्तुति ५३
कतबार देखिलाम देव त्रिलोचन। कत शत देखिलाम सिद्ध ऋषिगण
गन्धर्व्बेर गीत शुनिलाम मनोहर। बिद्याधरी नृत्य करे देखिनु बिस्तर ५४
तोमार बिहने राम, थाकि कोन् सुखे। तोमार पश्चाते मोरा याव स्वर्गलोके
पृथिबीर यत लोक करे योड़हात। एके एके सबारे बलेन रघुनाथ ५५
श्रीराम बलेन, शुन राजा बिभीषण। मम सङ्गे नहे तव स्वर्गेते गमन
हइया लङ्कार राजा थाक चारियुगे। आर किछु ना बलिह आजि मोर आगे ५६
शुन बलि तोमारे ये पवननन्दन। मम सङ्गे नहे तव स्वर्गेते गमन
यावत आमार नाम थाकिबे संसारे। यतकाल चन्द्र-सूर्य्य जगते प्रचारे ५७

लोगों ने कहा— हे रामचन्द्र, हम सब आपके प्रसाद से सुख-पूर्वक स्वर्ग-लोक को चलेंगे।। ४९ ।। हे रामचन्द्र, आपके जीवन से ही हम सबका जीवन है। प्रभु, आपके मरण से हम सबका मरण है। यह बात सुनकर रामचन्द्र ने स्वीकार कर लिया। बोले, जिसे स्वर्ग जाने की इच्छा हो हमारे संग चलो।। ५० ।। जीवन की आशा छोड़कर सबकी यही आशा थी कि श्रीराम के संग जाकर स्वर्गलोक में निवास करें। तीन करोड़ राक्षसों के संग विभीषण आया। सुग्रीव-अंगद समेत सभी वानर आये।। ५१ ।। नल, नील, मंत्री, जाम्बवान्, महेन्द्र, देबेन्द्र तथा वीर हनुमान आये। अयोध्या नगर में और जितने सारे लोग थे, धरती पर जितने लोग थे।। ५२ ।। सभी स्त्री-पुरुष अयोध्या नगर में आये। बालक-वृद्ध आदि कोई भी घर में नहीं रहा। सभी शीघ्रता से रामचन्द्र के पास आये। सबने हाथ जोड़कर राम की स्तुति की।। ५३ ।। हे रामचन्द्र, हमने कितनी बार 'देव' त्रिलोचन (शंकरजी) को देखा है, कितने सैकड़ों सिद्धों-मुनियों को देखा है, कितने ही गंधर्वों के मनोहर गीत सुने हैं, विद्याधरियों को नृत्य करते भी बहुत देखा है।। ५४ ।। पर हे राम, आपके बिना हम किस सुख से यहाँ रहें ! आपके पीछे-पीछे हम भी स्वर्गलोक को चलेंगे। संसार के सभी लोगों ने हाथ जोड़ लिया। तब रामचन्द्र एक-एक कर सबसे कहने लगे—।। ५५ ।। श्रीराम ने कहा— राजा विभीषण, सुनो, मेरे साथ तुम्हें स्वर्ग नहीं जाना है। तुम चार युगों तक लंका के राजा बनकर रहो। आज मेरे सामने तुम और कुछ न कहना।। ५६ ।। पवननन्दन, तुमसे कहता हूँ। सुनो, मेरे संग तुम्हें स्वर्ग में नहीं जाना है। जब तक मेरा नाम संसार में रहेगा, जब तक

ताबत या कह तुमि हइया अमर। तोमार प्रसादे मुक्त हबे चराचर
हनूमान बले, नाहि चाहि स्वर्गबास। तोमार ये गुण शुनि, एइ अभिलाष ५८
श्रीराम, तोमार नाम हइबे येखाने। सेइखाने सुस्थिर थाकिब रात्रिदिने
हनू-प्रति बलेन श्रीकमल-लोचन। तुमि आमि एक देह करिबा गणन ५९
आमा भक्त कपि तुमि, परम सुस्थिर। येइ तुमि, सेइ आमि, एकइ शरीर
ब्रह्मार बरेते चारियुगे चिरजोबी। आमार बरेते तुमि पालह पृथिबी ६०
शुन बलि महाज्ञानी मन्त्री जाम्बुबान। चारियुग स्थायी तुलि ब्रह्मार कल्याण
आरबार हौक तव प्रथम यौबन। तोमारे जिनिते ना पारिबे कोनजन ६१
आरबार आमि यदि हइ अबतार। तब सङ्गे देखा तबे हइबे आमार
आर यत मनुष्य आसुक मोर सने। स्वर्गबासे याइते याहार थाके मने ६२
दिलेन श्रीराम लब-कुशे छत्रदण्ड। हाते हाते समर्पण यत राज्यखण्ड
हनुमान जाम्बवान, महेन्द्र बानर। लव-कुश सने देन करिया दोसर ६३
बिभीषणे आनि राम करेन अर्पण। लब-कुशे राजा करि करेन गमन

श्रीराम, भरत ओ शत्रुघ्नेर बैकुण्ठे गमन

सुयात्रा करिया राम छाड़ेन राम संसार। राम गेला पृथिबी हइल अन्धकार १

सूर्य-चन्द्र जगत में विचरण करते रहेंगे, ॥ ५७ ॥ तब तक तुम अमर बनकर रहो, तुम्हारे अनुग्रह से चराचर को मुक्ति मिलती रहेगी। हनुमान बोले, मुझे स्वर्ग में निवास मिले, यह मैं नहीं चाहता ! मेरी यही अभिलाषा है कि आपका गुण-गान सुनता रहूँ ॥ ५८ ॥ श्रीरामजी, जहाँ आपका नाम-गान होगा, मैं वहीं परम स्थिर होकर दिन-रात निवास करता रहूँगा। तब हनुमान से कमल-लोचन रामचन्द्र ने कहा— तुम मान लो कि तुम्हारा और मेरा शरीर एक ही है। मुझमें तुममें कोई भिन्नता नहीं है ॥ ५९ ॥ हनुमान, तुम परम-अविचल, मेरे भक्त हो, जो तुम हो, वही मैं हूँ; तुम्हारा-मेरा शरीर एक ही है। ब्रह्मा के वर से चारों युगों में तुम चिरजीवी बने रहो, मेरे वर से तुम संसार का पालन करते रहो ॥ ६० ॥ महाज्ञानी, मंत्री जाम्बवान, सुनो, ब्रह्मा के आशीर्वाद से तुम चारों युगों तक स्थायी रूप से संसार में निवास करो। तुम्हें पुनः प्रथम यौवन प्राप्त हो जाए। तुम्हें कोई जीत नहीं सकेगा ॥ ६१ ॥ पुनः जब मैं अवतार लूंगा, तब मेरे साथ पुनः तुम्हारी भेंट होगी। और जितने लोग, स्वर्ग जाना चाहते हों, सब मेरे संग आवें ॥ ६२ ॥ श्रीराम ने लव-कुश को छत्र-दंड सौंप दिया। हाथों-हाथ समूचा राज्य-खंड उन्हें समर्पित किया ! हनुमान, जाम्बवान तथा वानर महेन्द्र के साथ लव-कुश की मित्रता करवा दी ॥ ६३ ॥ विभीषण को बुलाकर (लव-कुश को) उन्हें सौंप दिया। लव-कुश को राजा बनाकर रामचन्द्र ने प्रस्थान किया।

श्रीराम, भरत और शत्रुघ्न का वैकुंठ-गमन

मंगल-यात्रा करते हुए रामचन्द्र ने संसार त्याग दिया। राम के

अयोध्या छाड़िया राम करेन गमन। बशिष्ठ-नारद-आदि सङ्गे मुनिगण
अबधूत संन्यासी चलिल सारि सारि। क्षत्रिय ब्राह्मण वैश्य शूद्र बर्ण चारि २
हाते लड़ि करिया चलिल खोंडा-काणा। श्रीरामेर सङ्गे याय, ना मानिल माना
स्थावर जंगम चले श्रीरामेर सने। गाछे पक्षी ना रहे, ना पशु रहे बने ३
भूत-प्रत पिशाच, चलिल अन्तरीक्षे। हृष्ट हये याय सबे से उत्तर-मुखे
राज्यखण्ड-सह गेल हेमन्त-पर्व्वते। एक चापे याय लोक क्षमासेर पथे ४
संसार छाड़िया याय राजा लक्ष लक्ष। चलिल ये नपुंसक अन्तःपुर-रक्ष
चलिल सुग्रीब राजा श्रीरामेर मित। सेनानी छत्रिश कोटि चलिल त्वरित ५
ब्रह्मा आनिलेन रथ श्रीरामे लइते। बैकुण्ठे आसिबे प्रभु जगत-सहिते
तिन कोटि रथ एल, देबलोके देखे। आकाश युड़िया रथ रहे अन्तरीक्षे ६
जाह्नबी सरयु नदी एकठाँइ बहे। गङ्गा एड़ि रघुनाथ सरयुते रहे
मुक्त पूर्व्वपुरुष ये सरयुर जले। गङ्गा एड़ि रघुनाथ सरयुते उले ७
सरयुर स्रोत बहे अति खरशामा। स्रोते नामि तिन भाइ त्यजिलेन प्राण
स्वर्गेते दुन्दुभि बाजे, पुष्प-बरिषण। सरयुते तिन भाइ त्यजेन जीबन ८
नरदेह छाड़िया गेलेन तिन जन। बैकुण्ठे श्रीविष्णु गिया देन दरशन
श्रीराम भरत आर शत्रुघ्न लक्ष्मण। मिलि हइलेन एक-देह नारायण ९

प्रस्थान करने पर संसार में अंधकार हो गया ॥ १ ॥ रामचन्द्र अयोध्या छोड़कर चल पड़े। उनके संग वशिष्ठ-नारद आदि मुनिगण, अवधूत, संन्यासी, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र —इन चारों वर्णों के लोग कतारों में चले ॥ २ ॥ हाथों में लाठियाँ लिये हुए अन्धे-लँगड़े श्रीराम के संग चल पड़े, मना करने पर भी नहीं माने। स्थावर-जंगम श्रीराम के संग चले। पेड़ों पर पक्षी न रहे, न वनों में पक्षी रहे ॥ ३ ॥ भूत-प्रेत-पिशाच आदि अन्तरिक्ष में चले। वे सभी हर्षित हो उसी उत्तर दिशा की ओर चले। राज्य-खंड (के प्रजाजनों) के साथ वे हेमन्त-पर्वत पर पहुँचे। लोग एक ही वेग से छः महीने का मार्ग पार कर गये ॥ ४ ॥ लाखों राजा संसार छोड़कर चले। अंतःपुर-रक्षी नपुंसक (हिजड़े) भी चले। श्रीराम का मित्र राजा सुग्रीव चला। छत्तीस करोड़ सेनानायक तेज़ी से चले ॥ ५ ॥ प्रभु संसार के लोगों के संग आ रहे हैं यह सोचकर श्रीराम को ले जाने के लिए ब्रह्मा रथ ले आये। देवताओं ने देखा, तीन करोड़ रथ आ गये हैं। वे रथ आकाश को व्याप्त कर अन्तरिक्ष में स्थित हो गये ॥ ६ ॥ गंगा और सरयू नदियाँ जहाँ एक स्थान पर बह रही थीं, गंगा को छोड़ रामचन्द्र सरयू में ही रह गये। उनके पूर्वपुरुष सरयू के जल में मुक्त हुए थे। गंगा को छोड़ रामचन्द्र ने (इसी कारण) सरयू में डुबकी लगायी ॥ ७ ॥ सरयू की धारा बड़ी तेज गति से प्रवाहित हो रही थी, उस धारा में उतरकर तीनों भाइयों ने अपने प्राण तज दिये। स्वर्ग में दुन्दुभि वजने लगी, पुष्प-वर्षा होने लगी। सरयू नदी में तीनों भाइयों ने अपने जीवन तज दिये ॥ ८ ॥ वे तीनों भाई मानव-शरीर

सीतादेवी आइलेन श्रीरामेर पाशे। लक्ष्मीरूपा हइलेन सीता अवशेषे
वैकुण्ठेर नाथ यदि एल भगवान्। ब्रह्माके डाकिया किछु कहेन विधान १०
आमार सहित यत आसियाछे प्राणी। कोथाय थाकिबे तारा, किछुइ ना जानि
विरिञ्चि बलेन, शुन राजीवलोचन। सन्तान नामेते स्वर्ग करेछि सृजन ११
सेइखाने आसिया रहिबे सर्व्वजन। वाञ्छा करे येखाने थाकिते देवगण
येइ जन रामायण करिबे श्रवण। परलोके एइ-स्वर्गे करिबे गमन १२
मृत्युकाले राम नाम करे येइ जन। सशरीरे करिबे से वैकुण्ठे गमन
भक्त-अनुरूप स्वर्ग अनेक प्रकार। गोविन्दे भाविया लोक पायतो निस्तार १३
श्रीरामेर भक्त ये पाइल स्वर्गवास। इहा देखि ब्रह्मार मनेते हैल त्रास
चतुर्म्मुख चतुर्म्मुखे करिछेन स्तुति। तोमा-दरशने नाथ, पाइनु निष्कृति १४
आगम पुराण यत मीमांसा वेदान्त। तोमार महिमा राम, के पाइबे अन्त
आमा-हेन कोटि ब्रह्मा नाहि पाय सीमा। एमनि अनन्त तुमि, अनन्त-महिमा १५
पुण्य वृद्धि हय यारे करिले स्मरण। पापी पापे मुक्त हय शुनि रामायण
चारिवेद सहस्र नामे ये फल हय। रामनामे तार कोटिगुण फलोदय १६

तजकर चले गये। श्रीविष्णु वैकुंठ में जाकर प्रकट हुए। श्रीराम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न ये चारों भाई मिलकर एक-देह नारायण हो गये ।। ९ ।। सीतादेवी श्रीराम के पास आयीं, अंत में सीता लक्ष्मी-रूपा हो गयीं। जब वैकुंठ-नाथ भगवान आ पहुँचे, तब उन्होंने ब्रह्मा को बुला कर कुछ व्यवस्था के बारे में कहा ।। १० ।। मेरे संग जितने प्राणी आये हैं, वे कहाँ रहेंगे, मैं कुछ नहीं जानता। ब्रह्मा बोले, कमल-लोचन प्रभु, सुनिये, मैंने संतान नाम का स्वर्ग-लोक बनाया है ।। ११ ।। उसी स्थान में ये सभी जन आकर रहेंगे। जहाँ रहने की कामना देवगण भी किया करते हैं। जो जन रामायण श्रवण करेंगे, वे परलोक में इसी स्वर्ग में गमन करेंगे ।। १२ ।। जो मृत्युकाल में राम-नाम लेगा, वह सशरीर वैकुंठ-गमन करेगा। (भिन्न-भिन्न प्रकार के) भक्तों के अनुसार स्वर्ग भी अनेक प्रकार के हैं। गोविन्द का स्मरण कर लोग इस संसार से मुक्त हो जाते हैं ।। १३ ।। श्रीराम के सारे भक्तों को स्वर्ग-वास मिल गया, यह देख ब्रह्मा के मन में भय हुआ। चतुर्मुख ब्रह्माजी चारों मुखों से उनकी स्तुति करने लगे। नाथ, आपके दर्शन से मेरा उद्धार हो गया ।। १४ ।। वेद-पुराण, स्मृति-वेदान्त (आदि जितने भी शास्त्र हैं) आपकी महिमा का पार कौन पा सकता है ? मेरे जैसे करोड़ों ब्रह्मा उसका पार नहीं पा सकते, आप इतने अनन्त हैं, आपकी इतनी अनन्त-महिमा है ।। १५ ।। जिसका स्मरण करने पर पुण्य वृद्धि होती है, उस रामायण को सुनकर पापी पाप से मुक्त हो जाते हैं। चारों वेद, सहस्रनाम से जो फल होता है, राम-नाम से उसका करोड़ गुणा फल मिलता है ।। १६ ।। राम-नाम लेने की जो अभिलाषा करता है, वह सभी पापों से मुक्त होकर वैकुंठ में

राम-नाम लइते ये करे अभिलाष। सर्व्वपापे मुक्त से वैकुण्ठे करे बास
अपुत्रक लोक शुनि पाय पुत्रफल। सप्तकाण्ड शुनि पाय अश्वमेध-फल १७
सप्तकाण्ड रामायण अमृतेर खण्ड। एतदूरे समाप्त हइल सप्तकाण्ड १८

॥ उत्तरकाण्ड समाप्त ॥

निवास करता है। अपुत्रक रामायण सुनें तो उसे पुत्र-फल की प्राप्ति होती है। सप्तकांड रामायण सुनने पर अश्वमेध-यज्ञ का फल मिलता है ॥ १७ ॥ सप्तकांड रामायण अमृत का खंड है; अब यहाँ सप्तकांड रामायण की समाप्ति हुई।

॥ उत्तरकांड समाप्त ॥